लघु

हिंदी शब्दसागर

संपादक

करुणापति त्रिपाठी

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी
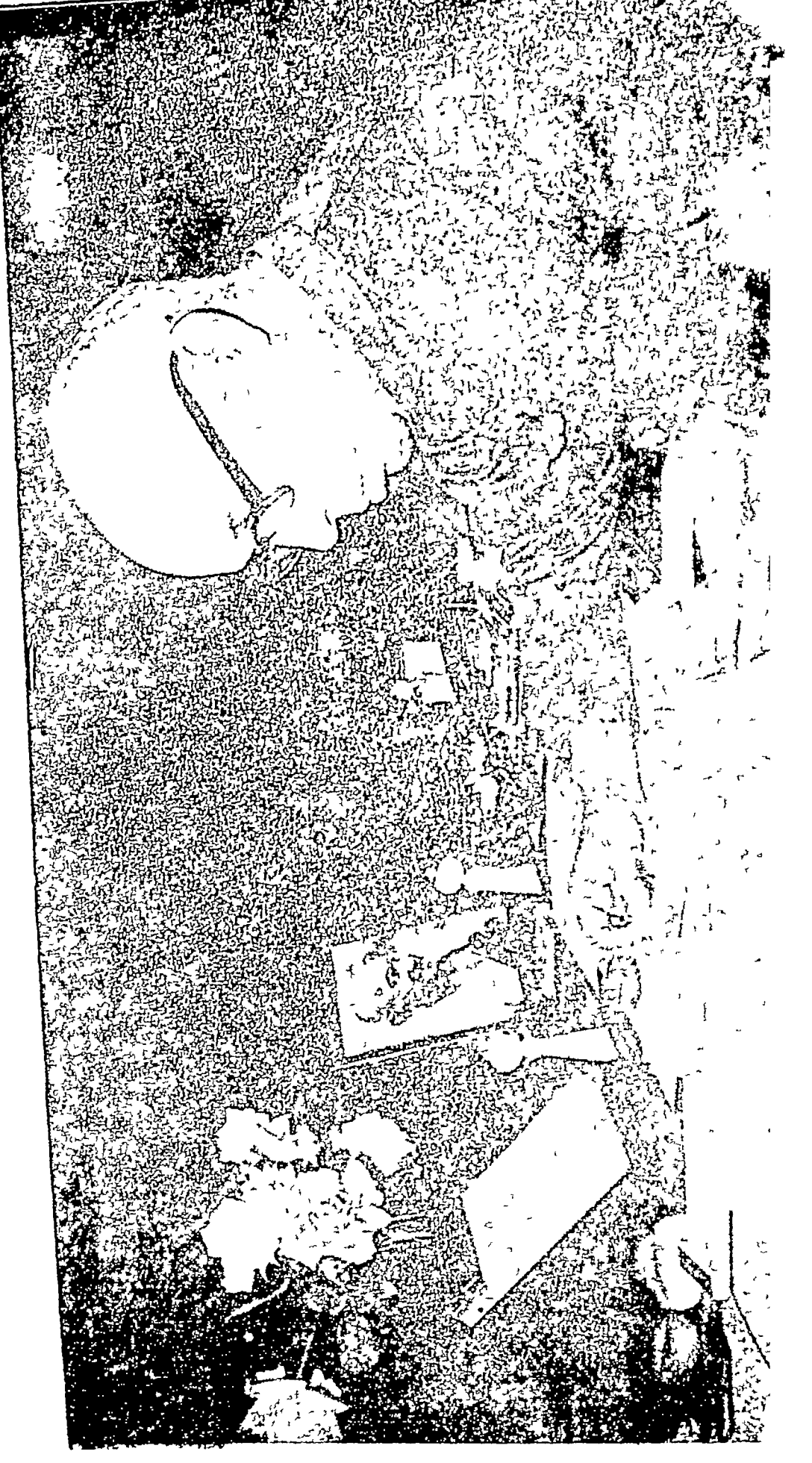
विश्व के सर्वाधिक प्रिय जननायक, राजनीति मे शांति एवं
प्रेम के नूतन युगप्रवर्तक और स्वतंत्र भारत के प्रकाशस्तंभ

महामानव जवाहरलाल नेहरू

को

श्रद्धा के साथ समर्पित

इस संस्करण के संबंध में

भारतीय भाषाओं को सभा द्वारा प्रकाशित 'हिंदी शब्दसागर' मौलिक, विशिष्ट, प्रामाणिक एवं आदर्श प्रतिनिधि देन है। संवत् १९५१ वि० का सभा का यह सकल्प सवत् १९८५ में, लगभग ३४ वर्ष की सतत तपस्या के उपरांत मूर्त हुआ। आरभ में इसके सपादक डा० श्यामसुंदरदास और सहायक संपादक सर्वश्री बालकृष्ण भट्ट, रामचंद्र शुक्ल, अमीरसिंह, जगमोहन वर्मा, भगवानदीन और रामचद्र वर्मा थे। कार्य समाप्त होते होते सहायक संपादको मे केवल आचार्य शुक्ल जी, लाला भगवानदीन और पद्मश्री रामचद्र वर्मा रह गए थे। इसके प्रकाशन में ही १९ वर्ष का समय (संवत् १९६६-१९८५ वि०) व्यतीत हो गया। अध्ययन अध्यापन, व्यावहारिकता एवं जनसाधारण की सुलभता की दृष्टि से सक्षिप्त हिंदी शब्दसागर का भी प्रकाशन सभा ने किया जो अपने गुणधर्म के कारण हिंदी के सर्वाधिक जनप्रिय एवं प्रतिनिधि प्रामाणिक कोश के रूप मे प्रतिष्ठा का अधिकारी हुआ। तब से निरतर इसका संशोधन और परिवर्धन होता रहा। इस प्रकार इस कोश ने एक नया ही रूप ग्रहण कर लिया। हीरक जयती के अवसर पर संवत् २०१० वि० में भारत के प्रथम राष्ट्रपति तथा सभा के सरक्षक डा० राजेद्रप्रसाद जी के अनुग्रह तथा केंद्रीय सरकार की कृपा से बृहत कोश के नवीन परिवर्धित और सशोधित संस्करण के संपादन के लिये अनुदान की उपलब्धि हुई। तब से निरतर नई स्फूर्ति के साथ सभा इस कार्य में सोत्साह लगी हुई थी। यह कोश १२ भागों मे प्रकाशित हो गया। यह गुरुगभीर कार्य समयसापेक्ष था। इसलिये सक्षिप्त हिंदी शब्दसागर का षष्ठ संस्करण प्रकाशित किया गया जो नवीन बृहत् कोश का संक्षिप्त सस्करण है। यह सवर्धित अभिनव संस्करण अपने गुणधर्म एव उपलब्धियो के कारण हिंदीजगत् मे विशेष आदर का पात्र है। पं० करुणापति जी त्रिपाठी जैसे गंभीर विद्वान् के संयोजन को इसका विशेष श्रेय है। इस सबंध मे श्री प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र एवं श्री कृष्णानंद जी की सेवाएँ भी आदर की अधिकारिणी हैं।

इसके प्रकाशन के साथ ही एक ऐसे कोश के प्रकाशन का अनुभव सभा करने लगी जो इससे भी संक्षिप्त हो, जिसमें अहिंदी भाषी प्रदेशों एवं अध्ययन अध्यापन क्षेत्र की आवश्यकता की पूर्ति प्रामाणिक ढग से सर्वजनसुलभ हो सके। इसके लिये कोशप्रणयन की अद्यतन वैज्ञानिक दृष्टि एवं युग की आवश्यकता का ध्यान रखने का संकल्प भी सभा का था। सभा ने इस कार्य का भार पं० करुणापति त्रिपाठी को, जो बृहत् हिंदी शब्दसागर के भी सयोजक थे, सौंपा। उन्होंने जिस निष्ठा, विद्वत्ता एव वैज्ञानिक दृष्टि से इस कार्य को सपादित एवं सपन्न किया वह सर्वथा उनकी गरिमा के अनुरूप है। उन्होने इस कार्य के लिये सभा से कुछ भी प्रतिदान नहीं लिया है। उनके इस निस्पृह सेवा के कारण ही यह कोश इस रूप मे प्रकाशित हो सका है।

इस कोश की प्रामाणिकता, उपादेयता एव उपयोगिता की दृष्टि से अपनी मौलिक महत्ता है। इसमे सक्षिप्त शब्दसागर से भी अधिक शब्द हैं यद्यपि विस्तृत अर्थविचार एव दृष्टात के लिये यहाँ अवकाश नहीं है। दूसरे, यद्यपि सभा ने इसे अपने धन मे प्रकाशित किया है, तो भी इसका मूल्य लागत मात्र ही रखा हे जिसमे वह सर्वसाधारण को उपलब्ध हो सके।

अपने वर्तमान रूप मे अपने आकार प्रकार मे यह हिंदी का सबसे अधिक प्रमाणिक और अर्वाचीन कोश हे। इसमे शब्द सकलन कृतियो से शब्द चयन कर किया गया है और प्राचीन तथा नये साहित्य मे प्रयुक्त शब्द तथा शिल्प और उद्योग मे व्यवहार मे लाए जाने वाले शब्द भी हैं। इस प्रकार यह अपने रूप मे हिंदी का ऐसा कोश हे। जिसके कारण कोश ससार मे इसकी ऐतिहासिक और अनन्य उपयोगी भूमिका है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी जगत की बहुत बडी आवश्यकता की पूर्ति इस कोश के माध्यम से होगी और अपने गुण धर्म के कारण हिंदी जगत इसे समादृत करेगा ।

नागरीप्रचारिणी सभा,
शती वर्ष
१६ जुलाई १९९३ ई०

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री
नागरीप्रचारिणी सभा
वाराणसी

प्रस्तावना

सभा ने हिंदी शब्दसागर के निर्माण द्वारा हिंदी-कोश-वाङ्मय के क्षेत्र मे नूतन युग का प्रवर्तन किया था। आगे चलकर उसी का एक व्यावहारिक संस्करण संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर नाम से प्रकाशित किया गया, जिसके अबतक छह संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। शब्दसागर के पुन: प्रकाशन का कार्य भी केंद्रीय शासन की आर्थिक सहायता से चल रहा है। शीघ्र ही उसके खंडो का भी प्रकाशन प्रारंभ हो जायगा। इसी श्रृंखला मे सभा लघु हिंदी शब्दसागर और लघुतर शब्दसागर प्रकाशित कर रही है। इन कोशों के संपादन में हिंदी सीखने पढनेवाली अहिंदीभाषी जनता की आवश्यकताओं का मुख्य रूप से ध्यान रखा गया है।

इनके संपादन और निर्माण मे सभा को प्रेरणा मिली थी अपने वरिष्ठ संरक्षक विश्व जनता के सर्वप्रिय नेता स्वर्गीय पंडित नेहरू से। अहिंदीभाषी प्रांतों मे हिंदी प्रचारकार्य मे बाधाओं का उल्लेख करते हुए उन्होंने एक बार हिंदी मे ऐसे कोशो की कमी की ओर ध्यान दिलाया था, जो प्रामाणिक भी हो और कम मूल्य पर उपलब्ध भी हो सके। देश के हृदयसम्राट नेहरू जी के उक्त संकेत से प्रेरित होकर सभा ने इन छोटे कोशो का संपादन प्रारंभ किया। इनका प्रकाशन सभा ने अपने धन से किया है और लगभग लागत मात्र इसका मूल्य भी रखा है।

सभा की लालसा थी कि जिनकी प्रेरणा से ये कार्य प्रारंभ हुए उन्हीं को ये समर्पित किए जायें। परंतु दुर्भाग्यवश क्रूर काल ने देश के जवाहर और भारत माँ के लाल को हमसे छीन लिया। उनके करकमलो मे इन्हें समर्पित करने का हमारा संकल्प अपूर्ण रह गया। अब सभा स्वर्गीय नेहरू जी के प्रथम मासिक श्राद्धदिवस पर वाङ्मयी श्रद्धांजलि के रूप मे इन कोशो को समर्पित करके ही संतोष लाभ कर रही है। आशा है, जिस प्रयोजन से इनका संपादन हुआ है, नेहरू जी के आशीर्वाद से उसकी पूर्तिदिशा मे ये कोश आगे बढ सकेंगे।

कमलापति त्रिपाठी
सभापति
नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी

गंगा दशहरा,
सं० २०२१ वि०

संपादकीय

नागरीप्रचारिणी सभा ने डा० श्यामसुंदरदास के प्रधान संपादकत्व मे और आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लाला भगवानदीन, श्रीरामचंद्र वर्मा आदि के सहयोग से 'हिंदी शब्दसागर' का निर्माण किया। हिंदी कोश के इतिहास मे वह कार्य एक नूतन युग का प्रवर्तन था। इसी कारण कोश के पूर्ण और प्रकाशित होने पर बड़े धूमधाम से 'कोशोत्सव स्मारक' का समारोह किया गया था। आगे चलकर श्रीरामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित होकर 'हिंदी शब्दसागर' का एक संक्षिप्त और व्यवहारोपयोगी संस्करण--'संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर' के रूप मे प्रकाशित हुआ। इस संक्षिप्त रूप के अनेक संस्करण अब तक छप चुके है। उपयोगिता और आवश्यकतानुसार उन संस्करणों मे संशोधन परिवर्धन भी समय समय पर होता रहा है। आदरणीय वर्माजी के सभा से अलग हो जाने पर अनेक संस्करणों के पुनर्निर्संपादन का भार सभा ने मुझे सौंपा था। मैने यथाशक्ति और योग्यतानुसार उन्हे सुष्ठुतर बनाने का पूरा प्रयास किया था। परंतु कुछ परिस्थितियाँ ऐसी आती गई जिनके कारण मेरे काम और पुनर्संपादन कार्य का उल्लेख तत्कालीन अधिकारियों ने न किया। फिर भी अपने श्रम के फल की प्रकाशनरूप सार्थकता मे ही मुझे संतोष रहा।

कुछ वर्षों पूर्व डा० राजबली पांडेय के मंत्रित्वकाल मे डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, विद्वद्वर पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र और श्री सुधाकर पांडेय ने संक्षिप्त शब्दसागर की श्रृंखला मे लघु और लघुतर कोशों के निर्माण का प्रस्ताव उपस्थित किया। इसका कारण यह था कि हमारे प्रधान मंत्री स्व० पं० नेहरू को हिंदी मे ऐसे कोश का अभाव खटक रहा था जो अहिंदी भाषा-भाषी हिंदीप्रेमियो के लिये सुलभ भी हो और प्रामाणिक भी। पं० विश्वनाथप्रसाद जी मिश्र के साथ मिलकर, उनके परामर्श और सुझावो के सहयोग से, इन प्रस्तावित कोशो के संपादन का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा गया। पंडित जी के साथ मिलकर और उनकी संमति से इसकी योजना बनी। इस योजना के अनुसार कार्य करने का भार श्री पूरनगिरि गोस्वामी को दिया गया। आगे चलकर 'मानस' के संपादन कार्य के कारण मिश्र जी ने इस कार्य से शीघ्र ही अपने को मुक्त कर लिया।

फिर भी उनकी संमति के अनुसार मैं कार्यसंचालन करता रहा। डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा ने अपने प्रधानमंत्रित्वकाल मे इसके संपादन और प्रकाशन मे अपूर्व उत्साह दिखाया और समस्त संभव सुविधाएँ प्रदान करने का वे प्रयास करते रहे। सभा के वर्तमान प्रधानमंत्री और मेरे सहयोगी मित्र श्री पं० शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' आरंभ से ही इन कोशो की उपयोगिता बढाने के निमित्त निरंतर मुझे बडे मूल्यवान् सत्परामर्श देते रहे हैं। इसके प्रकाशन के महत्वपूर्ण कार्य मे प्रकाशन मंत्री श्री सुधाकर पांडेय ने बहुत श्रम किया है और प्रकाशन की कठिनाइयो को दूर करने मे वे सर्वदा तत्पर रहे हैं।

इसके प्रकाशित होने मे अनुमान से अधिक विलंब हो गया--जिसके लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, डा० राजबली पाडेय के प्रति मैं आभार प्रदर्शित करते हुए भी उन लोगो के प्रति मैं अपने को ऋणी समझता हूँ। श्री सुधाकर पाडेय तो आज भी सभा के प्रकाशन मत्री हैं, अत: उनके प्रति आभारप्रकाशन अच्छा नहीं लगता। फिर भी, उनके प्रति कृतज्ञता का अज्ञापन अकृतज्ञता हो जायगी।

श्री पूरनगिरि गोस्वामी, श्री त्रिलोचन शास्त्री, श्री विश्वनाथ त्रिपाठी आदि ने इसके सपादन सशोधन मे जो योगदान किया है--उसके लिये उन्हे भूरि भूरि धन्यवाद है। अत में, श्री शभुनाथ वाजपेयी हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं जिनके अथक परिश्रम से ही ये कोश पाठकों के सामने शीघ्र आ पाए अन्यथा नेपथ्य मे कब तक ये छिपे रहते--कहा नहीं जा सकता।

इन कोशो मे अभी ऐसी अनेक त्रुटियाँ और कमियाँ हैं जिन्हें दूर करने का प्रयास अगले संस्करणो मे होगा। जाने अनजाने इनमे मुद्रण आदि की भी अशुद्धियाँ रह गई हैं। उनके लिये अपने को दोषी मानकर मैं बारबार क्षमार्थी हूँ।

यदि इन व्यवहारोपयोगी, प्रामाणिक और अल्प-मूल्य-सुलभ कोशो से पाठकों को, विशेषकर हिदीतर-भाषाभाषी हिदी पढनेवालो को, (मुख्यत: जिनके लिये इनका सपादन हुआ है)-आवश्यक सहायता मिली तो सभा का, मेरा और उल्लिखित समस्त सहयोगी बंधुओ का श्रम सार्थक होगा।

औरगाबाद, काशी

करुणापति त्रिपाठी

संकेत सूची

अं० = अंग्रेजी
अ० = अरबी
अनु० = अनुकरणबोधक
अप० = अपभ्रंश
अक० = अकर्मक क्रिया
अल्पा० = अल्पार्थक
अव० = अवधी
अव्य० = अव्यय
इब्रा० = इब्रानी
उ० = उदाहरण
उडि० = उड़िया
उप० = उपसर्ग
एक व० = एकवचन
कर्ता० = कर्ता कारक
क्रि० = क्रियाविशेषण
क्व० = क्वचित् प्रयोग
गुज० = गुजराती भाषा
चीनी० = चीनी भाषा
जापानी० = जापानी भाषा
ज्या० = ज्यामिति
ज्यो० = ज्योतिष
तर्क० = तर्कशास्त्र
ता० = तामिल
तु० = तुर्की
दे० = देखो
देश० = देशज
ना० धा० = नामधातुज क्रिया
पं० = पंजाबी भाषा
पा० = पाली भाषा
पुं० = पुल्लिंग
पुर्त० = पुर्तगाली भाषा
प्र० = प्रयोग
प्रत्य० = प्रत्यय
प्रा० = प्राकृत भाषा
प्रे० रूप = प्रेरणार्थक रूप
फा० = फारसी
बंग० = बँगला भाषा
बहु० = बहुवचन
भाव० = भाववाचक संज्ञा
मि० = मिलाओ
मुसल० = मुसलमान
मुहा० = मुहावरा
यू० = यूनानी भाषा
यौ० = यौगक
लश० = लशकरी भाषा
लै० = लैटिन
वि० = विशेषण
वै० = वैदिक संस्कृत
सं० = संस्कृत
संयो० = संयोजक क्रिया
सक० = सकर्मक क्रिया
सर्व० = सर्वनाम
स्त्री० = स्त्रीलिंग
स्पे० = स्पेनी भाषा
हिं० = हिंदी भाषा
🙜 = पुरानी हिंदी या केवल पद्यों में प्रयुक्त
† = प्रांतीय प्रयोग
‡ = ग्राम्य प्रयोग
⊙ समस्त पदों में पूर्व शब्द का बोधक
~ मुहावरे में पूर्व शब्द का बोधक।

लघु शब्दसागर

अ—संस्कृत और हिंदी वर्णमाला का प्रथम अक्षर और स्वर वर्ण।

अंक—पुं० [सं०] चिह्न। छाप। अक्षर, लेख। संख्या का चिह्न (१,२,३ आदि)। अदद। भाग्य। दाग। डिठौना। गोद। शरीर। बार, दफा। रूपक का एक भेद। नाटक का एक अंश जिसके अंत में यवनिका गिरा दी जाती है। ⊙गणित - पुं० संख्याओं का जोड़, घटाव, गुणा, भाग आदि करने की विद्या। ⊙धारण = पुं० शरीर पर शंख, चक्र, त्रिशूल आदि सांप्रदायिक चिह्न गरम धातु से दगवाना। ⊙पलई = स्त्री० [हिं०] अंकों को अक्षरों के स्थान पर रख-कर अर्थ निकालने की विद्या। ⊙पाली = स्त्री० धाय। ⊙माल = पुं० आलिंगन, भेंट। ⊙मुख = दे० 'अंकास्य'। ⊙विद्या स्त्री० अंक-गणित। मु०~देना या लगाना = गले लगना।~भरना या लगाना = गले लगाना, आलिंगन करना।

अंकड़ी—स्त्री० कँटिया, हुक। तीर का मुड़ा हुआ फल। लग्गी। लता।

अंकन—पुं० [सं०] वर्णन। चिह्न करना। लिखना। चित्र बनाना। शंख, चक्र आदि सांप्रदायिक चिह्न शरीर पर दगवाना। गिनती करना।

अंकना—अक० आँका जाना। दे० सक० 'आँकना'।

अंकवाना—सक० [आँकना का प्रे०] चिह्नित कराना। कुतवाना। अंदाज कराना। परखवाना।

अँकवार—स्त्री० दोनों भुजाओं को सामने फैलाकर मिलाने से बना बीच का स्थान। आलिंगन, भेंट। गोद। मु० ~देना = गले लगना, आलिंगन करना।~भरना = हृदय से लगाना, गले मिलना। सतानयुक्त रहना।

अँकाई—स्त्री० आँकने की क्रिया या मजदूरी। फसल में से काश्तकार और जमींदार के हिस्सों का ठहराव।

अँकाना—सक० दे० 'अँकवाना'।

अंकाव—पुं० आँकने या अंदाज लगाने का काम।

अंकावतार—पुं० [सं०] रूपक का दृश्य जिसमें प्रथम अंक की वस्तु का विच्छेद किए बिना दूसरे अंक की वस्तु चले।

अंकास्य—पुं० [सं०] रूपक का दृश्य जिसमें एक अंक की समाप्ति पर अगले अंक के आरंभ की सूचना पात्रों द्वारा दी जाय।

अंकित—वि० [सं०] चिह्नित, छापयुक्त। दागदार। लिखित। वर्णित। चित्रित।

अँकुड़ा—पुं० [अल्पा० स्त्री० अँकुड़ी] लोहे का टेढ़ा काँटा या टेढ़ी छड़। कुलावा। किवाड़ की चूल में ठोकने का लोहे का गोल पच्चड़। कपड़ा बुननेवालों का एक औजार। गाय बैल का एक रोग।

अंकुर—पुं० [सं०] अँखुआ। डाभ, कोपल। कली। नोक। खून। रोयाँ। भरते हुए घाव के छोटे लाल दाने। ⊙ण = पुं० अंकुर निकलना। उत्पन्न होना। आरंभ होना।

अंकुरना, अंकुराना—अक० अंकुर निकलना पैदा होना।

अंकुरित—वि० [सं०] जिसमें अंकुर हो गया हो। उगा हुआ। ⊙यौवना = निकलते हुए यौवन के चिह्नोंवाली किशोरी।

अंगद—पुं० [सं०] बाजूबंद । बालि का पुत्र । लक्ष्मण का एक पुत्र ।

अंगन—(हिं० वं० अँगना) पुं० [सं०] दे० 'आँगन' ।

अंगना—स्त्री० [सं०] अच्छे अंगवाली स्त्री । स्त्री । रमणी । सार्वभौम नामक उत्तर के दिग्गज की हथिनी ।

अँगरखा—पुं० घुटनों तक नीचा एक बंददार मरदाना पहनावा ।

अँगराना—ⓟअक० दे० 'अँगड़ाना' ।

अँगरी—स्त्री० कवच । गोह के चमड़े का दस्ताना ।

अँगरेज—पुं० इँगलैंड का रहनेवाला आदमी ।

अँगरेजी—वि० अँगरेज का । इँगलैंड का । स्त्री० अँगरेजों की भाषा ।

अँगलेट—पुं० देह का ढाँचा ।

अँगवना—ⓟसक० स्वीकार करना । सिर पर लेना । सहना ।

अंगांगिभाव—(हिं० वं० अंगागीभाव) पुं० [सं०] अवयव और अवयवी का परस्पर संबंध, अंग का संपूर्ण के साथ संबंध । गौण और मुख्य का परस्पर संबंध । अलंकार में संकर का एक भेद ।

अंगा—पुं० अँगरखा ।

अंगाकड़ी—स्त्री० अंगारों पर सेंकी हुई मोटी रोटी ।

अंगार—पुं० [सं०] दहकता हुआ कोयला, लकड़ी या कंडे आदि का टुकड़ा । कोयला । ⊙क=पुं० अंगारा । मंगल ग्रह । भँगरा (पौधा) । ⊙धानिका=स्त्री० अँगीठी । ⊙पुष्प=पुं० हिंगोट वृक्ष । ⊙मणि=पुं० मूँगा । ⊙वल्ली=स्त्री० घुँघची लता ।

अंगारा, अँगारा—पुं० [अल्पा० स्त्री० अंगारी] दहकता कोयला, लकड़ी आदि का टुकड़ा । मु०~**बनना या होना**=गुस्से से लाल होना । **अंगारे उगलना**=कड़ी बातें सुनाना । **अंगारे बरसना**=कड़ी गरमी पड़ना । **अंगारों पर पैर रखना**=अपने को खतरे में डालना । **अंगारों पर लोटना**=क्रोध या ईर्ष्या से जलना ।

अंगारिणी—स्त्री०[सं०] अँगीठी । आतिशदान । डूबे हुए सूर्य की लाली से युक्त दिशा ।

अंगिका—स्त्री० [सं०] अँगिया, चोली ।

अँगिया—स्त्री० स्त्रियों का स्तन ढकने का छोटा (पहनने का) कपड़ा या चोली ।

अंगिरस—पुं० [सं०] दस प्रजापतियों में गिने जानेवाले एक ऋषि । वृहस्पति । साठ संवत्सरों में से छठा ।

अँगिराना—ⓟअक० दे० 'अँगड़ाना' ।

अंगी—पुं० त्रि० [सं०] देहधारी । अवयववाला । प्रधान, मुख्य । पुं० नाटक का प्रधान नायक या प्रधान रस । ⊙करण, ⊙कार-पुं० स्वीकार, मंजूर । ⊙कृत=वि० स्वीकार किया हुआ ।

अँगीठी—स्त्री० आग रखने और जलाने का बरतन ।

अंगुरि, अंगुरी—स्त्री० [सं०] उँगली ।

अँगुरी—स्त्री० दे० 'अंगुरि' ।

अंगुल—पुं० [सं०] आठ जौ या उँगली की चौड़ाई के बराबर नाप । अंश का बारहवाँ भाग (ज्यो०) ।

अंगुलि, अंगुली—(हिं० वं० अँगुली) स्त्री० [सं०] उँगली । हाथी की सूँड का अगला भाग । ⊙त्राण=पुं० गोह के चमड़े का दस्ताना । **पर्व**=पुं० उँगली की पोर या गाँठ ।

अंगुश्त—पुं० [फा०] उँगली । ⊙नुमाई=स्त्री० दोषारोपण, लाछन ।

अंगुश्तरी—स्त्री० [फा०] अँगूठी ।

अंगुश्ताना—पुं० [फा०] सिलाई के समय सुई से बचाने के लिये उँगली पर पहनी जानेवाली लोहे या पीतल की एक टोपी । हाथ के अँगूठे की एक विशेष अंगूठी, आरसी ।

अंगुष्ठ—पुं० [सं०] अँगूठा ।

अँगूठा—पुं० हाथ या पैर पर किनारे की सबसे मोटी उँगली । मु०~**चूमना**=खुशामद करना । अधीन होना । ~**दिखाना**=देने से अवज्ञापूर्वक नाहीं

करना। इन्कार करना। **अँगूठे पर मारना** = तुच्छ समझना, परवान करना।

अँगूठी—स्त्री० उँगली मे पहनने का एक गहना।

अंगूर—पुं० [फा०] लता पर गुच्छो मे लगनेवाला मीठा और रसीला एक छोटा फल, दाख। भरते हुए घाव के छोटे लाल दाने। [हिं०] अँखुआ।

अंगूरी—वि० [फा०] अगूर से वना। अगूर के रग का। पुं० हलका हरा रग। स्त्री० अगूर की शराव।

अँगेजना, अँगेरना—सक० सहना। स्वीकार करना।

अँगोछना—सक० गीले कपडे से देह पोछना।

अँगोछा—पुं० देह पोछने का कपडा। उपरना, उत्तरीय।

अँगोटना—सक० दे० 'अगोटना'।

अँगौटी—स्त्री० आकृति, वनावट।

अघस—पुं० [स०] पाप। पातक।

अघ्रि—पुं० [स०] पैर, चरण। ⊙**प** = पुं० पेड।

अँचरा—पुं० दे० 'आँचल'।

अचल, अँचला—पुं० दे० 'आँचल'। किसी प्रदेश का वह भाग जो सीमा के समीप हो। किनारा, तट।

अँचवना—सक० दे० 'अचवना'।

अंचवन—पु० दे० 'अचवन'।

अचित—वि० [स०] पूजित।

अछरी—पुं० अक्षर। मत्र, टोना। मुँह के भीतर काँटे उभडने का रोग।

अंजन—पुं० [स०] सुरमा, काजल। सिद्धाजन। रोशनाई। लेप। माया। एक पर्वत। पश्चिम का दिग्गज। शब्द की वृत्ति जिसमे कई अर्थोंवाले किसी शब्द का अभिप्रेत अर्थ दूसरे शब्दो के योग या प्रसग से खुले। वि० काला, सुरमई। ⊙**केश** = पुं० चिराग। ⊙**शालाका** = स्त्री० अजन या सुरमा लगाने की सलाई। ⊙**सार** = वि० [हिं०] जिसमे अंजन लगा हो। ⊙ **हारी** = स्त्री० [हिं०] पलक के किनारे की फुसी। एक उडनेवाला कीडा, बिलनी।

अंजना—स्त्री० [सं०] हनुमान की माता। बिलनी। ⊙**नंदन** = पुं० अजना के पुत्र हनुमान।

अंजनी—स्त्री० [सं०] हनुमान की माता। कुटकी (औषधि)। बिलनी।

अंजर पंजर—पुं० शरीर का ढाँचा। हड्डी पसली। ढाँचा। मु०—**ढीला होना** = शरीर के जोडो का हिल उठना। शिथिल होना।

अंजल—स्त्री० दे० 'अंजलि'। पुं० अन्न-जल।

अंजलि—स्त्री० [स०] दोनो हथेलियो को मिलाकर बनाया सपुट। अजलि मे आने योग्य वस्तु, एक नाप। दोनो हथेलियो से दान के लिये निकाला अन्न। ⊙**कृत** = वि० (प्रणाम के लिये) हाथ जोडे हुए। ⊙**गत** = वि० अजलि मे आया हुआ। प्राप्त। ⊙**पुट** = पुं० दोनो हथेलियो को मिलाने से बना गड्ढा। ⊙**बद्ध** = वि० हाथ जोडे हुए।

अँजवाना, अँजाना - सक० [आँजना का प्रे०] अजन लगवाना।

अंजाम—पुं० [फा०] समाप्ति, अंत। परिणाम, फल।

अंजित—वि० [सं०] अजन लगा हुआ।

अंजीर—पुं० [फा०] खाने मे मीठा गूलर जैसा एक फल या मेवा तथा उसका पेड।

अंजुमन—स्त्री० [फा०] सभा, मजलिस।

अँजुरी, अँजुली—(पु) †—स्त्री० दे० 'अंजलि'।

अंजोर, (पु), **अँजोरा**†—पुं० उजाला प्रकाश।

अँजोरा—वि० प्रकाशयुक्त. जैसे, अँजोर पाख।

अँजोरना (पु)—सक० हरना, छीनना 'बुधि विवेक वल बचन चातुरी पहि लेहि लई अँजोरि' (सूर०)। बालना प्रकाशित करना।

अँजोरी (पु)—स्त्री० उजाला, रोशनी

चंद्रमा का प्रकाश। वि०स्त्री० उजली। प्रकाशमयी।

अंझा—पुं० छुट्टी, नागा। मु०~देना = नागा देना, बहकाना, कहकर काम न करना।

अँटना—अक० समाना, भीतर आना ठीक आना। भरना। पूरा पड़ना। लग जाना, खपना।

अंटा—पुं० गोला। सूत या रेशम का लच्छा। बड़ी कौड़ी। मेज पर गोलियों से खेला जाने वाला एक खेल (अं० बिलियर्ड)। ⊙चित = वि० पीठ के बल, सीधा। ⊙बधू = पुं० सब कुछ हारने पर जुए में फेंकी जानेवाली कौड़ी।

अँटिया—स्त्री० घास, साग, खर, पतली लकड़ियों आदि का बँधा छोटा गट्ठा। अँटियाना—सक० उँगलियों या हथेली के बीच छिपाना। चारों उँगलियों में लपेटकर डोरे की पिंडी बनाना। अँटिया बनाना। गायब करना।

अंटी—स्त्री० कमर पर रहनेवाली धोती की गाँठ या लपेट। उँगलियों के बीच का स्थान। सूत या रेशम का लच्छा। सूत लपेटने की लकड़ी, परेटन। विरोध, लड़ाई। मु०~काटना = माल उड़ाना। ~मारना = जुआ खेलते हुए कौड़ी को उँगलियों के बीच छिपाना। धोखा देकर वस्तु खिसका लेना। कम तौलना।

अँटोतल, अंटौतल—पुं० कोल्हू के बैल की आँख का ढक्कन।

अंठी—स्त्री० गुठली, बीज। गाँठ, गिरह। गिलटी। अंकुरित होता स्तन। कोश।

अंठुली—स्त्री० गुठली। अंकुरित होता स्तन।

अंड—पुं० [सं०] अंडा। अंडकोश। ब्रह्मांड। वीर्य। मृगनाभि। (पु)कामदेव। ⊙कटाह = पुं० ब्रह्मांड, विश्व। ⊙कोश = पुं० लिंग के नीचे की चमड़े की थैली जिसमें दो गुठलियाँ रहती हैं। ब्रह्मांड, संपूर्ण विश्व। ⊙ज = पुं० अंडे से उत्पन्न जीव (सर्प, मछली, पक्षी आदि)। ⊙वृद्धि = स्त्री० अंडकोश या फोता बढ़ना (एक रोग)। अंडाकार—वि०, पुं० अंडे का आकार, अंडे के आकार का गोल।

अंडबंड—पुं० बेसिरपैर की बात। गाली। वि० बेसिरपैर का, असंबद्ध।

अंडस—स्त्री० कठिनाई, संकट। सँकरा स्थान।

अंडा—पुं० वह गोल खोल जिसमें से दूध न पिलानेवाले जीवों (सर्प, मछली, पक्षी आदि) के बच्चे फूटकर निकलते हैं। (पु) देह, पिंड।

अंडी—स्त्री० एरंड का पेड़ या बीज। विशेष प्रकार का एक रेशमी कपड़ा।

अंतः—अव्य० [सं०] दे० 'अंतर्'। ⊙करण = पुं० भीतरी इंद्रिय जो संकल्प-विकल्प, निश्चय, स्मरण तथा दुःख आदि का अनुभव करती है, मन। विवेक, नैतिक बुद्धि। ⊙कोण = पुं० भीतरी कोना। एक सीधी रेखा के दो सीधी रेखाओं को काटने पर उसके एक ओर बननेवाले दोनों भीतरी कोण (ज्या०)। ⊙कलह = पुं० घर का कलह, आपसी लड़ाई। गृहयुद्ध। ⊙क्रिया = स्त्री० भीतरी कार्य। अंतःकरण को शुद्ध करनेवाला कर्म। ⊙पटी = स्त्री० चित्रपट द्वारा नदी, वन, नगर आदि का दिखलाया गया दृश्य। नाटक का परदा। ⊙पुर = पुं० जनानखाना। भीतरी महल। ⊙पुरिक = पुं० अंतःपुर का रक्षक, कंचुकी। ⊙शरीर = पुं० स्थूल शरीर के भीतर का सूक्ष्म शरीर। ⊙संज्ञ = पुं० जीव जो अपने सुख दुःख के अनुभव को प्रकट न कर सकें, जैसे वृक्ष। ⊙सत्त्वा = स्त्री० गर्भवती। ⊙सलिला = स्त्री० सरस्वती नदी।

अंत—पुं० [सं०] समाप्ति, आखीर। शेष भाग, पिछला अंश। सीमा, हद भीतरी हिस्सा। मरण, विनाश, नतीजा। [हिं०] अंतःकरण, मन।

भेद, छिपा हुआ भाव। ⓟअंत। क्रि० वि० आखिरकार, निदान। दूसरी जगह, और कहीं। ⊙क = पुं० मृत्यु। यमराज। ईश्वर। शिव। वि० अंत करनेवाला। मृत्यु लानेवाला। ⊙कर, ⊙कर्ता, ⊙कारी = वि० अंत करनेवाला। ⊙काल = पुं० मरने का समय। मौत। ⊙क्रिया = स्त्री० मरने के पीछे का क्रिया-कर्म। ⊙ग = वि० पूरा जानकार, निपुण। ⊙घाई = वि० [हिं०] अंत में धोखा देनेवाला, विश्वासघाती। ⊙पाल = पुं० द्वार-पाल, ड्योढ़ीदार। सरहद का पहरे-दार। ⊙शय्या = स्त्री० अरथी। चिता। मरघट। मरण। ⊙स्थ = वि० अंत में स्थित। बीच में स्थित। पुं० स्पर्श और ऊष्म वर्णों के बीच के चार वर्ण य, र, ल, व।

अँतड़ी—स्त्री० आँत। मु०~जलना = बहुत भूख लगना। **अँतड़ियों का बल खोलना** = बहुत दिनों के बाद भोजन मिलने पर खूब भर पेट खाना। **अँतड़ियों में बल पड़ना** = पेट दुखना, जैसे 'हँसते-हँसते अँतड़ियों में बल पड़ गए।'

अंततोगत्वा—क्रि० वि० [सं०] अंत में। निदान।

अंतरंग—वि० [सं०] आत्मीय घनिष्ठ। भीतरी। मानसिक। पुं० अभिन्न मित्र, दिली दोस्त। ⊙सभा = स्त्री० संस्था की चुनी हुई छोटी सभा जो उसकी व्यवस्था करती है।

अंतर्—अव्य० [सं०] [समा० में कहीं 'अंत', कहीं 'अन्ता' और कहीं 'अंतस्' में परिवर्तित] भीतर, बीच में, मध्य में। ⊙गत = वि० भीतर आया हुआ, शामिल। छिपा हुआ, गुप्त। हृदय के भीतर का। ⓟ पुं० मन, जी। ⊙गति = स्त्री० मन का भाव, हार्दिक इच्छा। ⊙गृह = पुं० भीतर का घर। ⊙गृही = स्त्री० तीर्थस्थान के भीतर पड़नेवाले प्रधान स्थलों की यात्रा। ⊙घट = पुं० शरीर का भीतरी भाग, अंतःकरण। ⊙ज्ञान = पुं० भीतरी ज्ञान, प्रज्ञा। ⊙दशा = स्त्री० ग्रहों के भोगकाल या महादशा के अंतर्गत नवग्रहों का नियत भोगकाल। ⊙दशाह = पुं० मृत्यु के पीछे दस दिन तक हिंदुओं में किया जानेवाला कर्मकांड। ⊙दृष्टि = स्त्री० ज्ञानचक्षु। आत्मचिंतन। ⊙देशीय = वि० देश के भीतर का या भीतरी भाग से संबंधित। ⊙धान = पुं० लोप, छिपाव। वि० गायब, अदृश्य। ⊙निविष्ट = वि० भीतर रखा या बैठा हुआ। मन में स्थित। ⊙निहित = वि० भीतर रखा या छिपा हुआ, शामिल। ⊙बोध = पुं० आत्मज्ञान आंतरिक अनुभव। ⊙भाव = पुं० समावेश, शामिल। भीतरी या मन का भाव। ⊙भावित = वि० शामिल किया गया। अंदर किया या छिपाया हुआ। ⊙भुक्त = वि० अंतर्गत, शामिल। पुं० जीवात्मा। ⊙मना = वि० अनमना। उदास। अन्तर्मुख। ⊙मल = पुं० मन का कलुष या बुराई। ⊙मुख = वि० भीतर की ओर मुँहवाला। भीतर की ओर प्रवृत्त। ⊙यामी = वि० मन की बात जाननेवाला। अंतःकरण में स्थित, प्रेरणा करनेवाला। पुं० ईश्वर, पर-मात्मा। ⊙राष्ट्रीय (वै० अंताराष्ट्रिय) = वि० दो या अधिक राष्ट्रों से संबंधित, उनके बीच का या उनमें प्रचलित। ⊙लापिका = स्त्री० वह पहेली जिसका उत्तर उसी पहेली के अक्षरों में हो। ⊙वती = वि० स्त्री० गर्भवती। ⊙वर्ती = वि० भीतर रहनेवाला। अंतर्गत। ⊙वेद = पुं० [हिं०] गंगा और यमुना के बीच का देश। दो नदियों के बीच का देश, दोआब। ⊙वेदी = वि० [हिं०] गंगा और यमुना के बीच के देश में रहनेवाला। ⊙हित = वि० भीतर। छिपा हुआ। अदृश्य। **अंत-रात्मा** = पुं० स्त्री० जीवात्मा, अंतःकरण

अंतर—पुं० [सं०] अलगाव, फर्क। दूरी फासला, बीच। बीच का समय, अवधि। ओट, आड़। छेद, रंध्र। अंत करण, मन। आत्मा। वि० दूसरा, अन्य (यह अर्थ प्राय: यौगिक शब्दों में मिलता है, जैसे, कालांतर देशांतर, मतांतर आदि)। क्रि० वि० भीतर, अंदर। दूर, अलग। ⊙**अयन** = पुं० [हिं०] दे० 'अंतर्गृही'। ⊙**जामी**= वि० [हिं०] दे० 'अंतर्यामी'। ⊙**तम** = पुं० सबसे भीतरी भाग। विशुद्ध अंत.-करण। ⊙**दिशा** = स्त्री० दो दिशाओं के बीच की दिशा, विदिशा। ⊙**पट** = पुं० परदा, ओट। विवाह-मंडप में वर-कन्या के बीच डाला हुआ परदा। भेद, छिपाव। कपडमिट्टी। गीली मिट्टी के साथ लपेटा जानेवाला कपड़ा। ⊙**राष्ट्रीय** = वि० दे० 'अंतर्राष्ट्रीय'।

अंतरा—पुं० नागा, अंतर। एक दिन के अंतर से आनेवाला ज्वर। कोना।

अंतरा—क्रि० वि० मध्य। निकट। सिवाय। पृथक्। बिना। पुं० गीत में स्थायी या टेक के अतिरिक्त बाकी पद या चरण। प्रात.काल और संध्या के बीच का समय, दिन।

अंतराना(पु)—सक० अलग करना। भीतर करना।

अंतरात्मा—पुं० स्त्री० [सं०] दे० 'अंतर्', में।

अंतराय—पुं० [सं०] विघ्न, बाधा।

अंतराल—पुं० [सं०] मध्य, बीच। मध्य का स्थान, मध्य का काल। घेरा, मंडल।

अंतरिक्ष—(हिं० वै० अंतरिख, अंतरिच्छ) पुं० [सं०] आकाश, शून्य। स्वर्ग लोक। तीन प्रकार के केतुओं में से एक। वि० गुप्त, अदृश्य।

अंतरित—वि० [सं०] भीतर रखा हुआ, छिपा हुआ। गायब। अलग किया हुआ। ढका हुआ।

अंतरिम—वि० दो कालों या कार्यों आदि के बीच का (अं० इंटेरिम)।

अंतरिया—पुं० एक दिन का अंतर देकर आनेवाला ज्वर।

अंतरीप—पुं० [सं०] पृथ्वी का नुकीला भाग जो समुद्र या जल में दूर तक चला गया हो।

अंतरीय—पुं० [सं०] कमर में या नीचे पहनने का वस्त्र। वि० भीतर का।

अंतरौटा—पुं० बारीक साड़ी के नीचे पहनने का कपड़ा।

अंतस्—(हिं० वै० अंतस) पुं० [सं०] हृदय। अव्य दे० 'अंतर'। ⊙**तल** = पुं० हृदय, दिल। ⊙**ताप** = भीतरी वेदना, मानसिक कष्ट। ⊙**संज्ञ** = पुं० जीव जो अपने सुख दुःख के अनुभव को प्रकट न कर सके जैसे वृक्ष। ⊙**सत्वा** = स्त्री० गर्भवती ⊙**सलिला** = स्त्री० (भीतर बहने-वाली) सरस्वती नदी।

अंतिम—वि० [सं०] अंत का, आखिरी। सबसे बढ़कर।

अंतेउर, अंतेवर(पु)—पुं० अंत पुर जनानखाना।

अंतेवासी—पुं० [सं०] गुरु के समीप रहने-वाला शिष्य। चांडाल।

अंत्य—वि० [सं०] अंत का। आखिरी ⊙**कर्म** = पुं० दे० 'अंत्येष्टि'। ⊙**क्रिया** = स्त्री० दे० 'अंत्येष्टि'। ⊙**ज** = पुं० शूद्र। अछूत। ⊙**वर्ण** = पुं० दे० 'अंत्यज'। अंत का अक्षर 'ह'। पद के अंत में आनेवाला अक्षर। ⊙**विपुला** = स्त्री० आर्या छंद का एक भेद।

अंत्याक्षर—पुं० शब्द या पद के अंत का अक्षर। वर्णमाला का अंतिम अक्षर 'ह'। **अंत्याक्षरी**—स्त्री० पहले कहे हुए पद्य के अंतिम अक्षर से आरंभ होनेवाला दूसरा पद्य पढ़ना (एक प्रतियोगिता)।

अंत्यानुप्रास—पुं० पद्य के चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। **अंत्येष्टि**—स्त्री० शवदाह आदि मृतक के अंतिम संस्कार।

अंत्र—पुं० [सं०] आँत, अँतड़ी। ⊙**वृद्धि** = स्त्री० आँत उतरने का रोग।

अंत्री(पु)—[सं०] स्त्री० आँत ।
अँथऊ—पुं० जैनियो का सूर्यास्त से पहले का भोजन ।
अँथवना—अक० दे० 'अथवना' ।
अंदर—क्रि० वि० [फा०] भीतर, अतर्गत ।
अँदरसा—(हिं० वै० अनरसा) पुं० पिसे हुए चावल मे बनी एक मिठाई ।
अंदरूनी—वि० [फा०] भीतरी, अदर का ।
अंदाज—पुं० [फा०] अनुमान, तखमीना । ढग, तर्ज । चेष्टा, अदा । ⊙**न**= क्रि० वि० अटकल से । लगभग । **अदाजा**—पुं० अनुमान, तखमीना ।
अदु—(वै० अदुक) [सं०] हाथी को बाँधने का जजीर या रस्सी । स्त्रियो का पैर मे पहनने का एक गहना ।
अँदुआ—पुं० हाथियो के पिछले पैर मे डालने के लिये लकडी का बना एक काँटदार यत्र ।
अंदेशा—(वै० हिं० अँदेस, अँदसा) पुं० [फा०] सदेह, शक । खटका, आशका । सोच चिंता । हर्ज, हानि । दुविधा, असमजस ।
अंध—वि० [सं०] बिना आँख का, जो देख न सके । अज्ञानी, मूर्ख । गाफिल । उन्मत्त । पुं० बिना आँख का या दृष्टिरहित व्यक्ति । अँधेरा । कवियो के बाँधे हुए पथ के विरुद्ध चलने का काव्यदोष । ⊙**कार**= पुं० अँधेरा, तम । ⊙**कूप**= पुं० घास-पात से ढका सूखा कुआँ । एक नरक । अँधेरा ⊙**खोपड़ी**= स्त्री० [हिं०] मूर्ख, नासमझ । ⊙**ड़**= पुं० [हिं०] आँधी, तूफान । ⊙**तमस्**= पुं० घोर अधकार । ⊙**तामिस्र**= पुं० घोर अधकारयुक्त नरक । ⊙**धुंध**(पु)= पुं० [हिं०] अधकार, अँधेरा । ⊙**परपरा**= स्त्री० बिना विचारे पुरानी रीतियो का अनुसरण । ⊙**बाई**(पु)= स्त्री० [हिं०] आँधी, तूफान । ⊙**विश्वास**= पुं० बिना विचार के किया जानेवाला विश्वास ।
अंधा—वि० बिना आँख का, दृष्टिरहित । भले-बुरे का विचार न रखनेवाला । अँधेरा, प्रकाशरहित । पुं० दृष्टिरहित व्यक्ति । ⊙**धुंध**= क्रि० वि० बिना सोचे विचारे । बेहिसाब । वि० बे अदाज, बहुत अधिक । ⊙**आईना**= पुं० दर्पण जिसमे चेहरा साफ न दिखाई दे । ⊙**कूआँ**= पुं० दे० 'अधकूप' । लडको का एक खेल । ⊙**शीशा**= पुं० दे० 'अधा आईना' । मु० ~ **अंधे की लकड़ी या लाठी**= एकमात्र सहारा या आसरा ।
अधाधुंधी—स्त्री० बड़ा अँधेरा, घोर अधकार । अधेर, गडबड । क्रि० वि० बिना सोच-विचार के, बेधडक । बेहिसाब, बेतहाशा । वि० बेअदाज, बहुत अधिक ।
अँधार(पु)+—पुं० अँधेरा, तम ।
अँधियार—(वै० अँधियारा (पु)) पुं० वि० दे० 'अँधेरा' ।
अँधियारी—स्त्री० अधकार । उपद्रवी घोडो, पक्षियो आदि की आँखो पर बाँधी जानेवाली पट्टी ।
अंधेर—पुं० अन्याय, जुल्म । गड़बड़, कुप्रबध । ⊙**खाता**= पुं० मनमानी व्यवस्था, कुप्रबध । हिसाब-किताब मे गडबडी । अन्याय ।
अँधेरना(पु)—सक० अधकारमय करना ।
अंधेरा—पुं० अधकार । धुधलापन । परछाँई । उदासी । वि० प्रकाशरहित । ⊙**गुप**, ⊙**घुप**= पुं० घोर अधकार । ⊙**पाख**—कृष्णपक्ष, बदी । मु०—**अंधेरे घर का उजाला**= इकलौता बेटा । कुलदीपक, वश की मर्यादा बढानेवाला । **अधेरे मुँह**= सूर्योदय के पहले, बडे सबेरे । **अँधेरी**= स्त्री० अंधकारयुक्त रात, आँधी, **अधड़** । घोडो या बैलो की आँखो पर डालने का परदा । ⊙**कोठरी**= गर्भ, कोख । मु०~डालना या देना = आँखें मूँदकर दुर्गति करना । धोखा देना ।
अँधोटी—स्त्री० बैल या घोडे की आँखें ढकने का परदा ।
अंब—स्त्री० दे० 'अबा' । पुं० आम ।
अंबर—पुं० [सं०] आसमान, आकाश ।

वस्त्र। एक प्रकार की एकरंगी किनारदार साड़ी। कपास। ह्वेल मछली से उत्पन्न एक सुगंधित वस्तु। एक इत्र। अभ्रक। ⊙डंबर = पुं० [हिं०] सूर्यास्त के समय की लाली। ⊙बेलि = स्त्री० आकाशबेल। ⊙मणि = पुं० सूर्य।

अंबराई—(पुं० अंबराउँ, अंबराव ⓟ पुं०) स्त्री० आम का बगीचा, अमराई।

अंबरीष—पुं० [सं०] भाड़। दाना भूनने का मिट्टी का बरतन। विष्णु। शिव। सूर्य। एक नरक। अयोध्या का एक परम वैष्णव सूर्यवंशी राजा।

अंबष्ठ—पुं० [सं०] पंजाब के मध्य भाग का पुराना नाम। वहाँ का रहनेवाला व्यक्ति। ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न जाति। महावत।

अंबष्ठा—स्त्री० [सं०] अंबष्ठ स्त्री। एक लता, पाठा।

अंबा—स्त्री० [सं०] माँ, माता। पार्वती, गौरी। काशी के राजा इंद्रद्युम्न की तीन कन्याओं में सबसे बड़ी जिसका भीष्म ने अपने भाई विचित्रवीर्य के लिये हरण किया था

अंबापोली—स्त्री० अमावट, अमरस।

अंबार—पुं० [फा०] ढेर, समूह।

अंबारी—स्त्री० हाथी की पीठ पर रखने का हौदा। छज्जा।

अंबालिका—स्त्री० [सं०] माता, माँ। काशी के राजा इंद्रद्युम्न की तीन कन्याओं में सबसे छोटी जिसका भीष्म ने भाई विचित्रवीर्य के लिये हरण किया था।

अंबिका—स्त्री० [सं०] दुर्गा, पार्वती। माता, माँ। काशी के राजा इंद्रद्युम्न की तीन कन्याओं में मँझली जिसे भीष्म ने भाई विचित्रवीर्य के लिये हरण किया था।

अंबिकेय—पुं० [सं०] अंबिका का पुत्र। गणेश। कार्तिकेय, धृतराष्ट्र।

अँबिया—स्त्री० आम का छोटा कच्चा फल जिसमें जाली न लगी हो।

अँबिरती—ⓟ स्त्री० तार का एक पुराना बाजा (पदमा०)।

अँबिरथाⓟ—वि० वृथा, व्यर्थ।

अंबु—पुं० [सं०] जल, पानी। जन्मकुंडली में चौथा घर या स्थान। चार की संख्या। ⊙चर = पुं० जलचर। ⊙ज = वि० जल में उत्पन्न। पुं० कमल। बेंत। वज्र। ब्रह्मा। शंख। ⊙द = वि० जल देनेवाला पुं० बादल। ⊙धर = पुं० वि० जल को धारण करनेवाला। पुं० बादल। ⊙धि = पुं० समुद्र। ⊙निधि = पुं० समुद्र। ⊙पति = पुं० समुद्र। वरुण। ⊙भृत् = पुं० बादल। समुद्र। ⊙राशि = पुं० समुद्र। ⊙रुह = पुं०। कमल। ⊙वाह = पुं० बादल। ⊙शायी = पुं० विष्णु, नारायण।

अंबुवा†—पुं० आम।

अंबोधिⓟ—पुं० दे० 'अंबुधि'।

अंबोह—पुं० [फा०] जमघट, समूह।

अंभ—पुं० जल, पानी। पितरलोक। लग्न से चौथी राशि। चार की संख्या। देव। ⊙ थाम = पुं० मंत्रप्रयोग जिसके द्वारा जल का प्रभाव या वर्षा रोक दी जाती है। ⊙निधि = पुं० दे० 'अंभोनिधि'।

अंभोज—वि० [सं०] जल से उत्पन्न। पुं० कमल। चंद्रमा। शंख।

अंभोद, अंभोधर—पुं० [सं०] बादल। मोथा।

अंभोधि—पुं० [सं०] समुद्र।

अंभोनिधि—पुं० [सं०] समुद्र।

अंभोराशि—पुं० [सं०] समुद्र।

अंभोरुह—पुं० [सं०] कमल।

अँवरा†, **अँवला**†—पुं० दे० 'आँवला'।

अंश—पुं० [सं०] विभाग, भाग। हिस्सा, बाँट। भाज्य अंक। भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या। कला, सोलहवाँ भाग। बारह आदित्यों में से एक। वृत्त की परिधि का ३६०वाँ भाग। ⊙तः = क्रि० वि० कुछ अंश में, किसी हद तक। ⊙पत्र = वह दस्तावेज जिसमें हिस्सेदारों का हिस्सा लिखा हो। ⊙सुता = स्त्री० यमुना नदी।

अंशावतार—पुं० [सं०] परमात्मा या देव

विशेष का अपनी शक्ति का कुछ अंश लेकर पृथ्वी पर जन्म लेना ।

अंशी—वि० [सं०] हिस्सेदार, साझीदार अवयव या अंशोवाला । अलौकिक सामर्थ्य रखनेवाला ।

अंशु—पुं० [सं०] किरण, प्रभा । सूत, तागा । तागे का छोर । बहुत सूक्ष्म भाग । ⊙क = पुं० कपड़ा । महीन कपड़ा । रेशमी कपड़ा । दुपट्टा । ओढनी । ⊙धर = पुं० सूर्य । ⊙मान = वि० प्रकाशयुक्त, चमकीला । पुं० सूर्य । चद्रमा । सगर का पौत्र एक सूर्यवशी राजा ⊙माली = पुं० सूर्य ।

अंस—पुं० [पुं०] कधा । दे० 'अश' ।

अँसुआⓅ†, **अँसुवा**Ⓟ†—पुं० दे० 'आँसू' ।

अँसुवाना—अक० आँसुओ से भर जाना ।

अ—उप० शब्दो के पूर्व लगकर निषेध-सूचक कई अर्थों मे प्रयुक्त । हिंदी मे मुख्य प्रयोग इन अर्थों मे है—(१) अभाव (अरूप, अकाम, अपुत्र, आदि), (२) विरोध (अधर्म, अनीति आदि) (३) बुराई (अकाल, अकार्य आदि) सस्कृत शब्दो मे स्वर के पूर्व यह 'अन्' मे वदल जाता है, जैसे अनत अनेक, अनीश्वर आदि ।

अइसⓅ†—वि० ऐसा, इस प्रकार का ।

अइसइⓅ†—क्रि० वि० ऐसे ही, इसी प्रकार ।

अउⓅ—सयो० और, तथा ।

अउगाहⓅ†—वि० अथाह, बहुत गहरा । कठिन ।

अउरⓅ†—सयो० दे० 'और' ।

अऊतⓅ—वि० बिना पुत्र का, निपूता । [स्त्री० अऊती] ।

अएरनाⓅ—सक० अगीकार करना ।

अकंटक—वि० [सं०] बिना काँटे का । बाधारहित । शत्रुरहित ।

अकच—पुं० [सं०] केतुग्रह । वि० बिना बालो का, गजा ।

अकच्छ—वि० नगा । व्यभिचारी, परस्त्री-गामी ।

अकड़—स्त्री० ऐंठ, मरोड़ । घमड, शेखी । ढिठाई । हठ । ⊙बाई = स्त्री० शरीर की नसो का एकबारगी तनने का रोग । ⊙बाज = वि० ऐंठदार, घमडी । ⊙बाजी = स्त्री० शेखी, घमड ।

अकड़ना—अक० सूखकर कडा होना । ठिठुरना । तनना घमड करना । ढिठाई करना ।

अकड़ाव—पुं० ऐंठन, खिचाव ।

अकड़ू†—वि० दे० 'अकडबाज' ।

अकतⓅ—वि० सारा, समूचा । क्रि० वि० बिलकुल, सरासर ।

अकत्थ, अकथⓅ—वि० दे० 'अकथ्य' ।

अकथनीय—वि० [सं०] कहने के अयोग्य, जो कहा न जा सके ।

अकधकⓅ†—पुं० आशका, आगापीछा ।

अकननाⓅ†—सक० सुनना, आहट लेना ।

अकना†—अक० ऊबना, उकताना ।

अकबक—स्त्री० असबद्ध प्रलाप, अंडबंड । धडका, खटका । होशहवास, सुध । वि० अवाक्, चकित ।

अकबकाना†—अक० चकित होना । 'सकें-सकात तन धकधकात उर अकबकात सब ठाढे' (सूर०) ।

अकबरी—स्त्री० [अ०] एक फलाहारी मिठाई । लकडी पर की एक नक्काशी । वि० अकबर बादशाह का, अकबर सबंधी ।

अकबाल—पुं० दे० 'इकबाल' ।

अकर वि० [सं०] बिना हाथ का । बिना महसूल का, कर से मुक्त । दुष्कर, कठिन । न करनेवाला ।

अकरकरा—पुं० एक पौधा जिसकी जड़ पुष्टई आदि मे प्रयुक्त होती है ।

अकरखनाⓅ—सक० खीचना, तानना । चढाना ।

अकरण—पुं० [सं०] कारण का अभाव । काम का अभाव । न करना । इंद्रियो से रहित, ईश्वर । Ⓟ वि० [हिं०] बिना कारण का । जिसका करना कठिन या असभव हो ।

अकरणीय—वि० [स०] न करने योग्य ।

अकरा†—वि० महँगा। खरा, उत्तम।
अकराल—वि० जो भयकर न हो, सुंदर। ⓟ भयकर।
अकरास—पुं० अँगड़ाई, देह टूटना। आलस्य।
अकरुण—वि० [सं०] करुणाहीन, कठोर-हृदय।
अकरूर—पुं० दे० 'अक्रूर'।
अकर्तव्य—वि० [सं०] न करने योग्य, अनुचित। पुं० अनुचित कर्म।
अकर्ता—वि० [सं०] कर्म या न करनेवाला। कर्म में लिप्त न रहनेवाला।
अकर्तृक—वि० [सं०] जिसका कोई कर्ता न हो।
अकर्तृत्व—पुं० [सं०] कर्तृत्व का न होना। कर्तृत्व का अभिमान न होना।
अकर्म—पुं० [सं०] कर्म का अभाव। बुरा काम। ⊙क = वि० (क्रिया) जिसका कोई कर्म न हो (व्या०)। ⊙ण्य = वि० कुछ काम न करनेवाला, आलसी।
अकर्मा—वि० [सं०] काम न करनेवाला। निकम्मा।
अकर्मी—पुं० [सं०] पापी, अपराधी। दुष्कर्मी।
अकर्षणⓟ—पुं० दे० 'आकर्षण'।
अकलंक—वि० [सं०] कलंकरहित, बेऐब। † पुं० दोष, लाछन।
अकलंकित—वि० [सं०] कलंकरहित, बेऐब।
अकल—वि० [सं०] जिसके अवयव न हों। अखंड, समूचा। ⓟ कलाहीन, गुणहीन। (हिं०) ⓟ व्याकुल. बेचैन। स्त्री० (हिं०) दे० 'अक्ल'।
अकलुष—वि० [सं०] कलुषरहित। पवित्र, शुद्ध। स्वच्छ।
अकल्प्य—वि० [सं०] जिसकी कल्पना न की जा सके।
अकल्याण—पुं० [सं०] अशुभ। अहित।
अकस—स्त्री० [अ०] वैर, अदावत, लाग।
अकसना—सक० अकस रखना, वैर करना। बराबरी करना।
अकसर—क्रि० वि० [अ०] बहुधा, अधिकतर। ⓟ [हिं०] अकेले, तनहा। वि० अकेला।
अकसीर—स्त्री० [अ०] रस या भस्म जो धातु को सोना या चाँदी बना दे, कीमिया। प्रत्येक रोग को नष्ट करनेवाली औषधि। वि० अव्यर्थ, अत्यंत लाभकर। ⊙गर = वि० कीमिया बनानेवाला, कीमियागर।
अकस्मात्—अव्य० [सं०] अचानक, सहसा। दैवात, संयोगवश।
अकह—वि० दे० 'अकथ'। मुँह पर न लाने योग्य, अनुचित। **अकहुवा**ⓟ†—वि० दे० 'अकथ'।
अकांड—वि० [सं०] बिना तने का। बिना कारण का। अप्रत्याशित। क्रि० वि० अकारण। अचानक। ⊙तांडव = पुं० व्यर्थ की उछलकूद, व्यर्थ की बकबक।
अकाज—पुं० कार्य की हानि, नुकसान। खोटा काम। ⓟ क्रि० वि० व्यर्थ, बिना प्रयोजन। **अकाजना**ⓟ—अक० हानि होना। मरना। **अकाजी** ⓟ—वि० अकाज करनेवाला।
अकाट, अकाट्य—वि० जो काटा न जा सके, जिसे गलत सिद्ध न किया जा सके (जैसे, अकाट्य तर्क)।
अकामी—वि० [सं०] इच्छाविहीन। जो कामी न हो, जितेंद्रिय।
अकाय—वि० [सं०] देहरहित। जन्म न लेनेवाला। रूपरहित। कामदेव।
अकार—पुं० [सं०] अक्षर 'अ'। ⓟ पुं० [हिं०] आकार, स्वरूप।
अकारजⓟ—पुं० दे० 'अकाज'।
अकारण—(हिं० वै० अकारन ⓟ) वि० [सं०] बिना कारण का, बिना मतलब का। जो किसी से उत्पन्न न हो। क्रि० वि० बिना कारण के, व्यर्थ।
अकारथ—क्रि० वि० व्यर्थ, बेकार। वि० निष्फल, वृथा।
अकार्य—पुं० [सं०] बुरा काम। अकाज। वि० न करने योग्य, अनुचित।

अकाल—पुं० [सं०] अनियमित समय, कुसमय। दुर्भिक्ष, कहत। घाटा, कमी। ⊙ **कुसुम** = पुं० बिना ऋतु का फूल। बेसमय की चीज। ⊙ **पुरुष** = पुं० ईश्वर, परमात्मा (सिख धर्म)। **मूर्ति** = स्त्री० अविनाशी पुरुष। ⊙ **मृत्यु** = स्त्री० थोडी अवस्था मे होनेवाली मौत।

अकालिक—वि० [सं०] बिना समय का, बेमौके का।

अकाली—पुं० सिखो का सप्रदाय जिसमे लोग सिर मे चक्र के साथ काले रग की पगडी बांधते है।

अकास(पु)—पुं० दे० 'आकाश'। ⊙ **दीया** = पुं० दे० 'आकाशदीप'। ⊙ **बानी** = स्त्री० आकाशवाणी, देववाणी। ⊙ **बेल** = स्त्री० दे० 'अमरबेल'।

अकासी(पु)†—स्त्री० चील पक्षी।

अकिंचन—वि० [सं०] जिसके पास कुछ न हो। निर्धन। परिग्रहत्यागी। जिसके भोगने के लिये कर्म न रह गए हो। पुं० निर्धन मनुष्य। परिग्रह-त्याग (जैन)। ⊙ **ता** = स्त्री० निर्धनता।

अकिंचित्कर—वि० [सं०] जिससे कुछ न हो सके। तुच्छ।

अकि(पु)†—सयो० कि, या, अथवा।

अकिल†—स्त्री० दे० 'अक्ल'। ⊙ **दाढ़** = स्त्री० जवानी मे निकलनेवाला दांत।

अकिल्विष वि० [सं०] पापरहित, पवित्र।

अकीरति(पु)—स्त्री० दे० 'अकीर्ति'।

अकीर्ति—स्त्री० [सं०] अपयश, निंदा।

अकुंठ—वि० [सं०] जो कुंठित न हो, तेज, धारदार। तीक्ष्ण, तीव्र (जैसे, अकुंठ मति)। खरा, उत्तम।

अकुताना(पु)—अक० दे० 'उकताना'।

अकुल—वि० [सं०] परिवारहीन। बुरे कुल या खानदान का। पुं० बुरा कुल। शिव। ⊙ **तंत्र** = तंत्र का एक विशेष सप्रदाय।

अकुलाना—अक० ऊबना, उकताना। जल्दी करना, उतावला होना। बेचैन होना, घबराना।

अकुलीन—वि० [सं०] तुच्छ वश मे उत्पन्न, कमीना।

अकुशल—वि० [सं०] जो चतुर न हो। अमगल।

अकूट—वि० [सं०] जो खोटा न हो, खरा (सिक्का)। अमोघ (शस्त्र)।

अकूत—वि० जो कूता न जा सके, बेअंदाज।

अकूपार—पुं० [सं०] पौराणिक कछुआ जो पृथ्वी को धारण किए है। समुद्र।

अकूल—वि० [सं०] जिसका किनारा या अंत न हो।

अकूहल(पु)—वि० बहुत अधिक, असख्य।

अकृच्छ्र—पुं० [सं०] क्लेश या कठिनाई का अभाव, आसानी। वि० आसान।

अकृत—वि० [सं०] बिना किया। पूरा न किया हुआ। बिगडा हुआ। जिसे किसी ने न बनाया हो, नित्य। (पु) निकम्मा, बुरा ⊙ **कार्य** = वि० कार्य मे असफल।

अकृती—वि० [सं०] निकम्मा। अकुशल।

अकृत्रिम—वि० [सं०] स्वाभाविक। प्राकृतिक। असली, सच्चा। हार्दिक, दिली।

अकृपा—स्त्री० [सं०] क्रोध, नाराजी।

अकृष्ट—वि० [सं०] जो खीचा न गया हो। जिसपर हल न चला हो।

अकेला—वि० जिसके साथ कोई न हो। बेजोड, अद्वितीय। पुं० निर्जन स्थान। **अकेले**—क्रि० वि० बिना किसी साथी के, केवल।

अकोट(पु)—वि० करोडो, असख्य।

अकोतर सौ(पु)—वि० एक ऊपर सौ, एक सौ एक।

अकोर(पु)—पुं० दे० 'अँकोर'।

अकोरी(पु)—स्त्री० दे० 'अँकवार'।

अकोविद—वि० [सं०] अज्ञ, मूर्ख।

अकोसना(पु)—सक० दे० 'कोसना'।

अक्क(पु)—पुं० सूर्य । 'छक्किक छबि छक्क ही सुअक्क के समान की' (प्रताप० ७४) ।

अक्खड़—वि० किसी का कहा न माननेवाला, उद्धत, उजड्ड, जड़ । असभ्य, अशिष्ट । झगड़ालू । निःशंक, बेडर । स्पष्टवक्ता, खरा ।

अक्खर (पु)—पुं० अक्षर, हरफ ।

अक्खा—पुं० गुल्ली, गोन ।

अक्त—वि० [सं०] संयुक्त, मिला हुआ, लगा हुआ । लिप्त, रँगा हुआ, भरा हुआ (केवल समा०, जैसे, विषाक्त तैलाक्त आदि) ।

अक्रम—वि० [सं०] बिना क्रम का, बेतरतीब । पुं० व्यतिक्रम, बेतरतीबी ।

अक्रमातिशयोक्ति—स्त्री० अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण और कार्य एक साथ दिखाए जायँ ।

अक्रिय—वि० [सं०] बिना काम का । चेष्टारहित, जड़ ।

अक्रूर—वि० [सं०] जो क्रूर न हो, दयालु, कोमल । पुं० श्रीकृष्ण के चाचा एक यादव ।

अक्ल—स्त्री० [अ०] बुद्धि, समझ । ⊙**मंद** = वि० फा० चतुर, समझदार । ⊙**मंदी** = स्त्री० फा० चतुराई, समझदारी । मु०~**का दुश्मन** = बहुत मूर्ख ।~**का पूरा** = (व्यंग्य) मूर्ख ।~**से काम करना** = समझ से काम लेना ।~**चरने जाना** = समझ का अभाव होना ।~**पर पत्थर या परदा पड़ना** = बुद्धि का काम न करना । ~**सठियाना** = बुद्धि भ्रष्ट होना ।

अक्लिष्ट—वि० [सं०] कष्ट या थकान से रहित । आसान ।

अक्ली—वि० [अ०] अक्ल से संबंधित । तर्कसंगत ।

अक्ष—पुं० [सं०] खेलने का पासा । पासों का खेल । छकड़ा, गाड़ी । धुरा । वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के भीतरी केंद्र से होती हुई उसके आरपार दोनों ध्रुवों पर निकली है । तराजू की डाँड़ी । आँख । रुद्राक्ष । आत्मा । ⊙**क्रीड़ा** = स्त्री० पासे का खेल, चौसर, चोपड़ । ⊙**पाद** = पुं० न्यायशास्त्र के प्रवर्तक गौतम ऋषि । नैयायिक । **अक्षांश** = पुं० भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के बीच ३६० भागों पर पूर्व पश्चिम होती हुई मानी जाने वाली रेखाएँ ।

अक्षत—वि० [सं०] न टूटा हुआ, समूचा । पुं० देवताओं को चढ़ाया जानेवाला अखंडित चावल । धान का लावा । जौ । ⊙**योनि** = वि० स्त्री० जिसका कौमार्य भंग न हुआ हो । स्त्री० कन्या जिसका कौमार्य भंग न हुआ हो । **अक्षता**—वि०स्त्री० दे० 'अक्षतयोनि' ।

अक्षम—वि० [सं०] क्षमारहित, असहिष्णु । असमर्थ । लाचार ।

अक्षय—वि० [सं०] क्षयरहित, सदा बना रहनेवाला । ⊙**तृतीया** = स्त्री० वैशाख शुक्ल तृतीया, स्नानदान आदि करने की एक तिथि । ⊙**नवमी** = स्त्री० कार्तिक शुक्ला नवमी, स्नानदान आदि की एक तिथि । ⊙**वट** = पुं० प्रयाग और गया के विशेष बरगद वृक्ष जिनका नाश पौराणिक लोग प्रलय में भी नहीं मानते ।

अक्षय्य—वि० [सं०] जिसका कभी क्षय नहीं होता, जिसका कभी क्षय न किया जा सके (जैसे, अक्षय्य निधि) ।

अक्षर—वि० अच्युत, स्थिर, अविनाशी । पुं० वर्ण, हरफ । स्वर । शब्द । ब्रह्म । आत्मा । आकाश । ⊙**न्यास** = पुं० लिखावट । मंत्र के एक एक अक्षर को पढ़कर हृदय, नाक, कान आदि को छूना (तंत्र) । ⊙**शः** = क्रि० वि० एक एक अक्षर, ज्यों का त्यों, सब ।

अक्षरी—स्त्री० हिज्जे । शब्द में आए अक्षर ।

अक्षरौटी—स्त्री० वर्णमाला । लिखावट । सितार पर गीत निकालने या बोल बजाने की क्रिया ।

अक्षि—स्त्री० [सं०] आँख, नेत्र । ⊙**गोलक**

= पुं० आँख का डेला । ⊙तारा = स्त्री० आँख की पुतली । ⊙पटल = पुं० आँख का परदा ।

अक्षुण्ण--वि० [सं०] अखडित, समूचा । अकुशल, अनाड़ी ।

अक्षोट—पुं० [सं०] अखरोट ।

अक्षौहिणी--स्त्री० [सं०] पूरी चतुरगिनी सेना जिसमे १,०६,३५० पैदल, ६५,६१० घोडे, २१८७० रथ और २१,८७० हाथी होते थे ।

अक्स—पुं० [अ०] छाया, परछाईं । चित्र, फोटो ।

अक्सर—(वै० अकसर) क्रि वि० [अ०] दे० 'अकसर' ।

अक्सीर—स्त्री० वि० दे० 'अकसीर' ।

अखग(पु)--वि० न चुकनेवाला, अविनाशी ।

अखंड--वि० [सं०] विना टुकडे का, पूरा । लगातार । बेरोक, निर्विघ्न । ⊙**नीय** = वि० जिसके टुकडे न हो सकें । जिसका विरोध या खडन न किया जा सके । **अखंडल**(पु)—वि० [हिं०] अखड, अटूट । समूचा, पूरा । पुं० इद्र । **अखडित**—वि० [सं०] जिसके टुकडे न हुए हो, पूरा । निर्विघ्न, बाधा-रहित । लगातार, सिलसिलेवार ।

अखज--वि० न खाने योग्य, अखाद्य । बुरा, खराब ।

अखड़ैत—पुं० मल्ल, पहलवान ।

अखती, अखतीज—स्त्री० दे० 'अक्षयतृतीया' ।

अखनी--स्त्री० मास का रसा या शोरबा ।

अखबार—पुं० [अ० खबर का बहु०] समाचारपत्र । ⊙**नवीस** = पुं० दे० 'पत्रकार' ।

अखय(पु) —वि० अक्षय, नित्य ।

अखर(पु)—पुं० दे० 'अक्षर' ।

अखरना—अक० खलना, बुरा लगना, कठिन या असह्य लगना ।

अखरा(पु)—वि० जो खरा न हो, झूठा । पुं० अक्षर, हरफ । भूसी मिला जौ का आटा ।

अखरावट, अखरावटी—स्त्री० वै पद्य जो क्रम से वर्णमाला के अक्षरों को लेकर आरंभ होते हैं ।

अखरोट—पुं० एक गिरीदार मेवा और उसका ऊँचा पेड । अक्षोट ।

अखर्व—वि० वडा, लवा ।

अखांगी(पु)—क्रि० वि० लगातार । 'लीन्हो सो नवाइ डीठि पगनि अखांगी री' (जगद्विनोद २७६) ।

अखा†—पुं० दे० 'आखा' ।

अखाडा—पुं० कुश्ती लडने या कसरत करने के लिये बनाया हुआ स्थान । साधुओ की साप्रदायिक मडली । साधुओ के रहने का स्थान । तमाशा दिखानेवालो या गाने बजानेवालो की मडली । सभा, दरबार, रगभूमि ।

अखाडिया—वि० अखाडे का कुशल, दंगली ।

अखात —पुं० [सं०] प्राकृतिक जलाशय, ताल । खाडी ।

अखाद्य—वि० [सं०] न खाने योग्य, अभक्ष्य ।

अखारा—पुं० दे० 'अखाडा' ।

अखिल--वि० [सं०] सपूर्ण, पूरा । अखड ।

अखीन(पु)—वि० न छीजनेवाला, अवि-नाशी, अक्षीण ।

अखीर--पुं० [अ०] अंत, छोर । समाप्ति ।

अखूट—वि० जो घटे या चुके नही, बहुत अधिक ।

अखेट(पु)—पुं० दे० 'आखेट' ।

अखेटक—पुं० दे० 'आखेटक' ।

अखेलत(पु)—वि० न खेलता हुआ, अचचल । आलस्य भरा ।

अखै(पु)—वि० दे० 'अक्षय' । ⊙**पद**(पु) = पुं० ब्रह्मपद, मुक्ति । ⊙**पुरुष**(पु) = पुं० ईश्वर, ब्रह्म । ⊙**बर**(पु)† = पुं० दे० 'अक्षयवट' ।

अखोर(पु)—वि० अच्छा, भद्र । सुदर । निर्दोष । पुं० कूड़ाकरकट, निकम्मी चीज । खराब घास, बुरा चारा । वि० निकम्मा, सड़ा-गला ।

अखोह†—पुं० ऊँची नीची या ऊबड़ खाबड़ भूमि ।

अखोट, अखोटा—पुं० जाँते या चक्की की किल्ली। गड़ारी का डंडा।

अख्खाह—अव्य० एक आश्चर्यसूचक शब्द (किसी को अनपेक्षित स्थान या अवसर पर पाकर)।

अख्तियार—पुं० दे० 'इख्तियार'।

अख्यान(पु)—पुं० दे० 'आख्यान'।

अगंड—पुं० बिना हाथ पैर का धड़।

अग—वि० [सं०] न चलनेवाला, स्थावर। टेढ़ा चलनेवाला। पुं० पेड़। पहाड़। सूर्य। साँप। (पु) वि० अनजान। अनाड़ी। (पु) पुं० अंग, शरीर। ⊙ज=वि० पर्वत से उत्पन्न। पुं० शिलाजीत। हाथी।

अगटना—अक० इकट्ठा होना।

अगड़(पु)—पुं० अकड़, दर्प। ⊙धत्ता=वि० लंबा-तड़ंगा, ऊँचा। श्रेष्ठ, बढ़ा-चढ़ा।

अगड़बगड़—वि० अंडबंड, बेसिरपैर का। पुं० अंडबंड बात। व्यर्थ का कार्य।

अगण—पुं० [सं०] पिंगल में अशुभ माने जाने वाले गण—जगण, रगण, सगण और तगण। ⊙नीय=वि० न गिनने योग्य, सामान्य। असंख्य। **अगणित**—वि० जिसकी गणना न हो, बेशुमार। **अगण्य**—वि० दे० 'अगणनीय'।

अगत(पु)†—स्त्री० दे० 'अगति'।

अगति—स्त्री० [सं०] बुरी गति, दुर्दशा। मरने पर दाह आदि क्रिया का यथाविधि न होना। (पु) अचल पदार्थ। ⊙क=वि० बेठिकाने, निराश्रय।

अगती—वि० बुरी गतिवाला, पापी। पुं० पापी मनुष्य। † वि० स्त्री० अगाऊ, पेशगी। क्रि० वि० आगे से, पहले से।

अगत्या—क्रि० वि० [सं०] लाचार हालत में, अंत में। अचानक।

अगद—पुं० [सं०] औषधि, दवा। वि० नीरोग, चंगा।

अगन—पुं० दे० 'अगण'। स्त्री० दे० 'अग्नि'।

अगनती, अगनित—वि० दे० 'अगणित'।

अगनिउ(पु) **अगनू**(पु) **अगनेउ**(पु) **अगनेत**(पु)—पुं० उत्तर पूर्व का कोना, अग्निकोण।

अगम—वि० [सं०] न जाने योग्य, दुर्गम। कठिन, विकट। अलभ्य। अपार, बहुत। बुद्धि के परे, दुर्बोध्य। अथाह बहुत गहरा। (पु) पुं० दे० 'आगम'।

अगमन(पु)—क्रि वि० आगे से, पहले से।

अगमनीया—वि० स्त्री० [सं०] दे० 'अगम्या'।

अगमानी(पु)—पुं० अगुआ, सरदार। † स्त्री० दे० 'अगवानी'।

अगम्य—वि० [सं०] जहाँ पहुँच न हो सके। विकट, कठिन। बहुत, अत्यंत। जहाँ बुद्धि न पहुँचे, अज्ञेय। अथाह।

अगम्या—वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध हो।

अगर—पुं० सुगंधित लकड़ी का एक पेड़। अव्य० [फा०] यदि, जो। ⊙ई=वि० [हिं०] कालापन लिए सुनहले रंग का। ⊙चे=अव्य० [फा०] यद्यपि। ⊙बत्ती=स्त्री० [हिं०] सुगंध के लिये जलाने की पतली बत्ती। धूपबत्ती। ⊙सार=पुं० दे० 'अगर'।

अगरना(पु)—अक० आगे होना, बढ़ना।

अगरज—पुं० अग्रज, बड़ा भाई।

अगरपार—पुं० क्षत्रियों की एक जाति।

अगरवार—पुं० वैश्यों की एक जाति, अग्रवाल।

अगराना(पु)—पुं० स्नेह से धृष्टता का व्यवहार करना।

अगरासन—पुं० दे० 'अग्राशन'।

अगरी—स्त्री० एक घास। किवाड़ की अर्गला। फूस की छाजन का एक ढंग। (पु) अंडबंड बात। स्नेह से धृष्टतापूर्ण की हुई बात।

अगरु—पुं० [सं०] अगर लकड़ी, ऊद।

अगरे(पु)—क्रि० वि० आगे, सामने।

अगरो(पु)—वि० अगला। बढ़कर, श्रेष्ठ। अधिक ज्यादा।

अगल-बगल—क्रि० वि० दोनो ओर, आस-पास।

अगला—वि० आगे या सामने का,'पिछला' का उलटा। पहले का पूर्ववर्ती। पुराना। आगामी। अपर। दूसरा। पुं० अगुआ, प्रधान। चतुर आदमी। पुरखा (बहु० मे प्रयुक्त)।

अगवाई—स्त्री० अगवानी, अभ्यर्थना। पुं० अगुआ, आगे चलनेवाला।

अगवाडा—पुं० घर के द्वार के सामने का भाग, 'पिछवाड़ा' का उलटा।

अगवान—पुं० अगवानी करनेवाला। विवाह मे कन्यापक्ष के लोग जो आगे बढकर बरात का स्वागत करते हैं। अगवानी, अभ्यर्थना।

अगवानी—स्त्री० अतिथि के निकट पहुँचकर उससे सादर मिलना। बरात को आगे बढकर लेने की रीति। (पु) पुं० अगुआ।

अगसारी(पु)—क्रि० वि० आगे, सामने।

अगस्त—पुं० ईसवी साल का आठवाँ महीना। दे० 'अगस्त्य'।

अगस्त्य—पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जिन्होने (पुराणो के अनुसार) समुद्र को चुल्लू मे भरकर पी लिया था। एक तारा। एक पेड जिसके फूल अर्धचद्राकार लाल और सफेद होते हैं।

अगह(पु)—वि० जिसे पकड न सकें। वर्णन और चिंतन के बाहर। जिसे धारण न कर सकें, कठिन।

अगहन—पुं० हेमत ऋतु का पहला महीना। अग्रहायण। **अगहनिया**—वि० अगहन मे होनेवाला (धान)।

अगहनी—वि० अगहन मे तैयार होनेवाला। स्त्री० वह फसल जो अगहन में काटी जाय। रोपा जानेवाला धान।

अगहर(पु)†—क्रि० वि० आगे। पहले, प्रथम।

अगहुँड़—क्रि० वि० आगे, आगे की ओर।

अगाउनी(पु)—क्रि० वि०, स्त्री० दे० 'अगौनी'।

अगाऊ—वि० अग्रिम, पेशगी। आगे का, सामने का। क्रि० वि० पहले, प्रथम।

अगाड़ा†—पुं० कछार, तरी। पुं० यात्री का पहले से आगे के पडाव पर भेजा जानेवाला मामान।

अगाड़ी—क्रि० वि० आगे, सामने। भविष्य मे। पुराने समय में, पहले। समक्ष, उपस्थिति मे (जैसे, किसी के अगाड़ी कुछ कहना)। पुं० आगे या सामने का भाग। अँगरखे या कुरते के सामने का भाग। सेना का पहला धावा।

अगाध—वि० [सं०] अथाह। अतहीन। दुर्बोध्य।

अगान(पु)—वि० अनजान, नासमझ।

अगामैं(पु)—क्रि० वि० आगे।

अगार—पुं० घर। ढेर। क्रि० वि० आगे, पहले।

अगारी†—स्त्री० दे० 'अगाडी'।

अगास(पु)—पुं० द्वार के आगे का चबूतरा। आकाश।

अगाह(पु)—वि० अथाह। बहुत। उदास। (पु) वि० विदित, मालूम। क्रि० वि० आगे से, पहले से।

अगिआं—स्त्री० हुक्म, आज्ञा।

अगिदधा†—वि० आग से जला हुआ।

अगिदाह—पुं० दे० 'अग्निदाह'।

अगिन—स्त्री० आग। मटमैले रग की एक छोटी चिड़िया जिसकी बोली मीठी होती है। एक घास। (पु) वि० अगणित, बेशुमार। ⊙**बान**=पुं० दे० 'अग्निवाण'। ⊙**बोट**=स्त्री० भाप से चलनेवाली बड़ी नाव, स्टीमर।

अगिनत, अगिनित(पु)—वि० दे० 'अगणित'।

अगिया—स्त्री० एक घास। जहरीले रोएँवाला एक पहाड़ी पौधा। घोड़ों बैलों का एक रोग। पैर में छाले

पढ़ने का एक रोग। ⊙बैताल = पुं० विक्रमादित्य के दो बैतालों में एक। मुँह से लपट निकालनेवाला भूत। दलदल आदि में आग के समान चमकनेवाली गैस। बहुत क्रोधी व्यक्ति।

अगिरी—पु स्त्री० मकान के आगे का भाग, द्वार।

अगिला—वि० दे० 'अगला'।

अगिलाई‡—स्त्री० अग्निदाह। ज्वाला, लपट।

अगीत पछीत—क्रि० वि० आगे पीछे। पुं० आगे और पीछे का भाग।

अगुआ—पुं० आगे चलनेवाला व्यक्ति। अग्रणी। मुखिया, प्रधान। मार्ग बतानेवाला। विवाह ठीक करनेवाला। ⊙ई = अग्रणी होने की क्रिया। प्रधानता। मार्गप्रदर्शन। **अगुआना**—सक० अगुआ बनाना। अक० आगे होना या जाना।

अगुण—वि० [सं०] सत्, रज, तम गुणों से रहित। अनाड़ी, मूर्ख। अवगुण, दोष। ⊙ज्ञ – वि० जिसे गुणों की परख न हो, गँवार।

अगुताना‡(पु)—अक० दे० 'उकताना'।

अगुरु—वि० [सं०] जो भारी न हो, हलका। जिसने गुरु से उपदेश न पाया हो। पुं० शीशम का वृक्ष। वृक्षविशेष, अगर।

अगुवा—पुं० दे० 'अगुआ'।

अगुसरना—अक० [स० अगुसारना] अग्रसर होना, आगे बढ़ना। 'एका परग न सो अगुसरई' (पदमा०)।

अगूठना(पु)—सक० घेर लेना।

अगूठा†—पुं० घेरा।

अगूढ़—वि० [सं०] छिपा न हो, प्रकट। आसान। पुं० साहित्य में गुणीभूत व्यंग्य के आठ भेदों में से एक जो वाच्य के समान ही स्पष्ट होता है।

अगूता(पु)—क्रि० वि० आगे, सामने।

अगेह—वि० बेघरबार का।

अगोई—वि० स्त्री० जो छिपी न हो, प्रकट।

अगोचर—वि० [सं०] जिसका ज्ञान इंद्रियों को न हो, अव्यक्त।

अगोट(पु)—पुं० रोक, प्रतिबंध। **अगोटना**—सक० रोकना, छेंकना। 'सब कोट जो पाव अगोटी। मींठी गाँठ जेवार सोटी' (पदमा०)। रोक लगाना, बंद कर रखना। छिपाना। अक० उलझना, फँसना। 'सुनि भावनि यह बात सबन की भठहि भ्राम के काम अगोटी' (सूर०)। सक० स्वीकार करना। पसंद करना।

अगोता(पु)—क्रि० वि० आगे, सामने।

अगोरदार—पुं० पहरा देनेवाला, रखवाली करनेवाला।

अगोरना—सक० राह देखना, प्रतीक्षा करना। पहरा देना। रोकना। 'जो मैं कोटि जतन करि राखति घूँघट ओट अगोरि' (सूर०)।

अगोढ़‡—पुं० पेशगी, अगाऊ।

अगौनी(पु)—क्रि० वि० आगे। स्त्री० अगवानी, पेशवाई। द्वारपूजा के समय छोड़ी जानेवाली आतिशबाजी।

अगौहैं(पु)—क्रि० वि० आगे, सामने।

अग्नि—[सं०] आग, ताप और प्रकाश। पंचभूतों में से तेज। एक प्रधान देवता। उष्णता, गर्मी। जठराग्नि, पाचन शक्ति। पित्त। ⊙कर्म = पुं० हवन। शवदाह। ⊙कीट = पुं० एक कीड़ा जिसका निवास अग्नि में माना जाता है। ⊙कुमार = कार्तिकेय। ⊙कुल = पुं० क्षत्रियों का एक कुल। ⊙कोण = पुं० पूर्व और दक्षिण का कोना। ⊙क्रीड़ा = स्त्री० आतिशबाजी। ⊙गर्भ = पुं० सूर्यकांत मणि। आतशी शीशा। वि० जिसके भीतर अग्नि हो। ⊙जिह्वा = स्त्री० आग की लपट। अग्नि

देवता की सात जिह्वाएँ। ⊙दीपक = वि० पाचनशक्ति को बढानेवाला। ⊙परीक्षा = स्त्री० [सं०] अग्नि द्वारा परीक्षा, जलती हुई आग या खौलते हुए तेल आदि के स्पर्श द्वारा दोषी या निर्दोष होने की जाँच। सोने चाँदी आदि की आग मे तपाकर परीक्षा। कठिन परीक्षा। ⊙पुराण = पुं० अठारह पुराणो मे से एक। ⊙पूजक = अग्नि को पूजनेवाला। पारसी। ⊙बाण = पुं० बाण जिससे आग निकले। ⊙बीज = पुं० सोना। ⊙मथ = पुं० अरणी वृक्ष जिसकी लकडियो को रगडने से अग्नि जल्दी निकलती है। वि० रगड द्वारा आग उत्पन्न करनेवाला। ⊙मणि = पुं० सूर्यकांत मणि। आतशी शीशा। ⊙मांद्य = पुं० मंदाग्नि, पाचनशक्ति की कमी। ⊙ मुख = पुं० देवता, प्रेत। ब्राह्मण। ⊙ वंश = पुं० अग्निकुल। ⊙शाला = स्त्री० घर जहाँ हवन की अग्नि स्थापित हो। ⊙ शिखा = स्त्री० आग की लपट। एक पौधा जिसकी जड मे विष होता है। ⊙शुद्धि = स्त्री० आग मे तपाकर शुद्ध करना। अग्निपरीक्षा। ⊙संस्कार = पुं० आग का व्यवहार। शुद्धि के लिये अग्निस्पर्श। मृतक का दाहकर्म। ⊙ होत्र = पुं० वैदिक विधि से अग्नि मे नित्य हवन कर्म। ⊙होत्री = पुं० अग्निहोत्र करनेवाला। **अग्न्यस्त्र**—पुं० जिस बाण या अस्त्र के अग्नि देवता हों, आग्नेयास्त्र, मंत्रप्रेरित यंत्र जिससे आग निकले। अस्त्र जो आग से चलाया जाय (बंदूक, पिस्तौल आदि)। **अग्न्याधान**—पुं० अग्नि की विधिपूर्वक स्थापना। अग्निहोत्र।

अग्य—(पु) वि० दे० 'अज्ञ'।

अग्या (पु)—स्त्री० दे० 'आज्ञा'।

अग्यारी—स्त्री० अग्नि मे धूप आदि सुगंध द्रव्य डालना। अग्निकुंड

अग्र—पुं० [सं०] आगे का भाग, सिरा। शिखर। क्रि० वि० आगे, सामने। वि० श्रेष्ठ, उत्तम। ⊙ गण्य = वि० गणना मे प्रथम आनेवाला, प्रधान श्रेष्ठ। ⊙ गामी = वि० आगे चलनेवाला। पुं० नायक, अगुआ। ⊙ज = पुं० बडा भाई। अगुआ। ब्राह्मण। वि० श्रेष्ठ, उत्तम। ⊙ जन्मा = पुं० बडा भाई। ब्राह्मण। ब्रह्मा। ⊙जा = स्त्री० बडी बहन। ⊙णी = वि० आगे चलने या नेतृत्व करनेवाला, अगुआ। पुं० प्रधान, मुखिया। ⊙तः = अव्य० आगे, सामने। प्रारंभ मे पहले। ⊙दूत = पुं० व[ह] जो पहले पहुँचकर किसी के आ[ने] की सूचना दे। ⊙लेख = पुं० समा[चार] पत्र मे संपादक का मुख्य लेख। ⊙शोची = वि० दूरदेश। ⊙सर = वि० आगे जानेवाला, अगुआ। आर[ंभ] करनेवाला। प्रधान। ⊙सोची (पु) = वि० [हिं०] दे० 'अग्रशोची'। ⊙हायण = पुं० वैदिक क्रम मे वर्ष क[ा] प्रथम किंतु वर्तमान उत्तर भार[त] मे वर्ष का नवाँ महीना, अगहन। ⊙हार—पुं० राजा की ओर से ब्राह्म[णों] को भूमिदान। ब्राह्मण को माफी दी हुई भूमि या गाँव। **अग्राशन**—पुं० देवता, गौ आदि के लिये पहले से निकाल दिया जानेवाले भोजन का अंश। **अग्रासन**—पुं० आदर क[ा] आसन। **अग्रिम**—वि० पेशगी आगामी। प्रधान, श्रेष्ठ। —धन = पुं० किसी कार्य या वस्तु के लि[ये] पहले से दिया जानेवाला धन। **अग्र्य**—वि० प्रधान, श्रेष्ठ। निपु[ण]। पुं० बडा भाई। **अग्रेसर**—वि० आ[गे] जानेवाला, अगुआ। श्रेष्ठ।

अग्राह्य—वि० [पुं०] ग्रहण या धारण [के] अयोग्य। त्याज्य। न मानने लायक।

अघ—पुं० [सं०] पाप, गुनाह। दु[ःख] कष्ट। अघासुर। ⊙मर्षण = वि० पापनाशक। पुं० एक पापनाश[क] वैदिक मंत्र। ⊙वान् = वि० पा[पी]

अघारि—पुं० पाप का शत्रु। 'अघ' नामक दैत्य को मारनेवाले श्रीकृष्ण। **अघासुर**—पुं० कंस का सेनापति अघ नामक दैत्य, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। **अघी**—वि० पापी, दुष्कर्मी। **अघौघ**—पुं० पापों का समूह।

अघट—वि० न होने योग्य। कठिन। (पु) जो ठीक न हो, बेमेल। जो कम न हो। स्थिर, एकरस। अघटनीय।

अघटित—वि० [सं०] जो हुआ न हो। असंभव, कठिन। (पु) अवश्य होनेवाला। अयोग्य, अनुचित। (पु) बहुत अधिक।

अघवाना—सक० [हिं० अघाना का प्रे०] पेटभर खिलाना। पिलाना। संतुष्ट करना।

अघाना—अक० पेट भर खाना पीना, छकना। 'पीवहु छाँछ अघाइ के कब केरे बारे' (सूर०)। संतुष्ट या तृप्त होना, प्रसन्न होना। (पु) थकना। ऊबना।

अघोर—वि० [सं०] जो भयानक न हो, सौम्य, सुहावना। अति भयंकर। पुं० शिव का एक रूप। एक पथ जिसके खानपान आदि में मद्य मांस, मल मूत्र आदि कुछ वर्जित नहीं। (पु) **नाथ** = पुं० शिव। ⊙**पंथी** = अघोरपंथ को माननेवाला। **अघोरी**—पुं० अघोर पंथ का अनुयायी। घिनौनी वस्तुओं का व्यवहार करनेवाला व्यक्ति। वि० जो घिनौनी वस्तुओं का व्यवहार करे।

अघोष—वि० [सं०] ध्वनिरहित। अल्प ध्वनियुक्त। ग्वालों से रहित। अघोष वर्ण। पुं० व्याकरण में प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा वर्ण (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ और श, ष, स)।

अघ्रान(पु)—पुं० आघ्राण, गंधग्रहण। **अघ्राना**(पु)—सक० आघ्राण करना सूंघना।

अचंभव(पु), **अचंभा**—पुं० आश्चर्य, अचरज। अचरज की बात।

अचंभित(पु)—वि० आश्चर्ययुक्त, अचंभे में पड़ा।

अचभो, अचभौ(पु)—पुं० दे० 'अचंभा'।

अचका†—वि० भरपूर, बहुत। पुं० घबराहट, भौंचक्कापन।

अचकन—स्त्री० एक लंबा कलीदार पहनावा।

अचकाँ(पु)—क्रि० वि० अचानक, सहसा।

अचक्का†—पुं० अनजान। अचक्के में = अचानक।

अचगरा(पु)—वि० छेड़छाड़ करनेवाला, शरारती। **अचगरी**(पु)—स्त्री० छेड़छाड़, शरारत।

अचना(पु)—सक० आचमन करना, पीना।

अचपल—वि० [सं०] अचंचल, गंभीर। चंचल, शोख। **अचपली**—स्त्री० अठखेली, किलोल।

अचभौन(पु)—पुं० दे० 'अचंभा' (सूर०)।

अचमन(पु)—पुं० दे० 'आचमन'।

अचर—वि० [सं०] न चलनेवाला, स्थावर। पुं० न चलनेवाला पदार्थ, स्थावर द्रव्य।

अचरज—पुं० आश्चर्य, अचंभा।

अचल—वि० [सं०] जो न चले, स्थिर। सदा रहनेवाला। पक्का, अटल। मजबूत, अटूट। पुं० पहाड़। ⊙**धृति** = स्त्री० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ५ नगण और एक लघु होता है। ⊙**संपत्ति** = स्त्री० न हटाई जा सकनेवाली संपत्ति, जैसे, घर, खेत।

अचला—वि० स्त्री० [सं०] जो न चले, स्थिर। स्त्री० पृथ्वी। ⊙**सप्तमी** = माघ शुक्ला सप्तमी।

अचवन—पुं० आचमन, पीना। भोजन के पीछे हाथ मुंह धोकर कुल्ली करना। **अचवना**—सक० आचमन करना, पीना। भोजन के बाद हाथ मुंह धोकर कुल्ली करना। **अचवाना**—सक०

[अचवना का प्रे०] अचवन कराना।

अचाचक—क्रि० वि० अचानक।

अचाक(पु), **अचाका**(पु)—क्रि० वि० अचानक।

अचान(पु—क्रि० वि० अचानक।

अचानक—क्रि० वि० बिना पूर्व सूचना या अनुमान के, एकाएक।

अचार—पुं० [फा०] मसाला के साथ तेल आदि मे कुछ दिन रखकर खट्टा या चटपटा किया फल या तरकारी। (पु)दे० 'आचार'। फल विशेप जिससे चिरौजी निकलती है।

अचारी(पु—वि०, पुं० दे० 'अचारी'। स्त्री० छिले हुए कच्चे आम की फाँको को धूप मे सिझाकर तैयार किया गया अचार।

अचाह—स्त्री० अनिच्छा, अरुचि। वि० बिना चाह या इच्छा का। **अचाहा**(पु)—वि० जिसकी चाह न हो। जो प्रेमपात्र न हो। पुं० व्यक्ति जो प्रेमपात्र न हो। प्रीति न करनेवाला व्यक्ति। **अचाही**(पु)—वि० इच्छा न रखनेवाला।

अचिंत(पु)—वि० चितारहित, बेफिक्र।

अचिंतनीय—वि० [सं०] जो चितन मे न आ सके, अज्ञेय।

अचिंतित—वि०[स०] बिना सोचा विचारा। आकस्मिक। बेफिक्र।

अचिंत्य—वि० [सं०] दे० 'अचिंतनीय'।

अचितवन—वि०, क्रि० वि० दे० 'अनिमेष'।

अचित्—पुं० [स०] अचेतन, जड प्रकृति।

अचिर—क्रि० वि० [सं०] शीघ्र, जल्दी। कुछ ही पहले। वि० थोडी अवधि का। थोडे समय तक रहनेवाला।

अचिरात्—क्रि० वि० [सं०] जल्दी, तुरत।

अचीता—वि० जिसका पहले से अनुमान न हो, आकस्मिक। बहुत। निश्चित।

अचूक—वि० जो खाली न जाय। जो अवश्य फल दिखावे। भ्रमरहित, ठीक। क्रि० वि० कौशल या सफाई से। अवश्य।

अचेत—वि० [सं०] बेहोश। असावधान, बेपरवाह। बेखबर, अनजान। नासमझ। (पु) जड। पु० माया, अज्ञान।

अचेतन—वि० [सं०] चेतनारहित, जड। बेहोश। पुं० जड द्रव्य।

अचैतन्य—वि० [सं०] चेतनारहित, जड। पु० बेहोशी। अज्ञान।

अचैन—पुं० बेचैनी, कष्ट। वि० बेचैन, विकल।

अचोख—वि० जो चोखा न हो, बुरा। मटमैला।

अचोना(पु)—पुं० आचमन करने का पात्र, कटोरा।

अचौन(पु—पुं० दे० 'आचमन'।

अच्छ—वि० [स०] निर्मल, पवित्र। (पु)आँख। रुद्राक्ष। रावण का बेटा अक्षकुमार।

अच्छत—पुं० अखडित चावल (देवताओं को चढाया जानेवाला)। वि० लगातार।

अच्छर—पुं० अक्षर, हरफ।

अच्छरा(पु), **अच्छरी** (पु—स्त्री० दे० 'अप्सरा'।

अच्छा—वि० उत्तम, बढिया। सुदर। खरा। तदुरुस्त। स्वास्थ्यप्रद। पुं० बडा आदमी (बहु०)। गुरुजन, बड़े बूढे (बहु०)। क्रि० वि० अच्छी तरह, बहुत (जैसे, हमे बुलाकर अच्छा तग किया)। जरूरत या ठीक समय पर (व्यग्य मे विपरीत आशय), जैसे, आप अच्छे आए। अव्य० प्रार्थना या आज्ञा की स्वीकृति, हाँ। खैर, जो हुआ सो हुआ। विस्मयद्योतक शब्द, जैसे, 'अच्छा! आप भी यही हैं!' ⊙ई = स्त्री० दे० 'अच्छापन'। ⊙**खासा** = वि० काफी अच्छा, एकदम ठीक। ⊙**पन** = पुं० अच्छे होने का भाव। ⊙**बिच्छा** = वि० दे० 'अच्छा खासा'। मु०~**कहना** = प्रशसा करना। **अच्छी कटना, गुजरना या बीतना** = आराम से जिंदगी बीतना। **अच्छे से पाला पड़ना** = बेढब आदमी से पाला पड़ना।

अच्छि(पु)—स्त्री० दे० 'अक्षि'।
अच्छोत पु—वि० बहुत, अधिक।
अच्छोहिनी—स्त्री० दे० 'अक्षौहिणी'।
अच्युत—वि० [सं०] न चूने या गिरने-वाला। स्थिर, अटल। अविनाशी। जो विचलित न हो या त्रुटि न करे। पुं० विष्णु। कृष्ण।
अछक पु—वि० जो छका न हो, अतृप्त।
अछत(पु)—क्रि० वि० रहते हुए, उपस्थिति में। सिवाय। न रहते हुए, अनु-पस्थित।
अछताना पछताना—अक० पछताना। 'ऐसे नीच-समझ अछताय पछताय मेघो सहित इंद्र अपने स्थान को गया' (प्रेम०)।
अछन(पु)—पुं० चिरकाल, बहुत समय। क्रि० वि० धीरे धीरे।
अछना पु—अक० विद्यमान रहना। 'अछहि वे हंस तेंवन सो गाती' (पदमा०)।
अछप—वि० न छिपने योग्य, प्रकट।
अछय(पु)—वि० दे० 'अक्षय'।
अछरा, अछरी(पु)—स्त्री० दे० 'अप्सरा'।
अछरौटी—स्त्री० वर्णमाला।
अछवाना(पु)—सक० सँवारना। 'रूप सरूप सिंगार सवाई। अच्छर जैसी रहि अछवाई' (पदमा०)।
अछाम(पु)—वि० जो पतला न हो, मोटा, हृष्टपुष्ट।
अछूत(पु)—वि० दे० 'अछूता'। न छूने योग्य या अपवित्र जाति का। पुं० ऐसी जाति का व्यक्ति। **अछूता**—वि० जो छुआ न गया हो। जो काम में न लाया गया हो या जिसका उपभोग न किया गया हो, नया, ताजा।
अछेद्य—वि० अभेद्य। अविनासी।
अछेव(पु)—वि० छिद्र या दोष से रहित।
अछेह(पु)—वि० लगातार। बहुत अधिक।
अछोप(पु)—वि० नंगा। तुच्छ, दीन।
अछोभ(पु)—वि० क्षोभरहित। गंभीर, शांत।
अछोर—वि० जिसका ओर छोर या सीमा न हो।
अछोह—पुं० क्षोभ का अभाव, शांति। मोह या करुणा का अभाव, निठुरता। वि० निठुर, दयाशून्य।
अछोही—वि० दे० 'अछोह'।
अजंगम—पुं० [सं०] छप्पय मात्रिक छंद का एक भेद जिसमें कुल ११४ वर्ण होते हैं। उनमें ३८ गुरु और ७६ लघु होते हैं। वह जो 'जंगम' नहीं है।
अज—वि० [सं०] जिसका जन्म न हो। पुं० ब्रह्मा। विष्णु। शिव। कामदेव। दशरथ के पिता सूर्यवंशी राजा। बकरा। मेंढा। माया।
अजगर पु—बकरी, हिरन आदि को निगल जानेवाला एक विशाल सर्प। ⊙**गरी** =स्त्री० [हिं०] अजगर की सी बिना परिश्रम की जीविका। वि० अजगर की। बिना परिश्रम की।
अजगव—पुं० [सं०] शिव का धनुष, पिनाक।
अजगुत—पुं० अचंभे की बात। अनुचित या असंगत बात। वि० आश्चर्यजनक, असंगत।
अजगैव(पु)—पुं० अलक्षित स्थान, परोक्ष।
अजड—वि० [सं०] जो जड़ न हो, चेतन। पुं० चेतन पदार्थ।
अजदहा—पुं० [फा०] दे० 'अजगर'।
अजन—वि० [सं०] निर्जन, सुनसान। जन्मरहित, अनादि।
अजनबी—वि० [अ०] अपरिचित, परदेसी। अनजान।
अजन्म, अजन्मा—वि० [सं०] जन्म के बंधन से रहित, नित्य
अजपा—वि० [सं०] जो जपा या भजा न जाय। जो न जपे। पुं० मंत्र जिसके मूल मंत्र 'हंस' का उच्चारण श्वास प्रश्वास के आने जाने मात्र से हो जाय।
अजब—वि० [अ०] विचित्र, अनोखा।
अजमाना—सक० दे० 'आजमाना'।
अजमोद—पुं० अजवायन की तरह का एक पेड़ जिसके बीज मसाले और

ओषधि के काम मे आते हैं। बडी अजवायन।

अजय—पुं० [सं०] पराजय, हार। छप्पय छद का एक भेद जिसमे ७० गुरु और १२ लघु मिलाकर ८२ वर्ण और १५२ मात्राएँ होती है। वि० [हिं०] जो जीता न जा सके।

अजय्य—वि० जो जीता न जा सके।

अजया—स्त्री०[सं०] भाँग। (पु)बकरी।

अजर—वि० [सं०] जरारहित, जो बूढा न हो, अविनाशी। (पु) जो हजम न हो।

अजरायल(पु)—वि० जो जीर्ण न हो, अमिट, पक्का।

अजरावर(पु)—वि० अजर अमर, अविनाशी।

अजवायन—स्त्री० एक पौधा जिसके सुगधित बीज मसाले और दवा के काम आते हैं।

अजस—पुं० अयश, बदनामी। **अजसी**—वि० बदनाम। जिसे यश न मिले।

अजस्र—क्रि वि० [सं०] निरतर, हमेशा। वि० सदा रहनेवाला।

अजहत्स्वार्था—स्त्री० [सं०] एक लक्षण जिसमे लक्षक शब्द वाच्यार्थ को न छोडकर कुछ भिन्न अर्थ प्रकट करे। उपादान लक्षण।

अजहद—क्रि वि० [फा०] हद से ज्यादा। बहुत अधिक।

अजहुँ, अजहूँ—क्रि० वि० आज तक। अभी तक।

अजा—वि० स्त्री [सं०] जो उत्पन्न न हुई हो। स्त्री० बकरी। प्रकृति या माया (साख्य दर्शन)। शक्ति, दुर्गा।

अजाचक, अजाची—वि० जिसे माँगने की आवश्यकता न हो, धनधान्य से पूर्ण।

अजात—वि० [सं०] जो पैदा न हुआ हो। ⊙**शत्रु**=वि० जिसका कोई शत्रु न हो। पुं० राजा युधिष्ठिर। शिव। काशी का एक राजा। मगध के राजा बिंबसार का पुत्र।

अजाती—वि० [हिं०] जाति से निकाला हुआ। पुं० ऐसा व्यक्ति।

अजान—वि० नासमझ। अपरिचित। पुं० [हिं०] अज्ञान, नासमझी। ⊙**ता**=स्त्री० दे० 'अजानपन'। ⊙**पन**=पुं० अज्ञान, नासमझी। ⊙**बीरी**=पुं० एक पेड जिसके सबध मे कहा जाता है कि उसके नीचे जानेवाला सुध-बुध भूल जाता है।

अजान—पुं० [अ०] नमाज के समय की पुकार, बाँग।

अजानी—वि० मूर्ख (स्त्री)।

अजाब—पुं० [अ०] सजा। यातना। प्रायश्चित्त।

अजामिल—पुं० [सं०] पुराण के अनुसार एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम लेने से तर गया।

अजाय—वि० बेजा, अनुचित।

अजायब—पुं० [अ० अजब का बहु०] विचित्र वस्तुओ या कर्मों का समूह। ⊙**खाना**=पुं० [फा०] भवन जिसमे अनोखे या दर्शनीय पदार्थों का सग्रह हो। ⊙**घर**=पुं० [हिं०] दे० 'अजायबखाना'।

अजार(पु)—पुं० दे० 'आजार'।

अजारा—पुं० दे० 'इजारा'।

अजिऔरा(पु)†—पुं० आजी या दादी के पिता का घर।

अजित—वि० [सं०] जो जीता न गया हो। पुं० विष्णु। शिव। बुद्ध।

अजिन—पुं० [सं०] चमडा। हिरन या व्याघ्र की रोमयुक्त खाल।

अजिर—पुं० [सं०] आँगन, सहन। शरीर।

अजी—अव्य० एक सबोधन, जी।

अजीज—वि० [अ०] प्रिय। पुं० सबधी। मित्र।

अजीत—वि० दे० 'अजित'।

अजीब—वि० [अ०] अनोखा, आश्चर्यजनक।

अजीरन—पुं० दे० 'अजीर्ण'।

अजीर्ण—पुं० [सं०] अपच, बदहजमी। अधिकता (व्यंग्य) जैसे बुद्धि का अजीर्ण होना। वि० जो पुराना न हो, नया।

अजीव—पुं० [सं०] जड पदार्थ। वि० मृत।

अजुगत—पुं० [अजुगति—स्त्री०] दे० 'अजगुत'।

अजू(पु)—अव्य० दे० 'अजौं'।

अजूजा(पु)—पुं० बिज्जू जैसा एक मुर्दा खानेवाला जानवर।

अजूबा—पुं० [अ०] अचरज में डालनेवाली चीज।

अजूरा(पु)—वि० जो जुड़ा न हो, अलग। पुं० [अ०] मजदूरी, भाड़ा।

अजूह(पु)—पुं० युद्ध।

अजेह (पु), **अजेय**—वि० [सं०] जिसे जीता न जा सके।

अजोग(पु)—वि० अयोग्य, अनुचित। बेमेल। नालायक।

अजोरना—सक० दे० 'अँजोरना'।

अजौं(पु)—क्रि० वि० आज तक। अबतक।

अज्ञ—वि० [सं०] नासमझ, मूर्ख, जड। (पु)। ⊙ता = स्त्री० नासमझी, मूर्खता, जडता।

अज्ञा(पु)—स्त्री० दे० 'आज्ञा'। ⊙कारी = वि० दे० 'आज्ञाकारी'।

अज्ञात—वि० [सं०] न जाना हुआ, अपरिचित। ⊙नामा = वि० जिसका नाम ज्ञात न हो। जिसे कोई न जानता हो। ⊙ यौवना = स्त्री० मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन के आगमन का ज्ञान न हो। ⊙वास = पुं० अज्ञात स्थान में निवास।

अज्ञान—पुं० [सं०] ज्ञान का अभाव। मूर्खता। अविद्या, मोह। वि० अनजान। मूर्ख, जड। ⊙ता स्त्री०, ⊙पन पुं० = [हिं०] अज्ञान की दशा या भाव। **अज्ञानी**—वि० [सं०] दे० 'अज्ञान'।

अज्ञेय—वि० [सं०] जो जाना न जा सके, जो जानने के योग्य न हो।

अज्यो—क्रि० वि० दे० 'अजौं'।

अझर—वि० जो झरे या बरसे नहीं।

अझूना(पु)—वि० जो जीर्ण न हो, स्थायी।

अझोरी(पु)—स्त्री० झोली, कपड़े की लंबी थैली (कंधे पर लटकाई जानेवाली)।

अटंबर—पुं० ढेर, राशि।

अट—स्त्री० शर्त, प्रतिबंध।

अटक—स्त्री० रुकावट। सकोच। मुश्किल।

अटकन (पु)—स्त्री० दे० 'अटक'।

अटकन बटकन—पुं० छोटे बच्चों का एक खेल।

अटकना—अक० रुकना। उलझे या लगे रहना। प्रेम में रमना। झगड़ना, विवाद करना।

अटकल—स्त्री० अनुमान, अंदाज। ⊙पच्चू = वि० अंदाज या कल्पना पर आश्रित। क्रि० वि० अंदाज या अनुमान से। ⊙बाज = वि० अटकल लगाने में कुशल। ⊙बाजी = स्त्री० अटकल लगाने की क्रिया।

अटकरना,(पु), **अटकलना**—अक० अटकल लगाना, अनुमान करना। 'बार बार राधा पहिचानी। निकसे स्याम सदन ते मेरे इन अटकरि पहिचानी' (सूर०)

अटका—पुं० जगन्नाथ जी को चढ़ाया हुआ भात।

अटकाना—सक० [अक० अटकना] रोकना, अड़ाना। उलझाना, फँसाना। प्रतीक्षा या आशा में रखना। बिना किए या अपूर्ण अवस्था में रखना। **अटकाव**—पुं० रुकावट, विघ्न।

अटखट(पु)—वि० टूटा फूटा।

अटखेली—स्त्री० दे० 'अठखेली'।

अटन—पुं० [सं०] घूमना फिरना, यात्रा।

अटना—अक० काफी होना। (पु) घूमना फिरना, यात्रा करना। आड या ओट करना। दे० 'आँटना'।

अटपटा—वि० अनोखा। अडबड, अव्यवस्थित। लडखडाता या गिरता पडता हुआ। **अटपटी**—स्त्री० शरारत, नटखटपन।

अटपटाना—अक० लड़खड़ाना। 'आलस भरे नैन बैन अटपटात जात' (सूर०)। हिचकना।

अटब्बर—पुं० आडंबर। कुनबा, परिवार।

अटल—वि० जो टले या डिगे नहीं। सदा बना रहनेवाला। अवश्य होनेवाला। पक्का।

अटवाटी खटवाटी—स्त्री० खाट खटोला, बोरिया बँधना।

अटवी—स्त्री० [सं०] जंगल।

अटहर—स्त्री० ढेर। पगड़ी, फेंटा। पुं० कठिनाई।

अटा—स्त्री० अटारी। अटाला, ढेर।

अटाउ (पु) पुं०—बुराई, बिगाड़।

अटाटूट—वि० बहुत, बेअंदाज।

अटारी—स्त्री० घर के ऊपर की कोठरी या छत।

अटाला—पुं० ढेर, राशि। सामान। कसाइयों की बस्ती।

अटूट—वि० न टूटने योग्य, मजबूत। अजेय। लगातार। दे० 'अटाटूट'।

अटेक—वि० बिना टेक का, जो प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहे।

अटेरन—पुं० सूत की आँटी बनाने का एक यंत्र। कुश्ती का एक पेंच। **अटेरना**—सक० अटेरन से सूत की आँटी बनाना। मात्रा से अधिक नशा पीना।

अटोक (पु)—वि० बिना रोक टोक का।

अट्ट—पुं० [सं०] बुर्ज। हाट, बाजार। वि० ऊँचा। जोर का (शब्द), जैसे, अट्टहास। ⊙**हास** = पुं० जोर की हँसी। ⊙**सट्ट** = वि० अंडबंड, ऊटपटाँग। पुं० अंडबंड बात।

अट्टालिका—स्त्री० [सं०] अटारी कोठा। महल।

अट्टी—स्त्री० सूत या ऊन का लच्छा।

अट्ठा—पुं० ताश का पत्ता जिस पर आठ बूटियाँ हों।

अट्ठाइस, **अट्ठाईस**—वि० बीस और आठ, २८।

अट्ठानबे—वि० नव्वे और आठ, ९८।

अट्ठारह—वि० दस और आठ, १८।

अट्ठावन—वि० पचास और आठ, ५८।

अट्ठासी—वि० अस्सी और आठ, ८८।

अठंग (पु)—पुं० अष्टांग योग का साधक।

अठ—वि० [के० समा० में] दे० 'आठ'। ⊙**ड़** = स्त्री० अष्टमी तिथि। ⊙**कौसल** = गोष्ठी। सलाह। ⊙**खेली** = स्त्री० विनोदक्रीड़ा, कल्लोल, चुलबुलापन। मतवाली चाल। ⊙**त्तर** = वि० दे० 'अठहत्तर'। ⊙**न्नी** = स्त्री० आठ आने, पचास नये पैसे मूल्य का सिक्का। ⊙**पहला** = वि० आठ कोनेवाला। ⊙**पाव** (पु) = पुं० उपद्रव, ऊधम। ⊙**मासा** = पुं० दे० 'अठवाँसा'। ⊙**मासी** = स्त्री० आठ माशे का सोने का सिक्का। ⊙**वाँस** = वि० अठपहला। ⊙**वाँसा** = वि० आठ महीने में उत्पन्न होनेवाला (बच्चा)। पुं० असाढ़ से माघ तक जोतकर ईख के लिये तैयार किया जानेवाला खेत। ⊙**वारा** = पुं० आठ दिन का समय, आधा पक्ष। ⊙**सिल्या** (पु) = पुं० सिंहासन। ⊙**हत्तर** = वि० सत्तर और आठ ७८।

अठलाना (पु)—अक० दे० 'इठलाना'। उन्मत्त होना।

अठाई (पु)—†वि० उत्पाती, शरारती।

अठान (पु)—पुं० न ठानने योग्य कार्य, दुष्कर कर्म। विरोध, शत्रुता। **अठाना** (पु)—†सताना। ठानना, छेड़ना।

अठारह—वि० दे० 'अट्ठारह'।

अठासी—वि० दे० 'अट्ठासी'।

अठिलाना—अक० दे० 'अठलाना'।

अठोठ (पु)—पुं० आडंबर, पाखंड।

अठोतरसो—वि० एक सौ आठ, १०८।

अठोतरी—स्त्री० एक सौ आठ दानों की जपने की माला।

अडंगा—पुं० हस्तक्षेप। रुकावट, बाधा।

अडड (पु)—वि० दे० 'अदड्य'। निर्भय निर्द्वंद्व।

अडंबर (पु)—पुं० दे० 'आडंबर'।

अड़—स्त्री० जिद, हठ। ⊙**दार** = वि० अड़ियल, रुकनेवाला। मतवाला।

अडग(प)—वि० दे० 'अडिग' ।

अड़चन, अड़लत्तन—स्त्री० रुकावट, कठिनाई ।

अड़तल—पुं० ओट शरण । बहाना, हीला ।

अड़तालीस—वि० चालीस और आठ, ४८ ।

अड़तीस—वि० तीस और आठ ३८ ।

अड़ना—अक० रुकना, ठहरना । हठ करना ।

अड़बंग(प)—वि० टेढ़ामेढ़ा, ऊँचा नीचा कठिन, दुर्गम । अनोखा ।

अड़बंध—वि० मृतक को पहनाया जानेवाला लँगोट ।

अडर(प)—वि० निडर, निर्भय ।

अड़सठ—वि० साठ और आठ ६८ ।

अड़हुल—पुं० बिना महक का एक बड़ा लाल फूल, जवापुष्प ।

अड़ान—पुं० रुकने की जगह । पड़ाव ।

अड़ाना—सक० [अक० अड़ना] अटकाना, फँसाना । डाट लगाना । ठूँसना, भरना ।

अड़ायतो—वि० ओट या आड़ करनेवाला ।

अड़ार—पुं० ढेर, राशि । ईंधन का ढेर । ईंधन की दूकान । वि० तिरछा । **अड़ारना**—सक० डालना, देना । 'पाट सुनत धनि आप बिसारैं । चित्त लखै, तनु ग्राई अड़ारै' (पदमा०) ।

अडिग—वि० अपनी जगह से न हिलनेवाला । दृढ़ ।

अड़ियल—वि० चलते चलते रुक जानेवाला । हठी । सुस्त ।

अड़िया—स्त्री० साधुओं को टेक लगाकर बैठने की लकड़ी ।

अड़ी—स्त्री० हठ । रोक । जरूरत का वक्त ।

अडीठ—वि० जो दिखाई न दे । छिपा हुआ ।

अडूलना—सक० ढालना, गिराना ।

अडूसा—पुं० एक पौधा जिसके फूल और पत्ते कास, श्वास आदि की दवा है ।

अडोर—वि० दे० 'अडोल' । पुं० दे० 'अंदोर' ।

अडोल—वि० न डोलनेवाला, स्थिर । स्तब्ध ।

अड़ोस पड़ोस—पुं० आसपास का प्रदेश, मुहल्ला या बस्ती । **अड़ोसी पड़ोसी**—वि० अड़ोस पड़ोस मे रहनेवाला ।

अड्डा—पुं० ठहरने का स्थान । उठने बैठने या मिलने का खास स्थान । बदमाशों, जुआरियों आदि के मिलने बैठने की जगह । प्रधान स्थान, केंद्र । इक्कों, ताँगों, मोटरों आदि के खड़े रखने का स्थान । पिंजरे में चिड़ियों के बैठने की लकड़ी या उनके बैठने की छड़ । कबूतरों के बैठने के लिये ऊँचे बाँस पर बँधी टट्टी । जुलाहे का करघा । जाली काढ़ने का चौखटा । नेवार बुनकर लपेटने की लकड़ी ।

अढ़तिया—पुं० दे० 'आढ़तिया' ।

अढ़न(प)—स्त्री० धाक, मर्यादा ।

अढ़वना—(प)—सक० आज्ञा देना ।

अढ़ुक—पुं० ठोकर, चोट ।

अढ़ुकना—अक० ठोकर खाना । सहारा लेना ।

अढ़ैया—पुं० ढाई सेर का बाट । ढाई गुने का पहाड़ा ।

अणरत(प)—वि० अनासक्त ।

अणिमा—स्त्री० [सं०] आठ सिद्धियों में पहली सिद्धि जिसमें योगी अणुवत् सूक्ष्म होकर अदृश्य रहता है ।

अणी(प)—सर्वो० अरे, एरी ।

अणु—पुं० [सं०] सूक्ष्मतम अविभाज्य विभाजकण । ६० परमाणुओं का सघात । छोटा टुकड़ा, कण । रजकण । अत्यत सूक्ष्म मात्रा । वि० अत्यत छोटा । जो दिखाई न दे । ⊙**बम** = पुं० अणु के विस्फोट से कार्य करनेवाला एक भीषण सहारकारी बम । ⊙**वाद** = पुं० जीव को अणु माननेवाला दर्शन । वह सिद्धात जिसमें सृष्टि का आदि कारण अणु और परमाणु है । वैशेषिक दर्शन ।

अणुवीक्षण—पुं० [सं०] सूक्ष्मदर्शक यंत्र, खुर्दबीन ।
अतक (पु)—पुं० दे० 'आतंक' ।
अतंद्र—वि० तंद्रारहित । चुस्त । चौकन्ना । सावधान । **अतंद्रित**—वि० दे० 'अतंद्र' ।
अतः—क्रि० वि० इसलिये, इस वास्ते ।
अतएव—क्रि० वि० अतः, इसलिये ।
अतत्य—वि० अन्यथा, असत्य ।
अतथ्य—वि० [सं०] तथ्यहीन, असत्य, गलत ।
अतद्गुण—पुं० [सं०] एक अलंकार जिसमें अत्यंत निकट की दूसरी वस्तु का गुण ग्रहण करना न दिखाया जाय ।
अतनु—वि० [सं०] शरीररहित । पुं० कामदेव ।
अतर—पुं० इत्र, फूलों की सुगंधि का सार । ⊙**दान**=पुं० अतर रखने का पात्र ।
अतरक (पु)—वि० दे० 'अतर्क्य' ।
अतरसों—क्रि० वि० वर्तमान से पिछला चौथा दिन या आनेवाला चौथा दिन ।
अतरिख (पु)—पुं० दे० 'अंतरिक्ष' ।
अतर्कित—वि० [सं०] जिसका पहले से अनुमान न हो, बेसोचा । आकस्मिक ।
अतर्क्य—वि० [सं०] तर्क न करने योग्य, अचिंत्य ।
अतल—पुं० [सं०] सात पातालों में से एक । वि० तलहीन, अथाह । ⊙**स्पर्शी** =वि० अतल को छूनेवाला, अत्यंत गहरा । जो तलस्पर्शी न हो ।
अतलस—स्त्री० [अ०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।
अतवार—पुं० दे० 'रविवार' ।
अतसी—स्त्री० [सं०] अलसी, तीसी ।
अताई—वि० [अ०] बिना सीखे काम करनेवाला । चालाक । कुशल । पुं० गवैया जिसने नियमपूर्वक शिक्षा न पाई हो ।
अति—वि०[सं०] बहुत अधिक । स्त्री०अधिकता, सीमा का उल्लंघन । ⊙**काय** =वि० बहुत विशाल । बड़े डील डौल का । पुं० रावण का एक पुत्र । ⊙**काल**=पुं० देर । कुसमय । ⊙**कृच्छ्र**=पुं० बहुत कष्ट । एक कठिन व्रत । ⊙**कृति**=स्त्री० पच्चीस वर्णों के वृत्तों का नाम । ⊙**क्रम**, ⊙**क्रमण** =पुं० नियम,सीमा,मर्यादा, अधिकार, आदि का पालन न करना या उल्लंघन, विपरीत व्यवहार । जीतना । बिताना (समय)। ⊙**क्रांत** =वि० सीमा के बाहर गया हुआ । बीता हुआ । ⊙**गत** =(पु) वि० बहुत अधिक ।⊙**गति**=स्त्री० उत्तम गति, मोक्ष । **चार**=पुं० आगे बढ़ जाना, अतिक्रमण । किसी राशि के भोग काल को समाप्त किए बिना एक ग्रह का दूसरी राशि में चला जाना ।⊙**जगती**—स्त्री० तेरह वर्णों के वृत्तों की संज्ञा । ⊙**देश**=पुं० एक स्थान के धर्म का दूसरे स्थान पर आरोप ।निर्दिष्ट विषय के अतिरिक्त और विषयों में भी काम आनेवाला नियम । सादृश्य । ⊙**धृति**= स्त्री० उन्नीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा । ⊙**पात**=पुं० अतिक्रम, गड़बड़ी । विघ्न, हानि । ⊙**पातक**=पुं० धर्मशास्त्र में कहे गए नौ पातकों में सबसे बड़ा। ⊙**बरवै**=पुं०[हिं०]एक छंद । ⊙**बला**=स्त्री०एक प्राचीन युद्धविद्या । ओषधि का एक पौधा । ⊙ **मुक्त**= वि० जिसे मुक्ति मिल गई हो । वीतराग । ⊙**रंजन**=पुं० बढ़ा चढ़ाकर कहना, अत्युक्ति । ⊙**रंजना**=स्त्री० दे० 'अतिरंजन' । ⊙**रथी**=पुं० बहुतों से लड़नेवाला अकेला रथारोही योद्धा । ⊙**रिक्त**=वि० सिवाय, छोड़कर । अधिक, बचा हुआ । अलग, न्यारा । ⊙**रेक**=पुं० अधिकता, ज्यादती । फालतूपन । ⊙**रोग**= पुं० क्षयरोग । ⊙**वाद**=पुं० 'अति' का वाद, कठोर वचन । शेखी । ⊙**वादी**=वि० अतिवाद करनेवाला । बहुत बोलनेवाला । ⊙**वृष्टि**=स्त्री० अत्यधिक वर्षा, ६ ईतियों में से एक ।

⊙बेल—वि० बेहद, अत्यंत । ⊙व्याप्ति = स्त्री० लक्षण में लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आ जाने का दोष, किसी नियम या सिद्धांत का अनुचित विस्तार । ⊙शय = वि० बहुत, ज्यादा । ⊙शयोक्ति = स्त्री० बढ़ा चढ़ाकर कथन । इस प्रकार का एक अलंकार । ⊙शयोपमा = स्त्री० दे० 'अनन्वय' । ⊙संध = पुं० प्रतिज्ञा या आज्ञा का भंग करना । ⊙संधान = पुं० लक्ष्य से आगे पहुँचना । अतिक्रमण । विश्वासघात, धोखा । ⊙सार = पुं० आँव या दस्त का एक रोग । ⊙सै(पु) = वि० [हि०] दे० 'अतिशय' । ⊙हसित = पुं० हास के छह भेदों में से एक जिसमें हँसने-वाला ताली पीटे, बीच बीच में अस्पष्ट वचन बोले, शरीर काँपे और आँसू निकलें ।

अतिथि—पुं० [सं०] मेहमान पाहुन । सन्यासी जो किसी स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरे । अग्नि । ⊙पूजा = स्त्री० मेहमानदारी । अतिथि का स्वागत सत्कार । ⊙यज्ञ = पुं० मेहमानदारी । पंच महायज्ञों में से एक ।

अतींद्रिय—वि० [सं०] जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा न हो ।

अतीत—वि० [सं०] बीता हुआ । विरक्त । मरा हुआ । क्रि० वि० परे, बाहर । पुं० विरक्त साधु, यति । (पु)मेहमान । अतीतना(पु)—अक० बीतना । सक० छोड़ना, त्यागना ।

अतीथ(पु)—पुं० दे० 'अतिथि' ।

अतीव—वि० [सं०] बहुत, अत्यंत ।

अतुराई(पु)—स्त्री० आतुरता । चंचलता ।

अतुराना(पु)—अक० आतुर होना, जल्दी मचाना । 'सूरदास प्रभु वचन सुनत हनुमंत चल्यौ अतुराई' (सूर०) ।

अतुल—वि० [सं०] जिसकी तुलना, तौल या अंदाज न हो सके । बहुत अधिक । बेजोड़ । ⊙नीय = वि० बेजोड़ । बहुत अधिक । अतुलित—वि० बिना तौला हुआ । बेअंदाज, बहुत अधिक । बेजोड़ । अतुल्य—वि० [सं०] असदृश, बेजोड़ । —योगिता = स्त्री० एक अलंकार जहाँ तुल्ययोगिता की संभावना दिखाई देने पर भी किसी अभीष्ट वस्तु का विरुद्ध गुण बतलाकर उसकी विलक्षणता दिखाई जाय ।

अतूप(पु)—वि० अपूर्व ।

अतूल(पु)—वि० दे० 'अतुल' ।

अतृप्त—वि० [सं०] जो तृप्त या संतुष्ट न हो । भूखा ।

अतोर(पु)—वि० जो न टूटे, दृढ़ ।

अतोल, अतौल—वि० बिना तौला या अंदाज किया हुआ । बहुत अधिक । बेजोड़ ।

अत्त(पु)†—स्त्री० अति, ज्यादती ।

अत्तार—पुं० [अ०] इत्र या तेल बेचने-वाला । यूनानी दवा बनाने और बेचनेवाला ।

अत्ति(पु)†—स्त्री० दे० 'अत्त' ।

अत्यंत—वि० [सं०] बहुत अधिक, हद से ज्यादा । अत्यंतातिशयोक्ति—स्त्री० अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण से पहले कार्य होना दिखाया जाता है ।

अत्यंताभाव—पुं० किसी वस्तु का बिलकुल न होना । वैशेषिक के पाँच अभावों में से एक, जो तीनों कालों में संभव न हो, जैसे, आकाशकुसुम । अत्यंतिक—वि० बहुत समीप का । बहुत घूमनेवाला ।

अत्यय—पुं० [सं०] बीतना । मृत्यु, नाश । हद से बाहर जाना । कष्ट । दोष ।

अत्यष्टि—स्त्री० [सं०] १७ वर्ण के वृत्तों की संज्ञा ।

अत्याचार—पुं० [सं०] अन्याय, जुल्म । दुराचार । ढोंग । अत्याचारी—वि० अत्याचार करनेवाला ।

अत्युक्त—वि० [सं०] जो बहुत बढ़ा चढ़ा-कर कहा गया हो । अत्युक्ति—स्त्री० बढ़ा चढ़ाकर कही गई बात या वैसी शैली । अलंकार जिसमें शूरता,

उदारता आदि गुणो का अद्भुत और अतथ्य वर्णन हो ।
अत्र—क्रि० वि० [सं०] यहाँ, इस स्थान पर । (पु) पुं० [हिं०] अस्त्र । ⊙**भवान्** = पुं० माननीय, श्रेष्ठ ।
अत्रि—पुं० [सं०] अनेक वेदमत्रो के द्रष्टा, ब्रह्मा के मानसपुत्र और एक प्रजापति । सप्तर्षिमडल का एक तारा ।
अत्रैगुण्य—पुं० [सं०] सत्, रज, तम, इन तीनो गुणो का अभाव ।
अथ—अव्य० [सं०] आरभ का सूचक एक मागलिक शब्द । अव, अनतर, तव । ⊙**च** = अव्य० और, और भी ।
अथक—वि० जो न थके ।
अथरा—पुं० [अल्पा० स्त्री० अथरी] मिट्टी का खुले मुंह का चौडा वरतन ।
अथर्व, अथर्वन्—पुं० [स०] चौथा वेद और उसके मत्रद्रष्टा महर्षि अथर्वन् या अगिरा । **अथर्वनी**—पुं० यज्ञ करानेवाला पुरोहित ।
अथवना(पु)—अक० अस्त होना, डूबना । '… आंगन अथयौ भानु' (बिहारी० ६२५) ।
अथवा—अव्य० [सं०] या, वा ।
अथाई—स्त्री० बैठक, चौपाल । 'कहै पदमाकर अथाइन को तजि-तजि … गयौ' (जगद्विनोद २३७) । गाँववालो के मिल बैठने का स्थान । गोष्ठी, मडली ।
अथाग(पु)—वि० दे० 'अथाह' ।
अथान, अथाना—पुं० अचार ।
अथाना—अक० दे० 'अथवना' । थाह लेना, गहराई नापना । खोजना ।
अथावती—(पु) वि० डूबा हुआ, अस्त ।
अथाह—वि० जिसकी थाह न हो, बहुत गहरा । बेअदाज, वहुत अधिक । कठिन, गूढ । पुं० समुद्र ।
अथिर(पु)—वि० अस्थिर । क्षणस्थायी, न टिकनेवाला ।
अथोर(पु)—वि० कम नही, वहुत ।
अदंक(पु)—पुं० आतक, भय ।
अदड—वि० [सं०] सजा से वरी । महसूल या कर से वरी । निर्द्वंद्व, निर्भय । ⊙**नीय** = वि० दड न पाने योग्य या उससे मुक्त । ⊙**मान**(पु) = वि० दे० 'अदडनीय' ।
अदड्य—वि० [स०] दे० 'अदडनीय' ।
अदत—वि० [सं०] जिसके दाँत न हो । जिसके दाँत न निकले हो, वहुत कम अवस्था का ।
अदंद—वि० द्वद्वहीन, शात । अकेला ।
अदभ—वि० [स०] दभरहित । सच्चा । निश्छल । अकृत्रिम । पुं० शिव ।
अदग—वि० निष्कलक । निर्दोष । अछूता, वचा हुआ ।
अदत्त—वि० [स०] न दिया हुआ । अनुचित ढग से दिया हुआ । विवाह मे न दिया हुआ । जिसने कुछ न दिया हो । **अदत्ता**—स्त्री० अविवाहिता कन्या ।
अदद—पुं० [अ०] सख्या, गिनती । सख्या का चिह्न ।
अदन—पुं० [सं०] भक्षण । पुं० [अ०] स्वर्ग का उपवन जहाँ ईश्वर ने आदम को वनाकर रखा था ।
अदना—वि० [अ०] तुच्छ, नीच । सामान्य ।
अदब—पुं० [अ०] वडो का आदर ।
अदबदाकर—क्रि० वि० हठ करके, जान बूझकर, जरूर ।
अदभ्र—वि० [स०] वहुत । अपार ।
अदम—पुं० [अ०] अभाव । परलोक । ⊙**पैरवी** = मुकदमे मे जरूरी पैरवी का अभाव ।
अदम्य—वि० [स०] जिसका दमन न हो सके । अजेय, प्रवल ।
अदय—वि० [सं०] दयारहित (कार्य) । निष्ठुर (व्यक्ति) । **अदया**—स्त्री० क्रोध ।
अदरक—पुं० एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी गाँठ औषध और चटनी आदि मे काम आती है ।
अदरा—पुं० दे० 'आर्द्रा' ।
अदराना—अक० बहुत आदर पूछ से शेखी करना, इतराना । सक० बहुत आदर पूछ से शेखी पर चढाना ।

अदर्शन—पुं० [सं०] दिखाई न देना। लोप, नाश। ⊙नीय—वि० दर्शन के अयोग्य, बुरा, भद्दा।

अदल—पुं० [अ०] न्याय, इंसाफ। वि० [सं०] बिना पत्ते का। बिना फौज का।

अदल बदल—पुं० [हिं०] हेरफेर, परिवर्तन।

अदली(पु)—वि० न्यायी, इंसाफ करनेवाला।

अदवान—स्त्री० चारपाई के पैताने की रस्सी।

अदांत—वि० बिना दांत का (पशु)।

अदांत—वि० [सं०] जिसका दमन न किया गया हो। जो इंद्रियों का दमन न कर सके, विषयों में आसक्त। उद्दंड।

अदा—वि० [अ०] चुकता, दिया हुआ। स्त्री० हाव भाव, मोहक चेष्टा। ढंग, अंदाज। ⊙ई(पु) = वि० चालबाज। ⊙यगी = स्त्री० [फा०] ऋण, धन आदि चुकाने या देने की क्रिया।

अदाग,(पु)**अदागी**(पु)—वि० बेदाग, निर्मल।

अदाता—वि० [सं०] न देनेवाला, कंजूस।

अदान(पु)—वि० न देनेवाला, कजूस। नादान, नासमझ। **अदानी**(पु)—वि० [सं०] कंजूस।

अदायाँ—वि० जो दायाँ या अनुकूल न हो, प्रतिकूल, बुरा।

अदाया(पु)—स्त्री० निर्दयता।

अदालत—स्त्री० [अ०] न्यायालय, कचहरी।

अदालती—वि० [हिं०] अदालत संबंधी। मुकदमा लड़नेवाला।

अदाँव—पुं० बुरा दाँव कठिनाई।

अदावत—स्त्री० [अ०] शत्रुता, विरोध। **अदावती**—वि० [हिं०] जो अदावत रखे। द्वेष से किया जानेवाला।

अदाह(पु)—स्त्री० अदा, हाव भाव।

अदित(पु)—पुं० दे० 'आदित्य'।

अदिति—स्त्री० [सं०] दक्ष की पुत्री और देवताओं की माता। प्रकृति। पृथ्वी। अंतरिक्ष। ⊙सुत = पुं० देवता। सूर्य।

अदिन—पुं० [सं०] बुरा दिन, संकट का समय। दुर्भाग्य।

अदिव्य—वि० [सं०] लौकिक, सामान्य। स्थूल। ⊙नायक = पुं० मनुष्य नायक।

अदिष्ट(पु)—वि०, पुं० दे० 'अदृष्ट'।

अदिष्टी(पु)—वि० अदूरदर्शी। अभागा।

अदीठ(पु)—वि० न देखा हुआ, गुप्त। **अदीठि**—स्त्री० बुरी नजर।

अदीन—वि० [सं०] दीनतारहित। उग्र। निडर। उदार।

अदीयमान—वि० [सं०] जो न दिया जाय।

अदीह(पु)—वि० जो बड़ा न हो, छोटा।

अदुंद(पु)—वि० निर्द्वंद्व। निश्चिंत। बेजोड़, अद्वितीय।

अदुतिय(पु)—वि० दे० 'अद्वितीय'।

अदूजा(पु)—वि० दे० 'अद्वितीय'।

अदूरदर्शी—वि० [सं०] दूर तक न सोचनेवाला, परिणाम का विचार न करनेवाला। नासमझ।

अदूषण—वि० [सं०] दूषणरहित, बेऐब, शुद्ध।

अदूषित—वि० [सं०] निर्दोष, शुद्ध।

अदृश्य—वि० [सं०] जो दिखाई न दे। लुप्त, गायब।

अदृष्ट—वि० [सं०] न देखा हुआ। अज्ञात, जिसका अनुभव न हुआ हो। गायब। पुं० भाग्य, किस्मत। ⊙पूर्व = वि० जो पहले न देखा गया हो। अद्भुत। ⊙वाद = पुं० परलोक आदि परोक्ष बातों पर विश्वास का सिद्धांत। **अदृष्टार्थ**—पुं० [सं०] शब्द प्रमाण जिसका अर्थ प्रत्यक्ष इंद्रियगोचर न हो, जैसे, स्वर्ग, परमात्मा।

अदेख(पु)—वि० अदृश्य, गुप्त। **अदेखी**—वि० दूसरे का उत्कर्ष न देख सकनेवाला, डाही।

अदेय—वि० न देने योग्य। जिसे देने को बाध्य न किया जा सके।

अदेस(पु)—पुं० आदेश। प्रणाम।
अदेह—वि० [सं०] विना शरीर का। पुं० कामदेव।
अदोख(पु)—वि० दे० 'अदोष'।
अदोखिल(पु)—वि० निर्दोष।
अदोष—वि० (वै० हिं० अदोस) निर्दोष। पापरहित।
अदौरी†—स्त्री० उर्द की सुखाई हुई बरी।
अद्ध(पु)—वि० दे० 'अर्द्ध'।
अद्धरज(पु)—पुं० दे० 'अध्वर्यु'।
अद्धा—पुं० आधा परिमाण। आधे नाप की वोतल। घटे के मध्य मे वजनेवाला घटा।
अद्धी—स्त्री० दमडी का आधा, पैसे का सोलहवाँ भाग। एक वढिया वारीक कपडा।
अद्भुत—वि० [सं०] विचित्र, अनोखा, अलौकिक। पुं० काव्य के नौ रसो मे से एक जिसका स्थायीभाव विस्मय है। अद्भुतोपमा—स्त्री० उपमा अलकार का एक भेद जिसमे उपमेय के ऐमे गुणो का उल्लेख हो जिनका होना उपमान मे कभी सभव न हो।
अद्य—क्रि० वि० [सं०] आज। अभी, अब। ⊙तन=वि० आज का, वर्तमान। इस समय तक का, आज तक का। ⊙तनीय=वि० दे० 'अद्यतन'। अद्यापि—क्रि० वि० आज भी, आज तक। अद्यावधि—क्रि० वि० इस अवधि तक, अब तक।
अद्रव—वि० [सं०] जो पतला (द्रव) न हो, गाढा, ठोस।
अद्रा(पु)—स्त्री० दे० 'आर्द्रा'।
अद्रि—पुं० [सं०] पर्वत, पहाड। ⊙तनया=स्त्री० पार्वती। गगा। २३ वर्णो का एक वृत्त। ⊙पति=हिमालय।
अद्वितीय—वि० [सं०] जिसके समान दूसरा न हो, वेजोड। अकेला। मुख्य। विलक्षण।
अद्वैत—वि० [सं०] अकेला। बेजोड। पुं० (एक मात्र) ब्रह्म, ईश्वर। ⊙वाद=पुं० चैतन्य या ब्रह्म के अतिरिक्त किसी दूसरी वस्तु या तत्व की वास्तविक सत्ता न मानने का सिद्धात। ⊙वादी=वि० अद्वैतवाद को माननेवाला।
अध—(अधस्) (अधो–समस्त पद मे सधि-प्रभावित 'अधस्' का रूप) अव्य० [सं०] नीचे, तले। क्रि० वि० नीचे, नीचे की ओर। ⊙पतन, ⊙पात=पुं० नीचे गिरना। अवनति। दुर्दशा।
अध(पु)—अव्य० दे० 'अध'। ऊरध=क्रि० वि० नीचे ऊपर। सर्वत्र। वि० (के० समा०) आधा, जैसे, अधखिला, अधजला आदि। ⊙कचरा=वि० अपूर्ण, अधूरा। जिसने पूरी तरह न सीखा हो। आधा कुटा या पिसा। ⊙कपारी=स्त्री० आधे सिर का दर्द। ⊙करी=स्त्री० मालगुजारी, किराए आदि की नियत समय पर देने की आधी रकम। ⊙कहा=वि० पुं० आधा या अस्पष्ट कहा हुआ। ⊙खिला=वि० कुछ कुछ या थोड़ा खिला हुआ, ⊙गति=स्त्री० दे० 'अधोगति'। ⊙घट(पु)=वि० पूरा न घटनेवाला, अर्थ निकालने मे कठिन। ⊙जर=वि० आधा जला हुआ। ⊙जल=वि० आधा भरा हुआ। ⊙फर=पुं० वीच का भाग, अतरिक्ष। ⊙वर=पुं० आधा रास्ता। वीच। ⊙वुध=अधूरे ज्ञानवाला। ⊙वैसू=वि० स्त्री० अधेड, ढलती उम्र की। ⊙मरा=वि० आधा मरा हुआ, लगभग मरा हुआ। ⊙मुआ=वि० दे० 'अधमरा'। ⊙मुख=क्रि० मुँह के वल, उलटा। ⊙वार=वि० आधे का हिस्सेदार। ⊙सेरा=पुं० आधे सेर या दो पाव का वाट।
अधडी(पु)—वि० स्त्री० अधर मे स्थित। ऊटपटाँग, असंबद्ध।
अधन(पु)—वि० निर्धन, कंगाल।

अधनिया—वि० आध आने या दो पैसे मे मिलनेवाला।

अधन्ना—पुं० [स्त्री० अधन्नी] आधे आने का सिक्का।

अधम—वि० [सं०] नीच, बुरा, दुष्ट, पापी। ⊙ई (पु)=स्त्री [हि०] अधमता, नीचता।

अधमा—स्त्री० [सं०] नीच या दुष्ट स्त्री। ⊙दूती = स्त्री० कटु बातें कहकर नायक या नायिका का संदेश एक दूसरे को पहुँचानेवाली दूती। ⊙नायिका = स्त्री० अनुकूल पति या नायक से भी दुर्व्यवहार करनेवाली नायिका।

अधर—पुं० [सं०] नीचे का ओठ। ओठ। पुं० [हि०] बिना आधार का स्थान, अंतरिक्ष। पाताल। वि० जो पकड़ मे न आए। नीच, बुरा। ⊙पान = पुं० [सं०] ओठों का चुंबन। ⊙बुधि = स्त्री० [हि०] तुच्छ बुद्धि। अस्थिर बुद्धि। मु०~में झूलना,~मे पड़ना, ~में लटकना = पूरा न होना। दुविधा मे पड़ना।

अधरज—पुं० ओठों की लालिमा। ओठों पर पान या मिस्सी की लकीर।

अधरम(पु)—पुं० दे० 'अधर्म'।

अधरा(पु)—पुं० अधर, ओठ।

अधराधर—पुं० [सं०] नीचे का ओठ।

अधरोष्ठ, अधरौष्ठ—पुं० [सं०] नीचे का ओठ। नीचे और ऊपर के ओठ।

अधर्म—पुं० [सं०] धर्म के विरुद्ध कार्य, पाप। दुष्कर्म। अन्याय।

अधर्मी—वि० [सं०] अधर्म करनेवाला।

अधवा—स्त्री० [सं०] पतिविहीन स्त्री, विधवा।

अधस्—अव्य० [सं०] दे० 'अध'। ⊙तल = पुं० नीचे की तह। नीचे का कमरा। तहखाना। ⊙तात् = क्रि० वि० नीचे। नीचे की ओर।

अधाधुध—क्रि० वि० दे० 'अधाधुध'।

अधार—पुं० दे 'आधार'। **अधारी**—स्त्री० सहारे की चीज। साधुओं का बाँहों के नीचे रखने का एक काठ का ढाँचा। यात्रा का थैला। वि० स्त्री० सहारा देनेवाली।

अधार्मिक—वि० [सं०] जो धार्मिक न हो, पापी, दुराचारी।

अधि—उप०[सं०] (शब्दो के पूर्व लगाया जानेवाला) जिसके प्रधान अर्थ ये हैं—(१) ऊपर, जैसे, अधिराज, अधीश्वर। (२) प्रधान, जैसे, अधिपति। (३) अधिक, जैसे, अधिमास। (४) संबंध मे, जैसे, अधिदैवत। (५) आधार, जैसे, अधिकरण, अधिष्ठान। ⊙करण = पुं० आधार, सहारा। व्याकरण मे क्रिया का आधार, सातवाँ कारक। प्रकरण, अध्याय। आधार विषय, जैसे, ज्ञान का अधिकरण आत्मा (दर्शन)। अधिकार, हक। ⊙कार = पुं० स्वामित्व, प्रभुत्व। हक, अख्तियार। वश। कब्जा, प्राप्त। क्षमता, शक्ति। हुकूमत। पद, योग्यता, लियाकत। प्रकरण। रूपक के प्रधान फल को प्राप्त करने की योग्यता (नाट्यशास्त्र)। ⊙कारी = पुं० [स्त्री०] अधिकारिणी। अधिकार रखनेवाला व्यक्ति। हकदार। मालिक। अफसर। शासक। ⊙कृत = वि० अधिकार, कब्जे या शासन मे आया हुआ। प्रामाणिक। ⊙क्रम = पुं० आरोहण, चढाव। ⊙गत = वि० पाया हुआ। जाना हुआ। ⊙गम = पुं० पहुँच। ज्ञान, अध्ययन। लाभ। ⊙त्यका = स्त्री० पहाड के ऊपर की समतल भूमि। ⊙देव = पुं० [स्त्री० अधिदेवी] इष्टदेव, कुलदेव। परमात्मा। ⊙दैव, ⊙दैवत = पुं० दे० 'अधिदेव'। वि० देवतासंबंधी। ⊙दैविक = वि० आध्यात्मिक। ⊙नायक = पुं० मुखिया, नेता। परम स्वतंत्र शासक। ⊙नायकतंत्र = पुं० एक अधिनायक या व्यक्ति समूह का परम स्वतंत्र या अनियंत्रित शासन। ⊙प = स्वामी मुखिया, सर्दार। राजा। ⊙पति =

दे॰ 'अधिप'। ⊙भौतिक = [हिं॰] दे॰ 'अधिभौतिक'। ⊙मास = पुं॰ दे॰ 'अधिक मास'। ⊙रथ = पुं॰ रथ पर चढ़ा हुआ सारथी। ⊙राज = पुं॰ महाराज, बादशाह। ⊙रोहण = पुं॰ चढ़ना, सवार होना। ⊙वर्ष = पुं॰ अधिक मासवाला या लौंद का वर्ष। ⊙वास = पुं॰ रहने की जगह, बस्ती। स्थायी निवास। खुशबू। उबटन। ⊙वासी = पुं॰ निवासी। स्थायी निवासी। ⊙वेशन = पुं॰ सभा आदि की बैठक, जलसा। ⊙ष्ठाता = पुं॰ [स्त्री॰ अधिष्ठात्री] अध्यक्ष, प्रधान। व्यक्ति जिस पर कार्य की जिम्मेदारी या देखभाल हो। ईश्वर। ⊙ष्ठान = पुं॰ वासस्थान। बस्ती, नगर। आधार, सहारा। पड़ाव, मुकाम। वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो (दर्शन)। शासन। ⊙ष्ठित = वि॰ ठहरा हुआ, बसा हुआ। बैठा हुआ। नियुक्त, निर्वाचित। देखभाल किया हुआ।

अधिक—वि॰ [सं॰] बहुत, ज्यादा। बचा हुआ, फालतू। पुं॰ अलंकार जिसमें आधेय का आधार से अधिक वर्णन होता है। ⊙तर = वि॰ और अधिक, तुलना में ज्यादा। क्रि॰ वि॰ ज्यादातर, प्रायः। ⊙ता = स्त्री॰ बहुतायत, बढ़ती, विशेषता। ⊙मास = पुं॰ मलमास लौंद का महीना। शुक्ल प्रतिपदा से अमावस्या तक का काल जिसमें संक्रांति न पड़े।

अधिकांग—वि॰ [सं॰] अतिरिक्त अवयव। वि॰ अतिरिक्त अवयववाला।

अधिकांश—पुं॰ [सं॰] अधिक भाग, ज्यादा हिस्सा। वि॰ बहुत। अधिकतर। क्रि॰ वि॰ ज्यादातर, अकसर।

अधिकाई (पु)—स्त्री॰ ज्यादती, बहुतायत। बड़ाई। महिमा।

अधिकाना (पु)—अक॰ ज्यादा होना, बढ़ना।

अधिकौंहाँ (पु)—वि॰ निरंतर बढ़ता रहनेवाला।

अधिया—स्त्री॰ आधा हिस्सा। जोत बोनेवाले और मालिक के बीच उपज के आधे की साझेदारी। पुं॰ आधे का हिस्सेदार। **अधियार**—पुं॰ आधे का मालिक। जायदाद में आधा हिस्सा। गाँव के हिस्से या जोत में आधे का हकदार।

अधियाना—सक॰ दो आधे हिस्सों में बाँट देना। अक॰ आधा होना।

अधीत—वि॰ [सं॰] पढ़ा हुआ।

अधीति—स्त्री॰ [सं॰] पठन, अध्ययन।

अधीन—वि॰ [सं॰] आश्रित, मातहत। काबू या वश का। लाचार, दीन। ⊙ता = स्त्री॰ मातहती। बेबसी। दीनता। **अधीनना**—अक॰ अधीन होना। सक॰ किसी को अपने अधीन करना।

अधीर—वि॰ [सं॰] धैर्यरहित, उतावला। बेचैन, घबराया हुआ। संतोषरहित।

अधीरज—पुं॰ धैर्यहीनता, उतावली। व्याकुलता।

अधीरा—वि॰ स्त्री॰ [सं॰] धैर्य न धरनेवाली। स्त्री॰ नायिका जो नायक में अन्य स्त्री के साथ के विलास चिह्न देखकर अधीरता से कुपित हो।

अधीश, अधीश्वर—पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ अधीश्वरी] स्वामी, राजा।

अधुना—क्रि॰ वि॰ [सं॰] अब, आजकल, इन दिनों। ⊙तन = वर्तमान समय या हाल का।

अधूत—पुं॰ [सं॰] अकंपित। निडर, ढीठ।

अधूरा—वि॰ जो पूरा न हो, आधा। असमाप्त।

अधेड़—वि॰ ढलती जवानी का, बुढ़ापे और जवानी के बीच का।

अधेला—पुं॰ आधा पैसा (एक सिक्का)।

अधेली—स्त्री॰ आधा रुपया, आठ आने का सिक्का।

अधैर्य—पुं॰ [सं॰] धैर्य का अभाव, अधीरज।

अधो—अव्य [सं॰] दे॰ 'अधः'। ⊙गति = स्त्री॰ पतन, गिराव, नीचे की

गति । अवगति, दुर्दशा । ⊙गमन = पुं० नीचे जाना, अवनति, दुर्दशा । ⊙गामी = वि० नीचे जानेवाला, बुरी दशा को पहुँचनेवाला । ⊙मार्ग = नीचे का या सुरग का रास्ता । गुदा । ⊙मुख = वि० नीचे मुख किए हुए । औंधा, उलटा । क्रि० वि० मुँह के बल, औंधा । ⊙र्द्ध = क्रि० वि० [हिं०] ऊपर नीचे, तले ऊपर । ⊙लंब = पुं० आडी रेखा पर समकोण बनाती हुई गिरनेवाली खडी रेखा । ⊙लोक = पुं० पाताल लोक । (पु) वायु = गुदा की वायु, पाद ।

अधोरध(पु)—क्रि० वि० ऊपर नीचे ।

अध्मान—पुं० [सं०] पेट अफरने का रोग ।

अध्यक्ष—पुं० [सं०] प्रधान, मुखिया । देखभाल करनेवाला । मुख्य अधिकारी, अफसर ।

अध्यच्छ(पु)—पुं० दे० 'अध्यक्ष' ।

अध्ययन—पुं० [सं०] पठन, पढाई ।

अध्यवसाय—पुं० [सं०] लगातार या दृढतापूर्वक काम मे लगा रहना । उत्साह । अध्यवसायी—वि० अध्यवसाय करनेवाला । उत्साही ।

अध्यस्त—वि० [सं०] ऊपर रखा हुआ । जिसका आरोप भ्रमपूर्ण हो ।

अध्यात्म—पुं० ब्रह्मविचार, आत्मज्ञान । वि० आत्मा या परमात्मा से सबधित ।

अध्यापक—पुं० [सं०] पढानेवाला, गुरु ।

अध्यापकी—स्त्री० [हिं०] अध्यापक का कार्य ।

अध्यापन—पुं० [सं०] दे० 'अध्यापकी' ।

अध्याय—पुं० [सं०] ग्रथ विभाग, परिच्छेद । पढना ।

अध्यारोप—पुं० [सं०] एक के व्यापार को दूसरे मे लगाना । अन्य मे अन्य वस्तु का भ्रम (वेदात) ।

अध्यास—पुं० [सं०] मिथ्याज्ञान, और मे और वस्तु की धारणा ।

अध्याहार—पुं० [सं०] वहस । वाक्य को पूरा करने के लिये उसमे ऊपर से कुछ शब्द और जोडना । अस्पष्ट वाक्य को दूसरे शब्दो मे स्पष्ट करने की क्रिया ।

अध्युषित—वि० [सं०] बसा हुआ । कब्जा किया हुआ ।

अध्यूढा—स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले ।

अध्येता—वि० [सं०] अध्ययन करनेवाला ।

अध्येय—वि० [सं०] अध्ययन या पढने के योग्य ।

अध्रुव—वि० [सं०] अस्थिर, चचल । अनिश्चित ।

अध्व—पुं० [सं०] पथ, राह । ⊙ग = पुं० यात्री । ⊙गा = स्त्री० गगा ।

अध्वर—पुं० यज्ञ । ⊙र्यु = पुं० यज्ञ मे यजुर्वेद का मत्र पढनेवाला ब्राह्मण ।

अन्—अव्य० [सं०] अभाव या निषेधसूचक अव्यय (स्वर से आरभ होनेवाले शब्दो के पूर्व लगनेवाला, जैसे, अनत, अनधिकार आदि) ।

अनंग—वि० [सं०] विना देह का । पुं० कामदेव । ⊙वती = स्त्री० कामवती, कामिनी । ⊙क्रीडा = स्त्री० रति, स्त्री-सभोग । छद शास्त्र मे मुक्तक नामक विषम वृत्त का एक भेद । ⊙शेखर = पुं० दडक नामक वर्ण वृत्त का एक भेद जिसमे ३२ वर्ण होते हैं और लघु गुरु का कोई क्रम नही होता । अनगना(पु)—अक० [हिं०] वेसुध होना, विदेह होना । 'जाको निरखि अनग अनगत ताहि अनग वढावै' (सूर०) । **अनंगारि**—पुं० [सं०] काम के वैरी, शिव ।

अनंगी—वि० [सं०] विना अग का । पुं० कामदेव । ईश्वर ।

अनंत—वि० [सं०] जिसका अत या पार न हो । बहुत अधिक । अविनाशी ।

पुं० विष्णु। शेषनाग। लक्ष्मण। बलराम। आकाश। बाहु का एक गहना। अनंत चतुर्दशी के व्रत में बाहु में पहनने का एक गंडा। ⊙चतुर्दशी = स्त्री० भाद्र शुक्ल चतुर्दशी। ⊙मूल = पुं० रक्त शुद्ध करने में प्रयुक्त एक पौधा या बेल। ⊙वीर्य = वि० अपार पौरुषवाला।

अनंतर—क्रि० वि० [सं०] बाद, पीछे। लगातार। वि० अंतररहित, निकट का।

अनंता—वि० स्त्री० [सं०] अंत या सीमारहित। स्त्री० पृथ्वी। पार्वती। अनंतमूल। दूब।

अनंद—पुं० [सं०] १४ वर्णों का एक वृत्त। **अनंदना**—अक० अनंदित होना। **अनंदी**—वि० दे० 'आनंदी'।

अनंभ—वि० [सं०] बिना पानी का। (पु) बाधारहित।

अनंश—वि० [सं०] जो पैतृक संपत्ति पाने का अधिकारी न हो।

अन(पु)—वि० अन्य, दूसरा। पुं० अनाज, अन्न। अव्य० शब्द के पूर्व लगनेवाला निषेध या अभाव का सूचक, जैसे, अनहोनी, अनगिनती आदि। ⊙**ही** (पु) = क्रि० वि० बिना, बगैर। ⊙**अहिवात** = पुं० वैधव्य। ⊙**ऋतु** = स्त्री० बेमौसम। ऋतु के विरुद्ध कार्य। ⊙**कहा** = वि० पुं० बिना कहा हुआ। जो किसी का कहना न माने। ⊙**गढ़** = वि० बिना गढ़ा हुआ। (पु) जिसे किसी ने न बनाया हो, स्वयंभू। बेडौल, बेढंगा। उजड्ड। बेतुका, अंडबंड। ⊙**गन** (पु) = वि० अगणित, बहुत। ⊙**गना** = वि० दे० 'अनगन'। पुं० गर्भ का आठवाँ महीना। ⊙**गवना** = अक० जान बूझकर देर करना। 'मुँह धोवति, एड़ी घसति, हँसति, अनगवति तीर' (बिहारी० ६९७)। ⊙**गाना** = अक० दे० 'अनगवना'। ⊙**गिन**, ⊙**गिनत** = वि० जिसकी गिनती न हो, बहुत। ⊙**गिना** = वि० सं० जो गिना न गया हो। दे० 'अनगिनत'। ⊙**गैरी** = वि० गैर, अपरिचित। ⊙**घरी** (पु) = स्त्री० कुसमय, बेवक्त। ⊙**घेरी** (पु) = वि० बिना बुलाया हुआ। ⊙**घोर** (पु) = पुं० अत्याचार, ज्यादती। ⊙**घोरी** = क्रि० वि० चुपचाप। अचानक। ⊙**चहा** (पु) = वि० न चाहा हुआ, अप्रिय। ⊙**चाहत** (पु) = वि० न चाहनेवाला, प्रेमहीन। ⊙**चाहा** = वि० जिसकी इच्छा न की जाय। ⊙**चीती** = क्रि० वि० बिना विचार किए। अचानक। ⊙**चीन्हा** (पु)† = वि० अपरिचित, न पहचाना हुआ। ⊙**चैन** = पुं० बेचैनी। ⊙**जनमा** = वि० जिसका जन्म न हुआ हो (ईश्वर)। ⊙**जान** = वि० अज्ञानी, नासमझ। अपरिचित। ⊙**डीठ** (पु)—वि० बिना देखा हुआ। ⊙**पच** = पुं० बदहजमी, अजीर्ण। ⊙**पढ़** = वि० = बेपढ़ा, गँवार। ⊙**पत** (पु) = पत से हीन। ⊙**फाँस** (पु) = स्त्री० मोक्ष। ⊙**बन** = स्त्री० विरोध, झगड़ा। ⊙**बिधा** = वि० बिना बिधा या छेद किया हुआ। ⊙**बूझ** = वि० नासमझ। जो बूझा या समझा न जा सके। ⊙**बेधा** = वि० दे० 'अनबिधा'। ⊙**बोल** = वि० न बोलनेवाला। मौन। गूँगा जो अपने सुख दुख को न कह सके। ⊙**बोलता** = वि० न बोलनेवाला बेजबान (पशु)। ⊙**बोला** = वि[illegible] बोलचाल की बंदी। दे० 'अनबोलता'। ⊙**भल** (पु) = पुं० बुराई हानि। ⊙**भला** = वि० बुरा, खराब ⊙**भाय**, ⊙**भावता** = वि० जो [illegible] भावे, अप्रिय। ⊙**भेदी** = वि० भे[illegible] न जाननेवाला। ⊙**भो** (पु) = पु[illegible] अनहोनी बात, अचरज। वि[illegible] अद्भुत। ⊙**भोरी** (पु) = स्त्री० भुलाव चकमा। ⊙**मद** = पुं० मद [illegible] अभिमान का अभाव। वि० जि[illegible] मद न हो। ⊙**मन**, ⊙**मना** = [illegible] उदास, खिन्न। बीमार। ⊙ **मा**[illegible]

(पु) = वि० जो मापा न गया हो। न नापा जाने योग्य। ⊙मारग(पु) = पुं० बुरा मार्ग। पाप। ⊙मिल (पु) = बेमेल, बेतुका। निर्लिप्त, अलग। ⊙मिलता = वि० अलभ्य, अप्राप्य। ⊙मेल = वि० बेमेल, असबद्ध। बिना मिलावट का, शुद्ध। ⊙मोल = वि० जिसका मूल्य न हो सके, कीमती। सुंदर, उत्तम। ⊙रंग(पु) = वि० दूसरे रग का। ⊙रस(पु) = वि० रसहीनता, शुष्कता। रुखाई, कोप। अनबन। उदासी, खेद। रसहीन काव्य ⊙रसनि = स्त्री० उदासी। रोष। दुःख। ⊙रसा (पु) = वि० अनमना। बीमार। ⊙राता(पु) = वि० बिना रँगा हुआ। प्रेम मे न पडा हुआ। ⊙रीति = स्त्री० कुरीति। अनुचित व्यवहार। ⊙रुचि(पु) = स्त्री० दे० 'अरुचि'। ⊙रूप(पु) = वि० बदसूरत। असमान। ⊙लायक(पु) = वि० नालायक, अयोग्य। ⊙लेख = वि० जो दिखाई न दे। ⊙वाद = पुं० बुरा वचन, कुबोल। ⊙सखरी = स्त्री० पक्की रसोई, घी मे पका भोजन। ⊙सत्त = पुं० दे० 'असत्य'। ⊙समझा = वि० नसमझ। जो समझा या ज्ञात न हो। ⊙सहत(पु) = वि० असह्य। ⊙सहन = वि० जो सह न सके। ⊙सुनी = वि० स्त्री० न सुनी हुई। ⊙हित(पु) = पुं० अहित, हानि। अहितचिंतक, शत्रु। ⊙हितू = वि० अहित चाहनेवाला, शत्रु। ⊙होता वि० निर्धन। अनहोना, आश्चर्ययुक्त। ⊙होनी = वि० स्त्री० न होनेवाली, अचभे की। स्त्री० असभव वात, अलौकिक घटना।

[अन]इस(पु)—पुं० बुराई, अहित। जो इष्ट न हो, बुरा।

[अन]क(पु) पुं० दे० 'आनक'।

[अन]कना(पु)—सक० सुनना। छिपकर या चुपचाप सुनना।

[अन]ख—पुं० क्रोध। दुःख। ईर्ष्या। झझट। डिठौना। वि० [सं०] बिना नख का

[अन]खाना(पु)—अक० क्रोध करना। सक० नाराज करना। अनखाहट—स्त्री० अनख दिखाने की क्रिया या भाव, नाराजगी

अनखी(पु)—वि० जो जल्दी नाराज हो।

अनखौहा(पु)†—वि० पुं० अनख से भरा, रुष्ट। चिडचिडा। अनुचित।

अनघ—वि० [सं०] पापरहित। शुद्ध, पवित्र। पुं० वह जो पाप न हो, पुण्य।

अनट(पु)—पुं० अगत्य। अनीति, अत्याचार।

अनत—वि० [सं०] जो झुका न हो, सीधा। क्रि० वि० और कही, अन्यत्र।

अनति—वि० [सं०] बहुत नही, थोडा। स्त्री० नम्रता का अभाव, अहकार।

अनद्यतन—वि० [सं०] अद्यतन या आज के दिन से पहले या बाद का। पुं० अद्यतन से भिन्न काल।

अनधिकार—पुं० [सं०] अधिकार या प्रभुत्व का अभाव। बेबसी। अक्षमता, अयोग्यता। वि० अधिकाररहित। ⊙चर्चा = स्त्री० योग्यता के क्षेत्र से बाहर की बातचीत। ⊙चेष्टा = स्त्री० जिस कार्य का अधिकार न हो उसे करना। अनधिकारी—वि० जिसे अधिकार न हो। अयोग्य, अपात्र। अनधिकृत—वि० जिसपर अधिकार या शासन न किया गया हो।

अनधिगत—वि० [सं०] अप्राप्त। बिना जाना या समझा हुआ।

अनधिगम्य—वि० [सं०] अप्राप्य। जो समझ के बाहर हो।

अनध्याय—पुं० [सं०] पढाई बद रहने का दिन, छुट्टी।

अनन्नास—पुं० खटमीठे स्वाद और कडे छिलके का एक फल।

अनन्य—वि० [सं०] अन्य से संबध न रखनेवाला, एकनिष्ठ, एक ही मे लीन, जैसे, विष्णु का अनन्य भक्त। दूसरा नही, वही। अद्वितीय, बेजोड। अकेला, एकमात्र।

अनन्वय—पुं० [सं०] सबध का अभाव। काव्य मे वह अलकार जिसमे एक ही वस्तु उपमान और उपमेय कही जाय।

अनन्वित—वि० [सं०] असबद्ध, अलग। अडबड, बेतुका।

अनपत्य—वि० [सं०] सतानहीन

अनपराध—वि० [सं०] निर्दोष, बेकसूर । पुं० निर्दोषिता ।
अनपायी—वि० [सं०] [स्त्री० अनपायिनी] जिसका नाश न हो । अविकारी । अचल । स्थिर ।
अनपेक्ष—वि० [सं०] अपेक्षारहित । चाह या परवाह न रखनेवाला । निष्पक्ष । उदासीन । असबद्ध । **अनपेक्षा**—स्त्री० चाह या परवाह का अभाव । **अनपेक्षित** वि० जो अपेक्षित न हो, जिसकी चाह या परवाह न हो । **अनपेक्षी**—वि० चाह या परवाह न रखनेवाला । **अनपेक्ष्य**—वि० जो अन्य की अपेक्षा न रखे, जिसे दूसरे की परवाह न हो या दूसरे के सहारे की आवश्यकता न हो ।
अनभिज्ञ—वि० [सं०] अनजान, अनाड़ी । अपरिचित ।
अनभिप्रेत—वि० [सं०] अभिप्राय के विरुद्ध । और का और ।
अनभिमत—वि० [सं०] राय या मत के विरुद्ध । नापसंद ।
अनभीष्ट—वि० [सं०] जो अभीष्ट न हो, नापसंद ।
अनभ्यस्त—वि० [सं०] जिसका अभ्यास न किया गया हो । जिसने अभ्यास न किया हो ।
अनभ्यास—पुं० [सं०] अभ्यास का अभाव साधना की त्रुटि ।
अनभ्र—वि० [सं०] बिना बादल का स्वच्छ (आकाश) ।
अनमिख(पु)—वि०, क्रि वि० दे० 'अनिमिष'
अनमीलना(पु)—सक०, आँख खोलना ।
अनम्र—वि० [सं०] विनयरहित, उद्दंड ।
अनय—पुं० [सं०] अनीति, दुष्ट कर्म । दुर्भाग्य ।
अनयस(पु)—पुं० दे० 'अनइस' ।
अनयास(पु)—क्रि० वि० दे० 'अनायास' ।
अनरना(पु)—सक० अनादर या अपमान करना ।
अनरथ(पु)—पुं० दे० 'अनर्थ' ।
अनर्गल—वि० [सं०] बिना प्रतिबंध का, अडबंड, विचारशून्य ।
अनर्घ—वि० [सं०] बहुमूल्य । सस्ता । अनुचित मूल्य ।
अनर्घ्य—वि० [सं०] बहुमूल्य । सस्ता । अपूज्य ।
अनर्थ—पुं० [सं०] उलटा मतलब । नुकसान, अनिष्ट । ⊙क = वि० बेमतलब । बेफायदा । अनिष्ट करनेवाला । ⊙**कारी** = वि० अनर्थ करनेवाला ।
अनर्ह—वि० [सं०] अयोग्य । अनधिकारी ।
अनल—पुं० [सं०] अग्नि, आग । तीन की संख्या । ⊙**मुख** = पुं० देवता । ब्राह्मण ।
अनलस—वि० [सं०] आलस्यरहित, फुर्तीला, जागरूक ।
अनल्प—वि० [सं०] जो अल्प न हो, अधिक ।
अनवकाश—पुं० [सं०] अवकाश या फुरसत का अभाव ।
अनवगाह—वि० [सं०] अथाह, बहुत गहरा ।
अनवग्रह—वि० [सं०] जिसे पकड़ा या रोका न जा सके ।
अनवच्छिन्न—वि० [सं०] अखंडित । जुड़ा हुआ, बेरोक ।
अनवट—पुं० पैर के अँगूठे में पहनने का एक छल्ला । कोल्हू के बैल की आँखों का ढक्कन ।
अनवद्य—वि० [सं०] अनिंद्य, निर्दोष ।
अनवधान—पुं० [सं०] असावधानी, गफलत । वि० असावधान, लापरवाह ।
अनवधि—वि० [सं०] असीम, बेहद । क्रि० वि० सदैव ।
अनवय(पु)—पुं० वंश, कुल ।
अनवरत—क्रि० वि० [सं०] लगातार, निरंतर ।
अनवसर—पुं० [सं०] फुरसत का अभाव । बेमौका ।
अनवस्था—संज्ञा [सं०] अस्थिरता । अव्यवस्था । एक तर्कदोष, तर्क जिसका कुछ ओर-छोर न हो । **अनवस्थित**—वि० अस्थिर, अशांत, चंचल । बेठिकाना, निराधार । **अनवस्थिति**—स्त्री० अस्थिरता, चंचलता अनिश्चयता । अवलंब का अभाव । समाधि प्राप्त होने पर भी चित्त का स्थिर न होना (योग) ।
अनवाँसना—सक० नए बरतन को पहली बार काम में लाना ।

अनवाँसी—स्त्री० एक बिस्वे का ४८०० भाग, बिस्वांसी का बीसवाँ हिस्सा।

अनवाप्ति—स्त्री० [सं०] प्राप्ति का अभाव। न पाना।

अनशन—पुं० [सं०] आहारत्याग, उपवास। विशेष उद्देश्य से आहारत्याग।

अनश्वर—वि० [सं०] नष्ट न होनेवाला। स्थिर।

अनसाना ⓟ—अक० दे० 'अनखाना'।

अनसूया—स्त्री० [सं०] दूसरे के गुणों में दोष न खोजना। ईर्ष्या का अभाव। अत्रि मुनि की स्त्री।

अनस्तित्व—पुं० [सं०] सत्ता का अभाव, न होना।

अनहदनाद—पुं० दे० 'अनाहत नाद'।

अनाकनी ⓟ, **अनाकानी**, ⓟ—स्त्री० सुनी अनसुनी करना, टालमटोल।

अनागत—वि० [सं०] न आया हुआ, अनुपस्थित। भावी, होनहार। अज्ञात, अपरिचित। अप्राप्त। ⓟ अनादि, अजन्मा। ⓟ अद्भुत। ⓟ क्रि० वि० अचानक, सहसा।

अनागम—पुं० [सं०] न आना। अप्राप्ति।

अनाचार—पुं० [सं०] दुराचार। कुरीति। भ्रष्टता। **अनाचारी**—वि० अनाचार करनेवाला।

अनाज—पुं० अन्न, धान्य, गल्ला।

अनाड़ी—वि० नासमझ, जो निपुण या कुशल न हो।

अनातप—पुं० [सं०] धूप का अभाव, छाया। वि० ठंढा, शीतल।

अनात्म—वि० [सं०] (के० समा०) आत्मा या चैतन्य से रहित, जड़। पुं० जड़ पदार्थ।

अनाथ—वि० [सं०] बिना नाथ या मालिक का। जिसका पालन पोषण करनेवाला न हो। असहाय। दीन, मुहताज। **अनाथालय**, **अनाथाश्रम**—पुं० अनाथ बच्चों आदि को रखने का स्थान।

अनादर—पुं० [सं०] आदर का अभाव, अवज्ञा। अपमान। एक अलंकार जिसमें प्राप्त वस्तु के तुल्य दूसरी अप्राप्त वस्तु की इच्छा के द्वारा प्राप्त वस्तु का अनादर सूचित किया जाय।

अनादि—वि० [सं०] आदि या आरंभ से रहित, सदा से रहनेवाला।

अनादृत—वि० [सं०] जिसका अनादर हुआ हो।

अनाना ⓟ—सक० मँगाना।

अनाप शनाप—पुं० अंडबंड बात, बकवाद। वि० ऊटपटाँग।

अनापा ⓟ—वि० बिना नापा हुआ, असीम।

अनाप्त—वि० [सं०] अप्राप्त। अविश्वस्त। अकुशल। जो आत्मीय या बंधु न हो।

अनाम—वि० [सं०] बिना नाम का। अप्रसिद्ध।

अनामय—वि० [सं०] रोगरहित, तंदुरुस्त। पुं० तंदुरुस्ती।

अनामा—स्त्री० [सं०] बिना नाम की, अनामिका।

अनामिका—स्त्री० [सं०] सबसे छोटी उँगली के पास की उँगली।

अनायत्त—वि० [सं०] जो दूसरे के वश में न हो, स्वतंत्र।

अनायास—क्रि० वि० [सं०] बिना प्रयास के, आसानी से। अचानक।

अनार—पुं० [फा०] एक पेड़ और उसके खट्टे या मीठे दानों और कड़े छिलके का एक फल। ⊙ दाना = पुं० खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना। **अनारी**—वि० अनार के रंग का, लाल। ⓟ दे० 'अनाड़ी'।

अनार ⓟ—पुं० अन्याय।

अनार्जव—पुं० [सं०] टेढ़ापन। कपट।

अनार्तव—वि० [सं०] बिना ऋतु का। पुं० रजोधर्म की रुकावट।

अनार्य—पुं० [सं०] वह जो आर्य न हो, म्लेच्छ। वि० जो श्रेष्ठ या सभ्य न हो, नीच।

अनार्ष—वि० [सं०] जो ऋषि या वैदिक मंत्र से संबंधित न हो।

अनावश्यक—वि० [सं०] जिसकी आवश्यकता या जरूरत न हो।

अनावृत—वि० [सं०] आवरणरहित, खुला, नंगा।

अनावृष्टि—स्त्री [सं०] वर्षा का अभाव। सूखा।

अनाश्रमी—वि० [सं०] आश्रमधर्म से रहित। पतित।

अनाश्रय—वि० [सं०] बेसहारा, अनाथ।
अनाश्रित—वि० [सं०] बेसहारा। जो किसी पर आश्रित न हो। स्वतंत्र।
अनासक्त—वि० [सं०] जो आसक्त न हो, निर्लेप। **अनासक्ति**—स्त्री० आसक्ति का अभाव, निर्लिप्तता।
अनासी(पु)—वि० दे० 'अविनाशी'।
अनास्था—स्त्री० [सं०] आस्था का आभाव, अश्रद्धा। अनादर।
अनाहक—क्रि० वि० दे० 'नाहक'।
अनाहत—वि० [सं०] जिसपर आघात न हुआ हो। हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर के छह चक्रों मे से एक। ⊙**नाद** = पुं० विना आघात के उत्पन्न होनेवाली दिव्य ध्वनि जिसे हठयोगी या सिद्ध सुनते हैं।
अनाहार—पुं० [सं०] भोजन का अभाव या त्याग। वि० जिसने कुछ खाया न हो। विना आहार का (व्रत), उपवास।
अनाहूत—वि० [सं०] विना बुलाया हुआ।
अनिंद(पु)—वि० दे० 'अनिंद्य'।
अनिंदित, अनिंद्य—वि० [सं०] निंदा के अयोग्य, निर्दोष। उत्तम, प्रशंसनीय।
अनि(पु)—वि० दे० 'अन्य'।
अनिकेत—पुं० [सं०] जिसका घरबार न हो। संन्यासी।
अनिच्छ—वि० [सं०] दे० 'अनिच्छुक'।
अनिच्छा—स्त्री० इच्छा या चाह का अभाव। अरुचि। **अनिच्छित**—वि० जिसके प्रति अनिच्छा हो। **अनिच्छु, अनिच्छुक**—वि० इच्छा या चाह न रखनेवाला।
अनित्य—वि० [सं०] जो सदा न रहे। नाशवान्।
अनिद्र—वि० [सं०] निद्रारहित, जागा हुआ। पु० नींद न आने का रोग।
अनिप(पु)—पुं० सेनापति।
अनिमा(पु)—स्त्री० दे० 'अणिमा'।
अनिमिष, अनिमेष—वि० [सं०] निमेषरहित, स्थिर दृष्टि। क्रि० वि० विना पलक गिराए, एकटक।
अनियंत्रित—वि० [सं०] विना रोकटोक का, मनमाना।
अनियत—वि० [सं०] अनिश्चित। अनियमित। अस्थिर। आकस्मिक। असीम।
अनियम—पुं० [सं०] नियम का अभाव। बेक़ायदगी। अव्यवस्था। **अनियमित**—वि० विना नियम या व्यवस्था का।
अनियाउ(पु)—पुं० दे० 'अन्याय'।
अनियारा(पु)—वि० पैना, धारदार।
अनिरुद्ध—वि० [सं०] बेरोक, अबाध। पुं० श्रीकृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र।
अनिरुध(पु)—पुं० दे० 'अनिरुद्ध'।
अनिर्दिष्ट—वि० [सं०] जो बताया न गया हो। अनिश्चित। असीम।
अनिर्देश्य—वि० [सं०] जिसे बताया या समझाया न जा सके।
अनिर्वचनीय—वि० [सं०] जिसका वर्णन या कथन न हो सके।
अनिर्वाच्य—वि० [सं०] दे० 'अनिर्वचनीय'। जिसका चुनाव न हो सके।
अनिल—पुं० [सं०] वायु, हवा। ⊙**कुमार** = पुं० हनुमान्।
अनिवार—वि० दे० 'अनिवार्य'।
अनिवार्य—वि० [सं०] जिसे हटाया न जा सके, अवश्य होनेवाला। जिसके विना काम न चले।
अनिश—क्रि० वि० [सं०] निरंतर। लगातार।
अनिश्चित—वि० [सं०] जिसका निश्चय न हुआ हो, संदिग्ध।
अनिष्ट—वि० [सं०] जो इष्ट या वांछित न हो। पु० अमंगल, बुराई। ⊙**कर** = वि० अनिष्ट करनेवाला।
अनी—स्त्री० नोक, सिरा। स्त्री० समूह, झुंड। सेना। ग्लानि, खेद।
अनीक—पुं० [सं०] सेना। समूह, झुंड। युद्ध, लड़ाई। जो अच्छा न हो, बुरा।
अनीठ(पु)—वि० जो इष्ट न हो, अनिच्छित। बुरा, खराब।
अनीति—स्त्री० [सं०] अन्याय। अत्याचार।
अनीप्सित—वि० [सं०] अनिच्छित, अनचाहा, जो ईप्सित न हो।
अनीश—वि० [सं०] बिना मालिक का। जिसके ऊपर कोई न हो, सबसे श्रेष्ठ। शक्तिहीन, असमर्थ। पुं० विष्णु।

अनीश्वरवाद--पुं० [सं०] ईश्वर पर अविश्वास का सिद्धांत, नास्तिकता। मीमांसा।
अनीस(पु)--वि० अनाथ। (पु) पुं० ईश्वर से भिन्न वस्तु, जीव, माया।
अनीह--वि० [सं०] इच्छारहित, बेपरवाह। उदासीन।
अनीहा-- स्त्री० [सं०] अनिच्छा। बेपरवाही। उदासीनता।
अनु-- (पु) पुं० दे० 'अणु'। (पु) अव्य० हाँ, ठीक। उप० [सं०] शब्दों के पूर्व लगकर इन मुख्य अर्थों में प्रयुक्त--(१) पीछे, जैसे, अनुगामी। (२) सदृश, जैसे, अनुरूप। (३) साथ, जैसे, अनुपान। (४) प्रत्येक, जैसे, अनुदिन। (५) बार-बार, जैसे, अनुशीलन। ⊙कंप = स्त्री० कृपा। सहानुभूति। ⊙कंपित = वि० जिस पर अनुकंपा हुई हो। ⊙करण = पुं० समान आचरण, नकल। वह जो पीछे उत्पन्न हो। ⊙कर्ता = वि० नकल करनेवाला। आज्ञाकारी। ⊙कार = पुं० दे० 'अनुकरण'। ⊙कारी = वि० दे० 'अनुकर्ता'। ⊙कूल = वि० पक्ष में रहनेवाला, सहायक। रजामंद। प्रसन्न। (पु) क्रि० वि० ओर, तरफ। पुं० नायक जो एक ही विवाहित स्त्री में अनुरक्त हो। एक अलंकार जिसमें प्रतिकूल से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखाई जाती है। ⊙कूलना(पु) = अक० सहायक होना। रजामंद होना। प्रसन्न होना। ⊙कृत = वि० अनुकरण या नकल किया हुआ। ⊙कृति = स्त्री० नकल, देखादेखी कार्य। ⊙क्रम = पुं० सिलसिला, तरतीब। ⊙क्रमण = पुं० क्रम या सिलसिले से आगे बढ़ना। पीछे चलना। ⊙क्रमणिका, ⊙क्रमणी = स्त्री० नामों, विषयों आदि की वर्णक्रम से दी हुई सूची। ⊙क्रोश = पुं० दया, सहानुभूति। ⊙क्षण = क्रि० वि० प्रतिक्षण। लगातार। ⊙गंता = वि० दे० 'अनुगामी'। ⊙ग = वि० पीछे चलनेवाला। अनुयायी। पुं० नौकर। साथी। ⊙गत = वि० पीछे चलनेवाला। अनुयायी। अनुकूल। जिसके पीछे कोई चल रहा हो। पुं० नौकर। ⊙गति = स्त्री० पीछे चलना। नकल। मरण। ⊙गम, ⊙गमन = पुं० पीछे चलना। नकल। विधवा का पति के शव के साथ जल मरना। ⊙गामी = वि० अनुगमन करनेवाला। आज्ञाकारी। ⊙गुण -- वि० समान गुणवाला। अनुकूल। पुं० अलंकार जिसमें किसी वस्तु के पूर्वगुण का दूसरी वस्तु के संसर्ग से बढ़ना दिखाया जाय। ⊙गृहीत = वि० जिस पर अनुग्रह किया गया हो, उपकृत। ⊙ग्रह = पुं० कृपा। अनिष्टनिवारण। ⊙ग्राहक, ⊙ग्राही = वि० अनुग्रह करनेवाला, मेहरबान, ⊙चर = पुं० दास, नौकर। साथी। ⊙चिंतन = पुं० ध्यान, विचार। भूली हुई बात को याद करना। ⊙ज -- वि० पीछे जनमा पुं० [स्त्री० अनुजा = छोटी बहन] छोटा भाई। ⊙जीवी = वि० आश्रित। पुं० सेवक। ⊙ज्ञा = स्त्री० आज्ञा, इजाजत, स्वीकृति। अलंकार जिसमें दूषित वस्तु में कोई गुण देखकर उसे पाने की इच्छा दिखाई जाय। ⊙ताप = पुं० गर्मी, तपन। पछतावा, अफसोस। ⊙दान = पुं० सरकार से मिलनेवाली आर्थिक सहायता। ⊙दिन = क्रि० वि० प्रतिदिन, रोज। ⊙धावन = पुं० पीछे दौड़ना। पीछा करना। छानबीन, खोज। ⊙नय = पुं० विनती। खुशामद। ⊙नाद = पुं० गूंज, प्रतिध्वनि। ⊙नासिक = वि०, पुं० जो (वर्ण) मुँह के साथ नाक से भी बोला जाय, जैसे, ङ, ञ, ण, न, म और ँ चिह्न द्वारा प्रकट ध्वनि। ⊙पात = पुं० तुलनात्मक संबंध का आँकड़ा, माप, उपयोगिता, आदि के विचार से परस्पर संबंध। गणित की त्रैराशिक क्रिया। ⊙पातक = पुं० ब्रह्महत्या के समान पाप, जैसे, चोरी, झूठ, परस्त्रीगमन आदि। ⊙पान = पुं० ओषध के साथ या ऊपर से खाई जानेवाली वस्तु। ⊙प्राणित = वि० प्राण या स्फूर्ति से भरा। प्रेरित। ⊙प्राशन(पु) = पुं० भक्षण। ⊙प्रास = पुं० शब्दालंकार जिसमें एक ही वर्ण

वार वार आए। ⊙बध = पु० सबध, लगाव। आगापीछा। सिलसिला। नतीजा। शर्त, ठहराव। ⊙भव = पु० कार्य करने से प्राप्त प्रत्यक्ष ज्ञान। परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान। महसूस करना, सवेदन। ⊙भवना(पु) = सक० अनुभव करना। ⊙भवी = वि० अनुभव करनेवाला। ⊙भाव = पु० काव्य मे मन के भाव को प्रकट करनेवाली कटाक्ष, रोमाच आदि चेष्टाएँ। ⊙भावी = वि० अनुभव करनेवाला। चश्मदीद गवाह। ⊙भूत = वि० अनुभव किया हुआ। आजमाया हुआ। ⊙ भूति = स्त्री० अनुभव। न्याय मे चार प्रमाणो (प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति, शब्दबोध) से प्राप्त ज्ञान। ⊙मति = स्त्री० हुक्म। स्वीकृति, इजाजत। ⊙मान = पु० अटकल, अदाज। न्याय के चार प्रमाणो मे से एक, प्रत्यक्ष साधन द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की भावना। ⊙मानना(पु) = सक० अनुमान करना। ⊙मित = वि० अनुमान किया हुआ। ⊙मिति = स्त्री० अनुमान। ⊙मेय = वि० अनुमान के योग्य। ⊙मोदन = पु० समर्थन, ताईद। किसी कार्य, प्रस्ताव आदि की स्वीकृति-सूचना। खुश होना। ⊙यायी = वि० पीछे चलनेवाला। किसी मत या नेता को माननेवाला। पु० सेवक। ⊙रजन = पु० दिलबहलाव। प्रीति, आसक्ति। ⊙रक्त = वि० प्रेमी, आसक्त। लीन। प्रसन्न। ⊙रक्ति = स्त्री० अनुरक्त होने का भाव। ⊙रणन = पु० घटा, नूपुर आदि का बजना। गूँज। ⊙राग = पु० प्रेम, आसक्ति। लगाव। ⊙रागना(पु) = प्रेम करना। ⊙रागी = वि० अनुराग रखनेवाला। ⊙राध(पु) = पु० विनती, प्रार्थना। ⊙राधना(पु) = सक० मनाना। (... .. 'मैं आज तुम्हें गहि बाँधौं। हा हा करि अनुराधौं'—सूर०)। ⊙राधा = स्त्री० सात तारो के मिलने से बना एक सर्पाकार नक्षत्र। ⊙रूप = वि० समान। योग्य। ⊙रूपक(पु) = पु० प्रतिमा। ⊙रूपना(पु) = अक०, सक० अनुरूप होना या बनाना। ⊙रोध = पु० विनयपूर्वक हठ, आग्रह। विचार, लिहाज। बाधा। ⊙लेपन = पु० शरीर पर सुगधित द्रव्य लगाना। उबटन करना। लीपना, पोतना। ⊙लोम = पु० ऊँचाई से नीचे की ओर आने का क्रम। उत्तम से अधम श्रेणी की ओर आना। सगीत मे सुरो का उतार। ⊙लोमविवाह = पु० उच्च वर्ण के पुरुष का छोटे वर्ण की स्त्री से विवाह। ⊙वर्तन = पु० अनुगमन। अनुकरण। किसी नियम का कई स्थानो पर बार बार लगाना। ⊙वर्ती = वि० अनुयायी। अनुकूल बरताव करनेवाला। आज्ञाकारी। ⊙वाक = पु० अध्याय का एक भाग। वेद के अध्याय का एक अश। ⊙वाद = पु० उल्था, तर्जुमा। पुन या पीछे से कहना। कही हुई बात का फिर से स्मरण और कथन (न्याय)। ⊙वादक = पु० अनुवाद या उल्था करनेवाला। ⊙वादित = वि० अनुवाद या उल्था किया हुआ। ⊙वाद्य = वि० अनुवाद करने योग्य। जिसका अनुवाद हो। ⊙शय = पु० घनिष्ठ सबध। परिणाम। पछतावा। पुराना बैर। ⊙शयाना = स्त्री० प्रिय के मिलनस्थान के नष्ट हो जाने से दुखी परकोया नायिका। ⊙शासक = वि०, पु० हुक्म देनेवाला। उपदेश करनेवाला। राज्य आदि का प्रबध करनेवाला। ⊙शासन = पु० हुक्म। उपदेश। व्याख्यान। महाभारत का एक पर्व। नियत्रण। नियमपालन। ⊙शीलन = पु० मनन, चिंतन। नियमित अध्ययन। पुन पुन अभ्यास। ⊙श्रुत = वि० परपरा से ज्ञात। ⊙श्रुति = स्त्री० वह जिसे परपरा से सुनते चले आए हो। ⊙षंग = पु० सबध, लगाव। कारण सहित कार्य। अवश्यभावी परिणाम। प्रसग मे (अर्थपूर्ति के लिये) शब्दो का योग। ⊙ष्टुप = पु० चार वर्णों का एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे आठ अक्षर होते हैं। ⊙ष्ठान = पु० कार्य

का आरंभ। नियमपूर्वक कोई काम करना। शास्त्रविहित कर्म। फल के लिये देवता का आराधन, पुरश्चरण। ⊙ष्ठित = वि० जिसका अनुष्ठान किया गया हो। ⊙संधान = पुं० खोज, जाँचपड़ताल, अच्छी तरह देखभाल। निशाना साधना। कोशिश। ⊙संधानना (पु) = सक० खोजना। सोचना विचारना। ⊙संधि = स्त्री० गुप्त परामर्श। कुचक्र। ⊙सरण = पुं० पीछे या साथ साथ चलना। नकल। अनुकूल आचरण। ⊙सरना (पु) = सक० अनुसरण करना। ⊙सार = वि० अनुकूल, मेल का। क्रि० वि० मेल में, तरह। ⊙सारना (पु) = सक० अनुसरण करना। आचरण करना। 'ऐसे जनम करम के ओछे ओछे ही अनुसारत' (सूर०)। करना। 'नख-ब्रह्मा विनती अनुसारी' (सूर०)। ⊙सारी (पु) = वि० अनुसरण करनेवाला। ⊙साल (पु) = पुं० पीड़ा। ⊙स्वार = पुं० स्वर के पश्चात् उच्चरित एक अनुनासिक ध्वनि जिसका चिह्न पंक्ति के ऊपर की बिंदी (ं) है। ⊙हरना (पु) = सक० अनुकरण या नकल करना। समान होना। ⊙हरत (पु) = वि० अनुसार अनुरूप। उपयुक्त, योग्य। ⊙हरिया (पु) = वि० समान। आकृति। ⊙हारना = सक० समता करना। 'देखु री! हरि के चंचल तारे।···खंजन हू न जात अनुहारे'। (सूर०)। ⊙हारी = वि० अनुकरण करनेवाला।

अनुक्त—वि० [सं०] न कहा हुआ। ⊙विषया-वस्तूत्प्रेक्षा = स्त्री० वस्तूत्प्रेक्षा। अलंकार का एक भेद जिसमें वर्ण्य वस्तु के संबंध में उत्प्रेक्षा तो की जाती है किंतु उपमेय का कथन नहीं होता।

अनुच (पु)—वि० जो ऊँचा न हो, नीचा। अश्रेष्ठ, नीच।

अनुचित—वि० [सं०] जो उचित न हो, बुरा।

अनुत्तर—वि० [सं०] जिसके पास उत्तर न हो, लाजवाब। मौन। श्रेष्ठ।

अनुत्तीर्ण—वि० [सं०] जो पार न उतरा हो। जो परीक्षा में सफल न हुआ हो।

अनुदात्त—वि० [सं०] जो ऊँचा या उठा हुआ न हो। स्वर के तीन भेदों में से एक।

अनुदार—वि० [सं०] जो उदार न हो, संकीर्ण विचारों का। कंजूस।

अनुपम—वि० [सं०] उपमारहित, बेजोड़। बहुत सुंदर। **अनुपमेय**—वि० दे० 'अनुपम'।

अनुपयुक्त—वि० [सं०] जो उपयुक्त न हो, अनुचित, अयोग्य।

अनुपस्थित—वि० [सं०] जो उपस्थित न हो, गैरहाजिर। **अनुपस्थिति**—स्त्री० उपस्थिति का अभाव, गैरहाजिरी।

अनुसर (पु)—क्रि० वि० लगातार।

अनूठा—वि० अद्भुत। बढ़िया, सुंदर।

अनूढ़ा—स्त्री० [सं०] बिना ब्याही स्त्री। बिना ब्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखती हो।

अनूतर (पु)—वि० निरुत्तर। मौन।

अनूदित—वि० [सं०] अनुवाद या उल्था किया हुआ। पीछे या अनुकूल कहा हुआ।

अनूप—पुं० [सं०] स्थान जहाँ जल अधिक हो। वि० अनुपम, बेजोड़। बहुत सुंदर।

अनृत—पुं० [सं०] असत्य, झूठ। वि० झूठा। (पु) अन्यथा, विपरीत।

अनेक—वि० [सं०] एक से अधिक, बहुत। ⊙श. = क्रि० वि० अनेक बार। भिन्न भिन्न प्रकार से। अधिक संख्या में। **अनेकार्थ**—वि० जिसके बहुत से अर्थ हों। —क = वि० दे० 'अनेकार्थ'।

अनेग (पु)—वि० दे० 'अनेक'।

अनेड़ (पु)—वि० टेढ़ामेढ़ा। खराब।

अनेरा (पु)—वि० व्यर्थ। झूठा। दुष्ट, निरंकुश। क्रि० वि० व्यर्थ।

अनै (पु)—पुं० दे० 'अनय'।

अनैक्य—पुं० [सं०] एका न होना, मतभेद, फूट।

अनैतिक—वि० [सं०] नीति विरुद्ध, बुरा।

अनैसना (पु)—अक० बुरा मानना, रूठना। '···श्याम रूप बन माँझ समाने मो पै रहे अनैसे' (सूर०)। **अनैसा** (पु)—वि० [स्त्री० अनैसी] जो इष्ट न हो, बुरा। **अनैसे** (पु)—क्रि० वि० बुरे भाव से, बुरी तरह से।

अनैहाⓅ—पुं० उपद्रव, उत्पात ।
अनोखा—वि० विलक्षण, विचित्र । अपूर्व । नया । सुदर ।
अनौटⓅ—पुं० दे० 'अनवट' ।
अन्न—पुं० [सं०] खाद्य पदार्थ । अनाज, धान्य । पकाया हुआ खाद्य पदार्थ । भात । Ⓟवि० अन्य,दूसरा । ⊙**कूट**Ⓟ = पुं० अन्न का पहाड या ढेर । भगवान के भोग लगाने का वैष्णवो का एक उत्सव ।⊙**क्षेत्र** = पुं० [हिं०] दे० 'अन्नसत्र' ।⊙**जल** = पुं० खाना पीना, दाना पानी । जीविका । रहन सहन का सयोग ।⊙**दाता** = वि० [हिं०] अन्न देनेवाला । पालन करनेवाला । स्वामी ⊙**पूर्णा** = स्त्री० अन्न की अधिष्ठात्री देवी, दुर्गा का एक रूप ।⊙**प्राशन** = पुं० बच्चो को पहली बार अन्न खिलाने का सस्कार । ⊙**मय कोश** = पुं० अन्न से धारण किया हुआ स्थूल शरीर (वेदात के पचकोशो मे पहला) ।⊙**सत्र** = पुं० स्थान जहाँ भूखो को मुफ्त भोजन दिया जाय ।
अन्ना—स्त्री० दाई । धाय ।
अन्य—वि० [सं०] दूसरा, और कोई । भिन्न, गैर ।⊙**तम** = वि० बहुतो मे से एक । सबसे बढकर, प्रधान । ⊙**त** = क्रि० वि० दूसरे से । और कही । दूसरी ओर, इसके विपरीत ।⊙**त्र** = क्रि० वि० और कही, दूसरी जगह ।⊙**था** = वि० और का और, उलटा । असत्य । अव्य० नही तो, ऐसा न होने पर । ⊙ **पुरुष** = पुं० गैर आदमी । सर्वनाम का एक भेद, वह पुरुष जिसके सबध मे कुछ कहा जाय, जैसे, यह, वह (व्या०), ⊙**मनस्क** = वि० अनमना, उदास ।⊙**संभोगदु खिता** = स्त्री० नायिका जो अन्य स्त्री मे अपने प्रिय के सभोगचिह्न देखकर दु खित हो । **सुरतदु खिता** = स्त्री० दे० 'अन्यसभोगदु खिता' । **अन्यापदेश**—पुं० दूसरे के बहाने कही जानेवाली बात । रूपक का एक नवस्वीकृत भेद । **अन्योक्ति**—स्त्री० एक अर्थालकार विशेष, वह कथन जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से कथित वस्तु के अतिरिक्त अन्य पर घटाया जाय । **अन्योन्य**—सर्व० परस्पर, आपस मे । पुं० वह अलकार जिसमे दो वस्तुओ की किसी क्रिया या गुण का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना दिखाया जाय । **अन्योन्याभाव**—पुं० एक वस्तु का दूसरी वस्तु न होना । न्याय शास्त्र मे 'अभाव' पदार्थ का विशेष भेद । **अन्योन्याश्रय**—पुं० एक दूसरे का आश्रय या अपेक्षा । एक शास्त्रीय दोष जिसमे एक वस्तु के ज्ञान या सिद्धि के लिये दूसरी वस्तु या ज्ञान की सिद्धि अपेक्षित होती है (न्याय) ।
अन्याय—पुं० [सं०] न्यायविरुद्ध आचरण, बेइसाफी । जुल्म, अत्याचार । **अन्यायी**—वि० अन्याय करनेवाला ।
अन्याराⓅ—वि० जो अलग न हो । अनोखा । खूब बहुत ।
अन्यून—वि० [सं०] जो न्यून न हो । बहुत, अधिक ।
अन्वय—पुं० [सं०] परस्पर सबध । वाक्य मे शब्दो का उचित क्रम और सबध । पद्य के शब्दो को वाक्यरचना के उचित क्रम मे रखना । न्याय मे कार्य और कारण का सबध । वश, कुल । **अन्वयी**—वि० सबद्ध । एक ही वश का ।
अन्वित—वि० [सं०] सहित, सबध, शामिल । वाक्य की शब्दयोजना मे सबद्ध । समझा हुआ । **अन्वितार्थ**—वि० जिसका अर्थ प्रसग से एकदम स्पष्ट हो जाय ।
अन्वीक्षण—पुं० [ ] ध्यान से देखना । खोज, तलाश ।
अन्वीक्षा—स्त्री० [सं०] दे० 'अन्वीक्षण' ।
अन्वेषक—वि० [सं०] अन्वेषण करनेवाला ।
अन्वेषण—पुं० [सं०] खोज, अनुसधान ।
अन्वेषी—वि० [सं०] अन्वेषण करनेवाला ।
अन्हवानाⓅ—सक० [अक० अन्हाना] स्नान कराना, नहलाना ।
अन्हानाⓅ†—अक० नहाना ।
अपंग—वि० अगहीन, लँगडा लूला । अशक्त ।
अपंडीⓅ—वि० पिंड या शरीर से रहित (ईश्वर) ।

अप—उप० [सं०] शब्दों के पूर्व लगकर इन मुख्य अर्थों में प्रयुक्त—(१) निषेध, जैसे, अपमान। (२) बुराई, जैसे अपकर्म। (३) विकृति जैसे, अपांग। (४) दूरी, अलगाव, जैसे, अपहरण। (५) नीचापन, जैसे, अपकर्ष। ⊙कर्ता = पुं० हानि पहुँचानेवाला। पापी। ⊙कर्म = पुं० बुरा काम, पाप। ⊙कर्ष = पुं० नीचे की ओर खिंचाव। गिराव, अवनति। उतार। अपयश। बेकदरी। ⊙कार = पुं० 'उपकार' का उलटा, हानि, बुराई। अपमान। ⊙कारक, कारी = वि० अपकार करनेवाला। विरोधी, द्वेषी। ⊙कीरति (पु) = स्त्री० दे० 'अपकीर्ति'। ⊙कृत = वि० जिसका अपकार किया गया हो। अपकारी। ⊙कृति = स्त्री० दे० 'अपकार'। ⊙कृष्ट = वि० खींचा या गिराया गया। पतित, भ्रष्ट। बुरा, खराब। अधम, निंद्य। ⊙क्रम = पुं० क्रमभंग, गड़बड़। ⊙गत = वि० भागा हुआ। मरा हुआ। नष्ट। ⊙घात = पुं० हत्या। विश्वासघात। ⊙चय = पुं० हानि। खर्च, कमी। नाश। ⊙चार = पुं० बुरा व्यवहार। अहित। अपराध, दोष। अपथ्य। ⊙चाल (पु) = स्त्री० कुचाल, खोटापन। ⊙चित = वि० घटा हुआ, क्षीण। पूज्य। ⊙चिति = स्त्री० कमी, हानि। पूजा, आदर। ⊙जय = स्त्री० पराजय, हार। ⊙जस (पु) = पुं० दे० 'अपयश'। ⊙जात = पुं० बिगड़ा हुआ लड़का। (पु) वि० हीन जाति का ⊙डर (पु) = पुं० भय, शंका। ⊙डरना (पु) = अक० डरना। ⊙ढार (पु) = वि० बेढंगे तौर से ढलने या अनुरक्त होनेवाला। ⊙तोस (पु) = पुं० दु:ख, रंज। ⊙द्रव्य = पुं० बुरी वस्तु। बुरा धन। ⊙ध्वंस = पुं० विनाश। अधःपतन। अपमान। पराजय। ⊙नयन = पुं० हटाना। दूर ले जाना। खंडन। ⊙नाम = पुं० बदनामी। गाली। ⊙नीत = वि० हटाया हुआ। दूर ले जाया हुआ। भगाया हुआ। ⊙भय (पु) = पुं० निर्भयता व्यर्थ का भय। डर। वि० निडर। दे० 'अपडर'। ⊙भ्रंश = पुं० पतन, गिराव, बिगाड़। बिगड़ा हुआ शब्द। प्राकृत भाषाओं का परवर्ती स्वरूप जिससे आधुनिक आर्यभाषाओं का विकास हुआ। वि० बिगड़ा हुआ। ⊙भ्रष्ट = वि० गिरा हुआ। बिगड़ा हुआ। ⊙मान = पुं० अनादर, बेइज्जती। अवज्ञा, अवहेलना। ⊙मानना (पु) = सक० अपमान करना। 'धायो जात तही को फिरि फिरि वै कितनो अपमानत' (सूर०)। ⊙मानित = वि० अपमान किया हुआ। ⊙मानी = वि० अपमान करनेवाला। ⊙मार्ग = पुं० बुरा रास्ता। ⊙मृत्यु = स्त्री० अकाल मृत्यु। साँप आदि के काटने, विष खाने आदि दुर्घटना से होनेवाली असमय मृत्यु। ⊙यश = पुं० बदनामी। कलंक। ⊙योग = पुं० बुरा योग। कुसमय अपशकुन। ⊙राग = पुं० द्वेष, शत्रुता। अरुचि। ⊙राध = पुं० दोष, पाप। जुर्म। भूल-चूक। ⊙राधी = वि० अपराध करनेवाला। ⊙रूप = वि० बदशकल, बेडौल। अद्भुत, अपूर्व। ⊙लक्षण = पुं० कुलक्षण, बुरा चिह्न। ⊙लाप = बकवाद। प्रसंग टालने के लिये इधर उधर की बातें या खंडन करना। ⊙लोक (पु) = पुं० अपयश। मिथ्या दोष। ⊙वर्ग = पुं० मोक्ष, मुक्ति। त्याग। दान। ⊙वर्जन = पुं० त्याग, छोड़ना। दान। ऋण या एहसान चुकाना। ⊙वाद = पुं० निंदा, अपयश। व्यापक नियम के विरुद्ध विशेष नियम। खंडन, प्रतिवाद। ⊙वारण = पुं० हटाना या दूर करना। व्यवधान, रोक। छिपाव, ओट। ⊙व्यय = पुं० निरर्थक व्यय। बुरे काम में खर्च। ⊙व्ययी = वि० अपव्यय करनेवाला। ⊙शकुन = पुं० बुरा शकुन। ⊙शब्द = पुं० दुर्वचन, गाली। अशुद्ध या बिगड़ा हुआ शब्द। असभ्य या गँवारू भाषा। ⊙सगुन (पु) = पुं० दे० 'अपशकुन'। ⊙सरण = पुं० चले जाना। पीछे हटना। ⊙सर्जन = पुं० त्याग। दान। मोक्ष। ⊙सव्य = वि० 'सव्य' का उलटा, दाहिना। विरुद्ध। दहिने कंधे पर जनेऊ रखे हुए। ⊙सोस (पु) = पुं० दे०

'अपशकुन'। ⊙स्नान = पुं० किसी के मरने पर उसके कुटुम्बियों द्वारा किया जानेवाला स्नान। ⊙स्मार = पुं० मिरगी रोग। ⊙ह = वि० नाश करनेवाला (के० समा० के अंत में प्रयुक्त) ⊙हरना (पु) = सक० छीनना। चुराना। नष्ट करना। ⊙हर्ता, ⊙हारी = वि० अपहरण करनेवाला। ⊙हास = पुं० अकारण हँसी। उपहास, चिढाना। ⊙हृत = वि० अपहरण किया हुआ। ⊙ह्नव = पुं० छिपाव, दुराव। बहाना, टालमटोल। ⊙ह्नुति = स्त्री० दे० 'अपह्नव'। अलंकार जिसमें उपमेय का निषेध कर उपमान की स्थापना की जाय।

अप––सर्व० (के० समा० में) 'आप' का संक्षिप्त रूप। ⊙**काजी** = वि० अपने ही काम से मतलब रखनेवाला, स्वार्थी। ⊙**घात** = पुं० आत्महत्या। ⊙**देखा**(पु) = वि० घमंडी। ⊙**नास**(पु) = वि० अपना नाश। ⊙**रता** (पु) = वि० अपने में रत, स्वार्थी। ⊙**रती**(पु) = स्त्री० स्वार्थ, बेईमानी। ⊙**वश** (पु) = वि० अपने वश का, अपने अधीन। ⊙**स्वार्थी** (पु) = वि० स्वार्थ साधनेवाला, मतलबी।

अपक्व––वि० [सं०] जो पका न हो, कच्चा। अनुभवहीन।

अपगा––स्त्री० नदी।

अपच––पुं० [सं०] अजीर्ण, बदहजमी।

अपछरा––स्त्री० अप्सरा, परी।

अपटी––स्त्री० [सं०] परदा। कनात। आवरण।

अपटु––वि० [सं०] जो पटु या कुशल न हो। सुस्त, आलसी।

अपठ––वि० [सं०] दे० 'अपढ़'। **अपठित**–– वि० जो पढ़ा न गया हो। दे० 'अपढ़'।

अपड़ाव(पु)––पुं० झगड़ा, तकरार।

अपढ़––वि० जो पढ़ा न हो, अशिक्षित।

अपत(पु)––वि० बिना पत्तों का। आच्छादन रहित, नग्न। लज्जारहित। अधम, नीच। स्त्री० विपत्ति। ⊙ई(पु) = स्त्री० ढिठाई, उत्पात। चंचलता।

अपताना(पु)––पुं० जंजाल, प्रपंच।

अपति(पु)––वि० स्त्री० बिना पति की। वि० दुष्ट, ढीठ। स्त्री० दुर्दशा। अपमान।

अपत्य––पुं० [सं०] संतान, औलाद।

अपथ––पुं० [सं०] कठिन रास्ता। बुरा मार्ग।

अपथ्य––वि० [सं०] जो पथ्य न हो, स्वास्थ्य नाशक। अहितकर। पुं० प्रतिकूल आहार-विहार।

अपद––वि० [सं०] बिना पैर का। पुं० रेंगनेवाला जानवर।

अपन(पु)––वि० अपना। सर्व० हम। ⊙**पौ०**(पु) = पुं० अपनापन आत्मीयता। अपना (आत्मा का) स्वरूप। होश। अहंकार। आत्मगौरव।

अपना––वि० निज का, 'पराया' का विपरीत। पुं० स्वजन। सर्व० स्वयं, निज ('को' के साथ)। ⊙**पन**, ⊙**पा** = पुं० आत्मीयता। स्वाभिमान। ⊙**पराया**, ⊙**बेगाना** = स्वजन-परजन, शत्रु-मित्र। ⊙**यत** = स्त्री० आत्मीयता। आपसदारी। मु०~**करना** = अनुकूल बनाना। ~**सा मुँह लेकर रह जाना** = बुरी तरह लज्जित होना। **अपनी अपनी पड़ना** = अपनी अपनी चिंता होना। **अपने तक रखना** = किसी से न कहना। **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना** = अपनी प्रशंसा आप करना।

अपनाना––सक० अपने अनुकूल या पक्ष में करना। स्वीकार करना, शरण में लेना।

अपरंच––अव्य० [सं०] और भी, दूसरा भी। पुन, फिर।

अपरंपार––वि० अपार, अनंत।

अपर––वि० [सं०] बाद का, पिछला। दूसरा, अन्य। जिसके परे या बाद में कुछ न हो। जिससे बढ़कर या श्रेष्ठ कोई न हो। ⊙**ता** = स्त्री० [अपर + ता] परायापन। [अ + परता] परायापन का अभाव, अपनापन। ⊙**लोक** = पुं० परलोक, स्वर्ग।

अपरना(पु)––स्त्री० दे० 'अपर्णा'।

अपरबल(पु)––वि० बलवान्।

अपरस––वि० नहीं छुआ हुआ। न छूने योग्य। पुं० हथेली और तलवे में होनेवाला एक चर्म रोग। विमुख।

अपरा––स्त्री० [सं०] अध्यात्मविद्या को छोड़कर अन्य विद्या, लौकिक विद्या। पश्चिम दिशा।

अपराजिता—स्त्री० [सं०] गुलाब से मिलती-जुलती पत्तियोंवाली एक लता। दुर्गा। अयोध्या नगरी। चौदह अक्षरों का एक वृत्त।

अपराह्न—पु० [सं०] दोपहर के बाद का समय, तीसरा पहर।

अपरिग्रह—पु० [सं०] दान का न लेना। निर्वाह के लिये नितान्त आवश्यक वस्तुओं से अधिक का त्याग। गरीबी। योग-शास्त्र मे पाँचवाँ यम, सगत्याग।

अपरिचित—वि० [सं०] जिससे परिचय न हो, अज्ञात। परिचय या जानकारी न रखनेवाला।

अपरिच्छिन्न—वि० [सं०] जिसका विभाजन न हो। मिला हुआ। असीम।

अपरिणामी—वि० [सं०] परिणामरहित, विकार या परिवर्तन से रहित।

अपरिपक्व—वि० [सं०] जो पका न हो, कच्चा, अधकचरा।

अपरिमित—वि० [सं०] असीम। असंख्य।

अपरिमेय—वि० [सं०] बेअंदाज। असंख्य।

अपरिवर्तनीय—वि० [सं०] जिसे बदले मे न दिया जा सके। जिसमे परिवर्तन न हो, एकरस।

अपरिहार्य—पु० [सं०] अनिवार्य, अवश्य-भावी। अत्याज्य। आदरणीय।

अपर्णा—स्त्री० [सं०] पार्वती। दुर्गा। वि० बिना पत्ती की।

अपलक—क्रि० वि० बिना पलक झपकाए, एकटक।

अपवित्र—वि० [सं०] अशुद्ध, नापाक। मैला, गंदा।

अपसना(पु)—अक० खिसकना, भागना। चल देना। 'फेर न जानो वह का भई। वह कैलास कि कहँ अपसई' (पदमा०)।

अपसोस(पु)—पु० अफसोस। दुःख।

अपसोसना(पु)—अक० अफसोस करना, दुखी होना। 'राधा कान्ह एक संग विलसत मनही मन अपसोसो (सूर०)।

अपांग—पु० [सं०] आँख की कोर, कटाक्ष। वि० अगहीन, अगभग।

अपा(पु)—पु० आपा, अहकार।

अपाउ(पु)—पु० दे० 'अपाव'।

अपात्र—वि० [सं०] अयोग्य, अनधिकारी।

अपादान—पु० [सं०] हटाना, अलगाव। अलगाव सूचक एक कारक (व्या०)।

अपान—पु० [सं०] पाँच वायुभेदो मे से एक। मलमूत्र को बाहर निकालनेवाली गुदा मे स्थित वायु। तालु से पीठ और गुदा से उपस्थ तक व्याप्त वायु। गुदा से निकलनेवाली वायु, पाद। गुदा। (पु)पु० आत्मज्ञान। आत्मगौरव। होश। अभिमान। (पु)वि० अपना, निज का।

अपाप—पु० [सं०] जो पाप न हो, पुण्य। वि० पापरहित।

अपामार्ग—पु० [सं०] एक पौधा, चिचडा।

अपाय—पु० [सं०] पीछे हटना। अलगाव। नाश। नुकसान। चोट। विपत्ति।

अपाय(पु)—पु० अनाचार, उपद्रव।

अपाय(पु)—वि० बिना पैर का। असमर्थ।

अपार—वि० [सं०] जिसका पार न हो, असीम। असंख्य, बहुत।

अपार्थिव—वि० [सं०] जो पार्थिव न हो, अलौकिक। दिव्य। स्वर्गीय।

अपाव(पु)—पु० अनाचार, उपद्रव।

अपावन—वि० [सं०] अपवित्र, मलिन।

अपाहिज—वि० अगभग, लूला लँगडा। काम न करने योग्य। आलसी।

अपिंडी—वि० [सं०] पिंडरहित, अशरीरी।

अपि—अव्य० [सं०] भी। तक। निश्चय। ⊙च=अव्य० और भी। बल्कि। ⊙तु=अव्य० किंतु, बल्कि। ⊙धान=पु० आच्छादन। आवरण। ढक्कन।

अपीच(पु)—वि० सुंदर, अच्छा।

अपील—स्त्री० [अं०] साग्रह प्रार्थना। छोटी अदालत के फैसले से छुटकारे के लिये बडी अदालत से प्रार्थना।

अपुत्र, अपुत्रक—वि० [सं०] पुत्रहीन।

अपुनपो(पु)—पु० दे० 'अपनपौ'।

अपुनीत—वि० [सं०] अपवित्र।

अपूठना(पु)—अक० नाश करना। उलटना। 'रावण हति लै चलौ साथ ही लंका धरौ अपूठी' (सूर०)।

अपूठा(पु)—वि० अजान, अनभिज्ञ। 'निकट रहत पुनि दूरि बतावत हौ रस माँहि अपूठे' (सूर०)।

अपूठीⓅ—वि० स्त्री० जो विकसित या खिली न हो।
अपूत—वि० अपवित्र। पुत्रहीन। Ⓟपु० कुपुत्र, नालायक बेटा।
अपूरⓅ—वि० भरपूर, पूरा। **अपूरना**Ⓟ—सक० भरना। फूकना, बजाना। 'सुना सख जो विष्णु अपूरा' (पदमा०)।
अपूर्ण—वि० [सं०] जो पूर्ण या भरा न हो। अधूरा, कम। ⊙**भूत** = पु० भूतकाल जिसमे क्रिया की समाप्ति न पाई जाय (व्या०)।
अपूर्व—वि० [सं०] जो पहले न रहा हो। अद्भुत। अनुपम, श्रेष्ठ। ⊙**रूप** = पु० एक अलकार जिसमे पूर्व गुण की प्राप्ति का निषेध हो।
अपेक्षा—स्त्री० [सं०] चाह। आवश्यकता। आश्रय, भरोसा। प्रतीक्षा। कार्य कारण का अन्योन्यसबध। अव्य० दे० 'अपेक्षा-कृत'। ⊙**कृत** = अव्य० तुलना या मुकावले मे।
अपेक्षित—वि० जिसकी अपेक्षा हो। आवश्यक, इच्छित या प्रतीक्षित। **अपेक्षी**—वि० अपेक्षा करनेवाला। **अपेक्ष्य**—वि० अपेक्षा करने योग्य।
अपेलⓅ—वि० अटल।
अपैठⓅ—वि० जहाँ पैठ या पहुँच न हो सके।
अपोगंड—वि० [सं०] सोलह वर्ष से ऊपर की अवस्थावाला, बालिग।
अपोच—वि० उत्तम। '·· जे कवि सदा अपोच' (जगद्विनोद ५०१)।
अप्रकाशित—वि० [सं०] प्रकाशरहित। जो प्रकट न हो। बिना छपा, जो छपकर सर्वसाधारण के सामने न आया हो।
अप्रकृत—वि० [सं०] अस्वाभाविक। बनावटी। झूठा।
अप्रचलित—वि० [सं०] जिसका चलन या व्यवहार न हुआ हो।
अप्रतिभ—वि० [सं०] प्रतिभाशून्य। मतिहीन। जिसे उत्तर या कर्तव्य न सूझे। सुस्त, मद।
अप्रतिम—वि० [सं०] जिसके समान कोई न हो, बेजोड।
अप्रतिष्ठा—स्त्री० [सं०] अपमान। अपयश।
अप्रतिहत—वि० [सं०] विना रोकटोक का। अपराजित। जिसकी हानि या घात न किया गया हो।
अप्रत्यक्ष—वि० [सं०] जो प्रत्यक्ष न हो, परोक्ष। गुप्त।
अप्रत्याशित—वि० [सं०] जिसकी आशा न की गई हो। आकस्मिक।
अप्रमेय—वि० [सं०] जो नापा न जा सके, अपरिमित। जो सिद्ध या प्रमाणित न किया जा सके। बुद्धि के विषय से परे।
अप्रसन्न—वि० [सं०] नाराज। उदास। दुखी।
अप्रस्तुत—वि० [सं०] अनुपस्थित। जिसकी चर्चा न हुई हो। जो तैयार न हो। गौण। पु० उपमान। ⊙**प्रशसा** = स्त्री० अलकार, जिसमे अप्रस्तुत के कथन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया जाय।
अप्राप्त—वि० [सं०] जो प्राप्त न हो। जिसे प्राप्त न हुआ हो। अप्रत्यक्ष। जो आया न हो। ⊙**व्यवहार** = पु० सोलह वर्ष से कम (बालक), नाबालिग।
अप्राप्य—वि० [सं०] जो प्राप्त न हो सके।
अप्रामाणिक—वि० [सं०] जो मानने योग्य न हो। जो प्रमाण से सिद्ध न हो।
अप्रासगिक—वि० [सं०] प्रसग या चर्चा के भीतर न आनेवाला।
अप्रिय—वि० [सं०] जिसकी चाह न हो। जो पसद न हो।
अप्सरा—स्त्री० [सं०] इद्र की सभा मे नाचनेवाली देवागना, परी।
अप्सरीⓅ—स्त्री० दे० 'अप्सरा'।
अफगान—पु० [अ०] अफगानिस्तान का रहनेवाला।
अफयून—स्त्री० [अ०] अफीम।
अफरना—अक० पेट का फूलना। पेट भर खाना। ऊबना।
अफराⓅ—अक० पेट भरने से सतुष्ट होना।
अफल—वि० [सं०] फलहीन। व्यर्थ। वध्या।
अफलातून—पु० [अ०] यूनानी दार्शनिक प्लेटो। बहुत बडा आदमी (व्यग्य)। किसी विषय का बहुत बडा जानकार।
अफवाह—स्त्री० [अ०] उडती खबर, किंवदती। मिथ्या समाचार, गप।

अफसर—पु० हाकिम, अधिकारी। मुखिया, प्रधान। **अफसरी**—स्त्री० अधिकार, प्रधानता। हुकूमत, शासन।

अफसाना—पु० [फा०] किस्सा, कहानी।

अफसोस—पु० [फा०] पछतावा। शोक।

अफीम—स्त्री० पोस्त की ढोंढ का गोंद जो कटु, मादक और विष होता है। ⊙ची = वि० जिसे अफीम खाने की लत हो।

अफीमी—वि० अफीम संबंधी। अफीमची।

अब—क्रि० वि० इस समय, इस क्षण। इन दिनों। ⊙का = इस समय का, आधुनिक। ⊙की, के = इस बार। ⊙जाकर = इतनी देर बाद। मु०~तब लगना या होना = मरने के निकट होना।

अबखरा—पु० [अ०] भाप।

अबतर—वि० [फा०] बुरा, खराब। बिगड़ा हुआ।

अबध(पु)—वि० अचूक। जो रोका न जा सके।

अबध(पु)—वि० अज्ञानी। पु० अवधूत, विरागी।

अबध्य—वि० [सं०] जिसे मारना उचित न हो। जिसे शास्त्र के अनुसार प्राणदंड न दिया जा सके, जैसे, स्त्री, ब्राह्मण। जो मारा न जा सके।

अबर(पु)—वि० बलहीन। पु० बादल, मेघ।

अबरक—पु० एक खनिज जो काँच की तरह चमकीला होता है और जिसमें अनेक पतली पतली तहें होती हैं, अभ्रक। एक पत्थर।

अबरन(पु)—वि० जिसका वर्णन न हो सके। बिना रूप रंग का। एक रंग का नहीं, भिन्न। पु० दे० 'आवरण'।

अबरस—वि० [फा०] सब्जे से कुछ खुलता हुआ सफेद रंग का। पु० उक्त रंग का घोड़ा जिस पर खरबूजे की फाँकों जैसी धारियाँ हों।

अबरा—पु० [फा०] 'अस्तर' का उलटा, दोहरे वस्त्र के ऊपर का पल्ला। न खुलने वाली गाँठ। निर्बल।

अबरी—स्त्री० [फा०] एक प्रकार का धारीदार चिकना कागज। पच्चीकारी के काम आनेवाला एक पीला पत्थर। लाह की एक रँगाई।

अबरू—स्त्री० [फा०] भौंह, भ्रू।

अबल—वि० [सं०] निर्बल, कमजोर।

अबलक—पु० दे० 'अबलख'।

अबलख—वि० सफेद और काले या सफेद और लाल रंग का। पु० उक्त रंग का घोड़ा या बैल। **अबलखा**—पु० मैना की जाति का एक पक्षी जिसके पर स्याह और पेट सफेद होता है।

अबला—स्त्री० [सं०] स्त्री, औरत।

अबवाब—पु० [अ०] मालगुजारी पर लगनेवाला अधिक कर। किसान, व्यापारी तथा लोहार आदि पेशेवालों से जमींदार को मिलनेवाला अधिक कर।

अबस—क्रि० वि० [अ०] व्यर्थ। (पु)वि० जो अपने वश में न हो।

अबाँह—वि० जिसकी बाँह न हो। अनाथ।

अबा—पु० [अ०] अंगे से मिलता जुलता एक ढीला पहनावा।

अबाती(पु)—वि० बिना वायु का। जिसे वायु न हिलाती हो। भीतर ही भीतर सुलगनेवाला (अग्नि)।

अबाद(पु)—वि० निर्विवाद।

अबादान—वि० बसा हुआ, भरापूरा।

अबादानी—स्त्री० बस्ती। शुभचिंतकता। चहल पहल, रौनक।

अबाध—वि० [सं०] निर्विघ्न, बिना बाधा के। बेहद।

अबाधित—वि० [सं०] बेरोक, बाधारहित। स्वच्छंद।

अबान(पु)—वि० शस्त्ररहित।

अबाबील—स्त्री० [फा०] बहुत छोटे पैरवाली काले रंग की चिड़िया।

अबार(पु)—स्त्री० देर, विलंब।

अबास(पु)—पु० रहने का स्थान, घर।

अबिगत(पु)—वि० जो जाना न जा सके।

अबिहड—वि० दे० 'अविहड'।

अबीर—पु० [अ०] होली खेलने में प्रयुक्त लाल रंग की बुकनी या अभ्रक का चूर्ण।

अबीरी—वि० अबीर के रंग का।

अबूझ—वि० अबोध, नासमझ।

अबूत(पु)—वि० बिना बूते का। अशक्त।

अबे—अव्य० अरे, हे, अपमानसूचक संबोधन। बराबरवालों से घनिष्ठता सूचक

सबोधन । मु० ~तबे करना = तिरस्कार सूचक वाक्य बोलना ।
अबेध—वि० जो बेधा या छेदा न गया हो ।
अबेर—स्त्री० देर, विलंब ।
अबेश(पु)—वि० अधिक, बहुत ।
अबैन(पु)—वि० चुप, मौन ।
अबोध—पु० [सं०] अज्ञान, मूर्खता । वि० अनजान, मूर्ख ।
अबोल(पु)—वि० मौन । जिसके विषय मे बोला न जा सके, अनिर्वचनीय । पु० बुरा बोल ।
अबोला—पु० रूठने के कारण मौन ।
अब्ज—पु० [सं०] जल से उत्पन्न वस्तु । कमल । शख । चद्रमा । कपूर ।
अब्धि—पु० [सं०] समुद्र । सरोवर । सात की सख्या । ⊙ज = पु० चंद्रमा । शख । अश्विनीकुमार ।
अब्बा—पु० [अ०] पिता, बाप ।
अब्र—पु० [फा०] बादल, मेघ ।
अब्रह्मण्य—पु० [स०] कर्म जो ब्राह्मण के लिये उचित न हो । हिंसा आदि कर्म । जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण मे न हो । ब्राह्मण-धर्म के विरुद्ध ।
अभ्रू—स्त्री० दे० 'अबरू' ।
अभंग—वि० [सं०] अखड, पूर्ण । न मिटने-वाला । लगातार । पु० मराठी भाषा का एक प्रसिद्ध छद । ⊙पद = पु० श्लेष अलकार का वह भेद जिसमे अक्षरो को इधर उधर किए बिना भिन्न अर्थ निकल सके । **अभंगी**—पु० अभग, पूर्ण । जिसका कोई कुछ न ले सके ।
अभजन—वि० [सं०] जिसका भजन न हो सके, अटूट ।
अभक्त—वि० [सं०] भक्ति या श्रद्धा मे हीन । ईश्वर से विमुख । जो बाँटा न गया हो, समूचा ।
अभक्ष—वि० दे० 'अभक्ष्य' ।
अभक्ष्य—वि० [सं०] जो खाने के योग्य न हो । जिसके खाने का धर्मशास्त्र मे निषेध हो ।
अभगत(पु)—वि० दे० 'अभक्त' ।
अभग्न—वि० [सं०] अखड, समूचा ।
अभद्र—वि० [सं०] अशिष्ट, बेहूदा । अशुभ ।
अभयकर—वि० [सं०] जो भयकर न हो । अभयदान देनवाला ।
अभय—वि० [सं०] निर्भय, बेडर । ⊙दान = पुं० भय से बचाने का वचन देना, शरण देना । ⊙पद = पुं० मुक्ति, मोक्ष ।
अभर—(पु)—वि० न ढाने योग्य ।
अभरन—(पु) स० दे० 'आभरण' । वि० अपमानित ।
अभरम(पु) वि०—अचूक । निडर । क्रि० वि० बिना सशय, निश्चय । बिना भ्रम का ।
अभल(पु)—वि० अश्रेष्ठ, बुरा ।
अभाऊ(पु)—वि० जो न भावे । अशोभित ।
अभाग(पु), **अभागा**—वि० भाग्यहीन, बद-किस्मत ।
अभागी—वि० [स०] भाग्यहीन । जिसे जायदाद के हिस्से का अधिकार न हो ।
अभाग्य—पुं० [सं०] प्रारब्धहीनता, बद-किस्मती, बुरा दिन ।
अभाव—पुं० [स०] न होना, अविद्यमानता । त्रुटि । कमी । (पु) दुर्भाव, विरोध ।
अभावना—वि० जो अच्छा न लगे, अप्रिय ।
अभावनीय—वि० [स०] जो भावना या चिंतन मे न आ सके ।
अभाषण—पुं० [सं०] भाषण या बातचीत का न होना ।
अभास(पु)—पुं० दे० 'आभास' ।
अभासना—सक० प्रकाशित या प्रकट करना ।
अभि—उप० [सं०] शब्दो के पूर्व लगकर 'सामने' (जैसे, अभिमुख), 'बुरा' (जैसे, अभियुक्त), 'समीप' (जैसे, अभिसारिका), चारो ओर (जैसे, अभ्युदय, अभियान) आदि अर्थ सूचित करता है । ⊙क्रमण = पुं० चढाई, धावा । ⊙गमन = पुं० पास जाना । सभोग । ⊙गामी = वि० अभि-गमन करनेवाला । ⊙ग्रह = पुं० लूट-खसोट । धावा । झगडा । लेना । ⊙घात = पुं० प्रहार, मार । ⊙चार = पुं० मारण, मोहन, उच्चाटन आदि के लिये किया जानेवाला तात्रिक अनुष्ठान । ⊙चारी = वि० अभिचार करनेवाला । ⊙जन = पुं० वश, परिवार । उच्चकुल मे जन्म । जन्मभूमि । कुल मे सबसे बडा व्यक्ति । ख्याति । ⊙जात वि० अच्छे कुल मे उत्पन्न ।

बुद्धिमान। योग्य। मान्य। सुंदर। ⊙जित् = वि० विजयी। पुं० दिन का आठवाँ मुहूर्त। तीन तारे का सिंघाड़े के आकार का एक नक्षत्र। ⊙ज्ञ = वि० जानकार। निपुण। ⊙ज्ञान = पुं० स्मृति, याद। निश्चय। याद दिलाने की निशानी। ⊙धा = स्त्री० शब्द की तीन शक्तियों में से एक, वाच्यार्थ प्रकाशित करनेवाली शब्दशक्ति। वाच्यार्थ। नाम, पदवी। ⊙धान = पुं० नाम रखना। नाम। कथन। शब्दकोश। ⊙धायक = वि० नाम रखनेवाला। कहनेवाला। वाचक शब्द। सूचक। ⊙धेय = वि० कथनीय, प्रतिपाद्य। वाच्य अर्थ। नाम लेने योग्य। ⊙नंदन = पुं० आनंद। प्रशंसा। विनीत प्रार्थना। स्वागत —पत्र = पुं० किसी के आगमन पर उसके मान या प्रशंसा में पढ़ा और अर्पित किया जानेवाला पाठयपत्र। ⊙नंदनीय = वि० अभिनंदन करने योग्य। ⊙नंदित = वि० जिसका अभिनंदन किया गया हो। ⊙नय = पुं० दूसरे के भाषण और चेष्टा आदि की नकल करना, नाट्य। स्वाँग, नकल। नाटक का खेल। ⊙नव = वि० नया। ताजा। ⊙निविष्ट = वि० पैठा या गड़ा हुआ। बैठा हुआ। अनन्य मन से अनुरक्त, मग्न। ⊙निवेश = पुं० प्रवेश, पैठ। मनोयोग, एकाग्र चिंतन। दृढ़ संकल्प। मरण से उत्पन्न भय (योग)। ⊙नीत = वि० अभिनय किया हुआ, खेला हुआ (नाटक)। निकट लाया हुआ। ⊙नेता = पुं० [स्त्री० अभिनेत्री] अभिनय करनेवाला व्यक्ति, नट, नटी। ⊙नेय = वि० अभिनय करने योग्य। ⊙प्राय = पुं० मतलब अर्थ। ⊙प्रेत = वि० चाहा हुआ, इष्ट। ⊙भव = पुं० पराजय। तिरस्कार। दबाव। आतंक। ⊙भावक = वि० अभिभव करनेवाला। पुं० संरक्षक, सरपरस्त (अल्पवयस्क या अनाथ आदि का) (अं० गार्जियन)। ⊙भाषण = पुं० व्याख्यान, भाषण। सभापति का भाषण। ⊙भूत = वि० पराजित। पीड़ित। वश में किया हुआ। विचलित। चकित या स्तब्ध। ⊙मंत्रण = पुं० मंत्र द्वारा संस्कार। आवाहन। ⊙मत = वि० मनोनीत, वांछित। राय के मुताबिक। पुं० राय, मत। विचार। मनचाही बात। ⊙मति = स्त्री० अभिमान, अहंकार। अपनेपन की मिथ्या भावना। इच्छा। राय, विचार। ⊙मन्यु = पुं० अर्जुन का सुभद्रा से उत्पन्न पुत्र। ⊙मान = पुं० घमंड, अहंकार। ⊙मानी = वि० अभिमान करनेवाला, घमंडी। ⊙मुख = क्रि० वि० सामने, ओर। ⊙यान = पुं० पास जाना। चढ़ाई, धावा। ⊙युक्त = वि० जिसपर अभियोग लगाया गया हो; मुलजिम। ⊙योक्ता = वि० अभियोग लगानेवाला, फरियादी, मुद्दई। ⊙योग = पुं० न्यायालय में किसी पर अपराध या हानि का आरोप, मुकदमा। आक्रमण। उद्योग। लगन। ⊙रत = वि० लीन, अनुरक्त। युक्त, सहित। ⊙रति = स्त्री० अनुराग। लगन। संतोष। ⊙राम = वि० रम्य, आनंददायक, सुंदर। ⊙रुचि = स्त्री० अत्यंत रुचि, पसंद। ⊙लषित = वि० चाहा हुआ, इष्ट। पुं० मनोरथ। ⊙लाख(पु) = स्त्री० दे० 'अभिलाषा'। ⊙लाखना(पु) = सक० चाहना। ⊙लाखा(पु) = स्त्री० दे० 'अभिलाषा'। ⊙लाखी(पु) = वि० दे० 'अभिलाषी'। ⊙लाप = पुं० चाह, इच्छा। वियोग शृंगार की दस दशाओं में से एक, प्रिय से मिलने की इच्छा। ⊙लाषा = स्त्री० इच्छा, कामना, चाह। ⊙लाषी = वि० अभिलाषा करनेवाला। ⊙वंदन = पुं० प्रणाम। स्तुति। ⊙वंदना = स्त्री० दे० 'अभिनंदन'। ⊙वादन = प्रणाम, नमस्कार। स्तुति। ⊙व्यंजक = वि० प्रकट करनेवाला, सूचक। ⊙व्यंजन = पुं० प्रकट या सूचित करना। ⊙व्यक्त = वि० प्रकट या जाहिर किया हुआ। ⊙व्यक्ति = स्त्री० व्यक्त या प्रकट होना। प्रत्यक्ष होना। ⊙शप्त = वि० जिसे शाप

दिया गया हो। जिसपर मिथ्या दोष लगा हो। ⊙शाप = पुं० शाप। मिथ्या दोषारोप, लाछन। ⊙षग = पुं० दृढ मिलाप, आलिंगन। लाछन। कोसना। भूत प्रेत का आवेश। कसम। पराजय। ⊙षिक्त = वि० जिसका अभिषेक हुआ हो। ⊙षेक = पुं० विधिपूर्वक मत्र से जल छिडककर राजपद प्रदान। ऊपर से जल डालकर स्नान। बाधाशाति या मगल के लिये मत्र पढकर कुश दूब से जल छिडकना। यज्ञ आदि के बाद शाति के लिये स्नान। आराध्य देव का स्नान। शिवलिंग पर जल टपकाना। ⊙ष्यद = पुं० बहाव, स्राव। आंख आना। ⊙सधि = ·· षड्यत्र, कुचक्र। धोखा।—ता = स्त्री० स्वय प्रिय का अपमान कर पश्चात्ताप करनेवाली स्त्री, कलहातरिता नायिका। ⊙सरण = पुं० आगे या पास जाना। प्रिय से मिलने जाना। ⊙सरन (पु) = पुं० शरण, सहारा। ⊙सरना (पु) = अक० सचरण करना, जाना। वाछित स्थान को जाना। प्रिय से मिलने सकेतस्थल को जाना। ⊙सार = पुं० प्रिय से मिलने के लिये नायक या नायिका का सकेतस्थल पर जाना। युद्ध। सहारा, बल। ⊙सारना (पु) = अक० दे० 'अभिसरना'। ⊙सारिका = स्त्री० नायिका के दस भेदो मे से एक, स्त्री जो सकेतस्थान मे प्रिय से मिलने के लिये स्वय जाय या प्रिय को बुलावे। ⊙सारिणी = स्त्री० दे० 'अभिसारिका'। ⊙सारी = वि० प्रिया से मिलने सकेतस्थल पर जाने वाला। साधक, सहायक। ⊙हित = वि० कहा हुआ।

अभिन्न—वि० जो अलग न हो, एकरूप। मिला या सटा हुआ। ⊙पद = पुं० श्लेष अलकार का एक भेद।

अभिरना (पु)—अक० लडना, भिड़ना। सहारा लेना।

अभी—क्रि० वि० इसी समय, तुरत।

अभीप्सित—वि० [सं०] चाहा हुआ, इच्छित। प्रिय।

अभीर—पुं० [सं०] गोप, अहीर। एक छद।

अभीष्ट—वि० [सं०] चाहा हुआ, वाछित। पसद का। आशय के अनुकूल। पुं० मनोरथ, इच्छित वस्तु।

अभुक्त—वि० [सं०] न खाया हुआ, जिसका भोग न किया हो, अव्यवहृत। ⊙मूल = पु० ज्येष्ठा नक्षत्र के अत की दो घडी तथा मूल नक्षत्र के आदि की दो घडी।

अभू (पु)†—क्रि० वि० दे० 'अभी'।

अभूखन (पु)†—पु० दे० 'आभूषण'।

अभूत—वि० [सं०] जो हुआ न हो। वर्तमान। अपूर्व, विलक्षण। ⊙पूर्व = वि० जो पहले न हुआ हो। अपूर्व।

अभेद—पु० [सं०] अभिन्नता, एकत्व। समानता। पु० रूपक अलकार का वह प्रकार जिसमे विना निषेध के उपमेय और उपमान का अभेद कथन किया जाय, जैसे, मुखचद्र, चरणकमल। वि० भेदशून्य, एकरूप। (पु) दे० 'अभेद्य'। ⊙वादी = वि० जीवात्मा और परमात्मा मे भेद न माननेवाला, अद्वैतवादी।

अभेद्य—वि० [सं०] जिसका विभाजन या छेदन न हो सके। जो टूट न सके।

अभेय (पु), **अभेव** (पु)—पु० अभेद, एकता। वि० अभिन्न, एक।

अभेरा—पु० मुठभेड, मुकाबला। रगड़, टक्कर।

अभोग—वि० [सं०] विना भोग किया हुआ, अछूता। (पु) दे० 'अभोग्य'। **अभोगी**—वि० भोग न करनेवाला, विरक्त। **अभोग्य**—वि० जो भोग करने के योग्य न हो।

अभोज (पु)—वि० दे० 'अभोज्य'।

अभोज्य—वि० [सं०] न खाने योग्य, जिसके खाने का निषेध हो।

अभौतिक—वि० [सं०] जो पचभूत का न बना हो। अगोचर।

अभ्यंग—पु० [सं०] लेपन। मल मलकर लगाना। सारे शरीर मे तेल लगाना।

अभ्यंतर—पु० [सं०] मध्य, बीच। हृदय। क्रि० वि०, भीतर, अदर।

अभ्यर्थना—स्त्री० [सं०] विनय, प्रार्थना। अगवानी, स्वागत।

अभ्यसित, अभ्यस्त—वि० [सं०] जिसका अभ्यास किया हो, बार बार किया हुआ। जिसने अभ्यास किया हो, दक्ष।

अभ्यागत—वि० [सं०] अतिथि, मेहमान। सामने आया हुआ। आया हुआ।

अभ्यागारिक—वि० [सं०] कुटुंब के पालने में तत्पर। गृहस्थी के झंझट से हैरान।

अभ्यास—पुं० [सं०] किसी काम को बार बार करना, मश्क। आदत। अध्ययन। पाठ। कसरत। कवायद। **अभ्यासी**—वि० अभ्यास करनेवाला, साधक।

अभ्युत्थान—पु० [सं०] उठान। बढती, उन्नति। आरंभ, उदय। आदर के लिये उठकर खड़ा होना।

अभ्युदय—पु० [सं०] उत्पत्ति, आरंभ। बढती, उन्नति। सूर्य आदि ग्रहों का उदय।

अभ्युपगम—पु० [सं०] सामने आना या जाना। स्वीकार, मंजूरी। पहले किसी बात को स्वीकार करना, फिर विशेष परीक्षा द्वारा उसका खंडन करना (न्याय)।

अभ्र—पु० [सं०] बादल। आकाश। अभ्रक। स्वर्ण।

अभ्रक—पुं० [सं०] दे० 'अबरक'।

अमंगल—वि० [सं०] मंगलशून्य, अशुभ। पु० अशुभ, दुःख।

अमंद—वि० [सं०] जो मंद न हो, तेज। कार्यकुशल। श्रेष्ठ।

अम—पु० [कि० समा० में] दे० 'आम'। ⊙**चूर**=पु० सुखाए हुए कच्चे आम का चूर्ण। ⊙**रस**=पु० दे० 'अमावट'। ⊙**राई**=स्त्री० आम का बाग। ⊙**राव** (पु)†=पु० दे० 'अमराई'। ⊙**हर**=पु० छिले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फाँक।

अमका†—वि० अमुक, फलाना।

अमड़ा—पु० छोटे छोटे खट्टे फल का एक पेड़।

अमत्त—वि० [सं०] मदरहित। बिना घमंड का। शांत। सावधान।

अमन—पु० [अ०] शांति, चैन। रक्षा, बचाव।

अमनस्क—वि० [सं०] अनमना, उदास।

अमनिया (पु)—वि० शुद्ध, पवित्र। स्त्री० रसोई पकाने की क्रिया (साधु)।

अमनैक—पु० अवध के वे पुराने काश्तकार जिन्हें लगान के विषय में विशेष अधिकार प्राप्त थे। हकदार। दावेदार, ढीठ, साहसी।

अमनैकी—स्त्री० मनमानी। 'सीख न मानी सयानी सखीन की यों पदमाकर की अमनैकी' (जगद्विनोद १६६)।

अमर—वि० [सं०] जो मरे नहीं, चिरजीवी। पु० देवता। पारा। उनचास पवनों में से एक। ⊙**ता**=स्त्री० मृत्यु का अभाव, चिरजीवन, देवत्व। ⊙**पख** (पु)=पु० पितृपक्ष। ⊙**पति**=पु० इंद्र। ⊙**पद**=पु० मुक्ति। स्वर्ग। ⊙**पुर**=पु० अमरावती। ⊙**बेल**=स्त्री० [हिं०] एक पीली लता या बौंर जिसमें जड़ और पत्तियाँ नहीं होतीं। ⊙**लोक**=पु० स्वर्ग। ⊙**वल्ली**=स्त्री० दे० 'अमरबेल'। पु० काम। घटना। विषय। समस्या।

अमरख (पु)—पु० क्रोध, गुस्सा। रस के ३३ संचारी भावों में से एक, दे० 'अमर्ष'। क्षोभ, दुःख। **अमरखी** (पु)—वि० बुरा माननेवाला, दुःखी होनेवाला।

अमरालय—पु० स्वर्ग।

अमरावती—स्त्री० देवताओं की पुरी, इंद्रपुरी।

अमरी—स्त्री० देवता की स्त्री। देवकन्या।

अमरेश—पु० देवताओं का राजा, इंद्र।

अमरूत†, **अमरूद**—पु० सरसों के बराबर बीजवाला एक गोल मीठा फल और पेड़।

अमर्याद—वि० [सं०] मर्यादाविरुद्ध, बेकायदा। अप्रतिष्ठित। **अमर्यादा**—स्त्री० अप्रतिष्ठा, बेइज्जती।

अमर्ष—पु० [सं०] क्रोध। द्वेष या दुःख जो तिरस्कार करनेवाले का अपकार न कर सकने के कारण होता है। असहिष्णुता।

अमर्षी—वि० असहनशील, जल्दी बुरा माननेवाला।

अमल—वि० [सं०] निर्मल, स्वच्छ। निर्दोष, पापशून्य। पु० [अ०] व्यवहार,

आचरण। शासन, हुकूमत। व्यसन। नशा। आदत, लत। प्रभाव। भोगकाल, समय। ⊙दारी = स्त्री० राज्य। शासन, अधिकार।

अमलतास—पु० लंबी गोल फली और पीले फूल का एक पेड़।

अमलबेत—पु० दवा में प्रयुक्त एक लता। एक प्रकार का खट्टा नीबू।

अमला—स्त्री० [सं०] लक्ष्मी। पु० [हिं०] आँवला। पु० [अ०] कर्मचारी वर्ग। कचहरी में काम करनेवाले।

अमली—वि० [अ०] अमल में आनेवाला, व्यावहारिक। अमल करनेवाला, कर्मण्य। नशेबाज।

अमलोनी—स्त्री० मोटे दल की छोटी और खट्टी पत्तियों का एक साग।

अमाँ—अव्य० एक संबोधन, ए मियाँ, अरे यार।

अमा—स्त्री० [सं०] अमावस्या, कृष्णपक्ष की अंतिम तिथि।

अमातना(पु)—सक० आमंत्रित करना, न्योता देना। 'तुमहूँ करो भोग सामग्री कुल देवता अमाति' (सूर०)।

अमात्य—पु० [सं०] मंत्री, वजीर।

अमान—वि० [सं०] बिना मान या अंदाज का। बेहद, बहुत। मानरहित, तुच्छ। पु० [अ०] रक्षा। शरण।

अमानत—स्त्री० [अ०] अपनी वस्तु दूसरे के पास पुन लेने के लिये रखना। इस प्रकार रखी हुई वस्तु, धरोहर। ⊙**दार** = पु० वह जिसके पास अमानत रखी जाय।

अमाना†—अक० समाना, अटना। फूलना, इतराना। 'तन धन जानि जाम जुग छाया भूलति कहा अमानी' (सूर०)।

अमानी—वि० [सं०] अभिमान रहित। स्त्री० [अ०] वह भूमि जिसके लिये सरकार जमींदार हो। ठेके पर न दिया गया काम। बिगड़ी हुई फसल के विचार से लगान की वसूली। +स्त्री० [हिं०] मनमानी, अँधेर।

अमानुष—वि० [सं०] अलौकिक, मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध, पाशव, पैशाचिक। पु० मनुष्य से भिन्न प्राणी। देवता। राक्षस। **अमानुषी**—वि० [हिं०] दे० 'अमानुषीय'। **अमानुषीय**—वि० मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध, पाशव, पैशाचिक। अलौकिक।

अमाप—वि० [सं०] बिना परिमाण का। बहुत।

अमाय(पु)—वि० दे० 'अमाया'।

अमाया—वि० [सं०] मायारहित, निर्लिप्त। निःस्वार्थ, छलरहित।

अमारी—स्त्री० [अ०] हाथी का मंडपयुक्त हौदा।

अमार्ग—पु० [सं०] कुमार्ग। दुराचरण।

अमाल—पु० [अ०] अमल रखनेवाला, हाकिम।

अमावट—स्त्री० पके आम के रस की सुखाई हुई पर्त या तह। एक मछली।

अमावना(पु)—अक० दे० 'अमाना'।

अमावस—स्त्री० दे० 'अमावस्या'।

अमावस्या—स्त्री० [सं०] कृष्णपक्ष की अंतिम तिथि।

अमाह—पु० एक रोग, आँख के डेले से निकला हुआ लाल मांस।

अमिख(पु)—पु० आमिष, मांस।

अमिट—वि० जो न मिटे, स्थायी। अवश्य होनेवाला, अटल।

अमित—वि० [सं०] अपरिमित। बहुत अधिक।

अमिताभ—वि० अमित तेजयुक्त। पु० बुद्धदेव।

अमित्र—वि० [सं०] शत्रु। जिसका कोई दोस्त न हो।

अमिय(पु)—पु० अमृत, सुधा। ⊙**मूरि** = स्त्री० अमृतबूटी, संजीवनी जड़ी।

अमिरती(पु)+स्त्री० दे० 'इमरती'।

अमिल(पु)—वि० अप्राप्य। बेमेल। जिससे मेलजोल न हो। ऊबड़ खाबड़।

अमिली—स्त्री० दे० 'इमली'। (पु)+स्त्री० दे० विरोध, मनमुटाव।

अमिश्रित—वि० [सं०] जो मिलाया न गया हो। खालिस, शुद्ध।

अमिष—पु० [सं०] छल या बहाने का अभाव। वि० निश्छल। (पु) पुं० दे० 'आमिष'।

अमी(पु)—पु० दे० 'अमिय'। ⊙**कर**(पु) =चंद्रमा।

अमीत—पुं० अमित्र, शत्रु।

अमीन—पु० [अ०] अदालती कर्मचारी जिसके सुपुर्द बाहर का काम हो, जैसे, मौके की तहकीकात, जमीन की पैमायश, कुर्की आदि।

अमीर—वि० [अ०] दौलतमंद, धनी। उदार। सरदार। शासक। **अमीराना**—वि० अमीरों के ढंग का, अमीरी प्रकट करनेवाला। **अमीरी**—स्त्री० दौलतमंदी, धनाढ्यता। उदारता। वि० अमीर का सा, अमीर के योग्य।

अमुक—सर्व०, वि० [सं०] कोई, फलाँ (किसी का बिना नाम लिए कथन)।

अमूर्त—वि० [सं०] मूर्तिरहित, निराकार। पुं० परमेश्वर। आत्मा। जीव। काल। दिशा आकाश। वायु।

अमूर्ति—वि० [सं०] दे० 'अमूर्त'।

अमूल—वि० [सं०] बिना जड़ का। प्रमाण-हीन। मिथ्या। पुं० प्रकृति। ⊙**क**= वि० बिना जड़ का। असत्य। बिना प्रमाण का।

अमूल्य—वि० [सं०] जिसका मूल्य न हो सके, अनमोल। बहुमूल्य, बेशकीमत। बिना मूल्य का, तुच्छ।

अमृत—पुं० [सं०] जीव को अमर बना देने-वाला पेय, सुधा। जल। घी। यज्ञ की बची हुई सामग्री। अन्न। मुक्ति। दूध। औषध। पारा। धन। सोना। बहुत स्वादिष्ट वस्तु। स्वास्थ्यप्रद वस्तु। ⊙**कर**= पुं० चंद्रमा। ⊙**कुंडली**= स्त्री० एक छंद। एक बाजा। ⊙**गति**= स्त्री० एक छंद। ⊙**त्व**= पुं० मरण का अभाव। मुक्ति। ⊙**दान**= पुं० एक ढकनेदार बरतन। ⊙**धारा**= स्त्री० एक वर्णवृत्त जिसके चार चरणों के क्रमशः २०, १२, १६ और ८ अक्षर होते हैं। ⊙**बान**= पुं० [हिं०] लाह का रोगन किया हुआ मिट्टी का बरतन। ⊙**योग**= पुं० फलित ज्योतिष में एक शुभ फलदायक योग। ⊙**संजीवनी**= स्त्री० दे० 'मृतसंजीवनी'। **अमृतांशु**= पुं० चंद्रमा।

अमेजना(पु)—अक० मिलना, मिलावट करना।

अमेट—वि० दे० 'अमिट'।

अमेठना—सक० दे० 'उमेठना'।

अमेध्य—पुं० [सं०] मलमूत्र आदि अपवित्र वस्तु। वि० जो यज्ञ के काम न आ सके, जैसे, पशुओं में कुत्ता और अन्न में मसूर आदि। जो यज्ञ कराने योग्य न हो। अपवित्र।

अमेय—वि० [सं०] अपरिमाण, बेहद। अज्ञेय।

अमेल, अमेली(पु)—वि० अनमिल, असंबद्ध।

अमेव(पु)—वि० दे० 'अमेय'।

अमोघ—वि० [सं०] व्यर्थ न होनेवाला, अचूक।

अमोद—वि० [सं०] मोदरहित। (पु) पुं० दे० 'आमोद'।

अमोल, अमोलक(पु)—वि० अमूल्य, कीमती।

अमोही—वि० विरक्त। निष्ठुर, निर्मोही।

अम्माँ—स्त्री० माता, माँ।

अम्मामा—पुं० [अ०] एक प्रकार का बड़ा साफा।

अम्मारी—स्त्री० दे० 'अबारी'।

अम्ल—पु० [सं०] खटाई। तेजाब। वि० खट्टा। ⊙**पित्त**= यकृत का एक रोग जिसमें अन्न न पचने से खट्टे डकार, वमन, दाह आदि की शिकायत होती है।

अम्लान—वि० [सं०] जो मुरझाया न हो, प्रफुल्ल। जो उदास न हो, प्रसन्न। निर्मल, स्वच्छ।

अम्हौरी—स्त्री० गरमी के दिनों में शरीर में निकलनेवाले छोटे छोटे चुनचुनानेवाले दाने।

अयं—सर्व० [सं०] यह।

अय—पु० लोहा। हथियार। अग्नि। अव्य० संबोधन, हे, ऐ।

अयथा—वि० [सं०] मिथ्या। अयोग्य।

अयन—पुं० [सं०] गति, चाल। मार्ग। सूर्य की भूमध्यरेखा के उत्तर या दक्षिण की गति। राशिचक्र की गति। आश्रम। स्थान। घर। काल। अंश। गाय या भैंस का थन से ऊपर का दूध से भरा भाग। ⊙**काल**= पु० एक अयन का समय।

छह महीने। ⊙संक्रम = पु० मकर और कर्क की संक्रांति। ⊙संक्रांति = स्त्री० दे० 'अयनसंक्रम'। ⊙संपात = पु० अयनांशों का योग।

अयश—पु० [सं०] बदनामी। निंदा। **अयशस्कर**—पु० बदनामी करनेवाला। बदनामी का कारण।

अयस्—पु० [सं०] लोहा। फौलाद। हथियार। ⊙कांत = पु० चुंबक।

अयाँ—वि० [अ०] प्रकट। स्पष्ट, साफ।

अयाचक—वि० [सं०] न माँगनेवाला। संतुष्ट।

अयाची—वि० [सं०] अयाचक। संपन्न, धनी।

अयान—वि० [सं०] बिना यान का, पैदल। (पु)वि० दे० 'अजान'। ⊙ता(पु) = स्त्री० दे० 'अयानप'। ⊙प(पु), ⊙पन(पु) = पु० अज्ञान। भोलापन।

अयाना—वि०, पु० अजान, नासमझ।

अयाल—पु० घोड़े और सिंह की गर्दन के बाल। पु० [अ०] परिवार के लोग, बाल-बच्चे आदि।

अयि—अव्य० [सं०] संबोधन, हे, अरे, अरी।

अयुक्त—वि० [सं०] अयोग्य, अनुचित। अलग। आपद्ग्रस्त। अनमना। युक्ति-शून्य। जो जुता न हो (पशु)।

अयुक्ति—स्त्री० [सं०] युक्ति का अभाव, गड़बड़ी। योग न देना।

अयुग, अयुग्म—पु० [सं०] अकेला, एकाकी। विषम, ताक।

अयुत—पु०, वि० [सं०] दस हजार।

अयोग—पु० [सं०] योग का अभाव। दुष्ट ग्रह आदि का बुरा योग (ज्यो०)। कुसमय। संकट। कूट। अप्राप्ति। वि० बुरा। विमेल। असंभव। वि० [हिं०] अयोग्य, अनुचित।

अयोग्य—वि० [सं०] जो योग्य न हो, अनुपयुक्त। अकुशल। नालायक। अन-धिकारी। नामुनासिब।

अयोनि—वि० [सं०] योनि या कोख से न उत्पन्न हुआ। नित्य।

अरंग—पुं० सुगंध। महक।

अरंभ—(पु) पु० दे० 'आरंभ'।

अरंभना—अक० बोलना, नाद करना। सक० आरंभ करना। अक० आरंभ होना।

अर—पु० [सं०] पहिये की नाभि और नेमि के बीच की आड़ी लकड़ी। कोना। पहिये का आरा। (पु) स्त्री० हठ, अड़।

अरइल—वि० दे० 'अड़ियल'।

अरई—स्त्री० बैल हाँकने की छड़ी या पैने की नुकीली कील।

अरक—पु० [अ०] भभके से निकाला गया रस या सार। अर्क। रस। पसीना। ⊙नाना = पुं० पोदीना और सिरका मिलाकर निकाला गया अर्क।

अरकना—अक० अरराके गिरना। टकराना। फटना, दरकना।

अरकना बरकना—अक० इधर उधर करना, ऐंचातानी करना। "अर कै हरि कै अरकै बरकै फरकै न रुकै भजिबोई चहै" (केशव)।

अरकला(पु)—पु० रोक, मर्यादा।

अरकाटी—पु० कुली भरती कराकर बाहर टापुओं में भेजनेवाला व्यक्ति।

अरकान—पु० [अ०] राज्य के प्रधान कर्म-चारी, मंत्री लोग।

अरगजा—पु० केसर, चंदन, कपूर, आदि को मिलाने से बननेवाला एक सुगंधित द्रव्य। **अरगजी**—पु० अरगजे का सा रंग। वि० अरगजी रंग या सुगंध का।

अरगट(पु)—वि० भिन्न, अलग।

अरगनी—स्त्री० दे० 'अलगनी'।

अरगल(पु)—पु० अर्गल, ब्योंड़ा।

अरगाना(पु)†—अक० अलग होना। चुप्पी साधना, मौन होना। 'अपनी चाल समुझि मन माहीं गुनि अरगाइ रह्यो' (सूर०)। सक० अलग करना, छाँटना।

अरघ—पु० दे० 'अर्घ'।

अरघा—पु० अर्घ देने का पात्र। शिवलिंग स्थापित करने का एक पात्र या आधार, जलहरी। कुएँ की जगत पर पानी निकलने का रास्ता।

अरघान(पु)†—पुं० आघ्राण, गंध।

अरचन(पु)—पु० दे० 'अर्चन'।

अरचना(पु)—सक० अर्चना करना, पूजना।

अरचल†—स्त्री० अड़चन, अंड़स।

अरचा(पु)—स्त्री० दे० 'अर्चा' ।
अरचि(पु)—स्त्री० ज्योति, तेज । अर्चि ।
अरज†—स्त्री०, पु० दे० 'अर्ज' ।
अरजना(पु)—सक० अर्ज या निवेदन करना ।
अरजल—पुं० ऐबी माना जानेवाला एक घोड़ा जिसके दोनो पिछले पैर और एक दाहिना पैर एक रंग के हों ।
अरजी(पु)—स्त्री० अर्जी, प्रार्थनापत्र । (पु)†वि० प्रार्थी ।
अरणि, अरणी—स्त्री० [सं०] एक वृक्ष, गनियार । सूर्य । यज्ञ मे अग्नि निकालने के लिये काठ का एक यंत्र ।
अरण्य—पुं० [सं०] जंगल, वन । कायफल । संन्यासियों का एक भेद । ⊙रोदन=पु० जिसका कोई सुननेवाला न हो । निष्फल निवेदन या कथन ।
अरति—स्त्री० [सं०] चित्त का न लगना, विराग ।
अरथ(पु)†—पुं० दे० 'अर्थ' ।
अरथाना(पु)†—सक० समझाना । 'दसरथ बचन राम बन गवने यह कहियो अरथाई' (सूर०) । बताना । 'भा बिहान पंडित सब आए । काढि पुरान जनम अरथाए" (पदमा०) ।
अरथी—स्त्री० मुर्दे को श्मशान ले जाने का सीढ़ी के ढंग का एक ढाँचा । (पु)वि०दे० 'अर्थी' । पुं० [सं०] रथहीन योद्धा, पैदल ।
अरदन—वि० [सं०] बिना दाँत का । (पु) वि० दे० 'अर्दन' ।
अरदना(पु)—सक० रौंदना, कुचलना । वध या नाश करना ।
अरदली—पुं० दे० 'अर्दली' ।
अरदावा—पुं० दला हुआ अन्न । भरता, चोखा ।
अरदास—स्त्री० निवेदन के साथ भेंट, नजर । देवता के निमित्त भेंट । प्रार्थना ।
अरधंग(पु)—पुं० दे० 'अर्धांग' । **अरधंगी** (पु)—पुं० दे० 'अर्धांगी' ।
अरध(पु)—वि० दे० 'अर्ध' । (पु)क्रि० वि० अंदर । नीचे ।
अरन(पु)—पुं० दे० 'अरण्य' ।
अरना—(पु)अक० दे० 'अड़ना' । पुं०[हिं०] जंगली भैंसा ।
अरनी(पु)—स्त्री० दे० 'अरणि' ।
अरपना(पु)†—सक० अर्पण करना । 'जाववती अरपी कन्या भरि मणि राखी समुहाय' (सूर०) ।
अरब—पु० सौ करोड़ । (पु)पु० घोड़ा । इंद्र । पुं० [अ०] पश्चिम एशिया का एक मरुदेश । इस देश का घोड़ा । इस देश का निवासी ।
अरबराना(पु)†—अक० घबराना, व्याकुल होना ।
अरबरी(पु)—स्त्री० घबराहट, हड़बड़ी ।
अरबिस्तान—पु० [फा०] अरब देश ।
अरबी—वि० [फा०] अरब देश का । पु० अरबी घोड़ा, ताजी । अरबी ऊँट । अरबी बाजा, ताशा । स्त्री० अरबों की भाषा जो अरब से बाहर भी कई देशो की भाषा है ।
अरबीला(पु)—वि० अड़बड़ ।
अरभक(पु)—पुं० दे० 'अर्भक' ।
अरमान—पुं० [फा०] लालसा, चाह ।
अरर—अव्य० व्यग्रता और अचंभे का सूचक शब्द ।
अरराना—अक० टूटने या गिरने का शब्द करना । 'तरु दोउ धरनि परे भहराइ । जर सहित अरराइके आघात शब्द सुनाइ' (सूर०) । सहसा गिरना ।
अरवा—वि० बिना उबाले या भूने धान से निकाला गया चावल ।
अरवाती†—स्त्री० 'ओलती' ।
अरविंद—पुं० [सं०] कमल । सारस ।
अरवी—स्त्री० तरकारी के रूप मे खाया जानेवाला एक कंद, घुइयाँ ।
अरस—वि० [सं०] नीरस, फीका । गँवार, अनाड़ी । (पु) पुं० आलस्य । ⊙परस—पु० आँखमिचौनी । खेल । मिलना, भेंट ।
अरस(पु)—पु० छत, पाटन । महल ।
अरसना(पु)—अक० ढीला या मंद पड़ना । ⊙परसना—सक० आलिंगन करना, भेंटना । 'अरसि परसि हँसि हँसि लपटाही' (सूर०) ।
अरसा—पु० [अ०] समय, अवधि । देर ।
अरसाना(पु)†—अक० अलसाना ।

अरसीला(पु)—वि० आलस्यपूर्ण ।
अरसौहा(पु)†—वि० आलस्यपूर्ण ।
अरहट—पु० कुएँ से पानी निकालने का जलपात्रों की माला से युक्त एक यंत्र, रहट ।
अरहन—पु० आटा या बेसन जो तरकारी आदि पकाते समय उसमे मिलाया जाता है ।
अरहना(पु)—स्त्री० पूजा ।
अरहर—स्त्री० दो दल के दानों का दाल बनाने का एक अनाज, तुअर ।
अरा(पु)—पु० दे० 'आरा' ।
अराक—पु० इराक देश । इस देश का घोडा ।
अराज—वि० [सं०] बिना राजा का । क्षत्रियरहित । पु० दे० 'अराजकता' ।
अराजक—वि० बिना राजा का । बिना शासन का, अशात । ⊙ता = स्त्री० राजा का न होना । शासन का अभाव । अशाति, अधेर ।

अराजी†—स्त्री० दे० 'आराजी' ।
अरात(पु)—दे० 'अराति' ।
अराति—पु० [सं०] शत्रु । मनुष्य के आतरिक शत्रु काम, क्रोध, आदि । ६ की सख्या ।
अराधन(पु)—पु० दे० 'आराधन' । अराधना(पु)—सक० आराधना करना ।
अराधी(पु)—वि० 'आराधी' ।
अराबा—पु० [अ०] गाडी, रथ । तोप लादने की गाडी । जहाज पर तोपो को एक बार एक ओर दागना ।
अरारूट, अरारोट—पु० एक कद जिसका आटा तीखुर की तरह खाने के काम आता है ।
अराल—वि० [सं०] कुटिल, टेढा । पु० राल । मत्त हाथी ।
अरावल(पु)—पु० दे० 'हरावल' ।
अरिंद(पु)—पु० शत्रु ।
अरि—पु० [सं०] शत्रु । चक्र । काम, क्रोध आदि षड्रिपु । छह की सख्या । लग्न से छठा स्थान (ज्यो०) । ⊙हन = पु० शत्रुघ्न । ⊙हा = वि० शत्रु का नाश करनेवाला । पु० शत्रुघ्न ।

अरियाना(पु)—सक० अरे कहकर बोलना, तिरस्कार करना ।
अरिल्ल—पु० सोलह मात्राओं का एक छद ।
अरिष्ट—पु० [सं०] दुःख पीडा । विपत्ति । दुर्भाग्य । अपशकुन । मरणकारक योग (ज्यो०) । एक प्रकार का मद्य जो धूप मे ओषधियो का खमीर उठाकर बनता है । काढा । अनिष्टसूचक उत्पात, जैसे, भूकप । वृषभासुर । सांरी । वि० अविनाशी । शुभ । अशुभ । ⊙नेमि = पु० कश्यप प्रजापति । हरिवंश के अनुसार कश्यप का विनता से उत्पन्न पुत्र ।

अरी—अव्य० स्त्रियो का एक सबोधन ।
अरुतुंद—वि० [सं०] मर्मभेदी, दुःखदायी । परुषभाषी । पु० शत्रु, वैरी ।
अरुंधती—स्त्री० [सं०] वशिष्ठ मुनि की स्त्री । धर्म से व्याही गई दक्ष की कन्या । सप्तर्षि मडल के वशिष्ठ के पास का एक बहुत छोटा तारा ।

अरु(पु)†—सयो० दे० 'औार' ।
अरुचि—स्त्री० [सं०] रुचि न होना । भूख न लगने का रोग । घृणा । ⊙कर = वि० जो रुचिकर या पसद न हो ।
अरुज—वि० [सं०] रोगरहित । निरोग ।
अरुझना(पु)†—अक० उलझना, फँसना । 'इक परत उठत अनेक अरुझत मोह अति मनसा मही' (सूर०) । अटकना, ठहरना । लडना, भिडना ।

अरुझाना(पु)—सक० [अक० अरुझना] उलझाना, फँसाना । 'नागर मन गई अरुझाई (सूर०) । अक० लिपटना, उलझना ।
अरुण—वि० [सं०] लाल, रक्त । पु० सूर्य । सूर्य का सारथी । सूर्योदय के पहले की ललाई । एक कुष्ट रोग । गहरा लाल रंग । कुमकुम । सिंदूर । माघ महीने का सूर्य । ⊙चूड = पु० मुर्गा । ⊙प्रिया = स्त्री० अप्सरा । छाया और सज्ञा नाम की सूर्य की स्त्रियाँ । ⊙शिखा = पु० मुर्गा ।
अरुणाई—स्त्री० [हिं०] लाली, रक्तता ।
अरुणाभ—वि० लाल आभा से युक्त, लाली लिए हुए । अरुणिमा—स्त्री० लाली, सुर्खी । अरुणोदय—पु० सूर्योदय के पहले

की लाली, उप काल। तडका। अरुणोपल—पु० पद्मराग मणि, लाल मानिक।

अरुन(पु)—वि० दे० 'अरुण'। **अरुनारा** (पु)—वि० लाल रग का।

अरुनाना⊙—अक० लाल होना। 'देखि थकित यह रूप को लोचन अरुनाए' (सूर०)। सक० लाल करना।

अरूरना(पु)—अक० दुखी या पीडित होना।

अरूढ(पु)—वि० दे० 'आरूढ'।

अरूप—वि० [सं०] रूपरहित, बिना सूरत-शकल का।

अरूलना—अक० छिदना, चुभना।

अरे—अव्य० [सं०] एक सबोधन, ए, ओ। एक आश्चर्यसूचक अव्यय।

अरेरना(पु)—सक० रगडना।

अरोगना—(पु) अक० दे० 'आरोगना'।

अरोच(पु)—पु० अरुचि, त्याग।

अरोचक—वि० [सं०] अरुचिकर। अन्न आदि का स्वाद न प्रतीत होने का एक रोग।

अरोहन(पु)—पु० दे० 'आरोहण'। **अरोहना** (पु)—अक० आरोहण करना। **अरोही**—वि० दे० 'आरोही'।

अर्क—पु० [सं०] सूर्य। आक, मदार। तांबा। इद्र। स्फटिक। विष्णु। पडित। बारह की सख्या। ⊙ज = वि० सूर्य से उत्पन्न। पु० यम। शनि। अश्विनीकुमार। सुग्रीव। कर्ण। ⊙जा = पु० सूर्य की कन्या। यमुना। तापती।

अर्क—पु० दे० 'अरक'। ⊙नाना = पु० दे० 'अरकनाना'।

अर्गजा(पु)—पु० दे० 'अरगजा'।

अर्गल—पु० [सं०] किवाड बद कर पीछे से आडी लगाने की लकड़ी, ब्योडा। सिटकिनी। हाथी बाँधने की जजीर। अवरोध, रोक।

अर्गला—स्त्री० [सं०] दे० 'अर्गल'।

अर्घ—पु० [सं०] षोडशोपचार मे से एक, देवता को अर्पण किया जानेवाला जल, दूध, कुशा, दही, सरसों, तडुल और जौ का मिश्रण। अर्घ देने का पदार्थ। आदर के लिये जलप्रदान। हाथ धोने के लिये जल देना। भेंट। शहद। मूल्य, भाव। घोड़ा। ⊙पात्र = पु० सूर्य आदि देवताओ को अर्घ या पितरो को तर्पण देने का ताँबे का पात्र, अर्घा।

अर्घा—पु० दे० 'अर्घपात्र'। जलहरी।

अर्घ्य—वि० [सं०] पूज्य। बहुमूल्य। पूजा मे देने योग्य (जल, फूल आदि)। भेंट देने योग्य।

अर्चक—वि० [सं०] अर्चना या पूजा करनेवाला।

अर्चन पु०, **अर्चना**—स्त्री० [सं०] पूजा। आदर सत्कार। वदना, प्रशसा। **अर्चनीय**—वि० पूजा करने योग्य। आदरणीय।

अर्चमान—वि० [सं०] दे० 'अर्चनीय'।

अर्चा—स्त्री० [सं०] पूजा। प्रतिमा।

अर्चि—स्त्री० [सं०] किरण। आग की लपट। तेज, दीप्ति।

अर्चित—वि० [सं०] पूजित। आदर किया हुआ।

अर्ज—स्त्री० [अ०] निवेदन, प्रार्थना। पु० चौडाई। ⊙दाश्त = स्त्री० [फा०] प्रार्थनापत्र।

अर्जन—पु० [सं०] कमाना। संग्रह करना।

अर्जमा(पु)—पु० दे० 'अर्यमा'।

अर्जित—वि० [सं०] अर्जन किया हुआ।

अर्जी—स्त्री० [अ०] प्रार्थनापत्र। ⊙दावा = पु० [फा०] न्यायालय के लिये प्रार्थनापत्र। ⊙नवीस = पु० [फा०] अर्जी लिखने का पेशा करनेवाला।

अर्जुन—पु० [सं०] पाँच पाडवो मे से मँझले का नाम। रंग तथा दवा आदि के काम मे प्रयुक्त एक वृक्ष। हैहयवशी एक राजा, सहस्रार्जुन। सफेद कनेर। मोर। इद्र। वि० सफेद। स्वच्छ।

अर्ण—पु० [सं०] वर्ण, अक्षर। जल, पानी। एक दडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण और आठ रगण होते हैं।

अर्णव—पु० [सं०] समुद्र। सूर्य। अतरिक्ष। दडक वृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण और नौ रगण हो। चार की सख्या।

अर्थ—पु० [सं०] शब्द का अभिप्राय, शब्द

की शक्ति, मानी। मतलब, प्रयोजन। हेतु, निमित्त। स्वार्थ। इंद्रियों के विषय। धन, संपत्ति। मूल्य। लाभ। ⊙कर = वि० [स्त्री० अर्थकरी] जिससे धन मिले। ⊙दंड = पु० अपराध के दंड में लिया जानेवाला धन, जुर्माना। ⊙ना = स्त्री० प्रार्थना। माँगना। ⊙पति = पु० कुबेर। राजा। ⊙पिशाच = वि० धनलोलुप, अत्यंत कंजूस। ⊙मंत्री = पु० राज्य के आयव्यय और राजस्व की व्यवस्था करनेवाला मंत्री। ⊙वाद = पु० वाक्य जिससे कुछ करने की उत्तेजना हो। केवल किसी ओर चित्त प्रवृत्त करने के लिये कहा जानेवाला वाक्य। ⊙वेद = पु० शिल्प शास्त्र। ⊙शास्त्र = पु० शास्त्र जिसमें अर्थ की प्राप्ति, व्यय, वितरण तथा विनिमय के सिद्धांतों का विवेचन हो। शास्त्र जिसमें राज्य के प्रबंध, वृद्धि, रक्षा आदि का विधान हो। ⊙सचिव = पु० दे० 'अर्थमंत्री'। **अर्थांतरन्यास**—पु० काव्यालंकार जिसमें सामान्य से विशेष का या विशेष से सामान्य का समर्थन किया जाय। **अर्थाना**(पु)—सक० अर्थ लगाना। समझाकर कहना। **अर्थात्**—अव्य० यानी, मतलब यह कि। **अर्थापत्ति**—स्त्री० वह प्रमाण जिसमें एक बात कहने से दूसरी बात स्वतः सिद्ध हो जाय। एक अर्थालंकार जिसमें एक बात से दूसरी बात की सिद्धि दिखाई जाय। **अर्थालंकार**—पु० अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखाया जाय (शब्दालंकार से भिन्न)। **अर्थावृत्ति**—स्त्री० दीपक अलंकार का वह भेद जिसमें भिन्न भिन्न रूप के एकार्थवाची क्रियापदों की आवृत्ति हो। **अर्थी**—वि० इच्छा या चाह रखनेवाला। प्रयोजन या गरज रखनेवाला। वादी, मुद्दई। याचक। नौकर। स्त्री० दे० 'अरथी'।

अर्दन—पु० [सं०] पीडन, हिंसा। माँगना। जाना। **अर्दना**(पु)—सक० पीड़ित करना।

अर्दली—पु० किसी बड़े अफसर के काम पर नियुक्त चपरासी।

अर्ध—वि० [सं०] आधा। ⊙चंद्र = पु० आधा चाँद, अष्टमी का चंद्रमा। मोरपख की आँख। नखक्षत। एक प्रकार का बाण। सानुनासिक चिह्न, चंद्रबिंदु। एक प्रकार का त्रिपुंड। बाहर निकालने के लिये गले में हाथ लगाने की मुद्रा। ⊙जल = पु० श्मशान में स्नान कराके आधा जल में और आधा बाहर रखने की क्रिया। ⊙नारीश्वर = पु० तंत्र में शिव का आधा पुरुष और आधा स्त्रीवाला शरीर। ⊙मागधी = स्त्री० पटना और मथुरा के बीच में प्रयुक्त प्राकृत भाषा का एक भेद। ⊙वृत्त = पु० वृत्त या गोले का आधा भाग। ⊙समवृत्त = पु० वृत्त (छंद) जिसका पहला चरण तीसरे चरण के बराबर और दूसरा चौथे के बराबर हो। **अर्धांग**—पु० आधा अंग। लकवा पक्षाघात। शिव।

अर्धांगिनी—स्त्री० पत्नी। **अर्धांगी**—पु० शिव। वि० अर्धांग का रोगी।

अर्धाली—स्त्री० आधी चौपाई।

अर्पना(पु)—सक० अर्पण करना।

अर्पण—पु० [सं०] देना, दान। नजर, भेंट। स्थापन, रखना।

अर्ब दर्ब(पु)—पु० धन दौलत।

अर्बुद—पु० [सं०] दस करोड़। राजस्थान का एक पर्वत, अरावली। मेघ। दो मास का गर्भ। शरीर में गाँठ पड़ने का एक रोग।

अर्भ—पु० [सं०] बच्चा, बालक। शिशिर ऋतु। छात्र। साग पात। ⊙क = वि० छोटा। मूर्ख। दुबला। पु० बालक, बच्चा।

अर्य—पु० [सं०] [स्त्री० अर्या, अर्याणी] स्वामी, ईश्वर। वैश्य। वि० श्रेष्ठ, उत्तम।

अर्यमा—पु० [सं०] सूर्य। बारह आदित्यों में से एक। उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र। मदार।

अर्वाक्—अव्य [सं०] इधर। निकट। नीचे।

अर्वाचीन—वि० [सं०] हाल का, आधुनिक। नया (प्राचीन का विपरीत)।

अर्श—पु० [सं०] बवासीर। पु० [अ०] आकाश। स्वर्ग।

अर्ह—वि० [सं०] पूज्य। योग्य, उपयुक्त। पु० ईश्वर। इंद्र।

अर्हंत—वि० [सं०] पूज्य, वंदित। पु० जिनदेव। बुद्ध।

अर्हित—वि० [सं०] पूजित, आदृत।

अर्ह्य—वि० [सं०] पूज्य, मान्य।

अलं—अव्य० [सं०] दे० 'अलम्'। ⊙करण =पु० सजावट। जेवर, गहना। ⊙कार =पु० सजावट। जेवर, गहना। काव्य में अर्थ या शब्द का चमत्कार, जैसे उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि। नायिका के हाव भाव या चेष्टाएँ। ⊙कृत=वि० विभूषित, सँवारा हुआ। काव्यालंकार-सहित।

अलंग—पु० ओर, तरफ।

अलंघनीय—वि० [सं०] जो लाँघा न जा सके। जिसे काटा या टाला न जा सके। जिसका विरोध न हो सके। जिसे पार न किया जा सके।

अलंघ्य—वि० [सं०] दे० 'अलंघनीय'।

अलंब(पु)—पु० दे० 'आलंब'।

अलंबुषा—स्त्री० [सं०] एक अप्सरा। दूसरे का प्रवेश रोकने के लिये खींची हुई रेखा। लज्जावती या छुईमुई का पौधा।

अल—पुं० [सं०] जहर। बिच्छू का डंक। हरताल।

अलक—स्त्री० [सं०] सिर के लटकते हुए बाल, केश। छल्लेदार बाल। हरताल।

अलकतरा—पु० [अ०] रँगाई आदि के काम आनेवाला एक गाढ़ा काला द्रव्य।

अलकलड़ैता(पु)—वि० दुलारा, लाडला।

अलकसलोरी(पु)—वि० स्त्री० लाडली, दुलारी।

अलका—स्त्री० [सं०] कुबेर की पुरी। आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की। ⊙पति =पु० कुबेर।

अलकाउर(पु)—पु० दे० 'अलकावलि'।

अलकावलि—स्त्री० [सं०] केशों का समूह, बालों की लटें। घूँघरवाले या छल्लेदार बाल।

अलकेस(पु)—पुं० कुबेर। 'भकबकात अलकेस अखंडल' (हिम्मत० ६०)।

अलक्त, अलक्तक—पु० [सं०] आलता। लाख। चपड़ा। महावर।

अलक्षित—वि० [सं०] न देखा हुआ। अज्ञात। गायब। अदृश्य। अचिह्नित।

अलक्ष्य—वि० [सं०] अदृश्य। अज्ञेय। गायब। जिसका लक्षण न कहा जा सके।

अलख—वि० जो दिखाई न पड़े। अगोचर। पु० परमेश्वर। ⊙धारी, ⊙नामी =पुं० गोरखनाथ के अनुयायियों का एक संप्रदाय। उक्त संप्रदाय का साधु। **अलखित**—वि० दे० 'अलक्षित'।

अलग—वि० जुदा, भिन्न। दूर। विशिष्ट।

अलगनी—स्त्री० कपड़े टाँगने की आड़ी रस्सी या बाँस।

अलगरज†—वि० दे० 'अलगरजी'। **अलगरजी**†—वि० बेगरज, बेपरवाह। स्त्री० बेपरवाही।

अलगाना—सक० अलग करना। दूर करना।

अलगोजा—पु० [अ०] एक प्रकार की बाँसुरी।

अलच्छ(पु)—वि० दे० 'अलक्ष्य'।

अलज(पु)—वि० दे० 'अलज्ज'।

अलज्ज—वि० [सं०] निर्लज्ज, बेहया।

अलता—पु० एक प्रकार का लाल रंग जिसे स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं।

अलप(पु)—वि० दे० 'अल्प'।

अलपाका—पु० कोमल लंबे बालोंवाला ऊँट जाति का किंतु छोटा और बिना कूबड़ का एक जानवर जो दक्षिणी अमेरिका में मिलता है। एक प्रकार का पतला, मुलायम और रोएँदार कपड़ा। उक्त जानवर का ऊन और उससे बना कपड़ा।

अलफा—पु० [अ०] एक प्रकार का बिना बाँह का लंबा कुरता।

अलबत्ता—अव्य० [अ०] लेकिन, परंतु। बेशक, निःसंशय। हाँ, बहुत ठीक।

अलबम—पु० तस्वीरें रखने की किताब।

अलबी तलबी—स्त्री० अरबी, फारसी आदि विदेशी भाषाएँ या कठिन उर्दू।

अलबेला—वि० पु० [वि० स्त्री० अलबेली] अल्हड़, बेपरवाह। बाँका, छैला। अनोखा, सुंदर। भोलाभाला।

अलभ्य—वि० [सं०] अप्राप्य । जो कठिनाई से मिल सके । अमूल्य ।

अलम्—अव्य० [सं०] पर्याप्त, काफी ।

अलम—पु० [अ०] रज, दुःख । झंडा ।

अलमस्त—वि० मस्त, लापरवाह । बेफिक्र । मतवाला, बेहोश । **अलमस्ती**—स्त्री० 'अलमस्त' होने का भाव ।

अलमारी—स्त्री० चीजें रखने के खाने या दरवाला खड़ा संदूक ।

अलमुनियम—पु० एक हलकी धातु जो कुछ नीलापन लिए सफेद होती है ।

अललटप्पू—वि० अटकलपच्चू, काल्पनिक । बेठिकाने का ।

अलल बछेडा—पु० घोडे का जवान बच्चा । अल्हड आदमी, व्यक्ति जिसे कुछ अनुभव न हो ।

अलल हिसाब—क्रि० वि० [अ०] बिना हिसाब किए ।

अलवांती—वि० स्त्री० जिसके बच्चा हुआ हो, जच्चा ।

अलवाई—वि० स्त्री० (गाय या भैंस) जिस को बच्चा जने एक या दो महीने हुए हो ।

अलवान—पु० [अ०] ऊनी चादर ।

अलस—वि० [सं०] आलसी, सुस्त ।

अलसाना—अक० सुस्ती या थकावट अनुभव करना । कार्य आरंभ करना न चाहना ।

अलसान, अलसानि (पु)—स्त्री० आलस्य, शैथिल्य ।

अलसी—स्त्री० एक पौधा और उसके बीज जिनसे रंगसाजी आदि के काम का तेल निकलता है । तीसी ।

अलसेट—स्त्री० ढिलाई, व्यर्थ की देर । (पु)टालमटूल, भुलावा । बाधा, अडचन । **अलसेटिया**—वि० अलसेट करनेवाला ।

अलसौंहा(पु)—वि० आलस्ययुक्त, शिथिल ।

अलहदगी—स्त्री० [फा०] अलगाव, पार्थक्य ।

अलहदा—वि० [अ०] अलग, पृथक् ।

अलहदी†—वि० दे० 'अहदी' ।

अलहन—पु० स्त्री० विपत्ति या अभाग्य का उदय । कमबख्ती ।

अलाई—वि० आलसी, काहिल । अलाउद्दीन का, जैसे, अलाई मोहर । पु० घोडे की एक जाति ।

अलात—पु० [सं०] जलती हुई लकडी । अंगार । ⊙**चक्र** = पु० जलती हुई लकडी को तेज घुमाने से बना हुआ मंडल । बनेठी । एक नृत्य ।

अलान—पु० बेल चढाने के लिये गाडी हुई लकडी । हाथी के बाँधने का खूंटा या सिक्कड । बेडी ।

अलानिया—क्रि० वि० खुले आम, सबके सामने ।

अलाप—(पु)पु० दे० 'आलाप' । **अलापना**—अक० गाने में तान लगाना, स्वर साधना । सक० गाना । बात करना, बोलना । **अलापी**(पु)—वि० बोलनेवाला । तान छेडनेवाला ।

अलाम(पु)—वि० बात बनानेवाला, मिथ्यावादी ।

अलामत—स्त्री० [अ०] लक्षण, चिह्न, पहचान ।

अलायक(पु)†—पु० दे० 'अयोग्य' ।

अलार—पु० [सं०] किवाड । अलाव, आँवाँ ।

अलाल—वि० आलसी । अकर्मण्य ।

अलाव—पु० तापने के लिये जलाई हुई आग, कौडा ।

अलावा—क्रि०वि०[अ०]सिवाय, अतिरिक्त ।

अलिंग—वि० [सं०] बिना चिह्न या लक्षण का । जिसका लक्षण न बताया जा सके । पु० दोनों लिंगों में व्यवहृत शब्द, जैसे, हम, तुम आदि (व्या०) ।

अलिंजर—पु० [सं०] पानी रखने का मिट्टी का बरतन, घडा ।

अलिंद—पु० [सं०] मकान के बाहरी द्वार के आगे का चबूतरा या छज्जा । (पु)पुं० भौंरा ।

अलि—पु० [सं०] भौंरा । कोयल । कौआ । बिच्छू । कुत्ता । मदिरा । स्त्री० दे० 'अली' ।

अली—स्त्री० सखी, सहेली । पंक्ति, कतार । पु० भौंरा ।

अलीक—वि० [सं०] मिथ्या । अप्रिय । (पु)अप्रतिष्ठित । पु० झूठ । अप्रिय वस्तु । (पु)अप्रतिष्ठा ।

अलीजा(पु)—वि० बहुत, अधिक । श्रेष्ठ ।

अलीन—पु० द्वार के चौखट की खडी लंबी लकडी । दालान आदि का दीवार से सटा खंभा । वि० अनुचित, बेजा ।

अलील—वि० [अ०] बीमार, रुग्ण।
अलीह(पु)—वि० मिथ्या। अनुचित।
अलुक—पु० [सं०] एक समास जिसमे बीच की विभक्ति का लोप नही होता, जैसे, सरसिज, अरुंतुद।
अलुझना(पु)—अक० दे० 'उलझना'।
अलुटना(पु)—अक० लड़खड़ाना। गिरना पड़ना।
अलूप—वि० दे० 'लुप्त'। पु० दे० 'लोप'।
अलूला(पु)—पु० बुलबुला। लपट।
अलेख—वि० जिसकी भावना न की जा सके, अज्ञेय। बेहिसाब, अनगिनत। **अलेखी**(पु)—वि० बेहिसाब या अडबड काम करनेवाला। अन्यायी।
अलोक—वि० [सं०] अदृश्य। निर्जन। पुण्यहीन। पु० पाताल आदि लोक। परलोक। मिथ्यादोष। निंदा। **अलोकना**—(पु) सक० देखना।
अलोना—वि० जिसमे नमक न पड़ा हो। जिसमे नमक न खाया जाय। (व्रत भी) फीका, स्वादरहित।
अलोप(पु)—वि० दे० 'लोप'। **अलोपना**—अक० लुप्त हो जाना। सक० लुप्त करना।
अलोल—वि० अचचल, स्थिर।
अलौकिक—वि० [सं०] जो इस लोक मे न दिखाई दे, लोकोत्तर। अपूर्व। अमानुषी। अस्वाभाविक।
अल्कत—वि० [अ०] काटा या रद्द किया हुआ।
अल्प—वि० [सं०] थोड़ा, कम। छोटा। पु० एक काव्यालकार जिसमे आधेय की अपेक्षा आधार की अल्पता वर्णित होती है। ⊙**जीवी**=वि० कम जीनेवाला। ⊙**ज्ञ**=वि० कम ज्ञान रखनेवाला। नासमझ। ⊙**प्राण**=पु० वर्ण या ध्वनि जिसके उच्चारण मे प्राणवायु का अल्प प्रयोग हो, वर्णमाला मे प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ अक्षर य, र, ल, व। ⊙**मत**=पु० थोड़े से लोगो का मत। मत जो औरो के मुकाबले मे कम हो। ⊙**वयस्क**=वि० कम उम्र का। ⊙**श.**=क्रि० वि० थोड़ा थोड़ा करके, धीरे धीरे। ⊙**संख्यक**=वि० कम गिनती का। कम जनसख्या का। **अल्पायु**—वि० थोड़े समय जीनेवाला।
अल्ल—पु० वश या उपगोत्र का नाम, जैसे, मुकर्जी, मिश्र आदि।
अल्लम गल्लम—पु० अडवड, वकवाद।
अल्ला—पु० दे० 'अल्लाह'। स्त्री० [सं०] माता।
अल्लाना(पु)†—अक० चिल्लाना, जोर से बोलना।
अल्लाह—पु० [अ०] ईश्वर। **अल्लाहो अकबर**=ईश्वर महान् है।
अल्हजा(पु)—पु० इधर उधर की बात, गप।
अल्हड़—वि० कम उम्र का, दुनियादारी के ज्ञान या अनुभव से हीन। बेपरवाह, मनमौजी। गँवार, अनाड़ी। उद्धत।
अव—(पु) अव्य० और। उप० [सं०] शब्दो के पूर्व लगकर निश्चय, अनादर, नीचापन, व्याप्ति आदि का बोध करता है। ⊙**कलन**=पु० देखना। जानना। ग्रहण। इकट्ठा करके मिलाना। ⊙**कलना**(पु)=सक० विचार मे आना। (पु)**काश**=पु० खाली वक्त, फुर्सत। रिक्त स्थान। अतरिक्ष, शून्य स्थान। दूरी। मौका। ⊙**किरण**=पु० बिखेरना, फैलाना। ⊙**कीर्ण**=वि० बिखेरा या फैलाया हुआ। नष्ट। चूर चूर किया हुआ। ⊙**गत**=वि० ज्ञात। नीचे गया हुआ, गिरा हुआ। ⊙**गतना**(पु)=सक० समझना, विचारना। ⊙**गति**=स्त्री० धारणा, समझ। बुरी गति। ⊙**गाधना**(पु)=सक० दे० 'अवगाहना'। ⊙**गास**(पु)=पु० जगह, स्थान, अवकाश। ⊙**गाह**(पु)=वि० अथाह, बहुत गहरा। कठिन। (पु) पु० गहरा स्थान। कठिनाई। पु० [सं०] भीतर पैठना। जल मे घुसकर स्नान। ⊙**गाहन**=पु० पानी मे पैठकर स्नान। प्रवेश, पैठ। मथन, विलोडन। खोज। लीन होकर विचार करना। ⊙**गाहना**(पु)=अक० अवगाहन करना। सक० छानबीन करना। विचलित करना। चलाना, हिलाना। विचारना। 'सूर स्याम

आवहिं की नाही मन मन यह अवगाहत' (सूर०)। धारण करना। ⊙गुंठन = पु० छिपाना या ढकना। पर्दा, घूंघट। रेखा से घेरना। ⊙गुंठित = वि० छिपा या ढका हुआ। ⊙गुंफन = पु० गूंथना, गुहना। ⊙गुण = पु० दोष, ऐब। बुराई। ⊙ग्रह = पु० बाधा। वर्षा का अभाव। बांध। संधिविच्छेद (व्या०)। ('अनुग्रह' का विलोम)। स्वभाव। शाप। ⊙घट (पु)† = वि० विकट, दुर्गम। ⊙चय = पु० चुनकर इकट्ठा करना। ⊙चेतन = वि० अवचेतना संबंधी। आंशिक चेतनावाला (अ० सबकांशस)। ⊙चेतना = स्त्री० मन की वह अवस्था जिसमे उसकी क्रियाओं का प्रत्यक्ष बोध न हो, अंत सज्ञा (अ० सबकांशसनेस)। ⊙च्छिन्न = वि० अलग किया हुआ। विशेषण युक्त। ⊙च्छेद = पु० अलगाव, भेद। सीमा। निश्चय। परिच्छेद। ⊙च्छेदक = वि० अवच्छेद करनेवाला। पु० विशेषण। ⊙ज्ञा = स्त्री० अनादर। आज्ञा की उपेक्षा, अवहेला। पराजय। एक काव्यालंकार जिसमे एक वस्तु के गुण या दोष से दूसरी वस्तु का गुण या दोष न होना दिखाया जाय। ⊙ज्ञात = वि० अपमानित, उपेक्षित। ⊙तंस = पु० जेवर। शिरोभूषण। मुकुट। माला। बाली, कर्णफूल। ⊙तरण = पु० नीचे आना। उतार। जन्म। अवतार। पार होना। घाट। कथन या लेख का कोई अंश ज्यों का त्यों अन्यत्र लिखना या कहना। इस प्रकार कहा या लिखा हुआ अंश। उद्धरण। ⊙तरणचिह्न = पु० अवतरणसूचक चिह्न (" ")। ⊙तरणिका = स्त्री० ग्रंथ की प्रस्तावना। रीति। ⊙तरना (पु) = अक० अवतार लेना। 'बहुरि हिमाचल के अवतरो' (सूर०)। ⊙तरित = वि० उतरा हुआ। अवतार लेकर आया हुआ। उद्धृत। पार पहुँचा हुआ। ⊙तार = पु० देवता या ईश्वर का लौकिक शरीर धारण करना। जन्म। उतरना, नीचे आना। (पु) सृष्टि। ⊙तारन (पु) = सक० रचना, बनाना। जन्म देना। 'धन्य घरी जिहि तू अवतारी' (सूर०)। ⊙तारी = वि० अवतार लेनेवाला। अलौकिक। ⊙तीर्ण = वि० उतरा हुआ जिसने अवतार धारण किया हो। उद्धृत। ⊙दशा = स्त्री० बुरी हालत। ⊙दात = वि० उज्वल। श्वेत। स्वच्छ। सुंदर। पीला। ⊙दान = प्रशस्त कर्म। पराक्रम, बल। खंडन। अतिक्रम। ⊙दान्य = वि० पराक्रमी। अतिक्रमणकारी। कंजूस। ⊙दारण = पु० चीरफाड, तोड फोड। मिट्टी खोदने का रंभा। ⊙धान = पु० ध्यान, मनोयोग। सावधानी। पु० गर्भ। ⊙धारण = पु० निश्चय, विचारपूर्वक निर्धारण। ⊙धारना (पु) = सक० धारण करना, ग्रहण करना। 'विप्र असीस विनति अवधारा' (पदमा०)। ⊙धू (पु) = पु० दे० 'अवधूत'। ⊙धूत = पु० संन्यासी, योगी। साधुओं का एक भेद। वि० कंपित। विनष्ट। ⊙नत = वि० नीचा, झुका हुआ। अधोगति को प्राप्त। ⊙नति = स्त्री० घटती, कमी। अधोगति, अनुन्नति। झुकाव। नम्रता। ⊙पात = पुं० गिराव। उतार, उतरना हाथी को फँसाने का एक गड्ढा। नाटक मे भय आदि से भागना, व्याकुल होना आदि दिखाकर अंक की समाप्ति। ⊙बोध = पु० जागना। ज्ञान। होश। ⊙भृथ = पु० यज्ञ की समापिका क्रिया। यज्ञ के अंत का स्नान। ⊙मति = स्त्री० अवज्ञा, अपमान। निंदा। ⊙मर्दन = पु० पीड़ा देना, दबाना। कुचलना। पीसना। ⊙मर्श संधि = स्त्री० पाँच प्रकार की संधियो मे से एक (नाट्यशास्त्र)। ⊙मान = पु० अपमान, अवज्ञा। ⊙मानना = स्त्री० दे० 'अवमान'। ⊙मूल्यन = पुं० सरकार द्वारा अन्य देशो की तुलना मे अपनी मुद्रा की विनिमय दर घटा देना (अ० डीवैल्यूएशन)। ⊙यव = पुं० हिस्सा, भाग। शरीर का भाग। तर्कपूर्ण वाक्य का एक भेद (न्याय)। ⊙यवी = वि० बहुत से अवयव या विभागोवाला, अंगी। संपूर्ण। पुं० बहुत अवयववाली वस्तु। शरीर। ⊙रत =

वि० जो रत न हो, निवृत्त। अलग। स्थिर। ⊙रति = स्त्री० विराम, ठहराव। छुटकारा। ⊙राधना (पु) = सक० पूजा करना। ⊙राधक (पु) = वि० आराधना करनेवाला। ⊙राधन (पु) = पुं० आराधन, पूजा। ⊙राधी (पु) = वि० आराधना करनेवाला। ⊙रुद्ध = वि० रुका हुआ। घिरा हुआ। ⊙रूढ़ = वि० उतारा हुआ, 'आरूढ' का उलटा। ⊙रेखना (पु) —सक० लिखना, चित्रित करना। देखना। 'भीतर जब होय तब चित्त अवरेखिये' (सूर०)। अनुमान करना। देखना। मानना। ⊙रोध = पुं० रुकावट घेरा। बद करना। अंत पुर। ⊙रोधक = वि० अवरोध करनेवाला। ⊙रोधना (पु) = सक० रोकना, निषेध करना। ⊙रोधित = वि० अवरोध किया हुआ। ⊙रोधी = वि० रोकनेवाला। घेरनेवाला। ⊙रोह = पुं० उतार, गिराव। अवनति। ⊙रोहण = पुं० उतरना, नीचे की ओर जाना। ⊙रोहना (पु) = अक० उतरना, नीचे आना। चढना। सक० खीचना। चित्रित करना। रोकना। ⊙रोही = पु० ऊँचे स्वर से नीचे स्वर की ओर आनेवाला, 'आरोही' का उलटा। ⊙लंबन = पु० आश्रय, सहारा। धारण, ग्रहण। ⊙लंबना (पु) = सक० अवलब या आश्रय लेना। 'जिनहि अतन अवलंबई सो आलबन जान' (केशव)। ⊙लंबित = वि० आश्रित, टिका हुआ। निर्भर। ⊙लंबी = वि० अवलंब करनेवाला। ⊙लिप्त = वि० लगा हुआ, पोता हुआ। आसक्त। घमडी। ⊙लेखना = सक० खुरचना। लकीर खीचना, चिह्न डालना। ⊙लेप = पु० उबटन, लेप। घमड। ⊙लेपन = लगाना, पोतना। वस्तु जो लगाई जाय। घमड। ऐब। ⊙लेह = पु० चटनी। वह औषध जो चाटी जाय। ⊙लेहन = पु० चाटना। चटनी। ⊙लोकन (पु) = देखना। जाँच पडताल। ⊙लोकना (पु) = सक० देखना। जाँचना। ⊙लोकनि (पु) = स्त्री० आँख। चितवन। ⊙लोकनीय = वि० देखने योग्य। ⊙लोचना = सक० दूर करना। ⊙शिष्ट = वि० शेष, बचा हुआ। ⊙शेष = वि० शेष, बाकी। समाप्त। पु० बची हुई वस्तु। समाप्ति। ⊙सन्न = वि० दुखी। सुस्त। नाश होनेवाला। ⊙सर = पु० मौका, सयोग। समय। फुरसत। एक काव्यालकार। ⊙सर्पण = पु० नीचे उतरना। ⊙साद = पु० विषाद, खेद। दीनता। थकावट। कमजोरी। नाश। ⊙सान पु० समाप्ति, अत। ठहराव। सीमा। मरण। ⊙सित = वि० समाप्त। बीता हुआ। बदला हुआ। ⊙सेख (पु) पु०, (पु) वि० दे० 'अवशेष'। ⊙सेचन = पु० सीचना। पसीना निकलना। रोगी के शरीर से पसीना निकलने की क्रिया। फस्द आदि से शरीर का रक्त निकालना। ⊙सेषित (पु) = वि० दे० 'अवशिष्ट'। ⊙स्था = स्त्री० हालत। समय। वय, उम्र। परिस्थिति। ⊙स्थान = पु० स्थिति, सत्ता। जगह, स्थान। ⊙स्थित = वि० उपस्थित, हाजिर, मौजूद। ठहरा हुआ। रखा हुआ। ⊙स्थिति = स्त्री० मौजूदगी, स्थिति। अस्तित्व। ⊙हित्था = स्त्री० भय, गौरव, लज्जा आदि के कारण हर्ष आदि को चतुराई से छिपाने का भाव। ⊙हेला, ⊙हेलना = स्त्री० उपेक्षा, बेपरवाही। तिरस्कार, अवज्ञा। ⊙हेलित = वि० जिसकी अवहेलना की गई हो।

अवक्खन (पु)—पु० देखना।

अवगारना (पु)—सक० समझाना बुझाना। 'सूर कहा याके मुख लागत कौन याहि अवगारे' (सूर०)।

अवचट†—पु० अचानक। कठिनाई. अडस।

अवछंग (पु)—पु० दे० 'उछग'।

अवट—पु० [सं०] गड्ढा। कुंड।

अवटना—सक० मथना। द्रव पदार्थ को आँच पर गाढा करना। '... सद्य दधि दूध ल्याई अवटि अबहिं हम · '(सूर०)।

अवडेर†—पु० झमेला, झंझट। **अवडेरना** (पु)—सक० न बसने देना। चक्कर मे डालना।

अवडेरा—वि० चक्करदार। बेढब।

अवद्य—वि० [सं०] निंद्य, पापी। त्याज्य।
अवध—पु० प्राचीन कोशल देश। अयोध्या नगरी।Ⓟ स्त्री० दे० 'अवधि'।Ⓟ वि० न मारने योग्य।
अवधि—स्त्री० [सं०] निर्धारित समय, मियाद। हद, पराकाष्ठा। अंत समय। अव्य०तक, पर्यंत।⊙मानⓅ=पुं० समुद्र।
अवधी—वि० अवध संबंधी। स्त्री० अवध की बोली।
अवन—पुं०[सं०] प्रसन्न करना। रक्षण। Ⓟस्त्री० अवनि, भूमि। सड़क।
अवनाⓅ—अक० दे० 'आवना'।
अवनि—स्त्री० [सं०] पृथ्वी, जमीन।
अवम—पुं० [सं०] पितरों का एक गण। अधिमास।⊙तिथि=स्त्री० तिथि जिसका क्षय हो गया हो।
अवरⓅ†—वि० अन्य, दूसरा, और। संयो० और। वि० [सं०] । अधम। अश्रेष्ठ। Ⓟवि० निर्बल।
अवरतⓅ—पुं० दे० 'आवर्त'।
अवरेब—पुं० तिरछी चाल। कपड़े की तिरछी काट। मोड़। कठिनाई, उलझन। झगड़ा।
अवर्ण्य—वि० [सं०] वर्णन के अयोग्य। जो वर्ण्य या उपमेय न हो, उपमान।
अवर्तⓅ—पुं० पानी का भँवर। घुमाव।
अवर्षण—पुं० [सं०] वर्षा का अभाव।
अवलीⓅ—स्त्री० पंक्ति, कतार। समूह।
अवलीकⓅ—वि० निष्कलंक, शुद्ध।
अवश—वि० [सं०] विवश, लाचार।
अवश्य—क्रि० वि० [सं०] निःसंदेह, जरूर। वि० जो वश में न आ सके।
अवश्यमेव—क्रि० वि० अवश्य ही, जरूर।
अवश्यंभावी—वि० अवश्य होनेवाला, अटल।
अवसिⓅ—क्रि० वि० दे० 'अवश्य'।
अवसेरⓅ—स्त्री० देर, विलंब। चिंता, उचाट। दुःख, बेचैनी। **अवसेरना**—सक० तंग करना, दुःख देना।
अवांछनीय—वि० [सं०] जिसकी चाह या आवश्यकता न हो।
अवांछित—वि० दे० 'अवांछनीय'।
अवांतर—वि० [सं०] बीच का। अंतर्गत। पुं० बीच। भीतर।
अवाई—स्त्री० आगमन। गहरी जोताई।
अवाक्—वि० [सं०] चुप, मौन। स्तब्ध, चकित। **अवाङ्मुख**—वि० नीचे की ओर मुँहवाला। लज्जित।
अवाच्य—वि० [सं०] अनिंदित। जिससे बात करना उचित न हो। अवर्णनीय। पु० गाली, अपशब्द।
अवाजⓅ—स्त्री० आवाज, शब्द।
अवार—पु० [सं०] नदी के इस पार का किनारा, 'पार' का उलटा।
अवारजा—पु० [फा०] वही जिसमें प्रत्येक आसामी की जोत आदि लिखी जाती है। जमा खर्च की वही। संक्षिप्त लेखा।
अवारनाⓅ—सक० रोकना, मना करना। दे० 'वारना'।
अवासⓅ—पु० दे० 'आवास'।
अवि—पु०[सं०] सूर्य। आक। भेड़ा। बकरा। पर्वत। Ⓟअव्य० और, और भी।
अविकच—वि० [सं०] बिना खिला हुआ। असफल।
अविकल—वि० [सं०] ज्यों का त्यों। पूरा। जो विकल न हो, शांत।
अविकल्प—वि० [सं०] निश्चित। असंदिग्ध।
अविकारी—वि० [सं०] जिसमें विकार न हो, एकरस। जो किसी का विकार न हो।
अविगत—वि० [सं०] अज्ञेय। अनिर्वचनीय। नित्य।
अविचार—पु० [सं०] भले बुरे को न पहचानना। मूर्खता। गलती। अन्याय।
अविचारी—वि० अविचारवाला।
अविच्छिन्न—वि० [सं०] लगातार, व्यवधान रहित। जो विच्छिन्न न हो।
अविज्ञ—वि० [सं०] अज्ञानी, नासमझ, अनभिज्ञ। **अविज्ञात**—वि० [सं०] अज्ञात। बिना समझा हुआ। अच्छी तरह न समझा हुआ। **अविज्ञेय**—वि०[सं०] जो जाना न जा सके। न जानने योग्य।
अविदित—वि० [सं०] जो विदित न हो। अप्रकट, गुप्त।
अविद्यमान—वि० [सं०] अनुपस्थित। असत्। मिथ्या।
अविद्या—स्त्री० [सं०] मिथ्या ज्ञान। मोह।

माया। कर्मकांड। सांख्य शास्त्र के अनुसार प्रकृति।
अविनय—पुं० [सं०] विनय का अभाव, उद्दंडता, ढिठाई।
अविनश्वर—वि० [सं०] जिसका नाश न हो।
अविनाभाव—पुं० [सं०] अनिवार्य संबंध या लक्षण जैसे अग्नि और धूम का।
अविनाशी—वि० [सं०] जिसका विनाश न हो, शाश्वत।
अविनीत—वि० [सं०] जो विनीत न हो, उद्धत। दुर्दांत।
अविभक्त—वि० [सं०] मिला हुआ। शामिल। समूचा। एक।
अविरत—वि० [सं०] लगातार। लगा हुआ। क्रि० वि० लगातार। हमेशा।
अविरति—स्त्री० [सं०] निवृत्ति का अभाव, लीनता। विषयों में आसक्ति। अशांति।
अविरथा(पु)—क्रि० वि० दे० 'वृथा'।
अविरल—वि० [सं०] बहुत। घना। मिला हुआ।
अविराम—वि० [सं०] बिना विराम या विश्राम का। लगातार, निरंतर।
अविरुद्ध—वि० [सं०] अनुकूल।
अविरोध—पुं० [सं०] समानता। अनुकूलता। मेल।
अविलंब—क्रि० वि० बिना देर किए, तुरंत।
अविवाहित—वि० [सं०] बिना ब्याहा, कुँआरा।
अविवेक—पुं० [सं०] भले बुरे की समझ का, अभाव। नादानी, मूर्खता। **अविवेकी**—वि० अविवेकयुक्त।
अविशेष—वि० [सं०] बिना विशेषता का, समान, तुल्य। पुं० भेदक धर्म का अभाव।
अविश्रांत—वि० [सं०] बिना थका हुआ। क्रि० वि० लगातार।
अविश्वसनीय—वि० [सं०] जो विश्वास के योग्य न हो।
अविश्वास—पुं० [सं०] विश्वास या एतबार का अभाव। संदेह। **अविश्वासी**—वि० किसी पर विश्वास न करनेवाला। जिसपर विश्वास न किया जाय।
अविषय—वि० [सं०] बिना विषय का। मन या इंद्रिय की पहुँच के बाहर। प्रकरणविरुद्ध।
अविहड़(पु)—वि० अखंड, अनश्वर। दे० 'वीहड़'।
अविहित—वि० [सं०] जो शास्त्रोक्त न हो, अनुचित।
अवेक्षण—पुं० [सं०] देखना। जाँच पड़ताल।
अवेज(पु)—पुं० बदला, प्रतिकार।
अवेस(पु)—पुं० दे० 'आवेश'।
अवैतनिक—वि० [सं०] बिना वेतन का (कोई कार्य या पद)।
अवैदिक—वि० [सं०] वेदविरुद्ध। वेदों के बाहर का।
अव्यक्त—वि० [सं०] अप्रकट। अज्ञात। पुं० ब्रह्मा, ईश्वर। शिव। विष्णु। कामदेव। सूक्ष्म शरीर। सुषुप्ति अवस्था। प्रकृति (सांख्य)।
अव्यय—वि० [सं०] जिसमें विकार न हो, एकरस। नित्य। पुं० शब्द जिसका रूप किसी वचन, लिंग या कारक में न बदले (व्या०)। ब्रह्मा। विष्णु। शिव। **अव्ययीभाव**—पुं० विशेषण या क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त समास जिसमें पूर्व पद अव्यय होता है; जैसे—अतिकाल, अनुरूप आदि।
अव्यर्थ—वि० [सं०] सफल। सार्थक। अचूक।
अव्यवस्था—स्त्री० [सं०] नियमहीनता, बेकायदगी। प्रबंध का अभाव, गड़बड़। शास्त्रविरुद्ध व्यवस्था। **अव्यवस्थित**—वि० बिना इंतजाम का। अनियंत्रित। बेढंगा। शास्त्रीय मर्यादा से हीन। चंचल, अस्थिर।
अव्यवहार्य—वि० [सं०] जो व्यवहार में न लाया जा सके। जातिच्युत।
अव्याकृत—स्त्री० [सं०] जिसमें विकार न हुआ हो। गुप्त। पुं० प्रकृति (सांख्य)।
अव्याप्ति—स्त्री० [सं०] व्याप्ति का अभाव। संपूर्ण लक्ष्य पर लक्षण के न घटने का दोष (न्याय)।

अव्याहत—वि० [सं०] बेरोक, बाधारहित। सत्य।
अव्युत्पन्न—वि० [सं०] अकुशल, मंद। जिस शब्द की व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके (व्या०)। व्याकरण न जाननेवाला।
अव्वल—वि० [अ०] पहला, प्रथम। उत्तम, श्रेष्ठ। पु० आदि, आरंभ।
अशंक—वि० [सं०] बेडर, निर्भय।
अशंभु (पु)—पु० अमंगल, अहित।
अशकुन—पु० [सं०] बुरा शकुन या लक्षण।
अशक्त—वि० [सं०] निर्बल। असमर्थ।
अशक्ति—स्त्री० [सं०] निर्बलता। बुद्धि और इंद्रियों का बेकाम होना (सांख्य)।
अशक्य—वि० [सं०] जो न हो सके, असाध्य।
अशन—पु० [सं०] भोजन। खाने की क्रिया।
अशनि—पु० [सं०] वज्र, बिजली।
अशरण—वि० [सं०] बिना शरण का, आश्रयहीन।
अशरफी—स्त्री० [फा०] सोने का एक सिक्का, मोहर। पीले रंग का एक फूल।
अशराफ—वि० [अ० शरीफ का बहु०] शरीफ, भद्र।
अशरीरी—वि० [सं०] बिना शरीर का।
अशांत—वि० [सं०] बेचैन। चंचल। असंतुष्ट। क्षुब्ध।
अशांति—स्त्री० [सं०] बेचैनी। चंचलता। असंतोष। क्षोभ।
अशिक्षित—वि० [सं०] अपढ़। अनाड़ी, गँवार। जो शिक्षित न हो।
अशिव—पु० [सं०] अमंगल, अहित।
अशिष्ट—वि० [सं०] उजड्ड, बेहूदा, गँवार।
अशुचि—वि० [सं०] अपवित्र। मैला, गंदा।
अशुद्ध—वि० [सं०] अपवित्र। बिना शोधा या साफ किया हुआ। गलत।
अशुद्धि—स्त्री० [सं०] अपवित्रता। गलती।
अशुन (पु)—पु० अश्विनी नक्षत्र।
अशुभ—पुं० [सं०] अमंगल। पाप, अपराध। वि० अमंगलकारी, बुरा।
अशेष—वि० [सं०] पूरा। समाप्त। अनंत, बहुत।
अशोक—वि० [सं०] शोकरहित। एक पेड़ जो लाल फूलोंवाला होता है और जो स्त्रीरोगों की चिकित्सा के काम में आता है। इसे रक्ताशोक भी कहते हैं। एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम की तरह लंबी और किनारों पर लहरदार होती हैं। पारा। मौर्य वंश का प्रसिद्ध सम्राट्। ⊙पुष्पमंजरी = स्त्री० दंडक वृत्त का एक भेद जिसमें २८ अक्षर होते हैं और लघु गुरु का कोई नियम नहीं होता। ⊙वाटिका = स्त्री० पुष्प या अशोक के पेड़ों का बगीचा। रावण का बगीचा जिसमें सीताजी को रखा गया था।
अशोच्य—वि० [सं०] जिसके लिये शोक या चिंता की आवश्यकता न हो।
अशौच—पु० [सं०] अपवित्रता। निकट संबंधी के मरने या संतान आदि होने पर हिंदुओं में कुछ दिनों तक मानी जानेवाली अशुद्धि।
अश्म—पु० [सं०] पहाड़। पत्थर। वज्र। बादल।
अश्मरी—स्त्री० [सं०] एक मूत्ररोग, पथरी।
अश्रद्धा—स्त्री० [सं०] श्रद्धा का अभाव, घृणा।
अश्रांत—वि० [सं०] जो थका न हो। क्रि० वि० निरंतर।
अश्रु—पु० [सं०] आँसू। काव्य के सात्विक भावों में से एक। ⊙गैस = स्त्री० [हिं०] आँसू गैस। ⊙पात = पुं० आँसू गिराना, रोना।
अश्रुत—वि० [सं०] जो पहले न सुना गया हो। जिसने कुछ देखा सुना न हो। ⊙पूर्व = वि० जो पहले न सुना गया हो। अद्भुत।
अश्लिष्ट—वि० [सं०] जो जुड़ा या मिला न हो, असंबद्ध। श्लेषशून्य।
अश्लील—वि० [सं०] लज्जाजनक, भद्दा, गंदा। ⊙ता = स्त्री० निर्लज्जता, भद्दापन। साहित्य या काव्य में एक दोष।
अश्लेषा—स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रों में से नवाँ।
अश्व—पु० [सं०] घोड़ा। ⊙गंधा = स्त्री० दे० 'असगंध'। ⊙गति = पु० १६ वर्णों का एक छंद। एक चित्रकाव्य। ⊙तर = पु० खच्चर। नागराज। बछड़ा। एक गंधर्व। ⊙पति = पु० घुड़सवार। घोड़ों का मालिक। भरत के मामा।

⊙पाल=पु० साईस। ⊙मेध=पु० चक्रवर्ती सम्राट् होने के लिये घोड़े के बलिदान द्वारा किया जानेवाला एक यज्ञ। ⊙शाला=स्त्री० घुड़साल। **अश्वारोहण**—पु० घोड़े की सवारी। **अश्वारोही**—वि० घोड़े का सवार।

अश्वत्थ—पु० [सं०] पीपल का पेड़।

अश्वत्थामा—पु०[सं०] द्रोणाचार्य का पुत्र। महाभारत का एक हाथी।

अश्विनी—स्त्री० [सं०] घोड़ी। २७ नक्षत्रों मे से पहला। वैदिक देवयुग्म। ⊙कुमार=पु० सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।

असाढ़—पु० दे० 'आषाढ़'।

अष्ट—वि० [सं०] आठ। ⊙क=पु० आठ वस्तुओं का सग्रह। आठ श्लोकों का स्तोत्र या काव्य। ⊙कमल=पु० हठयोग मे मूलाधार से ललाट तक के आठ चक्र या कमल। ⊙कुल=पु० पुराणों के अनुसार सर्पों के आठ कुल। ⊙कृष्ण=पु० वल्लभ सप्रदाय मे श्रीकृष्ण के आठ रूप—श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, बिट्ठलनाथ, द्वारिकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचद्रमा और मदनमोहन। ⊙द्रव्य=पु० हवन मे काम आनेवाले आठ द्रव्य—अश्वत्थ, गूलर, पाकड़, वट, तिल, सफेद सरसो, पायस और घी। ⊙धात(पु)=पु० दे० 'अष्टधातु'। ⊙धाती=वि० [हिं०] आठ धातुओं से निर्मित। मजबूत। उपद्रवी। वर्णसंकर। ⊙धातु=स्त्री० आठ धातुएँ—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा। ⊙पदी=स्त्री० आठ पदों का गीत। बेले का फूल या पौधा। ⊙पाद=पु० शार्दूल। मकड़ी। आठ पैर का एक भीषण समुद्री जतु (अँ० आक्टोपस)। ⊙भुजा=स्त्री दुर्गा। ⊙मंगल=पु० आठ मगल द्रव्य—सिंह, वृष, हाथी, कलश, पखा, वैजयती, भेरी और दीपक। ⊙वर्ग=पु० आठ ओषधियों का समाहार (जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि)। **अष्टांग**—पु० योग के आठ अग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। आयुर्वेद के आठ विभाग—शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायनतंत्र और बाजीकरण। शरीर के आठ अग—जानु, पद, हाथ, उर, शिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि जिनसे दडवत् करने का विधान है। वि० आठ अवयवोंवाला। अठपहल। **अष्टांगी**—वि० आठ अगोंवाला। **अष्टाक्षर**—पु० आठ अक्षरों का मत्र। विष्णु भगवान् का एक मत्र "ओं नमो नारायणाय"। वि० आठ अक्षरों का। **अष्टाध्यायी**—स्त्री० पाणिनिकृत व्याकरण का सूत्रग्रथ जिसमे आठ अध्याय हैं। **अष्टावक्र**—पु० एक ऋषि का नाम। टेढ़े मेढ़े अगों का मनुष्य।

असिथर(पु)—उपदेश, मत्र।

असंक(पु)†—वि० दे० 'अशक'।

असंखान—(पु)†वि० अनगिनत। "धुनी··· असंखान छाई" (प्रताप० १५)।

असंख्य—वि० [सं०] अनगिनत, बहुत अधिक।

असंग—वि० [सं०] अकेला। किसी से वास्ता न रखनेवाला, निर्लिप्त। अलग। विरक्त।

असंगत—वि० [सं०] प्रसगरहित, बेलगाव। अनुचित। प्रसगविरुद्ध।

असंगति—स्त्री० [सं०] मेल या सिलसिले का अभाव। अनुपयुक्तता। एक काव्यालकार जिसमे कार्य कारण के नियत सबंध का त्याग और विरोध का आभास हो।

असंत—वि० [सं०] खल, दुष्ट।

असंतुष्ट—वि० [सं०] जो सतुष्ट न हो। अतृप्त। अप्रसन्न।

असंतुष्टि—स्त्री० [सं०] दे० 'असतोष'।

असंतोष—पु० [सं०] सतोष या धैर्य का अभाव। अतृप्ति। अप्रसन्नता।

असंबद्ध—वि० [सं०] बिना मेल का। अलग। अडबड।

असंभव—वि० [सं०] जो न हो सके। पु०

एक काव्यालंकार जिसमें यह दिखाया जाय कि जो बात हो गई उसका होना असंभव था।

असंभार—वि० जिसका प्रबंध न हो सके। अपार।

असंभावना—स्त्री० [सं०] संभावना का अभाव, अभवितव्यता। अनादर। मोह।

असंभावित—वि० [सं०] जिसकी संभावना न रही हो, अनुमानविरुद्ध।

असंभाव्य—वि० [सं०] न होने योग्य, अनहोनी।

असंभाष्य—वि० [सं०] न कहे जाने योग्य। जिससे बातचीत करना उचित न हो। पु० बुरा वचन।

असंयत—वि० [सं०] संयमरहित। जो नियमबद्ध न हो।

असंस्कृत—वि० [सं०] बिना सँवारा सुधारा हुआ। असभ्य। बिना संस्कार का, व्रात्य।

अस(पु)†—वि० इस प्रकार का, ऐसा। समान। क्रि० वि० ऐसे।

असकताना†—अक० आलस्य अनुभव करना, सुस्ती दिखाना।

असक्त—वि० जो सक्त न हो। (पु)वि० दे० 'आसक्त'।

असगंध—स्त्री० छोटे गोल फलवाली एक झाड़ी जिसकी मोटी जड़ पुष्टई और दवा के काम आती है।

असगुन—(पु)†पु० दे० 'अशकुन'।

असज्जन—वि० [सं०] खल, दुष्ट।

असत्—वि० [सं०] सत्तारहित। मिथ्या। खोटा, असज्जन। बुरा, खराब।

असती—वि० स्त्री० [सं०] जो पतिव्रता न हो, पुंश्चली।

असत्ता—स्त्री० [सं०] सत्ता का अभाव। असाधुता।

असत्य—वि० पु० [सं०] मिथ्या, झूठ। ⊙वादी = वि० असत्य बोलनेवाला।

असन(पु)—पु० भोजन।

असफल—वि० दे० 'विफल'।

असबाब—पु० [अ०] चीज, वस्तु, सामान।

असभ्य—वि० [सं०] अशिष्ट। गँवार।

असमंजस—पु० [सं०] द्विविधा, आगा पीछा। कठिनाई।

असमंत(पु)—पु० चूल्हा।

असम—वि० [सं०] जो बराबर न हो। असमान। विषम, ताक। ऊँचा नीचा। पु० काव्यालंकार जिसमें उपमान का मिलना असंभव दिखाया जाय। आसाम प्रदेश। ⊙बाण = पु० कामदेव। ⊙शर = पु० कामदेव।

असमय—पु० [सं०] विपत्ति का समय। क्रि० वि० बेवक्त, बेमौका। कुसमय।

असमर्थ—वि० [सं०] अशक्त, दुर्बल। अयोग्य।

असमवायिकारण—पु० [सं०] वह कारण जो द्रव्य न हो, गुण या कर्म हो (न्यायशास्त्र)।

असमेध(पु)—पु० दे० 'अश्वमेध'।

असयाना(पु)—वि० सीधा साधा, छल या चतुराई से हीन। अनाड़ी, मूर्ख।

असर—पु० [अ०] प्रभाव।

असरार(पु)—क्रि० वि० निरंतर, लगातार।

असल—वि० [अ०] बिना मिलावट का, शुद्ध। असंकर। सच्चा, खरा। बिना बनावट का। पु० मूल, बुनियाद। मूलधन।

असली—वि० [हिं०] दे० 'असल'।

असवार†—पु० दे० 'सवार'।

असह(पु)—वि० दे० 'असह्य'।

असहन—वि० [सं०] असह्य। जिसमें सहन करने की शक्ति न हो, असहिष्णु। ⊙शील = वि० असहिष्णु।

असहनीय—वि० [सं०] सहने या बर्दाश्त के अयोग्य।

असहयोग—पु० [सं०] सहयोग का अभाव। मिलकर काम न करना। विरोध व्यक्त करने के लिये शासनकार्य में योग न देना।

असहाय—वि० [सं०] बिना सहारे का। अनाथ।

असहिष्णु—वि० [सं०] जो सहन न कर सके। चिड़चिड़ा, तुनकमिजाज।

असही(पु)†—वि० दूसरे की बढ़ती देखकर जलनेवाला। ⊙कुसही—वि० कुडीठवाला, नजर लगानेवाला।

असह्य—वि० [सं०] न सहन करने योग्य।
असाँच(पु)—वि० असत्य।
असा—पु० [अ०] डंडा। चाँदी या सोने से मढा हुआ सोटा।
असाई(पु)—वि० अशिष्ट, बेहूदा।
असाढ़—पु० दे० 'अषाढ'। **असाढ़ी**—वि० आषाढ का। आषाढ मे बोई जानेवाली फसल। आषाढी पूर्णिमा।
असाध(पु)—वि० दे० 'असाध्य'। दे०'असाधु'।
असाधारण—वि० [सं०] जो साधारण न हो, विशिष्ट।
असाधु—वि० [सं०] दुष्ट, खोटा। अशिष्ट।
असाध्य—वि० [सं०] न होने योग्य, दुष्कर। आरोग्य न होने योग्य।
असामयिक—वि० [सं०] नियत समय पर न होनेवाला, वेवक्त।
असामान्य—वि० [सं०] दे० 'असाधारण'।
असामी—पु० [अ० इस्म (नाम) का वहु०] व्यक्ति जिससे किसी प्रकार का लेन देन हो। लगान पर खेत लेनेवाला, काश्तकार। वह जिससे आर्थिक लाभ होता हो। ग्राहक। मुलजिम। कर्जदार। व्यक्ति, प्राणी, जैसे लाखो का असामी।
असार—वि० [सं०] सार या तत्व से हीन। पोला। तुच्छ।
असालत—स्त्री० [अ०] कुलीनता। सचाई। **असालतन**—क्रि० वि० स्वय, खुद।
असावधान—वि० [सं०] जो सावधान या खबरदार न हो। ⊙ता = स्त्री० [हिं० वै० असावधानी] गफलत, बेखबरी।
असावरी—स्त्री० एक प्रधान रागिनी तथा भैरव राग की मानी गई स्त्री।
असासा—पु० [अ०] माल असबाब, सपत्ति।
असि—स्त्री० [सं०] तलवार। खड्ग।
असित—वि० [सं०] काला। दुष्ट। टेढा, कुटिल।
असिद्ध—वि० [सं०] जो सिद्ध न हो। कच्चा। अपूर्ण। निष्फल। जो प्रमाणित न हुआ हो। **असिद्धि**—स्त्री० [सं०] असफलता। कच्चापन। अपूर्णता।
असीम—वि० [सं०] सीमारहित, बेहद। अगाध।
असील(पु)—वि० दे० 'असल'।
असीस—स्त्री० दे० 'आशिष'। **असीसना**—सक० असीस देना।
असुंदर—वि० [सं०] कुरूप, भद्दा।
असु(पु)—पु० दे० 'अश्व'।
असुग(पु)—वि० दे० 'आशुग'।
असुभ(पु)—वि० दे० 'अशुभ'।
असुर—पु० [सं०] राक्षस, दैत्य। नीच वृत्ति का पुरुष। रात्रि। राहु। सूर्य। बादल। **असुराई**(पु)—स्त्री० नीचता, खोटापन।
असुविधा—स्त्री० [सं०] कठिनाई, दिक्कत। तकलीफ।
असुहाता—वि० जो अच्छा न लगे। बुरा, भद्दा।
असूझ—वि० अंधकारमय। अपार, बहुत विस्तृत। विकट, कठिन।
असूत(पु)—वि० विरुद्ध, असबद्ध।
असूया—स्त्री० [सं०] पराए गुणो मे दोष निकालना या दूसरे की समृद्धि से चिढना। ईर्ष्या। रस के अतर्गत एक सचारी भाव।
असूर्यपश्या—वि० [सं०] घोर परदे मे रहनेवाली। (रानी या बेगम आदि)।
असूल†—पु० दे० 'उसल'। दे० 'वसूल'।
असेग(पु)—वि० असह्य, कठिन।
असेसर—पु० [अँ०] जज या मजिस्ट्रेट को सलाह देनेवाला व्यक्ति।
असैला(पु)—वि० कुमार्गी। अनुचित।
असोग(पु)—पु० दे० 'अशोक'।
असोच†—वि० चितारहित, बेफिक्र। अशुद्ध।
असोज†—पु० आश्विन, क्वार मास।
असोस(पु)—वि० न सूखनेवाला।
असौंध(पु)— दुर्गंध, बदबू।
अस्टौकुरी(पु)—वि० अष्टकुल का।
अस्तंगत—वि० जो अस्त हो चुका हो। अवनति को प्राप्त। समाप्त।
अस्त—वि० [सं०] छिपा हुआ, तिरोहित। डूबा हुआ (सूर्य, चद्र आदि)। अदृश्य। नष्ट। पु० लोप, अदर्शन। ⊙व्यस्त = वि० उलटा पलटा, छिन्नभिन्न। अस्थिर, घबराया हुआ। **अस्ताचल** = पु० एक कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्य का अस्त होना माना जाता है।
अस्तन(पु)†—पु० दे० 'स्तन'।
अस्तबल—पु० [अ०] घुडसाल।

अस्तमन—पु० [सं०] अस्त होना, डूबना।
अस्तमित—वि० [सं०] छिपा हुआ । डूबा हुआ। नष्ट।
अस्तर—पु० [फा०] नीचे की तह या पल्ला। सिले हुए दुहरे कपडे मे भीतर का कपडा। साडी के नीचे पहनने का कपडा। चित्र की जमीन तैयार करने का मसाला। नीचे का रग जिसपर दूसरा रग चढाया जाय। ⊙कारी = स्त्री० चूने की लिपाई। पलस्तर।
अस्ति—स्त्री० [स०] भाव, सत्ता। विद्यमानता। ⊙त्व = पु० विद्यमानता, मौजूदगी। सत्ता, भाव।
अस्तु—अव्य० [स०] जो हो। खैर, अच्छा।
अस्तुति—स्त्री० [सं०] निंदा, बुराई। ⓟस्त्री० दे० 'स्तुति'।
अस्तुरा†—पु० दे० 'उस्तरा'।
अस्तेय—पु० [स०] चोरी न करना (धर्म के दस लक्षणो मे से एक), अचौर्य।
अस्त्र—पु० [सं०] शस्त्र, हथियार। फेंककर चलाया जानेवाला हथियार (बाण आदि)। ढाल। तलवार। धनुष। मत्र-प्रेरित हथियार। चीरफाड का औजार। ⊙चिकित्सा = स्त्री० चीरफाड से किया जानेवाला इलाज। ⊙वेद = पु० धनुर्वेद। ⊙शाला = स्त्री० अस्त्र शस्त्र रखने का स्थान। **अस्त्रागार**—पु० दे० 'अस्त्रशाला'। **अस्त्री**—पु० अस्त्रधारी व्यक्ति।
अस्थायी—वि० [स०] स्थायी न रहनेवाला, थोडे दिनो का, क्षणिक। अस्थिर।
अस्थि—स्त्री० [सं०] हड्डी। ⊙सचय = पु० अत्येष्टि सस्कार के बाद जलने से बची हुई हड्डियाँ एकत्र करना।
अस्थिर—वि० [सं०] चचल, डाँवाडोल। अधिक समय तक न रहनेवाला। अनिश्चित, सदिग्ध। ⓟदे० 'स्थिर'।
अस्थूल—वि० [सं०] सूक्ष्म। ⓟवि० स्थूल।
अस्थैर्य—पुं० [सं०] दे० 'अस्थिरता'।
अस्नानⓟ—पुं० दे० 'स्नान'।
अस्पताल—पुं० औषधालय, दवाखाना।
अस्पृश्य—वि० [सं०] न छूने योग्य। अछूत या अत्यज जाति का।
अस्फुट—वि० [सं०] जो स्पष्ट या साफ न हो (वाणी आदि)। ⓟवि० दे० 'स्फुट'।
अस्मⓟ—पुं० पत्थर। अश्म।
अस्मिता—स्त्री० [स०] अहकार, मोह।
अस्त्र—पुं० [सं०] आँसू। जल। रुधिर।
अस्वस्थ—वि० [सं०] रोगी। अनमना।
अस्वाभाविक—वि० [सं०] अप्राकृतिक। बनावटी।
अस्वीकरण, अस्वीकार—पुं० [सं०] 'स्वीकार' का उलटा, नामजूरी, इनकार।
अस्वीकृत—वि० [सं०] अस्वीकार किया हुआ।
अस्सी—वि० सत्तर और दस, ८०।
अह—सर्व [सं०] मैं। पु० अहकार, अभिमान। ⊙कार = पु० अभिमान, घमड। 'मैं हूँ' या 'मैं करता हूँ' की भावना, स्वय को सब कुछ समझने की मनोवृत्ति। ⊙कारी = वि० अहकार करनेवाला, घमडी। ⊙ता = स्त्री० अहभाव। ⊙कृति = स्त्री० अहकार। ⊙वाद = पुं० डींग मारना।
अहकⓟ†—पु० इच्छा, लालसा।
अहकनाⓟ†—सक० इच्छा करना, लालसा करना।
अहटानाⓟ—अक० आहट लगना, पता लगना। सक० आहट लगाना, पता लगाना। अक० दुखना, दर्द करना।
अहथिरⓟ†—वि० दे० 'स्थिर'।
अहद—पुं० [अ०] प्रतिज्ञा, वादा। सकल्प। समय, राज्यकाल। ⓟनामा = पु० [फा०] प्रतिज्ञापत्र। सुलहनामा।
अहदी—वि० [अ०] आलसी। अकर्मण्य। पु० मुगलकाल के वे सिपाही जिनसे बडी आवश्यकता के समय ही काम लिया जाता था।
अहन्—पु० [स०] दिन।
अहनाⓟ—अक० वर्तमान होना, रहना। 'अस अस मच्छ समुद मँह अहही' (पदमा०)।
अहनिसिⓟ—अव्य० दे० 'अहर्निश'।
अहमक—वि० [अ०] मूर्ख।
अहमितिⓟ—स्त्री० दे० 'अहम्मति'।
अहमेव—पु० [सं०] घमड, अहंकार।

अहरन—स्त्री० निहाई ।
अहरना—सक० लकडी को छीलकर सुडौल करना । डौलना, छीलना ।
अहरह:—क्रि० वि० [सं०] प्रतिदिन, रोज ।
अहर्निश—क्रि० वि०[सं०] रातदिन । सदा । निरतर ।
अहलना(पु)—अक० हिलना, काँपना ।
अहलाद(पु)—पु० दे० 'आह्लाद' ।
अहवान(पु)—पु० आवाहन, बुलावा ।
अहसान—पु० [अ०] कृपा, अनुग्रह । कृतज्ञता । उपकार ।
अहह—अव्य० [सं०] आश्चर्य, खेद, क्लेश और शोक का सूचक शब्द ।
अहा—अव्य० प्रसन्नता और प्रशसा का सूचक शब्द ।
अहाता—पु०[अ०]घेरा, हाता । चारदीवारी ।
अहान(पु)—पु० दे० 'आह्वान' । स्त्री० नाम, कीर्ति ।
अहार(पु)—पु० दे० 'आहार' । **अहारना**—अक० खाना । चिपकाना । कपडे मे माडी देना । दे० 'अहरना' ।
अहारी(पु)—वि० दे० 'आहारी' ।
अहाहा—अव्य० हर्षसूचक शब्द ।
अहिंसक—वि० [सं०] जो हिंसा न करे, पीडा न पहुँचानेवाला ।
अहिंसा—स्त्री० [स०] घात न करना, पीडा न पहुँचाना । मन, वचन और कर्म से किसी को दुःख न देना ।
अहिंस्र—वि० [सं०] किसी को मारने या कष्ट न देनेवाला । हिंसा न करनेवाला (पशु) ।
अहि—पु० [सं०] साँप । राहु । वृत्रासुर । खल, वचक । पृथ्वी । सूर्य । मात्रिक गण मे टगण । इक्कीस अक्षरो के वृत्त का एक भेद । ⊙**नाथ**=पु० सर्पों के स्वामी, शेषनाग । ⊙**फेन**=पु० सर्प के मुँह की लार । अफीम । ⊙**बेल**(पु)=स्त्री०नागबेल, पान । ⊙**वर**=पु० दोहे का एक भेद जिसमे ५ गुरु और ३८ लघु होते है । ⊙**वल्ली**=स्त्री दे० 'अहिबेल' । ⊙**साव**(पु)=पु० साँप का बच्चा । **अहीश**—पु० शेषनाग । लक्ष्मण । बलराम ।
अहिलाद(पु)—पु० दे० 'आह्लाद' ।
अहिवात—पु० स्त्री का सौभाग्य, सुहाग । **अहिवाती**—वि० स्त्री० अहिवातवाली, सौभाग्यवती ।
अहीर—पु० गाय भैस रखने और बेचनेवाली एक जाति, ग्वाला ।
अहुटना(पु)—अक० अलग होना, हटना । 'सूरवदन देखत ही अहुटै या शरीर को रोग' (सूर०) ।
अहुटाना(पु)—सक० हटाना, अलग करना ।
अहुठ(पु)—वि० तीन और आधा, साढे तीन ।
अहेड़ी(पु)—पु० दे० 'अहेरी' ।
अहेतु—वि० [सं०] बिना कारण का । व्यर्थ । एक काव्यालकार जिसमे कारणो के इकट्ठे रहने पर भी कार्य का न होना दिखाया जाय ।
अहेर—पु० शिकार, मृगया । जतु जिसका शिकार किया जाय । **अहेरी**=वि० शिकार खेलनेवाला । पु० व्याध ।
अहो—अव्य० [सं०] सबोधन, विस्मय, करुणा आदि का सूचक शब्द ।
अहोई—क्रि० वि० दिनरात । सदैव । स्त्री० कार्तिक कृष्ण ८ को पडनेवाला एक पर्व ।
अहोरात्र—पु० [सं०] दिनरात । दिन और रात्रि का मान ।
अहोरा बहोरा—पु० दुलहिन के ससुराल जाकर उसी दिन अपने पिता के घर लौट आने की विवाह की रीति । क्रि० वि० बार बार ।

आ

आ—हिंदी वर्णमाला का दूसरा स्वर वर्ण । 'अ' का दीर्घ रूप ।
आँक—पु० चिह्न, निशान । अदद । अक्षर । अश, हिस्सा । लकीर । अँकवार । गढ़ी हुई बात । नौ मात्रा का छद । ⊙**ड़ा**=पु० अक, अदद । अको की सूची । पेच । पशुओ का एक रोग । **आँकना**—सक० चिह्नित करना, दागना । 'छिन छिन जीउ

सडासन आँक' (पदमा०)। मूल्य लगाना।
अनुमान करना। चिह्न बनाना।

आँकर†—वि० गहरा (जोताई का प्रकार) बहुत अधिक। वि० महँगा।

आँकुस(पु)†—पु० दे० 'अंकुश'।

आँकू—वि० आँकने या कूतनेवाला।

आँख—स्त्री० देखने की इंद्रिय, लोचन। दृष्टि, नजर। ध्यान। विवेक। पहचान, शिनाख्त। दया भाव। संतान। अँखुआ। आँख जैसा चिह्न (मोरपंख का)। छोटा छेद (सूई का)। ⊙डी(पु)=स्त्री० आँख, लोचन। ⊙ **मिचौनी**, ⊙ **मिचौली**, ⊙ **मीचली**=स्त्री० आँख मूँदकर छिपने और खोजने का बच्चों का एक खेल। मु०~**आना या उठना**=आँखों में लाली पीड़ा आदि होना। ~**उठाकर न देखना**=लज्जा से सामने न देखना। उपेक्षा के कारण न देखना। ~**उठाना**=सामने देखना। हानि पहुँचाने का इरादा या चेष्टा करना। ~**उलटना**=मरते समय पुतलियों का ऊपर चढ़ जाना। घमंड से भर जाना। ~**ऊँची न होना**=लज्जा से दृष्टि नीची रहना। ~**ओट पहाड़ ओट**=आँखों के सामने न होने पर दूर और नजदीक एक सा है। ~**का अंधा गाँठ का पूरा**=मूर्ख धनी। ~**का अंधा नाम नयन-सुख**=नाम और गुण में विरोध। ~**का काँटा**=शत्रु, बाधक। कष्टकर। ~**का काजल चुराना**=बहुत सफाई से चोरी करना। ~**का तारा या तिल**=पुतली के बीच का छोटा गोल स्थान। बहुत प्यारा व्यक्ति। ~**का परदा उठना**=भ्रम दूर होना। ~**का पानी ढल जाना**=लज्जा छूट जाना। ~**का पानी मरना**=दे० 'आँख का पानी ढल जाना'। ~**की किरकिरी**=दे० 'आँख का काँटा'। ~**की ठढक**=अत्यंत प्रिय व्यक्ति या वस्तु। ~**की पुतली**=आँख के भीतर का काला भाग। प्रिय व्यक्ति। ~**की बदी भौं के आगे**=किसी का दोष उसके मित्र या संबंधी से कहना। **आँखों के आगे अँधेरा छाना**=कुछ देर के लिये कुछ न दिखाई देना। बेहोश होना। **आँखों के सामने रखना**=निकट रखना। ~**खुलना**=पलक खुलना। नींद टूटना। भ्रम दूर होना। ~**खोलना**=देखना। सावधान करना। होश में आना। आँख ठीक करना। ~**गड़ना**=आँख दुखना। दृष्टि जमना। पाने की उत्कट इच्छा होना। **आँखें चार होना**=एक दूसरे को देखना। ~**चुराना**=सामने न आना। लज्जा से सामने न देखना। रुखाई करना। **आँखें तरेरना**=क्रोध से देखना। ~**दिखाना**=क्रोध जताना। ~**न उठाना**=सामने न देखना। लज्जा से नजर नीची किए रहना। (काम में) बराबर लगे रहना। ~**न खोलना**=बेसुध रहना। ~**न ठहरना**=चमक आदि के कारण दृष्टि न ठहरना। ~**निकालना**=आँख फोड़ना। क्रोध से देखना। ~**नीची होना**=लज्जित होना, अप्रतिष्ठा होना। **आँखें नीली पीली करना**=बहुत क्रोध करना। **आँखें पथराना**=मरने के समय पुतलियों का स्थिर हो जाना। **आँखों पर परदा पड़ना**=अज्ञान या भ्रम में पड़ना। ~**फाड़ फाड़कर देखना**=आश्चर्य या उत्सुकता से देखना। **आँखें फिर जाना**=पहले जैसा स्नेह या कृपा का न रहना। प्रतिकूल होना। ~**फोड़ना**=आँखों की ज्योति नष्ट करना। आँखों पर जोर पड़ने का काम करना। ~**बंद करके कोई काम करना**=बिना विचारे कोई काम करना। ~**बंद होना**=पलक गिरना। मृत्यु होना। ~**बचाकर कोई काम करना**=छिपाकर कोई काम करना। ~**बचाना**=सामना न करना। **आँखें बिछाना**=प्रेमपूर्वक प्रतीक्षा करना या स्वागत करना। ~**भर आना**=आँख में आँसू आ जाना। ~**भर देखना**=अच्छी तरह या इच्छा भर देखना। ~**मारना**=इशारा करना। इशारे से मना करना। ~**आँखें मिलना**=एक दूसरे को देखना। **आँखों में**=परख में, अनुमान में। ~**में आँख डालना**=एकटक देखना। ढिठाई से देखना।

~ मे खटकना = बुरा लगना। **आँखो मे खून उतरना** = क्रोध से आँखें लाल हो जाना। **~में गड़ना** = बुरा लगना। पसद न आना। **आँखो मे घर करना** = बहुत भाना। **आँखो मे चढ़ना** = पसद आना। **आँखों में चरबी छाना** = मदाध होना। गर्व से ध्यान न देना। **आँखों मे धूल झोंकना या डालना** = सरासर धोखा देना। **आँखों में फिरना** = ध्यान पर चढ़ना। **आँखो मे रात काटना** = कष्ट, चिंता आदि से सारी रात जागते बिताना। **आँखों में समाना** = हृदय मे बसना। **~रखना** = चौकसी रखना। चाह रखना। **~लगना** = नीद आना। प्रीति होना। दृष्टि जमना। **~लड़ना** = देखादेखी होना। प्रीति होना। **~सेंकना** = दर्शन का सुख उठाना। सुदर वस्तु या व्यक्ति को देखना। **आँखो से गिरना** = दृष्टिमे तुच्छ ठहरना। **आँखो से लगाकर रखना** = बहुत प्रेम या आदर से रखना। **~होना** = परख का होना। विवेक का होना।

आँग(पु)—पु० अंग। कुच।

आँगन—पु० घर के भीतर का सहन, अजिर।

आंगिक—वि० [सं०] अग सबधी। पु० चित्त के भाव को प्रकट करनेवाली चेष्टा, जैसे भ्रूविक्षेप, हाव आदि। रस मे कायिक अनुभाव। नाटक के अभिनय के चार भेदो मे से एक।

आंगिरस—पु० [सं०] अगिरा के पुत्र बृहस्पति आदि। वि० अगिरा सबधी।

आँगी(पु)†—स्त्री० दे० 'अँगिया'।

आँगुर(पु)—पु० दे० 'अगुल'।

आँगुरी(पु)—स्त्री० दे० 'उँगली'।

आँच—स्त्री० गरमी, ताप। आग की लपट। आग। ताव। तेज, प्रताप। चोट, हानि। सकट। प्रेम। काम ताप। मु० **~खाना** = आग पर चढना, गरमी पाना। **~दिखाना** = आग के सामने रखकर गरम करना।

आँचना(पु)—सक० जलाना, तपाना।

आँचर(पु)†—पुं० दे० 'आँचल'।

आँचल—पुं० धोती, दुपट्टे आदि के दोनो छोरो के पास का भाग। साधुओ का अँचला। साड़ी या ओढनी का छाती पर रहनेवाला भाग। स्तन। मु० **~दबाना** = दूध पीना। **~देना** = बच्चे को दूध पिलाना। विवाह की एक रीति। आँचल से हवा करना। **~में बाँधना** = हर समय साथ रखना। अच्छी तरह स्मरण रखना। **~लेना** = आँचल से पैर छूकर अभिवादन करना।

आँजन(पु)†—पुं० दे० 'अजन'।

आँजना—सक० अजन लगाना।

आंजनेय—पुं० [सं०] अजना के पुत्र हनुमान।

आँट—स्त्री० हथेली मे तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान। तर्जनी और अँगूठे से बना घेरा। दाँव, वश। वैर। गिरह, गाँठ। पूला, गट्ठा। ⊙**साँट** = स्त्री० साजिश। मेल जोल।

आँटना(पु)—अक० दे० 'अँटना'।

आँटी—स्त्री० छोटा गट्ठा। खेल की गुल्ली। कुश्ती का एक पेंच। सूत का लच्छा। धोती की गिरह, टेंट।

आँठी—स्त्री० दही मलाई आदि का लच्छा। गिरह, गाँठ। गुठली, बीज।

आँड़†—पुं० अडकोश।

आँड़ी—स्त्री० गाँठ, कद।

आँड़ू—वि० अडकोशयुक्त, बधिया न किया हुआ।

आँत—स्त्री० गुदा मार्ग तक रहनेवाली पेट के भीतर की लबी नली जिससे होकर मल या रद्दी पदार्थ बाहर निकल जाता है। मु० **~उतरना** = आँत का ढीला होकर अंडकोश मे उतरने का एक रोग। **~कुलकुलाना** = भूख से बुरी दशा होना।

आंतरिक—वि० [सं०] भीतर का। मन का। अभिन्न, आत्मीय।

आँदू—पु० लोहे का कड़ा। बाँधने का सीकड़।

आंदोलन—पु० [सं०] बार बार हिलना। हलचल, उथल पुथल। सामूहिक प्रयत्न या प्रचार।

आँध(पु)—स्त्री० अँधेरा, धुध। रतौंधी। आफत, कष्ट।

आंघना(पु)—अक० वेग से धावा करना, टूटना।

आंधरा(पु)†—वि० अंधा।

आंधारंभ(पु)—अंधेरखाता, मनमाना आचरण।

आंधी—स्त्री० धूल उठानेवाली वेग की हवा, तूफान। वि० आंधी की तरह तेज, चुस्त। मु०~**उठना**=तूफान उठना, हलचल मचना।

आंव(पु)—पु० दे० 'आम'।

आंय बांय—पु० व्यर्थ की बात, अडबड।

आंव—पु० अन्न न पचने से उत्पन्न चिकना सफेद लसदार पदार्थ।

आंवठ†—पु० कपडे या बरतन का किनारा।

आंवडना(पु)—अक० दे० 'उमडना'।

आंवड़ा(पु)†—वि० गहरा।

आंवल—पु० झिल्ली जिससे बच्चे गर्भ मे लिपटे रहते हैं।

आंवला—पु० मुरब्बे और दवा आदि मे प्रयुक्त गोल कषाय फल और उसका पेड। ⊙**सार गंधक**=खूब साफ की हुई पारदर्शक गंधक।

आंवां—पु० मिट्टी के बरतन पकाने का कुम्हारो का गड्ढा और भट्ठी।

आंशिक—वि० [सं०] अंश संबंधी। थोडा।

आंस(पु)—स्त्री० संवेदना, दर्द।

आंसी(पु)—स्त्री० इष्ट मित्रों के यहाँ बांटी जानेवाली मिठाई, बैना।

आंसु—पु० दे० 'आंसू'।

आंसू—पु० शोक, पीडा आदि से आंखो से निकलनेवाला पानी। मु०~**गिराना या ढालना**=रोना।~**पीकर रह जाना**=व्यथा को प्रकट न कर सकना।~**पोंछना**=कपडे आदि से आंसू का पानी पोछना। दिलासा या तसल्ली देना। **आंसुओं से मुंह धोना**=बहुत रोना।

आंहड़—पु० बरतन।

आंहां—अव्य० निषेधसूचक शब्द, नही।

आ—अव्य० [सं०] 'तक', 'भर', 'सहित' आदि अर्थो मे प्रयुक्त, जैसे, आसमुद्र=समुद्र तक, आजीवन=जीवन भर, आबालवृद्ध=बूढे और बच्चो सहित। उप० प्राय गत्यर्थक धातुओ के पूर्व लगकर अर्थ मे कुछ विशेषता उत्पन्न करता है। 'जाना', 'देना', 'ले जाना' आदि अर्थ-द्योतक संस्कृत शब्दो मे अर्थो को उलट देता है, जैसे 'गमन' से 'आगमन', 'नयन' से 'आनयन', 'दान' से 'आदान'।

आइंदा—वि० [फा०] आनेवाला, भविष्य का। क्रि० वि० आगे, भविष्य मे।

आइ(पु)—स्त्री० आयु, जीवन।

आइस(पु), **आइसु**(पु)—पु० दे० 'आयसु'।

आई—स्त्री० मृत्यु, मौत। (पु)दे० 'आइ'।

आईन—पु० [फा०] नियम, कायदा। कानून, राजनियम।

आईना—पु० [फा०] शीशा, दर्पण। ⊙**बंदी**=स्त्री० झाड, फानूस आदि की सजावट। फर्श मे पत्थर आदि की जुडाई। रोशनी के लिये तरतीब से टट्टियां खडी करना। ⊙**साज**=पु० आईना बनानेवाला। ⊙**साजी**=आईनासाज का पेशा।

आईनी—वि० [फा० आईन] कानूनी, वैधानिक।

आउ(पु)—स्त्री० आयु, जीवन।

आउज, आउझ—पु० ताशा नामक बाजा।

आउबाउ(पु)†—अडबड या असबद्ध बात।

आकंपन—पु० [सं०] कांपना, कंपकंपी।

आक—पु० मदार, अकौआ।

आकबाक(पु)—पु० ऊटपटांग बात।

आकर—पु० [सं०] खान, उत्पत्तिस्थान। खजाना, भांडार। किस्म, जाति। तलवार चलाने का एक हाथ। वि० श्रेष्ठ। गुणित, गुण। दक्ष। ⊙**ग्रंथ**=पु० आधार ग्रंथ, प्राचीन ग्रंथ। प्रामाणिक ग्रंथ। शब्दो, विषयो आदि की विस्तृत जानकारी के ग्रंथ; जैसे, शब्दकोश, विश्वकोश आदि। ⊙**भाषा**=स्त्री० मूल या प्राचीन भाषा जिससे कोई नई भाषा अपने लिये शब्द ग्रहण करे।

आकरखना(पु)—सक० दे० 'आकर्षना'।

आकरिक—पु० [सं०] खान खोदनेवाला।

आकरी—स्त्री० दे० 'आकरिक'।

आकर्ण—वि० [सं०] कान तक फैला हुआ।

आकर्णन—पु० [सं०] सुनना।

आकर्ष—पु० [सं०] खिंचाव, कशिश।

खीचने की शक्ति । पासे का खेल । धनुष चलाने का अभ्यास । कसौटी । चुबक । ⊙क = वि० आकर्षण करनेवाला । लुभावना, सुदर ।

आकर्षना(पु)—सक० आकर्षण करना ।

आकर्षण—पु० [सं०] खीचने की शक्ति या प्रेरणा । खीचने की क्रिया । दूरस्थ व्यक्ति या वस्तु को पास बुलाने का एक तात्रिक प्रयोग । ⊙**शक्ति** = स्त्री० भौतिक पदार्थों की अन्य पदार्थों को अपनी ओर खीचने की शक्ति ।

आकलन—पु० [सं०] संचय, बटोरना । ग्रहण । गिनना । अनुष्ठान, सपादन । जाँच ।

आकली—स्त्री० बेचैनी, आकुलता ।

आकल्प—पु० [सं०] शृगार करना । क्रि० वि० कल्पपर्यंत ।

आकस्मिक—वि० [सं०] अकारण या बिना अनुमान के होनेवाला ।

आकांक्षा—स्त्री० [सं०] इच्छा, चाह । अपेक्षा । अनुसधान । वाक्यार्थ के ज्ञान के लिये एक शब्द का दूसरे शब्द पर आश्रित होना (न्याय) ।

आकांक्षित—वि० [सं०] इच्छित । अपेक्षित ।

आका—पु० अलाव । भट्ठी । आँवाँ । पु० [अ०] स्वामी । ईश्वर ।

आकार—पु० [सं०] स्वरूप, सूरत । डीलडौल, कद । बनावट । निशान, चिह्न । चेष्टा । 'आ' वर्ण ।

आकारी(पु)—वि० आह्वान करने या बुलानेवाला ।

आकाश—पु० [सं०] पृथ्वी के ऊपर दिखाई देनेवाला वह नीला विस्तार जिसमे सूर्य, चद्रमा और तारे चमकते हैं, आसमान । शून्य, खाली जगह । पाँच तत्वो मे से एक । अभ्रक । ⊙**कुसुम** = पु० आकाश का फूल, अनहोनी बात । ⊙**गंगा** = स्त्री० आकाश मे छोटे छोटे तारो की चौडी पक्ति, स्वर्गंगा । ⊙**चारी** = वि० आकाशगामी । पु० नक्षत्र, वायु । पक्षी । देवता । ⊙**जल** = पु० वर्षा का जल । ओस । ⊙**दीप** = पु० दे० 'आकाशदीया' ⊙**दीया** = पु० [हिं०] ऊँचे बाँस के सिरे पर कडील मे जलाया जानेवाला दीपक । ⊙**नीम** = स्त्री० [हिं०] नीम के पेड़ पर होनेवाला एक पौधा । ⊙**पुष्प** = पु० दे० 'आकाश कुसुम' । ⊙**बेल** = स्त्री० [हिं०] दे० 'अमरबेल' । ⊙**भाषित** = पु० नाटक के अभिनय मे वक्ता का आसमान की ओर देखकर किसी प्रश्न को इस तरह कहना मानो वह उससे किया जा रहा हो और फिर स्वय उसका उत्तर भी देना । ⊙**मंडल** = पु० खगोल । ⊙**वाणी** = स्त्री० आकाश से आनेवाली वाणी, देववाणी । ⊙**वृत्ति** = स्त्री० अनिश्चित जीविका, ऐसी आमदनी जो बँधी न हो । मु०~**छूना या चूमना** = बहुत ऊँचा होना ।~**पाताल एक करना** = कठिन परिश्रम करना । आदोलन या हलचल करना ।~**पाताल का अंतर** = बडा अंतर ।~**से बातें करना** = बहुत ऊँचा होना । **आकाशी**—स्त्री० [हिं०] धूप, ओस आदि से बचने के लिये तानी जानेवाली चाँदनी । **आकाशीय**—वि० आकाश संबंधी । आकाश मे रहने या होनेवाला । आकस्मिक ।

आकिल—वि० [अ०] बद्धिमान ।

आकीर्ण—वि० [सं०] बिखेरा या फैलाया हुआ । व्याप्त, भरा हुआ ।

आकुंचन—पु० [स०] सिकुडन, सकोचन । टेढापन ।

आकुंचित—वि० [सं०] सिकुडा या सिमटा हुआ । टेढा ।

आकुठन—पु० [सं०] गुठला या कुद होना । लज्जा ।

आकुल, आकुलित—वि० [स०] घबराया हुआ । अव्यवस्थित । भरा हुआ ।

आकूति—स्त्री० [सं०] मतलब । उत्साह । सदाचार ।

आकृति—स्त्री० [सं०] चेहरा । बनावट, ढाँचा । रूप । २२ अक्षरो का एक वर्णवृत्त ।

आकृष्ट—वि० [सं०] खीचा हुआ, आकर्षित ।

आक्रंदन—पु० [सं०] रोना । चिल्लाना । पुकारना ।

आक्रम(पु)—पु० [सं०] पराक्रम, शूरता ।

आक्रमण—पु० [सं०] हमला, चढाई। झपटना, टूट पडना। घेरना। निंदा या आक्षेप।

आक्रमित—वि० [सं०] जिसपर आक्रमण किया गया हो। **आक्रमिता**—(नायिका) स्त्री० वह प्रौढा नायिका जो मन, वचन और कर्म से प्रिय को वश मे रखे।

आक्रांत—वि० [सं०] जिसपर हमला हुआ हो। वशीभूत, पराजित। व्याप्त, आकीर्ण।

आक्रोश—पु० [सं०] कोसना, गाली देना।

आक्लांत—वि० [सं०] सना या पुता हुआ।

आक्षिप्त—वि० [सं०] फेंका या गिराया हुआ। दूषित। निंदित। प्रसग मे समझा हुआ।

आक्षेप—पु० [सं०] फेंकना, गिराना। दोष लगाना, अपवाद। ताना। एक वातरोग जिसमे अगो मे कँपकँपी होती है। ध्वनि, व्यग। प्रसगागत।

आखंडल—पु० [सं०] इद्र।

आखतⓅ†—पुं० अक्षत, विना टूटा चावल। हल्दी, चदन या केसर मे रँगा चावल जो देवमूर्ति या दूल्हा दुलहिन के माथे पर लगाया जाना है।

आखनⓅ—क्रि० वि० प्रतिक्षण, हर घडी।

आखना—सक० कहना। चाहना। देखना।

आखरⓅ—पु० अक्षर, वर्ण।

आखा—पु० झीने कपडे से मढी हुई मैदा चालने की चलनी। वि० कुल समूचा। ⊙**तीज** = स्त्री० वैशाख सुदी तीज।

आखिर—वि० [फा०] अतिम, पीछे का। पु० अत। फल, नतीजा। वि० समाप्त खतम। क्रि० वि० अत मे। लाचार होकर। अच्छा, खैर। ⊙**कार** = क्रि० वि० अत में। **आखिरी**—वि० आखिर का, सबमे पिछला।

आखु—पु० [सं०] चूहा। सूअर। देवताड।

आखेट—पु० [सं०] अहेर, शिकार। ⊙**क** = पु०दे० 'आखेट'। वि० शिकारी, अहेरी।

आखोर—पु० [फा०] जानवरो के खाने से बची हुई घास या चारा। कूडा करकट। निकम्मी वस्तु। वि० निकम्मा। सडा गला। मैला कुचैला।

आख्या—स्त्री०[सं०]नाम। कीर्ति। व्याख्या

आख्यात—वि० [सं०] प्रसिद्ध। कहा हुआ।

आख्याति—स्त्री० [सं०] ख्याति, शोहरत। कथन। राजवश के लोगो का वृत्तात।

आख्यान—पु० [सं०] कथा कहानी। वृत्तात, बयान। कथा जिसे कथाकार स्वय कहे।

आख्यानिकी—स्त्री० [सं०] दडक वृत्त का भेद जिसके विषम चरणो मे क्रम से दो तगण, एक जगण और अत मे दो गुरु हो और सम मे एक जगण, एक तगण, एक जगण और अत मे दो गुरु हो।

आख्यायिका—स्त्री० [सं०] कहानी, किस्सा। शिक्षाप्रद कल्पित कथा। आख्यान जिसमें पात्र भी अपना अपना चरित्र अपने मुँह से कहें।

आगंतुक—वि०[सं०]जो आए, आया हुआ। जो अपनी इच्छा से या घूमता घामता आ जाय। पु० अतिथि। अजनबी।

आग—स्त्री० प्रकाश, उष्णता और लपट मे प्रकट होनेवाला तत्व, अग्नि। ताप, गर्मी। कामाग्नि। वात्सल्य प्रेम। ईर्ष्या वि० बहुत गरम, जलता हुआ। जो गुण मे उष्ण हो। Ⓟक्रि० वि० आगे। **मु०**~**उठाना** = झगडा उठाना। ~**का पुतला** = क्रोधी, चिडचिडा। ~**के मोल** = बहुत महँगा। ~**खाना अंगार हगना** = जैसा करना वैसा पाना। ~**देना** = चिता मे आग लगाना। आतशबाजी मे आग लगाना, जलाना, नष्ट करना। ~**पर लोटना** = बहुत बेचैन होना। डाह से जलना। ~**पानी का बैर** = स्वाभाविक शत्रुता। ~**फाँकना** = झूठी शेखी हाँकना। ~**बबूला होना** = बहुत क्रुद्ध होना। ~**बरसना** = बहुत गरमी पडना। कठोर वचन कहना। ~**बरसाना** = (शत्रु पर) खूब गोलियाँ चलाना। ~**भडकना** = आग का धधकना। उत्पात खड़ा होना। जोश बढ़ना। ~**में कूदना** = अपने को विपत्ति मे डालना। ~**लगना** = आग से जल उठना। क्रुद्ध होना। बुरा-बुरा लगना। महँगी फैलना। ~**लगाना** = आग से जलाना। जलन या गरमी पैदा करना। जोश बढ़ाना। झगड़ा लगाना।

क्रोध उत्पन्न करना। चुगली खाना। नष्ट करना। ~लगाकर तमाशा देखना = झगड़ा खडा करके अपनी मनोरंजन करना। ~लगाकर पानी को दौड़ना = झगड़ा उठाकर, दूसरो को दिखाने के लिये शांति का उद्योग करना। ~लगे = बुरा हो, नष्ट हो (स्त्रियो मे)। ~लगे पर कुआँ खोदना = पहले से किए जानेवाले बडे कार्य को समय पडने पर करने की कोशिश करना। पानी में आग लगाना = अनहोनी बातें कहना। असभव कार्य करना।

आगत—वि० [सं०] आया हुआ, प्राप्त, उपस्थित। ⊙पतिका = स्त्री० नायिका जिसका पति परदेश से आया हो। ⊙स्वागत = पु० [सं०] आए हुए व्यक्ति का आदर सत्कार।

आगम—पु० [स०] आगमन, आना। आनेवाला समय। होनहार। उत्पत्ति। आमदनी। मेल, समागम। शब्दप्रमाण। वेद। शास्त्र। नीतिशास्त्र। तंत्रशास्त्र। वि० आगामी, आनेवाला। ⊙जानी = वि० [हिं०] होनहार का जाननेवाला। ⊙ज्ञानी = वि० दे० 'आगमजानी'। ⊙वाणी = स्त्री० भविष्यवाणी। ⊙विद्या = स्त्री० वेदविद्या। ⊙सोची = वि० [हिं०] दूरदेश। मु०~बाँधना = आनेवाली बात का निश्चय करना।

आगमन—पु० [सं०] आना, अवाई। आय, लाभ।

आगमी—पु० आगम विचारनेवाला, ज्योतिषी।

आगर—पु० खान, आकर। समूह, ढेर। खजाना। नमक जमाने का गड्ढा। ब्योडा। घर। छाजन, छप्पर। वि० श्रेष्ठ, उत्तम। कुशल, चतुर।

आगरी—पु० नमक बनानेवाला व्यक्ति।

आगल—पु० ब्योडा, अगरी। क्रि० वि० सामने, आगे। वि० अगला।

आगला(पु)—क्रि० वि० दे० 'अगला'।

आगवन(पु)—पु० दे० 'आगमन'।

आगा—पु० [तु०] मालिक, सरदार। काबुली, अफगान। पु० [हिं०] आगे का भाग। शरीर के आगे का भाग। छाती। मुँह। माथा। लिंगेंद्रिय। पहनावे का अगला भाग। सेना का अगला भाग। घर के सामने का मैदान। भविष्य। ⊙पीछा = पु० हिचक, दुविधा। नतीजा। शरीर का अगला और पिछला भाग।

आगाज—पु० [फा०] प्रारंभ, शुरू।

आगान(पु)—पु० आख्यान, वृत्तांत।

आगामी—वि० [सं०] भावी, आनेवाला।

आगार—पु० [स०] घर। स्थान, जगह। खजाना।

आगाह—वि० [फा०] जानकार, वाकिफ। सचेत, सावधान। (पु)पु० आगम होनहार।

आगाही—स्त्री० [फा०] जानकारी। सावधानी।

आगि(पु)†—स्त्री० दे० 'आग'। ⊙वर्तक(पु) पु० पुराणो मे मेघ का एक भेद, अग्निवर्त्त।

आगिल(पु), आगिला(पु)†—वि० आगे का, अगला।

आगी†—स्त्री० दे० 'आग'।

आगे—क्रि० वि० सामने, समक्ष, 'पीछे' का उलटा। सामने और दूर पर। जीते जी, जीवन मे। इसके बाद। भविष्य मे। अनंतर, बाद। पहले। पूर्व। अतिरिक्त, अधिक। गोद मे। ⊙आगे = कुछ दिनो बाद, क्रमश। ⊙पीछे = एक के पीछे एक। सामने और पीठ पीछे। पास पास। पहले या बाद मे। अव्यवस्थित। वंश का उत्तराधिकारी। मु०~आना = प्रत्यक्ष होना, सामने आना। मिलना। सामना करना, भिड़ना, घटित होना। ~करना = प्रस्तुत करना। अगुआ बनाना। आड बनाना (कठिनाई आदि मे)। ~को = भविष्य मे। ~चलकर, ~जाकर = बाद मे। ~दौड़ पीछे चौड़ = आगे का काम करना पिछले का ध्यान न रखना। ~निकलना = बढ जाना (चाल या गुण आदि मे)। ~से = सामने से। भविष्य मे। पहले से, पूर्व से। ~से लेना = अगवानी करना। ~होना = आगे बढ़ना।

श्रेष्ठ होना । मुकाबले पर आना । मुखिया बनना ।

आगौन (पु)—पु० दे० 'आगमन' ।

आग्नेय—[सं०] अग्निसंबंधी । जिसका देवता अग्नि हो । अग्नि से उत्पन्न । जिससे आग निकले । पु० सुवर्ण । रुधिर । कृत्तिका नक्षत्र । अग्नि क पुत्र कार्तिकेय । ज्वालामुखी पर्वत । प्रतिपदा तिथि । किष्किंधा के पास दक्षिण का एक पुराना राज्य । आग भड़कानेवाला पदार्थ, जैसे, बारूद लाह आदि । ब्राह्मण । अग्निकोण । **आग्नेयास्त्र**—पु० प्राचीन अस्त्र जिनसे आग निकलती या बरसती थी । बदूक, तोप आदि । **आग्नेयी**—स्त्री० अग्नि को उद्दीप्त करनेवाली औषध । पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा ।

आग्रह—पु० [सं०] हठ, जिद । तत्परता, परायणता । जोर, आवेश ।

आग्रहायण—पु० [सं०] अगहन मास, मार्गशीर्ष । मृगशिरा नक्षत्र ।

आग्रही—वि० [सं०] आग्रह या हठ करनेवाला ।

आघ (पु)—पु० मूल्य, कीमत ।

आघात—पु० [सं०] प्रहार, मार । चोट, आक्रमण । ठोकर । धक्का । वधस्थान ।

आघूर्ण—वि० [सं०] घूमता या चक्कर लगाता हुआ । हिलता या काँपता हुआ ।

आघूर्णित—वि० [सं०] इधर उधर फिरता हुआ । चकराया हुआ ।

आघ्राण—पु० [सं०] सूँघना । अघाना, तृप्ति ।

आचमन—पु० [सं०] जल पीना । शुद्धि या कुल्ली के लिये जल लेना । धार्मिक कार्य के आरंभ मे दाहिने हाथ मे थोड़ा सा जल लेकर मंत्रपूर्वक पीना ।

आचमनी—स्त्री० आचमन करने का एक प्रकार का छोटा चम्मच ।

आचरज (पु)—पु० दे० 'अचरज' ।

आचरण—पु [सं०] करना, व्यवहार, बरताव । चाल चलन, चरित्र । आचार की शुद्धि । **आचरणीय**—वि० आचरण के योग्य, करने योग्य ।

आचरन (पु)—पु० दे० 'आचरण' ।

आचरना—सक० आचरण करना ।

आचरित—वि० [सं०] किया हुआ, व्यवहृत ।

आचार—पु० [सं०] व्यवहार, चलन, रीति । चरित्र, चाल चलन । शुद्धि, पवित्रता, शास्त्र के अनुकूल व्यवहार । व्यवहार या रीति नीति के नियम । ⊙**वान्** = वि० शुद्ध आचार का । नियम से रहनेवाला । ⊙**विचार** = पु० आचार और विचार, पवित्र रहन सहन ।

आचारज (पु)†—पु० दे० 'आचार्य' ।

आचारजी (पु)†—स्त्री० पुरोहिताई । आचार्य का काम या भाव ।

आचारी—वि० [सं०] आचारवान् । पु० रामानुज या वल्लभ संप्रदाय का वैष्णव ।

आचार्य—पु० [सं०] उपनयन के समय गायत्री मंत्र का उपदेश करनेवाला, गुरु । वेद पढ़ानेवाला । यज्ञ के समय कर्मोपदेशक । पुरोहित । अध्यापक । शास्त्र या सिद्धांत के प्रवर्तक । ब्रह्मसूत्र के चार प्रधान भाष्यकार—शंकर, रामानुज, मध्व और वल्लभ । वेद का भाष्यकार । प्रधानाध्यापक । **आचार्या**—स्त्री० स्त्री आचार्य । **आचार्याणी, आचार्यानी**—स्त्री० आचार्य की स्त्री ।

आचिंत्य—वि० [सं०] सब प्रकार से चिंतन करने योग्य । (पु) पु० परमेश्वर जो चिंतन मे नही आ सकता ।

आच्छन्न—वि० [सं०] ढका हुआ । छिपा हुआ ।

आच्छादक—वि० [सं०] ढकने या छिपानेवाला ।

आच्छादन—पु० [सं०] ढकना । कपड़ा । छाजन, छवाई ।

आच्छादित—वि० [सं०] ढका या छिपा हुआ ।

आछत (पु)†—क्रि० वि० होते हुए । रहते हुए । मौजूदगी मे ।

आछना (पु)—अक० होना । रहना, विद्यमान होना । 'दादुर बास न पावई भलेहि जो आछइ पास' (पदमा०) ।

आछरी—स्त्री० दे० 'अप्सरा' ।

आछा (पु)—वि० दे० 'अच्छा' ।

आछी (पु)—वि० स्त्री० अच्छी, भली । वि० खानेवाला ।

आछे(पु) क्रि० वि० अच्छी तरह।
आछेप(पु)—पु० दे० 'आक्षेप'।
आज—क्रि० वि० वर्तमान दिन मे। इन दिनो, वर्तमान समय मे। इस वक्त, अब। ⊙**कल** = क्रि० वि० इन दिनो, वर्तमान समय मे। मु०~**कल करना** = टालमटोल करना। ~**कल मे** = थोड़े दिनो मे, शीघ्र। ~**कल लगना** = मृत्यु निकट आना।
आजगव—पु०[सं०] शिव का धनुष, पिनाक।
आजन्म—क्रि० वि० [स०] जीवन भर।
आजमाइश—स्त्री० [फा०] परीक्षा, इम्तहान। परख।
आजमाना—सक० परखना, जाँच करना।
आजमूदा—वि० [फा०] आजमाया हुआ, परीक्षित।
आजा—पु० पितामह, बाप का बाप। ⊙**गुरु** = पु० गुरु का गुरु।
आजाद—वि० [फा०] छूटा हुआ, मुक्त। जो किसी के अधीन न हो। बेफिक्र। निडर। स्पष्टवक्ता। उद्धत। शास्त्र या लोक की रीति नीति मे न बँधा हुआ। **आजादी**—स्त्री० छुटकारा। स्वाधीनता।
आजानु—वि० [सं०] घुटने तक (लबा)। ⊙**बाहु**—वि० घुटनो तक लबे हाथवाला।
आजार—पु० [फा०] रोग। तकलीफ।
आजिजी—स्त्री० [अ०] नम्रता। दीनता, लाचारी।
आजीवन—क्रि०वि० [सं०] जिदगी भर।
आजीविका—स्त्री० [स०] वृत्ति, रोजी।
आज्ञप्त—वि० [स०] दे० 'आज्ञापित'।
आज्ञा—स्त्री० [स०] अधिकारपूर्ण कथन, हुक्म। प्रार्थना स्वीकृति, अनुमति। ⊙**कारी** = वि० आज्ञा माननेवाला। ⊙**पक** = वि० आज्ञा देनेवाला। ⊙**पत्र** = पु० आज्ञा जो लिखित हो, हुक्मनामा। ⊙**पन** = पु० आज्ञा देना। सूचित करना। ⊙**पालक** = पु० आज्ञा के अनुसार काम करना। ⊙**पित** = वि० हुक्म दिया हुआ। सूचित।
आज्य—पु० [सं०] घी। घी की जगह आहुति मे दी जानेवाली वस्तु।

आटना—सक० ढकना, दबाना।
आटा—पु० गेहूँ, जौ आदि किसी अन्न का चूर्ण, पिसान। मु०—**आटे दाल का भाव मालूम होना** = ससार की कठिनाइयो का अनुभव होना। **आटे दाल की फिक्र**=जीविका की चिंता। **गरीबी में आटा गीला होना** = तगी मे पास का भी कुछ जाता रहना।
आटोप—पु० [स०] फैलाव, बहुतायत। आडबर, विभव।
आठ—वि० सात और एक, ८। मु०~**आठ आँसू रोना** = बहुत विलाप करना। **आठो पहर** = हर वक्त। **आठो गाँठ कुम्मैत** = सर्वगुणसंपन्न। धूर्त। **आठें, आठो** = स्त्री० अष्टमी तिथि।
आडबर—पु० [स०] ऊपरी बनावट, दिखावा। आच्छादन। तबू। गभीर शब्द। पटह, तुरही का शब्द। हाथी की चिंघाड।
आडंबरी—वि० आडबर करनेवाला, ढोंगी। घमडी।
आड—स्त्री० ओट, परदा। शरण, आश्रय। रोक। थूनी, टेक। बिच्छू या भिड आदि का डक। स्त्रियो की लबी टिकली या आडा तिलक। माथे का गहना। **आड़ना**—सक० रोकना, छेंकना। बाँधना। मना करना। गिरवी रखना।
आड़ा—पु० एक धारीदार कपडा। लट्ठा, शहतीर। बाएँ से दहिने या दहिने से बाएं की ओर स्थित। तिरछा, टेढा। मु०—**आड़े आना** = बाधक होना। कठिनाई मे सहायक होना। **आड़े समय** = कठिनाई मे। **आड़े हाथो लेना** = व्यंग्य आदि से लज्जित करना।
आड़ी—स्त्री० तबला, मृदंग आदि बजाने का एक ढग। ओर, तरफ। सहायक, अपने पक्ष का।
आड़ू—पु० कुछ खटमीठे स्वाद का एक फल।
आढ़—पु० चार प्रस्थ या चार सेर के बराबर एक तोल। (पु) ओट, पनाह। अतर, नागा। वि० कुशल।
आढक—पु० [स०] चार सेर के बराबर तोल। इतना अन्न नापने का काठ का बरतन। अरहर।

आढत—स्त्री० दूसरे का माल कमीशन लेकर बेचने का व्यवसाय। ऐसा माल जमा रखने का स्थान। गल्ले, किराने आदि की थोक बिक्री की बडी दुकान। ⊙दार, **आढतिया**—पु० आढत का काम करनेवाला। दलाल।

आढ्य—वि० [स०] सपन्न, भरापूरा, धनी।

आणक—पु० [स०] रुपये का सोलहवाँ भाग, आना।

आणविक—वि० [सं०] अणु सबधी। अणु से बना हुआ।

आतंक—पु० [स०] भय, शका। रोब, दबदबा। रोग।

आततायी—वि० [स०] (शास्त्रो के अनुसार) घर सपत्ति मे आग लगानेवाला, विष देनेवाला, शस्त्र से हत्या करनेवाला, भूमि छीननेवाला, धन हडपनेवाला और स्त्री हरनेवाला। अत्याचारी। घोर पाप करनेवाला।

आतप—पु० [सं०] धूप, घाम। गरमी। ⊙त्र=पु० छाता, छतरी। **आतपी**—पु० सूर्य। वि० धूप सबधी।

आतमⓅ†—वि० दे० 'आत्म'।

आतमाⓅ†—स्त्री० दे० 'आत्मा'।

आतश—स्त्री० [फा०] आग, अग्नि। ⊙**खाना**=पु० आग रखने का स्थान। स्थान जहाँ पारसियो की अग्नि स्थापित हो। ⊙**दान**=पु० अँगीठी। ⊙**परस्त**=पु० अग्निपूजक। पारसी। ⊙**बाज**=पु० आतशबाजी बनानेवाला या करनेवाला। ⊙**बाजी**=स्त्री० बारूद के अनेक आकार और रग की चिनगारियाँ फेंकनेवाले या आवाज करनेवाले खिलौने। इस प्रकार के खिलौनो को जलाने का कार्य या दृश्य। **आतशी**—वि० अग्नि सबंधी। अग्नि उत्पन्न करनेवाला, जैसे, आतशी शीशा। जो आग मे न फूटे, जैसे, आतशी शीशी।

आतशक—पु० [फा०] उपदश, गरमी की बीमारी।

आतिथेय—पुं० [स०] अतिथि की सेवा करनेवाला या उसमे कुशल व्यक्ति। अतिथि सेवा की सामग्री।

आतिथ्य—पु० [सं०] अतिथिसत्कार, मेहमानदारी।

आतिश—स्त्री० दे० 'आतश'।

आतिशय्य—पु० [सं०] बहुतायत, ज्यादती।

आती पाती—स्त्री० लडको के छिपने और छूने का एक खेल।

आतुर—वि० [सं०] घबराया हुआ। अधीर, बेचैन। उत्सुक। दुखी। रोगी। Ⓟ क्रि० वि० शीघ्र, तुरत, जल्दी। ⊙**ताई** Ⓟ=स्त्री० उतावलापन, जल्दीबाजी। ⊙**सन्यास**=पु० मरने के कुछ ही पहले लिया जानेवाला सन्यास। **आतुरी**—स्त्री० [हिं०] घबराहट। जल्दबाजी।

आत्म—वि० [सं० 'आत्मन्' का समा० रूप] अपना। आत्मा का। ⊙**क**=वि० मय, युक्त (के० समा० के अत मे)। ⊙**गत**=वि० अपने मे लीन। स्वगत। ⊙**काम**=वि० आत्मा का अभिलाषी। मतलबी। ⊙**गौरव**=पु० अपनी बडाई या प्रतिष्ठा। ⊙**घात**=पु० आत्महत्या, खुदकुशी। ⊙**घातक**, ⊙**घाती**=वि० आत्महत्या करनेवाला। ⊙**ज**=पु० पुत्र। कामदेव। ⊙**ज्ञ**=पु० आत्मा का स्वरूप जाननेवाला, तत्वदर्शी। ⊙**ज्ञान**=पु० अपने को जानना। आत्मा या ब्रह्म का ज्ञान। ⊙**ज्ञानी**=पु० आत्मा और परमात्मा का ज्ञान रखनेवाला। ⊙**तुष्टि**=स्त्री० आत्मज्ञान से उत्पन्न सतोष या आनद। ⊙**त्याग**=पु० परहित के लिये अपने स्वार्थ का त्याग। ⊙**निवेदन**=पु० अपने को सपूर्ण रूप से इष्टदेव को अर्पित करना (नवधा भक्ति का एक अग)। ⊙**प्रशंसा**=स्त्री० अपने मुँह से अपनी बडाई। ⊙**बल**=पु० अपनी शक्ति। आत्मा का बल। ⊙**बोध**=पु० दे० 'आत्मज्ञान'। ⊙**भू**=वि० अपने शरीर से उत्पन्न हो। आप ही आप उत्पन्न, स्वयभू। पुं० पुत्र। कामदेव। ब्रह्मा। विष्णु। शिव। ⊙**रत**=वि० ब्रह्मज्ञान मे मग्न। आत्मा के आनद मे अनुरक्त। ⊙**रति**=स्त्री० आत्मानुरक्ति। ब्रह्मज्ञान। ⊙**वाद**=पु० आत्मा और पर-

मात्मा के ज्ञान को सबसे बढ़कर मानने का सिद्धांत। ⊙वादी = पु० आत्मवाद को माननेवाला व्यक्ति। ⊙विक्रय = पु० अपने आपको बेच डालना। लौकिक सुख के लिये अध्यात्म गुणों की अवहेलना। ⊙विद् = वि० आत्मा और परमात्मा का स्वरूप जाननेवाला। ⊙विद्या = स्त्री० अध्यात्म विद्या। ⊙श्लाघा = स्त्री० आत्मप्रशंसा। ⊙श्लाघी = वि० आत्मश्लाघा करनेवाला। ⊙संयम = पु० मन या इंद्रियों को वश में रखना। ⊙सिद्धि स्त्री० मोक्ष। ⊙हंता = वि० आत्मघाती। ⊙हत्या = स्त्री० अपना अंत करना। खुदकुशी। ⊙हन् = वि० आत्मघाती। **आत्मानंद**—पु० आत्मा का आनंद। आत्मा में लीन होने का सुख। **आत्माभिमान**—पु० आत्मगौरव, स्वाभिमान। **आत्माराम**—पु० आत्मज्ञान में रमनेवाला, वीतराग। जीव। ब्रह्म। तोता। **आत्मावलंबी**—वि० सब काम अपने बल पर करनेवाला, स्वावलंबी।

आत्मा—स्त्री० [सं०] मन या अंत.करण से परे उसके व्यापारों का ज्ञान करानेवाली सत्ता, रूह, चैतन्य। मन, हृदय। जीव। बुद्धि। विचारशक्ति। सूर्य, अग्नि। वायु। स्वभाव, धर्म।

आत्मिक—वि० [सं०] आत्मा संबंधी। अपना। मानसिक।

आत्मीय—वि० [सं०] अपना, निज का। पु० इष्ट मित्र। संबंधी, रिश्तेदार। ⊙ता = स्त्री० अपनापन, मैत्री।

आत्यंतिक—वि० [सं०] हद से ज्यादा, पराकाष्ठा का।

आत्रेय—वि० [सं०] अत्रि संबंधी। अत्रि गोत्रवाला। पु० अत्रि के पुत्र दत्त, दुर्वासा और चंद्रमा।

आथ(पु)—पु० दे० 'अर्थ'।

आथना(पु)—अक० होना।

आथर्वण—पु० [सं०] अथर्ववेद का जाननेवाला ब्राह्मण। अथर्ववेद विहित कर्म। अथर्वा ऋषि का पुत्र। अथर्वा गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति।

आथि(पु)—स्त्री० पूंजी, धन। अमीरी, खुशहाली।

आदत—स्त्री० [अ०] स्वभाव, प्रकृति। अभ्यास, बान, टेव।

आदम—पु० [अ०] इबरानी और अरबी लेखकों के अनुसार मनुष्यों का आदि प्रजापति। आदम की संतान, मनुष्य। ⊙कद = वि० [फा०] आदमी की ऊँचाई का। ⊙जाद = पु० [फा०] आदम की संतान। मनुष्य।

आदमी—पु० [अ०] मनुष्य। मानव जाति। नौकर। पति। ⊙यत = स्त्री० मनुष्यता, इंसानियत। सभ्यता, शिष्टता।

मु०~बनना = शिष्टता सीखना।

आदर—पु० [सं०] मान, इज्जत, सत्कार। ⊙णीय = वि० आदर के योग्य। **आदरना** (पु)—सक० आदर करना।

आदर्श—पु० [सं०] दर्पण, शीशा। वह जो रूप गुण, आदि में अनुकरण के योग्य हो, नमूना।

आदान—पु० [सं०] लेना, ग्रहण। ⊙प्रदान = पु० लेना देना।

आदाब—पु० [अ० अदब का बहु०] अदब कायदे, नियम। शिष्टाचार। नमस्कार।

आदि—वि० [सं०] शुरू या आरंभ का। पहला, प्रथम। पु० बुनियाद, मूल कारण। परमेश्वर। अव्य० इसी प्रकार अन्य, वगैरह। ⊙क = अव्य० आदि, वगैरह। ⊙कवि = पु० वाल्मीकि ऋषि ⊙कारण = पु० मूल कारण। ईश्वर। प्रकृति। ⊙नाथ = पु० महादेव। ⊙पुरुष = पु० परमेश्वर। ⊙म = वि० आदि का। पहला। ⊙विपुला = स्त्री० आर्या छंद का एक भेद।

आदित(पु)—पु० दे० 'आदित्य'।

आदित्य—पु० [सं०] अदिति के पुत्र। देवता। सूर्य। इंद्र। वामन। विष्णु। वसु। विश्वेदेवा। बारह मात्राओं का एक छंद। ⊙वार = पु० रविवार।

आदिल—वि० [फा०] न्यायी, इंसाफपसंद।

आदिष्ट—वि० [सं०] जिसे आदेश या हुक्म मिला हो। आदेश दिया हुआ (कथन)

आदी—वि० [अ०] अभ्यस्त । व्यसनी । (पु) क्रि० वि० निपट । †स्त्री० अदरक।
आदृत—वि० [सं०] आदर किया हुआ ।
आदेय—वि० [सं०] लेने योग्य ।
आदेश—पु० [सं०] आज्ञा, हुक्म । उपदेश । प्रणाम (साधुओं में) । ग्रहों का फल (ज्यो०) । ध्वनि या ध्वनियों के स्थान पर दूसरी ध्वनि या ध्वनियों का आना (व्या०) ।
आदेस(पु)—पु० दे० 'आदेश' ।
आद्यंत—क्रि० वि० [सं०] आदि से अंत तक ।
आद्य—वि० [सं०] पहला या आरंभ का । खाने योग्य । आद्या—स्त्री० दुर्गा । प्रकृति । दस महाविद्याओं में प्रथम । आद्योपांत—क्रि० वि० आरंभ से अंत तक ।
आद्रा—स्त्री० दे० 'आर्द्रा' ।
आध—वि० आधा ।
आधा—वि० किसी वस्तु के दो बराबर हिस्सों में एक । ⊙सीसी = स्त्री० आधे सिर का दर्द । आधों आध = दो बराबर भागों में । मु० ~तीतर आधा बटेर = बेमेल । ~होना = बहुत दुबला होना । आधे पेट रहना = पेट भरकर न खाना ।
आधान—पु० [सं०] स्थापन, रखना । गर्भ ।
आधार—पु० [सं०] वह जिस पर कुछ टिका या रखा हुआ हो । सहारा, अवलंब । थाला । पात्र । अधिकरण कारक (व्या०)। बुनियाद, नींव । मूलाधार चक्र (हठयोग) । आश्रय देनेवाला व्यक्ति । आधारित—वि० आधार पर रखा, ठहरा या अवलंबित । आधारी—वि० सहारे पर रहनेवाला । साधुओं की एक लकड़ी, अधारी ।
आधि—स्त्री० [सं०] चिंता, फिक्र । गिरवी, बंधक । मानसिक व्यथा ।
आधिक(पु)—वि० आधा, आधे के लगभग । (पु) क्रि० वि० आधे के लगभग, थोड़ा ।
आधिकारिक—पु० [सं०] मूल कथावस्तु (अँ० प्लाट) । वि० अधिकारयुक्त या अधिकारी का । सरकारी । प्रामाणिक । आधार का ।
आधिक्य—पु० [सं०] अधिकता, ज्यादती ।
आधिदैविक—वि० [सं०] भौतिक कारण के बिना होनेवाला, देवता, भूत प्रेत आदि द्वारा होनेवाला । अचानक होनेवाला ।
आधिपत्य—पु० [सं०] स्वामित्व, कब्जा ।
आधिभौतिक—वि० [सं०] पंच महाभूत या प्राणियों से होनेवाला या उनसे संबद्ध ।
आधीन(पु)—वि० दे० 'अधीन' । ⊙ता(पु) = स्त्री० अधीनता ।
आधुनिक—वि० [सं०] वर्तमान समय का, नवीन । आजकल का ।
आधेय—वि० [सं०] जो किसी आधार पर रखा या टिका हो । रखने या ठहराने योग्य । गिरवी रखने योग्य । पु० वह जो किसी आधार पर रखा या टिका हो ।
आध्यात्मिक—वि० [सं०] ब्रह्म और जीव से संबंधित । मन से संबंधित ।
आनंद—पु० [सं०] हर्ष, खुशी । सुख । ⊙बधाई = स्त्री० [हिं०] मंगल उत्सव । ⊙मत्ता = स्त्री० दे० 'आनंदसंमोहिता' । ⊙वन = पु० काशी । ⊙वर्धक = वि० आनंद बढ़ानेवाला । पु० उन्नीस मात्राओं का एक छंद । ⊙संमोहिता = स्त्री० संभोग के सुख में मग्न प्रौढ़ा नायिका । आनंदना (पु)—अक० आनंदित या प्रसन्न होना । आनंदित—वि० हर्षित । प्रसन्न । आनंदी—वि० आनंदित, हर्षित । खुशमिजाज ।
आन—स्त्री० मर्यादा । शान, ठसक । अदब, लिहाज । शपथ, कसम । प्रतिज्ञा, टेक । ढंग । विजयघोषणा, दुहाई । क्षण, अल्पकाल । (पु) वि० अन्य, दूसरा । ⊙बान = स्त्री० सजधज । शान शौकत । ठसक । मु० ~की आन में = शीघ्र, तुरंत ।
आनना(पु)†—सक० लाना ।
आनक—पु० [सं०] डंका, बड़ा ढोल । गरजता हुआ बादल । ⊙दुंदुभि = पु० कृष्ण के पिता वसुदेव । ⊙दुंदुभी = स्त्री० बड़ा ढोल ।
आनत—वि० [सं०] झुका हुआ । नम्र ।
आनद्ध—वि० [सं०] कसा हुआ । मढ़ा हुआ । तत्पर । पुं० चमड़े से मढ़ा बाजा, जैसे, ढोल, मृदंग आदि ।

आनन—पु० [सं०] मुँह । चेहरा ।

आनन फानन—क्रि० वि० [अ०] अति शीघ्र, फौरन ।

आनयन—पु० [सं०] लाना । उपनयन सस्कार ।

आनरेरी—वि० [अँ०] अवैतनिक, केवल प्रतिष्ठा के हेतु काम करनेवाला ।

आनर्त—पु० [सं०] द्वारका । आनर्त देश का निवासी । नृत्यशाला । युद्ध ।

आना—अक० पहुँचना (कहने या सुननेवाले के पास), 'जाना' का विरुद्धार्थक। जाकर लौटना । आरभ होना (जैसे, सरदी या गरमी आदि का आना) । फलना, फूलना (जैसे, फल आना) । मनोविकार या भाव उत्पन्न होना (जैसे, दया आना) । जानना, समझ मे आना, याद होना (जैसे, पाठ आना, हिसाब आना) । आँच पर चढ़े भोज्य पदार्थ का पकना । स्खलित होना । मु० = **आए दिन** = प्रतिदिन । अकसर । **आता जाता** = आने जानेवाला, पथिक । **आया गया** = अतिथि । बीता हुआ, समाप्त । **आ धमकना** = अचानक पहुँचना (अनिच्छा या तिरस्कार मे) । **आ निकलना** = अचानक पहुँना । **आ पड़ना** = सहसा गिरना । आक्रमण करना । कठिनाई या दु.ख उपस्थित होना । **(किसी की) आ बनना** = लाभ उठाने का अवसर मिलना। **आ रहना** = गिर पड़ना । **आ लगना** = ठिकाने पर पहुँचना । आरभ होना । पीछे लगना, साथ होना । **आ लेना** = पास पहुँचना, पकड़ना । आक्रमण करना ।

आना—पुं० एक रुपए का सोलहवाँ हिस्सा, पुराने चार पैसे । सोलहवाँ भाग ।

आनाकानी—स्त्री० ध्यान न देना । टालमटूल, हीलाहवाला । कानाफूसी, इशारो की बात ।

आनि(५)—स्त्री० दे० 'आन' । सक० लाकर ।

आनुगत्य—पु० [सं०] अनुगमन करने की क्रिया । परिचय ।

आनुपूर्वी—वि० क्रमानुसार, एक के बाद दूसरा । वर्णानुक्रम ।

आनुमानिक—वि० [सं०] अनुमान का, काल्पनिक ।

आनुवंशिक—वि० [सं०] वशक्रम से चला आता हुआ, पुश्तैनी ।

आनुश्राविक—वि० [सं०] जिसे परपरा से सुनते आए हो ।

आनुषगिक—वि० [सं०] प्रासगिक । सबद्ध। गौण ।

आन्वीक्षिकी—स्त्री० [सं०] आत्मविद्या । तर्कविद्या ।

आप—सर्व० मध्यम पुरुप या अन्य पुरुष के लिये आदरार्थक प्रयोग । स्वय, खुद । ईश्वर, भगवान । पुं० पानी । ⊙**काज** = पु० अपना काम, स्वार्थ । ⊙**काजी** = वि० मतलबी । ⊙**बीती** = स्त्री० घटना जो अपने पर घट चुकी हो, अनुभूत बात । ⊙**रूप** = स्वयं आप (महापुरुषो के लिये) आप महापुरुप, हजरत (व्यग्य)। मु०~**आपकी पड़ना** = अपनी ही चिंता होना ।~**आपको** = अलग अलग । अपने अपने को ।~**से आप** = अपने आप, स्वय ।~**ही आप** = बिना दूसरे की प्रेरणा के, स्वत । मन ही मन मे ।

आपगा—स्त्री० [सं०] नदी ।

आपण—पुं० [सं०] हाट, बाजार ।

आपणिक—वि० बाजार से सबधित । दुकानदार, व्यापारी । दूकान का कर ।

आपताब(५) पु० दे० 'आफताब' ।

आपत्काल—पु० [सं०] कुसमय । विपत्ति, दुर्दिन ।

आपत्ति—स्त्री० [सं०] विपत्ति, आफत । दु ख। कष्ट का समय । जीविका का कष्ट । एतराज, उज्र । दोपारोपण ।

आपत्य—वि० [सं०] अपत्य या औलाद से सबधित ।

आपद्—स्त्री० [सं०] विपत्ति। दु ख, कष्ट । ⊙**धर्म** = धर्म जिसका विधान केवल आपत्काल के लिये ही ।

आपदा—स्त्री० [सं०] दे० 'आपद्' ।

आपन(५)†—सर्व० दे० 'अपना' । ⊙**पौ**(५) = पु० दे० 'अपनपौ' ।

आपन्न—वि० [स०] आपद्ग्रस्त, दुखी। प्राप्त। (जैसे, सकटापन्न)।

आपया—स्त्री० नदी।

आपरेशन—पु० [अँ०] अस्त्र चिकित्सा, चीरफाड।

आपस—पु० सबध, भाईचारा, हेलमेल। ⊙दारी = स्त्री० भाईचारा, परस्पर निकट का सबध। मु०~का = सबधियो या मित्रो के बीच का। एक दूसरे के बीच का। ~मे = परस्पर मे। एक दूसरे के साथ।

आपसी—वि० आपस का, पारस्परिक।

आपस्तब—पु० [स०] वैदिक कर्मकाड (कृष्ण यजुर्वेद) की शाखा के प्रवर्तक ऋषि। कल्पसूत्रो की आपस्तब शाखा के सूत्रकार। एक स्मृतिकार।

आपा—पु० अपनी सत्ता, अपनी सत्ता का स्वरूप। अपनी असलियत। अहकार। होश हवास। स्त्री० [तु०] बडी बहन। ⊙धापी = स्त्री० अपनी अपनी चिंता। स्वेच्छाचारिता। ⊙पथी = वि० स्वेच्छाचारी। मु०~खोना = अहकार या स्वार्थ त्यागना, नम्र होना। अपने को बरबाद करना। मरना। ~तजना = अहकार छोडना। द्वैत भाव को छोडना। मरना। ~बिसराना = आत्मभाव को भुलाना। होश हवास खोना। ~सँभालना = चैतन्य होना। देह की सुध रखना। अपनी दशा सुधारना। जवान होना। **आपे मे आना** = होश हवाश मे आना। सावधान होना। **आपे मे न रहना** = अपने ऊपर वश न रहना। विवेक खो देना। **आपे से बाहर होना** = आवेश मे अपने ऊपर काबू न रखना। क्रुद्ध होना।

आपात—पुं० [स०] गिराव, पतन। आकस्मिक घटना। आरभ। अत। ⊙त = क्रि० वि० अचानक। पहली निगाह मे। आखिरकार। मकट।

आपातलिका—स्त्री० [स०] चार चरणो का मात्रिक छद।

आपान—पु० [स०] शराबियो की गोष्ठी। शराब पीने का स्थान।

आपी(पु)—पु० पूर्वाषाढ नक्षत्र।

आपीड—पु० [स०] सिर पर पहनने की चीज। कलगी। पगडी। पिंगल मे एक विषम वृत्त। वि० पीडा देनेवाला। निचोडनेवाला।

आपु(पु)†—सर्व० दे० 'आप'।

आपुन(पु)†—सर्व० दे० 'अपना'। खुद, स्वय।

आपुस(पु)†—पु० दे० 'आपस'।

आपूरना(पु)—अक० भरना।

आपेक्षिक—वि० [स०] अपेक्षा रखनेवाला, दूसरे पर आश्रित।

आप्त—वि० [स०] प्राप्त, लब्ध। कुशल। विश्वसनीय, सच्चा। विषय को ठीक तौर से जाननेवाला। प्रामाणिक। यथार्थवक्ता। पु० ऋषि। शब्दप्रमाण। (योग)। ⊙काम = वि० जिसकी सब कामनाएँ पूर्ण हो गई हो।

आप्ति—स्त्री० [स०] प्राप्ति, लाभ।

आप्यायन—पु० [स०] वृद्धि। तृप्ति। सुख समृद्धि का बढना। एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त होना।

आप्लावन—पु० [स०] डुबाना, बोरना।

आफत—स्त्री० [अ०] विपत्ति। दुख, कष्ट। मुसीबत का दिन। मु०~उठाना = विपत्ति भोगना। हलचल या ऊधम मचाना। ~का परकाला = घोर उद्योगी। उपद्रवी। ~का मारा = विपत्ति से पीडित। दुर्दैव से प्रेरित। ~ढाना = उपद्रव मचाना। कष्ट पहुँचाना। ~मचाना = ऊधम मचाना। जल्दी मचाना। ~लाना = विपत्ति उपस्थित करना। झंझट पैदा करना।

आफताब—पु० [फा०] सूर्य। **आफताबी**—स्त्री० [फा०] सूर्य के चिह्न से युक्त पान के आकार का या गोल जरी का पखा। एक आतशबाजी। दरवाजे या खिड़की के सामने का छोटा सायबान। वि० गोल। सूर्य सबंधी।

आफू—स्त्री० अफीम।

आब—स्त्री० [फा०] चमक। काति, रौनक। प्रतिष्ठा। तडक भड़क, ठाटबाट। धार (चाकू आदि की)। पु० पानी,

जल। ⊙कार=पु० शराब बनाने या बेचनेवाला। कलाल। ⊙कारी=स्त्री० आबकार का स्थान या व्यवसाय। —विभाग=मादक वस्तुओ से सबध रखनेवाला सरकारी मुहकमा। ⊙खोरा=पु० पानी पीने का बरतन, गिलास। कटोरा। ⊙जोश=पु० उबाला हुआ या बडा लाल मुनक्का या सूखा अगूर। ⊙ताब=स्त्री० तडक भडक, काति। ⊙दस्त=पु० मलत्याग के पीछे गुदा को धोना। आबदस्त का पानी। ⊙दाना पु० अन्न जल। जीविका। ⊙दार=वि० चमकीला, कातिमान्। शानवाला। ⊙दारी=स्त्री० चमक, काति। ⊙दोज=वि० पानी मे डूबा हुआ। पानी के अदर डूबकर चलनेवाला (जहाज या नाव)। पु० पनडुब्बी। ⊙पाशी=स्त्री० सिंचाई। ⊙रवाँ=पु० एक महीन मलमल। ⊙हवा=स्त्री० जलवायु। मु०~दाना उठना=जीविका न रहना।

आबद्ध—वि० [स०] बँधा हुआ। कैद।

आबनूस—पु० [फा०] एक जगली वृक्ष, तेंदू। **मु०~का कुंदा**=अत्यत काला मनुष्य।

आबनूसी—वि० [फा०] आबनूस का सा, गहरा काला। आबनूस का बना हुआ।

आबरत—पु० आवर्त, घेरा। '...आवरत पूरे रास मडल की पाई सी' (गगा० ४६)।

आबाद वि० [फा०] बसा हुआ। कुशल-पूर्वक, प्रसन्न। उपजाऊ। ⊙कार=पु० जगल काटकर आबाद हुए काश्तकार।

आबादी—स्त्री० बस्ती। जनसंख्या, मर्दुम-शुमारी। खेती की भूमि।

आबादानी=स्त्री० दे० 'अबादानी'।

आबी—वि० [फा०] पानी से सबधित। पानी मे रहनेवाला। हलके रग का, फीका। हलका नीला, आसमानी। पानी के किनारे रहनेवाला। स्त्री० आबपाशी की भूमि।

आब्दिक—वि० [स०] वार्षिक, सालाना।

आभ(पु)—स्त्री० काति, आभा। पु० पानी, जल।

आभरण—पु० [स०] आभूषण, जेवर। पालन, परवरिश।

आभरन(पु)—पु० दे० 'आभरण'।

आभा—स्त्री० [स०] चमक, काति। झलक, छाया, प्रतिबिंब।

आभार—पु० [स०] बोझ। उपकार। गृहस्थी का बोझ या जिम्मेदारी। आठ गण का एक वर्णवृत्त। **आभारी**—वि० जिसपर आभार हो, उपकृत।

आभास—पु० [स०] मिथ्या ज्ञान, भ्रम। सकेत, पता। झलक, छाया।

आभीर—पु० [सं०] अहीर, ग्वाल। ग्यारह मात्राओ का एक छद। **आभीरी**—स्त्री० अहीरिन। एक अपभ्रश भाषा। एक रागिनी।

आभूषण—पु० [स०] गहना, जेवर।

आभूषन(पु)—पु० दे० 'आभूषण'।

आभोग—पु० [सं०] किसी वस्तु को लक्षित करनेवाली सब बातो का होना। सुख आदि का पूरा अनुभव, तृप्ति।

आभ्यतर—वि० [स०] भीतरी, अदर का।

आभ्युदयिक—वि० [स०] अभ्युदय सबधी। एक श्राद्ध, नादीमुख।

आमत्रण—पु० [स०] न्योता, बुलावा। सबोधन, पुकारना। **आमत्रित**—वि० न्योता हुआ। पुकारा हुआ।

आम—पु० भारत का एक प्रसिद्ध स्वादिष्ट फल और उसका पेड, आम्र, रसाल। **मु०~के आम गुठली के दाम**=दोहरा लाभ। **~खाने से काम या पेड़ गिनने से**=मतलब की चीज से लाभ उठाओ, इधर उधर की बातो मे मत उलझो।

आम—पु० [स०] आँव, न पचे हुए अन्न का सफेद और लसीला मल। वि० कच्चा, असिद्ध। ⊙वात=पु० रोग जिसमे आँव गिरता है और शरीर सूजकर पीला पड जाता है। ⊙शूल=पु० आँव के कारण पेट मे ऐंठन और दर्द होने का रोग। वि० [अ०] साधारण। मामूली। प्रसिद्ध, विख्यात। ⊙फहम—वि०

सर्वसाधारण की समझ मे आनेवाला। ⊙राय = स्त्री० जनसाधारण की राय। ⊙लोग = पु० जनसाधारण। दरबारे आम—पु० राजसभा जिसमे सब लोग जा सकें।

आमड़ा—पु० एक खट्टा फल और उसका बड़ा पेड़।

आमद—स्त्री० [फा०] आगमन, आना। आमदनी। ⊙रफ्त = स्त्री० आना जाना।

आमदनी—स्त्री० [फा०] आय, आनेवाला धन। अन्य देशों से अपने देश मे आनेवाली व्यापारिक वस्तु।

आमन—स्त्री० साल मे एक ही फसल देनेवाली भूमि। जाडे मे होनेवाला धान।

आमनाय—पु० दे० 'आम्नाय'।

आमना सामना—पु० भेंट, मुकाबला।

आमने सामने—क्रि० वि० एक दूसरे के समक्ष या मुकाबले मे।

आमय—पु० [स०] रोग, बीमारी।

आमरख(पु)—पु० दे० 'आमर्ष'। **आमरखना**—अक० दुःखपूर्वक क्रोध करना।

आमरण—क्रि० वि० [स०] मरण काल तक, जिंदगी भर।

आमरस—पु० दे० 'अमरस'।

आमर्दन—पु० [स०] जोर से मलना, खूब पीसना या रगडना।

आमर्ष—पु० [स०] दे० 'अमर्ष'।

आमलक—पु० [स०] आँवला।

आमला†—पु० दे० 'आँवला'।

आमातिसार—पु० [स०] आँव के कारण अधिक दस्तों का होना।

आमात्य—पु० दे० 'अमात्य'।

आमादगी—स्त्री० [फा०] तैयारी, मुस्तैदी, तत्परता।

आमादा—वि० [फा०] उतारू, सनद्ध, तत्पर।

आमाल—पु० [अ० अमल का बहु०] कर्म, करनी। ⊙नामा = पु० रजिस्टर, जिसमे नौकरो के चालचलन और योग्यता आदि का विवरण रहता है।

आमाशय—पु० [स०] पेट के भीतर की थैली जिसमें खाए हुए पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।

आमिख(पु)—पु० दे० 'आमिष'।

आमिर(पु)—पु० आमिल, हाकिम।

आमिल—पु० [अ०] काम करनेवाला। कर्तव्यपरायण। अमला, कर्मचारी। हाकिम, अधिकारी। ओझा, सयाना। पहुँचा हुआ फकीर, सिद्ध। वि० [हिं०] खट्टा, अम्ल।

आमिष—पु० [स०] मास, गोश्त। भोग्य वस्तु। लालच। लुभावनी वस्तु। **आमिषाशी**—वि० मासभक्षक।

आमी—स्त्री० छोटा आम, अँबिया। एक छोटे कद का पहाडी पेड़। जौं और गेहूँ की भूनी हुई बाल।

आमुख—पु० [स०] नाटक की प्रस्तावना। ग्रथ की भूमिका।

आमेजना—सक० मिलाना, सानना।

आमेजिश—स्त्री० [फा०] मिलावट, मिश्रण।

आमोख्ता—पु० [फा०] पढे हुए पाठ की आवृत्ति। अभ्यास।

आमोद—पु० [स०] आनद, खुशी। दिलबहलाव, तफरीह। मनोहारी सुगधि। ⊙**प्रमोद** = पु० हँसी खुशी, रगरलियाँ। ⊙**आमोदित**—वि० जी बहला हुआ। आनंदित। सुगधित।

आम्नाय—पु० [स०] अभ्यास। वेद आदि का पाठ और अभ्यास। वेद।

आम्र—पु० [स०] आम का वृक्ष या फल। ⊙**कूट**= पु० विंध्य पर्वतमाला का दक्षिणीपूर्वी भाग जहाँ से सोन और नर्मदा नदियाँ निकली हैं, अमरकटक।

आयँती पायँती†—स्त्री० सिरहाना पायताना।

आय—स्त्री० [स०] आमदनी, धनागम। लाभ। ⊙**व्यय** = पु० आमदनी और खर्च। ⊙**व्ययक** = पु० बजट।

आयत—वि० [स०] विस्तृत, लबा चौडा। स्त्री० [अ०] इजील का वाक्य। कुरान का वाक्य।

आयतन—पु० [सं०] मकान, घर। ठहरने की जगह। देवताओं की वंदना की जगह। किसी वस्तु का अविछिन्न विस्तार या परिमाण, घनत्व (विज्ञान)। आयाम, किसी वस्तु की लबाई, चौडाई और

मोटाई (या ऊँचाई) का गुणनफल, घनफल (गणित)।

आयत्त—वि० [स०] अधीन, वशीभूत।

आयत्ति—स्त्री [स०] अधीनता, परवशता।

आयद—वि० [अ०] आरोपित, लगाया हुआ।

आयस—पु० [स०] लोहा। लोहे का कवच।

आयसी—वि० लोहे का।

आयसु(पु)—स्त्री० आज्ञा, हुक्म। (पु) स्त्री० दे० 'आयुष्य'।

आया—स्त्री० [पुर्त०] बच्चों को दूध पिलाने और उनकी निगरानी करनेवाली सेविका, धाय। अव्य० [फा०] क्या।

आयात—वि० [स०] आया हुआ। बाहर से आया हुआ (माल), 'निर्यात' का उलटा।

आयाम—पु० [स०] लंबाई, विस्तार। नियमित करना, नियमन (जैसे प्राणायाम)। व्याप्ति।

आयास—पु० [स०] परिश्रम, मेहनत। प्रयास।

आयु—स्त्री० [स०] जीवनकाल, उम्र। जिंदगी जीवन।

आयुध—पु०[स०] हथियार, अस्त्र, शस्त्र।

आयुर्बल—पु० [स०] आयुष्य, उम्र।

आयुर्वेद—पु० [स०] चिकित्सा शास्त्र, वैद्यक।

आयुष्मान्—वि० [स०] चिरजीवी, दीर्घजीवी।

आयुष्य—पु० [स०] आयु, उम्र।

आयोगव—पु० [स०] वैश्य स्त्री और शूद्र पुरुष से उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति (मनुस्मृति)।

आयोजन—पु० [स०] लगाना, जोडना, नियुक्ति। प्रबंध। उत्सव। उद्योग। सामान।

आयोजना—स्त्री दे० 'आयोजन'।

आयोजित—वि जिसका आयोजन या तैयारी हो चुकी हो। सोचा हुआ।

आरंभ—पु० [स०] (किसी वस्तु का) शुरू का हिस्सा, आदि। (किसी कार्य की) प्रथम अवस्था, शुरू, उठान। उत्पति।

आरंभना(पु)—अक० शुरू होना। सक० शुरू करना।

आर—पु० [स०] बिना साफ किया हुआ लोहा। पीतल। किनारा। कोना। पहिए का आरा। स्त्री० बिच्छू, भिड आदि का डंक। चमडा सीने का सूआ। (पु) जिद, हठ। घृणा। वैर। लज्जा।

आरक्त—वि [स०] कुछ कुछ लाल। लाल, सुर्ख।

आरज(पु)—वि० दे० 'आर्य'।

आरजू—स्त्री० [फा०] इच्छा, वांछा। अनुनय, खुशामद। प्रार्थना।

आरण्य—वि [स०] अरण्य का, जंगली। ○क=वि दे० 'आरण्य'। जंगल में रहनेवाला। वैदिक ब्राह्मणग्रंथों के अनंतर और उपनिषदों के पूर्व के ग्रंथभाग।

आरत(पु)—वि० दे० 'आर्त'।

आरति—स्त्री [स०] विरक्ति। दे० 'आर्ति'

आरती—स्त्री० नीराजन, पूजा में देवमूर्ति के सामने कपूर या घी का दीपक मंडलाकार घुमाना। आदर या मंगल के निमित्त किसी के सामने इस प्रकार दीपक घुमाना। षोडशोपचार पूजन का एक अंग। आरती करने का पात्र। आरती में पढा जानेवाला स्तोत्र या प्रार्थना।

आरन(पु)—पु अरण्य, जंगल।

आरपार—पु० दोनों किनारे, वार पार। क्रि वि० एक किनारे से दूसरे किनारे तक। एक तल से दूसरे तल तक।

आरबल(पु)—पु० दे० 'आयुर्बल'।

आरब्ध—वि० [स०] आरंभ किया हुआ।

आरभटी—स्त्री० [स०]क्रोध आदि उग्र भावों की चेष्टा। रूपक की वह शैली जिसमें यमक का प्रयोग अधिक होता है और जिसका व्यवहार इंद्रजाल, संग्राम, क्रोध, आघात-प्रतिघात और बंधन आदि में रौद्र, भयानक और बीभत्स रसों में होता है। रंगमंच पर अलौकिक और बीभत्स घटनाओं का प्रदर्शन।

आरव—पु० [स०] आवाज। आहट।

आरषी(पु)—वि० ऋषि संबंधी।

आरस(पु)—पु० [वि० स्त्री० 'आरसी'] दे० 'आलस्य'।

आरसी—स्त्री० शीशा, आईना। रत्न या शीशा जडा हुआ वह कटोरीदार छल्ला

जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे मे पहनती है।

आरा—पु० [सं०] लकडी चीरने की लोहे की दाँतेदार लबी पट्टी जिसके दोनो ओर लकडी के दस्ते लगे रहते है। चमडा सीने का टेकुआ या सूजा। पुं० पहिए की गडारी और पुटठी के बीच की चौडी पटरी। ⊙कश =वि० [हिं०] आरा चलानेवाला।

आराइश—स्त्री० [फा०] सजावट। कागज के फूल पत्ते।

आराजी—स्त्री० [अ०] भूमि, जमीन। खेत।

आराति—पुं० [सं०] शत्रु, वैरी।

आराधक—वि० [सं०] आराधना करनेवाला।

आराधन—पु० [सं०] पूजा। सेवा। तोषण, प्रसन्न करना। ⊙आराधना—स्त्री० उपासना, पूजा। सक० उपासना करना, पूजना। आराधनीय—वि० आराधना करने योग्य।

आराधित—वि० पूजित, सेवित। आराध्य—वि० जिसकी आराधना की जाय, पूज्य।

आराम—पु० [सं०] बाग, उपवन। पु० [फा०] चैन, सुख। चगापन, सेहत। विश्राम। वि० चगा, तदुरुस्त। ⊙कुरसी =स्त्री० [अ०] आराम करने की एक लबी कुरसी। ⊙गाह=स्त्री० [फा०] सोने का कमरा। ⊙तलब=वि० सुख चाहनेवाला। आलसी, सुस्त।

आरास्ता—वि० [फा०] सजा हुआ।

आरि(पु)—स्त्री० जिद, हठ।

आरी—स्त्री० छोटा आरा। लोहे की एक कील जो बैल हाँकने के पैने की नोक मे लगी रहती है। जूता सीने का छोटा सूजा। (पु)स्त्री० [अ०] ओर, तरफ। वि० [अ०] तग, हैरान।

आरुण्य—पु० [सं०] अरुणता, लाली।

आरूढ—वि० [सं०] चढा हुआ, सवार। स्थिर, दृढ (किसी बात पर)। तत्पर, उतारू। ⊙यौवना=स्त्री० वह नायिका जिसे पतिप्रसग अच्छा लगे।

आरो(पु)—पु० दे० 'आरव'।

आरोग—वि० दे० 'आरोग्य'।

आरोगना(पु)—सक० खाना। 'ताके फल आरोगे रघुपति पूरण भक्ति प्रकासी' (सूर०)।

आरोधना(पु)—सक० रोकना, छेंकना।

आरोप, आरोपण—पु० [सं०] लगाना, मढना (जैसे, दोषारोप)। इलजाम। रोपना। मिथ्या ज्ञान, भ्रम। एक वस्तु के गुणो को दूसरी वस्तु मे मानना। आरोपित—वि० आरोप किया हुआ।

आरोपना(पु)—सक० लगाना। स्थापित करना, बैठाना।

आरोह—पु० [सं०] ऊपर की ओर जाना, चढाव। चढना, सवारी। आक्रमण, चढाव। नितब। सगीत मे स्वरो का चढाव। वि० चढने या सवारी करनेवाला। आरोहण—पु० चढना, सवार होना। आरोही—वि० चढने या सवार होनेवाला। षडज से निषाद तक उत्तरोत्तर ऊँचा होनेवाला (स्वर)।

आर्जव—पु० [सं०] सीधापन, ऋजुता। विनय, नम्रता। ईमानदारी।

आर्त—वि० [सं०] दुखी, कातर। पीडित। अस्वस्थ। ⊙नाद, ⊙स्वर=पु० पीडा की आवाज, करुण पुकार।

आर्तव—वि० [सं०] ऋतु मे उत्पन्न, मौसमी। मासिक धर्म सबधी। पु० मासिक धर्म।

आर्थिक—वि० [सं०] अर्थ से सबधित, धन से सबधित।

आर्थी—वि० [सं०] अर्थ या मतलब से सबंध रखनेवाला (जैसे, आर्थी उपमा)।

आर्द्र—वि० [सं०] गीला, नम। सना हुआ, लथपथ।

आर्द्रा—स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रो मे छठा नक्षत्र। आषाढ के आरभ का काल। ग्यारह अक्षरो का एक वर्णवृत्त। अदरक।

आर्य—वि० [सं०] श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य। कुलीन। आर्य जाति का, आर्य सबधी। पुं० श्रेष्ठ पुरुष। ईसा के हजारो वर्ष पूर्व से सभ्यता के लिये प्रसिद्ध एक प्राचीन भारोपीय (अँ० इडोयोरोपियन) जाति। ⊙पुत्र=पुं० प्राचीन आर्य नारियो द्वारा पति के लिये प्रयुक्त शब्द। ⊙समाज=पु० प्राचीन वैदिक धर्म के आधार पर

स्वामी दयानद द्वारा स्थापित एक धार्मिक सप्रदाय ।

आर्या—स्त्री० [स०] पार्वती । सास । दादी, पितामही । सस्कृत और मराठी मे मुख्यत प्रयुक्त एक अर्धसम या विषम वृत्त जिसके पाँच भेद है (१) आर्या या गाहा(गाथा), (२) गीति या उग्गाहा (उद्गाथा),(३) उपगीति या गाहा, (४) उद्गीति या विग्गाहा (विगाथा), (५) आर्यागीति, साहिनी या खधा (स्कधक) । आर्या में चार मात्राओ का एक गण होता है और विषम गणो मे जगण नही रखे जाते ।

आर्यावर्त—पु० [स०] उत्तरी भारतवर्ष (१५ अगस्त सन् १९४७ से पहले का अविभक्त)।

आर्ष—वि० [स०] ऋषि सबधी । ऋषि का कहा हुआ । वैयाकरण पाणिनि से पहले का । ⊙**प्रयोग** = पुं० पाणिनि के पूर्व के ग्रथो मे मिलनेवाले व्याकरणविरुद्ध प्रयोग । ⊙**विवाह** = पुं० आठप्रकार के विवाहो मे तीसरा जिसमे वर से कन्या का पिता दो बैल शुल्क लेता था ।

आलकारिक—वि० [स०] अलकार-सबधी । अलकार युक्त । अलकार जाननेवाला ।

आलब—पुं० [स०] अवलब, आश्रय । गति, शरण ।

आलबन—पुं० [स०] सहारा, अवलब । भारतीय काव्य और नाट्यशास्त्र के अनुसार किसी दृश्य या श्रव्य काव्य का नायक या नायिका, रसनिष्पत्ति मे स्थायी भाव का आधारभूत कारण। साधन, उपकरण ।

आलंभ आलभन—पुं० [स०] वध । छूना । पकडना । यज्ञमेध ।

आल—पुं० [स०] हरताल । पुं० [हि०] झझट, बखेडा । स्त्री० [हि०] एक पौधा जिसकी छाल और जड से लाल रग निकलता है। इस पौधे का रग । गीलापन, तरी । आँसू । स्त्री० [अ०] बेटी की सतति । वश । ⊙**औलाद** = स्त्री० [अ०] बालबच्चे ⊙**जाल** = [अ०] पु० बखेडा, आडबर ।

आलकस†—पु० दे० 'आलस्य' ।

आलथी पालथी—स्त्री० दाँई जाँघ पर बाँई और बाँई पर दाहिनी एडी रखकर बैठने का एक आसन ।

आलपीन—स्त्री० कागज नत्थी करने की बिना छेद की घुडीदार सुई ।

आलबाल—पुं० दे० 'आलवाल'

आलम—पुं० [अ०] दुनिया, ससार । जन-समूह, भीड । अवस्था, दशा ।

आलमारी—स्त्री० दे० 'अलमारी' ।

आलय—पु० [स०] घर, मकान । स्थान ।

आलवाल—पु० [स०] थाला, आलवाल ।

आलस—वि० [स०] आलसी, सुस्त । ⑤† पु० दे० 'आलस्य' । **आलसी**—वि० [हि०] सुस्त, काहिल ।

आलस्य—पुं० [स०] कार्य करने मे अनुत्साह, सुस्ती, काहिली ।

आला—पुं० ताक, ताखा । वि० [अ०] बहुत बढिया, श्रेष्ठ। ⑤ †वि० गीला, ओदा ।

आलान—पु० [स०] हाथी को बाँधने का खूंटा, रस्सा या जजीर । बधन, रस्सी ।

आलाप—पुं० [स०] बातचीत । कथनोपकथन। सगीत मे स्वरो का साधन, तान । ⊙**क** = वि० बातचीत करनेवाला । गानेवाला ।

आलापना—सक० सुर खीचना । तान लेना ।

आलापी—वि० [स०] बोलनेवाला, तान लेनेवाला, गानेवाला । आलाप लेनेवाला ।

आलिंगन—पु० [स०] भुजाओ मे समेटकर छाती से लगाना, भेंटना, परिरभण ।

आलिगना⑤—सक० आलिगन करना ।

आलि—स्त्री० [स०] सखी, सहेली । पक्ति। रेखा । भ्रमरी । बिच्छू ।

आलिम—वि० [अ०] विद्वान्, पडित ।

आली—स्त्री० सखी । ⑤ †वि० स्त्री० गीली भीगी हुई । वि० [अ०] बडा, श्रेष्ठ । ⊙**जाह** = वि० ऊँचे पद या मर्यादावाला (विशेषत बादशाहो के लिये) । ⊙**शान** = वि० [अ०] शानदार, भव्य ।

आलू—पु० तरकारी के काम आनेवाला एक प्रसिद्ध कद ।

आलूचा—पु० [फा०] पजाब आदि मे होनेवाला एक गोल और खटमीठा फल और उसका पेड ।

आलूबुखारा—पु० आलूचा । सुखाया हुआ आलूचा फल ।

आलेख—पु० [स०] लिपि । लिखाई, अकन । लेख, इबारत । चित्र ।

आलेखन—पु० [सं०] लिखना, लिखाई। चित्र अंकित करना।
आलेख्य—वि० [सं०] लिखने या अंकित करने योग्य। पु० चित्र। लेख।
आलेप—पु० [सं०] लेप। उबटन। मलहम। पलस्तर।
आलोक—पु० [सं०] प्रकाश, उजाला। कांति, चमक। दर्शन। दृष्टि।
आलोकन—पु० [सं०] देखना। विचार करना।
आलोकित—वि० [सं०] प्रकाशित। देखा हुआ।
आलोचक—वि० [सं०] गुण दोष का विचार करनेवाला, परखनेवाला। देखनेवाला।
आलोचना—स्त्री० [सं०] गुण दोष का विचार, परख। देखना।
आलोडन—पु० [सं०] मथना, हिलोरना। सोच विचार।
आलोड़ना—सक० आलोडन करना।
आल्हा—पु० ३१ मात्राओं का एक छंद जिसमें १६ मात्राओं पर विराम होता है, वीर छंद। महोबा के दो क्षत्रिय भाइयों (आल्हा और ऊदल) की वीरगाथा का काव्य। उक्त काव्य के नायक। बहुत लंबा चौड़ा वर्णन।
आव(पु)—स्त्री० वायु।
आवज(पु), **आवझ**(पु)—पु० ताशे के ढंग का एक पुराना बाजा।
आवन(पु)—पु० आगमन, आना।
आवभगत—स्त्री० आदर सत्कार।
आवभाव—पु० दे० 'आवभगत'।
आवरण—पु० [सं०] आच्छादन, ढक्कन। किसी वस्तु पर लपेटा हुआ कपड़ा। परदा। माया। ढाल। दीवार आदि का घेरा। अज्ञान। चलाए हुए अस्त्र शस्त्र को निष्फल कर देनेवाला अस्त्र। ⊙**पृष्ठ**=पु० पुस्तक के ऊपर का कागज जिस पर उसका तथा लेखक का नाम आदि रहता।
आवर्त—पु० [सं०] घुमाव, चक्कर। पानी का भँवर। बादल जो पानी न बरसे। एक रत्न। चिंता। संसार। ⊙**क**=पु० घूमनेवाला, चक्कर लगानेवाला। गणित में दशमलव आदि का दोहराया जानेवाला (अंक)। नियत समय पर बराबर होने या मिलनेवाला (अर्थ, साहाय्य, अनुदान आदि)।
आवर्तन—पु० [सं०] चक्कर, घुमाव, फिराव। पुनरावृत्ति। गणित में किसी अंक या संख्या का बार बार दोहराया जाना। मथन, विलोडन।
आवर्दा—वि० [फा०] लाया हुआ। कृपापात्र।
आवलि—स्त्री० [सं०] पंक्ति, कतार।
आवली—स्त्री० [सं०] पंक्ति, कतार।
आवश्यक—वि० [सं०] जरूरी। अपेक्षित। अनिवार्य। ⊙**ता**—स्त्री० जरूरत, अपेक्षा।
आवश्यकीय—वि० जरूरी, प्रयोजनीय।
आवागमन—पु० आना जाना। बार बार जन्म लेना और मरना। जन्म और मरण का बंधन।
आवागवन(पु)—पु० दे० 'आवागमन'।
आवाज—स्त्री० [फा०] शब्द, ध्वनि। बोली, स्वर। मु०~**उठाना**,~**ऊँची करना**=पक्ष या विपक्ष में बोलना या आंदोलन करना।~**खुलना**=गला ठीक होने पर साफ आवाज निकलना।~**गिरना**=स्वर का मंद पड़ना।~**निकालना**=बोलना।~**फटना**=आवाज भर्राना। ~**बैठना**=गले की खराबी से आवाज साफ न निकलना।
आवाजा—पु० [फा०] ताना, व्यंग्य।
आवाजाही—स्त्री० आना जाना, आमदरफ्त।
आवारगी—स्त्री० दे 'आवारापन'।
आवारजा—पु० दे० 'अवारजा'।
आवारा—वि० [फा०] व्यर्थ इधर उधर फिरनेवाला। बदचलन, लुच्चा। ⊙**गर्द**=वि० दे० 'आवारा'। ⊙**गर्दी**=स्त्री० व्यर्थ इधर उधर घूमना। लुच्चापन।
आवास—पु० [सं०] रहने की जगह। मकान, घर।
आवाहन—पु० [सं०] मंत्र द्वारा किसी देवता को बुलाना, निमंत्रित करना।

आविद्ध—वि० [स०] बेधा हुआ । फेंका हुआ । पु० तलवार चलाने के ३२ हाथो (ढगो) मे से एक ।

आविर्भाव—पु० [स०] प्रकट या व्यक्त होना । उत्पत्ति । अवतार । उदय । संचार ।

आविर्भूत—वि० [स०] व्यक्त । उत्पन्न । उदित ।

आविल—वि० [सं०] गँदला । अशुद्ध । काले या धूमिल रग का ।

आविष्कर्ता—वि० [स०] आविष्कार करनेवाला ।

आविष्कार—पु० [स०] प्राकट्य । अभूतपूर्व वस्तु का निर्माण, नई बात की खोज, ईजाद । उक्त प्रकार की वस्तु या बात । ⊙**क**=वि० दे० 'आविष्कर्ता' ।

आविष्कृत—वि० [स०] आविष्कार या ईजाद किया हुआ ।

आवृत—वि० [स०] छिपा हुआ । ढका हुआ । लपेटा हुआ । घिरा हुआ ।

आवृत्ति—स्त्री० [स०] बार बार अभ्यास । पढाई, पाठ । पुस्तक, पत्र पत्रिका आदि का एक बार का पूरा मुद्रण । दुहराना ।

आवेग—पु० [स०] चित्त की प्रबल वृत्ति, जोश, झोक । अशाति । रस के ३३ सचारी भावो मे से एक, अकस्मात् इष्ट या अनिष्ट की प्राप्ति पर चित्त की आतुरता ।

आवेदक—वि० [स०] आवेदन करनेवाला, प्रार्थी ।

आवेदन—पु० [स०] प्रार्थना, निवेदन, अर्जी । ⊙**पत्र**=पु० प्रार्थनापत्र, अर्जी ।

आवेश—पु० [सं०] व्याप्ति, सचार । झोक, जोश । भूत प्रेत की बाधा । मृगी रोग ।

आवेष्टन—पुं० [स०] छिपाना, लपेटना या ढकना । लपेटने या ढकने की वस्तु । बेठन ।

आवेष्टित—वि० [स०] छिपाया, लपेटा या ढका हुआ । बेठन मे बँधा हुआ ।

आशंका—स्त्री० [स०] डर । शका । अनिष्ट की भावना ।

आशंसा—स्त्री० [सं०] आशा । इच्छा । शक ।

आशना—वि० [फा०] परिचित । पुं० यार, प्रेमी । स्त्री० प्रेमिका । ⊙**ई**=स्त्री० परिचय । प्रेम । स्त्री पुरुष का अनुचित सबध ।

आशय—पुं० [स०] अभिप्राय, मतलब, अर्थ, तात्पर्य । इच्छा, वासना । स्थान, आधार (जैसे, गर्भाशय, जलाशय) ।

आशा—स्त्री० [स०] प्राप्ति की इच्छा और कुछ विश्वास, उम्मीद । भरोसा, विश्वास । दिशा । मु०~**पर पानी फिरना**=निराश होना । आशा का नष्ट होना ।

आशातीत—वि० [स०] आशा से अधिक, सोचे समझे हुए मे कही अधिक ।

आशिक—वि० [अ०] प्रेम करनेवाला आसक्त । पु० प्रेमी मनुष्य ।

आशिकाना—वि० [अ०] आशिको का सा । प्रेमपूर्ण ।

आशिकी—स्त्री० [अ०] प्रेम का व्यवहार । प्रेम, आसक्ति ।

आशियाँ, आशियाना—पु० [फा०] घोसला, बसेरा । घर ।

आशिष—स्त्री० [स०] आशीर्वाद, दुआ । एक अलकार जिसमे अप्राप्त वस्तु की कामना की जाती है । **आशिषाक्षेप**—पु० एक काव्यालकार जिसमे दूसरे का हित दिखलाते हुए ऐसी बातो को करने की शिक्षा दी जाय जिससे वास्तव मे अपने ही दुःख की निवृत्ति हो ।

आशी—वि० [स०] खानेवाला ।

आशीर्वाद—पु० [स०] किसी के कल्याण, सफलता या दीर्घ जीवन की कामना, आसीस । बडो का छोटों के प्रति इस प्रकार की मंगल कामना या प्रार्थना ।

आशु—क्रि० वि० [स०] शीघ्र, जल्द । ⊙**कवि**=पु० कवि जो तत्क्षण कविता कर सके । ⊙**ग**=वि० जल्दी चलनेवाला । पु० सूर्य । वायु । वाण । ⊙**तोष**=पु० शिव, महादेव । वि० शीघ्र सतुष्ट या प्रसन्न होनेवाला ।

आश्चर्य—पु० [सं०] असाधारण बात को सुनने, देखने या जानने से उत्पन्न मनोविकार या भाव, अचभा । अद्भुत रस का स्थायी भाव । विस्मय ।

आश्चर्यित—वि०[सं०]आश्चर्ययुक्त, चकित।
आश्रम—पु० [सं०] ऋषिमुनियों का निवास स्थान, तपोवन। साधु-संतों के रहने की जगह, मठ। ठहरने की जगह। प्राचीन भारतीय व्यवस्था के अनुसार जीवन के चार विभाग (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास)। **आश्रमी**—वि० आश्रम संबंधी। आश्रम में रहनेवाला। ब्रह्मचर्य आदि चार आश्रमों में से किसी को धारण करनेवाला।
आश्रय—पु० सहारा, अवलंब। सहारे या आधार की वस्तु। शरण, पनाह। निर्वाह का हेतु। घर। **आश्रयी**—वि० आश्रय लेनेवाला।
आश्रित—वि० [सं०] सहारे पर टिका हुआ। दूसरे के भरोसे पर रहनेवाला। अधीन। सेवक।
आश्लिष्ट—वि० [सं०] मिला या चिपटा हुआ। आलिंगन में आया हुआ।
आश्लेष—पु० [सं०] लगाव, संबंध। आलिंगन।
आश्लेषा—पु० [सं०] श्लेषा या नवाँ नक्षत्र।
आश्वस्त—वि० [सं०] जिसे आश्वासन या तसल्ली दी गई हो। निश्चित।
आश्वासन—पु० [सं०] तसल्ली, सांत्वना। प्रोत्साहन। दिलबहलाव। समाश्वासन।
आश्विन—पु० [सं०] क्वार का महीना, चांद्र वर्ष का सातवाँ महीना।
आषाढ—पु० [सं०] चांद्र वर्ष का चौथा महीना। ब्रह्मचारी का पलाश का बना हुआ दंड।
आषाढ़ी—स्त्री० आषाढ मास की पूर्णिमा जिस दिन गुरुपूजा का महत्व माना जाता है।
आसंग—पु० [सं०] साथ। लगाव, संबंध। आसक्ति।
आसंदी—स्त्री० [सं०] कुरसी, मोढ़ा, छोटी चौकी।
आस—स्त्री० आशा, उम्मीद। कामना। सहारा, भरोसा।
आसकत।—स्त्री० सुस्ती, आलस्य। **आसकती**—वि० दे० 'आलसी'।
आसक्त—वि० [सं०] अनुरक्त, लिप्त। मोहित, लुब्ध। **आसक्ति**—स्त्री० अनुरक्ति, लिप्तता। चाह, इश्क।
आसते(पु)†—क्रि० वि० दे० 'आहिस्ता'।
आसत्ति—स्त्री० [सं०] सामीप्य। अर्थबोध के लिये एक दूसरे से संबंध से रखनेवाले पदों या शब्दों का पास पास रहना।
आसन—पु०[सं०] बैठने की विधि। बैठना। बैठने की वस्तु। साधुओं का निवास या पड़ाव। हठयोग में शरीर की विभिन्न मुद्राएँ या अभ्यास। कामशास्त्र में रति के विभिन्न ढंग। मु०~**उखड़ना**=अपनी जगह से हिल जाना, जमकर न बैठ सकना। ~**उठना**=प्रस्थित होना। ~**कसना**=अंगों को तोड़ मरोड़कर बैठना। ~**छोड़ना**=चल देना। ~**जमना**=स्थिरता से बैठना। ~**डिगना या डोलना**=चित्त डाँवाँडोल होना, मन में चंचलता, लालच, काम आदि उत्पन्न होना। ~**देना**=आदरपूर्वक बैठना या बैठाने के लिये कहना। ~**मारना**=जमकर बैठना। पालथी लगाकर बैठना। **आसनी**—स्त्री० छोटा आसन, छोटा बिछौना।
आसन्न—वि० सं० निकट आया हुआ, प्राप्त। ⊙**भूत**=पु० भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता वर्तमान काल के समीप प्रकट हो। (व्या०)।
आसपास—क्रि० वि० इधर उधर, समीप, निकट। चारों ओर।
आसमान—पु०[फा०]आकाश। स्वर्ग। मु०~**के तारे तोड़ना**=असंभव काम करना। ~**छूना**=बहुत ऊँचा होना। ~**जमीन के कुलाबे मिलाना**=लंबी चौड़ी हाँकना। विकट पुरुषार्थ दिखाना। ~**टूट पड़ना**=भारी विपत्ति आना। ~**पर उड़ना**=सामर्थ्य से बाहर के संकल्प करना। अपने सामने किसी को न समझना। ~**पर चढ़ना**=घमंड या गरूर करना। ~**पर चढ़ाना**=अत्यंत प्रशंसा करना। प्रशंसा करके मिजाज बिगाड़ देना। ~**पर थूकना**=सज्जन को अपमानित करने के प्रयत्न में स्वयं निंदित होना।

~में थिगली लगाना = अनहोनी बात करना । ~ सिर पर उठाना = बहुत शोर गुल या ऊधम मचाना । ~सिर पर टूट पड़ना = 'आसमान टूट पडना'। ~से बातें करना = दे० 'आसमान छूना'। **आसमानी**—वि० [फा०] आसमान संबंधी आसमान के रंग का, हलका नीला । दैवी, ईश्वरीय । स्त्री० ताडी ।
आसमुद्र—क्रि० वि० [सं०] समुद्र तक ।
आसय(पु)—पु० दे० 'आशय'।
आसरना —सक० आश्रय लेना ।
आसरा—पु० सहारा, अवलंब । भरोसा, शरण । प्रतीक्षा । आशा ।
आसव—पु० [सं०] जडी बूटी या फलों के खमीर को निचोडकर बनाया हुआ मद्य । अर्क । रस, (जैसे, अधरासव) । **आसवी**—वि० शराबी, मद्यप ।
आसा—स्त्री० दे० 'आशा' । पु० सोने या चाँदी का सजावटी डंडा ।
आसाइश—स्त्री० [फा०] सुख, आराम ।
आसान—वि० [फा०] सहल, सुगम । **आसानी**—स्त्री० आसान होना, सुगमता ।
आसामी—पु०, स्त्री० दे० 'असामी' । वि० आसाम प्रदेश संबंधी । पु० आसाम का निवासी । स्त्री० आसाम की भाषा ।
आसामुखी(पु)—वि० दूसरे का मुँह जोहनेवाला । परावलंबी ।
आसार—पु० [अ०] चिह्न, लक्षण ।
आसिख(पु)—स्त्री० दे० 'आशीर्वाद' ।
आसिन(पु)+—पु० दे० 'आश्विन' ।
आसिरबचन—पु० दे० 'आशीर्वाद' ।
आसी(पु)—वि० दे० 'आशी' ।
आसीन—वि० [सं०] बैठा हुआ, विराजमान ।
आसीस—स्त्री० दे० 'आशीर्वाद' ।
आसु(पु)—क्रि० वि० दे० 'आशु' ।
आसुग(पु)—वि०, पु० दे० 'आशुग' ।
आसुर—वि० [सं०] असुर संबंधी । ⊙**विवाह** = पु० विवाह जो कन्या के माता पिता को द्रव्य देकर किया जाय । **आसुरी**—स्त्री० दानवी, राक्षस की स्त्री । वि० स्त्री० असुर संबंधी, राक्षसी । ⊙**माया** = स्त्री० चक्कर मे डाल देनेवाली असुरों की चाल ।
आसेब—पु० [फा०] भूत प्रेत की बाधा ।
आसौं(पु)+—क्रि० वि० इस वर्ष ।
आस्तरण—पु० [सं०] बिछाना । फैलाना । बिछौना, बिस्तर । गद्दा । कालीन ।
आस्तिक—वि० [सं०] ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला । ईश्वर, वेद और परलोक आदि मे विश्वास रखनेवाला । ईश्वर का सृष्टि का उपादान और निमित्त माननेवाला । ⊙**ता** = स्त्री० आस्तिक होने का सिद्धांत या विश्वास ।
आस्तिक्य—पु० दे० 'आस्तिकता' ।
आस्तीन—स्त्री० [फा०] कपडे का वह भाग जो बाँह को ढकता है । मु०~ **का साँप** = वह जो मित्र होकर शत्रुता करे । छिपा हुआ दुश्मन ।~**चढाना** = काम के लिये मुस्तैद होना । लडने के लिये तैयार होना ।~**मे साँप पालना** = शत्रु को पास रखकर पोषण करना ।
आस्था—स्त्री० [सं०] श्रद्धा, पूज्य बुद्धि । विश्वास । सभा ।
आस्थान—पु० [सं०] बैठने की जगह । सभा, दरबार ।
आस्पद—पु० [सं०] स्थान । अधिष्ठान । कार्य । पद । अल्ल । कुल ।
आस्फालन—पु० [सं०] घमंड, गर्व । संघर्ष । रगड ।
आस्य—पु० [सं०] मुँह, मुख ।
आस्वाद—पु० [सं०] स्वाद, जायका ।
आस्वादन—पु० [सं०] स्वाद लेना, चखना ।
आह—अव्य० पीडा, शोक आदि का सूचक शब्द । स्त्री० कराहना, ठंडी साँस ।(पु) पु० साहस । बल । मु०~**पड़ना** = शाप पडना, दुःख पहुँचाने का फल मिलना । ~**भरना** = ठंडी साँस खीचना ।~**लेना** = सताकर बुरे फल को अपने पर लेना ।
आहचरज(पु)—पु० दे० 'आश्चर्य' ।
आहट—स्त्री० चलने का शब्द, पाँव की चाप । किसी के रहने का अनुमान करानेवाली ध्वनि । पता, टोह । हलकी ध्वनि ।
आहत—वि० [सं०] आघात किया हुआ । बजाया हुआ । जख्मी, घायल । जिस संख्या को गुणित करें । हिलता हुआ, कंपित ।

आहर(पु)—पु० दिन । युद्ध ।
आहरण—पु० [स०] छीनना, हरना । एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। ग्रहण ।
आहरन—पु० लोहारो और सुनारो की निहाई ।
आहव—पु० [स०] युद्ध । यज्ञ ।
आहा—अव्य० [फा०] आश्चर्य और हर्ष-सूचक शब्द ।
आहार—पु० [स०] भोजन, खाना। ⊙विहार=पु० खाना पीना, सोना आदि । रहन-सहन । आहारी—वि० आहार करनेवाला ।
आहार्य—वि० [स०] ग्रहण करने योग्य। छीनने योग्य । खाने योग्य । हटाने योग्य । अभिप्रेत । सहायक । सजाने योग्य । आहार्याभिनय—पु० विना कुछ बोले या चेष्टा किए केवल रूप और वेश द्वारा नाटक का अभिनय ।
आहि(पु)—अक० है ('होना' भावद्योतक क्रिया का वर्तमानकालिक अन्य पुरुष का रूप) ।
आहित—वि० [स०] रखा हुआ, स्थापित। धरोहर रखा हुआ ।
आहिस्ता—क्रि० वि० [फा०] धीरे धीरे ।
आहुत—पु० [स०] अतिथि सत्कार । वलि-वैश्वदेव यज्ञ। वि० आहुति या यज्ञ किया हुआ । वलि ।
आहुति—स्त्री० [स०] मत्र पढकर देवताओ के लिये घी, जौ, तिल आदि द्रव्य अग्नि मे डालना, होम । हवन मे डालने की सामग्री । एक वार यज्ञाग्नि मे डाली जानेवाली द्रव्य की मात्रा ।
आहूत—वि० [स०] पुकारा हुआ । वुलाया हुआ, निमत्रित ।
आहै(पु)—अक० दे० 'आहि' ।
आह्निक—वि० [स०] रोजाना, दिन का ।
आह्लाद—पु० [स०] आनद, खुशी ।
आह्वान—पु० [सं०] पुकार । वुलावा । देवता का आवाहन । अदालत मे उप-स्थित होने का आदेश, समन ।

इ

इ—देवनागरी वर्णमाला मे तीसरा स्वर-वर्ण जिसका दीर्घरूप ई है ।
इग—पु० [स०] हिलना डुलना । इशारा । चिह्न । हाथी का दाँत ।
इंगन—पु० [स०] हिलना डोलना । इशारा करना ।
इंगला—स्त्री० इडा नामक नाडी (हठ-योग) ।
इंगलिस्तान—पु० अँगरेजो का देश, इग-लैंड ।
इगित—पु० [स०] अभिप्राय को सूचित करनेवाला शारीरिक चेष्टा, इशारा । वि० हिलता हुआ । इशारा किया हुआ ।
इंगुदी—स्त्री० [स०] हिंगोट का पेड । मालकँगनी ।
इंगुर(पु)†—पु० दे० ईंगुर ।
इँगुरौटी—स्त्री० सिंदूर रखने की डिविया ।
इंच—पु० [अँ०] एक फुट का बारहवाँ भाग ।
इँचना(पु)—अक० खिचना । 'ऐचि छुड़ावति करु इँची आगैं आवति जाति' (विहारी० ६८३) ।
इजन—पु० भाप, विजली आदि से चालक शक्ति उत्पन्न करनेवाला यत्र । रेलगाडी का वह यत्रयुक्त डिब्बा जो अन्य डिब्बो को खींचता है । कल, पेंच ।
इंजीनियर—पु० [अँ०] यत्रो को वनाने या चलाने का विशेषज्ञ। सडक, इमारत, पुल आदि के नकशे वनाने और उनका निर्माण करनेवाला ।
इंजील—स्त्री० [अ०] ईसाइयो की धर्म-पुस्तक ।

इँडहर—पु० उर्द और चने की दाल से बना एक साग ।

इँडुवा—पु० बोझ उठाने के लिये सिरपर रखने की छोटी गोल गद्दी ।

इंतकाल—पुं० [अ०] मृत्यु । एक जगह से दूसरी जगह जाना । सपत्ति का एक से दूसरे के अधिकार मे जाना ।

इंतखाब—पु० [अ०] चुनाव, निर्वाचन । पसद । पटवारी के खाते की नकल ।

इतजाम—पु० [अ०] प्रबध, बदोबस्त ।

इंतजार—पु० [अ०] प्रतीक्षा, बाट जोहना ।

इंतहा—स्त्री० [अ०] चरम सीमा, हद । अत । परिणाम ।

इंदव—पु० एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ७ भगण और २ गुरु होते है ।

इँदारुन—पु० दे० 'इद्रायन' ।

इदिरा—स्त्री० [स०] लक्ष्मी । छद जिसके प्रत्येक चरण मे ११ अक्षर होते है और छठे तथा ग्यारहवे वर्ण पर विराम होता है ।

इंदीवर—पु० [स०] नील कमल । कमल ।

इंदु—पु० [स०] चद्रमा । कपूर । एक की सख्या । ⊙**कला**=स्त्री० चद्रमा की कला । चद्रमा की किरन । ⊙**कात**, ⊙**मणि**=पु० चद्रकात मणि । ⊙**वदना**=स्त्री० चद्रमा के समान मुखवाली । चौदह वर्णो का एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से भगण, जगण, सगण, नगण और अत के दोनो वर्ण गुरु हो ।

इदूर—पु० चूहा ।

इंद्र—वि० [स०] ऐश्वर्यवान् । श्रेष्ठ । पु० देवताओ के अधिपति एक वैदिक देवता । अतरिक्ष और वर्षा के देवता । देवराज । सूर्य । मालिक । ज्येष्ठा नक्षत्र । चौदह की सख्या । जीव, प्राण । ⊙**कील**=पु० मदराचल । ⊙**चाप**=पु० इद्रधनुष ⊙**जाल**=पु० जादूगरी, मायाकर्म । ⊙**जाली**=वि० इद्रजाल करनेवाला, जादूगर, बाजीगर । ⊙**जित्**=वि० इद्र को जीतनेवाला । पु० रावण का पुत्र मेघनाद । ⊙**जीत**=पु० [हि०] इद्रजित् । ⊙**दमन**=पु० बाढ के समय नदी के जल का किसी निश्चित ऊँचाई कुड, ताल, बट या पीपल के वृक्ष तक पहुँचना । मेघनाद । ⊙**धनुष**=पु० बादलो पर या वहाँ से गिरती फुहार पर सूर्य-किरणो के पड़ने से सामने की दिशा मे उत्तर से दक्खिन तक चमकनेवाली सात रगो की धनुपाकार चौडी रेखा । ⊙**धनुषी**=वि० [हि०] इद्रधनुष के समान, सात रगोवाला । ⊙**नील**=पु० नीलम । ⊙**लोक**=पु० स्वर्ग, देवलोक । ⊙**वंशा**=पु० १२ वर्णो का वृत्त जिसमे २ तगण, १ जगण और १ रगण होता है । ⊙**वज्रा**=पु० ११ वर्णो का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से २ तगण, १ जगण और २ गुरु वर्ण होते हैं । ⊙**वधू**=स्त्री० बीरबहूटी । **इद्रायुध**—पु० वज्र । इद्रधनुष । **इद्रासन**—पु० इद्र का सिंहासन, इद्र का पद । राजसिंहासन । मु० ~**का अखाडा**=इद्र की सभा । नाच रग से युक्त सजी हुई सभा । ~**की परी**=अप्सरा । बहुत सुदर स्त्री ।

इंद्राणी—स्त्री० [स०] इद्र की पत्नी, शची । बडी इलायची । इद्रायन । दुर्गा ।

इंद्रायन—स्त्री० दवा मे प्रयुक्त एक लता जिसका पका फल लाल या पीला और बहुत कडुवा होता है ।

इंद्रिय—स्त्री० [स०] विषयज्ञान की शक्ति और उसके छह उपकरण (आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा और मन), ज्ञानेद्रिय । कर्म के पाच साधक अग (हाथ, पैर, जीभ, उपस्थ और गुदा) लिंगेद्रिय । ⊙**जित्**=वि० इद्रियो पर वश रखनेवाला, जितेंद्रिय । ⊙**निग्रह**=पु० इद्रियो पर काबू, भोगेच्छाओ का दमन ।

इद्री(पु)†—स्त्री० दे० 'इद्रिय' ।

इधन—पु० [स०] ईंधन ।

इसाफ—पु० [अ०] न्याय । फैसला । ⊙**पसंद**=वि० न्यायप्रिय ।

इकंग(पु)†—वि० दे० इकतरफा, एक ओर का ।

इकंत(पु)†—वि० दे० 'एकात' ।

इक(पु)†—वि० दे० 'एक' । ⊙**आंक**(पु)=क्रि०वि० अवश्य, जरूर । ⊙**जोर**(पु)=

क्रि० वि० एक साथ, इकट्ठा। ⊙तर (पु) = वि० दे० 'एकत्र'। ⊙तरा = पु० दे० 'अँतरिया'। ⊙ता (पु) = स्त्री० दे० 'एकता'। ⊙ताई = स्त्री० एकत्व। अकेले रहने की इच्छा या स्वभाव। ⊙तान (पु) = वि० एकरस, अनन्य। ⊙तार = वि० एक सा, समान। क्रि० वि० लगातार। ⊙तारा = पु० एक तार का एक तरह का तँबूरा। हाथ से बुना जानेवाला एक कपडा। ⊙तालिस, ⊙तालीस = वि० चालीस और एक। इतनी सख्या। ⊙तिस, ⊙तीस = वि० तीस और एक। पु० तीस और एक की सख्या। ⊙त्र = वि० एकत्र, इकट्ठा। ⊙न्नी = स्त्री० एक रुपए के सोलहवें भाग का सिक्का, एक आना। ⊙बारगी = क्रि० वि० दे० 'एकबारगी'। ⊙ला (पु) = वि० दे० 'अकेला'। ⊙लाई = स्त्री० अकेलापन। एक पाट का महीन दुपट्टा या चादर। ⊙लौता = पु० माँ बाप का अकेला बेटा। वि० [वि० स्त्री० इकलौती] अकेला, (बिना भाई बहिन का बेटा)। ⊙ल्ला = वि० एक पर्त का, इकहरा। अकेला। ⊙सठ = वि० साठ और एक। पु० साठ और एक की सख्या। ⊙सर (पु) = वि० अकेला, एकाकी। ⊙सूत⊙ = वि० एक साथ, इकट्ठा। ⊙हत्तर = वि० सत्तर और एक। पु० सत्तर और एक की सख्या। ⊙हरा = वि० दे० 'एकहरा'। ⊙हाई (पु) = क्रि० वि० एक साथ, फौरन। अचानक। **इकट्ठा**—वि० जमा, एकत्र। **इकंत** (पु)—वि० दे० 'एकान'। **इकाई**—स्त्री० गणित मे अको के पहले स्थान की सज्ञा। उक्त स्थान मे लिखा अक। एक का भाव या मान। मूल अवयव। **इकेला** (पु)†—वि० दे० 'अकेला'। **इकैठ** (पु)—वि० इकट्ठा। **इकौंज**—स्त्री० स्त्री जिसके एक ही सतान हुई हो। **इकौसो** (पु)†—वि० एकान, निर्जन।

इकबाल—पु० [अ०] प्रताप। भाग्य। स्वीकार, हामी।

इकराम—पु० [अ०] इनाम, दान। इज्जत, बडाई।

इकरार—पु० [अ०] वादा, प्रतिज्ञा। स्वीकृति।

इक्का—वि० अकेला। अनुपम, बेजोड। पु० मोती का एक प्रकार की कान की बाली। अपने झुड से अलग हुआ पशु। अकेले लडनेवाला योद्धा। ताश का एक बूटी का पत्ता। पुराने ढग की एक सवारी गाडी। ⊙दुक्का = वि० अकेला दुकेला, छिटफुट।

इक्कीस—वि० बीस और एक। पु० बीस और एक की सख्या।

इक्यानवे—वि० नव्वे और एक। पु० नव्वे और एक की सख्या।

इक्यावन—वि० पचास और एक। पु० पचास और एक की सख्या।

इक्यासी—वि० अस्सी और एक। पु० अस्सी और एक की सख्या।

इक्षु—पु० [स०] ईख, गन्ना।

इखद (पु)—वि० दे० 'ईषन्'।

इखराज—पु० [अ०] खर्च, व्यय।

इखलास—पु० [अ०] मित्रता। प्रेम, भक्ति। साविका।

इखु (पु)—पु० दे० 'इषु'।

इख्तलाफ—पु० [अ०] विरोध। बिगाड, अनबन।

इख्तियार—पु० [अ०] अधिकार। कब्जा। सामर्थ्य।

इगारह (पु)†—वि० दे० 'ग्यारह'।

इग्यारह (पु)—वि० दे० 'ग्यारह'। पु० दस इद्रियाँ और मन। ग्यारह का दावँ।

इच्छना (पु)—सक० इच्छा करना। 'इच्छ इच्छ बिनती जस जानी। पुनि कर जोरि ठढ भइ रानी' (पदमा०)।

इच्छा—स्त्री० [स०] चाह, कामना। रुचि।

इच्छित—वि० [स०] चाहा हुआ, वाछित।

इच्छु (पु)—पु० दे० 'इक्षु'। वि० चाहनेवाला (समा० के अत मे)।

इजमाल—पु० [अ०] कुल, समष्टि। साझा, समिलित अधिकार। **इजमाली**—वि० शिरकत या साझे का।

इजराय—पु० [अ०] जारी करना (जैसे इजराय डिगरी)। व्यवहार, अमल।

इजलास—पु० [अ०] बैठक। जगह जहाँ बैठकर हाकिम मुकदमे का फैसला करता है, कचहरी।

इजहार—पु० [अ०] जाहिर करना, प्रकट करना। अदालत के सामने बयान, गवाही।

इजाजत—स्त्री० [अ०] आज्ञा, हुक्म। मजूरी, स्वीकृति।

इजाफा—पु० [अ०] बढती, वृद्धि।

इजार—स्त्री० [अ०] पायजामा, सूथन। ⊙**बद**=पु० [फा०] पैजामा या लँहगा बाँधने का बद, नारा।

इजारदार, इजारेदार—वि० [फा०] किसी वस्तु को इजारे या ठेके पर लेनेवाला, ठेकेदार। अधिकारी।

इजारा—पु० [अ०] किसी वस्तु को उजरत या किराए पर देना, ठेका। अधिकार, स्वत्व।

इज्जत—स्त्री० [अ०] प्रतिष्ठा, मान। मर्यादा। बडाई। ⊙**दार**=वि० [फा०] प्रतिष्ठित। **मु०**~**उतारना** =मर्यादा नष्ट करना। ~**रखना**=वेइज्जती से बचाना, प्रतिष्ठा की रक्षा करना। ~**लेना**=वेइज्जत करना। अनुचित या बलात् यौनसबध करना।

इठलाना—अक० इतराना, ठसक दिखलाना। नखरा करना।

इठलाहट—स्त्री० ठसक, इठलाने का भाव।

इठाई(पु)—स्त्री० रुचि। चाह। मित्रता।

इडा—स्त्री० [स०] भूमि। गाय। वाणी। स्तुति। अन्न, हवि। दुर्गा। स्वर्ग। पीठ की रीढ से होकर नाक के बाएँ छेद मे समाप्त होनेवाली एक नाडी (योग)।

इत(पु)†—क्रि० वि० इधर, यहाँ।

इतकाद—पुं० दे० 'एतकाद'।

इतना—वि० इस सख्या, मात्रा या विस्तार का, इस कदर। **इतने में**=इस बीच, तभी।

इतनो(पु)†—वि० दे० 'इतना'।

इतमाम(पु)†—पु० इंतजाम, प्रबध।

इतमीनान—पु० [अ०] विश्वास, भरोसा।

इतर—वि० [स०] दूसरा, और। नीच, पामर। †पु० दे० 'अतर'।

इतराना—अक० इठलाना। सफलता पर फूल उठना, घमड करना।

इतराहट(पु)—स्त्री गर्व।

इतरेतर—क्रि० वि० [स०] परस्पर, आपस मे। एक दूसरे के साथ। **इतरेतराश्रय**—पु० दो मे से किसी एक की सिद्धि से ही दूसरी वस्तु की सिद्धि होने का दोष (तर्क)।

इतरौंहाँ(पु)—वि० इतराना सूचित करनेवाला।

इतवार—पु० रविवार, शनि और सोमवार के बीच का दिन।

इतस्ततः—क्रि० वि० [स०] इधर उधर।

इताअत—स्त्री० [अ०] आज्ञापालन।

इताति(पु)—स्त्री० दे० 'इताअत'।

इताल(पु)—क्रि० वि० तत्काल, तुरत।

इति—अव्य० [स०] समाप्ति सूचक शब्द। स्त्री० समाप्ति, अत। ⊙**कर्तव्यता**=स्त्री० काम करने की विधि। कर्म की पराकाष्ठा, जो कुछ किया जा सकता हो। ⊙**वृत्त**=पु० पुरानी कथा, घटना। वर्णन, वृत्तात। ⊙**हास**=पु० बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओ और सबधित व्यक्तियो का कालक्रम से वर्णन।

इतेक(पु)†—वि० इतना।

इतो(पु)†—वि० इतना, इस मात्रा का।

इत्तफाक—पु० [अ०] मेल, एका। सयोग, मौका। **इत्तफाकन**—क्रि० वि० सयोगवश, अचानक। **इत्तफाकिया**—वि० आकस्मिक।

इत्तला—स्त्री० [अ०] सूचना, खबर।

इत्ता†—वि० इतना।

इत्तो(पु)—वि० दे० 'इतो'।

इत्थं—क्रि० वि० [स०] ऐसे, यो। ⊙**भूत**=वि० ऐसा। **इत्थमेव**—वि० ऐसा ही। क्रि० वि० इसी प्रकार से।

इत्यादि, ⊙**क**—अव्य० [स०] इसी तरह और। वगैरह।

इत्र—पु० दे० 'अतर'।

इदम्—सर्व० [सं०] यह । इदमित्थ—ऐसा ही, ठीक यही है।

इधर—क्रि०वि० इस ओर, यहाँ। आजकल। ⊙उधर = यहाँ वहाँ। चारो ओर। मु० ~उधर करना = टालमटूल करना। क्रमभग करना। हटाना। ~उधर की बात = अफवाह। असबद्ध बात। ~की उधर करना या लगाना = चुगलखोरी करना। ~उधर की हाँकना = गप मारना ~उधर मे रहना = व्यर्थ समय खोना। ~उधर होना = उलट पुलट होना। भाग जाना।

इन—सर्व० 'इस' का बहुवचन।

इनकार—पु० [अ०] अस्वीकार, नामजूरी।

इनसान—पु० [अ०] मनुष्य, आदमी।

इनसानियत—स्त्री० मनुष्यत्व, आदमियत। बुद्धि, शऊर। सज्जनता।

इनाम—पु० पुरस्कार, बख्शिश।

इनायत—स्त्री० [अ०] कृपा, मेहरबानी एहसान। मु० ~करना = कृपा करके देना। वंचित रखना (व्यग्य)।

इने गिने—वि० थोडे से, बहुत कम।

इन्ह(पु)—सर्व० दे० 'इन'।

इफरात—स्त्री० [अ०] अधिकता, प्रचुरता।

इबरानी—वि० [अ०] यर्दन नदी के तट पर बसी वह पुरानी जाति जिसमें ईसा और मूसा का जन्म हुआ था, यहूदी। स्त्री० फिलिस्तीन देश की भाषा, हिब्रू।

इबादत—स्त्री० [अ०] पूजा, अर्चा।

इबारत—स्त्री० [अ०] लेख, मजमून। लिखावट।

इमदाद—स्त्री० [अ० मदद का बहु०] मदद, सहायता।

इमली—स्त्री० खटाई के काम आनेवाली गूदेदार लबी फली और उसका पेड।

इमाम—पु० [अ०] मुसलमानो का पुरोहित या पुजारी। अली के बेटो की उपाधि। ⊙बाडा = पु० हाता जिसमे शिया मुसलमान ताजिआ रखते और उसे दफन करते हैं। मुसलमानो की समाधि और उसकी इमारत।

इमामदस्ता—पु० लोहे या पीतल का खल और बट्टा।

इमारत—स्त्री० [अ०] बडा और पक्का मकान। मकान।

इमि(पु)—क्रि० वि० इस प्रकार।

इमिरती—स्त्री० जलेबी से मिलती जुलती किंतु उससे कुछ मोटी और रसीली एक मिठाई।

इम्तहान—पु० [अ०] परीक्षा, जाँच।

इयत्ता—स्त्री० [सं०] सीमा, हद, विस्तार।

इरशाद—पु० [अ०] आज्ञा। फरमान।

इरषा(पु)—स्त्री० दे० 'ईर्ष्या'। इरषित(पु)—वि० जिससे ईर्ष्या की जाय।

इरा—स्त्री० [सं०] भूमि, पृथ्वी। वाणी। कश्यप की स्त्री और बृहस्पति की माता।

इराकी—वि० [अ०] इराक देश का। पु० घोडे की एक जाति।

इरादा—पु० [अ०] विचार, सकल्प। इच्छा।

इर्दगिर्द—क्रि० वि० चारो ओर, आसपास।

इर्षना(पु)—पु० स्त्री० प्रबल इच्छा।

इलजाम—पु० [अ०] अभियोग, दोषारोप, अपराध।

इलहाम—पु० [अ०] ईश्वरप्रेरित ज्ञान या वाणी का हृदय मे व्यक्त होना, दिव्य भावावेश।

इला—स्त्री० [सं०] पृथ्वी। पार्वती। सरस्वती। वाणी। गाय। बुध की पत्नी और पुरुरवा की माता। राजा इक्ष्वाकु की एक कन्या। ⊙वर्त = पु० [हिं०], ⊙वृत्त = पु० जबू द्वीप का एक खड।

इलाका—पु० [अ०] जमीदारी, रियासत। सबध, लगाव। 'कैधौं कछू राखै राकापति सो इलाका भारी ...' (जगद्विनोद २५)।

इलाज—पु० [अ०] चिकित्सा। दवा। उपाय।

इलाम(पु)—पु० इत्तलानामा। हुक्म।

इलायची—स्त्री० सुगधित बीजो का एक छिलकेदार छोटा फल जो दवा, मसाले आदि मे काम आता है। ⊙दाना = पु० चीनी मे पगा इलायची या पोस्ते का दाना। इलायची का बीज। चीनी की एक छोटी मिठाई।

इलाही—पु० [अ०] ईश्वर, खुदा। वि० दैवी, ईश्वरीय। ⊙गज = पु० अकबर

का चलाया हुआ एक गज जो ४१ अगुल (३३¾ इच) का होता था।

इल्तिजा—स्त्री० [अ०] निवेदन, प्रार्थना।

इल्म—पु० [अ०] विद्या। जानकारी। युक्ति।

इल्लत—स्त्री० [अ०] झझट, बाधा। रोग। अपराध।

इव—अव्य० [स०] समान, तरह, उपमा-वाचक शब्द।

इशारा—पु० [अ०] सकेत, सैन। सक्षिप्त कथन। सूक्ष्म आधार। गुप्त प्रेरणा।

इश्क—पु० [अ०] चाह, मुहब्बत। प्रेम।

इश्तहार—पु० [अ०] विज्ञापन, सूचना। बडा विज्ञापन या सूचनापत्र (दीवालों आदि पर चिपकाया जानेवाला)।

इषण(पु)—स्त्री० दे० 'एषणा'।

इषीका—स्त्री० [स०] बाण। तिनका, सीक। दियासलाई की काँटी।

इषुधी—पु० [स०] तूणीर, तरकश।

इष्ट—वि० [स०] चाहा हुआ, वाछित। पूजित। हितकारी। पु० अग्निहोत्र आदि शुभकर्म। यज्ञ। आराध्य देव। सिद्धि (जैसे, देवी का इष्ट होना)। मित्र। ईंट। ⊙**देव**, ⊙**देवता** = पु० आराध्य देव, पूज्य देवता। किसी गाँव या कुल का विशेष पूजित देवता। किसी व्यक्ति का निजी आराध्य देवता। **इष्टापत्ति**—स्त्री० वादी के कथन मे प्रतिवादी की दिखाई हुई वह आपत्ति जिसे वादी मान ले।

इष्टि—स्त्री० [स०] इच्छा, अभिलाषा। यज्ञ।

इस—सर्व० 'यह' शब्द का विभक्ति या कारकचिह्नों के पूर्व आनेवाला 'अग' रूप।

इसपज—पु० पानी सुखाने आदि मे प्रयुक्त एक छोटे समुद्री जलजतु की रुई जैसी छेददार ठठरी (अँ० स्पज)।

इसपात—पु० एक प्रकार का कडा लोहा, फौलाद।

इसबगोल—पु० [फा०] अतिसार आदि मे प्रयुक्त तिल जैसे बीज और उसका पौधा।

इसराज—पु० सारगी जैसा एक बाजा।

इसरार—पु० [अ०] आग्रह, जिद। कुतर्क।

इसलाम—पु० [अ०] हजरत मुहम्मद द्वारा प्रवर्तित धर्म जिसका मूल ग्रथ कुरान है।

इसलाह—स्त्री० [अ०] सशोधन।

इसारत(पु)—स्त्री० सकेत, इशारा।

इस्तमरारी—वि० [अ०] स्थायी, नित्य। ⊙**बंदोबस्त** = जमीन का वह बदोबस्त जिसमे मालगुजारी सदा के लिये नियत कर दी जाय।

इस्तरी—स्त्री० कपडो की तह बैठाने का एक औजार, लोहा।

इस्तीफा—पु० [अ०] काम छोडने का प्रार्थनापत्र, त्यागपत्र।

इस्तेमाल—पु० [अ०] प्रयोग, उपयोग।

इस्म—पु० [अ०] नाम, सज्ञा। ⊙**शरीफ** = पु० शुभ नाम।

इह—क्रि० वि० इस जगह, यहाँ। इस काल मे। इस लोक मे। पु० यह ससार। ⊙**लीला** = स्त्री० इस लोक का जीवन, यह जिंदगी।

इहाँ(पु)†—क्रि० वि० यहाँ।

ई

ई—हिंदी मे चौथा स्वर वर्ण और 'इ' का दीर्घ रूप।

ईंगुर—पु० एक चटकीला लाल खनिज पदार्थ जिसकी बुकनी स्त्रियो के शृगार और औषधियो मे प्रयुक्त होती है, सिगरफ। हिंगुल।

ईंचना—सक० दे० 'खींचना'।

ईंट—स्त्री०, **ईंटा**†—पु० दीवार बनाने के काम आनेवाला साँचे मे ढालकर पकाया मिट्टी का चौकोर टुकडा। धातु का चौखूँटा ढला टुकडा। ताश के पत्ते का एक रग। मु०~**से ईंट बजना** = नगर या मकान का ध्वस होना। ~**से ईंट-बजाना** = एकदम ध्वस्त या नष्ट करना।

ईंडरी—स्त्री० बोझ उठाते समय सिर पर रखने के लिये कुडलाकार गद्दी।

ईंधन—पु० जलाने की सामग्री, लकडी, कोयला आदि।

ई—सर्व० यह। (पु)अव्य० ही, जोर देने का शब्द। स्त्री० [स०] लक्ष्मी।
ईक्षण—पु० [स०] देखना। आँख। विवेचन, विचार।
ईख—स्त्री० गन्ना, ऊख।
ईखना(पु)—सक० देखना।
ईछना(पु)—सक० इच्छा करना।
ईछन(पु)—पु० आँख।
ईछा(पु)—स्त्री० दे० 'इच्छा'।
ईजाद—पु० [अ०] दे० 'आविष्कार'।
ईठ(पु)—पु० इष्ट, मित्र।
ईठना—सक० इच्छा करना।
ईठि(पु)—स्त्री० दोस्ती, प्रीति। सखी। चेष्टा, यत्न।
ईडा—स्त्री० [स०] स्तुति, प्रशसा।
ईढ(पु)—स्त्री० जिद, हठ।
ईतर(पु)—वि० इतरानेवाला, ढीठ। साधारण, नीच।
ईति—स्त्री० [स०] खेती की हानि पहुँचानेवाले छह उपद्रव—अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी पडना, चूहे लगना, पक्षियो की अधिकता, दूसरे राजा की चढाई। पीडा, दु ख।
ईथर—पु० [अँ०] शून्य स्थल मे व्याप्त हवा से भी पतला एक द्रव्य। शीघ्र उडनेवाला एक रासायनिक द्रव्य।
ईद—स्त्री० [अ०] मुसलमानो का एक त्यौहार। प्रसन्नता या उत्सव का दिन। मु० ~ का चाँद = वह जिसके दर्शन दुर्लभ हो।
ईदृश—क्रि० वि० [स०] इस तरह, ऐसे। वि० ऐसा।
ईप्सा—स्त्री० [स०] इच्छा, अभिलाषा।
ईबीसीबी—स्त्री० सिसकारी, रतिकाल मे मुँह से निकलनेवाला 'सीसी' शब्द।
ईमान—पु० [अ०] आस्तिक्य बुद्धि। लेन-देन मे खरापन, अच्छी नीयत। धर्म। सत्य। ⊙दार = वि० [फा०] विश्वासपात्र। सच्चा। दयानतदार, लेनदेन या व्यवहार मे सच्चा।
ईरखा(पु)—स्त्री० दे० 'ईर्षा'।
ईरानी—पु० [फा०] ईरान का निवासी। स्त्री० ईरान की भाषा। वि० ईरान से सबध रखनेवाला।
ईर्षणा(पु)—स्त्री ईर्ष्या, डाह।
ईर्षा (पु)—स्त्री० [स०] दे० 'ईर्ष्या'।
ईर्ष्या—स्त्री० [स०] दूसरे का उत्कर्ष न सहने की वृत्ति, डाह, जलन।
ईश—पु० [स०] स्वामी, मालिक। राजा। ईश्वर, परमेश्वर। महादेव, रुद्र। ग्यारह की सख्या। आर्द्रा नक्षत्र। वर्णो का एक वृत्त। ⊙ता, स्त्री० ⊙त्व = पु० स्वामित्व, प्रभुत्व।
ईशान—पु० [स०] स्वामी। महादेव। ग्यारह की सख्या। ग्यारह रुद्रो मे से एक। पूरब और उत्तर के बीच का कोना।
ईशिता—स्त्री०, ईशित्व—पु० [स०] आठ सिद्धियो मे से एक जिससे साधक सब पर शासन कर सकता है।
ईश्वर—पु० [स०] परमेश्वर, सृष्टिकर्ता। महादेव, शिव। मालिक, स्वामी। वि० सामर्थ्यवान्। ⊙प्रणिधान = पु० महर्षि पतजलि के योग के पाँच नियमो मे अतिम। अष्टाग योग मे किसी प्रतीक पर ईश्वर का आरोप करके चित्त का निरोध करना। श्रद्धा और भक्तिपूर्वक समस्त कर्मो का ईश्वर को अर्पण।
ईश्वरीय—वि० ईश्वर सबधी, ईश्वर का, दैवी।
ईषत्—वि० [स०] थोडा, कुछ, कम।
ईषना(पु)—स्त्री० प्रबल इच्छा।
ईस(पु)—पु० दे० 'ईश'।
ईसन(पु)—पु० ईशान कोण।
ईसर(पु)—पु० ऐश्वर्य। (पु) पु० महादेव।
ईसवी—वि० [फा०] ईसा से सबधित, ईसा का। ⊙सन् = ईसा मसीह की कल्पित निधनतिथि से गिनी जानेवाली वर्षगणना या सवत्, अगरेजी वर्षगणना।
ईसा—पुं० [अ०] ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा मसीह। (पु) पु० ईश्वर, महादेव। ⊙ई = वि० [फा०] ईसा के धर्म पर चलनेवाला।
ईहा—स्त्री० [स०] इच्छा चेष्टा, उद्योग। ⊙मृग = पु० रूपक का एक भेद जिसमे चार अंक और मुख, प्रतिमुख तथा निर्वहण ये तीन सधियाँ होती हैं।

उ

उ—हिंदी वर्णमाला मे पाँचवाँ स्वर वर्ण ।
उँ—अव्य० अवज्ञा, क्रोध आदि का सूचक प्राय अव्यक्त शब्द ।
उंगल—स्त्री० दे० 'अगुल' ।
उँगली—स्त्री० हाथ या पैर के छोर पर फलियों के आकार के निकले वे पाँच अवयव जो पकडने, उठाने आदि के काम आते हैं । **मु०**~**उठना** = बदनामी होना ।~**उठाना** = दोष लगाना, बदनाम करना । हानि पहुँचाने का इरादा करना ।~**रखना** = दोष दिखाना । ~**लगाना** = थोडा भी काम करना या सहारा देना । **उँगलियों पर नचाना** = मनमाना काम या दौडधूप कराना । **कानो मे उँगली डालना या देना** = किसी बात को न सुनना या चर्चा से बचना । **पाँचो उँगलियाँ घी मे होना** = सब प्रकार से लाभ होना ।
उँघाई—स्त्री० ऊँघ, झपकी ।
उंचन—स्त्री० खाट को कसने के लिये पायताने की ओर लगी रस्सी, अदवान ।
उचना—सक० अदवान कसना ।
उँचाई(पु)—स्त्री दे० 'ऊंचाई' ।
उँचान(पु)†—पु० ऊँचाई ।
उँचाना—सक० ऊँचा करना उठाना ।
उँचाव(पु)†—पु० ऊँचापन, बलदी ।
उंछ—स्त्री० [स०] मालिक के ले जाने के बाद खेत मे पडे हुए अन्न के दानो को जीविका के लिये चुनना, सीला बीनना । ⊙**वृत्ति** = स्त्री० खेत मे गिरे हुए दानो को बीनकर गुजर करने की वृत्ति । ⊙**शील** = वि० उछ वृत्ति पर निर्वाह करनेवाला ।
उँजरिया(पु)—स्त्री० दे० 'अँजोरिया' ।
उँजेरा, उँजेला(पु)†—पु० दे० 'उजाला' ।
उँडेलना—सक० एक बरतन से दूसरे बरतन मे या जमीन आदि पर डालना (विशेषत: तरल पदार्थ), ढालना ।
उँदरी(पु)—स्त्री० चुहिया ।
उंदुर—पु० [स०] चूहा, मूसा ।
उँह—अव्य० अस्वीकार, उपेक्षा, घृणा या वेदनासूचक शब्द ।
उँहूँ—अव्य० अस्वीकारसूचक शब्द ।
उ(पु)—अव्य० भी । †सर्व० वह ।
उअना(पु)—अक० उदय होना, उगना । 'उऍ सरद राका-ससी' (बिहारी० २३१)
उआ(पु)—सक० [अक० उअना] उदय करना, उगाना । (पु)मारने के लिये हाथ या हथियार उठाना ।
उऋण—वि० ऋणमुक्त । (किसी के प्रति) कर्तव्यपालन कर चुकनेवाला ।
उकचन—पु० मुचकुद का फूल ।
उकचना—अक० उखडना, अलग होना । उठ भागना, हटना ।
उकटना—सक० बार बार कहना । दे० 'उघटना' ।
उकटा—वि० उकटने या एहसान जतानेवाला । उकटने का कार्य । ⊙**पुरान** = पु० गईबीती बातो को फिर से उभाडना ।
उकठना—अक० सूखकर कडा होना ।
उकठा—वि० सूखकर कडा हुआ ।
उकडूँ—पु० घुटने मोडकर, चूतड एडियो से लगाकर, तलुओ के बल बैठना ।
उकढना(पु)—अक० निकलना, बाहर आना । 'आगे उकढि अगिन मे गयौ' । (हिम्मत० १३६)
उकत—स्त्री दे० 'उक्ति' ।
उकताना—अक० ऊबना । जल्दी मचाना ।
उकति(पु)—स्त्री० दे० 'उक्ति' ।
उकलन—अक० उखडना । उधडना ।
उकलाना—अक० उलटी या कै करना ।
उकलाई—स्त्री० कै, उलटी, मिचली ।
उकवथ—पु० एक चर्मरोग जिसमे शरीर पर दाने या चकत्ते निकलते है । खाज होती है और कभी कभी चेप बहता है । [एग्जिमा (अँ०)]
उकसना—अक० उभरना । अकुरित होना । उधडना ।
उकसनि(पु)—स्त्री० उभार ।

उकसाना—सक० [अक० उकसना] ऊपर उठाना। उत्तेजित करना। उठा देना, हटा, देना। (दीपक की बत्ती) बढाना या आगे करना।

उकसाहट—स्त्री० उकसाने की क्रिया या भाव उत्तेजना।

उकसौहाँ—वि० उभरता हुआ।

उकाब—पु० [अ०] बडी जाति का एक गिद्ध, गरुड।

उकालना (पु)—सक० दे० 'उकेलना'।

उकासना (पु)—सक० उभारना। ऊपर को फेंकना। 'वृषभ शृंग सो धरनि उकासत बल मोहन तन हेरैं (सूर०)।

उकासी (पु)—स्त्री० खुल जाना, सामने से परदे का हट जाना। स्त्री० अवकाश छुट्टी।

उकीरना (पु)—सक० उखाडना। खोदना। चिह्नित करना।

उकुति (पु)—स्त्री० दे० 'उक्ति'।

उकुसना†—सक० उजाडना, उधेडना।

उकेलना—सक० तह या पर्त से अलग करना, उखाडना। लिपटी हुई चीज को अलग करना या छुडाना, उधेडना।

उकौना—पु० दोहद।

उक्त—वि० [स०] कहा हुआ।

उक्ति—स्त्री० [स०] कथन, वचन। चमत्कारपूर्ण कथन।

उखडना—अक० जमीन या गडी वस्तु का अपने स्थान से अलग होना। जोड से हट जाना (जैसे, हाथ उखडना)। चाल में भेद पडना (घोडे की)। बेताल या बेसुरा होना। जमा न रहना, तितर बितर होना। हटना। टूट जाना। नाराज होना। मु०—**उखडी-उखडी बातें करना** = विरक्तिसूचक बात करना। उलटी सीधी बातें करना। **पैर या पाँव उखड़ना** = लडने के लिये सामने न खडा रहना, भागना। **रंग उखड़ना** = धाक कम होना।

उखम (पु)—पु० गरमी। ⊙**ज** (पु) = पु० जूँ आदि क्षुद्र कीट।

उखरना (पु)†—अक० दे० 'उखडना'।

उखली—स्त्री० ऊखल, ओखली।

उखा—स्त्री० दे० 'उषा'।

उखाड़—उखाडने की क्रिया, उत्पाटन। कुश्ती के पेच का तोड। कुश्ती का एक पेच। ⊙**पछाड़** = क्रि० वि० उलटपलट।

उखाड़ना—सक० [अक० उखडना] जमी या गडी वस्तु को उसके स्थान से हटाना। अंग को जोड से अलग करना। मन फेर देना। तितरवितर करना। हटाना। नष्ट करना। मु०—**गड़े मुर्दे उखाडना** = गई बीती बातों को फिर से छेडना।

उखाड़ू—वि० उखाडनेवाला। चुगलखोर।

उखारना (पु)†—सक० दे० 'उखाडना'।

उखारी†—स्त्री० ईख का खेत।

उखालिया—पु० बहुत सवेरे का भोजन, सरगही।

उखेड़—पु० दे० 'उखाड'। **उखेडना**—सक० दे० 'उखाडना'।

उखेरना (पु)—सक० उखाडना। 'कियो उपाय गिरवर धरिबे को महि ले पकरि उखेरो' (सूर०)।

उखलना (पु)—सक० उरेहना, लिखना।

उगटना (पु)—अक० बार बार कहना, उघटना। ताना मारना।

उगना—अक० उदय होना। अंकुरित होना। उत्पन्न होना।

उगरना—अक० सामने आना, निकलना। 'गवन करै कहँ उगरै कोई' (पद्मा०)।

उगलना—सक० [प्रे० उगलाना, उगलवाना] कै करना। मुँह की वस्तु को बाहर थूकना। हडपा हुआ माल विवश होकर लौटाना या बता देना। छिपाने योग्य बात को कहना। बाहर निकालना। मु०—**ज़हर उगलना** = बहुत बुरी या अनिष्ट करनेवाली बात कहना। **आग उगलना** = तीखी या उत्तेजक बात कहना।

उगवना (पु)—सक० दे० 'उगाना'।

उगसारना (पु)—सक० कहना, खोलना।

उगाना—सक० [अक० उगना] उदय करना। जमाना, अंकुरित करना।

उगार (पु), **उगाल**—पु० पीक, थूक, खखार। **उगालदान** = पु० थूकने, खखार आदि गिराने का बरतन, पीकदान।

उगाहना—सक० वसूल करना (अन्न, धन,

लगान आदि)। इकट्ठा करना (जैसे, चदा)।

उगाही—स्त्री० (धन, अन्न आदि) वसूल करने का काम, वसूली। वसूल किया हुआ रुपया, अन्न आदि। उगाहने की मजदूरी।

उगिलना(पु)†—सक० दे० 'उगलना'।

उग्गाहा—स्त्री० आर्या छद का एक भेद।

उग्र—वि० [स०] प्रचड, तेज, उत्कट। पु० महादेव। वच्छनाग जहर। विष्णु। सूर्य।

उघटना—अक० ताल देना। गई बीती बात को उठाना। अपने उपकार या दूसरे के अपराध को बार बार कहकर ताना देना। किसी को भला बुरा कहते उसके बाप दादा को भी भला बुरा कहने लगना।

उघटा—वि० किए हुए उपकार को बार बार कहनेवाला। पु० उघटने का कार्य।

उघडना—अक० आवरण का हटना, खुलना। नगा होना। प्रकट होना। भडा फूटना।

उघरना(पु)—अक० दे० 'उघडना'।

उघरारा(पु)†—वि० खुला हुआ। पु० खुला हुआ स्थान।

उघड़ना—सक० खोलना। नगा करना। प्रकट करना। गुप्त बात को खोलना, भडा फोडना।

उघारन (पु)—सक० दे० 'उघाडना'।

उघेलना(पु)—सक० खोलना। 'कित तीतर बन जीभ उघेला' (पदमा०)।

उचंत—वि० दे० 'उचित'। पु० दी हुई रकम जिसका हिसाब खर्च करने पर दिया जाय।

उचकन—पु किसी चीज को ऊँचा करने के लिये नीचे दिया जानेवाला ईंट आदि का टुकडा।

उचकना—अक० पजे के बल खडा होना। उछलना। सक० उछलकर लेना या छीनना।

उचकाना—सक० [अक० उचकना] ऊपर उठाना, ऊँचा करना।

उचक्का—पु० उचककर या छीनकर ले भागनेवाला ठग। बदमाश।

उचटना—अक० जमी या चिपकी वस्तु का अलग होना, उखडना। अलग होना। भडकना। विरक्त होना। मन न लगना।

उचटाना(पु)—सक० [अक० उचटना] उखाडना, नोचना। अलग करना। विरक्त करना भडकाना।

उचडना—अक सटी हुई चीज का अलग होना। हटना।

उचना(पु)—ऊँचा होना, उचकना। उठना। ऊँचा करना, ऊपर उठाना।

उचनि(पु)—स्त्री० उठान, उभार।

उचरना(पु)—सक० उच्चारण करना, बोलना। 'चढि गिरि शिखर, शब्द एक उचर्‍यो' (सूर)। अक० मुँह से शब्द निकलना।

उचाट—पु मन का न लगना, उदासीनता।

उचाटना—सक [अक० उचटना] उच्चाटन करना, जी हटाना, विरक्त करना।

उचाटी(पु)†—स्त्री० अनमनापन, विरक्ति।

उचाटन—पु० दे० 'उच्चाटन'

उचाड़ना—सक० [अक० उचडना] उखाडना, नोचना।

उचाना(पु)†—सक० ऊँचा करना। उठाना। 'सखिन तब भुज गहि उचाए बावरे कत होत' (सूर०)।

उचार(पु)—पु० दे 'उच्चार'। **उचारना**(पु)—सक० [अक उचरना] उच्चारण करना। दे० 'उचाडना'।

उचित—वि० [स] ठीक, योग्य, मुनासिब।

उचौहाँ(पु)—वि० ऊँचा उठा हुआ, उभरा हुआ।

उच्च—वि० [स०] ऊँचा। श्रेष्ठ, बडा।

उच्चरना—सक० उच्चारण करना।

उच्चाट—पु० [स०] उखाडने या नोचने की क्रिया। चित्त का न लगना, विरक्ति।

उच्चाटन—पु० उखाडना, नोचना। चित्त को हटना (तत्र के छह अभिचार या प्रयोगो मे से एक)। चित्त का न लगना विरक्ति, उदासीनता।

उच्चार—पु० [स०] मुँह से शब्द निकालना, बोलना। **उच्चारना**(पु)—सक० उच्चारण करना, बोलना। **उच्चारणीय**, **उच्चार्य**—वि० उच्चारण के योग्य।

उच्चैःश्रवा—पु० समुद्रमथन से निकला, इद्र का बडे कानोवाला सफेद घोडा। वि० ऊँचा सुननेवाला, बहरा।

उच्छन्न—वि० [स०] दवा हुआ, छिपा हुआ, लुप्त।
उच्छलन—पु० [स०] उछलने या छलकने की क्रिया।
उच्छलना(पु)—अक० दे० 'उछलना'।
उच्छव(पु)—पु० उत्सव।
उच्छाव(पु)—पु० उत्साह, उमग। धूमधाम।
उच्छास(पु)—पु० दे० 'उच्छ्वास'।
उच्छाह(पु)—पु० उछाह, उत्साह।
उच्छिन्न—वि० [स०] कटा हुआ, उखडा हुआ। नष्ट।
उच्छिष्ट—वि० [स०] खाने से वचा हुआ, जूठा। वरता हुआ, इस्तेमाल किया हुआ। पु० जूठी वस्तु। शहद
उच्छू—स्त्री० गले मे कुछ रुक जाने मे आनेवाली खाँसी।
उच्छृखल—वि० [स०] क्रमहीन, अडवड। निरकुश, मनमाना काम करनेवाला। उद्दड, अक्खड।
उच्छेद, उच्छेदन—पु० [स०] उखाडना। काटना। नाश।
उच्छ्वसित—वि० [स०] उच्छ्वासयुक्त। प्रसन्न। उत्साहित। फूला हुआ। जीवित। सात्वनाप्राप्त, शात।
उच्छ्वास—पु० [स०] गहरा श्वास। छोडी जानेवाली या ऊपर को खीची जानेवाली साँस। प्रोत्साहन। मौत। ग्रथ का विभाग, प्रकरण।
उछंग(पु)—पु० गोद, क्रोड। हृदय।
उछकना(पु)—अक० चेत मे आना, होश आना।
उछरना(पु)†—अक० दे० 'उछलना'।
उछलना—अक० वेग से ऊपर उठना। कूदना। बहुत प्रसन्न होना। रेखा या चिह्न उभर आना, चिह्न पडना। छलकना, तरगित होना।
उछाटना(पु)—सक० उचाटना, विरक्त करना। छाँटना, चुनना।
उछारना(पु)†—सक० दे० 'उछालना'।
उछाल—स्त्री० उछलने की क्रिया, कुदान। ऊपर उठने की सीमा। †उलटी, कै। छलक, पानी का छीटा। **उछालना**—सक० ऊपर की ओर फेंकना। प्रकट करना।
उछास—पु० दे० 'उच्छ्वास'।
उछाह—पु० उत्साह, उमग। उत्सव। आनंद। इच्छा। **उछाही**(पु)—वि० उछाह करनेवाला।
उछिष्ट(पु)—वि० दे० 'उच्छिष्ट'।
उछीनना(पु)—सक० उच्छिन्न करना।
उछीर(पु)—पु० अवकाश, जगह, रध्र।
उजडना—अक० गिरना, ध्वस्त होना। बसे हुए लोगो मे खाली होना, वीरान होना।
उजड्ड—पु० अक्खड, उद्दड। अशिष्ट, गँवार।
उजवक—पु० तातारियो की एक जाति। वि० सनकी। मूर्ख।
उजरत—स्त्री० [अ०] मजदूरी, पारिश्रमिक किराया, भाडा।
उजरना—अक० दे० 'उजडना'।
उजरा(पु)—वि० दे० उजला। **उजराना**(पु)—सक० उज्ज्वल या साफ कराना।
उजलत—स्त्री० [अ०] उतावली, जल्दी।
उजलवाना—सक० गहना या अस्त्र आदि साफ कराना।
उजला—वि० सफेद, धौला। साफ, स्वच्छ।
उजागर—वि० प्रकाशित। प्रकट, स्पष्ट। प्रसिद्ध, मशहूर।
उजाड—पु० उजडा हुआ स्थान। निर्जन जगह। जगल। वि० उजडा हुआ, ध्वस्त। वीरान। **उजाडना**—सक० [अक० उजडना] गिराना, ध्वस्त करना। वीरान करना।
उजार(पु)—पु० दे० 'उजाड'। **उजारना**(पु)—सक० दे० 'उजाडना'। दे० 'उजालना'।
उजारा(पु)—पु० उजाला, प्रकाश। वि० प्रकाशमान्, कातिमान्।
उजालना—सक० गहना और हथियार आदि साफ करना। प्रकाशित करना। जलाना।
उजाला—पु० प्रकाश, रोशनी। वि० प्रकाशयुक्त। मु०—**घर का उजाला** = घर की शोभा, घर मे अति प्रिय। **उजाली**—स्त्री० चाँदनी, चद्रिका। वि० स्त्री० प्रकाशयुक्त।

उजास—पु० प्रकाश, रोशनी । **उजासना**—अक० प्रकाशित होना, चमकना ।

उजियर(पु)—वि० उजला, साफ, स्वच्छ । **उजियरिया**†—स्त्री० चाँदनी, प्रकाश । **उजियार**(पु)†—पु० उजाला, प्रकाश । **उजियारना**—सक० प्रकाशित करना । जलना । **उजियारा**(पु)†—पु० दे० 'उजाला' ।

उजियाला—पु० दे० 'उजाला' ।

उजीर(पु)—पु० दे० 'वजीर' ।

उजुर—पु० दे० 'उज्र' ।

उजू—पु० मुसलमानो का नमाज पढने के पूर्व हाथ, पैर और मुँह धोने का धार्मिक कृत्य ।

उजेर, उजेरा(पु)—पु० दे० 'उजाला' ।

उजेला—पु०, वि० दे० 'उजाला' ।

उज्जर(पु)†—पु० दे० 'उज्ज्वल' ।

उज्जल—क्रि० वि० बहाव से उलटी ओर, नदी के चढाव की ओर । (पु) वि० दे० 'उज्ज्वल' ।

उज्यारा(पु)—पु० दे० 'उजाला' ।

उज्यास(पु)—पु० दे० 'उजास' ।

उज्र—पु० [अ०] आपत्ति, विरुद्ध वक्तव्य, एतराज । ⊙**दारी** = स्त्री० [फा०] अदालत मे मिली आज्ञा या अदालत से की गई किसी प्रार्थना का उज्र पेश करना ।

उज्ज्वल—वि० [सं०] प्रकाशमान् । श्वेत । चमकदार । स्वच्छ । बेदाग ।

उज्ज्वलन—पु० [स०] प्रकाश । दीप्ति । जलना । स्वच्छ करना ।

उज्ज्वला—स्त्री० १५ मात्राओ का छद जिसके प्रत्येक चरण के अत मे रगण होता है । १२ वर्णो का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से दो नगण, एक भगण और अत मे रगण होता है तथा सातवें और बारहवें अक्षर पर विराम होता है ।

उझकना(पु)—अक० उचकना, उछलना । उमडना । ताकने के लिये ऊँचा होना । 'जहँ तहँ उझकि झरोखा झाँकति जनक नगर की नार' (सूर०) ।

उझरना(पु)—सक० ऊपर की ओर उठाना । (पु)अक० उजड़ना, समाप्त होना ।

उझलना(पु)—सक० ढालना, ऊपर से कोई द्रव गिराना । उमड़ना, बढना ।

उझाँकना—सक० दे० 'झाँकना' ।

उटकना(पु)—सक० अदाज लगाना ।

उटक्करै(पु)—क्रि० वि० अधाधुध । 'सीसन की टक्कर लेत उटक्कर' ' (हिम्मत० १८५)

उटज—पु० [स०] झोपडी, कुटी ।

उटना(पु)—ओट मे होना, छिपना । 'भजि चलै एकै कुँवर को इत-उत उटै' (हिम्मत० १४६) ।

उठँगन—पु० आड, टेक । बैठने मे पीठ को सहारा देनेवाली वस्तु । ⊙**उठँगना**—अक० सहारा या टेक लगाना या जाकर बैठना । कमर सीधी करना, लेटना ।

उठना—अक० लेटे हुए का बैठना । बैठे हुए का खडा होना । ऊँचा होना । ऊपर चढना, ऊपर होना । कूदना, उछलना । जागना, बिस्तर छोडना । उदय होना । उत्पन्न होना (विचार आदि का) । सहसा शुरू होना (हवा, आँधी आदि का) । सहसा अनुभव करना (दर्द आदि का) । स्पष्ट होना, उभरना । (अक्षर, चिह्न आदि का) । खमीर आना, सडकर उफान आना । बद होना (दुकान, कारखाने आदि का) । कार्य का समय पूरा होना (दूकान कारखाने आदि का) । प्रस्थान करना (बरात, काफिले आदि का) । हटना, दूर होना (प्रथा का) । खर्च होना । बिकना (सौदे का) । भाडे या लगान पर जाना (घर, दुकान आदि का) । याद आना । बनकर तैयार होना (दीवार, मकान आदि का) । कामोत्तेजित होना (गाय, भैंस आदि का) । तैयार होना । मु०—(**दुनिया से) उठ जाना** = मर जाना । **उठती जवानी** = जवानी का आरभ । **उठते बैठते** = हर समय । **उठना बैठना** = सग साथ ।

उठल्लू—वि० एक जगह जमकर न रहनेवाला । आवारा । मु० ~**का चूल्हा** = बेकाम इधर उधर फिरनेवाला ।

उठान—स्त्री० उठने की क्रिया । बाढ़, वृद्धि । आरभ । खपत । ऊँचाई ।

उठाना—सक० [अक० उठना] लेटे हुए को बैठाना। बैठे हुए को खडा करना। ऊपर लेना। धारण करना। प्रस्थान कराना। जगाना। आरभ करना, छेडना (बात, झगडा आदि)। तैयार करना। मकान, दीवार आदि तैयार कराना। प्रथा का बद होना। खर्च करना। बेचना। भाडे पर देना। भोग करना (सुख, दुख आदि)। शिरोधार्य करना। 'नृप की आज्ञा लियो उठाई' (सूर०)। कसम खाने के लिये हाथ मे लेना (गीता, गगाजल आदि)। मु०—**उठा न रखना**=कसर न रखना।

उठाव—पु० उठा हुआ या उन्नत अश।

उठेलⓅ—स्त्री० धक्का, चोट। 'अरिखर गिराये···सक्ति की जु उठेल सों' (हिम्मत० १४२)।

उठौआ†—वि० दे० 'उठौवा'।

उठौनी—स्त्री० उठाने की क्रिया। उठाने की मजदूरी। पेशगी दिया जानेवाला रुपया। ब्याह पक्का करने के लिये कन्या-पक्ष को दिया जानेवाला रुपया। देवता की पूजा के लिये अलग रखा हुआ धन या अन्न। प्रसूता की सेवा शुश्रूषा।

उठौवा—वि० जा दूसरे स्थान पर ले जाया जा सके। जैसे, उठौवा चूल्हा।

उड़कू—वि० जो उड सके। उडनेवाला। चलने फिरनेवाला।

उडⓅ—पु० दे० 'उडु'।

उड़ना—अक० पख के सहारे हवा मे चलना। आकाशमार्ग से जाना। हवा मे ऊपर उठना या हिलना डोलना (पतग, पत्ता, धूल आदि)। हवा मे बिखरना, फैलना (छीटा सुगध आदि)। हवा मे हिलना, फहराना। तेज भागना। कटकर अलग होना। गायब होना, नष्ट होना। खर्च होना। आमोद-प्रमोद या खानपान मे आना (ताश उडना, मिठाई उडना आदि)। रग आदि फीका पडना। धोखा देना, चकमा देना। मार पडना (बेत आदि की)। छलांग मारना, कूदना। बहानेबाजी करना। मु०—**उडती खबर**=बाजारू खबर, किंवदती।

उड़ाना—सक० [अक० उड़ना] उडने की क्रिया कराना। उडनेवाले जीवो को भगाना। हवा मे ऊपर उठाना, हिलाना डुलाना। बिखेरना, फैलाना। काटकर अलग करना। गायब या नष्ट करना। खर्च करना। भोग मे लाना। गोली, बारूद आदि से नष्ट करना। मारना। तेजी से दौडाना। चकमा देना, ठगना। झूठा दोष लगाना। किंवदती फैलाना। चुपके से सीख लेना। मु०—**बेपर की उड़ाना**=प्रमाणहीन या अविश्वसनीय बात कहना।

उडायकⓅ—वि० उडानेवाला।

उड़ासⓅ—स्त्री० वासस्थान, महल।

उड़ासना—सक० बिछौना समेटना या उठाना। उजाडना, तहस नहस करना। हटाना।

उडियाना—पु० १२ मात्राओ का छद जिसके प्रथम और तृतीय चरण मे १२ तथा द्वितीय और चतुर्थ मे १० मात्राएँ और अत मे एक गुरु रहता है।

उडु—पु० [स०] नक्षत्र, तारा। पक्षी। मल्लाह। जल। ⊙**प**=पु० नाव। चद्रमा। बडा गरुड। एक नृत्य। ⊙**पति**=पु० चद्रमा। ⊙**राज**=पु० चद्रमा।

उडुस—पु० खटमल।

उडरना, Ⓟ **उडेलना**—सक० दे० 'उँडेलना'।

उडैनीⓅ—स्त्री० जुगनू।

उडौहो—उडनेवाला।

उड्डयन—पु० [स०] उडना, उडान।

उड्डीयन—पु० [स०] हठयोग की एक क्रिया या बध।

उड्डीयमान—वि० उडनेवाला, उडता हुआ।

उढ़कना—अक० ठोकर खाना। रुकना। सहारा लेना।

उढकाना—सक० [अक० उढकना] किसी के सहारे खडा करना।

उढ़रना—अक० विवाहिता स्त्री का अन्य पुरुष के साथ निकल जाना।

उढरी—स्त्री० रखेली, सुरैतिन, भगाकर लाई हुई स्त्री।

उढ़ाना—सक० कपडे से देह ढकना।
उढ़ावनी(पु)†—स्त्री० दे० 'ओढनी'।
उढ़ौनी(पु)—स्त्री० दे० 'ओढनी'।
उतंग(पु)—वि० ऊँचा, बुलद। श्रेष्ठ।
उतंत(पु)—वि० सयाना, जवान।
उत्—उप० [स०] शब्दो के पूर्व लगकर यह ऊँचाई (जैसे, उत्तुग), अतिक्रमण (जैसे, उल्लघन), जन्म (जैसे, उद्भव), बुराई (जैसे, उन्मार्ग, उत्पथ), प्रकर्ष (जैसे, उत्कर्ष) आदि सूचित करता है। ⊙**कंठ** = वि० जिसे उत्कठा हो। ⊙**कठा** = स्त्री० लालसा, चाव। रस में एक सचारी भाव, कार्य मे विलब न सहकर उसे चटपट करने की अभिलाषा। ⊙**कठित** = वि० उत्कठायुक्त, उत्सुक। ⊙**कठिता** = स्त्री० सकेत-स्थान मे प्रिय के न आने पर वितर्क करनेवाली नायिका। ⊙**कंप** = पु० कँपकँपी। ⊙**कट** = वि० तीव्र, उग्र। ⊙**कर्ण** = वि० सुनने के लिये कान खडे किए हुए। ⊙**कर्ष** = पु० समृद्धि, उन्नति। अधिकता। श्रेष्ठता। ⊙**कलित** = वि० खिला हुआ। चमकदार। खुला हुआ। उत्कठित। उद्विग्न, अनमना। ⊙**कीर्ण** = वि० लिखा हुआ, खुदा हुआ। बिंधा हुआ। ⊙**कृष्ट** = वि० उत्तम, श्रेष्ठ। ⊙**कोच** = पु० घूस, रिश्वत। ⊙**क्रम** = पुं० ऊपर चढना। उलट पुलट। उल्लघन। **क्रांत** = वि० ऊपर चढा हुआ। जिसका उल्लघन किया गया हो। ⊙**क्रोश** = पु० हल्ला, कोलाहल। ⊙**क्षिप्त** = वि० फेंका हुआ, उछाला हुआ। ⊙**खनन** = पु० खोदने की क्रिया। ⊙**तप्त** = वि० खूब तपा हुआ या गरम। दुखी, पीडित। ⊙**तान** = वि० पीठ के बल, सीधा। ⊙**ताप** = पु० गरमी, तपन। कष्ट, दुःख। शोक। क्षोभ। ⊙**तीर्ण** = वि० पार पहुँचा हुआ। उतरा हुआ। मुक्त। परीक्षा मे सफल। ⊙**तुंग** = वि० बहुत ऊँचा। ⊙**तेजक** = वि० उभाडनेवाला, उकसानेवाला, प्रेरक। भडकानेवाला। ⊙**तेजन** = पु०, ⊙**तेजना** = स्त्री० बढावा, प्रेरणा। भडकाना। ⊙**तोलन** = पु० ऊँचा करना, तानना। वजन करना। ⊙**पत्ति** = स्त्री० जन्म, पैदाइश। आरंभ। सृष्टि। ⊙**पन्न** = वि० जन्मा हुआ, पैदा। ⊙**पाटन** = पु० उखाडना। ⊙**पात** = पु० उपद्रव, आफत। हलचल। दगा, शरारत। ⊙**पाती** = वि० उत्पात मचानेवाला। ⊙**पादक** = वि० उत्पन्न करनेवाला। बनानेवाला। ⊙**पादन** = उत्पन्न करना, पैदा करना। बनाना। ⊙**पीडक** = वि० पीडा देनेवाला, जुल्म करनेवाला। ⊙**पीड़न** = पु० तकलीफ देना, सताना। ⊙**प्रेक्षा** = स्त्री० उद्भावना, आरोप। अर्थालकार जिसमे भेद-ज्ञानपूर्वक उपमेय मे उपमान की प्रतीति होती है। ⊙**फुल्ल** = वि० खिला हुआ। फूला हुआ। ⊙**संग** = पु० गोद क्रोड। मध्य भाग। वि० निलिप्त। ⊙**सर्ग** = पु० त्याग। दान। समाप्ति। सामान्य नियम, 'अपवाद' का उलटा (व्या०)। ⊙**सव** = पु० आनद, उत्साह। धूमधाम से किया जानेवाला कोई सार्वजनिक या शुभ कार्य। जलसा। त्योहार, पर्व। उछाह, धूमधाम। ⊙**साह** = पु० उमग, उछाह, जोश। साहस, वीर रस का स्थायी भाव। ⊙**सेध** = पु० ऊँचाई। मोटापन। शोथ। बढती, उन्नति, श्रेष्ठता।
उत(पु)—क्रि० वि० वहाँ, उधर।
उतन(पु)—क्रि०वि० उस तरफ, उस ओर।
उतना—वि० उस मात्रा या परिमाण का, उस कदर।
उतपल(पु)—पु० दे० 'उत्पल'।
उतपात—पु० दे० 'उत्पात'।
उतपानना(पु)—सक० उत्पन्न करना। 'षष्ठ पुत्र तासो उतपाने' (सूर०)।
उतमंग(पु)—पु० दे० 'उत्तमाग'।
उतर(पु)—पु० दे० 'उत्तर'।
उतरन—स्त्री० पहने हुए पुराने कपडे।
उतरना—अक० ऊपर से नीचे आना। शरीर में किसी जोड या हड्डी का अपनी

जगह से हटना। फीका हलका या धीमा होना। उग्र प्रभाव दूर होना (क्रोध,नशे आदि का)। वर्ष, मास या नक्षत्र विशेष का समाप्त होना। बुनाई या कढाई की वस्तु का पूरा होना। भाव कम होना। ठहरना, टिकना। खिचना (तस्वीर आदि का)। बच्चो का मर जाना। भरना, सचारित होना (जैसे, स्तन मे दूध), भभके से खिचकर तैयार होना। सफाई से कटना। धारण की हुई वस्तु का अलग होना। तौल मे ठहरना। अवतार लेना। घटित होना। शरीर के चारो ओर घुमाया जाना (आरती या न्योछावर का)। वसूल होना। (चदा आदि)। दूर होना (ऋण, बोझ या पाप का)। मु०—चेहरा उतरना = मुंह पर उदासी छाना।

उतराई—स्त्री० ऊपर से नीचे आने की क्रिया। नदी के पार उतारने का महसूल। ढालू जमीन।

उतराना—अक० पानी के ऊपर आना। उबलना। हर जगह दिखाई देना। सक० [उतरना का प्रे०] उतरने की क्रिया कराना।

उतरारी(पु)†—वि० उत्तर की (हवा)।

उतराव—पु० दे० 'उतार'।

उतराहा†—क्रि० वि० उत्तर की ओर।

उतरिन(पु)†—वि० दे० 'उऋण'।

उतलाना(पु)†—अक० जल्दी करना।

उतसहकठा(पु)—स्त्री० उत्कठा।

उतान(पु)—वि० दे० 'उत्तान'।

उतायल(पु)—वि० जल्दी, शीघ्र। **उतायली**—स्त्री० जल्दी, शीघ्रता।

उतार—पु० उतरने की क्रिया। ऊँचाई मे क्रमश कमी, ढाल। घटाव, कमी। समुद्र का भाटा। उतरन, त्यागा हुआ जीर्ण वस्त्र। उतारा न्योछावर। नशे, विष या मत्र का प्रभाव दूर करनेवाली वस्तु या प्रयोग। **उतारना**—सक० [अक० उतरना] ऊपर से नीचे लाना। खीचना, प्रतिरूप बनाना। नकल करना। उधेडना (खाल आदि)। सफाई से काटना (सिर का)। अलग निकालना (जैसे मलाई)। पहनी हुई चीज अलग करना (अँगूठी, कपडे आदि)। निवास कराना। उतारा करना (भूत प्रेत की बाधा या रोगशाति के लिये)। न्योछावर करना। नशे आदि का प्रभाव दूर करना। †वसूल करना। (पु)जन्म देना। पोना। मशीन, खराद, साँचे आदि पर से बनाकर तैयार करना। कढाई, बुनाई से कोई वस्तु तैयार करना। बाजे की कसन ढीला करना। भभके से खीचकर तैयार करना। वजन मे पूरा करना। तलकर तैयार करना, पाग उतारना। सक० पार उतारना।

उतारा—पुं० निवास करने या टिकने की क्रिया। पडाव। पार करने की क्रिया। भूत-प्रेत की बाधा या रोगशाति के लिये सिर के चारो ओर कुछ सामग्री घुमाकर चौराहे आदि पर रखना। उतारे की सामग्री या वस्तु।

उतारू—वि० उद्यत, तुला हुआ।

उताल(पु)—क्रि० वि० जल्दी, शीघ्र। स्त्री० शीघ्रता जल्दी। **उताली**(पु)—स्त्री० उतावली, जल्दी। क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी।

उतावल(पु)—क्रि० वि० जल्दी, शीघ्रता से। **उतावला**—वि० पुं० जल्दी मचानेवाला। व्यग्र, बेचैन। **उतावली**—स्त्री० जल्दी, शीघ्रता, जल्दीबाजी। व्यग्रता।

उताहल(पु)—क्रि० वि० जल्दी, शीघ्रता से।

उताहिल(पु)—क्रि० वि० दे० 'उतावल'।

उतिम(पु)†—वि० दे० 'उत्तम'।

उती(पु)—क्रि० वि० वहाँ।

उतृण—वि० दे० 'उऋण'।

उतै(पु)—क्रि० वि० वहाँ, उस ओर।

उतैला(पु)—वि० पुं० दे० 'उतावला'।

उत्तंग(पु)—वि० दे० 'उत्तुग'।

उत्तंस(पु)—पु० दे० 'अवतस'।

उत्त(पु)—पु० आश्चर्य, सदेह।

उत्तम—वि० [सं०] श्रेष्ठ, सबसे अच्छा। ⊙**पुरुष** = पु० सर्वनाम जो बोलनेवाले को सूचित करे, जैसे—मैं, हम (व्या०)। ⊙**श्लोक** = वि० यशस्वी, कीर्तिमान्। पु० यश। पुण्य। भगवान्, नारायण, विष्णु।

उत्तमांग—पु० सिर, मस्तक। **उत्तमोत्तम**—वि० अच्छे से अच्छा, सर्वोत्तम।

उत्तमा—वि० स्त्री० अच्छी, भली। ⊙**दूती** = स्त्री० दूती जो नायक या नायिका को मीठी बातो मे समझाकर मना लाए। ⊙**नायिका** = स्त्री० स्वकीया नायिका जो पति के प्रतिकूल होने पर भी अनुकूल बनी रहे।

उत्तर—पु० [स०] दक्षिण दिशा के सामने की दिशा, उदीची। प्रश्न के समाधान के लिये कही गई बात, जवाब। प्रतिकार, बदला। काव्यालकार जिसमे उत्तर से प्रश्न का अनुमान किया जाता है अथवा प्रश्नो का ऐसा उत्तर दिया जाता है जो चमत्कारयुक्त हो। काव्यालकार जिसमे प्रश्न के वाक्यो मे उत्तर भी होता है अथवा बहुत से प्रश्नो का एक ही उत्तर होता है। वि० पिछला, बाद का। ऊपर का। श्रेष्ठ। क्रि० वि० पीछे, बाद। ⊙**क्रिया** = स्त्री० अत्येष्टि क्रिया। ⊙**दाता** = वि० जवाब देनेवाला। जिम्मेदार। ⊙**दायित्व** = पु० जिम्मेदारी, जवाबदेही। ⊙**दायी** = वि० जवाब देनेवाला। जिम्मेदार। ⊙**पक्ष** = पु० शास्त्रार्थ या वाद-विवाद मे पूर्वपक्ष (अर्थात् पहले किए हुए निरूपण या प्रश्न का खडन या समाधान। ⊙**पद** = पु० यौगिक शब्द या समास का अतिम शब्द। ⊙**मीमांसा** = स्त्री० वेदो के उत्तरार्ध के दार्शनिक विवेचन जिनमे से महर्षि व्यास ने ब्रह्मविषयक विचारो को छाँटकर ब्रह्मसूत्रो की रचना की और जिन्हें शकराचार्य आदि ने वेदात के नाम से पूर्ण प्रतिष्ठा दी, ज्ञानकाड। **उत्तराखड**—पु० भारतवर्ष का हिमालय के पास का उत्तरी भाग। **उत्तराधिकार**—पु० किसी के मरने या हटने पर उसकी सपत्ति, अधिकार आदि का स्वत्व, वरासत। **उत्तराधिकारी**—पुं० उत्तराधिकार पानेवाला व्यक्ति। **उत्तराभास** पुं० झूठा या अडबड जवाब (स्मृति)। **उत्तरायण**—पुं० मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर सूर्य की गति। छह महीने का वह समय जिसके बीच सूर्य मकर रेखा से चलकर बराबर उत्तर की ओर बढता रहता है। माघ से आषाढ तक के छह महीने। शिशिर, वंसत और ग्रीष्म ऋतु। **उत्तरार्ध**—पुं० बाद का आधा भाग। **उत्तराषाढ़ा**—स्त्री० इक्कीसवाँ नक्षत्र। **उत्तरीय**—पुं० दुपट्टा, चद्दर। वि० ऊपर का, ऊपरवाला। उत्तर दिशा सबधी। **उत्तरोत्तर**—क्रि० वि० आगे आगे, क्रमश। दिनोदिन।

उत्तराफाल्गुनी—स्त्री० [सं०] बारहवाँ नक्षत्र।

उत्तराभाद्रपदा—स्त्री० [सं०] छब्बीसवाँ नक्षत्र।

उत्ता†—वि० दे० 'उतना'।

उत्तू—पुं० [फा०] औजार जिसे गरम करके कपडो पर बेलबूटे या चुन्नट बनाते हैं। उक्त औजार का बना हुआ बेलबूटा। वि० बेहोश। नशे मे चूर।

उत्थयना—सक० अनुष्ठान करना, आरभ करना।

उत्थान—पु० [सं०] उठने की क्रिया। उठान, आरभ। उन्नति, समृद्धि, बढ़ती।

उत्थापन—पुं० [स०] ऊपर उठाना। हिलाना डुलाना। उत्तेजित करना। जगाना। समाप्त करना।

उत्पल—पुं० [स०] कमल। नील कमल।

उत्सुक—वि० [स०] अत्यत इच्छुक, आकुल। चाही हुई बात मे देर न सहकर उद्योग मे तत्पर। ⊙**ता** = स्त्री० तीव्र इच्छा, आकुलता। इच्छित बात के लिये अविलब तत्परता, ३३ सचारी भावो मे से एक।

उथपना(पु)—सक० उखाडना, उजाडना।

उथल पुथल—स्त्री० उलट पलट, क्रमभग। वि० गडबड, अव्यवस्थित।

उथलना—अक० डाँवाडोल होना। उलट पुलट होना। पानी का छिछला होना।

उथला—वि० कम गहरा, छिछला।

उदंड(पु)†—वि० दे० 'उद्दड'।

उदंत—वि० जिसके दाँत न जमे हो (चौपायो के लिये)। पु० [स०] वृत्तात, समाचार।

उद्—उप० [सं०] दे० 'उत्'। ⊙**गत** =

वि० उत्पन्न, निकला हुआ। प्रकट। व्याप्त। प्राप्त। ⊙**गम** = पु० आविर्भाव, पैदाइश। उत्पत्ति का स्थान, निकास। नदी निकलने का स्थान। ⊙**गाता** = पुं० यज्ञ के चार प्रधान ऋत्विजो मे से एक जो सामवेद के मत्रो को गाता है। ⊙**गाथा** = स्त्री० आर्या छद का एक भेद जिसके विषम पदो मे १२ मात्राएँ और सम मे १८ मात्राएँ हो। इसके विषम गणो मे जगण नही होता। ⊙**गार** = पुं० मन का प्रकट किया हुआ भाव। उबाल, उफान। वमन, कै। थूक, कफ। डकार। आधिक्य। घोर शब्द। ⊙**गारी** = वि० उगलनेवाला। बाहर निकालनेवाला। प्रकट करनेवाला। ⊙**गीत** = वि० जो ऊँचे स्वर से गाया गया हो। ⊙**गीति** = स्त्री० आर्या छद का एक भेद जिसमे पहले और तीसरे चरणो मे १२-१२ मात्राएँ, दूसरे मे १५ और चौथे मे १८ मात्राएँ हो। इसके विषम चरणो मे जगण नही रखा जाता, अत के अक्षर गुरु होते हैं। ⊙**गीथ** = पुं० सामगान। प्रणव। ⊙**ग्रीव** = वि० जो गर्दन ऊपर उठाए हो। उत्सुक। ⊙**घाटन** = पुं० खोलना, उघाडना। प्रकट करना। किसी सभा, समेलन, संस्था, उद्योग आदि के कार्य का आरभ करना। ⊙**घात** = पुं० आरभ। अध्याय। धक्का, आघात। ⊙**घातक** = वि० आरभ करनेवाला। आघात करनेवाला। पुं० रूपक मे प्रस्तावना के पाँच भेदो मे से एक जिसमे कोई पात्र सूत्रधार और नटी आदि की कोई बात सुनकर उसका अपने मन के अनुकूल अर्थ लगाता हुआ रगमच पर आता है या नेपथ्य मे बोलता है। ⊙**घोष** = पुं० ऊँचे स्वर मे कहना। घोषणा। ⊙**दाम** = वि० बधनरहित। निरकुश, उग्र। महान्। घमडी। पुं० दडक वृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे २ नगण और १३ रगण होते हैं। वरुण। ⊙**दिष्ट** = वि० दिखाया हुआ, इगित। अभिप्रेत, लक्ष्य। कहा हुआ। ⊙**दीपक** = वि० उत्तेजित करनेवाला। तीव्र करनेवाला। प्रज्वलित करनेवाला। ⊙**दीपन** = पुं० उत्तेजित करना, भडकाना। उद्दीपन करनेवाली वस्तु। काव्य मे वह वस्तु जो रति आदि स्थायी भाव को उद्दीप्त करनेवाली हो, विभाव। ⊙**दीप्त** = वि० जिसका उद्दीपन हुआ हो, उत्तेजित। ⊙**देश** = पुं० अभिप्राय, लक्ष्य। कारण। स्थान। ⊙**देश्य** = वि० लक्ष्य, इष्ट। वस्तु जिसपर ध्यान रखकर कोई बात कही या की जाय, अभिप्रेत अर्थ। वह जिसके सबध मे कुछ कहा जाय, 'विधेय' का उलटा (व्या०)। मतलब, मशा। ⊙**धत** = वि० अक्खड, प्रगल्भ, उग्र। ⊙**धरण** = पुं० उठाने की क्रिया। गद्य या पद्य के पूर्ण या आशिक रूप को ज्यो का त्यो कहना या लिखना। पढा हुआ दोहराना। मुक्ति। उखाडना। ⊙**धार** = पुं० दुखनिवृत्ति, छुटकारा (ऋण से भी)। सुधार, उन्नति। ⊙**धृत** = वि० ऊपर उठाया हुआ। उद्धरण के रूप मे लिखा हुआ, रचना से ज्यो का त्यो लिया हुआ। उगला हुआ। ⊙**बुद्ध** = वि० जिसे ज्ञान हो गया हो, प्रबद्ध। जगा हुआ। विकसित। ⊙**बुद्धा** = स्त्री० अपनी ही इच्छा से उपपति से प्रेम करनेवाली परकीया नायिका। ⊙**बोध** = पुं० थोडा बहुत ज्ञान। जगाना। याद दिलाना। ⊙**बोधक** = वि० बोध करानेवाला, चेतानेवाला। जगानेवाला। उत्तेजित करनेवाला। ⊙**बोधन** = पुं० किसी बात का ज्ञान कराना या होना। होश, चेत। होश या चेत मे लाना या होना। ⊙**बोधिता** = स्त्री० परकीया नायिका जो उपपति के चतुराई से प्रकट किए हुए प्रेम को समझकर प्रेम करे। ⊙**भट** = वि० प्रबल, श्रेष्ठ, अद्भुत। पु० मुक्तक का एक प्रकार। ⊙**भव** = वि० उत्पत्ति, जन्म। वृद्धि, बढती। ⊙**भावना** = स्त्री० मन की उपज, कल्पना, अनुमान। ⊙**भास** = पुं० प्रकाश, दीप्ति। भाव

या विचार का उदय, प्रतीति। ⊙भासित = वि० उद्दीप्त। प्रकाशित। विदित। ⊙भिज = पुं० दे० 'उद्भिज्य'। ⊙भिज्ज = वि० उगनेवाला, धरती फाडकर निकलनेवाला। पुं० पेड पौधे, वनस्पति। ⊙भूत = वि० उत्पन्न। ⊙भूति = स्त्री० उत्पत्ति। उन्नति। ⊙भेद = पुं० फोडकर निकलना, उगना। व्यक्त होना, प्रकाशन। ⊙भेदन = पुं० तोडना फोडना। फोडकर निकलना, छेदकर पार करना या होना। ⊙भ्रात = वि० घूमा हुआ, जिसने चक्कर लगाया हो। भटका हुआ। चकित। विकल। पागल। ⊙यत = वि० उठाया हुआ, ताना हुआ। तैयार, तत्पर। ⊙यम = पुं० प्रयास, मेहनत। रोजगार, काम धधा। ⊙यमी = वि० परिश्रमी, मेहनती। ⊙यान = पुं० बगीचा, बाग। ⊙यापन = पुं० व्रत या अनुष्ठान को समाप्ति पर किया जानेवाला हवन, गोदान आदि कृत्य। ⊙योग = प्रयत्न, मेहनत। उद्यम, रोजगार। ⊙योगी = वि० उद्योग करनेवाला, मेहनती। ⊙रेक = पुं० अधिकता, ज्यादती। ⊙वर्तन = पुं० शरीर मे तेल, चदन आदि लगाना। उबटन। ⊙वह = पुं० ले जाना या ढोना। खीचना। पुत्र, बेटा। विवाह। सात वायुओ मे से एक जो तृतीय स्कध पर है। ⊙वहन — पुं० ऊपर उठना। खीचा जाना। ले जाया जाना, विवाह। ⊙वासन = पुं० स्थान छुडाना। भगाना। उजाडना, वासस्थान नष्ट करना। वध। ⊙वाह = पुं० विवाह। ⊙वाहन = पुं० ऊपर ले जाना। उठाना। ले जाना। खीचना। विवाह। ⊙विग्न = वि० घबराया हुआ। चिंतित। ⊙वीक्षण पुं० ऊपर की ओर देखना। ध्यान से देखना। ⊙वेग = पुं० आवेश, जोश। झोक, तरग। घबराहट, बेचैनी। ⊙वेजक = वि० उद्विग्न या बेचैन करनेवाला। ⊙वेजन = पुं० उद्विग्न करना। ऊब। ⊙वेजित = वि० उद्विग्न, दुखित। ऊबा हुआ। ⊙वेल = पुं० उफनकर या किनारे से बाहर गिरना। ⊙वेलित = वि० उफनकर गिरा हुआ। उछाला हुआ।

उदक—पुं० [सं०] जल, पानी। ⊙क्रिया = स्त्री० देवताओ को मत्र पढकर जल दान। पितरो को इसी प्रकार जल देना। किसी के आगे समानार्थ जल गिराना, अर्घ्य देना।

उदकना(पु)—अक० उछलना, छटकना।

उदगरना†—अक० निकलना। प्रकट होना। उभडना।

उदगार(पु)—पुं० दे० 'उद्‌गार'। **उदगारना**(पु)—सक० [अक० उदगरना] बाहर निकालना, उगलना। उभाडना, भडकाना। **उदगारी**(पु)—वि० दे० 'उद्‌गारी'।

उदग्ग(पु)—वि० ऊँचा, उन्नत। प्रचड, उग्र।

उदग्र—वि० [सं०] ऊँचा। बढा हुआ। प्रचड, उद्धत।

उदघटना(पु)—अक० प्रकट होना, उदय होना।

उदघाटना(पु)—सक० [अक० उदघटना] प्रकट करना, खोलना।

उदधि—पुं० [सं०] समुद्र। घडा। मेघ। ⊙सुत = पुं० समुद्र से उत्पन्न पदार्थ। चद्रमा। अमृत। शख। कमल। ⊙सुता = स्त्री० लक्ष्मी।

उदपान—पु० [स०] कूप। (पु)कमडल।

उदबस—वि० उजाड, सूना। खानाबदोश, एक स्थान पर न रहनेवाला।

उदबासना—अक० स्थान से हटाना, भगाना। उजाडना।

उदमदना(पु)—अक० उन्मत्त होना। 'गोपन के उदमाद फिरत उदमदे कन्हाई' (सूर०)।

उदमाद—पुं० उन्माद, पागलपन। **उदमादी**(पु)—वि० उन्मत्त मतवाला।

उदमानना(पु)—अक० उन्मत्त होना।

उदय—पु०[सं०] ऊपर आना, निकलना (ग्रह, नक्षत्रो के लिये)। प्रकट होना। उन्नति-

बढती। निकलने का स्थान। उदयाचल। ⊙गिरि = पुं० दे० 'उदयाचल'।
उदयना(पु)—अक० उदय होना। उदयाचल—पुं० पौराणिक विश्वास के अनुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहाँ से चद्रमा और सूर्य निकलते हैं। उदयाद्रि—पुं० दे० 'उदयाचल'।
उदरभर, उदरभरि—वि० [सं०] केवल अपना पेट भरनेवाला, पेटू। स्वार्थी।
उदर—सज्ञा पुं० [सं०] पेट। कोख। पेटा, बीच का भाग। भीतर का भाग।
उदरना(पु)—अक० फटना। ढहना, नष्ट होना।
उदवना—अक० उदय होना।
उदसना(पु)—अक० उजडना। बेतरतीब होना।
उदात्त—वि० [सं०] ऊँचे स्वर मे उच्चरित। दयावान्। उदार। श्रेष्ठ, बडा। स्पष्ट, विशद। समर्थ। पुं० वेद के स्वरो का विशिष्ट उच्चारण जो तालु आदि के ऊपरी भाग से होता है। एक काव्यालकार जिसमे सभाग्य विभूति का वर्णन खूब बढा चढाकर किया जाता है। उदात्त स्वर। दान।
उदान—पुं० [सं०] शरीर मे स्थित पाँच वायुओ मे से वह जिसका स्थान कठ है और जिससे डकार और छीक आती है।
उदाम(पु)—वि० दे० 'उद्दाम'।
उदायन(पु)—पुं० उद्यान, बाग।
उदार—वि० विशाल हृदयवाला। बडा, श्रेष्ठ। दाता। सरल, सीधा। ⊙चरित = वि० ऊँचे चरित्र का, शीलवान्। ⊙चेता = वि० उदार चित्तवाला। ⊙ता = स्त्री० सदाशयता। दानशीलता, फैयाजी।
उदाराशय = वि० उदार आशय का, ऊँचे विचारवाला।
उदारना—(पु)—सक० [अक० उदरना] फाडना। गिराना, ढाना।
उदारिज, उदारिज्ज(पु)—पु० दे० 'औदार्य'।
उदास—वि० [सं०] जिसका चित्त किसी पदार्थ से हट गया हो, विरक्त, निरपेक्ष, तटस्थ। जिसमे उत्साह न हो, खिन्न। दुखी। उदासना(पु)—सक० उजाड़ना, नष्ट करना। बटोरना, समेटना (बिस्तर का)। अक० उदास होना। उदासिल(पु)—वि० उदासीन। उदासी—पुं० [हिं०] विरक्त पुरुष, सन्यासी। नानकपथी साधुओ का एक भेद जो शिखा नही रखता। स्त्री० खिन्नता। दुख। विरक्ति। उदासीन—वि० [सं०] जिसका चित्त हट गया हो। निष्पक्ष, तटस्थ। रूखा, उपेक्षायुक्त।
उदाहरण—पुं० [सं०] दृष्टात, मिसाल। न्याय मे वाक्य के पाँच अवयवो मे से तीसरा, जिसके साथ साध्य का साधर्म्य या वैधर्म्य होता है।
उदाहृत—वि० [सं०] उदाहरण मे दिया हुआ। उदाहरण के साथ वर्णित, कथित।
उदित—वि० [सं०] जो उदय हुआ हो। प्रकट। उज्ज्वल, स्वच्छ। प्रसन्न। कथित। ⊙यौवना = मुग्धा नायिका के सात भेदो मे से एक जिसमे तीन हिस्सा यौवन और एक हिस्सा लड़कपन हो।
उदियान—पुं० दे० 'उद्यान'।
उदियाना—अक० उद्विग्न होना, घबराना।
उदीची—स्त्री० [सं०] उत्तर दिशा। उदीच्य—वि० उत्तर दिशा का रहनेवाला। उत्तर का।
उदीपन—पुं० दे० 'उद्दीपन'।
उदीयमान—वि० [सं०] उदय होता हुआ।
उदीर्ण—वि० [सं०] उठा हुआ, बढा हुआ। कथित। उदित।
उदुबर—पुं० [सं०] गूलर। देहली। नपुसक। एक कोढ।
उदूलहुक्मी—स्त्री० [फा०] आज्ञा का उल्लघन।
उदेग(पु)—पु० उद्वेग, उच्चाट।
उदो(पु), उदौ(पु)—पु० दे० 'उदय'।
उदोत(पु)—वि० प्रकाशित, दीप्त। शुभ्र। उत्तम। ⊙कर(पु) = वि० प्रकाश करनेवाला। चमकानेवाला। उदोती(पु)—वि० उदय करनेवाला, प्रकाश करनेवाला।
उद्दित(पु)—वि० दे० 'उदित'। दे० 'उद्धत'। दे० 'उद्यत'।
उद्दिम(पु)—पु० दे० 'उद्यम'।

उद्दोत(पु)—पु० प्रकाश । उत्पन्न । चमकीला । ⊙**ताई**=स्त्री० प्रकाश ।
उद्ध(पु)—क्रि० वि० दे० 'ऊर्ध्व' ।
उद्धना(पु)—अक० ऊपर उठना । उडना या फैलना ।
उद्धरणी—स्त्री० पढे हुए पाठ को दुहराना ।
उद्धरना(पु)—सक० उद्धार करना, उबारना । अक० बचना । छूटना ।
उद्धारना—सक० उद्धार करना, छुटकारा देना ।
उधड़ना—अक० मिलाई खुलना । पर्त से अलग होना ।
उधम(पु)—पु० दे० 'ऊधम' ।
उधर—क्रि० वि० वहाँ, उस ओर ।
उधरना(पु)—अक० उद्धार पाना । उधडना । सक० उद्धार करना, मुक्त करना । 'उधरौं धरनि असुर कुल भादौ धरि नर तनु अवतारा हौं' (सूर०) ।
उधराना(पु)—अक० हवा से छितराना । 'व्याकुल फिरति भवन वन जहँ तहँ तूल आक उधराई' (सूर०) । मदाध होना ।
उधार—पु० कर्ज, ऋण । मँगनी ।(पु) उद्धार, छुटकारा । **मु०~खाए बैठना**=किसी अवसर के लिये अत्यत उत्सुक रहना । उतारू रहना ।
उधारना(पु)—सक० उद्धार करना ।
उधारी(पु)—वि० उद्धार करनेवाला ।
उधेडना—सक० सिलाई खोलना । मिली हुई पर्त को अलग करना । विखराना ।
उधेडबुन—स्त्री० सोच विचार । चिंता, उलझन ।
उनत(पु)—वि० झुका हुआ ।
उन—सर्व० 'वह' का विभक्ति या कारकचिह्नों के पूर्व प्रयुक्त वहुवचन ।
उनइस†—वि० दे० 'उन्नीस' ।
उनचन—स्त्री० दे० 'अदवान' ।
उनचास—वि चालीस और नौ । पु० ४९ सख्या ।
उनतीस—वि० एक कम तीस । २९ सख्या ।
उनदी(पु)—वि० स्त्री० उनीदी, नीद से भरी ।
उनदौहीं—वि० स्त्री० उनीदी ।
उनमद(पु)—वि० उन्मत्त ।
उनमना—वि० दे० 'अनमना' ।
उनमाथना(पु)—सक० मथना ।
उनमाथी—वि० मथनेवाला ।
उनमाद—पु० दे० 'उन्माद' ।
उनमान(पु)—पु० दे० 'अनुमान' । परिमाण, नाप । सामर्थ्य, योग्यता । वि० तुल्य, समान ।
उनमनना(पु)—सक० अनुमान करना, सोचना ।
उनमुनी(पु)—वि० मौन, चुपचाप । स्त्री० उन्मनी मुद्रा ।
उनमूलना(पु)—सक० उखाडना ।
उनमेख(पु)—पु० आँख का खुलना । खिलना (फूल का) । प्रकाश ।
उनमेद—पु० पहली वर्षा का जहरीला फेन ।
उनयना—अक० दे० 'उनवना' ।
उनरना(पु)—अक० उमडना । उछलते हुए चलना ।
उनवना—अक० झुकना, लटकना, छाना, घिरना । 'उनवत आव सैन सुलतानी' (पदमा०) । ऊपर पडना ।
उनवर—वि० कम, न्यून, तुच्छ ।
उनवान(पु)—पु० अनुमान ।
उनसठ—वि० पचास और नौ । ५९ सख्या ।
उनहार(पु)—वि० सदृश, समान ।
उनहारि(पु)—वि० स्त्री० सादृश्य, समानता ।
उनाना(पु)†—सक० झुकाना । प्रवृत्त करना, लगाना । सुनना, ध्यान देना । आज्ञा मानना ।
उनींदा—वि० नीद से भरा, ऊँघता हुआ ।
उन्नत—वि० [स०] ऊँचा, ऊपर उठा हुआ । समृद्ध, वढा हुआ । श्रेष्ठ, वडा । तरक्की प्राप्त, सभ्य ।
उन्नति—स्त्री [स०] ऊँचाई, चढाव । तरक्की ।
उन्नाव—पु [अ०] हकीमी नुस्खो मे प्रयुक्त एक सूखा बेर । **उन्नावी**—वि० [फा०] उन्नाव के रग का, कालापन लिए हुए लाल ।
उन्नायक—वि० [स] उन्नति करानेवाला ।
उन्नासी—वि० सत्तर और नौ । स्त्री० ७९ सख्या ।
उन्निद्र—वि० [सं०] निद्रारहित । खिला हुआ, विकसित ।

उन्नीस—वि० एक कम बीस। पुं० १६ संख्या। मु०~बिस्वे = अधिकांश, प्राय। ~होना = कुछ कम होना। भला बुरा होना, कुछ अप्रिय घटना। थोडा अंतर होना।

उन्मत्त—वि० [सं०] मतवाला, मदांध। बेसुध। पागल।

उन्मद—वि० [सं०] मतवाला, नशे से युक्त। पागल।

उन्मन—वि० अन्यमनस्क, उदास। खिन्न। उन्मनी—स्त्री० हठयोग की पाँच मुद्राओं में से एक।

उन्माद—पुं० [सं०] पागलपन, विक्षिप्तता। सनक। नशा। संचारी भावों में से एक जिसमें वियोग के कारण चित्त ठिकाने नही रहता। ⊙क = वि० पागल करनेवाला। नशा करनेवाला। उन्मादन—पुं० [सं०] उन्माद करना। कामदेव के पाँच बाणों में से एक। उन्मादी—वि० नशे में चूर। पागल। बेहोश। उन्मत्त कर देनेवाला।

उन्मार्ग—पुं० [सं०] बुरा रास्ता। बुरा आचरण।

उन्मीलना(पु)—सक० खोलना।

उन्मीलित—वि० [सं०] खुला हुआ। विकसित, खिला हुआ। पुं० काव्यालंकार जिसमें दो वस्तुओं के बीच इतना अधिक सादृश्य वर्णित हो कि केवल एक ही बात के कारण उनमें भेद दिखाई पडे।

उन्मुक्त—वि०[सं०] खुला हुआ,छूटा हुआ। उदार। उन्मुक्ति—स्त्री०, मुक्ति, छुटकारा।

उन्मुख—वि० [सं०] ऊपर मुँह किए। उत्सुक, उत्कंठित। तैयार। मुँह किए हुए (किसी ओर), देखते हुए।

उन्मूलना(पु)—सक० उन्मूलन करना।

उन्मूलक—वि० [सं०] उन्मूलन करनेवाला।

उन्मूलन—पुं० [सं०] जड से उखाडना, समूल नष्ट या ध्वस्त करना।

उन्मेष—पुं० [सं०] खोलना (आँख का)। विकास, खिलना। थोडा प्रकाश प्रकट होना।

उन्मोचन—पुं० [सं०] बंधन खोलना। स्वतंत्र करना, प्रतिबंध हटाना।

उन्हानि(पु)—स्त्री० बराबरी, समता।

उन्हारि(पु)—स्त्री० दे० 'उनहारि'।

उपंग—पुं० एक बाजा, नसतरंग। [सं०] उद्धव के पिता।

उपंत(पु)—वि० उत्पन्न, पैदा।

उप—उप० [सं०] शब्दों के पूर्व लगकर यह समीपता (जैसे, उपकंठ, उपकूल), गौणता (जैसे, उपमंत्री), आरंभ (जैसे, उपक्रम) आदि अर्थों को व्यक्त करता है। ⊙कंठ = पुं० सामीप्य, पडोस। गाँव या सीमा के पास का स्थान। क्रि० वि० समीप, पास। ⊙करण = पुं० साधक वस्तु, सामान। छत्र, चँवर आदि राजचिह्न। ⊙करना(पु) = सक० उपकार करनेवाला। ⊙कर्ता = पुं० उपकार करनेवाला। ⊙कल्पना = पुं० आयोजन, तैयारी। ⊙कार = पुं० हितसाधन, भलाई। लाभ, फायदा। ⊙कारक, ⊙कारी = वि० उपकार करनेवाला। ⊙कूल = क्रि० वि० किनारा, तट। तट के पास की भूमि। ⊙कृत = वि० जिसके साथ उपकार किया गया हो। कृतज्ञ, एहसानमंद। ⊙कृति = स्त्री० उपकार, भलाई। ⊙क्रम = पुं० पास जाना। आरंभ, उठान। तैयारी। भूमिका। ⊙क्रमणिका = स्त्री० भूमिका। विषयसूची। ⊙क्रोश = पुं० भर्त्सना, निंदा। ⊙क्षेप = पुं० अभिनय के आरंभ में नाटक के समस्त वृत्तांत का संक्षेप में कथन। आक्षेप। ⊙गत = वि० पास पहुँचा हुआ। ज्ञात। स्वीकृत। ⊙गति = स्त्री० प्राप्ति, स्वीकार। ज्ञान। ⊙गीत, गीति = स्त्री० आर्या छंद का वह भेद जिसके विषम चरणों में १२ और सम में १५ मात्राएँ होती है किंतु विषम गणों में जगण नही रखा जाता और अंत में गुरु रहता है। ⊙गूहन = पुं० आलिंगन, भेंट। ⊙ग्रह = पुं० अप्रधान ग्रह। बडे ग्रह के चारों ओर घूमनेवाला छोटा ग्रह। कैदी। कैद। ⊙घात = पुं० नाश करने की क्रिया। इंद्रियों की असमर्थता। रोग। ⊙चय = पुं० वृद्धि। उन्नति। संचय, जमा करना। ⊙चर्या = स्त्री० सेवा। इलाज।

⊙चार = पुं० चिकित्सा, इलाज। सेवा, तीमारदारी। प्रयोग, व्यवहार। केवल बाह्य रूप का पालन, दिखावटी व्यवहार। पूजन के अंग (प्रधानत सोलह), षोडशोपचार। घूस। ⊙चारना(पु) = सक० व्यवहार मे लाना। विधान करना। 'हेम कलस सिर पर धरि पूरन काम मंत्र उपचारें' (सूर०)। ⊙चारी = वि० इलाज करनेवाला। तीमारदारी करनेवाला। ⊙चित = वि० संचित। बढा हुआ, समृद्ध। ⊙जाति = स्त्री० वे वर्णवृत्त जो इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा तथा इंद्रवंशा और वंशस्थ के मेल से बनते है। किसी जाति का उपभेद। ⊙जीविका = स्त्री० दूसरे के सहारे पर गुजर करना। ⊙दंश = पुं० एक संभोग जन्य सासर्गिक बीमारी, आतशक। ⊙दिशा = स्त्री० दो दिशाओ के बीच की दिशा। ⊙दिष्ट = वि० जिसे उपदेश दिया गया हो। जिसके विषय मे उपदेश दिया गया हो। ⊙देश = पुं० सीख, नसीहत। शिक्षा। सलाह। दीक्षा, गुरुमंत्र। ⊙देशक = वि० उपदेश करनेवाला। ⊙देश्य = वि० उपदेश के योग्य (व्यक्ति)। जिसका उपदेश उचित हो (बात)। ⊙देष्टा = वि० उपदेश देनेवाला, शिक्षक। ⊙देस(पु) = पुं० दे० 'उपदेश'। ⊙देसना(पु) = सक० उपदेश करना। ⊙द्रव = पुं० हलचल, विप्लव। ऊधम। दगा फसाद, गडबड। प्रधान रोग के बीच मे होनेवाला दूसरा विकार। ⊙द्रवी = वि० उपद्रव मचानेवाला। नटखट। ⊙धरना(पु) = सक० अपनाना, शरण मे लेना। ⊙धा = स्त्री० छल, कपट। किसी शब्द के अंतिम अक्षर के पहले का अक्षर (व्या०) उपाधि। ⊙धातु = स्त्री० अप्रधान धातु (काँसा, तूतिया आदि)। ⊙धान = पुं० तकिया। गद्दा। सहारा लेना। ⊙नय = पुं० समीप ले जाना। बालक को गुरु के पास ले जाना। उपनयन संस्कार। ⊙नयन = पुं० पास ले जाना। यज्ञोपवीत संस्कार, जनेऊ। ⊙नागरिका = स्त्री० अलंकार मे वह वृत्ति (वृत्ति अनुप्रास का एक भेद) जो शृंगार, हास्य और करुण रस मे प्रयुक्त होती है और जिसमे ट, ठ, ड, ढ, ड, ढ को छोडकर शेष मधुर वर्ण और सानुनासिक वर्ण प्रयुक्त होते हैं। ⊙नाम = पुं० दूसरा नाम। पुकारने का नाम। लेख आदि मे प्रयुक्त दूसरा नाम, तखल्लुस। ⊙नायक = पुं० नाटक मे प्रधान नायक का साथी या सहकारी। ⊙निधि = स्त्री० धरोहर, अमानत। ⊙नियम = पुं० छोटा नियम, गौण हिदायत। मुख्य नियम का अंग। म्यूनिसिपल बोर्ड आदि के नियम (अँ० बाइ लॉ)। ⊙निविष्ट = वि० दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ। बसा हुआ। कब्जा किया हुआ। ⊙निवेश = पुं० एक स्थान या देश से दूसरे स्थान या देश मे जा बसना। एक देश के लोगो का दूसरे देश पर शासन। ⊙निषद् = पुं० वेदो का वह भाग जिसमे आत्म और अनात्म तत्वो या ब्रह्मविद्या का निरूपण है। ⊙नीत = वि० पास ले जाया गया। जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो। ⊙नेता = पुं० पहुँचानेवाला। उपनयन करानेवाला, आचार्य। न्यास = पुं० काल्पनिक गद्यकथा जिसमे वास्तविक जीवन से मिलते जुलते चरित्रो और कार्यकलापो का विस्तृत और सुसबद्ध चित्रण हो (अँ० नावेल)। रोमांचकारी क्रिया कलापो का ऐसा चित्रण। जासूसी क्रिया कलापो से भरा ऐसा चित्रण। उपक्रम, बंधान। ⊙पति = पुं० पुरुष जिससे दूसरे की स्त्री अनुचित प्रेम करे, जार। ⊙पत्ति = स्त्री० कारण से कार्य का अनुमान। घटित होना। युक्ति, हेतु। सिद्धि, प्राप्ति। ⊙पत्तिसम = पुं० वादी की दलीलो का खंडन किए बिना प्रतिवादी द्वारा विरुद्ध विषय का प्रतिपादन। ⊙पत्नी = स्त्री० पत्नी तुल्य अविवाहित प्रेमिका, रखेली। ⊙पन्न = वि० पास आया हुआ। शरण मे आया हुआ। प्राप्त, लब्ध। युक्त, संपन्न। उपयुक्त, ठीक। ⊙पातक = पुं० छोटा पाप (जैसे, प्रतिज्ञा तोडना, स्वाध्याय आदि न करना आदि)।

⊙पादन = पुं० सिद्ध या साबित करना। उपस्थित करना। समझाना। कार्य को पूरा करना। ⊙पुराण = पुं० १८ मुख्य पुराणो के अतिरिक्त गौण या छोटे पुराण, जैसे—ब्रह्माड, नारदीय, हरिवश, वामन आदि। ⊙बरहन(पु) = पुं० तकिया। ⊙भुक्त = वि० काम मे लाया हुआ या भोगा हुआ। जूठा। ⊙भोक्ता = वि० उपभोग करनेवाला। ⊙भोग = पुं० काम मे लाना, इस्तेमाल। उपयोग का आनद। सुख या विलास की सामग्री। ⊙भोग्य = वि० उपभोग के योग्य। ⊙मत्री = पुं० मत्री के नीचे का या सहायक मत्री। ⊙मर्द, ⊙मर्दन = पुं० बुरी तरह दबाना, रौंदना या पीसना। उपेक्षा और तिरस्कार। ⊙मा = सादृश्य, तुलना। एक अर्थालकार जिसमे जाति, गुण, प्रभाव आदि किसी समानता के आधार पर एक वस्तु दूसरी के समान कही जाय। ⊙माता = वि० उपमा देनेवाला। स्त्री० धाय। ⊙मान = पुं० वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय। ⊙माना (पु) = सक० उपमा देना। ⊙मित = वि० जिसकी उपमा दी गई हो, जो किसी वस्तु के समान बतलाया गया हो। कर्मधारय के अतर्गत एक समास जो दो शब्दो के बीच उपमावाचक शब्द का लोप करने से बनता है, जैसे, पुरुषसिह। ⊙मिति = स्त्री० उपमा या सादृश्य से होनेवाला ज्ञान। ⊙मेय = वि० जिसकी उपमा दी जाय, जिस वस्तु को किसी दूसरे के समान कहा जाय, वर्ण्य। ⊙मेयोपमा = स्त्री० वह उपमा अलकार जिसमे उपमेय की उपमा उपमान हो और उपमान की उपमेय। ⊙युक्त = वि० ठीक, मुनासिब, योग्य। ⊙योग = पुं० व्यवहार, इस्तेमाल, प्रयोग। फायदा, लाभ। प्रयोजन, आवश्यकता। ⊙योगिता = स्त्री० उपयोगी होना काम मे आने की योग्यता। ⊙योगितावाद = पुं० वह सिद्धात जिसमे क्रिया का औचित्य उसका लाभप्रद होना ही है। नीति जिसमे लोकव्यवहार का एकमात्र मापदड अधिकाधिक जीवो का अधिकाधिक हितसाधन है। ⊙योगी = वि० काम मे आनेवाला। लाभकारी। अनुकूल, माफिक। ⊙रत = वि० विरक्त, उदासीन। मरा हुआ। ⊙रति = स्त्री० विषयो से विराग। उदासीनता। मृत्यु। ⊙रत्न = पुं० घटिया रत्न (जैसे शख, शुक्ति आदि)। ⊙रस = पुं० पारे के समान गुण करनेवाले पदार्थ, जैसे, गधक, हिंगुल, अभ्रक आदि। ⊙राग = पुं० रग। निकट की वस्तु के प्रभाव से किसी वस्तु का अपने वास्तविक रूप से भिन्न रूप मे दिखाई पडना, उपाधि। विषय मे अनुरक्ति। चद्र या सूर्य का ग्रहण। ⊙राम = पुं० आराम, विश्राम। छुटकारा। त्याग, उदासीनता। ⊙राज = पुं० राजप्रतिनिधि वाइसराय। गवर्नर-जनरल। ⊙राष्ट्रपति = पुं० राष्ट्रपति की अनुपस्थिति मे उसके अधिकार बरत सकनेवाला राष्ट्र का द्वितीय अधिकारी। ⊙रूपक = पुं० रूपक के १८ उपभेद (नाटिका, त्रोटक, गोष्ठी, सट्टक, नाट्यरासक, प्रस्थान, उल्लाप्य, काव्य, प्रेखण, रासक, सलापक, श्रीगदित, शिल्पक, विलासिका, दुर्मल्लिका, प्रकरणिका, हल्लीश और भाणिका)। ⊙रोध = पुं० अटकाव, रुकावट। आच्छादन। पर्दा, ओट। ⊙रोधक = पुं० रोकने या बाधा डालनेवाला। भीतर की कोठरी। ⊙लक्षक = वि० अनुमान करने या ताडनेवाला। सकेत करनेवाला, बोधक। पुं० वह शब्द जो उपादान लक्षणा से अपने वाच्यार्थ द्वारा निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्राय उसी कोटि की और वस्तुओ का भी बोध करावे। ⊙लक्षण = पुं० सकेत, पहचान। शब्द की वह शक्ति जिससे उसके अर्थ से निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्राय उसी कोटि की और वस्तुओं का भी बोध होता है। ⊙लक्ष्य = पुं० सकेत या अनुमान करने योग्य। संकेत,

चिह्न। उद्देश्य, निमित्त। ⊙लक्ष्य में = अवसर पर या सिलसिले मे। ⊙लब्ध = ३० पाया हुआ। जाना हुआ। ⊙लब्धि = स्त्री० प्राप्ति। लाभ। बुद्धि, ज्ञान। प्राप्त सफलता। ⊙लेपन = पुं० लेप लगाना। लीपना ⊙वन = पुं० बाग, फुलवारी। कुंज। छोटा जगल। ⊙वसथ = गाँव, वस्ती। यज्ञ करने के पहले का दिन जिसमे व्रत आदि करने का विधान है। ⊙वाक्य = पुं० वडे वाक्य मे रहनेवाला वह गौण वाक्य जिसमे एक आख्यात क्रिया हो। ⊙वास = पुं० भोजन का छूटना, फाका। व्रत जिसमे भोजन छोड दिया जाता है। ⊙वासी = वि० उपवास करनेवाला। ⊙विष = पुं० हलका विष (अफीम, धतूरा आदि) ⊙विष्ट = वि० वैठा हुआ। ⊙वीत = पुं० जनेऊ, यज्ञोपवीत। उपनयन सस्कार। ⊙वेद = पुं० वेदो से विकसित चार विद्याएँ——आयुर्वेद, धनुर्वेद, गाधर्ववेद, स्थापत्यवेद (शास्त्र)। ⊙वेशन = पुं० वैठना। वैठक (सभा, समिति आदि की)। ⊙शम = पुं० इंद्रियनिग्रह। निवृत्ति। शाति। निवारण का उपाय, इलाज। तरकीब। ⊙शमन = पुं० निरोध। शात रखना। निवारण, उपचार। तरकीव। ⊙शिष्य = पुं० शिष्य का शिष्य। ⊙संपादक = पुं० सहायक सपादक की अनुपस्थिति मे उसका कार्य करनेवाला व्यक्ति। ⊙सहार = पुं० समाप्ति, खात्मा। निराकरण। पुस्तक का अतिम अध्याय। पुस्तक या लेख के अत मे दिया जानेवाला साराश। ⊙समिति = स्त्री० प्रासगिक विषयो के लिये चुनी हुई छोटी समिति। ⊙सर्ग = पुं० शब्द या अव्यय जो किसी शब्द के पहले लगाकर उसमे किसी अर्थ की विशेषता उत्पन्न करता है (जैसे, प्र, अव, उप आदि)। अपशकुन। दैवी उत्पात। मृत्यु का लक्षण। एक रोग के बीच मे उत्पन्न दूसरा गौण रोग। ⊙सागर = पुं० छोटा समुद्र, खाड़ी। ⊙सेचन = पुं० सींचना, भिगोना या छिडकना। गीली चीज, रसा। ⊙स्करण = पुं० आभूषण। सजावट। सजाना। आभूषण पहनाना। ⊙स्कार = पुं० शोभा वढ़ानेवाली वस्तु। सजावट का साधन। ⊙स्कृत = वि० सजाया हुआ। तैयार किया हुआ। इकट्ठा। ⊙स्थ = पुं० नीचे या मध्य का भाग। पेड़। गुदा। पुरुष या स्त्री की जननेंद्रिय। गोद। वि० निकट वैठा हुआ। ⊙स्थान = ० निकट या सामने आना। अभ्यर्थ ना या पूजा के लिये निकट आना। खड होकर स्तुति करना। पूजा का स्थान। सभा। ⊙स्थापक = वि० उपस्थित करनेवाला, सामने रखनेवाला। ⊙स्थापन = पुं० उपस्थित या पेश करना। प्रस्ताव रखना। ⊙स्थित = वि० मौजूद, हाजिर। समीप या पास आया हुआ। ध्यान मे आया हुआ। ⊙स्थिति = मौजूदगी, हाजिरी। ⊙हत = वि० मारा या नष्ट किया हुआ। पीड़ित, चोट खाया हुआ। दुखित। ⊙हसित = वि० जिसकी हँसी की गई हो। नाक फुलाकर, आँखे टेढी करके और गर्दन हिलाकर हँसना (हास के छह भेदो मे से चौथा)। ⊙हार = पुं० भेट नजर। शैवो की उपासना के छह नियम——हसित, गीत, नृत्य, डुडुक्कार, नमस्कार और जप। ⊙हास = पुं० हँसी। दिल्लगी। निंदा। ⊙हासास्पद = वि० हँसी के योग्य। निंदनीय। ⊙हासी = स्त्री० [हिं०] हँसी, ठट्ठा। ⊙हास्य = वि० उपहास के योग्य। ⊙हृत = वि० पास लाया हुआ। भेंट दिया हुआ। लिया हुआ। इकट्ठा किया हुआ।

उपखान (पु)——पुं० दे० 'उपाख्यान'।

उपज——स्त्री० उत्पत्ति, पैदावार। उद्भावना, सूझ। मनगढत वात। सुदरता के लिये राग मे वँधी हुई तानो के सिवाय कुछ तान अपनी ओर से मिला देना।

उपजना——अक० उगना, पैदा होना।

उपजाना——सक० [अक० उपजना] उगाना, पैदा करना।

उपजाऊ—वि० जिसमे अच्छी उपज हो, जरखेज ।
उपटन– पु० दे० 'उवटन'। आघात या दाव आदि से पडा निशान ।
उपटना—अक० आघात या दाव आदि से निशान पडना ।
उपटाना(पु)—सक० [अक० उपट] उवटन लगवाना। उखडवाना । उखाडना । 'द्विरद को दत उपटाय तुम लेत हो ' (सूर०) ।
उपटारना(पु)—सक० उच्चाटन करना, हटाना। 'मधुवन से उपटारि श्याम को यहि व्रज लै करि आव' (सूर०) ।
उपड़ना—अक० उपटना, निशान पडना । उखडना ।
उपत्यका—स्त्री० [स०] पहाड के पास की भूमि, तराई ।
उपनना(पु)—अक० पैदा होना । 'तन तन विरह न उपनै सोई' (पदमा०) ।
उपना(पु)—अक० उडना, लुप्त होना । 'देखत वुरै कपूर ज्यो उपै जाइ जिन लाल (विहारी ८९) ।
उपनाना(पु)—सक० पैदा करना ।
उपरना—पु० दुपट्टा, चद्दर ।
उपरफट(पु)—वि० इधर उधर का। निष्प्रयोजन ।
उपरांत—क्रि० वि० [स०] अनतर, वाद ।
उपराना†—अक० ऊपर आना, उठना। प्रकट होना। सक० ऊपर करना, उठाना।
उपराचढी—स्त्री० एक ही वात के लिये कई आदमियो का प्रयत्न प्रतिद्वद्विता ।
उपराजना(पु)†—सक० उत्पन्न करना । रचना, वनाना। 'सोई होइ जो विधि उपराजा' (पदमा०)। कमाना ।
उपराला†—पु० पक्षग्रहण, सहायता ।
उपरावटा(पु)—वि० जो गर्व से सिर ऊँचा किए हो। 'कहा चलत उपरावटे अजहूँ खिसी न वात' (सूर०) ।
उपराहना(पु)—सक० प्रशसा करना। ' • फल अमृत भा सब उपराही' (पदमा०)।
उपराही(पु)—क्रि० वि० ऊपर। वि० वढकर, श्रेष्ठ ।
उपरि—क्रि० वि० [सं०] ऊपर। ⊙**कथित**= वि० ऊपर या पहले कहा हुआ ⊙**लिखित** = वि० ऊपर या पहले लिखा हुआ ।
उपरी उपरा—पुं० दे० उपराचढी, स्पर्धा।
उपरैना(पु)—पुं० दे० 'उपरना'। **उपरैनी**—स्त्री० ओढनी ।
उपरोक्त—वि० दे० 'उपर्युक्त' ।
उपरौटा—पु० ऊपर का पल्ला ।
उपर्युक्त—वि० [स०] ऊपर कहा हुआ। पहले कहा हुआ ।
उपल—पुं० [स०] ओला । पत्थर । रत्न। मेघ, वादल ।
उपला—पुं० गोवर का सुखाया हुआ टुकडा, कडा, गोहरी ।
उपल्ला—पुं० ऊपर का भाग, पर्त या तह।
उपसना—अक० दुर्गंधित होना । सडना ।
उपसाना—सक० [अक० उपसना] वासी करना, सडाना ।
उपही(पु)†—पुं० अपरिचित व्यक्ति, वाहरी आदमी ।
उपांग—पुं० [सं०] अग का भाग, छोटा अवयव । उपविभाग । तिलक, टीका ।
उपांत—पुं० [सं०] अत के समीप का भाग। आसपास का हिस्सा । अत से पहले का भाग । **उपांत्य**—वि० उपात का ।
उपाउ(पु)—पुं० दे० 'उपाय' ।
उपाकर्म—पुं० [स०] विधिपूर्वक वेदो का अध्ययन करना, स्वाध्याय । यज्ञोपवीत सस्कार ।
उपाख्यान—पुं० [सं०] पुरानी कथा या वृत्तात । कथा मे आनेवाली कोई और सवद्ध कथा, अंतर्कथा । वृत्तात, हाल ।
उपाटना(पु)—सक० [अक० उपटना] उत्पादन करना, उखाडना।
उपाडना—सक० दे० 'उपाटना' ।
उपाती(पु)—स्त्री० दे० 'उत्पत्ति'।
उपादान—पुं० कारण जो कार्यरूप में परिणत हो, जैसे मिट्टी और घडा । ग्रहण, स्वीकार । ज्ञान । अपने अपने विषयो से इद्रियो की निवृत्ति ।
उपादि(पु)—स्त्री० दे० 'उपाधि' ।
उपादेय—वि० [सं०] काम का । लाभप्रद । लेने योग्य । श्रेष्ठ ।

उपाधि—स्त्री० एक वस्तु को दूसरी बताने का छल। वह जिसके सयोग से कोई वस्तु और या विशेष दिखाई दे। उपद्रव। कर्तव्यचिंतन। प्रतिष्ठासूचक पद, खिताब।
उपाध्याय—पुं०[सं०] वेद-वेदाग का पढ़ानेवाला, आचार्य। शिक्षक, अध्यापक। ब्राह्मणो की एक उपजाति। **उपाध्याया**—स्त्री० अध्यापिका। **उपाध्यायानी**—स्त्री० उपाध्याय की स्त्री, गुरुपत्नी। **उपाध्यायी**—स्त्री० गुरुपत्नी, अध्यापिका।
उपानह—पुं० जूता।
उपाना(पु)—सक० उत्पन्न करना। करना। 'तबहि स्याम इक युक्ति उपाई' (सूर०)।
उपाय—पुं० [स०] वह जिससे अभीष्ट तक पहुँचें, तरकीब। शत्रु पर विजय पाने की चार युक्तियाँ—साम, दाम, दड, भेद। इलाज, उपचार। प्रयत्न।
उपायन—पुं० [स०] भेंट, सौगात।
उपारना†—सक० दे० 'उपाटना'।
उपार्जन—पुं० [स०] परिश्रम करके प्राप्त करना, कमाना, लाभ करना। बटोरना।
उपार्जित—पुं० [सं०] उपार्जन किया हुआ।
उपालभ—पुं० [सं०] उलाहना। शिकायत। ताना, व्यग्य।
उपालंभन—पुं० [सं०] उपालभ देना।
उपाव(पु)—पुं० दे० 'उपाय'।
उपाश्रित—वि० [सं०] किसी के सहारे पर रहनेवाला। टिका हुआ। झुका हुआ।
उपास(पु)†—पुं० दे० 'उपवास'। **उपासना** (पु)—सक० उपासना करना। अक० उपवास करना। भूखा रहना।
उपासक—वि० [सं०] उपासना करनेवाला। बहुत मानने या चाहनेवाला। श्रद्धा रखनेवाला।
उपासना—स्त्री० [स०] आराधना। पूजा। सेवा, टहल। पास बैठने की क्रिया।
उपासनीय—वि० [सं०] उपासना करने योग्य।
उपासी(पु)—वि० दे० 'उपासक'।
उपास्य—वि० [सं०] उपासना के योग्य।
उपेंद्र—पुं० [सं०] इद्र के छोटे भाई, विष्णु (वामन अवतार मे)। ⊙**वज्रा**=स्त्री० ११ वर्णो का आदि ह्रस्ववाला वह छद जिसमे शेष १० वर्ण इद्रवज्रा के समान होते है अर्थात् क्रम से जगण, तगण, जगण और अत मे दो गुरु रहते है।
उपेक्षण—पुं० [सं०] उपेक्षा करना।
उपेक्षा—स्त्री० [सं०] उदासीनता, लापरवाही। तिरस्कार, घृणा। परित्याग।
उपेक्षित—वि० [सं०] जिसकी उपेक्षा की गई हो।
उपेक्ष्य—वि० [स०] उपेक्षा के योग्य।
उपेत—वि० [स०] पास आया हुआ। प्राप्त। साथ लिए हुए, युक्त।
उपैनो(पु)—वि० खुला हुआ, नगा।
उपोद्घात—पुं० [सं०] उद्घाटन। प्रस्तावना, भूमिका।
उफ—अव्य० [अ०] कष्ट, पीडा, विषाद आदि प्रकट करनेवाला शब्द।
उफड़ना(पु)—अक० दे० 'उफनना।
उफनना—अक० उबलना, (तरल पदार्थ का) गरमी से ऊपर उठना। **उफनाना** (पु)†—अक० दे० 'उफनना'।
उफान—पुं० उबाल, (तरल पदार्थ का) गरमी से ऊपर उठना।
उबकना—अक० उलटी या वमन करना।
उबकाई(पु)†—स्त्री० मिचली, कै।
उबट(पु)—पुं० बुरा रास्ता, विकट मार्ग। वि० ऊबड खाबड, ऊँचा नीचा।
उबटन—पु० शरीर पर मलने के लिये सरसो, तिल और चिरौजी आदि का लेप, अभ्यग। **उबटना**—सक० उबटन लगाना, मलना। 'जननि उबटि अन्हवाइ कै अति क्रम सो लीन्हो गोद' (सूर०)।
उबरना—अक० उद्धार पाना, छूटना। बाकी रहना, शेष रहना।
उबलना—अक० खौलना, उफनना। वेग से निकलना। मु०—**उबल पड़ना**=क्रोध मे अडबड बकना।
उबहना(पु)—सक० हथियार खीचना, शस्त्र उठाना। पानी फेंकना, उलीचना। जोतना। अक० ऊपर की ओर उठना, उभरना। वि० बिना जूते का, नगा।
उबांत(पु)—स्त्री० उलटी, वमन।

उबार—पुं० उद्धार, छुटकारा। रक्षा। उबारना—सक० [अक० उबरना] उद्धार करना, छुड़ाना। रक्षा करना।
उबाल—पुं० उफान, जोश। उद्वेग, क्षोभ।
उबालना—सक०[अक०उबलना] खौलाना। पकाना, राँधना।
उबासी†—स्त्री० जँभाई।
उबाहना (पु)—सक० दे० 'उबहना'।
उबीठना (पु)—अक० जी भर जाने से अच्छा न लगना, ऊबना।
उबीधना (पु)—अक० फँसना, उलझना। गड़ना, धँसना।
उबेनो (पु)†—वि० बिना जूते का, नंगा।
उबेरना (पु)—सक० दे० 'उबारना'।
उभना (पु)—अक० उठना। उभड़ना।
उबेहना—सक० जड़ना, बैठाना। पिरोना। कील, काँटे गाड़ना।
उभड़ना—अक० दे० 'उभरना'।
उभय—वि०[सं०] दोनों। ⊙तः = क्रि०वि० दोनों तरफ। दोनों प्रकार से। दोनों दशाओं में। ⊙निष्ठ = वि० दोनों में निष्ठा रखनेवाला। दोनों में सम्मिलित। ⊙विपुला = स्त्री० आर्या छंद का एक भेद। उभयतोमुख = वि० दोनों ओर मुँहवाला, दोरुखा।
उभरना—अक० सतह से ऊपर उठना, उकसना। अंकुरित होना। उत्पन्न या प्रकट होना (दर्द आदि का)। खुलना (जैसे, बात का)। प्रबल होना। शक्ति या प्रताप पर होना। हटना। जवानी पर आना। कामोत्तेजित होना (पशु का)।
उभरौंहा (पु)—वि० उभार पर आया हुआ। उमड़ता हुआ।
उभाड़—पुं० उठान, ऊँचाई। ओज, वृद्धि। उभाड़ना—सक० दे० 'उभारना'।
उभाना (पु)—अक० सिर हिलाना और हाथ पैर पटकना (भूत आदि के आवेश में)।
उभार—पुं० दे० 'उभाड़'। उभारना—सक० ऊपर उठाना या निकालना। उत्तेजित करना, भड़काना। दबी बात खोलना।
उभिटना—अक० ठिठकना, हिचकना।
उमै (पु)—वि० दे० 'उभय'।
उमंग—स्त्री० मन का आनंदयुक्त वेग, उत्साह, तरंग। उल्लास। उभाड़, अधिकता।
उमँगना (पु)—अक० दे० 'उमगना'।
उमडना (पु)—अक० दे० 'उमहना'।
उमग (पु)—स्त्री० दे० 'उमंग'।
उमगना—अक० उमड़ना, भरकर ऊपर उठना। उल्लास या जोश में होना।
उमचना (पु)—अक० तलवों से अधिक दाब पहुँचाने के लिये कूदना, हुमचना। चौंक पड़ना। '··उमचि जात तबहीं सब सकुचति बहुरि मगन ह्वै जाति' (सूर०)।
उमड़—स्त्री० भराव, बढ़ाव। घिराव। धावा। उमड़ना—अक० भरकर ऊपर आना, भरकर बहना। घिरना, फैलना (बादल का)। आवेश में भरना, क्षुब्ध होना।
उमदना, उमदाना (पु)—अक० मस्त होना। उमड़ना।
उमर—स्त्री० दे० 'उम्र'।
उमरती—स्त्री० एक बाजा।
उमरा—पुं० [अ० अमीर का बहु०] प्रतिष्ठित लोग। रईस, सरदार सामंत।
उमराव—पुं० दे० 'उमरा'।
उमस—स्त्री० हवा न चलने से प्रतीत होनेवाली गरमी। उमसना—अक० उमस होना।
उमहना (पु)—अक० दे० 'उमड़ना'।
उमा—स्त्री० [सं०] शिव की पत्नी, पार्वती। दुर्गा। २२ अक्षरों का छंद जिसमें एक के बाद दूसरे के क्रम से ७ भगण और अंत में १ गुरु होता है, मालिनी सवैया। ⊙धव = पुं० पार्वती के पति, शिव। ⊙पति = शिव।
उमाकना (पु)—सक० उखाड़ देना, नष्ट करना।
उमाचना (पु)†—सक० उभाड़ना, ऊपर उठाना। निकालना। झकझोरना।
उमाद (पु)—पुं० दे० 'उन्माद'।
उमाह—पुं० उमंग, जोश। उमाहना—अक० उमगना। उमंग में आना। सक०

उमडने मे प्रवृत्त करना, वेग से बढाना ।
उमाहल(पु)—वि० उमग से भरा हुआ ।
उमेठन—स्त्री० मरोड, बल । **उमेठना**—सक० ऐंठना, मरोड़ना । **उमेठवाँ**—वि० ऐंठनदार, घुमावदार ।
उमेडना(पु)सक० दे० 'उमेठना' ।
उमेलना(पु)—सक० खोलना, उजाडना । वर्णन करना ।
उम्दगी—स्त्री० [फा०] अच्छाई, खूबी ।
उम्दा—पुं० [फा०] अच्छा, उत्तम ।
उम्मत—स्त्री० [अ०] किसी मत के अनुयायियो की मडली । समाज, फिरका । सतान (विनोद मे) । पैरोकार ।
उम्मीद, उम्मेद—स्त्री० [फा०] आशा, भरोसा, आसरा । ⊙**वार**= पुं० आशा या आसरा रखनेवाला । काम पाने की आशा मे विना वेतन के काम करनेवाला आदमी । नौकरी या पद का अभिलाषी प्रार्थी, अभ्यर्थी । चुनाव के लिये खडा होनेवाला आदमी ।
उम्र—पुं० [अ०] अवस्था, वयस । जीवन-काल ।
उर—पुं० वक्षस्थल, छाती । हृदय, मन । ⊙**ग**= पुं० [सं०] साँप । **उरगारि**—पुं० [सं०] साँपो के शत्रु, गरुण । **उरगिनी**(पु)—स्त्री० सर्पिणी ।
उरकना(पु)—अक० रुकना, ठहना । 'राघव-चेतन चेतन महा । आइ उरकि राजा पहँ रहा' (पदमा०) ।
उरगना—सक० स्वीकार करना ।
उरज(पु), **उरजात**(पु)—पुं० कुच, स्तन ।
उरझना—अक० दे० 'उलझना' ।
उरझेर(पु)—पुं० हवा का झोका ।
उरद—पुं०, स्त्री० एक पौधा जिसकी फलियो के दाने की दाल होती है, उडद, माष ।
उरध(पु)—क्रि० वि० दे० 'ऊर्ध्व' ।
उरधारना(पु)—सक० बिखराना । 'उरधारी लटैं छूटी आनन पर··'(सूर०) ।
उरबसी—स्त्री० दे० 'उर्वशी' ।
उरबिजा—स्त्री० पृथ्वी की पुत्री सीता ,
उरबी(पु)—स्त्री० दे० 'उर्वी' ।
उरमना(पु)†—अक० लटकना । **उरमाना** (पु)†—सक० [अक० उरमना] लटकाना ।
उरमी(पु)—स्त्री० लहर पीडा, दुःख ।
उरला—वि० पीछे का । विरल, निराला ।
उरविज(पु)—पुं० भौम, मगल ग्रह ।
उरस—वि० फीका, नीरस । पुं० छाती । हृदय ।
उरसना—सक० हिलाना, ऊपर नीचे करना । 'स्वास उदर उरसति यो मानो दुग्ध सिंधु छवि पावै' (सूर०) ।
उरसिज—पु० [सं०] स्तन ।
उरहनो—पुं० उलाहना, शिकायत ।
उरा(पु)—स्त्री० पृथ्वी ।
उराउ(पु)—पुं० दे० 'उराव' ।
उरारो(पु)—वि० विस्तृत, वशाल ।
उराव(पु)—पुं० चाह, उमगि ।
उराहनो†—पुं० दे० 'उलाहना' ।
उरिण, उरिन—वि० दे० 'उऋण' ।
उरु—वि० [स०] लवा चौडा । बडा । पुं० जघा, जाँघ ।
उरुजना पुं०—अक० दे० 'उलझना' ।
उरुवा(पु)—पुं० उल्लू की जाति का एक पक्षी ।
उरूज—पुं० [अ०] बढती, उन्नति ।
उरे†—क्रि० वि० यहाँ इस तरफ । पास, नजदीक ।
उरेखना(पु)—सक० दे० 'अवरेखना' । दे० 'उरेहना' ।
उरेहना—सक० लिखना, चित्र बनाना, रचना । 'अस मूरति के देव उरेही', (पदमा०) । रँगना लगाना (अजन का) ।
उरोज—पुं० [सं०] स्तन, कुच ।
उर्द—पुं०, स्त्री० दे० 'उरद' ।
उर्दू—स्त्री० [तु०] अरबी, फारसी से अधिक प्रभावित हिंदी का एक रूप । हिंदुस्तानी । ⊙**बाजार**= पुं० लश्कर या छावनी का बाजार । वह बाजार जहाँ सब चीजे मिलें ।
उर्ध(पु)—वि० ऊर्ध्व, ऊपर । बाद ।
उर्फ—पुं० [अ०] दे० 'उपनाम' ।
उर्मि(पु)—स्त्री० दे० 'ऊर्मि' ।
उर्वरा—स्त्री० [सं०] उपजाऊ भूमि । भूमि । वि० उपजाऊ ।
उर्विजा(पु)—स्त्री० दे० 'उर्वीजा' ।

उर्वी—स्त्री॰ [सं॰] पृथ्वी। ⊙जा = स्त्री॰ पृथ्वी से उत्पन्न, सीता। ⊙धर = पुं॰ शेषनाग। पर्वत।

उर्स—पुं॰ [अ॰] मुसलमानो मे महात्मा, पीर आदि के मरने के दिन का कृत्य। मुसलमान साधुओ की निर्वाण तिथि।

उलघन(पु)—पुं॰ दे॰ 'उल्लघन'।

उलघन, उलघना(पु)—सक॰ लाँघना, फाँदना। न मानना; अवहेलना करना।

उलका—स्त्री॰ दे॰ 'उल्का'।

उलचना(पु)—सक॰ दे॰ 'उलीचना'।

उलछना(पु)†—सक॰ हाथ से छितराना, बिखराना। उलीचना।

उलछारना(पु)—सक॰ दे॰ 'उछालना'।

उलझन—स्त्री॰ अटकाव, फँसाव। गिरह। लपेट। बाधा। समस्या, पसोपेश। चिंता। **उलझना**—अक॰ फँसना, अटकना। लपेट मे पडना, गुथ जाना। लिपटना। व्यस्त होना, लगना। प्रेम करना, आसक्त होना। विवाद करना। कठिनाई मे पडना। रुकना। टेढा होना। **उलझाना**—सक॰ [अक॰ उलझना] फँसाना, अटकाना। लगाए रखना, लिप्त रखना। मोडना, टेढा करना। (पु)अक॰ उलझना, फँसना। **उलझाव**—पुं॰ अटकाव, फँसाव। झगडा, झझट। चक्कर, फेर।

उलझौंहाँ—वि॰ अटकाने या फँसनेवाला। लुभानेवाला।

उलट—स्त्री॰ 'उलटना' क्रिया का के॰ समा॰ मे प्रयुक्त रूप। ⊙पलट, (पु)पुलट = स्त्री॰ अव्यवस्था, गडबडी। परिवर्तन। ⊙फेर = पुं॰ परिवर्तन, हेर फेर। जीवन की भलीबुरी दशा। ⊙बाँसी = स्त्री॰ सीधी न कही जाकर घुमा-फिराकर या उलटकर कही हुई बात।

उलटना—अक॰ ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर होना, औंधा होना। पीछे मुडना, लौटना। बहुत सख्या मे आ जाना, उमडना। अडबड होना। विपरीत होना। क्रुद्धहोना, चिढना। नष्ट होना। बेहोश होना। घमड करना। मोटा या पुष्ट होना। वचन भग करना। सक॰ औंधा करना। गिरा देना, पटकना। समेटकर ऊपर चढाना (परदा आदि)। अडबड करना। और का और करना। उत्तर प्रत्युत्तर करना। खोदना, उखाड़ डालना। बेहोश करना। कै करना। नष्ट करना। रटना, बार बार कहना।

उलटा—वि॰ ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर, औंधा। क्रमविरुद्ध, इधर का उधर। विपरीत, खिलाफ। अडबड, अयुक्त। क्रि॰ वि॰ बेठिकाने, ठीक रीति मे नही। न्याय के विरुद्ध। पुं॰ बेसन से बननेवाला एक पकवान। ⊙जमाना = उलटी रीति नीति का समय। ⊙पलटा, ⊙पुलटा = वि॰ बेतरतीब, अडबड। ⊙पलटी = स्त्री॰ फेर फार, अदल, बदल। ⊙सीधा = अडबड, बिना क्रम का। मु॰—**उलटी खोपड़ी का** = मूर्ख, उलटी बुद्धिवाला। **उलटी गंगा बहाना** = अनहोनी बात कहना। **उलटी माला फेरना** = अहित चाहना। **उलटी साँस चलना** = दम उखडना (मरने का लक्षण) **उलटे छुरे से मूँड़ना** = बेवकूफ बनाकर लूटना। **उलटे पाँव फिरना** = तुरत लौट जाना। **उलटे हाथ का दाँव** = बहुत ही सहज काम। **उलटे मुँह गिरना** = दूसरे को नुकसान पहुँचाने के प्रयत्न मे स्वय नुकसान उठाना। **उलटाना**—सक॰ उलटा करना। लौटाना। और का और करना या कहना। दूसरे पक्ष मे करना। **उलटाव**—पुं॰ पलटाव, फेर। घमाव, चक्कर। **उलटी**—स्त्री॰ वमन, कै। कलाबाजी (एक कसरत)। वि॰ स्त्री॰ विपरीत, विरुद्ध। **उलटे**—क्रि॰ वि॰ विरुद्ध क्रम से, और ढग से। न्याय या औचित्य के विपरीत।

उलथना(पु)—अक॰ उथल पुथल होना, उलटना। 'लहरें उठी समुँद उलथाना' (पदमा॰)। सक॰ उलट फेर करना।

उलथा—पुं॰ अनुवाद, भाषातर। एक प्रकार का नृत्य। कलाबाजी। करवट बदलना (चौपायो के लिये)।

उलद(पु)—स्त्री॰ वर्षा की झडी।

उलदना(पु)—सक॰ उँडेलना, बरसना।

उलफत—स्त्री॰ प्रेम, मुहब्बत।

उलमना(प)†—अक० लटकना, झुकना।
उलरना(प)—अक० उछलना। नीचे ऊपर होना। झपटना। पीछे की ओर झुकना।
उललना(प)—अक० लुढकना, ढलना। पलटना।
उलसना(प)—अक० शोभित होना।
उलहना(प)†—अक० खिलना, निकलना। हुलसना, फूलना।
उलाँघना†—सक० लाँघना, फाँदना। न मानना।
उलार—वि० पीछे की ओर बोझ से भारी या झुका हुआ।
उलारना†—सक० उछालना। नीचे ऊपर फेंकना। पीछे की ओर झुकाना।
उलाहना—पु० अनुचित बात के लिये व्यक्त क्षोभ या असतोष, उपालभ। शिकायत।
उलीचना—सक० पानी उठाकर फेंकना।
उलूक पुं० [सं०] उल्लू पक्षी। कणाद मुनि। पुं० [हिं०] लूक, लौ। ⊙**दर्शन** = पुं० [सं०] महर्षि कणाद का वैशेषिक दर्शन।
उलूखल—पुं० [सं०] ओखली। खरल। गुग्गुल।
उलेंड़ना(प)—सक० उँडेलना।
उलेल(प)—जोश, तेजी। बाढ़। **वि०** बेपरवाह, अल्हड।
उल्का—स्त्री० [सं०] लुक, लुआठी। आकाश से टूटकर गिरनेवाला चमकीला पिंड, टूटता तारा। प्रकाश, तेज। मशाल। चिराग। ⊙**पात** = पुं० तारा टूटना, लुक गिरना। उत्पात, विघ्न। ⊙**पाती** = वि० उत्पाती, विघ्नकारी। ⊙**मुख** = पुं० एक प्रेत जिसके मुँह से प्रकाश या आग निकलती है। अगिया वैताल। महादेव।
उल्था—पुं० भाषातर, अनुवाद, तर्जुमा।
उल्लंघन—पुं० [सं०] लाँघना, डाँकना। अतिक्रमण। न मानना, विरुद्ध आचरण।
उल्लंघना(प)—सक० दे० 'उलघना'।
उल्लसन—पुं० [सं०] हर्ष करना। रोमाच।
उल्लसित—वि० [सं०] उल्लासयुक्त, खुश।
उल्लाप्य—पुं० [सं०] उपरूपक के १८ भेदो से एक।
उल्लाल—दे० एक मात्रिक अर्द्धसम छद जिसके पहले और तीसरे चरण मे पंद्रह पद्रह मात्राएँ और सम मे १३ मात्राए होती हैं।
उल्लाला—पुं० १३ मात्राओ का एक छद, चद्रमणि।
उल्लास—पुं० [सं०] हर्ष, आनद। प्रकाश, चमक। ग्रथ का एक भाग, परिच्छेद। एक अलकार जिसमे एक के गुण या दोष से दूसरे मे गुण या दोष का होना दिखलाया जाता है। **उल्लासना**(प)—सक० प्रकट या प्रकाशित करना। **उल्लासी**—वि० आनदी, सुखी।
उल्लिखित—वि० [सं०] लिखा हुआ। खोदा हुआ, उत्कीर्ण। ऊपर या पहले लिखा हुआ। छीला या खरादा हुआ। खीचा, हुआ, चित्रित।
उल्लू—पुं० गोल चमकदार आँखोवाला और दिन मे न देखनेवाला एक पक्षी, घुग्घू। **मु०**~**बनाना** = बेवकूफ बनाना। ठगना। ~**बोलना** = उजडना। ~**सीधा करना** = स्वार्थ सिद्ध करना।
उल्लेख—पुं० [सं०] लिखना। वर्णन, जिक्र चर्चा। चित्र। निर्देश, हवाला। काव्यालकार जिसमे एक ही वस्तु का अनेक रूपो मे वर्णन किया जाय। **उल्लेखन**—पुं० उल्लेख करना।
उल्लेखनीय—वि० उल्लेख के योग्य।
उल्व—पुं० [सं०] झिल्ली जिसमे लिपटा हुआ बच्चा पैदा होता है, आँवल। गर्भाशय।
उवना(प)—अक० उदय होना, उगना।
उवनि(प)—स्त्री० उदय, प्रकाश।
उशवा—पुं० [अ०] रक्तशोधक जडवाला एक पेड।
उशीर—पुं० [सं०] गाँडर की जड, खस।
उष—स्त्री० [सं० के समा० मे] दे० 'उषस्'। ⊙**काल** = पु० दे० 'उषाकाल'। **उषस्**-स्त्री० [सं०] भोर, तडका, अरुणोदय या सध्या की लाली।
उषा—स्त्री० [सं०] भोर, तड़का। अरुणोदय या सध्या की अरुणिमा। अनिरुद्ध

को व्याही गई बाणासुर की कन्या ।⊙काल = पुं० भोर, तड़का ।
उष्ण—वि० [सं०] तप्त, गरम । तासीर मे गरम । फुरतीला, तेज । पुं० ग्रीष्म ऋतु । ⊙कटिबंध = पृथ्वी का वह भाग जो मकर और कर्क रेखाओ के बीच मे पडता है, भूमध्य रेखा से २३½ अंश उत्तर और उतना ही दक्षिण का भूभाग । ⊙ता स्त्री०, ⊙त्व = पुं० गरमी ।
उष्णीष—पुं० [सं०] पगडी, साफा । मुकुट, ताज ।
उष्म—पु०[सं०] गरमी, ताप । धूप । गरमी की ऋतु ।⊙ज = पु० पसीने, मैल आदि से पैदा होनेवाले कीडे, जैसे खटमल, जूं आदि । उष्मा—स्त्री० गरमी । धूप । गुस्सा ।
उस—सर्व० उभ० विभक्ति या कारक चिह्नो के पूर्व 'वह' शब्द का विकारी रूप ।
उसतति(पु)—स्त्री० दे० 'स्तुति' ।
उसनना—सक० पानी के साथ उबालना । पकाना ।
उसनीस(पु)—पुं० दे० 'उष्णीष' ।
उसरना(पु)—अक० हटना, दूर होना । बीतना, गुजरना 'जलद नवीन मिली मानो दामिनि बरषि निपा उसरे' (सूर)।
उसलना(पु)—अक० दे० उमरना' ।
उससना(पु)—अक० खिसकना, टलना । सांस लेना ।
उसांस(पु)—पु० दे० 'उसास' ।
उसारना(पु)—सक० [अक० उसरना] हटाना, टालना । बनाकर खडा करना (दीवार आदि) ।
उसारा†—पु० 'ओसारा' ।
उसालना(पु)—सक०[अक० उमलना] उखाडना । हटाना । भगाना ।
उसास—स्त्री० लंबी सांस, ऊपर को खींची हुई सांस । सांस । दुःख या शोकसूचक सांस । उसासी(पु)†—स्त्री० सुस्ताने की छुट्टी ।
उसिनना†—सक० दे० 'उसनना' ।
उसीर—पुं० दे० 'उशीर' ।
उसीसा(पु)—पु० सिरहाना । तकिया ।
उसूल—पुं० [अ०] सिद्धांत । नियम ।
उस्ताद—पु० [फा०] गुरु, अध्यापक । वि० चालाक, धूर्त (व्यंग्य) । निपुण, दक्ष, । उस्तादी—स्त्री०शिक्षक का काम । चतुराई, निपुणता । चालाकी, धूर्तता (व्यंग्य) ।
उस्तानी—स्त्री० गुरुपत्नी । शिक्षिका । चालाक या धूर्त स्त्री (व्यंग्य) ।
उस्तुरा—पु० [फा०] उस्तरा ।
उस्वास—पु० दे० 'उसांस' ।
उहवां(पु), उहां(पु)†—क्रि वि०दे० 'वहां' ।
उहे†—सर्व० दे० 'वही' ।

ऊ

ऊ—हिंदी वर्णमाला का छठा स्वर वर्ण ।
ऊँग—स्त्री० दे० 'ऊँघ' ।
ऊँघ—स्त्री० झपकी नींद का झोका । तद्रा ।
ऊँघन—स्त्री०, ऊँघ, झपकी । ऊँघना—अक० झपकी लेना, नींद मे झूमना ।
ऊँच(पु)†—वि० ऊँचा । श्रेष्ठ । उत्तम जाति या कुल का ।⊙नीच = छोटा बडा, कुलीन अकुलीन । हानि लाभ । भला बुरा ।
ऊँचा—वि० ऊपर उठा हुआ, बुलंद । श्रेष्ठ, महान् । जोर का (स्वर आदि) । कम (जैसे, ऊँचा सुनना) । जिसका लटकाव कम हो(वस्त्र) । मु०~नीचा = ऊबड खाबड । भला । बुरा । हानि लाभ ।~नीचा या उँची नीची सुनाना = भला बुरा कहना । ऊँची दूकान फीका पकवान = रूप या नाम के अनुरूप गुण या काम न होना ।
ऊँचाई—स्त्री० ऊपर की ओर का विस्तार, उठान, बुलंदी । गौरव, बडाई ।
ऊँचे(पु)†—क्रि० वि० ऊपर की ओर । जोरसे (शब्द करना) ।
ऊँछ—पुं० एक राग ।
ऊँछना—अक० कंघी करना ।
ऊँट—पुं० सवारी और बोझ लादने के काम

आनेवाला एक ऊँचा, लबा और कूवड-वाला चौपाया। ⊙वान = पुं० ऊँट चलाने वाला। मु०~किस करवट बैठता है = परिणाम क्या होता है।~ के मुँह मे जीरा = जरूरत को देखते हुए बहुत कम या नही के बराबर (खाने पीने की या दूसरी चीज)।

ऊँड़ा(पु)—पुं० बरतन जिसमे धन रखकर भूमि मे गाड दें। तहखाना।

ऊँदर†—पुं० चूहा।

ऊँहूँ—अव्य० नही, कभी नही (उत्तर मे)।

ऊ(पु)†—अव्य० भी।(पु)†सर्व० वह।

ऊअना(पु)†—अक० उगना, उदय होना।

ऊआबाई—वि० निरर्थक, अडबड।

ऊक(पु)—पुं० उल्का, टूटता तारा। जलन, ताप। लुक। भूल, गलती। ऊकना(पु)†—अक० भूल करना, चूकना। सक० छोड देना। सक० जलाना, तपाना।

ऊख—पुं० ईख, गन्ना। (पु) वि० तपा हुआ, गरम।

ऊखल—पुं० धान आदि अन्न की भूसी अलग करने के लिये काठ या पत्थर का गहरा बरतन, ओखली।

ऊज(पु)—पुं० उपद्रव, अधेर।

ऊजड—वि० उजडा हुआ, वीरान।

ऊजर(पु)—वि०दे० 'उजला'। उजाड, बिना वस्ती का।

ऊजरा(पु)—वि० दे० 'उजरा'।

ऊटकनाटक—पुं० व्यर्थ का काम। इधर उधर का काम।

ऊटना(पु)—अक० उत्साहित होना। सोच विचार करना।

ऊटपटाँग—वि० अडबंड,क्रमविहीन। व्यर्थ।

ऊठ—स्त्री० उमग, उत्साह।

ऊडना(पु)—सक० विवाह करना। 'बिरिध खाइ नवजौबन सौ तिरिया सौ ऊड" (पदमा०)।

ऊड़ा†—पुं० कमी, घाटा। नाश, लोप।

ऊड़ी—स्त्री० गोता। पनडुब्बी चिडिया।

ऊढ़—वि० विवाहित। ऊढ़ना(पु)—अक० तर्क करना, सोच विचार करना। विवाह करना।

ऊढ़ा—स्त्री० [सं०] विवाहिता स्त्री। नायिका का एक भेद, व्याही स्त्री जो अपने पति को छाडकर दूसरे से प्रेम करे।

ऊत—वि० नि सतान उजड्ड, बेवकूफ। पुं० वह जो नि सतान मरने के कारण पिंड आदि न पाकर भूत होता है।

ऊतर(पु)—पुं० उत्तर। बहाना, मिस।

ऊतला(पु)—वि० तेज, वेगवान्।

ऊतिम(पु)—वि० दे० 'उत्तम'।

ऊद—पुं० [अ०] अगर का पेड या लकडी। ⊙बत्ती = स्त्री०[हिं०] दे० 'अगरबत्ती'।

ऊद, ऊदबिलाव—पुं० नेवले के समान किंतु बडे डीलडौल का जल और स्थल मे रहनेवाला एक जंतु।

ऊदा—वि० ललाई लिए काले रग का। पुं० उक्त रग का घोडा।

ऊधम—पुं० दगा, उत्पात। शोरगुल। ऊधमी—वि० ऊधम करनेवाला।

ऊधो—पुं० उद्धव, कृष्ण के एक यादव सखा। मु०~का लेना न माधो का देना = किसी से लेन देन या लगाव न रखना।

ऊन—पुं० गरम कपडे बनाने मे प्रयुक्त भेड-ऊँट आदि का रोयाँ। वि० [सं०] कम, थोडा। तुच्छ, क्षुद्र। ⊙ता = स्त्री० कमी। ऊनी—वि० स्त्री० कम, थोडी। स्त्री० खेद, रज। वि० ऊन का बना हुआ। ऊनो†—वि० कम, थोडा। तुच्छ, हीन।

ऊपना(पु)—अक० उत्पन्न होना।

ऊपर—क्रि० वि० ऊँचाई पर, आकाश की ओर। ऊपर की मजिल मे, छत पर। आधार पर, सहारे पर। ऊँची श्रेणी मे, शासन या अधिकार मे बढकर। (लेख मे) पहले। अधिक, अतिरिक्त। प्रकट मे, देखने में। किनारे पर। सरपरस्ती या रक्षा मे। ऊपरी—वि० उपर का। बाहरी। बँधे हुए के अतिरिक्त, घूस, इनाम आदि से सबधित। दिखावटी, बनावटी। असबद्ध, फालतू। मु०~ ऊपर = अलग अलग। चुपके से। प्रकट मे। ~की आमदनी = वेतन आदि की बँधी हुई आमदनी के अतिरिक्त घूस, इनाम आदि से प्राप्त रकम। ~तले = ऊपर नीचे। एक के पीछे एक, क्रमश। ~लेना = जिम्मा लेना। ~से = दे०

ऊपर की आमदनी दिखाने के लिये, प्रकट में। ~होना = बढ़कर होना। रक्षक होना। परम स्वतंत्र होना। ~ही ऊपर = नीचे तक न पहुँच कर। चुपके से। कुछ इने गिने लोगों तक। बाहर ही बाहर।

ऊब—स्त्री० देर तक एक ही स्थिति में रहने से चित्त की व्याकुलता। घबराहट। (पु) उत्साह, उमंग। ऊबना—अक० ऊब अनुभव करना, उकताना।

ऊबट—वि० ऊँचा नीचा, ऊबड़ खाबड़। पु० ऊबड़ खाबड़ मार्ग।

ऊबड़ खाबड़—वि० ऊँचा नीचा, कठिन।

ऊबरना(पु)—अक० दे० 'उबरना'।

ऊभ(पु)—वि० उठा हुआ, उभरा हुआ।

ऊभना(पु)—अक० उठना, खड़ा होना।

ऊमक(पु)—स्त्री० झोंक, वेग।

ऊमना(पु)—अक० उमड़ना, उमगना।

ऊरज—वि०, पुं० दे० 'ऊर्ज'।

ऊरध(पु)—वि० दे० 'ऊर्ध्व'।

ऊरु—पु० [सं०] जानु, जंघा। ⊙स्तंभ = पुं० वात का एक रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं।

ऊर्ज—वि० [सं०] बलवान्। तेजस्वी। पुं० बल। तेज। कार्तिक मास।

ऊर्जस्वल—वि० [सं०] दे० 'ऊर्जस्वी'।

ऊर्जस्वी—वि० [सं०] बलवान्। तेजवान्। प्रतापी।

ऊर्जित—वि० [सं०] दे० 'ऊर्ज'।

ऊर्ण—पुं० [सं०] भेड़ या बकरी के बाल, ऊन। ⊙नाभ, ⊙नाभि = पुं० मकड़ी, लूता।

ऊर्ध—क्रि० वि० दे० 'ऊर्ध्व'।

ऊर्ध्व—क्रि० वि० [सं०] ऊपर, ऊपर की ओर। वि० ऊँचा। खड़ा। ⊙गति = स्त्री० ऊपर की ओर गति। मुक्ति। ⊙गामी = वि० ऊपर जानेवाला। मुक्त, निर्वाणप्राप्त। ⊙चरण = पुं० सिर के बल खड़े होकर तप करनेवाला तपस्वी। ⊙द्वार = पुं० ब्रह्मरंध्र। ⊙पुंड्र = पुं० खड़ा तिलक, वैष्णवी तिलक। ⊙बाहु = पुं० एक बाहु को ऊपर उठाए रखनेवाला तपस्वी। वि० जिसने हाथ उठा रखा हो। ⊙रेखा = स्त्री० पुराणानुसार राम, कृष्ण आदि विष्णु के अवतारों के ४८ चरणचिह्नों में से एक। ⊙रेता = वि० जो अपने वीर्य को न गिरने दे, नैष्ठिक ब्रह्मचारी। पुं० महादेव। भीष्म पितामह। हनुमान। सनकादिक महर्षि। संन्यासी। ⊙लोक पुं० बैकुंठ। आकाश। ⊙श्वास = पुं० ऊपर को चढ़ती हुई साँस। श्वास की तंगी।

ऊर्मि—स्त्री० [सं०] लहर, तरंग। पीड़ा, दुःख। ६ की संख्या। शिकन। ⊙माली = पुं० समुद्र।

ऊलजलूल—वि० असंबद्ध, बेसिरपैर का। अनाड़ी। अशिष्ट।

ऊलना—(पु)—अक० दे० 'उछलना'।

ऊषा—स्त्री० [सं०] दे० 'उषा'। ⊙काल = पुं० सबेरा, तड़का।

ऊष्म—वि० [सं०] गरम। पुं० गरमी। भाप। गरमी की ऋतु। ⊙वर्ण = पुं० श, ष, स, ह वर्ण।

ऊष्मा—स्त्री० [सं०] तपन, गरमी। भाप। गरमी की ऋतु।

ऊसर—पुं० भूमि जिसमें रेह अधिक होने से कुछ पैदा न हो। वि० (भूमि) जिसमें कुछ पैदा न हो।

ऊह—पुं० [सं०] अनुमान। तर्क-अपवाह्।

ऊहा—स्त्री० [सं०] दे० 'ऊह'। ⊙पोह = पुं० तर्क वितर्क। सोच विचार।

ऋ

ऋ—हिंदी वर्णमाला का सातवाँ वर्ण।

ऋक्—स्त्री० [सं०] ऋचा, वेदमंत्र। पुं० ऋग्वेद। ऋग्वेद—पुं० चारों वेदों में सब से प्राचीन और पहला। ऋग्वेदी—वि० [सं०] ऋग्वेद का जानने या पढ़नेवाला।

ऋक्ष—पुं० [सं०] रीछ, भालू। तारा,

नक्षत्र। मेष, वृष आदि राशि। एक पर्वत। ⊙पति = पुं० चद्रमा। जाववान्।

ऋचा—स्त्री० वेदमत्र। स्तोत्र।

ऋच्छ—पुं० दे० 'ऋक्ष'।

ऋजु—वि० [सं०] सीधा, जो टेढा न हो, सरल, सहज। अकुटिल। सरल स्वाभाव का, सज्जन। अनुकूल, प्रसन्न। ⊙ता = स्त्री० सीधापन। सरलता। सज्जनता। अकुटिलता।

ऋण—पुं० [सं०] कुछ समय के लिये लिया हुआ द्रव्य। एहसान का बोझ।

ऋणी वि० [सं०] जिसने ऋण लिया हो। कर्जदार। उपकृत। उपकार माननेवाला।

ऋत—वि० [सं०] सच्चा। उचित। ईमानदार। पूजित। पुं० सत्य। दैवी विधान।

ऋतु—स्त्री० [सं०] प्राकृतिक अवस्थाओ के अनुसार वर्ष के छह विभाग, मौसम। रजोदर्शन। ⊙काल = पुं० रजोदर्शन का समय। रजोदर्शन के बाद स्त्रियो का गर्भधारण योग्य रहने का समय। ⊙चर्या = स्त्री० ऋतुओ के अनुसार आहार विहार की व्यवस्था। ⊙दान = पुं० ऋतुस्नान के बाद पत्नी का सतान-कामना से सभोग। ⊙मती = वि० स्त्री० रजस्वला, मासिक धर्म युक्ता। मासिक धर्म से १६ दिन बाद तक की स्त्री जो गर्भ धारण के योग्य समझी जाती है। ⊙राज = पुं० ऋतुओ का राजा, वसत। ⊙वती = स्त्री० [हिं०] दे० 'ऋतुमती'। ⊙स्नान = पुं० रजोदर्शन के चौथे दिन का स्त्रियो का स्नान।

ऋत्विज्—वि० [सं०] यज्ञ करनेवाला। पुं० पुरोहित।

ऋद्ध—वि० [सं०] सपन्न, समृद्ध।

ऋद्धि—स्त्री०[सं०] समृद्धि, सपन्नता। आर्या छद का एक भेद जिसमे २६ गुरु और ५ लघु होते हैं। ⊙सिद्धि = स्त्री० सपन्नता और सफलता। गणेश जी की दासियाँ।

ऋनिया—वि० ऋणी, कर्जदार।

ऋषभ—पुं० [सं०] बैल। सगीत के सात स्वरो मे से दूसरा। ⊙गजविलसिता = स्त्री० १६ वर्णों का एक छद जिसमे क्रम से एक भगण, एक रगण, तीन नगण और अत मे एक गुरु होता है।

ऋषि—पुं० वेदमत्रो का प्रकाश करनेवाला, मत्रद्रष्टा। आध्यात्मिक और भौतिक तत्त्वो का साक्षात्कार करनेवाला, तत्त्वज्ञ। तपस्वी।

ए

ए—हिंदी वर्णमाला का आठवाँ स्वर वर्ण।

ऍच पेंच—पुं० उलझाव, अटकाव। टेढी चाल, बात।

एंजिन—पुं० [अँ०] दे० 'इजन'।

ऍडा बेंडा—वि० उलटा सीधा, अडबड।

ऍडी—स्त्री० अडी के पत्ते खानेवाला रेशम का कीडा। इस कीड़े का रेशम, अडी। †दे० 'एडी'।

ऍडुआ—पुं० दे० 'इँडुवा'।

ए—अव्य० बुलाने का एक सबोधन। ⓟ सर्व० यह।

एकंग—वि० अकेला। **एकंगा**—वि० एक ओर का, एकतरफा।

एकंतⓟ—वि० दे० 'एकात'।

एक—वि० [सं०] सबसे छोटी इकाई, पहला अक, पहली सख्या। बेजोड, अपूर्व। कोई, अनिश्चित। एक प्रकार का, समान। ⊙आध = वि० [हिं०] एक या दो, बहुत कम। ⊙एक = हर एक। अलग अलग। क्रमश। ⊙चक्र = पुं० सूर्य का रथ। सूर्य। वि० चक्रवर्ती। साम्राज्य। ⊙चित = वि०[हिं०] स्थिरचित्त। समान विचार का। ⊙च्छत्र = वि० बिना अन्य किसी के अधिपत्य या शासन का, पूर्ण प्रभुत्वयुक्त। क्रि० वि० पूर्ण प्रभुत्व के साथ। ⊙ज = पुं० शूद्र। राजा। ⊙जद्दी = वि० [फा०] एक ही पूर्वज से उत्पन्न, सगोत्र। ⊙जन्मा = पुं० दे० 'एकज'। ⊙टक = क्रि० वि० [हिं०] बिना पलक गिराए। लगातार (देखना)

⊙तत्र = पुं० दे० 'एकच्छत्र'। ⊙त = क्रि० वि० एक ओर से, एक तरफ से। ⊙तरफा = वि० [फा०] एक ओर का। एक पक्ष का। पक्षपातयुक्त। ⊙तरफा डिगरी या फैसला = न्यायालय की डिगरी या निर्णय जो प्रतिवादी के हाजिर न होने के कारण वादी को प्राप्त हो। ⊙ता = स्त्री० ऐक्य, मेल। वि० बेजोड़, अनुपम। समानता। ⊙ताक = वि० [हि०] बराबर, समान। ⊙तान = वि० एकाग्रचित, तन्मय। मिलकर एक। ⊙तानता = स्त्री० एकाग्रता। एकता। ⊙तारा = पुं० [हि०] एक तार का सितार। ⊙तालीस = वि० [हि०] चालीस और एक। पुं० ४१ संख्या। ⊙तीस = वि० [हि०] तीस और एक। पुं० ३१ संख्या। ⊙त्व = पुं० दे० 'एकता'। ⊙दंत = पुं० गणेश। वि० एक दाँत-वाला। ⊙दम = क्रि० वि० [हि०] फौरन, तुरंत। एक साथ, एकबारगी। सीधे, बिना रुके। वि० नितांत, बिलकुल। ⊙दा = क्रि० वि० एक बार, एक समय। ⊙देशीय = वि० एक स्थान या अवसर से संबंधित, जो सर्वत्र न घटे। ⊙नयन वि० एक आँख का, काना। पुं० कौवा। कुबेर। शुक्राचार्य। ⊙निष्ठ = वि० एक में ही निष्ठा रखनेवाला। एक पर आश्रित। ⊙पक्षीय = वि० एकपक्ष का, एकतरफा। ⊙पत्नीव्रत = वि० एक ही स्त्री से विवाह या प्रेम करनेवाला। पुं० एक ही पत्नी रखने का नियम। ⊙ब एक = क्रि० वि० अचानक। ⊙बारगी = क्रि० वि० [हि०] एक ही दफे में। अचा-नक। बिलकुल, सारा। ⊙भुक्त = वि० रात दिन में केवल एक बार भोजन करनेवाला। एक ही के द्वारा उपभोग किया जानेवाला। ⊙मत = वि० समान मत या राय रखनेवाले। ⊙मात्रिक = वि० एक मात्रा का। ⊙मुखी = वि० एक मुँह का। ⊙मुश्त = वि० [फा०] इकट्ठा (रुपया पैसा)। ⊙रंग = वि० एक रंग ढंग का, समान। बाहर भीतर समान, कपटशून्य। चारों ओर एक रहनेवाला। ⊙रदन = पुं० गणेश। वि० एक दाँतवाला। ⊙रस = वि० न बदलनेवाला, समान। ⊙रूप = वि० समान रूप या रंग ढंग का। ज्यों का त्यों, वैसा ही। ⊙रूपता = स्त्री० एकता, समानता। सायुज्य मुक्ति। ⊙लिंग = पुं० शिव, महादेव। शिव के १२ ज्योति-र्लिंगों में से एक। ⊙लौता = वि० [हि०] 'इकलौता'। ⊙वचन = पुं० वह जिससे एक का बोध हो (व्या०)। ⊙वेणि, वेणी = एक चोटी (बालों की) धारण करनेवाली (वियोगिनी या विधवा)। इकहरी चोटी (वियोग या वैधव्य सूचक)। ⊙सठ = वि०, पुं० दे० 'इकसठ'। ⊙सर = वि० [हि०] अकेला। एक पल्ले का। एकच्छत्र। वि० [फा०] सारा, तमाम। ⊙साँ = वि० [फा०] एक तरह का। समतल। ⊙सार = वि० [हि०] दे० 'एकसाँ'। ⊙हत्तर = वि०, पुं० दे० 'इकहत्तर'। ⊙हत्था = वि० [हि०] एक हाथवाला या एक ही हाथ से काम करनेवाला। एक हत्थेवाला। एक ही व्यक्ति के उपयोग में रहनेवाला। ⊙हरा = वि० [हि०] एक पाट या परत का। एक लड़ी का। अकेला। जो मोटा न हो (शरीर)। एकांत—वि० अत्यंत, नितांत। अलग, अकेला। निर्जन, सूना। पुं० निर्जन स्थान। एकांतता—स्त्री० अकेला-पन। सूनापन। एकांतवास—पुं० निर्जन स्थान में रहना। अकेले रहना। एकां-तिक—वि० जो सर्वत्र न घटे, एकदेशीय। अनन्य, किसी एक में ही श्रद्धा या अनु-राग रखनेवाली। एकांती—पुं० एक में ही रत व्यक्ति। भगवत्प्रेम को अंतः करण में रख प्रकट न करनेवाला भक्त। अकेला रहना पसंद करनेवाला व्यक्ति। एकाकार—पुं० मिलकर एक होना, भेद का अभाव। एकाक्ष—वि० एक आँख का, काना। पुं० कौवा। शिव। शुक्राचार्य। एकाक्षरी—वि० एक अक्षरवाला। एकाक्षरी कोश = पुं० वह कोश जिसमें प्रत्येक अक्षर के अलग अलग अर्थ दिए हों। एकाग्र—वि० एक ओर स्थिर,

चचलतारहित। **एकाग्रचित्त** = वि० स्थिर चित्तवाला। **एकाग्रता** = स्त्री० चित्त की स्थिरता। तल्लीनता, ध्यानावस्था। **एकात्मता**—स्त्री० अभेद। मिलकर एक रूप हो जाना। **एकात्मवाद**—पुं० प्राणियो और वस्तुओ मे एक ही आत्मा की व्याप्ति का सिद्धात। जीवात्मा और परमात्मा के अभेद का सिद्धात। एक ही आत्मा को जगत् और जीवन का मूल मानने का सिद्धात। **एकाधिकार, एकाधिपत्य**—पुं० एकमात्र अधिकार, पूर्ण प्रभुत्व। **एकार्थक**—वि० एक ही अर्थ का। समान अर्थवाला। **एकावली**—स्त्री० एक अलकार जिसमे पूर्व पूर्व कही गई वस्तुओ के लिये उत्तरोत्तर वस्तुओ का विशेषणभाव से स्थापन अथवा निषेध दिखाया जाय। १३ वर्णों का वह छद जिसमे क्रम से भगण, नगण, दो जगण और अत्य लघु होता है। वि० एक लडी का (हार)।

एकाह—वि० एक दिन मे पूरा होनेवाला (जैसे, एकाह पाठ)। पाठ या अनुष्ठान आदि। **एकेश्वरवाद**—पुं० अनेक देवी, देवताओ को न मानकर एक ही ईश्वर को मानना, उसी एक ईश्वर द्वारा सृष्टि की रचना भी मानना। मु०~**अक**,~ ~**आँक** = पक्की बात, निश्चय। एक बार। ~**आँख न भाना** = बिलकुल पसद न होना। ~**आँख से देखना** = एक समान मानना। समान व्यवहार करना। ~**और एक ग्यारह होते हैं** = दो के मिलने से शक्ति कई गुना बढ जाती है। ~**की चार लगना** = बढा चढाकर निंदा या शिकायत करना। ~**की दस सुनाना** = एक के बदले कई कडी बातें सुनाना। ~**चना भाड नहीं फोड़ता** = कई आदमियो का काम एक से नही हो सकता। ~**जान दो कालिब** = दो अभिन्न दोस्त। ~**थैली के चट्टे बट्टे** = मूलत कोई अतर नही। ~**न चलना** = कोई युक्ति सफल होना। —**पंथ दो काज** = एक प्रयत्न मे दो काम हो जाना। ~**पाँव से खड़े रहना** = प्रतीक्षा मे रहना। तावेदारी बजाना। ~**पेट के** = एक माँ से उत्पन्न, सहोदर। ~**लाठी से सबको हाँकना** = भल बुरे मे भेद न करना (व्यवहार या विचार मे)। ~**से एक** = एक से एक बढ़कर। ~**स्वर से बोलना** = एकमत होकर कहना। ~**होना** = मेल करना। तद्रूप होना। गुटबदी करना।

एकड़—पुं० भूमि की ४८४० वर्ग गज की माप, १$\frac{३}{५}$ बीघा।

एकत(पु)—क्रि० वि० दे० 'एकत्र'।

एकत्र—क्रि० वि० [स०] इकट्ठा। एक जगह।

एकरार—पुं० दे० 'इकरार'।

एकल—वि० [सं०] अकेला, एक मात्र। (पु)अनुपम, बेजोड।

एकला(पु)†—वि० दे० 'अकेला'।

एकाकी—वि० [सं०] एक अकवाला (नाटक)।

एकाग—वि० [स०] एक अगवाला। **एकांगी** = वि० एक पक्ष का, एकतरफा जिद्दी।

एका—स्त्री० [सं०] दुर्गा। पुं० [हिं०] ऐक्य, मेल। अभेद, एकरूपता। ⊙**ई** = स्त्री० दे० 'इकाई'।

एकाएक—क्रि० वि० अचानक, एकबारगी। **एकाएकी**(पु)†—क्रि० वि० दे० 'एकाएक'। एक एक करके। वि० अकेला।

एकाकी—वि० अकेला, तनहा। ⊙**पन** = पुं० अकेलापन।

एकादश—वि० [सं०] ग्यारह। पुं० ११ सख्या। **एकादशाह**—पुं० मृत्यु से ग्यारहवाँ दिन। द्विजातियो के मरने के ग्यारहवे दिन के कृत्य। **एकादशी**—स्त्री० प्रत्येक पक्ष की ग्यारहवी तिथि।

एकीकरण—पुं० [सं०] मिलाकर एक करना, समिश्रण।

एकीभूत—वि० [सं०] मिश्रित, एकरूप। जो इकट्ठा हुआ हो।

एकोतरसो—वि० एकोत्तरशत, एक सौ एक।

एकौभा(पु)†—वि० अकेला, एकाकी।

एक्का—वि० एक से संबंधित । अकेला । पुं० पशु जो झुंड छोड़कर अकेला चरता या घूमता हो । दो पहिए की एक पुराने ढंग की गाड़ी जिसमें घोड़ा जोता है, इक्का । ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो । ⊙वान=पुं० एक्का हाँकनेवाला ।

एक्की—स्त्री० एक ही बैल जोतने की गाड़ी । ताश या गंजीफे का एक बूटी का पत्ता, एक्का ।

एक्यानबे—वि०, पुं० दे० 'इक्यानवे' ।

एक्यावन—वि०, पुं० दे० 'इक्यावन' ।

एक्यासी—वि०, पुं० दे० 'इक्यासी' ।

एड़—स्त्री० दे० 'एड़ी' । मु०~देना, ~लगाना = (घोड़े को) आगे बढ़ाने के लिये एड़ से मारना । उकसाना, उत्तेजित करना । बाधा डालना ।

एड़ी—स्त्री० टखने के नीचे पैर की गद्दी का निकला हुआ भाग । मु०~घिसना, ~रगड़ना = बहुत दौड़धूप करना । बहुत कष्ट उठाना । ~चोटी का पसीना एक करना = बहुत मेहनत करना ।

एतकाद—पुं० [अ०] विश्वास, भरोसा ।

एतत्—सर्व० [सं०] यह (प्राय यौगिक शब्दों में, जैसे—एतद्देशीय, एतद्विषयक आदि) । एतदर्थ—क्रि० वि० इसलिये, इसी के लिये, इसी अभिप्राय से । एतद्देशीय—वि० इस देश से संबंधित ।

एतबार—पुं०[अ०] विश्वास, भरोसा, साख ।

एतराज—पुं० [अ०] विरोध, आपत्ति ।

एतवार—पुं० दे० 'इतवार' ।

एता†—वि० इतना, इस मात्रा का ।

एतादृश—वि० [सं०] ऐसा, इसके समान ।

एतिक(पु)†—वि०, स्त्री० इतनी ।

एनी—स्त्री० हरिणी ।

एरंड—पुं० [सं०] एक बड़ा पौधा जिसमें बड़े आँवले के आकार का नोकदार फल लगता है और जिसके बीजों का तेल निकलता है रेंड, रेंडी ।

एराक—पुं० [अ०] अरब के उत्तर का एक देश, इराक । एराकी—पुं० [अ०] एराक या ईराक का । देश की नस्ल का घोड़ा । वि० एराक का ।

एलची—पुं० [तु०] दूत । राजदूत ।

एला—स्त्री० [सं०] दे० 'इलायची' ।

एवं—क्रि० वि० [सं०] ऐसा ही । ऐसे ही और । और । एवमस्तु—ऐसा ही हो । एवमेव—क्रि० वि० ठीक इसी प्रकार ।

एव—अव्य० [सं०] एक निश्चयवाचक शब्द, ही, भी ।

एवज—पुं० [अ०] बदला, प्रतिकार । परिवर्तन, बदला । दूसरे की जगह कुछ काल तक काम करनेवाला आदमी । एवजी—पुं० [हिं०] बदले में कुछ काल तक काम करनेवाला आदमी, स्थानापन्न व्यक्ति । स्त्री० स्थानापन्नता ।

एषण—पुं० [सं०] इच्छा, अभिलाषा ।

एषणा—स्त्री० [सं०] एषण ।

एह—(पु)—सर्व० यह ।

एहतियात—स्त्री० [अ०] सावधानी, बचाव । परहेज ।

एहसान—पुं० [अ०] उपकार, कृतज्ञता । ⊙मंद = वि० एहसान माननेवाला, कृतज्ञ ।

एहि(पु)—सर्व० 'एह' का विभक्ति या कारक चिह्नों के पूर्व का रूप ।

एहो(पु)—एक संबोधन, हे, ऐ ।

ऐ

ऐ—हिंदी का नवाँ स्वर वर्ण ।

ऐं—अव्य अच्छी तरह न सुनकर फिर से कहलाने का शब्द । एक आश्चर्यसूचक शब्द ।

ऐंचाताना—वि० पुं० आँख की किसी पुतली के थोड़ा दाहिने या बाएँ होने के कारण जिसकी आँखें तिरछी प्रतीत हों । भेंगा ।

ऐंचातानी—स्त्री० अपनी ओर खींचने का प्रयत्न । अपने पक्ष का आग्रह ।

ऐंचना—सक० खींचना । अपने जिम्मे लेना अनाज को फटकारना ।

ऐंछना(पु)—सक० कंघी करना, झाड़ना ।

ऐंठ—स्त्री० । ऐंठन । अकड़, ठसक । द्वेष,

विरोध। ऐंठना—सक० मरोड़ना, बल देना। धोखा देकर लेना, ठगना। घमड करना।

ऐंठाना—सक० [ऐंठना का प्रे०] ऐंठने की क्रिया दूसरे से कराना।

ऐंड—पुं० ठसक, गर्व। पानी का भँवर। वि० निकम्मा, नष्ट। ⊙दार=वि० घमडी। बाँका तिरछा, शानदार। ⊙बैंड़ (पु) =टेढा, तिरछा

ऐंड़ना—अक० बल खाना। अँगडाई लेना। इतराना, घमड करना। 'धन जोबन मद ऐंडो ऐंडो ताकत नारि पराई' (सूर०)।

ऐंड़ा—वि० टेढ़ा। दर्पयुक्त।

ऐंड़ाना—अक० अँगडाई लेना। अकड दिखाना।

ऐंद्रजालिक—वि० [सं०] मायावी, इद्रजाल करनेवाला।

ऐंद्री—स्त्री० [सं०] इद्र की स्त्री, शची। दुर्गा। इद्रवारुणी। इलायची।

ऐ—अव्य० एक सबोधन, हे, ओ।

ऐकमत्य—पुं० [सं०] एकमत होना, एकराय।

ऐक्य—पुं० [सं०] एक का भाव। एका, मेल।

ऐगुन (पु)†—पुं० दे० 'अवगुण'।

ऐच्छिक—वि० [स०] इच्छा के अनुसार। वैकल्पिक।

ऐंत (पु)—वि० दे० 'इतना'।

ऐतरेय—पुं० [सं०] इतर या इतरा की सतान (ऋग्वेद के ब्राह्मण और आरण्यक के निर्माता)। ऋग्वेद का एक ब्राह्मण। एक उपनिषद् (ऐतरेय आरण्यक के दूसरे और तीसरे खड अथवा केवल दूसरे खड के अतिम चार भाग)।

ऐतिहासिक—वि० [सं०] इतिहास सबधी। जो इतिहास से सिद्ध हो। इतिहास जाननेवाला। ⊙ता=स्त्री० ऐतिहासिक होने का भाव। प्राचीनता।

ऐतिह्य—पुं० [सं०] परपराप्रसिद्ध प्रमाण, परपरा, रिवाज। लेखा जोखा।

ऐतु (पु)—वि० दस सहस्र।

ऐन—पुं० दे० 'अयन'।

ऐनक—स्त्री० आँख का चश्मा।

ऐपन—पुं० चावल और हल्दी का गीला पिसा एक मागलिक द्रव्य।

ऐब—पुं० [अ०] दोष, नुक्स। बुराई, कलक। **ऐबी**—वि० जिसमे ऐब हो। नटखट, दुष्ट। विकलाग, विशेषत: काना या ऐंचाताना।

ऐयार—पुं० [अ०] चालाक, धूर्त। चलता पुरजा व्यक्ति। **ऐयारी**—स्त्री० [अ०] चालाकी, धूर्तता।

ऐयाश—वि० [अ०] बहुत ऐश आराम करनेवाला, विलासी। विषयी, लपट। **ऐयाशी**—स्त्री० विषयासक्ति, भोग-विलास।

ऐराक—पु० दे० 'एराक'।

ऐरा गैरा—वि० बेगाना, अजनबी। तुच्छ, हीन। ⊙नत्थू खैरा=वि० अपरिचित, राह चलता आदमी।

ऐरापति (पु)—पुं० ऐरावत हाथी।

ऐरावत—पुं० [सं०] इद्र का हाथी जो पूर्व दिशा का दिग्गज है। बिजली से चमकता हुआ बादल। एक नाग। बिजली।

ऐल (पु)—पुं० बाढ। बहुतायत। हलचल, कोलाहल।

ऐश—पुं० [अ०] आराम, चैन। भोग-विलास।

ऐश्वर्य—पु० [सं०] धन सपत्ति। अणिमा आदि सिद्धि। प्रभुत्व। ⊙वान्=वि० सपत्तिवान्, वैभवशाली।

ऐसा—वि० इस भाँति का, इसके समान।

ऐसे—क्रि० वि० इस ढग से, इस तरह।

ऐहिक—वि० [सं०] इस लोक से सबधित, सासारिक।

ओ

ओ—हिंदी वर्णमाला का दसवाँ स्वर वर्ण।

ओं—अव्य० [सं०]। परब्रह्मवाचक शब्द, प्रणव मत्र। ⊙कार=पुं० दे० 'ओ'। 'ओ' शब्द का उच्चारण।

ओइछना†—सक० वारना, न्योछावर करना।

ओंठ—पुं० मुंह की बाहरी उभरी हुई कोर जिनसे दाँत ढके रहते है, ओष्ठ।

किनारा, छोर। मु०~काटना,~चबाना = क्रोध और दुःख प्रकट करना। ~चाटना = स्वाद के लालच से ओठों पर जीभ फेरना, स्वाद की लालसा रखना। ~फड़कना = क्रोध के कारण ओठ काँपना। ~हिलना = मुँह से शब्द निकालना या बोलने का प्रयत्न करना।

ओंड़ा(पु)—वि० गहरा। पुं० गड्ढा। चोरों की खोदी हुई सेंध।

ओ—अव्य० एक संबोधनसूचक शब्द। विस्मयसूचक शब्द, ओह। एक स्मरण-सूचक शब्द।

ओक—पुं० [सं०] घर, निवासस्थान। आश्रय, ठिकाना। नक्षत्रों या ग्रहों का समूह। ⊙**पति** = पुं० ग्रहपति। सूर्य। चंद्रमा। पुं० [हिं०] अंजली। स्त्री० [हिं०] मतली, कै।

ओकना, ओकाना—अक० कै करना। भैंस की तरह चिल्लाना। **ओकाई**—स्त्री० उबकाई, मिचली। वमन, कै।

ओकारांत—वि० [सं०] जिसके अंत में 'ओ' अक्षर हो।

ओखद†—पुं० दे० 'औषध'।

ओखली—स्त्री० ऊखल। मु०~में सिर देना = कष्ट या हानि सहने पर उतारू होना।

ओखा(पु)—पुं० बहाना, हीला। वि० रूखा-सूखा। विकट, कठिन। खोटा, मिलावट-वाला। झीना।

ओखाणो—पुं० कहावत। कहानी।

ओग(पु)—पुं० कर, महसूल।

ओघ—पुं० [सं०] समूह, ढेर। किसी वस्तु का घनत्व। बहाव, धारा।

ओछा—वि० जो गंभीर न हो, छिछोरा, क्षुद्र। छिछला, 'गहरा' का उलटा। हलका, जोर का नहीं। छोटा, कम। ⊙**ई** = स्त्री० दे० 'ओछापन'। ⊙**पन** = पुं० छिछोरापन, नीचता।

ओज—पुं० [सं०] तेज, कांति। प्रताप। बल, वीर्य। उजाला, प्रकाश। काव्य का गुण जिससे सुननेवाले के मन में आवेश उत्पन्न हो। शरीर के भीतर के रसों का सार भाग।

ओजना†—सक० रोकना, ऊपर लेना।

ओजस्विता—स्त्री० तेज, कांति। प्रताप। प्रभाव।

ओजस्वी—वि० [सं०] शक्तिवान्, प्रभाव-शाली।

ओझ—पुं० पेट। आँत।

ओझर—पुं० पेट, पेट की थैली।

ओझरी(पु)—स्त्री० दे० 'ओझर'।

ओझल—पुं० ओट, आड़। वि० लुप्त, गायब।

ओझा—पुं० ब्राह्मणों की एक शाखा। भूत प्रेत झाड़नेवाला, झाड़ फूँक करनेवाला। ⊙**ई** = स्त्री० ओझा की वृत्ति, झाड़-फूँक।

ओट—स्त्री० रोक या आड़ करनेवाली वस्तु। शरण, पनाह। **ओटना**—सक० रुई से बिनौलों को अलग करना। बार बार कहना। रोकना, अपने ऊपर सहना। अपने जिम्मे लेना।

ओटनी—स्त्री० कपास ओटने की चरखी।

ओटपाय(पु)—पुं० उपद्रव, झगड़ा।

ओठँगना—सक० सहारा लेना, टेक लगाना। थोड़ा आराम करना।

ओठ—पुं० ओठ, ओष्ठ।

ओड़—पुं० दे० 'ओट'। मिट्टी खोदने या उठानेवाला मजदूर, बेलदार। **ओड़ना**(पु)—सक० रोकना, ऊपर लेना। फैलाना, पसारना। 'सावधान ह्वै शोक निवारो ओड़हु दक्षिण हाथ' (सूर०)।

ओड़न(पु)†—वार रोकने की वस्तु, ढाल।

ओढ़ना—सक० कपड़े से शरीर ढकना। जिम्मा लेना। पुं० ओढ़ने का वस्त्र।

ओढ़नी—स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र, चद्दर, फरिया।

ओढ़र(पु)†—पुं० बहाना, मिस।

ओढ़ाना†पुं०—सक० ओढ़ने में प्रवृत्त करना, पहनाना। 'चीर ओढ़ावा केंचुल मढ़ा' (पदमा०)।

ओत—स्त्री० आराम, चैन। आलस्य। लाभ, बचत। पुं० [सं०] ताने का सूत। वि० [सं०] बुना हुआ। ⊙**प्रोत** = वि० [सं०] खूब गुँथा हुआ, खूब मिला जुला। रंजित, व्याप्त। सराबोर, तर। पुं० तानाबाना।

ओता(पु)†—वि० उतना।
ओद†—पुं० नमी, सील। वि० गीला, नम।
ओदन—पुं० [सं०] भात, पका हुआ चावल।
ओदर†—पुं० दे० 'उदर'।
ओदरना†—अक० फटना। ढहना, नष्ट होना।
ओदा—वि० गीला, नम।
ओदारना—सक० फाडना। ढहाना, नष्ट करना।
ओधना(पु)—अक० बँधना, लगाना। 'रोम रोम तन तासो ओधा' (पदमा०)। काम मे लगना।
ओनंत(पु)—वि० झुकता हुआ। झुका हुआ, नत।
ओनवना(पु)†—अक० दे० 'उनवना'।
ओनो(पु)†—पुं० पानी निकलने मार्ग, निकास।
ओनामासी—स्त्री० अक्षरारभ। प्रारभ।
ओप—स्त्री० चमक, काति। पालिश। ⊙**ची** = पुं० कवचधारी योद्धा। **ओपना**†—सक० चमकाना, पालिश करना। अक० चमकना। 'सूरदास प्रभु प्रेम हेम ज्यो अधिक ओप ओपी' (सूर०)
ओपनी—स्त्री० माँजने या साफ करने की वस्तु। चित्र पर चाँदी या सोना चमकाने का मशब या अकीक पत्थर का टुकडा।
ओफ—अव्य० पीडा, खेद, शोक और आश्चर्य सूचक शब्द, ओह।
ओबरी†—स्त्री० छोटा कमरा, कोठरी।
ओम्—पुं० [सं०] प्रणव मत्र, ओकार।
ओर—स्त्री० किसी स्थान, वस्तु आदि का पार्श्व (स्थितिबोध के लिये), तरफ। दिशा। पक्ष (जैसे, किसी की ओर से कुछ कहना)। पुं० सिरा, छोर। आदि, आरभ। **ओरना**(पु)†—अक० समाप्त होना।
ओरमना†—अक० लटकना झुकना।
ओराना†—अक० दे० 'ओरना'।
ओराहना†—पुं० दे० 'उलाहना'।
ओरी†—स्त्री० ओलती।
ओलंदेज—पुं० हालैंड देश का निवासी। ओलदेजी—वि० हालैंड देश सबधी।
ओलंबा(पु), **ओलभा**—पुं० उलाहना, शिकायत।
ओल—पुं० [सं०] सूरन, जमीकद। वि० [हिं०] गीला, ओदा। स्त्री० [हिं०] गोद। आड, ओट। जमानत मे रखी हुई वस्तु या आदमी। बहाना, मिस। **ओलना**—सक० परदा या ओट करना। रोकना। ऊपर लेना, सहना। सक० घुसाना, चुभाना।
ओला—पुं० बादलो से गिरनेवाला बरफ का टुकडा, पत्थर। वि० ओले के समान ठढा। पुं० परदा, ओट। भेद, गुप्त बात।
ओली—स्त्री० गोद। अचल, पल्ला। झोली।
ओषधि—स्त्री० [सं०] दवा। दवा के काम आनेवाली जड़ी बूटी। पौधा जो एक बार फलकर सूख जाता है। ⊙**पति** = पुं० चद्रमा। कपूर।
ओष्ठ—पुं० [सं०] दे० 'ओठ'। **ओष्ठ्य**—वि० ओष्ठ सबधी। जिसका उच्चारण ओष्ठ से हो। ⊙**वर्ण** = पुं० उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।
ओस—स्त्री० वायमडल मे मिली हुई भाप जो रात की सरदी से ठढी होकर जलबिंदु के रूप मे पदार्थों पर लग जाती है, शबनम। मु०~**पडना** = ओस का गिरना, कुम्हलाना, बेरौनक होना। उमग नष्ट होना। शरमाना। ~**का मोती** = शीघ्र नष्ट होनेवाला।
ओसाना—सक० हवा मे उडाकर दाना और भूसा अलग करना।
ओसार—पुं० फैलाव, विस्तार। दे० 'ओसारा'।
ओसारा†—पुं० दालान, बरामदा। ओसारे की छाजन, सायबान।
ओह—अव्य० आश्चर्य, दु ख या बेपरवाही सूचक शब्द।
ओहट(पु)—स्त्री० ओट, ओझल।
ओहदा पुं० [अ०] पद, स्थान।
ओहर†—अक० घटाव पर होना। (चढी हुई नदी आदि का)।
ओहार—पुं० रथ या पालकी के ऊपर पडा हुआ कपड़ा।

ओहो—अव्य० आश्चर्य या आनद का सूचक शब्द, अहो।

औ

औ—हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण।
औंकना(पु)—अक० उचटना, हट जाना।
औंगा†—वि० मूक, गूंगा। चुप्पा, न बोलनेवाला।
औंगी—स्त्री० चुप्पी, खामोशी।
औंघाई†—स्त्री० झपकी, तद्रा। निद्रा।
औंजना(पु)†—अक० ऊबना, अकुलाना। ढालना, उँडेलना।
औंठ—स्त्री० उठा हुआ किनारा (जैसे, घडे का)।
औंड़(पु)—पुं० गड्ढा या मिट्टी खोदनेवाला मजदूर, बेलदार।
औंड़ा, औंड़ो†—वि० गहरा, गभीर। उमड़ा या बढा हुआ।
औंदना†—अक० बेसुध या उन्मत्त होना। व्याकुल होना, अकुलाना।
औंदाना(पु)—अक० ऊबना, व्याकुल होना।
औंधना—अ० उलटा होना। सक० उलटा कर देना।
औंधा—वि० उलटा, नीचे की ओर मुंहवाला। नीचा। मु०—**औंधी खोपड़ी** = मूर्ख, जड। **औंधे मुंह गिरना** = मुंह के बल गिरना। बुरी तरह धोखा खाना। भूल करना।
औंधाना—सक० उलट देना। नीचा करना, लटकाना (सिर का)।
औंसना†—अक० उमस होना।
औ(पु)—अव्य० दे० 'और'।
औकात—पुं० [अ० वक्त का बहु०] समय, वक्त। स्त्री० हैसियत, वित्त।
औगत(पु)—स्त्री० दुर्दशा, अवगति। वि० दे० 'अवगत'।
औगाह(पु)—अक० दे० 'अवगाह'।
औगुन(पु)†—पुं० दे० 'अवगुण'। **औगुनी** (पु)† - वि० निर्गुणी। दोषी, ऐबी।
औघट(पु)—वि० दे० 'अवघट'।
औघड़—पुं० अघोर मत का पुरुष, अघोरी। बहुत गदा व्यक्ति। मनमौजी। वि० अटबढ, उलटा पलटा।
औघर(पु)—वि० अनगढ, 'सुघर' का उलटा अडबड। अनोखा।
औचक—क्रि० वि० अचानक, सहसा।
औचट—स्त्री० सकट, कठिनाई। क्रि० वि० अचानक। भूल से, अनजान मे।
औचित(पु)—वि० निश्चित, बेखबर।
औचित्य—पुं० [सं०] उचित का भाव, उपयुक्तता।
औज(पु)—स्त्री० दे० 'ओज'।
औजड़(पु)—वि० उजड्ड, अनाड़ी।
औजार—पुं० [अ०] काम करने का साधन या यत्न, हथियार।
औझड़(पु), **औझर**(पु)—क्रि० वि० लगातार। निरंतर।
औटना—सक० आँच पर चढाकर हिलाना और गाढा करना। खौलाना (पानी, दूध आदि)। (पु)इधर उधर हैरान होना। अक० तरल वस्तु का गरमी खाकर गाढा होना। खौलना।
औटाना—सक० दे० औटना।
औठपाय(पु)—पुं० दे० 'अठपाव'।
औढर—वि० जिधर मन करे उधर ढल पडनेवाला, मनमौजी। थोड़े मे प्रसन्न हो जानेवाला। ⊙**दानी** = वि० थोडी ही बात पर अपार कृपा करनेवाला। पुं० शिव। महादेव।
औतारना—(पु)अक० दे० 'अवतरना'।
औतार—पुं० दे० 'अवतार'।
औत्तापिक—वि० [सं०] उत्ताप सबधी, दुःख या संताप का।
औत्पत्तिक—वि० [स०] उत्पत्ति सबधी, जन्म का।
औत्सुक्य—पुं० [सं०] दे० 'उत्सुकता'।
औथरा—वि० उथला, छिछला।
औदरिक—वि० [सं०] उदर संबधी। बहुत खानेवाला, पेटू।
औदसा(पु)—स्त्री० दे० 'अवदशा'।
औदार्य—पुं० [सं०] उदारता। सात्विक नायक का एक गुण।
औदास्य—पुं० [सं०] उदासीनता, खिन्नता।
औदुंबर—वि० [सं०] उदुबर या गूलर का बना हुआ। ताँबे का बना हुआ। गूलर के वृक्षो से भरा हुआ। पुं० गूलर की

लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र। चौदह यज्ञों मे से एक।

औद्धत्य—पुं० [सं०] अक्खड़पन, उजड्डपन। ढिठाई, अविनय।

औद्योगिक—वि० [सं०] उद्योग सबधी।

औध(पु)—पुं० अवध या कोशल राज्य। अवध या अयोध्या नगरी। स्त्री० दे० 'अवधि'।

औधारना—(पु)—सक० दे० 'अवधारना'।

औधि(पु)—स्त्री० दे० 'अवधि'।

औना पौना—वि० आधा तीहा। थोड़ा बहुत। **औने पौने** = कमती बढ़ती पर।

औना(पु)—पुं० घर। '...न जात कहूँ तजि नेह को औनो' (जगद्विनोद ८५)।

औपचारिक—वि० [सं०] उपचार या नियम सबधी। केवल कहने सुनने का, जो वास्तविक न हो, केवल दिखावे का।

औपनिवेशिक—वि० [सं०] उपनिवेश सबधी।

औपनिषदिक—वि० [सं०] उपनिषद् सबधी या उपनिषद् के समान।

औपन्यासिक—वि० [सं०] उपन्यास सबधी, उपन्यासविषयक। उपन्यास मे वर्णन करने योग्य। अद्भुत।

औपसर्गिक—वि० [सं०] उपसर्ग सबधी।

औम(पु)—स्त्री० अवम तिथि।

और—अव्य० दो शब्दो या वाक्यो को जोड़नेवाला शब्द। दूसरा, अन्य। भिन्न। अधिक। मु०—**का और** = कुछ का कुछ विपरीत। अडबड।

औरत—स्त्री० [अ०] स्त्री। पत्नी।

औरस—पुं० धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र। वि० विवाहिता स्त्री से उत्पन्न, वैध।

औरसना(पु)—अक० विरस होना, रुष्ट होना, उदासीन होना।

औरेब—पुं० तिरछी चाल, वक्र गति। कपड़े की तिरछी काट। जैसे, औरेबदार गजी पेच, उलझन। पेंच या चाल की बात।

औलभा(पु)—दे० 'ओलभा'।

औलना—अक० जलना, गरम होना। गरमी पड़ना।

औलाद—स्त्री० [अ०] सतान, सतति। वशपरपरा, नस्ल।

औला दौला—वि० जिसे किसी बात की चिंता न हो, लापरवाह।

औलिया—पुं० [अ० वली का बहु०] मुसलमान सिद्ध, पहुँचा हुआ फकीर।

औवल—वि० [अ०] पहला, प्रथम। मुख्य, प्रधान, सर्वश्रेष्ठ। पुं० आरभ।

औशि(पु)—क्रि० वि० दे० 'अवश्य'।

औषध—स्त्री० [सं०] रोगनाशक वस्तु, दवा।

औसत—पुं० [अ०] बराबर का परता, समष्टि का समविभाग। वि० बीच का, दरमियानी। साधारण।

औसना(पु)†—अक० गरमी या उमस पड़ना। बासी होना। (फल आदि का) भूसे आदि मे दबकर पकना।

औसर(पु)†—पुं० दे० 'अवसर'।

औसान—पुं० अत। परिणाम। होश हवास, चेत।

औसि(पु)†—क्रि० वि० पुं० 'अवश्य'।

औसेर(पु)†—स्त्री० दे० 'अवसेर'।

औहत(पु)—स्त्री० अपमृत्यु, कुगति।

औहाती(पु)†—वि० स्त्री० दे० 'अहिवाती'।

क

क—हिंदी वर्णमाला का पहला व्यजन वर्ण।

कं—पुं० [सं०] जल। मस्तक। सुख। अग्नि। काम। सोना।

कंउधा(पु)†—पुं० बिजली की चमक।

कंक—पुं० [सं०] सफेद चील। एक बड़ा आम। यम। क्षत्रिय। बगला।

कंकड़, कंकर(पु)†—पुं० [अल्पा० ककड़ी] पत्थर का छोटा टुकड़ा। चिकनी मिट्टी और चूने का प्राकृतिक रोड़ा। किसी वस्तु का कड़ा टुकड़ा। रवा, डला। ⊙**पत्थर** = बेकाम की चीज। कूड़ा करकट। **कंकड़ीला, कंकरीला**(पु)†—वि० ककड़ से युक्त।

कंक(पु)†—पुं० [सं०] कलाई मे पहनने का आभूषण। कगन, कड़ा। दूल्हा दुल्हन के हाथ मे विवाह के पूर्व रक्षार्थ

बाँधा जानेवाला सूत्र ।
कंकन(५)†—पुं० दे० 'कंकण' ।
कंकरीट—स्त्री० छत, सडक बनाने का चूना, कंकड, बालू आदि मिलाकर बनाया हुआ मसाला, बजरी ।
कंकाल—पुं० [सं०] ठठरी, अस्थिपंजर ।
कंकालिनी—स्त्री० दुर्गा का एक रूप । वि० स्त्री० उग्र स्वभाव की, झगडालू । **कंकाली**—स्त्री० कंजडो जैसी एक घुमतू जाति । दुर्गा का एक रूप । वि० कर्कशा ।
कंकोल—पुं० [सं०] शीतलचीनी के वृक्ष का एक भेद ।
कँखवारी—स्त्री० काँख की फुडिया ।
कँखौरी—स्त्री० काँख । कँखवारी ।
कंगन—पुं० दे० 'कंकण' । मु०~**हाथ~को आरसी क्या**=प्रत्यक्ष बात के लिये प्रमाण की क्या आवश्यकता ।
कँगना—पुं० दे० 'कंकण' । एक गीत जो कंगन बाँधते या खोलते समय गाया जाता है ।
कँगनी—स्त्री० छोटा कंगन । छत या छाजन के नीचे दीवार मे उभडी हुई लकीर, कार्निस । दाँतदार या नुकीले किनारे का गोल चक्कर । एक अन्न ।
कँगला—वि० दे० 'कंगाल' ।
कंगाल—वि० निर्धन, गरीब । भुक्खड, अकाल का मारा । **कंगाली**—स्त्री० निर्धनता, मुहताजी ।
कँगूरा—पु० शिखर, चोटी । बुर्ज ।
कंघा—पुं० लकडी, मसाले आदि की बनी लबे, पतले दाँतोवाली चीज जिससे बाल झाडे या सँवारे जाते हैं । जुलाहो का एक औजार ।
कंघी—स्त्री० छोटा कंघा । जुलाहो का एक औजार ।
कंचन—पुं० सोना, सुवर्ण । धन, संपत्ति । धतूरा । एक प्रकार का कचनार । वि० नीरोग । स्वच्छ, सुंदर । मु०~**बरसना**=अटूट धन, संपत्ति होना । **कंचनी**—स्त्री० वेश्या ।
कंचुक—पुं० [सं०] चोली, । अँगिया अचकन, जामा । कवच, बख्तर । केंचुल । वस्त्र ।
कंचुकी—स्त्री० [सं०] अँगिया, चोली । पुं० रनिवास के दास दासियो का अध्यक्ष, अंतःपुररक्षक । द्वारपाल । साँप ।
कंचुरि(५), कँचुली†—स्त्री० दे० 'केंचुल' ।
कँचेरा—पुं० काँच का काम करनेवाला ।
कंज—पुं० [सं०] कमल । ब्रह्मा । चरण की एक रेखा । अमृत । सिर के बाल ।
कंजई—वि० [हिं०] कंजे के रंग का । खाकी । पुं० खाकी रंग । कंजई रंग का घोडा ।
कंजड, कंजर—एक खानाबदोश जंगली जाति
कंजा—पुं० एक कँटीली झाडी जिसकी फली के दाने दवा के काम आते हैं । वि० [स्त्री० कंजी] कंजे के रंग का, गहरा खाकी जिसकी आँख कंजे के रंग की हो ।
कंजावलि—स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, नगण, दो जगण और एक लघु होता है ।
कंजूस—वि० कृपण, जो धन का भोग न करे । **कंजूसी**—स्त्री० कृपणता, कंजूस होने का भाव ।
कंटक—पुं० [सं०] काँटा । सूई की नोक । शत्रु । विघ्न बाधा । विघ्नकर्ता । कवच । **कंटकित**—वि० काँटेदार, काँटो से घिरा । रोमांचित, पुलकित ।
कंटकारी—स्त्री० [सं०] भटकटैया । सेमल ।
कंटर—पुं० शीशे की बनी हुई सुंदर सुराही ।
कंटाइन—स्त्री० चुडैल डाइन । दुष्ट या कर्कशा स्त्री ।
कँटिया—स्त्री० काँटी, छोटी कील । मछली मारने की पतली नोकदार अँकुसी । किसी वस्तु को फँसाने या उलझाने की अँकुसी । सिर का एक गहना ।
कँटीला—वि० काँटेदार ।
कंटोप—पुं० टोपी जिससे सिर और कान ढके रहते हैं ।
कंठ—पु० [सं०] टेंटुआ, घेघा । गला । गले मे भोजन की नली । शब्द, आवाज । किनारा, तट काँठा । पक्षियो के गले मे जवानी मे निकलनेवाली रंगीन रेखा । ⊙**गत**=वि० गले मे प्राप्त, गले मे अटका हुआ । ⊙**तालव्य**=वि० कंठ और तालु दोनो से उच्चरित (वर्ण) । ⊙**माला**=स्त्री० गले मे गिलटियाँ निकलने का रोग ।

⊙श्री = स्त्री० गले का एक जडाऊ आभूषण। ⊙स्थ=वि० कंठगत। जबानी,कंठाग्र। कंठाग्र—वि० कंठस्थ, जबानी। कंठौष्ठ्य—वि० कंठ और ओष्ठ से एक साथ उच्चरित होनेवाला (वर्ण)।
कंठ्य—वि० कंठ संबंधी। कंठ से उत्पन्न। कंठ से उच्चरित (वर्ण)। गले के लिये उपकारी (औषध)। मु०~खुलना = मुँह से आवाज निकलना। ~फूटना = आवाज निकलना। जवानी आने पर आवाज बदलना। ~बैठना = गला बैठना, आवाज बेसुरा होना।
कंठा—पुं० पक्षियों के गले में निकलनेवाली रंगीन रेखाएँ। बड़े मनकों का गले का एक गहना। कुरते या अँगरखे का गले पर रहनेवाला अर्ध चंद्राकार भाग।
कंठी—स्त्री० छोटी गुरियों का कंठा। तुलसी, चंपा आदि की छोटी मनियों की माला। पक्षियों के गले की रंगीन रेखाएँ। मु०~देना = चेला करना। ~बाँधना = चेला बनाना। वैष्णव या भक्त होना। विषयों को त्यागना।
कंठीरव—पुं० [सं०] सिंह। कबूतर। मतवाला हाथी।
कंडरा—स्त्री० [सं०] मोटी नस या नाड़ी (सुश्रुत में १६ मानी जानेवाली)।
कंडा—पुं० जलाने का सूखा गोबर। सूखा मल।
कंडाल—पुं० एक बाजा, नरसिंहा, तुरही। पानी रखने का खुले गोल मुँह का बड़ा बरतन।
कंडी—स्त्री० छोटा कंडा, गोहरी। सूखा मल।
कंडील—स्त्री० कागज, अबरक आदि की लालटेन जो सजाने, बाँस पर लटकाने या आकाश में उड़ाने के काम आती है।
कंडु—स्त्री० [सं०] खुजली, खाज।
कंत(प)†, कंथ(प)†—पुं० पति, स्वामी। ईश्वर।
कंथा—पुं० गुदड़ी, कथरी। कंथी—पुं० गुदड़ी पहननेवाला, फकीर।
कंद—पुं० [सं०] गूदेदार और बिना रेशे की जड़। सूरन। बादल। लहसुन। छप्पय के ७१ भेदों में से एक। पुं० [फा०] जमाई हुई चीनी, मिस्री।
कंदन—पुं० [सं०] नाश, ध्वंस।
कंदरा—स्त्री० [सं०] गुफा, गुहा।
कंदर्प—पुं० [सं०] कामदेव।
कंदा—पुं० दे० 'कंद'। शकरकंद। घुइयाँ।
कंदील—स्त्री० [अ०] दे० 'कंडील'।
कंदुक—पुं० [सं०] गेंद। गोल तकिया।
कंदैला† वि० मलिन, गँदला।
कंध(प)—पुं० डाली। दे० 'कंधा'।
कंधनी—स्त्री० दे० 'करधनी'।
कंधर—पुं० [सं०] गरदन, ग्रीवा। बादल। मोथा।
कंधा—पुं० गले और मोढे के बीच का मनुष्य के शरीर का भाग। मु०~देना = अरथी में कंधा लगाना। सहायता देना। कंधे से कंधा छिलना = बहुत भीड़ होना।
कंधार—पुं० मल्लाह, कर्णधार। अफगानिस्तान का एक नगर और प्रदेश। कंधारी—वि० कंधार का। कंधार में उत्पन्न। पुं० घोड़े और अनार की एक जाति।
कंधावर—स्त्री० जूए का भाग जो बैल के कंधे पर रहता है। कंधे पर डाली जानेवाली चादर या दुपट्टा।
कँधेला—पुं० साड़ी का कंधे पर पड़नेवाला भाग।
कंप—पुं० [सं०] काँपना। हिलना। शृंगार के सात्विक अनुभावों में से एक। पुं० [हिं०] पड़ाव, डेरा। कंपन—पुं० काँपना, हिलना, स्थिर न रहना। कंपायमान—वि० [हिं०] कंपित, हिलता हुआ। कंपित—वि० काँपता हुआ, कँपाया हुआ, अस्थिर। डरा हुआ।
कँपकँपी—स्त्री० काँपना। थरथराहट।
कँपना—अक० काँपना, हिलना। भयभीत होना।
कँपा—पुं० लासा लगाकर चिड़ियों को फँसाने की बाँस की पतली तीलियाँ।
कँपाना—सक० [अक० कँपना] कंपित करना, हिलाना डुलाना। भयभीत करना।
कंपास—पुं० [अं०] कुतुबनुमा, दिशाबोधक

यत्र। वृत्त बनाने का दो भुजाओं का औजार, परकार।
कंपू—पुं० फौज के रहने का स्थान, छावनी। डेरा, खेमा। कैंप (अं०)।
कंबल—पुं० [सं०] ओढने बिछाने का ऊन का बना मोटा कपड़ा। एक बरसाती कीडा, कमला।
कंबु, कंबुक—पुं० [सं०] शख। शख की चूडी। घोघा। गरदन। **कंबुग्रीव** = वि० शख जैसी ग्रीवावाला।
कंबोज—पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद (वर्तमान अफगानिस्तान मे स्थित)।
कँवल—पुं० दे० 'कमल'। ⊙**ककड़ी** = स्त्री० कमल की जड। ⊙**गट्टा**—पुं० कमल का बीज।
कंस—पुं० [सं०] काँसा। प्याला, कटोरा। सुराही। झाँझ। काँसे का बरतन। मथुरा के राजा उग्रसेन का लडका और कृष्ण का मामा। ⊙**कार** = पुं० कसेरा। ⊙**ताल** = पुं० झाँझ।
कई—वि० एक से अधिक, अनेक।
ककडी—स्त्री० गरमी के दिनो मे फलनेवाली एक बेल और उसका लबा फल।
ककहरा—पुं० 'क' से 'ह' तक वर्णमाला।
ककुद्—पुं० [सं०] बैल के कधे का कूबड। डिल। पहाडी चोटी या शिखर। राज-चिह्न। वि० मुख्य, प्रधान।
ककुभ—पुं० [सं०] शिखर, चोटी। दिशा। तीन पदो का एक छद जिसके पहले, दूसरे तीसरे पद मे क्रमश ८,१२ और १८ वर्ण होते हैं। **ककुभा**—स्त्री० दिशा। एक रागिनी।
ककोडा—पुं० एक तरकारी, खेकसा।
कक्का†—पुं० दे० 'काका'। पुं० [सं०] नगाडा, दुदुभि।
कक्ष—पुं० [सं०] काँख, बगल। काँछ, लाँग। कमरा, कोठरी। काँख का फोडा। दर्जा, श्रेणी। पेटी, कमरबद। आँचल, दुपट्टे का छोर। घिरा हुआ स्थान घेरा, वृत्त। सादृश्य, तुलना।
कक्षा—स्त्री० [सं०] परिधि। ग्रह के भ्रमण करने का मार्ग। श्रेणी, दर्जा। तुलना, समता। ड्योढी, देहली। काँख। घेरने-वाली दीवार। दीवार से घिरी जगह। काँछ, कछोटा।
कगर—पुं० कुछ उठा हुआ किनारा। औठ, बारी। मेड, डाँड़। कारनिस। क्रि० वि० किनारे पर। समीप। अलग।
कगार—पुं० ऊँचा किनारा। नदी का करारा। टीला।
कच—पुं० [सं०] बाल। सूखा फोडा या जख्म। झुड। बादल। बृहस्पति का पुत्र। वस्त्र का छोर।
कच—वि० 'कच्चा' के लिये समा० मे प्रयुक्त रूप। ⊙**दिला** = वि० बच्चे या कमजोर दिल का, बुजदिल। ⊙**पेंदिया** = वि० पेंदी का कमजोर। ओछा, बात का कच्चा। ⊙**लोदा** = पुं० कच्चे आटे का पेडा, लोई। ⊙**लोन** = पुं० एक प्रकार का लवण। ⊙**लोहू** = पुं० खुले बजख्म से थोडा थोडा निकलनेवाला पानी।
कचकच—स्त्री० बकवाद, झकझक।
कचकचाना—अक० कचकच शब्द करना, धँसाने या चुभाने का शब्द करना। दाँत पीसना।
कचकोल—पुं० दरियाई नारियल का भिक्षापात्र। कपाल।
कचट(पु)†—स्त्री० दे० 'कचोट'।
कचडा—पुं० दे० 'कचरा'।
कचनार—पुं० दवा मे बहुप्रयुक्त एक छोटा पेड जिसकी कली का अचार और तर-कारी आदि बनती है।
कचपच—पुं० थोडे स्थान मे बहुत सी चीजो का भर जाना गिचपिच। 'कचकच'। **कचपचिया, कचपची**—स्त्री० कृत्तिका नक्षत्र, बहुत से छोटे छोटे तारो का एक पुज। दे० 'कचबची'।
कचबची—स्त्री० स्त्रियो मे शोभा के लिये प्रयुक्त चमकीले बुदे।
कचर कचर—पुं० कच्चे फल के खाने का शब्द। बकवाद।
कचरना(पु)—सक० पैर से कुचलना। खूब खाना या चबाना।
कचरा—पुं० कच्चा खरबूजा। फूट का कच्चा फल, ककडी। कूडा करकट, रद्दी चीज। उरद या चने की पीठी।

कचरी—स्त्री० ककडी की जाति का एक पीला और खटमीठा फल। कचरी के सुखाए टुकडे। सूखी कचरी की तरकारी। तरकारी के लिये काटकर सुखाए हुए फल मूल आदि। छिलकेदार दाल।

कचहरी—स्त्री० अदालत। दरबार। गोष्ठी, जमावडा। दफ्तर, कार्यालय।

कचाई—स्त्री० कच्चापन। अनुभव की कमी।

कचालू—पुं० एक प्रकार की अरवी, बडा। उबाले हुए आलू या बडे की चाट।

कचोचो(पु)—स्त्री० कृत्तिका, कचपचिया। जबड़ा, दाढ़।

कचूमर—पुं० बुरी तरह कुचली हुई वस्तु। कुचलकर बनाया हुआ अचार। मु० ~**करना या निकालना** = खूब कूटना या कुचलना। बुरी तरह मारना। नष्ट करना।

कचूर—पुं० हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ मे कपूर की सी महक होती है। (पु)कटोरा।

कचोना—सक० चुभाना, धँसाना।

कचोर(पु), **कचोरा**(पु)—पुं० कटोरा, प्याला।

कचौड़ी, कचौरी—स्त्री० उरद, आलू आदि की पीठी भरी मसालेदार पूरी। छोटी गोल चाट।

कच्चा—वि० बिना पका हुआ, हरा और बिना रस का। आँच पर न पका हुआ, पूरी बाढ को न प्राप्त, पूरा पुष्ट न हुआ। जो बनकर तैयार न हुआ हो। कमजोर, अधिक दिन न टिकनेवाला। अप्रामाणिक। तौल या माप से कम। गीली मिट्टी का बना हुआ। अपटु, अनाड़ी। बिना पूरे अभ्यास का। पुं० दूर दूर पर पड़ी हुई सीवन। जबड़ा, दाढ। ⊙**घड़ा** = पुं० कच्ची मिट्टी का घडा। सीखने या सस्कार ग्रहण करने योग्य उम्र का व्यक्ति। ⊙**चिट्ठा** = पुं० सच्चा वृत्तात। गुप्त भेद। ⊙**चूना** = पुं० बिना बुझाया हुआ चूना। ⊙**जी या दिल** = पुं० विचलित होनेवाला चित्त। ⊙**माल** = पुं० द्रव्य जिससे कोई चीज बनाई जाय (रूई, चमडा आदि। ⊙**हाथ** = पुं० अनभ्यस्त हाथ। **कच्ची कली** = स्त्री० मुँह बँधी कली। अप्राप्त यौवना स्त्री। **कच्ची गोटी** = स्त्री० चौसर की गोटी जिसने आधा रास्ता पार न किया हो। **कच्ची गृहस्थी** = स्त्री० छोटे छोटे बच्चो का कुटुब जिसमे कोई बडा व्यक्ति देखभाल करनेवाला न हो। **कच्ची चीनी** = स्त्री० चीनी जो गलाकर खूब साफ न की गई हो। **कच्ची पेशी** = स्त्री० मुकदमे की पहली पेशी जिसमे कुछ फैसला नही होता। **कच्ची बही** = स्त्री० बही जिसमे याददाश्त आदि के लिये अनियमित ढग से हिसाब लिखा जाय। **कच्ची रसोई** = स्त्री० अन्न जो दूध या घी के योग से नही, जल के योग से पकाया गया हो। **कच्ची रोकड़** = स्त्री० रोज के आय व्यय की कच्ची बही। **कच्ची सड़क** = स्त्री० सड़क जिसमे ककड आदि न पिटे हो। **कच्ची सिलाई** = स्त्री० बाद मे खोलने के लिये दूर दूर पर डाले जानेवाले (सिलाई के) टाँके। **कच्चे पक्के दिन** = चार पाँच महीने का गर्भ। दो ऋतुओ का सधिकाल। **कच्चे बच्चे** = पुं० बहुत छोटे छोटे बच्चे। मु०~**करना** = अप्रामाणिक या झूठा ठहराना। लज्जित करना। पक्की सिलाई के पहले कपडे पर टाँका लगाना। ~**पड़ना** = अप्रामाणिक या झूठा ठहरना। सिटपिटाना।

कच्छ—पुं० [सं०] किनारा, तट। जलप्राय देश। कछार। दलदल। दोनो टाँगो के बीच से निकाला हुआ धोती का छोर, लाँग। कच्छ देश। कच्छ का घोडा। (पु) पुं० कछुआ। ⊙**प** = पुं० कछुआ। विष्णु के २४ अवतारो मे से एक। कुबेर की नौ निधियो मे से एक। कुश्ती का एक पेंच।

कच्छा—पुं० चिपटे और बडे छोर की बडी नाव जिसमे दो पतवार होते हैं। कई नावो को मिलाकर बनाया हुआ बडा बेडा।

कच्छी—वि० कच्छ प्रदेश का। कच्छ देश मे उत्पन्न पुं० घोडे की एक जाति।

कछनी—स्त्री० घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती। छोटी धोती। वह वस्तु जिससे कोई चीज काछी जाय।

कछान, कछाना—पुं० घुटनों के उपर चढा-कर धोती पहनने का ढग ।
कछार—पुं० समुद्र या नदी के किनारे की तर और नीची भूमि ।
कछु(पु)†—वि० दे० 'कुछ' । ⊙क(पु) = वि० कुछ, थोडा ।
कछुआ—पुं० एक जलजतु जिसके ऊपर कड़ी ढाल की तरह का आवरण होता है ।
कछोटा, कछौटा—पुं० कछनी । स्त्रियों का पीछे लाँग लगाकर धोती पहनने का ढग ।
कज—पुं० [फा०] दोष, ऐब । टेढापन ।
कजी—दोषयुक्त, ऐबी ।
कजरा†—पु० काजल । काली आँखोवाला बैल । वि० काली आँखोवाला । जिसकी आखों मे काजल लगा हो । ⊙ई(पु) = स्त्री० कालापन । ⊙रा = वि० काजल-वाला, अजन से युक्त । काला, स्याह ।
कजरी—स्त्री० दे० 'कजली' ।
कजरौटा†—पुं० दे० 'कजलौटा' ।
कजलाना—अक० काला पडना । आग का बुझना । सक० काजल लगाना ।
कजली—स्त्री० कालिख । पारे और गधक का मिश्रण चूर्ण । काली आँखोवाली गाय । सावन की पूर्णिमा या भादो वदी तीज को मनाया जानेवाला एक त्यौहार। इस अवसर के लिये मिट्टी के पिंडो मे उगाए जौ के हरे अकुर । बरसात मे या सावन बदी तीज तक गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत ।
कजलौटा—पुं० काजल रखने की डाँडीदार डिबिया ।
कजा—स्त्री० [अ०] मौत ।
कजाक(पु)—पुं० दे० कज्जाकी लुटेरा, डाकू ।
कजाकी—स्त्री० लुटेरापन, लूटमार । छल कपट ।
कजावा—पुं० ऊँट की एक प्रकार की काठी ।
कजिया—पुं० [अ०] झगडा, दगा ।
कज्जल—पुं० [सं०] काजल, अजन । सुरमा । कालिख । बादल । १४ मात्राओ का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अत मे एक गुरु और लघु का क्रम होता है ।
कज्जाक—पुं० [तु०] डाकू, लुटेरा । चालाक । कजाकिस्तान देश का ।
कट—पुं० [सं०] कुश की चटाई । हाथी का गडस्थल । गंडस्थल । खस, सरकडा आदि घास । टट्टी । शव । अरथी । श्मशान । नितब, चूतड । वि० अतिशय । उग्र ।
कट—पु० [हिं०] एक काला रंग । के० समा० मे प्रयुक्त 'काट' का सक्षिप्त रूप जैसे, कटखेना = काट खानेवाला । पुं० काठ (काष्ठ) के लिये के० समा० मे प्रयुक्त । ⊙घरा, ⊙हरा = पुं० काठ का घेरा या ढाँचा । काठ का जगलेदार घर । बडा पिंजरा । पुं० [अं०] काट, तराश, ब्योत ।
कटक—पु० [सं०] सेना, फौज । राजशिविर । ककण, चूडा । पर्वत के किनारे का भाग । घाटी । नितब । घास फूस की चटाई । हाथी के दाँत पर जडे हुए पीतल के बद । साँकल का जोड । ⊙ई(पु) = स्त्री० कटक, फौज ।
कटकट—स्त्री० दाँतो के बजने का शब्द । लडाई झगडा ।
कटकटाना—सक० दाँत पीसना ।
कटखना—वि० काट खानेवाला, चिडचिडा, क्रोधी ।
कटडा—पुं० [स्त्री० कटडी] भैंस का नर बच्चा, पाडा ।
कटती—स्त्री० बिक्री, फरोख्त ।
कटना—अक० धारदार चीज की दाब से दो टुकडे होना । पिसना । धारदार चीज का धँसना । किसी भाग का अलग हो जाना, कोई अश निकल जाना । कतरा जाना । दूर होना । नष्ट होना । समय का बीतना । रास्ता खतम होना । चुपके से अलग हो जाना, खिसकना । लज्जित होना । डाह करना । (पु)मोहित होना । बिकना । आय होना । व्यर्थ व्यय होना । लिखावट रद्द होना (लकीर आदि से) । तैयार होना (नहर, आदि का) । ताश का फेंटा जाना । एक सख्या से दूसरी संख्या का ऐसा भाग जाना कि कुछ न बचे ।
कटनास—पुं० नीलकठ पक्षी ।
कटनि(पु)—स्त्री० काट । आसक्ति, रीझ ।

कटनी—स्त्री० काटने का औजार। फसल काटने का काम।

कटरा—पुं० छोटा चौकोर बाजार। दे० 'कटडा'।

कटवाँ—वि० कटा हुआ। जिसमे कटाई का काम हो।

कटसरैया—स्त्री० अडसे की तरह का एक काँटेदार पौधा जिसमें कार्तिक मास मे लाल, पीले, नीले और सफेद रग के फूल होते हैं।

कटहर(पु)†,**कटहल**—पुं० मोटे भारी, और नोकीले छिलकेवाला एक फल और उसका सदाबहार घना पेड।

कटहा(पु)†—दाँतो से काट खानेवाला। **कटा**(पु)†—पुं० मारकाट, हत्या। ⊙**कट** = स्त्री० कटकट शब्द। लड़ाई। ⊙**कटी** = स्त्री० मारकाट। घोर वैमनस्य।

कटाई—स्त्री० काटने का काम। काटने की मजदूरी।

कटाक्ष—पुं० [सं०] तिरछी चितवन। व्यग्य, आपेक्ष।

कटाछ—पुं० दे० 'कटाक्ष'।

कटान—स्त्री० काटने की क्रिया या ढग।

कटाना—सक० [काटना का प्रे०] काटने मे प्रवृत करना।

कटार, कटारी—स्त्री० एक बालिस्त का छोटा, तिकोना और दुधारा हथियार। एक प्रकार का बनबिलाव।

कटाव—पु० काट, कतरब्योंत। काटकर बनाए हुए वेल बूटे।

कटावन†—पुं० कटाई करने का काम। कटा हुआ टुकडा, कतरन।

कटाह—पुं० [सं०] कडाह। कछुए का खपडा। कुआँ। नरक। ऊँचा टीला। झोपडी।

कटि—स्त्री० [सं०] पेट और पीठ के नीचे पडनेवाला शरीर का मध्य भाग, कमर। हाथी का गडस्थल। ⊙**जेब** = स्त्री० [हिं०] किंकिणी, करधनी। ⊙**बंध** = पु० कमरबद। गरमी सरदी के विचार से किए गए पृथ्वी के पाँच भागो मे से कोई। ⊙**बद्ध** = वि० कमर वाँधे हुए। तैयार, उद्यत। ⊙**सूत्र** = पुं० कमर मे पहनने का डोरा, सूत की करधनी।

कटियाना(पु)—अक० हर्ष, प्रेम आदि से रोओ का काँटे के समान खडा होना, पुलकित होना।

कटीला—वि० काट करनेवाला, तीक्ष्ण। गहरा असर करनेवाला। मोहित करनेवाला। आनबानवाला।

कटु—वि० [सं०] छह रसो में एक, कडुआ। बुरा लगनेवाला। काव्य मे रस केविरुद्ध वर्णों की योजना, जैसे शृगार मे ट, ठ, ड आदि वर्ण। ⊙**क** = वि० कटु, कडुआ। बुरा लगनेवाला। ⊙**भाषी** = वि० कटुवचन बोलनेवाला। ⊙**वादी** = वि० दे० 'कटुभाषी'।

कटूक्ति—स्त्री० [सं०] अप्रिय बात।

कटेरी—स्त्री० भटकटैया।

कटैया†—वि० काटनेवाला। फसल काटनेवाला। स्त्री० भटकटैया।

कटोरदान—पुं० भोजन आदि रखने का धातु का ढक्कनदार बरतन।

कटोरा—पु० खुले मुँह, नीची दीवार और चौडी पेंदी का एक छोटा बरतन।

कटोरी—स्त्री० छोटा कटोरा, प्याली। अँगिया मे वह भाग जिसमे स्तन रहता है। तलवार की मूठ के ऊपर का गोल भाग। कटोरी के आकार की वस्तु। फूल की डडी का चौडा सिरा जिसपर दल रहते हैं।

कटौती—स्त्री० किसी रकम मे से बँधा हक या धर्मार्थ द्रव्य का काटना।

कट्टर—वि० अधविश्वासी। हठी, दुराग्रही। †काट खानेवाला, कटहा।

कट्टहा—पु० महाब्राह्मण, महापात्र।

कट्टा—वि० मोटा ताजा। बलवान्। पु० जूँ। जबडा।

कट्ठा—पु० पाँच हाथ, चार अंगुल की जमीन की एक नाप। मोटा या खराब गेहूँ।

कठ—पु० [सं०] एक ऋषि। एक यजुर्वेदीय उपनिषद्। कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा।

कठ—पु० काठ और चमडे का एक पुराना बाजा। वि० (के० समा० मे) निकृष्ट (जैसे, कठहुज्जत)। अधूरा, कच्चा (जैसे, कठपडित)। अनुचित

(जैसे, कठमस्त)। पु० (केवल समस्त पदो मे) काठ (जैसे, कठघरा)। ⊙केला = पु० एक प्रकार का फीका और रूखा केला। ⊙गूलर = पु० दे० 'कठूमर'। ⊙घरा = पु० काठ का ढांचा या जगलेदार घर। वडा पिंजरा। ⊙जामुन = पु० जामुन का वेस्वाद और कसैला फल। ⊙पंडित = पु० वनावटी पडित जिसे कुछ आता न हो। ⊙पुतली = स्त्री० काठ की पुतली जिसे तार द्वारा नचाते हैं। दूसरे के इशारे पर काम करनेवाला व्यक्ति। ⊙प्रेम = पु० प्रिय के अप्रसन्न होने पर भी किया जानेवाला प्रेम। ⊙फोड़वा = पु० खाकी रग की लवी चोच की चिडिया जो पेडो की छाल को छेदती रहती है। ⊙बंधन = पु० हाथी के पैर में डाली जानेवाली काठ की वेडी। ⊙बाप = पु० सौतेला वाप। ⊙मलिया = पु० काठ की माला या कठी पहननेवाला वैष्णव। वनावटी साधु। ⊙मस्त = वि० सड मुसड। व्यभिचारी। ⊙मुल्ला = पु० वनावटी मुल्ला। दुराग्रही आलिम। ⊙हुज्जत = स्त्री० अकारण तकरार, दुराग्रह।

कठरा—पु० दे० 'कठघरा'। काठ का सदूक। काठ का वरतन, कठौता।

कठला—पु० वच्चो को पहनाने की एक प्रकार की माला।

कठवत†—स्त्री० दे० 'कठौत'।

कठिन—वि० [स०] सख्त, कठोर। मुश्किल, दुष्कर। निर्दय। स्त्री० कष्ट, सकट। ⊙ई(पु)† = दे० 'कठिनाई'। ⊙ता = स्त्री० मुश्किल, असाध्यता। कडापन। निर्दयता। मजवूती।

कठिनाई—स्त्री० मुश्किल। असाध्यता। परेशानी। सकट। कठोरता।

कठिया—वि० मोटे और कडे छिलके का (जैसे, कठिया वादाम)।

कठियाना—अक० सूखकर कडा होना।

कठुला—पु० दे० 'कठला'। माला, हार, कठमाल।

कठुवाना†—अक० काठ की तरह कड़ा हो जाना। हाथ पैर ठिठुरना।

कठूमर—पु० जगली गूलर।

कठेठा(पु)†—वि० कडा, सख्त। तगडा।

कठोर—वि० सख्त, कडा। निर्दय, वेरहम। ⊙ता = स्त्री० कडापन, सख्ती। वेरहमी। ⊙ताई (पु) = स्त्री दे० 'कठोरता'।

कठौत—स्त्री० छोटा कठौता। **कठौता**—पु० काठ का चौडे मुंह और ऊंचे किनारे का वरतन।

कड़क—स्त्री० चौका देनेवाली कठोर ध्वनि (विजली आदि की), गाज। जोर से डाँटने या ललकारने की आवाज। घोडे की सरपट चाल। पटेवाजी का एक हाथ। रुक रुककर होनेवाला दर्द। रुक रुककर जलन के साथ पेशाव उतरना। ⊙नाल = स्त्री० चौडे मुँह की भयकर आवाज करनेवाली तोप।

कड़कड—पु० दो वस्तुओ के आघात का कठोर शब्द। कडी वस्तु के टूटने या फूटने का शब्द।

कड़कना—अक० कडी आवाज करना (विजली का)। गडगडाना (वादल का)। जोर से दपटना या ललकारना। आवाज के साथ टूटना (कडी चीज का)।

कडकडाता—वि० कडकड शब्द करता हुआ। घोर, वहुत तेज (धूप, जाडा आदि)।

कड़कडाना—अक० कडकड शब्द होना। कडी वस्तु का टूटते हुए आवाज करना। घी, तेल आदि का आँच पर तपकर कडकड करना। सक० तोडना (कड़ी वस्तु को)। घी तेल आदि को खूब गरम करना।

कड़कड़ाहट—स्त्री० कडकड आवाज, घोर नाद।

कडका—स्त्री० ओले की वृष्टि। कडकडाती हुई ध्वनि।

कडखा—पु० वीरो को उत्तेजित करनेवाला गीत।

कड़छी—स्त्री० लवी डडीदार कटोरी जिससे दाल आदि निकालते हैं।

कड़वा†—वि० कड़ुवा।

कड़वी—स्त्री० ज्वार का पेड जिसके भुट्टे काट लिए गए हो।

कड़ा—पु० हाथ या पाव मे पहनने का चूडा। धातु का छल्ला या कुडा। एक कबूतर। वि० सख्त, ठोस। जो कोमल प्रकृति का न हो, रूखा। ढील या सकोच न करनेवाला, दृढ। कसा हुआ, चुस्त। कम गीला। हृष्टपुष्ट। प्रचड, तेज। अधिक। असह्य। जोर का। कर्कश। विचलित न होनेवाला, दृढ। दुष्कर। ⊙ई = स्त्री० कडापन। कठोर व्यवहार। मु०~पडना = कडा रुख दिखाना, न दबना।

कड़ाका—पुं० कडी वस्तु के टूटने का शब्द। लघन, फाका। **कड़ाके का** = तेज, प्रचड (जैसे, कडाके की सरदी, कडाके की भूख, आदि)।

कड़ाबीन—स्त्री० चौडे मुँह की बडी बदूक। कमर मे बाँधने की छोटी बदूक।

कड़ाह, कडाहा—पुं० आँच पर चढाने का कुडेवाला बडा गोल बरतन।

कड़ाही—स्त्री० छोटा कडाह।

कड़ी—स्त्री० जजीर या सिकडी का एक छल्ला। अटकाने के लिये प्रयुक्त छोटा छल्ला। गीत का एक पद। छोटी शहतीर।

कड़ुआ—वि० दे० 'कडवा'।

कड़ुवा—वि० कटु, स्वाद मे उग्र और अप्रिय। तीक्ष्ण, झालदार। तीखी प्रकृति का, गुस्सैला। न भानेवाला। विकट, टेढा। ⊙पन = पुं० कडुवा होने का भाव, कटुता। ⊙हट = स्त्री० दे० 'कडवापन'। ⊙तेल = पुं० सरसो का तेल। मु०~घूंट पीना = असह्य बात सहना।

कड़ुवाना—अक० कडुवा लगना। खीझना। नीद रोकने से आँख मे दर्द होना।

कढ़ना—अक० खिचना, बाहर आना। उदय होना। किसी बात मे बढ जाना। आगे निकलना (दौड मे)। स्त्री का उपपति के साथ भाग जाना। उभरना, ऊपर उठना (कढाई आदि मे)। खौलकर गाढा होना (दूध का)।

कढ़राना (पु)†—सक० घसीटकर बाहर करना। '...सूर तबहु न द्वार छाडै डारिहौ कढराइ' (सूर०)।

कढ़वाना, कढाना—सक० निकलवाना, बाहर कराना। कशीदे का काम कराना।

कढाई—स्त्री० काढने की क्रिया या मजदूरी। दे० 'कडाही'।

कढ़ाव—पुं० कशीदे का काम। बेल बूटो का उभार।

कढ़िराना (पु)†—सक० दे० 'कढराना'।

कढ़िहार—वि० काढने या निकालनेवाला। उद्धार करनेवाला।

कढ़ी—स्त्री० बेसन आदि से बननेवाला एक प्रकार का सालन। मु०~का सा उबाल = शीघ्र घट जानेवाला उत्साह।

कढ़ैया†—स्त्री० दे० 'कडाही'। वि० निकालनेवाला।

कढ़ोरना (पु)—सक० दे० 'कढराना'।

कण—पुं० [सं०] अत्यत छोटा टुकडा, जर्रा। चावल का बारीक टुकडा। अन्न का दाना। भिक्षा।

कणाद—पुं० [सं०] वैशेषिक दर्शन के रचयिता, उलूक मुनि।

कणिका—स्त्री० [स०] कनका, जर्रा।

कण्व—पुं० [सं०] एक मत्रकार ऋषि। शकुतला को पालनेवाले कश्यप गोत्र मे उत्पन्न एक ऋषि।

कत—पुं० [अ०] कलम की नोक की आडी काट। (पु)अव्य० किसलिये, क्यो।

कतई—अव्य [अ०] बिलकुल, एकदम।

कतना—अक० काता जाना।

कतरन—स्त्री० कपडे, कागज आदि के काट-छाँट के बाद के बच जानेवाले छोटे रद्दी टुकडे।

कतरना—सक० कैंची या सरौते से काटना।

कतरनी—स्त्री० बाल, कपडे आदि काटने का एक औजार, कैंची।

कतर ब्योंत—स्त्री० काटछाँट। उलटफेर। उधेड़बुन। दूसरे के सौदे मे से कुछ रकम अपने लिये निकाल लेना। युक्ति, ढग।

कतरवाना—सक० [कतरना का प्रे०] दूसरे को कतरने मे प्रवृत्त करना।

कतराना—सक० दे० 'कतरवाना'। अक० सामना न हो, इसलिये थोडा हटकर निकल जाना।

कतल—पुं० दे० 'कत्ल'। ⊙बाज = पुं० वधिक, जल्लाद।
कतलाम Ⓟ†—पुं० दे० 'कत्ले ग्राम'।
कतली—स्त्री० मिठाई ग्रादि का चौकोर टुकड़ा।
कतवार—पुं० कूड़ा करकट, बेकाम घास-फूस। Ⓟ† वि० कातनेवाला। ⊙खाना = पुं० कतवार फेंकने की जगह।
कताना—सक० [कातना का प्रे०] ग्रन्य को कातने में प्रवृत्त करना।
कतार—स्त्री० [ग्र०] पंक्ति, पाँत। समूह, झुंड।
कतारी Ⓟ†—स्त्री० दे० 'कतार'।
कति Ⓟ—वि० स्त्री० [सं०] (गिनती में) कितनी
कतिक Ⓟ†—वि० कितना। थोड़ा। ग्रनेक।
कतिपय—वि० कई एक। कुछ, थोड़े से।
कतीरा—पुं० दवा के काम ग्रानेवाला जूलू नामक वृक्ष का सफेद गोंद।
कतेक Ⓟ—वि० कितने। ग्रनेक। थोड़े से।
कतेब Ⓟ—पुं० (धर्मग्रंथ) कुरान।
कतौनी—स्त्री० कातने का काम या मज-दूरी। काम में ग्रनावश्यक विलंब।
कत्ता—पुं० बाँस काटने का एक ग्रौजार। छोटी टेढ़ी तलवार।
कत्ती—स्त्री० चाकू, छुरी। छोटी तलवार। कटारी। सुनारों की कतरनी। एक प्रकार की पगड़ी।
कत्थई—वि० कत्थे के रंग का। पुं० कत्थई रंग।
कत्थक—पुं० एक जाति जिसका काम गाना, बजाना ग्रौर नाचना है।
कत्था—पुं० खैर की लकड़ी का उबालकर निकाला तथा जमाया हुग्रा रस। खैर का पेड़।
कत्ल—पुं० [ग्र०] वध, हत्या। कत्ले ग्राम = पुं० बिना विचार किए सर्वसाधारण का वध।
कथंचित्—क्रि० वि० [सं०] शायद। किसी प्रकार।
कथक—पुं० [सं०] कथा कहनेवाला। पुराण बाँचनेवाला। दे० 'कत्थक'।
कथक्कड़—वि० बहुत कथा कहनेवाला।
कथन—पुं० [सं०] कहना। वर्णन। वचन, उक्ति।
कथना Ⓟ—सक० कहना। 'लीला कथत सहस मुख ·' (सूर०)। निंदा करना। दे० 'कत्थक'।
कथनी—स्त्री० बात, कथन। हुज्जत, बकवाद।
कथनीय—वि० [सं०] कहने योग्य, वर्णनीय। निंदनीय।
कथरी—स्त्री० पुराने चिथड़े जोड़कर बनाया हुग्रा बिछौना, गुदड़ी।
कथा—स्त्री० [सं०] किस्सा, कहानी। चर्चा, जिक्र। धर्मविषयक व्याख्यान। समाचार, हाल। वादविवाद। ⊙प्रसंग = पुं० दे० 'कथावार्ता'। ⊙मुख = पुं० कथा या ग्राख्यान की प्रस्तावना। ⊙वस्तु = स्त्री० मूल कथा। ⊙वार्ता = स्त्री० पौराणिक ग्राख्यान। ग्रनेक प्रकार की बातचीत।
कथानक—पुं० [सं०] छोटी कथा, कहानी। उपन्यास या कहानी का सारांश।
कथित—वि० [सं०] कहा हुग्रा।
कथीर—पुं० राँगा।
कथील, कथीला—पुं० दे० 'कथीर'।
कथोद्घात—पुं० [सं०] कथाप्रारंभ। (नाटक में) सूत्रधार या प्रबंधक के ग्रंतिम शब्दों को दोहराते हुए रंगमंच पर सबसे पहले ग्रानेवाले पात्र द्वारा ग्रभिनय का ग्रारंभ।
कथोपकथन—पुं० [सं०] बातचीत। वाद-विवाद।
कथ्य—वि० [सं०] कहने के योग्य। जिसके विषय में कहा जाय।
कदंब—पुं० [सं०] कदम वृक्ष। समूह, ढेर।
कद—पुं० [ग्र०] डील, ऊँचाई। †क्रि० वि० [हिं०] कब।
कदध्व Ⓟ—पुं० खोटा मार्ग, कुपथ।
कदन—पुं० [सं०] मरण, विनाश। युद्ध। पाप। दुःख। घातक (समस्त पद में जैसे मदनकदन)।
कदन्न—पुं० [सं०] बुरा ग्रन्न। मोटा ग्रन्न (कोदो ग्रादि)।
कदम—पुं० एक सदाबहार जाति का बड़ा पेड़ जिसमें बरसात में गोल फल लगते हैं।

कदम—पु० [अ०] पैर, पाँव। डग, फलाँग। धूल आदि मे बना पैर का चिह्न। चलने मे एक पैर से दूसरे पैर तक का अतर, पेड। घोडे की एक चाल। ⊙**चा**=पु० [फा०] पैर रखने का स्थान। पाखाने की खुड्ढी। ⊙**बाज**=वि० [अ०] कदम की चाल चलनेवाला (घोडा)। मु०~**चूमना**=अत्यत आदर करना। प्रणाम करना। शपथ खाना। ~**पर कदम रखना**=ठीक पीछे पीछे चलना। अनुकरण करना। ~**बढ़ाना**=चाल तेज करना। ~**रखना**=प्रवेश करना।

कदर—स्त्री० [अ०] प्रतिष्ठा, बडाई। मात्रा, मान। ⊙**दान**=वि० [फा०] गुणग्राही। ⊙**दानी**=स्त्री० [फा०] गुणग्राहकता।

कदरई(पु)—स्त्री० कायरता।

कदरज(पु)—वि० दे० 'कदर्य'।

कदरमस(पु)—स्त्री० मारपीट, लडाई।

कदराई—स्त्री० भीरुता, कायरता।

कदराना(पु)—अक० कायर होना, डरना।

कदरो—स्त्री० मैना के डील डौल का एक पक्षी।

कदर्थ—पु० बेकार वस्तु, कूडा करकट। वि० कुत्सित, बुरा। ⊙**ना**=स्त्री० दुर्गति, दुर्दशा। पीडा, व्यथा। **कदर्थित**—वि० जिसकी दुर्गति की गई हो। त्यक्त। तिरस्कृत। बेकार किया गया।

कदर्य—वि० कजूस। लोभी। तुच्छ। बुरा।

कदली—स्त्री० [सं०] केला। काले और लाल रग का एक हिरन।

कदा—कि० वि० [सं०] कब, किस समय। ⊙**च**(पु)=क्रि० वि० शायद, कदाचित। ⊙**चन**=क्रि० वि० कभी, शायद। ⊙**चित्**=क्रि० वि० शायद, शायद कभी। **कदापि**—क्रि० वि० कभी, किसी समय भी।

कदाकार—वि० बुरे आकार का, बदसूरत।

कदाख्य—वि० बदनाम।

कदाचार—पु० बुरा आचरण।

कदी—वि० हठी, जिद्दी। क्रि० वि० कभी, किसी समय।

कदीम, कदीमी—वि० [अ०] पुराना, प्राचीन।

कदुष्ण—वि० थोडा गरम, कुनकुना।

कदूरत—स्त्री० [अ०] रजिश, मनमुटाव।

कदे(पु)—क्रि० वि० कभी।

कद्दावर—वि० [फा०] बडे डीलडौल का।

कद्दू—पु० कुम्हडा। लौकी। ⊙**कश**=पु० [फा०] कद्दू को रगडकर महीन टुकडे करने का एक औजार।

कद्रुज—पु० [सं०] कद्रु की सतान, साँप।

कधी—क्रि० वि० दे० 'कभी'।

कन—पु० बहुत छोटा टुकडा, जर्रा। अन्न का दाना। प्रसाद, जूठन। भीख। चावल की धूल। रेत का कण। बूँद। शारीरिक शक्ति। [हिं०] पु० 'कान' का सक्षिप्त रूप (के० समा० मे)। ⊙**कटा**=वि० जिसका कान कटा हो, बूचा। कान काटनेवाला। ⊙**खजूरा**=पु० बहुत से पैर का एक जहरीला कीडा। गोजर। ⊙**खोदनी**=स्त्री० कान की मैल निकालने की सलाई। ⊙**छेदन**=पु० हिंदुओ का कान छेदने का सस्कार। ⊙**टोप**=पु०=कानो को ढकनेवाली टोपी। ⊙**तूतुर**=पु० बहुत ऊँचा और लबा उछलनेवाला छोटी जाति का एक जहरीला मेढक। ⊙**पटी**=स्त्री० कान और आँख के बीच का स्थान। ⊙**फटा**=पु० कानो को फड़वाकर उनमे बिल्लौर, लकडी आदि के छल्ले पहननेवाला गोरखपथी योगी। वि० जिसका कान फटा हो। ⊙**फुंका**=वि० कान फूंकनेवाला, दीक्षा देनेवाला। जिसने दीक्षा ली हो। ⊙**फुसका**=वि० कान मे धीरे धीरे बात कहनेवाला। चुगलखोर। ⊙**फुसकी**=स्त्री० दे० 'कानाफूसी'। ⊙**फूल**=पु० दे० 'करनफूल'। ⊙**रस**=पु० गाना बजाना सुनने का आनद। सगीत की रुचि।

(⊙)रसिया = वि० संगीत का शौकीन। (⊙)सुई = स्त्री० आहट, टोह।

कनउड (पु)—वि० दे० 'कनौडा'।

कनक—पु० [सं०] सोना। धतूरा। पलाश। नागकेसर। खजूर। छप्पय छंद के ७१ भेदों में से एक। पु० [हिं०] गेहूँ। गेहूँ का आटा। (⊙)कली = पु० कान में पहनने का एक गहना, लौंग। (⊙)कशिपु = पुं० [सं०] दे० दे० 'हिरण्यकशिपु'। (⊙)चंपा = स्त्री० [हिं०] बहुत सफेद और मीठी सुगंधवाले फल का एक पेड, कर्णिकार। (⊙)जीरा = पुं० एक महीन धान। (⊙)फल = पुं० [सं०] धतूरे का फल। जमालगोटा। कनकाचल—पुं० [सं०] सोने का पर्वत। सुमेरु पर्वत।

कनकना—वि० जरा से आघात से टूटनेवाला, 'चीमड' का उलटा। जिससे कनकनाहट उत्पन्न हो। चुनचुनानेवाला। अरुचिकर। चिडचिडा। कनकनाना—अक० सूरन, अरवी आदि के स्पर्श या खाने से एक प्रकार की चुनचुनाहट होना। अरुचिकर होना। रोमांचित होना। कनकनाहट—स्त्री० कनकनाने का भाव।

कनका पु०, कनकी—स्त्री० चावल का टूटा हुआ छोटा टुकडा। छोटा कण।

कनकानी—पु० घोडे की एक जाति जो बडी कदमबाज और तेज होती है।

कनकूत—पु० खेत में खडी फसल की उपज का अनुमान।

कनकौवा—पु० कागज की बडी पतंग, गुड्डी।

कनखा (पु)†—पु० कोंपल। (पु) कटाक्ष। कनखियाना—सक० कनखी या तिरछी नजर से देखना। आँख से इशारा करना। कनखी, कनखैया (पु)†—स्त्री० पुतली को आँख के कोने पर ले जाकर ताकने की मुद्रा। दूसरों की दृष्टि बचाकर देखने का ढंग। आँख का इशारा।

कनगुरिया—स्त्री० कनिष्ठिका उँगली।

कनधार (पु), कनहार (पु)—पु० कर्णधार केवट।

कनमनाना—अक० सोए हुए प्राणी का आहट पाकर कुछ हिलना डोलना विरुद्ध कहना या चेष्टा करना।

कनय (पु)—पु० दे० 'कनक'।

कनसार—पु० ताम्रपत्र पर लेख खोदनेवाला।

कनस्तर—पु० तेल आदि रखने का टीन का चौकोर बरतन।

कना—पु० दे० 'कन'। सरकडा।

कनाउड़ा (पु)—वि० दे० 'कनौडा'।

कनागत—पु० पितृपक्ष। श्राद्ध।

कनात—स्त्री० [तु०] घेरकर आड करने की कपडे की दीवार।

कनावडा (पु)—वि० दे० 'कनौडा'।

कनिआरी (पु)—स्त्री०, कनियार (पु)—पु० दे० 'कनकचंपा'।

कनिका (पु)—स्त्री० दे० 'कणिका'।

कनिगर (पु)—वि० अपनी मर्यादा का ध्यान रखनेवाला।

कनियाँ†—स्त्री० गोद, कोरा, कौली।

कनियाना—अक० कतराना। पतंग का कन्नी खाना। †गोद में उठाना।

कनिष्ठ—वि० [सं०] सबसे छोटा। अत्यंत लघु। जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। हीन, निकृष्ट।

कनिष्ठा—वि० स्त्री० [सं०] सबसे छोटी, बहुत छोटी। हीन, निकृष्ट। स्त्री० सबसे छोटी या पीछे की विवाहिता स्त्री। नायिकाभेद के अनुसार अधिक स्त्रियों में वह जिसपर पति का प्रेम कम हो। सबसे छोटी उँगली, कानी उँगली।

कनिष्ठिका—स्त्री० [सं०] पाँचों उँगलियों में से छोटी, कानी उँगली।

कनिहार (पु)—पु० कर्णधार, मल्लाह।

कनी—स्त्री० छोटा टुकडा। हीरे का सबसे छोटा टुकडा। चावल का छोटा टुकडा। बूँद।

कनीनिका—स्त्री० [सं०] आँख की पुतली या तारा। कन्या।

कनूका (पु)†—पु० अनाज का दाना, कनका।

कने (पु) †—क्रि॰ वि॰ पास, निकट। ओर, तरफ। अधिकार मे।
कनेठा †—वि॰ काना। ऐंचाताना, भेंगा।
कनेठी—स्त्री॰ कान मरोडने की सजा।
कनेर—पु॰ लाल, पीले या सफेद रग के फूल का पेड। **कनेरिया**—वि॰ कनेर के फूल के रग का।
कनेव †—पु॰ चारपाई का टेढापन।
कनौजिया—वि॰ कन्नौज निवासी। पु॰ कान्यकुब्ज ब्राह्मण।
कनौड़ा—वि॰ [स्त्री॰ कनौडी] वि॰ काना। खडित अगवाला। बदनाम। क्षुद्र, तुच्छ। लज्जित। कृतज्ञ, एहसानमद।
कनौती—स्त्री॰ पशुओ के कान या कानो की नोक। कानो के उठाए रखने का ढग। कान की बाली।
कन्ना—पु॰ पतग को ऊपर नीचे दो छोरो पर बाँधनेवाला मुख्य डोरा। कन्ना बाँधने का छेद किनारा, कोर। चावल का कन। वनस्पति का एक रोग। मु॰—**कन्ने ढीले होना** = थक जाना। मानमर्दन होना।
न्नी—स्त्री॰ पतग के दोनो ओर के किनारे। वजन बराबर करने के लिये पतग की कन्नी मे बँधी धज्जी। किनारा, हाशिया। धोती, चादर आदि का किनारा। राजगीरो का पलस्तर करने का एक औजार, करनी।
न्यका—स्त्री॰ [स॰] कन्या, क्वारी लडकी। बेटी।
न्या—स्त्री॰ [सं॰] अविवाहिता लडकी। बेटी। बारह राशियो मे से एक। घीक्वार। बडी इलायची। एक वर्णवृत्त। ⊙**कुमारी** = स्त्री॰ भारत की दक्षिणी सीमा का एक अतरीप। ⊙**दान** = पुं॰ विवाह मे कन्या देने की एक रीति। ⊙**धन** = पुं॰ स्त्री को कन्या अवस्था मे मिलनेवाला धन। ⊙**रासी** = वि॰ [हिं॰] कन्या राशि मे उत्पन्न। दब्बू, कायर। मद भाग्यवाला। ⊙**वानी** (पु) = स्त्री॰ कन्या के सूर्य के समय की (अच्छी मानी जानेवाली) वर्षा।
कन्हाई—पुं॰ श्रीकृष्ण।
कन्हावर (पु)—पुं॰ दे॰ 'कँधावर'।
कन्हैया—पुं॰ श्रीकृष्ण। प्रिय व्यक्ति। बाँका आदमी। बहुत सुदर लडका।
कपट—पुं॰ [सं॰] धोखा, छल। दुराव, छिपाव।
कपटी—वि॰ कपट करनेवाला, छली।
कपटना—सक॰ काटकर अलग करना। धीरे से निकाल लेना।
कपड़—पुं॰ 'कपडा' का सक्षिप्त रूप (के॰ समा॰ मे)। ⊙**छन**, ⊙**छान** = पुं॰ पिसी हुई बुकनी को कपडे मे छानने का कार्य। ⊙**द्वार** = पुं॰ कपडो का भडार। ⊙**धूलि** = स्त्री॰ एक बारीक रेशमी कपडा, करेब। ⊙**मिट्टी** = स्त्री॰ धातु या ओषधि फूँकने के लिये बनाई हुई पोटली पर गीली मिट्टी के साथ कपडा लपेटने की क्रिया कपरौटी।
कपडा—पुं॰ रूई, रेशम, ऊन या सन आदि के तागो से बना हुआ आच्छादन, वस्त्र। पोशाक। ⊙**लत्ता** = पुं॰ पहनने ओढने का सामान। मु॰—**कपडो से होना** = मासिक धर्म से होना।
कपड़ौटी, कपरौटी—स्त्री॰ दे॰ 'कपडमिट्टी'।
कपर्द, कपर्दक—पुं॰ [सं॰] (विशेषत शिव का) जटाजूट। कौडी। **कपर्दिका**—स्त्री॰ [सं॰] कौडी। **कपर्दिनी**—स्त्री॰ [सं॰] दुर्गा। **कपर्दी**—पुं॰ [सं॰] जटाजूटधारी शिव। ग्यारह रुद्रो मे से एक। वि॰ जटाजूटधारी।
कपाट—पु॰ [सं॰] किवाड, पट।
कपार (पु) †—पु॰ दे॰ 'कपाल'।
कपाल—पुं॰ [सं॰] सिर के ऊपर का अस्थिविस्तार, खोपडी, मस्तक। भाग्य। घडे आदि के नीचे या ऊपर का भाग। भिक्षा माँगने का एक पात्र। अडे के छिलके का आधा भाग। ढक्कन। ⊙**क्रिया** = स्त्री॰ मृतक सस्कार मे शव की खोपडी को बाँस या लकडी से फोडना। सर्वथा नाश। ⊙**माली** = पुं॰ मुडमाला धारण करनेवाला, महादेव। **कपालिका**—स्त्री॰ खोपडी। घडे के नीचे या ऊपर का भाग। दाँत टूटने का एक रोग। स्त्री॰ [हिं॰] काली, रणचडी। **कपालिनी**—स्त्री॰ [सं॰] दुर्गा। **कपाली**—पुं॰ शिव। महादेव।

भैरव। खप्पर लेकर माँगनेवाला भिक्षुक। एक वर्णसकर जाति, कपरिया
कपालक(पु)—वि० दे० 'कापालिक'।
कपास—स्त्री० रूई का पौधा। रूई। **कपासी**—वि० कपास के फूल के रग का, बहुत हलके पीले रग का।
कपिजल—पुं० [सं०] चातक, पपीहा। गौरा पक्षी। तीतर। एक मुनि। वि० हलके पीले रग का।
कपि—पुं० [सं०] बदर। हाथी। कजा। विष्णु। ⊙**कच्छु**=स्त्री० केवाँच। ⊙**केतु**, ⊙**ध्वज**= पुं० अर्जुन। ⊙**खेल**(पु) = पुं० [हिं०] दे० 'कपिकच्छु'।
कपित्थ—पुं० [सं०] कैथ का पेड या फल।
कपिल—वि० [सं०] भूरा, मटमैला। सफेद। पुं० साख्य शास्त्र के प्रवर्तक एक मुनि। अग्नि। कुत्ता। चूहा। शिलाजीत। महादेव। सूर्य। विष्णु। **कपिला**—वि० स्त्री० भूरे या मटमैले रग की। सफेद। सफेद दागवाली। सीधी सादी। स्त्री० सफेद गाय। सीधी गाय।
कपिश—(हिं० वै० कपिस (पु)) वि० [सं०] काला और पीला रग मिला हुआ, भूरा। पीलापन या लाली लिए हुए भूरा।
कपीश—पुं० [सं०] वानरो का राजा। (हनुमान, सुग्रीव, वालि आदि)।
कपूत—पुं० नालायक बेटा, कुपुत्र। **कपूती**—स्त्री० पुत्र के अयोग्य आचरण, नालायकी।
कपूर—पुं० शीघ्र जल उठनेवाला, सफेद रंग का जमा हुआ एक सुगधित द्रव्य। **कपूरी**—वि० कपूर का बना हुआ। हलके पीले रग का। पुं० एक हलका पीला रग। एक पान।
कपोत—पुं० [सं०] कबूतर। परेवा। पक्षी। ⊙**व्रत** = पुं० निर्विरोध अत्याचार सहन करना। **कपोती**—स्त्री० कबूतरी। पडुकी।
कपोल—पुं० [सं०] गाल। हाथी का गडस्थल। ⊙**कल्पना** = स्त्री० मनगढत बात, गप। ⊙**कल्पित** = वि० गढा हुआ, झूठा।
कफ—पु० [सं०] प्राय खाँसने या थूकने से बाहर निकलनेवाली गाढी लसीली वस्तु, बलगम। शरीर के भीतर की एक धातु (वात, पित्त और कफ मे से)। पु० [अ०] कमीज, कुरते आदि मे आस्तीन के आगे की दोहरी पट्टी जिसमे बटन लगता है। पु० [फा०] झाग, फेन।
कफन—पु० [अ०] मुर्दा लपेटकर गाडने या जलाने का कपडा। ⊙**खसोट** = वि० [हिं०] कजूस, अत्यत लोभी। ⊙**खसोटी** = स्त्री० कफन फाडकर लिया जानेवाला डोमो का कर। बुरे ढग से धन कमाना। कजूसी। ⊙**चोर** = वि० दे० 'कफन-खसोट'। **मु०~की कौडी न रखना** = जो कमाना वह खा जाना। अत्यत त्यागी होना। **~को कौडी न होना** = अत्यत दरिद्र होना। **~फाडकर उठना** = मुर्दे का जी उठना। सहसा उठ बैठना। **सिर से~बाँधना** = मरने को तैयार होना, जान खतरे मे डालना। **कफनाना**—सक० मुर्दे को कफन मे लपेटना। **कफनी**—स्त्री० मुर्दे के गले मे डालने का कपडा। साधुओ के पहनने का बिना सिला लंबा कपडा।
कफस—पु० [अ०] पिंजरा, दरबा। कैदखाना। वायु और प्रकाश से रहित बहुत तग जगह।
कबध—पु० [सं०] बिना सिर का धड, रुड। पेट। सूर्योदय या सूर्यास्त का सूर्यबिब ढकनेवाला बादल। पीपा, कडाल। एक राक्षस जिसके सिर और जाँघो को इद्र ने उसके पेट मे घुसा दिया था। राहु।
कब—क्रि० वि० किस समय। किस दिन। कभी नही (जैसे, वह उसकी कब सुनने वाला है)।
कबड्डी—स्त्री० 'कबड्डी', 'कबड्डी' कहकर खेला जानेवाला एक भारतीय खेल।
कबर—पुं० दे० 'कब्र'। **कबरिस्तान**—पुं० दे० 'कब्रिस्तान'।
कबरा—वि० सफेद रग पर काले, लाल या पीले दागवाला, अबलक।
कबरी—स्त्री० [सं०] स्त्रियो के सिर की चोटी। सुदर केशपाश।
कबल—क्रि० वि० दे० 'कब्ल'।

कबहुँ—क्रि० वि० कभी, किसी अवसर पर। ⊙क = क्रि० वि० कदा कभी।
कबा—पुं० [अ०] एक प्रकार का लंबा ढीला पहनावा।
कबाड़—पुं० काम न आनेवाली वस्तु, रद्दी चीज। व्यर्थ का काम। **कबाड़ा**—पुं० व्यर्थ की बात, बखेडा। **कबाड़िया, कबाडी**—पुं० पुरानी या टूटी फूटी चीजे खरीदने बेचनेवाला व्यक्ति। तुच्छ व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति।
कबाब—पुं० [अ०] सीखो पर भुना हुआ मास। ⊙**चीनी** = स्त्री० [हिं०] मिर्च की जाति की एक झाडी और उसका दवा मे प्रयुक्त होनेवाला कड़ुआ चर्परा फल। मु० ~**करना** = जला देना। कष्ट पहुँचाना। ~**होना** = जलना भुनना। क्रुद्ध होना। **कबाबी**—वि० कबाब बेचनेवाला। मास खानेवाला।
कबार—पुं० राजगार, कारोबार। दे० 'क़बाड'। ⓟ पुं० कीर्तिवर्णन।
कबारना†—सक० उखाडना।
कबाला पुं० [अ०] दूसरे को जायदाद देने का दस्तावेज (बयनामा, दानपत्र आदि)।
कबाहटⓟ—स्त्री० दे० 'कबाहत'।
कबाहत—स्त्री० [अ०] बुराई, खराबी। दिक्कत, अडचन।
कबीर—पुं० [अ०] निर्गुण सप्रदाय के एक प्रसिद्ध सत। होली मे गाया जानेवाला एक गीत। श्रेष्ठ, बडा।
कबीला—पु० [अ०] एक गोत्र के सब लोगो का वर्ग। समूह, झुड। स्त्री० स्त्री, जोरू। पु० दे० 'कमीला'।
कबुलवाना, कबुलाना—सक० [अक० कबूलना का प्रे०] कबूल कराना, मनवाना।
कबूतर—पु० [फा०] झुड मे रहनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी जो पालतू और जगली दोनो प्रकार का होता है। ⊙**खाना** = पु० कबूतर रखने का दरबा। ⊙**बाज** = वि० कबूतर पालने और उडाने का शौकीन।
कबूल—पु० [अ०] स्वीकार, मजूर। ⊙**ना** = सक० [हिं०] कबूल करना, स्वीकार करना। **कबूलियत**—स्त्री० [अ०] पट्टे की स्वीकृति मे दिया जानेवाला दस्तावेज।
कब्ज—पु० [अ०] पाखाने का साफ न होना, मलावरोध। ग्रहण, पकड। **कब्जियत**—स्त्री० पाखाने का साफ न आना, मलावरोध।
कब्जा—पु० [अ०] मूँठ, दस्ता। सदूक, किवाड आदि मे पल्लो को घुमाने के लिये किनारो पर लगाया जानेवाला पुर्जा। दखल, अधिकार। दड, डाँड। कुश्ती का एक पेच। ⊙**दार** = पु० [फा०] कब्जा करनेवाला अधिकारी। वि० जिसमे कब्जा लगा हो।
कब्र—स्त्री० [अ०] मुर्दे को गाडने का गड्ढा। उसपर बनाया जानेवाला चबूतरा या खडा किया गया पत्थर। मु० ~**का मुँह झाँक आना** = मरते मरते बचना। ~**मे पैर या पाँव लटकाना** = मरने के निकट होना, बहुत वृद्ध होना।
कब्रिस्तान—स्त्री० [फा०] मुर्दे गाडने का स्थान।
कभी—क्रि० वि० किसी समय, किसी अवसर पर। मु० ~**का** = बहुत देर से। ~**न कभी** = किसी समय अवश्य।
कभूⓟ—क्रि० वि० दे० 'कभी'।
कमंगर—पु० कमान बनानेवाला। हड्डियो को बैठानेवाला। चितेरा, मुसब्बिर। †वि० कुशल, निपुण। **कमगरी**—स्त्री० कमगर का काम।
कमंडल—पु० दे० 'कमडलु'। **कमंडली**—वि० कमडल रखनेवाला, साधु, बैरागी। पाखडी। पु० ब्रह्मा।
कमंडलु—पु० [सं०] सन्यासियो का जलपात्र।
कमंदⓟ—पु० कबध, बिना सिर का धड। स्त्री० पशुओ आदि को फँसाने या शत्रुओ को बाँधने की फदेदार रस्सी। फदेदार रस्सी जिसे फेककर चोर आदि मकानो पर चढते हैं।
कम—वि० [फा०] थोडा, अल्प। बुरा (जैसे, कमअसल) क्रि० वि० प्राय नही। ⊙**असल** = वि० वर्णसकर, दोगला। ⊙**खाब** = पु० सोने चाँदी के तारो का एक मोटा रेशमी कपडा। ⊙**जोर** = वि० दुर्बल, अशक्त। ⊙**जोरी** = स्त्री० दुर्बलता। ⊙**ती** = कसी, घटती। ⊙ **बख्त** = वि० भाग्यहीन, अभागा। ⊙**बख्ती** = स्त्री०

बदनसीबी, दुर्भाग्य। ⊙सिन = वि० कम उम्र, छोटी अवस्था का। ⊙सिनी = स्त्री० लड़कपन, कमउम्री।

कमची—स्त्री० बाँस आदि की पतली लचीली टहनी। पतली लचकदार छड़ी। लकड़ी आदि की पतली फट्टी।

कमठ—पु० [सं०] कछुआ। साधुओं का तुंबा। बाँस। एक असुर। पीठ पर लंबे काँटेवाला साही नामक पशु।

कमठा—पु० धनुष, कमान।

कमठी—स्त्री० [सं०] कछुई। स्त्री० [हिं०] बाँस की पतली लचीली धज्जी।

कमना†(पु)—अक० कम होना, घटना।

कमनी(पु)—वि० दे० 'कमनीय'।

कमनीय—वि० [सं०] कामना करने योग्य। मनोहर, सुंदर।

कमनैत—पु० कमान चलानेवाला, तीरंदाज। **कमनैती**—स्त्री० तीर चलाने की विद्या, धनुर्विद्या।

कमर—स्त्री० [फा०] शरीर का मध्य भाग (पेट और पीठ के नीचे तथा पेड़ू और चूतड़ के ऊपर)। किसी लंबी वस्तु के बीच का भाग। कमर पर पड़नेवाला अँगरखे आदि का भाग। कुश्ती का एक पेंच। ⊙**कोट, कोटा** = पु० [हिं०] किलों आदि के ऊपर की कँगूरे और छेदों से युक्त छोटी दीवार। रक्षा के लिये घेरी हुई दीवार। ⊙**बंद** = पु० कमर बाँधने का लंबा कपड़ा, पटुका। पेटी। नाड़ा। किसी पदार्थ के मध्य भाग के चारों ओर लपेटी जानेवाली रस्सी। वि० कमर कसे हुए, मुस्तैद ⊙**बन्दी** = स्त्री० लड़ाई की तैयारी, मुस्तैदी। ⊙**बस्ता** = वि० तैयार, कटिबद्ध। **मु०**~**कसना या बाँधना** = तैयार या उतारू होना। ~**टूटना** = निराश होना। असहाय होना। ~**सीधी करना** = थकावट मिटाना।

कमरख—पु० पहलदार फाँकोंवाला एक लंबा खट्टा फल और उसका पेड़। **कमरखी**—वि० कमरख के समान फाँकदार।

कमरा—पुं० कोठरी। एक विशेष शीशे (अं० लेंस) से प्रतिबिंबित वस्तु का चित्र अंकित करने का यंत्र। †पुं० दे० 'कंबल'।

कमरिया—पुं० एक छोटे डील डौल का जबर्दस्त हाथी।

कमरी†—स्त्री० दे० 'कमली'।

कमल—पुं० [सं०] पानी में होनेवाला एक प्रसिद्ध पौधा और उसके लाल, नीले, पीले या सफेद फूल। पेट में दाहिनी ओर होनेवाला कमल के आकार का एक मासपिंड। जल। ताँबा। सारस। आँख का कोया। गर्भाशय का मुँह। छह मात्राओं का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में गुरु, लघु, गुरु, लघु होता है। छप्पय के ७१ भेदों में से एक जिसमें ४३ गुरु, ६६ लघु, कुल १०९ वर्ण और १५२ मात्राएँ होती हैं। एक वर्णवृत्त जिसका प्रत्येक चरण एक वर्णवृत्त का होता है। पीलिया रोग। मोमबत्ती जलाने का एक प्रकार का गिलास। मूत्राशय, मसाना। नक्षत्रों का एक समूह। ⊙**गट्टा** = पुं० [हिं०] कमल का बीज। ⊙**ज** = पुं० ब्रह्मा। ⊙**नयन** = वि० कमल की तरह बड़े नेत्रवाला। पुं० विष्णु। राम। कृष्ण। ⊙**नाभ** = पु० विष्णु। ⊙**नाल** = स्त्री० कमल की डंडी जिसपर फूल रहता है। ⊙**बंध** = पु० एक प्रकार का चित्रकाव्य। ⊙**बाई** = स्त्री० [हिं०] एक रोग जिसमें शरीर, विशेषकर आँखें पीली पड़ जाती हैं। ⊙**योनि** = पु० ब्रह्मा। **कमलाकार**—पु० छप्पय का एक भेद। वि० कमल के आकार का। **कमलाक्ष**—पु० दे० 'कमलगट्टा'। दे० 'कमलनयन'। **कमलासन**—पु० ब्रह्मा। योग का एक आसन, पद्मासन।

कमला—स्त्री० [सं०] लक्ष्मी। धन, ऐश्वर्य। संतरा। एक वर्णवृत्त जिसमें क्रम से दो नगण और एक सगण होता है। पु० [हिं०] खुजलाहट उत्पन्न करनेवाला एक रोएँदार कीड़ा, सूँडी। ⊙**कांत**, ⊙**पति** = पु० विष्णु।

कमलिनी—स्त्री० [सं०] कमल। छोटा कमल। तालाब जिसमें कमल हो।

कमली—पु० [सं०] ब्रह्मा। स्त्री० [हिं०] छोटा कंबल।

कमान—स्त्री० [फा०] धनुष। **कमानिया**—पु० धनुष चलानेवाला, तीरंदाज। वि०

मेहराबदार। **कमानी**—स्त्री० लोहे आदि की झुकाई हुई लचीली तीली। आँत उतरने के रोगियो को पहनाई जानेवाली चमडे की पेटी। कमान के आकार की झुकी हुई लकडी।

कमाना—सक० कामकाज करके रुपया पैदा करना। सुधारना या काम के योग्य बनाना। सेवा सबधी छोटे काम करना (जैसे, पाखाना कमाना)। कर्मसचय करना (जैसे, पाप कमाना)। अक० मेहनत मजदूरी करना। कसब करना। सक० कम करना, घटाना।

कमाल—पु० [अ०] पूरापन, समाप्ति। निपुणता। अनोखा काम। कारीगरी। कबीर के बेटे का नाम। वि० पूरा। सपूर्ण। सर्वोत्तम। बहुत ज्यादा। **कमालियत**—स्त्री० [अ०] पूरापन निपुणता।

कमासुत—वि० कमाई करनेवाला, खूब रुपए पैसे पैदा करनेवाला, उद्यमी।

कमी—स्त्री० कम होने का भाव, अल्पता।

कमीज—स्त्री० कफ और कालरवाला एक कुरता (अ० शर्ट)।

कमीना—वि० [फा०] ओछा, नीच।

कमीला—पुं० एक छोटा पेड जिसके फलो पर की लाल धूल रेशम रँगने के काम आती है है।

कमुकंवर(पु)‡—पुं० धनुष तोड़नेवाले रामचद्र।

कमेरा—पुं० काम करनेवाला, मजदूर, नौकर।

कमेला—पुं० पशुओ के मारे जाने की जगह, कसाईखाना।

कमोदिक—पुं० कामोद राग गानेवाला पुरुष। गवैया।

कमोदिन(पु)—स्त्री० दे० 'कुमुदिनी'।

कमोरा—पुं० चौडे मुँह का मिट्टी का एक बरतन, मटका। **कमोरी**=स्त्री० छोटा कमोरा।

कया(पु)—स्त्री० दे० 'काया'।

कयाम—पुं० [अ०] ठहराव, टिकान। ठहरने या विश्राम करने की जगह। निश्चय, स्थिरता।

कयामत—स्त्री० [अ०] मुसलमानो और ईसाइयो आदि मे सृष्टि का वह अंतिम दिन जब मुर्दे उठकर खडे होगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का लेखा रखा जायगा। प्रलय। खलबली, आफत।

कयास—पुं० [अ०] अनुमान, अटकल, सोच विचार।

करंक—पुं० [सं०] मस्तक। कमडलु। नारियल की खोपडी। पजर, ठठरी।

करंज—पुं० [सं०] कजा। दातून आदि के लिये प्रयुक्त एक छोटा जगली पेड। एक आतिशबाजी।

करंजा—पुं० दे० 'कजा'। दे० 'करज'।

करंजुवा—पुं० दे० 'करज'। बाँस, ऊख आदि को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का अकुर। करज का सा रग, वि० करज के रग का, खाकी।

करंड—पुं० [सं०] शहद का छत्ता। तलवार। एक हस। बाँस की टोकरी या पिटारी। एक प्रकार की चमेली। पुं० [हिं०] हथियार तेज करने का एक पत्थर।

करंतीना—पु० कानून द्वारा निर्धारित वह समय या स्थान जिसमे किसी सक्रामक बीमारीवाले क्षेत्रो से आए हुए यात्री या रोगी जनसाधारण से दूर रखे जाते है।

कर—पुं० [सं०] हाथ। हाथी की सूंड। सूर्य या चद्रमा की किरण। ओला, पत्थर। महसूल। छल, युक्ति। वि० करनेवाला (समा० के अत मे) जैसे, हितकर, दिनकर आदि। (पु)†प्रत्य० सबध कारक का चिह्न, का। ⊙**गत**= वि० हाथ मे आया हुआ, प्राप्त। ⊙**ग्रह**=पुं० विवाह, पाणिग्रहण। ⊙**चंग**(पु)=पुं० ताल देने का एक बाजा। डफ। ⊙**ज**=पुं० नाखून। उँगली। नख नामक सुगधिक द्रव्य। करज, कंजा। ⊙**तल**=हथेली। छप्पय का एक भेद। ⊙**तली**=स्त्री० हथेली। हथेली का शब्द, ताली। ⊙**ताल**=पुं० हथेलियो के परस्पर आघात का शब्द।

कीर्तन आदि मे हाथ मे लेकर बजाने का एक बाजा। झाँझ, मँजीरा। ⊙ताली = स्त्री० दोनों हाथो के परस्पर आघात का शब्द, ताली। करताल नामक बाजा। ⊙धर = पुं० बादल, मेघ। ⊙पर(पु) = स्त्री० खोपडी, वि० कजूस। ⊙पलई = स्त्री० [हि०] दे० 'करपल्लवी'। ⊙पल्लव = पुं० उँगली। ⊙पल्लवी = स्त्री० उँगलियों के सकेत शब्दो को प्रकट करने की विद्या। ⊙पिचकी = स्त्री० [हि०] पिचकारी की तरह पानी छोडने के लिए दोनों हथेलियों मे बनाया हुआ सपुट। ⊙पीडन = पुं० विवाह। ⊙पुट = पुं० दोनों हथेलियो को जोडने से बना गड्ढा या अजलि। ⊙माला = स्त्री० माला के समान प्रयुक्त उँगलियों के पोर। ⊙माली = पु० सूर्य। ⊙रुह = पुं० नाखून। ⊙वार(पु) = स्त्री० तलवार। ⊙वाल = पुं० तलवार। नख। ⊙वाली = स्त्री० छोटी तलवार। ⊙वीर, ⊙वीरक = पुं० कनेर का पेड। तलवार। श्मशान।

करक—पुं० [स०] कमडलु, करवा। अनार। कचनार। पलास। मौलसिरी। करील। स्त्री० [हि०] रुक रुककर होनेवाली पीडा, कसक। रुककर और जलन के साथ होनेवाला पेशाब। नखक्षत। दाब, रगड आदि से पडनेवाला चिह्न। नारियल की खोपडी का बना बरतन। एक पक्षी।

करकच—पुं० समुद्री नमक। झगडा फसाद।

करकट—पुं० कूडा, कतवार।

करकना—अक० कडकना, तडकना। रह रहकर दर्द करना, कसकना।

करकरा—पुं० एक सारस। वि० खुरखुरा। करकराहट—स्त्री० खुरखुराहट। आँख मे किरकिरी पडने की सी पीडा।

करकस(पु)†—वि० दे० 'कर्कश'।

करका—स्त्री० [सं०] ओला, वर्षा का पत्थर।

करखना(पु)†—अक० उत्तेजित या क्रुद्ध होना।

करखा(पु)†—पुं० दे० 'कडखा'। उत्तेजना, ताव। दे० 'कालिख'। मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३७ मात्राएँ होती है तथा ८, २० और २८ मात्राओ पर यति और अत मे विराम होता है।

करगत—स्त्री० सोने, चाँदी या सूत की करधनी।

करगल—पुं० [फा०] गिद्ध। तीर।

करगह—पुं० जुलाहों के कपडा बुनने का यत्र, करघा। जुलाहो के कारखाने मे कपडा बुनते समय पैर लटकाकर बैठने की नीची जगह।

करघा—पुं० दे० 'करगह'।

करछा—पुं० बडी कडछी। एक चिडिया।

करछाल—स्त्री० उछाल, छलाँग।

करछी†—स्त्री० दे० 'कडछी'।

करट—पुं० [स०] कौआ। हाथी की कनपटी। कुसुम का पौधा। नास्तिक।

करटी—पुं० [सं०] हाथी।

करण—पुं० [स०] इद्रिय। हेतु। हथियार, औजार। साधन। साधक। देह। स्थान। क्रिया, कार्य। कारक जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करे और जिसका चिह्न 'से' है (व्या०)। ज्योतिष तिथियो का एक विभाग। कातिब, लेखक। ध्वनि शब्द। दस्तावेज। नृत्य मे हाथ हिलाकर भाव बताने की क्रिया। कामशास्त्र का एक आसन। सख्या जिसका वर्गमूल न निकल सके। (पु) पुं० दे० 'कर्ण'। करणीय—करने योग्य।

करतब—पु० कार्य, काम। पुरुषार्थ, बहादुरी। कला, हुनर, करामात, जादू। करतबी—वि० करतब करनेवाला। बाजीगर। पुरुषार्थी। गुणी, निपुण।

करतरी(पु)—स्त्री० दे० 'कर्तरी'।

करता—पु० दे० 'कर्ता'। एक वर्णवृत्त जिसमे एक नगण, एक लघु और अत्य गुरु, कुल पाँच वर्ण होते है। उतनी दूरी जहाँ तक बंदूक की गोला जा सके।

करतार—पु० सृष्टि करनेवाला, ईश्वर। करतारी(पु)—स्त्री० दे० 'करताल'। वि० ईश्वरीय, करतार की।

करतूत--स्त्री० कर्म, करनी । कला, हुनर । **करतूति**(पु)--स्त्री० दे० 'करतूत' ।

करद--वि० [सं०] कर देनेवाला, अधीन (जैसे, करद राज्य) । सहारा देनेवाला । स्त्री० [हिं०] छुरी, चाकू ।

करदम(पु)--पुं० दे० 'कर्दम' ।

करदा--पुं० बिक्री की वस्तु मे लगा कूडा करकट । दाम मे कमी जो किसी वस्तु मे मिले हुए कूडे करकट का वजन निकाल देने के कारण की जाय । पुरानी वस्तुओ को नई वस्तुओ से बदलने मे जो और धन ऊपर से दिया जाय ।

करधनी--स्त्री० कमर मे लपेटकर पहनने का सोना या चाँदी का गहना । कमर मे पहनने का कई लडो का सूत ।

करन(पु)--पु० दे० 'कर्ण' । ⊙**धार**(पु)= पु० दे० 'कर्णधार' । ⊙**फूल**=पु० कान मे पहनने का एक गहना, तरौना । ⊙**बेध**=पु० वच्चो का कान छेदने का सस्कार ।

करनाई--स्त्री० तुरही ।

करना--पु० लवे पत्ते और सफेद फूल का एक पौधा, सुदर्शन ।(पु)किया हुआ काम, करनी । **करना**--सक० किसी क्रिया को समाप्ति की ओर ले जाना, सपादित करना, निवटना । पकाकर तैयार करना । ले जाना, पहुँचाना । पति या पत्नी के रूप मे रखना । रोजगार खोलना । भाडे पर सवारी लेना । रोशनी बुझाना । दूसरे रूप मे लाना । पद देना । पोतना, रग करना । ‡सभोग करना ।

करनाटकी--पु०करनाटक प्रदेश का निवासी । कलाबाज, कसरत दिखानेवाला । जादूगर, इद्रजाली ।

करनाल--पु० नरसिहा बाजा, भोपा । एक बडा ढोल । एक तोप ।

करनी--स्त्री० कर्म, करतूत । अन्त्येष्टि क्रिया । गारा लगाने का औजार, कन्नी ।

करपर(पु)--पु० खोपडी, कर्पर । वि० कजूस ।

करपरी--स्त्री० पीठी की वरी ।

करबरना(पु)--अक० कुलबुलाना । चहचहाना ।

करबला--पु० [अ०] अरब का उजाड मैदान जहाँ हजरत मोहम्मद के नाती हजरत अली के बेटे हुसैन मारे और दफनाए गए थे । मोहर्रम मे ताजिए दफन करने का स्थान । वह स्थान जहाँ पानी न मिले ।

करबीर--पु० दे० 'करवीर' ।

करभ--पु० [सं०] हथेली के पीछे का भाग । कलाई से लेकर कनिष्ठिका तक हाथ का बाहरी भाग । हाथी की सूँड । ऊँट का बच्चा । हाथी का बच्चा । ऊँट । नख नामक सुगधित वस्तु । कटि, कमर । दोहे का सातवाँ भेद जिसमे १६ लघु होते हैं । **करभोरु**--पु० हाथी की सूँड के समान जघा । वि० हाथी की सूँड के समान जाँघवाली स्त्री ।

करम--पु० [अ०] कृपा । एक गोद या गुग्गुल । [स०] भाग्य । ⊙**चंद**(पु)†= पु० भाग्य । ⊙**भोग**=पु० कर्मों का फल । कर्म । कर्मो के कारण प्राप्त दुःख । **मु०**~**का मारा**=अभागा । ~**फूटना**= भाग्य मद होना ।

करमकल्ला--पु० बद गोभी, पातगोभी ।

करमठ्ठा(पु)--वि० कजूस ।

करमठ(पु)†--वि० कर्मठ, कर्मकाडी ।

करमात(पु)--पु० कर्म भाग्य ।

करमी(पु)--वि० कर्म करनेवाला । कर्मठ । मजदूर ।

करमुँहा, करमुखा(पु)⊥--वि० काले मुँहवाला । कलकी ।

करर--पु० शरीर मे अनेक गाँठोवाला एक जहरीला कीडा । रग के अनुसार घोडे का एक भेद । एक जगली कुसुम ।

कररना, करराना(पु)--अक० चरमराकर टूटना । कर्कश शब्द करना ।

करल(पु)--पु० कडाही ।

करला--पु० दे० 'कल्ला' । **करली**(पु)-- दे० 'कल्ला' ।

करवट--स्त्री० हाथ या पार्श्व के बल लेटने की मुद्रा । ढग । पहलू । करवत, आरा । (काशी, प्रयाग आदि के वे प्राचीन आरे जिनके नीचे कटकर मरने से स्वर्ग आदि की प्राप्ति मानी जाती थी ।) **मु०**~**न लेना**=कर्तव्य का ध्यान न रखना । खबर

न लेना ।--बदलना = दूसरी ओर घूम-कर लेटना । और का और होना । --लेना = दूसरी ओर फिरकर लेटना । और का और हो जाना । करवट के नीचे सिर कटाना ।-करवटों मे रात काटना = व्याकुल या उत्कठा मे रात बिताना ।

करवत--पुं० आरा ।

करवर(पु)†--स्त्री० विपत्ति, मुसीबत ।

करवर(पु)--अक० कलरव करना, चहकना ।

करवा--पुं० धातु या मिट्टी का टोंटीदार लोटा । ⊙**चौथ** = स्त्री० कार्तिक कृष्ण चतुर्थी जिस दिन स्त्रियाँ गौरी का व्रत करती है ।

करवाना--सक० [करना का प्रे०] करने मे लगाना ।

करवैया(पु)†--वि० करनेवाला ।

करश्मा--पुं० [फा०] करामात, चमत्कार । हाव भाव । सकेत, इशारा । मत्र, टोना ।

करष--स्त्री० खिचाव, मनमुटाव । क्रोध, ताव । **करषना**(पु)--सक० खीचना, घसीटना । सोख लेना । इकट्ठा करना, समेटना ।

करसना(पु)--सक० दे० 'करषना' ।

करसान(पु)--पुं० किसान, खेतिहर ।

करसायल, करसायर(पु)--पुं० काला हिरन ।

करसी--स्त्री० उपला; कडा । उपले का टुकडा या चूर ।

करहच--पुं० दे० 'करहस' ।

करहंस--पुं० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से एक नगण, एक सगण और अत्य लघु, कुल सात वर्ण होते हैं ।

करह(पु)--पुं० ऊँट । फूल की कली ।

करहा(पु)--पुं० ऊँट ।

करहाट, करहाटक--पुं० [सं०] कमल की जड, भसीड । कमल का छत्ता । मैनफल ।

करांकुल--पुं० पानी के किनारे की एक बडी चिडिया, क्रौंच ।

करा(पु)--स्त्री० दे० 'कला' ।

करइत--पुं० एक बहुत विषैला काला साँप ।

कराई--स्त्री० दाल का छिलका । (पु)काला-पन । करने की मजदूरी ।

करात--पुं० सोना चाँदी या दवा तौलने का एक परिमाण ।

कराना--सक० दे० 'करवाना' ।

करावा--पुं० शीशे का छोटे मुँह का बडा पात्र ।

करामात--स्त्री० [अ० करामत का बहु०] चमत्कार, अद्भुत व्यापार । **करामाती**--वि० करामात दिखानेवाला, सिद्ध ।

करार--पुं० जल के काटने से बना नदी का ऊँचा किनारा । पुं० [अ०] ठहराव, स्थिरता । धैर्य, तसल्ली । आराम, चैन । प्रतिज्ञा ।

कराररना(पु)--अक० काँ काँ करना, कर्कश स्वर करना । 'वाणी मधुर जानि पिक बोलत कदम करारत काग' (सूर०) ।

करारा--पुं० जल के काटने से बना नदी का ऊँचा किनारा । टीला, ढूह । ऊँचा किनारा । पुं० कौआ । वि० छूने मे कठोर । दृढचित्त । खूब सिका हुआ । उग्र, तेज । खरा । अधिक, घोर । हट्टा कट्टा ।

कराल--वि० [सं०] विस्तृत मुँह और निकले हुए दाँतोवाला । भयकर, डरावना । अदम्य, दुर्निवार । खूब खुला हुआ । **कराली**--स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं मे से एक । कटारी । वि० स्त्री० डरावनी ।

कराह(पु)--पुं० दे० 'कडाह' । स्त्री० कराहने का शब्द । **कराहना**--अक० पीडा-सूचक शब्द मुँह से निकलना, आह आह करना ।

करिंद(पु)--पु० उत्तम हाथी । ऐरावत हाथी ।

करि--पु० हाथी । [समास मे स० 'करिन्' के लिये भी] ⊙**कुभ** = पुं० हाथी का मस्तक । ⊙**वदन** = पुं० गणेश ।

करिखई(पु)--स्त्री० कालापन, श्यामता ।

करिखा†--पुं० दे० 'कालिख' ।

करिणी--स्त्री० [सं०] हथिनी ।

करिया(पु)--पु० पतवार । माँझी । (पु)† वि० काला, श्याम । ⊙ई(पु)--स्त्री० कालापन । कालिख ।

करियारी†--स्त्री० कलियारी विष । लगाम ।

करिश्मा--पु० [फा०] दे० 'करश्मा' ।

करिष्णु—वि० [सं०] कर्तव्यपरायण। करने को उद्यत।

करी—पु० [सं०] हाथी। ⓟ† स्त्री० कड़ी, शहतीर। अनखिला फूल, कली। १५ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे एक गुरु और एक लघु मात्रा रहती है। ⓟकडी, वद। 'उखरी सु बखतर की करी' (हिम्मत० १२७)।

करीना—पु० [अ०] ढग, तौर। तरतीब। सलीका।

करीब—क्रि० वि० [अ०] पास, निकट। लगभग।

करीम—वि० [अ०] कृपालु। पु० ईश्वर।

करीर—पुं० [सं०] बाँस का नया कल्ला। करील का पेड। घडा।

करील—पु० कँकरीली भूमि मे होनेवाली बिना पत्ते की एक झाडी।

करीष—पु० [सं०] जगलो मे मिलनेवाला सूखा गोबर, वनकडा।

करुआⓟ—वि० दे० 'कडुआ'। अप्रिय। ⊙ई ⓟ=स्त्री० कडुआपन।

करुखीⓟ—स्त्री० कनखी, तिरछी नजर।

करुण—पु० [सं०] काव्य के नव रसो मे से एक जिसका स्थायी भाव शोक है। वि० दयनीय, करुणाजनक। दयार्द्र, करुणामय।

करुणा—स्त्री० [सं०] (ⓟ वै० करुना) दूसरे के दुःख की सहानुभूति मे उत्पन्न मनोभाव या दुःख, रहम। प्रिय जनो के वियोग से उत्पन्न दुःख, शोक। करना का पेड। ⊙**दृष्टि**=स्त्री० दया-दृष्टि, कृपा। ⊙**निधान**=वि० करुणा का खजाना, करुणा से भरा हुआ। ⊙**निधि**=वि० करुणा का समुद्र, करुणा से भरा हुआ। ⊙**मय**=वि० दयालु। **करुणार्द्र**—वि० करुणा से पसीजा हुआ।

करुरⓟ—वि० कडुआ।

करुवा†—पु० दे० 'करवा'। दे० 'कडुआ'।

करू†—वि० दे० 'कडुआ'।

करेजⓟ, **करेजा**†—पु० दे० 'कलेजा'।

करेणु—पु० [सं०] हाथी। कर्णिकार वृक्ष। स्त्री० हथिनी।

करेब—स्त्री० एक झीना कपडा।

करेमू—पु० पानी मे होनेवाला पोले डठल का एक साग।

करेरⓟ†—वि० कडा, कठिन।

करेला—पुं० एक बेल और उसका तरकारी के काम मे प्रयुक्त कटु स्वाद का फल। **करेली**—स्त्री० छोटे फल का जगली करेला। छोटा करेला।

करैत—पु० काले फन का एक बहुत विषैला साँप।

करोटन—पु० वनस्पति की एक जाति जिसमे मजरी लगती है और फलो मे तीन या छह बीज निकलते हैं। रग-विरगे और विलक्षण आकार के पत्तों के पौधे।

करोटी—स्त्री० [सं०] खोपडी। ⓟस्त्री० करवट।

करोड—वि० सौ लाख की सख्या (१,००,००,०००)। ⊙**पति**=वि० करोडो रुपएवाला, बहुत धनी।

करोड़ी—पु० राकडिया। मुसलमानी राज्य मे तहसील का एक अफसर।

करोदनाⓟ—सक० खुरचना, कुरेदना।

करोवनाⓟ—सक० दे० 'करोदना'। 'नहिं बोलत नहिं चितवन मुखतन धरनी नखन करोवत (सूर०)।

करोरⓟ†—वि० दे० 'करोड'।

करोलाⓟ†—पुं० करवा, गडुवा।

करौंछाⓟ†—वि० काला, श्याम।

करौंजीⓟ—स्त्री० दे० 'कलौंजी'।

करौंटⓟ—स्त्री० दे० 'करवट'।

करौंदा—पुं० एक कँटीला झाड और उसके छोटे खट्टे फल।

करौत—पुं० आरा। स्त्री० रखेल स्त्री। **करौता**—पुं० दे० 'करौत'। काँच का वडा बरतन। **करौती**—स्त्री० आरी। शीशे का छोटा बरतन, करावा। काँच की भट्टी।

करौलाⓟ—पुं० शिकारी। हँकवा करने-वाला।

करौली—स्त्री० एक प्रकार की सीधी छुरी।

कर्क—पुं० [सं०] केकडा। १२ राशियो मे से चौथी। काकडासीगी। अग्नि।

घडा। कर्कट—पुं० [सं०] केकडा। कर्क राशि। एक सारस। लौकी। कमल की जड। तराजू का मुडा हुआ सिरा। सँडसा। कर्कटी—स्त्री० [सं०] कछुई। ककडी। सेमल का फल। साँप। घड़ा। काकडासीगी।

कर्कर—पुं० [सं०] हड्डी। हथौडा। चूना बनाने का पत्थर। कुरज पत्थर। वि० करारा। खुरखुरा।

कर्कश—पुं० [सं०] तलवार। ईख। वि० कठोर, कडा। खुरखुरा, काँटेदार। तेज, प्रचड। क्रूर

कर्कशा—वि० स्त्री० [सं०] झगडालू। कटुभापिणी।

कर्चूर—पुं० [सं०] सोना। कचूर।

कर्ज—पु० [अ०] उधार, ऋण। ⊙दार=वि० [फा०] उधार लेनेवाला। मु०~खाना=कर्ज लेना। उपकृत होना। कर्जा—पुं० उधार, ऋण।

कर्ण—पुं० [सं०] कान, श्रवणेंद्रिय। नाव की पतवार। वृत्त की मध्य रेखा। पिंगल मे दो मात्रावाले गणो का एक बार साथ आना (SS)। छप्पय का चौथा भेद। ⊙कटु=वि० सुनने मे कर्कश या अप्रिय। ⊙कुसुम=पुं० कान का करनफूल। ⊙कुहर=पुं० कान का छेद। ⊙गोचर=वि० सुनाई पडनेवाला। ⊙धार=पुं० माँझी। सहारा। सहायक व्यक्ति। ⊙नाद=पु० कान मे सुनाई पडती हुई गूँज। कान का एक रोग। ⊙पाली=स्त्री० कान की लौ। वाली। ⊙पिशाची=स्त्री० एक देवी जिसकी सिद्धि से सब कुछ जाना जा सकता है। ⊙पूर=पुं० करनफूल। ⊙मूल=पुं० कान की जड। एक रोग। ⊙वेध=पुं० बालको के कान छेदने का सस्कार।

कर्णाट—पुं० [सं०] दक्षिण का एक देश। सपूर्ण जाति का एक राग। कर्णाटी—स्त्री० [सं०] सपूर्ण जाति की एक शुद्ध रागिनी। कर्णाट देश की स्त्री। कर्णाट देश की भाषा। शब्दालकार की एक वृत्ति जिसमे केवल कवर्ग के ही अक्षर आते है।

कर्णाधार—पुं० दे० 'कर्णधार'।

कर्णिका—स्त्री० [सं०] कान का एक गहना, करनफूल। हाथ की विचली उँगली। हाथी की सूँड की नोक। कमल का छत्ता। सफेद गुलाव। लेखनी। फल का डठल।

कर्णिकार—पुं० [सं०] कनियारी या कनकचपा का पेड। उसका फूल।

कर्णी—स्त्री० [सं०] एक वाण। पुं० वाण। वि० कानवाला। वडे कानवाला। पतवार युक्त।

कर्तन—पुं० [सं०] काटना, कतरना। (सूत आदि) कातना।

कर्तनी—स्त्री० [सं०] कतरनी, कैंची।

कर्तरी—स्त्री० [सं०] कैंची। सुनारो की कात्ती। कटारी। ताल देने का एक वाजा। दो क्रूर ग्रहो के बीच मे चद्रमा या किसी लग्न के आने की स्थिति।

कर्तव्य—वि० [सं०] करने योग्य। पुं० करने योग्य कार्य या उचित कार्य, फर्ज। ⊙ता=स्त्री० कर्तव्य का भाव। कर्मकाड की दक्षिणा। ⊙मूढ, ⊙विमूढ़=वि० जिसे कर्तव्य न सूझे। जो घवराहट मे कर्तव्य का निश्चय न कर सके।

कर्ता—वि० [सं०] करनेवाला। बनानेवाला। पुं० विधाता, ईश्वर। कारको मे से पहला जिससे क्रिया के करनेवाले का बोध होता है (व्या०)। कर्तार—वि० [हिं०] करनेवाला। बनानेवाला। पुं० ईश्वर। ब्रह्मा।

कर्तृ—वि० [सं०] करनेवाला। बनानेवाला। ⊙क=वि० किया हुआ। बनाया हुआ। ⊙त्व=पु० कर्ता का भाव। काम। ⊙वाचक=वि० कर्ता का बोध करानेवाला (व्या०)। ⊙वाच्य क्रिया=स्त्री० क्रिया जिसका रूप कर्ता के अनुसार चले।

कर्दम—पु० [सं०] कीचड। मास। पाप। एक प्रजापति जिनके पुत्र कपिल (साख्य शास्त्र के जन्मदाता) थे।

कर्नेता—पु० रग के अनुसार घोडे का एक भेद ।

कर्पट—पु० [सं०] गूदड, पुराना चिथडा ।

कर्पटी—पु० [सं०] चिथडे । गुदडे पहनने-वाला । भिखमगा ।

कर्पर—पु० [स०] खप्पर । खोपडी । कछुए के शरीर का ऊपर का कडा भाग । एक शस्त्र । कडाह ।

कर्पास—पु० [सं०] कपास ।

कर्पूर—पु० [स०] कपूर ।

कर्बुर—पु० [स०] स्वर्ण । धतूरा । जल । पाप । राक्षस । जडहन धान । कचूर । वि० रगबिरगा, चितकबरा ।

कर्म—पु०[स०] वह जो किया जाय, काम । दूसरा कारक, वह कारक जो कर्त्ता की क्रिया के व्यापार से होनेवाले फल का आश्रय हो (व्या०) । भाग्य, किस्मत । मृतक सस्कार । ⊙**काड** = पु० वेदो के वे भाग जिनमे यज्ञ आदि के विधि विधानों के विस्तृत वर्णन हैं । धार्मिक कृत्य । ⊙**काडी** = वि० यज्ञ आदि कृत्य करानेवाला । कर्मकाड का ज्ञाता । ⊙**कार** = पुं० लोहे या सोने का काम करनेवाला (एक जाति)। बैल । नौकर । वेगार मे काम करनेवाला । ⊙**क्षेत्र** = पु० कार्य करने का स्थान । भारतवर्ष । ⊙**चारी** = पु० काम करनेवाला । राज्य-प्रबध या किसी कार्यालय मे काम करने-वाला । ⊙**धारय समास** = पु० समास जिसमे पहला शब्द विशेषण हो । ⊙**नाशा** = स्त्री० गगा मे मिलनेवाली एक नदी । पुण्य अथवा कर्म का नाश करने-वाली वस्तु । ⊙**निष्ठ** = वि० शास्त्रविहित या कर्तव्य कर्मों मे निष्ठा रखनेवाला । ⊙**भू** = स्त्री० दे० 'कर्मक्षेत्र' । ⊙**भोग** = पुं० कर्मफल । पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम । किए हुए कर्म के परिणाम का भोग । ⊙**मास** = पु० ३० दिनो का महीना । सावन का महीना । ⊙**योग** = पु० चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्रविहित कर्म । निर्लिप्त भाव से किया जानेवाला कर्तव्य कर्म । ⊙**रेख** = स्त्री० [हिं०] भाग्य की लिखन, तकदीर । ⊙**क्रिया** = क्रिया जिसका रूप कर्म के अनुसार चले । ⊙**वाद** = पुं० मीमासा जिसमे कर्मप्रधान है । कर्मयोग । ⊙**वादी** = पु० मीमा-सक, कर्मकाड को प्रधान माननेवाला । काम को प्रधान माननेवाला । भाग्य को प्रधान माननेवाला । ⊙**विपाक** = पु० पूर्वजन्म के किए हुए कर्मो का भला और बुरा । फल । ⊙**शूर** = वि० साहस और दृढता से कर्म मे प्रवृत्त, उद्योगी । ⊙**सन्यास** = पु० कर्म का त्याग । कर्म के फल का त्याग । ⊙**साक्षी** = वि० जिसके सामने कोई काम हुआ हो । पुं० देवता जो प्राणियो के कर्मो को देखते रहते है (जैसे, सूर्य, चद्र आदि) ।

कर्मठ—वि० [सं०] काम मे कुशल । परिश्रम से काम करनेवाला । पुं० अग्निहोत्र आदि नित्य कर्मो को विधिपूर्वक करनेवाला व्यक्ति ।

कर्मणा—क्रि० वि० [सं०] कर्म के द्वारा (जैसे मनसा, वाचा, कर्मणा) ।

कर्मण्य—वि० [सं०] उद्योगी, प्रयत्नशील । काम मे कुशल । ⊙**ता** = स्त्री० कार्य-कुशलता, तत्परता ।

कर्मा—वि० [सं०] (के० समा० मे) करने-वाला (जैसे, क्रूरकर्मा, विश्वकर्मा) ।

कर्मिष्ठ—वि० [सं०] काम मे चतुर । कर्मनिष्ठ ।

कर्मी—वि० [सं०] कर्म करनेवाला । फल की आकाक्षा से यज्ञादि करनेवाला । कर्मठ । मजदूर ।

कर्मेंद्रिय—स्त्री० [सं०] काम करनेवाली इद्रिय (हाथ, पैर, वाणी, गुदा और उपस्थ) ।

कर्रा—पुं० जुलाहो के सूत फैलाकर तानने का काम । वि० कडा । मुश्किल । **कर्राना** (पु)†—अक० सख्त होना ।

कर्ष—पुं० [सं०] १६ माशे का एक मान । खिचाव, घसीटना । जोताई । खीचना । (लकीर आदि) पुं० जोश, वढावा । ⊙**क** = पु० खीचनेवाला । हल जोतने-वाला, किसान । ⊙**ण** = खिचाव, तनाव । खीचना (लकीर आदि) । जोतना । खेती ।

कर्षना (पु)—सक० खीचना, तानना ।

कलंक—पु० [सं०] दाग, धब्बा । लांछन,

वदनामी। ऐब, दोष। चद्रमा का काला दाग। कलकित—वि० [सं०] जिसे कलक लगा हो। कलकी—वि० [सं०] कलकयुक्त, दोषी, वदनाम। पु० [हि०] कल्कि अवतार।

कलंदर—पु० [अ०] ससार से विरक्त एक प्रकार का मुसलमान साधु। रोछ और वदर नचानेवाला व्यक्ति। दे० 'कलदरा'।

कलंदरा—पु० [अ०] सूत, रेशम और टसर से बुना जानेवाला एक प्रकार का रेशमी कपडा। खीमे का अँकुडा।

कल—स्त्री० [सं०] अस्पष्ट मधुर ध्वनि। पु० वीर्य। वि० मनोहर। कोमल। मधुर। ⊙कठ=पु० मधुर ध्वनि। कोयल। पारावत। हस। वि० मीठी ध्वनि करनेवाला। ⊙कल=पु० झरने आदि के गिरने का शब्द। स्त्री० [हि०] झगडा, वादविवाद। ⊙कूजक=वि० मधुर ध्वनि करनेवाला। ⊙घोष=पु० कोयल। ⊙धूत=पु० चाँदी। ⊙धौत=पु० सोना। चाँदी। ⊙रव=पु० मधुर शब्द। सुदर ध्वनि। कोकिल। कबूतर। ⊙हंस=पु० हस। राजहस। परमात्मा। एक वर्णवृत्त।

कल—क्रि० वि० [हि०] आनेवाले दिन में। बीते हुए दिन मे। भविष्य मे। पु० आनेवाला दिन। बीता हुआ दिन। भविष्य।

कल—वि० [हि०] 'काला' का सक्षिप्त (के० समा० मे)। ⊙जिब्भा, ⊙जीहा=वि० काली जीभवाला। जिसके मुँह से निकली अशुभ बातें प्राय ठीक घटें। ⊙मुँहाँ=वि० काले मुँह का, साँवला। मु०~का—थोडे ही दिनो का।

कल—स्त्री० [हि०] तदुरुस्ती। आराम, चैन। सतोष। ओट, पहलू। युक्ति, ढग। पेंच, पुरजा। पेंच पुरजो से बनी वस्तु। बदूक का घोडा। ⊙दार=वि० पेंचदार। पु० रुपया। ⊙बल=पु० उपाय, दाँवपेंच। मु०—ऐंठना=किसी के चित्त को किसी ओर फेरना। कल चालू करना।

कलई—स्त्री० [अ०] वरतनो पर किया जानेवाला राँगे का पतला लेप। चूने का लेप, सफेदी। चमकाने का रग या लेप। बाहरी चमक दमक। ⊙गर=पु० [फा०] वह जो कलई करे। मु०~खुलना=वास्तविक बात प्रकट होना। ~न लगना=युक्ति न चलना।

कलक—पु० [अ०] दु ख, चिंता। बेचैनी, घबराहट। पु० दे० 'कल्क'।

कलकना (पु)—अक० चिल्लाना, शोर करना।

कलकानि†—स्त्री० दिक्कत, हैरानी।

कलगा—पु० कलगी की तरह गुच्छेदार लाल फूल का एक पौधा।

कलगी—स्त्री० [तु०] चिडियो (मोर आदि) के सिर की चोटी। शुतुर्मुर्ग आदि के सुदर पख (ताज आदि पर लगाए जानेवाले)। मोती या सोने का बिना सिर का एक गहना। ऊँची इमारत का शिखर। लावनी का एक ढग।

कलछी—स्त्री० दे० 'कडछी'।

कलत्र—पु० [सं०] पत्नी।

कलत्थना (पु)—अक० छटपटाना। 'उलत्थैं पलत्थैं कलत्थैं कराहैं···' (हिम्मत० ७५)।

कलन—पु० [स०] बनाना। धारण करना। आचरण। लगाव। गणना। ग्रास। ग्रहण। धब्बा। दोष। हिलना डोलना। गुनगुनाना।

कलप—पु० कलफ। खिजाब। दे० 'कल्प'। ⊙बिरिछ=पु० दे० 'कल्पवृक्ष'।

कलपना—अक० विलाप करना। दुखी होना। कल्पना करना। (पु) स्त्री० दे० 'कल्पना'।

कलपाना—सक० [अक० कलपना] जी दुखाना। रुलाना।

कलफ—पु० [अ०] कडा करने के लिये कपडो पर लगाई जानेवाली पतली लेई। चेहरे पर का काला धब्बा, झाँईं।

कलबंकी—स्त्री० गौरैया, चटका पक्षी।

कलबूत—पु० ढाँचा, साँचा। जूता सिलने का लकडी का ढाँचा, फरमा। टोपी या पगडी बनाने का गुबदनुमा ढाँचा।

कलभ—पु० [सं०] हाथी का बच्चा। हाथी। ऊँट का बच्चा। धतूरा।

कलम—स्त्री० [अ०] लेखनी, लिखने का नोकदार लकड़ी का टुकड़ा। लकडी या किसी

मसाले का धातु की निब लगा हुआ ऐसा ही साधन। नया पेड़ लगाने के लिये किसी पेड़ की काटी हुई टहनी। हजामत बनवाने मे कनपटी के पास छोड दिए जानेवाले बाल। चित्र बनाने को बालो की कूची। झाड मे लटकाने का शीशे का लबा टुकडा। खोदने या नक्काशी करने का एक औजार। शीशा काटने का एक औजार। शोरे, नौसादर आदि का जमा हुआ छोटा, लंबा टुकडा, रवा। चित्र अकित करने की शैली। एक फुलझडी। एक धान। ⊙**कसाई**=पु० वह जो कुछ लिख पढकर लोगो की हानि करे। ⊙**कार**=पु० [फा०] चित्र-कार। कलम से दस्तकारी करने-वाला। एक तरह का बेल बूटे का कपडा। ⊙**कारी**=स्त्री० [फा०]कलम से किया हुआ काम (नक्काशी, बेल बूटा आदि)। ⊙**तराश**=पुं० [फा०] कलम बनाने का चाकू। ⊙**दान**=पुं० [फा०] कलम, दवात आदि रखने का खानेदार आधार। ⊙**बद**=वि० [फा०] लिखा हुआ। मु०~**करना**=काटना। ~**खींचना**=लिखे हुए को काटना। ~**चलाना**=लिखना। ~**तोड़ना**=लिखने का हद करना। अनूठी उक्ति कहना। **कलमी**—वि० [फा०] लिखा हुआ। कलम लगाने से उत्पन्न। जिसमे कलम या रवा हो जैसे कलमी शोरा।

कलमख(पु)—पुं० दे० 'कल्मष'।

कलमना(पु)—सक० काटना, दो टुकडे करना।

कलमलना(पु), **कलमलाना**—अक० दबाव या कठनाई से अगो का हिलना डोलना, कुलबुलाना।

कलमा—पुं० [अ०] वाक्य, बात। मुसल-मानी धर्म का मूल मत्र। मु०~**पढ़ना**=मुसलमान बनना।

कलल—पुं० [सं०] गर्भाशय मे रज और वीर्य के सयोग का प्रारंभिक रूप।

कलवरिया—स्त्री० कलाकार की दुकान, शराब की दुकान।

कलवार—पुं० शराब बनाने और बेचनेवाली एक जाति।

कलविंक—पु० [सं०] गौरैया पक्षी। तरबूज। सफेद चँवर। धब्बा। कलक। कोयल।

कलश—पुं० [स०] घडा, गगरा। मदिर के शिखर पर लगा पीतल, पत्थर आदि का कँगूरा। चोटी, सिरा।

कलशी—स्त्री० [स०] गगरी, छोटा कलस। मदिर का छोटा कँगूरा। एक बाजा।

कलस, कलसा—पु० [अल्पा० कलसी] गगरा, घडा। मदिर के शिखर का कँगूरा।

कलहंतरिता—स्त्री० दे० 'कलहातरिता'।

कलह—पुं० [सं०] विवाद, झगडा। लडाई, युद्ध। ⊙**कारी**=वि० झगडालू। ⊙**प्रिय**=वि० जिसे लड़ाई भली लगे, लडाका। पुं० नारद। **कलहांतरिता**—स्त्री०नायिका जो नायक या पति से झगडकर अलग हो जाती है और बाद मे पछताती है।

कलहा(पु)—वि० दे० 'कलही'। **कल-हारी**—वि० स्त्री० [हिं०] कलह करने-वाली, झगडालू। **कलही**—वि० स्त्री० झगडालू, लडाकी। स्त्री० दे० 'कल-हातरिता'।

कलाँ—वि० [फा०] बडा, दीर्घाकार।

कला—स्त्री० [सं०] अश, भाग। चद्रमा का १६ वाँ भाग। सूर्य का १२ वाँ भाग। अग्निमडल के १० भागो मे से कोई। समय का एक विभाग जो तीस काष्ठा का होता है। राशि के ३०वे अश का ६०वाँ भाग। मात्रा (पिंगल)। भली-भाँति कार्य करने का कौशल या विद्या (६४ कलाओ मे से कोई), हुनर। वृद्धि, सूद। जिह्वा। विभूति। शोभा। कौतुक, लीला। छल। कपट। ढग, युक्ति। बहाना मिस। नटो की एक कसरत। यज्ञ के तीन अगो मे से कोई। यत्र, पेंच। वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक भगण और अंत्य गुरु, कुल चार वर्ण होते हैं। रूप। नकलबाजी, बहानेबाजी। ⊙**कार**=पुं० किसी कला का व्यावहारिक जानकार। ⊙**कारिता**=स्त्री० कलाकार का काम या भाव। ⊙**कौशल**=पुं० किसी कला मे निपुणता। शिल्प, दस्तकारी।

⊙धर = पुं० चद्रमा। दडक छद का एक भेद। ⊙नाथ, ⊙निधि = पुं० चद्रमा। ⊙बाज = वि० [हिं०] कलाबाजी या नट की क्रिया करनेवाला। ⊙बाजी = स्त्री० [हिं०] नाच कूद। सिर नीचे कर उलट जाना। ⊙भृत = पुं० चद्रमा। ⊙वत = पु० [हिं०] किसी कला का ज्ञाता। गायन या वादन मे निपुण व्यक्ति। नट। ⊙वती = वि० स्त्री० जिसमे कला हो। शोभावाली। सगीत की एक मूर्च्छना। तुबुरु नामक गधर्व की वीणा।

कलाकंद—पु० [फा०] खोए और मिश्री की बनी बरफी।

कलाद—पु० [स०] सुनार।

कलादा⑮—पु० हाथी की गरदन पर वह स्थान जहाँ महावत बैठता है।

कलाप—पु० [सं०] गुच्छा, बडल। समूह। मार की पूँछ। मुट्ठा। तरकश। कमरबद। व्यापार। जेवर। हाथी के गले मे पहनाया जानेवाला रस्सा। **कलापी**—पु० [सं०] मोर। कोकिल। बरगद का पेड। वि० तरकश बाँधे हुए। झुड मे रहनेवाला।

कलापिनी—स्त्री० [सं०] मोरनी, मयूरी। रात्रि। नागरमोथा।

कलाबत्तू—पु० सोने चाँदी आदि का तार जो रेशम पर चढाकर बटा जाय। कपडो के किनारो पर टाँका जानेवाला सोने चाँदी के कलाबत्तू का बना हुआ पतला फीता।

कलाम—पुं० [अ०] वाक्य, वचन। कथन। वादा। एतराज।

कलार—पुं० दे० 'कलवार'।

कलाल—पुं० कलवार, मद्य बेचनेवाला।

कलावा—पुं० तकले पर लिपटा रहनेवाला सूत का लच्छा। विवाह आदि पर हाथ या घडे आदि पर बाँधा जानेवाला लाल पीले तागो का गुच्छा। हाथी की गरदन।

कलिंग—पुं० [सं०] मटमैले रग की एक चिडिया। इद्रजौ। सिरिस का पेड। तरबूज। एक राग। समुद्रतट पर कटक से मद्रास तक फैला हुआ प्रदेश।

कलिंगड़ा—पु० दीपक राग का पुत्र माना जानेवाला एक राग।

कलिंद—पुं० [सं०] बहेडा। सूर्य। पर्वत जिससे यमुना निकलती हैं। ⊙जा = यमुना नदी। **कलिंदी**⑮—स्त्री० दे० 'कालिंदी'।

कलि—पुं० [सं०] चौथा युग (४,३२,००० वर्षों का वर्तमान युग)। पाप। कलह, झगडा। वीर। क्लेश। सग्राम। तरकश। छद मे टगण का एक भेद जिसमे पहले दो वर्ण दीर्घ और बाद मे ह्रस्व होते हैं। वि० श्याम, काला। ⊙काल = पुं० कलियुग। ⊙मल = पु० पाप, कलुष। ⊙युग = पुं० चौथा युग। ⊙युगी = वि० [हिं०] कलियुग का। तुच्छ प्रकृति का।

कलिका—स्त्री० [सं०] बिना खिला फूल, कली। वीणा। मूल। एक प्राचीन बाजा। एक सस्कृत छद। कला, मुहूर्त। अश

कलित—वि० [स०] विदित, ख्यात। प्राप्त, गृहीत। सजाया हुआ। सुदर, मधुर। गिना हुआ। सोचा विचारा हुआ।

कलिया—पुं० [अ०] भूना हुआ मास। पकाया हुआ रसेदार मास।

कलियाना—अक० कलियो से युक्त होना। चिडियो का नया पख निकलना।

कलियारी—स्त्री० दवाई के काम का एक पौधा जिसकी जड मे विष होता है।

कलिल—वि० [सं०] मिश्रित। भरा या ढका हुआ। गहन, दुर्गम। पुं० ढेर, समूह। झाड झखाड। अव्यवस्था।

कलिहारी—स्त्री० दे० 'कलियारी'।

कलींदा—पुं० तरबूज।

कली—स्त्री० बिना खिला फूल, कलिका। चिडियो का नया निकला हुआ पर। वैष्णवो का एक तिलक। चूना बनाने का फुँका हुआ पत्थर या सीप। पायजामे, अँगरखे आदि मे लगाया जानेवाला तिकोना कटा कपडा। हुक्के का वह भाग जिसमे पानी रहता है।

कलीट⑮—वि० काला कलूटा।

कलीरा—पुं० विवाह मे दी जानेवाली कौडियों और छुहारो की माला।

कलील—वि० [अ०] थोड़ा, कम।

कलीसा—पुं० ईसाइयो या यहूदियो का प्रार्थना गृह । **कलीसिया**—पुं० ईसाइयो या यहूदियो का धर्ममडली ।
कलुख—पुं० दे० 'कलुष' । **कलुखाई**—स्त्री० दे० 'कलुषाई' । **कलुखी**—वि० दोषी, कलकी, बदनाम ।
कलुष—पुं० [स०] मलिनता । पाप । दोष । वि० मलिन । निंदित । दोषी । पापी । **कलुषाई**—स्त्री० [हिं०] बुद्धि की मलिनता, चित्त का विकार । **कलुषित**—वि० [स०] दूषित । मैला । पापी । काला ।
कलू(प)—पुं० दे० 'कलियुग' ।
कलूटा—वि० काले रग का ।
कलेऊ—पुं० दे० 'कलेवा'
कलेजा—पुं० हृदय, दिल । जिगर । छाती । जीवट, साहस । मु०~**उलटना**=वमन करते करते जी घबराना । होश का जाता रहना । ~**काँपना**=जी दहलना । ~**चीर कर रखना**=हृदय मे छिपे भावो को व्यक्त करना । ~**छिदना**=(कडी कडी बातो से) आतरिक व्यथा होना । ~**टूक टूक होना**=शोक से हृदय विदीर्ण होना । ~**टूटना**=उत्साह भग होना । ~**ठढा करना**=हार्दिक सतोष देना । ~**थामकर रह जाना**=शोक के वेग को दबाकर रह जाना, मन मसोसकर रह जाना । ~**धक धक करना या धडकना**=भय से व्याकुल होना । जी मे खटका होना । ~**निकालकर रखना**=अत्यत प्रिय वस्तु समर्पण करना । जी तोड परिश्रम करना । ~**पक जाना**=दु ख सहते सहते तग आ जाना । ~**पसीजना**=करुणा से भर आना ।~**फटना**=दु.ख देखकर अत्यत कष्ट होना । ~**बल्लियों, बाँसो या हाथो उछलना**=आनद, भय या आशका से दिल धक धक करना । ~**मुँह को आना**=बहुत दुखी होना । जी घबराना । ~**हिलना**=बहुत भय होना । **कलेजे का टुकडा**=अत्यत प्रिय व्यक्ति । **कलेजे पर साँप लोटना**=किसी बात के स्मरण से एकबारगी शोक छा जाना । ईर्ष्या से जलना । **कलेजे से लगाना**=प्यार से छाती से चिपटाना । **पत्थर का कलेजा**=कठोर हृदय । दु ख सहने मे समर्थ हृदय । **कलेजी**—स्त्री० कलेजे का मास ।

कलेवर—पुं० [सं०] शरीर, चोला । ढाँचा । मु० ~**बदलना**=एक शरीर त्यागकर दूसरा शरीर धारण करना । एक रूप से दूसरे रूप मे जाना । जगन्नाथ जी की पुरानी मूर्ति के स्थान पर नई मूर्ति का स्थापित होना ।
कलेवा—पुं० सबेरे का हलका भोजन, जलपान । मार्ग मे खाने के लिये साथ रखा जानेवाला भोजन, पाथेय । विवाह की एक रीति जिसमे वर अपनी ससुराल मे भोजन करता है । मु० ~**करना**=खा जाना । मार डालना ।
कलेस(प)—पुं० दे० 'क्लेश' ।
कलैया—स्त्री० सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाने की क्रिया, कलाबाजी ।
कलोर—स्त्री० जवान गाय जो बरदाई या ब्याई न हो ।
कलोल—पुं० आमोद प्रमोद, केलि । क्रीडा । **कलोलना**(प)—अक० कलोल करना ।
कलोलिनी—स्त्री० नदी । वि० स्त्री० कलोल करनेवाली ।
कलौंजी—स्त्री० एक पौधा । इसकी फलियो के महीन काले दाने जो मसाले के काम आते हैं । एक तरकारी ।
कलौंस—वि० कालापन लिए । स्त्री० कालापन, स्याही । कलक ।
कल्क—पुं० [सं०] चूर्ण, बुकनी । पीठी । गूदा । दभ । शठता । मैल । विष्ठा । पाप । अवलेह । बहेडा ।
कल्कि—पुं० [सं०] कलियुग के अत मे होनेवाले विष्णु के अवतार का नाम ।
कल्प—पुं० [सं०] विधान, कृत्य । वेद के प्रधान छह अगो मे से एक, वैदिक परपरा के सूत्र ग्रथविशेष । वैद्यक मे रोगनिवृत्ति का एक उपाय । प्रकरण, विभाग । ब्रह्मा का एक दिन जिसमे १४ मन्वतर या ४,३२,००,००,

००० वर्ष होते हैं । एक नृत्य । वि० समान । सभव । उचित, योग्य । ⊙कार = पुं० कल्पशास्त्र का रचनेवाला व्यक्ति, श्रौत सूत्र का रचयिता । ⊙तरु, ⊙द्रुम = पुं० कल्पवृक्ष । ⊙लता = स्त्री० कल्पवृक्ष। ⊙दास = पुं० माघ महीने भर सगम तट पर प्रयाग मे नियम के साथ रहना । ⊙वृक्ष = पुं० पुराणो के अनुसार कल्पात तक नष्ट न होनेवाला एक वृक्ष जो सब कुछ देनेवाला तथा समुद्रमथन से निकले १४ रत्नो मे से एक माना जाता है । एक वृक्ष जो सब पेडो से बडा और दीर्घजीवी होता है, गोरखइमली । ⊙सूत्र = पुं० वेदो के विविध यज्ञो के विधिविधानो की सूत्रो मे प्रस्तुत नियमावलियाँ । कल्पात—पुं० कल्प का अत, प्रलय ।

कल्पना—स्त्री० [स०] भावना । अनुमान । रचना । सजावट । अध्यारोप । मनगढत बात ।

कल्पित—वि० [स०] जिसकी कल्पना की गई हो । मनगढत, फर्जी । बनावटी, नकली ।

कल्मष—पुं० [सं०] पाप । मैल । मवाद । एक नरक ।

कल्य—पुं० [स०] सबेरा, भोर । शराब । कल (आनेवाला या बीता हुआ) । वि० स्वस्थ । दक्ष । अनुकूल । शुभ । शिक्षाप्रद । गूँगा । बहरा । ⊙पाल = पुं० कलवार ।

कल्या—स्त्री० [सं०] दे० 'कलोर' ।

कल्याण—पुं० [सं०] मगल, भलाई । सोना । एक रोग । स्वर्ग । सौभाग्य । सुख, समृद्धि । पुण्य । सदाचार । वि० भला । सुदर । तेजस्वी । गुणवान् । धर्मात्मा । शुभ । उदार । श्रेष्ठ । हितकर । सुखी । समृद्ध । भाग्यशाली । उचित । कल्याणी—वि० स्त्री० कल्याण करनेवाली । सुदरी । स्त्री० मापपर्णी गाय ।

कल्यान(पु)+—पुं० दे० 'कल्याण' ।

कल्लर—पुं० नोनी मिट्टी । रेह । ऊसर ।

कल्लाँच—वि० लुच्चा, गुडा । दरिद्र, कगाल ।

कल्ला—पुं० अकुर, किल्ला । हरी निकली हुई टहनी । पुं० गाल के भीतर का अश, जबडा । जबडे के नीचे गले तक का स्थान । आवाज । पशुओ का सिर । लैप का सिरा जिसमे बत्ती जलती है, बर्नर । ⊙तोड = वि० मुँहतोड, प्रबल । जोड तोड का । ⊙दराज = वि० [फा०] बढ बढकर बातें करने वाला, मुँहजोर । बहुत चिल्लानेवाला ।

कल्लाना—अक० चमडे के ऊपर ही ऊपर कुछ जलन लिए हुए एक प्रकार की पीडा होना ।

कल्लोल—पुं० [स०] पानी की लहर, तरग । आमोद प्रमोद, क्रीडा ।

कल्लोलिनी—स्त्री० [सं०] नदी ।

कल्ह†—क्रि० वि० दे० 'कल' ।

कल्हर—पुं० दे० 'कल्लर' ।

कल्हरना(पु)—अक० भुनना, कडाही मे तला जाना । कल्हारना†—सक० भूनना, कडाही मे तलना । अक० दु:ख से कराहना ।

कवच—पुं० [स०] लडाई मे बचाव के लिये पहना जानेवाला लोहे की कडियो के जाल का पहनावा, जिरहबख्तर । आवरण, छिलका । तत्रशास्त्र का एक अग जिसमे मत्रो द्वारा शरीर के विभिन्न अगो की रक्षा की प्रार्थना की जाती है । रक्षामत्र से लिखा हुआ ताबीज । युद्ध का बडा नगाडा ।

कवन†—सर्व० दे० 'कौन' ।

कवर—पुं० ग्रास, नेवाला । कवरना—सक० दे० 'कौरना' । पुं० [स०] केशपाश । गुच्छा । पुं० [अँ०] ढकना । पुस्तक का आवरणपृष्ठ ।

कवरी—स्त्री० [सं०] चोटी, जूडा ।

कवर्ग—पुं० [सं०] क से ङ तक पाँच अक्षर ।

कवल—पुं० [सं०] एक बार मुँह मे रखी जा सकने योग्य वस्तु, गस्सा । मुँह साफ करने के लिये एक बार मुँह मे

लिया जा सकने योग्य पानी, कुल्ली। एक मछली। एक तौल।

कवला(पु)—स्त्री० लक्ष्मी। धन। ⊙**कत**(पु) = पुं० विष्णु, नारायण।

कवलित—वि० [सं०] कौर किया हुआ, खाया हुआ। अंतर्भुक्त, अंतर्गत।

कवाम—पुं० [अ०] पकाकर शहद की तरह गाढा किया हुआ रस। किमाम। चाशनी।

कवायद—स्त्री० [अ०] नियम, व्यवस्था। व्याकरण। सेना के युद्धनियमों के अभ्यास का क्रिया।

कवि—पुं० [सं०] कविता रचनेवाला। गानेवाला। तत्वचिंतक। विद्वान्। मनीषी, ऋषि। ब्रह्मा। शुक्राचार्य। अग्नि। सूर्य। वरुण। इंद्र। आत्मा (सांख्य)। ⊙**त्व** = पुं० काव्यरचना-शक्ति। काव्य का गुण। बुद्धि, प्रज्ञा। ⊙**राज** = पुं० श्रेष्ठ कवि। भाट। वैद्यों की एक उपाधि।

कविता—स्त्री० [सं०] मनोविकारों पर प्रभाव डालनेवाला रमणीय पद्यमय वर्णन, काव्य। ⊙**ई**(पु) = स्त्री० दे० 'कविता'।

कवित्त—पुं० कविता। दंडक के अंतर्गत ३१ अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ८,८,८,७ के विराम से ३१ अक्षर होते हैं। केवल अंत में गुरु होना चाहिए, शेष वर्णों के लिये लघु, गुरु का कोई नियम नहीं है। मनहरन और घनाक्षरी इसके भेद हैं।

कविला(पु)—पुं० दे० 'करवला'।

कविलास(पु)—पुं० कैलाश। स्वर्ग।

कव्य—पुं० [सं०] वह अन्न या द्रव्य जिससे पिंडदान, पितृयज्ञादि किए जायँ।

कश—पुं० [सं०] चाबुक, कोडा। स्त्री० [फा०] खिंचाव। हुक्के या चिलम का दम, फूंक। ⊙**मकश** = स्त्री० खींचातानी। भीड, धक्कमधक्का। सोच विचार, असमंजस। संघर्ष।

कशा—स्त्री० [सं०] रस्सी। कोडा, चाबुक। लगाम।

कशिश—स्त्री० [फा०] आकर्षण, खिंचाव।

कशीदा—पुं० [फा०] कपडे पर सुई और तागे से निकाले हुए बेलबूटे आदि।

कश्चित्—वि० [सं०] कोई, कोई एक। सर्व० कोई (व्यक्ति)।

कश्ती—स्त्री० [फा०] नाव। पान, मिठाई या बायना आदि बाँटने के लिये धातु या काठ की बनी हुई एक तरह की तश्तरी। शतरंज का एक मोहरा।

कश्मल—पुं० [सं०] गंदगी। पाप। मोह। दोष। मूर्छा। वि० पापयुक्त। गंदा। भीरु।

कश्मीरी—वि० कश्मीर देश में उत्पन्न। स्त्री० कश्मीर की भाषा। पुं० कश्मीर का निवासी।

कष—पुं० [सं०] सान। कसौटी (पत्थर)। परीक्षा, जाँच। कोडा।

कषा—स्त्री० [सं०] दे० 'कशा'।

कषाय—वि० [सं०] कसैला, कटु। सुगंधित। रँगा हुआ। गेरू के रंग का। पुं० कसैली वस्तु या स्वाद। गेंदा। क्वाथ। धूल। गंदगी।

कष्ट—पुं० [सं०] तकलीफ। संकट। दुर्दशा। मेहनत। बेचैनी। ⊙**कल्पना** = स्त्री० कठिनाई से घटित होनेवाली कल्पना या युक्ति। ⊙**साध्य**—वि० जिसका करना या होना कठिन हो।

कष्टी(पु)—वि० पीडित, दुखी।

कस—पुं० कसौटी, जाँच। आसव। कोडा। तलवार की लचक। बल। दबाव, काबू। अवरोध। स्त्री० कसकर बाँधने की रस्सी। (पु)†क्रि० वि० कैसे। क्यों। पुं० 'कसाव' का संक्षिप्त रूप। निकला हुआ अर्क। सार। ⊙**बल** = पुं० सामर्थ्य, बल। साहस।

कसक—स्त्री० हलका या मीठा दर्द, टीस। बहुत दिनों का मन में रखा हुआ द्वेष। हौसला, अरमान। हमदर्दी। मु०~**निकालना** = पुराने वैर का बदला लेना।

कसकना—अक० कसक होना, टीसना।

कसकुट—पुं० ताँबे और जस्ते के बराबर भागों को मिलाकर बनाई जानेवाली एक मिश्रित धातु। भरत, काँसा।

कसन—स्त्री० कसने की क्रिया। कसने का ढंग। कसने की रस्सी। क्लेश, कष्ट।

कसना—पुं० कसकर बाँधने की वस्तु। गिलाफ। सक० बधन को दृढ करने के के लिये डोरी आदि को खीचना। बाँधना (जैसे पेटी कसना)। पुर्जो को दृढ करके बैठाना। साज रखकर सवारी तैयार करना। बहुत अधिक भरना। अक० अधिक खीचने से जकडना। लपेटने या पहनने की वस्तु का तग होना। सक० कसौटी पर परखना (सोने आदि को)। परखना, आजमाना। तलवार को लचाकर उसकी परीक्षा करना। दूध को गाढा करके खोवा बनाना। तलना। कष्ट पहुँचाना।

कसनि(पु)—स्त्री० दे० 'कसन'।

कसनी—स्त्री० बाँधने की रस्सी। गिलाफ। अँगिया। जाँच, परख।

कसब—पुं० [अ०] कमाई। हुनर, कला। वेश्यावृत्ति। पेशा, व्यवसाय।

कसबा—पुं० [अ०] साधारण गाँव से बडी और शहर से छोटी बस्ती।

कसबिन, कसबी—स्त्री० वेश्या। व्यभिचारिणी।

कसम—स्त्री० [अ०] सौगध, शपथ। प्रतिज्ञा। मु०~उतारना = शपथ का प्रभाव दूर करना। (किसी काम को) नाम मात्र के लिये करना। ~खाना = शपथ लेना। न करने की प्रतीज्ञा करना। ~खाने को = नाम मात्र को।

कसमल—पुं० दे० 'कश्मल'।

कसमस—स्त्री० दे० 'कसमसाहट'। कसमसाना—अक० कुलबुलाना, बहुत से व्यक्ति या वस्तुओं का रगड खाते हुए हिलना-डोलना। ऊबकर इधर से उधर होना। बेचैन होना। हिचकना। कसमसाहट—स्त्री० कुलबुलाहट। बेचैनी।

कसर—स्त्री० [अ०] कमी। द्वेष। घाटा, हानि। नुक्स, त्रुटि। किसी वस्तु के सूखने या उसमे से कूडा करकट निकलने से हो जानेवाली कमी।

कसरत—स्त्री० [अ०] व्यायाम। अधिकता, बहुतायत। कसरती—वि० [हिं०] कसरत करनेवाला। कसरत से पुष्ट।

कसहँड़ा—पुं० काँसे या पीतल का चौड़े मुँह का पात्र।

कसाई—पुं० [अ०] घातक, वधिक। बूचड़। गोघातक। वि० बेरहम।

कसाना—अक० स्वाद मे कसैला होना। काँसे के योग से खट्टी चीज का बिगडना। सक० कसने के लिये प्रेरित करना, कसवाना।

कसार—पुं० चीनी मिला भुना आटा या सूजी।

कसाला—पुं० कष्ट। कठिन परिश्रम।

कसाव—पुं० कसैलापन। खिचाव, तनाव।

कसावट—स्त्री० कसने का भाव, तनाव।

कसीदा—पुं० दे० 'कशीदा'। पुं० [अ०] उर्दू या फारसी की एक प्रकार की कविता जिसमे १५ से अधिक चरणों मे किसी की स्तुति या निंदा की जाती है।

कसीस—पुं० खानो मे मिलनेवाला लोहे का एक विकार। (पु)स्त्री० खिचाव। कसीसना—सक० आकर्षित करना।

कसूँभा—पुं० दे० 'कुसुंभा'।

कसूँभी—वि० कुसुम के रंग का, लाल।

कसूर—पुं० [अ०] अपराध, गलती। ⊙मंद, ⊙वार = वि० दोषी, अपराधी।

कसेरा—पुं० काँसे, फूल आदि के बरतन ढालने या बेचनेवाला। हिंदुओ की एक जाति।

कसेरू—पुं० रीढ। एक मीठी और गँठीली जड।

कसैया(पु)[1]—पुं० कसनेवाला। जकडकर बाँधनेवाला। जाँचनेवाला।

कसैला—वि० कषाय स्वादवाला, जिसमे कसाव हो (जैसे, आँवला, हड आदि)।

कसैली[1]—स्त्री० सुपारी।

कसोरा—पुं० मिट्टी का प्याला। कटोरा।

कसौटी—स्त्री० काला पत्थर जिसपर रगड़कर सोने की परीक्षा की जाती है। जाँच परख। मु०~पर कसना = जाँचना, परखना।

कस्तूर—पुं० कस्तूरी मृग।

कस्तूरा—पुं० मृग जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है। सीप जिससे मोती निकलता है। पोर्ट ब्लेयर की चट्टानो से खुरचकर निकाली जानेवाली एक बलकारक ओषधि।

कस्तूरिया—पुं० कस्तूरी मृग। वि० कस्तूरी मिश्रित। कस्तूरी के रंग का, मुश्की।

कस्तूरी—स्त्री० [सं०] मृगविशेष से निकलनेवाला एक सुगंधित द्रव्य, मुश्क। ⊙**मृग**=पुं० एक प्रकार का हिरन जिससे कस्तूरी निकलती है।

कस्तⓅ,**कस्द**—पुं० इरादा, दृढ़ निश्चय। 'यह कस्त करि आए यहाँ' (हिम्मत० ९५)।

कहँⓅ—प्रत्य० कर्म और सम्प्रदान का चिह्न, को, के लिये। Ⓟ क्रि वि० कहाँ।

कहँरना—अक० दे० 'कहरना'।

कहकहा—पुं० [अ०] जोर की हँसी, अट्टहास।

कहगिल—स्त्री० दीवार में लगाने का गारा। पलस्तर।

कहत—पुं० [अ०] अकाल, दुर्भिक्ष। **कहता**—वि० कहनेवाला।

कहन—स्त्री० कथन, उक्ति। वचन। कहावत। कविता। **कहना**—पु० कथन। आज्ञा। अनुरोध। सक० बोलना, उच्चारण करना। वर्णन करना। प्रकट करना। खबर देना। पुकारना। समझाना बुझाना। बहकाना। भला बुरा कहना। कविता करना। मु०—**कह बदकर**=प्रतिज्ञा करके। ललकारकर। ~**सुनना**=समझाना बुझाना, मनाना। **कहने को**=नाम मात्र को। **कहने में आना**=झूठी बात पर विश्वास कर कार्य करना। **कहनाउत**Ⓟ,**कहनावत**—स्त्री० कहावत। बात, कथन। **कहनि**Ⓟ†—स्त्री० दे० 'कहन'। **कहनी**—स्त्री० कथा। बात। **कहनूत**†—स्त्री० कहावत, मसल।

कहर—पु० विपत्ति० आफत। वि० घोर। भयकर। **कहरी**=वि० कहर ढानेवाला।

कहरना†—अक० दे० 'कराहना'।

कहरवा—पु० संगीत में एक ताल जिसमें चार पूर्ण और दो आधी मात्राएँ होती हैं। दादरा गीत जो कहरवा ताल पर गाया जाता है। कहरवा ताल का एक नाच।

कहरुबा—पु० [फा०] रंग में पीला और औषध में काम आनेवाला एक गोंद। एक सदाबहार वृक्ष का गोंद या राल।

कहलⓅ†—पु० उमस, औंस। ताप। कष्ट। **कहलना**Ⓟ—अक० कसमसाना, अकुलाना। गरमी से व्याकुल होना। दहलना।

कहलवाना—सक० [कहना का प्रे०] दूसरे को कहने में प्रवृत्त करना।

कहलाना—सक० द० 'कहलवाना'। सदेशा भेजना। अक० पुकारा जाना। Ⓟउमस व गरमी से व्याकुल या शिथिल होना।

कहवतⓅ—पु० कथन। 'राधिका की कहवत कहि दीजौ मोहन सों' (जगद्विनोद ४८६)।

कहवाँⓅ+—अ० दे० 'कहाँ'।

कहवा—पु० [अ०] चाय की तरह पेय बनाने का एक वृक्ष का बीज। काफी।

कहवाना—सक० दे० 'कहलवाना'।

कहवैया—वि० कहनेवाला।

कहाँ—क्रि० वि० किस जगह? मु०~**का**=कहीं का नहीं। असाधारण, बड़ा भारी। ~**का कहाँ**=बहुत दूर। ~**तक**=कितनी दूर तक। कितनी देर तक। ~**से**=क्यों, व्यर्थ। कभी नहीं।

कहा—पु० कथन, बात। आज्ञा। उपदेश। कथा। क्रि० वि० कैसे। Ⓟ†सर्व० क्या। ⊙**कही**=स्त्री० दे० 'कहासुनी'। ⊙**सुना**=भूल चूक। ⊙**सुनी**=झगड़ा, तकरार।

कहाना—सक० दे० 'कहलवाना', 'कहलाना'।

कहानी—स्त्री० छोटी कथा, आख्यायिका। झूठी बात।

कहार—पुं० एक जाति जो पानी भरने और डोली उठाने का काम करती है।

कहारा—पुं० टोकरा।

कहाल—पुं० एक बाजा।

कहावत—स्त्री० ऐसा बँधा वाक्य जिसमें कोई अनुभव की बात सक्षेप में चमत्कारिक ढंग से कही गई हो, लोकोक्ति। कही हुई बात, उक्ति।

कहियाⓅ†—क्रि० वि० किस दिन?

कहीं—क्रि० वि० किसी अनिश्चित स्थान में। (प्रश्न रूप में निषेधार्थक) नहीं, कभी नहीं। यदि, अगर। बहुत अधिक।

मु० ~का न छोडना = वरवाद करना। ~का न होना, ~का न रहना = किसी काम का न रहना, वरवाद होना।
कहुँ (पु)—क्रि० वि० दे० 'कहीं'।
कहूँ (पु)—क्रि० वि० दे० 'कहीं'।
काँइयाँ—वि० चालाक, धूर्त।
काँई—अव्य० क्यों। सर्व० क्या।
काँकर (पु)†—पुं० दे० 'ककड'।
काँकरी (पु)†—स्त्री० छोटा ककड। मु० ~ चुनना = वियोग के दु ख या चिंता से किसी काम मे मन न लगना।
कांक्षनीय—वि० इच्छा करने योग्य।
कांक्षा—स्त्री० [स०] इच्छा, चाह। कांक्षी—वि० चाहनेवाला।
काँख—स्त्री० वगल, वाहुमूल के नीचे का गड्ढा। मु० ~मे कतरनी रखना = छल करना।
काँखना—अक० मल निकालने के लिये पेट की वायु को दवाना। श्रम या पीडा से कुछ शब्द मुंह से निकालना। खूव परिश्रम करना। वहुत दिनो तक रोगशय्या पर पडे रहना।
काँखासोती—स्त्री० दाहिनी वगल के नीचे से ले जाकर वाएँ कधे पर दुपट्टा डालने का ढग।
काँगुरा—पुं० दे० 'कगूरा'।
काँच—स्त्री० धोती का वह छोर जिसे दोनो जाँघो के वीच से ले जाकर पीछे खोसते हैं, लाँग। गुदेंद्रिय के भीतर का भाग। पुं० वालू, पोटाश आदि से वनाया जानेवाला एक पारदर्शक मिश्र पदार्थ, काच, शीशा।
कांचन—पुं० [सं०] सोना। धन सपत्ति। कचनार। चपा। नागकेसर। धतूरा।
काँचरी (पु), काँचली—स्त्री० साँप की केंचुली।
काँचा (पु)—वि० दे० 'कच्चा'।
कांची—स्त्री० [सं०] मेखला, करधनी। गोटा। गुजा। हिंदुओ की सात पुरियो मे से एक, काजीवरम् नगर।
काँचुरी—स्त्री० दे० 'काँचली'।
काँछना (पु)—सक० दे० काछना।
काँछा†—स्त्री० अभिलाषा।
कांजिक—पुं० [सं०] कढी। काँजी। एक माँड या खट्टा गाढा रस जिसमे खमीर पैदा हो गया हो, काँजी। वि० काँजी के स्वाद का। खट्टा।
काँजी—स्त्री० एक प्रकार का सुपाच्य माँड़ या खट्टा गाढा रस जिसमे खमीर पैदा गया हो। फटे हुए दूध का पानी। छाछ।
काँजी हाउस—पुं० सरकारी पशुशाला जिसमे लोगो के छूटे हुए पशु वद किए जाते है।
काँट—पुं० दे० 'काँटा'।
काँटा—पुं० पेड की टहनी मे निकला सुई सा नुकीला अकुर। कटक काँटा जो मोर, मुर्गे आदि पक्षियो की नर जातियो के पैरो के पजे के ऊपर निकला रहता है, खाँग। मैना आदि के गले का एक रोग। जीभ मे निकलनेवाली छोटी नुकीली फुसी। लोहे की वडी कील। मछली पकडने की झुकी हुई नोकदार कील। तराजू के पलडे की वरावरी सूचित करनेवाली डाँडी के ऊपर की सूई। लोहे का तराजू जिसकी डाँडी पर काँटा होता है। सुई या कील की तरह की कोई नुकीली वस्तु। झुकी हुई कील। नाक मे पहनने की कील। खाना खाने का एक प्रकार का धातु का पजा। घडी की सुई। सूआ। गणित मे गुणनफल के शुद्धाशुद्ध की जाँच की एक क्रिया। मु० ~निकलना = वाधा या कष्ट दूर होना। खटका मिटना। (रास्ते मे) ~विछाना = वाधा डालना। ~वोना = वुराई करना। अडचन डालना। (आँखो मे) ~सा करकना या खटकना = असह्य होना। (सूखकर) ~होना = वहुत दुवला होना। काँटे से काँटा निकालना = एक शत्रु से दूसरे शत्रु का नाश करना। काँटो पर लोटना = दु ख से तडपना। डाह से जलना।
काँटी—स्त्री० छोटा काँटा या कील। डाँडी पर काँटा लगा हुआ छोटा तराजू। झुकी हुई छोटी कील। वेडी।
काँठा—पुं० गला। कठ। तोते आदि पक्षियो के गले की रेखा। किनारा, तट। घाटी पार्श्व।
कांड—पुं० [सं०] वाँस, ईख आदि पौधो मे दो गाँठो के वीच का अश, पोर। किसी

ग्रथ का विभाग । किसी कार्य या विषय का विभाग । शाखा । गुच्छा । समूह । धनुप के बीच का मोटा भाग । बाण । तना (वृक्ष का) ।

कांडना(पु)—सक० रौंदना, कुचलना । धान का कूटकर चावल से भूसी अलग करना । खूब मारना ।

कांडी—स्त्री० ऊखली का गड्ढा । भारी चीजो को हटाने या चढाने का लकडी का डडा सेंगरी । छाजन मे लगनवाला बॉस या लकडी का पतला, सीधा लट्ठा । छड । अरहर का सूखा डठल ।

कांत—पुं० [स०] पति । श्रीकृष्ण । चद्रमा । विष्णु । शिव । कार्तिकेय । वसत ऋतु । कुकुम । कातसार । सूर्यकात मणि । केसर । चुवक । वि० सुदर । प्रिय । वाछनीय । ⊙**सार**=पुं० पक्का लोहा, फौलाद । **कातासक्ति**—स्त्री० ईश्वर को पति मानकर की जानेवाली भक्ति, माधुर्य भाव ।

काता—स्त्री० [स०] प्रिया । सुदर स्त्री । भार्या । एक वृत्त ।

कातार—पुं० [स०] दुर्भेद्य और गहन वन । भयानक स्थान । वजर । बॉम । छेद ।

काति—स्त्री० [स०] तेज, आभा, प्रकाश । शोभा, छवि । चद्रमा की १६ कलाओ मे से एक । आर्या छद का एक भेद जिसमे १६ लघु और २५ गुरु मात्राएँ होती हैं । ⊙**मान्**=वि० तेजोमय, प्रकाशमय । मनोहर । भव्य । पुं० चद्रमा । कामदेव ।

कांथरि(पु)—स्त्री० दे० 'कथरी ।'

कांदना(पु)—अक० रोना, चिल्लाना ।

कांदा—पु० प्याज की तरह गाँठवाला एक गुल्म । प्याज । कीचड ।

कांदो(पु)†—पु० कीचड ।

कांध(पु)†—पु० दे० 'कधा' ।

कांधना(पु)—सक० उठाना, सिर पर लेना । मचाना, ठानना । स्वीकार करना । सहना ।

कांधर(पु)—पु० कृष्ण ।

कांधा†—पु० दे० 'कधा' । दे० 'कान्हा' ।

कांप—स्त्री० बाँस आदि की पतली लचीली तीली, कपा । पतग की धनुष की तरह झुकी हुई तीली । सूअर का खाँग । हाथी का दाँत । कान का एक गहना ।

कॉपना—अक० हिलना, थरथराना । डर से हिलना, थर्राना । डरना ।

कॉय कॉय, कॉव कॉव—पु० कौवे का शब्द । व्यर्थ का शोर ।

कॉवड, कॉवर—स्त्री० कधे पर रखकर ले जाने का एक बॉस जिसके दोनो छोरो पर लटके छीको मे वस्तु ले जाते है । वहँगा । एक डडे के छोरो पर बँधी हुई बॉस की टोकरियाँ जिनमे यात्री गगाजल ले जाते है ।

कॉवरि'—स्त्री० दे० 'कॉवर' । **कॉवरिया**—पु० कॉवर लेकर चलनेवाला व्यक्ति । **कॉवारथी**—पु० वह जो किसी तीर्थ मे कामना से कॉवर लेकर जाय ।

कॉस—पु० पवित्र मानी जानेवाली तथा चटाई आदि बनाने की एक लबी घास ।

कॉसा—पु० एक मिश्रित धातु, भरत । भीख माँगने का ठीकरा । ⊙**गर**=पु० कॉसे का काम करनेवाला व्यक्ति ।

कांस्य—पु० [स०] कॉसा । कॉसे की वस्तु ।

का—प्रत्य० [स्त्री० की] सबध या षष्ठी का चिह्न (व्या०) । अव्य० क्या ? उप० [स०] एक हीनतावाचक शब्द (जैसे, कापुरष) ।

काइ(पु)—स्त्री० काया, शरीर । 'निज पति ही के प्रेममय जाको मन बच काइ' (जगद्विनोद १७) ।

काई—स्त्री० जल तथा सील मे होनेवाली एक महीन घास । ताँबे आदि पर लगनेवाला एक मोरचा । मैल । मु० ~**छुड़ाना**=मैल दूर करना । दुख दारिद्र्य मिटाना । ~**सा कट जाना**=बिखर जाना ।

काऊ(पु)†—क्रि वि० कभी । सर्व० कोई । कुछ । (पु) किसी पर या किसी को ।

काक—पुं० [स०] कौआ । पुं० [हिं०] डाट बनाने की एक नरम लकडी, काग । ⊙**जंघा**=स्त्री० ओषधि मे प्रयुक्त एक गाँठदार पौधा । गुजा । भुगवन नामक लता । ⊙**सुता**=स्त्री० कोयल । ⊙**तालीय**=वि० सयोगवश होनेवाला,

आकस्मिक। ⊙दंत=पुं० (कौए के दाँत के समान) कोई असभव वात। ⊙पक्ष=पुं० कानो और कनपटियो के ऊपर के वाल के पट्टे, जुल्फ। कौए का पख। ⊙पच्छ=पुं० [हि०] काकपक्ष। ⊙वध्या=स्त्री० स्त्री जिसके एक सतति के वाद दूसरी न हुई हो। ⊙वलि=स्त्री० श्राद्ध के समय कौओ को दिया जानेवाला भोजन का भाग। ⊙सिखा Ⓟ=स्त्री० दे० 'काकपक्ष'।

काकरीⓅ—स्त्री० दे० 'ककडी'।

काकरेजा—पुं० गाढे काले रग का कपडा।

काकरेजी—पुं० [फा०] लाल और काले के मेल से वननेवाला रग। वि० उक्त रग का।

काकली—स्त्री० [सं०] मद और मधुर ध्वनि, कलनाद। सेंध लगाने की सवरी।

काका—पुं० पिता का छोटा भाई, चाचा।

काकाकौआ, काकातुआ—पुं० [मला०] सिर पर टेढी चोटी का सफेद रग का एक वडा तोता।

काकिणी—स्त्री० [सं०] गुजा। वीस कौडियो के वरावर मूल्य का पण का चतुर्थ भाग। माशे का चौथाई भाग। कौडी।

काकी—स्त्री० [सं०] कौए की मादा। स्त्री० [हि०] चाची।

काकु—पुं० [सं०] पीडा, भय, शोक, आदि मनोविकारो के कारण कठध्वनि का विकार। छिपी हुई चुटीली वात, व्यग्य। अलकार मे वक्रोक्ति का एक भेद जिसमे शब्दो के अन्यार्थ या अनेकार्थ से नही वल्कि ध्वनि से ही दूसरा अभिप्राय ग्रहण किया जाय।

काकुत्स्थ—पुं० [सं०] ककुत्स्थ के वशज। रामचद्र या लक्ष्मण।

काकुल—पुं० [फा०] कनपटी पर लटकते हुए लवे वाल, कुल्ले, जुल्फे।

काग—पुं० कौआ वहुत हलकी और लचीली लकडी का एक वडा पेड। इस पेड की छाल से निर्मित वोतल की डाट।

कागज—पुं० [अ०, वहु० कागजात] सन, रुई आदि को सडाकर लिखे या छापे जाने के लिये वनाया हुआ पत्र। लिखा हुआ कागज। दस्तावेज। अखवार। **कागजी**—वि० कागज का, कागज का वना हुआ। पतले छिलके का (जैसे, कागजी वादाम)। लिखित।

कागद†—पुं० दे० 'कागज'।

कागरⓅ—पुं० दे० 'कागज'। पख।

कागरीⓅ—वि० तुच्छ, हीन।

कागा—पुं० दे० 'कौआ'। ⊙वासी=स्त्री० भाँग जो सवेरे कौआ वोलते समय छानी जाय। कुछ काले रग का एक मोती। ⊙रोल=पुं० शोरगुल।

कागौर—पुं० दे० 'काकवलि'।

काचाⓅ—वि० कच्चा। डरपोक।

काछ—पुं० पेड़ू और जाँघ के जोड़ और उसके कुछ नीचे तक का स्थान। लाँग। अभिनय के लिये नटो का वेश वनाना। **काछना**†—सक० कमर मे लपेटे हुए वस्त्र के लटकते हुए भाग को जाँघो पर से ले जाकर पीछे कसकर वाँधना। पहनना। **काछनी**—स्त्री० कसकर और कुछ ऊपर चढाकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनो लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं, कछनी। घाघरे की तरह का चुननदार आधी जाँघ का एक पहनावा। **काछा**—पुं० दे० 'काछनी'।

काछी—पुं० तरकारी वोने और वेचनेवाली एक जाति। इस जाति का व्यक्ति।

काछूⓅ—पुं० दे० 'कछुआ'।

काछेⓅ—क्रि० वि० निकट, पास।

काज—पुं० काम, कृत्य। व्यवसाय। उद्देश्य, मतलव। विवाह। वटन फँसाने का छेद।

काजर†—पुं० दे० 'काजल'।

काजरीⓅ—स्त्री० गाय जिसकी आँख के किनारे काला घेरा हो।

काजल—पुं० आँखो मे लगाने का दीपक का जमाया हुआ धुआँ। मु० ~की कोठरी=स्थान जहाँ जाने से दोष या कलक से न वचा जा सके।

काजी—पुं० इसलाम धर्म और रीति नीति के अनुसार न्याय की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी। न्यायकर्ता।

काजू—पुं० एक पेड़ और उसकी खाई

जानेवाली गिरी। इस वृक्ष के फल की गुठली के भीतर की मीगी।

काट—स्त्री० काटने की क्रिया या भाव। काटने का ढग। कटा हुआ स्थान, घाव। कपट, विश्वासघात। कुश्ती मे पेच का तोड। विरोध। तेल, घी आदि का तलछट या मैल। **काटना**—सक० [अक० कटना] धारदार चीज से दो टुकड़े करना। घाव करना। अश निकालना, कोई भाग अलग करना। वध करना। पीसना। कतरना, ब्योतना। नष्ट करना। बिताना। रास्ता खतम करना। अनुचित प्राप्ति करना। लिखावट को रद करना। सडक या नहर तैयार करना। पानी की किनारा काटकर दूसरी ओर ले जाना। विभाग कर बनाना (खाना, क्यारी आदि)। एक सख्या का दूसरी से ऐसा भाग करना कि कुछ न बचे। जेल या कैद भोगना। दांत धँसाना या डक मारना। तीक्ष्ण वस्तु से जलन होना (सूरन, चूने आदि से)। एक रेखा का दूसरी पर से चार कोण बनाते हुए निकलना। (किसी मत का) खडन करना। किसी जीव (बिल्ली आदि) का सामने से निकलना। घस्से से डोरी तोडना। दुख दायी लगना। मु०—**काटने दौड़ना** = चिडचिडाना, क्रुद्ध होना। जी को उचाट करना, सूना लगना। **काटो तो खून नहीं** = किसी भयानक बात से स्तब्ध हो जाना।

काटर(पु)—वि० हठी, कट्टर। काटनेवाला। कडा। कठोर।

काटू—वि० काटनेवाला। डरावना।

काठ—पु० पेड का कटा अग, लकडी। जलाने की लकडी। शहतीर। लकडी की बेडी। (पु)शरीरपिंजर। ⊙**कबाड़** = टूटा फूटा सामान। मु० ~**का उल्लू** = वज्र मूर्ख। ~**की हाँडी** = ऐसा धोखा जो दूसरी बार न चल सके। ~**होना** = सज्ञाहीन या स्तब्ध होना। सूखकर कडा हो जाना। **काठड़ा**—पु० दे० 'कठौता'। **काठिन्य**—पु० कडापन, कठोरता।

काठी—स्त्री० घोडो की पीठ पर कसने की जीन जिसमे नीचे काठ लगा रहता है। ऊँट की पीठ पर रखने की काठ लगी गद्दी। शरीर की गठन। काठ का म्यान। ईंधन। वि० काठियावाड का।

काढ़ना—सक० [अक० कढना] भीतर से बाहर करना, निकालना। खोलकर दिखाना। अलग करना (एक वस्तु दूसरी से)। उरेहना, लकडी, पत्थर, कपडे आदि पर बेल-बूटे बनाना। उधार लेना। घी, तेल आदि मे पकाकर निकालना।

काढ़ा—पु० ओषधियो को पानी मे उबालकर बनाया हुआ अर्क, क्वाथ।

कातना—सक० [अक० कतना] रुई को ऐंठकर तागा बनाना। चरखा चलाना।

कातर—वि० [सं०] अधीर, घबराया हुआ। भयभीत। डरपोक। आर्त, दुखी। हतोत्साह।

काता—पु० काता हुआ सूत, तागा।

कातिक—पु० दे० 'कार्तिक'।

कातिब—पु० [अ०] लेखक, मुहर्रिर।

कातिल—वि० [अ०] हत्यारा, कत्ल करनेवाला।

काती—स्त्री० कैंची। सुनारो की कतरनी। चाकू, छुरी। छोटी तलवार।

काथ(पु)—पु० दे० 'कत्था'।

काथरी†—स्त्री० दे० 'कथरी'।

कादंब—पु० [सं०] एक हस। ऊख। बाण। कदब वृक्ष या उसका फल फूल। कदब की बनी शराब। वि० कदब सबधी।

कादंबरी—स्त्री० [सं०] कोयल। वाणी। मदिरा। मैना। बाणभट्ट की लिखी एक प्रसिद्ध आख्यायिका।

कादंबिनी—स्त्री० [सं०] बादलो की घटा।

कादर—वि० डरपोक। अधीर, व्याकुल।

कादिरी—स्त्री० [अ०] बेगमो की एक प्रकार की चोली।

कान—पु० सुनने की इद्रिय, कर्ण। सुनने की शक्ति। कान मे पहनने का सोने का एक गहना। चारपाई का टेढापन। किसी वस्तु का निकला हुआ भद्दा कोना। तराजू का पसगा। तोप या बदूक मे रंजक रखने का स्थान। नाव की पतवार।

कड़ाही आदि का दस्ता। मु०~उठाना = आहट लेना। सचेत होना। ~उमेठना = दड के लिये कान मरोड़ना। न करने की प्रतिज्ञा करना। ~करना = सुनना, ध्यान देना। ~काटना = मात करना, बढ़कर होना। ~का कच्चा = बिना सोचे समझे विश्वास कर लेनेवाला। ~खड़े करना = सचेत होना। ~खाना = बहुत शोर गुल करना। ~गरम करना = दे० 'कान उमेठना'। ~देना या धरना = ध्यान से सुनना। ~पकड़ना = कान उमेठना। अपनी भूल को स्वीकार करना। ~पर जूं तक न रेंगना = कुछ भी ध्यान न देना। ~फूंकना = दीक्षा देना, चेला बनाना। ~भरना = किसी के मन मे किसी के विरुद्ध कोई बात बैठा देना। ~मूंदना = सुनना न चाहना। ~मे तेल डाले बैठना = सुनकर भी उस ओर कुछ ध्यान न देना। ~मे डाल देना = सुना देना, सूचित कर देना। कानो कान खबर न होना = किसी के सुनने मे न आना। कानो पर हाथ धरना = एक बारगी इनकार करना।

कानन—पुं० [सं०] जगल। घर।

काना—वि० जिसकी एक आँख न हो। (फल) जिनका कुछ भाग कीड़ो ने खा लिया हो। पु० 'आ' की मात्रा (ा)। वि० जिसका कोना निकला हो, तिरछा।

कानाकानी, कानाफूसी—स्त्री० कान मे धीरे से कही जानेवाली बात।

कानावाती—स्त्री० दे० 'कानाफूसी'।

कानि—(हिं० वै० कान) स्त्री० लोकलज्जा, मर्यादा, प्रतिष्ठा। लिहाज, सकोच।

कानी—वि० स्त्री० एक आँखवाली। सबसे छोटी (उँगली)। ~कौडी = फूटी कौड़ी।

कानीन—पु० [सं०] अविवाहित कन्या से पैदा हुआ व्यक्ति।

कानून—पु० [अ०] राजनियम, विधि। ⊙दाँ = वि० [फा०] कानून जाननेवाला। मु०~छाँटना या बघारना = अनावश्यक तर्क या हुज्जत करना। **कानूनी**—वि० जो कानून जाने। कानून सबधी, कानून के अनुकूल। हुज्जती।

कान्ह(५)—श्रीकृष्ण।

कान्हड़ा—पु० एक राग जिसमे सातो स्वर लगते है।

कान्हर(५)—पु० श्रीकृष्ण।

कापर(५)—पु० कपड़ा, वस्त्र।

कापाल—पु० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र। वि० कपाल सबधी। **कापालिक**—पु० शैव मत के तान्त्रिक साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिए रहते हैं और मद्य मासादि खाते है। **कापाली**—पु० [सं०] शिव। एक वर्णसकर जाति।

कापिल—वि० [सं०] कपिल सबधी। कपिल के मत को माननेवाला, सांख्यवादी। भूरा। साख्य दर्शन।

कापी—स्त्री० [अँ०] नकल, प्रतिलिपि। लिखने की कोरे कागज की पुस्तक। प्रति, जिल्द। ⊙राइट = पु० निर्धारित समय के लिये लेखक, निर्माता आदि को अपनी कृति के मुद्रण, प्रकाशन, विक्रय आदि का विधान द्वारा प्राप्त स्वत्व या एकाधिकार।

काफिया—पु० [अ०] अत्यानुप्रास, तुक। ⊙बदी = स्त्री० तुकबदी। मु०~तग करना = बहुत हैरान करना।

काफिर—वि० [अ०] मुसलमानो के अनुसार उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला। मूर्तिपूजक। ईश्वर को न माननेवाला। निष्ठुर। बुरा। काफिर देश का रहनेवाला। पु० दक्षिणी अफ्रीका की बाँटू जाति की शाखा। इसकी भाषा। सिंधु नद के उत्तरपश्चिम का एक प्रदेश।

काफिला—पु० [अ०] यात्रियो का दल।

काफी—पु० [फा०] एक पेय कहवा। एक राग। जितना आवश्यक हो उतना, पर्याप्त।

काफूर—पु० [फा०] कपूर। मु०~होना = गायब होना, भाग जाना। **काफूरी**—वि० काफूर का। काफूर के रग का। पु० बहुत हलका हरा रग।

काब—स्त्री० [तु०] बड़ी रकाबी।

काबर—वि० कई रगो का, चितकबरा। पु० एक प्रकार की कुछ रेत मिली भूमि, दोमट।

काबिज—वि० [अ०] अधिकार या कब्जा रखनेवाला। कब्ज करनेवाला।
काबिल—वि० [अ०] योग्य। विद्वान्।
काबिलीयत—स्त्री० [अ०] योग्यता, लियाकत। विद्वत्ता।
काबिस—पु० मिट्टी के कच्चे बरतन रँगने का एक रंग। एक लाल मिट्टी।
काबुक—पु० [फा०] कबूतरों का दरबा।
काबुली—वि० काबुल का। पु० काबुल का निवासी।
काबू—पु० [तु०] वश, इख्तियार।
काम—पु० कार्य, कर्म। प्रयोजन, सरोकार। उपयोग। व्यवसाय। कारीगरी, रचना। वेलबूटा, नक्काशी। ⊙**काज** = पु० कारबार। व्यापार। ⊙**काजी** = वि० कामकाज करनेवाला। ⊙**गार** = पु० मजदूर, दे० 'कामदार'। ⊙**चलाऊ** = वि० जिससे काम निकल सके। ⊙**चोर** = काम से जी चुरानेवाला। ⊙**दार** = पुं० कारिंदा। वि० जिसपर जरदोजी या कसीदे का काम हो। ⊙**धाम** = पुं० काम काज। धंधा।
काम—पुं० [सं०] इच्छा। महादेव। कामदेव। मैथुन की इच्छा। चार पदार्थों (धर्म अर्थ, काम, मोक्ष) में से एक। ⊙**कला** = स्त्री० रति। ⊙**कलोल** = स्त्री० [हिं०] काम क्रीडा। ⊙**ग** = वि० स्वेच्छाचारी, दुराचारी, लंपट। ⊙**चारी** = वि० जहाँ चाहे विचरनेवाला, मनमाना काम करने वाला। कामुक। ⊙**ज** = वि० वासना से उत्पन्न। ⊙**जित्** = वि० काम को जीतनेवाला। पुं० महादेव। कार्तिकेय। ⊙**ज्वर** = पुं० स्त्रियों और पुरुषों को अतृप्त कामवासना से होनेवाला एक ज्वर। ⊙**तरु** = पुं० दे० 'कल्पवृक्ष'। ⊙**द** = वि० मनोरथ पूरा करनेवाला। ⊙**दमणि** = पुं० चिंतामणि। ⊙**दहन** = पुं० कामदेव को जलानेवाले, शिव। ⊙**दा** = स्त्री० कामधेनु ⊙**दुहा** = स्त्री० कामधेनु। ⊙**देव** = पुं० स्त्री पुरुष के संयोग की प्रेरणा देनेवाला पौराणिक देवता। वीर्य। संभोग की इच्छा। ⊙**धुक्** = वि० इच्छानुसार जब और जितनी बार दुही जानेवाली (गाय)। इच्छाएँ पूर्ण करनेवाला। ⊙**धेनु** = स्त्री० पुराणानुसार एक गाय जिससे जो कुछ माँगा जाय वही मिलता है। वसिष्ठ की शबला या नंदिनी गाय। ⊙**पंचमी** = स्त्री० वसंत पंचमी। ⊙**बाण** = पुं० कामदेव के पाँच बाण (उन्मादन, संतापन, शोषण, स्तंभन और संमोहन। फूलों के बाण मानने पर ये हैं लाल कमल, अशोक आम की मंजरी, चमेली और नील कमल)। ⊙**भूरुह** = पुं० कल्पवृक्ष। ⊙**रिपु** = पुं० शिव। ⊙**रूप** = पुं० आसाम का एक जिला जहाँ कामाख्या देवी का स्थान है। शत्रु के अस्त्रों को व्यर्थ करनेवाला एक प्राचीन अस्त्र। २६ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में गुरु लघु का क्रम रहता है। देवता। वि० मनमाना रूप बनानेवाला। ⊙**वान्** = वि० [स्त्री० कामवती] काम या संभोग की इच्छावाला। **शर** = दे० 'कामबाण'। ⊙**शास्त्र** = पुं० दांपत्य प्रेम और संबद्ध व्यवहारों का वर्णन करनेवाली विद्या या ग्रंथ। ⊙**सखा** = पुं० [हिं०] वसंत। **कामांध** = वि० काम वासना के पीछे पागल। **कामाक्षी** = स्त्री० तंत्र में देवी की एक मूर्ति। दुर्गा का एक रूप। **कामाख्या** = स्त्री० देवी का योनिपीठ, कामरूप। तंत्र में देवी का एक रूप। महाभारत का एक तीर्थ। **कामातुर** = वि० काम के वेग से व्याकुल **कामारि** = पुं० महादेव। **कामार्थी** = वि० संभोग का इच्छुक। **कामावशायिता, कामावसायिता** = स्त्री० अपनी इच्छा से समस्त वासनाओं का दमन। योग की अष्टसिद्धियों में से एक, सत्यसंकल्पता। **कामेश्वरी** = स्त्री० तंत्र के अनुसार भैरवी कामाख्या की पाँच मूर्तियों में से एक। **कामोद्दीपक** = वि० वासना को उत्तेजित करनेवाला। **कामोद्दीपन** = स्त्री० वासना की उत्तेजना। वि० दे० 'कामोद्दीपक'।
कामता(पु)—वि० दे० 'कामद'। पुं० चित्रकूट के पास का एक गाँव।
कामना—स्त्री० [सं०] इच्छा, मनोरथ।
कामयाब—वि० [फा०] सफल, सिद्ध प्रयोजनवाला। **कामयाबी**—स्त्री० [फा०] सफलता, प्रयोजन की सिद्धि।

कामरी(पु)—स्त्री० कमली ।

कामरू—पुं० दे० 'कामरूप' ।

कामल, कामला—पुं० [सं०] कमल रोग, पित्त का अत्यधिक बनना या एकदम न बनना ।

कामली(पु)—स्त्री० कमली ।

कामा(पु)—स्त्री० कामिनी स्त्री । एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे केवल दो गुरु वर्ण होते हैं। स्त्री० [अ०] लघु विरामचिह्न (,) ।

कामायनी—स्त्री० [सं०] अंगिरस् या मनु की पत्नी श्रद्धा । जयशंकर 'प्रसाद' कृत एक प्रगीत महाकाव्य ।

कामित—स्त्री० [सं०] अभिलाषा । वि० इच्छित ।

कामिल—वि० [अ०] पूरा, समूचा । योग्य । पूर्ण ज्ञाता ।

कामी—वि० [सं०] कामना रखनेवाला । विषयी, कामुक ।

कामुक—वि० [सं०] चाहनेवाला । विषयी ।

कामोद—पुं० संपूर्ण जाति का एक राग ।

काम्य—वि० [सं०] वांछनीय । सुंदर । प्रिय । पसंद । कामना से किया हुआ । पुं० कामना की सिद्धि के लिये किया जानेवाला यज्ञ या कर्म ।

काम्येष्टि—स्त्री० [सं०] कामनासिद्धि के लिये किया जानेवाला यज्ञ ।

काय—वि० [सं०] प्रजापति संबंधी । स्त्री० शरीर । कनिष्ठा उँगली के नीचे का भाग। प्रजापति का हवि । प्राजापत्य विवाह । मूल धन । समुदाय । ⊙व्यूह = पुं० शरीर मे वात, पित्त, कफ, रक्त, मांस आदि के स्थान और विभाग का क्रम । योगियों को अपने कर्मों के भोग के लिये चित्त मे एक एक इंद्रिय और अंग की कल्पना करना । सैनिक घेरा । ⊙स्थ = वि० शरीर मे रहनेवाला । पु० जीवात्मा । परमात्मा । एक जाति । कायजा—पु० [अ०] घोडे की लगाम की डोरी जिसे पूँछ तक ले जाकर बाँधते हैं ।

कायथ—पु० कायस्थ, एक जाति ।

कायदा—पु० [अ०] नियम । चाल, दस्तूर । ढंग । विधि । क्रम, व्यवस्था ।

कायफल—पु० एक वृक्ष जिसकी छाल, फल और फूल दवा के काम आते है ।

कायम—वि० [अ०] ठहरा हुआ, स्थिर । स्थापित । निर्धारित । निश्चित । ⊙मुकाम = स्थानापन्न, एवजी ।

कायर—वि० डरपोक, भीरु ।

कायल—वि० [अ०] तर्क वितर्क मे सिद्ध बात को मान लेनेवाला, कबूल करनेवाला ।

कायली†—स्त्री० ग्लानि, लज्जा ।

काया—स्त्री० [सं०] शरीर देह । ⊙कल्प = पु० [सं०] औषध के प्रभाव से वृद्ध शरीर को पुन तरुण और सबल बनाने की क्रिया । ⊙पलट = पु० [हिं०] बडा परिवर्तन । और ही रूप रंग का होना ।

कायिक—वि० [सं०] शरीर संबंधी । शरीर से उत्पन्न । संघ संबंधी (बौद्ध) ।

कारंड, कारंडव—पु० [सं०] हंस या बत्तख की जाति का एक पक्षी ।

कारंधम, कारंधमी—पु० [सं०] मिश्रित धातुओं से चीजें बनानेवाला व्यक्ति। कीमियागर ।

कार—पु० [सं०] क्रिया, कार्य । (जैसे, उपकार, स्वीकार आदि) । करनेवाला, बनानेवाला (समास के अंत मे, जैसे—चर्मकार, ग्रंथकार आदि) । वर्णमाला के किसी अक्षर के आगे लगकर उसी एक अक्षर का बोध करनेवाला प्रत्यय (जैसे-चकार, लकार आदि) । अनुकृत ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञावत् बोध करानेवाला प्रत्यय (चीत्कार, हाहाकार आदि)। स्त्री० [अं०] मोटर गाडी । पु० [फा०] काम, कार्य । ⊙कुन = पु० इंतजाम करनेवाला । कारिंदा । ⊙खाना = पु० स्थान जहाँ व्यापार के लिये कोई चीज बनाई जाय । कारबार, व्यवसाय । मामला । घटना । क्रिया । ⊙गर = वि० असर करनेवाला । उपयोगी । ⊙गुजार = वि० अपना कर्तव्य अच्छी तरह पूरा करनेवाला । ⊙गुजारी = स्त्री० कर्तव्यपालन । कर्मपटुता । कर्मण्यता । ⊙चोब = पु० लकडी का चौखटा जिसपर कपडा तानकर जरदोजी का काम किया जाता

है, अड्डा। जरदोजी का काम करनेवाला व्यक्ति। ⊙चोबी = वि० जरदोजी का। स्त्री० जरदोजी, गुलकारी। ⊙नामा = पु० कामो का विवरण। करतूत। प्रशसनीय काम। ⊙परदाज = वि० कामकरनेवाला। प्रबधकर्ता। ⊙बार = पु० काम काज, व्यापार। पेशा, व्यवसाय। ⊙बारी = वि० कामकाजी। पु० कारिंदा ⊙रवाई = स्त्री० काम, करतूत। कार्यतत्परता। गुप्त प्रयत्न, चाल। ⊙साज = वि० बिगडे काम को सँभालनेवाला। ⊙साजी = स्त्री० काम पूरा करने की युक्ति। चालबाजी, कपट प्रयत्न। ⊙स्तानी = स्त्री० काररवाई। चालबाजी।

कारक—वि० [स०] करनेवाला (प्राय समासात मे)। पु० संज्ञा या सर्वनाम की वह अवस्था जिसके द्वारा उसका क्रिया से सबध प्रकट हो (व्या०)। ⊙**दीपक** = पु० दीपक नामक अर्थालकार का भेद जिसमे कई क्रियाओं का एक कर्ता वर्णन किया जाय।

कारजⓅ†—पु० दे० 'कार्य'।

कारटाⓅ—पु० कौआ, काग।

कारण—पु० [सं०] वह जिससे किसी वस्तु या कार्य का पूर्वसबध आवश्यक हो, हेतु, निमित्त। अभिप्राय, सबब। आदि, मूल। कर्म। प्रमाण। ⊙**माला** = स्त्री० हेतुओ की श्रेणी। एक अर्थालकार जिसमे क्रम से बाद मे कही वस्तुओ के कारण पहले कही बाते हो। ⊙**शरीर** = पु० सुषुप्त अवस्था का वह कल्पित शरीर जिसमे इद्रियो का विषयव्यापार तो नही रहता पर अहकार आदि का सस्कार रहता है।

कारतूस—पु० गोली बारूद से भरी एक खोली जिसे बदूक आदि मे भरकर चलाते हैं।

कारनⓅ—पु० दे० 'कारण'। स्त्री० रोने का आर्त स्वर।

कारनिस—स्त्री० दीवार की कँगनी, कगर।

कारनी—पुं० प्रेरक, करानेवाला। वि० भेद करानेवाला।

कारवाँ—पु० [फा०] यात्रियो का दल।

कारा—स्त्री० [सं०] बधन, कैद। कैदखाना। पीड़ा, क्लेश। Ⓟ वि० दे० 'काला'। **कारागार, कारागृह** = पु० [सं०] कैदखाना। **कारावास**—पु० [सं०] कैदखाना। कैद मे रहना।

कारिंदा—पु० [फा०] दूसरे की ओर से काम करनेवाला, कर्मचारी, गुमाश्ता।

कारिका—स्त्री० [सं०] पद्यबद्ध और सक्षिप्त व्याख्या। नट की स्त्री। नर्तकी।

कारिख—स्त्री० दे० 'कालिख'।

कारित—वि० [सं०] कराया हुआ।

कारी—पु० [स०] करनेवाला, बनानेवाला (समासात मे)। वि० गहरा। घातक।

कारीगर—पु० [फा०] दस्तकार, शिल्पकार। वि० शिल्प मे कुशल, हुनरमद। **कारीगरी**—स्त्री० [फा०] दस्तकारी, शिल्प। मनोहर रचना।

कारु—पु० [स०] देवताओ का शिल्पी, विश्वकर्मा। कारीगर। विद्या, कला।

कारुणिक—वि० [स०] करुणा करनेवाला, दयालु।

कारुण्य—पु० [सं०] करुणा का भाव, दया।

कारूँ—पु० [अ०] हजरत मूसा का चचेरा भाई जो बडा धनी और कजूस था। वि० कजूस। मु०~**का खजाना** = असीम धन।

कारूनी—स्त्री० घोडो की एक जाति।

कारूरा—पु० [अ०] शीशी जिसमे रोगी का मूत्र वैद्य को दिखाने के लिये रखा जाता है। मूत्र।

कारोछ—स्त्री० दे० 'कालौछ'।

कारोबार—पु० दे० 'कारबार'।

कार्तिक—पु० [स०] क्वार और अगहन के बीच मे पडनेवाला महीना।

कार्तिकेय—पु० [सं०] शिव जी के पुत्र स्कद।

कार्पण्य—पु० [सं०] कृपणता, कजूसी।

कार्पास—पु० [सं०] कपास।

कार्मण—पु० [सं०] मत्रतत्र आदि का प्रयोग।

कार्मना—पु० मत्रतत्र का प्रयोग। मत्रतत्र।

कार्मुक—पु० [सं०] धनुष। धन्वाकार

शस्त्र। अर्धवृत्त (ज्या०)। इद्रधनुप, बाँस। धनुराशि।

कार्य—पु० [सं०] काम, धधा। वह जो कारण का विकार हो अथवा जिसे लक्ष्य करके कर्ता क्रिया करे। फल, परिणाम। ⊙कर्ता = पु० काम करनेवाला, कर्मचारी। ⊙कारणभाव = पु० कार्य और कारण का सबध। ⊙क्रम = पु० कार्यों की सूची या क्रम। **कार्यान्वित**—वि० कार्य मे बदला हुआ, सपादित। **कार्यालय**—पु० काम करने का स्थान, दफ्तर। कारखाना।

कारवाई—स्त्री० दे० 'काररवाई'।

कार्षापण—पु० [सं०] एक प्राचीन सिक्का या नाप।

काल—पु० [सं०] सबधसत्ता जिसके द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान आदि की प्रतीति होती है, समय। मृत्यु। यमदूत। अवसर। अकाल, महँगी। शिव का एक नाम। वि० काला। ⊙कठ = पु० शिव। मोर। नीलकठ पक्षी। खजन। ⊙कूट = पु० एक अत्यत भयकर विष, काला वच्छनाग। ⊙कोठरी = स्त्री० [हिं०] जेलखाने की बहुत तग और अँधेरी कोठरी जिसमे तनहाई कैदवाले कैदी रखे जाते है। बहुत छोटा और अँधेरा कमरा। ⊙क्षेप = पु० समय बिताना। निर्वाह। ⊙चक्र = पु० समय का हेर फेर। एक अस्त्र। ⊙छेप = पु० [हिं०] दे० 'कालक्षेप'। ⊙ज्ञ = पु० समय के हेर फेर को जाननेवाला। ज्योतिषी। मुर्गा। ⊙ज्ञान = पु० समय की पहचान। स्थिति और अवस्था की जानकारी। मृत्यु का समय जान लेना। ⊙दड = पु० यमराज का दड। ⊙धर्म = पु० मृत्यु, विनाश। समयानुसार धर्म या व्यापार। समय का प्रभाव। सामयिकता। ⊙निशा = वि० दीवाली की रात। अँधेरी, भयावनी रात। ⊙पाश = पु० समय का नियम जिसके कारण भूत प्रेत कुछ समय तक अनिष्ट नही कर सकते। यमराज का बधन। ⊙पुरुष = पु० ईश्वर का विराट् रूप। काल। ⊙यापन = पु० समय बिताना। गुजारा करना। ⊙रात्रि(५) = [हिं०] दे० 'कालरात्रि'। ⊙रात्रि = स्त्री० [सं०] अँधेरी और भयावनी रात। प्रलय की रात। मृत्यु की रात्रि। दीवाली की अमावस्या। दुर्गा की एक मूर्ति। ⊙विपाक = पु० काम का समय पूरा होना। कालास्त्र = पु० बाण जिससे शत्रु का निधन निश्चित समझा जाता था।

काल—क्रि० वि० दे० 'कल'।

कालबूत—पु० कच्चा भराव जिसपर मेहराब बनाई जाती है।

कालर—पु० दे० 'कल्लर'। पु० [अं०] गले मे बाँधने का पट्टा। कोट या कमीज मे गले के चारो ओर उठी हुई पट्टी।

काला—वि० काजल या कोयले के रग का, स्याह। कलुषित, बुरा। भारी, प्रचड। पु० काला साँप। ⊙कलूटा = वि० बहुत काला। ⊙चोर = पु० बहुत बडा चोर। बुरे से बुरा आदमी। ⊙जीरा = पु० स्याह जीरा। ⊙नमक = पु० सज्जी के योग से बना एक पाचक लवण। ⊙नाग = पु० काला साँप, विषधर साँप। अत्यत कुटिल आदमी। ⊙पहाड़ = पु० बहुत भयानक या दुस्तर वस्तु। मुरशिदाबाद के नवाब दाउद का सेनापति जो बडा कट्टर और क्रूर मुसलमान था। ⊙पान = पु० ताश की बूटियो का एक रग हुकुम। ⊙पानी = पु० देशनिकाले का दड। अडमान और निकोबार आदि द्वीप जहाँ देशनिकाले के कैदी भेजे जाते है। शराब। ⊙भुजग = वि० बहुत काला। काले कोस = बहुत दूर। मु०—अपना मुँह ~ करना = पाप करना। व्यभिचार करना। (किसी बुरे आदमी का) दूर होना।

कालिंदी—स्त्री० [सं०] कलिंद पर्वत से निकली हुई यमुना नदी। श्रीकृष्ण की एक स्त्री। एक वैष्णव सप्रदाय।

कालि(५)†—क्रि० वि० दे० 'कल'।

कालिक—वि० [सं०] समय सबधी। जिसका समय नियत हो।

कालिका—स्त्री० [सं०] देवी का एक स्वरूप,

चडिका। कालापन। बिछुआ नामक पौधा। मेघ। स्याही। मदिरा। आँख की काली पुतली।

कालिख—स्त्री० धुएँ के जमने से लगनेवाली काली बुकनी, कलौंछ। **मु० मुंह मे ~लगना** = बदनामी मे मुंह दिखलाने लायक न रहना।

कालिब—पु० [अ०] टीन या लकडी का गोल ढाँचा जिस पर चढाकर टोपियाँ दुरुस्त की जाती हैं। शरीर।

कालिमा—स्त्री० [सं०] कालापन, कालिख। अँधेरा। कलक।

कालिय—पु० [सं०] एक सर्प जिसे कृष्ण ने वश मे किया था। ⊙**जित्**, ⊙**दमन**, ⊙**मर्दन** = पु० श्रीकृष्ण।

काली—स्त्री० [स०] चडी, कालिका। पार्वती। दस महाविद्याओ मे पहली। अग्नि की सात जिह्वाओ मे पहली। वि० स्त्री० [हिं०] 'काला' का स्त्रीलिङ्ग। ⊙**घटा** = स्त्री० घने काले बादलो का समूह। ⊙**जबान** = स्त्री० जीभ जिससे निकली अशुभ बातें घट जायँ। ⊙**दह** = पु० वृंदावन मे यमुना का एक कुड जिसमे कालिय नाग रहता था। ⊙**मिर्च** = स्त्री० काले छिलके की गोल मिर्च। ⊙**शीतला** = स्त्री० एक उग्र चेचक जिसमे काले दाने निकलते है।

कालौंछ—स्त्री० कालापन। स्याही। धुएँ की कालिख।

काल्पनिक—वि० [स०] कल्पना करनेवाला। कल्पित, फर्जी।

काल्ह', **काल्हि**(५)†—क्रि० वि० 'कल'।

कावा—पुं० [फा०] घोडे को एक वृत्त मे चक्कर देने की क्रिया। **मु० ~काटना** = वृत्त मे दौडना, चक्कर खाना। आँख बचाकर दूसरी ओर निकल जाना।

काव्य—पु० [सं०] रसात्मक वाक्यरचना। पुस्तक जिसमे ऐसी रचना हो। रोला छद का भेद जिसमे प्रत्येक चरण की ११वीं मात्रा लघु होती है। ⊙**लिंग** = पु० अर्थालंकार जिसमे कही हुई बात का कारण वाक्य या पद के अर्थ द्वारा दिखाया जाय।

काव्यार्थापत्ति—पु० [सं०] अर्थापत्ति अलंकार।

काश—पु० [सं०] एक घास, काँस। खाँसी। अव्य० [फा०] यदि सभव होता।

काशिका—वि० स्त्री० [सं०] प्रकाश करनेवाली। प्रकाशित। स्त्री० काशीपुरी। पाणिनीय व्याकरण पर एक वृत्ति।

काशीकरवट—पु० काशी मे एक स्थान जहाँ प्राचीन काल मे लोग आरे के नीचे कटकर अपना प्राण देना बहुत पुण्य समझते थे।

काशीफल—पु० कुम्हडा।

काश्त—स्त्री० [फा०] खेती, कृषि। ⊙**कार** = पु० किसान, खेतिहर। ⊙**कारी** = स्त्री० खेती, किसानी। काश्तकार का हक।

काश्मीर—पु० [सं०] भारत के उत्तरपश्चिम का एक प्रदेश, कश्मीर। कश्मीर का निवासी। कश्मीर मे उत्पन्न वस्तु। केसर। वि० कश्मीर मे उत्पन्न। कश्मीर का। **काश्मीरा**—पु० एक मोटा ऊनी कपडा। एक अगूर। **काश्मीरी**—वि० कश्मीर देश सबधी। कश्मीर का निवासी।

काश्यप—वि० [स०] कश्यप प्रजापति के वश या गोत्र का। कश्यप सबधी।

काषाय—वि० [सं०] हड, बहेडे आदि कसैले वस्तुओ मे रँगा हुआ। गेरुआ। पु० उक्त कसैली वस्तुओ मे रँगा हुआ वस्त्र। गेरुआ वस्त्र।

काष्ठ—पु० [सं०] काठ, लकडी। जलावन, ईंधन।

काष्ठा—स्त्री० [सं०] हद, अवधि। उच्चतम चोटी। उत्कर्ष। १८ पल का समय या एक कला का ३०वाँ भाग। चद्रमा की कला। ओर, तरफ। स्थिति।

कास—पु० [स०] खाँसी। पु० काँस।

कासनी—स्त्री० [फा०] एक पौधा जिसकी जड, डठल और बीज दवा के काम आते हैं। इसका बीज। कासनी के फूल के समान नीला रग।

कासा—पु० [फा०] प्याला, कटोरा। भोजन। फकीरो का दरियाई नारियल का बरतन।

कासार—पु० [सं०] छोटा तालाव, पोखरा। बीस रगण का एक दडक वृत्त। दे० 'कसार'।

कासिद—पु० [अ०] सदेशा ले जानेवाला, पत्रवाहक।

काहँ(पु)—प्रत्य० दे० 'कहँ'।

काह(पु)—क्रि० वि० क्या? कौन सी वस्तु?

काहली(पु)—वि० दे० 'काहिल'।

काहि(पु)—सर्व० किसको? किसे? किससे?

काहिल—वि० [अ०] आलसी, जो फुर्तीला न हो। काहिली—स्त्री० [अ०] सुस्ती, आलस।

काही—वि० घास के रग का, कालापन लिए हरा।

काहु(पु)—सर्व० दे० 'काहू'

काहू—सर्व० किसी। पु० [फा०] गोभी की तरह का एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं।

काहे†, काहे को†—क्रि० वि० क्यो? किसलिये?

कि—अव्य० दे० 'किम्'।

किकर—पु० [सं०] [स्त्री० किकरी] दास। राक्षसो की एक जाति।

किकर्तव्यविमूढ—वि० [सं०] जिसे कर्तव्य न सूझे, भौचक्का, घवराया हुआ।

किकिणी—स्त्री० [स०] क्षुद्रघटिका। करधनी।

किगरी—स्त्री० छोटा चिकारा, छोटी सारगी।

किचन—पु० [स०] थोडी वस्तु।

किचित्—वि०, क्रि० वि० [स०] कुछ, थोड़ा।

किजल्क—पु० [स०] कमल का केसर। कमल। नागकेशर। वि० कमल के केशर के रग का पीला।

किंतु—अव्य० [सं०] पर, लेकिन। वरन्, वल्कि।

किपुरुख(पु), किपुरुष—पु० [सं०] देवयोनि मे गिने गए मनुष्यो के समान घोडे के मुँहवाले विशेष प्राणी। वर्णसकर।

किभूत वि० [सं०] कैसा। विलक्षण। भद्दा।

किवदंती—स्त्री० [सं०] उड़नी खवर। जनश्रुति।

किवा—अव्य० [स०] या तो, अथवा।

किशुक—पु० [सं०] पलाश, ढाक। तुन का पेड।

कि—सर्व० क्या? किस प्रकार? अव्य० एक सयोजक शब्द जो कहना, देखना आदि क्रियाओ के बाद उनके विषयवर्णन क पहले आता है। इतने मे। अथवा।

किआरी—स्त्री० दे० 'कियारी'।

किकियाना—अक० कीकी या कें कें शब्द करना।

किचकिच—स्त्री० व्यर्थ का वादविवाद, वकवाद। झगडा।

किचकिचाना—अक० क्रोध मे दाँत पीसना। दाँत पर दाँत दवाना।

किचकिचाहट—स्त्री० किचकिचाने का भाव।

किचकिची—स्त्री० किचकिचाहट, दाँत पीसने की अवस्था।

किचरपिचर—वि० दे० 'गिचपिच'।

किछु(पु)†—वि० दे० 'कुछ'।

किटकिट—स्त्री० दे० 'किचकिच'।

किटकिटाना—अक० क्रोध मे दाँत पीसना। दाँत के नीचे ककड की तरह कडा लगना।

किटकिना—पु० दस्तावेज जिसके द्वारा ठीकेदार अपना ठीका दूसरे असामियो को दे देता है। सोनारो का ठप्पा। चालाकी।

किट्ट—पु० [सं०] धातु की मैल। तेल आदि मे नीचे वैठी हुई मैल, कीट।

कित(पु)†—क्रि० वि० कहाँ? किधर? किस ओर?

कितक(पु)†—वि०, क्रि० वि० कितना?

कितना—वि० किस परिमाण, मात्रा या सख्या का? अधिक। क्रि० वि० किस परिमाण या मात्रा मे? कहाँ तक? अधिक।

कितव—पुं० [सं०] जुआरी। धूर्त, छली। पागल। दुष्ट।

किता—पु० [अ०] सिलाई के लिये कपडे की काट छाँट। ढग, चाल। अदद। सतह का हिस्सा। प्रदेश।

किताव—स्त्री० [अ०] पुस्तक ग्रथ। रजिस्टर। वही। मु०—किताबी कीड़ा = पुस्तको को चाट जानेवाला कीडा। व्यक्ति जो सदैव पुस्तक पढता रहता है।

किताबी—वि० किताव के आकार का। किताव

संबंधी। ⊙कीड़ा = पुस्तकों को चाट जाने वाला कीडा। व्यक्ति जो सदैव पुस्तक पढ़ता रहता है।
कितिक(पु)†—वि० दे० 'कितक', 'कितना'?
कितेक(पु)†—वि० कितना ? बहुत।
कितो—वि० दे० 'कितना' ? क्रि० वि० किधर ?
कित्ति(पु)—स्त्री० यश।
किधर—क्रि० वि० किस ओर ?
किधौं(पु)—अव्य० अथवा, तो। न जाने।
किन—सर्व० 'किस' का बहु०। (पु)सर्व० किसने। क्रि० वि० क्यों न, चाहे। क्यों नहीं। पु० चिह्न, दास।
किनका—पु० [स्त्री० किनकी] अन्न का टूटा हुआ दाना। चावल आदि की खुद्दी।
किनवानी—स्त्री० छोटी छोटी बूँदों की फूही।
किनहा†—वि० (फल) जिसमें कीड़े पड़े हों।
किनार(पु)—पु० दे० 'किनारा'।
किनारा—पु० [फा०] लंबाई की ओर का छोर (थान या कपड़े का)। हाशिया, गोटा। चारों ओर का भाग जहाँ विस्तार समाप्त हो (खेत आदि का)। सिरा छोर। पार्श्व, बगल। तट, तीर। मु०~करना या खींचना = अलग होना, छोड़ देना। किनारे लगना = किनारे पर पहुँचना। समाप्त होना।
किनारी—स्त्री० कपड़ों के किनारे लगनेवाला पतला गोटा।
किन्नर—पु० [सं०] देवयोनि में माने जानेवाले प्राणी जिनका मुख घोड़े के समान होता है। गाने बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति। किन्नरी—स्त्री० [सं०] किन्नर की स्त्री। किन्नर जाति की स्त्री। स्त्री० एक तंबूरा। किंगरी, सारंगी।
किफायत—स्त्री० [अ०] काफी होने का भाव। कम खर्चा, थोड़े में काम चलाना। बचत। किफायती—वि० [अ०] कम खर्च करनेवाला। सँभालकर खर्च करनेवाला।
किबला—पु० [अ०] पश्चिम दिशा। मक्का। पूज्य व्यक्ति। पिता। ⊙नुमा = पु० [फा०] पश्चिम दिशा को बतानेवाला अरब मल्लाहों द्वारा प्रयुक्त एक प्राचीन यंत्र।
किम्—वि०, सर्व० [सं०] क्या ? कौन सा ?
किमरिक—पु० एक बारीक चिकना सफेद कपड़ा।
किमाछ—पु० दे० 'केवाँच'।
किमाम—पु० शहद के समान गाढ़ा किया हुआ शरबत (जैसे, सूरती का किमाम)।
किमाश—पु० [अ०] तर्ज, ढंग। गंजीफे का एक रंग।
किमि(पु)—क्रि० वि० किस प्रकार ? कैसे ?
किम्मती(पु)—वि० गुणवान्। 'हम करतूती बड़े किम्मती कहाए·' (जगद्विनोद ४६)।
कियत्—वि० [सं०] कितना ?
कियारी—स्त्री० दे० 'क्यारी'।
किरंटा—पु० छोटे दरजे का क्रिस्तान (तुच्छताव्यंजक)।
किरकिटी—स्त्री० आँख में चुभनेवाला तिनका या धूल का कण।
किरकिरा—वि० कँकरीला, महीन और कड़े रवेवाला। मु०~होना = आनंद में विघ्न पड़ना। किरकिराना—अक० किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा होना। दे० 'किटकिटाना'। किरकिराहट—स्त्री० किरकिरी पड़ने की पीड़ा। दाँत के नीचे कंकरीली वस्तु पड़ने का शब्द। कंकरीलापन। किरकिरी—स्त्री० आँख में पड़कर पीड़ा देनेवाला तिनका या धूल का कण। अपमान, हेठी।
किरकिल—पु० गिरगिट। (पु) स्त्री० शरीरस्थ दस वायुओं में से वह जिससे छींक आती है।
किरच—स्त्री० नोक के बल सीधी भोंकी जानेवाली एक सीधी तलवार। छोटा नुकीला टुकड़ा।
किरण—स्त्री० [सं०] प्रकाश की पतली रेखा, किरन। ⊙माली = पु० सूर्य।
किरन—स्त्री० सूर्य, चंद्र, दीपक आदि से

प्रवाहित ज्योति की सूक्ष्म रेखा। कलाबत्तू या बादले की बनी झालर। मु० ~फूटना = सूर्योदय होना।

किरपा ⓤ †—स्त्री० दे० 'कृपा'।

किरपान ⓤ—पुं० दे० 'कृपाण'।

किरम—पु० दे० 'किरिमदाना'। कीडा।

किरमाल ⓤ †पु० तलवार, खड्ग।

किरमिच—पु० एक चिकना मोटा कपडा जिससे जूते, वैग आदि वनते हैं।

किरमिज—पु० एक रग, हिरमजी। दे० 'किरिमदाना'। किरमिजी रग का घोडा। किरमिजी—वि० किरमिज के रग का।

किरराना—अक० क्रोध से दांत पीसना। किर्र-किर्र शब्द करना।

किरवान ⓤ—पु० दे० 'कृपाण'।

किरवार ⓤ—पु० दे० 'करवाल'।

किरवारा ⓤ—पु० अमलतास।

किरांची—स्त्री० अनाज, भूसा आदि लादने की वैलगाडी। मालगाडी का डव्बा।

किरात—पु० [सं०] एक प्राचीन जगली जाति। हिमालय के पूर्व तथा आस-पास के प्रदेश का प्राचीन नाम।

किरात—स्त्री० जवाहरात से सवधित एक तौल (लगभग चार जौ के वरावर)।

किराना—पु० पसारी की दूकान से मिलने-वाली चीजें (नमक, हलदी आदि)।

किरानी—पु० वह जिसके माता पिता मे से कोई एक यूरोपियन और दूसरा हिंदुस्तानी हो, किरटा। अग्रेजी दफ्तर का मुशी, क्लार्क।

किराया—पु० [अ०] दूसरे की वस्तु को काम मे लाने के वदले दिया जानेवाला धन, भाडा। ⊙दार = पु० [फा०] भाडे पर लेनेवाला व्यक्ति।

किरायेदार—पु० दे० 'किरायादार'।

किरावल—पु० वह सेना जो लडाई का मैदान ठीक करने के लिये आगे जाय। वदूक से शिकार करनेवाला आदमी।

किरासन—पु० मिट्टी का तेल।

किरिच—स्त्री० दे० 'किरच'।

किरिम—पु० दे० 'कृमि'। ⊙दाना = पु० सुखाकर रंगने के काम आनेवाला किर-मिज नामक कीडा।

किरिया ⓤ †—स्त्री सौगध, कसम। कर्तव्य, काम। मृत व्यक्ति के हेतु श्राद्ध आदि कर्म।

किरीट—पु० [सं०] राजाओ आदि द्वारा माथे पर वांधा जानेवाला एक शिरो-भूषण। आठ भगण का एक वर्णवृत्त या सवैया। किरीटी—पु० [सं०] वह जो किरीट पहने। इद्र। अर्जुन। राजा।

किरोलना—सक० करोदना, खुरचना।

किर्च—स्त्री० दे० 'किरच'।

किर्मिज—पु० एक रग, किरमिजी। दे० 'किरिमदाना'। किरमिजी रग का घोडा।

किल—अव्य० [सं०] निश्चय, सचमुच।

किलक—स्त्री० किलकने या हर्षध्वनि करने की क्रिया। हर्षध्वनि।

किलकार—स्त्री० हर्षध्वनि करना।

किलकारना—अक० हर्षध्वनि करना। चिल्लाना।

किलकारी—स्त्री० हर्षध्वनि। चीख।

किलकिंचित—पु० [सं०] नायिका का हर्षातिरेक मे नायक के समक्ष झूठी हँसा, रोदन, भय, रोष और शाति का मिलाजुला प्रदर्शन (साहित्यदर्पण)।

किलकिल—स्त्री० दे० 'किचकिच'।

किलकिला—स्त्री० [सं०] हर्षध्वनि, किल-कारी। पु० मछली खानेवाली एक छोटी पानी का चिड़िया। पु० समुद्र का वह भाग जहां की लहरें भयकर शब्द करती हो। किलकिलाना—अक० हर्षध्वनि करना। चिल्लाना। वादविवाद करना।

किलकिलाहट—स्त्री० किलकिलाने का शब्द।

किलना—पु० किलनी से कुछ वडा और उसी की जाति का कीडा जो चौपायो के शरीर मे चिमट जाता है। अक० [सक० कीलना] कीला जाना। वश मे किया जाना। गति का अवरोध होना। किलनी—स्त्री० पशुओ के शरीर मे चिमटनेवाला एक कीडा।

किलबिलाना—अक० दे० कुलवुलाना।

किलवांक—पु० कावुल देश का एक घोडा।

किलवाना—सक० [कीलना का प्रे०] कील

जडवाना। तन्नमन्त्र द्वारा भूतप्रेत के विघ्नकारी कृत्य को रुकवा देना। जादू टोना करा देना।

किलविष—पु० दे० 'किल्विष'।

किला—पु० [अ०] लडाई के समय बचाव का दृढ स्थान, दुर्ग, गढ। ⊙**बदी** = स्त्री० [फा०] दुर्गनिर्माण। सेना की व्यूहरचना। रक्षा का कडा प्रबध। शतरज मे बादशाह को सुरक्षित घर मे रखना। **किलेदार** = पु० दुर्गपति। **किलेबदी** = स्त्री० दे० 'किला-बदी'। मु०~**फतह करना** = बडा कठिन काम कर लेना। ~**टूटना** = बडी अडचन का दूर होना।

किलोल†—पु० दे० 'कलोल'।

किल्लत स्त्री० [अ०] कमी, तगी।

किल्ला—पु० बडी कील या मेख। खूंटा। **किल्ली**—स्त्री० कील। खूंटी। सिट-किनी। कल या पेंच को चलाने या घुमाने की मुठिया।

किल्विष—पु० [स०] पाप, अपराध, दोष। रोग। अन्याय। हानि। चोट।

किवॉच—पु० दे० 'केवाँच'।

किवाड—पु० लकडी का पल्ला जो द्वार बद करने के लिये चौखट मे जुडा रहता है, कपाट।

किशमिश—स्त्री० [फा०] सुखाया हुआ छोटा बेदाना अगूर। **किशमिशी**—वि० जिसमे किशमिश हो। किशमिश के रग का।

किशलय—पु० [सं०] नया निकला हुआ पत्ता, कल्ला।

किशोर—पु० [स०] [स्त्री० किशोरी] ११-से १५ वर्ष तक की अवस्था का बालक। पुत्र।

किश्त—स्त्री० [फा०] शतरज के खेल मे बादशाह का किसी मोहरे की घात मे पडना, शह।

किश्ती—स्त्री० नाव। एक प्रकार की छिछली थाली या तश्तरी। शतरज का एक मोहरा, हाथी। ⊙**नुमा** = वि० नाव के आकार का, धन्वाकार होकर दोनो छोरो पर कोना डालते हुए।

किस—सर्व० 'ने', 'को' आदि कारक चिह्नो से पूर्व लगनेवाला 'कौन' और 'क्या' का विकारी रूप।

किसनईⓅ—स्त्री० दे० 'किसानी'।

किसबⓅ—पु० दे० 'कसब'।

किसबत—स्त्री० वह थैली जिसमे नाई अपने उस्तरे, कैंची आदि रखते हैं।

किसमीⓅ—पु० श्रमजीवी, मजदूर, कुली।

किसलय—पु० [स०] किशलय।

किसान—पु० खेती करनेवाला व्यक्ति, खेतिहर।

किसानी—स्त्री० खेती, किसान का काम।

किसालाⓅ—पु० कष्ट। 'सिसिर के पाला न व्यापत किसाला तिन्हैं' (जगद्विनोद ३९१)।

किसी—सर्व० 'कोई' का कारक चिह्नो के पूर्व प्रयुक्त विकारी रूप।

किसूⓅ—सर्व दे० 'किसी'।

किसोरⓅ†—पु० [स्त्री० किसोरी] दे० 'किशोर'।

किस्त—स्त्री० [अ०] कई बार करके ऋण या देय (देना) चुकाने का ढग। निश्चित समय पर दिया जानेवाला ऋण या देय का भाग। ⊙**बदी** = स्त्री० [फा०] थोडा थोडा करके रुपया अदा करने का ढग। ⊙**वार** = क्रि० वि० [फा०] किस्त के ढग से, किस्त करके, हर किस्त पर।

किस्म—स्त्री० [अ०] भेद, प्रकार, तरह। ढग, तर्ज।

किस्मत—स्त्री० भाग्य, नसीब। एक कमि-श्नर के अधीन कई जिलो का प्रदेश, कमिश्नरी। ⊙**वर** = वि० [फा०] भाग्य-वान्। मु०~**आजमाना** = किस्मत के भरोसे पर कोई कार्य करना। ~**चमकना या जागना** = भाग्य प्रबल होना। ~**फूट-ना** = भाग्य मद होना। ~**लड़ना** = भाग्य की परीक्षा होना। भाग्य खुलना।

किस्सा—पु० [अ०] कहानी, कथा। हाल, वृत्तात, समाचार। झगडा, तकरार। ⊙**ख्वाँ**, ⊙**गो** = पुं० [फा०] वह जो किस्से कहानियाँ सुनाता हो।

किहिⓅ—सर्व० किसका।

कींगरी—स्त्री० दे० 'किंगरी'।

कीक—पु०चीख, चीत्कार। कीकना—अक० कीकी करके चिल्लाना, चीत्कार करना।
कीकर—पुं० बबूल का पेड़।
कीका(पु)—पुं० घोड़ा।
कीकान—पुं० घोड़ों के लिये प्रसिद्ध भारत के पश्चिमोत्तर का एक देश। इस देश का घोड़ा।
कीच—पु० कीचड़, कर्दम।
कीचड़—पु० पानी मिली हुई धूल या मिट्टी, पंक। आँख का सफेद मल।
कीट—पु० [सं०] रेंगने या उड़नेवाला क्षुद्र जंतु, कीड़ा। पु० [हिं०] जमा हुआ मैल। ⊙भृंग = पु० एक न्याय जिसका प्रयोग कई वस्तुओं के बिलकुल एकरूप होने पर किया जाता है।
कीड़ा—पु० उड़ने या रेंगनेवाला छोटा जंतु। कृमि, सूक्ष्म कीट। साँप। जूँ, खटमल आदि। मु०—कीड़े काटना = बेचैनी होना, चंचलता होना।
कीड़ी—स्त्री० छोटा कीड़ा। चींटी।
कीदहुँ(पु)—अव्य दे० 'किधौं'।
कीनखाब—पु० दे० 'कमखाब'।
कीना—पु० [फा०] द्वेष, बैर।
कीप—स्त्री० तंग मुँह के बरतन में द्रव पदार्थ ढालने के लिये लगाई जानेवाली चोंगी।
कीमत—स्त्री० [अ०] दाम, मूल्य। कीमती—वि० अधिक कीमत का, बहुमूल्य।
कीमा—पु० [अ०] बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त।
कीमिया—स्त्री० [फा०] रसायन। रासायनिक क्रिया। ⊙गर = पु० रसायन बनानेवाला, रासायनिक परिवर्तन में प्रवीण।
कीमुख्त—पु० [अ०] गधे या घोड़े का चमड़ा जो हरे रंग का और दानेदार होता है।
कीर—पु० [सं०] शुक, तोता।
कीरति(पु)—स्त्री० दे० 'कीर्ति'।
कीर्ण—वि० [सं०] बिखरा हुआ। फैला हुआ, व्याप्त। छाया हुआ।
कीर्तन—पु० [सं०] भगवान् के अवतार संबंधी भजन, कथा आदि। यशोगान, गुणकथन।
कीर्तनिया—पु० कीर्तन करने या सुनानेवाला व्यक्ति।
कीर्ति—स्त्री० [सं०] ख्याति, नामवरी। बड़ाई, नेकनामी। पुण्य। आर्या छंद का एक भेद जिसमें १४ गुरु और १६ लघु वर्ण होते हैं। दशाक्षरा वृत्तों में से एक जिसके प्रत्येक चरण में तीन सगण और एक गुरु होता है। एकादशाक्षरी वृत्तों में से एक जो इंद्रवज्रा के मेल से बनता है। ⊙मान् = वि० यशस्वी, नेकनाम। ⊙स्तंभ = पु० किसी की कीर्ति का स्मरण कराने के लिये बनाया जानेवाला स्तंभ। कार्य या वस्तु जिससे किसी की कीर्ति स्थायी हो।
कील—स्त्री० [सं०] लोहे या काठ की मेख। योनि में अटकनेवाला मूढ़ गर्भ। नाक में पहनने का छोटा आभूषण, लौंग। मुहाँसे की मासकील। जाँते की बीच की खूँटी। खूँटी जिसपर कुम्हार का चाक घूमता है। आग की लपट। कीलक—पु० [सं०] कील, खूँटा। एक तांत्रिक देवता। अन्य मंत्र का प्रभाव नष्ट करनेवाला मंत्र। किसी मंत्र का मध्य भाग। कीलन—पु० [सं०] बंधन, रुकावट। मंत्र को कीलने का काम। कीलना—स०कील लगाना। कील ठोककर मुँह बंद करना। मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना। साँप को ऐसा मोहित करना कि वह काट न सके। वश में करना। कीला—पु० बड़ी कील। स्त्री० क्रीड़ा। कीलाक्षर—पु० [सं०] कील से लिखी जानेवाली एक प्राचीन लिपि। कीलित—वि० [सं०] जिसमें कील जड़ी हो। मंत्र से स्तंभित। कीली—स्त्री० कील या डंडा जिस पर चक्र घूमता है। 'कील,' 'किल्ली'।
कीश—पु० [सं०] बंदर। चिड़िया। सूर्य।
कीसा—पु० [फा०] थैली, खीसा।
कुँअर—पु० राजकुमार। लड़का, पुत्र।
कुँअरेटा(पु)†—पु० लड़का, बालक।
कुँआँ, कुँआ—पु० पानी या तेल निकालने के लिये जमीन में खोदा गया कच्चा या पक्का गड्ढा, कूप। मु०—(किसी के लिये) ~खोदना = हानि पहुँचाने का

यत्न करना। जीविका के लिये प्रयत्न करना। **कुँए मे गिरना**=विपत्ति मे पडना। **कुँए मे बाँस डालना**=बहुत खोजना। **कुँए मे भाँग पड़ना**=सब की बुद्धि खराब होना। **नित्य कुँआ खोदना**= प्रति दिन कमाना और उसी से निर्वाह करना।

कुँआरा—वि० जिसका विवाह न हुआ हो।

कुँई—स्त्री० दे० 'कुमुदिनी'।

कुंकुम—पु० [स०] केसर। रोली। कुंकुमा।

कुंकुमा—पु० झिल्ली की कुप्पी या ऐसा बना हुआ लाख का पोला गोला जिसके भीतर गुलाल भरकर होली के दिनो मे दूसरो पर मारते है।

कुंचन—पु० [स०] सिमटना, बटुरना।

कुंचित—वि० [स०] घूमा हुआ, घूँघरवाले, छल्लेदार (बाल)।

कुंची—स्त्री० दे० 'कुजी'।

कुज—पु० [स०] वृक्ष, लता आदि से मडप की तरह ढका स्थान। १५ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तगण, जगण, रगण, सगण और रगण होते है। ⊙**कुटीर**=पु० लताओ मे घिरा हुआ घर। ⊙**गली**=स्त्री०[हि०] बगीचो मे लताओ से छाया हुआ पथ। पतली तग गली। ⊙**विहारी**=पु० श्रीकृष्ण। **कुजित**—वि० [स०] कुजो से युक्त, लतामडपोवाला।

कुज—पु० दुशाले के कोनो पर बनाए जाने-वाले बूटे। क्रौच पक्षी।

कुजक(पु)—पु० अत पुर मे आने जानेवाला ड्योढी पर का चोवदार, कचुकी।

कुंजडा—पु० तरकारी बोने और बेचनेवाली एक मुसलमान जाति।

कुजर—पु० [स०] हाथी। बाल, केश। छप्पय के २१वें भेद का नाम। पाँच मात्राओ के छदो के प्रस्तार मे पहला। वि० श्रेष्ठ, उत्तम (जैसे, पुरुषकुजर)।

कुजरारि—पु० सिह।

कुंजल(पु)—पु० [सं०] काँजी। पु० हाथी।

कुजा(पु)†—पु० पुरवा, चक्कड।

कुजी—स्त्री० चाभी, ताली। वह पुस्तक जिससे दूसरी पुस्तक का अर्थ खुले। **मु०** ~(**किसी की**) **हाथ मे होना**=(किसी का) वश मे होना।

कुठ—वि० [स०] जिसकी धार चोखी या तीक्ष्ण न हो, कुद। मूर्ख। **कुठित**—वि० [स०] बिना तीक्ष्ण धार का, गुठला। निकम्मा। मद।

कुड—पु० [स०] कुडा। प्राचीन काल का अनाज नापने का एक मान। छोटा तलाब। पृथ्वी मे खोदा हुआ गड्ढा या धातु का पात्र जिसमे आग जलाकर अग्निहोत्र आदि करते है। बटलोई। ऐसी स्त्री का जारज लडका जिसका पति जीता हो। पूला, गट्ठा। लोहे का टोप। होदा। **कुँडरा**—पु०[हि०] मटका।

कुंडल—पु० [सं०] कान का मडलाकार आभूषण, बाली। गोरखपथी कनफटे साधुओ का सींग, काँच, सोने आदि का कानो का आभूषण। कडा, चूडी आदि कोई मडलाकार आभूषण। रस्सी आदि का गोल फदा। मडल जो कुहरे या बदली मे सूर्य या चद्रमा के चारो ओर दिखाई पडता है। मडल बाँधकर या फेरो मे सिमटकर बैठने की स्थिति। छद मे वह मात्रिक गण जिसमे दो मात्राएँ हो, पर अक्षर एक ही हो। बाईस मात्राओ का एक छद जिसके अत मे दो दीर्घ मात्राएँ हो। **कुडलाकार**—वि० मडलाकार गोल। **कुडलिका**—स्त्री० मडलाकार रेखा। कुडलिया छद। **कुडलिनी**—स्त्री० तत्र और हठयोग के अनुसार एक सर्पाकार वस्तु जो मूलाधार मे सुषुम्ना नाडी की जड के नीचे है। एक मिठाई, जलेबी या इमरती। **कुडलिया**—पु० [हि०] एक मात्रिक छद जो एक दोहे और एक रोला के योग से इस प्रकार बनता है कि दोहे का अतिम चरण रोले के आदि मे अविकल आता है तथा पूरी कुडलियाँ के आरभिक और अतिम शब्द या पद एक होते है। **कुंडली**—स्त्री० [सं०] जलेबी, कुडलिनी। गिलोय। जन्मकाल के ग्रहो की स्थिति बतानेवाला एक चक्र जिसमे बारह घर होते हैं। इँडुवा। साँप के बैठने की मुद्रा। पु० साँप। वरुण। मोर।

विष्णु। कुडा—पु० [हिं०] मिट्टी का चौडे मुंह का एक बडा गहरा बरतन। दरवाजे की चौखट मे साँकल फँसाने का कोढा। कुडी—स्त्री० पत्थर या मिट्टी का कटोरे के आकार का बरतन। जजीर की कडी। किवाड मे लगी हुई साँकल।

कुत—पु० [स०] भाला, बरछी। कोडिल्ला। जूं। क्रूर भाव, अनख।

कुतल—पु० [सं०] सिर के बाल। प्याला, चुक्कड। जौ। हल। वेश बदलनेवाला पुरुष, बहुरूपिया।

कुता(पु)†—स्त्री० दे० 'कुती'।

कुंती—स्त्री० [स०] बरछी, भाला। कर्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता।

कुंथना—अक० पीटा जाना।

कुद—पुं० [सं०] जूही की तरह के सफेद फूल का एक पौधा। कनेर का पेड। कमल। कुदुर नामक गोद। कुबेर की नौ निधियो मे से एक। नौ की सख्या। विष्णु। वि० [फा०] कुठित, गुठला। मद।

कुंदन—पुं० बहुत अच्छे और साफ सोने का पतला पत्तर। बढिया सोना। वि० खरे सोने के समान चोखा, खालिस, स्वच्छ। निरोग।

कुंदरू—पु० एक बेल जिसमे लबे, परवल से फल लगते हैं, जिनकी तरकारी होती है।

कुंदा—पुं० [फा०] लकडी का बडा, मोटा, बिना चीरा हुआ टुकडा, लक्कड। लकडी का टुकडा जिसपर रखकर कुछ गढते, काटते या कुदी करते हैं, निहठा, ठीहा। बदूक का पिछला चौडा भाग। लकडी जिसमे अपराधी के पैर ठोंके जाते हैं, काठ। दस्ता, मूठ। कपडो मे कुदी करने की लकडी की बडी मुँगरी। चिडिया का पर। कुश्ती का एक पेंच। खोवा, मावा।

कुंदी—स्त्री० धुले हुए कपडो की सिकुडन दूर करने तथा तह जमाने के लिये उसे मुँगरी से कूटने की क्रिया। खूब मारना पीटना। ⊙गर=पु० कुदी करनेवाला व्यक्ति।

कुंदेरना†—सक० खुरचना। खरादना।

कुंदेरा—पुं० खरादनेवाला व्यक्ति।

कुंभ—पु० [सं०] मिट्टी का घडा, कलश। हाथी के सिर के दोनो ओर उभरे हुए भाग। ज्योतिष मे दशवी राशि। दो द्रोण या ६४ सेर का एक प्राचीन मान। प्राणायाम के तीन अगो मे से एक। प्रति १२वें वर्ष पडनेवाला एक बडा पर्व। गुग्गुल। ⊙कार=पु० मिट्टी के बरतन बनानेवाला, कुम्हार। मुर्गा। ⊙ज, ⊙जन्मा, ⊙जात, ⊙सभव=पु० (घडे से उत्पन्न) अगस्त्य मुनि।

कुंभिलाना(पु)—अक० दे० 'कुम्हलाना'।

कुभी—पु० [स०] हाथी। मगर। गुग्गुल। एक जहरीला कीडा। बच्चो को क्लेश देनेवाला एक राक्षस। स्त्री० छोटा घडा। कायफल का पेड। तरबूज। बसी। जलाशयो मे होनेवाली एक वनस्पति, जलकुभी। एक नरक, कुभीपाक। ⊙पाक=पु० पुराणानुसार एक नरक जिसमे पापी अग्नि मे जलाए जाते हैं।

कुँवर—पु० राजपुत्र। लडका, बेटा।

कुँवरेटा—वि० छोटा लडका, बच्चा।

कुँवारा—वि० जिसका ब्याह न हुआ हो।

कुँहकुँह(पु)—पु० केसर।

कु—उप० [सं०] सज्ञा के पूर्व लगकर यह उसके अर्थ मे छोटाई, न्यूनता, रुकावट, बुराई, तिरस्कार, दोष आदि का अर्थ देता है (कुकर्म, कुगति, कुदृष्टि, कुयोग आदि)। ⊙कर्म=पु० बुरा काम। ⊙कर्मी=वि० बुरा काम करनेवाला, पापी। ⊙खेत(पु)=पु० खराब जगह। ⊙ख्यात=वि० बदनाम। ⊙ख्याति=स्त्री० निंदा, बदनामी। ⊙गति=स्त्री० दुर्गति, दुर्दशा। ⊙गहनि(पु)=स्त्री० अनुचित, आग्रह, हठ। ⊙घात=पु० बेमौका। बुरा दाँव, छल कपट। ⊙चक्र=पु० दूसरो को हानि पहुँचाने का गुप्त प्रयत्न, षड्यत्र। ⊙चक्री=वि० षड्यत्र रचनेवाला। ⊙चर=वि० बुरे स्थानो मे घूमनेवाला, आवारा। नीच कर्म करनेवाला। वह जो पराई निंदा करता फिरे। ⊙चरचा(पु)=स्त्री० बुरी अफवाह, बदनामी। ⊙चाल=स्त्री० [हिं०] बुरा आचरण, खराब चालचलन। दुष्टता, बदमाशी। ⊙चाली=वि० [हिं०] बुरे आचरण या चालवाला, कुमार्गी। दुष्ट।

⊙चाह(पु) = स्त्री० अमंगल, अशुभ बात। ⊙चील, चेल(पु)† = वि० दे० 'कुचैला'। ⊙चेष्ट = वि० बुरी चेष्टावाला। ⊙चेष्टा = स्त्री० कुप्रयत्न, बुरी चाल। चेहरे का बुरा भाव। ⊙चैन(पु) = स्त्री० दु:ख, व्याकुलता। वि० बेचैन, व्याकुल। ⊙चैला = वि० [हिं०] मैले कपडेवाला। गंदा। ⊙जन्त्र(पु) = पु० अभिचार, टोना। ⊙जात(पु) = स्त्री० दे० 'कुजाति'। ⊙जाति = स्त्री० बुरी या हीन जाति। पु० बुरी जाति का आदमी। पतित पुरुष। ⊙जोगी(पु) = वि० असंयमी। ⊙टेव = स्त्री० [हिं०] अनुचित हठ। ⊙टेक = स्त्री० खराब आदत, बुरी बान। ⊙ठाँव = स्त्री० [हिं०] बुरी जगह। ⊙ठाट = पु० बुरा साज सामान। बुरा प्रबंध। ⊙ठाय(पु) = स्त्री० दे० 'कुठाँव'। ⊙ठाहर(पु) = पुं० बुरा स्थान। बेमौका। ⊙ठौर = पुं० [हिं०] बुरी जगह। बेमौका। ⊙डौल = वि० [हिं०] बेढंगा, भद्दा। ⊙ढंग = पु० [हिं०] बुरी रीति, कुचाल। वि० बेढंगा, भद्दा। बुरी तरह का। ⊙ढंगी = वि० [हिं०] कुमार्गी। ⊙ढब = वि० [हिं०] बेढब। कठिन। ⊙तरकी(पु) = दे० 'कुतर्की'। ⊙तर्क = पु० बेढंगी दलील, बकवास। ⊙तर्की = पुं० बकवादी वितंडावादी। ⊙दाँव = पुं० [हिं०] विश्वासघात। संकट की स्थिति, औचट। विकट स्थान। मर्मस्थान। ⊙दाई (पु) = वि० विश्वासघाती, छली। ⊙दान = पु० दान जिसे लेना बुरा समझा जाय (शय्यादान, गजदान आदि)। ⊙दाम = पु० [हिं०] खोटा सिक्का। ⊙दाय (पु) = पु० दे० 'कुदाँव'। ⊙दिन = पु० विपत्ति का समय। एक सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक का समय। वह दिन जिसमे ऋतुविरुद्ध या इसी प्रकार की और कष्ट देनेवाली घटनाएँ हों। ⊙दिष्ट(पु) = स्त्री० बुरी नजर, पापदृष्टि। ⊙दृष्टि = स्त्री० बुरी नजर, पापदृष्टि। तर्क जो वेद से अनुमोदित न हो। ⊙द्रव = पु० कोदो (अन्न)। ⊙धातु = स्त्री० बुरी धातु। लोहा। ⊙नाम = पु० बदनामी। ⊙पंथ = पु० [हिं०] बुरा मार्ग। निषिद्ध आचरण। कुत्सित सिद्धांत या संप्रदाय। ⊙पंथी = वि० [हिं०] दे० 'कुमार्गी'। ⊙पढ = वि० [हिं०] अनपढ़ ठीक से न पढा हुआ। ⊙पथ = पु० बुरा रास्ता। निषिद्ध आचरण। पु० [हिं०] स्वास्थ्य के लिये हानिकारक भोजन। ⊙पथ्य = पु० स्वास्थ्य को खराब करनेवाला आहार-विहार, बदपरहेजी। ⊙पाठ = पु० बुरी सलाह। ⊙पाठी = वि० बदमाश, नटखट। ⊙पात्र = वि० अयोग्य, नालायक। जिसे दान देना शास्त्र मे निषिद्ध हो। ⊙पुत्र = पु० कपूत, दुष्ट पुत्र। ⊙बाक(पु) = पु० कठोर वचन। गाली। शाप। ⊙बानि(पु)† = स्त्री० बुरी आदत, कुटेव। ⊙बानी(पु) = पु० बुरा व्यापार। ⊙बुद्धि = वि० भ्रष्ट बुद्धि का, मूर्ख। मूर्खता। बुरी मंत्रणा। ⊙बेला = स्त्री० अनुपयुक्त समय। ⊙बोलना = वि० [हिं०] अशुभ बातें कहनेवाला। ⊙मारग(पु) = पु० दे० 'कुमार्ग'। ⊙मार्ग = पु० कुपथ। अधर्म। ⊙मार्गी = वि० बदचलन। ⊙मुख = वि० जिसका चेहरा अच्छा न हो। पु० रावण का एक योद्धा। सूअर। अधर्मी। ⊙यश = पु० बदनामी। ⊙रव = वि० जिसका स्वर कर्कश हो। पु० सियार। लाल फूल की कटसरैया। आक। ⊙राही = वि० [हिं०] कुमार्गी। बदचलन। बदचलनी, दुराचार। ⊙रुख = वि० [हिं०] मुँह बनाए हुए, नाराज। ⊙रूप = वि० बदसूरत। बेढंगा। ⊙वाक्य = पु० अयोग्य बात। गाली। ⊙वाच्य = वि० कहने के अयोग्य, बुरा। कठोर शब्द। गाली। ⊙विचारी = वि० बुरे विचारवाला। ⊙साइत = स्त्री० [हिं०] बुरी साइत। बेमौका। ⊙साखी(पु) = पु० बुरा पेड। ⊙सूत = पु० [हिं०] बुरा सूत। बुरा प्रबंध।

कुआँ—पु० दे० 'कुँआ'।
कुकड़ना†—अक० सिकुडना।
कुकडी—स्त्री० कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा, अंटी। मदार का डोडा। दे० 'खुखडी'।
कुकनू—[यू०] एक (कल्पित) पक्षी जो अपने ही गाने से उत्पन्न आग मे भस्म हो जाता है।
कुकुभ—पु० [सं०] ३० मात्राओ का एक मात्रिक छद जिसमे दो अत्य गुरु होते हैं।
कुकुर—पु० [सं०] यदुवशी क्षत्रियो की एक शाखा। एक साँप। कुत्ता। ⊙खाँसी=स्त्री० [हिं०] सूखी खाँसी जिसमे कफ न गिरे और खाँसते खाँसते उलटी हो जाय। ⊙दत=पु० साधारण दाँत के अतिरिक्त नीचे आडा निकलनेवाला दाँत। ⊙माछी=स्त्री० [हिं०] पशुओ को काटनेवाली एक मक्खी, कुकुरौछी। ⊙मुत्ता=पु० [हिं०] एक प्रकार की खुमी जिसमे बुरी गध निकलती है, दे० खुमी'।
कुकुही(पु)†—स्त्री वनमुर्गी।
कुक्कुट—पु० [सं०] मुर्गा। चिनगारी। लुक। जटाधारी पौधा।
कुक्कुर—पु० [सं०] कुत्ता। यदुवशियो की एक शाखा।
कुक्ष—पु० [सं०] पेट, उदर। कुक्षि—स्त्री० [सं०] पेट। कोख। बीच का भाग।
कुगोल(पु)—पु० पृथ्वी, भूमडल।
कुघा(पु)—स्त्री० ओर, तरफ।
कुच—पु० [सं०] स्तन, छाती।
कुचना(पु)—अक० सिकुडना, सिमटना।
कुचलना—सक० दवाकर विकृत करना, मसलना। पैरो से रौंदना। मु०—सिर~ =पराजित करना।
कुचला—पु० पान जैसे पत्तोवाला एक वृक्ष जिसके विषैले बीज औषध के काम मे आते है।
कुच्छित(पु)—वि० दे० 'कुत्सित'।
कुछ—वि० थोडी सख्या या मात्रा का। सर्व० कोई (वस्तु)। कोई काम की बात। मु०~एक=थोडे से।~ऐसा =विलक्षण।~का कुछ=और का और। ~न~=थोडा बहुत।~कर देना=जादू टोना कर देना।~ खा लेना=विष खा लेना। ~न चलना=वश न चलना।~न पूछना= कहने की जरूरत नही। ~लगाना= (अपने को) बडा या श्रेष्ठ समझना। ~हो जाना=कोई रोग या भूत प्रेत की बाधा होना।
कुज—पु० [सं०] मगल ग्रह। वृक्ष। पृथ्वी का पुत्र माना जानेवाला नरकासुर। वि० लाल रग का।
कुजा—स्त्री० [सं०] जानकी, सीता।
कुटत—स्त्री० कुटाई। मार, प्रहार।
कुट—पु [सं०] घर। कोट, गढ। कलश। स्त्री० सुगधित जड की एक बडी मोटी झाडी। पु० [हिं०] कूटा हुआ या छोटा टुकडा। एक चावल।
कुटका—पु० छोटा टुकडा। कसीदे मे तिकोना बूटा।
कुटकी—स्त्री० एक पहाडी पौधा जिसकी जड की गोल, बेडौल गाँठें औषध का काम देती है। एक जडी। स्त्री० ऋतुओ के अनुसार रग बदलनेवाली एक छोटी चिडिया। एक उडनेवाला कीडा जो पशुओ के रोयो मे घुसा रहता है। +कँगनी।
कुटनपन—पु० कुटनी का काम, दूतीकर्म। झगडा लगाने का काम।
कुटज—पु० एक वृक्ष और उसका फूल।
कुटनपेशा—पु० दे० कुटनपन'।
कुटनहारी—स्त्री० धान कूटने का काम करनेवाली स्त्री।
कुटना—पु० स्त्रियो का दलाल या दूत। चुगलखोर पुरुष। कुटाई करने का हथियार।
कुटनाना—सक० किसी स्त्री को बहकाकर कुमार्ग पर ले जाना।
कुटनापा—पु० दे० 'कुटनपन'।
कुटनी—स्त्री० स्त्रियो को बहकाकर उन्हें परपुरुष से मिलानेवाली स्त्री, दूती। चुगलखोर स्त्री।
कुटवारी(पु)—स्त्री० कोतवाल का कार्य, नगर की चौकसी।

कुटाई—स्त्री० कूटने का काम। कूटने की मजदूरी।
कुटास—स्त्री० मारपीट।
कुटिया—वि० झोपडी।
कुटिल—वि० [सं०] टेढा। घूमा या बल खाया हुआ। घुँघराला। कपटी। पु० शठ। चौदह अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से एक यगण और दो अत्य गुरु वर्ण रहते है। ⊙**गति**=पु० १३ वर्णों का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से दो नगण,दो तगण और अत्य गुरु होता है। ⊙**ता**=स्त्री० टेढापन। खोटापन, छल। ⊙**पन**=पु० [हिं०]दे० "कुटिलता'। **कुटिलाई**=स्त्री० [हिं०] दे० 'कुटिलता'। **कुटिला**—स्त्री० [सं०] सरस्वती नदी। एक प्राचीन लिपि।
कुटी—स्त्री० [सं०] घास फूस से बनाया हुआ छोटा घर, झोपडी। ⊙**चक**=पु० चार प्रकार के सन्यासियो मे से पहला जो शिखा सूत्र का त्याग नही करता और अपने पुत्र का आश्रित होकर घर पर ही रहने मे आनद मानता है। ⊙**चर**=पु० कुटीचक। कपटी, छली। **कुटीर**—पु० दे० 'कुटी'।
कुटुंब—पु० [सं०] परिवार, कुनबा। **कुटुंबी**—पु० परिवारवाला व्यक्ति। कुटुब के लोग, सबधी।
कुटुमⓅ†—पु० दे० 'कुटुब'।
कुट्टनी—स्त्री० [सं०] कुटनी।
कुट्टमित—पु० [सं०] सुख के समय स्त्रियो की मिथ्या दुखचेष्टा जो हावो मे है।
कुट्टा—पु० परकटा कबूतर। पैर बाँधकर जाल मे छोडा हुआ पक्षी जिसे देखकर और पक्षी फँसते है।
कुट्टी—स्त्री० चारे को छोटे टुकडो मे काटने की क्रिया। कूटा हुआ और सडाया हुआ कागज जिससे कलमदान इत्यादि बनते हैं। लडको का मैत्रीभग सूचक एक सकेत जो दाँतो पर नाखून बजाकर किया जाता है। परकटा कबूतर।
कुठला—पु० अनाज रखने का मिट्टी का बरतन।
कुठांउⓅ†, **कुठांय**Ⓟ†—स्त्री० दे० 'कुठांव'।
कुठांव—स्त्री० बुरी जगह। मर्मस्थान।
कुठाट—पुं० बुरा साज। बुरा प्रबध। खराब काम करने की तैयारी।
कुठार—पुं० [हिं०]अन्न, धन, आदि रखने का भडार। पु० [सं०] कुल्हाडी। फरसा। वि० नाशक। ⊙**पानि**Ⓟ=पु० परशुराम। **कुठाराघात**—पु० कुल्हाडी का आघात। गहरी चोट। **कुठारी**—स्त्री० कुल्हाड़ी, टाँगी। वि० स्त्री० नाश करनेवाली। पु० [हिं०] भडार का प्रबध करनेवाला अधिकारी।
कुठाली—स्त्री० सोना चाँदी गलाने की मिट्टी की घरिया।
कुठिया†—स्त्री० दे० 'कुठला'।
कुड़कुडाना—अक० मन ही मन कुढना। बडबडाना।
कुडबुडाना—अक० दे० 'कुडकुडाना'।
कुड़क—पु० [सं०] अन्न नापने का एक पुराना मान जो चार अगुल चौडा और उतना ही गहरा होता था।
कुड़ुक—स्त्री० अडा न देनेवाली मुर्गी। वि० व्यर्थ, खाली।
कुड्मल—पु० [सं०] कली। एक नरक।
कुढन—स्त्री० दुख या क्रोध जो मन ही मन रहे। **कुढना**—अक० मन ही मन चिढना या क्रोध करना। डाह करना। भीतर ही भीतर दुखी होना। **कुढाना**—सक० [कुढना का प्रे०] चिढाना, क्रोध दिलाना। कलपाना।
कुणप—प० [सं०] लाश, शव। इगुदी। राँगा। बरछा।
कुतका—पु० गतका। मोटा डडा। भाँग घोटने का डडा।
कुतना—अक० [सक० कूतना] कूता जाना।
कुतप—पु० [सं०] मध्याह्न के समय होनेवाला दिन का आठवाँ मुहूर्त। श्राद्ध मे आवश्यक आठ बातें। सूर्य। अग्नि। तेल रखने की चमडे की कुप्पी।
कुतरना—सक० दाँत से छोटे छोटे टुकडो मे काटना। बीच ही मे से कुछ अश उडा लेना।
कुतवारⓅ—पु० दे० 'कोतवाल'।
कुतवाल†—पु० दे० 'कोतवाल'।
कुताही—स्त्री० दे० 'कोताही'।

कुतिया—स्त्री० कुत्ते की मादा, कुत्ती ।
कुतुक—पु०[सं०]उत्सुकता, कुतूहल । ग्रानद ।
कुतुब—पु० [ग्र०] ध्रुवतारा । ⊙नुमा = दिशा का ज्ञान कराने का यत्न ।
कुतूहल—पु० [सं०] किसी वस्तु को देखने या सुनने की प्रवल इच्छा । खिलवाड । ग्रचभा । कुतूहली—वि० जिसे वस्तुग्रो के देखने यासुनने की ग्रधिक उत्कठा हो । कौतुकी, खिलवाडी ।
कुत्ता—पु० गीदड, लोमडी ग्रादि की जाति का एक पालतू या जगली जानवर, श्वान। एक घास जिसकी वाले कपडो मे लिपट जाती है । कल का पुरजा जो किसी चक्कर को पीछे की ग्रोर घूमने मे रोकता है । लकडी का छोटा चौकोर टुकडा जिसे नीचे गिराने से दरवाजा नही खुल सकता । वदूक का घोडा । तुच्छ मनुष्य ।
कुत्सा—स्त्री० [स०] निंदा । कुत्सित—वि० [स०] निंदित, खराव । नीच, ग्रधम ।
कुदकना—ग्रक० दे० 'कूदना' ।
कुदरत—स्त्री० [ग्र०] प्रकृति, माया, ईश्वरीय शक्ति । कारीगरी, रचना । शक्ति, प्रभुत्व । कुदरती—वि० प्राकृतिक, स्वाभाविक । दैवी, ईश्वरीय ।
कुदलाना(पु)—ग्रक० कूदते हु' चलना, उछलना ।
कुदान—स्त्री० कूदने की क्रिया । दूर की कौडी, एक वार मे पार जाने योग्य दूरी। कूदने का स्थान । कुदाना—सक०[कूदना का प्रे०] दूसरे को कूदने मे लगाना ।
कुदाल—स्त्री० मिट्टी खोदने का एक ग्रौजार ।
कुधर—पु० [सं०] पहाड । शेषनाग ।
कुनकुना—सक० थोडा गरम, गुनगुना ।
कुनना—सक० खरादना । खुरचना ।
कुनप—पु० दे० 'कुणप' ।
कुनबा—पु० कुटुब, खानदान ।
कुनबी—पु० हिंदुग्रो की एक जाति । गृहस्थ ।
कुनवा—पु० खरादनेवाला व्यक्ति ।
कुनह—स्त्री० मनोमालिन्य । पुराना वैर ।
कुनही—वि० द्वेषी । वुरा माननेवाला ।
कुनाई—स्त्री० खरादने या खुरचने पर निकलनेवाली वुकनी, वुरादा । कोयले के छोटे छोटे महीन टुकडे, भस्सी । खरादने की क्रिया । खरादने की मजदूरी ।
कुनित(पु)—वि० दे० 'क्वणित' ।
कुनैन—स्त्री० शीतज्वर के लिये ग्रत्यत उपकारी एक ग्रौषधि । क्वीनीन (ग्रं०) ।
कुपना(पु)—ग्रक० दे० 'कोपना' ।
कुपार(पु)—पु० समुद्र ।
कुपित—वि० [सं०] क्रुद्ध, नाराज ।
कुपुटना—सक० चुटकी मे फूल या साग ग्रादि तोडना ।
कुप्पा—पु० घी, तेल ग्रादि रखने का, घडे के ग्राकार का, चमडे का वरतन । मु०~ हो जाना = फूल जाना, सूजना । हृष्ट पुष्ट होना । रूठना ।
कुप्पी—स्त्री० छोटा कुप्पा ।
कुफुर(पु)†—पु० दे० 'कुफ्र' ।
कुबड—धनुष । (पु)वि० खोडा, विकृताग ।
कुबडा—वि० जिसकी पीठ टेढी हो गयी या झुक गई हो । टेढा, झुका हुग्रा । कुब्ज ।
कुबडी—स्त्री० दे० 'कुबरी' ।
कुबत(पु)†—स्त्री० वुरी वात, निंदा । कुचाल
कुबरी—स्त्री० श्रीकृष्ण पर प्रेम रखनेवाली कस की एक कुबडी दासी, कुब्जा । कैकयी की दासी, मथरा । झुके सिरवाली छडी ।
कुबेणी—स्त्री० मछली पकडने की वसी ।
कुब्ज—वि० [सं०] कुवडा । वातरोग जिसमे छाती या पीठ टेढी होकर ऊँची हो जाती है ।
कुब्बा—पु० दे० 'कूवड' ।
कुभा—स्त्री० [सं०] पृथ्वी की छाया । वुरी दीप्ति । कावुल नदी ।
कुमठी(पु)—स्त्री० पतली लचीली टहनी ।
कुमक—स्त्री० [तु०] सहायता, तरफदारी । कुमकी—वि० कुमक से सबधित स्त्री० हाथियो के पकडने मे सहायता करने के लिये सिखाई हुई हथिनी ।
कुमकुम—पु० केसर । कुमकुमा ।
कुमकुमा—पु० [तु०] लाख का एक पोला गोला जिसमे ग्रबीर ग्रौर गुलाल भरकर होली मे एक दूसरे पर छोडते हैं । तग मुँह का एक छोटा लोटा । काच का वना हुग्रा छोटा पोला गोला ।

कुमाच—पु० एक रेशमी कीडा । गंजीफे के पत्ते का एक रग । दे० 'कौच' ।

कुमार—पु० [सं०] पाँच वर्ष तक की अवस्था का बालक । पुत्र । युवराज । कार्तिकेय । युवावस्था या उससे पहले की अवस्थावाला पुरुष । सनक, सनदन आदि कई ऋषि जो सदा बालक ही रहते हैं । एक ग्रह जिसका उपद्रव बालको पर होता है । वि० बिना ब्याहा, कुँवारा । ⊙**तंत्र** = पु० वैद्यक का वह भाग जिसमे बच्चो के रोगो का निदान और चिकित्सा हो । ⊙**भृत्या** = स्त्री० गर्भिणी के सुख से प्रसव कराने की विद्या । गर्भिणी या प्रसूत बालको के रोगो की चिकित्सा । ⊙**ललिता** = स्त्री० सात अक्षरो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक जगण और उसके बाद एक सगण तथा अत मे एक गुरुवर्ण रहता है । ⊙**लसित** = स्त्री० आठ अक्षरो का एक वृत्त । **कुमारिका** = स्त्री० [सं०] दस से बारह वर्ष तक की उम्रवाली कन्या । अविवाहिता लडकी । **कुमारी**—स्त्री० [सं०] दस से बारह वर्ष तक की अवस्था की कन्या । अविवाहिता लडकी । घीकुवाँर । नवमल्लिका । सीता । पार्वती । दुर्गा । भारतवर्ष के दक्षिण का एक अतरीप । वि० स्त्री० बिना ब्याही । ⊙**पूजन** = पुं० तत्रशास्त्र मे कुमारी कन्याओ को देवी का प्रतीक मानकर की जानेवाली पूजा ।

कुमुद—पुं० [सं०] सफेद कुई । लाल कमल । चाँदी । विष्णु । कपूर । ⊙**बधु** = पुं० चद्रमा । **कुमुदिनी**—स्त्री० [सं०] कुई । वह स्थान जहाँ कुमुद हो । ⊙**पति** = पुं० चद्रमा । **कुमुद्वती**—स्त्री० [सं०] कुमुदो से भरा हुआ स्थान । कुमुदो का समूह ।

कुमेरु—पु० [सं०] दक्षिणी ध्रुव ।

कुमोदⓅ—पु० दे० 'कुमुद' । **कुमोदिनी**—स्त्री० दे० 'कुमुदिनी' ।

कुम्मैत, कुम्मैदⓅ—पु० घोडे का स्याही लिए लाल रग, लाखी । इस रग का घोडा ।

कुम्हड़बतिया—स्त्री० कुम्हड़े का नवजात फल । कमजोर व्यक्ति ।

कुम्हड़ा—पुं० एक बेल और उसके बडे गोल फल जिनकी तरकारी बनती है । **कुम्हड़ौरी**—स्त्री० कुम्हडे के महीन टुकडे मिलाकर बनाई जानेवाली बरी ।

कुम्हलाना—अक० पौधे या फूल की ताजगी का जाता रहना, मुरझाना । सूखने पर होना । काति का मलिन पडना ।

कुम्हार—पुं० मिट्टी के बरतन बनानेवाला व्यक्ति । **कुम्हारी**—स्त्री० कुम्हार की स्त्री । दे० 'अजनहारी' ।

कुम्ही—स्त्री० जलकुभी ।

कुरंग—पुं० [सं०] बादामी रग का हिरन । बरवै छद । पु० [हिं०] बुरा लक्षण । घोडे का एक रग, कुम्मैत । इस रग का घोडा । वि० बुरे रग का । ⊙**सार** = पु० कस्तूरी, मुश्क ।

कुरकी—स्त्री० दे० 'कुर्की' ।

कुरकुटा—पु० टुकडा । रोटी का टुकडा ।

कुरकुर—पु० खरी वस्तु के दबकर टूटने का शब्द । **कुरकुरा**—वि० तोडने पर कुरकुर शब्द करनेवाला खरा और करारा, खस्ता ।

कुरता—पु० कधे से घुटने तक का एक बाँहदार पहनावा ।

कुरनाⓅ†—अक० ढेर लगाना । दे० 'कुरलना' ।

कुरबान—वि० [अ०] न्योछावर या बलिदान किया हुआ । **कुरबानी**—स्त्री० देवता आदि के लिए बलि करने की क्रिया । आत्मत्याग ।

कुरर—पु० [सं०] (स्त्री० कुररी) गिद्ध । एक जाति का पक्षी । क्रौंच ।

कुररा—पु० क्रौंच । टिटिहरी ।

कुरलनाⓅ—अक० पक्षियो का बोलना, कूकना । 'कूदहि कुरलहि जनु सर हसा' (पदमा०) ।

कुरला—पु० दे० 'कुल्ला' । स्त्री० क्रीडा ।

कुरवना—सक० ढेर लगना ।

कुरवारनाⓅ—सक० खोदना, करोदना । 'धरनी नख चरनन कुरवारति सौतिन भाग सुहाग डहीली' (सूर०) ।

कुरसी—स्त्री० [अ०] एक प्रकार की ऊँची चौकी जिसमे पीछे की ओर सहारे के लिये पटरो लगी होती है। चबूतरा जिसके ऊपर इमारत आदि बनाई जाय। पीढी, पुश्त। ⊙नामा = पु० [फा०] वशपरपरा, वशवृक्ष।

कुरा—पु० पुराने जखम मे पडनेवाली गाँठ। कटसरैया।

कुराई (पु)—स्त्री० दे० 'कुराय'।

कुरान—पु० [अ०] अरबी भाषा मे लिखा हुआ मुसलमानो का धर्मग्रथ।

कुराय—स्त्री० रास्ते का ऊँचा नीचा स्थान।

कुराह—स्त्री० बुरा रास्ता, खोटा आचरण।

कुराहर (पु)†—पु० दे० 'कोलाहल'।

कुरिया†—स्त्री० फूस की झोपडी, कुटी। बहुत छोटा गाँव।

कुरिहार (पु)—पु० दे० 'कोलाहल'।

कुरी (पु)—स्त्री० वश, घराना। (पु) विभाग, खड।

कुरु—पु० [स०] हस्तिनापुर का चद्रवशी राजा जिसके वश मे कौरव और पाडव हुए। हिमालय के उत्तर और दक्षिण मे फैला एक प्राचीन विस्तृत प्रदेश जिसके उत्तरकुरु और दक्षिणकुरु दो खड थे। वि० कुरु प्रदेश का रहनेवाला। ⊙क्षेत्र = पु० अबाला और दिल्ली के बीच का एक तीर्थ जहाँ महाभारत का युद्ध हुआ था। ⊙खेत = पु० [हि०] दे० 'कुरुक्षेत्र'।

कुरुम (पु)—पु० दे० 'कूर्म'।

कुरेदना—सक० खुरचना, करोदना। ढेर को इधर उधर चलाना।

कुरेर (पु)—स्त्री० कुलेल, आमोद प्रमोद।

कुरेलना—सक० दे० कुरेदना।

कुरैया—स्त्री० लबी लहरदार पत्तियो और लबे सुगधित फूलोवाला वृक्ष जिसके बीज 'इद्रजौ' कहलाते है। कुटज।

कुरौना (पु)—सक० ढेर लगाना।

कुर्क—वि० [तु०] जब्त। ⊙अमीन = पुं० [फा०] सरकारी कर्मचारी जो अदालत की आज्ञा से जायदाद जब्त करता है।

कुर्की—स्त्री० ऋण या जुरमाने की वसूली के लिये कर्जदार या अपराधी की जायदाद का सरकार द्वारा जब्त किया जाना।

कुलंग—पुं० [फा०] लबी गरदनवाला एक पक्षी जिसका सिर लाल और बाकी शरीर मटमैले रग का होता है। मुर्गा।

कुलजन—पुं० [सं०] अदरक की तरह का एक पौधा जिसकी जड गरम और दीपन होती है। पान की जड।

कुल—वि० [अ०] सब, तमाम। पुं० [सं०] वश, खानदान। जाति। समूह। घर। वाम मार्ग। व्यापारियो का सघ। ⊙कलक = पुं० वश की कीर्ति मे धब्बा लगानेवाला। ⊙कानि = स्त्री० [हि०] कुल की मर्यादा। ⊙ज, ⊙जात = वि० उत्तम कुल मे उत्पन्न, कुलीन। ⊙तारन = वि० [हि०] कुल को तारनेवाला। ⊙देव, ⊙देवता = पुं० देवता जिसकी पूजा कुल मे परपरा से होती आई हो। ⊙धाय = वि० अपने कुल को धन्य करनेवाला। ⊙पति = पुं० घर का मालिक, कुल का मुखिया। अध्यापक जो विद्यार्थियो का भरण पोषण करता हुआ उन्हे शिक्षा दे। ऋषि जो दस हजार ब्रह्मचारियो का अन्न, भोजन वस्त्र और शिक्षा दे। विश्वविद्यालय का उपप्रधान सर्वोच्च अधिकारी (अ० वाइसचासलर)। ⊙पूज्य = वि० कुल परपरा मे पूज्य। ⊙बोरन = वि० [हि०] वश की मर्यादा भ्रष्ट करनेवाला। नालायक। ⊙वंत = वि० [हि०] कुलीन। ⊙वट = स्त्री० [हि०] कुल की राह, वश की परपरा, ⊙वान् = वि० अच्छे वश का। ⊙संस्कार = पुं० कुलीनो के लक्षण और गुण, आभिजात्य। ⊙कुलांगार = पुं० कुल का नाश करनेवाला, सत्यानाशी। कुलाचार्य = पुं० कुलगुरु, पुरोहित।

कुलट—पुं० [स०] औरस के अतिरिक्त अन्य प्रकार का पुत्र (क्रीत, दत्तक आदि)।

कुलटा—वि० स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी स्त्री। स्त्री० परकीया नायिका जो बहुत पुरुषो से प्रेम रखती हो।

कुलथी—स्त्री० एक प्रकार का मोटा अन्न या दाल।

कुलना—अक० टीस मारना, दर्द करना।

कुलफ, कुलुफ (पु)—पुं० ताला।

कुलफत—स्त्री० [अ०] चिंता।

कुलफा—पुं० एक साग, बड़ी जाति की अमलोनी।

कुलफी—स्त्री० पेंच। टीन आदि का चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बर्फ जमाते है। उक्त प्रकार से जमा हुआ दूध, मलाई या कोई शरबत।

कुलबुल—पु० छोटे छोटे जीवो की हिलने डोलने की आहट। **कुलबुलाना**—अक० बहुत से छोटे छोटे जीवो का एक साथ हिलना डोलना। चचल होना, आकुल होना।

कुलह—स्त्री० टोपी। शिकारी चिड़ियो की आँखो पर का ढक्कन। **कुलहा**(पु)—पु दे० 'कुलह'। **कुलही**—स्त्री० बच्चो के सिर पर देने की टोपी, कनटोप।

कुलाँच कुलाँट(पु)—स्त्री० चौकड़ी, छलाँग।

कुलाधि(पु)—स्त्री० पाप।

कुलावा—पु० [अ०] लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किवाड बाजू से जकड़ा रहता है, पायजा। मोरी।

कुलाल—पु० [सं०] कुम्हार। जगली मुर्गा। उल्लू।

कुलाह—पु० [स०] भूरे रग का घोडा जिसके पैर गाँठ से सुमो तक काले हो। स्त्री० [फा०] अफगानिस्तान मे पहनी जानेवाली एक ऊँची नोकदार टोपी।

कुलाहल(पु)—पु० दे० 'कोलाहल'।

कुलिंग—पु [स०] एक पक्षी। चिडा, गौरा। पक्षी।

कुलिक—पु० [स०] शिल्पकार, दस्तकार। उत्तम वश मे उत्पन्न पुरुष। किसी जाति या कुल का प्रधान पुरुष।

कुलिश—पु० [स०] हीरा। बिजली, गाज। राम, कृष्ण आदि के चरणो मे वज्र के आकार का एक चिह्न। कुठार।

कुली—पु० [तु०] बोझ ढोनेवाला, मजदूर।

कुलीन—वि० [सं०] उत्तम कुल मे उत्पन्न, खानदानी। (पु) पवित्र, शुद्ध।

कुलेल—स्त्री क्रीडा, कलोल। **कुलेलना** (पु)—अक कुलेल करना।

कुल्माष—पु० [सं०] कुलथी। उर्द। बोरो धान। द्विदल अन्न।

कुल्या—स्त्री० [सं०] नहर। नला। नाली। कुलीन स्त्री।

कुल्ला—पु० मुँह को साफ करने के लिये उसमे पानी लेकर इधर उधर हिलाकर फेंकने की क्रिया, मुँह मे एक बार लिया जानेवाला पानी। घोडे की रीढ पर की काली धारी। इस रग का घोडा। जुल्फ, काकुल।

कुल्ली—स्त्री० कुल्ला, गरारा। कुल्ले के परिमाण का पानी। जुल्फ, काकुल।

कुल्हड़—पु० पुरवा, चुक्कड।

कुल्हाडा—पु० पेड आदि काटने और लकडी चीरने का लोहे का औजार। **कुल्हाडी**—स्त्री० छोटा कुल्हाडा, टाँगी।

कुल्हिया—स्त्री० छोटा पुरवा, चुक्कड।

कुवज—पु० [सं०] (कमल से उत्पन्न) ब्रह्मा।

कुवलय—पु० [सं०] नीली कोई। नील कमल। भूमडल।

कुवाँ—पु० दे० 'कुँआँ'।

कुवार—पु० आश्विन महीना, असोज।

कुश—पु० [सं०] यज्ञ आदि पवित्र कार्यों मे प्रयुक्त काँस की तरह नुकीली और कडी घास। जल, पानी। रामचद्र जी का एक पुत्र। हल, फाल। दे० 'कुश-द्वीप'। ⊙**द्वीप** = पु० प्राचीन भौगोलिक विभाजन के सात द्वीपो मे से एक। **कुशाग्र** = वि० (कुश की नोक की तरह) नुकीला। तेज (जैसे कुशाग्रबुद्धि)।

कुशल—वि० [सं०] दक्ष, चतुर। श्रेष्ठ, भला। पुण्यशील। पु० क्षेम। खैरियत। ⊙**क्षेम** = पु० राजी खुशी, खैरआफि-यत। ⊙**ता** = स्त्री० चतुराई। योग्यता। खैरियत। ⊙**ताई**(पु) = स्त्री० खैरियत।

कुशलात(पु), **कुसलात**(पु)—स्त्री० खैरियत।

कुशली—वि० [स०] सकुशल। तदुरुस्त।

कुशा—स्त्री० [स०] कुश। रस्सी।

कुशादा—वि० [फा०] खुला हुआ। विस्तृत।

कुशिक—पु० [स०] एक प्राचीन आर्य वश जिसमे विश्वामित्र हुए। कुशिक का वश। कुशिक के वशज।

कुशीलव—पु० [सं०] कवि, चारण। नाटक

खेलनेवाला, नट। गवैया। वाल्मीकि ऋषि।

कुशेशय—पु० [सं०] कमल, पद्म। सारस। कनकचपा।

कुश्ता—पु० [फा०] मारे हुए की लाश। भस्म जो धातुओ को रासायनिक क्रिया से फूँककर वने। वि० मारा गया। सताया हुआ।

कुश्ती—स्त्री० [फा०] दो आदमियो का एक दूसरे को वलपूर्वक पछाडने के लिये लडना, मल्लयुद्ध। ⊙वाज = वि० कुश्ती लडनेवाला, पहलवान।

कुषु भ—पु० [सं०] कीडो की वह थैली जिसमे उनका विष रहता है।

कुष्ठ—पु० [सं०] कोढ। कुट नामक ओषधि। कुडा वृक्ष। **कुष्ठी**—पु० [सं०] वह जिसे कुष्ठ हुआ हो, कोढी।

कुष्मांड—पु० [स०] कुम्हडा। शिव के अनुचर एक देवता।

कुसल(पु)†—वि०, पु० 'कुशल'। ⊙ई(पु) = स्त्री० निपुणता। **कुसलाई**(पु) = स्त्री० निपुणता। खैरियत।

कुसली(पु)—वि० दे० 'कुशली'। †पु० आम की गुठली। आम की गुठली के आकार का एक पकवान।

कुसवारी—पु० रेशम का एक जगली कीडा। रेशम का कोया।

कुसीद—पु० [सं०] सूद पर देने की रीति, व्याज। व्याज पर दिया हुआ धन।

कुसु व—पु० मजवूत लकडी का एक वडा वृक्ष जिसमे अच्छी लाख निकलती, फल खाए जाते और वीजो से तेल निकलता है।

कुसु भ—पु० [सं०] वर्रे, कुसुम। केसर। **कुसु भा**—पु० कुसुम का रग। अफीम और भांग के योग से वना एक मादक द्रव्य।

कुसुभी—वि० कुसुम के रग का लाल।

कुसुम—पु० [सं०] फूल। छोटे छोटे वाक्य का गद्य। आँख का एक रोग। मासिक धर्म। छद मे ठगण का एक भेद जिसमे लघु, गुरु, लघु, गुरु होते हैं। एक पौधा जिसके वीजो से तेल और फूलो से वढिया लाल रग निकलता है। दे० 'कुसुव'। ⊙वाण = पु० कामदेव। ⊙विचित्रा = स्त्री० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से नगण, यगण, नगण और यगण कुल १२ वर्ण होते है। ⊙शर = पु० कामदेव। ⊙स्तवक = पु० दडक छद का एक भेद जिसमे ९ सगण होते है। **कुसुमांजलि**—स्त्री० फूलो से भरी अजलि। षोडषोपचार पूजन मे अजलि मे फूल भरकर चढाना। **कुसुमाकर**—पु० वसत। छप्पय का एक भेद। वगीचा। **कुसुमायुध**—पु० कामदेव। **कुसुमासव**—पु० फूलो का रस, मकरन्द। शहद। **कुसुमित**—वि० [सं०] फूला हुआ, पुष्पित।

कुसेसय(पु)—पु० दे० 'कुशेशय'।

कुहक—पु० [सं०] माया, जाल। धूर्त, मक्कार। मुर्गे की वाँग। इद्रजाल जाननेवाला।

कुहकना—अक० पक्षी का मधुर स्वर मे वोलना, पीकना।

कुहकिनी—वि० स्त्री० कुहकनेवाली। स्त्री० कोयल।

कुहकुहाना—अक० दे० 'कुहकना'।

कुहना(पु)—सक० वुरी तरह से मारना। गाना, अलापना।

कुहनी—स्त्री० हाथ और वाहु के जोड की हड्डी।

कुहप—पु० राक्षस।

कुहर—पु० [सं०] गड्ढा, विल, छेद। गले का छेद।

कुहरा—पु० वर्षा की वूँदो से भी सूक्ष्म रूप मे पृथ्वी पर टपकनेवाली वायुमडल मे फैली हुई स्थानीय जल की भाप।

कुहराम—पु० विलाप, रोना पीटना। हलचल।

कुहाडा—पु० दे० 'कुल्हाड़ा'।

कुहाना(पु)†—अक० रिसाना, रूठना।

कुहासा—पु० दे० 'कुहरा'।

कुही—स्त्री० एक शिकारी चिडिया। पु० घोडे की एक जाति। (पु)वि क्रोधी।

कुहुँचा(पु)—पु० कलाई। '... ऐंठत कर कुहुँचान को' (हिम्मत० ११३)।

कुहुक—स्त्री० पक्षियो का मधुर स्वर, पीक। **कुहुकना**—अक० पक्षियो का मधुर स्वर मे बोलना।

कुहू—स्त्री० [सं०] अमावस्या जिसमे चद्रमा एकदम दिखाई न दे। मोर या कोयल की बोली।

कूँख†—स्त्री० दे० 'कोख'।

कूँखना—अक० दे० काँखना।

कूँच—स्त्री० जुलाहो का खस या नारियल का एक डेढ हाथ लबा ब्रुश। मोटी नस जो मनुष्यो की एडी के ऊपर और जानवरो के टखने के नीचे होती है, घोडानस।

कूँचना†—सक० कूटना, कुचलना।

कूँचा—पु० मूँज आदि को कूटकर बनाया हुआ झाड़।

कूँची—स्त्री० छोटा कूँचा, छोटा झाड़। मैल साफ करने या रग फेरने का कटी हुई मूँज या बालो का गुच्छा। चित्रकार को रग भरने की कलम।

कूँज—पु० क्रौच पक्षी।

कूँड़—स्त्री० सिर को बचाने के लिये लोहे की एक ऊँची टोपी। कुएँ से पानी निकालने का मिट्टी या लोहे का गहरा बरतन।

कूँड़ा†—पु० पानी रखने का मिट्टी का गहरा बरतन। गमला। रोशनी करने की बडी हाँडी। कठौता।

कूँडी—स्त्री० पत्थर का कटोरा। छोटी नाँद।

कूथनाⓅ—पु० कराहना। कष्ट झेलना। कबूतरो का गुटरगूँ करना। सक० किसी को दु ख देना या नुकसान पहुँचाना। मारना पीटना।

कूआँ—पु० दे० 'कुँआँ'।

कूई—स्त्री० जल मे होनेवाला कमल की तरह का एक पौधा, कुमुदिनी। छोटा कूँआ।

कूक—स्त्री० लबी सुरीली ध्वनि, मोर या कोयल की बोली। घडी या बाजे आदि मे कुजी देने की क्रिया। **कूकना**—अक० कोयल या मोर का बोलना, लबी सुरीली ध्वनि निकालना। आर्त स्वर से चिल्लाना। सक० घडी या बाजे मे कुजी भरना।

कूकर†—पु० कुत्ता, श्वान। ⊙**कौर**=पु० कुत्ते के आगे डाला जानेवाला जूठा भोजन। तुच्छ वस्तु। ⊙**निंदिया**=स्त्री० थोडे ही खटके से टूट जानेवाली हलकी नीद।

कूच—पु० [तु०] प्रस्थान। रवानगी। मु०~**कर जाना**=मर जाना। (किसी का) **देवता~कर जाना**=भय आदि से स्तभित हो जाना। ~**बोलना**=प्रस्थान करना, रवाना होना।

कूचा—पु० [फा०] छोटा रास्ता, गली। दे० 'कूँचा'। पु० क्रौच।

कूज—स्त्री० [सं०] पक्षियो का मधुर स्वर। ध्वनि, अस्फुट स्वर। **कूजन**—पु० कूजने की क्रिया। **कूजना**—अक० पक्षियो का मधुर शब्द करना। अस्फुट स्वर करना। **कूजित**—वि० [सं०] पक्षियो के शब्दो से युक्त। पक्षियो की ध्वनि। ध्वनित। बोला गया।

कूजा—पु० [फा०] मिट्टी का पुरवा, कुल्हड। पु० [हिं०] एक गुलाब।

कूट—स्त्री० कुट नामक ओषधि। कूटने या पीटने की क्रिया। पु० [सं०] पहाड की ऊँची चोटी (जैसे, हेमकूट)। सीग। (अनाज आदि की) ऊँची और बडी राशि, ढेरी। छल। असत्य। रहस्य। पहेली। गूढार्थ-वाला। गूढ अर्थ का हास्य या व्यग्य। वि० मिथ्यावादी। छलपूर्ण। बनावटी। प्रधान, श्रेष्ठ। ऊँचा। ⊙**कर्म**=पु० छल, कपट। ⊙**ता**=स्त्री० कठिनाई। मिथ्यापन। छल। ⊙**त्व**=पु० दे० 'कूटता'। ⊙**नीति**=स्त्री० छिपी हुई चाल, घात। ⊙**युद्ध**=पु० लडाई जिसमे शत्रु को धोखा दिया जाय। ⊙**योजना**=स्त्री० षड्यत्र, भीतरी चालबाजी। ⊙**स्थ**=वि० सर्वोपरि स्थित, ऊँचे दरजे का। समूह मे स्थित। अटल। न बदलनेवाला, एकरस। अविनाशी। गुप्त।

कूटू—पु० एक पौधा जिसके बीजो का आटा व्रत मे फलाहार के रूप मे खाया जाता है, कोटू।

कूड़ा—पु० गर्द, खर, पत्ते आदि हटाने योग्य चीजें, कतवार। निकम्मी चीज। ⊙**खाना**=पु० कूड़ा फेकने का स्थान।

कूढ़मग्ज—वि० मदबुद्धि, कठिनाई से बात समझनेवाला ।

कूत—स्त्री० सख्या, मूल्य या परिमाण का अनुमान। दे० 'कनकूत'। कूतना—सक० अदाज लगाना। विना गिने, नापे या तौले सख्या, मूल्य या परिमाण की कल्पना करना। दे० 'कनकूत'।

कूद—स्त्री० कूदने की क्रिया। ⊙फाँद= स्त्री० उछलना, कूदना।

कूदना—अक० पैरो को पृथ्वी से ऊपर उठाकर शरीर को किसी ओर फेकना, उछलना, फाँदना। इच्छापूर्वक ऊपर से नीचे गिरना। बीच मे दखल देना या सहसा आ मिलना। क्रम भग कर दूसरे स्थान पर पहुँचना। अत्यत प्रसन्न होना। बढ बढकर बातें करना। सक० लाँघ जाना। मु०—किसी के बल पर~ = किसी का सहारा पाकर बहुत बढकर बोलना।

कूप—पु० [सं०] कुँआँ। कुप्पी। छेद। सूराख। गहरा गड्ढा। ⊙क=पु० छोटा कुँआँ। कुप्पा। ⊙मडूक = पु० कुएँ मे रहने वाला मेढक। अपने स्थान से कही बाहर न जानेवाला मनुष्य। जो अपने सीमित क्षेत्र को छोडकर बाहर न गया हो। थोडी जानकारी का मनुष्य।

कूपल(पु)—स्त्री० दे० 'कोपल'।

कूब—पु० दे० 'कूबड'।

कूबड—पु० पीठ का टेढापन। टेढापन।

कूबर—पु० कूबड।

कूबरी—स्त्री० दे० 'कुबरी'।

कूर—वि० दयारहित, कठोर। भयकर। मनहूस। दुष्ट। निकम्मा। मूर्ख। टेढा। ⊙ता = स्त्री० बेरहमी। मूर्खता। (पु) अरसिकता। कायरता। खोटापन।

कूरम(पु)—पु० दे० 'कूर्म'।

कूरा—पु० ढेर। हिस्सा।

कूर्चिका—स्त्री० [स०] कूँची। कली। कुजी।

कूर्म—पु० [सं०] कछुआ। पृथ्वी। प्रजापति का एक अवतार। दस प्राणो मे से एक। नाभिचक्र के पास की एक नाडी। विष्णु का दूसरा अवतार। ⊙पुराण = पु० अठारह पुराणो मे से एक।

कूल—पु० [सं०] किनारा, तट। समीप। नाला। तालाब। सेना के पीछे का भाग।

कूलिनी—स्त्री० [सं०] नदी।

कूल्हा—पु० कमर मे पेड के दोनो ओर निकली हुई हड्डियाँ।

कूवत—स्त्री० [अ०] शक्ति, बल।

कूवर—पु० [स०] रथ का वह भाग जिसपर जूआ बाँधा जाता है। रथ मे रथी के बैठने का स्थान। कूबडा।

कूष—स्त्री० दे० 'कोख'।

कूष्माड—पु० [सं०] कुम्हडा। पेठा। एक प्रकार के पिशाच जा शिव के गण हैं।

कूह(पु)—स्त्री० हाथी की चिग्घाड। चीख, चिल्लाहट।

कृकर—पु० [स०] मस्तक की वायु जिसमे छीक आती है। वायु के पाँच प्रकारो मे से एक जिससे पाचन क्रिया मे सहायता मिलती है।

कृकलास—पु० [सं०] गिरगिट।

कृकाटिका—स्त्री० [स०] कधे और गले का जोड, घाँटी।

कृच्छ्र—पु० [सं०] कष्ट, दुख। पाप। मूत्रकृच्छ्र रोग। कोई व्रत जिसमे पचगव्य का प्राशन कर दूसरे दिन उपवास किया जाय। वि० मुश्किल। कठोरव्रत।

कृत—वि० [सं०] किया हुआ, संपादित। बनाया हुआ, रचित। पु० सत्ययुग। ⊙काज = वि० [हिं०] दे० 'कृतकार्य'। ⊙कार्य, ⊙कृत्य = वि० जिसका काम पूरा हो चुका हो, सफल मनोरथ। ⊙घ्न = वि० किए हुए उपकार को न माननेवाला। ⊙घ्नता = स्त्री० किए हुए उपकार को न मानने का भाव। ⊙घ्नी(पु) = वि० [हिं०] दे० 'कृतघ्न'। ⊙ज्ञ = वि० उपकार को माननेवाला। ⊙ज्ञता = स्त्री० कृतज्ञ होने का भाव। ⊙युग = पु० सत्ययुग। ⊙हीन = वि० दे० 'कृतघ्न'। कृतात—पु० समाप्त करनेवाला। यम, धर्मराज। पूर्व जन्म मे किए शुभ और अशुभ कर्मो का फल। मृत्यु। पाप। देवता। भरणी नक्षत्र। कृतात्मा—पु० शुद्ध आत्मा का मनुष्य, महात्मा। कृतार्थ—वि० सफल मनोरथ। सतुष्ट। निपुण।

कृति—स्त्री० [सं०] कार्य । रचना । करतूत । आघात । जादू । डाकिनी । अनुष्टुप् जाति का एक छद ।

कृती—वि० [सं०] कुशल, निपुण । साधु पुण्यात्मा । विहित कर्म करनेवाला । सतुष्ट ।

कृत्ति—स्त्री० [सं०] मृगचर्म । चमडा । भोजपत्र । कृत्तिका नक्षत्र । ⊙**वास**=पु० महादेव ।

कृत्तिका—स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रो मे से तीसरा ।

कृत्य—पु० [सं०] कर्तव्य, कर्म, (वेदविहित) आवश्यक कार्य । करनी, करतूत ।

कृत्या—स्त्री० [सं०] शत्रु को नष्ट करने के लिये तात्रिको द्वारा सिद्ध की जानेवाली एक भयकर राक्षसी या तद्रूप प्रयोग । दुष्ट या कर्कशा स्त्री । जादू टोना ।

कृत्रिम—वि० [सं०] नकली, बनावटी ।

कृदंत—पु० [सं०] धातु के अत मे कृत प्रत्यय लगने से बननेवाला शब्द, क्रिया से बना हुआ विशेषण ।

कृपण—वि० [सं०] कजूस । क्षुद्र । दयनीय । ⊙**ता**=स्त्री० कजूसी । दीनता ।

कृपनाई(पु)—स्त्री० दे० 'कृपणता' ।

कृपया—क्रि० वि० [सं०] कृपा करके, मेहरबानी करके ।

कृपा—स्त्री० [सं०] बिना प्रतिकार के भलाई करने की इच्छा या वृत्ति, अनुग्रह, दया । क्षमा । ⊙**पात्र**=पु० वह व्यक्ति जिसपर कृपा हो । **कृपायतन**—पु० कृपा के भंडार, अत्यत कृपालु ।

कृपाण—पु० [सं०] कटार । तलवार । दडक वृत्त का एक भेद ।

कृपाल(पु)†—वि० दे० 'कृपालु' ।

कृपालु—वि० [सं०] कृपा करनेवाला, दयालु । ⊙**ता**=स्त्री० मेहरबानी ।

कृपिण(पु), **कृपिन**(पु)—वि० दे० 'कृपण' ।

कृपिनाई—स्त्री० दे० 'कृपणता' ।

कृमि—पु० [सं०] छोटा कीडा । हिरमिजी कीडा या मिट्टी । लाह । रेशम का कीडा । ⊙**ज**=वि० रेशम । अगर । हिरमिजी ।

कृश—वि० [सं०] दुबला पतला, क्षीण । अल्प, सूक्ष्म । ⊙**ता**=स्त्री० दुर्बलता । कमी । ⊙**ताई**(पु)=स्त्री० दे० 'कृशता' ।

कृशित—वि० [सं०] दुर्बल, क्षीणकाय ।

कृशोदरी—वि० पतली कमरवाली (स्त्री) ।

कृशर—पु० [सं०] तिल और चावल की खिचडी । केसारी, लोबिया मटर ।

कृशानु—पु० [सं०] अग्नि ।

कृषक—पु० [सं०] किसान, खेतिहर । हल का फल ।

कृषि—स्त्री० [सं०] खेती, काश्त ।

कृषीबल—पु० [सं०] किसान ।

कृष्ण—वि० [सं०] श्याम, काला । नीला या आसमानी । दुष्ट । पु० यदुवशी वसुदेव और देवकी के आठवे पुत्र जो विष्णु के अवतार माने जाते है । छप्पय छद का एक भेद । चार अक्षरो का एक वृत्त । वेदव्यास । कौआ । कदम का पेड । अँधेरा पक्ष । कलियुग । चद्रमा का धब्बा । हिरन । ⊙**चद्र**=पु० वसुदेव के पुत्र कृष्ण । ⊙**द्वैपायन**=पाराशर के पुत्र वेदव्यास । ⊙**पक्ष**=पु० मास का वह पक्ष जिसमे चद्रमा का ह्रास हो, अँधेरा पाख । ⊙**सार**=पु० काला हिरन । शीशम । सेहुँड । खैर । **कृष्णाभिसारिका**—स्त्री० वह अभिसारिका नायिका जो अँधेरी रात मे अपने प्रेमी के पास संकेत स्थान मे जाय । **कृष्णाष्टमी**—स्त्री० भादो के कृष्ण पक्ष की अष्टमी जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था ।

कृष्णा—स्त्री० [सं०] द्रौपदी । पिप्पली । दक्षिण देश की एक नदी, कृष्णगगा । कालाजीरा । अगर । ऊद । काली (देवी) । अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक । काले पत्ते की तुलसी ।

कृष्य—वि० [सं०] खेती करने योग्य (भूमि) ।

कृसोदरी(पु)—वि० स्त्री० दे० 'कृशोदरी' ।

केंचली—स्त्री० सर्प आदि के शरीर पर का झिल्लीदार चमडा जो हर साल गिर जाता है ।

केंचुआ—पु० सूत के आकार का एक बरसाती कीडा। केंचुए के आकार का सफेद कोडा जो मल या वमन के साथ वाहर निकलता है।
केंचुरि—स्त्री० दे० 'केंचली'।
केंचुल—स्त्री० दे० 'केंचली'।
केंचुली—स्त्री० दे० 'केंचली'। वि० केंचुल की तरह का।
केंचुवा—पु० दे० 'केंचुआ'।
केंद्र—पु० [सं०] वृत्त के ठीक मध्य का विंदु, नाभि। किसी निश्चित अंश से ९०, १८०, २७० और ३६० अंश के अंतर का स्थान। वीच का स्थान। प्रधान स्थान। **केंद्रित**—वि० केंद्र मे स्थित। एक जगह लाए हुए, एकत्र। **केंद्री**—वि० केंद्र मे स्थित। ⊙**करण**=पु० कुछ चीजो, शक्तियो या अधिकारो को एक केंद्र मे लाने का काम। **केंद्रीय**—वि० केंद्र से संबंधित। मुख्यस्थानीय।
के—प्रत्य० संवधसूचक 'का' का वहुवचन। 'का' का विकारी रूप जो उसे किसी कारकचिह्न के साथ प्रयुक्त शब्द के पूर्व लगने पर प्राप्त होता है। 'पास' और 'यहाँ' आदि के पूर्व 'का' का विकारी रूप।
केउ†—सर्व० कोई।
केउरⓅ—पु० दे० 'केयूर'।
केकडा—पु० पानी का एक जंतु जिसे आठ टाँगें और दो पंजे होते है।
केकय—पु० [सं०] एक प्राचीन राज्य, कश्मीर मे आधुनिक 'कक्का'। सूर्यवंशी क्षत्रियों की एक शाखा। केकय का रहनेवाला।
केका—स्त्री० [सं०] मोर की वोली।
केचित्—सर्व [सं०] कोई कोई।
केडा—पु० नया पौधा या अंकुर। नवयुवक।
केत—पु० [सं०] घर, भवन। स्थान, वस्ती। ध्वजा। चिह्न। रूप, आकार। संकल्प।
केतक—पु० [सं०] केवडा। वि० कितने, किस कदर। बहुत।
केतकी—स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जिसके कांड के चारो ओर तलवार के से कांटेदार पत्ते निकले होते हैं और कोश मे वंद मंजरी के रूप मे वहुत सुगंधित फूल लगते हैं।
केतन—पु० [सं०] ध्वजा। चिह्न। निमंत्रण, आह्वान। घर। स्थान, जगह।
केताⓅ†—वि० कितना (संख्या या परिमाण)।
केतिकⓅ—वि० दे० 'केता'।
केतु—पु० [सं०] ध्वजा। निशान। ज्ञान। दीप्ति। पुराणानुसार राहु राक्षस का धड। पुच्छल तारा। नवग्रहो मे से एक। शत्रु। प्रधान। ⊙**मती**=स्त्री० एक वर्णार्ध समवृत्त। रावण की नानी अर्थात् सुमाली राक्षस की पत्नी। ⊙**मान्**=वि० तेजस्वी। ध्वजावाला। वुद्धिमान्।
केतोⓅ—वि० कितना।
केदली†—पु० कदली वृक्ष।
केदार—पु० [सं०] वह खेत जिसमे धान वोया या रोपा जाता है। खेत (विशेषत. पानी से भरा हुआ)। सिंचाई के लिये खेत मे किया हुआ विभाग, क्यारी। खुला मैदान। वृक्ष के नीचे का थाला। एक तीर्थ, केदारनाथ। शिव के ज्योतिर्लिंगो मे से एक।
केदारा—पु० एक राग।
केन—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध उपनिषद्।
केमⓅ—पु० दे० 'कदंब'।
केयूर—पु० [सं०] वाँह मे पहनने का आभूषण, भुजवंद। **केयूरी**—वि० केयूरधारी।
केर†—प्रत्य० संवधसूचक प्रत्यय, का।
केराⓅ—प्रत्य० का।
केराना†—पु० दे० 'किराना'।
केरानी—पु० दे० 'किरानी'।
केरि†—प्रत्य० की। स्त्री० दे० 'केलि'।
केरी†—प्रत्य० की। स्त्री० आम का कच्चा और छोटा नया फल।
केरो†—प्रत्य० का।
केला—पु० गरम जगहो मे होनेवाला एक पेड जिसके पत्ते एक डेढ गज लंबे, हाथ भर चौडे और फल लंबे, गूदेदार तथा मीठे होते हैं। इस वृक्ष का फल।
केलि—स्त्री० [सं०] खेल, क्रीडा। मैथुन, रति। हँसी, दिल्लगी। आमोद प्रमोद।

पृथ्वी। ⊙कला = स्त्री० सरस्वती की वीणा। कामक्रीडा।

केवट—पु० नाव चलाने तथा मिट्टी खोदने का काम करनेवाली एक जाति।

केवटीदाल—स्त्री० एक मे मिली हुई दो या अधिक प्रकार की दाल।

केवड़ई—वि० केवडे की तरह हलका पीला और हरा मिला हुआ सफेद।

केवड़ा—पु० सफेद केतकी का पौधा। इस पौधे का फूल। इस पौधे से उतारा हुआ सुगंधित जल।

केवल—वि० [सं०] एकमात्र, अकेला। शुद्ध, पवित्र। उत्तम। क्रि० वि० मात्र, सिर्फ। पु० भ्रांतिशून्य और विशुद्ध ज्ञान। **केवलात्मा**—पु० पाप और पुण्य से रहित, ईश्वर। वि० जिसका स्वभाव शुद्ध ऐक्य हो। **केवली**—पु० [सं०] मुक्ति का अधिकारी साधु, केवल ज्ञानी।

केवाड़†—पु० दे० 'किवाड'।

केश—पु० [सं०] सिर का बाल। अयाल। किरण, रश्मि। वरुण। विश्व। विष्णु। सूर्य। ⊙**कर्म** = पु० बाल झाडने और गूंथने की कला। ⊙**पाश** = पु० बालो की लट, काकुल। ⊙**राज** = पु० भुजगा पक्षी। भृगराज, भँगरैया। ⊙**विन्यास** = पु० बालों का सँवारना। **केशांत**—पु० सोलह सस्कारो मे से एक जिसमे यज्ञोपवीत के बाद सिर के बाल मूँडे जाते है। मुडन। बाल का सिरा। **केशिनी**—स्त्री० स्त्री जिसके सिर के बाल सुदर और बडे हो। एक अप्सरा। रावण की माता कैकसी। **केशी**—पु० घोडा। सिह। एक असुर जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। वि० किरण या प्रकाशवाला। अच्छे बालो-वाला।

केशर—पु० [सं०] दे० 'केसर'। **केशरिणी**—स्त्री० सिह की स्त्री, सिहिनी। **केशरी**—पु० दे० 'केसरी'।

केशव—पु० [सं०] विष्णु। श्रीकृष्ण। ब्रह्म, परमेश्वर। विष्णु के २४ मूर्ति-भेदो मे से एक।

केस—पु० केश, सिर का बाल।

केसर—पु० [सं०] बाल की तरह का पतला रेशा जो फूलो के बीच रहता है। एक पौधा जिसके फूलो के भीतर प्राप्त रेशा स्थायी सुगध के लिये प्रसिद्ध है, कुकुम, जाफरान। अयाल। नागकेसर। मौलसिरी। **केसरिया**—वि० [हिं०] केसर के रग का पीला। केसर के रग मे रँगा। केसर मिश्रित।

केसरि खौरि—स्त्री० केसर का तिलक।

केसरी—पु० [सं०] सिह। घोडा। नागकेसर। हनुमान् के पिता। ⊙**सुवन**Ⓟ पु० हनुमान्।

केसारी—स्त्री० दे० 'खिसारी'।

केहरी—पु० सिह। घोडा।

केहाⓅ—पु० मोर, मयूर।

केहिⓅ†—सर्व० किसको (अवधी)?

केहूँⓅ—क्रि० वि० किसी प्रकार।

केहू†—सर्व० कोई।

कैⓅ—प्रत्य० के।

कैंकर्य—पु० [सं०] 'किंकर' का भाव, किंकरता। सेवा।

कैंचा—वि० ऐंचाताना, भेंगा। पु० बडी कैंची।

कैंची—स्त्री० [पु०] बाल, कपडे आदि कतरने का यत्र, कतरनी। कैंची की तरह एक दूसरी पर रखी दो सीधी लकडियाँ। कुश्ती का पेच।

कैंड़ा—पु० नकशा ठीक करने या डौल डालने का यत्र। पैमाना, मान। चाल, ढग। चालबाजी।

कै†—वि० कितने (सख्याबोधक)? Ⓟया, अथवा। स्त्री० वमन, उलटी।

कैकेयी—स्त्री० [सं०] केकय गोत्र मे उत्पन्न स्त्री। राजा दशरथ की रानी और भरत की माता।

कैतव—पु० [सं०] छल, कपट। जुआ। वैदूर्य मणि। वि० छली। धूर्त। जुआरी। **कैतवापह्नुति**—स्त्री० अपह्नुति अलकार का एक भेद जिसमे वास्तविक विषय का गोपन या निषेध स्पष्ट शब्दो मे न करके व्याज से किया जाता है।

कैतून—स्त्री० [अ०] एक बारीक लेस जो कपडो मे लगाई जाती है।

कैथ, कैथा—पु० एक कँटीला पेड जिसमे छोटे बेल के आकार के बहुत कडे छिलकेवाले कसैले और खट्टे गोल फल लगते है।
कैथिन†—स्त्री० कायस्थ जाति की स्त्री।
कैथी—स्त्री० शिरोरेखारहित एक पुरानी लिपि जो शीघ्र लिखी जाती है।
कैद—स्त्री० [अ०] बधन, अवरोध। पहरे मे बद स्थान मे रखना, कारावास। किसी प्रकार की शर्त, अटक या प्रतिबंध। ⊙**खाना**=पु० [फा०] कैदी रखने का स्थान, जेलखाना। ⊙**तनहाई**=स्त्री० कैद जिसमे कैदी को अकेला रखा जाय। ⊙**सख्त**=स्त्री० कैद जिसमे कैदी को कठिन श्रम करना पडे, कडी कैद। **कैदी**—पु० वह जिसे कैद किया गया हो, बदी।
कैधो(पु)†—अव्य० या, अथवा।
कैफियत—स्त्री० [अ०] हाल, समाचार। विवरण। आश्चर्यजनक या हर्षोत्पादक घटना।
कैवर—स्त्री० [देश०] तीर का फल, गाँसी।
कैवा(पु)—क्रि० वि० कई बार।
कैबार(पु)—पु० दे० 'किवाड'। क्रि० वि० दे० 'कैवा'।
कैम, कैमा(पु)—पु० दे० 'कदब'।
कैरव—पु० [सं०] [स्त्री० कैरवी] कुमुद। सफेद कमल। शत्रु। जुआरी। **कैरवाली**—स्त्री० कैरवो का समूह।
कैरा—पु० भूरा रग। ललाई की झलक लिए सफेदी। वैल जिसके रोयो के भीतर से चमडे की ललाई झलकती हो। वि० कैरे रग का। जिसकी आँखें भूरी हो।
कैलाश, कैलास—पु० [सं०] शिव जी का निवास मानी जानेवाली हिमालय की एक चोटी। स्वर्ग। ⊙**नाथ**, ⊙**पति**=पु० शिव। ⊙**वास**=पु० मृत्यु।
कैवर्त—पु० [सं०] केवट।
कैवल्य—पु० [सं०] शुद्धता, वेमेलपन, निर्लिप्तता। (वेदात मे) शुद्ध ऐक्य, अद्वैत। आत्मा की सत्त्व, रज और तम रूप त्रिगुणो और उनके समस्त विकारो से निर्लिप्तता, मोक्ष। एक उपनिषद्।
कैवा†—क्रि० वि० कई बार।
कैशिकी—स्त्री० [सं०] नाटक लिखने की चार वृत्तियो मे से एक जिसमे नृत्य, गीत तथा भोग विलास आदि का प्रचुर वर्णन रहता है। शृगार रस के वर्णन मे इस वृत्ति या शैली का प्रयोग रहता है।
कैसर—पु० [अ०] सम्राट्, शाहशाह। जर्मनी आदि के पुराने सम्राटो की उपाधि।
कैसा—वि० किस ढग का, किस रूप या गुण का? (निषेधार्थक प्रश्न के रूप मे) किसी प्रकार का नही। समान।
कैसे—क्रि० वि० किस प्रकार? किस हेतु?
कैसो†—वि० दे० 'कैसा'?
कोई—स्त्री० दे० 'कुँई'।
कोचना—सक० गोदना, धँसाना।
कोचा—पु० एक जलपक्षी। बहेलियो की लबी लग्गी।
कोछना—सक० दे० 'कोछियाना'।
कोंछियाना—सक० साडी का वह भाग जो पहनने मे पेट के नीचे खोसा जाता है। (स्त्रियो का) आँचल के कोने मे कोई चीज भरकर कमर मे खोस लेना।
कोढा—पु० धातु का छल्ला या कडा जिसमे कोई वस्तु अटकाई जाय। वि० जिसमे कोढ़ा लगने का चिह्न हो।
कोथना—अक० दे० 'कूँथना'।
कोपल—स्त्री० नई और मुलायम पत्ती, अकुर, कल्ला।
कोरी(पु)—वि० स्त्री० कोमल, सुकुमार।
कोवर(पु)—वि० मुलायम, नाजुक।
कोहडा†—पु० दे० 'कुम्हडा'। **कोहड़ौरी**†—स्त्री० कुम्हडे या पेठे की बनाई हुई बरी।
को(पु)—सर्व० कौन? प्रत्य० कर्म और सम्प्रदान का बोधक कारकचिह्न।
कोइरी—पु० साग, तरकारी आदि बोने और बेचनेवाली जाति, काछी।
कोइला—पु० दे० 'कोयला'।
कोइली—स्त्री० काला सा दाग पडा, कुछ सुगधित और स्वादिष्ट कच्चा आम। आम की गुठली। दे० 'कोयल'।
कोइँ—स्त्री० कुमुदिनी, कुइँ।

कोई—सर्व० वह (मनुष्य या पदार्थ) जो अज्ञात हो। अविशेष वस्तु या व्यक्ति। एक भी (मनुष्य), कुछ भी। ऐसा एक (मनुष्य या पदार्थ) जो अज्ञात हो। क्रि० वि० लगभग, करीब।

कोउ⑤†—सर्व०, वि० कोई।

कोउक⑤†—सर्व० कोई एक, कुछ लोग।

कोऊ⑤†—सर्व० कोई।

कोक—पु० चकवा पक्षी। रतिशास्त्र का एक आचार्य। सगीत का एक भेद। विष्णु। भेडिया। मेंढक। जगली खजूर। ⊙**कला** = स्त्री० रति विद्या। ⊙**शास्त्र**= पु० कोककृत 'रतिरहस्य'। कामशास्त्र।

कोकई—वि० ऐसा नीला जिसमे गुलाबी की झलक हो। पु० उक्त प्रकार का रग।

कोकाह—पु० [सं०] सफेद रग का घोडा।

कोकिल—पु० [स०] कोयल। नीलम की छाया। छप्पय का १६वाँ भेद जिसमे ५२ गुरु, ४८ लघु और १५० मात्राएँ होती हैं। जलता हुआ अगारा।

कोकिला—स्त्री० [सं०] कोयल। ⑤जलता हुआ अगारा।

कोकी—स्त्री० [सं०] मादा चकवा।

कोकीन, कोकेन—स्त्री० [अँ०] एक मादक ओषधि या विष जिसे लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है।

कोको—स्त्री० कौआ, लडको को वहकाने का शब्द। स्त्री० [पुर्त०] चाय के समान एक पेय।

कोख—स्त्री० उदर, पेट। पसलियो के नीचे पेट के दोनो वगल का स्थान। गर्भाशय। मु०~**उजड़ जाना** = सतान का मर जाना। गर्भ गिर जाना। ~**बंद होना** = वध्या होना।

कोच—स्त्री० [अँ०] एक वढिया चौपहिया घोडागाडी। पु० गद्देदार पलग, वेच या कुरसी। ⊙**बकस** = पु० [हिं०] कोच मे हाँकनेवाले के बैठने की जगह। ⊙**वान** = पु० कोच हाँकनेवाला।

कोचा—पु० तलवार, कटार आदि का हलका घाव जो पार न हुआ हो। ताना, लगती हुई वात।

कोजागर—पु० [सं०] आश्विन मास की पूर्णिमा। उक्त पूर्णिमा को जागरण का एक उत्सव।

कोट—पु० [सं०] दुर्ग, गढ। शहरपनाह, महल। पु० [हिं०] समूह, यूथ। पु० [अँ०] कमीज के ऊपर पहनने का एक अँगरेजी पहनावा। ⊙**पाल** = पु० [सं०] दुर्ग की रक्षा करनेवाला, किलेदार।

कोटर—पु० [स०] पेड का खोखला भाग। [illegible] के आसपास रक्षा के लिये लगाया जानेवाला कृत्रिम वन।

[illegible]टि—स्त्री० [स०] धनुष का सिरा। अस्त्र की नोक या धार। श्रेणी, दरजा। वादविवाद का पूर्व पक्ष। उत्कृष्टता। समूह, जत्था। राशिचक्र का तृतीय अश। सौ लाख की सख्या, करोड। ⊙**शः** = क्रि० वि० अनेक प्रकार से। वि० अनेकानेक, बहुत अधिक।

कोटिक—वि० करोड। अनगिनत।

कोटू—पु० दे० 'कूटू'।

कोठड़ी—स्त्री० दे० 'कोठरी'।

कोठरी—स्त्री० छोटा कमरा।

कोठा—पु० बडी कोठरी, चौडा कमरा। भडार। मकान मे छत के ऊपर का कमरा। छत। उदर, पेट। गर्भाशय। खाना, घर। किसी अक का पहाडा जो एक खाने मे लिखा जाय। शरीर या मस्तिष्क का भीतरी भाग। मु०~**बिगड़ना** = अपच आदि रोग होना। ~**साफ होना** = साफ दस्त होना।

कोठार—पु० अन्न, धन आदि रखने का स्थान, भडार। **कोठारी**—पु० भडार का प्रवध करनेवाला अधिकारी, भडारी।

कोठिला—पु० दे० 'कुठला'।

कोठी—स्त्री० वडा पक्का मकान, हवेली, बँगला। वह मकान या वडी दूकान जिसमे रुपयो का लेन देन या वडा कारबार होता हो। अनाज रखने का कुठला, वखार। गर्भाशय। एक साथ मडलाकार उगनेवाले बाँसो का समूह। ⊙**वाल** = पु० महाजन, साहूकार। बडा व्यापारी। महाजनी अक्षर जिनमे शीर्ष रेखाएँ और अधिकाश मात्राएँ नही होती।

⊙वाली = स्त्री० कोठी चलाने का काम । कोठीवाल अक्षर ।

कोड़ना—सक० खेत गोडना ।

कोडा—पु० मनुष्यो या जानवरो को मारने के लिये डडे मे बँधी हुई बटे सूत या चमडे की डोर, चाबुक । उत्तेजक बात । चेतावनी ।

कोड़ाई—स्त्री० खेत गोडने की मजदूरी या काम ।

कोड़ी—स्त्री० बीस का समूह, बीसी ।

कोढ—पु० रक्त और त्वचा सबधी एक सक्रामक और घिनौना रोग जिसके उग्ररूपो का परिणाम हाथ पैरो का गलना भी है । मु० ~**चूना या टपकना** = कोढ के कारण अगो का गल गलकर गिरना । ~ **की खाज या ~में खाज** = दु ख पर दु ख । **कोढी**—पु० कोढ रोग से पीडित व्यक्ति ।

कोण—पु० [सं०] विभिन्न दिशाओ से आकर मिलनेवाली दो सीधी रेखाओ के बीच का स्थान । दीवारो से मिला हुआ किसी खुली या वद जगह का स्थान, कोना । दो दिशाओ के मिलने की दिशा, विदिशा । एकात और गुप्त स्थान ।

कोत—स्त्री० दे० 'कूवत' ।

कोतल—पु० [फा०] जलूसी घोडा । राजा की सवारी का घोडा । घोडा जो जरूरत के वक्त के लिये साथ रखा जाता है ।

कोतवार—पु० दे० 'कोटपाल' ।

कोतवाल—पु० नगरस्थ पुलिस का एक प्रधान कर्मचारी । पडितो की सभा, विरादरी की पचायत अथवा साधुओ के अखाडे की वैठक, भोज आदि का निमत्रण देने और ऊपरी प्रबंध करनेवाला व्यक्ति । **कोतवाली**—स्त्री० पुलिस के कोतवाल का कार्यालय । कोतवाल का का पद या काम । प्रधान थाना ।

कोताⓅ†—वि० दे० 'कोताह' ।

कोताह—वि० [फा०] छोटा, कम । **कोताही**—स्त्री० त्रुटि, कमी ।

कोतिⓅ—स्त्री० दिशा, ओर ।

कोथला—पु० बडा थैला । पेट ।

कोथली—स्त्री० रुपए पैसे रखने की कमर मे वाँधने की लवी थैली ।

कोदंड—पु० [सं०] धनुष, कमान । धनु राशि । भौंह ।

कोदⓅ—स्त्री० दिशा, ओर । कोना ।

कोदव—पु० दे० 'कोदो' ।

कोदों, कोदो†—पु० एक मोटा खाद्यान्न । मु० ~**देकर पढना या सीखना** = अधूरी या वेढगी शिक्षा पाना । **छाती पर~ दलना** = किसी को दिखलाकर कोई ऐसा काम करना जो उसे वहुत बुरा लगे ।

कोध—Ⓟ स्त्री० दे० 'कोद' ।

कोन†—पु० कोना ।

कोना—पु० वह स्थान जहाँ दो किनारे मिले, खूँट । वह जगह जहाँ दो दीवारें मिलें । छोर जहाँ लवाई चौडाई मिले (जैसे, दुपट्टे का कोना) । एकात और छिपा हुआ स्थान । मु० ~**झाँकना** = भय या लज्जा से जी चुराना ।

कोनियाँ—स्त्री० दीवार के कोने पर चीजे रखने के लिये वैठाई हुई पटरी । चित्र या मूर्ति के चारो कोनो का अलकरण ।

कोप—पु० [स०] क्रोध, गुस्सा । ⊙**भवन** = पु० वह स्थान जहाँ कोई रूठकर जा रहे ।

कोपन—वि० [स०] क्रोधी ।

कोपनाⓅ—अक० कोप करना ।

कोपर—पु० डाल का पका हुआ आम । कुडे से युक्त वडा थाल ।

कोपल—पु० दे० 'कोंपल' ।

कोपी—वि० कोप करनेवाला ।

कोपीन—पु० दे० 'कौपीन' ।

कोफ्ता—पु० [फा०] कूटे हुए मास का वना हुआ कबाव ।

कोबी—स्त्री० दे० 'गोभी' ।

कोमल—वि० [सं०] मुलायम, नरम । सुकुमार, नाजुक । कच्चा । सुदर । स्वर का एक भेद (सगीत) । ⊙**ता** = स्त्री० नरमी । मधुरता । लालित्य । **कोमला**—स्त्री० [स०] अलकार शास्त्र मे वह वृत्ति या अक्षरयोजना जिसमे कोमल पद और प्रसाद गुण हो । **कोमलाई**Ⓟ—स्त्री० दे० 'कोमलता' ।

कोय(पु)†—सर्व दे० 'कोई'।

कोयर—पु० साग पात। हरा चारा।

कोयल—स्त्री० मधुर बोलनेवाली काले रग की एक चिडिया। एक लता, अपराजिता।

कोयल—पु० अगारे को बुझाने से बचा हुआ पदार्थ। जलाने के काम आनेवाला एक खनिज पदार्थ।

कोया—पु० आँख का डेला। कटहल की गुठली।

कोर—स्त्री० सिरा, हाशिया। कोना। द्वेष। ऐब, बुराई। हथियार की धार। पक्ति, श्रेणी। ⊙**कसर**=स्त्री० कमी, दोष, ऐब। कमी वेशी।

कोरक—पु० [स०] कली। फूल या कली के आधार के रूप मे हरी पत्तियाँ, फूल की कटोरी। कमल की डडी।

कोरना—सक० काठ, पत्थर आदि पर खोदना (चित्र आदि)। वारीक तराशना, खरोचना (जैसे, लौकी कोरना)। कोर निकालना। छीलकर ठीक करना।

कोरमा—पु० [तु०] विना शोरबे का मशाले मे तला हुआ मास।

कोरा†—पु० गोद, उछग। बिना किनारे की रेशमी धोती। वि० जो बरता न गया हो, नया, अछूता (बरतन, कपडा, औजार आदि)। विना लिखा या चित्रित, सादा (कागज)। खाली, रहित। निष्कलक, वेदाग। धनहीन। मूर्ख, अपढ। केवल, सिर्फ। **मु०~जवाब देना**=साफ इनकार करना। ~**रह जाना**=कुछ न पाना।

कोरि(पु)—वि० दे० 'कोटि'।

कोरी—पु० हिंदुओ मे कपडा बुननेवाली एक जाति। (पु)वि० करोडो, अनेक।

कोरो—पुं० ओसारे के छप्पर मे लगनेवाली बाँस की आडी टुकडियाँ। छाजन के ठाठ मे लगा बाँस या लकडी।

कोल—पु० [सं०] सूअर। गोद। बेर (फल)। तोले भर का एक मान। एक जगली जाति।

कोलना—सक० बीच मे खोदकर पोला करना।

कोलाहल—पुं० [सं०] बहुत से लोगो की अस्पष्ट चिल्लाहट, शोर, हल्ला।

कोली—स्त्री० गोद, अँकवार। पु० हिंदू जुलाहा, कोरी।

कोल्हू—पु० दानो से तेल या ऊख से रस निकालने का यत्र। **मु०~क**, **बल**=बहुत कठिन श्रम करनेवाला।

कोविद—वि० [स०] विद्वान्, अनुभवी, कुशल (विद्याओ और कलाओ मे)।

कोश—पु० [स०] अडा। सपुट, डिब्बा। फूलो की बँधी कली। पूजा का पचपात्र नामक बरतन। तलवार, कटार आदि की म्यान। आवरण, खोल। थैली। आत्मा का ढँके रहनेवाले पाँच आवरण—अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, ज्ञानमय और आनदमय (वेदात)। सचित धन। ग्रथ जिसमे अर्थ या पर्याप्त सहित शब्द इकट्ठे किए गये हो, अभिधान, शब्दकोश। समूह। रेशम का कोया। कटहल आदि फलो का कोया। ⊙**कार**=म्यान बनाने वाला। शब्दकोश बनानेवाला। रेशम का कीडा। ⊙**कीट**=पु० रेशम का कीडा। ⊙**पाल**=पु० खजाने की रक्षा करनेवाला व्यक्ति। ⊙**वृद्धि**=स्त्री० अडवृद्धि रोग। **कोशागार**—पु० खजाना रुपया पैसा रखने का घर।

कोशल—पु० [स०] सरयू या घाघरा नदी के दोनो तटो पर का देश। उक्त देश मे बसनेवाली क्षत्रिय जाति। अयोध्या नगर। ⊙**सुता**=स्त्री० कौशल्या, राम की माता। **कोशला**—स्त्री० [सं०] अयोध्या।

कोशिश—स्त्री० [फा०] प्रयत्न, चेष्टा।

कोष—पु० [स०] दे० 'कोश'। **कोषाणु**—पु० अत्यत छोटे कोषो मे रहनेवाला मूल तत्व जिससे प्राणियो के शरीर का निर्माण होता है। **कोषाध्यक्ष**—पु० खजानची।

कोष्ठ—पु० [सं०] पेट का भीतरी हिस्सा। शरीर के भीतर का भाग जिसमे पक्वाशय, मलाशय आदि कोष है। कोठा, घर का भीतरी भाग। अन्नसग्रह का स्थान। कोश, खजाना। चहारदीवारी। दीवार, बाढ, लकीर आदि से घिरा स्थान। ⊙**क**=पु० दीवार, लकीर आदि से घिरा हुआ स्थान, खाना। बहुत से खाने या घरवाला

चक्र, सारणी। लिखने मे एक प्रकार के चिह्नो का जोड़ा जैसे, [ ], { }, ( )। ⊙बद्धता = स्त्री० कब्जियत।

कोस—पु० दूरी का एक मान जो प्राचीन काल मे चार या आठ हजार हाथ का माना जाता था। आज कल दो मिल की दूरी। मु०—**कोसो या काले कोसो** = बहुत दूर। **कोसों दूर रहना** = बहुत बचना।

कोसना—सक० शाप के रूप मे गालियाँ देना, दुर्वचन कहकर बुरा मनाना। मु० —**पानी पी पीकर ~** = बहुत अधिक कोसना या बुरा मनाना।

कोसिला†—स्त्री० राम की माता कौशल्या।

कोहँडौरी—स्त्री० उर्द की पीठी और कुम्हडे के गूदे से बनाई हुई वरी।

कोह—पु० [फा०] पर्वत। ⓹†पु० क्रोध। ⊙नूर = पु० [फा०] इतिहासप्रसिद्ध एक भारतीय हीरा।

कोहनी—स्त्री० दे० 'कुहनी'।

कोहबर—पु० विवाह के समय कुलदेवता को स्थापित करने का स्थान या घर।

कोहरा—पु० दे० 'कुहरा'।

कोहान—पु० [फा०] ऊँट की पीठका कूबड।

कोहाना⓹†—अक० रूठना, मान करना। नाराज होना।

कोही—वि० क्रोध करनेवाला।

कौं—प्रत्य० को, के लिये।

कौंच—स्त्री० दे० 'केवाँच'। लचकीली तलवार। 'कौंचनि उमेठत हरषि पैठत ' (हिम्मत० १४७)।

कौंतेय—पु० [सं०] कुंती के पुत्र (युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन)। अर्जुन वृक्ष।

कौंध—स्त्री० विजली की चमक। **कौंधना**—अक० (विजली का) चमकना।

कौंहर—पु० इद्रायन की जाति का एक फल जो पकने पर अत्यत रक्त वर्ण का हो जाता है।

कौ⓹—क्रि० वि० कब ?

कौआ—पु० एक बडा काला पक्षी जो अपने कर्कश स्वर और चालाकी के लिये प्रसिद्ध है। बहुत धूर्त मनुष्य। गले के अन्दर तालू की झालर के बीच का लटका हुआ मास का टुकडा, घाँटी। वगले की चोच की तरह मुँहवाली एक मछली। ⊙**ठोंठी** = स्त्री० एक लता जिसके फूल कौए की चोच के समान होते है। ⊙**रोर** = पु० बहुत अधिक बकवक। बहुत शोरगुल।

कौटिल्य—पु० [सं०] टेढापन। कपट। दुराव, छिपाव। चाणक्य।

कौटुंबिक—वि० [सं०] कुटुब से सबधित। परिवारवाला।

कौड़ा—पु० बडी कौडी। जाडे के दिनो मे तापने के लिये जलाई हुई आग, अलाव।

कौड़िया—वि० कौडी के रग का, कुछ स्याही लिए हुए सफेद। पु० कौडिल्ला पक्षी, किलकिला। **कौडियाला**—वि० कौडी के रग का, ऐसा हलका नीला जिसमे गुलाबी की कुछ झलक हो। पु० एक विषैला साँप। कृपण। धनाढ्य। छोटे छोटे फूल का एक पौधा। कौडिल्ला पक्षी। **कौडिल्ला**—पु० मछली खानेवाली एक चिडिया, किलकिला।

कौडी—स्त्री० प्राचीन काल मे कम मूल्य के सिक्के की तरह काम आनेवाला समुद्र के एक कीडे का घोघा। धन, रुपया पैसा। वह कर जो सम्राट् अपने अधीन राजाओ से लेता है। आँख का डेला। जाँघ, आँख या गले की गिल्टी। कटार की नोक। छाती के नीचे बीचोबीच की वह छोटी हड्डी जिसपर नीचे की ओर दोनो पसलियाँ मिलती है। मु०—**कानी ~** = टूटी कौडी। अत्यत अल्प द्रव्य। **~काम का नहीं** = एकदम निकम्मा, निकृष्ट। **~ के मोल बिकना** = बहुत सस्ता बिकना। **~अदा करना या चुकाना** = कुल वेवाक करना। **~~को मुहताज** = रुपये पैसे से बिल्कुल खाली। **~~जोड़ना** = बहुत थोडा थोडा करके धन सग्रह करना। **दो~का** = विना मूल्य का, निकृष्ट।

कौणप—पु० [सं०] राक्षस । वासुकी के वंश का एक सर्प ।

कौतिग(पु)—पु० दे० 'कौतुक' । ⊙**हार**= पु० कौतुक देखनेवाला, तमाशबीन ।

कौतुक—पु० [सं०] कुतूहल । आश्चर्य । दिल्लगी । आनद । प्रसन्नता । खेल तमाशा । **कौतुकिया**—पु० [हिं०] कौतुक करनेवाला । विवाह सबंध करानेवाले नाई, पुरोहित आदि । **कौतुकी**—वि० कौतुक करनेवाला, विनोदशील । विवाह संबध करानेवाला । खेल तमाशा करनेवाला ।

कौतूहल—पु० [सं०] दे० 'कुतूहल' ।

कौथ‡—स्त्री० कौन सी तिथि या तारीख । क्या सबध, क्या वास्ता ।

कौन—सर्व० अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की जिज्ञासा करनेवाला एक प्रश्नवाचक सर्वनाम । मु०~**होना**=क्या अधिकार रखना ? क्या मतलब रखना ? कौन सबधी होना ?

कौनप—पु० दे० 'कौणप' ।

कौपीन—पु० [सं०] ब्रह्मचारियो और सन्यासियो आदि के पहनने की लँगोटी । शरीर के वे भाग जो कौपीन से ढके जायँ (गुदा और लिंग) ।

कौम—स्त्री० [अ०] नस्ल, जाति । राष्ट्र । **कौमियत**—स्त्री० कौम का भाव, जातीयता । राष्ट्रीयता । **कौमी**—वि० कौम से सवधित, जातीय । राष्ट्रीय ।

कौमार—पु० [स०] कुमार अवस्था, जन्म से पाँच वर्ष तक की अवस्था । १६ वर्ष तक की अवस्था (तत्र मत मे) । सनत्कुमार की एक सृष्टि । कुमार । ⊙**भृत्य**=पु० बालको के लालन पालन और चिकित्सा आदि की विद्या, धातृविद्या ।

कौमारी—स्त्री० [सं०] सात मातृकाओ मे से एक, कार्तिकेय की शक्ति । पार्वती । वाराही कद ।

कौमुदी—स्त्री० [सं०] ज्योत्स्ना, चाँदनी । कार्तिकी पूर्णिमा । आश्विनी पूर्णिमा । दीपोत्सव तिथि । कुमुदिनी । व्याख्या, टीका (जैसे, सिद्धातकौमुदी) ।

कौमोदी, कौमोदकी—स्त्री० [सं०] विष्णु की गदा ।

कौर—पु० उतना भोजन जितना एक बार मुँह मे डाला जाय, गस्सा । उतना अन्न जितना एक बार चक्की मे पीसने के लिये डाला जाय । मु०—**मुँह का ~छीनना**=देखते देखते किसी का अश दवा बैठना ।

कौरना‡—सक० थोडा भूनना, सेंकना । 'कुँदरू और ककोडा कौरे' (सूर०) ।

कौरव—पु० [सं०] कुरुवश की सतान । धृतराष्ट्र के पुत्र । वि० कुरु सवधी । ⊙**पति**=पु० दुर्योधन ।

कौरा—पु० दरवाजे के दोनो पार्श्व का भाग । कुत्ते आदि को दिया जानेवाला खाना ।

कौरी—स्त्री० गोद, अँकवार ।

कौल—वि० [सं०] उत्तम कुल मे उत्पन्न, खानदानी । वाममार्गी । पु० [हिं०] कौर, ग्रास । कमल । पु० [अ०] कथन, उक्ति । प्रतिज्ञा, वादा । ⊙**करार**=पुं० परस्पर दृढ प्रतिज्ञा । मु०~**का पूरा या पक्का**=बात का सच्चा ।

कौला—पु० एक स्वादिष्ट सतरा । द्वार के दोनो पार्श्व का भाग, कौरा ।

कौली—स्त्री० गोद । आलिंगन ।

कौवा—पु० दे० 'कौआ' ।

कौवाल—पु० [अ०] कौवाली गानेवाला । मुसलमानो मे गवैयो की एक जाति । **कौवाली**—स्त्री० [अ०] एक प्रकार का भगवत्प्रेम सबधी गीत जो सूफियो की मजलिसो मे गाया जाता है । इस धुन मे गाई जानेवाली गजल । कौवालो का पेशा ।

कौशल—पु० [सं०]चतुराई, दक्षता । कुशल मगल । कोशल देश का निवासी ।

कौशलेय—पु० [सं०] कौशल्या के पुत्र राम, रामचद्र ।

कौशल्या—स्त्री० [सं०] राम की माता ।

कौशिक—पु० [सं०] इद्र । कुशिक राजा के पुत्र गाधि । विश्वामित्र । कोषाध्यक्ष । कोशकार । उल्लू । नेवला । रेशमी कपडा । शृंगार रस । एक उपपुराण । अथर्ववेद का एक सूक्त ।

कौशिकी—स्त्री० [सं०] चडिका। राजा कुशिक की पोती और ऋचीक मुनि की पत्नी।

कौशेय—वि० [सं०] रेशम। रेशमी वस्त्र।

कौषिकी—स्त्री० [सं०] दे० 'कौशिकी'।

कौषीतकी—स्त्री० [सं०] ऋग्वेद की एक शाखा। ऋग्वेद के अंतर्गत एक ब्राह्मण और उपनिषद्।

कौसल—पु० दे० 'कौशल'।

कौसिक—पु० दे० 'कौशिक'।

कौसिलाⓅ—स्त्री० कौशल्या, महाराज दशरथ की पत्नी और राम की माता।

कौस्तुभ—पु० [सं०] पुराणानुसार समुद्र से निकला हुआ रत्न जिसे विष्णु अपने वक्षस्थल पर पहनते है।

कौहर—पु० इद्रायण जिसका फल पकने पर अत्यत लाल होता है।

क्या—सर्व० प्रस्तुत या अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा करनेवाला एक प्रश्नवाचक शब्द। कौनसी वस्तु या वात? वि० कितना, किस कदर? बहुत अधिक। अपूर्व, विचित्र। बहुत अच्छा, उत्तम। क्रि० वि० क्यो, किसलिये? अव्य० केवल प्रश्नसूचक शब्द (जैसे, क्या वह चला गया?)।

क्यारी—स्त्री० पौधे लगाने के लिये मेडो द्वारा किए गए खेत के विभाग। सिंचाई के लिये खेत के किए जानेवाले विभाग। समुद्र के पानी का नमक नीचे बैठाने का बडा कडाह। थाला। शिव का एक लिंग।

क्यो—क्रि० वि० किस कारण, किसलिये? Ⓟ किस प्रकार? ⊙**कर**=किस प्रकार? ⊙**कि**=इसलिये कि। ⊙**नहीं**=अवश्य। मु०~न हो=धन्य हो, शाबाश।

क्रंदन—पु० [सं०] रोना, विलाप। युद्ध के समय वीरो का आह्वान, ललकार।

क्रकच—पु० [सं०] आरा, करवत। एक नरक। ज्योतिष मे एक अशुभ योग। करील का पेड। एक बाजा।

क्रतु—पु० [सं०] यज्ञ। जीव। इद्रिय। संकल्प। इच्छा। अभिलाषा। निश्चय। विष्णु। आषाढ मास। ब्रह्मा के एक मानसपुत्र जो सप्तर्षियो मे से है। ⊙**पति**=पु० विष्णु। ⊙**ध्वंसी**=पु० शिव।

क्रम—पु० [सं०] पैर रखने या डग भरने की क्रिया। वस्तुओ या कार्यों के परस्पर आगे पीछे होने का नियम। पूर्वापर सवधी व्यवस्था। शैली। तरतीव। सिलसिला। कार्य को उचित रूप से धीरे धीरे करने की प्रणाली। वेदपाठ की एक प्रणाली। किसी कृत्य के पीछे कौन सा कृत्य करना चाहिए, इसकी व्यवस्था। वैदिक विधानकल्प। वह काव्यालकार जिसमे प्रथमोक्त वस्तुओं का वर्णन क्रम से किया जाय। Ⓟ पु० दे० 'कर्म'। ⊙**श**=क्रि० वि० क्रम से, सिलसिलेवार। धीरे धीरे, थोडा थोड़ा करके। ⊙**सन्यास**=पु० वह सन्यास जो क्रमश ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम के बाद लिया जाय। ⊙**नासा**Ⓟ=पु० दे० 'कर्मनाशा'। **क्रमागत**—वि० क्रमश किसी रूप को प्राप्त। जो सदा होता आया हो, परपरागत। **क्रमात्**—क्रि० वि० क्रम या सिलसिले से, यथानुक्रम। क्रम क्रम से, धीरे धीरे। **क्रमानुकूल, क्रमानुसार**—वि०, क्रि० वि० क्रम से, सिलसिलेवार, तरतीव से। **क्रमिक**—वि० क्रमयुक्त, क्रमागत। परपरागत। क्रम क्रम से होनेवाला।

क्रमेल, ⊙क—पु० [सं०] ऊँट।

क्रय—पु० [सं०] मोल लेने की क्रिया, खरीदने का काम। ⊙**विक्रय**=पु० खरीदने और वेचने की क्रिया। **क्रयी**—पु० मोल लेनेवाला, खरीदनेवाला। **क्रय्य**—वि० जो खरीदने के लिये रखा जाय, जो चीज खरीदने के लिये हो।

क्रव्य=पु० [सं०] मास। **क्रव्याद**—पु० मास खानेवाला जीव। चिता की आग। भयकर आग।

क्रांत—वि० [सं०] गया हुआ। बीता हुआ। दबा या ढका हुआ। जिसपर आक्रमण हुआ हो, ग्रस्त। आगे बढा

हुआ, जैसे, सीमाक्रात। ⊙दर्शी = वि० अतीत और अनागत को जाननेवाला, सर्वद्रष्टा। **क्रांति**—स्त्री० कदम रखना। गति। आगे बढना। खगोल मे वह कल्पित वृत्त, जिसपर सूर्य घूमता है। किसी ग्रह का अपक्रम। एक दशा से दूसरी दशा मे भारी परिवर्तन, फेरफार, उलटफेर, जैसे, राज्यक्राति। ⊙**मंडल** = पु० वह वृत्त जिसपर सूर्य घूमता है। ⊙**वृत्त** = पु० सूर्य का मार्ग।

क्रिचयन(पु)†—पु० चाद्रायण व्रत।

क्रिमि—पु० दे० 'कृमि'। ⊙**जा** = स्त्री० लाह, लाख। रेशम।

क्रियमाण—पु० [सं०] वह जो किया जा रहा हो। वर्तमान कर्म जिसका फल आगे मिलेगा।

क्रिया—स्त्री० [सं०] किसी काम का होना या किया जाना, कर्म। प्रयत्न, चेष्टा। गति, हरकत, हिलना, डोलना। अनुष्ठान, आरभ। व्याकरण मे शब्द का वह भेद जिससे किसी व्यापार का होना या करना पाया जाय; जैसे आना, गारना। शौच आदि कर्म, नित्यकर्म। श्राद्ध आदि प्रेतकर्म। उपचार, चिकित्सा। ⊙**कर्म** = पु० अत्येष्टि क्रिया। ⊙**चतुर** = पु० क्रिया या घात मे चतुर नायक। ⊙**निष्ठ** = वि० सध्या, तर्पण आदि नित्यकर्म करनेवाला। ⊙**योग** = पु० देवताओ की पूजा करना और मदिर आदि बनवाना। ⊙**वान्** = वि० कर्मनिष्ठ, कर्मठ। ⊙**विदग्धा** = स्त्री० वह नायिका जो नायक पर किसी क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करे। ⊙**विशषण** = पु० आधुनिक व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे किसी वाक्य मे क्रिया, विशेषण अथवा किसी अन्य क्रिया विशेषण के बारे मे कोई विशेष बात प्रकट हो, जैसे, कैसे, धीरे, क्रमश, अचानक, इत्यादि। **क्रियातिपत्ति**—स्त्री० वह काव्यालकार जिसमे प्रकृत से भिन्न कल्पना करके किसी विषय का वर्णन किया जाय। **क्रियात्मक**—वि० जो सचमुच करके दिखलाया गया हो, क्रियामय। **क्रियार्थ**—पु० वेद मे यज्ञादि कर्म का प्रतिपादक विधिवाक्य।

क्रिस्तान—पु० ईसा के मत पर चलनेवाला, ईसाई। **क्रिस्तानी**—वि० ईसाइयो का। ईसाई मत के अनुसार।

क्रीट(पु)—पु० दे० 'किरीट'।

क्रीडना—अक० क्रीडा करना, खेलना।

क्रीड़ा—स्त्री० [स०] केलि, आमोद प्रमोद, खेलकूद। एक छद या वृत्त। ⊙**चक्र** = पु० छह यगण का एक वृत्त या छद, महामादकारी। **क्रीडित**—वि० जिससे क्रीड़ा की जाय, क्रीडा के काम मे आया हुआ।

क्रीत—वि० [सं०] खरीदा हुआ। पु० दे० 'क्रीतक'। पद्रह प्रकार के दासो मे से वह जो मोल लिया गया हो। **क्रीतक**—पु० मनुस्मृति के अनुसार बारह प्रकार के पुत्रो मे से एक, जो मातापिता को धन देकर उनसे खरीदा गया हो।

क्रुद्ध—वि० [सं०] कोपयुक्त, क्रोध मे भरा हुआ। **क्रुद्धित**—वि० दे० 'क्रोधित'।

क्रूर—वि० [स०] [स्त्री० क्रूरा] परपीडक। निर्दय, जालिम। कठिन। तीक्ष्ण। ⊙**कर्मा** = पु० क्रूर काम करनेवाला। ⊙**ता** = स्त्री० निष्ठुरता, निर्दयता, कठोरता। दुष्टता। **क्रूरात्मा**—वि० दुष्ट प्रकृतिवाला।

क्रूस—पु० ईसाइयो का एक धर्मचिह्न जो उस सूली का सूचक है जिसपर ईसामसीह चढाए गए थे।

क्रेता—पु० [सं०] खरीदनेवाला, माल लेनेवाला।

क्रोड़—पु० [सं०] आलिंगन मे दोनो बाँहो के बीच का भाग, भुजातर, वक्षस्थल। गोद, अँकवार। ⊙**पत्र** = पु० वह पत्र जो किसी पुस्तक या समाचारपत्र मे उसकी किसी छूट की पूर्ति के लिये ऊपर से लगाया जाय, परिशिष्ट, पूरक।

क्रोध—पु० [सं०] चित्त का उग्र भाव जो कष्ट या हानि पहुँचानेवाले अथवा अनुचित काम करनेवाले के प्रति होता है, कोप, रोष, गुस्सा। ⊙**वंत**(पु) = वि० दे० 'क्रुद्ध'। **क्रोधित**(पु)—वि० कुपित,

क्रुद्ध। क्रोधी—वि० क्रोध करनेवाला, गुस्सावर।

क्रोश—पु० [सं०] कोस।

क्रौंच—पुं० [सं०] करांकुल नामक पक्षी। हिमालय की एक चोटी। पुराणानुसार सात द्वीपो मे से एक। एक प्रकार का अस्त्र। वह वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से भगण, मगण, सगण, भगण, चार नगण और अत्य गुरु, कुल २५ वर्ण होते है। ⊙रंध्र = पुं० हिमालय पर्वत की एक घाटी।

क्लार्क—पु० [अं०] कार्यालय का मुशी, मुहर्रिर, लिपिक। क्लर्की—स्त्री० [हि०] लिपिक या मुहर्रिर का काम।

क्लांत—वि० [सं०] थका हुआ, श्रात। क्लाति—स्त्री० परिश्रम। थकावट।

क्लिशित—वि० दे० 'क्लेशित'।

क्लिष्ट—वि० [सं०] क्लेशयुक्त, दुःख से पीडित। बेमेल (बात)। पूर्वापर विरुद्ध (वाक्य)। कठिन, मुश्किल। जो कठिनता से सिद्ध हो। काव्य का वह दोष जिसके कारण उसका भाव समझने मे कठिनता होती है।

क्लीव—वि० [सं०] नपुसक, नामर्द। कायर।

क्लेद—पु० [सं०] गीलापन, आर्द्रता। पसीना। पीप, मवाद। ⊙क = पु० पसीना लानेवाला। शरीर मे एक प्रकार का कफ जिससे पसीना उत्पन्न होता है। शरीर की दस प्रकार की अग्नियो मे से एक।

क्लेश—पु० [सं०] दुःख, कष्ट, व्यथा। झगडा, लडाई। क्लेशित—वि० जिसे क्लेश हो, दुःखित, पीडित।

क्लैव्य—पु० [सं०] क्लीवता, नपुसकता।

क्लोम—पु० [सं०] दाहिना फेफडा। फेफडा, फुपफुस।

क्वचित्—क्रि० वि० [सं०] शायद ही कोई, बहुत कम।

क्वण—पु० [सं०] घुँघरू का शब्द। वीणा की झकार। ध्वनि, शब्द। क्वणित—वि० शब्द करता हुआ। बजता हुआ।

क्वाँरा—पु० दे० 'क्वारा'।

क्वाथ—पु० [सं०] पानी मे उबालकर ओषधियो का निकाला हुआ रस, काढा।

क्वान—पु० दे० 'क्वाण'।

क्वारपन—पु० क्वारापन, कुमारपन।

क्वारा—पु० वि० जिसका विवाह न हुआ हो, कुँआरा, बिनब्याहा। ⊙पन = पु० दे० 'क्वारपन'।

क्वासि—वाक्य [सं०] तू कहाँ है, तू किस स्थान पर है?

क्वैला—पु० दे० 'कोयला'।

क्वैलिया—स्त्री० कोयल। '· क्वैलिया कूकन क्यो सहि लैहैं' (जगद्विनोद २५३)।

क्षंतव्य—वि० [सं०] दे० 'क्षम्य'।

क्षण—पु० [सं०] काल या समय का सबसे छोटा भाग, पल का चतुर्थांश। काल। अवसर, मौका। समय। उत्सव, पर्व का दिन। ⊙दा = स्त्री० रात। ⊙प्रभा = स्त्री० बिजली। ⊙भंगुर = वि० शीघ्र या क्षण भर मे नष्ट होनेवाला, अनित्य।

क्षणिक—वि० [सं०] एक क्षण रहनेवाला, क्षणभगुर, अनित्य। ⊙वाद = पु० बौद्धो का एक सिद्धात जिसमे प्रत्येक वस्तु का उत्पत्ति से दूसरे ही क्षण मे नाश हो जाना माना जाता है।

क्षणिका—स्त्री० [सं०] बिजली।

क्षणेक†—क्रि० वि० क्षणभर, बहुत थोडी देर तक।

क्षत—वि० [सं०] जिसे क्षति या आघात पहुँचा हो, घाव लगा हुआ। पु० घाव। फोडा। मारना, काटना। क्षति या आघात पहुँचाना। ⊙ज = वि० क्षत से उत्पन्न, जैसे, क्षतज शोथ। लाल, सुर्ख। पु० रक्त, खून। ⊙योनि = वि० स्त्री० जिसका पुरुष के साथ समागम हो चुका हो। ⊙विक्षत = वि० जिसे बहुत चोट लगी हो, घायल, लहूलुहान। ⊙व्रण = पु० कटने या चोट लगने के बाद पका हुआ स्थान।

क्षता—स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसका विवाह के पहले ही किसी पुरुष से सबध हो चुका हो।

क्षति—स्त्री० [सं०] हानि नुकसान। क्षय, नाश।

क्षत्र—पु० [सं०] आधिपत्य, प्रभुत्व। बल।

राष्ट्र। धन। शरीर। जल। शासन, शासक वर्ग। सैन्य वर्ग, राजन्य वर्ग, क्षत्रिय, योद्धा। ⊙कर्म = पु० क्षत्रियोचित कर्म। ⊙धर्म = पु० क्षत्रियो का धर्म। ⊙प = पु० ईरान के प्राचीन माडलिक राजाओ की उपाधि जो भारत के शक राजाओ ने ग्रहण की थी। ⊙पति = पु० राजा। ⊙वेद = पु० धनुर्वेद।

क्षत्रिय—पु [स०] चार वर्णो मे से दूसरा वर्ण। राजा।

क्षत्री—पुं० दे० 'क्षत्रिय'।

क्षपणक—वि० [स०] निर्लज्ज। पुं० नगा रहनेवाला जैन यती, दिगबर यती। बौद्ध। सन्यासी।

क्षपा—स्त्री० [सं०] रात, रात्रि। ⊙कर = पु० चद्रमा। कपूर। ⊙चर = पु० निशाचर, राक्षस। ⊙नाथ = पुं० चद्रमा।

क्षपेस(पु)—पुं० चद्रमा।

क्षम—वि० [सं०] सशक्त, योग्य, समर्थ, उपयुक्त (यौगिक मे), जैसे, कार्यक्षम। पुं० शक्ति, बल। ⊙ता = स्त्री० योग्यता, सामर्थ्य। धैर्य, बरदाश्त की शक्ति

क्षमणीय—वि० [सं०] क्षमा करने योग्य। बरदाश्त करने लायक।

क्षमना(पु)—सक० दे० 'छमना'।

क्षमा—स्त्री०[सं०] चित्त की एक वृत्ति जिससे मनुष्य दूसरे द्वारा पहुँचाए हुए कष्ट को दड देने की शक्ति रखता हुआ भी चुपचाप सह लेता है और उसके प्रतिकार या दड की इच्छा नही करता, माफी। सहनशीलता। पृथ्वी। एक की सख्या। दक्ष की एक कन्या। दुर्गा। तेरह अक्षरो का एक वर्णवृत्त। ⊙ई(पु) = स्त्री०[हिं०]क्षमा करने की क्रिया। ⊙वान् = वि० क्षमा करनेवाला, सहनशील, गमखोर। ⊙शील = वि० माफ करनेवाला, क्षमावान्। शात प्रकृति का। क्षमाना(पु)—सक० दे० 'छमाना'। क्षमालु—वि० क्षमाशील, क्षमावान्। क्षमितव्य—वि० क्षमा करने योग्य। क्षमी—वि० क्षमाशील, माफ करनेवाला। शात प्रकृति का। समर्थ। क्षम्य—वि० जो क्षमा किया जाने योग्य हो।

क्षय—पुं० [सं०] धीरे धीरे घटना, ह्रास, अपचय। प्रलय, कल्पात। नाश। यक्ष्मा नामक रोग, क्षयी। अत, समाप्ति। ज्योतिष के अनुसार वह चाद्र मास जो चाद्र और सौर वर्षो के मेल के लिये गणना मे नही लिया जाता। ज्योतिष के अनुसार किसी वर्ष का वह महीना जो शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरभ होकर अमावस्या तक रहता है। ⊙पक्ष = पुं० कृष्ण पक्ष। क्षयिष्णु—वि० क्षय या नष्ट होनेवाला। क्षयी—वि० क्षय होनेवाला, नष्ट होनेवाला। जिसे यक्ष्मा का रोग हो। पुं० चद्रमा। स्त्री० एक रोग जिसमे रोगी का फेफडा सड जाता है, तपेदिक, यक्ष्मा। क्षय्य—वि० क्षय होने के योग्य।

क्षर—वि० [स०] नाशवान्, नष्ट होनेवाला। पिघलने, टपकने या धीरे धीरे बहनेवाला। पुं० जल। मेघ। जीवात्मा। शरीर। अज्ञान। ⊙ण = पु० रस रसकर चूना, स्राव होना, रसना। झगडा। नाश या क्षय होना। छूटना। पतन, पात, गिरना। साफ करना।

क्षांत—वि० [सं०] क्षमाशील। सहनशील। क्षांति—स्त्री० सहिष्णुता, सहनशीलता। क्षमा।

क्षात्र—वि० [सं०] क्षत्रिय सबधी, क्षत्रियो का। पु० क्षत्रियत्व, क्षत्रियपन।

क्षाम—वि० [सं०] क्षीण, कृश, दुबला पतला। दुर्बल, कमजोर। अल्प, थोडा। क्षामोदरी—वि० पतली कमरवाली (स्त्री)।

क्षार—पु० [सं०] दाहक जारक या विस्फोटक औषधियो को जलाकर या खनिज पदार्थों को पानी मे घोलकर रासायनिक क्रिया द्वारा साफ करके तैयार की हुई राख का नमक, खार। नमक। सज्जी। शोरा। सुहागा। राख। वि० क्षरणशील। खारा। ⊙लवण = पु० खारा नमक।

क्षालन—पु० [सं०] धोना, साफ करना।

क्षालित—वि० धुला हुआ, साफ किया हुआ।

क्षिति—स्त्री० [सं०] पृथ्वी। वासस्थान, जगह। राज्य। गोरोचन। क्षय। प्रलयकाल। ⊙ज = पु० खगोल मे वह तिर्यग् वृत्त जिसकी दूरी आकाश के मध्य से ९० अक्ष

हो। दृष्टि की पहुँच पर वह वृत्ताकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी मिले हुए जान पडते हो। मगल ग्रह। नरकासुर। के चुग्रा। वृक्ष, पेड।

क्षिप्त—वि० [सं०] फेका हुआ, त्यागा हुआ। विकीर्ण। अवज्ञात, अपमानित। पतित। वात रोग से ग्रस्त। उचटा हुआ, चचल, विचलित।

क्षिप्र—क्रि० वि० [स०] शीघ्र, जल्दी। तुरत। वि० तेज, जल्द। चचल। ⊙हस्त = वि० शीघ्र या तेज काम करनेवाला।

क्षीण—वि० [स०] दुवला पतला। सूक्ष्म। घटा हुआ, जो कम हो गया हो। ⊙चद्र = पु० कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का चद्रमा। ⊙ता = स्त्री० दुर्वलता, कमजोरी। सूक्ष्मता।

क्षीर—पु० [सं०] दूध, पय। द्रव या तरल पदार्थ, जल, पानी। पेडो का रस या दूध। खीर। ⊙काकोली = स्त्री० एक प्रकार की काकोली जडी जो अष्टवर्ग के अतर्गत है। ⊙ज = पु० चद्रमा। शख। कमल। दही। ⊙जा = स्त्री० लक्ष्मी। ⊙धि, ⊙निधि = पु० समुद्र। ⊙व्रत = पु० केवल दूध पीकर रहने का व्रत। ⊙सागर = पु० पुराणानुसार सात समुद्रो मे से एक, जो दूध से भरा हुआ माना जाता है। ⊙सार = पु० मक्खन। **क्षीरिणी**—स्त्री० [सं०] क्षीर काकोली। खिरनी। **क्षीरोद**—पु० [सं०] क्षीर समुद्र।

क्षुराण—वि० [सं०] अभ्यस्त। दलित। टुकडे टुकडे किया हुआ। खडित। सुविचारित।

क्षुत्—स्त्री० [सं०] भूख, क्षुधा।

क्षुद्र—वि० [सं०] कृपण, कजूस। अधम, नीच। अल्प, छोटा या थोडा। क्रूर। खोटा। दरिद्र। ⊙ घटिका = स्त्री० घुँघरूदार करधनी। घुँघरू। ⊙ता = स्त्री० नीचता, कमीनापन। ओछापन। ⊙प्रकृति = वि० ओछे या नीच स्वभाववाला, नीच प्रकृति का। ⊙बुद्धि = वि० दुष्ट या नीच बुद्धिवाला। नासमझ, मूर्ख। **क्षुद्रा**—स्त्री० [सं०] मधुमक्खी। वेश्या। लोनी, अमलोनी। **क्षुद्रावली**—स्त्री० क्षुद्रघटिका। **क्षुद्राशय**—वि० नीच प्रकृति, कमीना।

क्षुधा—स्त्री० [सं०] भोजन करने की इच्छा, भूख। ⊙वंत, ⊙ वान = वि० भूखा। **क्षुधातुर**—वि० भूख से व्याकुल। **क्षुधित**—वि० भूखा।

क्षुप—पु० [सं०] छोटी डालियोवाला पेड, पौधा। झाडी।

क्षुब्ध—वि० [सं०] चचल, अधीर। व्याकुल, विह्वल। भयभीत, डरा हुआ। कुपित, क्रुद्ध।

क्षुभित—वि० [सं०] क्षुब्ध।

क्षुर—पु० [सं०] छुरा, उस्तुरा। पशुओ के पाँव का खुर। ⊙धार = पु० छुरे की धार। (बौद्धो मे) एक नरक। एक प्रकार का बाण जिसमे तेज धारवाली कोई वस्तु लगी रहती है। ⊙प्र = पु० एक प्रकार का तेज धारवाला बाण। खुरपा। **क्षुरिका**—स्त्री० छुरी, चाकू। एक यजुर्वेदी उपनिषद्। **क्षुरी**—पु० नाई, हज्जाम। वह पशु जिसके पाँव मे खुर हो। स्त्री० छुरी, चाकू।

क्षेत्र—पुं० [स०] वह स्थान जहाँ अन्न बोया जाता है, खेत। समतल भूमि। उत्पत्ति स्थान। घर, स्थान। प्रदेश। तीर्थ स्थान। जोरू, स्त्री। शरीर। अंत.करण। वह स्थान जो रेखाओ से घिरा हुआ हो। प्रभाव या क्रिया का दायरा। ⊙गणित = पु० क्षेत्रो के नापने और उनका क्षेत्रफल निकालने की विधि बतानेवाला गणित, रेखागणित। ⊙ज = वि० जो क्षेत्र से उत्पन्न हो। पु० वह पुत्र जो किसी मृत या असमर्थ पुरुष की बिना सतानवाली स्त्री के गर्भ से दूसरे पुरुष द्वारा उत्पन्न हो। ⊙ज्ञ = पु० जीवात्मा, शरीर और उसमे रहनेवाले चैतन्य और आत्मा को जाननेवाला। परमात्मा। किसान, खेतिहर। खेती का पूरा जानकार व्यक्ति। वि० जानकार, ज्ञाता, निपुण, कुशल। ⊙पति = पु० खेत का मालिक। खेतिहर, किसान, । जीवात्मा। परमात्मा। ⊙पाल = पु० खेत का रखवाला, क्षेत्ररक्षक। एक प्रकार के भैरव। द्वारपाल। किसी स्थान का प्रधान प्रबधकर्ता, भूमि-

या। ⊙फल=पु० किसी क्षेत्र का वर्गात्मक परिमाण, रकबा। ⊙ विद्=पु० जीवात्मा। **क्षेत्री**—पु० खेत का मालिक। नियुक्ता स्त्री का विवाहित पति। स्वामी।

क्षेप—पु० [सं०] फेंकना। ठोकर, घात। अक्षांश। निंदा, बदनामी। दूरी। बिताना, गुजारना, जैसे, कालक्षेप। फैलाना। लेप चढ़ाना, लीपना। ⊙क=वि० फेंकनेवाला। मिलाया हुआ, मिश्रित। निंदनीय। पु० ऊपर या पीछे से मिलाया हुआ अंश। **क्षेपण**—पु० फेंकना। गिराना। बिताना, गुजारना।

क्षेमंकरी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चील जिसका गला सफ़ेद होता है। एक देवी।

क्षेम—पु० [सं०] प्राप्त वस्तु की रक्षा, सुरक्षा, हिफाजत। कुशल मंगल। अभ्युदय। सुख, आनंद। मुक्ति। ⊙करी=स्त्री० क्षेमकरी।

क्षैण्य—पु० [सं०] क्षीण का भाव, क्षीणता।

क्षोणि—स्त्री० [सं०] पृथ्वी। एक की संख्या। ⊙प=पु० राजा। **क्षोणी**—स्त्री० दे० 'क्षोणि'।

क्षोभ—पु० [सं०] विचलता, खलबली। व्याकुलता, घबराहट। भय, डर। रंज, शोक। क्रोध। ⊙क=वि० क्षोभित करनेवाला। **क्षोभण**—वि० पु० क्षोभक। काम के पाँच बाणों में से एक।

क्षोभित(पु)—वि० घबराया हुआ, व्याकुल। विचलित, चलायमान। डरा हुआ। क्रुद्ध। **क्षोभी**—वि० उद्वेगशील, व्याकुल, चंचल।

क्षोम—पु० दे० 'क्षौम'।

क्षौणि, क्षौणी—स्त्री० [सं०] पृथ्वी। एक की संख्या।

क्षौद्र—पु० [सं०] क्षुद्र का भाव, क्षुद्रता। छोटी मक्खी का मधु। जल।

क्षौम—पु० [सं०] रेशमी वस्त्र, सन आदि के रेशों से बुना हुआ कपड़ा। वस्त्र, कपड़ा।

क्षौर—पुं० [सं०] हजामत, सिर मुड़ाना। **क्षौरिक**—पु० [सं०] नाई, हज्जाम।

क्ष्मा—स्त्री० [सं०] पृथ्वी, धरती। एक की संख्या।

क्ष्वेड—पु० [सं०] अव्यक्त शब्द या ध्वनि।

ख

ख—हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर।

खं—पु० [सं०] शून्य स्थान, खाली जगह। बिल, छिद्र। आकाश। निकलने का मार्ग। इंद्रिय। बिंदु, शून्य। स्वर्ग। सुख। ब्रह्म। मोक्ष, निर्वाण। क्रिया, कार्य।

खंख—वि० छूछा, खाली। उजाड़, वीरान।

खंखरा†—पु० ताँबे का देग जिसमें चावल आदि पकाया जाता है। वि० जिसमें बहुत से छेद हों। जिसकी बुनावट घनी या ठस न हो, झीना।

खंखार—पु० दे० 'खखार'।

खंग—पु० तलवार। गैंडा।

खंगड़—वि० उद्दंड, उग्र, उजड्ड। टूटा फूटा।

खंगना†—अक० कम होना, घट जाना।

खँगहा—वि० दे० 'खँगैल'। गैंडा। बाज पक्षी। गरुड़।

खंगालना—सक० हलका धोना। सब कुछ उड़ा ले जाना, खाली कर देना।

खँगी—स्त्री० कमी, घटी।

खँगैल—वि० लंबे दाँतवाला। जिसके खुर पके हों।

खँचना†—अक० चिह्नित होना, निशान पड़ना। **खँचाना**—सक० अंकित करना। दे० 'खींचना'।

खँचिया—स्त्री० दे० 'खाँची'।

खंज—पु० [सं०] पैर जकड़ जाने का एक रोग। लँगड़ा। ⊙क=पु० लँगड़ा। (पु)पु० खंजन पक्षी।

खँजड़ी—स्त्री० दे० 'खँजरी'।

खंजन—पु० [सं०] कई रंग और आकार का एक प्रसिद्ध पक्षी।

खंजर—पु० [फा०] कटार।
खँजरी—स्त्री० डफली की तरह का एक बाजा। स्त्री० [हिं०] रंगीन कपड़ों की लहरिएदार धारी। धारीदार कपड़ा।
खंजरीट—पु० [सं०] खंजन पक्षी।
खंड—पुं० [सं०] हिस्सा, टुकड़ा। नौ की संख्या। समीकरण की एक क्रिया (गणित)। खाँड, चीनी। दिशा। वि० खंडित, अपूर्ण। लघु। पुं० [हिं०] खाँडा। ⊙कथा=स्त्री० कथा का एक भेद जिसमें मंत्री अथवा ब्राह्मण नायक होता है और चार का प्रकार विरह होता है। ⊙काव्य=पु० छोटा कथात्मक प्रबंधकाव्य (जैसे, मेघदूत)। ⊙परशु=पु० महादेव, शिव। विष्णु। परशुराम। ⊙प्रलय=पु० एक चतुर्युगी या ब्रह्मा का एक दिन बीतने पर होनेवाला प्रलय। खंडित—वि० टूटा हुआ। अपूर्ण। खंडिता—स्त्री० नायिका जिसका नायक रात को किसी अन्य नायिका के पास रहकर सवेरे उसके पास आए। खंडी—वि० खंड करनेवाला। (पु)स्त्री० राजकर। 'खंडी सु मनमानी लई' (हिम्मत० १६)।
खँडर—पु० दे० 'खँडहर'।
खँडरा—पु० बेसन का एक प्रकार का चौकोर बड़ा।
खँडरिच—पु० खंजन पक्षी।
खँडवानी—स्त्री० खाँड का शर्बत। कन्यापक्षवालों की ओर से बरातियों को जलपान या शरबत भेजने की क्रिया।
खँडसाल—स्त्री० खाँड या शक्कर बनाने का कारखाना।
खंडहर, खँडहर, खँडहर†—पु० टूटे या गिरे हुए मकान का बचा हुआ भाग।
खँडौरा†—पु० मिसरी का लड्डू, ओला।
खँतरा†—पु० दरार। कोना, अँतरा।
खंता—पु० मिट्टी आदि खोदने का औजार। खोदी हुई भूमि।
खंदक—स्त्री० [अ०] शहर या किले के चारों ओर की खाई। बड़ा गड्ढा।
खंधार(पु)†—पुं० फौज के सिपाहियों का शिविर या पड़ाव, छावनी, स्कंधावार। डेरा, खेमा। पु० सामंत राजा, सरदार।
खंभ—पु० दे० 'खंभा'। खंभा—पु० पत्थर या काठ आदि का लंबा टुकड़ा जिसके आधार पर छत रहती है, स्तंभ। बड़ी लाट।
खंभार(पु)†—पु० अंदेशा। घबराहट। डर। शोक।
खंभावती—स्त्री० मालकोस राग की दूसरी स्त्री मानी जानेवाली एक रागिनी।
खँभिया—स्त्री० छोटा पतला खंभा।
खँसना(पु)—अक० दे० 'खसना'।
ख—पु० [सं०] खाली स्थान। शून्य। बिंदु। ब्रह्म। शब्द। आकाश। स्वर्ग। छेद। इंद्रिय।
खई(पु)†—स्त्री० क्षय। लड़ाई, युद्ध। तकरार।
खए—पु० बाहुमूल, पखौरा।
खक्खा—पु० जोर की हँसी, अट्टहास। अनुभवी पुरुष। बड़ा और ऊँचा हाथी।
खखार—पु० खखारने से निकलनेवाला गाढ़ा कफ या थूक। खखारना—अक० थूक या कफ बाहर निकालने के लिये गले से शब्द सहित वायु निकालना।
खखेटना(पु)—सक० दबाना। भगाना। घायल करना।
खखेटा—पु० छेद। शंका।
खग—पु० [सं०] पक्षी, चिड़िया। गंधर्व। बाण। ग्रह। तारा। बादल। देवता। सूर्य। चंद्रमा। हवा। ⊙केतु=पु० गरुड़। ⊙नाथ, ⊙पति=पु० गरुड़। सूर्य। खगेश—पु० गरुड़।
खगहा—पु० गैंडा।
खगोल—पु० [सं०] आकाश मंडल। खगोलविद्या। ⊙विद्या=स्त्री० विद्या जिससे आकाश के नक्षत्रों, ग्रहों आदि का ज्ञान प्राप्त हो, ज्योतिष।
खग्रास—पु० [सं०] ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य या चंद्र का सारा मंडल ढक जाय, सर्वग्रास।
खचन—पु० बाँधने या जड़ने की क्रिया। अंकित करने या होने की क्रिया।
खचना(पु)—अक० जड़ा जाना। अंकित

होना, चित्रित होना। रम जाना। अटक रहना। 'नैना पकज पक खचे' (सूर०)। सक० जडना। अकित करना।

खचर—पु० [सं०] सूर्य। मेघ। ग्रह। नक्षत्र। वायु। पक्षी। वाण। वि० आकाश मे चलनेवाला, आकाशचारी।

खचरा—वि० वर्णसकर। दुष्ट, नीच।

खचाखच—क्रि० वि० वहुत भरा हुआ, ठसाठस।

खचित—वि० [सं०] खीचा हुआ, चित्रित या लिखित।

खचेरना ⓟ—सक० दवाना, अभिभूत करना।

खच्चर—पु० गधे और घोडी के सयोग से उत्पन्न एक पशु।

खज ⓟ—वि० खाने योग्य, भक्ष्य।

खजला—पु० दे० 'खाजा'।

खजहजा ⓟ—पु० खाने योग्य उत्तम फल या मेवा।

खजानची—पु० [फा०] खजाने का अफसर, कोषाध्यक्ष।

खजाना—पु० [अ०] धन सग्रह करके रखने का स्थान, धनागार, कोश। कोई चीज सग्रह करके रखने का स्थान। राजस्व, कर।

खजुआ, खजुवा—पु० खाजा मिठाई।

खजुली—स्त्री० दे० 'खुजली'। खाजे की तरह की एक मिठाई।

खजूर—पु० ताड की जाति का मीठे फल का एक पेड। एक मिठाई। **खजूरी**—वि० खजूर सबधी। खजूर के आकार का। तीन लड का गुंथा हुआ।

खट—स्त्री० दो चीजो के टकराने या कडी चीज के टूटने या गिरने से उत्पन्न शब्द। ⊙**खट** = स्त्री० 'खटखट' शब्द। झझट। झगडा। ⊙**पट** = स्त्री० अनबन, झगडा। टकराने पीटने आदि का शब्द। वि० 'खट्टा' का सक्षेप (समास मे) ⊙**मिट्ठा**, ⊙**मीठा** = वि० कुछ खट्टा और कुछ मीठा। स्त्री० 'खाट' का सक्षेप (समास मे) ⊙**कीड़ा** = पु० दे० 'खटमल'। ⊙**पाटी** = स्त्री० खाट की पाटी, 'खट-नही। ⊙**बुना** = पु० चारपाई बुननेवाला व्यक्ति। ⊙**मल** = पु० खाट, मैले विस्तर आदि मे होनेवाला एक कीडा।

खटक—स्त्री० खटका, चिता। **खटकना**—अक० 'खटखट' शब्द होना। शरीर मे काँटे, ककडी आदि के गडने से रह रह-कर पीडा होना। बुरा मालूम होना, खलना। उचटना, हटना। डरना। परस्पर झगडा होना। अनिष्ट की आशका होना। ठीक न जान पडना।

खटका—पु० 'खटखट' शब्द, टकराने, गिरने आदि का शब्द। डर आशका। चिता। पेच, कमानी आदि जिसके घुमाने, दवाने आदि मे कोई वस्तु खुलती या वद होती हो। किवाड की सिटकनी। पेड मे बँधा बाँस का टुकडा जिसे हिलाकर चिडिया उडाते है। **खटकाना**—सक० [अक० खटकना] 'खटखट' शब्द करना, हिलाना या वजाना। शका उत्पन्न करना।

खटखटाना—सक० 'खटखट' शब्द करना, खडखडाना।

खटना—सक० धन कमाना। काम धधे मे लगना।

खटपटिया—वि० झगडालू। स्त्री० खडाऊँ।

खटपद—पु० दे० 'षट्पद'।

खटमुख—पु० दे० 'षट्मुख'।

खटरस—पु० दे० 'षट्रस'।

खटराग—पु० झझट, बखेडा। व्यर्थ की चीजें, काठ कवाड।

खटवाट—स्त्री० दे० 'खटपाटी'।

खटाई—स्त्री० खट्टापन, तुरशी। खट्टी चीज। मु०~**मे डालना** = वहुत दिनो तक लट-काए रखना (किसी काम को)। कुछ निर्णय न करना।

खटाका—पु० 'खट' शब्द। क्रि० वि० तुरत।

खटाखट—पु० 'खटखट' शब्द। क्रि० वि० 'खटखट' शब्द के साथ। जल्दी, विना रुकावट के।

खटाना—अक० खट्टापन आ जाना। निर्वाह होना। जाँच मे पूरा उतरना।

खटापटी—स्त्री० दे० 'खटपट'।

खटाव—पुं० निर्वाह, गुजर।

खटास—स्त्री० खट्टापन, तुरशी।

खटिक—पु० फल तरकारी आदि बेचने का काम करनेवाला एक हिंदू जाति।

खटिया—स्त्री० छोटी खाट, खटोली।

खटोलना—पु० दे० 'खटोला'।

खटोला—पु० छोटी खाट।

खट्टा—वि० कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का, तुर्श। मु०—जी ~ होना = दिल फिर जाना।

खट्वांग—पु० [सं०] चारपाई का पाया। शिव का एक अस्त्र। प्रायश्चित्त करते समय भिक्षा माँगने का एक पात्र। तंत्र में देवता को जल्दी प्रसन्न करने की एक मुद्रा।

खट्वा—स्त्री० [सं०] खाट, चारपाई।

खड़ंजा—पु० फर्श पर ईंटों की खड़ी चुनाई।

खड़—पु० एक प्रकार की घास। सूखी घास, तिनका।

खड़क—स्त्री० दे० 'खटक'। **खड़कना**—अक खड़खड़ शब्द होना, हिलने या बजने आदि का शब्द होना।

खड़खड़ाना—अक० 'खड़खड़' ध्वनि करना (जैसे, सूखी पत्तियों का)। सक० परस्पर टकराना या बजाना, 'खड़खड़' शब्द उत्पन्न करना।

खड़खड़िया—स्त्री० चार कहारों की पालकी।

खड़ग(पु)—पु० दे० 'खड्ग'। **खड़गी**(पु)—वि० खड्गधारी। पु० गैंडा।

खड़जी—वि० दे० 'खड़गी'।

खड़बड़—स्त्री० खड़खड़, खटखट। उलटफेर। हलचल। **खड़बड़ना**—अक० बेतरतीब करना। घबराना। सक० उलट पुलटकर शब्द उत्पन्न करना। उलटफेर करना। घबरा देना। **खड़बड़ी**—स्त्री उलटफेर। हलचल।

खड़मंडल—पु० गड़बड़घोटाला। वि० उलटपुलट, नष्ट भ्रष्ट।

खड़ा—वि० सीधा ऊपर को गया हुआ, ऊपर को उठा हुआ (जैसे झंडा ~ करना)। पृथ्वी पर सीधे पैरों के बल शरीर को ऊँचा किए हुए। ठहरा या टिका हुआ। तैयार। उत्पन्न, प्रस्तुत (झगड़ा, मामला आदि)। आरंभ, जारी। निर्मित, उठा हुआ (मकान आदि)। न काटा गया, न उखाड़ा गया (फसल आदि)। बिना पका, कच्चा (जैसे, खड़ा चावल)। समूचा। स्थिर, ठहरा हुआ (जैसे, खड़ा पानी)। मु०~जवाब = साफ जवाब। अविलंब इनकार। ~होना = सहायता देना। किसी पद या चुनाव के लिये उम्मेदवार होना। खड़े खड़े, खड़े घाट = तुरंत।

खड़ाऊँ—स्त्री० काठ के तल्ले का खुला जूता, पादुका।

खड़ाका—पु०, क्रि० वि० दे० 'खटाका'।

खड़िया—स्त्री० एक प्रकार की सफेद मिट्टी, खरिया।

खड़ी—स्त्री० दे० 'खड़िया'।

खड़ी बोली—स्त्री० मेरठ और दिल्ली के आसपास बोली जानेवाली हिंदी की एक बोली।

खड्ग—पु० [सं०] एक प्रकार की तलवार, खाँडा। ⊙**कोश** = पु० म्यान। ⊙**पत्र** = पु० पुराणानुसार यमपुरी का वन जिसके पेड़ों में तलवार के से पत्ते होते हैं। तलवार की धार।

खड्गी—पु० [सं०] खड्गधारी। गैंडा।

खड्ड, खड्डा—पु० गड्ढा।

खत—पु० घाव, जख्म। पु० [अ०] चिट्ठी, पत्र। लिखावट। लकीर। हजामत में माथे का ऊपरी भाग। ⊙**कशी** = स्त्री० [फा०] चित्र बनाने के पहले आवश्यक रेखाएँ अंकित करना, टीपना।

खतखोट†—स्त्री० खुरंड।

खतना—पु० [अ०] लिंग के अगले भाग का बढ़ा हुआ चमड़ा काटने की मुसलमानी रस्म। अक० [हिं०] खाते पर चढ़ना।

खतम—वि० पूर्ण, समाप्त। मु०~करना = मार डालना।

खतर, खतरा—पु० [अ०] डर। आशंका।

खतरेटा—पु० खत्री (निंदा या उपेक्षा में)।

खता—स्त्री० [अ०] कसूर, अपराध। धोखा भूल। (पु)पु० क्षत घाव। ⊙**वार** = पु० [फा०] दोषी। अपराधी।

खति(पु)—स्त्री० दे० 'क्षति'।

खतियाना—सक० खाते में अलग अलग मद में लिखना।

खतियौनी—स्त्री० वह बही जिसमें अलग

अलग हिसाब हो, खाता। खतियाने का काम।
खत्ता—पु० गड्ढा। अन्न रखने का स्थान।
खत्म—पु० [अ०] दे० 'खतम'।
खदबदाना—अक० उबलने का शब्द होना।
खदान—स्त्री० कोई वस्तु निकालने के लिये खोदा जानेवाला गड्ढा।
खदिर—पु० खैर का पेड। कत्था। चद्रमा। इद्र।
खदेडना, खदेरना†—सक० दूर करना, भगाना।
खद्दड, खद्दर—पु० हाथ के काते हुए सूत का बुना कपडा, खादी।
खद्योत—पु० [सं०] जुगनू। सूर्य।
खनⓅ†—पु० दे० 'क्षण'। पु० मकान का खड।
खनक—पु० [सं०] जमीन खोदनेवाला। चूहा। सेंध लगानेवाला, चोर। स्त्री० [हिं०] धातुखडो के टकराने या बजने का शब्द।
खनकना—अक० धातुखडो के टकराने का शब्द होना। **खनकाना**—सक० 'खन-खन' करना। रुपए आदि बजाना। **खनखनाना**—अक० खनकना। सक० खनकाना।
खनना†—सक० खोदना। कोडना।
खनिज—वि० [सं०] खान से खोदकर निकाला हुआ।
खनित्र—पुं० [स०] खोदने का औजार, गैंती, खता।
खनोनाⓅ—सक० दे० 'खनना'।
खपची—स्त्री० बाँस की पतली तीली। बाँस की पतली पटरी, कमठी।
खपडा—पुं० मकान छाने का मिट्टी का पका टुकडा। भीख माँगने का मिट्टी का बरतन। ठिकरा। कछुए की पीठ पर का कडा ढक्कन। **खपडी**—स्त्री० नाँद की तरह का मिट्टी का छोटा बरतन। दाना भूनने की मिट्टी की हँडिया। ठीकरा।
खपडैल—स्त्री० दे० 'खपरैल'।
खपत, खपती—स्त्री० समाई, गुजाइश। माल की कटती या बिक्री।
खपना—अक० काम मे आना, व्यय होना। निभाना, गुजारा होना। नष्ट होना। तग होना।
खपरⓅ—पुं० दे० 'खप्पर'।
खपरिया—स्त्री० भूरे रग का एक खनिज पदार्थ। छोटा खपडा।
खपरैल—स्त्री० खपडे से छाई हुई छत।
खपाना—सक० [अक० खपना] व्यय करना, काम मे लाना। निभाना, निर्वाह करना। नष्ट करना। तग करना। मु०—**माथा या सिर~** = सोचते सोचते हैरान होना।
खपुआ, Ⓟ**खपुवा**—वि० डरपोक, कायर। दुष्ट, दगाबाज। स्त्री० दरवाजे की चूल को छेद मे दृढ बैठाने के लिये लगाई जानेवाली लकडी।
खपुर—पुं० [सं०] आकाश मे कभी कभी उदय होनेवाला गधर्वमडल जिसके अनेक शुभाशुभ फल माने जाते है। पुराणानुसार आकाश का एक नगर। आकाश मे मानी जानेवाली राजा हरिश्चद्र की पुरी।
खपुष्प—पुं० [स०] आकाशकुसुम। असभव बात।
खप्पर—पु० भिक्षापात्र। खोपडी। तसले के आकार का कोई पात्र।
खफगी—स्त्री० [फा०] अप्रसन्नता। क्रोध।
खफा—वि० [अ०] अप्रसन्नता। क्रुद्ध।
खफीफ—वि० [अ०] थोडा, कम। हलका। तुच्छ। लज्जित।
खबर—स्त्री० [अ०] समाचार, हाल। सूचना, जानकारी। सदेशा। सुधि, सज्ञा। पता, खोज। ⊙**गीर** = वि० [फा०] देखभाल करनेवाला। ⊙**दार** = वि० [फा०] होशियार, सजग। ⊙**दारी** = स्त्री० [फा०] सावधानी। ⊙**नवीस** = पुं० [फा०] समाचार लेखक। राजाओ आदि के पास नित्य के समाचार लिखकर भेजनेवाला व्यक्ति।
खबरि†, **खबरिया**†—स्त्री० दे० 'खबर'।
खबीस—पुं० [अ०] दुष्टात्मा, भूत प्रेत, चुडैल आदि। दुष्ट और क्रूर व्यक्ति। कजूस।
खब्त—पुं० [अ०] पागलपन, सनक। **खब्ती**—वि० सनकी, पागल।
खभरना†—सक० मिश्रित करना। उथल पुथल करना।
खभार—पुं० दे० 'खँभार'।
खम—पुं० [फा०] टेढापन, झुकाव। मु०~

खाना = मुडना, झुकना । हारना । ~ठोकना=लडने के लिये ताल ठोकना । दृढता दिखलाना ।
खमकना (पु)—अक० 'खमखम' शब्द करना ।
खमदम—पुं० [फा०] पुरुषार्थ, साहस ।
खमसा—पुं० [अ०] प्रत्येक वद मे पाँच चरणवाली एक गजल ।
खमा (पु)—स्त्री० दे० 'क्षमा' ।
खमीर—पुं० [अ०] गूँधे हुए आटे का मडाव । गूँधकर उठाया हुआ आटा । तवाकू को सुगधित करने के लिये डाला जानेवाला, कटहल, अनन्नास आदि का सडाव । स्वभाव, प्रकृति । खमीरा—वि० पुं० खमीर उठाकर वनाया हुआ । चीनी या शीरे मे पकाकर वनाई हुई (ओषधि) ।
खमोश—वि० दे० खामोश' ।
खम्माच—स्त्री० मालकोश राग की दूसरी रागिनी ।
खय (पु)+—स्त्री० क्षय, विनाश । प्रलय । ⊙कारी = वि० नाश करनेवाला ।
खया—पुं० दे० 'खवा' ।
खयानत—स्त्री० [अ०] धरोहर रखी हुई वस्तु न देना अथवा कम देना, गवन । चोरी या वेईमानी ।
खयाल—पुं० दे० 'ख्याल' ।
खर—पुं० [सं०] गधा । खच्चर । वगला । कौआ । तृण, घास । ६० सवत्सरो मे २५वाँ सवत् । छप्पय छद का एक भेद । एक राक्षस । वि० कडा । तेज, तीक्ष्ण । हानिकारक । कडुआ । कठोर । घना । गरम । खुरखुरा । काँटेदार । अमागलिक । तेज धार का । ⊙तर = वि० वहुत तेज, वहुत तीक्ष्ण । ⊙धार = पुं० तेज धारवाला अस्त्र । खरांशु = पुं० सूर्य । खरारि = पुं० विष्णु ।
खरक—पुं० चौपायो को रखने के लिये खभे और वल्लियो से वनाया हुआ घेरा । पशुओ के चरने का स्थान । बाँसो की फट्टियो का किवाड । दे० 'खटक' । स्त्री० दे० 'खडक' । खरकना—अक० 'खरखर' शब्द होना । फाँस चुभने से दर्द होना । सरकना, चल देना ।
खरका—पुं० तिनका । दे० 'खरक' ।
खरखरा—त्रि० दे० 'खुरखुरा' ।
खरखशा—पुं० [फा०] झगडा । भय, आशका । झझट ।
खरखौकी (पु)—स्त्री० खर, तृण आदि खानेवाली अग्नि ।
खरग—पुं० दे० 'खड्ग' ।
खरगोश—पुं० [फा०] चूहे से मिलता जुलता किंतु वडे आकार का, वडे कान, रोएँदार पूँछ और नरम चमडे का एक जतु ।
खरच—पुं० दे० 'खर्च' । खरचना—अक० खर्च करना । खरचा—पुं० दे० 'खर्चा' । खरची—स्त्री० जीविका निवाह का साधन । खाने पीने की वस्तु । वेश्याओ को उनकी वृत्ति के वदले प्राप्त होनेवाला धन ।
खरतल+—त्रि० खरा, स्पष्टवादी । शुद्ध हृदयवाला । मुरौवत न करनेवाला । स्पष्ट । प्रचड, उग्र ।
खरदुक—पुं० एक पुराना पहनावा ।
खरव—पुं० सौ अरव की सख्या । वि० सौ अरव ।
खरवूजा—पुं० ककडी की जाति का एक मीठा गोल फल ।
खरभर†—पुं० 'खरभर' का शब्द । शोर । हलचल, गडवड । खरभरना—अक० क्षुब्ध होना । घवराना । खरभराना+—अक० खरभर शब्द करना । शोर करना । गडवड या हलचल मचाना । खरभरी—स्त्री० खलवली, हलचल । व्यग्रता ।
खरमंडल—वि० दे० 'खड़मडल' ।
खरमस्ती—स्त्री० [फा०] दुष्टता, पाजीपन, शरारत ।
खरमास—पुं० दे० 'खरवाँस' ।
खरल—पुं० ओषधियाँ कूटने की पत्थर की कूँडी ।
खरवाँस—पुं० पूस और चैत का महीना (मागलिक कार्य के लिये वर्जित) जब सूर्य धन और मीन का होता है ।
खरसा†—पुं० एक पकवान । ग्रीष्म ऋतु । अकाल । खुजली ।
खरसान—स्त्री० हथियार तेज करने की एक सान ।
खरहरा—पुं० घोडे के रोएँ साफ करने के लिये दाँतेदार कघी । एक प्रकार का झाडू ।

खरहरी—स्त्री० एक मेवा (कदाचित् खजूर)।

खरहा—पु० खरगोश।

खरा—वि० बढिया, अच्छा। बिना मिलावट का। तेज, तीखा। सेककर कडा किया हुआ, करारा। चीमड, कडा। बेईमाना या धोखे से रहित। नगद (दाम)। स्पष्टवक्ता। सच्चा। बहुत अधिक। मु०~**खरी सुनाना**, ~**खोटी सुनाना**=अप्रिय लगने पर भी सच्ची बात कहना। भला बुरा कहना। **रुपए खरे होना**=रुपए मिलने का निश्चय होना। **खराई**—स्त्री० खरापन। सवेरे अधिक देर तक जलपान या भोजन आदि न मिलने के कारण तबीअत खराब होना।

खराद—पुं० एक औजार जिसपर चढाकर लकडी, धातु आदि की सतह चिकनी और सुडौल की जाती है। स्त्री० खरादने का काम। बनावट, गढन। **खरादना**—सक० खराद पर चढाकर किसी वस्तु को साफ और सुडौल बनाना। **खरादी**—पुं० खरादनेवाला।

खराब—वि० [अ०] बुरा, निकृष्ट। दुर्दशाग्रस्त। पतित, बुरे चाल चलन का। **खराबी**—स्त्री० [फा०] बुराई, दोष, अवगुण, दुर्दशा।

खरायँध—स्त्री० मूत्र की दुर्गंध। क्षार आदि की दुर्गंध।

खराश—स्त्री० [फा०] खरोच, छिलन।

खरिया—स्त्री० पतली रस्सी से बनी हुई घास, भूसा बाँधने की जाली। झोली। दे० 'खडिया'। **खरियाना**—सक० झोली मे डालना, थैले मे भरना। ले लेना। झोला मे से गिरना।

खरिहान—पु० दे० 'खलियान'।

खरी—स्त्री० दे० 'खडिया'। दे० 'खली'।

खरीता—पु० [अ०] थैली, खीसा। जेब। आज्ञापत्र आदि का लिफाफा।

खरीद—स्त्री० [फा०] मोल लेने की क्रिया। खरीदी हुई चीज। **खरीदना**—सक० [हिं०] मोल लेना, क्रय करना।

खरीदार—पु० [फा०] मोल लेनेवाला। इच्छुक।

खरीफ—स्त्री० [अ०] फसल जो आषाढ से अगहन के बीच काटी जाय।

खरोच—स्त्री० छिलने का चिह्न, खराश। एक भोज्य पदार्थ पतौर। **खरोचना**—सक० खुरचना, छीलना।

खरोट—स्त्री० दे० 'खरोच'। **खरोटना**—स[क]० नाखून गडाकर शरीर मे घाव [कर]ना। दे० 'खरोचना'।

ख[रो]ष्ट्री, खरोष्ठी—स्त्री० [सं०] एक प्राचीन लिपि जो फारसी की तरह दाहिने से बाँए को लिखी जाती थी, गाधार लिपि।

खरौंट—स्त्री० दे० 'खरोच'।

खरौंहा†—वि० कुछ खारा या नमकीन।

खरौट—स्त्री० दे० 'खरोच'।

खरौरा—पु० दे० 'खिरौरा'।

खर्ग—पुं० दे० 'खड्ग'।

खर्च—पु० [फा०] किसी काम मे वस्तु का लगाना, व्यय, खपत। किसी काम मे लगनेवाला धन। **खर्चा**—पु० दे० 'खर्च'। **खर्चीला**—वि० बहुत खर्च करनेवाला।

खर्जूर—पु० [सं०] खजूर। चाँदी। बिच्छू। हरताल।

खर्पर—पु० [सं०] भिक्षापात्र। तसले के आकार का मिट्टी का बरतन। काली देवी का रुधिरपान का पात्र। खोपडा। खपरिया नामक उपधातु।

खर्रा—पु० बडा हिसाब या विवरण लिखने का लबा कागज। पीठपर छोटी फुसियाँ निकलने का एक रोग।

खर्राच†—वि० दे० 'खर्चीला'।

खर्राटा—पु० सोते समय नाक से निकलनेवाला। शब्द। मु०~**भरना या मारना**=बेखबर सोना।

खर्व—वि० [सं०] जिसका अग भग्न या अपूर्ण हो। छोटा। बौना। पु० सौ अरब की सख्या, खरब। कुबेर की नौ निधियो मे से एक।

खल—वि० [सं०] क्रूर। नीच, अधम। दुष्ट। पु० खरल। धतूरा। खलिहान। ⊙ई†=स्त्री० [हिं०] खलता, खल

होने का भाव। ⊙ता = स्त्री० दुष्टता, नीचता।

खलक—पुं० [अ०] सृष्टि के जीवधारी। दुनिया।

खलड़ी—स्त्री० दे० 'खाल'।

खलना—अक० बुरा लगना, अप्रिय लगना।

खलबल—स्त्री० हलचल। शोर। कुलबुलाहट। **खलबलाना**—अक० 'खलबल' शब्द करना। हिलना डोलना। विचलित होना।

खलबली—स्त्री० हलचल। घबराहट, व्याकुलता।

खलभल(पु)—स्त्री० खलबली, हलचल। 'अति परी खलभल प्रबल दल पर' (हिम्मत० ६०)।

खलल—पु० [अ०] रोक, बाधा।

खलाना†—सक० पात्र आदि में से खाली करना। गड्ढा करना। फूली हुई सतह को नीचे धँसाना, पचकाना।

खलास—वि० [अ०] छूटा हुआ, मुक्त। खतम, समाप्त। च्युत, गिरा हुआ। **खलासी**—स्त्री० छुटकारा, छुट्टी। पु० जहाज या इंजन पर का नौकर।

खलित(पु)—वि० चंचल, डिगा हुआ। गिरा हुआ।

खलियान—पु० फसल काटकर रखने, माँडने और बरसाने का स्थान। राशि, ढेर।

खलियाना—सक० खाल उतारना, चमडा अलग करना। खाली करना।

खलिश—स्त्री० [फा०] कसक, पीडा।

खली—स्त्री० तेल निकालने पर तिलहन की बची हुई सीठी।

खलीता—पु० दे० 'खरीता'।

खलीफा—पु० [अ०] उत्तराधिकारी। मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी जो मुसलमानो के सर्वोच्च धार्मिक नेता माने जाते थे। अध्यक्ष, अधिकारी। बूढा व्यक्ति। बावर्ची। हज्जाम, दर्जी आदि के लिये संबोधन का शब्द।

खलु—अव्य०, क्रि० वि० [सं०] एक निश्चयवाचक शब्द।

खलेल—पुं० खली आदि का फुलेल में रह जानेवाला अंश।

खल्लड—पुं० चमडे की मशक या थैला। औषधि कूटने का खल। चमडा। वृद्ध मनुष्य जिसका चमडा झूल गया हो।

खल्व—पुं० [सं०] सिर के बाल झड जाने का रोग, गंज। **खल्वाट**—पुं० गंज रोग। वि० गंजा।

खवा—पुं० कंधा, भुजमूल।

खवाना†—सक० दे० खिलाना, भोजन कराना।

खवारा(पु)—वि० बुरा, खोटा।

खवास—पुं० [अ०] राजाओं और रईसो का खास खिदमतगार। राजाओं को पान खिलानेवाला या कपडे, जूते आदि पहनानेवाला व्यक्ति। हिंदुओं की एक जाति। **खवासिन**—स्त्री० रानियों की खास खिदमत करनेवाली दासी। राजाओं की रखेली। **खवासिनी**—स्त्री० दे० 'खवासिन'। **खवासी**—स्त्री० खवास का काम, खिदमतगारी। नौकरी। हाथी के हौदे या गाडी आदि में पीछे की ओर वह स्थान जहाँ खवास बैठता है।

खवैया—वि० खानेवाला।

खस—पुं० [सं०] वर्तमान गढवाल और उसके उत्तरवर्ती प्रांत का प्राचीन नाम। इस प्रदेश में रहनेवाली एक जाति। स्त्री० गाँडर नामक घास की सुगंधित जड (पंखे और टट्टियों आदि में प्रयुक्त)। ⊙खाना = पुं० खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी।

खसकना—अक० धीरे से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। अपने स्थान से हटना, सरकना। **खसकाना**—सक० [अक० खसकना] गुप्त रूप से हटाना। स्थानांतरित करना। हटाना।

खसखस—स्त्री० पोस्ते का दाना। **खसखसी**—वि० पोस्ते के फूल के रंग का, नीलापन लिए सफेद।

खसखसा—वि० जिसके कण दबाने से अलग हो जायँ, भुरभुरा। बहुत छोटा।

खसना(पु)—अक० खसकना, गिरना।

खसम—पुं० [अ०] पति, खाविंद । स्वामी, मालिक ।
खसरा—वि० [अ०] पटवारी का कागज जिसमे खेत की सख्या, क्षेत्रफल आदि लिखा रहता है। हिसाब किताब का कच्चा चिट्ठा। पुं० एक प्रकार की खुजली ।
खसलत—स्त्री० [अ०] स्वभाव, आदत ।
खसिया—वि० पशु जिसके अडकोश निकाल लिए गए हो, बधिया । नपुसक । बकरा ।
खसी—पु० दे० 'खस्सी' ।
खसीस—वि० [अ०] कजूस । अयोग्य । दुष्ट ।
खसोट—स्त्री० बुरी तरह उखाडने या नोचने की क्रिया । बलपूर्वक लेना, छीनना । **खसोटना**—सक० बुरी तरह नोचना या उखाडना । बलपूर्वक लेना, छीनना । **खसोटी**—स्त्री० दे० 'खसोट' ।
खस्ता—वि० [फा०] बहुत थोडी दाब से टूट जानेवाला, भुरभुरा । खिन्न । थका हुआ । दुर्दशाग्रस्त ।
खस्वस्तिक—पु०[सं०] सिर के ऊपर आकाश मे माना जानेवाला बिंदु, शीर्षबिंदु ।
खस्सी—पु० [अ०] बकरा । वि० बधिया । हिँजडा।
खहर—पु० [सं०] गणित मे वह राशि जिसका हर शून्य हो ।
खाँ—पु० दे० 'खान' ।
खाँग†—पु०काँटा । पक्षियो के पैरों मे निकलनेवाला काँटा । गैंडे के मुँह पर का सीग। जगली सूअर का मुंह के बाहर निकला हुआ दाँत । स्त्री० त्रुटि, कमी । **खाँगना**†—कम होना, घटना । **खाँगड, खाँगड़ा**—वि०खाँगवाला । हथियारबद । बलवान् । अक्खड । **खाँगी**†—स्त्री० त्रुटि, कमी ।
खाँगा—पुं० दे० 'खाँडा' ।
खाँचना(पु)†—सक० अकित करना, खीचना । जल्दी लिखना ।
खाँचा—पु० पतली टहनियो आदि का बना हुआ बडे बडे छेदो का टोकरा, झावा ।
खाँड-खाँड†—स्त्री० बिना साफ की हुई चीनी, कच्ची शक्कर ।
खाँड़ना—सक० तोडना । चबाना, कूचना ।
खाँडर—पुं० टुकडा ।
खाँडा, खाँड़ा†—पुं० खग (अस्त्र) । खड, भाग, टुकडा ।
खाँधना(पु)—सक० खाना ।
खाँभ(पु)†—पु० खभा ।
खाँवाँ—पु० अधिक चौडी खाईं। खेत आदि की रक्षा की कच्ची दीवाल ।
खाँसना—अक० गले से कफ आदि निकालने या केवल शब्द करने के लिये वायु को कठ से झटके से निकालना । **खाँसी**—स्त्री० खाँसने की क्रिया या रोग । खाँसने का शब्द ।
खाईं—स्त्री० वह नहर जो किसी गाँव या महल आदि के चारो ओर रक्षा के लिये खोदी गई हो, खदक ।
खाउ—वि० बहुत खानेवाला, पेटू ।
खाक—स्त्री० [फा०] धूल, मिट्टी । तुच्छ, अकिंचन । कुछ नही, जैसे, वे खाक पढते लिखते है । ⊙**सार** = वि० धूल में मिला हुआ तुच्छ, अकिंचन (नम्रतावाचक) । पु० मुसलमानो का एक राजनीतिक दल। मु०—(कहीं पर)~**उड़ना** = बरबादी होना । ~**उड़ाना या छानना** = मारा मारा फिरना । ~**मे मिलना** = बरबाद होना । **खाकी**—वि० [फा०] मिट्टी के रग का, भूरा । बिना सींची हुई भूमि ।
खाका—पु० चित्र आदि का डौल, ढाँचा, नकशा । वह कागज जिसमे किसी काम के खर्च का अनुमान लिखा जाय, चिट्ठा, तखमीना । मसौदा । मु०~**उडाना** = उपहास करना ।
खाख—स्त्री० दे० 'खाक' ।
खाखरे(पु)—पु० एक प्रकार के पोले बाजे । 'बज्जत सु गज्जत खाखरे' (हिम्मत० ४०) ।
खागना—अक० चुभना, गडना ।
खाज—स्त्री० एक रोग जिसमे शरीर बहुत खुजलाता है, खुजली । मु०—**कोढ की खाज** = दु ख मे दु ख बढानेवाली वस्तु ।
खाजा—पु० भक्ष्य वस्तु, खाद्य । एक प्रकार की मिठाई ।
खाजी(पु)—स्त्री० खाद्य पदार्थ, भोजन की वस्तु ।

खाट—स्त्री० चारपाई, खटिया।
खाटा(पु)—वि० दे० 'खट्टा'।
खाड़(पु)—पु० गड्ढा, गर्त।
खाड़ी—स्त्री० समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो।
खात—पु० [सं०] खोदना, खुदाई। तालाब। कुँआ। गड्ढा। खाद, कूड़ा और मैला जमा करने का गड्ढा। **खाता**—पु०[हिं०] अन्न रखने का गड्ढा, बखार। कुएँ के पास का गड्ढा। पु० वह वही जिसमे मिति, वार और ब्योरेवार हिसाब लिखा हो। मद, विभाग।
खातमा—पु० [फा०] अंत, समाप्ति। मृत्यु।
खातिर—स्त्री० [अ०] आदर, सम्मान। †अव्य० वास्ते, लिये। ⊙**खाह** = अव्य०, क्रि० वि० [फा०] जैसा चाहिए वैसा, इच्छानुसार। ⊙**जमा** = स्त्री० [अ०] संतोष, तसल्ली। ⊙**दारी** = स्त्री० [फा०] आदर, आवभगत। **खातिरी**—स्त्री० आदर, आवभगत। तसल्ली, संतोष।
खाती—स्त्री० खोदी हुई भूमि। खत्ती, जमीन खोदनेवाली एक जाति। बढ़ई।
खाद—स्त्री वे सड़े गले पदार्थ जो खेत मे उपज बढ़ाने के लिये डाले जाते हैं। (पु) पु० खाने योग्य पदार्थ।
खादन—पु० [सं०] भक्षण, भोजन। **खादित**—वि० [सं०] खाया हुआ।
खादर—पु० नीची जमीन, कछार।
खादिम—पु० [फा०] सेवक, नौकर।
खादी—वि० [सं०] खानेवाला। शत्रु का नाश करनेवाला। रक्षक। कँटीला। स्त्री० गजी या और कोई मोटा कपड़ा। हाथ से काते हुए सूत का हाथ के करघे पर बना कपड़ा, खद्दर। †वि० दोष निकालनेवाला, छिद्रान्वेषी। दूषित।
खाद्य—वि० [सं०] खाने योग्य। पु० भोजन, खाने की वस्तु।
खाधु(पु)†—पु० भोज्य पदार्थ। ⊙**क**(पु) = वि० खानेवाला।
खान—स्त्री० धातु, पत्थर आदि खोदकर निकालने का स्थान, खदान। जहाँ कोई वस्तु बहुत सी हो, खजाना। पु० [फा०] सरदार। पठानो की उपाधि। स्त्री० [हिं०] खाने की क्रिया, भोजन की सामग्री। भोजन करने का ढंग या आचार। ⊙**पान** = पु० खाना पीना। खाने पीने का आचार। खाने पीने का संबंध। **खानक**—पु० खान खोदनेवाला। बेलदार, मेमार, राज।
खानकाह—स्त्री० [अ०] मुसलमान साधुओ के रहने का स्थान।
खानगी—वि० [फा०] निज का, घरेलू। स्त्री० केवल कसब करानेवाली वेश्या, कसबी।
खानदान—पु० [फा०] वंश, कुल। **खानदानी**—वि० अच्छे कुल का। पैतृक, पुश्तैनी। **खानसामा**—पु० [फा०] अँगरेजो, मुसलमानो आदि का रसोइया।
खाना—सक० भक्षण करना। हिंसक जंतुओ का शिकार पकड़ना और भक्षण करना। विषैले कीड़ो का काटना। तंग करना। नष्ट करना। उड़ा देना, न रहने देना। हड़प जाना। रिशवत आदि लेना। (आघात, प्रभाव आदि) सहना। मु०—**खा जाना या कच्चा खा जाना** = प्राण ले लेना। **खाता कमाता** = खाने पीने भर को कमानेवाला। **~कमाना** = काम धंधा करके जीविका निर्वाह करना। **~न पचना** = जी न मानना। **खाने दौड़ना** = चिड़चिड़ाना, क्रुद्ध होना। **खा पका जाना** = खर्च कर डालना। **मुँह की ~** = नीचा देखना, पराजित होना।
खाना—पु० [फा०] घर, मकान, जैसे डाकखाना, किसी चीज के रखने का घर। विभाग, कोठा। खंड। सारिणी या चक्र का विभाग कोष्ठक। ⊙**खराब** = वि० जिसका घरबार तक न रह गया हो। ⊙**जाद** = वि० घर मे पला हुआ। दास, सेवक। ⊙**तलाशी** = स्त्री० किसी खोई या चुराई हुई चीज के लिये मकान के अंदर छानबीन करना। ⊙**पूरी** = स्त्री० किसी चक्र या सारणी के कोठो मे यथास्थान संख्या या शब्द लिखना। नकशा भरना। ⊙**बदोश** = वि० जिसका घरबार न हो

खानि—स्त्री० दे० 'खान'। ओर, तरफ। ढग। ⊙क(पु)†=स्त्री० दे० 'खानि'।
खाब(पु)†—पु० दे० 'ख्वाब'।
खाम—पु० चिट्ठी या लिफाफा। सधि, जोड। (पु)†घटा हुआ, क्षीण। वि० [फा०] जो पका न हो, कच्चा। जिसे अनुभव न हो। ⊙**खयाली**=स्त्री० व्यर्थ या बिना आधार का विचार। **खामना**—सक० गीली मिट्टी या आटे से पात्र का मुँह बद करना। चिट्ठी को लिफाफे मे बद करना।
खामखाह, खामखाही—क्रि० वि० दे० 'ख्वाहमख्वाह'।
खामी—स्त्री० [फा०] कच्चापन, कचाई। त्रुटि, दोष।
खामोश—वि०[फा०] चुप, मौन। **खामोशी**—स्त्री० मौन, चुप्पी।
खार—पुं० दे० 'क्षार'। सज्जी। लोना, रेह। धूल, राख। एक पौधा जिससे खार निकलता है। पुं० [फा०] काँटा, फाँस। खाँग। डाह, जलन। मु०~**खाना**=डाह करना।
खारक†, **खारिख**(पु)†—पुं० छुहारा।
खारा—वि० खार या नमक के स्वाद का। कडुआ, अरुचिकर। पुं० एक धारीदार कपडा। घास या सूखे पत्ते बाँधने के लिये जालदार बँधना। जालीदार थैला। झाबा, खाँचा।
खारिज—वि० [अ०] बाहर किया हुआ, रद्द किया हुआ। भिन्न, अलग। जिस (अभियोग) की सुनवाई करने से इनकार किया गया हो।
खारिश—स्त्री० [फा०] खुजली।
खारी—स्त्री० एक प्रकार का क्षार लवण। वि० क्षारयुक्त, जिसमे खार हो।
खारुआँ, खारुवा—पुं० आल से बना हुआ एक प्रकार का गाढा लाल रग। इस रग से रँगा हुआ मोटा कपडा।
खाल—स्त्री० मनुष्य, पशु आदि के शरीर का ऊपरी आवरण, चमडा। आधा चरसा, अधौडी। धौंकनी, भाथी। मृत शरीर। नीची भूमि जिसमे प्राय बरसात का पानी जमा हो जाता है। खाडी। खाली जगह। मु०~**उधेड़ना या खींचना**=बहुत मारना पीटना या कडा दड देना।
खालसा—वि० जिसपर केवल एक का अधिकार हो। राज्य का, सरकारी। पुं० सिक्खो की एक विशेष मडली।
खाला—वि० नीचा, निम्न। स्त्री० [अ०] माता की बहिन। मौसी। मु०~**का घर**=सहज काम।
खालिक—पुं० [अ०] सृष्टिकर्ता, उत्पन्न करनेवाला।
खालिस—वि० [अ०] जिसमे कोई दूसरी वस्तु न मिली हो, शुद्ध।
खाली—वि० [अ०] जिसके भीतर का स्थान शून्य हो, रिक्त। जिसपर कुछ न हो। जिसमे कोई एक विशेष वस्तु न हो। रहित, विहीन। जिसे कुछ काम न हो। जो व्यवहार मे न हो, जिसका काम न हो (वस्तु)। व्यर्थ, निष्फल। क्रि० वि० केवल, सिर्फ। मु०~**हाथ होना**=पास मे रुपया पैसा न होना। ~**पेट**=बिना कुछ खाए हुए। **निशाना या वार ~जाना**=लक्ष्य पर न पहुँचना। **बात ~जाना या पडना**=वचन निष्फल होना, कहने के अनुसार कोई बात न होना।
खाविंद—पुं० [फा०] पति। मालिक।
खास—वि० [अ०] विशेष, प्रधान, 'आम' का उलटा। आत्मीय। स्वय, खुद। विशुद्ध, ठेठ। ⊙**कलम**=पुं० प्राइवेट सेक्रेटरी। ⊙**बरदार**=पुं० [फा०] वह सिपाही जो राजा की सवारी के आगे चलता है।
खासा—पुं० [अ०] राजा का भोजन। राजा की सवारी का घोडा या हाथी। एक प्रकार का पतला सफेद सूती कपडा। वि० अच्छा, उत्तम। स्वस्थ, तदुरुस्त। मध्यम श्रेणी का। सुडौल, सुदर। भरपूर, सर्वांगपूर्ण।
खासियत—स्त्री० [अ०] स्वभाव, प्रकृति। गुण, विशेषता।
खाहिश—स्त्री० [फा०] दे० 'ख्वाहिश'।
खिंग(पु)—पुं० सफेद रग का घोड़ा जिसके

मुह पर का पट्टा और चारो टाप गुलावी-पन लिए सफेद हो। 'तहँ खिग निहारे सुख दिलवारे···' (प्रताप० ६५)।

खिंचना—अक० घसीटा जाना। किसी कोश, थैले आदि से वाहर निकल जाना। एक या दोनो छोरो का एक या दोनो ओर वढना, तनना। किसी ओर वढना या जाना, आकर्षित होना। सोखा जाना, चुसना। भभके से अर्क या शराव आदि तैयार होना। गुण या तत्व का निकल जाना। कलम आदि से वनकर तैयार होना, चित्रित होना। रुक रहना। माल का चालान होना। अनुराग कम होना। मु०—**पीड़ा या दर्द~** = (औपध आदि से) दर्द दूर होना। **हाथ~** = देना वद होना। **खिंचवाना, खिंचाना**—सक० [खीचना का प्रे०] खीचने का काम दूसरो से करना। **खिंचाई**—स्त्री० खीचने की क्रिया। खीचने की मजदूरी। **खिंचाव**—पु० खिचने का भाव या क्रिया।

खिडाना—†सक० विखराना, छितराना।

खिंथा—स्त्री० जोगियो का पहनावा, गुदडी।

खिंखिध(पु)—पुं० दे० 'किष्किधा'।

खिचडवार—पु० मकरसक्राति।

खिचड़ी—स्त्री० एक मे मिलाया या पकाया हुआ दाल और चावल। विवाह की एक रस्म जिसमे वर और उसके छोटे भाइयो को कच्ची रसोई खिलाई जाती है। एक ही मे मिले हुए दो या अधिक प्रकार के पदर्थ। मकर सक्राति। वि० मिला जुला, गडवड।

खिजमत(पु)—स्त्री० दे० 'खिदमत'।

खिजलाना—अक० झुँझलाना, चिढना।

खिजाँ—स्त्री० [फा०] वृक्षो के पत्ते झडने के दिन, हेमत ऋतु। पतझड। ह्रास या पतन के दिन।

खिजाब—पुं० [अ०] सफेद वालो को काला करने की ओषधि, केशकल्प।

खिझ(पु)—स्त्री० खीझ, खीज।

खिझना—अक० दे० 'खीजना'। **खिझाना**—सक० [अक० खीझना] चिढाना।

खिडकना—अक० चुपचाप चल देना।

खिडकी—स्त्री० झरोखा। छोटा दरवाजा, दरीचा।

खिताब—पुं० [अ०] पदवी, उपाधि।

खित्ता—पु० [अ०] प्रात, देश।

खिदमत—स्त्री० [फा०] मेवा टहल। ⊙**गार** = पु० खिदमत करनेवाला, टहलुवा। **खिदमती** = वि० जो खूव सेवा करे। मेवा सवधी अथवा जो सेवा के वदले मे प्राप्त हुआ हो।

खिन(पु)—पु० दे० 'क्षण'। वि० दुर्वल, कमजोर। **खिनक**—पु० एक क्षण, क्षणेक।

खिन्न—वि० [सं०] उदासीन, चिंतित। अप्र-सन्न। दीनहीन, असहाय।

खिपना(पु)—अक० खपना। तल्लीन होना, निमग्न होना।

खियाना—अक० रगड से घिस जाना। सक० खिलाना (खाना)।

खियाल—पु० दे० 'ख्याल'।

खिरनी—स्त्री० एक ऊँचा पेड और उसके फल जो खाए जाते है।

खिराज—पु० [अ०] राजस्व, कर।

खिरिरना(पु)—सक० अनाज छानना। खरचना।

खिरैटी—स्त्री० वला, वीजवद।

खिरौरा—पु० एक प्रकार का लड्डू।

खिरौरी—स्त्री० केवडा देकर वाँधी हुई खैर या कत्थे की टिकिया।

खिलना—अक० कली से फूल होना। प्रसन्न होना। शोभित होना। ठीक या उचित जँचना। वीच से फट जाना। अलग अलग हो जाना।

खिलअत—स्त्री० [अ०] वह वस्त्र आदि जो किसी वादशाह की ओर से समानार्थ या पुरस्करणार्थ किसी को दिया जाता है।

खिलकत—स्त्री० [अ०] सृष्टि, ससार। लोगो का समूह, भीड।

खिलकौरी†—स्त्री० खेल, खिलवाड।

खिलखिलाना—अक० खिल खिल शब्द करके हँसना, जोर से हँसना।

खिलत, खिलति(पु)†—स्त्री० दे० 'खिलअत'।

खिलवत—स्त्री० [अ०] शून्य निर्जन स्थान, एकात। (पु)पु० अतरग मित्र। 'निज खिलवतिन मे हास है' (हिम्मत०१३)। ⊙**खाना**=पु० [फा०] गुप्त सलाह का स्थान, एकात।

खिलवाना—सक० [खाना का प्रे०] किसी के द्वारा भोजन करवाना। सक० [खेलना का प्रे०] किसी को खेल मे लगाना। उलझाए रखना। सक० [खिलना का प्रे०] प्रफुल्लित कराना। विकसित करवाना।

खिलाई—स्त्री० खाने या खिलाने की क्रिया। वह दाई या मजदूरनी जो बच्चो को खिलाती हो।

खिलाड, खिलाड़ी—पु० खेल करनेवाला। कुश्ती लडने, पटा बनेठी खेलने या ऐसे ही और काम करनेवाला। जादूगर।

खिलाना—सक० दे० 'खिलवाना'। भोजन कराना।

खिलाफ—वि० [अ०] विरुद्ध, उलटा।

खिलाफत—स्त्री० [अ०] खलीफा का पद। खलीफापन। उत्तराधिकारी। बादशाहो (मुसलमान) पर खलीफा का प्रभुत्व। खलीफा का मुसलमान राजाओ पर अधिकार नष्ट होते जाने से १९१८ ई० मे अँगरेजो के विरुद्ध भारतीय मुसलमानो का अदोलन।

खिलौना—पु० कोई मूर्ति जिससे बालक खेलते हैं।

खिल्ली—स्त्री० हँसी, दिल्लगी। †स्त्री० पान का बीडा। कील, काटा।

खिवना—अक० चमकना, प्रकाशित होना।

खिसना(पु)—अक० दे० 'खिसकना'।

खिसकना—अक० 'खसकना'।

खिसाना(पु)+—अक० दे० 'खिसियाना'।

खिसारा—पु० [फा०] घाटा, नुकसान।

खिसारी—स्त्री० लतरी, दुबिया मटर।

खिसियाना—अक० लजाना, शरमाना। खफा होना, क्रुद्ध होना।

खिसी(पु)—स्त्री० लज्जा। ढिठाई। दुखद घटना।

खिसौहाँ(पु)—वि० लज्जित सा। कुढा या रिसाया सा।

खींच—स्त्री० खीचने का भाव। ⊙**तान**= दो व्यक्तियो का एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग। खीचाखीची। क्लिष्ट कल्पना द्वारा किसी शब्द या वाक्य आदि का अन्यथा अर्थ करना। **खींचना**—सक० घसीटना। किसी कोश, थैले आदि मे से बाहर निकालना। किसी वस्तु को छोर या बीच से पकडकर अपनी ओर लाना। तानना। आकर्षित करना। सोखना, चूसना। भभके से अर्क, शराब आदि टपकाना। किसी वस्तु के गुण या तत्व को निकाल लेना। चित्रित करना, लकीर आदि बनाना। रोक रखना। मु०—**चित्त**~= मन को मोहित करना। **पीडा या दर्द** ~ = औषध आदि से दर्द दूर करना। **हाथ** ~= किसी काम का न करना, विरत होना। **खींचाखींची, खींचातानी**—स्त्री० दे० 'खीचतान'।

खीज—स्त्री० झुँझलाहट। वह बात जिससे कोई चिढे। **खीजना**—अक० दुखी और क्रुद्ध होना, झुँझलाना।

खीझ(पु)+—स्त्री० दे० 'खीज'। **खीझना**—अक० दे० 'खीजना'।

खीन(पु)+—वि० क्षीण। ⊙**ताई**(पु)—स्त्री० दे० 'क्षीणता'।

खीर—स्त्री० दूध मे पकाया हुआ चावल। दूध। मु०~**चटाना**=बच्चे को पहले पहल अन्न खिलाना।

खीरा—पु० ककडी की जाति का एक फल।

खीरी—स्त्री० चौपायो के थन के ऊपर का वह भाग जिसमे दूध रहता है, बाख। स्त्री० खिरनी।

खील—स्त्री० भूना हुआ धान, लावा। †स्त्री० दे० 'कील'। **खीला**+—पु० काँटा, कील।

खीली—स्त्री० पान का बीडा, खिल्ली।

खीवन, खीवनि—स्त्री० मतवालापन, मस्ती।

खीस(पु)†—वि० नष्ट, बरबाद। स्त्री० खीज, नाराजगी। खिसियाने का भाव। लज्जा। ओठ से बाहर निकले हुए दाँत।

खीसा—पु० थैला। जेब।

खुँदाना—सक० (घोडा) कुदाना।

खुदी—स्त्री० दे० 'खूँद'।

खुभी—स्त्री० दे० 'खुभी'।

खुआर(पु)†—वि० दे० 'ख्वार'।

खुक्ख—वि० जिसके पास कुछ न हो, छूछा।
खुखड़ी—स्त्री० तकुए पर चढाकर लपेटा हुआ सूत या ऊन, कुकडी। नैपाली कटार।
खुगीर—पु०[फा०] वह ऊनी कपडा जो घोडो के चारजामे के नीचे रहता है, नमदा। चारजामा, जीन। मु०~की भरती = अनावश्यक लोगो या पदार्थों की भरती।
खुचर, खुद्दुर—स्त्री० झूठमूठ अवगुण दिखलाने का कार्य।
खुजलाना—सक० खुजली मिटाने के लिये नख आदि को अग पर फेरना, सहलाना। अक० किसी अग मे सुरसुरी या खुजली मालूम होना।
खुजलाहट—स्त्री० सुरसुरी, खुजली। खुजली—स्त्री० खुजलाहट। एक रोग जिसमे शरीर बहुत खुजलाता है। एग रोग जिसमे शरीर मे खुजलानेवाले दाने निकल आते हैं।
खुजाना—सक०, अक० दे० 'खुजलाना'।
खुट—स्त्री० दे० 'कुट्टी'। वि० 'खोटा' का सक्षेप (समास में) ⊙चाल(पु) = स्त्री० दुष्टता, पाजीपन। खराब चालचलन। उपद्रव। ⊙चाली(पु) = वि० दुष्ट। बदचलन ⊙पन, पना = पु० खोटापन, दोष।
खुटक(पु)†, खुटका—स्त्री० खटका, आशका।
खुटाई—स्त्री० छोटापन।
खुटना(पु)†—अक० खुलना। अक० समाप्त होना। खुटाना—अक० समाप्त होना।
खुटिला—पु० करनफूल नामक एक गहना।
खुट्टी†—स्त्री० खेडी नाम की मिठाई। दे० 'कुट्टी'।
खुट्ठी†—स्त्री० 'खुरड'।
खुडुआ†—पु० दे० 'घोघी'।
खुड्डी, खुड्ढी—स्त्री० पाखाने मे पैर रखने का पायदान। पाखाना फिरने का गड्ढा।
खुतबा—पु० [अ०] तारीफ, प्रशसा। सामयिक राजा की प्रशसा। घोषणा। मु०—(किसी के नाम का) ~पढा जाना = सर्व साधारण को सूचना देने के लिये किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना।
खुत्थी, खुथी(पु)†—स्त्री० पौधो का भाग जो फसल काट लेने पर पृथ्वी मे गडा रह जाता है, खूँटी। थाती, धरोहर। वह पतली, लबी थैली जिसमे रुपया भरकर कमर मे बाँधते है। धन, दौलत।
खुद—अव्य० [फा०] स्वय, आप। ⊙काश्त = स्त्री० वह जमीन जिसे उसका मालिक स्वय जोते बोए पर वह सीर न हो। ⊙कुशी = स्त्री० आत्महत्या। ⊙गरज = वि० स्वार्थी। ⊙मुख्तार = वि० स्वतत्र, स्वच्छद। मु०—~ब~ = आप से आप, बिना दूसरे के यत्न के। खुदी—[फा०] अहकार। अभिमान, शेखी।
खुदना—अक० खोदा जाना।
खुदरा—पु० फुटकर चीज। रेजकारी।
खुदवाई—स्त्री० खुदवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। खुदवाना—सक० खोदने का काम कराना।
खुदा—पु० [फा०] ईश्वर। ⊙वंद—पुं० ईश्वर। अन्नदाता, मालिक। हुजूर। खुदाई—स्त्री० खोदने का भाव, काम या मजजूरी। स्त्री० [फा०] ईश्वरता। सृष्टि। खुदाई खिदमतगार—पु० भारत के स्वाधीनता आदोलन मे काग्रेस का साथ देनेवाला तत्कालीन उत्तरपश्चिम भारत के पठानो का एक राजनीतिक दल।
खुदाव—पु० खुदाई। खोदकर बनाए हुए बेलबूट, नक्काशी।
खुद्दी—स्त्री० चावल, दाल आदि के बहुत छोटे छोटे टुकडे।
खुनखुना—पु० बच्चो का एक प्रकार का बजनेवाला खिलौना। झुनझुना।
खुनस†—स्त्री० क्रोध, गुस्सा। खुनसाना—अक० क्रोध करना। खुनसी—वि० क्रोधी।
खुफिया—वि० गुप्त। ⊙पुलिस = स्त्री० गुप्त पुलिस जासूस।
खुभना—सक० चुभना, धँसना। खुभाना—सक० दे० 'चुभाना'।
खुमराना(पु)†—अक० उपद्रव के लिये घूमना, इतराते फिरना।
खुभी—स्त्री० कान मे पहनने का एक आभूषण, लौंग।
खुमान—वि० दीर्घजीवी (आशीर्वाद)।
खुमार—पु० [फा०] दे० 'खुमारी'। खुमारी—स्त्री० मद, नशा। नशा उतरने के समय

की हलकी थकावट। वह शिथिलता जो रात भर जागने से होती है।

खुमी—स्त्री० पत्रपुष्परहित क्षुद्र उद्‌भिद् की एक जाति जिसके अतर्गत भूफोड, ढिंगरी और कुकुरमुत्ता आदि है। सोने की कील जिसे लोग दाँतो मे जडवाते हैं। धातु का पोला छल्ला जो हाथी के दाँत पर चढाया जाता है।

खुरंड—पु० सूखें घाव के ऊपर की पपडी।

खुर—पु० [स०] सीगवाले चौपायो के पैर की टाप जो बीच से फटी होती है। ⊙**पका** = पु० [हि०] मुँह और खुरो मे दाने निकलने का चौपायो का एक रोग।

खुरक—स्त्री० सोच, अदेशा, खटक।

खुरखुर—स्त्री० कफ आदि से गले मे होनेवाला शब्द। घर घर शब्द। **खुरखुराना**—अक० गले मे कफ आदि से घरघराहट होना। कण या रवे आदि गडना। **खुरखुराहट**—स्त्री० गले मे कफ आदि का शब्द। खुरखुरापन।

खुरचन—स्त्री० खुरचकर निकाली जानेवाली वस्तु। **खुरचना**—सक० जमी हुई चीज को खोदकर अलग करना।

खुरचाल—स्त्री० दे० 'खुटचाल'।

खुरजी—स्त्री० [फा०] घोडे, बैल आदि पर सामान रखने का झोला।

खुरपा—पु० घास छीलने का औजार।

खुरमा—स्त्री० [अ०] छुहारा। एक पकवान या मिठाई।

खुराक—स्त्री० [फा०] भोजन सामग्री। खाने की मात्रा। एक बार सेवन की जानेवाली भोजन की मात्रा। **खुराकी**—स्त्री० वह धन जो खुराक के लिये दिया जाय।

खुराफात—स्त्री० [अ०] बेहूदी और रद्दी बात। गालीगलौज। झगड़ा, उपद्रव।

खुरी—स्त्री० टाप का चिह्न।

खुरुक(पु)—पु० दे० 'खुरक'।

खुर्द—वि० [फा०] छोटा। ⊙**बीन** = स्त्री० वह यत्र जिससे छोटी वस्तु बहुत बडी दिखाई देती है, सूक्ष्मदर्शक यत्र। ⊙**बुर्द** = क्रि० वि० नष्ट भ्रष्ट। **खुर्दा**—पु० [फा०] छोटी मोटी चीज।

खुर्राट—वि० बूढा। अनुभवी। चालाक, धूर्त।

खुलना—अक० [सक० खोलना] अवरोध या आवरण का दूर होना, बद न रहना, जैसे, किवाड खुलना। ऐसी वस्तु का हट जाना जो छाए या घेरे हो। दरार होना, फटना। बाँधने या जोडनेवाली वस्तु का हटना। जारी होना। सडक, नहर आदि तैयार होना। किसी कारखाने, सस्था, स्कूल आदि का नित्य का कार्य आरभ होना। किसी सवारी का रवाना हो जाना। गुप्त या गूढ बात का प्रकट हो जाना। कार्यारभ होना। मन की बात कहना। देखने मे अच्छा लगना, सजना। मु०—**खुलकर** = बिना रुकावट के। **खुलता रग** - हलका सुहावना रग। **खुले आम, खुले खजाने, खुले मैदान** = सबके सामने। **खुलवाना**—सक० [खोलना का प्रे०] खोलने का काम दूसरे से कराना। **खुला**—वि० बधनरहित। जिसे कोई रुकावट न हो। प्रकट। **खुलासा**—पु० [अ०] साराश। वि० खुला हुआ। अवरोधरहित। साफ साफ। **खुल्लमखुल्ला**—क्रि० वि० प्रकाश्य रूप से, खुलेआम।

खुवार(पु)—वि० दे० 'ख्वार'।

खुश—वि० [फा०] प्रसन्न। अच्छा (यौगिक शब्दो मे)। ⊙**किस्मत** = वि० भाग्यवान्। ⊙**किस्मती** = स्त्री० सौभाग्य। ⊙**खबरी** = स्त्री० अच्छी खबर। ⊙**दिल** = वि० सदा प्रसन्न रहनेवाला। हँसोड। ⊙**नसीब** = वि० भाग्यवान्। ⊙**बू** = स्त्री० सुगध। ⊙**मिजाज** = वि० हँसमुख। ⊙**मिजाजी** = स्त्री० मन का सदा प्रसन्न रहना। कुशल समाचार। ⊙**हाल** = वि० सुखी। **खुशी**—स्त्री० [फा०] आनद।

खुशामद—स्त्री० [फा०] प्रसन्न करने के लिये झूठी प्रशसा, चापलूसी। **खुशामदी**—वि० चापलूस। ⊙**टट्टू** = पुं० वह जिसका काम खुशामद करना हो।

खुश्क—वि० [फा०] जो तर न हो, सूखा। जिसमे रसिकता न हो। किसी दूसरी आमदनी के बिना। **खुश्की**—स्त्री० रूखापन, नीरसता। स्थल या भूमि।

खुशाल, खुस्याल(पु)—वि० खुशहाल, आनंदित।

खुही—स्त्री० दे० 'घुग्घी'।

खूँखार—वि० [फा०] खून पीनेवाला। भयंकर। क्रूर।

खूँट—पु० छोर, कोना। ओर, तरफ। भाग, हिस्सा। स्त्री० कान की मैल।

खूँटना—सक० पूछताछ करना, टोकना। छेडछाड करना। कम होना। दे० 'खोटना'।

खूँटा—पुं० पशु बाँधने के लिये जमीन मे गडी लकडी या मेख। **खूँटी**—स्त्री० छोटी मेख, छोटी गडी लकडी। अरहर, ज्वार आदि के पौधे की सूखी पेडी का अंश जो फसल काट लेने पर खेत मे खडा रह जाता है। गुल्ली, अंटी। क्षौर मे छूटी हुई बालो की जडे। सीमा, हद। मेख के आकार की लकडी।

खूँद—स्त्री० थोडी जगह मे घोडे का इधर उधर चलते या पैर पटकते रहना।

खूँदना—अक० पैर उठा उठाकर जल्दी जल्दी भूमि पर पटकना, कूदना। पैरो से रौदकर खराब करना। कुचलना।

खूक—पुं० [फा०] सूअर।

खूझा—पुं० फल के अंदर का निकम्मा रेशेदार भाग। उलझा हुआ रेशेदार लच्छा।

खूटना(पु)†—अक० रुक जाना। खतम होना। सक० छेडना, रोकटोक करना।

खूटा(पु)—वि० दे० 'खोटा'।

खूडी—स्त्री० कान मे पहनने का एक प्राचीन आभूषण, खुभी।

खूद, खूदड, खूदर†—पुं० किसी वस्तु के छान लेने या साफ कर लेने पर बचा हुआ निकम्मा भाग।

खून—पुं० [फा०] रक्त, रुधिर। हत्या, कतल। ⊙**खराबा** = पुं० [हिं०] मारकाट। ⊙**खराबी** = स्त्री० मारकाट। मु०~**उबलना या खौलना** = क्रोध से शरीर लाल होना। ~**का प्यासा** = वध का इच्छुक। ~**पीना** = मार डालना। बहुत तंग करना, सताना। **खूनी**—वि० [फा०] मार डालनेवाला, हत्यारा। अत्याचारी। लाल।

खूब—वि० [फा०] अच्छा, उत्तम। क्रि० वि० अच्छी तरह से। ⊙**कलाँ** = स्त्री० फारस की एक घास के बीज, खाकसीर। ⊙**सूरत** = वि० सुंदर। ⊙**सूरती** = स्त्री० सुंदरता। **खूबी**—स्त्री० भलाई। गुण, विशेषता।

खूबानी—स्त्री० [फा०] एक मेवा, जरदालू।

खूसट—पुं० उल्लू। वि० मनहूस।

खूसर†—पुं० दे० 'खूसट'।

खृष्टीय—वि० ईसा संबंधी, ईसाई। ईसवी।

खेकसा, खेखसा—पुं० परवल के आकार का एक रोएँदार फल या तरकारी, ककोडा।

खेचर—पुं० [सं०] वह जो आकाश मे चले। सूर्य, चंद्र आदि ग्रह। तारागण। वायु। देवता। विमान। पक्षी। बादल। भूत प्रेत। राक्षस। **खेचरी**—स्त्री० खेचर संबंधी। **खेचरी गुटिका**—स्त्री० योगसिद्ध गोली जिसे मुँह मे रखने से आकाश मे उडने की शक्ति आ जाती है (तंत्र)। **खेचरी मुद्रा**—स्त्री० योगसाधन की एक मुद्रा जिसमे मस्तक पर दृष्टि गडाने के बाद जीभ को उलटकर तालू से लगाते है।

खेटक—पुं० [सं०] खेडा, छोटा गाँव। सितारा। बलदेव जी की गदा। (पु) पुं० [हिं०] शिकार।

खेटकी—पुं० [सं०] भडुरी, भडेरिया। पुं० [हिं०] शिकारी। वधिक।

खेड़ा†—पुं० छोटा गाँव।

खेडी—स्त्री० एक प्रकार का देशी लोहा, झुरकुटिया लोहा। वह मांसखंड जो जरायुज जीवो के बच्चो की नाल के दूसरे छोर मे लगा रहता है।

खेत—पुं० अनाज आदि की फसल उत्पन्न करने योग्य जोतने बोने की जमीन। खडी फसल। किसी चीज के, विशेषत पशुओ आदि के, उत्पन्न होने का स्थान या देश। समरभूमि। तलवार का फल। मु०~**आना या रहना** = युद्ध मे मारा जाना। ~**करना** = समतल करना।

उदय के समय चद्रमा का पहले पहल प्रकाश फैलाना। ~रखना = समर मे विजय प्राप्त करना। **खेतिहर**—पुं० किसान। **खेती**—स्त्री० अनाज बोने का कार्य, कृषि। खेत में बोई हुई फसल। ⊙**बारी** = स्त्री० किसानी।

खेद—पु० [स०] दुःख। थकावट। **खेदित**—वि० दुखित। थका हुआ।

खेदना†—सक० मारकर हटाना, भगाना। शिकार के पीछे दौडना।

खेदा—पु० किसी बनैले पशु को मारने या पकडने के लिये घेरकर एक उपयुक्त स्थान पर लाने का काम, हाँका। शिकार।

खेना—सक० नाव के डाँडो का चलाना जिससे नाव चले। कालक्षेप करना।

खेप—स्त्री० उतनी वस्तु जितनी एक बार मे लाई जाय। गाडी आदि की एक बार की यात्रा।

खेपना—सक० बिताना।

खेम(पु)—पु० दे० 'क्षेम'।

खेमा—पु० [अ०] तबू, डेरा।

खेरा[1]—पु० खेडा, छोटा गाँव।

खेल—पु० मन बहलाने या व्यायाम के लिये इधर उधर उछल कूद, दौड धूप या और कोई मनोरंजन का कृत्य, जिसमे कभी कभी हार जीत भी होती है। मामला, बात। बहुत हलका तुच्छ काम। अभिनय, स्वांग आदि। विचित्र लीला। नाटक, सिनेमा। ⊙**क**(पु) = पु० खेलाडी। ⊙**मिचौनी** = स्त्री० दे० 'आँखमिचौनी'। ⊙**वाड़** = पु० खेल। ⊙**वाडी**—वि० बहुत खेलनेवाला। विनोदशील। **खेलना**—अक० मन बहलाने या व्यायाम के लिये इधर उधर उछलना, कूदना, दौडना आदि। कामक्रीडा करना। भूतप्रेत के प्रभाव से सिर और हाथ पैर आदि पटकना। विचरना। सक० मनबहलाव का काम करना। नाटक या अभिनय करना। **मु०—जान या जी पर ~** = बडे साहस का काम करना। **खेलाना**—सक० [अक० खेलना] किसी दूसरे को खेल मे लगाना। उलझाए रखना। दे० 'खिलवाना'।

खेला—पु० दे० 'सट्टा'।

खेलाड़ी—वि० खेलनेवाला। विनोदी। पु० खेलनेवाला व्यक्ति। तमाशा करनेवाला। ईश्वर।

खेलौना—पु० दे० 'खिलौना'।

खेवक(पु)—पु० मल्लाह।

खेवट—पु० पटवारी का एक कागज जिसमे हर पट्टीदार का नाम और हिस्सा लिखा रहता है। मल्लाह।

खेवना(पु)—सक० दे० 'खेना'।

खेवरा—पु० एक प्रकार के तात्रिको का सप्रदाय, इसके माननेवाले हाथ मे खप्पर लिए रहते है।

खेवा—पु० नाव का किराया। नाव द्वारा नदी पार करने का काम। बार, दफा। बोझ से भरी नाव। **खेवाई**—स्त्री० नाव खेने का काम या मजदूरी। **खेवैया**—वि० खेनेवाला। पु० मल्लाह।

खेसा—पु० बहुत मोटे सूत की लबी चादर।

खेसारी—स्त्री० दे० 'खिसारी'।

खेह—स्त्री० धूल, राख। **मु०~खाना** = धूल फाँकना, व्यर्थ समय खोना। दुर्दशाग्रस्त होना। **खेहर**†—स्त्री० दे० 'खेह'।

खेहा—पुं० दे० 'केह'।

खैंचना—सक० दे० 'खीचना'।

खैर—पु० कत्था। एक प्रकार का बबूल, कथकीकर। एक पक्षी। स्त्री० [फा०] कुशल, क्षेम। ⊙**आफियत** = स्त्री० कुशल मगल। ⊙**खाह** = वि० शुभचितक। **खैरियत**—स्त्री० कुशल, क्षेम। भलाई, कल्याण।

खैरा—वि० खैर के रग का।

खैरात—स्त्री० [अ०] दानपुण्य।

खैलर—स्त्री० मथानी।

खैला—पु० दे० 'खैलर'।

खोइचा—पु० साडी का आँचल, पल्ला, खूँट।

खोच—स्त्री० नुकीली चीज से छिलने का आघात, खरोंट। काँटे आदि मे फँसकर कपडे का फट जाना।

खोंचा—पु० बहेलियो का चिड़िया फँसाने

का लवा बाँस। मिठाई, पकवान आदि रखकर बेचने की बडी थाली।

खोचिया।—पु० भिखमगा।

खोची—स्त्री० भिखारी।

खोट—स्त्री० खोटने या नोचने की क्रिया। नोचने से पडा हुआ दाग, खरोट। **खोटना**—सक० किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोडना, नोचना।

खोडर—पु० पेड का भीतरी पोला भाग।

खोडा—वि० जिसका कोई अग भग हो।

खोता—पु० चिडियो का घोसला, नीड।

खोपा—पु० चोटी का गुच्छा, जूरा।

खोसना—सक० घुसाना, अटकाना।

खोआ—पु० दे० 'खोवा'।

खोई—स्त्री० रस निकाले हुए गन्ने के टुकडे, छोई। धान की खील, लाई।

खोखला—वि० पोला। सारहीन।

खोखा—पु० कागज जिसपर हुडी लिखी जाती है। हुडी जिसका रुपया चुका दिया गया हो।

खोगीर—दे० 'खुगीर'।

खोज—स्त्री० अनुसधान, तलाश। निशान, पता। गाडी के पहिए की लीक या पैर आदि का चिह्न। **खोजना**—सक० खोज करना, तलाश करना।

खोजा—पु० वह नपुसक जो मुसलमानी हरमो मे सेवक की भाँति रहता है। सेवक। माननीय व्यक्ति, सरदार। गुजराती मुसलमानो की एक जाति।

खोजी—वि० खोजनेवाला।

खोट—पु० ऐब, बुराई। उत्तम वस्तु मे (सोने, चाँदी आदि) निकृष्ट वस्तु की मिलावट। ऐसी मिलाई हुई वस्तु। ⊙ता(प) = स्त्री० खोटापन, बुराई। **खोटा**—वि० ऐबवाला, बुरा, 'खरा' का उलटा। ⊙ई(प) = स्त्री० खोटापन, बुराई, कपट। ⊙खरा = वि० भला बुरा। मु०—**खोटी खरी सुनाना** = फटकारना।

खोड़—स्त्री० भूत प्रेत आदि की बाधा। पु० वृक्ष की लकडी के सड जाने से होनेवाला छेद। **खोड़रा**—पु० पुराने पेड का खोखला भाग।

खोद—पु० [फा] शिरस्त्राण, युद्ध मे पहनने का लोहे का टोप।

खोदना—सक० मिट्टी आदि हटाकर गहरा करना, गड्ढा करना, उखाडना या गिरना। नक्काशी करना। उँगली, छडी आदि से छूना या दबाना। छेड-छाड करना। उत्तेजित करना, उभाडना। **खोद विनोद**—स्त्री० छानबीन, जाँच पडताल। **खोदाई**—स्त्री० खोदने का काम। खोदने की मजदूरी।

खोनचा—पु० मिठाई आदि रखकर बेचने की बडी परात या थाल।

खोना—सक० अपने पास की वस्तु को निकल जाने देना, गँवाना। भूल से किसी वस्तु को कही छोड देना। खराब करना, बिगाडना। अक० गँवाया जाना, भूल से छूट जाना।

खोपडा—पु० सिर की हड्डी, कपाल। सिर। गरी का गोला। नारियल। भिक्षुको का खप्पर। **खोपड़ी**—स्त्री० सिर की हड्डी, कपाल। सिर। मु०—**अधी या औंधी~का** = उलटी समझ का, मूर्ख। **~खा जाना या चाट जाना** = बकवाद करके तग करना।

खोपा—पु० छप्पर का कोना। किसी रास्ते की ओर पडनेवाला मकान का कोना। स्त्रियो का केशविन्यास। जूड़ा बँधी हुई वेणी। गरी का गोला।

खोम(प)—पु० समूह, झुड।

खोय—स्त्री० आदत, बान। (प)कंदरा, खोह।

खोया, खोवा—पु० आँच पर चढाकर इतना गाढा किया हुआ दूध कि उसकी पिंडी बँध सके, मावा।

खोर—स्त्री० संकरी गली, कूचा। चौपायो को चारा देने की नाँद। स्नान। **खोरना**(प)।—अक० नहाना। 'विविध काल यमुना जल खोरैं' (सूर०)।

खोरा—पु० कटोरा, बेला। पानी पीने का बरतन, गिलास। (प)।वि० लंगडा-लूला, अगभग।

खोरी।—स्त्री० तंग गली। ऐब। बुराई।

मस्तक पर चदन का आडा या धनुषाकार तिलक, खोर।

खोरिया—स्त्री० छोटी कटोरी। छोटे चमकीले बुदे।

खोल—पु०[फा०]ऊपर से चढा हुआ ढकना, गिलाफ। कीडो का बदलता रहनेवाला उपरी चमडा। मोटी चादर। **खोली**—स्त्री० आवरण, गिलाफ।

खोलना—सक० [अक० खुलना] छिपाने या रोकनेवाली वस्तु का हटाना (जैसे,किवाड खोलना)। दरार या छेद करना। बधन अलग करना या तोडना। किसी क्रम को चलाना या जारी करना। सडक, नहर आदि तैयार करना। दुकान, दफ्तर, सस्था आदि का दैनिक कार्य आरभ करना। गुप्त या गूढ बात को स्पष्ट करना।

खोह—स्त्री० गुफा, कदरा।

खोही—स्त्री० पत्तो की छतरी। घुग्घी।

खौं—स्त्री० खात, गड्ढा। अन्न सचित करने का गड्ढा।

खौंचा—पु० साढे छह का पहाड़ा। मिठाई, पकवान आदि रखकर बेचने की बडी थाली, खोचा।

खौफ—पु० [अ०] डर, दहशत।

खौर—स्त्री० मस्तकपर चदन का आडा या धनुषाकार तिलक। स्त्रियो का मस्तक पर पहनने का एक गहना। **खौरना**—सक० खौर लगाना, तिलक करना। चुनना। छाँटना, क्षीण करना।

खौरहा—वि० जिसके सिर के बाल झड गए हो। जिस पशु के शरीर मे खौरा या खुजली का रोग हो।

खौरा—पु० एक प्रकार की बडी खुजली। * वि० जिसके खौरा रोग हुआ हो।

खौलना—अक० [सक० खौलाना] उबलना, जोश खाना।

खौलाना—सक० [अक० खौलना] उबालना, गरम करना।

ख्यात—वि० [सं०] प्रसिद्ध, विदित।

ख्याति—स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि शोहरत।

ख्याल—पु० [अ०] ध्यान। विचार, भाव। अटकल, अनुमान। लावनी गाने का एक ढग। **मु०~रखना** = ध्यान रखना, देखते भालते रहना। **~से उतर जाना** = भूल जाना। ख्याला(पु)†—पु० खेल। **ख्याली**—वि० कल्पित, फर्जी। (पु)खेल या कौतुक करनेवाला। **मु०~पुलाव पकाना** = असभव बाते सोचना।

खिृष्टान—पु० ईसाई।

खिृष्टीय—वि० ईसाई। ईसा सबधी। ईसाई धर्म सबधी।

खिृष्ट—पु० हजरत ईसा मसीह।

ख्वाजा—पु० [फा०] मालिक। सरदार। ऊँचे दर्जे का मुसलमान फकीर। बडा व्यापारी। रनिवास का नपुसक भृत्य, खोजा।

ख्वाब—पु० [फा०] सोने की अवस्था, नीद। स्वप्न। ⊙**गाह** = स्त्री० सोने का घर, शयनागार।

ख्वार—वि० [फा०]खराब, नष्ट। तिरस्कृत।

ख्वारी—स्त्री० [फा०] खराबी, दुर्दशा। सर्वनाश।

ख्वाह—अव्य० [फा०] अथवा, या।⊙ **मख्वाह** = कोई चाहे या न चाहे अपनी टेक से। अवश्य।

ख्वाहिश—स्त्री० [फा०] इच्छा, अभिलाषा।

ग

ग—व्यजन मे कवर्ग का तीसरा वर्ण।

गंग—पु० एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे कुल नौ मात्राएँ और अत मे दो गुरु रहते हैं। स्त्री० गगा नदी।⊙**बरार** = पु० वह जमीन जो किसी नदी की धारा के हटने से निकल आती है। ⊙**शिकस्त** = पु० जमीन जिसे कोई नदी काट ले गयी हो।

गंगा—स्त्री० [सं०] भारत मे हिमालय मे निकलनेवाली तथा बहुत पवित्र मानी

जानेवाली नदी, जाह्नवी। ⊙गति=स्त्री० मृत्यु। ⊙जमनी=वि० [हिं०] मिला-जुला, दुरगा। दो धातुओं का बना हुआ। जिसपर सोने चाँदी दोनो का काम हो। काला उजला, स्याह सफेद। ⊙जल=पु० गगा का पानी। एक बारीक सफेद कपडा। ⊙जली=स्त्री० [हिं०] यात्रियो द्वारा गगाजल भरकर ले जाने का धातु या काँच का बरतन। धातु की सुराही। ⊙धर=पु० शिव। एक छद, गगोदक। मु०~गगाजली उठाना=गगाजल हाथ में लेकर कसम खाना। ⊙पुत्र=पु० भीष्म। गगा आदि के घाटो पर दान लेने-वाले एक प्रकार के ब्राह्मण। ⊙यात्रा=स्त्री० मरणासन्न व्यक्ति का गगातट पर मरने के लिये गमन। मृत्यु। ⊙लाभ=पु० मृत्यु। ⊙सागर=पु० एक तीर्थ जहाँ गगा समुद्र मे गिरती हैं। एक बडी टोटी-दार झारी।

गंगाल—पु० पानी रखने का बडा बरतन, कडाल।

गँगेरन—स्त्री० चतुर्विध बला के अतर्गत माना जानेवाले एक पौधा, नागबला।

गगोक(पु), गगोझ(पु)—पु० गगोदक।

गंगोदक—पु० [स०] गगाजल। चौबीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमे आठ रगण होते है।

गंगौटी—स्त्री० गगा के किनारे की मिट्टी।

गंज—पु० सिर के बाल उडने का एक रोग। सिर मे छोटी फुसियो का एक रोग। पु० [फा०] खजाना, कोष। ढेर, अबार। समूह, झुड। गल्ले की मडी। गल्लाखाना, भडार। वह चीज जिसमे बहुत सी काम की चीजें एकत्र हो। पु० [सं०] अवज्ञा, तिरस्कार।

गंजन—पु० [सं०] अवज्ञा, तिरस्कार। पीडा, कष्ट। नाश। गजना—सक० [हिं०] अवज्ञा या निरादर करना। नाश करना। गंजनिहार—वि० नष्ट करनेवाला, मारने-वाला।

गंजा—पु० गज रोग। वि० गज रोगवाला, खल्वाट।

गंजाना†—सक० दे० 'गजना'।

गजिया—स्त्री० सूत की बुनी हुई जालीदार थैली। घास रखने की रस्सी की थैली।

गजी—स्त्री० ढेर, समूह। †शकरकद। बुनी हुई छोटी कुरती या बडी, बनियायन। वि० दे० 'गँजेडी'।

गजीफा—पु० [फा०] आठ रग के ९६ पत्तो से खेला जानेवाला एक खेल।

गँजेड़ी—वि० गाँजा पीनेवाला।

गँठ—स्त्री० 'गाँठ' का सक्षेप (समास मे)। ⊙जोडा=पु० विवाह की एक रस्म जिसमे वर और वधू के वस्त्र को परस्पर बाँध देते हैं। ⊙बधन=पु० दे० 'गँठ-जोडा'।

गँठवाना, गँठाना—सक० [गाँठना का प्रे०] सिलवाना। मोटी सिलाई करवाना। जुडवाना।

गंड—पु० [सं०] कपोल, गाल। कनपटी। गले मे पहनने का गडा। फोड़ा। दाग, लकीर। गोल मडलाकार चिह्न या लकीर। गाँठ। बीथी नामक नाटक का अग जिसमें सहसा प्रश्नोत्तर होते हैं। ⊙माला=स्त्री० गले मे छोटी छोटी गिल्टियाँ सूजने का एक रोग, कठमाला। ⊙स्थल=पु० हाथी की कनपटी। कनपटी।

गंडक—पु० [सं०] गले मे पहनने का जतर या गडा। गडकी नदी का तटस्थ देश तथा वहाँ के निवासी।

गंडका—स्त्री० [सं०] २० वर्णों का एक वृत्त।

गंडा—पु० गाँठ। मत्र पढकर गाँठ लगाया हुआ धागा जिससे लोग रोग या भूत प्रेत की बाधा दूर करने के लिये गले मे बाँधते हैं। पैसा कौडी आदि गिनने मे चार की सख्या का एक समूह। आडी धारी। तोते चिड़ियो आदि के गले की रगीन धारी, कंठा। फोडा, फुसी या दाना। गिल्टी। निशान। गाल, कपोल।

गंडासा, गँड़ासा†—पु० चौपायो के चारे या घास के टुकडे काटने का एक हथियार। एक शस्त्र, परशु।

गंडूष—[सं०] चुल्लू। कुल्ली। हाथी की सूँड की नोक।

गँडेरी—स्त्री० गन्ने का छोटा टुकड़ा।

गंडोल—पुं० कच्ची शकर। ईख। ग्रास, कौर।
गंता—वि० [सं०] जानेवाला।
गदगी—स्त्री० [फा०] मैलापन। अपवित्रता। मैला, मल।
गँदला—वि० मैला कुचैला, गदा।
गंदा—वि० [फा०] मैला, मलिन। अपवित्र। घिनौना।
गदुम—पुं० [फा०] गेहूँ, गोधूम। **गदुमी**—वि० गदुम के रग का, ललाई लिए भूरा।
गंध—स्त्री० [स०] बास, महक। सुगध। शरीर मे लगाया जानेवाला सुगधित द्रव्य। लेश, अणु मात्र। गधक। ⊙**पत्र**—पुं० सफेद तुलसी। मरुवा। नारगी। बेल। ⊙**बिलाव**=पुं० [हिं०] नेवले की तरह का एक मासभक्षी पशु जिसकी नाभि से सुगधित चेप निकलता है। ⊙**मार्जार**=पुं० दे० 'गधबिलाव'। ⊙**मादन**=पुं० पुराणो मे सुगधमय वनो के लिये प्रसिद्ध एक पहाड। भौंरा। ⊙**वाह**=पुं० वायु, हवा। चदन। वि० गध ले जानेवाला। खुशबूदार।
गंधक—पुं० [सं०] एक जलनेवाला पीला खनिज पदार्थ। **गधकी**—वि० [हिं०] गधक के रग का, हलका पीला।
गंधर्व—पु० [सं०] गाने बजाने मे प्रवीण एक देवयोनि। मृग। घोडा। गाने और वेश्यावृत्ति करनेवाली एक जाति। विधवा स्त्री का दूसरा पति। ⊙**नगर**=पुं० आकाश या स्थल मे नगर, ग्राम आदि का मिथ्या आभास। भ्रम। चद्रमा के किनारे का मडल जो हलकी बदली मे दिखाई देता है। सध्या के समय पश्चिम दिशा मे रग बिरगे बादलो के बीच फैली हुई लाली। ⊙**विद्या**—स्त्री० सगीत। ⊙**विवाह**=पु० आठ प्रकार के विवाहो मे से वह जिसमे वर और वधू अपने मन से सबध कर लेते है। ⊙**वेद**=पु० सगीतशास्त्र (चार उपवेदो मे से एक)।
गंधा—वि० स्त्री० [सं०] गधवाली (यौगिक शब्दो के अत मे), जैसे, मत्स्यगधा।
गंधाना†—सक० दुर्गंध करना।
गंधाबिरोजा—पु० चीड वृक्ष का गोद।
गंधार—पु० दे० 'गाधार'।
गँधिया—पुं० एक बदबूदार कीडा। एक घास।
गंधी—पु० [सं०] अत्तार। गँधिया घास। गँधिया कीडा।
गँधीला—वि० बदबूदार।
गंभीर—वि० [सं०] जिसकी थाह जल्दी न मिले, गहरा। घना, गहन। जिसके अर्थ तक पहुँचाना कठिन हो, गूढ। घोर, भारी। शात, सजीदा।
गँव—स्त्री० घात, दाँव। मतलब, प्रयोजन। मौका। ढग, उपाय। **मु०~से**=युक्ति से। Ⓟ†धीरे से।
गँवई—स्त्री० छोटा गाँव।
गँवरमसला—पु० गँवारो की कहावत या उक्ति।
गँवाना—सक० बिताना, काटना। खोना।
गँवार—वि० गाँव का रहनेवाला, देहाती। असभ्य। मूर्ख। अनाड़ी। **गँवारी**—स्त्री० गँवारपन, देहातीपन। मूर्खता। गँवार स्त्री। वि० गँवार जैसा। भद्दा, बदसूरत। **गँवारू**—वि० दे० 'गँवारी'। **गँवेला**†—वि० दे० 'गँवार'।
गँसⓅ—पु० द्वेष, बैर। लाग की बात, ताना। स्त्री० तीर की नोक।
गँसना†Ⓟ—सक० जकडना, गाँठना। बुनावट मे सूतो को परस्पर खूब मिलाना। अक० गँठ जाना, कस जाना। ठसाठस भरना।
गँसीला—वि० नोकदार, चुभनेवाला।
गँहना†—सक० ग्रहण करना, पकडना। ठहरना, रुकना।
ग—पु० [सं०] गीत। गधर्व। गुरु मात्रा। गणेश। वि० गानेवाला। जानेवाला।
गइंदⓅ—पु० दे० 'गयद'। **गइ**Ⓟ—पुं० हाथी, गज।
गइनाही†Ⓟ—स्त्री० ज्ञान, जानकारी।
गईबहोर—वि० खोई हुई वस्तु को देने अथवा बिगडी हुई को बनानेवाला।
गऊ—स्त्री० गाय, गौ।
गगन—पु० [सं०] आकाश। शून्य स्थान। छप्पय छद का एक भेद। ⊙**चर**=पुं० पक्षी। ⊙**चुबी**=वि० आकाश को चूमनेवाला। बहुत ऊँचा। ⊙**धूल**=स्त्री० [हिं०] खुभी का एक भेद। केतकी के फूल

की धूल । ⊙वाटिका = स्त्री० आकाश की वाटिका । असभव बातें । ⊙भेड़ = स्त्री० [हि०] करांकुल या कूंज पक्षी । ⊙भेदी = वि० आकाश को भेदनेवाला, बहुत ऊंचा (स्वर आदि) । ⊙स्पर्शी = वि० आकाश को छूनेवाला, बहुत ऊंचा (मकान आदि) ।

गगरा—पुं० [स्त्री० अल्पा० गगरी] धातु का घडा, कलसा ।

गच—पु० नरम वस्तु मे कडी या पैनी वस्तु के धंसने का शब्द । चूने सुरखी का मसाला । चूने सुरखी से पटी हुई जमीन, पक्का फर्श । ⊙कारी = स्त्री० गच या चूने सुरखी का काम । ⊙गीर = पु० गच बनानेवाला व्यक्ति ।

गचना(पु)—सक० बहुत जल्दी या कसकर भरना । दे० 'गांसना' ।

गछ—पु० पेड, वृक्ष । पौधा ।

गछना(पु)—अक० जाना, चलना । सक० चलाना, निबाहना । अपने जिम्मे लेना ।

गजंद(पु)—पुं० दे० 'गयद' ।

गज—पु० [फा०] १६ गिरह या तीन फुट की एक माप । पुराने ढग की बदूक भरने मे प्रयुक्त छड़ । सारंगी आदि बजाने की कमानी । एक प्रकार का तीर । पु० [सं०] हाथी । एक राक्षस । आठ की सख्या । ⊙गति = स्त्री० हाथी की सी मद चाल । हाथी की चाल । एक वर्णवृत्त । ⊙गमन = पुं० हाथी की सी मद चाल । ⊙गामिनी = वि० स्त्री० हाथी के समान मंद गति से चलनेवाली । ⊙गाह = पु० [हि०] हाथी की झूल । ⊙गौन(पु) = पुं० दे० 'गजगमन' । ⊙गौहर(पु) = पुं० गजमुक्ता । ⊙दंत = पुं० हाथी का दांत । दीवार मे गडी खूंटी । दांत के ऊपर निकला हुआ दांत । ⊙दंती = वि० हाथीदांत का बना हुआ । ⊙दान = पुं० हाथी का दान । हाथी का मद । ⊙नाल = स्त्री० हाथी से खिचनेवाली बड़ी तोप । ⊙पति = पुं० बहुत बड़ा हाथी । राजा जिसके पास बहुत से हाथी हो । ⊙पुट = पुं० भोजन या औषध फूंकने के लिये जमीन मे खोदा हुआ गड्ढा । ऐसे गड्ढो मे धातु फूंकने की एक रीति । ⊙बदन(पु) = पुं० दे० 'गजवदन' । ⊙बांक, ⊙बाग = पुं० हाथी का अकुश । ⊙मणि = पुं० गजमुक्ता । ⊙मुक्ता = स्त्री० हाथी के मस्तक से निकलनेवाला एक मोती (प्राचीन विश्वास से) । ⊙मोती(पु) = पुं० गजमुक्ता । ⊙राज = पुं० बडा हाथी । ⊙वदन = पुं० गणेश । ⊙बान(पु) = पुं० महावत । ⊙शाला = स्त्री० हाथी बांधने का घर, फीलखाना । गजानन—पुं० गणेश । गजारि—पुं० सिंह । गजेंद्र—पुं० ऐरावत । बडा हाथी, गजराज ।

गजब—पुं० [अ०] गुस्सा, कोप । आफत, विपत्ति । जुल्म । विलक्षण बात । मु० ~ का = विलक्षण, अपूर्व ।

गजर—पुं० हर पहर पर घंटा बजने का शब्द । सवेरे के समय का घंटा । जगाने की घंटी । ⊙दम = क्रि० वि० तडके, सवेरे ।

गजरा—पुं० फूलो की घनी गुंथी हुई माला । कलाई मे पहनने का एक गहना । एक रेशमी कपडा ।

गजल—स्त्री० [अ०] फारसी और उर्दू में शृंगार रस का एक मुक्तक काव्य ।

गजा—पुं० नगाडा बजाने का डंडा ।

गजाधर—पुं० दे० 'गदाधर' ।

गजी—स्त्री० एक मोटा देशी कपडा, गाढ़ा । स्त्री० [सं०] हथिनी ।

गजूह(पु)—पुं० हाथियो का झुंड । युद्ध में एक व्यूहविशेष ।

गजफा—पुं० दूध, पानी आदि के छोटे बुलबुलो का समूह, गाज । †पुं० ढेर, गांज । खजाना । लाभ ।

गटई†—स्त्री० गला । दे० 'गिट्टी' । दे० 'गोटी' ।

गटकना—सक० खाना, निगलना । हडपना, दबा लेना ।

गटगट—पु० घूंट घूंट पीने मे गले से उत्पन्न शब्द ।

गटपट—पु० बहुत अधिक मेल । सहवास, प्रसग ।

गटा(पु)—पु० दे० 'गट्टा'।
गटी(पु)—स्त्री० गाँठ। लपेट।
गट्ट—पु० दे० 'गटगट'। मु करना = निगल जाना, खाना। हड़प जाना, दबा बैठना।
गट्टा—पु० हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़, कलाई। पैर की नली और तलुए के बीच की गाँठ। गाँठ। बीज। एक मिठाई।
गट्ठर—पु० बड़ी गठरी।
गट्ठा—पु० घास, लकड़ी आदि का बोझ, गट्ठर। बड़ी गठरी। प्याज या लहसुन की गाँठ।
गठना—अक० परस्पर मिलकर एक होना, जुड़ना, सटना। मोटी सिलाई होना। गुप्त विचार आदि मे सहमत या सम्मिलित होना। दाँव पर चढ़ना, सधना। अच्छी तरह निर्मित होना। सभोग होना। अधिक मेल मिलाप होना। गठा बदन = हृष्ट पुष्ट और कड़ा शरीर।
गठरी—स्त्री० कपड़े मे गाँठ देकर बाँधा हुआ सामान, बड़ी पोटली। जमा की गई दौलत। मु० ~ मारना = अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना, ठगना।
गठवाँसी—स्त्री० गट्ठे या विस्वे का बीसवाँ अश, बिस्वासी।
गठवाना, गठाना—सक० [गाठना का प्रे०] सिलवाना। मोटी सिलाई करवाना। जुड़वाना।
गठा—(पु) पुं० दे० 'गट्ठा'।
गठाव—पु० दे० 'गढन'।
गठित—वि० गठा हुआ।
गठिबंध(पु)—पु० दे० 'गठबधन'।
गठिया—स्त्री० बोझ लादने का बोरा या दोहरा थैला, खुरजी। बड़ी गठरी। जोड़ो मे सूजन और पीड़ा का एक रोग।
गठियाना†—सक० गाँठ लगाना। गाँठ मे बाँधना।
गठीला—वि० गाँठवाला। गठा हुआ, सुडौल। मजबूत।
गठौत, गठौती—स्त्री० मेलमिलाप, घनिष्ठता। मिलकर पक्की की हुई बात, अभिसधि।
गड—पुं० [सं०] ओट, आड़। घेरा, चहारदीवारी। गड्ढा।
गड़गड़ाना—अक० गरजना, 'गड़गड़' शब्द करना। सक० 'गड़गड़' शब्द कराना।
गड़गड़ाहट—स्त्री० 'गड़गड़' शब्द, बादल गरजने या गाड़ी के चलने का शब्द।
गड़गड़ी—स्त्री० एक तरह की डुग्गी, नगाड़ा।
गड़[illegible]र—पुं० मस्त हाथी के साथ भाला लिए हुए चलनेवाला महावत।
गड़ना—अक० [सक० गाड़ना] धँसना, चुभना। चुभने की सी पीड़ा पहुँचाना। दर्द करना, दुखना। मिट्टी आदि के नीचे दबना। समाना, पैठना। खड़ा होना, भूमि पर ठहरना। स्थिर होना, डटना। मु० गड़ जाना = लज्जित होना। गड़े मुर्दे उखाड़ना = पुरानी बाते उभाड़ना।
गड़प—स्त्री० पानी, कीचड़ आदि मे किसी वस्तु के सहसा घुसने का शब्द। **गड़पना**—सक० निगलना, खा लेना। हजम करना, अनुचित अधिकार करना।
गड़बड़—वि० ऊँचा नीचा, असमतल। अडबड, अस्तव्यस्त। पुं० क्रमभंग, अव्यवस्था। कुप्रबध। ⊙झाला = पुं० गोलमाल, अव्यवस्था। उपद्रव, दंगा। **गड़बड़ाना**—अक० गड़बड़ी में पड़ना, चक्कर या भूल मे पड़ना। अव्यवस्थित या क्रमभग होना। बिगड़ना, नष्ट होना। सक० गड़बड़ी मे डालना। भ्रम में डालना। बिगाड़ना। **गड़बड़िया**—वि० गड़बड़ करनेवाला, उपद्रवी। **गड़बड़ी**—स्त्री० दे० 'गड़बड़'।
गड़रिया, गड़रिया†—पुं० भेड़ें पालने और उनके ऊन से कंबल बनानेवाली जाति।
गड़हा—पुं० दे० 'गड्ढा'।
गड़ाना†—सक० चुभाना, धँसाना। [गाड़ना का प्रे०] गाड़ने मे लगाना।
गड़ायत(पु)—वि० गड़ने या चुभनेवाला।
गड़ारी—स्त्री० मंडलाकार रेखा, वृत्त।

घेरा। चक्र। आड़ी धारी। कुएँ से पानी खींचने की गोल पहिया। ⊙दार=वि० जिसपर धारियाँ पड़ी हों। घेरदार।

गड़ई—स्त्री० पानी पाने का छोटा टोंटीदार बरतन, झारी।

गड़ुवा—पुं० टोंटीदार लोटा।

गड़ेरिया—पु० दे० 'गडरिया'।

गड़ौना—पु० एक प्रकार का पान। काँटा।

गड्ड—पुं० एक ही आकार की एक के ऊपर एक जमाकर रखी हुई वस्तुओं का समूह, गज, गड्डी। (पु)† गड्ढा।

गड्डबड्ड, गड्डमड्ड—पुं० क्रमशून्य मिश्रण, घपला। वि० अडबड, बिना सिलसिले का मिला हुआ।

गड्डरिक—पुं० [सं०] गडरिया। वि० भेड संबंधी।

गड्डाम†—वि० बदमाश, पाजी।

गड्डी—स्त्री० गड्ड, गज। †गाडी।

गड्ढा—पुं० जमीन में गहरा या खुदा हुआ स्थान, गड्हा। खड्ड। मु०—किसी के लिये ~खोदना=किसी के अनिष्ट का प्रयत्न करना।

गढ़ंत—वि० कल्पित, बनावटी (बात)।

गढ़—पुं० किला, दुर्ग। ⊙पति=पु० किलेदार, राजा, सरदार। ⊙वई=पुं० गढ़पति। ⊙वाल=पु० गढवाला। हिमालय की तलहटी में उत्तर प्रदेश का एक जिला। ⊙वै(पु)=पुं० दे० 'गढ़पति'। मु०~जीतना=किला जीतना। कठिन काम करना। **गढ़ी**—स्त्री० छोटा किला। **गढ़ीस**(पु)—पुं० गढ का स्वामी या प्रधान अधिकारी। **गढ़ोई** (पु)†—पुं० दे० 'गढपति'।

गढ़त, गढ़न—स्त्री० गढने की क्रिया या भाव, बनावट। **गढ़ना**—सक० छाँटकर काम की वस्तु बनाना, रचना। सुडौल करना। बात बनाना। मारना पीटना। **गढ़ाना**—सक० [गढना का प्रे०] गढने का काम करवाना, गढवाना। †अक० कष्टकर लगना, खलना। **गढिया**—वि० गढ़नेवाला। **गढ़ैया**—वि० गढने-वाला, बनानेवाला।

गण—पु० [सं०] समूह, झुंड। श्रेणी, जाति। किसी विषय में समान मनुष्यों का समुदाय। सेना का तीन गुल्म या समुदाय। छंद:शास्त्र में तीन वर्णों के समूह जो लघु, गुरु के क्रम से आठ माने गए हैं—यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण। व्याकरण में धातुओं और शब्दों के वे समूह जिनमें समान लोप, आगम और वर्ण-विकार आदि हों। शिव के पारिषद्। दूत या सेवक। परिचारक वर्ग। पक्षपाती, अनुयायी। ⊙तंत्र=पुं० प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य। प्रजा से निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा शासित राष्ट्र। ⊙देवता=पुं० समूहचारी देवता (जैसे, विश्वेदेवा, रुद्र, आदित्य आदि)। ⊙नायक=पुं० गणेश, गजानन। ⊙पति=पुं० समाज, जाति या सेना का नायक। गणेश। शिव। ⊙राज्य=पुं० वह शासन जो प्रजा के चुने हुए मुखियों, प्रतिनिधियों या सरदारों द्वारा चलाया जाता हो। **गणाधिप**—पुं० गणेश। गणों का मालिक। साधुओं का अधिपति या महंत। **गणेश**—पुं० गणपति, हिंदुओं के द्वारा शुभ कामों में प्रथम पूजनीय देवता।

गणक—पुं० [सं०] ज्योतिषी, गणना करनेवाला।

गणन—पुं० [सं०] गिनना। गिनती। **गणना**—स्त्री० गिनती, शुमार। हिसाब। संख्या।

गणिका—स्त्री० [सं०] वेश्या।

गणित—पुं० [सं०] गणनाशास्त्र जिसके अंकगणित, बीजगणित और ज्यामिति ये तीन अंग हैं। हिसाब। ⊙ज्ञ=वि० गणित जाननेवाला, ज्योतिषी।

गण्य—वि० [सं०] गिनने के योग्य। जिसकी पूछ हो, मान्य। ⊙मान्य=वि० प्रतिष्ठित।

गत—वि० [सं०] गया हुआ, बीता हुआ। मरा हुआ। रहित, हीन। स्त्री० वेश, रूपरंग। अवस्था, दशा। उपयोग। दुर्गति। नाश। मृतक का क्रिया कर्म। नृत्य में शरीर का विशेष संचालन और मुद्रा। बाजों की

कुछ ध्वनियो का क्रमबद्ध मिलान। मु० ~बनाना = दुर्दशा करना। **गताक**—वि० गया, बीता, निकम्मा। पुं० पिछला अक। पिछली सख्या (पत्र, पत्रिका आदि की)। **गतानुगतिक**—वि० पुराने उदाहरण पर चलनेवाला, दूसरो के पीछे चलनेवाला। अधानुकरण करनेवाला।

गतका—पुं० लकडी का खेलने का डडा जिस पर चमडे का खोल चढा रहता है। फेरी और गतके से खेला जानेवाला एक खेल।

गति—स्त्री० [स०] चाल, गमन। हिलना डोलना, हरकत। हालत, दशा। वेश, रूप रग। प्रवेश, पैठ। दौड, तदबीर। सहारा। प्रयत्न। लीला, माया। रीति, ढग। मृत्यु के बाद जीवात्मा की दशा। चाल, गैतरा। ग्रहो की चाल। ताल और स्वर से अगचालन। सगीत मे वाघ की बोली या ध्वनियो का क्रमबद्ध मिलान, गत।

गत्ता—पुं० कई परतो को साटकर बनाई हुई कागज की दफ्ती।

गत्तालखाता—पुं० गई बीती रकम का लेखा, बट्टाखाता।

गथ (पु)†—पुं० पूँजी, जमा। माल। झुड।

गथना (पु)—सक० एक मे एक जोडना, गूँथना। बात गढना।

गद—पुं० [सं०] बिष। रोग। गुलगुली वस्तु पर आघात का शब्द।

गदकारा—वि० पु० मुलायम और दब जानेवाला, गुदगुदा।

गदगदा (पु)—वि० दे० 'गद्गद'।

गदना (पु)—सक० कहना।

गदर—पु० [अ०] बलवा, विद्रोह। हलचल, खलबली।

गदराना—अक० (फलो आदि का) पकने पर होना। जवानी मे अगो का भरना। आँख मे कीचड आदि का आना। वि० गदराया हुआ। अक० गँदला होना।

गदह—पु० [हिं०] 'गदहा' का के० समा० मे प्रयुक्त रूप। ⊙ **पचीसी** = स्त्री० दे० 'गधा पचीसी'। ⊙ **पन** = पु० दे० 'गधापन'।

गदहा—पु० [सं०] रोग हरनेवाला, वैद्य। पु० [हिं०] दे० 'गधा'।

गदा—स्त्री० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र जिसमे एक डडे के सिरे पर भारी लट्टू रहता था। ⊙ **धर** = पु० विष्णु, नारायण। वि० गदा धारण करनेवाला। पु० [फा०] भिखारी, फकीर। ⊙ **ई** = वि० [हि०] तुच्छ, नीच, क्षुद्र।

गदेला—पु० रुई आदि भरा हुआ मोटा ओढना या बिछौना। हाथी की पीठ पर कसने का भारी गद्दा। †छोटा लडका।

गद्गद—वि० [स०] अत्यधिक हर्ष, प्रेम आदि के आवेग से पूर्ण। अधिक हर्ष, प्रेम आदि के कारण रुका हुआ या अस्पष्ट। प्रसन्न।

गद्द—पु० मुलायम जगह पर किसी चीज के गिरने का शब्द। गरिष्ठ चीज से पेट का भारीपन।

गद्दर—वि० जो अच्छी तरह न पका हो, अधपका। मोटा गद्दा।

गद्दा—पु० रुई आदि से भरा मोटा और गुदगुदा, बिछौना, भारी तोशक। हाथी की पीठ का मोटा बिछौना। घास, पयाल आदि का बोझ।

गद्दी—स्त्री० छोटा गद्दा। घोडे, ऊँट आदि की पीठ पर जीन आदि रखने का कपडा व्यवसायी आदि के बैठने का स्थान। राजा या महत आदि का पद। राजवश की पीढी या आचार्य की शिष्यपरपरा। हथेली या पैर के नीचे का मासल भाग। ⊙ **नशीन** = वि० सिंहासनारूढ। जिसे राज्याधिकार मिला हो, पदारूढ। ⊙ **नशीनी** = स्त्री० गद्दी पर बैठने का समारोह, पदारूढ होना। मु० ~**पर बैठना** = सिंहासनारूढ होना। पदारूढ होना।

गद्य—पु० [स०] छदरहित पदरचना, पद्य का उलटा।

गधा—पु० घोडे के आकार का, पर उससे छोटा एक चौपाया। मूर्ख, गँवार। ⊙ **पच्चीसी** = स्त्री० सोलह वर्ष से पच्चीस वर्ष की अवस्था, अनुभवहीनता या नासमझी की अवस्था। ⊙ **पन** = पु० मूर्खता।

गन (पु)—पु० दे० 'गण'

गनक (पु)—पु० गणक, ज्योतिषी।

गनगन—स्त्री० काँपने या रोमाच होने की मुद्रा। गनगनाना†—अक० शीत आदिसे रोमाच या कंप होना ।
गनगौर—स्त्री० चैत्र शुक्ल तृतीया (स्त्रियो के गणेश गौरी की पूजा का दिन) ।
गनना—सक० दे० 'गिनना' ।
गननाना—अक० गूंजना। घूमना, चक्कर मे आना ।
गनाना(पु)—सक० गिनाना। अक० गिना जाना ।
गनी—वि० [अ०] धनवान् ।
गनीम—पुं० [अ०] लुटेरा। शत्रु ।
गनीमत—स्त्री० [अ०] लूट का माल। मुफ्त का माल। सतोष की बात ।
गन्ना—पुं० ईख, ऊख।
गप—स्त्री० इधर उधर की बात जिसकी सत्यता का निश्चय न हो।जी बहलाने या बिना प्रयोजन की बात। मिथ्या बात। झूठी खबर। पुं० झट से निगलने या घुस पडने आदि का द्योतक शब्द। भक्षण। गपडचौथ—स्त्री० व्यर्थ की गोष्ठी, व्यर्थ की बात। वि० अड बड। गपना(पु)—सक० गप मारना, बकना। गपिहा—वि० गप्पी, झूठबोलनेवाला। बकवादी। गपोड़ा—पुं० गप, मिथ्या बात। गपोडी—वि० दे० 'गप्पी'। गप्प—स्त्री० दे० 'गप'। गप्पी—वि० गप मारने वाला, बढा चढाकर बात करनेवाला। झूठा।
गपकना—अक० झट से खा लेना।
गपागप—क्रि० वि० जल्दी जल्दी, झटपट।
गप्फा—पुं० बडा ग्रास। लाभ।
गफ—वि० घना, ठस, 'झीना का उलटा'।
गफलत—स्त्री० [अ०] असावधानी, बेपरवाही। बेखबरी, सुध का अभाव। प्रमाद, भूल।
गफिलाई(पु)—स्त्री० दे० 'गफलत'।
गबन—पुं० [अ०] दूसरे के सौंपे हुए या मालिक के माल को खा लेना, खयानत।
गबरा†—वि० दे० 'गब्बर'।
गबरू—वि० उभडती जवानी का, पट्ठा। भोला भाला, सीधा। †पुं० दूल्हा।
गबरून—पुं० चारखाने की तरह का एक मोटा कपडा।
गब्बर—वि० घमडी। जल्दी काम न करने या बात का जल्दी उत्तर न देनेवाला, मद। बहुमूल्य। मालदार।
गर्बिब(पु)—वि० घमडी, गर्वयुक्त। 'डगडग डुल्लत गबिब' (हिम्मत० ६१)।
गभस्ति—पुं० [सं०] किरण। सूर्य। बाँह, हाथ। स्त्री० अग्नि की स्त्री, स्वाहा। ⊙मान्=पुं० सूर्य। पौराणिक नौ द्वीपो मे से एक। एक पाताल। वि० प्रकाश मय, चमकीला।
गभीर(पु)—वि० दे० 'गभीर'।
गभुआर—वि० गर्भ का (बाल)। जिसके सिर के बाल जन्म से न कटे हो। नादान, अनजान।
गम—स्त्री० पहुँच, गुजर। पुं० [अ०] दुःख, शोक। ⊙खोर=वि० [फा० गमख्वार] सहनशील। ⊙गीन=वि० दुखी, उदास।
गमक—पु० [सं०]जानेवाला। बोधक, सूचक। स्त्री० सगीत मे एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाने का एक ढग। तबले की गभीर आवाज। सुगध। गमकना—अक० [हि०] महकना।
गमन—पुं० [सं०] जाना, चलना। सभोग (जैसे, वेश्यागमन)। रास्ता। गमना(पु)—अक० जाना, चलना। गम करना, सोच करना। ध्यान देना।
गमला—पुं० फूल आदि के पेड पौधे लगाने का पात्र। पाखाना फिरने का बरतन।
गमाना—सक० दे० 'गवाना'।
गमार†—वि० दे० 'गँवार'।
गमी—स्त्री० किसी के मरने पर उसके सगे-सबधियो द्वारा किया जानेवाला शोक, सोग। मृत्यु, मरनी। शोक का समय।
गम्य—वि० [सं०] गमन के योग्य। प्राप्य, लभ्य। सभोग करने योग्य। साध्य।
गयद(पु)—पु० बडा हाथी। दोहे का एक भेद जिसमे १३ गुरु और २२लघु होते हैं।
गय—पु० [सं०] घर, मकान। अतरिक्ष। धन, सपत्ति। प्राण। पुत्र, अपत्य। गया तीर्थ।

(पु)पु० हाथी। ⊙ नाल = स्त्री० हाथी द्वारा खीची जानेवाली एक तोप, गजनाल।

गयल(पु) स्त्री० दे० 'गैल'।

गर—पु० [सं०] घिग्घी बँधने और मूर्च्छा आने का एक रोग। जहर।(पु)†पुं० गला, गरदन। प्रत्य० [फा०] बनाने या करनेवाला (समस्तपदो मे), जैसे—बाजीगर।

गरक—वि० डूबा हुआ, निमग्न। नष्ट, विलुप्त।

गरकाब—पुं० [फा०] डूबने की क्रिया। वि० डूबा हुआ। बहुत अधिक लीन।

गरगज—पुं० किले की दीवारो पर तोप रखने का बुर्ज। ढूह या टीला जहाँ से शत्रु की सेना का पता चलाया जाता है। तख्तो से बनी हुई नाव की छत। फाँसी की टिकठी। वि० बहुत बडा।

गरगाब(पु)—वि० दे० 'गरकाब'।

गरज—स्त्री० बहुत गभीर और ऊँचा शब्द, कडक। (जैसे, बादल या सिंह या वीर की गरज)। क्रोध या आवेश की ऊँची आवाज। स्त्री० [अ०] प्रयोजन, मतलब। आवश्यकता। इच्छा। अव्य० आखिरकार। मतलब यह कि। ⊙ मद = वि० जरूरतवाला। इच्छुक। **गरजना**—अक० [हिं०] बहुत गभीर और ऊँचा शब्द करना, कडकना। क्रोध या आवेश मे बहुत जोर से बोलना मोती का चटकना। **गरजी, गरजू**†—वि० [हिं०] दे० 'गरजमद'।

गरट्ट(पु)—पुं० समूह, झुड।

गरद—स्त्री० दे० 'गर्द'।

गरदन—स्त्री० [फा०] धड और सिर को जोडनेवाला अग, ग्रीवा। बरतन आदि का ऊपरी भाग। मु०~**उठना** = विरोध करना। विद्रोह करना। ~**काटना** = सिर काटना। हानि पहुँचाना। ~**झुकना** = नम्र, आज्ञाकारी या अधीन होना। लज्जित होना। ~**पर** = ऊपर, जिम्मे। ~**फँसना** = काबू मे होना, विवश होना। ~**मे हाथ देना या डालना** = बाहर निकालने के लिये गरदन पकडना। अपमान करना। **गरदनियाँ, गरदनिया**—स्त्री० बाहर निकालने के लिये गरदन पकडने की क्रिया। **गरदनी**—स्त्री० कुरते का गला। गले मे पहनने की हँसली। घोडे की गरदन और पीठ पर रखने का कपडा। कारनिस, कँगनी।

गरदा—पुं० धूल, गर्द।

गरदान—वि० [फा०] घूम फिरकर एक ही स्थान पर आनेवाला। स्त्री० शब्दो का रूपसाधन। पु० कबूतर जो घूम फिरकर सदा अपने स्थान पर आता हो।

गरना—अक० गलना। गडना। निचुडना।

गरनाल—स्त्री० चौड़े मुँह की तोप, घननाल।

गरब(पु)†—पुं० दे० 'गर्व'। ⊙**गहेली** = वि० स्त्री० गर्ववाली, घमड करनेवाली। **गरबना** (पु), **गरबाना**(पु)†—अक० गर्व मे आना। **गरबीला**—वि० पुं० जिसे गर्व हो, घमडी।

गरभ—पुं० दे० 'गर्भ'। **गरभाना**—अक० गर्भिणी होना। धान, गेहूँ आदि के पौधो मे बाल लगना।

गरम—वि० तप्त, ऊष्ण। तीक्ष्ण, उग्र। तेज, प्रचड। उष्ण तासीरवाला। जोश से भरा, उत्साहपूर्ण। ⊙ **कपड़ा** = ऊनी कपडा। ⊙**खबर** = जोश पैदा करनेवाला समाचार। ⊙**मसाला** = धनिया, लौंग इलायची आदि मसाले। ⊙ **मिजाज** = चिडचिडा। **गरमाना**—अक० उष्ण होना। उमग पर आना, मस्ताना। आवेश मे आना। क्रोध करना। कुछ देर दौडने या परिश्रम करने पर पशुओ का तेजी पर आना। †सक० गरम करना, तपाना। **गरमाई**—स्त्री० दे० 'गरमी'। **गरमागरम**—वि० बिलकुल गरम। ताजा। **गरमागरमी**—स्त्री० मुस्तैदी, जोश। कहासुनी, बक झक। **गरमाहट**—स्त्री० गरमी। **गरमी**—स्त्री० [फा०] उष्णता, ताप। तेजी, उग्रता। आवेश, क्रोध। उमंग, जोश। ग्रीष्म ऋतु। आतशक रोग। ⊙**दाना** = पुं० [हिं०] अँधौरी। मु०~**निकालना** = गर्व दूर करना।

गररा(पु)—पुं० एक घोडा, गर्रा।

गरराना—अक० गरजना, गडगडाना।

गरल—पुं० [सं०] जहर। साँप का जहर।

गरवा(पु)—वि० भारी।

गरसना—सक० दे० 'ग्रसना'।

गरह—पुं० दे० 'ग्रह'।

गरहन—पुं० दे० 'चंद्र या सूर्यग्रहण'। दे० 'ग्रहण'।

गरा†—पुं० दे० 'गला'।

गरानाⓅ—सक० गलाना। निचोडना, निचोडकर दूर करना।

गरारा—वि० गर्वयुक्त। प्रबल, बलवान्। पुं० कुल्ली। कुल्ली करने की दवा। पायजामे की ढीली मोहरी। बहुत बडा थैला।

गरासⓅ—पुं० दे० 'ग्रास'। **गरासना**Ⓟ—सक० दे० 'ग्रसना'।

गरिमा—स्त्री० [सं०] भारीपन। महिमा, महत्व, गौरव। गर्व। शेखी। आठ सिद्धियों में से एक जिससे साधक अपना बोझ चाहे जितना भारी कर सकता है।

गरियाना†—अक० गाली देना।

गरियार—वि० सुस्त, बोदा (चौपाया)।

गरिष्ठ—वि० [सं०] अति गुरु, अत्यंत भारी। जो जल्दी न पचे।

गरी—स्त्री० नारियल के फल के भीतर का मुलायम गोला। बीज की अंदर की गूदी, गिरी, मींगी।

गरीब—वि० [अ०] निर्धन, दरिद्र। दीन-हीन। नम्र। ⊙**निवाज**Ⓟ = वि० दीनों पर दया करनेवाला। ⊙**परवर** = वि० [फा०] गरीबों को पालनेवाला। **गरीबाना**—वि० [फा०] गरीबों का सा। **गरीबी**—स्त्री० दीनता, अधीनता। नम्रता। निर्धनता, मुहताजी।

गरीयस—वि० [सं०] बड़ा भारी। महान्, प्रबल।

गरु, गरुआⓅ—वि० भारी, वजनी। गौरवशाली। **गरुआना**†—अक० भारी होना। **गरुआई** स्त्री० गुरुता, भारीपन।

गरुड़—पुं० [सं०] विष्णु का वाहन माना जानेवाला एक पक्षी। उकाब पक्षी (कुछ के मत से)। एक सफेद रंग का बडा जलपक्षी। सेना की एक व्यूहरचना। एक प्रकार का प्रसाद। एक नृत्य। छप्पय छंद का भेद। एक पुराण। ⊙**गामी** = पुं० विष्णु। श्रीकृष्ण। ⊙**ध्वज** = पुं० विष्णु। ⊙**रुत** = पुं० सोलह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। ⊙**व्यूह** = पुं० रणस्थल में सेना के जमाव का एक प्रकार।

गरुताⓅ†—स्त्री० गुरुता, भारीपन। बडाई, बडप्पन।

गरुवाईⓅ—स्त्री० दे० 'गरुआई'।

गरूⓅ—वि० भारी, वजनी।

गरूर—पुं० [अ०] घमंड, अभिमान। **गरूरी**† —वि० [हिं०] गरूरवाला, घमंडी। स्त्री० अभिमान, घमंड। **गरूरत**Ⓟ†—पुं० दे० 'गरूर'।

गरेवान—पुं० [फा०] अंगे, कुरते आदि में गले पर का भाग

गरेरनाⓅ—सक० घेरना। 'भा धावा गढ़ लीन्ह गरेरी' (पदमा०)।

गरैयाँ†—स्त्री० गराँव, पगहा।

गरोह—पु० [फा०] झुंड, जत्था, गोल।

गर्जन—पुं० [सं०] गरजना, कडक।

गर्त—पुं० [सं०] गड्ढा। दरार। घर।

गर्द—स्त्री० [फा०] धूल। राख। ⊙**खोर** = वि० गर्द या मिट्टी से मैला न प्रतीत होने-वाला (जैसे, खाकी रंग। पाँव पोछने का नारियल की जटा आदि का चौकोर टुकडा।

गर्दन—स्त्री० दे० 'गरदन'।

गर्दभ—पु० [सं०] गधा।

गर्दिश—स्त्री० [फा०] घुमाव, चक्कर। विपत्ति, आफत।

गर्भ—पु० [सं०] पेट के अंदर का बच्चा, हमल। स्त्री के पेट में बच्चा रहने का स्थान, बच्चेदानी। ⊙**केसर** = पु० फूलों में वे पतले सूत जो गर्भनाल के अंदर होते हैं। ⊙**गृह** = पु० मकान के बीच की कोठरी, मध्य का घर। घर का मध्य भाग, आँगन। मंदिर में प्रतिमा रखने की कोठरी। सोने का कमरा। ⊙**नाल** = स्त्री० फूल के अंदर की पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भकेसर रहता है। ⊙**पात** = पु० पेट के बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले निकल जाना। ⊙**वती** = वि० स्त्री० जिसके पेट में बच्चा हो, गर्भिणी। ⊙**संधि**—स्त्री० नाटक

मे पाँच प्रकार की सधियो मे से वह जिसमे ईप्सित वस्तु की प्राप्ति अथवा अप्राप्ति मे उसकी प्राप्ति के सकेत मिलते है। ⊙स्राव = पुं० चार महीने के भीतर का गर्भपात। **गर्भांक** = पुं० नाटक के अक का एक भाग या दृश्य। **गर्भाधान**—पुं० गर्भधारण। मनुष्य के १६ सस्कारो मे से पहला। **गर्भाशय**—पुं० स्त्रियो के पेट मे बच्चा रहने का स्थान, बच्चेदानी। **गर्भिणी**—वि० स्त्री०, **गर्भित**—वि० गर्भयुक्त। गर्भवती। भरा हुआ, पूर्ण।

गर्रा—वि० लाख के रंग का। पुं० घोडे का एक रग। इस रग का घोडा। इस रग का कबूतर। बहते हुए पानी का थपेडा।

गर्व—पुं० [स०] अहकार, घमड। **गर्वाना** (पु)—अक० गर्व करना। 'का तुम इतनेहि को गर्वानी' (सूर०)। **गर्विता**—स्त्री० [सं०] नायिका जिसे अपने रूप, गुण या पति के प्रेम का घमड हो। **गर्विष्ठ**—वि० घमडी। **गर्वी**—वि० घमडी। **गर्वीला**—वि० [हिं०] गर्व से भरा हुआ।

गर्हण—पुं० [सं०] निंदा, शिकायत। **गर्हित**—वि० दूषित, निंदित, बुरा। **गर्ह्य**—वि० गर्हणीय, निंदनीय।

गल—पुं० [सं०] गला, कठ। ⊙**कंबल** = पुं० गाय आदि के गले के नीचे झूलनेवाली मोटे चमडे की झालर। ⊙**गंड** = पु० गला फूलने और गाँठ पड़ने का एक रोग, घेघा। ⊙**ग्रह** = पु० मछली का काँटा। कठिनाई से टलनेवाली आपत्ति। ⊙**जंदड़ा** = पु० [हिं०] वह जो कभी पिंड न छोडे। चोट लगे हुए हाथ को गले के सहारे लटकाने के लिये बाँधी जानेवाली पट्टी। ⊙**झंप** = पु० [हिं०] हाथी के गले मे पहनाने की लोहे की झूल या जजीर। ⊙**थना** = पु० [हिं०] कुछ बकरियो की गरदन मे दोनो ओर लटकनेवाली थैलियाँ। ⊙**फाँसी** = स्त्री० [हिं०] गले की फाँसी। कष्टदायक वस्तु या कार्य। ⊙ **बहियाँ**, ⊙**बाँही** = स्त्री० [हिं०] गले मे बाँहें डालना, आलिगन। ⊙**शुंडी** = स्त्री० जीभ के आकार का मास का छोटा टुकडा जो जीभ की जड के पास होता है, कौआ। तालू की जड सूखने का एक रोग। ⊙**स्तन** = पु० [सं०] दे० 'गलथना'। **गल**—पु० [हिं०] 'गाल' का रूप (के० समा० मे)। ⊙**गंजना** (पु) = अक० शोर करना। 'गलगजहिं भेरी असमाना' (पदमा०)। ⊙**गाजना** (पु) = अक० गाल बजाना, बढ बढकर बातें करना। ⊙**गुथना** = वि० फूले बदन और गालवाला, मोटा ताजा। ⊙**तकिया** = पु० गालो के नीचे रखा जानेवाला छोटा, गोल और मुलायम तकिया। ⊙**फड़** = पुं० गाल का चमडा। जलजतुओ का पानी मे साँस लेने का अवयव। ⊙**मुंदरी** = स्त्री० गाल बजाना, व्यर्थ बकवाद करना। शिव जी के पूजन मे गाल बजाने की एक मुद्रा। ⊙**मुच्छा** = पु० गालो पर के बढाए हुए बाल। ⊙**सुआ** = पुं० गालो के नीचे का भाग सूज जाने का एक रोग। ⊙**सुई** = स्त्री० दे० 'गलसुआ'।

गलका—पुं० हाथ की उँगलियो मे होनेवाला एक फोडा।

गलगल—स्त्री० मैना की जाति की एक चिड़िया। एक प्रकार का बड़ा नीबू। एक रोग।

गलगला—वि० आर्द्र, तर।

गलतंस—पुं० निस्सतान व्यक्ति की सपत्ति।

गलत—वि० [अ०] अशुद्ध, जो ठीक न हो, भ्रममूलक। झूठ, मिथ्या। ⊙**फहमी** = स्त्री० [फा०] गलत समझना, भ्रम। **गलती**—स्त्री० [अ० गलत] अशुद्धि, त्रुटि। भूल, धोखा।

गलतान—वि० [फा०] लुढ़कता या लड़खडाता हुआ।

गलन—पुं० [सं०] गिरना, पतन। गलना।

गलना—अक० पिघलना। अधिक पककर नरम होना। सड़ना। दुर्बल होना। सरदी से हाथ पैर ठिठुरना। बेकाम या नष्ट होना। व्यर्थ व्यय होना (धन आदि का)।

गलबल—पुं० कोलाहल, खलबली।

गला—पुं० गरदन, कंठ। गले का स्वर। अँगरखे, कुरते आदि की काट में गले पर का भाग। बरतन के मुँह के नीचे का पतला भाग। चिमनी का कल्ला (अँ० बर्नर)। वि० अधिक पका हुआ। जीर्ण शीर्ण (वस्त्र आदि)। मुलायम, कोमल। गलेबाज—वि० अच्छा गानेवाला। गलेबाजी—स्त्री० अच्छा गाना। डींग हाँकना। पक्के गाने में बहुत तान, आलाप आदि लेना। मु०~आना=गले के भीतर छाला पड़ना। ~काटना=धड़ से सिर अलग करना। बहुत हानि पहुँचाना। सूरन, बड़े आदि का गले में चुनचुनाहट पैदा करना। ~घुटना=दम रुकना, साँस न लिया जाना। ~घोटना=गला दबाकर साँस रोकना। जबरदस्ती करना। ~छूटना=छुटकारा मिलना। ~दबाना=अनुचित दबाव डालना। ~फाड़ना=बहुत जोर से चिल्लाना। ~रेतना=दे० 'गला काटना'। गले का हार=इतना प्रिय कि कभी जुदा न किया जाय। पीछा न छोड़नेवाला। (बात) गले उतरना या गले के नीचे उतरना=(बात) मन में बैठना, जी में जँचना। गले पड़ना=भोगने या सहने के लिये मिलना। (दूसरे के) गले बाँधना या मढ़ना=दूसरे को उसकी इच्छा के विरुद्ध देना। गले लगना=भेंटना, मिलना। इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना।

गलाना—सक० [अक० गलना] पिघलाना। गरम करना। सड़ाना। व्यर्थ व्यय करना (धन आदि)।

गलानि(पु)—स्त्री० दे० 'ग्लानि'।

गलित—वि० [सं०] गला हुआ। नरम किया हुआ। जीर्ण शीर्ण। चुआ हुआ। नष्ट भ्रष्ट। (पु)परिपक्व। ⊙कुष्ठ=पुं० कोढ़ जिसमें अंग गलकर गिरने लगते हैं। ⊙यौवना=स्त्री० स्त्री जिसका यौवन ढल गया हो।

गलियारा—पुं० पतली या तंग गली। दो कमरों या स्थानों आदि के बीच का अलग, सीधा और सुरक्षित मार्ग।

गली—स्त्री० घरों की पंक्तियों के बीच से होकर गया हुआ तंग रास्ता, कूचा। मुहल्ला, महाल। मु०~~मारे फिरना=इधर उधर व्यर्थ घूमना। जीविका के लिये भटकना।

गलीचा—पुं० [फा०] ऊन या सूत का बुना हुआ मोटा बिछौना जिसपर प्रायः रंग बिरंगे बेलबूटे आदि बने रहते हैं, कालीन।

गलीज—वि० [अ०] गंदा, मैला। अशुद्ध, अपवित्र। पुं० कूड़ा करकट, गंदगी। पाखाना।

गलीत(पु)—वि० मैला कुचैला। दुर्दशाग्रस्त।

गलीम(पु)—पुं० शत्रु। 'अरिंदेस देसन घूम को। गूजर गलीम लगाइकै' (हिम्मत० १५)।

गल्प—स्त्री० मिथ्या प्रलाप, गप। छोटी कहानी।

गल्ला—पुं० शोर। पुं० [फा०] झुंड, दल (चौपायों का) पुं० [अ०] पैदावार, उपज। अनाज। दुकान पर नित्य की बिक्री से मिलनेवाला धन, गोलक। मद, खाता।

गवँ—स्त्री० प्रयोजनसिद्धि का अवसर, घात। मतलब। मु०~से=घात देखकर। चुपचाप।

गवन(पु)†—पुं० प्रयाण, जाना। वधू का पहले पहल पति के घर जाना, गौना। ⊙चार—पुं० वर के घर वधू के जाने की रस्म। गवनना(पु)—अक० जाना। गवना—पुं० दे० 'गौना'।

गवय—पुं० [सं०] नील गाय। एक छंद।

गवाक्ष—पुं० [सं०] छोटी खिड़की, झरोखा।

गवाख(पु)—पुं० दे० 'गवाक्ष'।

गवाना—सक० [गाना का प्रे०] गाने का काम दूसरे से कराना।

गवारा—वि० [फा०] मनभाता, पसंद। सह्य। स्वीकार करने योग्य।

गवारि(पु)—स्त्री० गोपी।

गवास—पुं० कसाई, गोनाशक। स्त्री० गाने की इच्छा।

गवाह—पुं० [फा०] घटना को साक्षात् देखनेवाला या किसी मामले के विषय मे जानकारी बतानेवाला व्यक्ति, साक्षी। **गवाही**—स्त्री० गवाह का बयान, साक्षी का प्रमाण।

गवीश—पुं० [सं०] गोस्वामी। विष्णु। साँड।

गवेजा—पुं० गप, बातचीत।

गवेल†—वि० गँवार, देहाती।

गवेषण—स्त्री० [सं०] खोज, अन्वेषण। **गवेषी**—वि० खोजनेवाला।

गवेसना(पु)—अक० खोजना, ढूँढना।

गवेहा—वि० गाँव का रहनेवाला, देहाती।

गवैया—पु० गानेवाला, गायक।

गव्य—वि० [सं०] जो गौ से प्राप्त हो (दूध दही आदि)। पु० गोसमूह। पचगव्य।

गश—पु० [फा०] बेहोशी। मु०~**खाना** बेहोश होना।

गश्त—स्त्री० [फा०] दौरा, भ्रमण, चक्कर। पहरे के लिये घूमना। **गश्ती**—वि० घूमनेवाला, फिरनेवाला। गश्त से भेजा जाने वाला (गश्ती चिठ्ठी, गश्ती हुक्म आदि)। स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा।

गसना(पु)†—अक० जकडना, गुथना। फँसना, ग्रस्त होना।

गसीला—वि० जकडा हुआ, गुँथा हुआ। (कपडा) जिसके सूत खूब मिले हो, गफ।

गस्सा—पु० ग्रास, कौर।

गह—स्त्री० पकड। मूठ, दस्ता।

गहकना—अक० चाह से भरना, ललकना। उमग से भरना।

गहगड्ड—वि० गहरा, घोर (नशे के लिये)।

गहगह(पु)—वि० प्रसन्नतापूर्ण, उमग से भरा हुआ। क्रि० वि० धूमधाम के साथ (बाजे के लिये)। **गहगहाना**—अक० आनद और उमग से फूलना। 'वायस गहगहात शुभ वाणी विमल पूर्वदिशि बोल' (सूर०)। पौधो का लहलहाना।

गहगहे—क्रि० वि० दे० 'गहगह'।

गहना—पु० आभूषण, जेवर। रेहन। बधक। सक० पकडना, ग्रहण करना। **गहनि**(पु)—स्त्री० अड़, जिद। पकड।

गहबर(पु)†—वि० दुर्गम, विषम। व्याकुल, उद्विग्न। आवेग से भरा हुआ। **गहबरना**(पु)—अक० आवेग से भरना। घबराना।

गहर—स्त्री० देर, विलब। दुर्गम, गूढ। **गहरना**(पु)—अक० देर करना। झगडना, उलझना। 'श्याम के गुण नही जानत जात हमसो गहरि' (सूर०)।

गहरा—वि० जिसकी थाह बहुत नीचे हो, गभीर। जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो। बहुत अधिक, ज्यादा। मजबूत, दृढ। गाढा, 'हलका' या 'पतला' का उलटा। मु०~**असामी**=मालदार आदमी। बडा आदमी। ~**हाथ**=(हथियार का) भरपूर वार। **गहरी घुटना या छनना**=गाढ़ी भग घुटना। गाढी मित्रता होना। **गहराई**—स्त्री० 'गहरा' का भाव, गहरापन। **गहराना**†—अक० गहरा होना। सक० गहरा करना। (पु) अक० दे० 'गहरना'। अक० कुढना, नाराज होना। 'अधर कप रिसि भौंह मरोर्यो मन ही मन गहरानी' (सूर०)। **गहराव**—पुं० दे० 'गहराई'।

गहरु(पु)—स्त्री० देर, विलब।

गहवाना—सक० [गहना का प्रे०] पकडने का काम करना।

गहवारा—पुं० पालना, झूला।

गहाई(पु)†—स्त्री० गहने का भाव, पकड़।

गहागड्ड—वि० दे० 'गहगड्ड'।

गहागह—वि० दे० 'गहगह'।

गहाना—सक० दे० 'गहवाना'।

गहासना(पु)—सक० दे० 'ग्रसना'।

गहिला—वि० बावला, पगला। **गहीला**—वि० घमडी। पागल।

गहेजुआ†—पुं० छछूँदर।

गहेलरा†—वि० दे० 'गहेला'।

गहेला—वि० हठी। घमडी। पागल। गँवार, मूर्ख।

गहैया—वि० पकड़नेवाला। स्वीकार करनेवाला।

गह्वर—पुं० [सं०] अधकारमय और गूढ स्थान। जमीन मे छोटा सुराख, बिल।

दुर्भेद्य स्थान। गुफा, कदरा। निकुंज। झाडी। जगल। वि० दुर्गम, विषम। गुप्त।

गाँउ†—पुं० दे० 'गाँव'।

गांग—वि० [सं०] गगा सबधी।

गागेय—पुं० [सं०] भीष्म। कार्तिकेय। हेलसा मछली। कसेरू।

गाँछना—सक० दे० 'गूंथना'।

गाँज—पुं० ढेर, अबार। गाँजना—सक० ढेर करना।

गाँजा—पुं० भाँग की जाति का एक पौधा जिसकी कलियो का धूआँ नशे के लिये पिया जाता है।

गाँठ—स्त्री० फदा, बधन, गिरह। अचल, चादर आदि के छोर मे कोई वस्तु लपेटकर लगाई हुई गिरह। गठरी, बोरा। अग का जोड, बद। ईख, बाँस आदि का कुछ उभरा हुआ जोड, पोर। गाँठ के आकार की जड। घास का बँधा हुआ बोझ, गट्ठा। ⊙गोभी = स्त्री० गोभी की एक जाति जिसकी जड मे गोल गाँठें होती है। मु० ~कतरना या काटना = गाँठ काटकर रुपया निकाल लेना, जेब कतरना। ~का = पास का, पल्ले का। ~का पूरा = धनी। ~खुलना = उलझन मिटना, समस्या का समाधान होना। ~जोड़ना = विवाह आदि के समय स्त्री पुरुष के कपडो के पल्ले को एक मे बाँधना। मन या हृदय की ~खोलना = जी खोलकर कोई बात कहना। भीतरी इच्छा प्रकट करना। लालसा पूरी करना। ~मे बाँधना = अच्छी तरह याद रखना। ~से = पास से, पल्ले से।

गाँठना—सक० गाँठ लगाना। मरम्मत करना (जैसे जूता या गुदडी गाँठना)। मिलाना, तरतीब देना (मनसूबा या मजमून गाँठना, आदि)। अनुकूल करना, पक्ष मे करना। निश्चय करना। दबोचना, गहरी पकड पकडना। वश मे करना, वार को रोकना। मु०—मतलब ~ = काम निकालना।

गाँठरी—स्त्री० दे० 'गठरी'।

गाँठी—स्त्री० दे० 'गाँठ'।

गाँडर—स्त्री० मूंज की तरह की एक घास, गडदूर्वा।

गाँडा—पुं० पेड़, पौधे या डठल का छोटा कटा खड। ईख का छोटा व[illegible] टुकड़ा, गँडेरी।

गाडीव—पुं० [सं०] अर्जुन का धनुष।

गाँती—स्त्री० दे० 'गाती'।

गाँथना(पु)—सक० गूंथना। मोटी सिलाई करना।

गाधर्व - वि० [सं०] गधर्व सबधी। गधर्व देश मे उत्पन्न। गधर्व जाति का। पुं० सामवेद का उपवेद, गधर्व विद्या। सगीत शास्त्र। आठ प्रकार के विवाहो मे से एक जो वर और कन्या की स्वेच्छा मात्र से होता है। ⊙वेद = पुं० सामवेद का उपवेद, सगीत शास्त्र।

गांधार—पुं० [सं०] सिधु नदी के पश्चिम का देश। गाधार देश का रहनेवाला। संगीत मे तीसरा स्वर।

गांधी—स्त्री० हरे रग का एक छोटा कीडा। एक घास। हीग। इत्र और सुगधित तेल बेचनेवाली एक जाति। गुजराती वैश्यो की एक जाति। महात्मा मोहनदास कर्मचद गाँधी।

गाभीर्य—पुं० [सं०] गभीरता, गहराई। स्थिरता। मनोवेगो से चचल न होने का गुण, धीरता। गूढता, गहनता।

गाँव—पुं० ग्राम, किसानो या खेती पर अवलवित लोगो की छोटी वस्ती। ऐसी वस्ती के सब लोग।

गाँस—स्त्री० रोक टोक, बधन। वैर, ईर्ष्या। भेद की बात। गाँठ, फदा। तीर या बरछी का फल। वश, अधिकार। देखरेख, निगरानी। कठिनाई, सकट। गाँसना—सक० [अक० गँसना] गूंथना। छेदना, सालना। ताने मे कसना जिससे बुनावट ठोस हो। †वश मे रखना, शासन मे रखना। दबोचना। ठूंसना, भरना। गाँसी—स्त्री० तीर या बरछी आदि का फल। गाँठ, गिरह। कपट। मनोमालिन्य।

गाइ†, गाई†—स्त्री दे० 'गाय'।

गागर, गागरी†—स्त्री० दे० 'गगरी'।

गाछ—पुं० छोटा पेड, पौधा। पेड़, वृक्ष।

गाज—पुं० पानी आदि का फेन, झाग। स्त्री० गर्जन, गरज। बिजली गिरने का शब्द। बिजली, वज्र। मु०~**पड़ना**=आफत आना, नाश होना। **गाजना**—अक० गरजना, चिल्लाना। प्रसन्न होना।

गाजर—स्त्री० मूली की आकृति का किंतु लाल या बैंगनी रंग का एक मीठा कंद। मु०~**मूली समझना**=तुच्छ समझना।

गाजा—पु० [फा०] मुँह पर मलने का एक रोगन।

गाजी—पु० [अ०] मुसलमानो मे वह वीर पुरुष जो धर्म के लिये विधर्मियो से युद्ध करे। बहादुर।

गाड़—स्त्री० गड्ढा। अन्न रखने का गड्ढा। कुएँ की ढाल। **गाड़ना**—सक० गड्ढे मे दबाना या ढकना। धरती मे धँसाना। छिपाना।

गाडर—स्त्री० भेड। दे० 'गाँडर'।

गाडरू—पुं० दे० 'गारुड़ी'।

गाड़ा(पु)†—पु० गाड़ी, छकडा। वह गड्ढा जिसमे छिपकर लोग शत्रु, चोर, डाकू आदि का पता लेते थे।

गाड़ी—स्त्री० पहिएवाली सवारी। ⊙**वान**=पुं० गाडी हाँकनेवाला व्यक्ति। कोचवान।

गाढ़—वि० अधिक, बहुत। मजबूत, दृढ। घना, गाढा। गहरा, अथाह। कठिन, दुरुह। पुं० कठिनाई, संकट।

गाढ़ा—पुं० एक मोटा सूती कपडा। मस्त हाथी। वि० जो तरल या पतला न हो। जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों, ठस। गहरा, घनिष्ठ। बढाचढ़ा। कठिन, विकट। मु०—**गाढ़ी छनना**=गहरी मित्रता होना। **गाढ़े का साथी**=संकट के समय का मित्र। **गाढ़े की कमाई**=बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन। **गाढ़े दिन**=संकट के दिन।

गाढ़े(पु)†—क्रि० वि० दृढता से। अच्छी तरह, खूब।

गाणपत—वि० [सं०] गणपति संबंधी। पुं० गणेश की उपासना करनेवाला एक संप्रदाय।

गाणपत्य—पुं० [सं०] गणेश का उपासक। वह संप्रदाय जिसमे सबसे बड़े देवता गणेश माने जाते हैं। नेतृत्व।

गात—पुं० शरीर। एक पान।

गाता—वि० [सं०] गानेवाला।

गाती—स्त्री० गले मे बाँधने की चादर। चादर या अँगोछा लपेटने का एक ढंग।

गात्र—पुं० [सं०] देह, शरीर।

गाथ—पुं० यश। प्रशंसा।

गाथना—सक० दे० 'गाँथना'।

गाथा—स्त्री० [सं०] स्तुति। श्लोक जिसमें स्वर का नियम न हो। प्राचीन काल की रचना जिसमे लोगो के दान, यज्ञ आदि का वर्णन होता था। आर्या वृत्त। एक प्राचीन मिश्रित भाषा। श्लोक। गीत। कथा, वृतांत। पारसियो के धर्मग्रंथ का एक भेद। छोटे छोटे प्रसंगो पर हुए पद्य और उनका संग्रह (जैसे, गाथा सप्तशती)।

गाद—स्त्री० तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढी चीज, तलछट। तेल का चीकट। गाढी चीज।

गादड़, गादर†—वि० कायर, डरपोक। पुं० गीदड।

गादा—पुं० अच्छी तरह न पका खेत का अन्न। कच्ची फसल। बरगद का फल। हरा महुआ।

गादी—स्त्री० एक पकवान। दे० 'गद्दी'।

गादुर—पुं० चमगादड़।

गाध—पुं० स्थान, जगह। थाह, जल के नीचे का स्थल। नदी का बहाव। लोभ। वि० जिसे हलकर पार कर सकें, छिछला। थोडा।

गान—पुं० संगीत, गाना। गाने की चीज़, गीत।

गाना—पुं० दे० 'गान'। सक० ताल स्वर के नियम के अनुसार शब्द उच्चारण करना। मधुर ध्वनि करना। वर्णन करना, विस्तार से कहना। स्तुति करना, प्रशंसा करना। मु० **अपनी ही**~=अपनी ही बात कहते जाना।

गाफिल—वि० [अ०] असावधान, बेपरवाह। बेसुध, बेखबर।

गाभ—पुं० पशुओ का गर्भ। दे० 'गाभा'

मध्य। गाभा—पुं० नया निकलता हुआ मुँहबँधा नरम पत्ता, कोपल। केले आदि में डठल के भीतर का भाग। लिहाफ आदि के अदर की निकली हुई पुरानी रुई। कच्चा अनाज, खडी खेती। गाभिन, गाभिनी—वि० स्त्री० गर्भिणी (चौपायों के लिये)।

गाम—पुं० गाँव।

गामी—वि० [सं०] चलनेवाला, चलनेवाला। संभोग करनेवाला (के० समा० के अंत में, जैसे परस्त्रीगामी)।

गाय—स्त्री० सींगवाला एक मादा चौपाया जो दूध के लिये प्रसिद्ध है, बैल की मादा। बहुत सीधा मनुष्य। ⊙**गोठ** = स्त्री० गोशाला।

गायक—पुं० [सं०] गवैया, गानेवाला। **गायकी**—स्त्री० गानेवाली स्त्री। स्त्री० [हिं०] गानविद्या का पूरा ज्ञान। गानविद्या के नियमों के अनुसार गाना। गानविद्या।

गायत्री—स्त्री० [सं०] २४ वर्णों का तीन चरणों में विभक्त एक वैदिक छंद। हिंदू धर्म में सबसे अधिक महत्व का माने जानेवाला एक वैदिक मंत्र। दुर्गा। गंगा। छह अक्षरों के प्रत्येक चरण का एक वर्णवृत्त।

गायन—पु० [सं०] गवैया। गाने का पेशा करनेवाला। गान। कार्तिकेय। **गायिनी**—स्त्री० गानेवाली स्त्री। एक मात्रिक छंद।

गायब—वि० [अ०] अंतर्धान, लुप्त।

गायबाना—क्रि० वि० [अ०] पीठ पीछे, अनुपस्थिति में।

गार—पु० [अ०] गहरा गड्ढा। गुफा, कंदरा। †स्त्री० [हिं०] गाली।

गारना—सक० निचोडना। पानी के साथ घिसना। ⓟनिकालना, त्यागना। ⓟ† गलाना, घुलाना। नष्ट करना, खोना। 'आछो गात, अकारथ गार्‌यो' (सूर०)।

गारा—पु० ईंटों की जोडाई में लगनेवाला मिट्टी, चूने आदि का लसदार लेप। कीचड।

गारी†—स्त्री० दे० 'गाली'।

गारुड़—पुं० [सं०] साँप का विष उतारने का मंत्र। सेना की एक व्यूहरचना। सुवर्ण। एक अस्त्र। वि० गरुड संबंधी।

गारुडि—पु० आठ प्रकार के तालों में से एक। गारुडी। **गारुड़ी**—पुं० मंत्र से साँप का विष उतारनेवाला।

गारोⓟ—पुं० मान, गर्व। प्रतिष्ठा, बड़प्पन।

गार्हपत्याग्नि—स्त्री० [सं०] कर्मकांड के अनुसार छह प्रकार की अग्नियों में से पहली और प्रधान अग्नि जिसकी रक्षा प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिए।

गार्हस्थ्य—पुं० [सं०] गृहस्थ का कर्तव्य। गृहस्थाश्रम।

गाल—पुं० मुँह के दोनों ओर ठुड्डी और कनपटी के बीच का कोमल भाग, कपोल। डाढ, मुख। बकवाद करने की लत, मुँहजोरी। मध्य, बीच। ग्रास, फंका। चक्की में पीसने के लिये एक बार जानेवाला मुट्ठी भर अन्न। ⊙**गूल**ⓟ = पुं० व्यर्थ बात। मु०~**फुलाना** = अभिमान करना। रूठकर न बोलना।~**बजाना** = डींग मारना। व्यर्थ बकवाद करना।

गालना—अक० बात करना, बोलना।

गालमसूरी—स्त्री० एक पकवान या मिठाई।

गाला—पुं० धुनी हुई रुई का गोला जिसे चरखे में काता जाता है। बड़बडाने की लत, मुँहजोरी। ग्रास, कौर।

गालिब—वि० [अ०] जीतनेवाला, बढ जानेवाला, श्रेष्ठ।

गालिमⓟ—वि० दे० 'गालिब'।

गाली—स्त्री० निंदा, अपमान या लज्जासूचक उक्ति, दुर्वचन। कलंकसूचक आरोप। ⊙**गलौज** = स्त्री० परस्पर गाली देना। ⊙**गुफ्ता** = पुं० दे० 'गाली गलौज'।

गालू—वि० व्यर्थ डींग मारनेवाला। गप्पी, बकवादी।

गाल्हनाⓟ†—अक० दे० 'गालना'।

गाव—पुं० [फा०] गाय। बैल। ⊙**कुशी** = स्त्री० गोवध। ⊙**जबान** = स्त्री० ज्वर, खाँसी आदि में प्रयुक्त एक बूटी। ⊙**तकिया** = पुं० कमर लगाकर बैठने का बडा तकिया, मसनद। ⊙**दुम** = वि० जो ऊपर से गाय की पूँछ की तरह पतला होता आया हो। चढाव उतारवाला।

गावदी—वि० कुंठित बुद्धि का, बेवकूफ।

गासिया—पु० जीनपोश।

गाह—पुं० [सं०], गहन, दुर्गम। अवगाहन करनेवाला मनुष्य। (पु) पुं० ग्राहक। पकड, घात। मगर। **गाहना**—सक० अवगाहन करना, डबकर थाह लेना। मथना। धान आदि के डठल को दाँते समय दाना गिराने के लिये झाडना।

गाहा—स्त्री० [प्रा०] कथा, वृत्तात। आर्या छद का एक भेद।

गाही—स्त्री० गिनने का पाँच पाँच का एक मान।

गाहू—स्त्री० आर्या छंद का एक भेद, उपगीति छंद।

गिजना—अक० [सक० गीजना] गीजा जाना।

गिजाई—स्त्री० एक बरसाती कीडा। गीजने की क्रिया या भाव।

गिडुरी—स्त्री० दे० 'इँडुरी'।

गिदुक—पु० तकिया। 'गजक गुलाबी गुल गिंदुक गुले गुलाब' (जगद्विनोद २०६)।

गिदौड़ा, गिंदौरा—पु० बहुत मोटी रोटी के आकार मे ढाली हुई चीनी।

गिआन(पु)—पु० दे० 'ज्ञान'।

गिउ(पु)—पु० गला, गरदन।

गिचपिच—वि० जो साफ या क्रम से न हो, एक मे मिला जुला।

गिचिरपिचिर—वि० दे० 'गिचपिच'।

गिजगिजा—वि० ऐसा गीला और मुलायम जो खाने मे अच्छा न लगे। जो छूने मे मांसल हो।

गिजा—स्त्री० [अ०] भोजन, खुराक।

गिटकिरी—स्त्री० तान लेने मे विशेष प्रकार से स्वर का काँपना।

गिटपिट—स्त्री० निरर्थक शब्द। मु०~**करना** = टूटी फूटी अँगरेजी बोलना।

गिट्टक—स्त्री० चिलम के नीचे रखने का ककड।

गिट्टी—स्त्री० पत्थर के छोटे छोटे टुकडे। मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ छोटा टुकडा, ठीकरी। चिलम की गिट्टक।

गिड़गिड़ाना—अक० अत्यत दीन होकर प्रार्थना करना।

गिड़गिड़ाहट—स्त्री० विनती। गिडगिडाने का भाव।

गिद्ध—पु० एक प्रकार का बडा मासाहारी पक्षी। छप्पय छद का ५२वाँ भेद। ⊙**राज** = पु० जटायु।

गिनती—स्त्री० सख्या, शुमार। मूल्य, महत्व। उपस्थिति की जाँच, हाजिरी (सिपाहियो के लिये)। मु०~**के** = बहुत थोडे। ~**गिनाने के लिये** = कहने सुनने भर को। ~**मे आना** = कुछ महत्व का समझा जाना।

गिनना—सक० गणना करना, सख्या निश्चित करना। हिसाब लगाना, कुछ महत्व का समझना। मु०—**दिन ~** = आशा मे समय बिताना। किसी प्रकार कालक्षेप करना।

गिनवाना, गिनाना—सक०[गिनना का प्रे०] गिनने का काम दूसरे से करवाना।

गिनी—स्त्री० [अँ०] २१ शिलिंग का सोने का सिक्का।

गिन्नी—स्त्री० घुमाने या चक्कर खिलाने की क्रिया। दे० 'गिनी'।

गिमटी—स्त्री० पलँगपोश, पर्दे आदि का एक बूटीदार मजबूत कपडा।

गिय(पु)—पु० दे० 'गिउ'।

गियाह—पु० एक प्रकार का घोडा।

गिरंदा—पु० [फा०] फदा लगानेवाला, फाँसनेवाला।

गिर—पु० पहाड। सन्यासियो के दस भेदों मे से एक, गिरि।

गिरगिट—पु० छिपकिली की जाति का पेडो पर रहनेवाला एक जतु। मु०~**की तरह रंग बदलना** = कभी कुछ, कभी कुछ कहना और करना।

गिरगिरी—स्त्री० सारगी के ढग का लडको का एक खिलौना।

गिरजा—पुं० ईसाइयो का प्रार्थनामदिर। स्त्री० गिरिजा, पार्वती।

गिरदा†—पुं० घेरा, चक्कर। तकिया। काठ की थाली जिसमे हलवाई मिठाई रखते हैं। ढाल, फरी।

गिरदावर—पुं० दे० 'गिर्दावर'।

गिरधर—पुं० दे० 'गिरिधर'।

गिरना—अक० ऊपर से नीचे आ रहना,

पतित होना। खडा न रह सकना, जमीन पर पड जाना। अवनति या घटाव पर होना। जलधारा का बडे जलाशय मे जा मिलना। शक्ति या मूल्य आदि का कम होना। तेजी से लपकना (जैसे बाज का कबूतर पर)। बहुत चाव से आगे बढना (जैसे, खरीदारो का माल पर)। अपने स्थान से हट, निकल या लड जाना। नजला, फालिज आदि का होना। सहसा उपस्थित या प्राप्त होना। लडाई मे मारा जाना।

गिरफ्त—स्त्री० [फा०] पकड, पकडने की क्रिया। गिरफ्तार—वि० जो पकडा, कैद किया या बाँधा गया हो। ग्रसा हुआ। गिरफ्तारी—स्त्री० गिरफ्तार होने का भाव या क्रिया।

गिरमिट—पु० बडा बरमा (बढई)। इकरारनामा, शर्तनामा। इकरार।

गिरवान(पु)†—पु० दे० 'गीर्वाण'। दे० 'गरेबान'।

गिरवाना—सक० [गिराना का प्रे०] गिराने का काम दूसरे से कराना।

गिरवी—वि० [फा०] गिरो रखा हुआ, बधक। ⊙ दार=पु० व्यक्ति जिसके यहाँ कोई वस्तु बधक रखी हो।

गिरह—स्त्री० [फा०] गाँठ। उलझन। बैर। जेब, खीसा। दो पोरो के जुडने का स्थान। एक गज का १६वाँ भाग। कलाबाजी। ⊙कट=वि० जेब या गाँठ मे बँधा हुआ माल काट लेनेवाला।

गिरही(पु)†—पु० दे० 'गृही'।

गिराँ—वि० महँगा। भारी। अप्रिय।

गिरा—स्त्री० [सं०] वाणी की शक्ति। जीभ, जबान। वचन, वाणी। सरस्वती देवी। ⊙पति=पुं० ब्रह्मा। ⊙पितु (पु)=पु० ब्रह्मा, सरस्वती के पिता।

गिराना—[अक० गिरना] नीचे डालना। लुढ़काना। घटाना, अवनत करना। बहाना। ढहाना। किसी चीज को उसके स्थान से हटा या निकाल देना। सहसा उपस्थित करना। लडाई मे मार डालना।

गिरानी—स्त्री० [फा०] महँगापन। अकाल। कमी। पेट का भारीपन।

गिरावट—स्त्री० गिरने की क्रिया या भाव।

गिरास—पु० दे० 'ग्रास'। गिरासना†(पु)—सक० दे० 'ग्रसना'।

गिराह(पु)†—पु० दे० 'ग्राह'।

गिरि—पुं० [सं०] पर्वत। दशनामी सप्रदाय के अतर्गत एक भेद। परिव्राजकों की एक उपाधि। ⊙जा=स्त्री० पार्वती, गौरी। गगा। ⊙धर=पुं० श्री कृष्ण। ⊙धारन(पु)=पुं० दे० 'गिरिधर'। ⊙धारी=पु० श्री कृष्ण। ⊙नदिनी=पार्वती। गंगा। नदी। ⊙नाथ=महादेव, शिव। ⊙पथ=पुं० दो पहाडो के बीच का तंग रास्ता, दर्रा। पहाडी रास्ता। ⊙राज=पुं० बडा पर्वत। हिमालय। गोवर्धन पर्वत। मेरु। ⊙श=पुं० शिव। ⊙सुता=स्त्री० पार्वती। गिरींद्र—पुं० पर्वत। हिमालय। शिव। गिरीश—पुं० महादेव, शिव। हिमालय पर्वत। कैलाश पर्वत। गोवर्धन पर्वत। कोई बडा पहाड।

गिरी—स्त्री० बीज के अदर से निकलनेवाला गूदा। (पु) पु० दे० 'गिरि'।

गिरैयाँ†—स्त्री० चौपायो के गले का छोटा रस्सा।

गिरो—वि० [फा०] रेहन, बधक।

गिर्द—अव्य० [फा०] आसपास, चारो ओर।

गिर्दावर—पुं० [फा०] घूमने या दौरा करनेवाला। घूमकर काम की जाँच करनेवाला।

गिल—स्त्री० [फा०] मिट्टी, गारा। ⊙कार=पु० गारा या पलस्तर करनेवाला व्यक्ति। ⊙कारी=स्त्री० गिलकार का कार्य।

गिलगिली—पु० घोडे की एक जाति।

गिलट—पुं० सोना चढाने का काम। एक बहुत हलकी और कम मूल्य की धातु जिसका रग सफेद और चमकीला होता है।

गिलटी—स्त्री० शरीर मे सधिस्थान की गाँठ। इन गाँठो के सूजने का रोग।

गिलन—पु० [सं०] निगलना।

गिलना—सक० विना दाँतो से तोडे गले मे उतारना, निगलना। मन ही मे रखना, प्रकट न होने देना।
गिलबिलाना—अक० अस्पष्ट वचन बोलना।
गिलम—स्त्री० नरम और चिकना ऊनी कालीन। मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना। वि० कोमल, नरम।
गिलमिल—पुं० एक प्रकार का कपडा।
गिलहरा—पुं० सूत का मोटी धारियो का एक कपडा।
गिलहरी—स्त्री० चूहे से मिलता जुलता पेड पर रहनेवाला एक जन्तु जिसकी पीठ पर धारियाँ और मुलायम घने रोएँ की मोटी पूँछ होती है।
गिला—पु० [फा०] उलाहना। शिकायत, निंदा।
गिलान(पु)—स्त्री० दे० 'ग्लानि'।
गिलाफ—पुं० [अ०] तकिए, लिहाफ आदि पर चढाया जानेवाला कपडे का थैला, खोल। बडी रजाई। लिहाफ। म्यान।
गिलावा—पु० ईंट जोडने की गीली मिट्टी, गारा।
गिलास—पु० तरल पदार्थ पीने का गोलाई लिए लबा बरतन। ओलची नाम का पेय।
गिलिम—स्त्री० दे० 'गिलम'।
गिली—स्त्री० दे० 'गुल्ली'।
गिलोय—स्त्री० [फा०] औषध मे प्रयुक्त एक कडवी लता, गुरुच, गुडूची।
गिलोला—पुं० गुलेल से फेंका जानेवाला मिट्टी का छोटा गोला।
गिलौरी—स्त्री० पान का बीडा। ⊙दान= पुं० पान रखने का डिब्बा, पानदान।
गिल्टी—स्त्री० 'गिलटी'।
गिल्यान(पु)—स्त्री० दे० 'ग्लानि'।
गींजना—सक० कपडे, फूल आदि कोमल पदार्थ को इस प्रकार दबाना या मलना कि वह खराब हो जाय।
गी—स्त्री० [सं०] वाणी, बोलने की शक्ति। सरस्वती देवी।
गीउ(पु)—स्त्री० दे० 'गीव'।
गीत—पु० [सं०] गाने की चीज, गाना। बडाई, यश। वि० गाया हुआ। मु० ~गाना=बडाई करना।
गीता—स्त्री० [सं०] गुरु शिष्य के सवाद के रूप मे लिखित ब्रह्मज्ञान सबधी पद्यग्रथ। महाभारत का १८ अध्यायोवाला पद्यात्मक उपदेश जो श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया था, भगवद्गीता। २६ मात्राओ एक छद। वृत्तात, कथा। उपदेश।
गीति—स्त्री० [सं०] गान, गीत। आर्या छद का एक भेद, उद्गाथा, उद्गाहा। ⊙का=स्त्री० २६ मात्राओ का एक छद जिसके प्रत्येक चरण के अत मे क्रम से एक लघु और एक गुरु होता है। गीतगान। ⊙काव्य= पुं० गाया जानेवाला मुक्तक काव्य। ⊙रूपक= पुं० रूपक जिसमें गद्य कम और पद्य अधिक होता है।
गीदड—पुं० सियार, शृगाल। वि० डरपोक। ⊙भभकी= स्त्री० दिखाऊ क्रोध या धमकी।
गीदी—वि० [फा०] डरपोक। कायर।
गीध—पुं० दे० 'गिद्ध'।
गीधना(पु)+—अक० एक वार लाभ उठाकर सदा उसका इच्छुक रहना, परचना।
गीवत†—स्त्री० [अ०] अनुपस्थिति। चुगली।
गीर(पु)—स्त्री० वाणी। ⊙वान= पुं० दे० 'गीर्वाण'। 'जानि गीरवान औ विमानन के जुरे थोक' (गगा० ३४)
गीर्देवी—स्त्री० [सं०] सरस्वती।
गीपति—पु० [सं०] बृहस्पति। विद्वान्।
गीर्वाण—पुं० [सं०] देवता, सुर।
गीला—वि० भीगा हुआ, तर, नम।
गीव(पु)—स्त्री० ग्रीवा।
गुगा†, गुगा†—पुं० दे० 'गूँगा'।
गुगी—स्त्री० दोमुहाँ साँप, चुकरैंड।
गुँगुआना—अक० धुँआ देना, अच्छी तरह न जलना। 'गूँ गूँ' शब्द करना। अस्पष्ट शब्द करना।
गुचा—पुं० [अ०] कली। नाचरग, जश्न।
गुची(पु)—स्त्री० दे० 'घुँघची'।
गुज—स्त्री० [सं०] भौरो के भनभनाने का शब्द, गुजार। कोमल, मधुर ध्वनि, कलरव। (पु) स्त्री० दे० 'गुजा'। ⊙निकेतन= पुं० भौरा। गुजन—पुं० भौरो के गूँजने की क्रिया। कोमल मधुर ध्वनि करने की क्रिया। गुजित—वि० भौरो आदि के गुजार से युक्त।

गुंजना—अक० भौंरों का भनभनाना, मधुर ध्वनि करना।
गुंजरना—अक० भौंरो का गूंजना। गरजना, शब्द करना।
गुंजा—स्त्री० [सं०] घुंघची नाम की लता।
गुंजाइश—स्त्री० [फा०] अँटने या समाने की जगह, जगह, अवकाश। समाई, सुभीता।
गुंजान—वि० [फा०] घना, अविरल।
गुंजायमान—वि० [सं०] गूंजता हुआ।
गुंजार—पुं० भौंरो की गूंज। **गुंजारित**—वि० दे० 'गुंजित'।
गुंठा—पुं० नाटे कद का एक घोडा। †वि० नाटा, बौना।
गुंड—पु० मलार राग का एक भेद। वि० पिसा हुआ।
गुंडई†—स्त्री० गुंडापन, शोहदापन।
गुंडली—स्त्री० फेंटा, कुंडली। गेंडुरी।
गुंडा—वि० बदचलन, बदमाश। छैला, चिकनिया। पु० बदमाश आदमी।
गुंथना—अक० [सक० गूंथना] लडी या गुच्छे मे नाथा जाना। सुई, तागे आदि से एक वस्तु का दूसरी मे टीका जाना। मोटे तौर पर सिला जाना। साना या मांडा जाना (आटे आदि का)। लडने मे एक दूसरे से खूब लिपट जाना।
गुंधना—अक० [सक० गूंधना] पानी मे सान कर मसला जाना, गूंधा जाना। † दे० 'गुंथना'।
गुंधाई—स्त्री० गूंधने की क्रिया या मजदूरी।
गुंफ—पुं० [सं०] उलझन, फँसाव। गुच्छा। दाढ़ी, गलमुच्छा। कारणमाला अलंकार। **गुंफन**—पु० [सं०] उलझन, फँसाव, गुत्थमगुत्था। गूंथना।
गुंबज—पु० देवालयो की गोल छत, गुंवद।
गुंबद—पु० [फा०] दे० 'गुंबज'।
गुंबा—पु० सिर पर चोट लगने से होनेवाली कडी गोल सूजन।
गुंभी—पु० स्त्री० अंकुर, गाभ।
गुंमज—पु० दे० 'गुंबज'।
गुआ—पु० चिकनी सुपारी। सुपारी।
गुइयाँ—स्त्री०, पुं० साथी, गोइयाँ। सखी, सहचरी।
गुग्गुल—पु० [सं०] एक काँटेदार पेड़ और सुगंध के लिये जलाया जानेवाला उसका गोंद, गूगल। सलई का पेड़ जिससे राल या धूप निकलती है।
गुच्ची—स्त्री० लडकों द्वारा गोली या गुल्ली डंडा खेलने के लिये बनाया जानेवाला छोटा गड्ढा। गुप्पी। वि० बहुत छोटी, नन्ही।
गुच्छ, गुच्छक—पु० [सं०] एक मे बँधे फूलों या पत्तियों का समूह, गुच्छा। घास की जूरी। पौधा जिसमे केवल पत्तियाँ या पतली टहनियाँ फैलें, झाड। फुंदना, झब्बा।
गुच्छा—पु० [हिं०] एक मे लगे या बँधे पत्तो, फूलो या फलो का समूह। एक मे लगी या बँधी छोटी वस्तुओं का समूह (घुंघरुओं, चाभियो आदि का गुच्छा)। फुंदना, झब्बा।
गुच्छी—स्त्री० करंज, कंजा। रीठा। फूलो या बीजकोश के गुच्छो की एक तरकारी।
गुजर—पु०, स्त्री० [फा०] निकास, गति। पैठ, पहुँच। गुजारा, निर्वाह। ⊙ **बसर** = स्त्री० निर्वाह, गुजारा। **गुजरना**—अक० [हिं०] (समय) व्यतीत होना। किसी स्थान से होकर निकलना। निर्वाह होना, निभना। मु०—**गुजर जाना** = मर जाना।
गुजरान—पु० [फा०] निर्वाह, कालक्षेप।
गुजरानाⓅ—सक० दे० 'गुजारना'।
गुजरिया—स्त्री० गूजर जाति की स्त्री, ग्वालिन।
गुजरी—स्त्री० कलाई मे पहनने की एक प्रकार की पहुँची। दीपक राग की एक रागिनी।
गुजरेटी—स्त्री० गूजर जाति की कन्या। गूजरी, ग्वालिन।
गुजश्ता—वि० [फा०] बीता हुआ, (भूत काल)।
गुजारना—सक० बिताना, काटना। पेश करना।
गुजारा—पु० [फा०] गुजरान, निर्वाह। जीवन निर्वाह के लिये दी जानेवाली वृत्ति। सडक पर महसूल लेने का स्थान।
गुजारिश—स्त्री० [फा०] निवेदन, प्रार्थना।
गुज्जरी—स्त्री० [सं०] गूजरी। एक रागिनी।

गुझरौट (पु) †—पु० कपडे की सिकुडन, शिकन। स्त्रियो की नाभि के आस पास का भाग।

गुझिया—स्त्री० एक पकवान। खोए की एक मिठाई।

गुझौट† (पु)—पुं० दे० 'गुझरौट'।

गुटकना—अक० कबूतर की तरह गुटरगूं करना।† सक० निगलना। खा जाना।

गुटका—पुं० दे० 'गुटिका'। छोटे आकार की पुस्तक। लट्टू। गुपचुप मिठाई।

गुटरगूं—स्त्री० कबूतर की बोली।

गुटिका—स्त्री० [सं०] वटी, गोली। अभिमंत्रित गोली जिसे मुँह मे रखनेवाला दूसरो को दिखाई नही देता।

गुटेका (पु)—पुं० दे० 'गुटिका'।

गुट्ट—पुं० समूह, झुड, दल।

गुट्ठल—वि० बडी गुठलीवाला (फल)। गुठली के आकार का। जड़, मूर्ख। पुं० किसी वस्तु के इकट्ठा होकर जमने से बनी हुई गाँठ। गिलटी।

गुट्ठी—स्त्री० मोटी गाँठ।

गुठली—स्त्री० कडा और बडा बीज (एक बीजवाले फल का।)

गुड—पुं० [सं०] ऊख या खजूर का पका कर जमाया हुआ रस।

गुडगुड—पुं० जल मे नली आदि के द्वारा हवा फूंकने से होनेवाला शब्द (जैसे हुक्के मे)। **गुड़गुड़ाना**—अक० गुडगुड शब्द होना। सक० हुक्का पीना। **गुड़गुड़ाहट**—स्त्री० गुडगुड शब्द होने का भाव। **गुड़गुड़ी**—स्त्री० एक प्रकार का हुक्का।

गुडच—स्त्री० दे० 'गिलोय'।

गुडहर, गुड़हल—पु० अडहुल का पेड या फूल।

गुडाकेश—पुं० [सं०] शिव, महादेव। अर्जुन।

गुडिया—स्त्री० लडकियो के खेलने की कपडे की पुतली। मु०—**गुड़ियो का खेल** = सहज काम।

गुड़ी—स्त्री० पतग, कनकौवा।

गुडूची—स्त्री० [सं०] गिलोय।

गुड्डा—पु० लड़कियों के खेलने का कपड़े का बना हुआ पुतला।† बड़ी पतग।

गुड्डी—स्त्री० पतंग, कनकौवा। घुटने की हड्डी। एक छोटा हुक्का।

गुढ़ासी—पु० मन मे कोई गूढ आशय रखनेवाला। विप्लव करनेवाला।

गुण—पु० [सं०] किसी वस्तु का जातिस्वभाव, लक्षण या विशेषता, धर्म। प्रकृति के तीन भाव—सत्त्व, रज, तम। निपुणता, प्रवीणता। हुनर, कला या विद्या। असर, भाव। अच्छा स्वभाव। विशेषता, खासियत। तीन की सख्या। प्रकृति। व्याकरण मे 'अ', 'ए' और 'ओ' (अ, इ और उ का सधिगत रूप)। रस्सी या तागा, डोरा। धनुष की डोरी। प्रत्य० सख्यावाचक शब्दो के आगे लगकर उतनी ही बार और होना सूचित करनेवाला शब्द जैसे द्विगुण, चतुर्गुण। ⊙**कर**, ⊙**कारक** = वि० फायदा करनेवाला। ⊙**गौरि** = स्त्री० पतिव्रता स्त्री, सुहागिन। स्त्रियो का एक व्रत। ⊙**ग्राहक**, ⊙**ग्राही** = पु० वि० गुणियों का आदर करनेवाला। ⊙**ज्ञ** = वि० गुण को पहचाननेवाला। गुणी। ⊙**वंत** = वि० [हिं०] दे० 'गुणवान्'। ⊙**वाचक** = वि० गुण को प्रकट करनेवाला। ⊙**वान्** = वि० गुणवाला, गुणी। **गुणांक**—पुं० अक जिसे गुणा करना हो। **गुणाढच**—वि० गुणपूर्ण। पु० पैशाची भाषा के प्रसिद्ध कवि और 'बड्डकहा' के रचयिता। **गुणानुवाद**—पु० गुणकथन, तारीफ। **गुणी**—वि० गुणवाला। पु० कलाकार। कुशल पुरुष। झाड फूंक करनेवाला, ओझा। रस्सीयुक्त। मु०~**गाना** = प्रशसा करना। ~**मानना** = एहसान मानना।

गुणन—पु० [सं०] गुणा करना, जरब देना। गिनना, तखमीना करना। रटना। मनन करना। ⊙**फल** = पुं० अक या सख्या जो एक अक को दूसरे अंक से गुणा करने पर आए। **गुणना**—सक० [हिं०] गुणन करना, जरब देना।

गुणा—पु० गणित की एक क्रिया,

जरब। गुणित—वि० [सं०] गुणा किया हुआ।

गुणीभूत व्यंग्य—पु० [सं०] काव्य में वह व्यंग्य जो प्रधान न हो वरन् वाच्यार्थ के साथ गौण रूप से आया हो।

गुण्य—पु० [सं०] अंक जिसे गुणा करना हो। वह जिसमें विशिष्ट गुण हो।

गुत्थमगुत्था—पुं० गुथ जाने का भाव या स्थिति। परस्पर खूब लिपटकर लड़ना। उलझाव, फँसाव।

गुत्थी—स्त्री० गाँठ, गिरह। समस्या, कठिनाई।

गुथना—अक० [सक० गूथना] दे० 'गुँथना'।

गुदकार, गुदकारा—वि० गूदेदार। गुदगुदा, मासल।

गुदगुदाना—सक० हँसाने आदि के लिये किसी के तलवे, काँख आदि को सहलाना। मनबहलाव या विनोद के लिये छेड़ना। किसी में उत्कंठा उत्पन्न करना।

गुदगुदी—स्त्री० वह सुरसुराहट या मीठी खुजली जो मासल स्थानों पर उँगली आदि छू जाने से होती है। उत्कंठा, शौक। उल्लास, उमंग।

गुदड़ी—स्त्री० फटे पुराने कपड़ों को जोड़कर बनाया जानेवाला ओढ़ना या बिछावन। ⊙**बाजार**=पुं० बाजार जहाँ टूटी फूटी या पुरानी चीजें बिकती हैं। मु०~में लाल=तुच्छ स्थान में उत्तम वस्तु।

गुदना—पुं० दे० 'गोदाना'। अक० [सक० गोदना] चुभना, धँसना, गोदा जाना।

गुदभ्रंश—पु० [सं०] काँच निकलने का रोग।

गुदरⓅ—पु० दे० 'गुजर'। **गुदरना**Ⓟ—अक० गुजरना, बीतना। अलग रहना। निवेदन करना।

गुदराननाⓅ—सक० पेश करना, सामने रखना। निवेदन करना।

गुदरैनⓅ†—स्त्री० पढ़ा हुआ पाठ शुद्धतापूर्वक सुनाना। परीक्षा, पड़ताल।

गुदा—स्त्री० [सं०] मलद्वार।

गुदाना—सक० [गोदना का प्रे०] गोदने की क्रिया कराना।

गुदारनाⓅ—सक० गुजारना।

गुदाराⓅ†—पु० नाव पर नदी पार करने की क्रिया, उतारा। दे० 'गुजारा'।

गुद्दी—स्त्री० फल के भीतर का गूदा। सिर का पिछला भाग। हथेली का मांस।

गुन—पुं० दे० 'गुण'।

गुनगुना—वि० दे० 'कुनकुन'।

गुनगुनाना—अक०, सक० बहुत धीमे या अस्पष्ट स्वर में गाना। नाक में बोलना।

गुनगौरⓅ—स्त्री० दे० 'गनगौर'। 'धाम गुनगौर के सु गिरिजा' (जगद्विनोद ५७२)।

गुनगौरिⓅ—स्त्री० पार्वती। 'गुन के गुमान गुनगौरि को गनै नहीं' (जगद्विनोद ५२५)।

गुनना—सक० गुणा करना। गिनना या तखमीना करना। रटना। चिंतन करना। ज्ञान को व्यवहार में लाना। महत्व समझना।

गुनहगार—वि० [फा०] पापी। अपराधी।

गुनही†—वि० गुनहगार।

गुना—पुं० किसी संख्या में लगकर किसी वस्तु का उतनी ही बार होना सूचित करनेवाला शब्द, जैसे पाँचगुना। गुणा (गणित)।

गुनाह—पुं० [फा०] पाप। दोष, कसूर। **गुनाही**—वि० दे० 'गुनहगार'।

गुनिया†—वि० गुणवान्। **गुनियाला**Ⓟ—वि० दे० 'गुनिया'।

गुनी—वि०, पुं० 'गुणी'।

गुपाल—पुं० दे० 'गोपाल'।

गुपुतⓅ—वि० दे० 'गुप्त'।

गुप्त—वि० [सं०] छिपा हुआ। गूढ़, जानने में कठिन। पुं० वैश्यों का अल्ल। ⊙**चर**=पु० किसी बात का चुपचाप भेद लेनेवाला दूत, जासूस। ⊙**दान**=पु० दान जिसे दाता के अतिरिक्त कोई न जाने।

गुप्ता—स्त्री० [सं०] नायिका जो प्रेम छिपाने का उद्योग करती है। रखेली।

गुप्ति—स्त्री० [सं०] छिपाने की क्रिया। रक्षा करने की क्रिया। कैदखाना। गुफा। अहिंसा आदि योग के अंग।

गुप्ती—स्त्री० छडी जिसके अंदर किरच या पतली तलवार छिपी हो।

गुच्ची—स्त्री० गोली आदि खेलने के लिये बना छोटा गड्ढा, गुच्ची।

गुफा—स्त्री० पहाड या जमीन मे बना लबा गड्ढा, कंदरा।

गुफ्तगू—स्त्री० बातचीत।

गुबरैला—पुं० गोबर आदि खानेवाला एक छोटा कीडा।

गुबार—पुं० [अ०] गर्द, धूल। मन मे दबाया हुआ क्रोध, दु ख, द्वेष आदि।

गुबिंद(पु)—पुं० दे० 'गोविंद'।

गुब्बारा—पुं० कागज, रबर आदि की बनी थैली जिसमे गरम हवा या हलकी गैस आदि भरकर उडाते है। एक आतिश-बाजी।

गुम—वि० [फा०] खोया हुआ। छिपा हुआ। अप्रसिद्ध। ⊙**नाम** = वि० अज्ञात। जिसमे नाम न दिया हो। ⊙**राह** = वि० बुरे मार्ग पर चलनेवाला। भूला भटका हुआ।

गुमटा—पुं० माथे या सिर पर चोट लगने से होनेवाली गोल सूजन। कपास का एक कीडा।

गुमटी—स्त्री० मकान के ऊपरी भाग मे सीढी या कमरो आदि की छत जो शेष भाग से अधिक ऊपर उठी होती है। रेल की लाइन के किनारे बनी कोठरी। सडक के नीचे से वर्षा आदि का जल बहने के लिये बनाया हुआ पुल।

गुमना†—अक० गुम होना।

गुमर—पुं० घमड शेखी। मन का गुबार। कानाफूसी।

गुमान—पुं० [फा०] अनुमान। घमड। बदगुमानी। **गुमानी**—वि० गुमान करने-वाला, घमडी।

गुमना†—सक० गायब करना। गँवाना।

गुमाश्ता—पुं० [फा०] बडे व्यापारी की ओर से बही आदि लिखने, माल खरीदने या बेचने पर नियुक्त व्यक्ति।

गुम्मट—पुं० गुबद। गुमटा।

गुम्मा—वि० चुप्पा, न बोलनेवाला।

गुर—पुं० काम तुरत करने की युक्ति या क्रिया। †दे० 'गुरु'

गुरगा—पुं० चेला। टहलुआ, नौकर। जासूस।

गुरगाबी—पुं० [फा०] मुडा जूता।

गुरज—पुं० दे० 'गुर्ज'।

गुरझन—स्त्री० उलझन, गाँठ।

गुरदा—पुं० रीढदार जीवो के अदर का कलेजे के निकट का एक अग। साहस। एक छोटी तोप।

गुरबा—पु० [अ०] 'गरीब' का बहुवचन।

गुरमख—वि० जिसने गुरु से मत्र लिया हो, दीक्षित।

गुरबी†—वि० घमडी।

गुरई†—स्त्री० दे० 'गोराई'।

गुराब—पुं० तोप लादने की गाडी।

गुरिद†(पु) पुं० गदा।

गुरिया—स्त्री० माला का एक अश, मनका। कटा हुआ छोटा खड।

गुरु—वि० [सं०] बडे आकार का। भारी, वजनी। कठिनता से पकने या पचने-वाला। शक्तिशाली। पुं० आचार्य, गायत्री मत्र का उपदेश देनेवाला। मत्र का उप-देष्टा। शिक्षक। पूज्य पुरुष। देवताओ के आचार्य बृहस्पति। पुष्य नक्षत्र। दो मात्राओवाला अक्षर(पिंगल)। ⊙**आइना**† —स्त्री० [हिं०] गुरु की स्त्री। शिक्षा देनेवाली स्त्री। ⊙**आई** = स्त्री० [हिं०] गुरु का धर्म। गुरु का काम। चालाकी, धूर्तता। ⊙**आनी** = स्त्री० [हिं०] दे० 'गुरुआइन'। ⊙**कुल** = पुं० गुरु, आचार्य या शिक्षक के रहने का स्थान जहाँ वह विद्यार्थियो को अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो। ⊙**घंटाल** = वि० [हिं०] बड़ा चालाक। ⊙**जन** = पुं० बडे लोग, माता, पिता, आचार्य आदि। ⊙**ता** = स्त्री० महत्व बडप्पन। भारीपन। गुरुआई। ⊙**ताई**(पु) = स्त्री० दे० 'गुरुता'। ⊙**तोमर** = पुं० तोमर छद के अत मे दो मात्राएँ और रख देने से बननेवाला छद। ⊙**त्व** = पुं० वजन, भारीपन। महत्व। ⊙**त्वकेंद्र** = पु० किसी पदार्थ मे वह बिंदु जिसपर उस समस्त पदार्थ

का भार एकत्र और कार्य करनेवाला मानते हैं। ⊙दक्षिणा = दक्षिणा जो विद्या पढने पर गुरु को दी जाय। ⊙द्वारा = पुं० [हिं०] गुरु या आचार्य के रहने की जगह। सिक्खो का मंदिर। ⊙भाई = पुं० [हिं०] एक ही गुरु का शिष्य होने से भाई। ⊙मुख = वि० दे० 'गुरमुख'। ⊙मुखी = स्त्री० [हिं०] गुरु नानक की चलाई हुई एक लिपि। ⊙वार= पु० वृहस्पति का दिन (सप्ताह का पाँचवाँ)।

गुरुच—स्त्री० दवाओ मे प्रयुक्त कडुवे रस की एक मोटी बेल, गिलाय।

गुरुज(पु)—पु० दे० 'गुर्ज'।

गुरुत्वाकर्षण—पुं० [सं०] आकर्षण जिसके द्वारा (हवा से अधिक भारी) वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं।

गुरुविनी(पु)—स्त्री० दे० 'गुर्विणी'।

गुरेव—स्त्री० [फा०] भागना, बचना। दूर रहना।

गुरेरना†—सक० आँखें फाडकर देखना, घूरना।

गुरेरा(पु)—पुं० दे० 'गुलेला'।

गुर्ग—पु० [सं०] भेडिया। शृगाल।

गुर्ज—पु० [फा०] गदा, सोटा। दे० 'बुर्ज'। ⊙बर्दार = पुं० गुर्जधारी सैनिक।

गुर्जर—पु० [सं०] गुजरात देश। गुजरात का निवासी। गूजर। **गुर्जरी**—स्त्री० गुजरात की स्त्री। एक रागिनी।

गुर्रा—पुं० [अ०] घोडे के माथे पर का सफेद दाग। लाख के रंग का घोडा। उत्कृष्ट वस्तु। चांद्रमास की पहली तिथि। उपवास, फाका। **गुर्राना**—अक० डराने के लिये 'घुरघुर' की तरह गंभीर शब्द करना। क्रोध या अभिमान मे कर्कश स्वर से बोलना।

गुर्विणी—वि० स्त्री० [सं०] गर्भवती।

गुर्वी—वि० स्त्री० [सं०] बडी, भारी। प्रधान, मुख्य। गौरवशाली। गर्भवती। स्त्री० गुरु की पत्नी।

गुल—पुं० [फा०] शोर, हल्ला। गुलाब का फूल,। फूल, पुष्प। पशुओ के शरीर मे फूल के आकार का भिन्न रंग का गोल दाग। गालो मे हँसने से पडनेवाला गड्ढा। दाग, छाप। बत्ती का जला हुआ अंश। किसी चीज पर बना भिन्न रंग का निशान। अंगारा। ⊙कंद = पुं० अमलतास या गुलाब के फूल और चीनी की धूप में सिझाई पखडियाँ जो दस्त लाती हैं। ⊙कारी = स्त्री० बेलबूटे का काम। ⊙खैरु = पुं० [हिं०] नीले रंग के फूल का एक पौधा। ⊙गपाड़ा = पुं० [हिं०] शोरगुल। ⊙जार = पुं० बाग, वाटिका। वि० आनंद और शोभा से युक्त, चहलपहल से भरा। ⊙दस्ता = पु० सुंदर फूलो और पत्तियो का एक मे बँधा समूह। ⊙दाउदी = स्त्री० सुंदर गुच्छेदार फूलो का एक पौधा। ⊙दान = पुं० गुलदस्ता रखने का पात्र। ⊙दार = पुं० एक कबूतर। एक कशीदा। वि० फूलदार। ⊙दुपहरिया = पुं० [हिं०] कटोरे के आकार तथा गहरे लाल रंग के सुंदर फूलो का पौधा। ⊙नार = पुं० अनार का फूल। अनार के फूल सा गहरा लाल रंग। ⊙बकावली = स्त्री० [हिं०] सफेद सुगंधित फूल का हल्दी की जाति का एक पौधा। ⊙बदन = पुं० धारीदार रेशमी कपडा। वि० सुकुमार। ⊙मेंहदी = स्त्री० [हिं०] एक पौधा। इस पौधे का कई रंगो का फूल। ⊙मेख = पुं० गोल सिरे की कील। ⊙लाला = पुं० एक पौधा और उसका फूल। ⊙शन = पुं० बाग, वाटिका। ⊙शब्बो = स्त्री० लहसुन से मिलता जुलता एक छोटा पौधा। रजनीगंधा। ⊙हजारा—पुं० एक प्रकार का गुललाला। मु० ~ करना = (चिराग) बुझाना। ~ खिलना = विचित्र घटना होना। बखेडा होना।

गुल(पु), **गुलगुल**—वि० नरम, मुलायम। 'गजक गुलाबी गुल गिंदुक...' (जगद्विनोद २०९)।

गुलगुला—वि० दे० गुलगुल। पुं० एक मीठा पकवान। कनपटी।

गुलचना—(पु)सक० दे० 'गुलचाना'।

गुलचा—पुं० धीरे से प्रेमपूर्वक गालो पर हाथ का किया हुआ आघात। **गुलचाना**,

गुलचियाना—सक० गुलचा मारना।

गुलछर्रा—पुं० कर्तव्य भूलकर स्वच्छद वृत्ति से किया हुआ भोग विलास।

गुलफटी—स्त्री० धागे आदि की उलझन की गाँठ। शिकन, सिकुडन।

गुलाब—पुं० [फा०] एक सुदर सुगधित फूल और उसका कँटीला पौधा। ⊙**जल** = पुं० [हिं०] गुलाब का अरक। ⊙**जामुन** = पुं० [हिं०] एक मिठाई। फल। ⊙**पाश** = पुं० गुलाबजल भरकर छिडकने का झारी के आकार का एक लबा पात्र। ⊙**पाशी** = स्त्री० गुलाबजल का छिडकाव। ⊙**बाड़ी** = स्त्री० [हिं०] गुलाब के फूलो आदि से किया जानेवाला एक उत्सव। **गुलाबा**—पुं० [फा०] एक बरतन। **गुलाबी**—वि० [फा०] गुलाब के रग का। गुलाब सबधी। गुलाबजल से बसाया हुआ। कम, हलका। पुं० एक हलका लाल रग।

गुलाम—पुं० [अ०] मोल लिया हुआ दास। साधारण सेवक। पराधीन व्यक्ति। ताश का एक पत्ता। **गुलामी**—स्त्री० [फा०] दासत्व। सेवा, नौकरी। पराधीनता।

गुलाल—पुं० हिंदुओ मे होली के अवसर पर चेहरे पर मलने की एक लाल बुकनी।

गुलाला—पु० दे० 'गुललाला'।

गुलिक—स्त्री० गुरिया।

गुलिस्ताँ—पुं० [फा०] बाग, वाटिका।

गुलू—पुं० [फा०] गला। स्वर। ⊙**बंद** = पुं० सरदी से बचने के लिये सिर, गले आदि पर लपेटने की पट्टी। गले का एक गहना।

गुलुफ—पुं० दे० 'गुल्फ'।

गुलेनार—पुं० [फा०] दे० 'गुलनार'।

गुलेल—स्त्री० मिट्टी की गोलियाँ चलाने की कमान।

गुलेल, गुलेला—पुं० गुलेल से फेकने की मिट्टी की गोली।

गुल्फ—पु० [सं०] एडी पर की गाँठ।

गुल्म—पु० [सं०] बिना कडी लकडी या डठल का, एक जड़ से कई शाखाओ मे होकर निकलनेवाला पौधा (ईख, शर आदि)। सेना का समुदाय जिसमे ९ हाथी, ९ रथ, २७ घुडसवार और ४५ पैदल होते हैं। पेट का एक रोग।

गुल्लक—स्त्री० दे० 'गोलक'।

गुल्ला—पु० गुलेल से फेकने की मिट्टी की गोली। गुलेल। गुल, शोर।

गुल्लाला—पु० पोस्त के से पौधेवाला एक लाल फूल।

गुल्ली—स्त्री० फल की गुठली। लकडी या धातु का नुकीले छोर का टुकडा। मकई की गुठली या खुखडी। छत्ते मे मधु की जगह। ⓟ**डंडा** = पु० एक गुल्ली और एक डडी से खेला जानेवाला लडकों का खेल।

गुवाल—पु० दे० 'ग्वाल'।

गुविंद—पु० दे० 'गोविंद'।

गुसाँई—पु० दे० 'गोसाईं'।

गुसाⓟ†—पु० दे० 'गुस्सा'।

गुस्ताख—वि० [फा०] अशिष्ट, ढीठ, बेअदब। **गुस्ताखी**—स्त्री० ढिठाई, अशिष्टता, बेअदबी।

गुस्ल—पु० [अ०] स्नान, नहाना। ⊙**खाना** = पु० [फा०] नहाने का घर।

गुस्सा—पु० [अ०] क्रोध, रिस। मु०~ **उतरना या निकलना** = क्रोध शात होना। **(किसी) पर~उतारना** = अपने क्रोध का फल चखाना। **गुस्सैल**—वि० [हिं०] जिसे जल्दी क्रोध आए।

गुह—पु० [सं०] कार्तिकेय। घोडा। विष्णु। राम का मित्र निषाद जाति का एक नायक। गुफा। हृदय। † पु० गू, मैला।

गुहना—सक० दे० 'गूँथना'।

गुहराना†—सक० पुकारना, चिल्लाकर बुलाना।

गुहांजनी—स्त्री० आँख की पलक पर होने वाली फुडिया, बिलनी।

गुहा—स्त्री० [सं०] गुफा, कदरा।

गुहार—स्त्री० दुहाई, रक्षा या सहायता के लिये पुकार। शोर।

गुह्य—वि० [सं०] गुप्त, छिपा हुआ। छिपाने योग्य। गूढ। ⊙**क** = पुं० कुवेर के

खजानो के रक्षक यक्ष। ⊙पति = पुं० कुवेर। गुह्यांग--पुं० गोपनीय अंग।

गूंगा--वि० जो बोल न सके, मूक। मु०--गूंगे का गुड = ऐसी बात जिसका अनुभव हो, पर वर्णन न हो सके।

गूंज--स्त्री० भौंरो या मक्खियो के उड़ने का शब्द। प्रतिध्वनि। लट्टू की कील। कान की बालियो मे लपेटा हुआ पतला तार। गूंजना--अक० भौंरों या मक्खियों का मधुर ध्वनि करना।

गूंदना--सक० गूंथना, पिरोना। 'गूंदि गूंदि गेंदे गजगाँह गनि ' (जगद्विनोद २६०)

गूंधना--सक० पानी मे सानकर हाथो से दबाना या मसलना, माडना। गूंथना, पिरोना।

गूजर--पुं० अहीरो की एक जाति, ग्वाला। गूजरी--स्त्री० गूजर जाति की स्त्री, ग्वालिन। पैर मे पहनने का एक जेवर। एक रागिनी।

गूढ़--वि० [सं०] गुप्त, छिपा हुआ। अभिप्रायगर्भित, गभीर। जिसका आशय जल्दी समझ मे न आए। ⊙गेह(पु) = पुं० यज्ञशाला। ⊙ता = स्त्री० छिपाव। कठिनता। दुर्बोधता। ⊙पुरुष = पुं० जासूस। गूढोक्ति--स्त्री० एक अलकार जिसमे कोई गुप्त बात किसी दूसरे को सुनाते हुए तीसरे के प्रति कही जाती है। गूढ़ोत्तर--पुं० एक अलकार जिसमे प्रश्न का उत्तर कोई गूढ अभिप्राय लिए हुए होता है।

गूथना--सक० दे० 'गूंथना'।

गूदड़--पुं० चिथडा। फटा पुराना कपडा।

गूदा--पुं० फल के भीतर का अश जिसमे रस आदि रहता है। भेजा, मग्ज। मीगी, गिरी।

गून--स्त्री० नाव खीचने की रस्सी।

गूनी--स्त्री० दे० 'गोनी'।

गूलर--पुं० वट वर्ग का एक बडा पेड़ जिसका फल अजीर के समान होता है। मु०--का फूल = जो कभी देखने मे न आए।

गृंजन--पुं० [सं०] गाजर। शलजम।

गृध्र पुं० [सं०] गिद्ध। जटायु, सपाति आदि पौराणिक पक्षी।

गृह--पुं० [सं०] घर, मकान। कुटुब, वश। ⊙प, ⊙पति = पुं० घर का मालिक। अग्नि। ⊙पसु(पु) = पुं० कुत्ता। ⊙पाल = पुं० घर का रक्षक, चौकीदार। कुत्ता। ⊙मत्री = राज्य की भीतरी बातो की व्यवस्था करनेवाला मत्री। ⊙युद्ध = पुं० एक कुटुब के व्यक्तियो मे होनेवाला झगडा। किसी देश मे शासक और शासितो मे होनेवाली राजनीतिक लड़ाई। गृहस्थ--पुं० ब्रह्मचर्य के उपरात विवाह करके दूसरे आश्रम मे रहनेवाला व्यक्ति। घरबारवाला, बालबच्चोवाला। † जिसके यहाँ खेती होती हो। गृहस्थाश्रम--पुं० चार आश्रमो मे से विवाहित जीवन का दूसरा आश्रम। गृहस्थी--स्त्री० गृहस्थाश्रम। घरबार, गृहव्यवस्था। कुटुब। घर का सामान। † खेतीबाड़ी। गृहिणी--स्त्री० घर की मालकिन। भार्या, स्त्री। गृही--पुं० गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी।

गृहीत--वि० [सं०] लिया, पकडा या रखा हुआ। प्राप्त। स्वीकृत। समझा हुआ, ज्ञात। आश्रित।

गृह्य--वि० [सं०] गृह सबधी, गृहस्थी से सबधित। ⊙सूत्र--पुं० वैदिक पद्धति की पुस्तक जिसके अनुसार गृहस्थ लोग मुडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि सस्कार करते हैं।

गेंड़ली--स्त्री० कुडली, फेंटा।

गेंडुआ†--पुं० तकिया, सिरहाना, बड़ी गेंद।

गेंडुरी--स्त्री० फेंटा, कुडली। साँपो का कुडलाकार बैठना। सिर पर बोझ उठाने की कपडे, रस्सी आदि की गोल गद्दी।

गेंद--स्त्री० कपडे, लकड़ी, रबर या चमड़े का गोला जिससे लडके खेलते हैं कंदुक। कलबूत। ⊙तड़ी = स्त्री० खेल जिसमे लड़के एक दूसरे को गेंद से मारते हैं।

गेंदवा†--पुं० तकिया।

गेंदा—पुं० एक पौधा। उसमे लगनेवाले पीले या नीले रग का फूल।
गेंदुक(प)—पुं० गेंद।
गेंदुरी—स्त्री० गेडुरी इडुवा।
गेंदुवा—पुं० गेंडुआ, तकिया।
गेंड़ना—सक० लकीर से घेरना। परिक्रमा करना, चारो ओर घूमना।
गेय—वि० [सं०] गाने के लायक।
गेरना—सक० गिराना, नीचे डालना। ढालना, उँडेलना। डालना, लगाना (जैसे, सुरमा गेरना)।
गेरुआ—वि० गेरू के रग का। गेरू मे रँगा हुआ, जोगिया।
गेरू—स्त्री० खानो से निकलनेवाली एक लाल कडी मिट्टी गैरिक।
गेह—पु० घर, मकान। **गेहनी**(प)—स्त्री० घरवाली, पत्नी। **गेही**—पु० गृहस्थ।
गेहुँअन—मटमैले रग का अत्यत विषधर साँप।
गेहुँआ—वि० गेहूँ के रग का, बादामी।
गेहूँ—पु० एक प्रसिद्ध अनाज जिसके चूर्ण की रोटी आदि बनती है।
गैंडा—पु० भैंसे के आकार का एक बहुत मोटे चमड़े का पशु जिसकी नाक पर एक या दो सीग होते हैं।
गैंती—पु० जमीन खोदने का एक ओजार, कुदाल।
गैन(प)—पु० गैल, मार्ग।
गैना—पु० छोटी जाति का बैल।
गैब—पु० [अ०] जो सामने न हो, परोक्ष।
गैबर(प)—पु० बडा हाथी। एक चिडिया।
गैबी—वि० [फा०] गुप्त, छिपा हुआ। अज्ञात, अजनबी।
गैयर(प)—पु० हाथी।
गैया—स्त्री० गाय।
गैर—वि० [अ०] अन्य, दूसरा। कुटुब या समाज से बाहर का, पराया। विरुद्ध अर्थवाची या निषेधवाचक शब्द। ⊙**जिम्मेदार**=[फा०] वि० अपनी जिम्मेदारी न समझनेवाला। ⊙**मनकूला**=अचल, जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान को न ले जा सकें। ⊙**मामूली**=वि० असाधारण। ⊙**मुनासिब**=वि० अनुचित। ⊙**मुमकिन**=वि० असभव। ⊙**वाजिब**=वि० बेजा, अनुचित। ⊙**हाजिर**=वि० जो हाजिर न हो, अनुपस्थित। ⊙**हाजिरी**=स्त्री० अनुपस्थिति, नागा।
गैरत—स्त्री० [अ०] लज्जा, हया।
गैरिक—पु० [सं०] गेरू। सोना।
गैल—स्त्री० मार्ग, रास्ता।
गोइँड़†—पु० गाँव का सिवान, गाँव के पास की भूमि।
गोठ—स्त्री० धोती की कमर पर की लपेट, मुर्री।
गोंड—पु० मध्य प्रदेश की एक जगली जाति। वर्षा काल का एक राग।
गोंद—पु० पेड से निकला हुआ एक लसदार पदार्थ, लासा। ⊙**पँजीरी**=स्त्री० गोद मिली हुई पँजीरी जिसे प्रसूता स्त्रियो को खिलाते है। ⊙**पाग**=पु० गोद और चीनी से बनी एक मिठाई, पपडी।
गोंदरी—स्त्री० पानी की एक घास। इस घास की बनी चटाई।
गो—स्त्री० [सं०] गाय। किरण। वृष राशि। इंद्रिय। वाणी। सरस्वती। आँख। पृथ्वी। बिजली। दिशा। माता। जीभ। पुं० बैल। नदी नामक शिवगण। घोडा। सूर्य। चद्रमा। आकाश। स्वर्ग। जल। वज्र। शब्द। नौ का अक। ⊙**कन्या**=स्त्री० कामधेनु। ⊙**कर**=पुं० सूर्य। ⊙**कर्ण**=पुं० हिंदुओ का एक शैव क्षेत्र। इस स्थान की शिवमूर्ति। वि० गाय के से लबे कानवाला। ⊙**कुल**=पुं० गायो का झुड। गोशाला। वर्तमान मथुरा से पूर्व दक्षिण की ओर एक गाँव। ⊙**कोस**=पु० [हिं०] उतनी दूर जहाँ तक गाय के बोलने का शब्द सुन पडे। ⊙**क्षर**=पुं० दे० 'गोखरू'। ⊙**खग**=पु० थलचर पशु। ⊙**खुर**=पुं० [हिं०] गौ का पैर। गौ के खुर का चिह्न। ⊙**ग्रास**=पुं० भोजन के आरभ मे गौ के लिये अलग निकाला हुआ पके अन्न का भाग। ⊙**चना**†=पुं० [हिं०] चना मिला हुआ गेहूँ। ⊙**चर**=पुं० विषय जिसका ज्ञान इद्रियो द्वारा हो सके। चरागाह। ⊙**जई**=स्त्री० [हिं०] एक मे मिला हुआ गेहूँ और जौ। ⊙**दान**=पुं० गौ को विधि-

वत् संकल्प करके ब्राह्मण को दान करने की क्रिया। ⊙धन = पुं० गौओं की संपत्ति। (पु) गौओं का समूह। (पु)† गोवर्धन पर्वत। ⊙धूलि, ⊙धूली = स्त्री० संध्या का समय। ⊙पति = पुं० ग्वाल, गोप। श्रीकृष्ण। विष्णु। शिव। राजा। सूर्य। ⊙पद = पुं० गौ के खुर का चिह्न। गोशाला। ⊙पदी = वि० [हिं०] गाय के खुर के समान, अत्यंत छोटा। ⊙पाल = पु० गौ का पालन पोषण करनेवाला। अहीर, ग्वाला। श्रीकृष्ण। एक छंद। ⊙पुच्छ = पु० गौ की पूँछ। एक प्रकार का हार। ⊙पुर = पु० नगर का द्वार या फाटक। किले का फाटक। फाटक। स्वर्ग। ⊙मती = स्त्री० एक नदी। ग्यारह मात्राओं का एक छंद। ⊙मय = पु० गोबर। ⊙मर(पु) = पु० कसाई, गोहिंसक। ⊙माय, ⊙मायु = पु० गीदड। ⊙मुख = पु० गौ का मुख। गौ के समान मुख का शंख। नरसिंहा बाजा। दे० 'गोमुखी'। ⊙मुखी = स्त्री० भीतर हाथ डालकर माला फेरने की थैली। गंगोत्तरी में गंगा के निकलने का गौ के मुँह के समान स्थान। ⊙मूत्र = पु० गाय का मूत्र। ⊙मेद, मेदक = पु० नौ रत्नों में गिना जानेवाला एक प्रसिद्ध रत्न। ⊙मेध = पु० गौ से हवन किया जानेवाला एक प्राचीन यज्ञ। ⊙रज = पु० गौ के खुरों से उठी हुई धूल। ⊙रस = पु० दूध। दही। छाछ। इंद्रियों का सुख। ⊙रोचन = पुं० गौ के पित्त में से निकलनेवाला एक पीले रंग का सुगंधित द्रव्य। ⊙लोक = पु० सब लोकों से ऊपर माना जानेवाला श्रीकृष्ण का निवासस्थान। ⊙वर्द्धन, वर्धन = पु० वृंदावन का एक पर्वत जिसे पुराणानुसार श्रीकृष्ण ने उँगली पर उठाया था। ⊙स्वामी = पुं० जितेंद्रिय व्यक्ति। वैष्णव संप्रदाय में आचार्यों के वंशधर या उनकी गद्दी के अधिकारी। संन्यासियों का एक संप्रदाय।

गोखरू—पु० चने के आकार के कड़े और कँटीले फल का एक पौधा। धातु के गोल कँटीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों को पकड़ने के लिये उनके रास्ते में फैला दिए जाते हैं। गोटे और बादले के तारों से गूँथकर बनाया हुआ एक साज। कड़े के आकार का एक आभूषण।

गोखा—पु० दे० 'झरोखा'।

गोचना(पु)—सक० रोकना, छेंकना।

गोजर—पु० कनखजूरा।

गोजी—स्त्री० गौ हाँकने की लकड़ी। बड़ी लाठी।

गोझा—पु० एक पकवान, गुझिया। एक कँटीली घास। जेब।

गोट—स्त्री० कपड़े के किनारे खूबसूरती के लिये लगाने की पट्टी, मगजी। किसी प्रकार का किनारा। स्त्री० मंडली, गोष्ठी। चौपड़ का मोहरा, गोटी।

गोटा—पु० कपड़ों के किनारे खूबसूरती के लिये लगाया जानेवाला बादले का फीता। छोटे टुकड़ों के रूप में कतरी और एक में मिली हुई इलायची, सुपारी तथा बादाम की गिरी। धनियाँ की गिरी। सूखा हुआ मल, सुद्दा। (पु) गोला।

गोटी—स्त्री० कंकड़, गेरू आदि का छोटा गोल टुकड़ा। चौपड़ खेलने का मोहरा। गोटियों से खेला जानेवाला एक खेल। लाभ का आयोजन। मु०~**जमना या बैठना** = युक्ति सफल होना। आमदनी की सूरत होना।

गोठ—स्त्री० गोशाला। गोष्ठी। श्राद्ध। सैर।

गोड़†—पु० पैर, पाँव। **गोड़ा**—पुं० घुटना, जाँघ और पैर के बीच का जोड़। †पु० पलंग आदि का पाया। घोड़िया। **गोड़िया**—स्त्री० छोटा पैर।

गोड़ना—सक० मिट्टी खोदना और उलट-पलट देना जिससे वह पोली और भुर-भुरी हो जाय, कोड़ना। **गोड़ाई**—स्त्री० गोड़ने का क्रिया या मजदूरी। **गोड़ाना**—सक० [गोड़ना का प्रे०] गोड़ने का काम दूसरे से कराना।

गोणी—स्त्री० [सं०] अनाज आदि भरने का टाट का दोहरा बोरा, गोन। एक प्राचीन माप या तोल।

गोत—स्त्री० [अ०] उड़ती हुई पतंग का ऊपर से नीचे आना। पु० गोत्र। कुल,

वंश। समूह, जत्था। **गोतिया, गोती**—वि० [हिं०] अपने गोत्र का, भाई बंधु।

गोता—पु० डूबने की क्रिया, डुबकी। ⊙**खोर**=वि० डुबकी लगानेवाला। मु०~**खाना**=धोखे में आना। ~**मारना**=डुबकी लगाना। बीच में अनुपस्थित रहना।

गोत्र—पु० [सं०] मूल पुरुष के अनुसार कुल या वंश की संज्ञा। वंश, खानदान। गिरोह, जत्था। भाई बंधु। नाम। क्षेत्र। ⊙**सुता**=स्त्री० पार्वती।

गोद—स्त्री० वक्षस्थल के पास एक या दोनों हाथों से बना घेरा (प्राय बालकों को लेने का) कोरा। आँचल। मु०~**का**=छोटी उम्र का (बालक)। ~**पसार कर विनती करना या माँगना**=अत्यंत अधीनता से माँगना या प्रार्थना करना। ~**बैठना**=दत्तक बनना। ~**भरना**—सौभाग्यवती के अंचल में चावल, हल्दी, नारियल आदि देना। संतान होना।

गोदना—सक० नील या कोयले के पानी में सुई डुबाकर शरीर को विविध प्रकार से चिह्नित करना। चुभाना। (किसी कार्य के लिये) बार बार जोर देना। ताना देना। पु० गोदने से शरीर पर बना चिह्न या आकृति।

गोदा—स्त्री० [सं०] गोदावरी नदी। पु० [हिं०] बड़, पीपल या पाकर का पक्का फल।

गोदाम—पु० बिक्री आदि का बहुत सा माल रखने का बड़ा स्थान।

गोदी—स्त्री दे० 'गोद'।

गोधा—स्त्री० [सं०] गोह नामक जंतु।

गोधूम—पु० [सं०] गेहूँ।

गोन—स्त्री० बैलों की पीठ पर लादा जानेवाला, टाट, कंबल, चमड़े आदि का बना दोहरा बोरा। नाव खींचने की मस्तूल में बाँधी जानेवाली रस्सी।

गोना—सक० छिपाना।

गोनिया—स्त्री० दीवार या कोने आदि की सीध जाँचने का औजार। पुं० स्वयं अपनी पीठ पर या बैलों पर लादकर बोरे ढोनेवाला व्यक्ति। रस्सी बाँधकर नाव खींचनेवाला व्यक्ति।

गोनी—स्त्री० टाट का थैला, बोरा। पटुआ, सन।

गोप—पु० [सं०] गौ का पालन पोषण करनेवाला। ग्वाला, अहीर। गाँव का मुखिया। राजा। **गोपांगना**—स्त्री० गोप जाति की स्त्री। **गोपा**—स्त्री० गाय पालनेवाली, अहीरिन, ग्वालिन। **गोपाष्टमी**—स्त्री० कार्तिक शुक्ला अष्टमी। **गोपिका**—स्त्री० गोप की स्त्री, ग्वालिन, अहीरिन। **गोपी**—स्त्री० ग्वालिनी, गोपपत्नी। श्रीकृष्ण की प्रेमिका गोपजातीय स्त्रियाँ। ⊙**चंदन**=पु० वैष्णवों के तिलक लगाने की एक प्रकार की पीली मिट्टी। ⊙**नाथ**=पुं० श्रीकृष्ण। **गोपेंद्र**—पुं० श्रीकृष्ण। गोपों में श्रेष्ठ, नंद।

गोपन—पुं० [सं०] छिपाव, दुराव। लुकाना। रक्षा। **गोपना**(पु)—सक० छिपाना। **गोपनीय**—वि० छिपाने के लायक।

गोप्ता—वि० [सं०] रक्षक।

गोप्य—वि० [सं०] गुप्त रखने योग्य।

गोफन, गोफना—पुं० ढेले आदि भरकर चलाने का छींके के आकार का जाल। ढेलवाँस।

गोफा—पु० नया निकला हुआ मुँह बँधा पत्ता।

गोबर—पु० गौ का मल। ⊙**गणेश**=वि० मूर्ख। भद्दा, बदसूरत। ⊙**हारी**=स्त्री० गोबर पाथने या काढने का काम करनेवाली औरत। **गोबरी**—स्त्री० गोबर की लिपाई। कंडा, उपला।

गोभा(पु)—स्त्री० लहर, तरंग। अंकुर, आँख।

गोभी—स्त्री० चारों ओर चौड़े, मोटे पत्ते तथा बीच में छोटे मुँहबँधे फूलों के गुँथे समूहवाला एक शाक, फूल गोभी। एक शाक, जिसके तीन प्रकार हैं: फूलगोभी, पातगोभी और गाँठगोभी।

गोम—स्त्री० घोड़ों की बुरी मानी जानेवाली एक भौंरी।

गोयँड—पुं० दे० 'गोइँड'।

गोय—पु० [फा०] गेंद।

गोया—क्रि० वि० [फा०] मानो, जैसे।
गोर—स्त्री० [फा०] कब्र। † वि० [हिं०] गोरा।
गोरख—पु० एक प्रसिद्ध हठयोगी, गोरखनाथ। ⊙धंधा = पु० कई तारो, कड़ियो आदि का समूह जिनको परस्पर विशेष युक्ति से जोडते या अलग करते हैं। बहुत उलझन या झगड़े की चीज। उलझन, झगडा। ⊙पंथी = वि० गोरखनाथ के चलाए हुए सम्प्रदायवाला। ⊙मुंडी = स्त्री० रक्तशोधन मे बहुत गुणकारी घुंडी के समान गोल गुलावी रंग के फूलवाली एक घास।
गोरटी(पु)—वि० स्त्री० गोरे रंगवाली, गोरी।
गोरसा—पुं० गाय के दूध से पला बच्चा।
गोरसी—स्त्री० दूध गरम करने की अँगीठी।
गोरा—वि० सफेद और स्वच्छ वर्णवाला (मनुष्य)। पुं० यूरोप, अमेरिका आदि देशो का निवासी, फिरंगी। ⊙ई(पु)† = स्त्री० गोरापन। सुंदरता।
गोरिल्ला—पुं० [अफ्रीका] एक बड़े आकार का वनमानुस।
गोरी—पुं० सुंदर और गौर वर्ण की स्त्री, रूपवती स्त्री।
गोलंदाज—पु० [फा०] तोपे मे गोला रखकर चलानेवाला तोपची।
गोलंबर—पुं० गुंबद। गुंबद के आकार का गोल ऊँचा उठा हुआ पदार्थ। गोलाई। कलबूत।
गोल—पुं० [फा०] मंडली, झुंड। पु० [अं०] खेल मे जीत के लिये गेंद पहुँचाने का स्थान। इस प्रकार गेंद पहुँचाने की संख्या। वि० [सं०] चक्र के आकार का, वृत्ताकार। पु० [सं०] मंडलाकार क्षेत्र, वृत्त। गोला, गोलाकार पिंड। दे० 'गोलमाल'। ⊙गप्पा = [हिं०] एक महीन, करारी, तली फुलकी। ⊙माल = पुं० [हिं०] गड़बड़। अव्यवस्था। ⊙मिर्च = स्त्री० दे० 'काली मिर्च'। ⊙यंत्र = पुं० [सं०] यंत्र जिससे गृहों, नक्षत्रों की गति और अयन परिवर्तन आदि जाने जाते हैं। ⊙योग = पुं० [सं०] ज्योतिष मे एक बुरा योग। गोलमाल। गोलाकार, गोलाकृति—वि० गोल आकार का। गोलार्ध—पु० पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचोबीच काटने से बनता है। विषुवत् रेखा के उत्तर या दक्षिण का पृथ्वी का आधा भाग।
गोलक—पु० [सं०] गोलोक। गोलपिंड। विधवा का जारज पुत्र। मिट्टी का बड़ा कुंडा। आँख का ढेला। आँख की पुतली। गुंबद। धनसंग्रह का संदूक या थैली। गुल्लक। विशेष कार्य के लिये संगृहीत धन (अं० फंड)।
गोला—पुं० बडा गोल पिंड। लोहे का गोल पिंड जिसे तोपो की सहायता से शत्रुओ पर फेंकते हैं। वायुगोला। जंगली कबूतर। नारियल की गरी का गोल पिंड। अनाज या किराने की बडी दुकानो का बाजार या मंडी। लकड़ी का गोल और लंबा लट्ठा (छाजन आदि मे प्रयुक्त)। रस्सी, सूत आदि की गोल लपेटी हुई पिंडी।
गोलाई—स्त्री० गोल होने का भाव।
गोली—स्त्री० [गोला का अल्पा०] छोटा गोलाकार पिंड। औषध की बटी। बालको के खेलने की मिट्टी, काँच आदि का गोल पिंड। गोली का खेल। बंदूक, तमंचे आदि मे भरकर चलाई जानेवाली कागज, धातु, बारूद आदि की बनी विस्फोटक टोपी।
गोवना—सक० दे० 'गोना'।
गोविंद—पु० [स०] श्रीकृष्ण। वेदांतवेत्ता, तत्वज्ञ।
गोश—पु० [फा०] सुनने की इंद्रिय, कान। ⊙माली = स्त्री० कान उमेठना। ताडना, कड़ी चेतावनी।
गोशवारा—पु० [फा०] कान का बाला, कुंडल। सीप का अकेला, बडा मोती। कलाबत्तू मे बना हुआ पगडी का आँचल। कलगी, तुर्रा, सिरपेच। जोड, मीजान। संक्षिप्त लेखा जिसमे हरएक मद का आय-व्यय अलग दिखलाया गया हो।
गोशा—पु० [फा०] कोना। एकांत

स्थान। तरफ, दिशा। कमान का सिरा। ⊙नशीन = वि० एकांतवास करनेवाला।
गोश्त—पुं० [फा०] मास।
गोष्ठ—पु० [सं०] गोशाला। सलाह। दल, मडली।
गोष्ठी—स्त्री० [सं०] सभा, मडली। बातचीत। सलाह। एक ही अक का एक रूपक।
गोसमायल—पुं० पगडी मे एक ओर लगा हुआ मोतियो की लडी का वह गुच्छा जो कान के पास लटकता रहता है (फा० गोशमायल)।
गोसा—पुं० उपला, कडा।
गोसाईं—पु० गौओ का स्वामी। ईश्वर। मालिक। विरक्त। साधु। जितेंद्रिय व्यक्ति। सन्यासियो का एक संप्रदाय।
गोसैयां†—पुं० प्रभु, स्वामी।
गोह—स्त्री० छिपकली की जाति का एक जगली जतु जो नेवले से बडा होता है।
गोहन⑤—पु० सग रहनेवाला, साथी। सग, साथ।
गोहरा—पु० सुखाया हुआ गोबर, कडा।
गोहार—स्त्री० पुकार, दुहाई, रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाना। शोर।
गोहारि†, **गोहारी**†—स्त्री० दे० 'गोहार'।
गोही⑤†—स्त्री० दुराव, छिपाव। गुप्त बात।
गोहुअन—पु० दे० 'गेहुँअन'।
गौं—स्त्री० प्रयोजनसिद्धि का स्थान या अवसर, घात। मतलब, गरज। ढग, तर्ज।
गौ—स्त्री० गाय, गैया। ⊙**चरी** = स्त्री० गाय चराने का कर। ⊙**मुखी** = स्त्री० दे० 'गोमुखी'।
गौख†—स्त्री० छोटी खिडकी, झरोखा। देहाती मकानो का बरामदा, चौपाल।
गौखा†—पु० झरोखा, गौख। गाय का चमड़ा।
गौगा—पु० [अ०] शोर, हल्ला। अफवाह।
गौड़—पु० बग देश का एक प्राचीन विभाग। ब्राह्मणो की एक जाति। गौड़ देश का निवासी। राजपूतो का एक भेद। कायस्थो का एक भेद। सपूर्ण जाति का एक राग।
गौडिया—वि० गौड देश का, गौड सबधी।
गौडी—स्त्री० [सं०] गुड़ से बनी मदिरा। काव्य मे एक रीति या वृत्ति जिसमें टवर्ग, सयुक्त अक्षर अथवा समास अधिक आते है। एक रागिनी।
गौण—वि० [सं०] जो प्रधान या मुख्य न हो। सहायक, मचारी। **गौणी**—वि० स्त्री० [सं०] अप्रधान, साधारण। स्त्री० एक लक्षणा जिसमे किसी एक वस्तु का गुण लेकर दूसरे मे आरोपित किया जाता है।।
गौदुमा—वि० गाय की पूंछ के आकार का, उतार चढाववाला।
गौन†—पुं० दे० 'गमन'। **गौनहाई**†—वि० स्त्री० गौने के बाद ससुराल मे पहले पहल आई हुई। **गौनहार**—स्त्री० स्त्री जो दुलहिन के साथ उसकी ससुराल जाय। दे० 'गौनहारी'।
गौनहारिन, **गौनहारी**—स्त्री० गाने का पेशा करनेवाली स्त्री।
गौना—पुं० विवाह के बाद वर द्वारा वधू को घर लाने की एक रस्म, द्विरागमन।
गौर—वि० [सं०] गोरे चमडेवाला, गोरा। श्वेत, उज्वल। पुं० पीला रग। लाल रग। चद्रमा। सोना। केसर। दे० 'गौड'। पुं० [अ०] सोच विचार, चितन। खयाल, ध्यान।
गौरव—पुं० [सं०] बडप्पन, महत्व। इज्जत, आदर। उत्कर्ष। भारीपन। **गौरवान्वित**—वि० गौरव या समान से युक्त। **गौरवित**—वि० दे० 'गौरवान्वित'। **गौरवी**—वि० गौरवान्वित। अभिमानी। **गौरवा**—पुं० चटक पक्षी, चिडा।
गौरांग—पु० [सं०] चैतन्य महाप्रभु। युरोपीय व्यक्ति। विष्णु।
गौरा—स्त्री० गोरे रग की स्त्री। पार्वती। हल्दी। एक रागिनी।
गौरी—स्त्री० [सं०] गोरे रग की स्त्री। पार्वती। आठ वर्ष की कन्या हल्दी। तुलसी। गोरोचन। सफेद रग की गाय। सफेद दूब। ⊙**शंकर** = पुं० महादेव, शिव। हिमालय पर्वत की सब से ऊँची चोटी। **गौरीश**—पु० महादेव, शिव।

गोहर—पु० [फा०] मोती।
गोहरा—पु० गायों के रखने का स्थान।
ग्याति†—स्त्री० दे० 'ज्ञाति'।
ग्यान†—पु० दे० 'ज्ञान'।
ग्यारस—स्त्री० एकादशी।
ग्यारह—वि० दस और एक, एकादश। पुं० ग्यारह की सूचक संख्या।
ग्रंथ—पुं० [सं०] पुस्तक, किताब। ग्रथन, गाँठ लगाना। ⊙ कर्ता, ⊙ कार =पुं० ग्रंथ की रचना करनेवाला व्यक्ति। ⊙चुबक=पुं० वह जो ग्रंथ का पाठ मात्र कर गया हो, उसके विषय को समझा न हो। ⊙संधि=स्त्री० ग्रंथ का विभाग, सर्ग, अध्याय आदि। ⊙साहब=पुं० [हिं०] सिक्खों की धर्म पुस्तक।
ग्रंथन—पुं० [सं०] गाँठ लगाकर जोडना। जोडना। गूँथना।
ग्रंथनाⓅ—सक० ग्रंथन करना।
ग्रंथि—स्त्री० [सं०] गाँठ। बंधन। मागा का जाल। गाँठों की तरह सूजन का एक रोग। ⊙बंधन=पुं० दे० 'गठबंधन'। ग्रंथित Ⓟ—वि० दे० 'ग्रथित'। **ग्रंथिल**—वि० [सं०] गाँठदार, गँठीला।
ग्रथित—वि० [सं०] गाँठ देकर बाँधा हुआ। एक में गूँथा या पिरोया हुआ।
ग्रसन—पुं० [सं०] भक्षण। निगलना। पकड, ग्रहण। बुरी तरह पकडना, चंगुल में फँसना। ग्रास। ग्रहण। **ग्रसित**—वि० दे० 'ग्रस्त'। **ग्रस्त**—वि० [सं०] पकडा हुआ। पीडित। खाया हुआ। निकला हुआ। ग्रहण लगा हुआ।
ग्रसना—सक० बुरी तरह पकडना चंगुल में फँसाना। सताना।
ग्रह—पुं० [सं०] सौर मंडल के नौ प्रधान तारे (सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु)। नौ की संख्या। चंद्रमा या सूर्य का ग्रहण। ग्रहण करना, लेना। कृपा, अनुग्रह। छोटे बच्चों के स्कंद, शकुनी आदि रोग, जिन्हें भूत प्रेत आदि का उपद्रव समझा जाता है। वि० बुरी तरह पकडने या तंग करने वाला। ⊙दशा=स्त्री० गोचर ग्रहों की स्थिति। ग्रहों की स्थिति के अनुसार मनुष्य की भली या बुरी दशा। अभाग्य, कमबख्ती। ⊙पति=पुं० सूर्य। शनि। आक का पेड़। ⊙वेध=पुं० ग्रह की स्थिति आदि का जानना।
ग्राडील—वि० बहुत बडा या ऊँचा।
ग्राम—पुं० [सं०] छोटी बस्ती, गाँव। आबादी, बस्ती। समूह, ढेर। क्रम से सात स्वरों का समूह, सप्तक (संगीत)। ⊙देवता=पुं० गाँव में पूजित देवता। गाँव का रक्षक देवता। ⊙सिंह=पु० कुत्ता। **ग्रामणी**—पु० गाँव का मालिक। प्रधान, अगुआ। **ग्रामिक**—वि० गाँव में रहनेवाला। उजड्ड, गँवार। **ग्रामीण**—वि० [सं०] ग्राम संबंधी। दे० 'ग्रामिक'। **ग्राम्य**—वि० [सं०] गाँव से संबंधित। बेवकूफ। अश्लील। पुं० काव्य में भद्दे या गँवारू शब्दों के प्रयोग का दोष। अश्लील शब्द या वाक्य। मैथुन। ~धर्म=पुं० मैथुन, स्त्रीप्रसंग।
ग्राव—पुं० [सं०] पर्वत। पत्थर। ओला।
ग्रास—पुं० [सं०] कौर, गस्सा। पकड़। ग्रहण लगना। ⊙क=वि० पकडनेवाला। निगलनेवाला। छिपाने या दबानेवाला। **ग्रासना**†—सक० दे० 'ग्रसना'। **ग्रासित**—वि० दे० 'ग्रस्त'।
ग्राह—पुं० [सं०] मगर, घड़ियाल। ग्रहण, उपराग। पकडना, लेना। ज्ञान। ग्रहण करनेवाला। **ग्राहक**—पुं० ग्रहण करनेवाला। मोल लेनेवाला। चाहनेवाला। पतला दस्त बदकर बँधा पाखाना लानेवाली औषधि।
ग्राही—पुं० वह जो ग्रहण करे या स्वीकार करे। मल रोकनेवाला पदार्थ। **ग्राह्य**—वि० लेने योग्य। स्वीकार करने योग्य। जानने योग्य।
ग्रीखमⓅ†—स्त्री० दे० 'ग्रीष्म'।
ग्रीवा—स्त्री० [सं०] गर्दन, गला।
ग्रीष्म—स्त्री० [सं०] गरमी की ऋतु। उष्ण, गरम।
ग्रेहⓅ†—पुं० दे० 'गेह'। **ग्रेही**Ⓟ—पुं० दे० 'गृहस्थ'।
ग्लानि—स्त्री० [सं०] अनुत्साह, खेद।

अपनी दशा, बुराई या दोष आदि को देखकर होनेवाला अनुत्साह, अरुचि और खिन्नता ।

ग्वार—स्त्री० एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल होती है । पु० ग्वाल, अहीर । ⊙**पाठा**=पु० दे० 'घीकुँआर' । **ग्वारी**Ⓟ†— दे० 'ग्वार' ।

ग्वारनट, ग्वारनेट—स्त्री० एक बढ़िया, रंगीन, रेशमी कपड़ा ।

ग्वाल—पु० अहीर, गोप । एक छद । ब्रजभाषा के एक प्राचीन कवि । **ग्वाला**—पुं० दे० 'ग्वाल' । **ग्वालिन**—स्त्री० ग्वाले की स्त्री, ग्वाल जाति की स्त्री । ग्वार (पौधा) । एक बरसाती कीडा, गिंजाई ।

ग्वैठनाⓅ†—सक० मरोडना, ऐंठना ।

ग्वैंड़ाⓅ—पु० गाँव के पास की भूमि, गोइँड़ ।

घ

घ—हिंदी की वर्णमाला मे कवर्ग का चौथा व्यजन ।

घँघोलना—सक० (पानी को) हिलाकर घोलना । (पानी को) हिलाकर मैला करना ।

घंट—पुं० घडा । मृतक की क्रिया मे पीपल मे बाँधा जानेवाला जलपात्र । दे० 'घंटा' ।

घंटा—पु० [सं०] थाली के आकार का एक बाजा जो मुँगरी से ठोककर बजाया जाता है, घडियाल । औंधे बरतन के आकार का एक बाजा जिसमे आवाज करने के लिये एक लगर लटकता रहता है । घडियाल जो समय की सूचना के लिये बजाया जाता है । दिन रात का चौबीसवाँ भाग । साठ मिनट का समय । ⊙**घर**= पुं० [हिं०] ऊँची मीनार पर घटा बजाकर समय सूचित करनेवाली बडी घडी । **घंटिका**—स्त्री० बहुत छोटा घटा । घुंघरू । स्त्री० रहँट का छोटा लंबा घडा । **घंटी**—स्त्री० [हिं०] पीतल या फूल की छोटी लुटिया । बहुत छोटा घटा । घटी का शब्द । घुँघरू । गले की हड्डी की अधिक निकली हुई गुरिया । गले का कौआ ।

घई—स्त्री० गभीर भँवर । थूनी, टेक । वि० बहुत गहरा, अथाह ।

घघरा—पुं० दे० 'घाघरा' । **घघरी**—स्त्री० [घघरा का अल्पा०] छोटा लहँगा ।

घट—पु० [सं०] घडा, कलसा । पिंड, शरीर । कुभ राशि । वि० [हिं०] घटा हुआ, कम । ⊙**कर्ण**= पुं० रावण का भाई कुंभकर्ण । ⊙**दासी**= स्त्री० कुटनी । ⊙**योनि**= पुं० अगस्त्य मुनि । ⊙**सभव**= पु० अगस्त्य मुनि । ⊙**स्थापना**= पु० मगलकार्य या पूजन के पूर्व जल से भरा घडा पूजन के स्थान पर रखना । नवरात्र का पहला दिन । **घटाकाश**—पु० घडे के अदर की खाली जगह ।

घटक—पु० [सं०] मध्यस्थ, बीच मे पडनेवाला । विवाह सबध तय करनेवाला । दलाल । काम पूर्ण करनेवाला व्यक्ति । वशपरपरा बतानेवाला व्यक्ति । चारण ।

घटका—पु० मरने के पहले की वह अवस्था जिसमे साँस रुक रुककर घरघराहट के साथ निकलती है ।

घटती—स्त्री० कमी, कसर । हीनता, अप्रतिष्ठा ।

घटना—अक० होना । सटीक बैठना, ठीक उतरना । कम होना, क्षीण होना । स्त्री० [सं०] कोई बात जो हो जाय । वाकया ।

घट बढ़—स्त्री० कमी बेशी, न्यूनाधिकता । वि० कमबेश ।

घटवाई—पु० घाट का कर लेनेवाला । बिना कर लिए या तलाशी लिए न जाने देनेवाला । स्त्री० कम करवाई ।

घटवार—पु० घाट का महसूल लेनेवाला । मल्लाह, केवट । घाट पर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण, घाटिया ।

घटहा†—पु० घाट का ठेकेदार । इस पार से उस पार जानेवाली नाव ।

घटा—स्त्री० [हि०] मेघो का घना समूह, उमडते हुए बादल । समूह, झुड ।
घटाई—स्त्री० हीनता, अप्रतिष्ठा ।
घटाटोप—पु० चारो ओर से घेरे हुए बादलो की घटा । किसी वस्तु को पूर्णत ढक लेनेवाला कपडा । बादलो की भाँति चारो ओर से घेर लेनेवाला दल या समूह ।
घटाना—सक० कम करना, क्षीण करना । बाकी निकालना, काटना । अप्रतिष्ठा करना ।
घटाव—पु० कमी, न्यूनता । अवनति । नदी की बाढ की कमी ।
घटावना(पु)—सक० दे० 'घटाना' ।
घटिक—पु० [स०] घटा पूरा होने पर घडियाल बजानेवाला व्यक्ति, घडियाली ।
घटिका—स्त्री० [स०] छोटा घडा, गगरी । घडी, घटी यत्र । एक घडी या २४ मिनट का समय ।
घटित—वि० [सं०] जो हुआ हो । रचा हुआ, निर्मित ।
घटिताई(पु)—स्त्री० घाटा, कमी ।
घटिया—वि० खराब, कम मोल का । अधम, तुच्छ ।
घटिहा—वि० घात पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला । मक्कार । धोखेबाज । व्यभिचारी, लपट । दुष्ट, खेल ।
घटी—स्त्री० [सं०] घडी, २४ मिनट का समय । घडी, समयसूचक यत्र । कमी । हानि ।
घटूका(पु)—पु० भीमसेन का हिडिबा राक्षसी से उत्पन्न पुत्र, घटोत्कच ।
घट्ठा—पु० शरीर पर रगड से उभरा हुआ चिह्न ।
घडघडाना—अक० घडघड शब्द करना, गडगडाना । घडघडाहट—स्त्री० घडघड शब्द होने का भाव । बादल गरजने या गाडी आदि के चलने का शब्द ।
घड़ना—सक० दे० 'गढना' । घड़ाना—सक० दे० 'गढाना' ।
घड़ा—पु० पानी भरने का मिट्टी का एक बरतन, बडी गगरी । मु०—घड़ो पानी पड़ जाना = अत्यत लज्जित होना ।
घड़िया—स्त्री० मिट्टी का बरतन जिसमे सुनार सोना चाँदी गलाते हैं । मिट्टी का छोटा प्याला । रहट में पानी भरकर लाने के लिये लगे हुए छोटे बरतन ।
घडियाल—पु० थाली के आकार का बरतन जो पूजा मे या समय सूचित करने के लिये बजाया जाता है । एक बडा और हिंसक जलजतु । घडियाली—वि० घटा बजानेवाला (व्यक्ति) ।
घडी—स्त्री० दिन रात का ३२ वाँ भाग, १४ मिनट का समय । ⊙घड़ी = क्रि० वि० थोडी थोडी देर पर । ⊙दिआ = पु० वह घडा और दीया जो घर के किसी के मरने पर घर मे रखा जाता है । ⊙साज = पु० घडी की मरम्मत करनेवाला । मु०~गिनना = बडी उत्सुकता से प्रतीक्षा करना । मरने के निकट आना ।
घडोला—पु० छोटा घडा ।
घड़ौंची—स्त्री० पानी से भरा घडा रखने की तिपाई ।
घतिया—पु० घात करनेवाला, धोखा देनेवाला ।
घतियाना—सक० अपनी घात या दाँव मे लाना । चुराना, छिपाना ।
घन—पु० [सं०] बादल । लुहारो का बड़ा हथौडा । समूह, झुड । कपूर । घटा, घड़ियाल । किसी अक को उसी अक से दो बार गुणन करने से लब्ध गुणनफल । लबाई, चौडाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) तीनो का विस्तार । ताल देने का बाजा । पिंड, शरीर । वेदपाठ का एक प्रकार । वि० घना । गठा हुआ, ठोस । मजबूत । ज्यादा । ⊙कोदंड = पु० इद्रधनुष । ⊙गरज = स्त्री० [हिं०] बादल गरजने की ध्वनि । खाई जानेवाली एक खुमी । एक तोप । ⊙घोर = पु० [हिं०] भीषण ध्वनि, बादल की गरज । वि० बहुत घना, गहरा, भीषण । ⊙चक्कर = पु० [हिं०] मूर्ख । चचल बुद्धि का आदमी । आवारागर्द । एक आतिशबाजी । गर्दिश, चक्कर । जजाल । ⊙त्व = पु० घनापन, सघनता । लबाई, चौडाई और मोटाई तीनों का भाव । गठाव, ठोसपन । ⊙नाद

=पु० बादलों की गरज। रावणपुत्र, मेघनाद। ⊙फल=पु० लंबाई, चौडाई और मोटाई, तीनों का गुणनफल। किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त गुणनफल। ⊙बान=पु० [हिं०] बादल छा देने का बाण। बेल=वि० बेलबूटेदार। ⊙मूल=पु० गणित में किसी घन (राशि) का मूल अंक (जैसे, २७ का ३)। ⊙रस =पु० जल। कपूर। हाथियों का एक रक्तयोग। ⊙श्याम=पु० काला बादल। श्रीकृष्ण। वि० बादल के समान काला। ⊙सार=पु० कपूर। **घनाक्षरी**—पु० स्त्री० दंडक या मनहर छंद जिसे साधारणतया कवित्त कहते हैं। इसमें १६-१५ के विश्राम से प्रत्येक चरण में ३१ अक्षर होते है। अंत में प्राय गुरु वर्ण होता है। शेष के लिये लघुगुरु का कोई नियम नहीं है। **घनानंद**—पु० गद्य काव्य का एक भेद। व्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि।

घनघनाहट—स्त्री० 'घनघन' का शब्द या भाव।

घना—वि० पास में सटे हुए अवयववाला, सघन, गुंजान (घना जंगल, घने बाल, घनी बनावट आदि)। नजदीकी, घनिष्ट। बहुत।

घनाली—स्त्री० मेघों की पंक्ति या समूह।

घनिष्ठ—वि० [सं०] गाढा, घना। पास का, अंतरंग।

घने—वि० बहुत से, अनेक।

घनेरा—Ⓟ†—वि० बहुत अधिक।

घपची—स्त्री० दोनों हाथों की मजबूत पकड।

घपला—पु० गडबड, गोलमाल।

घपुआ†—वि० मूर्ख, नासमझ।

घबराना—अक० व्याकुल होना। अधीर होना। किंकर्तव्यविमूढ होना। जल्दी मचाना। जी न लगना। सक० व्याकुल करना। अधीर करना। गडबडी में डालना। हैरान करना। उचाट करना।

घबराहट—स्त्री० व्याकुलता। अधीरता। किंकर्तव्यविमूढता। उतावली, बेसब्री।

घमंकाⓅ†—पु० घूँसा, मुष्टिका-प्रहार। 'घम' शब्द करनेवाली चोट।

घमंड—पुं० अभिमान, शेखी। जोर, भरोसा।

घमंडी—वि० अभिमानी, शेखीबाज।

घमकना—अक० 'घमघम' शब्द करना या गरजना। † घूँसा मारना।

घमका—पु० गदा या घूँसा पडने का शब्द। आघात की ध्वनि।

घमघमाना—अक० घमघम शब्द करना, गंभीर शब्द करना भारी आघात करना। घूँसा मारना।

घमर—पु० नगाडे, ढोल आदि का भारी शब्द।

घमरौल—स्त्री० हल्लागुल्ला, ऊधम। गडबड़।

घमसा—पुं० ऊमस। घनापन, अधिकता।

घमसान—पुं० भयंकर युद्ध, घोर रण।

घमाना—अक० घाम लेना, धूप खाना।

घमासान—पुं० घमासान, भयंकर युद्ध। वि० घोर, भयंकर (लडाई)।

घमोई—स्त्री० बाँस का एक रोग जिससे उसमें नए कल्ले नहीं निकलने पाते।

घमोय—स्त्री० कँटीले पत्तों का एक पौधा, जिसके पत्तों का रस आँख के लिये उपकारी माना जाता है, सत्यानाश।

घमौरी—स्त्री० दे० 'अम्हौरी'।

घर—पुं० मनुष्य के रहने का दीवार, छत आदि से घिरा स्थान, मकान। जन्म-भूमि, स्वदेश। कुल, घराना। कार्यालय, दफ्तर। कमरा। पति। रेखाओं से घिरा स्थान, कोठा। डिब्बा, खाना। संदूक आदि में पटरी आदि से घिरा छोटा स्थान। समाने या भरने का स्थान, छोटा गड्ढा। छेद, बिल। नगीने आदि के बैठाने का स्थान। उत्पत्ति का कारण। गृहस्थी। गृहस्थी का सामान। आँख का गड्ढा। चौखटा। बहुतायत का स्थान। पेंच, युक्ति। बाँस आदि का घने होकर उगने का स्थान। स्त्री० पत्नी। ⊙घाट=रंगढंग, चाल-ढाल। घरबार। ⊙घाल, ⊙घालक, ⊙घालन=वि० परिवार में दु ख या अशांति

फैलानेवाला। कुल मे कलक लगानेवाला। ⊙जाय = पुं० दास, गुलाम। ⊙दासी = स्त्री० गृहिणी, पत्नी। ⊙द्वार = पुं० दे० 'घरबार'। ⊙नाल = स्त्री० एक पुरानी तोप। ⊙फोरी = वि० स्त्री० परिवार मे कलह फैलानेवाली। ⊙बसा = पुं० उपपति, यार। ⊙बसी = स्त्री० रखेली स्त्री। वि० स्त्री० घर की समृद्धि करनेवाली, भाग्यवती। घर उजाड़नेवाली (व्यग्य)। ⊙बार = रहने का स्थान। गृहस्थी। निज की सारी सपत्ति। ⊙बारी = पुं० गृहस्थ, बालबच्चो वाला। ⊙वाला = पु० पति। घर का मालिक। ⊙वाली = स्त्री० पत्नी। ⊙हाँई(पु)† = स्त्री० घर मे विरोध करानेवाली स्त्री। वि० स्त्री० बदनामी फैलानेवाली, चुगलखोर। मु०~करना = निवास करना। समाने या ठहरने के लिये जगह बनाना। (मन मे)~करना = बहुत पसद आना। ~का = निज का। आपस का, सबधियों या आत्मीय जनो के बीच का। भाई-बधु। पति।~का न घाट का = बिना काम का। जिसका निश्चित निवास-स्थान न हो। ~के बाढे = घर ही मे बढ चढकर बातें करनेवाला।~के ~रहना = हानि लाभ मे बराबर रहना।~घालना = परिवार मे अशाति या दुख फैलाना। कुल मे कलक लगाना। प्रेम से व्यथित करना। ~फोड़ना = परिवार मे झगडा लगाना। ~बसना = घर आबाद होना। घर मे स्त्री या वहू आना।~बैठना = (किसी के यहाँ) पत्नी के भाव से रहने लगना। ~बैठे = बिना परिश्रम के।~से = पास से, गाँठ से।~से देना = पास से देना, नुकसान उठाना।

घरनी—स्त्री० घरवाली, पत्नी।

घरबात(पु)†—स्त्री० घर घर की सपत्ति।

घरसा—(पु)†—पुं० रगड़ा।

घराऊ—वि० घर का, गृहस्थी सबधी। आपस का, निज का।

घराती—पुं० विवाह मे कन्या पक्ष के लोग।

घराना—पुं० खानदान, कुल।

घरियाना†—सक० घरी या तह लगाना।

घरी(पु)†—स्त्री० तह, लपेट। दे० 'घडी'। **घरीक**(पु)†—क्रि० वि० एक घडी भर, थोडी देर।

घरू—वि० घर का, गृहस्थी से संबधित।

घरेलू—वि० घर का, पालतू। घर का, निज का। घर का बना हुआ।

घरैया'—वि० घर का, घनिष्ट सबधी।

घरो†—पुं० दे० 'घडा'।

घरौंदा, घरौंधा'—पुं० कागज, मिट्टी, धूल आदि का बना छोटे बच्चो के खेलने का घर। छोटा मोटा घर।

घरौना—पुं० घर, मकान। बच्चो के खेलने का मिट्टी आदि का घर, घरौंदा।

घर्म—पुं० [स०] घाम, धूप।

घर्रा—पुं० एक प्रकार का अजन। कफ के कारण गले की घरघराहट। **घर्राटा**—पु० घर्र घर्र शब्द, दे० 'खर्राटा'।

घर्षण—पु० [स०] रगड, घिस्सा। **घर्षित**—वि० रगडा हुआ, घिसा हुआ।

घलना(पु)'—अक० फेका जाना, छूटकर गिर पडना। तीर या गोली का छूटना। मारपीट हो जाना।

घलाघल, घलाघली—स्त्री० मारपीट, आघात-प्रतिघात, टक्कर। डालना, फेंकना।

घलुआ†—पुं० खरीददार को उचित तौल के अतिरिक्त दी जानेवाली वस्तु।

घवरि(पु)†—स्त्री० फलो या पत्तियो का गुच्छा।

घसखुदा—पु० घास खोदनेवाला। अनाडी, मूर्ख।

घसना†—अक० दे० 'घिसना'।

घसिटना†—अक० घसीटा जाना।

घसियारा—पु० घास बेचनेवाला, घास छीलकर लानेवाला।

घसीट—स्त्री० जल्दी लिखने का भाव। जल्दी का लिखा लेख। घसीटने का भाव। **घसीटना**—सक० किसी वस्तु को इस प्रकार खीचना कि वह भूमि से रगड खाती हुई जाय। जल्दी जल्दी

लिखना। (किसी काम में) जबरदस्ती शामिल करना।
घहघह—स्त्री० बादल के गरजने की ध्वनि।
घहनाना(पु)—अक० घंटे आदि का शब्द करना।
घहरना—अक० गरजने का सा शब्द करना। घोर शब्द करना। घहराना—अक० दे० 'घहरना'। घहरानि†—स्त्री० गरज, तुमुल शब्द। घहरारा(पु)†—पुं० घोर शब्द गरज। घहरारी(पु)†—स्त्री० दे० 'घहरारा'।
घाँ(पु)†—स्त्री० दिशा। ओर, तरफ।
घाँघरा†—पुं० दे० 'घाघरा'।
घाँटी†—स्त्री० गले का कौआ।
घाँह(पु)†—स्त्री० ओर, तरफ।
घा†—स्त्री० दे० 'घाँह'।
घाइ(पु)—पुं० दे० 'घाव'।
घाइल(पु)†—वि० दे० 'घायल'।
घाई(पु)†—स्त्री० ओर, तरफ। बार, दफा। पानी का भँवर।
घाई—स्त्री० दो उँगलियों के बीच की संधि, अंटी। चोट, आघात। धोखा।
घाउ†—पुं० दे० 'घाव'।
घाऊघप—वि० चुपचाप माल हजम करनेवाला जिसकी चाल जल्दी न खुले।
घाएँ†—अव्य० ओर, तरफ।
घाघ—पुं० गोंडा के एक चतुर और अनुभवी व्यक्ति जिनकी खेतीबारी और मौसम आदि की कहावतें प्रसिद्ध है। वि० बहुत चालाक, खुर्राट।
घाघरा—पुं० स्त्रियों के कमर से नीचे का अंग ढकने का एक चुननदार और घेरदार पहनावा, लहँगा। स्त्री० सरजू नदी।
घाट—पुं० जलाशय या नदी का किनारा जहाँ नहाने धोने आदि की सीढ़ियाँ बनी हों। नदी का किनारा जहाँ धोबी कपड़ा धोते या जहाँ से नाव पर चढ़ते है। चढ़ाव उतार का पहाड़ी मार्ग। पहाड़। ओर, तरफ। चालढाल, तौर तरीका। तलवार की धार का उतार चढ़ाववाला भाग। अँगिया का गला। †स्त्री० धोखा, छल, बुराई। ⊙वाल = पुं० घाटिया, गंगापुत्र।
घाटा—पुं० घटी, नुकसान।
घाटारोह(पु)†—पुं० घाट से जाने न देना।
घाटि(पु)†—वि० कम, घटकर। स्त्री० पाप, नीच कर्म।
घाटिया—पुं० घाट पर बैठकर स्नान करनेवालों से दक्षिणा लेनेवाला ब्राह्मण, गंगापुत्र।
घाटी—स्त्री० पर्वतों के बीच भूमि, दर्रा।
घात—पुं० [सं०] प्रहार, चोट, मार। वध। अहित, बुराई। गुणनफल (गणित)। स्त्री० कार्यसिद्धि का अनुकूल स्थान और अवसर। दूसरे का अहित कर अपनी स्वार्थसिद्धि के लिये अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा, ताक। चालबाजी। रंगढंग, तौर-तरीका। ⊙क = पुं० हत्यारा। जल्लाद। शत्रु। मु०~पर चढ़ना या~में आना = दाँव पर चढ़ना, वश में आना।~में रहना = ताक में रहना। ~लगना = अवसर मिलना। ~लगाना = मौका ताकना। घातकी—पुं० [हिं०] दे० 'घातक'। घातिनी—वि० स्त्री० [सं०] वध करनेवाली। घातिया—वि० [हिं०] दे० 'घाती'। घाती—वि० [सं०] वध करनेवाला। नाश करनेवाला। धोखेबाज।
घान—पुं० कोल्हू या चक्की में एक बार पेरी या पीसी जानेवाली वस्तु। एक बार में पकाई या भूनी जानेवाली वस्तु। (पु)प्रहार, चोट। घानी—स्त्री० दे० 'घान'। पुं० कोल्हू।
घाना(पु)—सक० मारना। वश करना।
घाम—पुं० धूप, आतप। घामड़—वि० घाम से व्याकुल (चौपाया)। मूर्ख, जड़। आलसी। घामर(पु)—वि० दे० 'घामड़'।
घाय(पु)†—पुं० दे० 'घाव'। घायक—वि० घातक, मारनेवाला। जिससे घाव हो जाय। घायल—वि० जिसके घाव लगा हो, जख्मी।
घाल†—पुं० दे० 'घलुआ'। ⊙मेल = पुं० कई भिन्न प्रकार की वस्तुओं की एक साथ मिलावट। मेलजोल, घनिष्ठता। घालना—सक० डालना, रखना। फेंकना; चलाना। कर डालना। बिगाड़ना। मार डालना।

घालक—वि० मारने या नाश करनेवाला।

घाव—पु० शरीर पर का कटा या चिरा हुआ स्थान, जख्म। मु०~पर नमक छिड़कना = दुःख के समय और पीड़ा पहुँचाना। **घावरिया**Ⓟ†—पु० घावों का चिकित्सक।

घास—स्त्री० [सं०] पृथ्वी पर उगनेवाले छोटे उद्‌भिद् जिन्हें चौपाए चरते हैं, तृण, चारा। ⊙पात, ⊙फूस = पु० तृण और वनस्पति। कूड़ा करकट, बेकाम चीज। मु०~काटना,~छीलना = तुच्छ काम करना। निरर्थक प्रयत्न करना।

घाहⓅ†—स्त्री० दे० 'घाई'।

घिग्गी, घिग्घी—स्त्री० अधिक रोने से साँस लेने में पड़नेवाली रुकावट, सुबकी, हिचकी। भय के मारे बोलने में होनेवाली रुकावट।

घिघियाना—अक० गिड़गिड़ाना।†चिल्लाना।

घिचपिच—स्त्री० जगह की तंगी। थोड़े स्थान में बहुत सी वस्तुओं का समूह। वि० अस्पष्ट।

घिन—स्त्री० घृणा, नफरत। गंदी चीज से जी बिगड़ने की अवस्था। **घिनाना**—अक० घृणा करना। **घिनावना, घिनौना**—वि० गंदा, घिन उत्पन्न करनेवाला।

घिन्नी—स्त्री० दे० 'घिरनी'। दे० 'गिन्नी'।

घिय†—पु० दे० 'घी'।

घिया—स्त्री० एक बेल और उसका लंबा या गोल फल जिसकी तरकारी बनती है, लौकी। †नेनुआ, घियातोरी। ⊙तोरी = स्त्री० एक बेल और तरकारी के काम आनेवाले उसके फल, नेनुआ। छिलके पर गहरी रेखाएँ पड़ी हुई तरोई।

घिरना—अक० चारों ओर फैली हुई वस्तु के बीच में पड़ना, घेरे में आना। चारों ओर छाना (जैसे, घटा घिरना)।

घिरनी—स्त्री० गराड़ी, चरखी। चक्कर, फेरा। रस्सी बटने की चरखी। दे० 'गिन्नी'।

घिराई—स्त्री० घेरने की क्रिया या भाव। पशुओं को चराने का काम या मजदूरी।

घिराव—पुं० घेरने की क्रिया या भाव। घेरा।

घिरिनि—पुं० दे० 'गिरहबाज'।

घिरौरा—पुं० घूस का बिल।

घिर्राना—सक० घसीटना। गिड़गिड़ाना।

घिसना—सक० रगड़ना, दबाते हुए इधर उधर फिराना। अक० रगड़ खाकर कम होना।

घिसपिस†—स्त्री० घिसघिस। मेलजोल।

घिसाई—स्त्री० घिसने की क्रिया या भाव। घिसने की मजदूरी।

घिस्सा—पुं० रगड़ा। धक्का, ठोकर। पहलवान द्वारा अपनी कुहनी और कलाई की हड्डी से दिया जानेवाला आघात, रद्दा।

घींच†—स्त्री० गरदन, ग्रीवा।

घी—पुं० दूध में से निकला हुआ चिकना सार, घृत। मु०~के दिए जलना = कामना पूरी होना। आनंद मंगल होना। (किसी की) पाँचों उँगलियाँ~में होना = सुख या लाभ का पूरा अवसर मिलना।

घीकुँआर—पुं० ग्वारपाठा।

घुँइयाँ—स्त्री० अरवी कंद।

घुंगची घुंघची—स्त्री० एक बेल और उसके प्रसिद्ध लाल बीज, गुंजा।

घुंघनी—स्त्री० भिगोकर तला हुआ चना, मटर आदि अन्न।

घुंघरारेⓅ†—वि० घुंघराले, घुंघरवाले (बाल)।

घुंघराले—वि० छल्लेदार घूमे हुए (बाल)।

घुंघरू, घुंघुरू—पुं० धातु का बना बजनेवाला खोखला दाना। ऐसे दानों का बना पैर का गहना जिसे नाचनेवाले पहनते हैं। 'घर्रा'। चने के दाने का कोश। सनई का फल जिसके भीतर रहनेवाले बीज बजते हैं।

घुंघुवारे—वि० दे० 'घुंघुराले'।

घुंडी—स्त्री० कपड़े का गोल बटन। हाथ या पैर में पहनने के कड़े के दोनों छोरों पर की गाँठ। गोल गाँठ।

घुग्घी—स्त्री० पानी, शीत आदि से बचने के लिये तिकोना लपेटा हुआ कंबल।

घुग्घू—पुं० उल्लू पक्षी। **घुघुआ**—पुं० दे०

'घुग्घू'। घूघुआना—अक० उल्लू पक्षी का बोलना। बिल्ली का गुर्राना।

घुटना—अक० साँस का भीतर ही दब जाना, बाहर न निकलना, रुकना। उलझकर कड़ा पड जाना। घोटा जाना, पीसा जाना। रगड खाकर चिकना होना। घनिष्टता होना।

घुटन्ना—पुं० घुटनो तक का पायजामा।

घुटरू(पु)†—पुं० दे० 'घुटना'।

घुटवाना, घुटाना—सक० [घोटना का प्रे०] घोटने का काम कराना। बाल मुँडाना।

घुटुरू(पु)†—पुं० दे० 'घुटना'।

घुट्टी—स्त्री० छोटे बच्चो को पाचन के लिये पिलाई जानेवाली दवा। मु०~मे पडना=स्वभाव मे होना।

घुड़—पुं० 'घोडा' का संक्षेप (समास मे)। ⊙चढा=पुं० घोडे का सवार। ⊙चढी=स्त्री० विवाह मे दूल्हे का दूलहिन के घर घोडे पर चढकर आना। एक तोप, घुडनाल। ⊙दौड=स्त्री० घोडो की दौड। दौड पर घोडो की हार या जीत पर निर्भर जुए का खेल। घोडे दौडाने का स्थान या सडक। एक बडी नाव। ⊙नाल=स्त्री घोडो पर चलनेवाली एक तोप। ⊙बहल=स्त्री० रथ जिसमे घोडे जुतते हो। ⊙सवार=(पु)पुं० जो घोडे पर सवार हो। ⊙साल=स्त्री० अस्तबल।

घुड़कना—सक० कडककर बोलना, डाँटना।

घुड़की—स्त्री० घुडकने की क्रिया। डाँट डपट, फटकार।

घुड़िया—स्त्री० छोटी घोडी। दे० 'घोडिया'।

घुणाक्षरन्याय—पु० घुनो के खाने से लकडी मे अक्षर बन जाने के समान अनजान मे हो जानेवाली रचना।

घुन—पुं० अनाज, लकडी आदि मे लगनेवाला एक छोटा कीड़ा। मु०~लगना=घुन का अनाज या लकडी को खाना। अदर ही अदर क्षीण होना। **घुनना**—अक० घुन के द्वारा खाया जाना। किसी दोष से भीतर ही भीतर छीजना।

घुन्ना—वि० जो क्रोध, द्वेष आदि भावो को मन ही मे रखे, चुप्पा।

घुप—वि० गहरा, निबिड (अधकार)।

घुमँड़ना—अक० दे० 'घुमडना'।

घुमक्कड़—वि० बहुत घूमनेवाला।

घुमटा—पु० सिर का चक्कर।

घुमड,(पु) **घुमड़**—स्त्री० बरसनेवाले बादलो के घिर आने की क्रिया। 'घन घुमड पावस निसा...' (जगद्विनोद १७७)। घुमडना—अक मेघो का छाना। इकट्ठा होना।

घुमड़ी—स्त्री० घूमने से सिर मे आनेवाला चक्कर। केंद्र पर स्थिर रहकर चारो ओर घूमने की क्रिया। (किसी वस्तु के) चारो ओर फेरा लगाने की क्रिया।

घुमना†—वि० घूमनेवाला, घुमक्कड। घुमाना—सक० चक्कर देना, चारो ओर फिराना। सैर कराना। किसी विषय की ओर लगाना, प्रवृत्त करना।

घुमरना—अक० ऊँचे शब्द से बजना। दे० 'घुमडना'। †दे० घूमना'।

घुमरा(पु)—अक० दे० 'घुमरना'।

घुमरी†—स्त्री० दे० 'घुमडी'। भँवर (पानी का)। चौपाओ का एक रोग।

घुमाव—पुं० घूमने या घुमाने का भाव। फेर, चक्कर। रास्ते का मोड।

घुम्मरना—अक० दे० 'घुमरना'।

घुरकना(पु)—अक० दे० 'घुडकना'।

घुरघुराना—अक० गले से 'घुर घुर' शब्द निकालना।

घुरना(पु)—अक० दे० 'घूरना'। शब्द करना, बजना।

घुरबिनिया—स्त्री० घूर पर से दाना या गली कूचो से फूटी चीजो के टूकडे चुनने का काम।

घुरमना(पु)—अक० दे० 'घूमना'।

घुराना—अक० दे० 'घुलाना'।

घुर्मित—क्रि० वि० घूमता हुआ, चक्कर खाता हुआ।

घुलना—अक० पानी, दूध आदि पतली चीजो मे हिल मिल जाना। गलना। पककर

पिलपिला होना। दुर्बल होना। (समय बीतना)। मु०—घुल घुलकर बातें करना = अभिन्न हृदय होकर बातें करना। घुल घुलकर काँटा होना = बहुत दुबला हो जाना। घुल घुलकर मरना = बहुत दिनों तक कष्ट भोगकर मरना। घुलाना—सक० [अक० घुलना] गलाना। शरीर दुर्बल करना। मुँह मे मे धीरे धीरे चूसना। गरमी या दाब से नरम करना। सुरमा या काजल लगाना। व्यतीत करना।

घुलवाना—सक [घोलना का प्रे०] गलवाना। आँख मे सुरमा लगवाना। द्रव पदार्थ मे मिश्रित कराना।

घुसना—अक० अंदर पैठना, भीतर जाना। धँसना। चुभना। अनधिकार चर्चा, प्रवेश या कार्य करना। किसी विषय की ओर खूब ध्यान लगाना। घुसाना—[अक० घुसना] भीतर पैठाना। चुभाना, धँसाना। अनधिकार प्रवेश या कार्य करना।

घुसपैठ—स्त्री० पहुँच, गति। घुसपैठिया—वि० पहुँचवाला। अनधिकार प्रवेश करनेवाला।

घुसेड़ना—सक० दे० 'घुसाना'।

घूँघट—पुं० साड़ी का भाग जिसे परदे या लज्जा के लिये स्त्रियाँ मुँह पर डाल लेती हैं। बाहरी दरवाजे के सामने भीतर की ओर रहनेवाली परदे की दीवार।

घूँघर—पुं० बालों मे बड़े छल्ले या मरोड़। ⊙वाले = वि० छल्लेदार, कुंचित (बाल)।

घूँघरी†—स्त्री० घुँघुरू, नूपुर।

घूँट—पुं० एक बार गले के नीचे उतारा जानेवाला द्रव पदार्थ, चुसकी। घूँटना—सक० पीना, द्रव पदार्थ गले के नीचे उतारना।

घूँटी—स्त्री० दे० 'घुट्टी'।

घूँस—स्त्री० दे० 'घूस'।

घूँसा—पुं० मारने के लिये उठाई हुई बँधी हुई मुट्ठी। बँधी हुई मुट्ठी का प्रहार।

घूआ—पुं० काँस, सरकंडे आदि का रुई की तरह का फूल। एक कीड़ा जिसे बुलबुल आदि पक्षी खाते हैं।

घूक—पुं० [सं०] घुग्घू, उल्लू।

घूंस—पुं० ऊँचा बुर्ज।

घूघ—स्त्री० सिर को चोट से बचाने के लिये लोहे या पीतल की टोपी।

घूटना—सक० दे० 'घूँटना'।

घूम—पुं० घुमाव, चक्कर। मोड़। घूमना—अक० चारों ओर फिरना, चक्कर खाना। सैर करना, टहलना। सफर करना। मँडराना। किसी की ओर मुड़ना। वापस आना या जाना। (पु)+ मतवाला होना। मु०~पड़ना = बिगड़ उठना।

घूरना—अक० क्रोध या बुरे भाव से एकटक देखना। +घूमना।

घूरा—पु० कूड़ करकट का ढेर। कनवारखाना।

घूस—स्त्री० चूहे के वर्ग का एक बड़ा जंतु। काम कराने के लिये अनुचित रूप से दिया जानेवाला धन, रिश्वत। ⊙खोर = वि० घूस खानेवाला। ⊙खोरी = स्त्री० घूस लेने की क्रिया।

घृणा—स्त्री० [सं०] घिन, नफरत। बीभत्स रस का स्थायी भाव। घृणित—वि० घृणा करने योग्य। जिसे देख या सुनकर घृणा पैदा हो।

घृत—पुं० [सं०] घी। ⊙कुमारी = स्त्री० घीकुँवार।

घृनी (पु)—वि० दयालु।

घेघा—पुं० गला फूल जाने का एक रोग।

घेर—पुं० चारों ओर का फैलाव, घेरा। ⊙घार = स्त्री० चारों ओर से घेरने या छा जाने की क्रिया। चारों ओर का फैलाव। खुशामद। घेरना—सक० चारों ओर हो जाना, बाँधना। चारों ओर से रोकना। चराना। किसी स्थान को अपने अधिकार मे रखना। चारों ओर से अधिकार या आक्रमण के लिये स्थित होना। बार बार जाकर अनुरोध या विनय करना।

घेवर—पुं० मैदे, घी और चीनी की बड़ी टिकिया के आकार की एक मिठाई।

घैया—पुं० ताजे और बिना मथे हुए दूध के ऊपर उतराते मक्खन को काछकर इकट्ठा करने की क्रिया। थन से छूटती

हुई दूध की धारा जिसे मुँह से पिया जाय। स्त्री० ओर, तरफ।

घैर, घैरु, घैरो(पु)†—पु० निंदामय चर्चा, बदनामी। **घैरुहारिनि**(पु) = वि० स्त्री० निंदा करनेवाली।

घैला†—पुं० घडा।

घैहल†—वि० घायल।

घोंघा—पुं० शख की तरह का एक कीडा, शबुक। वि० जिसमें कुछ सार न हो। मूर्ख।

घोंचू—वि० नासमझ, गँवार।

घोंटना—स० घूँट घूँट करके पीना। हजम करना। दे० 'घोटना'।

घोंपना—सक० धँसाना, गडाना। बुरी तरह सीना।

घोंसला—पु० घास, फूँस आदि का चिड़ियों के रहने और अडे देने का स्थान, नीड।

घोसुआ(पु)†—सक० पु० दे० 'घोंसला'।

घोखना—सक० रटना, घोटना।

घोघी†—स्त्री० दे० 'घुग्घी'।

घोटना—सक० चिकना और चमकीला करने के लिये बार बार रगडना। बारीक पीसने के लिये रगडना। रगडकर परस्पर मिलाना। अभ्यास करना। दुहराना, आवृत्ति करना। डाँटना। (गला) इस प्रकार दबाना कि साँस रुक जाय। उस्तरे से बाल साफ करना। पु० घोटने का औजार।

घोटा—पु० घोटने की वस्तु। घुटा हुआ चमकीला कपडा। रगडा, घुटाई। ⊙**ई** = स्त्री० घोटने का काम या मजदूरी।

घोटाला—पु० घपला, गडबड।

घोडा—पु० बिना फटे खुरों, चार पैरों, अयाल और दुमवाला पशु जो सवारी और गाडी खींचने आदि के काम आता है। पेच या खटका जिसे दबाने से बदूक चलती है। भार सँभालने के लिये छज्जे के नीचे दीवार मे लगाया जानेवाला टोटा। शतरज का एक मोहरा जो ढाई घर चलता है। ⊙**गाड़ी** = स्त्री० घोडे द्वारा खींची जानेवाली गाडी। ⊙**नस** = स्त्री० बडी मोटी नस जो एडी के पीछे ऊपर को जाती है। ⊙**बच** = स्त्री० दवा मे प्रयुक्त खुरासानी बच जो सफेद रग और उग्र गधवाली होती है।

घोड़िया—स्त्री० छोटी घोडी। दीवार में गडी खूँटी। छज्जे का भार सँभालनेवाली पत्थर आदि की टोंटी। जुलाहों का एक औजार। दे० 'घडी'।

घोड़ी—स्त्री० घोडे की मादा। पायों पर खड़ी काठ की लबी पटरी। विवाह मे दूल्हे का घोडी पर चढकर दुलहिन के घर जाने की रीति। विवाह मे वर पक्ष की ओर से गाए जानेवाले गीत।

घोर—वि० [स०] भयकर। घना, दुर्गम। कठिन। गहरा। बुरा। बहुत ज्यादा। (पु)स्त्री० ध्वनि। आवाज। (पु)घोडा। **घोरना**(पु)†—अक० गरजना। दे० 'घोलना'।

घोरा(पु)†—पु० घोडा। खूँटा।

घोरिल्ला(पु)†—पु० लडकों के खेलने का मिट्टी का घोडा।

घोल—पु० घोलकर बना तरल पदार्थ। **घोलना**—सक० तरल पदार्थ को हिलाकर मिलाना। हल करना।

घोष—पु० [स०] अहीरों की बस्ती। अहीर। गोशाला। तट। शब्द, आवाज। गरजने का शब्द। उच्चारण के प्रयत्नों मे से एक (व्या०)। **घोषणा**—स्त्री० उच्च स्वर से किसी बात की सूचना। मुनादी, डुग्गी। गर्जन, आवाज। ⊙**पत्र** = पु० सर्वसाधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा आदि का पत्र, विज्ञप्ति।

घोसी—पु० गाय, भैस पालने और दूध बेचने का पेशा करनेवाली एक मुसलमान जाति।

घौद—पु० फलों का गुच्छा (जैसे, केले का घौद)।

घ्राण—स्त्री० [स०] नाक। सूँघने की शक्ति। गध।

ङ

ङ—व्यजन का पाँचवाँ और क वर्ग का अतिम अक्षर।

च

च—हिंदी वर्णमाला का छठा व्यजन ।

चंक(पु)—वि॰ पूरा, समूचा ।

चंकुर—पु॰ [सं॰] रथ, यान । वृक्ष ।

चंक्रमण—पु॰ [सं॰] घूमना, टहलना । चक्कर लगाना ।

चंग—स्त्री॰ डफ के आकार का एक छोटा वाजा । पु॰ दे॰ 'चगुल' । गजीफे का एक रग । स्त्री॰ पतग, गुड्डी । **मु॰~पर चढ़ाना**=इधर उधर की वात कहकर अपने अनुकूल करना । मिजाज वढा देना ।

चंगना(पु)—सक॰ तग करना, कसना ।

चंगा—वि॰ स्वस्थ, तदुरस्त । अच्छा, सुदर । निर्मल । शुद्ध ।

चंगुल(पु)—पु॰ चुगुल । पकड, वश । चिडियो या पशुओ का पजा । पकड, हथकडा । चगुल मे उठाने योग्य वस्तु का परिमाण । **मु॰~में फंसना**=कावू मे आना ।

चंगेर, चंगेरी—स्त्री॰ वाँस की छिछली डलिया । फूल रखने की डलिया । चमडे का जलपात्र, मशक । रस्सी मे वाँधकर लटकाई हुई टोकरी जिसमे वच्चों को सुलाकर पालना झुलाते हैं ।

चंगेली—स्त्री॰ दे॰ 'चंगेर' ।

चंच(पु)—पु॰ दे॰ 'चचु' ।

चंचरी—स्त्री॰ [सं॰] भ्रमरी । होली मे गाने का एक गीत, चाँचरि । हरिप्रिया नामक मात्रिक छद । एक वर्णवृत्त । छब्वीस मात्राओ का एक छंद ।

चंचरीक—पु॰ [सं॰] भ्रमर, भौरा । **चंचरीकावली**—पु॰ १३ अक्षरों का एक वर्णवृत्त । भौंरो की एक पक्ति ।

चंचल—वि॰ [सं॰] चलायमान, अस्थिर । अधीर, एकाग्र न रहनेवाला । उद्विग्न, घवडाया हुआ । नटखट, चुलबुला । रसिक, कामुक । ⊙**ता**=स्त्री॰ अस्थिरता, चपलता । नट-खटी शरारती । ⊙**ताई**(पु) =स्त्री॰ दे॰ 'चचलता' । **चंचलाई**(पु) —स्त्री॰ दे॰ 'चचलता' ।

चंचला—स्त्री॰ [सं॰] लक्ष्मी । बिजली । एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण, रगण और अंत्य लघु तथा आठवें पर यति और १६ वे पर विराम होता है ।

चंचु—पु॰ [सं॰] पीले फूल और छोटी फली का एक वरसाती साग, चेच । रेड का पेड । हिरन । स्त्री॰ चिडियो की चोंच ।

चंचोरना—सक॰ दे॰ 'चचोडना' ।

चंट—वि॰ चालाक, सयाना । धूर्त ।

चंड—वि॰ [सं॰] तेज, उग्र । वलवान्, दुर्दमनीय । कठोर, विकट । उद्धत, क्रोधी । पु॰ ताप गरमी । एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था । कार्तिकेय । एक भैरव । ⊙**कर**=पु॰ सूर्य । ⊙**ता**=स्त्री॰ उग्रता, प्रवलता । वल, प्रताप । ⊙**रसा**=स्त्री॰ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण और यगण, कुल ६ वर्ण होते हैं । ⊙**वृष्टिप्रपात**=पु॰ एक दडक वृत्त जिसमे क्रम से २ नगण और ७ रगण होते हैं । **चंडांशु**—पु॰ सूर्य ।

चंड़ाई(पु)—स्त्री॰ शीघ्रता, फुरती । जवरदस्ती, अत्याचार ।

चंडाल—पु॰ [सं॰] चाडाल । नीच व्यक्ति, क्रूर व्यक्ति । वि॰ नीच, घृणित । ⊙**पक्षी** =पु॰ कौवा । **चंडालिनी**—स्त्री॰ [सं॰] चडाल वर्ण की स्त्री । दुष्टा स्त्री, दुश्चरित्रा स्त्री । दूषित माना जानेवाला एक प्रकार का दोहा ।

चंडालिका—स्त्री॰ [सं॰] दुर्गा । एक वीणा । एक पौधा ।

चंडावल—पु॰ सेना के पीछे का भाग, 'हरावल' का उलटा । वहादुर सिपाही । संतरी ।

चंडिका—स्त्री॰ [सं॰] दुर्गा । झगडालू स्त्री । गायत्री देवी । १३ मात्राओ का एक मात्रिक छद जिसके अत मे रगण रहता है ।

चंडी—स्त्री॰ [सं॰] दुर्गा का वह रूप जो उन्होंने महिषासुर के वध के लिये धारण किया था । कर्कशा और उग्र स्त्री । तेरह अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके

प्रत्येक चरण मे क्रम से २ नगण, २ सगण और अंत्य गुरु होता है।

चंडू—पु० अफीम का किमाम जिसका धुआँ नशे के लिये नली से पीते हैं। ⊙**खाना** = पु० चडू पीने का घर। ⊙**खाने की गप** = बिलकुल झूठी बात। ⊙**बाज** = वि० चडू पीने का व्यसनी।

चंडूल—पु० खाकी रग की एक चिडिया। बेडौल या मूर्ख आदमी।

चंडोल—पु० एक पालकी जिसे चार आदमी उठाते है।

चंद—पु० दे० 'चद्र'। पृथ्वीराज रासो' के रचयिता, हिंदी के एक प्राचीन कवि। वि० [फा०] थोड़े से, कुछ।

चंदक—पु० चद्रमा। चाँदनी। चाँद नामक मछली। माथे पर पहनने का एक अर्ध-चद्राकार गहना। नथ मे पान के आकार की बनावट।

चंदन—पु० [सं०] एक पेड जिसके हीर की सुगधित लकडी औषध, इत्र तथा तिलक लगाने आदि के काम आती हैं। सदल। उक्त लकडी का टुकडा। घिसे हुए चदन का लेप। छप्पय छंद का तेरहवाँ भेद। ⊙**गिरि** = पु० मलयाचल नामक पर्वत। ⊙**चंदनहार** = पु० दे० 'चंद्रहार'।

चंदनी—स्त्री० दे० 'चाँदनी'।

चँदनौता—पु० एक प्रकार का लहँगा।

चंदबान—पु० दे० 'चद्रबाण'।

चँदराना†—सक० झूठा बनाना, बहलाना। जान बूझकर अनजान बनना।

चंदला—वि० गजा।

चँदवा—पु० एक छोटा मडप, चँदोवा; गोल थिगली या पैबद। मोर की पूँछ पर का अर्धचद्राकार चिह्न। तालाब के भीतर का गहरा गड्ढा जिसमे मछलियाँ पकडी जाती हैं।

चंदा—पु० चद्रमा। पीतल आदि की गोल चद्दर। पु० अनेक आदमियो से उनकी स्वेच्छा से लिया हुआ थोडा थोडा धन (प्राय सार्वजनिक या अच्छे कार्य के लिये)। सस्था की सदस्यता का धन। पत्र पत्रिका आदि का वार्षिक, अर्धवार्षिक या त्रैमासिक मूल्य।

चंदावल—पु० दे० 'चडावल'।

चंदिका—स्त्री० दे० 'चद्रिका'।

चदिनि, चंदिनी—स्त्री० चाँदनी, चद्रिका।

चदिर—पु० [सं०] चद्रमा। हाथी।

चंदेल—पु० [सं०] चद्रवशी क्षत्रियो की एक शाखा जो किसी समय कालिजर और महोबे मे राज्य करती थी।

चदोआ—पु० दे० 'चँदवा'।

चँदोवा—पु० दे० 'चँदवा'।

चंद्र—पु० [सं०] चद्रमा। मोर की पूँछ की चद्रिका। कपूर। जल। सोना। पौराणिक भूगोल के १८ उपद्वीपो मे से एक। बिंदी जो सानुनासिक वर्ण पर लगाई जाती है। पिंगल मे टगण का दसवाँ भेद (।।ऽ।।)। हीरा। आनददायक वस्तु। १७ मात्राओ का एक छद जिसमे १०वी मात्रा पर यति और १७वी पर विराम होता है। वि० आनददायक। सुदर। ⊙**क** = पु० चद्रमा। चद्रमा के समान मडल या घेरा। चाँदनी। मोर की पूँछ की चद्रिका। नाखून। कपूर। ⊙**कला** = स्त्री० चद्रमडल का सोलहवाँ अश। चद्रमा की किरण या ज्योति। एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक के बाद दूसरे के क्रम से कुल ८ सगण होते हैं। माथे पर पहनने का एक गहना। ⊙**कांत** = पु० एक रत्न जिसके विषय मे प्रसिद्ध है कि वह चद्रमा के सामने करने से पसीजता है। ⊙**कांता** = स्त्री० चंद्रमा की स्त्री। रात्रि। पद्रह अक्षरो का एक वर्ण-वृत्त। ⊙**ग्रहण** = पु० चद्रमा का ग्रहण। दे० 'ग्रहण'। ⊙**चूड़** = पु० शिव। ⊙**जोत** = स्त्री० [हिं०] चद्रमा की चाँदनी। ⊙**धनु** = पु० वह इद्रधनुष जो रात को चद्रमा का प्रकाश पडने पर दिखाई देता है। ⊙**धर** = पु० शिव। ⊙**बधूटी** = स्त्री० [हिं०] बीरबहूटी। ⊙**प्रभा** = स्त्री० चाँद का प्रकाश। ⊙**बाण** = पु० एक प्राचीन बाण जिसका फल अर्धचद्राकार होता था। ⊙**बिंदु** = पु० अर्ध अनुस्वार की बिंदी (ँ)। ⊙**बिंब** = पु० चद्रमा का मडल। सपूर्ण जाति का एक राग। ⊙**माल** = पु०

शिव। ⊙भूषण = पु० शिव। ⊙मणि = पुं० चद्रकांत मणि। १३ मात्राओं का उल्लाला छद। ⊙माला = स्त्री० २८ मात्राओं का एक छद। ⊙मौलि = पुं० शिव। ⊙रेखा, ⊙लेखा = स्त्री० चद्रमा की कला। चद्रमा की किरण। द्वितीया का चद्रमा। एक वर्णवृत्त। ⊙ललाम = पु० दे० 'चद्रमाललाम'। ⊙लोक = पुं० चद्रमा का लोक। ⊙वंश = पु० प्राचीन क्षत्रियो का एक वश जिसकी उत्पत्ति चद्रमा से मानी जाती है। ⊙वर्त्म = पुं० एक वर्णवृत्त। ⊙वार = पु० सोमवार। ⊙शाला = स्त्री० चाँदनी, चद्रिका। अटारी। ⊙शेखर = पु० शिव। ⊙हार = पु० अर्धचद्राकार छोटेवडे अनेक मनको का गले का एक गहना। ⊙ हास = पुं० खड्ग, तलवार। रावण की तलवार। चद्रातप = पु० चाँदनी। चँदवा, वितान। चद्रिका—स्त्री० चद्रमा का प्रकाश। मोर की पूँछ के पर का गोल चिह्न। इलायची। जूही या चमेली। एक देवी। एक वर्णवृत्त। माथे पर का एक भूषण, बेंदी। चद्रोदय—पु० चद्रमा का उदय। वैद्यक मे एक रस। चँदवा, वितान।

चद्रमा:—पु० [स०] रात को प्रकाश देनेवाला पृथ्वी का एक ग्रह जो सूर्य से प्रकाश पाता और एक पक्ष मे घटता तथा दूसरे पक्ष मे बढता है। चाँद। नवग्रहो में से एक। ⊙ललाम = पु० महादेव, शिव।

चद्रा†—स्त्री० मरने के समय टकटकी बँधने और कफ से गला रुँधने की अवस्था।

चँपना—अक० बोझ से दवना। उपकार से दबना।

चपलता—(पु) स्त्री० चपे की लता।

चपा—पुं० मझोले कद का एक पेड और उसका हलके पीले रग का कडी महक का फूल। प्राचीन काल मे अग देश की राजधानी। एक मीठा केला। घोडे की एक जाति। रेशम का कीडा। ⊙ कली = स्त्री० गले मे पहनने का स्त्रियो का एक गहना।

चंपू—पु० [सं०] गद्य और पद्य से मिश्रित रचना।

चवल पु० भीख माँगने का पात्र। चिलम का सरपोश। स्त्री० विंध्य से निकलकर यमुना मे गिरनेवाली एक नदी। सिंचाई का पानी ऊपर चढ़ाने के लिये पानी के किनारे लगी लकडी। पु० पानी की बाढ।

चँवर—पु० डाँडी मे लगा हुआ सुरा गाय की पूँछ का गुच्छा जो राजाओं या देवमूर्तियों के सिर पर डुलाया जाता है। घोडो और हाथियो के सिर पर लगाने की कलँगी झालर, फुँदना। ⊙ढार = पु० चँवर डुलानेवाला सेवक।

चउक†—पु० दे० 'चौक'।

चउर†—पु० दे० 'चँवर'।

चउहट्ट(पु)—पु० चौहट्ट, चौराहा।

चउहा—पु० चार प्रकार का।

चए(पु)—पु० समूह, राशि।

चक—वि० [सं०] चपकाया हुआ, भ्रात। वि० [हिं०] भरपूर। पु० [हिं०] चकई नामक खिलौना। चक्रवाक पक्षी। चक्र अस्त्र। चक्का, पहिया। जमीन का टुकडा, पट्टी। छोटा गाँव, खेडा। निरतर अधिकता। अधिकार, दखल। ⊙डोर, ⊙डोरि = स्त्री० [हिं०] चकई खिलौने मे लपेटा हुआ सूत। ⊙फेरी(पु) = स्त्री० परिक्रमा, भँवरी। ⊙वदी = [हिं०] स्त्री० छोटे बडे भूखडो को एक मे मिलाकर खेती के लिये विशाल क्षेत्र तैयार करना।

चकई—स्त्री० मादा चकवा। घिरनी या गडारी के आकार का एक खिलौना।

चकचकाना—अक० रिस रिसकर बाहर आना। भीग जाना।

चकचाना(पु)†—अक० चकाचौंध लगना।

चकचाल(पु)—चक्कर, भ्रमण।

चकचाव(पु)†—पुं० चकाचौंध।

चकचून—वि० चकनाचूर, पिसा हुआ।

चकचौंध—स्त्री० दे० 'चकाचौंध'। चकचौंधना—अक० चकाचौंध होना। सक० चकाचौंध उत्पन्न करना।

चकचौंह(पु)—स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चकचौंहना(पु)—सक० चाह से देखना, आशा से टक बाँधकर देखना।

चकचौंहा—वि० देखने योग्य, सुदर।

चकता—पुं० दे० 'चकत्ता'।

चकती—स्त्री० चमड़े, कपड़े आदि मे से काटा हुआ गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा। थिगली। मु०—**आकाश में~लगाना** = अनहोनी बात करने का प्रयत्न करना।

चकत्ता—पु० रक्तविकार आदि से शरीर के ऊपर का गोल दाग। खुजलाने आदि से चमड़े के ऊपर पड़ी चिपटी सूजन। दांतो से काटने का चिह्न। पुं० मोगल या तातार अमीर चगताई खाँ जिसके वश मे बाबर, अकबर आदि मुगल बादशाह थे। चगताई वश का पुरुष।

चकना(पु)—अक० चकित होना। चौंकना, आशकायुक्त होना।

चकनाचूर—वि० चूरचूर, जिसके टूट फूटकर बहुत मे छोटे टुकड़े हो गए हो। श्रम से बहुत शिथिल।

चकपक, चकबक—वि० चकित, भौचक्का।

चकपकाना—अक० विस्मित होकर चारो ओर देखना। आशकायुक्त होना। चौकना।

चकमक—पुं० [तु०] आग निकालने का एक कड़ा पत्थर।

चकमा—पु० भुलावा, धोखा। हानि।

चकर(पु)†—पुं० चकवा। दे० 'चक्कर'।

चकरबा—पु० कठिन स्थिति, असमजस। बखेड़ा।

चकरा(पु)—वि० चौड़ा, विस्तृत। पु० पानी का भँवर।

चकराना—अक० (सिर का) चक्कर खाना या घूमना। भ्रात होना। भूलना। चकपकाना, चकित होना। सक० आश्चर्य मे डालना।

चकरी—स्त्री० चक्की। चकई खिलौना। वि० चक्र के समान भ्रमणशील, अस्थिर।

चकल—पु० दे० 'चौकल'।

चकलई—स्त्री० चौड़ाई।

चकला—पु० रोटी बेलने का पत्थर या काठ का गोल पाटा। चक्की। इलाका, जिला। व्यभिचारिणी स्त्रियो या रडियो का अड्डा। वि० चौड़ा। ⊙**चकलेदार** = पुं० किसी प्रदेश का शासक या कर सग्रह करनेवाला।

चकली—स्त्री० घिरनी, गड़ारी। चदन घिसने का छोटा चकला।

चकवड़—पु० पीले फूल और पतली लबी फलियो का एक बरसाती पौधा।

चकवा—पु० एक जलपक्षी जिसके विषय मे प्रवाद है कि उसका रात को जोड़े से वियोग हो जाता है। सुरखाव।

चकवाना(पु)†—अक० चकपकाना, हैरान होना।

चकवार—(पु)पु० दे० 'कछुआ'।

चकवाह(पु)—पुं० दे० 'चकवा'।

चकहा(पु)†—पु० चक्का, पहिया।

चका(पु)†—चक्का। चकवा।

चकाचक—वि० सराबोर, लथपथ। क्रि० वि० खूब, भरपूर।

चकाचौंध—स्त्री० अधिक चमक से आँखो की झपक।

चकाना(पु)—अक० दे० 'चकपकाना'।

चकाबू—पुं० एक के पीछे एक कई मडलाकार पक्तियो मे सैनिको की स्थिति। भूलभुलैया।

चकासना(पु)—अक० दे० 'चमकना'।

चकित—वि० [सं०] विस्मित, दग, चकपकाया हुआ। हैरान, घबराया हुआ, शकित, चौकन्ना। डरपोक। **चकिताई**(पु)—स्त्री० चकित होने की क्रिया या भाव, आश्चर्य।

चकुला(पु)†—पुं० चिड़िया का बच्चा।

चकृत(पु)—वि० दे० 'चकित'।

चकैया—स्त्री० दे० 'चकई'।

चकोटना—सक० चुटकी से मास नोचना चुटकी काटना।

चकोतरा—पुं० एक बड़ा जँबीरी नीबू।

चकोर—पुं० एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो चद्रमा का प्रेमी और अगार खानेवाला माना जाता है। एक वर्णवृत्त जिसमे सात भगण, एक गुरु और एक लघु होता है।

चकौंध(पु)—स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चक्क—पु० चकवा। कुम्हार का चाक।

चक्कर—पुं० (विशेषत घूमनेवाली) बड़ी गोल वस्तु, चाक। घेरा, मडल। मंडलाकार गति, फेरा। अक्ष पर घूमना। चलने मे अधिक दूरी, फेर। हैरानी। दुरूहता। पेंच। सिर घूमना

बेहोशी। पानी का भँवर। मु०~खाना = पहिए की तरह घूमना। घुमाव फिराव के साथ जाना। भटकना, हैरान होना।~मे आना या पड़ना = (किसी के) धोखे मे आना।

चक्कवइ(पु), चक्कवत(पु)—वि० सार्वभौम, दे० 'चक्रवर्ती'।

चक्का—पुं० पहिया। पहिए के आकार की गोल वस्तु। बडा चिपटा टुकडा, ढेला। जमा हुआ कतरा, थक्का।

चक्की—स्त्री० आटा पीसने या दाल आदि दलने का पत्थर का यत्र, जाँता। † बिजली, वज्र। पैर के घुटने की गोल हड्डी। मु०~पीसना = कडा परिश्रम करना।

चक्खी—स्त्री० खाने की स्वादिष्ट और चटपटी चीज, चाट।

चक्र—पुं० [सं०] पहिया। कुम्हार का चाक। चक्की। तेल पेरने का कोल्हू। पहिए के आकार का लोहे का एक अस्त्र। पानी का भँवर। ववडर, वातचक्र। समूह, मंडली। सेना का व्यूह। मडल, प्रदेश। एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक फैला प्रदेश। चकवा। योग मे शरीरस्थ छह पद्म। फेरा, भ्रमण। दिशा, प्रात। एक वर्णवृत्त। सरकार की ओर से देशभक्ति या वीरता आदि के लिये दिया जानेवाला पदक या तमगा (वीरचक्र, महावीर चक्र आदि)। ⊙चर = पु० तेली। कुम्हार। ⊙धर = वि० चक्र धारण करनेवाला। पु० विष्णु, भगवान्। श्रीकृष्ण। वाजीगर। कई ग्रामो या नगरो का अधिपति। ⊙धारी, ⊙पाणि = पुं० विष्णु। ⊙पूजा = स्त्री तान्त्रिको की एक पूजा। ⊙बंध = पु० चक्र के आकार का एक चित्रकाव्य। ⊙मुद्रा = स्त्री० विष्णु के चक्र आदि आयुधो के चिह्न जिन्हें वैष्णव अपने अंगो पर छपवाते हैं। ⊙वती(पु) = वि० दे० 'चक्रवर्ती'। ⊙वर्ती = वि० आसमुद्रात भूमि पर राज्य करनेवाला, सार्वभौम। ⊙वाक = पुं० चकवा नाम का पक्षी। ⊙वात = पुं० वेग से चक्कर खाती हुई हवा, ववडर। ⊙वाल = पु० परिधि, घेरा। समूह, भीड। एक पौराणिक पर्वतमाला जो पृथ्वी को घेरे है और दिन रात का विभाजन करती है। ⊙वृद्धि = स्त्री० व्याज जिसमे उत्तरोत्तर व्याज पर भी व्याज लगता है, सूद दर सूद। ⊙व्यूह = पुं० प्राचीन काल मे सेना की चक्करदार रचना या स्थिति। चक्राक—पु० वैष्णवो द्वारा शरीर पर दिखाया जानेवाला चक्र-चिह्न। चक्राग—पु० चकवा। रथ या गाड़ी। हस। चक्रायुध—पुं० विष्णु। चक्री—पुं० विष्णु। कुम्हार। गाँव का पडित या पुरोहित। चकवा। सर्प। जासूस, चर। चक्रवर्ती राजा।

चकित(पु)—वि० दे० 'चकित'।

चक्ष—पुं० दे० 'चक्षुस्'।

चक्षुरिंद्रिय—स्त्री० [सं०] आँख।

चक्षुष्य—वि० [सं०] नेत्रो को हितकारी (ओषधि आदि)। सुदर, प्रियदर्शन। नेत्र सबंधी।

चक्षुस्—पुं० [सं०] आँख। मध्य एशिया की आक्सस नदी।

चख(पु)—पुं० आँख। पु० [फा०] लडाई, झगडा, कलह। ⊙चख = स्त्री० तकरार, कहासुनी।

चखचौंध(पु)—स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चखना—सक० स्वाद लेने के लिये मुँह मे रखना, स्वाद लेना। चखाना—सक० [अक० चखना] स्वाद दिलाना।

चखाचखी—स्त्री० वैर, विरोध।

चखु(पु)—पु० चक्षु, आँख।

चखौड़ा(पु)†—पु० दिठौना, डिठौना।

चगड़—वि० चालाक, चतुर।

चगताई(पु)—पु० चगताई खाँ से चलनेवाला तुर्कों का प्रसिद्ध वश, चकत्ता।

चचा—पु० वाप का भाई, पितृव्य।

चचिया—वि० चाचा के वरावर का संवंध रखनेवाला। ⊙ससुर = पु० पति या पत्नी का चाचा।

चचींडा—पु० तोरई की तरह की लवी धारीदार तरकारी। † चिचडा।

चचेरा—वि० चाचा से उत्पन्न, जैसे चचेरा भाई।

चचोड़ना—सक० दाँत से खीच या दाबकर चूसना।

चट—क्रि० वि० जल्दी से, झट। ⓟ† पुं० दाग, धब्बा। घाव या चकत्ता। स्त्री० कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द। उँगलियो को मोड़कर दबाने का शब्द। वि० चाट पोछकर खाया हुआ, समाप्त। नष्ट। चटाई। बैठने का लबा पर चौडाई मे पतला टाट या चटाई। मु०~**कर जाना** =सब खा जाना। दूसरे की वस्तु लेकर न देना।

चटक—पु० [सं०] गौरा पक्षी, चिडा। स्त्री० चमक दमक, काति। † वि० चटकीला। स्त्री० तेजी, फुरती। क्रि०वि० चटपट, तेजी से। वि० चटपटा, चरपरा। ⊙**ई**† = तेजी, फुरती। ⊙**मटक** = वि० बनाव, सिंगार। नाज नखरा।

चटकन—स्त्री० तमाचा, थप्पड़।

चटकना—अक० 'चट' शब्द करके टूटना, तडकना। कली का खिलना। कोयले, लकडी आदि का जलते समय 'चटचट' करना। चिड़चिडाना। झल्लाना। अनबन होना। पुं० दे० 'चटकन'।

चटकनी—स्त्री० सिटकिनी।

चटकाⓟ†—पुं० फुरती, जल्दी। दाग, चकत्ता।

चटकाना—सक० [अक० चटकना] ऐसा करना जिससे कोई वस्तु चटक जाय, तोडना। उँगलियो को खीचकर या मोड़ते हुए 'चटचट' शब्द निकालना। बार बार टकराना जिससे 'चटचट' शब्द निकले (गेंद, जूती आदि)। डक मारना। अलग करना, छोड़ना। चिढ़ाना, कुपित करना। मु०—**जूतियाँ** ~=जूता घसीटते हुए इधर उधर घूमना, बुरी दशा मे इधर उधर पैदल घूमना।

चटकार—वि० चटकीला, चमकीला। चपल, तेज। वि० स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द।

चटकाली—स्त्री० गौरैयो की पंक्ति। चिडियो की पक्ति।

चटकीलता—स्त्री० चटक, दीप्ति।

चटकीला—वि० जिसका रंग फीका न हो, खुलता, भडकीला। चमकीला, आभादार। चरपरा, चटपटा।

चटखना—सक० दे० 'चटकना'।

चटचट—स्त्री० चटकने या टूटने का शब्द। जलती लकडियो का 'चटचट' शब्द।

चटचेटक—पुं० इद्रजाल, जादू।

चटनी—स्त्री० चाटने की चीज। भोजन के साथ स्वाद बढाने के लिये खाई जानेवाली गीली चरपरी वस्तु।

चटपट—क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी।

चटपटा—वि० चरपरा, मजेदार, मिर्च-मसालेदार।

चटपटाना†—अक० दे० 'छटपटाना'।

चटपटी—स्त्री० उतावली, शीघ्रता। घबराहट। स्त्री० चटपटी चीज।

चटशाला, चटसार, चटसाल—स्त्री० पाठशाला, बच्चो के पढ़ने का स्थान।

चटाई—स्त्री० फूस, सीक, पतली फट्टियों आदि का बिछावन। चाटने की क्रिया।

चटाक से—क्रि० वि० टूटने, चटकने या चपत लगने की आवाज, 'चटाक' के साथ।

चटाका—पुं० लकडी या कडी वस्तु के जोर से टूटने का शब्द।

चटाना—सक० [चाटना का प्रे०] चाटने का काम कराना। घूस देना। सान चढवाना।

चटापटी—स्त्री० शीघ्रता। संक्रामक रोग से जल्दी होनेवाली मृत्यु।

चटावन—पुं० दे० 'अन्नप्राशन'।

चाटिकⓟ—क्रि० वि० चटपट, तत्काल।

चटियल—वि० जिसमे पेड पौधे न हों, खुला हुआ (मैदान)।

चटी—स्त्री० चटसार, पाठशाला। दे० 'चट्टी'।

चटुल—वि० चचल, चालाक। सुंदर। मधुरभाषी।

चटुला—स्त्री० [सं०] बिजली।

चटोर, चटोरा—वि० चटपटी चीजें खाने की लतवाला, स्वादलोलुप। लोभी। **चटोरपन, चटोरापन**—पुं० चटपटी चीजें खाने का व्यसन।

चट्टा—वि० चाट पोछकर खाया हुआ। समाप्त, नष्ट।

चट्टा—पुं० चटियल मैदान। कुष्ट आदि का दाग।

चट्टान—स्त्री० पहाड़ी भूमि मे पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा।

चट्टा बट्टा—पुं० काठ के खिलौनो का समूह। बाजीगर की थैली की गोलियाँ और गोले। मु०—एक ही थैली के चट्टे बट्टे = एक ही मेल के मनुष्य।

चट्टी—स्त्री० टिकान, पडाव। एडी की ओर खुला हुआ जूता (अं० स्लिपर)। हानि, घाटा।

चट्टू—वि० चटोरा।

चड्ढी—स्त्री० एक दूसरे की पीठ पर चढ़कर चलने का लड़को का एक खेल।

चढ़त, चढन—स्त्री० देवता को चढाई हुई वस्तु।

चढना—अक० [सक० चढाना] नीचे से ऊपर को जाना, ऊँचाई पर जाना। ऊपर उठना, उड़ना। ऊपर की ओर सिमटना। मढा जाना। उन्नति करना। (नदी या पानी का) बाढ पर आना। धावा करना। दल बाँधकर जाना। मँहगा होना। सुर ऊँचा होना। बहाव के विरुद्ध चलना। ढोल, सितार आदि की डोरी का अधिक तनना। देवता, महात्मा आदि को भेंट दिया जाना। सवार होना। वर्ष, मास, नक्षत्र आदि का आरभ होना। कर्ज होना। दर्ज होना। आवेश होना। (नशे, क्रोध आदि का)। पकने को चूल्हे पर रखा जाना। पोता जाना।

चढ़वाना—सक० [चढना का प्रे०] दूसरे को चढने मे प्रवृत्त करना।

चढ़ाई—स्त्री० चढने की क्रिया या भाव। ऊँचाई की ओर ले जानेवाली भूमि। आक्रमण, धावा। ⑤ दे० 'चढावा'।

चढ़ाउतरी—स्त्री० बार बार चढने उतरने की क्रिया।

चढ़ाऊपरी—स्त्री० एक दूसरे से आगे होने या बढने का प्रयत्न, होड।

चढ़ाचढ़ी—स्त्री० दे० 'चढाऊपरी'।

चढाना—सक० [अक० चढना] ऊपर ले जाना या पहुँचाना। ऊपर सरकाना (आस्तीन आदि)। तानना (भौं, कमान)। देवता को भेंट देना। बही, कागज आदि पर दर्ज करना। पकने को चूल्हे पर रखना। मढना। सितार आदि की डोरी कसकर बाँधना।

चढ़ाव—पुं० चढने की क्रिया या भाव। वृद्धि, बाढ। ऊँचाई की ओर ले जानेवाली भूमि, चढाई। दे० 'चढ़ावा'। नदी की धारा आने की दिशा। **चढावा**—पुं० दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के दिन पहनाया जानेवाला गहना। देवता को चढाई जानेवाली सामग्री। बढावा, दम।

चणक—पुं० [सं०] चना।

चतुर—वि० [सं०] होशियार, निपुण। फुर्तीला, तेज। टेढी चाल चलनेवाला। धूर्त, चालाक। पुं० शृगार रस मे वह नायक जो अपनी चातुरी से प्रेमिका के सयोग का साधन करे। ⊙ता = स्त्री० चतुराई, होशियारी, चालाकी। ⊙पन† = पुं० [हिं०] चतुराई। चतुरई, चतुराई = स्त्री० [हिं०] होशियारी, निपुणता। धूर्तता, चालाकी।

चतुरसम—⑤ पुं० दे० 'चतुस्सम'।

चतुर्—वि० [सं०] चार। पुं० चार की सख्या। (के० समा० मे)। ⊙गुण = वि० चौगुना। चार गुणोवाला। ⊙दशी = स्त्री० पक्ष की चौदहवी तिथि, चौदस। ⊙दिक् = पु० चारों दिशाएँ। क्रि० वि० चारो ओर। ⊙भुज = वि० चार भुजाओंवाला। पुं० विष्णु। वह क्षेत्र जिसमे चार भुजाएँ और चार कोण हो। ⊙भुजा = स्त्री० एक देवी। गायत्री रूपधारिणी महा शक्ति। ⊙भुजी = पुं० एक वैष्णव सप्रदाय। वि० चार भुजाओवाला। ⊙मास = पुं० बरसात के चार महीनो का समय। ⊙मुख = पुं० ब्रह्मा। वि० चार मुखवाला। क्रि० वि० चारो ओर। ⊙युगी = स्त्री० चारो युगो का समय (४३, २०,००० वर्ष)। ⊙ वर्ग = पुं०

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ⊙वर्ण = पुं० ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ⊙वेद = पुं० परमेश्वर। चारो वेद। ⊙वेदी = पुं० चारो वेदो का जाननेवाला व्यक्ति। ब्राह्मणो का एक भेद। ⊙व्यूह = पुं० चार मनुष्यो अथवा पदार्थों का समूह। विष्णु। चतुरंग = पुं० गाना जिसमे चार प्रकार के बोल हो। सेना के चार अंग—हाथी घोडे, रथ, पैदल। चतुरंगिणी सेना। शतरंज। चतुरंगिणी—वि० स्त्री० चार अंगोवाली (विशेषतया सेना)। चतुरस्र = वि० चौकोर। चतुरानन = पुं० ब्रह्मा। चतुरिंद्रिय = पुं० चार इंद्रियों वाले जीव, जैसे—मक्खी, भौंरे, साँप आदि। चतुर्थ = वि० चौथा। चतुर्थांश = पुं० चौथाई। चतुर्थाश्रम = पुं० सन्यास। चतुर्थी = स्त्री० [सं०] पक्ष की चौथी तिथि, चौथ। विवाह के चौथे दिन होनेवाले गंगा पूजन आदि कर्म। संस्कृत मे चौथी विभक्ति।

चतुष्—वि० [सं०] 'चतुर' के लिये समास मे प्रयुक्त रूप। ⊙कल = वि० चार कलाओ वाला, जिसमे चार मात्राएँ हो (जैसे, छंद शास्त्र मे चतुष्कल गण)। ⊙कोण = वि० चार कोनोवाला, चौकोर। ⊙पथ = पु० चौराहा। ⊙पद = पु० चौपाया। वि० जिसमे चार पद हो। ⊙पदा = स्त्री० चौपैया छंद जिसका प्रत्येक चरण ३० मात्राओ का होता है। ⊙पदी = स्त्री० चौपाई छंद जिसके प्रत्येक चरण मे १५ मात्राएँ और अंत मे गुरु, लघु होते हैं। चार पद का गीत। चतुष्टय = चार की संख्या। चार चीजो का समूह।

चत्वर—पु० [सं०] चौमुहानी, चौरास्ता। चबूतरा, वेदी।

चद्दर—स्त्री० बिछाने या ओढने का वस्त्र, चादर। धातु का लंबा चौड़ा चौकोर पत्तर।

चनकना—अक० दे० 'चटकना'।

चनकट—पु० थप्पड ('हने एकन को जुमुठिका, एकनि चनकटे'—हिम्मत० १४६)।

चनखना†—अक० चिढना, खफा होना।

चनन(५)—पु० चंदन, संदल।

चना—पु० चैती फसल का एक प्रधान अन्न, बूट, छोला। मु०—नाको चने चबवाना = बहुत तंग या हैरान करना।

चपकन—स्त्री० एक अँगरखा। किवाड, संदूक आदि मे लोहे या पीतल का वह साज जिसमे ताला लगाया जाता है।

चपकना—अक० दे० 'चिपकना'।

चपकुलिस—स्त्री० [तु०] अड़चन, कठिनाई। बहुत भीड।

चपटना—अक० चिपकना। चिमटना।

चपटा—वि० दे० 'चिपटा'।

चपड़ा—पु० साफ की हुई लाख का पत्तर। लाल रंग का एक कीडा।

चपत—पु० तमाचा, थप्पड। हानि।

चपना—अक० दबना, कुचल जाना। लज्जित होना।

चपरना(५)†—सक० चुपडना। सानना। धोखा देना। अक० जल्दी करना।

चपरा—पु० दे० 'चपडा'। अव्य० हठात्, ख्वाहमख्वाह।

चपरास—स्त्री० चौकीदार, चपरासी आदि के पहनने की धातु की पट्टी जिसपर दफ्तर या मालिक का नाम खुदा होता है, बिल्ला। चपरासी—पु० नौकर जो चपरास पहने हो, अरदली।

चपरि(५)—क्रि० वि० तेजी से, सहसा।

चपल—वि० [सं०] स्थिर न रहनेवाला, चंचल चुलबुला। क्षणिक। जल्दबाज। चालाक, धृष्ट। ⊙ता = स्त्री० तेजी, जल्दी। ढिठाई। चपला—वि० स्त्री० [सं०] चंचल, फुरतीली। स्त्री० लक्ष्मी। बिजली। आर्या छंद का एक भेद। पुंश्चली स्त्री। जीभ। ⊙ई = स्त्री० चपलता।

चपलाना(५)—अक० चलना, हिलना डोलना। सक० चलाना, हिलाना, डुलाना।

चपली†—स्त्री० दे० 'चप्पल'।

चपाक(५)—क्रि० वि० दे० 'चटपट'।

चपाती(५)—स्त्री० पतली रोटी, फुलका।

चपाना—सक० [अक० चपना] दबवाना। लज्जित करना।

चपेट—स्त्री० रगड के साथ धक्का, आघात।

थप्पड दबाव, सकट। **चपेटना**—सक० दबो-चना, रगड देना। आघात पहुँचाते हुए हटाना। डाँटना। **चपेटा**—पु० दे० 'चपेट'।
चपेरना(पु)—सक० चापना, दबाना।
चप्पड—पु० दे० 'चिप्पड'।
चप्पल—स्त्री० खुली एडी का जूता जिसमे आगे की ओर चमडे आदि की पट्टियाँ होती हैं। चट्टी।
चप्पा—पु० चौथा भाग। थोडा भाग। चार अगुल की जगह, थोडी जगह।
चप्पी—स्त्री० धीरे धीरे हाथ पैर दबाने की क्रिया।
चप्पू—पु० एक प्रकार का डाँडा।
चबकना—अक० रह रहकर दर्द करना, टीसना।
चबाना—सक० दाँतो से कुचलना। दाँतो मे काटना। मु०—चबा चबाकर बातें करना = एक एक शब्द धीरे धीरे कहना।
चबाव(पु)—पु० दे० 'चवाव'।
चबीना(पु)—दे० 'चबेना'।
चबूतरा—पु० वैठने के लिये बनाई हुई चौरस, ऊँची जगह। † कोतवाली।
चबेना—पु० चबाकर खाने का सूखा, भूना हुआ अनाज, भूँजा।
चभाना—सक० खिलाना, भोजन कराना।
चभोरना(पु)—सक० डुबोना। तर करना।
चमक—स्त्री० प्रकाश। काँति, दमक। कमर आदि का दर्द जो चोट लगने या एक-बारगी अधिक बल पडने के कारण होता है। ⊙ताई(पु) = स्त्री० दे० 'चमक'। ⊙दमक = स्त्री० दीप्ति, आभा। तडक भडक। **चमकना**—अक० प्रकाशित होना, जगमगाना। दमकना, काति से युक्त होना। उन्नति करना, समृद्ध होना। चौंकना। भड-कना। फुरती से खिसक जाना। एकबारगी दर्द उठना। मटकना, उँगलियाँ आदि हिलाकर भाव बताना। कमर मे लचक आना। **चमकाना**—सक० [अक० चम-कना] चमक लाना। उज्ज्वल करना। चौंकाना। चिढाना। घोडे को चचलता के साथ बढाना। भाव बताने के लिये उँगली आदि हिलाना। **चमकारी**(पु)—स्त्री० चमक, प्रकाश। वि० स्त्री० चम-कीली। **चमकीला**—वि० जिसमे चमक हो। शानदार, भडकीला। **चमकौवल**—पु० चमकाने की क्रिया। मटकाने की क्रिया। **चमक्को**—स्त्री० चमकनेवाली स्त्री, चचल और निर्लज्ज स्त्री। कुलटा स्त्री। झगडालू स्त्री।
चमकी—स्त्री० कारचोवी मे प्रयुक्त छोटे, गोल या चौकोर चिपटे टुकडे, सितारे।
चमगादड़—पु० चमडे के पखोवाला एक स्तनपायी जतु जो रात मे ही बाहर निकलता है।
चमचम—स्त्री० एक बँगला मिठाई। क्रि० वि० दे० 'चमाचम'।
चमचमाना—अक० प्रकाशमान होना, दम-कना। सक० चमकाना।
चमचा—पु० [फा०] छोटी कडछी, चम्मच। चिमटा।
चमजुई, चमजोई—स्त्री० एक छोटी किलनी। पीछा न छोडनेवाली वस्तु।
चमडा—पु० प्राणियो के शरीर का ऊपरी आवरण, चर्म। प्राणियों के मृत शरीर का चर्म, खाल। छाल। मु०~उधेड़ना या खींचना = बहुत मारना। **चमड़ी**—स्त्री० दे० 'चमडा'।
चमत्कार—पु० [सं०] आश्चर्य। आश्चर्य का विषय या घटना, करामात। विचि-त्रता। **चमत्कारी**—वि० अद्भुत। चम-त्कार दिखानेवाला। **चमत्कृत**—वि० ताज्जुब मे आया हुआ। **चमत्कृति**—स्त्री० आश्चर्य।
चमन—पु० [फा०] हरी भरी क्यारी। फुल वारी, छोटा बगीचा। गुलजार बस्ती।
चमर—पु० [स०] सुरा गाय। सुरा गाय की पूँछ का चँवर। ⊙शिखा = स्त्री० घोडे की कलँगी। **चमरी**—स्त्री० दे० 'चमर'।
चमरख—स्त्री० मूँज या चमडे की बनी हुई चकती जिसमे से होकर चरखे का तकुआ घूमता है।
चमरस—पु० जूते या चमडे से होनेवाला घाव।
चमरौधा—पु० दे० 'चमौवा'।
चमला—पु० भीख माँगने का ठीकरा या पात्र।

चमस—पु० [सं०] सोमपान करने का चम्मच के आकार का एक यज्ञपात्र। कडछी, 'चम्मच।

चमाऊ(पु)—पु० चँवर, चमर। पु० दे० 'चमौवा'।

चमाचम—वि० चमक या काति के सहित।

चमार—पु० चमडे का काम करनेवाली एक जाति या व्यक्ति। **चमारिन, चमारी**—स्त्री० चमार की स्त्री। चमार का काम।

चमू—स्त्री० [म०] फौज। सेना जिसमे ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे।

चमेली—स्त्री० सुगधित फूलो की एक झाडी या लता। इस झाडी का सफेद, छोटा और सुगधित फूल।

चमोटी—स्त्री० कोडा, चाबुक। पतली छडी, कमची। चमडे का टुकडा जिसपर नाई छूरे को तेज करते हैं।

चमौवा—पुं० भद्दा देशी जूता जिसका तला चमडे से सिला हो, चमरौधा।

चम्मच—पुं० एक छोटी, हलकी कडछी।

चय—पुं० [सं०] समूह, ढेर। टीला। गढ। कोट, चहारदीवारी। नीव। चबूतरा। चौकी। **चयन**—पुं० सग्रह, इकट्ठा करने का कार्य। चुनने का कार्य। यज्ञ के लिये अग्नि का सस्कार। क्रम से लगाना या चुनना। **चयना**(पु)—सक० सचय करना।

चर—पुं० [सं०] भेदिया, जासूस। दूत। वह जो चले। खजन पक्षी। कौडी। मगल। नदियो के किनारे या सगम की गीली भूमि जो बहकर आई हुई मिट्टी के जमने मे बनती है। दलदल, कीचड। नदी के बीच मे बालू का बना हुआ टापू। वि० जगम। एक स्थान पर न ठहरनेवाला। खानेवाला। **चरक**—पुं० दूत, चर। भेदिया, जासूस। वैद्यक के एक प्रधान आचार्य जिनकी रची 'चरकसहिता' है। चरकसहिता ग्रथ। पथिक।

चरकटा—पुं० चारा काटकर लानेवाला आदमी।

चरकना(पु)—अक० दे० 'दरकना'।

चरका—पुं० हलका घाव, जख्म। गरम धातु से दागने का चिह्न। हानि। धोखा।

चरख—पुं० घूमनेवाला गोल चक्कर। खराद। चरखा। कुम्हार का चाक। गोफन। गाडी जिसपर तोप चढी रहती है। लकडबग्घा। एक शिकारी चिडिया। ⊙**पूजा**=स्त्री० एक उग्र शैव पूजा जो चैत की सक्राति को होती है। **चरखा**—पु० घूमनेवाला चक्कर, चरख। सूत बनाने का लकडी का यत्र। कुएँ का रहट। सूत लपेटने की चरखी। गराडी, घिरनी। वडा या बेडौल पहिया। नया घोड़ा जोतकर निकालने का गाडी का ढाँचा। झझट का काम। **चरखी**—स्त्री० पहिए की तरह घूमनेवाली वस्तु। छोटा चरखा। कपास ओटने की चरखी। सूत लपेटने की फिरकी। कुएँ से पानी खीचने की गराडी।

चरग[+]—पुं० बाज की जाति की एक शिकारी चिडिया, चरख। लकडबग्घा।

चरचना—सक० देह मे चदन आदि लगाना। लेपना। भाँपना, अनुमान करना। पूजन करना।

चरचराना—अक० 'चर्र चर्र' शब्द के साथ टूटना या जलना। घाव आदि आदि का खुश्की से तनना और दर्द करना। सक० 'चर्र चर्र' शब्द के साथ तोडना।

चरचा—स्त्री० दे० 'चर्चा'। **चरचारी**(पु)—पुं० चरचा चलानेवाला व्यक्ति। निंदक।

चरजना—सक० बहकाना। अनुमान करना।

चरण—पुं० [स०] पैर, पग। बडो का सामीप्य। पद्य का एक पद। चौथाई भाग। मूल, जड। गोत्र। क्रम। आचार। घूमने की जगह। सूर्य आदि की किरण। अनुष्ठान। गमन। चरने का कार्य। ⊙**गुप्त**=पुं० एक चित्रकाव्य। ⊙**चिह्न**=पु० पैरो के तलुए की रेखा। पैर का निशान। ⊙**दासी**=स्त्री० सेविका। पत्नी। जूता। वि०[हिं०] महात्मा चरण-दास का अनुयायी। ⊙**पादुका**=स्त्री० खडाऊँ। पत्थर आदि का बना चरण के आकार का पूज्य चिह्न। ⊙**पीठ**=पुं० दे० 'चरणपादुका'। ⊙**सहस्र**=

पुं० सूर्य । ⊙सेवा = स्त्री० पैर दवाना। वड़ो की सेवा । चरणामृत—पु० पानी जिसमे किसी महात्मा या वडे के चरण धोए गए हो। एक मे मिला हुआ दूध, दही, घी, शक्कर और शहद जिसमें देव-मूर्ति को स्नान कराया गया हो, पचामृत। चरणायुध—पु० मुर्गा। चरणोदक—पुं० चरणामृत।

चरता—स्त्री० [सं०] चलने का भाव। पृथ्वी।

चरती—वि० जिसने व्रत न रखा हो।

चरन—पु० दे० 'चरण'। ⊙पीठ = पुं० चरणपादुका।

चरना—सक० पशुओ का खेत या मैदान मे घूमकर घास या चारा खाना। अक० घूमना फिरना। पु० काछा, काछनी।

चरनि(प)—स्त्री० चाल।

चरनी—स्त्री० चरागाह। नांद जिसमे पशुओ को खाने के लिये चारा दिया जाता है। पशुओ का आहार, घास चारा आदि।

चरपट—पुं० थप्पड़, चपत। उचक्का। एक छद।

चरपरा—वि० तीता, झालदार। चरपराहट—स्त्री० स्वाद की तीक्ष्णता, झाल। घाव आदि की झलन। डाह, ईर्ष्या।

चरफराना—अक० तडपना।

चरब—वि० तेज, तीखा।

चरबांक, चरवाक—वि० चतुर, चालाक। शोख, निडर।

चरबा—पुं० नकल, खाका।

चरबी—स्त्री० सफेद या कुछ पीले रग का एक चिकना पदार्थ जो प्राणियो के शरीर और वहुत से पौधा और वृक्षो मे भी पाया जाता है, मेद। मु०~चढ़ना = मोटा होना। ~छाना = वहुत मोटा होना। मदाध होना।

चरम—वि० [सं०] अतिम, सब से वढा हुआ। चोटी का।

चरमर—पुं० जूता या चारपाई आदि के दवने या मुडने का शब्द। चरमराना—अक० 'चरमर' शब्द होना। सक० 'चरमर' शब्द करना।

चरमवती(प)†—स्त्री० चर्मण्वती, चवल नदी।

चरवाई—स्त्री० चराने का काम या मजदूरी।

चरवारा(प)—पुं० दे० 'चरवाहा'।

चरवाहा—पुं० गाय, भैंस आदि चरानेवाला व्यक्ति।

चरस—पु० भैंस आदि के चमडे का वडा ढोल जिससे सिंचाई के लिये पानी निकाला जाता है, चरसा। भूमि नापने का २१०० हाथ का परिमाण। नशे के लिये चिलम मे पिया जानेवाला गांजे का गोंद या चेप। एक पक्षी, वनमोर। चरसा—पुं० भैंस, वैल आदि का चमडा। चमडे का बना थैला। चरस, मोट।

चराई—स्त्री० चरने का काम। चराने का काम या मजदूरी।

चरागाह—पुं० [फा०] मैदान जहाँ पशु चरते हो।

चराना—सक० [चरना का प्रे०] पशुओ को चारा खिलाने के लिये मैदान आदि मे ले जाना। बातो मे बहलाना।

चराचर—वि० [सं०] चर और अचर, जड और चेतन। जगत्।

चरावर†(प)—स्त्री० व्यर्थ की बात, बकवाद।

चरिंदा—पुं० चरनेवाला जीव, गाय, भैंस आदि पशु।

चरित—पुं० [सं०] रहन सहन, आचरण। करनी, कृत्य। किसी के जीवन की विशेष घटनाओ या कार्यो आदि का वर्णन, जीवनी, जैसे—रामचरित (मानस), बुद्धचरित आदि। चर्या। ⊙नायक = पुं० प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कोई पुस्तक लिखी जाय।

चरितार्थ—वि० जिसके अभिप्राय की सिद्धि हो चुकी हो, कृतार्थ। जो ठीक घट चुका हो।

चरित्तर†—पुं० नखरेवाजी, धूर्तता की चाल।

चरित्र—पुं० [सं०] स्वभाव। कार्य। शील, आचरण। चरित। ⊙नायक = पुं० दे० 'चरितनायक'। ⊙वान् = वि० अच्छे चरित्रवाला।

चरी—स्त्री० चरागाह। चारे मे प्रयुक्त छोटी ज्वार के हरे पेड।

चरु—पुं० [सं०] यज्ञ की आहुति के लिये पकाया हुआ अन्न, देवताओ या पितरों

को दिया जानेवाला पक्वान्न। उक्त अन्न पकाने का पात्र। चरागाह। यज्ञ।
चरखला†—पुं० सूत कातने का चरखा।
चरेरा—वि० कडा और खुरदुरा। रूखा।
चरैया†—पु० चरानेवाला व्यक्ति। चरनेवाला पशु।
चर्चक—वि० [सं०] चर्चा करनेवाला।
चर्चन—पु० [सं०] चर्चा। लेपन।
चर्चरिका—स्त्री० [सं०] नाटक मे वह गान जो किसी एक विषय की समाप्ति और यवनिकापात होने पर होता है।
चर्चरी—स्त्री० वसत मे गाया जानेवाला एक गाना, फाग। होली की धूमधाम या हुल्लड। एक वर्णवृत्त। ताली बजाने का शब्द। चर्चरिका। आमोद प्रमोद।
चर्चा—स्त्री० [सं०] जिक्र, वर्णन। बातचीत। अफवाह। लेपन, पोतना। गायत्रीरूपा महादेवी। दुर्गा।
चर्चिका—स्त्री० [सं०] चर्चा, जिक्र। दुर्गा।
चर्चित—वि० [सं०] लेपित, पोता हुआ। जिसकी चर्चा हो।
चर्पट—पु० [सं०] चपत, थप्पड़। हाथ की खुली हुई हथेली।
चर्म—पु० [सं०] चमडा। ढाल। ⊙**कशा**, ⊙**कषा**=पु० एक सुगंधित द्रव्य, चमरखा। ⊙**कार**=पु० चमार। ⊙**कील**=स्त्री० बवासीर। एक रोग जिसमे शरीर मे नुकीला मस्सा निकल आता है। ⊙**चक्षु**=पु० साधारण चक्षु, 'ज्ञानचक्षु' का उलटा। ⊙**दड**=पु० चमडे का बना कोडा। ⊙**वसन**=पु० शिव।
चर्या—स्त्री० [सं०] वह जो किया जाय, आचरण। चालचलन। कामकाज। जीविका। सेवा। चलना, टहलना।
चर्राना—अक० लकडी आदि का टूटने या तडकने के समय चर चर शब्द करना। घाव पर खुजली या सुरसुरी मिली हुई हलकी पीडा होना। जुटते हुए चमडे मे तनाव के कारण पीडा होना। खुश्की और रुखाई के कारण किसी अग मे तनाव होना। किसी बात की तीव्र इच्छा होना।
चर्री—स्त्री० लगती हुई व्यंगपूर्ण बात। चुटीली बात
चर्वण—पु० [सं०] दाँतो से खूब दबाकर खाना, चबाना। वह वस्तु जो चबाई जाय, चबैना, दाना। **चर्वित**—वि० चबाया हुआ। ⊙**चर्वण**—पुं० चबाई हुई वस्तु को फिर स चबाना। किए हुए काम या कही हुई बात को फिर से रना या कहना। पिष्टपेषण।
च[illegible]—वि० [सं०] चचल। चलता हुआ। पुं० पारा। दोहा छद का एक भेद। शिव। विष्णु। ⊙**विचल**=वि० जो ठीक जगह से इधर उधर हो गया हो, उखडा पुखडा, बेठिकाने का। जिसके क्रम या नियम का उल्लघन हुआ हो, स्त्री० किसी नियम या क्रम का उल्लघन। ⊙**चलक**=अक० दे० 'चमकना'। ⊙**चलाव**=पुं० प्रस्थान, यात्रा, चलाचली। मृत्यु। ⊙**चाल**=क्रि० वि० चलविचल। चचल। अस्थिर। ⊙**चित्र**=पु० किसी लबी फिल्म पर लिए हुए चित्र जो परदे पर सजीव प्राणियो की तरह दिखाई देते हैं। सिनेमा। ⊙**चूक**=स्त्री० धोखा, कपट। ⊙ **पत्र**=पुं० [सं०] पीपल का वृक्ष। ⊙**ता**=स्त्री० चचलता। अस्थिरता। वि० [हिं०] गमन करता हुआ, हिलता डोलता। जिसका क्रम भग न हो। जिसका रिवाज बहुत हो। प्रचलित। काम करने योग्य, जो अशक्त न हुआ हो। चालाक। ⊙**खाता**=वि० बक आदि का वह खाता जिसमे लेन देन चालू हो। चलता हिसाब। मु०~**करना**=हटाना, भगाना, भेजना। किसी प्रकार निपटाना। ~**बनना**=चल देना। ⊙**ती**=स्त्री० [हिं०] प्रभाव, अधिकार। ⊙**दल**, **पत्र**=पु० [सं०] पीपल का वृक्ष। **चलन**—पु० गति। रस्म, रीति। व्यवहार, उपयोग या प्रचार। स्त्री० [सं०] (ज्योतिप मे) सूर्य की वह गति जब दिन और रात दोनो बराबर होते हैं (अर्थात् २० मार्च और २२ या २३ सितबर)। पु० [सं०] गति, भ्रमण।

⊙कलन = पु० [सं०] ज्योतिष मे एक प्रकार का गणित जिससे दिन रात के घटने बढने का हिसाब लगाया जाता है। एक प्रकार का गणित। ⊙सार = वि० जो उपयोग या व्यवहार मे हो। टिकाऊ। चलना—पु० बडी चलनी। अक० गमन या प्रस्थान करना। हिलना डोलना। कार्यनिर्वाह मे समर्थ होना, निभना। बहना। बढना। किसी कार्य में अग्रसर होना, किसी युक्ति या काम मे आना। आरभ होना। जारी रहना, क्रम या परपरा का निर्वाह होना। बराबर काम देना, टिकना। लेन देन के काम मे आना। प्रचलित होना। काम मे लाया जाना। तीर, गोली आदि का छूटना। लडाई झगडा होना, विरोध होना। पढा जाना। कारगर होना। उपाय लगना। आचरण करना, व्यवहार करना। निगल जाना। खाया जाना। सक० शतरज या ताश मे गोटी या पत्ते को बढाना या सामने रखना। मु०—चाल~ = छल करना, धोखा देना। पेट~ = दस्त आना। निर्वाह होना। मन~ = इच्छा होना। मुँह~ = खूब बोलना। मुंह चलाना। अनधिकार बोलना, खाना। चल बसना = मर जाना। अपने चलते = भरसक, यथाशक्ति। चलनि(पु)—स्त्री० दे० 'चलन'। ⊙वंत(पु) = पु० पैदल। सिपाही। ⊙वैया = पु० चलनेवाला।

चला—स्त्री० [सं०] बिजली। लक्ष्मी। पृथ्वी।

चलाऊ—वि० जो बहुत दिनो तक चले, टिकाऊ।

चलक—वि० दे० 'चालाक'।

चलाका(पु)—स्त्री० बिजली।

चलाचल(पु)—स्त्री० चलाचली। गति। वि० [सं०] चचल, चपल। चल विचल। चलाचली—स्त्री० चलने के समय की घबराहट, धूम या तैयारी। बहुत से लोगो का प्रस्थान। चलने की तैयारी या समय। वि० जो चलने के लिये तैयार हो।

चलान—पुं० भेजे जाने या चलने की क्रिया। भेजने या चलाने की क्रिया। किसी अपराधी का पकडा जाकर न्याय के के लिये न्यायालय भेजा जाना। माल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना। भेजा या आया हुआ माल। वह कागज जिसमे किसी की सूचना के लिये भेजी चीजो की सूची आदि हो। रवन्ना।

चलाना—सक० चलने के लिये प्रेरित करना। गति देना, हिलाना डुलाना। हरकत देना। कार्यनिर्वाह मे समर्थ करना, निभाना। बढाना। वृद्धि करना, उन्नति करना। किसी कार्य को अग्रसर करना। आरभ करना। जारी रखना। बराबर काम मे लाना, टिकाना। व्यवहार मे लाना, लेनदेन के काम मे लाना। प्रचलित करना, प्रचार करना। प्रयुक्त करना। तीर गोली आदि छोडना। किसी चीज से मारना। किसी व्यवसाय की वृद्धि करना। मु०—किसी की~ = किसी के बारे मे कुछ कहना। मुँह~ = खाना। बोलना। हाथ~ = मारने के लिये हाथ उठाना, मारना, पीटना।

चलापन—पुं० चचलता।

चलायमान—वि० [सं०] चलनेवाला, जो चलता हो। चचल। विचलित।

चलाव†—पुं० चलने का भाव। यात्रा।

चलावना—सक० दे० 'चलाना'।

चलावा—पुं० रीति, रस्म। आचरण। गौना। बाजा बजाकर गाँव की सीमा मे बाहर निकलने के लिये किया जानेवाला एक प्रकार का उतारा जो प्रायः गाँवो मे भयकर बीमारी फैलने के समय किया जाता है।

चलित—वि० [स०] अस्थिर, चलायमान। चलता हुआ।

चलैया†—पुं० चलनेवाला।

चवना—अक० टपकना, बहना। गर्भपात होना।

चवन्नी—स्त्री० चार आने मूल्य का चाँदी

या निकल का पुराना सिक्का। एक रुपए का चौथाई मूल्य का सिक्का।

चवर्ग—पुं० [सं०] च से ञ तक के पाँच अक्षरो का समूह।

चवा(पु)—स्त्री० एक साथ सब दिशाओ से बहनेवाली वायु।

चवाई—पुं० बदनामी फैलनेवाला, निंदक, चुगलखोर।

चवाव—पुं० चारो ओर फैलनेवाली चर्चा, अफवाह। बदनामी, निंदा।

चवेली—स्त्री० चमेली।

चश्म—स्त्री० [फा०] आँख। ⊙**दीद** = वि० आँखो से देखा हुआ। ⊙**दीद गवाह** = पुं० वह साक्षी जिसमे अपनी आँखो से घटना देखी हो। ⊙**नुमाई** = स्त्री० आँख दिखाना, घुडकना। **चश्मा**—पुं० दृष्टि-शक्ति बढाने या ठढक रखने के लिये आँखो पर पहना जानेवाला कमानी मे जडा हुआ शीशे या पारदर्शी पत्थर का जोडा, ऐनक। पानी का सोता।

चष(पु)—पुं० आँख। ⊙**चोल**(पु) = पुं० पलक।

चषक—पुं० [सं०] मद्य पीने का पात्र। मधु, शहद। मद्य।

चसक†—स्त्री० हलका दर्द। (पु) पुं० दे० 'चषक'। **चसकना**—अक० हलकी पीडा होना, टीसना।

चसका—पुं० किसी वस्तु या कार्य से मिला हुआ आनद जो उस चीज के पुन पाने या उस काम के पुन करने इच्छा उत्पन्न करता है, शौक। आदत, लत।

चसना—अक० दो चीजो का एक मे सटना, लगना, चिपना।

चसम(पु)—स्त्री० दे० 'चश्म'।

चसमा(पु)—पु० दे० 'चश्मा'।

चस्पाँ—वि० [फा०] चिपकाया हुआ।

चह—पु० नदी के किनारे नाव पर चढने के लिये चबूतरा। पाट। (पु)† स्त्री० गड्ढा।

चहक—स्त्री० पक्षियो का मधुर शब्द, चिडियो की चहचह। **चहकना**—अक० [अनु०] चहचहाना। उमग या प्रसन्नता से अधिक बोलना। **चहकार**—स्त्री० दे० 'चहक'। **चहकारना**†—अक० दे० 'चहकना'।

चहचहा—पु० 'चहचहाना' का भाव, चहकना, चहक। दिल्लगी, ठठ्ठा। वि० जिसमे चहचह शब्द हो, उल्लास। आनद और उमग उत्पन्न करनेवाला। ताजा। **चहचहाना**—अक० पक्षियो का चहचह शब्द करना, चहकना।

चहनना†—सक० दबाना, रौदना।

चहना(पु)†—सक० दे० 'चाहना'।

चहनि(पु)†—स्त्री० दे० 'चाह'।

चहबच्चा—पु० [फा०] पानी भरने या रखने का छोटा गड्ढा या हौज। धन गाड़ने या छिपा रखने का छोटा तहखाना।

चहर(पु)†—स्त्री० आनद की धूम, रौनक। शोरगुल। वि० बढिया। चुलबुला। **चहरना**(पु)†—अक० आनंदित होना, प्रसन्न होना।

चहल—स्त्री० कीचड, कीच। आनद की धूम। रौनक। ⊙**कदमी** = स्त्री० [फा०] धीरे धीरे टहलना या घूमना। ⊙**पहल** = स्त्री० [हिं०] किसी स्थान पर बहुत से लोगो के आने जाने की धूम। रौनक।

चहला†—पु० कीचड।

चहारदीवारी—स्त्री० [फा०] किसी स्थान के चारो ओर की दीवार, प्राचीर।

चहारुम—वि० [फा०] किसी वस्तु के चार भागो मे से एक भाग, चौथाई।

चहीचहा—अक० लुक छिपकर देखना।

चहुँ(पु)—वि० चार, चारो। ⊙**घाँ** = क्रि० वि० चारो ओर। ⊙**पाहाँ**† = क्रि० वि० चारो ओर।

चहुँकना—अक० दे० 'चौकना'।

चहुँवान—पु० दे० 'चौहान'।

चहूँ—वि० दे० 'चहुँ'।

चहूँटना—अक० सटना, मिलना।

चहेटना—सक० दबाना। निचोडना। दे० 'चपेटना'।

चहेता—वि० जिसे चाहा जाय, प्यारा।

चहोरना†—अक० रोपना, बैठाना। सहेजना, सँभालना।

चांई—वि० ठग, उचक्का। छली, चालाक।

चाँकना—सक० खलिहान में अनाज की राशि पर मिट्टी राख या ठप्पे से छापा लगाना जिसमें यदि अनाज निकाला जाय, तो मालूम हो जाय। सीमा घेरना, हद खींचना। पहचान के लिये चिह्न डालना।

चाँगला†—वि० स्वस्थ, तंदुरुस्त, हृष्टपुष्ट। चतुर। पुं० घोड़ों का एक रंग।

चाँचर, चाँचरि—स्त्री० वसंत ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रकार का राग, चर्चरी राग। एक प्रकार का वस्त्र।

चांचल्य—पुं० [सं०] चंचलता, चपलता।

चाँचु(पु)—पुं० दे० 'चोंच'।

चाँटा†—पुं० [स्त्री० चाँटी] बड़ी च्यूँटी, चिउँटा। पुं० थप्पड़। **चाँटी**—स्त्री० दे० 'च्यूँटी'।

चाँड—वि० प्रबल, बलवान्। उग्र, उद्धत, शोख। बढ़ाचढ़ा, श्रेष्ठ। तृप्त, संतुष्ट। स्त्री० भार सँभालने का खंभा, टेक। भारी जरूरत। गहरी चाह। दबाव, संकट। प्रबलता, अधिकता। मु०~**सरना**=इच्छा पूरी होना। **चाँड़ना**—सक० खोदना, खोदकर गिराना। उखाड़ना, उजाड़ना। जोर से दबाना।

चांडाल—पुं० [सं०] [स्त्री० चांडाली, चांडालिन] डोम। पतित मनुष्य (गाली)।

चाँडिला(पु)†—वि० [स्त्री० चाँडिली] प्रचंड, उग्र। नटखट, शोख। बहुत, अधिक।

चाँडू—वि० चाहनेवाला।

चाँद—पुं० चंद्रमा। चांद्र मास, महीना। द्वितीया के चंद्रमा के आकार का एक आभूषण। चाँदमारी का काला दाग। स्त्री० खोपड़ी का मध्य भाग। ⊙**तारा**=पुं० एक बारीक मलमल जिसपर चमकीली बूटियाँ होती हैं। एक पतंग या कनकौआ। ⊙**ना**—पुं० तेज, प्रकाश, उजाला। चाँदनी। ⊙**नी**—स्त्री० चंद्रमा का प्रकाश, चंद्रमा का उजाला, चंद्रिका। बिछाने की बड़ी सफेद चद्दर। ऊपर तानने का सफेद कपड़ा। मु०~**का खेत**=चंद्रमा का चारों ओर फैला हुआ प्रकाश। **चार दिन की चाँदनी**=थोड़े दिन रहनेवाला सुख। ⊙**बाला**=पुं० कान में पहनने का एक गहना। ⊙**मारी**=स्त्री० दीवार या कपड़े पर बने हुए चिह्नों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास। मु०~**का टुकड़ा**=अत्यंत सुंदर मनुष्य। ~**पर थूकना**=किसी महात्मा पर कलंक लगाना जिसके कारण स्वयं अपमानित होना पड़े। **किधर~निकला है?**=आज क्या अनहोनी बात हुई जो आप दिखाई पड़े?

चाँदी—स्त्री० एक सफेद चमकीली धातु जिसके सिक्के, आभूषण और बरतन इत्यादि बनते हैं, रजत। मु०~**का जूता**=घूस, रिश्वत। ~**काटना**=खूब रुपया पैदा करना।

चांद्र—वि० [सं०] चंद्रमा संबंधी। पुं० चांद्रायण व्रत। चंद्रकांत मणि। अदरक। ⊙**मास**=पुं० उतना काल जितना चंद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगता है, एक पूर्णिमा या अमावस्या से दूसरी पूर्णिमा या अमावस्या तक का समय। **चांद्रायण**—पुं० महीने भर का एक कठिन व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने बढ़ने के अनुसार आहार घटाना बढ़ाना पड़ता है। एक मात्रिक छंद जिसके चरण में २१ मात्राएँ होती होती हैं और ११वीं मात्रा पर यति तथा २१वीं पर विराम होता है। इसमें ग्यारह मात्राएँ जगणांत और दस दस रगणांत होती हैं।

चाँप—स्त्री० चँप या दब जाने का भाव। रेलपेल, धक्का। बलवान् की प्रेरणा। बंदूक का पुरजा जिसके द्वारा कुंदे से नली जुड़ी रहती है। (पु)† पुं० चंपा का फूल। **चाँपना**—सक० दबाना।

चाँय चाँय—स्त्री० व्यर्थ की बकवाद, बकबक।

चाइ(पु) स्त्री०, **चाऊ**(पु)—पुं० दे० 'चाव'।

चाउर†—पुं० दे० 'चावल'।

चाक—पुं० कुम्हार के बरतन बनाने का कील पर घूमता हुआ मंडलाकार पत्थर। पहिया। कुएँ से पानी खींचने की चरखी। थापा जिससे

खलियान की राशि पर छापा लगाते हैं। मंडलाकार चिह्न की रेखा। पु० [फा०] दरार, चीर। वि० [तु०] मज-बूत, पुष्ट। तदुरुस्त। ⊙चौबद = वि० तगडा। चुस्त, चालाक। फुरतीला। **चाकना**—सक० हद खीचना। खलियान मे अनाज की राशि पर मिट्टी या राख से छापा लगाना जिसमे यदि अनाज निकाला जाय तो मालूम हो जाय। पहचान का चिह्न डालना।

चाकचक—वि० चारो ओर से सुरक्षित, दृढ।

चाकचक्य—स्त्री० [स०] चमचमाहट, उज्व-लता। शोभा, सुदरता।

चाकर—पु० [फा०] सेवक, नौकर। **चाकरी**—स्त्री० सेवा, नौकरी।

चाकि—पु० दे० 'चाक'।

चाकी†—स्त्री० दे० 'चक्की'। विजली, वज्र। भारी अनर्थ।

चाकू—पु० [फा०] फल, कलम आदि काटने या छीलने का छोटा औजार, छुरी।

चाक्षुष—वि० [स०] चक्षु सवधी। जिसका ज्ञान नेत्रो से हो। पु० न्याय मे ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण जिसका ज्ञान नेत्रो द्वारा हो। छठे मनु।

चाख—पु० नीलकठ नाम का पक्षी।

चाखना†—सक० दे० 'चखना'।

चाचर, चाचरि—स्त्री० होली मे गाया जानेवाला गीत, चर्चरी राग। होली के खेल तमाशे। दगा, हलचल।

चाचरी—स्त्री० योग की एक मुद्रा।

चाचा—पुं० [स्त्री० चाची] पितृव्य, बाप का भाई।

चाट—स्त्री० चटपटी चीजो के खाने या चाटने की प्रबल इच्छा। किसी वस्तु का आनद लेकर उसी का आनद लेने की चाह, चसका। प्रबल इच्छा, लोलु-पता। लत, आदत। चरपरी और नम-कीन खाने की चीजें, गजक। **चाटना**—सक० जीभ लगाकर या जीभ से पोछ पोछकर खाना, चट कर जाना। प्यार से किसी वस्तु पर जीभ फेरना। पशुओ का शरीर साफ करने के लिये शरीर पर जीभ फेरना। कीडो का किसी वस्तु को खा जाना।

चाटु—पुं० [स०] मीठी बात, प्रिय बात। खुशामद। ⊙कार = पु० खुशामद करनेवाला। ⊙कारी—स्त्री० खुशामद।

चाड़Ⓟ—स्त्री० दे० 'चाँड'। पु० उत्कट इच्छा।

चाढाⓅ—पु० प्रेमपात्र, प्यारा।

चातक—पु० [सं०] पपीहा।

चातर—वि० दे० 'चातुर'।

चातिक—पु० पपीहा।

चातुर—वि० [सं०] गोचर, प्रकट। चतुर। खुशामदी, चापलूस। **चातुरी**—स्त्री० चतुरता, चतुराई, व्यवहारदक्षता। चालाकी।

चातुर्भद्र, चातुर्भद्रक—पु० [सं०] चार पदार्थ, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। किन्ही चार औषधीय पौधो का सग्रह।

चातुर्मासिक—वि० [सं०] चार महीने मे होनेवाला (यज्ञ, कर्म आदि)। **चातुर्मास्य**—पु० वर्षाकाल। तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार चार चार महीना के तीन मौसमो के प्रारभ मे किए जानेवाले वैश्वदेव, वरुण प्रधास और शाक मेध यज्ञ। वर्षा-काल मे होनेवाला चार महीने का एक पौराणिक व्रत। **चातुर्वर्ण्य**—पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामक चारो वर्ण। **चातुर्य**—पु० चतुराई।

चात्रिकⓅ—पु० दे० 'चातक'।

चादर—स्त्री० [फा०] कपडे का लबा चौडा टुकडा जो विछाने या ओढने के काम आता है। हलका ओढना, पिछौरी। किसी धातु का बडा चौखूंटा पत्तर, चद्दर। पानी की चौडी धार जो कुछ ऊपर से गिरती हो। वर्षा मे बाढ की तरगो के कारण नदी के जल पर चद्दर के समान पडी हुई जलराशि। फूलो की वह राशि जो किसी पूज्य स्थान पर चढाई जाती है (मुसल०)।

चानⓅ—पु० दे० 'चद्रमा'।

चानकⓅ—क्रि० वि० दे० 'अचानक'।

चाननⓅ—पु० दे० 'चदन'।

चाप—पु० [स०] धनुष। गणित मे आधा

वृत्त की परिधि का कोई भाग। धनु राशि। स्त्री० दवाव। पैर की आहट।
चापना—सक० दवाना।
चापट, चापड—वि० दवाया या कुचला हुआ। समतल। वरबाद।
चापल(पु)—वि० दे० 'चपल'। ⊙**ता** = स्त्री० दे० 'चपलता'।
चापलूस—वि० [फा०] खुशामदी। **चापलूसी**—स्त्री० खुशामद।
चापल्य—स्त्री० [सं०] चपलता।
चाब—स्त्री० गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी और जड़ ओषधि के काम आती है, चाव्य। इस पौधे का फल। स्त्री० वे चौखूंटे दांत जिनसे भोजन कुचलकर खाया जाता है। डाढ़, चौभड़। बच्चे के जन्मोत्सव की एक रीति। **चाबना**—सक० चबाना। खूब कूंच कूंच कर भोजन करना।
चाबी, चाभी—स्त्री० कुंजी।
चाबुक—पु० [फा०] कोड़ा, सोटा। जोश दिलानेवाली बात। ⊙**सवार** = पु० घोड़े को चलना सिखानेवाला।
चाभना—सक० खाना। मु० **माल**~ = बढ़िया बढ़िया चीजें खाना।
चाम—पु० चमड़ा खाल। मु०~**के दाम चलाना** = चलती में अन्याय करना, अंधेर करना।
चामर—पु० [सं०] चौंर, चँवर। मोरछल। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण, जगण, रगण, जगण और रगण कुल १५ वर्ण होते हैं।
चामिल(पु)—स्त्री० दे० 'चचल'।
चामीकर—पु० [सं०] सोना। धतूरा। वि० सुनहरा।
चामुंडा—स्त्री० [सं०] दुर्गा देवी का वह रूप जिसमे उन्होने चड और मुड नामक दैत्यो का वध किया था।
चाय—स्त्री० एक पौधा जिसकी सुखाई हुई पत्तियो का काढा चीनी और दूध मिलाकर पीने की चाल अब भारत मे प्राय सर्वत्र है। चाय के साथ उबाला हुआ पानी। ⊙**पानी** = पु० जलपान। पु० दे० 'चाव'।
चायक(पु)—पु० चाहनेवाला।
चार—पु० [सं०] गति, गमन। बधन, कारागार। गुप्त दूत, चर, जासूस। सेवक। चिरौंजी का पेड, पियार अचार। रीति। वि० [हि०] तीन से अधिक। कई एक। कुछ। ⊙**खाना** = पु० [फा०] एक प्रकार का कपडा जिसमें धारियो के द्वारा चौखूंटे घर बने रहते हैं। ⊙**जामा** = पु० [फा०] जीन, पलान। ⊙**दीवारी** = स्त्री० [फा०] घेरा। शहरपनाह, प्राचीर। ⊙**पाई** = स्त्री०[हि०] छोटा पलग खाट, मजी। ⊙**पाया** = पु० [हि०] दे० 'चौपाया'। ⊙**बाग** = पु० [फा०] चौखूंटा बगीचा। चार बराबर खानो मे बँटा हुआ रुमाल। ⊙**यारी** = स्त्री० [हि०] चार मित्रो की मडली। मुसलमानो मे सुन्नी सप्रदाय की एक मडली। चांदी का एक चौकोर सिक्का जिसपर खलीफाओ का नाम या कलमा लिखा रहता है। मु०~**आंखे होना** = नजर से नजर मिलना, देखादेखी होना, साक्षात्कार होना। ~**चांद लगना** = चौगुनी प्रतिष्ठा होना, चौगुनी शोभा होना, सौंदर्य बढ़ना। **चारो फूटना** = चारो आंखें (दो हिए की दो ऊपर की) फूटना।
चारण—पु० वश की कीर्ति गानेवाला, भाट, वदीजन। राजपूताने की एक जाति। भ्रमणकारी।
चारना(पु)†—सक० चराना।
चारा—पु० पशुओ के खाने की घास, पत्ती, डठल आदि। [फा०] उपाय।
चारिणी—वि० स्त्री० [सं०] आचरण करनेवाली, चलनेवाली।
चारित—वि० [सं०] चलाया हुआ।
चारित्र—वि० [सं०] कुलक्रमागत आचार, चाल चलन, स्वभाव। **चारित्र्य**—पु० [सं०] चरित्र।
चारी—वि० [सं०] चलनेवाला। आचरण करनेवाला। पु० पैदल सिपाही। सचारी भाव।
चारु—वि० [सं०] सुदर। ⊙**हासिनी** = वि० स्त्री० सुदर हँसनेवाली, मनोहर मुसकानवाली। स्त्री० वैताली छद का एक भेद।

चाल—स्त्री० गति। चलने का ढग। आचरण। आकार प्रकार, बनावट। रीति। गमन मुहुर्त। कार्य करने की युक्ति। कपट। प्रकार। शतरज या ताश आदि के खेल मे गोटी को एक घर से दूसरे घर मे ले जाने अथवा पत्ते या पासे को दाँव पर डालने की क्रिया। हलचल, आदोलन। हिलने डोलने का शब्द, खटका। ⊙**चलन**=पु० आचरण, चरित्र, शील। ⊙**ढाल**=स्त्री० व्यवहार। तौर तरीका। ⊙**बाज**=वि० धूर्त छली। **चालिया**—वि० दे० 'चालबाज'। **चाली**—वि० चालबाज। चचल, नटखट।

चालक—वि० [सं०] चलानेवाला, सचालक। पुं० धूर्त, छली।

चालन—पुं० [सं०] चलाने क्रिया। चलने की क्रिया। भूसी या चोकर जो आटा चालने के पीछे रह जाता है।

चालना(पु)†—सक० चलाना। एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना। (बहू) बिदा कराके ले आना। हिलना। कार्य निर्वाह करना, भुगताना। बात उठाना। आटे को चलनी मे रखकर छानना। कागज, कपडा, लकडी आदि मे कीडो का अत्यधिक बरबादी करना। अक० चलना।

चालनी†—स्त्री० दे० 'चलनी'।

चाला—पुं० प्रस्थान। नई बहू का पहले पहल मायके से ससुराल या ससुराल से मायके जाना। यात्रा का मुहुर्त।

चालाक—वि० [फा०] व्यवहारकुशल। धूर्त। **चालाकी**—स्त्री० चतुराई, युक्ति, पटुता। चालबाजी। युक्ति।

चालान—पु० दे० 'चलान'।

चालीस—वि० जो गिनती मे बीस और बीस हो। पु० बीस और बीस की सख्या (४०)।

चालीसा—पुं० चालीस का समूह।

चाल्ह, चाल्हा—स्त्री० चेल्हवा मछली।

चावँ चावँ—स्त्री० दे० 'चाँय चाँय'।

चाव—पुं० प्रबल इच्छा, अरमान। प्रेम, अनुराग। शौक, उत्कठा। लाड प्यार। उमग, उत्साह।

चावना—सक० दे० 'चाहना'।

चावल—पुं० धान कूटकर निकाला हुआ एक प्रसिद्ध अन्न, तडुल। भात। चावल के आकार के दाने। एक रत्ती का आठवाँ भाग या उसके बराबर की तौल।

चाष—पु० [सं०] नीलकठ पक्षी। चाहा पक्षी। आँख। **चाषु**—पु० नीलकठ पक्षी।

चास†—स्त्री० जोत, बाह। **चासना**—अक० जोतना। हलवाहा, किसान।

चासनी—स्त्री० [फा०] चीनी, मिश्री या गुड को आँच पर चढाकर गाढा और मधु के समान लसीला किया हुआ रस। चसका। नमूने का सोना जो सुनार को गहने बनाने के लिये सोना देनेवाला गाहक अपने पास रखता है।

चाह—स्त्री० अभिलाषा। प्रेम। आदर। माँग। चाय नामक पेय। (पु)स्त्री० समाचार। गुप्त भेद। ⊙**क**(पु)=वि० चाहने या प्रेम करनेवाला। **चाहना**=सक० इच्छा करना। प्रेम करना। माँगना। प्रयत्न करना। (पु)देखना। ढूँढ़ना। स्त्री० जरूरत।

चाहा—पु० बगले की तरह का एक जलपक्षी

चाहि(पु)—अव्य० अपेक्षाकृत।

चाहिए—अव्य० उचित है, उपयुक्त है।

चाही—वि० स्त्री० चहेती, प्यारी।

चाहे—अव्य० जी चाहे, इच्छा हो। यदि जी चाहे तो। होनेवाला हो।

चिआँ—पु० इमली का बीज।

चिउँटा—पुं० एक कीडा जो मीठे के पास बहुत जाता है। **चिउँटी**—स्त्री० चीटी पिपीलिका। मु०~**की चाल**=बहुत सुस्त चाल, मद गति। ~**के पर निकलना**=ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो, मरने पर होना।

चिंघाड़—स्त्री० चीख मारने का शब्द। किसी जतु का घोर शब्द, चिल्लाहट। हाथी की बोली। **चिंघाड़ना**—अक० चीखना, चिल्लाना। हाथी का चीखना बोलना या चिल्लाना।

चिंचिनी—स्त्री० इमली का पेड, फल।

चिंज, चिंजा(पु)†—पुं० पुत्र।

चिंड—पुं० नाच का एक प्रकार।

चिंत—स्त्री० दे० 'चिंता'। **चितना**(पु)—

सक० ध्यान करना स्मरण करना। चिंता करना, सोचना। स्त्री० ध्यान, भावना।

चिंतवनⓅ—पुं० दे० 'चिंतन'।

चिंतक—वि० [सं०] चिंतन करनेवाला। सोचनेवाला। **चिंतन**—बार बार स्मरण, ध्यान। विचार, गौर। **चिंतनीय**—वि० चिंतन या ध्यान करने योग्य। जिसकी फिक्र करना उचित हो। विचार करने योग्य। संदिग्ध। **चिंता**—स्त्री० सोच, खुटका। ध्यान, भावना। ⊙**मणि**—पुं० कल्पित रत्न जिसके विषय मे प्रसिद्ध है कि उससे जो अभिलाषा की जाय, वह पूर्ण कर देता है। ब्रह्मा। परमेश्वर। सरस्वती का मंत्र जिसे विद्याप्राप्ति के लिये जपते या लडके की जीभ पर लिखते है। **चिंतित**—वि० जिसे चिंता या सोच हो, चिंता-युक्त। **चिंत्य**—वि० विचारणीय। संदिग्ध।

चिंदी—स्त्री० टुकडा।

चिंपाजी—पुं० एक प्रकार का वनमानुष।

चिउडा—पुं० दे० 'चिडवा'।

चिक—स्त्री० [तु०] बाँस या सरकडे की तीलियो का बना हुआ झँझरीदार परदा, चिलमन। पुं० पशुओ को मारकर उनका मास बेचनेवाला, बूचर, बकरकसाई। स्त्री० [हिं०] कमर का वह दर्द जो एकबारगी अधिक बल पडने के कारण होता है, चमक, चिलक, झटका।

चिकट—वि० चिकना और मैल से गंदा, मैला कुचैला। लसीला। **चिकटना**—अक० जमी हुई मैल के कारण चिपचिपा होना।

चिकन—पुं० [फा०] महीन सूती कपडा जिसपर उभरे हुए बूटे बने रहते है।

चिकनई—स्त्री० दे० 'चिकनापन'।

चिकना—वि० जो छूने मे खुरदुरा न हो, जो साफ और बराबर हो। जिसपर पैर आदि फिसले। जिसमे तेल लगा हो। सँवारा हुआ, सुंदर। खुशामदी। अनुरागी। पुं० तेल, घी, चरबी आदि चिकने पदार्थ। ⊙**ई**=स्त्री० चिकनापन। स्निग्धता, सरसता।

चिकनाना—सक० चिकना करना। साफ करना, सँवारना। अक० चिकना होना। स्निग्ध होना। हृष्ट पुष्ट होना। स्नेहयुक्त होना। मु०~**घड़ा**=निर्लज्ज। ~**चुपड़ी बातें**=बनावटी स्नेह से भरी बाते, कृत्रिम और मधुर भाषण। **चिकनाहट**—स्त्री० चिकनापन। **चिकनिया**—वि० छैला, शौकीन, बनाठना। **चिकनी सोपाड़ी**—स्त्री० एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।

चिकरना—अक० चीत्कार करना, चिंघाडना, चीखना।

चिकवा†—पुं० मास बेचनेवाला, बूचड। एक प्रकार का रेशमी कपडा।

चिकार—पुं० दे० 'चिंघाड'। **चिकारना**—अक० दे० 'चिंघाडना'।

चिकारा—पुं० सारंगी की तरह का एक बाजा। हिरन की जाति का एक जानवर।

चिकित्सक—पुं० [सं०] चिकित्सा करनेवाला, वैद्य।

चिकित्सा—स्त्री० [सं०] रोग दूर करने की युक्ति या क्रिया, इलाज। वैद्य का काम।

चिकित्सालय—पुं० वह स्थान जहाँ रोगियो की दवा हो, अस्पताल।

चिकिया—चिको या बूचडो का मोहल्ला।

चिकुटीⓅ—स्त्री० दे० 'चिकोटी'।

चिकुर—पुं० [सं०] सिर के बाल, केश। पर्वत। साँप आदि रेंगनेवाले जंतु। छछूंदर। गिलहरी। **चिकुरारी**—पुं० केशो का समूह।

चिकोटी†—स्त्री० दे० 'चुटकी'।

चिक्कट—पुं० गर्द, तेल आदि की मैल जो कही जम गई हो, कीट। वि० मैला कुचैला, गंदा।

चिक्कण—वि० [सं०] चिकना।

चिक्करना—अक० दे० 'चिंघाडना'।

चिक्कार—पुं० दे० 'चिंघाड'।

चिखुरी—स्त्री० दे० 'गिलहरी'।

चिचडा—पुं० डेढ दो हाथ ऊँचा एक पौधा जो दवा के काम आता है, अपामार्ग। दे० 'चिचडी'। **चिचडी**—स्त्री० एक कीडा जो चौपायो के शरीर मे चिमटा रहता है और उनका खून पीता है, किलनी। एक तरकारी।

चिचान(पु)—पुं० बाज पक्षी।
चिंचिडा—पुं० दे० 'चचीडा'।
चिचियाना†—अक० दे० 'चिल्लाना'।
चिचुकना—अक० दे० 'चुचुकना'।
चिचोड़ना†—सक० दे० 'चचोडना'।
चिजारा—पुं० कारीगर, राज।
चिट—स्त्री० कागज, कपडे आदि का टुकडा। पुरजा। ⊙**नवीस**=पु० मुहर्रिर। कारिंदा।
चिटकना—अक० सूखकर जगह जगह पर फटना। लकडी का जलते समय 'चिट-चिट' शब्द करना। चिढना। **चिटकाना**—सक० [अक० चिटकना] किसी सूखी हुई चीज को तोडना या तडकाना। खिझाना, चिढाना।
चिट्टकी—स्त्री० चुटकी।
चिट्टा—वि० सफेद, श्वेत। पुं० झूठा बढावा।
चिट्ठा—पु० हिसाब की बही, खाता। वह कागज जिसपर वर्ष भर का हिसाब जाँच-कर नफा नुकसान दिखाया जाता है। किसी रकम की सिलसिलेवार सूची। वह रुपया जो प्रति दिन, प्रति सप्ताह या प्रति मास मजदूरी या तनख्वाह के रूप मे बाँटा जाय। खर्च की फिहरिस्त। मु०—**कच्चा**~=वृत्तात जिसमे कोई बात छिपाई न गई हो। गुप्त वृत्तात।
चिट्ठी—स्त्री० कागज जिसपर कहीं भेजने के लिये समाचार आदि लिखा हो, पत्र। छोटा पुरजा या कागज जिसपर कुछ लिखा हो। एक क्रिया जिसके द्वारा यह निश्चय किया जाता है कि कोई माल पाने या कोई काम करने का अधिकारी कौन हो, लाटरी। किसी बात का आज्ञापत्र। निमत्रणपत्र। ⊙**पत्री**—स्त्री० पत्रव्यवहार। ⊙**रसा**—पु० चिट्ठी बाँटनेवाला, डाकिया।
चिड़चिडा—पु० दे० 'चिचडा'। वि० शीघ्र चिढनेवाला, जल्दी अप्रसन्न होनेवाला। **चिडचिडाना**—अक० जलने मे चिड-चिड शब्द होना। सूखकर जगह जगह से फटना, खरा होकर दरकना। चिढना, बिगडना, झुँझलाना।
चिड़वा—पु० हरे, भिगोए या कुछ उबाले हुए धान को कूटकर बना हुआ चिपटा दाना, चिउडा।
चिडा—पु० गौरा पक्षी, 'गोरैया' का नर।
चिड़िया—स्त्री० पक्षी। चिडिया के आकार का गढा या काटा हुआ टुकडा। ताश का एक रग। ⊙**खाना**=पु० वह स्थान या घर जिसमे अनेक प्रकार के पक्षी और पशु देखने के लिये रखे जाते हैं। मु०~**का दूध**=अप्राप्य वस्तु। **सोने की**~=धन देनेवाला असामी।
चिडिहार†(पु)—पु० दे० 'चिरीमार'।
चिडी—स्त्री० दे० 'चिडिया'। ⊙**मार**=पुं० चिडिया पकडनेवाला, बहेलिया।
चिढ—स्त्री० चिढने का भाव, अप्रसन्नता, कुढन, खिजलाहट। नफरत, घृणा। **चिढना**—अक० खीजना, झुँझलाना। नाराज होना। द्वेष रखना।
चिढाना—सक० चिढने के लिये प्रेरित करना। किसी को कुढाने के लिये मुँह बनाना या और कोई चेष्टा करना। उपहास करना।
चित्—स्त्री० [सं०] चेतना, ज्ञान।
चित(पु)—पु० चितवन, दृष्टि। वि० पीठ के बल पडा हुआ, 'पट' का उलटा। पु० चित्त, मन। ⊙**चोर**=वि० चित्त को चुरानेवाला, प्यारा। ⊙**भंग**=पु० ध्यान न लगना, उदासी। होश का ठिकाने न रहना।
चितउन(पु)—स्त्री० दे० 'चितवन'।
चितकबरा—वि० किसी एक रग पर दूसरे रग के छापवाला।
चितरना(पु)—सक० चित्रित करना, चित्र-बनाना।
चितरोख—स्त्री० एक चिडिया, चितरवा।
चितला—वि० चितकबरा। पुं० लखनऊ का एक प्रकार का खरबूजा। एक बडी मछली।
चितवन—स्त्री० ताकने का भाव या ढग, अवलोकन, दृष्टि। **चितवना**(पु)—सक० देखना।
चितवाना(पु)—सक० [चितवना का प्रे०] तकाना, दिखाना।
चिता—स्त्री० चुनकर रखी हुई लकड़ियों

का ढेर जिसपर मुरदा जलाया जाता है। ⓟ स्मशान।

चितारना—अक० चित्रित करना, अंकित करना।

चिताना—सक० [अक० चेतना] सावधान करना। स्मरण कराना। आत्मबोध कराना। (आग) जलाना।

चितावनी—स्त्री० चिताने की क्रिया, सावधान करने की क्रिया। वह बात जो सावधान करने के लिये कही जाय।

चिति—स्त्री० [सं०] चेतना। चिता। समूह। चुनने या इकट्ठा करने की क्रिया। चैतन्य। दुर्गा।

चितेरा—पु० चित्रकार।

चितौन—स्त्री० दे० 'चितवन'।

चितौनी—स्त्री० दे० 'चेतावनी'।

चित्त—पु० [सं०] अंतःकरण की अनुसंधानात्मक वृत्ति। मन। ⊙भूमि = स्त्री० चित्त की पाँच अवस्थाएँ—क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध (योग)। ⊙विक्षेप = पु० चित्त की चंचलता या अस्थिरता। ⊙विभ्रम = पु० भ्रांति। उन्माद। ⊙वृत्ति = स्त्री० चित्त की गति। मु०~चढना = दे० 'चित्त पर चढना'। ~चुराना = मन मोहना। ~देना = मन लगाना। ~पर चढ़ना = मन मे आना, बार बार ध्यान मे आना। याद पडना। ~बँटना = मन एकाग्र न रहना। ~में धँसना, जमना या बैठना = हृदय मे दृढ होना। समझ से आना। ~से उतरना = भूल जाना। दृष्टि से गिरना।

चित्तर—पु० दे० 'चित्र'। ⊙सारी = स्त्री० दे० 'चित्रशाला'।

चित्ती—स्त्री० छोटा दाग या चिह्न, बुंदकी। चिपटी और खुरदरी पीठवाली कौडी जिससे जुए के दाँव फेंकते हैं, टैयाँ।

चित्र—पु० [सं०] चंदन आदि से माथे पर बनाया हुआ चिह्न, तिलक। किसी वस्तु का स्वरूप या आकार जो कलम और रंग आदि के द्वारा बना हो, तसवीर। काव्य के तीन भेदो मे से एक जिसमे व्यंग्य या लक्ष्य अर्थ की अपेक्षा वाच्यार्थ की प्रधानता रहती है। काव्य मे एक प्रकार की रचना जिसमे पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते है कि खड्ग, रथ, कमल आदि के आकार बन जाते है। एक वर्णवृत्त। आकाश। एक प्रकार का कोढ जिसमे शरीर मे सफेद चित्तियाँ या दाग पड जाते हैं। चित्रगुप्त। चीते का पेड। वि० अद्भुत। चितकबरा। ⊙कला = स्त्री० चित्र बनाने की विद्या। ⊙कार = पु० चित्र बनानेवाला। ⊙कारी = स्त्री० [हिं०] चित्रविद्या, चित्र बनाने की कला। ⊙काव्य = पु० एक प्रकार का काव्य, दे० 'चित्र'। ⊙कूट = पु० एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ वनवास के समय राम और सीता ने बहुत दिनो तक निवास किया था। चित्तौर। ⊙गुप्त = पु० चौदह यमराजो मे से एक जो प्राणियों के पाप और पुण्य का लेखा रखते हैं। ⊙जल्प = पु० वह भावगर्भित वाक्य जो नायक और नायिका रूठकर एक दूसरे से कहते हैं। ⊙पट = पु० वह कपडा, कागज या पटरी जिसपर चित्र बनाया जाय, चित्राधार। छीट। सिनेमा। ⊙पदा = स्त्री० एक छंद। ⊙मद = पु० नाटक आदि मे किसी स्त्री का अपने प्रेमी का चित्र देखकर विरह-सूचक भाव दिखलाना। ⊙मृग = पु० एक प्रकार का चित्तीदार हिरन, चीतल। ⊙योग = पु० बुड्ढे को जवान और जवान को बुड्ढा या नपुंसक बना देने की विद्या या कला। ⊙रथ = पु० सूर्य। ⊙लेखा = स्त्री० एक वर्णवृत्त। चित्र बनाने की कलम या कूँची। बाणासुर की कन्या उषा की एक सखी जो चित्र-कला मे निपुण थी। ⊙विचित्र = वि० रंग बिरंगा। बेलबूटेदार। ⊙विद्या = स्त्री० चित्र बनाने की विद्या। ⊙शाला = स्त्री० वह घर जहाँ चित्र बना हो। वह घर जहाँ चित्र रखे जाते हो या उनका प्रदर्शन होता हो, रंगबिरंग की सजावट का स्थान। ⊙सार = पु० [हिं०] दे०

'चित्रशाला'। ⊙ सारी = स्त्री० [हिं०] वह घर जहाँ चित्र टँगे हो या दीवार पर बने हो। सजा हुआ सोने का कमरा, विलास भवन। चित्रकारी। ⊙स्थ = वि० चित्र मे अंकित किया हुआ। चित्र मे अंकित व्यक्ति के समान निस्तब्ध। ⊙हस्त = पु० वार का एक हाथ, हथियार चलाने का एक हाथ। वि० जिसने वार करने के लिये हाथ उठाया हो। **चित्राधार**—पु० वह पुस्तक जिसमे अनेक प्रकार के चित्र एकत्र करके रखे जाते है। **चित्रित**—वि० चित्र मे खीचा हुआ। जिसपर बेल बूटे आदि बने हो। जिसपर चित्तियाँ या धारियाँ आदि हो। शब्दो में चित्रण किया हुआ, वर्णित। मु०~उतारना = चित्र बनाना। वर्णन आदि के द्वारा ठीक ठीक दृश्य सामने उपस्थित कर देना।

चित्रक—पु० [स०] तिलक। चीते का पेड़। चीता, बाघ। चिरायता। चित्रकार।

चित्रना⑤—सक० चित्रित करना, वर्णित करना। तसवीर बनाना।

चित्रांग—वि० [सं०] जिसके अंग पर चित्तियाँ, धारियाँ आदि हो। पुं० चीता। एक प्रकार का सर्प। ईंगुर।

चित्रा—स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रो मे से १४वाँ नक्षत्र। मूषिकपर्णी। ककडी, चिचडा या खीरा। दती वृक्ष। गडदूर्वा। मजीठ। बायबिडग। मूसाकानी। आखुकर्णी। अजवाइन। एक रागिनी। १५ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से और दो दो भगण होते हैं तथा आठवें वर्ण पर यति और अत मे विराम होता है। १६ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे एक गुरु होता है। इसकी ५वी, ८वी और ९वी मात्रा लघु होती है, यह चौपाई का एक भेद है।

चित्रिणी—स्त्री० [सं०] कामशास्त्र मे वर्णित पद्मिनी आदि स्त्रियो के चार भेदो मे से एक।

चियड़ा—पु० फटापुराना कपडा, लत्ता, लुगरा।

चियाड़ना—सक० चीरना, फाड़ना। अपमानित करना।

चिदात्मा—पु० [सं०] ज्ञान और आनंदमय, ब्रह्म।

चिदाभास—पु० [स०] चैतन्य स्वरूप परब्रह्म का आभास अथवा प्रतिबिब जो अंतःकरण पर पडता है। जीवात्मा।

चिद्रूप—पु० ज्ञानस्वरूप, परमात्मा।

चिद्विलास—पु० [सं०] चैतन्य स्वरूप ईश्वर की माया।

चिनक—स्त्री० जलन के साथ पीडा, चुनचुनाहट।

चिनगरा—पु० दे० 'चिथडा'।

चिनगारी—स्त्री० जलती हुई आग का छोटा कण या टुकडा। दहकती हुई आग मे से फूट फूटकर उडनेवाला कण, अग्निकण। मु०—**आँखों से~छूटना** = क्रोध से आँखे लाल होना।

चिनगी—स्त्री० अग्निकण, चिनगारी। चुस्त और चालाक लडका, तेज और फुरतीला लडका। वह लड़का जो नटो के साथ रहता है।

चिनाना⑤—सक० दे० 'चुनवाना'।

चिनिया—वि० चीनी के रग का, सफेद। चीन देश का। ~**केला** = पु० छोटी जाति का केला। ~**बदाम** = पु० दे० 'मूँगफली'।

चिन्मय—वि० [सं०] शुद्ध ज्ञानमय। पुं० परमेश्वर।

चिन्ह⑤†—पु० दे० 'चिह्न'।

चिन्हवाना†—सक० दे० 'चिन्हाना'।

चिन्हाना—सक० (चीन्हना का प्रे०) पहचनवाना, परिचित कराना। **चिन्हानी**—स्त्री० चीन्हने की वस्तु, पहचान, लक्षण। स्मारक। रेखा। **चिन्हार**—वि० अपनी पहचान का, परिचित। **चिन्हारी**—स्त्री० जान पहचान, परिचय।

चिपकना—अक० किसी लसीली वस्तु के कारण दो वस्तुओ का परस्पर जुडना, चिमटना। किसी कार्य मे लगना। **चिपकाना**—सक० लसीली वस्तु को बीच मे देकर दो वस्तुओ को परस्पर जोडना, चिमटाना। लिपटाना।

चिपचिपा—वि० चिपकनेवाला, लसदार। **चिपचिपाना**—अक० छूने मे चिपचिपा जान पड़ना, लसदार मालूम होना।

चिपटना—अक० दे० 'चिपकना'।
चिपटा—जिसकी सतह दबी और बराबर फैली हुई हो बैठा या धँसा हुआ।
चिप्पड़—पु० छोटा चिपटा टुकड़ा। सूखी लकड़ी आदि के ऊपर की छूटी हुई छाल का टुकड़ा, पपड़ी, चुप्पड़। किसी वस्तु के ऊपर से छीलकर निकाला हुआ टुकड़ा।
चिप्पी—स्त्री० छोटा चिप्पड़ या टुकड़ा। उपली, गोहँठी।
चिबुक—पु० [सं०] ठोड़ी। गाल।
चिमटना—अक० चिपकना। आलिंगन करना। हाथ पैर आदि सब अंगों को लगाकर दृढ़ता से पकड़ना। पीछा न छोड़ना। **चिमटाना**—सक० चिपकाना। लिपटाना।
चिमटा—पु० एक औजार जिससे उस स्थान पर की वस्तुओं को पकड़कर उठाते है, जहाँ हाथ नही ले जा सकते, दस्तपनाह। **चिमटी**—स्त्री० बहुत छोटा चिमटा।
चिमड़ा—वि० दे० 'चीमड़'।
चिमनी—[अ०] मकान या कारखाने आदि का धूँआ बाहर निकालनेवाली विशेष नली। लप या लालटेन पर की शीशे की नली।
चिरंजीव—वि० [सं०] चिरजीवी, बहुत दिनो तक जीनेवाला। आशीर्वाद का शब्द जिसका अभिप्राय है–'बहुत दिनो तक जियो'।
चिरंतन—वि० [सं०] पुराना, प्राचीन।
चिर—वि० [सं०] बहुत दिनों पूर्व का। बहुत दिनो तक रहनेवाला। सदा रहनेवाला। ⊙**काल** = पु० बहुत समय। ⊙**कालिक** = वि० बहुत दिनों का पुराना। ⊙**जीवन** = पु० बहुत दिनो तक बना रहनेवाला जीवन अमरत्व। ⊙**जीवी** = वि० बहुत दिनो तक जीनेवाला। अमर। पु० विष्णु। कौवा। मार्कंडेय ऋषि। शाल्मलि या सेमर का पेड़। अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम जो चिरजीवी माने गए हैं। काकभुशुंडि। ⊙**निद्रा** = स्त्री० मृत्यु। ⊙**स्थायी** = वि० बहुत दिनों तक रहनेवाला। ⊙**स्मरणीय** = वि० बहुत दिनो तक स्मरण रखने योग्य। पूजनीय। **चिरायु**—वि० बड़ी उम्रवाला, बहुत दिनों तक जीनेवाला, दीर्घायु।
चिरई—स्त्री० दे० 'चिड़िया'।
चिरकना—अक० थोड़ा थोड़ा मल निकालना।
चिरकीन—वि० [फा०] गंदा।
चिरकुट—पु० फटा पुराना कपड़ा, चिथड़ा।
चिरचिटा—पु० चिचड़ा, अपामार्ग।
चिरना—अक० [सक० चीरना] फटना, सीध में कटना। लकीर के रूप में घाव होना।
चिरम, पु० **चिरमि**, **चिरमिटी**—स्त्री० गुंजा, घुँघची।
चिरवाई—स्त्री० चिरवाने का भाव, कार्य या मजदूरी। **चिरवाना**—सक० चीरने का काम कराना, फड़वाना।
चिरहटा—पु० दे० 'चिड़ीमार'।
चिराई—स्त्री० चीरने का भाव, क्रिया या मजदूरी।
चिराकⓅ—पु० दे० 'चिराग'।
चिराग—पु० [फा०] दीपक, दीया। ⊙**दान** = पु० दीवट, शमादान। **चिरागी**—स्त्री० किसी पवित्र स्थान पर चिराग आदि जलाने का खर्च। मजार पर चढ़ाई जानेवाली भेंट।
चिरातन—वि० दे० 'चिरतन'।
चिराना—सक० चीरने का काम दूसरे से कराना। Ⓟ—वि० पुराना।
चिरायंध—स्त्री० वह दुर्गंध जो चमड़े, बाल, मांस आदि जलने से फैलती है।
चिरायता—पु० एक पौधा जो बहुत कड़ुवा होता है और दवा के काम में आता है।
चिरायु—वि० दे० 'चिर'।
चिरारी—स्त्री० दे० 'चिरौंजी'।
चिरियाⓅ—स्त्री० दे० 'चिड़िया'।
चिरिहार—पु० दे० 'चिड़ीमार'।
चिरीⓅ—स्त्री० दे० 'चिड़िया'।
चिरौंजी—स्त्री० प्रियाल वृक्ष के फलो के बीज की गिरी।
चिरौरी—स्त्री० दीनतापूर्ण प्रार्थना।

चिलक—स्त्री० कांति। रह रहकर उठनेवाला दर्द, टीस, चमक। **चिलकना**—अक० रह रहकर चमकना, चमचमाना। रह रहकर दर्द उठना। **चिलका**—सक० [अक० चिलक] चमकाना, झलकाना।

चिलगोजा—पु० [फा०] एक प्रकार का मेवा, चीड या सनोबर का फल।

चिलड़ा—पु० उलटा नाम का पकवान।

चिलता—पु० [फा०] एक कवच। 'काटत चिलता है इमि असि बाहै'....' (हिम्मत० १८६)।

चिलचिलाना—अक० दे० 'चिलकना'।

चिलबिल—पु० मजबूत लकडीवाला एक बड़ा जंगली वृक्ष।

चिलबिला, चिलबिल्ला—वि० चंचल, चपल।

चिलम—स्त्री० [फा०] कटोरी के आकार का नलीदार मिट्टी का बरतन जिसमे तबाकू पीते है। ⊙**ची** = स्त्री० देग के आकार का एक बरतन जिसमे हाथ मुंह धोते और कुल्ली आदि करते है।

चिलमन—स्त्री० [फा०] बाँस की तीलियो का परदा, चिक।

चिलवाँस—पु० चिड़िया फँसाने का फंदा।

चिल्लड़—पु० जूं की तरह का एक छोटा सफेद कीडा।

चिल्लपों—स्त्री० चिल्लाना, शोरगुल, पुकार।

चिल्लर†—पु० दुअन्नी, चवन्नी आदि छोटे सिक्के, रेजगी।

चिल्ला—पु० [फा०] चालीस दिन का समय। चालीस दिन का वधेज या किसी पुण्यकार्य का नियम (मुसल०)। पु० [हिं] उडद या मूंग आदि का पराठा, चीला, उलटा। धनुष की डोरी। **चिल्ला का जाड़ा** = कड़ी सर्दी।

चिल्लाना—अक० जोर से बोलना, शोर करना।

चिल्लाहट—स्त्री० चिल्लाने का भाव। हल्ला, शोर।

चिलिंग—स्त्री० दे० 'चिलक'।

चिल्ली—स्त्री० झिल्ली। बिजली, वज्र।

चिल्ही†—स्त्री० दे० 'चील'।

चिहुंकनाⓅ†—अक० दे० 'चौंकना'।

चिहुंटनाⓅ—सक० चुटकी काटना। चिपटना, लिपटना। मु०—**चित्त**～= मर्म स्पर्श करना, चित्त मे चुभना।

चिहुंटी—स्त्री० चुटकी, चिकोटी।

चिहुरⓅ—पुं० सिर के बाल, चिकुर, केश।

चिह्न—पुं० [स०] वह लक्षण जिससे किसी चीज की पहचान हो, निशान। पताका झंडी। किसी संस्था या पद आदि की सूचक वस्तु। दाग। छाप। स्मरण दिलाने के लिये कोई वस्तु। **चिह्नित**—वि० चिह्न किया हुआ। जिसपर चिह्न हो।

चीं—स्त्री० पक्षियो अथवा छोटे बच्चो का बहुत महीन शब्द। ⊙**चपड** = स्त्री० विरोध मे कुछ बोलना। **चीं चीं** = स्त्री० दे० 'ची'।

चींटवा, चींटा—पुं० दे० 'चिउंटा'।

चींतनाⓅ—सक० दे० 'चित्रना'।

चींथना—सक० नोचकर फाडना। **चीथना**—सक० टुकडे टुकडे करना, फाडना।

चीक—स्त्री० बहुत जोर से चिल्लाने का शब्द, चिल्लाहट। **चीकना**—अक० पीडा कष्ट आदि मे जोर से चिल्लाना। बहुत जोर से बोलना। Ⓟवि० दे० 'चिकना'।

चीकट—पु० तेल की मैल, तलछट। लसार मिट्टी। वि० बहुत मैला या गंदा।

चीख—स्त्री० दे० 'चीक'। **चीखना**—सक० स्वाद जानने के लिये थोडी मात्रा मे खाना, चखना। अक० पीडा या कष्ट आदि के कारण जोर से चिल्लाना। बहुत जोर से बोलना।

चीखर, चीखल—पु० दे० 'कीचड'।

चीखुर—पु० गिलहरी।

चीज—स्त्री० [फा०] सत्तात्मक वस्तु, पदार्थ। महत्व की वस्तु। बात। काम। ⊙**बस्त** = स्त्री० सामान। गहना कपडा।

चीठ—स्त्री० मैला।

चीठा—पु० चिट्ठा। **चीठी**†—स्त्री० चिट्ठी।

चीड़—पु० एक ऊंचा पेड जिसके गोंद से

गंधाविरोजा और तारपीन का तेल निकलता है।
चीत (पु)—पु० चित्रा नक्षत्र।
चीतना—सक० सोचना। चैतन्य होना। स्मरण करना। तसवीर या वेलबूटे बनाना।
चीतर—पु० एक प्रकार का हिरन जिसके शरीर पर चित्तियाँ होती है। अजगर की जाति का एक प्रकार का चित्तीदार साँप।
चीता—पु० बाघ की जाति का एक प्रसिद्ध हिंसक पशु जिसके चमड़े पर चित्तियाँ या धब्बे होते हैं। एक पेड जिसकी छाल और जड औषध के काम मे आती है। (पु) पु० चित्त। होश, सज्ञा। वि० [हिं०] सोचा या विचारा हुआ।
चीत्कार—पु० [सं०] चिल्लाहट, हल्ला।
चीथडा—पु० दे० 'चिथडा'।
चीन—पु० [सं०] झंडी। सीसा नामक धातु। तागा। एक प्रकार का रेशमी कपडा। एक प्रकार का हिरन। एक प्रकार का सावाँ। भारतवर्ष के पूर्वोत्तर मे बसा हुआ एक प्राचीन देश जिसकी राजधानी पेकिंग है। **चीनांशुक**—पु० एक प्रकार की लाल बनात जो पहले चीन से आती थी। चीन से आनेवाला रेशमी कपडा।
चीनना—सक० दे० 'चीन्हना'।
चीना—पु० चीन देशवासी। एक तरह का सावाँ। चीनी कपूर। वि० चीन देश का। ⊙**बदाम** = पु० दे० 'मूँगफली'।
चीनिया—वि० चीन देश का।
चीनी—स्त्री० ईख, चुकदर, खजूर आदि के रस से बना हुआ खूब साफ और मीठा चूर्ण, शक्कर। चीन देश की भाषा या लिपि। वि० चीन देश का। ⊙**मिट्टी** = स्त्री० एक प्रकार की सफेद मिट्टी जिस पर पालिश बहुत अच्छी होती है और जिसके बरतन आदि बनते हैं।
चीन्हा—पु० दे० 'चिह्न'। **चीन्हना**—सक० पहचानना।
चीप—पु० दे० 'चिप्पड'। दे० 'चेप'।
चीफ—पु० [अं०] बडा सरदार या राजा।
चीमड—वि० जो खीचने, मोडने या झुकाने आदि से फटे या टूटे नही।
चीयाँ—पु० दे० 'चियाँ'।
चीर—पु० [सं०] वस्त्र। वृक्ष की छाल। चिथडा। गौ का थन। मुनियों, विशेषत: बौद्ध भिक्खुओं के पहनने का कपडा। धूप का पेड। स्त्री० चीरने का भाव या क्रिया। चीरकर बनाई हुई दरार। ⊙**चरम** (पु)† = पु० बाघबर, मृगछाला। ⊙ **फाड** = स्त्री० चीरने फाडने का काम या भाव। शल्य चिकित्सा। **चीरना**—सक० विदीर्ण करना, फाडना। मु०—**माल** (या रुपया आदि) ~ = अनुचित रूप से बहुत धन कमाना। **चीरा**—पु० एक प्रकार का लहरिएदार रंगीन कपडा जो पगड़ी बनाने के काम मे आता है। गाँव की सीमा पर गाडा हुआ पत्थर या खभा चीरकर बनाया हुआ क्षत या घाव।
चीरी (पु)†—पु० दे० 'चिडिया'।
चीर्ण—वि० [सं०] फाडा या चीरा हुआ।
चील—स्त्री० गिद्ध की जाति की चिड़िया।
चीलर—पु० दे० 'चिल्लड'।
चीला—पु० दे० 'चिलडा'।
चील्ह—स्त्री० दे० 'चील'।
चील्ही—स्त्री० बालको के कल्याणार्थ एक प्रकार का टोनोपचार।
चीवर—पु० [सं०] सन्यासियो, भिक्षुओ या भिक्खुओ का फटा पुराना कपडा। बौद्ध या जैन सन्यासियो के पहनने के वस्त्र का ऊपरी भाग। **चीवरी**—पुं० बौद्ध भिक्षु। भिक्षुक।
चीस—स्त्री० दे० 'टीस'।
चुंगल—पुं० चिडियो या जानवरो का पंजा। मनुष्य के पजे की वह स्थिति जो किसी वस्तु को पकडने मे होती है, पंजा। मु० ~**में फँसना** = वश मे आना।
चुंगी—स्त्री० किसी वस्तुराशि का वह अश जो अधिकारी व्यक्ति या सस्था अपने स्वत्व के रूप मे वसूल करती है। नगरपालिका आदि द्वारा बाहर से लाए हुए कुछ माल पर वसूल होनेवाला महसूल या कर। चगुल भर वस्तु, चुटकी भर चीज।
चुंडा—पुं० कुआँ, कूप।
चुंडित (पु)—वि० चुटियावाला, चुदीवाला।

चुंदी—स्त्री० बालों की शिखा जिसे हिंदू सिर पर पीछे की ओर रखते हैं, चुटिया।
चुंधलाना—अक० चौंधना, चकाचौंध होना।
चुंधा—वि० जिसे सुझाई न पड़े। छोटी आँखोंवाला।
चुंधियाना—अक० दे० 'चंधलाना'।
चुंबक—पु० [सं०] वह जो चुंबन करे। कामुक। धूर्त। ग्रंथों को केवल इधर उधर उलटनेवाला। एक प्रकार का पत्थर या धातु जिसमें लोहे आदि को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति होती है। ⊙ त्व = पुं० चुंबक पत्थर का गुण जिसमें वह लोहे आदि को अपनी तरफ खींचता है, आकर्षण। आकर्षण शक्ति।
चुंबन—पुं० [सं०] प्रेमवश होठों से (किसी के) ओठ, गाल, सिर आदि अंगों का स्पर्श, चुम्मा। **चुंबना**—सक० [हिं०] 'चूमना'। **चुंबित**—वि० चूमा हुआ। प्यार किया हुआ। **चुंबी**—वि० चूमनेवाला। छूने या स्पर्श करनेवाला।
चुअना(पु)—अक० दे० 'चूना'। **चुआना**—सक० बूंद बूंद गिराना। (पु) चुपड़ना, रसमय करना; भभके से अर्क उतारना। **चुआई**—स्त्री० चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव।
चुआन—स्त्री० खाईं, नहर। गड्ढा।
चुकंदर—पुं० [फा०] गाजर की तरह की एक जड़ जो मीठी होती है।
चुक—पु० दे० 'चूक'।
चुकता—वि० बेबाक, ऋण या देय रहित। निःशेष, अदा (ऋण)। **चुकती**—वि० दे० 'चुकता'।
चुकना—अक० समाप्त होना, बाकी न रहना। चुकता होना। निबटना। (पु)भूल करना। (पु)खाली जाना। एक समाप्तिसूचक संयोज्य क्रिया। **चुकाना**—सक० अदा करना, बेबाक करना। तै करना, ठहराना। **चुकाई**—स्त्री० चुकने या चुकता होने का भाव।
चुक्कड़—पुं० मिट्टी का बरतन जिसमें पानी आदि पीते है, पुरवा, कुल्हड़।
चुक्र—पुं० [सं०] चूक नाम की खटाई, चुक, महाम्ल। एक खट्टा शाक, चूका। काँजी।
चुखाना—सक० दुहते समय गाय के थन से दूध उतारने के लिये पहले उसके बछड़े को दूध पिलाना।
चुगना—सक० चिड़ियों का चोंच से दाना उठाकर खाना। **चुगाई**—स्त्री० चुगने का भाव या क्रिया। **चुगाना**—सक० चिड़ियों को दाना या चारा डालना।
चुगद—पु० [फा०] उल्लू पक्षी। मूर्ख।
चुगलखोर—पु० [फा०] पीठ पीछे शिकायत करनेवाला, लुतरा। **चुगलखोरी**—स्त्री० चुगली खाने का काम।
चुगली—स्त्री० [फा०] दूसरे की निंदा जो उसकी अनुपस्थिति में की जाय।
चुचकना†—सक० ऐसा सूखना जिसमें झुर्रियाँ पड़ जायँ।
चुचकारना—सक० चुमकारना। **चुचकारी**—स्त्री० चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव।
चुचाना—अक० चूना, टपकना, निचुड़ना।
चुटका†—पु० कोड़ा चाबुक। स्त्री० चुटकी। **चुटकना**—सक० कोड़ा या चाबुक मारना। चुटकी से तोड़ना। साँप काटना। **चुटका**—पु० बड़ी चुटकी। चुटकी भर अन्न। **चुटकी**—स्त्री० किसी वस्तु को पकड़ने, दबाने या लेने आदि के लिये अँगूठे और पास की उँगली का मेल। चंगुल भर या थोड़े आटे की भीख। चुटकी बजने का शब्द। अँगूठे और तर्जनी के संयोग से (दूसरे व्यक्ति के) शरीर के किसी भाग को दबाना या उसपर नाखून गड़ाना। अँगूठे और उँगली से मोड़कर बनाया हुआ गोखरू, गोटा या लचका। बंदूक के प्याले का ढकना या घोड़ा। मु०~ बजाना = अँगूठे को बीच की उँगली पर रखकर जोर से छटकाकर शब्द निकालना। ~बजाते = चटपट, देखते देखते, बात की बात में। ~भर = बहुत थोड़ा, जरा सा। ~भरना = चुटकी काटना चुभती या लगती हुई बात कहना। ~माँगना = भिक्षा माँगना। **चुटकियों में** = बहुत शीघ्र, चटपट। **चुटकियों में (पर) उड़ाना** = अत्यंत तुच्छ या सहज

समझना । ~लेना = हँसी उडाना । चुभती या लगती हुई बात कहना ।
चुटकुला—पु० चमत्कारपूर्ण संक्षिप्त उक्ति, मजेदार बात । लतीफा । दवा का छोटा नुस्खा जो बहुत गुणकारक हो, लटका । **मु०**~ छोडना = दिल्लगी की बात कहना । कोई ऐसी बात कहना जिससे एक नया मामला खडा हो जाय ।
चुटिया—स्त्री० शिखा, चोटी ।
चुटीला—वि० जिसे चोट या घाव लगा हो । पुं० छोटी चोटी, अगल बगल की पतली चोटी । वि० सिरे का, सबसे बढिया। **चुटैल**—वि० जिसे चोट लगी हो, घायल । चोट या आक्रमण करनेवाला ।
चुडिहारा—पु० चूडी बेचनेवाला ।
चुडैल—स्त्री० भूतनी, पिशाचनी । कुरूपा स्त्री । क्रूर स्वभाव की स्त्री ।
चुनचुना—वि० जिसके छूने या खाने से जलन लिए हुए पीडा हो । पु० सूत की तरह के महीन सफेद कीडे जो पेट के मल के साथ निकलते है । **चुनचुनाना**—अक० कुछ जलन लिए हुए चुभने की सी मद मद पीडा होना । फोडे या घाव की खुजली ।
चुनट—स्त्री० दे० 'चुनन' ।
चुनन—स्त्री० वह सिकुडन जो दाब पाकर कपडे कागज आदि पर पडती है, सिलवट, शिकन, चुनट ।
चुनना—सक० छोटी वस्तुओ को हाथ, चोच आदि से एक एक करके उठाना । छाँट छाँटकर अलग करना । बहुतो मे से कुछ को पसद करके लेना । तरतीब से लगाना । जोडाई करना । कपडे मे चुनना या सिकुडन डालना । **मु०—दीवार मे**~ = किसी मनुष्य को खडा करके उसके चारो ओर ईंटो की जोडाई करना ।
चुनरी—स्त्री० सौभाग्य या मगल सूचक रंगीन कपडा जिसके बीच बुंदकियाँ होती है । विशेष प्रकार के छीट का रगीन कपडा । याकूत, चुन्नी ।
चुनवाना, चुनाना—सक० चुनने का काम दूसरे से कराना । **चुनाई**—स्त्री० चुनने की क्रिया या भाव । दीवार की जोडाई या उसका ढग । चुनने की मजदूरी ।
चुनाव—पु० चुनने का काम या भाव । बहुत चीजो या व्यक्तियो मे से कुछ को पसद करना या छाँटना । किसी पद के लिये बहुमत द्वारा स्वीकृत करना । लोकसभा और विधानसभाओं के लिये जनता का मत देकर चुनना । मतदान, निर्वाचन । **चुनिंदा**—वि० चुना हुआ, बढिया ।
चुनी—स्त्री० दे० 'चुन्नी' ।
चुनौटी—स्त्री० चूना रखने की डिबिया ।
चुनौती—स्त्री० उत्तेजना, बढावा । युद्ध के लिये आह्वान, ललकार ।
चुन्नी—स्त्री० मानिक, याकूत या और किसी रत्न का बहुत छोटा टुकडा, बहुत छोटा नग । अनाज का चूरा । लकडी का बारीक चूरा, कुनाई । चमकी, सितारा ।
चुप—वि० जिसके मुँह से शब्द न निकले, अवाक्, मौन । स्त्री० मौनावलबन । ⊙**चाप** = क्रि० वि० मौन । शात भाव से । धीरे से, प्रयत्नहीन । विरोध मे बिना कुछ कहे ।
चुपकना—अक० चुप रहना । उ०—'चुपकि न रहत, कह्यौ कछु चाहत, ह्वैहै कीच कोठिलो धोए ।'—श्रीकृष्णगीता० ।
चुपका—वि० मौन । **मु०—चुपके से** = बिना कुछ कहे सुने । गुप्त रूप से ।
चुपकि(पु)—वि० मौन, खामोश ।
चुपडना—सक० किसी गीली या चिपचिपी वस्तु का लेप करना, पोतना, जैसे रोटी में घी चुपडना । किसी दोष का आरोप दूर करने के लिये इधर उधर की बातें करना । चिकनी चुपडी कहना । **मु०—चुपडी और दो दो !** = अपेक्षाकृत उत्तम वस्तु का उचित से अधिक अश ।
चुपाना(पु)†—अक० चुप हो रहना, मौन रहना । **चुप्पा**—वि० जो बहुत कम बोले, घुन्ना । **चुप्पी**—स्त्री० मौन ।
चुबलाना, चुभलाना—सक० स्वाद लेने के लिये मुँह मे रखकर इधर उधर डुलाना ।
चुभकना—अक० गोता खाना । **चुभकी**—स्त्री० डुब्बी, गोता ।
चुभना—अक० किसी नुकीली वस्तु का दबाव पाकर किसी नरम वस्तु के भीतर

गड़ना। हृदय मे खटकना, मन मे व्यथा उत्पन्न करना। मन मे बैठना। चुभाना, चुभोना—सक० धँसाना, गडाना।

चुमकार—स्त्री० चूमने का सा शब्द जो प्यार दिखाने के लिये मुँह से निकालते है, पुचकार। **चुमकारना**—सक० प्यार दिखाने के लिये मुँह से चूमने का शब्द निकालना, पुचकारना, दुलारना।

चुम्मा—पु० दे० 'चूमा'।

चुर—पुं० बाघ आदि के रहने का स्थान, माँद, बैठक। ⓟ अधिक।

चुरना—अक० आँच पर उबलकर पकना, सीझना। आपस मे गुप्त मंत्रणा या बातचीत होना।

चुरकना, चुरगना—अक० चहकना, चोंची करना (व्यंग्य या तिरस्कार मे), चटकना टूटना।

चुरकी—स्त्री० चुटिया।

चुरकुट—वि० चकनाचूर, चूर्णित।

चुरकुसⓟ—वि० दे० 'चुरकुट'।

चुरमुर—पुं० खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द। **चुरमुरा**—वि० जो दबाने पर चुरचुर शब्द करके टूट जाय, करारा। **चुरमुराना**—अक० चुरमुर शब्द करके टूटना। सक० चुरमुर शब्द करके तोड़ना। करारी या खरी चीज चबाना।

चुराⓟ—पुं० दे० 'चूरा'।

चुराना—सक० गुप्त रूप से पराई वस्तु हरण करना, चोरी करना। लोगो की दृष्टि से बचाना या छिपाना (आँख, मुँह, नजर आदि), जैसे वह गाय दूध चुराती है। उबालकर पकाना, सिझाना। मु०—चित ~ = मन मोहित करना। जी ~ = मन न लगाना, काम से भागना।

चुरीⓟ—स्त्री० दे० 'चूड़ी'।

चुरुट—पुं० [अं०] तबाकू के पत्ते या चूर की दोनों ओर खुली हुई बत्ती जिसका धुँआ लोग पीते हैं, सिगार।

चुरूⓟ—पुं० दे० 'चुल्लू'।

चुल—स्त्री० किसी अंग के मले या सहलाए जाने की इच्छा, खुजलाहट। **चुलचुलाना**—अक० खुजलाहट होना। दे० 'चुलबुलाना'। **चुलचुली**—स्त्री० खुजलाहट। **चुलबुला**—वि० चंचल। नटखट। **चुलबुलाना**—अक० चुलबुल करना, रह रहकर हिलना। चंचल होना। **चुलबुलाहट**—स्त्री० चंचलता।

चुलाना—सक० दे० 'चुवाना'।

चुलियाला—पु० एक मात्रिक छद जिसके दो भेद है, (१) दो पद का छंद जिसमें दोहे के अंत मे एक जगण और एक लघु रखा जाता है, और (२) चार पद का छंद जिसके अंत मे मगण रहता है।

चुलुक—पुं० [सं०] भारी दलदल या कीचड़। चुल्लू।

चुल्ला, चुल्ली—वि० चुलबुला, पाजी, शरारती।

चुल्लू—पु० गहरी की हुई हथेली जिसमें कुछ लिया या पिया जा सके। मु०—**भर पानी में डूब मरना** = मुँह न दिखाना, लज्जा के मारे मर जाना। ~**में उल्लू होना** = थोड़ी सी भाँग या शराब में बेसुध होना। ~**में समुद्र न समाना** = छोटे पात्र मे बहुत बडी वस्तु न आना, कुपात्र या क्षुद्र मनुष्य से कोई बडा या अच्छा काम न हो सकना। **चुल्लुओं रोना** = बहुत रोना। **चुल्लुओ लहू पीना** = बहुत सताना।

चुवनाⓟ—अक० दे० 'चूना'। **चुवाना**ⓟ—सक० [अक० चूना] बूँद बूँद करके गिराना, टपकाना।

चुसकी—स्त्री० ओठ से लगाकर थोड़ा थोड़ा करके पीने की क्रिया, सुड़क, घूँट, दम।

चुसना—अक० [सक० चूसना] चूसा जाना, ओठो से दबाकर पिया जाना। निचुड़ जाना। सारहीन होना। देते देते पास में कुछ न रह जाना। **चुसाना**—सक० ['चूसना' का प्रे०] चूसने का काम दूसरे से कराना।

चुसनी—स्त्री० बच्चो का खिलौना जिसे वे मुँह मे डालकर चूसते है, दूध पिलाने की शीशी।

चुस्त—वि० [फा०] कसा हुआ, सकुचित। जिसमे आलस्य न हो। दृढ। सटीक, उपयुक्त। **चुस्ती**—स्त्री० फुरती। कसावट। दृढता।

चुहँटी—स्त्री॰ चुटकी।

चुहचुहा—स्त्री॰ चुहचुहाता हुआ। रसीला। चुहचुहाता—वि॰ सरस, रँगीला, मजेदार। चुहचुहाना—अक॰ रस टपकना। चटकीला लगना। चिड़ियों का बोलना।

चुहचुही—स्त्री॰ चमकीले काले रंग की एक बहुत छोटी चिड़िया फुलचुही।

चुहटना(पु)—सक॰ रौंदना, कुचलना। चिपटना, लिपटना।

चुहड़ा—पु॰ दे॰ 'चूहड़ा'।

चुहल—स्त्री॰ हँसी, ठठोली, मनोरंजन। ⊙बाज = वि॰ ठठोल, दिल्लगीबाज।

चुहाड़ा—वि॰ दुष्ट, पाजी।

चुहिया—स्त्री॰ ['चूहा' का स्त्री॰ और अल्पा॰] छोटा चूहा।

चुहुटना(पु)—सक॰ दे॰ 'चिपटना'।

चुहुटनी—स्त्री॰ गुंजा, घुँघची।

चूँ—पुं॰ छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द। चूँ शब्द। मु॰~करना = प्रतिवाद करना, विरोध में कुछ कहना।

चूँकि—क्रि॰ वि॰ [फा॰] इस कारण से कि, क्योंकि।

चूँदरी—स्त्री॰ दे॰ 'चुनरी'।

चूक—स्त्री॰ भूल, गलती, छूट। (पु)कपट, धोखा, छल। पु॰ नीबू, इमली, अनारदाना आदि के खट्टे रस को गाढ़ा करके बनाया हुआ एक अत्यंत खट्टा पदार्थ, सिरका। एक प्रकार का साग। वि॰ बहुत खट्टा, जैसे खट्टा चूक।

चूकना—अक॰ गलती करना, छोड़ देना। लक्ष्यभ्रष्ट होना, सुअवसर खो देना।

चूका—पु॰ एक खट्टा साग।

चूची—स्त्री॰ स्तन, कुच।

चूचुक—पु॰ [सं॰] स्तन का अगला भाग।

चूजा—पुं॰ [फा॰] मुरगी का बच्चा।

चूड़—पुं॰ [सं॰] चोटी, शिखा। सिर। खंभे, मकान या पहाड़ का ऊपरी भाग। एक कंकण। छोटा कुँआ। चूडांत—वि॰ चरम सीमा, पराकाष्ठा। क्रि॰ वि॰ अत्यंत।

चूड़ा—स्त्री॰ [सं॰] चोटी, शिखा। मोर के सिर पर की चोटी। कुआँ। गुंजा। बाँह में पहनने का एक अलंकार। चूड़ाकरण नामक संस्कार। पुं॰ कंकण, कड़ा, वलय। हाथीदाँत की चूड़ियाँ। ⊙करण = पुं॰ बच्चे का पहले पहल सिर मुँडवाकर चोटी रखवाने का हिंदू संस्कार, मुंडन। ⊙कर्म = पुं॰ चूड़ाकरण, मुंडन संस्कार। ⊙पाश = स्त्रियों के सिर का बँधा हुआ बाल, जूड़ा। एक प्रकार का (स्त्रियों का) केशविन्यास। ⊙भरण = पुं॰ प्राचीन काल का केशविन्यास। ⊙मणि = सिर में पहनने का शीशफूल नाम का गहना। वि॰ सर्वोत्कृष्ट, सबसे श्रेष्ठ।

चूड़ी—स्त्री॰ कोई मंडलाकार पदार्थ, वृत्ताकार पदार्थ। सोना, चाँदी, काँच, शंख, हाथीदाँत आदि का स्त्रियों का हाथ में पहनने का एक वृत्ताकार गहना। फोनोग्राफ या ग्रामोफोन बाजे का रेकार्ड जिसमें गाना भरा रहता है। किसी कील या ढकने आदि में कसने के निमित्त बनी घुमावदार गहरी रेखाएँ। ⊙दार = वि॰ जिसमें चूड़ी, छल्ले अथवा इसी आकार के घेरे पड़े हों, जैसे चूड़ीदार टोंटी, चूड़ीदार पायजामा। मु॰—चूड़ियाँ ठंढी करना या तोड़ना = पति के मरने के समय स्त्री का अपनी चूड़ियाँ उतारना या तोड़ना। चूड़ियाँ पहनना = स्त्रियों का वेश धारण करना (व्यंग्य और हास्य)। विधवा का किसी के घर बैठ जाना।

चूत—पुं॰ [सं॰] आम का पेड़। स्त्री॰ [हिं॰] योनि, भग।

चूतड़—पुं॰ पीछे की ओर कमर के नीचे और जाँघ के ऊपर का मांसल भाग, नितंब।

चून—पु॰ आटा, पिसान। दे 'चूना'।

चूनर, चूनरी—स्त्री॰ दे॰ 'चुनरी'।

चूना—पु॰ एक तीक्ष्ण और सफेद क्षार भस्म जो पत्थर, कंकड़, शंख, मोती आदि पदार्थों को भट्ठियों आदि में फूँककर बनाया जाता है। वि॰ जिसमें किसी चीज के चूने योग्य छेद या दराज हो। ⊙दानी = स्त्री॰ चूना रखने की डिबिया। अक॰ बूँद बूँद करके गिरना, टपकना।

गर्भपात होना। फल आदि का पेड से गिरना।

चूमना—सक० होठो से (किसी दूसरे के) ओठ, हाथ, गाल आदि को अथवा किसी पदार्थ को स्पर्श करना या दबाना, चुम्मा लेना।

चूमा—पुं० चूमने की क्रिया या भाव, चुबन।

चूर—पु० बुकनी, चूर्ण। वि० तन्मय, तल्लीन। नशे मे मस्त। **चूरना**†(पु)—सक० चूर करना, टुकडे टुकडे करना। तोडना, चूर्ण करना। **चूरा**—पुं० चूर्ण, बुरादा।

चूरन—पुं० दे० 'चूर्ण'।

चूरमा—पुं० रोटी या पूरी को चूर चूर करके घी, चीनी मिलाया हुआ खाद्यपदार्थ।

चूर्ण—पु० [सं०] सूखा, पिसा हुआ अथवा बहुत ही छोटे छोटे टुकडो मे किया हुआ पदार्थ, चूरा। पाचक औषधो की बारीक बुकनी, चूरन। सुगधित पाउडर। वि० तोडा फोडा या नष्ट भ्रष्ट किया हुआ। ⊙**भाष्य**=पुं० पद्य से गद्य मे व्याख्या करना। **चूर्णक**—पुं० सत्तू। वह गद्य जिसमे छोटे छोटे शब्द हो, लबे लबे समासवाले शब्द न हो। धान। **चूर्णित**—वि० चूर्ण किया हुआ।

चूर्णी—स्त्री० [सं०] आर्या छद का एक भेद।

चूल—पुं० [सं०] शिखा। बाल। स्त्री० [हिं०] किसी लकडी का पतला सिरा जो किसी दूसरी लकडी के छेद मे उसे जोडने के लिये जाय।

चूलिका—स्त्री० [सं०] नाटक मे नेपथ्य से किसी बात की सूचना।

चूल्हा—पुं० मिट्टी लोहे आदि का वह पात्र जिसपर नीचे आग जलाकर, भोजन पकाया जाता है। मु०~**जलना**=भोजन बनना। ~**न्यौतना**=घर के सब लोगो को निमत्रण देना। ~**फूंकना**=भोजन पकाना। ~**में जाना या पड़ना**=नष्ट होना। **तवा से निकलकर ~में पड़ना**=छोटी विपत्ति से छूटकर बडी विपत्ति मे फँसना।

चूषण—पुं० [सं०] चूसने की क्रिया। **चूष्य**—वि० चूसने के योग्य।

चूसना—सक० जीभ और होठ के सयोग से किसी पदार्थ का रस पीना। किसी चीज का सार भाग ले लेना। धीरे धीरे धन आदि लेना।

चूहड़—वि० दे० 'चुहाडा'।

चूहडा—पु० भगी या मेहतर, चाडाल।

चूहर—पुं० दे० 'चूहडा'।

चूहा—पुं० एक प्रसिद्ध छोटा जतु जो प्राय घरो और खेतो मे बिल बनाकर रहता और अन्न आदि खाता है, मूसा। ⊙**दती**=स्त्री० स्त्रियो के पहनने की एक प्रकार की पहुंची। ⊙**दान**(पु) पु०, **चूहेदानी**=स्त्री० चूहो को फँसाने का एक प्रकार का पिजडा।

चें—स्त्री० चिडियो के बोलने का शब्द, चेचे। **चेंचें**—स्त्री० चिडियो या बच्चो के बोलने का शब्द, चीची। व्यर्थ की बकवाद। **चेंपें**—स्त्री० चिल्लाहट, असतोष की पुकार। बकवक। **चेंटुआ**—पु० चिडिया का बच्चा।

चेकितान—पु० [सं०] प्रतिभावान् या बुद्धिमान् व्यक्ति। महादेव। पाडवो के एक सहायक और मित्र राजा का नाम।

चेचक—स्त्री० [फा०] शीतला रोग।

चेजा—पु० छेद, सूराख।

चेजारा—पु० चुनाई का काम करनेवाला, राजगीर।

चेट—पु० [सं०] दास, नौकर। पति। नायक और नायिका को मिलानेवाला, भँडुवा। भाँड।

चेटक—पु० नौकर। चटक मटक। दूत। जादू या इद्रजाल की विद्या। **चेटकनी**(पु) स्त्री०, **चेटकी**—पु० इद्रजाली, जादूगर। कौतुक करनेवाला। स्त्री० चेटक की स्त्री०। **चेटिका**—स्त्री०, **चेटी**—स्त्री० दासी।

चेटका(पु)—स्त्री० चिता। स्मशान, मरघट।

चेटिया—पु० चेला, शिष्य।

चेटुवा—पु० चिडिया का बच्चा।

चेत—पु० [हिं०] चेतना, होश। बोध। सावधानी। स्मरण। **चेतना**—अक० होश आना। सावधान होना। सक० विचारना, समझना।

चेतन—वि० [सं०] जिसमे चेतना हो, ज्ञानयुक्त। पु० आत्मा, जीव। मनुष्य। प्राणी। परमेश्वर। ⊙ता = स्त्री० चैतन्य, सज्ञानता। **चेतना**—स्त्री० होश, ज्ञान। वुद्धि, समझ। याद। जीवन।

चेता—वि० [सं०] चित्तवाला (समा० के अंत मे जैसे, दृढचेता।)

चेतावनी—स्त्री० वह वात जो किसी को होशियार करने के लिये कही जाय।

चेतिका(पु)—स्त्री० मुरदा जलाने की चिता, सरा।

चेना—पु० कँगनी या साँवाँ की जाति का एक मोटा अन्न। एक साग।

चेप—पु० चिपचिपा या लसदार रस। चिडियो को फँसाने का लासा।

चेर, चेरा(पु)—पु० नौकर, सेवक। चेला, शिष्य। **चेराई**(पु)—स्त्री० सेवा, नौकरी। **चेरी**(पु)—स्त्री० 'चेरा' का स्त्री०।

चेल—पु० [सं०] कपडा।

चेलकाई—स्त्री० चेलहाई। **चेलहाई**—स्त्री० चेलो का समूह, शिष्य वर्ग।

चेला—पु० वह जिसने किसी से कोई धार्मिक उपदेश ग्रहण किया हो, शिष्य। वह जिसने किसी से शिक्षा ली हो, विद्यार्थी। किसी गुरु से मंत्र लेनेवाला। दीक्षा लेनेवाला। शिक्षा लेनेवाला। पक्का चेला = किसी के भेद को जानने-वाला। वडे गुरु का चेला = अच्छा ज्ञाता। खूब घुटा हुआ व्यक्ति। **चेलिन, चेली**—स्त्री० 'चेला' का स्त्रीलिंग। दीक्षा लेनेवाली महिला।

चेल्हवा—स्त्री० एक छोटी मछली।

चेषटा(पु), **चेष्टा**—स्त्री० [सं०] शरीर के अंगो की गति। अंगो की गति या अव-स्था जिससे मन का भाव प्रकट हो। प्रयत्न, कोशिश। काम। परिश्रम। कार्य या व्यवहार से सूचित भाव।

चेस्टर—पु० ओवरकोट की तरह का एक प्रकार का वडा कोट जो घुटनो के नीचे तक लंबा होता है और ठंढ से वचने के लिये पहना जाता है।

चेहरा—पु० [फा०] गरदन के ऊपर का अगला भाग जिसमे मुँह, आँख, कान, नाक, मस्तक आदि रहते हैं, मुखडा। किसी चीज का अगला भाग, आगा। देवता, दानव या पशु आदि की आकृति का वह साँचा जो लीला या स्वाँग आदि मे चेहरे के ऊपर पहना या वाँधा जाता है। ⊙शाही = वह रुपया जिस पर किसी वादशाह का चेहरा वना हो, प्रचलित रुपया, चालू सिक्का। मु०~ उतरना = लज्जा, शोक, चिंता या रोग आदि के कारण चेहरे का तेज जाता रहना।

चेहलुम—पु० [फा०] मुसलमानो मे मृत्यु के चालीसवें दिन कर्वला के शहीदो को दी जानेवाली श्रद्धांजलियाँ।

चै(पु)—पु० दे० 'चय'

चैत—पु० फागुन के वाद और वैसाख से पहले का महीना, चैत्र। एक चलता गाना जो चैत मे गाया जाता है, चैती। **चैता**—पु० एक चलता गाना जो चैत के महीने मे गाया जाता है, चैती। **चैती**—स्त्री० वह फसल जो चैत मे काटी जाय, रवी। चैत मे गाया जाने-वाला एक प्रकार का चलता गाना।

चैतन्य—पु० [सं०] चित्स्वरूप आत्मा, चेतन आत्मा। ज्ञान, चेतना। ब्रह्म। प्रकृति। एक प्रसिद्ध वगाली महात्मा।

चैत्य—पु० [सं०] चिता संवधी, समाधि या स्तूप से सवद्ध। वडा मकान, घर। मंदिर, मठ, विहार। यज्ञशाला। गाँव मे वह पेड जिसके नीचे ग्रामदेवता की वेदी या चवूतरा हो। किसी देवी देवता का चवूतरा। वुद्ध जी की मूर्ति। अश्वत्थ का पेड। वौद्ध सन्या-सियो के रहने का मठ, विहार। चिता। स्तूप।

चैत्र—पु० [सं०] चांद्र वर्ष का प्रथम मास, चैत। वौद्ध या जैन सन्यासी। यज्ञभूमि। मंदिर। समाधि, स्तूप। ⊙रथ = पु० कुवेर के वाग का नाम।

चैन—पु० आराम, सुख। मु०~उडाना = आनंद करना। ~की वंशी वजाना = निर्द्वंद्व रहना, निश्चिंत रहना, आनंद

मे मग्न रहना। ~पड़ना = शांति मिलना, सुख मिलना।
चंपला—पु० एक प्रकार का पक्षी।
चंय—(पु०)—स्त्री० बाँह।
चंल—पु० [स०] कपड़ा, वस्त्र।
चैल—पु० कुल्हाड़ी से चीरी हुई लकड़ी का टुकड़ा जो जलाने के काम मे आता है।
चोंक—स्त्री० वह चिह्न जो चुंबन मे दाँत लगाने से पड़ता है।
चोंगा—पु० कोई वस्तु रखने के लिये खोखली नली। मूर्ख, जड़।
चोंथना(पु०)—सक० दे० 'चुगना'।
चोंच—स्त्री० पक्षियो के मुँह का निकला हुआ अगला भाग। मुख, मुँह (व्यंग्य)। मु०—**दो दो चोंचें होना** = कहा सुनी होना, कुछ लडाई झगड़ा होना।
चोंटना—सक० दे० 'खोटना'।
चोंडा—पु० स्त्रियो के सिर के बाल, झोंटा। सिंचाई के लिए खोदा हुआ छोटा कुआँ।
चोंथ—पु० उतने गोबर का ढेर जितना एक बार गिरे।
चोंथना—सक० किसी चीज मे से उसका कुछ अंश बुरी तरह नोचना।
चोंधर—वि० जिसकी आँखें बहुत छोटी हों। मूर्ख।
चोआ—पु० एक सुगंधित द्रव पदार्थ जो कई गंध द्रव्यो को एक साथ मिलाकर उनका रस टपकाने से तैयार होता है।
चोई—स्त्री० धोई हुई दाल का छिलका।
चोकर—गेहूँ जौ आदि का छिलका जो आटा चालने के बाद बच जाता है।
चोक—चूसने की क्रिया या भाव। चूसने की वस्तु।
चोख(पु०)—स्त्री० तेजी।
चोखन—वि० तेज, प्रचंड।
चोखना(पु)—सक० चूसना।
चोखनी(पु)—स्त्री० चूसकर पीने की क्रिया।
चोखा—वि० बिना मैल, खोट या मिलावट का, शुद्ध और उत्तम। जो सच्चा और ईमानदार हो, खरा। धारदार। मनोहर। स्वादिष्ट। पु० उबाले या भूने हुए बैंगन, आलू आदि को नमक मिर्च आदि के साथ मलकर तैयार किया हुआ सालन, भरता।
चोगा—पु० [तु०] पैरो तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा, लबादा।
चोगान—पु० दे० 'चौगान'।
चोचला—पु० नाज नखरा। हाव भाव।
चोज—पु० वह चमत्कारपूर्ण उक्ति जिससे लोगो का मनोविनोद हो, सुभाषित। हँसी ठट्ठा, विशेषत व्यंग्यपूर्ण उपहास।
चोट—स्त्री० एक वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का वेग के साथ पतन या टक्कर, आघात। जख्म। वार। किसी हिंसक पशु का आक्रमण, हमला। हृदय पर आघात, ठेस। किसी के अनिष्ट के लिये चली हुई चाल। कटाक्ष, ताना। विश्वासघात। बार, दफा। ~हा(पु)—वि० चोट खाया हुआ, चुटैल। **चोटार**(पु)—वि० चोट खाया हुआ। **चोटारना**—अक० चोट करना।
चोटा—पुं० राब का पसेव जो छानने से निकलता है, चोआ।
चोटियाना—सक० चोट लगाना। चोटी पकड़ना। वश मे करना।
चोटी—स्त्री० सिर पर पीछे की ओर कुछ थोड़े से बड़े बाल जिन्हें हिंदू प्राय नही कटाते, शिखा, चुंदी। एक मे गुँथे हुए स्त्रियो के सिर के बाल। सूत या ऊन आदि का डोरा जिससे स्त्रियाँ बाल बाँधती हैं। जूड़े मे पहनने का एक आभूषण, कुछ पक्षियो के सिर के वे पर जो ऊपर उठे रहते है, कलँगी। सबसे ऊपर का उठा हुआ भाग, शिखर, जैसे, पहाड़ की चोटी, मकान की चोटी। मु०~**दबना** = बेबस होना, लाचार होना। **(किसी की) ~ (किसी के) हाथ में होना** = किसी प्रकार के दबाव मे होना। **~का** = सर्वोत्तम।
चोटी पोटी(पु)—वि० स्त्री० खुशामद से भरी हुई (बात)। झूठी या बनावटी (बात)।
चोट्टा—पुं० वह जो चोरी करता हो, चोर
चोदक—वि० [सं०] प्रेरणा करनेवाला।
चोदना—स्त्री० [सं०] वह वाक्य जिसमे कोई काम करने का विधान हो, विधिवाक्य। प्रेरणा। योग आदि के संबध का प्रयत्न।

सक० [हिं०] स्त्रीप्रसंग करना, संभोग करना।

चोप(पु)—पुं० गहरी चाह। चाव, शौक। उमंग। बढ़ावा। **चोपना**(पु)—अक० किसी वस्तु पर मोहित हो जाना, मुग्ध होना। **चोपी**(पु)—वि० इच्छा रखनेवाला। उत्साही।

चोब—स्त्री० [फा०] शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा। नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा। छड़ी, सोंटा। ⊙**चीनी**=स्त्री० एक काष्ठौषधि जो एक लता की जड़ है। ⊙**दार**(पु)—पुं० वह नौकर जिसके पास चोब या आसा रहता है, आसाबरदार। प्रतीहार, द्वारपाल।

चोर—पुं० [सं०] चुराने या चोरी करनेवाला। ऊपर से अच्छे घाव में वह दूषित या विकृत अंश जो भीतर ही भीतर पकता और बढ़ता है। वह छोटी संधि या छेद जिसमें से होकर कोई पदार्थ बह या निकल जाय या जिसके कारण कोई त्रुटि रह जाय। खेल में वह लड़का जिससे दूसरे लड़के दाँव लेते हैं। वि० जिसके वास्तविक स्वरूप का ऊपर से देखने से पता न चले। ⊙**कट**=पुं० [हिं०] चोर उचक्का। ⊙**टा**(पु)=पुं०[स्त्री० चोरटी] दे० 'चोट्टा'। ⊙**दंत**=पुं० वह दाँत जो बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त बहुत कष्ट के साथ निकलता है। ⊙**दरवाजा**=पुं० [फा०] मकान के पीछे की ओर का गुप्त द्वार। ⊙**पुष्पी**=स्त्री० अधाहुली या शंखाहुली। ⊙**महल**=पुं० [अ०] वह महल जहाँ राजा और रईस अपनी अविवाहिता स्त्री रखते हैं। ⊙**मिहीचनी**(पु) =स्त्री० आँखमिचौनी का खेल। मु०—**मन में ~ पैठना**=मन में किसी प्रकार का खटका या संदेह होना **चोराचोरी**(पु)†—क्रि० वि० छिपे छिपे, चुपके चुपके। **चोरी**—स्त्री० [हिं०] चुराने की क्रिया। चुराने का भाव। चोली।

चोल—पुं० [सं०] दक्षिण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। उक्त देश का निवासी। स्त्रियों के पहनने की चोली। कुरते के ढंग का एक पहनावा, चोला। कवच।

चोलकी—पुं० बाँस का कल्ला। नारंगी का पेड़। हाथ की कलाई। करील का पेड़।

चोलना—पुं० दे० 'चोला'।

चोला—पुं० एक प्रकार बहुत लंबा और ढीला कुरता जिसे प्रायः साधु फकीर पहनते हैं। एक रस्म जिसमें नए जनमे हुए बालक को पहले पहल कपड़े पहनाए जाते हैं। वह कपड़ा जो पहले पहल बच्चे को पहनाया जाता है। शरीर, तन। मु० **~ छोड़ना**=मरना, प्राण त्यागना। **~ बदलना**=एक शरीर का परित्याग करके दूसरा शरीर धारण करना (साधु)।

चोली—स्त्री० अँगिया की तरह का स्त्रियों का पहनावा। मु०—**~ दामन का साथ**=बहुत अधिक साथ या घनिष्ठता।

चोवा—पुं० दे० 'चोआ'।

चोषण—पुं० [सं०] चूसना। **चोष्य**—वि० जो चूसने के योग्य हो।

चौंक—स्त्री० चौंकने की क्रिया या भाव। ⊙**ना**=अक० आश्चर्य, डर या पीड़ा से अचानक हिल डुल उठना या काँपना, झिझकना। चकित होना। सोते से अचानक जाग उठना। भय या आशंका से हिचकना, भड़कना। **चौंकाना**—सक० [चौंकना का प्रे०] किसी को चौंकने में प्रवृत्त करना, भड़काना।

चौंध—स्त्री० चकाचौंध, तिलमिलाहट।

चौंधना(पु)—अक० चमकना, कौंधना। **चौंधियाना**—अक० बहुत अधिक चमक या प्रकाश के सामने दृष्टि का स्थिर न रह सकना, चकाचौंध होना। आँखों से सुझाई न पड़ना। **चौंधी**—स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चौंर—पुं० दे० 'चँवर'।

चौंराना(पु)—सक० चँवर डुलाना। झाड़ देना।

चौंरी—स्त्री० काठ की डाँडी में लगा हुआ घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा जो मक्खियाँ उड़ाने के काम में आता है। चोटी या वेणी बाँधने की डोरी। सफेद पूँछवाली गाय।

चौ—वि० चार (संख्या) (के० समा० में)

जैसे, चौपहल, चौमासा। पुं० मोती तौलने का एक मान। ⊙आ = पुं० दे० 'चौवा'। ⊙आना(पु)† = अक० चकपकाना, चकित होना। चौकन्ना होना। ⊙क = पुं० चौकोर भूमि, चौखूटी खुली जमीन। आँगन, सहन। चौखूंटा चबूतरा, बडी वेदी। मगल अवसरो पर पूजन के लिये आटे, अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूंटा क्षेत्र। शहर के बीच का बडा बाजार। चौराहा, चौमुहानी। चौसर खेलने का कपडा। सामने के चार दाँतो की पक्ति। चार चार का समूह। ⊙कडा = पुं० कान मे पहनने की वालियाँ जिनमें दो दो मोती हो। ⊙कड़ी = स्त्री० हिरन की वह दौड जिसमे वह चारो पैर एक साथ फेकता हुआ जाता है, चौफाल। चार आदमियो का गुट्ट, मडली। एक गहना। चार युगो का समूह, चतुर्युगी। पलथी। स्त्री० चार घोडो की गाडी। चंडाल चौकडी = उपद्रवियो की मडली। मु०~भूल जाना = बुद्धि का काम न करना, सिटपिटा जाना, घबरा जाना। ⊙कन्ना = वि० सावधान, चौकस। चौंका हुआ, आशकित। ⊙कल (पु) = पु० चार मात्राओ का समूह। इसके पाँच भेद हैं (ऽऽ, ।।ऽ, ।ऽ।, ऽ।।, ।।।।)। ⊙कस = वि० सावधान, सचेत। ठीक, पूरा। ⊙कसाई(पु)† = स्त्री० दे० 'चौकसी'। ⊙कसी = स्त्री० सावधानी, होशियारी। ⊙का = पु० पत्थर का चौकोर टुकडा, चौखूंटी सिल। काठ या पत्थर का पाटा जिसपर रोटी बेलते हैं, चकला। सामने के चार दाँतो की पक्ति। सिर का गहना, सीसफूल। वह लिपा पुता स्थान जहाँ हिंदू रसोई बनाते या खाते है। मिट्टी या गोबर का लेप जो सफाई के लिये किसी स्थान पर किया जाय। एक ही प्रकार की चार वस्तुओ का समूह जैसे मोतियो का चौका। ताश का वह पत्ता जिसमे चार बूटियाँ हो। मु०—~लगाना = किसी स्थान को गोबर या मिट्टी से लीपना। सत्यानाश करना। ⊙की = स्त्री० चौकोर आसन जिसमे चार पाए लगे हो, छोटा तख्त। कुरसी। मदिर मे मडप के खभो के बीच का स्थान जिसमे से होकर मडप मे प्रवेश करते है। पडाव, ठहरने की जगह, टिकान अड्डा। वह स्थान जहाँ आसपास की रक्षा के लिये थोडे से सिपाही आदि रहते हो। चुगी वसूली का स्थान। पहरा, रखवाली। वह भेंट या पूजा जो किसी देवता या पीर आदि के स्थान पर चढाई जाती है। गले मे पहनने का एक गहना, पटरी। रोटी बेलने का छोटा चकला। जादू, टोना। तेलियो के कोल्हू मे लगी हुई एक लकडी। गले मे पहनने का एक गहना जिसमे चौकोर पटरी होती है। **चौकीदार**—पु० पहरा देनेवाला, गोडइत। **चौकीदारी**—स्त्री० पहरा देने का काम, रखवाली। चौकीदार का पद। वह चदा या कर जो चौकीदार रखने के लिये लिया जाय। ⊙कोना = वि० दे० 'चौकोर'। ⊙कोर = वि० जिसके चार कोने हो, चौखूंटा, चतुष्कोण। ⊙खट = स्त्री० लकडी का वह ढाँचा जिसमे किवाड मे के पल्ले लगे रहते है। देहली, डेहरी। मु०—~लाँघना = घर के अदर या बाहर जाना। ⊙खटा = पु० चार लकडियो का ढाँचा जिसमे मुँह देखने का या तसवीर का शीशा जडा जाता है, फ्रेम। ⊙खानि = स्त्री० अडज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज्ज, आदि चार प्रकार के जीव। ⊙खूंट = पुं० चारो दिशाएँ। भूमडल। क्रि० वि० चारो ओर। ⊙खूंटा = वि० दे० 'चौकोर'। ⊙गड्डा = पु० 'चौराहा'। ⊙गिर्द = क्रि० वि० चारो ओर, चारो तरफ। ⊙गुना = वि० चार बार और उतना ही, चतुर्गुण। ⊙गोड़िया = स्त्री० एक प्रकार की ऊँची चौकी। ⊙गोशिया = वि० [फा०] चार कोनेवाला। स्त्री० एक प्रकार की टोपी। पुं० तुरकी घोडा। ⊙घडा = पु० पान, इलायची रखने का डिब्बा जिसमे चार खाने बने होते हैं। चार खानो का

बरतन जिसमे मसाला आदि रखते है। पत्ते की वह खोंगी जिसमे चार बीडे पान हों। ⊙घोडी = स्त्री० चार घोडो की गाडी,चौकडी। ⊙तनियाँ = स्त्री० दे० 'चौतनी'। ⊙तनी = स्त्री० बच्चों की वह टोपी जिसमे चार बद लगे रहते है। ⊙तही = स्त्री० खेस की बुनावट का एक कपडा। ⊙ताल = मृदग का एक ताल। एक प्रकार का गीत जो होली मे गाया जाता है। ⊙तुका = वि० जिसमे चार तुक हों। पु० एक प्रकार का छद जिसके चारो चरणो की तुक मिली होती हैं। ⊙थ = स्त्री० पक्ष की चौथी तिथि, चतुर्थी। चौथाई भाग। मराठों का लगाया हुआ एक कर जिसमे आमदनी या तहसील का चतुर्थांश ले लिया जाता था। ⓤ|वि० चौथा। मु०—चौथ का चाँद = भाद्र शुक्ल चतुर्थी का चद्रमा जिसके विषय मे प्रसिद्ध है कि यदि कोई देख ले तो झूठा कलक लगता है। ⊙था = वि० जिसके पूर्व तीन और हों, जो सख्या या क्रम मे चार के स्थान पर पडे। चौथई - पु० चौथा भाग, चतुर्थांश, चहारुम। चौथापन—पु० जीवन की चौथी अवस्था, बुढापा। ⊙थिया = पु० वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आए। चौथाई का हकदार। ⊙थी = स्त्री० विवाह के चौथे दिन की एक रीति जिसमे विवाह मे बँधे वर कन्या के ककन खोले जाते हैं। फसल की वह बाँट जिसमे जमीदार चौथाई लेता है। ⊙दंता = वि० चार दाँतो वाला। उद्दड, बदमाश। ⊙दस = स्त्री० पक्ष का चौदहवाँ दिन, चतुर्दशी। ⊙दह = वि० जो गिनती मे दस और चार हो। पु० दस और चार के जोड की सख्या १४। ⊙दाँत ⓤ|= पु० दो हाथियो की लडाई, हाथियो की मुठभेड। ⊙धारी = स्त्री० चारखाना (कपडा)। ⊙पई = स्त्री० १५ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे एक लघु और उसके पहले गुरु वर्ण रहता है। ⊙पट = वि० चारो ओर से खुला हुआ, अरक्षित। वि० नष्टभ्रष्ट बरबाद। चौपट चरण—जिसके कहीं पहुँचते ही सब कुछ नष्टभ्रष्ट हो जाय, चौपटा। ⊙पटा = वि० चौपट करनेवाला। पट = स्त्री० दे० 'चौसर'। ⊙पत|= स्त्री० कपडे की तह या घडी। ⊙पतरना, ⊙पताना = सक० कपडे की तह लगाना। ⊙पतिया = स्त्री० एक प्रकार की घास। एक साग। ⊙पथ = पु० चौराहा। ⊙पद ⓤ|= पु० 'चौपाया'। ⊙पदा = एक प्रकार का छद जिसमे चार पद या चरण होते है। ⊙पहल = वि० [फा०] जिसके चार पहल या पार्श्व हों, वर्गात्मक। ⊙पाई = स्त्री० १६ मात्राओं का एक छद। इस मे गुरु लघु या चौकलों का नियम नही है। सम के पीछे सम और विषम के पीछे सम और विषम के पीछे विषम कल रखे जाते है। अत मे जगण या तगण नही रखा जाता। त्रिकल के बाद समकल नही होते। सम सम प्रयोग उचित माना जाता है, जैसे, 'गुरु-पद-रज-मृदु-मजुल-अजन।' इसमे विषम विषम और सम सम का प्रयोग भी देखा जाता है, जैसे, 'नित्य-भजिय-तजि-मन—कुटि—लाई'। विषम विषम सम भी प्रयुक्त होते है, जैसे—'कहहु-राम कै-कथा सुहा-ई'। कभी कभी दो विषमो को मिलाकर एक सम माना जाता है, जैसे 'ब—दौं—राम-नाम—रघु—बर—को। †चारपाई। ⊙पाया = पु० चार पैरोवाला पशु। गाय, बैल, भैंस आदि पशु। ⊙पाल = पु० बैठने उठने का वह स्थान जो ऊपर से छाया हो, पर चारो ओर खुला हो। बैठक। दालान। एक प्रकार की पालकी। ⊙पुरा = पु० वह कुआँ जिसपर चारों ओर चार पुरवट या मोट एक साथ चल सकें। ⊙पैया = पु० एक प्रकार का छद, दे० 'चौपाई'। खाट। ⊙फला = वि० चार फलोवाला (चाकू आदि)। ⊙फेर = क्रि० वि० चारो तरफ।

⊙बदी = स्त्री॰ एक प्रकार का छोटा चुस्त अगा, 'बगलबदी'। ⊙बसा = पु॰ एक वर्णवृत्त। ⊙बगला = पु॰ कुरते, अगे इत्यादि मे बगल के नीचे और कली के ऊपर का भाग। वि॰ चारो ओर का। ⊙बाई† = स्त्री॰ चारो ओर से बहनेवाली हवा। अफवाह, उडती खबर। ⊙बारा = पु॰ कोठे के ऊपर खुली कोठरी। खुली हुई बैठक। क्रि॰ वि॰ चौथी दफा। ⊙बोला = पु॰ १५ मात्राओ का मात्रिक छद। जिसके प्रत्येक चरण के अत मे क्रम से लघु गुरु हो। ⊙मंजिला = वि॰ चार मरातिब या खडोवाला (मकान आदि)। ⊙मसिया = वि॰ वर्षा के चार महीनो मे होनेवाला। पु॰ चार माशे की तौल या बाट। ⊙मार्ग = पु॰ दे॰ 'चौराहा'। ⊙मासा = पु॰ वर्षाकाल के चार महीने (आषाढ, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन), चातुर्मास। वर्षा ऋतु से सबधित कविता। ⊙मुख = क्रि॰ वि॰ चारो ओर, चारो तरफ। ⊙मुखा = वि॰ चारो ओर (चार) मुँहवाला। ⊙मुहानी = स्त्री॰ चौराहा। ⊙ ⊙मेखा = वि॰ चार मेखोवाला। पु॰ प्राचीन काल का एक प्रकार का दड या सजा। ⊙रंग = पु॰ तलवार का एक हाथ। वि॰ तलवार के वार से कटा हुआ। ⊙रंगा = वि॰ चार रगो का, जिसमे चार रग हो। ⊙रस = वि॰ जो ऊँचा नीचा न हो, समसल। चौपहल। पु॰ एक प्रकार का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से एक तगण और दूसरा यगण होता है तथा कुल छह वर्ण होते हैं। ⊙रस्ता, ⊙रहर = पु॰ दे॰ 'चौराहा'। ⊙राहा = पु॰ चौरस्ता, चौमुहानी। ⊙वर, ⊙वा पु॰ हाथ की चार उँगलियो का समूह। अँगूठे को छोड हाथ की बाकी उँगलियो की पक्ति मे लपेटा हुआ तागा। चार अगुल की माप। तास का पत्ता जिसमे चार बूटियाँ हो। पु॰ दे॰ 'चौपाया'। ⊙सर = पु॰ एक खेल जो बिसात पर चार रगो की चार चार गोटियो से खेला जाता है, चौपड। इस खेल की बिसात। चार लडो का हार। ⊙हट = पु॰ दे॰ 'चौहट्टा'। ⊙हट्ट(५)† = पु॰ दे॰ 'चौहट्टा'। ⊙हट्टा = पु॰ वह स्थान जिसके चारो ओर दूकानें हो। चौमुहानी, चौरस्ता। ⊙हद्दी = स्त्री॰ चारो ओर की सीमा। ⊙हरा = वि॰ जिसमे चार फेरे या तहें हो। चौगुना। ⊙है = क्रिया वि॰ चारो ओर।

चौगान—पु॰ [फा॰] गोल्फ से मिलता जुलता एक पुराना खेल जिसमे लकडी के बल्ले से गेद मारते है। चौगान खेलने का मैदान। चौगान खेलने की लकडी जो आगे की ओर मुडी या झुकी होती है। नगाडा बजाने की लकडी। युद्धभूमि।

चौघड—पु॰ किनारे का वह चौडा चिपटा दाँत जो आहार कूचने या चबाने के काम मे आता है, चौभर।

चौघर†—वि॰ घोडो की एक चाल, चौफाल।

चौचंद†—पु॰ बदनामी की चर्चा, निंदा। ⊙हाई(५)—वि॰ स्त्री॰ बदनामी करनेवाली।

चौड़ा—वि॰ चकला, चौडाईवाला। ⊙ई = स्त्री॰ किसी चौकोर चीजमे लबाई के अतिरिक्त (और उसमे कम) फैलाव या विस्तार, चौडापन।

चौड़ान—स्त्री॰ दे॰ 'चौडाई'।

चौडोल, चौडोला—पु॰ दे॰ 'चडोल'।

चौतरा†—पु॰ दे॰ 'चबूतरा'।

चौधराई—स्त्री॰ चौधरी का काम। चौधरी का पद।

चौधरी—पु॰ किसी समाज या मडली का मुखिया जिसका निर्णय उसे समाजवाले मानते हैं, प्रधान।

चौप(५)—पु॰ दे॰ 'चोप'।

चौबे—पु॰ ब्राह्मणो की एक जाति या शाखा, चतुर्वेदी।

चौभड़—स्त्री॰ दे॰ चौघड'।

चौर—पु॰ [सं॰] चोर। एक गधद्रव्य।

चौरा—पु॰ चबूतरा, वेदी। किसी देवता, सती, मृत महात्मा, भूत, प्रेत आदि का वह स्थान जहाँ वेदी या चबूतरा बना

रहता है, समाधि, स्तूप। चौपाल, चौबारा। लोबिया, बोडा।
चौराई—स्त्री० दे० 'चौलाई'।
चौरासी—वि० ८० से चार अधिक। पु० ८० से चार अधिक की संख्या, ८४। चौरासी लक्ष योनि। नाचते समय पैर मे बांधने का घुंघरू। मु० ~मे पडना या भरमना = अनेक योनियो मे जन्म लेना और दुख भोगना, पुन पुन जन्मना और मरना।
चौरी—स्त्री० छोटा चबूतरा।
चौरेठा—पु० पीसा हुआ चावल।
चौर्य—पु० [स०] चोरी।
चौल संस्कार—पु० [स०] मुडन संस्कार।
चौलाई—स्त्री० एक पौधा जिसका साग खाया जाता है।
चौलुक्य†—पु० दे० 'चालुक्य'।
च्यता—स्त्री० दे० 'चिता'।
च्यवन—पु० [स०] चूना या टपकना। एक वैदिक ऋषि जिन्हें अश्विनीकुमार ने युवा बना दिया था। ⊙प्राश = पु० आयुर्वेद मे एक प्रसिद्ध पौष्टिक अवलेह।
च्युत—वि० [सं०] गिरा हुआ, झडा हुआ। भ्रष्ट। अपने स्थान मे हटा हुआ। विमुख, पराङ्मुख। **च्युति**—स्त्री० झडना, गिरना। गति, उपयुक्त स्थान से हटाना। चूक, कर्तव्य विमुखता।

छ

छ—हिंदी वर्णमाला का सातवाँ व्यजन जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।
छग(पु)—पु० दे० 'उछग'।
छगा—वि० जिसके किसी हाथ या पैर मे छह उँगलियाँ हो, छांगुर।
छंगुनियाँ, छँगुली(पु)—स्त्री० एक प्रकार की घुंघरूदार अँगूठी।
छँछौरी—स्त्री० एक पकवान जो छाछ मे बनाया जाता है।
छँटना—अक० कटकर अलग होना, छिन्न होना, दूर होना। समूह से अलग होना, चुनकर अलग कर लिया जाता। साफ होना, मैल निकालना। क्षीण होना, दुबला होना। मु०—**छँटा हुआ** = चुना हुआ। चालाक, धूर्त। **छँटाई**—स्त्री० छाँटने का काम, भाव या मजदूरी। **छँटैल**—वि० छँटा हुआ। धूर्त या चालाक।
छँडना(पु)—सक० त्यागना। अन्न को ओखली मे डालकर कूटना, छाँटना। **छँडाना**(पु)†—सक० छीनना, छुडाकर ले लेना।
छद—पु० [सं०] वेदो के वाक्यो का वह भेद जो अक्षरो की गणना के अनुसार किया गया है। वेद। वह वाक्य जिसमे वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि का नियम हो, पद्य। वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार पद या वाक्य रखने की व्यवस्था, पद्यबध। वह विद्या जिसमे छदो के लक्षण आदि का विचार हो। इच्छा। स्वेच्छाचार। (पु)बधन, गाँठ। जाल, सघात। कपट। एक आभूषण जो हाथ मे पहना जाता है। **छदोबद्ध**—वि० पद्यबद्ध। जो छदो मे हो। **छंदोभग**—पु० छदरचना का एक दोष जो मात्रा, वर्ण आदि के नियम का पालन न होने के कारण होता है।
छदक—वि० [सं०] रक्षक। छली। पु० श्री कृष्णचद्र। बुद्धदेव का सारथी। छल।
छ:—वि० पु० दे० 'छह'।
छकडा—पु० बोझ लादने की गाडी, सगड।
छकडी—स्त्री० छह का समूह। वह पालकी जिसे छह कहार उठाते हो। छह घोडों की गाडी।
छकना—अक० खा पीकर अघाना। मद्य आदि पीकर नशे मे चूर होना। अचंभे मे आना। दिक होना। **छकाना**—सक० [अक० छकना] खिला पिलाकर तृप्त करना। मद्य आदि से उन्मत्त करना। अचभे मे डालना। दिक करना। **छकौला**—वि० छका हुआ, तृप्त। मस्त, मत्त।
छकल—पुं० छह मात्राएँ।

छकाछक—वि० छाया हुआ। परिपूर्ण, भरा हुआ। नशे मे चूर।

छक्कर—पु० दाँव-पेच '···लेत उटक्कर घालत छक्कर लरि लपटै' (हिम्मत० १८५)।

छक्का—पु० छह का समूह या छह अवयवो से वनी वस्तु। षड्दर्शन। जुए का दाँव जिसमे दो, छह, दस या चौदह कौडियाँ चित्त पडें। जुआ। छह वूटियो का ताश। होश हवास। ⊙**पंजा** = चालबाजी। मु०~**पजा छूटना** = होश-हवास जाता रहना, वुद्धि काम न करना, हिम्मत हारना। ~**पंजा भूलना** = युक्ति काम न करना, बुद्धि काम न करना।

छगड़ा(पु)—पु० बकरा।

छगन—पु० छोटा वच्चा, प्रिय वालक। वि० वच्चो के प्यार का शब्द।

छगुनी—स्त्री० कनिष्ठिका, कानी उँगली।

छछिआ, छछिया—वि० छाछ पीने या नापने का छोटा पात्र।

छछिहारी—वि० छाछ विलोनेवाली।

छछूंदर—पु० चूहे की जाति का एक जतु। एक प्रकार का यत्र का तावीज। एक आतिशबाजी। मु०~**छोड़ना** = ऐसी बात कहना जिससे लोगो मे हलचल मच जाय। ~**के सिर मे चमेली का तेल** = बेमेल बात, अयोग्य व्यक्ति को अच्छी चीज की प्राप्ति।

छजना—अक० शोभा देना, सजना। उपयुक्त जान पडना।

छज्जा—पु० छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के वाहर निकला रहता है। कोठे या पाटन का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है।

छटकना—अक० किसी वस्तु का दाव या पकड से वेग के साथ निकल जाना। दूर रहना, अलग अलग फिरना। वश मे से निकल जाना। कूदना। **छटकाना**—सक० [अक० छटकना] दाब या पकड़ से बलपूर्वक निकल जाने देना। झटका देकर पकड या वधन से छुडाना। पकड या दबाव मे रहनेवाली वस्तु को बलपूर्वक अलग करना।

छटपट—पु० छटपटाने की क्रिया। †वि० चचल, नटखट। **छटपटाना**—अक० वधन या पीडा से हाथ पैर फटकारना। वेचैन होना। किसी वस्तु के लिये व्याकुल होना। **छटपटी**—स्त्री० घबराहट, वेचैनी। गहरी उत्कठा।

छटाँक—स्त्री० एक तौल जो सेर का सोलहवाँ भाग होती है।

छटा—स्त्री० [स०] दीप्ति, प्रकाश। शोभा, सौंदय। बिजली।

छठ—स्त्री० पक्ष की छठी तिथि। **छठा**—वि० छह की सख्यावाला।

छठी—स्त्री० जन्म से छठे दिन की पूजा या सस्कार। जन्म का छठा दिन। मु०~**का दूध याद आना** = शेखी भूल जाना, बहुत हैरानी या कष्ट होना।

छड़—स्त्री० धातु, लकडी आदि का लबा, पतला, बडा टुकडा।

छडा—पु० पैर मे पहनने का गहना। वि० अकेला।

छड़िया—पु० दरवान।

छडी—स्त्री पतली लाठी। पीरो की मजार पर चढाने की झडी। ⊙**दार** = पु० द्वारपाल, दरवान।

छत—स्त्री० घर के ऊपर चूने, ककड से वना फर्श, पाटन। ऊपर का खुला कोठा। छत के ऊपर तानने की चादर, चाँदनी। (पु)पु० घाव। (पु)क्रि० वि० होते हुए, रहते हुए। ⊙**गीर**, ⊙**गीरी** = स्त्री० ऊपर तानी हुई चाँदनी।

छतज—वि० लाल, रक्तवर्ण। क्षतज।

छतना(पु)—पु० पत्तो का वना हुआ छाता।

छतनार†—वि० छाते की तरह फैला हुआ, दूर तक फैला हुआ (पेड)।

छतरी—स्त्री० छाता। एक प्रकार का बहुत वडा छाता जिसके सहारे सैनिक हवाई जहाजो से जमीन पर उतरते हैं। मडप। समाधि के स्थान पर वना हुआ छज्जेदार मडप। कबूतरो के वैठने के लिये वाँस की फट्टियो का टट्टर। खुमी। डोली के ऊपर की छत। वहली के ऊपर की छत। ⊙**फौज** = स्त्री० छतरियो के सहारे हवाई जहाजो से उतरनेवाली सेना।

छतिया(पु)†—स्त्री० दे० 'छाती'। **छतियाना**—सक० छाती के पास ले जाना। दागते समय बंदूक के कुंदे को छाती के पास लगाना।

छतिवन—पु० एक पेड़, सप्तपर्णी।

छतीसा—वि० चतुर, सयाना। धूर्त।

छत्तर†—पु० दे० 'छत्र'। दे० 'सत्र'।

छत्ता†—पु० छाता, छतरी। पटाव या छत जिसके नीचे से रास्ता चलता हो। मधुमक्खी, भिड़ आदि के रहने का घर। छाते की तरह दूर तक फैली वस्तु, चकत्ता। कमल का बीजकोश।

छत्तीस—वि० ३० और छह, ३६ की संख्या। विमुख, उदासीन।

छत्तीसी—वि० छलछंद में कुशल। छिनाल।

छत्र(पु)—पु० क्षत्रिय। [सं०] पु० छाता, छतरी। राजाओं का राजचिह्न, रुपहला या सुनहरा छाता। खुमी, कुकुरमुत्ता। ⊙**छाया** = रक्षा, शरण। ⊙**धर** = पु० वह जो राजाओं पर छत्र लगाता हो। ⊙**धारी** = छत्र धारण करनेवाला। ⊙**पति** = पु० राजा। ⊙**पन**(पु) = वि० क्षत्रियत्व। ⊙**बंधु**(पु) = वि० क्षत्रियों में अधम। ⊙**भंग** = पुं० राजा का नाश, अराजकता। ज्योतिष का राजनाशक योग। ⊙**नास**(पु) = पुं० क्षत्रियों का नाश।

छत्रक—पुं० [सं०] खुमी, कुकुरमुत्ता। तालमखाने की जाति का एक पौधा। मंदिर, मंडप। शहद का छत्ता।

छत्री—वि० छत्रयुक्त। पुं० † दे० 'क्षत्रिय'।

छद—पुं० [सं०] ढक लेनेवाली वस्तु, आवरण, जैसे रदच्छद। खोल। छाल। पक्ष, चिड़ियों का पंख। पत्ता। **छदन**—पुं० दे० 'छद'।

छदाम—पुं० पैसे का चौथाई भाग।

छद्म—पुं० [सं०] छिपाव। व्याज, बहाना। छल, जैसे-छद्म वेश। ⊙**वेश** = पु० बदला हुआ वेश, कृत्रिम वेश। **छद्मी**—वि० बनावटी वेश धारण करनेवाला। कपटी।

छन—पु० दे० 'क्षण'। ⊙**छवि**(पु) = स्त्री० बिजली। ⊙**दा** = स्त्री० दे० 'क्षणदा'। ⊙**रुचि** = स्त्री० बिजली।

छनक—पु० छन छन करने का शब्द, झनझनाहट। (पु) एक क्षण। स्त्री० छनकने की क्रिया या भाव। किसी आशंका से चौंककर भागने की क्रिया, भड़क। ⊙**मनक** = स्त्री० गहनों की झंकार। सजधज। ठसक। दे० 'छगनमगन'। **छनकना**—अक० किसी तपती हुई धातु पर से पानी आदि की बूंद का छन छन शब्द करके उड़ जाना। (पु) झनकार करना, बजना। किसी बात से एकाएक चौंकना या भाग जाना, भड़कना। चौकन्ना होकर भागना। **छनकाना**—सक० [अक० छनकना] छन छन शब्द करना। चौंकाना, भड़काना।

छनछनाना—अक० किसी तपी हुई धातु पर पानी आदि पड़ने के कारण छन छन शब्द होना। खौलते हुए घी, तेल आदि में किसी गीली वस्तु के पड़ने के कारण छन छन शब्द होना। झनझनाना, झनकार होना। चिड़चिड़ाना। सक० छन छन का शब्द उत्पन्न करना। झनकार करना।

छनदा(पु)—स्त्री० दे० 'क्षणदा'।

छनना—अक० किसी पदार्थ का महीन छेदों में से इस प्रकार नीचे गिरना कि मैल, सीठी आदि ऊपर रह जाय, (छलनी से) छाना जाना। किसी नशे का पिया जाना। लड़ाई होना। बहुत से छेदों से युक्त होना। बिंध जाना, अनेक स्थानों पर चोट खाना। छानबीन होना, निर्णय होना। कड़ाह में से पूरी, पकवान आदि निकलना। मु० गहरी~ = खूब मेल जोल होना, गाढ़ी मैत्री होना।

छनाना—सक० [छानना का प्रे०] किसी दूसरे से छानने का काम कराना। भाँग पिलाना।

छनिक(पु)—वि० दे० 'क्षणिक'। पुं० क्षणभर।

छन्न—पुं० किसी तपी हुई चीज पर पानी आदि पड़ने से उत्पन्न शब्द। झनकार, ठनकार। वि० [सं०] छिपा हुआ, ढका हुआ।

छन्नी—पुं० वह कपड़ा जिससे कोई चीज छानी जाय, साफी।

छप—स्त्री० पानी मे किसी वस्तु के जोर से गिरने का शब्द। जोर से पानी के छीटे पड़ने का शब्द। पानी पर पजे आदि के पटकने से उत्पन्न शब्द। ⊙**का** = पुं० पानी का भरपूर छीटा। पानी मे हाथ पैर मारने की क्रिया। सिर मे पहनने का एक गहना।

छपकना—सक० किसी तेज हथियार से किसी पदार्थ को एक ही वार मे काट डालना। पतली लचीली छडी से मारना। किसी घात मे छिप रहना।

छपटना[+]—अक० किसी वस्तु से लगना या सटना।

छपछप—पुं० पानी पर प्रहार से उत्पन्न शब्द। वि० ऊपर ही ऊपर का (आघात, वार आदि), हलका। **छपछपाना**—अक० पानी पर कोई वस्तु पटककर छप-छप शब्द करना। सक० पानी मे छप-छप शब्द उत्पन्न करना।

छपद—पुं० भौरा। षट्पद।

छपन[+]—वि० गुप्त, गायब। विनाशक। पुं० नाश, सहार।

छपना—अक० छापा जाना, चिह्न या दाब पड़ना। चिह्नित होना, अकित होना। यत्रालय मे किसी लेख आदि का मुद्रित होना। शीतला का टीका लगना। अक० दे० 'छिपाना'। **छपवैया**—पुं० छापनेवाला। छपवानेवाला। मुद्रित करनेवाला। **छपाना**—सक० (छापना का प्रे०) छापने का काम दूसरे से कराना। (पु)सक० दे० 'छिपाना'। **छपाई**—स्त्री० छापने का काम, मुद्रण। छापने का ढग। छापने की मजदूरी।

छपरखट, छपरखाट—स्त्री० मसहरीदार पलग।

छपरबंद—वि० दे० 'छप्परबद'।

छपरी(पु)[+]—स्त्री० झोपडी।

छपा(पु)—स्त्री० दे० 'क्षपा'। ⊙**कर** = पुं० दे० 'क्षपाकर'। ⊙**चर** = वि० निशाचर, राक्षस। चद्रमा। ⊙**नाथ** = पुं० दे० 'क्षपानाथ'।

छपाका—पुं० पानी पर किसी वस्तु के जोर से पड़ने का शब्द। जोर से उछाला हुआ पानी का छीटा।

छप्पय—पुं० एक मात्रिक छद जिसमे छह चरण होते है एव कुल १४८ मात्राएँ होती है। इसके पहले चार चरणो मे चौबीस मात्राओ वाले रोला के चार चरण होते हैं, जिनके बाद छब्बीस मात्राओ के उल्लाला के दो चरण रखे जाते है (इसके अनेक उपभेद मिलते है)।

छप्पर—पुं० फूस आदि की छाजन जो मकान के ऊपर छाई जाती है। झोपडी। छोटा ताल या गड्ढा, पोखरा। ⊙**बद** = वि० जो छप्पर या झोपडा बनाकर रहता हो। छप्पर छाने या बनानेवाला। मु० ~**पर रखना** = छोड देना, चर्चा न करना, जिक्र न करना। ~**फाडकर देना** = अनायास देना, अकस्मात् देना।

छबडा—पुं० टोकरा, झावा।

छबतरवती(पु)—स्त्री० शरीर की सुदर बनावट।

छबि—स्त्री० दे० 'छवि'। ⊙**मान** = वि० दे० 'छबीला'। **छबीला**—वि० शोभायुक्त, सुदर। **छबीली**—वि० स्त्री० छबिवाली।

छम—स्त्री० घुँघरू बजने का शब्द। पानी बरसने का शब्द। (पु) पुं० दे० 'क्षम'। ⊙**छम** = स्त्री० नूपुर, पायल, घुँघरू आदि के बजने का शब्द। पानी बरसने का शब्द। क्रि० वि० छमछम शब्द के साथ।

छमकना—अक० घुँघरू आदि बजाते हुए हिलना डोलना। गहनो की झनकार करना। इतराना।

छमछमाना—अक० छमछम शब्द करना। छमछम शब्द करके चलना।

छमत—पु० छह दर्शनो के मत।

छमना[+]—सक० क्षमा करना।

छमसी—स्त्री० दे० 'छमासी'।

छमा—स्त्री० दे० 'क्षमा'। ⊙**ई**[+] = स्त्री० दे० 'क्षमा'। ⊙**सील** = वि० दे० 'क्षमाशील'।

छमासी—स्त्री० मृत्यु के छह महीने बाद

होनेवाला श्राद्ध। छह माशे की तौल। छह माशे का वटखरा।

छमाछमि—क्रि० वि० लगातार छमछम शब्द के साथ।

छमुख—पु० षडानन।

छमैया—वि० दे० 'क्षमाशील'।

छय(पु)†—पु० दे० 'क्षय'। ⊙ना=अक० छीजना, नष्ट होना।

छर—पु० दे० 'छत्र'। दे० 'क्षर'। मु०~ जाना=भूत इत्यादि मे डर जाना। ⊙ना=अक० चूना, टपकना। चुचुवाना। अत्यधिक भयभीत होना (भूत प्रेत आदि से)। दूर होना, न रहना। सक० (पु)†—छलना, ठगना। मोहित करना।

छरकना(पु)—अक० दे० 'छलकना'।

छरछंद(पु)—पु० दे० 'छलछद'।

छरछर—पु० कणो या छर्रो के वेग से निकलने और गिरने का शब्द। पतली, लचीली छडी से मारने का शब्द, सटसट।

छरछराना—अक० नमक आदि लगने से शरीर के घाव या छिले हुए स्थान मे उत्पन्न होनेवाली दुखद अनुभूति।

छरभार(पु)†—पु० प्रबध या कार्य का बोझ। झझट।

छरहरा—वि० इकहरे बदन का, हलके शरीर का। फुरतीला, चुस्त।

छरा—पु० छडा। लडी। रस्सी। नारा, इजारबद।

छरिंदा†—वि० दे० 'छरीदा'।

छरिया—पु० छडीदार, चोबदार।

छरी†(पु)—स्त्री० वि० दे० 'छडी'। दे० 'छली'।

छरोर—पु० चमडे का छिलना, खरोच। छरोरा†—पु० दे० 'खरोच'।

छर्दन—पु० [सं०] वमन, कै करना।

छर्दि—स्त्री० [सं०] वमन, कै।

छर्रा—पु० छोटी ककडी। लोहे या सीसे के छोटे टुकडे जो बदूक मे चलाए जाते है।

छल—पु० [सं०] वास्तविकता को छिपाने या अन्यथा दिखाने का कार्य। व्याज, बहाना। धूर्तता, ठगपना। कपट, धोखा। ⊙कारी=वि० छल करनेवाला। ⊙छंद=पु० कपट का जाल, चालबाजी। ⊙छिद्र=पु० धूर्तता, धोखेबाजी। ⊙हाई(पु)†=वि० स्त्री० छली, चालबाज।

छलना—सक० धोखा देना, भुलावे में डालना। छलाना—सक० [हिं०] [छलना का प्रे०] धोखा दिलाना। छलाई(पु)—स्त्री० छल का भाव, कपट।

छलक, छलकन—स्त्री० छलकने की क्रिया या भाव। छलकना—अक० किसी तरल चीज का बरतन मे उछलकर बाहर गिरना। उमडना। छलकाना—सक० [अक० छलकना] किसी पात्र मे भरे हुए जल आदि को हिला डुलाकर बाहर उछालना।

छलछलाना—अक० छलछल शब्द होना। पानी आदि थोडा करके गिरना। जल से पूर्ण होना।

छलनी—स्त्री० आटा चालने का बरतन, चलनी। मु०~हो जाना=किसी वस्तु मे बहुत से छेद हो जाना। कलेजा~ होना=दुख सहते सहते हृदय जर्जर हो जाना।

छलाँग—स्त्री० कुदान, चौकडी।

छाला(पु)†—पु० दे० 'छल्ला'।

छलावा—पु० भूत प्रेत आदि की छाया जो दिखाई पडते ही अदृश्य हो जाया करती है। वह प्रकाश या लुक जो दलदलो के किनारे या जगलो मे बिखरी हुई हड्डियो के भीतर छिपे भास्वर या फासफोरस के जल उठने से दिखाई पडता और बुझते ही गायब हो जाता है। चचल, शोख। इद्रजाल, जादू।

छलिया, छली—वि० छल करनेवाला, कपटी।

छल्ला—पु० सोने, चाँदी आदि के तार की सादी अँगूठी। कोई मडलाकार वस्तु; कडा। छल्लेदार—वि० जिसमे मडलाकार चिह्न या घेरे बने हो।

छवना†—पु० बच्चा। सूअर का बच्चा। किसी पशु का बच्चा।

छवा(पु)†—पु० किसी पशु का बच्चा, बछडा। एडी।

छवाई—स्त्री० छाने का काम या भाव। छाने की मजदूरी।

छवाना—सक० [छाना का प्रे०] छाने का काम दूसरे स कराना।

छवि—स्त्री० [स०] शोभा, सौदर्य। काति, द्युति, प्रभा।

छह—वि० गिनती मे पाँच से एक अधिक। पुं० वह सख्या जो पाँच से एक अधिक हो। इस सख्या का सूचक अक ६।

छहरना(पु)—अक० छितराना। **छहराना** (पु)—अक० बिखरना, चारो ओर फैलना। फहराना, हवा मे उडना। सक० बिखराना, छितराना। **छहरीला**†—वि० छितरानेवाला, बिखरनेवाला।

छहियाँ†—स्त्री० दे० 'छाँह'।

छाँक—पु० टुकडा, भाग।

छाँगना—सक० डाल, टहनी आदि काटकर अलग करना।

छाँगुर—पुं० वह मनुष्य जिसके पजे मे छह उँगलियाँ हो।

छाँछ—स्त्री० दे० 'छाछ'।

छाँट—स्त्री छाँटने, काटने या कतरने की क्रिया या ढग। कतरन। अलग की हुई निकम्मी वस्तु। वमन, कै। ⊙**छिड़का** =पु० बहुत हलकी और थोडी वर्षा।

छाँटना—सक० छिन्न करना, काटकर अलग करना। आकार मे लाने के लिये काटना या कतरना। अनाज मे से कन या भूसी कूट फटकारकर अलग करना। लेने के लिये चुनना या निकालने के लिये पृथक् करना। निकालना, दूर करना। साफ करना। किसी वस्तु का कुछ अश निकालकर उसे छोटा या सक्षिप्त करना। अलग या दूर रखना। अनावश्यक पाडित्य दिखाना।

छाँटा—पु० छाँटने की क्रिया या भाव। किसी को छल से अलग करना। मु०~**देना**=किसी छल से साथ या मडली से अलग करना।

छाँड़ना†(पु)—सक० दे० 'छोडना'।

छाँद—स्त्री० चौपायो के पैर बाँधने की रस्सी। **छाँदना**—सक० रस्सी आदि से बाँधना, जकडना। घोडे या गधे के पिछले पैरो को एक दूसरे से सटाकर बाँध देना।

छाँदा—पु० वह भोजन जो ज्योनार या रसोई घर आदि से अपने घर लाया जाय, परोसा। हिस्सा, भाग। कडाह प्रसाद।

छांदोग्य—पु० [स०] सामवेद का एक ब्राह्मण। छादोग्य ब्राह्मण का उपनिषद्।

छाँव—स्त्री० दे० 'छाँह'।

छाँवडा(पु)—पुं० जानवर का बच्चा, छौना। छोटा बच्चा, बालक।

छाँह—स्त्री० वह स्थान जहाँ आड या रोक के कारण धूप या चाँदनी न पडती हो, साया। उपर से छाया हुआ स्थान, शरण। छाया, परछाँई। बचाव या निर्वाह का स्थान। प्रतिबिंब। भूत, प्रेत आदि का प्रभाव। ⊙**गीर**=पु० राजछत्र। दर्पण, आईना। मु०~**न छूने देना**=निकट तक न आने देना। ~**बचाना**=दूर दूर रहना।

छाउँ—स्त्री० दे० 'छाँह'।

छाक—स्त्री० तृप्ति, इच्छापूर्ति। वह भोजन जो काम करनेवाले दोपहर को करते है। दुपहरिया। नशा, मस्ती। ⊙**ना**(पु)= अक० खा पीकर तृप्त होना, अघाना। नशा पीकर मस्त होना। हैरान होना।

छाग—पु० [स०] बकरा। **छागल**—पु० बकरा। बकरे की खाल की बनी हुई चीज। स्त्री० [हिं०] पैर का एक गहना, झाँझन।

छाछ, छाछी—स्त्री० वह पनीला दही या दूध जिसका घी या मक्खन निकाल लिया गया हो, मट्ठा।

छाज—पु० अनाज फटकने का सीक या बाँस की खपचियो का बना पात्र। छाजन, छप्पर। छज्जा। छाजने की क्रिया या भाव। सजावट। **छाजन**—पु० आच्छादन, वस्त्र। **भोजन छाजन**= खाना कपडा। स्त्री० छप्पर, खपरैल। छाने का काम या ढग। **छाजना**—अक० शोभा देना, अच्छा लगना। विराजना।

छाजा(पु)†—पु० दे० 'छज्जा'।

छात(पु)—पु० दे० 'छाता'। स्त्री० दे० 'छत'। 'कोऊ बडे घर की ठकुराइनि ठाडी न छात रहै छिरकी मै' (जगद्विनोद ५६०)।

छाता—पु० मेह, धूप आदि से बचने के लिये काम मे लाया जानेवाला आच्छादन जो

लोहे बाँस आदि की तीलियों पर कपड़ा या पत्ता चढ़ाकर बनाया जाता है। बड़ी छतरी। दे० 'छतरी'। खुमी। चौड़ी छाती। वक्षस्थल की चौड़ाई का नाप।

छाती—स्त्री० हड्डी की ठठरियों का पल्ला जो पेट के ऊपर गर्दन तक होता है, सीना। स्तन, कुच। कलेजा, हृदय, मन, जी। हिम्मत। मु०~**जलना** = अजीर्ण आदि के कारण हृदय में जलन मालूम होना। सताप होना। डाह होना। ~**जुड़ाना** = दे० 'छाती ठढी करना'। ~**ठढी करना** = चित्त शात और प्रफुल्ल करना, मन की अभिलाषा पूर्ण करना। ~**धड़कना** = खटके या डर से कलेजा जल्दी जल्दी उछलना, जी दहलना। ~**पत्थर की करना** = भारी दुख सहने के लिये कठोर करना। ~**पर पत्थर रखना** = दुख सहने के लिये हृदय कठोर करना। ~**पर मूँग या कोदो दलना** = किसी के सामने ही ऐसी बात करना जिससे उसका जी दुखे। ~**पर साँप लोटना या फिरना** = दु.ख से कलेजा दहल जाना, मानसिक व्यथा होना, ईर्ष्या से हृदय व्यथित होना, जलन होना। ~**पीटना** = दुख या शोक से व्याकुल होकर छाती पर हाथ पटकना। ~**फटना** = अत्यत सताप होना। ~**से लगाना** = आलिगन करना, गले लगाना। **वज्र की** ~ = ऐसा कठोर हृदय जो दुख सह सके, सहिष्णु हृदय।

छात्र—पु० [स०] शिष्य, विद्यार्थी। ⊙**वृत्ति** = स्त्री० वह वृत्ति या धन जो विद्यार्थी को विद्याभ्यास के लिये सहायतार्थ मिला करता है, वजीफा। **छात्रालय**—पु० विद्यार्थियों के रहने का स्थान।

छाद्मिक—पु० [सं०] वह जो भेप बदले हो मक्कार, ढोंगी। बहुरुपिया।

छादन—पु० [स०] छाने या ढकने का काम। वह जिससे छाया या ढका जाय, आवरण। छिपाव। वस्त्र।

छान—स्त्री० छप्पर।

छानना—सक० चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े और किसी छेददार वस्तु के पार निकालना जिसमें उसका कूड़ा करकट निकल जाय। छाँटना। जाँचना, पड़तालना। ढूँढना, तलाश करना। भेदकर पार करना। नशा पीना। दे० 'छाद'।

छानबीन—स्त्री० जाँच पड़ताल, गहरी खोज। पूर्ण विवेचना, विस्तृत विचार।

छाना—सक० किसी वस्तु पर कोई दूसरी वस्तु इस प्रकार फैलाना जिसमें वह पूरी ढक जाय, आच्छादित करना। पानी, धूप से बचाव के लिये किसी स्थान के ऊपर कोई वस्तु तानना या फैलाना। शरण में लेना। अक० फैलना, पसरना, बिछ जाना। डेरा डालना, रहना।

छानी—स्त्री० घास फूस का छाजन।

छाप—स्त्री० वह चिह्न जो छापने में पड़ता है, मुहर का चिह्न, मुद्रा। शंख चक्र आदि के चिह्न जिन्हें वैष्णव अपने अगों पर गरम धातु से अकित कराते हैं। वह अँगूठी जिसमें अक्षर आदि खुदा हुआ रहता है, ठप्पा। कवियों का उपनाम। ⊙**ना** = सक० स्याही आदि पुती वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर उसकी आकृति चिह्नित करना। ठप्पे से निशान डालना, मुद्रित करना, अकित करना। कागज आदि को छापे की कल में दबाकर उसपर अक्षर या चित्र अंकित करना, मुद्रित करना।

छापा—पु० साँचा जिस पर गीली स्याही आदि पोतकर उसपर खुदे चिह्नों की आकृति किसी वस्तु पर उतारते हैं, ठप्पा। मुहर, मुद्रा। ठप्पे या मुहर से दबाकर डाला हुआ चिह्न या अक्षर। पंजे का वह चिह्न जो शुभ अवसरों पर हल्दी आदि से छापकर (दीवार, कपड़े आदि पर) डाला जाता है। दुश्मन पर अचानक किया जानेवाला हमला। रात में सोते हुए बेखबर लोगों पर सहसा आक्रमण। किसी अवैधानिक कार्यवाही या वस्तु को पकड़ने के लिये पुलिस द्वारा एकाएक किया जानेवाला हमला। ⊙**खाना** = पुं० वह स्थान जहाँ पुस्तक आदि छापी जाती है, मुद्रणालय।

छाबड़ी—स्त्री० वह दौरी आदि जिसमे खाने पाने की चीजें रखकर बेची जाती है, खाँचा, छाबा।
छाम—वि० दे० 'क्षाम'। **छामोदरी**(पु)—वि० स्त्री० दे० 'क्षामोदरी'।
छायल—पु० स्त्रियो का एक पहनावा। एक प्रकार की कुरती। छपा हुआ वस्त्र।
छाया—स्त्री० [सं०] उजाले की रुकावट से होनेवाला अँधेरा या साया। किसी वस्तु के कारण पड़नेवाली परछाई। जहाँ धूप की पहुँच न हो, छाँह। प्रतिबिंब या अक्स। किसी वस्तु अथवा बात का सामान्य या क्षीण आभास। अनुकरण। चित्र का कम प्रकाश या अपेक्षाकृत हलके रगवाला भाग। चेहरे की काति या रग। काति, दीप्ति। भूत प्रेत का प्रभाव। शरण, रक्षा। सूर्य की पत्नी सज्ञा। आर्या छद का भेद। ⊙**दान** = पु० घी या तेल से भरे कांसे के कटोरे मे अपनी परछाई देखकर दिया जानेवाला दान। ⊙**पथ** = पु० आकाशगगा। देवपथ। ⊙**पुरुष** = पुं० हठयोग के अनुसार मनुष्य की छायारूप आकृति जो आकाश की ओर स्थिर दृष्टि से बहुत देर देखते रहने पर दिखाई पडती है। ⊙**वाद** = पु० हिंदी मे प्रधानतया सन् १६१८ से १६३६ तक प्राप्त होनेवाली भावुकता और कल्पनाप्रधान एक स्वच्छद काव्यप्रवृत्ति। 'रहस्यवाद' उक्त काव्यप्रवृत्ति की ही एक विशिष्ट धारा है जिसमे अज्ञेय के प्रति जिज्ञासा मुख्य है। ⊙**वादी** = वि० छायावाद के सिद्धात पर कविता करनेवाला कवि। छायावाद का पक्षपाती।
छार—पु० जली हुई वनस्पतियो या रासायनिक क्रिया से घुली हुई धातुओ की राख का नमक, क्षार। नमक। खारी पदार्थ। भस्म, राख। धूल, गर्द।
छाल—स्त्री० पेडो के ऊपर का कडा छिलका, वल्कल।
छालना—सक० छानना। छलनी की तरह छिद्रमय करना। † धोना।
छालटी—स्त्री० छाल या सन का बना वस्त्र।
छाला—स्त्री० छाल या चमडा, जिल्द। पु० किसी अग पर जलने, रगड खाने आदि से चमडे की ऊपरी झिल्ली का उभार जिसके भीतर एक प्रकार का चेप रहता है, फफोला।
छालित(पु)—वि० धोया हुआ।
छालिया, छाली—स्त्री० सुपारी।
छावनी—स्त्री० पडाव, डेरा। सेना के ठहरने का स्थान, सैनिको की बस्ती।
छावना(पु)†—पु० दे० 'छौना'।
छावा—पु० बच्चा। पुत्र, बेटा। जवान हाथी।
छउँकी—स्त्री० एक प्रकार की छोटी चीटी। एक छोटा उडनेवाला कीडा। लकड़ी उठानेके काम मे आनेवाला एक औजार।
छिंकना—अक० [सक० छेंकना] छेंका या घेरा जाना।
छिछ(पु)—स्त्री० छीटा, धार।
छिड़ाना—सक० जबरदस्ती ले लेना, छीनना।
छि—अव्य० घृणा, तिरस्कार या अरुचि-सूचक शब्द।
छिउला—पु० छोटा पेट, पौधा।
छिगुनियाँ—स्त्री० दे० 'छिगुनी'।
छिगुनी—स्त्री० सबसे छोटी उँगली, कनिष्ठिका।
छिच्छ(पु)—स्त्री० दे० 'छिछ'।
छिछकारना—सक० दे० 'छिडकना'।
छिछड़ा—पुं० दे० 'छीछडा'।
छिछला—वि० पानी की सतह जो गहरी न हो, उथला।
छिछोरपन, छिछोरापन—पुं० छिछोरा होने का भाव, क्षुद्रता।
छिछोरा—वि० क्षुद्र, ओछा।
छिजाना—सक० [छीजना का प्रे०] छीजने का काम कराना। अक० दे० 'छीजना'।
छिटकना—अक० इधर उधर फैलना, चारों ओर बिखरना। प्रकाश की किरणो का चारो ओर फैलना।
छिटकाना—सक० [अक० छिटकना] चारों ओर फैलाना, बिखराना।
छिटकी—स्त्री० छीट, छीटा।
छिड़कना—सक० द्रव पदार्थ को इस प्रकार फेंकना कि उसके महीन महीन छींटे

फैलकर इधर उधर पड़ें। भिगोने, तर करने, सुगंधित करने या रँगने आदि के लिये किसी वस्तु पर जल, इत्र, रंग आदि बिखराना।

छिड़का—पुं० दे० 'छिड़काव'। **छिडकाई**—स्त्री० छिडकने की क्रिया या भाव, छिडकाव। छिडकने की मजदूरी।

छिड़काव—पुं० पानी आदि छिडकने की क्रिया।

छिड़ना—अक० आरभ होना, शुरू होना, चल पडना।

छितनी—स्त्री० छोटी टोकरी।

छितराना—अक० खडो या कणो का गिरकर इधर उधर फैलना। तितर बितर होना, बिखरना। सक० खडो या कणो को गिराकर इधर उधर फैलाना, बिखराना, छीटना। दूर दूर करना।

छिति(पु)—स्त्री० दे० 'क्षिति'। ⊙**ज** = पु० दे० 'क्षितिज'। ⊙**पाल**(पु) = पु० राजा। ⊙**राउ** = पु० भूपति, राजा। **छितीस**(पु)—पु० राजा।

छिदना—अक० छेद से युक्त होना। सूराखदार होना। घायल होना। चुभना।

छिदाना—सक० [छेदना का प्रे०] छेद कराना। चुभवाना, धँसवाना।

छिद्र—पु० [सं०] छेद। गड्ढा, बिल। अवकाश, जगह। दोष, त्रुटि। नौ की सख्या। **छिद्रान्वेषण**—पु० दोष ढूंढना, खुचुर निकालना। **छिद्रान्वेषी**—वि० पराया दोष ढूंढनेवाला।

छिन(पु)—पु० दे० 'क्षण'। ⊙**छवि**(पु) = स्त्री० बिजली। ⊙**भंग**(पु) = दे० 'क्षणभगुर'। **छिनक**(पु)—क्रि वि० एक क्षण, थोडी देर।

छिनकना—सक० नाक का मल जोर से साँस बाहर करके निकालना, सिनकना।

छिनना—अक० छीन लिया जाना। हरण होना।

छिनवाना—सक० ['छीनना' का प्रे०] छीनने का काम दूसरे से कराना। **छिनाना**—सक० छिनवाना। †छीनना, हरण करना।

छिनरा—वि० परस्त्रीगामी (पुरुष), लपट, वृषल।

छिनार, छिनाल—वि० व्यभिचारिणी, कुलटा।

छिनारा, छिनाला—पुं० स्त्री पुरुष का अनुचित सहवास, व्यभिचार।

छिन्न—वि० [सं०] जो कटकर अलग हो गया हो, खडित। ⊙**भिन्न**=वि० खडित। टूटा फूटा। नष्ट भ्रष्ट। अस्त व्यस्त, तितर बितर। ⊙**मस्ता** = स्त्री० तान्त्रिकों की एक देवी जो महाविद्याओं मे छठी है।

छिपकली—स्त्री० एक सरीसृप या जतु जो दीवारो आदि पर प्राय दिखाई पडता है, बिस्तुइया।

छिपना—अक० ओट मे होना, ऐसी स्थिति मे होना जहाँ से दिखाई न पडे। **छिपाना**—सक० [अक० छिपना] आवरण या ओट मे करना, दृष्टि से ओझल करना। गुप्त रखना।

छिपाव—पु० छिपाने का भाव, गोपन।

छिप्र(पु)—क्रि० वि० दे० 'क्षिप्र'।

छिमा(पु)†—स्त्री० दे० 'क्षमा'।

छियना—सक० छूना। 'चट न टोम कछू छियना है।' (प्रबोध० ४४)।

छिया—स्त्री० घृणित वस्तु। मल, गलीज। वि० मैला, घृणित। स्त्री० छोकरी, लडकी

छिरकना†—सक० 'छिडकना'।

छिलका—पु० एक परत की खोल जो फलो आदि पर होती हैं।

छिलना—अक० छिलके का अलग होना। ऊपरी चमडे का कुछ भाग कटकर अलग हो जाना।

छिवना(पु)—अक० स्पर्श करना।

छिहानी†—स्त्री० मरघट, श्मशान।

छींक—स्त्री० नाक मे चुनचुनाहट या खुजलाहट होने पर शब्द के साथ सहसा निकलनेवाला वायु का तेज प्रवाह। ⊙**ना** = अक० छीक लेना।

छींका—पु० रस्सी या तार आदि का जाल जो खाने पीने की चीजें रखने के लिये छत मे या ऊँचे स्थान पर लटकाया जाता है, सिकहर। जालीदार खिडकी या झरोखा। बैलो के मुँह पर चढाया जानेवाला रस्सियो का जाल। झूले का झुलना।

छींट—स्त्री० महीन बूंद, जलकण। वह कपडा जिसपर रगबिरग के बेलबूटे छपे

हो। छींटना—सक० दे० 'छितराना।'
छींटा—पु० द्रव पदार्थ की बिखरी या छिटकी हुई बूंद, जलकण। हलकी वृष्टि। पडी हुई बूंद का चिह्न। छोटा दाग। हाथ से बिखेरकर बीज बोना। मदक या चडू की एक मात्रा। व्यंग्यपूर्ण उक्ति।
छी—अव्य० घृणासूचक शब्द। मु०~ करना = घिनाना, अरुचि या घृणा प्रकट करना।
छीका—पु० दे० 'छीका'।
छीछड़ा—पु० मास का तुच्छ, निकम्मा टुकडा।
छीछालेदर—स्त्री० फजीहत, दुर्दशा।
छीज—स्त्री० घाटा, कमी। ⊙ना = अक० क्षीण होना, घटना।
छीटि(पु)—स्त्री० हानि, घाटा। बुराई।
छीतीछान—वि० तितर बितर।
छीन—वि० दे० 'क्षीण'।
छीनना—सक० दूसरे की वस्तु जबरदस्ती ले लेना, झपटना, हरण करना। काटकर अलग करना। चक्की आदि को छेनी से खुरदुरा करना, कूटना।
छीनाझपटी—स्त्री० एक दूसरे के हाथ से छीन झपटकर किसी वस्तु को ले लेने का प्रयत्न।
छीप—वि० तेज, वेगवान्। स्त्री० छाप, दाग। सेहुआँ नामक चर्मरोग जिसमे चमडे की ऊपरी तह छिलकर छोटे बड़े दाग पड जाते है।
छीपी—पु० कपडे पर बेलबूटे या छींट छापनेवाला।
छीवर—स्त्री० मोटी छींट, वह कपडा जिसपर बेलबूटे हो।
छीमी†—स्त्री० फली। थन, स्तन (गाय, भैंस का)।
छीर—पु० दे० 'क्षीर'। स्त्री० कपडे का वह किनारा जहाँ लबाई समाप्त हो, किनारा। ⊙ज = पु० दही। मक्खन। चंद्रमा। ⊙प(पु) = पु० दूध पीता बच्चा।
छीलना—अक० छिलका या छाल उतारना। जमी हुई वस्तु को खुरचकर अलग करना। गले के भीतर चुनचुनाहट या खुजली उत्पन्न करना।
छीलर—पु० छिछला गड्ढा, तलैया।
छुंगना—स्त्री० एक प्रकार की घुंघरूदार अँगूठी।
छुगली—स्त्री० एक प्रकार की घुंघरूदार अँगूठी।
छुआछूत—स्त्री० कुछ व्यक्तियों को उनकी जाति, पेशे अथवा धर्म आदि के कारण स्पर्श योग्य न समझने का विचार।
छुआना†—सक० [छूना का प्रे०] स्पर्श कराना लाना।
छुईमुई—स्त्री० एक प्रकार का पौधा और लता जिसकी पत्तियाँ हाथ लगाते ही मुरझा जाती है, लज्जावती।
छुगुन†—पु० दे० 'घुंघरू'।
छुच्छा—वि० दे० 'छूछा'।
छुच्छी—स्त्री० पतली पोली नली। लौंग, नाक की कील।
छुच्छू—वि० तुच्छ, तिरस्कार योग्य।
छुछुंदरि—पु० [सं०] दे० 'छछूंदर'।
छुट(पु)—अव्य० छोडकर, सिवाय।
छुटना(पु)—अक० दे० 'छूटना'। **छुटकाना** (पु)—सक० छोडना, अलग करना। साथ न लेना। मुक्त करना।
छुटकारा—पु० छूटन का भाव या क्रिया। आपत्ति या चिंता आदि से रक्षा, निस्तार। किसी काम या कार्यभार से मुक्ति।
छुटपन†—पु० छोटाई, लघुता। बचपन।
छुटाना†—सक० दे० 'छुडाना'।
छुट्टा—वि० जो बँधा न हो। अकेला। जिसके साथ कुछ माल असबाब न हो। ⊙पान = बिना लगा पान। छुट्टे हाथ = खाली हाथ।
छुट्टी—स्त्री० छुटकारा, रिहाई। काम से खाली वक्त, फुरसत। काम बद रहने का दिन, तातील। जाने की आज्ञा।
छुड़ाना—सक० बँधी, फँसी, उलझी या लगी हुई वस्तु को पृथक् करना। दूसरे के अधिकार से अलग करना। पुती हुई वस्तु को दूर करना। रेल या डाक द्वारा आए हुए सामान को महसूल आदि चुकाकर अपने अधिकार मे करना। कार्य या नौकरी से हटाना, बरखास्त करना। किसी प्रवृत्ति या अभ्यास को

दूर करना। (किसी व्यक्ति को) बंधन, हवालात, जेल, दंड या दायित्व से मुक्त कराना। मवेशियों को कांजी हाउस से मुक्त कराना। [छोडना का प्रे०] छोडने का काम कराना।

छुत्(पु)—स्त्री० भूख।

छुतिहा—वि० छूतवाला, अस्पृश्य। संक्रामक रोग। आर्तव काल की स्त्री। कलंकित, दूषित, घृणित। पु० शोरे का नमक।

छुद्धित(पु)—वि० भूखा।

छुद्र—पु० दे० 'क्षुद्र'। छुद्रावलि(पु)—स्त्री० दे० 'क्षुद्रघंटिका'।

छुधा—स्त्री० दे० 'क्षुधा'। ⊙वंत = वि० भूखा, क्षुधित। छुधित—वि० भूखा।

छुप(पु)—पु० दे० 'क्षुप'।

छुपना—अक० दे० 'छिपना'।

छुभित(पु)—वि० विचलित, चंचलचित्त। घबराया हुआ।

छुभिराना(पु)—अक० क्षुब्ध होना, चंचल होना।

छुरधार(पु)—स्त्री० छुरे की धार, पतली पैनी धार।

छुरा—पु० बेंट में लगे हुए लंबे धारदार लोहे के टुकडे का एक हथियार जो मारने, भोंकने या काटने के काम आता है, बडा फलदार चाकू। उस्तरा।

छुरित—पु० [सं०] लास्य नृत्य का एक भेद। बिजली की चमक।

छुरी—स्त्री० चीजें काटने या चीरने फाडने का एक बेंटदार छोटा हथियार, चाकू। आक्रमण करने का एक धारदार हथियार।

छुलछुलाना—अक० थोडा थोडा करके गिरना या बहना। थोडा थोडा करके पेशाब करना। इतराना।

छुलाना—सक० [छूना का प्रे०] स्पर्श कराना, छुआना।

छुवाना—सक० दे० 'छुलाना'।

छुहना(पु)—अक० छू जाना। रँग जाना, लिपना। सफेदी करना। सक० दे० 'छूना'।

छुहारा—पु० एक प्रकार का खजूर, खुरमा। पिंड खजूर।

छूँछा—वि० खाली, रीता। जिसमें कुछ तत्त्व न हो। निर्धन।

छू—पु० मंत्र पढकर फूँक मारने का शब्द। मु० ~मंतर होना = चटपट दूर होना, गायब होना, जाता रहना।

छूछा—वि० दे० 'छूँछा'।

छूट—स्त्री० छुटकारा, मुक्ति। अवकाश, फुरसत। बाकी रुपया छोड देना। सामान्य कर या दातव्य आदि में कमी। किसी कार्य से संबंध रखनेवाली किसी बात पर ध्यान न जाने का भाव। वह रुपया जो देनदार से न लिया जाय। पारिश्रमिक या मूल्य लेने में की जानेवाली रिआयत। स्वतंत्रता, आजादी। गाली गलौज। ⊙ना = अक० फँसी या पकडी हुई वस्तु का अलग या दूर होना। किसी बाँधने या पकडनेवाली वस्तु का ढीला पडना या अलग होना। किसी पुती या लगी हुई वस्तु का अलग होना। छुटकारा होना। प्रस्थान करना। दूर पड जाना, बिछुड़ना (जैसे, घर छूटना, भाई बंधु छूटना)। पीछे रह जाना। किसी अस्त्र का चल पडना या छूटना। बराबर होती रहनेवाली बात का बंद होना किसी नियम या परंपरा का भंग होना, (जैसे, व्रत छूटना)। किसी वस्तु में से वेग के साथ निकलना (जैसे, रक्त की धार)। रस रसकर निकलना। कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकलना, जैसे, फव्वारा छूटना। किसी काम का भूल से न किया जाना। किसी कार्य से हटाया जाना, जैसे, नौकरी छूटना। पशुओं का अपनी मादा से संयोग करना। मु०—नाड़ी~ = नाडी का न चलना, मृत्यु हो जाना।

छूत—स्त्री० छूने का भाव, संसर्ग। गंदी, अशुचि या रोगसंचारक वस्तु का स्पर्श। ⊙का रोग = वह रोग जो किसी रोगी से छू जाने से हो। अशुचि वस्तु के छूने का दोष या दूषण। किसी मनहूस आदमी या भूत प्रेत की छाया, भूत आदि लगने का बुरा प्रभाव। मु०~ उतारना या झाड़ना = मनहूस आदमी या भूत प्रेत की छाया को झाड फूँक आदि से दूर करना।

छूना—अक० सटना, स्पर्श होना। सक० किसी वस्तु से अपना कोई अग लगाना, सटाना, स्पर्श करना। हाथ बढाकर उँगलियो के ससर्ग मे लाना, हाथ लगाना। † दान के लिये किसी वस्तु का स्पर्श करना। दौड की बाजी मे किसी को पकड़ना, उन्नति की समान श्रेणी मे पहुँचना। बहुत कम काम मे लाना। पोतना। मु०—**आकाश**~ = बहुत ऊँचा होना।

छेंकना—सक० आच्छादित करना, स्थान घेरना। रोकना, जाने न देना। लकीरो से घेरना। काटना, मिटाना।

छेक—पु० छेद, सूराख। कटाव, विभाग।

छेकानुप्रास—पु० [सं०] वह अनुप्रास जिसमे व्यजनो का सादृश्य एक ही बार उसी क्रम से हो। **छेकापह्नुति**—स्त्री० एक अलकार जिसमे वास्तविक बात का अयथार्थ उक्ति से खडन किया जाता है। **छेकोक्ति**—स्त्री० वह लोकोक्ति जो अर्थांतर गर्भित हो अर्थात् जिससे अन्य अर्थ की भी ध्वनि निकले।

छेटा—स्त्री० बाधा।

छेड़—स्त्री० छूकर या खोद खादकर तग करने की क्रिया। हँसी ठठोली करके कुढाने का काम, चुटकी। चिढानेवाली बात। रगडा झगडा। कोई काम आरभ करना, शुरू करना। ⊙**ना** = सक० हँसाने, चिढाने आदि के लिये किसी को उँगली आदि से छूना, दबाना, कोचना। उत्तेजित करना या तग करना। हँसी, ठठोली करके कुढाना, चुटकी लेना। छू या खोद खादकर भडकाना या तग करना। कोई बात या कार्य आरभ करना, उठाना। बजाने के लिये बाजे मे हाथ लगाना। नश्तर से फोडा चीरना।

छेत†—पु० दे० 'छेदन'।

छेत्र(पु)†—पु० दे० 'क्षेत्र'।

छेद—पु० [सं०] छेदन, काटने का काम। नाश, ध्वस। छदन करनेवाला। गणित मे भाजक। पु० सूराख। बिल, दरज। दोष, ऐब। ⊙**क** = वि० छेदने या काटनेवाला। नाश करनेवाला। विभाजक। ⊙**ना** = पु० काटकर अलग करने का काम, चीर फाड। नाश। काटने या छेदने का अस्त्र। रुकावट। छिद्र। सक० [हिं०] कुछ चुभाकर किसी वस्तु को छिद्रयुक्त करना, बेधना। घाव करना। †काटना।

छेना—सक० छिनगाना, कुल्हाडी आदि से काटना या घाव करना। पु० खटाई से फाडा हुआ दूध जिसका पानी निचोड लिया गया हो, पनीर। †कडा, उपला।

छेनी—स्त्री० लोहे का वह औजार जिससे पत्थर आदि काटे या नकाशे जाते हैं, टाँकी।

छेम(पु)‡—पुं० दे० 'क्षेम'। ⊙**करी**(पु) = स्त्री० दे० 'क्षेमकरी'।

छेरी, छेली—स्त्री० बकरी, छेरी।

छेव—पुं० जख्म, घाव। † आनेवाली आपत्ति, होनहार, दुःख। किसी दुष्कर्म या क्रूर ग्रह आदि के प्रभाव से होनेवाला अनिष्ट। स्त्री० दे० 'टेव'। ⊙**ना** = सक० काटना, छिन्न करना। चिह्न लगाना। (पु)फेंकना। डालना, ऊपर डालना। (पु)स्त्री० ताडी।

छेवर†—पु० छाल, वक्कल। छिलका। चमडा, त्वचा।

छेवरा—पु० दे० 'छेवर'

छेह(पु)—पु० दे० 'छेव'। खडन, नाश। वि० टुकडे टुकडे किया हुआ। न्यून, कम। (पु)स्त्री दे० 'खेह'।

छेहर†—स्त्री० छाया, साया।

छै—वि० दे० 'छह'। (पु) स्त्री० दे० 'क्षय'। ⊙**ना**(पु) = अक० छीजना। नष्ट होना।

छैया(पु)†—पुं० बच्चा।

छैल(पु)—पु० दे० 'छैला'। ⊙**चिकनिया** = पुं० शौकीन, बनाठना आदमी। ⊙**छबीला** = पु० सजा बजा और युवा पुरुष, बाँका। छरीला नाम का पौधा। **छैला**—पु० सुदर और बना ठना आदमी। ‡ बाँका।

छोंडा(पु)—पु० दही मथने की मथानी।

छो—पु० छोह। प्रेम। दया, कृपा। क्षोभ, गुस्सा।

छोई—स्त्री० दे० 'खोई'। निस्सार वस्तु।

छोकड़ा—पु० लडका, वालक। अनुभव या अपरिपक्व वुद्धि का यवक (तिरस्कार मे), लौडा। **छोकरो**†—पु० दे० 'छोकडा'।

छोटा—वि० विस्तार या डीलडौल मे कम। थोडी उम्र का। पद या प्रतिष्ठा मे कम। तुच्छ, सामान्य। ओछा, क्षुद्र। ⊙ई=स्त्री० छोटापन, लघुता। नीचता। ⊙मोटा=वि० साधारण, जैसे छोटी मोटी वात। छोटा, जैसे, छोटा मोटा घर।

छोटी इलायची—स्त्री० सफेद या गुजराती इलायची।

छोटी हाजरी—स्त्री० यूरोपियनो का प्रात-काल का कलेवा।

छोड़ना—सक० पकडी हुई वस्तु को पकड से अलग करना। किसी लगी या चिपकी हुई वस्तु का अलग हो जाना। वधन आदि से मुक्त करना। अपराध क्षमा करना। न ग्रहण करना। प्राप्य धन न लेना। देना, मुआफ करना। परित्याग करना, पास न रखना। पडा रहने देना, न उठाना या न लेना। प्रस्थान कराना, चलाना (सवार छोडना, घोडा छोडना आदि) चलना या फेंकना। किसी वस्तु व्यक्ति या स्थान से आगे वढ जाना। हाथ मे लिए हुए कार्य को त्याग देना। किसी रोग या व्याधि का दूर होना। वेग के साथ बाहर निकालना। ऐसी वस्तु को चलाना जिसमे से कोई वस्तु कणो या छींटो के रूप मे वेग से वाहर निकले। बचाना, शेष रखना। किसी कार्य को या उसके किसी अग को भूल से न करना। ऊपर से गिराना। मु०—किसी पर किसी को~=किसी को पकडने या चोट पहुँचाने के लिये उसके पीछे किसी को लगा देना। **छोड़कर**=अतिरिक्त, सिवाय।

छोना—पु० वच्चा, लडका।

छोनिप(पु)—पुं० दे० 'क्षोणिप'। **छोना**=पुं० राजपुत्र, राजकुमार।

छोनी(पु)—स्त्री० दे० 'क्षोणी'।

छोप—पुं० गाढी या गीली वस्तु की मोटी तह, मोटा लेप। लेप चढाने का कार्य। आघात, वार, प्रहार। छिपाव, बचाव। ⊙ना=सक० गाढ़ा लेप करना। गीली मिट्टी आदि का लोदा ऊपर रखना या फैलाना। धर दबाना, ग्रसना। आच्छादित करना, ढंकना। †किमी वुरी वात को छिपाना, पक्ष डालना। †वार या आघात बचाना।

छोभ—पु० दे० 'क्षोभ'। ⊙ना(पु)=अक० क्षुब्ध होना। **छोभित**(पु)—वि० दे० 'क्षोभित'।

छोम(पु)—वि० चिकना, कोमल।

छोर—पुं० जहाँ किसी वस्तु की लबाई का अत हो, चौडाई का हाशिया, किनारा। हद। कोर, कोना। **ओर छोर**=आदि अत।

छोरा—पु० छोकडा, लडका। (स्त्री० छोरी)।

छोराछोरी†—स्त्री० छीन खसोट, छीना-छीनी। झगडा, वखेडा।

छोरना†—सक० वधन आदि अलग करना, खोलना। वधन से मुक्त करना। हरण करना, छीनना।

छोलदारी—स्त्री० छोटा खेमा, छोटा तबू।

छोलना†—सक० छीलना।

छोला—पु० ईख को काटने और छीलनेवाला पुरुष। एक प्रकार का चना।

छोह—पु० ममता, प्रेम। दया, अनुग्रह। ⊙ना(पु)=अक० विचलित, चचल या क्षुब्ध होना। प्रेम या दया करना। **छोहाना**(पु)—अक० मुहव्वत करना, प्रेम दिखाना। दया करना। **छोही**(पु)†—वि० ममता रखनेवाला, स्नेही।

छोहरा—पु० दे० 'छोरा'।

छोहिनी(पु)—स्त्री दे० 'अक्षौहिणी'।

छौंक—स्त्री० वघार, तडका। ⊙ना=सक० वासने के लिये हीग, मिरचा आदि मिले हुए कडकडाते घी को दाल आदि में डालना, वघारना। मसाले मिले हुए कडकडाते घी मे कच्ची तरकारी आदि भूनने के लिये डालना, तड़का देना।

छौंड़ा†—पु० अनाज रखने का गड्ढा, खत्ता। लडका, बच्चा।
छौना—पु० पशु का बच्चा (जैसे, मृगछौना)
छौर⑤—पु० दे० 'क्षौर'।
छौलदारी—स्त्री० एक प्रकार का छोटा खेमा, छोटा तबू।
छौवाना⑤—सक० दे० 'छुआना'।

ज

ज—हिंदी वर्णमाला का एक व्यजन वर्ण जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है।
जंग—स्त्री० [फा०] लडाई, युद्ध। पुं० लोहे का मोरचा। **जगी**—वि० [फा०] लडाई से सबध रखनेवाला; जैसे जगी जहाज। फौजी, सैनिक। बहुत बडा वीर, लडाका।
जंगम—वि० [सं०] चलने फिरनेवाला, चर। जो एक स्थल से दूसरे स्थल पर लगाया जा सके, जैसे जगम सपत्ति। दाक्षिणात्य लिंगायत शैव सप्रदाय के गुरु।
जगल—पु० [सं०] वन, अरण्य। बजर। उजाड स्थान। निर्जन स्थान। जनशून्य भूमि, रेगिस्तान। मु० ~में मगल = सुनसान स्थान मे चहलपहल। **जंगली**—वि० जगल मे मिलने या होनेवाला, जगल सबधी। बिना वोए या लगाए उगनेवाला पौधा। जगल मे रहनेवाला, बनैला।
जंगला—पुं० [पुर्त०] खिडकी, दरवाजे, बरामदे आदि मे लगी हुई लोहे की छडो की पक्ति, कटहरा, बाड। चौखट या खिडकी जिसमे छड लगी हो।
जंगार—पुं० [फा०] ताँबे का कसाव, तूतिया। एक रग जो ताँबे का कसाव है। **जंगारी**—वि० [फा०] नीले रंग का। **जंगाल**—पुं० दे० 'जगार'।
जंघा—स्त्री० जघा, रान।
जँचना—अक० जाँचा जाना, देखा भाला जाना। जाँच मे पूरा उतरना, उचित या अच्छा ठहरना। जान पडना, प्रतीत होना।
जंजल⑤†—वि० पुराना और कमजोर, बेकाम।
जजाल—पुं० प्रपच, झझट। बधन, फँसाव, उलझन। पानी का भँवर। एक प्रकार की बडी पलीतेदार बदूक। बडे मुँह की तोप। बडा जाल। **जजालिया, जंजाली**—वि० प्रपची, झगड़ालू।
जंजीर—स्त्री० [फा०] साँकल, कडियो की लडी। बेडी। किवाड की कुडी, सिकडी।
जंतर—पुं० औजार, यत्र। तात्रिक यत्र। प्राय चौकोर या लबा तार्बीज जिसमे मत्र या कोई टोटके की वस्तु रहती है। गले मे पहनने का एक गहना, कठुला। ⊙**मंतर** = पुं० टाना टोटका, जादू टोना। वेधशाला।
जंतरी—स्त्री० छोटा जता जिसमे सुनार तार बढाते हैं। पत्रा, तिथिपत्र। जादूगर, भानमती। बाजा बजानेवाला।
जँतसर—पुं० वह गीत जो स्त्रियाँ चक्की पीसते समय गाती हैं।
जँतसार—स्त्री० जाँता गाडने का स्थान।
जंता—पुं० यत्र कल (जैसे जताघर)। तार खीचने का औजार। वि० दड देनेवाला, यत्रणा देनेवाला। शासन करनेवाला।
जंती—स्त्री० छोटा जता, जतरी। †माता, माँ।
जंतु—पु० [स०] जन्म लेनेवाला, जीव, प्राणी, जानवर। **जीव जंतु** = प्राणी, जानवर।
जंत्र—पु० यत्र, कल औजार। तात्रिक यत्र। ताला। ⊙**ना**⑤ = सक० ताले के भीतर बद करना, जकडबद करना। स्त्री० दे० 'यत्रणा'। ⊙**मंत्र** = पु० दे० 'जतर मतर'। टोना टोटका। **जंत्रित**—स० दे० 'यत्रित'। बद। बँधा हुआ।
जंत्री—पु० बाजा। बजानेवाला व्यक्ति। तिथिपत्र। वि० यत्रित करनेवाला, बाँधनेवाला।
जंद—पु० पारसियो का अत्यत प्राचीन धर्मग्रथ जिसकी भाषा वैदिक भाषा से बहुत समानता रखती है। वह भाषा जिसमें पारसियो का धर्मग्रथ है।
जंदरा—पु० यत्र, कल। जाँता। †ताला।
जंपना⑤—सक० बोलना, कहना।
जंबक—पु० दे० 'जबुक'।

जंबाल—पु० [सं०] कीचड, पक। सेवार। काई। केवडा।

जबीर—पु० [सं०] जबीरी नीबू। मरुवा। वनतुलसी। **जबीरी नीबू**—पु० एक प्रकार का खट्टा नीबू।

जंबु—पु० [सं०] जामुन। ⊙क=पु० बडा जामुन, फरेंदा। केवडा। शृगाल, गीदड। ⊙द्वीप=पु० पुराणानुसार सात द्वीपो मे से एक जिसके नौ खडो या वर्षो मे से एक भारत वर्ष है। **जबू**—पु० [सं०] जामुन। काश्मीर राज्य का एक प्रसिद्ध नगर।

जबूर—पु० [फा०] जबूरा, जमूरका। तोप की चर्ख। पुरानी छोटी तोप जो प्राय ऊँटो पर लादी जाती थी, जबूरक। ⊙क=स्त्री० छोटी तोप। तोप की चर्ख। भँवर कली। ⊙ची=पु० तोपची तुपकची, सिपाही। **जबूरा**—पु० चर्ख जिसपर तोप चढाई जाती है। भँवरकली। सुनारो का बारीक काम करने का एक औजार।

जभ—पु० [सं०] दाढ, चौभड। जबडा। एक दैत्य (इद्र का शत्रु)। जँबीरी नीबू। जँभाई। **जँभाई**—स्त्री० दे० 'जम्हाई'।

जँभाना—अक० जँभाई लेना।

जभारि—पु० इद्र। अग्नि। वज्र। विष्णु।

ज—पु० [सं०] मृत्युजय। जन्म। पिता। विष्णु। छद शास्त्रानुसार एक गण जिसके आदि और अत के वर्ण लघु और मध्य का गुरु है (।ऽ।)। वि० वेगवान् तेज। जोतनेवाला। प्रत्य० उत्पन्न, जात, जैसे, देशज।

जई—स्त्री० जौ की जाति का अन्न। जौ का छोटा अकुर जो मगलद्रव्य के रूप मे ब्राह्मण, पुरोहित भेंट करते है। अकुर। उन फलो की बतिया जिनमे बतिया के साथ फूल भी रहता है, जैसे कुम्हडे की जई। ⓟवि० दे० 'जयी'।

जईफ—वि० [अ०] बुड्ढा, वृद्ध। **जईफी**—स्त्री० [फा०] बुढापा।

जऊ—क्रि० वि० यद्यपि।

जकंदⓟ—स्त्री० छलाँग, चौकडी, उछाल। ⊙ना—अक० कूदना, उछलना। टूट पडना।

जक—पु० धनरक्षक भूत प्रेत, यक्ष। कजूस आदमी। स्त्री० जिद्द, हठ। धुन, रट। [फा०] पराजय। हानि, घाटा। पराभव, लज्जा। ⊙ना†ⓟ=अक० भौचक्का होना। झक मे बोलना।

जकड—स्त्री० जकडने की क्रिया या भाव। ⊙ना=सक० कसकर बाँधना, कसकर पकडना। अक० तनाव आदि के कारण अगो का हिलने डुलने के योग्य न रह जाना।

जकात—स्त्री० [अ०] दान, खैरात। कर, महसूल।

जकित†ⓟ—वि० चकित, स्तभित।

जक्तगुरु—पु० दे० 'जगद्गुरु'।

जखम—पु० दे० 'जख्म'। मु०~**ताजा या हरा हो आना**=बीते हुए कष्ट का फिर लौट या याद आना।

जखमी—वि० [फा०] जिसे जखम लगा हो, घायल।

जखीरा—पु० [अ०] वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की बहुत सी चीजो का सग्रह हो, खजाना। ढेर, समूह। वह स्थान जहाँ तरह तरह के पौधे और बीज बिकते हो।

जख्म—पु० [फा०] क्षत, घाव। मानसिक दु ख या आघात।

जग—पु० ससार, दुनिया। ससार के लोग, लोक। †ⓟदे० 'यज्ञ'।

जगजग†—वि० चमकीला, प्रकाशित।

जगजगाना†—अक० चमकना, जगमगाना।

जगजोनि—पु० दे० 'जगद्योनि'।

जगड्वाल—पु० [सं०] आडबर। व्यर्थ का आयोजन।

जगण—पु० [सं०] पिंगल मे एक गण जिसमे मध्य का अक्षर गुरु और आदि और अत के लघु होते है, जैसे—महेश।

जगत्—पु० [सं०] विश्व, ससार। वायु। महादेव। जगम। ⊙प्रान=पु० [हिं०] हवा, पवन। **जगदंब जगदंबा**—स्त्री० दे० 'जगदबिका'। **जगदंबिका**—स्त्री० जगत् की माता दुर्गा। **जगदाधार**—पु० ईश्वर। हवा। **जगदीश**—पु० परमेश्वर। विष्णु, जगन्नाथ। **जगदीश्वर**—पु० परमेश्वर। **जगदीश्वरी**—स्त्री० भगवती।

जगद्गुरु—पु० परमेश्वर । शिव । नारद । अत्यंत पूज्य या प्रतिष्ठित पुरुष । शंकराचार्य की गद्दीपर बैठनेवालों की उपाधि । **जगद्धाता**—पु० ब्रह्मा । विष्णु । महादेव । **जगद्धात्री**—स्त्री० दुर्गा, सरस्वती । मातृदेवी । **जगद्योनि**—पुं० शिव । विष्णु । ब्रह्मा । परमेश्वर । पृथ्वी । **जगद्वंद्य**—वि० जिसकी वंदना सारा संसार करे संसार में पूज्य या श्रेष्ठ । **जगन्नाथ**—पुं० जगत् का नाथ, ईश्वर । विष्णु । विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो उड़ीसा के पुरी नामक स्थान में है । **जगन्नियंता**—पु० जगत् का नियंता, परमात्मा । **जगन्माता**—स्त्री० दुर्गा । **जगन्मोहिनी**—स्त्री० दुर्गा । महामाया ।

जगत—स्त्री० कुएँ के चारों ओर बना हुआ चबूतरा । पुं० दे० 'जगत्' । ⊙**सेठ**=पुं० बहुत बड़ा धनी या महाजन ।

जगती—स्त्री० [सं०] संसार, भुवन । पृथ्वी । एक वैदिक छंद ।

जगना—अक० नींद त्यागना, नींद से उठना, जागना । सचेत या सावधान होना । देवी देवता या भूत प्रेत आदि का प्रभाव दिखाई देना । उत्तेजित होना । (आग का) जलना । जगमगाना, चमकना ।

जगबंदⓟ—वि० दे० 'जगद्वंद्य' ।

जगमग, जगमगा—वि० प्रकाशित, जिसपर प्रकाश पड़ता हो । चमकीला, चमकदार ।

जगमगाना—अक० प्रकाश से चमकना, जगमग होना । **जगमगाहट**—स्त्री० जगमगाने का भाव, चमक ।

जगरमगर—वि० दे० 'जगमग' ।

जगह—स्त्री० वह अवकाश जिसमें कोई चीज रह सके, स्थान । मौका । पद, ओहदा, नौकरी । गुंजायश ।

जगात†—पुं० दान, खैरात । महसूल, कर । **जगाती**†—पु० वह जो कर वसूल करे । कर उगाहने का काम ।

जगाना—सक० नींद से उठाना । होश दिलाना, बोध कराना । फिर से ठीक स्थिति में लाना । आग को तेज करना, सुलगाना । यंत्र मंत्र आदि का साधन करना ।

जगार†—स्त्री० जागरण, जाग उठना ।

जगीला†—वि० जागने के कारण अलसाया ।

जग्यउपवीत—पुं० दे० 'यज्ञोपवीत' ।

जघन—पुं० [सं०] कटि के नीचे आगे का भाग, पेड़ू । नितंब, चूतड़ । ⊙**चपला**=स्त्री० कामुक स्त्री । कुलटा । आर्या छंद का एक भेद ।

जघन्य—वि० [सं०] अंतिम, चरम । गर्हित, त्याज्य । निकृष्ट । पु० शूद्र । नीच जाति । पीठ का वह भाग जो पुट्ठे के पास होता है ।

जचना—अक० दे० 'जँचना' ।

जच्चा—स्त्री० प्रसूता स्त्री, वह स्त्री जिसे हाल में बच्चा हुआ हो । ⊙**खाना**=सूतिकागृह, सौरी ।

जच्छ†—पु० दे० 'यक्ष' । ⊙**पति**=पु० यक्षपति । **जच्छेस**—पु० दे० 'यक्षेश्वर' ।

जज—पु० [अं०] न्यायाधीश । **जजी**—स्त्री० जज का पद या काम । जज की कचहरी ।

जजमान—पुं० दे० 'यजमान' ।

जजिया—पुं० [अ०] दंड । एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्यकाल में अन्य धर्मवालों पर लगता था ।

जजीरा—पु० [फा०] टापू, द्वीप ।

जज्जल—वि० दुर्बल, कमजोर ।

जटना—सक० धोखा देकर कुछ लेना, ठगना । ⓟजटना । **जटाना**—सक० [जटना का प्रे०] जटने का काम दूसरे से कराना । †अक० ठगा जाना ।

जटल—स्त्री० गप्प, बकवास ।

जटा—स्त्री० [सं०] आपस में उलझे या गुँथे हुए सिर के बहुत से बड़े बड़े बाल, जड़ के पतले पतले सूत । एक साथ बहुत से रेशे आदि । शाखा । जटामासी । जूट, पाट । केवाँच, कौंछ । वेदपाठ का एक भेद । ⊙**जूट**=पु० बहुत से लंबे बालों का समूह । शिव की जटा । ⊙**धर**=पु० जटाधारी, शिव, महादेव । ⊙**धारी**=वि० जो जटा रखे हो । पुं० शिव, महादेव । मरसे की जाति का एक पौधा, मुर्गकेश ।

जटामासी—स्त्री० एक सुगंधित पदार्थ जो

एक वनस्पति की जड है, बालछड। एक ओषधि।

जटित—वि० [सं०] जडा हुआ।

जटिल—वि० [सं०] जटावाला, जटाधारी। अत्यंत कठिन, दुर्बोध। क्रूर, दुष्ट।

जठर—पु० [सं०] पेट कुक्षि। एक उदर-रोग। शरीर। वि० वृद्ध। कठिन। जठराग्नि—स्त्री० पेट की वह गरमी जिससे अन्न पचता है।

जड—वि० [सं०] जिसमे चेतनता न हो। चेष्टाहीन, स्तब्ध। नासमझ, मूर्ख। ठिठुरा हुआ, अकडा हुआ। शीतल, ठढा। गूंगा। बहरा। जिसके मन मे मोह हो। स्त्री० वृक्षो और पौधो का वह भाग जो जमीन के अदर दबा रहता है और जिसके द्वारा उन्हें जल और आहार पहुँचता है, मूल। नींव, बुनियाद। हेतु, कारण। आधार। ⊙ता = स्त्री० जड होने का भाव या दशा। अचेतना। मूर्खता। साहित्यदर्पण के अनुसार एक सचारी भाव जो किसी घटना के होने पर चित्त के विवेकशून्य होने की दशा मे होता है। स्तब्धता, अचलता। ⊙ताई = स्त्री० [हिं०] मूर्खता, नासमझी। अचेतनता। ⊙त्व = पु० चेतनता का विपरीत भाव, स्वय हिल डोल या किसी प्रकार की चेष्टा न कर सकने का भाव या स्थिति, चेष्टाहीनता। अज्ञता, मूर्खता। मु०~ उखाडना या खोदना = ऐसा नष्ट करना जिसमे फिर अपनी पूर्वस्थिति तक न पहुँच सके। बुराई करना, अहित करना। ~जमाना = दृढ या स्थायी होना। ~पकडना = जमना, दृढ होना।

जड़काला—पु० जाडे का समय, शीतकाल।

जडना—सक० एक चीज को दूसरी चीज मे बैठाना, पच्ची करना। एक चीज को दूसरी चीज मे ठोककर बैठाना। प्रहार करना। चुगली खाना। जडवाना—सक० [जडना का प्रे०] जडने का काम दूसरे से कराना। जड़ाई—स्त्री० जडने का काम या भाव। जडने की मजदूरी। जड़ाऊ—वि० जिसपर नग या रत्न आदि जडे हो। जड़ाना—सक० दे० 'जडवाना'। अक० शीत लगना। जड़ाव—पु० जडने का काम या भाव। जडाऊ काम। जड़ित(पु)—वि० जडा हुआ। जिसमे नग आदि जडे हो। अच्छी तरह बँधा या जकडा हुआ। जड़िया—पु० नग जडने का काम करनेवाला।

जड़हन—पु० वह धान जिसके पौधे एक जगह से उखाडकर दूसरी जगह बैठाए जाते है।

जड़ावर—पु० जाडे मे पहनने के कपडे, गरम कपडे।

जडिमा—स्त्री० [सं०] जडता।

जडी—स्त्री० वह वनस्पति जिसकी जड़ ओषध के काम मे लाई जाय। बिरई। ⊙बूटी = जगली ओषधि।

जडीभूत—वि० [सं०] जो बिलकुल जड के समान हो गया हो, सुन्न, सज्ञारहित।

जड़ुआ—वि० दे० 'जडाऊ'।

जड़ैया†—स्त्री० जूडी का बुखार।

जत†(पु)—वि० जितना, जिस मात्रा का।

जतन(पु)†—पु० दे० 'यत्न'। जतनी—पु० यत्न करनेवाला। चतुर, चालाक।

जतलाना—सक० दे० 'जताना।'

जताना—सक० ज्ञात कराना, बतलाना। पहले से सूचना देना।

जति—वि० जीतनेवाला। पु० दे० 'यति'। जती—पु० दे० 'यती'।

जतु—पु० [सं०] वृक्ष का निर्यास, गोद। लाख, लाह। शिलाजीत। ⊙गृह = पु० घास, फूस लाख आदि शीघ्र जलनेवाले पदार्थो को मिलाकर बने लेप से पलस्तर किया हुआ घर। दुर्योधन द्वारा पाडवो को कुती सहित भस्म करने के लिये बनवाया हुआ इस प्रकार का लाख का घर। कुटी।

जतेक†(पु)—क्रि० वि० जितना, जिस मात्रा का।

जत्था—पु० बहुत से प्राणियो का समूह, गरोह। वर्ग, फिरका।

जत्रु—पु० [सं०] दे० 'हँसली'।

जथा(पु)—क्रि० वि० दे० 'यथा'। पु० दे० 'ज[illegible]'। स्त्री० पूंजी, धन।

जथारथ—अव्य० दे० 'यथार्थ'।
जद†—क्रि० वि० जब, जब कभी। अव्य० यदि।
जदपि—क्रि० वि० दे० 'यद्यपि'।
जदवार—स्त्री० [अ०] दे० 'निर्विषी'।
जदुपति(पु)—पु० दे० 'यदुपति', कृष्ण। **जदुपुर**—पु० मथुरा नगरी। **जदुराई, जदुराज**—पु० श्रीकृष्ण।
जद्द(पु)—वि० ज्यादा। प्रचड, प्रबल।
जद्दपि—क्रि० वि० दे० 'यद्यपि'।
जद्दबद्द—पु० बुरा भला कहना।
जद्दक्षा—दे० 'यदृच्छा'।
जन—पु० [स०] लोक, लोग। प्रजा। सामान्य व्यक्ति, सर्वसाधारण। अनुयायी, अनुचर, दास। समूह, समुदाय। भवन। मजदूरी। सात लोको मे से पाँचवाँ लोक, इहलोक के ऊपर का लोक। ⊙**तत्र** = पु० प्रजातत्र। ⊙**तांत्रिक** = वि०दे० 'प्रजातात्रिक'। ⊙**ता** = स्त्री० जनसमूह, सर्वसाधारण, समाज। मनुष्य जाति, मानव समुदाय। ⊙**पद** = पु० आबाद देश। जिला। बस्ती। समाज। राष्ट्र। राज्य, साम्राज्य। ⊙**प्रिय** = वि० सबसे प्रेम रखनेवाला, सर्वप्रिय। ⊙**रव** = पु० किंवदती, अफवाह। लोकनिंदा, बदनामी। कोलाहल, शोर। ⊙**लोक** = पु० सात लोको मे से एक। ⊙**वाणी** = स्त्री० लोकभाषा। लोगो का कथन। ⊙**वास** = पु० सर्वसाधारण के ठहरने या टिकने का स्थान। सभा, समाज। दे० 'जनवासा'। ⊙ **वासा** = पु० [हिं०] बरात या दूल्हे के ठहरने का स्थान। ⊙**श्रुति** = स्त्री० अफवाह, लोगो मे फैली अप्रमाणिक बात। ⊙**सख्या** = स्त्री० आबादी की कुल सख्या। ⊙**स्थान** = पु० मनुष्यो का निवासस्थान। दडकारण्य का एक प्रदेश।
जनक—पु०[सं०]जन्मदाता। पिता। मिथिला के प्राचीन राजवश की उपाधि। सीता के पिता। ⊙**जा** = स्त्री० महाराज जनक की पुत्री, सीता। ⊙**नंदिनी** = स्त्री० सीता। **जनकात्मजा**—स्त्री० सीता।
जनकौर—पु० जनकपुर। जनक के भाई-बधु।
जनखा—वि० जिसके हाव भाव आदि औरतो के से हो। हीजडा, नपुसक।
जनन—पु० [स०] उत्पत्ति। जन्म। आविर्भाव। तत्र के अनुसार मत्रो के दस सस्कारो मे से पहला। यज्ञ आदि मे दीक्षित व्यक्ति का एक सस्कार। वश, कुल। पिता। परमेश्वर। निर्माता। निर्माण। निमित्त होना। **जनना**—सक० जन्म देना। ब्याना। **जननि**(पु)—स्त्री० दे० 'जननी'। **जननी**—स्त्री० उत्पन्न करनेवाली। माता, माँ। कुटकी। अलता। जनी नाम का गधद्रव्य। **जनर्नेद्रिय**—स्त्री० भग, योनि। लिंग, शिश्न।
जनम—पु० दे० 'जन्म'। ⊙**घूँटी** = वह घूँटी जो बच्चो को जन्म समय से दो तीन वर्ष तक पिलाई जाती है। **मु०**—(**किसी बात का**)~**मे पडना** = जन्म से ही (किसी बात की) आदत पडना। ⊙**ना** = अक० पैदा होना, जन्म लेना। **जनमाना**—सक० प्रसव कराना। पैदा कराना।
जनमेजय—पुं० दे० 'जन्मेजय'।
जनयिता—पुं० [सं०] पैदा करनेवाला, पिता। **जनयित्री**—स्त्री० पैदा करनेवाली, माता।
जनरल—पु० [अ०] फौज का सेनापति। वि० साधारण, आम।
जनवाई—स्त्री० दे० 'जनाई'।
जनवाना—सक० [जनना का प्रे०] प्रसव कराना, बच्चा पैदा कराना। जानकारी दिलवाना, सूचित कराना।
जनहरण—पु० [सं०] एक दडक वृत्त जिसमे ३० लघु के बाद १ गुरु, कुल ३१ वर्णों का प्रत्येक चरण होता है।
जनाई—स्त्री० जनानेवाली, दाई। जनाने की मजदूरी।
जनाउ(पु)†—पु० दे० 'जनाव'।
जनाजा—पु० [अ०] अरथी। वह सदूक जिसमे रखकर लाश को गाडने, जलाने आदि के लिये ले जाते हैं, तावूत। शव, लाश।
जनानखाना—पु० [फा०] मकान या महल

का वह हिस्सा जिसमे पुरुष नही जाते, केवल स्त्रियाँ ही रहती हैं। स्त्रियो के रहने का स्थान, अंतःपुर ।

जनाना—सक०दे०'जनवाना'। उत्पन्न कराना, जनन का काम करना। वि० [फा०] स्त्रियो का, स्त्री सबधी। हीजडा। निर्बल, डरपोक। पु० जनखा, मेहरा। अंतःपुर, जनानखाना। पत्नी, जोरू। ⊙पन पु० [हिं०] स्त्रीत्व। स्त्री जैसे हावभाव, नामर्दी। स्त्रैणता।

जनाब—पु० [अ०] बडो के लिये आदर-सूचक शब्द, महाशय।

जनार्दन—पु० [सं०] विष्णु।

जनाव†—पु० जनाने की क्रिया या भाव, सूचना, इत्तला।

जनावर†—पु० दे० 'जानवर'।

जनाश्रय(पु)—पु० [सं०] धर्मशाला, सराय। घर, मकान।

जनि—स्त्री० [सं०] उत्पत्ति, जन्म, पैदाइश। नारी, स्त्री। माता। जनी नामक गंध द्रव्य। भार्या, पत्नी। जन्मभूमि। (पु)† अव्य० [हिं०] मत, नही।

जनिता—पु० उत्पन्न करनेवाला। पिता।

जनित्री—स्त्री० पैदा करनेवाली माता, माँ।

जनियाँ(पु)—स्त्री० प्रियतमा, प्रिया, प्रेयसी।

जनी—स्त्री० औरत, स्त्री। दासी, अनुचरी। माता। कन्या, पुत्री। एक गंधद्रव्य। वि० स्त्री० उत्पन्न या पैदा की हुई।

जनु—क्रि० वि० मानो (उत्प्रेक्षावाचक)।

जनून—पु० [अ०] पागलपन। **जनूनी**—पु० पागल।

जनेऊ†,**जनेव**†—**पुं०** यज्ञोपवीत। यज्ञोपवीत सस्कार।

जनेत—स्त्री० वरयात्रा, बरात।

जनैया—वि० जाननेवाला।

जनो—क्रि० वि० मानो।

जन्म—**पुं०** [सं०] गर्भ से बाहर आना, उत्पत्ति। अस्तित्व मे आना, आविर्भाव। जीवन। जीवनकाल (जैसे, जन्म भर)। ⊙**कुंडली** = स्त्री० चक्र जिससे किसी के जन्म के समय मे ग्रहो की स्थिति, दिन, तिथि, सवत् आदि का पता चले, जन्म-पत्र (फलित ज्योतिष)। ⊙**तिथि** = स्त्री० दे० 'जन्म दिन'। ⊙**दिन** = **पुं०** जन्म का दिन, वर्षगाँठ। ⊙**पत्र** = **पुं०** जन्म-पत्री। ⊙**पत्री** = स्त्री०[हिं०] वह पत्र या खर्रा जिसमे किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहो की स्थिति, वार तिथि, सवत् आदि का ब्योरा रहता है। ⊙**भूमि** = स्त्री० वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो। ⊙**सिद्ध** = वि० जिसकी सिद्धि जन्म से हो ही। जन्म मात्र से प्राप्त। ⊙**स्थान** = पु० जन्मभूमि।

जन्मांतर—पु० दूसरा जन्म। **जन्माष्टमी**—स्त्री० भादो कृष्णाष्टमी, जिस दिन भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का जन्म हुआ था।

जन्मोत्सव—पु० किसी के जन्म का उत्सव। किसी महापुरुष के जन्म की तिथि पर मनाया जानेवाला महोत्सव, दान, जप, पूजा, पाठ आदि। मु० ~**लेना** = पैदा होना। ~**हारना** = व्यर्थ जन्म खोना। दूसरे का दास होकर रहना।

जन्मना—अक० जन्म लेना। अस्तित्व में आना।

जन्मा—**पुं०** वह जिसका जन्म हो। (के० समा० के अंत मे, जैसे, शरजन्मा, नेत्र-जन्मा)। वि० जो पैदा हुआ हो, उत्पन्न।

जन्माना—सक० [जन्मना का स० रूप] उत्पन्न करना, जन्म देना।

जन्य—पु० [सं०] जनसाधारण। अफवाह, खबर। राष्ट्र, किसी एक देश के वासी। लडाई, युद्ध। पुत्र। पिता। जन्म। बाजार,हाट। दूल्हे का साथी (छोटा भाई), बच्चा आदि। वि० जन सबधी। किसी जाति, देश या राष्ट्र से सबध रखनेवाला। राष्ट्रीय, जातीय। जो उत्पन्न हुआ हो।

जन्हु—पु० दे० 'जह्नु'।

जप—पु० [सं०] किसी मत्र या वाक्य को बार-बार धीरे धीरे या मन ही मन मे दुहराना। पूजा आदि मे मत्र की सख्या-पूर्वक मूक या मद स्वर मे आवृत्ति। ⊙**तप** = सध्या, पूजा, जप, पाठ आदि, पूजापाठ। ⊙**ना** = सक० [हिं०] किसी नाम, मत्र या स्तोत्र आदि का मद स्वर मे बारबार उच्चारण। सध्या, यज्ञ या पूजा आदि के समय संख्यानुसार बारबार

मद उच्चारण से आवृत्ति करना। †खा जाना, ले लेना। ⊙माला = स्त्री० वह माला जिसे लेकर लोग जप करते है। जपनी—स्त्री० [हिं०] माला। गोमुखी, गुप्ती। वह वस्तु जिसके सहारे जप किया जाय। जपनीय—वि० जप करने योग्य। जपिया, जपी—वि० जप करनेवाला।
जपा—स्त्री० [सं०] जवा, अडहुल। पु० जपनेवाला।
जप्त—वि० दे० 'जब्त'।
जफा—स्त्री० [फा०] सख्ती, जुल्म।
जफील—स्त्री० सीटी का शब्द। वह जिससे सीटी बजाई जाय, सीटी।
जब—क्रि० वि० जिस समय, जब कभी। ⊙जब = जिस जिस समय, जिस वक्त। ⊙तब = कभी कभी। ~देखो तब = सदा।
जबड़ा—पु० मुँह मे दोनो ओर ऊपर नीचे की वे हड्डियाँ जिनमे डाढें जडी रहती हैं, कल्ला।
जबर—वि० [फा०] बली, ताकतवर। मजबून। ⊙ई = स्त्री० [हिं०] अन्याय, अत्याचार, सख्ती, ज्यादती। ⊙दस्त = वि० बलवान्, बली, शक्तिवाला। दृढ, मजबूत। ⊙दस्ती = स्त्री० जियादती, अन्याय। क्रि० वि० बलपूर्वक। ⊙न = क्रि० वि० दे० 'जब्रन'। जबरा—वि० [हिं०] बलवान्। पु० घोडे और गधे के मध्य का एक बहुत सुदर जानवर जिसके चमडे पर काली सफेद धारियाँ पडी रहती है।
जबह—पु० [अ०] गला काटकर प्राण लेने की क्रिया।
जबहा—पु० जीवट, साहस।
जबान—स्त्री० [फा०] जीभ, जिह्वा। बात, बोल। प्रतिज्ञा। भाषा, बोलचाल। ⊙दराज = वि० धृष्टतापूर्वक अनुचित बातें करनेवाला। ⊙बदी = किसी घटना के सबध मे लिखा जानेवाला इजहार या गवाही जिसके बाद कहनेवाला अपने वक्तव्य को तोडमरोड या बदल नही सकता, किसी को अपनी बात मे परिवर्तन करने के अवसर का अभाव। मौन, चुप्पी। बद⊙ = गुस्ताख, अशिष्टभाषी। बर⊙ = कठस्थ। ब⊙ - बहुत सीधा। मु० ~ खींचना = धृष्टतापूर्ण बातें करने के लिये कठोर दड देना। ~पकड़ना = बोलने न देना, कहने से रोकना। ~पर आना = मुँह से निकलना। ~मे लगाम न होना = सोच-समझकर बोलने के अयोग्य होना। ~हिलाना = मुँह से शब्द निकालना। दबी ~से बोलना या कहना = साफ साफ न कहना।
जबानी—वि० जो केवल जबान से कहा जाय, किया न जाय। मुँह से कहा हुआ।
जबून—वि० [तु०] बुरा, खराब।
जब्त—पु० [अ०] अधिकारी या राज्य द्वारा दडस्वरूप सपत्ति का हरण। सहन। जब्ती—स्त्री० जब्त होने की क्रिया।
जब्र—पुं० [अ०] ज्यादती, सख्ती। जब्रन—क्रि० वि० बलात्, जबरदस्ती।
जभी—क्रि० वि० जिस समय ही। ज्यो ही।
जम—पु० दे० 'यम'। ⊙कात, ⊙कातर (पु) = पुं० पानी का भँवर। स्त्री० यम का छुरा या खाँडा। ⊙घट = पुं० दे० 'यमघट'। मनुष्यो की भीड, ठट्ठ। ⊙ज = वि० दे० 'यमज'। ⊙जई = स्त्री० मृत्यु। ⊙डाढ = स्त्री० कटारी की तरह एक हथियार। ⊙धर, ⊙धरि = पुं० दे० 'यमडाढ'। ⊙राज = पु० दे० 'यमराज'। ⊙वार (पु) = पु० यमराज का दरवाजा।
जमन (पु)—पु० दे० 'यवन'।
जमनका (पु)—स्त्री० यवनिका। काई। मैल।
जमना—अक० तरल पदार्थ का ठोस या गाढा हो जाना। दृढतापूर्वक बैठना। स्थिर होना निश्चल होना। एकत्र होना। हाथ से होनेवाले काम का पूरा पूरा अभ्यास होना। बहुत से आदमियो के सामने होनेवाले किसी काम का उत्तमता से होना, जैसे गाना जमना, खेल जमना। किसी व्यवस्था या काम का अच्छी तरह चलने योग्य हो जाना। अक० उगना, उपजना। (पु) स्त्री० दे० 'यमुना'।

जमवट—स्त्री० लकडी का वह गोल चक्कर जो कुआँ बनाने मे भगाड मे रखा जाता है।

जमा—वि० [अ०] सग्रह किया हुआ। सब मिलाकर। जो अमानत के तौर पर या किसी खाते में रखा गया हो। स्त्री० पूंजी। रुपया पैसा। भूमिकर, मालगुजारी, लगान। जोड (गणित)। ⊙खर्च = पु० आय और व्यय। ⊙बंदी = स्त्री० [फा०] पटवारी का एक कागज जिसमे असामियो के लगान की रकमे लिखी जाती है। ⊙मार = वि० [हि०] दूसरो का धन दबा रखने या ले लेनेवाला।

जमाई—पुं० दामाद, जँवाई। स्त्री० जमने या जमाने की क्रिया या भाव।

जमात—स्त्री० मनुष्यो का गरोह या जत्था। कक्षा, दर्जा। **जमाति**—स्त्री० दे० 'जमात'।

जमादार—पु० [फा०] सिपाहियो या पहरेदारो आदि का प्रधान।

जमानत—स्त्री० [अ०] वह जिम्मेदारी जो जबानी, कोई कागज लिखाकर अथवा कुछ रुपया जमा करके ली जाती है, जामिनी। ⊙नामा = पुं० [फा०] वह कागज जो जमानत करते समय लिखा जाता है।

जमाना—पुं० [फा०] समय, वक्त। बहुत अधिक समय। प्रताप या सौभाग्य का समय। दुनियाँ, ससार। ⊙साज = वि० जो लोगो का रग ढग देखकर व्यवहार करता हो। मु०~देखा होना = अनुभवी होना। सक० [जमना का सक०] किसी तरल पदार्थ को गाढा या ठोस बनाना, किसी पदार्थ को दृढतापूर्वक बैठाना। जड मजबूत करना। अच्छी प्रकार चलने योग्य बनना (व्यापार, स्कूल, आदि को)। हाथ से होनेवाले काम का अभ्यास करना। प्रहार करना, चोट लगाना।

जमालगोटा—पुं० एक पौधे का बीज जो अत्यत रेचक होता है।

जमाव—पुं० जमाने का भाव। जमने का भाव। **जमावट**—स्त्री० जमने का भाव। **जमावडा**—पु० लोगो का समूह, भीड।

जमींकंद—पुं० सूरन, ओल।

जमींदार—पुं० [फा०] जमीन का मालिक। अँगरेजी राज्यकाल मे जमीन का मालिक जो किसानो को लगान पर जमीन देता था। **जमींदारी**—स्त्री० [फा०] जमींदार की जमीन। जमींदार का पेशा, पद या कार्य।

जमींदोज—वि० [फा०] जो तोड फोडकर गिरा दिया गया हो (मकान), विनष्ट।

जमी—वि० सयम करनेवाला, यमी।

जमीन—स्त्री० [फा०] पृथ्वी (ग्रह)। पृथ्वी का ऊपरी ? म भाग, धरती। मिट्टी। कपडे आदि की सतह जिसपर बेलबूटे आदि बने हो। आधार सामग्री। चित्र आदि लिखने के लिये मसाले से तैयार की हुई सतह। भूमिका, आयोजन। मु०~आसमान एक करना = अत्यधिक दौडधूप करना। हलचल मचा देना। ~आसमान का फरक = बहुत अधिक अतर, बहुत बडा फरक। आसमान के कुलावे मिलाना = बहुत डीग हाँकना। ~चूमना = मुंह के बल गिरना। ~देखना = गिर पडना, पटका जाना। नीचा देखना। ~पर पाँव या पैर न रखना = बहुत गर्व करना। ~बाँधना = अस्तर या मसाला लगाकर चित्र के लिये सतह तैयार करना।

जमुकना[1]—अक० पास पास होना, सटना।

जमुर्रद—पुं० [फा०] पन्ना, रत्न।

जमुहाना†—अक० दे० 'जँभाना'।

जमूडा—पुं० एक प्रकार की सँडसी।

जमूरक—पुं० एक छोटी तोप।

जमूरा—†पुं० एक छोटी तोप। एक प्रकार की सँडसी।

जमोग†—पुं० जमोगने की क्रिया या भाव।

जमोगना†—सक० हिसाब किताब की जाँच करना। स्वय उत्तरदायित्व से मुक्त होने के लिये दूसरे को भार सौंपना, सरेखना। तसदीक करना। बात की जाँच कराना।

जमौआ—वि० जमाकर बनाया हुआ, जैसे जमौआ कवल।

जम्हाई—स्त्री० आलस्य के कारण श्वास लेने तथा छोडने की एक सहज क्रिया। उबासी।

जम्हाना—अक० दे० 'जँभाना'।

जयत—वि० [सं०] विजयी। बहुरुपिया। पुं० रुद्र। इद्र के पुत्र उपेंद्र का नाम। स्कद, कार्तिकेय। **जयंती**—स्त्री० [सं०] ध्वजा,

पताका। हलदी। दुर्गा। पार्वती। किसी की जन्मतिथि पर होनेवाला उत्सव। एक बडा पेड, जैत या जैंता। वैजती का पौधा। जौ के छोटे पौधे जिन्हे विजयादशमी के दिन ब्राह्मण यजमानो को भेट करते है, जई। वि० स्त्री० [सं०] जय करनेवाली।

य—स्त्री०[सं०] युद्ध, विवाद आदि मे विपक्षियो का पराभव, जीत। विष्णु के एक पार्षद का नाम। महाभारत का पूर्वनाम। जयती। जैत का पेड। लाभ। अयन। ⊙करी = स्त्री० चौपाई छद। ⊙जयकार = स्त्री० किसी की जय मनाने का घोष। ⊙जीव(पु) = पुं० [हिं०] एक प्रकार का अभिवादन या प्रणाम जिसका अर्थ है—जय हो और जिओ। ⊙पत्र = पुं० वह पत्र जो पराजित पुरुष अपने पराजय के प्रमाण मे विजयी को लिख देता है। ⊙पाल = पु० जमालगोटा। विष्णु। राजा। ⊙मगल = पु० हाथी जिसपर राजा विजय करने के उपरात सवार होकर निकले। राजा की सवारी का हाथी। ताल के साठ भेदो मे से एक। ⊙मार, ⊙मारा = स्त्री०[हिं०] दे० 'जयमाल'। ⊙माल = स्त्री० [हिं०] वह माला जो विजयी को पहनाई जाय। वह माला जिसे स्वयवर के समय कन्या वरे हुए पुरुष के गले मे डालती थी। ⊙सील = वि० [हिं०] विजयी, जयशाली। पु० विजय का स्मारक, स्तभ या धरहरा। मु०~मनाना = विजय की कामना करना, समृद्धि चाहना।

जयति—अव्य० [सं०] जय हो।

जयना(पु)†—अक० जीतना।

जया—स्त्री०[सं०] वि० जय दिलानेवाली। जयकारिणी। दुर्गा। पार्वती। हरी दूब। अरणी वृक्ष। जैत का पेड। हरीतकी, हड। ध्वजा। गुडहल का फूल। जयी—वि० विजयी, जयशील।

जर(पु)—पु० वृद्धावस्था। पु० दे० 'ज्वर'। स्त्री० दे० जड। पु० [फा०] सोना, स्वर्ण। धन। ⊙कस, ⊙कसी(पु) = वि० जिसपर सोने के तार आदि लगे हो। ⊙तार(पु) = पु० सोने या चाँदी आदि का तार, जरी। ⊙तारी = स्त्री० [हिं०] जरी के काम से युक्त साडी।

जरना(पु)†—अक० दे० 'जलना'। सक० दे० 'जडना'।

जरकटी—पु० एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

जरखेज—वि० [फा०] उपजाऊ (जमीन)।

जरठ—वि० [सं०] कर्कश, कठिन। वृद्ध। जीर्ण, पुराना।

जरतुस्त—पु० दे० 'जरदुस्त'।

जरत्—वि० [सं०] बुड्ढा। पुराना।

जरद—वि० पीला, पीत। जरदी—स्त्री० पीलापन। अडे के भीतर का पीला चेप।

जरदा—पुं० चावलो का एक व्यजन। पान मे खाने की सुगधित सुरती। पीले रग का घोडा।

जरदालू—पु० [फा०] खुबानी।

जरदुस्त—पु० [फा०] पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता आचार्य।

जरदोज—पुं० [फा०] जरदोजी का काम करनेवाला व्यक्ति। जरदोजी—स्त्री० वह दस्तकारी जो कपडो पर सलमे सितारे आदि से की जाती है।

जरन, जरनि(पु)—स्त्री० दे० 'जलन'।

जरनल—पुं० [अँ०] विविध सस्थाओ या विभागो के विशेष दैनिक या सामयिक पत्र।

जरनैल—पुं० दे० 'जनरल'।

जरब—स्त्री० [अ०] आघात, चोट। गुणा (गणित)।

जरबाफ—पु० [फा०] सोने के तारो से कपडे पर बेल बूटे बनानेवाला। जरबाफी—वि० जिसपर कलाबत्तू का काम बना हो। स्त्री० जरदोजी।

जरबफ्त—पु० [फा०] वह रेशमी कपडा जिसमे कलाबत्तू के बेलबूटे हो।

जरबीला(पु)†—वि० भडकीला और सुदर।

जरमन—पु० [अ०] जरमनी का निवासी। स्त्री० जरमनी की भाषा। वि० जरमनी का। ⊙सिलवर = पुं० एक धातु जो जस्ते, ताँबे और निकल के सयोग से बनती है।

जरांकुश—पु० मूंज के प्रकार की एक सुगंधित घास ।

जरवारा(पु)—वि० धनी, संपन्न ।

जरा—स्त्री० [सं०] बुढ़ापा । वि० थोड़ा, कम । क्रि० वि० [फा०] थोड़ा, कम । ⊙ग्रस्त = वि० बुड्ढा, वृद्ध ।

जराअत—स्त्री० [अ०] खेतीबारी ।

जराना—सक० दे० 'जलाना' ।

जरायु—पु० [सं०] झिल्ली जिसमें बच्चा लिपटा हुआ उत्पन्न होता है । गर्भाशय । ⊙ज = पुं० वह प्राणी जो जरायु में लिपटा हुआ गर्भ से उत्पन्न हो । पिंडज का एक भेद ।

जराव(पु)†—वि० दे० 'जड़ाऊ' ।

जरिया(पु)†—पुं० दे० 'जड़िया' । वि० जो जलाकर बनाया गया हो, जैसे जरिया नमक । पु० [अ०] संबंध, लगाव । हेतु, कारण । साधन, सिलसिला ।

जरी—स्त्री० [फा०] ताश नामक कपड़ा जो बादले से बुना जाता है । सोने के तारों आदि से बना हुआ काम ।

जरीब—स्त्री० [फा०] वह जंजीर जिससे भूमि नापी जाती है ।

जरीवाना†—पु० दे० 'जुरमाना' ।

जरूर—क्रि० वि० [अ०] अवश्य, निःसंदेह । जरूरत—स्त्री० आवश्यकता, प्रयोजन । जरूरी—वि० [फा०] जिसके बिना काम न चले, प्रयोजनीय । जो अवश्य होना चाहिए ।

जरोट(पु)†—वि० जड़ाऊ ।

जर्क बर्क—वि० भड़कीला, चमकीला ।

जर्जर—वि० [सं०] जीर्ण, जो पुराना होने के कारण बेकाम हो गया हो । टूटा फूटा, खंडित । वृद्ध, बुड्ढा । जर्जरित—वि० दे० '[illegible]र' ।

जर्द—वि० [फा०] पीला, पीत । जर्दी—स्त्री० पीलापन ।

जर्दा—पु० [फा०] दे० 'जरदा' ।

जर्नल—पु० दे० 'जरनल' ।

जर्रा—पु० [अ०] बहुत छोटा टुकड़ा ।

जर्राह—पुं० [अ०] चीर फाड़ के द्वारा चिकित्सा करनेवाला, शस्त्रचिकित्सक ।

जलंधर—पु० [सं०] एक राक्षस जिसका वध विष्णु ने किया था । दे० 'जलोदर' ।

जल—पु० [सं०] पानी । उशीर, खस । पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र । गंधबाला । ⊙अलि = पुं० पानी का एक काला कीड़ा, भँवरा, भौतुआ । ⊙कर = पुं० जलाशयों की उपज, जैसे मछली सिंघाड़ा आदि । नदी, नाला, तालाब या समुद्र के पानी का पीने के अतिरिक्त उपभोग करनेवाले से लिया जानेवाला कर । ⊙कल = स्त्री० [हिं०] पानी देनेवाली कल । नगर में पानी की व्यवस्था करनेवाला विभाग । आग बुझानेवाला दमकल । ⊙क्रीड़ा = स्त्री० वह क्रीड़ा जो नदी, जलाशय आदि में की जाय । ⊙खावा = पुं० [हिं०] दे० 'जलपान' । ⊙घड़ी = स्त्री० [हिं०] समय जानने का एक प्राचीन यंत्र जिसमें नाँद में भरे जल पर एक महीन छेद की कटोरी के भरकर डूब जाने पर एक प्रहर या एक घंटा माना जाता था । ⊙चर = पुं० पानी में रहनेवाले जंतु । ⊙चरी = स्त्री० मछली । जलचर होने की क्रिया या भाव । ⊙चादर = स्त्री० [हिं०] जल का फैला हुआ पतला प्रवाह । ⊙चारी = पु० दे० 'जलचर' । ⊙ज = वि० जो जल में उत्पन्न हो । पुं० कमल । शंख । मछली । जलजंतु । मोती । ⊙जा = स्त्री० लक्ष्मी । ⊙जात = वि० जलज । जल में उत्पन्न । पु० कमल । ⊙जान = पुं० [हिं०] जहाज । ⊙डमरूमध्य = पुं० [हिं०] दो बड़े समुद्रों को जोड़नेवाला पतला समुद्र (भूगोल) । ⊙तरंग = पुं० एक बाजा जो जल से भरी कटोरियों को एक क्रम से रखकर दो लकड़ियों से बजाया जाता है । ⊙त्रास = वह भय जो कुत्ते, शृगाल आदि जीवों के काटने पर जल देखने से उत्पन्न होता है । ⊙थंभ(पु) = पुं० दे० 'जलस्तंभ' । ⊙द = वि० जल देनेवाला । पुं० मेघ, बादल । मोथा । कपूर । ⊙दस्यु = पुं० समुद्री डाकू । ⊙दागम = पुं० वर्षा ऋतु का आरंभ । बादलों का घिरना । ⊙दाता =

वि० ऋषियों और पितरों को मन्त्रपूर्वक जल प्रदान करके सन्तुष्ट करनेवाला। ⊙धर = पुं० बादल। मुस्ता। समुद्र। ⊙धरमाला = स्त्री० बादलों का समूह। बारह अक्षरों का वह वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, भगण सगण और मगण हो तथा चौथे वर्ण पर यति और बारहवें पर विराम हो। ⊙धरी = स्त्री० [हिं०] वह अर्घा जिसमें शिवलिंग रहता है, जलहरी। ⊙धारा = स्त्री० पानी का प्रवाह पानी की धार। जलधारा के नीचे बैठे रहने की तपस्या। पुं० बादल, मेघ। ⊙धि = पुं० समुद्र। एक अर्ब। महापद्म। ⊙निधि = पुं० समुद्र। ⊙पक्षी = पुं० वह पक्षी जो मुख्यत जल के पास रहता हो। ⊙पाटल = पुं० काजल। ⊙पान = पुं० थोड़ा और हलका भोजन, नाश्ता। ⊙पीपल = स्त्री० पीपल के आकार की एक प्रकार की औषधि। ⊙प्रपात = पुं० किसी नदी आदि का ऊँचे पहाड़ से नीचे गिरना, झरना, प्रपात। ⊙प्रवाह = पुं० पानी का बहाव। नदी में शव आदि को बहा देने की क्रिया। ⊙प्लावन = पुं० पानी की बाढ़ जिससे आस पास की भूमि जल में डूब जाय। जल से होनेवाला ध्वंस या संहार। एक प्रकार का प्रलय जब समस्त पृथ्वी जलमग्न हो जाती है। ⊙बेत = पुं० [हिं०] जलाशयों के किनारे जमनेवाला बेत। ⊙भँवर = पुं० [हिं०] एक काला कीड़ा जो पानी पर शीघ्रता से दौड़ता है, भौंतुवा। ⊙मानुष = पुं० परीरु नामक कल्पित जलजंतु जिसकी नाभि से ऊपर का भाग मनुष्य का सा और नीचे का मछली के समान बतलाया जाता है। ⊙यान = पुं० वह सवारी जो जल में काम आती हो, जैसे नाव, जहाज आदि। ⊙राशि = पुं० समुद्र। ⊙रुह = पुं० कमल। ⊙वर्त = पुं० दे० 'जलावर्त'। ⊙शायी = पुं० विष्णु। ⊙सेना = स्त्री० समुद्र में जहाजों पर लड़नेवाली फौज। ⊙स्तंभ = पुं० एक भौतिक घटना जिसमें जलाशयों या समुद्र के ऊपर पानी का एक मोटा स्तंभ सा बन जाता है, सूँडी। ⊙स्तंभन = पुं० मंत्रादि से जल की गति रोकना। ⊙हर = वि० [हिं०] जलमय, जल से भरा। पुं० जलाशय। ⊙हरी = स्त्री० [हिं०] अर्घा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है। मिट्टी का जलभरा घड़ा जो छेद करके शिवलिंग के ऊपर टाँगा जाता है। **जलांजलि**—स्त्री० मृत को दी जानेवाली जल की अंजलि। **जलातंक**—पुं० दे० 'जलत्रास'। **जलाधिप, जलेश**—पुं० वरुण। समुद्र। **जलावर्त**—पुं० पानी का भँवर नाल। एक प्रकार का मेघ। **जलाशय**—पुं० वह स्थान जहाँ पानी एकत्र हो, जैसे तालाब, नदी। **जलाहल**—वि० [हिं०] जलमय। **जलेचर**—वि० दे० 'जलचर'। **जलोदर**—पुं० एक रोग जिसमें पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी एकत्र होने से पेट फूल जाता है। **जलौका**—स्त्री० जोंक।

जलजला—पुं० [फा०] भूकंप।

जलन—स्त्री० जलने की पीड़ा या दुःख, दाह। बहुत अधिक ईर्ष्या, डाह।

जलना—अक० दग्ध होना, बलना। आँच के कारण भाप या कोयले आदि के रूप में हो जाना। आँच लगने के कारण किसी अंग का पीड़ित होना, झुलसना। ईर्ष्या या द्वेष आदि के कारण कुढ़ना। मु०—**जलती आग में कूदना** = जान बूझकर विपत्ति में फँसना। **जले पर नमक छिड़कना** = किसी दुःखी या व्यथित मनुष्य को और दुःख देना। **जली कटी बात** = लगती हुई बात, कटु बात जो द्वेष डाह या क्रोध आदि के कारण कही जाय। **जल भुनकर राख, खाक, कोयला या कबाब होना** = ईर्ष्या, क्रोध या दोनों में बुरी तरह होना। **जलना भुनना** = कुढ़ना।

जलप—पुं० ध्वनि। बौछार। ⊙**ना** = अक० लंबी चौड़ी बातें करना। बकवाद करना।

जलसा—पुं० [अ०] आनंद, उत्सव। सभा, समिति आदि का बड़ा अधिवेशन।

जलहरण—पुं० बत्तीस अक्षरों का दंडक वृत्त जिसके अंत में दो लघु होते हैं। इसमें

१६वे वर्ण पर यति और अत मे विराम होता है। अतिम गुरु वर्ण भी लघु ही माना जाता है।

जलाक—पु० पेट की ज्वाला। लू।

जलाजल—पु० झालर, झलाझल।

जलाटीन—पु० दे० 'जिलाटीन'।

जलातन—वि० क्रोधी। ईर्ष्यालु।

जलाद(पु)—पु० दे० 'जल्लाद'।

जलाना—सक० आग लगाना, भस्म करना। किसी पदार्थ को आँच से भाप या कोयले आदि के रूप मे करना। झुलसाना। किसी के मन मे सताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना।

जलापा—पु० डाह या ईर्ष्या की जलन।

जलावन—पु० ईंधन। किसी वस्तु का वह अश जो तपाए या जलाए जाने पर जल जाता है।

जलील—वि० [अ०] तुच्छ, नीच। जिसने नीचा देखा हो, अपमानित।

जलूस—पु० [अ०] बहुत से लोगो का समारोह से किसी सवारी या प्रदर्शन के साथ प्रस्थान।

जल्द—क्रि० वि० [फा०] शीघ्र। तेजी से।

जल्दी—स्त्री० शीघ्रता, फुरती। †क्रि० वि० दे० 'जल्द'।

जल्प—पु० [स०] कहना। बकवाद। ⊙क = वि० बकवादी, वाचाल। ⊙न = पु० बकवाद, प्रलाप। डीग। ⊙ना = अक० [हिं०] बकवाद करना, डीग मारना।

जल्लाद—पु० [अ०] प्राणदड पाए हुए अपराधियो का वध करने पर नियुक्त पुरुष। क्रूर व्यक्ति।

जव—पु० दे० 'जौ'।

जवनिका—स्त्री० दे० 'यवनिका'।

जवांमर्द—वि० [फा०] शूरवीर, बहादुर।

जवा—स्त्री० दे० 'जपा'। पु० लहसुन का दाना।

जवाई†—स्त्री० जाने की क्रिया या भाव। गमन।

जवाखार—पु० जौ के क्षार का नमक।

जवादि—पु० एक सुगधित द्रव्य जो गधबिलाव के शरीर से निकलता है।

जवान—वि० [फा०] तरुण। बहादुर। पु० सिपाही, योद्धा। वीर पुरुष।

जवानी—स्त्री० [स०] अजवायन। स्त्री० [फा०] यौवन, तरुणाई। मु०~उतरना या ढलना = उमर ढलना, बुढापा आना। ~चढना = यौवन का आगमन होना। मदमत्त होना।

जवाब—पु० [अ०] किसी प्रश्न या बात के समाधान के लिये कही हुई बात, उत्तर। बदला। मुकाबले की चीज, जोड। नौकरी छूटने की आज्ञा। इन्कार। ⊙दार, ⊙देह = वि० [फा०] उत्तरदाता। जिम्मेदार। **जवाबी**—वि० [फा०] जिसका जवाब देना हो। बदले मे। **जवाबी पोस्टकार्ड** = एक साथ लगे दो पोस्टकार्ड जिनमे एक जवाब के लिये भेजा जाता है।

जवार(पु)—पु० दे० 'जवाल'।

जवारा—पु० जौ के हरे अकुर, जई।

जवारी—स्त्री० जौ, छुहारे और मोतियो आदि से गुँथा हुआ हार।

जवाल—पु० अवनति, घटाव। जजाल, आफत।

जवास, जवासा—पु० एक प्रकार का कँटीला पौधा जिसके पत्ते सूख जाते है।

जवाहर—पु० [अ०] रत्न, मणि। **जवाहरी**—पु० दे० 'जौहरी'। **जवाहिर**—पु० दे० 'जवाहर'।

जवैया†—वि० जानेवाला, गमनशील।

जशन—पु० [फा०] उत्सव, जलसा। आनद, हर्ष। नाच गाना।

जष्टमुष्ट—पु० लाठी और मुक्का।

जस(पु)†—क्रि० वि० जैसा। †पु० दे० 'यश'।

जसन—पु० दे० 'जशन'।

जसोदा, जसोवै—स्त्री० दे० 'यशोदा'।

जस्ता—पु० खाकी रग की एक धातु।

जहँ—क्रि० वि० दे० जहाँ।

जहँडना, जहँडाना†—अक० घाटा उठाना। धोखे मे आना।

जहदम—पु० दे० 'जहन्नुम'।

जहतिया†—पु० जगात या लगान वसूल करनेवाला।

जहत्स्वार्था—स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसके पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को त्यागकर उपलक्षण मात्र रह जाते है, जैसे गगा मे घर है।

जहदजहल्लक्षणा—स्त्री० [सं०] लक्षणा का

वह प्रकार जिसमे शब्दो के कई भावो मे से प्रसगानुकूल भाव ही ग्रहण किया जाता है।

जहदना—अक० कीचड होना। थक जाना।

जहदा—पु० दलदल।

जहद्दम(प)—पु दे० 'जहन्नुम'।

जहना(प)†—सक० त्यागना। छोडना। नाश करना।

जहन्नुम—पु० [अ०] नरक। वह स्थान जहाँ बहुत अधिक दुख या कष्ट हो। मु०~**मे जाय** = चूल्हे मे जाय, हमसे कोई सबध नही।

जहमत—स्त्री० [अ०] मुसीबत, आफत। झझट, बखेडा।

जहर—स्त्री० [अ०] विष। अप्रिय बात या काम। वि० मार डालनेवाला। बहुत अधिक हानि पहुँचानेवाला। पु दे० 'जौहर'। ⊙**बाद** = पु० [फा०] एक प्रकार का बहुत भयकर और विषैला फोडा। ⊙**मोहरा** = [फा०] एक काला पत्थर जिसमे साँप का विष दूर करने का गुण माना जाता है। हरे रग का एक विषघ्न पत्थर। मु०~**उगलना** = मर्मभेदी या कटु बात कहना। ~**करना या कर देना** = बहुत अधिक अप्रिय या असह्य कर देना। ~**का घूँट पीना** = किसी अनुचित असह्य बात को देखकर क्रोध को मन मे दबा रखना। ~**की पुड़िया** = बडा उपद्रवी या अनर्थ करनेवाला। ~**का बुझाया हुआ** = बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट। जहरी जहरीला—वि० जिसमे जहर हो।

जहल्लक्षणा—स्त्री० दे० 'जहत्स्वार्था'।

जहाँ—क्रि० वि० जिस स्थान पर। जैसे ही। पु० [फा०] जहान, ससार। ⊙**तहाँ** = इतस्तत, इधर उधर। सब जगह। ⊙**पनाह** = पुं० [फा०] ससार का रक्षक (बादशाहो का सबोधन)। मु०~**का तहाँ** = जिस जगह पर हो, उसी जगह पर।

जहाँगीरी—स्त्री० [फा०] हाथ मे पहनने का एक जड़ाऊ गहना। एक प्रकार की चूडी।

जहाज—पुं० [अ०] समुद्र मे चलनेवाली बडी नाव। मु० ~**का कौवा, काग या पछी** = दे० 'जहाजी कौवा'। जहाजी—वि० [अ०] जहाज से सबध रखनेवाला। **जहाजी कौआ** = वह कौवा जो जहाज के समुद्र मे निकल जाने पर और कही शरण न पाकर फिर फिर उसी जहाज पर आता है। ऐसा मनुष्य जिसे दूसरा ठिकाना न हो।

जहान—पुं० [फा०] ससार लोक।

जहालत—स्त्री० [अ०] अज्ञान।

जहिया(प)†—क्रि० वि० जिस समय, जब।

जहीं(प)†—अव्य० जहाँ ही, जिस स्थान पर। दे० 'ज्योंही'।

जहीन—वि० [अ०] समझदार। धारणा-शक्तिवाला।

जह्नु—पु० [स०] [हिं० वं० जन्हु] विष्णु। एक राजर्षि, पुराणो के अनुसार एक ऋषि जिन्होने गगा को पी लिया था और फिर कान से निकाल दिया था। ⊙**तनया**, ⊙**नदिनी** = स्त्री० गगा।

जाँग—पु० घोडो की एक जाति।

जाँगडा—पु० भाट, बदी।

जाँगर—पु० शरीर का बल, बूता। सूखा तृण या चारा। सुनसान स्थान, खाली स्थान।

जांगल—पु० [स०] तीतर। मास। सूखा देश। वि० जगल सबधी, जगली।

जागलू—वि० गँवार, जगली।

जाँघ—स्त्री० घुटने और कमर के बीच का अग।

जाँघिया—पु० पाजामे की तरह का घुटने तक का एक पहनावा, काछा।

जाँघिल—पु० एक प्रकार की चिडिया जो प्राय पानी के किनारे रहती है। वि० जिसका पैर चलने मे लच खाता हो।

जाँच—स्त्री० जाँचने की क्रिया या भाव, परीक्षा, परख। गवेषणा। ⊙**क**(प)† = पु० जाचक। ⊙**पडताल** = तहकीकात, छानबीन। ⊙**ना** = सक० सत्यासत्य आदि का अनुसधान करना। †प्रार्थना करना, मांगना।

जाँजरा(प)†—वि० दे० 'जाजरा'।

जाँझ(प)—स्त्री० वह वर्षा जिसके साथ तेज हवा भी हो।

जाँत, जाँता—पु० आटा पीसने की बडी चक्की।

जाँतपट—पु० चक्की के पाट।

जातव—वि० [सं०] जंतु संबंधी। जंतुओं से उत्पन्न या मिलनेवाला।
जाव(पु)—पु० दे० 'जामुन'।
जाँवत(पु)—अव्य० दे० 'यावत्'।
जाँवर(पु)—पु० गमन, जाना।
जा—स्त्री०[सं०] माता माँ। देवरानी, देवर की स्त्री। वि०स्त्री० उत्पन्न, संभूत। (पु)† सर्व०जिस। वि०[फा०] मुनासिब, उचित।
जाइ(पु)—वि० व्यर्थ, वृथा। वि० [फा०] उचित, वाजिव।
जाई—स्त्री० बेटी, पुत्री।
जाउनि(पु)—स्त्री० दे० 'जामुन'।
जाउरि—स्त्री०दूध में पकाया हुआ चावल,खीर।
जाक—पु० यक्ष।
जाकड़—पु० माल इस शर्त पर ले आना कि यदि वह पसंद न होगा, तो फेर दिया जायगा, पक्का का उलटा।
जाकेट—स्त्री० एक प्रकार की अँगरेजी कुरती या सदरी।
जाखिनी—स्त्री० दे० 'यक्षिणी'।
जाग—पु० यज्ञ, मख। स्त्री० जगह। जागने की क्रिया या भाव, जागरण ⊙ना = अक० सोकर उठना। निद्रारहित रहना। सावधान होना। उदित होना, चमक उठना। समृद्ध होना, प्रसिद्ध होना, जोर शोर से उठना। प्रज्वलित होना, जलना। मु०—जागता = प्रत्यक्ष,साक्षात्। प्रकाशित भासमान। जागती जोत—स्त्री० किसी देवता, विशेषत देवी की प्रत्यक्ष महिमा या चमत्कार। चिराग, दीपक।
जागर, जागरण—पु० [सं०] निद्रा का अभाव, जागना। किसी पर्व के उपलक्ष्य में सारी रात जागना। जागरित—पु० नींद का न होना, जागरण। वह अवस्था जिसमें मनुष्य को इंद्रियों द्वारा सब प्रकार के कार्यों का अनुभव होता रहे।
जागरूक—पुं० [सं०] वह जो जाग्रत अवस्था में हो। रखवाला, पहरेदार।
जागरूप—वि० जो बिलकुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो।
जागर्ति—स्त्री० [सं०] जागरण, जाग्रति। चेतनता।
जागो(पु)†—भाट।
जागीर—स्त्री० [फा०] राज्य की ओर से मिली भूमि या प्रदेश। ⊙दार—पुं० वह जिसे जागीर मिली हो, जागीर का मालिक। सामंत।
जाग्रत—वि० [सं०] जो जागता हो। वह अवस्था जिसमें सब बातों का परिज्ञान हो।
जाग्रत—स्त्री० जागरण, जगाने की क्रिया।
जाचक(पु)† पुं० माँगनेवाला। भिखमंगा। ⊙ता(पु)† = स्त्री० माँगने का भाव। भीख माँगने की क्रिया, भिखमंगी।
जाचना(पु)†—सक० माँगना।
जाजरो,जाजरी(पु)†—वि० जर्जर, जीर्ण
जाजिम—स्त्री० [तुं०] बिछाने की छपी हुई चादर या फर्श। गलीचा, कालीन।
जाज्वल्य—वि० [सं०] प्रज्वलित, प्रकाश-युक्त। ⊙मान—वि० प्रज्वलित, तेजस्वी
जाट—पुं० भारतवर्ष की एक जाति जो सिंध पूर्वी पंजाब, राजपूताना तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में फैली हुई है, इसमें हिंदू, मुसलमान और सिख हैं।
जाठ—पुं० वह बड़ा लट्ठा जो पत्थर के कोल्हू की कूंडी के बीच पड़ा रहता है।
जाठर—वि० [सं०] जठर संबंधी। जठर से उत्पन्न। पुं० जठर, पेट। भूख।
जाड़ा—पुं० शीतकाल। सरदी, पाला। ठंढ।
जाड्य—पुं० [सं०] जड़ता।
जात—पु० [सं०] जन्म। पुत्र। जीव। वि० जन्मा हुआ। (जैसे, जलजात, नवजात) व्यक्त, प्रकट। प्रशस्त, अच्छा। स्त्री० [हिं०] जाति। शरीर। ⊙क = पु० बच्चा। बत्तख। भिक्षु। फलित ज्योतिष का एक भेद। वे बौद्ध कथाएँ जिनमें बुद्ध के पूर्व जन्मों की बातें है। ⊙कर्म = हिंदुओं के दस संस्कारों में से चौथा संस्कार जो बालक के जन्म के समय होता है। ⊙पाँत = स्त्री०[हिं०]जाति,बिरादरी।
जातना, जातनाई(पु)—स्त्री० दे० 'यातना'।
जातरूप—पु० [सं०] सोना, सुवर्ण।
जातवेद—पु०[सं०] अग्नि। रवि। परमेश्वर।
जाता—स्त्री०[सं०] पुत्री। वि०स्त्री०उत्पन्न।

जाति—स्त्री० [सं०] हिंदू मे समाज का विभाग जो पहले कर्मानुसार था, पर पीछे से जन्मानुसार हो गया। देश, भाषा, संस्कृति आदि के विचार से मनुष्यसमाज का विभाग, जैसे अँगरेज जाति, जर्मन जाति आदि। वह विभाग जो आकृति, नस्ल आदि की समानता के विचार से किया जाय। कोटि, वर्ग, जैसे मनुष्य जाति, पशु जाति। अच्छी जाति का। जन्म, पैदाइश। वर्ण। कुल, वंश। गोत्र। मात्रिक छंद। ⊙**च्युत** = वि० जाति से गिरा या निकाला हुआ। ⊙**पाँत** = स्त्री० [हिं०] जाति या पंक्ति, वर्ण और उसके उपविभाग।

जाती—स्त्री० [सं०] चमेली की जाति का एक फूल, जाही, जाई। छोटा आँवला। मालती। जायफल। वि० [अ०] व्यक्तिगत। अपना, निज का।

जातीय—वि० [सं०] जाति संबंधी। ⊙**ता** = स्त्री० जाति या वर्णविशेष को महत्व देने का भाव। जाति की ममता या अभिमान। राष्ट्रीयता, कौमियत।

जातुधान—पुं० [सं०] राक्षस।

जात्रा(पु)—स्त्री० दे० 'यात्रा'।

जादव(पु)†—पुं० यादव। ⊙**पति**(पु)† = पुं० श्रीकृष्णचंद्र।

जादसपति(पु)†—पुं० जलजंतुओं का स्वामी, वरुण।

जादा(पु)—वि० दे० 'ज्यादा'। वि० [फा०] जन्मा हुआ हुआ। के० समा० के अंत मे जैसे, शाहजादा।

जादू—पुं० [फा०] वह आश्चर्यजनक कृत्य जिसे अलौकिक और अमानवी समझते हो, इंद्रजाल। वह अद्भुत खेल या कृत्य जो दर्शको की दृष्टि और बुद्धि को धोखा देकर किया जाय। टोना, टोटका। दूसरे को मोहित करने की शक्ति, मोहिनी। ⊙**गर** = पुं० वह जो जादू करता हो। ⊙**गरी** = स्त्री जादू करने की क्रिया, जादूगर का काम।

जादौ(पु)†—पुं० दे० 'यादव'। ⊙**राय** (पु)† = पुं० श्रीकृष्णचंद्र।

जान—स्त्री० ज्ञान, जानकारी। ख्याल, अनुमान। वि० सुजान, जानकार, चतुर। पुं० दे० 'यान'। ⊙**कार** = वि० जाननेवाला, विज्ञ। ⊙**ना** = सक० ज्ञान प्राप्त करना, अभिज्ञ होना, मालूम करना। सूचना पाना। अनुमान करना। ⊙**पना**(पु)† = पुं० बुद्धिमत्ता, चतुराई। ⊙**पनी**(पु) = पुं० बुद्धिमानी, चतुराई। ⊙**पहचान** = स्त्री० परिचय। ⊙**मनि** (पु) = पुं० ज्ञानियो मे श्रेष्ठ। ⊙**राय** = पुं० जानकारो मे श्रेष्ठ, बड़ा बुद्धिमान्। ⊙**हार** (पु) = वि० दे० 'जाननहार'। स्त्री० [फा०] प्राण, दम। बल, सामर्थ्य। सार, तत्व। अच्छा या सुंदर करनेवाली वस्तु, शोभा बढ़ानेवाली वस्तु। ⊙**दार** = वि० सजीव। जीवट या हिम्मतवाला। पुं० प्राणी। मु० ~**आना** = शोभा या आब बढ़ना। ~**पर आ बनना** = प्राण पर संकट होना। ~**खाना** = तंग करना। ~**पर खेलना** = प्राणो को संकट में डालना। ~**छुड़ाना या बचाना** = प्राण बचाना। संकट टालना। (**किसी पर**) ~**जाना** = किसी पर अत्यंत अधिक प्रेम होना। ~**मे जान आना** = ढाढ़स बँधना, घबराहट या भय दूर होना। ~**से जाना** = प्राण खोना, मरना। ~**को जान न समझना** = अत्यंत अधिक कष्ट या परिश्रम सहना। ~**जोखो** = प्राणहानि की आशंका, प्राण जाने का डर। ~**के लाले पड़ना** = प्राण बचना कठिन दिखाई देना, जी पर आ बनना।

जाननहार—वि० जाननेवाला।

जानकी—स्त्री० [सं०] जनक की पुत्री, सीता। ⊙**जानि**, ⊙**जीवन**, ⊙**नाथ** = पुं० रामचंद्र।

जानपद—पुं० [सं०] जनपद संबंधी वस्तु। जनपद का निवासी, मनुष्य। देश। मालगुजारी। वि० जनपद संबंधी।

जानवर—पुं० [फा०] पशु। प्राणी। वि० मूर्ख, जड़।

जानशीन—वि० [फा०] दूसरे के स्थान पर या पद पर बैठनेवाला। उत्तराधिकारी।

जानहु(पु)†—अव्य० मानो।

जाना—अक० एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्राप्त होने या पहुँचने के लिये हिलना डोलना या चेष्टा करना, गमन करना, बढना। हटना, प्रस्थान करना। अलग होना, दूर होना। हाथ या अधिकार से निकलना, हानि होना। खो जाना, गायब होना, गुम होना। बीतना, गुजरना। नष्ट होना। बहना, जारी होना। ⓟ† सक० उत्पन्न करना, जन्म देना। मु०—किसी बात पर ~ = किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना। गया घर = दुर्दशाप्राप्त घराना। गयाबीता = दुर्दशाप्राप्त। निकृष्ट। जाने दो = क्षमा करो, माफ करो, चर्चा छोडो, प्रसग छोडो।

जानि—स्त्री० [सं०] स्त्री, भार्या। ⓟवि० जानकार।

जानिब—स्त्री० [अ०] तरफ, ओर। ⊙दार = वि० [फा०] पक्षपाती।

जानी—वि० [फा०] जान से सबध रखनेवाला। ⊙दुश्मन = जान लेने को तैयार दुश्मन। ⊙दोस्त = दिली दोस्त। स्त्री० प्राणप्यारी।

जानु—पु० [सं०] घुटना। [फा०] जांघ, रान। ⊙पाणि = क्रि० वि [हिं वं० जानूपानि]। घुटनो और हाथो के बल (जैसे बच्चे चलते है)।

जानू—पु० [फा०] जघा, जांघ।

जानो†—अव्य० मानो, जैसे।

जाप—पु० [सं०] जपने की क्रिया, जप। जपने की थैली या माला। ⊙क = पु० जप करनेवाला। **जापी**—पु० [हिं०] जापक। **जाप्य**—पु० जप करने योग्य, आराध्य देव।

जापा—पु० सौरी, प्रसूतिकागृह।

जाफत—स्त्री० भोज, दावत।

जाफरान—पु० [अ०] केसर।

जाबिर—वि० [फा०] जब्र या ज्यादती करनेवाला, अत्याचारी।

जाब्ता—पु० [अ०] नियम, कायदा, व्यवस्था, कानून। ⊙दीवानी = सर्वसाधारण के परस्पर आर्थिक व्यवहार से सबध रखनेवाला कानून। ⊙फौजदारी = दंडनीय अपराधो से सबध रखनेवाला कानून।

जामⓟ—पु० पहर, प्रहर, ७॥ घडी या तीन घटे का समय। [फा०] प्याला, कटोरा। दे० 'जामुन'। **जामिक**ⓟ—पु० पहरुआ, पहरा देनेवाला, रक्षक।

जामगी—पु बदूक या तोप का पलीता।

जामदानी—स्त्री० एक प्रकार का बढा हुआ फूलदार कपड़ा।

जामन—पु० दही बनाने के लिये दूध मे डाला जानेवाला दही या खट्टा पदार्थ।

जामना—अक० दे० 'जगना'।

जामनी—वि० दे० 'यावनी'।

जामवंत—पु० दे० 'जावबान्'।

जामा—पु० [फा०] पहनावा, कपडा, वस्त्र। चुननदार घेरे का एक प्रकार का पहनावा। मु०—**जामे से बाहर होना** = आपे मे बाहर होना, अत्यत क्रोध करना।

जामाता—पु० [सं०] दामाद।

जामिन, जामिनदार—पु० [अ०] जमानत करनेवाला, जिम्मेदार, प्रतिभू।

जामिनी—स्त्री० दे० 'यामिनी'। दे० 'जमानत'।

जामीⓟ—स्त्री० दे० 'जमीन'।

जामुन—पु० एक सदाबहार पेड जिसके फल बैगनी या बहुत काले होते हैं और खाए जाते हैं। **जामुनी**—वि० जामुन के रग का, बैगनी या काला।

जामेवार—पु० एक प्रकार का दुशाला जिसकी सारी जमीन पर बूटे रहते हैं। इसी प्रकार का छीट।

जार्य—वि० दे० 'जाय'।

जायⓟ†—अव्य० वृथा, निष्फल। वि० उचित, ठीक।

जायका—पु० [अ०] स्वाद।

जायज—वि० [अ०] उचित, मुनासिब।

जायजा—पु० [अ०] जाँच पडताल। हाजिरी, गिनती।

जायदाद—स्त्री० [फा०] भूमि, धन या सामान आदि जिसपर किसी का अधिकार हो, सपत्ति।

जायनमाज—स्त्री० [फा०] छोटी दरी या

बिछौना जिसपर बैठकर मुसलमान नमाज पढते हैं।
जायपत्री—स्त्री० दे० 'जावित्री'।
जायफल—पु० अखरोट की तरह का पर उससे छोटा एक सुगंधित फल।
जायल—वि० [अ०] विनष्ट, बरबाद।
जाया—स्त्री० [स०] विवाहिता स्त्री, पत्नी। उपजाति वृत्त का सातवाँ भेद। वि० [फा०] खराब, नष्ट।
जार—पु० [स०] पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला पुरुष, उपपति, यार, आशना। वि० मारने या नाश करनेवाला। ⊙कर्म=पु० व्यभिचार। ⊙ज=पु० किसी स्त्री की उपपति से उत्पन्न संतान। **जारिणी**—स्त्री० दुश्चरित्रा स्त्री, बदचलन औरत।
जारक—वि० [सं०] जलानेवाला।
जारण—पु० [स०] जलाना, भस्म करना।
जारन(पु)—पुं० ईंधन। जलाने की क्रिया या भाव। **जारना**†—सक० दे० 'जलाना'।
जारी—वि० [अ०] चलता हुआ, प्रचलित, निरंतर होता हुआ। बहता हुआ, प्रवाहित। स्त्री०[हिं०] परस्त्रीगमन, छिनाला।
जालंधर—पु० दे० 'जलधर'।
जालंधरी विद्या—स्त्री० मायिक विद्या, माया, इंद्रजाल।
जाल—पु०[स०]तार या सूत आदि का पट जिसका व्यवहार मछलियो और चिडियो को पकडने मे होता है। बुने या गुँथे हुए बहुत से तारो अथवा रेशो का समूह। मकडी का जाला। इंद्रजाल। किसी को फँसाने या वश मे करने की युक्ति। समूह। एक प्रकार की तोप। पुं० [अ०] फरेब, झूठी कार्रवाई। ⊙साज=पुं० [फा०] दूसरो को धोखा देने के लिये झूठी कार्रवाई करनेवाला व्यक्ति। ⊙साजी=स्त्री० [फा०] दगाबाजी। नकली दस्तावेज आदि बनाने का काम।
जालक—पु० [स०] जाल। कली। समूह। झरोखा, खिडकी। घोसला।
जालना(पु)—सक० दे० 'जलाना'।
जाला—पुं० मकडी का बनाया हुआ पतले तारो का वह जाल जिसमे वह मक्खियो और कीडे मकोडो को फँसाती है। आँख का एक रोग जिसमे पुतली के ऊपर सफेद झिल्ली पड जाती है। वह जाल जिसमे घास, भूसा आदि बाँधे जाते हैं। पानी रखने का एक प्रकार का मिट्टी का बडा बरतन। (पु)स्त्री० दे० 'ज्वाला'।
जालिक—पु० [सं०] मछुवा, केवट। बहेलिया, जाल फैलानेवाला।
जालिका—स्त्री० [स०] जाली। समूह, दल। कवच। मकडी। जोक।
जालिम—वि० [अ०] जुल्म करनेवाला।
जालिया—वि० दे० 'जालसाज'।
जाली—स्त्री० लकडी, पत्थर या धातु की चादर आदि मे बना हुआ बहुत से छोटे छेदो का समूह। कसीदे का एक प्रकार का काम, भरना। एक प्रकार का कपडा जिसमे केवल बहुत से छोटे छोटे छेद ही होते हैं। कच्चे आम के अंदर गुठली के ऊपर का ततुसमूह। वि० नकली।
जावक(पु)†—पुं० लाह से बना हुआ पैरो मे लगाने का लाल रग, अलता, महावर।
जावत(पु)†—अव्य० दे० 'यावत्'।
जावन(पु)†—पुं० दे० 'जामन'।
जावर†—पुं० एक प्रकार की खीर।
जावित्री—स्त्री० जायफल के ऊपर का सुगंधित छिलका जो औषधादि के काम मे आता है।
जाषनी(पु)†—स्त्री० दे० 'यक्षिणी'।
जाषरी†—स्त्री० नटिनी।
जासु(पु)†—वि० जिसका।
जासूस—पुं० [अ०] गुप्त रूप से किसी बात, विशेषत अपराध आदि का पता लगानेवाला, भेदिया, गुप्तचर। **जासूसी**—स्त्री० गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना। जासूस का काम करना।
जाहिर—वि० [अ०] जो सबके सामने हो, प्रकट, प्रकाशित, खुला हुआ। विदित, जाना हुआ। ⊙दारी=स्त्री० वह बात या काम जो केवल दिखावे के लिये हो। **जाहिरा**—क्रि० वि० [अ०] देखने में, प्रकट रूप मे, प्रत्यक्ष मे। **जाहिरी**—वि० [अ०] जो जाहिर हो, प्रकट।
जाहिल—वि० [अ०] मूर्ख, गँवार। अनपढ।

जाही—स्त्री० चमेली की जाति का एक फूल।

जाह्नवी—स्त्री० [सं०] जन्हु ऋषि से उत्पन्न गंगा।

जिंक—पुं० [अ०] जस्ता। जस्ते का खार।

जिंद—पुं० भूत, प्रेत, जिन। पुं० दे० 'जंद'।

जिंदगानी—स्त्री० दे० 'जिंदगी'।

जिंदगी—स्त्री० [फा०] जीवन। जीवनकाल, आयु। उत्साह, सजीवता। मु०—के दिन पूरे करना = दिन काटना, जीवन बिताना। मरने को होना।

जिंदा—वि० [फा०] जीवित, जीता हुआ। ⊙दिल = वि० खुशमिजाज, उत्साहयुक्त। प्रसन्नचित्त। हँसोड़ दिल्लगीबाज।

जिंवाना—सक० दे० 'जिमाना'।

जिंस—स्त्री० [फा०] प्रकार, किस्म भाँति। चीज, वस्तु, द्रव्य। सामग्री, सामान। अनाज, गल्ला, रसद। ⊙वार = पुं० पटवारियों का वह कागज जिसमें वे खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखते हैं।

जिअनमूरि—स्त्री० जीवन देनेवाली जड़ी। सजीवनी बूटी।

जिआना ⓟ—सक० दे० 'जिलाना'।

जिउ†—पुं० दे० 'जीव'।

जिउका†—स्त्री० दे० 'जीविका'।

जिउकिया—पुं० जीविका करनेवाला, रोजगारी। पहाड़ी लोग जो जंगलों से अनेक प्रकार की वस्तुएँ लाकर नगरों में बेचते हैं।

जिउतत—पुं० मन के अनुकूल बात, मन की बात।

जिउतिया—स्त्री० दे० 'जिताष्टमी'।

जिकिर—पुं० दे० 'जिक्र'।

जिक्र—पुं० [अ०] चर्चा, प्रसंग।

जिगर—पुं० [फा०] यकृत। कलेजा। चित्त, मन, जीव। साहस, हिम्मत। गूदा, सत्त, सार। जिगरी—वि० दिली, भीतरी। अत्यंत घनिष्ठ, अभिन्नहृदय।

जिगरा—पुं० साहस, जीवट।

जिगीषा—स्त्री० [सं०] जीतने की इच्छा। उद्योग, प्रयत्न।

जिच, जिच्च—स्त्री० बेबसी, तंगी, मजबूरी। शतरंज में खेल की वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्ष को मोहरा चलने की जगह न हो। विवाद की वह अवस्था जिसमें दोनों पक्ष अपनी बात पर अड़े हों और समझौते का मार्ग दिखाई न दे रहा हो। क्रि० विवश, मजबूर, तंग।

जिजिया—पुं० दे० 'जजिया'।

जिज्ञासा—स्त्री० [सं०] जानने की इच्छा, ज्ञान प्राप्त करने की कामना। पूछताछ, प्रश्न, तहकीकात।

जिज्ञासु—जो जिज्ञासा करे, खोजी। मुमुक्षु।

जित्—वि० [सं०] जीतनेवाला, जेता।

जित—वि० [सं०] जीता हुआ। वश में किया हुआ। वि० दे० 'जित्'। ⓟ†क्रि० वि० जिधर, जिस ओर। जहाँ। जितात्मा—वि० दे० 'जितेंद्रिय'। जिताष्टमी—स्त्री० अपुत्रा, मृतपुत्रा और पुत्रवती हिंदू स्त्रियों का पुत्रजन्म और उसके दीर्घ जीवन के लिये आश्विन कृष्ण अष्टमी को किया जानेवाला व्रत और उपासना, जिउतिया।

जितेंद्रिय—वि० जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो। समवृत्तिवाला, शांत।

जितक ⓟ—वि०, क्रि० वि० दे० 'जितना'।

जितना—वि० जिस मात्रा का, जिस परिमाण का। क्रि० वि० जिस मात्रा में, जिस परिमाण में।

जितवना ⓟ†—सक० दे० 'जताना'।

जितवाना—सक० दे० 'जिताना'।

जितवार†—वि० जीतनेवाला।

जितवैया†—वि० जीतनेवाला।

जिताना—सक० [जीतना का प्रे० रूप] जीतने में सहायता करना।

जिति—स्त्री० [सं०] जीत।

जिते ⓟ—वि० बहु० जितने (संख्यासूचक)।

जितै ⓟ—क्रि० वि० जिधर, जिस ओर।

जितैया—वि० जीतनेवाला।

जितो ⓟ†—वि० जितना (परिमाणसूचक)। क्रि० वि० जिस मात्रा में, जितना।

जित्वर—वि० [सं०] जेता, विजयी। विजयशील।

जिद्द—स्त्री० [अ०] हठ, दुराग्रह। बैर।

जिद्दी—वि० [फा०] जिद करनेवाला। दूसरे की बात न माननेवाला, दुराग्रही।

जिधर—क्रि० वि० जिस ओर, जहाँ।

जिन—पु० [सं०] जैनो के तीर्थकर। बुद्ध। विष्णु। सूर्य। वि, सर्व० 'जिस' का बहु०। [अ०] भूत या प्रेतात्मा। मु०~ **सवार होना** = गुस्से मे आपा खोना।

जिना—पु [अ०] व्यभिचार। ⊙**कार** = वि० [फा] व्यभिचारी।

जिनि†—अव्य० मत, नही।

जिनिस—स्त्री० दे० 'जिंस'।

जिन्ह†(पु)—सर्व० दे० 'जिन'।

जिबह—पु० वध, हनन, मार डालना।

जिब्भा, जिभ्या(पु)—स्त्री० दे० 'जिह्वा'।

जिमनास्टिक—पु० [अँ०] एक प्रकार की अँगरेजी कसरत।

जिमाना—सक० भोजन कराना।

जिमि(पु)—क्रि० वि० जिस प्रकार मे, जैसे।

जिम्मा—पु० [अ०] किसी बात के करने या कराने का भार ग्रहण करना। सुपुर्दगी, ⊙**दार, वार** = वि० [फा०] वह जो किसी बात के लिये जिम्मा ले। जवाबदेह, उत्तर दाता। ⊙**वारी** = स्त्री० [हिं०] किसी बात के करने या किए जाने का भार, उत्तर दायित्व, जवाबदेही। सुपुर्दगी। सरक्षा। मु०— **किसी के जिम्मे रुपये आना, निकलना या होना** = किसी के ऊपर ऋण होना।

जिम्मेदार, जिम्मेवार—वि० दे० 'जिम्मावार'।

जिय†—पु० मन, चित्त।

जियन—पु० जीवन।

जियबधा—पु० दे० 'जल्लाद'।

जियरा†—पु० जीव, हृदय।

जियान—पु० [अ०] घाटा, टोटा, नुकसान।

जियाना(पु)†—सक० जीवित रखना। पालना।

जियाफत—स्त्री० [अ०] आतिथ्य। दावत।

जियारत—वि० [अ०] दर्शन। तीर्थयात्रा। मु०~ **लगना** = भीड लगना।

जियारी(पु)†—स्त्री० जीवन, जिंदगी। जीविका। हृदय की दृढता, जीवट, जिगरा।

जिरगा—पु० [फा०] झुंड। मडली, दल।

जिरह—स्त्री० [अ०] ऐसी पूछताछ जो किसी से उसकी कही हुई बातो की सत्यता की जाँच के लिये की जाय, बहस, दलील। स्त्री० [फा०] लोहे की कड़ियो से बना हुआ कवच, वर्म, बकतर। ⊙**पोश** = जो बकतर पहने हो, कवचधारी। **जिरही**—वि० [हिं०] जो जिरह पहने हो, कवचधारी।

जिराअत—स्त्री० [अ०] खेतीबारी, कृषि। **जिराअती**—वि० [फा०] कृषि सबधी।

जिराफा—पु० दे० 'जुराफा'।

जिला—स्त्री० [अ०] चमक, पालिश। माँजकर या रोगन आदि चढाकर चमकाने का कार्य। पुं० प्रात, प्रदेश। भारतवर्ष मे किसी प्रात का वह भाग जो एक कलक्टर या डिप्टी कमिश्नर के प्रबंध मे हो। किसी इलाके का छोटा विभाग या अश (अ० डिस्ट्रिक्ट)। ⊙**दार** = पु० [फा०] वह अफसर जिसे जमीदार अपने इलाके के किसी भाग मे लगान वसूल करने के लिये नियत करता था। वह अफसर जो नहर, अफीम आदि के सबध मे किसी हलके मे काम करने के लिये नियत हो। ⊙**साज** = पु० [फा०] हथियारो आदि पर ओप चढाने-वाला, सिकलीगर। सान धरनेवाला।

जिलाह(पु)—पुं० अत्याचारी।

जिलेदार—पु० दे० 'जिलादार'।

जिल्द—स्त्री० [अ०] खाल, चमडा, खलड़ी। ऊपर का चमडा, त्वचा। वह पुट्ठा या दफ्ती आदि जो किसी किताब के ऊपर उसकी रक्षा के लिये लगाई जाती है। पुस्तक की एक प्रति। पुस्तक का वह भाग जो पृथक् सिला या बँधा हो, भाग, खड। ⊙**गर** = पुं० [फा०] दे० 'जिल्दसाज'। ⊙**बंद** = पु० [फा०] वह जो किताबो की जिल्द बाँधता हो। ⊙**बंदी** = स्त्री० [फा०] जिल्द बाँधने का काम, जिल्द बँधाई। ⊙**साज** = पु० [फा०] दे० 'जिल्दबद'। ⊙**साजी** = स्त्री० [फा०] दे० 'जिल्दबदी'।

जिल्लत—स्त्री० [अ०] अपमान, बेइज्जती। हीन दशा। मु०~**उठाना या पाना** = अपमानित होना। तुच्छ ठहरना।

जिव†—पु० दे० 'जीव'।

जिआना—सक० दे० 'जिलाना'।

जिवारी(पु)—स्त्री० जिलानेवाली।

जिष्णु—वि० [सं०] सदा जीतनेवाला। पुं० विष्णु। कृष्ण। इंद्र। सूर्य। अर्जुन।

जिस—वि० 'जो' का वह रूप जो विभक्ति-युक्त विशेष्य के साथ आने से प्राप्त होता है, जैसे–जिस पुरुष ने। सर्व० 'जो' का वह रूप जो उस विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।

जिस्ता—पु० दे० 'जस्ता'। दे० 'दस्ता'।

जिस्म—पु० [फा०] शरीर, देह। जिस्मानी—वि० शारीरिक।

जिह(पु)†—आ० धनुष का चिल्ला, रोदा, ज्या।

जिहन—पु० [अ०] समझ, बुद्धि। मु०~खुलना = बुद्धि का विकास होना। ~लड़ाना = खूब सोचना।

जिहाद—पु० [अ०] मजहबी लड़ाई। वह लड़ाई जो मुसलमान लोग अन्य धर्मावलंबियो से अपने धर्म की रक्षा आदि के लिये करें।

जिहि—सर्व० जिसको। जिसका। जिसने।

जिह्म—वि० [सं०] वक्र, टेढ़ा। ⊙ग = पुं० वह जो टेढ़ा या तिरछा चलता हो। सर्प, साँप।

जिह्वा—स्त्री० [सं०] जीभ, जबान। ⊙मूल = पु० जीभ का पिछला स्थान। ⊙मूलीय = पुं० जिह्वामूल से उच्चरित वर्ण। जिह्वाग्र—पुं० जबान की नोक।

जींगन†—पुं० जुगनू।

जी—पुं० मन, तबीयत। प्राण। हिम्मत, जीवट। संकल्प। अव्य० एक सम्मान-सूचक शब्द जो किसी के नाम के अंत मे लगाया जाता है, अथवा किसी बड़े कथन के प्रश्न या संबोधन के उत्तर मे संक्षिप्त आदरयुक्त प्रतिसंबोधन। मु०~अच्छा होना = चित्त स्वस्थ होना। नीरोग होना। किसी पर~आना = किसी से प्रेम होना। ~खट्टा होना = मन फिर जाना या विरक्ति होना, घृणा होना। ~चुराना = हीलाहवाली करना, किसी काम से भागना। ~छोटा करना = मन उदास करना। उदारता छोड़ना, कंजूसी करना। ~टँगा रहना या होना = चित्त मे ध्यान या चिंता रहना। ~डूबना = चित्त स्थिर न रहना, चित्त व्याकुल होना। ~दुखना = चित्त को कष्ट पहुँचाना। ~देना = मरना। अत्यंत प्रेम करना। ~निढाल होना = चित्त का स्थिर न रहना, चित्त ठिकाने न रहना। ~पर आ बनना = प्राण बचाना कठिन हो जाना। ~पर खेलना = जान को आफत मे डालना। ~बिगड़ना = जी मचलाना, कै करने की इच्छा होना। (किसी की ओर से)~बुरा करना = किसी के प्रति घृणा या क्रोध करना। ~भर आना = चित्त मे दुःख या करुणा का उद्रेक होना। ~भरकर = मनमाना, यथेष्ट। ~भरना = दूसरे का संदेह दूर करना, खटका मिटाना। चित्त संतुष्ट होना, तृप्ति होना। ~मे आना = चित्त मे विचार उत्पन्न होना। ~मे ~आना = ढाढ़स होना। (किसी का) ~रखना = मन रखना, इच्छा पूरी करना। ~लगना = मन का किसी विषय मे योग देना, चित्त प्रवृत्त होना। (किसी से)~लगना = किसी से प्रेम होना। ~से = जी लगाकर ध्यान देकर। ~से उतर जाना = दृष्टि से गिर जाना, भला न जँचना। ~से जाना = मर जाना।

जीअ, जीउ(पु)—पुं० दे० 'जी', 'जीव'।

जीअन(पु)—पुं० दे० 'जीवन'।

जीगन(पु)—पुं० दे० 'जुगनू'।

जीजा—पुं० बड़ी बहिन का पति। बहिन का पति। जीजी—स्त्री० बड़ी बहिन।

जीत—स्त्री० युद्ध या लड़ाई मे विपक्षी के विरुद्ध सफलता, विजय। किसी ऐसे कार्य मे सफलता जिसमे दो या अधिक विरुद्ध पक्ष हो। जीतना—सक० विजय प्राप्त करना। किसी ऐसे कार्य मे सफलता प्राप्त करना जिसमे दो या अधिक व्यक्ति प्रयत्न मे हो।

जीता—वि० जीवित, जो मरा न हो। तौल या नाप मे ठीक से कुछ बढ़ा हुआ।

जीन(पु)—वि० जर्जर, कटा फटा। वृद्ध। पुं० [फा०] घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी, चारजामा, काठी। एक प्रकार का बहुत मोटा सूती कपड़ा। ⊙पोश = पुं० [फा०] जीन के ऊपर ढकने का कपड़ा।

⊙सवारी = स्त्री० [फा०] घोड़े पर जीन रखकर चढने का कार्य।

जीना—अक० जीवित रहना, जिंदा रहना, प्रसन्न होना। मु०—**जीता जागता** = जीवित और सचेत, भला चगा। **जीती मक्खी निगलना** = जान बूझकर कोई अन्याय या अनुचित कर्म करना। **जीते जो मर जाना** = जीवन मे ही मृत्यु से बढकर कष्ट भोगना। ~**भारी हो जाना** = जीवन का आनद जाता रहना। पुं० [फा०] सीढी।

जीनी⑤—वि० दे० 'झीनी'।

जीभ—स्त्री० लबे, चिपटे मासपिंडवाला, मुंह के भीतर का वह अग या अवयव जो निगलने, स्वाद लेने और (मनुष्यो मे) बोलने के काम आता है, जबान, रसना। जीभ के आकार की कोई वस्तु, जैसे निब। मु०—**किसी की के नीचे ~होना** = किसी का अपनी कही बात से बदल जाना। ~**चलना** = भिन्न भिन्न वस्तुओ का स्वाद लेने के लिये जीभ का हिलना डुलना, चटोरेपन की इच्छा होना। ~**चलाना** = बहुत बोलना। अनुचित या अनधिकार बातें करना। ~**निकालना** = जीभ खीचना, जीभ उखाड लेना। ~**पकड़ना** = बोलने न देना। ~**बद करना** = बोलना बद करना। ~**लड़ाना** = बहुत बोलना। ~**हिलाना** = मुंह से कुछ बोलना।

जीभी—स्त्री० चिपटी पतली धनुषाकार या सीधी वस्तु जिससे जीभ छीलकर साफ करते हैं। निब। छोटी जीभ। गलशुंडी।

जीमना—सक० भोजन करना।

जीमूत—पु० [सं०] पर्वत। बादल। इद्र। सूर्य। शाल्मली द्वीप के एक वर्ष का नाम। एक प्रकार का दडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण और ग्यारह रगण होते हैं।

जीय⑤†—पु० दे० 'जी'। ⊙**दान** = पुं० प्राणदान, प्राणरक्षा।

जीयट—पु० दे० 'जीवट'।

जीयति⑤†—स्त्री० जीवन।

जीर—पु० [सं०] जीरा। फूल का जीरा, केसर। खड्ग तलवार। ⑤ पु० जिरह, कवच। ⑤ त्रि० जीर्ण, पुराना। **जीरना**—अक० जीर्ण होना। कुम्हलाना। फटना।

जीरण⑤—वि० दे० 'जीर्ण'।

जीरन⑤—वि० दे० 'जीर्ण'।

जीरा—पु० एक पौधा जिसके फलो के गुच्छो को सुखाकर मसाले के काम मे लाते हैं। जीरे के आकार के छोटे, महीन, लबे बीज। फूलो का केसर।

जीरी—पु० एक प्रकार का अगहनी धान जो कई वर्षो तक रह सकता है।

जीर्ण—वि० [सं०] बुढापे से जर्जर। टूटा फूटा और पुराना, फटा पुराना, बहुत दिनो का। पेट मे अच्छी तरह पचा हुआ। ⊙**ज्वर** = पु० वह ज्वर जिसे रहते बारह दिन से अधिक हो गए हो, पुराना बुखार। ⊙**ता** = स्त्री० पुरानापन। बुढापा। ⊙**शीर्ण** = वि० फटा पुराना। **जीर्णोद्धार**—पु० फटी पुरानी या टूटी फूटी वस्तुओ का फिर से सुधार, पुराने मकान, मदिर, कुएँ आदि की मरम्मत।

जीला⑤†—वि० झीना, पतला। महीन।

जीवत—वि० [सं०] जीता जागता, सजीव।

जीवंती—स्त्री० [सं०] एक लता जिसकी पत्तियाँ ओषधि के काम मे आती है। एक लता जिसके फूलो मे मीठा मधु या मकरद होता है। एक प्रकार की बढ़िया पीली हड। बाँदा। गडूची।

जीव—पु० [सं०] प्राणियो का चेतन तत्व, जीवात्मा, आत्मा। प्राण, जीवनतत्व, जान। प्राणी, जीवधारी। ⊙**क** = पु० प्राण धारण करनेवाला, प्राणवत। क्षपणक, भिक्षुक। सँपेरा। सेवक। व्याज लेकर जीविका करनेवाला। अष्टवर्ग के अतर्गत एक जडी या पौधा। ⊙**जतु** = प्राणी। मनुष्य के अतिरिक्त जीवधारी पशु पक्षी, कीडे मकोडे आदि। ⊙**दान** = पुं० अपने वश मे आए हुए शत्रु या अपराधी को न मारने या छोड देने का कार्य। ⊙**धन** = पु० जीवो और पशुओ के रूप मे सपत्ति। जीवनधन, अति प्रिय व्यक्ति। ⊙**धारी** = पु० प्राणी, जीवजंतु। ⊙

प्रभा = स्त्री० आत्मा। ⊙बध(पु) = वि० दे० 'जीवबधु'। ⊙बधु - पु० गुल दुप-हरिया, बधूक। ⊙योनि = स्त्री० जीव-जंतु। ⊙लोक = पु० भूलोक, पृथ्वी। ⊙हत्या, ⊙हिंसा = स्त्री० प्राणियो का वध। प्राणियों के वध का दोष। जीवघातक—वि० जीव की हत्या करने-वाला। जीवाणु—पु० जीवयुक्त प्रणु, जीव का सबसे छोटा रूप [अं० प्रोटो-प्लाज्म]। जीवात्मा—पु० [सं०] प्राणियों की चेतन वृत्ति का कारणस्वरूप पदार्थ।

जीवेश—पु० परमात्मा।

जीवट—पु० हृदय की दृढ़ता, साहस हिम्मत।

जीवन—पु० [सं०] जन्म और मृत्यु के बीच का काल, जिंदगी। जीवित रहने का भाव, प्राणधारण। जीवित रखनेवाली वस्तु। परम प्रिय, प्यारा। जीविका। पानी। वायु। ⊙चरित = पु० जीवन मे किए कार्यों आदि का वर्णन, जिंदगी का हाल, जीवनी। ⊙धन = सबसे प्रिय वस्तु या व्यक्ति। प्राणप्रिय, प्राणाधार। ⊙बूटी = स्त्री० [हिं०] एक पौधा या बूटी जिसके विषय मे प्रसिद्ध है कि वह मरे हुए आदमी को भी जिला सकती है, सजीवनी। ⊙मूरि (पु) = स्त्री० जीवन बूटी। अत्यंत प्रिय वस्तु। ⊙वृत्त = पु० दे० 'जीवनचरित'।

जीवनोपाय—पु० जीविका।

जीवना(पु)†—अक० दे० 'जीना'।

जीवनी—स्त्री० जीवन भर का वृत्तात, जीवन-चरित। जिंदगी। वि० जीवन देनेवाली।

जीवन्मुक्त—वि० [सं०] जो जीवित दशा मे ही आत्मज्ञान द्वारा सासारिक मायाबंधन से छूट गया हो, वीतराग।

जीवन्मृत—वि० [सं०] जीवित रहते हुए भी मुरदा, जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो।

जीवरा(पु)†—पु० जीव, प्राण।

जीवरि†—पु० जीवन, प्राणधारण की शक्ति।

जीवाजून†—पु० पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि।

जीविका—स्त्री० [सं०] वह व्यापार जिससे जीवननिर्वाह हो, रोजी।

जीवित—वि० [सं०] जीता हुआ, जिंदा।

जीवितेश—पु० जीता जागता और प्रत्यक्ष ईश्वर। स्वामी, पति। यमराज।

जीवी—वि० [सं०] जीनेवाला, प्राणधारी। जीविका करनेवाला। जैसे, श्रमजीवी, दीर्घजीवी।

जीह, जीहा, जीहि(पु)—स्त्री० दे० 'जीभ'।

जुंबिश—स्त्री० [फा०] चाल, गति, हरकत। मु०—खाना = हिलना डोलना।

जु(पु)—वि०, क्रि० वि०, दे० 'जो'।

जुआँ—स्त्री० दे० 'जूँ'।

जुआ—पु० गाड़ी के आगे जड़ी हुई लकड़ी जो बैलों के कंधों पर रहती है। †जुआठा। चक्की में लगी हुई लकड़ी जिसे पकड़कर वह फिराई जाती है। रुपए पैसे की बाजी लगाकर खेला जानेवाला खेल। ⊙चोर = पु० धोखेबाज, ठग।

जुआठा—पु० दे० 'जुआ'।

जुआरी—पु० जुआ खेलनेवाला।

जुईं—स्त्री० छोटी जूँ।

जुकाम—पु० [अ०] एक बीमारी जिसमे नाक बहती तथा सिर मे भारीपन और हरा-रत रहती है, सरदी। मु०—मेंढकों को ~होना = छोटे मनुष्य का बड़ों के समान चेष्टा करना।

जुग—पु० युग्म। जोड़ा। चौसर के खेल मे दो गोटियों का एक ही कोठे मे इकट्ठा होना। पुश्त, पीढ़ी।

जुगजुगाना—अक० मंद ज्योति से चमकना, टिमटिमाना। अवनत दशा से कुछ उन्नत दशा को प्राप्त होना, उभरना।

जुगत—स्त्री० युक्ति, तदबीर। व्यवहार-कुशलता, चतुराई। जुगती—पु० युक्ति निकालने या खोजनेवाला, चतुर। स्त्री० दे० 'जुगत'।

जुगनी—स्त्री० दे० 'जुगनू'।

जुगनू—एक बरसाती कीड़ा जिसका पिछला भाग रह रहकर चिनगारी की तरह चम-कता है, खद्योत। पान के आकार का गले का एक गहना, रामनामी।

जुगम(पु)—वि० दे० 'युग्म'।

जुगल—वि० दे० 'युगल'।

जुगवना—सक० संचित रखना।

जुगाना†—सक० दे० 'जुगवना'।

जुगार†—स्त्री० दे० 'जुगाली'।
जुगालना—अक० चौपायों का पागुर करना।
जुगाली—स्त्री० सींगवाले चौपायों की निगले हुए चारे को गले से थोड़ा निकालकर फिर से चबाने की क्रिया, पागुर।
जुगुत, जुगुति—स्त्री० दे० 'जुगत'।
जुगुप्सा†—स्त्री० [सं०] निंदा। अश्रद्धा, घृणा।
जुज—पु० [अ०] टुकड़ा, भाग। कागज के ८ या १६ पृष्ठों का समूह, फारम।
जुज्झ(पु)†—स्त्री० दे० 'युद्ध'।
जुझाऊ—जूझने या युद्ध के लिये उत्तेजित करनेवाला। लड़ाई में काम आनेवाला, युद्ध संबंधी।
जुझार(पु)†—वि० लड़ाका, वीर। युद्ध, लड़ाई।
जुट—स्त्री० दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ, जोड़ी, जत्था, दल। **जुटना**—अक० संश्लिष्ट होना, जुड़ना। लिपटना, गुथना। संभोग करना। एकत्र होना। कार्य में दृढ़ता से लगना या संमिलित होना। मिलना। **जुटाना**—सक० [अक० जुटना] जुटने में प्रवृत्त करना। **जुटाव**—पु० जुटने की क्रिया या भाव। जमावड़ा।
जुटली—वि० जूड़ेवाला, लंबे बालों की लटवाला।
जुटिका—स्त्री० [सं०] शिखा, चुंदी। गुच्छा, लट।
जुट्टी—स्त्री० घास या टहनियों का छोटा पूला, मेंटिया। सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते हैं। गड्डी। जुटी या मिली हुई
जुठारना—सक० खाने पीने की वस्तु को कुछ खाकर छोड़ देना, जूठा करना।
जुठिहारा—जूठा खानेवाला।
जुड़ना—अक० वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का अंग दूसरी के साथ लगा रहे, संबद्ध होना। संभोग करना। †इकट्ठा होना। एकत्र होना, किसी कार्य में योग देने के लिये उपस्थित होना। प्राप्त होना, मिलना। ठंढा होना। दे० 'जुतना'।
जुड़पित्ती—स्त्री० एक रोग जिसमें शरीर में बड़े बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं। इनमें बड़ी खुजली और जलन रहती है।
जुड़वाँ—वि० गर्भ में ही एक में सटे या जुड़े हुए, यमल (जैसे, जुड़वाँ बच्चे)। पुं० एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे।
जुड़वाना—सक० ठंढा करना, सुखी करना। [जोड़ना का प्रे०] जोड़ने में प्रवृत्त करना, जोड़ लगवाना।
जुड़ाई—स्त्री० दे० 'जोड़ाई'।
जुड़ाना—अक० ठंढा होना। शांत होना; तृप्त होना। सक० ठंढा करना। शांत और संतुष्ट करना। **जुड़ावना**†—सक० दे० 'जुड़ाना'।
जुत(पु)—वि० दे० 'युक्त'।
जुतना—अक० बैल, घोड़े आदि का गाड़ी हल आदि में लगना। किसी काम में परिश्रमपूर्वक लगना। हल में जोता जाना। **जुतवाना**—सक० [जोतना का प्रे०] दूसरे से जोतने का काम कराना।
जुताई—स्त्री० दे० 'जोताई'।
जुतियाना—सक० जूते मारना। अत्यंत निरादर करना।
जुत्थ(पु)—पुं० दे० 'यूथ'।
जुदा—वि० [फा०] अलग। निराला। ⊙ई = स्त्री० जुदा होने का भाव, वियोग।
जुद्ध(पु)—पुं० दे० 'युद्ध'।
जुन्हरी—स्त्री० ज्वार (अन्न)।
जुन्हाई—स्त्री० चाँदनी, चंद्रिका, चंद्रमा।
जुन्हैया†—स्त्री० दे० 'जुन्हाई'।
जुपना†—अक० बुझना।
जुबली—स्त्री० [अं०] किसी बड़ी घटना का स्मारक महोत्सव, जयंती। **सिलवर**⊙ = किसी घटना का पचीसवाँ, वार्षिक उत्सव, रजत जयंती। **गोल्डेन**⊙ = किसी घटना का पचासवाँ वार्षिक उत्सव, जयंती। **डायमंड**⊙=किसी घटना का साठवाँ वार्षिक उत्सव, हीरक जयंती।
जुबान—स्त्री० दे० 'जबान'।
जुमला—वि० [फा०] सब कुल। पुं० पूरा वाक्य।
जुमा—पु० [अ०] शुक्रवार।
जुमिल—पुं० एक प्रकार का घोड़ा।

जुमेरात—स्त्री० [अ०] वृहस्पतिवार ।
जुर(पु)—पु० बुखार, ज्वर ।
जुरअत—स्त्री० [फा०] साहस, हिम्मत ।
जुरझना(पु)—सक० जलना, फुँकना ।
जुरमुरी—स्त्री० ज्वरांश, हरारत । ज्वर आदि की कँपकँपी ।
जुरना(पु)†—सक० दे० 'जुड़ना' ।
जुरमाना—पुं० [फा०] वह दंड जिसके अनुसार अपराधी कुछ धन दे । अर्थदंड ।
जुरा(पु)—स्त्री० दे० 'जरा' ।
जुराना(पु) अक० दे० 'जुड़ाना' । सक० दे० 'जोड़ना' ।
जुराफा—पु० अफरीका का एक बहुत ऊँचा जंगली पशु जिसकी टाँगें और गर्दन ऊँट की सी लंबी तथा धब्बेदार होती है ।
जुर्म—पु० [अ०] वह कार्य जिसके लिये राजनियम में दंड का विधान हो, अपराध ।
जुर्रा—पुं० [फा०] नर बाज ।
जुर्राव—स्त्री० [तु०] मोजा, पैतावा ।
जुल—पु० धोखा, दम ।
जुलाई(पु)—वि० धोखा देनेवाला धूर्त । स्त्री० [अ०] जून के बाद का अँगरेजी महीना ।
जुलाव—पुं० [फा०] रेचन, दस्त । दस्त की दवा ।
जुलाहा—पुं० कपड़ा बुननेवाला । पानी पर तैरनेवाला एक कीड़ा ।
जुलूस—पुं० दे० 'जलूस' ।
जुलोक—पु० द्युलोक, स्वर्गलोक, देवलोक ।
जुल्फ—स्त्री० [फा०] पीछे लटकनेवाले सिर के लंबे बाल, पट्टा । जुल्फी—स्त्री० जुल्फ ।
जुल्म—पु० [अ०] अत्याचार । मु०~टूटना =आफत आना ।~ढाना=अत्याचार करना । कोई अद्भुत काम करना ।
जुल्लाव—पु० दे० 'जुलाब' ।
जुवा—वि० जवान, तरुण । स्त्री० जवानी ।
जुवारि—स्त्री० एक प्रकार का अन्न, ज्वार ।
जुस्तजू—स्त्री० [फा०] तलाश, खोज ।
जुहाना†—सक० एकत्र करना, जुटाना । इमारत के काम में पत्थर आदि यथास्थान बैठाना । चित्र में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिये आकृतियों को यथास्थान बैठाना, संयोजन ।
जुहार—स्त्री० क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का प्रणाम, सलाम । पुकार, आवाहन । ⊙ना=सक० सहायता माँगना । एहसान लेना । सलाम करना ।
जुही—स्त्री० दे० 'जूही' ।
जूँ—स्त्री० एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है । अव्य० एक आदरसूचक शब्द जो ब्रज, बुंदेलखंड आदि में बड़ों के नाम के साथ लगाया जाता है, जी । मु०—कानों पर~रेंगना=स्थिति का ज्ञान होना, होश होना ।
जूआ—पु० दे० 'जुआ' ।
जूजू—पु० एक कल्पित जीव जिसके नाम से लड़कों को डराते हैं, हाऊ ।
जूझ(पु)—स्त्री० लड़ाई, युद्ध । ⊙ना(पु)†=अक० लड़ना । लड़कर मर जाना ।
जूट—पु० [सं०] जटा की गाँठ, जूड़ा । लट । एक प्रकार का रेशेवाला पौधा जिसके रेशे से बोरे बनते हैं ।
जूठ—वि० उच्छिष्ट । भुक्त । जूठन—स्त्री० जूठा करके छोड़ा हुआ भोजन । वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी ने एक दो बार कर लिया हो, भुक्त पदार्थ । जूठा—वि० खाने से बचा हुआ, उच्छिष्ट । भोगकर अपवित्र किया हुआ, भुक्त । पुं० दे० 'जूठन' ।
जूड़ा—पु० सिर के लंबे बालों को एक साथ लपेटकर बाँधी हुई गाँठ । चोटी, कलगी । मूँज आदि का पूला । घड़े के नीचे रखने की गेंडुरी ।
जूड़ी—स्त्री० वह ज्वर जिसके आने के पहले रोगी को जाड़ा मालूम होता है ।
जूता—पु० चमड़े आदि का बना हुआ वह पहनावा जिसे लोग सर्दी, गरमी या काँटे आदि से बचने के लिये पैरों में पहनते हैं, पदत्राण, उपानह । ⊙खोर=वि० जो मार या गाली की कुछ परवाह न करे । निर्लज्ज । मु०—(किसी का)~उठाना =दासत्व करना, खुशामद करना ।~उछलना या चलना=मारपीट होना । ~खाना=जूतों की मार खाना । बुरा भला सुनना, तिरस्कृत होना । जूते से खबर लेना या बात करना=जूते से

मारना। **जूती दाल बँटना**=आपस मे लडाई झगडा होना।

जूती—स्त्री० स्त्रियों का जूता। छोटा जूता। कम कीमत का जूता। ⊙**पैजार**=स्त्री० जूतों की मारपीट। लडाई, दगा। मु०—**जूतियाँ चटखाते फिरना**=मारा मारा फिरना।

जूथ(पु)—पु० दे० 'यूथ'।

जून†—पु० समय, काल। तृण, घास। [अँ०] मई के बादवाला अँगरेजी का छठा महीना।

जूप—पु० जुआ। विवाह मे एक रीति जिसमे वर और वधू परस्पर जुआ खेलते है,पासा।

जूमना(पु)†—अक० इकट्ठा होना, जुटना।

जूर(पु)—पु० जोड, सचय। ⊙**ना**=सक० दे० 'जोडना'।

जूरा—पु० दे० 'जूडा'।

जूरी—स्त्री० घास या पत्तों का छोटा पूला, जुट्टी। सूरन आदि के नए कल्ले जो बँधे हुए निकलते है। एक प्रकार का पक्वान। पु० [अँ०] पच जो जज के साथ बैठकर मुकदमा सुनते और राय देते है।

जूस—पु० पकी हुई दाल का पानी, परवल आदि का रसा जो बीमारी के बाद रोगी को खिलाया जाता है, पथ्य। उबाली हुई चीज का रस, रसा। सम सख्या, जैसे दो, चार, दस, बीस, सौ आदि। ⊙**ताक**=पु० एक प्रकार का जूआ जिसमे कौडी, इमली के बीज आदि हाथ मे लेकर पूछा जाता है कि यह जूस है या ताक। इस प्रकार का बच्चों का खेल।

जूसी—स्त्री० वह गाढा लसीला रस जो ईख के पकाए हुए रस मे से छूटता है, खाँड का पसेव।

जूह(पु)—पुं० दे० 'यूथ'।

जूहर(पु)—पु० दे० 'जौहर'।

जूही—स्त्री० एक प्रसिद्ध झाड या पौधा, इसके फूल चमेली से मिलते जुलते पर छोटे होते है। एक प्रकार की आतिशबाजी।

जृभ—पु० [सं०] जँभाई। आलस्य। ⊙**क**=वि० जँभाई लेनेवाला पुं० रुद्र के गणो मे से एक। एक अस्त्र जिसके चलाने से शत्रु जँभाई लेने लगते या सो जाते थे। ⊙**ण**=पु० जँभाई लेना, जँभाई।

जृंभा—स्त्री० जँभाई। आलस्य या प्रमाद से उत्पन्न जडता।

जेंगना†—पु० दे० 'जुगनूँ'।

जेंना—सक० दे० 'जेवना'।

जेंवन—पु० भोजन। **जेंवना**—सक० खाना। **जेंवाना**—सक० [जेवना का प्रे०] खिलाना।

जेंवरी—स्त्री० दे० 'जेवडी'।

जे(पु)†—सर्व० 'जो' का बहुवचन।

जेइ, जेउ, जेऊ(पु)†—सर्व० दे० 'जो'।

जेटी—स्त्री० [अँ०] वह स्थान जहाँ जहाजो पर माल चढता या उतरता है।

जेठ—पुं० वैशाख और अषाढ के बीच का महीना, ज्येष्ठ। पति का बडा भाई, भसुर। वि० अग्रज, बडा। **जेठरा**†—वि० दे० 'जेठ'। **जेठास, जेठासी, जेठा**—पुं० बडे भाई का हिस्सा। वि० अग्रज, बडा। सबसे अच्छा। **जेठाई**—स्त्री० बडाई, जेठापन। **जेठानी**—स्त्री० पति के बडे भाई की स्त्री। **जेठी**—वि० जेठ सबधी, जेठ का। **जेठौत, जेठौता**†—पुं० जेठ या पति के बडे भाई का पुत्र। पुं० पति का बडा भाई। **जेठौती**—स्त्री० सपत्ति मे बडे भाई का हिस्सा।

जेठी मधु—स्त्री० मुलेठी।

जेता—पु० जीतनेवाला, विजयी। विष्णु। वि० दे० 'जितना'।

जेतिक(पु)†—क्रि० वि० जितना। **जेतिग**—क्रि० वि० दे० 'जेतिक'।

जेते(पु)†—वि० जितने। **जेतो**(पु)†—क्रि० वि० जितना।

जेब—पु० [फा०] पहनने के कपडो के बगल मे या सामने की ओर लगी हुई वह छोटी थैली जिसमे चीजे रखते है, खीसा, पाकेट। स्त्री० शोभा, सौंदर्य। ⊙**कट**=पु० [हिं०] वह जो दूसरो का रुपया पैसा लेने के लिये उनकी जेब काटता हो, जेबकतरा, गिरहकट। ⊙**खर्च**=पु० [हिं०] वह धन जो किसी को निज खर्च के लिये मिले। ⊙**घडी**=स्त्री० [हिं०] जेब मे रखी जानेवाली छोटी घडी। **जेबी**—वि० जो जेब मे रखा जा सके। बहुत छोटा।

जेय—वि० [सं०] जीतने योग्य।

जेर—स्त्री० वह झिल्ली जिसमे गर्भगत वालक रहता है, आँवल। वि० [फा०] पराजित। जो बहुत तग किया जाय। ⊙पाई=स्त्री० [फा०] स्त्रियो की जूती। ⊙बार=वि० [फा०] जो किसी आपत्ति के कारण बहुत दुखी हो। जिसकी बहुत हानि हुई हो। ⊙बारी=स्त्री० [फा०] आपत्ति या क्षति के कारण बहुत दुखी होना, तगी। हैरानी, परेशानी।

जेरी—स्त्री० दे० 'जेर'। वह लाठी जो चरवाहे कँटीली झाडियाँ इत्यादि हटाने के लिये रखते है।

जेल—पु० [अँ०]वह स्थान जहाँ राज्य द्वारा दडित अपराधी निश्चित समय के लिये रखे जाते हैं, वदीगृह। जजाल, हैरानी या परेशानी का काम।⊙खाना=पु०कारागार।

जेलाटिन, जेलाटीन—पु० [अँ०] सरेस की तरह का एक पदार्थ जो मास, हड्डी और खाल से निकलता है।

जेवड़ा—पु० दे० 'जेवर्डा'। जेवडी—स्त्री० रस्सी।

जेवना—सक० दे० 'जीमना'।

जेवनार—स्त्री०बहुत से मनुष्यो का एक साथ बैठकर भोजन करना।भोज। रसोई,भोजन।

जेवर—पु० [फा०] गहना, आभूषण।

जेवरी—स्त्री० दे० 'जेवडी'।

जेह—स्त्री० कमान की डोरी मे वह स्थान जो आँख के पास लगाया जाता है और जिसकी सीध मे निशाना रहता है,चिल्ला। दीवार मे नीचे की ओर पलस्तर आदि का मोटा और उभडा हुआ लेप।

जेहन—पु० [अ०] बुद्धि, धारणा शक्ति।

जेहर†— स्त्री० पाजेब।

जेहल—पुं० दे० 'जेल'। ⊙खाना‡=पु० 'जेलखाना'।

जेहि(पु)—सर्व० जिसको। जिससे। जिसने।

जै†—वि० जितने, जितनी सख्या मे। स्त्री० दे० 'जय'। ⊙जैकार=स्त्री० दे० 'जय-जयकार'।

जैत(पु)†—स्त्री० विजय। पु० अगस्त की तरह का एक पेड।⊙पत्र (पु)=पु० दे० 'जय-पत्र'। ⊙वार (पु)†=पु० जीतनेवाला, विजयी।

जैतून—पु० [अ०] एक ऊँचा सदाबहार पेड जिसे पश्चिम की प्राचीन जातियाँ पवित्र मानती थी। इसके फल और बीज दवा के काम मे आते हैं। इसका तेल भी होता है जो खाने और मालिश के काम आता है।

जैत्र—पु० [स०] विजेता, विजयी। पारा।

जैन—पु०[स०] महावीर स्वामी द्वारा प्रवर्तित भारत का एक प्राचीन धार्मिक सम्प्रदाय या मत जिसमे अहिंसा को परम धर्म माना जाता है और कोई ईश्वर या सृष्टि-कर्ता नहीं माना जाता। जैन मत माननेवाला, जैनी।

जैनी—पु० जैन मतावलबी।

जैनु(पु)‡—पु० भोजन।

जैमाल—स्त्री० दे० 'जयमाल'।

जैयद—वि० [अ०] बड़ा भारी, बहुत बडा बहुत धनी।

जैल—पु० [अ०] नीचे का भाग। पक्ति सफ। इलाका। ⊙दार=कई गाँवो का प्रबधक। सरकारी ओहदेदार।

जैसा—वि०जिस प्रकार का, जिस रूपरग या गुण का। जितना, जिस परिमाण या मात्रा का। †(केवल विशेषण के साथ)समान, तुल्य। क्रि० वि० जितना, जिस परिमाण मे। मु०~चाहिए=उपयुक्त। जैसे का तैसा=ज्यो का त्यो, जैसा पहले था वैसा ही। जैसे को तैसा=जोड़ का तोड़, सवाल का जवाब।

जैसे—क्रि०वि० जिस प्रकार से, जिस ढग से। ⊙तैसे=किसी प्रकार बड़ी कठिनता से।

जैसो†—वि०, क्रि० वि० दे० 'जैसा'।

जो(पु)†—क्रि० वि० दे० 'ज्यो'।

जोक—स्त्री०पानी मे रहनेवाला एक कीड़ा जो चिपटकर रक्त चूसता है। वि०अपना काम निकालने के लिये बेतरह पीछे पडनेवाला।

जोकी—स्त्री० लोहे का वह काँटा जो दो तख्तो को जोडता है। दे० 'जोक'।

जोधरी—स्त्री० छोटी ज्वार।

जोधैया—स्त्री० चाँदनी, चद्रिका।

जो—सर्व०एक सबधवाचक सर्वनाम जिसके द्वारा कही हुई सज्ञा या सर्वनाम के वर्णन मे कुछ और वर्णन की योजना की जाती

है, जैसे, जो घोडा आपने भेजा था, वह मर गया। (पु)अव्य० यदि, अगर।

जोअना(पु)†—सक० दे० 'जोवना'।

जोइ(पु)†—स्त्री०जोरू, पत्नी। सर्व०दे०'जो'

जोइसी(पु)—पु० दे० 'ज्योतिषी'।

जोउ—सर्व० दे० 'जो'।

जोखना—सक०तौलना,वजन करना। जाँचना।

जोखा—पु० लेखा, हिसाब।

जोखिता(पु)—स्त्री० दे० 'जोषिता'।

जोखिम—स्त्री० भारी अनिष्ट या विपत्ति की आशका,झोका। वह पदार्थ जिसके कारण भारी विपत्ति आने की सभावना हो। मु०~उठाना या सहना = ऐसा काम करना जिसमे भारी अनिष्ट की आशंका हो। जान की ~होना = मौत का भय होना।

जोखों—स्त्री० दे० 'जोखिम'।

जोगंधर—पुं० एक युक्ति जिससे शत्रु के चलाए हुए अस्त्र से अपना बचाव किया जाता था।

जोग—अव्य० को, के निकट, के वास्ते। पुं० दे० 'योग'। **जोगडा**—पुं० बना हुआ योगी, पाखडी। **जोगानल**—स्त्री० योग से उत्पन्न आग। **जोगिंद**(पु)†—पुं० दे० 'जोगींद्र'। **जोगिन**—स्त्री० योग साधनेवाली स्त्री। जोगी की स्त्री। साधुनी। पिशाचिनी। **जोगिनी**—स्त्री० दे० 'योगिनी'। **जोगिया**—वि० जोगी सबंधी, जोगी का। गेरू के रग मे रँगा हुआ, गैरिक। **जोगींद्र**(पु)†—पुं० बडा योगी। योगिराज शिव। **जोगी**—पुं० वह जो योग करता हो, योगी। एक प्रकार के भिक्षुक जो सारगी पर गाते फिरते हैं। **जोगीड़ा**—पुं० एक प्रकार रगीन या चलता गाना। गाने बजानेवालो का एक छोटा समाज। **जोगेश्वर**—पुं० श्रीकृष्ण। शिव। सिद्ध योगी।

जोगवना—सक० यत्न से रखना, रक्षित रखना। सचित या एकत्र करना। आदर करना। जाने देना, ख्याल न करना। पूरा करना।

जोजन(पु)†—पुं० दे० 'योजन'।

जोट(पु)—पुं० जोडी। साथी। प्रतिपक्षी। **जोटा**(पु)†—पुं० जोड़ा। **जोटी**(पु)†—स्त्री० जोड़ी। बराबरी का, समान। प्रतिपक्षी।

जोटिंग—पुं० [सं०] शिव।

जोड़—पुं० सख्याओ का योग। जोडने की क्रिया। मीजान, टोटल। वह स्थान जहाँ दो या अधिक पदार्थ मिले हो। वह टुकड़ा जो किसी चीज मे जोडा जाय। वह चिह्न जो दो चीजो के एक मे मिलने के कारण सधिस्थान पर पडता है, गाँठ। मेल-मिलाप। एक ही तरह की अथवा साथ साथ काम मे आनेवाली दो चीजें। समानता, मेल। वह जो बराबरी का हो, जोडा। पहनने के सब कपडे, पूरी पोशाक। छल, दाँव। ⊙तोड़ = दाँवपेंच, छल-कपट। विशेष युक्ति, ढग। **जोड़ती**—स्त्री० गणित मे कई सख्याओ का योग, जोड।

जोड़ना—सक० दो वस्तुओ को किसी उपाय से एक करना, दो चीजो को मजबूती से एक करना। किसी टूटी हुई चीज के टुकडो को मिलाकर एक करना। द्रव्य या सामग्री को क्रम से रखना या लगाना। एकत्र करना, इकट्ठा करना। कई सख्याओ का योगफल निकालना। वाक्यो या पदो आदि की योजना करना। प्रज्वलित करना। सबध स्थापित करना। **जोड़ाई**—स्त्री० वस्तुओ को जोड़ने की क्रिया या भाव। जोडने की मजदूरी।

जोडन—स्त्री० वह पदार्थ जो दही जमाने के लिये दूध मे डाला जाता है। जामन।

जोडवाँ—वि० (बच्चे) जो एक ही गर्भ से एक साथ उत्पन्न हो, जुडवाँ।

जोड़ा—पु० साथ साथ काम मे आनेवाले दो समान पदार्थ। एक ही सी दो चीजें। जूता, उपानह। पहनने के सब कपड़े, पूरी पोशाक। पति और पत्नी, नर और मादा। वह जो बराबरी का हो, जोड। **जोडी**—स्त्री० दे० 'जोडा'। दो घोडो या दो बैलो की गाडी। गाडी मे साथ जोते जानेवाले दो बैल या दो घोडे। दोनों मुगदर जिनसे कसरत करते है। मँजीरा।

जोत—स्त्री० चमडे का तस्मा या रस्सी जिसका एक सिरा जोते जानेवाले जानवरो के गले मे और दूसरा उस चीज में

जेर—स्त्री० वह झिल्ली जिसमे गर्भगत बालक रहता है, ऑवल। वि० [फा०] पराजित। जो बहुत तग किया जाय। ⊙पाई=स्त्री० [फा०] स्त्रियो की जूती। ⊙बार=वि० [फा०] जो किसी आपत्ति के कारण बहुत दुखी हो। जिसकी बहुत हानि हुई हो। ⊙बारी=स्त्री० [फा०] आपत्ति या क्षति के कारण बहुत दुखी होना, तगी। हैरानी, परेशानी।

जेरी—स्त्री० दे० 'जेर'। वह लाठी जो चरवाहे कँटीली झाडियां इत्यादि हटाने के लिये रखते है।

जेल—पुं० [अं०]वह स्थान जहाँ राज्य द्वारा दडित अपराधी निश्चित समय के लिये रखे जाते हैं, बदीगृह। जजाल, हैरानी या परेशानी का काम। ⊙खाना=पु०कारागार।

जेलाटिन, जेलाटीन—पु० [अं०] सरेस की तरह का एक पदार्थ जो मास, हड्डी और खाल से निकलता है।

जेवड़ा—पु० दे० 'जेवडी'। जेवडी—स्त्री० रस्सी।

जेवना—सक० दे० 'जीमना'।

जेवनार—स्त्री०बहुत से मनुष्यो का एक साथ बैठकर भोजन करना।भोज। रसोई,भोजन।

जेवर—पु० [फा०] गहना, आभूषण।

जेवरी—स्त्री० दे० 'जेवडी'।

जेह—स्त्री० कमान की डोरी मे वह स्थान जो आँख के पास लगाया जाता है और जिसकी सीध मे निशाना रहता है,चिल्ला। दीवार मे नीचे की ओर पलस्तर आदि का मोटा और उभडा हुआ लेप।

जेहन—पु० [अ०] बुद्धि, धारणा शक्ति।

जेहर†— स्त्री० पाजेब।

जेहल—पु० दे० 'जेल'। ⊙खाना‡=पु० 'जेलखाना'।

जेहि(प)—सर्व० जिसको। जिससे। जिसने।

जैं†—वि० जितने, जितनी सख्या मे। स्त्री० दे० 'जय'। ⊙जैकार=स्त्री० दे० 'जय-जयकार'।

जैत(प)†—स्त्री० विजय। पुं०अगस्त की तरह का एक पेड। ⊙पत्र (प)=पु० दे० 'जय-पत्र'। ⊙वार (प)†=पु० जीतनेवाला, विजयी।

जैतून—पु० [अ०] एक ऊँचा सदाबहार पेड जिसे पश्चिम की प्राचीन जातियाँ पवित्र मानती थी। इसके फल और बीज दवा के काम मे आते हैं। इसका तेल भी होता है जो खाने और मालिश के काम आता है।

जैत्र—पु० [सं०] विजेता, विजयी। पारा।

जैन—पु०[स०] महावीर स्वामी द्वारा प्रवर्तित भारत का एक प्राचीन धार्मिक सम्प्रदाय या मत जिसमे अहिसा को परम धर्म माना जाता है और कोई ईश्वर या सृष्टि-कर्ता नहीं माना जाता। जैन मत माननेवाला, जैनी।

जैनी—पुं० जैन मतावलबी।

जैनु(प)†—पु० भोजन।

जैमाल—स्त्री० दे० 'जयमाल'।

जैयद—वि० [अ०] बड़ा भारी, बहुत बड़ा बहुत धनी।

जैल—पु० [अ०] नीचे का भाग। पक्ति सफ। इलाका। ⊙दार=कई गांवो का प्रबधक। सरकारी ओहदेदार।

जैसा—वि०जिस प्रकार का, जिस रूपरग या गुण का। जितना, जिस परिमाण या मात्रा का। †(केवल विशेषण के साथ)समान, तुल्य। क्रि० वि० जितना, जिस परिमाण मे। मु०~चाहिए=उपयुक्त। जैसे का तैसा=ज्यो का त्यो, जैसा पहले था वैसा ही। जैसे को तैसा=जोड का तोड़, सवाल का जवाब।

जैसे—क्रि०वि० जिस प्रकार से, जिस ढंग से। ⊙तैसे=किसी प्रकार बडी कठिनता से।

जैसो†—वि०, क्रि० वि० दे० 'जैसा'।

जो(प)†—क्रि० वि० दे० 'ज्यो'।

जोक—स्त्री०पानी मे रहनेवाला एक कीड़ा जो चिपटकर रक्त चूसता है। वि०अपना काम निकालने के लिये बेतरह पीछे पड़नेवाला।

जोकी—स्त्री० लोहे का वह काँटा जो दो तख्तो को जाडता है। दे० 'जोक'।

जोधरी—स्त्री० छोटी ज्वार।

जोधैया—स्त्री० चाँदनी, चद्रिका।

जो—सर्व०एक सबधवाचक सर्वनाम जिसके द्वारा कही हुई सज्ञा या सर्वनाम के वर्णन मे कुछ और वर्णन की योजना की जाती

है, जैसे, जो घोडा आपने भेजा था, वह मर गया। (पु)अव्य० यदि, अगर।

जोग्रना (पु)†—सक० दे० 'जोवना'।

जोइ (पु)†—स्त्री० जोरू, पत्नी। सर्व० दे० 'जो'

जोइसी (पु)—पु० दे० 'ज्योतिषी'।

जोउ—सर्व० दे० 'जो'।

जोखना—सक० तौलना, वजन करना। जाँचना।

जोखा—पु० लेखा, हिसाब।

जोखिता (पु)—स्त्री० दे० 'जोषिता'।

जोखिम—स्त्री० भारी अनिष्ट या विपत्ति की आशका, झोका। वह पदार्थ जिसके कारण भारी विपत्ति आने की सभावना हो। **मु०~उठाना या सहना** = ऐसा काम करना जिसमे भारी अनिष्ट की आशंका हो। **जान की~होना** = मौत का भय होना।

जोखों—स्त्री० दे० 'जोखिम'।

जोगंधर—पुं० एक युक्ति जिससे शत्रु के चलाए हुए अस्त्र से अपना बचाव किया जाता था।

जोग—अव्य० को, के निकट, के वास्ते। पुं० दे० 'योग'। **जोगड़ा**—पुं० बना हुआ योगी, पाखडी। **जोगानल**—स्त्री० योग से उत्पन्न आग। **जोगिंद** (पु)†—पुं० दे० 'जोगीद्र'। **जोगिन**—स्त्री० योग साधनेवाली स्त्री। जोगी की स्त्री। साधुनी। पिशाचिनी। **जोगिनी**—स्त्री० दे० 'योगिनी'। **जोगिया**—वि० जोगी सबंधी, जोगी का। गेरू के रग मे रँगा हुआ, गैरिक। **जोगींद्र** (पु)†—पुं० बडा योगी। योगिराज शिव। **जोगी**—पुं० वह जो योग करता हो, योगी। एक प्रकार के भिक्षुक जो सारगी पर गाते फिरते हैं। **जोगीड़ा**—पुं० एक प्रकार रगीन या चलता गाना। गाने बजानेवालो का एक छोटा समाज। **जोगेश्वर**—पुं० श्रीकृष्ण। शिव। सिद्ध योगी।

जोगवना—सक० यत्न से रखना, रक्षित रखना। सचित या एकत्र करना। आदर करना। जाने देना, ख्याल न करना। पूरा करना।

जोजन (पु)†—पुं० दे० 'योजन'।

जोट (पु)—पुं० जोड़ी। साथी। प्रतिपक्षी। **जोटा** (पु)†—पुं० जोड़ा। **जोटी** (पु)†—स्त्री० जोड़ी। बराबरी का, समान। प्रतिपक्षी।

जोटिंग—पुं० [सं०] शिव।

जोड़—पुं० सख्याओ का योग। जोडने की क्रिया। मीजान, टोटल। वह स्थान जहाँ दो या अधिक पदार्थ मिले हो। वह टुकड़ा जो किसी चीज मे जोडा जाय। वह चिह्न जो दो चीजो के एक मे मिलने के कारण धिस्थान पर पड़ता है, गाँठ। मेल-मलाप। एक ही तरह की अथवा साथ साथ काम मे आनेवाली दो चीजें। समानता, मेल। वह जो बराबरी का हो, जोडा। पहनने के सब कपडे, पूरी पोशाक। छल, दाँव। ⊙**तोड़** = दाँवपेंच, छल-कपट। विशेष युक्ति, ढग। **जोड़ती**—स्त्री० गणित मे कई सख्याओ का योग, जोड़।

जोड़ना—सक० दो वस्तुओ को किसी उपाय से एक करना, दो चीजो को मजबूती से एक करना। किसी टूटी हुई चीज के टुकडो को मिलाकर एक करना। द्रव्य या सामग्री को क्रम से रखना या लगाना। एकत्र करना, इकट्ठा करना। कई सख्याओ का योगफल निकालना। वाक्यो या पदो आदि की योजना करना। प्रज्वलित करना। सबध स्थापित करना। **जोड़ाई**—स्त्री० वस्तुओ को जोड़ने की क्रिया या भाव। जोडने की मजदूरी।

जोडन—स्त्री० वह पदार्थ जो दही जमाने के लिये दूध मे डाला जाता है। जामन।

जोड़वाँ—वि० (बच्चे) जो एक ही गर्भ से एक साथ उत्पन्न हो, जुडवाँ।

जोड़ा—पु० साथ साथ काम मे आनेवाले दो समान पदार्थ। एक ही सी दो चीजें। जूता, उपानह। पहनने के सब कपड़े, पूरी पोशाक। पति और पत्नी, नर और मादा। वह जो बराबरी का हो, जोड़। **जोड़ी**—स्त्री० दे० 'जोडा'। दो घोड़ो या दो बैलो की गाडी। गाडी मे साथ जोते जानेवाले दो बैल या दो घोडे। दोनों मुगदर जिनसे कसरत करते हैं। मँजीरा।

जोत—स्त्री० चमडे का तस्मा या रस्सी जिसका एक सिरा जोते जानेवाले जानवरो के गले मे और दूसरा उस चीज में

बँधा रहता है जिसमे वे जोते जाते है। वह रस्सी जिसमे तराजू के पल्ले लटकते रहते हैं। काश्त, खेती। भूमि जिसे एक काश्तकार जोतकर काम मे लाता है। दे० 'ज्योति'। **जोतना**--सक० गाडी, कोल्हू आदि को चलाने के लिये उसके आगे बैल, घोडे आदि पशु बाँधना। किसी को जबरदस्ती किसी काम मे लगाना। खेती के लिये हल चलाना। बोने के योग्य बनाना। **जोता**--पु० जुआठे मे बँधी हुई वह पतली रस्सी जिसमे बैलो की गरदन फँसाई जाती है। बहुत बडी शहतीर। वह जो हल जोतता हो। **जोताई**--स्त्री० जोतने का काम या भाव। जोतने की मजदूरी।

जोति, जोती(पु)†--स्त्री० जोतने बोने योग्य भूमि। स्त्री० घी का दीआ जो किसी देवी देवता के आगे जलाया जाता है। दे० 'ज्योति'।

जोतिक(पु)‡--क्रि० वि० जैसा।

जोतिलिंग--पु० दे० 'ज्योतिर्लिंग'।

जोधा(पु)†--पुं० दे० 'योद्धा'।

जोनि(पु)--स्त्री० दे० 'योनि'।

जोन्ह, जोन्हाई(पु)†--स्त्री० दे० 'जुन्हाई'।

जोपै(पु)--प्रत्य० यदि, अगर। यद्यपि।

जोफ--पुं० [अ०] बुढापा। कमजोरी।

जोबन--पुं० युवा होने का भाव, यौवन। खूबसूरती। रौनक, बहार। **जोबनाढ्या**--वि० योवन से भरपूर।

जोम--पुं० [अ०] उमग, उत्साह। जोश, आवेश। अभिमान।

जोय(पु)†--स्त्री० जोरू, स्त्री। (पु) सर्व० जो, जिस।

जोयना(पु)†--सक० बालना, जलाना। सक० दे० 'जोवना'।

जोयसी(पु)†--पु० दे० 'ज्योतिषी'।

जोर--पुं० [फा०] बल, शक्ति। प्रबलता, बढती। अधिकार, काबू। आवेश, झोक। भरोसा, सहारा। परिश्रम। व्यायाम। ⊙**जुल्म** = पुं० अत्याचार। तेजी, बढती। ⊙**दार** = वि० जिसमे बहुत जोर हो, जोरवाला। ⊙**शोर** = पुं० बहुत अधिक जोर। मु०--(किसी बात पर) ~**देना** = बहुत ही आवश्यक या महत्वपूर्ण बतलाना। (किसी के) ~**पर कूदना** = किसी को अपनी सहायता पर देखकर अपना बल दिखाना। ~**मारना या ~लगाना** = बल का प्रयोग करना। बहुत प्रयत्न करना। **जोरो पर होना** = पूरे बल पर होना। खूब उन्नत होना।

जोराजोरी(पु)--स्त्री० जबरदस्ती। क्रि० वि० जबरदस्ती, बलपूर्वक। **जोरावर**--वि० बलवान्, ताकतवर। **जोरावरी**--स्त्री० जबरदस्ती, बलप्रयोग।

जोरना--सक० दे० 'जोडना'।

जोरा--पु० जोडा। तोले भर राँगा और तोले भर चाँदी के योग से दो तोले चांदी बनाने की क्रिया या स्थिति (रसायन)।

जोरी(पु)†--पु० जोडी। स्त्री० जबरदस्ती।

जोरू--स्त्री० स्त्री, पत्नी।

जोलाहल(पु)†--स्त्री० ज्वाला, अग्नि।

जोली(पु)†--स्त्री० बराबरी।

जोवना(पु)--सक० जोहना, देखना। ढूँढना। आसरा देखना।

जोश--पु० [फा०] आँच या गरमी के कारण उबलना, उफान। चित्त की तीव्र वृत्ति, आवेश। उत्साह, उमग। मु०--खून का~ = प्रेम का वह वेग जो अपने वश के किसी मनुष्य के लिये हो। ~**खाना** = उबलना, उफनना। ~**देना** = पानी के साथ उबालना।

जोशन--पु० [फा०] भुजाओ पर पहनने का गहना। जिरह बकतर, कवच।

जोशाँदा--पुं० [फा०] क्वाथ, काढा। गुलबनफशा, गावजबाँ आदि का काढा।

जोशी--पु० दे० 'जोषी'।

जोशीला--वि० जिसमे जोश हो, आवेगपूर्ण।

जोष--स्त्री० स्त्री, नारी। दे० 'जोख'।

जोषिता--स्त्री० स्त्री, नारी।

जोषी--पु० गुजराती, महाराष्ट्र और पहाडी ब्राह्मणो मे एक जाति। ज्योतिषी, गणक।

जोह(पु)†--स्त्री० खोज, तलाश। प्रतीक्षा। कृपादृष्टि। **जोहन**(पु)†--स्त्री० देखने या

जोहने की क्रिया। तलाश। प्रतीक्षा। **जोहना**Ⓟ†—सक० देखना, ताकना। ढूंढना, पता लगाना। प्रतीक्षा करना।

जोहार—स्त्री० अभिवादन, प्रणाम। पुं० दे० 'जौहर'। ⊙**ना**†=अक० प्रणाम या अभिवादन करना।

जौं†—अव्य० यदि, जो। क्रि० वि० दे० 'ज्यों'।

जौरा भौंरा—पुं० किले या महलों का वह तहखाना जिसमें गुप्त खजाना आदि रहता है। दो बालकों का जोड़ा।

जौरे†—क्रि० वि० पास, निकट।

जौ—पुं० गेहूँ की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीज या दाने की गिनती अनाजों में है। एक पौधा जिसकी लचीली टहनियों से टोकरे, झाड़ आदि बनते हैं। एक तौल। † अव्य० यदि, अगर। Ⓟ† क्रि० वि० जब।

जौख—पुं० झुंड, जत्था। सेना। पक्षियों की श्रेणी।

जौजा—स्त्री० जोरू पत्नी।

जौधिक—पुं० तलवार या खड्ग के ३२ हाथों में से एक।

जौनⓅ†—सर्व० जो। वि० जो। पुं० दे० 'यवन'।

जौपैⓅ†—अव्य० अगर, यदि।

जौवतिⓅ—स्त्री० दे० 'युवती'।

जौहर—पुं० रत्न, बहुमूल्य पत्थर। सार वस्तु। हथियार की ओप। उत्तमता, खूबी। ईसा की १३वीं से १५वीं सदी तक अफगान बादशाहों में दूसरों की स्त्रियों को छीनने की प्रवृत्ति के कारण प्रचलित, राजपूतों की एक प्रथा जिसके अनुसार नगर या गढ़ के घिर जाने पर अपनी हार निश्चित देखकर लड़ने योग्य समस्त वीर अपनी माताओं, बहनों, स्त्रियों और पुत्र-वधुओं आदि स्त्रियों को दहकती हुई चिता के सुपुर्द करके फाटक खोल देते थे और स्वयं शत्रु का संहार करते हुए वीरगति लाभ करते थे। वह चिता जो दुर्ग में स्त्रियों के जलने के लिये बनाई जाती है। आत्महत्या।

जौहरी—पु० [फा०] रत्न परखने या बेचने-वाला। पारखी।

ज्ञ—पुं० [सं०] ज् और ञ के संयोग से बना हुआ संयुक्त अक्षर। ज्ञान, बोध। ज्ञानी, जाननेवाला (जैसे, शास्त्रज्ञ)। ब्रह्मा। बुध ग्रह। Ⓟ**प्त** = वि० जताया हुआ। ⊙**प्ति** = स्त्री० जानकारी। बुद्धि।

ज्ञात—वि० [सं०] जाना हुआ। ⊙**यौवना** = स्त्री० वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन का ज्ञान हो। **ज्ञातव्य**—वि० जो जाना जा सके, ज्ञेय। **ज्ञाता**—वि० जाननेवाला। ज्ञानी। **ज्ञातृत्व**—पु० जानकारी।

ज्ञाति—पुं० एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य, गोती। भाई बंधु। स्त्री० दे० 'जाति'।

ज्ञान—पुं० [सं०] वस्तुओं और विषयों का बोध, जानकारी, प्रतीति। तत्वज्ञान। ⊙**कांड** = पु० ईश्वर, जीव, आत्म और अनात्म तत्व, सृष्टि, ब्रह्मा, विश्वविधान और प्रलय, इहलोक और परलोक तथा जन्म और मृत्यु आदि तात्विक बातों की चारों वेदों में बिखरी हुई गंभीर विवेचनाओं का महर्षि बादरायण व्यास द्वारा किया हुआ संग्रह, उत्तर मीमांसा। कर्मकांड के अतिरिक्त वैदिक प्रवचन। ⊙**गम्य** = पुं० जो जाना जा सके, ज्ञेय। ⊙**गोचर** = वि० दे० 'ज्ञानगम्य'। ⊙**योग** = पुं० ज्ञान की प्राप्ति द्वारा मोक्ष का साधन। ⊙**वान्** = वि० ज्ञानी। ⊙**वृद्ध** = वि० जिसकी जानकारी अधिक हो। **ज्ञानेंद्रिय**—स्त्री० वे पाँच इंद्रियाँ जिनसे जीवों के विषयों का बोध होता है, यथा—आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा। मु० ~**छाँटना** = अपनी विद्या या जानकारी जताने के लिये लंबी चौड़ी बातें करना। **ज्ञानी**—वि० ज्ञानवान्, जानकार। आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी।

ज्ञापक—वि० [सं०] जतानेवाला, सूचक।

ज्ञापन—पु० [सं०] जताने या बताने का कार्य। **ज्ञापित**—वि० [सं०] जताया हुआ, सूचित।

ज्ञेय—वि० [सं०] जो जानने योग्य हो। जो जाना जा सके।

ज्या—स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी। चाप के

किन्ही दो विंदुओ को मिलानेवाली सीधी रेखा (गणित)। पृथ्वी। ⊙मिति = स्त्री० वह गणित जिससे भूमि के परिमाण, रेखा, कोण, तल आदि का ज्ञान होता है, क्षेत्रगणित, रेखागणित।

ज्यादती—स्त्री० [फा०] अधिकता। अत्याचार। जबरदस्ती।

ज्यादा—वि० [फा०] अधिक, बहुत।

ज्यान(पु)—पुं० हानि, नुकसान।

ज्याना(पु)—सक० दे० 'जिलाना'।

ज्याफत—स्त्री० दावत, भोज। आतिथ्य।

ज्यारना(पु)—अक० दे० 'जिलाना'।

ज्यारी—वि० जिलानेवाली, जीवनदायिनी।

ज्यावना(पु)†—सक० दे० 'जिलाना'।

ज्यूं†—अव्य० दे० 'ज्यो'।

ज्येष्ठ—वि० [सं०] बडा, जेठा। वृद्ध। श्रेष्ठ। पु० जेठ का महीना। परमेश्वर। पति का बडा भाई। ⊙ता = स्त्री० ज्येष्ठ होने का भाव। वडाई। श्रेष्ठता। **ज्येष्ठा**—स्त्री० सबसे बडी पत्नी। वह स्त्री जो औरो की अपेक्षा पति को अधिक प्यारी हो। मध्यमा उँगली। कुडल के आकार का अठारहवाँ नक्षत्र जो तीन तारो से बना है। छिपकली। वि० बडी।

ज्यों(पु)—क्रि० वि० जिस प्रकार, जैसे, जिस ढग से। जिस क्षण, जैसे ही। अव्य० मानो, जैसे। ⊙का त्यो = ठीक वैसा ही। ⊙ज्यो = जिस क्रम से। जिस मात्रा से, जितना। ⊙त्यों = किसी न किसी प्रकार।

ज्योति शिखा—स्त्री० [सं०] विषम वर्णवृत्तो का एक भेद जिसके पहले दल मे ३२ लघु और दूसरे दल मे १६ गुरु होते हैं।

ज्योति—स्त्री० प्रकाश, उजाला। लपट, लौ। अग्नि। सूर्य। नक्षत्र। आँख की पुतली के मध्य का विंदु। दृष्टि। विष्णु। परमात्मा। ⊙क = पुं० दे० 'ज्योतिषी'। ⊙त = वि० ज्योति से भरा हुआ, प्रकाशमान्। उजला। ⊙मय = वि० दे० 'ज्योतिर्मय'। ⊙मान् = वि० दे० 'ज्योतिष्मान्'।

ज्योतिर्—स्त्री० [सं०] ('ज्योतिस्' के लिये के० समास मे) दे० 'ज्योति'। ⊙इंगण = पुं० जुगनू। ⊙मय = वि० प्रकाशमय, जगमगाता हुआ। ⊙लिंग = पुं० भारतवर्ष मे प्रतिष्ठित शिव के प्रधान लिंग जो बारह हैं। शिव, महादेव। ⊙लोक = पुं० ध्रुव लोक। ⊙विद = पुं० ज्योतिषी। ⊙विद्या = स्त्री० ज्योतिष।

ज्योतिश्चक्र—पुं० [सं०] नक्षत्रो और राशियो का मडल।

ज्योतिष—पुं० [सं०] वेदो के छह अगो में गिनी जानेवाली वह विद्या जिससे अतरिक्ष मे स्थित ग्रहो, नक्षत्रो आदि की पारस्परिक दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है, नक्षत्र विद्या। फलित ज्योतिष। अस्त्रो का एक सहार या रोक।

ज्योतिषी—पुं० ज्योतिष शास्त्र का जाननेवाला मनुष्य, दैवज्ञ।

ज्योतिष्क—पुं० ग्रह, तारा, नक्षत्र आदि का समूह। मेथी। चित्रक, चीता।

ज्योतिष्टोम—पु० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जिसे अग्निष्टोम नामक यज्ञ का प्रारंभिक भाग माना जाता है।

ज्योतिष्—पु० [सं०] ('ज्योतिस्' के लिये समास मे) दे० 'ज्योति'। ⊙पथ = पुं० आकाश। ⊙पुज = पु० नक्षत्रसमूह। ⊙मती = स्त्री० मालकंगनी। रात्रि। ⊙मान् = वि० प्रकाशयुक्त। पु० सूर्य।

ज्योत्स्ना—स्त्री० [सं०] चद्रमा का प्रकाश, चाँदनी। चाँदनी रात।

ज्योनार—स्त्री० पका हुआ भोजन, रसोई। भोज, दावत।

ज्योरी†—स्त्री० रस्सी।

ज्योहत, ज्योहर(पु)†—आत्महत्या। जौहर।

ज्यौ—अव्य० जो, यदि। पुं० दे० 'जी'। (पु)पु० आत्मा।

ज्यौतिष—वि० [सं०] ज्योतिष सबधी।

ज्वर—पुं० [सं०] शरीर की वह गरमी जो अस्वस्थता प्रकट करे, बुखार।

ज्वलंत—वि० [सं०] प्रकाशमान, दीप्त। अत्यत स्पष्ट।

ज्वलन—पु० [सं०] जलने का कार्य या भाव। लपट, ज्वाला। **ज्वलित**—वि० जला हुआ। चमकता या झलकता हुआ, उज्ज्वल।

ज्वान—वि० दे० 'जवान'।
ज्वार—स्त्री० एक प्रकार का मोटा अनाज, जोन्हरी। पु० समुद्र की तरग का चढाव, 'भाटा' का उलटा। ⊙भाटा=पु० समुद्र के जल का चढ़ाव उतार या लहर का बढना और घटना जो चद्रमा और सूर्य के आकर्षण से होता है। इसके चढने को ज्वार और उतरने को भाटा कहते हैं।
ज्वारी—वि० जूआ खेलनेवाला, जुआरी।
ज्वाल—पु० लौ, लपट। ⓟस्त्री० दे० 'ज्वाला'।
ज्वाला—स्त्री० [सं०] अग्निशिखा, लपट। विष आदि की गरमी। गरमी, ताप। ⊙मुखी पर्वत=पु० वह पर्वत जिसकी चोटी मे से धुआँ, राख, पिघले या जले हुए पदार्थ बराबर अथवा समय समय पर निकला करते हैं।

झ

झ—हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यजन जिसका उच्चारण स्थान तालू है।
झँई—स्त्री० आँखो के सामने छा जानेवाला अँधेरा, चक्कर।
झंकना—अक० दे० 'झीखना'।
झंकार—स्त्री० [सं०] झनकार, झीगुर आदि छोटे जानवरो के बोलने का शब्द। ⊙ना=सक० [हिं०] 'झनझन' शब्द उत्पन्न करना। अक० 'झनझन' शब्द होना। झंकृत—वि० जिसमे झनकार हुई हो। झंकृति—स्त्री० दे० 'झकार'।
झंखना—अक० दे० झीखना।
झंखाड़—पु० घनी और काँटेदार झाडी या पौधा। वह वृक्ष जिसके पत्ते झड गए हो। व्यर्थ की और रद्दी चीजो का समूह।
झँगा—पु० दे० 'झगा'।
झँगुली ⓟ—स्त्री० दे० 'झगा'।
झंझट—पु० स्त्री० व्यर्थ का झगडा, बखेडा। कठिनाई, परेशानी।
झंझनाना—अक० झनझन शब्द होना, झका-रना। सक० झनझन शब्द करना।
झंझर—स्त्री० दे० 'झज्झर'।
झँझरा—दे० जिसमे बहुत से छोटे छेद हो।
झँझरी—स्त्री० किसी चीज मे बहुत से छोटे छेदों का समूह, जाली। दीवारो आदि मे बनी हुई छोटी जालीदार खिडकी।
झंझा—पु० [सं०] वह तेज आँधी जिसके साथ वर्षा भी हो। तेज आँधी, तूफान।
झंझानिल, झंझावात—पु० दे० 'झझा'।
झंझी—स्त्री० फूटी कौडी।
झँझोड़ना—सक० किसी चीज को बहुत वेग और झटके के साथ हिलाना जिसमें वह टूटफूट जाय या नष्ट हो जाय, झकझो-रना। किसी जानवर का अपने से छोटे जानवर को मार डालने के लिये दाँतो से पकड़कर खूब झटका देना। पानी आदि से भरे बरतन को इसी प्रकार वेग से हिलाना।
झंडा—पु० तिकोने या चौकोर कपड़े का टुकडा जिसका एक सिरा लकडी आदि के डडो मे लगा रहता है और जिसका व्यवहार अपनी राजनीतिक स्वतत्रता या अधिकार सूचित करने, कोई चिह्न प्रकट करने, सकेत करने या उत्सव आदि सूचित करने के लिये होता है। पताका, निशान ज्वार, बाजरे आदि के पौधे के ऊपर का नरफूल, जीरा। मु०~खड़ा करना=सैनिक आदि एकत्र करने के लिये झडा स्थापित करके सकेत करना, आडबर करना।~गाड़ना या फहराना=किसी स्थान, विशेषत नगर या किले आदि पर अपना अधिकार करके उसके चिह्नस्वरूप झडा स्थापित करना। पूर्ण रूप से अपना अधिकार करके उसके चिह्नस्वरूप झडा स्थापित करना। पूर्ण रूप से अपना अधि-कार जमाना। झंडी—स्त्री० छोटा झडा।
झँडूला—वि० (बालक) जिसके सिर पर गर्भ के बाल हो। घनी पत्तियोवाला, सघन (वृक्ष)।
झंप—पुं० [सं०] उछाल, फलाँग। झपट। घोडो के गले का एक आभूषण। मु०~देना=कूदना।
झँपकना, झपना—अक० छिपना, आड होना। कूदना, लपकना। टूट पडना, एकदम से आ पड़ना। झेंपना।
झँपरी—स्त्री० पालकी को ढकने की खोली।

झंपान—पुं० पहाड़ी सवारी के लिये एक प्रकार की खटोली झप्पान।
झंपित(पु)—वि० ढका या छिपाया हुआ।
झँपोला—पुं० छोटा झाँपा या झावा, छाबडा।
झंव—पुं० गुच्छा।
झँवकार(पु)†—वि० झाँवरे रंग का, काला।
झँवराना—अक० कुछ काला पडना। कुम्हलाना, फीका पडना।
झँवा—पुं० दे० 'झाँवा'। ⊙ना = अक० झाँवे के रँग का हो जाना, कुछ काला पड जाना। अग्नि का मद हो जाना। घट जाना। कुम्हलाना, मुरझाना। झाँवे से रगडा जाना। सक० झाँवे के रंग का कर देना, कुछ काला कर देना। आग ठढी करना। घटाना। कुम्हला देना। झाँवे से रगडना, रगडवाना।
झँसना—सक० किसी को बहकाकर उसका धन आदि ले लेना। सिर या तलुए आदि मे कोई चिकना पदार्थ लगाकर हथेली से उसे बार बार रगडना।
झई—स्त्री० दे० 'झाई'।
झउआ†—पुं० दे० 'झावा'।
झक—स्त्री० सनक, धुन। दे० 'झख'। वि० चमकीला, साफ। ⊙ना† = अक० बकवाद करना, व्यर्थ की बातें करना। क्रोध मे आकर अनुचित वचन कहना।
झकझक—स्त्री० व्यर्थ की हुज्जत। बकबक।
झकझका—वि० चमकीला। झकझकाहट—स्त्री० चमक।
झकझेलना—सक० दे० 'झकझोरना'।
झकझोर—पुं० झकझोरने की क्रिया या भाव, झटका। वि० झोकेदार, तेज। ⊙ना = सक० किसी चीज को पकडकर खूब हिलाना। झकझोरा—पुं० झटका।
झकझोलना—सक० दे० 'झकझोरना'। (पु)अक० झकझोरा जाना।
झका(पु)—वि० चमकीला, साफ। ⊙झक = वि० खूब साफ और चमकता हुआ।
झकुराना†—अक० झूमना। सक० झूमने मे प्रवृत्त करना।
झकोरना—अक० हवा का झोका मारना।
झकोरा(पु)—पु० हवा का झोका। झटका, झोका।
झकोल(पु)†—पु० दे० 'झकोर'।
झक्क—वि० साफ और चमकता हुआ। स्त्री० दे० 'झक'।
झक्कड—पुं० तेज आँधी। वि० दे० 'झक्की'।
झक्की—वि० बहुत बक बक करनेवाला। जो अपनी धुन के सामने किसी की न सुने, सनकी।
झखना(पु)†—अक० दे० 'झीखना'।
झख—स्त्री० झीखने का भाव या क्रिया। मछली। मु०~मारना = व्यर्थ समय नष्ट करना। अपनी मिट्टी खराब करना। अक० दे० 'झीखना'।
झखी(पु)—स्त्री० मछली।
झगडना—अक० झगडा करना। झगडा—पुं० लडाई, हुज्जत, तकरार। झगडालू—वि० जो बात बात मे झगडा करता हो, कलहप्रिय। झगडी(पु)—स्त्री० दे० 'झगडालू'।
झगर—पुं० एक प्रकार की चिडिया।
झगरा(पु)†—पुं० झगडा, तकरार। झगराऊ(पु)†—वि० दे० 'झगडालू'। झगरी (पु)†—स्त्री० दे० 'झगडालू'।
झगला(पु)†—पु० दे० 'झगा'। झगा—पुं० छोटे बच्चो के पहनने का ढीला कुरता।
झगुली(पु)†—स्त्री० दे० 'झगा'।
झज्झर—पु० कुछ चौडे मुँह का पानी रखने का मिट्टी का एक प्रकार का बरतन।
झज्झी—स्त्री० फूटा कौडी झंझी।
झझक—स्त्री० झझकने की क्रिया या भाव, भडक। झुँझलाहट। रह रहकर निकलनेवाली अप्रिय गंध। रह रहकर होनेवाला पागलपन का हलका दौरा। झझकन(पु)† —स्त्री० दे० 'झझक'। झझकना—अक० अचानक डरकर ठिठकना, भडकना। चौक पडना। झझकाना—सक० [झझकना का प्रे०] भय की आशका कराके किसी काम से रोक देना, भडकाना। चौंका देना।
झझकारना—सक० डपटना, डाँटना। दुरदुराना, झटकारना। तुच्छ समझना।
झट—क्रि० वि० तुरत, उसी समय।
झटकना—सक० किसी चीज को झोंके से हिलाना जिसमे उसपर पडी हुई

दूसरी चीज गिर पडे, झटका देना। झोका देना। चालाकी से या जबरदस्ती किसी की कोई चीज लेना, हथियाना। अक० रोग या दुख से क्षीण होना। **झटका**—पु० झटकने की क्रिया, हलका धक्का। झटके का भाव। पशुवध जिसमे पशु हथियार के एक ही आघात से काट डाला जाता है। आपत्ति, रोग या शोक आदि का आघात।

झटकारना—सक० दे० 'झटकना'।

झटपट—अव्य० तुरत।

झटिति—क्रि० वि० [सं०] झट, चटपट।

झड़—स्त्री० तेज हवा के साथ होनेवाली लगातार वर्षा। दे० 'झडी'। **झडी**—स्त्री० लगातार झडने की क्रिया। छोटी बूँदो की लगातार वर्षा। लगातार बातें कहते जाना या चीजें रखते जाना। ताले के भीतर का खटका।

झडकना(पु)—सक दे० 'झिडकना'।

झड़झड़ाना—सक० दे० 'झिडकना'। दे० 'झझोडना'।

झडन—वि० झडी हुई चीज। झडने की क्रिया या भाव।

झड़ना—अक० किसी चीज से टूटकर गिरना, जैसे, पेड से पत्तो का झडना। अधिक सख्या मे गिरना। झाडना या साफ किया जाना।

झड़प—स्त्री० मुठभेड, लडाई। क्रोध। आवेश। ⊙ना = अक० आक्रमण करना। लडना, झगडना। जबरदस्ती किसी से कुछ छीन लेना, झटकना।

झड़बेरी—स्त्री० जगली बेर।

झडाका—पु० मुठभेड, झडप। क्रि० वि० झट से, चटपट।

झड़ाझड—क्रि० वि० लगातार।

झन—स्त्री० धातु के टुकडो के बजने की ध्वनि।

झनक—स्त्री० झनझन शब्द, झनकार। ⊙ना = अक० झनकार का शब्द करना क्रोध मे हाथ पैर पटकना। दे० 'झीखना'।

झनकवात—स्त्री० एक प्रकार का वायुरोग।

झनकार—स्त्री० झनझनाहट का शब्द, झकार।

झनझनाना—अक० झनझन शब्द होना। सक० झनझन शब्द उत्पन्न करना।

झनस—पु० एक प्रकार का पुराना बाजा।

झनाझन—स्त्री० झकार, झनझन शब्द। वि० झनझन शब्द सहित।

झनिया—वि० दे० 'झीना'।

झन्नाहट—स्त्री० झनकार, झनझनाहट।

झप—क्रि० वि० तुरत।

झपक—स्त्री० पलक गिरने भर का समय बहुत थोडा समय। पलक का गिरना। हलकी नीद, झपकी। ⊙ना = अक० पलक का गिरना। झँपना। सक० झपकी लेना, ऊँघना, पलक गिराना या बद करना। झपटना। **झपकाना**—सक० [अक० झपकना] पलको को बार बार बद करना। **झपकी**—स्त्री० हलकी नीद। आँख झपकने की क्रिया। धोखा, चकमा। **झपकौंहा**(पु)†—वि० नीद से भरा हुआ (नेत्र), झपकता हुआ। मस्त, नशे मे चूर।

झपका—पु० हवा का झोका।

झपट—स्त्री० झपटने की क्रिया या भाव। ⊙ना = अक० किसी चीज को लेने या आक्रमण करने के लिये वेग से उस ओर बढना। किसी को झपटने मे प्रवृत्त करना। **झपटान**—स्त्री० झपटने की क्रिया या भाव, झपट। **झपटाना**—सक० 'झपटना' का प्रे०।

झपट्टा†—पु० दे० 'झपट'।

झपताल—पु० सगीत मे एक ताल।

झपना—अक० (पलको का) गिरना, आँखें झपकना। झुकना। झेंपना।

झपलैया(पु)—स्त्री० दे० 'झँपोला'।

झपस—स्त्री० गुजान होने का भाव। घनी हरियाली। ⊙ना = अक० लता या पेड की डालियो का खूब घना होकर फैलना।

झपाका—पु० शीघ्रता। क्रि० वि० झप से, जल्दी।

झपाटा—पु० चपेट, आक्रमण।

झपाना—सक० मूँदना, बद करना, (आँखो या पलको का)। झुकाना।

झंपित—वि० झपा हुआ, मुंदा हुआ। जिसमे नीद भरी हो। (नेत्र)। लज्जायुक्त।
झपेट—स्त्री० दे० 'झपट'। ⊙ना=सक० आक्रमण करके दबा लेना, दबोचना। झपेटा—पुं० चपेट, झपट। भूत प्रेतादि की बाधा या आक्रमण।
झप्पान—पुं० दे० 'झपान'।
झबरा—वि० जिसके बहुत लबे लबे बिखरे हुए बाल हो। झबरीला—वि० कुछ बडा, चारो तरफ बिखरा और घुमावदार (केशसमूह)। झबरैरा(पु)†—वि० दे० 'झबरीला'।
झबा—पु० दे० 'झब्बा'।
झबार, झबारि†—स्त्री० टटा, बखेड़ा।
झबिया†—स्त्री० छोटा झब्बा, छोटा फुंदना। सोने चाँदी की छोटी छोटी कटोरी जो बाजूबद, हुमेल, झुमके आदि मे पिरोई रहती है।
झबूकना†—अक० झझकना, चौंकना।
झब्बा—पुं० तारो का गुच्छा जो कपडो या गहनो मे शोभा के लिये लटकाया जाता है। एक मे लगी छोटी चीजो का समूह, गुच्छा।
झमक—स्त्री० चमक का अनुकरण। प्रकाश, उजाला। झमझम शब्द। नखरे की चाल। ⊙ना=अक० रह रहकर चमकना, दमकना। झपकना, छाना। झमझम शब्द होना, झनकार होना। लडाई मे हथियारो का चमकना और खनकना। अकड दिखलाना। झमझम शब्द करना। झमकाना—सक० [अक० झमकना] हिलाकर चमक पैदा करना। आभूषण या हथियार आदि बजाना और चमकाना।
झमकारा—वि० झमझमाकर बरसनेवाला (बादल)।
झमकीला—वि० चमकीला। चचल।
झमझम—स्त्री० घुंघरुओ आदि के बजने का शब्द, छमछम। पानी बरसने का शब्द। वि० जो खूब चमके, चमकता हुआ। क्रि० वि० झमझम शब्द के साथ। चमक दमक के साथ। झमझमाना—अक० झमझम शब्द होना या करना। चमचमाना, चमकना।
झमना—अक० झुकना, दबना।
झमा(पु)—पु० दे० 'झाँवाँ'।
झमाका—पु० पानी बरसने या गहनों के बजने का झमझम शब्द। ठसक, नखरा।
झमाझम—क्रि० वि० उज्ज्वल काति के सहित, दमक के साथ। झमझम शब्द सहित।
झमाट—पु० झुरमुट।
झमार—पु० वर्षा का झोका।
झमाना—अक० छाना, घेरना। दे० 'झँवाना'।
झमेला—पुं० बखेडा, झझट। भीड़भाड़। झमेलिया—वि० झमेला करनेवाला, झगडालू।
झर—स्त्री० [सं०] पानी गिरने का स्थान, निर्झर। झरना, सोता। समूह। तेजी, वेग। झडी, लगातार वृष्टि। (पु)ताप। ⊙झर=स्त्री० जल के गिरने, बरसने या हवा के चलने आदि का शब्द। झरझराना—सक० झरझर शब्द के साथ गिराना। दे० 'झडझडाना'। अक० झरझर शब्द के साथ जलना।
झरक(पु)—स्त्री० दे० 'भलक'। ⊙ना(पु)=अक० दे० 'झलकना'। दे० 'झिडकना'।
झरन—स्त्री० झरने की क्रिया। वह जो कुछ झरकर निकला हो। दे० 'झडन'।
झरना—पु० ऊँचे स्थान से गिरनेवाला जलप्रवाह, सोता, चश्मा। पु० एक प्रकार की चलनी जिसमे रखकर अनाज छाना जाता है। लबी डाँडी की छेददार चिपटी करछी। वि० झरनेवाला, जो झरता हो। (पु)† अक० दे० 'झडना'। ऊँची जगह से सोते का गिरना।
झरनि(पु)†—स्त्री० दे० 'झरन'। झरनी—वि० झारनेवाली, गिरानेवाली।
झरप(पु)†—स्त्री० झोका, झकोर। वेग, तेजी। चाँड़, टेक। चिक, परदा। दे० 'झडप'। झरपना(पु)†—अक० झोका देना, बौछार मारना। दे० 'झड़पना'।
झरसना(पु)—अक० दे० 'झुलसना'।
झरहरना—अक० झरझर शब्द करना। झरहराना—अक० हवा के झोंको से पत्तों

का शब्द करना। सक० झटकना, झाड़ना।
झरहरा†—वि० दे० 'झँझरा'।
झराझर—क्रि० वि० झरझर शब्द के सहित। लगातार, बराबर। वेगसहित।
झरिफ(पु)—पु० चिलमन, चिक, परदा।
झरी—स्त्री० पानी का झरना। वह किराया या कर जो किसी बाजार या सट्टी मे जाकर सौदा बेचनेवालो से प्रतिदिन लिया जाता है। पतली दरार या छेद। दे० 'झड़ी'।
झरोखा—पुं० खिड़की, गवाक्ष।
झल—स्त्री० लपट, आँच। किसी विषय की उत्कट इच्छा, उग्र कामना। क्रोध। समूह।
झलक—स्त्री० दमक, आभा। प्रतिबिंब। वह प्रधान रंगत या आभा जो किसी समूचे चित्र मे व्याप्त हो। ⊙ना=अक० आभास होना। चमकना, दमकना। झलकनि(पु)—स्त्री० दे० 'झलक'।
झलका—पुं० छाला, फफोला।
झलकाना—सक० चमकाना, दमकाना। दरसाना, कुछ आभास देना।
झलझल—स्त्री० चमक, दमक। क्रि० वि० रह रहकर निकलनेवाली आभा के साथ। झलझलाना—अक० चमकना। सक० चमकाना। चमचमाना। झलझलाहट—स्त्री० चमक दमक।
झलना—सक० हवा करने के लिये कोई चीज हिलाना। अक० इधर उधर हिलना, † शेखी बघारना। झाला जाना [सक० झालना]। दे० 'झेलना'।
झलमल—पु० अँधेरे के बीच थोड़ा थोड़ा उजाला। चमक दमक। क्रि० वि० 'झलभल'।
झलमला—वि० हलकी चमकवाला। रुक रुककर चमकनेवाला। झलमलाना—अक० रह रहकर चमकना, चमचमाना। निकलते हुए प्रकाश का हिलना डोलना। सक० किसी स्थिर ज्योति या लौ को हिलाना डुलाना।
झलरा†—पु० एक प्रकार का पकवान जिसे झालर भी कहते है।
झलराना(पु)†—अक० फैलकर छाना।
झला(पु)†—पु० हलकी वर्षा। झालर, तोरण या बदनवार आदि। पंखा। समूह।
झलाझल—वि० खूब चमचमाता हुआ, चमाचम। झलाझली—वि० चमकदार। स्त्री० झलाझल का भाव।
झलाबोर—पु० कलाबत्तू का बना हुआ साड़ी आदि का चौड़ा आँचल। कारचोबी। वि० चमकदार।
झलामल†—स्त्री० झलमल, चमक दमक। वि० चमकीला।
झल्ल—स्त्री० पागलपन।
झल्लक—पु० [सं०] काँसे का बना हुआ करताल, झाँझ।
झल्ला—पु० बड़ा टोकरा। वर्षा। बौछार। † वि० पागल, बेवकूफ।
झल्लाना—अक० चिढ़ना, झुँझलाना। सक० चिढ़ाना, खिझाना।
झवा—पु० दे० 'झाँवा'।
झष—पुं० [सं०] मछली। मकर, मगर। ताप। वन। मीन राशि। दे० 'झख'। ⊙केतु=पु० कामदेव।
झसना—सक० दे० 'झँसना'।
झहनना(पु)—अक० झन्नाटे या सन्नाटे मे आना। (रोएँ का) खड़ा होना। झनझन शब्द होना।
झहनाना—सक० [अक० झहनना] झनकार करना।
झहरना(पु)—अक० झरने का सा या झरझर शब्द करना। शिथिल पड़ना। सक० झिड़कना, झल्लाना। झहराना—अक० शिथिल होना। झरझर शब्द के साथ गिरना। झल्लाना, खिजलाना। हिलाना।
झाँई—स्त्री० परछाईं, झलक। अंधकार। धोखा। प्रतिध्वनि। एक प्रकार के हलके काले धब्बे जो रक्तविकार से मनुष्यशरीर पर पड़ जाते हैं।
झाँक—स्त्री० झाँकने की क्रिया या भाव। ⊙ना=अक० ओट, आड़, खिड़की, छिद्र आदि से देखना। इधर उधर झुककर देखना। ⊙नी(पु)=स्त्री० दे० 'झाँकी'। झाँका—पुं० दे० 'झरोखा'। झाँकी—स्त्री० झाँकने की क्रिया या भाव, दर्शन। दृश्य। झरोखा।

झाँख—पु० एक प्रकार का हिरन जिसके वडे वडे सींग होते हैं, वारहसिंगा। ⊙ना(पु)† = अक० दे० 'झीखना'।
झाँखर—पु० दे० 'झखाड'।
झाँगला—वि० ढीला ढाला (कपडा)।
झाँगा†—पु० दे० 'झभा'। वखेडा, झझट।
झाँझ—स्त्री० मंजीरे की तरह के काँसे के ढले हुए दो वडे गोलाकार टुकडो का जोडा जिन्हें भजन, कीर्तन, पूजन आदि के समय वजाते हैं। क्रोध। पाजीपन, शरारत। शोर। दे० 'झाँझन'।
झाँझडी(पु)†—स्त्री० दे० 'झाँझन'।
झाँझन—स्त्री० पैर मे पहनने का एक प्रकार का गहना, पायल।
झाँझर—स्त्री० झाझन, पैंजनी। छलनी। वि० पुराना, जर्जर। वहुत से छेदोवाला।
झाँझरी—स्त्री० झाझ वाजा, झाल। झाझन नामक गहना।
झाँझिया—पु० वह जो झाँझ वजाता हो।
झाँप—स्त्री० वह जिससे कोई चीज ढकी जाय। नींद, झपकी। पर्दा, चिक। पु० उछलकूद। ⊙ना = सक० पकडकर दवा लेना, छोप लेना। ढकना, आड मे करना। झेंपना। झाँपी†—स्त्री० ढकने की टोकरी। मूंज की पिटारी।
झाँवना—सक० झाँवे मे रगडकर (हाथ पैर आदि) धोना।
झाँवर—वि० झाँवे के रग का, कुछ काला। मलिन। मुरझाया हुआ। शिथिल, मद।
झाँवरी—वि० झाँवे के रग की।
झाँवली—स्त्री० झलक। आँख की कनखी।
झाँवाँ—पु० जली हुई ईट जिसमे रगडकर मैल छुडाते हैं।
झाँसना—सक० धोखा देना। ठगना।
झाँसा—पु० वहकाने का क्रिया, धोखा-धडी। ⊙पट्टी = स्त्री० धोखाधडी।
झा—पु० मैथिल और गुजराती व्राह्मणो की एक उपाधि।
झाई—स्त्री० दे० 'झाँई'।
झाऊ—पु० एक प्रकार का छोटा झाड जो नदियो के किनारे होता है।
झाग—पु० पानी या किसी तरल पदार्थ आदि का फेन, गाज।
झागड(पु)†—पु० दे० 'झगडा'।
झाड़—पु० वह छोटा पेड या पौधा जिसकी डालियाँ जड या जमीन के वहुत पास से निकलकर चारो ओर खूब छितराई हुई हो। झाड के आकार का वह रोशनी करने का सामान जो छत मे लटकाया या जमीन पर वैठकी की तरह रखा जाता है। स्त्री० झाडने की क्रिया। फटकार डाँट डपट। मत्र से झाडने की क्रिया। ⊙खड = पु० जगल, वन। ⊙झखाड़ = पु० काँटे-दार झाडियो का समूह। ⊙दार = वि० घना। काँटेदार। ⊙फानूस = पु० शीशे के झाड, हँडिया और गिलास आदि। ⊙फूँक = स्त्री० भूत प्रेत आदि की वाधाओ अथवा रोगो को दूर करने के लिये मत्र आदि पढकर झाडना फूँकना। ⊙वुहार = स्त्री० झाडना और वुहारना, सफाई।
झाडन—स्त्री० वह जो झाडने पर निकले। वह कपडा जिससे कोई चीज झाडी जाय।
झाड़ना—सक० गर्द दूर करना, छुडाना, साफ करना। अपनी योग्यता दिखलाने के लिये गढ गढकर वाते करना। झक-झोरना, लथेडना। किसी चीज पर पडी हुई गर्द आदि साफ करने के लिये उसको उठाकर झटका देना। झाडू या कपडे आदि की रगड से गर्द या दूसरी चीज गिराना। झटके मे किसी चीज पर पडी या लगी हुई दूसरी चीज गिराना या हटाना। वल या युक्तिपूर्वक किसी से धन ऐंठना। रोग या प्रेतवाधा आदि दूर करने के लिये किसी को किसी मत्र आदि से फूँकना। डाँटना।
झाडा—पु० झाड फूंक। तलाशी। मल, पाखाना।
झाडी—स्त्री० छोटा झाड, पौधा। छोटे पेडो का समूह।
झाडू—पु० लवी सींको आदि का समूह जिससे जमीन या फर्श झाडते हैं, वुहारी। पुच्छल तारा, केतु। ⊙वरदार = वि० झाडू देनेवाला, फराश। मु० ~ फिरना = कुछ न रहना। ~ मारना = घृणा या निरादर करना।
झापड़—पु० थप्पड।

झाबदार†—वि० परिपूर्ण, भरा पूरा ।
झाबर—पुं० दे० 'झाबा' ।
झाबा—पु० टोकरा, खाँचा । दे० 'झब्बा' ।
झाम†(पु)—पुं० झब्बा, गुच्छा । घुडकी, डाँट । छल ।
झामर—पु० दे० 'झूमर' ।
झामरा(पु)—वि० श्यामल । मैला, मलिन ।
झामी†—वि० धोखेबाज ।
झायँझायँ—स्त्री० झनकार। वह शब्द जो किसी सुनसान स्थान मे हो । हवा का शब्द । निरर्थक शोरगुल ।
झार†—वि० एकमात्र, केवल । कुल, सब । पु० समूह, झुड । स्त्री० दाह, जलन । ईर्ष्या । ज्वाला, लपट । झाल, चरपरा पन ।
झारना—सक० बाल साफ करने के लिये कधी करना । छाँटना, अलग करना । दे० 'झाडना' । चलाना (हथियार) । 'यह गैल है बिन मैल जसकी हँसि हथ्यारन झारिय' (हिम्मत० ११०) ।
झारा—पु० सूप । झाग्ना । दे० 'झाडा' ।
झारि—स्त्री० दे० 'झार' ।
झारी—स्त्री० एक प्रकर का लबोतरा टोटीदार जलपात्र । समूह ।
झाल—पु० झाँझ नामक बाजा । झालने की क्रिया या भाव । स्त्री० चरपराहट, तीतापन। तरग, लहर। पानी की झडी । वि० स्त्री० दे० 'झार' ।
झालना—सक० धातु की बनी हुई वस्तुओ मे टाँका देकर जोड लगाना । पीने की चीजो को ठढा करने के लिये बरफ या शोरे मे रखना ।
झालर—स्त्री० किसी चीज के किनारे पर शोभा के लिये बनाया या लगाया हुआ वह हाशिया जो लटकता रहता है । झालर या किनारे के आकार की लटकती हुई कोई चीज । झाँझा। पु० एक प्रकार का पकवान जिसे झलरा भी कहते है ।
झालरना—अक० दे० 'झलराना' ।
झाला—पु० सितार या बीन बजाते समय बीच मे पैदा की जानेवाली एक सुदर झकार । इस प्रकार की झकार के साथ बजाया जानेवाला टुकडा । राजपूतो की एक शाखा ।
झालि†—स्त्री० पानी की झडी ।
झावँझावँ—स्त्री० बकवाद । हुज्जत, तकरार ।
झिंगवा—स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली ।
झिंगुली(पु)†—स्त्री० दे० 'झगा' ।
झिंचिया—स्त्री० बहुत से छोटे छोटे छेदो वाला वह घडा जिसके भीतर दीआ बालकर कुआर के महीने मे लडकियाँ घुमाती है ।
झिझया—स्त्री० दे० 'झिंचिया' ।
झिझक—स्त्री० हिचक, किसी काम के करने मे होनेवाला सकोच । पसोपेश । ⊙**ना**=अक० झिझक दिखाना । दे० 'झझकना' । **झिझकारना**—सक० 'झझकारना' । दे० 'झटकना' ।
झिटका†—पु० दे० 'झटका' ।
झिडकना—सक० अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक बिगडकर कोई बात करना । अलग फेक देना, झटकना । **झिडकी**—स्त्री० वह बात जो झिडककर कही जाय, डाँट, फटकार ।
झिनवा—पु० महीन चावल का धान ।
झिपना—अक० दे० 'झेपना' । **झिपाना**—सक० लज्जित करना ।
झिरझिर—क्रि० वि० धीरे धीरे ।
झिरना(पु)—अक० दे० 'झारना' ।
झिरझिरा—वि० झीना, पतला (कपडा) ।
झिरहर†—वि० दे० 'झंझरा' ।
झिराना—अक० दे० 'झुराना' ।
झिरी—स्त्री० छोटा छेद जिसमे से कोई चीज निकल जाय, झरी । पानी का छोटा सोता । पाला, तुषार ।
झिलँगा—पु० ऐसी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड गई हो । पु० दे० 'झींगा' ।
झिलना—अक० झेला जाना, सहा जाना । बलपूर्वक प्रवेश करना, घुसना । तृप्त होना, अघा जाना । तल्लीन होना ।
झिलम—स्त्री० लोहे का झँझरीदार पहनावा जो लडाई मे सिर और मुँह पर पहना जाता था ।
झिलमिल—स्त्री० हिलता हुआ प्रकाश ।

रह रहकर प्रकाश के घटने वढने की क्रिया। एक प्रकार का वढ़िया वारीक और मुलायम कपडा। युद्ध मे पहनने का लोहे का कवच, झिलम। वि० रह रहकर चमकता हुआ। झिलमिला—वि० जो गफ या गाढा न हो, झीना। चमकता हुआ। जो वहुत स्पष्ट न हो। झिलमिलाना—अक० रह रहकर चमकना। प्रकाश का हिलना। सक० कोई चीज इस प्रकार हिलाना कि वह रह रहकर चमके। हिलाना। झिलमिली—स्त्री० वहुत सी आडी पटरियो का ढांचा जो किवाडो आदि मे केवल वायु आने के लिये जडा रहता है खडखडिया। चिक, चिलमन।

झिलाना—सक० [झेलना का प्रे०] दूसरे को झेलने के लिये वाध्य करना।

झिल्लड़—वि० पतला और झँझरा। गफ का उलटा (कपडा)।

झिल्ली—पु० [सं०] झींगुर। स्त्री० ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज दिखाई पडे।

झींकना—अक० दे० 'झीखना'।

झींका—पु० उतना अन्न जितना एक वार चक्की मे डाला जाता है।

झींख—स्त्री० झीखने का भाव, कुढना। ⊙ना = अक० पछताना और कुढना, खीजना। दुखडा रोना, विपत्ति का हाल सुनाना। पु० झीखने की क्रिया या भाव। दुख का वर्णन, दुखडा।

झींगा—पु० एक प्रकार की मछली। एक प्रकार का धान।

झींगुर—पुं० तेज झींझी आवाजवाला छोटा कीडा जो अँधेरे घरो, खेतो और मैदानो मे रहता है।

झींना—वि० दे० 'झीना'।

झींसी—स्त्री० छोटी छोटी वूंदो की वर्षा, फुहार।

झीखना—अक० दे० 'झीखना'।

झीना—वि० वहुत महीन, पतला। जिसमे वहुत से छेद हो, झँझरा। दुवला।

झील—स्त्री० वहुत वडा तालाव, ताल, सर।

झीलर—पुं० छोटी झील।

झीवर—पुं० मल्लाह।

झुँझलाना—अक० खिजलाना, चिडचिडाना।

झुंड—पुं० वहुत से मनुष्यो या पशुओ आदि का समूह, गरोह।

झुकना—अक० ऊपरी भाग का नीचे की ओर लटकना, नवना। किसी पदार्थ के एक या दोनो सिरो का किसी ओर नत होना। किसी खडे या सीधे पदार्थ का किसी ओर मुडना। प्रवृत्त होना, दत्तचित्त होना। पक्षपात करना। नम्र होना। हार मानना। क्रुद्ध होना। झपट पड़ना। (सेना आदि के लिये)। मर जाना। मु०—झुकझुक पड़ना = नशे या नींद के कारण अच्छी तरह खडा न रह सकना।

झुकमुख†—पुं० दे० 'झुटपुटा'।

झुकराना—अक० झोका खाना। झुलसना।

झुकाना—सक० [अक० झुकना] किसी खडी चीज के ऊपरी भाग को टेढा करके नीचे की ओर लाना, नवाना। किसी पदार्थ के एक या दोनो सिरो को किसी ओर नत करना। प्रवृत्त करना, लगा देना (मनुष्यो के लिये) विनीत वनाना।

झुकामुकी—स्त्री० दे० 'झुटपुटा'।

झुकाव—पुं० किसी ओर झुकने, प्रवृत्त होने या ढलने की क्रिया या भाव। ढाल, उतार। मन का किसी ओर लगना, प्रवृत्ति।

झुग्गी—स्त्री० झोपडी, कुटिया।

झुगिया(पु)—स्त्री० दे० 'झुग्गी'।

झुटपुटा—पुं० ऐसा समय जव कुछ अंधकार और कुछ प्रकाश हो।

झुटुंग—वि० जिसके खडे खडे और विखरे हुए वाल हो, झोटेवाला।

झुठकाना—सक० झूठी वात कहकर विश्वास दिलाना, भ्रम मे डालना (विशेषतः वच्चो को)। झुठलाना—सक० झूठा ठहराना, झूठा वनाना। झूठ कहकर धोखा देना। झुठाई(पु)†—स्त्री० झूठापन, असत्यता।

झुठाना—सक० झूठा ठहराना।

झुनक—पुं० नूपुर का शब्द करना। झुनकना—अक० झुनझुन शब्द करना।

झुनकार†—वि० पतला, महीन (शब्द)।

झुनझुन—पुं० नूपुर आदि के वजने का शब्द। झुनझुना—पुं० एक खिलौना, घुनघुना।

झुनझुनाना—अक० झुनझुन शब्द होना। सक० झुनझुन शब्द उत्पन्न करना। **झुन-झुनियाँ**—स्त्री० पैर मे पहनने का एक आभूषण। वेडी, निगड। सनई का पौधा।

झुनझुनी—स्त्री० हाथ या पैर (विशेषत तलवो, पजो और हथेलियो) के बहुत देरतक एक ही प्रकार दबे या तने रहने से रुके हुए रक्त की रुकावट दूर होते ही पुन स्वतत्र सचार के कारण उसमे होनेवाली सनसनाहट। एक प्रकार का रोग जिसमे ऐसी सनसनाहट होता है।

झुपरी†—स्त्री० दे० 'झोपडी'।

झुमका—पु० छोटी गोल कटोरी के आकार का कान का एक लटकनेवाला गहना।

झुमरी—स्त्री० काठ की मुँगरी। गच पीटने का एक औजार।

झुमाना—सक० [अक० झूमना] किसी को झूमने मे प्रवृत्त करना।

झुरना—अक सूखना, दे० 'झुराना'। बहुत अधिक दुखी होना या शोक करना। चिता, रोग या परिश्रम आदि के कारण दुर्बल होना, घुलना।

झुरझुरी—स्त्री० कँपकँपी। थोडी थोडी ठढक।

झुरमुट—पु० एक ही मे मिले हुए या पास पास के झाड या क्षुप। बहुत से लोगो का समूह, गरोह। चादर आदि से शरीर को चारो ओर से ढक लेने की क्रिया।

झुरसनाⓅ†—अक० दे० 'झुलसना'।

झुराना†—सक० [अक० झुरना] सुखाना। अक० सूखना। दुःख या भय से घबरा जाना। दुबला होना।

झुरावन†—पु० सूखने के कारण किसी वस्तु मे कम होनेवाला अंश।

झुर्री—स्त्री० सिकुडन, शिकन।

झुलना†—पु०दे०'झूला'। वि० झूलनेवाला।

झुलनी—स्त्री० नाक मे पहनने का लटकनेवाला आभूषण। तार मे गुथा हुआ छोटे मोतियो का गुच्छा जिसे स्त्रियाँ नाक की नथ मे लटकाती हैं। दे०'झूमर'।

झुलमुला†—वि० दे० 'झिलमिल'।

झुलस, झुलसन—स्त्री० गरमी या आँच से पडनेवाली चमडे की सिकुडन और कालापन, अधजली अवस्था। शरीर झुलसानेवाली गरमी। **झुलसना**—अक० ऊपरी भाग का इस प्रकार अंशत जल जाना कि उसका रंग काला पड़ जाय, झौसना। अधिक गरमी के कारण किसी चीज के ऊपरी भाग का सूखकर काला पड़ जाना। सक० ऊपरी भाग या तल को इस प्रकार अशत जलाना कि उसका रग काला पड जाय, झौसना। किसी पदार्थ के ऊपरी भाग को सुखाकर अधजला कर देना। **झुलसवाना**—सक० [झुलसना का प्रे०] झुलसने का काम दूसरे से कराना। **झुलसाना**—सक० दे० 'झुलसवाना'।

झुलाना—सक० [झूलना का प्रे०] किसी को झूलने मे प्रवृत्त करना। कोई चीज देने या कोई काम करने के लिये बहुत अधिक समय तक आसरे मे रखना। **झुलावना**Ⓟ†—सक० दे० 'झुलाना'।

झुल्ला—पु० स्त्रियो के पहनने का एक प्रकार का कुरता।

झुहिरना†—अक० लदना, लादा जाना।

झूँकⓅ†—पु० दे० 'झोका'। स्त्री० दे० 'झोक'। ⊙**ना**†=सक० दे० 'झोकना'। दे० 'झखना'। दे० 'झूकना'।

झूँखनाⓅ†—अक० दे० 'झीखना'।

झूँझल—स्त्री० दे० 'झुँझलाहट'।

झूँसना†—अक०, सक० दे० 'झुलसना'।

झूँकटी—स्त्री० छोटी झाडी।

झूकनाⓅ—अक० गिरना, झोका जाना।

झूकाⓅ†—पु० दे० 'झोका'।

झूझनाⓅ—अक० दे० 'जूझना'।

झूठ—पुं० असत्य, सच का उलटा। ⊙**झूठ**=क्रि० वि० यो ही, व्यर्थ अकारण। मु०~सच कहना या लगाना=झूठी निदा करना। **झूठा**—वि० मिथ्या, असत्य। झूठ बोलनेवाला। जो केवल रूप रग आदि मे असल चीज के समान हो, पर गुण आदि मे नही, नकली। जो

(पुरजा या अंग आदि) बिगड या घिस जाने के कारण ठीक ठीक काम न दे सके।

झूठो—क्रि० वि० झूठमूठ, यो ही। नाम-मात्र के लिये।

झूना†—वि० दे० 'झीना'। पुं० घाघरा (पहनावा)। 'झूना की झकोरन चहूँघा खोरि खोरिन में'। (जगद्विनोद २३५)।

झूम—स्त्री० झूमने की क्रिया या भाव। ऊँघ, झपकी। ⊙ना=अक० बार बार इधर-उधर हिलना, झोंके खाना। सिर और धड को बार बार आगे पीछे या इधर उधर हिलाना (मस्ती, प्रसन्नता, नीद या नशे मे)।

झूमक—पुं० एक प्रकार का गीत जो होली के दिनो मे स्त्रियां झूम झूमकर एक घेरे मे नाचती हुई गाती हैं, झूमर। इस गीत के साथ होनेवाला नृत्य। झूमर नामक पूरबी गीत। गुच्छा। चाँदी, सोने आदि के छोटे झुमको या मोतियो आदि के गुच्छो की वह कतार जो साडी आदि मे सिर पर पडनेवाले भाग मे लगी रहती है। दे० 'झुमका'। ⊙साड़ी=स्त्री० वह साडी जिसमे झूमक या मोती आदि के गुच्छे टँके हो। झूमका—पुं० दे० 'झुमका'। दे० 'झूमक'।

झूमड़—पुं० दे० 'झूमर'। ⊙झामड़=पुं० ढकोसला, प्रपच।

झूमर—पुं० सिर मे पहनने का एक प्रकार का गहना। कान मे पहनने का झुमका। झूमक नाम का गीत। इस गीत के साथ होनेवाला नाच। बहुत से लोगो का साथ मिलकर गोल घेरे मे घूम घूमकर नाचना। झूमरा नामक ताल। एक प्रकार का काठ का खिलौना।

झूर†—वि० सूखा, खुश्क। खाली। व्यर्थ। स्त्री० जलन, दाह। दुख। झूरा†—वि० दे० 'झूर'। पुं० जलवृष्टि का अभाव। कमी।

झूरना†—सक० याद करना।

झूरे†—क्रि० वि० व्यर्थ, झूठमूठ। वि० दे० 'झूर'।

झूल—पुं० वह कपड़ा जो शोभा के लिये पालकी या चौपायो पर डाला जाता है। वह कपडा जो पहनने पर भद्दा जान पड़े (व्यग्य)। ⑤ दे० 'झूला'। ⊙ना=अक० लटककर बार बार आगे पीछे या इधर उधर हिलना। झूले पर बैठकर पेंग लेना। किसी कार्य के होने की आशा मे अधिक समय तक पडे रहना। वि० झूलनेवाला। पुं० एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे २६ मात्राएँ और अत मे गुरु लघु होते हैं, प्रथम झूलना। इस छद मे ७वी, १४वी और २१वीं मात्राओ पर यति और अत मे विराम होता है। इस छद का दूसरा भेद जिसके प्रत्येक चरण मे ३७ मात्राएँ और अत मे यगण होता है तथा १०वी, २०वीं और ३०वी मात्राओ पर यति तथा अत मे विराम होता है। हिंडोला, झूला।

झूलन—पुं० वर्षा ऋतु का एक उत्सव जिसमे मूर्तियो को झूले पर बैठाकर झुलाते हैं, हिंडोला।

झूलरि—स्त्री० झूलता हुआ छोटा गुच्छा या झुमका।

झूला—पुं० पेड की डाल या छत आदि मे लटकाई हुई मजबूत रस्सी आदि से बँधी पटरी जिसपर बैठकर झूलते है। बडे रस्सो, जजीरो या तारो आदि का बना हुआ झूलनेवाला पुल। वह बिस्तर जिसके दोनो सिरे रस्सियो मे बाँधकर दोनो ओर दो ऊँची खूटियो आदि मे बाँध दिए गए हो। देहाती स्त्रियो का ढीलाढाला कुरता। झोंका, झटका।

झेंपना, झेपना—अक० शरमाना, लजाना।

झेर⑤†—स्त्री० देर। बखेडा, झगड़ा।

झेरना⑤†—सक० झेलना। शुरू करना।

झेरा—पुं० झझट, बखेडा।

झेल—स्त्री० तैरने आदि मे हाथ पैर से पानी हटाने की क्रिया। हलका धक्का या हिलोरा। झेलने की क्रिया या भाव। देर। ⊙ना=सक० ऊपर लेना, सहना। तैरने मे हाथ पैर से पानी हटाना। पानी मे पैठना, हेलना। ढकेलना। †हजम करना। ग्रहण करना, मानना। क्रीडा करना।

झोक—स्त्री० झुकाव, प्रवृत्ति। बोझ। वेग, तेजी। किसी काम का धूम धाम से से उठान। ठाट, सजावट। पानी का हिलोरा। दे० 'झोका'। ⊙ना = सक० किसी वस्तु को आग मे फेंकना। अचानक ढकेलना। अत्यधिक मात्रा या परिमाण मे डालना या फेंकना। जबरदस्ती आगे की ओर बढाना, ढकेलना। अधाधुध खर्च करना। आपत्ति, खतरा, दु ख या भय के स्थान मे कर देना। बहुत ज्यादा काम ऊपर डालना। बिना विचारे दोष आदि मढना। अपनी ही बातें कहते जाना या दलीलें सुनाते रहना और दूसरे की कुछ न सुनना। मु०—भाड़ ~ = तुच्छ काम करना। **झोंका**—पु० धक्का, रेला। हवा का झटका या धक्का। हवा का बहाव, झकोरा। पानी का हिलोरा। इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया। ठाट, सजावट।

झोकी—स्त्री० उत्तरदायित्व। जोखो, जोखिम।

झोंझ—पुं० घोंसला। कुछ पक्षियो (जैसे, ढेक, गीध आदि) के गले की थैली या लटकता हुआ मास। खुजली, सुरसुराहट।

झोंझल—स्त्री० झुँझलाहट, कुढन।

झोंटा—पु० बडे बड़े बालो का समूह। पतली लबी वस्तुओ का वह समूह जो एक बार हाथ मे आ सके, जुट्टा। वह धक्का जो झूले को इधर उधर हिलने के लिये दिया जाता है, पेंग। **झोंटी**⑤—स्त्री० दे० 'झोटा'।

झोपड़ा—पु० छोटा घर जो गांवो या जगलो मे कच्ची मिट्टी की छोटी दीवारें उठाकर और घास फूस से छाकर बना लेते हैं। मु०—अंधा ~ = पेट, उदर। **झोपड़ी**—स्त्री० छोटा झोपडा, कुटिया।

झोंपा—पुं० झब्बा, गुच्छा।

झोटिंग—वि० जिसके सिर पर बडे और खडे बाल हो, झोटेवाला। पुं० भूतप्रेत या पिशाच आदि।

झोर†—पुं० दे० 'झोल'। स्त्री० दे० 'झोली'। ⊙ना† = सक० झटका देकर हिलाना या कँपाना। किसी चीज को इस प्रकार झटका देकर हिलाना जिसमे उसके साथ लगी हुई दूसरी चीजें गिर पडें। इकट्ठा करना। किसी को किसी बात पर अत्यधिक बुरा भला कहना या समझना। बहुत अधिक भोजन करना।

झोरई†—वि० रसेदार (तरकारी)।

झोरी⑤—स्त्री० झोली। पेट, झोझर। एक प्रकार की रोटी।

झोल—पुं० तरकारी आदि का गाढा रसा, शोरबा। कढी आदि की तरह पकाई हुई पतली लेई। मांड। धातु पर का मुलम्मा। पहने या ताने हुए कपडो आदि का अश जो ढीला होने के कारण लटक जाता है। इस प्रकार झूलने या लटकने का भाव या क्रिया। आँचल। परदा, ओट। वि० जो कसा या तना न हो। पुं० गलती, भूल। कमी। वह झिल्ली या थैली जिसमें गर्भ से निकले हुए बच्चे रहते हैं। गर्भ। राख। दाह, जलन।

झोला†—पुं० झोका, हिलोर। कपडे की बडी झोली या थैली। ढीलाढाला गिलफा, खोली। साधुओ का ढीला कुरता, चोला। एक वातरोग जिसमे कोई अग ढीला पडकर बेकाम हो जाता है, लकवा। पेडों का पाला, लू आदि के कारण एकबारगी कुम्हला जाने या सूख जाने का रोग। आघात, धक्का। बाधा, आपत्ति। इशारा। **झोली**—स्त्री० कपडे को मोडकर बनाई हुई थैली। घास बाँधने का जाल। मोट, चरसा। वह कपडा जिससे खलिहान मे अनाज ओसाया जाता है। सफरी बिस्तर जो चारो कोनो पर लगी हुई रस्सियो द्वारा खभो मे बाँधकर फैलाया जाता है। कुश्ती का एक पेंच, बँवरा। राख, भस्म। मु० बुझाना = सब काम हो चुकने पर पीछे उसे करने चलना।

झौंझट—पुं० दे० 'झंझट'।

झौंद—पुं० पेट, उदर।

झौंर⑤—पुं० झुड, समूह। फूलो, पत्तियो या छोटे फलो का गुच्छा। एक प्रकार का गहना, झब्बा। पेड़ो या झाड़ियो का घना समूह, कुंज।

झौंरना—अक० गूंजना। दे० 'झौरना'।

झौरा—पुं० झुंड ।

झौराना (पु)—अक० इधर उधर हिलना, झूमना । हलके काले रंग का हो जाना, काला पड़ जाना । कुम्हलाना ।

झौंसना—सक० दे० 'झुलसना' ।

झौर—पुं० हुज्जत, तकरार । डाँट फटकार, कहा सुनी । झौरना—सक० छोप लेना ।

झौवा‡—पुं० रहठे की बनी हुई छोटी दौरी, खँचिया ।

झौहाना—अक० गुर्राना । जोर से चिढ़-चिढ़ाना । जोर से चिल्लाते हुए डाँटना ।

ञ

ञ—हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है ।

ट

ट—हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहला वर्ण है ।

टंक—पुं० एक प्रकार की बख्तरदार गाड़ी जिसपर तोपें चढ़ी रहती हैं [अं० टैंक] । पुं० [सं०] चार माशे की एक तौल । एक प्राचीन सिक्का । २१¾ रत्ती की मोती की तौल । टाँकी, छेनी । कुल्हाड़ी, फरसा । कुदाल । तलवार । टाँग । क्रोध । अभिमान । सुहागा । कोप । ⊙शाला=स्त्री० टकसाल, सिक्के ढालने की जगह ।

टंकण—पुं० [सं०] सुहागा । सिक्कों की ढलाई । धातु की चीज में टाँके से जोड़ लगाने का कार्य । टाइप करना । घोड़े की एक जाति । एक प्राचीन देश जो कदाचित् दक्षिण में था ।

टँकना—अक० टाँका जाना । सी कर अट-काया जाना, सिलना । रेती के दाँतों का नुकीला होना । लिखा जाना । सिल, चक्की आदि का खुरदुरा किया जाना, रेता जाना ।

टंका—पुं० एक तोले की तौल । ताँबे का एक पुराना सिक्का ।

टँकाई—स्त्री० टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

टँकाना—सक० [टाँकना का प्रे०] टाँकों से जुड़ाना या सिलवाना । सिलाकर लग-वाना । (सिल, जाँता, चक्की आदि को) खुरदुरा कराना, कुटाना । सिक्कों का परखना ।

टंकार—स्त्री० [सं०] टन टन शब्द जो किसी कसे हुए तार आदि पर उँगली मारने से होता है । वह शब्द जो धनुष की कसी हुई डोरी खींचकर छोड़ देने से होता है । धातुखंड पर आघात लगने का शब्द । ⊙ना=सक० [हिं०] धनुष की डोरी खींचकर शब्द करना, चिल्ला खींचकर बजाना ।

टंकी—स्त्री० पानी भरने का छोटा सा कुंड या बड़ा बरतन, टाँका ।

टंकोर—पुं० दे० 'टंकार' । ⊙ना=सक० दे० 'टंकारना' ।

टँकौरी—स्त्री० सोना चाँदी आदि तौलने में प्रयुक्त तराजू ।

टंग—पुं० [सं०] टाँगा । कुल्हाड़ी । कुदाली । सुहागा ।

टँगड़ी—स्त्री० दे० 'टाँग' ।

टँगना—अक० ऊँचे आधार पर इस प्रकार अटकना कि सब भाग नीचे की ओर गया हो, लटकना । फाँसी पर चढ़ना या लट-कना । अनिश्चय में रहना । उत्कंठा या आशा में लटकना । पुं० वह रस्सी जिस-पर कपड़े आदि टाँगे या रखे जाते हैं, अलगनी ।

टंगा—पुं० दे० 'टाँगा' ।

टँगारी‡—स्त्री० कुल्हाड़ी ।

टंच‡—वि० कंजूस । निष्ठुर । तैयार । ‡तृप्त, संतुष्ट । पुं० सिलाई । '... टच न टोभ कछू छियना है ।' (प्रबोध० ४४) ।

टंटघंट—पुं० घड़ी, घंटा आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या प्रपंच । काठ कबाड़ । विविध सामग्री ।

टंटा—पुं० लंबी चौड़ी प्रक्रिया, आडंबर । दगा, फसाद । झगड़ा ।

टंडल, टंडैल—पुं० लश्करों के जहाजों या

अस्त्र शस्त्र के गोदामो मे नियुक्त बहुत छोटा अफसर। सार्वजनिक काम करनेवाले मजदूरो का मुखिया, मेठ।

टँड़िया—स्त्री० अनत के आकार का एक प्रकार का गहना जो बाहो मे पहना जाता है।

ट—पु० [सं०] नारियल का खोपडा। वामन। चौथाई भाग। शब्द।

टई—स्त्री० दे० 'टही'।

टक—स्त्री० ऐसा ताकना जिसमे बडी देर तक पलक न गिरे। स्थिर दृष्टि। मु०—टक~देखना = बिना पलक गिराए लगातार कुछ काल तक देखते रहना। ~बांधना = स्थिर दृष्टि से देखना। ~लगाना = आसरा देखते रहना।

टकटक(पु)†—पु० स्थिर दृष्टि, टकटकी। वि० स्थिर या बँधी हुई (दृष्टि)। ⊙ना† = सक० एकटक ताकना। टकटक शब्द उत्पन्न करना। निष्फल प्रयास करना। टकटकी—स्त्री० ऐसी दृष्टि जिसमे देर तक पलक न गिरे, गड़ी हुई नजर। मु०~बाँधना = स्थिर दृष्टि से देखना।

टकटोना, टकटोरना—सक० टटोलना। ढूँढना।

टकटोलना—सक० दे० 'टटोलना'।

टकटोहन—पु० टटोलकर देखने की क्रिया। टकटोहना(पु)—सक० दे० 'टटोलना'।

टकराना—अक० जोर से भिडना, धक्का या ठोकर लेना। मारा मारा फिरना, डाँवाडोल घूमना। सक० जोर से भिडाना, पटकना।

टकसाल—स्त्री० वह स्थान जहाँ सिक्के बनाए जाते है। निर्माणगृह। प्रयोगशाला। जँची या प्रामाणिक वस्तु। टकसाली—वि० टकसाल सबधी। खरा, चोखा। अधिकारियो या विज्ञों द्वारा माना हुआ, शिष्टो द्वारा प्रयुक्त या गृहीत। जँचा हुआ। पु० टकसाल का अधिकारी।

टका—पु० चाँदी का एक पुराना सिक्का, रुपया। ताँबे का एक सिक्का जो पुराने दो पैसे के बराबर होता था, अधन्ना, दो पुराने पैसे। धन, द्रव्य। तीन तोले की तौल (वैद्यक)। मु०~पास न होना = धनहीन होना। ~सा जवाब देना = साफ इनकार करना, कोरा जवाब देना। ~सा मुंह लेकर रह जाना = लज्जित हो जाना। टके गज की चाल = मोटी चाल, थोडे खर्च मे निर्वाह। टके सेर भाजी टके सेर खाजा = अधेर, अराजकता।

टकासी—स्त्री० टके या दो पैसे प्रति रुपए का सूद।

टकाही—वि० स्त्री० नीच और दुश्चरित्रा (स्त्री)।

टकी—स्त्री० दे० 'टकटकी'।

टकुआ—पुं० चरखे का तकला जिसपर सूत [illegible]ता जाता है।

ट[illegible]—वि० धनी, सपन्न।

टकोर—स्त्री० हलकी चोट, ठेस। नगाड़े पर का आघात। डके या नगाडे की आवाज। धनुष की डोरी खीचने का शब्द, टकार। दवा भरी हुई गरम पोटली को किसी अंग पर रह रहकर छुलाने की क्रिया, सेंक। झाल, परपराहट। ⊙ना = सक० हलका आघात पहुँचाना। डके आदि पर चोट लगाना, (दवा की) टकोर देना, सेंकना।

टकोरी—स्त्री० आघात, चोट।

टकौरी—स्त्री० दे० 'टँकौरी'।

टक्कर—स्त्री० वह आघात जो दो वस्तुओ के एक दूसरे से भिडने से लगता है, ठोकर। मुकाबिला, मुठभेड़, लडाई। जोर से सिर मारने का धक्का। घाटा, हानि। मु०~का = बराबरी का, जोड का तोड। ~खाना = किसी कडी वस्तु के साथ इतने वेग से भिडना या छू जाना कि गहरा आघात पहुँचे। मारा मारा फिरना। मुकाबिला करना, भिडना। समान होना, तुल्य होना। ~मारना = ऐसा प्रयत्न करना जिसका फल शीघ्र दिखाई न दे।

टखना—पुं० एडी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ, गुल्फ।

टग(पु)†—स्त्री० दे० 'टक'।

टगण—पुं० [सं०] छह मात्राओ का एक गण (छद-शास्त्र)।

टघरना†—अक० दे० 'पिघलना'।

टचटच—क्रि० वि० धाँयधाँय। धकधक (आग की लपट का शब्द)।

टटका—वि० हाल का, ताजा। नया, कोरा।

टटलबटल†—वि० अडबंड, ऊटपटाग।

टटिया—स्त्री० बाँस की फट्टियो, घास फूस

और सरकंडों से बनाया गया वह ढाँचा जो ओट या रक्षा के लिये द्वार, बरामदे या खिड़कियों पर लगाया जाता है, टट्टी।

टटीबा—पुं० घिरनी, चक्कर।

टटोना, टटोरना†—सक० दे० 'टटोलना'।

टटोल—स्त्री० टटोलने का भाव या क्रिया। ⊙ना = सक० मालूम करने के लिये उँगलियों से छूना या दबाना। ढूँढ़ने या पता लगाने के लिये इधर उधर हाथ रखना। बातों ही बातों में किसी के हृदय का भाव जानना, थाह लेना। जाँच करना, परखना।

टटोहना(प)—सक० दे० 'टटोलना'।

टट्टर—पुं० बाँस की फट्टियों, सरकंडों आदि को जोड़कर बनाया हुआ ढाँचा जो ओट या रक्षा के लिये दरवाजे आदि में लगाया जाता है।

टट्टी—स्त्री० बाँस की फट्टियों आदि को जोड़कर आड़ या रक्षा के लिये बनाई हुई दीवार। चिक, चिलमन। पतली दीवार। पाखाना। बाँस की फट्टियों आदि की दीवार और छाजन जिसपर बेलें चढ़ाई जाती हैं। खस की सीकों का परदा (ठढक के लिये)। मु०~की आड़ (या ओट) से शिकार खेलना = किसी के विरुद्ध छिपकर कोई चाल चलना। छिपाकर बुरा काम करना। धोखे की ~ = ऐसी वस्तु या बात जिसके कारण लोग धोखा खाकर हानि उठावें।

टट्टू—पुं० छोटे कद का घोड़ा, टाँगन। मु०—भाड़े का~ = रुपया लेकर दूसरे की ओर से काम करनेवाला आदमी।

टन—स्त्री० किसी धातुखंड पर आघात पड़ने से उत्पन्न शब्द, टनकार।

टनकना—अक० टनटन बजना। धूप या गरमी लगने के कारण सिर में दर्द होना।

टनटन—स्त्री० घंटे का शब्द। **टनटनाना**—सक० धातुखंड पर आघात करके टनटन शब्द निकालना। अक० टनटन बजना।

टनमन—पुं० दे० टोना। वि० टनमना। **टनमना**—वि० स्वस्थ, चंगा। प्रसन्न, 'अनमना' का उल्टा।

टनाका†—पुं० घंटा बजने का शब्द। वि० बहुत कड़ी (धूप)।

टनाटन—स्त्री० लगातार टनटन शब्द, लगातार घंटा बजने की ध्वनि।

टप—पुं० गाड़ी पालकी में लगा हुआ ओहार या सायबान, कलंदरा। इक्के फिटन आदि के ऊपर की छतरी। नाँद के आकार का पानी रखने का एक बरतन, टोप। कान में पहनने का फूल। स्त्री० बूँद बूँद टपकने का शब्द। किसी वस्तु के एकबारगी ऊपर से गिर पड़ने का शब्द। ⊙ना = अक० बिना कुछ खाए पिए पड़ा रहना। व्यर्थ आसरे में बैठा रहना। झींखना, कुढ़ना।

टपक—स्त्री० टपकने का भाव। बूँद बूँद गिरने का शब्द। रह रहकर होनेवाला दर्द। ⊙ना = अक० बूँद बूँद गिरना, चूना। फल का पेड़ से गिरना। ऊपर से सहसा नीचे आना। जाहिर होना, झलकना। फोड़े, घाव आदि का रह रहकर दर्द करना, टीस मारना। **टपका**—पुं० बूँद बूँद गिरने का भाव। टपकी हुई वस्तु, रसाव। पककर आपसे आप गिरा हुआ फल। रह रहकर उठनेवाला दर्द, टीस। **टपका टपकी**—स्त्री० बूँदा बूँदी, मेह की हलकी झड़ी, फुहार। फलों का लगातार गिरना।

टपकाना—सक० [अक० टपकना] बूँद बूँद करके गिराना, चुआना। भभके से अर्क खींचना, चुआना।

टपरना—सक० टाँकी की चोट से पत्थर की सतह खुरदरी करना। जमीन या दीवार पर नया मसाला लगाने से पहले उसे थोड़ा खोदना।

टपाना—अक० बिना खिलाए पिलाए पड़ा रहने देना। व्यर्थ आसरे में रखना। सक० फँदाना।

टपाटप—क्रि० वि० लगातार टपटप शब्द के साथ या बूँद बूँद करके (गिरना)। एक एक करके, शीघ्रता से।

टप्पर†—पु० दे० 'छप्पर'।

टप्पा—पु० उछल उछलकर जाती हुई वस्तु की बीच बीच की टिकान। उतनी दूरी जितनी दूरी पर कोई फेंकी हुई वस्तु जाकर पड़े। उछाल, फलाँग। नियत दूरी। दो स्थानों के बीच में पड़नेवाले मैदान।

जमीन का छोटा हिस्सा। अंतर, फर्क। एक प्रकार का चलता गाना।

टब—पु० [अं०] पानी रखने के लिये नाँद के आकार का खुला हुआ बरतन। एक प्रकार का लप।

टमटम—स्त्री० दो ऊँचे ऊँचे पहियों की खुली हलकी घोड़ागाड़ी।

टमटी—स्त्री० एक प्रकार का बरतन।

टमाटर—पुं० पकने पर प्राय लाल रंग की कुछ खट्टी और गोल एक विलायती तरकारी।

टर—स्त्री० कर्कश या कर्णकटु शब्द। मेढक की बोली। अविनीत वचन और चेष्टा। हठ। मु०~टर करना या लगाना = ढिठाई से बोलते जाना।

टरकना—अक० खिसकना। टल जाना।

टरकाना—सक० [अक० टरकना] हटाना, खिसकाना। टाल देना, चलता करना, बहाना करना।

टरकुल—वि० बहुत ही मामूली और निकम्मा।

टरटराना—सक० बक बक करना। ढिठाई या अशिष्टता से बोलना।

टरना†—अक० दे० 'टलना'। (पु) सक० टालना, हटाना।

टरनि†—स्त्री० टरने का भाव या ढंग।

टर्रा—वि० ऐंठकर बात करनेवाला, टर्रानेवाला। धृष्ट, कटुवादी। ⊙ना = अक० अविनीत और कठोर स्वर से उत्तर देना, अशिष्टता या धृष्टता करना। ⊙पन = पु० बातचीत में अविनीत भाव, कटुवादिता।

टलना—अक० हटना, खिसकना। मिटना, न रह जाना। (किसी कार्य के लिये) निश्चित समय से और आगे का समय स्थिर होना, स्थगित होना। (किसी बात का) अन्यथा होना, ठीक न ठहरना। (किसी आदेश या अनुरोध का) न माना जाना, उल्लंघित होना। (समय) व्यतीत होना। मु०—अपनी बात से~ = प्रतिज्ञा न पूरी करना, मुकरना।

टलहा†—वि० खोटा, खराब।

टलाटली—स्त्री० दे० 'टालमटोल'।

टल्लेनवीसी—स्त्री० दे० 'टिल्लेनवीसी'।

टवाई—स्त्री० व्यर्थ घूमना, आवारगी।

टस—स्त्री० किसी भारी चीज के खिसकने या टसकने का शब्द। मु०~से मस न होना = किसी भारी चीज का कुछ भी न खिसकना। कहने सुनने का कुछ भी प्रभाव अनुभव न करना।

टसक—स्त्री० कसक, टीस।

टसकना—अक० अपनी जगह से हटना, खिसकना। टीस मारना। बात मानने को तैयार होना। **टसकाना**—सक० [अक० टसकना] हटाना, खिसकना।

टसर—पुं० एक प्रकार का घटिया, कड़ा और मोटा रेशम।

टसुआ—पुं० आँसू।

टहकना—अक० रह रहकर दर्द करना। पिघलना।

टहना—पुं० वृक्ष की डाल। **टहनी**—स्त्री० वृक्ष की पतली शाखा, डाली।

टहल—सेवा, खिदमत। नौकरी, चाकरी। ⊙ई (पु), ⊙टकोरा = स्त्री० सेवा। ⊙नी = स्त्री० टहल करनेवाली दासी, मजदूरनी। चिराग की बत्ती उकसानेवाली लकड़ी। **टहलुआ**—पुं० सेवक। **टहलू**—पुं० दे० 'टहलुआ'।

टहलना—अक० धीरे धीरे चलना। सैर करना, हवा खाना। **टहलाना**—सक० [अक० टहलना] धीरे धीरे चलाना। सैर कराना, घुमाना, दूर करना।

टहो†—स्त्री० मतलब निकालने की बात।

टहोका—पुं० हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का। मु०~खाना = धक्का खाना ठोकर सहना। ~देना = झटकना, ढकेलना।

टाँक—स्त्री० तीन या चार माशे की एक तौल (जौहरी)। कूत, अंदाज। लिखावट, लिखन। कलम की नोक। ⊙ना = सक० एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु को कील आदि जड़कर जोड़ना। सीना। सीकर अटकाना। सिल, चक्की आदि को टाँकी से गड्ढे करके खुरदुरा करना। रेती तेज करना। दर्ज करना, बही आदि में लिखना या चढ़ाना। लिखकर पेश करना। दाखिल करना। चट कर जाना, खाना। अनुचित रूप से ले लेना, मार

लेना। टाँका—पुं० वह जिसके द्वारा दो चीजें (प्राय कपडे या धातु की) जोडा जाता है। धातु की चादर आदि का जोड मिलानेवाली कील या काँटा। सीवन। टँका हुई चकती, थिगली। शरीर पर के घाव की सिलाई। धातुओ को जोडनेवाला मसाला। पत्थर काटने की चौडी छेनी। हौज, चहवच्चा। कडाल।

टाँकी—स्त्री० पत्थर गढने का औजार, छेनी। काटकर बनाया हुआ छेद। पानी रखने का छोटा हौज। छोटा तराजू। छोटा टाँका।

टाँग—स्त्री० जीवो के चलने का अवयव, पैर। मु०~अडाना = फिजूल दखल देना। विघ्न डालना। ~तले से (या ~के नीचे से) निकलना = हार मानना। ~पसार कर सोना = निश्चित सोना।

टाँगन—पुं० छोटा घोडा, टट्टू।

टाँगना—सक० [टँगना का सक०] लटकाना, अटकाना। फाँसी पर चढाना।

टाँगा—पुं० बडी कुल्हाडी। एक प्रकार की गाडी जिसका ढाँचा पीछे की ओर कुछ झुका रहता है।

टाँगी‡—स्त्री० कुल्हाडी।

टाँच—स्त्री० दूसरे का काम बिगाडनेवाली बात या वचन, भाँजी। टाँका, सिलाई, डोभ। टँकी हुई चकती, थिगली। ⊙ना = सक० टाँकना, सीना। काटना, तराशना।

टाँठ†—पुं० खोपडी।

टाँठ, टाँठा—वि० कडा, कठोर। दृढ, बली।

टाँड—स्त्री० लकडी के खभो पर बनाई हुई पाटन जिसपर चीज असबाब रखते हैं। मचान जिसपर बैठकर खेत की रखवाली करते है। बाहु मे पहनने का स्त्रियो का एक गहना, टँडिया।

टाँडा—पुं० अन्न आदि व्यापार की वस्तुओ से लदे हुए पशुओ का झुड, काफिला। बिक्री के माल का खेप। बनजारो का झुड। कुटुब।

टाँडी—स्त्री० दे० 'टिड्डी'।

टाँण—स्त्री० दे० 'टाँड'।

टाँय टाँय—स्त्री० कर्कश शब्द, टें टें। बकवाद। मु०~फिस = बकवाद बहुत या काम का आरभ बडे जोर से, पर फल कुछ भी नही।

टाइटल—पुं० [अं०] पुस्तक का आवरण-पृष्ठ मुखपृष्ठ पर छपा हुआ नाम। उपाधि, खिताब।

टाइप—पुं० [अं०] छापने के लिये उलटकर खुदे सीसे के ढले अक्षर। ⊙राइटर = पुं० एक कल जिसकी कुजियो को उँगलियो द्वारा दबाकर कागज पर अक्षर छापे जाते है, टकणयत्र।

टाइम—पुं० [अं०] समय, वक्त। ⊙टेबुल = पुं० वह सारिणी जिसमे भिन्न भिन्न कार्यों का समय लिखा रहता। वह पुस्तक जिसमे रेलगाडियो के पहुँचने और छूटने का समय रहता है। ⊙पीस = स्त्री० एक प्रकार की घडी।

टाट—पुं० सन या पटुए की रस्सियो का बुना मोटा कपडा। बिरादरी या उसका अग। महाजनी गद्दी। मु०~मे पाट की बखिया = बेमेल का साज।

टाटर—पुं० टट्टर, टट्टी। सिर की हड्डी, खोपडी।

टाटिक, टाटी (पु)—स्त्री० दे० 'टट्टी'।

टाड—स्त्री० दे० 'टाँड'।

टान—स्त्री० तनाव, खिंचाव। एक बार मे छापी जानेवाली पूरी सामग्री। ⊙ना = सक० दे० 'तानना'। एक दौर मे छापना।

टाप—स्त्री० घोडे के पैर का सबसे निचला भाग जो जमीन पर पडता है। घोडे के पैरो के जमीन पर पडने का शब्द। मछली पकडने का झावा। मुरगियो के बद करने का झावा। कान मे पहनने का एक अलंकार। ⊙ना = अक० घोडो का पैर पटकना। किसी वस्तु की प्रतीक्षा करते रह जाना और उसका प्राप्त न होना। उछलना, कूदना। सक० कूदना, फाँदना। अक० दे० 'टपना'।

टापा—पुं० उजाड मैदान। उछाल। किसी वस्तु को ढकने, बंद करने का टोकरा, झावा।

टापू—पुं० स्थल का वह भाग जिसके चारो ओर जल हो, द्वीप। †टप्पा, टापा।

टाबर†—पुं० बालक, लड़का। परिवार।
टामक†—पुं० डिमडिमी।
टामन—पुं० दे० 'टोटका'।
टायर—पुं० [अं०] रबर आदि का चक्राकार खोल या पट्टी जो पहिए पर कसकर बैठाई रहती है।
टारना†—सक० दे० 'टालना'।
टाल—स्त्री० ऊँचा ढेर, अटाला। लकड़ी, भूसे आदि की दूकान। टालने का भाव। पु० स्त्री और पुरुष का समागम करानेवाला, कुटना।
टालटूल—स्त्री० दे० 'टालमटूल'।
टालमटूल—स्त्री० बहाना।
टालना—सक० हटाना, खिसकाना। दूर करना, भगा देना। मिटाना, न रहने देना। स्थगित करना। समय बिताना। (आदेश या अनुरोध) न मानना। बहाना करके पीछा छुड़ाना, उपेक्षा या उल्लंघन करना। झूठा वादा करन। धता बताना, टरकाना। पलटना, फेरना। इधर उधर हिलाना, गति देना।
टाली—स्त्री० गाय, बैल आदि के गले मे बाँधने की घंटी। चंचल, जवान गाय या बछिया जो तीन वर्ष से कम आयु की हो।
टावर—पु० [अं०] मीनार।
टाहली†—पुं० दे० 'टहलुआ'।
टिंडा—स्त्री० एक बेल जिसके गोल फलो की तरकारी होती है।
टिकट—पु० [अं०] कागज या पतली दफ्ती का वह मूल्य अंकित किया हुआ टुकड़ा जिसे खरीदनेवाले को सवारी, खेल तमाशा, सरकस पुल, प्रदर्शनी, सिनेमा, थिएटर आदि के उपयोग की सुविधा प्राप्त होती है। डाक, तार और कर विभाग द्वारा मूल्यांकित किया हुआ एक ओर चिह्नित तथा दूसरी ओर गोंद या वैसी ही चिपकनेवाली चीज लगा हुआ कागज का टुकड़ा जिसे खरीदकर चिपकानेवाले को यथाविहित सेवा (डाक तार मे) और सुविधा (विधान मे) प्राप्त होती है। (अं० स्टांप)। बीस रुपये से अधिक धन के आदान के लिये दी जानेवाली रसीद पर लगाया जानेवाला कर विभाग का ऐसा ही कागज का टुकड़ा, रसीदी टिकट।
टिकटिकी—स्त्री० दे० 'टिकठी'।
टिकठी—स्त्री० तीन तिरछी खड़ी की हुई लकड़ियो का एक ढाँचा जिसमे अपराधियो के हाथ पैर बाँधकर उनके शरीर पर बेत या कोड़े लगाए जाते या उनके गले मे फाँसी का फंदा लगाया जाता है। तिपाई। वह रत्थी जिसपर शव ले जाते है।
टिकड़ा—पु० कोई चिपटा गोल टुकड़ा। आँच पर सेकी हुई मोटी रोटी, बाटी।
टिकना—अक० कुछ काल तक के लिये रहना, ठहरना। घुली हुई वस्तु का नीचे बैठना। कुछ दिनो तक काम देना। स्थित रहना, अड़ा रहना।
टिकरी†—स्त्री० एक प्रकार का नमकीन पकवान। टिकिया।
टिकली—स्त्री० छोटी टिकिया। स्त्रियो के शृंगार की (विशेषत माथे पर लगाने की) पन्नी या काँच की बहुत छोटी बिंदी चमकी।
टिकस—पुं० दे० 'टिकट'।
टिकाई†—पुं० युवराज। स्त्री० टिकने का भाव।
टिकाऊ—वि० टिकने या कुछ दिनो तक काम देनेवाला, मजबूत।
टिकान—स्त्री० टिकने या ठहरने का भाव। पड़ाव, चट्टी। **टिकाना**—सक० [अक० टिकना] रहने के लिये जगह देना। सहारे पर खड़ा करना या रोकना ठहराना। बोझ उठाने मे सहायता देना। उठने बैठने मे सहायता देना। उठने बैठने मे सहायता के लिये पकड़ना। **टिकाव**—पु० स्थिति, ठहराव। स्थायित्व। ठहरने की जगह, पड़ाव।
टिकिया—स्त्री० गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा, जैसे दवा की टिकिया आलू की टिकिया। बिंदी। कोयले की बुकनी से बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा जिससे चिलम पर आग सुलगाते हैं। उक्त आकार की एक गोल मिठाई।
टिकुली—स्त्री० दे० 'टिकली'।

टिकैत—पुं० राजा का उत्तराधिकारी कुमार, युवराज। अधिष्ठाता। सरदार।

टिकोरा†—पुं० आम का छोटा और कच्चा फल।

टिक्कड—पुं० बडी टिकिया। सेकी हुई छोटी मोटी रोटी, लिट्टी।

टिक्का—पु० दे० 'टीका'।

टिक्की—स्त्री० गोल और चिपटा छोटा टुकडा, टिकिया। बाटी। माथे पर की बिंदी। ताश की बूटी।

टिघलना—अक० दे० 'पिघलना'।

टिचन—वि० तैयार, दुरुस्त। उद्यत, मुस्तैद। सावधान।

टिटकारना—सक० 'टिकटिक' कहकर हांकना।

टिटिह, टिटिहा—पुं० टिटिहरी चिडिया का नर।

टिटिहरी—स्त्री० पानी के पास रहनेवाली एक छोटी चिडिया, कुररी।

टिट्टिभ—पुं० [स०] टिटिहरी। टिड्डी।

टिड्डा—पुं० एक प्रकार का छोटा परदार कीडा।

टिड्डी—स्त्री० एक प्रकार का उडनेवाला कीडा जो लाखो की सख्या मे बहुत बडा दल बाँधकर चलता और पेड पौधो को हानि पहुँचाता है।

टिड़बिड़ंगा—वि० टेढामेढा।

टिपका(प)†—पुं० बूंद।

टिपकारी—स्त्री० ईंटो की जोड की खाली जगह मे सिमेंट या सुरखी भरना, गहरी रेखा बनाना।

टिपटिप—स्त्री० बूंद बूंद करके गिरने या टपकने का शब्द।

टिपारा—पुं० मुकुट के आकार की एक टोपी।

टिप्पणी—स्त्री० [सं०] किसी वाक्य या प्रसग का विस्तार के साथ अर्थ सूचित करनेवाला विवरण। टीका, व्याख्या।

टिप्पन—पुं० टीका, व्याख्या। जन्मकुडली। जन्मपत्री। **टिप्पनी**—स्त्री० [सं०] दे० 'टिप्पणी'।

टिप्पा—पुं० घाव, चोट। 'छुटे सब्ब सिप्पे करैं दिग्ध टिप्पे' (हिम्मत० ७१)।

टिफिन—पुं० [अं०] दोपहर का भोजन। ⊙कैरियर=कटोरदान।

टिमटिमाना—अक० (दीपक का) मद मंद जलना। बुझने पर हो होकर जलना। मरने के निकट होना। तारो का जगमगाना।

टिमाक—वि० बनाव सिंगार।

टिर—स्त्री० दे० 'टर'।

टिरफिस—स्त्री० बात न मानने की ढिठाई, ची चपड।

टिर्राना—अक० दे० 'टर्राना'।

टिल्ला—पुं० धक्का।

टिल्लेनवीसी—स्त्री० निठल्लापन। हीलाहवाली, बहाना। कुटनपन।

टिसुआ†—पुं० आंसू।

टिहुनी†—स्त्री० घुटना। कोहनी।

टिहूका—स्त्री० चौंक, झझक।

टीडसी—स्त्री० दे० 'टिंडा'।

टीडी†—स्त्री० दे० 'टिड्डी'।

टीक—स्त्री० गले मे पहनने का गहना, माथे पर पहनने का गहना।

टीकना—सक० टीका या तिलक लगाना। चिह्न या रेखा बनाना।

टीका—पुं० वह चिह्न जो चदन, रोली, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर उपासना के सांप्रदायिक सकेत या शोभा के लिये लगाया जाता है। विवाह स्थिर होने की एक रीति जिसमे कन्यापक्ष के लोग वर के माथे मे तिलक लगाते और वर को द्रव्य देते है। दोनों भौहो के बीच माथे का मध्य भाग। (किसी समुदाय का) शिरोमणि, श्रेष्ठ पुरुष। राजतिलक। राज्य का उत्तराधिकारी, युवराज। आधिपत्य का चिह्न। एक गहना जिसे स्त्रियाँ माथे पर पहनती है। दाग, चिह्न। किसी रोग से बचाने के लिये मुख्यत उस रोग के चेप या रस से बनी दवा किसी के शरीर मे सूइयो से चुभाकर प्रविष्ट करने की क्रिया। स्त्री० [सं०] किसी पद या ग्रंथ का अर्थ स्पष्ट करनेवाला वाक्य या ग्रंथ, व्याख्या। ⊙कार=पु० किसी ग्रथ का अर्थ या टीका लिखनेवाला।

टीन—पुं० रांगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर। इस चद्दर का बना डिब्बा। रांगा।

टीप—स्त्री० दाब, दबाव। टिपकारी। गच कूटने का काम। टकार, घोर शब्द। गाने मे जोर की तान। स्मरण के लिये किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया, टाँक लेने का काम। दस्तावेज। जन्मपत्री, कुंडली। ⊙**टाप**=वि० बनाव-सिंगार। आडंबर। **टीपन**—स्त्री० जन्मपत्री। **टीपना**—सक० दबाना, चाँपना। धीरे धीरे ठोकना। चित्र बनाने से पहले उसकी रेखाएँ खीचना। जोड का खाली स्थान भरना। लिखना, टाँकना।

टीबा—पु० दे० 'टीला'।

टीमटाम—स्त्री० बनाव सिंगार, आडंबर।

टीला—पुं० पृथ्वी का कुछ उभरा हुआ भाग, ढूह। मिट्टी का ऊँचा ढेर। पहाड़ी।

टीस—स्त्री० कसक, चसक। ⊙**ना**=अक० रह रहकर दर्द उठना, कसक होना।

टुंटा, टुंडा—वि० जिसकी डाल या टहनी आदि कट गई हो, ठूंठा। लूला, लुंजा।

टुइयां—स्त्री० छोटी जाति का तोता। वि० ठिगना, नाटा, बौना।

टुक वि० थोडा, जरा।

टुकड़—पुं० ('टुकडा' के लिये के० समा० मे) पु० भिखारी, मँगता। वि० तुच्छ। कगाल। ⊙**गदाई**=पुं० भिखमंगा। स्त्री० टुकडा माँगने का काम। ⊙**तोड़**—पुं० दूसरे का दिया हुआ टुकडा खाकर रहनेवाला आदमी।

टुकड़ा—पुं० किसी वस्तु का वह भाग जो उससे कट छँटकर अलग हो गया हो, खड। चिह्न आदि के द्वारा विभक्त अश, भाग। रोटी का तोडा हुआ अश। मु०~**तोडना**=दूसरे के दिए हुए भोजन पर निर्वाह करना। ~**माँगना**=भीख माँगना। ~**सा जवाब देना**=कोरा जवाब देना।

टुकड़ी—स्त्री० छोटा टुकडा, खड। मडली, दल। सेना का एक अश।

टुचा, टुच्चा—वि० तुच्छ, ओछा।

टुटपुंजिया—वि० जिसके पास बहुत थोडी पूँजी या सपत्ति हो।

टुटरूँ—पुं० छोटी पंडुकी। ⊙**टूँ**=स्त्री० पडुकी या फाख्ता के बोलने का शब्द। वि० अकेला। दुबला पतला।

टुनगा†—पु० टहनी का अगला भाग।

टुनटुन—पुं० [अनु०] 'टुनटुन' शब्द।

टुनटुना—पुं० एक छोटा बाजा या घंटी, झुनझुना। **टुनटुनाना**—अक० 'टुनटुन' शब्द करना। अस्पष्ट और मंद बोलना। धीरे धीरे बजना। गूंजना। टूटे फूटे शब्द निकालना। बेकाम इधर उधर घूमना।

टुनिहाई—स्त्री० दे० 'टोनहाई'।

टुपकना, टुमकना†—अक० धीरे से काटना या डक मारना। कटु या व्यंग्यपूर्ण बात कहना। चुगली खाना।

टुर्रा—पुं० रवा, कण।

टूंगना—सक० (चौपायो का) टहनी के सिरे की कोमल पत्तियो को खाना। कुतरकर चबाना।

टूंड़—पुं० कीडो के मुँह के आगे निकली हुई दो पतली नलियाँ जिन्हें धँसाकर वे रक्त आदि चूसते हैं। जौ, गेहूँ आदि की बाल मे दाने के कोश के सिरे पर निकला हुआ नुकीला अवयव, सीग। **टूंडी**—स्त्री० छोटा टूंड। ढोढी, नाभि। किसी वस्तु की दूर तक निकली हुई नोक।

टूक†, **टूकर**†—पु० दे० 'टुकडा'।

टूका†—पु० टुकडा, खड। रोटी का चौथाई भाग। भिक्षा।

टूट†—स्त्री० खड, टुकडा। टूटने का भाव। लिखावट मे भूल मे छूटा हुआ वह शब्द या वाक्य जो पीछे से किनारे पर लिखते हैं। भूल, त्रुटि। (पु)† पु० टोटा, घाटा। ⊙**ना**=अक० टुकडे टुकडे होना, खडित होना। किसी अग के जोड का उखड जाना। अलग होना। सबध छूटना लगाव न रह जाना। सिलसिला बद होना चलता न रहना, बद हो जाना। दुर्बल होना। धनहीन होना। घाटा होना। किसी ओर एकबारगी वेग से आ जाना। एकबारगी बहुत सा आ पडना, पिल पडना। एकबारगी धावा करना। अनायास कही से आ जाना। युद्ध मे किले का

ले लिया जाना। शरीर मे ऐंठन या तनाव लिए हुए पीडा होना। आकाश से चमकते हुए पृथ्वी पर गिरना। उत्साह न रह जाना जैसे, दिल टूटना। मु०—टूट टूटकर बरसना = मूसलाधार बरसना। तारा~ = आकाश मे चक्कर काटनेवाले नक्षत्रो के टुकडो का पृथ्वी पर गिरते समय वायु-मडल की रगड से चमक उठना। टूटा—वि० खडित, भग्न। लँगडा या लूला (व्यक्ति)। दुबला या कमजोर। निर्धन। पु० दे० 'टोटा'। मु०—टूटी फूटी बात या बोली = असबद्ध वाक्य। अस्पष्ट वाक्य।

टूठना (पु)—अक० सतुष्ट होना। टूठनि (पु)—स्त्री० सतोष, तुष्टि।

टूम—स्त्री० गहना, आभूषण। व्यग्य। मु० ~टाम = वस्त्राभूषण, बनाव सिंगार।

टूमना†—सक० धक्का देना, झटका देना। ताना मारना।

टें—स्त्री० तोते की बोली। मु०~टें = व्यर्थ की बकवाद, हुज्जत।~होना या बोलना = चटपट मर जाना।

टेंगना, टेंगरा—स्त्री० एक प्रकार की मछली।

टेंट—स्त्री० धोती की वह मडलाकार ऐंठन जो कमर पर पडती है, मुर्री। कपास का डोडा। दे० 'टेंटर'।

टेंटर—पु० रोग या चोट के कारण आँख के ढेले पर का उभरा हुआ मास।

टेंटी—स्त्री० करील। पु० व्यर्थ झगडा करने-वाला, हुज्जती।

टेंटुवा—पु० गला। अंगूठा।

टेंटें—स्त्री० तोते की बोली। व्यर्थ की बकवाद।

टेंडा†—वि० चचल, शरारती।

टेंडसी—स्त्री० दे० 'टिंडा'।

टेउकी—स्त्री० किसी वस्तु को लुढकने या गिरने से बचाने के लिये उसके नीचे लगाई हुई वस्तु।

टेक—स्त्री० वह लकडी जो किसी भारी वस्तु को टिकाए रखने के लिये नीचे से लगाई जाती है, थूनी। आश्रय, अवलंब। बैठने का स्थान। ऊँचा टीला। मन मे ठानी हुई बात, जिद। प्रतिज्ञा। बान, आदत। गीत का पहला पद, स्थायी। मु०~निभना या रहना = प्रतिज्ञा पूरी होना। ~पकड़ना या गहना = हठ करना। टेकी—पु० प्रतिज्ञा पर दृढ रहनेवाला। हठी, जिद्दी।

टेकना—सक० सहारे के लिये किसी वस्तु को शरीर के साथ भिडाना, सहारा लेना। ठहराना या रखना। सहारे के लिए पक-डना, हाथ का सहारा लेना। (पु)† दृढ़ निश्चय या प्रण करना, अडना। बीच में रोकना या पकडना। मु०—माथा~ = प्रणाम करना। टेकनी—स्त्री० वह चीज जो किसी चीज को गिरने से रोकने के लिये लगाई जाय।

टेकरा—पु० टीला। छोटी पहाडी। टेकरी—स्त्री० दे० 'टेकरा'।

टेकला (पु)†—स्त्री० धुन, रट।

टेका—पु० दे० 'टेक'।

टेकान—स्त्री० टेक, चाँड। वह चबूतरा जिसपर बोझ ढोनेवाले बोझ अडाकर सुस्ताते है।

टेकाना†—सक० उठाकर ले जाने मे सहारा देने के लिये थामना। उठने बैठने में सहायता के लिये पकडना। दे देना, हाथ से उठाकर देना।

टेकुआ†—पु० चरखे का तकला।

टेकुरी—स्त्री० सूत कातने या रस्सी बटने का तकला। चमारो का सूआ जिससे वे चमडा सीते हैं।

टेघरना†—अक० दे० 'पिघलना'।

टेटका—पु० कान का एक गहना। वि० दे० 'टेढ़ा'।

टेढ—स्त्री० टेढापन, वक्रता। †वि० दे० 'टेढा'। ⊙बिडगा = वि० टेढामेढा।

टेढ़ा—वि० जो सीधा न हो, मुडा या झुका हुआ। जो समानातर न गया हो, तिरछा। कठिन, पेचीला। उद्धत, उजड्ड। ⊙ई = स्त्री० टेढापन। मु०~पडना या होना = उग्र रूप धारण करना, बिगडना। अकड़ना, टर्राना। टेढ़ी खीर = मुश्किल काम। टेढी सीधी सुनाना = भला बुरा कहना।

टेढ़े—क्रि० वि० घुमाव फिराव के साथ, तिरछे। मु०~टेढ़े जाना या ~मेढ़े चलना = इतराना।

टेना—सक० हथियार को तेज करने के लिये पत्थर आदि पर रगडना। मूंछ के बालो को खडा करने के लिये ऐंठना।

टेनिस—पुं० [अं०] एक अँगरेजी खेल जो बीच मे जाल टाँगकर रबर की पोली गेंद और जालदार बल्ले से खेला जाता है।

टेबुल—पुं० [अं०] मेज। सारणी (जैसे, टाइम टेबुल)।

टेम—स्त्री० दिए की लौ।

टेर—स्त्री० गाने मे ऊँचा स्वर, तान। बुलाने का ऊँचा शब्द, हाँक। ⊙ना= सक० ऊँचे स्वर से गाना। पुकारना। तै करना, बिताना।

टेलिग्राफ—पुं० [अं०] वह तार या यत्र जिसके द्वारा खबरें भेजी जाती हैं।

टेलिग्राम—पुं० [अं०] तार से भेजी हुई खबर।

टेलिप्रिंटर—पुं० [अं०] एक प्रकार का यत्र जिससे तार द्वारा आए हुए समाचार टाइप राइटर पर छपते हैं।

टेलिफोन—पु० [अं०] एक प्रकार का यत्र जिसके द्वारा एक स्थान पर कही हुई बात बहुत दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई देती है। इस प्रकार का यत्र।

टेलिविजन—पुं० [अं०] एक प्रकार का रेडियो यत्र जिसकी सहायता से शब्दो के साथ वक्ता और दृश्य आदि भी सिनेमा की भाँति दिखाई देते हैं।

टेव—स्त्री० आदत, बान।

टेवना—सक० दे० 'टेना'।

टेवा—पुं० जन्मपत्री, जन्मकुडली। लग्न-पत्र जिसमे विवाह की मिति, घडी आदि लिखी रहती है।

टेवैया†—पु० सिल्ली पर धार तेज करने-वाला व्यक्ति।

टेसू—पुं० पलाश, ढाक। एक उत्सव जिसमे विजयादशमी के दिन बहुत से लडके गाते हुए भूमते है।

टैंक—पुं० [अं०] तालाब। पानी रखने का हौज या खजाना। लडाई मे काम आने-वाली लोहे की एक बडी गाडी जिसमे तोपें लगी रहती हैं।

टैक्स—पुं० [अं०] कर, महसूल। इन्कमटैक्स—पुं० आमदनी पर लगनेवाला कर, आयकर।

टैयाँ—स्त्री० एक प्रकार की चिपटी छोटी कौडी, चित्ती।

टोक—स्त्री० रोक। किसी काम के प्रारम्भ मे पूछताछ या रुकावट, बाधा।

टोका‡—पुं० सिरा, किनारा। नोक, कोना।

टोचना—सक० चुभाना।

टोटा—पुं० पानी आदि ढालने के लिये बरतन मे लगी हुई नली, तुलतुली।

टोक†—स्त्री० टोकने की क्रिया या भाव। बुरी दृष्टि का प्रभाव, नजर। ⊙टाक= स्त्री० प्रश्न आदि द्वारा बाधा। रोक टोक= स्त्री० मनाही, निषेध, बाधा।

टोकणी—स्त्री० एक प्रकार का हडा, टोकनी।

टोकना—सक० किसी को कोई काम करते हुए देखकर उसे कुछ कहकर रोकना या पूछताछ करना। नजर लगाना। पु० टोकरा, डला। एक प्रकार का हडा।

टोकरा—पु० बाँस की फट्टियो या पतली टहनियो का गोल और गहरा बरतन, छाबडा।

टोकरी—स्त्री० छोटा टोकरा। †देगची, बटलोई।

टोकारा—पु० वह बात जो किसी को कुछ चिताने या स्मरण दिलाने के लिये कही जाय।

टोटक—पु० दे० 'टोटका'। टोटका—पुं० कोई बाधा या कष्ट दूर करने या मनो-रथ सिद्ध करने के लिये किसी दैवी शक्ति पर विश्वास करके किया जानेवाला प्रयोग, टोना। टोटकेहाई†=स्त्री टोटका करनेवाली स्त्री।

टोटा—पु० बचा या कटा हुआ टुकडा। कारतूस। घाटा, हानि। कमी।

टोड़ⓟ†—पु० बडा पेट। टोड़िकⓟ†—पु० तोदवाला, पेटू।

टोडिसⓟ—पु० शरारती।

टोडी—पु० [अं०] कमीना और खुशामदी, अधम पुरुष। ⊙बच्चा=सरकारी अफसरो का खुशामदी।

टोनहा—वि० टोना या जादू करनेवाला। ⊙ई=स्त्री० टोना। झाड़फूंक।

टोना—पु० मंत्र तंत्र का प्रयोग, टोटका। विवाह का एक प्रकार का गीत। एक शिकारी चिड़िया।

टोप—पु० बडी टोपी। लडाई मे पहनने की लोहे की बनी टोपी, शिरस्त्राण। गिलाफ। बूंद।

टोपा—पु० बहुत बडी टोपी। टोपी के लिये व्यग्य या निंदासूचक शब्द। टोकरा। टाँका, डोभ। टोपी—स्त्री० सिर पर का पहनावा। राजमुकुट। इन आकार की कोई गोल और गहरी वस्तु। पीढी, पुश्त। इस आकार का धातु का गहरा ढक्कन जिसे बदूक पर चढाकर घोडा गिराने से आग लगती है। वह थैली जो शिकारी जानवर के मुँह पर चढाई रहती है। गांधी टोपी = खद्दर की किश्तीनुमा टोपी जैसी अपने अफ्रीका के प्रवासकाल मे जूलू और वोअर जातियो द्वारा किए गए अँगरेजो के प्रति विद्रोह मे पीडितो की निःस्वार्थ सेवा करने के दिनो मे गांधी जी लगाया करते थे।

टोभ—पुं० टाँका, टोपा। 'नैन मुंदे पै न फेर फितूर को टच न टोभ कछू छियना है।' प्रबोध० ४४)।

टोर†—स्त्री० कटारी।

टोरना†—सक० तोडना। मु०—आँख~ = लज्जा आदि से दृष्टि हटाना या अलग करना।

टोर्रा—पुं० अरहर का छिलके सहित खडा दाना। रवा, दाना।

टोल—स्त्री० मडली, जत्था। पाठशाला। पुं० [अँ०] नगरपालिका, निगम आदि द्वारा वसूल किया जानेवाला स्थानीय महसूल।

टोला—पु० किसी बडी बस्ती का एक भाग, मुहल्ला। पत्थर या ईंट का टुकडा, रोडा।

टोली—स्त्री० छोटा मुहल्ला। जत्था, मडली। पत्थर की चौकोर पटिया, सिल। एक प्रकार का बाँस।

टोवना—सक० दे० 'टोना'।

टोह—स्त्री० टटोल, खोज। खबर, देख-भाल। टोही—वि० पता लगानेवाला, खबर लेनेवाला।

ट्रंक—पु० [अँ०] सदूक, पेटी।

ट्राम—स्त्री० [अँ०] बडे नगरो मे सडक पर बिजली से चलनेवाली गाडी जिसका मार्ग रेल की लाइनो की तरह दो पटरियो का होता है।

ठ

ठ—हिंदी वर्णमाला का १२वाँ व्यजन जिसके उच्चारण का स्थान मूर्धा है।

ठठ—वि० ठूंठा (पेड)।

ठठार—वि० खाली, रीता।

ठड—स्त्री० दे० 'ठढ'। ⊙क = स्त्री० दे० 'ठढक'। ठंढा—वि० ठढा, सर्द। ठंडई, ठंडाई—स्त्री० दे० 'ठढाई'।

ठढ—स्त्री० शीत, सरदी। ⊙क = स्त्री० सरदी, जाडा। ताप की कमी तरी। सतोष, प्रसन्नता। उपद्रव या फैले हुए रोग आदि की शाति।

ठंढा—वि० सर्द। जो जलता न हो। जिसमे आवेश न हो। धीर, शात। सुस्त। जो अनुचित बात होते देखकर कुछ न बोले। तृप्त, खुश। निश्चेष्ट, जड। मरा हुआ। मु०~करना = क्रोध शात करना। तसल्ली देना। ताजिया~करना = ताजिया दफन करना। (किसी पवित्र या प्रिय वस्तु को)~करना = फेंकना या तोडना फोडना।~रखना = आराम चैन से रखना~होना = क्रोध शात होना। मर जाना। ठढी साँस = दुःख भरी साँस, आह। ठंढे ठढे = बिना विरोध या प्रति-वाद किए, चुपचाप। हँसीखुशी। ठंढाई—स्त्री० वह दवा या मसाला जिससे ठढक आती है। पिसी हुई भाँग।

ठई(पु)—स्त्री० स्थिति।

ठक—स्त्री० ठोकने का शब्द। वि० भौचक्का, स्तभित। ⊙ठक = स्त्री० बखेडा, झझट। ठकठकाना—सक० ठकठक शब्द करना, खटखटाना। ठोकना पीटना। ठकठकिया—वि० हुज्जती, बखेडिया।

ठकुर—पुं० 'ठाकुर' का के० समा० मे ग्राने-वाला रूप। ⊙**सुहाती**=स्त्री० स्वामी को प्रिय लगनेवाली बात, खुशामद। **ठकुराइन**—स्त्री० ठाकुर की स्त्री, स्वामिनी। क्षत्रिय को स्त्री। नाई की स्त्री। **ठकुराई**—स्त्री० सरदारी, प्रधानता। ठाकुर का अधिकार। ठाकुर या सरदार के अधीन प्रदेश, रियासत। बडप्पन, महत्व। **ठकुरानी**—स्त्री० ठाकुर या सरदार की स्त्री। रानी। मालकिन। **ठकुराय**—पुं० क्षत्रियों का एक भेद। **ठकुरायत**—स्त्री० आधिपत्य, प्रभुत्व। ठाकुर या सरदार के अधीन प्रदेश, रियासत।

ठकोरी—स्त्री० अड्डे के आकार की सहारा देने की लकडी जो साधु या पहाड़ी मजदूर अपने साथ रखते हैं।

ठक्कर—स्त्री० दे० 'टक्कर'। पुं० गुजरातियों मे एक जाति या वंशोपाधि।

ठग—पुं० वह लुटेरा जो छल और धूर्तता से माल लूटता हो। छली, धूर्त। ⊙**ई**=स्त्री० ठगपना। ⊙**मूरी**=स्त्री० वह नशीली जडी बूटी जिसे ठग पथिकों को बेहोश करके धन लूटने के लिये खिलाते या सुंघाते थे। ⊙**मोदक**=पुं० दे० 'ठग लाडू'। ⊙**लाडू**=पुं० ठगो का लड्डू जिसमे नशीली या बेहोश करनेवाली चीज मिली रहती थी। ⊙**विद्या**=स्त्री० धूर्तता, धोखेबाजी। ⊙**ना**=सक० धोखा देकर माल लूटना। धोखा देना। सौदा बेचने मे बेईमानी करना। अक० धोखा खाना। चक्कर मे आना, दंग रहना। मु० – **ठगा सा**=चकित, भौंचक्का। ⊙**नी**=स्त्री० [दे० ठगिन, ठगिनी] ठग की स्त्री। ठगनेवाली स्त्री। कुटनी। **ठगाना**†—अक० ठगा जाना। **ठगाही**†—स्त्री० दे० 'ठगपना'। **ठगिया**—पुं० दे० 'ठग'। **ठगी**—स्त्री० धोखा देकर माल लूटने का काम या भाव। धूर्तता, धोखेबाजी। **ठगोरी, ठगौरी**—स्त्री० सुधबुध भुलाने वाली शक्ति। टोना, जादू।

ठगण—पुं० [सं०] पाँच मात्राओं का एक गण (छंदःशास्त्र)।

ठट—पुं० एक स्थान पर बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का समूह, झुंड। बनाव, सजावट। ⊙**कीला**=वि० सजा हुआ, ठाठदार। ⊙**ना**=सक० तय करना, ठहराना, निश्चित करना। सजाना। अक० अड़ना, डटना। सजना। आरंभ करना (राग)। **ठटनि**—स्त्री० बनाव, रचना। **ठटरी**—स्त्री० हड्डियों का ढांचा। घास, भूसा आदि बाँधने का जाल। किसी वस्तु का ढांचा। अरथी।

ठट्ट†—पुं० बनाव, रचना। दे० 'ठट'।

ठट्टी—स्त्री० ठटरी, पंजर।

ठठ्ट—पुं० दे० 'ठट'।

ठट्ठा—हँसी, दिल्लगी। **ठट्ठेबाज**—दिल्लगीबाज।

ठठ—पुं० दे० 'ठट'। ⊙**ना**=अक० दे० 'ठटना'।

ठठईⓅ—स्त्री० दे० 'ठट्ठा'।

ठठकनाⓅ†—अक० ठिठकना। स्तंभित हो जाना।

ठठरी—स्त्री० दे० 'ठटरी'।

ठठाना—सक० पीटना, तडतडाना। अक० जोर से हँसना।

ठठिरिन†—स्त्री० ठठेरे की स्त्री।

ठठेरमंजारिका—स्त्री० ठठेरे की बिल्ली जो ठकठक शब्द से न डरे।

ठठेरा—पुं० कसेरा। मु०—**ठठेरे की बिल्ली**=ऐसा मनुष्य जो कोई विकट बात देखकर न चौंके या न घबराए। **ठठेरी**—स्त्री० ठठेरे की स्त्री। ठठेरे का काम। **ठठेरी बाजार**—कसेरो का बाजार। **ठठोल**—पुं० दिल्लगीबाज, मसखरा। दे० 'ठठोली'। **ठठोली**—स्त्री० हँसी दिल्लगी।

ठड़ा†, **ठढ़ा**†—वि० खड़ा, दंडायमान।

ठन—स्त्री० धातु पर आघात पड़ने या उसके बजने का शब्द।

ठनक—स्त्री० चमड़े से मढे बाजे पर आघात पडने का शब्द। टीस, कसक। ⊙**ना**=अक० ठनठन शब्द करना। टीस मारना, कसकना। मु०—**माथा**~=गहरा खटका पैदा होना, सचेत होना। सिर मे रुकरुक कर दर्द होना। **ठनकाना**—सक० किसी धातु खंड या चमड़े से मढे बाजे पर

आघात करके शब्द निकालना। ठनकार—स्त्री० धातुखंड के बजने का शब्द।

ठनगन—पुं० मांगलिक अवसरों पर नेगियों का अधिक पाने के लिये हठ।

ठनठन—स्त्री० ठनठन ध्वनि, किसी धातु के बजने का शब्द। ⊙गोपाल = पुं० छूछी और निःसार वस्तु। निर्धन मनुष्य। रुपये पैसे की कमी।

ठनठनाना—सक० ठनठन शब्द निकालना, बजाना। अक० ठनठन शब्द होना या बजना। **ठनाका**—पुं० ठनठन शब्द, ठनकार। **ठनाठन**—क्रि० वि० ठनठन शब्द के साथ।

ठपका†—पुं० धक्का, ठेस।

ठप्पा—पुं० लकड़ी, धातु आदि का खंड जिस पर कोई आकृति या बेलबूटे इस प्रकार खुदे हों कि उसे किसी दूसरी वस्तु पर रखकर दबाने में वे उभर आवें, साँचा। साँचे के द्वारा बनाया बेलबूटा आदि, छाप। एक प्रकार का गोटा।

ठमक—स्त्री० चलते चलते ठहर जाने का भाव, रुकावट। चलने की ठसक, लचक। ⊙ना = अक० चलते चलते ठहर जाना, ठिठकना। ठसक के साथ रुक रुककर या हाव भाव दिखाते हुए चलना। **ठमकाना, ठमकारना**—सक० चलते चलते रोकना, ठहराना।

ठयना—सक० दृढ़संकल्प के साथ आरंभ करना, ठानना। पूरी तरह से करना। निश्चित करना। स्थापित करना, बैठाना। लगाना, प्रयुक्त करना। अक० ठनना। स्थित होना, बैठना। प्रयुक्त होना, लगना।

ठरना—अक० सरदी से अकड़ना या सुन्न होना। बहुत अधिक ठंड पड़ना।

ठर्रा—पुं० बहुत मोटा सूत। बड़ी अधपकी ईंट। महुए की निकृष्ट शराब।

ठलुआ—पुं० बेकार, आवारा।

ठवना—सक० दे० 'ठवनी'। **ठवनि**—स्त्री० दे० 'ठवनी'। **ठवनी**—स्त्री० बैठक, स्थिति। बैठने या खड़े होने का ढंग, मुद्रा।

ठस—वि० ठोस, कड़ा। जिसकी बुनावट घनी हो, गफ। मजबूत। भारी, वजनी। सुस्त। (रुपया) जिसकी झनकार ठीक न हो। कंजूस।

ठसक—स्त्री० नखरा, ऐंठ। दर्प, शान। ⊙दार = वि० घमंडी। तड़क भड़कवाला।

ठसका—पुं० सूखी खाँसी जिसमें कफ न निकले। ठोकर, धक्का।

ठसाठस—क्रि० वि० ठूँसकर या खूब कसकर भरा हुआ। खचाखच।

ठस्सा—पुं० अभिमानपूर्ण हाव भाव, ठसक। घमंड। ठाठबाट, शान।

ठहना—अक० घोड़ों का हिनहिनाना। घंटे का बजना। बनाना, सँवारना। सक० रक्षा करना।

ठहर†—पुं० स्थान, जगह। रसोई का स्थान, चौका, लिपाई पुताई।

ठहरना—अक० चलना बंद करना, रुकना। टिकना। एक स्थान पर बना रहना। नीचे न गिरना, अड़ा रहना। बना रहना। काम देना, चलना। घुली हुई वस्तु के नीचे बैठजाने पर पानी का स्थिर और साफ होकर ऊपर रहना, थिराना। धीरज रखना। प्रतीक्षा करना। निश्चित होना। गर्भ रहना। **ठहराना**—सक० चलने से रोकना। टिकाना। स्थिर रखना। इधर उधर न जाने देना, स्थिर करना। किसी होते हुए काम को रोकना पक्का करना, तै करना। **ठहराई**—स्त्री० ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी। कब्जा। **ठहराव**—पुं० ठहरने का भाव, स्थिरता। निश्चय। **ठहरौनी**—स्त्री० विवाह में टीके, दहेज आदि के लेन देन का करार।

ठहाका†—पुं० जोर की हँसी।

ठहियाँ†—स्त्री० दे० 'ठाँव'।

ठाँ—स्त्री० पुं० दे० 'ठाँव'। **ठाँई**†—स्त्री० स्थान, जगह। तईं, प्रति। समीप। **ठाउँ**—पुं० स्त्री० दे० ठाँयँ।

ठाँठ—जो सूखकर बिना रस का हो गया हो। (गाय या भैंस) जो दूध न देती हो।

ठाँसना—सक० जोर से घुसाना या भरना। रोकना, मना करना। अक० ठनठन शब्द के साथ खाँसना।

ठाँयँ—पुं०, स्त्री० जगह। निकट। बंदूक

छूटने का शब्द। ⊙ठाँयँ = स्त्री० बंदूक छूटने का शब्द। †झगडा।

ठाँव—पु०, स्त्री० स्थान, ठिकाना। ⊙**कुठाँव** = हर जगह, अच्छी या बुरी किसी भी जगह। अवसर का विचार न करके। उचित या अनुचित समझे बिना। स्थान और समय के औचित्य और अनौचित्य का ध्यान न रखकर।

ठाकुर—पु० देवता, देवमूर्ति। ईश्वर। पूज्य व्यक्ति। किसी प्रदेश का अधिपति, सरदार। जमीदार। क्षत्रियो की उपाधि। मालिक। नाइयो की उपाधि। बगाली एव मैथिल ब्राह्मणो की उपाधि। ⊙**द्वारा** = पुं० मदिर, देवालय। ⊙**बाड़ी** = स्त्री० देवालय। ⊙**सेवा** = स्त्री० देवता का पूजन। मदिर के नाम दान की हुई सपत्ति। **ठाकुरी**—स्त्री० स्वामित्व, शासन। दे० 'ठकुराई'।

ठाट—पुं० लकडी या बाँस की पट्टियो का बना हुआ परदा। मूल अगो की योजना जिनके आधार पर शेष रचना होती है, ढाँचा। वेशविन्यास,सजावट। ऊपरी तडक भडक, दिखावट। ढग, शैली। आयोजन,तैयारी। सामान। युक्ति,ढग। समूह,झुड।†बहुतायत। ⊙**ना**Ⓟ† = सक० रचना, बनाना। आयोजन करना, ठानना। सजाना, सँवारना। खपरैल के नीचे रखे जानेवाले ठट्टर को बाँधना। ⊙**बाट** = पु० सजावट। तडक भडक,आडबर। मु०—**बदलना**—वेश बदलना। झूठमूठ अधिकार या बडप्पन जताना।

ठाटर—पुं० टट्टर, टट्टी। ठठरी, पजर। ढाँचा। कबूतर आदि के बैठने की छतरी। ठाटबाट, बनाव,सिगार। खपरैल के नीचे की टट्टी।

ठाटी†—स्त्री० ठट, समूह।

ठाठ†—पु० दे० 'ठाट'।

ठाढ़ाⓅ†—वि० खडा। समूचा। उत्पन्न। हृष्टपुष्ट। मु०—**देना**=ठहराना, टिकाना।

ठाढ़ेश्वरी—पु० एक प्रकार के साधु जो दिन-रात खडे ही रहते हैं।

ठाबर†—पु० झगड़ा, मुठभेड।

ठान—स्त्री० काम का छिडना, अनुष्ठान। छेडा हुआ काम। दृढ निश्चय। अदाज, मुद्रा। ⊙**ना** = सक० अनुष्ठिन करना, छेडना। पक्का करना, ठहराना।

ठानाⓅ†—सक० ठानना। निश्चित करना। स्थापित करना, रखना।

ठामⓅ†—पु०, स्त्री० स्थान। मुद्रा, अदाज।

ठार—पु० गहरा जाडा। पाला, हिम।

ठाला—पु० रोजगार का न रहना, बेकारी। आमदनी का न होना। वि० निठल्ला, बिना काम धधे का।

ठावनाⓅ—सक० दे० 'ठाना'।

ठाहर†—पु० स्थान, जगह। रहने या टिकने का स्थान।

ठिँगना—वि० छोटे डील का, नाटा।

ठिकठैनⓅ—पु० ठाटबाट।

ठिकना—अक० दे० 'ठहरना'।

ठिकरा†—पुं० दे० 'ठीकरा'।

ठिकाना†—सक०[अक० ठिकना] ठहारना। अपने पास रखना (बाजारू)। पु० जगह, ठौर। रहने या ठहरने की जगह। निर्वाह का स्थान। प्रमाण, भरोसा। स्थिरता, ठहराव। प्रबध, बदोबस्त। हद। (कुछ रियासतो मे) जागीर। **ठिकानेदार**—पु० वह जिसे रियासत की ओर से ठिकाना (जागीर) मिला हो। मु०—**ठिकाने आना** = अपने स्थान पर पहुँचना। बहुत सोच विचार के उपरात यथार्थ बात करना या समझना। **ठिकाने की बात** = ठीक या प्रामाणिक बात। समझदारी की बात। **ठिकाने पहुँचाना या लगाना** = ठीक जगह पर पहुँचाना। नष्ट कर देना, न रहने देना। मार डालना।

ठिठकना—अक० चलते चलते एकबारगी रुक जाना। स्तभित होना।

ठिठरना, ठिठुरना†—अक० सर्दी से ऐठना।

ठिनकना—अक०बच्चो का रुक रुककर रोना।

ठिर—स्त्री० गहरी सरदी। ⊙**ना** = सक०सरदी से ठिठुरना। अक० बहुत जाडा पडना।

ठिलना—अक० ठेला जाना। बलपूर्वक बढना, घुसना।

ठिलाठिल†—क्रि० वि० एक पर एक गिरते हुए, धक्कमधक्का करते हुए।

ठिलिया—स्त्री० छोटा घडा, गगरी।
ठिलुआ—वि० निठल्ला।
ठिल्ला—पु० गगरी, घडा।
ठिव्व(पु)—पु० स्थान। 'पिक्कत इक्कन इक्क ठिव्व...(प्रताप० १०)।
ठिहारी—स्त्री० ठहराव, निश्चय।
ठीक—वि० जैसा हो वैसा, सच, यथार्थ। प्रामाणिक। उचित, योग्य। शुद्ध, सही। दुरुस्त, अच्छा। जो किसी स्थान पर अच्छी तरह बैठे या जमे। सीधा। जिसमे कुछ फर्क न पडे, निर्दिष्ट। ठहराया हुआ, पक्का। क्रि०वि० जैसे चाहिए वैसे, उचित रीति से। पु० पक्की बात, निश्चय। प्रबध, पक्का आयोजन। जोड, योग। ⊙ठाक=पु० निश्चित प्रबध, बदोबस्त। निश्चय, ठहराव। वि० अच्छी तरह, दुरुस्त, काम देने योग्य।
ठीकरा—पु० मिट्टी के बरतन का छोटा फूटा टुकडा। पुराना या टूटाफूटा बरतन। भिक्षापात्र। ठीकरी—स्त्री० मिट्टी के बरतन का फूटा टुकडा। तुच्छ वस्तु।
ठीका—पुं० कुछ धन आदि के बदले मे किसी के किसी काम को पूरा करने का जिम्मा। आय साधन को कुछ काल के लिए इस शर्त पर दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके अपने लिये निर्धारित अश निकालकर बराबर मालिक को देता जाय, इजारा, पट्टा। ठीकेदार—पु० दे० 'ठेकेदार'।
ठीलना†—सक० दे० 'ठेलना'।
ठीवन(पु)—पु० थूक।
ठीहँ—स्त्री० घोडों की हिनहिनाहट।
ठीहा—पु० जमीन मे गडा हुआ लकडी का कुदा जिसपर वस्तुओ को रखकर लुहार, बढई आदि उन्हें पीटते, छीलते या गढते है। लकडी गढने या चीरने का कुदा। बैठने के लिये ऊँचा किया हुआ स्थान, गद्दी हद।
ठुंठ—पु० सूखा हुआ पेड। लूला व्यक्ति।
ठुकना—अक० ठोका जाना। धँसना। मार खाना। हानि होना। पैर मे बेडी पहनना। कैद होना। ऊपर आना, जिम्मे होना (जैसे जुर्माना ठुकना)।
ठुकराना—सक० ठोकर मारना। तुच्छ समझकर दूर हटाना। तिरस्कार करना।
ठुड्डी—स्त्री० ठोडी। वह भूना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो।
ठुनकना—अक० बच्चो का रह रहकर रोने का सा शब्द निकालना। रोने का नखरा करना। किसी वस्तु के लिये रह रहकर रोना (बच्चों का)।
ठुमक—वि० चाल जिसमे उमंग के कारण थोडी थोडी दूर पर पैर पटकते हुए चलते हैं, ठसकभरी (चाल)। ठुमकना—अक० बच्चा का उमग मे थोड़ी थोडी दूर पर पैर पटकते हुए या कूदते हुए चलना। नाचने मे पैर पटककर चलना जिसमे घुंघरू बजें।
ठुमका†—वि० नाटा, ठिगना।
ठुमकी—स्त्री० ठिठक, रुकावट। छोटी खरी पूरी। वि० स्त्री० नाटी, छोटे डील की।
ठुमरी—स्त्री० एक प्रकार का गीत जो केवल एक स्थायी और एक अतरे मे समाप्त होता है।
ठुर्री—स्त्री० वह भूना हुआ दाना जो भूनने पर न खिले।
ठुसना—अक० [सक० ठूसना] कसकर भरा जाना, ठूंसा जाना।
ठुसाना—सक० [ठसाना का प्रे०] कसकर भरवाना। पेट भर खिलाना (अशिष्ट)।
ठूंग—स्त्री० चाच। चोच से मारने की क्रिया।
ठूंठ—पुं० वह पेड जिसमे डाल, पत्तियां आदि न हो, सूखा पेड। कटा हुआ हाथ, ठुठ।
ठूंठा—वि० बिना पत्तियो और टहनियो का (पेड)। बिना हाथ का, लूला।
ठूंसना, ठूसना—स० खूब कसकर भरना। दबा दबाकर घुसाना। बहुत अधिक खाना (व्यग्य)।
ठेंगना—वि० दे० 'ठिगना'।
ठेंगा—पु० अँगूठा, ठोसा। डंडा। मु०~ दिखाना=धोखा देना, विफल करना।
ठेंठी—स्त्री० कान की मैल। मूंदने के लिये लगाई हुई रूई आदि की डाट। डाट, काग।
ठेंपी—स्त्री० दे० 'ठेंठी'।
ठेक—स्त्री० टेक, चाँड। पच्चड़। पेंदा। घोडो की एक चाल। छडी या लाठी की सामी। ⊙ना=सक० सहारा लेना, टेकना। टिकना, रहना। ठेका—पुं० सहारे की वस्तु, ठेक। ठहरने या रुकने की जगह, अड्डा।

तबला या ढोल बजाने की वह क्रिया जिसमे केवल ताल दिया जाय। तबले मे बायाँ, डुग्गी। ठोकर, धक्का। दे० 'ठीका'। ठेकी—स्त्री० टेक। सहारा। ठेकेदार—पुं० ठेका लेनेवाला व्यक्ति।
ठेकाई—स्त्री० कपडों की छपाई मे काले हाशिए की छपाई।
ठेगना⑤—सक० टेकना। मना करना।
ठेघा†—पु० चाँड।
ठेठ—वि० निपट, बिलकुल। बिना मेल का, खालिस। निर्लिप्त। आरभ। स्त्री० वह बोली जिसमे लिखने पढने की शिष्ट भाषा के शब्दो का मेल न हो।
ठेपी—स्त्री० बोतल की डाट, काग।
ठेलना—सक० धक्का देकर आगे बढाना, ढकेलना।
ठेला—पु० धक्का, आघात। एक प्रकार की सामान ढोने की गाडी जिसे कुछ आदमी हाथो से ढकेलकर चलाते है। भीडभाड, धक्कमधक्का। ⊙ठेल=स्त्री० धक्कम-धक्का, आदमियो का एक दूसरे से रगड खाते हुए आगे बढना। अत्यधिक भीड़।
ठेलुवा—पु० दे० 'ठलुआ'।
ठेस—स्त्री० आघात, चोट।
ठेन⑤†—स्त्री० जगह, स्थान।
ठोक—स्त्री० ठोकने की क्रिया या भाव, प्रहार, आघात। आखेट मे हाँका करने-वालो का सीमित क्षेत्र मे शिकार को घेरने के लिये चारो ओर ऐसे छिपे व्यक्ति बैठाना जो जानवर को घेरा तोडकर भागता देखकर पत्थर आदि से किसी वृक्ष या कडी वस्तु को ठोकते हैं जिससे डरकर वह पशु सीधा मचान की ओर लौट जाता है. रोक। ⊙ना=सक० दे० 'ठोकना'।
ठोग—स्त्री० चोच या उसकी मार। उँगली की ठोकर।
ठोंगा—पुं० कागज का बना हुआ थैला जिसमे व्यापारी ग्राहको को समान देते है।
ठो†—अव्य० सख्या, अदद।
ठोकना—सक० जोर से चोट मारना। प्रहार करना। मारना पीटना। चोट लगाकर धँसाना, गाडना। (नालिश, अरजी आदि) दायर करना। काठ मे डालना, बेडियो से जकडना। दड, जुर्माना आदि करना। हथेली से आघात पहुँचाना। हाथ से मार-कर बजाना। मु०—ठोकना बजाना= जाँचना, परखना। ठोक बजाकर=अच्छी तरह देखभालकर, जाँच पडताल करके। सबको सूचित करके, किसी से भी न छिपाकर।
ठोकर—स्त्री० आघात जो चलने मे ककड पत्थर आदि के धक्के से पैर मे लगे, ठेस। वह पत्थर या ककड जिसमे पैर रुककर चोट खाता हो। वह कडा आघात जो पैर मे या जूते के पजे से किया जाय। कडा आघात, धक्का। जूते का अगला भाग।~मु०~खाना=किसी भूल के कारण दु ख सहना। धोखे मे आना, चूक जाना। कष्ट सहना।~लेना=ठोकर खाना। ठोकर लगना।
ठोठरा†—खाली, पोपला।
ठोडी, ठोढी—स्त्री० होठ के नीचे का गोलाई लिए उभरा भाग, ठुड्डी।
ठोर—पु० एक प्रकार का पकवान। चोच, चचु।
ठोली—स्त्री० दे० 'ठठोली' (मुख्यत 'बोली' के साथ)। दुश्चरित्रा या रखेल।
ठोस—वि० जो पोला या खोखला न हो। मजबूत। पु० कुढन, डाह।
ठोसा—पु० दे० 'ठेगा'।
ठोहना⑤—सक० पता लगाना, खोजना।
ठौनि⑤—स्त्री० दे० 'ठवनि'।
ठौर—पुं० जगह, स्थान। मौका, अवसर। ⊙कुठौर=बुरे ठिकाने। बेमौका। मु०~न आना=समीप न आना।~रखना=मार डालना।~रहना=जहाँ का तहाँ पड रहना। मर जाना।

ड

ड—हिंदी वर्णमाला का तेरहवाँ व्यजन और टवर्ग का तीसरा वर्ण।
डंक—पु० बिच्छू भिड, मधुमक्खी आदि कीडो मे पीछे का जहरीला काँटा। डक

मारा हुआ स्थान । कलम की जीभ, निब ।

डंकना—अक० भयानक शब्द करना, गरजना ।

डंका—पु० एक प्रकार का नगाडा । मु०—**डंके की चोट कहना**=खुल्लमखुल्ला कहना, सबको सुनाकर कहना ।

डंकिनी—स्त्री० दे० 'डाकिनी' ।

डँकौरी—स्त्री० भिड़, ततैया ।

डँगर—पु० चौपाया । दुबला पतला, क्षीण-काय या निर्बल व्यक्ति ।

डँगरी—स्त्री० लंबी ककड़ी । चुड़ैल, डाइन ।

डँगवारा—पु० किसानों की हल, बैल, आदि की पारस्परिक सहायता, जिता ।

डंगू ज्वर—पु० एक प्रकार का ज्वर जिसमे शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं ।

डँटैया—पु० डाँटने या घुडकनेवाला व्यक्ति ।

डंठल—पु० छोटे पौधों की पेडी और शाखा ।

डंठी†—स्त्री० डंठल ।

डंठा—पु० दे० 'डंडा' ।

डंड—पु० डंडा, सोटा । भुजा, बाँह । हाथों और पैरों के पंजों के बल पर की जाने-वाली कसरत । दंड, सजा । जुरमाना । घाटा । घडी, दंड । ⊙**पेल**=पु० कस-रती, पहलवान । बलवान् (आदमी) ।

डंडवत—स्त्री० दे० 'दंडवत्' ।

डंड़वार, डंडवारा—पु० वह कम ऊँची दीवार जो किसी स्थान को घेरने के लिये उठाई जाय ।

डंडवीⓅ†—पु० दंड या राजकर देनेवाला ।

डंडा—पुं० लकडी का सीधा, लंबा टुकडा जिसका मुख्य प्रयोग मारने या बचाने मे होता है । मोटी छडी, लाठी । चारदी-वारी । ⊙**डोली**=स्त्री० लडकों का खेल ।

डंडाकरनⓅ—पुं० दे० 'दंडकवन' ।

डंड़िया—स्त्री० वह साडी जिसके बीच मे गोटे टाँककर लकीरें बनी हों । गेहूँ के पौधे की सींक जिसमे बाल रहती है । पु० कर उगाहनेवाला ।

डंडी—स्त्री० छोटी, लंबी, पतली लकडी । हाथ मे रहनेवाली वस्तु का वह लंबा, पतला भाग जो मुट्ठी मे पकडा जाता है, दस्ता । तराजू की लकडी जिसमे पलड़े बाँध जाते हैं, डांडी । लंबा डंठल जिसमे फूल या फल लगा होता है, नाल । आरसी नाम के गहने का वह छल्ला जो उँगली मे पडा रहता है । झप्पान नाम की पहाडी सवारी । दंड धारण करनेवाला सन्यासी, दंडी । Ⓟ चुगलखोर । ⊙**मार**=वि० कम सौदा तौलनेवाला । मु०~**मारना**=कम सौदा तौलना ।

डंडूल—स्त्री० बवंडर, आँधी । द्वंद्व ।

डंडोरना—सक० हिलोरकर ढूंढना, उलट-पलटकर खोजना ।

डंबर—पु० [सं०] आडंबर, ढकोसला । विस्तार । एक प्रकार का चँदवा । शोभा, सजावट । **अंबर**⊙=पु० वह लाली जो सायंकाल आकाश मे दिखाई पड़ती है । **मेघ**⊙=पु० बडा शामियाना ।

डँवरु, डँवरू—पु० दे० 'डमरू' ।

डँवरुआ—पुं० बात का एक रोग, गठिया ।

डँवाडोल—वि० दे० 'डाँवाडोल' ।

डंस—पु० एक जंगली मच्छर, डाँस । वह स्थान जहाँ विषैले कीड़ों का दाँत या डंक चुभा हो ।

डक—पुं० एक टाट जिससे जहाजों के पाल बनते हैं । एक मोटा कपडा । बंदरगाह का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरता है ।

डकरना, डकराना—अक० साँड, बैल या भैंसे का बोलना ।

डकार—पु० भोजन करने के पश्चात् पेट मे भरी वायु का कंठ से शब्द के साथ निक-लने का शारीरिक व्यापार । बाघ, सिंह आदि की गरज, दहाड । मु०~**न लेना**=किसी का धन चुपचाप हजम कर जाना । ⊙**ना**=अक० डकार लेना । किसी का माल ले लेना, हजम करना । बाघ, सिंह आदि का गरजना, दहाड़ना ।

डकैत—पु० डाका मारनेवाला, डाकू ।

डकैती—स्त्री० डाका मारने का काम, छापा ।

डग—पुं० एक स्थान से पैर उठाकर दूसरे स्थान पर रखना, कदम । साधारणतः चलने मे पड़े हुए एक के बाद दूसरे पैर के बीच की दूरी । मु०~**देना**=चलने में आगे की ओर पैर रखना । ~**भरना**,

~मारना = लंबे पैर बढ़ाना, कदम बढ़ाना।

डगना(पु)†—अक० हिलना, खिसकना। चूकना, डिगना। डगमगाना, लडखडाना।

डगडगाना—अक० डगमगाना, काँपना।

डगडोलना—अक० दे० 'डगमगाना'।

डगडौर—वि० दे० 'डाँवाडोल'।

डगण—पु० [सं०] पिंगल मे चार मात्राओ का एक गण।

डगमग—वि० लडखडाता हुआ। विचलित, अस्थिर। **डगमगाना**—अक० डगमग होना, कभी इस बल, कभी उस बल झुकना, लडखडाना। विचलित होना, दृढ़ न रहना। सक० किसी को डगमग होने मे प्रवृत्त करना।

डगर—स्त्री० मार्ग, रास्ता। ⊙ना(पु)† = अक० चलना। लुढकना। **डगरा**†—पु० रास्ता। बाँस की पतली फट्टियो का बना छिछला बर्तन, छाबडा।

डगा†—पु० नगाडा बजानेकी लकडी, चोब।

डगाना—सक० दे० 'डिगाना'।

डटना—अक० जमकर खडा होना, ठहरा रहना। लग जाना, छू जाना। दृढता से प्रवृत्त होना। शोभित होना। **डटाना**—सक० एक वस्तु को दूसरी वस्तु से लगाना, सटाना। जोर से भिडाना। जमाना, खडा करना।

डट्टा—पु० हुक्के का नैचा। डाट, काग। बडी मेख।

डड्ढार(पु)†—बडी दाढीवाला। वीर। साहसी।

डढन(पु)—स्त्री० दाह, जलन। **डढ़ना**(पु)—अक० जलना।

डढ़ार, डढ़ारा—वि० वह जिसके डाढे हो। वह जिसके दाढी हो।

डढियल—वि० डाढीवाला, जिसके बडी दाढी हो।

डढ़ना(पु)—सक० जलाना।

डढ़ोरा(पु)—वि० डाढीवाला।

डपट—स्त्री० डाँट, झिडकी। घोडे की तेज चाल। ⊙ना = सक० क्रोध मे जोर से बोलना, डाँटना। तेजी से जाना।

डपोरसंख—पुं० जो कहे बहुत पर कर कुछ न सके, डीग मारनेवाला। बड़े डीलडौल का पर मूर्ख।

डफ—पु० चमडा मढा हुआ एक प्रकार का बडा बाजा जो प्राय होली मे बजाया जाता है, डफला। लावनी बाजो का बाजा, चग।

डफला—पु० दे० 'डफ'। **डफली**—स्त्री० छोटा डफ, खँजरी। मु०—**अपनी अपनी ~ अपना अपना राग** = जितने लोग उतने मत या विचार।

डफ़ना†—अक० जोर से रोना या चिल्लाना, दहाड मारना।

डफालची, डफाली—पु० डफला, ताशा, ढोल आदि बजानेवाला।

डफोरना†—अक० हाँक देना, ललकारना।

डब—पु० जेब, थैला।

डबकना—अक० पीडा करना, टीस मारना।

डबकौंहा—वि० आँसू भरा हुआ, डबडबाया हुआ।

डबडबाना—अक० आँसू से (आँखें) भर आना। अश्रुपूर्ण होना।

डबरा—पु० छिछला गड्ढा जिसमे पानी जमा रहे, कुड, हौज। भूखड।

डबल—वि० [अँ०] दोहरा, दूना। बहुत बडा या भारी। पु० अँगरेजी जमाने का पैसा। ⊙**रोटी** = स्त्री० पाव रोटी, सडाए हुए या खमीरी आटे की फूलाई हुई मोटी रोटी।

डबी(पु)†—स्त्री० दे० 'डब्बी'।

डबोना—सक० दे० 'डूबाना'।

डब्बा—पुं० ढक्कनदार छोटा गहरा बरतन। रेलगाडी मे की एक गाडी।

डब्बू—पु० व्यंजन परोसने का एक प्रकार का कटोरा।

डभकना†—अक० पानी मे डूबना उतराना, चुभकी लेना। आँख डबडबाना।

डभकौरी—वि० दे० 'डभकौहाँ'।

डभकौहाँ—वि० अश्रुपूर्ण (नेत्र)।

डभकौरी—स्त्री० उरद की पीठी की बरी।

डमरू—पु० चमडा मढा एक बाजा जो बीच मे पतला रहता है और दोनो सिरो की ओर बराबर गोलाई लिए चौडा होता जाता है और जिसे बीच मे लटकनेवाली

घुंडी या गाँठ को हिलाकर बजाया जाता है। इस प्रकार की कोई वस्तु। ३२ लघु वर्णों का एक दडकवृत्त जिसमे ११वे, २२वे और २७वें वर्ण पर यति तथा अत मे विराम होता है। ⊙मध्य = पु० धरती या समुद्र का वह तग या पतला भाग जो स्थल या जल के दो वडे खडो को मिलाता है। जल⊙ मध्य = पु० जल का वह तग या पतला भाग जो समुद्र के दो वडे भागो को मिलाता है। स्थल⊙मध्य = पु० भूमि का वह पतला भाग जो पृथ्वी के दो वडे हिस्सो को मिलाता है। ⊙यत्र = पुं० एक प्रकार का यत्र या पात्र जिसमे अर्क खीचे जाते तथा सिगरफ का पारा, कपूर आदि उडाए जाते है।

डयन—पु० [स०] उडान। पख।

डयना—पुं० पख, डैना।

डर—पु० वह मनोवेग जो किसी अनिष्ट की आशका से उत्पन्न होता है, भय। अनिष्ट की सभावना का अनुमान, आशका। ⊙ना = अक० भयभीत होना आशका करना। **डरपना**[+]—अक० दे० 'डरना'। **डरपाना**[+]—सक० दे० 'डराना'। **डरपोक**—वि० वहुत डरनेवाला, भीरु। **डरवाना**—सक० दे० 'डराना'। **डरा-डरी**[+]—स्त्री० दे० 'डर'। **डराना**—सक० [अक० डरना] डर दिखाना, भयभीत करना। **डरारी**(पु)—वि० स्त्री० डरावनी। **डरावना**—वि० जिससे डर लगे, भयानक। **डरावा**—पु० डराने के लिये कही हुई वात। वह लकडी जो पेडो मे चिडिया उडाने के लिये वँधी रहती और खटखट शब्द करती है, धडका। रात मे जानवरो को डराकर भगाने के लिये खेतो मे खडा किया जानेवाला ढाँचा।

डरा(पु)—पु० दे० 'डला'।

डरिया[+]—स्त्री० दे० 'डाल'। पु० डोरिया नाम का सूती कपडा।

डरीला[+]—वि० डारवाला, शाखायुक्त।

डरैला[+]—वि० डरावना।

डल—पु० टुकड़ा, खड। स्त्री० झील, काश्मीर की एक झील। **डली**—स्त्री० छोटा टुकडा (नमक, मिसरी आदि का)। छोटा ढला। सुपारी। दे० 'डलिया'।

डलना—अक० [सक० डालना] डाला जाना, पडना।

डला—पु० टुकडा, खड। ढेला। वाँस, वेत आदि की पतली फट्टियो से बना हुआ वरतन। टोकरा। **डलिया**—स्त्री० छोटा डला या टोकरा, दौरी।

डसन—स्त्री० डसन की क्रिया, भाव या ढग। **डसना**—सक० विषवाले जतुओ का दाँत से काटना। डक मारना। मच्छरो आदि का सूंड धँसाकर काटना। **डसाना**—सक० [डसना का प्रे०] डसने का काम दूसरे से कराना। विछाना, फैलाना।

डहकना—सक० धोखा देना, ठगना। ललचाकर न देना। अक० विलखना, विलाप करना, दहाड मारना। (पु छितराना, फैलाना] **डहकाना**—सक० खोना, गँवाना। धोखे से किसी की चीज ले लेना, ठगना, ललचाकर न देना। अक० धोखे मे आकर पास का कुछ खोना, ठगा जाना।

डहडह—वि० दे० 'डहडहा'। **डहडहा**—वि० जो सूखा या मुरझाया न हो, हरा भरा। प्रसन्न। तुरत का, ताजा। **डहडहाट**(पु)—स्त्री० हरापन, ताजगी। प्रफुल्लता, आनद। **डहडहाना**—अक० पेड पौधे का हराभरा या ताजा होना। आनदित होना।

डहन—पु० पर, पख। जलन।

डहना—अक० जलना, भस्म होना। द्वेष करना। सक० भस्म करना। दु ख पहुँचाना।

डहर[+]—स्त्री० रास्ता, मार्ग, डगर। आकाशगगा। ⊙ना = अक० चलना। **डहराना**—सक० [डहरना का प्रे०] चलाना, दौडाना, फिराना।

डहर—पु० डाहने या तग करनेवाला। द्वेष। सताप।

डाँक—स्त्री० ताँवे या चाँदी का बहुत पतला पत्तर जिसे नगीनो के नीचे वैठाते हैं। दे० 'डाक'। कै, वमन। पु० दे० 'डका'। दे० 'डक'।

डाँकना—सक० फाँदना । वमन करना ।
डाँग—पु० जगल । डका । स्त्री० बडा डडा, लठ ।
डाँगर—वि० गाय, भैस आदि पशु, चौपाया। एक नीच जाति। वि० बहुत दुबला पतला । मूर्ख । निर्बल । भाग्यहीन ।
डाँट—स्त्री० घुड़की, डपट । फटकार । शासन । दवाव ।⊙ना = सक०डराने के लिये क्रोध-पूर्वक जोर से बोलना घुडकना । उच्च स्वर मे निषेध करना ।
डाँठ—पुं० डठल ।
डाँड,डाँड़ा—पु० सीधी लकडी,डडा । गदका। नाव खेने का बल्ला, चप्पू । सीधी लकीर ऊँची मेंड। छोटा भींटा या टीला । सीमा, जुरमाना । नुकसान का बदला, हरजाना । **डाँडना, डाँडना**—अक० जुरमाना करना। **डाँड़ा**—पुं० छड, डडा । गतका । नाव खेने का डाँड । हद, मेड । **डाँड मेड, डाँडा मेडा**—पुं० परस्पर अत्यत सामीप्य, लगाव । अनबन, झगडा ।
डाँड़ी—स्त्री० लबी पतली लकडी । लबा हत्था या दस्ता। तराजू की डडी । पतली शाखा, टहनी । हिंडोले मे वे चार सीधी लकडियाँ या डोरी की लडें जिनमें बैठने की पटरी लटकती रहती है । सीधी लकीर, रेखा । लीक, मर्यादा । चिडियो के बैठने का अड्डा । डडे मे बंधी हुई झोली के आकार की पहाडी सवारी, झप्पान ।
डाँडी—पुं० डाँड खेनेवाले आदमी । 'डाँडी' ।
डाँवरा—पुं० लडका बेटा ।
डाँवाडोल—वि० एक स्थिति मे न रहनेवाला, चचल । अव्यवस्थित (चित्त), सदेह से भरा हुआ (मन) ।
डाँस—पुं० बडा मच्छर, दश । एक प्रकार की मक्खी ।
डाइन—स्त्री० भूतनी, चुडैल । वह स्त्री जिसकी दृष्टि आदि के प्रभाव से बच्चे मर जाते हो, टोनहाई । कुरूपा और डरावनी स्त्री ।
डाक—स्त्री० सवारी का ऐसा प्रबंध जिसमे एक टिकान पर बराबर जानवर आदि बदले जाते हो । चिट्ठी-पत्रपत्रिकाएँ, पारसल, मनीआर्डर, वी० पी० आदि पहुँचाने का सरकारी प्रबंध । चिट्ठी, पत्रपत्रिकाएँ, पारसल, वी० पी०, मनिआर्डर आदि । नीलाम की बोली । वमन, कै । ⊙खाना = पु० वह सरकारी दफ्तर जहाँ चिट्ठीपत्री, पत्रपत्रिकाएँ, पारसल, मनीआर्डर आदि भेजने और बाँटने की व्यवस्था की जाती है । ⊙गाड़ी = डाक ले जानेवाली रेलगाडी जो और गाडियो से तेज चलती है। बहुत तेज चलानेवाली रेलगाडी। ⊙घर = पु० दे० 'डाकखाना'। ⊙चौकी = स्त्री० मार्ग मे वह स्थान जहाँ यात्रा के घोडे या हरकारे बदले जायँ । ⊙बँगला = पुं० वह मकान जो सरकार या किसी विशेष विभाग (जैसे, नहर, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड आदि) की ओर से दौरा करनेवाले अफसरो या भ्रमण करनेवाले लोगो के अस्थायी रूप मे ठहरने के लिये बना हो। मु० ~बैठाना या लगाना = शीघ्र यात्रा के लिये स्थान स्थान पर सवारी बदलने की चौकी नियत करना ।
डाक्टर—पुं० [अँ०] विश्वविद्यालय से किसी विषय की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त करने-वाला विद्वान् या पडित । वह जिसे अँग-रेजी (एलोपैथी) चिकित्सा करने की योग्यता और अधिकार प्राप्त हो । **डाक्टरी**—स्त्री० डाक्टर का काम, पद या पदवी । वि० डाक्टर सबधी । डाक्टर का ।
डाका—पुं० माल असबाब जबरदस्ती छीनने के लिये दल बाँधकर धावा, बटमारी । ⊙जनी = स्त्री० डाका मारने का काम, डकैती, बटमारी ।
डाकिन—स्त्री० दे० 'डाकिनी'। **डाकिनी**—स्त्री० [सं०] पिशाची जो काली के गणों मे है । डाइन, चुडैल ।
डाकू—पु० डाका डालनेवाला, लुटेरा ।
डाकोर—पु० ठाकुर, विष्णु भगवान् (गुजरात) ।
डाख—पु० दे० 'ढाक' ।
डागल—पु० पहाडी रास्ता ।
डागा—पु० नगाडा बजाने का डडा, चोब ।
डाट—स्त्री० टेक, चाँड । छेद बद करने की वस्तु । बोतल, शीशी आदि का मुँह बद

करने की वस्तु, काग, । मेहराब को रोक रखने के लिये ईंटो आदि की भरती । पु० दे० 'डाँट' । ⊙ना = सक० एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कसकर दबाना । टेकना, चाँड लगाना । छेद या मुँह बद करना, ठेठी लगाना । कसना या ठूँसकर भरना । खूब पेट भरकर खाना । ठाट से कपडा, गहना आदि पहनना । मिलाना, भिडाना । दे० 'डाँटना' ।

डाढ—स्त्री० चबाने के चौडे दाँत, चौभड ।

डाढ़ना(पु)—सक० जलाना ।

डाढ़ा—स्त्री० दावानल । आग । ताप, दाह जलन ।

डाढी—ठोडी, चिबुक । ठुड्डी और कनपटी पर के बाल, दाढी ।

डाबर—पु० नीची जमीन जहाँ पानी ठहरा रहे । पोखरी, तलैया । हाथ धोने का पात्र, चिलमची । मैला (पानी) । मट-मैला ।

डाबा—पु० दे० 'डब्बा' ।

डाभ—पु० एक प्रकार का पवित्र और मुला-यम कुश जो यज्ञादि मे काम आता है । कुश । आम की मजरी या बौर । कच्चा नारियल ।

डामर—पु० [स०] शिवकथित माना जाने-वाला तत्राशास्त्र, जिसके योग, शिव, दुर्गा, सारस्वत, ब्राह्म और गाधर्व, ये छह भेद है । हलचल, धूम । आडबर, ठाटबाट । चमत्कार । [देश०] तालवृक्ष का गोंद, राल । अलकतरा । कहरुवा नामक गोंद । एक प्रकार की मधुमक्खी जो राल बनाती है ।

डामल—स्त्री० उम्र भर के लिये कैद । देश-निकाले का दड ।

डांयडांय—क्रि० वि० व्यर्थ इधर से उधर (घूमना) ।

डायन—स्त्री० दे० 'डाइन' ।

डायरी—स्त्री० [अ०] राजनामचा, दैनदिनी, प्रतिदिन की स्मरणीय बातो का पुस्तिका । दैनिक विवरण । नित्य के कार्य का विव-रण ।

डार(पु)†—स्त्री० दे० 'डाल' । डलिया, चंगेर । पशुओं या पक्षियो का झुड ।

डारना—सक० दे० 'डालना' ।

डाल—स्त्री० पेड के धड का वह निकला हुआ हिस्सा जिसमे पत्तियाँ और कल्ले होते हैं, शाखा । फानूस जलाने के लिये दीवार मे लगी हुई एक प्रकार की खूंटी । तलवार का फल । डलिया, चँगेरी । कपडा और गहना जो डलिया मे रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिया जाता है।

डाली—स्त्री० डलिया, चंगेरी । फल, फूल मेवे जो डलिया मे सजाकर किसी के पास भेंट भेजे जाते हैं, भेंट । दे० 'डाल' ।

डालना—सक० नीचे गिराना, छोडना । एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कुछ दूर से गिराना, छोडना । रखना या मिलाना । घुसाना । खोजखबर न लेना, भुला देना । अकित करना । फैलाकर रखना । पहनना । जिम्मे करना । गर्भपात करना (चौपायो के लिये) । कै करना । (स्त्री को) पत्नी की तरह रखना । उपयोग करना । घटित करना, मचाना । बिछाना । मु०—डाल रखना = रख छोडना । रोक रखना, देर लगाना ।

डाव—पुं० दे० 'दाँव' ।

डावरा—पुं० लडका, बेटा । डावरी—स्त्री० लडकी ।

डासन—पुं० बिछौना, बिस्तर । डासना†—सक० बिछाना, फैलाना । (पु)† डसना । डासनी—स्त्री० चारपाई । आसनी ।

डाह—स्त्री० जलन, ईर्ष्या । ⊙ना = सक० जलाना, सताना । डाही—वि० डाह या ईर्ष्या करनेवाला ।

डाहुक—पुं० एक प्रकार का पक्षी ।

डिंगर—वि० [सं०] मोटा आदमी । दुष्ट, बदमाश । दास, गुलाम । [देश०] वह काठ जो नटखट चौपायो के गले मे बाँध दिया जाता है ।

डिंगल—वि० नीच, दूषित । स्त्री० राज-पूताने की वह भाषा जिसमे भाट और चारण काव्य और वशावली लिखते हैं ।

डिंड़सी—स्त्री दे० 'टिंडसी' ।

डिंडिम—पु० [सं०] डुगडुगी, डमरू ।

डिंब—पु० बावैला, भयध्वनि । दगा, लडाई । अडा । फेफड़ा । कीड़े का छोटा बच्चा ।

डिंभ—पु० [सं०] छोटा बच्चा । मूर्ख । आडंबर, पाखंड । अभिमान ।

डिक्टेटर—पु० [अँ०] प्रजा की इच्छाओं की अपेक्षा न रखकर मनमाने ढंग से शासन करनेवाला शासक (प्राय. असामान्य स्थिति या विशेष अवधि के लिये)। विशेषत किसी राजतंत्र को दबाकर या उसके बाद अधिकार प्राप्त करनेवाला शासक, अधिनायक ।

डिगना—अक० हिलना, खिसकना । उचित स्थान या स्थिति से हटना । वचन, मर्यादा चरित्र, आदि से च्युत होना । **डिगाना**—सक० [अक० डिगना] जगह से टालना, खिसकाना । बात पर स्थिर न रखना, विचलित करना ।

डिगरी—स्त्री० [अँ०] विश्वविद्यालय की परीक्षा की उपाधि या पदवी । अंश, कला, एक माप (तापद्योतक) । दीवानी अदालत का फैसला । ⊙**दार** = वि० वह जिसके पक्ष मे डिगरी या फैसला हो ।

डिगलाना—अक० दे० 'डगमगाना' ।

डिग्गी—स्त्री तालाब । †हिम्मत ।

डिजाइन—पु० [अँ०] नमूना, तर्ज । कल्पित चित्र । बनावट ।

डिटेक्टिव—पुं० [अँ] जासूस, गुप्तचर ।

डिठार, डिठियार†—वि० जिसे सुझाई दे ।

डिठौना—पु० छोटे बच्चो को बुरी नजर से बचाने के लिये माथे पर लगाया जानेवाला काजल का टीका ।

डिढ़—वि० दे० 'दृढ' ।

डिढ्या†—स्त्री० अत्यंत लालच, तृष्णा, लोभ ।

डिनर—पु० [अँ०] रात्रिभोजन । सामूहिक भोज ।

डिप्लोमा—पुं० [अँ०] वह लिखित प्रमाण-पत्र जो किसी को विशेष योग्यता आदि प्राप्त करने पर मिलता है ।

डिबिया—स्त्री० छोटा ढक्कनदार बरतन, छोटा डिब्बा या संपुट ।

डिब्बा—पुं० एक प्रकार का ढक्कनदार छोटा बरतन । रेलगाडी की एक गाडी । बच्चो की पसली के दर्द की बीमारी ।

डिमगना—सक० मोहित करना, छलना ।

डिम—पुं० [सं०] रूपक का एक भेद जिसमें चार अंक और चार ही संधियाँ होती हैं तथा माया, इंद्रजाल, लडाई और क्रोध आदि का समावेश होता है । इसमे देवता गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच आदि उद्धत नायक होते हैं ।

डिमडिमी—स्त्री० डुगडुगिया या डुग्गी नाम का बाजा ।

डिलारोⓅ—वि० बडे कद का, बडे डील-डौलवाला । 'बुखारेहु के हैं डिलारे घमंडै । (प्रताप० ३७) ।

डिल्ला—पुं० [सं०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ और अंत मे भगण होता है । एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो सगण होते हैं, तिलका । बैलो के कंधे पर उठा हुआ कूबड ।

डिसमिस—वि० [अँ०] खारिज, नामंजूर । नौकरी से बरखास्त ।

डींग—स्त्री० शेखी, बढी चढी बातें ।

डीठ—स्त्री० दृष्टि, नजर । देखने की शक्ति । सूझबूझ । ⊙**ना**Ⓟ† = अक० दिखाई देना, दृष्टि में आना । ⊙**बंध** = पुं० नजरबंदी, इंद्रजाल । इंद्रजाल करनेवाला, जादूगर ।

डीन—स्त्री० [सं०] पक्षियो की उडान । पु० [अँ०] विश्वविद्यालय मे किसी विभाग का अध्यक्ष ।

डीबुआ†—पुं० पैसा ।

डीमडाम—स्त्री० ऐंठ, ठसक । ठाटबाट ।

डील—पु० प्राणियो के शरीर की ऊँचाई, कद । शरीर, जिस्म । व्यक्ति, प्राणी । ⊙**डौल** = देह की लंबाई चौडाई । शरीर का ढाँचा, काठी ।

डीह—पु० आबादी, बस्ती । किसी वंश या जाति का आदि निवासस्थान । उजडे हुए गाँव का टीला । ग्रामदेवता ।

डुंग†—पु० ढेर, अटाला । टीला, पहाडी ।

डुंगर†—पुं० दे० 'डुंग' ।

डुंड†—पु० पेड़ो की सूखी डाल, ठूँठ । डका ।

डुक—पु० घूँसा, मुक्का ।

डुक्का डुक्कीⓅ—स्त्री० घूँसाघूँसी । 'तहँ ढुक्का ढुक्की मुक्का-मुक्की डुक्का डुक्की होन लगी' (हिम्मत० १८६) ।

डुगडुगी—स्त्री० चमडा मढा हुआ एक छोटा बाजा, डुग्गी ।
डुग्गी—स्त्री० दे० 'डुगडुगी' ।
डुपटना†—सक० (कपडा) चुनना, चुनियाना ।
डुपट्टा—पुं० दे० 'दुपट्टा' ।
डुबकनी—स्त्री० पनडुब्बी (अँ० सबमेरीन) ।
डुबकी—स्त्री० गोता, बुडकी । पीठी की बनी हुई बिना तली बरी ।
डुबाना—सक० [अक० डूबना] पानी या किसी द्रव पदार्थ के भीतर डालना, गोता देना । नष्ट करना । मु०—**नाम**~ =नाम को कलंकित करना, मर्यादा खोना । **लुटिया**~ =महत्व या प्रतिष्ठा नष्ट करना ।
डुबाव—पुं० पानी की डूबने भर की गहराई ।
डुबोरना†—सक० दे० 'डुबाना' ।
डुब्बा—पु० दे० 'पनडुब्बा' ।
डुब्बी—स्त्री० दे० 'डुबकी' । दे० 'पनडुब्बी' ।
डुभकौरी—स्त्री० पीठी की बिना तली बरी ।
डुलनाⓅ†—अक० दे० 'डोलना' । **डुलाना**—सक० [अक० डोलना] हिलाना, चलाना । हटाना, भगाना । फिराना, घुमाना ।
डूंगर, डूंगरी—पु० टीला, भीटा । छोटी पहाडी ।
डूंघा—वि० गहरा ।
डूबना—अक० पानी वा द्रव पदार्थ के भीतर समाना, गोता खाना । सूर्य, ग्रह, नक्षत्र आदि का अस्त होना । बरबाद होना । किसी व्यवसाय मे लगा हुआ या किसी को दिया हुआ धन नष्ट होना । चिंतन मे मग्न होना । लीन होना, तन्मय होना । मु०—**चुल्लू भर पानी में डूब मरना** = दे० 'डूब मरना' । **जी** ~ = चित्त व्याकुल होना, बेहोशी होना ।~**उतराना** = चिंता मे पड जाना । **डूब मरना** = शरम के मारे मुंह न दिखाना । **नाम**~ = प्रतिष्ठा नष्ट होना ।
डेउढ़ी—स्त्री० ड्योढी । टिटसी ।
डेक—पु० [अँ०] समुद्री जहाजो की वह खुली जगह जहाँ उसमे काम करनेवाले छोटे दर्जे के लोग और कम किराया देनेवाले यात्री रहते हैं । बकरम नाम का कपडा ।
डेढ़हा†—पु० पानी का साँप ।
डेढ—वि० एक पूरा और उसका आधा ($1\frac{1}{2}$) । मु०~**ईंट की मसजिद बनाना** = खरेपन या अक्खडपन के कारण सबसे अलग काम करना ।~(**या ढाई**) **चावल की खिचडी पकाना** = अपनी राय सबसे अलग रखना ।
डेडा—वि० पुं० दे० 'ड्योढा' ।
डेबरी—स्त्री० दे० 'ढिबरी' ।
डेमरेज—पु० [अँ०] बंदरगाह या रेलवे स्टेशन पर नियमित समय से अधिक देर तक बिना छुडाए पडे रह जानेवाले माल के लिये माल छुडानेवाले द्वारा दिया जानेवाला धन, हरजाना ।
डेरा—पु० थोडे दिनों के लिये रहना, पडाव । ठहरने का सामान, तंबू, खेमा, कनात । डेरे के लिये बिस्तर, रसद आदि । ठहरने का स्थान । खेमा, तंबू । नाचने गानेवालो का दल, मंडली । मकान, घर । Ⓟ† वि० बायाँ, सव्य । मु० ~**डालना** = सामान के साथ टिकना, ठहरना ।~**पडना** = टिकान होना, छावनी पडना ।
डेराना†—अक० दे० 'डरना' ।
डेरी—स्त्री० वह स्थान जहाँ दूध और मक्खन आदि के लिये गौएँ और भैंसें रखी जाती हो ।
डेल—पु० उल्लू पक्षी । रोडा, ढेला । पक्षियो को बंद करने का डला ।
डेला—पुं० आँख का सफेद उभरा हुआ भाग जिसमे पुतली होती है, कोया ।
डेली†—स्त्री० डलिया, बाँस की झाँपी । [अँ०] दैनिक ।
डेवढ़†—वि० डेढ गुना । पु० सिलसिला, क्रम ।
डेवढा†—वि० पु० दे० 'ड्योढा' ।
डेवढी—स्त्री० दे० 'ड्योढी' ।
डेहरी—स्त्री० दे० 'दहलीज' ।
डैनⓅ, **डैना**Ⓟ—पुं० चिडियो का पंख, पर, बाजू ।
डोंगर—पु० पहाडी, टीला ।

डोंगा—पुं० बिना पाल की नाव । बड़ी नाव ।
डोंगी—स्त्री० छोटी नाव ।
डोडा—पुं० बड़ी इलायची । टोटा, कारतूस ।
डोडी, डोड़ी—स्त्री० पोस्ते का फल जिसमे से अफीम निकलती है, टोटी ।
डोई—स्त्री० काठ की डाँडी की बड़ी करछी जिससे दूध, चाशनी आदि चलाते है ।
डोकरा—पुं० अशक्त और वृद्ध मनुष्य । † पिता ।
डोकिया, डोकी—स्त्री० काठ का छोटा कटोरा जिसमे तेल, बटना आदि रखते है ।
डोब, डोबा—पुं० डुबाने का भाव, गोता, डुबकी ।
डोम—पुं० एक जाति जिसका काम श्मशान पर शव को आग देना और सूप, डले आदि बेचना है । ढाढी, मिरासी । ⊙**कौआ** = पुं० बड़ा और बहुत काला कौआ । ⊙**ड़ा** = पु० दे० 'डोम' । **डोमनी, डोमिन**—स्त्री० डोम जाति की स्त्री । ढाढी या मिरासी की स्त्री ।
डोर—स्त्री० [सं०] डोरा, मोटा तागा । मु० ~ **पर लगाना** = प्रयोजनसिद्धि के अनुकूल करना । **डोरा**—पु० मोटा सूत या तागा, धागा । धारी, लकीर । आँखो की महीन लाल नसें जो नशे या उमग की दशा मे दिखाई पड़ती है । तलवार की धार । तपे घी की धार । एक प्रकार की करछी, पली । प्रेम का बंधन । वह वस्तु जिससे किसी वस्तु का पता लगे । काजल या सुरमे की रेखा । मु० ~ **डालना** = प्रेमसूत्र मे बद्ध करना, परचाना । **डोरी**—स्त्री० रस्सी । पाश, बंधन । डाँडीदार कटोरा या कलछा । डोरा । मु० ~ **ढीली छोड़ना** = देखरेख कम करना ।
डोरिया—पुं० वह कपड़ा जिसमे कुछ सूत की लबी धारियाँ बनी हो । एक बगला ।
डोरियाना†—सक० पशुओ को रस्सी से बाँधकर ले चलना, एक रस्सी से बाँधना । इकट्ठा करना ।
डोरिहार(पु)—पु० पटवा ।
डोरे(पु)—क्रि० वि० साथ लिए हुए, सग सग ।
डोल—पु० लोहे का गोल बरतन । हिंडोला, झूला । डोली, पालकी । हलचल । वि० चंचल । ⊙**ची** = स्त्री० छोटा डोल ।
डोलना—सक० गति मे होना । चलना, टहलना । दूर होना । (चित्त) विचलित होना । **डोलाना**—सक० [अक० डोलना] हिलाना, चलाना । दूर करना, हटाना ।
डोलडाल—पु० चलना फिरना, टहलना । पाखाने जाना ।
डोला—पु० स्त्रियो के बैठने की बंद सवारी जिसे कहार कंधो पर ढोते हैं, पालकी । झूले का झोका, पेंग । मु० ~ **देना** = किसी राजा या सरदार को भेंट मे अपनी बेटी देना । बेटी को वर के घर ले जाकर व्याहना । **डोली**—स्त्री० दे० 'डोला' ।
डोही—स्त्री० दे० 'डोई' ।
डौंडी—स्त्री० ढिंढोरा, डुगडुगिया । घोषणा, मुनादी । मु० ~ **देना** = मुनादी करना । सबसे कहते फिरना । ~ **बजना** = घोषणा होना । जयजयकार होना । यश फैलना ।
डौंरू—पु० दे० 'डमरू' ।
डौआ—पुं० काठ का चमचा ।
डौल—पु० ढाँचा, ढड्ढा । बनावट का ढग, ढब । प्रकार । उपाय । लक्षण, रगढग । मु० ~ **पर लाना** = काट छाँटकर सुडौल या दुरुस्त करना । अभीष्ट साधन के अनुकूल करना । **बाँधना या लगाना** = उपाय करना । **डौलियाना**†—सक० प्रयोजन सिद्धि के अनुकूल करना । गढकर दुरुस्त करना ।
ड्योढा—वि० किसी पदार्थ से उसका आधा और ज्यादा, डेढगुना । पु० एक प्रकार का पहाड़ा जिसमे अंको की डेढगुनी सख्या बतलाई जाती है ।
ड्योढी—स्त्री० चौखट, दरवाजा । चौखट के नीचे का भाग । वह बाहरी कोठरी जो मकान मे घुसने के पहले पडती है, पौरी । ⊙**दार** = पु० दे० 'ड्योढीवान' । ⊙**वान** = पु० ड्योढी पर रहनेवाला पहरेदार, दरवान ।
ड्रम—पुं० [अँ०] लोहे का कडाल के आकार का पीपा ।
ड्राइवर—पु० [अँ०] गाडी हाँकने या चलानेवाला व्यक्ति ।
ड्राम—पु० [अँ०] एक अँगरेजी तौल जो दो माशे के लगभग होती है ।

ड्रामा—पु० [अँ०] नाटक, रूपक ।

ड्रेस—पुं०, स्त्री० [अँ०] पोशाक, लिबास।

ढ

ढ—हिंदी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन और ट वर्ग का चौथा अक्षर ।
ढँकना—सक० दे० 'ढकना' ।
ढख(पु)†—पु० दे० 'ढाक' ।
ढंग—पु० ढब, रीति । प्रकार, तरह । रचना, बनावट । युक्ति, उपाय । चालढाल, आचरण । बहाना । लक्षण, आभास । दशा, स्थिति । रंग⊙ = लक्षण । हालचाल । मु०~पर चढ़ना = अभिप्रायसाधन के अनुकूल होना । ~पर लाना = अभिप्रायसाधन के अनुकूल करना या उचित रास्ते पर लाना । ढंगी—वि० चालबाज, चतुर ।
ढँगलाना(पु)—सक० लुढकाना ।
ढँढोर—पुं० आग की लपट, ज्वाला ।
ढँढोरना—सक० दे० 'ढूँढना' ।
ढँढोरची—पु० ढँढोरा या मुनादी करनेवाला ।
ढँढोरा—पु० घोषणा करने का ढोल, डुगडुगी । वह घोषणा जो ढोल बजाकर की जाय, मुनादी ।
ढँढोरिया—पुं० ढँढोरा पीटने या मुनादी करनेवाला आदमी ।
ढँपना—अक० दे० 'ढकना' ।
ढकना—अक० किसी वस्तु के नीचे पड़कर दिखाई न देना छिपना । सक० ऊपर से कोई वस्तु रख या फैलाकर ओट मे करना या छिपाना । पु० ढकने की वस्तु, ढक्कन । ढकनिया†—स्त्री० दे० 'ढकनी' । ढकनी—स्त्री० ढक्कन ।
ढका(पु)†—पु० बड़ा ढोल । धक्का, टक्कर ।
ढकिल(पु)†—स्त्री० चढाई, आक्रमण ।
ढकेलना—सक० धक्के से गिराना । धक्के से हटाना, ठेलकर सरकाना ।
ढकोसला—पुं० मतलब साधने का ढंग, पाखंड ।
ढक्कन—पु० [सं०] ढकने की वस्तु, ढकना ।
ढक्का—स्त्री० [सं०] बड़ा ढोल ।
ढगण—पु० [सं०] एक मात्रिक गण जो तीन मात्राओ का होता है ।
ढचर—पु० टटा, बखेडा । आडंबर, ढकोसला ।
ढड्ढा—वि० बहुत बडा और बेढंगा । पु० ढाँचा । झूठा ठाटबाट, आडंबर ।
ढनमनाना†—अक० लुढकना । बिना प्रयोजन इधर उधर घूमना । निष्फल प्रयत्न करना ।
ढपना—पु० ढकने की वस्तु, ढक्कन ।
ढफ—पु० दे० 'डफ' ।
ढब—पु० ढंग, रीति । प्रकार, तरह । बनावट, गढन । उपाय, तदबीर । आदत, बान । मु०~पर चढ़ना = किसी का ऐसी अवस्था मे होना जिससे कुछ मतलब निकले । ~पर लगाना या लाना = किसी को इस प्रकार प्रवृत्त करना कि उससे कुछ अर्थ सिद्ध हो ।
ढयना—अक० दे० 'ढहना' ।
ढरना(पु)†—अक० दे० 'ढलना' ।
ढरनि—स्त्री० दे० 'ढरनी' । ढरनी—स्त्री० गिरने या पडने की क्रिया, पतन । हिलने डोलने की क्रिया । चित्त की प्रवृत्ति, झुकाव । करुणा, दयाशीलता ।
ढरहरना(पु)†—अक० सरकना, ढलना, झुकाना ।
ढरहरी‡—स्त्री० पकौडी ।
ढराना—सक० दे० 'ढलाना' । दे० 'ढरकाना' ।
ढरारा—वि० गिरकर बह जानेवाला । लुढकनवाला । शीघ्र प्रवृत्त होनेवाला ।
ढर्रा—पु० कार्य करने का ढंग या रास्ता । शैली, तरीका । उपाय, तदबीर । चालचलन । आदत ।
ढलक—स्त्री० ढलकाव, उतराई । ढलकना—अक० द्रव पदार्थ का आधार से नीचे गिर पडना, ढलना । लुढकना । ढलकाना—सक० द्रव पदार्थ को आधार से नीचे गिराना । लुढकाना ।
ढलका—पु० वह रोग जिसमे आँख से पानी बहा करता है ।
ढलना—अक० ढरकना, बहना । सूर्य या चद्रमा का क्षितिज की ओर जाना, अस्त होना । दिन, ऐश्वर्य, तेज, प्रताप आदि की उत्कर्ष से विनाश की ओर गति । बीतना, गुजरना । उंडेला जाना । लुढ़कना । लहर

खाकर इधर उधर डोलना, लहराना। किसी ओर आकृष्ट होना, प्रसन्न होना, रीझना। साँचे मे ढालकर बनाना। मु०—दिन~ = सध्या होना। सूरज या चाँद~ = सूर्य या चद्रमा का अस्त होना। साँचे मे ढला = बहुत सुदर। ढलवाना, ढलाना—सक० ढालने का काम दूसरे से कराना।

ढलवाँ—वि० जो साँचे मे ढालकर बनाया गया हो, (बर्तन आदि)। वि० दे० 'ढालवाँ'।

ढलाई—स्त्री० ढालने का भाव या काम। ढालने की मजदूरी।

ढलैत—पु० ढाल लेकर चलनेवाला सिपाही।

ढवरी(पु)†—स्त्री० धुन, लगन।

ढहना—अक० मकान आदि का गिर पडना, ध्वस्त होना। नष्ट होना, मिट जाना।

ढहरि‡—स्त्री० दे० 'डेहरी'। मिट्टी का मटका।

ढहवाना, **ढहाना**—सक० दीवार, मकान आदि गिरवाना, ध्वस्त कराना।

ढाँकना—सक० दे० 'ढकना'।

ढाँख—पु० दे० 'ढाक'।

ढाँचा—पु० किसी चीज की बनावट का मौलिक आधार, वह मूल या सहारा जिसपर किसी वस्तु का सारा विस्तार टिका हो, डौल। पजर, ठटरी। गढन, बनावट। इस प्रकार जोडे हुए लकड़ी आदि के बल्ले कि उनके बीच कोई वस्तु जमाई या जड़ी जा सके। प्रकार, भाँति।

ढाँपना—सक० दे० 'ढकना'।

ढाँसना—अक० सूखी खाँसी, खाँसना।

ढाँसी—स्त्री० सूखी खाँसी।

ढाई—वि० दो और आधा।

ढाक—पु० पलाश का पेड। लडाई का ढोल। मु०~के तीन पात = सदा एक सा।

ढाटा, **ढाठा**—पु० डाढी पर बाँधने की पट्टी। घाव, टूटी हड्डी वगैरह बाँधने की खपची।

ढाढ़—स्त्री० चिग्घाड, गरज, (बाघ, सिंह आदि की)। चिल्लाहट। मु०~मारना = चिल्लाकर रोना।

ढाढ़ना—सक० दे० 'दाढ़ना'।

ढाढस—पु० आश्वासन, तसल्ली। साहस, हिम्मत।

ढाढी—पुं० मुसलमान गवैए जो प्राय जन्मोत्सव के अवसर पर लोगो के यह जाकर बधाई आदि के गीत गाते है।

ढाना—सक० दीवार, मकान आदि गिरवाना। ध्वस्त करवाना। ढाहना।

ढाबर—वि० मटमैला, गँदला (पानी)।

ढाबा—पुं० छोटी अटारी। ओलती। रोटी, दाल आदि बिकने का स्थान, होटल।

ढामक—पुं० ढोल आदि का शब्द।

ढार(पु)—स्त्री० ढाल, उतार। मार्ग। ढग, बनावट।

ढारना—सक० दे० 'ढालना'।

ढारस—पुं० दे० 'ढाढस'।

ढाल—स्त्री [स०] तलवार आदि का वार रोकने का अस्त्र। [हिं०] वह स्थान जो क्रमश बराबर नीचा होता गया हो, उतार। ढग, तरीका। ढालवाँ—वि० जिसमे ढाल हो, ढालू। ढालुवा—वि० ढला हुआ। ढालू—वि० दे० 'ढालवाँ'।

ढालना—सक० [हिं०] उँडेलना। शराब पीना। बेचना। ताना मारना, व्यग्य बोलना। पिघली वस्तु या धातु को साँचे मे जमाकर रूप देना।

ढासा†—पुं० लुटेरा, डाकू।

ढासना—पुं० वह ऊँची वस्तु जिसपर बैठने मे पीठ टिक सके। तकिया।

ढाहना†—सक० दे० 'ढाना'।

ढिढोरना—सक० मथना, बिलोडना। खोजना, हाथ डालकर ढूँढना।

ढिंढोरा—पु० वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की सूचना दी जाती है, डुगडुगिया। वह सूचना जो ढोल बजाकर दी जाय, घोषणा। मु०~पीटना = खूब प्रचार करना।

ढिग—क्रि० वि० पास, निकट। स्त्री० सामीप्य। तट, किनारा। कपड़े का किनारा, कोर।

ढिठाई—स्त्री० गुरुजनो के समक्ष व्यवहार की अनुचित स्वच्छदता, गुस्ताखी। निर्लज्जता। अनुचित साहस।

‡ढिबरी—स्त्री० वह डिबिया जिसके मुंह मे बत्ती डालकर मिट्टी का तेल जलाते है। कसे जानेवाले पेंच के सिरे पर का लोहे का छल्ला ।

ढिमका—सर्व० अमुक फलाँ ।

ढिलढिल, ढिलमिल—वि० दे० 'ढिलढिला' ।

ढिलढिला—वि० ढीलाढाला । पानी की तरह पतला, तरल ।

ढिलाई—स्त्री० ढीला होने का भाव । शिथिलता, सुस्ती । देरी । ढीला करने की क्रिया या भाव ।

ढिलाना—सक० [ढीलना का प्रे०] ढीलने का काम कराना । ढीला कराना । (पु)†सक० ढीला कराना ।

ढिल्लड—वि० सुस्त, आलसी ।

ढिसरना(पु)†—अक० फिसल पडना, सरक पडना । प्रवृत्त होना ।

ढींगर†—पु० हट्टा कट्टा आदमी । उपपति ।

ढींच†—पुं० कूबड ।

ढीट—वि० दे० 'ढीठ' । ढीठ—वि० बडो का सकोच या डर न रखनेवाला, धृष्ट । अनुचित साहस करनेवाला । साहसी । ⊙क = वि० दे० 'ढीठ' । ⊙ना(पु)† = स्त्री० दे० 'ढिठाई' । ढीठचो—पुं० दे० 'ढीठ' ।

ढींम†—पुं० पत्थर का बडा टुकडा या ढोका । मिट्टी की पिंडी ।

ढील—स्त्री० शिथिलता, अतत्परता । ढीला करने का भाव । पुं० बालो का कीडा, जूं । ढीलना—सक० कसा या तना हुआ न रखना, ढीला करना । बधनमुक्त करना, छोड देना । (रस्सी आदि) इस प्रकार छोडना जिसमे वह आगे की ओर बढती जाय । ढीला—वि० [स्त्री० ढीली] जो कसा या तना हुआ न हो । जो दृढता से बँधा या लगा हुआ न हो । जो कसकर पकडे हुए न हो । खुला हुआ । जो गाढा न हो, बहुत गीला । जो सकल्प पर अडा न रहे । शात, नरम । मद, आलसी । मु०—ढीली आँख = मदभरी चितवन ।

ढुढ†—पुं० उचक्का, ठग ।

ढुंढपाणि(पु)—पुं० शिव के एक गण । दंडपाणि भैरव । दंड लेकर चलनेवाला सिपाही ।

ढुंढिराज—पुं० [सं०] गणेश ।

ढुंढी—स्त्री० बाँह, मुश्क ।

ढुकना—अक० घुसना, प्रवेश करना । एकबारगी धावा करना, टूट पडना । सुनने या देखने के लिये आड मे छिपना ।

ढुटौना—पुं० दे० 'ढोटा' ।

ढुनमुनिया—स्त्री० लुढकने की क्रिया या भाव ।

ढुरकना†—अक० फिसलकर गिरना, लुढकना । झुकना ।

ढुरना—अक दे० 'ढुलना' ।

ढुरहुरी—स्त्री० लुढकने की क्रिया या भाव । पगडडी ।

ढुराना—सक० [अक० ढुरना] गिराकर बहाना, ढुलकाना । इधर उधर हिलाना (चँवर आदि का) । लुढकाना ।

ढुर्री—स्त्री० पहाडो पर या जगलो मे मवेशियो या आदमियो के आने जाने के कारण दबी हुई घास से पहचाना जानेवाला मार्ग, पगडडी ।

ढुलकना—सक० ऊपर नीचे चक्कर खाते हुए गिरना, लुढकना । ढुलकाना—सक० दे० 'लुढकाना' ।

ढुलना—अक० गिरकर बहना । प्रवृत्त होना । प्रसन्न होना, कृपालु होना इधर से उधर होना या डोलना । इधर उधर हिलना या हिलाया जाना (चँवर आदि का) । ढुलाना—सक० [अक० ढुलना] गिराकर बहाना, ढरकाना, ढालना । नीचे ढालना, गिराना । लुढकाना, ढँगलाना । प्रवृत्त करना, झुकाना । अनुकूल करना, प्रसन्न करना । इधर उधर ढुलाना । चलाना, फिराना । फेरना, पोतना । सक० [ढोना का प्रे०] ढोने का काम कराना ।

ढुलवाई—स्त्री० ढोने का काम, भाव या मजदूरी । ढुलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

ढुलवाना—सक० ढोने का काम कराना । ढुलाने का काम कराना ।

ढुल्ला—पुं० दे० 'ढोला'।
ढूँढ, ढूँढ़†—स्त्री० खोज, तलाश। ढूँढना, ढूँढना—सक० खोजना, तलाश करना।
ढूसर—पुं० दे० 'भार्गव'।
ढूह, ढूहा†—पु० ढेर, अटाला। टीला, भीटा।
ढेंक—स्त्री० पानी के किनारे रहनेवाली एक चिड़िया।
ढेंकली—स्त्री० सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालने का यंत्र। धान कूटने का लकड़ी का यंत्र, ढेंकी। कलाबाजी, कलैया।
ढेंकी—स्त्री० अनाज कूटने की ढेंकली। कुएँ से पानी निकालने का यंत्र।
ढेंढ†—पु० कौवा। एक जाति। मूर्ख। कपास आदि का डोडा, ढोंढ।
ढेंढर—पुं० आँख के डेले का निकला हुआ विकृत मांस, टेंटर।
ढेपुनी†—स्त्री० पत्ते या फल का वह भाग जो टहनी से लगा रहता है। दाने की तरह उभरी हुई नोक, ठोंठ। कुचाग्र।
ढेबुआ†—पु० पैसा।
ढेबुका†—पु० ढेबुआ, पैसा।
ढेर—पु० नीचे ऊपर रखी हुई बहुत-सी वस्तुओं का ऊपर उठा हुआ समूह, अंबार, पुंज। वि० बहुत अधिक, ज्यादा। मु० ~ करना = मार डालना। ~हो रहना या हो जाना = गिरकर मर जाना। थककर चूर हो जाना। ढेरी—स्त्री० ढेर, राशि।
ढेल(पु)—पु० दे० 'ढेला'। ⊙ बाँस = स्त्री० रस्सी का वह फंदा जिससे ढेला फेंकते हैं, गोफना। ढेला—स्त्री० ईंट, कंकड़, पत्थर या मिट्टी आदि का टुकड़ा, चक्का। टुकड़ा, खंड। एक धान। ढेला चौथ—स्त्री० भादों सुदी चौथ। (प्रवाद है कि इस दिन चंद्रमा देखने से कलंक लगता है, जिसका निवारण गालियाँ सुनने पर हो जाता है। अतः इस दिन दूसरों के घरों पर ढेले फेंके जाते हैं जिससे गालियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती है)।
ढैया—स्त्री० ढाई सेर तौलने का बटखरा। ढाई गुने का पहाड़ा।
ढोंग—पुं० ढकोसला, पाखंड। ⊙ बाजी = स्त्री० पाखंड, आडंबर। ढोंगी—वि० ढोंग रचनेवाला पाखंडी।
ढोंढ़—पुं० कपास, पोस्ते आदि का डोडा। कली।
ढोंढी—स्त्री० नाभि।
ढोटा—पुं० पुत्र, बेटा। ढोटौना‡—पुं० दे० 'ढोटा'।
ढोना—सक० बोझ लादकर ले जाना, भार ले चलना। उठा ले जाना। निर्वाह करना।
ढोर—पु० गाय, बैल, भैंस आदि पालतू पशु, मवेशी।
ढोरना(पु)†—सक० ढरकाना, ढालना। लुढकाना। साथ लगाना। इधर उधर डुलाना।
ढोरी—स्त्री० ढालने या ढरकाने की क्रिया या भाव। धुन, लौ।
ढोल—पुं० एक बड़ा बाजा जिसके दोनों ओर चमड़ा मढ़ा होता है और बीच में पोला रहता है। कान का परदा। मु० ~ पीटना या बजाना = चारों ओर कहते या जताते फिरना। ढोलक, ढोलकी—स्त्री० छोटा ढोल। ढोलकिया—वि० ढोलक बजानेवाला। ढोलिनी—स्त्री० ढोल बजानेवाली स्त्री, डफालिन।
ढोलना†—सक० ढरकाना, ढालना। डुलाना। पुं० ढोलक के आकार का छोटा जंतर। ढोलक के आकार का पत्थर का बहुत बड़ा और वजनी बेलन जिससे सड़क पीटते हैं।
ढोलनी—स्त्री० बच्चों का झूला, पालना।
ढोला—पुं० एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो सड़ी हुई वस्तुओं में पड़ जाता है। हद का निशान। पिंड, देह। एक प्रकार का गीत। (पु) दूल्हा, प्रियतम। बड़ा ढोल जो मध्यकाल में युद्ध में बजाया जाता था। ढोलिया—पुं० ढोल बजानेवाला।
ढोली—स्त्री० २०० पानों की बँधी हुई गड्डी। हँसी, ठठोली।
ढोव—पुं० वह पदार्थ जो मंगल के अवसर पर लोग सरदार या राजा को भेंट करते हैं, डाली।
ढोवा—ढोने की क्रिया या भाव। लूट। डाली, ढोव।

ढोहना(पु)—सक० दे० 'ढोना'। दे० 'ढूँढना'।
ढौंचा—पुं० साढे चार का पहाडा।
ढौंसना—अक० आनद की ध्वनि करना।
ढौकन—पुं० [सं०] भेंट, उपहार। घूस।
ढौरना(पु)—अक० डोलना, झूमना।
ढौरी(पु)†—स्त्री० रट, धुन। पु० ढग, विधि।

ण

ण—हिंदी वर्णमाला का पद्रहवाँ व्यजन; इसका उच्चारणस्थान मूर्द्धा है।
णगण—पु० [सं०] दो मात्राओ का गण (छद शास्त्र)।

त

त—हिंदी वर्णमाला का १६वाँ व्यजन और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दाँत है।
तं—स्त्री० [सं०] नाव। पुण्य।
तंइ—प्रत्य० दे० 'तईं'।
तंक—पु० [सं०] भय, आतक। प्रियवियोग से होनेवाला दुख। टाँकी, छेनी।
तंग—पु० [फा०] घोडो की जीन कसने का तस्मा। वि० कसा, कडा। दिक, परेशान। सिकुडा हुआ। चुस्त छोटा। ⊙दस्त = वि० कजूस। गरीब। ⊙हाल = वि० निर्धन। विपद्‌ग्रस्त। मु०—**आना या ~होना** = घबरा जाना, दुखी होना। **~करना** = सताना, दुख देना। **हाथ~होना** = धनहीन होना। **तंगी**—स्त्री० [फा०] तग या सँकरा होने का भाव। दुख, तकलीफ। निर्धनता। कमी।
तंगा—पु० एक प्रकार का पेड। अधन्ना, पुराना डबल पैसा।
तंजेब—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की महीन और बढिया मलमल।
तंड—पु० नृत्य, नाच।
तंडक—पु० [सं०] खजन पक्षी। फेन। पूरी तैयारी। समासबहुला रचना। घर का सीधा और खडा खभा।
तंडव—पुं० 'ताडव'।
तंडुल—पुं० [सं०] चावल।
तंत(पु)†—पु० दे० 'ततु'। दे० 'तत्व'। स्त्री० आतुरता। वि० जो तौल मे ठीक हो। सूत। ताँत। तार। पुं० बाजा जिसमे बजाने के लिये तार लगे हो, जैसे, सितार या सारगी। क्रिया तत्रशास्त्र। इच्छा कामना। दे० 'तंत्र'। ⊙घंट = पु० आडवर, टंटघट। ⊙मत = पु० दे० 'तत्रमत्र'।
ततरी(पु)†—पु० वह जो तारवाले बाजे बजाता हो, तत्री।
ततु—पुं० [सं०] डोरा, तागा। ताँत। विस्तार, फैलाव। वशपरपरा। सतान। यज्ञ की परपरा। मकडी का जाला। ग्राह। ⊙वादक = पुं० बीन आदि तार के बाजे बजानेवाला, तत्री। ⊙वाय = पुं० कपडे बुननेवाला, जुलाहा।
ततुर—पुं० [सं०] कमल की जड, भसीड।
तत्र—पु० [सं०] ततु, ताँत। सूत। चरखा। जुलाहा। कपडा, वस्त्र। कुटुब का भरण पोषण। निश्चित सिद्धात। प्रमाण। औषध। झाडने फूँकने का मत्र। हिंदुओं का उपासना सबधी एक शास्त्र, जो शिव-प्रणीत माना जाता है। कार्य। कारण। राजकर्मचारी। राज्य का प्रबध या शासन प्रणाली, जैसे प्रजातत्र, गणतत्र आदि। सेना। धन, सपत्ति। अधीनता। कुल, खानदान। लक्षण, मुख्य अंग, पहचान, गुण। नमूना ढाँचा। जादू, टोने आदि के सिद्धातो का उपदेश देनेवाला ग्रथ। **तंत्रण**—पुं० शासन या प्रबध आदि का काम। **तंत्री**—स्त्री० तारवाले बाजे, जैसे वीणा, सितार आदि। सितार आदि बाजो में लगा हुआ तार। गुरुच। शरीर की नस। रस्सी। तार का बाजा (वीणा, सितार)। पुं० वह जो बाजा बजाता हो। गवैया।
तंदरा(पु)†—स्त्री० दे० 'तंद्रा'।
तंदुरुस्त—वि० [फा०] नीरोग, स्वस्थ। **तंदुरुस्ती**—स्त्री० नीरोग होने की अवस्था या भाव। स्वास्थ्य।

तंदुल(पु)†—पु० चावल, तडुल।

तंदूर—पुं० भट्ठी की तरह का रोटी पकाने का मिट्टी का बहुत बडा गोल पात्र या चूल्हा। **तंदूरी**—वि० तदूर मे बना हुआ।

तंदेही—स्त्री० परिश्रम, मेहनत। प्रयत्न। चेतावनी, ताकीद।

तंद्रा—स्त्री० [सं०] नीद के कारण कुछ कुछ सो जाने की स्थिति, ऊँघ। हलकी बेहोशी। ⊙लस = पु० तद्रा या ऊँघने के कारण होनेवाला आलस्य। ⊙लु = वि० जिसे तद्रा आती हो।

तंबा—पुं० चौडी मोहरी का एक पायजामा।

तंबाकू—पु० दे० 'तमाकू'।

तंबिया—पु० ताँबे या और किसी चीज का बना हुआ छोटा तसला।

तँबियाना—अक० ताँबे के रग का होना। ताँबे के बरतन मे रखे किसी पदार्थ में ताँबे का स्वाद या गध आ जाना।

तंबीह—स्त्री० [अ०] नसीहत, शिक्षा। ताकीद।

तंबू—पु० कपडे, टाट आदि का बना हुआ घर, खेमा, शामियाना।

तंबूर—पुं० [फा०] एक प्रकार का तारवाला बाजा। छोटा ढोल। ⊙ची = पु० तबूर बजानेवाला। **तबूरा**—पु० बीन या सितार की तरह का एक बाजा, तानपूरा।

तंबूल(पु)†—पु० दे० 'ताबूल'। **तंबोल**—पु० दे० 'ताबूल'। दे० 'तमोल'। **तंबोली**—पु० वह जो पान बेचता हो, तमोली, बरई।

तंभ, तंभन(पु)—पु० रससिद्धात मे स्तंभ नामक अनुभाव या सात्विक भाव (अलकार शास्त्र)।

त(पु)†—क्रि० वि० तो।

तअज्जुब—पु० [अ०] आश्चर्य, विस्मय।

तअल्लुक—पु० [अ०] बहुत से मौजो की जमीदारी, बडा इलाका। ⊙दार = पुं० इलाकेदार, जमीदारी का मालिक। ⊙दारी = स्त्री० तअल्लुकदार का पद या भाव।

तअल्लुका—पुं० दे० 'तअल्लुक'।

तअल्लुक—पु० [अ०] सबध।

तअस्सुब—पु० धर्म या जाति सबधी पक्षपात।

तइसा†—वि० दे० 'वैसा'।

तईं(पु)—प्रत्य० प्रति, को। अव्य० लिये, वास्ते।

तई—स्त्री० थाली के आकार की छिछली कडाही। वि० तपी, जली।

तउ(पु)†—अव्य० दे० 'तब', तब भी। दे० 'त्यो'। **तऊ**(पु)†—अव्य० तो भी।

तक—अव्य० एक विभक्ति जो किसी वस्तु या व्यापार की सीमा अथवा अवधि सूचित करती है, पर्यंत। स्त्री० दे० 'टक'। पु० दे० 'तक्र'।

तकदमा—पु० [अ०] किसी चीज की तैयारी का हिसाब जो पहले से तैयार किया जाय, तखमीना।

तकदीर—स्त्री० [अ०] भाग्य, नियति, प्रारब्ध, किस्मत।

तकन—स्त्री० ताकने की क्रिया या भाव, देखना।

तकना(पु)†—अक० देखना। शरण लेना। पु० बहुत ताकनेवाला।

तकमा†—पु० दे० 'तमगा'। दे० 'तुकमा'।

तकमील—स्त्री० [अ०] पूरा होने की क्रिया या भाव।

तकरार—स्त्री० [अ०] विवाद, झगडा।

तकरीर—स्त्री० [अ०] वक्तृता, भाषण। बहस, दलील। बातचीत।

तकला—पु० चरखे मे लोहे की वह सलाई जिसपर सूत लिपटता जाता है, टेकुआ। **तकली**—स्त्री० सूत कातने का एक छोटा यत्र जिसमे काठ के एक लट्टू या चक्र मे छोटा तकला लगा रहता है।

तकलीफ—स्त्री० [अ०] कष्ट, दुःख। विपत्ति, मुसीबत।

तकल्लुफ—पु० [अ०] केवल शिष्टाचारवश कष्ट उठाकर कोई काम करना, शिष्टाचार। औपचारिक व्यवहार, बनावट।

तकसीम—स्त्री० [अ०] बाँटने की क्रिया या भाव, बँटाई। भाग (गणित)।

तकसीर—स्त्री० [अ०] अपराध, कसूर।

तकाई—स्त्री० ताकने की क्रिया या भाव। रखवाली।

तकाजा—पु० [अ०] ऐसी चीज मांगना जिसके पाने का अधिकार या विश्वास हो।

तगादा। ऐसा काम करने के लिये कहना जिसके लिये वचन मिल चुका हो। पावना माँगना। उत्तेजना, प्रेरणा।

तकाना—सक० [ताकना का प्रे०] दूसरे को ताकने मे प्रवृत्त करना, दिखाना।

तकावी—स्त्री० [अ०] वह धन जो सरकार की ओर से खेतिहरा को बीज खरीदने या कुआँ आदि बनवाने के लिये कर्ज के रूप मे दिया जाय।

तकिया—पु० [फा०] कपडे का वह थैला जिसमे रूई, पर आदि भरते हैं और जिसे लेटने के समय सिर के नीचे रखते हैं। पत्थर को वह पटिया आदि जो रोक या सहारे के लिये लगाई जाती है। विश्राम करने का स्थान। आश्रय, सहारा। वह स्थान जहाँ कोई मुसलमान फकीर रहता हो। ⊙**कलाम** = पु० दे० 'सखुनतकिया'।

तकुआ—पु० दे० 'तकला'।

तक्र—पु० [स०] मट्ठा, छाछ।

तक्षक—पु० [सं०] बढई। सूत्रधार। पाताल के आठ नागो मे से एक जिसने राजा परीक्षित को काटा था।

तक्षण—पु०[स०] लकडी पत्थर आदि गढ-कर मूर्तियाँ बनाना।

तखफीफ—स्त्री० [अ०] कमी, न्यूनता।

तखमीनन्—क्रि० वि० [अ०] अदाज से, अनुमानत। **तखमीना**—पु० अदाज, अनुमान।

तख्त—पु० [फा०] सिहासन, राजगद्दी। तख्तो की बनी हुई बडी चौकी। ⊙**ताऊस** = पु० बहुमूल्य रत्नो से जडा हुआ मोर के आकार का वह प्रसिद्ध राजसिहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था। ⊙**नशीन** = वि० जो राजसिहासन पर बैठा हो, गद्दीनशीन। ⊙**पोश** = पु० तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर। चौकी। ⊙**बंदी** = स्त्री० तख्तो की बनी हुई दीवार। **तख्ता**—पु० लकडी का लबा चौडा और चौकोर टुकडा, बडा पटरा। लकडी की बडी चौकी, तख्त। अरथी, टिखटी। कागज ताव। बाग की क्यारी। मु० ~**उलटना** = बना बनाया काम बिगडना, बरबाद हो जाना। ~**हो जाना** = अकड जाना, पटरे के समान सपाट हो जाना। **तख्ती**—स्त्री० छोटा तख्ता। जिस पर लडके अभ्यास करते हैं। लिखने की काठ की पटरी, पटिया।

तगडा—वि० पु० बलवान्, मजबूत। अच्छा और बडा। हृष्ट पुष्ट, मोटा ताजा। **तगडी**—स्त्री० दे० 'तागडी'। वि० स्त्री० मोटी, स्वस्थ।

तगण—पु० [स०] तीन वर्णो का वह समूह जिसमे पहले दो गुरु और तब एक लघु-वर्ण होता है (छदशास्त्र)।

तगदमा—दे० 'तकदमा'।

तगना—अक० तागा जाना।

तगमा—पु० दे० 'तमगा'।

तगर—पु०[सं०] एक प्रकार का पेड जिसकी लकडी बहुत सुगधित होती और औषध के काम मे आती है।

तगला—पु० दे० 'तकला'।

तगा(प्रा)†—पु० दे० 'तागा'।

तगाई—स्त्री० तागने का काम, भाव या मजदूरी।

तगादा—पु० दे० 'तकाजा'।

तगाना—सक० डोभ डलवाना। सिलवाना।

तगार, तगारी—स्त्री० ओखली गाडने का गड्ढा। चूना गारा इत्यादि ढोने का तसला, वह स्थान जहाँ चूना, गारा आदि बनाया जाय। वह पक्का गड्ढा जिसमे जूसी आदि रखी जाय।

तगीर(पु)—पु० बदलने की क्रिया या भाव, परिवर्तन। **तगीरी**—स्त्री० परिवर्तन।

तचना†—अक० दे० 'तपना'। **तचाना**—सक० तप्त करना, गरम करना। सतप्त या दुखी करना **तचित**—वि० सतप्त, दुखी। तप्त, प्रज्वलित।

तचा†—स्त्री० चमडा, खाल, त्वचा।

तच्छिन(पु)—क्रि० वि० उसी समय, तत्काल।

तज—पु० दारचीनी की जाति का मझोले कद का एक सदाबहार पेड। गरम मसाले मे पडनेवाला तेजपत्ता, इसका पत्ता और तज (लकडी) इसकी छाल है। इस पेड़ की सुगधित छाल जो औषध के काम मे आती है।

तजकिरा—पु० [अ०] चर्चा, जिक्र।

तजन(पु)†—पु० छोडने की क्रिया या भाव, त्याग। कोडा, चाबुक। **तजना**—सक० त्यागना।

तजरबा—पु० [अ०] वह ज्ञान जो परीक्षा द्वारा प्राप्त किया जाय, अनुभव। वह परीक्षा जो ज्ञान प्राप्त करने के लिये की जाय। ⊙**कार**=पु० जिसने तजरबा किया हो, अनुभवी व्यक्ति।

तजवीज—स्त्री० [अ०] समति, राय। फैसला। खयाल, अनुमान। बदोबस्त। ⊙**सानी**=स्त्री० अभियोग की फिर सुनवाई, पुर्नविचार।

तज्जन्य, तज्जनित—वि० [सं०]उससे उत्पन्न।

तज्ञ—वि०[सं०]तत्व का जाननेवाला। ज्ञानी।

तटक—पुं० दे० 'ताटक'।

तट—पु० [सं०] तीर, किनारा। खेत। प्रदेश। क्रि० वि० समीप, पास। ⊙**स्थ**=तट पर रहनेवाला। निकट रहनेवाला। अलग रहनेवाला। जो किसी का पक्ष ग्रहण न करे, निरपेक्ष, मध्यस्थ।

तटका—वि• दे० 'टटका'।

तटनी(पु)—स्त्री० दे० 'तटिनी'।

तटिनी, तटी—स्त्री० [सं०] नदी।

तड—पु० एक ही जाति या समाज मे होनेवाला विभाग, पक्ष। थप्पड या किसी चीज के उत्पन्न शब्द। आमदनी की सूरत (दलाल)।

तडक—स्त्री० तडकने की क्रिया या भाव। तड़कने के कारण किसी चीज पर पडा हुआ चिह्न। ⊙**ना**=अक० 'तड' शब्द के साथ फटना, फूटना, चटकना। किसी चीज का सूखने आदि के कारण फट जाना। आँच पाकर फटने या टूटने की आवाज होना। जोर का शब्द करना। बिगडना, झुँझलाना। उछलना, कूदना। ⊙**भडक**=स्त्री० ठाटबाट।

तड़का—पु० सबेरा, सुबह, प्रातःकाल। छौंक, बघार।

तड़काना—सक० [अक० तड़कना] इस तरह से तोड़ना जिससे 'तड' शब्द हो। जोर का शब्द उत्पन्न करना।

तड़कीला†—वि० भडकीला। तडकनेवाला। ⊙**भड़कीला**=वि० चमक दमकवाला।

तड़क्का†—क्रि० वि० दे० 'तडाका'।

तड़तड़ाना—अक० तड तड शब्द होना, सक० तड तड शब्द उत्पन्न करना।

तड़प—स्त्री० तडपने की क्रिया या भाव। चमक, भड़क। ⊙**ना**=अक० अधिक वेदना के कारण व्याकुल होना, छटपटाना। घोर शब्द करना, गरजना।

तड़पाना—सक० [अक० तडपाना] दूसरे को तडपने मे प्रवृत्त करना।

तडफना—अक० दे० 'तडपना'।

तड़बदी—स्त्री० समाज या बिरादरी मे अलग पक्ष या विभाग बनाना।

तडाक—स्त्री० तडकने का शब्द। क्रि०वि० 'तड या तडाक' शब्द के सहित। जल्दी से। ⊙**पड़ाक**=वि० चटपट, तुरत।

तड़ाका—पुं० 'तड' शब्द। क्रि० वि० चटपट।

तडाग—पुं०[सं०] पद्मादियुक्त सर, तालाब।

तडागना—अक० डीग हाँकना। हाथ पैर हिलाना, प्रयत्न करना।

तडातड—क्रि० वि० इस प्रकार जिसमे तडतड शब्द हो। शीघ्रता से। **तडातडी**—स्त्री० जल्दीबाजी, उतावलापन। व्याकुलता।

तडावा—पु० ऊपरी तडक भडक। धोखा।

तडित—स्त्री० [सं०] बिजली। **तड़िता**—स्त्री० [हिं०] दे० 'तडित'।

तडी—स्त्री० चपत। धोखा (दलाल)। बहाना, हीला।

तडीत(पु)—स्त्री० दे० 'तडित।'

तत्—पु० [सं०] वही या वह, ब्रह्म। वायु। सर्व० (के० समा० मे) उस। जैसे, तत्काल, तत्क्षण।

तत—पु० [सं०] वायु। विस्तार। पिता। पुत्र। वह बाजा जिसमे बजाने के लिये तार लगे हो, जैसे सारगी, सितार आदि। (पु)† वि० तपा हुआ, गरम। (पु)† पु० दे० 'तत्व'।

ततकार—पु० दे० 'ततताथेई'।
ततखन(पु)—क्रि० वि० दे० 'तत्क्षण'।
ततताथेई—स्त्री० नृत्य का शब्द, नाच के बोल, ततकार।
ततबाउ, ततुबाऊ (पु)†—पु० दे०'ततुवाय'।
ततबीर(पु)‡—स्त्री० दे० 'तदबीर'।
ततसार(पु)—स्त्री० आँच देने या तपाने की जगह।
तताई(पु)†—स्त्री० गरमी।
तातारना—सक० गरम जल से धोना। ततेरा देकर धोना।
तति—स्त्री० [स०] श्रेणी, ताँता। समूह। विस्तार।
ततैया—स्त्री० बर्रे, भिड।
ततोधिक—वि० उससे बढकर। उससे अधिक।
तत्काल—क्रि० वि० [स०]तुरत, उसी समय। तत्कालिक—वि० [हि०] दे० 'तत्कालिक'। तत्कालीन—वि० उस समय का।
तत्क्षण—क्रि० वि० उसी क्षण, तुरत।
तत्त(पु)†—पु० दे० 'तत्व'।
तत्ता(पु)—वि० गरम, उष्ण। ⊙**थंबा** = पुं० दे० 'तत्तो थंबो'।
तत्ताथेई—स्त्री० दे० 'ततताथेई'।
तत्तो थंबो—पु० दम दिलासा, बीच बचाव।
तत्थ†—वि० मुख्य, प्रधान। पु० कूवत, शक्ति, बल।
तत्पर—वि० [सं०] उद्यत, मुस्तैद। निपुण। चतुर। ⊙**ता** = स्त्री० होशियारी। सनद्धता, मुस्तैदी। निपुणता।
तत्पुरुष—पुं० [सं०] ईश्वर। एक रुद्र का नाम। एक प्रकार का समास जिसमे पहले पद मे कर्ता कारक की विभक्ति को छोड किसी दूसरे कारक की विभक्ति लुप्त हो और पिछले पद का अर्थ प्रधान हो, जैसे जलचर।
तत्र—क्रि० वि० [सं०] उस जगह, वहाँ। ⊙**भवान्** = पु० समान के लिये व्यक्तियो के नामो के पहले प्रयुक्त पद, माननीय। तत्रापि—अव्य० वहाँ भी। उसपर भी, तथापि।
तत्व—पु० [सं०] वास्तविक स्थिति, असलि यत। जगत् का मूल कारण, सांख्य के अनुसार सृष्टि के २५ मौलिक उपादानों (कारणो) मे से कोई। पचभूत अर्थात् पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। परमात्मा, ब्रह्म। सार वस्तु। वह भौतिक पदार्थ जिसका साधारण रासायनिक प्रक्रिया से विश्लेषण न किया जा सके [अँ० एलीमेंट] (रसायन)। आजकल इनकी सख्या ९२ मानी जाती हैं। रहस्य, भेद। ⊙**ज्ञ** = पुं० तत्व जाननेवाला, ब्रह्मज्ञानी। दार्शनिक। ⊙**ज्ञान** = पुं० ब्रह्म, आत्मा और सृष्टि आदि के सबध का यथार्थ ज्ञान, ब्रह्मज्ञान। ⊙**ज्ञानी** = पुं० दे० 'तत्वज्ञ'। ⊙**ता** = स्त्री० तत्व होने का भाव या गुण। यथार्थता। ⊙**दर्शी** = पुं० दे० 'तत्व, 'तत्वज्ञ'। ⊙**दृष्टि** = स्त्री० ज्ञानचक्षु, दार्शनिक सूझ या पहुँच। ⊙**वाद** = पुं० दर्शनशास्त्र सबधी विचार। ⊙**वादी** = पुं० तत्ववाद का ज्ञाता और स्पष्ट बात करनेवाला। ⊙**विद्** = पुं० तत्ववेत्ता। ⊙**विद्या** = स्त्री० दर्शनशास्त्र। ⊙**वेत्ता** = पु० तत्वज्ञ। दार्शनिक ⊙**शास्त्र** = पुं० दे० 'दर्शनशास्त्र'। **तत्वावधान**—पुं० देख-रेख, निरीक्षण।
तत्सम—पुं० [सं०] सस्कृत या अन्य किसी भाषा मे प्रयुक्त शब्द या उसका कोई रूप जो उसकी परवर्ती या अन्य किसी विदेशी भाषा मे ज्यो का त्यो ग्रहण कर लिया गया हो (जैसे दया, माया, सिनेमा आदि), किसी भाषा का शुद्ध शब्द।
तत्सामयिक—वि० [सं०] उस समय का, उसके समय का।
तथा—अव्य० [सं०] और। इसी तरह, वैसे ही। ⊙**कथित** = वि० बिना किसी प्रमाण के कही जानेवाली (बात या कहा जानेवाला व्यक्ति)। आरोपित (व्यक्ति, बात या घटना)। ⊙**कथ्य** = वि० दे० 'तथाकथित'। **तथास्तु**—ऐसा ही हो, वैसा ही हो। एवमस्तु। **तथागत**—पुं० गौतम बुद्ध। **तथापि**—अव्य० तो भी, अब भी। **तथैव**—अव्य० वैसा ही, उसी प्रकार। **तथोक्त**—वि० दे० 'तथाकथित'।

तथ्य—पुं० [सं०] यथार्थता, वास्तविकता। वि० सच, यथार्थ।

तद्—वि०[सं०]वह (के०समा०मे)। ⊙**गत** = वि० उससे संबंध रखनेवाला, उसके अंतर्गत, उसमे व्याप्त। ⊙**गुण** = पु० एक अर्थालंकार जिसमे किसी एक वस्तु का अपना गुण त्याग करके समीपवर्ती किसी दूसरे उत्तम पदार्थ का गुण ग्रहण कर लेना वर्णित होता है। ⊙**भव** = पुं० संस्कृत या अन्य किसी भाषा का वह शब्द जिसका रूप परवर्ती या अन्य किसी भाषा मे कुछ परिवर्तित हो गया हो। संस्कृत के शब्द का अपभ्रंश रूप, जैसे, 'अश्रु' का 'आँसू'। ⊙**रूप** = वि० समान, उसी रूप का। ⊙**रूपता** = स्त्री० सादृश्य, समानता। ⊙**वत्** = वि० उसके समान, ज्यों का त्यों। **तदंतर, तदनंतर**—क्रि० वि० उसके पीछे, उसके बाद। **तदनु**—क्रि वि० उसके बाद। उसी तरह, वैसा ही। **तदनुरूप**—वि० उसी के रूप का, उसी के समान। **तदनुसार**—वि० उसके अनुकूल, उसी के ढंग का। **तदपि**—अव्य० तथापि, तब भी। **तदाकार**—वि० वैसा ही, उसी आकार का। तन्मय। **तदीय**—सर्व० उससे संबंध रखनेवाला, उसका। **तदुपरांत**—क्रि० वि० उसके बाद। **तद्धित**—पु० व्याकरण मे एक प्रकार का प्रत्यय जिसे संज्ञा के अंत मे लगाकर शब्द बनाते हैं (जैसे 'मित्र' से 'मित्रता')।

तदबीर—स्त्री० [अ०] उपाय, तरकीब।

तदारुक—पु० [अ०] भागे हुए अपराधी आदि की खोज या किसी दुर्घटना के संबंध मे जाँच। दुर्घटना को रोकने के लिये पहले से किया हुआ प्रबंध, पेशबंदी। सजा।

तद्यपि—अव्य० दे० 'तदपि'।

तन—क्रि० वि० तरफ, ओर। ⓟवि० दे० 'तनिक'। पु० शरीर, देह। ⊙**त्राण** = पु० दे० 'तनुत्राण'। ⊙**धर** = पु० दे० 'तनुधारी'। ⊙**पात** = पु० दे० 'तनुपात'। ⊙**पोषक** = पुं० जो केवल अपने ही शरीर या स्वार्थ का ध्यान रखे। ⊙**राग** = पु० दे० 'तनुराग'। ⊙**रूह** = पु० दे० 'तनूरुह'। ⊙**सुख** = पु० एक प्रकार का बढ़िया फूलदार कपड़ा। मु०~**को लगना** = हृदय पर प्रभाव पड़ना, जी मे बैठना। (खाद्य पदार्थ का) शरीर को पुष्ट करना। ~**देना** = ध्यान देना, मन लगाना। ~**मन मारना** = इंद्रियों को वश मे रखना।

तनक—वि० थोड़ा, छोटा।

तनकीह—स्त्री० [अ०] जाँच, तहकीकात। अदालत का किसी मुकदमे मे उन बातों का स्थिर करना जिनका फैसला होना जरूरी हो (अँ० इशू)।

तनखाह, तनख्वाह—स्त्री० [फा०] वेतन, तलब।

तनगनाⓟ†—अक० दे० 'तिनकना'।

तनजेब—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बहुत महीन और बढ़िया मलमल।

तनज्जुल—वि० [अ०] उन्नत का उलटा, अवनत, पद या प्रतिष्ठा मे नीचे उतारा या घटाया हुआ। **तनज्जुली**—स्त्री० [फा०] अवनति।

तनतनहा—वि० अकेला।

तनाई—स्त्री० तानने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तनाउⓟ—वि० दे० 'तनाव'।

तनतनाना—अक० शान दिखाना। क्रोध करना।

तनना—अक० खिचाव या खुश्की आदि के कारण किसी पदार्थ का कड़ा होना या बढ़ना। अकड़कर सीधा खड़ा होना। कुछ अभिमानपूर्वक रुष्ट या उदासीन होना।

तनमय—वि० दे० 'तन्मय'।

तनय—पु० [सं०] [स्त्री० तनया] बेटा, पुत्र।

तनवाना—सक० [तानना का प्रे०] तानने का काम दूसरे से कराना, तनाना।

तनहा—वि० [फा०] जिसके संग कोई न हो, अकेला। क्रि० वि० अकेले। ⊙**ई** = स्त्री० अकेलापन। एकांत।

तना—पुं० [फा०] वृक्ष का जमीन से ऊपर निकला हुआ वह मुख्य भाग जिसमे डालियाँ निकलती हैं, पेड का धड। क्रि० वि० ओर, तरफ।

तनाकु(पु)†—क्रि० वि० दे० 'तनिक'।

तनाजा—पुं० [अ०] बखेडा, झगडा। शत्रुता।।

तनाना—सक० दे० 'तनवाना'।

तनाव†—स्त्री० खेमे की रस्सी। पुं० तनने का भाव या क्रिया। रस्सी, डोरी।

तनि, तनिक—वि० थोडा, कम। छोटा। क्रि० वि० जरा, टुक।

तनिमा—स्त्री० [सं०] शरीर का दुबलापन, कृशता।

तनिया+—स्त्री० लँगोटी। जाँघिया। चोली।

तनी—स्त्री० डोरी की तरह बटा हुआ वह कपडा जो अँगरखे आदि में उनका पल्ला बाँधने के लिये लगाया जाता है, बंद। दे० 'तनिया'। + क्रि०वि० दे० 'तनिक'।

तनीनि—स्त्री० बंधन, बंद।

तनु—वि० [सं०] दुबला, पतला। थोडा, कम। कोमल, नाजुक। सुंदर। स्त्री० देह, बदन। चमडा, खाल। स्त्री०। ⊙ज = पुं० बेटा, पुत्र। (पु)जा = स्त्री० लडकी, बेटी। ⊙ता = स्त्री० लघुता, छोटाई। दुबलापन कृशता। ⊙त्राण = पुं० कवच, बखतर। ⊙धारी = वि० देह-धारी। ⊙मध्या = स्त्री० चौरस नाम का वर्णवृत्त। वि० पतली कमरवाली। ⊙राग = पुं० केसर, चंदन आदि मिला सुगंधित उबटन, बटना। ⊙रुह, ⊙रुह = पुं० रोआँ, रोम। बाल।

तनुक(पु)—क्रि० वि० दे० 'तनिक'। पुं० दे० 'तनु'।

तनूज(पु)—पुं० दे० 'तनुज'। तनूजा—स्त्री० लडकी, बेटी।

तनेन, तनेना(पु)—वि० (स्त्री० तनेनी) क्रुद्ध। खिंचा हुआ, टेढा।

तनै(पु)—पुं० दे० 'तनय'। तनैया(पु)—स्त्री० बेटी।

तनोज(पु)—पुं० रोम, रोआँ। लडका, बेटा।

तनोरुह—पुं० दे० 'तनुरुह'।

तन्नाना—अक० अकडना, ऐंठना।

तन्नी—स्त्री० वह रस्सी जिससे तराजू के पल्ले लटकते हैं। दे० 'तरनी'।

तन्मय—वि० [सं०] लवलीन। ⊙ता = स्त्री० एकाग्रता, लीनता।

तन्मात्र—पुं० [सं०] उतना ही या उसी मात्रा का पदार्थ, वही वस्तु। सांख्य के अनुसार पंचभूतों का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप (शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध)।

तन्मात्रा—स्त्री० दे० 'तन्मात्र'।

तन्यता—स्त्री० [सं०] धातुओं आदि का वह गुण जिससे उनके तार खींचे जाते हैं।

तन्वंग—वि० [सं०] दुबले पतले अंगोंवाला। सुकुमार शरीरवाला। तन्वंगी—वि० दुबली पतली। कोमलांगी। स्त्री० दुबली पतली स्त्री। कोमलांगी स्त्री। सुंदर स्त्री।

तन्वी—स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त। कृशांगी। दुबली या कोमल अंगोंवाली।

तप—पुं० शरीर को तपाने या कष्ट देनेवाले वे कार्य जो चित्त को विषयों से हटाने के लिये किए जायँ, तपस्या। शरीर या इंद्रिय को वश में रखने का धर्म कर्म, साधना। नियम। अग्नि। पुं० [सं०] ताप, गरमी। ग्रीष्म ऋतु। बुखार। ⊙रितु(पु) = स्त्री० गरमी का मौसम। ⊙रासी(पु) = पुं० तपस्वी।

तपकना(पु)—अक० उछलना, धडकना। चमकना। दे० 'टपकना'।

तपती—स्त्री [सं०] सूर्य और छाया की कन्या जिसके संवरण से गर्भ से कुरु हुए थे। ताप्ती नदी।

तपन—पुं० [सं०] तपने की क्रिया या भाव, ताप, आँच। सूर्य। सूर्यकांत मणि। ग्रीष्म। एक प्रकार की अग्नि। धूप। वह क्रिया या हाव भाव आदि जो नायक के वियोग में नायिका करे या दिखलावे। स्त्री० ताप गरमी।

तपना—अक० तप्त होना। संतप्त होना, कष्ट सहना। गरमी या ताप फैलाना। प्रभुत्व या प्रताप दिखलाना, आतंक फैलाना। तपस्या करना। बुरे कामों में अंधाधुंध खर्च करना। तपनि(पु)+—स्त्री० दे० 'तपन'। तपनी†—स्त्री० वह स्थान

जहाँ बैठकर आग तापते हो, अलाव। तपस्या।

तपश्चरण—पुं०, **तपश्चर्या**—स्त्री०[सं०] तप, तपस्या।

तपस—पुं० दे० 'तपस्या'।

तपसा—स्त्री० तप। तापती नदी।

तपसी—पुं० तपस्वी, तपस्या करनेवाला।

तपस्या—स्त्री० [सं०] तप। व्रतचर्या। कठिन साधना।

तपस्विता—स्त्री० [सं०] तपस्वी होने की अवस्था या भाव। **तपस्विनी**—स्त्री० तपस्या करनेवाली स्त्री। तपस्वी की स्त्री। पतिव्रता या सती स्त्री। **तपस्वी**—पुं० वह जो तप करता हो। दीन। दया करने योग्य।

तपा—पुं० तपस्वी। तपाया हुआ द्रव्य या पदार्थ। बडे अनुभववाला व्यक्ति, वह व्यक्ति जिसने बहुत कुछ देख, सुन या भोग लिया हो।

तपाक—पुं० [फा०] आवेश, जोश, उत्साह। वेग, तेजी।

तपाना—सक०[अक० तपना]गरम करना। दुख देना। चाँदी सोने आदि को आग मे डालकर परखना। दुख, प्रलोभन या कष्ट मे डालकर किसी व्यक्ति को आजमाना।

तपावत—पुं० वह जो तपस्या करता हो, तपस्वी।

तपित(पु)+—वि० [सं०] तपा हुआ, गरम।

तपिया—पुं० दे० 'तपस्वी'।

तपिश—स्त्री० [फा०] गरमी, तपन।

तपी—पुं० तपस्वी।

तपेदिक—पुं० [फा] क्षय रोग।

तपेला—पुं० वह पात्र जिसमे किसी वस्तु को रखकर गरम किया जाय।

तपो—पुं० [सं० समास मे 'तपस्' के लिये] तपस्या। ⊙**धन** = पुं० तपस्या ही जिसका धन हो, बडा तपस्वी। ⊙**बल** = पुं० तप का प्रभाव या शक्ति। ⊙**भूमि** = स्त्री० तप करने का स्थान, तपोवन। ⊙**लोक** = पुं० पुराणानुसार ऊपर के सात लोको मे से छठा लोक, सत्यलोक के नीचे का तथा जनलोक के ऊपर का लोक। ⊙**वन** = पुं० तपस्वियो के रहने या तपस्या करने के योग्य वन। ⊙**वृद्ध** = वि० तपस्या मे बढाचढा।

तप्त—वि० [सं०] तपाया या तपा हुआ, उष्ण। दुखित, पीडित। ⊙**कुंड** = पु० गरम पानी का सोता। ⊙**कृच्छ्र** = पु०एक प्रकार का व्रत जो प्रायश्चित्तस्वरूप किया जाता है। इसमे तीन दिन तप्त दूध, तीन दिन तप्त घी और तीन दिन तप्त वायु पर रहना पडता था (मनु)। ⊙**माष** = पु एक प्रकार की परीक्षा जिससे अपराध आदि के संबध मे किसी के कथन की सत्यता जानी जाती थी। इसमे लोहे या तांबे के बरतन मे घी या तेल खौलाया जाता था और परीक्षार्थी उस खौलते हुए तेल या घी मे अपनी उंगली डालता था। यदि उसकी उँगली मे छाले आदि नही पडते थे तो उसे सच्चा समझा जाता था। ⊙**मुद्रा** = स्त्री० शख चक्रादि के छापे जिन्हें तपाकर वैष्णव लोग अपने अगो पर दाग लेते हैं।

तप्प(पु)+—पु० दे० 'तप'।

तफरीक—स्त्री० [अ०] विभाग, बँटवारा। अंतर, फरक। गणित मे घटाने की क्रिया, बाकी।

तफरीह—स्त्री० [अ०] मनबहलाव, दिल्लगी। खुशी। हवाखोरी, सैर।

तफसील—स्त्री० [अ०] विस्तार, विस्तृत वर्णन। टीका। ब्योरा।

तब—अव्य० उस समय। इस कारण।

तबक—पु० [अ०] आकाश के वे खंड जो पृथ्वी के उपर और नीचे माने जाते हैं, लोक, तल। परत, तह। चाँदी सोने के पत्तरो का बेलकर या पीटकर कागज की तरह बनाया हुआ पतला वरक। चौडी और छिछली थाली। ⊙**गर** = पु० [फा०] सोने, चाँदी के तबक बनानेवाला, तबकिया।

तबका—पु० खंड, हिस्सा। तह, परत। लोक, तल। आदमियो का गरोह, समुदाय।

तबकिया—पु० दे० 'तबकगर'।

तबदील—वि० [अ०] जो बदला गया हो।

तबर—पु० [फा०] कुल्हाडी। कुल्हाडी की तरह का एक हथियार।

तबल—पु० बड़ा ढोल । नगाड़ा, डंका । ⊙ची = पु० वह जो तबला बजाता हो, तबलिया । **तबला**—पुं० ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा । **तबलिया**—पुं० दे० 'तबलची' ।
तबलीग—पुं० [अ०] दूसरों को अपने धर्म में मिलाना ।
तबादला—पुं० [अ०] बदल जाना, परिवर्तन । किसी कर्मचारी का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना, बदली ।
तबाशीर—पुं० बंसलोचन ।
तबाह—वि० [फा०] जो बिलकुल खराब हो गया हो, नष्ट । **तबाही**—स्त्री० [फा०] नाश, बरबादी ।
तबीअत—स्त्री० [अ०] चित्त, मन । बुद्धि, समझ । ⊙दार = वि० [फा०] भावुक, रसिक । समझदार । मु०—(किसी पर) ~आना = किसी से प्रेम होना ।
तबीब—पुं० [अ०] वैद्य, हकीम ।
तबेला पुं० दे० 'तवेला' ।
तब्बरⓅ—पुं० दे० 'टाबर' ।
तभी—अव्य० उसी समय । इसी कारण ।
तमकाⓅ—पुं० जोश । 'तारी दै तडाक तडातड के तमका में' (जगद्विनोद ६९०) ।
तमंचा—पुं० [फा०] छोटी बंदूक, पिस्तौल । वह लंबा पत्थर जो दरवाजों की बगल में लगाया जाता है ।
तम—प्रत्य० एक प्रत्यय जो तुलना के लिये विशेषण के अंत में लगकर 'सब से बढ़कर' का अर्थ देता है, जैसे श्रेष्ठतम । पुं० अंधकार । राहु । सूअर । पाप । क्रोध । अज्ञान । कालिख, कालिमा । नरक । मोह । सांख्य में प्रकृति का तीसरा गुण जिससे काम, क्रोध और हिंसा आदि उत्पन्न होते हैं । ⊙चर = पुं० राक्षस, निशाचर । उल्लू । **तमाच्छन्न**—वि० अंधकार से घिरा हुआ । **तमाच्छादित**-वि० दे० 'तमाच्छन्न' ।
तमक—पुं० जोश, उद्वेग । तेजी, तीव्रता । क्रोध का आवेश, ताव । **तमकना**—अक० क्रोध का आवेश दिखलाना । दे० 'तमतमाना' ।
तमगा—पुं० [तु०] पदक ।
तमचुरⓅ†—पु० मुरगा । ताम्रचूड़ ।
तमचोरⓅ—पु० दे० 'तमचुर' ।
तमच्छन्न—वि० दे० 'तमाच्छन्न' ।
तमतमाना—अक० धूप या क्रोध आदि के कारण चेहरा लाल होना ।
तमता—स्त्री० [सं०] तम का भाव । अँधेरा ।
तमन्ना—स्त्री० [अ०] इच्छा, मनोकामना ।
तमयीⓅ—स्त्री० रात ।
तमस्—पु० [सं०] अंधकार । अज्ञान । पाप । **तमस्विनी**—स्त्री० रात । **तमस्वी**—वि० अंधकारपूर्ण ।
तमस्सुक—पु० [अ०] ऋणपत्र, दस्तावेज ।
तमहीद—स्त्री० [अ०] भूमिका ।
तमा—पु० राहु । Ⓟ स्त्री० रात, रजनी । लोभ [अ० तमअ] ।
तमाकू—पु० एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते सूंघे, पिए और खाए जाते हैं । सुरती । इन पत्तों से तैयार की हुई एक प्रकार की गीली पिंडी जिसे चिलम पर जलाकर मुंह से धुंआ खींचते हैं ।
तमाखू†—पु० दे० 'तमाकू' ।
तमाचा—पु० हथेली और उंगलियों से गाल पर किया हुआ प्रहार, थप्पड़ ।
तमादी—स्त्री० [अ०] किसी काम का नियमित समय बीत जाना ।
तमाम—वि० [अ०] पूरा, संपूर्ण । समाप्त । मु०—काम~होना = प्राण निकल जाना ।
तमामी—स्त्री० [फा०] एक प्रकार का देशी रेशमी कपड़ा ।
तमारि—पु० सूर्य । स्त्री० दे० 'तंवार' ।
तमाल—पु० [सं०] समुद्र के किनारे होनेवाला एक बहुत ऊंचा सुंदर सदाबहार वृक्ष जिसकी पत्तियां चौड़ी और कालापन लिए लाल होती है । तेजपत्ता । काले खैर का वृक्ष । वरुण वृक्ष । एक प्रकार की तलवार ।
तमाशबीन—पु० तमाशा देखनेवाला । वेश्यागामी, ऐयाश ।
तमाशा—पु० [अ०] वह दृश्य जिसके देखने से मनोरंजन हो । अनोखी बात । ⊙ई = वि० तमाशा देखनेवाला ।
तमिस्र—पुं० [सं०] अँधेरा । क्रोध । वि० अंधकारपूर्ण । **तमिस्रा**—स्त्री० रात ।

तमी—स्त्री० [सं०] रात। ⊙**चर**= पुं० राक्षस। ⊙**पति** = पुं० चद्रमा। **तमीश**—पु० चद्रमा।

तमीज—स्त्री० [अ०] भले और बुरे को पहचानने की शक्ति विवेक। पहचान। ज्ञान, बुद्धि। अदब, कायदा।

तमो—पुं० [सं०] (के० समा० में 'तमस्' के लिये) दे० तमस्। ⊙**गुण** = पुं० प्रकृति के तीन गुणो या धर्मो मे से एक जिसके लक्षण अज्ञान, आलस्य, दभ, दर्प आदि है। ⊙**गुणी** = वि० जिसकी वृत्ति मे तमोगुण हो, अधम वृत्तिवाला। ⊙**घ्न** = पु० अग्नि। चद्रमा। सूर्य। बुद्ध। बिष्णु। शिव। ज्ञान। दीपक, दीआ। वि० जिससे अँधेरा दूर हो। ⊙**मय** = वि० अधकार से भरा हुआ। तमोगुण युक्त। अज्ञानी। क्रोधी। ⊙**हर** = पु० चंद्रमा। सूर्य। अग्नि। ज्ञान। वि० अधकार दूर करनेवाला। अज्ञान दूर करनेवाला।

तमोर(पु)†—पुं० दे० 'तमोरा'।

तमोरा(पु)†—पु० पान। **तमोरी**(पु)†—पुं० दे० 'तबोली'।

तमोल(पु)†—पु० पान का बीडा। दे० 'तबोल'। **तमोली**—पु० दे० 'तबोली'।

तय—वि० [अ०] पूरा किया हुआ, समाप्त। निश्चित, ठहराया हुआ। निबटाया हुआ, निर्णीत।

तयना(पु)†—अक० दे० 'तपना'।

तयार(पु)—वि० दे० 'तैयार'।

तरग—स्त्री० [सं०] पानी की लहर, हिलोर। सगीत में स्वरो का चढ़ाव उतार, स्वरलहरी। चित्त की उमग। ⊙**वती** = स्त्री० नदी। **तरंगायित**—वि० जिसमें तरगें उठती हो, तरगित। तरगो की तरह का, लहरदार। **तरगिणी**—स्त्री० नदी। वि० स्त्री० तरगवाली। **तरंगित**—वि० जिसमे तरगें उठ रही हो, नीचे ऊपर उठता हुआ। **तरंगी**—वि० [हिं०] तरगयुक्त, जिसमे लहर हो। मनमौजी।

तरंड—पु० [सं०] नाव, नौका। मछली मारने की डोरी लगी हुई छोटी सी लकड़ी। नाव खेने का डाँड़ा।

तर—वि० [फा०] भीगा हुआ। शीतल। जो सूखा न हो, हरा। मालदार। क्रि० वि० नीचे। प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो तुलना के लिये गुणवाचक शब्दो मे लगकर दूसरे की अपेक्षा आधिक्य (गुणमे) सूचित करता है (जैसे, अधिकतर, श्रेष्ठतर)।

तरई†—स्त्री० नक्षत्र, सितारा।

तरक—स्त्री० दे० 'तडक'। पु० सोच विचार, तर्क, उधेडबुन। जिरह, दलील। सुदर उक्ति। स्त्री० वह शब्द जो समाप्त होने पर, उसके नीचे किनारे की ओर, आगे के पृष्ठके आरभ का शब्द सूचित करने के लिये लिखा जाता है। ⊙**ना**(पु)† = अक० दे० 'तडकना'। तर्क करना, सोच विचार करना। उछलना, कूदना।

तरकश—पुं० [फा०] तीर रखने का चोगा, तूणीर, तरकस। **तरकशी**—स्त्री० छोटा तरकस।

तरका—पु० [अ०] वह जायदाद जो किसी मरे हुए आदमी के वारिस को मिले।

तरकारी—स्त्री० वह पौधा जिसकी पत्ती, डठल फल आदि पकाकर खाने के काम आते है। खाने के लिये पकाया हुआ फल, फूल, पत्ता आदि, शाक, भाजी। खाने योग्य मास (प०)।

तरकी—स्त्री० कान मे पहनने का फूल के आकार का एक गहना।

तरकीब—स्त्री० [अ०] उपाय, ढंग। रचना-प्रणाली। बनावट, रचना।

तरकुली—स्त्री० दे० 'तरकी'।

तरक्की—स्त्री० [अ०] पद, प्रतिष्ठा, आय आदि की वृद्धि, बढती।

तरखा†—पु० जल का तेज बहाव।

तरखान—पु० बढई।

तरछना(पु)†—अक० तिरछी आँख से इशारा करना।

तरजना—अक० तर्जन करना, डपटना। भला बुरा कहना, बिगड़ना।

तरजनी—स्त्री० दे० 'तर्जनी'। भय, डर।

तरजीला--वि० क्रोधपूर्ण। उग्र, प्रचड। भयकर।

तरजीह--स्त्री० [अ०] किसी को औरो से अच्छा समझना या प्रधानता देना।

तरजुमा--पु० [अ०] अनुवाद, उल्था।

तरजौहाँ--वि० दे० 'तरजीला'।

तरण--पु० [स०] तरना, तैरना। पार जाना। पार लगानेवाला।

तरणि--पु० [सं०] सूर्य। नाव। निस्तार, उद्धार। स्त्री० दे० 'तरणी'। ⊙जा = स्त्री० सूर्य की कन्या, यमुना। एक वर्ण-वृत्त जिसमे एक नगण और अत्य गुरु कुल चार वर्ण होते है। उ०--नगपती। वरसती। शिव कहो। सुख लही। ⊙तनूजा = स्त्री० सूर्य की पुत्री, यमुना। ⊙सुत = पु० सूर्य का पुत्र। यम। शनि। कर्ण।

तरणी--स्त्री० [स०] नौका, नाव।

तरतराना(पु)--अक० तडतड शब्द करना, तडतडाना। घी आदि तरल पदार्थ से बिलकुल तर होना।

तरतीव--स्त्री० [अ०] वस्तुओ का अपने ठीक स्थानो पर लगाया जाना, सिलसिला।

तरद्दुद--पु० [अ०] सोच, फिक्र, अदेशा। कठिनाई, परेशानी।

तरन(पु)--पु० दे० 'तरण'। दे० 'तरौना'। ⊙तार = पु० निस्तार, मोक्ष। ⊙तारन = पु० उद्धार, निस्तार। भवसागर से पार करनेवाला।

तरना--सक० पार करना। अक० मुक्त होना, सद्गति प्राप्त करना। (पु) दे० 'तलना'।

तरनि--स्त्री० दे० 'तरणि'। ⊙जा(पु) = स्त्री० दे० 'तरणिजा'। तरनी(पु)--स्त्री० नाव, नौका। मिठाई का थाल वा खोचा रखने का छोटा मोढा। पु० सूर्य।

तरपत--पु० सुभीता। आराम, चैन।

तरपन(पु)--पु० देवताओ, ऋषियो और पितरो की तृप्ति के लिये नित्य स्नान करके समुचित मन्त्र पढते हुए उन्हें जल देना। तर्पण।

तरपना--अक० दे० 'तडपना'।

तरपर--क्रि० वि० नीचे ऊपर। एक के पीछे दूसरा।

तरपौला(पु)--वि० चमकदार।

तरफ--स्त्री० [अ०] ओर, दिशा। किनारा, पार्श्व। पक्ष, पासदारी। ⊙दार = वि० पक्ष मे रहनेवाला, हिमायती।

तरफराना--अक० दे० 'तडफडाना'।

तरवतर--वि० [फा०] भीगा हुआ, गीला।

तरवूज--पु० एक प्रकार की वेल। इस बेल के वडे गोल फल जो खाए जाते हैं।

तरवोना(पु)--अक० तर करना, भिगोना।

तरमीम--स्त्री० [अ०] सशोधन, रद्दोवदल।

तरराना(पु)--अक० मरोडना, ऐंठना।

तरल--वि० [सं०] हिलता डोलता, चचल। क्षणभगुर। वहनेवाला, द्रव। चमकीला। ⊙ता = स्त्री० चचलता। द्रवत्व। ⊙नयन = पु० एक वर्णवृत्त जिसमे एक के वाद दूसरे के कम से चार नगण होते है। तरलाई(पु)--स्त्री० चचलता। द्रवत्व।

तरवन--पु० तरकी। कर्णफूल।

तरवरिया(पु)--वि० तलवार चलानेवाला।

तरवा--पु० दे० 'तलवा'।

तरवार--स्त्री० दे० 'तलवार'।

तरस--पु० करुणा, दया। मु०--(किसी पर) ~खाना = दया करना। ⊙ना = अक० (किसी वस्तु को) न पाकर वेचैन रहना, ललचना। सक० त्रस्त करना, पीडा पहुँचाना। डराना। तरसाना--सक० कोई वस्तु न देकर उसके लिये वेचैन करना। व्यर्थ ललचाना। तरसौंहाँ(पु)--वि० तरसनेवाला।

तरह--स्त्री० [अ०] प्रकार, भाँति। वनावट, रूपरग। ढव, प्रणाली। उपाय। वचाव, भुलावा। हाल, दशा। ⊙दार = वि० [फा०] सुदर वनावट का। शौकीन। मु०~देना = खयाल न करना, वचा जाना, जाने देना।

तरहटी--स्त्री० दे० 'तलहटी'।

तरहर†, तरहरी†, तरहारि†--क्रि० वि० तले, नीचे नीचे का। निकृष्ट, वुरा।

तरहुँड(पु)--क्रि० वि० दे० 'तरहर'।

तरहेल†—वि० अधीन, निम्नस्थ। वश मे आया हुआ पराजित।

तराई—स्त्री० पहाड़ के नीचे का सीड़वाला मैदान। पहाड की घाटी।

तराज़ू—पु० [फा०] तुला, तोलने का यत्न।

तराटक(पु)—पु० दे० 'त्राटिका'।

तराना—पु० [फा०] एक प्रकार का चलता गाना। सक०[हि०] तैरने मे प्रवृत्त करना।

तराप (पु)†—स्त्री० बदूक, तोप आदि का 'तडाक' शब्द।

तरापा†—पु० कुहराम, त्राहि त्राहि।

तराबोर—वि० खूब भीगा हुआ, शराबोर।

तरामर(पु)—स्त्री० जल्दी जल्दी होनेवाली कारवाई। घूस।

तरामीरा—पु० एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

तरायल—वि० नीचे का, निम्नस्थ।

तरायल।—वि० तरल। चचल।

तरारा—पु० छलाँग, कुलाँच। पानी की धार जो बरावर किसी वस्तु पर गिरे।

तरावट—स्त्री० गीलापन। शीतलता। शरीर की गरमी शात करनेवाला आहार आदि। स्निग्ध भोजन।

तराश—स्त्री० [फा०] काटने का ढग या भाव, काट। काटछाँट, बनावट। ढग, तर्ज। ⊙ना = सक० [हि०] काटना, कतरना।

तरास—पु० दे० 'त्रास'। ⊙ना(पु) = सक० त्रास या कष्ट देना, भय दिखाना।

तराहीं(पु)—क्रि० वि० नीचे।

तरिको†—पु० कान का एक गहना, तरौना। (पु) स्त्री० बिजली।

तरिता(पु)—स्त्री० दे० 'तडिता'।

तरियाना†—सक० तह मे बैठा देना। छिपाना, ढकना। अक० तले बैठ जाना, तह मे जमना।

तरिवन—पुं० तरकी। कर्णफूल।

तरिवर(पु)—पुं० दे० 'तरुवर'।

तरिहँत—क्रि० वि० नीचे, तले।

तरी—स्त्री० [सं०] नाव, नौका। स्त्री० [हि०] गीलापन। शीतलता। वह नीची भूमि जहाँ बरसात का पानी इकट्ठा रहता हो, कछार। तराई। (पु) कान का एक गहना, कर्णफूल।

तरीका—पु० [अ०] ढग, रीति। चाल, व्यवहार। उपाय।

तरीवन।—पु० दे० 'तरिवन'।

तरु—पु० [स०] वृक्ष, पेड। एक प्रकार का चीड। ⊙बाँही(पु) = स्त्री० [हि०] पेड की भुजा, शाखा।

तरुण—वि० [स०] (स्त्री० तरुणी) युवा, जवान। नया। तरुणाना(पु)—अक० जवान होना। तरुणाई(पु)—स्त्री० जवानी।

तरुन (पु)†—दे० 'तरुण'। तरुनई, तरुनाई—(पु)—तरुणावस्था, जवानी। तरुनापा (पु)—पुं० दे० 'तरुनाई'।

तरेंदा—पु० पानी मे तैरता हुआ काठ, बेडा।

तरे†—क्रि० वि० नीचे तले।

तरेटी—स्त्री० दे० 'तराई'।

तरेरना—सक० दृष्टि से असमति या असतोष प्रकट करना, क्रोधपूर्वक देखना।

तरैया—स्त्री० तारा, नक्षत्र। वि० तरनेवाला। तारनेवाला।

तरोई—स्त्री० दे० 'तुरई'।

तरोवर(पु)—पु० दे० 'तरुवर'।

तरौंछ—स्त्री० दे० 'तलछट'।

तरौंस—पु० तट, तीर।

तरौना—पु० तरकी। कर्णफूल।

तर्क—पु० [अ०] त्याग, छोडना। पु० [स०] हेतुपूर्ण युक्ति, दलील। चमत्कारपूर्ण उक्ति, चुहल या चोज की बात। व्यग्य, ताना। ⊙वितर्क = पु० ऊहापोह, सोचविचार। बहस। ⊙शास्त्र = पु० तर्कसगत विवेचना के नियम और सिद्धातो के खडन मडन की शैली बतलानेवाली विद्या या शास्त्र। न्याय शास्त्र। तर्काभास = पु० ऐसा तर्क जो ठीक न हो, कुतर्क। तर्की—वि० तर्क करनेवाला। तर्क्य—वि० विचार्य तर्क करने योग्य।

तर्कना(पु)†—अक० तर्क करना।

तर्कश—पु० [फा०] तीर रखने का चोगा।

तर्कु—पु० [सं०] तकला, टेकुआ।

तर्ज—पु० [अ०] प्रकार, किस्म। रीति, शैली। बनावट।

तर्जन—पु० [सं०] भय प्रदर्शन। क्रोध। फटकार। ⊙गर्जन=पु० क्रोधप्रदर्शन, डाँट डपट।

तर्जना— अक० धमकाना, डपटना।

तर्जनी—स्त्री० [सं०] अँगूठे और मध्यमा के बीच की उँगली।

तर्जुमा—पु० [अ०] उल्था, अनुवाद।

तर्पण—पु० [सं०] तृप्त या सतुष्ट करने की क्रिया। कर्मकाड की एक क्रिया जिसमे देवो, ऋषियो और पितरो को तुष्ट करने के लिये नित्य स्नान करके मत्र पढते हुए हाथ या अरघे से पानी देते हैं।

तरचौना(पु)—पु० दे० 'तरौना'।

तल—पु० [सं०] नीचे का भाग। पेंदा, तला। जल के नीचे की भूमि। वह स्थान जो किसी वस्तु के नीचे पडता हो। पैर का तलवा। हथेली। किसी वस्तु का बाहरी फैलाव, सतह। घर की छत। सप्त पातालो मे से पहला। ⊙गृह=पुं० तहखाना। ⊙घर=पुं० [हिं०] जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी, तहखाना। ⊙छट=स्त्री० [हिं०] द्रव पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल, तलौंछ।

तलक‡—अव्य० तक, पर्यंत।

तलकर—पु० वह महसूल या देय धन जो जमीदार ताल से उत्पन्न वस्तुओं पर लगाता था और अब सरकार द्वारा वसूल किया जाता है।

तलना—सक० कड़कड़ाते हुए घी या तेल मे डालकर भूनना या पकाना।

तलप(पु)—पु० दे० 'तल्प'।

तलपट—वि० बरबाद चौपट। पु० किसी व्यवसाय मे हुए हानिलाभ का चिट्ठा।

तलफ—वि० [अ०] नष्ट, बरबाद।

तलफना—अक० दे० 'तड़पना'।

तलब—स्त्री० [अ०] खोज, तलाश। चाह, पाने की इच्छा। आवश्यकता। बुलावा। वेतन। ⊙गार=वि० [फा०] चाहनेवाला। तलबी—स्त्री० बुलाहट। माँग।

तलबाना—पुं० [फा०] वह खर्च जो गवाहो को तलब करने के लिये अदालत मे दाखिल किया जाता है।

तलबेली—स्त्री० घोर उत्कठा, बेचैनी, छटपटी।

तलमलाना—अक० दे० 'तिलमिलाना'।

तलव—पु० [सं०] सङ्गीतज्ञ, गवैया।

तलवकार—पु० [सं०] सामवेद की एक शाखा जिसमे मत्रो के स्वरो के आरोहावरोह की विवेचना की गई है।

तलवा—पु० पैर की नीचे की ओर का मासल भाग जो खडे होने या चलने पर जमीन से सटा रहता है। मु० ~खुजलाना=तलवे मे खुजली होना जिसे भावी यात्रा का शकुन या सकेत समझा जाता है। तलवे चाटना या सहलाना=बहुत खुशामद करना। तलवे छलनी होना=चलते चलते शिथिल हो जाना।

तलवार—स्त्री० लोहे का एक लबा धारदार हथियार, खड्ग, कृपाण। मु० ~का खेत=लडाई का मैदान। ~का घाट=तलवार मे वह स्थान जहाँ से उसका टेढापन आरभ होता है। ~का पानी=तलवार की आभा या दमक। ~के घाट उतारना=तलवार से सिर काटकर प्राण हर लेना। ~खींचना=आघात करने के लिये म्यान से तलवार बाहर करना। ~सूंतना=वार करने के लिये तलवार खीचना। तलवारो की छाँह मे=रणक्षेत्र मे।

तलहटी—स्त्री० पहाड़ के नीचे की भूमि, तराई।

तला—पु० किसी वस्तु के नीचे की सतह, पेंदा। जूते के नीचे का चमड़ा, तल्ला।

तलाई—स्त्री० दे० 'तलैया'।

तलाक—पुं० [अ०] स्त्री पुरुष के पारस्परिक पति-पत्नी-सबंध का वैधानिक परित्याग।

तलातल—पु०[सं०] सात पातालों मे से एक।

तलाना—सक० तलने का काम कराना।

तलामली(पु)—स्त्री० दे० 'तलबेली'।

तलाव†—पुं० ताल, तालाब।

तलाश—स्त्री० [तु०] खोज, अनुसंधान। आवश्यकता, चाह। ⊙ना†=सक०[हिं०] ढूंढना। खोजना। तलाशी—स्त्री० [फा०] गुम हुई या छिपाई हुई वस्तु अथवा छिपे हुए व्यक्ति को पाने के लिये देखभाल। पुलिस

द्वारा इस प्रकार की खोज। मु०~लेना गुम या छिपाई हुई वस्तु अथवा छिपे व्यक्ति को निकालने के लिये संदिग्ध मनुष्य के घर बार आदि की देखभाल करना।

तली—स्त्री० नीचे की सतह, पेंदी। तलछट। हाथ या पैर की हथेली या तलवा।

तले—क्रि० वि० नीचे, ऊपर का उलटा।

तलेटी—स्त्री० पेंदी। तलहटी।

तलैया—स्त्री० छोटा ताल।

तलौंछ—स्त्री० नीचे जमी मैल आदि, तलछट।

तल्ख—वि० [फा०] कडुवा। बुरे स्वाद का।

तल्प—पु० [सं०] शय्या। अटारी। पत्नी।

तल्ला—पुं० तले की परत, अस्तर। सामीप्य। मकानों की ऊँचाई के हिसाब से खड, मरातिब। जूते के नीचे का भाग।

तल्लीन—वि० [सं०] किसी विषय मे लीन, निमग्न।

तव—सर्व० [सं०] तुम्हारा।

तवक्षीर—पुं० तीखुर।

तवज्जह—स्त्री० [अ०] ध्यान, रुख। कृपा-दृष्टि।

तवा—पुं० लोहे का वह छिछला गोल बरतन जिसपर रोटी सेकते हैं। मिट्टी या खपड़े का गोल ठिकरा जिसे चिलम पर रखकर तमाखू पीते हैं। मु०~तवे की बूंद = देर तक न टिकनेवाला। जिससे कुछ भी तृप्ति न हो, बहुत थोड़ा या कम।

तवाजा—स्त्री० [अ०] आदर, आवभगत। मेहमानदारी, दावत।

तवाना(पु)—अ० तपना, गरम होना। ताप या दुख से पीडित होना। प्रताप फैलाना। गुस्से से लाल होना।

तवायफ—स्त्री० [अ०] वेश्या, रडी।

तवारा—पु० जलन, दाह।

तवारीख—स्त्री० [अ०] इतिहास, पुरातत्व।

तवालत—स्त्री० [अ०] बखेड़ा, झंझट। लंबाई, दीर्घत्व। अधिकता।

तवेला—पु० घुडसाल, अस्तबल।

तशखीश—स्त्री० [अ०] ठहराव, निश्चय। मर्ज की पहचान।

तशरीफ—स्त्री० [अ०] बुजुर्गी, इज्जत, बड़प्पन। मु०~रखना = विराजना, बैठना (आदर)। ~लाना = पदार्पण करना, आना (आदर)।

तश्त—पुं० [फा०] बडा थाल। **तश्तरी**—स्त्री० थाली के आकार का छिछला, हलका और छोटा बरतन, रकाबी।

तष्टा—पुं० [सं०] छील छालकर गढनेवाला। विश्वकर्मा। बढई। ताँबे की छोटी तश्तरी।

तस(पु)†—वि० तैसा, वैसा। क्रि० वि० तैसा, वैसा।

तसकीन—स्त्री० [अ०] तसल्ली, सांत्वना।

तसदीक—स्त्री० [अ०] सच्चाई की परीक्षा या निश्चय। साक्ष्य, गवाही। सच्चाई।

तसदीह(पु)†—स्त्री० सिर का दर्द। तकलीफ।

तसबीह—स्त्री० [अ०] सुमिरनी, जपमाला।

तसमा—पु० [फा०] चमड़े का चौड़ा फीता।

तसला—पु० कटोरे के आकार का पर उससे बड़ा और गहरा बरतन।

तसलीम—स्त्री० [अ०] सलाम किसी बात की स्वीकृति, हामी।

तसल्ली—स्त्री० [अ०] सांत्वना, आश्वासन। शांति, धैर्य।

तसवीर—स्त्री० [अ०] वस्तुओं की आकृति जो रंग आदि के द्वारा कागज, पटरी आदि पर बनी हो, चित्र। वि० चित्र सा सुंदर, मनोहर।

तसू, तस्सू—पु० इमारती गज का २४ वाँ अंश जो १। इंच के लगभग होता है।

तस्कर—पुं० [सं०] चोर। चोर नामक गंध द्रव्य। ५१ लंबे और सफेद केतुओं मे से कोई। **तस्करी**—स्त्री० चोरी। चोर की स्त्री। चोर स्त्री।

तस्फिया—पुं० [अ०] फैसला, निर्णय।

तस्मात्—अव्य० [सं०] उसके कारण, उसकी वजह से।

तस्य—सर्व० [सं०] उसका।

तहँ, तहँवा†—क्रि० वि० दे० 'तहाँ'।

तह—स्त्री० [फा०] किसी वस्तु की मोटाई का फैलाव जो किसी दूसरी वस्तु के ऊपर हो, परत। तल, पेंदा। पानी के

नीचे की जमीन, थाह। महीन पटल, वरक। ⊙खाना=पु० वह कोठरी या घर जो जमीन के नीचे बना हो। ⊙दरज=वि० (कपडा) जिसकी तह तक न खुली हो, बिलकुल नया। ⊙पेंच =पु० पगडी के नीचे का कपडा। भेद, रहस्य। मु०~करना या लगाना= किसी फैली हुई वस्तु के भागो को कई ओर से मोडकर समेटना। ~कर रखो= रहने दो, नही चाहिए। ~तोडना= झगडा निवटाना। कुएँ का सब पानी निकाल देना जिसमे जमीन दिखाई देने लगे। (किसी चीज की)~देना=हलकी परत चढाना। हलका रग चढाना। ~की बात=गुप्त रहस्य। (किसी बात की)~तक पहुँचना=असली बात समझ जाना।

तहकीक—स्त्री० [अ०] दे० 'तहकीकात'। तहकीकात—स्त्री० [अ० 'तहकीक' का बहु०, हि० मे एक] किसी विषय या घटना की ठीक ठीक बातो की खोज, छानबीन।

तहजीब—स्त्री० [अ] सभ्यता, शिष्टता।

तहना(पु)—अक० दे० तपना'।

तहबाजारी—स्त्री० [फा०] बाजार या सट्टी मे सौदा बेचनेवालो से लिया जानेवाला महसूल।

तहमत—स्त्री० कमर मे लपेटा हुआ कपडा या अँगोछा, लुगी।

तहरी—स्त्री० [देश०] पेठे की बरी मिली हुई चावल की खिचडी। मटर की खिचडी।

तहरीक—स्त्री० [अ०] गति देना। उसकाना। आदोलन। प्रस्ताव।

तहरीर—स्त्री० [अ०] लिखावट। लेखशैली। लिखी हुई बात। लिखा हुआ प्रमाणपत्र। लिखने की उजरत, लिखाई। तहरीरी—वि० [फा०] लिखा हुआ।

तहलका—पुं० [अ०] मौत। बरबादी। खलबली, हलचल।

तहवील—स्त्री० [अ०] सुपुर्दगी। अमानत। खजाना, जमा। ⊙दार=पु० [फा०] खजानची।

तहस नहस—वि० बरबाद, नष्टभ्रष्ट।

तहसील—स्त्री० [अ०] लोगो से रुपया वसूल करने की क्रिया, वसूली। वह आमदनी जो लगान वसूल करने से इकट्ठी हो। तहसीलदार का दफ्तर या कचहरी। तहसील के अनुसार बँटा हुआ देश का हिस्सा, जिले का छोटा भाग। ⊙दार=पुं० [फा०] कर वसूल करनेवाला। वह अफसर जो राजस्व या कर वसूल करता और माल तथा फौजदारी के छोटे मुकदमो का फैसला करता है। ⊙दारी=स्त्री० तहसीलदार का पद, अधिकार या क्षेत्र। तहसीलदार की कचहरी। ⊙ना=सक० उगाहना, वसूल करना (कर, लगान, चदा आदि)।

तहाँ—क्रि० वि० उस जगह, वहाँ।

तहाना—सक० तह करना, लपेटना।

तहिआना[1]—सक० दे० 'तहाना'।

तहियाँ, तहिया[1]—क्रि०वि० तब, उस दिन।

तहीं[1]—क्रि० वि० उसी जगह, वही।

ताँई—क्रि० वि० दे० 'ताईं'।

ताँगा—पुं० दे० 'टाँगा'।

ताडव—पु० [सं०] शिव का नृत्य। सहारनृत्य (शिव का)। पुरुष का नृत्य। (पुरुषो के नृत्य को ताडव और स्त्रियो के नृत्य को लास्य कहते है) वह नाच जिसमे बहुत उछलकूद हो, उद्धत नृत्य।

ताँत—स्त्री० पशुओ की नसो को बटकर बनाया हुआ सूत। धनुष की डोरी। डोरी, सूत। सारगी आदि तार। जुलाहो का राछ।

ताँता—पु० अटूट पक्ति, कतार। मु०~लगना=एक पर एक बराबर चला चलना। ताँति[1]—स्त्री० दे० 'ताँत'।

ताँती—स्त्री० पक्ति। औलाद। पु० जुलाहा।

ताँत्रिक—वि० [सं०] तत्र सबधी। पु० तत्र शास्त्र का जाननेवाला, यत्र मत्र आदि करनेवाला।

ताँबा—पु० लाल रग की प्रसिद्ध धातु जो चाँदी के बाद बिजली और गरमी की सबसे अच्छी सवाहक (अँ० कडक्टर) होती है। यह पीटने से बढ सकती है और इसका तार भी खीचा जा सकता है।

तांबिया, तांबी—स्त्री० चौड़े मुंह का तांबे का एक छोटा बरतन। तांबे की करछी।

तांबूल—पु० [सं०] सादा पान। कत्था, चूना, सुपारी आदि डालकर बनाया हुआ पान का बीडा। सुपारी।

ता—प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जिसे विशेषण और सज्ञा शब्दो के अत मे जोडने से भाववाचक सज्ञा बनती है, (जैसे, दुष्ट से दुष्टता, स्थूल से स्थूलता, मनुष्य से मनुष्यता)। अव्य० [फा०] तक, पर्यंत। ⓟ† सर्व० [हि०] उस। ⓟ†वि० [हि०] उस।

ताई—अव्य० [स० तावत् या फा० ता] तक, पर्यंत। पास, तक। (किसी के) प्रति, समक्ष। लिये, वास्ते। वि० दे० 'तई'। स्त्री० बाप के बडे भाई की स्त्री। एक प्रकार की छिछली कडाही।

ताईद—स्त्री० [अ०] समर्थन, पुष्टि। पक्षपात।

ताऊ—पु० बाप का बडा भाई, बडा चाचा। **मु० बांछ्या का**~ = मूर्ख।

ताऊन—पु० [अ०] प्लेग नामक छूत का घातक और सक्रामक रोग जिसमे गिल्टियो के सूजने और दर्द करने के साथ ज्वर होता है, जो मृत्यु तक बढता ही जाता है। यह रोग चूहो मे पैदा होनेवाले एक विशेष प्रकार के कीडे (अं० फ्ली) के काटने से होता है।

ताक—पु० [अ०] चीज वस्तु रखने के लिये दीवार मे बना हुआ गड्ढा या खाली स्थान, आला। वि० जो बिना खंडित हुए दो बराबर भागो मे न बँट सके, विषम; (जैसे—तीन, पाँच)। जिसके जोड़ का दूसरा कोई न हो, अनुपम। स्त्री० [हि०] ताकने की क्रिया या भाव, देखना। स्थिर दृष्टि, टकटकी। अवसर की प्रतीक्षा, घात। खोज, तलाश। ⊙**झांक** = स्त्री० छिपकर किसी को देखना। छिपकर या रह रहकर देखना। ⊙**ना** = सक० देखना। विचारना, अनुमान करना। ताडना, समझ जाना। पहले से सोचकर स्थिर करना। रखना, रखवाली करना। **मु०**~**मे रहना** = मौका देखते रहना। ~**रखना या लगाना** = घात मे रहना।

ताकत—स्त्री० [अ०] बल, शक्ति। सामर्थ्य। ⊙**वर** = वि० [फा०] बलवान्, शक्तिमान।

ताका—वि० तिरछा ताकनेवाला, भेंगा।

ताकि†—अव्य० [फा०] जिसमे, इसलिये कि।

ताकीद—स्त्री० [अ०] जोर के साथ किसी बात की आज्ञा या अनुरोध, चेतावनी, सहेजना।

ताख—पुं० दे० 'ताक'।

ताखा—पुं० कपडे का लपेटा हुआ थान। किसी वस्तु के रखने का दीवार मे स्थान। सडक, पुल आदि के नीचे बना हुआ पानी बहने का रास्ता। नदी, नाला, नहर आदि का पानी बहने के लिये बना हुआ इस प्रकार का मार्ग।

ताग—पु० तागने की क्रिया या भाव। दे० 'तागा'। ⊙**पाट** = पुं० विवाह मे वर पक्ष द्वारा कन्या के लिये दिए जानेवाले कपडे लत्ते। एक प्रकार का गहना जो रेशम के तागे मे सोने के तीन जतर डालकर बनाया जाता है और विवाह मे काम आता है। **मु०**~**डालना** = विवाह मे गणेशपूजन आदि के बाद वर के बडे भाई (वधू के जेठ) का वधू को तागपाट पहनाना।

तागड़ी—स्त्री० करधनी। कटिसूत्र।

तागा—पुं० रुई, रेशम आदि के रेशो को बटकर बनाई गई वह वस्तु जो लबी रेखा के रूप मे होती है, डोरा, धागा। वह कर या महसूल जो प्रति मनुष्य के हिसाब से लगे।

ताज—पु० [अ०] बादशाह का राजमुकुट। कलगी, तुर्रा। मोर, मुर्गे आदि के सिर की चोटी, शिखा। दीवार की कँगनी या छज्जा। मकान के सिरे पर शोभा के लिये बनाई हुई बुर्जी। गजीफे के एक रग का नाम। दे० 'ताजमहल'। ⊙**दार** = पु० बादशाह। ⊙**पोशी** = स्त्री० राज्यारोहण समारोह, राजतिलक। ⊙**महल** = पु० [अ०] आगरे मे बादशाह शाहजहाँ का बनवाया हुआ अपनी बेगम मुमताज महल का अद्भुत मकबरा या समाधि जो दुनिया के सात आश्चर्यो मे माना जाता है।

ताजक—पु० [फा०] एक ईरानी जाति जो विलोचिस्तान मे 'देहवार' कहलाती है।

ताजगी—स्त्री० [फा०] ताजापन, हरापन। प्रफुल्लता, स्वस्थता। नयापन।

ताजा—वि० [फा०] जो सूखा या कुम्हलाया न हो, हराभरा। (फल आदि) जिसे पेड से अलग हुए बहुत देर न हुई हो। जो थका मांदा न हो, स्वस्थ, प्रफुल्ल। तुरत का बना। जो बहुत दिनो का न हो, नया।

ताजिया—पु० [अ०] वांस की कमचियो आदि का मकबरे के आकार का मडप जिसमे इमाम हुसेन की कब्र होती है। मुहर्रम मे शिया मुसलमान इसकी आराधना करते और अतिम दिन इमाम के मरने का शोक मनाने के लिये जलूस बनाकर छाती पीटते हुए इसे लेकर घुमाते और कर्बला की याद मे दफन करते है।

ताजियाना—पु० [फा०] कोडा।

ताजी—वि० [फा०] अरव का घोडा। शिकारी कुत्ता।

ताजीम—स्त्री० [अ०] वडे के सामने उसके आदर के लिये उठकर खडे हो जाना, झुककर सलाम करना इत्यादि, वडो के प्रति आदर भाव का प्रदर्शन। मध्यकाल मे किसी सरदार या वीर को राजा की ओर से दरवार मे दिया जानेवाला आदर। किसी सरदार के समान मे दी हुई जागीर। **ताजीमी सरदार**—पु० वह सरदार जिसके आने पर राजा या वादशाह उठकर खडे हो जांय या जिसे कुछ आगे वढकर लें। दरवार मे विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त सरदार। समान मे राजा की ओर से जागीर प्राप्त सरदार।

ताजीर—स्त्री० [अ०] दड। **ताजीरात**—पु० दड सवधी कानूनो का सग्रह। **ताजीरी**—वि० दड के रूप में लगाया वैठाया हुआ, जैसे ताजीरी पुलिस, ताजीरी कर।

ताटंक, ताडंक—पु० [सं०] करनफूल, तरकी। छप्पय के २४वें भेद का नाम। एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३० मात्राएँ और अत मे मगण होता है।

ताड़—पुं० [सं०] शाखारहित एक वहुत ऊँचा और पतला पेड जो खभे के रूप मे ऊपर की ओर वढता चला जाता है और केवल सिरे पर पत्ते धारण करता है। इससे एक पेय निकाला जाता है जो ताड़ी कहलाता है (विशेष दे० 'ताड़ी')। ताडन, प्रहार। शब्द, ध्वनि। अनाज के डठल आदि की अँटिया जो मुट्ठी मे आ जाय। हाथ का एक गहना। **ताड़न**—पु० प्रहार, आघात। डांट डपट, घुडकी। शासन, दड। **ताड़ना**—स्त्री० प्रहार, मार। डांट डपट, शासन। उत्पीडन, कष्ट। सक० [हिं०] मारना पीटना, दडित करना। सक० [हिं०] मारना, पीटना। डांटना डपटना। लक्षण से समझ लेना, भांपना। मार पीटकर भगाना, हटा देना।

ताडित—वि० जिस पर प्रहार हुआ हो। जो डांटा गया हो। दडित। मारकर भगाया हुआ।

ताडी—स्त्री० ताड के डठलो से निकाला हुआ सफेद नशीला रस जो नशा के लिये पीने के काम आता है और पौष्टिक होता है। ध्यान, समाधि।

तात—पु० [सं०] पिता, वाप। पूज्य व्यक्ति, गुरु। स्नेह का एक शब्द या सवोधन जो भाई बंधु, इष्ट मित्र तथा छोटे और वडे के लिये व्यवहृत होता है। (पु)†वि० तपा हुआ, गरम।

ताता†—वि० तपा हुआ, गरम।

तातायेई—स्त्री० [अनु०] नाचने मे पैर के गिरने आदि का अनुकरण शब्द।

तातार—पुं० [फा०] मध्यकालीन मध्य एशिया का एक देश जो हिंदुस्तान और फारस के उत्तर मे कैस्पियन सागर से लेकर चीन के उत्तर तक था। **तातारी**—वि० तातार देश सवधी, तातार देश का। पुं० तातार देश का निवासी।

तातील—स्त्री० [अ०] छुट्टी का दिन, छुट्टी।

तात्कालिक—वि० [सं०] तत्काल या तुरत का।

तात्पर्य—पुं० [सं०] अर्थ, मतलब। तत्परता।

तात्विक—वि० [सं०] तत्वज्ञान युक्त। यथार्थ, सारवान्।

तायेई—स्त्री० दे० 'तातायेई'।

तादात्म्य—पु० [सं०] एक वस्तु का दूसरी मे मिल जाना, वही या वैसा ही हो जाना।
तादाद—स्त्री० [अ०] गिनती, अदद।
तादृश—वि० [सं०] उसके समान, वैसा।
ताधा—स्त्री० दे० 'ताताथेई'।
तान—स्त्री० [सं०] तानने का भाव या क्रिया, खीच, फैलाव। लय का विस्तार, आलाप। ऐसा पदार्थ जिसका बोध इंद्रियो आदि को हो, ज्ञान का विषय। ⊙**पूरा** = पु० [हिं०] सितार के आकार का एक बाजा, तबूरा। ⊙**बाना**† = पु० [हिं०] दे० 'ताना बाना'। मु०~**उड़ाना या तोड़ना** = गीत गाना ⊙**ना** = सक० फैलाने के लिये जोर से खीचना। किसी सिमटी या लिपटी हुई वस्तु को खीचकर फैलाना। परदे की सी वस्तु को ऊपर फैलाकर बाँधना। एक ऊँचे स्थान से दूसरे ऊँचे स्थान तक खीचकर बाँधना। मारने के लिये हाथ या कोई हथियार उठाना। किसी को हानि पहुँचाने के अभिप्राय से कोई बात उपस्थित कर देना। कैदखाने भेजना। मु०~**कर** = बलपूर्वक, जोर से।~**कर सोना** = आराम से सोना। निश्चिंत रहना।
ताना—सक० तपाना, गरम करना। पिघलना। तपाकर परीक्षा करना (सोना-आदि धातु)। जाँचना, आजमाना। गीली मिट्टी आदि से बरतन का मुँह बद करना। मूँदना। [अ०] बोली ठोली, व्यग्य। पु० [हिं०] कपडे की बुनावट मे लबाई के बल के सूत। दरी या कालीन बुनने का करघा। ⊙**बाना** = [हिं०] पु० कपडा बुनने मे लबाई और चौडाई के बल के हुए सूत। **तानी**†—स्त्री० [हिं०] कपडे की बुनावट के लबाई के बल के सूत। तनी, बद।
तानापाही—स्त्री० बार बार आना जाना।
तानारीरी—स्त्री० साधारण गाना, राग।
तानाशाह—पु० [फा०] स्वेच्छाचारी शासक, जूल्म करनेवाला बादशाह। **तानाशाही**—स्त्री० स्वेच्छाचारिता, निरकुशता। वह राज्य व्यवस्था जिसमे सारा अधिकार एक ही आदमी के हाथ मे हो, अधिनायक तत्र।
ताप—पु० [सं०] एक प्राकृतिक शक्ति जिसका प्रभाव पदार्थों के पिघलने, भाप बनने आदि मे देखा जाता और जिसका अनुभव अग्नि, सूर्य की किरण आदि के रूप मे होता है, गरमी, आँच, लपट। ज्वर। कष्ट, दुःख। मानसिक कष्ट, सताप। ⊙**क** = पु० ताप उत्पन्न करनेवाला। रजोगुण। ज्वर। ⊙**चालक** = वि० जिसमे ताप या बिजली एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँच सकती हो, जैसे, धातु (अँ० कडक्टर)। ⊙**चालकता** = स्त्री० पदार्थो का वह गुण जिससे गरमी या ताप उनके एक सिरे से चल कर दूसरे सिरे तक पहुँचता हो। ⊙**तिल्ली** = स्त्री० [हिं०] पिलही बढने का रोग जिसमे तिल्ली या प्लीहा के बढने के साथ ज्वर और उससे उत्पन्न अनेक शारीरिक शिकायते प्रकट हो जाती हैं, प्लीहा रोग। ⊙**त्रय** = पु० तीन प्रकार के ताप—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। ⊙**न** = पु० ताप देनेवाला। सूर्य। कामदेव के पाँच बाणो मे से एक। सूर्यकात मणि। मदार। एक प्रकार का प्रयोग जिससे शत्रु को पीडा होती है (तत्र)। ⊙**ना** = सक० [हिं०] आग की आँच से गरमी प्राप्त करना, आग सेंकना। धूप सेंकना। गरम करने के लिये जलाना। नष्ट करना। व्यर्थ खर्च करना (धन)। Ⓟतपाना, भस्म करना। ⊙**मान** = पु० [हिं०] उष्णता की मात्रा या सीमा। ⊙**मानयंत्र** = पु० [हिं०] उष्णता की मात्रा मापने का यन्त्र (अँ० थरमामीटर)।
तापित—वि० जो तपाया गया हो। तप्त, गरम। दुखित, पीडित। **तापी**—वि० ताप देनेवाला। जिसमे ताप हो। पु० बुद्धदेव। स्त्री० सूर्य की कन्या। तापती नदी। यमुना नदी। **तापेंद्र**—पु० सूर्य।
तापस—पु० [सं०] तपस्वी। तेजपत्ता। ⊙**द्रुम** = पु० दे० 'तापसवृक्ष'। ⊙**वृक्ष**

=पु० हिंगोट या इगुदी वृक्ष। तापसी—स्त्री० तपस्या करनेवाली स्त्री। तपस्वी की स्त्री।
तापा—पु० मुर्गी का दरबा।
तापिच्छ—पु० [सं०] तमाल वृक्ष।
ताफ्ता—पु० [फा०] एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपडा।
ताफना—पु० दे० 'ताफ्ता'।
ताब—स्त्री० [फा०] ताप, गरमी। चमक। शक्ति सामर्थ्य। धैर्य।
ताबडतोड—क्रि० वि० अखडित क्रम से, लगातार।
ताबा—वि० दे० 'ताबे'।
ताबूत—पु० [अ०] वह सदूक जिसमे लाश रखकर गाडने को ले जाते हैं।
ताबे—वि० वशीभूत, मातहत (करना या होना के साथ) आज्ञानुवर्ती, हुक्म का पाबद। ⊙दार = वि० [फा०] आज्ञाकारी, हुक्म का पाबद।
ताम—पु० [सं०] दोष, विकार। बेचैनी। दुःख, क्लेश। क्रोध, गुस्सा। अधकार। वि० भीषण, डरावना। व्याकुल, हैरान।
तामजान, तामझाम—पु० एक प्रकार की छोटी खुली पालकी।
तामडा—वि० ताँबे के रग का, ललाई लिए हुए भूरा।
तामरस—पु० [सं०] कमल। सोना। ताँबा। धतूरा। एक नगण दो जगण और एक यगण का एक वर्णवृत्त।
तामलेट—पु० [अं० टवलर] लोहे का गिलास या बरतन जिसपर रोगन या लुक फेरा रहता है।
तामस—वि० [सं०] तमोगुण से युक्त। पु० सर्प। खल। उल्लू। क्रोध। अधकार। अज्ञान, मोह। तमोगुण। तामसी—वि० स्त्री० अँधेरी रात। महाकाली। एक प्रकार की माया या विद्या।
तामिल—पुं० दक्षिण भारत की एक जाति। इस जाति की भाषा। इस जाति का देश।
तामिस्र—पुं० [सं०] घोर अधकार से पूर्ण एक नरक। क्रोध। द्वेष। एक अविद्या का नाम।
तामीर—[अ०] इमारत बनाने का काम।
तामील—स्त्री० [अ०] आज्ञा का पालन।
तामोर(प)—पुं० दे० 'ताबूल'।
ताम्र—पुं० [सं०] ताँबा। ⊙पट्ट, पत्र = पुं० ताँबे की चद्दर का टुकडा जिसपर प्राचीन काल मे अक्षर से खुदवाकर दान पत्र आदि लिखे जाते थे। ताँबे की चद्दर। ⊙पर्णी = स्त्री० बावली, तालाब। मद्रास की एक छोटी नदी। ⊙युग = पुं० पुरातत्व के अनुसार किसी देश या जाति के इतिहास का वह समय जब पहले पहल ताँबे आदि धातुओं का व्यवहार करने लगी थी। यह युग प्रस्तरयुग और लोहयुग के बीच मे माना जाता है।
ताय(प)†—पुं० ताप, गरमी। जलन। धूप। सर्व० दे० 'ताहि'। ⊙ना(प)† = सक० तपाना।
तायदाद†—स्त्री० दे० 'तादाद'।
तायफा—पुं० स्त्री० [फा०] वेश्याओ और समाजियो की मंडली। वेश्या।
ताया—पुं० बाप का बडा भाई, बडा चाचा।
तार १—पुं० [सं०] ताल, मजीरा। करताल नामक बाजा। तल, सतह। [हिं० ताड] कान का एक गहना, तरौना। वि० [सं०] निर्मल, स्वच्छ। पु० रूपा। चाँदी। तपी हुई धातु को पीट और खीचकर बनाया हुआ तागा, धातुतंतु। धातु का वह तार या डोरी जिसके द्वारा बिजली की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार भेजा जाता है (टेलिग्राफ)। तार से आई हुई खबर। सूत, तागा। बराबर चलता हुआ क्रम, अखड परपरा, सिलसिला। ब्योत, सुभीता, व्यवस्था, मौका, अवसर, सुयोग। †ठीक माप। कार्यसिद्धि का उपाय, युक्ति, ढब। प्रणव, ओकार। सगीत मे एक सप्तक। १८ अक्षरो का एक वर्णवृत्त। ⊙कश = पु० [हिं०] धातु का तार खीचनेवाला। ⊙कूट = पु० चाँदी और पीतल के योग से बनी एक धातु। ⊙घर = पु० [हिं०] वह स्थान या सरकारी दफ्तर जहाँ तार द्वारा खबरें भेजी और मँगाई जाती हैं। ⊙घाट = पु० [हिं०] मतलब निकलने का सुभीता, आयोजन। ⊙तोड़ = पुं० [हिं०]

कारचोबी का काम। ⊙बर्क़ी = पु०[हिं०] बिजली की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचानेवाला तार। मु०~करना = नोचकर सूत सूत अलग करना। ~जमना, ~बैठना या बँधना = ब्योत होना, कार्यसिद्धि का सुभीता होना। किसी काम का बराबर चला चलना, सिलसिला जारी होना।

तारक—पु० [सं०] नक्षत्र, तारा। आँख। आँख की पुतली। एक असुर जिसे कार्तिकेय ने मारा था। राम या शिव का षडक्षर मत्र, 'ओ रामाय नम', 'ओ नमः शिवाय' मत्र। वह जो पार उतारे, तारनेवाला। भवसागर से पार करनेवाला। एक वर्णवृत्त जिसमे चार सगण और अत्य गुरु कुल १३ अक्षर होते है। **तारकेश**—पु० चद्रमा। **तारकेश्वर**—पु० शिव।

तारका—स्त्री० [सं०] नक्षत्र, तारा। आँख की पुतली। नाराच नामक छद। बालि की स्त्री तारा। दे० 'ताडका'।

तारकोल—पु० दे० 'अलकतरा'।

तारण—पु० [सं०] पार उतारने का काम। उद्धार, निस्तार। उद्धार करनेवाला, तारनेवाला। विष्णु।

तारतम्य—पु० [सं०] एक दूसरे से कमीवेशी का हिसाब, न्यूनाधिक्य। कमीवेशी के हिसाब से तरतीब। गुण, परिमाण आदि का परस्पर मिलान।

तारन—पु० दे० 'तारण'। **तारना**—सक० पार लगाना। सद्गति देना।

तारपीन—पु० चीड के पेड़ से निकला हुआ तेल।

तारल्य—पुं० [सं०] तरल या प्रवाहशील होने का धर्म। चचलता।

तारा—स्त्री० (सं०] दस महाविद्याओ मे से एक। बौद्ध तात्रिको की एक देवी। बृहस्पति की स्त्री जिसे चंद्रमा ने उसके इच्छानुसार रख लिया था और जिससे बुध उत्पन्न हुए थे। बालि की स्त्री और सुषेण की कन्या जो अहल्या, मदोदरी, कुती और द्रौपदी को मिलाकर पचकन्याओ मे मानी जाती है। पुं० नक्षत्र, सितारा। आँख की पुतली। सितारा, भाग्य। पुं० [हिं०] दे० 'ताला'। ⊙ग्रह = पु० नक्षत्रो के समान रात के अँधेरे मे आकाश मे चमकनेवाला ग्रह (मगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये पाँच ग्रह)। ⊙पथ = पुं० आकाश। ⊙मडल = पुं० नक्षत्रो का समूह या घेरा। तारा-बूटी की छपाईवाला एक वस्त्र। **ताराधिप, ताराधीश**—पुं० चद्रमा। शिव। बृहस्पति। बालि। सुग्रीव। **तारेश**—पु० चद्रमा। मु०~टूटना = रात के अँधेरे मे आकाश में अनत काल से घूमनेवाले नक्षत्रो के टुकडो का पृथ्वी की आकर्षण शक्ति से खिचकर जमीन पर गिरते समय (वायुमडल से रगड खाकर) चमकना, उल्कापात होना। ~डूबना = शुक्र (ग्रह) का अस्त होना। **तारे गिनना** = चिंता या आसरे में बेचैनी से रात काटना। **तारे तोड लाना** = कोई बहुत ही कठिन या चालाकी का काम करना। **तारो की छाँह** = बडे सवेरे।

ताराज—पुं० [फा०] लूटपाट। नाश, ध्वस।

तारिकाⓅ—स्त्री० दे० 'तारका'।

तारिणी—वि० स्त्री० [सं०] उद्धार करनेवाली। स्त्री० तारा देवी (तत्रशास्त्र)।

तारीⓅ—स्त्री० दे० 'ताली'। Ⓟ†दे० 'ताडी'।

तारीक—वि० [फा०] काला। धुंधला; अँधेरा।

तारीख—स्त्री० [फा०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक अथवा १२ बजे रात से दूसरे १२ बजे रात तक के समय को एक दिन मानकर की जानेवाली (पाक्षिक या) मासिक कालगणना, तिथि। कालनिर्धारण-विधि। किसी काम के लिये ठहराया हुआ दिन। मु०~डालना = दिन नियत करना।

तारीफ—स्त्री० [अ०] प्रशसा, बड़ाई। विशेषता, गुण। लक्षण, परिभाषा। वर्णन।

तारुण्य—पु० [सं०] जवानी।

तार्किक—पु० [सं०] तर्कशास्त्र का जाननेवाला। तर्क करनेवाला। तत्ववेत्ता, दार्शनिक।

ताल—पु० [सं०] हथेली। करतलध्वनि, ताली। नाचने गाने मे उसके मध्यवर्ती काल और क्रिया की परिभाषा। जघा या बाहु पर जोर से हथेली मारकर उत्पन्न किया हुआ शब्द। मँजीरा, झाँझ। चश्मे के पत्थर या काँच का एक पल्ला। हरताल। ताड का पेड या फल। खजूर का पेड। ताना। तलवार की मूठ। पिंगल मे ढगण या तीन मात्राओं के गण का दूसरा भेद। पु० तालाब। ⊙केतु = पु० भीष्म। बलराम। ⊙जघ = पु० एक प्राचीन देश और जाति। इस देश का निवासी। ताड के समान लबी टाँगोवाला व्यक्ति। एक दानव। ⊙ध्वज = पु० दे० 'तालकेतु'। ⊙पर्णी = स्त्री० सौफ। कपूरकचरी। तालमूली, मुसली। ⊙मखाना = पु० [हि०] भारत मे प्राय सर्वत्र पाया जानेवाला एक काँटेदार पौधा जो दलदल मे होता है। इसके बीज, जड, पेड आदि सब दवा के काम आते है। यह मूत्रकारक, बलकारक और जननेंद्रिय सबधी रोगो के लिये उपकारक माना जाता है। दे० 'मखाना'। ⊙मिस्री = स्त्री० [हि०] ताड या खजूर के रस से बनाई हुई मिश्री। ⊙मेल = पु० [हि०] ताल सुर का मिलान। उपयुक्त योजना, ठीक ठीक सयोग। उपयुक्त अवसर। ⊙रस = पु० ताड के पेड का मद्य, ताडी। ⊙वन = पु० ताड के पेडो का जगल। व्रज का एक वन। मु० ~ठोकना = लड़ने के लिये ललकारना।

तालक(प)—पु० दे० 'तअल्लुक'।

ताल बैताल—पुं० दो देवता या यक्ष। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हे सिद्ध किया था।

तालव्य—वि० [सं०] तालु सबधी। तालु और जीभ की सहायता से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य और श (पाणिनि)।

ताला—पु० लोहे, पीतल आदि का यत्र जो कुजी की सहायता से किवाड, सदूक आदि की कुडी मे फँसा देने से बिना कुजी के नही खुल सकता। वह लोहे का तवा जो योद्धा लोग छाती पर पहनते थे। ⊙कुजी = स्त्री० ताला और कुजी। लडको का एक खेल।

तालाब—पु० जलाशय, पोखरा।

तालिका—स्त्री० [सं०] ताली, कुजी। नत्थी या तागा जिसमे तालपत्र या कागज बँधे हो। सूची। अनुक्रमणिका।

तालिब—पुं० [अ०] तलब करनेवाला, तलाश करनेवाला। चाहनेवाला। जिज्ञासु। ⊙इल्म = पु० विद्यार्थी।

तालिम(प)—स्त्री० बिस्तर।

ताली—स्त्री० छोटा ताल, तलैया। स्त्री० [सं०] धातु की वह कील जिससे ताला खोला और बद किया जाता है, कुजी। ताडी, ताड का मद्य। पाठ्य पुस्तको की विस्तृत व्याख्या। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे कुल तीन वर्ण होते हैं। मेहराब के बीचोबीच का पत्थर या ईट। स्त्री० [हि०] हथेली, थपोडी। दोनो फैली हुई हथेलियो को एक दूसरी पर मारने की क्रिया। दोनो हथेलियो को फैलाकर एक दूसरी पर मारने से उत्पन्न शब्द। मु० ~पीटना या ~बजाना = खुशी, समर्थन, प्रोत्साहन या प्रशंसा प्रकट करने के लिये थपोडी पीटना। हँसी उडाना। अँधेरे मे जीव जतुओ को भगाने के लिये हथेडी बजाना। आराधना और जप मे विहित रीति से ताली बजाना। भूत प्रेत आदि को भगाने के लिये तत्रशास्त्र मे बताए ढग से ताली पीटना।

तालीम—स्त्री० [अ०] अभ्यासार्थ उपदेश, शिक्षा।

तालु—पु० [सं०] रीढवाले प्राणियो के मुह के भीतर की ऊपरी छत।

तालुका—पुं० दे० 'तअल्लुक'।

तालू—पु० दे० 'तालु'। खोपडी के नीचे का भाग, दिमाग। घोडो का एक ऐब। मु० ~मे दाँत जमना = अदृष्ट आना, बुरे दिन आना। ~से जीभ न लगना = चुपचाप न रहा जाना, बके जाना।

ताल्लुक—पु० दे० 'तअल्लुक'।

ताव—पु० कागज का तख्ता । वह गरमी जो किसी वस्तु को तापने या पकाने के लिये पहुँचाई जाय, आँच । अभिमान या अधिकार की भावना से प्रेरित क्रोध या आवेश , शेखी की झोक । ऐसी इच्छा जिसमे उतावलापन हो । ⊙ **भाव** = पु० उपयुक्त अवसर, मौका, परिस्थिति । **मु०**—(किसी वस्तु मे) ~**आना** = जितना चाहिए, उतना गरम हो जाना । ~**खाना** = आँच पर गरम होना । ~**चढ़ना** = प्रवल इच्छा होना । ~**दिखाना** = अभिमान मिला हुआ क्रोध प्रकट करना । ~**देना** = आँच पर रखना, गरम करना । ~**मे आना** = अभिमान मिले हुए क्रोध के आवेग मे होना । **मूँछो पर ~देना** = पराक्रम, वल आदि के घमड मे मूँछो को हाथ से ऐंठकर खडी करना ।

तावड़ा, तावड़ो†—पु० दे० तावरी' ।

तावत्—क्रि० वि० [सं०] उतनी देर तक, तब तक । उतनी दूर तक, वहाँ तक, 'यावत्' का सवधपूरक ।

तावना(पु)†—सक० तपाना, गरम करना । जलाना । दुख पहुँचाना ।

तावरी—स्त्री० ताप, जलन, घाम । वुखार, ज्वर, हरारत । गरमी से आया हुआ चक्कर, मूर्च्छा ।

तावरो(पु)†—पु० दाह, जलन । धूप, घाम ।

तावा†—पुं० दे० 'तवा' ।

तावान—पुं० [फा०] वह चीज जो नुकसान भरने के लिये दी या ली जाय, दड ।

तावीज—पु० [अ०] यत्र, मत्र या कवच जो किसी सपुट के भीतर रखकर पहना जाय । धातु का चौकोर या पहलदार सपुट जिसे तागे मे लगाकर गले या बाँह पर पहनते हैं । जतर ।

ताश—पु० एक प्रकार का जरदोजी कपडा, जरवफ्त । खेलने के लिये मोटे और चिकने कागज के बावन चौखूँटे टुकडे जिनपर प्राय लाल और काले रगो की वूटियाँ या तसवीरें बनी रहती हैं । ये १३-१३ पत्तो के चार वर्गो (हुक्म, चिडी, पान और ईंट) मे विभाजित रहते है । छोटी दफ्ती जिसपर सीने का तागा लपेटा रहता है ।

ताशा—पुं० चमडा मढा हुआ एक प्रकार का वाजा जो गले मे लटकाकर एक पतली और एक मोटी लकडी से बजाया जाता है, तासा । दे० 'ताश' ।

तासन—पु० रेशम के ताने और वादले के वाने से बननेवाला एक कपडा । 'तासन की गिलमैं गलीचा मखतूल के ···' जगद्विनोद ३७५) ।

तासीर—स्त्री० [अ०] असर, प्रभाव ।

तासु(पु)†—सर्व उसका ।

तासूं†—सर्व० दे० 'तासों' । **तासों**†—सर्व० उससे ।

तास्सुव—पु० [अ०] धार्मिक पक्षपात या कट्टरपन । पक्षपात ।

ताहम—अव्य० [फा०] तो भी ।

ताहि(पु)†—सर्व० उसको, उसे ।

ताहीं†—अव्य० दे० 'ताँई, तईं' ।

तिआ—स्त्री० दे० 'तिया' ।

तिआह†—पु० तीसरा विवाह । वह पुरुष जिसका तीसरा व्याह हो रहा हो ।

तिकडम—पु० तरकीब, चाल । **तिकड़मी**—वि० जो तिकडम लडाना जानता हो, चालबाज, धूर्त ।

तिकडा—पु० एक साथ वुनी हुई तीन धोतियाँ ।

तिकडी—स्त्री० तीन कडियोवाला । **खाट** चारपाई की वह बुनावट जिसमे तीन रस्सियाँ एक साथ हो ।

तिकोन(पु)—वि० दे० 'तिकोना' । **तिकोना**—वि० तीन कोनो का । पु० समोसा नाम का पकवान । **तिकोनिया**—वि० दे० 'तिकोना' ।

तिक्का†—पु० मास की वोटी, लोथ ।

तिक्की—स्त्री० गजीफे या ताश का वह पत्ता जिसपर तीन वूटियाँ हो ।

तिक्ख(पु)—वि० तीखा, चोखा, तेज । चालाक ।

तिक्त—वि० [सं०] नीम या चिरायते का सा स्वाद ।

तिक्ष(पु)†—वि० तीक्ष्ण, तेज । चोखा, पैना ।

तिखटी(पु)†—स्त्री० दे० 'टिकठी' ।

तिखाई—स्त्री० तीखापन।
तिखारना†—अक० कोई बात पक्की रखने के लिये कम से कम तीन वार कहना या कहलाना।
तिखूँटा—वि० जिसमे तीन कोने हो, तिकोना।
तिगⓅ†—पु० दे० 'त्रिक'।
तिगुना—वि० तीन गुना।
तिग्म—वि० [सं०] तीक्ष्ण, तेज। पु० वज्र। पिप्पली।
तिच्छⓅ—वि० दे० 'तीक्ष्ण'। **तिच्छन**Ⓟ—वि० दे० 'तीक्ष्ण'।
तिजरा—पु० दे० 'तिजारी'।
तिजहरीⓅ—स्त्री० तीसरा पहर, दो पहर के वाद के ३ घटो का समय।
तिजार†—पु० दे० 'तिजारी'। **तिजारी**—स्त्री० हर तीसरे दिन जाडा देकर आनेवाला ज्वर, शीतज्वर।
तिजारत—स्त्री० [अ०] वाणिज्य, रोजगार।
तिजोरी—स्त्री० वह लोहे का भारी और मजवूत सदूक या छोटी आलमारी जिसमे रुपए आदि रखे जाते हैं (अँ० 'सेफ')।
तिड़ी†—स्त्री० दे० 'तिक्की'। †वि० गायव, रपफूचक्कर। ⊙**विड़ी**=वि० तितर वितर, छितराया हुआ, इधर उधर। **मु०**~**करना**=गायव करना, चुरा लेना। ~**होना**=गायव होना, भाग जाना।
तितⓅ—क्रि० वि० तहाँ, वहाँ। उस ओर।
तितना†—क्रि० वि० दे० 'उतना'।
तितर बितर—वि० जो एकत्र न हो, विखरा हुआ। क्रमहीन, अव्यवस्थित।
तितली—स्त्री० एक उडनेवाला सुदर कीडा या फतिगा जो प्राय फूलो पर वैठा हुआ दिखाई पडता है। एक प्रकार की घास, तित्तिर।
तितलौकी†—स्त्री० कटुतुवी, कडुवा कद्दू।
तितारा—पु० सितार की तरह का एक वाजा जिसमे तीन तार लगे रहते हैं। वि० जिसमे तीन तार हो।
तितिवा—पु० ढकोसला। दे० 'तितिम्मा'।
तितिक्ष—वि० [सं०] सहनशील। **तितिक्षा**—स्त्री० सरदी, गरमी आदि सहने की सामर्थ्य, सहिष्णुता। क्षमा, क्षाति। **तितिक्षु**—वि० क्षमाशील।
तितिम्मा—पु० [अ०] बचा हुआ भाग। परिशिष्ट, उपसहार। (कानून) किसी दस्तावेज, वसीयतनामे, इकरारनामे आदि का पूरक या सुधारक अश। (अँ० करेक्शनडीड)।
तितेⓅ†—वि० उतने। **तितेक**Ⓟ†—वि० उतना।
तितैⓅ†—क्रि० वि० वहाँ या वही। उधर।
तितोⓅ†—वि०, क्रि० वि० उतना।
तित्तिर—पु० [सं०] तीतर (पक्षी)। तितली (घास)। **तित्तिरि**—पु० काले धव्वोवाला तीतर नाम का पक्षी। कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा, तैत्तिरीय। यास्क मुनि के शिष्य और कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा के आदि उपदेशक।
तिथि—स्त्री० [सं०] चद्रमा की गति के अनुसार किसी पक्ष के १५ दिनो की क्रमिक सख्या, मिति। पद्रह की सख्या। तारीख। ⊙**क्षय**=पुं० किसी तिथि का गिनती मे न आना (ज्यो०)। ⊙**पत्र**=पु० पचाग, पत्रा।
तिदरा—स्त्री० वह कोठरी जिसमे तीन दरवाजे या खिडकियाँ हो।
तिधर†—क्रि० वि० दे० उधर'।
तिधारा—पु० विना पत्तो का एक प्रकार का थूहर (सेंहुड) वृक्ष।
तिन†—सर्व० 'तिस' का वहुवचन। Ⓟपु० तिनका, तृण।
तिनउर—पु० तिनके का समूह।
तिनकना—अक० चिढना, झुँझलाना।
तिनका—पु० सूखी घास या डाँठी का टुकडा, तृण। **मु०**~**तोड़ना**=सवंध तोडना। वलैया लेना। ~**दाँतो में पकडना या लेना**=क्षमा या कृपा के लिये दीनतापूर्वक विनय करना, गिडगिडाना। **तिनके का सहारा**=थोड़ा सा सहारा। **तिनके को पहाड करना**=छोटी वात को वडी कर डालना।
तिनगना—अक० दे० 'तिनकना'।
तिनगरी—स्त्री० एक प्रकार का पकवान।
तिनपहला—वि० जिसमे तीन पहल या पार्श्व हो।

तिनिश—पु० [सं०] शीशम की जाति का एक पेड, तिनास ।
तिनुकाⓅ†—पु० दे० 'तिनका' ।
तिन्ना—पु० एक भगण और अत्य गुरु कुल चार अक्षरो का एक वर्णवृत्त । रोटी के साथ खाने की रसदार वस्तु । तिन्नी धान । **तिन्नी**—स्त्री० एक प्रकार का जगली धान जो तालो मे होता है । नीवी, फुफुंदी ।
तिन्हा—सर्व दे० 'तिन' ।
तिपतिⓅ†—स्त्री० दे० 'तृप्ति' ।
तिपल्ला—वि० जिसमे तीन पल्ले हो । जिसमे तीन तागे हो ।
तिपाई—स्त्री० तीन पायो की बैठने या घडा आदि रखने की छोटी ऊँची चौकी, तिगोडिया ।
तिपाड—पु० जो तीन पाट जोडकर बना हो । जिसमे तीन पल्ले हो ।
तिबारा—वि० तीसरी बार । पु० तीन बार खीचा हुआ मद्य । वह घर या कोठरी जिसमे तीन द्वार हो ।
तिबासी—वि० तीन दिन का पुराना या बासी (खाद्य पदार्थ) ।
तिब्ब—स्त्री० [अ०] यूनानी चिकित्साशास्त्र ।
तिब्बत—पु० एक प्राचीन देश जो हिमालय के उत्तर मे है, भोट देश । **तिब्बती**—वि० भोट देश का, तिब्बत का । स्त्री० तिब्बत की भाषा । पु० तिब्बत का रहनेवाला ।
तिमंजिला—वि० तीन खडो का, तीन मरातिब का ।
तिमिंगिल—पु० [सं०] समुद्र मे रहनेवाला मत्स्य से आकार का एक बडा जतु, एक द्वीप का नाम । उस द्वीप का निवासी ।
तिमि—पु० [सं०] समुद्र मे रहनेवाला मछली के आकार का एक बडा जतु, समुद्र । रतौधी नामक रोग जिसमे रात को दिखाई नही देता । Ⓟ अव्य० [हिं०] उस प्रकार, वैसे ।
तिमिर—पु० [सं०] अधकार, अँधेरा । आँखो से धुंधला दिखाई पड़ना, रात को न दिखाई पड़ना आदि आँखो के दोष । ⊙**हर** = पु० सूर्य । दीपक । **तिमिरारि**—पु० सूर्य ।
तिमिरारीⓅ—स्त्री० घोर अँधेरा । Ⓟ पु० दे० 'तिमिरारि' ।
तिमुहानी—स्त्री० वह स्थान जहाँ तीन ओर जाने के तीन मार्ग हो ।
तियⓅ—स्त्री० स्त्री । पत्नी ।
तियला—पु० स्त्रियो का एक पहनावा ।
तिया—पु० तिक्की, तिडी । Ⓟ स्त्री० दे० 'तिय' ।
तिरकना—अक० बाल सफेद होना । दे० तडकना ।
तिरकुटा—पु० सोठ, मिर्च, पीपल इन तीन कटु ओषधियो का समूह ।
तिरखाⓅ†—स्त्री० दे० 'तृषा' । **तिरखित**Ⓟ—वि० दे० 'तृषित' ।
तिरखूँटा—वि० जिसमे तीन खूँट या कोने हो ।
तिरग—पु० [सं०] तीन रगण (ऽ।ऽ) और एक गुरु (वर्ण) ।
तिरछई†—स्त्री० तिरछापन ।
तिरछा—वि० टेढा, जो सीधा न हो । कटु या अप्रिय । एक प्रकार का रेशम का कपडा । ⊙ई Ⓟ = स्त्री० तिरछापन । ⊙**ना** = सक० तिरछा होना । ⊙**बाँका** = छबीला । **तिरछौहाँ**—वि० जो कुछ तिरछापन लिए हो (जैसे, तिरछौंही डीठ) । **तिरछौहे**—क्रि० वि० तिरछेपन के साथ, वक्रता से । मु०—**तिरछी चितवन या नजर** = बिना सिर फेरे हुए बगल की ओर दृष्टि । **तिरछी बात या वचन** = कटु वाक्य, अप्रिय शब्द ।
तिरना—अक० पानी मे न डूबकर सतह के ऊपर रहना, उतराना । तैरना, पैरना । पार होना । तरना, मुक्त होना ।
तिरनी—स्त्री० घाघरा बाँधने की डोरी, नीवी । स्त्रियो के घाघरे या धोती का वह भाग जो नाभि के नीचे पडता है ।
तिरप—स्त्री० नृत्य मे एक प्रकार की गति, तिहाई ।
तिरपट†—वि० तिरछा । मुश्किल । बढव, उलटा सीधा ।
तिरपाई—स्त्री० तीन पायो की ऊँची चौकी, (अँ० स्टूल) ।
तिरपाल—पु० फूस या सरकडे के लबे पूले

जो छाजन मे खपडो के नीचे दिए जाते हैं, मुठ्ठा। रोगन चढ़ा हुआ कैनवस या टाट। एक प्रकार का बहुत मोटा कपडा जिससे पानी छनकर पार नहीं होता।

तिरपित(पु)‡—वि० दे० 'तृप्त'।

तिरपौलिया—पु० वह स्थान जहाँ तीन ऐसे बराबर और बडे फाटक हों जिससे होकर हाथी, ऊँट इत्यादि सवारियाँ निकल सकें। किसी नगर या बाजार के मध्य का ऐसा स्थान।

तिरफला—पु० दे० 'त्रिफला'।

तिरबेनी—स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'।

तिरमिरा—पु० दुर्बलता के कारण होनेवाला दृष्टि का वह दोष जिसमे कभी अँधेरा और कभी अनेक प्रकार के रग या तारे दिखाई पडते हैं। तेज रोशनी या चमक मे नजर का न ठहरना, चकाचौंध। ⊙ना =अक० तेज रोशनी या चमक के सामने आँखो का झपना, चौंधना। छटपटाना, व्याकुल होना।

तिरलोक‡—पु० दे० 'त्रिलोक'।

तिरशूल‡—पु० दे० 'त्रिशूल'।

तिरस्कार—पु० [सं०] अपमान। भर्त्सना, फटकार। अनादरपूर्वक त्याग। तिरस्कृत—वि० जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादर से त्यागा हुआ। परदे में छिपा हुआ।

तिरहुतिया—वि० तिरहुत प्रदेश का। पु० तिरहुत का निवासी। स्त्री० तिरहुत की बोली।

तिराना—सक० तैराना। पार करना। उबारना, निस्तार करना। भयभीत करना।

तिराहा—पु० दे० 'तिमुहानी'।

तिरि‡—वि० दे० 'तिर्यक्'।

तिरिन(पु)‡—पु० दे० 'तृण'।

तिरिया—स्त्री० औरत, स्त्री। ⊙चरित्तर = स्त्रियों की चालाकी या कौशल।

तिरीछ(पु)‡—वि० दे० 'तिरछा'।

तिरेंदा—पुं० समुद्र मे तैरता हुआ पीपा जो संकेत के लिये किसी ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहाँ पानी छिछला होता है या चट्टानें होती हैं। मछली मारने की बंसी की लकडी जिसके डूबने से मछली के फँसने का पता लगता है।

तिरोधान—पुं० [सं०] अंतर्धान।

तिरोभाव—पु० [सं०] अंतर्धान, अदर्शन। गोपन, छिपाव। तिरोभूत, तिरोहित—वि० छिपा हुआ, गायब।

तिरौंछा‡—वि० दे० 'तिरछा'।

तिर्यक्—वि० [सं०] तिरछा, टेढा। पुं० पशु पक्षी आदि जीव। ⊙ता = स्त्री० टेढापन। पशुता, जडता। तिर्यग्गति—स्त्री० तिरछी चाल। पशु पक्षी आदि छोटी योनियो की प्राप्ति। अधोगति।

तिलंगा—पु० अँगरेजी फौज का देशी सिपाही। एक प्रकार का कनकौवा।

तिलगाना—पु० पु० तैलग देश।

तिलंगी—वि० तिलगाने का निवासी। स्त्री० एक प्रकार की पतग।

तिल—पु० [सं०] एक पौधा जिसके बीजो से तेल निकाला जाता है। बहुत छोटा टुकडा। काले रग का बहुत छोटा दाग जो शरीर पर होता है। काली बिंदी के आकार का गोदना। आँख की पुतली के बीचोबीच का वह मध्य बिंदु जिससे दिखाई पडता है। ⊙कुट = पुं० [हिं०] कूटे हुए तिल जो खाँड की चाशनी मे पगे हो। ⊙चटा = पु० [हिं०] एक प्रकार का झींगुर जो गदी, ठढी और अँधेरी जगहो मे रहता है, चपडा। ⊙चावला = वि० [हिं०] काला और सफेद मिला। ⊙चावली = स्त्री० [हिं०] तिल और चावल की खिचडी। ⊙तिल = क्रि० वि० [हिं०] थोडा थोडा। ⊙पट्टी = स्त्री०[हिं०] खाँड़ मे पगे हुए तिलो का जमाया हुआ कतरा। ⊙पपड़ी = स्त्री० [हिं०] दे० 'तिलपट्टी'। ⊙पुष्प = पु० तिल का फूल। व्याघ्रनख, बघनखा। ⊙भर = वि० [हिं०] जरा सा। ⊙भुग्गा = पु० [हिं०] दे० 'तिलकुट'। मु० ~की ओट पहाड = किसी छोटी बात के भीतर बडी भारी बात। ~का ताड करना = किसी छोटी बात को बहुत बढा देना। ~धरने की जगह न होना = जरा सी भी जगह खाली न रहना।

तिलक—पु० एक प्रकार का जनाना कुरता। खिलअत। पु० [स०] वह चिह्न जो चदन, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर साप्रदायिक सकेत या शोभा के लिये लगाते हैं, टीका। राज्याभिषेक, राजतिलक। विवाह स्थिर करने की एक रीति या क्रिया, टीका। माथे पर पहनने का स्त्रियो का एक गहना। शिरोमणि, श्रेष्ठ व्यक्ति, पुन्नाग की जाति का एक सुदर पेड़। घोड़े का एक भेद। तिल्ली जो पेट के भीतर होती है। किसी ग्रथ की अर्थसूचक व्याख्या, टीका। लोकमान्य बाल गगाधर तिलक। ⊙मुद्रा = स्त्री० [सं०] चदन आदि का टीका और शख, चक्र आदि का छापा जो भक्त लोग लगाते है। ⊙हरु, हार = पुं० वे लोग जो कन्यापक्ष से वर को तिलक चढाने के लिये भेजे जाते है।

तिलकना—अक० गीली मिट्टी का सूखकर स्थान स्थान पर फटना। फिसलना।

तिलका—स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसमे कुल दो सगण होते हैं।

तिलछना⑤—अक० विकल रहना, छटपटाना।

तिलड़ा—वि० जिसमें तीन लड़े हो।

तिलड़ी—स्त्री० तीन लडो की माला जिसके बीच मे जुगनी होती है।

तिलदानी—स्त्री० वह थैली जिसमे दरजी सूई, तागा आदि रखते है।

तिलमिल—स्त्री० चकाचौंध, तिरमिराहट।

तिलमिलाना—अक० दे० 'तिरमिराना'।

तिलवा—पुं० तिलो का लड्डू।

तिलस्म—पुं० [अ०] जादू, इद्रजाल। करामात, चमत्कार। **तिलस्मी**—वि० तिलस्म सबधी।

तिलहन—पुं० वे पौधे जिनके बीजो से तेल निकलता है।

तिलाजलि, तिलांजली—स्त्री० [सं०] मृतक सस्कार की एक क्रिया जिसमे अँजुली मे जल और तिल लेकर मृतक के नाम से छोडते हैं। पितरो को मत्रपूर्वक दी हुई तिलमिश्रित जल की अजलि। मु० ~ देना = बिलकुल त्याग देना, जरा भी सबध न रखना।

तिलाक—पुं० दे० 'तलाक'।

तिलाम⑤—पु० गुलाम का गुलाम, दासानुदास। 'राम को कोऊ गुलाम कहैं ता गुलाम को मोहिं तिलाम लिखी जौं' (प्रबोध० १२)।

तिली†—स्त्री० दे० 'तिल'। दे० 'तिल्ली'।

तिलेदानी—स्त्री० दे० 'तिलदानी'।

तिलेगू—स्त्री० दे० 'तेलगू'।

तिलोक—पु० दे० 'त्रिलोक'। ⊙पति = पु० विष्णु।

तिलोकी—पु० २१ मात्राओ का एक उपजाति छद जो प्लवगम तथा चाद्रायण के योग से बनता है। ऊपर के नियम से चौपाई मे ५ मात्राएँ बढ़ा देने से भी ये तीनो छद (प्लवगम, चाद्रायण और तिलोकी) बन जाते है। तिलोकी के अत मे हरिगीतिका के दो पद रखने से अमृतकुडली छद बनता है।

तिलोचन—पु० दे० 'त्रिलोचन'।

तिलोदक—पु० [सं०] दे० 'तिलाजली'।

तिलोरी—स्त्री० तेलिया मैना। दे० 'तिलौरी'।

तिलौंछना—सक० थोडा तेल लगाकर चिकना करना। **तिलौंछा**—वि० जिसमे तेल का सा स्वाद या रग हो।

तिलौरी—स्त्री० वह बरी जिसमे तिल भी मिला हो।

तिल्ला—पु० कलाबत्तू या बादले आदि का ⊙काम। दुपट्टे या साडी आदि का वह अचल जिसमे कलाबत्तू आदि का काम किया गया हो। दे० 'तिलका'।

तिल्लाना—पु० दे० 'तराना'।

तिल्ली—स्त्री० पेट के भीतर का पोली गुठली के आकार का एक छोटा अवयव जो पसलियो के नीचे बाईं ओर होता है, प्लीहा। तिल नाम का अन्न।

तिवाड़ी, तिवारी—पु० दे० 'त्रिपाठी'।

तिवास†—पु० तीन दिन।

तिरास—पु० ताना, व्यग्य वचन। ⑤स्त्री० दे० 'तृष्णा'।

तिष्ठना⑤—अक० ठहरना।

तिष्षन⑤—वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तिस†—सर्व० 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है।

जो छाजन मे खपडो के नीचे दिए जाते हैं, मुठ्ठा। रोगन चढ़ा हुआ कैनवस या टाट। एक प्रकार का वहुत मोटा कपड़ा जिससे पानी छनकर पार नहीं होता।

तिरपित(पु)‡—वि० दे० 'तृप्त'।

तिरपौलिया‡—पु० वह स्थान जहाँ तीन ऐसे वरावर और वडे फाटक हों जिससे होकर हाथी, ऊँट इत्यादि सवारियाँ निकल सकें। किसी नगर या वाजार के मध्य का ऐसा स्थान।

तिरफला—पु० दे० 'त्रिफला'।

तिरवेनी—स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'।

तिरमिरा—पु० दुर्वलता के कारण होनेवाला दृष्टि का वह दोष जिसमे कभी अँधेरा और कभी अनेक प्रकार के रग या तारे दिखाई पडते है। तेज रोशनी या चमक मे नजर का न ठहरना, चकाचौंध। ⊙ना = अक० तेज रोशनी या चमक के सामने आँखो का झपना, चौंधना। छटपटाना, व्याकुल होना।

तिरलोक‡—पु० दे० 'त्रिलोक'।

तिरशूल‡—पु० दे० 'त्रिशूल'।

तिरस्कार—पु० [स०] अपमान। भर्त्सना, फटकार। अनादरपूर्वक त्याग। तिरस्कृत—वि० जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादर से त्यागा हुआ। परदे मे छिपा हुआ।

तिरहुतिया—वि० तिरहुत प्रदेश का। पु० तिरहुत का निवासी। स्त्री० तिरहुत की वोली।

तिराना—सक० तैराना। पार करना। उवारना, निस्तार करना। भयभीत करना।

तिराहा—पु० दे० 'तिमुहानी'।

तिरि‡—वि० दे० 'तिर्यक्'।

तिरिन(पु)‡—पु० दे० 'तृण'।

तिरिया—स्त्री० औरत, स्त्री। ⊙चरित्तर = स्त्रियो की चालाकी या कौशल।

तिरीछ(पु)‡—वि० दे० 'तिरछा'।

तिरेंदा—पुं० समुद्र मे तैरता हुआ पीपा जो सकेत के लिये किसी ऐसे स्थान पर रखा जाता है जहाँ पानी छिछला होता है या चट्टानें होती है। मछली मारने की वसी की लकडी जिसके डूवने से मछली के फँसने का पता लगता है।

तिरोधान—पुं० [सं०] अंतर्धान।

तिरोभाव—पु० [स०] अंतर्धान, अदर्शन। गोपन, छिपाव। तिरोभूत, तिरोहित—वि० छिपा हुआ, गायव।

तिरौंछा‡—वि० दे० 'तिरछा'।

तिर्यक्—वि० [सं०] तिरछा, टेढा। पुं० पशु पक्षी आदि जीव। ⊙ता = स्त्री० टेढापन। पशुता, जड़ता। तिर्यंगति—स्त्री० तिरछी चाल। पशु पक्षी आदि छोटी योनियो की प्राप्ति। अधोगति।

तिलगा—पु० अँगरेजी फौज का देशी सिपाही। एक प्रकार का कनकौवा।

तिलंगाना—पु० पु० तैलग देश।

तिलगी—वि० तिलगाने का निवासी। स्त्री० एक प्रकार की पतग।

तिल—पु० [सं०] एक पौधा जिसके वीजो से तेल निकाला जाता है। बहुत छोटा टुकडा। काले रग का बहुत छोटा दाग जो शरीर पर होता है। काली विंदी के आकार का गोदना। आँख की पुतली के वीचोवीच का वह मध्य विंदु जिससे दिखाई पडता है। ⊙कुट = पुं० [हि०] कूटे हुए तिल जो खाँड की चाशनी मे पगे हो। ⊙चटा = पु० [हि०] एक प्रकार का झींगुर जो गदी, ठंढी और अँधेरी जगहो मे रहता है, चपडा। ⊙चावला = वि० [हि०] काला और सफेद मिला। ⊙चावली = स्त्री० [हि०] तिल और चावल की खिचडी। ⊙तिल = क्रि० वि० [हि०] थोडा थोडा। ⊙पट्टी = स्त्री०[हि०] खाँड़ मे पगे हुए तिलो का जमाया हुआ कतरा। ⊙पपड़ी = स्त्री० [हि०] दे० 'तिलपट्टी'। ⊙पुष्प = पु० तिल का फूल। व्याघ्रनख, वघनखा। ⊙भर = वि० [हि०] जरा सा। ⊙भुग्गा = पु० [हि०] दे० 'तिलकुट'। मु० ~की ओट पहाड़ = किसी छोटी वात के भीतर वडी भारी वात। ~का ताड करना = किसी छोटी वात को वहुत वढा देना। ~धरने की जगह न होना = जरा सी भी जगह खाली न रहना।

तिलक--पु० एक प्रकार का जनाना कुरता। खिलअत। पु० [सं०] वह चिह्न जो चदन, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर सांप्रदायिक सकेत या शोभा के लिये लगाते हैं, टीका। राज्याभिषेक, राज-तिलक। विवाह स्थिर करने की एक रीति या क्रिया, टीका। माथे पर पहनने का स्त्रियो का एक गहना। शिरोमणि, श्रेष्ठ व्यक्ति, पुन्नाग की जाति का एक सुदर पेड़। घोड़े का एक भेद। तिल्ली जो पेट के भीतर होती है। किसी ग्रथ की अर्थसूचक व्याख्या, टीका। लोकमान्य बाल गगाधर तिलक। ⊙**मुद्रा**=स्त्री० [सं०] चदन आदि का टीका और शख, चक्र आदि का छापा जो भक्त लोग लगाते हैं। ⊙**हरु, हार**=पुं० वे लोग जो कन्यापक्ष से वर को तिलक चढाने के लिये भेजे जाते है।

तिलकना—अक० गीली मिट्टी का सूखकर स्थान स्थान पर फटना। फिसलना।

तिलका—स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसमे कुल दो सगण होते हैं।

तिलछना(पु)—अक० विकल रहना, छट-पटाना।

तिलड़ा—वि० जिसमें तीन लड़े हों।

तिलड़ी--स्त्री० तीन लडो की माला जिसके बीच मे जुगनी होती है।

तिलदानी—स्त्री० वह थैली जिसमे दरजी सूई, तागा आदि रखते हैं।

तिलमिल--स्त्री० चकाचौंध, तिरमिराहट।

तिलमिलाना—अक० दे० 'तिरमिराना'।

तिलवा--पुं० तिलो का लड्डू।

तिलस्म—पुं० [अ०] जादू, इद्रजाल। करा-मात, चमत्कार। **तिलस्मी**—वि० तिलस्म सबधी।

तिलहन—पुं० वे पौधे जिनके बीजो से तेल निकलता है।

तिलांजलि, तिलांजली—स्त्री० [सं०] मृतक संस्कार की एक क्रिया जिसमे अँजुली मे जल और तिल लेकर मृतक के नाम से छोडते हैं। पितरो को मत्रपूर्वक दी हुई तिलमिश्रित जल की अजलि। मु० ~ **देना**=बिलकुल त्याग देना, जरा भी सबध न रखना।

तिलाक--पुं० दे० 'तलाक'।

तिलाम(पु)—पु० गुलाम का गुलाम, दासानु दास। 'राम को कोऊ गुलाम कहैं ता गुलाम को मोहि तिलाम लिखौ जौं' (प्रबोध० १२)।

तिली†—स्त्री० दे० 'तिल'। दे० 'तिल्ली'।

तिलेदानी--स्त्री० दे० 'तिलदानी'।

तिलेगू—स्त्री० दे० 'तेलगू'।

तिलोक—पु० दे० 'त्रिलोक'। ⊙पति= पु० विष्णु।

तिलोकी—पु० २१ मात्राओ का एक उप-जाति छद जो प्लवगम तथा चाद्रायण के योग से बनता है। ऊपर के नियम से चौपाई मे ५ मात्राएँ बढा देने से भी ये तीनो छद (प्लवगम, चाद्रायण और तिलोकी) बन जाते हैं। तिलोकी के अत मे हरिगीतिका के दो पद रखने से अमृतकुडली छद बनता है।

तिलोचन—पु० दे० 'त्रिलोचन'।

तिलोदक—पु० [सं०] दे० 'तिलाजली'।

तिलोरी–स्त्री० तेलिया मैना। दे० 'तिलौरी'।

तिलौंछना—सक० थोडा तेल लगाकर चिकना करना। **तिलौंछा**—वि० जिसमे तेल का सा स्वाद या रग हो।

तिलौरी—स्त्री० वह बरी जिसमे तिल भी मिला हो।

तिल्ला--पु० कलाबत्तू या बादले आदि का ⊙काम। दुपट्टे या साडी आदि का वह अचल जिसमे कलाबत्तू आदि का काम किया गया हो। दे० 'तिलका'।

तिल्लाना—पु० दे० 'तराना'।

तिल्ली--स्त्री० पेट के भीतर का पोली गुठली के आकार का एक छोटा अवयव जो पसलियो के नीचे बाईं ओर होता है, प्लीहा। तिल नाम का अन्न।

तिवाड़ी, तिवारी—पु० दे० 'त्रिपाठी'।

तिवास‡—पु० तीन दिन।

तिशना—पुं० ताना, व्यग्य वचन। (पु)स्त्री० दे० 'तृष्णा'।

तिष्ठना(पु)—अक० ठहरना।

तिष्षन(पु)—वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तिस†—सर्व० 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है।

मु० ~पर = इतना होने पर, ऐसी अवस्था मे।

तिसनाⓅ—स्त्री० दे० 'तृष्णा'।

तिसरायत—स्त्री० तीसरा या गैर होने का भाव। तिसरैत—पुं० झगडा करनेवालो से अलग एक तीसरा मनुष्य, तटस्थ। तीसरे हिस्से का मालिक।

तिसानाⓅ—अक० प्यासा होना।

तिहरा—वि० तीन परत या लपेट का। जो तीसरी बार किया गया हो। जो एक साथ तीन हो। ⊙ना = सक० तीन आवृत्ति करना।

तिहवार—पु० दे० 'त्यौहार'।

तिहाई—स्त्री० तीसरा भाग या हिस्सा। खेत की उपज।

तिहायत—पु० दे० 'तिसरैत'।

तिहारा, तिहारेⓅ†—सर्व० दे० 'तुम्हारा'।

तिहाव†—पु० क्रोध। विगाड, झगडा।

तिहि—सर्व० दे० 'तेहि'।

तिहूँ†—वि० तीनो।

तिहैया—पु० तीसरा भाग। तवले, मृदग आदि की वे तीन थापे जिनमे से अंतिम थाप ठीक सम पर पडती है।

तीⓅ—स्त्री० पत्नी। स्त्री। मनहरण छद। १५ वर्णो का एक छद जिसमे पाँच सगण होते हैं।

तीक्षरा, तीक्षनⓅ—वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तीक्ष्ण—वि० [सं०] तेज नोक या धारवाला। तेज, प्रखर। उग्र, प्रचड। जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो, कडुवा। जो सुनने मे अप्रिय हो। असह्य। ⊙दृष्टि = वि० जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात पर पडती हो। ⊙धार = पु० खड्ग। वि० जिसकी धार बहुत तेज हो। ⊙बुद्धि = वि० जिसकी वुद्धि बहुत तेज हो, वुद्धिमान्।

तीखⓅ†—वि० दे० 'तीखा'। **तीखना**Ⓟ†—वि० दे० 'तीक्ष्ण'। **तीखा**—वि० दे० 'तीक्ष्ण'। चोखा, वढिया।

तीखुर—पु० हल्दी की जाति का एक प्रकार का पौधा जिसकी जड के चूर्ण का व्यवहार कई तरह की मिठाइयाँ आदि वनाने मे होता है।

तीछन, तीछाⓅ†—वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तीज—स्त्री० पक्ष की तीसरी तिथि। भादो सुदी (शुक्ल पक्ष) तीज जिस दिन हिंदू स्त्रियाँ पति के कल्याणार्थ निर्जल व्रत करती हैं। वि० दे० 'हरतालिका'।

तीजा—वि० तीसरा, तृतीय। पु० (मुसलमानो मे मनाया जानेवाला) किसी की मृत्यु का तीसरा दिन।

तीतⓅ‡—वि० दे० 'तीता'। **तीता**—वि० जिसका स्वाद तीखा और चरपरा हो (जैसे मिर्च), कडुआ।

तीतर—पु० एक प्रसिद्ध चंचल और तेज दौडनेवाला पक्षी जो लड़ाने के लिये पाला जाता है।

तीतुरीⓅ†—स्त्री० दे० 'तितली'।

तीतुलⓅ—दे० 'तीतर'।

तीन—वि० जो दो और एक हो। पु० दो और एक का जोड। सरयूपारी ब्राह्मणो मे तीन उत्तम गोत्रो का एक वर्ग। मु०~तेरह करना = तितर वितर करना, अलग अलग करना। न~मे, न तेरह में = जो किसी गिनती मे न हो, जिसे कोई पूछता न हो। **तीनि**Ⓟ†—पु०, वि० दे० 'तीन'।

तीमारदारी—स्त्री० [फा०] रोगियो की सेवाशुश्रूषा का काम, परिचर्या।

तीयⓅ—स्त्री० औरत, स्त्री। **तीया**Ⓟ—स्त्री० दे० 'तीय'। पु० दे० 'तिक्की' या 'तिडी' (ताश का खेल)।

तीरदाज—पु० तीर चलानेवाला, निशाना लगानेवाला। बहादुर।

तीरंदाजी—स्त्री० [फा०] तीर चलाने की क्रिया या विद्या। बहादुरी। निपुणता।

तीर—पु० [सं०] नदी का किनारा, तट। पास, निकट। [फा०] वाण, शर। ⊙वर्ती = वि० तट या किनारे पर रहनेवाला, पडोसी। ⊙स्थ = पु० किनारे लगा हुआ व्यक्ति या वस्तु। मरणासन्न व्यक्ति। मु०~चलाना या फेंकना = युक्ति भिडाना। ~मारना = आजमाना।

तीरथ—पु० दे० 'तीर्थ'।

तीराⓅ†—पु० दे० 'तीर'।

तीर्णा—स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त। दे० 'तिन्ना'।

तीर्थंकर—पु० [सं०] जैनियो के उपास्य देव जो सब देवताओ से श्रेष्ठ तथा सब प्रकार के दोषो से रहित और मुक्तिदाता माने जाते है। इनकी सख्या २४ है।

तीर्थ—पु० [सं०] वह पवित्र या पुण्य स्थान जहाँ धर्मभाव से लोग यात्रा, पूजा या स्नान आदि के लिये जाते हो। कोई पवित्र स्थान। हाथ मे के कुछ विशिष्ट स्थान, जैसे दाहिने हाथ का ऊपरी भाग ब्रह्मतीर्थ, अँगूठे और तर्जनी का मध्य-भाग पितृतीर्थ, कनिष्ठा उँगली के नीचे का भाग प्राजापत्य तीर्थ और उँगलियो का अगला भाग देवतीर्थ माना जाता है। इन तीर्थों से क्रमश आचमन, पिंड दान (पितृकार्य), और देवकार्य किया जाता है। शास्त्र। यज्ञ। स्थान, स्थल। उपाय। अवसर। अवतार। उपाध्याय, गुरु। दर्शन। ब्राह्मण। अग्नि। सन्यासियो की एक उपाधि। तारनेवाला। ईश्वर। माता पिता। ⊙पति = पुं० दे० 'तीर्थराज'। ⊙यात्रा = स्त्री० पवित्र स्थानो मे दर्शन, स्नानादि के लिये जाना। ⊙राज = पु० प्रयाग। ⊙राजी = स्त्री० काशी। तीर्थाटन—पु० तीर्थयात्रा।

तार्थिक, तैर्थिक—पुं० [सं०] तीर्थ का ब्राह्मण, पडा। बौद्धधर्म का विद्वेषी ब्राह्मण। (बौद्ध) तीर्थंकर।

तीली—स्त्री० बडा तिनका, सीक। धातु आदि का पतला, पर कडा तार। पटवो का वह औजार जिससे वे रेशम लपेटते हैं। तीलियो की वह कूँची जिससे जुलाहे सूत साफ करते है।

तीव्र—वि० [सं०] अतिशय। तेज। बहुत गरम। नितात, बेहद। कटु। असह्य। प्रचड। तीखा। द्रुतगामी। कुछ ऊँचा और अपने स्थान से बढा हुआ (स्वर) (सगीत)।

तीस—वि० दस का तिगुना, बीस और दस। पुं० दस की तिगुनी सख्या, ३०। ⊙मार खाँ = बड़ा बहादुर (व्यग्य)। ~दिन या तीसो दिन = सदा, हमेशा।

तीसर†—वि० दे० 'तीसरा'। पुं० खेत की तीसरी जुताई। तीसरा—वि० क्रम मे तीन के स्थान पर पडनेवाला। जिसका प्रस्तुत विषय से कोई सबध न हो, गैर।

तीसी—स्त्री० दे० 'अलसी'। पुं० दे० तिहाई। स्त्री० फल आदि गिनने का तीस गाहियो (गाही = ५) अर्थात् एक सौ पचास का एक मान।

तुंग—वि० [सं०] ऊँचा। उग्र, प्रचड। प्रधान। पुं० पुन्नाग वृक्ष। पर्वत। नारियल। कमल का केसर। शिव। दो नगण और दो अत्य गुरु का एक वर्णवृत्त। तुरगम। ⊙तनी = वि० स्त्री० [हिं०] ऊँचे स्तनोवाली। ⊙बाहु = पु० तलवार के ३२ हाथो मे से एक, उत्थितहस्त। तुगारण्य—पुं० झाँसी के पास बेतवा के किनारे का एक जगल। तुगारन्न(पु)†—पुं० दे० 'तुगारण्य'।

तुंड—पुं० [सं०] मुँह। चोच। निकला हुआ मुँह, थूथन। सूँड। तलवार का अगला हिस्सा। महादेव। अन्न की बालियो की नोक, ढोढी। तुडि—स्त्री० मुँह। चोच। नाभि। तुडी—वि० मुँह, चोच, थूथन या सूँडवाला। पुं० गणेश। स्त्री नाभि, ढोढी।

तुंद—वि० [फा०] तेज, प्रचड। पुं० [सं०] पेट, तोद। तुदिल—वि० तोदवाला, बडे पेटवाला। तुदी—वि० दे० 'तुदिल'।

तुंदैला—वि० तोद या बडे पेटवाला।

तुंबडी—स्त्री० दे० 'तूँबडी'।

तुबर(पु)—पुं० दे० 'तूँबुरु'।

तुबा—पुं० दे० 'तूँबा'।

तुबुरु—पुं० [सं०] धनिया। एक प्रकार के पौधे का बीज जो धनिया के आकार का होता है। एक विष्णुभक्त गधर्व जो चैत महीने मे सूर्य के रथ पर रहते हैं और संगीत मे परम प्रवीण माने जाते हैं।

तुआ(पु)‡—सर्व० दे० 'तव'।

तुअना(पु)†—अक० चूना, टपकना। खडा न रह सकना, गिर पड़ना। गर्भपात होना।

तुइँ—सर्व० दे० 'तू'।

तुक—स्त्री० किसी पद्य या गीत का कोई खड या कडी। पद्य के चरणो के अतिम अक्षरो का मेल, अत्यानुप्रास। ध्वनि-साम्य। मेल, जोड। ⊙बदी = स्त्री० केवल तुक जोडने या भद्दी कविता करने की क्रिया। भद्दी कविता जिसमे काव्य के रस, भाव, व्यजना आदि गुण न हो। मु०~जोड़ना = भद्दी कविता करना।

तुकमा—पु० [फा०] घुडी फँसाने का फदा, मुद्धी।

तुकांत—पु० पद्य के चरणो के अतिम अक्षरो का मेल, अत्यानुप्रास, काफिया।

तुका—पु० दे० 'तुक्का'।

तुकार—स्त्री० 'तू' का प्रयोग जो अपमान जनक समझा जाता है, अशिष्ट सबोधन, 'तू' शब्द का प्रयोग। ⊙ना = सक० तू तू करके बुलाना या बोलना, अशिष्ट सबोधन करना।

तुक्कल—स्त्री० बडी पतग।

तुक्का—पु० वह तीर जिसमे गाँसी की जगह घुडी सी बनी होती है। टीला, पहाडी। सीधी खडी वस्तु।

तुख—पु० भूसी, छिलका। अडे के ऊपर का छिलका।

तुखार—पु० [सं०] एक देश (सभवत हिमालय के उत्तर पश्चिम का) जहाँ के घोडे बहुत अच्छे माने जाते थे। इस देश का निवासी या इस प्रदेश का घोडा। ⓟपु० दे० 'तुषार'।

तुख्म—पु० [अ०] बीज।

तुच्छ—वि० [सं०] क्षुद्र, नाचीज। ओछा, नीच। थोडा। तुच्छातितुच्छ—वि० छोटे से छोटा, अत्यत हीन, अत्यद क्षुद्र।

तुजुक—पु० [तु०] शोभा, शान। कानून नियम। आत्मकथा।

तुझ—सर्व० कर्ता और सबध के अतिरिक्त अन्य विभक्तियो मे 'तू' का रूप।

तुझे—सर्व० 'तू' का कर्म और सप्रदान कारक का रूप, तुझको।

तुट ⓟ—वि० जरा सा।

तुट्ठना ⓟ—सक० तुष्ट करना। अक० तुष्ट होना।

तुडवाना, तुडाना—सक० [तोडना का प्रे०] तोडने का काम कराना, तुडवाना। अलग करना, सबध न रखना। बडे सिक्के को बराबर मूल्य के कई छोटे छोटे सिक्को से बदलना, भुनाना। तुड़ाई—स्त्री० तुडाने की क्रिया या भाव। तोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तुतरा ⓟ†—वि० दे० 'तोतला'। ⊙ना ⓟ† = अक० दे० 'तुतलाना'। तुतुरोहाँ ⓟ†—वि० दे० 'तोतला'।

तुतलाना—अक० रुक रुककर टूटे फूटे शब्द बोलना।

तुत्थ—पु० [सं०] तूतिया। नील।

तुदन—पु० [सं०] व्यथा देने की क्रिया। व्यथा, पीडा।

तुन—पु० एक बहुत बडा पेड जिसके फूलो से एक प्रकार का पीला (बसती) रंग निकलता है।

तुनक—वि० [फा०] दुर्बल। नाजुक। ⊙मिजाज = छोटी छोटी बात पर बिगडने या रूठनेवाला।

तुनीर—पु० दे० 'तूणीर'।

तुपक—स्त्री० छोटी तोप। बदूक, कडाबीन।

तुफग—स्त्री० हवाई बदूक। वह लबी नली जिसमे मिट्टी की गोलियाँ आदि डालकर फूक के जोर से चलाते हैं।

तुफैल—पु [अ०] साधन, कारण। कृपा।

तुभना ⓟ—अक० स्तब्ध रहना।

तुम—सर्व० 'तू' शब्द का बहु०। वक्ता की की ओर से श्रोता के लिये (विशेषत: बडो के द्वारा छोटो के लिये) एकवचन मे प्रयुक्त शब्द। ईश्वर या घनिष्ठ व्यक्ति के सबोधन मे एकवचन मे प्रयुक्त सर्वनाम। ⊙तडाक† = पु० दे० 'तूतडाक'।

तुमड़ी—स्त्री० छोटा तूबा, तुबी। सूखे कद्दू का बना हुआ एक बाजा'।

तुमरा†—सर्व० दे० 'तुम्हारा'।

तुमरू—पु० दे० 'तुबुरु'।

तुमल ⓟ—पु० वि० दे० 'तुमुल'।

तुमुर ⓟ—पु० दे० 'तुमुल'।

तुमुल—पु० [सं०] सेना का कोलाहल या धूम, हल्ला, लडाई की हलचल। सेना की

गहरी मुठभेड, भिडंत । वि० कोलाहल से भरा हुआ । घमासान ।

तुम्ह†—सर्व० दे० 'तुम' ।

तुम्हारा—सर्व० 'तुम' का सबधकारक का रूप।

तुम्हें—सर्व० 'तुम' का वह विभिक्तयुक्त रूप जो उसे कर्म और सप्रदान मे प्राप्त होता है, तुमको ।

तुरग—पु० [सं०] घोडा । चित्त। सात की संख्या । **तुरंगम**—पु० घोडा । चित्त । दो नगण और दो अत्य गुरु का एक वृत्त, तुग, तुंगा ।

तुरगक—पु० [सं०] बडी तुरई ।

तुरंज—स्त्री० पु० चकोतरा नीबू । बिजौरा नीबू ।

तुरत—क्रि० वि० जल्दी से, अत्यत शीघ्र ।

तुरई—स्त्री० एक बेल जिसके लबे फलो पर गहरी धारियाँ या नालियाँ पडी रहती है । इनकी तरकारी बनाई जाती है ।

तुरक—पु० दे० 'तुर्क' । **तुरकटा**—पु० मुसलमान (तिरस्कार) । **तुरकाना**—वि० तुरको का सा । पु० तुर्कों का देश या बस्ती । **तुरकिन**—स्त्री० तुर्क जाति की स्त्री । †मुसलमान की स्त्री । **तुरकी**—वि० तुर्कों के देश का । स्त्री० तुर्कों की भाषा ।

तुरग—पु० [सं०] घोडा । चित्त ।

तुरत—अव्य० शीघ्र, चटपट ।

तुरप—पु० ताश के खेल मे किसी बाँट मे वह रग या उसका पत्ता जो उस बाजी मे अन्य रगो को जीत लेता है । इस रग का पत्ता । मु० ~**लगाना**=जीतने के लिये तुरप का पत्ता चलना ।

तुरपन—स्त्री० एक प्रकार की सिलाई । **तुरपना**—सक० तुरपन की सिलाई करना ।

तुरयⓅ—पु० घोडा ।

तुरही—स्त्री० फूक से बजाने का एक बाजा जो मुंह की ओर पतला और पीछे की ओर चौडा होता है ।

तुराⓅ—स्त्री० दे० 'त्वरा' । स्त्री०, पु० घोड़ा ।

तुराईⓅ†—स्त्री० गद्दा, त—

तुरानाⓅ—अक० घबराना, आतुर होना । सक० दे० 'तुडाना' ।

तुरावती—वि० स्त्री० बेगवाली, झोक के साथ बहनेवाली ।

तुरियाⓅ—स्त्री० दे० 'तुरीय' ।

तुरी—स्त्री० घोड़ी ।

तुरीय—स्त्री० [स०] ब्रह्ममय होने की दिशा स्थूल शरीर के धर्मो से परे की अवस्था चौथी अंतर्दशा, ब्रह्मावस्था । अज्ञान से दूर शुद्ध चैतन्य, ब्रह्म। मूलाधार से उठनेवाली वाक् (वाणी) शक्ति की चौथी अवस्था जब वह मुंह मे आकर जिह्वा, तालु, ओठ और दाँतो के सहयोग से उच्चरित होती है । इन अवस्थाओ को क्रम से परा (मूलाधार से उठी), पश्यती (हृदयस्थिता), मध्यमा, (हृदय से ऊपर उठने वाली) और वैखरी (उच्चार्यमाण) या बोली कहते है ।

तुरुष्क—पु० [सं०] तुर्क जाति, तुर्की का रहनेवाला (मनुष्य) । तुर्कों का देश, तुर्की या तुर्किस्तान । तुर्की का घोड़ा ।

तुरुही—स्त्री० दे० 'तुरही' ।

तुर्क—पुं० [फा०] तुर्की और तुर्किस्तान का निवासी । **तुर्कमान**—पुं० तुर्क जाति का मनुष्य । तुर्की घोडा । **तुर्किस्तान**—पुं० तुर्कों का देश, तुर्की। **तुर्की**—वि० तुर्कों के देश का, तुर्की या तुर्किस्तान का । स्त्री० प० तुर्किस्तान की भाषा। तुर्किस्तान का घोडा । तुर्कों की सी ऐंठ, अकड, गर्व पुं० तुर्को का देश, तुर्किस्तान ।

तुर्रा—पुं० [अ०] घुंघराले बालो की लट जो माथे पर हो, काकुल । पर या फुंदना जो पगडी मे लगाया या खोसा जाता है, कलगी । फूलो की लडियो का गुच्छा जो दूल्हे के कान के पास लटकता रहता है टोपी आदि मे लगा हुआ फूंदना । पक्षियो के सिर पर निकले हुए परो का गुच्छा, शिखा । कोड़ा, चाबुक । वि० [फा०] अनोखा । मु० ~**यह कि**=उस पर भी

तुर्श—वि० [फा०] खट्टा, अम्ल । तुर्शी—स्त्री० खटाई, अम्लता ।

तुल(पु)—दे० दे० 'तुल्य' ।

तुलना—अक० तौला जाना । तौल या मान मे बराबर उतरना, तुल्य होना । आधार पर इस प्रकार ठहरना कि आधार के बाहर निकला हुआ कोई भाग अधिक बोझ के कारण किसी ओर को झुका न हो । किसी अस्त्र आदि का इस प्रकार चलाया जाना कि वह ठीक लक्ष्य पर पहुँचे, सधना । नियमित होना, बँधना, बँधे हुए मान का अभ्यास होना । गाडी के पहिए का ओंगा जाना । (अँ० लुब्रिकेशन)। उद्यत होना । उतारू होना । स्त्री० [स०] दो या अधिक वस्तुओ के गुण, मान आदि के एक दूसरी से घट बढ होने का विचार, मिलान । सादृश्य । उपमा । तुलनात्मक—वि० जिसमे और काम के साथ साथ तुलना भी हो ।

तुलवाई—स्त्री० तोलने की मजदूरी । पहिए को ओंगवाने की मजदूरी ।

तुलवाना—सक० [तोलना का प्रे०] तोल या वजन कराना । गाडी के पहिये की धुरी मे घी तेल आदि चिकनी चीजें दिलाना, ओंगवाना (अँ० लुब्रिकेट) ।

तुलसी—स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जिसकी दो जातियाँ पाई जाती हैं—शुक्ल और कृष्ण । कृष्ण तुलसी को हिंदू बहुत पवित्र मानते हैं और अपने घरो मे लगाते हैं । ⊙दल = पुं० तुलसी के पौधे की पत्ती । ⊙वन = पुं० [हिं०] वृ दावन ।

तुला—स्त्री० [सं०] सादृश्य, तुलना । तराजू । मान, तौल । ज्योतिष की बारह राशियो मे से सातवी राशि जिसका आकार तराजू लिए हुए मनुष्य का सा माना जाता है । ⊙दान = पु० एक प्रकार का दान जिसमे किसी मनुष्य के वजन के बराबर धन, अन्न या अन्य कोई पदार्थ दान किया जाता है । ⊙परीक्षा = स्त्री० अभियुक्तो की एक दिव्य परीक्षा जिसमे किसी अभियुक्त को दो बार तौलते और दोनो बार तौल बराबर होने पर निर्दोष मानते थे । ⊙यत्र = पु० तराजू । तुलाधार—पु० तुला राशि । तराजू की डोर जिसमे पलडे बँधे रहते है । वनिया । वि० तुला को धारण करनेवाला ।

तुलाई—स्त्री० रुई से भरा दुहरा कपडा जो ओढने के काम मे आता है, दुलाई । तौलने का काम या भाव । तौलने की मजदूरी । तौलाई ।

तुलाना(पु)—अक० आ पहुँचना, समीप आना । सक० गाडी के पहियो की धुरी मे चिकना दिलाना ।

तुल्य—वि० [सं०] समान, बराबर । सदृश ⊙ता = स्त्री० बराबरी, समता । सादृश्य । ⊙योगिता = स्त्री० एक अलकार जिसमे केवल प्रस्तुतो अथवा केवल अप्रस्तुतो का अर्थात् अकेले उपमेयो का या अकेले उपमानो का एक ही साधारण धर्म कहा जाता हैं । दीपक मे उपमेय और उपमान दोनो का साधारण धर्म एक रहता है किंतु यहाँ उपमानो और उपमेयो का अलग अलग साधारण धर्म बतलाया जाता है ।

तुव—सर्व० दे० 'तव' ।

तुवर—पु० [स०] कसैला रस । अरहर ।

तुष—पु० [सं०] अन्न का छिलका, भूसी । अडे का छिलका । तुषानल—पु० भूसी या घासफूस की आग । ऐसी आग मे भस्म होने की क्रिया जो प्रायश्चित्त के लिये की जाती है ।

तुषार—पु० [स०] हवा मे मिली भाप जो सरदी से जमकर गिरती है, पाला । हिम, बरफ । हिमालय के उत्तर का एक देश जहाँ के घोडे प्रसिद्ध थे । तुषार देश मे बसनेवाली जाति जो शक जाति की एक शाखा थी । वि० छूने मे बरफ की तरह ठढा ।

तुष्ट—वि० [सं०] तोषप्राप्त, तृप्त । राजी, खुश । तुष्टना(पु)—सक० [हिं०] प्रसन्न होना । तृप्त होना । तुष्टि—स्त्री० सतोष, तृप्ति । प्रसन्नता ।

तुसी—स्त्री० अन्न के ऊपर का छिलका, भूसी ।

तुहार†—सर्व० [प्रा०] दे० 'तुम्हारा' ।

तुहि—सर्व [प्रा०] तुझको ।

तुहिन—पु० [सं०] पाला, कुहरा। हिम, बरफ। चाँदनी। शीतलता। **तुहिनांशु**—पु० चद्रमा। **तुहिनाचल**—पु० हिमालय।

तूँ—सर्व० दे० 'तू'।

तूँबा—पु० कडुआ गोल कद्दू, तितलौकी। सूखे कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन जिसे प्रायः साधु सत इस्तेमाल करते हैं या जो वीणा या सितार आदि बनाने के काम आता है। कमडल। ⊙**फेरी**=इधर की चीज उधर करना, एक की चीज दूसरे को देना हेरा फेरी। **तूँबी**—स्त्री० कडुआ गोल कद्दू। सूखे कद्दू का खोखला करके बनाया हुआ बरतन।

तू—सर्व० मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम। यह शब्द ईश्वर के लिये प्रयुक्त होता है। मनुष्य के लिये अशिष्ट या अपमानसूचक समझा जाता है। मु०~**तड़ाक**, ~**पुकार या**~~**मैं मैं करना**=अशिष्ट शब्दो मे विवाद करना।

तूख—पु० तिनके का टुकडा, सीक।

तूटनाⓟ—अक० दे० 'टूटना'।

तूठनाⓟ—अक० सतुष्ट होना, तृप्त होना। प्रसन्न होना।

तूण—पु० [सं०] तीर रखने का चोगा, तरकश। चामर नामक वर्णवृत्त जिसमे रगण, जगण, रगण, जगण और अत्य रगण के क्रम से कुल १५ अक्षर होते हैं।

तूणीर—पु० [सं०] तूण, तरकश।

तूत—पु० [फा०] मझोले आकार का एक पेड जिसके गोल दानेदार छोटे लच्छे के आकार के फल खाने मे स्वादिष्ट और मीठे होते हैं, शहतूत।

तूतिया—पु० दे० 'नीला थोथा'।

तूती—स्त्री० [फा०] छोटी जाति का तोता। कनेरी नाम की छोटी सुदर चिडिया, मटमैले रग की एक छोटी चिडिया जो बहुत मधुर बोलती है, मैना। मुँह से बजाने का एक छोटा बाजा। मु०—**किसी की ~बोलना**=किसी की खूब चलती होना या प्रभाव जमना। **नक्कारखाने में~की आवाज कौन सुनता है**=भीड भाड़ या शोरगुल में कही हुई बात नही सुनाई पडती, बडे लोगो के सामने छोटो की बात कोई नही सुनत।

तूदा—पु० [फा०] राशि, ढेर। सीमा का चिह्न, हदवदी। मिट्टी का वह टीला जिसपर निशाना लगाना सीखा जाता है।

तून—पु० तुन का पेड। तूल नाम का लाल कपडा। दे० 'तूण'। **तूनीर**—पु० दे० 'तूणीर'।

तूना—अक० दे० 'तुअना'।

तूफान—पु० [अ०] ऐसा अधड जिसमे खूब धूल उडे, पानी बरसे और अधेरा छा जाय। डुबानेवाली बाढ, समुद्री आँधी। आफत, उत्पात। हल्ला गुल्ला। झगडा बखेडा, दगा फसाद। झूठा दोषारोपण। **तूफानी**—वि० [फा०] बखेड़ा करनेवाला, उपद्रवी, फसादी। झूठा कलक लगानेवाला। उग्र, प्रचड।

तूमड़ी—स्त्री० तूँबी। तूँबी का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाया करते हैं।

तूमना—सक० रुई के गाले के सटे हुए रेशों को कुछ अलग अलग करना, उधेडना। धज्जी धज्जी करना। हाथ से मसलना।

तूमार—पु० [अ०] बात का व्यर्थ विस्तार, बात का बतगड।

तूर—पु० [सं० तूर (=तूर्य)] नगाड़ा। तुरही।

तूरजⓟ—पु० दे० 'तूर्य'।

तूरण, तूरन—क्रि० वि० दे० 'तूर्ण'।

तूरनाⓟ—पु० तुरही। †सक० दे० 'तोड़ना'।

तूरा—पु० दे० 'तुरही'।

तूरान—पु० [फा०] वर्तमान ईरान (देश) के उत्तरपूर्व का मध्य एशिया का भूभाग जो तुर्क, तातारी, मुगल आदि जातियो का निवासस्थान था। **तूरानी**—वि० तूरान देश का। पु० तूरान देश का निवासी।

तूर्ण—क्रि० वि० [सं०] शीघ्र, जल्दी।

तूल—पु० [सं०] आकाश। शहतूत। कपास, मदार, सेमर आदि के डोडे के भीतर का घूआ, रुई। चटकोले लाल रग का सूती

कपडा। गहरा लाल रग। ⓟ वि० [हिं०] तुल्य, समान। पु० [अ०] लबाई विस्तार। ⊙कलाम = पु० लबी चौडी बातें। कहासुनी। ⊙तवील = वि० लबा चौडा। मु० खींचना या पकडना = किसी बात का बहुत बढ जाना।

तूलना—सक० पहिए की धुरी मे तेल या चिकना देना।

तूलमतूल—क्रि० वि० आमने सामने।

तूला—स्त्री० [स०] कपास।

तूलिका, तूली—स्त्री० [स०] तसवीर बनाने-

तूष्णी—वि० [स० तूष्णीम्] मौन, चुप। स्त्री० खामोशी।

तूस—पु० भूसी, भूसा एक प्रकार का बहुत उत्तम, बारीक और मुलायम ऊन जिससे दुशाले, शाल आदि बनते हैं, पशमीना। तूस के ऊन का जमाया हुआ कबल, ओढना, चादर या नमदा। ⊙शाह = तूस का बना हुआ बहुत नफीस और गरम ओढना या दुहरी चादर।

तूसदान—पु० कारतूस।

तूसनाⓟ—सक० सतुष्ट करना। प्रसन्न करना। अक० सतुष्ट वा तृप्त होना।

तृखा—स्त्री० दे० 'तृषा'।

तृजगⓟ—वि० दे० 'तिर्यक्'।

तृण—पुं० [सं०] वह उद्भिद् जिसकी पेडी मे छिलके और हीर का भेद नहीं होता और जिसकी पत्तियो के भीतर केवल लबाई के बल नसें होती है, जैसे—कुश, दूब, सरपत, बाँस, घास। ⊙धान्य = पुं० तिन्नी का चावल। सावाँ, कोदो आदि मोटे अन्न। ⊙मय = वि० घास का बना हुआ। ⊙शय्या = स्त्री० चटाई। **तृणावर्त्त**—पु० बवडर, बवडर। एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था। मु०~ गहना या पकडना = हीनता प्रकट करना, गिडगिडाना। ~गहाना या पकड़ाना = विनीत करना, वशीभूत करना। (किसी वस्तु पर) ~टूटना = किसी वस्तु का इतना सुदर होना कि उसे नजर से बचाने के लिये उपाय करना पडे। ~तोडना = किसी सुदर वस्तु को देखकर उसे नजर से बचाने के लिये उपाय करना। सबध तोडना। ⊙वत् = अत्यत तुच्छ, कुछ भी नहीं।

तृतीय—वि० [सं०] तीसरा। **तृतीयांश**—पु० तीसरा भाग। **तृतीया**—स्त्री० प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन, तीज। सस्कृत व्याकरण मे करण कारक या तीसरी विभक्ति।

तृनⓟ—पु० दे० 'तृण'।

तृपतिⓟ†—स्त्री० दे० 'तृप्ति'।

तृपित—वि० दे० 'तृप्त'।

तृप्त—वि० [सं०] जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो, तुष्ट। प्रसन्न। **तृप्ति**—स्त्री० इच्छा पूरी होने से प्राप्त शाति और आनद, सतोष। प्रसन्नता।

तृषा—स्त्री० [स०] प्यास। इच्छा, अभिलाषा। लालच। **तृषित**—वि० प्यासा। अभिलाषी, इच्छुक। **तृष्णा**—स्त्री० प्राप्ति के लिये आकुल करनेवाली इच्छा, लोभ। प्यास।

तेंⓟ—प्रत्य० से, द्वारा। से (अधिक)। (किसी काल या स्थान) से।

तेंद—पु० दे० 'तेंदू'। **तेंदु**—पु० दे० 'तेंदू'। **तेंदू**—पु० मझोले आकार का एक वृक्ष। इसकी लकडी आबनूस के नाम से बिकती है। इस पेड का फल, जो खाया जाता है।

तेंदुआ—पु० दक्षिणी एशिया और अफ्रीका मे पाया जानेवाला खूँखार और मासाहारी जानवर जिसके चमडे पर मटमैले और भूरे रग के धब्बे या चित्तियाँ पड़ी रहती हैं।

ते—अव्य० दे० 'तें'। सर्व० वे, वे लोग। **तेउ**ⓟ—सर्व० वे भी, वे लोग भी। पु० दे० 'तेज'। **तेऊ**—सर्व० वे भी, वे लोग भी।

तेखनाⓟ†—अक० बिगडना, क्रुद्ध होना।

तेग—स्त्री० [अ०] तलवार, खड्ग। **तेगा**—पु० [हिं०] तेग, खाँडा। दरवाजे को पत्थर, मिट्टी इत्यादि से बंद करने की क्रिया।

तेज—पु० [सं० तेजस्] काति, चमक ज्योति। पराक्रम, जोर। वीर्य सारभाग, तत्त्व। ताप, गरमी पित्त। सोना। उग्रता, प्रचंडता

प्रताप,रोब दाब। सत्व गुण से उत्पन्न लिंग-शरीर। पाँच महाभूतो मे से तीसरे (अग्नि) का गुण, स्वभाव या धर्म। अग्नि। वि० [फा०] जिसकी धार पैनी हो। चलने मे शीघ्रगामी। चटपट काम करनेवाला, फुरतीला। तीक्ष्ण, तीखा। महँगा। उग्र, प्रचंड। चटपट अधिक प्रभाव डालनेवाला। जिसकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण हो। ⊙पत्ता = पु० [हिं०] दारचीनी की जाति का एक पेड। इसकी पत्तियाँ सुगधित होने के कारण दाल, तरकारी आदि मे मसाले की तरह डाली जाती हैं। ⊙पत्र = पुं० [स०] दे० 'तेजपत्ता'। ⊙पात = पु० [हिं०] दे० 'तेजपत्ता'। ⊙मान, ⊙वत = वि० [हिं०] दे० 'तेजवान्'। ⊙वान् = वि० [सं०तेजोवान्] तेजस्वी। वीर्यवान्। बली, ताकतवाला। चमकीला।

तेजना(पु)—सक० दे० 'तजना'।

तेजस्—पु० [स०] दे० 'तेज'। **तेजस्विता**—स्त्री० [सं०] तेजस्वी होने का भाव। **तेजस्वी**—वि० [स०] कातिमान्, तेजयुक्त। प्रतापी, प्रभावशाली।

तेजसी(पु)—वि० तेजयुक्त।

तेजाब—पु० [फा०] तरल अथवा रवेदार रासायनिक द्रव्य जो प्राय. गलानेवाला और खट्टा होता है, अम्ल।

तेजी—स्त्री० [फा०] तेज होने का भाव। तीव्रता, प्रबलता। प्रचंडता। शीघ्रता। महँगी, 'मदी' का उलटा।

तेजो—पु० [समास मे सं० तेजस् के लिये] दे० 'तेज'। ⊙मंडल = पु० सूर्य और चंद्रमा के चारो ओर का मडल, छटा-मडल। चित्र मे देवी-देवताओ, अवतारो और महापुरुषो के मुख मडल के चारो ओर दिखाई जानेवाली तेजोराशि, प्रभामडल। ⊙मय = वि० बहुत आभा, काति या ज्योतिवाला, दीप्तिमान। ⊙वान = वि० दे० 'तेजवान्'। ⊙हत = वि० जिसका तेज नष्ट हो गया हो।

तेतना†—वि० दे० 'तितना'। **तेता**†—वि० पु०उतना, उसी प्रमाण का। **तेतिक**(पु)†—वि० उतना। **तेतो**(पु)†—वि० दे० 'तेता'।

तेरस—स्त्री० किसी पक्ष की १३वी तिथि, त्रयोदशी।

तेरह—वि० दश और तीन। पुं० दस और तीन का जोड। **तेरहीं**—स्त्री० किसी के मरने के दिन से १३वी तिथि, जब ब्राह्मण भोजन कराके दाह करनेवाला, उसके निकट सगोत्री, सबधी और घर के लोग शुद्ध होते है।

तेरा—सर्व० (तुच्छता या छोटेपन के अर्थ मे) मध्यम पुरुष, एकवचन, सबध कारक, सर्वनाम 'तू' का सबध कारक रूप। मु०—तेरी सी = तेरे लाभ या मतलब की बात, तेरे अनुकूल बात। **तेरे**—अव्य० से। **तेरो**†—सर्व० दे० 'तेरा'।

तेल—पुं० वह चिकना तरल पदार्थ जो बीजो या वनस्पतियो आदि से अथवा जमीन के भीतर से निकाला जाता है। रोगन। जीव-जतुओ और पशुपक्षियो की चरबी (जैसे मछली का तेल)। विवाह से कुछ पहले की एक रस्म जिसमे वर और वधू को दूब से हरदी मिला हुआ तेल लगाया जाता है। मु०~उठना या चढना = विवाह से पहलेतेल की रस्म पूरी होना।

तेलगू—पु० तैलग देश की भाषा।

तेलहन—पुं० दे० 'तिलहन'।

तेलहा†—वि० पुं० जिसमे तेल हो। तेल मे पकाया हुआ। तेल सबधी।

तेला—पु० तीन दिनरात का उपवास।

तेलिन—स्त्री० तेल निकालने और बेचनेवाले की पत्नी। तेली जाति की स्त्री। एक बर-साती कीडा जिसके छू जाने से छाले पडते है।

तेलिया—वि० तेल की तरह चिकना और चम-कीला। तेल के से रगवाला। तेली का या तेली सबधी। पु० काला,चिकना और चम-कीला रग। इस रग का घोडा। एक प्रकार का बबूल। सींगिया नामक विष। ⊙कद = पु० एक प्रकार का कद। यह जहाँ होता है वहाँ की भूमि तेल से सींची हुई जान पडती है। ⊙कुमैत = पुं० घोडे का एक रग जो अधिक काला या कुमैत

होता है। ⊙पखान = पुं० एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर। ⊙सुरंग = पुं० दे० 'तेलिया कुमैत'।

तेली—पु० हिंदुओं की एक जाति जो सरसों आदि पेरकर तेल निकालने का व्यवसाय करती है। मु०~का बैल = हर समय काम मे लगा रहनेवाला व्यक्ति।

तेवन†—पुं० नजरबाग। आमोद प्रमोद और क्रीडा का स्थान या वन। क्रीडा।

तेवर—पुं० कुपित दृष्टि। भौंह। मु०~चढ़ना = दृष्टि का ऐसा हो जाना जिससे क्रोध प्रकट हो।~बदलना या बिगड़ना = बेमुरौवत हो जाना। खफा हो जाना।

तेवाना(पु)†—अक० सोचना, चिंता करना।

तेह(पु)†—पु० क्रोध। अहकार, ताव। तेजी, प्रचडता। तेहा—पु०गुस्सा। शेखी, घमड। तेही—पु०क्रोधी। अभिमानी। दे०'तेहिं'।

तेहरा—वि० दे० 'तिहरा'। ⊙ना = सक० किसी काम को (बिलकुल ठीक करने के लिये) तीसरी बार करना।

तेहवार—पु० दे० 'त्योहार'।

तेहिं(पु)†—सर्व० उसको, उसे।

तैं(पु)—अव्य० से। सर्व० तू। (पु)तूने।

तै†—क्रि० वि० उतना, उस मात्रा का। पु० [अ०] फैसला, निश्चय। पूर्ति, पूरा करना। वि० जिसका निपटारा या फैसला हो चुका हो। जो पूरा हो चुका हो। ⊙तमाम = अत, समाप्ति, फैसला।

तैजस—पु० [सं०] कोई चमकीला पदार्थ। घी। पराक्रमी। भगवान्। वह शारीरिक शक्ति जो आहार को रस तथा रस को धातु मे परिणत करती है। राजस अवस्था मे प्राप्त अहकार। वि० तेज से उत्पन्न, तेज सवधी।

तैत्तिर—पुं० [सं०] तीतर।

तैत्तिरीय—स्त्री० [सं०] कृष्ण यजुर्वेद की ८६ शाखाओं मे मे एक, जो तित्तिरि नामक ऋषि द्वारा कथित है। इस शाखा का उपनिषद्। तैत्तिरीयारण्यक—पुं० तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक अंश जिसमे वानप्रस्थो के लिये उपदेश है।

तैनात—वि० [अ० तअय्युन का बहु० तअय्युनात] किसी काम पर लगाया या नियत किया हुआ, मुकर्रर।

तैयार—वि० [अ०] जो काम मे आने के लिये बिलकुल उपयुक्त हो गया हो, ठीक, लैस। उद्यत, तत्पर। उपस्थित, मौजूद। हृष्ट पुष्ट। मु०—हाथ~होना = कला आदि मे हाथ का बहुत अभ्यस्त और कुशल होना। तैयारी—सं०[हिं०] तैयार होने की क्रिया या भाव, दुरुस्ती। तत्परता। निपुणता। शरीर की पुष्टता, मोटाई। प्रबध आदि के संबध की धूमधाम। सजावट।

तैरना—अक० पानी के ऊपर ठहरना, उतराना। हाथ पैर या और कोई अग हिलाकर पानी पर चलना, पैरना। तैराई—स्त्री० तैरने की क्रिया या भाव। तैराक—वि० जो अच्छी तरह तैरना जानता हो। तैराना—सक० [तैरना का प्रे०] दूसरे को तैरने मे प्रवृत्त या शिक्षित करना। धँसाना, धँसाना।

तैलंगी—पु० तैलग प्रदेश का रहनेवाला। स्त्री० तैलग देश की भाषा, तेलगू।

तैल—पु० [सं०] तेल, चिकना। ⊙कार = पुं०दे० 'तेली'। ⊙चित्र = पु०एक प्रकार का चित्र जो प्राय मोटे कपडे आदि पर तेल मिले हुए रगो से बनाया जाता है और बहुत टिकाऊ होता है। तैलाक्त—वि० जिसमे तेल लगा हो, तेल से तर। तैलाभ्यग—पु० तेल की मालिश।

तैश—पुं० [अ०] आवेशयुक्त, क्रोध, ताव।

तैसा—वि० उस प्रकार का ('वैसा' का पुराना रूप)। तैसे—क्रि० वि० दे० 'वैसे'।

तों(पु)†—क्रि० वि० दे० 'त्यों'।

तोअर(पु)†—पु० दे० 'तोमर'।

तोद—स्त्री० पेट का आगे का बढा हुआ भाग, पेट का फुलाव। तोदल—वि० तोदवाला।

तो(पु)—सर्व० तेरा। अव्य० उस दशा मे, तब। (प्राय. यदि के साथ) तथापि। एक अव्यय। जिसका व्यवहार किसी शब्द पर

जोर देने के लिये अथवा कभी कभी यो ही किया जाता है (जैसे, यही तो मै भी कहता हूँ, वही तो समझना है, आदि)। (पु)†सर्व० 'तू' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के समय प्राप्त होता है, तुझ (व्रज)।

तोइ(पु)†—पु० पानी, जल।

तोई—स्त्री० मगजी, गोट।

तोका†—सर्व० तुमको। तुम्हारा। तुम्हारे लिये।

तोकूं, तोकों—सर्व० तुझको। तुम्हारे लिये।

तोख(पु)†—पु० दे० 'तोष'।

तोटक—पु० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसमे चार सगणो के क्रम से कुल १२ अक्षर होते है।

तोटका—पु० दे० 'टोटका'।

तोड़—पु० तोडने की क्रिया या भाव, जैसे तोड फोड। नदी आदि के जल का तेज बहाव। कुश्ती मे किसी दाँव से बचने के लिये किया हुआ दाँव या पेच, काट। किसी प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला पदार्थ या कार्य। मारक। बार, दफा। मोड़, जोड। दही का पानी। ⊙क = वि० तोडनेवाला। ⊙ना = सक० (आघात या झटके से किसी पदार्थ के) टुकडे करना। किसी वस्तु के अग का अथवा उसमे लगी हुई किसी दूसरी वस्तु को किसी प्रकार अलग करना। किसी वस्तु का कोई अंग किसी प्रकार खडित, भग्न या बेकाम करना। खेत मे हल जोतना। सेंध लगाना। क्षीण, दुर्बल या अशक्त करना। किसी संघटन, व्यवस्था या कार्य-क्षेत्र आदि को न रहने देना अथवा नष्ट कर देना। निश्चय के विरुद्ध आचरण करना अथवा नियम का उल्लघन करना। मिटा देना, बना न रहने देना।

तोडर—पु० दे० 'तोडा'।

तोड़ा—पु० सोने, चाँदी आदि की लच्छेदार और चौडी जजीर या सिकडी जो हाथो या गले मे पहनी जाती है। रुपये रखने की टाट आदि की थैली जिसमे १०००) आते हैं। नदी का किनारा, तट। नदी के सगम पर बालू, मिट्टी आदि का मैदान। घाटा, टोटा, कमी। नाच का एक टुकड़ा। मु० ~उलटना या ~गिनना = बहुत सा द्रव्य होना।

तोण(पु)†—पुं० तरकश, बाण रखने का थैला।

तोत†—पुं० ढेर, समूह।

तोतई—वि० तोते के रग का, धानी।

तोतक—पुं० पपीहा।

तोतराना(पु)—अक० दे० 'तुतलाना'।

तोतला—वि० वह जो तुतलाकर बोलता हो। जो स्पष्ट उच्चारण न कर सके।

तोता—पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध पक्षी जिसके शरीर का रग हरा और चोच लाल होती है। यह आदमियो की बोली की बहुत अच्छी तरह नकल करता है जिसके लिये इसे लोग पालते है, सुग्गा। बदूक का घोडा। ⊙चश्म = वि० तोते की तरह आँखें फेर लेनेवाला, बेमुरौवत। मु० ~पालना = किसी दोष, दुर्व्यसन या रोग को जान बूझकर बढाना। तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना = बहुत बेमुरौवत होना। हाथो के तोते उड़ जाना = बहुत घबरा जाना, सिटपिटा जाना।

तोदन—पुं० [सं०] चाबुक, चमोटी आदि। व्यथा, पीड़ा।

तोप—स्त्री० [अ०] लोहे का नलीदार बहुत बडा अस्त्र जो प्राय दो या चार पहियो की गाडी से एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाया जाता है और जिसमे गोले रख-कर बारूद की शक्ति से शत्रुओ पर चलाए जाते है। ⊙खाना = पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ तोपे और उनका कुछ सामान रहता हो। युद्ध के लिये सुसज्जित चार से आठ तोपो तक का समूह। तोप चलानेवाले सैनिको का दल। ⊙ची = पुं० [फा०] तोप चलानेवाला, गोलदाज। मु०~कीलना = तोप की नाली मे लकडी का कुदा खूब कसकर ठोक देना जिसमे उसमे से गोला न चलाया जा सके। ~की सलामी उतारना = किसी प्रसिद्ध पुरुष के आगमन पर अथवा किसी महत्व-पूर्ण घटना के समय बिना गोले तोप मे बारूद भरकर आग लगाकर शब्द करना।

तोपना†—सक० ढकना।

तोपा—पुं० एक टाँके मे की हुई सिलाई।

तोफा†—वि० पुं० दे० 'तोहफा'।

तोबड़ा—पुं० चमड़े या टाट आदि की वह थैली जिसमे दाना भरकर घोड़े को खिलाते हैं। मु०~चढाना = बोलने से रोकना।

तोबा—स्त्री० किसी अनुचित कार्य को भविष्य मे न करने की शपथपूर्वक दृढ प्रतिज्ञा। पश्चात्ताप, प्रायश्चित्त। मु०~तिल्ला करना या~तिल्ला मचाना = रोते, चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए तोबा करना।~बुलवाना = पूर्णरूप से परास्त करना।

तोम—पुं० समूह, ढेर।

तोमर—पुं० [सं०] एक प्रकार का पुराना अस्त्र जिसमे लकडी के डडे मे आगे की ओर लोहे का बडा फल लगा रहता था, बर्छा। एक प्रकार का छद जिसका लक्षण प्राचीन ग्रथो मे 'सज जाहि तोमर जान, मिलता है। किंतु तुलसीदास जी ने तोमर को शुद्ध मात्रिक छद माना है जिसमे कुल १२ मात्राएँ होती हैं और अत मे गुरु लघु का क्रम रहता है। एक प्राचीन देश का नाम या उस देश का निवासी। राजपूत क्षत्रियो का एक प्राचीन राजवश।

तोय—पुं० [सं०] जल, पानी। ⊙धर = पुं० मेघ। मोथा। ⊙धारा = स्त्री० पानी की धारा। ⊙धि, ⊙निधि = पुं० समुद्र।

तोर(पु)†—पु० दे० 'तोड'। (पु)†—वि० दे० 'तेरा'। ⊙ना = दे० 'तोडना'।

तोरई—स्त्री० दे० 'तुरई'।

तोरण—पु० [सं०] घर या नगर का बाहरी फाटक। सजावट के लिये निर्मित पत्तियो आदि की माला, वदनवार।

तोरन(पु)†—पुं० दे० 'तोरण'।

तोरा(पु)†—सर्व० दे० 'तेरा'।

तोरावान्(पु)†—वि० वेगवान्, तेज।

तोरी—स्त्री० दे० 'तुरई'। †सर्व० स्त्री० तेरी, तुम्हारी।

तोल—पु०, स्त्री० पदार्थ के गुरुत्व का परिमाण, वजन। तोलने की क्रिया या भाव। ⊙ना = सक० पदार्थ का गुरुत्व जानने के लिये उसे तराजू पर रखना, वजन करना। अस्त्र आदि को लक्ष्य पर पहुँचाने के लिये हाथ को ठीक स्थिति में करना, साधना। मिलान करना।

तोलन—पु० [सं०] तोलने की क्रिया। उठाने की क्रिया।

तोला—पु० बारह माशे की तोल। इस तोल का बाट।

तोव(पु)—स्त्री० तोप। 'तहँ तबहि तोव तुगनि तडपि तत्तडात' ' (जगद्विनोद ७१०)।

तोशक—स्त्री० [तु०] खोल मे रुई आदि भरकर बनाया हुआ गुदगुदा बिछौना, हलका गद्दा।

तोशदान—पु० वह थैली आदि जिसमे मार्ग के लिये जलपान या दूसरी आवश्यक चीजें रखते हैं। चमडे की वह थैली जिसमें सिपाहियो का कारतूस रहता है।

तोशखाना—पुं० वह बडा कमरा या स्थान जहाँ राजाओ और अमीरो के पहनने के बढिया कपडे और गहने आदि रहते हैं।

तोष—पु० [सं०] संतोष, तृप्ति। प्रसन्नता, आनद। वि० अल्प, थोड़ा (अनेकार्थ)। ⊙क = वि० सतुष्ट करनेवाला। ⊙ना (पु) = सक० सतुष्ट या तृप्त करना। अक० सतुष्ट या तृप्त होना। तोषन (पु)—पुं० सतुष्ट करने की क्रिया या भाव।

तोषण—पुं० [सं०] तृप्ति, सतोष। सतुष्ट करने की क्रिया या भाव।

तोषित—वि० [सं०] तुष्ट, तृप्त।

तोस(पु)—पुं० दे० 'तोष'।

तोसल(पु)†—पु० दे० 'तोषल'।

तोसा(पु)†—पुं० दे० 'तोशा'।

तोसागार(पु)†—पुं० दे० 'तोशाखाना'।

तोहफगी—स्त्री० उत्तमता, अच्छापन।

तोहफा—पुं० [अ०] सौगात, उपहार।

तोहमत—स्त्री० [अ०] वृथा लगाया हुआ दोष।

तोहरा†—सर्व० दे० 'तुम्हारा'।

तोहि—सर्व० तुझको, तुझे।

तौंकना—अक० दे० 'तौंसना'।

तौंस†—स्त्री० वह प्यास जो धूप या ताव खा जाने के कारण लगे और जल्दी न बुझे। ⊙ना = अक० गरमी से झुलस जाना या व्याकुल होना।

तौंसा—पु० कड़ी गरमी, लपट।

तौ(पु)†—क्रि० वि० दे० 'तो'। अक० था।
तौक—पु० [अ०] हँसुली के आकार का गले मे पहनने का एक गहना। एक भारी घेरा जिसे अपराधी या पागल के गले मे पहना देते हैं। पक्षियो आदि के गले की गोल प्राकृतिक रेखा। पट्टा, चपरास। कोई गोल घेरा या पदार्थ।
तौन†—सर्व० वह, जो।
तौनी—स्त्री० रोटी सेकने का छोटा तवा।
तौफीक—स्त्री० [अ०] श्रद्धा। सामर्थ्य, शक्ति।
तौबा—स्त्री० [अ०] दे० 'तोबा'।
तौर—पुं० [अ०] चालढाल, चालचलन। ⊙तरीका = पुं० चालचलन। हालत, दशा। तरीका, ढग, तरह।
तौरात—पु० दे० 'तौरेत'
तौरि(पु)†—स्त्री० घुमेर, चक्कर।
तौरेत—पु० [इब्रा०] यहूदियो का प्रधान धर्म ग्रंथ जो हजरत मूसा पर प्रकट हुआ था।
तौल—पु० [सं०] तराजू। तुला राशि। दे० 'तोल'। ⊙ना = सक० [हि०] दे० 'तोलना'। तौला—[हि०] पु० अनाज तौलने वाला मनुष्य, तविया। तौलाना—सक० [हि०] [तौलना का प्रे०] तौलने का काम दूसरे से करना।
तौलिया—स्त्री० [अँ० टावेल] एक विशेष प्रकार का मोटा अँगोछा।
तौसना†—अक० गरमी से वहुत व्याकुल होना, जलना। सक० गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना, जलाना।
तौहीन—स्त्री० [अ०] अपमान, वेइज्जती। तौहीनी(पु)†—स्त्री० दे० 'तौहीन'।
त्यक्त—वि० [सं०] त्यागा हुआ।
त्यजन—पु० [सं०] छोडने का काम, त्याग।
त्याग—पु० [सं०] किसी पदार्थ पर से अपना स्वत्व हटा लेने अथवा उसे अपने पास से अलग करने की क्रिया। किसी को छोडने अथवा किसी से दूर रहने या होने की क्रिया। संवध या लगाव आदि न रखने की क्रिया। खेद, ग्लानि, विरक्ति के कारण सासारिक विषयो (जैसे पद, प्रतिष्ठा, नौकरी, कामधधा, व्यवसाय, व्यापार, गृह, कुटुव, धन, सपत्ति आदि) और पदार्थो को छोड़ने की क्रिया। व्याह के समय दिया जानेवाला दान। अपनी इच्छा से किसी को कुछ देकर या किसी के लिये कोई वडा काम करके स्वय कष्ट उठाने की क्रिया। परोपकार, दान। ⊙पत्र = वह पत्र जिसमे किसी प्रकार के त्याग का उल्लेख हो। इस्तीफा। ⊙ना = सक० [हि०] त्याग करना, सवधविच्छेद करना। त्यागी—वि० स्वार्थ या सासारिक सुखो को छोडनेवाला, विरक्त।
त्यागना(पु)†—सक० दे० 'त्यागना'।
त्याज्य—वि० [सं०] त्यागने योग्य।
त्यार†—वि० दे० 'तैयार'।
त्यूं†—क्रि० वि० दे० 'त्यो'।
त्यो—क्रि० वि० उस प्रकार, उस तरह। उसी समय। अव्य० तरफ, ओर।
त्योरस†, त्योरूस†—पु० पिछला या अगला तीसरा वर्ष।
त्योराना(पु)—अक० सिर घूमना।
त्योरी—स्त्री अवलोकन, चितवन, दृष्टि। मु०~चढ़ना या बदलना = दृष्टि का ऐसा हो जाना जिससे क्रोध झलके, आँखे चढना। ~में वल पड़ना = त्योरी चढना।
त्योहार—पु० वह दिन जिसमे कोई वडा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाय, पर्व। त्योहारी—स्त्री० वह धन जो किसी त्योहार के उपलक्ष्य मे छोटो, लड़को आश्रितो या नौकरो आदि को दिया जाता है।
त्यों—क्रि० वि० दे० 'त्यो'।
त्यौनार—पु० ढग, तर्ज।
त्यौर—पु० दे० 'त्योरी'।
त्रपा—स्त्री० [सं०] लज्जा, शर्म। छिनाल स्त्री, पुश्चली। यश। (पु)वि० लज्जित।
त्रय—वि० [सं०] तीन। तीसरा। त्रयी—तीन वस्तुओ का समूह या एकता, तिगड्ड। ऋक्, यजु और सामवेद। ऋक्, साम और यजुर्वेद मे, प्रतिपादित धर्म। एक शब्द जिसे किसी दूसरे शब्द के अत मे जोडने से उसी कोटि की तीन वस्तुओ या विषयो का बोध होता है, (जैसे—वेदत्रयी =

अथर्ववेद के अतिरिक्त तीनो वेद । लोकत्रयी = स्वर्ग, मृत्यलोक और पाताल। देवत्रयी = ब्रह्मा, विष्णु और शिव । वर्णत्रयी = ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य । कालत्रयी = भूत, भविष्य और वर्तमान । बृहत्त्रयी = तीन बड़े काव्यो या वस्तुओ का समूह। लघुत्रयी = तीन छोटे काव्यो या वस्तुओ का समूह) । **त्रयीतनु** = पु० तीन वेदो रूपी शरीरवाला, सूर्य । **त्रयीधर्म** = पु० तीनो वेदो मे विहित धर्म, कर्मकाड आदि । **त्रयीमय** = पु० तीनो वेदो को धारण करनेवाला, सूर्य । **त्रयीमुख** = पु० तीनो वेदो का मुँह ब्राह्मण। **त्रयोदशी**-स्त्री० किसी पक्षकी १३ वी तिथि, तेरस ।

त्रष्टा—पु० दे० 'तष्टा' ।

त्रसन—पु० [सं०] भय, डर । उद्वेग ।

त्रसना—(पु)†—अक० भय से कॉप उठना, डरना ।

त्रसरेणु—पु० [सं०] वह चमकता हुआ कण जो छेद मे से आती हुई धूप मे नाचता या घूमता दिखाई देता है, सूक्ष्म कण ।

त्रसाना(पु)—सक० [अक० त्रसना] डराना, धमकाना ।

त्रसित(पु)—वि० भयभीत, डरा हुआ। सताया हुआ ।

त्रस्त—वि० [सं०] भयभीत । पीडित । घबराया हुआ ।

त्राटक—पु० [सं०] दे० 'त्राटिका' । **त्राटिका**—स्त्री० योग की एक मुद्रा ।

त्राण—पु० [सं०] रक्षा, बचाव । रक्षा का साधन । कवच ।

त्राता—पु० [सं०] रक्षक, बचानेवाला ।

त्रातार—पु० दे० 'त्राता' ।

त्रायमाण—पु० [सं०] बनफशे की तरह की एक लता । वि० रक्षक । रक्षित होता हुआ। रक्षा करता हुआ ।

त्रास—पु० [सं०] डर । कष्ट, तकलीफ। ⊙**क** = पु० डरानेवाला, भयभीत करने वाला। निवारक, दूर करनेवाला। ⊙**ना**(पु)† = सक० डराना, त्रास देना। ⊙**मान**= वि० [हिं०] भीत, त्रस्त । **त्रासिक**—वि० दे० 'त्रस्त' ।

त्राहि—अव्य [सं०] बचाओ, रक्षा करो ।

त्रि—वि० [सं०] तीन (समास मे, जैसे—त्रिकाल, त्रिमूर्ति, त्रिलोक आदि) । ⊙**क** = पु० तीन का समूह। रीढ के नीचे का वह भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती है। कमर। त्रिफला। त्रिकुटा। **ककुद्** = पु० त्रिकूट पर्वत । विष्णु । वि० जिसके तीन शृग हो । ⊙**कटु**, ⊙**कटुक** = पु० सोठ, मिर्च और पीपल इन तीन कटु वस्तुओ का योग । ⊙**कल** = पु० तीन मात्राओ का शब्द, प्लुत । दोहे का एक भेद जिसके आदि मे त्रिकल के बाद त्रिकल रहता है । वि० जिसमे तीन कलाएँ हो । ⊙**कांड** = पु० तीन भाग या हिस्सोवाला। कोश, निरुक्त। बाण। वि० जिसमे तीन काड हो। ⊙**काल** = पु० तीनो समय—भूत, वर्तमान और भविष्य । तीनो समय—प्रात, मध्याह्न और साय। ⊙**कालज्ञ** = पु० (विशेषत ऋषियो और मुनियो के लिये) भूत, भविष्य और वर्तमान तीनो को जाननेवाला, सर्वज्ञ। दैवज्ञ फलित ज्योतिष से भूत और भविष्य बतानेवाला। सामुद्रिक । ⊙**कालदर्शक** = वि० दे० 'त्रिकालज्ञ' । ⊙**कालदर्शी** = पु० दे० 'त्रिकालज्ञ' । ⊙**कुटा** = पु० सोठ, मिर्च और पीपल (छोटी) का मेल । दवा के लिये बना हुआ इनका चूर्ण । ⊙**कुटी** = स्त्री० दोनो भौंहो के बीच के ऊपर का स्थान। इस स्थान पर जमाई दृष्टि । ⊙**कूट** = पु० वह पर्वत जिसपर रावण की लका बसी हुई मानी जाती थी। एक कल्पित पर्वत जो सुमेरु पर्वत का पुत्र माना जाता है। योग मे बताए हुए शरीर के भीतर के छह चक्रो मे से एक। एक पर्वत जो सुमेरु पर्वत का पुत्र माना जाता है और जिसपर सिद्ध, देवर्षि आदि विहार करते हैं। ⊙**कोण** = पु० तीन कोने का क्षेत्र, त्रिभुज । तीन कानेवाली वस्तु । ⊙**कोणमिति** = स्त्री० गणित शास्त्र का वह विभाग जिसमे त्रिभुज के कोण, बाहु, वर्ग, विस्तार आदि का मान निकालने की रीति बतलाई जाती है। ⊙**गर्त** = पु० उत्तर भारत के उस प्रात का प्राचीन नाम जिसमे आजकल जाल-

घर और कांगड़ा आदि नगर हैं। ⊙गुण =पु० सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों का समूह। ⊙गुणातीत = वि० सत्व रज और तम तीनों गुणों से परे। अनासक्त, आत्मवान। निर्गुण ब्रह्म। वि० तीन गुना। ⊙ गुणात्मक = वि०, पु० सत्व, रज और तम गुणों से युक्त। ⊙जग = पु० तीनों लोक—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल। ⊙जट = पु० महादेव। ⊙जामा(पु)† = स्त्री० [हिं०] रात्रि। ⊙ज्या = स्त्री० वृत्त के केंद्र से परिधि तक की रेखा, व्यास की आधी रेखा। ⊙दंड = पु० सन्यास आश्रम के चिह्न-स्वरूप धारण किया जानेवाला बाँस का वह पतला डंडा जिसके सिरे पर दो छोटी (चार अंगुल की) लकड़ियाँ बँधी रहती हैं जिन्हें वाग्दंड, कामदंड, और मनोदंड का प्रतीक माना जाता है। ⊙दंडी = पु० त्रिदंडधारी सन्यासी। ⊙दल = तीन फांकोवाला। बिल्वपत्र। ⊙दश = पु० भूत, भविष्य और वर्तमान अथवा बचपन, जवानी और बुढ़ापा तीनों अवस्थाओं में एक सा रहनेवाला देवता। ⊙दशालय = पु० देवताओं का निवास-स्थान, स्वर्ग। सुमेरु पर्वत। ⊙दिव = पु० स्वर्ग। आकाश। ⊙देव = पु० ब्रह्मा, विष्णु और महेश। ⊙दोष = पु० वात, पित्त और कफ। सन्निपात रोग। काम, क्रोध और लोभ। ⊙धा = क्रि० वि० तीन तरह से, तीन रूपों में। वि० तीन तरह का, तीन रूपों का। ⊙धारा = स्त्री० तीन धारवाला सेहुँड, तिधार। गंगा। ⊙नयन = पु० महादेव। ⊙नेत्र = पु० महादेव। ⊙पथ = पु० आकाश (स्वर्ग), मृत्युलोक और पाताल। नरक रूपी तीनों रास्ते। कर्म, ज्ञान और उपासना नामक जीवन में आत्मलाभ के तीनों मार्ग। ⊙पथगा, ⊙पथगामिनी = स्त्री० स्वर्ग, नरक और मृत्युलोक तीनों में बहनेवाली (नदी), गंगा। ⊙पद = पु० तिपाई। त्रिभुज। वह जिसके तीन पद हों। ⊙पदा = स्त्री० वैदिक छंद का एक भेद। दे० 'त्रिपदी'। ⊙पदी = स्त्री० हंसपदी लता। तिपाई। गायत्री नामक वैदिक छंद जिसके तीन ही चरण होते हैं। ⊙पाठी = पु० तीन वेदों को पढ़ने या जाननेवाला पुरुष, त्रिवेदी। ब्राह्मणों की एक जाति, तिवारी। ⊙पिटक = पु० भगवान् बुद्ध के उपदेशों का संग्रह जो उनकी मृत्यु के उपरांत उनके शिष्यों और अनुयायियों ने समय समय पर किया है और जिसे बौद्ध अपना प्रधान धर्मग्रंथ मानते हैं। यह तीन भागों में, जिन्हें पिटक कहते हैं, विभक्त है। ये इस प्रकार हैं— सूत्रपिटक विनयपिटक और अभिधर्म-पिटक। ⊙पुंड = पु० [हिं०] शाक्तों और शैवों का भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का मस्तक पर लगाया जानेवाला तिलक। ⊙पुर = बाणासुर का एक नाम। तीनों लोक। चँदेरी नगर। वे तीनों नगर जो तारकासुर के तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली नाम के तीनों पुत्रों ने मय दानव से अपने लिये बनवाए थे। ⊙दहन = पु० महादेव। ⊙पुरा स्त्री० = कामाख्या देवी की एक मूर्ति। पूर्व बंगाल का एक प्राचीन हिस्सा। बंगाल का एक पुराना राज्य। ⊙पुरारि = पु० शिव। ⊙पुरासुर = पु० दे० 'त्रिपुर'। ⊙फला = स्त्री० आँवले, हड़ और बहेड़े का समूह। इनका दवा के लिये बनाया हुआ चूर्ण या अर्क। ⊙बली = स्त्री० वे तीन बल जो पेट पर पड़ते हैं। इनकी गणना स्त्री के सौंदर्य में होती है। (पु)बेनी = स्त्री० [हिं०] दे० 'त्रिवेणी'। ⊙भंग = वि० जिसमें तीन जगह बल पड़ते हों। तीन जगह मुड़ा हुआ। पु० खड़े होने की एक मुद्रा जिसमें जानु कमर और गरदन में कुछ टेढ़ापन रहता है।

⊙भंगी = वि० त्रिभग मुद्रावाला, तीन जगह से मुडा हुआ। पु० एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राएँ होती है और १०, ८, ८, ६ मात्राओ पर यति होती है। गणात्मक दडक का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे ६ नगण, २ सगण, भगण, मगण, सगण और अत मे एक गुरु होता है, अर्थात् कुल ३४ अक्षर होते है। ⊙भुज = पु० वह धरातल जो तीन भुजाओ या रेखाओ से घिरा हो। तीन भुजाओवाली वस्तु। ⊙भुवन = पु० तीनो लोक अर्थात् स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल। ⊙मात्रिक = वि० जिसमे तीन मात्राएँ हो, प्लुत। तीन मात्राओवाला छद। ⊙मूर्ति = पु० ब्रह्मा, विष्णु और शिव। सूर्य। ⊙यामा = स्त्री रात्रि। ⊙युग = पु० विष्णु। सत्ययुग, त्रेता और द्वापर ये तीनो युग। ⊙लोक = पु० स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनो लोक। ⊙लोकनाथ = पु० ईश्वर। राम। कृष्ण। शिव। ⊙लोकपति = पु० दे० 'त्रिलोकनाथ'। ⊙लोकी = स्त्री० दे० 'त्रिलोक'। ⊙लोचन = पु० शिव, महादेव। ⊙वर्ग = पु० तीन का समुदाय। धर्म, अर्थ और काम। त्रिफला। त्रिकुटा। सृष्टि, स्थिति और क्षय या प्रलय। सत्व, रज और तम। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। भूत, भविष्य, और वर्तमान। ⊙विध = वि० तीन प्रकार से ⊙वेणी = स्त्री० तीन नदियो का सगम। गगा, यमुना और सरस्वती का सगम स्थान जो प्रयाग मे है। इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाडियो का सगम स्थान (हठयोगी)। ⊙वेद = पु० ऋक्, यजु और साम—ये तीनो वेद। ⓟवेदी = पु० ऋक्, यजु और साम—इन तीनो वेदो को जाननेवाला। ब्राह्मणो का एक भेद, त्रिपाठी। ⊙शंकु = पु० बिल्ली। पतग, टिड्डी। पपीहा। जुगनूँ। एक पहाड। अयोध्या के एक सूर्यवशी राजा जिन्हें स्वर्ग जाने के प्रयत्न मे बीच ही मे लटके रहना पडा। एक नक्षत्र जिसे उक्त त्रिशकु बतलाया जाता है। ⓟशक्ति = स्त्री० इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी तीनो दैवी शक्तियाँ। काली, तारा और त्रिपुरा ये तीनो देवियाँ (तत्र)। प्रभाव, उत्साह और मत्र ये तीनो शक्तियाँ (राजनीति), महत्तत्व। गायत्री। ⊙शूल = पु० एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फन होते हैं विशेषत महादेव जी का अस्त्र। दैहिक, दैविक, भौतिक दुख। ⊙संगम = पु० तीन नदियो का सगम, त्रिवेणी। ⊙संध्य = पु० प्रात, मध्याह्न और साय ये तीनो सधिकाल। सूर्योदय से सूर्यास्त तक रहनेवाली तिथि जो बहुत शुभ मानी जाती है। ⊙सध्या = स्त्री० प्रात, मध्याह्न और साय ये तीनों सध्याएँ। ⓟस्थली = स्त्री० काशी, गया और प्रयाग ये तीन तीर्थस्थान जिन्हें बहुत पवित्र माना जाता है। ⊙स्रोता = स्त्री० तीन सोतो या धाराओवाली (नदी) गगा।

त्रिखाⓟ—स्त्री० दे० 'तृषा'।

त्रिजगⓟ‡—पु० पशु पक्षी तथा कीडे मकोडे, तिर्यक्।

त्रिणⓟ—पु० दे० 'तृण'।

त्रिदोषनाⓟ—अक० तीनो दोषो के कोप मे पडना। काम, क्रोध और लोभ के फदो मे पडना।

त्रिनⓟ†—पु० दे० 'तृण'।

त्रिपितानाा—अक० तृप्त होना, अघा जाना। सक० तृप्त या सतुष्ट करना।

त्रिय, त्रियाⓟ†—स्त्री० औरत। त्रियाचरित्र—पु० स्त्रियो का छल कपट जिसे पुरुष सहज मे नही समझ सकते।

त्रिषितⓟ—वि० दे० 'तृषित'।

त्रिष्टुभ—पु० [सं०] एक वैदिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ग्यारह अक्षर होते हैं। इद्रवज्रा, उपेंद्रवज्रा आदि छद इसी के विकास हैं।

त्रुटि—स्त्री [सं०] टूट, अपूर्णता। कमी, कसर। अभाव। भूल चूक। वचनभग। त्रुटित—वि० कटा या टूटा हुआ। घायल। त्रुटीⓟ—स्त्री दे० 'त्रुटि'।

त्रेतायुग—पुं० [सं०] चार युगो मे से दूसरा जो १२,९६,००० वर्ष का माना जाता है।

त्रै—त्रि० तीन (द्विगु समास के पूर्व पद के रूप में विशेषत प्रयुक्त) जैसे—त्रैगुण्य, त्रैमातुर, त्रैमासिक, त्रैविद्य आदि। ⊙कालिक=पु० तीनों कालों मे या सदा होनेवाला। ⊙गुण्य=पु० सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों का धर्म या भाव। ⊙मातुर=लक्ष्मण जिनसे कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा तीनो माता प्रसन्न रहा करती थी। ⊙मासिक=वि० हर तीसरे महीने होनेवाला, जो हर तीसरे महीने हो। प्रति तीसरे महीने प्रकाशित होनेवाला (पत्र या पत्रिका)। ⊙राशिक=पु० गणित की एक क्रिया जिसमे तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है (अं० 'रूल आफ् थ्री')। ⊙लोक्य=पु० स्वर्ग, मर्त्यलोक और पाताल ये तीनों लोक। २१ मात्राओ का छद। ⊙वर्णिक=पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों वर्णों के लोग। ⊙वार्षिक=वि० जो हर तीसरे वर्ष हो, तीन वर्ष सबंधी।

त्रोटक—पुं० [सं०] नाटक का एक भेद जिसमे ५, ७, ८ या ९ अक होते हैं। यह शृंगार-रसप्रधान होता है और इसका नायक कोई दिव्य मनुष्य होता है।

त्रोण—पु० [सं०] तूणीर, तरकश।

त्र्यंबक—पु० [सं०] शिव, महादेव। त्र्यंबका—स्त्री० दुर्गा।

त्वक्—पु० [सं०] छिलका, छाल। चमडा, खाल। पाँच ज्ञानेंद्रियो मे से स्पर्श से ज्ञान करानेवाली इद्रिय जो सारे शरीर को ढके रहती है, त्वगिंद्रिय।

त्वचकना(पु)—अक० वृद्धावस्था मे शरीर का चमडा झूलना, झुर्रियाँ पडना।

त्वचा—स्त्री० [सं०] शरीर पर का चमडा। छाल, वल्कल। साँप की केचुली।

त्वदीय—सर्व० [सं०] तुम्हारा।

त्वरा—स्त्री० [सं०] शीघ्रता, जल्दी। ⊙लेखन=पु० एक प्रकार के लेखन की क्रिया जिसमे अक्षरो के स्थान पर चिह्नो द्वारा शीघ्रता से लिखा जाता है, शीघ्रलिपि। ⊙वान्=वि० जल्दबाज। वेगवान्। त्वरित—क्रि० वि० तेजी से, जल्दी से, वेगपूर्वक। वि० शीघ्र, तेज। त्वरितगति—पु० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण, एक जगण फिर एक नगण और अत्य गुरु कुल १० वर्ण होते हैं। स्त्री० तेज या शीघ्र गति।

त्वष्टा—पु० [सं०] विष्णु। महादेव, शिव। एक प्रजापति का नाम। विश्वकर्मा। ११वें आदित्य। एक वैदिक देवता।

थ

थ—हिंदी वर्णमाला का १७वाँ व्यजन और तवर्ग का दूसरा अक्षर जिसका उच्चारणस्थान दाँत है।

थंडिल—पु० यज्ञ की वेदी। परिष्कृत भूमि। भूशय्या।

थंब—पु० दे० 'थभ'। थंभ—पु० खभा, स्तभ। सहारा, टेक। थंभन—पुं० रुकावट, ठहराव। दे० 'स्तभन'। थंभित—वि० रुका या ठहरा हुआ। अपनी जगह से न हटनेवाला। भय या आश्चर्य से निश्चल।

थंभना†—अक० दे० 'थमना'।

थकन—स्त्री० दे० 'थकान'। थकना—अक० परिश्रम करते करते शिथिल होना, क्लात होना। ऊब जाना, हैरान हो जाना। बुढापे से अशक्त होना। ढीला होना या रुक जाना, चलता न रहना। मोहित होना। थकान—स्त्री० थकावट, क्लाति। थकाना—सक०[अक० थकना] श्रात या शिथिल बनाना, परिश्रम से अशक्त बनाना। थकामाँदा—वि०परिश्रम करते करते अशक्त, श्रात। थकावट, थकाहट—स्त्री० थकने का भाव, शिथिलता। थकित—वि० थका हुआ। मोहित।

थकौहाँ†—वि० थका माँदा सा, शिथिल।

थक्का—पु० गाढी चीज की जमी हुई मोटी तह। जैसे, दही का थक्का। खून का थक्का।

थगित—वि० ठहरा हुआ, रुका हुआ। शिथिल। मद।

थति(पु)†—स्त्री० दे० 'थाती'।

थन—पुं० गाय, भैंस, बकरी इत्यादि मादा चौपायो का वह थैली जैसा अग जिसमे दूध होता है। इस अग का छीमी या फली के आकार का लटकता हुआ प्रत्यग। **थनी**—स्त्री० स्तन के आकार की दो थैलियाँ जो बकरियो के गले के नीचे लटकती हैं, गलथना। **थनेला, थनैल**—पुं० थन पर हुआ फोडा।

थनैत—पुं० गाँव का मुखिया। जमीदार की ओर से गाँव का लगान वसूल करनेवाला।

थपक—स्त्री० दे० 'थपकी'। ⊙**ना**=सक० प्यार से या आराम पहुँचाने के लिये किसी के शरीर पर धीरे धीरे हाथ मारना। धीरे धीरे ठोकना। पुचकारना या दम दिलासा देना। **थपकाना**—सक० [थपकना का प्रे०] थपकने का काम दूसरे से कराना। दे० 'थपकना'। **थपकी**—स्त्री० किसी के शरीर पर (प्यार से आराम पहुँचाने के लिये) हथेली से धीरे धीरे पहुँचाया हुआ आघात। हाथ से धीरे धीरे ठोकने की क्रिया।

थपका(पु)—पुं० दे० 'थक्का'।

थपड़ी—स्त्री० दे० 'थपोडी'।

थपथपाना—सक० (हथेली से) मद आघात करना, थपथप शब्दपूर्वक मारना। **थपथपी**—स्त्री० दे० 'थपकी'।

थपन(पु)—पु० ठहराने या जमाने का काम, स्थापन। **थपना**(पु)—सक० स्थापित करना, बैठाना, जमाना। अक० स्थापित होना।

थपा(पु)—पुं० साँचा। 'घडे थोपवे के थप। होत जैसे' (प्रताप० ५१)।

थपेड़ना—सक० थपेडा लगाना या मारना।

थपेड़ा—पुं० थप्पड। आघात, धक्का। झोका, तरगाघात।

थपोडी—स्त्री० करतलध्वनि, ताली।

थप्पड—पु० हथेली से किया हुआ आघात, तमाचा। आघात, धक्का।

थम(पु)—पुं० दे० 'स्तभ'। ⊙**कारी**(पु)—वि० स्तभन करनेवाला, रोकनेवाला।

थमना—अक० चलता न रहना, रुकना। ठहरना। जारी न रहना, बद हो जाना। धीरज रखना।

थर—स्त्री० तह, परत। पुं० दे० 'थल'। बाघ की माँद।

थरकना(पु)†—अक० डर से काँपना, थर्राना। **थरकौहाँ**—वि० काँपता या हिलता हुआ। **थरथर**—स्त्री० डर से काँपने की मुद्रा, प्रकप। क्रि० वि० काँपने की मुद्रा सहित, प्रकप के साथ। **थरथराना**—अक० डर के मारे काँपना। अत्यधिक काँपना। **थरथराहट, थरथरी**—स्त्री० कँपकपी।

थरसना(पु)—पुं० त्रस्त होना, भयभीत होना।

थरमामीटर—पुं० [अं०] ताप नापने का यत्र।

थरहरिया(पु)—वि० हिलनेवाला, स्थिर न रहनेवाला। 'परत न ढीले गति गुरबीले थरहरिया' (प्रताप० ६६)।

थरी—स्त्री० शेरो आदि की माँद। गुफा।

थरु(पु)—पुं० जगह, स्थान।

थर्राना—अक० डर के मारे काँपना, दहलना। भय से रोमाचित होना।

थल—पुं० स्थान, ठिकाना। सूखी धरती। थल का मार्ग। वह स्थान जहाँ बहुत सी रेत पड गई हो, रेगिस्तान। बाघ की माँद। ⊙**चर**=पु० पृथ्वी पर रहनेवाले जीव। ⊙**पति**=पुं० राजा। ⊙**रुह**(पु)=वि० धरती पर उत्पन्न होनेवाला। वनस्पति। मु०~**बैठना या~से बैठना**=आराम से बैठना। स्थिर होकर बैठना, शात भाव से बैठना।

थलकना—अक० झाल पडने के कारण ऊपर नीचे हिलना। मोटाई या ढीलेपन के कारण शरीर के मास का हिलने डोलने मे हिलना।

थलथल—वि० मोटाई के कारण झूलता या

हिलता हुआ। थलथलाना—अक० मोटाई के कारण शरीर के मास का झूलकर हिलना।
थली—स्त्री० स्थान, जगह। जल के नीचे का स्थल। ठहरने या बैठने की जगह, बैठक। बालू का मैदान।
थवई—पुं० मकान बनानेवाला कारीगर, राज।
थसरना(पु)†—अक० शिथिल होना।
थहना(पु)—सक० थाह लेना। छा जाना। 'चहुँ ओर ·· घर धूरिधारन के थहे' (हिम्मत० ८०)। थहाना—सक० गहराई आदि का पता लगाना, थाह लेना। विद्या या भीतरी अभिप्राय आदि का अंदाज करना।
थहराना†—अक० काँपना।
थाँग—स्त्री० चोरो या डाकुओं का गुप्त स्थान। खोज, पता। थाँगी—पुं० चोरी का माल मोल लेने या अपने पास रखनेवाला आदमी। चोरों को चोरी के लिये टिकाने आदि का पता देनेवाला मनुष्य। जासूस, भेदिया, चोरो के गोल का सरदार।
थाँवला—पु० थाला, आलवाल।
था—अक० 'है' का भूतार्थक रूप, रहा।
थाई(पु)—वि० दे० 'स्थायी भाव'।
थाक—पु० गाँव की सीमा। ढेर, समूह।
थाकना—अक० दे० 'थकना'।
थात(पु)—वि० जो बैठा या ठहरा हो, स्थित।
थाति—स्त्री० ठहराव, टिकान। दे० 'थाती'।
थाती—स्त्री० समय पर काम आने के लिये रखी हुई वस्तु। जमा पूँजी। धरोहर।
थान—पु० जगह, ठौर। निवासस्थान। किसी देवी या देवता का स्थान। वह स्थान जहाँ घोड़े या चौपाए बाँधे जायँ। कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा जिसकी लंबाई बँधी हुई होती है। संख्या, अदद।
थानक—पु० स्थान, जगह। नगर। थाँवला, आलवाल। फेन, बबूला।
थाना—पु० टिकने या बैठने का स्थान, अड्डा। पुलिस की बड़ी चौकी। बाँसो का समूह। थानेदार—पु० थाने का प्रधान अफसर।
थानुसुत(पु)—पु० गणेश जी। कार्तिकेय।
थानैत—पु० किसी चौकी या अड्डे का मालिक। किसी स्थान का देवता, ग्रामदेवता।
थाप—स्त्री० तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे का आघात। थप्पड़। निशान, छाप। स्थिति, जमाव। मर्यादा, धाक। मान, प्रमाण। पंचायत। शपथ। ⊙न = पु० स्थापित करने, जमाने या बैठाने की क्रिया। किसी स्थान पर प्रतिष्ठित करना, ⊙ना = स्त्री० स्थापना, प्रतिष्ठा। नवरात्र में दुर्गापूजा के लिये घटस्थापन। सक० स्थापित करना, जमाना, बैठाना। किसी गीली सामग्री को हाथ या साँचे से पीट अथवा दबाकर कुछ बनाना, जैसे, उपले थापना, ईंटें थापना।
थापर(पु)—पुं० दे० 'थप्पड़'।
थापा—पुं० हथेली तथा पंजे का छापा (हलदी, रंग आदि से)। खलिहान में अनाज की राशि पर गीली मिट्टी या गोबर से डाला हुआ चिह्न। वह साँचा जिसमें रंग आदि पोतकर कोई चिह्न अंकित किया जाय, छापा। ढेर, राशि।
थापी—स्त्री० वह चिपटी मुँगरी जिससे राज या कारीगर गच पीटते है।
थाम—पु० खंभा, स्तंभ। मस्तूल। स्त्री० थामने की क्रिया या ढंग, पकड़, रोक। ⊙ना = सक० किसी चलती हुई वस्तु को रोकना। गिरने, पड़ने या लुढ़कने आदि न देना। ग्रहण करना, हाथ में लेना। सहारा देना, सँभालना। अपने ऊपर कार्य का भार लेना।
थायी(पु)—वि० दे० 'स्थायी'।
थारा(पु)—पु० बड़ी थाली। 'थली थान थारान पै ज्यो थरक्कै' (प्रताप० ४०)।
थारो(पु)†—वि० तुम्हारा।
थाल—पु० बड़ी थाली।
थाला—पु० वह घेरा या गड्ढा जिसके भीतर पौधा लगाया जाता है, थावला।
थाली—स्त्री० विभिन्न धातुओं का वह बड़ा गोलाकार और छिछला बरतन जिसमें खाने के लिये भोजन रखा जाता है। मु०—का बैंगन = लाभ और हानि के

विचार से सदा पक्ष बदलता रहनेवाला, अवसरवादी।

थावर(पु)—वि० दे० 'स्थावर'।

थावस—स्त्री० स्थिरता, धीरज।

थाह—स्त्री० धरती का वह तल जिसपर पानी हो, गहराई का अत या हद। कम गहरा पानी जिसका अदाज मिल सके। गहराई का अदाज। अत, पार। कोई वस्तु कितनी या कहाँ तक है, इसका पता। ⊙ना = सक० थाह लेना, अदाज लेना।

थाहरा(पु)†—वि० जिसमे जल गहरा न हो, छिछला। जिसका पता या अदाज हो।

थियेटर—पु० [अँ०] रगभूमि। नाटक, अभिनय।

थिगली—स्त्री० वह टुकडा जो किसी फटे हुए कपडे आदि का छेद वद करने के लिये लगाया जाय, पैवद। **मु०—वादल मे~लगाना** = असभव काम करना।

थित(पु)—वि० ठहरा हुआ। स्थापित, रखा हुआ। **थिति**—स्त्री० ठहराव, स्थायित्व। ठहरने का स्थान। रहाइश, रहन। वने रहने का भाव, रक्षा। अवस्था, दशा।

थिर—वि० स्थिर, न हिलने डोलनेवाला। शात, धीर। दृढ, टिकाऊ। ⊙ता, ⊙ताई = स्त्री० ठहराव, अचलत्व। स्थायित्व। धीरता। ⊙थानी = वि० एक जगह जमकर रहनेवाला। ⊙ना = अक० पानी या और किसी द्रव पदार्थ का हिलना-डोलना वद होना। जल के स्थिर होने के कारण उसमे घुली हुई वस्तु का तल मे वैठना। मैल आदि के नीचे वैठ जाने के कारण साफ चीज का जल के ऊपर रह जाना, नियरना।

थिरक—पुं० नृत्य मे चरणो की चचल गति। ⊙ना = अक० नाचने मे पैरो को क्षण क्षण पर उठाना और रखना। अग मटकाकर नाचना। **थिरकौहाँ**—वि० थिरकनेवाला।

थिरजोह(पु)—पु० मछली।

थिरा(पु)—स्त्री० पृथ्वी।

थिराना—सक० [अक० थिरना] क्षुब्ध जल को स्थिर होने देना। जल को स्थिर करके उसमे घुली हुई वस्तु को नीचे वैठने देना। किसी वस्तु को जल मे घोलकर और उसकी मैल आदि को नीचे वैठाकर साफ करना, नियारना।

थीता(पु)—पु० स्थिरता, शाति। चैन। **थीती**(पु)—स्त्री० स्थिरता, धैर्य।

थीर, थीरा(पु)—वि० दे० 'थिर'।

थुकाना—सक० [थूकना का प्रे०] थूकने की क्रिया दूसरे से कराना। मुँह मे ली हुई वस्तु को गिरवाना, उगलवाना। थुडी थुडी कराना, निंदा कराना।

थुक्का फजीहत—स्त्री० निंदा और तिरस्कार। लडाई झगडा।

थुडी—स्त्री० घृणा और तिरस्कारसूचक शब्द, धिक्कार। **मु०~करना** = धिक्कारना।

थुथकार—स्त्री० थूकने की क्रिया, भाव या शब्द। ⊙ना = सक० थुडी थुडी करना, अत्यधिक घृणा प्रकट करना।

थुन्नी—स्त्री० दे० 'थूनी'।

थुरहथा—वि० जिसके हाथ छोटे हो, जिसकी हथेली मे कम चीज आवे। किफायत करनेवाला।

थुलमा—पुं० हिमालय के ठढ प्रदेशों मे वनने और प्रयुक्त होनेवाला जमाए हुए वहुत मुलायम और वारीक ऊन का एक प्रकार का वढिया पहाडी कवल।

थुलिका—स्त्री० स्थूल, मोटी।

थू—अव्य० थूकने का शब्द। घृणा और तिरस्कारसूचक शब्द, धिक्। **मु०~~ करना या~करना** = धिक्कारना।

थूक—पुं० निष्ठीव, वह गाढा और कुछ कुछ लसीला रस जो मुँह के भीतर जीभ तथा मास की झिल्लियो से छूटता है, खखार, लार। ⊙ना = अक० मुँह से थूक निकालना या फेंकना। सक० मुँह मे ली हुई वस्तु को गिराना, उगलना। बुरा कहना, धिक्कारना। **मु०—किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न थूकना** = अत्यत तुच्छ समझकर ध्यान न देना। **~कर चाटना** = कहकर मुकर जाना। किसी को दी हुई वस्तु को लौटा लेना। **~देना** = तिरस्कार कर देना।

थूथन—पुं० लंबा निकला हुआ मुंह (जैसे, सूअर या ऊँट का)।

थून, थूनी—स्त्री० खभा, स्तभ। वह खभा जो किसी बोझ को रोकने के लिये नीचे से लगाया जाय, चाँड।

थूरना—सक० कूटना, चूर चूर करना। मारना, पीटना। ठूँसना।

थूलⓅ—वि० मोटा, भारी। भद्दा। **थूला**—वि० मोटा, मोटा ताजा।

थूवा—पुं० दूह। पिंड, लोदा। सीमासूचक स्तूप।

थूहर—पुं० एक छोटा पेड़ जिसमे गाँठो पर से डडे के आकार के डठल निकलते हैं। इसका दूध विषैला होता है और औषध के काम मे आता है, सेंहुड।

थेई थेई—वि० थिरक थिरककर नाचने की मुद्रा और ताल।

थेगली—स्त्री० दे० 'थिगली'।

थेथर—वि० लस्तपस्त, थका हुआ। परेशान, हैरान। ⊙ई=स्त्री० निर्लज्जता और उद्दडता मे भरी बात। लज्जाजनक व्यवहार।

थैला—पु० कपडे आदि को सीकर बनाया हुआ पात्र जिसमे कोई वस्तु भरकर बद की जा सके, बडा बटुआ। रुपयो से भरा हुआ थैला, तोडा। **थैली**—स्त्री० छोटा थैला, कीसा, बटुआ। रुपयो से भरी हुई थैली, तोड़ा। मु०~खोलना=थैलो मे से निकालकर रुपया देना। उदारतापूर्वक देना।

थोक—पु०ढेर, राशि। समूह, झुड। इकट्ठी बेचने की चीज, खुदरा का उलटा। इकट्ठी वस्तु, कुल। मु० ~करना=इकट्ठा करना, जमा करना।

थोड़ा—वि०जो मात्रा या परिमाण मे अधिक न हो, कम, जरा सा। क्रि०वि०अल्प परिमाण या मात्रा मे। ⊙बहुत=कुछ कुछ, किसी कदर। कम या अधिक, कुछ न कुछ। मु० ~(थोड़े) ही=एकदम नही, जोरदार निषेध या निराकरण।

थोथरा—वि० दे० 'थोथा'।

थोथा—वि० जिसके भीतर कुछ सार न हो, खोखला, पोला। जिसकी धार तेज न हो, कुठित। व्यर्थ का, निकम्मा।

थोपडी—स्त्री० चपत, धौल।

थोबडा—पु० जानवरो का थूथन।

थोपना—सक० किसी पर गीली वस्तु का लोदा डाल देना, चिपका देना, छोपना। मोटा लेप चढाना। झूठा आरोप करना। आक्रमण आदि से रक्षा करना, बचाना। दे० 'छोपना'।

थोर, थोराⓅ†—वि० थोडा।

थोरिकⓅ†—वि० थोडा, तनिक।

थौंदⓅ—स्त्री० दे० 'तोद'।

थ्यावस†—पु० स्थिरता, ठहराव। धैर्य।

द

द—हिंदी वर्णमाला का १८वाँ व्यजन जो तवर्ग का तीसरा वर्ण है।

दंग—वि० [फा०] चकित, स्तब्ध। पु० घबराहट। दे० 'दंगा'।

दंगई—वि० दगा करनेवाला, उपद्रवी। उग्र।

दंगल—पुं० [फा०] पहलवानो की वह कुश्ती जो जोड बदलकर हो और जिसमे जीतनेवाले को इनाम आदि मिले। अखाडा, मल्लयुद्ध का स्थान। समूह, जमात। †प्रतिद्वद्विता (जैसे, कजली का दगल)। बहुत मोटा गद्दा या तोशक। वि० बहुत बडा, भारी। **दंगली**—वि० दंगल सबधी। बहुत बडा।

दगा—पुं० झगड़ा, उपद्रव। हुल्लड, शोर गुल। मारकाट, मारपीट।

दंड—पुं० [सं०] डडा, लाठी। स्मृतियो में वर्णित आश्रम और वर्ण के अनुसार दड धारण करने की व्यवस्था। दड के आकार की कोई वस्तु (जैसे, भुजदड, मेरुदड)। एक प्रकार की कसरत जो हाथ पैर के पजो के बल औधे होकर की जाती है। भूमि पर औधे लेटकर किया हुआ प्रणाम, दडवत्। किसी अपराध के प्रतिकार मे अपराधी को पहुँचाई जानेवाली पीडा या हानि। अर्थदड, जुरमाना। दमन, शासन। ध्वजा या पताका का काष्ठदड। तराजू की डांड़ी।

किसी वस्तु (जैसे, करछी, चम्मच आदि) की डंडी। लंबाई की एक माप जो चार हाथ की होती थी। (मरने के बाद कर्म के अनुसार दंड देनेवाले) यम। ६० पल का का काल। २४ मिनट का समय, घड़ी। ⊙क = पुं० डंडा। दंड देनेवाला, शासक। एक वर्णिक छंद का प्रकार जिसमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो (यह दो प्रकार का होता है। एक गणात्मक जिसमें गणों का बंधन या नियम होता है और दूसरा मुक्त जिसमें केवल अक्षरों की गिनती होती है)। दंडक नामक जंगल जिसमें वनवास के समय श्रीरामचंद्र जी बहुत दिनों तक टिके थे। ⊙कला = स्त्री० एक प्रकार का मात्रिक छंद। ⊙दास = पुं० वह जो दंड का रुपया न दे सकने के कारण दास हुआ हो ⊙धर = पुं० यमराज। शासनकर्ता। संन्यासी। सिपाही। ⊙धार = पुं० यमराज। राजा। ⊙ना(पु) = सक० दंड देना, शासित करना, सजा देना। ⊙नायक = पुं० सेनापति। दंडविधान करनेवाला राजा या हाकिम। यम। कालभैरव। ⊙नीति = स्त्री० दंड देने का का सिद्धांत और प्रक्रिया। दंड देने का कानून। ⊙नीय = वि० दंड पाने के योग्य। ⊙पाणि = पुं० यमराज। भैरव की एक मूर्ति। ⊙प्रणाम = पुं० दंडवत्, सादर अभिवादन। ⊙वत् = स्त्री० पृथ्वी पर दंड के समान लेटकर किया हुआ नमस्कार, साष्टांग प्रणाम। ⊙विधि = स्त्री० अपराधी के दंड से संबंध रखनेवाला नियम या व्यवस्था, सजा या कानून। दंडालय—पुं० न्यायालय। वह स्थान जहाँ दंड दिया जाय। एक छंद। मु०~भरना = जुरमाना देना। दूसरे के नुकसान को पूरा करना। ~भोगना या~भुगतना = सजा अपने ऊपर लेना। ~सहना = नुकसान उठाना।

दंडकारण्य—पुं० वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के किनारे तक फैला था और जिसमें श्रीरामचंद्रजी ने बहुत दिनों तक वनवास किया था।

दंडन—पुं० [सं०] दंड देने की क्रिया, शासन, निग्रह।

दंडायमान—वि० डंडे की तरह सीधा खड़ा, खड़ा।

दंडिका—स्त्री० [सं०] २० अक्षरों का वह वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और में अंत में गुरु लघु वर्ण होते हैं। इन्हें रत्यका, गंडका और वृत्त छंद भी कहते हैं।

दंडित—वि०, पुं० [सं०] जिसे दंड मिला हो, सजा पाया हुआ।

दंडी—पुं० [सं०] दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। यमराज। राजा। द्वारपाल। वह संन्यासी जो दंड और कमंडल धारण करे। जिनदेव। शिव, महादेव। संस्कृत के पदलालित्य के लिये प्रसिद्ध कवि जिनके बनाए हुए दो ग्रंथ मिलते हैं—दशकुमारचरितम्' और 'काव्यादर्श'।

दंड्य—वि० [सं०] दंड पाने योग्य।

दंत—पुं० [सं०] दाँत। ३२ की संख्या। ⊙कथा = स्त्री० सुनी सुनाई या परंपरागत बात, किंवदंती। ⊙च्छद = पुं० ओष्ठ, अधर। ⊙धावन = दाँत धोने या साफ करने का काम, दातुन करने की क्रिया। दतौन, मंजन। ⊙बीज = पुं० अनार। ⊙मूलीय = वि० दंतमूल से उच्चारण किया जानेवाला (वर्ण) तवर्ग, ल और स अक्षर। दंतोष्ठ्य—वि० (वर्ण) जिसका उच्चारण स्थान दाँत और ओठ से हो।

दँतार—वि० बड़े दाँतोवाला।

दँतिया—स्त्री० छोटे छोटे दाँत।

दँतियाना—सक० दाँतो से काटना या नोचना। एक किनारे खड़ा करना या पंक्तिबद्ध सजाना। दबाना, ठकेलकर एक कोने में करना।

दंती—स्त्री० [सं०] अंडी की जात का एक पेड़। (यह दो प्रकार की होती है—लघु दंती और वृहद्दंती)।

दँतुरिया(पु)†—स्त्री० दे० 'दँतिया'।

दँतुला—वि० बड़े बड़े दाँतोवाला।

दँतेरना—सक० दे० 'दँतियाना'।

दंत्य—वि० [सं०] दाँत संबंधी। वि०, पुं० '(वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो। त, थ, द, ध, न, ल और स अक्षर।

दंद—स्त्री॰ किसी स्थान से निकलती हुई गरमी। पुं॰ लड़ाई झगड़ा, द्वंद्व, उपद्रव। शोरगुल। **दंदी**—वि॰ झगड़ालू, उपद्रवी।

दंदन—वि॰ दमन करनेवाला।

दंदाना—अक॰ गरम होना। पुं॰ [फा॰] दाँत के आकार की उभरी हुई वस्तुओं की पंक्ति (कंघी या आरे आदि की)। **दंदानेदार**—वि॰ जिसमें दाँत की तरह निकले हुए कँगूरों की पंक्ति हो।

दंपति,दंपती—पुं॰ [सं॰] पतिपत्नी का जोड़ा।

दंपा—(पु) स्त्री॰ बिजली।

दंभ—पु॰ [सं॰] महत्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिये झूठा आडंबर। झूठी ठसक, घमंड। **दंभी**—वि॰ पाखंडी। अभिमानी।

दंभान(पु)—पु॰ दे॰ 'दंभ'।

दंभोलि—पुं॰ [सं॰] इंद्रास्त्र, वज्र।

दँवरी—स्त्री॰ अनाज के सूखे डंठलों में से दाने झाड़ने के लिये बैलों से रौंदवाने का काम।

दँवारि(पु)—स्त्री॰ दे॰ 'दवाग्नि'।

दंश—पुं॰ [सं॰] वह घाव जो दाँत काटने से हुआ हो। दाँत काटने की क्रिया। दाँत। विषैले जंतुओं का डंक। डाँस नामक विषैली मक्खी। ⊙क = पुं॰ दाँत से काटनेवाला। ⊙न = पुं॰ दाँत से काटना। डसना। वर्म, बकतर। ⊙ना (पु) = सक॰ दाँत से काटना। डसना।

दंष्ट्र—पुं॰ [सं॰] दाँत।

दंस(पु)—पु॰ दे॰ 'दंश'।

दइत—पु॰ दे॰ 'दैत्य'।

दई—पु॰ ईश्वर, विधाता। दैवसंयोग, अदृष्ट। ⊙**दई** = हे दैव, हे दैव! (रक्षा के लिये ईश्वर की पुकार)। ⊙**मारा** = वि॰ जिसपर ईश्वर का कोप हो, अभागा। मु॰~**का घाला** = ईश्वर का मारा हुआ, अभागा, कमबख्त।

दकन—पु॰ दक्षिणी भारत। **दकनी**—पु॰ दक्षिणी भारत का निवासी। वि॰ दक्षिण भारत का। स्त्री॰ दक्षिण भारत की भाषा। दक्षिण भारत में प्रयुक्त हिंदी का पुराना नाम।

दकियानूस—पुं॰ [अ॰] बहुत पुरानी विचारधाराओं का पोषक, अंध परंपरा को माननेवाला। **दकियानूसी**—वि॰ बहुत पुराना।

दकीका—पु॰ [अ॰] कोई बारीक बात। युक्ति, उपाय। क्षण, लमहा। मु॰~ **कोई बाकी न रखना** = सब उपाय कर चुकना।

दक्खिन—पु॰ वह दिशा जो प्रातःकाल सूर्य की ओर मुँह करके खड़े होने में दाहिने हाथ की ओर पड़ती है, उत्तर के सामने की दिशा। भारत का वह भाग जो दक्षिण में है।

दक्खिनी—वि॰ दक्खिन का। जो दक्षिण के देश का हो। पु॰ दक्षिण देश का निवासी।

दक्ष—वि॰ [सं॰] निपुण, कुशल। दक्षिण, दाहिना। पु॰ ब्रह्मा के दाहिने अँगूठे से उत्पन्न सातवें प्रजापति जिनसे देवता उत्पन्न थे। ये सृष्टि के उत्पादक, पालक और पोषक कहे गए हैं, पुराणानुसार शिव की पत्नी सती इन्हीं की कन्या थी। अत्रि ऋषि। महेश्वर। ⊙**कन्या** = स्त्री॰ दक्ष प्रजापति की १६ कन्याओं में से एक जो रुद्र की पत्नी थी (गरुडपुराण), सती।

दक्षिण—वि॰ [सं॰] बायाँ का उलटा, दाहिना। अनुकूल। उस ओर का जिधर उदीयमान सूर्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दाहिना हाथ पड़े। दक्ष, चतुर। पु॰ उत्तर के सामने की दिशा। वह नायक जिसका अनुराग अपनी सब नायिकाओं पर समान हो। प्रदक्षिणा। तंत्रोक्त एक आचार या मार्ग। **दक्षिणा**—स्त्री॰ दक्षिण दिशा। वह द्रव्य या धन जो किसी दान, धर्म, शुभ कार्य, पाठ, जप, होम, कथा, भोजन, अध्ययन आदि करने के उपलक्ष्य में ब्राह्मणों को दिया जाय। वह दान जो किसी शुभ कार्य आदि के समय ब्राह्मणों को दिया जाय। पुरस्कार, भेंट। वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से संबंध करने पर भी उससे बराबर वैसी ही प्रीति रखती हो। **दक्षिणापथ**—पु॰ विंध्य पर्वत के दक्षिण ओर के

वे प्रदेश जहाँ से दक्षिण भारत के लिये रास्ते जाते है। दक्षिणायन—वि० भूमध्य रेखा से दक्षिण का (जैसे, दक्षिणायन सूर्य)। पुं० सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति। छह महीने का वह समय जिसमें सूर्य कर्क रेखा से चलकर बराबर दक्षिण की ओर मकर रेखा तक बढता रहता है। दक्षिणावर्त—वि० जो दाहिनी ओर को घूमा हो। दक्षिण देश का। पु० एक प्रकार का शख जिसका घुमाव दाहिनी ओर को होता है। दक्षिणी—दक्षिण का। दक्षिणीय—वि० दक्षिण का। जो दक्षिणा का पात्र हो।

दखमा—पु० वह स्थान जहाँ पारसी अपने मुरदे रखते हैं।

दखल—पु० [अ०] अधिकार, कब्जा। हस्तक्षेप, हाथ डालना। प्रवेश।

दखिन—पु० दे० 'दक्षिण'। ⊙हा† = वि० दक्षिण का, दक्षिणी।

दखील—वि० [अ०] दखल या अधिकार रखनेवाला।

दगड़—पु० लडाई मे बजाया जानेवाला बडा ढोल।

दगदग—वि० चमकीला, चमाचम। पु० आशंका। अनिश्चय, सदेह।

दगदगा—पु० [अ०] डर, भय। सदेह। एक प्रकार की कंडील। ⊙ना = [हि०] दमदमाना। चमकना। सक० चमकाना, चमक उत्पन्न करना।

दगदगी—स्त्री० दे० 'दगदगा'।

दगध†—पु० दे० 'दाह'। वि० दे० 'दग्ध'। ⊙ना (प) = अक० जलना। सक० जलाना। दुख देना। ठगना।

दगना—अक० (बदूक या तोप आदि का) छूटना, चलना। जलना, झुलस जाना। दागा जाना (सक० दागना)। प्रसिद्ध होना। सक० दे० 'दागना'।

दगर, दगरो†—पु० देर, विलब। डगर, रास्ता।

दगल, दगला—पु० मोटे वस्त्र का बना हुआ या रुईदार अँगरखा। भारी लबादा।

दगल्ला†—पु० भारी लबादा, कवच। 'सुपन्है दगल्ले महावीर मल्ले'। (प्रताप० ५८)।

दगहा—वि० जिसमे दाग हो। दाहकर्म करनेवाला। जो दागा हुआ हो, दग्ध किया हुआ।

दगा—स्त्री० [अ०] छल कपट, धोखा। ⊙बाज = वि० [फा०] धोखा देनेवाला। ⊙बाजी = स्त्री० [फा०] छल, कपट।

दगैल—वि० जिसमे दाग हो। जिसमे कुछ खोट या दोष हो। दुष्ट, खोटा। पु० दगाबाज या छली व्यक्ति।

दग्गना (प)—अक० जलना। '...दरीन दुग्ग दग्गही'। (प्रताप० ७६)।

दग्ध—वि० [सं०] जला या जलाया हुआ। दुखित, जिसे कष्ट पहुँचा हो। दग्धाक्षर—पु० पिंगल के अनुसार झ, ह, र, भ, और ष ये पाँचों अक्षर जिनका छद के आरभ मे रखना वर्जित है।

दग्धा—स्त्री० [सं०] पश्चिम दिशा। विशिष्ट राशियो से युक्त विशिष्ट तिथियाँ (अशुभ)।

दग्धित (प)—वि० दे० 'दग्ध'।

दचक—स्त्री० दचकने की क्रिया या भाव, लचक। ⊙ना = अक० ठोकर या धक्का खाना। दब जाना। झटका खाना। लचकना, झुक जाना। नीचे ऊपर होना। सक० ठोकर या धक्का लगाना। दबाना। झटका देना। झुकाना, नत करना।

दचका—पुं० दे० 'दचक'।

दचना—अक० गिरना, पडना।

दच्चा†—पुं० धक्का या ठोकर। 'तजै बला वच्चे फिरै खात दच्चे' (हिम्मत० ७०)।

दच्छ—(प) दे० 'दक्ष'। ⊙कुमारी = स्त्री० दक्ष प्रजापति की कन्या, सती। ⊙सुता = स्त्री० दक्ष की कन्या, सती।

दच्छना—स्त्री० दे० 'दक्षिणा'।

दच्छिन—वि० दे० 'दक्षिण'।

दढना—अक० जलाना।

दढ़ियल—वि० दाढीवाला।

दतवन—स्त्री० दे० 'दतुअन'।

दतारा—पु० बड़े बड़े दाँतोवाला हाथी। 'मुकना न्यारे दिपत दतारे उमड़ि चले' (प्रताप० १०६)।

दतिया—स्त्री० छोटा दाँत।

दतुअन, दतुवन, दतौन—स्त्री० नीम या बबूल आदि की छोटी टहनी जिससे दाँत साफ करते हैं, दातुन। दाँत साफ करने और मुँह धोने की क्रिया।

दत्त—पु० [सं०] दत्तात्रेय। जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक। दान। दे० 'दत्तक'। ⊙क=पु० औरस पुत्र के अभाव में बनाया गया पुत्र, गोद लिया हुआ लड़का। ⊙चित्त=वि० जिसने किसी काम में खूब जी लगाया हो। दत्तात्मा-पु० वह जो स्वयं किसी के पास जाकर उसका दत्तक पुत्र बने।

ददा—पुं० दे० 'दादा'।

ददिऔरा†—पु० दे० 'ददिहाल'।

ददिया ससुर—पु० श्वसुर का पिता।

ददिहाल—पुं० दादा का कुल। दादा का घर।

ददोरा—पु० मच्छर, बर्रे आदि के काटने या खुजलाने आदि के कारण चमड़े के ऊपर होनेवाली चकत्ती की तरह थोड़ी सी सूजन, चकत्ता।

दद्रु—[सं०] दे० 'दाद'।

दध(पु)†—पु० दे० 'दधि'।

दधसार(पु)—पु० दे० 'दधिसार'।

दधि(पु)—पु० उदधि, समुद्र। पु० [सं०] दही। ⊙काँदो=पु० [हिं०] जन्माष्टमी के समय होनेवाला एक प्रकार का उत्सव जिसमें लोग हल्दी मिला दही एक दूसरे पर फेंकते हैं। ⊙जात=पु० मक्खन। (उदधि से उत्पन्न) चद्रमा। ⊙सुत=पु० [सं० उदधिसुत] कमल। मोती। चद्रमा। जालधर दैत्य। विष। [सं०] मक्खन। ⊙सुता=स्त्री० [सं० उदधिसुता] सीप।

दनदनाना—अक० दनदन शब्द करना। जल्दी करना। आनद करना।

दनादन—क्रि० वि० दनदन शब्द के साथ। जल्दी जल्दी।

दनुज—पु० [सं०] दानव, असुर। ⊙दलनी=दुर्गा। ⊙राय=पुं० [हिं० दानवों] के राजा हिरण्यकशिपु, रावण, कस आदि।

दनुजेंद्र—पु० [सं०] दे० 'दनुजराय'।

दन्न—पु० 'दन्न' शब्द जो तोप आदि के छूटने से होता है।

दपटना—अक० डाँटना, घुड़कना।

दपु(पु)—पु० दर्प, शेखी।

दपेट—स्त्री० दे० 'दपट'। चपेट। 'वहु दाबि डारे सुभट तुरग दीह दपेट सों' (हिम्मत०, १६०)।

दफतर—पु० दे० 'दफ्तर'।

दफनी—स्त्री० कागज के कई तख्तो को एक में साटकर बनाया हुआ गत्ता, कुट, वसली।

दफन—पु० [अ०] किसी चीज को, विशेषत. मुरदे को, जमीन में गाड़ने की क्रिया।

दफनाना—सक० जमीन में दबाना, गाड़ना।

दफा—स्त्री० [अ०] बार, वेर। किसी कानूनी किताब का वह एक अश जिसमें किसी एक अपराध के सबध में व्यवस्था हो। वि० दूर किया हुआ, तिरस्कृत। ⊙दार=पु० [फा०] फौज का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों। मु०~ लगाना=अभियुक्त पर किसी कानूनी धारा को घटाना।

दफ्तर—पु० [फा०] वह स्थान जहाँ किसी कारखाने, कपनी सस्था या व्यवसायी आदि का लिखापढ़ी, लेनदेन और व्यवस्था आदि का कार्य होता हो, कार्यालय, [अँ०] आफिस। लबी चौड़ी चिट्ठी। सविस्तर वृत्तात, चिट्ठा।

दफ्तरी—पु० [फा०] वह कर्मचारी जो दफ्तर के कागज आदि दुरुस्त करता और रजिस्टर आदि पर रूल खीचता हो। किताबों की जिल्द बाँधनेवाला।

दब(पु)—स्त्री० दबदबा, आतक। 'मानत न कोऊ जमदूतन की दाह दब, (गगा , २०)

दबंग—वि० किसी से न दबनेवाला। प्रभावशाली, रोबवाला।

दबक—स्त्री० दबने या छिपने की क्रिया या

भाव । सिकुडन । ⊙गर = पुं० दबका (तार) बनानेवाला, दबकैया ।

दबकना—अक० दे० 'दुबकाना' । सक० धातु को हथौडी से पीटकर बढाना ।

दबका—पुं० कामदानी का सुनहला तार ।

दबकाना—छिपाना, आड मे करना ।

दबकैया—पु० दे० 'दबकगर' ।

दबगर—पु० ढाल बनानेवाला । चमडे के कुप्पे बनानेवाला ।

दबदबा—पु० [अ०] रोबदाब, प्रभुत्व । आतक ।

दबना—अक० भार के नीचे आना । ऐसी अवस्था मे होना जिसमे किसी ओर से बहुत जोर पडे । किसी भारी शक्ति के सामने अपने स्थान पर न ठहर सकना, पीछे हटना । दबाव मे पडकर किसी के इच्छानुसार काम करने के लिये विवश होना । किसी के मुकाबले मे ठीक या अच्छा न जँचना । किसी बात का आगे न बढ पाना । उभर न सकना, शात रहना । अपनी चीज का अनुचित रूप से किसी दूसरे के अधिकार मे चला जाना । ऐसी अवस्था मे आ जाना जिसमे कुछ बस न चल सके । मद पडना, फीका होना । सकोच करना, झेंपना । मु०—दबी जवान से कहना = डर या सकोच के कारण धीरे से कहना ।

दबाना—सक० [अक० दबना] ऊपर से भार रखना । किसी पदार्थ पर किसी ओर से बहुत जोर पहुँचाना । पीछे हटाना । जमीन के नीचे गाड़ना । किसी पर इतना आतक जमाना कि वह कुछ कह न सके । दूसरे को मद या मात कर देना । किसी बात को उठने या फैलने न देना, छिपाना । दमन करना, शात करना । किसी दूसरे की चीज पर अनुचित अधिकार करना । झोक के साथ बढकर किसी चीज को पकड लेना । ऐसी अवस्था मे ले आना जिसमे मनुष्य असहाय, दीन या विवश हो जाय ।

दबाव—पुं० दबाने की क्रिया । दबाने का भाव । रोब ।

दबीज—वि० [फा०] जिसका दल मोटा हो, गाढा भारी, बडा ।

दबैल—वि० जिसपर किसी का प्रभाव या दबाव हो । जो बहुत दबता या डरता हो, दब्बू । सबसे दबनेवाला ।

दबोचना—सक० किसी को सहसा पकड़कर दबा लेना, धर दबाना । छिपाना ।

दबोरना—(पु)सक० अपने सामने ठहरने न देना, दबाना ।

दमकना(पु)—अक० दे० 'दमकना' ।

दम—पुं० [स०] वह दड जो दमन करने के लिये दिया जाता है, सजा । इद्रियो को वश मे रखना और बुरे कामो मे प्रवृत्त न होने देना । दबाव । पुराणानुसार मरुत राजा के पौत्र जो बभ्रु की कन्या इद्रसेना के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । बुद्ध । विष्णु । घर । कीचड । पुं० [फा०] साँस, श्वास । नशे आदि के लिये साँस के साथ धुआँ खीचने की क्रिया, कश । साँस खीचकर जोर से बाहर फेकने या फूँकने की क्रिया । उतना समय जितना एक बार साँस लेने मे लगता है, लहमा, पल । प्राण, जान, जी । वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ अपना अस्तित्व बनाए रखता और जीता है, जीवनी शक्ति । व्यक्तित्व । खाद्य पदार्थ को बरतन मे रखकर और उसका मुँह बद करके हलकी आँच पर पकाने की क्रिया । धोखा, छल । तलवार या छुरी आदि की धार । एक हथियार, 'छुरी जमधर दम तमचे कटिक से' (हिम्मत०, ११२) । ⊙कल = स्त्री० वह यत्र जिसमे ऐसे नल लगे हो, जिनके द्वारा कोई तरल पदार्थ हवा के दबाव से ऊपर अथवा और किसी ओर झोके से फेंका जा सके, पप । आग बुझाने का यत्र । वह यत्र जिसकी सहायता से कुँए से पानी निकालते हैं । दे० 'दमकला' । ⊙कला = पु० [हिं०] वह बडा पात्र जिसमे लगी हुई पिचकारी के द्वारा महफिलो मे गुलाबजल अथवा रग आदि छिडका जाता है । दे० 'दमकल' । दे० 'दमचूल्हा' । ⊙खम = पुं० [फा०] दृढ़ता,

मजबूती । जीवनी शक्ति । मूर्ति की सुदर और सुडौल गढन । चित्र की गोलाई लिए लगातार चलनेवाली वे रेखाएँ जिनसे वह चित्र जानदार मालूम होता है । तलवार की धार और उसका झुकाव । ⊙चूल्हा = पुं० [हि०] एक प्रकार का लोहे का चूल्हा जिसमे कोयला जलता है, अँगीठी । ⊙दार = वि० [फा०] जिसमे जीवनी शक्ति यथेष्ट हो । दृढ, मजबूत । जिसमे साँस अधिक समय तक रह सके । जिसकी धार तेज हो । ⊙ दिलासा, ⊙पट्टी, ⊙ बुत्ता = पु० वह बात जो केवल फुसलाने के लिये कही जाय, झूठी आशा । ⊙बाज = वि० [फा०] दम देनेवाला । फुसलाने वाला । मु०~अटकना या ~उखड़ना = साँस रुकना (विशेषत मरने के समय) । ~के~ = क्षण भर, थोडी देर ।~खींचना = चुप रह जाना । साँस ऊपर चढाना । ~खुश्क होना = दे० 'दम सूखना' ।~घुटना = हवा की कमी के कारण साँस रुकना । ~तोड़ना = अतिम साँस लेना । ~देना = बहकाना, धोखा देना ।~नाक मे या नाक मे~आना = बहुत तग या परेशान होना ।~निकलना = मृत्यु होना ।~पर = थोडी थोडी देर पर, जल्दी जल्दी ।~ फूलना=श्वास रोग । अधिक परिश्रम के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलना । साँस के रोग का दौरा होना ।~भरना = किसी के प्रेम अथवा मित्रता आदि का पक्का भरोसा रखना और अभिमानपूर्वक उसका वर्णन करना । परिश्रम के कारण थक जाना ।~मारना = विश्राम करना, चूँ करना । दे० 'दम लगाना' । ~लगाना = गाँजे आदि को चिलम पर रखकर उसका धुआँ खीचना, कश लगाना। ~लेना = विश्राम करना, सुस्ताना । ~साधना = श्वास की गति को रोकना । चुप होना । ~सूखना = बहुत डर के कारण साँस तक न लेना, प्राण सूखना ।

दमक—स्त्री० चमक, आभा । मद मद गरमी या आँच । ⊙ना = अक० चमकना ।

दमड़ी—स्त्री० पैसे का आठवाँ भाग । मु०~ का पूत = बहुत ही तुच्छ, नगण्य ।~के तीन होना = बहुत सस्ता होना, कौडियो के मोल होना ।

दमदमा—पु० [फा०] वह किलेबदी जो लडाई के समय थैलो मे बालू भरकर की जाती है ।

दमन—पु० [स०] दबाने या रोकने की क्रिया । दड, सजा । इद्रियो का निग्रह । उपद्रव, विरोध आदि को बलपूर्वक दबाना । विष्णु । महादेव, शिव । एक ऋषि का नाम । स्त्री० दे० 'दमयती' । ⊙शील = वि० जिसकी प्रकृति दमन करने की हो, दमन करनेवाला । इद्रियों को वश मे रखनेवाला । **दमनीय**—वि० दमन करने योग्य । दबाया जाने लायक । बिना दबाए नष्ट हो जानेवाला या काम न देनेवाला ।

दमनक—पुं० [सं०] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तीन नगण और लघु गुरु कुल ११ वर्ण होते है । दौना नामक पौधा ।

दमा—पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस लेने मे बहुत कष्ट होता है, खाँसी आती है और कफ बडी कठिनता से निकलता है ।

दमाद—पुं० दे० 'दामाद' ।

दमानक—स्त्री० तोपो की बाढ ।

दमामा—पुं० [फा०] नगाडा, डका ।

दमारि(पु)†—पु० जगल की आग ।

दमावती—स्त्री० दमयती, राजा नल की स्त्री और विदर्भ के राजा भीमसेन की कन्या ।

दमैया—(पु)†—वि० दमन करनेवाला, दबानेवाला ।

दयत†—पुं० दे० 'दैत्य' ।

दया—स्त्री० [सं०] करुणा, रहम । दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म को ब्याही गई थी । ⊙दृष्टि = स्त्री० करुणा या अनुग्रह का भाव । ⊙निधान = पुं० वह जिसमे बहुत अधिक दया हो, बहुत दयालु । ⊙ निधि = पु० बहुत दयालु पुरुष । ईश्वर । ⊙पात्र = पुं० वह जो दया के योग्य हो । ⊙पर = पु० दयापरायण, दयालु । ⊙मय = पु०, वि० दया से पूर्ण । ईश्वर । ⊙वत = वि० [हिं०] दे० 'दयालु' ।

⊙वान् = वि० जिसके चित्त मे दया हो, दयालु। ⊙शील = वि० कृपालु, दयालु। ⊙सागर = पु० जिसके चित्त मे बहुत दया हो। दयार्द्र = वि० दया से भरा हुआ। दयाना Ⓟ —अक० दयालु होना।
दयानत—स्त्री० [अ०] सत्यनिष्ठा, ईमान। ⊙दार = वि० [फा०] इमानदार, सच्चा।
दयार—पु० [अ०] प्रात, प्रदेश।
दयाल—वि० दे० 'दयालु'।
दयालु—वि० [सं०] दया करनेवाला, कृपालु।
दयावना Ⓟ †—वि० पु० दया के योग्य, दीन।
दयित—वि० [सं०] प्रिय, प्यारा।
दर—स्त्री० ईख, ऊख। पु० [सं०] फाड़ने की क्रिया, विदारण। गड्ढा, दरार। गुफा। डर। शख। समूह, दल। स्त्री० [फा०] भाव, निर्ख। प्रतिष्ठा। अव्य० बीच, मे। पु० द्वार, दरवाजा। देहली। मकान के अदर का विभाग। मकान की मजिल खड। ⊙कार = स्त्री० आवश्यकता, जरूरत। ⊙किनार = क्रि० वि० अलग, अलहदा, एक ओर, दूर। ⊙कूच = क्रि० वि० बराबर यात्रा करता हुआ, मजिल दर मजिल। ⊙गह = स्त्री० दे० 'दरगाह'। ⊙गाह = स्त्री० चौखट, देहरी। दरबार, कचहरी। किसी सिद्ध पुरुष का समाधिस्थान, मकबरा। ⊙गुजर = वि० अलग, वचित। मुआफ, क्षमाप्राप्त। ⊙दर = क्रि० वि० द्वार द्वार, स्थान स्थान पर। ⊙पेश = क्रि० वि० आगे, उपस्थित। ⊙बदी = स्त्री० अलग अलग दर या विभाग बनाना। चीजो की दर या भाव निश्चित करना। ⊙बान = पु० ड्योढीदार, द्वारपाल।
दरक—वि० [सं०] डरपोक। स्त्री० [हिं०] फटने या दरार पड़ने की क्रिया या भाव। दराज, संधि। ⊙ना = अक० दाब पड़ने से फटना, चिरना।
दरका—पु० शिगाफ, दरार। वह चोट जिससे कोई वस्तु दरक या फट जाय। ⊙ना = सक० [अक० दरकना] फाड़ना। †अक० फटना।
दरखत Ⓟ †—पुं० दे० 'दरख्त'।
दरखास्त—स्त्री० किसी बात के लिये प्रार्थना, निवेदन। प्रार्थनापत्र।
दरख्त—पु० [फा०] पेड़, वृक्ष।
दरज—स्त्री० दराज, दरार।
दरजन—पु० दे० 'दर्जन'।
दरजा—पु० दे० 'दर्जा'।
दरजी—पु० दे० 'दर्जी'।
दरण—पु० [सं०] दलने या पीसने की क्रिया। ध्वस, विनाश।
दरद—पुं० पीड़ा, व्यथा। दया। काश्मीर और हिंदूकुश पर्वत के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम। एक म्लेच्छ जाति जिसका उल्लेख मनुस्मृति, हरिवश आदि मे है। ईगुर, शिगरफ। ⊙वत, ⊙वंद = पुं० सहानुभूति रखनेवाला, कृपालु। पीड़ित, दुखी।
दरद्द—पु० दे० 'दरद' या 'दर्द'।
दरदरा—वि० जिसके कण स्थूल हों, जिसके रवे महीन न हो, मोटे हों। दरदराना—सक० इस प्रकार पीसना कि मोटे मोटे रवे या टुकड़े हो जायें।
दरन Ⓟ —वि० पुं० दे० 'दलन'।
दरना—सक० दरदरा या मोटे चूर्ण दलना। नष्ट करना।
दरप Ⓟ †—पु० दे० 'दर्प'। दरपना—अक० ताव या क्रोध मे आना। घमड करना।
दरपन Ⓟ—पुं० दे० 'दर्पण'। दरपनी—स्त्री० मुँह देखने का छोटा शीशा।
दरब—पुं० धन, दौलत।
दरबर—क्रि० वि० शीघ्र, जल्द। दे० 'दरदरा'।
दरबा—पुं० कबूतरो, मुर्गियो आदि के रहने के लिये काठ का खानेदार सदूक। बहुत छोटा और अँधेरा कमरा।
दरबार—पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसाहबो के साथ बैठते है। राजाओ का शासको के समाज के साथ बैठकर राजनीतिक निर्णय, घोषणा और विचार-विमर्श आदि करने का स्थान। राजसभा। सभाभवन। महाराज, राजा (रजवाड़ो मे)। ⊙आम = पु० अकबर बादशाह की सामाजिक बैठक। उसके लिये बना प्रसाद। सामान्य मनुष्यो और जनसाधारण के साथ बैठना। उसके लिये

नियत कक्ष। ⊙खास = पुं० जनता के विशिष्ट लोगों और मंत्रियों आदि के साथ बैठने के लिये अकबर का बनवाया हुआ प्रासाद। ऐसी बैठक। ⊙दारी = स्त्री० किसी को प्रसन्न करने के हेतु उसके यहाँ बार बार जाकर बैठना और मीठी मीठी बातें करना। खुशामद, चापलूसी। ⊙विलासी(पु) = पुं० द्वारपाल, दरबान। दरबारी—पु० दरबार मे बैठनेवाला। वि० दरबार का, दरबार के योग्य। बढ़िया।

दरभ—पुं० दे० 'दर्भ' बदर।

दरमा—पुं० बाँस की चटाई।

दरमान—पुं० [फा०] औषध, दवा।

दरमाहा—पुं० [फा०] मासिक वेतन।

दरमियान—पुं० [फा०] मध्य, बीच। क्रि० वि० बीच मे, मध्य में। दरमियानी—वि० बीच का, मध्यस्थ। पु० दो आदमियों के बीच के झगड़े का निपटारा करनेवाला मनुष्य।

दररना(पु)—सक० दे० 'दरेरना'।

दरवाजा—पुं० [फा०] द्वार, मुहाना। किवाड, कपाट।

दरवी—स्त्री० कडछी, पौनी। साँप का फन।

दरवेश—पु० [फा०] फकीर, साधु। भिखारी।

दरशन—पुं० दे० 'दर्शन'।

दरशनी—स्त्री० दर्पण, शीशा।

दरशनी हुडी—वि० वह हुडी जिसके भुगतान की मिति बहुत कम दिनों की हो।

दरशाना—अक० [सं०] दे० 'दरसाना'।

दरस—पुं० दर्शन, दीदार। भेंट, मुलाकात। रूप, छवि, सुदरता। दरसन(पु)—अक० दिखाई पडना। दरसना—पुं० दे० दर्शन'। सक० देखना, लखना। दरसाना, दरसावना(पु)—सक० दिखाना। प्रकट करना, स्पष्ट करना, समझाना। (पु) अक० दिखाई पड़ना।

दराज—वि० [फा०] बडा, दीर्घ। क्रि० वि० बहुत अधिक। स्त्री० [हिं०] मेज मे लगा हुआ सदूकनुमा खाना। दरज, दरार।

दरार—स्त्री० वह खाली जगह जो किसी चीज के फटने पर पड जाती है, दरज। दरारना—अक० फटना, विदीर्ण होना।

दरारा—पुं० दरेरा, धक्का।

दरिंदा—पु० [फा०] फाड खानेवाला जंतु, मासभक्षक वनजतु।

दरिगह—स्त्री० दे० 'दरगाह'।

दरिद्र—वि० [सं०] निर्धन, कगाल। ⊙नारायण = पु० दरिद्रों और दीन दुखियों के रूप मे प्रकट नारायण की प्रत्यक्ष मूर्ति। दरिद्री—वि० दे० 'दरिद्र'।

दरिया—पुं० [फा०] नदी। समुद्र। 'दरिया [साहब]मी' नामक निर्गुण सप्रदाय के प्रवर्तक [सं]त। ⊙दिल = वि० उदार, दानी। ⊙बरार = पु० वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने से निकले। ⊙बुर्द = पुं० वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर बहा दे।

दरियाई—वि० [फा०] नदी या समुद्र से सबधित। नदी के निकट का। स्त्री० [हिं०] एक रेशमी पतली साटन। (पु)तलवार विशेष। 'दिप्ती दरियाई भटनि चलाई अति उमही' (हिम्मन० १९६)। ⊙घोडा = पु० [हिं०] गैंडे की तरह का एक जानवर जो नदियों के किनारे रहता है (अं० हिपोपॉटैमस) ⊙नारियल = पु० [हिं०] फकीरों द्वारा पात्र के समान व्यवहृत एक बडे नारियल का खोपडा।

दरियाफ्त—वि० [फा०] पूछा गया, ज्ञात।

दरियाव—पु० दे० 'दरिया'।

दरी—स्त्री० [सं०] गुफा, खोह। पहाड़ के बीच का वह नीचा स्थान जहाँ कोई नदी गिरती हो। मोटे सूतो का बना हुआ मोटे दल का बिछौना, शतरजी। द्वार। ⊙खाना [फा०] = वह घर जिसमे बहुत से द्वार हो, बारहदरी।

दरीचा—पु० [फा०] खिडकी। खिड़की के पास बैठने की जगह। दरीची—स्त्री० छोटा दरीचा।

दरीबा—पुं० पान का बाजार।

दरेग—पु० [अ०] कमी, कसर।

दरेरना—सक० रगडना, पीसना। रगड़ते हुए धक्का देना।

दरेरा—पुं० रगडा, धक्का। बहाव का जोर, तोड़।

दरेस—स्त्री० [अ० ड्रेस] एक प्रकार का फूलदार महीन कपडा। पोशाक। वि० तैयार, बना बनाया।

दरेसी—स्त्री० समतल या दुरुस्त करना (सडक, फर्श, छत, दीवाल आदि)।

दरैया†—पुं० दलनेवाला। विनाशक।

दरोग—पु० [अ०] असत्य ⊙हलफी = स्त्री० (सच बोलने की) कसम खाकर भी झूठ बोलना।

दरोगा—पु० दे० 'दारोगा'।

दर्ज—स्त्री० दे० 'दरज'। वि० [फा०] लिखा हुआ, अंकित।

दर्जन—पुं० बारह का समूह, इकट्ठी बारह वस्तुएँ।

दर्जा—पु० [अ०] ऊँचाई निचाई मे क्रम के विचार से निश्चित स्थान, श्रेणी। पढाई के क्रम मे ऊँचा नीचा स्थान। पद, ओहदा। किसी वस्तु का वह विभाग जो ऊपर नीचे के क्रम से हो, खड। क्रि० वि० गुणित, गुना।

दर्जी—पुं० [फा०] वह जो कपडे सीने का व्यवसाय करे। कपडा सीनेवाली जाति का पुरुष।

दर्द—पु० [फा०] पीडा, दुःख। कारण। हाथ से निकल जाने का कष्ट। ⊙नाक = वि० कष्टकर, दुखदायी। दयनीय। ⊙मंद = वि० पीडित, दुखी। दयावान्। मु०~खाना = दया करना।

दर्दी—पु० दे० 'दर्दमंद'।

दर्दुर—पुं० [स०] मेढक। बादल। अभ्रक।

दर्प—[स०] ऐश्वर्य, पद या प्रतिष्ठा का घमड। लक्ष्मी और अधर्म से उत्पन्न वृत्ति (भागवत, महाभारत आदि)। मिथ्या अभिमान, गर्व। अहकार के कारण किसी के प्रति कोप, मान। उद्दडता। आतक। रोब। दर्पिल—वि० दर्प या अभिमान से भरा हुआ। अक्खड। जिसपर आतंक छाया हो। दर्पी—पु० दर्प से भरा हुआ, अभिमानी।

दर्पण—पु० [सं०] मुँह देखने का शीशा, आईना।

दर्ब(पु)†—पुं० द्रव्य, धन। धातु (सोना, चाँदी इत्यादि)।

दर्भ—पु० [सं०] कुशा। धर्मकार्य का पवित्र, हरा कोमल कुश, डाभ। कुशासन। दर्भासन—पुं० कुश का बना हुआ बिछावन, कुशासन।

दर्रा—पु० [फा०] पहाडी के बीच का सँकरा मार्ग, घाटी। दरार।

दर्राना—अ०क्रि० धडधड़ाना, बेधडक चला जाना।

दर्व—पु० [सं०] दुष्ट मनुष्य। राक्षस। पजाब के उत्तर की एक प्राचीन जाति। इस जाति का प्रदेश।

दर्वी—स्त्री० [स०] कडछी, चमचा। साँप का फन। ⊙कर = पु० फनवाला साँप।

दर्श—पुं० [सं०] दर्शन। चद्रदर्शन पर किया जानेवाला यज्ञ। द्वितीया तिथि। वह यज्ञ या कृत्य जो अमावस्या के दिन हो। ⊙क = वि० देखनेवाला। दिखानेवाला।

दर्शन—पुं० [सं०] आँखों से प्राप्त बोध, अवलोकन। भेंट, मुलाकात। तत्वज्ञान, ब्रह्मविद्या। भारतीय प्राचीन ब्रह्मविद्या या तात्विक विवेक का शास्त्र (इसकी छह मुख्य शाखाएं हैं जिन्हें आस्तिक दर्शन कहते हैं—(पूर्वमीमासा, उत्तरमीमासा, न्याय, वैशेषिक, साख्य और योग)। तत्वज्ञान का शास्त्र, अध्यात्मविद्या। आँख। स्वप्न। बुद्धि। धर्म। दर्पण। ⊙शास्त्र = पु० प्राचीन ब्रह्मविद्या या तात्विक विवेक की छह प्रणालियो मे से कोई। दर्शनी हुडी—स्त्री० [हि०] दे० 'दरशनी हुडी'। दर्शनीय—वि० देखने योग्य, सुदर।

दर्शाना—सक० दे० 'दरसाना'। दर्शी—वि० देखनेवाला।

दल—पु० [सं०] किसी वस्तु, मुख्यत. अन्न या फल, फूल आदि के दो सम खडो मे से एक जो एक दूसरे से स्वभावत जुडे हो पर दबाव द्वारा अलग किए जा सकें (जैसे, दाल के दो दल)। पौधो का पत्ता, पत्र। तमाल पत्र। फूल की पँखडी। परत की तरह फैली हुई चीज की मोटाई। समूह, झुड। मंडली। सेना। भेदन, कटाव, जुदाई। ⊙गंजन = वि० विपक्ष के दल को नष्ट करनेवाला, बडा वीर। ⊙पति = पुं० दल का नायक, सरदार। सेनापति। ⊙बल = पुं० लाव-लश्कर, फौज, सहायको का जत्था।

⊙बादल = बादलों का समूह। बहुत अधिक साज सामान या सामग्री। भारी सेना। बहुत बड़ा शामियाना। ⊙बाल (पु) †—पुं० सेनापति।

दलना—पक० रगड़ या पीसकर टुकड़े टुकड़े करना। रौंदना, कुचलना। दबाना, मसलना। चक्की में डालकर अनाज आदि के दानों को दो दालों या कई टुकड़ों में करना। नष्ट करना, ध्वस्त करना। तोड़ना।

दलक—स्त्री० [अ०] गुदड़ी। [हिं०] आघात से उत्पन्न कंप घबराहट, धमक। रह रहकर उठनेवाला दर्द, टीस। ⊙ना—अक० फट जाना, दरार खाना। थर्राना, काँपना। चौंकना। उद्विग्न हो उठना। सक० डराना।

दलगीर—वि० ठपक या तपाक से युक्त।

दलदल—स्त्री० कीचड़। वह गीली जमीन जिसमें पैर नीचे को धँसता हो। मु०~ में फँसना = ऐसी मुश्किल या दिक्कत में पड़ना जिससे जल्दी छुटकारा न हो सके। जल्दी खतम या तै न होना। दलदला—वि० दलदलवाला।

दलन—पु० [स०] संहार। पीसकर टुकड़े टुकड़े करना। फटकर अलग होने की क्रिया या दशा, पार्थक्य। वि० संहार या नाश करनेवाला (के० समा० के अंत में)।

दलनि†—स्त्री० दलने की क्रिया या ढंग।

दलनिधिखानी (पु)—स्त्री० तलवार विशेष। "...दलनिधिखानी बिज्जु-समानी रन कौंधै (हिम्मत० १६४)।

दलनीय—वि० [सं०] दलन करने योग्य।

दलमलना—सक० मसल डालना। रौंदना, कुचलना। नष्ट करना।

दलवैया—वि० दलन या नाश करनेवाला। दलने या चूर्ण करनेवाला।

दलहन—पुं० वह अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है।

दलान†—पु० दे० 'दालान'।

दलाल—पु० [अ०] कुछ धन लेकर दूसरों की चीजों का क्रय विक्रय करानेवाला। वह व्यक्ति जो सौदा लेने या बेचने में सहायता दे, मध्यस्थ। कुटना।

दलाली—स्त्री [फा०] दलाल का काम। क्रय विक्रय कराने के लिये मिलनेवाला धन, दलाल को मिलनेवाला द्रव्य।

दलित—वि० [स०] मसला हुआ। दबाया, रौंदा या कुचला हुआ। खंडित। विनष्ट किया हुआ।

दलिया—पु० दलकर कई टुकड़े किया हुआ अनाज (जैसे, गेहूँ का दलिया)।

दली—वि० दलवाला। पत्तोंवाला।

दलील—स्त्री० [अ०] तर्क, युक्ति। बहस।

दलेल—स्त्री० सिपाहियों की वह कवायद जो सजा की तरह पर हो।

दवँगरा—पु० वर्षारंभ में होनेवाली झड़ी।

दव—पु० [स०] वन, जंगल। स्त्री० वह आग जो वन में आपसे आप लग जाती है, दावाग्नि। अग्नि। ⊙ना = सक० [हिं०] जलना। पु० दे० 'दौना'। दवागिन (पु)—स्त्री० दे० 'दवाग्नि'। दवाग्नि—स्त्री० वन में लगनेवाली आग। दवानल—पु० दवाग्नि।

दवन (पु)—पु० नाश। दौना पौधा।

दवनी—स्त्री० फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाकर दाना झाड़ने का काम, दँवरी।

दवरिया‡—स्त्री० दे० 'दवारि'।

दवा (पु) †—स्त्री० वन में लगनेवाली आग। अग्नि, आग। स्त्री० [फा०] वह वस्तु जिससे कोई रोग या व्यथा दूर हो। औषध। चिकित्सा। दुरुस्त करने या ठीक रास्ते पर लाने की तदबीर। मिटाने का उपाय। ⊙खाना—पु० औषधालय।

दवाई†—स्त्री० दे० 'दवा'।

दवात—स्त्री० स्याही रखने का बरतन।

दवामी—[अ०] जो चिर काल तक के लिये हो, स्थायी (जैसे, दवामी बंदोबस्त)।

दवारी—स्त्री० दवाग्नि।

दश—पु० [सं०] दस। ⊙कंठ = पु० रावण। ⊙कंठजहा = पुं० श्री रामचंद्र। ⊙कंधर = पु० रावण। ⊙क = दस वस्तुओं का समूह। सन्, संवत् आदि की गणना में दस वर्षों को एक मानकर जोड़ी जानेवाली संख्या, प्रत्येक दस वर्षों की अवधि। ⊙गात्र = पुं० मृतक संबंधी

एक कर्म जो उसके मरने के पीछे दस दिनो तक होता रहता है। ⊙ग्रीव = पु० दस ग्रीवावाला, रावण। ⊙नाम = पु० सन्यासियो के दस भेद—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी। ⊙नामी = पुं० अद्वैतवादी सन्यासियो मे शकराचार्य के शिष्यो का एक वर्ग। ⊙मुख = पु० दस मुँहोवाला, रावण। ⊙मूल = पुं० दस विशिष्ट औषधीय पेडो की छाल या जड (वैद्यक)। ⊙शीश = पु० दस सिरोवाला, रावण। ⊙हरा = पुं० ज्येष्ठ शुक्ल दशमी तिथि जिसे गगादशहरा भी कहते हैं। आश्विन शुक्ल दशमी तिथि अर्थात् विजयादशमी, जिस दिन श्रीराम ने रावण को मारा था। दशाग—पुं० पूजन मे सुगध के निमित्त जलाने मे प्रयुक्त धूप जिसमे दस सुगधद्रव्यो का योग होता है। दशानन—पु० दस मुँहवाला, रावण। दशार्ण—पुं० विध्य पर्वत के पूर्वदक्षिण मे स्थित प्रदेश का प्राचीन नाम जिससे होकर धसान नदी बहती है। उक्त प्रदेश का निवासी या राजा। तत्र का एक दशाक्षर मत्र। दशाश्वमेध—पु० दस अश्वमेध यज्ञो का क्रम या समवाय। काशी मे गगा जी का एक पवित्र घाट जहाँ से यात्री जल भरते हैं। दशाह—पु० दस दिन। मृतक सस्कार का दसवाँ दिन।

दशन—पुं० [सं०] दाँत। कवच। दशनावली—स्त्री० दाँतो की पक्ति।

दशना—वि० स्त्री० [सं०] दशन या दाँतोवाली।

दशमलव—पु० [सं०] वह भिन्न जिसके हर मे दस या उसका कोई घात हो (गणित)।

दशमी—स्त्री० [सं०] चाद्र मास के किसी पक्ष की दसवी तिथि। आश्विन के शुक्ल पक्ष की दसवी तिथि, जिस दिन श्रीराम ने रावण को मारा था। विजयादशमी। ९० वर्ष से ऊपर की अवस्था या आयु।

दशा—स्त्री० [सं०] अवस्था, स्थिति। मनुष्य के जीवन की अवस्था। साहित्य मे रस के अतर्गत विरही की अवस्था। फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन मे प्रत्येक ग्रह का नियत भोगकाल।

दस—वि० नौ और एक, पाँच का दूना। कई, बहुत से। पु० पाँच की दूनी सख्या। ⊙माथ(पु) = पुं० (दस माथे या मस्तकवाला) रावण।

दसन—पु० दे० 'दशन'। 'अधर दसन अनुभाव' (जगद्विनोद, ६८१)।

दसना—पु० बिछौना, बिस्तर। अक० बिछाया जाना, फैलना। सक० बिछाना, बिस्तर फैलाना। दसाना = सक० बिछाना।

दसखत†—पु० दे० 'दस्तखत'।

दसमी—स्त्री० दे० 'दशमी'।

दसवाँ—वि० गिनती मे दस के स्थान पर पडनेवाला। पु० किसी की मृत्यु के दसवें दिन होनेवाला कृत्य।

दसा—स्त्री० दे० 'दशा'। (पु)जलती बत्ती। 'दामिनी दमकनि दिमान मैं दसा की है' (जगद्विनोद, ३८५)।

दसारन—पुं० दे० 'दशार्ण'।

दसी—स्त्री० कपडे के छोर पर का सूत। थान का आँचल।

दसौंधी—पु० वदियो या चारणो की एक जाति जो अपने को ब्राह्मण कहती है, भाट।

दस्तदाजी—स्त्री० [फा०] हस्तक्षेप।

दस्त—पु० [फा०] पतला पाखाना, विरेचन। हाथ। ⊙कार = पु० हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला आदमी। ⊙कारी = स्त्री० हाथ की कारीगरी, शिल्प। ⊙खत = पु० अपने हाथ से लिखा हुआ अपना नाम, हस्ताक्षर। ⊙गीर = वि० हाथ पकडनेवाला, सहायक। ⊙दराज = वि० जल्दी मार बैठनेवाला। उचक्का, हाथलपक। ⊙बरदार = वि० जो किसी वस्तु पर से अपना हाथ या अधिकार उठा ले। ⊙याब = वि० हस्तगत, प्राप्त।

दस्तक—स्त्री० [फा०] हाथ से 'खटखट' शब्द उत्पन्न करने या खटखटाने की

क्रिया। बुलाने के लिये दरवाजे की कुडी खटखटाने की क्रिया। मालगुजारी वसूल करने के लिये गिरफ्तारी या वसूली का परवाना। माल आदि ले जाने का परवाना, कर, महसूल।

दस्तरखान—पु० [फा०] वह चादर जिसपर खाना रखा जाता है।

दस्ता—पु० वह जो हाथ मे आए या रहे। किसी औजार आदि का वह हिस्सा जो हाथ से पकडा जाता है, मूठ। फूलो का गुच्छा, गुलदस्ता। पुलिस या फौज के सिपाहियो का छोटा दल या टोली। किसी वस्तु का उतना गड्डा या पूला जितना हाथ मे आ सके। कागज के चौबीस या पचीस तावो की गड्डी।

दस्ताना—पु० [फा०] पजे और हथेली मे पहनने का बुना हुआ कपडा।

दस्तावर—वि० [फा०] दस्त लगानेवाला।

दस्तावेज—स्त्री० [फा०] वह कागज जिसमे कुछ आदमियो के बीच के व्यवहार की बातें उनके हस्ताक्षर सहित लिखी हो, व्यवहार सबधी लेख।

दस्ती—वि० [फा०] हाथ का, जो हाथ से ले जाया जाय या भेजा जाय (जैसे, दस्ती चिट्ठी)। हाथ मे लेकर चलने की बत्ती, मशाल। छोटी मूठ। छोटा कलमदान। हाथ का रूमाल।

दस्तूर—पु० [फा०] रीति, चाल। नियम, विधि। पारसियो का पुरोहित जो उनका कर्मकाड कराता है।

दस्तूरी—स्त्री० [फा०] वह द्रव्य जो धनिको के नौकर अपने मालिक का सौदा लेने मे दूकानदारो से हक के तौर पर पाते हैं।

दस्यु—पु० [स०] लुटेरा, डाकू। चोर। असुर। अनार्य, म्लेच्छ। दास। ⊙ज = पु० दस्यु की सतान, नीच। ⊙ता = स्त्री० लुटेरापन, डकैती, चोरी। दुष्टता। ⊙वृत्त = स्त्री० डकैती, लुटेरापन। चोरी।

दह—पु० नदी मे वह स्थान जहाँ पानी बहुत गहरा हो। कुड, हौज। स्त्री० ज्वाला, लपट।

दहक—स्त्री० आग दहकने की क्रिया, ज्वाला। लपट। ⊙ना = अक० लौ के साथ बलना, धधकना। शरीर का गरम होना, तपना। **दहकाना**—सक० [अक० दहकना] ऐसा जलाना कि लौ ऊपर उठे। धधकाना। भडकाना, । क्रोध दिलाना।

दहकान—पु० [फा०] गँवार, देहाती। **दहकानी**—वि० देहाती, गँवार।

दहड़ दहड़—क्रि० वि० लपट फेंकते हुए, धायँ धायँ।

दहन—पु० [सं०] जलने क्रिया या भाव, दाह। अग्नि। कृत्तिका नक्षत्र। तीन की सख्या। एक रुद्र।

दहना—अक० जलना, भस्म होना। क्रोध से सतप्त होना, कुढना। धँसना, नीचे बैठाना। सक० जलाना। सतप्त करना, कष्ट पहुँचाना। क्रोध दिलाना। वि० दे० 'दहिना'।

दहनि†—स्त्री० जलने की क्रिया, जलन।

दहपट—वि० ढाया हुआ, ध्वस्त। रौंदा हुआ, कुचला हुआ ⊙ना = सक० ध्वस्त करना, चौपट करना। रौंदना। कुचलना।

दहर—पु० नदी मे गहरा स्थान, दह। कुड, हौज।

दहरना(पु)—अक० दे० 'दहलना'। सक० दे० 'दहलाना'।

दहरौरा—पु० दही मे पडा हुआ बडा। एक प्रकार का गुलगुला।

दहल—स्त्री० डर से एकबारगी काँप उठने की क्रिया, अत्यत भीत होना। ⊙ना = अक० डर से एकबारगी काँप उठना। हिलना, काँपना (दीवार, मकान, जगल आदि का)। **दहलाना**—सक० [अक० दहलना] डर से कँपाना, भयभीत करना।

दहला—पु० ताश या गजीफे का वह पत्ता जिसमे दस बूटियाँ हो। †पु० थाला, थाँवला।

दहलीज—स्त्री० [फा०] द्वार के चौखट की नीचेवाली लकडी जो जमीन पर रहती है, देहली।

दहशत—स्त्री० [फा०] डर, भय।

दहा—पु० मुहर्रम का महीना। मुहर्रम की १ से १० तारीख का समय। ताजिया।

दहाई—स्त्री० दस का मान या भाव। अकों

के स्थानों की गिनती मे दूसरा स्थान जिसपर लिखा अंक दसगुना माना जाता है, । जैसे, २५ मे २ का मान २० है ।

दहाड़—स्त्री० शेर आदि की गरज। जोर से चिल्लाकर रोने की ध्वनि, आर्तनाद। युद्ध आदि के वीरो का गर्जन या ललकार। मु०~मारना या~मारकर रोना = चिल्ला चिल्लाकर रोना। ⊙ना = अक० शेर आदि का घोर शब्द करना। गरजना। चिल्लाकर रोना। युद्ध आदि मे वीरो का गरजना या ललकारना।

दहाना—पु० [फा०] चौडा मुँह, द्वार। वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समु मे गि ती है, मुहाना। मोरी। अक०[हिं हिसाब लगाना। अदाज करना।

दहिना—वि० शरीर के दो पार्श्वों मे से वह पार्श्व जो उत्तर मुख होने पर पूर्व की ओर रहता है और जिसमे प्राय अधिक बल होता है, बायाँ का उलटा।

दहिनावर्त†—वि० दे० 'दक्षिणावर्त'।

दहिने—क्रि० वि० दाहिनी ओर को। ⊙बाँए = क्रि० वि० इधर उधर, दोनो ओर। मु०~होना = अनुकूल होना, प्रसन्न होना।

दही—पु० स्त्री० खटाई के द्वारा जमाया हुआ दूध।

दहु(पु)—अव्य० अथवा, या। कदाचित्।

दहेड़ी—स्त्री० दही रखने का मिट्टी का बरतन।

दहेज—पु० वह धन और समाज जो विवाह के समय कन्यापक्ष की ओर से वर पक्ष को दिया जाता है।

दहेला—वि० जला हुआ। सतप्त। भोगा हुआ, ठिठुरा हुआ।

दह्यो(पु)—पु० दे० 'दही'।

दाँ—पु० दफा, वारी। पु० [फा०] ज्ञाता, जाननेवाला, जानकार।

दाँक—स्त्री० दहाड, गरज। ⊙ना(पु) = अक० गरजना, दहाडना।

दाँग—स्त्री० [फा०] छह रत्ती की तौल। दिशा, तरफ। पु० [हिं०] नगाड़ा डका। टीला, छोटी पहाडी।

दाँज†—स्त्री० बराबरी, समता।

दाँड़ना—सक० दड या सजा देना। जुरमाना करना।

दाँत—पु० अकुर के रूप मे निकली हुई हड्डी जो जीवो के मुँह, तालू, गले या पेट मे होती है और आहार चबाने, तोडने तथा आक्रमण करने, जमीन खोदने इत्यादि के काम मे आती है, दत। दाँत के आकार की निकली हुई वस्तु, दाँता। मु०~काटी रोटी = अत्यत घनिष्ठ मित्रता, गहरी दोस्ती।~किटकिटाना या~बजना = सरदी से दाँत के हिलने या काँपने के कारण दाँत पर दाँत पडना और शब्द होना।~खट्टे करना = खूब हैरान करना। प्रतिद्वद्विता या लडाई मे परास्त करना।~चबाना = क्रोध से दाँत पीसना, कोप प्रकट करना।~तले उँगली दबाना = अचरज मे आना, दग रहना। खेद प्रकट करना, अफसोस करना।~पीसना = (क्रोध मे) दाँत पर दाँत रखकर हिलाना।~बैठ जाना = दाँत की ऊपर नीचेवाली पक्तियो का परस्पर इस प्रकार मिल जाना कि मुँह जल्दी न खुल सके। (किसी वस्तु पर)~रखना या लगाना = लेने की गहरी चाह रखना। बदला लेने का विचार रखना। अवसर की प्रतीक्षा या ताक मे रहना। दाँतो उँगली काटना = दे० 'दाँत तले उँगली दबाना।' दाँतो पसीना आना = कठिन परिश्रम पडना। दाँतो मे तिनका लेना = दया के लिये बहुत विनती करना। (किसी के) तालु मे~जमना = बुरे दिन आना, शामत आना।

दांत—वि० [सं०] दमन किया हुआ। जितेंद्रिय, सयमी। दाँत का, दाँत सबधी। दाँतो से बना हुआ।

दाँता—पु० दाँत के आकार का कँगूरा।

दाँता किटकिट—स्त्री० कहासुनी, झगडा। गाली गलौज।

दांति—स्त्री० [सं०] विनय। इद्रियनिग्रह। अधीनता।

दाँती—स्त्री० हँसिया जिससे घास या फसल काटते हैं। काली भिड़। दाँतो की पक्ति,

बत्तीसी। दो पहाडो के बीच की सँकरी जगह, दर्रा।

दांना—सक० पकी फसल के डठलो को बैलो से दाना अलग करने के लिये रौंदवाना।

दांपत्य—वि० [सं०] पतिपत्नी सबधी। स्त्री० पुरुष का सा। पुं० स्त्री० पुरुप के बीच का प्रेम या व्यवहार।

दांभिक—वि० [सं०] पाखडी, धोखेबाज। घमडी।

दांय—स्त्री० दे० दँवरी'।

दांवँ—पुं० दे० 'दावँ'।

दांवनी—दामिनी नामक सिर का गहना।

दांवरी—स्त्री० रस्सी, डोरी। Ⓟस्त्री० दावाग्नि।

दाइⓅ—पुं० दे० 'दाय' और 'दाँव'।

दाइज, दाइजा—पुं० दे० 'दायजा'।

दाईं—वि० स्त्री० दाहिनी। स्त्री०वारी, दफा।

दाई—स्त्री० दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलानेवाली स्त्री, धाय। बच्चे की देख-रेख रखनेवाली दासी। बच्चा जनानेवाली स्त्री। वि० दे० 'दायीं'। मु० ~से पेट छिपाना = जाननेवाले से कोई बात छिपाना।

दाउँⓅ† दाउ,†—पुं० दे० 'दावँ'।

दाऊ†—पु० बडा भाई। कृष्ण के बडे भाई बलदेव। पिता।

दाऊदखानी—पु० [फा०] एक प्रकार का चावल। उत्तम प्रकार का सफेद गेहूँ, दाऊदी गेहूँ।

दाऊदी—पु० एक प्रकार का बढिया गेहूँ।

दाएँ—क्रि० वि० दाहिनी ओर को। मु० ~ होना = अनुकूल या प्रसन्न होना।

दाक्षायण—वि० [सं०] दक्ष से उत्पन्न। दक्ष का, दक्षसबधी। **दाक्षायणी**—स्त्री० दक्ष की कन्या। अश्विनी आदि नक्षत्र। दुर्गा। कश्यप की स्त्री अदिति।

दाक्षिणात्य—वि० [स०] दक्खिनी, दक्षिण का। पु० भारतवर्ष का वह भाग जो विंध्याचल के दक्षिण मे पड़ता है। दक्षिण देश का निवासी।

दाक्षिण्य—पु० [स०] अनुकूलता, प्रसन्नता। कुशलता। उदारता। शिष्टता, सुशीलता। दूसरे को प्रसन्न करने का भाव। नाटक मे वाक्य या चेष्टा द्वारा किसी उदासीन या अप्रसन्न चित्त को प्रसन्न करना। वि० दक्षिण का। दक्षिणा सबधी।

दाख—स्त्री० अगूर। मुनक्का। किशमिश।

दाखिल—वि० [फा०] प्रविष्ट, घुसा हुआ। शरीक, मिला हुआ। पहुँचा हुआ। ⊙खारिज = पु० किसी सरकारी कागज पर से किसी जायदाद के पुराने हकदार का नाम काटकर उसपर दूसरे हकदार का नाम लिखना। ⊙दफ्तर=वि० दफ्तर मे रखा हुआ (कागज) जिसकी कार्रवाई हो चुकी हो। **दाखिला**—पु० प्रवेश, पैठ। सस्था आदि मे प्रविष्ट या समिलित किए जाने का कार्य।

दाग—पु० जलाने का काम, दाह। मुर्दा जलाने की क्रिया। जलन, दाह। जलन का चिह्न। पु० [फा०] धब्बा, चित्ती। निशान, चिह्न। फल आदि पर पडा हुआ सडने का चिह्न। जलने का चिह्न। कलंक, ऐब।

दागना—सक० [हिं०] दग्ध करना। तपे लोहे से किसी के अग को ऐसा जलाना कि चिह्न पड जाय। धातु के तपे हुए साँचे को छुआकर अग पर उसका चिह्न डालना तप्त मुद्रा से अकित करना। फोडे आदि पर ऐसी तेज दवा लगाना जिससे वह जल या सूख जाय। भरी हुई बदूक मे बत्ती देना, तोप बदूक आदि छोडना। मृतक के निमित्त मृत्यु के १२वें दिन किसी साँड को दागकर स्वच्छद घूमने के लिये छोड देना। चिह्न या दाग लगाना।

दागी—वि० [फा०] जिसपर दाग या धब्बा हो। जिसपर सडने का चिह्न हो। कलकित, दोषयुक्त। जिसको सजा मिल चुकी हो।

दाघ—पुं० [सं०] गरमी, ताप।

दाजनⓅ†—स्त्री० दे० 'दाझन'। **दाजनाⓅ†**—अक० जलना। ईर्ष्या करना। सक० जलाना।

दाझनⓅ—स्त्री० जलन। **दाझनाⓅ**—अक० जलना, सतप्त होना। सक० जलाना।

दाटनाⓅ—सक० दे० 'डाँटना'।

दाड़िम—पुं० [सं०] अनार।

दाढ—स्त्री० जबड़े के भीतर के मोटे चौड़े दाँत, चौभड़। भीषण शब्द, गरज, दहाड़। चिल्लाहट। मु० ~मारकर रोना = खूब चिल्लाकर रोना।

दाढना(पु)—सक० जलाना, आग मे भस्म करना। सतप्त करना।

दाढा†—पुं० दे० 'दाढ'। दावानल। आग। दाह।

दाढी—स्त्री० चिबुक। ठुड्ढी और दाढपर के बाल, श्मश्रु। दे० 'डाढी'। ⊙जार = पुं० एक गाली, जिसे स्त्रियाँ कुपित होने पर पुरुषो को देती हैं।

दात(पु)—पु० दान। दे० 'दाता'।

दातव्य—वि० [सं०] देने योग्य। पुं० देने का काम, दान। दानशीलता, उदारता।

दाता—पु० [सं०] वह जो दान दे, दानशील। देनेवाला।

दातार—पु० दाता, देनेवाला।

दाती(पु)—वि० स्त्री० देनेवाली।

दातुन—स्त्री० दे० 'दतुवन'।

दात्यूह—पु० [सं०] पपीहा, चातक। मेघ।

दात्री—वि० स्त्री० [सं०] देनेवाली। स्त्री० हँसिया, दाँती।

दाद—पु० एक चर्मरोग जिसमे शरीर पर उभरे हुए ऐसे चकत्ते पड जाते हैं जिनमे बहुत खुजली होती है, दिनाई। स्त्री० [फा०] न्याय। प्रोत्साहन। प्रशसा, शाबासी। मु० ~चाहना = किसी अत्याचार के प्रतीकार की प्रार्थना करना। ~देना = न्याय करना। प्रशसा करना।

दादनी—स्त्री० [फा०] वह रकम जिसे चुकाना हो। वह रकम जो किसी काम के लिये पेशगी दी जाय, अगता।

दादरा—पु० एक प्रकार का चलता गाना। एक ताल जिसमे दो अर्धमात्राएँ होती हैं।

दादा—पु० पितामह, पिता का पिता। बडा भाई। बडे बूढो के लिये आदरसूचक शब्द। अव्य० भय, आश्चर्य या सतोषसूचक शब्द।

दादि(पु)†—स्त्री० न्याय, इसाफ।

दादी—स्त्री० पिता की माता, पितामह की स्त्री। पु० दाद चाहनेवाला, न्याय का प्रार्थी।

दादु(पु)†—स्त्री० दाद, दिनाई।

दादुर(पु)—मेंढक।

दादू†—पु० दादा के लिये सबोधन या प्यार का शब्द। 'भाई' आदि के समान एक साधारण सबोधन। बडो द्वारा प्रयुक्त छोटो के लिये प्रेमसूचक शब्द। अकबर के शासनकाल मे अहमदाबाद मे पैदा हुए एक सत जो जाति के धुनिया कहे जाते हैं। इनके नाम पर दादू पंथ चला। ⊙दयाल = पु० दे० 'दादू'। ⊙पंथी = पु० दादूदयाल के पथ का अनुयायी।

दाघ(पु)—स्त्री० जलन, दाह। ⊙ना(पु) = सक० जलाना, भस्म करना।

दान—पु० [सं०] देने का कार्य। धर्मार्थ, श्रद्धावश या दयापूर्वक दूसरे को धन देने का कार्य, खैरात। वह वस्तु जो दान में दी जाय। कर, महसूल। कुछ देकर शत्रु के विरुद्ध कार्यसाधन की नीति (राजनीति)। हाथी का मद। छेदन। शुद्धि। ⊙धर्म = पु० दान देने का कार्य, दान पुण्य। ⊙पत्र = पु० वह लेख या पत्र जिसके द्वारा कोई सपत्ति किसी को प्रदान की जाय। ⊙पात्र = पु० वह व्यक्ति जो दान पाने के उपयुक्त हो। ⊙लीला = स्त्री० कृष्ण की वह लीला जिसमें उन्होंने ग्वालिनो से गोरस बेचने का कर वसूल किया था। वह ग्रथ जिसमे इस लीला का वर्णन किया गया हो। ⊙वारि = पु० हाथी का मद। ⊙वीर = पु० वह जो दान देने से न हटे, अत्यत दानी। ⊙शील = वि० दान करनेवाला, दानी। दानाध्यक्ष—पु० राजाओ के यहाँ दान का प्रबध करनेवाला सबसे बडा अधिकारी। दानी—वि० जो दान करे, उदार। पु० दाता। वि० [हिं०] कर संग्रह करनेवाला। दान लेनेवाला।

दानव—पु० [सं०] कश्यप के 'दनु' नाम की पत्नी से उत्पन्न पुत्र, असुर। दानवी—स्त्री० दानव की स्त्री। दानव जाति की स्त्री। राक्षसी। वि० दानवो का, दानव सबधी। दानवेंद्र—पु० राजा बलि।

दाना—वि० [फा०] बुद्धिमान्, अक्लमंद। पु० अनाज का एक बीज, अन्न का एक

कण। अनाज, अन्न। चबेना। कोई छोटा बीज जो बाल, फली या गुच्छे मे लगे। फल या उसका बीज। कोई छोटी गोल वस्तु, जैसे, मोती का दाना। माला की गुरिया, मनका। रवा, कण। छोटे छोटे उभार जो टटोलने से अलग अलग मालूम हों। छोटी गोल वस्तुओ के लिये सख्या के स्थान पर आनेवाला शब्द। ⊙ई = स्त्री॰ अक्लमदी, बुद्धिमानी। ⊙पानी = पु॰ [हिं॰] खानपान, अन्नजल। भरण पोषण का आयोजन, जीविका। रहने का सयोग। दानेदार— वि॰ [हिं॰] जिसमे दाने या रवे हो, रवादार। मु॰ ~पानी छोडना = अन्न जल ग्रहण न करना, उपवास करना। दाने दाने को तरसना = भोजन के लिये कुछ न पाना। दाने दाने को मुहताज = अत्यत दरिद्र।

दानौं(पु)†—पु॰ दे॰ 'दानव'।

दाप—पु॰ अहकार, घमड। शक्ति, बल। उत्साह, उमग। रोब, आतक। क्रोध। जलन, ताप। ⊙क = पु॰ दबानेवाला। ⊙ना(पु) = सक॰ दबाना। मना करना।

दाब—स्त्री॰ दबने या दबाने का भाव। किसी वस्तु का वह जोर जो नीचे की वस्तु पर पडे, भार, बोझ। आतक, रोब, आधिपत्य, शासन। ⊙दार = वि॰ आतक रखनेवाला, रोबदार। ⊙ना—सक॰ दे॰ 'दबाना'।

दाबा—पुं॰ कलम लगाने के लिये पौधे की टहनी मिट्टी मे गाडना।

दाभ—पुं॰ कुश, डाभ, दर्भ।

दाम—पुं॰ [सं॰] रस्सी। माला, लडी। समूह, राशि। लोक, विश्व। पुं॰ [फा॰] जाल, फदा। पुं॰ [हिं॰] पैसे का २४वाँ या २५वाँ भाग। मूल्य, कीमत। धन, रुपया पैसा, सिक्का, रुपया। राजनीति की एक चाल जिसमे शत्रु को धन द्वारा वश मे करते हैं, दाननीति। मु॰~खड़ा करना = कीमत वसूल करना। ~चुकाना = मूल्य दे देना। कीमत ठहराना, मोल भाव तै करना। ~भर देना = कौडी कौडी चुका देना, कुछ (ऋण) बाकी न रखना। ~भरना = डाँड देना। चाम के ~चलाना = अधिकार या अवसर पाकर मनमाना अँधेर करना।

दामन—पुं॰ [फा॰] अगे, कोट, कुरते इत्यादि का निचला भाग, पल्ला। पहाडो के नीचे की भूमि। ⊙गीर = वि॰ दामन या पल्ला पकड़नेवाला, पीछे पडनेवाला। दावेदार।

दामरी—स्त्री॰ रस्सी, रज्जु।

दामा(पु)—स्त्री॰ दावानल।

दामाद—पुं॰ [फा॰] पुत्री का पति, जामाता।

दामिनी—स्त्री॰ [सं॰] बिजली, विद्युत्। स्त्रियो का एक शिरोभूषण, बिंदिया।

दामी—स्त्री॰ कर, मालगुजारी। वि॰ कीमती।

दामोदर—पु॰ [स॰] श्रीकृष्ण। विष्णु। एक जैन तीर्थंकर।

दायँ(पु)—पु॰ दे॰ 'दावँ'। स्त्री॰ बराबरी। दे॰ 'दाँज'।

दाय—पुं॰ [सं॰] वह धन जो किसी को देने के लिये हो। दायजे, दान आदि मे दिया जानेवाला धन। वह पैतृक या सबधी का धन जिसका उत्तराधिकारियो मे विभाग हो सके। हक, हिस्सा। दान। (पु) पुं॰ दे॰ 'दाव' ⊙भाग = पुं॰ पैतृक धन का विभाग। बाप दादे या सबधी की सपत्ति के पुत्रो, पौत्रो या सबधियों मे बाँटे जाने की स्मृतियो और धर्मशास्त्रो मे वर्णित व्यवस्था जो हिंदू धर्मशास्त्र का एक प्रधान विषय है।

दायम—क्रि॰ वि॰ [अ॰] सदा, हमेशा। दायमी—वि॰ सदा बना रहनेवाला, स्थायी। दायमुलहब्स—पुं॰ जीवन भर के लिये कैद, काले पानी की सजा।

दायर—वि॰ [फा॰] फिरता या चलता हुआ। चलता, जारी। उपस्थित। मु॰ ~करना। मामले, मुकदमे वगैरह को चलाने के लिये पेश करना।

दायरा—पुं॰ [अ॰] गोल, घेरा, मंडल। वृत्त। कक्षा।

दायाँ—वि० पूरब का ओर करके खड़े होने पर शरीर का वह आधा भाग जो दक्षिण की ओर हो, शरीर का वह अग जो प्राय अधिक प्रयुक्त और बलवान् होता है, दाहिना ।
दाया(पु)†—स्त्री० दे० 'दया' । स्त्री० [फा०] दाई ।
दायाद—वि० [पुं०] जो दाय का अधिकारी हो, जिसे किसी की जायदाद मे हिस्सा मिले । पुं० वह जिसका सबध के कारण किसी की जायदाद मे हिस्सा हो । पुत्र पौत्र आदि । सपिड कुटुबी ।
दायित्व—पु० [सं०] देनदार होने का भाव। जिम्मेवारी ।
दायी—वि० [सं०] देनेवाला (जैसे, सुख-दायी, वरदायी) ।
दार—(पु) पुं० दे० 'दारू' । प्रत्य० [फा०] रखनेवाला । स्त्री० [सं०] पत्नी, भार्या । ⊙कर्म=पु० किसी को पत्नी बनाने की क्रिया, विवाह । ⊙परिग्रह=पु० किसी को पत्नी के रूप मे स्वीकार करने का काम, विवाह ।
दारक—पु० [सं०] बच्चा, लडका । पुत्र ।
दारचीनी—स्त्री० एक प्रकार का तृज जो दक्षिण भारत और सिहल मे होता है। इस पेड की सुगधित छाल जो दवा और मसाले के काम मे आती है ।
दारण—पु० [सं०] चीरफाड । चीरने फाडने का औजार। फोडा आदि चीरने का काम ।
दारना(पु)—सक० विदीर्ण करना। नष्ट करना ।
दारमदार—पुं० [फा०] आश्रय, सहारा । किसी पर अवलबित रहना ।
दारा—स्त्री० पत्नी, भार्या ।
दारि(पु)†—स्त्री० दे० 'दाल' ।
दारिउँ(पु)—पुं० दे० 'दाडिम' ।
दारिका—स्त्री० [सं०] बालिका, कन्या । बेटी ।
दारिद(पु)—पुं० दरिद्रता, अकिंचनता ।
दारिद्र(पु)—पुं० दे० 'दारिद्रय' ।
दारिद्रय—पुं० [सं०] दरिद्रता, गरीबी ।
दारिम(पु)—पुं० दे० 'दाडिम' ।
दारी—स्त्री० [सं०] पैर के तलवो का एक रोग जिसमे चमडा कडा होकर जगह जगह फट जाता और खून फेंकता है, बिवाई । स्त्री० [हिं०] वह लौंडी जो लडाई मे जीतकर लाई गई हो, दासी। ⊙जार=पु० [हिं०] लौंडी का पति (गाली) । दासीपुत्र, गुलाम ।
दारु—पुं० [सं०] काठ, लकडी । देवदार । बढई। कारीगर। ⊙जोषित(पु)=स्त्री० दे० 'दारुयोपित्' । ⊙पुत्रिका=स्त्री० कठपुतली । ⊙योपित्=स्त्री० कठ-पुतली । ⊙सार=पु० चंदन । ⊙हलदी=स्त्री० [हिं०] आल की जाति का एक सदाबहार झाड जिसकी जड और डठल दवा के काम मे आते है।
दारुक—पु० [सं०] देवदारु । श्रीकृष्ण के सारथी का नाम ।
दारुण—वि० [सं०] भयकर, भीषण । कठिन, विकट। पुं० चीते का पेड़ । भयानक रस। विष्णु । शिव । एक नरक ।
दारुन(पु)—वि० दे० 'दारुण' ।
दारू—स्त्री० [फा०] दवा । शराब । बारूद ।
दारो⊙—पुं० दे० 'दार्यो' ।
दरोगा—पुं० [फा०] प्रबध या निगरानी करनेवाला अधिकारी (जैसे, दारोगा जेल, दारोगा चुगी, आदि) पुलिस का वह अफसर जो किसी थाने का अधि-कारी हो, थानेदार ।
दार्यौ(पु)—पु० अनार ।
दार्शनिक—वि० [सं०] दर्शन शास्त्र जानने-वाला, तत्वज्ञानी । दर्शनशास्त्र संबधी ।
दाल—स्त्री० दला हुआ अरहर, मूँग, चना, मटर, उडद आदि अनाज। मसाले के साथ या केवल पानी मे उबाला हुआ दला अन्न जो रोटी, भात आदि के साथ खाया जाता है। दाल के आकार की कोई वस्तु। ⊙दलिया=पु० सूखा रूखा भोजन, गरीबो का सा खाना। ⊙मोट =स्त्री० घी, तेल आदि मे नमक, मिर्च के साथ तली हुई दाल। ⊙रोटी=पु० सादा खाना। मु०~गलना=प्रयोजन सिद्ध होना। ~में कुछ काला होना=

कुछ खटके या सदेह की बात होना, किसी बुरी बात का लक्षण दिखाई पड़ना। ~रोटी चलना = जीविका-निर्वाह होना। जूतियों ~बँटना = आपस में खूब लड़ाई झगड़ा होना।

दालचीनी—स्त्री० दे० 'दारचीनी'।

दालान—पुं० [फा०] मकान में वह छाई हुई जगह जो एक, दो या तीन ओर खुली हो, बरामदा।

दालिद(पु)—पु० दे० 'दारिद्रय'।

दालिम(पु)—पु० दे० 'दाडिम'।

दावँ—पु० बार, दफा। किसी बात का समय जो कई आदमियों में एक दूसरे के पीछे क्रम से आवे, बारी। अनुकूल सयोग, अवसर। उपाय, चाल। कुश्ती या लडाई जीतने के लिये काम में लाई जानेवाली युक्ति, पेंच। कार्यसाधन की कुटिल युक्ति, छल। खेलने की बारी। पासे, जुए की कौड़ी आदि का इस प्रकार पड़ना जिससे जीत हो। †स्थान, ठौर। मु०~करना = घात लगाना। ~चूकना = अवसर को हाथ से जाने देना, घात में बैठना। देना = खेल में हारने पर नियत दड भोगना या परिश्रम करना (लड़कों का खेल)। ~पर चढ़ना = इस प्रकार वश में होना कि दूसरा अपना मतलब निकाल ले। ~पर रखना = रुपया पैसा या कोई वस्तु बाजी पर लगाना। ~लगना = अनुकूल सयोग मिलना, मौका मिलना। ~पर लगाना = दे० 'दाँव पर रखना'। ~लेना = बदला लेना।

दावँना—सक० दाना और भूसा अलग करने के लिये कटी हुई फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाना।

दावनी—स्त्री० माथे पर पहनने का स्त्रियों का गहना, बेंदी।

दावँरी—स्त्री० रस्सी, रज्जु।

दाव—पुं० दे० 'दावँ'। एक प्रकार का हथियार। पुं० [सं०] वन, जंगल। वन की आग। आग। जलन, ताप। **दावाग्नि**—स्त्री० [सं०] दे० 'दावानल'। **दावानल**—पुं० [सं०] वन की आग, दावा।

दावत—स्त्री० [अ०] ज्योनार, भोज। खाने का बुलावा, निमत्रण। सहभोज।

दावन(पु)—पुं० दमन, नाश। **दावना**(पु)—सक० दे० 'दावँना'। दमन करना।

दावनी—स्त्री० दे० 'दावँनी'।

दावा—स्त्री० वन में लगनेवाली आग जो पेड़ों की डालियों के एक दूसरी से रगड़ खाने से उत्पन्न होती है। पुं० [अ०] किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करने का कार्य। स्वत्व, हक। किसी जायदाद या रुपए पैसे के लिये चलाया हुआ मुकदमा। नालिश, अभियोग। जोर, दबाव। दृढता-पूर्वक कथन। ⊙**गीर** = पुं० [फा०] दावा करनेवाला, अपना हक जतानेवाला। ⊙**दार** = पुं० दावा करनेवाला, अपना हक जतानेवाला।

दावात—स्त्री० [अ०] स्याही रखने का बरतन, मसिपात्र।

दावनी(पु)—स्त्री० बिजली। दावनी नामक गहना।

दाशरथि—पुं० [सं०] दशरथ के चार पुत्र राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।

दाशार्ह—पुं० [सं०] दशार्ह से उत्पन्न यादव, दशार्ह की सतान। कृष्ण। दशार्ह की सतानों का प्रदेश।

दास—पुं० [सं०] वह जो अपने को दूसरे की सेवा के लिये समर्पित कर दे, गुलाम। (मनुस्मृति में सात प्रकार के और याज्ञवल्क्य आदि स्मृतियों में १५ प्रकार के दास कहे गए हैं)। शूद्र। धीवर। एक उपाधि जो शूद्रों के नामों के आगे लगाई जाती है। किसी प्रकार की वृत्ति लेकर काम करनेवाला, नौकर। दस्यु। वृत्तासुर। (पु)†पुं० दे० 'डासन'। ⊙**ता** = स्त्री० दास का कर्म, गुलामी। **दासानुदास**—पुं० सेवक का सेवक, अत्यत तुच्छ सेवक, (नम्रतासूचक)।

दासन—पुं० दे० 'डासन'।

दासा—पुं० दीवार से सटाकर उठाया हुआ पुश्ता जो कुछ ऊँचाई तक हो और जिस पर चीज वस्तु भी रखी जा सके। आँगन के चारों ओर दीवार से सटाकर उठाया

हुआ चबूतरा। उसपर रखी हुई लकडी या पत्थर की मोटी पटिया। वह लकडी या पत्थर जो दरवाजे पर ऊपर का बोझ सम्हालने के लिये दीवार के आरपार रहता है। लकडी या पत्थर का लबा और मोटा टुकडा, शिलाखड।

दासी—स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली स्त्री, टहलनी। ⊙पुत्र = पुं० किसी की रखेली या दासी से उत्पन्न पुत्र। हस्तिनापुर के राजा विचित्रवीर्य की दासी का पुत्र, विदुर।

दासेय—वि० [सं०] दास से उत्पन्न, गुलामजादा।

दास्तान—स्त्री० [फा०] वृत्तात, हाल। कथा। वर्णन।

दास्य—पु० [स०] दासता, सेवा। भक्ति के नौ भेदो से एक जिसमे उपासक उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको उनका दास समझते है।

दाह—पुं० [सं०] जलाने की क्रिया या भाव। शव जलाने की क्रिया। जलन, ताप। एक रोग जिसमे शरीर मे जलन मालूम होती है, प्यास लगती है और कठ सूखता है। अत्यत पीडा या दु ख, ईर्ष्या। ⊙क = वि०जलानेवाला। पुं० चित्रक वृक्ष। अग्नि। ⊙कर्म = पुं० मुर्दे का अग्नि सस्कार। ⊙क्रिया = स्त्री० दे० 'दाहकर्म'। **दाहन**—पुं० जलाने का काम। जलवाने या भस्म करने की क्रिया।

दाहना—वि० दे० 'दाहिना'। ⓟसक० भस्म करना, जलाना। कष्ट, देना दु ख पहुँचाना।

दाहि†—स्त्री० बार, दफा। 'इकहि भजत इक दाहि' (पद्माभरण, १९३)।

दाहिन, दाहिना—वि० दक्षिण, बायाँ का उलटा। उधर पडनेवाला जिधर दाहिना भाग हो। अनुकूल, प्रसन्न। मु०—(किसी का) ~हाथ होना = बडा भारी सहायक, होना। दाहिनी देना = दक्षिणावर्त परिक्रमा करना। दाहिनी लाना = प्रदक्षिणा करना।

दाहिनावर्त—वि० दे० 'दक्षिणावर्त'।

दाहिने—क्रि० वि० दाहिने हाथ की दिशा में।

दाही—वि० [सं०] जलानेवाला, भस्म करनेवाला।

दिंड—पुं० एक प्रकार का नाच।

दिंडी—पुं० [सं०] १९ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे दो गुरु होते हैं और ९ और १० पर विराम होता है।

दिअनाⓟ—पु० चिराग, दिया।

दिअली—स्त्री० मिट्टी का बना हुआ बहुत छोटा दीया या कसोरा। दे० 'दिउली'।

दिआ†—पु० दिया, चिराग।

दिआना—सक० दे० 'दिलाना'।

दिउली†—स्त्री० खुरड। दे० 'दिअली'। मछली के ऊपर से छूटनेवाला छिलका।

दिक्—स्त्री०[सं०] दिशा, ओर। ⊙कन्या = स्त्री० दिशारूपी कन्या, दसो दिशाएँ जो पुराणो मे ब्रह्मा की कन्याएँ मानी गई हैं। ⊙करी = पुं० दे० 'दिग्गज'। ⊙कांत = स्त्री० दिक्कन्या। ⊙कुंजर = पुं० वह काल्पनिक हाथी जिसपर दिशाएँ खडी हैं। ⊙पाल = पुं० पुराणानुसार दसो दिशाओ के अधिपति दस देवता जिनके नाम पूर्वादि दिशाओ के क्रम से 'इंद्र, अग्नि, यम, निर्ऋति (या नैर्ऋति) वरुण वायु, कुबेर, ईश, (शिरोर्ध्व दिशा के) ब्रह्मा और (पैर के नीचे की दिशा के) अनत हैं, दे० 'दिगपाल'। ⊙शूल = पुं० फलित ज्योतिष के अनुसार वह दिन या योग जब किसी विशिष्ट दिशा मे जाना निषिद्ध हो। ⊙साधन = पु० वह उपाय या विधि जिससे दिशाओ का ज्ञान हो। ⊙सुंदरी = स्त्री० दे० 'दिक्कन्या'।

दिक—वि० [अ०] हैरान, तंग अस्वस्थ, बीमार ('तबीयत' शब्द के साथ)। पु० क्षय रोग। **दिक्क**—वि०, पुं० दे० 'दिक'। **दिक्कत**—स्त्री० [अ०] दिक का भाव, परेशानी, कष्ट। कठिनता। **दिक्करि**ⓟ—स्त्री० दिशाओ के हाथी, दिग्गज। 'थभि न सकत भूमिधर दिक्करि' (हिम्मत०६०)।

दिकदाह—पु० दे० 'दिग्दाह'।

दिखना—अक० दिखाई देना।

दिखराना—सक० दे० 'दिखलाना'।

दिखरावना ⓟ—सक० दे० 'दिखलाना'।

दिखरावनी(पु)†—स्त्री० दिखाने का भाव या क्रिया ।

दिखलवाई—स्त्री० वह धन जो नवोढा का मुँह दखने के बदले मे दिया जाय । दे० 'दिखलाई' ।

दिखलाई—स्त्री० दिखलाने की क्रिया या भाव। वह धन जो नव विवाहिना का मुख देखने के बदले मे दिया जाय ।

दिखलाना—सक० [देखना का प्रे०] दूसरे को देखते मे प्रवृत्त करना। अनुभव कराना, समझाना ।

दिखहार(पु)†—पुं० देखनेवाला ।

दिखाई—स्त्री० देखने या दिखाने का काम । वह धन जो देखने या दिखाने के बदले मे दिया जाय ।

दिखाऊ—वि० जो देखने योग्य हो पर काम मे न आ सके । बनावटी । नि सार ।

दिखादिखी—स्त्री० दे० 'देखादेखी' ।

दिखाना—सक० दे० 'दिखलाना' ।

दिखाव—पुं० देखने का भाव या क्रिया । दृश्य, नजारा ।

दिखावट—स्त्री० दिखाने का भाव या क्रिया। आडबर, बाहरी टीमटाम, तडक भडक । **दिखावटी**—स्त्री० वह जो केवल देखने योग्य हो, पर काम मे न आ सके, बनावटी ।

दिखावा—पुं० ऊपरी तडक भडक, बनावट ।

दिखैया(पु)†—वि० दिखलाने या देखनेवाला ।

दिखौआ—पुं० दे० 'दिखावटी' ।

दिगगना—स्त्री० [सं०] दिशारूपिणी स्त्री, दसो दिशाएँ ।

दिगत(पु)—पु० आँख का कोना । [सं०] दिशा का छोर आकाश का छोर, क्षितिज । सब दिशाएँ ।

दिगंतर—स्त्री० [स०] दो दिशाओ के बीच का स्थान ।

दिगबर—वि० [सं०] दिशाओ से ही ढका हुआ, नगा । पु० नगा रहनेवाला जैन यति । शिव । अधकार । जैनियो की एक शाखा । ⊙ता = स्त्री० नगापन ।

दिगश—पुं० [सं०] क्षितिज वृत्त का ३६०वाँ अश । ⊙यत्र = पु० वह यत्र जिससे किसी ग्रह या नक्षत्र का दिगश जाना जाय ।

दिगपाल—पु० दे० 'दिग्गज' । २४ मात्राओ का वह छद जिसके प्रत्येक चरण के अत मे दो गुरु वर्ण रहते है ।

दिग्—स्त्री० [सं०] दे० दिक् । ⊙गज = पु० पुराणानुसार वे आठो हाथी जो आठो दिशाओ मे पृथ्वी को दबाए रखने और उनकी रक्षा करने के लिये स्थापित है। पूर्वादि दिशाओ के क्रम से इनके नाम ऐरावत, पुडरीक, वामन, कुमुद, अजन, पुष्पदत, सार्वभौम और सुप्रतीक है । वि० बहुत बडा, बहुत भारी । ⊙दति(पु)† = पु० दे० दिग्गज' । ⊙दर्शक यत्र = पु० कुतुबनुमा । ⊙दर्शन = पु० वह जो कुछ उदाहरण स्वरूप दिखलाया जाय, नमूना दिखाने का काम । जानकारी । ⊙दाह = पु० एक विशेष प्रकार का उत्पात या दैवी घटना जिसमे सूर्यास्त के बहुत देर बाद तक दिशाएँ लाल और जलती हुई सी दिखलाई पडती है । बृहत्सहिता के अनुसार यह अशुभ-सूचक लक्षण माना जाता है । ⊙देवता(पु) = पु० दे० 'दिक्पाल' । ⊙पट = पु० दिशारूपी वस्त्र । नगा । ⊙पति = वि०पु० ⊙पाल = पु० दे० 'दिक्पाल' । ⊙भ्रम = पु० दिशा सबधी भ्रम या भूल, दिशाओ के ज्ञान का अभाव । ⊙मडल = पु० दिशाओ का समूह, सपूर्ण दिशाएँ । ⊙ राज = पु० दे० 'दिक्पाल' । ⊙वस्त्र = पु० नंगा रहनेवाला जैन यति । ⊙वास = पु० दे० 'दिग्वस्त्र' । ⊙विजय = स्त्री० अपनी सेना सहित राजाओ का वीरता दिखलाने और महत्व स्थापित करने के लिये देश देशातरो मे जाकर युद्ध करना और विजय प्राप्त करना । अपने गुण, विद्या या बुद्धि आदि के द्वारा देश देशातरो मे अपना महत्व स्थापित करना । देश देशातरो के रहनेवाले को जीतना । ⊙विजयी, ⊙विजेता = वि० पु० जिसने द्विग्विजय किया हो ।

विभाग = पुं० दिशा, ओर। ⊙व्यापी = वि० जो सब दिशाओ मे व्याप्त हो। ⊙शूल = पु० दे० 'दिक्शूल'।

दिग्घ(पु)†—वि० लंबा। बड़ा। दीर्घ।

दिङ्नाग—पु० [सं०] दिग्गज। एक बौद्ध नैयायिक और आचार्य। मल्लिनाथ के के अनुसार महाकवि कालिदास के एक समकालीन कवि और प्रतिद्वंद्वी।

दिङ्मंडल—पु० दिशाओ का समूह।

दिच्छ(पु)—स्त्री० दिशा। 'देखौ दिच्छ दिच्छन प्रतच्छ निज पच्छिन के' (प्रबोध०२५)।

दिच्छित(पु)†—पु० वि० दे० 'दीक्षित'।

दिजराज(पु)†—पु० दे० 'द्विजराज'।

दिटि्ठी—स्त्री० दे० 'दृष्टि'।

दिठवन—स्त्री० दे० 'देवोत्थान'।

दिठाना—अक० बुरी दृष्टि लगना। सक० बुरी दृष्टि लगाना।

दिठादिठी—स्त्री० 'देखादेखी'।

दिठौना†—पु० काजल की वह बिंदी जो बालको को नजर से बचाने के लिये उनके माथे पर लगाई जाती है। डिठौना।

दिढ़(पु)†—वि० दे० 'दृढ'। दिढ़ाना(पु)†—सक० मजबूत करना। निश्चित करना। दिढ़ाव(पु)—पुं० दे० 'दृढता'।

दिति—स्त्री० [सं०] कश्यप ऋषि की एक स्त्री जो दक्ष प्रजापति की कन्या और दैत्यो की माता थी। ⊙सुत = पु० दैत्य, राक्षस।

दिदार—पुं० दे० 'दीदार'।

दिन—पु० [सं०] सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय। आठ पहर या चौबीस घंटे का समय। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। समय, काल। निश्चित या उचित समय। वह समय जिसके बीच कोई विशेष बात हो (जैसे गर्भ के दिन, बुरे दिन)। क्रि० वि० सदा, हमेशा। ⊙कंत(पु)† = पुं० सविता, सूर्य। ⊙कर = पु० सूर्य। ⊙चर्या = स्त्री० दिन भर का काम धंधा। ⊙दानी(पु)† = स्त्री० वि० [हिं०] प्रति दिन दान करनेवाला, खूब दान देनेवाला। गरीबपरवर। ⊙नाथ = पु० सूर्य। ⊙पति = पुं० सूर्य। ⊙पत्र = पुं० वह पत्र या पत्रसमूह जिसमे वार, तिथियाँ और तारीख आदि दी रहती है, (अं० कैलेंडर), पंचांग। ⊙मणि = पुं० सूर्य, रवि। ⊙मान = पु० सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के समय का मान, दिन का प्रमाण। ⊙राई (पु) = पुं० दे० 'दिनराज'। ⊙राज = पुं० सूर्य। दिनांत—पुं० दिन का अंत, संध्या। दिनांध—पुं० वह जिसे दिन को न सूझे। उल्लू। चमगादड़। दिनेश—पुं० सूर्य। दिनौंधी—स्त्री० [हिं०] एक रोग जिसमे दिन मे कम दिखाई देता है, रतौंधी का उलटा। मु०~ काटना या ~पूरे करना = निर्वाह करना, समय बिताना। ~को तारे दिखाई देना = इतना अधिक मानसिक कष्ट पहुँचना कि बुद्धि ठिकाने न रहे। ~को~, रात को रात न जानना या समझना = अपने सुख या विश्राम आदि का कुछ भी ध्यान न रखना। ~चढ़ना = किसी स्त्री का गर्भवती होना। सूर्योदय होना। ~छिपना या डूबना = संध्या होना। ~ढलना = संध्या का समय निकट आना। ~दहाड़े या ~दिहाड़े = बिलकुल दिन के समय। ~दिन या ~पर~ = सदा, हर रोज। ⊙रात = सदा, हरवक्त। ~दूना रात चौगुना होना या बढ़ना = बहुत जल्दी जल्दी और बहुत अधिक बढ़ना, खूब उन्नति पर होना। ~धरना = किसी काम के लिये दिन निश्चित करना। ~निकलना = सूर्योदय होना। ~फिरना = बुरे दिनो के बाद अच्छे दिन आना। ~बिगड़ना = बुरे दिन होना।

दिनअर—पुं० दे० 'दिनकर'।

दिनांत—पुं० दिन का अंत, संध्या।

दिनाइ†—स्त्री० दाद नामक रोग।

दिनाई(पु)—स्त्री० कोई ऐसी विषाक्त वस्तु जिसके खाने से थोड़े ही समय मे मृत्यु हो जाय।

दिनार(पु)—पुं० दे० 'दीनार'।

दिनिग्रर(पु), **दिनियर**(पु)'—पुं० सूर्य ।
दिनी—वि० बहुत दिनों का, पुराना ।
दिनेर—पुं० सूर्य ।
दिपना(पु)—अक० प्रकाशमान होना । चमकना । **दिपाना**—अक० दे० 'दिपना' ।
दिपति(पु)†—स्त्री० दे० 'दीप्ति' ।
दिब(पु)—पुं० दे० 'दिव्य' ।
दिबि(पु)—पुं० स्वर्ग । 'जग जिनिव्व दिवि देवदल' (प्रताप० १) ।
दिमाक'—पुं० दे० 'दिमाग' ।
दिमाग—पुं० [अ०] विचार, कामना, चेतना, स्मरण आदि शक्तियों का अवयव । मस्तिष्क, भेजा । मानसिक शक्ति, बुद्धि । अभिमान, शेखी । ⊙**चट** = वि० [हिं०] बक बककर सिर खानेवाला, बकवादी । ⊙**दार** = वि० [फा०] बुद्धिमान, बहुत समझदार । घमंडी । **दिमागी**—वि० दे० 'दिमागदार' । दिमाग संबंधी । मु० ~**खाना या चाटना** = व्यर्थ की बातें कहना, बकवाद करना । ~**खाली करना** = ऐसा काम करना जिसमे मानसिक शक्ति का बहुत अधिक व्यय हो । ~**चढ़ना या आसमान पर होना** = बहुत घमंड होना । ~**लड़ाना** = बहुत सोच विचार करना ।
दिमात(पु)†—वि० पु० दो माताओवाला, वह जिसकी दो माताएँ हों । वि० पु० वह जिसमें दो मात्राएँ हो, द्विकल ।
दिमाना(पु)†—वि० दे० 'दीवाना' ।
दियना†—पु० दिया, दीपक । अक० दिपना, चमकना ।
दियरा—पुं० एक प्रकार का पकवान । वह लुक जो शिकारी हिरनो को आकर्षित करने के लिये जलाते हैं । दीपक, दिया ।
दिया—पुं० उजाले के लिये घी या तेल से जलनेवाली बत्ती का पात्र, चिराग, दीपक । ⊙**सलाई** = स्त्री० लकड़ी की छोटी सलाई या सींक जिसके एक सिरे पर गंधक का मिश्रण लगा रहता है जो रगड़ने से जल उठता है । मु० ~**ठंढा करना** = दिया बुझाना । (किसी के घर का) । ~**ठंढा होना** = किसी के मरने से कुल में अंधकार छा जाना । ~**बढ़ाना** = दिया बुझाना । ~**बत्ती करना** = रोशनी का सामान करना, चिराग जलाना । ~**लेकर ढूँढ़ना** = चारों ओर हैरान होकर ढूँढ़ना, बड़ी छानबीन से खोजना ।
दियारा—पु० नदी के किनारे की वह जमीन जो नदी के हट जाने पर निकल आती है, कछार, खादर । प्रदेश, प्रांत ।
दिरद(पु)—पु० दे० 'द्विरद' ।
दिरम—पु० [फा०] मिस्र देश का चाँदी का एक सिक्का, दिरहम । साढ़े तीन माशे की एक तौल ।
दिरमान—पु० [फा०] चिकित्सा, इलाज । **दिरमानी**—पु० इलाज करनेवाला, चिकित्सक ।
दिरानी—स्त्री० दे० 'देवरानी' ।
दिरिस(पु)†—पु० दे० 'दृश्य' ।
दिल—पु० [फा०] छाती के बाईं ओर का वह पोला या भीतरी अवयव जो निरंतर क्रियाशील रहकर शरीर में रक्तसंचार को नियमित रखता है, कलेजा, हृदय । भावों का अवयव (विशेषत प्रेम का), मन, चित्त । ⊙**गीर** = वि० उदास । दु खी । ⊙**चला** = वि० [हिं०] साहसी, दिलेर । बहादुर । मनचला, दिलदार । ⊙**चस्प** = वि० जिसमे जी लगे, मनोहर, चित्ताकर्षक । ⊙**जमई** = स्त्री० इतमीनान, तसल्ली । ⊙**जला** = [हिं०] जिसके चित्त को बहुत कष्ट पहुँचा हो । ⊙**जोई** = स्त्री० किसी का मन रखने के लिये उसे प्रसन्न करना । ⊙**दार** = वि० उदार, दाता । रसिक । प्रेमी । ⊙**फेंक** = पु० [हिं०] जिसका हृदय वश मे न हो, जो सरलता से प्रेमपाश मे फँस जाय । ⊙**बर** = वि० प्यारा, प्रिय । ⊙**बस्तगी** = स्त्री० किसी बात मे दिल लगाना, मनोरंजन । ⊙**रुबा** = पुं० वह जिससे प्रेम किया जाय, प्यारा । एक वाद्य यंत्र । ⊙**शिकन** = वि० दु खी या निराश करके दिल तोड़नेवाला ।
दिलवाना—सक० दे० 'दिलाना' ।

दिलहा—पुं० दे० 'दिल्ली'। जोडदार किवाडो का वह भाग जो बीच मे होता है।
दिलाना—सक० [देना का प्रे०] दूसरे को देने मे प्रवृत्त करना, दिलवाना।
दिलावर—वि० [फा०] बहादुर। उत्साही, साहसी।
दिलासा—पुं० तसल्ली, आश्वासन। दम⊙ = पु० तसल्ली, धैर्य। धोखा।
दिली—वि० दिल सबधी, हार्दिक। अत्यत घनिष्ठ, जिगरी।
दिलेर—वि० [फा०] बहादुर। साहसी।
दिल्लगी—स्त्री० दिल लगाने की क्रिया या भाव। केवल विनोद या हँसन हँसाने की बात, ठठ्ठा, मजाक। ⊙बाज = पुं० हँसी दिल्लगी करनेवाला, मसखरा। मु० (किसी बात की) ~उड़ाना = (किसी बात को) अमान्य और मिथ्या ठहराने के लिये (उसे) हँसी मे उडा देना।
दिल्ला—पुं० किवाड के पल्ले मे लकडी का वह चौखटा जो शोभा के लिये बना या जड दिया जाता है, आइना।
दिल्ली—पुं० भारत का मुख्य नगर। भारत सरकार की राजधानी। दिल्ली प्रदेश। ⊙वाल = पुं० एक प्रकार का जूता, सलेमशाही।
दिव—पुं० [स०] स्वर्ग। आकाश। वन। दिन। ⊙राज = पुं० इद्र।
दिवक(पु)—पुं० एक प्रकार का सॉप। शेषनाग।'चिक्करि दिक्करि उठहि दिवक भुवभार न थर्भाहिं' (प्रताप० १२२)।
दिवला(पु)—पुं० दे० 'दिया'।
दिवस—पुं० [स०] दिन, रोज। ⊙अध (पु) = पुं० दे० 'दिवाध'। ⊙मुख = प्रात काल, सवेरा।
दिवस्पति—पु० [सं०] इद्र, देवराज। सूर्य।
दिवा—पु० [सं०] दिन, दिवस। २२ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात भगण और अत्य गुरु होता है, मालिनी, उमा, मदिरा। दे० 'दिया'। ⊙कर = पु० सूर्य। दिवांध—वि० जिसे दिन मे न सूझे, जिसे दिनौंधी हो। पु० दिनौंधी का रोग। उल्लू। चमगादड़।
दिवान—पु० दे० 'दीवान'।
दिवाना(पु)†—सक० दे० 'दिलाना'। पु० दे० 'दीवाना'।
दिवाभिसारिका—स्त्री० [स०] वह नायिका जो दिन के समय अपने प्रेमी से मिलने के लिये सकेत स्थान मे जाय।
दिवाल—वि० जो देता हो, देनेवाला।
दिवाला—पु० वह अवस्था जिसमे मनुष्य के पास अपना ऋण चुकाने के लिये कुछ न रह जाय, टाट उलटना। किसी पदार्थ का बिलकुल न रह जाना। मु०~ निकलना = शक्ति से अधिक व्यय हो जाना। ~निकालना = दिवाला होना। ~मारना = दिवालिया बन जाना। यथेष्ट धन बचाकर अपने आप को ऋण चुकाने मे असमर्थ घोषित करना। दिवालिया—वि० ऋण चुकाने मे असमर्थ। दिवाला निकालनेवाला व्यक्ति।
दिवाली—स्त्री० दे० 'दीवाली'।
दिवि—पु० [सं०] आकाश। नभ मे।
दिवैया—वि० देनेवाला, जो देता है।
दिवोल्का—स्त्री० [सं०] दिन मे आकाश से गिरता हुआ दिखाई देनेवाला पिड या उल्का।
दिवौका—पुं० [सं०] वह जो स्वर्ग मे रहता हो। देवता।
दिव्य—वि० [सं०] स्वर्ग से सबंध रखनेवाला, स्वर्गीय। आकाश से सबध रखनेवाला। अलौकिक। प्रकाशमान, चमकीला। बहुत सुदर, बहुत स्वच्छ। पुं० यव, जौ। तत्ववेत्ता। तीन प्रकार के केतुओ मे से एक। आकाश मे होनेवाला एक प्रकार का उत्पात। तीन प्रकार के नायको मे से वह जो स्वर्गीय या अलौकिक हो (जैसे, इद्र राम)। व्यवहार या न्यायालय मे प्राचीन काल की एक प्रकार की परीक्षा जिससे किसी मनुष्य का अपराधी या निरपराध होना सिद्ध होता था (ये परीक्षाएँ नौ प्रकार की होती थी—घट, अग्नि, उदक, विष, कोष, तडुल,

तप्तमाषक, फूल तथा धर्मज)। (विशेषत देवताओं आदि की) शपथ, कसम। ⊙चक्षु=पुं० अलौकिक वस्तुओं को देखने की शक्तिवाली आँखें। ज्ञानचक्षु। आध्यात्मिक दृष्टि। अंधा। चश्मा, ऐनक बदर। ⊙ता=स्त्री० दिव्य का भाव। देवभाव। सुदरता। ⊙दृष्टि=स्त्री० अलौकिक दृष्टि जिसमे गुप्त, परोक्ष अथवा अंतरिक्ष पदार्थ दिखाई दे। ज्ञानदृष्टि ⊙रथ=पु० देवताओं का विमान। ⊙सूरि=पु० रामानुज संप्रदाय के १२ आचार्य जिनके नाम ये हैं—कासार, भूत, महत्, भक्तिसार, शठारि, कुलशेखर विष्णुचित्त, भक्तांघ्रिरेणु, मुनिवाह, चतुष्कवींद्र, रामानुज और गोदा देवा या मधुकर कवि। दिव्यांगना—स्त्री० देववधू। अप्सरा। दिव्यादिव्य—पुं० तीन प्रकार के नायकों मे से एक। वह मनुष्य या इहलौकिक नायक जिसमे देवताओं के भी गुण हों (जैसे नल, अभिमन्यु)। दिव्यास्त्र—पुं० देवताओं का दिया हुआ हथियार। अद्भुत या अलौकिक हथियार। दिव्योदक—पु० वर्षा का जल, निर्मल पानी।

दिव्या—स्त्री० [सं०] तीन प्रकार की नायिकाओं मे से एक, स्वर्गीय या अलौकिक नायिका (जैसे, पार्वती, सीता आदि)। दिव्यादिव्या—स्त्री० तीन तीन प्रकार की नायिकाओं मे से एक। वह इहलौकिक नायिका जिसमे स्वर्गीय स्त्रियों के भी गुण हों (जैसे, दमयंती, पद्मिनी आदि)।

दिश्—स्त्री० [सं०] दिशा, दिक्।

दिशा—स्त्री० [सं० दिश्] ओर, तरफ। क्षितिज वृत्त के किए हुए चार कल्पित विभागों मे से किसी एक विभाग की ओर का विस्तार। ये चार विभाग पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण कहलाते हैं। दस की संख्या। ⊙दाह(पु)=पुं० [हि०] दे० 'दिग्दाह'। ⊙भ्रम=[हिं०] दिशाओं के संबंध मे भ्रम होना, दिशाओं के ज्ञान का अभाव। ⊙शूल=पुं० दे० 'दिक्शूल'।

दिशि—स्त्री० दे० 'दिशा'।

दिश्य—वि० [सं०] दिशा संबधी।

दिष्ट—पुं० [सं०] भाग्य। उपदेश। दारुहलदी। काल। ⊙बंधक=पुं० [हिं०] वह रेहन जिसमे चीज पर रुपये देनेवाले का कोई कब्जा न हो, उसे सिर्फ सूद मिलता रहे एवं वह इतना ही देखता रहे कि ऋण अदा होने तक जिस चीज पर ऋण लिया गया है वह ज्यों की त्यों [illegible] ी है।

दि[illegible]ट(पु)—स्त्री० दे० 'दृष्टि'।

[illegible]सतर(पु)†—पुं० देशांतर, विदेश। क्रि० वि० बहुत दूर तक।

दिसा(पु)†—स्त्री० दे० 'दिशा'।

दिसना(पु)†—अक० दे० दिखाना'।

दिसा—स्त्री० दे० 'दिशा'। †स्त्री० मलत्याग।

दिसावर—पुं० दूसरा देश, परदेश। दिसावरी—वि० विदेश से आया हुआ, बाहरी (माल)।

दिसि(पु)†—स्त्री० दे० 'दिशा'। ⊙कुंजर, ⊙दुरद(पु)†=पुं० दे० 'दिग्गज'। ⊙नायक(पु)†=पुं० दे० 'दिक्पाल'। ⊙प(पु)=पुं० दे० 'दिक्पाल'। ⊙राज(पु)=पुं० दे० 'दिक्पाल'।

दिसिटि(पु)†—स्त्री० दे० 'दृष्टि'।

दिसैया(पु)†—वि० देखनेवाला। दिखानेवाला।

दिष्टी(पु)†—स्त्री० दे० 'दृष्टि'।

दिष्टीबंध—पु० नजरबंदी, जादू।

दिस्ता—पुं० दे० 'दस्ता'।

दिहंदा—वि० [फा०] दाता देनेवाला। (मुख्यत समास मे प्रयुक्त, जैसे, नादिहंद=नदेनेवाला)।

दिहकान—पुं० दे० 'दहकान'।

दिहा—पुं० दे० 'दिहाड़ा'।

दिहाडा—पुं० दिन, दिवस। दुर्गत।

दिहात—पुं० दे० 'देहात'।

दीआ—पुं० दे० 'दिया'।

दीक्षक—पुं० [सं०] दीक्षा देनेवाला गुरु। शिक्षक।

दीक्षण—पुं० [सं०] दीक्षा देने की क्रिया।

दीक्षांत—पुं० [सं०] वह अवभृथ यज्ञ या

स्नान जो किसी यज्ञ के समाप्त हो जाने पर उसकी त्रुटि आदि के दोष की शाति के लिये किया जाय। विद्यालयो और विश्वविद्यालयो आदि का प्रमाणपत्र देने का उत्सव (अँ० कान्वोकेशन)।

दीक्षा—स्त्री० [स०] गुरु या आचार्य का नियमपूर्वक मन्त्रोपदेश, मन्त्र की शिक्षा जो गुरु दे और शिष्य ग्रहण करे। उपनयन सस्कार जिसमे आचार्य गायत्री मन्त्र का उपदेश करे, गुरुमन्त्र। सोमयागादि का सकल्पपूर्वक अनुष्ठान। ⊙**गुरु** = पुं० मन्त्रोपदेष्टा गुरु।

दीक्षित—वि० [स०] जिसने आचार्य से दीक्षा या गुरु से मन्त्र लिया हो। जिसने सोम यागादि का सकल्पपूर्वक अनुष्ठान किया हो। पुं० ब्राह्मणो की एक शाखा।

दीखना—अक० दिखाई देना, देखने मे आना, दृष्टिगोचर होना।

दीघी—स्त्री० वावली, तालाव।

दीच्छा(पु)—स्त्री० दे० 'दीक्षा'।

दीठ—स्त्री० देखने की वृत्ति या शक्ति दृष्टि। टक, नजर (मुहावरे के लिये दे० 'दृष्टि' के मुहावरे)। आँख की ज्योति का प्रसार जिससे वस्तुओ के रूप, रग आदि का वोध होता है, दृक्पथ। अच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि जिसका प्रभाव वुरा पडे, नजर देखने के लिये खुली हुई आँख। देखभाल, देखरेख, निगरानी। परख, पहचान। कृपादृष्टि। उम्मीद। विचार, सकल्प। ⊙**वदी** = स्त्री० इद्रजाल की ऐसी माया जिससे लोगो को और का और दिखाई दे, नजरवदी, जादू। ⊙**वंत** = जिसे दिखाई दे, देखनेवाला, दृष्टिसपन्न। अच्छी सूझ वूझ का। दूरदर्शी। मु०~**उतारना या झाड़ना** = मन्त्र के द्वारा वुरी दृष्टि का प्रभाव दूर करना। ~**खा जाना** = किसी की वुरी दृष्टि के सामने पड जाना, टोक मे आना। ~**जलाना** = नजर उतारने के लिये राई नोन या कपडा जलाना।

दीठिमेरावा—पुं० परस्पर दर्शन, आँखें चार होना।

दीदा—पुं० [फा०] दृष्टि, नजर। आँख, नेत्र। अनुचित साहस, ढिठाई। मु०~**लगना** = जी लगना, ध्यान, जमना। **दीदे का पानी ढल जाना** = निर्लज्ज हो जाना। **दीदे निकालना** = क्रोध की दृष्टि से देखना। **दीदे फाड़कर देखना** = अच्छी तरह आँख खोलकर देखना।

दीदार—पुं० [फा०] दर्शन, देखादेखी।

दीदी—स्त्री० वडी वहिन।

दीधिति—स्त्री० [सं०] सूर्य, चद्रमा आदि की किरण। प्रकाश। उँगली। ब्रह्मसूत्रभाष्य की टीका की एक टीका।

दीन—वि० [स०] दयनीय, करुण। दु खित, कातर, अधीर, सतप्त। दरिद्र, गरीव, निर्धन। जिसका मन मरा हुआ हो। दु ख या भय से अधीनता प्रकट करनेवाला। नम्र, विनीत। हतोत्साह, निरुत्साह। पुं० [अ०] मत, मजहव। ⊙**ता** = स्त्री० दरिद्रता, गरीवी। नम्रता, विनीत भाव ⊙**ताई**(पु) = स्त्री० दे० 'दीनता'। ⊙**त्व** = पुं० दे० 'दीनता। ⊙**दयालु** = वि० दीनो पर दया करने वाला। पुं० ईश्वर। ⊙**दार** = [फ०] अपने धर्म पर विश्वास रखनेवाला, धार्मिक। ⊙**दुनिया** = स्त्री० [फा०] यह लोक और परलोक। ⊙**बधु** = पु० दुखियो का सहायक। ईश्वर।

दीनानाथ—पुं० दीनो का स्वामी या रक्षक।

दीनार—पुं० [सं०] स्वर्णमुद्रा, मोहर। स्वर्णाभूषण, सोने का गहना। निष्क की तौल।

दीप—पुं० [सं०] दिया, चिराग। दस मात्राओ का एक छद जिसके अत मे तीन ह्रस्व, एक दीर्घ और अत्य ह्रस्व मात्राओ का क्रम रहता है (।।।ऽ।)। पुं० [हिं०] दे० 'द्वीप'। ⊙**दान** = पुं० किसी देवता के सामने दीपक जलाकर रखना जो पूजने का अग समझा जाता है। एक कृत्य जिसमे मरणासन्न व्यक्ति के हाथ से आटे के जलते हुए दिए का सकल्प कराया जाता है (कर्मकाड)। ⊙**ध्वज** = पु० काजल। ⊙**माला** = स्त्री० जलते हुए दीपो की पक्ति। दीपदान या आरती

के लिये जलाई हुई बत्तियों का समूह। दे० दीवाली'। ⊙मालिका = स्त्री० दीप-दान, आरती या शोभा के लिये सजाई हुई दीपों की पंक्ति। दीवाली। ⊙शिखा = स्त्री० चिराग की लौ। ⊙दीपावलि = स्त्री० [हिं०] दे० 'दीपमालिका'। दीपोत्सव = पुं० दीवाली।

दीपक—पुं० [सं०] दीप, चिराग। एक अर्थालंकार जिसमे प्रस्तुत अर्थात् उपमेय और अप्रस्तुत अर्थात् उपमान, दोनों का एक ही धर्म कहा जाता है अथवा बहुत सी क्रियाओं का एक ही कारक होता है। १५ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, तगण, नगण तगण और यगण रहता है तथा १० वें वर्ण पर यति और अंत में विराम होता है। छह रागों में से दूसरा राग (संगीत)। केसर, कुंकुम। वि० प्रकाश करनेवाला। उजाला फैलानेवाला। शरीर में पाचन की अग्नि को तेज करनेवाला। शरीर में वेग या उमंग लानेवाला, उत्तेजक। ⊙माला = स्त्री० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, मगण, जगण और अंत्य गुरु, कुल १० वर्ण होते हैं। दीपक अलंकार का एक भेद, मालादीपक। ⊙ वृक्ष = पुं० वह बड़ा दीवट जिसमें दीपक रखने के लिये कई शाखाएँ हों। झाड़। दीपकावृत्ति—स्त्री० दीपक अलंकार का एक भेद, आवृत्ति दीपक।

दीपत, दीपति(पु)—स्त्री० कांति, चमक प्रभा। शोभा। कीर्ति।

दीपतिवंत—वि० देदीप्यमान, दीप्तिमय।

दीपन—पुं० [सं०] प्रकाश के लिये जलाने का काम, प्रकाशन। भूख को उभारना या तेज करना। आवेग उत्पन्न करना, उत्तेजन। मंत्र के उन दस संस्कारों में से एक जिनके बिना मंत्र सिद्ध नहीं होता। वि० दीपन करनेवाला, जठराग्निवर्धक।

दीपना(पु)—अक० प्रकाशित होना, चमकना, जगमगाना। सक० प्रकाशित करना, चमकाना।

दीपिका—स्त्री० [सं०] छोटा दीपक। वि० स्त्री० उजाला फैलानेवाली। प्रदीप्त करनेवाली।

दीपित—वि० [सं०] प्रकाशित, प्रज्वलित। चमकता या जगमगाता हुआ। उत्तेजित।

दीप्त—वि० [सं०] जलता हुआ। जगमगाता हुआ, चमकीला।

दीप्ति—स्त्री० [सं०] प्रकाश, रोशनी। प्रभा, चमक। कांति, शोभा। ज्ञान का प्रकाश। ⊙मान = वि० दीप्तियुक्त, चमकता हुआ। कांतियुक्त।

दीप्य—वि० [सं०] जो जलाया जाने को हो। जो जलाने योग्य हो।

दीप्यमान्—वि० [सं०] चमकता हुआ।

दीमक—स्त्री० [फा०] चींटी की तरह एक छोटा सफेद कीड़ा जो लकड़ी, कागज आदि को चाटकर खोखला और नष्ट कर देता है, वल्मीक।

दीयट—पुं० दे० 'दीवट'।

दीया—पुं० दीपक, दिया। बत्ती जलाने का छोटा कसोरा। ⊙सलाई = स्त्री० दे० 'दियासलाई'।

दीरघ(पु)—वि० दे० 'दीर्घ'।

दीर्घ—वि० [सं०] आयत, लंबा। बड़ा (देश और काल दोनों के लिये)। पुं० गुरु या दो मात्राओंवाला वर्ण जैसे, आ, ई, ऊ। ⊙काय = वि० बड़े डील डौल का। ⊙जीवी = वि० जो बहुत दिनों तक जीए, बहुत काल तक जीनेवाला। ⊙दर्शिता = स्त्री० दूरदर्शिता। ⊙दर्शी = वि० दूरदर्शी। ⊙दृष्टि = वि० दे० 'दीर्घदर्शी'। स्त्री० दे० 'दीर्घदर्शिता'। ⊙निद्रा = स्त्री० मृत्यु, मौत। ⊙निःश्वास = पुं० लंबी साँस जो दुःख के आवेग के कारण ली जाती है। ⊙बाहु = वि० जिसकी भुजाएँ लंबी हों। ⊙लोचन = वि० बड़ी आँखोंवाला। ⊙श्रुत = वि० जो दूर तक सुनाई पड़े। जिसका नाम दूर तक विख्यात हो। ⊙सूत्र = वि० दे० 'दीर्घसूत्री'। ⊙सूत्रता = स्त्री० प्रत्येक कार्य में विलंब करने का स्वभाव। आलसीपन। ⊙सूत्री = वि० हर एक काम में जरूरत से ज्यादा देर लगानेवाला।

आलसी। ⊙स्वर = पुं० द्विमात्रिक स्वर।

दीर्घायु—वि० बहुत दिनो तक जीनेवाला, चिरजीवी। पुं० लंबी जिंदगी।

दीर्घिका—स्त्री०[सं०] बावली, छोटा तालाब।

दीर्ण—वि० [सं०] फटा हुआ, टूटा हुआ।

दीवट—स्त्री० पीतल, लकडी आदि का दीपक का आधार, चिरागदान।

दीवा†—दीपक, चिराग।

दीवान—पुं० [अ०] राज्य का प्रबंध करनेवाला, मंत्री। दरबार, राजसभा, कचहरी। गजलो का सग्रह। ⊙आम = पुं० दरबार जिसमे राजा या बादशाह से साधारण लोग मिल सकते हो। वह स्थान जहाँ आम दरबार लगता हो। आमदरबार के के लिये अकबर का बनवाया प्रासाद। ⊙खाना = पुं०[फा०] घर का वह बाहरी हिस्सा जहाँ बडे आदमी बैठते और सब लोगों से मिलते हैं, बैठक। ⊙खास = पुं० [फा०] ऐसी सभा जिसमे राजा या बादशाह मंत्रियो तथा चुने हुए प्रधान लोगो के साथ बैठता है, खास दरबार। वह जगह जहाँ खास दरबार होता हो। इसके लिये अकबर का बनवाया प्रासाद।

दीवाना—वि० [फा०] पागल, उन्मत्त।

दीवानी—स्त्री० [फा०] दीवान का पद। वह न्यायालय जो संपत्ति संबंधी वादो (मुकदमो) पर विचार और निर्णय करे। वि० स्त्री० पगली।

दीवार—स्त्री० [फा०] पत्थर, ईंट मिट्टी, आदि को नीचे ऊपर रखकर उठाया हुआ परदा जिससे किसी स्थान को घेरकर मकान आदि बनाते हैं, भीत। किसी वस्तु का घेरा जो ऊपर उठा हो। ⊙गीर = पुं० दीपक आदि रखने का आधार जो दीवार मे लगाया जाता है।

दीवाल—स्त्री० दे० 'दीवार'।

दीवाली—स्त्री० कार्तिक की अमावस्या को होनेवाला एक पर्व जिसमे संध्या के समय देवमंदिरो और घर मे भीतर बाहर बहुत से दीपक जलाकर पंक्तियो मे रखे जाते हैं और लक्ष्मी का पूजन होता है।

दीसना—अक० दिखाई पडना।

दीह(५)—वि० लंबा, बडा।

दुंद—पुं० दो मनुष्यो के बीच होनेवाला युद्ध या झगडा। उत्पात, उपद्रव। जोडा, युग्म। दुंदुभि, नगाडा।

दुंदना(५)—अक० शोर करना। '…दादुर सुदुंद दीह' (जगद्विनोद ८५)।

दुंदुम(५)—पुं० दुंदुभि, नगाडा।

दुंदुभि—पुं० [सं०] वरुण देवता। विष। एक राक्षस जिसे बलि ने मारा था। स्त्री० नगाडा, धौंसा।

दुंदुभी—स्त्री० दे० 'दुंदुभि'।

दुंदुह(५)—पुं० पानी का साँप, डेडहा।

दुंबा—पुं० एक भेड जिसकी दुम गोल और घने मुलायम बालो के कारण भारी होती है।

दुः—उप० [सं०] (समा० मे 'दुस्' के लिये) दे० 'दुस्'। ⊙शासन = जिसपर शासन करना कठिन हो। पुं० धृतराष्ट्र के सौ लडको मे से दूसरा। ⊙शील = वि० बुरे स्वभाव का। ⊙संधान = पुं० केशवदास के अनुसार काव्य मे एक रस जो उस स्थल पर होता है जहाँ एक तो अनुकूल होता है और दूसरा प्रतिकूल, एक तो मेल की बात करता है, दूसरा बिगाड की। ⊙सह = वि० जिसका सहन करना कठिन हो, जो कष्ट से सहा जाय। ⊙साध्य = जिसका करना कठिन हो, जो कष्ट से सहा जाय। ⊙साहस = पुं० व्यर्थ का साहस। अनुचित या अस्वाभाविक साहस। ढिठाई। ⊙साहसी = वि० पुं० साहस करनेवाला। ⊙स्वप्न = पुं० ऐसा सपना जिसका फल बुरा माना जाता हो। ⊙स्वभाव = पुं० बुरा स्वभाव, बदमिजाजी। दुष्ट स्वभाव का।

दुःख—पुं० मन को कष्ट देनेवाली अवस्था, सुख का विपरीत भाव, तकलीफ। संकट, विपत्ति। मानसिक कष्ट, खेद। पीडा, दर्द। बीमारी। ⊙कर = पुं० दे० 'दुःखद'। ⊙द = वि० दुःख पहुँचानेवाला (प्रायः अचेतन के लिये, जैसे दुःखद

समाचार)। ⊙दाता = वि॰ दुःख या कष्ट देनेवाला (प्रायः चेतन के लिये)। ⊙दायक = वि॰ दुःख या कष्ट पहुँचानेवाला। ⊙दायी = वि॰ दे॰ 'दुःखदायक'। ⊙प्रद = पुं॰ दुःख देनेवाला (प्रायः अचेतन के लिये) जैसे पूस मे चद्रग्रहण दुःखप्रद होता है। ⊙मय = वि॰ क्लेश से भरा हुआ, दुःखपूर्ण। ⊙वाद = पुं॰ सिद्धांत जिसमें संसार और उसकी सब बातें सदा दुःखमय मानी जाती हैं। ⊙वादी = पुं॰ वह जो दुःखवाद पर विश्वास करता हो।

दुःखांत—वि॰ जिसके अंत में दुःख हो। जिसके अंत में दुःख का वर्णन हो (जैसे दुःखांत नाटक)। पुं॰ दुःख का अंत, क्लेश की समाप्ति। दुःख की पराकाष्ठा।

दुःखित—वि॰ जिसे कष्ट या तकलीफ हो। दुःखिनी—वि॰ स्त्री॰ जिसपर दुःख पड़ा हो, दुखिया। दुःखी—वि॰ [सं॰] जिसे दुःख या कष्ट हो।

दु—वि॰ 'दो' शब्द का संक्षिप्त रूप जो समास में प्रयुक्त होता है (जैसे, दुविधा, दुचित्ता)।

दुअन—पुं॰ दे॰ 'दुवन'।

दुअन्नी—स्त्री॰ दो आने का पुराना सिक्का।

दुआ—स्त्री॰ [अ॰] प्रार्थना, विनती (ईश्वर से)। याचना, दरखास्त। आशीर्वाद। मु॰ ~माँगना = प्रार्थना करना। ~लगना = आशीर्वाद का फलीभूत होना।

दुआदस(प)—पुं॰ दे॰ 'द्वादश'।

दुआब—पुं॰ [फा॰] दो नदियों के बीच का प्रदेश। गंगा और यमुना के बीच की भूमि।

दुआर†—पुं॰ द्वार, दरवाजा। दुआरी—स्त्री॰ छोटा दरवाजा।

दुआल—स्त्री॰ चमड़ा। चमड़े का तसमा। रिकाब का तसमा। दुआली—स्त्री॰ चमड़े का वह तसमा जिसमे कसेरे और बढ़ई खराद घुमाते हैं।

दुइ†—वि॰ दे॰ 'दो'।

दुइज(प)†—स्त्री॰ पाख की दूसरी तिथि, द्वितीया। पुं॰ दूज का चाँद।

दुई—स्त्री॰ अपने को दूसरे से अलग समझना, दुजायगी, द्वैत।

दुऊ(प)—वि॰ दे॰ 'दोनों'।

दुकड़हा†—वि॰ नीच।

दुकड़ा—पुं॰ एक पैसे का चौथाई भाग। एक साथ या एक मे लगी दो चीजें, जोड़ा। वह जिसमे कोई वस्तु दो दो हो या जिसमे किसी वस्तु का जोड़ा हो।

दुकड़ी—वि॰ स्त्री॰ जिसमें कोई वस्तु दो दो हो। स्त्री॰ चारपाई की वह बुनावट जिसमें दो बाध या सुतली एक साथ बुनी जाती है। दो बूटियोंवाला ताश का पत्ता, दुक्की। दो घोड़ों की बग्घी।

दुकना(प)—अक॰ लुकना, छिपना।

दुकान—स्त्री॰ [फा॰] वह मकान या स्थान जहाँ बेचने के लिये चीजें रखी हों और ग्राहक खरीदते हों, हट्टी। ⊙दार = पुं॰ दुकानवाला, दुकान का स्वामी, दुकान पर बैठकर सौदा बेचनेवाला। वह जिसने आय के लिये कोई ढोंग रच रखा हो, आडंबर करनेवाला। ⊙दारी = स्त्री॰ दुकान या बिक्री बट्टे का काम, दुकान पर माल बेचने का काम। ढोंग रचकर रुपया पैदा करने का काम। दुकान पर होनेवाली बिक्री की आय। मु॰ ~उठाना = कारबार बंद करके दुकान छोड़ देना। दुकान बंद करना। ~बढ़ाना = दुकान बंद करना। ~लगाना = दुकान का असबाब फैलाकर यथास्थान बिक्री के लिये रखना। बहुत सी चीजों को इधर उधर फैलाकर रख देना। आडंबर करना। ~सँभालना = दुकान मे बिक्री बट्टे की व्यवस्था करना।

दुकाल—पुं॰ अन्नकष्ट का समय, अकाल, दुर्भिक्ष।

दुकूल—पुं॰ [सं॰] सन या तीसी के रेशे का बना कपड़ा, क्षौम वस्त्र। महीन कपड़ा। वस्त्र।

दुकूलिनी—स्त्री॰ [सं॰] नदी।

दुकेला—पुं॰ जिसके साथ कोई दूसरा भी हो, जो अकेला न हो। अकेला⊙ = जिसके साथ कोई न हो या एक ही दो आदमी हो। दुकेले—क्रि॰ वि॰ किसी के साथ, दूसरे आदमी को साथ लिए हुए।

दुक्कड़—पुं० तबले की तरह का एक बाजा जो शहनाई के साथ बजाया जाता है। एक मे जुडी हुई या साथ पटी हुई दो नावो का जोडा।

दुक्का—वि० जो एक साथ दो हों, जिसके साथ कोई दूसरा भी हो। जो जोडे मे हो, जो एक ही साथ दो हो (वस्तु)। पु० दे० 'दुक्की'। इक्का दुक्का = अकेला दुकेला।

दुक्की—स्त्री० ताश का वह पत्ता जिसपर दो बूटियाँ बनी हो।

दुखडा—वि० जिसमे दो खड हो, दो मरातिब का।

दुख—पुं० दे० 'दुख'। ⊙दद = पुं० दे० 'दुखदुद'। ⊙द = वि० दे० 'दुखद'। ⊙दाई, ⊙दायी, ⊙दानि = वि० दे० 'दुखदायी'। ⊙दुद = पुं० दुख का उपद्रव, दुख और आपत्ति। ⊙हाया = वि० दे० 'दुखित'। मु०~उठाना, पाना या भोगना = सहना। ~देना = कष्ट देना। ~बँटाना = सहानुभूति करना, कष्ट या सकट के समय साथ देना। ~भरना = सकट के दिन काटना।

दुखना—अ० (किसी अग का) पीडित होना, दर्द करना।

दुखड़ा—पुं० वह कथा जिसमे किसी के कष्ट या शोक का वर्णन हो, दुख या तकलीफ का बयान। कष्ट, विपत्ति। मु०~रोना = अपने दुख का वृत्तात कहना।

दुखरा—पुं० दे० 'दुखडा'।

दुखवना†—सक० दे० 'दुखाना'।

दुखना—सक० कष्ट पहुँचाना, व्यथित करना। किसी के मर्मस्थान या पके घाव इत्यादि को छू देना, जिससे उसमे पीडा हो। मु०—जी~ = मन मे दुख उत्पन्न करना।

दुखारा—वि० दुखी, पीडित। दुखारी(प)—वि० दे० 'दुखारा'।

दुखित(प)—वि० दे० 'दुखित'।

दुखिया—वि० जिसे किसी प्रकार का दुःख या कष्ट हो, दुखी। दुखियारा—वि० जिसे किसी बात का दुःख हो, दुखिया। रोगी।

दुखी—वि० जो कष्ट या दुख मे हो। जिसके चित्त मे खेद उत्पन्न हुआ हो। बीमार।

दुखीला†—वि० दुख अनुभव करनेवाला, दुखपूर्ण।

दुखौहाँ(प)—वि० दुखदायी।

दुगछा—स्त्री० ग्लानि, घृणा।

दुगई—स्त्री० ओसारा, बरामदा।

दुगडा—पु० दुनाली बदूक। दूहरी गोली।

दुगदुगी—स्त्री० वह गड्ढा जो छाती के ऊपर बीचो बीच होता है, धुकधुकी। गले मे पहनने का एक गहना।

दुगना—वि० किसी वस्तु से उतना ही और अधिक जितना कि वह हो, दूना।

दुगासरा—पु० किसी दुर्ग के नीचे या चारो ओर बसा हुआ गाँव।

दुगुण(प)—वि० दे० 'द्विगुण'।

दुगुन(प)†—वि० दे० 'दुगना'।

दुग्ग(प)—पु० दे० 'दुर्ग'।

दुग्ध—वि० [सं०] दुहा हुआ। भरा हुआ। पु० दूध।

दुग्धी—स्त्री० [सं०] दुधिया नाम की घास, दुद्धी। वि० दूधवाला, जिसमे दूध हो।

दुघड़िया—वि० दो घडी का, काम चलाऊ (जैसे, दुघडिया मुहूर्त) ⊙मुहूर्त = पु० दो दो घडियो के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त, कामचलाऊ मुहूर्त। (ऐसा मुहूर्त बहुत जल्दी या आवश्यकता के समय निकाला जाता है और इसमे वार आदि का विचार नही होता।)

दुघरी†—स्त्री० दुघडिया मुहूर्त।

दुचद—वि० दूना, दुगना।

दुचारी—पु० दुराचरण, कुचाल।

दुचित(प)—वि० जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो, अस्थिरचित्त। चिंतित। दुचितई, दुचिताई(प)†—स्त्री० चित्त की अस्थिरता, दुविधा। खटका चिंता, घबराहट। दुचित्ता—वि० जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो, अस्थिरचित्त। सदेह मे पडा हुआ। जिसके चित्त मे खटका हो।

दुज(पु)—पुं० दे० 'द्विज' ।
दुजन्मा(पु)—पुं० दे० 'द्विजन्मा' ।
दुजानू—क्रि० वि० दोनों घुटनों के बल, घुटने टेककर (बैठना) ।
दुजायगी—स्त्री० दे० 'दुई' ।
दुजीह(पु)—पु० दे० 'द्विजिह्व' ।
दुजेश—पु० दे० 'द्विजेश' ।
दुटूक—वि० दो टुकडो मे किया हुआ, खडित । मु०~बात = थोडे मे कही हुई साफ बात । बिना घुमाव फिराव की स्पष्ट बात ।
दुड़बड़ी†—स्त्री० एक प्रकार का बाजा ।
दुडी—स्त्री० दे० दुक्की' ।
दुत—अव्य० एक शब्द जो तिरस्कारपूर्वक हटाने के समय बोला जाता है, दूर हो । घृणा, अस्वीकृति या तिरस्कार-सूचक शब्द । ⊙कार = स्त्री० वचन द्वारा किया हुआ अपमान, धिक्कार, फटकार । ⊙कारना—सक० 'दुत दुत' शब्द करके किसी को अपने पास से हटाना । तिरस्कृत करना, धिक्कारना ।
दुतरफा, दुतर्फा—वि० दोनों ओर का, जो दोनों ओर हो ।
दुतावी—स्त्री० तलवारविशेष । 'चरवी जिन चावी दिपति दुतावी देखि परै' (हिम्मत० १६९) ।
दुतारा—पु० एक बाजा जिसमे दो तार होते हैं ।
दुति(पु)—स्त्री० दे० 'द्युति' । ⊙मान(पु) = दे० 'द्युतिमा' । ⊙वत(पु) = वि० आभा-युक्त, चमकीला । सुदर ।
दुतिय(पु), दुतीय(पु)—वि० दे० 'द्वितीय' ।
दुतिया, दुतीया(पु)†—स्त्री पक्ष की दूसरी तिथि, दूज ।
दुदल—पु० दाल । एक पौधा जिसकी जड औषध के काम मे आती है, कानफूल ।
दुदलाना'—सक० दे० 'दुतकारना' ।
दुदामी—स्त्री० एक प्रकार का पुराना सूती कपडा जो मालवे मे बनता था ।
दुदिला—वि० दुविधा मे पडा हुआ, दुचित्ता । खटक मे पडा हुआ, चिंतित, व्यग्र, घब-राया हुआ ।
दुद्धी—स्त्री० जमीन पर फैलनेवाली एक घास जिसके डठलो मे थोडी थोडी दूर पर गाँठें होती हैं । इसका व्यवहार औषध मे होता है । थूहर की जाति का एक छोटा पौधा । सफेद या खडिया मिट्टी । सारिवा लता । जगली नील ।
दुध—पु० दूध का के० समा० रूप । ⊙मुख(पु)† = वि० दुधमुँहा, बच्चा । नासमझ । ⊙मुँहा = वि० जो अभी तक माता का दूध पीता हो, छोटा बच्चा । ⊙हाँड़ी = स्त्री० मिट्टी का छोटा बरतन जिसमे दूध रखा या गरम किया जाता है ।
दुधाँडी—स्त्री० दे० 'दुधहाँडी' ।
दुधार—वि० दूध देनेवाली, जो दूध देती हो, (जैसे, दुधार गाय) । जिसमे दूध हो, दूध देनेवाला (वृक्ष, फल आदि) । वि० पुं० दे० 'दुधारा' ।
दुधारा—वि० (तलवार, छुरी आदि) जिसमे दोनो ओर धार हो (जैसे दुधारा खाँडा) । पुं० एक प्रकार का चौडा खाँडा या तल-वार जिसके दोनो ओर तेज धार होती है ।
दुधारी—वि० स्त्री० दूध देनेवाली, जो दूध देती हो । जिसमे दोनो ओर धार हो, (जैसे, दुधारी तलवार) ।
दुधारू—वि० दे० 'दुधार' ।
दुधिया—स्त्री० दुद्धी नाम की घास । एक प्रकार की ज्वार या चरी । खडिया मिट्टी । कलियारी की जाति का एक विष । वि० दूध मिला हुआ, जिसमे दूध पडा हो । जिसमे दूध होता है । दूध की तरह सफेद, सफेद रग का । ⊙पत्थर = पुं० एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिसके प्याले, खिलौने आदि बनते है । एक प्रकार का नग या रत्न । ⊙विष = पुं० कलियारी की जाति का एक विष जिसके सुदर पौधे काश्मीर और हिमालय के पश्चिम भाग मे मिलते है ।
दुधैल—वि० स्त्री० बहुत दूध देनेवाली, दुधार ।
दुनरना, दुनवना (पु)†—अक० लचकर प्राय दोहरा हो जाना । सक० लचाकर दोहरा करना ।
दुनाली—वि० स्त्री० दो नलियोवाली (जैसे, दुनाली बदूक) । स्त्री० वह बदूक जिसमे दो नलियाँ हो, दुनाली बदूक ।

दुनिया—स्त्री० [अ०] संसार, जगत्। संसार का जंजाल। ⊙ई = वि० सांसारिक। स्त्री० संसार। ⊙दार = पु० [फा०] सांसारिक प्रपंच में फँसा हुआ मनुष्य, गृहस्थ। वि० ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला। व्यवहारकुशल। ⊙दारी = स्त्री० [फा०] दुनिया का कारबार, गृहस्थी का जंजाल। स्वार्थसाधन। बनावटी व्यवहार। ⊙साज = वि० [फा०] ढंग रचकर अपना काम निकालनेवाला, स्वार्थसाधक। चापलूस। दीन⊙ = लोक परलोक। मु० ~के परदे पर = सारे संसार में। ~की हवा लगना = सांसारिक अनुभव होना। दुनिया की बातों और वस्तुओं का सच्चा ज्ञान होना। ~भर का = बहुत अधिक।

दुनी(पु)—स्त्री० संसार।

दुपटा(पु)†—पुं० दे० 'दुपट्टा'।

दुपट्टा—पुं० ओढने का वह कपडा जो दो पाटों को जोडकर बना हो, दो पाट की चद्दर, चादर। मु० ~तानकर सोना = निश्चिंत होकर सोना, बेखटके सोना। कंधे या गले पर डालने का लंबा कपडा।

दुपट्टी(पु)†—स्त्री० दे० 'दुपट्टा'।

दुपद—पुं० वि० दे० 'द्विपद'।

दुपहर—स्त्री० दे० 'दोपहर'।

दुपहरी—स्त्री० दे० 'दुपहरिया'।

दुफसली—वि० वह बीज जो रबी और खरीफ दोनों में हो। वि० स्त्री० दुबिधा की, अनिश्चित (बात)।

दुबकना—अक० भय से किसी सँकरे स्थान या आड में छिपना या सिमटना। लुकना, आड में होना। दुबकाना—सक० [अक० दुबकना] छिपाना, आड में करना।

दुबधा—स्त्री० दो में से किसी एक बात पर चित्त के न जमने की क्रिया, अनिश्चय, चित्त की अस्थिरता। संशय असमंजस, पसोपेश। खटका, चिंता।

दुबरा†—वि० दे० 'दुबला'। ⊙ना(पु)†—अक० दुबला होना, शरीर से क्षीण होना।

दुबला—वि० क्षीण शरीर का, कृश। अशक्त।

दुबारा—क्रि० वि० एक बार कर चुकने पर फिर एक बार, दूसरी बार।

दुबाला—वि० दे० 'दोवाला'। पाश, फंदा। '.... फिरि जाल के जाइ दुबाले परयो' (जगद्विनोद १८६)।

दुबिध(पु)—पुं० दे० 'द्विविद'। स्त्री० दे० 'दुविधा'।

दुबिधा(पु)—स्त्री० दे० 'दुवधा'।

दुबे—पुं० ब्राह्मणों का एक भेद, दूबे, द्विवेदी।

दुभाखी, दुभाषिया—पुं० भिन्न भिन्न भाषा-भाषियों को एक दूसरे की बात जबानी अनुवाद करके सुनानेवाला।

दुमंजिला—वि० [फा०] दो मरातिब का, दो दो खंड का (मकान)।

दुम—स्त्री० [फा०] पूँछ, पुच्छ। पूँछ की तरह पीछे लगी या बँधी हुई वस्तु। पीछे पीछे लगा रहनेवाला आदमी, पिछलग्गू। किसी काम का अंतिम अंश, पुछल्ला। ⊙ची = स्त्री० घोडे के साज में वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है। ⊙दार = वि० पूँछवाला। जिसके पीछे पूँछ की सी कोई वस्तु हो। मु० ~दबाकर भागना = डरपोक कुत्ते की तरह डरकर भागना, डर के मारे झटपट भाग खडा होना। ~हिलाना = कुत्ते का दुम हिलाकर प्रसन्नता प्रकट करना। चापलूसी करना।

दुमन, दुमना—वि० दुःखी, चिंतित अस्थिर, व्यग्र।

दुमाता—वि० बुरी माता। सौतेली माँ।

दुमाहा—वि० हर दो महीने पर पूरा होनेवाला, द्वैमासिक (वेतन आदि)।

दुमुहाँ—वि० जिसके दो मुँह हों। दुहरी चाल चलने या बात करनेवाला, कपटी।

दुरंगा—वि० दो रंगों का, जिसमें दो रंग हों। दो तरह का। दोहरी चाल चलनेवाला। दुरंगी—वि० स्त्री० दे० 'दुरंगा'। स्त्री० कुछ इस पक्ष का कुछ उस पक्ष का अवलंबन (जैसे, दुरंगी चाल)।

दुरंत—वि० [सं०] जिसका अंत जल्दी न मिले, बडा भारी। दुर्गम, कठिन। दुःसाध्य। घोर, भीषण। अशुभ। दुष्ट, खल।

दुरधा—(पु) वि० दो छिद्रोंवाला। आर पार छेदा हुआ।

दुर्—उप० [सं०] 'दुस्' के लिये समास में

व्यवहृत (मुख्यत. बुराई, अभाव या कठिनता के अर्थ मे)। ⊙गंध = स्त्री० बुरी गध, बदबू। ⊙गत = वि० जिसकी बुरी गत हुई हो, दुर्दशाग्रस्त। दरिद्र। स्त्री० [हिं०] दे० 'दुर्गति'। ⊙गति = स्त्री० बुरी गति, दुर्दशा। वह दुर्दशा जो परलोक मे हो, नरकभोग। ⊙गम = वि० जहाँ जाना कठिन हो। दुर्ज्ञेय। दुस्तर, कठिन। पुं० गढ, किला। विष्णु। वन। सकट का स्थान। ⊙गुण = पुं० दोष, ऐब। ⊙घट = वि० जिसका होना कठिन हो, कष्टसाध्य। ⊙घटना = स्त्री० ऐसी बात जिसके होने से बहुत कष्ट, पीड़ा या शोक हो। बुरा सयोग, वारदात। आफत। ⊙जन = पुं० दुष्ट जन, खोटा आदमी, खल। ⊙जय = वि० जिसे जीतना बहुत कठिन हो, जो जल्दी न जीता जा सके। ⊙जेय = वि० दे० 'दुर्जय'। ⊙ज्ञेय = वि० जो जल्दी समझ मे न आ सके। ⊙दम = वि० दे० 'दुर्दमनीय'। ⊙दमनीय, ⊙दम्य = वि० जिसे वश मे करना कठिन हो, जो जल्दी कब्जे मे न आए। प्रबल, उद्दड। ⊙दशा = स्त्री० बुरी दशा, दुर्गति। ⊙दांत = वि० दुर्दमनीय। प्रचड, प्रबल। ⊙दिन = पुं० बुरा दिन। ऐसा दिन जिसमे बादल छाए हो और पानी बरसता हो, मेघाच्छन्न दिन। दुःख और कष्ट का समय। ⊙दैव = पुं० दुर्भाग्य, दिनो का बुरा फेर। ⊙धर = वि० जिसे कठिनता से पकड सकें। उद्दड, प्रबल। जो कठिनता से समझ मे आए। ⊙धर्ष = वि० जिसका दमन करना कठिन हो। प्रबल। उग्र, उद्दड। ⊙नाम = पुं० बदनामी। गाली, बुरा वचन। ववासीर। सीप। ⊙निवार, ⊙निवार्य = वि० जो जल्दी रोका या हटाया न जा सके। जिसका होना निश्चित हो, जो टाला न जा सके। ⊙नीति = स्त्री० कुनीति। बुरा आचरण। ⊙बल = वि० कमजोर। दुबला पतला। ⊙बोध = वि० जो जल्दी समझ मे न आए, गूढ, क्लिष्ट। ⊙भाग्य = पुं० मंद भाग्य, खोटी किस्मत। ⊙भाव = पुं० बुरा भाव। द्वेष, मनमुटाव। ⊙भावना = स्त्री० बुरी भावना। खटका, चिंता। आशका। ⊙भिक्ष, ⊙भिच्छ = ऐसा समय जिसमे भोजन कठिनता से मिले, अकाल। ⊙भेद = वि० जिसे जल्दी भेदा या छेदा न जा सके। जिसे जल्दी पार न कर सकें। ⊙भेद्य = वि० दे० 'दुर्भेद'। ⊙मति = स्त्री० बुरी बुद्धि, कम अक्ल। वि० खल, दुष्ट। ⊙मद = वि० घमडी, मदमत्त। ⊙मल्लिका = स्त्री० दृश्य काव्य के अतर्गत चार अको का एक उपरूपक जिसमे हास्य रस प्रधान होता है। इसमे कैशिकी और भारती वृत्तियाँ होती हैं, गर्भसधि नही होती। ⊙मिल = पुं० एक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राएँ होती हैं। अत मे एक सगण और दो गुरु होते है। इसके किसी चौकल मे जगण नहीं रखा जाता। ⊙मुख = पुं० घोड़ा। राम की सेना का एक बदर। रामचद्र जी का एक गुप्तचर जिसके द्वारा उन्होंने सीता के विषय मे लोकापवाद सुना था। वि० जिसका मुख बुरा हो। कटुभाषी। जिसके मुँह से निकली बुरी बात खाली न जाय। ⊙लघ्य = वि० जिसका लाँघ सकना कठिन हो। ⊙लक्ष्य = वि० जो कठिनाई से दिखाई पड़े। ⊙लभ = वि० जिसे पाना कठिन हो। अनोखा, बहुत बढिया। प्रिय। ⊙वचन = पुं० दुर्वाक्य, गाली। ⊙वह = वि० जिसका वहन करना कठिन हो। जो निभाया न जा सके। ⊙वाद = पुं० निंदा, गाली। स्तुतिपूर्वक कहा हुआ अप्रिय वाक्य। ⊙विनीत = वि० अशिष्ट, अक्खड। ⊙विपाक = पुं० बुरा परिणाम या फल। बुरा सयोग, दुर्घटना। ⊙वृत्त = वि० दुश्चरित्र, दुराचारी। ⊙व्यवस्था = स्त्री० कुप्रबध। ⊙व्यवहार = पुं० बुरा व्यवहार। दुष्ट आचरण। ⊙व्यसन = पुं० ऐसी बात का अभ्यास जिससे हानि हो। बुरी लत। ⊙व्यसनी = वि० बुरी लतवाला।

दुर—अव्य० एक शब्द जिसका प्रयोग तिरस्कारपूर्वक हटाने के लिये होता है और

जिसका अर्थ है 'दूर हो'। पुं० [फा०] मोती, मुक्ता। मोती का वह लटकन जो नाक मे पहना जाता है, लोलक। छोटी बाली। मु०~करना = तिरस्कारपूर्वक हटाना, कुत्ते की तरह भगाना।

दुरजन—पुं० दे० 'दुर्जन'।

दुरजोधन(पु)—पुं० दे० 'दुर्योधन'।

दुरतिक्रम—वि० [सं०] जिसका अतिक्रमण या उल्लघन न हो सके। प्रबल। जिसका पार पाना कठिन हो, अपार।

दुरत्यय—वि० [सं०] जिसे पार करना बहुत कठिन हो। दुस्तर, कठिन। दुर्दमनीय।

दुरथल(पु)—पुं० बुरी जगह।

दुरद—पुं० दे० 'द्विरद'।

दुरदा(पु)—वि० दो दाँतोवाला। 'मज्जत गज दुरदा' •' (हिम्मत० १६६)।

दुरदाम(पु)—वि० कष्टसाध्य।

दुरदाल(पु)—पुं० हाथी।

दुरदुराना—सक० तिरस्कारपूर्वक दूर करना, अपमान के साथ भगाना।

दुरदृष्ट—पुं० [सं०] दुर्भाग्य, बदकिस्मती।

दुरना—अक० आँखो के आगे से दूर होना, आड मे जाना। न दिखलाई पडना, छिपना, ओझल होना।

दुरभिसंधि—स्त्री० [सं०] बुरे अभिप्राय से गुट बाँधकर की हुई सलाह, साजिश।

दुरभेव†—पुं० बुरा भाव, मनमुटाव।

दुरमिल(पु)—वि० दुष्प्राप्य। 'मुनिजन जापकन जो वा दुरमिलती' (गगा०११)।

दुरमुस—पुं० गदा के आकार का उपकरण जिससे ककड या मिट्टी पीटकर बैठाई जाती है।

दुरलभ(पु)—वि० दे० 'दुर्लभ'।

दुरवस्था—स्त्री० [सं०] खराब हालत। दुख, कष्ट या दरिद्रता की दशा, हीन दशा।

दुराउ(पु)†—पुं० दे० 'दुराव'।

दुरागमन—पुं० दे० 'द्विरागमन'।

दुराग्रह—पुं० [सं०] किसी बात पर बुरे ढग से अडना। अनुचित बात के लिये किया जानेवाला हठ। अपने मत के ठीक न सिद्ध होने पर भी उसपर स्थिर रहने का काम।

दुराचरण—पु० [सं०] बुरा चालचलन, खोटा व्यवहार।

दुराचार—पु० [सं०] दुष्ट आचरण, बुरा चालचलन।

दुराज—पु० बुरा राज्य, बुरा शासन। एक ही स्थान पर दो राजाओ का राज्य या शासन। वह स्थान जहाँ दो राजाओ का राज्य हो।

दुराजी—वि० दो राजाओ का।

दुरात्मा—वि० दुष्टात्मा, बुरे काम करनेवाला।

दुरादुरी—स्त्री० छिपाव, गोपन।

दुराधर्ष—वि० [सं०] जिसका दमन करना कठिन हो, प्रबल।

दुराना—अक० दूर होना, टलना, भागना। छिपना। सक० दूर करना, हटाना। छोडना। छिपाना।

दुरारूढ़—वि० कठिन, क्लिष्ट। जिसपर चढना या पहुँचना कठिन हो। जो जल्दी समझ मे न आए।

दुराव—पु० अविश्वास या भय के कारण किसी से बात गुप्त रखने का भाव, भेदभाव। कपट, छल।

दुराशय—पु० [सं०] दुष्ट आशय, बुरी नीयत। वि० जिसका आशय बुरा हो, खोटा।

दुराशा—स्त्री० [सं०] ऐसी आशा जो पूरी होनेवाली न हो, व्यर्थ की आशा।

दुरासा(पु)—स्त्री० दे० 'दुराशा'।

दुरित—पु० [सं०] पाप, पातक। उपपातक, छोटा पाप। वि० पापी, पातकी।

दुरियाना†—सक० अपमानपूर्वक दूर करना।

दुरुखा—वि० जिसके दोनो ओर मुँह हो। जिसके दोनो ओर कोई चिह्न या विशेषता हो। जिसके दोनो ओर दो रग हो।

दुरुपयोग—पु० [सं०] बुरा या अनुचित उपयोग।

दुरुस्त—वि०[फा०]जो अच्छी दशा मे हो। जो टूटा फूटा या बिगडा न हो। जिसमे दोष या त्रुटि न हो। उचित, यथार्थ। **दुरुस्ती**—स्त्री० सुधार, सशोधन।

दुरूह—वि० [सं०] जल्दी समझ मे न आने योग्य, गूढ, कठिन।
दुरेफ—पु० दे० 'द्विरेफ'।
दुर्कुल(पु)—पुं० दे० 'दुष्कुल'।
दुर्ग—वि० [सं०] जिसमे पहुँचना कठिन हो, किला। दुर्गम। पु० पत्थर आदि की चौडी और पुष्ट दीवारो से घिरा राजा, सरदार, सेना के सिपाही आदि के रहने का स्थान। एक असुर जिसे मारने से देवी दुर्गा कहलाई। ⊙पाल = पु० गढ का रक्षक, किलेदार। ⊙रक्षक = पु० किलेदार।
दुर्गा—स्त्री० [सं०] अनेक दैत्यो का नाश करनेवाली, पाप, भय आदि से रक्षा करनेवाली, दुर्ग नामक दैत्य को मारनेवाली देवी (देवीपुराण)। आदिशक्ति। हिमवान् की कन्या काली या पार्वती जो शिव को व्याही थी, कार्तिकेय और गणेश की माता (जिनके गौरी, भवानी, चडी आदि अनेक नाम और रूप हैं)। नील का पौधा। अपराजिता। श्यामा पक्षी। एक सकर रागिनी। दुर्गाध्यक्ष—पु० गढ का प्रधान, किलेदार। दुर्गोत्सव—पु० दुर्गापूजा का उत्सव जो नवरात्र मे होता है।
दुर्दर(पु)—वि० दे० 'दुर्धर'।
दुर्रा—पु० [फा०] कोडा, चाबुक।
दुर्रानी—पु० [फा०] अफगानो की एक जाति।
दुलना—अक० दे० 'डुलना'।
दुलकना—अक०, सक० दे० 'दुलखना'।
दुलकी—स्त्री० घोडे की एक चाल जिसमे वह चारो पैर अलग अलग उठाकर कुछ उछलता हुआ चलता है।
दुलखना—सक० बार बार कहना या बतलाना। अक० कहकर मुकरना।
दुलडा—वि० दो लडोवाला (हार, आभूषण आदि)। **दुलडी**—स्त्री० दो लडो की माला।
दुलत्ती—स्त्री० गधे, घोडे आदि चौपायो का पिछले दोनो पैरो को उठाकर मारना।
दुलदुल—पुं० [अ०] वह मादा खच्चर जिसे इसकंदरिया (मिस्र) के हाकिम ने मुसलमानो के पैगबर मुहम्मद साहब को भेट मे दिया था। साधारण लोग इसे घोडा समझते हैं और मुहर्रम के दिनों मे इसकी नकल निकालते हैं। मुहर्रम के आठवें और नवें दिन अब्बास और हुसैन के नाम से निकाला जानेवाला बिना सवार का घोडा।
दुलभ(पु)—वि० दे० 'दुर्लभ'।
दुलरा(पु)—वि० दे० 'दुलारा'। दो लडो का।
दुलराना—सक० बच्चो को बहलाकर प्यार करना, लाड करना। अक० दुलारे बच्चो की सी चेष्टा करना।
दुलरी—स्त्री० दे० 'दुलडी'। दे० 'दुलाई'।
दुलहन—स्त्री० नव विवाहिता वधू। वधू।
दुलहा—पुं० दे० 'दूल्हा'।
दुलहिया, दुलही—स्त्री० दे० 'दुलहन'।
दुलहेटा—पुं० लाडला बेटा, दुलारा लडका। दुलहा।
दुलाई—स्त्री० ओढने का दुहरा हलका कपडा जिसके भीतर थोडी रुई भरी हो।
दुलाना(पु)—सक० दे० 'डुलाना'।
दुलार—पुं० प्रसन्न करने की वह चेष्टा जो प्रेम के कारण लोग बच्चो या प्रेमपात्रो के साथ करते हैं, लाड प्यार। आवश्यकता से अधिक प्रेम। सिर चढाना। ⊙ना = सक० प्रेम के कारण बच्चो या प्रेमपात्रो के साथ अनेक प्रकार की चेष्टाएँ करना (जैसे, शरीर पर हाथ फेरना, चूमना, विलक्षण सबोधनो से पुकारना आदि), लाड करना। आवश्यकता से अधिक प्यार करना।
दुलारा—वि० जिसका बहुत दुलार या लाड-प्यार हो, अत्यधिक प्यारा। **दुलारी**—वि० स्त्री० जिसका बहुत दुलार या लाड प्यार हो, लाडली। स्त्री० लाडली बेटी, प्रिय कन्या।
दुलीचा, दुलैचा—पुं० दे० 'गलीचा'।
दुलोही—स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
दुल्लभ(पु)—वि० दे० 'दुर्लभ'।
दुव—वि० दो।
दुवन—पुं० खल, दुर्जन। शत्रु। राक्षस, दैत्य।
दुवाज—पुं० एक प्रकार का घोड़ा।
दुवादस(पु)—वि० दे० 'द्वादश'। ⊙**बानी**

(पु) = वि० वारह वानी का, सूर्य के समान दमकता हुआ, खरा (विशेषत सोने के लिये)।

दुवार†—पुं० दे० 'द्वार'।

दुवाल—स्त्री० [फा०] रिकाव मे लगा हुआ चमडे का चौडा फीता।

दुवाली—स्त्री० रँगें या छपे हुए कपडो पर चमक लाने के लिये घोटने का औजार। स्त्री० [फा०] चमडे का परतला या पेटी जिसमे वदूक, तलवार आदि लटकाते हैं।

दुविधा—स्त्री० दे 'दुवधा'।

दुवो(पु)†—वि० दोनों।

दुश्—उप० [सं०] (समास मे 'दुस्' के लिये प्रयुक्त) दे० 'दुस्'। ⊙चरित = वि० वदचलन, वुरे आचरण का। कठिन। पुं० वुरा आचरण, कुचाल। ⊙चरित्र = वि० वुरे चरित्रवाला। पु० दुराचार। ⊙चिंता = स्त्री० वुरी या विकट चिंता। ⊙चेष्टा = स्त्री० वुरा काम, वुरी चेष्टा।

दुशवार—वि० [फा०] कठिन, मुश्किल। दु सह।

दुशाला—पु० पशमीने की चादरो का जोडा जिनके किनारे पर वेलें वनी रहती हैं।

दुशासन(पु)—पु० दे० दु.शासन'।

दुश्मन—पु० [फा०] शत्रु, वैरी। दुश्मनी—स्त्री० वैर, शत्रुता।

दुष्—उप० [सं०] ('दुस्' के लिये समास मे प्रयुक्त) दे० 'दुस्'। ⊙कर = वि० जिसे करना कठिन हो, दु साध्य। ⊙कर्मा = वि० पापी, कुकर्मी। ⊙काल = पु० वुरा वक्त। दुर्भिक्ष। ⊙कीर्ति = स्त्री० वदनामी। ⊙प्रवृत्ति = स्त्री० वुरी प्रवृत्तिवाला। ⊙प्राप्य = वि० जो सहज मे न मिल सके, जिसका मिलना कठिन हो।

दुष्ट—वि० [सं०] जिसमे दोष या ऐव हो। पित्त आदि दोष से युक्त। दुर्जन, पाजी। दुष्टाचार—पु० कुचाल, कुकर्म। दुष्टात्मा—वि० जिसका अत.करण वुरा हो, खोटी प्रकृति का, दुराशय।

दुस्—उप० [सं०] समास मे वुराई, कठिनता, अभाव के अर्थ मे मुख्यत. प्रयुक्त। ⊙तर = वि० जिसे पार करना कठिन हो। विकट, कठिन। ⊙सह = वि० दे० 'दु सह'।

दुसराना(पु)—सक० दे० 'दुहराना'।

दुसरिहा(पु)—वि० साथी, सगी। प्रतिद्वद्वी।

दुसह(पु)—वि० असह्य। कठिन, कठोर।

दुसही†—वि० जो कठिनता से सह सके। ईर्ष्यालु, द्वेषी।

दुसाखा—पुं० एक प्रकार का शमादान जिसमे दो कनखे निकले होते हैं।

दुसाध—पुं० हिंदुओ मे एक जाति जो सूअर पालती है।

दुसार, दुसाल—पुं० आरपार किया हुआ छेद। क्रि० वि० एक पार से दूसरे पार तक।

दुसासन(पु)—पुं० दे० 'दु शासन'।

दुसूती—स्त्री० दुहरे सूत की वनी हुई चादर, एक प्रकार की मोटी चादर।

दुसेजा—पुं० वड़ी खाट, पलग।

दुहता—पुं० वेटी का वेटा, नाती।

दुहत्थड़—पुं० दोनो हाथो से मारा हुआ थप्पड़।

दुहत्था—वि० दोनो हाथो से किया हुआ (जैसे, दुहत्थी मार)। दो मूठो या दस्तोवाला।

दुहना—सक० स्तन से दूध निचोड़कर निकालना। निचोड़ना, तत्व या सार खीचना। मु०—दुह लेना = सार खीच लेना। धन हर लेना, लूटना।

दुहनी—स्त्री० वह वरतन जिसमे दूध दुहा जाता है, दोहनी।

दुहरा—वि० दो परत या तह का, दुगना। ⊙ना = सक० दूसरी वार कहना या करना। (कपडे या कागज आदि की) दो तहें करना।

दुहाई—स्त्री० उच्चस्वर से किसी वात की सूचना जो चारो ओर दी जाय, मुनादी। शपथ, कसम। वचाव या रक्षा के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना। गाय, भैंस, वकरी आदि को दुहने का काम। दुहने की मजदूरी। मु० ~देना = अपने वचाव के लिये किसी का नाम लेकर चिल्लाना। (किसी की) ~फिरना = राजा के सिंहासन पर वैठने पर उसके

नाम की घोषणा होना। प्रताप का डंका पिटना।

दुहाग—पुं० दुर्भाग्य। वैधव्य, रँडापा।

दुहागिन—स्त्री० सुहागिन का उलटा, विधवा।

दुहागिल—वि० अभागा। अनाथ। सूना।

दुहागी—वि० अभागा, बदकिस्मत।

दुहाना—सक० [दुहना का प्रे०] दुहने का काम दूसरे से कराना।

दुहावनी—स्त्री० दूध दुहने की मजदूरी, दुहाई।

दुहिता—स्त्री [सं०] कन्या, लड़की।

दुहिन(पु)—पुं० ब्रह्मा।

दुहुँधां(पु)—पुं० दोनों ओर।

दुहेला—वि० दुःखदायी, दुःसाध्य, कठिन। दुःखी। पुं० विकट या दुःखदायक कार्य। कठिन खेल।

दुहोतरा(पु)—वि० दो अधिक, दो ऊपर।

दुह्य—वि० [सं०] दुहने योग्य।

दूंद(पु)—पुं० दे० 'दुंद'।

दूंदना(पु)—अक० लड़ाई झगडा या उपद्रव करना।

दूंदि(पु)—स्त्री० दे० 'दुंद'। शोर (द्वंद्व) 'दिसि दिसन दादुर से उमगि दूंदि मचावहीं' (हिम्मत ८१)।

दूइज—स्त्री० दे० 'दूज'।

दूक(पु)—वि० दो एक, कुछ।

दूकान—पुं० दे० 'दुकान'।

दूखना(पु)—सक० दोष लगाना। अक० दे० 'दुःख'।

दूज—स्त्री० किसी पक्ष की दूसरी तिथि, द्वितीया। मु०~का चाँद होना = बहुत दिनों पर दिखाई पड़ना।

दूजा(पु)—वि० दूसरा।

दूत—पुं० [सं०] संदेशवाहक। वह जो संदेश पहुँचाने या किसी विशेष कार्य के लिये कहीं भेजा जाय, चर। राजदूत। प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक दूसरे तक पहुँचानेवाला मनुष्य। ⊙कर्म = पुं० संदेसा या खबर पहुँचाना, दूत का काम। **दूतावास**—पुं० किसी देश में दूसरे देश के राजदूत और उससे संबद्ध व्यक्तियों के रहने आदि की जगह।

दूतर(पु)—वि० दे० 'दुस्तर'।

दूतिका, दूती—स्त्री० [सं०] प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक दूसरे तक पहुँचानेवाली स्त्री, कुटनी।

दूत्य—पुं० दे० 'दौत्य'।

दूध—पुं० सफेद रंग का वह प्रसिद्ध तरल पदार्थ जो स्तनपायी जीवों की प्रसूता के स्तनों में रहता है और जिससे उनके नवजात बच्चों का बहुत दिनों तक पोषण होता है, दुग्ध। क्षीर। अनाज के हरे बीजों का रस। वह सफेद तरल पदार्थ जो अनेक प्रकार के पौधों की पत्तियों या डंठलों को तोड़ने पर निकलता है। ⊙पिलाई = स्त्री० दूध पिलानेवाली दाई। ब्याह की एक रस्म जिसमें बरात के समय माता वर को दूध पिलाने की सी मुद्रा करती है। वह धन या नेग जो माता को इस क्रिया के बदले में मिलता है। ⊙पूत = पुं० धन और संतति। ⊙फेनी = स्त्री० दे० 'फेनी'। ⊙भाई = पुं० ऐसे बालक जो एक ही स्त्री का स्तन पीकर पले हों पर भिन्न भिन्न माता पिता से उत्पन्न हों, धाभाई। ⊙मुँहा = वि० दे० 'दुधमुँहा'। ⊙मुख = वि० दे० 'दुधमुँहा'। मु०~उतरना = छातियों में दूध भर जाना।~का~और पानी का पानी करना = ठीक ठीक न्याय करना, असलियत का निर्णय करना। ~का सा उबाल = शीघ्र शांत हो जानेवाला मनोवेग।~की मक्खी की तरह निकालना या निकालकर फेंक देना = किसी मनुष्य को बिलकुल तुच्छ या अनावश्यक समझकर अपने साथ से एकदम अलग कर देना। ~के दाँत न टूटना = बहुत छोटा रहना या बचपन रहना।~पीता बच्चा = गोद का बच्चा।~फटना = खटाई आदि पड़ने के कारण दूध का जल अलग और सार भाग या छेना अलग हो जाना, दूध बिगड़ना। (स्तनों में) ~भर आना =

बच्चे की ममता या स्नेह के कारण माता के स्तनों मे दूध उतर आना। **दूधो नहाओ, पूतो फलो** = धन और सतान की वृद्धि हो (आशीर्वाद)।

दूधिया—वि० जिसमे दूध मिला हो अथवा जो दूध से बना हो। दूध के रग का, सफेद। पुं० एक प्रकार का सफेद और चमकीला पत्थर या रत्न। एक प्रकार का सफेद घटिया मुलायम पत्थर जिसकी प्यालियाँ आदि बनती हैं।

दून—स्त्री० दूने का भाव। जितना समय लगाकर गाना या बजाना आरभ किया जाय, उसके आधे समय मे गाना या बजाना। पु० तराई, घाटी। मु०**~की लेना या हाँकना** = बहुत बढ चढकर बातें करना, डीग मारना। **~की सूझना** = बहुत बडी या असभव बात का ध्यान मे आना।

दूनर†(पु)—वि० जो लचकर दुहरा हो गया हो।

दूना—वि० दुगुना, दो बार उतना ही।

दूनों(पु)†—वि० दे० 'दोनो'।

दूब—स्त्री० एक प्रसिद्ध घास, (यह तीन प्रकार की होती है, हरी, सफेद और गाँडर)।

दूबदू—क्रि० वि० आमने सामने, मुकाबले मे।

दूबरा(पु)†—वि० दे० 'दुबला'।

दूबा†—स्त्री० दे० 'दूब'।

दूबे—पु० ब्राह्मणो की एक शाखा, द्विवेदी।

दूभर—वि० कठिन, मुश्किल।

दूमना(पु)†—अक० हिलना डोलना।

दूरदेश—वि० [फा०] दूर तक की बात विचारनेवाला, दूरदर्शी।

दूर—क्रि० वि० [सं०] देश, काल या सबध आदि के विचार से बहुत अतर पर, पास या निकट का उलटा। वि० जो दूर या फासले पर हो। ⊙**दर्शक** = वि० दूर तक देखनेवाला। ⊙**दर्शक यत्र** = पु० दूरबीन। ⊙**दर्शिता** = स्त्री० दूर की बातें सोचने का गुण, दूरदेशी। ⊙**दर्शी** = वि० बहुत दूर तक की बात सोचनेवाला, दूरदेश। ⊙**बीन** = स्त्री० [फा०] एक यत्र जिससे दूर की चीजें बहुत पास, स्पष्ट या बडी दिखाई देती हैं। ⊙**वर्ती** = वि० दूर का। ⊙**वीक्षण** = पु० दूरबीन। ⊙**स्थ** = वि० दूर का। मु०**~करना** = अलग करना। न रहने देना, मिटाना। **~की बात** = बारीक बात। कठिन बात। बहुत आगे चलकर आनेवाली बात। **~की सूझ** = बडी सूक्ष्म बात। **~भागना या रहना** = बहुत बचना, पास न जाना। **~होना** = हट जाना, अलग हो जाना। मिट जाना।

दूरी—स्त्री० दो वस्तुओ के मध्य का स्थान, फासला। ⊙**कृत** = वि० [सं०] दूर किया हुआ।

दूर्वा—स्त्री० [सं०] दूब नाम की घास।

दूलन(पु)—पु० दे० 'दोलन'।

दूलह—पु० दुलहा, वर, नौशा। पति, स्वामी।

दूल्हा—पु० दे० 'दूलह'।

दूषक—पु० [सं०] वह जो किसी पर दोषारोपण करे। दोष उत्पन्न करनेवाला पदार्थ।

दूषण—पु० [सं०] बुराई, अवगुण। दोष लगाने की क्रिया या भाव, ऐब लगाना। एक राक्षस जो खर और रावण का भाई था।

दूषणीय—वि० [सं०] दोष लगाने योग्य, जिसमे ऐब लगाया जा सके।

दूषना(पु)†—सक० दोष लगाना, कलकित करना।

दूषित—वि० [सं०] जिसमे दोष हो, खराब।

दूष्य—वि० दोष लगाने योग्य। निंदा करने योग्य। तुच्छ।

दूसना—सक० दे० 'दूषना'।

दूसर(पु)†—वि० दे० 'दूसरा'।

दूसरा—वि० पहले के बाद का, द्वितीय। जिसका प्रस्तुत विषय या व्यक्ति से सबध न हो, अन्य।

दूहना—सक० दे० 'दुहना'।

दूहा(पु)† - पु० दे० 'दोहा'।

दृक्—पु० [सं० समा० मे दृश् के लिये] दृष्टि। ⊙**क्षेप** = पु० दृष्टिपात। ⊙**पथ** = पु० दृष्टि का मार्ग, दृष्टि की पहुँच। ⊙**पात** = पुं० दृष्टिपात। ⊙**शक्ति** =

देखने की शक्ति, आँखो की शक्ति। प्रकाश-रूप, चैतन्य। आत्मा।

दृक—पु० [सं०] छेद, बिल।

दृग्—पु० [सं० समास मे दृश् के लिये] आँख। ⊙**गोचर** = वि० जो आँख से दिखाई दे। **दृगचल**—पु० पलक। **दृगबु**—पु० आँखो से निकलनेवाला जल। आँसू।

दृग(पु)—पु० आँख। देखने की शक्ति, दृष्टि। दो की सख्या। ⊙**मिचाव** = पु० आँख-मिचौनी का खेल। मु० ~**डालना या देना** = देखना।

दृढ—वि० [स०] मजबूत, कडा, ठोस। जो विचलित न हो, अटल। निश्चित, ध्रुव। बलवान्, हृष्टपुष्ट। जो खूब कसकर बँधा या मिला हो, प्रगाढ। निडर, ढीठ, कडे दिल का। ⊙**चेता** = वि० पक्के विचारोंवाला, दृढनिश्चय। ⊙**ता** = स्त्री० दृढ़ होने का भाव, दृढत्व, मजबूती। स्थिरता। ⊙**त्व** = पु० दृढता। ⊙**पद** = पु० तेईस मात्राओ का एक छद जिसके अत मे दो गुरु होते हैं, उपमान। ⊙**प्रतिज्ञ** = वि० जो अपनी प्रतिज्ञा से न टले। **दृढ़ांग**—वि० जिसके अग दृढ हो, हृष्ट-पुष्ट।

दृढ़ाना—सक० दृढ करना, पक्का या मजबूत करना। अक० कडा, पुष्ट या मजबूत होना। स्थिर या पक्का होना।

दृढ़ाई(पु)—स्त्री० दे० 'दृढता'।

दृप्त—वि० [सं०] उग्र, प्रचड। प्रज्वलित। तेजयुक्त। अभिमानी।

दृश्—पुं० [सं०] देखना, दर्शन। दिखाने-वाला, प्रदर्शक। देखनेवाला। स्त्री० दृष्टि। आँख। दो की सख्या। ज्ञान।

दृशद्वती—स्त्री० दे० 'दृषद्वती'।

दृश्य—वि० [सं०] जो देखने मे आ सके, जिसे देख सकें। दर्शनीय। मनोरम, सुदर। जानने योग्य। पुं० वह पदार्थ जो आँखो के सामने हो, देखने की वस्तु। तमाशा। वह काव्य जो अभिनय द्वारा दर्शको को दिखाया जाय, नाटक, रूपक। ज्ञात या दी हुई सख्या (गणित)। ⊙**मान** = वि० जो दिखाई पड़ रहा हो। चमकीला। सुदर।

दृषद्वती—स्त्री० [सं०] ऋग्वेद मे वर्णित वर्तमान पजाब की एक नदी का प्राचीन नाम। विश्वामित्र की एक पत्नी का नाम।

दृष्ट—वि० [सं०] देखा हुआ। जाना हुआ, प्रकट। लौकिक और गोचर, प्रत्यक्ष। पुं० दर्शन। साक्षात्कार। प्रत्यक्ष प्रमाण (साख्य)। ⊙**कूट** = पुं० पहेली। वह कविता जिसका अर्थ शब्दो के वाचकार्थ से न समझा जा सके, बल्कि प्रसग या रूढ अर्थों से जाना जाय। ⊙**मान**(पु) = वि० प्रकट। व्यक्त। ⊙**वाद** = पुं० वह दार्शनिक सिद्धात जो प्रत्यक्ष को ही मानता है।

दृष्टांत—पुं० अज्ञात वस्तुओ या व्यापारो का धर्म आदि समझाने के लिये समान धर्मवाली किसी प्रसिद्ध या ज्ञात वस्तु या व्यापार का कथन, उदाहरण, मिसाल। एक अर्थालकार जिसमे एक ओर तो उपमेय और उसके साधारण धर्म का वर्णन और दूसरी ओर बिंबप्रतिबिंब भाव से उपमान और उसके साधारण धर्म का वर्णन होता है। न्याय शास्त्र के १६ पदार्थों मे से एक। शास्त्र। मरण। **दृष्टार्थ**—पुं० देखते ही समझ मे आ जानेवाले अर्थ का शब्द। वह शब्द जिस के श्रवण से श्रोता को किसी ऐसे अर्थ का बोध हो जिसका प्रत्यक्ष इस ससार मे होता हो।

दृष्टि—स्त्री० [सं०] देखने की वृत्ति या शक्ति, आँख की ज्योति। आँख की पुतली के किसी वस्तु की सीध मे होने की स्थिति। नजर, निगाह। आँख की ज्योति का प्रसार जिससे वस्तुओ के रूप, रग आदि का बोध होता है। देखने के लिये खुली हुई आँख। परख, पहचनना। कृपादृष्टि, हित का ध्यान। आशा की दृष्टि, उम्मीद। ध्यान विचार। उद्देश्य, अभिप्राय। ⊙**कूट** = पुं० दे० 'दृष्टकूट'। ⊙**कोण** = पुं० विचार करने का ढग, विचार, किसी विषय पर निश्चित सिद्धात। ⊙**क्रम** = पुं० चित्र मे दृश्य जगत् के समान ही किसी वस्तु के आकार प्रकार, दूरी और सामीप्य आदि का दिखाई देना, स्वाभाविक चित्रण। ⊙**गत** = वि० जो दिखाई पडता हो। ⊙**गोचर** = वि० जो देखने मे आ सके। ⊙**पथ** = पुं० दृष्टि का फैलाव, नजर की

पहुँच । ⊙परंपरा = स्त्री० दे० 'दृष्टि-क्रम' । ⊙पात = पुं० दृष्टि डालने की क्रिया या भाव, ताकना । ⊙बंध = पुं० दीठबदी, इद्रजाल, जादू । हाथ की सफाई या चालाकी । ⊙वंत = वि० दृष्टिवाला । ज्ञानी । ⊙वाद = पुं० वह सिद्धात जिसमे दृष्टि या प्रत्यक्ष प्रमाण की ही प्रधानता हो । मु०—(किसी से) ~जुड़ना = देखा-देखी होना । (किसी से) ~जोड़ना = आँख मिलाना, साक्षात्कार करना ।~मिलाना = दे० 'दृष्टि जोडना' ।~रखना = देखरेख मे रखना ।

दे—स्त्री० स्त्रियो के लिये एक आदरसूचक शब्द, देवी । बगालियो की एक उपाधि।

देई—स्त्री० देवी । स्त्रियो के लिये एक आदरसूचक शब्द । लडकी ।

देख—स्त्री० देखने की क्रिया या भाव (प्राय समास या यौगिक शब्दो मे प्रयुक्त) ⊙भाल = स्त्री० जाँच पडताल, निरीक्षण । देखादेखी, साक्षात्कार । ⊙रेख = स्त्री० देखभाल, निगरानी ।

देखन(पु)†—देखने की क्रिया, भाव या ढग । ⊙हार(पु)†—वि० देखनेवाला ।

देखना—सक० किसी वस्तु के अस्तित्व या उसके रूप रग आदि का नेत्रो द्वारा ज्ञान प्राप्त करना । पढना । जाँच करना । खोजना, तलाश करना । आजमाना, परखना । निगरानी रखना, ताकते रहना । समझना, सोचना । अनुभव करना, भोगना । गुण, दोष का पता लगाना, जाँचना । ठीक करना, उपाय करना, प्रतिकार करना (जैसे, उन्हें जो जी मे आए करने दो, हम देख लेंगे) । मु०~सुनना = जानकारी प्राप्त करना, पता लगाना । देखने मे = वाह्य लक्षणो के अनुसार, साधारण व्यवहार मे। रूप रग मे। देखते देखते = आँखो के सामने। तुरत, फौरन, चटपट । देखते रह जाना = हक्का बक्का रह जाना, चकित हो जाना । देखा जायगा = फिर विचार किया जायगा। पीछे जो कुछ करना होगा, किया जायगा।

देखराना(पु)†— सक० दे० 'दिखलाना' ।

देखरावना(पु)†—सक० दे० 'दिखलाना' ।

देखाऊ—वि० दे० 'दिखाऊ' ।

देखादेखी—स्त्री० आँखो से देखने की दशा या भाव, दर्शन । क्रि० वि० दूसरो को करते देखकर, दूसरो के अनुकरण पर ।

देखाना†(पु)—सक० दे० 'दिखाना' ।

देखाभाली—स्त्री० दे० 'देखभाल' ।

देखाव—पुं० दृष्टि की सीमा, नजर की पहुँच । ठाटबाट, तडक भडक ।

देखावना—सक० दे० 'दिखाना' ।

देखावट—स्त्री० दे० 'दिखावट' ।

देखावटी†—वि० दे० 'दिखावटी' ।

देग—पुं० [फा०] खाना पकाने का चौड़े मुँह और पेट का वडा वरतन । ⊙चा = पुं० छोटा देग । ⊙ची = स्त्री० छोटा देगचा ।

देदीप्यमान—वि० [सं०] अत्यत प्रकाशयुक्त, चमकता हुआ, दमकता हुआ ।

देन—स्त्री० देने की क्रिया या भाव, दान । दी हुई चीज, प्रदत्त वस्तु । ⊙दार = पुं० ऋणी, कर्जदार । ⊙लेन = पुं० लेने और देने का व्यवहार, व्याज पर रुपया उधार देने का व्यापार । ⊙हारा(पु)† = वि० देनेवाला ।

देना—पु० उधार लिया हुआ रुपया, कर्ज । सक० अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार मे करना, प्रदान करना । सौपना, हवाले करना । हाथ पर या पास रखना, थमाना। रखना, लगाना या डालना, (जैसे सिर पर टोपी देना, जोडमे पच्चड देना, तरकारी मे नमक देना, पेंसिल से लकीर देना) । मारना, प्रहार करना, जैसे (थप्पड देना, चाँटा देना)। अनुभव कराना, भोगाना (जैसे कष्ट देना, दु ख देना) । उत्पन्न करना, निकालना (जैसे, यह गाय खूब दूध देती है वकरी ने दो वच्चे दिए) । बद करना । भिडाना (जैसे, किवाड देना, वोतल मे डाट देना) । (इस क्रिया का प्रयोग वहुत सी सकर्मक क्रियाओ के साथ सयो० क्रि० के रूप मे होता है, जैसे, कर देना गिरा देना) ।

देमान(पु)†—पु० दे० 'दीवान' ।

देय—वि० [सं०] देने योग्य, दातव्य ।

देयासी†—वि० झाड फूंक करनेवाला, ओझा

देर—स्त्री० [फा०] नियमित, उचित या आवश्यक से अधिक समय, अतिकाल, विलंब। समय, वक्त।

देरी—स्त्री० दे० 'देर'।

देवँक—स्त्री० दे० 'दीमक'।

देव—पु० [फा०] दैत्य, राक्षस। पु० [सं०] देवता, सुर। पूज्य व्यक्ति। ब्राह्मणों, राजाओं तथा बड़ों के लिये आदरसूचक शब्द। ⊙**ऋण** = पु० देवताओं के लिये कर्तव्य, यज्ञादि कर्म। ⊙**ऋषि** = पु० देवर्षि, देवताओं के लोक में रहनेवाले ऋषि नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य आदि। ⊙**कन्या** = स्त्री० देवता की पुत्री, देवी। ⊙**कार्य** = पु० देवताओं को प्रसन्न करने के लिये किया हुआ कर्म, होम-पूजा आदि। ⊙**गज** = पु० ऐरावत = ⊙**गण** = पु० देवताओं का समूह, देवताओं का वर्ग। देवता का अनुचर। ⊙**गति** = स्त्री० मरने के बाद उत्तम गति, स्वर्ग लाभ। ⊙**गिरि** = स्त्री० रैवतक पर्वत जो गुजरात में है, गिरनार। दक्षिण का एक प्राचीन नगर जो आजकल दौलताबाद कहलाता है। ⊙**गुरु** = पु० बृहस्पति। ⊙**ठान** = पु० [हिं०] कार्तिक शुक्ला एकादशी। इस दिन विष्णु भगवान् चार महीने सोकर उठते हैं, दिठवन। ⊙**तर्पण** = पु० मंत्र पढ़ते हुए ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं के नाम ले लेकर पानी देना। ⊙**ता** = पु० स्वर्ग में रहनेवाला जरा-मृत्युविहीन प्राणी, सुर। ⊙**त्व** = पु० देवता होने का भाव या धर्म, जरामृत्युविहीनता। ⊙**दत्त** = वि० देवता का दिया हुआ। देवता के निमित्त किया हुआ। पु० देवता के निमित्त दान की हुई संपत्ति। शरीर की पाँच वायुओं में से एक, जिससे जँभाई आती है। अर्जुन के शंख का नाम। ⊙**दार** = पु० [हिं०] एक बहुत ऊँचा और सीधा पेड़ इसकी अनेक जातियाँ संसार के अनेक स्थानों में पाई जाती है। इससे एक प्रकार का अलकतरा और तारपीन की तरह का तेल भी निकलता है। ⊙**दाली** = स्त्री० एक लता जो देखने में तुरई की बेल से मिलती जुलती होती है, घघरबेल। ⊙**दासी** = स्त्री० मंदिरों में समर्पित होकर रहनेवाली दासी या नर्तकी। वेश्या। ⊙**दूत** = पु० जो परमात्मा या किसी देवता का संदेशवाहक हो, पैगंबर। ⊙**देव** = पु० देवताओं का देवता। महादेव। विष्णु। ब्रह्मा। गणेश। ⊙**धुनि**, ⊙**धुनी** = [हिं०] स्त्री० गंगा नदी। ⊙**नदी** = स्त्री० गंगा। सरस्वती और दृषद्वती नामक दो वैदिक नदियाँ। ⊙**नागरी** = स्त्री० उत्तर भारत की प्रधान लिपि, जिसमें संस्कृत, हिंदी, मराठी, नेपाली आदि देशी भाषाएँ लिखी जाती है। यह प्राचीन ब्राह्मी लिपि का विकसित रूप है। ⊙**पथ** = पु० आकाश। ⊙**पुरी** = स्त्री० इंद्र की नगरी, अमरावती। ⊙**भाषा** = स्त्री० संस्कृत भाषा। ⊙**भूमि** = स्त्री० स्वर्ग। ⊙**मंदिर** = पु० वह घर जिसमें किसी देवता की मूर्ति स्थापित हो, देवालय। ⊙**माया** = स्त्री० परमेश्वर की माया जो अविद्या के रूप में जीवों को बंधन में डालती है। ⊙**मुनि** = पु० नारद ऋषि। ⊙**यज्ञ** = पु० होमादि कर्म जो पंचयज्ञों में से एक है। ⊙**यान** = पु० उपनिषदों के अनुसार शरीर से अलग होने के बाद जीवात्मा के ब्रह्मलोक जाने के लिये दो मार्गों में से एक। मुक्ति के लिये देवताओं की उपासना का मार्ग। ⊙**युग** = पु० सत्युग। ⊙**योनि** = स्त्री० स्वर्ग, अंतरिक्ष आदि में रहनेवाले उन जीवों की सृष्टि जो देवताओं के अंतर्गत माने जाते हैं, (जैसे अप्सरा, किन्नर, गंधर्व, गुह्यक, सिद्ध, भूत, पिशाच आदि)। ⊙**राज** = पु० देवताओं के राजा, इंद्र। ⊙**राज्य** = स्वर्ग। ⊙**राय** = पु० [हिं०] दे० 'देवराज'। ⊙**लोक** = पु० स्वर्ग। ⊙**वधू** = देवता की स्त्री। देवी। अप्सरा। ⊙**वाणी** = स्त्री० संस्कृत भाषा। किसी अदृश्य देवता का वचन जो अंतरिक्ष में सुनाई पड़े, आकाशवाणी।

⊙व्रत=पु० भीष्म पितामह। ⊙सुनी (शु)=स्त्री० देवलोक की कुतिया, सरमा। ⊙सभा=स्त्री० देवताओ का समाज, देवताओ की सभा। राजसभा। वह सभा जिसे मय ने युधिष्ठिर के लिये बनाया था, सुधर्मा। ⊙सेना=स्त्री० देवताओ की सेना। प्रजापति की कन्या, जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। ये मातृकाओ मे श्रेष्ठ मानी जाती है और स्कदपत्नी के रूप मे अधिक प्रसिद्ध है। इन्हें नवजात शिशुओ का पालन करनेवाली देवी माना जाता है, षष्ठी देवी। ⊙स्थान=पु० देवताओ के रहने की जगह। देवालय, मदिर। ⊙हर, ⊙हरा=पु० [हिं०] मंदिर। **देवर्षि**—पुं० (देवऋषि) नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, भृगु इत्यादि जो ऋषियो मे देवता माने जाते हैं। **देवांगना**—स्त्री० देवताओ की स्त्री, स्वर्ग की स्त्री। अप्सरा। **देवायतन**—पु० स्वर्ग। **देवार्पण**—पु० देवता के निमित्त किसी वस्तु का दान, देवता को चढाया हुआ धन, धान्य आदि। **देवालय**—पु० स्वर्ग। वह घर जिसमे किसी देवता की मूर्ति रखी जाय, मदिर। **देवेंद्र**—पु० इद्र। **देवेश**—पु० इद्र। **देवोत्तर**—पुं० देवता को अर्पित किया हुआ धन या सपत्ति। **देवोत्थान**—पुं० विष्णु का शेष की शय्या पर से उठना, जो कार्तिक शुक्ला एकादशी को होता है। **देवोद्यान**—पुं० देवताओ के बगीचे जो चार है—नदन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र। **देवोन्माद**—पुं० एक प्रकार का उन्माद जिसमे रोगी पवित्र रहता, सुगंधित फूलो की माला पहनता और सस्कृत आदि बोलता है।

देवर—पु० [सं०] पति का छोटा भाई। पति का भाई। **देवरानी**—स्त्री० [हिं०] देवर की स्त्री, पति के छोटे भाई की स्त्री। देवराज इद्र की पत्नी, शची।

देवरा—पुं० छोटा मोटा देवता।

देवल—पु० [सं०] वह जो देवताओ की पूजा करके जीविका निर्वाह करे, पुजारी, पडा। धार्मिक पुरुष। नारद मुनि। एक स्मृतिकार। देवालय, देवमदिर।

देवा†—वि० देनेवाला (जैसे—पानीदेवा)। †देनदार, ऋणी। पुं० देवता।

देवान†—पुं० दरबार, कचहरी, राजसभा। अमात्य, मत्री। प्रबंधकर्ता।

देवानांप्रिय—पुं० [सं०] देवताओ को प्रिय। बकरा। मूर्ख।

देवारी—स्त्री० दे० 'दीवाली'।

देवाल†—वि० देनेवाला। पुं० दे० 'दीवार'।

देवी—स्त्री० [सं०] देवता की स्त्री, देवपत्नी। दुर्गा। वह रानी जिसका के राजा साथ अभिषेक हुआ हो, पटरानी। ब्राह्मण स्त्रियो की एक उपाधि। सुशीला और सदाचारिणी स्त्री। स्त्रियो के लिये आदरसूचक शब्द। ⊙पुराण=पुं० एक उपपुराण जिसमे देवी का माहात्म्य आदि वर्णित है। ⊙भागवत=पुं० एक पुराण, जिसकी गणना बहुत से लोग उपपुराणो मे करते हैं।

देवैया†—वि० देनेवाला।

देश—पुं० [सं०] दिशाओ का विस्तार जिसके भीतर सब कुछ है, दृश्य जगत्। पृथ्वी का वह भाग जो राजनीतिक दृष्टि से स्वतत्र सत्ता रखता हो, राष्ट्र। स्थान, जगह। शरीर का कोई भाग, अग (जैसे, स्कधदेश, कटिदेश)। एक राग। ⊙ज=वि० देश मे उत्पन्न। पुं० वह शब्द जो न सस्कृत हो, न सस्कृत का अपभ्रश हो, बल्कि किसी प्रदेश मे लोगो की बोलचाल से उत्पन्न हो गया हो। ⊙निकाला=पुं० [हिं०] देश से निकाल दिए जाने का दड। ⊙भाषा=स्त्री० किसी देश-विशेष की भाषा (जैसे, बँगला, मराठी, गुजराती आदि)। **देशांतर**—पुं० अन्य देश, विदेश, परदेश। भूगोल मे ध्रुवो से होकर उत्तर दक्षिण गई हुई किसी सर्वमान्य मध्य रेखा मे पूर्व या पश्चिम की दूरी लंबाश।

देशाटन—पुं० [सं०] भिन्न भिन्न देशो की यात्रा, देशभ्रमण।

देशी—वि० देश का, देश सबधी। स्वदेश का, अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।

देशीय—वि० [सं०] दे० 'देशी'।
देश्य—वि० [सं०] देश संबंधी, देशी, देश का, देश मे उत्पन्न।
देस—पुं० दे० 'देश'।
देसड़ा(पु), देसरा(पु)—पुं० दे० 'देश'।
देसवाल—वि० स्वदेश का, दूसरे देश का नहीं।
दसावर—पुं० अन्य देश, परदेश।
देसी—वि० स्वदेश का, दूसरे देश का नहीं।
देह—पुं० [फा०] गाँव, खेडा, मौजा। स्त्री० [सं०] शरीर, तन। शरीर का कोई अंग। जीवन, जिंदगी। (पु)त्याग=पु० मृत्यु, मौत। ⊙धारण=पु० शरीररक्षा, जीवन। जन्म। ⊙धारी=पु० शरीर धारण करनेवाला, शरीरी। ⊙पात=पु० मृत्यु। ⊙यात्रा=स्त्री० शरीर का खान पान आदि व्यवहार। जीवननिर्वाह, मृत्यु। ⊙वंत=जिसके देह हो, जो तनुधारी हो। पु० व्यक्ति, प्राणी, शरीरी। ⊙वान्=त्रि० शरीरधारी। देहांत—पु० मृत्यु, मौत। देहात्मवाद—पु० देह या शरीर को ही आत्मा मानने का सिद्धांत। भौतिकवाद। देही—पु० आत्मा। शरीरधारी, प्राणी। स्त्री० दे० 'देह'।
देहरा—पु० देवालय। मनुष्य का शरीर।
देहरी(पु)†—स्त्री० दे० 'देहली'।
देहली—स्त्री० [सं०] द्वार की चौखट की वह लकड़ी जो नीचे होती है, दहलीज। भारत की राजधानी दिल्ली। ⊙दीपक=पु० भीतर बाहर दोनो ओर प्रकाश फैलानेवाला देहली पर रखा हुआ दीपक। एक अर्थालंकार जिसमे किसी मध्यस्थ शब्द का अर्थ दोनो ओर लगाया जाता है। ⊙दीपक न्याय=देहली पर रखे हुए दोनो ओर प्रकाश फैलानेवाले दीपक के समान दोनो ओर लगनेवाली बात।
देहात—पु० [फा०] गाँव, ग्राम। देहाती—वि० गाँव का। गाँव मे रहनेवाला। गँवार।
देहुरा—पु० दे० 'देहरा'।
दैं(पु)—अव्य० से (जैसे—चपाक दैं)।
दैउ(पु)†—पुं० दे० 'दैव'।
दैत्य—पुं० [सं०] कश्यप के वे पुत्र जो दिति नाम की स्त्री से पैदा हुए थे, असुर। लंबे डील या असाधारण बल का मनुष्य भयंकर मनुष्य। अति करनेवाला आदमी (जैसे, वह खाने मे दैत्य है)। ~⊙गुरु=शुक्राचार्य। दैत्यारि—पुं० विष्णु। इंद्र।
दैनंदिन—वि० [सं०] नित्य का। क्रि० वि० प्रति दिन। दिनोंदिन। पुं० एक प्रकार का प्रलय। दैनंदिनी—स्त्री० वह पुस्तिका जिसमे प्रति दिन के कार्य या घटनाएँ दर्ज की जायँ, रोजनामचा (अं० डायरी)।
दैन—वि० देनेवाला (यौगिक मे)।
दैनिक—वि० [सं०] प्रति दिन का। जो रोज रोज हो। जो एक दिन मे हो। दिन संबंधी। प्रतिदिन प्रकाशित होनेवाला समाचारपत्र आदि)। दैनिकी—स्त्री० दे० 'दैनंदिनी'।
दैन्य—पुं० [सं०] दीनता, विनीत भाव, गर्व या अहंकार के प्रतिकूल भाव। काव्य के संचारी भावो मे से एक जिसमे दुःख आदि से चित्त गिर जाता है, कातरता।
दैयत†—पुं० दैत्य, राक्षस, दानव।
दैया(पु)‡—पु० दई, दैव। अव्य० आश्चर्य, भय या दुखसूचक शब्द जिसे स्त्रियाँ बोलती हैं। हे दई! हे परमेश्वर!
दैर्घ्य—पुं० [सं०] दीर्घता, लंबाई।
दैव—वि० [सं०] देवता संबंधी। देवता के द्वारा होनेवाला। देवता को अर्पित। पु० प्रारब्ध। होनेवाली बात, होनी। विधाता, ईश्वर। आसमान। ⊙गति=स्त्री० ईश्वरीय बात, दैवी घटना। घटना। भाग्य। ⊙ज्ञ=पु० ज्योतिषी, भविष्य को जानने और बतानेवाला। ⊙योग=पु० संयोग, इत्तिफाक। ⊙वश, ⊙वशात् क्रि० वि० संयोग से, दैवयोग से। ⊙वाणी=स्त्री० आकाशवाणी। संस्कृत। ⊙वादी=पु० भाग्य के भरोसे रहनेवाला। आलसी, निरुद्योगी। ⊙विवाह=पुं० आठ प्रकार के विवाहो मे से एक जिसमे यज्ञ करनेवाला व्यक्ति ऋत्विज या पुरोहित को अपनी कन्या देता है। दैवागत—वि० दैवी, आकस्मिक। दैवात्—अकस्मात्, दैवयोग

से, इत्तिफाक से। दैविक—वि० देवता सबधी, देवताओ का। देवताओ का किया हुआ।

दैवत—वि० [सं०] देवता सबधी। पु० देवता की प्रतिमा आदि। देवता।

दैवी—वि० [सं०] देवता सबधिनी। देवताओ द्वारा की हुई, देवकृत, प्रारब्ध या सयोग से होनेवाली। आकस्मिक। सात्विक। ⊙गति = ईश्वर की हुई। भावी, होनहार, अदृष्ट।

दैहिक—वि० [सं०] देह सबधी, शारीरिक। देह से उत्पन्न।

दोचना—सक० दबाव मे डालना।

दो—वि० एक और एक। ⊙आतशा = वि० [फा०] जो दो बार भभके मे खीचा या चुआया गया हो। ⊙आब = पु० [फा०] किसी देश का वह भाग जो दो नदियो के बीच मे हो। गगा और यमुना के बीच की भूमि। ⊙आबा = पु० दे० 'दोआबा'। ⊙चद = वि० [फा०] दुगना, दूना। ⊙चित्ता - वि० दे० 'दुचित्ता'। ⊙जानू = क्रि० वि० [फा०] घुटनो के बल, घुटने टेककर (बैठना)। ⊙तरफा = वि० [फा०] दोनो तरफ का। ⊙तला, ⊙तल्ला = वि० दो खड का, दो मजिला। ⊙तही = स्त्री० एक प्रकार की मोटी दोहरी चादर। ⊙तारा = पु० एकतारे की तरह का एक प्रकार का बाजा जिसमे दो तार लगे हो। ⊙दिला = वि० दे० 'दोचित्ता'। ⊙धारा = वि० जिसके दोनो ओर धार या बाड हो। पु० एक प्रकार का थूहर। ⊙नली = वि० पु० जिसमे दो नाल हो, जैसे दो नली बदूक। ⊙पलिया† = वि० स्त्री० दे० 'दोपल्ली'। ⊙पल्ली = वि० दो पल्लेवाला, जिसमे दो पल्ले हो। स्त्री० एक प्रकार की टोपी जिसमे कपडे के दो टुकडे एक साथ सिले होते हैं। ⊙पहर = वि० दिन के दो पहरो (छह घटो) के बीतने का समय, मध्याह्न काल। ⊙पहरिया = स्त्री० दे० 'दोपहर'। ⊙पीठा = वि० दोनो ओर समान रग रूप का, दोरुखा। ⊙फसली = वि० दोनो फसलो के सबध का, दो फसलों मे होनेवाला (अन्न, फल आदि)। जो दोनो ओर लग सके, दोनो ओर काम देने योग्य (जैसे, दो फसली बात)। ⊙बारा = क्रि० वि० [फा०] दे० 'दुबारा'। ⊙बाला = वि० [फा०] दुगना दूना। ⊙भाषिया = वि० पु० दे० 'दुभाषिया'। ⊙मजिला = वि० [फा०] दे० 'दुमजिला'। ⊙महला = वि० दे० 'दुमजिला'। ⊙मुँहा = वि० दे० 'दुमुँहा'। ⊙रंगा = वि० दे० 'दुरगा'। ⊙रगी = स्त्री० दोरगे या दोमुँहे होने का भाव। छल, कपट। दो तरफ लगनेवाली चाल या बात। ⊙रसा = वि० दो प्रकार के स्वाद या रसवाला। पु० एक प्रकार का पीने का तमाकू। ⊙राहा = पु० वह स्थान जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों। ⊙रुखा = वि० [फा०] जिसके दोनो ओर समान रग या बेलबूटे हो। जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर दूसरा रग हो। ⊙शाखा = पु० [फा०] शमादान या दीवारगीर जिसमे दो बत्तियाँ हों। ⊙साला†—वि० दो वर्ष का, दो वर्ष का पुराना। ⊙सूती = स्त्री० दे० 'दुसूती'। ⊙हत्थड = पु० 'दुहत्थड'। ⊙हत्था वि० = 'दुहत्था'। मु०—आँखें ~चार होना = सामना होना। ~एक या ~चार = कुछ थोडे। ~चार होना = भेंट होना, मुलाकात होना। ~दिन का = बहुत ही थोडे समय का।

दोई(पु)†, दोउ(पु)†, दोऊ(पु)†—पु०, वि० दे० 'दो'।

दोख(पु)†—पु० दे० 'दोष'। ⊙ना(पु)† = सक० दोष लगाना, ऐब लगाना।

दोखी(पु)†—पु० दे० 'दोषी'।

दोगला—पु० [फा०] वह मनुष्य जो अपनी माता के उपपति (विवाहित पति के अतिरिक्त पुरुष) से उत्पन्न हुआ हो, जारज। वह जीव जिसके माता पिता भिन्न भिन्न जातियो के हों, वर्णसकर।

दोगा—पु० एक प्रकार का लिहाफ का कपडा। पानी मे घोला हुआ चूना जिससे सफेदी की जाती है।

दोच, दोचन—स्त्री० दुबधा, असमजस। कष्ट, दु ख। दबाव, दबाए जाने का भाव। **दोचना**—सक० कोई काम करने के लिये बहुत जोर देना, दबाव डालना।
दोज—स्त्री० पक्ष की द्वितीया तिथि, दूज।
दोजख—पु० [फा०] मुसलमानो के धर्म के अनुसार नरक जिसके सात विभाग हैं। **दोजखी**—वि० दोजख सबधी, दोजख का। बहुत बडा अपराधी या पापी।
दोत(पु)—स्त्री० दवात। 'लिखौ कहौ लैकै कहूँ कागज कलम दोत' (गगा ३०)।
दोधक—पु० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसमे तीन भगण और अत मे दो गुरु वर्ण होते है, बधु।
दोन—पु० दो पहाडो के बीच की नीची जमीन। दो नदियो के बीच की जमीन, दोआब। दो नदियो का सगम स्थान। दो वस्तुओ की सधि या मेल।
दोना—पु० पत्तो का बना हुआ कटोरे के आकार का छोटा, गहरा पात्र।
दोनिया, दोनी†—स्त्री० छोटा दोना।
दोनो—वि० पूर्ववर्णित दो, उभय।
दोबल—पु० दोष, अपराध।
दोबा(पु)—पु० दे० 'दुबधा'।
दोय(पु)†—वि०, पु० दे० 'दो'। दे० 'दोनो'।
दोयम—वि० [फा०] दूसरा, मध्यम।
दोरदड(पु)†—वि० दे० 'दुर्दंड'। पु० दे० 'दोर्दंड'।
दोल—पु० [सं०] झूला, हिंडोल। डोली, चडोल। **दोला**—स्त्री० हिंडोला, झूला। डोली या चडोल। **दोलायत्र**—पु० वैद्यो का एक यत्र जिसकी सहायता से वे औषधियो के अर्क उतारते हैं। झूला। **दोलायमान**—वि० हिलता हुआ, झूलता हुआ। **दोलित**—वि० हिलता या झूलता हुआ।
दोष—पु० द्वेष, शत्रुता। पु० [सं०] अवगुण, ऐब, नुक्स। लाछन, कलक। अपराध, जुर्म। पाप, पातक। शरीर मे के वात, पित्त और कफ जिनके कुपित होने से शरीर मे व्याधि उत्पन्न होती है। वह मानसिक भाव जो मिथ्या ज्ञान से उत्पन्न होता है और जिसकी प्रेरणा से मनुष्य भले या बुरे कामो मे प्रवृत्त होता है। अति-व्याप्ति (न्याय)। साहित्य मे वे बातें जिनसे काव्य के गुण या प्रभाव मे कमी हो जाती है। परिभाषा की त्रुटि। प्रदोष। ⊙ता = स्त्री० दोष का भाव। ⊙ना(पु)† = सक० दोष लगाना, अपराध लगाना।
दोषन(पु)†—पु० दोष, दूषण, अपराध। **दोषाकर**—पु० चद्रमा। **दोषारोपण**—पु० (किसी पर) दोष लगाना। **दोषित**(पु)—वि० दे० 'दूषित'। **दोषिन**†—स्त्री० अपराधिनी। पाप करनेवाली स्त्री। दुष्ट स्वभाववाली स्त्री। **दोषी**—पु० अपराधी, कसूरवार। पापी। मुज-रिम, अभियुक्त। जिसमे दोष हो। दुष्ट स्वभाववाला। मु० ~देना = अपराध लगाना। ~निकालना = अवगुण खोजना, दोष का पता लगाना। ~लगाना = किसी के सबध मे यह कहना कि उसमे अमुक दोष है।
दोस(पु)†—पु० दे० 'दोष'।
दोसदारी(पु)†—स्त्री० मित्रता, दोस्ती।
दोस्त—पु० [फा०] मित्र, स्नेही। **दोस्ताना**—पु० दोस्ती, मित्रता। मित्रता का व्यवहार। वि० दोस्ती का, मित्रता का। **दोस्ती**—स्त्री० मित्रता, स्नेह।
दोह(पु)†—पु० दे० 'द्रोह'।
दोहग—पु० दे० 'दोहाग'।
दोहगा†—स्त्री० सुरैतिन, उपपत्नी।
दोहता—पु० दे० 'दुहता'।
दोहद—स्त्री० [स०] गर्भवती स्त्री की इच्छा, उकौना। गर्भवती स्त्री की मतली इत्यादि। गर्भावस्था। गर्भ का चिह्न। गर्भ। एक प्राचीन कविप्रौढोक्ति जिसके अनुसार सुदर स्त्री के स्पर्श से प्रियगु, पान की पीक थूकने से मौलसिरी चर-णाघात से अशोक, दृष्टिपात मे तिलक, मधुर गान से आम और नाचने से कचनार फूलते है। ⊙वती = स्त्री० गर्भवती स्त्री।
दोहन—पु० [स०] गाय, बकरी, भैंस इत्यादि के स्तनो से दूध निकालना, दुहना। दोहनी। **दोहनी**—स्त्री० मिट्टी का वह बरतन जिसमे दूध दुहते है। दूध दुहने का काम।

दोहना—सक० दोष लगाना। तुच्छ ठहराना।

दोहर—स्त्री० कपड़े की दो परतों को सीकर बनाई जानेवाली एक चादर।

दोहरना—अक० दो बार होना, दूसरी आवृत्ति होना। दोहरा होना, दो परतों का किया जाना। सक० दोहरा करना।

दोहरा—वि० दे० 'दुहरा'। पु० एक ही पत्ते मे लपेटे हुए पान के दो बीड़ (तंबोली)। कत्था, सुपाड़ी, चूना आदि का महीन सूखा मिश्रण। दोहा नाम का छंद।

दोहराना—सक० दे० 'दुहराना'।

दोहा—पु० एक प्रसिद्ध हिंदी छंद। इसके पहले तथा तीसरे चरण मे १३-१३ मात्राएँ और दूसरे तथा चौथे चरण मे ११-११ मात्राएँ होती है। इसी को उलट देने से सोरठा हो जाता है।

दोहाई—स्त्री० दे० 'दुहाई'।

दोहाक, दोहागⓅ†—पु० दुर्भाग्य, बदकिस्मती।

दोहागा†—पु० अभागा।

दोहित्ता†—पु० बेटी का बेटा, नाती। दौहित्र।

दोही—पु० दोहे का तरह का एक छंद जो चार चरणों का होने पर भी दो ही पंक्तियों मे लिखा जाता है। इसके पहले और तीसरे चरण मे १५-१५ मात्राएँ होती हैं और दूसरे तथा चौथे चरण मे ११-११। इसके अंत मे एक लघु होना चाहिए। पु० [स०] दूध दुहनेवाला। ग्वाला।

दोह्य—वि० [स०] दुहने योग्य।

दौंⓅ—अव्य० दे० 'धौं'। दे० 'दं'। Ⓟ पु० दे० 'दव'।

दौंकनाⓅ—अक० दे० 'दमकना'।

दौंचनाⓅ†—सक० दबाव डालकर लेना। लेने के लिये अड़ना।

दौंरी—स्त्री० बैलों का झुंड जो कटी हुई फसल के डठलों पर दाना झाड़ने के लिये फिराया जाता है। वह रस्सी जिससे बैल बँधे होते हैं। फसल के डंठलों से दाने झाड़ने की क्रिया। झुंड।

दौⓅस्त्री० आग, जंगल की आग। संताप।

दौड़—स्त्री० दौड़ने की क्रिया या भाव। धावा, चढ़ाई। उद्योग मे इधर उधर फिरने की क्रिया, किसी काम के लिये कहीं बार बार आना-जाना। द्रुत गति, वेग। गति की सीमा, पहुँच। प्रयत्नों की पहुँच। फैलाव, विस्तार। सिपाहियों का दल जो अपराधियों को एकबारगी कहीं पकड़ने के लिये जाय। ⊙**धूप**=स्त्री० प्रयत्न, परिश्रम। मु०~**मारना या लगाना**=वेग के साथ जाना। दूर तक पहुँचना, लंबी यात्रा करना। ⊙**ना**—अक० बहुत तेजी से चलना, वेग से जाना। सहसा प्रवृत्त होना, झुक पड़ना। किसी प्रयत्न मे इधर उधर फिरना। व्याप्त होना, छा जाना (जैसे, चेहरे पर लाली दौड़ना, खून दौड़ना आदि)।

दौड़ाना—सक० [अक० दौड़ना] दौड़ने की क्रिया कराना, जल्दी जल्दी चलाना। किसी काम को शीघ्र संपन्न करने के लिये शीघ्रता से भेजना; बार-बार आने जाने के लिये कहना या विवश करना। किसी वस्तु को एक जगह से खींचकर दूसरी जगह ले जाना। फैलाना, पोतना। चलाना (जैसे, कलम दौड़ाना)।

दौड़ादौड़—क्रि० वि० बिना कहीं रुके हुए, बेतहाशा। स्त्री० दे० 'दौड़ादौड़ी'। **दौड़ादौड़ी**—स्त्री० दौड़धूप। बहुत लोगों के साथ इधर उधर दौड़ने की क्रिया। आतुरता, हड़बड़ी। **दौड़ान**—स्त्री० दौड़ने की क्रिया या भाव। वेग, झोंक। सिलसिला।

दौत्यⓅ—पु० [सं०] दूत का काम।

दौनⓅ—पु० दे० 'दमन'।

दौना—पु० एक पौधा जिसकी पत्तियों मे तेज सुगंध आती है। दे० 'दोना'। Ⓟ सक० दमन करना।

दौनागिरि—पु० दे० 'द्रोणागिरि'।

दौर—पु० [अ०] चक्कर, फेरा। दिनों का फेर, कालचक्र। अभ्युदय काल। प्रताप, हुकूमत। पारी, बारी। बार, दफा। दे० 'दौरा'। ⊙**दौरा**—प्रधानता, प्रबलता। मु० ~**चलना**=शराब के प्याले

का बारी बारी से सबके सामने लाया जाना।

दौरना(पु)†—अक० दे० 'दौड़ना'।

दौरा—पु० [स० द्रोण] बाँस की फट्टियो या मूँज आदि का टोकरा। पु० [अ० दौर] चक्कर, भ्रमण। फेरा, गश्त। अफसर का इलाके मे जाँच पडताल के लिये घूमना। सामयिक आगमन, फेरा। किसी ऐसे रोग का लक्षण प्रकट होना जो समय समय पर होता हो, जैसे मिरगी का दौरा। मु० (असामी या मुकदमा) ~सुपुर्द करना = (असामी या मुकदमे को) फैसले के लिये सेशन जज के पास भेजना।

दौरात्म्य—पु० [स०] दुरात्मा का भाव, दुर्जनता। दुष्टता।

दौरान—पु० [फा०] दौरा, चक्र। दिनो का फेर। फेरा, पारी।

दौराना(पु)†—सक० दे० 'दौड़ाना'।

दौरी†—स्त्री० बाँस या मूँज की छोटी टोकरी, डलिया।

दौर्जन्य—पुं० [स०] दुर्जनता।

दौर्बल्य—पुं० [स०] दुर्बलता।

दौर्भाग्य—पुं० [स०] दे० 'दुर्भाग्य'।

दौर्मनस्य—पु० [सं०] 'दुर्मनस्' होने का भाव।

दौलत—स्त्री० [अ०] धन, सपत्ति। ⊙खाना = पु० [फा०] निवासस्थान, घर (आदरार्थ)। ⊙मंद = वि० [फा०] धनी, सपन्न।

दौवारिक—पु० [सं०] द्वारपाल।

दौहित्र—पु० [सं०] लडकी का लडका, नाती।

द्याना(पु), **द्यावना**(पु)—सक० दे० 'दिलाना'।

द्यु—पु० [सं०] दिन। आकाश। स्वर्ग। अग्नि। सूर्यलोक। ⊙मणि = पु० सूर्य। ⊙लोक = पु० स्वर्गलोक।

द्युति—स्त्री० [स०] दीप्ति, काति, चमक, आभा। शोभा, छवि। लावण्य। रश्मि, किरण। ⊙मंत = वि० दे० 'द्युतिमान'। ⊙मा = स्त्री० प्रकाश, तेज। ⊙मान् = वि० जिसमे चमक या आभा हो।

द्यूत—पु० [स०] वह खेल जिसमे दाँव बदकर हार जीत की जाय, जुआ।

द्योढ़ी(पु)—स्त्री० ड्योढ़ी।

द्योतक—वि० [स०] प्रकाश करनेवाला। बतलानेवाला।

द्योतन—पु० [स०] दर्शन। प्रकाशित करने या जलाने का काम। दिखाने का काम।

द्योसमनि(पु)—पु० सूर्य (दिवसमणि)। 'द्योस मनि कुज लग्यो गुजनि सो गजिकै' (जगद्विनोद १८९)

द्योहरा(पु)—पु० दे० 'देवहरा'।

द्यौस(पु)—पु० दिन।

द्रम्म—पु० [सं०] १६पण मूल्य की एक मुद्रा।

द्रव—पु० [स०] द्रवण। बहाव। पलायन, दौड। वेग। आसव। रस। द्रवत्व। वि० पानी की तरह पतला, तरल। गीला। पिघला हुआ। ⊙ण = पु० [सं०] क्षरण, बहाव। पिघलने या पसीजने की क्रिया या भाव। चित्त के कोमल हाने की वृत्ति। गमन, गति। ⊙ना (पु) = अक० प्रवाहित होना, बहना। पिघलाना। पसीजना, दयार्द्र होना। ⊙शील = वि० जो पिघलता या पसीजता हो। **द्रवित**—वि० दे० 'द्रवीभूत'। **द्रवीभूत**—वि० जो पानी की तरह पतला या द्रव हो गया हो। पिघला हुआ। दयार्द्र, पसीजा हुआ।

द्रविड़—पु० दक्षिण भारत का एक भाग। इस भाग का रहनेवाला। दक्षिणी ब्राह्मणो का एक वर्ग। दक्षिण भारत मे बसी हुई एक प्राचीन जाति।

द्रविण—पु० [स०] धन। द्रव्य, संपत्ति। रुपया पैसा।

द्रव्य—पु० [स०] पदार्थ, चीज। वह मूल पदार्थ जिसमे केवल गुण और क्रिया अथवा केवल गुण हो और जो समवायि कारण हो (वैशेषिक मे द्रव्य नौ कहे गये हैं—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन। साख्य के अनुसार द्रव्यो की कुल सख्या ३१ हैं। मूल तत्व जिसमे कोई और द्रव्य न मिला हो (आधुनिक भौतिक विज्ञान में इनकी सख्या ९२मानी गयी है)। सामग्री, सामान। धन दौलत। ⊙वान् = वि० धनवान्, धनी।

द्रष्टव्य—वि० [स०] देखने योग्य । जो दिखाया जानेवाला हो ।

द्रष्टा—वि० [स०] देखनेवाला । साक्षात् करनेवाला । दर्शक, प्रकाशक । पु० पुरुष (साख्य)। आत्मा ।

द्राक्षा—स्त्री० [स०] दाख, अगूर ।

द्राघिमा—स्त्री० [स०] दीर्घता, लबाई । अक्षाश सूचित करनेवाली वे कल्पित रेखाएँ जो भूमध्यरेखा के समानातर पूर्व पश्चिम को मानी गई हैं ।

द्राव—पु०[स०] क्षरण । बहने या पसीजने की क्रिया । गमन । ⊙क = वि० ठोस चीज को तरल करनेवाला । गलानेवाला। पिघलानेवाला । बहानेवाला । करुणा उत्पन्न करनेवाला । ⊙ण = पुं० गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव ।

द्राविड़—वि० [सं०] द्रविड प्रदेशवासी, द्रविडो से सबद्ध। द्राविडी—वि० द्रविड सबधी द्रविडो का। मु०~प्राणायाम=कोई सीधी बात घुमाव फिराव के साथ करना।

द्रुत—वि० [सं०] शीघ्रगामी । भागा हुआ । द्रवीभूत, गला हुआ । वृक्ष । ताल की एक मात्रा का आधा, बिंदु । वह लय जो मध्यम से कुछ तेज हो, दून । ⊙गामी = वि० शीघ्रगामी, तेज चलनेवाला । ⊙पद= पुं० बारह अक्षरो का एक छद जिनमे चौथा, १ वां और ११वां अक्षर गुरु और शेष लघु होते हैं । ⊙मध्या = स्त्री० एक अर्धसमवृत्त जिसके प्रथम और तृतीय पाद मे तीन भगण और गुरु होते हैं, तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण मे एक नगण, दो जगण और एक भगण होता है । ⊙विलबित = पु० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है, सुदरी । द्रुति—स्त्री० द्रव । गति । तीव्रता ।

द्रुम—पुं० [सं०] वृक्ष ।

द्रुमिला—स्त्री० [स०] एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राएँ होती है । इसके प्रत्येक चरण के अत मे गुरु होता हैं तथा १०वी और १८वी मात्रा पर यति होती है ।

द्रुह्यु—पु० [सं०] प्राचीन आर्यों का एक वश या जनसमूह । शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का ज्येष्ठ पुत्र जिसने ययाति का बुढापा लेना अस्वीकार किया था ।

द्रोण—पुं० [सं०] लकडी का एक बरतन जिसमे वैदिक काल मे सोम रखा जाता था । जल आदि रखने का लकडी का बरतन, कठवत । चार आढक या १६ सेर की एक प्राचीन माप । पत्तो का दोना । नाव, डोगा । अरणी की लकडी । लकडी का रथ। डोमकौवा, बडा कौवा । द्रोणगिरि नामक पहाड। कौरवो पाडवो को अस्त्र-शिक्षा देनेवाले अश्वत्थामा के पिता द्रोणाचार्य । ⊙काक = पुं० डोमकौवा । द्रोणी—स्त्री० डोगी । छोटा दोना । काठ का प्याला, कठवत । दो पर्वतो के बीच की भूमि, दून । दर्रा । द्रोण की स्त्री कृपी । एक परिमाण जो दो सूर्प या १२८ सेर का होता था ।

द्रोन(पु)†—पुं० दे० 'द्रोण' ।

द्रोह—पुं० [सं०] दूसरे का अहितचिंतन, वैर, द्वेष । द्रोही—वि० द्रोह करनेवाला, बुराई चाहनेवाला ।

द्वद—पुं० युग्म, जोडा । जोड, प्रतिद्वद्वी । दो आदमियो की परस्पर लडाई, द्वद्वयुद्ध, मल्लयुद्ध । झगडा, कलह, बखेडा । दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओ का जोडा, जैसे, रागद्वेष, दुख सुख इत्यादि । उलझन, झझट। कष्ट, दुख । उपद्रव, झगड़ा, ऊधम । दुवधा, सशय । स्त्री० [सं० दुदुभी] दुदुभी ।

द्वदर(पु)—वि० झगडालू ।

द्वद्व—पुं० [सं०] दो वस्तुएँ जो एक साथ हो, युग्म । स्त्री पुरुष या नर मादा का जोड़ा । गुप्त बात, रहस्य । दो आदमियो की लडाई । झगडा, कलह । एक प्रकार का का समास जिसमे मिलनेवाले सब पद प्रधान रहते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है (जैसे, रोटी-दाल पकाओ) । ⊙युद्ध = पुं० वह लडाई जो दो के बीच हो, कुश्ती ।

द्वय—वि० [स०] दो। ⊙ता = स्त्री० दो का भाव, द्वैत । अपनेपन और पराएपन का भाव, भेदभाव ।

द्वादश—वि० [सं०] जो सख्या मे दस और दो हो, बारह। बारहवाँ। पुं० बारह की संख्या या अक, १२। ⊙**बानी**(प) = वि० पुं० दे० 'बारहबानी'। **द्वादशाक्षर**—पुं० विष्णु का एक मत्र जिसमे १२ अक्षर है। (वह मत्र यह है—'ओ नमो भगवते वासुदेवाय'।)। **द्वादशाह**—पुं० १२ दिनो का समुदाय। वह श्राद्ध जो किसी के निमित्त उसके मरने से १२वें दिन हो। **द्वादशी**—स्त्री० किसी पक्ष की १२ वी तिथि।

द्वापर—पुं० [स०] चार युगो मे से तीसरा युग। पुराणो मे यह युग ८६४००० वर्ष का माना गया है।

द्वार—पुं० [स०] घर मे आने जाने के लिये दीवार मे खुला हुआ स्थान, दरवाजा। किसी घिरे हुए या रुकावट के स्थान से निकलने की जगह, मुख, मुहाना (जैसे गगाद्वार)। इद्रियो के मार्ग या छेद (जैसे, आँख, कान, नाक)। उपाय, साधन। ⊙**चार** = पुं० दे० 'द्वारपूजा'। ⊙**पटी** = दरवाजे पर टाँगने का पर्दा। ⊙**पाल** = पु० दरवाजे पर रक्षा के लिये नियुक्त व्यक्ति, दरबान। ⊙**पूजा** = स्त्री० विवाह का वह कृत्य जिसमे कन्यावाले के द्वारपर बारात के साथ वर के स्वागत के लिये पूजन आदि किया जाता है। ⊙**वती** = स्त्री० द्वारिका। ⊙**समुद्र** = पु० दक्षिण का एक पुराना नगर जहाँ कर्नाटक के राजाओं की राजधानी थी।

द्वारका—स्त्री० [सं०] काठियावाड गुजरात की एक प्राचीन नगरी। यह सात पुरियो मे से एक है। द्वारावती। ⊙**नाथ** = पु० दे० 'द्वारकाधीश'। **द्वारकाधीश**—पु० द्वारका के मालिक, श्रीकृष्ण। कृष्ण की वह मूर्ति जो द्वारका मे है।

द्वारा—अव्य [सं०] जरिए, से, साधन से। पुं० [सं० द्वार] द्वार, दरवाजा, फाटक। मार्ग, राह।

द्वारावती—स्त्री० [सं०] द्वारका।

द्वारिका—स्त्री० दे० 'द्वारका'।

द्वारी(प)—स्त्री० छोटा द्वार, दरवाजा। पु० दे० 'द्वारपाल'।

द्वि—वि० [सं०] दो। ⊙**क** = वि० जिसमे दो अवयव हो। दुहरा। ⊙**कर्मक** = वि० (क्रिया) जिसके दो कर्म हो। ⊙**कल** = पुं० छद शास्त्र मे दो मात्राओ का समूह, दो मात्राओ का अक्षर। **गुण** = वि० दुगुना, दूना। ⊙**गुणित** = वि० दो से गुणा किया हुआ। दूना, दुगना। ⊙**जन्मा** = वि० जिसका दो बार जन्म हुआ हो। पुं० द्विज। ⊙**जाति** = पुं० ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, जिनको यज्ञोपवीत धारण करके वेदाध्ययन का अधिकार है, द्विज। ब्राह्मण। अडज। पक्षी। दाँत। सर्प। ⊙**जिह्व** = जिसके दो जीभें हो। चुगलखोर। खल, दुष्ट। पुं० साँप। ⊙**त्व** = पुं० दो का भाव, दोहरा होने का भाव। ⊙**दल** = वि० जिसमे दो दल या पिड हो। जिसमे दो पटल हो। पुं० वह अन्न जिसमे दो दल हो, दाल। ⊙**धा** = क्रि वि० दो प्रकार से, दो तरह से, दो खडो या टुकड़ो मे। ⊙**पद** = वि० दो पैरोवाला। पुं० मनुष्य। ⊙**पदी** = स्त्री० वह छद या वृत्ति जिसमे दो पद हो। दो पदो का गीत। एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमे किसी दोहे आदि को कोष्ठो की तीन पक्तियो मे लिखते हैं। ⊙**पाद** = वि० दो पैरोवाला (पशु)। जिसमे दो पद या चरण हो। ⊙**बाहु** = वि० दो बाँहो या हाथोवाला मनुष्य। ⊙**भाषी** = पुं० दे० 'दुभाषिया'। ⊙**मुखी** = वि० स्त्री० दो मुँहवाली। स्त्री० वह गाय जो बच्चा दे रही हो। (ऐसी गाय के दान का बड़ा माहात्म्य समझा जाता है)। ⊙**रद** = पुं० हाथी। वि० दो दाँतोवाला। ⊙**रसन** = वि० दो जबानोवाला। कभी कुछ और कभी कुछ कहनेवाला। पुं० साँप। ⊙**रेफ** = पुं० भ्रमर, भौंरा। ⊙**विध** = वि० दो प्रकार का। क्रि० वि० दो प्रकार से। ⊙**विधा** = पुं० [हिं०] दुबधा, अनिश्चय। ⊙**वेदी** = पुं० ब्राह्मणो की एक उपजाति, दूबे। ⊙**शिर** = वि० जिसके दो शिर हो। **द्विगु**—पुं० वह कर्मधारय समास जिसका पूर्वपद सख्यावाचक हो (पाणिनि

व्याकरण)। द्विरागमन—पुं० वधू का अपने पति के घर दूसरी बार आना।
द्विरुक्ति—स्त्री० दो बार कथन, पुनरुक्ति।
द्वींद्रिय—पुं० वह जतु जिसके दो ही इद्रियाँ हो।

द्विज—पुं० [सं०] वह जिसका जन्म दुबारा हुआ हो। अडज प्राणी। पक्षी। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के पुरुष जिनको यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है। ब्राह्मण। चद्रमा। ⊙पति, ⊙राज = पुं० ब्राह्मण। चद्रमा। कपूर। गरुड़।
द्विजेंद्र, द्विजेश—पुं० दे० 'द्विजपति।'

द्वितिया(पु)—वि० दूसरा।

द्वितीय—वि० [सं०]दूसरा। द्वितीया—स्त्री० प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि, दूज।

द्विष, द्विषत्—पुं० [सं०] शत्रु, वैरी।

द्वीप—पुं० [सं०] स्थल का वह भाग जो चारो ओर जल से घिरा हो, टापू। पुराणानुसार पृथ्वी के सात (कही कही नौ) बडे विभाग जिनके नाम ये—जबुद्वीप, प्लक्ष या गोमेद, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप।

द्वेष—पुं० [सं०] चित्त को अप्रिय लगने की वृत्ति, चिढ। वैर। द्वेषी—वि० द्वेष रखनेवाला। द्वेष्टा—वि० दे० 'द्वेषी'।

द्वै(पु)†—वि० दो, दोनो।

द्वैज(पु)—स्त्री० द्वितीया, दूज।

द्वैत—पुं० [सं०] दो का भाव, युग्म। अपने और पराए का भाव, भेद, अतर। दुबधा, भ्रम। अज्ञान। ⊙वाद = पुं० वह दार्शनिक सिद्धात जिसमे जीव (आत्मा) और ईश्वर (ब्रह्म या परमात्मा) एक न माने जाकर अलग या भिन्न माने जाते हैं। वह दार्शनिक सिद्धात जिसमे भूत और चित् शक्ति अथवा शरीर और आत्मा दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं। ⊙वादी = द्वैतवाद को माननेवाला।

द्वैध—पुं० [सं०] विरोध। राजनीति के षड्गुणो मे से एक जिसमे मुख्य उद्देश्य गुप्त रखकर दूसरा उद्देश्य प्रकट किया जाता है। आधुनिक राजनीति मे वह शासनप्रणाली जिसमे कुछ विभाग सरकार के हाथमे और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियो के हाथ मे हो।

द्वैपायन—पुं० [सं०] गगा के एक टापू मे पैदा हुए व्यास जी जिन्होंने महाभारत और पुराणो की रचना की। एक ह्रद या ताल जिसमे कुरुक्षेत्र के युद्ध मे दुर्योधन भागकर छिपा था।

द्वैमातुर—वि० [सं०] जिसकी दो माँ हों। पु० गणेश। जरासध।

द्वौ(पु)—वि० दोनो। दे० 'दव'।

ध

ध—हिंदी वर्णमाला का १९ वाँ व्यजन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान दतमूल है।

धंध(पु)—पुं० दे० 'धधा'।

धंधक—पुं० धधा। काम धधे का आडबर, जजाल। मायाजाल, ढोग। ⊙धोरी = पुं० हर घडी दुनिया के धध मे जुटा रहनेवाला मायाग्रस्त मनुष्य।

धंधरक—पुं० दे० 'धधक'।

धंधला—पुं० कपट का आडंबर, ढोग। हीला, बहाना।

धंधलाना—अक० छलछद करना, ढंग रचना।

धंधा—पुं० धन या जीविका के लिये उद्योग, कामकाज। उद्यम, व्यवसाय।

धंधार(पु)—स्त्री० ज्वाला, लपट।

धंधारी—स्त्री० गोरखधधा, भूलभुलैया।

धँधेर—पु० राजपूतो की एक शखा। 'चौहान चौदह आकरे, धधेर धीरज धाकरे' (हिम्मत० २७)।

धँधोर—पु० होलिका, होली। आग की लपट।

धँवना—सक० दे० धौंकना।

धँसन—स्त्री० कीचड, दलदल आदि मे धँसने की क्रिया या ढग। ध्यान मे डूबने की क्रिया या अवस्था। घुसने या पैठने का ढग। गति, चाल।

धँसना—अक० किसी कडी वस्तु का किसी नरम वस्तु के भीतर दाब पाकर घुसना। गडना। अपने लिये जगह करते हुए घुसना। (पु)†नीचे की ओर धीरे धीरे जाना, नीचे

खसकना। तल या सतह का दबाव आदि के कारण अधिक नीचे हो जाना। किसी खडी वस्तु का जमीन मे और नीचे तक चला जाना, बैठ जाना, गडना। विचार, ध्यान या चिंता मे डूबना। (पु)नष्ट होना। **मु०—जी या मन** मे ~ = दिल मे असर करना, जँचना।

धँसाना—सक० [अक० धँसना] नरम चीज मे घुसाना, गडाना, चुभाना। प्रवेश कराना। तल या सतह को दबाकर नीचे की ओर करना। **धँसान**—स्त्री० धँसने की क्रिया या ढग। दलदल। **धँसाव**—पु० दे० 'धँसान।'

धक—स्त्री० हृदय के जल्दी जल्दी चलने का भाव या शब्द। उमग, उद्वेग। क्रि० वि० अचानक, एक बारगी। **मु०—जी~ करना** = भय या उद्वेग से जी धडकना। **जी~हो जाना** = डर से जी दहल जाना। चौंक उठना। ⊙**धकाना** = अक० भय उद्वेग आदि के कारण हृदय का जोर जोर से या जल्दी जल्दी चलना। †(आग का) दहकना, भभकना। तेजी या जल्दी करना। ⊙**धकी** = स्त्री० जी धक धक करने की क्रिया या भाव, जी की धड़कन। गले और छाती के बीच का गड्ढा जिसमे स्पदन मालूम होता है। ⊙**पक** = स्त्री० धक-धकी। क्रि० वि० दहलते हुए, डरते हुए। ⊙**पकाना** = अक० जी मे दहलना, डरना।

धकपेल(पु)—स्त्री० धक्कमधक्का, रेलपेल। आतिशय्य, आधिक्य।

धका(पु)†—पु० दे० 'धक्का'।

धकाना†—सक० दहकाना, सुलगाना।

धकापेल—स्त्री० दे० 'धकपेल'।

धकारा†—आशका, खटका।

धकियाना—सक० धक्का देना, ढकेलना।

धकेलना—सक० दे० 'ढकेलना'।

धकैत—वि० धक्कमधक्का करनेवला।

धक्कमधक्का—पु० बार बार, बहुत अधिक या बहुत से आदमियो का परस्पर धक्का देने का काम, धकापेल। ऐसी भीड़ जिसमे लोगो के शरीर एक दूसरे से रगड खाते हो या टकराते हों।

धक्का—पु० एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ ऐसा वेगयुक्त स्पर्श जिससे एक या दोनो पर एकबारगी भारी दबाव पड जाय, टक्कर। ढकेलने की क्रिया, झोका, चपेट। ऐसी भारी भीड जिसमे लोगो के शरीर एक दूसरे से रगड खाते हो। शोक या दु ख का आघात। विपत्ति, आफत। हानि, टोटा। ⊙**मुक्की** = स्त्री० ऐसी लडाई जिसमे एक दूसरे को ढकेले और घूसो से मारे, मुठभेड, मार-पीट।

धगडा—पु० यार, उपपति।

धगधगाना(पु)†—अक० धकधकाना, धड-कना (छाती या जी का)।

धगरी—वि० स्त्री० पति की दुलारी, कुलटा, व्यभिचारिणी।

धगा(पु)†—पु० दे० 'धागा'।

धच्छ(पु)—सक० मारना। '. . बिपच्छिन के धच्छिवो को, मच्छ कच्छ आदि कला कच्छिवो करता हैं' (प्रबोध० २५)।

धज—स्त्री० सजाव, बनाव। मोहित करने-वाली चाल, सुदर ढग। बैठने उठने का ढब, ठवन। ठसक, नखरा। रूपरग, शोभा। **सज**⊙ = तैयारी, साज सामान।

धजका—पु० धक्का, झटका।

धजा—स्त्री० दे० 'ध्वज'।

धजीला—वि० सजीला, सुदर।

धज्जी—स्त्री० कपडे, कागज आदि की कटी हुई लबी पतली पट्टी। लोहे की चद्दर या लकडी के पतले तख्ते की अलग की हुई लबी पट्टी। **मु०—धज्जियाँ उड़ाना** = टुकडे टुकड़े करना, विदीर्ण करना। (किसी की) खूब दुर्गति करना।

धड़ंग—वि० नगा (केवल यौ० प्रयोग, जैसे, नंगधडग)।

धड़—पु० शरीर का स्थूल मध्य भाग जिसके अतर्गत छाती, पीठ और पेट होते है। पेड का वह सबसे मोटा कडा भाग जिससे निकलकर डलियाँ इधर उधर फली रहती हैं, तना। स्त्री० वह शब्द जो किसी वस्तु के एकबारगी गिरने आदि से होता है।

धड़क—स्त्री० दिल के चलने की क्रिया, हृदय का स्पदन। हृदय के स्पदन का शब्द। भय, आशका आदि के कारण हृदय का अधिक स्पदन, जी धकधक करने की क्रिया। आशका, अंदेशा। सकोच। ⊙**न** = स्त्री० हृदय का स्पदन, दिल का धकधक करना ⊙**ना** = अक० हृदय का स्पदन करना या धकधक करना। किसी भारी वस्तु के गिरने का सा धडधड शब्द होना। मु०—**छाती, जी या दिल** ~ = भय या आशका मे हृदय का जोर जोर से जल्दी जल्दी चलना।

धड़का—पु० दिल की धडकन। दिल धडकने का शब्द। खटका, अंदेशा। पयाल का पुतला या डडे पर रखी हुई काली हांडी आदि जिसे चिडियो को डराने के लिये खेतो मे रखते है। हृद्रोग जिसमे हृदय की धडकन को ऊपर से देखा जा सकता है। ⊙**ना** = सक० [अक० धडकना] दिल मे धडक पैदा करना, जी धकधक करना, जी दहलाना। शब्द उत्पन्न करना।

धड़धड़ाना—अक० धडधड शब्द करना, भारी चीज के गिरने पडने की सी आवाज करना, जल्दी या तेजी करना। मु०—**धडधड़ाता हुआ** = धड़ धड शब्द और वेग के साथ। बिना किसी प्रकार के खटके, रुकावट या संकोच के, बेधडक।

धड़ल्ला—पु० धडाका। मु०—**धड़ल्ले से या धड़ल्ले के साथ** = बिना किसी रुकावट के, झोक से। बिना किसी प्रकार के भय या संकोच के, बेधडक।

धड़ा—पु० किसी बँधी हुई तौल का वह बोझ जिसे तराजू के एक पलडे पर रखकर दूसरे पलडे पर उसी के बराबर चीज तौलते हैं, बाट। चार सेर। ⊙**बंदी** = स्त्री० दे० 'धडेबदी'। **धड़ेबंदी** = स्त्री० तोल मे धडा बांधना। युद्ध के समय दोनो पक्षो का अपना सैनिक बल बराबर करना। मु०~**करना** = कोई वस्तु तौलने के पहले तराजू के दोनो पलडो को बराबर कर लेना। ~**बांधना** = दे० 'धडा करना'। दोषारोपण करना, कलक लगाना।

धड़ाका—पु० 'धड' 'धड' शब्द, धमाके या गडगडाहट का शब्द। मु०—**धड़ाके से** = जल्दी से।

धडाधड़—क्रि० वि० लगातार 'धड' 'धड' शब्द के साथ। लगातार, जल्दी जल्दी।

धडाम—पु० ऊपर से एकबारगी कूदने या गिरनेका शब्द।

धडी—स्त्री० चार या पांच सेर की एक तौल। पांच सौ रुपए की रकम। रेखा, लकीर। वह लकीर जो मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठो पर पड़ जाती है मु०~**भरना** = वजन करना।

धत्—अव्य० दुत्कारने का शब्द, तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।

धत—स्त्री० कुटेव, लत।

धतकारना—सक० दुतकारना। लानत मलामत करना, धिक्कारना।

धता—वि० चलता, हटा हुआ। मु०~**करना या~बताना** = हटाना, भगाना टालना। ~**होना** = चलता होना, चल देना।

धतूर—पु० [स०] नरसिहा नाम का बाजा, तुरही।

धतूरा—पु० दो तीन हाथ ऊंचा एक पौधा। इसके फलो के बीज बहुत विषैले होते हैं।

धत्ता—पु० एक मात्रिक छद जो दो ही पक्तियो मे लिखा जाने के कारण द्विपदी धत्ता कहा जाता है। इसके विषम चरणों मे १८ तथा सम मे १३ मात्राएँ होती है और अत मे तीन लघु होते हैं। चारो पद मिलकर ६२ मात्राएँ हो जाती हैं। **धत्तानंद**—पु० एक छद जिसकी प्रत्येक पक्ति मे ३१ मात्राएँ और अत मे तीन लघु होते हैं। यह दो ही पक्तियों में लिखा जाता है।

धधक—स्त्री० आग की लपट के ऊपर उठने की क्रिया, आग की भभक। आँच, लपट। संताप। ⊙**ना** = अक० आग का लपट के साथ जलना, भडकना। **धधकाना**—सक० [अक० धधकना] (आग को) लपट के साथ जलाना।

धधाना--अक० दे० 'धधकना' ।
धनंजय--पु०[सं०] अग्नि । चित्रक वृक्ष, चीता । अर्जुन का एक नाम । अर्जुन वृक्ष । विष्णु । शरीरस्थ पाँच वायुओं मे से एक ।
धन--पु० [सं०] रुपया पैसा, जमीन जायदाद इत्यादि, सपत्ति । (पु)स्त्री० युवती स्त्री, वधू । ‡वि० दे० 'धन्य' । किसी व्यक्ति के अधीन चौपायो का झुड, गाय भैस आदि । अत्यत प्रिय व्यक्ति, जीवनसर्वस्व । गणित मे जोडी जानेवाली सख्या या जोड का चिह्न । मूल, पूँजी ।⊙**कुबर** = पु० (धन मे कुबेर के समान) अत्यत धनी व्यक्ति । ⊙**तेरस** = स्त्री० [हिं०] कातिक कृष्ण त्रयोदशी (इस दिन रात को लक्ष्मी की पूजा होती है) । ⊙**द** = वि० धन देनेवाला, दाता । पु० कुबेर । धनपति । वायु । ⊙**धानी** = स्त्री० खजाना । ⊙**धान्य** = धन और अन्न आदि, सामग्री और सपत्ति । ⊙**धाम** = पु० रुपया पैसा और घरबार । ⊙**धारी** = पु० कुबेर । बहुत बडा अमीर । ⊙**वत** = वि० [हिं०] दे० 'धनवान्' । ⊙**वान्** = वि० धनी, दौलतमद । ⊙**हीन** = वि० निर्धन, दरिद्र । **धनाढ्य** = वि० धनवान्, अमीर ।
धनक--पु० धनुष, कमान । एक प्रकार की ओढनी ।
धना(पु)--स्त्री० युवती, वधू (गीत या कविता मे) । एक रागिनी ।
धनाश्री--स्त्री० [सं०] **धनासी**--एक रागिनी ।
धनि(पु)--स्त्री० युवती, वधू । वि० दे० 'धन्य' ।
धनिक--वि० [सं०] धनवान्, धनी । पु० धनी मनुष्य । पति ।
धनिया--पु० एक छोटा पौधा जिसके सुगधित फल मसाले के काम मे आते हैं । (पु) स्त्री० युवती स्त्री । धन्या ।
धनिष्ठा--स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रो मे से तेईसवाँ नक्षत्र जिसमे पाँच तारे हैं ।
धनी--वि० [सं०] जिसके पास धन हो । जिसके पास कोई गुण आदि हो । पु० धनवान् आदमी । वह जिसके अधिकार मे कोई हो, मालिक । पति, शौहर । स्त्री० युवती स्त्री, वधू । ⊙**धोरी** = पुं० [हिं०] धन और मर्यादावाला व्यक्ति । मालिक या रक्षक । मु०--**बात का~ धनी** = बात का सच्चा ।
धनु--पु० [सं०] दे० 'धनुष' । ⊙**ई**‡ = स्त्री० छोटा धनुष । ⊙**हाई**(पु) = [हिं०] धनुष की लडाई । ⊙**ही** = स्त्री० [हिं०] लडको के खेलने की कमान । **धन्वाकार**--वि० कमान के आकार का, गोलाई के साथ झुका हुआ ।
धनुआ--पुं० धनुष, कमान । रुई धुनने की धुनकी ।
धनुक--पुं० दे० 'धनुस्' । दे० 'इद्रधनुष' । ⊙**बाई** = स्त्री० लकवे की तरह का एक वायुरोग जिसमे शरीर का कोई अग मुड कर धन्वाकार या टेढा हो जाता है । धनुष्टकार ।
धनुर्--पुं० [सं० 'धनुस्' के लिये के० समा० मे] **धनुर्धर**--पुं० धनुष धारण करनेवाला पुरुष । **धनुर्धारी**--पु० दे० 'धनुर्धर' । **धनुर्यज्ञ**--पु० एक यज्ञ जिसमे धनुष का पूजन तथा उसके चलाने आदि की परीक्षा होती थी । **धनुर्वात**--पुं० दे० 'धनुकबाई' । **धनुर्विद्या**--स्त्री० धनुष चलाने की विद्या, तीरदाजी । **धनुर्वेद**--पु० यजुर्वेद का उपवेद जिसमे धनुष और बाणो के विभिन्न प्रयोगो का विवरण है । यह उपवेद माना जाता है ।
धनुष्--पु० [सं०] दे० 'धनुस्' ।
धनुष--पुं० दे० 'धनुस्' ।
धनुस्--पु० [सं०] फलदार तीर फेंकने का वह अस्त्र जो बाँस या लोहे के लचीले डडे को झुकाकर उसके दोनो छोरो के बीच डोरी बाँधकर बनाया जाता है, कमान । ज्योतिष मे धनु राशि । एक लग्न । चार हाथ की एक माप ।
धनेस--पुं० बगुले के आकार की एक चिडिया ।
धन्ना(पु)--वि० दे० 'धन्य' ।

धन्नासेठ—पुं० बहुत धनी आदमी, प्रसिद्ध धनाढ्य ।

धन्नी—स्त्री० गायो और बैलो की एक जाति । घोड़े की एक जाति ।

धन्य—वि० [सं०] प्रशसा या बडाई के योग्य, पुण्यवान् । ⊙**वाद** = पु० किसी उपकार या अनुग्रह के बदले में कृतज्ञतासूचक शब्द, शुक्रिया । साधुवाद, शाबासी ।

धन्वा—पु० [सं०] धनुस्, कमान । जलहीन देश, मरुभूमि । **धन्वी**—वि० धनुर्धर ।

धप—स्त्री० किसी भारी और मुलायम चीज के गिरने का शब्द । पुं० थप्पड, तमाचा । ⊙**ना** = अक० जोरसे चलना, दौडना। झपटना, लपकना । मारना, पीटना। **धप्पा**—पु० तमाचा । घाटा, नुकसान ।

धपि—अव्य० शीघ्रता से।

धब्बा—पु० किसी सतह के ऊपर पड़ा हुआ ऐसा चिह्न जो देखने मे बुरा लगे, दाग। कलक । मु०—**नाम मे~लगना** = कीर्ति को मिटानेवाला काम करना ।

धम—स्त्री० भारी चीज के गिरने का शब्द धमाका ।

धमक—स्त्री० भारी वस्तु के गिरने का शब्द, आघात का शब्द । पैर रखने की आवाज या आहट । आघात आदि से उत्पन्न कप या विचलन । आघात, चोट । ⊙**ना** = अक० 'धम' शब्द के साथ गिरना, धमाका करना। दर्द करना (सिर) । मु०—**आ धमकना** = अचानक आ पहुँचना । **धमकी**—स्त्री० दड देने या अनिष्ट करने का वह विचार जो भय दिखाने के लिये प्रकट किया जाय। घुडकी, डाँट डपट । मु०~**मे आना** = किसी के डराने से कोई काम कर बैठना।

धमकाना—सक० डराना । घुडकना ।

धमगजर—पु० उपद्रव ।

धमधमाना—अक० 'धमधम' शब्द करना ।

धमधूसर(पु)—वि० मोटा और भद्दा। मोटे शरीर और मोटी बुद्धिवाला ।

धमनी—स्त्री० [सं०] शरीर के भीतर रक्त-सचार की छोटी या वडी नली, नस, नाडी ।

धमाकना(पु)—अक० दे० 'धमकाना' ।

धमाका—पु० भारी वस्तु के गिरने का शब्द । बदूक के छूटने का शब्द । आघात, धक्का । पथरकला बदूक । हाथी पर लादने की तोप ।

धमाचौकडी—स्त्री० उछल-कूद, ऊधम । धीगाधीगी, मारपीट ।

धमाधम—क्रि० वि० लगातार कई बार 'धम' 'धम' शब्द के साथ । शब्दो के साथ लगातार कई प्रहार । स्त्री० कई बार गिरने से उत्पन्न लगातार धम धम शब्द । मारपीट ।

धमार—पुं० एक प्रकार का गीत । स्त्री० उछलकूद, धमाचौकडी । नटो की उछल-कूद, कलाबाजी । विशेष प्रकार के साधुओ की दहकती आग पर कूदने की क्रिया । **धमारिया**—पु० धमार गानेवाला । **धमारी**—स्त्री० उपद्रव, उत्पात । होली की क्रीडा । वि० उपद्रवी।

धरंता(पु)†—वि० पकडनेवाला ।

धर—वि० [सं०] धारण करनेवाला, ऊपर लेनेवाला । ग्रहण करनेवाला । पुं० [सं०] पर्वत, पहाड। कच्छप, जो पृथ्वी को ऊपर उठाए है। विष्णु। श्रीकृष्ण। पृथ्वी। शरीर। स्त्री० [हिं०] धरने या पकडने की क्रिया। ⊙**पकड़** = स्त्री० [हिं०] भागते हुए आदमियोको पकडने का व्यापार, गिरफ्तारी।

धरक†(पु)—स्त्री० दे० 'धडक' । ⊙**ना** = अक० दे० 'धड़कना'

धरण—पु० दे० 'धारणा' ।

धरणि—स्त्री० [सं०] पृथ्वी । ⊙**धर** = पुं० पृथ्वी को धारण करनेवाला। कच्छप। पर्वत । विष्णु । शिव । शेषनाग । **धरणी**—स्त्री० पृथ्वी, आधार। ⊙**सुता** = स्त्री० सीता ।

धरता—पु० देनदार, ऋणी । कोई कार्य आदि अपने ऊपर लेनेवाला, धारण करनेवाला। करता ⊙**धरता** = सब कुछ करनेवाला ।

धरती—स्त्री० पृथ्वी । ससार ।

धरधर(पु)—पु० दे० 'धराधर' स्त्री० दे० 'धडधड' ।

धरधरा(पु)†—पु० धडकन ।

धरधराना(पु)†—अक० दे० 'धडधडाना' ।

धरना—स्त्री० धरती, जमीन। पु० दे०

'धरना'। स्त्री० धरने की क्रिया, भाव या ढग। हठ, अड, टेक। वह लबा लट्ठा जो दीवारो या लट्ठो पर इसलिये आडा रखा जाता है जिसमे उसके ऊपर पाटन (छत आदि) या कोई बोझ ठहर सके, कडी। वह नस जो गर्भाशय को दृढता से जकडे रहती है। गर्भाशय। टेक, हठ। ⊙हार(पु) = वि० धारण करनेवाला।

धरना—पुं० कोई काम करने के लिये अडकर बैठना और जब तक काम न हो वहाँ से न हटना (जैसे किसी के दरवाजे पर धरना देना)। सक० रखना, ठहराना। निश्चित करना (जैसे नाम धरना)। पास या रक्षा मे रखना। धारण करना, पहनना। आरोपित करना, मढना। अगीकार करना। पकड़ना, थामना। आश्रय ग्रहण करना। किसी फैलनेवाली वस्तु का किसी दूसरी वस्तु मे लगना या छू जाना। रखेली की तरह रखना। गिरवी रखना। मु०—**धर पकड़कर** = जबरदस्ती। **धरा रह जाना** = काम न आना। **नाम धरना** = बदनाम करना। **नाम धराना** = बदनाम होना या बदनाम कराना।

धरनी—स्त्री० हठ, टेक। दे० 'धरणी'। ⊙**धनि** = पुं० नृपति, राजा। (पु)**धर** = पु० पहाड़, पर्वत।

धरम(पु)‡—पु० दे० 'धर्म'। ⊙**ध्वज** = पु० दे० 'धर्मध्वज'।

धरषना(पु)—अक० दब जाना। डर जाना, सहम जाना। सक० दबाना। अपमानित करना।

धरसनी(पु)—स्त्री० दे० 'धर्षणी'।

धरहर, धरहरि†—स्त्री० गिरफ्तारी, धर पकड। लडनेवालो को धर पकडकर लडाई बद करने का कार्य, बीच बचाव। बचाव, रक्षा। धीरज।

धरहरना(पु)—अक० 'धड धड' शब्द करना, धडधडाना।

धरहरा—पु० खभे की तरह बहुत ऊँचा मकान या भाग जिसपर चढ़ने के लिये भीतर ही भीतर सीढ़ियाँ बनी हो, धौरहर, मीनार।

धरहरिया†—पु० बीचबचाव करनेवाला,

धरा—स्त्री० [सं०] पृथ्वी, जमीन। ससार। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण और गुरु होता है। ⊙**तल** = पु० धरती की सतह। केवल लबाई चौड़ाई का गुणनफल जिसमे मोटाई, गहराई या ऊँचाई का कुछ विचार न किया जाय। धरती। लबाई और चौडाई का गुणनफल, क्षेत्रफल। ⊙**धर** = पु० शेषनाग। पर्वत। विष्णु। ⊙**धरन**(पु) = पु० [हिं०] दे० 'धराधर'। ⊙**पुत्र** = पु० भौम ग्रह, मगल ग्रह। ⊙**शायी** = वि० जमीन पर गिरा, पडा या लेटा हुआ। भूमि पर गिकर मरा हुआ। परास्त। ⊙**सुर**† = पु० ब्राह्मण। **धराधीश**—पु० राजा।

धराऊ—वि० जो साधारण से अधिक अच्छा होने के कारण कभी कभी केवल विशेष अवसरो पर निकाला जाय, बहुमूल्य। बहुत दिनो का रखा हुआ, पुराना।

धराक(पु)†—पु० दे० 'धड़ाक'।

धराधार—पु० [सं०] शेषनाग।

धराना—सक० [अक० धरना] पकडाना, थमाना। ठहराना, निश्चित करना।

धराहर—पु० दे० 'धराधर'।

धरित्री—स्त्री० [सं०] धरती, पृथ्वी।

धरी—स्त्री० चार सेर की एक तौल। रखेली स्त्री। कान मे पहनने का एक गहना।

धरेजा—पु० किसी स्त्री को पत्नी की तरह रखना। स्त्री० दे० 'धरेल'।

धरेल, धरेली—स्त्री० उपपत्नी, रखेली।

धरेश—पुं० [सं०] राजा।

धरैया†—पु० धरनेवाला, पकडनेवाला।

धरोहर—स्त्री० माँगने पर रखनेवाले को लौटाने के लिये रखी हुई वस्तु या द्रव्य, अमानत।

धर्ता—पु० [सं०] धारण करनेवाला। कोई काम ऊपर लेनेवाला। **कर्ता धर्ता** = जिसे सब कुछ करने धरने का अधिकार हो।

धर्म—पु० [सं०] किसी वस्तु या व्यक्ति की वह नित्यवृत्ति, गुण या लक्षण जो उससे कभी अलग न हो, प्रकृति। अलकार

शास्त्र मे वह गुण या वृत्ति जो उपमेय और उपमान मे समान रूप से हो। वह कृत्य, आचरण, व्यवहार या विधान जिसका फल शुभ (स्वर्ग या उत्तम लोक की प्राप्ति आदि) बताया गया हो, कर्तव्य, फर्ज। कल्याणकारी कर्म, सदाचार, पुण्य। उपासनाभेद, पथ, मजहब। नीति, न्यायव्यवस्था, कानून, जैसे हिंदू धर्मशास्त्र। विवेक, ईमान। ⊙**कर्म** = पु० वह कर्म या विधान जिसका करना किसी धर्मग्रथ मे आवश्यक ठहराया गया हो। ⊙**क्षेत्र** = पु० पुण्य कमाने की जगह। कुरुक्षेत्र। भारतवर्ष, जो धर्म के सचय के लिये कर्मभूमि माना गया है। ⊙**ग्रथ** = पु० वह ग्रथ या पुस्तक जिसमे किसी जनसमाज के आचार, व्यवहार और उपासना आदि के सबध मे शिक्षा हो। ⊙**घडी** = स्त्री० [हिं०] वह घडी जो ऐसे स्थान पर लगी हो जिसे सब लोग देख सकें। ⊙**चक्र** = पु० धर्म का समूह। बुद्ध की धर्मशिक्षा जिसका आरभ काशी से हुआ था। ⊙**चर्या** = स्त्री० धर्म का आचरण। ⊙**चारी** = वि० धर्म का आचरण करनेवाला। ⊙**च्युत** = वि० अपने धर्म से गिरा या हटा हुआ। ⊙**ज्ञ** = वि० धर्म जाननेवाला। ⊙**तः** = अव्य० धर्म का ध्यान रखते हुए, धर्म के विचार से। ⊙**धक्का** = पु० [हिं०] वह हानि या कठिनाई जो धर्म या परोपकार आदि के लिये सहनी पडे। व्यर्थ का कष्ट। ⊙**ध्वज** = पु० धर्म का आडबर खडा करके स्वार्थ साधनेवाला मनुष्य, पाखडी। मिथिला के एक राजा जो कुशध्वज के बेटे और अमृतध्वज तथा कृतध्वज के पिता थे। ये सन्यास धर्म और मोक्ष धर्म के जानेवाले परम ब्रह्मज्ञानी थे। ⊙**ध्वजी** = वि० पाखडी। ⊙**निष्ठ** = वि० धर्म मे जिसकी आस्था हो, धर्मपरायण। ⊙**निष्ठा** = स्त्री० धर्म मे आस्था। ⊙**पत्नी** = स्त्री० वह स्त्री जिसके साथ धर्मशास्त्र की रीति से विवाह हुआ हो, विवाहिता स्त्री। ⊙**पुस्तक** = स्त्री० किसी धर्म का मुख्य ग्रथ। ⊙**बुद्धि** = स्त्री० धर्म अधर्म का विवेक, भले बुरे का विचार। ⊙**भीरु** = वि० जिसे धर्म का भय हो, पाप से डरनेवाला। ⊙**युग** = पु० सतयुग। ⊙**युद्ध** = पु० वह युद्ध जिसमे कोई भी नैतिक नियम तोडा न जाय। ईसाइयो, मुसलमानो आदि द्वारा विधर्मियो से किया जानेवाला युद्ध। ⊙**राइ**(पु) = पु० [हिं०] दे० 'धर्मराज'। ⊙**राज** = पु० धर्म का पालन करनेवाला राजा। युधिष्ठिर। यमराज। न्यायाधीश, न्यायकर्ता। ⊙**राव**(पु) = पु० [हिं०] दे० 'धर्मराज'। ⊙**लुप्ता उपमा** = स्त्री० वह उपमा जिसमे धर्म अर्थात् उपमान और उपमेय मे समान रूप से पाई जानेवाली विशेषता का कथन न हो। ⊙**वीर** = पु० वह जो धर्म करने मे साहसी हो। ⊙**शाला** = स्त्री० वह मकान जो पथिकों या यात्रियो के टिकने के लिये धर्मार्थ बना हो। अन्नसत्र। ⊙**शास्त्र** = पु० धार्मिक विषयो पर लिखा हुआ ग्रथ। ⊙**शास्त्री** = पु० धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था देनेवाला। धर्मशास्त्र जाननेवाला पडित। ⊙**शील** = वि० धर्म के अनुसार आचरण करनेवाला, धार्मिक। ⊙**सभा** = स्त्री० न्यायालय, अदालत। ⊙**सारी**(पु)† = स्त्री० [हिं०] दे० 'धर्मशाला'। **धर्मांध**—वि० जो धर्म के नाम पर अधा हो रहा हो, धर्म के नाम पर बुरे से बुरे काम करनेवाला। **धर्मा**—वि० [सं०] धर्मवाला, स्वभाववाला। (अब प्राय यौगिक मे, जैसे—समानधर्मा)। **धर्माचार्य**—पु० धर्म की शिक्षा देनेवाला गुरु। **धर्मात्मा**—वि० धर्मशील, धार्मिक। **धर्माधिकरण**—पु० न्यायालय। **धर्माधिकारी**—पु० धर्म अधर्म की व्यवस्था करनेवाला, न्यायाधीश। वह जो किसी राजा की ओर से धर्मार्थ द्रव्य बाँटने आदि का प्रबध करता है, दानाध्यक्ष। **धर्मार्थ**—क्रि० वि० केवल धर्म या पुण्य के उद्देश्य से, परोपकार के लिये। **धर्मावतार**—स्त्री० साक्षात् धर्मस्वरूप, अत्यंत धर्मात्मा। न्यायाधीश। युधिष्ठिर। **धर्मा-**

सन—पु० वह आसन, कुर्सी या चौकी जिसपर न्यायाधीश बैठता है। धर्मिणी—स्त्री० पत्नी। वि० धर्म करनेवाली। धर्मिष्ठ—वि० धार्मिक, पुण्यात्मा। धर्मी—वि० जिसमे धर्म या गुण हो। धार्मिक, पुण्यात्मा। मत या धर्म को माननेवाला। पु० धर्म का आधार, गुण या धर्म का आश्रय। धर्मात्मा मनुष्य। धर्मोपदेशक—पु० धर्म का उपदेश देनेवाला। मु०~कमाना = धर्म करके उसका फल संचित करना। ~बिगाड़ना = धर्म के विरुद्ध आचरण करना, धर्म भ्रष्ट करना। स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। ~लगती कहना = ठीक ठीक कहना, सत्य सत्य या उचित बात कहना। ~से कहना = सत्य सत्य कहना।

धर्मंरण—क्रि० वि० [सं०] धामिन साँप। एक प्रकार का वृक्ष। एक प्रकार का पक्षी।

धर्ष—पु० [सं०] दे० 'धर्षण'। ⊙क = पु० वह जो धर्षण करे। ⊙ण = पु० अपमान। दबोचना, आक्रमण। दबाने या दमन करने का कार्य। असहनशीलता। ⊙णा = स्त्री० [सं०] अवज्ञा, अपमान। दबाने या हराने का कार्य, सतीत्व हरण। धर्षी—वि० धर्षण करनेवाला। आक्रमण करनेवाला, दबोचनेवाला। हरानेवाला। नीचा दिखाने या अपमान करनेवाला।

धव—पु० [सं०] पति, स्वामी। पुरुष। एक जंगली पेड़ जिसके कई अंगों का ओषधि के रूप मे व्यवहार होता है।

धवनी—स्त्री० दे० 'धौंकनी'। ⓟ†वि० सफेद, उजला।

धवरा†—वि० उजला, सफेद। धवरी—वि० स्त्री० सफेद। स्त्री० सफेद रंग की गाय।

धवल—पुं० छप्पय छंद का ४५वाँ भेद। वि० [सं०] श्वेत, उजला, सफेद। निर्मल, झकाझक। सुंदर। ⊙गिरि = पु० दे० 'धवलागिरि'। ⊙ना = सक० [हिं०] चमकाना, प्रकाशित करना।

धवला—वि० स्त्री० सफेद, उजली। स्त्री० गाय। धवलाई ⓟ†—सफेदी, उजलापन। धवलागिरि—पु० हिमालय पहाड़ की एक प्रख्यात चोटी। धवलित—वि० सफेद। उज्ज्वल। धवलिमा—स्त्री० सफेदी। उज्ज्वलता। धवली—स्त्री० सफेद गाय।

धवाना—सक० [धाना का प्रे०] दौड़ाना।

धस—पु० जल आदि मे प्रवेश, डुबकी। ⊙ना ⓟ = अक० ध्वस्त होना, नष्ट होना। अक० दे० 'धँसना'।

धसक—स्त्री० ठन ठन शब्द जो सूखी खाँसी मे गले से निकलता है। सूखी खाँसी। ईर्ष्या। धसकने की क्रिया या भाव। ⊙ना = अक० नीचे को धँसना या दब जाना। ईर्ष्या करना। डरना।

धसनि—स्त्री० पुं० 'धँसनि'।

धसमसाना ⓟ—अक० दे० 'धँसना'।

धसान—स्त्री० दे० 'धँसान'। पूरबी मालवा और बुंदेलखंड की एक नदी।

धांगड़—पु० एक अनार्य जंगली जाति। एक जाति जो कुएँ और तालाब खोदने का काम करती है।

धांधना—सक० भेड़ना। बहुत अधिक खा लेना।

धांधल—स्त्री० ऊधम, उपद्रव। फरेब, धोखा। बहुत अधिक जल्दी। ⊙पन = पु० पाजीपन, शरारत। धोखेबाजी। धांधली—वि० उपद्रवी, नटखट। धोखेबाज। स्त्री० स्वेच्छाचारिता, मनमानी। बहुत अधिक जल्दी, धांधल।

धांस—स्त्री० सूखे तम्बाकू या मिर्च आदि की तेज गंध।

धांसना—अक० पशुओं का खाँसना।

धा—वि० [सं०] धारण करनेवाला। प्रत्य० तरह, भाँति (जैसे, नवधा भक्ति)। पु० संगीत मे 'धैवत' शब्द या स्वर का संकेत, ध। स्त्री० 'धाय'।

धाई ⓟ—स्त्री० दे० 'दाई'। दे० 'धव'।

धाऊ—पु० नाच का एक भेद।

धाउ†—पु० वह आदमी जो आवश्यक कामों के लिये दौड़ाया जाय, हरकारा।

धाक—स्त्री० रोब, आतंक। प्रसिद्धि, शोहरत। मु०~बँधना या होना = रोब या

दवदबा होना। ~ बांधना = रोब जमाना। ⊙ना = अक० धाक जमाना, रोब जमाना।

धागा†—पु० बटा हुआ सूत, तागा।

धाड़†—स्त्री० दे० 'डाढ'। दे० 'दहाड़'। दे० 'ढाड'। डाकुओं का आक्रमण। जत्था, गरोह।

धात—स्त्री० दे० 'धातु'।

धातकी—स्त्री [सं०] धव का फूल।

धाता—पु० [सं०] ब्रह्मा। विष्णु। शिव, महादेव। ४६ वायुओं मे से एक। शेषनाग। १२ सूर्यो मे से एक। ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम। विधाता, विधि। आत्मा। सप्तर्षि। उपपति। टगण के आठवें भेद की सज्ञा। वि० पालनेवाला। धारण करनेवाला। रक्षा करनेवाला।

धातु—पु० स्त्री० [सं०] भूत, तत्व। पु० शब्द का मूल जिससे क्रियाएं बनती हैं (जैसे, सस्कृत मे भू, कृ आदि)। स्त्री० वह खनिज मूल द्रव्य जो अपारदर्शक हो, जिसमे एक विशेष प्रकार की चमक और गुरुत्व हो, जिसमे से होकर ताप और विद्युत् का सचार हो सके तथा जो पीटने अथवा तार के रूप मे खीचने से खडित न हो। सोना, लोहा, सीसा आदि। शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ। वैद्यक मे शरीरस्थ सात अस्थियाँ—रस, रक्त, मास, मेद, धातुएँ, मज्जा और शुक्र। बुद्ध या किसी महात्मा की अस्थि आदि जिसे बौद्ध लोग डिब्बे मे बद करके स्थापित करते थे। शुक्र, वीर्य। ⊙पुष्ट = वि० (ओषधि) जिससे वीर्य गाढ़ा होकर बढे। ⊙मर्म = पु० कच्ची धातु को साफ करना, जो ६४ कलाओ मे है। ⊙राग = पु० गेरू। ⊙वर्धक = वि० वीर्य को बढानेवाला। ⊙वाद = पु० चौसठ कलाओ मे से एक, जिसमे कच्ची धातु को साफ करते तथा एक मे मिली हुई अनेक धातुओ को अलग अलग करते हैं। रसायन बनाने का काम। तांबे से सोना बनाना, कीमियागरी। **धात्वर्थ**—पु० धातु से निकालनेवाला (किसी शब्द का) अर्थ, मूल और पहला अर्थ।

धात्र—पु० [सं०] पात्र, बरतन। ⓟवि० [हि०] पालने या रक्षा करनेवाला। **धात्री**—स्त्री० माता। माँ। धाय, दाई। गायत्री स्वरूपिणी भगवती। गगा। आंवला। छोटा हृद। भूमि, पृथ्वी। गाय। आर्या छद का एक भेद जिसमें १८ गुरु और १९ लघु मात्राएँ होती हैं।

धाधि—स्त्री० ज्वाला।

धान—पु० तृण जाति का पौधा जिसके बीजो की गिनती अच्छे अन्नों में है (उनका छिलका निकालने से चावल बनता है) शालि। ⓟ दे० 'धान्य'।

धानक—पु० धनुष चलानेवाला, तीरंदाज। रुई धुननेवाला, धुनिया। पूरब की एक पहाड़ी जाति। **धानकी**—पु० धनुर्धर।

धानपान—वि० दुबला पतला, नाजुक।

धानमाली—पु० [सं०] किसी दूसरे के चलाए हुए अस्त्र को रोकने की एक क्रिया।

धानाⓟ†—अक० तेजी से चलना, दौड़ना। कोशिश करना।

धानी—स्त्री० धान की पत्ती के रग का सा हलका हरा रंग। वि० हलके हरे रंग का। स्त्री० [सं० धाना] भूना हुआ जौ या गेहूँ। स्त्री० [सं०] वह जो धारण करे, वह जिसमे कोई वस्तु रखी जाय। स्थान। जगह। जैसे, राजधानी। ⓟ†[हि०] दे० 'धान्य'।

धानुक—पु० दे० 'धानक'।

धान्य—पु० [सं०] छिलके समेत चावल, धान। अन्न मात्र। चार तिल का एक परिमाण या तौल। एक प्राचीन अस्त्र।

धाप—पु० दूरी की एक नाप जो प्राय. एक मील की और कही दो मील की मानी जाती है। लबा चौड़ा मैदान। खेत की नाप। स्त्री० तृप्ति, सतोष। ⊙नाⓟ = अक० तृप्त होना, अघाना। दौड़ना, भागना। सक० सतुष्ट करना, तृप्त करना।

धाबा—पु० छत के ऊपर का कमरा, अटारी। वह स्थान जहाँ पर कच्ची या पक्की रसोई (मोल) मिलती हो।

धाभाई—पु० ऐसे बालक जिनमे से एक तो धाय का पुत्र हो और दूसरे ने उस धाय का केवल दूध पीया हो, दूधभाई।

धाम—पु० [सं०] घर, मकान। देह, शरीर। बागडोर, लगाम। शोभा। प्रभाव। देवस्थान या पुण्यस्थान (जैसे, चारो धाम आदि)। जन्म। विष्णु। ज्योति। ब्रह्म। स्वर्ग। ⊙**दा**=वि० स्त्री० स्वर्ग देनेवाली, बैकुंठ देनेवाली।

धामक धूमक—स्त्री दे० 'धूमधाम'।

धामिन—स्त्री० एक प्रकार का बहुत लबा और तेज दौड़नेवाला साँप।

धायँ—स्त्री० किसी पदार्थ के जोर से गिरने या तोप, बंदूक आदि छूटने का शब्द।

धाय—स्त्री० वह स्त्री जो किसी दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन पोषण करने के लिये नियुक्त हो, धात्री, दाई। पु० धव का पेड़।

धार—पु० [सं०] जोर की वर्षा। इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल जो वैद्यक और डाक्टरी मे बहुत उपयोगी माना जाता है। ऋण, उधार। प्रात, प्रदेश। स्त्री० पानी आदि के गिरने या बहने का तार, अखड प्रवाह। पानी का सोता। किसी काटनेवाले हथियार का वह तेज सिरा या किनारा जिससे कोई चीज काटते हैं बाढ। किनारा, सिरा। सेना, फौज। किसी प्रकार का डाका, आक्रमण या हल्ला। ओर, तरफ। मु०~**चढाना**=किसी देवी, देवता या पवित्र नदी आदि पर दूध, जल आदि चढ़ाना। ~**देना**=दूध देना।~**निकालना**=दूध दुहना।~**बाँधना**=यत्र आदि के बल से किसी हथियार की धार को निकम्मा कर देना।~**मारना**=पेशाब करना।

धारक—वि० [सं०] धारण करनेवाला। रोकनेवाला। ऋण लेनेवाला।

धारण—पु० [सं०] थामना, लेना या अपने ऊपर ठहराना। पहनाना। खाना या पीना। अगीकार करना, ग्रहण करना। उधार लेना। **धारणा**—स्त्री० धारण करने की क्रिया या भाव। वह शक्ति जिससे कोई बात मन मे धारण की जाती है, बुद्धि, समझ। पक्का विचार। मर्यादा। याद, स्मृति। योग मे मन की वह स्थिति जिसमे केवल ब्रह्म का ही ध्यान रहता है।

धारणीय—वि० [सं०] धारण करने योग्य।

धारनाⓅ—सक० धारण करना, अपने ऊपर लेना। ऋण करना, उधार लेना। दे० 'ढारना'।

धारा—स्त्री० [सं०] पानी आदि का बहाव या गिराव। अखड प्रवाह, धार। पानी का झरना, सोता। (विचार या चिंतन आदि की) पद्धति या क्रम (जैसे, विचारधारा)। काटनेवाले हथियार का तेज सिरा, धार। दफा (कानून)। घोड़े की चाल। प्राचीन काल की एक नगरी जो दक्षिण देश मे थी। लकीर, रेखा। मालवा की प्राचीन राजधानी। ⊙**धर**=पु० बादल। ⊙**यंत्र**=पु० पिचकारी। फुहारा। ⊙**वाहिक**, ⊙**वाही**=वि० धारा के रूप मे बिना रोक टोक बढ़ने या चलनेवाला, बराबर कुछ समय तक क्रम से चलनेवाला (जैसे, धारावाहिक भाषण)। ⊙**सभा**=स्त्री० दे० 'व्यवस्थापिका सभा'। **धारोष्ण**—पु० [सं०] थन से निकला हुआ ताजा दूध जो प्राय कुछ गरम होता है।

धारि—Ⓟ स्त्री० दे० 'धार'। समूह, झुड। एक वर्णवृत्त। सेना।

धारिणी—स्त्री० [सं०] धरणी, पृथ्वी। वि० स्त्री० धारण करनेवाली।

धारिनिⓅ—वि० स्त्री० दे० 'धारिणी'।

धारी—वि० [सं०] जो धारण करे (जैसे—शस्त्रधारी)। पु० धारि नामक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक रगण और एक लघु होता है, जैसे—री लखों न। जात कौन। वस्त्र हारि। मौन धारि। स्त्री० लकीर। फौज। समूह, झुड।

धार्तराष्ट्र—पु० [सं०] धृतराष्ट्र के वशज।

धार्मिक—वि० [सं०] धर्मात्मा, पुण्यात्मा। धर्म सबधी।

धार्य—वि० [सं०] धारण करने के योग्य।

धावक—पु० [सं०] हरकारा।

धावन—पु० [सं०] बहुत जल्दी या दौडकर जाना। चिट्ठी या सदेशा पहुँचानेवाला, हरकारा। धोने या साफ करने का काम। वह चीज जिससे कोई चीज धोई या साफ की जाय। **धावना**(पु)†—अक० दौडना, भागना। **धावनि**(पु)†—स्त्री० जल्दी चलने की क्रिया या भाव, दौड। धावा, चढाई।

धावरी(पु)—स्त्री सफेद गाय। वि० सफेद, उज्वल।

धावा—पु० शत्रु से लडने के लिये दलवल सहित तैयार होकर जाना, हमला। जल्दी जल्दी जाना, दौड। **मु०~मारना** = कही पहुँचने के लिये जल्दी चलना।

धावित—वि० [सं०] दौडता या भागता हुआ।

धाह(पु)—स्त्री० जोर से चिल्लाकर रोना, धाड।

धाही(पु)†—स्त्री० दे० 'धाय'।

धिंग—स्त्री० धीगाधीगी, ऊधम।

धिंगा†—पु० वदमाश, शरीर, निर्लज्ज। ⊙**ना** = सक० धीगाधीगी करना। **धिगाई**—स्त्री० ऊधम, वदमाशी। वेशर्मी।

धिआ—स्त्री० दे० 'धिय'।

धिआन(पु)†—पु० दे० 'ध्यान'।

धियाना(पु)†—सक० दे० 'ध्यावना'।

धिक्—अव्य० [सं०] तिरस्कार, अनादर या घृणासूचक शब्द, लानत। निंदा, शिकायत।

धिक—अव्य० धिक्, लानत।

धिकना†—अक० गरम होना, तप्त होना।

धिकाना†—सक० [अक० धिकना] खूब गरम करना, तपाना।

धिक्कार—स्त्री० [सं०] तिरस्कार, अनादर या घृणाव्यजक शब्द, लानत। ⊙**ना** = सक० [हिं०] धिक्कार व्यक्त करना, लानत मलामत करना, फटकारना।

धिग—अव्य दे० 'धिक्'।

धिय, धिया(पु)—स्त्री० कन्या, वेटी। लडकी, वालिका।

धिरकार†—स्त्री० दे० 'धिक्कार'।

धिरवाना(पु)†—सक० धमकाना।

धिराना(पु)†—सक० डराना, धमकाना। अक० धीमा होना। धैर्य धारणकरना।

धींग—पु० हट्टाकट्टा, दृढाग मनुष्य। वि० मजवूत, जोरावर। वदमाश, कुमार्गी। **धींगड़**†—वि० दुष्ट। हट्टाकट्टा। वर्णसकर। **धींगड़ा**—वि० दे० 'धींगड'। **धींगरा**—वि० दे० 'धींगड'।

धींगरी†—स्त्री० उपद्रव या पाजीपन करनेवाली स्त्री। **धींगा**—पु० शरीर, उपद्रवी, पाजी। ⊙**धींगी**—स्त्री० जवरदस्ती। शरारत, वदमाशी। ⊙**मुश्ती**—स्त्री० दे० 'धींगाधींगी'।

धींद्रिय—स्त्री० [सं०] वह इद्रिय जिससे किसी वात का ज्ञान हो (जैसे, मन, आँख, कान), ज्ञानेंद्रिय।

धींवर—पु० दे० 'धीमर'।

धी—स्त्री० लडकी, वेटी। स्त्री० [सं०] बुद्धि। मन। कर्म। ⊙**मान्** = पु० वृहस्पति। वुद्धिमान्।

धीजना—सक० ग्रहण करना, स्वीकार करना। धीरज धरना। प्रसन्न या सतुष्ट होना। स्थिर होना।

धीम(पु)†—वि० दे० 'धीमा'।

धीमर—पु० दे० 'धीवर'।

धीमा—वि० धीरे चलनेवाला। जो अधिक प्रचड, तीव्र या उग्र न हो, हलका। कुछ नीचा और साधारण से कम (स्वर)। जिसकी तेजी कम हो गई हो।

धीय†—स्त्री० दे० 'धी'। पुत्री, लडकी। **धीया**—स्त्री० लडकी।

धीर(पु)†—पु० धैर्य। सतोष। वि० [सं०] जिसमे धैर्य हो, सव्रवाला, दृढ और शात चित्तवाला। वलवान्। विनीत। गभीर। मनोहर, सुदर। मद, धीमा। ⊙**ललित** = पु० वह नायक जो सदा खूव वना ठना और प्रसन्नचित्त रहता हो। ⊙**शांत** = पु० वह नायक जो सुशील, दयावान् गुणवान् और पुण्यवान् हो। **धीरोदात्त**—पु० वह नायक जो निरभिमान, दयालु, क्षमाशील, वलवान्, धीर, दृढ और योद्धा हो (जैसे, रामचद्र, युधिष्ठिर आदि)। वीररस प्रधान नाटक का मुख्य नायक।

धीरोद्धत—पु० वह नायक जो वहुत प्रचड और चचल हो और सदा अपने ही गुणो का वखान किया करे।

धीरक(पु)—पु० दे० 'धैर्य'।

धीरज‡(पु)—पु० दे० 'धैर्य'।

धीरना(पु)—अक० धीरज धरना। सक० धीरज धराना।

धीरा—स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर व्यंग्य से कोप प्रकाशित करे। वि० [हिं०] मंद, धीमा। पु० [हिं०] धीरज, धैर्य। **धीराधीरा**—स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से अपना क्रोध जतलावे।

धीरे—क्रि० वि० आहिस्ते से, धीमी गति से। इस प्रकार जिसमे कोई सुन या देख न सके, चुपके।

धीवर—पु० [सं०] एक जाति जो प्राय मछली पकडने और बेचने का काम करती है, मछुआ, मल्लाह।

धुंकार—स्त्री० जोर का शब्द, गरज।

धुंगार—स्त्री० बघार, तडका। ⊙**ना**=सक० बघारना, छौंकना।

धुंज‡—वि० मंद दृष्टि।

धुंद—स्त्री० दे० 'धुंध'।

धुंध—स्त्री० वह अँधेरा जो हवा मे मिली धूल या भाप के कारण हो। हवा मे उडती हुई धूल। आँख का एक रोग जिसमे कोई वस्तु स्पष्ट नही दिखाई देती।

धुंधकार—पु० धुंकार, गरज। अंधकार।

धुंधमार—पु० दे० 'धुंधुमार'।

धुंधर‡—स्त्री० हवा मे उडती हुई धूल। अँधेरा।

धुंधराना—अक० दे० 'धुंधलाना'।

धुंधला—वि० कुछ कुछ काला, धूएँ के रंग का। जो साफ दिखाई न दे, अस्पष्ट। कुछ कुछ अँधेरा। ⊙**ई**=स्त्री० दे० 'धुंधलापन'। ⊙**ना**=अक० धुंधला होना। सक० धुंधला करना। ⊙**पन**=पु० धुंधले या अस्पष्ट होने का भाव। कम दिखाई देने का भाव।

धुंधाना—अक० विना लपट के धुआँ देकर जलना।

धुंधुकार—पु० अंधकार, अँधेरा। धुंधलापन। नगाडे का शब्द, धुंकार।

धुंधुरि(पु)†—स्त्री० गुबार या धूएँ के कारण होनेवाला अँधेरा।

धुंधुरित—वि० धुंधला किया हुआ, धूमिल। दृष्टिहीन, धुंधली दृष्टिवाला।

धुंधुवाना(पु)†—अक० धुआँ देना, धुआँ दे देकर जलना।

धुंधेरी—स्त्री० दे० 'धुंधुरि'।

धुअ(पु)—पु० दे० 'ध्रुव'।

धुआँ—पु० धूम, जलती हुई चीजो से निकलनेवाली भाप जो कुछ कालापन लिए होती है। घटाटोप, उभडती हुई वस्तु, भारी समूह। धज्जी, नाश। ⊙**कश**=पु० भाप के जोर से चलनेवाली नाव या जहाज, अगिनवोट। चूल्हे के धुएँ को खुली जगह मे निकालने का मार्ग। ⊙**धार**=वि० वडे जोर का, प्रचंड (जैसे, धुएँ से भरा। धुआँधार वर्षा, धुआँधार घटा, धुआँधार नशा)। गहरे रंग का, भडकीला, भव्य। काला। क्रि० वि० बहुत अधिक या बहुत जोर से (जैसे-धुआँधार बरसना)। **मु०~निकालना या काढ़ना**=बढ बढकर बातें कहना। **धुएँ का धौरहर**=थोडे ही काल मे नष्ट होनेवाली वस्तु या आयोजन। **धुएँ के बादल उड़ाना**=भारी गप हाँकना। ⊙**ना**=अक० अधिक धुएँ में रहने के कारण स्वाद और गंध मे बिगड जाना (पकवान आदि)। **धुआँयध**–वि० धुएँ की तरह महकनेवाला। स्त्री० अन्न न पचने के कारण आनेवाली डकार।

धुआँस—स्त्री० दे० 'धुवाँस'

धुकना(पु)†—अक० नीचे की ओर ढलना, झुकना। गिर पडना। झपटना, टूट पडना। **धुकाना**(पु)†—सक० [अक० धुकना] झुकाना, नवाना। गिरना, ढकेलना। पछाड़ना, पटकना।

धुकड़पुकड़—पु० भय आदि से होने वाली चित्त की अस्थिरता, घबराहट। आगा-पीछा, पसोपेश।

धुकधुकी—स्त्री० कलेजे की धडकन, कंप।

डर, भय। कलेजा, हृदय। पेट और छाती के बीच का वह भाग जो कुछ गहरा सा होता है। पदिक या जुगनू नामक गहना।
धुकान†—स्त्री० घोर शब्द, गडगडाहट का शब्द।
धुकार, धुकारी—स्त्री० नगाडे का शब्द।
धुक्कनाⓅ†—अक० दे० 'धुकना'।
धुज, धुजाⓅ†—स्त्री० दे० 'ध्वजा'।
धुजिनीⓅ†—स्त्री० सेना फौज।
धुड़गाⓅ†—वि० जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो केवल धूल हो, जिसपर धूल लगी हो।
धुतकार—स्त्री० दे० 'दुतकार'।
धुताईⓅ†—स्त्री० 'धूर्तता'।
धुताराⓅ—वि० दे० 'धूर्त'।
धुधकार—स्त्री० धू धू शब्द का शोर। घोर शब्द, गरज। **धुधुकारी**—स्त्री० दे० 'धुधुकार'।
धुन—स्त्री० बिना आगा पीछा सोचे कोई काम करते रहने की प्रवृत्ति, लगन। मन की तरग। सोच विचार, चिंता। गीत गाने की तर्ज। दे० 'ध्वनि'। मु०~**का पक्का** =वह जो आरभ किए हुए काम को बिना पूरा किए न छोड़े।
धुनकना—सक० दे० 'धुनना'।
धुनकी—स्त्री० धुनियो का वह धनुष के आकार का औजार जिससे वे रुई धुनते हैं। लडको के खेलने का छोटा धनुष।
धुनना—सक० धुनकी से रुई साफ करना जिसमे उसके बिनौले निकल जायँ। खूब मारना पीटना। बारबार कहना। कोई काम बिना रुके बराबर करना।
धुनिⓅ—स्त्री० दे० 'ध्वनि'। दे० 'धुनी'।
धुनियाँ—पु० वह जो रुई धुनने का काम करता हो, पेंहना।
धुनी—स्त्री० [सं०] नदी। वि० मन लगाकर काम करनेवाला।
धुपना†—अक० दे० 'धुलना'।
धुमिला—वि० दे० 'धूमिल'। **धुमिलाना**Ⓟ—अक० धूमिल होना, काला पडना।
धुरंधर—वि० जो सब में बडा, भारी या बली हो। श्रेष्ठ, प्रधान। उच्च गुणों से युक्त। धुरी धारण करनेवाला।
धुर—पु० गाडी या रथ आदि का धुरा, अक्ष। अग्र, शीर्ष या प्रधान स्थान। बोझ। आरभ। जमीन की एक माप जो विस्वे का बीसवाँ भाग होती है, बिस्वासी। अव्य० बिलकुल ठीक, सटीक। एक दम दूर। वि० पक्का दृढ। मु० सिर से=बिलकुल शुरू से।
धुरजटी—पु० दे० 'धूर्जटी'।
धुरधनि—वि० श्रेष्ठ, प्रधान।
धुरनाⓅ†—सक० पीटना, मारना। बजाना।
धुरपद—पु० दे० 'ध्रुपद'।
धुरवाⓅ†—पु० बादल, मेघ।
धुरा—पु० वह डडा जिसमे पहिया पहनाया रहता है और जिसपर वह घूमता है, अक्ष।
धुरियाना†—सक० किसी वस्तु पर धूल डालना। किसी ऐब को युक्ति से छिपा देना। अक० चीज का धूल से ढका जाना। ऐब का छिपाया जाना।
धुरी—स्त्री० गाडी का अक्ष। ⊙**राष्ट्र**=पु० समान राजनीतिक लक्ष्य से परिचालित राष्ट्र, द्वितीय महायुद्धके पूर्व विश्वविजय के लिये सघटित इटली, जर्मनी और जापान का गुट।
धुरीण—वि० [सं०] बोझ सँभालनेवाला। मुख्य प्रधान। धुरधर।
धुरीन—वि० धुरीण, प्रधान मुख्य।
धुरेटनाⓅ†—सक० धूल से लपेटना।
धुर्रा—पु० किसी चीज का अत्यंत छोटा भाग, कण। मु०—**धुर्रे उड़ाना**=किसी वस्तु के अत्यत छोटे छोटे टुकडे कर डालना। छिन्न भिन्न कर डालना। बहुत अधिक मारना, नष्ट करना। किसी के विचारो का बुरी तरह खडन करना।
धुलना—अक० [सक० धोना] पानी की सहायता से साफ या स्वच्छ किया जाना, धोया जाना।
धुलाई—स्त्री० धोने का काम या भाव। धोने की मजदूरी।
धुलाना—सक० धोने का काम दूसरे से करवाना।
धुलेंडी—स्त्री० हिंदुओ का एक त्योहार जो होली जलने के दूसरे दिन होता है। इस दिन लोग दूसरों पर अबीर गुलाल डालते हैं।
धुवⓅ†—पु० दे० 'ध्रुव'।

धुवाँ—पुं० दे० 'धुआँ'।
धुवाँस—स्त्री० धुली हुई उरद का आटा जिससे पापड़, कचौड़ी आदि बनती है।
धुवाना(पु)—सक० दे० 'धुलाना'।
धुस्स—पुं० मिट्टी आदि का ऊँचा ढेर, टीला। नदी का बाँध।
धुस्सा—पुं० मोटे ऊन की लोई जो ओढने के काम मे आती है।
धूँध—स्त्री० दे० 'धुंध'।
धूँधर(पु)—वि० दे० 'धुँधला'।
धू(पु)—वि० स्थिर, अचल। पुं० ध्रुवतारा। राजा उत्तानपाद का पुत्र जो भगवान् का भक्त था। धुरी।
धूआँ—पुं० दे० 'धुआँ'।
धूई†—स्त्री० धूनी।
धूकना(पु)—अक० दे० 'ढुकना'।
धूजना—अक० हिलना। काँपना।
धूर्जट(पु)—पुं० शिव, महादेव।
धूत—वि० [सं०] हिलाया या कँपाया हुआ। जो धमकाया गया हो। त्यक्त। सब तरफ से रुका या घिरा हुआ। ⊙पाप=वि० पाप को मिटानेवाला, पापघ्न। †(पु)वि० धूर्त, दगाबाज।
धूतना(पु)—सक० धूर्तता करना, ठगना।
धूताई—स्त्री० धूर्तता, चालबाजी।
धूती—स्त्री० एक चिड़िया।
धूतुक, धूतू—पुं० तुरही।
धूधू—पुं० आग के दहकने या जोर से जलने का शब्द।
धूनना(पु)—सक० किसी वस्तु को जलाकर उसका धुआँ उठाना, धूनी देना।
धूना—पुं० एक बड़ा पेड़ जिसका गोंद धूप की तरह जलाया जाता है। वह सुगंधित वस्तु जो आग मे जलाई जाय।
धूनी—स्त्री० गुग्गुल, लोबान आदि गंधद्रव्यों या और किसी वस्तु को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। साधुओं के तापने की आग। मु०~जगाना या~लगाना=साधुओं का अपने सामने आग जलाना। तप करना। साधु होना, विरक्त होना।~देना=धंध मिश्रित या विशेष प्रकार का धुआँ उठाना या पहुँचाना।~रमाना=सामने आग जलाकर शरीर तपाने बैठना। तप करना, साधु या विरक्त हो जाना।
धूप—स्त्री० [सं०] सूर्य का प्रकाश और ताप, चमक, घाम। देवपूजन मे या सुगंध के लिये गंधद्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। गंध द्रव्य जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठता है (जैसे, कस्तूरी, अगर की लकड़ी)। कई द्रव्यों के योग से बनाई हुई कृत्रिम धूप। ⊙घड़ी=स्त्री० एक यंत्र जिससे धूप मे समय का ज्ञान होता है। ⊙छाँह=स्त्री० एक प्रकार का रंगीन कपड़ा जिसमे एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है और कभी दूसरा। ⊙दान=पुं० धूप या गंधद्रव्य जलाने का डिब्बा, अगियारी। ⊙दानी=स्त्री० दे० 'धूपदान'। ⊙बत्ती=स्त्री० मसाला लगी हुई सीक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है। मु०~खाना=ऐसी स्थिति मे होना कि धूप ऊपर पड़े।~चढ़ना या~निकलना=सूर्योदय के पीछे प्रकाश का बढ़ना, दिन चढ़ना।~दिखाना=धूप मे रखना।~में बाल या~में चूड़ा सफेद करना=बिना कुछ अनुभव प्राप्त किए जीवन का बहुत सा भाग बिता देना।
धूपना(पु)†—अक० धूप देना, गंधद्रव्य जलाना। दौड़ना, हैरान होना (जैसे, दौड़ना धूपना)। सक० गंधद्रव्य जलाकर सुगंधित धुआँ पहुँचाना। **धूपित**—वि० [सं०] धूप जलाकर सुगंधित किया हुआ। थका हुआ, शिथिल।
धूम—पु०[सं०]धुआँ। अजीर्ण या अपच मे उठनेवाली डकार। धूमकेतु। उल्कापात। स्त्री० [हिं०] बहुत से लोगों के इकट्ठे होने और शोरगुल करने आदि का व्यापार, रेलपेल। उत्पात, ऊधम। ठाट बाट, समारोह। कोलाहल, शोर। प्रसिद्धि। ⊙केतु=पु० केतु ग्रह, पुच्छल तारा। अग्नि। शिव। ⊙ध्वज=पु० आग। ⊙पान=पु० तमाकू, चुरुट आदि पीने का कार्य। विशेष प्रकार का धूआँ जो नल के द्वारा रोगी को सेवन कराया

जाता है । ⊙पोत=पु० धुआँकश, स्टीमर । ⊙धड़क्का,⊙धड़ाका=पु० दे० 'धूमधाम' ।⊙धाम=स्त्री० भारी तैयारी, ठाटवाट, समारोह । मु०~ डालना=ऊधम करना ।

धूमकधैया--स्त्री० उछलकूद और हल्ला-गुल्ला ।

धूमर(पु)†—वि० दे० 'धूमल' ।

धूमल, धूमला—वि० धुएँ के रग का, ललाई लिए काला । जो चटकीला न हो, धुँधला । जिसकी काति मद हो ।

धूमावती—स्त्री० [स०] दस महाविद्याओ मे से एक, भयकर रूप और मलिन वेश की एक देवी (तत्नसार) ।

धूमिल(पु)†—वि० धुएँ के रग का । धुँधला ।

धूम्र—वि० [सं०] धुएँ के रग का । पु० ललाई लिए काला रग । शिलारस नाम का गधद्रव्य । एक असुर । शिव, महा-देव । मेढा ।

धूर†—स्त्री० दे० 'धूल' ।⊙धान=पु०धूल की राशि, गर्द का ढेर । ⊙धानी= स्त्री० गर्द की ढेरी । ध्वंस, विनाश । वदूक ।

धूरजटी(पु)†—पु० दे०'धुर्जटि' ।

धूरत(पु)†—वि० दे० 'धूर्त' ।

धूरा—पुं० धूल, गर्द । वुकनी, चूरा ।

धूरि(पु)†—स्त्री० दे० 'धूल' ।

धूर्जटी—पुं० [सं०] शिव, महादेव ।

धूर्त—वि० [सं०] मायावी । धोखा देने-वाला, वचक । पुं० साहित्य मे शठ नायक का एक भेद । दाँवपेच या छल करनेवाला व्यक्ति । विट्लवण, लोहे की मैल । धतूरा ।

धूल—स्त्री० मिट्टी, रेत आदि का महीन चूर, रेणु, रज, गर्द । धूल के समान तुच्छ वस्तु । ⊙धूसर=वि० धूल से भरा हुआ । मु०(कही)~उडना= वरवादी होना । रौनक न रहना ।(किसी की)~ उड़ना=दोषो और त्रुटियो का उधेड़ा जाना, बदनामी होना । उपहास होना । (किसी की)~उड़ाना= वुराइयो को प्रकट करना, वदनामी करना । हँसी करना । ~की रस्सी वटना=अनहोनी वात के पीछे पड़ना । केवल धूर्तता से काम निकालना । ~चाटना =बहुत विनती करना । अत्यत नम्रता दिखाना । (किसी वात पर)~डालना=फैलने न देना, दवाना । ध्यान न देना ।~ फाँकना=मारा मारा फिरना ।~में मिलना=नष्ट होना, चौपट होना । पैर की~ =अत्यंत तुच्छ वस्तु या व्यक्ति । सिर पर~डालना=पछताना, सिर धुनना ।~समझना= अत्यत तुच्छ समझना ।

धूला—पुं० टुकड़ा, खड ।

धूलि—स्त्री० [सं०] धूल, गर्द ।

धूवाँ—पुं० दे० 'धुआँ' ।

धूसर—वि० [सं०] धूल के रंग का, खाकी, मटमैला । धूल से भरा । **धूसरित**—वि० [सं०] जो धूल से मटमैला हुआ हो । धूल से भरा हुआ ।

धूसरा—वि० दे० 'धूसर' ।

धूसला(पु)—वि० दे० 'धूसर' ।

धृक, धृग(पु)—अव्य दे० 'धिक्' ।

धृत—वि० [सं०] धरा हुआ, पकडा हुआ । धारण किया हुआ, ग्रहण किया हुआ । स्थिर किया हुआ, निश्चित । ⊙राष्ट्र =पुं० वह जिसका राज्य दृढ हो, शक्ति-शाली राजा । महाभारतकाल के हस्तिना-पुर के जन्माध राजा जो विचित्रवीर्य के पुत्र और दुर्योधन के पिता थे । **धृति**—स्त्री० धरने या पकडने की क्रिया, धारण । स्थिर रहने की क्रिया या भाव, ठहराव । मन की दृढता, धैर्य । सोलह मातृकाओ मे से एक । अठारह अक्षरो के वृत्तो की सज्ञा । दक्ष की एक कन्या और धर्म की पत्नी । **धृती**—वि० धीर, धैर्यवान् ।

धृष्ट—वि० [सं०] सकोच या लज्जा न करनेवाला । ढीठ, गुस्ताख ।

धृष्णु—वि० [सं०]धृष्ट, ढीठ । साहसी ।

धृष्य—वि० [सं०] धर्षण के योग्य ।

धेन—स्त्री० दे० 'धेनु' ।

धेनु—स्त्री० [सं०] गाय । वह गाय जिसे वच्चा जने वहुत दिन न हुए हो । ⊙मति=स्त्री० गोमती (नदी) । ⊙मुख =पुं० गोमुख नामक वाजा, नरसिंहा ।

धेय—वि० [सं०] धारण करने योग्य, धार्य। पोषण करने योग्य।

धेर—पुं० एक अनार्य जाति। इस जाति के लोग गाँव के बाहर रहते और मरे हुए चौपायों का मास खाते है।

धेरिया, धेरी—स्त्री० लडकी, बेटी।

धेलचा†, **धेला**—पु० दे० 'अधेला'। **धेली**† —स्त्री० अठन्नी।

धेताल†—वि० चपल, चचल। उजड्ड, उद्धत।

धैना—स्त्री० टेव, आदत। कामधधा।

धैर्य—पुं० [सं०] सकट, बाधा आदि उपस्थित होनेपर चित्त की स्थिरता, धीरज। उतावली या आतुर न होने का भाव, सब्र। चित्त मे उद्वेग न उत्पन्न होने का भाव।

धैवत—पु० [सं०] संगीत के सात स्वरो मे से छठा स्वर जो पचम के बाद का है।

धोधा—पु० लोदा, बेडौल पिंड। भद्दा। मु०—**मिट्टी का**~ = नासमझ, जड। निकम्मा, आलसी।

धोखा—पु० मिथ्या व्यवहार जिससे दूसरे के मन मे मिथ्या विश्वास उत्पन्न हो, छल। धूर्तता, चालाकी, झूठ बात आदि से उत्पन्न मिथ्या विश्वास, डाला हुआ भ्रम, भुलावा। भ्राति। भ्रम मे डालनेवाली वस्तु, माया। जानकारी का अभाव, अज्ञान। अनिष्ट की संभावना, जोखिम। अन्यथा होने की संभावना, सशय। भूल, प्रमाद, त्रुटि। वह पुतला जिसे किसान चिडियो को डराने के लिये खेत मे खडा करते हैं। रस्सी लगी हुई लकड़ी जो फलदार पेडो पर इसलिये बाँधी जाती है कि रस्सी खीचने से खट-खट शब्द हो और चिडियाँ दूर रहें, खटखटा। बेसन का एक पकवान। **धोखेबाज**—वि० धोखा देनेवाला, कपटी, धूर्त। **धोखेबाजी**—स्त्री० छल, कपट, धूर्तता। मु०~**उठाना** = भ्रम मे पडकर हानि या कष्ट उठाना। ~**खड़ा करना या~ रचना** = भ्रम मे डालने के लिये आडबर करना। ~**खाना** = ठगा जाना, प्रतारित होना। भ्रम मे पड़ना। ~**देना** = भ्रम मे डालना, छलना। अकस्मात् मरकर या नष्ट होकर दु ख पहुँचाना। ~**पड़ना** = जैसा समझा या कहा जाय, उसके विरुद्ध होना। ~**लगना** = त्रुटि होना, कमी होना। ~**लगाना** = कसर करना। **धोखे की टट्टी** = वह पर्दा या टट्टी जिसकी ओट मे छिपकर शिकारी शिकार खेलते है। भ्रम मे डालनेवाली चीज या व्यवहार। दिखाऊ चीज। **धोखे मे या धोखे से** = जान बूझकर नही, भूल से।

धोटा—पुं० दे० 'ढोटा'।

धोती—स्त्री० वह कपडा जो कटि से लेकर घुटनो के नीचे तक का शरीर (स्त्रियो का प्राय सर्वांग) ढकने के लिये कमर मे लपेटकर पहना जाता है। स्त्री० योग की एक क्रिया। दे० 'धौती'। कपडे की वह धज्जी जिसे हठयोग 'धौती' क्रिया मे मुँह मे निगलते है। मु०~**खराब होना** = अनजान मे पाखाना होना। ~**ढीली करना** = डर जाना, डरकर भागना।

धोना—सक० [अक० धुलना] पानी से साफ करना, पखारना। दूर करना, मिटाना। मु०—(**किसी वस्तु से**) **हाथ**~ = खो देना, गँवा देना। **हाथ धोकर पीछे पड़ना** = सब छोड़कर पीछे लग जाना या बुरी तरह तग करना। **धो बहाना** = न रहने देना।

धोपⓅ†—स्त्री० तलवार, खंग।

धोब—पुं० धोए जाने की क्रिया। **धोबिन**—स्त्री० धोबी जाति की स्त्री। एक जलपक्षी। **धोबी**—पुं० कपडे धोने का पेशा करनेवाला, रजक। मु० ~**का कुत्ता** = व्यर्थ इधर उधर फिरनेवाला, निकम्मा आदमी।

धोम—पुं० धूम, धुआँ।

धोर—पुं० पास, निकटता। किनारा, बाढ़। **धोरे**Ⓟ†—क्रि० वि० पास, निकट।

धोरी—पुं० धुरे को उठानेवाला। बैल। प्रधान, मुखिया। श्रेष्ठ पुरुष, बड़ा आदमी।

धोवती—स्त्री० धोती।

धोवन—स्त्री॰ धोने का भाव। वह पानी जिससे कोई वस्तु धोई गई हो। धोवना (पु)†—सक॰ दे॰ 'धोना'। धोवा(पु)—पुं॰ धोवन। जल, अर्क।

धौं(पु)†—प्रव्य॰ एक अव्यय जो ऐसे प्रश्नो के पहले लगाया जाता है जिनमे जिज्ञासा का भाव कम और सशय का भाव अधिक होता है, न जाने। प्रश्न के रूप मे आनेवाले दो विकल्प या संदेहसूचक वाक्यो मे से दूसरे या दोनो के पहले लगनेवाला शब्द, कि, या। एक शब्द जिसका प्रयोग जोर देने के लिये ऐसे प्रश्नो के पहले 'तो' या 'भला' के अर्थ मे होता है जिनका उत्तर काकु से नही होता है। किसी वाक्य के पूरे होने पर उससे मिले हुए प्रश्नवाक्य का आरभसूचक शब्द जो 'कि' का अर्थ देता है। विधि, आदेश आदि वाक्यो के पहले केवल जोर देने के लिये आनेवाला एक शब्द।

धौंक—स्त्री॰ आग दहकाने के लिये भाथी को दबाकर निकाला हुआ हवा का झोका। गरमी की लपट, लू। ⊙ना = सक॰ आग पर, उसे दहकाने के लिये, भाथी या पखे आदि से हवा का झोका पहुँचाना। ऊपर डालना, भार डालना या सहन कराना। दड आदि लगाना। धौंकनी—स्त्री॰ बांस या धातु की नली जिससे लुहार, सुनार आदि आग फूंकते हैं, फुंकनी। भाथी। धौंका†—स्त्री॰ लू। धौंकिया—पुं॰ भाथी चलानेवाला, आग फूंकनेवाला। व्यापारी जो भाथी आदि लिए घूमते और टूटे फूटे वरतनो की मरम्मत करते हैं। धौंकी—स्त्री॰ दे॰ 'धौंकनी'।

धौंज, धौंजन—स्त्री॰ दौड़ धूप। घवराहट। चिंता, फिक्र।

धौंजना†—सक॰ दौडना, धूपना, दौड धूप करना। पैरों से रौंदना। रौंदकर या मल दलकर तह विगाडना (कपडे आदि की)।

धौंताल—वि॰ जिसे किसी बात की धुन लग जाय। शरारती। चुस्त, चालाक। साहसी। हट्टा कट्टा, मजबूत। निपुण।

धौंर—स्त्री॰ एक प्रकार की सफेद ईख।

धौंस—स्त्री॰ धमकी, घुड़की। धाक, रोब-दाव। भुलावा, धोखा, छल। ⊙ना = सक॰ दवाना, दमन करना। धमकी या घुडकी देना, डराना। मारना पीटना। ⊙पट्टी = स्त्री॰ भुलावा, झाँसा पट्टी।

धौंसर(पु)—वि॰ दे॰ 'धूसर'।

धौंसा—पुं॰ बडा नगाडा, डका। सामर्थ्य, शक्ति। धौंसिया—पु॰ धौंस से काम चलानेवाला। झांसा पट्टी देनेवाला। नगाडा वजानेवाला।

धौ—पु॰ दे॰ 'धव'।

धौज—स्त्री॰ दे॰ 'धौंज'।

धौत—वि॰ [सं॰] धोया हुआ, साफ। उजला, सफेद। नहाया हुआ। पु॰ रूपा, चाँदी।

धौति—स्त्री॰ [सं॰] शुद्ध। हठयोग की एक क्रिया जो शरीर को भीतर और बाहर से शुद्ध करने के लिये की जाती है। आँतें साफ करने की योग की एक क्रिया जिसमे कपडे की एक धज्जी मुँह से पेट के नीचे उतारते हैं, फिर पानी पीकर उसे धीरे धीरे वाहर निकालते हैं।

धौरहर(पु)—पु॰ दे॰ 'धौलहर'।

धौरा—वि॰ सफेद, उजला। सफेद रंग का वैल। धौ का पेड़। एक प्रकार का पडुक।

धौराहर—पु॰ दे॰ 'धौलहर'।

धौरिय(पु)—पु॰ वैल।

धौरी—स्त्री॰ सफेद रंग की गाय, कपिला। एक प्रकार की चिड़िया।

धौल(पु)—वि॰ उजला, सफेद। ऊँचा। पु॰ धरहरा, धौलहर। स्त्री॰ चाँटा, थप्पड। नुकसान, हानि। ⊙धक्का = पु॰ आघात, चपेट। ⊙धप्पड़ = पुं॰ धौल या धप्पड की मारपीट, धक्का मुक्का। उपद्रव, ऊधम। ⊙धप्पा = पु॰ दे॰ 'धौलधप्पड़'। ⊙हर(पु) = पु॰ महल, प्रासाद। ऊंची अटारी, बुर्ज।

धौला—पु॰ धौ का पेड, धौरा। सफेद वैल। वि॰ उजला, श्वेत। ⊙ई(पु) = स्त्री॰ सफेदी, उजलापन। ⊙गिरि = पु॰ दे॰ 'धवलगिरि'।

ध्यात—वि॰ [सं॰] विचारा हुआ, ध्यान किया हुआ।

ध्याता—वि० [सं०] ध्यान करनेवाला। विचार करनेवाला।

ध्यान—पु० [सं०] अंतःकरण में उपस्थित करने की क्रिया या भाव, मानसिक प्रत्यक्ष। सोच विचार, चिंतन, मनन। भावना, विचार। चित्त की ग्रहण वृत्ति, चित, मन। चेत, खयाल। बोध करनेवाली वृत्ति, समझ। धारणा, स्मृति, याद। चित्त को एकाग्र करके किसी ओर लगाने की क्रिया (योग के आठ अंगों में से सातवाँ अंग और धारणा तथा समाधि के बीच की अवस्था)। ⊙**योग** = पु० वह योग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो। **मु०**~**आना** = विचार उत्पन्न होना। स्मरण होना, याद होना। ~**करना** = ईश्वर, किसी आराध्य या अभीष्ट आदि के चिंतन में चित्त को एकाग्र करके बैठना। ~**छूटना** = चित्त की एकाग्रता का नष्ट होना, चित्त इधर उधर हो जाना। ~**जमना** = चित्त एकाग्र होना, विचार स्थिर होना। ~**जाना** = चित्त का किसी ओर प्रवृत्त होना। ~**दिलाना** = खयाल कराना, या जताना, सुझाना। स्मरण कराना, याद दिलाना। ~**देना** = (अपना) चित्त प्रवृत्त करना, गौर करना। ~**धरना** = मन में स्थापित करना। ~**पर चढ़ना** = मन में स्थान कर लेना, चित्त से न हटना। ~**बँटना** = चित्त एकाग्र न रहना, खयाल इधर उधर होना। ~**बँधना** = किसी ओर चित्त स्थिर या एकाग्र होना। ~**में डूबना या मग्न होना** = किसी बात को इस प्रकार मन में लाना कि और सब बातें भूल जायँ। (किसी के) ~**में लगना** = किसी का विचार मन में लाकर मग्न होना। ~**में न लाना** = परवाह न करना। न विचारना। ~**रखना** = विचार बनाए रखना, न भूलना। याद रखना। ~**लगना** = बराबर खयाल बना रहना। चित्त प्रवृत्त या एकाग्र होना। ~**से उतरना** = भूलना।

ध्याननाⓅ—सक० ध्यान करना।

ध्यानाⓅ—सक० ध्यान करना। स्मरण करना।

ध्यानि, ध्यानी—वि० [सं०] ध्यानयुक्त, समाधिस्थ। ध्यान करनेवाला।

ध्येय—वि० [सं०] ध्यान करने योग्य। जिसका ध्यान किया जाय।

ध्रुपद—पुं० एक प्रकार का गीत जिसके द्वारा देवताओं की लीला या राजाओं के यज्ञादि का वर्णन गाया जाता है, एक राग।

ध्रुव—वि० [सं०] सदा एक ही स्थान पर रहनेवाला, स्थिर, अचल। सदा एक ही अवस्था में रहनेवाला, नित्य। निश्चित, दृढ़। पुं० ध्रुव तारा। पुराणों के अनुसार राजा उत्तानपाद और उनकी पत्नी सुनीति के एक पुत्र जो प्रसिद्ध तपस्वी हुए हैं और जिन्हें आकाश में तारे के रूप में स्थित माना जाता है। भूगोल विद्या में पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी दोनों सिरे जहाँ समस्त देशांतर रेखाएँ केंद्रित होती हैं। रगण का १८वाँ भेद जिसमें क्रमशः एक लघु, एक गुरु और तीन लघु होते हैं। आकाश। शंकु, कील। पर्वत। खंभा, थून। वट, बरगद। आठ वस्तुओं में से एक। ध्रुपद। विष्णु। ⊙**तारा** = पुं० वह तारा जो सदा ध्रुव अर्थात् मेरु के ऊपर रहता है, कभी इधर उधर नहीं होता। पुराणों के अनुसार यह राजा उत्तानपाद का पहला पुत्र ध्रुव माना जाता है। ⊙**दर्शक** = पुं० कुतुबनुमा। सप्तर्षिमंडल। ⊙**दर्शन** = पुं० विवाह संस्कार के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें वर वधू को ध्रुवतारा दिखाया जाता है ⊙**लोक** = पुं० पुराणानुसार एक लोक जो सत्यलोक के अंतर्गत है और जिसमें ध्रुव स्थित हैं।

ध्वंस—पुं० [सं०] नाश। ⊙**क** = वि० नाश करनेवाला। ⊙**न** = पुं० नाश करने की क्रिया। नाश होने का भाव, क्षय। **ध्वंसावशेष**—पुं० किसी चीज के टूट फूट जाने पर बचा हुआ अंश, खँडहर। **ध्वंसी**—वि० नाश करनेवाला, विनाशक।

ध्वज—पुं० [सं०] चिह्न, निशान। वह लंबा या ऊँचा डंडा जिसके सिरे पर कोई चिह्न बना रहता है, पताका बँधी रहती है, झंडा। ⊙**भंग** = पुं० नपुस-

कता। ध्वजिनी—स्त्री० सेना का एक भेद जिसका परिमाण कुछ लोग वाहिनी का दूना मानते हैं। ध्वजी—वि० ध्वज-वाला। चिह्नयुक्त।

ध्वजा—स्त्री० पताका, झंडा। छंद शास्त्रानुसार ठगण का पहला भेद जिसमें पहले लघु फिर गुरु आता है।

ध्वनि—स्त्री० [सं०] वह ज्ञेय पदार्थ या बोध जिसका ग्रहण श्रवणेंद्रिय से हो, शब्द, आवाज। आवाज की गूँज, जय। वह काव्य जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ अधिक सुंदर और मर्मस्पर्शी हो। गूढ़ अर्थ, मतलब। ध्वनित—वि० शब्दित। व्यंजित, प्रकट किया हुआ। बजाया हुआ। ध्वन्य—पुं० व्यंग्यार्थ। ध्वन्यात्मक—ध्वनिस्वरूप या ध्वनिमय। (काव्य) जिसमें व्यंग्य प्रधान हो। ध्वन्यार्थ—पुं० वह अर्थ जिसका बोध वाच्यार्थ से न होकर केवल ध्वनि या व्यंजना से हो।

ध्वस्त—वि० [सं०] च्युत, गिरा पड़ा। खंडित, टूटा फूटा। नष्ट। पराजित।

ध्वांत—पुं० [सं०] अंधकार, अँधेरा। ⊙चर = पुं० राक्षस।

न

न—हिंदी वर्णमाला का २०वाँ अनुनासिक व्यंजन।

नंग—वि० बदमाश और बेहया, लुच्चा। पुं० नंगापन, नंगा होने का भाव। गुप्त अंग। ⊙धड़ंग = वि० बिलकुल नंगा। विवस्त्र। ⊙मुनंगा = वि० दे० 'नंगधड़ंग'।

नंगा—वि० वस्त्रहीन, दिगंबर। नग्न। निर्लज्ज। लुच्चा, पाजी। जो किसी तरह ढका न हो, खुला हुआ (जैसे नंगे पैर, नंगे सिर, नंगी तलवार आदि)। ⊙झोली = स्त्री० किसी के पहने हुए कपड़ों आदि को उतरवाकर अथवा यों ही अच्छी तरह देखना जिसमें उसकी छिपाई हुई चीज का पता लग जाय। ⊙बुच्चा, ⊙बूचा = वि० जिसके पास कुछ भी न हो, बहुत दरिद्र। ⊙लुच्चा = वि० नीच और दुष्ट बदमास।

नंगियाना—सक० नंगा करना, शरीर पर वस्त्र न रहने देना। सब कुछ छीन लेना।

नंग्याना(प)—सक० दे० 'नंगियाना'।

नंद—पुं० [सं०] आनंद, हर्ष। लड़का, बेटा। परमेश्वर। पुराणानुसार नौ निधियों में से एक। विष्णु। चार प्रकार की बाँसुरियों में से एक। पिंगल में ढगण के दूसरे भेद का नाम जिसमें एक गुरु और एक लघु होता है। यशोदा के पति और गोकुल के गोपों के मुखिया। महात्मा बुद्ध के सौतेले भाई। ⊙क = पुं० श्रीकृष्ण का खड्ग। राजा नंद जिनके यहाँ कृष्ण बाल्यावस्था में रहे थे। वि० आनंददायक। कुलपालक। संतोष देनेवाला। ⊙किशोर = पुं० श्रीकृष्ण। ⊙कुमार = पुं० श्रीकृष्ण। ⊙ग्राम = पुं० नंदिग्राम। अयोध्या नगरी के समीप का एक गाँव जहाँ राम के वनवास काल में भरत ने तपस्वियों की तरह जीवन बिताया था। ⊙नंदन = पुं० श्रीकृष्ण। ⊙ना = अक० आनंदित होना। ⊙नंदिनी = स्त्री० नंद की वह कन्या जिसे श्रीकृष्ण की जगह रखकर कंस को दिखलाने के लिये वसुदेव मथुरा उठा लाए थे, योगमाया। ⊙रानी = स्त्री० [हिं०] नंद की स्त्री, यशोदा। ⊙लाल(प) = पुं० [हिं०] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नंदकी—स्त्री० [सं०] विष्णु।

नंदन—वि० आनंददायक, प्रसन्न करनेवाला (जैसे, रघुनंदन)। पुं० [सं०] इंद्र का उपवन जो स्वर्ग में है। लड़का (जैसे, नंदनंदन)। एक प्रकार का विष। महादेव, शिव। विष्णु। एक प्रकार का अस्त्र। मेघ, बादल। एक वर्णवृत्त। ⊙वन = पुं० इंद्र की वाटिका। नंदना—स्त्री० लड़की, बेटी।

नंदनी—स्त्री० दे० 'नंदिनी'।

नंदा—स्त्री० [सं०] दुर्गा। गौरी। एक प्रकार की कामधेनु। एक मातृका या बालग्रह। संपदा, सुख, समृद्धि। पति

की बहन, ननद। बरवै छंद का एक नाम। प्रसन्नता, आनंद। किसी पक्ष की पहली, छठी और ११वीं तिथि जो शुभ मानी जाती है (वराह मिहिरकृत वृहत्संहिता)। वि० आनंद देनेवाली शुभ।

नंदि—पुं० [सं०] आनंद। वह जो आनंदमय हो। परमेश्वर। शिव का द्वारपाल बैल, नंदिकेश्वर। ⊙**घोष** = पुं० अर्जुन का रथ। बंदीजनों की घोषणा। ⊙**वर्धन** = पुं० शिव। पुत्र, बेटा। मित्र। प्राचीन काल का एक प्रकार का विमान। वि० आनंद बढ़ानेवाला। **नंदिकेश्वर**—पुं० शिव के द्वारपाल बैल का नाम। एक उपपुराण जिसे नंदिपुराण भी कहते हैं।

नंदित वि० [सं०] आनंदित, सुखी। ⓟवि० [हिं०] बजता हुआ।

नंदिनⓟ—स्त्री० लड़की।

नंदिनी—स्त्री० [सं०] आनंददायिनी कन्या, पुत्री। रेणुका नामक गंधद्रव्य। उमा। गंगा। पति की बहन, ननद। दुर्गा। १३ अक्षरों का एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, जगण, दो सगण और अंत्य गुरु रहता है। कलहंस, सिंहनाद, सिंहनी, कुटजा। वशिष्ठ की गाय जिसकी आराधना कर राजा दिलीप ने रघु नामक पुत्र प्राप्त किया था। पत्नी। वि० स्त्री० आनंद देनेवाली, प्रसन्न करनेवाली।

नंदी—वि० [सं०] आनंदयुक्त, जो प्रसन्न हो। पुं० शिव का द्वारपाल बैल। शिव के एक प्रकार के गण। शिव के नाम पर दागकर उत्सर्ग किया हुआ बैल (कर्मकांड)। वह कृषि कर्म के अनुपयुक्त बैल जिसके शरीर पर गाँठें हों। नाटक में नांदीपाठ करनेवाला व्यक्ति। धव का पेड़। बरगद का पेड़। विष्णु। ⊙**गण** = पुं० शिव के द्वारपाल, बैल। दागकर उत्सर्ग किया हुआ बैल (कर्मकांड)। ⊙**मुख** = पुं० दे० 'नांदीमुख'। **नंदीश्वर**—पुं० शिव। शिव का एक गण।

नंदेऊⓟ†—पुं० दे० 'नंदोई'।

नंदोई—पुं० ननद का पति, पति का बहनोई।

नंबर—पुं० [अं०] गिनती, अदद। सामयिक पत्र की कोई संख्या, अंक। दे० 'नंबरी गज'। ⊙**दार** = पुं० [फा०] (जमींदारी उन्मूलन के पहले) गाँव से मालगुजारी आदि वसूल करने में सहायता देनेवाला बड़ा किसान या जमींदार। ⊙**वार** = क्रि० वि० [फा०] सिलसिलेवार, एक करके।

नंबरी—वि० नंबरवाला, जिसपर नंबर लगा हो। प्रसिद्ध। जैसे, नंबरी बदमाश। ⊙**गज** = पुं० कपड़ा नापने का ३६ इंच का गज। ⊙**सेर** = पुं० तौलने का सेर जो रुपयों से ८० भर का होता है।

नंसⓟ—वि० नष्ट, बरबाद।

न—पुं० [सं०] उपमा। रत्न। सोना। बुद्ध। बंध। अव्य० निषेधवाचक शब्द, नहीं। या नहीं, (जैसे, तुम वहाँ आओगे न?)।

नईⓟ—वि० नीतिज्ञ। वि० स्त्री० 'नया' का स्त्री० रूप। ⓟ† स्त्री० दे० 'नदी'।

नउँजी†—स्त्री० लीची नामक फल।

नउⓟ†—वि० दे० 'नव'। दे० 'नौ'।

नउआँ†—पुं० दे० 'नाई'।

नउकाⓟ†स्त्री० दे० 'नौका'।

नउजⓟ—अव्य० दे० 'नौज'।

नउतⓟ†—वि० नीचे की ओर झुका हुआ।

नउनिया—स्त्री० नाई की स्त्री, नाइन।

नउलिⓟ†—वि० नया।

नओढ़ⓟ†—स्त्री० दे० 'नवोढा'।

नक—स्त्री० 'नाक' का संक्षेप (के० समा० में) नाक। ⊙**कटा** = वि० जिसकी नाक कटी हो। जिसकी बहुत दुर्दशा, अप्रतिष्ठा या बदनामी हुई हो। निर्लज्ज। ⊙**घिसनी** = स्त्री० जमीन पर नाक रगड़ने की क्रिया। बहुत अधिक दीनता, आजिजी। ⊙**चढ़ा** = पुं० चिड़चिड़ा, बदमिजाज। ⊙**छिक्नी** = स्त्री० एक प्रकार की घास जिसके फूल सूँघने से छींकें आने लगती है। ⊙**तोड़ा** = पुं० अभिमानपूर्वक नाक भौं चढ़ाकर नखरा करना अथवा कोई बात करना।

⊙फूल = पुं० नाक का एक आभूषण, लौंग। कील। ⊙बानी ⓟ† = स्त्री० नाक मे दम, हैरानी। ⊙बेसर = स्त्री० नाक मे पहनने की छोटी नथ। ⊙मोती = पुं० नाक मे पहनने का मोती, लटकन। ⊙वानी = ⓟ स्त्री० दे० 'नकवानी'। ⊙सीर = स्त्री० आपसे आप आप नाक से रक्त वहना।

नकटा—पुं० वह जिसकी नाक कट गई हो। एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ विवाह के समय गाती है। वि० जिसकी नाक कटी हो। निर्लज्ज, अपना समान या प्रतिष्ठा खोनेवाला।

नकटी—स्त्री० नाक से निकलनेवाली मैल जो कफ के समान होती है। वि० स्त्री० जिसकी नाक कटी हो।

नकद—पुं० [अ०] वह धन जो सिक्को के रूप मे हो, रुपया पैसा। वि० (रुपया) जो तैयार हो, (धन) जो तुरत काम मे लाया जा सके। खास। वढिया, अच्छा। क्रि० वि० तुरत दिए हुए रुपए के वदले मे, उधार का उलटा। मु०—नौ~न तेरह उधार = तुरत मिलनेवाली थोडी वस्तु भी भविष्य मे होनेवाले अधिक लाभ से वढकर है।

नकदी—स्त्री० दे० 'नकद'।

नकना ⓟ †—सक० लांघना, फांदना। चलना। त्यागना। नाक मे दम करना। अक० नाक मे दम होना, ऊब जाना।

नकब—स्त्री० [अ०] चोरी करने के लिये दीवार मे किया हुआ छेद, सेंध।

नकल—स्त्री० [अ०] वह जो किसी दूसरे के ढग पर या उसकी तरह तैयार किया गया हो, अनुकृति। एक के अनुरूप दूसरी वस्तु वनाने का कार्य, अनुकरण। लेख आदि की अक्षरश प्रतिलिपि, (अँ० कापी)। किसी के वेश, हावभाव या वातचीत आदि का पूरा पूरा अनुकरण, स्वांग। अद्भुत और हास्यजनक आकृति। हास्य रस की कोई छोटी मोटी कहानी, चुटकुला। ⊙नवीस = पु० वह आदमी, विशेषत अदालत का मुहर्रिर, जिसका काम केवल दूसरो के लेखो की नकल करना होता है। ⊙वही = स्त्री० वह वही जिसपर चिट्ठियो और हुडियो आदि की नकल रखी जाती है।

नकली—वि० जो नकल करके बनाया गया हो, वनावटी। खोटा, जाली, झूठा।

नकश—पु० दे० 'नक्श'। ताश से खेला जानेवाला एक जुआ।

नकशा—पु० दे० 'नक्शा'।

नकाना†—ⓟ अक० नाक मे दम होना, वहुत परेशान होना। सक० नाक मे दम करना, वहुत परेशान करना।

नकाब—पु० [अ०] चेहरा छिपाने या ढकने का कपडा (मुसलमान)। साडी या चादर का वह भाग जिसमे स्त्रियो का मुँह ढका रहता है, घूँघट। ⊙पोश = पु० [अ० फा०] नकाव से चेहरा ढके हुए।

नकार—पु० [स०] न या नही का वोधक शब्द या वाक्य, नही। इनकार, अस्वीकृति। 'न' अक्षर। ⊙ना = अक० [हिं०] इनकार करना, अस्वीकृत करना।

नकारा†—वि० जो किसी काम का न हो, खराव।

नकाशना—सक० धातु पत्थर आदि पर खोद कर चित्र, फूल, पत्ती आदि वनाना।

नकाशी†—स्त्री० दे० 'नक्काशी'।

नकियाना—अक० शब्दों का अनुनासिकवत् उच्चारण करना, नाक से वोलना। वहुत दु खी या हैरान होना। सक० वहुत परेशान या तंग करना।

नकीव—पु० [अ०] चारण, भाट। कडखा गानेवाला पुरुष, कडखैत।

नकुल—पु० [सं०] नेवला नामक जतु। पाडु राजा के चौथे पुत्र का नाम जो अश्विनीकुमार द्वारा माद्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। वेटा, पुत्र।

नकेल—स्त्री० ऊँट की नाक मे वँधी हुई रस्सी जो लगाम का काम देती है, मुहरा। मु०—किसी की~हाथ में होना = किसी पर सव प्रकार का अधिकार होना।

नक्कारखाना—पु० [फा०] वह स्थान जहां पर नक्कारा वजता है, नौवतखाना। मु०—**नक्कारखाने मे तूती की आवाज कौन सुनता है** = वडे वडे लोगो के सामने छोटे आदमियो की वात कोई नही सुनता।

नक्कारची—पुं० [फा०] नगाड़ा बजानेवाला।
नक्कारा—पुं० [फा०] नगाड़ा, डंका।
नक्काल—पु० [अ०] नकल करनेवाला।
नक्काश—पुं० [अ०] वह जो नक्काशी करता हो। **नक्काशी**—स्त्री० धातु आदि पर खोदकर बेल बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। वे बेलबूटे जो इस प्रकार बनाए गए हों।
नक्की—वि० पक्का, दृढ। ठीक।
नक्कीमूठ—पुं० कौड़ियों से खेला जानेवाला एक खेल।
नक्कू—वि० जिसकी नाक बड़ी हो। अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित समझनेवाला। सबसे अलग और उलटा काम करनेवाला। मजाक का पात्र।
नक्त—पुं० [सं०] बिलकुल संध्या का समय। रात। एक प्रकार का व्रत, इसमें रात को तारे देखकर भोजन किया जाता है। शिव।
नक्र—पुं० [सं०] नाक नामक जलजंतु। मगर। घड़ियाल। नाक, नासिका।
नक्ल—स्त्री० [अ०] दे० 'नकल'।
नक्श—वि० [अ०] जो अंकित या चित्रित किया गया हो। पुं० तसवीर, चित्र। खोदकर या कलम से बनाया हुआ बेलबूटा। मोहर, छाप। तावीज। जादू, टोना। ताश से खेला जानेवाला एक जुआ, नकश। मु०~ **बैठना** = अधिकार जमाना। **मन में~ करना या कराना** = किसी के मन में कोई बात अच्छी तरह बैठाना।
नक्शा—पुं० [अ०] मानात्मक या अनुपात पर आश्रित रेखाचित्र (जो कभी कभी बिना रंग का और बहुधा रंग या रंगों की सहायता से बनता है)। रेखाओं द्वारा आकार आदि का निर्देश, चित्र, मानचित्र। आकृति, ढाँचा, गढ़न, बनावट। कागज आदि पर किसी निश्चित अनुपात में बनाया गया पृथ्वी या खगोल के किसी भाग का प्राकृतिक, राजनीतिक अथवा अन्य विशेषता का चित्र। किसी नगर की बनावट या मकान, सड़क, आदि का किसी निश्चित अनुपात से बनाया गया रेखाचित्र। चालढाल, तर्ज। अवस्था, ढाँचा। ⊙**नवीस** = पुं० [फा०] नक्शा लिखने या बनानेवाला। ⊙**बंद** = पुं० [फा०] वह जो साड़ियों आदि के बेलबूटों के नक्शे या तर्ज तैयार करता है। **नक्शी**—वि० जिसपर बेलबूटे बने हों, नक्काशीदार।
नक्षत्र—पुं० [सं०] चंद्रमा के पथ में पड़नेवाले तारों का वह समूह जिनका पहचान के लिये आकार निर्दिष्ट करके नाम रखा गया हो, ये सब २७ नक्षत्रों में विभक्त हैं। तारा, सितारा। ⊙**नाथ** = पु० चंद्रमा। ⊙**पथ** = पु० नक्षत्रों के चलने का मार्ग। ⊙**राज** = पु० चंद्रमा। ⊙**लोक** = पु० पुराणानुसार वह लोक जिसमें नक्षत्र हैं। ⊙**वृष्टि** = स्त्री० तारा टूटना, उल्कापात होना। **नक्षत्री**—पु० चंद्रमा। वि० भाग्यवान्।
नख—स्त्री० हाथ या पैर का नाखून। पु० [सं०] [फा०] गुड्डी उड़ाने के लिये सरेस और शीशे के चूर्ण आदि से बनाया गया रेशमी या सूती तागा, डोर। एक प्रसिद्ध गंध द्रव्य जो घोंघे की जाति के एक जीव के मुँह का ऊपरी आवरण होता है। खंड, टुकड़ा। ⊙**क्षत** = पु० वह दाग या चिह्न जो नाखून के गड़ने के कारण स्तन आदि पर बना हो (कामशास्त्र)। ⊙**च्छत** (पु)† = पु० [हिं०] दे० 'नखक्षत'। ⊙**छद**(पु) = पु० [हिं०] दे० 'नखक्षत'। ⊙**छोलिया**(पु) = पु० [हिं०] दे० 'नखक्षत'। ⊙ **जल** = पु० नखों से निकला जल, गंगा जो विष्णु के पैर के अँगूठे के नख से निकलती हैं। ⊙**बान**(पु) = पुं० [हिं०] नाखून। ⊙**रेखा** = स्त्री० नखक्षत। बादलों की माता मानी जानेवाली कश्यप ऋषि की एक पत्नी। ⊙**बिंदु** = पु० वह गोल या चंद्राकार चिह्न जो स्त्रियाँ नाखून के ऊपर मेंहदी या महावर से बनाती हैं। ⊙**शिख** = पुं० नख से लेकर शिखा तक के सब अंग, सर्वांग। शरीर के सब अंगों का वर्णन। ⊙**सिख** = पुं० [हिं०] दे० 'नखशिख'। मु०~**सिख से** = सिर से पैर तक। **नखांक**—पु० नख नामक गंधद्रव्य। नाखून गड़ाने का चिह्न। **नखायुध**—पु० शेर, चीता आदि। नखों से फाड़नेवाले जानवर। नृसिंह।
नखत, नखतर(पु)—पु० दे० 'नक्षत्र'।

नखतराज, नखतेस—पु० दे० 'चद्रमा'।

नखना—अक० उल्लघन होना, डाका जाना। सक० उल्लंघन करना, पार करना। नष्ट करना।

नखरा—पु० [फा०] वह चुलबुलापन या चेष्टा जो जवानी की उमग मे अथवा प्रिय को रिझाने के लिये हो, चोचला, नाज। चचलता, चुलबुलापन। ⊙तिल्ला = पु० [हि०] नखरा, चोचला। **नखरेबाज**—वि० [हि०] जो बहुत नखरा करे, नखरा करनेवाला।

नखरीला†—वि० [फा०] नखरा करनेवाला।

नखरौंट—स्त्री० दे० 'नखक्षत'।

नखास—पु० वह बाजार जिसमे पशु, विशेषत घोडे, बिकते हैं।

नखियाना(पु)†—सक० नाखून गडाना।

नखी—पु० [सं०] शेर। चीता। वह जानवर जो नाखून से किसी पदार्थ को चीर या फाड सकता है। स्त्री० [सं०] नख नामक गधद्रव्य।

नखेद(पु)—पु० दे० 'निषेध'।

नखोटा(पु)†—सक० नाखून से खरोचना या नोचना।

नग—पु० नगीना। रत्न, मणि, अदद, सख्या। पु० [सं०] पहाड। पेड। सात की सख्या। साँप। सूर्य। ⊙ज = पु० हाथी। वि० जो पहाड से उत्पन्न हो। ⊙जा = स्त्री० पार्वती। ⊙धर = पु० श्रीकृष्णचद्र जिन्होंने गोवर्धन पहाड उठाया था। ⊙धरन(पु) पु० [हि०] पु० 'नगधर'। ⊙नदिनी = स्त्री० पार्वती। ⊙पति = पु० हिमालय पर्वत। चद्रमा। शिव। सुमेरु। ⊙बलित = वि० रत्न-जटित। ⊙स्वरूपिणी = स्त्री० एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक जगण, एक रगण, एक लघु और अत्य गुरु अथवा क्रम से चार वार लघु गुरु वर्ण (कुल ८ वर्ण) होते हैं। **नगाधिप**—पु० हिमालय पर्वत। सुमेरु पर्वत। **नगारि**—पु० इद्र। **नगेंद्र, नगेश**—पु० पर्वतराज हिमालय।

नगण—पु० [सं०] पिंगल मे तीन लघु अक्षरो का एक वर्णिक गण।

नगण्य—वि० [सं०] बहुत ही साधारण या गया बीता, तुच्छ। ध्यान न देने योग्य, उपेक्षणीय।

नगद—पु० दे० 'नकद'।

नगन(पु)†—वि० जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, नगा।

नगनिका—स्त्री० क्रीडावृत्ति, जिसमे एक यगण और एक गुरु होता है।

नगनी—स्त्री० कन्या, पुत्री।

नगफेंग—वि० बदमाश, नगा।

नगफनियाँ—पु० कान मे पहना जानेवाला एक गहना, नागफनी।

नगर—पु० [सं०] गाँव या कस्बे आदि से बडी मनुष्यो की वह बस्ती जिसमे अनेक जातियो और पेशो के लोग रहते हो, शहर। ⊙कीर्तन—पु० वह गाना, बजाना या कीर्तन जो नगर की गलियो और सडको मे घूम घूमकर हो। ईश्वर का सामूहिक यशगान, जप और भजन। ⊙नारि = स्त्री० वेश्या। ⊙पाल = पु० वह जिसका काम नगर मे शाति और सुव्यवस्था रखना तथा उसकी रक्षा करना हो। ⊙पालिका = स्त्री स्वायत्त शासन करने-वाला नगर। ऐसा शासन करनेवाली स्थानीय संस्था। ⊙वासी = पु० वि० शहर मे रहनेवाला। ⊙हार = प्राचीन भारत का एक नगर जो वर्तमान जलाला-बाद के निकट बसा था। **नगराध्यक्ष**—पु० दे० 'नगरपाल'। **नगराई**(पु)†—स्त्री० पौरत्व, शहरातीपन। चतुराई। **नगरी**—स्त्री० [सं०] नगर, शहर। पु० शहर मे रहनेवाला।

नगाड़ा—पु० दे० 'नगारा'।

नगारा—पु० [फा०] नगाड़ा, धौंसा।

नगी—स्त्री० रत्न, नगीना। पार्वती। पहाडी स्त्री।

नगीच†—क्रि० वि० दे० 'नजदीक'।

नगीना—स्त्री० [फा०] रत्न, मणि। ⊙साज = पु० वह जो नगीना बनाता या जड़ता हो।

नगेसरि(पु)†—पु० दे० 'नागकेसर'।

नग्न—वि० [सं०] जिसके सरीर पर कोई वस्त्र न हो, नंगा। जिसके ऊपर किसी

प्रकार प्रकार का आवरण न हो। शिव।

नग्मा—पुं० दे० 'नगमा'।

नग्र(पु)†—पुं० दे० 'नगर'।

नघना—सक० लाँघना। **नघाना**—सक० [अक० नघना] लँघाना।

नचना—वि० नाचनेवाला। बराबर इधर उधर घूमनेवाला (पु)†अक० नाचना। **नचनि**(पु)†—स्त्री० नाच, नृत्य। **नचनिया**†—नाचनेवाला व्यक्ति। **नचनी**—वि० स्त्री० नाचनेवाली। इधर उधर घूमती रहनेवाली। **नचवैया**—पुं० नाचने या नाचनेवाला।

नचाना—सक० [नाचना का प्रे०] दूसरे को नाचने मे प्रवृत्त करना, नृत्य कराना। किसी को बार ब र उठने बैठने या और कोई काम करने के लिये तंग करना, हैरान करना। व्यर्थ इधर उधर दौडाना। इधर उधर घुमाना या हिलाना। मु०—**आँखें** (या नैन)~=चचलतापूर्वक आँखो की पुतलियो को इधर उधर घुमाना। **नाच**~=घूमने फिरने या और कोई काम करने के लिये विवश करके तंग करना, हैरान करना। **नचीला**—वि० जो नाचता या इधर उधर घूमता रहे, चंचल। **नचौहाँ**(पु)†—वि० जो सदा नाचता या इधर उधर घूमता रहे, चंचल।

नचिकेता—पुं० [सं०] वाजश्रवा ऋषि का पुत्र जिसने मृत्यु से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था। अग्नि।

नच्यंत(पु)—वि० दे० 'निश्चित'।

नछत्र—पुं० दे० 'नक्षत्र'।

नछत्री(पु)†—वि० भाग्यशाली।

नजदीक—वि० [फा०] निकट, पास।

नजम—स्त्री० पद्य, छदोबद्ध कविता।

नजर—स्त्री० [अ०] दृष्टि, निगाह। कृपादृष्टि, मेहरबानी से देखना। निगरानी, देखरेख। ध्यान, खयाल। परख, पहचान। दृष्टि का वह कल्पित प्रभाव जो किसी सुदर मनुष्य या अच्छे पदार्थ आदि पर पडकर उसे खराब कर देनेवाला माना जाता है। भेंट, उपहार। किसी बडे व्यक्ति को दी जानेवाली भेंट। मिलने के समय हाथ या रुमाल पर नकदी रखकर किसी राजा या अधिकारी के सामने उपस्थित करना। घूस देना। ⊙**बंद**=वि० [अ० + फा०] जो किसी बद स्थान मे कडी निगरानी मे रखा जाय और निश्चित स्थान और सीमा से बाहर आ जा न सके। पुं० जादू या इद्रजाल आदि का वह खेल जिसके विषय साधारण विश्वास है कि वह लोगो की नजर बाँधकर किया जाता है। ⊙**बंदी**=स्त्री० [अ० + फा०] राज्य की ओर से वह दंड जिसमे दडित व्यक्ति निगरानी मे रखा जाता है और नियत स्थान या सीमा से बाहर नही जा सकता। नजरबंद होने की दशा। जादूगरी, बाजीगरी। ⊙**बाग**=पुं० महलो या बडे बडे मकानो आदि के सामने (या चारो ओर) का बाग। ⊙**हाया**=वि० [हिं०] नजर लगानेवाला। मु०~**आना**=दिखाई देना। ~**उतारना**=बुरी दृष्टि के प्रभाव को किसी मत्र या युक्ति से हटा देना। ~**पड़ना**=दिखाई देना। ~**पर चढ़ना**=पसद आ जाना, भला मालूम होना। ~**फिरना**=क्रुद्ध होना, सहानुभूति न रखना। ~**बाँधना**=जादू या मत्र आदि के जोर से किसी को कुछ का कुछ कर दिखाना। ~**में तोलना**=देखकर किसी के गुण, दोष आदि की परीक्षा करना। ~**लगना**=बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना।

नजरानना(पु)†—सक० भेंट या उपहार स्वरूप देना। नजर लगाना।

नजराना—अक० नजर लग जाना। बुरी दृष्टि के प्रभाव मे आना। सक० नजर लगाना। नजर करना, उपहार देना। पुं० [अ०] राजा या अधिकारी के सामने रखी जानेवाली उपहार, धन आदि की भेंट।

नजरि(पु)—स्त्री० दे० 'नजर'।

नजला—पुं० [अ०] एक रोग जिसमे गरमी के कारण विकारयुक्त पानी ढलकर भिन्न भिन्न अगो की ओर प्रवृत्त होकर उन्हें खराब कर देता है। जुकाम, सरदी।

नजाकत—स्त्री० [फा०] नाजुक होने का भाव, सुकुमारता।

नजात—स्त्री० [अ०] मुक्ति, मोक्ष । छुटकारा, रिहाई ।

नजारा—पुं० [अ०] दृश्य, दृष्टि, नजर । प्रिय को लालसा या प्रेम की दृष्टि से देखना ।

नजिकाना(पु)†—सक० निकट पहुँचना, नजदीक, पहुँचना ।

नजीक†—क्रि० वि० निकट ।

नजीर—स्त्री० [अ०] उदाहरण, दृष्टांत ।

नजूम—पुं० [अ०] ज्योतिष विद्या । नजूमी—पुं० ज्योतिषी ।

नजूल—पुं० [अ०] शहर की वह जमीन जो सरकार के अधिकार में हो ।

नट—पुं० [सं०] अभिनय करनेवाला मनुष्य, वह जो नाटय करता हो । नाचनेवाला । एक मकर जाति । एक जाति जो प्राय गा बजाकर और खेल तमाशे करके जीवन निर्वाह करती है । संपूर्ण जाति का एक राग । ⊙ना = स्त्री० नट का भाव । ⊙नागर = पुं० नृत्यकला मे प्रवीण व्यक्ति, नटराज । श्रीकृष्ण । ⊙नारायण = पु० सपूर्ण जाति का एक राग । ⊙नी = स्त्री० [हिं०] नट की स्त्री । नट जाति की स्त्री । नर्तकी । ⊙राज = पुं० महादेव, शिव । ⊙वर = पुं० नाटयकला मे प्रवीण मनुष्य । श्रीकृष्ण । वि० बहुत चतुर, चालाक । ⊙सार(पु)† = स्त्री० [हिं०] दे० 'नाटयशाला' । ⊙सारी(पु) = स्त्री० [हिं०] नट का काम ।

नटई†—स्त्री० गला, गरदन । गले की घटी, घाँटी ।

नटखट—वि० चचल, शरीर । उपद्रवी, ऊधमी । चालाक, धूर्त । नटखटी—स्त्री० शरारत, पाजीपन ।

नटन—पु० [सं०] नृत्य, नाचना । नाटय करना ।

नटना—अक० नाटय करना । नाचना । कहकर बदल जाना, मुकरना । नष्ट होना । सक० नष्ट करना ।

नटनि(पु)†—स्त्री० नृत्य । इनकार ।

नटवना(पु)—सक० नाटय करना, अभिनय करना ।

नटसाल—स्त्री० काँटे का वह भाग जो निकाल लिए जाने पर भी टूटकर शरीर के भीतर रह जाय । कसक, पीड़ा ।

नटिन—स्त्री० नट की स्त्री । नर्तकी ।

नटी—स्त्री० [सं०] नट जाति की स्त्री । नाचनेवाली स्त्री, नर्तकी । अभिनय करनेवाली स्त्री ।

नटुआ, नटुवा†—पु० दे० 'नट' । दे० 'नटई' ।

नटेश, नटेश्वर—पुं० [सं०] महादेव ।

नटैया†—स्त्री० दे० 'नटई' ।

नठना(पु)†—अक० नष्ट होना । सक० नष्ट करना ।

नढना—सक० गूँथना, पिरोना । बाँधना, फँसाना ।

नत—वि० [सं०] झुका हुआ । मध्याह्न के बाद अस्ताचल की ओर झुकनेवाले रवि की छाया से निकाला हुआ (समय) । ⊙पाल = पु० शरणागत का पालन करनेवाला, प्रणतपाल । नतांश—पुं० मध्याह्नकालीन सूर्य की छाया के आधार पर निकाला हुआ समय अंश । ग्रहों की स्थिति निश्चित करनेवाला वह वृत्त जिसका केंद्र भूकेंद्र पर होता है और जो विषुवत रेखा पर लंब होता है ।

नतर(पु)†—क्रि० वि० दे० 'नतरु' ।

नतरु(पु)—क्रि वि० नहीं तो, अन्यथा । ⊙क = क्रि० वि० दे० 'नतरु' ।

नति—स्त्री० [सं०] झुकाव, उतार । नमस्कार, प्रणाम । विनय, विनती । नम्रता, खाकसारी ।

नतिनी†—स्त्री० लड़की की लड़की, नातिन ।

नतीजा—पु० [फा०] परिणाम, फल ।

नतु—क्रि० वि० [सं०] नही तो । ⊙का = अव्य० नही तो क्या ?

नतैत†—पुं० सबधी, रिश्तेदार । नतैती—स्त्री० रिश्तेदारी, सबध ।

नत्थ†—स्त्री० दे० 'नथ' ।

नत्थी—स्त्री० कागज या कपड़े आदि के कई टुकड़ों को एक साथ मिलाकर सबको एक ही मे बाँधना या फँसाना । इस प्रकार नाथे हुए कई कागज आदि, मिसिल (अँ० फाइल) ।

नथ—स्त्री० बाली की तरह का नाक का एक गहना ।

नथना—अक० किसी के साथ नत्थी होना,

एक सूत्र में बँधना। छिदना, छेदा जाना।
पुं० नाक का अगला भाग। नाक का छेद। मु० ~फुलाना = क्रोध करना।

नथनी—स्त्री० नाक मे पहनने की छोटी नथ। बुलाक।

नथिया, नथुनी†—स्त्री० दे० 'नथ'।

नद—पुं० [सं०] बडी नदी अथवा ऐसी नदी जिसका नाम पुलिंगवाची हो। जैसे, सिंधु, ब्रह्मपुत्र, सोन आदि। ⊙**राज** = पुं० समुद्र।

नदना(पु)†—अक० पशुओ का शब्द करना, रँभाना। बजना, शब्द करना।

नदान(पु)†—वि० दे० 'नादान'।

नदारद—वि० [फा०] जो मौजूद न हो, गायब। समाप्त, खतम।

नदिया(पु)†—स्त्री० दे० 'नदी'।

नदी—स्त्री० [सं०] जल का वह प्राकृतिक प्रवाह जो किसी पर्वत, स्रोत या जलाशय आदि से निकलकर किसी निश्चित मार्ग से बहता हुआ प्रायः बारहो महीने चलता रहता हो, दरिया। किसी तरल पदार्थ का बडा प्रवाह। ⊙**गर्भ** = पुं० वह गड्ढा या तल जिसमे से होकर नदी का पानी बहता है। मु० ~नाव संयोग = ऐसी भेंट मुलाकात जो कभी इत्तिफाक से हो जाय। **नदीश**—पु० समुद्र।

नद्दना(पु)†—अक० दे० 'नंदना'

नद्दी(पु)†—स्त्री० दे० 'नदी'।

नद्ध—वि० [सं०] बँधा हुआ, बद्ध।

नधना—अक० बैल, घोडे आदि का उस वस्तु के साथ जुड़ना या बँधना जिसे उन्हे खीचकर ले जाना हो, जुतना। जुडना, संबद्ध होना। काम का ठनना।

ननँद—स्त्री० दे० 'ननद'

ननकारना(पु)†—अक० अस्वीकार करना, मंजूर न करना।

ननद—स्त्री० पति की बहिन। **ननदोई**—पुं० ननद का पति।

ननसार—स्त्री० दे० 'ननिहाल'।

ननिआउर†—पु० दे० 'ननिहाल'।

ननिहाल—पुं० नाना का घर, ननसार।

नन्हा—वि० छोटा। ⊙**ई**(पु) = स्त्री छोटापन, छोटाई। अप्रतिष्ठा, हेठी। **नन्हैया**(पु)†—वि० दे० 'नन्हा'।

नपाई—स्त्री० नापने का काम, भाव या मजदूरी।

नपाक(पु)†—वि० अपवित्र।

नपुंसक—पुं० [सं०] 'काम' की उत्तेजना या इच्छा से हीन पुरुष, नामर्द। क्लीव, हिजडा। ⊙**त्व** = पुं० नामर्दी, क्लीवत्व। कायरता।

नपुआ†—पुं० वह बरतन जिसमे कोई चीज नापी जाय।

नपुत्री(पु)†—वि० दे० 'निपुत्री'।

नप्ता—स्त्री० [सं०] नाती या पोता।

नफर—पुं० [फा०] दास, सेवक। व्यक्ति (जैसे, दस नफर मजदूर)। **नफरी**—स्त्री० [फा०] एक मजदूर की एक दिन की मजदूरी या काम। मजदूरी का दिन।

नफरत—स्त्री० [अ०] घिन, घृणा।

नफा—पु० [अ०] लाभ, फायदा।

नफासत—स्त्री० [अ०] नफीस होने का भाव, उम्दापन।

नफीरी—स्त्री० [फा०] तुरही।

नफीस—वि० [अ०] बढिया। स्वच्छ। सुंदर।

नबी—पुं० [अ०] ईश्वर का दूत, पैगंबर।

नबेड़ना—सक० निपटाना (झगडा आदि), समाप्त करना। चुनना। दे० 'निबेरना'।

नबेड़ा—पु० फैसला, निपटारा।

नब्ज—स्त्री० [अ०] हाथ की वह रक्तवहा नाली जिसकी चाल से रोग की पहचान की जाती है, नाड़ी। मु० ~चलना = नाडी मे गति होना। ~छूटना = नाडी की गति या प्राण न रह जाना।

नब्बी(पु)—स्त्री० नई। 'सुर सुनत अरब्बी अति धुनि नब्बी।' (प्रताप० ८३)।

नब्बे—वि० जो गिनती मे ८० और १० हो। पुं० ८० और १० के जोड की संख्या, ९०।

नभ—पुं० पंचतत्वो मे से एक, आकाश। खाली जगह। शून्य, सिफर। सावन या भादो का महीना। आश्रय, आधार। पास, निकट। शिव। जल। मेघ, बादल। वर्षा। ⊙**गामी**(पु) = पुं० चंद्रमा। पक्षी। देवता। सूर्य। तारा। ⊙**चर**(पु) = पुं०

दे० 'नभश्चर'। ⊙धुज(पु) = पुं० मेघ। ⊙स्थल = पुं० आकाश। ⊙स्थित = वि० आकाश मे स्थित।

नभश्चर—पुं० [सं०] पक्षी। बादल। हवा। देवता, गधर्व और ग्रह आदि। वि० आकाश मे चलनेवाला।

नभोमणि—पुं० [सं०] सूर्य।

नभोवाणी—स्त्री० [सं०] दे० 'रेडियो'।

नम—वि० [फा०] भीगा हुआ, गीला। पुं० [सं० नमस्] नमस्कार। त्याग। अन्न। वज्र। यज्ञ।

नमक—पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ जिसका व्यवहार भोज्य पदार्थों मे एक प्रकार का स्वाद उत्पन्न करने के लिये थोडे मान मे होता है, लवण। लावण्य, सलोनापन। ⊙ख्वार = वि० नमक खानेवाला, पालित होनेवाला। ⊙सार = पु० वह स्थान जहाँ नमक निकलता या बनता हो। ⊙हराम = पुं० [फा० + अ०] वह जो किसी का दिया हुआ अन्न खाकर उसी का द्रोह करे, कृतघ्न। ⊙हलाल = पुं० [फा० + अ०] वह जो अपने स्वामी या अन्नदाता का कार्य धर्मपूर्वक करे, स्वामिभक्त। मु०~अदा करना = अपने पालक या स्वामी के उपकार का बदला चुकाना। ~खाना = (किसी के द्वारा) पालित होना, (किसी का) दिया खाना। ~फूटकर निकलना = नमकहरामी की सजा मिलना, कृतघ्नता का दड मिलना। ~मिर्च मिलाना या लगाना = किसी बात को बहुत बढा चढाकर कहना। कटे पर ~छिडकना = किसी दुखी को और भी दुख देना। नमकीन—वि० जिसमे नमक का सा स्वाद हो। जिसमें नमक पड़ा हो। सुदर, खूबसूरत। पु० वह पकवान आदि जिसमे नमक पडा हो।

नमदा—पुं० [फा०] जमाया हुआ ऊनी कबल या कपडा।

नमन—पुं० [सं०] प्रणाम, नमस्कार। झुकाव। नमना(पु)—अक० झुकना। प्रणाम करना, नमस्कार करना। नमनीय—वि० [सं०] जिसे नमस्कार किया जाय, आदरणीय, पूजनीय। जो झुक सके। जो झुकाया जा सके।

नमस्कार—पुं० [सं०] झुककर अभिवादन करना, प्रणाम। ⊙ना(पु) = सक० नमस्कार करना।

नमस्ते—[सं० नम + ते = आपको] संस्कृत का एक वाक्य जिसका अर्थ है 'आपको नमस्कार है'।

नमाज—स्त्री०[फा०]ईश्वरप्रार्थना। ⊙गाह = स्त्री० [फा०] मस्जिद में वह स्थान जहाँ नमाज पढी जाती है। नमाजी—पुं० [फा०] नमाज पढनेवाला। वह वस्त्र जिस पर खड़े होकर नमाज पढी जाती है।

नमाना(पु)†—सक० झुकाना। दबाकर अपने अधीन करना।

नमित—वि० [सं०] झुका हुआ।

नमिस—स्त्री० विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ दूध का फेन।

नमी—स्त्री० [फा०] गीलापन, आर्द्रता।

नमूना—पुं० [फा०] अधिक पदार्थ मे से निकाला हुआ वह थोडा अंश जिसका उपयोग उस मूल पदार्थ का गुण और स्वरूप आदि का ज्ञान कराने के लिये होता होता है, बानगी। वह जिसके सदृश दूसरी वस्तु के स्वरूप, गुण आदि का ज्ञान हो (जैसे, नमूने का थान, टोपी आदि) ढाँचा, खाका।

नम्र—वि० [सं०] विनीत, जिसमे नम्रता हो। झुका हुआ। ⊙ता = स्त्री० नम्र होने का भाव, विनय।

नय(पु)—स्त्री० नदी। पु० [सं०] नीति। नम्रता। ⊙पाल = वि० [सं०] नीति का पालन करनेवाला, नीति का रक्षक। ⊙शील = वि० [सं०] नीतिज्ञ। विनीत।

नयकारी(पु)—पु० नाचनेवालो का मुखिया। नाचनेवाला, नचनिया।

नयन—पु० [सं०] चक्षु, नेत्र। आँख। ले जाना। ⊙गोचर = वि० आँखो से दिखाई देनेवाला, समक्ष। ⊙पट = पु० आँख की पलक। ⊙वंत = वि० [हि०] आँखवाला, देखने की शक्ति रखनेवाला।

नयना†—पुं० आँख, नेत्र। स्त्री० [सं०] (के० समा० मे) आँखवाली (जैसे, कमल-

नयना)। ⓟ+अक० नम्र होना। झुकना, लटकना। ⓟसक० घटाना, नीचा करना।

नयनागर—वि० सं० नीतिज्ञ।

नयनी—स्त्री० [सं०] आँख की पुतली। वि० स्त्री० (के० समा० में) आँखवाली (जैसे, मृगनयनी)।

नयन—पुं० मक्खन। एक प्रकार की बूटीदार मलमल।

नयरⓟ—पु० नगर।

नया—वि० जो पुराना न हो, जो वर्तमान या उसके बहुत निकट बना या उत्पन्न हुआ हो, नवीन। जो थोड़े समय से मालूम हुआ हो या सामने आया हो। जो पहले था उसके स्थान पर आनेवाला दूसरा। जिससे पहले किसी ने काम न लिया हो। जिसका आरंभ बहुत हाल में हुआ हो। नौसिखुआ, अनुभवरहित। ⊙नवेला = नवयुवक, नौजवान। ⊙पन = पु० नया होने का भाव, नवीनता। मु०~करना = कोई नया फल या अनाज मौसिम में पहले पहल खाना। ~पुराना करना = पुराना हिसाब साफ करके नया हिसाब चलाना (महाजनी)। पुराने स्थान पर नया करना या रखना।

नर—पुं० पानी का नल। पु० [सं०] पुरुष, मर्द। एक देवयोनि। दे० 'नर नारायण'। श्रेष्ठ या बड़ा। दोहे का एक भेद जिसमें १५ गुरु और १८ लघु होते हैं। छप्पय का एक भेद जिसमें १० गुरु और १३ लघु होते हैं। विष्णु। शिव। अर्जुन। वह खूँटी जो छाया जानने के लिये खड़ बल गाड़ी जाती है। सेवक। वि० जो (प्राणी) पुरुषजाति का हो, मादा का उलटा। ⊙कंत ⓟ = पु० [हिं०] राजा। ⊙केसरी = पु० विष्णु का हिरण्य कश्यप को मारनेवाला नर और सिंह का मिलाजुला रूप, नृसिंह। मनुष्यों में श्रेष्ठ। ⊙केहरी = पु० [हिं०] दे० 'नरकेसरी'। ⊙तात = पुं० राजा। ⊙नारा = पु० हिजड़ा, नपुंसक। डरपोक, कायर। ⊙देव = पु० राजा, नृपति। ब्राह्मण। ⊙नाथ = पु० राजा। ⊙नायक = पु० राजा, नृप। ⊙नारायण = पु० नर और नारायण नाम के दो ऋषि जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं। अर्जुन और कृष्ण। ⊙नारि = स्त्री० नर (अर्जुन) की स्त्री, द्रौपदी। ⊙नाहⓟ = पु० [हिं०] राजा। ⊙नाहर = पु० [हिं०] नृसिंह भगवान्। ⊙पति = पु० राजा। ⊙पाल = पु० राजा। ⊙पिशाच = पु० मनुष्य होकर भी पिशाचों का सा काम करनेवाला व्यक्ति, अत्यंत क्रूर मनुष्य। ⊙भक्षी = पु० मनुष्यों को खानेवाला राक्षस। मेध = पु० एक प्रकार का प्राचीन यज्ञ जिसमें मनुष्य के मांस की आहुति दी जाती थी। ⊙लोक = पुं० मर्त्यलोक, भूलोक, मनुष्यलोक। ⊙वाह = पुं० वह सवारी जिसे मनुष्य उठाकर ले चलते हों (जैसे, पालकी आदि)। ⊙वाहन = पु० दे० 'नरवाह'। कुबेर। ⊙सिंघा = पुं० [हिं०] तुरही की तरह का एक प्रकार का नल के आकार का ताँबे का बड़ा बाजा जो फूँककर बजाया जाता है। ⊙सिंह = पुं० दे० 'नृसिंह'। ⊙हरि = पु० नृसिंह। एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ और अंत में एक नगण और एक गुरु होता है। ⊙हरी = पु० [हिं०] नृसिंह भगवान् जो विष्णु के दस अवतारों में से चौथे अवतार हैं। **नरेंद्र**—पु० राजा, नृप। वह जो साँप बिच्छू आदि के काटने का इलाज करे। २८ मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं। कभी कभी अंत में एक लघु और एक गुरु अथवा दोनों लघु भी होते हैं। इसे ललितपद और दोवै छंद भी कहते हैं। २१ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक भगण, एक रगण, दो नगण, दो जगण और एक यगण होता है तथा १३वें वर्ण पर यति और २१वें पर विराम रहता है। **नरेश**—पुं० राजा, नृप। **नरोत्तम**—पुं० ईश्वर। उत्तम मनुष्य। नरों में श्रेष्ठ।

नरईⓟ—स्त्री० गेहूँ की बाल का डंठल। एक तरह की घास।

नरक—पुं० [सं०] पुराणों और धर्मशास्त्रों आदि के अनुसार वह स्थान जहाँ पापी

मनुष्यों की आत्मा पाप का फल भोगने के लिये भेजी जाती है, जहन्नुम। बहुत ही गंदा स्थान जहाँ बहुत अधिक कष्ट हो। नरकासुर नामक एक प्रतापी असुर जिसने त्रेता में इंद्र को जीतकर अतुल ऐश्वर्य भोगा था। भोगा था। ⊙चतुर्दशी = स्त्री० कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी जिस दिन घर का कूड़ा कतवार निकालकर फेंका जाता है।

नरकचूर—पुं० दे० 'कचूर'।

नरकट—पुं० बेंत की तरह का पोले डंठल का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके डंठल कलम, निगालियाँ, दौरियाँ तथा चटाइयाँ आदि बनाने के काम में आते हैं।

नरकी—वि० दे० 'नारकी'।

नरगिस—स्त्री० [फा०] प्याज की तरह का एक पौधा जिसमें कटोरी के आकार का सफेद रंग का फूल लगता है, जिसमें गोल काला धब्बा होता है। इसके फूल का इत्र बहुत अच्छा बनता है।

नरजा†—पुं० छोटा तराजू। नरजी†—पुं० तौलनेवाला। स्त्री० छोटी तराजू।

नरतक(पु)—पुं० दे० 'नर्तकी'।

नरद—स्त्री० चौसर खेलने की गोटी। ध्वनि, नाद।

नरदन—स्त्री० नाद करना, गरजना।

नरदमा, नरदा—पुं० मैले पानी का नल।

नरबदा—स्त्री० दे० 'नर्मदा'।

नरम—वि० मुलायम, कोमल। लचकदार। तेज, मंदा। धीमा, मद्धिम। सुस्त, आलसी। जल्दी पचनेवाला। जिसमें पौरुष का अभाव या कमी हो।

नरमा—स्त्री० एक प्रकार की कपास, राम कपास। सेमर की रुई। कान के नीचे का भाग। एक प्रकार का रंगीन कपड़ा। ⊙ई(पु)† = पुं० स्त्री० दे० 'नरमी'।

नरमाना—सक० नरम करना। शांत करना, धीमा करना। अक० नरम या मुलायम होना। शांत होना, ठंढा होना।

नरमी—स्त्री० नरम होने का भाव, मुलायमियत।

नरदह—पुं० नरपति, राजा।

नरयाई—स्त्री० दे० 'नरई'।

नरसल—पुं० दे० 'नरकट'।

नरसों—क्रि० वि० दे० 'अतरसों'।

नराच—पुं० [सं०] तीर, बाण। पंच चामर या नागराज नामक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अंत्य गुरु होता है अर्थात् क्रम से आठ लघु गुरु वर्ण होते हैं। नराचिका—स्त्री० [सं०] आठ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक तगण, एक रगण, एक लघु और अंत्य गुरु होता है।

नराज—वि० दे० 'नाराज'।

नराजना(पु)—सक० नाराज करना। अक० नाराज होना।

नराट(पु)†—पुं० राजा।

नराधिप—पुं० [सं०] राजा।

नरिंद(पु)†—पुं० राजा। नरेंद्र।

नरियर†—पुं० दे० 'नारियल'।

नरिया†—पुं० एक प्रकार का अर्धवृत्ताकार मिट्टी का लंबा खपड़ा।

नरियाना†—अक० जोर से चिल्लाना।

नरी—स्त्री० [फा०] सिझाया हुआ चमड़ा, मुलायम चमड़ा। ढरकी के भीतर की नली जिसपर तार लपेटा रहता है, नार (बुनाई)। एक घास। स्त्री० [हिं०] नली, नाली। ['नर' का स्त्री०] स्त्री, नारी।

नरेली—स्त्री० नारियल की खोपड़ी। नारियल की खोपड़ी से बना हुआ हुक्का।

नर्क(पु)—पुं० दे० 'नरक'।

नर्तना(पु)—अक० नाचना।

नर्तक—पुं० [सं०] नाचनेवाला, नट। नरकट। चारण, बंदीजन। एक जाति। महादेव। नर्तकी—स्त्री० [सं०] नाचनेवाली स्त्री।

नर्तन—पुं० [सं०] नृत्य, नाच।

नर्तित—वि० [सं०] नचाया हुआ, नचाया जाता हुआ।

नर्द—स्त्री० [फा०] चौसर की गोटी।

नर्दन—स्त्री० [सं०] भीषण ध्वनि।

नर्म—वि० दे० 'नरम'। पुं० [सं०] हँसी, ठट्ठा, दिल्लगी। हँसी ठट्ठा करनेवाला सखा। ⊙द = पुं० मसखरा, भाँड़। ⊙द्युति = स्त्री० प्रतिमुख संधि के १३ अंगों में से एक (नाट्य)। ⊙सचिव = पुं० विदूषक।

नर्मदा—स्त्री० [सं०] मध्यप्रदेश की एक नदी जो विंध्य पर्वतमाला की अमरकटक नामक चोटी से निकलकर भडौंच के पास खभात की खाडी में गिरती है। नर्मदेश्वर—पु० नर्मदा नदी के जल मे लुढ़कने से बने हुए चिकने अडाकार पत्थर के टुकडे जो शिवलिंग मानकर पूजे जाते हैं।

नल—पुं० [सं०] मृणाल। निषध देश के चद्रवशी राजा वीरसेन के पुत्र। विदर्भ देश के राजा भीम की कन्या दमयती के साथ इनका विवाह हुआ था। ये द्यूत-विद्या, अश्वसचालन, पाकशास्त्र और गणितशास्त्र मे अपने समय मे अद्वितीय थे। राम की सेना का एक बदर जो विश्वकर्मा का पुत्र और नील का भाई था। इन दोनो ने राम और उनकी वानर सेना के लका पहुँचने के लिये समुद्र पर पुल बाँधा था। नरकट। पद्म, कमल। धातु आदि का बना हुआ पोला गोल लबा खड। वह मार्ग जिसमे से होकर गदगी और मैला आदि बहता हो, पनाला। पेड के अदर वह नाली जिसमे से होकर पेशाब नीचे उतरता है, नली।

नला—पु० पेट के अदर की वह नाली जिसमे से होकर पेशाब नीचे उतरता है। हाथ या पैर की नली के आकार की लबी हड्डी।

नलिका—स्त्री० [सं०] नल के आकार की कोई वस्तु, नली। मूँग के आकार का एक अन्न, दाल। तरकश।

नलिन—पु० [सं०] कमल। जल। सारस। नीली कुमुदिनी। नलिनी—स्त्री० कमलिनी, कमल। वह देश जहाँ कमल अधिकता से होते हो। पुराणानुसार गगा की एक धारा का नाम। नलिका नामक गधद्रव्य। नली एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे पाँच सगण होते हैं, मनहरण, भ्रमरावली। ⊙रुह=पु० मृणाल, कमल की नाल। ब्रह्मा।

नली—स्त्री० छोटा या पतला नल। नल के आकार की भीतर से पोली हड्डी जिसमे मज्जा होती है। घुटने से नीचे का भाग, पैर की पिंडली। बदूक की नली जिसमे होकर गोली गुजरती है।

नलुआ—पुं० छोटा नल या चोगा।

नव—वि० [सं०] जो पुराना न हो, नया। नौ, आठ और एक। ९। ⊙क=पुं० एक ही तरह के नौ का समूह। ⊙कुमारी=स्त्री० नवरात्र मे पूजनीय नौ कुमारियाँ जिनमे नौ देवियो की कल्पना की जाती है। ⊙खंड=पु० पृथ्वी के नौ खड—भरत, किंपुरुष, भद्र, हरि, हिरण्य, केतुमाल, इलावृत्त, कुश और रम्य। ⊙ग्रह=पु० (फलित ज्योतिष) सूर्य, चद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नौ ग्रह। ⊙जात=वि० जो अभी पैदा हुआ हो। ⊙दुर्गा=स्त्री० पुराणानुसार नौ दुर्गाएँ जिनकी नवरात्र मे नौ दिनो तक क्रमश पूजा होती है, यथा शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चद्रघटा, कूष्माडा, स्कदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री ⊙नीत=पु० मक्खन। ⊙पदी=स्त्री० चौपई या जयकरी छद जिसमे १५ मात्राएँ होती हैं और अत मे गुरु लघु होता है। ⊙म=वि० जो गिनती मे नौ के स्थान पर हो, नवाँ। ⊙मल्लिका=स्त्री० चमेली। नगण, जगण, भगण और यगण का एक वर्ण वृत्त। नेवारी का फूल। ⊙युवक=पुं० नौजवान, तरुण। ⊙युवा=पुं० दे० 'नवयुवक'। ⊙यौवना=स्त्री० वह स्त्री जिसके यौवन का आरभ हो। ⊙रंग=वि० [हिं०] सुदर, रूपवान्। नए ढग का, नवेला। (पु औरगजेब बादशाह। ⊙रंगी=वि० [हिं०] नित्य नए आनद करनेवाला। हँसमुख, खुशमिजाज। ⊙रत्न=पुं० मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न। राजा विक्रमादित्य की प्रसिद्ध सभा के नौ पडित—धन्वतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि। गले मे पहनने का नौ रत्नो का हार। बगाल के राजा लक्ष्मण सेन की सभा के नौ प्रसिद्ध विद्वान्। ⊙रस=पुं० काव्य के शृगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शात नामक

नौ रस। ⊙रात्र = पु० चैत्र और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमे हिंदू लोग नवदुर्गा का व्रत, घट-स्थापन तथा पूजन आदि करते हैं। ⊙शिक्षित = पु० वह जिसने अभी हाल मे कुछ पढ़ा या सीखा हो, नौसिखुआ। वह जिसे आधुनिक ढंग की शिक्षा मिली हो। ⊙सत(पु) = पु० [हिं०] नव और सात, सोलह श्रृंगार। वि० सोलह, षोडश। ⊙सप्त = पु० नौ और सात, सोलह। सोलह श्रृंगार। ⊙ससि(पु) = पु० [हिं०] द्वितीया या दूज का चाँद, नया चाँद। ⊙सात (पु) = पु० वि० हिं० दे० 'नवसत'।

नवागत—पु० नया आया हुआ।

नवान्न—पु० किसी फसल का नया अनाज। एक प्रकार का श्राद्ध। नवाह—पु० नव दिनों का क्रम या समूह। रामायण आदि का वह पाठ जो नौ दिन में समाप्त हो।

नवोढा—स्त्री० नव विवाहिता स्त्री। नव-यौवना, युवती स्त्री। साहित्य मे मुग्धा के अंतर्गत ज्ञातयौवना नायिका का एक भेद। वह नायिका जो लज्जा और भय के कारण नायक के पास न जाना चाहती हो।

नवना(पु)—अक० झुकना। नम्र होना।

नवका†(पु)—स्त्री० नाव।

नवछावरि(पु)—स्त्री० दे० 'न्यौछावर'।

नवतन(पु)—वि० नया।

नवधाभक्ति—स्त्री० [सं०] नौ प्रकार की भक्ति (श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन)।

नवन(पु)—पु० दे० 'नमन'।

नवनि(पु)—स्त्री० झुकने की क्रिया या भाव। नम्रता, दीनता।

नवमी—स्त्री० [सं०] चांद्र मास के किसी पक्ष की नवीं तिथि।

नवल—वि० [सं०] नवीन, नया। सुंदर, अनोखा, अद्वितीय। जवान, युवा। उज्वल। ⊙अनंगा = स्त्री० मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक (केशव)। ⊙किशोर = पु० श्रीकृष्णचंद्र। ⊙वधू = स्त्री० मुग्धा नायिका के चार भेदो मे से एक (केशव)।

नवला—स्त्री० नवयुवती।

नवाई—स्त्री० विनीत होने का भाव। †(पु) वि० नया, नवीन।

नवाज—वि० [फा०] कृपा करनेवाला। ⊙ना(पु)† = सक० कृपा करना, दया दिखलाना।

नवाजिश—स्त्री० [फा०] कृपा, दया।

नवाड़ा—पु० एक प्रकार की छोटी नाव। नाव को बीच धारा में ले जाकर चक्कर देने की क्रीड़ा, नावर।

नवाना—सक० [अक० नव] झुकाना। विनीत करना।

नवाब—पु० मुगल सम्राटों की ओर से प्रति-निधि के रूप में नियुक्त किसी रियासत या राज्य का मुसलमान शासक। छोटे-मोटे मुसलमानी राज्यो के मालिको के नाम के साथ लगाई जानेवाली उपाधि। राजा की उपाधि के समान एक उपाधि जो भारतीय मुसलमान अमीरों को अँगरेजी सरकार की ओर से मिलती थी। शान और शौकत या विलासिता में रहनेवाला व्यक्ति। वि० बहुत शानशौकत और अमीरी ढंग से रहने तथा खूब खर्च करनेवाला। नवाबी—नवाब का पद। नवाब का काम। नवाब होनेकी दशा। नवाबों का राजत्व-काल। नवाबों की सी हुकूमत। बहुत अधिक अमीरी या शानशौकत। वि० नवाबों का सा।

नवासा—पु० [फा०] बेटी का बेटा या उसको प्राप्त संपत्ति। अस्सी और नौ की संख्या; ८९।

नवीन—वि० [सं०] हाल का, ताजा, नया। विचित्र, अपूर्व। नवयुवक, जवान।

नवीस—पु० [फा०] लेखक, कातिब।

नवीसी—स्त्री० [फा०] लिखने की क्रिया या भाव, लिखाई।

नवेद—पु० निमंत्रणपत्र।

नवेला—वि० नवीन, नया। तरुण, जवान।

नव्य—वि० [सं०] नया, नूतन।

नशना(पु)—अक० नष्ट होना।

नशा—पु० [फा० या अ० ?] वह अवस्था जो शराब, अफीम या गांजा आदि मादक द्रव्य खाने या पीने से होती है। वह चीज जिससे नशा हो। दुर्व्यसन, नशीली वस्तु

के सेवन का दुर्व्यसन। धन, विद्या प्रभुत्व या रूप आदि का घमड, अभिमान। ⊙खोर = पु० [फा०] वह जो नशे का सेवन करता हो, नशेबाज। ⊙पानी = पु० [हिं०] मादक द्रव्य और उसकी सब सामग्री। नशेबाज—पु० वह जो बराबर किसी प्रकार के नशे का सेवन करता हो। मु०~उतरना = घमड दूर करना। ~किरकिरा हो जाना = किसी अप्रिय बात के होने के कारण नशे का मजा बीच मे बिगड़ जाना। (आंखो मे) ~छाना = नशा चढ़ना, मस्ती चढ़ना। ~जमना = अच्छी तरह नशा होना। ~हिरन होना = किसी असभावित घटना आदि के कारण नशे का बिलकुल उतर जाना।

नशाना (पु)—सक० नष्ट करना।

नशावन (पु)†—वि० नाश करनेवाला।

नशीन—वि० [फा०] बैठनेवाला (जैसे, तख्त-नशीन, गद्दीनशीन)। **नशीनी**—स्त्री० [फा०] बैठने की क्रिया या भाव।

नशीला—वि० [फा०] नशा उत्पन्न करने-वाला। जिसपर नशे का प्रभाव हो। मु०~नशीली आंखें = वे आंखें जिनमे मस्ती छाई हो।

नशोहर†—वि० नाशक।

नश्तर—पुं० [फा०] फोड़ा आदि चीरने का एक बहुत तेज छोटा चाकू या ऐसे हथि-यार से फोड़ा आदि चीरने का कार्य।

नश्वर—वि० [सं०] जो नष्ट हो जाय या जो नष्ट हो जाने के योग्य हो।

नष (पु)—पुं० दे० 'नख'।

नषत (पु)—पुं० दे० 'नक्षत्र'।

नष्ट—वि० [सं०] जिसका नाश हो गया हो, जो बरबाद हो गया हो। जो दिखाई न दे। अधम, नीच। निष्फल, व्यर्थ। ⊙ता = स्त्री० नष्ट होने का भाव। वाहियातपन, दुराचारिता। ⊙बुद्धि = वि० मूर्ख, मूढ। ⊙भ्रष्ट = वि० जो बिलकुल टूट-फूट या नष्ट हो गया हो।

नष्टा—स्त्री० [सं०] वेश्या, रडी। व्यभि-चारिणी, कुलटा।

नसंक (पु)†—वि० निर्भय।

नस—स्त्री० शरीर के भीतर ततुओ का वह बध, जाल या लच्छा जो मासपेशियो के छोर पर उन्हें दूसरी पेशियो या अस्थि आदि कडे स्थानो से जोड़ता है (जैसे, घोड़ानस)। कोई शरीरतंतु या रक्तवा-हिनी नली (साधारण बोलचाल)। ततु या ततुजाल जो शरीर के किसी अग के सवेदन को मस्तिष्क या मेरुदड या स्नायु-केंद्र तक पहुँचाते हैं। वे पतले रेशे या तंतु जो पत्तो मे बीच बीच मे होते हैं। मु०~चढ़ना या ~पर ~चढ़ना = खिचाव, दबाव या झटके आदि के कारण शरीर मे किसी स्थान की नस का अपने स्थान से इधर उधर हो जाना या बल खा जाना। ~में = सारे शरीर मे, सर्वांग मे। ~फड़क उठना = बहुत अधिक प्रसन्नता होना।

नसतरंग—पु० शहनाई के आकार का पीतल का एक बाजा जिसको गले की घंटी के पास की नसो पर रखकर गले से स्वर भरकर बजाते हैं।

नसतालीक—पुं० [अ०] फारसी या अरबी लिपि में लिखने का वह ढग जिसमे अक्षर खूब साफ और सुदर होते हैं, घसीट या शिकस्त का उलटा। वह जिसका रंग ढंग बहुत अच्छा हो।

नसना (पु)†—अक० नष्ट होना। बिगड़ जाना। भागना, दौड़ना।

नसल—स्त्री० [अ०] वंश, जाति।

नसवार—स्त्री० सूंघने के लिये तंबाकू के पीसे हुए पत्ते, सुंघनी।

नसाना (पु)†—अक० नष्ट हो जाना। बिगड़ जाना।

नसावना‡—अक० दे० 'नसा'।

नसीत (पु)—स्त्री० दे० 'नसीहत'।

नसीनी†—स्त्री० सीढी।

नसीब—पु० [अ०] भाग्य, प्रारब्ध। ⊙वर = वि० 'भाग्यवान्'। मु०~होना = प्राप्त होना, मिलना। **नसीबा**†—पुं० दे० 'नसीब'।

नसीहत—स्त्री० [अ०] उपदेश, सीख। अच्छी संमति।

नसेनी—स्त्री० सीढी, निःश्रेणी।

नस्य—पुं० [सं०] नास, सुंघनी। सूंघने की दवा या चूर्ण आदि।

नस्वर(पु)†—वि० दे० 'नश्वर'।

नहँ‡—पु० दे० 'नाखून'।

नहछू—पु० विवाह की एक रस्म जिसमें वर की हजामत बनती है, नाखुन काटे जाते हैं और मेहँदी आदि लगाई जाती है।

नहन—पु० पुरवट खीचने की मोटी रस्सी, नार।

नहना—सक० नाधना, जोतना।

नहर—स्त्री० [फा०] यातायात या सिंचाई आदि के लिये बनाया गया जलमार्ग।

नहरनी—स्त्री० हज्जामो का एक औजार जिससे नाखून काटे जाते हैं।

नहरुआ—पु०एक रोग जिसमें घाव में से डोरी की तरह का कीडा धीरे धीरे निकलता है।

नहला—पुं० ताश का वह पत्ता जिसपर नौ बूटियाँ होती हैं।

नहलाना—सक० [अक० नहाना] दूसरे को स्नान कराना, नहवाना।

नहलाई—स्त्री० नहाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

नहवाना—सक० दे० 'नहलाना'।

नहसुत—नख की रेखा, नाखून का निशान।

नहान—पुं० नहाने की क्रिया। स्नान का पर्व।

नहाना—अक० शरीर को स्वच्छ करने या उसकी शिथिलता दूर करने के लिये उसे जल से धोना, स्नान करना। किसी तरल पदार्थ से सारे शरीर का आप्लुत हो जाना, बिलकुल तर हो जाना। रजोधर्म से निवृत्त होने पर स्त्री का स्नान करना। मु०—दूधो~पूतो फलना = धन और परिवार से पूर्ण होना। (आशीर्वाद)।

नहार—वि० [फा०] जिसने सवेरे से कुछ खाया न हो, बासीमुँह। नहारी—स्त्री० जलपान।

नहारू—पुं० दे० 'नाहरू'।

नहिं(पु)—अव्य० दे० 'नही'।

नहीं—अव्य० एक अव्यय जिसका व्यवहार अस्वीकृति प्रकट करने के लिये होता है। मु०~तो = उस दशा में जब कि यह बात न हो। ~सही = यदि ऐसा न हो तो कोई परवा या हानि नही।

नहूसत—स्त्री० [अ०] उदासीनता, खिन्नता, मनहूसी। अशुभ लक्षण।

नाउँ—पु० दे० 'नाम'।

नागा—वि० दे० 'नंगा'। पु० एक प्रकार के साधु जो नंगे ही रहते है, नागा।

नांघना(पु)†—सक० लाँघना, इस पार से उस पार उछलकर जाना, डाँकना।

नांठना(पु)—अक० नष्ट होना।

नांद—स्त्री० मिट्टी का वह बडा और चौडा बरतन जिसमे पशुओ को चारा पानी दिया जाता है, हौदी।

नांदना(पु)—अक० शब्द करना, शोर करना। छीकना। आनंदित होना। दीपक का बुझने के पहले भभकना।

नांदी—स्त्री० [सं०] अभ्युदय, आनंद। देव-स्तुति। वह आशीर्वादात्मक श्लोक या पद्य जिसका पाठ सूत्रधार नाटक आरंभ करने के पहले करता है, मंगलाचरण (नाट्य-शास्त्र)। ⊙मुख = पु० एक आभ्युदयिक श्राद्ध जो विवाह आदि मंगल अवसरो पर किया जाता है, वृद्धि श्राद्ध। अभ्युदय के लिये किया जानेवाला पैत्रिक श्राद्ध। ⊙मुखी = स्त्री० दो नगण, दो तगण और दो गुरु का एक वर्णवृत्त।

नांय(पु)‡—पु०दे०'नाम'। अव्य० दे० 'नहीं'।

नांव—पुं० दे० 'नाम'।

नांह(पु)—पुं० स्वामी।

ना—अव्य० [सं०] नही, न।

नाइक(पु)—पु० दे० 'नायक'।

नाइत्तिफाकी—स्त्री० [फा०] मेल का अभाव, फूट, मतभेद।

नाइन—स्त्री० बाल बनानेवाली, नाई जाति की स्त्री। नाई की स्त्री।

नाइब—पुं० दे० 'नायब'।

नाईं—स्त्री० समान दशा। वि० स्त्री० समान, सदृश।

नाई—पुं०बाल बनानेवाली जाति। इस जाति का पुरुष, हज्जाम। वि० दे० 'नाईं'

नाउँ(पु)†—पु० दे० 'नाम'।

नाउ(पु)†—स्त्री० दे० 'नाव'।

नाउन†—स्त्री० दे० 'नाइन'।

नाउम्मेद—वि० [फा०] निराश, हताश। नाउम्मेदी—स्त्री० निराशा।

नाऊ†—पु० दे० 'नाई'।

नाकंद—वि० बिना निकाला हुआ (घोडा आदि), अल्हड, अशिक्षित।

नाक—पुं० मगर की जाति का एक प्रसिद्ध जलजंतु। स्वर्ग। अंतरिक्ष। आकाश। स्त्री० ओठों और आँखो के बीच की सूँघने और साँस लेने की इद्रिय, नासिका। मल जो नाक से निकलता है, रेंट। प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु। प्रतिष्ठा, इज्जत। ⊙**घिसनी** = विनती और गिडगिडाहट। ⊙**बुद्धि** = वि० क्षुद्र बुद्धि या ओछी समझ का। मु०~**कटना** = इज्जत जाना।~**कान काटना**~कड़ा दड देना। (किसी की)~**का बाल** = सदा साथ रहनेवाला घनिष्ठ मित्र या मत्री।~**चढना** = क्रोध आना, त्यौरी चढना।~**तक खाना** = बहुत अधिक खाना। ~**पर गुस्सा होना** = बात बात पर गुस्सा होना, चिडचिडा स्वभाव होना।~**भौं चढ़ाना** या ~**भौं सिकोड़ना** = अरुचि और अप्रसन्नता प्रकट करना, घिनाना और चिढना, नापसद करना।~**मे दम करना** या~**मे दम लाना** = खूब तग या हैरान करना, बहुत सताना। ~**रगड़ना** = बहुत गिडगिडाना और विनती करना, मिन्नत करना।~**रख लेना** = प्रतिष्ठा की रक्षा कर लेना। ~**सिकोड़ना** = अरुचि या घृणा प्रकट करना, घिनाना।~**सिनकना** = जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना। **नाकों आना** = हैरान हो जाना, बहुत तग होना। **नाकों चने चबवाना** = खूब तंग करना।

नाकड़ा—पुं० एक रोग जिसमे नाक पक जाती है।

नाकदर—वि० जिसकी कद्र या प्रतिष्ठा न हो। **नाकना**(पु)†—सक० लाँघना, उल्लघन करना। बढ जाना, मात कर देना।

नाकप(पु)—पु० [स०नाक + प] इद्र।

नाका—पु० प्रवेश द्वार, मुहाना। गली या रास्ते का आरभस्थान। नगर, दुर्ग आदि का प्रवेशद्वार, फाटक। वह प्रधान स्थान जहाँ निगरानी रखने या महसूल आदि वसूल करने के लिये सिपाही तैनात हों। सुई का छेद। ⊙**बंदी** = स्त्री० [फा०] किसी रास्ते से कही जाने या घुसने की रुकावट, किसी स्थान मे आने जाने के सब रास्तो का घेरा या रोक। **नाकेदार**—पुं० [फा०] नाके या फाटक पर रहनेवाले सिपाही। वह अफसर जो आने जाने के प्रधान स्थानो पर किसी प्रकार का कर आदि वसूल करने के लिये तैनात हो। वि० जिसमे नाका या छेद हो। **नाकेबदी**—स्त्री० दे० 'नाकाबदी'। मु०~**छेकना या बाँधना** = आने जाने का मार्ग रोकना।

नाकाबिल—वि० [फा०] अयोग्य, नालायक।

नाकाम—वि० [फा०] विफलमनोरथ। निराश।

नाकिस—वि० [अ०] बुरा, खराब।

नाकुली—स्त्री० एक प्रकार का कद जो सर्प के विष को दूर करता है।

नाकेस—पु० इद्र।

नाक्षत्र—वि० [सं०] नक्षत्र सबधी।

नाखना(पु)†—सक० नाश करना। फेंकना, गिराना। उल्लघन करना।

नाखुना—पु० [फा०] आँख का एक रोग जिसमे एक लाल झिल्ली सी आँख की सफेदी मे पैदा होती है।

नाखुश—वि० [फा०] अप्रसन्न, नाराज।

नाखून—पु० [फा०] उँगलियों के छोर को ढकनेवाली चिपटे किनारे या नोक की तरह निकली हुई सीग सी कडी वस्तु, नख। चौपायो के खुर का बढा हुआ किनारा।

नाग—पु० [सं०] सर्प, साँप। कद्रु से उत्पन्न कश्यप ऋषि की सतान जिनका स्थान पाताल माना गया है। एक देश का नाम जो हिमालय के उस पार था। इस देश मे बसनेवाली जाति जो शक जाति की एक शाखा मानी जाती है। एक पर्वत (महाभारत)। हाथी। राँगा। सीसा (धातु)। नागकेसर। पुन्नाग। पान, ताबूल। नागवायु। बादल। आठ की सख्या। दुष्ट या क्रूर मनुष्य। वर्तमान आसाम के उत्तरपूर्वी पहाडी जगलो मे बसनेवाली एक जाति। इस जाति का व्यक्ति, नागा। ⊙**अरि** = पुं० सिंह। ⊙**कन्या** = स्त्री० नाग जाति की कन्या जो बहुत सुदर मानी जाती है।

⊙केसर = पुं० एक सीधा सदाबहार पेड। इसके सूखे फूल औषध, मसाले और रंग बनाने के काम आते हैं। ⊙फाग(पु) = पु० अफीम। ⊙दमन = पुं० दे० 'नागदौन'। ⊙दौन = पु० [हिं०] छोटे आकार का एक पहाडी पेड। कहते हैं, इसकी लकड़ी के पास सांप नही आते। ⊙नग = पु० गजमुक्ता। ⊙पंचमी = स्त्री० सावन सुदी पचमी, जब हिंदू लोग नाग की पूजा करते हैं। नागपचमी का हिंदू त्योहार। ⊙पति = पु० सर्पों का राजा वासुकि। हाथियो का राजा ऐरावत। ⊙पाश = पुं० एक अस्त्र जिससे शत्रुओ को बाँध लेते थे। ⊙फनी = स्त्री० [हिं०] थूहर की जाति का एक पौधा जिसके चौड़े मोटे पत्तो पर जहरीले कांटे होते हैं। कान मे पहनने का एक गहना। सिंघे के आकार का बाजा जिसका प्रचार नेपाल मे है। नागा साधुओ का कौपीन। ⊙फांस = स्त्री० [हिं०] दे० 'नागपाश'। ⊙बला = स्त्री० गगेरन। ⊙बेल = स्त्री० [हिं०] पान की बेल, बान। ⊙राज = पुं० शेषनाग, वासुकि, ऐरावत। 'पचामर' या 'नाराच' छद। ⊙लली = स्त्री० [हिं०] दे० 'नागकन्या'। ⊙लोक = पुं० पाताल। ⊙वंश = पुं० शक जाति की एक शाखा जिसका राज्य भारत के कई स्थानो और सिंहलद्वीप मे था। ⊙वल्ली = स्त्री० पान। नागाशन—पुं० गरुड़। मयूर। सिंह। नागेंद्र—पु० बड़ा सर्प। शेष। वासुकि आदि। नाग। ऐरावत। मु०~से खेलना = ऐसा कार्य करना जिसमे प्राण जाने का भय हो। नागिन—स्त्री० नाग की स्त्री, सांप की मादा। रोमो की लंबी भौंरी जो पीठ पर होती है, (अशुभ)।

नागना(पु)—अक० नागा करना, अतर डालना।

नागर—वि० [सं०] नगर संबंधी। नगर मे रहनेवाला। पु० नगर मे रहनेवाला मनुष्य। चतुर आदमी, सभ्य, शिष्ट और निपुण व्यक्ति। देवर। गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। ⊙ता = स्त्री० नागरिकता, शहरातीपन। नगर का रीति व्यवहार, सभ्यता। चतुराई। ⊙बेल = स्त्री० पान। ⊙मुस्ता = स्त्री० नागरमोथा। ⊙मोथा = पु० [हिं०] एक प्रकार का तृण या घास जिसकी जड मसाले और औषध के काम मे आती है। नागरि—स्त्री० [हिं०] नागरी, चतुर स्त्री। नागरिक—वि० नगर संबंधी, नगर का। नगर मे रहनेवाला, शहराती। चतुर, सभ्य। किसी देश का राजनीतिक अधिकारसंपन्न निवासी। नागरिकता—स्त्री० नागरिक के अधिकारो से सपन्न होने की अवस्था। नागरी—स्त्री० भारतवर्ष की वह प्रधान लिपि जिसमे संस्कृत, नेपाली, मराठी और हिंदी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं, देवनागरी। नगर की रहनेवाली स्त्री। चतुर स्त्री।

नागवार—वि० [फा०] असह्य। जो अच्छा न लगे, अप्रिय।

नागा—स्त्री० पुं० नंगे रहनेवाले शैव साधुओ का संप्रदाय। इस संप्रदाय का साधु। आसाम के पूर्व की पहाडियो मे बसनेवाली एक जंगली जाति। आसाम मे वह पहाड जिसके आसपास नागा जाति बसती है। नियत समय पर होनेवाली बात का किसी दिन या किसी नियत अवसर पर न होना, अनुपस्थिति।

नागेसर(पु)—पुं० दे० 'नागकेसर'।

नागौर—पुं० मारवाड के अंतर्गत एक नगर और जिला जहाँ की गाएँ बहुत दूध देती है तथा बछड़े बहुत अच्छे बैल होते हैं।

नागौरी—वि० नागौर की अच्छी जाति का (बैल, बछड़ा आदि)। वि० स्त्री० नागौर की अच्छी जाति की (गाय)।

नाच—पुं० हृदयोल्लास के अनुरूप अथवा संगीत के मेल मे तालस्वर के अनुसार हावभावयुक्त अंगविक्षेप या अवयवों का संचालन। नृत्य, नाट्य। क्रीडा, खेल। कर्म। ⊙कूद = स्त्री० नाच तमाशा। आयोजन, प्रयत्न। गुण, योग्यता, बड़ाई आदि प्रकट करने का उद्योग, डींग। क्रोध से उछलना कूदना। ⊙घर = पुं० वह

स्थान जहाँ नाच हो, नृत्यशाला। ⊙ना =अक० चित्त की उमग के अनुरूप उछलना कूदना तथा इसी प्रकार की और चेष्टाएं करना। सगीत के मेल मे तालस्वर के अनुसार हावभावपूर्वक कूदना, फिरना तथा इसी प्रकार की और चष्टाएं करना, थिरकना। चक्कर मारना, इधर उधर घूमना। स्थिर न रहना, दौडना, घूमना। थर्राना, कांपना। क्रोध मे आकर उछलना, कूदना, बिगड़ना। मु०—सिर पर ~ = घेरना, ग्रसना। पास आना। आंख के सामने ~ = अत.करण मे प्रत्यक्ष के समान प्रतीत होना, मन मे चित्र के समान उपस्थित रहना। ⊙महल = पुं० दे० 'नाचघर'। ⊙रंग = पुं० आमोद प्रमोद, जलसा। मु०~ काछना = नाचने के लिये तैयार होना। —नचाना = जैसा चाहना, वैसा काम कराना। दिक करना।

नाचार—वि० [फा०] विवश, लाचार।

नाचीज—वि० [फा०] तुच्छ, नगण्य।

नाज†—पुं० अन्न, अनाज। खाद्य द्रव्य, भोज्य सामग्री। पुं० [फा०] नखरा, चोचला, घमड, गर्व। ⊙अदा, ⊙नखरा = हाव भाव। चटक मटक, बनाव सिगार। ⊙बरदार = पु० नाज या नखरे झेलनेवाला। ⊙बरदारी = स्त्री० नाज उठाना, चोचले सहना। मु०~उठाना = चोचला सहना।

नाजनी—स्त्री० सुदरी स्त्री।

नाजायज—वि० [अ०] जो जायज न हो, जो नियमविरुद्ध हो, अनुचित।

नाजिम—वि० [अ०] प्रवधकर्ता। पुं० मुसलमानी राज्यकाल मे वह प्रधान कर्मचारी जिसपर किसी देश के प्रवध का भार रहता था।

नाजिर—पुं० [अ०] निरीक्षक, देखभाल करनेवाला। लेखको का अफसर। छोटे कर्मचारियो और दैनिक उपयोग की सामग्रियो की देखभाल और नियन्त्रण करनेवाला अफसर (कचहरियो मे)। ख्वाजा, महलसरा। वेश्याओ का दलाल।

नाजिल—वि० [अ०] ऊपर से उतरनेवाला।

नाजी—पुं० [जर्मन] प्रथम विश्वयुद्ध (१९-१४-१८) के वाद प्रचलित जर्मनी का वह राजनीतिक दल जिसने हिटलर के नेतृत्व मे सन् १९३९ मे विश्व भर मे जर्मन प्रभुत्व की स्थापना के लिये द्वितीय महायुद्ध छेडा और उसके अत मे, १९४५ में, स्वय भी विच्छिन्न हो गया। इस दल का सदस्य।

नाजुक—वि० [फा०] कोमल, सुकुमार। पतला, महीन। सूक्ष्म, गूढ़। जरा से झटके या धक्के से टूट फूट जानेवाला, कमजोर। जिसमे हानि या अनिष्ट की आशका हो। ⊙मिजाज = वि० जो थोडा सा कष्ट भी न सह सके।

नाजो = वि० स्त्री० दुलारी। प्रियतमा। नाजनी।

नाट—पु० [सं०] नृत्य, नाच। नकल, स्वाँग। एक देश जो कर्नाटक के पास था। यहाँ का निवासी।

नाटक—पुं० [सं०] रगशाला मे अभिनेताओं का आकृति, हाव भाव, वेश और वचन आदि के अनुकरण द्वारा किसी के जीवन की घटनाओ का प्रदर्शन, अभिनय। वह ग्रन्थ जिसमे कोई कथानक या चरित्र इस प्रकार दिखाया गया हो, दृश्य काव्य (अँ० ड्रामा)। रूपक के दस शास्त्रीय भेदो मे से एक। दिखावटी कार्य, आडबर। ⊙कार = पुं० नाटक का रचयिता। ⑤शाला = स्त्री० वह घर या स्थान जहाँ नाटक होता हो। नाटकावतार—पु० किसी नाटक के अभिनय के बीच दूसरे नाटक का सभिनय। नाटकिया, नाटकी—वि० [हिं०] नाटक का अभिनय करनेवाला। नाटकीय—वि० नाटक सबधी। नाटिक⑤—पुं० नर्तक, नाचनेवाला। नाटिका—स्त्री० एक प्रकार का दृश्य काव्य जिसमे चार अक होते है। इसकी कथा कल्पित होती है तथा स्त्री पात्र अधिक होते हैं।

नाटना—अक० प्रतिज्ञा आदि पर स्थिर न रहना, हट जाना। सक० अस्वीकार करना।

नाटा--वि० जिसका डील ऊँचा न हो, छोटे कद का। पुं० छोटे डील की गाय या बैल।

नाट्य--पुं०[सं०] नटो का काम, नृत्य, गीत और वाद्य। स्वाग के द्वारा चरित्रप्रदर्शन, अभिनय। स्वांग। ⊙कार = पु० नाटक करनेवाला, नट। नाटक लिखनेवाला। ⊙मदिर = पुं० नाट्यशाला। ⊙रासक = पुं० एक ही अक का एक प्रकार का उपरूपक दृश्यकाव्य। ⊙शाला = स्त्री० वह स्थान जहाँ अभिनय किया जाय। ⊙शास्त्र = पुं० नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या। भरत मुनिकृत इस विद्या का एक प्राचीन ग्रथ। नाट्यालकार--पु० वह विशेष अलकार जिसके आने से नाटक का सौंदर्य अधिक बढ जाता है। नाट्योक्ति--स्त्री० वे विशेष विशेष सबोधन शब्द जो विशेष व्यक्तियों के लिये नाटको मे आते हैं, जैसे--ब्राह्मण के लिये 'आर्य'।

नाठ(पु)--पु० नाश, ध्वस। अभाव, अनस्तित्व। वह जायदाद जिसका कोई वारिस न हो। मु० ~पर बैठना = किसी लावारिस माल का अधिकारी होना। ⊙ना(पु) = सक० नष्ट करना। अक० नष्ट होना। भागना, हटना। 'नाठ्यो धर्म नाम सुनि मेरो .'। (सूर०)।

नाठा--पु० वह जिसका कोई वारिस न हो, लावारिस।

नाड़--स्त्री० ग्रीवा, गर्दन।

नाड़ा--पु० सूत की वह मोटी डोरी जिससे स्त्रियाँ घाघरा और पुरुष पैजामा आदि बाँधते है, इजारबद। लाल या पीला रँगा हुआ गडेदार सूत जो देवताओ को चढाया जाता है।

नाडी--स्त्री० [सं०]नली। साधारण शरीर के भीतर की वे नालियाँ जिनमे होकर रक्त बहता है, धमनी। हठयोग के अनुसार ज्ञानवाहिनी, शक्तिवाहिनी और श्वास-प्रश्वास वाहिनी नालियाँ। व्रणरध्र, नासूर का छेद। बदूक की नली। काल का एक मान जो छह क्षण या आधे मुहूर्त का होता है। ⊙चक्र = पुं० नाभि देश मे स्थित वह अडाकार गाँठ जिससे निकलकर सब नाड़ियाँ शरीर भर मे फैली है (हठयोग)। ⊙मंडल = पु० विषुवत् रेखा। ⊙वलय = पुं० काल या समय निश्चित करने का एक यत्र।

नाती†--पु० नातेदार, संबधी। नाता, सबध।

नातरफदार--वि० [फा०] जो किसी एक पक्ष की तरफ न हो, तटस्थ।

नातरु(पु)--अव्य० और नही तो अन्यथा।

नातवाँ--वि० [फा०] कमजोर, दुर्बल।

नाता--पु० दो या कई मनुष्यों के बीच वह लगाव जो एक ही कुल में उत्पन्न होने या विवाह आदि के कारण होता है, रिश्ता संबध, लगाव। नातेदार--वि० संबंधी, रिश्तेदार। नाताकत--वि० [फा०] जिसे ताकत या बल न हो, निर्बल।

नाती--पु० लडकी का लडका। †बेटे का बेटा।

नाते--क्रि० वि० संबध से। वास्ते, लिये।

नात्सी--पु० दे० 'नाजी'।

नाथ--पुं०[सं०] प्रभु, मालिक। पति। वह रस्सी जिसे बैल, भैंस आदि की नाक छेदकर उसे वश मे करने के लिये डाल देते हैं। स्त्री० [हिं०] नाथने की क्रिया या भाव। जानवरो की नकेल। ⊙द्वारा = पु० [हिं०] उदयपुर राज्य के अंतर्गत वल्लभ संप्रदाय के वैष्णवो का प्रसिद्ध स्थान। ⊙ना = सक० [हिं०] बैल, भैंस आदि की नाक छेदकर उसमे इसलिये रस्सी डालना जिसमे वे वश मे रहे, नकेल डालना। किसी वस्तु को छेदकर उसमे रस्सी या तागा डालना। नत्थी करना। लडी के रूप मे जोडना।

नाद--पु० [सं०] आकाश का गुण, शब्द। निर्गुण ब्रह्म का आकाशगत सर्वप्रथम सगुण रूप(दर्शन)। शब्दब्रह्म। ध्वनि, आवाज। वर्णों का अव्यक्त रूप, अर्धमात्रा, परा। वर्णों के स्पष्ट उच्चारण के आभ्यतर और बाह्य प्रयत्नो मे दूसरा जिसमे कठ को न तो बहुत अधिक फैलाकर और न सकुचित करके वायु निकालनी पडती है। अर्धमडलाकार सानुनासिक स्वर जिसका योगियो के विभिन्न प्रतीको मे प्रयोग होता है (योग), (सगीत)।

गाय, बैल वगैरह के 'सानी' खाने आदि के काम का चौड़े मुँहवाला बड़ा पात्र । ⊙विद्या = स्त्री० संगीत शास्त्र । ⊙ना (पु) = सक० बजाना । अक० बजना, शब्द करना । चिल्लाना, गरजना । प्रफुल्लित होना । नादित—वि० [सं०] जिसमे नाद या शब्द होता हो । नादी—वि०[सं०] शब्द करनेवाला । बजनेवाला ।

नादर(पु)—पुं० अनादर ।

नादली—स्त्री० संगयशव नामक पत्थर की चौकोर टिकिया जिसे हृदय की रोग-बाधा दूर करने के लिये यंत्र की तरह पहनते है । हौलदिली ।

नादान—वि० [फा०] नासमझ, मूर्ख ।

नादार—वि० [फा०] निर्धन ।

नादिम—वि० [सं०] लज्जित ।

नादिया—पु० नदी । वह बैल जिसे लेकर लेकर जोगी भीख माँगते हैं ।

नादिर—वि० [फा०] अद्भुत, अनोखा । **नादिरशाही**—स्त्री० नादिरशाह के अत्याचारो के ढंग का अत्याचार या ज्यादती, भारी अत्याचार । मनमाना जुल्म । वि० बहुत कठोर और उग्र ।

नादिहंद—वि०[फा०] न देनेवाला, जो ऋण चुका सके ।

नाधना—सक० रस्सी या तस्मे के द्वारा बैल, घोड़े आदि को उस वस्तु के साथ बाँधना जिससे उन्हें खींचकर ले जाना होता है, जोतना । जोड़ना संबध करना । गूँथना । गुहना । आरंभ करना, ठानना । अरुचिकर काम मे लगाना । कठिन परिश्रम मे लगाए रहना ।

नानक—पु० सिख संप्रदाय के आदि गुरु । ⊙**पंथी** = पुं० गुरु नानक का अनुयायी, सिख । ⊙**शाही** = वि० गुरु नानक से संबध रखनेवाला । नानकशाह का शिष्य या अनुयायी, सिख ।

नानकीन—पु० एक प्रकार का सूती कपड़ा ।

नानखताई—स्त्री०[फा०] टिकिया के आकार की एक सोंधी खस्ता मिठाई ।

नानबाई—पु० रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला ।

नाना—वि० [सं०] अनेक प्रकार के, बहुत तरह के । अनेक, बहुत । पु० [हिं०] माता का पिता, मातामह । †सक० झुकाना । नीचा करना । डालना । घुसाना । पु० [अ०]पुदीना । **अर्क** ⊙ = सिरके के साथ भबके मे उतारा हुआ पुदीने का अर्क ।

ननिहाल—पु० नाना नानी का स्थान या घर ।

नानी—स्त्री० माता की माता । मु०~**याद आना** या ~**मर जाना** = संकट या विपत्ति मे बुरी तरह घबरा जाना ।

नानुकर—पु० नाही, इनकार ।

नान्ह—वि० छोटा, लघु । नीच, क्षुद्र । पतला, महीन ।

नान्हक(पु)†—पु० दे० 'नानक' ।

नान्हरिया(पु)†—वि० छोटा, नन्हा ।

नान्हा(पु)†—वि० दे० 'नन्हा' ।

नाप—स्त्री० किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई आदि जिसका निश्चय किसी निर्दिष्ट लंबाई को एक मानकर किया जाय, माप । नापने का काम । वह निर्दिष्ट लंबाई या वजन जिसे एक मानकर किसी वस्तु का विस्तार या वजन कितना है, यह स्थिर किया जाता है, मान । नापने की वस्तु । ⊙**जोख**, ⊙**तौल** = स्त्री० परिमाण या मात्रा जो नाप या तौलकर स्थिर की जाय । ⊙ना = सक० किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई, गहराई या वजन निश्चित करना, मापना । कोई वस्तु कितनी है इसका पता लगाना (जैसे—दूध नापना, शराब नापना) । मु०—सिर~ = सिर काटना ।

नापसंद—वि० [फा०] जो पसंद न हो, जो अच्छा न लगे । अप्रिय ।

नापाक—वि० [फा०] अशुद्ध । मैला कुचैला ।

नापायदार—वि० [फा०] जो मजबूत या टिकाऊ न हो, कमजोर ।

नापास—वि० जो पास या उत्तीर्ण न हुआ हो, असफल ।

नापित—पु०[सं०]वह जो सिर के बाल मूँड़ने या काटने आदि का काम करता हो, नाई ।

नापैद—वि० [फा०] जो पैदा न हुआ हो । विनष्ट । अप्राप्य ।

नाफा—पुं० [फा०] कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी मृगो की नाभि में होती है ।

नाबदान—पुं० [फा०] वह नाली जिससे मैला पानी आदि बहता है, पनाला।
नाबालिग—वि० [अ०] जो पूरी उम्र का न हुआ हो, कम उम्र।
नाबूद—वि० [फा०] नष्ट, ध्वस्त।
नाभ—स्त्री० नाभि, ढोंढी। शिव का एक नाम। एक सूर्यवंशी राजा जो भगीरथ के पुत्र थे (भागवत)। अस्त्रों का एक सहार।
नाभि—स्त्री० [सं०] जरायुज जीवो के बीचोबीच वह भाग जिससे (मनुष्यो मे जन्म के बाद काटा जानेवाला) जरायु-नाल जुड़ा रहता है, ढोंढी। पहिए का मध्य भाग, नाह। कस्तूरी। पु० प्रधान राजा। प्रधान व्यक्ति या वस्तु। गोत्र। क्षत्रिय।
नामंजूर—वि० [अ०] जो मंजूर न हो, अस्वीकृत।
नाम—पुं० [सं०] वह शब्द जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या समूह का बोध हो, संज्ञा, अभिधान। प्रसिद्धि, ख्याति, यश, कीर्ति। ⊙**क** = वि० [हिं०] नाम से प्रसिद्ध, नामवाला। ⊙**करण** = पु० नाम रखने का काम। हिंदुओ के १६ संस्कारो मे से पाँचवाँ जिसमे बच्चे का नाम रखा जाता है। ⊙**कर्म** = पु० नामकरण। ⊙**कीर्तन** = पु० ईश्वर के नाम का जप, भगवान् का भजन। ⊙**जद** = वि० [फा०] जिसका नाम किसी बात के लिये निश्चित कर लिया गया हो। प्रसिद्ध। ⊙**जदगी** = स्त्री० [फा०] किसी काम या चुनाव आदि मे किसी का नाम निश्चित किया जाना (अँ० नामिनेशन)। ⊙**दार** = वि० [फा०] दे० 'नामवर'। ⊙**धराई** = स्त्री० [हिं०] बदनामी, निंदा। ⊙**धाम** = पु० [हिं०] नाम और पता। ⊙**धारी** = त्रि० नामक, नामवाला। ⊙**धेय** = पु० नाम का निदर्शक शब्द। नामकरण। वि० नामवाला। ⊙**निशान** = पु० [फा०] चिह्न, पता। ⊙**पट्ट** = पु० वह पट्ट जिसपर किसी व्यक्ति या संस्था आदि का नाम लिखा हो (अँ० साइनबोर्ड)। ⊙**बोला** = वि० [हिं०] भक्तिपूर्वक नामस्मरण करनेवाला। ⊙**लेवा** = पु० [हिं०] नाम स्मरण करनेवाला। उत्तराधिकारी, संतति। ⊙**वर** = वि० [फा०] जिसका बड़ा नाम हो, प्रसिद्ध। ⊙**शेष** = वि० जिसका केवल नाम बाकी रह गया हो, नष्ट। मृत, गत, मरा हुआ। मु० ~**उछालना** = बदनामी कराना, चारों ओर निंदा करना। ~**उठ जाना** = चिह्न मिट जाना या चर्चा बंद हो जाना। (किसी बात का) ~**करना** = कोई बात पूरी तरह से न करना, कहने भर के लिये थोड़ा सा करना। ~**कमाना** या ~**करना** = मशहूर होना। ~**का** = नामधारी। कहने सुनने भर को, काम के लिये नहीं। ~**के लिये** या ~**को** = कहने सुनने भर के लिये, थोड़ा सा। काम के लिये नहीं। ~**को मरना** = सुयश के लिये अथक प्रयत्न करना। ~**चढ़ना** = किसी नामावली मे नाम लिखा जाना। ~**चलना** = लोगो मे नाम का स्मरण बना रहना। वंश का क्रम चलता रहना। ~**जगाना** = उज्वल कीर्ति फैलाना। ~**जपना** = बारबार नाम लेना। ईश्वर या देवता का नामस्मरण करना। ~**डुबाना** = यश और कीर्ति का नाश करना। ~**डूबना** = यश और कीर्ति का नाश होना। (किसी का) ~**धरना** = बदनाम करना, दोष लगाना, ऐब बताना। ~**धराना** = नामकरण कराना। बदनामी कराना, निंदा कराना। ~**न लेना** = दूर रहना, बचना। ~**निकल जाना** = किसी बात के लिये मशहूर या बदनाम हो जाना। (किसी के) ~**पर** = किसी को अर्पित करके, किसी के निमित्त। (किसी के) ~**पड़ना** = किसी के नाम के आगे लिखा जाना, जिम्मेदार रखा जाना। ~**पर धब्बा लगाना** = यश पर लाछन लगाना, बदनामी करना। ~**पर मरना या मिटना** = किसी के प्रेम मे लीन होना, किसी के प्रेम मे खपना। (किसी के) ~**पर बैठना** = किसी के भरोसे संतोष करके निष्क्रिय रहना। ~**पाना** = मशहूर होना। (किसी का) ~**बद करना** =

बदनामी करना, कलक लगाना। ~बाकी रहना = मरने या कही चले जाने पर भी कीर्ति का बना रहना। केवल नाम रह जाना, और कुछ न रहना। ~बिकना = नाम मशहूर होने से कदर होना। ~मिटना = नाम न रहना, स्मारक या कीर्ति का लोप होना। नाम तक शेष न रहना, एकदम अभाव हो जाना। ~मात्र = नाम लेने भर को, बहुत थोडा। ~रखना = नाम निश्चित करना, नामकरण करना। ~रहना = प्रतिष्ठा या समान बना रहना। ~रह जाना = यश बना रहना। ~लगाना = किसी दोष या अपराध के सबध मे नाम लेना। दोषमढना। (किसीके) ~लिखना = किसी के जिम्मे देय स्वरूप मे लिखना या टाँकना। (किसी का) ~लेकर = किसी प्रसिद्ध या बडे आदमी के नाम से लोगों का ध्यान आकर्षित करके, नाम के प्रभाव से। (किसी देवता या पूज्य पुरुष का) स्मरण करके। ~लेना = नाम उच्चारण करना, नाम जपना, प्रशसा करना करना। चर्चा करना। ~व निशान = पता, खोज। (किसी) ~से = शब्द द्वारा निर्दिष्ट होकर या करके। (किसी के) ~से = चर्चा से, जिक्र से। (किसी का) सबध बताकर, यह प्रकट करके कि कोई बात किसी की ओर से है। (किसी को) हकदार या मालिक बनाकर, (किसी के) उपयोग या उपभोग के लिये। ~से कॉपना = नाम सुनते ही डर जाना, बहुत भय मानना। ~होना = दोष मढा जाना, कलक लगना। नाम प्रसिद्ध होना।

नामर्द—वि० [फा०] नपुसक। डरपोक, कायर।

नामाकूल—वि० [अ०] अयोग्य, नालायक। अनुचित।

नामालूम—वि० [अ०] अज्ञात। अपरिचित, अप्रसिद्ध।

नामी—वि० [सं०] नामधारी, नामवाला। प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर।

नामुनासिब—वि० [फा०] अनुचित।

नामुमकिन—वि० [फा० + अ०] असभव।

नामूसी—स्त्री० [अ०] बेइज्जती, बदनामी।

नाम्ना—वि० [सं०] नाम से, नामवाला।

नायँ(पु)†—पु० दे० 'नाम'। अव्य० दे० 'नही'।

नायक—पु० [सं०] लोगो को अपने कहे पर चलानेवाला आदमी, नेता, अगुआ। अधिपति, स्वामी। श्रेष्ठ पुरुष। काव्य या नाटच मे किसी रस का पुरुष आलबन या साधक, वह पुरुष जिसका चरित्र किसी काव्य, उपन्यास, कथा, आख्यायिका या नाटक आदि का मुख्य विषय हो (अलकार शास्त्र)। सगीत कला मे निपुण पुरुष, कलावत। एक सगण और दो अत्यलघु का एक वर्णवृत्त।

नायका(पु)—स्त्री० दे० 'नायिका'। वेश्या की माँ। कुटनी, दूती।

नायन—स्त्री० नाई की स्त्री।

नायब—पुं० [अ०] किसी की ओर से काम करनेवाला, मुनीम, मुख्तार। सहायक। सहकारी।

नायाब—वि० [फा०] बहुत बढिया। जो जल्दी न मिले, अप्राप्य।

नायिका—स्त्री० [सं०] शृंगार रस का स्त्री आलबन या साधिका, वह स्त्री जिसका चरित्र किसी काव्य, उपन्यास, कथा, आख्यायिका या नाटक आदि का मुख्य विषय हो। रूपगुणवती सुशीला स्त्री (अलंकार शास्त्र)।

नारंग—पु० [सं०] नारगी।

नारंगी—स्त्री० नीबू की जाति का एक मझोला पेड जिसमे मीठे, सुगधित और रसीले फल लगते है और उसका फल। नारगी के छिलके का सा रग, पीलापन लिए हुए लाल रग। वि० पीलापन लिए हुए लाल रग का।

नार—स्त्री० गरदन, ग्रीवा। जुलाहो की ढरकी, नाल। स्त्री० दे० 'नारी'। पु० आँवलनाल। दे० 'नाल'। नाला। बहुत मोटा रस्सा। नारा। इजारबद। जुआ जोडने की रस्सी या तस्मा। मु० ~नवाना या ~नीचा करना = गरदन झुकाना, सिर नीचे की ओर करना। लज्जा, चिंता,

सकोच और मान आदि के कारण सामने न ताकना।

नारकी—वि० [सं०] नरक मे जाने योग्य कर्म करनेवाला, पापी।

नारद—पु० [सं०] ऋग्वेद के अनुसार कण्व या कश्यप गोत्र मे उत्पन्न एक मत्रद्रष्टा ऋषि। एक देवर्षि जो बहुधा पर्वत के साथ रखे गए हैं और देवताओ और मनुष्यो के बीच दूत के रूप मे माने गए हैं (महाभारत)। एक प्रसिद्ध देवर्षि और हरिभक्त जो ब्रह्मा के मानसपुत्र कहे जाते और १० प्रजापतियों मे गिने जाते है (मनुस्मृति)। (लोक मे नारद को कलहप्रिय और झगडा करानेवाला भी माना जाता है)। विश्वामित्र के एक पुत्र। एक प्रजापति। झगडा करानेवाला आदमी। ⊙पुराण = पुं० अठारह महापुराणो मे से एक। इसमे तीर्थों और व्रतों का माहात्म्य है। बृहन्नारदीय नामक एक उपपुराण। नारदी—स्त्री० चालाकी, चालबाजी। नारदीय—वि० [सं०] नारद सबधी, नारद का।

नारना—सक० थाह लगाना, भाँपना।

नारबेवार†—पुं० आँवल और नाल।

नारसिंह—पु०[सं०] नरसिंह रूपधारी विष्णु। एक तत्र का नाम। एक उपपुराण। वि० नृसिंह सबधी।

नारा—पुं० इजारबंद, दे० 'नाडा'। लाल रँगा सूत जो पूजन मे देवताओ को चढ़ाया जाता है, मौली। हल के जुए मे बँधी हुई रस्सी। †दे० 'नाला'। १० बँधा बँधाया शब्द या शब्दसमूह जो लोगो को प्रेरित या उत्तेजित करने के लिये जोर जोर से दुहराया जाता है (जैसे 'क्राति, चिरजीवी हो' या 'हर हर महादेव'।

नाराच—पु० [सं०] लोहे का बाण। दुर्दिन, ऐसा दिन जिसमे बादल घिरा हो, अधड चले या इसी प्रकार के और उपद्रव हो। एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक लघु और एक गुरु के क्रम से कुल २४ मात्राएँ होती हैं। इसे पचचामर, नाराच या नागराज भी कहते हैं। २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद। प्रत्येक चरण मे क्रम से दो नगण और चार रगण का एक वर्णवृत्त, महामालिका।

नाराज—वि० [फा०] अप्रसन्न, खफा।

नारायण—पु० [सं०] भगवान् का क्षीरसागर मे शेषनाग पर सोया हुआ रूप, विष्णु। मनुस्मृति के अनुसार सृष्टि के पहले का ईश्वर का स्वरूप जिससे ब्रह्मा और उनकी सारी रचना विकसित हुई। 'अ' अक्षर का नाम। कृष्ण यजुर्वेद के अतर्गत एक उपनिषद्। एक अस्त्र। नारायणी—स्त्री० दुर्गा। लक्ष्मी। गगा। श्रीकृष्ण की सेना का नाम जिसे उन्होने कुरुक्षेत्र के युद्ध मे दुर्योधन की सहायता के लिये दिया था। नारायणीय—वि० नारायण सबधी।

नाराशंस—वि० [सं०] जिसमे मनुष्यो की प्रशसा हो, स्तुति सबधी। पु० वेदो के वे मत्र जिनमे राजाओ आदि की प्रशसा है, प्रशस्ति। वह चमचा जिसमे पितरों को सोमपान दिया जाता है। पितर। नाराशंसी—स्त्री० दे० 'नाराशंस'।

नारि—स्त्री० दे० 'नारी'।

नारिकेल—पु० [सं०] नारियल।

नारिदान⑤—पुं० दे० 'नाबदान'।

नारियल—पुं० खजूर की जाति का एक पेड। इसका मीठी गरी और कडे रेशेदार छिलके का बडा फल जिससे तेल भी निकलता है। नारियल का हुक्का। नारियली—स्त्री० नारियल का खोपडा। नारियल का हुक्का।

नारी—स्त्री० [सं०] स्त्री, औरत। तीन गुरु वर्णों का एक वर्णवृत्त, इसे तारी या ताली छद भी कहते हैं। ⑤स्त्री० दे० 'नाडी'। दे० 'नाली'

नारू—पुं० जूं, ढील। नहरुआ नामक रोग।

नालंद—पुं० बौद्धो का एक प्राचीन क्षेत्र और विद्यापीठ जो मगध मे पटने से तीस कोस दक्खिन मे था और जहाँ दूर दूर से विद्यार्थी पढने के लिये आते थे।

नाल—स्त्री० [सं०] कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली लबी डडी। पौधे का डंठल, काड। गेहूँ, जौ आदि की वह पतली लंबी डडी जिसमे बाल लगती है। नाली।

नल। बंदूक की नली। सुनारों की फुंकनी। जुलाहों की नली, छूंछा। पुं० [अ०] लोहे का वह अर्धचंद्राकार खड जिसे घोडो की टाप के नीचे या जूतो की एडी के नीचे रगड से बचाने के लिये जड़ते है। तलवार आदि के म्यान की साम जो नोक पर मढी होती है। कसरत मे प्रयुक्त कुडलाकार गढा हुआ पत्थर का भारी टुकडा जिसके बीचो बीच पकडकर उठाने के लिये एक दस्ता रहता है। लकडी का वह चक्कर जिसे नीचे डालकर कुएं की जुडाई की जाती है। वह रुपया जो जुआरी जुए का अड्डा रखनेवाले को देता है। पुं० [हिं०] रक्त की नालियो तथा एक प्रकार के मज्जातंतु से बनी हुई रस्सी के आकार की वस्तु जो एक ओर तो गर्भस्थ बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय की दीवार मे मिली होती है, आंवलनाल। लिंग। हरताल। जल बहने का स्थान। ⊙कटाई = स्त्री० तुरत के जन्मे हुए बच्चे की नाभि मे लगे हुए नाल को काटने का काम या उसकी मजदूरी।

नालकी—स्त्री० इधर उधर से खुली पालकी जिसपर एक मिहराबदार छाजन होती है।

नालबंद—पुं० [फा०] जूते की एडी या घोडे की टाप में नाल जडनेवाला। वि० जिसमे नाल बंधी हो।

नाला—पुं० बरसाती पानी बहने का दूर तक गया हुआ गहरा और कम चौडा प्राकृतिक रास्ता, जलप्रणाली। उक्त मार्ग मे बहता हुआ जल। दे० 'नाडी'।

नालायक—वि० [अ०] अयोग्य, निकम्मा।

नालि(पु)—अव्य० साथ।

नालिका - स्त्री० [सं०] छोटी नाल या डठल। नाली। एक प्रकार का गधद्रव्य।

नालिश—स्त्री० [फा०] किसी के द्वारा पहुँचे हुए नुकसान या कष्ट का न्यायालय आदि मे या ऐसे मनुष्य के निकट निवेदन जो उसका प्रतिकार कर सकता हो, अभियोग।

नाली—स्त्री० जल बहने का पतला मार्ग। मोरी। कोई गहरी लकीर। घोडे की पीठ का गड्ढा। चौपायो को दवा पिलाने का चोगा। नाडी, धमनी। करेमू का साग। घडी। कमल।

नावँ(पु)†—पु० दे० 'नाम'।

नाव—स्त्री० लकडी, लोहे आदि की बनी हुई जल के ऊपर चलनेवाली सवारी, किश्ती।

नावक—पुं० [फा०] एक प्रकार का छोटा वाण। मधुमक्खी का डक। पु० [हिं०] केवट, मल्लाह।

नावना[1]—सक० झुकाना, नवाना। डालना। गिराना। प्रविष्ट करना, घुसाना।

नावर, नावरि(पु)†—स्त्री० नाव, नौका। नाव की एक क्रीडा जिसमे उसे बीच मे ले जाकर चक्कर देते है।

नावाकिफ—वि० [अ०] अपरिचित।

नाविक—पु० [सं०] मल्लाह, केवट।

नाश—पु० [सं०] लोप, ध्वस, बरबादी। गायब होना। ⊙क = वि० नाश या ध्वस करनेवाला। वध करनेवाला। दूर करनेवाला। ⊙कारी = वि० नाशक, विनाशक। ⊙न = पुं० नाश करना। वि० नाश करनेवाला ⊙ना(पु) = सक० दे० 'नासना'। ⊙वान् = वि० नश्वर, मिटनेवाला।

नाशपाती—स्त्री० [तु०] मझोले डीलडौल का एक पेड जिसके फल प्रसिद्ध मेवो मे गिने जाते हैं।

नाशी—वि० [सं०] नाश करनेवाला। नश्वर

नाश्ता—पुं० [फा०] जलपान।

नास—स्त्री० वह औषध जो नाक से सूंघी जाय। सुंघनी। नाशपाती की जाति का एक फल। ⊙दान = पुं० सुंघनी रखने की डिबिया।

नासना(पु)—सक० नष्ट करना, बरबाद करना। मार डालना।

नासमझ—वि० बिना समझ का, बेवकूफ।

नासा—स्त्री० [सं०] नासिका, नाक। नाक का छेद, नथना ⊙पुट = पुं० नथना।

नासिक—पुं० [सं०] महाराष्ट्र देश का एक तीर्थस्थल जो उस स्थान के निकट है जहाँ से गोदावरी निकली है। स्त्री० [हिं०] नाक, नासिका।

नासिका—स्त्री० [सं०] नाक, नासा।

नासी(पु)—वि० दे० 'नाशी'।

नासीर—पुं० [अ०] सेना का अग्रभाग।

नासूर—पुं० [अ०] घाव, फोडे आदि के भीतर दूर तक गया हुआ वह छेद जिससे बहुत दिनो तक बराबर मवाद निकला करता है और घाव जल्दी भर नही पाता।

नास्तिक—पुं० [सं०] वह जो वेद की प्रामाणिकता, ईश्वर या परलोक आदि को न माने। ⊙ता = स्त्री० नास्तिक होने का भाव ईश्वर, परलोक आदि को न मानने की बुद्धि।

नास्तिकवाद—पुं० [सं०] नास्तिको का तर्क या मत।

नास्य—वि० नाक संबंधी। नाक से उत्पन्न।

नाह(पु)—पुं० दे० 'नाथ'।

नाहक—क्रि० वि० [अ०] व्यर्थ बेफायदा।

नाह नूह(पु)—स्त्री० नही नही शब्द, इनकार।

नाहर—पु० सिंह। बाघ। टेसू का फूल।

नाहरू—पु० नारू नाम का रोग, नहरुवा। दे० 'नाहर'।

नाहिनै(पु)—[वाक्य] नही है।

नाहीं—अव्य० दे० 'नही'।

नाहू—पु० दे० 'नाथ'।

निंत(पु)—क्रि० वि० दे० 'नित्य'।

निंद(पु)—वि० दे० 'निंद्य'। ⊙ना(पु)† = सक० निंदा करना, बदनाम करना।

निंदक—पु० [सं०] निंदा करनेवाला।

निंदन—पु० [सं०] निंदा करने का काम।

निंदनीय—वि०[सं०]निंदा करने योग्य। बुरा।

निंदरना—सक० दे० 'निंदना'।

निंदरिया(पु)†—स्त्री० नीद, निद्रा।

निंदा—स्त्री० [सं०] (किसी व्यक्ति या वस्तु का) दोषकथन, बुराई का वर्णन। बदनामी। ⊙स्तुति = स्त्री० निंदा के बहाने स्तुति, व्याज स्तुति। निंदित—वि० [सं०] जिसकी लोग निंदा करते हो, बुरा। निंद्य—वि० [सं०] निंदा करने योग्य, निंदनीय। दूषित, बुरा।

निंदाई—स्त्री० निराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

निंदासा—वि० जिसे नीद आ रही हो, उनीदा।

निंदिया†—स्त्री० नीद।

निंब—स्त्री०[सं०]नीम का पेड। ⊙कौरी = स्त्री० दे० 'निबौली'।

निंबार्क—पु० [सं०] वैष्णवो के एक संप्रदाय के प्रवर्तक निंबादित्य नामक आचार्य इनका चलाया हुआ वैष्णव संप्रदाय।

निंबू—पु० [सं०] नीबू।

निः—अव्य [सं० 'निस्' के लिये समास मे प्रयुक्त] दे० 'निस्'। ⊙शंक = वि० निडर, निर्भय। जिसे किसी प्रकार का खटका या हिचक न हो। ⊙शब्द = वि० शब्दरहित, जहाँ शब्द न हो या जो शब्द न करे। ~शेष = वि० जिसका कोई अंश रह न गया हो, समूचा। समाप्त। ⊙श्रेणी = स्त्री० सीढी। ⊙श्रेयस् = वि० मोक्ष, मुक्ति। कल्याण। भक्ति। विज्ञान। ⊙श्वास = पुं० प्राणवायु का नाक से निकलना, नाक से निकाली हुई वायु, साँस। ⊙संकोच = क्रि० वि० बिना संकोच के, बेधडक। ⊙संग = वि० बिना मेल या लगाव का। निर्लिप्त। जिसमे अपने मतलब का कुछ लगाव न हो। जिसके साथ कोई न हो, अकेला। ⊙संतान = वि० जिसके संतान न हो। ⊙संदेह—वि० जिसे या जिसमे कुछ संदेह न हो। अव्य० बिना किसी संदेह के। इसमे कोई संदेह नही, ठीक है, बेशक। ⊙संशय = वि० संदेहरहित। ⊙सत्व = वि० जिसमे कुछ असलियत, तत्व या सार न हो। ⊙सरण = पुं० निकालना। निकलने का रास्ता, निकास। निर्वाण। मरण।। ⊙सीम = वि० जिसकी सीमा न हो, बेहद। बहुत बडा या अधिक। ⊙सृत = वि० निकला हुआ। ⊙स्पंद = वि० जिसमे किसी प्रकार का स्पंदन न हो, निश्चल। ⊙स्पृह = वि० इच्छारहित। जिसे प्राप्ति की इच्छा न हो, निर्लोभ। ⊙स्वन = वि० जिसमे किसी प्रकार का शब्द न हो। पुं० ध्वनि, शब्द। ⊙स्वार्थ = वि० जो अपने लाभ, सुख या सुभीते का ध्यान न रखता हो। (कोई बात) जो अपने अर्थसाधन के निमित्त न हो।

नि—उप० [सं०] एक उपसर्ग जिसके लगने से शब्दो मे इन अर्थों की विशेषता होती है—संघ या समूह (जैसे, निकर), नीचे (जैसे, निपतित), अत्यंत (जैसे, निगृ-

हीत), आदेश (जैसे, निदेश)। पु० निषाद स्वर का संकेत (संगीत)।

निअर(पु)†—अव्य० निकट, पास। वि० समान, तुल्य। **निअराना†**—सक० निकट जाना। अक० निकट आना।

निआऊ(पु)†—पु० दे० 'न्याय'।

निआन(पु)—पु० परिणाम, अंत। अव्य० अंत में, आखिर।

निआमत—स्त्री० [अ०] अच्छा और बहुमूल्य पदार्थ, अलभ्य वस्तु।

निआर्थी(पु)—वि० निर्धन, गरीब।

निकंटक(पु)—वि० दे० 'निष्कंटक'।

निकंदन(पु)—पु० नास, नष्ट करने या मिटानेवाला। **निकंदना(पु)**—सक० नष्ट करना। **निकंदिनि**—वि० स्त्री० नाश करनेवाली।

निकट—वि० [सं०] पास का। संबंध जिससे विशेष अंतर न हो (जैसे, निकट संबंधी)। क्रि० वि० समीप। ⊙**वर्ती** = वि० पासवाला, समीपस्थ। ⊙**स्थ** = वि० पास का। संबंध में जिससे बहुत अंतर न हो। मु०—**किसी के**~ = किसी से (जैसे, किसी के निकट कुछ माँगना)। किसी के लेखे में, किसी की समझ में (जैसे, तुम्हारे निकट यह काम कुछ भी नहीं)।

निकम्मा—वि० जो कोई काम धंधा न करे। जो किसी काम का न हो, बुरा।

निकर—पु० [सं०] समूह, झुंड, राशि, ढेर। निधि। पु० [अं० या डच ?] (निकर बोकर्स के संक्षिप्त रूप निकर्स से) एक प्रकार का अँगरेजी जाँघिया, घुटने तक का पायजामा।

निकरना(पु)†—अक० दे० 'निकलना'।

निकर्मा—वि० आलसी, अकर्मण्य।

निकलंक—वि० दोषरहित।

निकलंकी—पु० विष्णु का दसवाँ अवतार, कल्कि अवतार।

निकल—स्त्री० [अं०] एक धातु जो कोयले, गंधक आदि के साथ मिली हुई खानों में मिलती है। साफ होने पर यह चाँदी की तरह चमकती है और धातुओं के मिश्रण में काम आती है।

निकलना—अक० भीतर से बाहर आना। मिली हुई, लगी हुई या पैवस्त चीज का अलग होना। पार होना, एक ओर से दूसरी ओर चला जाना। किसी श्रेणी आदि के पार होना, उत्तीर्ण होना। जाना, गुजरना। उत्पन्न होना। उपस्थित होना, दिखाई पड़ना। किसी ओर को बढ़ा हुआ होना। निश्चित होना, ठहराया जाना। स्पष्ट होना, प्रकट होना। आरंभ होना। सिद्ध होना, सरना। हल होना, किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर प्राप्त होना। फैलाव होना। प्रचलित होना। छूटना। आविष्कृत होना। शरीर के ऊपर उत्पन्न होना। अपने को बचा जाना, बच जाना। मुकरना, नटना। खपना, बिकना। प्रस्तुत होकर सर्वसाधारण के सामने आना, प्रकाशित होना। हिसाब किताब होने पर कोई रकम जिम्मे ठहरना। फट कर अलग होना, उचड़ना। जाता रहना, न रह जाना। बीतना। घोड़े, बैल का सवारी या गाड़ी आदि लेकर चलना सीखना। मु०—**निकल चलना** = वित्त से बाहर काम करना, इतराना। **निकल जाना** = चला जाना, आगे बढ़ जाना। न रह जाना, नष्ट हो जाना। घट जाना। न पकड़ा जाना, भाग जाना। (स्त्री का) **निकल जाना** = किसी पुरुष के साथ अनुचित संबंध करके घर छोड़ कर चली जाना।

निकष—पुं० [सं०] कसौटी का पत्थर। तलवार की म्यान।

निकाई(पु)—पु० दे० 'निकाय'। स्त्री० भलाई। अच्छापन। खूबसूरती, सुंदरता।

निकाज—वि० बेकाम, निकम्मा।

निकाना—सक० दे० 'निराना'।

निकाम—वि० निकम्मा। बुरा, खराब। क्रि० वि० व्यर्थ, निष्प्रयोजन। (पु)वि० व्यर्थ, दे० 'निष्काम'। (पु)वि० बहुत अधिक, अत्यंत।

निकाय—पुं० [सं०] समूह, झुंड। ढेर, राशि। घर। परमात्मा। किसी विशिष्ट कार्य के लिये स्थापित कतिपय साधिकार व्यक्तियों का संघ या समुदाय (अं० बाडी)।

निकारना(पु)†—सक० दे० 'निकालना'।

निकालना—सक० [अक० निकलना] भीतर से बाहर लाना। मिली हुई, लगी हुई या पैवस्त चीज को अलग करना। पार करना, अतिक्रमण कराना। ले जाना। किसी ओर को बढा हुआ करना। निश्चित करना, ठहराना। उपस्थित करना। खोलना, स्पष्ट करना। आरभ करना, चलाना। सबके सामने लाना, देख मे करना। अलग करना। घटाना। छुडाना, मुक्त करना। नौकरी से छुडाना। दूर करना, हटाना। बेचना, खपाना। सिद्ध करना। प्राप्त करना। निर्वाह करना। किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर निश्चित करना। हल करना। जारी करना, फैलाना। आविष्कृत करना। बचाव करना। उद्धार करना। प्रचारित करना, प्रकाशित करना। ऊपर ऋण देना या निश्चित करना। ढूँढकर पाना। घोडे, बैल आदि को सवारी लेकर चलना या गाडी आदि खीचना सिखाना। सुई से बेलबूटे बनाना।

निकाला—पुं० निकालने का काम। किसी स्थान से निकाले जाने का दड, निष्कासन (जैसे, देशनिकाला)।

निकास—पुं० निकलने की क्रिया या भाव। निकालने की क्रिया या भाव। निकलने के लिये खुला स्थान, मार्ग या छेद। दरवाजा। बाहर का खुला स्थान, मैदान। उद्गम, मूल स्थान। वश का मूल। रक्षा या छुटकारे की तदबीर। निर्वाह का ढग, सिलसिला। प्राप्ति का ढग, आमदनी का रास्ता। आय, आमदनी, निकासी। **निकासना**†—सक० दे० 'निकालना'। **निकासी**—स्त्री० निकलने की क्रिया या भाव। वह धन जो सरकारी दर आदि देने के बाद बच रहे, मुनाफा, आमदनी। बिक्री के लिये माल की रवानगी, लदाई। बिक्री, खपत। चुगी। रवन्ना।

निकाह—पुं०[अ०] मुसलमानी शास्त्रीय पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह।

निकियाना⊙—सक० नोचकर धज्जी धज्जी अलग करना। चमडे पर से पख या बाल नोचकर अलग करना।

निकिष्ट(पु)†—वि० दे० 'निकृष्ट'।

निकुंज—पुं०[सं०] ऐसा स्थान जो घनी लताओ आदि से घिरा हो।

निकृष्ट—वि० [सं०] बुरा, नीच।

निकेत, निकेतन—पुं० [सं०] घर, मकान। स्थान, जगह।

निकेया—पुं० शोभा, सुदरता।

निक्षिप्त—वि०[सं०] फेंका हुआ, छोडा हुआ।

निक्षेप—पुं० [सं०] फेंकने या डालने की क्रिया या भाव। चलाने की क्रिया या भाव। छोडने की क्रिया या भाव। धरोहर, अमानत, थाती। **निक्षेपण**—पुं० फेंकना, डालना। छोडना, चलाना। त्यागना।

निखंग(पु)—पुं० दे० 'निषग'।

निखंड—वि० ठीक मध्य मे, सटीक, ठीक।

निखट्टू—वि० जो कुछ कमाई न करे, इधर उधर मारा मारा फिरनेवाला। निकम्मा, आलसी। **निखट्टू**—वि० जिससे कोई कामधधा न हो सके, निकम्मा। अपनी कुचाल के कारण कही न टिकनेवाला, इधर उधर मारा मारा फिरनेवाला।

निखरक(पु)—क्रि० वि० बेखटक, निश्चिततया।

निखरना—अक० मैल छँटकर साफ होना। रग खुलना।

निखरी—स्त्री० पक्की या घी की पकी हुई रसोई, 'सखरी' का उलटा।

निखर्व—वि० [सं०] दस हजार करोड। पुं० दस हजार करोड की सख्या या अक।

निखवखु(पु)—वि० बिलकुल, सब और बाकी कुछ नही।

निखाद—पुं० दे० 'निषाद'।

निखार—पुं० निर्मलता, स्वच्छता। शृगार।

निखारना—सक० [अक० निखरना] साफ करना। पवित्र करना।

निखालिस†—वि० विशुद्ध, जिसमे और किसी चीज का मेल न हो।

निखिल—वि० [सं०] सपूर्ण, सब।

निखुटना—अक० खतम होना।

निखेध(पु)—पुं० दे० 'निषेध'। ⊙ना(पु)—सक० मना करना।

निखोट—वि० जिसमे कोई खोटाई या दोष

न हो। साफ, स्पष्ट या खुला हुआ। क्रि० वि० वेधड़क।
निखोटना—सक० नाखून से तोड़ना या काटना।
निगंदना—सक० रजाई, दुलाई आदि रुई भरे कपड़ो मे तागा डालना।
निगंध—वि० गधहीन।
निगड़—स्त्री०[सं०] हाथी के पैर बाँधने की जजीर, आँदू। वेड़ी।
निगद, निगदन—पुं० [सं०] भाषण, कथन।
निगम—पुं० [सं०] मार्ग, पथ। वेद। हाट, वाजार। मेला। रोजगार, व्यापार। व्यापारियो का सघ। निश्चय। राजाज्ञा, नीति या विधान द्वारा किसी नगर, वस्ती स्थान आदि का एक व्यक्ति के समान प्रबध करनेवाला व्यक्तिसमूह या सघ (अं०कारपोरेशन)। कायस्थो का एक भेद। **निगमागम**—पुं० वेद शास्त्र।
निगमन—पुं० [सं०] न्याय के अनुमान के पाँच अवयवो मे से एक, सावित की जानेवाली वात सावित हो गई, यह जताने के लिये दलील आदि के पीछे उस वात को फिर कहना, नतीजा।
निगर—वि०, पुं० दे० 'निकर'।
निगरा—पुं० (ऊख का) रस जिसमे पानी न मिला हो।
निगरानी—स्त्री०[फा०] देखरेख, निरीक्षण।
निगरुⓅ—वि०हलका, जो भारी या वजनी न हो।
निगलना—सक० लील जाना, गले के नीचे उतार लेना। दूसरे का धन आदि मार बैठना।
निगहबान—पुं० [फा०] रक्षक, प्रतिपालक। **निगहबानी**—स्त्री० रक्षा, प्रतिपालन।
निगालिका—स्त्री० [सं०] आठ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे जगण, रगण, और लघु गुरु होते हैं, प्रमाणिका, नागस्वरूपिणी।
निगाली—स्त्री० हुक्के की नली जिसे मुँह मे रखकर धुआँ खीचते हैं।
निगाह—स्त्री० [फा०] दृष्टि, नजर। देखने की क्रिया या ढग, चितवन। कृपादृष्टि। ध्यान, विचार। परख, पहचान। चौकसी।
निगिधⓅ—वि० जिसका वहुत लोभ हो, वहुत प्यारा।
निगुणⓅ—वि० दे० 'निर्गुण'।
निगुनीⓅ—वि० गुणरहित।
निगुरा—वि० जिसने गुरुसे मत्र न लिया हो, अदीक्षित।
निगूढ़, निगूढ़ा—वि० [सं०] अत्यत गुप्त, रहस्यमय।
निगृहीत—वि० [सं०] धरा हुआ, पकड़ा हुआ। आक्रात, पीडित। दडित।
निगोड़ा—वि० जिसके ऊपर कोई वडा न हो, जिसके आगे पीछे कोई न हो, अभागा। दुष्ट, कमीना।
निग्रह—पुं० [सं०] रोक, अवरोध। दमन। चिकित्सा। दड। पीडन, सताना। वधन। भर्त्सना, फटकार। सीमा, हद। ⊙**ना**Ⓟ=सक० पकड़ना। रोकना। दड देना। ⊙**स्थान**=पुं० वादविवाद या शास्त्रार्थ मे वह अवसर जहाँ दो शास्त्रार्थ करनेवालो मे से कोई उलटी पुलटी या नासमझी की वात कहने लगे और उसे चुप करके शास्त्रार्थ वद कर देना पड़े। यह पराजय का स्थान है। न्याय मे ऐसे निग्रहस्थान २२ कहे गए है। **निग्रही**—वि० रोकनेवाला, दवानेवाला। दड देनेवाला।
निघंटु—पु० [सं०] वैदिक शब्दो का कोश। शब्दसग्रह मात्र। आयुर्वेद का ग्रंथ जिसमे औषध द्रव्यों के गुण और प्रयोगफल का वर्णन रहता है।
निघटनाⓅ—अक० दे० 'घटना'।
निघरघट—वि० जिसका कही घरघाट या ठिकाना न हो, निर्लज्ज। मु० ~**देना**= वेहयाई से झूठी सफाई देना।
निघरा—वि० जिसके घरवार न हो, निगोड़ा (गाली)।
निचय—पु० [सं०] समूह। निश्चय। सचय।
निचलⓅ—वि० दे० 'निश्चल'।
निचला—वि० नीचे का, नीचेवाला। स्थिर, शांत।
निचाई—स्त्री० नीचापन। नीचे की ओर दूरी या विस्तार। कमीनापन।
निचान—स्त्री० नीचापन। ढाल, ढालुआँपन।
निचिंत—वि० चितारहित, वेफिक्र।

निचीता(पु)—वि० दे० 'निश्चित'
निचुड़ना—अक० [सक० निचोड़ना] रस से भरी या गीली चीज का इस प्रकार दबाना कि रस या पानी टपककर निकल जाय। छूटकर चूना, गरना। रसहीन या सारहीन होना। शरीर का रस या सार निकल जाने से दुबला होना ।
निचै(पु)—पुं० दे० 'निचय' ।
निचोड़—निचोडने से निकला हुआ रस आदि। सार, सत। साराश, खुलासा। ⊙ना = सक० [अक० निचुडना] गीली या रसभरी वस्तु को दबाकर या ऐंठकर उसका पानी या रस टपकाना, गारना। किसी वस्तु का सार भाग निकाल लेना। सर्वस्व हरण कर लेना।
निचोना(पु)†—सक० दे० 'निचोडना'।
निचोर—पु० दे० 'निचोड। ⊙ना(पु)† = सक० दे० निचोडना'।
निचोल—पु० [सं०] स्त्रियो की ओढनी या चादर।
निचोवना(पु)†—सक० दे० 'निचोडना'।
निचौहाँ—वि० नीचे की ओर किया हुआ या झुका हुआ, नमित ।
निचौहैं—क्रि० वि० नीचे की ओर ।
निछक्का—पु० एकात, निर्जन स्थान ।
निछत्र—वि० बिना छत्र का। बिना राजचिन्ह का। क्षत्रियो से हीन ।
निछनियाँ†—क्रि० वि० दे० 'निछान'।
निछल(पु)—वि० छलहीन ।
निछान†—खालिस, विशुद्ध। क्रि० वि० एक दम, बिलकुल ।
निछावर—स्त्री० एक उपचार या टोटका जिसमे किसी की रक्षा के लिये कोई वस्तु उसके सिर या सारे अगो के ऊपर से घुमाकर दान कर देते या भूमि पर डाल देते हैं, उतारा। वह द्रव्य या वस्तु जो ऊपर घुमाकर दान की जाय या छोड दी जाय। प्रसन्नता या खुशी के आदि के कारण धन आदि का बाँटना या लुटाना। इनाम, नेग। मु०—~(किसी का) किसी पर होना = किसी के लिये मर जाना।
निछोह, निछोही—वि० जिसे छोह या प्रेम न हो। निर्दय।

निज—अव्य० निश्चय, ठीक ठीक। स्वयमेव, खुद बखुद। वि० [सं०] अपना, स्वकीय। खास, प्रधान। ठीक, सच्चा। ⊙स्व = पु० अपनापन। मौलिकता। निजानंद—वि० अपने मे ही आनंद लेनेवाला, आत्मानंद स्वरूप। मु०~करके = निश्चय, अवश्य। खासकर, मुख्यत.।~का = खास अपना।
निजकाना†—अक० निकट पहुँचना ।
निजाअ—पु० [अ०] झगडा तकरार। शत्रुता।
निजाई—वि० [अ०] जिसके संबध मे कोई झगडा हो ।
निजाम—पु०[अ०]इतजाम, व्यवस्था। हैदराबाद के नवाबो की पदवी या खिताब।
निजी—वि० निज का, अपना ।
निजू†(पु)—वि० निर्बल।
निझरना—अक० अच्छी तरह झड़ जाना। लगी हुई वस्तु के झड जाने से खाली हो जाना। सार वस्तु से रहित हो जाना। अपने को निर्दोष प्रमाणित करना।
निझोल—पु० हाथी ।
निझ्झल(पु)—पु० हाथी।
निटोल—पु० मुहल्ला, बस्ती ।
निट्टि(पु)—क्रि० वि० दे० 'नीठि' ।
निठल्ला—वि० जिसके पास कोई कामधधा न हो, खाली। बेरोजगार। निठल्लू—वि० दे० 'निठल्ला' ।
निठाला—पु० ऐसा समय जब कोई कामधधा न हो। वह वक्त या हालत जिसमें कुछ आमदनी न हो।
निठुर—वि० जो पराया कष्ट न समझे, निर्दय। ⊙ई(पु)—स्त्री० दे० 'निठुरता'। ⊙ता(पु)—स्त्री० क्रूरता, हृदय की कठोरता। निठुराई(पु)—स्त्री० दे० 'निठुरता'।
निठोर—पुं० बुरी या खराब जगह। बुरा दावँ, बुरी दशा ।
निडर—वि० जिसे डर न हो, निर्भय। साहसी। ढीठ। ⊙पन⊙ पना = पुं० निर्भयता।
निड़—क्रि० वि० निकट, पास ।
निढाल—वि० शिथिल, थका माँदा, अशक्त। उत्साहहीन।
निढिल(पु)—वि० कसा या तना हुआ। कड़ा
नितंत—क्रि० वि० दे० 'नितांत' ।

नितंब—पु० [सं०] जाँघो की हड्डियो के ऊपर कमर का पिछला उभरा हुआ भाग, चूतड़ (विशेषत स्त्रियो का)। कधा। पहाड का निचला हिस्सा या तलहटी। नितंबिनी—स्त्री० सुदर नितंबोवाली स्त्री, सुदरी।

नित—अव्य [सं०] प्रति दिन, रोज। सदा, हमेशा। ⊙नित = प्रति दिन, रोज रोज।

नितल—पुं० [सं०] सात पातालो मे से एक।

नितांत—वि० [सं०] सर्वथा, एक दम।

निति(पु)†—अव्य० दे० नित। बहुत अधिक।

नित्य—वि० [सं०] जो सब दिन रहे, अविनाशी। प्रति दिन का। अव्य० प्रति दिन, रोज रोज। सदा, हमेशा। ⊙कर्म = पु० प्रति दिन का काम। वह धर्म सबधी कर्म जिसका प्रति दिन करना आवश्यक ठहराया गया हो। ⊙क्रिया = स्त्री० नित्यकर्म। ⊙नियम = पु० प्रतिदिन का बँधा हुआ व्यापार, रोज का कायदा। ⊙नैमित्तिक कर्म = पु० पर्व, श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि कर्म। ⊙प्रति = अव्य० हर रोज। ⊙शः = अव्य० प्रति दिन। सदा। ⊙सम = पु० न्याय मे वह अयुक्त खंडन जो इस प्रकार किया जाय कि अनित्य वस्तुओ मे भी अनित्यता नित्य है, अत. धर्म के नित्य होने से धर्मी भी नित्य हुआ।

निथंभ—पु० खभा।

निथरना—अक० पानी या और किसी पतली चीज का स्थिर होना जिससे उसमे घुली मैल आदि नीचे बैठ जाय। घुली हुई चीज के नीचे बैठ जाने से जल का अलग हो जाना। छनकर साफ होना।

निथार—पु० घुली हुई चीज के बैठ जाने से अलग हुआ साफ पानी। पानी के स्थिर होने से उसके तल मे बैठी हुई चीज। जमकर बैठी हुई वस्तु। ⊙ना=सक०[अक० निथरना] पानी या और किसी पतली चीज को स्थिर करना जिससे उसमे घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय। घुली हुई चीज को नीचे बैठाकर खाली पानी अलग करना। छानकर साफ करना।

निदई(पु)—वि० दे० 'निर्दय'।

निदरना(पु)—सक० निरादर करना। त्याग करना। मात करना, बढ़कर निकलना।

निदर्शन—पु० [सं०] प्रकट करने, दिखाने या प्रदर्शित करने का कार्य। उदाहरण, दृष्टात।

निदर्शना—स्त्री० [सं०] एक अर्थालकार जिसमे एक बात किसी दूसरी बात को ठीक ठीक कर दिखाती हुई कही जाती है।

निदलन(पु)—पुं० दे० 'निर्दलन'।

निदहना(पु)—सक० जलाना।

निदाघ—पु० [सं०] गरमी। धूप, घाम। ग्रीष्म काल।

निदान—पु० [सं०]आदि कारण। कारण। रोग की पहचान। अत, अवसान। तप के फल की चाह। शुद्धि। अव्य० अंत मे, आखिर। वि० निकृष्ट, बहुत गया बीता।

निदारुण—वि० [सं०] घोर, भयानक। दु सह। निर्दय।

निदाह(पु)—पु० दे० 'निदाघ'।

निदिध्यासन—पुं० [सं०] श्रवण और मनन से प्राप्त ज्ञान का फिर फिर स्मरण, पुन पुन चिंतन।

निदेश(पु)—दे० 'निदेश'।

निदोष(पु)—वि० दे० निर्दोष'।

निद्धि—स्त्री० दे० 'निधि'।

निद्र(पु)—[सं०] एक उपसहारक अस्त्र।

निद्रा—स्त्री० [सं०] शरीर की (साधारणतः रात मे) कुछ घटो तक होनेवाली वह दशा या अवस्था जिसमे स्नायविक क्रियाएँ रुकी रहती हैं, आँखें बद रहती हैं, मासपेशियाँ ढीली पड़ जाती है और चेतना प्राय: लुप्त रहती है, नीद। निद्राण—वि० लुप्त, सोया हुआ, सोता हुआ। निद्रायमान—वि० जो नीद मे हो। निद्रालु—वि० निद्राशील, सोनेवाला। निद्रित—वि० सोया हुआ।

निधड़क—क्रि० वि० बिना किसी रुकावट के। बिना आगा पीछा किए। बेखटके।

निधन—पुं० [सं०] नाश। मरण। कुल, खानदान। कुल का अधिपति। विष्णु। (पु)वि० निर्धन, दरिद्र।

निधनी—वि० निर्धन।

निधान—पुं० [सं०]आधार, आश्रय। निधि। वह स्थान जहाँ कोई वस्तु लीन हो।

निधि—स्त्री० [सं०] खजाना, गड़ा हुआ

खजाना। कुबेर के नौ प्रकार के रत्न · पद्म, महापद्म, शख, मकर, कच्छप, मुकुद, कुद, नील और खर्व। वह धन जो किसी विशेष कार्य के लिये अलग जमा कर दिया जाय। समुद्र। आधार, घर (जैसे—गुणनिधि)। विष्णु। शिव। नौ की सख्या। ⊙नाथ, ⊙पति = पुं० निधियो के स्वामी, कुबेर।

निनरा—वि० न्यारा, अलग।

निनाद—पुं० [स०] शब्द, आवाज। ⊙ना(पु) = अक० [हिं०] निनाद या शब्द करना। निनादी—वि० शब्द करनेवाला।

निनान(पु)—पु० अंत। लक्षण। क्रि० वि० अत मे, आखिर। वि० परले सिरे का, एकदम। बुरा, निकृष्ट।

निनारा—वि० अलग, जुदा। दूर हटा हुआ। निराला।

निनारो(पु)†—वि० विलक्षण, विचित्र। अलग, जुदा।

निनावाँ—पु० मुँह के भीतरी भागो मे निकलनेवाले विकृतिजन्य महीन लाल दाने जिनमे छरछराहट होती है।

निनौना†—सक० नीचे करना, झुकाना।

निन्नानबे—वि० नव्वे और नौ। पु० नव्वे और नौ की सख्या, ९९। **मु०~के फेर में आना या पड़ना** = धन बढाने की धुन होना।

निन्यारा(पु)—वि० दे० 'निनारा'।

निपंग(पु)—वि० जिसके हाथ पैर टूटे हो, अपाहिज।

निपजना(पु)†—अक० उपजना, उत्पन्न होना। बढना। बनना।

निपजी(पु)—स्त्री० मुनाफा। उपज।

निपट—अव्य० सरासर, एकदम। निरा, विशुद्ध।

निपटना—अक० दे० 'निबटना'।

निपतन—पु० [सं०] अध पतन, गिराव।

निपत्न—वि० पत्नहीन, ठूंठा।

निपात—पुं० [सं०] पतन, गिराव। अध-पतन। विनाश। मृत्यु, क्षय। वह शब्द जो व्याकरण के नियमों के अनुसा बना हो। वि० बिना पत्तो का। ⊙ना(पु) = सक० [हिं०] नीचे गिराना। नष्ट करना, काटकर गिराना। मार गिराना, वध करना। निपातन—पु० गिराने का कार्य। नाश। वध करने का कार्य। निपाती—वि० गिरानेवाला, फेंकनेवाला। मारनेवाला। पु० शिव, महादेव। (पु) वि० बिना पत्ते का।

निपीडन—पु० [सं०] पीडित करना, तकलीफ देना। मलना दलना। पेरना।

निपीड़ना(पु)—सक० कष्ट पहुचाना, पीडित करना। पेरना। दबाना, मलना-दलना।

निपुण—वि० [सं०] दक्ष, कुशल। ⊙ता = स्त्री० दक्षता, कुशलता। निपुणाई(पु)—स्त्री० दे० 'निपुणता'।

निपुत्नी—वि० निपूता, नि सतान'।

निपुन(पु)—वि० दे० 'निपुण'। ⊙ई(पु)—स्त्री० दे० 'निपुणता'।

निपूता, निपूत(पु)+—वि० अपुत्न, पुत्नहीन।

निफन(पु)—वि० पूर्ण, पूरा। पूर्ण रूप से, अच्छी तरह।

निफरना—अक० चुभकर या घँसकर आरपार होना। खुलना, उद्घाटित होना।

निफल(पु)—वि० निष्फल, निरर्थक।

निफाक—पु०[अ०]द्रोह, बैर। फूट, अनबन।

निफोट(पु)—वि० स्पष्ट, साफसाफ।

निबध—पु० [सं०] बधन। वह व्याख्या जिसमे अनेक मतो का सग्रह हो। लिखित प्रबध। किसी विषय पर (मुख्यत गद्यमे) साहित्यिक और रोचक गुफन, लेख। गीत। प्रबध, रचना।

निबंधन—पु० [सं०] बंधन। व्यवस्था, नियम। कर्तव्य। हेतु।

निबकौरी†—स्त्री० नीम का फल। नीम का बीज।

निबटना—अक० निवृत्त होना, छुट्टी या फुरसत पाना। पूरा। होना। तै होना। चुकना खतम होना। शौच आदि से निवृत्त होना।

निबटाना—सक० [अक० निबटना] पूरा करना, समाप्त करना। खतम करना। चुकाना, बेबाक करना। तै करना। निर्णय करना, फैसला करना।

निबटाव—पु० दे० 'निबटेरा'। निबटेरा—

पुं० निबटने का भाव या क्रिया, छुट्टी। समाप्ति। फैसला, निश्चय।
निबड़ना(पु)—अक० दे० 'निबटना'।
निबद्ध—वि० [सं०] बँधा हुआ। ग्रथित। बैठाया या जड़ा हुआ। निरुद्ध, रुका हुआ।
निबर†—वि० दे० 'निर्बल'।
निबरना—अक० मुक्त होना, उद्धार पाना। छुट्टी पाना, फुरसत पाना। (काम) पूरा होना, समाप्त होना। बँधी या लगी वस्तु का अलग होना, छूटना। एक मे मिली-जुली वस्तुओ का अलग होना। सुलझना। दूर होना, खतम होना। निर्णय होना।
निबल—वि० दुर्बल।
निबह—पुं० समूह, झुंड।
निबहना—अक० निभना, संबंध लगातार बना रहना। पार पाना, छुट्टी पाना। निरंतर व्यवहार होना, पालन होना। पूरा होना, सपरना।
निबहुर†—जहाँ से कोई न लौटे, यमद्वार। **निबहुरा**†—वि० जो चला जाय और न लौटे (गाली)।
निबाह—पुं० निबाहने की क्रिया या भाव, गुजारा। संबंध या परपरा की रक्षा। पूरा करने का कार्य, पालन। छुटकारे का ढग, बचाव का रास्ता। ⊙**ना**=सक० [अक० निबहना] (किसी बात का) निर्वाह करना, बराबर चलाए चलना। पालन करना, चरितार्थ करना। बराबर करते जाना, सपराना।
निबिड़—वि० दे० 'निविड'।
निबुआ(पु)—पु० दे० 'नीबू'।
निबुकना(पु)†—अक० छुटकारा पाना, बधन से निकलना। बधन खुलना। पार होना, निकल जाना।
निबेड़ना—सक० (बंधन आदि) छुडाना। छाँटना, चुनना। सुलझाना। निर्णय करना। दूर करना, अलग करना। पूरा करना। **निबेड़ा**—पु० छुटकारा, मुक्ति। बचाव, उद्धार। बिलगाव, छाँट, चुनाव। सुलझाने की क्रिया या भाव। त्याग। निबटेरा, समाप्ति। निर्णय, फैसला।
निबेरना—सक० दे० 'निबेड़ना'। **निबेरा**—पु० दे० 'निबेड़ा'।
निबेहना(पु)—सक दे० 'निबेरना'।
निबौरी, निबौली—स्त्री० निबकौरी, नीम का फल।
निभ—पु० [स०] प्रकाश, प्रभा। वि० तुल्य, समान (पद के अतमात्र मे, जैसे देवनिभ)।
निभना—अक० निर्वाह होना, सबध लगातार बना रहना। पार पाना, छुटकारा पाना। लगातार बना रहना। गुजारा होना। पूरा होना, सपरना। पालन होना, चरितार्थ होना।
निभरम(पु)—वि० जिसे या जिसमे कोई शका न हो। क्रि० वि० बेखटके, बेधडक।
निभरोसी†—वि० जिसे कोई भरोसा न रह गया हो, निराश। निराश्रय।
निभाना—सक० [अक० 'निभना'] (किसी बात का) निर्वाह करना, बरबार चलाए चलना। चरितार्थ करना, पालन करना। बराबर करते जाना।
निभाउँ(पु)—वि० जिसमे कोई भाव या मनोवेग न हो।
निभागा—वि० अभागा।
निभाव—पु० दे० निर्वाह'।
निभृत—वि० [सं०] निर्जन, एकात। छिपा हुआ, बद किया हुआ। निश्चल, स्थिर। रखा हुआ। नम्र, विनीत। शात, धीर। भरा हुआ, पूर्ण।
निभ्रांत(पु)—वि० दे० 'निभ्रांत'।
निमंत्रना—सक० न्योता देना।
निमंत्रण—पु० [सं०] किसी कार्य के लिये नियत समय पर आने का अनुरोध करना, बुलावा। खाने का बुलावा, न्योता। ⊙**पत्र**=पु० वह पत्र (लिखा, टकित [illegible] या छपा हुआ कागज) जिसके द्वारा किसी को किसी विशेष कार्य या अवसर के लिये बुलाया जाय। **निमंत्रित**—वि० जिसे न्योता दिया गया हो।
निमक‡—पु० दे० 'नमक'।
निमकी—स्त्री० नीबू का अचार। मैदे की मोयनदार नमकीन टिकिया।
निमकौड़ी—स्त्री० दे० 'निबौली'।
निमगारना(पु)†—अक० उत्पन्न करना।
निमग्न—वि० [सं०] डूबा हुआ, मग्न। तन्मय।

निमज्जना(पु)—अक० गोता लगाना, अवगाहन करना।

निमज्जन—पु० [सं०] डूबकर किया जानेवाला स्नान, अवगाहन। निमज्जित—वि० डूबा हुआ, मग्न। नहाया हुआ।

निमटना—अक० दे० 'निबटना'।

निमता(पु)—वि० जो उन्मत्त न हो।

निर्मम—वि० जिसमे ममत्व या प्रेम न हो, कूर, निर्दय।

निमाज—स्त्री० दे० 'नमाज'। वि० दे० 'नवाज'।

निमान—वि० नीचा, ढालयुक्त। नम्र, विनीत। दब्बू। मनचाही करनेवाला। (पु)पु० नीचा स्थान, गड्ढा। जलाशय।

निमि—पु० [सं०] महाभारत के अनुसार एक ऋषि जो दत्तात्रेय के पुत्र थे। राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। वशिष्ठ के शाप से शरीर नष्ट हो जाने पर इन्होने प्राणिमात्र की पलको का आश्रय लिया जिससे उनकी आँखें बद होने और खुलने लगी (पुराण)। आँखो का मिचना, पलक गिरना। ⊙राज(पु) = पु० निमिवशी राजा जनक।

निमिख—पु० दे० 'निमिष'।

निमित्त—पु० [सं०] हेतु, कारण। चिह्न, लक्षण। उद्देश्य। साधक उपकरण। ⊙क = वि० किसी हेतु से होनेवाला, जनित। ⊙कारण = पु० वह जिसकी सहायता या कर्तृत्व से कोई वस्तु बने (न्याय)। विशेष दे० 'कारण'।

निमिष—पु० दे० 'निमेष'।

निमीलन—वि० [सं०] बद करना, मूंदना। सिकोड़ना।

निमूद—वि० मुंदा हुआ, बद।

निमेख—पुं० दे० 'निमेष'।

निमेट—वि० न मिटनेवाला।

निमेष—पु० [सं०] पलक का गिरना, आँख का झपकना। पलक मारने भर का समय, पल, क्षण, पलक।

निमोना—पु० चने या मटर के पिसे हुए हरे दानो का बनाया हुआ रसदार नमकीन व्यजन।

निम्न—वि० [सं०] नीचा। ⊙गा = स्त्री० नदी। निम्नोक्त—वि० [सं०] नीचे कहा हुआ।

नियता—पु० [सं०] नियम बांधनेवाला, व्यवस्था करनेवाला। कार्य को चलानेवाला। नियम पर चलानेवाला, शासक।

नियंत्रण—पुं० [सं०] नियम आदि में बाँधना या उसके अनुसार चलाना। नियंत्रित—वि० नियम मे बंधा हुआ, कायदे का पाबंद।

नियत—वि० [सं०] नियम द्वारा स्थिर, परिमित। ठीक किया हुआ, निश्चित, स्थिर। नियोजित, तैनात। स्त्री० दे० 'नीयत'। नियताप्ति—स्त्री० नाटक मे अन्य उपायो को छोड़कर एक ही उपाय से फलप्राप्ति का निश्चय। नियति—स्त्री० नियत होने का भाव, बँधेज। स्थिरता। भाग्य, दैव। अवश्य होनेवाली बात। पूर्वकृत कर्म का निश्चित परिणाम।

नियम—पु० [सं०] विधि या निश्चय के अनुकूल प्रतिबध, कायदा, बँधा हुआ क्रम, परपरा। ठहराई हुई रीति, विधि, व्यवस्था, कानून। अनुशासन, नियत्रण। शर्त। सकल्प, प्रतिज्ञा। योग के आठ अंगो मे से एक जिसमे शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान किया जाता है। एक अर्थालकार जिसमें किसी बात का एक ही स्थान पर नियम कर दिया जाय; अर्थात् उसका होना एक ही स्थान पर बतलाया जाय। विष्णु। महादेव। ⊙बद्ध = वि० नियमो से बँधा हुआ। नियमन—पु० नियमबद्ध करने का कार्य, कायदा बाँधना। शासन, निग्रह। नियमित—वि० बंधा हुआ क्रमबद्ध। कायदे या कानून के मुताबिक।

नियर†—अव्य० समीप, पास। नियराई†—स्त्री० निकटता, सामीप्य। नियराना†—अक० निकट पहुँचना।

नियाई—वि० दे० 'न्यायी'।

नियाज—स्त्री० [फा०] इच्छा। दीनता। बड़ो का प्रसाद। मृतक के उद्देश्य मे दरिद्रों को दिया जानेवाला भोजन। बड़ों मे होनेवाली भेंट।

नियान(पु)—पुं० परिणाम, नतीजा। अव्य० अंत मे, आखिर।
नियामक—पुं० [सं०] नियम करनेवाला। व्यवस्था या विधान करनेवाला। नियंत्रण रखनेवाला। मारनेवाला।
नियामत—स्त्री० अलभ्य पदार्थ। स्वादिष्ट भोजन, उत्तम व्यंजन। धन दौलत।
नियार, नियारा—पुं० जौहरी या सुनारों की दूकान का कूड़ा कतवार। उसमे से निकलनेवाला माल। नियारिया—पुं० सुनारों या जौहरियों की राख, कूड़ा करकट आदि मे से माल निकालनेवाला। चतुर मनुष्य, चालाक आदमी।
नियारा'—वि० अलग, दूर। दे० नियार'।
नियारे(पु)†—अव्य० दे० 'न्यारे'।
नियाव†—पुं० दे० 'न्याय'।
नियुक्त—वि० [सं०] नियोजित, तैनात। तत्पर किया हुआ, प्रेरित। स्थिर किया हुआ। नियुक्ति—स्त्री० मुकर्ररी। तैनाती।
नियुत—वि० [सं०] एक लाख, लक्ष। दस लाख।
नियुद्ध—पुं० [सं०] बाहुयुद्ध, कुश्ती।
नियोक्ता—पुं० [सं०] नियोजित करनेवाला। स्थिर या मुकर्रर करनेवाला।
नियोग—पुं० [सं०] नियोजित करने का कार्य, तैनाती। प्रेरणा। अवधारण। उत्तरदायित्व, कर्तव्यभार। आर्यों की एक प्राचीन प्रथा जिसके अनुसार कोई निसंतान स्त्री पति के न रहने पर (मर जाने पर) अथवा उससे संतान न होने पर अपने देवर पति के और किसी गोत्रज वा पुरोहित से संतान उत्पन्न करा सकती थी। आज्ञा।
नियोजक—पुं० [सं०] काम मे लगानेवाला, मुकर्रर करनेवाला। नियोजन—पुं० किसी काम मे लगाना, तैनात करना।
निरंकार(पु)—पुं० दे० 'निराकार'।
निरंकुश—वि० [सं०] जिसके लिये कोई अंकुश या प्रतिबंध न हो, बिना डर का, स्वेच्छाचारी।
निरंग—वि० [सं०] अंगरहित। जिसमे और कुछ न हो, जिसमे अंगों का विभाजन न हो, जैसे, निरंग रूपक (अलंकार)। बेरंग, विवर्ण। काम। उदास, बेरौनक। पुं० रूपक अलंकार का एक भेद।
निरंजन—वि० [सं०] अंजनरहित, बिना काजल का। कल्मषशून्य, दोषरहित। माया से निर्लिप्त (ईश्वर का एक विशेषण)। पुं० परमात्मा।
निरंतर—वि० [सं०] जो बराबर चला गया हो, अविच्छिन्न। निविड़, घना। लगातार या बराबर होनेवाला। सदा रहनेवाला, स्थायी। क्रि० वि० बराबर, सदा।
निरंध—वि० [सं०] भारी अंधा। महामूर्ख। बहुत अँधेरा।
निरंबु—वि० [सं०] बिना पानी का, निर्जल।
निरंभ—वि० निर्जल। बिना पानी पिए रह जानेवाला।
निरंश—वि० [सं०] जिसे उसका भाग न मिला हो। बिना अक्षांश का।
निरंस—वि० बिना अंश या भाग का।
निर्—उप० [सं०] के० समा० मे प्रयुक्त एक उपसर्ग। दे० 'निस्'। ⊙गंध = वि० गंधहीन। ⊙गत = वि० निकला हुआ, बाहर आया हुआ। ⊙गम = पुं० निकास। ⊙गुण = पुं० गुण या विशेषणरहित अवस्था। परमेश्वर। निर्गुणोपासक मत का। वि० जो सत्व, रज, तम तीनों गुणों से रहित हो। जिसमे कोई गुण न हो। ⊙गुणिया = वि० [हिं०] वह जो निर्गुण ब्रह्म की उपासना करता हो। ⊙गुणी = वि० जिसमे कोई गुण न हो, मूर्ख। ⊙घंट पुं० शब्द या ग्रंथसूची। ⊙घात = पुं० तेज हवा चलने का शब्द। बिजली की कड़क। एक प्रकार का अस्त्र। ⊙घिन(पु) = वि० [हिं०] दे० 'निर्घृण'। ⊙घृण = वि० जिसे गंदी वस्तुओं से या बुरे कामों से घृणा या लज्जा न हो। अति नीच; निंदित। निर्दय। ⊙घोष = पुं० शब्द, आवाज। वि० शब्दरहित। ⊙छल(पु)† = वि० दे० 'निश्छल'। ⊙जन = वि० वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो, सुनसान। ⊙जर = पुं० जराविहीन प्राणी। देवता।

वि० जरारहित, तरुण। ⊙जल = वि० बिना जल का, जिसमे जल पीने का विधान न हो। ⊙जलाएकादशी = स्त्री॰ जेठ सुदी एकादशी तिथि, जिसदिन लोग निर्जल व्रत रखते हैं। ⊙जीव = वि० जीवरहित, मृतक। अशक्त या उत्साहहीन। ⊙झर = पु० पानी का झरना, सोता, चश्मा। ⊙झरिणी = स्त्री० नदी, दरिया। ⊙दम वि० जिसे दम्भ या अभिमान न हो। आडबररहित। ⊙दई(पु)† = वि० [हि०] दे० 'निर्दय'। ⊙दय = वि० निष्ठुर, बेरहम। ⊙दयी(पु) = वि० [हि०] दे० निर्दय'। ⊙दल = वि० जिसमे दल या पत्र न हो। जो किसी दल का न हो। ⊙दूषण(पु)† = वि० [हि०] दे० 'निर्दोष'। ⊙दोश = वि० बेऐब, बेदाग। बेकसूर। ⊙दोशी = वि० दे० 'निर्दोष'। ⊙द्वद = वि० [हि०] दे० 'निर्द्वंद्व'। ⊙द्वद्व = वि० जिसका कोई विरोध करनेवाला न हो। जो रोग, द्वेष, मान, अपमान आदि द्वद्वो से रहित या परे हो। स्वच्छद। ⊙धधा = वि० [हि०] जिनके हाथमे कामधधा न हो, बेरोजगार। ⊙धन = वि० धनहीन, गरीब। ⊙धार = पु० [हि०] दे० 'निर्धारण'। ⊙धारक = पु० वह जो किसी बात का निर्धारण या निश्चय करता हो। ⊙धारण = पु० ठहराना या निश्चित करना। निश्चय, निर्णय। न्याय के अनुसार किसी एक जाति के पदार्थों मे से गुण या कर्म आदि के विचार मे कुछ को अलग करना। ⊙धारित = वि० निश्चित किया हुआ। ⊙निमेष = क्रि० वि० बिना पलक झपकाए, एकटक। वि० जो पलक न गिरावे। जिसमे पलक न गिरे। ⊙बंध = पु० रुकावट, अडचन। जिद। आग्रह। ⊙बल = वि० बलहीन, कमजोर। ⊙बाध = वि० बाधारहित। क्रि० वि० बिना किसी प्रकार की बाधा के। ⊙बाधित = वि० दे० 'निर्बाध' ⊙बुद्धि = वि० बेवकूफ, मूर्ख। ⊙बोध = वि० जिसे अच्छे बुरे का कुछ भी ज्ञान न हो, अनजाना। ⊙भय = वि० निडर, बेखौफ। ⊙भर = वि० अवलबित, आश्रित। पूर्ण, भरा हुआ। युक्त, मिला हुआ। (निर् + भर) खाली। ⊙भीक = वि० बेडर, निडर। ⊙भ्रम = वि० भ्रमरहित, शकारहित। क्रि० वि० बेखटके। ⊙भ्रांत = वि० जिसमे कोई सदेह न हो। जिसको कोई भ्रम न हो। ⊙मत्सर = मत्सररहित, ईर्ष्याहीन। ⊙मद = वि० मदहीन, बिना घमड का। ⊙मम = वि० जिसे ममता न हो। जिसको कोई वासना न हो। निष्काम। ⊙ मर्म = वि० जिसमे भेद, छिपाव या रहस्य न हो, मर्मरहित। ⊙मल = वि० मलरहित, साफ, स्वच्छ। पापरहित, पवित्र। निर्दोष, कलंकहीन। ⊙मला = पु० [हि०] नानकपथी एक साधु सप्रदाय। ⊙मात्रिक = वि० बिना मात्रा का। ⊙मायल(पु) = पु० [हि०] दे० 'निर्माल्य'। ⊙माल्य = पु० वह पदार्थ जो किसी देवता पर चढ चुका हो। शिव जी को चढा हुआ पदार्थ जिसे गृहस्थ ग्रहण नही करते। ⊙मुक्त = वि० आवागमन के बधन से मुक्त। ⊙मूल = वि० बिना जड का। जड से उखाडा हुआ। बेबुनियाद, बेजड। सर्वथा नष्ट। क्रि० वि० समूल, अपने कारण और कार्य दोनो के साथ। ⊙मूलन = पु० जड मे उखाडने की क्रिया, विनाश। ⊙मूलिनी = वि० स्त्री० निर्मूल करनेवाली। ⊙मोल (पु)† = वि॰ जिसका मूल्य बहुत अधिक हो या जिसके मूल्य का अनुमान न हो सके। अमूल्य। ⊙ मोह = वि० जिसके मन मे मोह या ममता न हो। ⊙मोहिनी = वि० स्त्री० [हि०] जिसके चित्त मे ममता या दया न हो। ⊙मोही = वि० [हि०] जिसके हृदय मे मोह या ममता न हो। ⊙यात = पु० वह जो कहीं से बाहर निकले। देश से बाहर जाने की क्रिया या जानेवाला माल। ⊙यातन = पु० बदला चुकाना। प्रतीकार। मार डालना। ⊙यास = पु० वृक्षो या पौधो मे से आप मे आप अथवा उनका तना आदि चीरने से निकलनेवाला। रस। गोद। बहना या झरना। ⊙युक्ति = पु० महात्माओ के निर्युक्तिक वचन जो सूत्र के लिये कहे गए हो। ⊙लज्ज = वि० बेशर्म, बेहया। ⊙लिप्त = वि० जो किसी विषय मे आसक्त न हो। अनासक्त। जो लिप्त न हो। ⊙लेप = वि० [हि०]

दे० 'निर्लिप्त'। ⊙लोभ = वि० जिसे लोभ न हो। ⊙वश = वि० जिसका वश नष्ट हो गया हो। ⊙वचन = पुं० निश्चित रूप से कोई बात कहना, निरूपण। निरुक्ति कथन। स्त्री० चुप, मौन। ⊙वसन = वि० नग्न, नगा। ⊙वहण = पु० निबाह, गुजर। समाप्ति। ⊙वाक् = वि० मौन, चुप। ⊙वाचक = पु० वह जो निर्वाचन करे या चुने। ⊙वाचन = पुं० किसी काम के लिये बहुतो मे से एक या अधिक को चुनना। ⊙वाचित = वि० चुना हुआ। वापण = पु० समाप्ति। विनाश। आग, दीपक आदि का बुझना। दान। ⊙ वासक = पुं० वह जो निर्वासन करता हो। देशनिकाला देनेवाला। ⊙वासन = पुं० मार डालना, वध। गाँव, शहर या देश आदि से दड स्वरूप बाहर निकाल देना, देशनिकाला। निकालना। ⊙ वासित = वि० जिसे देश-निकाला मिला हो, अपने निवासस्थान से निकाला हुआ। ⊙ विकल्प = वि० जो विकल्प, परिवर्तन या प्रभेदो आदि से रहित हो। स्थिर, निश्चित। ⊙ विकल्प समाधि = स्त्री० एक प्रकार की समाधि जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता आदि का कोई भेद नही रह जाता। ⊙विकार = वि० जिसमे किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो। ⊙ विघ्न = वि० विघ्न-बाधा-रहित। क्रि०वि० बिना किसी प्रकार के विघ्न के। ⊙विरोध = वि० जिसमे कोई विरोध या बाधा न हो। क्रि० वि० बिना किसी विरोध या रुकावट के। ⊙विवाद = वि० जिसमे कोई मतभेद या वितर्क न हो, बिना झगडे का। ⊙विशेष = पु० परमात्मा, परब्रह्म। ⊙विषी = स्त्री० एक घास जिसकी जड का व्यवहार अनेक प्रकार के विषो का नाश करने के लिये होता है। ⊙बीज = वि० बीजरहित। जो कारण से रहित हो। ⊙वीर्य = वि० कमजोर, निस्तेज। ⊙वेद = पु० अपना अपमान। खेद, दु ख। वैराग्य। ⊙वेदी = पु० वेद से परे, ब्रह्म। ⊙वैर = वि० वैर या द्वेष से रहित। ⊙व्यलीक = वि० निष्कपट। ⊙व्याज = वि० निष्क-पट, छलरहित। बाधारहित। ⊙हेतु = वि० जिसमे कोई हेतु या कारण न हो। मु०—निर्मूल होना = जड के साथ नष्ट होना, इस प्रकार नष्ट होना कि कोई चिह्न न बचे।

निरकार(पु)—वि० दे० 'निराकार'।

निरकेवल†—वि० खालिस, बिना मेल का। स्वच्छ।

निरक्षदेश—पु० [सं०] भूमध्यरेखा के आस-पास के देश जिनमे रात और दिन सदा बराबर होते है।

निरक्षन(पु)—पु० दे० 'निरीक्षण'।

निरक्षर—वि० [सं०] अक्षरशून्य। अनपढ, मूर्ख।

निरक्षरेखा—स्त्री० [सं०] भूमध्य रेखा जिसके बाद ही अक्षाश प्रारभ होते हैं। भूमध्य-रेखा पर स्थित भूभाग। निरक्षवृत्त, क्रातिवृत्त।

निरखना(पु)—सक० देखना, ताकना।

निरग—पुं० दे० 'नृग'।

निरगुन(पु)—वि० दे० 'निर्गुण'।

निरचू—वि० जिसे फुरसत मिल गई हो, निश्चित।

निरच्छ(पु)—वि० अधा।

निरच्छर—वि० दे० 'निरक्षर'।

निरजर—वि० जो कभी जीर्ण या पुराना न हो।

निरजोस, निरजोसु—पु० निचोड। निर्णय।

निरजोसी—वि० निचोड निकालनेवाला। निर्णय करनेवाला।

निरझर(पु)—पुं० दे० 'निर्झर'।

निरत—वि० [सं०] किसी काम मे लगा हुआ, तत्पर, लीन। (पु)†पुं० दे० 'नृत्य'। ⊙ना = सक० नाचना।

निरतिशय—वि० [सं०] हद दरजे का, सबसे बढकर।

निरत्थ(पु)—वि० दे० 'निरर्थ'।

निरदई(पु), निरदै(पु)—वि० दे० 'निर्दय'।

निरदहन—वि० खूब जलानेवाला निश्चय-पूर्वक जलानेवाला।

निरधातु—वि० शक्तिहीन।

निरधार(पु)—पुं० दे० 'निर्धार'। वि० ठहराय हुआ, निश्चत। ⊙ना = सक० निश्चय करना। मन मे धारण करना, समझना।

निरनउ—पु० दे० 'निर्णय'।
निरनुनासिक—वि० [सं०] (वर्ण) जिसका उच्चारण नाक के सबध से न हो, जो अनुनासिक न हो।
निरन्न—वि० [सं०] अन्नरहित। निराहार, जो अन्न न खाए हो।
निरन्ना—वि० निराहार।
निरपना(पु)—वि० जो अपना न हो। बेगाना, गैर।
निरपराध—वि० [स०] अपराधरहित, वेकसूर। क्रि० वि० बिना कोई कसूर किए। निरपराधी(पु)—वि० दे० 'निरपराध'।
निरपवाद—वि० [सं०] जिसमे कोई अप वाद या दोप न हो।
निरपेक्ष—वि० [सं०] जिसे किसी बात की अपेक्षा या चाह न हो। जो किसी पर निर्भर न हो, स्वतत्र। अलग, तटस्थ।
निरबसी—वि० जिसके वश या कुल मे कोई दूसरा न हो। नि सतान।
निरबल(पु)—वि० दे० 'निर्बल'।
निरबहना(पु)—अक० दे० 'निभना'।
निरबेद(पु)—पुं० वैराग्य। ताप। खिन्नता, उदासी।
निरबेरा(पु)—पु० दे० 'निबेरा'।
निरभिमान—वि० [सं०] जिसे अभिमान न हो।
निरभिलाष—वि० [सं०] अभिलाषारहित।
निरभूल(पु)—वि० बेखबर। "नदनंदन नव नागरी लखि सोवत निरभूल"। (जगद्विनोद ५४६)।
निरभै—वि० दे० 'निर्भय'।
निरभ्र—वि० [सं०] विना बादल का।
निरमना(पु)—सक० निर्माण करना, बनाना।
निरमर, निरमल(पु)—वि० दे० 'निर्मल'।
निरमाना(पु)—सक० बनाना, तैयार करना।
निरमान(पु)—पुं० दे० 'निर्माण'।
निरमायल(पु)—पुं० दे० 'निर्माल्य'।
निरमूलना(पु)—सक० निर्मूल करना। नष्ट करना।
निरमोल, निरमोलक(पु)—वि० अनमोल, अमूल्य। बहुत बढ़िया।
निरमोलिका—वि० दे० 'निरमोल'।
निरमोलिस—वि० अमूल्य, अनमोल।
निरमोली(पु)—वि० दे० 'निरमोल'।
निरमोही(पु)—वि० दे० 'निर्मोही'।
निरय—पुं० [सं०] नरक। दुर्गति, दुर्दशा।
निरयण—पुं० [सं०] अयनरहित गणना, ज्योतिष मे गणना की एक रीति।
निरर्थ—वि० दे० 'निरर्थक'। निरर्थक—वि० [स०] अर्थशून्य, वेमानी। न्याय मे एक निग्रह स्थान। बिना मतलब का, व्यर्थ। निष्फल।
निरलेप—वि० दे० 'निर्लेप'।
निरवच्छिन्न—वि० [सं०] सिलसिलेवार, अटूट।
निरवद्य—वि० [सं०] निंदा या दोप से रहित।
निरवध(पु)—वि० दे० 'निरवधि'।
निरवधि—वि० जिसकी कोई अवधि न हो। क्रि० वि० लगातार, निरतर।
निरवयव—वि० [स०] जिसमे अग प्रत्यग-भेद न हो, निराकार।
निरवलंब—वि० [सं०] अवलबहीन, आधार-रहित। जिसका कोई सहायक न हो।
निरवार—पुं० छुटकारा, बचाव। छुडाने या सुलझाने का काम। निवटेरा।
निरवारना(पु)—सक० टालना, रोकनेवाली वस्तु को हटाना। छुडाना। छोडना, त्यागना। गाँठ आदि छुडाना, सुलझाना। निर्णय करना, तै करना।
निरवाह‡(पु)—पुं० दे० 'निर्वाह'।
निरवाहक—वि० निर्वाह या रक्षा करनेवाला।
निरशन—पुं० [सं०] भोजन न करना, लघन।
निरसंक(पु)‡—वि० दे० 'नि शक'।
निरसचय(पु)—वि० बिना कुछ बचाकर रखा हुआ, सब कुछ।
निरस—वि० रसहीन। विरक्त।
निरसन—पुं० [स०] फेंकना, दूर करना। खारिज करना, रद्द करना। निराकरण, परिहार। निकालना। नाश, वध।
निरस्त्र—वि० [सं०] अस्त्रहीन, बिना हथियार का।
निरहंकार—वि० [सं०] अभिमान रहित।
निरहेतु(पु)—वि० दे० 'निर्हेतु'।
निरा—वि० बिना मेल का, खालिस। जिसके साथ और कुछ न हो, केवल। नितांत, बिलकुल।

निराई—स्त्री० फसल के पौधों के आसपास उगनेवाले तृण, घास आदि को दूर करने का काम। निराने की मजदूरी।
निराकरण—पुं० छाँटना। हटाना, दूर करना। मिटाना, रद करना। शमन, निवारण। युक्ति या दलील को काटना।
निराकांक्षा—स्त्री० [सं०] आकाक्षा या कामना का अभाव।
निराकार—वि० [सं०] जिसका कोई आकार न हो। पु० ईश्वर। आकाश।
निराकुल—वि० [सं०] जो आकुल या घबराया न हो। बहुत घबराया हुआ।
निराखर(पु)†—वि० बिना अक्षर का। मौन, चुप। अपढ, मूढ।
निराचार—वि० आचाररहित, आचारभ्रष्ट।
निराट—वि० निरा, बिलकुल।
निरादर—पुं० [सं०] अपमान, वेइज्जती।
निराधार—वि० [सं०] जिसे सहारा न हो या जो सहारे पर न हो। जो प्रमाणो से पुष्ट न हो। मिथ्या, झूठ। जिसे या जिसमे जीविका आदि का सहारा न हो। जो बिना अन्नजल आदि के हो।
निरानंद—वि० [सं०] आनदरहित, जिसमे आनद न हो। पुं० आनद का अभाव, दु ख।
निराना—सक० फसल के पौधो के आसपास की घास खोदकर दूर करना जिसमे पौधो की बाढ न रुके।
निरापद—वि० [सं०] जिसे कोई आफत या डर न हो। जिससे हानि या अनर्थ की आशका न हो। जहाँ किसी बात का डर या खतरा न हो।
निरापन, निरापने—वि० जो अपना न हो, वेगाना।
निरापुन(पु)—वि० दे० 'निरापन'।
निरामय—वि० [सं०] नीरोग, तदुरुस्त।
निरामिष—वि० [सं०] जिसमे मास न मिला हो। जो मास न खाय।
निरारा—वि० अलग, पृथक्। निरारी—वि० निराली, विचित्र।
निरालब—वि० [सं०] विना आलब या सहारे का, निराकार। निराश्रय।
निरालस्य—वि० [सं०] फुरतीला, चुस्त।
निराला—पु० एकात स्थान। वि० विलक्षण, अद्भुत, अजीब। अपूर्व, बहुत वढिया। जहाँ कोई मनुष्य या वस्ती न हो, एकात, निर्जन।
निरावना—सक० दे० 'निराना'।
निरावलंब—वि० [स०] विना सहारे का।
निरावृत्त—वि० [स०] बिना आवरण के।
निराश—वि० [सं०] आशाहीन, नाउम्मीद।
निराशा—स्त्री० [सं०] नाउम्मेदी। ⊙वाद=पु० वह वाद या सिद्धात जिसमें किसी बात के परिणाम मे नैराश्य ही प्रधान रहता हो। निराशी—वि० नाउम्मीद। उदासीन, विरक्त।
निराश्रय—वि० [सं०] आश्रयरहित। असहाय, अशरण।
निरास(पु)—वि० दे० 'निराश'। निरासी(पु)—वि० दे० 'निराशी'। उदास, वेरौनक।
निराहार—वि० [सं०] जो बिना भोजन के हो। जिसके अनुष्ठान मे भोजन न किया जाता हो।
निरिंद्रिय—वि० [सं०] इद्रियशून्य। मानसिक, काल्पनिक भावना का।
निरिच्छना(पु)—सक० देखना।
निरीक्षक—पु० [सं०] देखनेवाला। देखरेख करनेवाला। निरीक्षण—पु० देखना। निगरानी। देखने की मुद्रा या ढग, चितवन। निरीक्षा—स्त्री० देखना।
निरीश्वर—वि० [सं०] ईश्वर से रहित। पु० दे० 'निरीश्वरवादी'। ⊙वाद=पुं० यह सिद्धात कि कोई ईश्वर नही है, नास्तिकता। ⊙वादी=वि० जो ईश्वर का अस्तित्व न माने।
निरीस(पु)—वि० नास्तिक।
निरीह—वि० [सं०] इच्छारहित। चेष्टारहित। उदासीन। सीधासादा, बेचारा।
निरुआर†—पुं० दे० 'निरुवार'।
निरुक्त—वि० [सं०] व्याख्या किया हुआ। नियुक्त, ठहराया हुआ। पुं० छह वेदागों मे से एक जिसमे वैदिक शब्दो की यास्क मुनि कृत व्याख्या है, निघटु की व्याख्या। निरुक्ति—स्त्री० किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमे व्युत्पत्ति आदि का पूरा कथन हो। एक काव्यालंकार

जिसमे किसी शब्द का मनमाना अर्थ किया जाय, परतु वह अर्थ सयुक्तिक हो।

निरुज(पु)—वि० दे० 'नीरुज'।

निरुत्तर—स्त्री० [सं०] जिसका कुछ उत्तर न हो। जो उत्तर न दे सके। चुप, शात।

निरुद्देश्य—वि० [स०] जिसका कोई उद्देश्य न हो। क्रि० वि० विना किसी उद्देश्य के।

निरुद्ध—वि० [सं०] रुका या बँधा हुआ। पुं० योग मे चित्त की वह अवस्था जिसमे वह अपनी कारणीभूत प्रकृति को प्राप्त होकर निश्चेष्ट हो जाता है।

निरुद्यम—वि० [सं०] उद्योगरहित, बेकाम। **निरुद्यमी**—पुं० जो उद्यम न करता हो, वेकार।

निरुद्योग—वि० [सं०] उद्योगरहित।

निरुपद्रव—वि० [स०] जिसमे कोई उपद्रव न हो। **निरुपद्रवी**—पु० जो उपद्रव न करे। शात।

निरुपम—वि० [सं०] उपमारहित, बेजोड।

निरुपयोगी—वि० [सं०] जो उपयोग मे न आ सके, व्यर्थ।

निरुपाधि—वि० [स०] उपाधिरहित, वाधा रहित। मायारहित। पु० [सं०] ब्रह्म।

निरुपाय—वि० [सं०] जो कुछ उपाय न कर सके। जिसका कोई उपाय न हो।

निरुवरना(पु)†—अक० कठिनता आदि का दूर होना, सुलझना।

निरुवार†—पु० छुडाने का काम, मोचन। छुटकारा, वचाव। सुलझाने का काम। तै करना, निवटाना। निर्णय, फैसला। ⊙**ना**† = सक० छुडाना। सुलझाना। निवटाना। निर्णय या फैसला करना।

निरूढ—वि० [सं०] प्रचलित, विख्यात (शब्द या अर्थ)। परपरागत, परपरामान्य। अविवाहित, कुँआरा। ⊙ **लक्षणा** = स्त्री० वह लक्षणा जिसमे शब्द का रूढ अर्थ ग्रहण किया जाता है (जैसे 'लाल पगडी आते ही सब छँट गए' अथवा 'भाले पिल पडे')। **निरूढा**—स्त्री० दे० 'निरूढ लक्षणा'।

निरूप—वि० रूपरहित, निराकार। वद-शकल। **निरूपक**—वि० [सं०] किसी विषय का निरूपण करनेवाला।

निरूपण—पु० [सं०] प्रकाश। किसी विषय का विवेचनापूर्वक निर्णय, विचार। निदर्शन। **निरूपित**—वि० जिसका निरूपण हो चुका हो। **निरूप्य**—वि० निरूपण करने योग्य। जिसका निरूपण होने को हो। **निरूपन**(पु)—पु० निरूपण, निश्चय, निर्णय। **निरूपना**(पु)—सक० निरूपण करना, निश्चित करना।

निरेखना(पु)—सक० दे० 'निरखना'।

निरै(पु)—पु० नरक। दुर्दशा।

निरैठा(पु)†—पु० मस्त, मौजी।

निरोध—पु० [स०] रोक, वधन, निग्रह। घेरा, घेर लेना। नाश। ⊙**क** = वि० रोकने-वाला। **निरोधी**—वि० दे० 'निरोधक'।

निर्ख—पु० [फा०] भाव, दर। ⊙**नामा** = पु० वह पत्र जिसपर सव चीजो का निर्ख या भाव लिखा हो। ⊙**बंदी** = स्त्री० चीजो के भाव या दर निश्चित करना।

निर्गमना—अक० निकलना।

निर्गुंडी—स्त्री० [सं०] औषध मे प्रयुक्त एक क्षुप, सँभालू।

निर्णय—पु० [सं०] औचित्य और अनौचित्य आदि का विचार करके किसी विषय के दो पक्षो मे से एक पक्ष को ठीक ठहराना, निश्चय। वादी और प्रतिवादी की वातो को सुनकर उनके सत्य अथवा असत्य होने के सवध मे कोई विचार स्थिर करना, फैसला। अनेक मे से एक का पक्ष स्थिर करना। **निर्णयोपमा**—स्त्री० एक अर्थालकार जिसमे उपमेय और उपमान के गुणो और दोषो की विवेचना की जाती है।

निर्णायक—पु० [सं०] वह जो निर्णय या फैसला करे।

निर्णीत—वि० [सं०] निर्णय किया हुआ।

निर्त(पु)†—पु० दे० 'नृत्य'। ⊙**क**(पु)† = पुं० दे० 'नर्तक'। ⊙**ना**(पु)† = अक० नाचना।

निर्दहना(पु)†—सक० जलाना।

निर्दिष्ट—वि० [सं०] जिसका निर्देश हो चुका हो। वतलाया या नियत किया हुआ।

निर्देश—पु० [सं०] किसी पदार्थ को वत-

लाना। ठहराना या निश्चित करना। आज्ञा। कथन, उल्लेख, जिक्र। वर्णन। ऐसा उल्लेख जिसकी सहायता से विशेष ज्ञातव्य बातों का पता चल सके। नाम।
निर्धारना—सक० निश्चित करना, ठहराना।
निर्बहना—अक० पार होना, अलग होना, दूर होना। निभना, पालन होना।
निर्मना(पु)†—सक० दे० 'निर्माना'।
निर्मली—स्त्री० एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसके पके हुए बीजों का औषध रूप मे तथा गंदला पानी साफ करने के लिये व्यवहार होता है। रीठे का वृक्ष या फल।
निर्माण—पु० [सं०] रचना, बनावट। बनाने का काम। निर्माता—वि० निर्माण करनेवाला, बनानेवाला।
निर्मान—वि० बेहद, अपार। पुं० दे० 'निर्माण'।
निर्माना(पु)—सक० रचना, उत्पन्न करना।
निर्मित—वि० [सं०] बनाया हुआ, रचित।
निर्मोक—पु० [सं०] साँप की केंचुली। शरीर के ऊपर की खाल। आकाश।
निर्वहना(पु)†—अक० परंपरा का होना, निभना।
निर्वाण—वि० [सं०] बुझा हुआ (दीपक, अग्नि आदि)। अस्त, डूबा हुआ। शांत, धीमा पड़ा हुआ। मृत। पुं० बुझना, ठंढा होना। समाप्ति, न रह जाना। अस्त, डूबना। शांति। मुक्ति।
निर्वाह—पुं० [सं०] किसी क्रम या परंपरा का चला चलना, गुजारा, निबाह। किसी बात के अनुसार बराबर आचरण का पालन। समाप्ति, पूरा होना। ⊙ना (पु) = अक० निर्वाह करना।
निलजई—स्त्री० निर्लज्जता, बेशर्मी।
निलज्ज†—वि० दे० 'निर्लज्ज'। ⊙ता(पु) = स्त्री० निर्लज्जता, बेशर्मी। निलज्जी(पु)†—वि० स्त्री० बेशर्म, बेहया (स्त्री)।
निलय—पुं० [सं०] मकान, घर। स्थान, जगह। ⊙कारी = वि० घर बनानेवाला।
निलहा—वि० नील नामक पौधे की खेती या व्यवसाय से संबंध रखनेवाला। नील संबंधी।
[illegible]—पुं० दे० 'निलय'।
निवछरा(पु)—वि० ऐसा समय जिसमे बहुत कामकाज न हो।
निवछावर—स्त्री० दे० 'निछावर'।
निवसन—पुं० [सं०] गाँव। घर। वस्त्र।
निवसना—अक० रहना, निवास करना।
निवह—पु० [सं०] समूह, यूथ। सात वायुओं मे से एक वायु। अग्नि की सात जीभों मे से कोई।
निवाई—वि० नया। अनोखा, विलक्षण।
निवाज—वि० दे० 'नवाज'। ⊙ना(पु)† = सक० दे० 'नवाजना'।
निवाड़ा—पु० दे० 'नवाड़ा'।
निवार—स्त्री० बहुत मोटे सूत की बनी हुई चौड़ी मजबूत पट्टी जिससे पलंग आदि बुने जाते है, निवाड़। पु० तिन्नी धान।
निवारक—वि० [सं०] रोकनेवाला। दूर करनेवाला, मिटानेवाला। निवारण—पु० [सं०] रोकने की क्रिया। हटाने या दूर करने की क्रिया। निवृत्ति, छुटकारा।
निवारना(पु)—सक० रोकना, दूर करना। काटना बिताना।
निवारी—स्त्री० जूही की जाति का फैलनेवाला एक झाड़ या पौधा। इस पौधे का फूल।
निवाला—पु० [फा०] कौर, ग्रास।
निवास—पु० [सं०] रहने की क्रिया या भाव। रहने का स्थान, घर। ⊙स्थान = पु० रहने का स्थान। घर, मकान।
निवासी—पु० रहनेवाला, बसनेवाला।
निविड़—वि० [सं०] घना, घनघोर। गहरा।
निविष्ट—वि० [सं०] जिसका चित्त एकाग्र हो। एकाग्र। लपेटा हुआ। घुसा या घुसाया हुआ। बाँधा हुआ।
निवृत्त—पु० [सं०] दूर होना, मिटना। निवृत्ति—स्त्री० मुक्ति, छुटकारा, प्रवृत्ति का उलटा। मोक्ष।
निवेद(पु)†—पु० दे० नैवेद्य'। निवेदक—पु० [सं०] निवेदन करनेवाला, प्रार्थी। निवेदन—पु० विनती, प्रार्थना। समर्पण। निवेदना(पु)†—सक० विनती या प्रार्थना करना। कुछ भोज्य पदार्थ आगे रखना, नैवेद्य चढाना। अर्पित करना। निवेदित—वि० अर्पित किया हुआ। निवेदन किया हुआ।

निबेरना(पु)†—सक० दे० 'निबटाना'। **निबेरा** (पु)—वि० चुना हुआ, छाँटा हुआ। नवीन, अनोखा।

निवेश—पु० [सं०] विवाह। डेरा, खेमा। प्रवेश। घर। ठहराया या रखा जाना।

निशक—वि० जिसे किसी बात की शका या भय न हो।

निशग—पु० दे० 'निषग'।

निश्—उप० [सं०] 'निस्' के लिये के० समा० मे प्रयुक्त उपसर्ग। ⊙**चल** = वि० अचल, अटल। स्थिर। ⊙**चेतन** = वि० चेतनाविहीन, सज्ञाशून्य, बेहोश। जड़। ⊙**चेष्ट** = वि० चेष्टारहित, स्थिर। बेहोश। स्थिर, निष्कप। ⊙**छल** = वि० छलरहित, सीधा। ⊙**शंक** = वि० निडर, सदेह रहित। ⊙**शेष** = वि० जिसमे से या जिसका कुछ भी बाकी न बचा हो।

निश—स्त्री० दे० 'निशा'।

निशात—पु० [सं०] रात्रि का अत। प्रभात, तड़का।

निशाध—वि० [सं०] जिसे रात को न सूझे। उल्लू। चमगादड़।

निशा—स्त्री० [सं०] दिन का अभाव, रात्रि। हल्दी। दारुहरिद्रा। ⊙**कर** = पुं० चद्रमा, चाँद। मुरगा। ⊙**चर** = पु० रात को चलने या व्यवहार करनेवाला, राक्षस। गीदड़। उल्लू। सर्प। चक्रवाक। भूत, पिशाच। चोर। ⊙**चरी** = स्त्री० राक्षसी। दानवी। कुलटा। अभिसारिका। वि० निशाचर जैसा, निशाचर का। ⊙**नाथ** = पु० चद्रमा। ⊙**पति** = पु० चद्रमा। ⊙**मणि** = पु० चद्रमा। ⊙**मुख** = पु० सध्या, सायकाल। निशात—पु० रात्रि का अत। प्रभात। निशाध—वि० जिसे रात को न सूझे। उल्लू। चमगादड़। निशाधीश—पु० दे० 'निशापति'।

निशाखातिर—स्त्री० [अ० खातिर + फा० निशाँ (खातिरनिशाँ)] तसल्ली, दिलजमई।

निशान—पु० [फा०] लक्षण जिससे कोई चीज पहचानी जाय, चिह्न, पहचान। किसी पदार्थ से अकित किया हुआ चिह्न। शरीर अथवा और किसी पदार्थ पर बना हुआ स्वाभाविक या कृत्रिम चिह्न, दाग या धब्बा। वह चिह्न जो अपढ आदमी अपने (हाथ के अँगूठे से) हस्ताक्षर के बदले मे किसी कागज आदि पर बनाता है। लक्षण या चिह्न जिससे किसी प्राचीन घटना अथवा पदार्थ का परिचय मिले। पता, ठिकाना। समुद्र मे या पहाड़ो आदि पर बना हुआ वह स्थान जहाँ लोगो को मार्ग आदि दिखाने के लिये कोई प्रयोग किया जाता हो। दे० 'लक्षण'। दे० 'निशाना'। दे० 'निशानी'। ध्वजा, झंडा। ⊙**ची** = पुं० वह जो किसी राजा, सेना या दल आदि के आगे झडा लेकर चलता हो। ⊙**देही** = स्त्री० असामी को सम्मन आदि की तामील के लिये पहचनवाने की क्रिया। **नाम निशान**—पु० किसी प्रकार का चिह्न या लक्षण। अस्तित्व का लेश, बचा हुआ, थोड़ा अंश। **मु०~देना** = असामी को सम्मन आदि तामील करने के लिये पहचनवाना। **किसी बात का~ उठाना या खड़ा करना** = किसी काम मे अगुआ या नेता बनकर लोगो को अपना अनुयायी बनाना। आदोलन करना।

निशाना—पुं० [फा०] वह जिसपर लक्ष्य करके किसी अस्त्र या शस्त्र आदि का वार किया जाय, लक्ष्य। किसी पदार्थ को लक्ष्य बनाकर उसकी ओर किसी प्रकार का वार करना। वह जिसपर लक्ष्य करके कोई व्यग्य या बात कही जाय। **मु०~ बाँधना** = वार करने के लिये अस्त्र आदि को इस प्रकार साधना जिसमे ठीक लक्ष्य पर वार हो। **~मारना या ~ लगाना** = लक्ष्य स्थिर करके अस्त्र आदि का वार करना।

निशानी—स्त्री० [फा०] स्मृति के उद्देश्य से दिया अथवा रखा हुआ पदार्थ। वह चिह्न जिससे कोई चीज पहचानी जाय, निशान।

निशास्ता—पु० [फा०] गेहूँ को भिगोकर उसका निकाला और पकाया हुआ सत या गूदा। माड़ी, कलफ।

निशि—स्त्री० [सं०] रात, रात्रि। ⊙**कर** = पुं० चद्रमा। ⊙**चर** = पुं० दे० 'निशाचर'। ⊙**चरराज**(पु) = पु० निशाचरो का राजा,

रावण, विभीषण आदि। ⊙चरी = स्त्री० निशाचर की स्त्री, राक्षस की पत्नी। ⊙चारी = पु० दे० 'निशाचर'। ⊙नाथ = पुं० दे० 'निशानाथ'। ⊙पाल = पु० चद्रमा। एक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से भगण, जगण, सगण, नगण और रगण होते हैं। ⊙वासर(पु) = पु० रात-दिन, हमेशा।

निशित—वि० [सं०] चोखा, तेज। पु० लोदा।

निशीथ—पु० [सं०] आधी रात। रात।

निशीथिनी—स्त्री० [सं०] रात्रि।

निशुभ—पु० [सं०] वध। हिंसा। एक असुर जो शुभ का भाई था और दुर्गा के हाथ से मारा गया था। ⊙मर्दिनी = स्त्री० निशुभ का मर्दन करनेवाली दुर्गा।

निश्चय—पु० [सं०] नि सशय ज्ञान। विश्वास, यकीन। निर्णय। दृढ़ सकल्प। **निश्चयात्मक**—वि० जो बिलकुल निश्चित हो, ठीक ठीक।

निश्चित—वि० [सं०] चितारहित, बेफिक्र। ⊙ई(पु)† = स्त्री० [हिं०] निश्चितता। ⊙ता = स्त्री० निश्चित होने का भाव, बेफिक्री।

निश्चित—वि० [सं०] जिसके सबध मे निश्चय हो, तै किया हुआ। जिसमे कोई फेर बदल न हो सके, पक्का।

निश्चै(पु)—पुं० दे० 'निश्चय'।

निश्रेणी—स्त्री० [सं०] सीढ़ी, जीना। मुक्ति।

निश्रेयस—पुं० [सं० नि श्रेयस्] मोक्ष। दु ख का अभाव। कल्याण।

निश्वास—पुं० [सं०] नाक या मुंह के बाहर निकलनेवाला श्वास।

निषग—पु० [सं०] तूणीर, तरकश। खड्ग।

निष्—उप० [सं०] 'निस' के लिये के० समा० मे प्रयुक्त उपसर्ग। ⊙कंटक = वि० जिसमे किसी प्रकार की बाधा, आपत्ति या झझट आदि न हो। ⊙कंप = वि० जो कांपता या हिलता न हो, स्थिर। ⊙कपट = स्त्री० निश्छल, सीधा, सरल। ⊙ करुण = वि० करुणारहित। ⊙कर्म = वि० [स० निष्कर्मन्] अकर्मा, जो कामो से लिप्त हो। ⊙कर्ष = पु० निश्चय। खुलासा। निचोड़, सार। ⊙कलक = वि० निर्दोष, बेऐब। ⊙काम = वि० (वह मनुष्य) जिसमे किसी प्रकार की कामना, आसक्ति या इच्छा न हो। (वह काम) जो बिना किसी प्रकार की कामना या इच्छा के किया जाय। प्रयत्नों के फल का मोह छोडकर किया हुआ (काम)। ⊙कारण = वि० बिना कारण, बेसबब। व्यर्थ। ⊙कासन = पु० निकालना, बाहर करना। ⊙कृत = वि० निकला हुआ। छूटा हुआ, मुक्त। ⊙केवल (पु) = वि० विशुद्ध, एकमात्र, अनन्य। ⊙क्रमण = पु० बाहर निकलना। एक सस्कार जिसमे जब बालक चार महीने का होता है, तब उसे घर से बाहर निकाल कर सूर्य का दर्शन कराया जाता है। ⊙क्रय = पु० किसी पदार्थ के बदले मे दिया जानेवाला धन। बदला, विनिमय। वेतन, तनखाह। बिक्री। ⊙क्रांत = वि० निकला या निकाला हुआ। छूटा हुआ, मुक्त। ⊙क्रिय = वि० जिसमे कोई क्रिया या चेष्टा न हो। ⊙क्रिय प्रतिरोध = पु० किसी अनुचित कार्य या आज्ञा का वह विरोध जिसमे विरोध करनेवाला उचित काम करता रहता है और दड की परवा नही करता। बदला लेने के लिये कुछ न करके किया जानेवाला विरोध (अत्याचार, अपराध, अनौचित्य आदि का)। ⊙पंद = वि० जिसमे किसी प्रकार का कप न हो। ⊙पक्ष = वि० पक्षपातरहित। ⊙पाप = वि० पापरहित। ⊙पीडन = पु० निचोडना, दबाना। ⊙प्रभ = वि० जिसमे किसी प्रकार की प्रभा या चमक न हो। ⊙प्रयोजन = वि० स्वार्थशून्य, व्यर्थ। क्रि० वि० बिना अर्थ या मतलब के। व्यर्थ, फजूल। ⊙प्राण = वि० प्राण-रहित, मुरदा। ⊙फल = वि० व्यर्थ-बेफायदा।

निषध—पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत जो हरिवर्ष की सीमा पर है। हरिवश के अनुसार रामचद्र के प्रपौत्र और कुश के पौत्र का नाम। पुराणानुसार दक्षिण भारत का प्राचीन प्रदेश जो विध्याचल पर्वत पर था। महाराज नल यही के राजा थे।

निषाद—पु० [सं०] बहुत पुरानी अनार्य जाति

जो भारत मे आर्य जाति के उत्थान से पहले निवास करती थी। भारत का एक प्राचीन प्रदेश जो सभवत शृंगवेरपुर के चारो ओर था। सगीत मे सातवाँ और सबसे ऊँचा स्वर।

निषादी—पु० [सं०] हाथीवान, महावत।

निषिद्ध—स्त्री०[सं०]जिसका निषेध या मनाही की गई हो। खराब, बुरा। **निषेध**—पु० [सं०] मनाही, न करने का आदेश। बाधा, रुकावट। ⊙**क**=पु० मना करनेवाला।

निषेधाभास—पु० आक्षेप नामक अलकार का एक भेद। **निषेधित**—वि० दे० 'निषिद्ध'।

निषेवा(पु)—स्त्री० सेवा।

निष्क—पु०[सं०] वैदिक काल का एक प्रकार का सोने का सिक्का जिसका मान भिन्न-भिन्न समयो मे भिन्न भिन्न था। प्राचीनकाल की चाँदी की एक तौल जो चार सुवर्ण के बराबर थी। वैद्यक मे चार माशे की तौल, टक। सुवर्ण। हीरा।

निष्ठ—वि०[सं०] स्थित, ठहरा हुआ। तत्पर, लगा हुआ (जैसे, कर्तव्यनिष्ठ)। जिसमे किसी के प्रति श्रद्धा या भक्ति हो (जैसे, स्वामिनिष्ठ)। **निष्ठा**—स्त्री० स्थिति, ठहराव। निर्वाह। चित्त का जमना। विश्वास, निश्चय। धर्म, गुरु या बडे आदि के प्रति श्रद्धाभक्ति, पूज्य बुद्धि। नाश। ज्ञान की वह चरमावस्था जिसमे आत्मा और ब्रह्म की एकता हो जाती है। ⊙**वान्**=वि० निष्ठा या श्रद्धा रखनेवाला।

निष्ठीवन—पु० [सं०] थूक।

निष्ठुर—वि०[सं०] कडा, सख्त। क्रूर, बेरहम।

निष्ण, निष्णात—वि० [सं०] किसी बात का पूरा पडित, निपुण।

निष्पत्ति—स्त्री० [सं०] पूर्णता, समाप्ति। सिद्धि, परिपाक। निर्वाह। मीमासा। निश्चय, निर्धारण।

निष्पन्न—वि० [सं०] जो समाप्त या पूरा हो चुका हो, सिद्ध।

निष्प्रेही(पु)—वि० दे० 'निस्पृह'।

निसंक†—वि० दे० 'निश्शक'।

निसंग—वि० दे० 'निस्सग'।

निसठ—वि० गरीब।

निसंबर(पु)—वि० सबल रहित, बिना किसी सामग्री या उपकरण के।

निसबल—वि० दे० 'निस्सबल'।

निसस(पु)†—वि० क्रूर, बेरहम। वि० बिना साँस का, मुर्दा सा।

निससना(पु)—अक० निःश्वास लेना।

निस्—उप०[सं०] अभाव, दूरी, अति, सर्वथा आदि अर्थो मे प्रयुक्त उपसर्ग। ⊙**तद्र**=वि० जिसे तद्रा या आलस्य न हो। जागा हुआ। ⊙**तत्व**=वि० जिसमे कोई तत्व न हो, निस्सार। ⊙**तरग**=वि० जिसमे तरग या लहर न हो, शात। ⊙**तरण**=पु०दे० 'निस्तार'। ⊙**तल**=वि०जिसका तल बहुत गहरा न हो। गोल, वृत्ताकार। नीचा। ⊙**तार**=पु०पार होने का भाव। मोक्ष, उद्धार। ⊙**तारण**=पु० निस्तार करना, बचाना, छुडाना। पार करना। ⊙**तीर्ण**=वि० जो तै या पार कर चुका हो। छूटा हुआ, मुक्त। ⊙**तेज**=वि० तेजरहित, अप्रभ, मलिन। ⊙**पंद**=वि० जो हिलता डोलता न हो, स्थिर। निश्चेष्ट, स्तब्ध। ⊙**सकोच**=वि० सकोचरहित, बेधडक। ⊙**संग**=वि० जो किसी से कोई सबध न रखता हो। विषयविकार से रहित। निर्जन, एकात। अकेला। ⊙**संतान**=वि० सततिरहित, सतानहीन। ⊙**सदेह**=क्रि० वि० अवश्य, जरूर। वि०अवश्य, जरूर। वि०जिसमे सदेह न हो। ⊙**संबल**=वि० जिसका कोई सबल, सहारा या ठिकाना न हो। ⊙**सत्व**=वि० जिसमे कुछ भी सत्व न हो, असार। ⊙**सरण**=पु० निकलने की क्रिया या भाव। निकलने का मार्ग। ⊙**सहाय**=वि० जिसका कोई सहायक न हो। ⊙**सार**=वि० साररहित, जिसमे कोई काम की वस्तु न हो। ⊙**सीम**=वि० जिसका वारापार न हो, असीम। बहुत अधिक। ⊙**सृत**=पु० तलवार के ३२ हाथो मे से एक। ⊙**स्नेह**=वि० जिसमे स्नेह या प्रेम न हो, निर्दय। पु० स्नेह या प्रेम का अभाव।

निस(पु)†—स्त्री० दे० 'निशा'। ⊙**कर**(पु)=पु० दे० 'निशाकर' ⊙**द्योस**(पु)†=क्रि०

वि० रात दिन। नित्य, सदा। ⊙वासर (पु)† = पु० रात और दिन।
निसक(पु)—वि० अशक्त, कमजोर।
निसत(पु)‡—वि० असत्य, मिथ्या।
निसतरना(पु)†—अक० निस्तार या छुटकारा पाना।
निसतारना—सक० [अक० निस्तरना] निस्तार करना, मुक्त करना।
निसप्रेही—वि० दे० 'निस्पृह'।
निसबत—स्त्री० [अ०] संबंध, लगाव। मँगनी, विवाह संबंध की बात। तुलना, मुकाबला।
निसयाना(पु)—वि० जिसके होशहवास ठिकाने न हों। निसयानी(पु)—वि० स्त्री० दे० 'निसयाना'।
निसरना(पु)—अक० निकलना, बाहर होना।
निसरावन—पु० ब्राह्मण को दिया जानेवाला असिद्ध अन्न, सीधा।
निसर्ग—पु० [सं०] स्वभाव, प्रकृति। रूप, आकृति। दान। सृष्टि।
निसवादल(पु)‡—वि० स्वादरहित। निसवादलि(पु)‡—वि० दे० 'निसवादल'।
निसस(पु)†—वि० श्वासरहित, बेहोश।
निसहाय—वि० दे० 'निस्सहाय'।
निसाँक‡—वि० दे० 'निःशंक'।
निसाँस, निसाँसा(पु)†—पु० ठंढी साँस, लंबी साँस। वि० बेदम, मृतप्राय।
निसाँसी(पु)—वि० स्त्री० दे० 'निसाँस'।
निसा—स्त्री० निशाखातिर, संतोष। (पु) स्त्री० दे० 'निशा'।
निसान—पु० दे० 'निशान'। नगाडा धौंसा।
निसामुख(पु)†—निशामुख, संध्या का समय, प्रदोषकाल।
निसाफ(पु)†—पुं० दे० 'इनसाफ'।
निसार—पु० [अ०] निछावर, सदका। (पु)† वि० दे० 'निस्सार'।
निसारना†—सक० दे० 'निकालना'।
निसास(पु)—पु० गहरी या ठंढी साँस। वि० बेदम, निष्प्राण। निसासी(पु)—वि० जिसका श्वास न चलता हो, बेदम।
निसि—स्त्री० दे० 'निशि'। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और अंत्य लघु होता है। ⊙कर = पु० दे० 'निशिकर'। ⊙चर(पु)† = पु० दे० 'निशाचर'। ⊙चारी = पु० दे० 'निशाचर'। ⊙दिन(पु) = क्रि० वि० रात दिन आठों पहर। सदा। ⊙नाथ = पु० चंद्रमा। ⊙निसि = स्त्री० निशीथ, आधी रात। ⊙वासर(पु) = क्रि० वि० रात दिन। सदा, नित्य।
निसिअ, निसियर(पु)—पु० चंद्रमा।
निसीठी—वि० नीरद, थोथा।
निसु(पु)†—स्त्री० दे० 'निशा'।
निसुका(पु)—वि० गरीब। निगोडा।
निसूदन—पु० [सं०] हिंसा, वध।
निसृष्ट—वि० [सं०] छोडा हुआ। मध्यस्थ भेजा हुआ, प्रेरित। दिया हुआ। निसृष्टार्थ—पुं० वह दूत जो दोनों पक्षों का अभिप्राय अच्छी तरह समझकर स्वयं ही सब प्रश्नों का उत्तर दे देता और कार्य सिद्ध कर लेता है।
निसेनिका†, निसेनी†, निसैनी†—स्त्री० सीढी।
निसेष(पु)—वि० दे० 'निःशेष'।
निसेस(पु)—पु० चंद्रमा। वि० दे० 'निःशेष।'
निसोग(पु)†—वि० जिसे कोई शोक या चिंता न हो।
निसोच(पु)—वि० चितारहित, बेफिक्र।
निसोत—वि० जिसमें और किसी चीज का मेल न हो, शुद्ध। निष्कपट।
निसोथ—स्त्री० एक लता जिसकी जड और डठल अच्छे रेचक समझे जाते हैं।
निसोधु(पु)†—स्त्री० सुध, खबर। सँदेसा।
निस्केवल(पु)—वि० एकमात्र, अनन्य, शुद्ध।
निस्तब्ध—वि०[सं०] जो हिलता डोलता न हो। जडवत्, निश्चेष्ट।
निस्तर(पु)—पु० दे० 'निस्तार'। निस्तरना (पु)†—अक० निस्तार पाना, मुक्त होना। सक० निस्तार करना, मुक्त करना निस्तार, निस्तारन(पु)†—सक० मुक्त करना, उद्धार करना। निस्तारण(पु)—वि० दे० 'निस्तारन'।
निस्तारा(पु)—पु० दे० 'निस्तार'।
निस्पृह—वि० [सं० निःस्पृह] लालच या कामना आदि से रहित, निर्लेप
निस्फ—वि० [अ०] अर्ध, आधा।
निस्वन—पुं० [सं०] ध्वनि, शब्द।

निस्वार्थ—वि० [सं० नि स्वार्थ] स्वार्थरहित।
निहग, निहगम—वि० एकाकी, अकेला । स्त्री आदि से सबध न रखनेवाला (साधु) । नगा । बेशरम ।
निहंग लाडला—वि० जो माता पिता के दुलार के कारण बहुत ही उद्दड और लापरवाह हो गया हो ।
निहता—वि० [सं०] नाश करनेवाला । महाक्रूर।
निहकर्म—पु० दे० 'निष्कर्म' ।
निहकाम(पु)†—वि० दे० 'निष्काम' ।
निहचय(पु)†—पुं० दे० 'निश्चय' ।
निहचल(पु)†—वि० दे० 'निश्चल' ।
निहचीत(पु) वि० दे० 'निश्चित'।
निहडर(पु)— वि० दे० 'निडर' ।
निहत—वि० [सं०] नष्ट । जो मार डाला गया हो । फेका हुआ ।
निहत्था—वि० जिसके हाथ मे कोई शस्त्र न हो । खाली हाथ, निर्धन ।
निहनना†—सक० मार डालना ।
निहननी—वि० स्त्री० नाश करनेवाली, समाप्त करनेवाली ।
निहपाप(पु)†—वि० दे० 'निष्पाप' ।
निहफल(पु)†—वि० दे० 'निष्फल' ।
निहाई—स्त्री० सुनारो और लुहारो का लोहे का एक चौकोर औजार जिसपर वे धातु को रखकर हथौडे से कूटते या या पीटते हैं ।
निहाउ(पु)†—पु० दे० 'निहाई' ।
निहायत—वि० [अ०] अत्यत, बहुत ।
निहार—पुं० [सं०] कुहरा, पाला । ओस । हिम, बरफ ।
निहारना—सक० ध्यानपूर्वक देखना, ताकना ।
निहाल—वि० [फा०] जो सब प्रकार से सतुष्ट और प्रसन्न हो गया हो, पूर्णकाम।
निहालना—सक० दे० 'निहारना'।
निहाली—स्त्री० [फा०] गद्दा । तोशक । निहाई ।
निहित—वि० [सं०] स्थापित । अदर रखा हुआ । छिपा हुआ ।
निहुरना†—अक० झुकना, नवना । निहुराना—सक० [अक० 'निहुरना' = झुकाना । नवाना ।
निहुराई—स्त्री० निहुरने या झुकने की क्रिया । (पु) स्त्री० निष्ठुरता ।
निहोर—पुं० अनुग्रह, एहसान । ⊙ना—सक० मनाना, मनौती करना । प्रार्थना या विनय करना । कृतज्ञ होना । निहोरा—पुं० विनती, प्रार्थना । मनौती, खुशामद । अनुग्रह, एहसान । भरोसा, आसरा । क्रि० वि० कारण से, द्वारा । के लिये, वास्ते ।
नींद—स्त्री० जीवन की एक नित्यप्रति (विशेषत. रात मे) होनेवाली अवस्था जिसमे चेतन क्रियाएँ रुकी रहती हैं और शरीर तथा अंत.करण विश्राम करते हैं, सोने की अवस्था, निद्रा । मु०~उचटना = नीद का दूर होना ।~खुलना या टूटना = नीद का छूट जाना, जाग पडना । ~पड़ना = नीद आना, निद्रा की अवस्था होना । ~लेना = सोना । ~सचरना = नीद आना ।~हराम होना = सोना छूट जाना ।
नींदना(पु)—अक० नीद लेना, सोना । सक० दे० 'निराना' ।
नींबू—पुं० मध्यम आकार का एक पेड़ और उसका फल (यह खट्टा और मीठा दो प्रकार का होता है। खट्टे नींबू के कागजी, जबीरी आदि कई भेद हैं) ।
नींव—स्त्री० घर बनाने मे गहरी नाली के रूप मे खुदा हुआ गड्ढा जिसके भीतर से दीवार की जुडाई आरभ होती है। दीवार की जड या आधार, मूलभित्ति । मूल, आधार । मु० ~खोदना = जड मिटाना या नष्ट करना । ~जमाना, डालना या देना = दीवार उठाने के लिये नींव के गड्ढे मे ईट, पत्थर आदि जमाकर आधार खडा करना, दीवार की जड़ जमाना । (किसी बात की)~जमाना या डालना = आधार दृढ करना, स्थिर करना, स्थापित करना ।~देना = गड्ढा खोदकर दीवार खडी करने के लिये स्थापना बनाना । (किसी बात की)~देना = कारण या आधार खड़ा करना,

जड़ खड़ी करना। (किसी वस्तु या बात की) ~पड़ना = घर की दीवार का आधार खड़ा होना, सूत्रपात होना, जड़ खड़ी होना या जमना।

नीक, नीका(पु)।—वि० अच्छा, सुंदर, भला। पु० अच्छाई, उत्तमता। ठीक, यथार्थ।

नीके, नीकें—क्रि० वि० अच्छी तरह।

नीच—वि० [सं०] जाति, गुण, कर्म, संस्कार, स्वभाव या किसी बात में घटकर या न्यून, क्षुद्र। बुरा, निकृष्ट, तुच्छ। ⊙ **ऊँच** = वि० [हिं०] अच्छा बुरा। बुराई भलाई, गुण अवगुण। अच्छा और बुरा परिणाम, हानि लाभ। सुख दुःख। ⊙ **गामी** = वि० नीचे जानेवाला। ओछा। **नीचाशय**—वि० बुरे आदर्शोंवाला, ओछा।

नीचा—वि० जो कुछ उतार या गहराई पर हो, गहरा, ऊँचा का उलटा। ऊँचाई में सामान्य की अपेक्षा कम, जो ऊपर की ओर दूर तक न गया हो। जो ऊपर से जमीन की ओर दूर तक आया हो, अधिक लटका हुआ। झुका हुआ। जो तीव्र या जोर का न हो, धीमा। जो जाति, पद, गुण इत्यादि में न्यून या घटकर हो, ओछा, बुरा। ⊙ **ऊँचा** = वि० जो समतल न हो, ऊबड़-खाबड़। मु० ~**ऊँचा** = भला बुरा। भलाई बुराई, गुण अवगुण, अच्छा और बुरा परिणाम, हानि-लाभ। संपद विपद, सुख दुःख। ~**खाना**, ~**दिखना** = तुच्छ बनना, अपमानित होना। हारना। लज्जित होना। ~**दिखाना** = तुच्छ बनाना, अपमानित करना। मानभंग करना, शेखी झाड़ना। परास्त करना। लज्जित करना। **देखना** = दे० 'नीचा दिखना'। **नीची दृष्टि करना** = लज्जा से सिर झुकाना, सामने न ताकना।

नीचू।—क्रि० दे० 'नीचे'। स्त्री० दे० 'लीची'।

नीचे—क्रि० वि० नीचे की ओर, ऊपर का उलटा। घटकर, कम। अधीनता में। ⊙**ऊपर** = एक पर एक। उलटपुलट, व्यस्त। मु० ~**गिरना** = प्रतिष्ठा खोना। पतित होना, अवनत दशा को प्राप्त होना। ऊपर से नीचे तक = सब भागों में सर्वत्र। सिर से पैर तक।

नीजन(पु)—पुं० निर्जन स्थान।

नीझर(पु)—पुं० सोता। निर्झर।

नीठ—क्रि० वि० दे० 'नीठि'।

नीठि—स्त्री० अरुचि, अनिच्छा। क्रि० वि० ज्यों त्यों करके, किसी न किसी प्रकार। मुश्किल से।

नीठो(पु)—वि० अनिष्ट, अप्रिय।

नीड़—पु० [सं०] चिड़ियों का घोंसला। ठहरने या रहने का स्थान। ⊙ज = पु० चिड़िया, पक्षी।

नीत—वि० [सं०] लाया हुआ, पहुँचाया हुआ। स्थापित। प्राप्त। ग्रहण किया हुआ।

नीति—स्त्री० [सं०] ले जाने या ले चलने की क्रिया, भाव या ढंग। जीवन के लिये या किसी विशेष कार्य के लिये समाज द्वारा स्वीकृत आधारभूत व्यावहारिक सिद्धांत। व्यवहार की रीति, आचारपद्धति। व्यवहार की वह रीति जिससे अपना कल्याण हो और समाज को भी कोई बाधा न पहुँचे। लोक या समाज के कल्याण के लिये उचित ठहराया हुआ आचार व्यवहार, अच्छी चाल। राजा और प्रजा की रक्षा के लिये निर्धारित व्यवस्था, राजनीति। राज्य की रक्षा के लिये काम में लाई जानेवाली युक्ति, शासक और शासित की व्यवहार पद्धति। किसी कार्य की सिद्धि के लिये चली जानेवाली चाल, युक्ति, हिकमत। आध्यात्मिक आचरण के सिद्धांत या नियम। ⊙**ज्ञ** = वि० नीति का जाननेवाला। ⊙**मान्** = वि० नीतिपरायण, सदाचारी। ⊙**वादी** = पु० वह जो सब काम नीतिशास्त्र के अनुसार करना चाहता हो। ⊙ **विज्ञान** = पु० दे० 'नीतिशास्त्र'। ⊙**शास्त्र** = पु० वह शास्त्र जिसमें देश, काल और पात्र के अनुसार बरतने के नियम हों। वह शास्त्र जिसमें मनुष्य समाज के हित के लिये आचार, व्यवहार और शासन का विधान हो।

नीदना(पु)—सक० निंदा करना।

नीप—पु० [सं०] कदंब। गुलदुपहरिया। पहाड़ का निचला भाग।

नीपना(पु)—सक० दे० 'लीपना'।
नीबी(पु)—स्त्री० नीवी, इजारबद।
नीबू—दे० 'नीबू'।
नीम—पु० पत्ती भाड़नेवाला एक पेड़ जिसका प्रत्येक भाग कड़ुवा होता है। वि० [फा०] आधा, अर्ध। ⊙रजा = वि० थोड़ी बहुत रजामदी। कुछ तोष या प्रसन्नता। नीमा-स्तीन—स्त्री० आधी आस्तीन की एक प्रकार की कुरती।
नीमन†—वि० नीरोग, चगा। दुरुस्त, ठीक। बढ़िया, अच्छा।
नीमा—पु० [फा०] एक पहनावा जो जामे के नीचे पहना जाता है।
नीमावत—पु० निंबार्काचार्य का अनुयायी वैष्णव।
नीयत—स्त्री० [अ०] आतरिक लक्ष्य, आशय, इच्छा, मशा। मु०~डिगना या बद होना = अच्छा या उचित सकल्प दृढ न रहना, बुरा सकल्प होना। ~बदल जाना = सकल्प या विचार और का और होना, इरादा दूसरा हो जाना। बुरा विचार होना। ~बाँधना = सकल्प करना। ~भरना = जी भरना, इच्छा पूरी होना। ~मे फर्क आना = बेई-मानी या बुरा सूझना। ~लगी रहना = इच्छा बनी रहना, जी ललचाया करना।
नीर—पु० [सं०] पानी, जल। कोई द्रव पदार्थ या रस। फफोले आदि के भीतर का चेप या रस। ⊙ज = पु० जल मे उत्पन्न वस्तु। कमल। मोती, मुक्ता। ⊙द = पु० बादल। वि० [सं० नि + रद] बे दाँत का। धर = पु० बादल। ⊙धि = पु० समुद्र। ⊙निधि = पु० समुद्र। बादल। मु०~ढलना = मरते समय आँख से आँसू बहना। किसी की आँख का~ढल जाना = निर्लज्ज या बेहया हो जाना।
नीरव—वि० [सं०] जिसमे किसी प्रकार का शब्द न हो। जो न बोलता हो, चुप। ⊙ता = स्त्री० नि शब्द या चुप होने का भाव।
नीरस—वि० [सं०] रसहीन। सूखा। जिसमे कोई स्वाद या मजा न हो, फीका, जिसमे कोई आनद या मनोरजन न हो। जिसमें मन न लगे।
नीराजन—पु० देवता की आरती, दीपदान। हथियारो को चमकाने या साफ करने का काम।
नीरा(पु)—क्रि० वि० पास, समीप। स्त्री० ताड या खजूर का सूर्योदय के पहले तक टपका हुआ रस। (नशा उत्पन्न होने के पूर्व का) रस, ताडी। पु० दे० 'नीर'।
नीराजना(पु)—अक० आरती करना।
नीरुज—वि० दे० 'नीरोग'।
नीरे(पु)—क्रि० वि० दे० 'नियरे'।
नीरोग—वि० [सं०] रोगरहित, तदुरुस्त।
नील—वि० [सं०] नीले रग का। पु० एक प्रसिद्ध पौधा जिससे नीला रग निकाला जाता है। नीला रग, गहरा आसमानी रग। चोट का नीले या काले रग का दाग जो शरीर पर पड जाता है। लाछन, कलक। राम की सेना का एक बदर। इलावृत्त खड का एक पर्वत। नवनिधियो मे से एक। नीलाम। एक वर्णवृत्त जिसमे पाँच भगण और अत्य गुरु होता है। सौ अरब की सख्या। ⊙कंज = पु० इदीवर, नील कमल। ⊙कंठ = वि० जिसका कठ नीला हो। पु० महादेव एक प्रकार की चिडिया जिसके कठ और डैने नीले होते हैं। मोर। गोरा या चटक नाम का पक्षी। ⊙कांत = पु० एक पहाडी चिड़िया। विष्णु। नीलम। मणि। ⊙कांता = स्त्री० विष्णुक्राता लता जिसमे बडे बडे नीले फूल लगते हैं। ⊙गाय = स्त्री० [हिं०] नीलापन लिए भूरे रग का एक बड़ा हिरन जो गाय के बराबर होता है। ⊙चक्र = पु० जगन्नाथ जी के मदिर के शिखर पर माना जानेवाला चक्र। ३० अक्षरो का एक दडवृत। ⊙मणि = पु० नीलम। ⊙मोर = पु० [हिं०] कुररी नामक पक्षी। ⊙लोहित = वि० नीलापन लिए लाल, बैंगनी। ⊙स्वरूप, ⊙स्वरूपक—पुं० एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन भगण और दो गुरु होते हैं। नीलांजन—पु० नीला सुरमा

तूतिया, नीला थोथा। नीलांबर—पुं० नीले रंग का कपड़ा (विशेषतया रेशमी)। वि० नीले कपड़े धारण करनेवाला।
नीलांबुज—पुं० नील कमल। नीलोत्पल—पुं० नीला कमल। मु० का टीका लगाना = कलंक लेना, बदनामी उठाना। —की सलाई फिरवा देना = अंधा कर देना।
नीलम—पुं० [फा०] मि० सं० नीलमणि] नीलमणि, नीले रंग का रत्न।
नीला—वि० आकाश के रंग का, नील के रंग का। ⊙थोथा = पुं० तांबे का नीला क्षार या लवण, तूतिया। मु० ~पीला होना = क्रुद्ध होना। चेहरा ~ पड़ जाना = आकृति में भय, उद्विग्नता, लज्जा, खेद, विषाद, ग्लानि आदि मनोभावों का प्रकट होना। सजीवता के लक्षण नष्ट होना।
नीलाम—पुं० [पुर्त० लीलाम] बिक्री का एक ढंग जिसमें कोई संपत्ति या वस्तु खरीदने के लिये उपस्थित लोगों में सबसे अधिक दाम लगानेवाले के हाथ बेच दी जाती है।
नीलिका—स्त्री० [सं०] नीलबरी। नीली निर्गुंडी, नीले सम्हालू का वृक्ष। आँख तिलमिलाने का रोग। मुख पर का एक रोग जिसमें सरसों के बराबर छोटे छोटे कड़े काले दाने निकलते हैं, इल्ला।
नीलिमा—स्त्री० [सं०] नीलापन। श्यामता, स्याही।
नीली घोड़ी—स्त्री० जामे के साथ सिली हुई कागज की घोड़ी जिसे पहन लेने से जान पड़ता है कि आदमी घोड़े पर सवार है, इसे पहनकर डफाली भीख माँगने निकलते हैं।
नीलोफर—पुं० [फा०] नील कमल। कुईं, कुमुद। दवा की एक ओषधि।
नीवँ, नीव—स्त्री० दे० 'नींव'।
नीवि—स्त्री० दे० 'नीवी'।
नीवी—स्त्री० [सं०] कमर में लपेटी हुई धोती दे० 'नीवी'। वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे सूत की डोरी से या योंही बाँधती हैं। सूत की डोरी जिससे स्त्रियाँ धोती या लहँगे की गाँठ बाँधती हैं, कटि-वस्त्र बंध, फुँफुदी। साड़ी, धोती।
नीसक(पु)—वि० कमजोर।
नीसानी—स्त्री० २३ मात्राओं का एक छंद।
नीहँ—स्त्री० दे० 'नींव'।
नीहार—पुं० [सं०] कुहरा। पाला, तुषार, बर्फ।
नीहारिका—स्त्री० [सं०] आकाश में धुएँ या कुहरे की तरह फैला हुआ क्षीण प्रकाशपुंज जो अँधेरी रात में सफेद धब्बे की तरह दिखाई पड़ता है।
नुकता—पुं० [अ०] बिंदु, बिंदी। चुटकुला फबती, लगती हुई उक्ति। ऐब। ⊙चीनी = स्त्री० [फा०] छिद्रान्वेषण, दोष निकालने का काम।
नुकती—स्त्री० [फा० नुखदी] एक प्रकार की मिठाई बेसन की महीन बुँदिया।
नुकना(पु)—अक० दे० 'लुकना'।
नुकरा—पुं० [अ०] चाँदी। घोड़ों का सफेद रंग। वि० सफेद रंग का घोड़ा।
नुकसान—पुं० [अ०] कमी, ह्रास। हानि, घाटा। दोष, अवगुण। ⊙देह = वि० [अ० + फा०] नुकसान पहुँचानेवाला, हानिकर। मु० ~उठाना = हानि सहना। (किसी को) ~करना = दोष उत्पन्न करना, स्वास्थ्य के प्रतिकूल होना। ~पहुँचाना = हानि करना। ~भरना = हानि की पूर्ति करना, घाटा पूरा करना।
नुकीला—वि० नोकदार। बाँका, तिरछा।
नुक्कड़—पुं० नोक, पतला सिरा। सिरा, छोर। निकला हुआ कोना, सड़क का छोर।
नुक्स—पुं० [अ०] दोष, बुराई, कसर।
नुचना—अक० [सक० नोचना] नोचा जाना, खिंचकर उखड़ना। खरोंचा जाना। नाखून आदि से छिलना।
नुत्फा—पुं० [अ०] वीर्य, शुक्र। संतति, औलाद।
नुनना—सक० लुनना, खेत काटना।
नुनखरा, नुनखारा—वि० स्वाद में नमक का सा खारा, नमकीन।
नुनाई(पु)†—स्त्री० सलोनापन, लावण्य।
नुनेरा—पुं० नोनी मिट्टी आदि से नमक निकालनेवाला। लोनिया, नोनिया।
नुमाइंदा—पुं० [फा०] प्रतिनिधि।
नुमाइश—स्त्री० [फा०] दिखावट, प्रदर्शन।

नाना प्रकार की वस्तुओं को लोगों को दिखाने के लिये एक जगह रखना। तडकभडक, सजधज। कुतूहल और परिचय के लिये एक स्थान पर दिखाया जाना, प्रदर्शनी।

नुमाइशी—वि० [फा० नुमाइश] जो केवल दिखावट के लिये हो, किसी प्रयोजन का न हो, दिखाऊ।

नुसखा—पु० [अ०] लिखा हुआ कागज। कागज की वह चिट जिसपर हकीम या वैद्य रोगी के लिये औषध और सेवनविधि लिखते हैं।

नूत—वि० नया, नूतन।

नूतन—वि० [सं०] नया, नवीन। हाल का, ताजा। अनोखा।

नून—पुं० आल। आल की जाति की एक लता। † लवण, नमक। (पु)वि० दे० 'न्यून'। ⊙ताई(पु)—स्त्री० न्यूनता, कमी।

नूपुर—पु० [सं०] पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना, पैंजनी। घुँघरू। नगण के पहले भेद का नाम।

नूका—पु० १४ मात्राओं का एक छंद, कज्जल।

नूर—पु० [अ०] ज्योति, प्रकाश। कांति, शोभा। मु०~का तडका = प्रात काल। ~बरसना = प्रभा की अधिकता से प्रकट होना।

नूरा—वि० नूरवाला, तेजस्वी।

नूह—पु० [अ०] (यहूदी, ईसाई और मुसलमान मतों के अनुसार) एक पैगंबर जिनके समय में प्रलय हुआ था। एक भारी नाँव में शरण लेकर उन्होंने अपनी और संसार के अनेक जीव जंतुओं की रक्षा की थी (पुरानी इंजील)।

नृ—पुं० [सं०] नर, मनुष्य। ⊙केशरी = पुं० नृसिंह अवतार। श्रेष्ठ पुरुष। ⊙केहरि = पु० [हिं०] नृसिंह अवतार। ⊙देव, देवता = स्त्री० राजा। ब्राह्मण। ⊙प = पु० नरपति। ⊙पति, ⊙पाल = पु० राजा। ⊙मणि = पु० श्रेष्ठ पुरुष। ⊙मेध = पु० वह यज्ञ जिसमें मनुष्य की आहुति दी जाय। ⊙यज्ञ = पु० नर मात्र को संतुष्ट करने का व्रत जो पंचयज्ञों में माना गया है और जिसका करना गृहस्थ मात्र का कर्तव्य है, अतिथिपूजा। ⊙शंस = वि० क्रूर, निर्दय। बेरहम। अपकारी, अत्याचारी, जालिम। ⊙सिंह = पुं० सिंहरूपी भगवान् जो विष्णु के चौथे अवतार थे। इन्होंने हिरण्यकशिपु को मारकर प्रह्लाद की रक्षा की थी। श्रेष्ठ पुरुष। ⊙हरि = पुं० 'नृसिंह'।

नृतक(पु)—पुं० दे० 'नर्तक'।

नृत्तना(पु)—अक० नाचना।

नृत्य—पुं० [सं०] संगीत के ताल और गीत के अनुसार हाथ पाँव और अंग प्रत्यंग हिलाने, उछलने कूदने आदि का व्यापार, नाच, नर्तन। ⊙शाला = स्त्री० नाचघर।

नृत्यकी(पु)†—स्त्री० दे० 'नर्तकी'।

ने—प्रत्य० सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्ता के साथ प्रयुक्त चिह्न या विभक्ति।

नेई—(पु)स्त्री० दे० 'नींव'।

नेक(पु)†—वि० थोड़ा, तनिक। क्रि० वि० थोड़ा, तनिक। वि० [फा०] भला, उत्तम। शिष्ट, सज्जन। ⊙चलन = वि० अच्छे चालचलन का, सदाचारी। ⊙नाम = वि० जिसका अच्छा नाम हो, यशस्वी। ⊙नीयत = वि० अच्छे संकल्प का। उत्तम विचार का।

नेकी—स्त्री० [फा०] भलाई, उत्तम व्यवहार। सज्जनता। उपकार। ⊙बदी = भलाई बुराई, पाप करना। ⊙और पूछ पूछ = किसी का उपकार करने में उससे पूछने की क्या आवश्यकता?

नेकु(पु)†—वि०, क्रि० वि० दे० 'नेक'।

नेग—पुं० विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों तथा कृत्य में योग देनेवाले लोगों को कुछ उपहार दिए जाने का लौकिक नियम। वह वस्तु या धन जो इस प्रकार दिया जाता है। ⊙चार = पु० नेग देने की रीति या दस्तूर। ⊙जोग = पुं० विवाह आदि मंगल अवसरों पर संबंधियों तथा काम करनेवालों को उनके प्रसन्नतार्थ कुछ दिए जाने का दस्तूर।

नेगटी(पु)†—पु नेग या रीति का पालन करनेवाला व्यक्ति।

नेगम—पु० दे० 'निगम'।

नेगी—पु० नेग पानेवाला नेग पाने का हकदार। ⊙**जोगी** = पु० नेग पानेवाले, नेगी (जैसे—नाई, बारी)।

नेछावर‡—स्त्री० दे० 'निछावर'।

नेजा—पु० [फा०] भाला, बरछा। साँग, निशान। ⊙**बरदार** = पु० भाला या राजाओ का निशान लेकर चलनेवाला।

नेजाल(पु)‡—पु० भाला।

नेठना(पु)—अक० दे० 'नाठना'।

नेड़ो(पु)—क्रि० वि० दे० 'नेडे'।

नेड़े†—क्रि० वि० निकट, पास।

नेत—पु० ठहराव, निर्धारण। निश्चय, सकल्प। व्यवस्था, प्रबध। मथानी की रस्सी। गहना। स्त्री० एक प्रकार की चादर। दे० 'नीयत'।

नेतक—पु० चुंदरी, चूनर।

नेता—पु० मथानी की रस्सी। पु० [सं०] अगुआ, नायक, सरदार। स्वामी, मालिक। काम चलानेवाला, निर्वाहक। ⊙**गिरी** = स्त्री० [हिं०] दे० 'नेतृत्व'।

नेति—[सं०] एक सस्कृत वाक्याश (न इति) जिसका अर्थ है 'यही नही' अर्थात् 'इतना ही नहीं है'।

नेती—स्त्री० वह रस्सी जो मथानी मे लपेटी जाती है और जिसके खींचने से मथानी फिरती है। हठयोग की वह क्रिया जिससे डोरा नाक मे डालकर मुँह से निकलते हैं। ⊙**धौती** = स्त्री० हठयोग की एक क्रिया जिसमे कपडे की धज्जी पेट मे डालकर आँतें साफ करते हैं, धौति।

नेतृत्व—पुं० [सं०] नेता होने का भाव, कार्य या पद, नायकत्व, सरदारी।

नेत्र—पुं० [सं०] आँख। मथानी की रस्सी। एक प्रकार का वस्त्र। पेड की जड। रथ। दो की सख्या का सूचक शब्द। ⊙**जल** = पुं० आँसू। ⊙**वाला** = पु० [हिं०] दे० 'सुगधवाला'। ⊙**मंडल** = पु० आँख का घेरा, आँख का डेला। ⊙**स्राव** = पु० आँखो से पानी बहना। **नेत्राभिष्यद**—पु० आँख आने का रोग।

नेनुआ, नेनुवा—पु० एक भाजी या तरकारी, घिया, तरोई।

नेपचून—पु० [अं०] सूर्य की परिक्रमा करनेवाला, सौर मडल के सबसे दूरवाले ग्रहो मे से एक जिसका पता हरशेल ने लगाया था।

नेपथ्य—पु० [स०] नृत्य, अभिनय आदि मे रगमच से न दिखाई देनेवाला परदे के भीतर का वह स्थान जिसमे नट वेश सजते हैं।

नेपाल—पु० हिंदुस्तान के उत्तर मे हिमालय की गोद मे बसा हुआ एक स्वतत्र देश। **नेपाली**—वि० नेपाल मे रहने या होनेवाला। नेपाल संबधी। स्त्री० नेपाल की भाषा।

नेपुरा(पु)—पु० दे० 'नूपुर'।

नेफा—पु० [फा०] पायजामे या लहँगे के घेरे मे इजारबद पिरोने का स्थान। भारत का पूर्वोत्तर सीमात प्रदेश। (यह शब्द अँगरेजी के नार्थ-ईस्ट-फ्रटियर एजेंसी के आद्याक्षरो से) बना है।

नेब(पु)—नायब सहायक, मत्री।

नेम—पु० नियम, कायदा। बँधी हुई बात, ऐसी बात जो टलती न हो, बराबर होती हो। रीति, दस्तूर। धर्म की दृष्टि से कुछ नित्य या नैमित्तिक क्रियाओ का पालन। यम, नियम आदि का कठोर अभ्यास। ⊙**धरम** = पु० पूजा पाठ, व्रत आदि।

नेमत—स्त्री० दे० 'नियामत'।

नेमि—स्त्री० [सं०] पहिए का घेरा या चक्कर। कुएँ की जमवट। प्रात भाग। पु० नेमिनाथ नामक जैनियो के एक तीर्थंकर। वज्र।

नेमी—वि० नियम का पालन करनेवाला। धर्म की दृष्टि से पूजापाठ, व्रत आदि करनेवाला सयमी।

नेरा†—अ० दे० 'नियर'।

नेरी—क्रि० वि० दे० 'नेरे'।

नेरे,नेरो†—क्रि० वि० निकट, पास।
नेर्यौ—वि० निकट।
नेवग(पु)—पुं० दे० 'नेग'।
नेंवछावरि—स्त्री० दे० 'न्योछावर'।
नेवज—पुं० खाने पीने की चीज जो देवता को चढ़ाई जाय, भोग।
नेवतना†—सक० नेवता भेजना।
नेवता—पुं० दे० 'न्योता'।
नेवर—पुं० दे० 'नूपुर'। †वि० बुरा। स्त्री० घोडो, बैलो आदि के पैर की रगड।
नेवरना—अक० निवारण या दूर होना। समाप्त होना।
नेवला—पु० साँप मारने के लिये प्रसिद्ध एक मांसाहारी पिडज जतु जो देखने मे गिलहरी के आकार का पर उसमे बडा और भूरा होता है।
नेवाज—पुं० दे० 'निवाज'।
नेवारना(पु)—सक० दे० 'निवारना'।
नेवारी—स्त्री० जूही की जाति का एक पौधा जिसमे सफेद रंग के छोटे छोटे फूल लगते हैं, वनमल्लिका।
नेसुक(पु)†—वि० तनिक, जरा। क्रि० वि० थोडा सा, जरा सा, तनिक।
नेस्त—वि० [फा०] जो न हो। ⊙नाबूद = वि० पूर्णत भ्रष्ट। नेस्ती—स्त्री० [फा०] न होना। आलस्य, काहिली। नाश।
नेह—पु० स्नेह, प्रेम, तेल या घी।
नेही(पु)— वि० स्नेह करनेवाला, प्रेमी।
नै—स्त्री० दे० 'नय'। नव, नया, नई। (पु)स्त्री० नदी। स्त्री० [फा०] बाँस की नली। हुक्के की निगाली। बाँसुरी।
नैऋत(पु)—वि०, पु० दे० 'नैर्ऋत'।
नैक, नैकु—वि० दे० 'नेक, नेकु'।
नैकट्य—पु० [सं०] निकटता।
नैगम—वि० [स०] निगम सबधी। जिसमे ब्रह्म आदि का प्रतिपादन हो (जैसे, उपनिषद्)। पु० उपनिषद् भाग। नीति।
नैचा—पु० [फा०] हुक्के की दुहरी नली जिसके एक सिरे पर चिलम रखी जाती है और दूसरे का छोर मुँह मे रखकर धुआँ खीचते हैं। ⊙बंद = पु० वह जो हुक्के का नैचा बनाता है।
नैतिक—वि० [सं०] नीतिसबंधी। आध्यात्मिक। समाजविहित।
नैन, नैनि(पु)—पु० दे० 'नियम'। †पु० मक्खन।
नैनसुख—पु० एक प्रकार का चिकना सूती कपडा।
नैनू—पु० एक प्रकार का उभरे हुए बेलबूटे का कपडा। मक्खन।
नैपाल—पु० दे० 'नेपाल'। नेपाली—वि० नेपाल देश का। नेपाल मे रहने या होनेवाला। पु० नेपाल का रहनेवाला। आदमी। स्त्री० नेपाल की भाषा।
नैपुण्य—पु० [सं०] निपुणता, चतुराई।
नैम†—स्त्री० दे० 'नियम'।
नैमित्तिक—वि० [सं०] जो निमित्त उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो, सहेतुक (यज्ञ आदि कर्म)।
नैमिषारण्य—पु० [सं०] एक तीर्थ स्थान।
नैया(पु)‡—स्त्री० नाव।
नैयायिक—वि० [सं०] न्यायशास्त्र का जाननेवाला।
नैरंतर्य—पु० [सं०] निरतरता।
नैर(पु)—सं० शहर। देश, जनपद।
नैराश्य—पु० [सं०] निराशा का भाव, नाउम्मेदी।
नैर्ऋत—वि० [सं०] नैर्ऋति सबंधी। पु० राक्षस। पश्चिमदक्षिण कोण का स्वामी। नैर्ऋति—स्त्री० दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।
नैर्मल्य—पु० [सं०] निर्मलता।
नैवेद्य—पु० [सं०] वह भोजन की सामग्री जो देवता को चढाई जाय, भोग।
नैश—वि० [सं०] निशा सबधी, रात का।
नैषध—वि० [सं०] निषध देश सबधी, निषध देश का। पु० नल जो निषध देश के राजा थे। श्री हर्ष रचित एक सस्कृत काव्य।
नैष्ठिक—वि० [सं०] निष्ठावान्, निष्ठायुक्त।
नैसर्गिक—वि० [सं०] स्वाभाविक, प्राकृतिक।
नैसा(पु)—वि० बुरा, खराब।
नैसिक, नैसुक†—वि० थोडा, तनिक।
नैहर—पु० किसी स्त्री के पिता का घर, मायका, पीहर।

नोइनी, नोई—स्त्री० वह रस्सी जो गौ दुहते समय उसके पिछले पैरो मे बाँधी जाती है।

नोक—स्त्री० [फा०] उस ओर का सिरा जिस ओर कोई वस्तु बराबर पतली पड़ती गई हो। किसी वस्तु के निकले हुए भाग का पतला सिरा। निकला हुआ कोना। ⊙झोक = स्त्री० [हिं०] परस्पर होनेवाली झड़प, आक्षेप। चुभनेवाली बात, ताना। छेड़छाड़। आतक, तपाक। बनाव सिंगार, ठाट बाट। ⊙दार = वि० जिसमे नोक हो। चुभनेवाला, पना। चित्त मे चुभनेवाला। शानदार।

नोकना(पु)†—सक० ललचाना।

नोकाझोकी—स्त्री० दे० 'नोकझोक'।

नोखा†—वि० दे० 'अनोखा'।

नोच—स्त्री० नोचने की क्रिया या भाव। छीनना, लूट। ⊙खसोट = स्त्री० नोचने खसोटने की क्रिया या भाव, छीनाझपटी, लूट। ⊙ना = सक० जमी या लगी हुई वस्तु को झटके से खीचकर अलग करना, उखाड़ना। नख आदि से विदीर्ण करना। दुखी और हैरान करके माँगना या लेना। **नोचू**—वि० नोचने खसोटने या छीनने झपटनेवाला।

नोट—पुं० [अं०] टाँकने या लिखने का काम, ध्यान रहने के लिये लिख लेने का काम। लिखा हुआ परचा, पत्र। आशय या अर्थ प्रकट करनेवाला लेख, टिप्पणी। पहले सरकार और अब उसकी ओर से स्थापित (रिजर्व) बैंक द्वारा भिन्न भिन्न धनराशियो के लिये जारी किया हुआ कागजी सिक्का।

नोदन—पु० [सं०] प्रेरणा, चलाने या हाँकने का काम। बैलो को हाँकने की छड़ी या कोड़ा, पैना।

नोन†—पु० दे० 'नमक'। ⊙हरामी = वि० दे० 'नमकहराम'।

नोनचा—पु० दे० नमक मिली हुई आम की फाँकें। नमकीन अचार।

नोना—नमक का वह अश जो पुरानी दीवारो तथा सीड की जमीन मे लगा मिलता है। लोनी मिट्टी। †शरीफा, सीताफल। ‡वि० नमक मिला, खारा। लावण्यमय, सुदर। सक० दे० 'नोवना'।

नोनिया—पु० लोनी मिट्टी से नमक निकालनेवाली एक जाति। †स्त्री० नोनिया, अमलोनी।

नोनी†—स्त्री० लोनी मिट्टी। लोनिया, अमलोनी का पौधा।

नोर, नोल(पु)—वि० दे० 'नवल'।

नोहना†—सक० दुहते समय रस्सी से गाय के पैर बाँधना।

नोहर†—वि० अलभ्य, जल्दी न मिलनेवाला, अनोखा, अद्भुत।

नौ—वि० एक कम दस, आठ से एक अधिक। नया, नवीन। पु० नौ की सख्या, ९। मु०~दो ग्यारह होना = देखते देखते गायब हो जाना, चल देना।

नौकर—पु० [फा०] भृत्य, खिदमतगार। वैतनिक कर्मचारी। ~शाही = स्त्री० वह शासनप्रणाली जिसमे वास्तविक राजसत्ता बड़े बड़े राजकर्मचारियो के हाथ मे रहती है। **नौकराना**—पु० [हिं०] नौकरो को मिलनेवाली दस्तूरी या उपहार। **नौकरानी**—स्त्री० [हिं०] घर का कामधधा करनेवाली स्त्री, सेविका।

नौकरी—स्त्री० नौकर का काम, सेवा, टहल। कोई काम जिसके लिये तनख्वाह मिलती हो। काम के लिये मिलनेवाली तनख्वाह। **नौकरी पेशा**—पु० जिसकी जीविका नौकरी हो।

नौका—स्त्री० [सं०] नाव, किश्ती।

नौगर, नौगिरही—स्त्री० दे० 'नौग्रही'।

नौग्रही—स्त्री० हाथ मे पहनने का एक गहना।

नौछावर†—स्त्री० दे० 'निछावर'।

नौज—अव्य० [अ०] ऐसा न हो, ईश्वर न करे। न हो, न सही (बेपरवाही) (स्त्री)।

नौजवान—वि० [फा०] नवयुवक, उठती जवानी का।

नौजा—पुं० बादाम। चिलगोजा।

नौजि†—अव्य० दे० 'नौज'।

नौजी—स्त्री० दे० 'न्यौजी'।

नौतन(पु)—वि० दे० 'नूतन'।

नौतम(पु)—वि० अत्यंत नवीन। ताजा। पुं० नम्रता, विनय।

नौता—पुं० दे० 'न्योता'।

नौतीⓅ—वि० स्त्री० नूतन, ताजी।

नौधाⓅ—वि० दे० 'नवधा'।

नौनगा—पुं० बाहु पर पहनने का नौ नगो का एक गहना।

नौना—अक० दे० 'नवना'।

नौबड—वि० जिसे हीन दशा से अच्छी दशा मे आए थोडे ही दिन हुए हो, हाल मे बढा हुआ।

नौबत—स्त्री० [फा०] बारी, पारी। दशा, हालत। उपस्थित दशा, सयोग। वैभव या मगलसूचक वाद्य, विशेषत शहनाई और नगाडा जो देवमदिरो या बडे आदमियो के द्वार पर बजता है। दुर्दशा, शामत। ⊙**खाना** = पुं० फाटक के ऊपर बना हुआ वह स्थान जहाँ बैठकर नौबत बजाई जाती है, नक्कारखाना। मु०~ झडना = नौबत बजना। ~**बजना** = आनद उत्सव होना। प्रताप वा ऐश्वर्य की घोषणा होना। **नौबती**—पुं० नौबत बजानेवाला, नक्कारची। फाटक पर पहरा देनेवाला। बिना सवार का सजा हुआ घोडा। बडा खेमा या तबू। ⊙**दार** = पुं० दे० 'नौबती'।

नौमिⓅ—सक० 'मैं नमस्कार करता हूँ'।

नौमी—स्त्री० पक्ष की नवी तिथि, नवमी।

नौरंगⓅ‡—पुं० 'औरग' (= औरगजेब) का रूपातर, औरगजेब बादशाह।

नौरंगी‡—स्त्री० दे० 'नारगी'।

नौरतन—पुं० दे० 'नवरत्न'। नौनगा गहना। स्त्री० एक प्रकार की चटनी।

नौरोज—पुं० [फा०] (पारसियो मे) नये वर्ष का पहला दिन जब बडा आनंद उत्सव मनाया जाता है। त्यौहार।

नौलⓅ—वि० दे० 'नवल'।

नौलखा—वि० जिसका मूल्य नौ लाख रुपए हो, जडाऊ और बहुमूल्य (जैसे, नौलखा हार)।

नौशा—पुं० [फा०] दूल्हा, वर।

नौसत—पुं० सोलह शृगार, सिंगार।

नौसर—पुं० धूर्तता, चालबाजी। जालसाजी।

नौसरिया—वि० धूर्त, चालबाज। जालसाज।

नौसरा—पु० नौ लडो का हार।

नौसादर—पु० एक तीक्ष्ण झालदार क्षार या नमक।

नौसिखिया, नौसिखुआ—वि० जिसने कोई काम हाल मे सीखा हो, जो दक्ष या कुशल न हुआ हो।

नौसेना—स्त्री० [सं०] जलसेना, जल मे लडनेवाली सेना।

नौहड—पु० मिट्टी की नई हँडिया।

न्यग्रोध—पु० [सं०] वट वृक्ष, बरगद। शमी वृक्ष। बाहु। विष्णु। महादेव।

न्यस्त—वि० [सं०] रखा हुआ, धरा हुआ। स्थापित, बैठाया या जमाया हुआ। चुनकर सजाया हुआ। डाला हुआ, फेंका हुआ। छोडा हुआ। अमानत रखा हुआ।

न्याउ†—पु० दे० 'न्याय'।

न्यातिⓅ—स्त्री० जाति।

न्यानⓅ—अव्य० अत मे, निदान।

न्यानाⓅ†—वि० अनजान, नासमझ।

न्याय—पु० [सं०] उचित बात, इसाफ। किसी मामले मुकदमे मे दोषी और निर्दोष, अधिकारी और अनधिकारी आदि का निर्धारण। निर्णय, फैसला। (छह दर्शनो मे) वह शास्त्र जिसमे किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिये विचारो की उचित योजना का निरूपण होता है। ऐसा दृष्टात वाक्य जिसका व्यवहार लोक मे कोई प्रसग आ पडने पर होता है और जो किसी उपस्थित बात पर घटता है, कहावत (जैसे काकतालीय न्याय, घुणाक्षर न्याय, आदि)। ⊙**कर्ता** = पु० न्याय या फैसला करनेवाला हाकिम। ⊙**त** = क्रि० वि० न्याय से, ईमान से। ठीक ठीक। ⊙**परता** = स्त्री० न्यायशीलता, न्यायी होने का भाव। **वान्** = वि० न्याय पर चलनेवाला, न्यायी। ⊙**सभा** = स्त्री० दे० 'न्यायालय'। **न्यायाधीश**—स्त्री० [सं०] मुकदमे का फैसला करनेवाला, अधिकारी, जज। **न्यायालय**—पुं० [सं०] वह जगह जहाँ मुकदमो का फैसला होता हो, अदालत, कचहरी। **न्यायी**—वि० न्याय पर चलनेवाला, उचित पक्ष ग्रहण करनेवाला। **न्याय्य**—वि० न्यायसगत, उचित।

न्यारा—वि० अलग, जुदा । और ही, भिन्न । जो पास न हो, दूर । अनोखा, विलक्षण ।
न्यारी—वि० स्त्री० अनोखी, निराली । पृथक्, अलग । न्यारे—क्रि० वि० अलग । पास नही, दूर ।
न्यारिया—पु० सुनारो के नियार (राख इत्यादि) को धोकर सोना चाँदी एकत्र करनेवाला ।
न्याव—पु० नीति, आचरण पद्धति । उचित पक्ष, वाजिब बात । विवेक । इसाफ, न्याय ।
न्यास—पु० [सं०] स्थापना, रखना । धरोहर । अर्पण, त्याग । सन्यास । देवता के भिन्न भिन्न अगो का ध्यान करते हुए मत्र पढकर उनपर विशेष वर्णो का स्थापन (तत्र) ।
न्यून—वि० [सं०] कम, थोडा । घटकर, नीचा । ⊙ता = स्त्री० कमी । हीनता ।
न्योछावर—स्त्री० दे० 'निछावर' ।
न्योजी—स्त्री० लीची नामक फल । चिलगोजा, नेजा ।
न्योतना—सक० आनंद उत्सव आदि मे सम्मिलित होने के लिये वधुबाधव आदि को बुलाना, न्योता देना ।
न्योतहरी—पु० निमत्रित, न्योते मे आया हुआ व्यक्ति ।
न्योता—पु० निमत्रण, आनद उत्सव आदि मे सम्मिलित होने के लिये वधुबाधव आदि का आह्वान, बुलावा । वह भोजन जो दू रे को अपने यहाँ कराया जाय या दूसरे यहाँ (उसकी प्रार्थना पर) किया जाय, ८वत । वह भेंट या धन जो इष्टमित्र या सबधी इत्यादि के यहाँ किसी शुभ या अशुभ कार्य के समय दिया या भेजा जाता है ।
न्योला—पु० दे० 'नेवला' ।
न्योली—स्त्री० हठयोग की एक क्रिया जिसमे पेट की नलियो को पानी से साफ करते हैं ।
न्वंनी(पु)—स्त्री० दे० 'नोइनी' ।
न्हाना†(पु)—अक० दे० 'नहाना' ।

प

प—हिंदी वर्णमाला मे स्पर्श व्यजनो के अतिम वर्ग का पहला वर्ण । इसका उच्चारण ओठ से होता है ।
पक—पु० [सं०] कीचड, कीच । पानी के साथ मिला हुआ (मिट्टी, धूलि, गोबर आदि) पोतने योग्य पदार्थ । लेप (जैसे—केसर, कुकुम, चदन आदि) । ⊙ज = पु० [सं०] कमल । पंकज योनि—पु० ब्रह्मा । पकज राग—पु० पद्मराग मणि । पंकजवाटिका—स्त्री० तेरह अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसमे क्रम से एक भगण, एक नगण, दो जगण और अत्य लघु होता है, एकावली । जात = पु० कमल । रुह = पु० कमल ।
पंकिल—वि० [सं०] जिसमे कीचड हो । मलिन मैला ।
पंक्ति—स्त्री० [सं०] ऐसा समूह जिसमे बहुत से प्राणी या बहुत सी वस्तुएँ एक दूसरे के उपरात एक सीध मे स्थित हो, कतार । रेखा । सतर । कुलीन ब्राह्मणो की श्रेणी । भोज मे एक साथ बैठकर खानेवालो की श्रेणी । चालीस अक्षरो का एक वैदिक छद जो पाँच पादो मे विभक्त रहता है । एक वर्णवृत्त । ⊙पावन = पु० वह ब्राह्मण जिसको यज्ञादि मे बुलाना, भोजन कराना और दान देना श्रेष्ठ माना गया है । ⊙बद्ध = वि० श्रेणीवद्ध, कतार मे बँधा या रखा हुआ ।
पंख—पु० वह अग या अवयव जिससे चिडियाँ कीडे मकोडे, आदि उडते हैं, पर, डैना । मु० ~जमना = न रहने का लक्षण उत्पन्न होना । वहकने या बुरे रास्ते पर जाने का रगढग दिखाई पडना । प्राण खोने का लक्षण दिखाई देना । ~लगना = पक्षी के समान वेगवान् होना ।
पंखड़ी, पँखड़ी—स्त्री० फूल का दल जो खिलने पर फैला रहता है ।
पंखा—पु० वह वस्तु या यत्र जिसे हिला या चला कर हवा का झोका किसी ओर ले जाते हैं, बेना, व्यजन । ⊙कुली = पु० वह कुली या मजदूर जो पखा खीचता हो । ⊙पोश = [हिं० + फा०] पखे के ऊपर का गिलाफ ।

पंखी—पुं० पक्षी, चिड़िया। पाँखी, फतिंगा। पख, पर। एक प्रकार की ऊनी चादर। स्त्री० छोटा पखा।

पँखुड़ा†—पुं० कधे और बाँह का जोड़, पखोरा।

पँखुड़ी(पु)†—स्त्री० दे० 'पँखड़ी'।

पग—वि० लँगड़ा। स्तब्ध। पुं० एक प्रकार का नमक।

पँग—पु० उपंग, जलतरग।

पंगत, पगति—स्त्री० पाँती, पक्ति। भोज के समय भोजन करनेवालो की पंक्ति। भोज। समाज, सभा।

पगा—वि० लँगड़ा। स्तब्ध, बेकाम।

पगु—वि० [सं०] जो पैर से चल न सकता हो, लँगड़ा। पु० [स०] शनैश्चर। एक वातरोग जो मनुष्य की जाँघो मे होता है। इसमे रोगी चल फिर नही सकता। ⊙**गति**=स्त्री, वर्णिक छदो का एक दोष जो लघु के स्थान मे गुरु या गुरु के स्थान मे लघु वर्ण आ जाने से होता है।

पंगुल—वि० पगु, लँगड़ा।

पंच—वि० [स०] जो सख्या मे चार से एक अधिक हो, पाँच। पु० पाँच की संख्या या अक। समुदाय, समाज। जनता, लोक। पाँच या अधिक आदमियो का समाज जो किसी झगड़े या मामले को निपटाने के लिये एकत्र हो, न्याय करनेवाली सभा। निर्णायक। वह जो फौजदारी के दौरे के मुकदमे मे दौरा जज की अदालत मे फैसले मे जज की सहायता के लिये नियत हो। ⊙**क**=पु० पाँच का समूह, पाँच का सग्रह। वह जिसके पाँच अवयव या भाग हो। धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र जिनमे दक्षिण यात्रा और तृण काष्ठ का सग्रह निषिद्ध है (फलित)। शकुन शास्त्र। पचायत। दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य का समूह। ⊙**कन्या** =स्त्री० (पुराणानुसार) अहल्या, द्रौपदी, कुती, तारा और मदोदरी ये पाँच स्त्रियाँ जिनका कौमार्य विवाह आदि करने पर भी अखंडित माना जाना है। ⊙**कल्याण** =पु० वह घोड़ा जिसका सिर (माथा) और चारों पैर सफेद हो और शेष शरीर लाल या काला हो। ⊙**कवल**=पु० पाँच ग्रास अन्न जो स्मृति के अनुसार खाने के पूर्व कुत्ते, पतित, कोढी, रोगी और कौए आदि के लिये अलग निकाल दिया जाता है, अग्रासन। ⊙**कोण**= वि० जिसमे पाँच कोने हो। ⊙**कोश**= पु० उपनिषद् और वेदात के अनुसार शरीर सघटित करनेवाले अन्नमय, प्राणमय, मनोमय विज्ञानमय और आनंदमय नाम के पाँच कोश या स्तर। ⊙**कोस**=पु० [हि०] पाँच कोस की लबाई और चौड़ाई के बीच बसी हुई काशी की पवित्र भूमि। ⊙**कोसी**=स्त्री० [हि०] काशी की परिक्रमा। ⊙**क्रोश**=पु० पचकोस, काशी। ⊙**गगा**=स्त्री० पाँच नदियो का समूह—गगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा। पु० वर्तमान वाराणसी के अतर्गत एक तीर्थ और घाट। ⊙**गव्य**= पु० गाय से प्राप्त होनेवाले पाँच द्रव्य- दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र जो बहुत पवित्र माने जाते हैं और प्रायश्चित्त आदि मे खिलाए जाते हैं। ⊙**गौड़**= पु० देश भेद के अनुसार विंध्य के उत्तर मे बसनेवाले ब्राह्मणो की सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड, मैथिल और उत्कल नामक पाँच शाखाएँ। ⊙**चामर**=पु० दे० 'नाराच' छद। ⊙**जन**=पु० पाँच या पाँच प्रकार के जनो का समूह। गधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस। मनुष्य या मनुष्य जाति। राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। ⊙**जन्य**=पु० दे० 'पाचजन्य'। ⊙**तत्व**=पु० पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश, पचभूत। ⊙**तन्मात्र**=पु० (सांख्य) आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी नामक पाँच महाभूतो के क्रम से शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध नामक पाँच गुण। ⊙**तन्मात्रा**=स्त्री० दे० 'पचतन्मात्र'। ⊙**तपा**=पु० पचाग्नि तापनेवाला, तपस्वी। ⊙**ता**=स्त्री० पाँच का भाव। मृत्यु, विनाश। ⊙**तिक्त**=पु० (आयुर्वेद) गिलोय (गुरुच), कटकारि (भटकटैया), सोठ, कुट और चिरायता (चक्रदत्त)

नाम की पांच कडवी ओषधियो का समूह। ⊙तोलिया=पु० [हि०] एक प्रकार का झीना महीन कपडा। ⊙त्व =पु० पांच का भाव। मृत्यु, मौत। ⊙देव=पु० हिंदुओ के पांच प्रधान उपास्य देवता--आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी। ⊙द्रविण=पु० विंध्याचल के दक्षिण मे बसे ब्राह्मणो की पांच शाखाएँ—महाराष्ट्र, तैलग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड। ⊙नद=पु० पजाब की सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम नामक पांच बडी नदियाँ जो सिंधु नद मे मिलती हैं। पंजाब प्रदेश। दे० 'पचगगा'। ⊙नाथ=पु० बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रगनाथ और श्रीनाथ। ⊙नामा=पु० [स० + फा०] वह कागज जिसपर पंच लोगो ने अपना निर्णय या फैसला लिखा हो। ⊙परमेष्ठी=पुं० जैनशास्त्र के अनुसार अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पांच का समूह। ⊙पल्लव=पुं० आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) और बेल इन पांच वृक्षो के पल्लव। ⊙पात्र=पुं० गिलास के आकार का चौडे मूँह का एक बरतन जो पूजा मे काम आता है। पार्वण श्राद्ध। ⊙पीरिया=पु० [हि०] मुसलमानो के पांचो पीरो की पूजा करनेवाला। ⊙प्राण=पु० प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान नामक पांच प्रकार की वायु। ⊙बान=पु० [हि०] पचबाण, कामदेव। ⊙भर्तारी=स्त्री० [हि०] पांच पतियोवाली, द्रौपदी। ⊙भूत =पु० दे० 'पचतत्व'। ⊙मकार=पु० (वाममार्ग) मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन नामक 'म' से प्रारभ होनेवाले पांच साधन। ⊙महापातक=पुं० पांच बडे पाप—ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार और इन पातको के करनेवालो का ससर्ग (मनुस्मृति)। ⊙महायज्ञ =पु० स्मृतियो के अनुसार पांच कृत्य जिनका नित्य करना गृहस्थो के लिये आवश्यक है। ये कृत्य हैं—अध्यापन और सध्यावदन, पितृतर्पण या पितृयज्ञ, होम या देवयज्ञ, बलिवैश्वदेव या भूतयज्ञ। और अतिथिपूजन (नृयज्ञ या मनुष्ययज्ञ)। ⊙महाव्रत=पुं० अहिंसा, सत्य, अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह (किसी से कुछ न लेना) का कठोरता से पालन (योग)। ⊙मुख=पु०पाँच मुँहवाले, शिव, शकर। ⊙मुखी=वि० पांच मुखवाला, शिव। ⊙मूल=पु० (वैद्यक) एक पाचन औषध जो पांच ओषधियो की जड से बनती है। ⊙मेल=वि० [हि०] जिसमे पाँच प्रकार की चीजें मिली हो। जिसमे सब प्रकार की चीजें मिली हो। ⊙रत्न=पु०पाँच प्रकार के रत्न—सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती। ⊙राशिक=पु० एक प्रकार का हिसाब जिसमे चार ज्ञात राशियो के द्वारा पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है (गणित)। ⊙लरा=वि० [हि०] दे० 'पँचलडा'। पु० पँचलडा हार। ⊙लवण=पु० पाँच प्रकार के लवण—काँच, सेंधा, सामुद्र, बिट और सोचर (वैद्यक)। ⊙वटी=स्त्री० रामायण के अनुसार दडकारण्य के अतर्गत नासिक के पास एक स्थान जहाँ रामचद्र जी बनवास मे रहे थे। सीताहरण यही हुआ। ⊙बाण =पु० कामदेव के पाँच बाण=(उन्मादन, तापन, शोषण, स्तभन और समोहन), कामदेव के पांच पुष्पबाण (अरविंद, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल)। कामदेव। ⊙शब्द=पांच मगलसूचक बाजे जो मगलकार्यो मे बजाए जाते है—तत्री, ताल, झाँझ, नगाडा और तुरही। व्याकरण के अनुसार सूत्र, वार्तिक भाष्य, कोश और महाकवियो के प्रयोग। पाँच प्रकार की ध्वनि (वेदध्वनि, बदीध्वनि, जयध्वनि, शखध्वनि और निशानध्वनि)। ⊙शर=पु० कामदेव के पाँच बाण। कामदेव। ⊙शिख=पु० सिंघा बाजा। एक मुनि जो कपिल के पुत्र थे। ⊙सबद =पु० [हि०] दे० 'पचशब्द'। ⊙सूना= स्त्री० मनु के अनुसार वे पाँच प्रकार की हिंसाएँ जो गृहस्थो से गृहकार्य करने मे होती हैं—चूल्हा जलाना, आटा आदि पीसना, झाडू देना, कूटना और पानी रक

घडा रखना। ⊙हजारी=पु० [हिं०] पु० दे० 'पजहजारी'। पंचाग—पु० पाँच अग या पाँच अगो से युक्त वस्तु। ज्योतिष के अनुसार वह तिथिपत्र जिसमे किसी सवत् के वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण ब्योरेवार दिए गएहो, पत्रा। वृक्ष के पाँच अग—जड, छाल, पत्ती, फूल और फल (वैद्यक)। प्रणाम का एक भेद जिसमे घुटना, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेककर आँख देवता की ओर करके मुँह से प्रणाम सूचक शब्द कहा जाता है। पचाक्षर—वि० जिसमे पाँच अक्षर हो। पु० प्रतिष्ठा नामक वृत्ति। शिव का एक मत्र जिसमे पाँच अक्षर हैं—ओ नम शिवाय। विष्णु का एक मत्र जिसमे पाँच अक्षर है—ओ विष्णवे नम। पचाग्नि—स्त्री० अन्वाहार्य पचन या दक्षिणगार्हपत्य आहवनीय, आवसथ्य और सभ्य नाम की पाँच पवित्र अग्नियाँ। शरीर मे छिपी पाँच तरह की अदृश्य अग्नियाँ। छादोग्य उपनिषद् के के अनुसार सूर्य, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और योषित्। एक प्रकार का तप जिसमे तप करनेवाला अपने चारो ओर अग्नि जलाकर (सूर्य को पाँचवी अग्नि मानकर) दिन भर धूप मे बैठा रहता है। वि० पचाग्नि विद्या जाननेवाला। पचाग्नि तापनेवाला। पचानन—वि० जिसके पाँच मुँह हो। पु० शिव। सिह। पचामृत—पु० दिव्य पेय जो दूध, दही, घी, चीनी और मधु मिलाकर बनाया जाता है और प्रायः नारायण (राम, कृष्ण, सत्यनारायण) आदि की मूर्ति के स्नान के काम आता है। पंचायतन—पु० पाँच देवताओ की मूर्तियो का समूह (जैसे, रामपचायतन)। मु०~की भीख=सर्वसाधारण की कृपा, सबका आशीर्वाद। ~की दुहाई=सब लोगो से अन्याय दूर करने की सहायता करने की पुकार। ~परमेश्वर=दस आदमियो का कहना ईश्वर वाक्य के तुल्य है। (किसी की)~मानना या बदना=झगडा निपटाने के लिये किसी को निर्णायक नियत करना।

पँच—वि० [के० समा० मे 'पाँच' के लिये]। ⊙गुना=वि० उतना ही पाँच बार, पाँच गुना। ⊙रंगा=वि० पाँच रगो का। अनेक रगो का। ⊙लड़ा=वि० पाँच लडो का (जैसे—पँचलडा हार)। ⊙लड़ी=स्त्री० गले मे पहनने की पाँच लडो की माला। ⊙वाँसा=पु० एक रीति जो गर्भ रहने से पाँचवें महीने मे की जाती है।

पचम—वि० [स०] पाँचवाँ। रुचिर, सुदर। दक्ष, निपुण। पु० [सं०] सात स्वरो मे से पाँचवाँ स्वर, यह स्वर कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है। एक राग जो छह प्रधान रागो मे तीसरा हैं। पंचमी—स्त्री० शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाँचवी तिथि। द्रौपदी। अपादान कारक (व्याकरण)।

पंचवान—पु० राजपूतो की एक जाति।

पचायत—स्त्री० [हि०] किसी विवाद या झगडे पर विचार करने के लिये चुने हुए लोगो का मडल, पचो की बैठक या सभा। एक साथ बहुत से लोगो की बकवाद या गपशप। मु०~जोड़ना=बहुत से लोगो का एकत्र होकर किसी मामले या झगडे पर विचार करना। भीड लगाना। पंचायती—वि० पचायत का किया हुआ। पचायत का। पचायत सबधी। बहुत से लोगो का मिलाजुला, साझे का। सब लोगों का, सामूहिक।

पचाल—पु० [सं०] हिमालय पहाड़ और चबल नदी के बीच गगा के दोनो ओर के प्रदेश का पुराना नाम। महाभारत काल मे द्रुपद यही के राजा थे। पचाल देशवासी। पचाल देश का राजा। महादेव, शिव। एक प्रकार का छद जिसमे एक ही तगण होता है।

पचालिका—स्त्री० [सं०] पुतली, गुड़िया। नटी, नर्तकी।

पचाली—स्त्री० [सं०] पुतली, गुडिया। द्रौपदी। एक गीत।

पचाशिका—स्त्री० [स०] एक ही प्रकार की पचास चीजो का समूह।

पचीकरण—पु० [सं०] पचभूतो के विभाजन या समिश्रण की एक प्रक्रिया (वेदात)।

पछा—पु० स्राव जो प्राणियो के शरीर से या पेड पौधो से निकलता है। छाले आदि के भीतर भरा हुआ पानी। वि० पानी

मिला हुआ। पंछाला—पु० फफोला। फफोले का पानी।

पंछी—पु० चिड़िया, पक्षी।

पंजर—पु० [सं०] हड्डियों का ठट्ठर या ढाँचा जिसपर शरीर खड़ा रहता है और जो रक्त, मांस, मज्जा, स्नायु आदि अनेक अंगों का सहारा रहता है, ठठरी। ऊपरी धड़ (छाती) का हड्डियों का घेरा, पार्श्व, वक्षस्थल आदि की अस्थिपंक्ति। शरीर, देह। पिंजड़ा।

पंजरना(पु)—अक० दे० 'पजरना'।

पंजहजारी—पु० [फा०] एक उपाधि और मनसब (गुजारे के लिये पाँच हजार रुपए वार्षिक आय की जागीर) जो मुसलमान बादशाहों (विशेषतः अकबर आदि मुगल बादशाहों) के समय में सरदारों और दरबारियों को उनकी विशेषताओं या बहादुरी के लिये मिलती थी।

पंजा—पु० [फा०] हाथ या पैर की पाँचों उँगलियों का समूह। पंजा लड़ाने की कसरत या बलपरीक्षा। उँगलियों के सहित हथेली का संपुट, चंगुल। पाँच का समूह, गाही। जूते का अगला भाग जिसमें उँगलियाँ रहती हैं। मनुष्य के पंजे के आकार का कटा हुआ किसी धातु का टुकड़ा जिसे लंबे बाँस आदि में बाँधकर झंडे या निशान की तरह ताजिए के साथ लेकर चलते हैं। ताश का वह पत्ता जिसमें पाँच चिह्न या बूटियाँ हों। मु० **पंजे झाड़कर पीछे पड़ना या चिमटना** = हाथ धोकर पीछे पड़ना, जी जान से लगना या तत्पर होना। **पंजे में** = पकड़ में, मुट्ठी में। अधिकार में, वश में। **छक्का ~** = दाँव पेंच, चालबाजी।

पंजाब—पु० [फा०] स्वतंत्रतापूर्व भारत के उत्तरपश्चिम का एक प्रसिद्ध प्रदेश जो १९४७ की स्वतंत्रता से पूर्वी (भारत के अंतर्गत) और पश्चिमी (पाकिस्तान के अंतर्गत) दो टुकड़ों में विभक्त हो गया है। प्राचीन पंचनद। पंजाबी—वि० पंजाब का। पु० पंजाब निवासी।

पँजारा—पु० धुनिया।

पंजिका—स्त्री० पंचांग। बही। रजिस्टर।

पँजीरी—स्त्री० आटे को घी में भूनकर चीनी और मेवे मिलाकर बनाया हुआ एक मिष्ठान्न।

पँजेरा—पु० बरतन में टाँके आदि देकर जोड़ लगानेवाला।

पंडर—वि० पांडुवर्ण का, पीला। पु० पिंड, शरीर।

पँड़वा—पु० भैंस का बच्चा

पंडा—पु० किसी तीर्थ या मंदिर का पुजारी। यात्रियों को ठहराने और मंदिर, घाट आदि पर दान दक्षिणा लेनेवाला ब्राह्मण।

पंडाल—पु० किसी सभा के अधिवेशन के लिये बनाया हुआ मंडप।

पंडित—वि० [सं०] विद्वान्, शास्त्रज्ञ। कुशल, प्रवीण। शुद्ध संस्कृतज्ञ। पु० शास्त्रज्ञ। ब्राह्मण। हिंदुओं का धार्मिक कर्मकांड करानेवाला व्यक्ति। शिक्षक, अध्यापक। पंडिताई—स्त्री० [हिं०] विद्वत्ता, पांडित्य। पंडिताऊ—वि०[हिं०] प्राचीन संस्कृत के पंडितों के ढंग का, कोरे संस्कृतज्ञ का सा (जैसे, पंडिताऊ हिंदी)। पंडितानी—स्त्री० [हिं०]पंडित की स्त्री। ब्राह्मणी।

पंडु—वि० [सं०] पीलापन लिए हुए मटमैला। सफेद। पीला।

पंडुक—पु० कपोत या कबूतर की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी, पिंडुक, फाख्ता।

पँतीजना—सक० रुई ओटना पीजना।

पँतीजी—स्त्री० रुई धुनने की धुनकी।

पँत्यारी(पु)—स्त्री० दे० 'पंक्ति।

पंथ—पु० मार्ग, रास्ता। आचारपद्धति, चाल। धर्ममार्ग, संप्रदाय (जैसे, सिक्ख पंथ, गोरख पंथ आदि)। मु० **~गहना** = चलना। चाल पकड़ना, आचरण ग्रहण करना। **~दिखाना** = रास्ता बताना। उपदेश देना। **~देखना या निहारना** = प्रतीक्षा करना। **~पर लगना** = रास्ते पर होना, चाल ग्रहण करना। **~में या ~पर पाँव देना** = चलना। आचरण ग्रहण करना। **किसी के ~लगना** = अनुयायी होना। किसी के पीछे पड़ना बराबर तंग करना।

पंथकी(पु)—पु० मुसाफिर, पथिक।

पंथान(पु)—मार्ग।
पंथि(पु)—पु० राही, पथी।
पथिक(पु)†—पुं० दे० 'पथिक'।
पंथी—पु० राही, पथिक। किसी सप्रदाय या पथ का अनुयायी।
पंद—स्त्री० [फा०] शिक्षा उपदेश।
पदरह—वि० दस और पाँच। पु० दस और पाँच की सूचक सख्या, १५।
पप—पुं० [अं०] वह नल जिसके द्वारा पानी या हवा एक तरफ से दूसरी तरफ पहुँचाई जाती है। एक प्रकार का जूता।
पपा—स्त्री० [सं०] दक्षिण भारत की एक नदी और उसी से लगा हुआ एक ताल और नगर जो त्रेतायुग मे वानरो के राजा बालि की राजधानी थी (वाल्मीकि रामायण)। ⊙सर=पुं० दे० 'पपा'।
पंपाल—वि० पापी, दुष्ट।
पँवर—पु० सामान, सामग्री।
पँवरना—अक० तैरना। थाह लेना, पता लगाना।
पँवरि—स्त्री० प्रवेशद्वार या गृह, फाटक, ड्योढी। पँवरिया—पुं० द्वारपाल, ड्योढीदार। मगल अवसर पर द्वार पर वैठकर मगल गीत गानेवाला याचक।
पँवरी—स्त्री० दे० 'पँवरि'। खडाऊँ, पाँवरी।
पँवाड़ा—पु० लबी चौडी कथा जिसे सुनते सुनते जी ऊबे, दास्तान। यश, कीर्ति। व्यर्थ विस्तार के साथ कही हुई बात। एक प्रकार का गीत।
पँवार—पु० दे० 'परमार'।
पँवारना†—सक० हटाना, फेंकना।
पँवारी—पु० पँवाडा, कीर्ति।
पसारी—पु० मसाले और जडीबूटी वेचनेवाला दूकानदार।
पंसासार—पुं० पासे का खेल।
पंसेरी—स्त्री० पाँच सेर का बाट।
पइठना(पु)—अक० दे० 'पैठना'।
पइता—पु० एक छद जिसे पाइता, पादताली, पवित्रा और प्रथिना भी कहते हैं। इसमे क्रम से एक मगण, एक भगण और एक सगण होता है।
पइसना†—अक० दे० 'पैठना'।
पइसार†—पु० पैठ, प्रवेश।
पउँरि, पउरी—स्त्री० दे० 'पौरि'।
पकड़—स्त्री० पकडने की क्रिया या भाव, ग्रहण। पकडने का ढंग। लडाई में एक वार आकर परस्पर गुथना, भिडत। दोष, भूल आदि ढूँढ निकालने की क्रिया या भाव। ⊙धकड=स्त्री० दे० 'घर पकड'। ⊙ना=सक० किसी वस्तु को इस प्रकार हाथ में लेना कि वह जल्दी छूट न सके, थामना, ग्रहण करना। काबू में करना, गिरफ्तार करना। कुछ करने से रोक रखना। ढूँढ निकालना, पता लगाना। रोकना टोकना, (जैसे,भूल करने पर पकडना)। दौडने, चलने या और किसी बात में बढे हुए के बराबर हो जाना। सहारा देना। किसी फैलनेवाली वस्तु में लगकर उससे सचरित या प्रभावित होना (जैसे, फूस का आग पकडना, कपडे का रग पकडना)। अपने स्वभाव या वृत्ति के अतर्गत करना (जैसे, चाल पकडना, ढग पकडना)। आक्रात होना, ग्रस्त होना (जैसे सर्दी पकडना, रोग पकडना)।
पकड़ाना—सक० [पकडना का प्रे०] पकड़ने का काम कराना। किसी को ग्रहण कराना।
पकना—अक० फल या अनाज आदि का पुष्ट होकर खाने या काटकर सुरक्षित रखने के योग्य होना, पूरी अवस्था को प्राप्त होना। आँच खाकर गलना या प्रयोग के योग्य होना, सिद्ध होना। फोड़े आदि मे मवाद आना, पीव से भरना। पक्का होना। मु० कलेजा ~= सताप होना। बाल~=(बुढापे के कारण) बाल सफेद होना।
पकरना†(पु)—सक० दे० 'पकड'।
पकवान—पु० घी मे तलकर बनाई हुई खाने की वस्तु (पूरी, मिठाई आदि)।
पका—वि० जो (फल, अनाज आदि) पुष्ट अवस्था को प्राप्त होकर खाने या काटकर सुरक्षित रखने योग्य हो, कच्चा का उलटा। उबाला हुआ (पानी आदि तरल पदार्थ)। आँच या ताप द्वारा गलाकर इस्तेमाल के योग्य तैयार किया हुआ

(भोजन या द्रवणशील कोई मसाला आदि)। ⊙ना = सक० [अक० पकना] फल आदि को पुष्ट और तैयार करना। आँच या गरमी के द्वारा गलाना या तैयार करना, रीधना। फोड़े फुंसी, घाव आदि मे पीव या मवाद उत्पन्न करना। पक्का करना।

पकाई—स्त्री० पकाने की क्रिया या भाव। पकाने की मजदूरी।

पकावन—पु० दे० 'पकवान'।

पकौड़ा—पु० घी या तेल मे पकाकर फुलाई हुई वेसन या पीठी की वडी।

पक्का—वि० मजवूत, टिकाऊ। स्थिर, न टलनेवाला। प्रामाणिक। जिसकी नाप तौल प्रामाणिक हो (जैसे, पक्का पाँच सेर)। जो अभ्यस्त या निपुण व्यक्ति के द्वारा वना हो (जैसे, पक्के अक्षर)। तजरुवेकार, निपुण। जो किसी काम को करते करते दक्ष हो गया या मँज गया हो (जैसे, पक्का हाथ)। अनाज या फल जो पुष्ट होकर खाने के योग्य हो गया हो। पका हुआ, जिसमे पूर्णता आ गई हो। जो अपनी बाढ या प्रौढ़ता को पहुँच गया हो, पुष्ट। साफ और दुरुस्त। जो आँच पर कडा या मजवूत हो गया हो। आँच पर पका हुआ। न छूटनेवाला (जैसे, पक्का रग)। शास्त्रीय (जैसे, पक्का गाना)। मु०~ कागज = वह कागज जिसपर लिखी हुई बात कानून से दृढ समझी जाती है। ~खाना या पक्की रसोई = घी मे पका भोजन। ~पानी = औटाया हुआ पानी। स्वास्थ्यकर जल।

पक्की—स्त्री० पूरी, कचौडी, मिठाई आदि।

पक्खर(पु)—स्त्री० दे० 'पाखर'। वि० पक्का, पुख्ता।

पक्व—वि० [सं०] पका हुआ। पक्का। परिपुष्ट दृढ। **पक्वान्न**—पु० पका हुआ अन्न। पानी आदि के साथ आग पर घी युक्त पकाकर बनाई हुई खाने की चीज। **पक्वाशय**—पु० पेट मे वह स्थान जहाँ अन्न जाता है और यकृत् तथा ग्रथियो से आए हुए रस से मिलकर पचता है।

पक्ष—पु० [सं०] किसी विशेष स्थिति से दाहिने और बाएँ पड़नेवाले भाग, तरफ। किसी विषय के दो या अधिक परस्पर भिन्न अगो मे से एक, पहलू। वह बात जिसे कोई सिद्ध करना चाहता हो, सिद्धात या विषय। अनुकूल मत या प्रवृत्ति। झगडा या विवाद करनेवालो मे से किसी के अनुकूल स्थिति। निमित्त, लगाव। वह वस्तु जिसमे साध्य की प्रतिज्ञा करते है (जैसे, पर्वत वह्निमान् है। यहाँ पर्वत पक्ष है जिसमे साध्य वह्निमान् की प्रतिज्ञा की गई है) (न्याय)। फौज, सेना, बल। सहायको या सवर्गो का दल। सहायक, साथी। वादियो प्रतिवादियो के अलग अलग समूह। चाद्र मास के पद्रह पद्रह दिनो के दो विभाग, पाख। चिड़ियो का डैना, पख, पर। शर पक्ष, तीर मे लगा हुआ पर। गृह, घर। ⊙**पात** = पु० बिना उचित अनुचित के विचार के किसी के अनुकूल प्रवृत्ति या स्थिति, तरफदारी। ⊙**पाती** = वि० तरफदार। **पक्षाघात**—पु० आधे अग का लकवा, फालिज। मु० ⊙**गिरना** = मत का युक्तियो द्वारा सिद्ध न हो सकना। **किसी का ~लेना** = (झगड़े मे) किसी की ओर होना, सहायक होना। पक्षपात करना, तरफदारी करना।

पक्षिराज—पु० [सं०] गरुड। जटायु। एक प्रकार का धान।

पक्षी—पु० [सं०] चिडिया। तरफदार।

पक्ष्म—पु० [सं०] आँख की बरौनी। **पक्ष्मल**—वि० वडी बरौनियोवाला। **पक्ष्मिल**—वि० [सं०] जिसमे बरौनी हो।

पखंडी—पु० पाखडी। वह जो कठपुतलियाँ नचाता हो।

पख—स्त्री० ऊपर से व्यर्थ बढाई हुई बात, तुर्रा। अडगा। झगडा, बखेडा। दोष, त्रुटि।

पखड़ी—स्त्री० फूलो का रगीन पटल जो खिलने के पहले परागकेसर को चारो ओर से बद किए रहता है और खिलने पर फैल जाता है, पुष्पदल।

पखराना—सक० [पखारना का प्रे०] धुलवाना, पखारने का काम कराना।

पखरी†—स्त्री० दे० 'पाखर'। दे० 'पखडी'।
पखरैत—पुं० वह घोडा, बैल या हाथी जिसपर लोहे की पाखर पडी हो।
पखवाड़ा†—पु० दे० 'पखवारा'।
पखवारा—पु० महीने के पद्रह दिनो के दो विभागो मे से कोई एक। पद्रह दिन का काल।
पखाउज—स्त्री० दे० 'पखावज'।
पखान(पु)—पु० दे० 'पाषाण'।
पखाना—पु० कहावत, मसल। †पु० दे० 'पाखाना'।
पखारना—अक० पानी मे धोकर साफ करना, धोना।
पखाल—स्त्री० चमडे की वडी मशक जिसमे पानी भरा जाता है। धौंकनी। पखाली—पु० पखाल या मशक से पानी भरनेवाला, भिश्ती।
पखावज—स्त्री० एक वाजा जो मृदग से कुछ छोटा होता है। पखावजी—पु० पखा-वज वजानेवाला।
पखी, पखीरी(पु)—पु० दे० 'पक्षी'।
पखुरी—स्त्री० दे० 'पखडी'।
पखेरू—पु० पक्षी, चिडिया।
पखौटा—पु० डैना, पर। मछली का पर।
पग—पु० पैर, पाँव। डग, फाल। ⊙डडी=स्त्री० खेत, जगल या मैदान मे पैदल चलने का तग रास्ता। ⊙तरी(पु)=स्त्री० जूता। ⊙दासी=स्त्री० जूता। खडाऊँ।
पगना—अक० शरवत या शीरे मे इस प्रकार पकाना कि शरबत या शीरा चारो ओर लिपट और घुस जाय। रस आदि के साथ ओतप्रोत होना, सनना। किसी के प्रेम मे डूवना।
पगनियाँ†—स्त्री० जूती।
पगरा(पु)†—पुं० पग, कदम। दे० 'पगाह'।
पगला—वि० दे० 'पागल'।
पगहा†—पुं० दे० 'पघा'।
पगा†—पुं० दुपट्टा, पटका। दे० 'पघा'। दे० 'पगरा'।
पगाना—सक० पागने का काम करना। अनुरक्त करना, मगन करना।
पगार(पु)—चहारदीवारी। पैरों से कुचली हुई मिट्टी, कीचड या गारा। ऐसी वस्तु जिसे पैरो से कुचल सकें। वह पानी या नदी जिसे पैदल चलकर पार कर सकें। वेतन, तनख्वाह।
पगाह—स्त्री० [फा०] यात्रा आरभ करने का समय प्रभात।
पगिआना(पु)†—सक० दे० 'पगाना'।
पगिया(पु)†—स्त्री० दे० 'पगडी'।
पगुराना†—अक० पागुर या जुगाली करना। हजम करना।
पघा—पुं० ढोरो को वाँधने की मोटी रस्सी, पगहा।
पचकना—अक० दे० 'पिचकना'।
पच—वि०[कि० समा० मे] पाँच। ⊙कल्यान=पु० दे० 'पचकल्याण'। ⊙खा†=पु० दे० 'पचक'। ⊙गुना=वि० दे० 'पँचगुना'। ⊙मेल=वि० दे० 'पँचमेल'। ⊙रग=पुं० चौक पूरने की सामग्री—मेहँदी का चूरा, अवीर, वुक्का, हल्दी और सुपारी के वीज। ⊙रंगा=वि० दे० 'पँचरगा'। पुं० नवग्रह आदि की पूजा के निमित्त पूरा जानेवाला चौक। ⊙लडी=स्त्री० दे० 'पँचलडी'। ⊙लोना=स्त्री० जिसमे पाँच प्रकार के नमक मिले हो (दे० 'पचलवण')।
पचडा—पु० झझट, वखेडा। एक प्रकार का गीत जिसे प्राय ओझा लोग देवी आदि के सामने गाते है। लावनी के ढग का एक गीत।
पचन—पु० [सं०] पचाने की क्रिया या भाव, पाक। पकने की क्रिया या भाव। अग्नि।
पचना—अक० खाई हुई वस्तु का जठराग्नि की सहायता से रसादि मे परिणत होना, हजम होना। समाप्त या नष्ट होना। पराया माल इस प्रकार अपने हाथ मे आ जाना कि फिर वापस न हो सके। ऐसा परिश्रम होना जिससे शरीर क्षीण हो, बहुत हैरान होना। खपना, समा जाना। मु०—पच मरना=किसी काम के लिये बहुत अधिक परिश्रम करना, हैरान होना।
पचपन—वि० पचास और पाँच। पुं० पचास और पाँच की सूचक सख्या, ५५। ⊙साला=पुं० पचपन साल की अवस्था,

भारत मे सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण करने की अवस्था ।

पचवाई—स्त्री० एक प्रकार की देशी शराब।

पचहरा—वि० पाँच परतो या तहोवाला ।

पचाना—सक० [अक० पचना] पकना, आँच पर गलाना । हजम करना । समाप्त या नष्ट करना । पराए माल को अपना कर लेना, आत्मसात् कर जाना। अत्यधिक परिश्रम लेकर या क्लेश देकर शरीर, मस्तिष्क आदि का क्षय करना । खपाना, मिला लेना ।

पचारना—सक० ललकारना ।

पचास—वि० चालीस और दस । पुं० चालीस और दस की सख्या । **पचासा**—पु० एक ही प्रकार की पचास वस्तुओ का समूह । पचास वर्षो की आयु या अवस्था ।

पचित(पु)—वि० पच्ची किया हुआ, जुडा या बैठाया हुआ ।

पचीस†—वि० दे०' पचीस' । **पचीसी**†—स्त्री० पु० 'पच्चीस' ।

पचोतरसो—पुं० एक सौ पाँच की संख्या का अक, १०५ ।

पचौनी—स्त्री० पेट के अदर की वह थैली जिसमे भोजन पचता है ।

पचौर, पचौली†—पु० गाँव का मुखिया, पंच ।

पचौवर—वि० पाँच तरह का किया हुआ, पचहरा ।

पच्चड़, पच्चर—पुं० लकड़ी की वह गुल्ली जिसे लकड़ी की बनी चीजो मे साल या जोड़ को कसने के लिये ठोकते हैं ।

पच्ची—स्त्री० ऐसा जड़ाव जिसमे जड़ी या जमाई जानेवाली वस्तु उस वस्तु के बिलकुल समतल हो जाय जिसमे वह जडी या जमाई जाय । किसी धातुनिर्मित पदार्थ पर किसी अन्य धातु के पत्तर का जड़ाव। ⊙**कारी** = स्त्री० [हिं० + फा०] पच्ची करने की क्रिया या भाव । मु० (किसी मे) ~**हो जाना** = बिलकुल मिल जाना, लीन हो जाना ।

पच्चीस—वि० पाँच और बीस । पु० पाँच और बीस की सख्या, २५ । **पच्चीसी**—स्त्री० एक ही प्रकार की २५ वस्तुओ का समूह । किसी की आयु के पहले पच्चीस वर्ष । एक विशेष गणना जिसका सैकडा पच्चीस गाहियो का अर्थात् १२५ का माना जाता है । एक प्रकार का खेल जो चौसर की बिसात पर पासे के बदले सात कौडियो से खेला जाता है ।

पच्छ—पु० दे० 'पक्ष' । ⊙**ताई** (पु) = स्त्री० दे० 'पक्षपात' । **धर** = वि० पक्ष धारण करनेवाला । पक्षपात करनेवाला ।

पच्छिम—पुं० दे० 'पश्चिम' ।

पच्छी—पुं० दे० 'पक्षी' ।

पछड़ना—अक० लडने मे पटका जाना । दे० 'पिछड़ना' ।

पछताना(पु)—अक० किसी किए हुए अनुचित कार्य के सबंध मे पीछे से दुखी होना, पश्चात्ताप करना ।

पछतानि(पु)†—स्त्री० दे० 'पछतावा' ।

पछताव†—पु० दे० 'पछतावा' ।

पछतावना†—पु० दे० 'पछताना' ।

पछतावा—पु० पश्चात्ताप ।

पछना—पुं० वह वस्त्र जिससे कोई चीज पोछी जाय । फसद । अक० पोछा जाना ।

पछमन(पु) क्रि० वि० पीछे ।

पछलना—पु० दे० 'पिछलना' ।

पछलगा—वि० दे० 'पिछलगा' ।

पछलत्त—स्त्री० दे० 'पिछलत्ती' ।

पछवाँ—वि० पच्छिम का ।

पछाँह—पु० पश्चिम की ओर का देश । **पछाँहिया, पछाँही**—वि० पछाँह का, पश्चिमी प्रदेश का ।

पछाड़—स्त्री० अचेत होकर गिरना । मु०~**खाना** = खडे खडे अचानक बेसुध होकर गिर पडना ।

पछाड़ना—सक० कुश्ती या लडाई मे पटकना, गिराना । हराना । धोने के लिये कपडे को जोर से पटकना ।

पछानना(पु)—सक० दे० 'पहचानना' ।

पछारना(पु)†—सक० दे० 'पछाड़ना' ।

पछावरि(पु)†—स्त्री० एक प्रकार का सिखरन या शरबत । छाछ का बना एक पेय पदार्थ ।

पछाहीं—वि० पछाहँ का ।

पछिआना†—सक० पीछे पीछे चलना । पीछा करना ।

पछिताव—पु० दे० 'पछतावा'।
पछु—वि० पक्ष। पक्ष लेनेवाला, सहायता करनेवाला।
पछुवाँ—वि० पच्छिम की हवा।
पछेली†—स्त्री० हाथ मे पहनने का स्त्रियो का एक प्रकार का कडा।
पछोडना—सक० सूप आदि मे रखकर (अन्न आदि के दानो को) साफ करना, फटकना। मु०—फटकना ~ = खूब देखना भालना।
पछोरन—पु० साफ करने से निकला हुआ कूडा करकट या अन्न के बेकाम दाने आदि।
पछोरना—सक० दे० 'पछोडना'।
पछ्यावर†—स्त्री० एक प्रकार का सिखरन या शरबत।
पजरना(पु)—अक० जलना, दहकना।
पजारना(पु)—सक० [अक० पजरना] जलाना।
पजावा—पुं० आवाँ, ईंट पकाने का भट्टा।
पजोखा†—पुं० मातमपुरसी।
पज्ज—पु० शूद्र।
पज्झटिका—स्त्री०† १६ मात्राओ का एक छद जिसके पदात मे गुरु वर्ण होता है।
पटंबर(पु)†—पु० रेशमी, कपडा, कौषेय।
पट—पु० दरवाजा। पालकी के दरवाजे जो सरकाने से खुलते और बद होते हैं। सिहासन। चिपटी और चौरस भूमि। वि० ऐसी स्थिति जिसमे पेट भूमि की ओर हो, चित का उलटा। क्रि० वि० चट का अनुकरण, तुरत। पु० [सं०] वस्त्र, कपडा। आड करनेवाली वस्तु, पर्दा, चिक। किसी धातु आदि का वह चिपटा टुकडा या पट्टी जिसपर कोई चित्र या लेख खुदा हो। कागज का वह टुकडा जिसपर चित्र खीचा या उतारा जाय, चित्रपट। वह चित्र जो जगन्नाथ, बदरिकाश्रम आदि मदिरो से दर्शनप्राप्त यात्रियो को मिलता है। छप्पर, छान। कपास। ⊙**कार** = पु० जुलाहा। ⊙**झोल**(पु) = पु० अचल, आँचल। ⊙**धारी** = वि० जो कपडा पहने हो। ⊙**ना** = अक० किसी गड्ढे या नीचे स्थान का भरकर आसपास की सतह के बराबर हो जाना। किसी स्थान मे किसी वस्तु की इतनी अधिकता होना कि उससे शून्य स्थान न दिखाई पडे। मकान, कुएँ आदि के ऊपर कच्ची या पक्की छत बनना। †सीचा जाना। दो मनुष्यो के विचार या स्वभाव मे समानता होना। लेनदेन आदि मे उभय पक्ष का मूल्य या शर्तो आदि पर सहमत हो जाना, तै हो जाना। (ऋण) चुकना, पूरा अदा हो जाना। पु० दे० 'पाटलिपुत्र'। मु० ~**उघड़ना या खुलना** = मदिर का दरवाजा इसलिये खुलना कि लोग दर्शन करें। ~**पडना** = मद पडना, न चलना (जैसे रोजगार पट पडना)।
पटइन†—स्त्री० पटवा जाति की स्त्री।
पटकन(पु)—स्त्री० पटकने की क्रिया या भाव। चपत। छडी।
पटकना—सक० किसी वस्तु या व्यक्ति को झटके के साथ नीचे की ओर गिराना। किसी वस्तु या व्यक्ति को उठाकर कुछ ऊँचाई से जोर के साथ जमीन पर फेंकना कुश्ती मे प्रतिद्वद्वी को पछाड़ना। अक० सूजन बैठना या पचकना। पट शब्द के साथ किसी चीज का दरक या फट जाना। मु०—(**किसी पर**) ~ = कोई ऐसा काम किसी के सुपुर्द करना जिसे करने की उसकी इच्छा न हो। **सिर** ~ = बार बार असफल प्रयत्न करना। किसी काम के लिये बहुत अधिक आजिजी।
पटकनिया, पटकनी—स्त्री० पटकने या पटके जाने की क्रिया या भाव, पछाड।
पटका—पु० वह दुपट्टा या रूमाल जिससे कमर बाँधी जाय, कमरबद।
पटकान—स्त्री० दे० 'पटकनी'।
पटतर(पु)—पु० समता, बराबरी। उपमा, तशबीह। **पटतरना**—अक० उपमा देना।
पटतारना—सक० [अक० पटतरना] खाँडे, भाले आदि शस्त्र का किसी पर चलाने के लिये पकडना या खीचना। ऊँची नीची जमीन को चौरस करना।
पटनी—स्त्री० वह जमीन जो किसी को इस्तमरारी पट्टे के द्वारा मिली हो।
पटपट—स्त्री० हल्की वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द की आवृत्ति। क्रि० वि०

बराबर पटपट ध्वनि करता हुआ, जैसे बूँदो का पटपट पड़ना।

पटपटाना—अक० भूख प्यास या सरदी गरमी के मारे बहुत कष्ट पाना। किसी चीज से पटपट ध्वनि निकलना। सक० 'पटपट' शब्द उत्पन्न करना। खेद करना।

पटपर—वि० समतल, चौरस। पुं० नदी के आसपास की वह समतल भूमि जो बरसात मे प्राय पानी मे डूबी रहती है। अत्यत उजाड स्थान।

पटबंधक—पु० एक प्रकार का रेहन जिसमे रेहनदार रखी हुई सपत्ति के लाभ मे से सूद रहित मूल धन अदा करने पर रेहन रखी हुई संपत्ति लौटा देता है।

पटबिजना, पटबीजना—पु० दे० 'जुगनू'।

पटमजरी—स्त्री० [पु०] एक रागिनी।

पटमंडप—पु० [सं०] तबू, खेमा।

पटरा—पुं० काठ का लबा चौकोर और चौरस टुकड़ा, तख्ता। धोबी का पाट। हेंगा, पाटा। मु०~कर देना=मार काटकर फैला देना या बिछा देना। चौपट कर देना।

पटरानी—स्त्री० वह रानी जो राजा के साथ सिहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो, मुख्य रानी।

पटरी—स्त्री० काठ का पतला लबा और चौकोर तख्ता, छोटा पटरा। लिखने की तख्ती, पटिया। बैठने का छोटा पीढा या चौकी। सडक या नहर के दोनो किनारो का वह भाग जो पैदल चलनेवालो के लिये होता है। बगीचे मे क्यारियो के इधर उधर के पतले पतले रास्ते। लोहे की मजबूत लबी पट्टी जिसपर रेलगाडी चलती हैं, रेल की लाइन। सुनहरे या रुपहले तारो से बना हुआ वह फीता जिसे कपडे की कोर पर लगाते हैं। हाथ मे पहनने की एक प्रकार की चूडी। वि० चौरस, समतल, बराबर। मु०~जमना या~बैठना= मन मिलना, पटना।

पटल—पु० [सं०] आवरण, पर्दा। छप्पर, छान परत, तह। पहल, पार्श्व। आँख का पर्दा। लकड़ी आदि का चौरस टुकड़ा पटरा। पुस्तक का भाग या अशविशेष, परिच्छेद। तिलक। टीका। समूह, ढेर।

पटवा—पु० रेशम या सूत मे गहने गुँथनेवाला, पटहार। पटसन, पाट।

पटवारगरी—स्त्री० पटवारी का काम या पद।

पटवारी—पु० गाँव के जमीन और उसके लगान का हिसाब किताब रखनेवाला छोटा सरकारी कर्मचारी। स्त्री० कपडे पहनानेवाली दासी।

पटवास—पु० [सं०] शिविर, तबू। वह वस्तु जिससे वस्त्र सुगधित किया जाय। लहँगा।

पटसन—पु० एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशे से रस्सी, बोरे, टाट और वस्त्र बनाए जाते है। पटसन के रेशे, जूट।

पटहा—पु० [सं०] दुदुभी, नगाडा।

पटहार, पटहारा—पु० दे० 'पटवा'।

पटा—पु० लोहे की वह पट्टी जिससे तलवार की काट और बचाव सीखे जाते हैं। (पु)पीढा, पटरा। अधिकारपत्र, सनद। लेनदेन, क्रय-विक्रय। चौडी लकीर, धारी। दे० 'पट्टा'। ⊙फेर= पुं० विवाह की एक रस्म जिसमे वर वधू आपस मे आसन बदलते हैं। **पटेबाज**—वि० [हिं०] पटा खेलनेवाला, व्यभिचारी और धूर्त।

पटाना—सक० [स० पाटना का प्रे०] पाटने का काम कराना। छत को पीटकर बराबर कराना। पाटन या छत बनवाना। ऋण चुका देना। मूल्य तै कर लेना। राजी करना। अक० शात होकर बैठना।

पटाई†—स्त्री० पाटने या पटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पटाक—किसी छोटी चीज के गिरने का शब्द (जैसे—वह पटाक से गिरा)।

पटाका—पु० पट या पटाक शब्द। पट या पटाक शब्द करके छूटनेवाली आतशबाजी। कोडे या पटाके की आवाज। तमाचा।

पटापट—क्रि० वि० लगातार बार बार 'पट' 'पट' ध्वनि के साथ। तेजी से। स्त्री० निरतर 'पट पट' शब्द की आवृत्ति।

पटापटी—स्त्री० वह वस्तु जिसमे अनेक रगो के फूल पत्त बने हों।

पटाव—पु० पाटने की क्रिया या भाव। पाटकर चौरस किया हुआ स्थान। छत की पाटन।

पटासन—पु० [सं०] बैठने के लिये कपड़े का बना आसन।

पटिया†—स्त्री० पत्थर का प्राय चौकोर और चौरस कटा हुआ टुकडा। खाट की पट्टी, पाटी। लिखने की पट्टी, तख्ती। हेंगा, पाटा। मांग, पट्टी।

पटी(५)—स्त्री० कपडे का पतला लबा टुकडा, पट्टी। पटका, कमरबद। नाटक का पर्दा।

पटीर—पु० [सं०] एक प्रकार का चदन। खैर का वृक्ष। वट वृक्ष।

पटीलना—अक० किसी को उलटी सीधी बातें समझा बुझाकर अपने अनुकूल करना। कमाना। ठगना। सफलतापूर्वक किसी काम को समाप्त करना।

पटु—वि० [सं०] कुशल, दक्ष। चतुर। अत्यत कठोर हृदयवाला। तंदुरुस्त। तीखा, तेज। उग्र, प्रचड।

पटुआ—पु० दे० 'पटुवा'।

पटुका—पु० दे० 'पटका'। चादर।

पटुली—स्त्री० काठ की पटरी जो झूले के रस्सो पर रखी जाती है। चौकी, पीढी।

पटुवा—पु० पटसन, जूट। करेमू।

पटूका(५)†—पु० दे० 'पटका'।

पटेर—पु० पानी मे होनेवाली एक घास, गोदपटेर।

पटेल—पुं० गांव का नबरदार या मुखिया (गुजरात, मध्यप्रदेश आदि मे)। सौराष्ट्र में हिंदुओ की एक उपजाति।

पटेला—पुं० वह नाव जिसका मध्य भाग पटा हो। दे० 'पटेर'। हेंगा। सिल, पटिया।

पटेत—पुं० दे० 'पटेबाज'।

पटैला—पु० किवाड बद करने का डडा, ब्योडा। दे० 'पटेला'।

पटो(५)—पु० अधिकारपत्र, सनद पट्टा।

पटोर—पु०पटोल,परवल। एक रेशमी कपड़ा।

पटोरी—स्त्री० रेशमी साडी या धोती।

पटोल—पु० [सं०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। परवल।

पटौतन—पु० ऋण आदि का परिशोध, कर्ज चुकना।

पटौनी—स्त्री० पटने या पटाने की क्रिया या भाव।

पटौहाँ†—पु० पटा हुआ स्थान। पटवधक।

पट्ट—वि० दे० 'पट'। पु० [सं०] तख्ती, लिखने की पटिया। तांबे आदि धातुओ की वह चिपटी पट्टी जिसपर राजकीय आज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी। किसी वस्तु का चिपटा या चौरस तल या भाग। शिला, पटिया। पीढा। वह भूमि सबंधी अधिकार पत्र जो भूमिस्वामी की ओर से असामी को दिया जाता है, पट्टा। ढाल। पगड़ी। दुपट्टा। नगर। चौराहा। राजसिंहासन। रेशम। पटसन। वि० [सं०] मुख्य, प्रधान। ⊙देवी = स्त्री० पटरानी। ⊙महिषी = स्त्री० पटरानी। पट्टक—पु० दे० 'पट्ट'।

पट्टन—पु० [सं०] नगर।

पट्टा—पु० किसी स्थावर संपत्ति, विशेषत. भूमि के, उपभोग का अधिकारपत्र जो स्वामी की ओर से असामी या ठेकेदार को दिया जाय। कोई अधिकारपत्र, सनद। चमडे या बनात आदि की बद्धी जो कुत्तो, बिल्लियो के गले में पहनाई जाती है। पीढा। पुरुषों के सिर के बाल जो पीछे की ओर गिरे और बराबर कटे होते हैं। चपरास। चमडे का कमरबद, पट्टी। एक प्रकार की तलवार।

पट्टिका—स्त्री० [सं०] छोटी तख्ती, पटिया। कपडे की छोटी पट्टी।

पट्टी—स्त्री० लकडी की वह चौरस और चिपटी पटरी जिसपर आरभिक छात्रों को लिखना सिखाया जाता है, तख्ती। पाठ, सबक। उपदेश, शिक्षा। बहकाना, भुलावा। लकडी की वह बल्ली जो खाट के ढांचे की लबाई मे लगाई जाती है, पाटी। धातु, कागज या कपडे की धज्जी। लकड़ी की लबी बल्ली जो छत या छाजन के ठाठ मे लगाई जाती है। सन की बनी हुई धज्जियां जिनके जोड़ने मे ठाठ तैयार होते हैं। कपड़े की कोर या किनारी। एक प्रकार की मिठाई। ऊन या मोटे कपडे की धज्जी जिसे सर्दी और थकावट से बचने के लिये टांगो मे बांधते हैं।

पंक्ति, कतार। माँग के दोनों ओर के, कघी से खूब बैठाए हुए वाल जो पट्टी से दिखाई पडते हैं। किसी वस्तु या सपत्ति (विशेषत भूमि, मकान आदि) का भाग, पत्ती। ⓟ वह अतिरिक्त कर जो किसी विशेष प्रयोजन के लिये असामियों पर लगता है, नेग। ⊙दार = पु० वह व्यक्ति जिसका किसी सपत्ति (विशेषत. भूमि, मकान आदि) मे हिस्सा हो, हिस्सेदार। सगोत्री। वरावर का अधिकारी। ⊙दारी = स्त्री० पट्टी या वहुत से हिस्से होना। पट्टीदार होने का भाव। वह भूस्वामित्व जो वहुत से मालिक होने पर भी अविभक्त सपत्ति समझी जाती हो, भाईचारा। मु०—~दारी करना = किसी के वरावर अधिकार जताना। वरावरी करना। ~मे आना = किसी के चकमे या वहकावे मे आना, पट्टी पढना।

पट्टू—पु० हाथ का वुना एक ऊनी वस्त्र जो पट्टी के रूप मे होता है और वहुत गरम माना जाता है।

पट्ठमानⓟ—वि० पढने योग्य।

पट्ठा—पु० जवान, पाठा। कुश्तीवाज। ऐसा पत्ता जो लवा, दलदार या मोटा हो। मोटा कागज। मासपेशियो को एक दूसरी से और हड्डियो के साथ बाँधे रखनेवाले ततु, मोटी नस। एक प्रकार का चौडा गोटा। पेडू के नीचे कमर और जाँघ के जोड का वह स्थान जहाँ छूने से गिल्टियाँ मालूम होती है। मु०~ चढना = किसी नस का तन जाना, नस पर नस चढना।

पट्ठी—स्त्री० दे० 'पठिया'।

पठन—पु० [स०] पढना। **पठनीय**—वि० पढने योग्य।

पठनेटा—पु० पठान का लडका।

पठवनाⓟ—सक० भेजना। **पठवाना** ⓟ—सक० [पठाना का प्रे०] भेजने का काम दूसरे से कराना। **पठाना**ⓟ—सक० भेजना।

पठान—पु० अफगानिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान के वीच बसी हुई एक मुसलमान जाति जो वीरता, कठोरता आदि के लिये प्रसिद्ध है। **पठानी**—स्त्री० पठान जाति की स्त्री। पठान की स्त्री। पठान होने का भाव। शूरता, वीरता, कठोरता आदि गुण। वि० पठानो का।

पठानी लोध—स्त्री० एक जगली वृक्ष जिसकी लकडी और फूल औषध के काम मे आते है।

पठावन—पु० दूत।

पठावनि, पठावनी—स्त्री० किसी को कही कोई वस्तु या सदेश पहुँचाने के लिये भेजना। इस प्रकार भेजने की मजदूरी। भेजना, पहुँचाना।

पठित—वि० [स०] जिसे पढ चुके हों, अधीत। पढा लिखा, शिक्षित।

पठिया—स्त्री० जवान और तगडी स्त्री।

पठौनी—स्त्री० दे० 'पठावनी'।

पठ्यमानⓟ—वि० पढा जाने के योग्य, सुपाठ्य।

पड़छती, पडछत्ती—स्त्री० भीत की रक्षा के लिये लगाया जानेवाला छप्पर या टट्टी। कमरे आदि के बीच की पाटन जिसपर चीज असवाव रखते है, टाँड।

पडतⓟ—स्त्री० दे० 'पडता'।

पडता—पु० कम से कम लाभ के साथ किसी वस्तु की खरीद या तैयारी का दाम। दर, शरह। लगान की शरह। सामान्य दर, औसत। मु०~खाना या पड़ना = लागत और अभीष्ट लाभ मिल जाना, खर्च और मुनाफा निकल आना। ~फैलाना या बैठाना = किसी चीजके तैयार करने, खरीदने और मँगाने आदि मे जो खर्च पडा हो, उसे देखते समुचित लाभ जोडकर उसका भाव निश्चित करना।

पडताल—स्त्री० किसी वस्तु की सूक्ष्म छानबीन, जाँच। गाँव अथवा शहर के द्वारा खेतो की एक प्रकार की जाँच। पैमायश। ⊙ना = सक० पडताल करना, जाँचना।

पड़ती—स्त्री० वह भूमि जिसपर कुछ काल से खेती न की गई हो। वह खेत जो पैदावार बढाने के लिये एक या दो साल तक जोता या बोया नही जाता। मु०~

उठना = पडती का जोता जाना। ~ छोडना = किसी खेत को कुछ समय तक यो ही छोडना, उसे जोतना नही जिसमे उसकी उर्वरक शक्ति बढे।

पडना—अक० प्राय ऊँचे स्थान से नीचे आना। गिरना। (दुखद घटना) घटित होना (जैसे, मुसीबत पडना)। विश्राम के लिये सोना या लेटना। बीमार होना। बिछाया जाना, फैलाया जाना। ठहरना, टिकना। पहुँचाना या पहुँचाया जाना, दाखिल होना। हस्तक्षेप करना। प्राप्त होना। पडना खाना। आय, प्राप्ति आदि का औसत होना। रास्ते मे मिलना। उत्पन्न होना। स्थित होना। सयोगवश होना, उपस्थित होना। जैसे, (मौका पडना, काम पडना)। जाँच या विचार करने पर पाया जाना। देशान्तर या अवस्थातर होना। अत्यत इच्छा या धुन होना। मु०—(किसी पर) ~ = विरति या मुसीबत आना। पडा होना = एक स्थान मे कुछ समय तक स्थित रहना, एक ही जगह बने रहना। रखा रहना। बाकी रहना। पडे रहना या पडा रहना = बिना कुछ काम किए लेटे रहना, निकम्मा रहना। क्या पडी है = क्या मतलब है, क्या चाहता है ?

पडपडाना—अक० पडपड शब्द होना। अत्यत कटु पदार्थ के भक्षण या स्पर्श से जीभ पर किंचित् दुखद तीक्ष्ण अनुभूति होना, चरपराना।

पडपोता—पुं० पुत्र का पोता।

पड़वा—स्त्री० प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि।

पड़ाना—सक० गिराना, झुकाना।

पड़ापड—क्रि० वि० वर्षा होने, जूते पडने या थप्पड लगने के शब्द के साथ।

पडाव—पुं० यात्रा के बीच मे उतरने या रुकने की जगह। वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हो।

पडिया—स्त्री० भैंस का मादा बच्चा।

पडिया—स्त्री० दे० 'पडवा'।

पड़ोस—पुं० किसी के घर के आसपास के घर। किसी स्थान के आस पास के स्थान। आसपास रहनेवाले व्यक्ति। पास ⊙ = समीपवर्ती मुहल्ला या स्थान। मु०~ करना = पडोस मे बसना। पड़ोसी—वि० पड़ोस मे रहनेवाला। पड़ोसी पड़ोसी = वि० पास पड़ोस के रहनेवाले।

पढत—स्त्री० पढ़ने की क्रिया या भाव। पढने का ढग या अदाज। मत्र, जादू। पढंता—वि० पढनेवाला।

पढ़त—स्त्री० पढने की क्रिया या भाव। मंत्र।

पढना—सक० पुस्तक, लेख आदि को इस प्रकार देखना कि उसमे लिखी बात समझ मे आ जाय। लिखावट के शब्दो का उच्चारण करना, बाँचना। उच्चारण करना, मध्यम या धीमे स्वर से कहना। स्मरण रखने के लिये बारबार उच्चारण करना, रटना। जादू करना। तोते, मैना आदि का मनुष्यो के सिखाए हुए शब्द उच्चारण करना। शिक्षा प्राप्त करना, अध्ययन करना। पढवाई—स्त्री० पढवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। पढवैया—वि० पढनेवाला। पढ़ाई—स्त्री० पढ़ने का काम। विद्याभ्यास। पढने का भाव। पढाने का काम। पढ़ने का भाव। पढ़ाने का ढग। पढाने का शुल्क। पढाना—सक० [पढना का प्रे०] शिक्षा देना, अध्यापन करना। कोई कला या हुनर सिखाना। तोते, मैना आदि पक्षियो को बोलना सिखाना। सिखाना, समझाना। पढ़ैया—पु० पढनेवाला।

पण—पु० [सं०] कोई कार्य जिसमे बाजी बदी गई हो, द्यूत। प्रतिज्ञा, शर्त। वस्तु जिसके देने का करार या शर्त हो (जैसे किराया)। मोल, कीमत। फीस, शुल्क। धन सपत्ति। क्रय विक्रय की वस्तु। व्यापार, व्यवसाय। स्तुति, प्रशसा। प्राचीन काल का तांबे का टुकडा जिसका व्यवहार सिक्के की भाँति किया जाता था। एक प्राचीन नाप।

पणव—पु० [सं०] छोटा नगाड़ा या ढोल। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक मगण, एक नगण, एक भगण और अत मे गुरु होता है। प्रत्येक चरण मे १६,१६, मात्राएँ होने के कारण यह चौपाई के अतर्गत आता है।

पण्य—वि० [सं०] खरीदने या बेचने योग्य। प्रशंसा करने योग्य। पु० सौदा, माल। व्यापार, रोजगार। बाजार। दूकान। ⊙**भूमि**=स्त्री० वह स्थान जहाँ माल या सौदा जमा किया जाता हो, गोदाम। ⊙**वीथी**=स्त्री० बाजार, क्रय विक्रय का स्थान। ⊙**शाला**=स्त्री० दूकान। बाजार।

पतंग—पु० [सं०] उड़नेवाला जीव या कीड़ा। फतिंगा, भुनगा। शलभ, टिड्डी। सूर्य। चिड़िया। एक प्रकार का धान, जड़हन। गेंद। शरीर। नाव। पु० [हिं०] एक बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी से बहुत बढ़िया लाल रंग निकलता है। स्त्री० हवा में ऊपर उड़ाने का पतले कागज का एक ढाँचा जो बाँस की तीलियों पर मढ़कर बनाया जाता है, गुड्डी, कनकौआ। ⊙**बाज**=पु० [हिं०] वह जिसको पतंग, उड़ाने का व्यसन हो। ⊙**बाजी**=स्त्री० [हिं०] पतंग, उड़ाने की कला, क्रिया या भाव।
पतंगसुत—पु० [सं०] अश्विनीकुमार (देवताओं के वैद्य)।

पतंगम(पु)—पुं० पक्षी। फतिंगा।

पतंगा—पुं० पतंग। उड़नेवाला कीड़ा-मकोड़ा। एक कीड़ा जो घासों अथवा वृक्ष की पत्तियों पर होता है। चिनगारी।

पतंचिका—स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी या ताँत, चिल्ला।

पत(पु)†—पुं० पति, खसम। मालिक, स्वामी। स्त्री० लज्जा, आबरू। इज्जत। ⊙**पानी**=पु० लज्जा, आबरू। मु०~**उतारना या लेना**=बेइज्जती करना। ⊙**रखना**=इज्जत बचाना।

पतई—स्त्री० पत्ती, पत्ता। लज्जा, मान।

पतझड़—स्त्री० वह ऋतु जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं, माघ और फाल्गुन के महीने। अवनति काल।

पतझर—स्त्री० दे० 'पतझर'।

पतझार†—स्त्री० दे० 'पतझड़'।

पततप्रकर्ष—पु० [सं०] काव्य में एक प्रकार का रसदोष जिसमें किसी प्रसंग या वर्णन का प्रभाव उत्तरोत्तर कम होता जाता है।

पतन—पु० [सं०] गिरना। बैठना या डूबना। अवनति, अधोगति। नाश, मृत्यु। पाप। जातिच्युति, जाति से बहिष्कृत होना। उड़ान, उड़ना। ⊙**शील**=वि० जो बिना गिरे न रह सके, गिरनेवाला।

पतना—क्रि० गिरना।

पतनीय—वि० [सं०] गिरनेवाला। **पतनोन्मुख**—वि० जिसका पतन, अधोगति या विनाश निकट आ गया हो।

पतर(पु)—वि० पतला, कृश। पत्ता। पत्तल।

पतरा†—वि० दे० 'पतला'।

पतरी†—स्त्री० दे० 'पत्तल'। पतली।

पतला—वि० [वि० स्त्री० पतली] जिसका घेरा, लपेट अथवा चौड़ाई कम हो, जो मोटा न हो। जिसकी देह का घेरा कम हो, कृश। जिसका दल मोटा न हो, हलका। गाढ़े का उलटा, अधिक तरल। अशक्त, असमर्थ। मु०~**पड़ना**=दुर्दशा ग्रस्त होना। ~**हाल**=दुःख और कष्ट की अवस्था।

पतलून—पुं० वह पाजामा जिसमें मियानी नहीं लगाई जाती और पायँचा सीधा गिरता है, अँगरेजी पाजामा।

पतलो†—स्त्री० सरकंडा, सरपत।

पतवर†—क्रि० वि० पंक्ति क्रम से, बराबर बराबर।

पतवार, पतवारी—स्त्री० नाव का वह त्रिकोणाकार मुख्य अंग जो पीछे की ओर आधा जल में आधा बाहर होता है, इसके द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है।

पता—पुं० किसी का स्थान या ठिकाना सूचित करनेवाली बात जिससे उसको पा सकें या उस तक भेज सकें। चिट्ठी आदि पर लिखा हुआ पानेवाले का पूरा ठिकाना। खोज, टोह। जानकारी, खबर। गूढ़ तत्व, रहस्य, भेद। ⊙**ठिकाना**=पु० किसी वस्तु का स्थान और उसका परिचय। ⊙**निशान**=पुं० वे बातें जिनसे किसी के संबंध में कुछ जान सकें। अस्तित्वसूचक चिह्न। मु०—**पते की बात**=रहस्य खोलनेवाला कथन।

पताई—स्त्री० झड़ी हुई पत्तियों का ढेर।

पताका—स्त्री० [सं०] झंडा, फरहरा। नाटक मे वह स्थल जहाँ एक पात्र एक विषय मे कोई बात सोच रहा हो और दूसरा पात्र आकर दूसरे के संबंध मे कोई बात कहे। पिंगल के नौ प्रत्ययो मे से आठवाँ जिसके द्वारा किसी निश्चित गुरु लघु वर्ण के छंद का स्थान जाना जाय। सौभाग्य। दस खर्व की संख्या। ⊙स्थान = पु० नाटक मे वह स्थान जहाँ पताका हो, दे० 'पताका'। मु०—(किसी स्थान मे अथवा किसी स्थान पर) ~उड़ना = अधिकार होना, राज्य होना। सर्वप्रधान होना, सब मे श्रेष्ठ माना जाना। (किसी वस्तु की) ~उड़ना = प्रसिद्धि होना, धूम होना। ⊙उड़ाना = अधिकार करना, विजयी होना। ⊙गिरना = हार होना। **पताकिनी**—स्त्री० सेना।

पतारⓅ†—पु० दे० 'पाताल'। जंगल, सघन वन।

पताल—पु० दे० 'पाताल'। ⊙आँवला = पु० औषध के काम मे आनेवाला एक पौधा या क्षुप। ⊙कुम्हड़ा = पु० एक प्रकार का जंगली पौधा जिसकी गाँठो से शकरकंद की तरह कंद फूटते हैं।

पतासा—पु० दे० 'बतासा'।

पतिंग—पु० पतंग, फतिंगा।

पतिंवरा—वि० स्त्री० [सं०] जो अपना पति स्वयं चुने, स्वयंवरा (स्त्री)।

पति—पु० [सं०] स्त्री के लिये वह पुरुष जिससे उसका विवाह हुआ हो, दूल्हा। मालिक, स्वामी। मर्यादा, प्रतिष्ठा। शिव या ईश्वर। ⊙कामा = वि० स्त्री० पति की कामना रखनेवाली स्त्री। ⊙देवता = स्त्री० पति को देवता के समान माननेवाली स्त्री, पतिदेवा। ⊙देवा = स्त्री० पति को देवता के समान माननेवाली स्त्री, पतिव्रता। ⊙लोक = पु० पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमे उसका पति रहता है। ⊙वती = स्त्री० सधवा, सौभाग्यवती (स्त्री)। ⊙व्रत = पु० पति मे (स्त्री की) अनन्य प्रीति और भक्ति, पातिव्रत्य। ⊙व्रता = वि० पति मे अनन्य अनुराग रखनेवाली, साध्वी (स्त्री)।

पतिआना—सक० विश्वास करना, भरोसा या एतबार करना।

पतिआरⓅ†—पु० विश्वास, एतबार, साख। विश्वसनीय।

पतित—वि० [सं०] गिरा हुआ, ऊपर से नीचे आया हुआ। आचार नीति या धर्म से गिरा हुआ। महापापी। जाति मे निकाला हुआ, समाज बहिष्कृत। अत्यंत मलीन, महा अपावन, अति नीच। ⊙उधारन Ⓟ = वि० जो पतित का उद्धार करे। पु० ईश्वर या उनका अवतार। ⊙पावन = वि० पतित को पवित्र करनेवाला। पु० ईश्वर। सगुण ईश्वर।

पतितेसⓅ—पु० पतितो का मुखिया या सरदार, बहुत बड़ा पतित।

पतिनीⓅ—स्त्री० दे० 'पत्नी'।

पतिया—स्त्री० चिट्ठी, खत।

पतियाना†—सक० विश्वास करना, एतबार या भरोसा करना।

पतियाराⓅ—पतियाने का भाव, एतबार।

पतीजनाⓅ—अक० पतिआना, एतबार करना। सच मानना।

पतीतना—अक० विश्वास करना, सच मानना।

पतीननाⓅ—अक० विश्वास या भरोसा करना, सच मानना।

पतील, पतीला—वि० दे० 'पतला'। पुं० बड़ी पतीली। **पतीली**—स्त्री० देगची, एक प्रकार की बटलोई।

पतुकीⓅ—स्त्री दे० 'पतीली'।

पतुरिया—स्त्री० वेश्या, नाचने गाने का व्यवसाय करनेवाली। व्यभिचारिणी स्त्री, छिनाल स्त्री।

पतोखा—पु० पत्ते का बना पात्र, दोना। एक प्रकार का बगला। **पतोखी**—स्त्री० एक पत्ते का दोना, छोटा दोना। पत्तो का बना छोटा छाता।

पतोह, पतोहू—स्त्री० बेटे की स्त्री, पुत्रवधू।

पतौआⓅ‡, **पतौवा**Ⓟ—पु० पत्ता।

पत्तन—पु० [सं०] नगर, शहर।

पत्तर—पु० धातु का ऐसा चिपटा लंबा

टुकडा जो पीटकर तैयार किया गया हो, धातु की चादर ।

पत्तल—स्त्री० पत्तो को जोडकर बनाया हुआ एक पात्र जो खाने के लिये थाली का काम देता है। पत्तल मे परसी हुई भोजन सामग्री । एक आदमी के खाने भर भोजन सामग्री । मु०—**एक~मे खानेवाले** = परस्पर रोटी बेटी का व्यवहार करनेवाले । **किसी की~मे खाना** = किसी के साथ खानपान का सबध रखना । **जिस~में खाना उसी में छेद करना** = जिससे लाभ उठाना उसी की हानि करना, कृतघ्नता ।

पत्ता—पु० पेड़ या पौधे के शरीर का वह प्राय. हरे रग का फैला हुआ अवयव जो काड या टहनी से निकलता है, पत्रक, पर्ण । कान मे पहनने का एक गहना । मोटे कागज का गोल या चौकोर खड । मु०~**खड़कना** = कुछ खटका या आशका होना, आहट मिलना । **~तोड़ भागना** = बेतहाशा भागना, सिर पर पैर रखकर भागना । **~न हिलना** = हवा का बिलकुल बद होना । **~हो जाना** = तेजी से दौडकर क्षणमात्र मे दृष्टि से ओझल हो जाना ।

पत्ति—पुं० [सं०] पैदल सिपाही । शूरवीर पुरुष, योद्धा । प्राचीन काल मे सेना का सबसे छोटा विभाग जिसमे १ रथ, १ हाथी, ३ घोडे और ५ पैदल होते थे । किसी किसी के मत से पैदलो की सख्या ५५ होती थी ।

पत्तिक—पु० [सं०] प्राचीन काल मे सेना का एक विशेष विभाग जिसमे १० घोडे, १० हाथी, १० रथ और १० प्यादे होते थे। उपर्युक्त विभाग का अफसर। वि० पैदल चलनेवाला ।

पत्ती—स्त्री० छोटा पत्ता । हिस्सा, साझे का अंश । फूल की पंखडी, दल । भाँग । पत्ती के आकार की लकडी, धातु आदि का कटा हुआ टुकडा, पट्टी । सफेद पान के कोमल छोटे पत्तो का बीड़ा । †जर्दे का छोटा टुकडा । राजपूतो की एक जाति । ⊙**दार** = पुं० साझीदार, हिस्सेदार ।

पत्थ(पु)—प० दे० 'पथ्य' ।

पत्थर—पु० पृथ्वी के कडे स्तर का पिंड या खड । सडक की नाप सूचित करनेवाला पत्थर । ओला, वर्षोपल । रत्न, हीरा, लाल, पन्ना आदि । पत्थर की तरह कठोर, भारी अथवा टूटने, गलने आदि के अयोग्य वस्तु । बिलकुल नही, खाक (तिरस्कार के साथ अभाव का सूचक) । ⊙**कला** = पु० पुरानी चाल की बदूक जिसमे बारूद सुलगाने के लिये चकमक पत्थर लगा रहता था । ⊙**चटा** = पु० एक प्रकार की घास । एक प्रकार का साँप । एक प्रकार की मछली । एक प्रकार का कीडा । कजूस । ⊙**फूल** = पुं० छरीला, शैलाख्य । ⊙**फोड़** = पुं० पत्थरो की सधि मे होनेवाली एक वनस्पति । मु०~**का कलेजा, दिल या हृदय** = वह हृदय जिसमें दया, करुणा आदि कोमल वृत्तियो का स्थान न हो । बहुत कठोर हृदय । **~का दिल या~की छाती** = अडिग हिम्मतवाला दिल । **~की लकीर** = न मिटनेवाली (वस्तु) । **~चटाना** = पत्थर पर घिसकर धार तेज करना । **~तले हाथ आना या दबना** = ऐसे सकट मे फँस जाना जिससे छूटने का उपाय न दिखाई पडता हो । **~तले से हाथ निकलना** = सकट या मुसीबत से छूटना । **~पर दूब जमना** = अनहोनी बात या असभव काम होना । **~पसीजना या पिघलना** = अत्यत कठोर चित्त मे नरमी या कृपण के मन मे दानेच्छा आदि होना । **~पड़ना** = चौपट हो जाना । **~पानी** = आँधी पानी, तूफान । **~से सिर फोड़ना या मारना** = असंभव बात के लिये प्रयत्न करना । **~होना** = स्तभित होना, निष्कंप होना । पत्थर के समान स्थिर या जड हो जाना । सज्ञाहीन होना । जम जाना ।

पत्नी—स्त्री० [सं०] शास्त्र की विधि से ब्याही स्त्री, भार्या । ⊙**व्रत** = पुं० अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त और किसी स्त्री से गमन न करने का सकल्प या नियम ।

पत्य—पुं० [सं०] पति होने का भाव ।

पत्याना—(पु)† सक० दे० 'पतिआना' ।

पत्यारी(पु)—स्त्री० पंक्ति ।
पत्यारो†—पुं० दे० 'पतिआर', विश्वास, प्रतीति ।
पत्र—पुं० [सं०] वृक्ष का पत्ता, दल । लिखा हुआ कागज, दस्तावेज। चिट्ठी पत्री, खत । समाचारपत्र, अखबार । पुस्तक या लेख का एक पन्ना, सफा । वह कागज वा ताम्रपत्र आदि जिसपर किसी विशेष कार्य के प्रमाणस्वरूप कुछ लिखा गया हो (जैसे, दानपत्र, प्रतिज्ञापत्र आदि) । पट्टा, अभिलेख। धातु की चद्दर, वरक । तीर या पक्षी का पख, पक्ष। किसी विशिष्ट विषय, साहित्य, ज्ञान विज्ञान या सूचना आदि के लिये नियमित समय पर होनेवाला अर्धसाप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक या त्रैमासिक प्रकाशन ।⊙क = पुं० किसी विषय की छोटी पुस्तिका या कुछ बड़ा सूचनापत्र। ⊙कार = पुं० समाचार पत्र का सपादक। पत्रो मे लिखकर जीविका चलानेवाला । ⊙कृच्छ = पुं० एक व्रत जिसमे पत्तो का काढा पीकर रहा जाता है। ⊙पुष्प = पु० सत्कार या पूजा की बहुत मामूली सामग्री, फलफूल । लघु उपहार। ⊙भग = पुं० चित्र या रेखाएँ जो सौदर्यवृद्धि के लिये भाल, कपोल आदि पर बनाई जाती है ।⊙वाह, ⊙वाहक = पुं० पत्र ले जानेवाला, हरकारा ।⊙व्यवहार = पुं० चिट्ठी लिख भेजने और प्राप्त करने का क्रम, लिखापढी । **पत्रा**—पु० [हिं०] तिथिपत्र, पचाग । पन्ना, वर्क । **पत्राचार**—पु० पत्रव्यवहार, खतकिताबत । **पत्रावली**—स्त्री० दे० 'पत्रभग' । **पत्रिका**—स्त्री० [सं०] सामयिक पत्र वा पुस्तक, समाचारपत्र । छोटा लेख या लिपि। चिट्ठी, खत । विविध विषयो पर नियमित समय पर प्रकाशित होनेवाला पत्र (जैसे मासिक पत्रिका, त्रैमासिक पत्रिका आदि)। **पत्री**—स्त्री० [सं०] चिट्ठी, खत । कोई छोटा लेख या लिपिपत्रिका (जैसे, जन्मपत्री, लग्नपत्री) । वि० जिसमे पत्ते हों । पु० वाण, तीर। चिड़िया । श्येन, बाज । पेड़।
पथ—पुं० [सं० समा० में प्रयुक्त] मार्ग, रास्ता, राह । व्यवहार आदि की रीति । दे० 'पथ्य' । ⊙गामी = पु० पथिक, रास्ता चलनेवाला । ⊙दर्शक, प्रदर्शक = पु० मार्गदर्शक, रास्ता दिखानेवाला ।
पथरकला—पु० एक प्रकार की बदूक या कड़ाबीन जो चकमक पत्थर के द्वारा अग्नि उत्पन्न करके चलाई जाती थी।
पथरचटा—पु० पाषाणभेद या पखानभेद नाम की ओषधि, एक प्रकार का कीड़ा ।
पथराना—अक० सूखकर पत्थर की तरह कड़ा हो जाना । ताजगी न रहना, नीरस और कठोर हो जाना । सजीव न रहना, जड़ हो जाना (जैसे—आँखें पथराना) ।
पथरी—स्त्री० कटोरे या कटोरी के आकार का पत्थर का बना हुआ कोई पात्र। एक रोग जिसमे मूत्राशय मे पत्थर जैसे छोटे-बड़े टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं जिनके कारण पेशाब उतरने मे बाधा और असह्य वेदना आदि अनेक शारीरिक शिकायतें पैदा हो जाती हैं। चकमक पत्थर। पत्थर का वह टुकड़ा जिसपर रगड़कर उस्तरे आदि की धार तेज करते हैं। कुरड पत्थर जिससे औजार तेज करने की सान बनाते हैं ।
पथरीला—वि० पत्थरो से युक्त (जैसे, पथरीली जमीन) ।
पथरौटा—पु० पत्थर का कटोरा ।
पथिक—पु० [सं०] मार्ग चलनेवाला, यात्री ।
पथी—पु० यात्री, पथिक ।
पथेरा—पु० पाथने का काम करनेवाला । कुम्हार ।
पथौरा—पु० वह स्थान जहाँ उपले या कडे पाथे जाते है ।
पथ्य—पु० [सं०] वह हल्का और जल्दी पचनेवाला खाना जो रोगी के लिये लाभदायक हो, उपयुक्त आहार । हित, मंगल । मु० ~से रहना = सयम से रहना ।
पथ्या—स्त्री० [सं०] आर्या छंद का भेद ।
पद—पु० [सं०] पैर, पाँव । पैर का निशान । योग्यता के अनुसार नियत स्थान, दर्जा। विभक्ति और प्रत्यययुक्त शब्द, सार्थक शब्द या शब्दसमूह । किसी श्लोक या छद का चतुर्थांश, श्लोकपाद । ईश्वर भक्ति-

संबंधी गीत, भजन। मोक्ष, निर्वाण। पुराणानुसार दान के लिये जूते, छाते, कपड़े, अँगूठी, कमंडलु, आसन, बरतन और भोजन का समूह। व्यवसाय, काम। त्राण, रक्षा। चिह्न, निशान। प्रदेश, स्थान। वस्तु। उपाधि। ⊙क = पु० पूजन आदि के लिये किसी देवता के पैरों के बनाए हुए चिह्न। सोने, चाँदी या किसी और धातु का बना हुआ सिक्के की तरह का गोल या अन्य आकार का टुकड़ा जो किसी व्यक्ति अथवा जनसमूह को कोई विशेष अच्छा कार्य करने के उपलक्ष्य में दिया जाता है, तमगा। ⊙ग = वि० पैदल चलनेवाला प्यादा। ⊙चतुरर्ध = पु० विषम वृत्तों का एक भेद जिसके प्रथम चरण में ८, दूसरे में १२, तीसरे में १६ और चौथे २० वर्ण होते हैं। इसमें गुरु लघु का नियम नहीं होता। इसके अपीड, प्रत्यापीड, मंजरी, लवली और अमृतधारा ये पाँच अवांतर भेद होते हैं। ⊙चर = पु० पैदल, प्यादा। ⊙चार = पु० दे० 'पदचारण' ⊙ चारण = पु० पैदल चलना। टहलना। ⊙चारी = पु० पैदल चलनेवाला। स्त्री० दे० 'पदचारण'। ⊙चिह्न = पु० चलने से भूमि आदि पर पैरों का पड़नेवाला चिह्न। ⊙च्छेद = पु० संधि और समासयुक्त वाक्य के प्रत्येक पद को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग करने की क्रिया। ⊙च्युत = वि० जो अपने पद या स्थान से हट गया हो। ⊙तल = पु० पैर का तलवा। ⊙त्राण = पु० जूता। ⊙ दलित = वि० पैरों से रौंदा या कुचला हुआ। जो दबाकर बहुत हीन कर दिया गया हो। ⊙न्यास = पु० पैर रखने की एक मुद्रा। चलन, ढंग। पद रचने का काम। ⊙मैत्री = स्त्री० सरसता लाने के लिये किसी कविता में शब्द (ध्वनि) या अक्षर की आवृत्ति। ⊙योजना = स्त्री० कविता के लिये पदों का जोड़ना। ⊙ रिपु = पुं० कांटा, कंटक।

पदवी—स्त्री० [सं०] वह प्रतिष्ठा या मान-सूचक पद जो राज्य अथवा किसी संस्था आदि की ओर से किसी योग्य व्यक्ति को मिलता है, उपाधि। ओहदा, दरजा। रास्ता। पद्धति, तरीका। **पदाक्रांत**—वि० [सं०] पैरों तले कुचला या रौंदा हुआ। **पदाति, पदातिक**—पुं० वह जो पैदल चलता हो, प्यादा। सिपाही। नौकर, सेवक। **पदादिका**—पुं० [हिं०] पैदल सेना। **पदाधिकारी**—पुं० [सं०] वह जो किसी पद पर नियुक्त हो, अफसर।

पदई(पु)—स्त्री० दे० 'पदवी'।

पदम—पुं० दे० 'पद्म'। बादाम की जाति का एक जंगली पेड़, पद्माख।

पदमिनी—स्त्री० दे० 'पद्मिनी'।

पदाना—सक०[पादना का प्रे०] बहुत अधिक दिक करना, तंग करना।

पदार—पुं० [सं०] पैरों की धूल।

पदार्थ—पु० [सं०] वह जिसका कोई नाम हो और जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सके। वह जो भौतिक तत्वों से बना हो, वह जिसका रूप या आकार हो। उन विषयों में से कोई विषय जिनका किसी दर्शन में प्रतिपादन हो और जिसके संबंध में माना जाता हो कि उनके ज्ञान द्वारा मोक्ष की प्राप्ति होती है। पुराणानुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। वैद्यक में रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति। ⊙वाद = पु० वह सिद्धांत जिसमें भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता हो और आत्मा अथवा ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार न होता हो। ⊙विज्ञान = पु० वह विद्या जिसके द्वारा भौतिक पदार्थों और व्यापारों का ज्ञान हो। ⊙विद्या = स्त्री० दे० 'पदार्थ विज्ञान'।

पदार्पण—पु० [सं०] किसी स्थान में पैर रखने या जाने की क्रिया (आदरार्थक)। **पदावली**—स्त्री० वाक्यों की श्रेणी। भजनों का संग्रह। पद या शब्दसमूह।

पदिक—पु० [सं०] पैदल सेना। (पु)पु० गले में पहनने का जुगनू नाम का गहना। हीरा। ⊙हार(पु) = पुं० रत्नहार, मणि-माल।

पदी(पु)—पु० पैदल, प्यादा।

पदुम(पु)—पु० दे० 'पद्म'। ⊙राग = पुं० पद्मराग मणि।

पद्मिनी(पु)—स्त्री० दे० 'पद्मिनी'।
पद्धटिका—स्त्री० [सं०] दे० 'पज्झटिका'।
पद्धति—स्त्री० [स०] ढग। कार्यप्रणाली, विधि। रीति,रस्म। कर्म या सस्कारविधि की पोथी। वह पुस्तक जिससे किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ या तात्पर्य समझा जाय। १६ मात्राओ वह छद जिसके पदात मे एक जगण होता है।
पद्धरी—पु० दे० पद्धटिका'।
पद्म—पु० [सं०] कमल का फूल या पौधा। सामुद्रिक के अनुसार पैर मे का कमल से मिलते जुलते आकार का एक विशेष चिह्न जो भाग्यसूचक माना जाता है। विष्णु का एक आयुध। कुबेर की नौ निधियो मे से एक। गणित मे सोलहवे स्थान की सख्या, सौ नील। पुराणानुसार एक नरक का नाम। शरीर पर पडे हुए सफेद दाग। ⊙कंद=पु० कमल की जड़, भसीड़। ⊙ज=पु० कमल से उत्पन्न ब्रह्मा। ⊙नाभ=पु० वह जिसकी नाभि से कमल निकला हो, विष्णु। ⊙पाणि=पु० वह जिसके हाथ मे कमल हो, विष्णु या ब्रह्मा। अवलोकितेश्वर नामक बोधिसत्व। सूर्य। ⊙बध=पु० एक चित्रकाव्य जिसमे अक्षरो को ऐसे क्रम से लिखते है जिससे पद्म या कमल का आकार बन जाता है। ⊙योनि=पु० वह जिसकी उत्पत्ति कमल से हो, ब्रह्मा। ⊙राग=पु० मानिक, लाल। ⊙बीज=पु० कमलगट्टा। ⊙व्यूह =पु० प्राचीन काल मे युद्ध के समय किसी वस्तु या व्यक्ति की रक्षा के लिये सेना रखने की कमल के आकार की एक स्थिति।
पद्मा—स्त्री० [स०] लक्ष्मी। भादो सुदी एकादशी तिथि। पद्माकर—पु० बडा तालाब या झील जिसमे कमल पैदा होते हो। पद्मालय—पु० वह जिसका निवास कमल हो, ब्रह्मा। पद्मालया—स्त्री० कमल मे रहनेवाली, लक्ष्मी।
पद्मासन—पुं० योगसाधन का एक आसन जिसमे पालथी मारकर सीधे बैठते है। ब्रह्मा। शिव। पद्मिनी—स्त्री० कमलिनी, छोटा कमल। कोकशास्त्र के अनुसार स्त्रियो की चार जातियो मे से सर्वोत्तम जाति। लक्ष्मी। वह तालाब या जलाशय जिसमे कमल हो। ⊙वल्लभ= सूर्य। पद्मेशय—पुं० [सं०] पद्मो पर सोनेवाले, विष्णु।
पद्माख—पु० दे० 'पद्म'।
पद्मावती—स्त्री० [सं०] एक मात्रिक छद। महाकवि जायसी रचित पद्मावत महाकाव्य के अनुसार सिहल की एक राजकुमारी जिससे चित्तौर के राजा रतनसेन व्याहे थे। पटना नगर का प्राचीन नाम। पन्ना नगर का प्राचीन नाम। उज्जयिनी का एक प्राचीन नाम। मनसा देवी। कश्यप ऋषि की कन्या और जरत्कारु मुनि की पत्नी। जयदेव कवि की स्त्री, एक नदी का नाम।
पद्य—वि० [स०] जिसमे कविता के पद या चरण हो, छदोमय। जिसका संबध पैरो से हो। पुं० पिंगल के नियमो के अनुसार नियमित मात्रा या वर्णो का चार चरणोवाला छद, कविता, गद्य का उलटा। पद्यात्मक—वि० जो छदबद्ध हो।
पधराना—अक० किसी बडे, प्रतिष्ठित या पूज्य का आगमन। पधराना—सक० आदरपूर्वक ले जाना, इज्जत से बैठाना। प्रतिष्ठित करना। स्थापित करना। पधरावनी—स्त्री० किसी देवता की स्थापना। किसी को आदरपूर्वक ले जाकर बैठाने की क्रिया। पधारना—अक० पदार्पण करना, आना, (बडो के लिये आदरार्थ)। जाना, चला जाना, (बडो के लिये आदरार्थ)। सक० आदरपूर्वक बैठाना, पधराना'।
पन—पुं० प्रतिज्ञा, सकल्प। २५, २५ वर्षो के क्रम से किसी व्यक्ति की आयु के चार भागो मे से कोई। प्रत्य० एक प्रत्यय जिसे नामवाचक या गुणवाचक संज्ञाओ मे लगाकर भाववाचक सज्ञा बनाते हैं (जैसे, लडकनपन, बचपन)।
पनकपडा—पुं० वह गीला कपडा जो शरीर के किसी अग के कटने या उसमे चोट लगने पर बाँधा जाता है।
पनकाल—पु० अनिवृष्टि के कारण होनेवाला अकाल।
पनग(पु)—पुं० साँप, पन्नग।

पनघट—पु० वह घाट जहाँ से लोग पानी भरते हो।

पनच—स्त्री० धनुष की डोरी, प्रत्यंचा।

पनचक्की—स्त्री० पानी के जोर से चलनेवाली चक्की या कल।

पनडब्बा—स्त्री० पानदान।

पनडुब्बा—पु० गोताखोर। वह पक्षी जो पानी मे गोता लगाकर मछलियाँ पकड़ता हो। मुरगाबी। एक प्रकार का कल्पित भूत।

पनडुब्बी—स्त्री०एक प्रकार की नाव जो प्रायः पानी के अंदर डूबकर चलती है (अं० सबमेरीन)।

पनपना—अक० हरा भरा होना या फलना-फूलना। बीज से निकलना या नये पत्ते आदि फेंकना। फिर से तंदुरुस्त होना।

पनबट्टा—पु० पान रखने का छोटा डिब्बा।

पनभरा—पु० 'पनहरा'।

पनव(पु)—पु० दे० 'प्रणव'। एक प्रकार का ढोल।

पनवाडी—पु० पान बेचनेवाला, तमोली।

पनवारा—पु० पत्तो की बनी हुई पत्तल। एक पत्तल भर भोजन जो एक मनुष्य के लिये खाने भर हो।

पनस—पु० [सं०] कटहल का वृक्ष या उसका फल।

पनसाखा—पु० एक प्रकार की मसाल जिसमे तीन या चार बत्तियाँ एक साथ जलती हैं।

पनसारी—पु० दे०'पसारी'।

पनसाल—स्त्री० वह स्थान जहाँ सर्वसाधारण को पानी पिलाया जाता हो, पौसरा। पानी की गहराई नापने का उपकरण।

पनसुइया—स्त्री० एक प्रकार की छोटी नाव।

पनसेरी—स्त्री० दे० 'पसेरी'

पनह(पु)—स्त्री० दे० 'पनाह'।

पनहरा—पु० वह जो पानी भरने का काम काम करता हो।

पनहा—पु०कपडे या दीवाल आदि की चौडाई, घेरा। गूढआशय या तात्पर्य, मर्म। (पु) पु० चोरी का पता लगानेवाला।

पनहारा—पु० दे० 'पनहरा'।

पनहियाभद्र—पु० वह जिसके सिर पर अधिक जूते पडने से बाल उड गए हो।

पनही†—स्त्री० जूता।

पना—पु० आम, इमली आदि के रस से बनाया जानेवाला एक प्रकार का पेय, पन्ना।

पनाती—पु० पोते अथवा नाती का पुत्र।

पनारि†—स्त्री० नाली।

पनाला—पु० दे० 'परनाला'।

पनासना†—सक० पोषण करना, परवरिश करना।

पनाह—स्त्री० [फा०] शत्रु, सकट या कष्ट से बचाव या रक्षा पाने का स्थान, शरण। मु०—(किसी से) ~माँगना = कष्ट या पीडा से भयभीत होकर किसी से बचत बचने की इच्छा करना।

पनिच(पु)—पु० दे० 'पनच'।

पनिया—वि०दे० 'पनिहा'। ⊙ना† = अक० पानी देना, सींचना। ⊙सोत† = वि० (तालाब, खाई आदि) जिसमे पानी का सोता निकला हो अत्यंत गहरा।

पनिहा—वि० पानी मे रहनेवाला। जिसमें पानी मिला हो। पानी सबधी। पु० भेदिया, जासूस।

पनिहार—पु० दे० 'पनहार'।

पनी(पु)†—वि० प्रण करनेवाला।

पनीर—पु० [फा०] फाडकर जमाया हुआ दूध, छेना। वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो।

पनीरी—स्त्री० फूल पत्तो के वे छोटे पौधे जो दूसरी जगह ले जाकर रोपने के लिये उगाए गए हो। वह क्यारी जिसमे पनीरी जमाई गई हो।

पनीला—वि० पानी मिला हुआ, जलयुक्त।

पनुआँ†—पु० वह शरबत जो गुड के कडाहे से पाग निकलने के पश्चात् उसे धोकर तैयार किया जाता है।

पनैला—पु० एक गाढ़ा चिकना और चमकीला कपडा, परमटा। वि० जिसमे पानी मिला हो। जो पानी मे रहता या होता हो

पन्न—वि० [सं०] गिरा हुआ, पड़ा हुआ (जैसे प्रपन्न, विपन्न)। नष्ट, गत ।

पन्नग(पु)— पु० पन्ना, मरकत। पु० [सं०] साँप। पद्माख। ⊙पति = पु० शेषनाग, सर्पराज ।

पन्नगारि—पु० [सं०] गरुड ।

पन्ना—पु० पिरोज की जाति का, हरे रंग का एक रत्न, मरकत। पृष्ठ, पत्र ।

पन्नी—स्त्री० राँगे या पीतल के कागज की तरह पतले पत्तर जिन्हें शोभा के लिये अन्य वस्तुओं पर चिपकाते हैं। सोने या चाँदी के पानी मे रँगा हुआ कागज या चमडा। एक भोज्य पदार्थ। ⊙साज = पु० पन्नी बनाने का काम करनेवाला।

पन्हाना—अक० दे० 'पिन्हाना'। सक० दे० 'पिन्हाना'। दे० 'पहनाना'।

पन्हयाँ†—स्त्री० दे० 'पनही'।

पपड़ा—पुं० लकड़ी का रूखा करकरा और पतला छिलका। रोटी का छिलका।

पपड़िया—वि० पपडी संबधी, पपडीवाला (जैसे, पपडिया कत्था)। ⊙ना = अक० किसी चीज की परत का सूखकर सिकुड़ जाना। इतना सूख जाना कि ऊपर पपडी जम जाय।

पपड़ी—स्त्री० किसी वस्तु की ऊपरी परत जो तरी या चिकनाई के अभाव के कारण कड़ी और सिकुडकर जगह जगह से चिटक गई हो। मवाद के सूख जाने से घाव के ऊपर बना हुआ आवरण या परत, खुरंड। सोहनपपडी नामक मिठाई। ⊙ला = वि० जिसपर पपडी जमी हो, पपड़ीदार।

पपीता—पु० एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल खाए जाते हैं, पपैया ।

पपीलि(पु)—स्त्री० चीटी।

पपीहरा—पुं० दे० 'पपीहा'।

पपैया—पुं० दे० 'पपीहा'।

पपैहा—पुं० एक पक्षी जो वसन्त और वर्षा मे बड़ी सुरीली ध्वनि में बोलता है, चातक ।

पपोटा—पुं० आँख के उपर का चमड़े का

पपोरना†—सक० बाँहें ऐंठना और उनका भराव या पुष्टता देखना (बलाभिमान का सूचक)।

पवारना—सक० दे० 'पँवारना'।

पब्बय(पु),पब्बै(पु)—पु० पहाड़।

पब्बि(पु)—स्त्री० वज्र।

पब्लिक—स्त्री० [अं०] जनसाधारण, आम लोग। वि० जनसाधारण का, सार्वजनिक। पमाँवना†पमान।(पु)—अक० डींग हाँकना।

पमार(पु)—पुं० परमार ।

पय(पु)—पु० दूध। जल, पानी। अन्न। ⊙द(पु) = पुं० दे० 'पयोद'। ⊙धि(पु) = पु० दे० 'पयोधि'। ⊙निधि(पु) = पु० दे० 'पयोनिधि'।

पयस्विनी—स्त्री० [सं०] दूध देनेवाली गाय। बकरी। नदी।

पयस्वी—वि० [सं०] पानीवाला, जलयुक्त।

पयहारी—पु० दूध पीकर रहनेवाला तपस्वी या साधु।

पयान—पुं० गमन, जाना।

पयार, पयाल—पुं० धान, आदि के सूखे डंठल जिनके दाने झाड़ लिए गए हो, पुआल। मु०~गहना,~झाड़ना या~पीटना = व्यर्थ परिश्रम या सेवा करना।

पयो—पुं० [सं० पयस् का समा० रूप] पयस्, पय। ⊙ज = पु० कमल। ⊙द = पुं० बादल, मेघ। ⊙धर = पु० स्तन। बादल। नागरमोथा। कसेरू। तालाब। गाय का अयन। पहाड़। दोहा छंद का ११ वाँ भेद। छप्पय छंद का २७ वाँ भेद। ⊙धि = पुं० समुद्र। ⊙निधि = पु० समुद्र।

परंच—अव्य० [सं०] और भी। तो भी, परंतु।

परंतप—वि० [सं०] वैरियो को दुःख देनेवाला। जितेंद्रिय।

परंतु—अव्य० [सं०] तो भी, किंतु, लेकिन।

परंद—पु० पक्षी। '...उड़ि जैवे कों, न एती अंग अगन परंद पाखियाँ दई' (जगद्विनोद ५७)।

परंपरा—स्त्री० [सं०] एक के पीछे दूसरा, ऐसी अटूट शृंखला या क्रम (विशेषत. काल

या घटनाओं आदि का), अनुक्रम। संतति, औलाद। बराबर चली आती रीति, प्रथा। परंपरागत--वि० परंपरा से चला आता हुआ, अनादि काल से होता आनेवाला।

पर--अव्य० पश्चात्, पीछे, बाद। परंतु, किंतु। प्रत्य० सप्तमी या अधिकरण का चिह्न (जैसे--उसपर, तुमपर)। वि० [सं०] अपने को छोड़कर शेष, गैर, दूसरा। पराया, दूसरे का। भिन्न, जुदा। पीछे का, बाद का। अलग, तटस्थ। सबके ऊपर, श्रेष्ठ। प्रवृत्त, तत्पर (समास में)। ⊙काजी = वि० परोपकारी। ⊙कोटा = पु० [हिं०] गढ़ आदि की रक्षा के लिये चारों ओर उठाई हुई दीवार। पानी आदि की रोक के लिये खड़ा किया हुआ धुस, बाँध। ⊙जात = स्त्री० [हिं०] दूसरी जाति। वि० दूसरी जाति का। ⊙तंत्र = वि० पराधीन, परवश। ⊙तंत्रता = स्त्री० पराधीनता। ⊙तः = अव्य० दूसरे से, अन्य से। पीछे, परे, आगे। ⊙त्र = क्रि० वि० और जगह। परलोक। ⊙त्व = पु० परायापन। पहले या पूर्व होने का भाव। ⊙देश = पु० विदेश, दूसरा देश, पराया स्थान, पराया शहर। ⊙देशी = वि० विदेशी, दूसरे स्थान या देश का। ⊙धाम = पु० वैकुंठ धाम। ⊙पार = पु० दूसरी तरफ का किनारा। ⊙पीड़क = पुं० दूसरे को पीड़ा या दुःख पहुँचानेवाला। ⊙पीरक(प) = पु० [हिं०] पराई पीड़ा को समझनेवाला। ⊙पुरुष = पु० स्त्रियों के लिये अपने पति के अतिरिक्त कोई और पुरुष। ⊙बस = वि० दूसरे के वश में पड़ा हुआ, परतंत्र। ⊙बसताई(प) = स्त्री० [हिं०] पराधीनता, परतंत्रता। ⊙ब्रह्म = पुं० ब्रह्म जो जगत् से परे है, निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म, सच्चिदानंद। ⊙लोक = पु० वह स्थान जो शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त है (जैसे स्वर्ग, वैकुंठ आदि)। मु० ~सिधारना = मरना। ⊙लोकवासी = वि० मरा हुआ। ⊙लोकगमन = पु० मृत्यु। ⊙वश = वि० पराधीन। ⊙वश्य = वि० दे० 'परवश'। ⊙साल = अव्य० [हिं०] पिछले साल। आगामी वर्ष। पराधीन = वि० दूसरे के अधीन, परतंत्र। पराधीनता = स्त्री० दूसरे की अधीनता, गुलामी। परान्न = पु० पराया अन्न या धान्य, दूसरे का दिया भोजन। परार्थ = पु० दूसरे का काम, दूसरे का उपकार। वि० जो दूसरे के लिये हो। परार्ध--पु० एक शंख की संख्या (१००००००००००००००००)। ब्रह्मा की आयु का आधा काल। परोपकार--पुं० दूसरे का हित या भलाई। परोपकारी--वि० परोपकार करनेवाला।

पर = पुं० [फा०] चिड़ियों का डैना और उसपर के धूए या रोएँ, पंख। ⊙कटा = वि० [फा०] जिसके पर कटे हों। मु० ~कट जाना = शक्ति या बल का आधार न रह जाना। ~जमना = पर निकलना। जो पहले सीधा सादा रहा हो, उसे शरारत सूझना। (कहीं जाते हुए) ~जलना = हिम्मत न होना, गति या पहुँच न होना। ~न मारना = पैर न रख सकना, जा न सकना।

परई--स्त्री० दीपक के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का बरतन।

परकना(प)--अक्र० परचना, हिलना-मिलना। धड़क खुलना, अभ्यास पड़ना।

परकसना--अक० प्रकाशित होना, चमकना। प्रकट होना।

परकाना†--सक० [अक० परकना] परचाना, हिलाना, मिलाना। चस्का लगाना।

परकार--पुं० [फा०] वृत्त या गोलाई खींचने का एक औजार। (प)†पुं० दे० 'प्रकार'। (प)ना = सक० परकार से वृत्त बनाना। चारों ओर फेरना।

परकाल--पुं० दे० 'परकार'।

परकाला--पुं० सीढ़ी, जीना। चौखट, देहलीज। टुकड़ा, खंड। शीशे का टुकड़ा। चिनगारी। मु०--आफत का ~ = प्रचंड या भयंकर मनुष्य।

परकास—पुं॰ दे॰ 'प्रकाश'। ⊙ना ⓟ = सक॰ प्रकाशित करना। प्रकट करना।

परकासिकⓟ—वि॰ दे॰ 'प्रकाशक'।

परकितिⓟ†—स्त्री॰ दे॰ 'प्रकृति'।

परकीय—वि॰ [सं॰] पराया, दूसरे का। परकीया—स्त्री॰ पति को छोड़ दूसरे पुरुष से प्रीति संबंध रखनेवाली स्त्री, नायिका का एक भेद, (नायिकाओं के दो प्रधान भेदों में से)।

परख—स्त्री॰ गुण दोष स्थिर करने के लिये अच्छी तरह देखभाल, जाँच। गुणदोष का ठीक पता लगानेवाली दृष्टि, पहचान। ⊙ना = सक॰ गुण दोष स्थिर करने के लिये अच्छी तरह देखना भालना, जाँच करना। भला और बुरा पहचानना। प्रतीक्षा या इनजार करना। ⊙वैया = वि॰ परखनेवाला, जाँचनेवाला। परखाना—सक॰ [परखना का प्रे॰] परखने का काम दूसरे से कराना सहेजवाना, सँभलवाना। परखैया—पुं॰ दे॰ 'परखवैया'।

॰परग—पुं॰ पग, कदम।

॰परगटनाⓟ—अक॰ प्रकट होना। सक॰ प्रकट या जाहिर होना।

॰परगन—पुं॰ दे॰ 'परगना'। परगना—पुं॰ [फा॰] वह भूभाग जिसके अंतर्गत बहुत से ग्राम हों, जिले का भाग।

॰परगसनाⓟ—अक॰ प्रकाशित होना, प्रकट होना।

परगासाⓟ—पुं॰ दे॰ 'प्रकाश'।

परघटⓟ†—वि॰ दे॰ 'प्रकट'।

॰परचंडⓟ—वि॰ दे॰ 'प्रचंड'।

परचतⓟ†—स्त्री॰ जान पहचान, जानकारी।

परचना—अक॰ हिलना मिलना, घनिष्ठता प्राप्त करना। चसका लगना, धड़क खुलना।

॰परचा—पुं॰ [फा॰] कागज का टुकड़ा, चिट। पुरजा, ख़त। परीक्षा में आनेवाला प्रश्नपत्र। पुं॰ [हिं॰] परिचय, जानकारी। परख, जाँच। प्रमाण। ⊙ना = सक॰ [अक॰ परचना] हिलाना मिलाना, आकर्षित करना। धड़क खोलना, चसका लगाना। जलाना।

परचार—ⓟ पुं॰ दे॰ 'प्रचार'। ⊙नाⓟ = सक॰ दे॰ 'प्रचारना'।

परचून—पुं॰ दाल, मसाला आदि भोजन का सामान। परचूनी—पु॰ आटा, दाल आदि बेचनेवाला बनिया, मोदी।

परछत्ती—स्त्री॰ घर या कोठरी के भीतर दीवार से लगाकर कुछ दूर तक बनाई हुई पाटन जिसपर सामान रखते हैं, टाँड, पाटा। फूस आदि की छाजन।

परछन—स्त्री॰ विवाह की एक रीति जिसमें बारात द्वार पर आने पर कन्यापक्ष की स्त्रियाँ वर की आरती तथा उसके ऊपर से मूसल, बट्टा आदि घुमाती हैं।

परछना—सक॰ परछन करना।

परछाईं—स्त्री॰ किसी वस्तु की आकृति के अनुरूप छाया जो प्रकाश के अवरोध के कारण पड़ती है, छायाकृति। जल, दर्पण आदि पर पड़ा हुआ किसी पदार्थ का पूरा प्रतिरूप, अक्स। मु॰ ~से डरना या भागना = बहुत डरना, पास तक आने से डरना।

परछालनाⓟ—सक॰ धोना।

परजंकⓟ—पु॰ दे॰ 'पर्यंक'।

परजⓟ—स्त्री॰ एक संकर रागिनी। वि॰ [सं॰] परजात, दूसरे से उत्पन्न।

परजनⓟ—पुं॰ दे॰ 'परिजन'।

परजन्यⓟ—पु॰ दे॰ 'पर्जन्य'।

परजरना, परजलनाⓟ—अक॰ जलना, सुलगना। क्रुद्ध होना, कुढ़ना। डाह करना।

परजा—स्त्री॰ प्रजा, रैयत। किसी के अधीन या अवलंब पर रहनेवाला।

परजाता—पु॰ मझोले आकार का एक पेड़ जिसमें गुच्छों में सुगंधित फूल लगते हैं, पारिजात।

परजायⓟ—पुं॰ दे॰ 'पर्याय'।

परजौट—पुं॰ घर बनाने के लिये सालाना पर जमीन लेने देने का नियम।

परणनाⓟ—सक॰ विवाह करना।

परतंचा—स्त्री॰ दे॰ 'पतंचिका'।

परत—स्त्री॰ मोटाई का फैलाव जो किसी

सतत के ऊपर हो, तह। लपेटी जा सकने-वाली फैलाव की वस्तुओ (जैसे—कागज, कपडा चमडा आदि) का इस प्रकार का मोड़ जिससे भिन्न भिन्न भाग ऊपर नीचे हो जायँ। कपड़े, कागज आदि के ऊपर नीचे चिपकाए या जोडे गए भाग।

परतच्छ(पु)—वि० दे० 'प्रत्यक्ष'।

परतल—पुं० लादनेवाले घोड़ो की पीठ पर रखने का बोरा या गोनी।

परतला—पुं० चमडे या मोटे कपडे की चौड़ी पट्टी जो कँधे से कमर तक छाती और पीठ पर से तिरछी होती हुई आती है और जिसमे तलवार या चपरास आदि लटकाई जाती है।

परता—पु० दे० 'पडता'।

परताप(पु)—पु० दे० 'प्रताप'।

परतिचा(पु)—स्त्री० दे० 'पतचिका'।

परतिग्या(पु)—स्त्री० दे० 'प्रतिज्ञा'।

परती—स्त्री० वह खेत या जमीन जो बिना जोते छोड दी गई हो, पडती।

परतीत(पु)—स्त्री० दे० 'प्रतीति'।

परतेजना(पु)—सक० परित्याग करना, छोडना। 'जैसे उन मोको परतेजी कबहूँ फिरि न निहारत है' (सूर)।

परथन†—पु० दे० 'पलेथन'।

परद(पु)—पु० दे० 'परदा'।

परदच्छिना(पु)‡—स्त्री० दे० 'प्रदक्षिणा'।

परदनी(पु)—स्त्री० धोती। दान दक्षिणा।

परदा—पुं० [फा०] आड करने के काम मे आनेवाला कपड़ा, चिक आदि, पट। आड करनेवाली कोई वस्तु। लोगो की दृष्टि के सामने न होने की स्थिति, आड़, छिपाव। स्त्रियो को बाहर निकलकर लोगो के सामने न होने देने की चाल। वह दीवार जो विभाग करने या ओट करने के लिये उठाई जाय। तह, परत। आड के रूप मे आँख, कान आदि की झिल्ली। प्रतिष्ठा, मर्यादा। ⊙नशीन=वि० परदे मे रहनेवाली, अत पुरवासिनी (स्त्री)। मु०~उठाना या खोलना=भेद खोलना।~डालना=छिपाना। आँख पर~पड़ना=सुझाई न देना। ढका~=छिपा दोष या कलक, बनी हुई प्रतिष्ठा या मर्यादा। बुद्धि पर ~पड़ना=बुद्धि मद होना।~रखना=किसी की बुराई आदि लोगो पर प्रकट न होने देना, किसी प्रतिष्ठा बनी रहने देना। परदे के भीतर रहना, सामने न होना। दुराव रखना।~होना=स्त्रियों को सामने न होने देने का नियम होना। दुराव होना। परदे में रखना=(स्त्रियो को) घर के भीतर रखना, बाहर लोगो के सामने न होने देना। छिपा रखना।

परदाज—पु० [फा०] सजाना। चित्र आदि के चारो ओर बेल बूटे बनाना। चित्रों मे अभीप्ट रगत लाने के लिये बहुत पास पास महीन बिंदु लगाना।

परदादा—सं० प्रपितामह, दादा का बाप।

परदुम्म(पु)—पु० दे० 'प्रद्युम्न'।

परदोस(पु) पुं० दे० 'प्रदोप'।

परधान(पु)—वि० दे० 'प्रधान'। पु० दे० 'परिधान'।

परन—पुं० प्रतिज्ञा, टेक। स्त्री० बान, आदत। (पु) पुं० दे 'पर्ण'। ⊙साल=स्त्री० झोपडी, पर्णकुटी।

परनाना—पु० नाना का बाप।

परनाम—पुं० दे० 'प्रणाम'।

परनाला—पु०पानी बहने का रास्ता, पनाला।

परनि(पु)—स्त्री० बान, आदत।

परनौत(पु)—स्त्री० प्रणाम।

परपंच(पु)†—पु० दे० 'प्रपच'। ⊙क(पु)=वि० दे० 'परपची'। **परपंची**(पु)‡—वि० बखेडिया, फसादी। धूर्त, मायावी।

परपट—पुं० चौरस मैदान, समतल भूमि।

परपरा—वि० जो परपराता हो। 'परपर' शब्द के साथ टूटनेवाला। ⊙ना=अक० मिर्च आदि कड़वी चीजों का जीभ या किसी अग मे विशेष प्रकार का उग्र सवेदन उत्पन्न करना, चुनचुनाना।

परपूठना⊙—सक० परिपुप्ट या पक्का करना।

परपूठा(पु)—वि० पक्का।

परपोता—पुं० पोते का बेटा, पुत्र के पुत्र का पुत्र।
परफुल्ल(पु)—वि० दे० 'प्रफुल्ल'।
परब—पु० दे० 'पर्व'।
परबत—पु० दे० 'पर्वत'।
परबल(पु)—वि० दे० 'प्रबल'।
परबाल—पु० आँख की पलक पर का वह फालतू बाल जिसके कारण बहुत पीड़ा होती है। (पु) दे० 'प्रवाल'।
परबीन(पु)—वि० दे० 'प्रवीण'।
परबेस(पु)—पु० दे० 'प्रवेश'।
परबोध(पु)—पु० दे० 'प्रबोध'। (पु)ना=सक० जगाना। ज्ञानोपदेश करना। दिलासा देना, तसल्ली देना।
परभाइ(पु)—पु० दे० 'प्रभाव'।
परभात(पु)—पु० दे० 'प्रभात'।
परभाव(पु)—पु० दे० 'प्रभाव'।
परम—वि० [सं०] सबसे बढ़ा चढ़ा, अत्यंत। जो बढ़ चढ़कर हो, उत्कृष्ट। प्रधान, मुख्य। आद्य, आदिम। पु० शिव। विष्णु। ⊙गति=स्त्री० मोक्ष, मुक्ति। ⊙तत्व=पु० मूल तत्व जिससे संपूर्ण विश्व का विकास हुआ है। ⊙धाम=पु० वैकुंठ। ⊙पद=पु० मोक्ष, मुक्ति। ⊙पुरुष=पुं० परमात्मा। ⊙भट्टारक=पुं० एकछत्र राजाओं की एक प्राचीन उपाधि। ⊙हंस=पु० संन्यासी जो ज्ञान की परमावस्था को पहुँच गया हो। परमात्मा।
परमटा—पु० दे० 'पनैला'।
परमल—पु० ज्वार या गेहूँ का एक प्रकार का भुना हुआ दाना।
परमा—स्त्री० [सं०] शोभा, छवि (अमरकोष के सुषमा 'परमाशोभा' का भ्रामक अनुकरण)।
परमाणु—पुं० [सं०] पृथ्वी, जल, तेज और वायु इन चार भूतों का वह छोटे से छोटा भाग जिसके फिर और विभाग नहीं हो सकते, अत्यंत सूक्ष्म अणु। ⊙वाद=न्याय और वैशेषिक का यह सिद्धांत कि परमाणुओं से जगत् की सृष्टि हुई है।
परमात्मा—पुं० [सं०] ईश्वर।
परमानंद—पुं० [सं०] ब्रह्म के अनुभव का सुख, ब्रह्मानंद। आनंदस्वरूप ब्रह्म।
परमान†—पुं० प्रमाण, सबूत। सत्य बात। सीमा, अवधि। ⊙ना(पु)=सक० प्रमाण मानना, ठीक समझना। स्वीकार करना।
परमायु—स्त्री० [सं०] अधिक से अधिक आयु, जीवित काल की सीमा जो १०० वर्ष मानी गई है।
परमार—पुं० राजपूतों का एक कुल जो अग्निकुल के अंतर्गत है, पँवार।
परमारथ(पु)—पु० दे० 'परमार्थ'।
परमार्थ—पु० [सं०] परम अर्थ, श्रेष्ठतम वस्तु, नाम रूपादि से परे यथार्थ तत्व। ज्ञान। मोक्ष। सत्य। धर्म। ⊙वादी=पु० ज्ञानी, तत्वज्ञान। परमार्थी—वि० यथार्थ तत्व को ढूँढ़नेवाला, तत्वजिज्ञासु। मोक्ष चाहनेवाला।
परमिति(पु)—स्त्री० चरम सीमा या मर्यादा।
परमुख(पु)—वि० विमुख, पीछे फिरा हुआ। जो प्रतिकूल आचरण करे।
परमेश, परमेश्वर—पुं० [सं०] संसार का कर्ता और परिचालक सगुण ब्रह्म। विष्णु। शिव। परमेश्वरी—स्त्री० दुर्गा।
परमेष्ठ—पुं० [सं०] चतुर्मुख ब्रह्मा, प्रजापति (शुक्ल यजुर्वेद)। परमेष्ठी—पुं० [सं०] ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता। विष्णु। शिव। जैनियों के एक देवता या जिन का नाम। विराट् पुरुष। शालग्राम। चाक्षुष मनु।
परमेसर(पु)†—पु० दे० 'परमेश्वर'।
परमोक—पु० परमधाम, वैकुंठ। मोक्ष, स्वच्छंदता।
परमोद(पु)—पु० दे० 'प्रमोद'। ⊙ना(पु)†=सक० दे० 'परबोधना'। मीठी मीठी बातें करके अपनी तरफ मिलाना।
परयंक(पु)—पु० दे० 'पर्यंक'।
परलउ, परलय(पु)—स्त्री० सृष्टि का नाश या अंत, प्रलय।
परला—वि० उस ओर का, उधर का। मु०—परले दरजे या सिरे का=हद दरजे का, अत्यंत।
परले(पु)—स्त्री० दे० 'प्रलय'।

परवर(पु)—पुं० दे० 'परवल'। वि० [फा०] (यौगिक शब्दो मे) पालन करनेवाला, पालनेवाला। ⊙दिगार = पु० [फा०] ईश्वर।

परवरिश—स्त्री० [फा०] पालन पोषण।

परवल—पु० एक लता और उसके चार पांच अगुल लबे और दोनो सिरो की ओर पतले या नुकीले गूदेदार फल जिनकी तरकारी पथ्य मे बहुप्रयुक्त है।

परवस्ती(पु)‡—स्त्री० दे० 'परवरिश'।

परवा—स्त्री० पक्ष की पहली तिथि, पडवा। स्त्री० [फा०] चिता, आशका। ध्यान, खयाल। आसरा।

परवाई(पु)—स्त्री० दे० 'परवाह'।

परवान(पु)—पु० प्रमाण, सबूत। सत्य बात। सीमा, अवधि। ⊙ना(पु) = सक० ठीक समझना।

परवानगी—स्त्री० [फा०] आज्ञा, अनुमति।

परवाना—पुं० [फा०] आज्ञापत्र। फतिगा, पतग। बरी, चूना आदि नापने का एक मान या पात्र।

परवाल(पु)—पु० दे० 'प्रवाल'।

परवास—पुं० आच्छादन।

परवाह—स्त्री० दे० 'परवा'। †पुं० दे० 'प्रवाह'।

परवी—स्त्री० पर्वकाल।

परवीन(पु)—वि० दे० 'प्रवीण'।

परवेख(पु)—पुं० हलकी बदली के समय दिखाई पड़नेवाला चद्रमा के चारो ओर का घेरा।

परवेश(पु)—पुं० दे० 'प्रवेश'।

परश—पुं० [सं०] पारस पत्थर। (पु)स्पर्श, छूना।

परशु—पुं० [सं०] एक प्रकार की कुल्हाडी जो लड़ाई मे काम आती थी, तबर, भलुआ, फरसा।

परसंग(पु)—पुं० दे० 'प्रसंग'।

परसंसा(पु)—स्त्री० दे० 'प्रशसा'।

परस—पु० छूना, स्पर्श। पारस पत्थर। परसन⊙—पु० छूना, छूने का काम। छूने का भाव। वि० प्रसन्न, खुश। ⊙ना (पु) = सक० छूना, स्पर्श करना। (पु) स्पर्शकराना। परोसना।

परसन्न(पु)—वि० दे० 'प्रसन्न'।

परस पखान—पु० दे० 'पारस'।

परसा—पुं० दे० 'परोसा'। परसाना(पु)—सक० [अक० परसना] स्पर्श कराना। भोजन सामने रखवाना, परसवाना।

परसाद(पु)‡—पुं० दे० 'प्रसाद'।

परसिद्ध(पु)—वि० दे० 'प्रसिद्ध'।

परसु(पु)—वि० दे० 'परशु'।

परसूत(पु)†—वि०, पु० दे० 'प्रसूत'।

परसेद(पु)—पु० दे० 'प्रस्वेद'।

परसो—अव्य० गत दिन या बीते हुए कल से एक दिन पहले। आगामी दिन के बाद का दिन।

परसोत्तम(पु)—पु० दे० 'पुरुषोत्तम'।

परसौहाँ—वि० छूनेवाला।

परस्पर—क्रि० वि० [सं०] एक दूसरे के साथ, आपस मे। परस्परोपमा—स्त्री० दे० 'उपमेयोपमा'।

परहरना(पु)—सक० त्यागना।

परहार†—पु० दे० 'प्रहार'। दे० 'परिहार'।

परहेज—पुं० [फा०] स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाली बातो से बचना, खाने पीने आदि का संयम। दोषो और बुराइयो से दूर रहना। ⊙गार = वि० परहेज करनेवाला, सयमी। दोषो से दूर रहनेवाला, बुराइयो से बचनेवाला।

परहेलना(पु)—सक० निरादर करना।

पराठा—पुं० घी लगाकर तवे पर सेंकी हुई चपाती।

परा—स्त्री० [सं०] चार प्रकार की वाणियो मे पहली वाणी। वह विद्या जो ऐसी वस्तु का ज्ञान कराती है जो सब गोचर पदार्थों से परे हो, ब्रह्मविद्या। पु० पक्ति, कतार। ⊙ना = (पु)†अक० भागना, पलायन करना।

पराउ—पुं० दे० 'पडाव'। 'परो एक पतित पराउ तीर गंगा जूके'। (गगा० ३१)।

परकाष्ठा—स्त्री० [सं०] चरम सीमा, हद, अंत।

पराक्रम—पु० [सं०] बल। शक्ति, पुरुषार्थ।
पराक्रमी—वि० बलवान्। बहादुर। उद्योगी।
पराग—पु० [सं०] वह रज या धूलि जो फूलो के बीच लबे केसरो पर जमी रहती है। धूलि, रज। एक प्रकार का सुगंधित चूर्ण जिसे लगाकर स्नान किया जाता है। चदन। उपराग। ⊙**केसर**=पु० फूलो के बीच मे वे पतले लबे सूत जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है।

परागना(पु)—अक० अनुरक्त होना।
पराङमुख—वि० [सं०] मुँह फेरे हुए, विमुख। जो ध्यान न दे, उदासीन। विरुद्ध।
पराजय—स्त्री० [स०] विजय का उलटा, हार।

पराजित—वि० [स०] परास्त, हारा हुआ।
परात—स्त्री० थाली के आकार का एक बडा बरतन।

परात्पर—वि० [सं०] सर्वश्रेष्ठ। पु० परमात्मा। विष्णु।
परान—पु० दे० 'प्राण'।
पराभव—पु० [सं०] पराजय, हार। तिरस्कार। विनाश।

पराभूत—वि० [सं०] पराजित। ध्वस्त, नष्ट।
परामर्श—पुं० [सं०] सलाह, मत्रणा। युक्ति। विवेचन, विचार। पकडना। खीचना।

परायण—वि० [सं०] गया हुआ। प्रवृत्त, लगा हुआ (जैसे, धर्मपरायण, नीतिपरायण)। **परायन**(पु)—वि० परायण, प्रवृत्त।

पराया—वि० पुं० दूसरे का, अन्य का। जो आत्मीय न हो, गैर।

परार(पु)—वि० दे० 'पराया'।
परारध(पु)—पुं० दे० 'परार्ध'।
परारब्ध—पुं० दे० 'प्रारब्ध'।

परालब्ध—पुं० दे० 'प्रारब्ध'।
परावधि—स्त्री० [सं०] पराकाष्ठा, हद।
परावन—पुं० भगदड, पलायन। गांव के लोगो का घर के बाहर पूजा और उत्सव आदि के लिये डेरा डालकर टिकना।

परावर्तन—पुं० [सं०] लौटना, पीछे फिरना।

परावह—पुं० [सं०] वायु के सात भेदों मे से एक।

परावा—पुं० दे० 'पराया'।
परावृत्त—वि० [सं०] लौटा या लौटाया हुआ। बदला हुआ। भागा हुआ।

पराशर—पुं० [सं०] महर्षि वशिष्ठ के बेटे, शक्ति के पुत्र, वेदव्यास के पिता। एक प्रसिद्ध स्मृतिकार। एक गोत्र।

परास(पु)†—पुं० दे० 'पलाश'।
परासय(पु)—पुं० दूसरे का आशय। 'सूछम संमुझि परासयहि ईहा साभिप्राय' (पद्माभरण २४६)।

परास्त—वि० [स०] पराजित। ध्वस्त।
पराह्न—वि० [सं०] दोपहर के बाद का समय, तीसरा पहर।

परि—उप० [स०] उपसर्ग जिसके लगने से शब्द मे इन अर्थो की वृद्धि होती है—चारो ओर (जैसे, परिक्रमा), अच्छी तरह (जैसे, परिपूर्ण), अतिशय, (जैसे, परिवर्धन), परिच्छन्न, पूर्णता (जैसे, परित्याग, परिपक्व), तिरस्कार (जैसे, परिभव) आदि। ⊙**कर**=पुं० कमरबद, फेंटा। तैयारी। अनुयायियो का दल, अनुचर वर्ग। समूह। परिवार। पलँग। एक अर्थालकार जिसमे अभिप्राययुक्त विशेषणो के साथ विशेष्य आता है। ⊙**क्रमण**=पु० मन बहलाने के लिये घूमना, टहलना। परिक्रमा। ⊙**ख्यात**=वि० प्रसिद्ध, मशहूर। ⊙**गणन**=पुं० गणना करना, गिनना। ⊙**गणित**=वि० गिना हुआ। राजकीय सूची मे दर्ज या गिनाया हुआ, अनुसूचित (अं० शेड्यूल्ड)। ⊙**गत**=वि० बीता हुआ, गत। मरा हुआ। विस्मृत जाना हुआ। ⊙ **गृहीत**=वि० मजूर किया हुआ। ग्रहण किया हुआ, लिया हुआ। प्राप्त। ⊙ **ग्रह**=पुं० प्रतिग्रह, दान लेना। पाना, धनादि का सग्रह। आदरपूर्वक कोई वस्तु लेना। विवाह। पत्नी। परिवार। ⊙**घोष**=पुं० तेज या भारी आवाज। बादल का गरजना। ⊙**चर**=पुं० सेवक, खिदमतगार। रोगी की सेवा करने-

वाला। ⊙चरी = स्त्री० दासी, सेविका। ⊙चर्या = स्त्री० सेवा, टहल। रोगी की सेवा शुश्रूषा। ⊙चार = पु० सेवा टहल। टहलने या घूमने फिरने का स्थान। ⊙चारना = सक० [हिं०] सेवा टहल करना। ⊙चारक = पु० सेवक, नौकर। रोगी की सेवा करनेवाला। ⊙चारण = पुं० सेवा करना। संग करना या रहना। ⊙चारिक = पु० सेवक। चारिका = स्त्री० दासी। ⊙चालक = पुं० चलानेवाला, चलने के लिये प्रेरित करनेवाला। किसी काम को जारी रखने तथा आगे बढ़ानेवाला। संचालक। गति देनेवाला। ⊙चालन = पु० चलने के लिये प्रेरित करना। कार्यक्रम को जारी रखना। हिलाना, गति देना। ⊙चालित = वि० चलाया हुआ। बराबर जारी रखा हुआ। हिलाया हुआ। ⊙जन = पु० आश्रित या पोष्य वर्ग (जैसे पुत्र कलत्र, सेवक आदि), परिवार। सदा साथ रहनेवाले सेवक। ⊙ज्ञा = स्त्री० ज्ञान। ⊙ज्ञात = वि० जाना हुआ। ⊙ज्ञान = पुं० पूर्ण ज्ञान। ⊙तप्त = वि० तपा हुआ। जिसे दुःख पहुँचा हो। पछतानेवाला। ⊙ताप = पुं० गरमी, आँच। दुःख, क्लेश। संताप, रंज। पछतावा। ⊙तापी = जिसको परिताप हो, दुखित या व्यथित। पीड़ा देनेवाला, सतानेवाला। ⊙तुष्ट = वि० खूब संतुष्ट। प्रसन्न। ⊙तृप्त = वि० भली भाँति तृप्त, परितुष्ट। ⊙तोष = पुं० संतोष, तृप्ति। प्रसन्नता। ⊙त्यक्त = वि० छोड़ा, फेंका या दूर किया हुआ। ⊙त्याग = पु० निकालना, छोड़ना। ⊙त्यागना (पु) = सक० [हिं०] छोड़ देना, त्यागना। ⊙त्याज्य = वि० छोड़ने या त्यागने योग्य। ⊙त्राण = पु० बचाव रक्षा। ⊙त्राता = पु० परित्राण या रक्षा करनेवाला। ⊙दर्शन = पु० घूम घूमकर देखना। निरीक्षण, मुआयना। ⊙दाह = पु० बहुत अधिक मानसिक कष्ट। ⊙निर्वाण = पु० पूर्ण निर्वाण या मोक्ष। ⊙न्यास = पु० काव्य में वह स्थल जहाँ कोई विशेष अर्थ पूरा हो। नाटक में मुख्य कथा की मूलभूत घटना की संकेत से सूचना करना। ⊙पक्व = वि० अच्छी तरह पका हुआ। जो बिलकुल हजम हो गया हो। पूर्ण विकसित, प्रौढ़। तजुर्बेकार। निपुण, कुशल। ⊙पत्र = पुं० किसी विषय का सूचनापत्र। ⊙पाक = पुं० पकना या पकाया जाना। पचना। प्रौढ़ता। बहुदर्शिता। कुशलता। ⊙पालन = पु० रक्षा करना, बचाव। ⊙पालना = स्त्री० [हिं०] दे० 'परिपालन'। ⊙पालित = वि० जिसका परिपालन किया गया हो। पाला पोसा हुआ। ⊙पुष्ट = वि० जिसका पोषण भली भाँति किया गया हो। पूर्ण पुष्ट। ⊙पूत = वि० पवित्र। साफ किया हुआ। छाँटा हुआ (अन्न)। ⊙पूरक = वि० परिपूर्ण करनेवाला, भर देनेवाला। ⊙पूरन = वि० [हिं०] खूब भरा हुआ, पूर्ण। संतुष्ट, तृप्त। समाप्त किया हुआ। ⊙पूर्ण = खूब भरा हुआ। पूर्ण तृप्त। समाप्त किया हुआ। ⊙पोषण = पु० पालन, परवरिश। पोषण पुष्टि। ⊙प्लव = पु० तैरना। बाढ़। अत्याचार, जुल्म। नाव। ⊙प्लावित = वि० दे० 'परिप्लुत'। ⊙प्लुत = वि० प्लावित, डूबा हुआ। गीला, भीगा हुआ। ⊙प्लुष्ट = वि० जला हुआ, भुना हुआ। प्लोष = पु० जलन, दाह। जलना। भुनना। शरीर के भीतर की गरमी। ⊙बृंहण = पु० बढ़ती। किसी मुख्य ग्रंथ का पूरक ग्रंथ। परिशिष्ट। ⊙भव = पु० अनादर, तिरस्कार। ⊙भावना = स्त्री० चिंता, सोच। विचार, ध्यान। साहित्य में वह वाक्य या पद जिससे कुतूहल या उत्सुकता सूचित अथवा उत्पन्न हो (अलंकार शास्त्र)। ⊙भाषा = स्त्री० स्पष्ट कथन, संशयरहित कथन या बात। किसी शब्द की विशेषता और व्याप्ति निश्चित करनेवाला निरूपण, सामान्य रूप निर्धारण करनेवाला लक्षण। किसी वस्तु के वास्तविक स्वभाव और गुण का

निर्देश या किसी शब्द का अर्थकथन। ऐसे निर्देश की पदसघटना। ऐसा शब्द जो किसी शास्त्र, व्यवसाय या वर्ग आदि मे किसी निर्दिष्ट अर्थ या भाव का सकेत मान लिया गया हो (जैसे, गणित की परिभाषा, लुहारो की परिभाषा आदि)। ऐसी बोलचाल जिसमे वक्ता अपना आशय पारिभाषिक शब्दो मे प्रकट करे। निंदा, बदनामी। ⊙**भाषित** = वि० जो अच्छी तरह कहा गया हो। (वह शब्द) जिसकी परिभाषा की गई हो। ⊙**भू** = वि० व्याप्त रहनेवाला, घेरे रहनेवाला। नियामक, ईश्वर। परिचालक। ⊙**भूषण** = पु० सजावट, शृगार। वह शाति या सधि जो किसी प्रदेश या भूखड का राजस्व देकर स्थापित की जाय (कामंदकीय नीति)। ⊙**भूषित** = वि० सजाया हुआ। ⊙**भ्रमण** = पु० घूकना, चक्कर खाना। परिधि, घेरा। टहलना। पर्यटन। भटकना। ⊙**भ्रष्ट** = वि० गिरा हुआ, पतित। भागा हुआ, पलायित। ⊙**मंडल** = पु० चक्कर, घेरा। ⊙**मार्जक** = पु० धोने या माँजनेवाला। परिष्कार। ⊙**मार्जन** = पु० धोने या माँजने का कार्य। परिशोधन, परिष्करण। ⊙**मार्जित** = वि० धोया या माँजा हुआ। साफ किया हुआ। ⊙**मोक्ष** = पु० पूर्ण मोक्ष, निर्वाण। परित्याग, छोडना। ⊙**मोक्षण** = पु० मुक्त करना या होना। परित्याग करना। ⊙**रंभ**, ⊙**रंभण** = पु० गले या छाती से लगाकर मिलना, आलिंगन। ⊙**लेख** = पु० चित्र का स्थूल रूप जिसमे केवल रेखाएँ हो, खाका। चित्र, तसवीर। कूँची या कलम जिससे रेखाचित्र खीचा जाय। उल्लेख, वर्णन। ⊙**लेखन** = पुं० किसी वस्तु के चारों ओर रेखाएँ बनाना। चित्र अकित करना। वर्णन या उल्लेख करना। ⊙**लेखना**(पु) = सक० [हिं०] समझना, मानना। ⊙**वंश** = पु० धोखा, छल। ⊙**वत्सर** = पुं० ज्योतिष के पाँच विशेप सवत्सरो मे से एक। एक पूरा वर्ष या साल। ⊙**वदन** = पु० किसी के दोष का वर्णन, निंदा। ⊙**वर्जन** = पुं० त्याग, छोडना। दूर रहना, बचना। ⊙**वर्तक** = वि० घूमने, फिरने या चक्कर खानेवाला। घुमाने, फिराने या चक्कर देनेवाला, उलटने पलटनेवाला। बदलनेवाला, विनिमयकर्त्ता। जो बदला जा सके। ⊙**वर्तन** = पु० घुमाव, फेरा, चक्कर। दो वस्तुओ का परस्पर अदल बदल, विनिमय। जो किसी वस्तु के बदले मे लिया या दिया जाय। एक रूप छोडकर दूसरा रूप धारण करना। रूपातर, तबदीली। किसी काल या युग की समाप्ति। ⊙**वर्तित** = वि० बदला हुआ। जो बदले मे मिला हो। ⊙**वर्ती** = वि० परिवर्तनशील, बार बार बदलनेवाला। बदला करनेवाला। जो बराबर घूमे। ⊙**वर्धन** = पुं० सख्या, परिमाण, विस्तार, गुण आदि मे किसी वस्तु की खूब वृद्धि करना या होना, बढती। ⊙**वर्धित** = वि० बढा या बढाया हुआ। ⊙**वह** = पुं० सात पवनो मे से छठा पवन जिसके बारे मे प्रसिद्ध है कि वह प्रात काल पवन के ऊपर रहता है और आकाशगगा को बहाता तथा शुक्र तारे को घुमाता है। अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक। ⊙**वाद** = पुं० पु० निंदा, बुराई। झूठी शिकायत (मनुस्मृति)। वीणा या सितार बजाने का लोहे के तारो का छल्ला, मिजराब। ⊙**वादी** = वि० निंदा करनेवाला। ⊙**वास** = पु० ठहरना, टिकना। घर, मकान। सुगध। ⊙**वाह** = पु० बाँध, मेंड या दीवार के ऊपर से पानी का बहाव। फालतू पानी निकलने का मार्ग। ⊙**विद्ध** = वि० अच्छी तरह घुसा या घुसाया हुआ। सब ओर या सब प्रकार से बिधा हुआ। ⊙**विष्ट** = वि० घेरा हुआ। परोसा हुआ (भोजन)। ⊙**वृति** = स्त्री० ढकने, घेरने या छिपानेवाली वस्तु। ⊙**वृत्त** = वि० घुमाया हुआ, उलटा पलटा हुआ। घेरा हुआ वेष्टित। समाप्त। ⊙**वृत्ति** = स्त्री० घुमाव, चक्कर। घेरा, वेष्टन। विनिमय, बदला। समाप्ति, अत। ऐसा शब्दपरिवर्तन जिसमे अर्थ मे कोई अतर न आने पाए (जैसे 'कमललोचन'

के 'कमल' या 'लोचन' को 'पद्म' या 'नयन' मे बदलना) (व्याकरण)। पु०एक अर्थालंकार जिसमे एक वस्तु को देकर दूसरी के लेने का कथन होता है। ⊙वृद्ध = वि० खूब पुष्ट या बढा हुआ। ⊙वृद्धि = स्त्री० दे० 'परिवर्धन'। ⊙वेद = पु० पूरा ज्ञान, सम्यक् ज्ञान। ⊙वेदन = पु० दे० 'परिवेद'। विवरण। लाभ। विद्यमानता। बहस। भारी दुख या कष्ट। बडे भाई के पहले छोटे भाई का व्याह होना। ⊙वेश = पुं० घेरा। ⊙वेष, ⊙वेषण = पु० (खाना) परोसना। घेरा, परिधि। सूर्य या चद्र आदि का चारो ओर का मंडल। परकोटा, शहरपनाह। ⊙वेष्टन = पुं० चारो ओर से घेरना या वेष्टित करना। आच्छादन, आवरण। परिधि, घेरा। ⊙व्रज्या = स्त्री० इधर उधर भ्रमण। तपस्या। भिक्षुक की भाँति जीवन विताना। ⊙व्राज, ⊙व्राजक = पु० वह सन्यासी जो सदा भ्रमण करता रहे। सन्यासी, यती। ⊙शिष्ट = वि० बचा हुआ। पुं० किसी पुस्तक के लेख का भाग जो यथास्थान न दिया जा सका हो और जिसके बिना वह अपूर्ण रह जाता हो। किसी पुस्तक के अत में जोडा हुआ वह अंश जिसमे ऐसी बातें दी गई हो जिनसे उसे समझने मे सहायता मिले अथवा उसकी उपयोगिता या महत्व बढे। ⊙शीलन = पुं० विषय को खूब सोचते और समझते हुए पढना, मननपूर्वक अध्ययन। स्पर्श। ⊙शेष = वि० बचा हुआ, अवशिष्ट। पुं० जो कुछ बच रहा हो। परिशिष्ट। समाप्ति। अत। ⊙शोध, ⊙शोधन = पुं० पूरी सफाई। ऋण या कर्ज की वेबाकी, चुकता। ⊙श्रम = पु० उद्यम। श्रम, मेहनत। थकावट। ⊙श्रमी = वि० जो बहुत श्रम करे, उद्यमी। ⊙श्रय = पुं० आश्रय, पनाह की जगह। सभा, परिषद्। ⊙श्रांत = वि० थका हुआ। ⊙श्रांति = स्त्री० थकावट, माँदगी। ⊙श्रुत = वि० विख्यात, मशहूर। ⊙संख्या = स्त्री० गणना, गिनती। एक अर्थालकार जिसमे पूछी या विना पूछी हुई वात उसी के सदृश दूसरी वात को व्यग्य या वाच्य से काटने के अभिप्राय से कही जाय। यह दो प्रकार का होता है—प्रश्नपूर्वक और विना प्रश्न का। ⊙सर्प = परिक्रमण, घेरा। घूमना फिरना। किसी की खोज में जाना। साहित्य-दर्पण के अनुसार नाटक मे किसी का किसी की खोज मे मार्ग के चिह्नो के सहारे भटकना। सुश्रुत के अनुसार ११ क्षुद्र कुष्ठो मे से एक। सर्पो की एक जाति। ⊙सेवना, सेवा = स्त्री० दे० 'सेवा'। ⊙स्पंद = पुं० कपन, स्पदन। ⊙स्पर्धा = स्त्री० प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता। ⊙स्फुट = वि० बिलकुल प्रकट या खुला हुआ। व्यक्त, प्रकाशित। खूब खिला हुआ। ⊙स्यद = झरना, क्षरण। ⊙हत = वि० मरा या मारा हुआ। हल की मुठिया या हत्था। ⊙हरण = पु० छीन लेना। छोड़ना, तजना। दोष, अनिष्टादि का उपचार या उपाय करना। हरना (पु) = सक० [हिं] त्यागना, छोड़ना। ⊙हानि = क्षति, कमी। ⊙हार = पुं० दोष, अनिष्ट, खरावी आदि का निवारण या निराकरण। दोषादि के दूर करने की युक्ति या उपाय, उपचार। परित्याग। पशुओ के चरने के लिये परती छोडी हुई सार्वजनिक भूमि। लडाई मे जीता हुआ धनादि। कर या लगान की माफी। घूँट। खडन, तरदीद। नाटक मे किसी अनुचित या अविधेय कर्म का प्रायश्चित्त करना (साहित्यदर्पण)। तिरस्कार। उपेक्षा। राजपूतो का एक वश जो अग्निकुल के अतर्गत माना जाता है। ⊙हारक = वि० परिहार करनेवाला, निवारक। ⊙हारना (पु) = सक० [हिं०] प्रहार करना, चलाना (शस्त्र)। ⊙हारी = पु० निवारण, त्याग। दोपक्षालन। हरण या गोपन करनेवाला। ⊙हार्य = वि० जिसका परिहार किया जा सके, जिससे बचा जा सके, जो दूर किया जा सके। जिसका निवारण, त्याग या उपचार करना उचित हो। ⊙हास = पुं०

हँसी, दिल्लगी, मजाक। क्रीड़ा, खेल। ⊙हीन (हीण) = वि० अत्यंत हीन, दीन, हीन। त्यागा हुआ, फेंका, ढकेला या निकाला हुआ। ⊙हृति = स्त्री० नाश, क्षय।

परिकरमाⓅ—स्त्री० दे० 'परिक्रमा'।

परिकरांकुर—पु० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष्य या शब्द का प्रयोग विशेष अभिप्राय लिए हुए होता है।

परिक्रमा—स्त्री० चारों ओर घूमना, फेरी। किसी देवता, मंदिर, तीर्थ, देवस्थान या तुलसी आदि के चारों ओर श्रद्धापूर्वक घूमना। किसी तीर्थ या मंदिर के चारों ओर घूमने के लिये बना हुआ मार्ग।

परिक्षा—स्त्री० दे० 'परीक्षा'।

परिक्षित—पुं० दे० 'परीक्षित'।

परिखन—वि० रखवाली करनेवाला।

परिखना†—सक० दे० Ⓟपरख। अक० प्रतीक्षा करना। रखवाली करना।

परिखा—स्त्री० [सं०] खंदक, खाईं।

परिग्रह—पुं० संगी साथी या आश्रित जन।

परिघ—पु० [सं०] अर्गला, अगडी। भाला। घोडा। फाटक। घर। तीर। बाधा, प्रतिबंध।

परिचय—पुं० [सं०] जानकारी, ज्ञान। प्रमाण, लक्षण। किसी व्यक्ति के नाम-धाम या गुणकर्म आदि के संबंध की जानकारी। जान पहचान। **परिचायक**—पु० परिचय या जान पहचान करनेवाला। सूचित करनेवाला। **परिचित**—वि [सं०] जानाबूझा, ज्ञात। जानकारी रखनेवाला, वाकिफ। जानपहचान रखनेवाला, मुलाकाती। **परिचिति**—स्त्री० दे० 'परिचय'।

परिचनाⓅ—अक० दे० 'परचना'।

परिचरजाⓅ—स्त्री० दे० 'परिचर्या'।

परिचौ†—पुं० दे० 'परिचय'।

परिच्छद—पु० [सं०] ढकने का कपड़ा, आच्छादन। पहनावा, पोशाक। राजचिह्न। राजा का अनुचर। कुटुंब।

परिच्छन्न—वि० [सं०] ढका या छिपा हुआ। जो कपड़े पहने हो। साफ किया हुआ।

परि[illegible]छा—Ⓟस्त्री० दे० 'परीक्षा'।

परिच्छिन्न—वि० [सं०] सीमायुक्त, परिमित। विभक्त।

परिच्छेद—पुं० [सं०] खंड या टुकड़े करना, विभाजन। ग्रंथ का कोई स्वतंत्र विभाग, अध्याय।

परिछन—पुं० दे० 'परछन'।

परिछाहीं—स्त्री० दे० 'परछाईं'।

परिजंकⓅ—पुं० दे० 'पर्यंक'।

परिणत—वि० [सं०] बदला हुआ। पका हुआ। पचा हुआ। झुका हुआ। प्रौढ़, पुष्ट, 'कच्चा' का उलटा (बुद्धि या वय)।

परिणति—स्त्री० बदलना। पकना या पचाना। प्रौढ़ता, पुष्टि। अंत।

परिणय—पुं० [सं०] ब्याह, विवाह। **परिणयन**—पुं० [सं०] विवाह करना।

परिणाम—पु० [सं०] बदलने का भाव या कार्य। स्वाभाविक रीति से रूप परिवर्तन या अवस्थांतर प्राप्ति (सांख्य)। विकृति, विकार, रूपांतर। एक स्थिति से दूसरी स्थिति में प्राप्ति (योग)। एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय के कार्य का उपमान द्वारा किया जाना अथवा अप्रकृत (उपमान) का प्रकृत (उपमेय) से एकरूप होकर कोई कार्य करना कहा जाता है। विकास, परिपुष्टि। समाप्त होना, बीतना। नतीजा फल। ⊙दर्शी = वि० परिणाम या फल को सोचकर कार्य करनेवाला, दूरदर्शी। ⊙दृष्टि = स्त्री० किसी कार्य के परिणाम को जान लेने की शक्ति। ⊙वाद = पुं० सांख्य मत जिसमें जगत् की उत्पत्ति, नाश आदि नित्य परिणाम के रूप में माने जाते हैं।

परिणामी—वि० [सं०] जो बराबर बदलता रहे।

परिणीत—वि० [सं०] विवाहित। समाप्त, पूर्ण।

परितच्छⓅ—पु० दे० 'प्रत्यक्ष'।

परितोसⓅ—पुं० दे० 'परितोष'।

परिध—पु० दे० 'परिधि'।

परिधनⓅ—पु० नीचे पहनने का कपड़ा, धोती आदि।

परिधान—पुं० [सं०] वस्त्र, पोशाक। शरीर के कपड़े, वल्कल आदि से ढँकने या लपेटने की क्रिया।

परिधि—स्त्री० [सं०] वह रेखा जिसके समस्त बिंदु केंद्रबिंदु से समान दूरी पर हो, घेरा। सूर्य, चद्र आदि के चारो ओर दिखाई पडनेवाला घेरा, मडल। चारो ओर की सीमा। बाडा या चहारदीवारी। नियत मार्ग, कक्षा। वस्त्र, पोशाक। क्षितिज।

परिधेय—वि० [सं०] पहनने योग्य। पुं० वस्त्र, कपडा।

परिनय(पु)—पु० दे० 'परिणय'।

परिपाटी—स्त्री० [सं०] क्रम, सिलसिला। शैली, ढंग, चाल। रीति। अकगणित।

परिवार—पुं० मर्यादा।

परिभाव—पुं० [सं०] दे० 'परिभव'।

परिभूत—वि० [सं०] पराजित। अपमानित।

परिमल—पुं० [सं०] सुवास, खुशबू। मलना, उबटना। मैथुन। पडितो की सभा या गोष्ठी।

परिमाण—पुं० [सं०] वह मान जो नाप या तोल के द्वारा जाना जाय, मात्रा। वैशेषिक के अनुसार द्रव्यो के सख्यादि पाँच गुणो में से एक।

परिमित—वि० [सं०] सीमा, सख्या आदि से बद्ध, नपातुला। न अधिक न कम। कम, थोडा। परिमिति—स्त्री० नाप, तोल आदि। सीमा, मर्यादा, इज्जत।

परिमेय—वि० [सं०] जो नापा या तौला। जा सके। ससीम, संकुचित। जिसे नापना या तौलना हो।

परियंक(पु)—पुं० 'पर्यंक'।

परियंत(पु)—अव्य० दे० 'पर्यंत'।

परिरंभना—सक० आलिंगन करना, गले लगाना।

परिवर्त—पुं० घुमाव, चक्कर। बदला, विनिमय। जो बदले मे लिया या दिया जाय। किसी काल या युग का अत। (ग्रंथ का) परिच्छेद। स्वरसाधन की एक प्रणाली (संगीत)।

परिवा—स्त्री० अमावस्या या पूर्णिमा के बाद की तिथि, पडिवा।

परिवार—[सं०] पुं० एक ही कुल मे उत्पन्न मनुष्यो का समुदाय, कुटुब। किसी व्यक्ति को घेरे हुए चलनेवाले लोग, अनुगामियो का वर्ग। स्वजनो या आत्मीयो का समुदाय किसी पर आश्रित व्यक्तियो का समूह। एक स्वभाव या धर्म की वस्तुओं का समूह। तलवार की खोली, म्यान। आवरण, ढकना।

परिवीत—वि० [सं०] घिरा हुआ। ढका या छिपा हुआ।

परिवृत—वि० ढका, छिपाया या घिरा हुआ।

परिव्राट्—पुं० [सं०] दे० 'परिव्राज'।

परिषत्—स्त्री० दे० 'परिषद्'।

परिषद्—स्त्री० [सं०] प्राचीन काल की विद्वान् ब्राह्मणो की वह सभा जिसे राजा समय समय पर राजनीति, धर्मशास्त्र आदि किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिये बुलाता था और जिसका निर्णय सर्वमान्य होता था। सभा, मजलिस। समूह, समाज।

परिषद—पुं० [सं०] सवारी या जुलूस में चलनेवाले वे अनुचर जो स्वामी को घेरकर चलते है, परिषद् सदस्य, सभासद। मुसाहिब, दरबारी। दे० 'परिषद्'।

परिष्कार—पुं० [सं०] सस्कार, शुद्धि, स्वच्छता। जेवर। शोभा। सजावट, सिंगार। परिष्क्रिया—स्त्री० [सं०] शुद्ध करना, शोधन। माँजना धोना। सँवारना सजाना। परिष्कृत—वि० [सं०] साफ या शुद्ध किया हुआ। माँजा या धोया हुआ। सँवारा या सजाया हुआ।

परिसर—पुं० [सं०] किसी स्थान के आसपास की जमीन। किसी घर के निकट का खुला मैदान। पडोस, स्थिति। मृत्यु। नाश। वि० लगा हुआ, मिला हुआ, जुटा या सटा हुआ, बगल का।

परिस्तान—पुं० [फा०] वह कल्पित लोक या स्थान जहाँ परियाँ रहती हो। वह स्थान जहाँ सुदर मनुष्यो (विशेषतः स्त्रियो) का जमघट हो।

परिहंस(पु)—पु० ईर्ष्या, डाह ।
परिहस(पु)—पु० हँसी, दिल्लगी । रज,दु ख ।
परिहित—वि० [सं०] चारो ओर से छिपाया हुआ, ढँका हुआ । पहना हुआ या ऊपर डाला हुआ (कपडा) ।

परी—स्त्री०[फा०] फारस की प्राचीन कथाओ के अनुसार काफ नामक पहाड पर बसनेवाली कल्पित सुदरी और परवाली स्त्रियाँ । परी सी सुदर स्त्री, परम सुदरी । ⊙जाद = वि० अत्यत सुदर ।

परीक्षक—पु० [सं०] परीक्षा करनेवाला या लेनेवाला ।

परीक्षण—पु० [सं०] दे० 'परीक्षा' ।

परीक्षा—स्त्री० [सं०] वह कार्य जिससे किसी की योग्यता, सामर्थ्य आदि जाने जायँ, इम्तहान । गुण, दोष आदि जानने के लिये अच्छी तरह से देखने भालने का कार्य, समीक्षा । आजमाइश, अनुभवार्थ प्रयोग । निरीक्षण, जाँच पडताल । वह विधान जिससे प्राचीन न्यायालय किसी अभियुक्त अथवा साक्षी के सच्चे या झूठे होने का निश्चय करते थे । **परीक्षित**—वि० [सं०] जिसकी परीक्षा या जाँच की गई हो । पुं० अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, पाडु कुल के एक प्रसिद्ध राजा । **परीक्ष्य**—वि० [सं०] परीक्षा करने या लेने योग्य ।

परीखना(पु)—सक० दे० 'परखना' ।
परीच्छित—क्रि० वि० अवश्य ही, निश्चित रूप से ।

परीछत, **परीछित**(पु)—पुं० दे० 'परीक्षित' ।
परीछा(पु)—स्त्री० दे० 'परीक्षा' । क्रि० वि० दे० 'परीच्छित' ।

परीत(पु)—पु० प्रेत, दे० 'परेत' ।

परीशान—वि० दे० 'परेशान' ।
परुख(पु)—वि०दे० 'परुष' । **परुखाई**(पु)—स्त्री० परुषता, कठोरता ।

परुष—वि० [सं०] कठोर, कडा, बुरा लगनेवाला (शब्द, वचन, आदि) । निष्ठुर, निर्दय । **परुषा**—स्त्री० [सं०] काव्य मे वह वृत्ति, रीति या शब्दयोजना की प्रणाली जिसमे टवर्गीय, द्वित्व, सयुक्त, रेफ और श, ष आदि वर्ण तथा लंबे लंबे समास अधिक आए हो । इस वृत्ति मे वीर, रौद्र और भयानक रसो की कविता करने से रस का अच्छा परिपाक होता है । रावी ।
परूष, **परूषक**—पुं० [सं०] फालसा ।

परे—अव्य०उस ओर, उधर । बाहर, अलग । ऊपर बढकर । बाद, पीछे ।

परेई—स्त्री०पडुकी, फाखता । मादा कबूतर ।
परेखना—सक० परखना, जाँचना । आसरा देखना, प्रतीक्षा करना ।

परेखा(पु)—पुं० परीक्षा, जाँच । विश्वास, प्रतीति । पछतावा, अफसोस ।

परेग—स्त्री० छोटा काँटा, कील ।
परेड—स्त्री० [अ०] वह मैदान जहाँ सैनिको को युद्ध की शिक्षा दी जाती है । सैनिक शिक्षा, कवायद । प्रदर्शन ।

परेत—पु० दे० 'प्रेत' ।
परेता—पुं० जुलाहो का एक औजार जिसपर पर वे सूत लपेटते हैं । पतग की डोर लपेटने का बेलन ।

परेर†—पुं० आकाश, आसमान ।
परेवा—पुं० पडुक पक्षी, फाखता । कबूतर । तेज उडनेवाला पक्षी । तेज चलनेवाला पत्रवाहक, हरकारा ।

परेश—पु० [सं०) ईश्वर, परमात्मा ।
परेशान—वि०[फा०] व्याकुल, उद्विग्न, तग । **परेशानी**—स्त्री० व्याकुलता, हैरानी ।

परेस(पु)—पुं० ईश्वर, परमात्मा ।
परो(पु)†—क्रि० वि० दे० 'परसो ।
परोना—सक० दे० 'पिरोना' ।
परोक्ष—पुं०[सं०] अनुपस्थिति, गैरहाजिरी । परम ज्ञानी । वि० जो दिखाई न पडे, अप्रत्यक्ष । गुप्त, छिपा हुआ ।
परोजन—पु० दे० 'प्रयोजन' ।
परोरना†—सक० मत्र पढ़कर फूँकना, अभिमत्रित करना ।
परोरा—पु० दे० 'परवल' ।
परोल—पु० सजा की मीयाद के पूर्व विशेष शर्तों पर कैदी को छोड़ना । सकेत का शब्द

जिसके बोलने से पहरे के सिपाही बोलने-वाले को आने या जाने से नही रोकते (सेना)। मु०~मिलाना = भेदिया बनाना, अपनी तरफ मिलाना।

परोस—पु० दे० 'पड़ोस'।

परोसना—सक० दे० 'परसना'।

परोसा—पुं० एक मनुष्य के खाने भर का भोजन जो थाल या पत्तल पर लगाकर कही भेजा जाता है।

परोसी—पुं० दे० 'पडोसी'।

परोसैया—पुं० वह जो भोजन परसता हो

परोहना—पु० वह जिसपर कोई सवार हो या कोई चीज लादी जाय (घोडा, बैल, रथ गाडी आदि)।

पर्कटी—स्त्री० [सं०] पाकर वृक्ष।

पर्जंक(पु)†—पु० दे० 'पर्यंक'।

पर्जन्य—पु० [सं०] बादल, मेघ। विष्णु। इद्र।

पर्ण—पुं० [सं०] पत्ता। पख। पान। पलाश वृक्ष। ⊙कुटी = स्त्री० केवल पत्तो की बनी हुई कुटी, पर्णशाला। ⊙शाला = स्त्री० दे० 'पर्णकुटी'। **पर्णिक**—पु० पत्ते बेचनें-वाला। **पर्णी**—पु० वृक्ष, पेड। तेजपत्ता। पिठवन। शालपर्णी, सीमन। स्त्री० एक प्रकार की अप्सराएँ।

पर्त—स्त्री० दे० 'परत'।

पर्दा—पु० दे० 'परदा'।

पर्पट—पु० [सं०] पित्त पापडा। पापड।

पर्पटी—स्त्री० सौराष्ट्र देश की मिट्टी, गोपी-चदन। पानडी। पापडी। स्वर्णपर्पटी नामक औषध।

पर्यंक—पु० [सं०] पलग। योग का एक आसन। वीरासन का एक भेद।

पर्यंत—अव्य० [सं०] तक, लौं। पु० अतिम सीमा। समीप। पार्श्व, बगल।

पर्यटन—पु० [सं०] भ्रमण, घूमना फिरना।

पर्यवसान—पु० [सं०] अत, समाप्ति। अत-र्भाव, शामिल हो जाना। ठीक ठीक अर्थ निश्चित करना।

पर्यवेक्षण—पु० [सं०] अच्छी तरह देखना, निरीक्षण।

पर्यसन—पु० [सं०] दूर करना, हटाना, फेंकना। नष्ट करना।

पर्यस्तपाह्नुति—स्त्री० [सं०] वह अर्थाल जिसमे वस्तु का गुण गोपन करके गुण का किसी दूसरे मे आरोपित [ ]जाना वर्णन किया जाय।

पर्याकुल—वि० [सं०] अत्यधिक व्याकुल, बहुत घबराया हुआ।

पर्याप्त—वि० [सं०] पूरा, काफी। प्राप्त, मिला हुआ। समर्थ। परिमित। पुं० तृप्ति, सतोष। शक्ति, सामर्थ्य। योग्यता। यथेष्टता। प्रचुरता।

पर्याय—पु० [सं०] एक ही भाषा मे किसी शब्द के अर्थ मे प्रयुक्त दूसरा शब्द, समानार्थवाची शब्द (जैसे, 'विष' का पर्याय 'हलाहल')। क्रम, सिलसिला। वह अर्थालकार जिसमे एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रय लेना वर्णित हो या अनेक वस्तुओ का एक ही के आश्रित होने का वर्णन हो। **पर्यायोक्ति**—स्त्री० वह शब्दा-लकार जिसमे कोई बात साफ न कहकर घुमाव फिराव से कही जाय, अथवा जिसमे किसी सुदर बहाने से कार्य साधन किए जाने का वर्णन हो।

पर्यालोचन—पु० [सं०] अच्छी तरह देख-भाल, समीक्षा। **पर्यालोचना**—स्त्री० पूरी जाँच पडताल। समीक्षा।

पर्यास—पुं० [सं०] पतन। वध। नाश।

पर्यासन—पुं० [सं०] किसी को घेरकर बैठना। किसी के चारो ओर घूमना।

पर्युपासक—पु० [सं०] सेवक, दास।

पर्युपासन—पु० [सं०] सेवा।

पर्व—पु० [सं०] (सस्कृत मे केवल समास मे) धर्म, पुण्यकार्य अथवा उत्सव आदि करने का समय, पुण्यकाल, पुराणो मे अष्टमी चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा और सक्राति के दिन पर्व कहे गए है। चातुर्मास्य। प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा अथवा अमावस्या तक का समय, पक्ष। दिन। क्षण। अवसर, मौका। उत्सव। वह स्थान जहाँ दो चीजे (विशेषत अंग) जुडे हो, जोड, जैसे, कुहनी अथवा गन्ने की गाँठ। भाग, टुकड़ा, हिस्सा (जैसे,

उँगली के पोर (पर्व), महाभारत के अठारह पर्व)। सूर्य या चद्रमा का ग्रहण। ⊙काल = पुं० वह समय जब कोई पर्व हो, पुण्यकाल। चद्रमा का क्षयकाल। (जैसे, कृष्णपक्ष की अमावास्या आदि तिथियाँ)। ⊙संधि = स्त्री० पूर्णिमा अथवा अमावास्या और प्रतिपदा के बीच का समय। सूर्य अथवा चद्रमा को ग्रहण लगने का समय। घुटने पर का जोड।

पर्वत—पुं० [सं०] जमीन की सतह का खूब ऊँचा उठा हुआ प्राकृतिक भाग जो मिट्टी मिश्रित या शुद्ध पत्थर होता है, पहाड। किसी चीज का बहुत ऊँचा ढेर। पुराणानुसार एक देवर्षि जो नारद के परम मित्र थे। पेड। एक प्रकार का साग। दशनामी सप्रदाय के एक प्रकार के सन्यासी। ⊙नदनी = स्त्री० पार्वती। ⊙राज = पुं० बहुत बडा पहाड। हिमालय पर्वत। पर्वतारि—पुं० इद्र जिन्होने पुराणो के अनुसार पर्वतो के पख काटे थे। पर्वतास्त्र—पु० प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसके फेंकते ही शत्रु की सेना पर बडे बडे पत्थर बरसने लगते थे, अथवा अपनी सेना के चारो ओर पहाड खडे हो जाते थे जिससे शत्रु का प्रभजनास्त्र विफल हो जाता था। पर्वती—वि० [हि०] दे० 'पर्वतीय'। पर्वतीय—वि० पहाडी, पहाड सबधी। पहाडपर रहने, होने या बसनेवाली। पर्वतेश्वर—पु० [सं०] हिमालय।

पर्वर—पुं० दे० 'परवल'। वि० दे० 'परवर'।

पर्वरिश—स्त्री० [फा०] पालन पोषण।

पर्वाह—स्त्री० दे० 'परवाह'। पुं० दे० 'प्रवाह'।

पर्विणी—स्त्री० [सं०] दे० 'पर्व'।

पर्वेश—पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार कालभेद से सूर्य या चंद्रग्रहण के समय के अधिपति देवता। वृहत्सहिता मे ब्रह्मा, इद्र, कुबेर, वरुण, अग्नि, यम और चद्रमा ये सात देवता क्रम से छह छह महीने के ग्रहण के अधिपति हुआ करते हैं। भिन्न भिन्न पर्वेश के समय ग्रहण होने का भिन्न भिन्न फल होता है।

पर्हेज—पु० [फा०] रोग आदि मे स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचानेवाली वस्तु का त्याग। बचना, अलग रहना। सयम।

पलंका(पु)†—स्त्री० लका मे भी दूर का देश, बहुत दूर का स्थान।

पलंग—पु० अच्छी और बडी चारपाई, पर्यंक। ⊙पोश = पु० [फा०] पलंग पर बिछाने की चादर। मु०—तोडना = बिना काम किए सोया या पड़ा रहना। कुछ कार्य न करते हुए समय काटना।

पलँगिया—स्त्री० छोटा पलंग, खटिया।

पल—पुं० पलक, दृगंचल। समय का अत्यंत छोटा विभाग, क्षण। पु० [सं०] समय का एक प्राचीन विभाग जो २४ मिनट या २४ सेकड के बराबर होता है, घडी या दड का ६०वाँ भाग। चार कर्ष के बराबर तौल। मास। धान का पयाल। धोखेबाजी। चाल, गति। तराजू। मूर्ख। ⊙चर = पुं० एक उपदेवता जिसके बारे मे राजपूतो की कथाओ में प्रसिद्ध है कि यह युद्ध में मरे हुए लोगों का रक्त पीकर आनद से नाचता कूदता है। मु०—के पल मे = बहुत ही अल्पकाल मे, क्षण भर मे। ~मारते या~मारने में = बहुत ही जल्दी, आँख झपकते।

पलक—स्त्री० क्षण, पल, लहमा। आँख के ऊपर का चमडे का परदा, पपोटा तथा बरौनी। ⊙दरिया† = वि० [हि० + फा०] बहुत बडा दानी, अति उदार। ⊙नेवाज† = वि० छन में निहाल करनेवाला, बड़ा दानी। मु०~झपकते = अत्यंत अल्प समय मे, बात कहते। किसी के रास्ते में या किसी के लिये ~बिछाना = किसी का अत्यत प्रेम से स्वागत करना। ~भाँजना = पलक गिराना या हिलाना। ~मारना = आँखो से सकेत या इशारा करना। पलक झपकाना या गिराना। ~लगना = आँखें मुँदना, पलक झपकना। नीद आना, झपकी लगना।

~से~न लगना = टकटकी बँधी रहना। नींद न आना।

पलका(पु)—पु० पलग, चारपाई।

पलटन—स्त्री० अँगरेजी पैदल सेना की एक छोटी टुकडी या टोली। दल, समुदाय। **पलटनिया**—पु० पलटन मे काम करनेवाला, सैनिक।

पलटना—अक० उलट जाना। अवस्था या दशा बदलना, परिवर्तन होना, कायापलट हो जाना, किसी दशा की ठीक उलटी या विरुद्ध दशा, उपस्थित होना। अच्छी से बुरी या बुरी से अच्छी स्थिति या दशा प्राप्त होना। अच्छी दशा प्राप्त होना। मुड़ना, पीछे फिरना, लौटना। सक० •किसी की स्थिति को उलटना, औंधाना। अवनत को उन्नत या उन्नत को अवनत करना, उलटे को सीधा या सीधे को उलटा करना। फेरना, बार बार उलटना। बदलना, एक वस्तु को त्यागकर दूसरी को ग्रहण करना। बदले मे लेना, बदला करना। एक बात से मुकरकर दूसरी कहना। (पु)लौटाना, वापस करना। एक पात्र से दूसरे मे करना।

पलटा—पु० घूमने, उलटने या चक्कर खाने की क्रिया या भाव। बदला, प्रतिफल। गाने मे जल्दी जल्दी थोडे से स्वरो पर चक्कर लगाना या ऊँचे स्वर तक पहुँचकर सफाई से फिर नीचे स्वरो की तरफ मुड़ना। नाव चलानेवाले के बैठने की पटरी। कुश्ती का एक पेंच। धातु की गोलाकार खुरचनी जिससे बटलोही से भात निकाला जाता है और कड़ाही मे पूरी, तरकारी आदि पलटी जाती है। मु०~खाना = दशा या स्थिति का उलटा जाना। ⊙ना = सक० [अक०√ पलट] लौटाना, वापस करना। बदलना। **पलटी**—स्त्री० बदले या पलटे जाने की क्रिया या भाव। बदली, तबादला। **पलटे**†—क्रि० वि० बदले मे, एवज मे।

पलड़ा†—पु० तराजू का पल्ला। पक्ष (जैसे, किसी का पलड़ा भारी होना)।

पलथी†—स्त्री० स्वस्तिकासन, पालथी।

पलना(पु)†-पु० दे० 'पालना'। अक० परवरिश पाना, पाला पोसा जाना। खा पीकर हृष्ट पुष्ट होना, तैयार होना। (पु)† = सक० घोडे पर जीन कसकर उसे चलने के लिये तैयार करना।

पलपंगत(पु)—पु० मास का ढेर। 'हरवरात हरखात प्रमथ परसत पलपगत।' (जगद्विनोद ७१५)।

पलवा(पु)†—पु० अँजुली, चुल्लू। ईख के ऊपर का नीरस भाग जिसमे पास पास गाँठें होती हैं। ईख की गाँठ जो बोने के लिये पाल मे लगाई जाती हैं। हिसार (पजाब) के आसपास उगनेवाली एक घास जिसे भैंस बडे चाव से खाती है।

पलवैया—पु० पालन करनेवाला, पालक।

पलस्तर—पु० दीवार आदि पर किया जानेवाला मिट्टी, सीमेंट, चूने आदि के गारे का लेप। मु०~ढीला होना, बिगड़ना या बिगड जाना = बहुत परेशान होना, नसें ढीली हो जाना।~ढीला करना = तग करना, बहुत परेशान करना।

पलहना(पु)—अक० पल्लवित होना, पनपना, लहलहाना।

पलहा(पु)—पु० कोपल, कोमल पत्ते।

पलांडु—पुं० [सं०] प्याज।

पला—पु० पल, निमिष। (पु)तराजू का पलडा। पल्ला, आँचल। पार्श्व, किनारा। (पु)†अक० भागना, पलायन कराना। सक० पलायन कराना, भगाना।

पलाद—पु० [सं०] माँस खानेवाला, राक्षस।

पलान—पु वह गद्दी या चारजामा जो जानवरो की पीठ पर माल लादने या चढने के लिये कसा जाता है।

पलाना(पु)—सक० घोडे आदि पर पलान कसना। चढाई की तैयारी करना।

पलानी—स्त्री० छप्पर। दे०'पलायन'। एक अलकार जिसे स्त्रियाँ पैर मे पजे के ऊपर पहनती है।

पलान्न—पु० [सं०] चावल और मास के मेल से बना हुआ भोजन, पुलाव।

पलायक—वि० [सं०] भागनेवाला, भग्गू। **पलायन**—पु० भागने की क्रिया या भाव, भागना। **पलायमान**—वि० भागता हुआ। **पलायित**—वि० भागा हुआ।

पलाश—पु० [सं०] पलास, ढाक। पत्ता। राक्षस। कचूर। मगध। प्रदेश। वि० मासाहारी। निर्दय। हरा। **पलाशी**—वि० [सं०] मासाहारी। पत्रयुक्त। पु० राक्षस।

पलास—पु० एक प्रसिद्ध वृक्ष, क्षुप या लता जिसके पत्ते सीको में निकलते हैं और एक मे तीन तीन होते हैं। इसका फूल छोटा, अर्धचद्राकार और गहरे लाल रग का होता है, टेसू। गीध की जाति का एक मासाहारी पक्षी। एक प्रकार की सँडसी, पिलास। दो भागो को जोडनेवाली गाँठ।

पलिका(पु)—पुं० दे० 'पलका'।

पलिकिनी—स्त्री० [सं०] पहली वार गाभिन हुई गाय। वि० पके वालोवाली स्त्री, बुड्ढी स्त्री (वैदिक)।

पलित—वि० [सं०] वृद्ध, वुड्ढा। पका हुआ या सफेद (वाल)। पु० सिर के वालो का उजला होना, वाल पकना। ताप, गरमी।

पली—स्त्री० तेल, घी आदि द्रव पदार्थों को बडे वरतन से निकालने का लोहे का एक उपकरण। **मु०**~**जोड़ना** = थोडा थोड़ा करके सचय या सग्रह करना।

पलीता—पु० वत्ती के आकार मे लपेटा हुआ वह कागज जिसपर कोई यत्र लिखा हो, इस वत्ती की धूनी प्रेतग्रस्त लोगो को दी जाती है। रेशो आदि को वटकर बनाई हुई वह वत्ती जिससे वंदूक या तोप के रजक मे आग लगाई जाती है। कपडे की वह वत्ती जिसे पनशाखे पर रखकर जलाते हैं। वि० बहुत क्रुद्ध, आगवबूला। तेज दौडने या भागनेवाला।

पलीद—वि० [फा०] अपवित्र, गदा। घृणास्पद। नीच, दुष्ट। पु० भूत, प्रेत।

पलुआ†—वि० पालतू, पाला हुआ।

पलुहना(पु)†—अक० पल्लवित होना, हरा भरा होना। **पलुहाना**(पु)†—सक० पल्लवित करना, हरा भरा करना।

पलेडना(पु)†—सक० ढकेलना, धक्का देना।

पलेथन—पु० वह सूखा आटा जिसे रोटी वेलने के समय लोई पर लगाते हैं। किसी हानि या अपकार के पश्चात् उसी के सबध से होनेवाला अनावश्यक व्यय। **मु०**~**निकलना** = खूब मार पडना या खाना। परेशान होना।~**निकालना** = खूब मारना। बुरा हाल करना।

पलैया—वि० पालन करनेवाला। '..... चीरि डारौ पल मे पलैया पंजपन हौं।' (जगद्विनोद ५६०)।

पलोटना—सक० पैर दवाना। दे० 'पलट' अक० कष्ट से लोटना पोटना, तडफड़ाना

पलोथन—पु० दे० 'पलेथन'।

पलोवना(पु)—सक० पैर दवाना, पैर मलना। सेवा करना, प्रसन्न करने का यत्न करना।

पलोसना(पु)—सक० धोना। मीठी मीठी वातें करके ढग पर लाना।

पल्टा—पुं० दे० 'पलटा'।

पल्लव—पु० [सं०] नए निकले हुए कोमल पत्तो का समूह या गुच्छा, कोपल, कल्ला। उँगली (प्राय हाथ' के वाचक शब्दो के साथ समास होने पर जैसे, करपल्लव, पाणिपल्लव)। हाथ मे पहनने का कडा या ककण। बल। पल्लव प्रदेश। इस प्रदेश का निवासी। दक्षिण का एक प्राचीन राजवश जिसका राज्य उडीसा से तुगभद्रा नदी तक था। आल का रग। ⊙**ग्राही** = वि० केवल ऊपर ऊपर से ज्ञान प्राप्त करनेवाला, पूरा ज्ञान न रखनेवाला। **पल्लवन**—पु० [सं०] पल्लव करना या निकालना। किसी बात या विषय का विस्तार करना। ⊙**ना**(पु) = अक० पल्लवित होना, पनपना। **पल्लविअ**(पु)—वि० दे० 'पल्लवित'। **पल्लवित**—वि० [सं०] जिसमें नए नए पत्ते हो। हरा भरा। लबा चौडा। जिसके रोंगटे खडे हो।

पल्ला—क्रि० वि० दूर। वि० दे० 'परला'। पुं० दूरी। कैंची के दो भागो मे से एक भाग

कपड़े का छोर, आंचल । दूरी (जैसे, उनका घर यहाँ से पल्ले पर है) । पास, अधिकार मे तरफ। दुपल्ली टोपी के दो भागो मे से एक । किवाड़ । पहल । तीन मन का बोझ । चद्दर । रजाई या दुलाई के ऊपर का कपड़ा । धोती का एक फर्द । पेड़ के तने से चीरकर अलग किया हुआ लकड़ी का लंबा चौड़ा और मोटा टुकड़ा जिसमे खिड़कियाँ और दरवाजे आदि बनाए जाते हैं । वह चद्दर या गोन जिसमे अन्न बाँधकर ले जाते हैं । तराजू का पलड़ा । पल्लेदार—पुं० [फा०] अनाज ढोनेवाला मजदूर । गल्ला तौलनेवाला आदमी । पल्लेदारी—स्त्री० [फा०] पल्लेदार का काम । मु० ~छूटना = छुटकारा मिलना । ~झुकना या ~भारी होना = पक्ष बलवान् होना । ~पसारना = किसी से कुछ माँगना । पल्ले पड़ना = प्राप्त होना, मिलना । किसी के पल्ले बाँधना = जिम्मे किया जाना । व्याहना (तिरस्कार) ।

पल्ली—स्त्री० [सं०] छोटा गाँव, पुरवा, टोला । कुटी । छिपकली ।

पल्लु†—पु० आंचल, छोर, दामन । चौड़ी गोट।

पल्लै(पु)†—वि० दे० 'परलय' । दे० 'पल्ला' ।

पल्लो†—पुं० पल्लव । वह चद्दर या गोन जिसमे अनाज बाँधते हैं ।

पल्वल—पुं० [सं०] छोटा तालाब या गड्ढा ।

पवगा†—पुं० एक प्रकार का छद ।

पवन(पु)—पुं० दे० 'पवन' । पुं० [सं०] वायु, हवा । वायु के अधिष्ठाता देवता । एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से एक भगण, एक तगण, एक नगण, और एक सगण होता है । कुम्हार का आवाँ । जल, पानी । साँस । प्राणवायु । ⊙अस्त्र = पु० दे० 'पवनास्त्र' । ⊙कुमार = पुं० हनुमान् । भीमसेन । ⊙चक्की = स्त्री० [सं० + हिं०] वह चक्की या कल जो हवा के जोर से चलती हो, हवा चक्की । ⊙चक्र = पु० ववंडर । ⊙तनय = पु० हनुमान् । भीमसेन । ⊙पति = पु० वायु के अधिष्ठाता । ⊙परीक्षा = स्त्री० ज्योतिषियो की एक क्रिया जिसके अनुसार आषाढ शुक्ल पूर्णिमा के दिन वायु की दिशा को देखकर ऋतु का भविष्य कहते है । ⊙पुत्र = पु० हनुमान् । भीमसेन । ⊙बाण = पु० वह बाण जिसके चलाने से हवा वेग से चलने लग । ⊙वाहन = पु० अग्नि । ⊙सुत = पु० हनुमान् । भीमसेन ।

पवनाश, पवनाशन पवनाशी—पुं० साँप ।

पवनास्त्र—पु० एक पौराणिक अस्त्र जिसके चलाने से तेज हवा चलने लगती थी ।

पवनी—स्त्री० गावो मे रहनेवाली छोटी जाति की गरीब प्रजा जो अपने निर्वाह के लिये ऊँची जाति के समृद्ध गाँववालो से नियमित रूप से कुछ पाती है (जैसे, नाऊ, बारी, धोबी) । दे० 'पौना' ।

पवमान—पु० [सं०] पवन, हवा । गार्हपत्य अग्नि । वि० पवित्र करनेवाला ।

पवर, पवरी†—स्त्री० दे० 'पँवरि' ।

पवर्ग—पुं० [सं०] देवनागरी वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग जिसमे प, फ, ब, भ, म ये पाँच अक्षर हैं ।

पवाँर—पु० दे० 'परमार' ।

पवाँरना†—सक० फेंकना, गिराना ।

पवाई—स्त्री० एक पैर का जूता । चक्की का एक पाट ।

पवाड़ा—पुं० दे० 'पँवाड़ा' ।

पवाना—सक० [अक०] पाना, भोजन करना । खिलाना, भोजन कराना ।

पयार—पुं० एक प्रकार का छद ।

पवि—पुं० [सं०] वज्र । बिजली, गाज । वाक्य । सेहुँड । रास्ता (डिंगल) ।

पवित्ताई(पु)—स्त्री० दे० 'पवित्रता' ।

पवित्तर—वि० दे० 'पवित्र' ।

पवित्र—वि० [सं०] जो गदा, मैला या खराब न हो, शुद्ध, निर्मल । पु० मेह, वर्षा । कुशा । ताँबा । जल । दूध । यज्ञोपवीत, जनेऊ । शहद । कुशा की बनी हुई पवित्री जिसे श्राद्धादि मे उँगलियो मे पहनते हैं । विष्णु । महादेव । ⊙ता = स्त्री० पवित्र या शुद्ध होने का भाव स्वच्छता । पवित्रात्मा—वि० [सं०] शुद्ध आत्मा या अन्त करणवाला ।

पवित्रित—वि० शुद्ध या निर्मल किया हुआ ।

पवित्रा—स्त्री० [सं०] तुलसी । हल्दी । पीपल । रेशमी माला जो कुछ धार्मिक कृत्यों के समय पहनी जाती है ।

पवित्री—स्त्री० कुश का बना छल्ला जो कर्मकांड के काम करते समय अनामिका में पहना जाता है

पशम—स्त्री० बढ़िया मुलायम ऊन जिससे दुशाले और पशमीने आदि बनते हैं । गुप्तांगों पर के बाल, झांट । बहुत ही तुच्छ वस्तु ।

पशमीना—पु० पशम । पशम का बना हुआ कपड़ा ।

पशु—पुं० [सं०] चार पैरों का प्राणी (कुत्ता बिल्ली, घोड़ा इत्यादि), चौपाया । जीव मात्र प्राणी (शैवदर्शन); जैसे पशुपति । मूर्ख, अज्ञानी । देवता । यज्ञ । ⊙ता = स्त्री० पशु का भाव । जड़ता, मूर्खता और औद्धत्य । ⊙त्व = पु० दे० 'पशुता' । ⊙धर्म = पु० पशुओं का सा आचरण, मनुष्य के लिये निंद्य व्यवहार । ⊙पति = पुं० जीवों का मालिक शिव, महादेव । अग्नि । ओषधि । ⊙पाल = पुं० पशुओं को पालनेवाला, पशुओं का रक्षक । ⊙भाव = पु० पशुत्व, जानवरपन । तंत्र में मंत्र के साधन के तीन प्रकारों में से एक । ⊙राज = पु० सिंह ।

पशुपतास्त्र—पु० [सं०] महादेव का शूलास्त्र ।

पश्चात्—अव्य० [सं०] पीछे से, फिर, अनंतर । ⊙ताप—पुं० किए हुए अनुचित या न कर पानेवाले उचित काम पर मानसिक दु:ख या चिंता, पछतावा । ⊙तापी = पु० [सं०] पछतानेवाला ।

पश्चानुताप—पु० [सं०] पश्चात्ताप ।

पश्चिम—वि० [सं०] जो पीछे से उत्पन्न हुआ हो, अंतिम । पुं० वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है, पश्चिम । ⊙वाहिनी = वि० पश्चिम की ओर बहनेवाली (नदी आदि) । ⊙सागर = पु० यूरोप अफ्रिका और अमेरिका के बीच का समुद्र, ऐटलांटिक महासागर ।

पश्चिमा—स्त्री० पश्चिम दिशा । पश्चिमाचल—पुं० वह कल्पित पर्वत जिसकी आड़ में सूर्य का छिपना कहा जाता है, अस्ताचल । पश्चिमी—वि० पश्चिम की ओर का । पश्चिम संबंधी, पश्चिम का । पश्चिमोत्तर—वि० पश्चिम और उत्तर के बीच का । पुं० पश्चिम और उत्तर का कोना, वायु कोण ।

पश्तो—स्त्री० भारत की आर्यभाषाओं में से एक देशी भाषा जो पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर सीमा प्रदेश से अफगानिस्तान तक बोली जाती है । इसमें फारसी के शब्द बहुत हैं ।

पश्म—स्त्री० [फा०] दे० 'पशम' ।

पश्मीना—पु० [फा०] दे० 'पशमीना' ।

पश्यती—स्त्री० [सं०] नाद की दूसरी अवस्था या स्वरूप जब वह मूलाधार से उठकर हृदय में जाता है ।

पश्यतोहर—पुं० [सं०] वह जो आँखों के सामने से चीज चुरा ले (सुनार आदि) ।

पश्वाचार—पु० [सं०] तांत्रिकों के अनुसार कामना और संकल्पपूर्वक वैदिक रीति से देवी का पूजन । तंत्रसाधना के दिव्य, वीर और पशु तीन रूपों में से कलियुग में विहित केवल अंतिम रूप ।

पष—पु० पख, डैना । तरफ, ओर । पक्ष, पाख ।

पषनियां(पु)—पुं० देखनेवाला, तमाशबीन ।

पषा—पुं० दाढ़ी, श्मश्रु ।

पषाण, पषान—पुं० दे० 'पाषाण' ।

पषारना(पु)†—सक० धोना ।

पसंघा†—पुं० वह बोझ जिसमें तराजू के पल्लों का बोझ बराबर करने के लिये हलके पल्ले में बांध या रख देते हैं, पासंग । वि० बहुत थोड़ा या कम ।

पसंती(पु)—स्त्री० दे० 'पश्यंती' ।

पसंद—वि० [फा०] जो अच्छा लगे, रुचि के अनुकूल । स्त्री० अच्छा लगने की वृत्ति, अभिरुचि ।

पसनी†—स्त्री० अन्नप्राशन नामक संस्कार जिसमें नवजात शिशु को पहले पहल अन्न खिलाया जाता है ।

पसर—पुं० गहरी की हुई हथेली, करतलपुट। पुं० विस्तार, फैलाव। ⊙ना = अक० आगे की ओर बढना, फैलना। विस्तृत होना, बढना। पैर फैलाकर लेटना। **पसराना**—सक० दूसरे को पसारने मे प्रवृत्त करना। **पसरौहाँ**—वि० जो पसारता हो, फैलानेवाला।

पसरहट्टा—पुं० वह बाजार जिसमे पसारियो आदि की दूकानें हों।

पसली—स्त्री० मनुष्यों और पशुओ आदि के शरीर मे छाती पर के पजर की आडी और गोलाकार हड्डियो मे से कोई हड्डी। मु०—हड्डी~तोड़ना = बहुत मारना पीटना।

पसाउ†Ⓟ पुं०—प्रसाद, प्रसन्नता, कृपा।

पसाना—सक० भात मे से मॉड निकालना। पसेव निकालना या गिराना। Ⓟ+अक० प्रसन्न होना।

पसार—पुं० प्रसार, फैलाव। विस्तार, लबाई-चौडाई। ⊙ना = सक० आगे की ओर बढाना, फैलाना। **पसारा**—पुं० दे० 'पसार'।

पसारी—पु० दे० 'पसारी'।

पसाव, पसावन—पुं० पसाने पर निकलनेवाला पदार्थ, मॉड।

पसाहनⓅ—पु० अगराग।

पसिजर—पु० रेल या जहाज आदि का यात्री। स्त्री० मुसाफिरो के लिये वह गाड़ी जो हर स्टेशन पर ठहरती चलती है।

पसितⓅ—वि० बँधा हुआ, बाँधा हुआ।

पसीजना—अक० पदार्थ मे मिले हुए द्रव अश का रिस रिसकर बाहर निकलना। चित्त मे दया उत्पन्न होना।

पसीना—पु० वह द्रव जो परिश्रम करने अथवा गरमी लगने पर स्तनपायियो के चमडे से निकलने लगता है, प्रस्वेद। मु०—पसीने की कमाई=परिश्रमपूर्वक कमाया हुआ धन। पसीने पसीने होना = पसीने से तर होना।

पसुरीⓅ—स्त्री० दे० 'पसली'।

पसू—पु० दे० 'पशु'।

पसूज—स्त्री० वह सिलाई जिसमे सीधे तोपे भरे जाते हैं। ⊙ना = सक० सीना, सिलाई करना।

पसेउ†—पुं० दे० 'पसेव'।

पसेरी—स्त्री० पांच सेर का बाट, पसेरी।

पसेव—पु० किसी चीज मे से रिसकर निकला हुआ जल। पसीना।

पसोपेश—पु० [फा०] आगा पीछा, हिचक। हानि लाभ, भला बुरा परिणाम।

पस्त—वि० [फा०] हारा हुआ। थका हुआ। दबा हुआ। ⊙कद = वि० नाटा, बौना। ⊙हिम्मत = वि० भीरु, डरपोक।

पहँⓅ—अव्य० निकट, पास। से।

पहँसल—स्त्री० हँसिया के आकार का तरकारी काटने का एक औजार।

पहⓅ†—स्त्री० दे० 'पौ'।

पहचान—स्त्री० पहचानने की क्रिया या भाव। किसी का गुण, मूल्य योग्यता जानने की क्रिया या भाव। लक्षण, निशानी। भेद या अतर समझने की शक्ति विवेक, तमीज (जैसे, खरे खोटे की पहचान)। जान पहचान, परिचय। ⊙ना = सक० देखते ही जान लेना कि यह कौन व्यक्ति या क्या वस्तु है, चीन्हना। किसी वस्तु के रूप रग या शक्ल-सूरत से परिचित होना। अतर समझना या करना, बिलगाना। योग्यता या विशेषता से अभिज्ञ होना।

पहटना—सक० पीछा करना, खदेडना। धार को रगडकर तेज करना।

पहनⓅ—पु० दे० 'पाहन'।

पहनना—सक० शरीर पर धारण करना (कपडे या गहने के लिये)। **पहनाना**—सक० किसी को कपडे, आभूषण आदि धारण कराना। **पहनाई**—स्त्री० पहनने की मजदूरी या उजरत। **पहनावा**—पु० पहनने के कपडे, पोशाक। सिर से पैर तक के शरीर के किसी अग के ऊपर पहनने के सब कपडे, पाँचो कपडे। पहनने का ढग या चाल।

पहपट—स्त्री० एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ गाया करती हैं। शोरगुल, हल्ला। झगडा फसाद। बदनामी या अपवाद का शोर। छल, धोखा। ⊙बाज = पु०

[फा०] शरारती, झगडालू। ठग, धोखेबाज। ⊙हाई† = स्त्री० झगडा कराने या लगानेवाली (स्त्री)।

पहर—पु० एक दिन का चतुर्थांश, तीन घंटे का समय। जमाना, युग।

पहरना—सक० दे० 'पहनना'।

पहरवाⓅ—पु० दे० 'पहरेदार'।

पहरा—पु० पैर रखने का फल, आ जाने का शुभ या अशुभ प्रभाव (स्त्रियो मे)। किसी व्यक्ति या सामान के विषय मे यह देख भाल कि वह निर्दिष्ट स्थान से हटने या भागने न पाए, चौकी, निगहवानी। निर्दिष्ट स्थान मे किसी वस्तु या व्यक्ति की रक्षा का कार्य, रखवाली। उतना समय जितने मे एक रक्षकदल को रक्षा-कार्य करना पडता है, तैनाती। वे रक्षक या चौकीदार जो एक समय मे काम कर रहे हो, गारद। चौकीदार का गश्त या फेरा। चौकीदार की आवाज। पहरे मे रहने की स्थिति, हिरासत, नजरबंदी। Ⓟ†समय, युग, जमाना। मु०~देना = रखवाली करना। ~बदलना = नया रक्षक नियुक्त करके पुराने को छुट्टी देना, रक्षक बदलना। ~बैठना = किसी वस्तु या व्यक्ति के आस पास रक्षक बैठाया जाना। **पहरे में देना या रखना** = हिरासत में देना, हवालात भेजना। **पहरे में होना** = हिरासत मे होना, नजरबंद होना। **पहरेदार**—पुं० पहरा देनेवाला चौकीदार।

पहराना†—सक० दे० 'पहनाना'।

पहरायतⓅ—पुं० पहरेदार।

पहरावन—पुं० पहनावा, पोशाक। दे० 'पहरावनी'। **पहरावनी**—स्त्री० वह पोशाक जो कोई व्यक्ति किसी पर प्रसन्न होकर उसको दे। किसी बड़े द्वारा छोटे को दिया हुआ पहनावा, खिलअत।

पहरी—पुं० पहरेदार, चौकीदार।

पहरुआ, पहरू†—पुं० दे० 'पहरेदार'।

पहल—पुं० किसी घन पदार्थ के तीन या अधिक कोने अथवा कोनो के बीच की समतल भूमि, बगल, पहलू। धुनी हुई रुई या ऊन की मोटी और कुछ कडी तह, जमी हुई रुई अथवा ऊन। रजाई, तोशक आदि से निकाली हुई पुरानी रुई जो दबने के कारण कडी हो जाती है। Ⓟतह परत। किसी कार्य का अपनी ओर से आरंभ, छेड़।

पहलवान—पुं० [फा०] कुश्ती लडनेवाला बली पुरुष, मल्ल। बलवान् और डील-डौलवाला। **पहलवानी**—स्त्री० [फा०] पहलवान होने का भाव, काम या पेशा।

पहलवी—पुं० दे० 'पह्लवी'।

पहला—पुं० आरंभ का, प्रथम। **पहले**—अव्य० आरंभ मे, शुरू मे। देश क्रम मे प्रथम, स्थिति मे पूर्व। आगे, बीते समय मे। **पहले पहल** = अव्य० सबसे पहले, सर्वप्रथम। **पहलौठा**—वि० पहली बार के गर्भ से उत्पन्न (लडका)। **पहलौठी**—स्त्री० पहले पहल बच्चा जनना, प्रथम प्रसव।

पहलू—पुं० [फा०] बगल और कमर के बीच का वह भाग जहाँ पसलियाँ होती हैं, पार्श्व। दायाँ अथवा बायाँ भाग, बाजू, बगल। करवट, दिशा, तरफ। किसी वस्तु के पृष्ठ देश पर का समतल कटाव, पहल, गुण, दोष आदि की दृष्टि से किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अंग, पक्ष।

पहँटना—सक० तेज करना।

पहाऊँⓅ—पुं० सबेरे।

पहाड़—पुं० पत्थर, चूने, मिट्टी आदि की चट्टानो का ऊँचा और बड़ा समूह जो प्राकृतिक रीति से बना हो और पृथ्वीतल से निरंतर ऊपर उठा हुआ हो, पर्वत। बहुत बड़ा ढेर, ऊँची राशि। बहुत भारी चीज। वह जिसको समाप्त या शेष न कर सके। अति कठिन कार्य। मु०~ उठाना = भारी काम सिर पर लेना। ~कटना = बड़ा भारी और कठिन काम हो जाना। ~काटना = असंभव काम कर डालना। **~टूटना या टूट पड़ना** = अचानक महान् संकट उपस्थित होना। **~से टक्कर लेना**—जबरदस्त से मुकाबिला करना। **पहाड़ी**—वि० जो पहाड पर रहता

मा होता है। जिसका सबंध पहाड़से हो। स्त्री० छोटा पहाड़। पहाड के लोगों की गाने की एक धुन। एक रागिनी।

पहाड़ा—किसी अंक के गुणनफलों की क्रमागत सूची या नकशा।

पहार, पहारू†—पु० पहरेदार।

पहिचान—स्त्री० दे० 'पहचान'। **पहिचानि**(पु)—स्त्री० दे० 'पहचान'।

पहिति, पहिती(पु)†—स्त्री० पकी हुई दाल।

पहिनना—सक० दे० 'पहनना'।

पहियाँ(पु)†—अव्य० दे० 'पहँ'।

पहिया—पुं० गाडी अथवा कल मे लगा हुआ वह चक्कर जो अपनी धुरी पर घूमता है और जिसके घूमने पर गाडी या कल भी चलती है, चक्का।

पहिरना†—सक० दे० 'पहनना'।

पहिरावनी—स्त्री० दे० 'पहनावा'।

पहिल†—वि० दे० 'पहिला'। **पहिला**—वि० दे० 'पहला'। प्रथम प्रसूता, पहले पहल व्याई हुई। **पहिले**—अव्य० दे० 'पहले'।

पहोति†(पु)—स्त्री० दे० 'पहिती'।

पहुँच—स्त्री० किसी स्थान तक अपने को ले जाने की क्रिया या शक्ति। किसी स्थान तक लगातार फैलाव। गुजर, पैठ। पहुँचाने की सूचना। किसी विषय को समझने या ग्रहणकरने की शक्ति। अभिज्ञता की सीमा, दखल। ⊙ना=अक० एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान मे प्रस्तुत या प्राप्त होना। किसी स्थान तक लगातार फैलना। एक हालत से दूसरी हालत हो जाना। घुसना, पैठना। ताडना, समझना। समझने में समर्थ होना। प्राप्त होना। मिलना। अनुभव मे आना। समकक्ष होना, तुल्य होना। मु०—पहुँचा हुआ=जिसे सब कुछ मालूम हो। दक्ष, निपुण। ईश्वर के निकट पहुँचा हुआ, सिद्ध। **पहुँचनेवाला**—जानकर, भेद या रहस्य जानने मे समर्थ। **पहुँचाना**—सक० [अक० पहुँचना] उपस्थित कराना, ले जाना। किसी के साथ इसलिये जाना जिसमें वह अकेला न पड़े। किसी को विशेष अवस्था तक ले जाना। प्रविष्ट कराना। कोई चीज लाकर या ले जाकर किसी को प्राप्त कराना। अनुभव कराना। समान बना देना।

पहुँचा—पु० कलाई, गट्टा

पहुँची—स्त्री० कलाई पर पहनने का एक आभूषण। युद्ध मे कलाई पर पहना जानेवाला एक आवरण।

पहुँ(पु)—स्त्री० दे० 'पौ'।

पहुड़ना—अक० दे० 'पौढना'।

पहुतना(पु)—अक० पहुँचना, उपस्थित होना।

पहुना†—पु० दे० 'पाहुना'। **पहुनाई**—स्त्री० पाहुना होने का भाव, अतिथि रूप मे कहीं जाना या आना। मेहमानदारी।

पहुप(पु)†—पुं० दे० 'पुष्प'।

पहुमी—स्त्री० दे० 'पुहमी'।

पहुला—पु० कुमुदिनी।

प्रहेली—स्त्री० किसी वस्तु या विषय का ऐसा वर्णन जो दूसरी वस्तु या विषय का वर्णन जान पडे और बहुत सोच विचार के बाद असल या ठीक वस्तु या विषय पर घटाया जा सके, बुझौवल। घुमाव फिराव की बात, समस्या। मु०~बुझाना=अपने मतलब को घुमा फिराकर कहना।

पह्लव—पु० [सं०] एक प्राचीन जाति, प्रायः प्राचीन पारसी या ईरानी। एक प्राचीन देश जो पह्लव जाति का निवास स्थान था। वर्तमान पारस या ईरान का अधिकांश। **पह्लवी**—स्त्री० अति प्राचीन पारसी या जेंद अवस्ता की भाषा और आधुनिक फारस के मध्यवर्ती काल की भाषा।

पाँ, पाँइ(पु)—पुं० पाँव।

पाँइता(पु)—पु० दे० 'पाँयता'।

पाँईं बाग—पु० [फा०] महलो के चारों ओर का छोटा बाग जिसमे राजमहल की स्त्रियाँ सैर करने जाती हैं।

पाँऊँ†—पु० पाँव, पैर।

पाँक—पु० कीचड, पक।

पाँख†—पु० पंख, पर। स्त्री० फूलो की पँखड़ी, पुष्पदल।

पाँखड़ी—स्त्री० दे० 'पाँखडी'।

पाँखी—स्त्री० पतिगा । पक्षी, चिडिया ।

पाँखुरी†—स्त्री० दे० 'पँखडी' ।

पाँगा, पाँगा नोन—पु० समुद्री नोन ।

पाँच—वि० जो गिनती मे चार और एक हो । पुं० पाँच की सख्या या अक, ५ । बहुत से लोग, जाति या समाज के मुखिया लोग, पच । दस⊙ = वि० कुछ लोग । मु०—**पाँचो ऊँगलियाँ घी मे होना** = सब तरह का लाभ या आराम होना । **पाँचो सवारो मे नाम लिखाना** = औरो के साथ अपने को भी श्रेष्ठ गिनाना ।

पाँचई—स्त्री० पचमी तिथि ।

पाँचजन्य—पु० [सं०] कृष्ण के बजाने का शख जिसे उन्होंने पाचजन्य नामक असुर को मारकर लिया था । विष्णु के शख का नाम । अग्नि ।

पाँचभौतिक—पु० [सं०] पाँचो भूतो या तत्वों से बना हुआ शरीर ।

पाँचाल—पु० [सं०] दे० 'पचाल' । वि० पचाल प्रदेश का रहनेवाला । पचाल प्रदेश सबधी । **पाचाली**—स्त्री० [सं०] पाडवो की स्त्री । द्रौपदी । गुडिया, कपडे की पुतली । साहित्य मे एक प्रकार की रीति या वाक्यरचना प्रणाली जिसमे बडे बडे पाँच छह समासो से युक्त और काति-पूर्ण पदावली होती है । इसका व्यवहार सुकुमार और मधुर वर्णन मे होता है । कुछ लोग गौडी और वैदर्भी वृत्तियो के मेल को भी पाचाली कहते हैं । स्वर-साधन की प्रणाली ।

पाँचैं†—स्त्री० पक्ष की पाँचवी तिथि । पचमी ।

पाँजना—सक० धातु के टुकडो को टाँके लगाकर जोडना, टाँका लगाना, झालना ।

पाँजर—पु० बगल और कमर के बीच का वह भाग जिसमे पसलियाँ होती हैं । पसली । पास, बगल ।

पाँजी—स्त्री० नदी का इतना सूख जाना कि उसे हलकर पार कर सकें ।

पाँझ—वि० दे० 'पाँजी' ।

पांडर—[सं०] सफेद रग । कुद वृक्ष और उसका फूल । एक जाति का पक्षी ।

पाडव—पु० [सं०] कुती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पाडु के पाँचों पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सह-देव । एक प्राचीन देश जो वितस्ता (झेलम) नदी के तीर पर था । इस प्रदेश के निवासी । ⊙नगर = पु० दिल्ली ।

पाडित्य—पु० [सं०] पडित होने का भाव, विद्वता ।

पाडु—पु० [सं०] पाडुफली, पारली । परमल । कुछ लाली लिए पीला रग । सफेद हाथी । सफेद रग । पीला रग । एक रोग का नाम जिसमे यकृत विकार के कारण रक्त के दूषित हो जाने मे शरीर पीले रग का हो जाता है । वि० पीला । श्वेत, सफेद । ⊙रग = पु० विष्णु का एक अवतार । एक प्रकार का साग जो तिक्त, लघु और कृमि तथा कफनाशक होता है । औं का पेड । कबूतर । बगला । सफेद खडिया । कामला रोग । सफेद कोढ । ⊙लिपि = स्त्री० किसी पुस्तक, लेख आदि की हाथ की लिखी प्रति । लेख आदि का वह पहला रूप जो घटाने बढाने या काटने छाँटने आदि के लिये तैयार किया जाय, मसौदा । ⊙लेख = पु० दे० 'पांडुलिपि' ।

पांडुर—वि० [सं०] पीला । सफेद ।

पांडे—पुं० सरयूपारी, कान्यकुब्ज और गुज-राती आदि ब्राह्मणो की एक शाखा । कायस्थो की एक शाखा । पंडित, विद्वान् । गीदड ।

पांडेय—पुं० दे० 'पांडे' ।

पाँति—स्त्री० कतार, पगत । समूह । एक साथ भोजन करनेवाले बिरादरी के लोग ।

पांथ—वि० [सं०] पथिक । वियोगी, विरही । ⊙निवास = पु० सराय, चट्टी । ⊙शाला = स्त्री० सराय, धर्मशाला ।

पाँमरी—स्त्री० दुपट्टा । 'साँमरी पाँमरी की दै खुही······चली साँमरी ह्वै कै' (जगद्विनोद २४३) ।

पाँयँ(पु)†—पु० चरण, पैर ।

पाँयँचा—पुं० [फा०] पाखानो आदि मे बना हुआ वह स्थान जिसपर पैर रखकर शौच

से निवृत्त होने के लिये बैठते हैं। पायजामे की मोहरी जिससे पैर ढका जाता है।

पांयता—पु० पलग, खाट या विस्तर का वह भाग जिसकी ओर पैर किए जाते हैं, पैताना।

पांव—पु० वह अग जिससे चलते है, पैर। मु०—(किसी काम या वात मे) ~**अड़ाना** = किसी बात मे व्यर्थ समिलित होना, फजूल दखल देना। ~**उखड़ जाना** = ठहरने की शक्ति या साहस न रह जाना, लडाई में न ठहरना। ~**उठाना** = चलने के लिये कदम वढाना। जल्दी जल्दी पैर आगे रखना। ~**कट जाना** = आने जाने की शक्ति या योग्यता न रहना। ~**का लटका** = पैर रखने की आहट, चलने का शब्द। ~**गाडना** = पैर जमाना, जमकर खड़ा रहना। लडाई मे स्थिर रहना। ~**घिसना** = चलते चलते पैर थकना। ~**जमाना** = पैर ठहरना, स्थिर भाव मे खडा होना। दृढता रहना, हटने या विचलित होने की अवस्था न आना। ~**डिगना** = स्थिर न रहना, विचलित होना। ~**तले की मिट्टी निकल जाना** = (किसी भयकर बात को सुनकर) स्तब्ध सा हो जाना, होश उड जाना। ~**तोड़ना** = वहुत चल कर पैर थकाना। बहुत दौड धूप करना, इधर उधर बहुत हैरान होना। ~**तोड कर बैठना** = कही न जाना, अचल होना। हारकर बैठना। (किसी के) ~**धरना** = पैर छूकर प्रणाम करना। दीनता से विनय करना। **बुरे पथ पर**~**धरना** = बुरे काम मे प्रवृत्त होना। ~**धो धोकर पीना** = बहुत अधिक आदर समान करना। ~**पकड़ना** = विनती करके किसी को कही जाने से रोकना। पैर छूना, बडी दीनता और विनय करना। पैर छूकर नमस्कार करना। ~**पखारना** = पैर धोना। ~**पड़ना** = पैरो पर गिरना, साष्टाग दडवत् करना। अत्यत दीनता से विनय करना। ~**पर गिरना** = **दे०** 'पांव पडना'। ~**पसारना** = पैर फैलाना। आराम से पडना या सोना। मरना। आडवर वढाना, ठाट बाट करना। ~**चलना** = पैदल चलना। ~**पीटना** = बेचैनी से पैर पटकना। घोर प्रयत्न करना, हैरान होना। ~**पूजना** = वडा आदर सत्कार करना, वहुत पूज्य मानना। विवाह मे कन्यादान के समय कन्याकुल के लोगो का वर का पूजन करना और कन्यादान मे योग देना। ~**फूंक फूंक कर रखना** = वहुत वचाकर काम करना, बहुत सावधानी से चलना। ~**फैलाना** = अधिक पाने के लिये हाथ वढाना, पाकर भी अधिक का लोभ करना। वच्चो की तरह अडना, जिद करना। ~**बढ़ाना** = चलने मे पैर आगे रखना। अधिक वढना, अतिक्रमण करना। ~**बाहर निकालना** = ऐसी चाल चलना जो अपने से ऊंचे पद और वित के लोगो को शोभा न दे, इतराकर चलना। वे कहा होना, स्वेच्छाचारी होना। ~**भर जाना** = थकावट से पैर मे बोझ सा मालूम होना। ~**भारी होना** = गर्भ रहना। रोपना = प्रतिज्ञा करना। ~**रोपना** = प्रतिज्ञा करना। ~**लगना** = प्रणाम करना। विनती करना। ~**से दावकर रखना** = वरावर अपने पास रखना। वडी चौकसी रखना। ~**सो जाना** = पैर सुन्न या स्तब्ध हो जाना। (किसी के) ~**न होना** = ठहरने की शक्ति या साहस न होना, दृढता न होना। ~**धरती पर**~**न रखना** = वहुत घमड करना। फूले अग न समाना। **पांवड़ा**—**पुं०** वह कपडा या विछौना जो आदर के लिये किसी मार्ग मे विछाया जाता है, पायदाज। **पांवडी**—खडाऊँ। जूता।

पांवर(५)†—वि० दे० 'पामर'।

पांवरी—**स्त्री०** दे० 'पांवडी' सोपान, सीढी। पैर रखने का स्थान। जूता, खडाऊँ। पौरी, ड्योढी। वैठक, दालान।

पांशव—पुं० [सं०] रेह का नमक।

पांशु—**स्त्री०**[सं०] धूलि, रज। बालू। गोबर

की खाद। एक प्रकार का कपूर। ⊙ज = पुं० नोनी मिट्टी से निकाला हुआ नमक।

पाशुल—वि० लपट, व्यभिचारी। मैला जिसपर गर्द या धूलि पडी हो। पांशुला—स्त्री० [सं०] कुलटा, व्यभिचारिणी।

पांस—स्त्री० सडी गली चीजें जो खेतो को उपजाऊ करने के लिये उनमे डाली जाती है, खाद। किसी वस्तु को सडाने पर उठा हुआ खमीर। शराब उतारा हुआ महुआ।

पाँसना†—सक० खेत मे खाद देना।

पाँसा—पुं० हाथी दांत या हड्डी का चार पाँच अँगुल लबे वत्ती के आकार का चौपहल टुकडा जिससे चौसर खेलते हैं और जिसमें प्रत्येक पहल पर बिंदु बने रहते हैं। मु०~उलटना = किसी प्रयत्न का उलटा फल होना।

पासु—स्त्री० दे० 'पाशु'।

पांसुरी†—स्त्री० दे० 'पसली'।

पाँही(पु)†—क्रि० वि० पास, निकट।

पा, पाइ(पु)—पुं० पैर, पाँव।

पाइक(पु)—पुं० दे० 'पायक'।

पाइतरी(पु)†—स्त्री० दे० 'पैताना'।

पाइमाल—वि० पददलित, कुचला हुआ, विपन्न।

पाइल(पु)—स्त्री० दे० 'पायल'।

पाई—स्त्री० एक ही घेरे मे नाचने या चलने की क्रिया। एक छोटा सिक्का जो एक पैसे का तीसरा भाग होता है। एक पैसा। वह छोटी सीधी लकीर जो किसी संख्या के आगे लगाने से इकाई का चतुर्थांश प्रकट करती है (जैसे, ४। अर्थात् सवा चार)। दीर्घ आकारसूचक मात्रा, पूर्ण विराम सूचित करनेवाली खडी रेखा। बेंत आदि के ताने सूत को फैलाकर मांजने के लिये बनाया हुआ जुलाहो का एक खास प्रकार का ढांचा, टिकडी। घोडो की वह बीमारी जिसमे उनके पैर सूज जाते हैं और वे चल नही पाते। आभूषण ने की पिटारी। छापे के घिसे हुए रद्दी [illegible]प। एक छोटा लबा कीडा जो धान [illegible]। खराब कर देता है। मु०~करना = पाई पर फैले हुए ताने को कूँची से मांजना।

पाईता—पुं० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से एक मगण और एक सगण होता है।

पाउ(पु)†—पुं० दे० 'पाँव'।

पाउ—पुं० पैर, पाँव

पाउडर—पु० [अं०] चूर्ण, बुकनी। चेहरे या शरीर पर लगाने का चूर्ण।

पाक—पुं० [सं०] पकाने की क्रिया, रीधना। पकने या पकाने की क्रिया या भाव। रसोई, पकवान। वह औषध जो चाशनी मे मिलाकर बनाई जाय। खाए हुए पदार्थ के पचने की क्रिया। वह खीर जो श्राद्ध मे पिंडदान के लिये पकाई जाती है। एक राक्षस जिसे इद्र ने मारा था। ⊙ना† = अक० दे० 'पकना'। ⊙यज्ञ = पुं० वृषोत्सर्ग और गृहप्रतिष्ठा आदि के समय किया जानेवाला होम जिसमे खीर की आहुति दी जाती है। पच महायज्ञो मे ब्रह्मयज्ञ के अतिरिक्त अन्य चार यज्ञ—वैश्वदेव, होम, वलिकर्म, नित्य श्राद्ध और अतिथि भोजन। ⊙शाला = स्त्री० रसोई बनाने का घर। ⊙शासन = पुं० इद्र। ⊙स्थली—स्त्री० दे० 'पक्वाशय'। वि० [फा०] पवित्र, शुद्ध। पापरहित निर्मल। समाप्त। ⊙दामन = वि० सच्चरित्रा, साध्वी, पतिव्रता। मु०~झगडा ~करना = किसी भारी कार्य को समाप्त कर डालना। झगडा तै करना, बाधा दूर करना। मार डालना।

पाकट—पुं० दे 'पॅकेट'। स्त्री० जेब, खीसा। ⊙मार = पुं० दूसरे की जेब काटकर पैसे चुरानेवाला, जेबकट। मु०~गरम करना = घूस लेना, घूस देना। ~गरम होना = पास में काफी धन होना।

पाकठ†—वि० पका हुआ। तजरबेकार। बली, मजबूत।

पाकड—पुं० दे० 'पाकर'।

पाकर—पुं० प्रसिद्ध वृक्ष जो पचवटी में माना जाता है। इसकी छाया बहुत घनी होती है। इसकी छाल से बारीक और मुलायम सूत निकलते हैं। नरम फलो को प्राय जगली और देहाती लोग खाते हैं, पाखर।

पाकरी—स्त्री० दे० 'पाकर'।

पाक—वि० दे० 'पक्का'।

पाकिस्तान—पु० [फा०] अँग्रेजो के अधीन भारतवर्ष के बलूचिस्तान, पूर्वी बगाल, उत्तरपश्चिमी सीमात प्रदेश, पश्चिमी पंजाब और सिध को मिलाकर १६४७ ई० मे बनाया हुआ मुसलमानी बहुमत का एक स्वतत्र राज्य जिसका क्षेत्रफल ३, ६५, ६०७ वर्गमील है।

पाकेट—पु० [अं०] जेब, खीसा।

पाक्य—वि० [स०] पचने योग्य।

पाक्षिक—वि० [सं०] पक्ष या पखवाडे से संबध रखनेवाला। पक्षवाहा, तरफदार। दो मात्राओं का (छद)।

पाखंड—पु० वेदविरुद्ध आचार। ढोग, आडंबर। छल, धोखा। नीचता, शरारत। **मु०**~**फैलाना** = किसी को ठगने के लिये उपाय रचना। **पाखडी**—वि० वेदविरुद्ध आचार करनेवाला। बनावटी धार्मिकता दिखानेवाला, धोखेबाज, धूर्त।

पाख—पुं० पद्रह दिन, पखवाडा। मकान की चौडाई की दोवारो के वे भाग जो लबाई की दीवारो से त्रिकोण के आकार मे अधिक ऊँचे होते हैं और जिनपर बँडेर रहते हैं। पख, पर।

पाखर—स्त्री० लोहे की वह झूल जो लडाई में हाथी या घोडे पर डाली जाती है। राल चढाया हुआ टाट या उससे बनी पोशाक। पु० दे० 'पाकर'।

पाखा—पु० कोना, छोर। दे० 'पाख' (मकान से सबधित)।

पाखान(पु)†—पु० दे० 'पाषाण'।

पाखाना—पु० [फा०] वह स्थान जहाँ मल किया जाय। मल, गू, गलीज।

पाग—स्त्री० पगडी। पु० दे० 'पाक'। वह शीरा या चाशनी जिसमे मिठाइयाँ आदि डुबाकर रखी जाती है। चीनी के शीरे मे पकाया हुआ फल आदि। वह दवा या पुष्टई जो शीरे मे पकाकर बनाई जाय। ~**ना** = सक० मीठी चाशनी मे सानना या लपेटना। तर करना, रँगना, अनुरजित करना। अक० अत्यत अनुरक्त होना।

पागल—वि० जिसका दिमाग ठीक न हो, बावला। क्रोध, शोक या प्रेम आदि के वेग के कारण जिसकी भला बुरा सोचने की शक्ति नष्ट हो गई हो, आपे से बाहर। मूर्ख, नासमझ। ~**खाना** = वह स्थान जहाँ पागल रखे जाते हैं और उनका इलाज किया जाता है। ~**पन** = वह मानसिक रोग जिससे मनुष्य की बुद्धि और इच्छा शक्ति आदि मे अनेक प्रकार के विकार होते है, उन्माद। मूर्खता।

पागुर—पु० दे० 'जुगाली'।

पाचक—वि० [सं०] पचाने या पकानेवाला। पु० वह औषध जो पाचन शक्ति को बढाने के लिये खाई जाती है। रसोइया। पांच प्रकार के पित्तो मे से एक। पाचक पित्त मे रहनेवाली अग्नि। **पाचन**—पुं० पचाना या पकाना। खाए हुए आहार का पेट मे जाकर शरीर के धातुओं के रूप मे परिवर्तन। वह औषधि जो पेट मे पडे आम अथवा अपक्व आहार को पचावे। प्रायश्चित्त। खट्टा रस। अग्नि। वि० पचानेवाला, हाजिम। ~**शक्ति** = स्त्री० शरीर की वह शक्ति जो भोजन को पचावे, हाजमा। **पाचना**(पु)—सक० अच्छी तरह पकाना, परिपक्व करना। **पाचीय**—वि० पचाने या पकाने योग्य। **पाचिका**—स्त्री० रसोईदारिन, रसोई बनानेवाली।

पाच्छाह†—पु० दे० 'बादशाह'।

पाच्य—वि० [स०] पचाने या पकाने योग्य, पचनीय।

पाछ—स्त्री० जतु या पौधे के शरीर पर छुरी की धार आदि मारकर किया हुआ हलका घाव। पोस्ते के डोढे पर नहरनी से लगाया हुआ चीरा जिसमे अफीम निकलती है। किसी वृक्ष पर उसका रस निकालने के लिये लगाया हुआ चीरा। पुं० पीछा, पिछला भाग। (पु)क्रि० वि० पीछे। ~**ना** = सक० छुरे या नहरनी आदि से रक्त, पछा या रस निकालने के लिये हलका चीरा लगाना, चीरना।

पाछल—वि० दे० 'पिछला'।
पाछा(पु)—पुं० दे० 'पीछा'।
पाछिल(पु)—वि० दे० 'पिछला'।
पाछी, पाछे(पु)—क्रि० वि० दे० 'पीछे'।
पाज—पुं० पाँजर। पक्ति, कतार। दीवार, बाँध।
पाजामा—पुं० [फा०] पैर मे पहनने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जिससे टखने से कमर तक का भाग ढका रहता है। मु०—पाजामे के बाहर होना = आपे से बाहर होना, मर्यादा भग करना।
पाजी(पु)—पु० पैदल सेना का सिपाही, प्यादा। रक्षक, चौकीदार। वि० दुष्ट, लुच्चा।
पाजेब—स्त्री० [फा०] स्त्रियो का एक गहना जो पैरो मे पहना जाता है, मजीर, नूपुर।
पाटंबर—पुं० रेशमी वस्त्र।
पाट—पु० रेशम। बटा हुआ रेशम, नख। रेशम के कीडे का एक भेद। पटसन के रेशे। सिंहासन, गद्दी। चौडाई, फैलाव। पीढा। वह शिला जिसपर धोबी कपडा धोता है। शिला, पटिया। चक्की के एक ओर का भाग। कोल्हू हाँकनेवाले के बैठने का चिपटा शहतीर। पैर रखकर पानी भरने के लिये कुएँ पर रखी हुई लकडी। ⊙महिषी = स्त्री० दे० 'पटरानी'। ⊙रानी = स्त्री० दे० 'पटरानी'।
पाटन—स्त्री० पाटने की क्रिया या भाव, पटाव। वह जो पाटकर बनाया जाय। मकान की पहली मजिल से ऊपर मजिलें। सर्प का विष उतारने का एक मत्र जो रोगी के कान के पास चिल्लाकर पढा जाता है।
पाटना—सक० [अक० 'पटना'] किसी गहराई को मिट्टी, कूडे आदि से भर देना। दो दीवारों के बीच मे या किसी गहरे स्थान के आर पार बल्ले आदि बिछाकर आधार बनाना, छत बनाना। सींचना।
पाटल—पु० [सं०] पाडर या पाढर का पेड, गुलाब।
पाटला—स्त्री [सं०] पाडर का वृक्ष। लाल लोध। दुर्गा का एक रूप। गुलाब। पु० [हिं०] एक प्रकार का बढिया सोना।
पाटली—स्त्री० [सं०] पाडर। पाडुफली। पटने की अधिष्ठात्री देवी। गाधि की पुत्री जिसके अनुरोध से प्राचीन पाटलीपुत्र नगर बसाया गया था।
पाटव—पु० [सं०] पटुता, कुशलता। दृढता, मजबूती। आरोग्य।
पाटवी—वि० पटरानी से उत्पन्न (राजकुमार)। रेशमी, कौशेय (वस्त्र)।
पाटसन—पु० दे० 'पटसन'।
पाटा—पुं० लकडी का पीढा। दो दीवारों के बीच सामान रखने के लिये बनाया हुआ स्थान।
पाटी—स्त्री० [सं०] परिपाटी, रीति। जोड, बाकी, गुणा आदि का क्रम। श्रेणी, पक्ति। लकडी की वह पट्टी जिसपर छात्र लिखने का अभ्यास करते हैं, तख्ती। पाठ, सबक। माँग के दोनो ओर कंघी द्वारा बैठाए हुए बाल, पट्टी। चारपाई के ढाँचे मे लबाई की ओर की पट्टी। चटाई। शिला, चट्टान। खपरैल की नरिया का प्रत्येक आधा भाग। मु०—पढ़ना = पाठ पढना। शिक्षा पाना।
पाटीर—पुं० [सं०] एक प्रकार का चदन।
पाठ—पुं० [सं०] पढने की क्रिया या भाव, पढाई। (किसी पुस्तक, विशेषत. धर्मपुस्तक को) नियमपूर्वक पढने की क्रिया या भाव। वह जो कुछ पढा या पढाया जाय। उतना अंश जो एक बार पढा जाय, सबक। किसी ग्रथ का खड, परिच्छेद। किसी पुस्तक या ग्रथ मे शब्दो या वाक्यो का क्रम या योजना। ⊙क = पुं० पढनेवाला, वाचक। पढानेवाला, अध्यापक। धर्मोपदेशक। गौड, सारस्वत, सरयूपारीण, गुजराती आदि ब्राह्मणों का एक वर्ग। ⊙दोष = पुं० पढने का वह ढग जो निद्य और वर्जित है (जैसे, कठोर स्वर से, विकृत या सानुनासिक या ठहर ठहरकर, अव्यक्त और अस्पष्ट उच्चारण के साथ, गाते या सिर आदि अंगो को हिलाते हुए पढना आदि)। ⊙भेद = पु० दे० 'पाठांतर'। ⊙शाला = स्त्री० वह स्थान जहाँ पढाया जाय, विद्यालय। मु०—पढ़ाना = अपने मतलब के लिये किसी को बहः

काना, पट्टी पढ़ाना। उलटा~पढ़ाना = कुछका कुछ समझा देना, बहका देना। पाठांतर—पुं० एक ही पुस्तक की भिन्न प्रतियों के लेख मे किसी विशेष स्थल पर भिन्न शब्द, वाक्य अथवा क्रम, पाठभेद। पाठ का भेद, पाठभिन्नता। पाठालय—पुं० पाठशाला। पाठावली—स्त्री० [हिं०] पाठों का समूह। पाठों की पुस्तक।

पाठन—पु० [सं०] पढाना, अध्यापन। पाठना(पु)—सक० दे० 'पढाना'।

पाठा—स्त्री० [सं०] पाढ नाम की लता जिसके छोटे और बडे दो भेद हैं और जिसका अनेक रोगो की दवा के रूप मे व्यापक प्रयोग होता है। पु० जवान और परिपुष्ट, मोटा तगड़ा, पट्ठा। जवान बैल, भैंसा या बकरा।

पाठी—पु० [सं०] पाठ करनेवाला, पढनेवाला (जैसे, वेदपाठी)। चीता, चित्रक वृक्ष।

पाठीन—पु० [सं०] मछली विशेष, पहिना।

पाठ्य—वि० [सं०] पढने योग्य। जो पढाया जाय।

पाड़—पुं० धोती आदि का किनारा। मचान। वह जाली जो कुएं के मुंह पर रहती है, चह। बांध, पुश्ता। वह तख्ना जिसपर खड़ा करके फांसी दी जाती है, तिकठी।

पाड़र—स्त्री० पाटल नामक वृक्ष।

पाड़ा—पु० पुरवा, महल्ला। भैंस का नर बच्चा, पड़वा।

पाढ़—पु० पाटा। वह मचान जिसपर फसल की रखवाली के लिये खेतवाला बैठता है। दस्तकारी, कला कौशल आदि की सामग्री तैयार करने के उपकरणो या यन्त्रो की एक इकाई (यूनिट)।

पाढ़त(पु)—स्त्री० जो कुछ पढा जाय। मन्त्र, जादू। पढने की क्रिया या भाव।

पाढर, पाढल—पु० पाडर का पेड।

पाढ़ा—पु०-एक प्रकार का हिरन, चित्रमृग। स्त्री० दे० 'पाठा'।

पाढ़ी—स्त्री० सूत की लच्छी। यात्रियो को पार करनेवाली नाव।

पाण—पु० [सं०] दाव। व्यापार। हाथ। प्रशंसा।

पाणि—पु० [सं०] हाथ, कर। ⊙ग्रहण = पु० विवाह की एक रीति जिसमे कन्या का पिता उसका हाथ वर के हाथ मे देता है। विवाह, ब्याह। ⊙ग्राहक = पु० पाणिग्रहण करनेवाला, पति। ⊙ज = पु० उंगली। नाखून। ⊙पीडन = पु० पाणिग्रहण, विवाह। क्रोध, पश्चात्ताप आदि के कारण हाथ मलना।

पाणिनीय—वि० [सं०] प्रसिद्ध संस्कृतवैयाकरण पाणिनि द्वारा रचित (ग्रंथ आदि)। पाणिनि का कहा हुआ। पाणिनिसंबंधी। पाणिनि को माननेवाला। ⊙दर्शन = पुं० पाणिनि का अष्टाध्यायी व्याकरण जिसके 'स्फोट' सिद्धांत के कारण 'सर्वदर्शनसंग्रह' कार ने उसे दर्शन माना है।

पाणी—पु० दे० 'पाणि'।

पातंजल—वि० [सं०] पतंजलि का बनाया हुआ (योगसूत्र या व्याकरण महाभाष्य) पु० पतंजलि कृत योगसूत्र। पतंजलि प्रणीत महाभाष्य (व्याकरण)। पातंजल योग साधनेवाला। ⊙दर्शन = पु० योग दर्शन। ⊙भाष्य = पु० महाभाष्य नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ। ⊙सूत्र = पु० योगसूत्र।

पातंजलीय—वि० [सं०] दे० 'पातंजल'।

पात—पु० [सं०] गिरने या गिराने की क्रिया या भाव, पतन। नाश, ध्वंस। पडना, जा लगना। खगोल में वह स्थान जहाँ नक्षत्रों की कक्षाएँ क्रांतिवृत्त को काटकर ऊपर चढती या नीचे आती हैं। राहु। (पु) [हिं०] पत्ता, पत्र। पातक—पु० नीचे गिरानेवाला काम, पाप, गुनाह। पातकी—वि० पातक करनेवाला, पापी। पातन—पुं० गिराने की क्रिया।

पातर(पु)†—स्त्री० पत्तल। वेश्या, रंडी। (पु)† वि० पतला, सूक्ष्म। क्षीण, बारीक। दुर्बल शरीर का, पतला। नीचे कुल का, अप्रतिष्ठित।

पातल—स्त्री० दे० 'पातर'।

पातव्य—वि० [सं०] रक्षा करने योग्य। पीने योग्य।

पातशाह—पु० दे० 'बादशाह'।

पाता⑤—पु० पत्ता, पर्ण। रक्षक, बचानेवाला।

पाताखत—पु० पत्र और अक्षत, तुच्छ या थोड़ी वस्तु। पूजा की स्वल्प सामग्री, तुच्छ भेंट।

पातावा—पु० दे० 'पायतावा'।

पातार⑤—पु० दे० 'पाताल'।

पाताल—पु० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सातवाँ। पृथ्वी के नीचे के लोक, अधोलोक। गुफा, बिल। बड़वानल। छद-शास्त्र में वह चक्र जिसके द्वारा मात्रिक छद की सख्या, लघु, गुरु कला आदि का ज्ञान होता है। ⊙यंत्र = पु० एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा कड़ी ओषधियाँ पिघलाई जाती है या उनका तेल बनाया जाता है।

पाति†—स्त्री० पत्ती, दल। चिट्ठी, खत।

पातित्य—पु० [सं०] पतित होने का भाव, गिरावट। अध पतन।

पातिव्रत, पातिव्रत्य—पु० [सं०] पतिव्रता होने का भाव, सतीत्व।

पातिसाहि—पु० दे० 'बादशाह'।

पाती†—स्त्री० चिट्ठी, पत्र। वृक्ष के पत्ते। ⑤ इज्जत, प्रतिष्ठा।

पातुर†—स्त्री० वेश्या।

पात्र—पु० [सं०] जिसमे कुछ रखा जा सके, आधार, बरतन। वह जो किसी विषय का अधिकारी हो, (जैसे दानपात्र)। नाटक, के नायक, नायिका आदि। अभिनेता, नट। पत्ता, पत्र। ⊙ता = स्त्री० पात्र होने का भाव, योग्यता। ⊙दुष्ट रस = पु० केशवदास के मत से एक प्रकार का रस-दोष जिसमे कवि जिस वस्तु को जैसा समझता है, रचना मे उसके विरुद्ध कह जाता है, परस्पर विरोधी या बेमेल उक्ति, ऊटपटाँग बातें।

पात्री—स्त्री० छोटा बरतन। पु० पात्रवाला व्यक्ति, वह जिसके पास बरतन हो। जिसके पास सुयोग्य व्यक्ति हों। **पात्रीय**—वि० पात्र सबधी, पात्र का।

पाथ—पु० [सं०] जल। सूर्य। अग्नि। अन्न। आकाश। वायु। मार्ग, राह। ⊙निधि= दे० पु० पाथोधि'। ⊙नाथ⑤ = पु० समुद्र। ⊙प्रदनाथ = पु० प्रलय के बादल।

पाथर⑤†—पु० दे० 'पत्थर'।

पाथेय—पु० [सं०] रास्ते का कलेवा। संबल, राहखर्च।

पाथोज—पु० [सं०] कमल।

पाथोद—पु० [सं०] बादल।

पाथोधि—पु० [सं०] समुद्र।

पाद—पु० अपान वायु, अधोवायु। पु० [सं०] चरण पाँव। श्लोक या पद्य का चतुर्थांश, पद। चौथा भाग। पुस्तक का विशेष अंश। वृक्ष का मूल। नीचे का भाग, तल। बड़े पर्वत के समीप मे छोटा पर्वत। चलना, गमन। ⊙क = वि० चलनेवाला। चौथाई, चतुर्थांश। ⊙ग्रहण = पु० पैर छूकर प्रणाम करना। ⊙ज = वि० पैर से उत्पन्न। पु० शूद्र। ⊙टीका = स्त्री० वह टिप्पणी जो किसी ग्रथ के पृष्ठ के नीचे लिखी गई हो (अं० फुटनोट)। ⊙तल= पु० पैर का तलवा। ⊙त्र, ⊙त्राण = पु० खड़ाऊँ। जूता। ⊙न्यास = पु० चलना, पैर रखना। नाचना। ⊙प = पु० वृक्ष, पेड़। बैठने का पीढ़ा। ⊙पीठ = पु० पीढ़ा। ⊙पूरण = पु० श्लोक या कविता के किसी चरण को पूरा करना। वह अक्षर या शब्द जो किसी पद को पूरा करने के लिये उसमे रखा जाय। ⊙प्रक्षालन—पु० पैर धोना। ⊙प्रणाम = पु० साष्टाग दंडवत्, पाँव पड़ना। ⊙प्रहार = पु० लात मारना, ठोकर मारना। ⊙रस, ⊙रक्षक = पु० वह जिससे पैरो की रक्षा हो, जैसे, जूता। ⊙वंदन = पु० पैर पकड़ कर प्रणाम करना। ⊙शुश्रूषा = स्त्री० चरणसेवा, पैर दबाना। ⊙हीन = वि० जिसके तीन ही चरण हो। जिसके चरण न हो। **पादाक्रांत**—वि० पददलित, पैर से कुचला हुआ, पामाल। **पादोदक**—पु० वह जल जिसमे पैर धोया गया हो। चरणामृत।

पादना⑤—अक० वायु छोड़ना, अपान वायु का त्याग करना।

पादरी—ईसाई धर्म का पुरोहित जो अन्य

ईसाइयों का जातकर्म, अत्येष्टि आदि संस्कार और उपासना कराता है।

पादशाह—पुं० दे० 'बादशाह'।

पादाकुलक—पुं० [सं०] वह छंद जिसके प्रत्येक पद में चार चौकल हों। चौपाई और पादाकुलक में अंतर यह है कि प्रथम में प्रत्येक चरण में चार चार चौकल रहना आवश्यक नहीं है, किंतु दूसरे में है। इस प्रकार जिस चौपाई के चारों चरणों में चार चौकल हों उसे पादाकुलक कह सकते हैं। जहाँ ऐसा न हो वहाँ शुद्ध चौपाई होती है। चौपाई की १६ मात्राओं में लघु गुरु या चौकलों के क्रम का बंधन नहीं रहता। पादाकुलक के पद्धरि अरिल्ल, डिल्ला, उपचित्रा, पज्झटिका, सिंह, मत्तसमक, विश्लोक, चित्रा और वानवासिका ये नौ मुख्यभेद हैं।

पादाति, पादातिक—पुं० [सं०] पैदल सिपाही, प्यादा।

पादारघ(पु)—पुं० दे० 'पाद्यार्घ'।

पादी—पुं० [सं०] पैरवाला जीव। चरणवाला छंद। पैरवाला जलजंतु (जैसे, मगर, घड़ियाल)। पैरवाला जल और स्थल दोनों पर रहनेवाला जंतु (जैसे, गोह)। किसी संपत्ति की चौथाई का हकदार।

पादीय—वि० [सं०] पदवाला, मर्यादावाला (जैसे, कुमारपादीय)।

पादुका—स्त्री० [सं०] खड़ाऊँ। जूता।

पाद्य—पुं० [सं०] वह जल जिससे पूजनीय व्यक्ति या देवता के पैर धोए जायँ। ⊙पुं० [सं०] पाद्य देने का एक भेद। **पाद्यार्घ**—पुं० पैर तथा हाथ धोने या धुलाने का जल। पूजा की सामग्री। पूजा में भेंट या नजर।

पाधा—पुं० आचार्य, उपाध्याय। पंडित।

पान(पु)—पुं० प्राण। दे० 'पाणि'। पुं० [सं०] किसी द्रव पदार्थ को गले के नीचे घूँट घूँट करके उतारना, पीना। शराब पीना। पीने का पदार्थ। मद्य। पानी। कटोरा, प्याला। **जलपान**—पुं० पानी पीना। कलेवा। **विषपान**—पुं० विष पीना। **मद्यपान**—पुं० शराब पीना। धूम (धूम्र) पान—पुं० बीड़ी सिगरेट, सिगार, हुक्का आदि पीना। **स्तनपान**—पुं० स्तन से दूध पीना। **अधरपान**—पुं० अधरों का गाढ़ चुंबन। ⊙**गोष्ठी**=स्त्री० वह सभा या मंडली जो शराब पीने के लिये बैठी हो।

पान—पुं० [हिं०] पत्ता। एक प्रसिद्ध लता जिसके पत्तों पर चूना, कत्था, सुपारी आदि रखकर उनका बीड़ा बना कर खाते हैं। पान के आकार की कोई चीज। ताश के पत्तों के चार भेदों में से एक। ⊙**दान**=पुं० [हिं०] वह डिब्बा जिसमें पान और उसके लगाने की सामग्री रखी जाती है, पनडब्बा। **पानागार**—पुं० शराब पीने का स्थान। मु०~**उठाना**=कुछ करने की प्रतिज्ञा करना।~**फमाना**=पान को उलटना पुलटना और सड़े अंश या पत्तों को अलग करना।~**खिलाना**=मँगनी करना, सगाई करना, वर कन्या के ब्याह के लिये दोनों पक्षों का वचनबद्ध होना।~**चीरना**=ऐसे काम करना जिनमें कोई लाभ न हो।~**देना**=कोई साहसपूर्ण काम करने के लिये किसी को वचनबद्ध करना। दे० 'बीड़ा देना'। ⊙**पत्ता**=लगा या बना हुआ पात। तुच्छ पूजा या भेंट पान फूल। ⊙**फूल**=सामान्य उपहार या भेंट। अत्यंत कोमल वस्तु।~**बनाना**=पान में चूना, कत्था, सुपारी आदि रखकर बीड़ा तैयार करना। पान लगाना।~**लेना**=दे० 'बीड़ा लेना'।

पानरा†—पुं० दे० 'पनारा'।

पानही†—स्त्री० दे० 'पनही'।

पाना—वि० जिसे पाने का हक हो, पावना। सक० अपने पास या अधिकार में करना, प्राप्त करना। भला या बुरा परिणाम भोगना। दी हुई या खोई चीज वापस मिलना। भेद पाना, समझना। कुछ सुन या जान लेना। देखना, साक्षात् करना। अनुभव करना, भोगना। समर्थ होना, सकना (संयोज्य क्रिया में), पास तक पहुँचना। किसी बात में किसी के बराबर

पहुँचना। भोजन करना। पाने का हक, पावना। जानना, अनुभव करना।

पानात्य—पु० [सं०] एक प्रकार का रोग जो बहुत मद्य पीने से होता है। इसमे हृदय मे दाह और पीडा होती है, मुँह पीला पडकर सूख जाता है, रोगी को मूर्च्छा आती है, वह अड बड बकता है और उसके मुँह से झाग गिरने लगती है।

पानि(पु)—पु० दे० 'पानी'। हाथ। ⊙ग्रहन (पु)=पु० दे० 'पाणिग्रहण'।

पानिप—पुं० ओप, काति। चमक, आब। प्रतिष्ठा। शोभा, सौंदर्य। पानी।

पानी—पु० अम्लजन और उदजन (अं० आक्सिजन—हाईड्रोजन) के परमाणुओ के योग से बना हुआ गध और स्वादरहित पारदर्शक तरल द्रव्य जो ताप से भाप और शीत से हिम हो जाता है। नदी, तालाब, कुआँ, समुद्र, झरना, वर्षा, आँसू, पसीना, थूक, पेशाब, उदक धातुओ आदि मे मिलनेवाला ऐसा तरल पदार्थ, जल। वह पानी का सा पदार्थ जो जीभ, आँख, त्वचा, घाव आदि से रिसकर, निकले। मेह, वर्षा। पानी जैसी पतली वस्तु। रस, अर्क, जूस। चमक, आब। धारदार हथियारो के लोहे का वह हलका स्याह रग जिससे उसकी उत्तमता की पहचान होती है, जौहर। मान, इज्जत। वर्ष, साल (जैसे, पाँच पानी का सूअर)। मुलम्मा। मरदानगी, जीवट। पशुओ की वशगत विशेषता या कुलीनता। पानी की तरह ठढा पदार्थ। पानी की तरह फीका या स्वादहीन पदार्थ। लडाई या द्वद्वयुद्ध। वर, दफा। जलवायु, आबहवा। ⊙दार=वि० आबदार, चमकदार। इज्जतदार। जीवटवाला, साहसी। स्वात्माभिमानी। ⊙देवा=वि० तर्पण या पिंडदान करनेवाला वशज। ⊙फल=सिंघाडा। मु०~आना=पानी का रिस रिसकर एकत्र होना। कुएँ, तालाब मे पानी का सोता खुलना। घाव, आँख, नाक आदि मे पानी भर आना या उनसे पानी गिरना। ~उठाना=पानी सोखना। पानी अटाना। ~उतारना=अपमानित करना। ~करना या कर देना=गुस्सा उतार देना। ~काटना=पानी का बाँध काट देना। एक नाली से दूसरी मे पानी ले जाना। तैरते समय हाथ से पानी को हटाना। ~का बताशा या बुलबुला=क्षणभगुर वस्तु। ~की तरह बहाना=अधाधुध खर्च करना। ~के मोल=बहुत सस्ता। ~जाना=इज्जत जाना। ~टूटना=कुएँ, ताल आदि मे इतना कम पानी रह जाना कि निकाला न जा सके। ~देना=पानी से भर देना, सींचना। पितरों के नाम अजलि मे लेकर पानी गिराना, तर्पण करना। ~पढ़ना=मत्र पढकर पानी फूँकना। ~परोरना=पानी पढना या फूँकना। ⊙पानी होना=लज्जित होना। ~फूँकना=मत्र पढ़कर पानी पर फूँक मारना। (किसी पर) ~फेरना या फेर देना=चौपट कर देना। (किसी के सामने) ~भरना=(किसी से तुलना मे) अत्यत तुच्छ प्रतीत होना, फीका पडना। ~भरी खाल=अनित्य या क्षणभंगुर शरीर। ~मे आग लगाना=जहाँ झगडा होना असभव हो, वहाँ झगडा करा देना। ~मे फेंकना या बहाना=नष्ट करना। मुँह में पानी आना या छूटना - स्वाद लेने का गहरा लालच होना। गहरा लोभ होना। ~लगना=स्थान विशेष के जलवायु के कारण स्वास्थ्य विगड़ना या रोग होना।

पानीय—पुं० [सं०] जल। वि० पीने योग्य, जो पिया जा सके। रक्षा करने योग्य, रक्षा सबधी।

पानूस(पु)—पुं० दे० 'फानूस'।

पानौरा†—पुं० पान के पत्ते की पकौडी।

पाप—पु० [सं०] वह कर्म जिसका फल इस लोक और परलोक मे अशुभ हो, धर्म या पुण्य का उलटा, पातक। अपराध, कसूर। वध, हत्या। पापबुद्धि, बुरी नीयत। अनिष्ट, खराबी। झझट। पाप ग्रह, अशुभ

ग्रह। ⊙कर्म = पु० वह काम जिसके करने मे पाप हो। ⊙कर्मा = वि० दे० 'पापी'। ⊙गण = पु० छद.शास्त्र के अनुसार ठगण का आठवाँ भेद। ⊙ग्रह = पु० शनि, राहु, केतु, ये अशुभ फल देनेवाले ग्रह (फलित)। ⊙घ्न = वि० जिससे पाप नष्ट हो। पुं० तिल। ⊙चारी = वि० पाप करनेवाला ⊙दृष्टि = वि० जिसकी दृष्टि पापमय हो। जिसकी दृष्टि पड़ने से हानि पहुँचे। ⊙नाशक, ⊙नाशन, ⊙नाशी = पु० प्रायश्चित्त। विष्णु। शिव। ⊙योनि = स्त्री० पाप से प्राप्त होनेवाले मनुष्य के अतिरिक्त पशु, पक्षी, वृक्ष आदि की योनि। ⊙रोग = पु० वह रोग जो कोई विशेष पाप करने से होता है, धर्मशास्त्रानुसार कुष्ठ, अधत्व, काणत्व आदि रोग। बसत रोग, छोटी माता। ⊙लोक = पुं० नरक। ⊙हर = वि०, पुं० पापनाशक। मु० ~ उदय होना = पिछले जन्म के पाप का बदला मिलना। ~कटना = पाप का का नाश होना। झगड़ा या जजाल छूटना। ~ कमाना या ~ बटोरना = पाप कर्म करना। ~मोल लेना = जानबूझकर किसी बखेड़े के काम मे फँसना।

पापड़—पुं० उर्द अथवा मूंग की धोई के बेसन आदि से बनाई हुई मसालेदार पतली चपाती जो तेल मे तलकर या आग मे भूनकर खाई जाती है। वि० पतला कागज सा। सूखा। मु० ~बेलना = बड़ी मिहनत करना। कठिनाई या दुख मे दिन कटना। बहुत से ~ बेलना = बहुत तरह के काम कर चुकना।

पापड़ा—पुं० एक पेड़ जिसकी लकड़ी से कघी और खराद की चीजें बनाई जाती हैं। दे० 'पित्तपापड़ा'।

पापड़ाखार—पु० केले के पेड़ का क्षार।

पापर—पुं० दे० 'पापड'।

पापाचार—पुं० पाप का आचरण, दुराचार।

पापात्मा—वि० पाप मे अनुरक्त, पापी।

पापिष्ठ—वि० बहुत बड़ा पापी।

पापी—वि० पाप करनेवाला। क्रूर। निर्दय।

पापीयस्—वि० [सं०] पापी, पातकी।

पापोश—स्त्री० [फा०] जूता। पाँव पोछने के लिये नारियल, तार आदि का बुना हुआ टुकड़ा।

पाबंद—वि० [फा०] बँधा हुआ, पराधीन। किसी बात, नियम, आज्ञा, वचन आदि का नियमित रूप से अनुसरण करनेवाला। किसी नियम, प्रतिज्ञा, विधि, आदेश का पालन करने के लिये नियमत वा न्यायत विवश। पुं० घोड़े की पिछाड़ी। नौकर।

पाबदी—स्त्री० [फा०] पाबंद होने का भाव, अधीनता। लाचारी। किसी का नियमित अनुकरण।

पामड़ा—पु० दे० 'पाँवड़ा'।

पामर—वि० [सं०] दुष्ट, कमीना। पापी, अधम। नीच कुल या वश से उत्पन्न। मूर्ख, निर्बुद्धि।

पामरी—स्त्री० दुपट्टा, उपरना। दे० 'पाँवड़ी'।

पामाल—वि० [फा०] तबाह, बरबाद। पैर से मला या रौंदा हुआ, पददलित।

पायँ (पु)†—पु० दे० 'पाँव'। ⊙जेहरि (पु) = स्त्री० दे० 'पाजेब'। ⊙ता = पुं० पलग या चारपाई का वह भाग जिधर पैर रहता है, पैताना।

पायंदाज—पु० [फा०] पैर पोछने का बिछावन।

पाय (पु)—पुं० पैर, पाँव।

पायक—पुं० धावन, हरकारा। दास, सेवक। पैदल सिपाही। वि० पानेवाला।

पायतख्त—पुं० [फा०] राजधानी।

पायतन (पु) पुं० दे० 'पाँयता'।

पायताबा—पुं० [फा०] मोजा, जुर्राब। जूते के भीतर तले के बराबर बिछा हुआ चमड़े आदि का टुकड़ा, सुखतला।

पायदार—वि० [फा०] टिकाऊ, दृढ, मजबूत।

पायमाल—वि० [फा०] दे० 'पामाल'।

पायरा—पुं० घोड़े की जीन के दोनो ओर सवार के पैर रखने के लिये तसमे मे लगा हुआ लटकनेवाला लोहे का आधार, रकाब।

पायल—स्त्री० पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना जिसमे घुँघरू लगे रहते हैं, पाजेब। तेज चलनेवाली हथिनी। वह बच्चा जिसके पैर जन्म के समय पहले बाहर हों। बाँस की सीढ़ी।

पायस—स्त्री० दूध मे पकाया हुआ चावल आदि, खीर। सरल निर्यास, सलई का गोंद।

पायस(पु)†—पुं० ज्योनार। पडोस।

पाया—पुं० पलँग, चौकी आदि मे खडे डडे या खभे के आकार का वह भाग जिसके सहारे उसका ढाँचा ऊपर ठहरा रहता है, पावा। खभा, स्तभ। पद, दरजा। सीढी, जीना।

पायाब—वि० [फा०] इतना कम गहरा (जल) जो पैदल चलकर पार किया जा सके।

पायी—वि० [सं०] पीनेवाला।

पायु—पुं० [सं०] मलद्वार, गुदा। भरद्वाज ऋषि के एक पुत्र का नाम।

पारंगत—वि० [सं०] पार गया हुआ। पूर्ण पडित, पूरा जानकर।

पारंपरीण—वि० [सं०] परपरा से चला आया हुआ।

पारपर्य—पुं० [सं०] परंपरा का भाव। परपराक्रम। वशपरपरा। परपरा से चली आती हुई रीति।

पार—अव्य० परे, आगे, दूर। पुं० [सं०] नदी, झील आदि जलाशयों के आमने सामने के दोनो किनारो मे उस किनारे से भिन्न किनारा जहाँ (या जिसकी ओर) अपनी स्थिति हो, दूसरी ओर का किनारा। सामनेवाला दूसरा पार्श्व, दूसरी ओर। छोर, अंत, हद। आर पार = क्रि० वि० [हिं०] यह किनारा और वह किनारा। इस किनारे से उस किनारे तक। ⊙ग = वि० पारजानेवाला। काम को पूरा करनेवाला, समर्थ। पूरा जानकार। ⊙दर्शक = वि० जिसमे आर-पार दिखाई पडे (जैसे, शीशा)। ⊙दर्शिता = स्त्री० पारदर्शी होने का भाव। ⊙दर्शी = वि० उस पार तक देखनेवाला। दूरदर्शी, बुद्धिमान्। जो पूरा पूरा देख चुका हो। मु० ~उतारना = किसी काम से छुट्टी पाना। सिद्धि या सफलता प्राप्त करना। समाप्त करना, मार डालना। (नदी आदि) ~करना = जल आदि का मार्ग तै करना। पूरा करना। निबाहना, बिताना। ~पाना = अंत तक पहुँचना। (किसी से) ~पाना = किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना, जीतना। ~लगना = नदी आदि के बीच होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना। किसी से ~ लगना = पूरा हो सकना। ~लगना = किसी वस्तु के बीच से ले जाकर उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना। कष्ट या दुःख से बाहर करना, उद्धार करना। पूरा करना। ~होना = किसी दूर तक फैली हुई वस्तु के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना। किसी काम को पूरा कर चुकना।

पारई†—स्त्री० 'पारा'। सकोरा, मिट्टी का प्याला।

पारख(पु)†—स्त्री० दे० 'पारिख'। दे० 'परख'। दे० 'पारखी'।

पारखद(पु)पुं० दे० 'पार्षद'।

पारखी—पुं० वह जिसे परख या पहचान हो। परखनेवाला, परीक्षक।

पारचा—पुं० [फा०] टुकडा, खंड, धज्जी (विशेषत कपडे, कागज आदि की)। कपडा, वस्त्र। एक प्रकार का रेशमी कपडा। पहनावा, पोशाक।

पारजात—(पु)—पुं० दे० 'पारिजात'।

पारण—पुं० [फा०] किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन किया जानेवाला पहला भोजन और तत्सबधी कृत्य। तृप्त करने की क्रिया या भाव। मेघ, बादल। समाप्ति।

पारतंत्र्य—पुं० [सं०] परतंत्रता, दासता।

पारत्रिक—वि० [सं०] दे० 'पारलौकिक'।

पारथ—पुं० दे० 'पार्थ'।

पारथिव—पुं० दे० 'पार्थिव'।

पारद—पुं० [सं०] पारा। मनुस्मृति, महाभारत आदि के अनुसार पश्चिम का एक देश और वहाँ का निवासी। इस देश मे रहनेवाली एक जाति।

पारधी—पुं० टट्टी आदि की ओट से पशु-पक्षियों को पकड़ने या मारनेवाला, बहेलिया, शिकारी। हत्यारा।
पारन—पुं० दे० 'पारण'।
पारना—सक० [अक० परना] डालना, गिराना। जमीन पर लवा डालना। लिटाना। कुश्ती या लड़ाई मे गिराना, पछाड़ना। किसी वस्तु को दूसरी वस्तु मे रखने, ठहराने या मिलाने के लिये उसमे गिराना या रखना। रखना। शामिल करना। शरीर पर धारण करना, पहनाना। बुरी बात घटित करना, उत्पात मचाना। साँचे आदि में डालकर या किसी वस्तु पर जमाकर कोई वस्तु तैयार करना (जैसे ईंट, खपड़ा या काजल पारना)। ⓟ† दे० पालना। ⓟ† अक० सकना, समर्थ होना। पिंडा~ = पिंडदान करना।
पारमार्थिक—वि० [सं०] जिससे परमार्थ सिद्ध हो, जिससे पारलौकिक सुख मिले। सदा ज्यों का त्यों रहनेवाला, जो परिणामी या परिवर्तनशील न हो, नामरूप से परे शब्दसत्य।
पारलौकिक—वि० [सं०] परलोक संबंधी। परलोक मे शुभ फल देनेवाला।
पारवश्य—पुं० [सं०] परवशता।
पारशव—पुं० [सं०] पराई स्त्री से उत्पन्न पुरुष। ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न व्यक्ति या जाति (याज्ञवल्क्य स्मृति)। लोहा। एक प्राचीन देश जहाँ मोती निकलते थे।
पारषद ⓟ—पुं० दे० 'पार्षद'।
पारस—पुं० एक कल्पित पत्थर जिसके विषय मे प्रसिद्ध है कि यदि लोहा उससे स्पर्श कराया जाय तो सोना हो जाता है, स्पर्शमणि। अत्यंत लाभदायक और उपयोगी वस्तु। वह जो दूसरे को अपने समान कर ले। परसा हुआ खाना। पत्तल जिसमे खाने के लिये पकवान, मिठाई आदि हो, परोसा। ⓟपास, निकट। बादाम या खुबानी की जाति का एक मझोला पेड़ जो ढाक के समान जान पड़ता है, गीदड, ढाक। प्राचीन काबोज और वाह्लीक तथा वर्तमान अफगानिस्तान के पश्चिम का देश जो सभ्यता और शिष्टाचार के लिये प्रसिद्ध था। वि० पारस पत्थर के समान स्वच्छ और उत्तम। चगा, तदुरुस्त। जो दूसरे को अपने ही समान कर ले।
पारसव—पुं० दे० 'पारशव'।
पारसा—वि० [फा०] धर्मनिष्ठ, सदाचारी।
पारसी—वि० पारस देश का रहनेवाला आदमी। हिंदुस्तान मे बंबई और गुजरात की ओर हजारो वर्ष से बसे हुए वे पारस देश के निवासी जिनके पूर्वज मुसलमान होने के डर से पारस छोडकर यहाँ आए थे।
पारसीक—पुं० [फा०] पारस देश। पारस देश का निवासी। पारस देश का घोड़ा।
पारस्कर—पुं० [सं०] एक देश का प्राचीन नाम। एक गृह्यसूत्रकार मुनि।
पारस्परिक—वि० [सं०] परस्पर होनेवाला, आपस का।
पारस्य—पुं० [सं०] पारस देश।
पारा—पुं० चाँदी की तरह सफेद और चमकीली एक धातु जो साधारण गरमी या सरदी मे द्रव अवस्था मे रहती है। दीपक के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का बरतन, परई। टुकड़ा। वह छोटी दीवार जो केवल पत्थरों के टुकड़े एक दूसरे पर रखकर बनाई गई हो। मु०~पिलाना = किसी वस्तु को इतना भारी करना मानो उसमे पारा भारा हो।
पारायण—पुं० [सं०] पूरा करने का कार्य, समाप्ति। समय बाँधकर किसी ग्रंथ का आद्योपांत पाठ।
पारायणिक—वि० [सं०] पाठ करनेवाला, आद्योपांत पढ़नेवाला छात्र।
पारावत—पुं० [सं०] परेवा, पडुक। कबूतर, कपोत। बंदर। पर्वत।
पारावार—पुं० [सं०] सीमा, दोनो तट। आरपार। समुद्र।
पाराशर—पुं० [सं०] पराशर का पुत्र या वंशज। व्यास। वि० पराशर संबंधी। पराशर का बनाया हुआ। पाराशरी—

पुं० [सं०] व्यास के भिक्षुसूत्र का अध्ययन करनेवाला, सन्यासी ।

पारि(पु)—स्त्री० हद, सीमा । ओर, तरफ । जलाशय का तट । पुं० मद्य पीने का पात्र, प्याला ।

पारिख(पु)†—स्त्री० दे० 'परख' ।

पारिजात—पुं० [सं०] समुद्रमथन के समय निकला स्वर्ग मे इद्र के नदनकानन का एक वृक्ष । परजाता, हर्रसिगार । कोविदार, कचनार । पारिभद्र, फरहद । ऐरावत के कुल का एक हाथी । एक पहाड । एक मुनि । ⊙क=पुं० दे० 'पारिजात' ।

पारितोषिक—पुं० [सं०] वह धन या वस्तु जो किसी पर परितुष्ट या प्रसन्न होकर उसे दी जाय, इनाम । वि० सतुष्ट या प्रसन्न करनेवाला ।

पारिपथिक—पुं० [सं०] बटमार, डाकू, लुटेरा ।

पारिपात्र—पुं० [सं०] सप्तकुल पर्वतो मे से एक जो विध्य के अतर्गत है ।

पारिपार्श्व—पुं० [सं०] पारिषद, अनुचर, अर्दली ।

पारिपार्श्विक—पुं० [सं०] पास खडा रहनेवाला, सेवक, अर्दली । नाटक के अभिनय मे एक विशेष नट जो स्थापक का अनुचर होता है ।

पारिपल्लव—पुं० [सं०] यज्ञो मे कहा जानेवाला एक आख्यान (शतपथ ब्राह्मण) । नाव, जहाज । एक तीर्थ (महाभारत) ।

पारिभद्र—पुं० [सं०] फरहद का पेड । देवदार । सलई का वृक्ष, कुट ।

पारिभाव्य—पुं० [सं०] परिभू या जामिन होने का भाव । कुट नाम की ओषधि ।

पारिभाषिक—वि० [सं०] जिसका व्यवहार किसी विशेष अर्थ के सकेत के रूप मे किया जाय (जैसे, पारिभाषिक शब्द), किसी के गुण, धर्म, स्वभाव आदि के ठीक ठीक विवरण से सबध रखनेवाला ।

पारियात्र—पुं० दे० 'पारिपात्र' ।

पारिव्राज्य—पुं० [सं०] परिव्राजक का कर्म या भाव । पीपल की एक जाति ।

पारिषद—पुं० [सं०] परिषद् मे बैठनेवाला, सभासद । अनुयायीवर्ग, गण (जैसे शिव के पारिषद, विष्णु के पारिषद) ।

पारी—स्त्री० किसी बात का अवसर जो कुछ अतर देकर क्रम से प्राप्त हो, बारी ।

पारुष्य—पुं० [सं०] वचन की कठोरता । इद्र का वन ।

पार्क—पुं० [अं०] नगर का सार्वजनिक उपवन, उद्यान ।

पार्टी—स्त्री० [अं०] दल, मडली । वह समिलन जिसमे लोगो को बुलाकर जलपान या भोजन कराया जाता है ।

पार्थ—पुं० [सं०] राजा । कुती (पृथा) के युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन नामक तीन पुत्रो मे से कोई । अर्जुन । अर्जुन वृक्ष ।

पार्थक्य—पुं० [सं०] पृथक् होने का भाव, भेद । जुदाई, वियोग ।

पार्थव—पुं० [सं०] पृथु (मोटा) होने का भाव, विशालता, स्थूलता ।

पार्थिव—वि० [सं०] पृथिवी सबधी । पृथिवी से उत्पन्न, मिट्टी आदि का बना हुआ (जैसे, पार्थिव शरीर) । राजा के योग्य, राजसी । पुं० मिट्टी का शिवलिग जिसके पूजन का बडा फल माना जाता है । **पार्थिवी**—स्त्री० (पृथ्वी से उत्पन्न) सीता । उमा, पार्वती ।

पार्थो—पुं० दे० 'पार्थिव' ।

पार्वण—पुं० [सं०] वह श्राद्ध जो किसी पर्व मे किया जाय (जैसे, अमावास्या या ग्रहण आदि के दिन किया जानेवाला श्राद्ध) ।

पार्वत—वि० [सं०] पर्वत सबधी । पवत पर होनेवाला । **पार्वती**—स्त्री० हिमालय पर्वत की कन्या, शिव की अर्धांगिनी देवी जो गौरी, दुर्गा आदि अनेक नामो से पूजी जाती है भवानी, गौरी । गोपीचंदन ।

पार्वतीय—पुं० पहाड का, पहाडी । वि० पर्वत पर रहनेवाला । **पार्वतेय**—वि० पर्वत

होने का वाला। पर्वत से संबधित।

पार्श्व—पु [सं०] छाती के दाहिने या बाएँ का भाग, अगल बगल की जगह, पास। ⊙ग = वि० अनेक प्रकार के कुटिल उपाय रचकर धन कमानेवाला, चालबाजी के सहारे अपनी बढती चाहनेवाला। पुं० सहचर। ⊙वर्ती = पुं० पास रहनेवाला, मुसाहब ⊙ स्थ = वि० पास खडा रहने वाला। पु० अभिनय के नटो मे से एक।

पार्श्विक—वि० बगलवाला, पार्श्व संबंधी। अन्याय से रुपया कमाने की फिक्र मे रहनेवाला।

पार्षद—पुं० [सं०] पास रहनेवाला सेवक, परिषद। मुसाहब, मंत्री।

पार्सल—पुं० [अं०] पुलिंदा, पैकेट। डाक, वायुयान या रेल से रवाना करने के लिये बँधा हुआ पुलिदा, पैकेट या बडल। मु० ~करना = बांधकर या लपेटकर डाक, वायुयान या रेल द्वारा भेजना। ~लगाना = गठरी या पुलिंदे को रेल वायुयान या डाक द्वारा बाहर भेजने के लिये देना।

पालंक—पुं० [सं०] पालक शाक। बाज पक्षी। एक रत्न जो काला, हरा और लाल होता है।

पालग—पुं० दे० 'पलग'।

पाल—पुं० फलो को गरमी पहुँचाकर पकाने के लिये पत्ते बिछाकर रखने की विधि। वह लबा चौडा कपडा जिसे नाव के मस्तूल से लगाकर इसलिये तानते है जिससे हवा भरे और नाव को ढकेले। तबू, शामियाना। गाड़ी या पालकी ढाकने का कपडा। कबूतरो का जोड़ा खाना, कपोत मैथुन। स्त्री० पानी को रोकनेवाला बाँध या किनारा, मेड। ऊँचा किनारा, कगार। कुँए के भीतर की दीवार गिर जाने की अवस्था। पुं० [सं०] पालनकर्ता। चीते का पेड़। पीकदान। बगाल का एक प्रसिद्ध राजवश जिसने साढे तीन सौ वर्ष तक बग और मगध मे राज्य किया था। ⊙क = पुं० पालनकर्ता। अश्वरक्षक, साईस। पाला हुआ लडका, दत्तक पुत्र। [हिं०] एक प्रकार का साग। पलग, पर्यंक।

पालउ—पुं० पत्ता, पत्ती। कोमल और नया पत्ता।

पालकी—स्त्री० एक प्रकार की सवारी जिसे आदमी कधे पर लेकर चलते हैं और जिसमे आदमी आराम से लेट सकता है, शिविका बद डोली। ⊙गाड़ी = स्त्री० वह (विशेषत: घोडे से खीची जानेवाली) गाडी जिस पर पालकी के समान छत हो।

पालट—पुं० दत्तक पुत्र। स्त्री० पटेबाजी की एक चोट का नाम।

पालतू—वि० पाला हुआ, पोसा हुआ। पाला जानेवाला।

पालथी—स्त्री० बैठने का वह ढंग जिसमे दोनो जघाएँ दोनो ओर फैलाकर जमीन पर रखी जाती है और घुटनो से दोनो टाँगें मोडकर बाँया पैर दाहिनी जघा पर और दाहिना बाई पर टिका दिया जाता है।

पालन—पुं० [सं०] भोजन वस्त्र आदि देकर जीवनरक्षा, भरण पोषण। अनुकूल आचरण द्वारा किसी बात की रक्षा या निर्वाह, पूरा करना। **पालनीय**—वि० पालन करने योग्य, पाल्य।

पालिका—वि० स्त्री० पालन करनेवाली।

पालित—वि० [सं] पाला हुआ, रक्षित।

पालिनी—वि० स्त्री० पालन करनेवाली।

पालना—सक० भोजन वस्त्र आदि देकर जीवन रक्षा करना, परवरिश करना। पशु पक्षी आदि को रखना। न टालना, पूरा करना पु० एक प्रकार झूला या हिंडोला, गहवारा।

पालव—पुं० पल्लव, पत्ता। कोमल पत्ता।

पाला—पु० वायु और भूमि की अत्यधिक शीतलता के कारण जमकर पृथ्वी पर गिरी हुई भाप की सफेद तह, तुषार। हिम, बर्फ। ठढ, सरदी। व्यवहार करने का सयोग, वास्ता। प्रधान स्थान, सदर मुकाम। सीमा निर्दिष्ट करने के लिये मिट्टी की उठाई हुई मेड या छोटा भीटा। अनाज भरने का बडा बरतन जो प्राय: कच्ची

मिट्टी की गोल दीवार के रूप मे होता है। कुश्ती लड़ने या कसरत करने की जगह, अखाडा। झडबेरी की पत्तियाँ जो राजपूताने आदि मे चारे के काम आती है। मु० (किसी से) ~पडना' = वास्ता पडना, काम पड़ना। ~मार जाना = पौधे या फसल का पाला गिरने से नष्ट हो जाना। (किसी के) पाले पडना = वश मे होना, पकड मे आना ।

पालागन--स्त्री० प्रणाम, दडवत् ।

पालि—स्त्री० [सं०] कान के पुट के नीचे का मुलायम चमडा या लौ। कोना। पंक्ति, श्रेणी। किनारा। सीमा, हद। मेंड, बाँध। कगार, भीटा। अंक, गोद। परिधि। चिह्न। पुल। ढूह। देग, बटलोई। एक प्रस्थ के बराबर एक प्राचीन माप। गुरु-कुल मे छात्रो को दिया जानेवाला नियमित भोजन। जूँ, चीलर ।

पालिश—स्त्री० [अँ०] चिकनाई और चमक, ओप। रोगन या मसाला जिसके लगाने से चिकनाई और चमक आ जाय ।

पालिसी—स्त्री० [अँ०] नीति, कार्यसाधन का ढग ।

पाली---वि० [सं०] पालन करनेवाला, पोषण करनेवाला। रखनेवाला, रक्षा करनेवाला। स्त्री०। खेलकूद पढाई आदि के विभाजित भाग। स्त्री० [हिं०] एक प्राचीम भाषा जिसमे बौद्धो के धर्मग्रथ लिखे हुए है।

पालू—वि० पालतू ।

पाल्य--वि० [सं०] पालन के योग्य ।

पाँव—पुं० दे० 'पाँव'। ⊙डा = पुं० दे० 'पाँवडा'। ⊙डी = स्त्री० दे० 'पाँवडी'।

पाँवरⓅ—वि० तुच्छ, नीच, दुष्ट। मूर्ख, निर्बुद्धि। पुं० दे० 'पाँवडा'। स्त्री० दे० 'पाँवडी' ।

पाव—पुं० चौथाई भाग। एक सेर का चौथाई भाग चार छटाँक का मान। पासा खेलने का दाव, पौबारह।

पावक---पुं० [सं०] अग्नि, आग। सदाचार। अग्निमंथ वृक्ष, अगेथू का पेड। वरुण। सूर्य। वि० शुद्ध या पवित्र करनेवाला।

⊙मणि = पुं० सूर्यकांतमणि, आतशी शीशा।

पावकुलक—पुं० दे० 'पादाकुलक'।

पावता--स्त्री० रुपए पाने का सूचक पत्र, रसीद।

पावदान—पुं० पैर रखने के लिये बना हुआ स्थान या वस्तु। इक्के, गाडी आदि मे लोहे की पटरी जिसपर पैर रखकर चढते हैं ।

पावन—वि० [सं०] पवित्र करनेवाला। पवित्र, शुद्ध। पु० अग्नि। प्रायश्चित्त, शुद्धि। जल। गोबर। रुद्राक्ष। व्यास का एक नाम। विष्णु। सिद्धपुरुष।

पावना--पु० दूसरे से रुपया आदि पाने का हक, लहना। वह रुपया जो दूसरे से पाना हो। Ⓟ†—सक० पाना, प्राप्त करना। अनुभव करना। भोजन करना। दे० 'पाना'।

पावली—स्त्री० एक रुपए का चौथाई सिक्का।

पावस—स्त्री० वर्षाकाल, बरसात।

पावा—पु० दे० 'पाया'। गोरखपुर जिले का एक प्राचीन गाँव जहाँ बुद्ध भगवान् कुछ दिन ठहरे थे ।

पाश—पु० [सं०] रस्सी, तार आदि से सरकनेवाली गाँठो आदि के द्वारा बनाया हुआ घेरा जिसके बीच मे पडने से जीव बँध जाता है और कभी कभी बंधन के अधिक कसकर बैठजाने से मर भी जाता हैं, फाँस। पशु पक्षियो को फँसाने का जाल या फंदा। बंधन, फँसानेवाली वस्तु ⊙केरली = स्त्री० [हिं०] प्राचीन यूनान आदि मे प्रचलित ज्योतिष की एक गणना जो पासे फेंककर की जाती है। (वहाँ से केरल होता हुआ यह भारत आया जान पडता है।) ⊙धर = पु० वरुण देवता। ⊙हस्त = पु० वरुण देवता। शतभिष नक्षत्र। **पाशी**— पुं० पाशवाला देवता, वरुण। बहेलिया। यमराज। अपराधियो को फाँसी का फंदा पहनानेवाला चाडाल।

पाशक—पु० [सं०] पासा, चौपड।

पाशव—वि० [सं०] पशु सम्बन्धी, पशुओ का। पशुओं जैसा।

पाशा—पुं० तुर्की सरदारों की उपाधि (जैसे, कमालपाशा)।

पाशुपत—वि० [सं०] पशुपति या शिव संबंधी। पशुपति का। पुं० पशुपति या शिव का उपासक शैवों का एक भेद। शिव का कहा हुआ तंत्रशास्त्र। अथर्व-का एक उपनिषद्। अगस्त का फूल। ⊙**दर्शन**=पुं० एक सांप्रदायिक दर्शन जिसका उल्लेख सर्वदर्शनसंग्रह मे है, नकुलीश पाशुपत दर्शन। **पाशुपतास्त्र**—पुं० शिव का शूलास्त्र जो बड़ा प्रचंड था।

पाश्चात्य—वि० [सं०] पीछे का, पिछला। पश्चिम दिशा का, पश्चिम मे रहनेवाला।

पाश्चात्यीकरण—पुं० (किसी देश या जाति आदि को) पाश्चात्य सभ्यता के साँचे मे ढालना, पाश्चात्य ढंग का बनाना।

पाषंड—पुं० [सं०] वेदविरुद्ध आचरण, झूठा मत। लोगों को ठगने के लिये साधुओं का सा रूप रंग बनाना, ढोंग। माया, कपट। **पाषंडी**—वि० वेदविरुद्ध मत और आच-रण ग्रहण करनेवाला। धर्म आदि का झूठा आडंबर खड़ा करनेवाला, ढोंगी।

पाषर—स्त्री० दे० 'पाखर'।

पाषाण—पुं० पत्थर, प्रस्तर। वि० निर्दय, हृदयहीन। ⊙**चतुर्दशी**=स्त्री० अग्रहायण शुक्ला चतुर्दशी, अगहन सुदी चौदस। इस तिथि को स्त्रियाँ गौरी का पूजन करके रात को पाषाण (पत्थर के ढोंको) के आकार की बड़ियाँ बनाकर खाती है। ⊙**भेद**=पुं० एक पौधा जो अपनी पत्तियों की सुंदरता के लिये बगीचों मे लगाया जाता है, पथरचट। **पाषाणी**—वि० स्त्री० पत्थर की तरह कठोर हृदयवाली।

पाषाणीय—वि० [सं०] पत्थर का।

पासंग—पुं० [फा०] तराजू की डंडी को बराबर करने के लिये उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ, पसंघा। तराजू की डंडी बराबर न होना। मु० (किसी का)~**भी न होना**=किसी के मुकाबिले में बहुत कम होना।

पास—पुं० बगल, ओर; तरफ। सामीप्य, निकटता। अधिकार, कब्जा, रक्षा, पल्ला (केवल 'के' 'मे' और 'से' विभक्तियों के साथ)। (पु) दे० 'पाश'। (पु) दे० 'पासा'। अव्य० निकट, समीप। अधिकार मे, रक्षा मे। **आस पास**—अव्य० अगल बगल, समीप। लगभग, करीब। वि० [अं०] पार किया हुआ, तै किया हुआ। परीक्षा आदि मे सफल, उत्तीर्ण। स्वीकृत, मंजूर। जारी, प्रचलित। पुं० वह कागज जिसमे किसी के कहीं बेरोक-टोक आने जाने की इजाजत हो ⊙**बुक**=पुं० बैंक और डाकखाने से रुपए जमा करनेवालों को दी जानेवाली वह किताब जिसमे जमा की हुई या निकाली हुई रकम दर्ज रहती है। मु०~**फटकना**=निकट जाना। (किसी के)~**बैठना**=संगत मे रहना।

पासना—अक० थनों मे दूध आना (ग्वाला)।

पासनी—स्त्री० अन्नप्रासन, चटावन।

पासबान—पुं० [फा०] चौकीदार। रख-वाला। स्त्री० रखी हुई स्त्री, रखेली। **पासबानी**(पु)—स्त्री० चौकीदारी। रक्षा, हिफाजत।

पासमान(पु)—पुं० पास रहनेवाला, दास।

पासवर्ती(पु)—वि० दे० 'पार्श्ववर्ती'।

पासा—पुं० हाथीदाँत या हड्डी के छह-पहले टुकड़े जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी होती है और जिनसे चौसर खेलते हैं। चौसर का खेल। मोटी बत्ती के आकार मे लाई हुई वस्तु, गुल्ली (जैसे सोने के पासे)। पीतल या काँसे का चौखूँटा लंबा ठप्पा जिसमे घुँघरू आदि बनाने के लिये छोटे छोटे गोल गड्ढे बने होते हैं।

पासि, पासिक(पु)—पुं० फंदा। बंधन।

पासी—पुं० जाल या फंदा डालकर चिड़िया पकड़नेवाला, बहेलिया। एक जाति जो ताड़ी चुआने का व्यवसाय करती है। स्त्री० फंदा, फाँस। घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी, पिछाड़ी।

पासुरी(पु)—स्त्री० दे० 'पसली'।

पाहँ—अव्य० निकट, समीप। किसी के प्रति, किसी से।

पाहन (पु)—पुं० पत्थर, प्रस्तर।

पाहरू (पु)†—पुं० पहरेदार, चौकसी करनेवाला।

पाहाण (पु)—पु दे० 'पाहन'।

पाहि (पु)—अव्य० पास, निकट। किसी के प्रति, किसी से।

पाहि—सक० [सं०] एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है 'रक्षा करो' या 'बचाओ'।

पाहीं (पु)—अव्य० दे० 'पाहि'।

पाही—सक० दे० 'पाहि'। स्त्री० वह खेती जिसका किसान दूसरे गाँव मे रहता है।

पाहुँच†—स्त्री० दे० 'पहुँच'।

पाहुन—पु० दे० 'पाहुना'। पाहुना—पुं० अतिथि, मेहमान। †दामाद, जामाता। पाहुनी—स्त्री० स्त्री अतिथि, मेहमान औरत। आतिथ्य, मेहमानदारी।

पाहुर†—पुं० भेंट, नजर। सौगात।

पिंग—वि० [सं०] पीला, पीलापन लिए भूरा। भूरापन लिए लाल, तामड़ा। सुघनी रग का।

पिंगल—वि० [स०] पीला, पीत। भूरापन लिए पीला, सुँघनी रंग का। पु० एक प्राचीन मुनि जो छंद-शास्त्र के आदि आचार्य माने जाते हैं। छद शास्त्र। ६० सवत्सरो मे से एक। एक निधि का नाम। वदर, कपि। अग्नि। पीतल। उल्लू पक्षी।

पिंगला—स्त्री० [स०] हठयोग और तत्र मे जो तीन प्रधान नाडियाँ मानी गई हैं उनमे से एक। लक्ष्मी का नाम। गोरोचन। शीशम का पेड। राजनीति। दक्षिण के दिग्गज की स्त्री। भगवान् के अनुसार विदेह नगर की वह वेश्या जिसने भगवान् की भक्ति द्वारा मुक्ति पाई थी।

पिंगपांग—पुं० [अं०] एक प्रकार का अँग्रेजी खेल जो मेज पर छोटा सा जाल टाँगकर छोटे से गेंद और छोटे से बल्ले या थापी से खेला जाता है।

पिंजड़ा—पु० दे० 'पिंजरा।'

पिंजर—वि० [स०] पीला, पीतवर्ण का। भूरापन लिए लाल रग का। पुं० पिंजरा। शरीर के भीतर का हड्डियो का ठट्टर, ककाल। सोना। भूरापन लिए लाल रग का घोड़ा।

पिंजरा—पुं० लोहे, बाँस आदि की तीलियो का बना हुआ झावा जिसमे पक्षी पाले जाते हैं। ⊙पोल = पुं० वह स्थान जहाँ पालने के लिए गाय, बैल आदि चौपाए रखे जाते हो, पशुशाला।

पिंड—पुं० [सं०] गोलमटोल टुकड़ा, गोला। ठोस टुकडा, लुगदा। ढेर, राशि। पके हुए चावल आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध मे पितरो को अर्पित किया जाता है। भोजन, आहार। देह। नक्षत्र, ग्रह। ⊙खजूर = पुं० [हिं०] एक प्रकार का खजूर जिसके फल मीठे होते हैं। ⊙ज = पुं० सब अगो के बन जाने पर गर्भ से सजीव निकलनेवाला जतु (जैसे, मनुष्य, कुत्ता, बिल्ली)। ⊙दान = पुं० पितरो को पिंड देने का कर्म जो श्राद्ध मे किया जाता है। ⊙रोग = पुं० वह रोग जो शरीर में घर किए हो। कोढ। ⊙रोगी = वि० रुग्ण शरीर का। मु०~छोड़ना = साथ न लगा रहना या सबध न रखना, तग न करना। ~पड़ना = पीछे पडना।

पिंडरी (पु)†—स्त्री० दे० 'पिंडली।'

पिंडली—स्त्री० टाँग का ऊपरी पिछला भाग जो मासल होता है। मु०~हिलना = पैर थर्राना, भय से कंपकपी होना।

पिंडवाही—स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा।

पिंडा—पुं० ठोस या गोली वस्तु का टुकडा। गोलमटोल टुकडा। मधु, तिल्ली मिला हुई खीर आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध मे पितरो को अर्पित किया जाता है। शरीर, देह। स्त्रियो की गुप्तेंद्रिय। मु०~पानी देना = श्राद्ध और तर्पण करना। ~फीका होना = तबियत खराब होना। ~धोना = स्नान करना।

पिंडारी (पु)—दक्षिण की एक जाति जो पहले

खेती करती थी, पीछे अवसर पाकर लूट-मार करने लगी और मुसलमान हो गई।

पिडालू—स्त्री० एक प्रकार का शकरकंद, पिंडिया। एक प्रकार का शफतालू या रतालू।

पिंडिका—स्त्री० [सं०] छोटा पिंड, पिंडी। छोटा ढेला या लोदा। पिंडली। वह पिंडली या पिंडी जिसपर देवमूर्ति स्थापित की जाती है, वेदी।

पिंड़िया—स्त्री० गीली भुरभुरी वस्तु का मुट्ठी से बांधा हुआ लंबोतरा टुकडा। गुड की लंबोतरी भेली, मुट्ठी। लपेटे हुए सूत, सुतली या रस्सी का गोला।

पिंडी—स्त्री० छोटा ढेला या लोदा। गीली या भुरभुरी वस्तु का टुकडा। घीया, कद्दू। पिंडखजूर। वेदी जिसपर बलिदान किया जाता है। सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा।

पिडुरी, पिडुलीⓅ†—स्त्री० दे० 'पिंडली'।

पिशन—स्त्री० दे० 'पेनशन'।

पिअ—वि०, पुं० दे० 'प्रिय'।

पिअना†—सक० दे० 'पीना'।

पिअर†, **पिअरा**†—वि० पीला।

पिअराईⓅ†—स्त्री० पीलापन।

पिअरी†—स्त्री० हल्दी के रंग से रँगी हुई वह धोती जो किसी शुभ कार्य के समय पहनी या किसी देवी देवता को चढाई जाती है। वि० स्त्री० [पिअरा का स्त्री०] पीली।

पिआरा†—वि० दे० 'प्यारा'।

पिआस—स्त्री० दे० 'प्यास'।

पिउⓅ—पुं० पति, खाविंद।

पिक—पुं० [सं०] कोयल।

पिक्कनाⓅ—सक० देखना। पिक्कत इक्कन इक्क लिक्कन तक्कत (प्रताप० १०)।

पिघलना—अक० गरमी से किसी चीज का गलकर पानी सा हो जाना, द्रवीभूत होना। चित्त मे दया उत्पन्न होना।

पिघलाना—सक० [अक० पिघलना] किसी चीज को गरमी पहुँचाकर पानी के रूप मे लाना। किसी के मन मे दया उत्पन्न करना।

पिचकना—अक० किसी फूले या उभरे हुए तल का दब जाना। **पिचकाना**—सक० [अक० पिचकना] फूले या उभरे हुए तल को दबाना।

पिचकारी—स्त्री० एक प्रकार का नलदार यंत्र जिसका व्यवहार जल या किसी दूसरे तरल पदार्थ को जोर से किसी ओर फेंकने मे होता है। मु०~**छूटना या निकलना** = किसी स्थान से तरल पदार्थ का बहुत वेग से बाहर निकलना।

पिचकीⓅ†—स्त्री० दे० 'पिचकारी'।

पिचपिचा—वि० लसदार, चिपचिपा। दबा हुआ और गुलगुला।

पिचपिचाहट—स्त्री० पिचपिचा होने की स्थिति या दशा।

पिचुक्का†—पुं० पिचकारी। गोलगप्पा।

पिचोतरसो† पुं० एक सो पांच की संख्या, सौ और पांच।

पिच्चित—वि० [सं०] पिचका या दबा हुआ।

पिच्ची—वि० दे० 'पिच्चित'।

पिच्छ—पुं० [सं०] पशु की पूँछ, लांगूल। मोर की पूँछ। मोर की चोटी, चूडा।

पिच्छल—पुं० [सं०] मोचरस। आकाश-बेल। शीशम। वि० जिसपर पैर फिसले, चिकना। वि० [हिं०] दे० 'पिछला'।

पिच्छा—स्त्री० [सं०] मोचरस। सुपारी। शीशम। नारंगी। निर्मली। आकाशबेल। भात या चावल का माँड।

पिच्छिल—वि० [सं०] गीला और चिकना। जिसपर पडने से पैर रपटे या फिसले। चूडायुक्त (पक्षी)। खट्टा, कोमल, फूला हुआ और कफकारी (पदार्थ जैसे, लसोडा आदि)। स्निग्ध सरस व्यंजन (कढी, दाल आदि)।

पिछड़ना—अक० पीछे रह जाना, साथ-साथ या आगे न रहना।

पिछलगा—पुं० वह मनुष्य जो किसी के पीछे चले, अधीन। वह मनुष्य जो अपने स्वतंत्र

विचार न रखता हो बल्कि सदा किसी दूसरे के विचारो या सिद्धातो के अनुसार काम करे। अनुगामी, शिष्य। नौकर। पिछलगी—स्त्री० पिछलगा होने का भाव, अनुयायी होना। पिछलग्गू†—पुं० दे० 'पिछलगा'।

पिछलत्ती—स्त्री० घोडो आदि का पिछले पैरो से मारना।

पिछलना—अक० पीछे की ओर हटना या मुडना।

पिछला—वि०[वि० स्त्री० पिछली] पीछे की ओर का, अगला का उलटा। बाद का, पहला का उलटा। अत की ओर का। बीता हुआ, पुराना। गत बातो मे से अतिम। पु० पिछले दिन का पढा हुआ पाठ, एक दिन पहले पढा हुआ पाठ। वह खाना जो रोजे के दिनो मे मुसलमान लोग कुछ रात रहते खाते है, सहरी।

पिछवाई—स्त्री० पीछे की ओर लटकाने का परदा।

पिछवाडा—पुं० किसी मकान का भाग। घर के पीछे का स्थान या जमीन।

पिछवार(पु)—पु० दे० 'पिछवाडा'।

पिछाडी—स्त्री० पीछे का हिस्सा। वह रस्सी जिससे घोडे के पिछले पैर बांधते है।

पिछान(पु)†—स्त्री० दे० 'पहचान'। ⊙ना = सक० दे० 'पहचानना'।

पिछारी—स्त्री० दे० 'पिछाडी'।

पिछेलना—सक० धक्का देकर पीछे हटाना। पीछे छोडना।

पिछौंहँ(पु)†क्रि० वि० पीछे की ओर, पीछे की ओर से।

पिछौरा†—पुं० पुरुषो के ओढने का दुपट्टा या चादर।

पिटंत—स्त्री० पीटने की क्रिया या भाव, मारपीट।

पिटक—पुं० [स०] पिटारा। फुड़िया, फुसी। आभूषण जो ध्वजा मे लगाया जाता है। किसी ग्रथ का एक भाग (जैसे, त्रिपिटक = तीन भागोवाला बौद्ध ग्रथ)।

पिटना—पु० चूने आदि की छत पीटने का औजार, थापी। अक० [सक० पीटना] मार खाना, ठोका जाना। आघात पाकर आवाज करना।

पिटरी(पु)—स्त्री० दे० 'पिटारी'।

पिटाई—स्त्री० पीटने का काम या भाव। प्रहार, मार। पीटने की मजदूरी।

पिटारा—पुं० बांस, बेत, मूज आदि के नरम छिलको से बना हुआ एक प्रकार का बडा ढकनेदार पात्र, वह झांपी जिसका घेरा गोल तल चिपटा और ढक्कन ढालुवां गोल अथवा बीच मे उठा हुआ होता है। पिटारी—स्त्री० छोटा पिटारा, झांपी। पानदान। मु०~का खर्च = वह धन जो स्त्रियो को पान खर्च के लिये दिया जाय। वह धन जो किसी स्त्री को व्यभिचार से प्राप्त हो।

पिट्टस—स्त्री० शोक या दुःख से छाती पीटने की क्रिया। (स्त्री०) मु०~पड़ना या मचना = शोक या दुःख मे छाती पीटा जाना, रोना धोना होना।

पिट्टू—वि० मार खाने का अभ्यस्त, अकसर पीटा जानेवाला।

पिट्ठी—स्त्री० दे० 'पीठी'।

पिट्ठू—पुं० पीछे चलनेवाला, अनुयायी (तिरस्कार)। सहायक, हिमायती। किसी खिलाडी का वह कल्पित साथी जिसकी बारी मे वह स्वय खेलता है।

पिठवन—स्त्री० एक प्रसिद्ध लता जो ओषधि के काम आती है।

पिठौरी—स्त्री० पीठी की बनी हुई बरी या पकौडी।

पिढ़ई—स्त्री० छोटा पीडा या पाटा। रहट आदि का ढांचा जिसपर छोटा यत्र रखा जाता है।

पिढ़ी†—स्त्री० मचिया। दे० 'पीढ़ी'।

पितबर—पुं० दे० 'पीताबर'।

पितपापड़ा—पुं० एक झाड या क्षुप जिसका उपयोग औषध के रूप मे होता है, दवनपापडा।

पितर—पुं० मरे हुए पुरखे जिनके नाम पर

श्राद्ध या जलदान किया जाता है। ⊙पति = [स०] पुं० यमराज।

पितराइंध†—स्त्री० खाद्य वस्तु के स्वाद और गध मे वह विकार जो पीतल के वरतन मे अधिक समय तक रखे रहने से उत्पन्न हो जाता है।

पितराई—स्त्री० पीतल का कसाव, पितराइंध।

पिता—पु० [सं०] वह पुरुप जिसके वीर्य से जन्म हो। उत्पन्न करनेवाला, वनानेवाला। पालन पोपण करनेवाला। वाप। ⊙**मह** = पुं० [स०] पिता का पिता, दादा। भीष्म। ब्रह्मा। शिव।

पितिया—पु० चाचा। ⊙**ससुर**† = पुं० पति या पत्नी का चाचा, चचिया ससुर। ⊙**सास**† = स्त्री० स्त्री या पति की चाची, ससुर के भाई की स्त्री, चचिया सास।

पितु(पु)—पु० दे० 'पिता'।

पितृ—पु० [सं०] दे० 'पिता'। किमी व्यक्ति के मृत वाप, दादा, परदादा आदि। किसी व्यक्ति का ऐसा मृत पूर्वपुरुष जिसका प्रेतत्व छूट चुका हो। ⊙**ऋण** = पु० धर्मशास्त्रानुसार मनुष्य के तीन जन्मजात ऋणो मे से एक (पुत्र उत्पन्न करने से इस ऋण से मुक्ति होती है)। ⊙**कर्म** = पुं० श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म जो पितरो के उद्देश्य से होते हैं। ⊙**कल्प** = पुं० श्राद्ध आदि कर्म। ⊙**कुल** = पुं० वाप, दादा या उनके भाई वधुओ आदि का कुल, पिता के गोत्र के लोग। ⊙**कृत्य** = पुं० पितृकर्म, श्राद्ध आदि कार्य। ⊙**गृह** = पुं० वाप का घर, मायका (स्त्रियो के लिये)। ⊙**तर्पण** = पुं० पितरो के उद्देश्य से किया जानेवाला जलदान, तर्पण। ⊙**तिथि** = स्त्री० अमावास्या तिथि जो पितरो को वहुत प्रिय है। ⊙**तीर्थ** = पु० गया, वाराणसी, प्रयाग आदि २२२ तीर्थ। अँगूठे और तर्जनी के वीच का भाग। ⊙**दान** = पु० पितरो के उद्देश्य से किया जानेवाला दान। ⊙**दाय** = पुं० पिता से प्राप्त धन या सपत्ति, वपौती। ⊙**दिन** = पु० अमावास्या का दिन। ⊙**पक्ष** = पु० कुआर की कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय। पिता के सवधी, पितृकुल। ⊙**पति** = पु० यमराज। ⊙**पद** = पु० पितरो का लोक। पितृत्व। ⊙**पैतामह** = वि० वाप दादो का। ⊙**प्रसू** = स्त्री० पिता की माता, दादी। सध्या। ⊙**प्रिय** = पु० भँगरा, भृगराज। अगस्त का वृक्ष। ⊙**मेध** = पु० वैदिक काल के अत्येष्टि कर्म का एक भेद जिसमे अग्निदान और दस पिंडदान आदि समिलित थे और जो श्राद्ध से भिन्न होता था। ⊙**यज्ञ** = पुं० पितृतर्पण। ⊙**याण** = पु० उपनिषदो के अनुसार मृत्यु के अनतर जीवात्मा के चद्रलोक होते हुए पितृलोक मे जाने का मार्ग। मोक्ष के लिये पितरो को प्रसन्न करने का मार्ग। पितृलोक जाने का मार्ग, (छादोग्य उपनिषद् पितृलोक को चद्रलोक से ऊपर वताता है)। ⊙**लोक** = पु० पितरो का लोक जो चद्रलोक के ऊपर है (छादोग्योपनिषद्), चद्रलोक के ऊपर वह स्थान जहाँ पितृगण रहते है। ⊙**वन** = पु० श्मशान।

पितृव्य—पु० [सं०] चचा, चाचा।

पित्त—पु० [सं०] यकृत द्वारा वनाया जानेवाला वह भूरापन लिए पीला रस जो पाचन क्रिया मे सहायक होता है। ⊙**घ्न** = वि० पित्तनाशक। ⊙**ज्वर** = पु० वह ज्वर जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हो, पैत्तिक ज्वर। ⊙**पापडा** = पु० दे० 'पितपापडा'। ⊙**प्रकृति** = वि० जिसके शरीर मे वात और कफ की अपेक्षा पित्त की अधिकता हो। ⊙**प्रकोपी** = वि० (वस्तु) जिसके भोजन से पित्त की वृद्धि हो। **पित्ताशय**—पु० पित्त की थैली जो जिगर मे पीछे और नीचे की ओर होती है।

पित्तल—वि० जिससे पित्तदोष वढे, पित्तकारी (द्रव्य)। पु० भोजपत्र। हरताल। पीतल धातु।

पित्ता—पु० जिगर मे वह थैली जिसमे पित्त रहता है, पित्ताशय। साहस, हौसला। मु० ~**उवलना या खौलना** = वडा क्रोध आना, मिजाज भडक उठना। ~**निक-**

लना† = बहुत अधिक परिश्रम का काम करना। ~पानी करना = बहुत परिश्रम करना। ~मरना = गुस्सा न रह जाना। ~मारना = क्रोध दबाना। कोई अरुचिकर या कठिन काम करने मे न ऊबना।

पित्ती—स्त्री० एक रोग जिसमे शरीर भर मे छोटे छोटे ददोरे पड जाते हैं। महीन दाने जो गरमी के दिनो मे शरीर पर निकल आते हैं, अँभौरी। †पु० पितृव्य, चचा।

पित्र्य—वि० [सं०] पितृ सबधी।

पिथौरा—पु० दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज चौहान।

पिदड़ी—स्त्री० दे० 'पिद्दी'।

पिद्दा—पु० दे० 'पिद्दी'।

पिद्दी—स्त्री० बया की जाति की एक सुदर छोटी चिडिया। बहुत ही तुच्छ और नगण्य जीव।

पिधान, पिधानक—पु० [सं०] पर्दा, गिलाफ। ढक्कन, ढकना। तलवार की म्यान। किवाड।

पिनकना—अक० अफीम के नशे मे सिर का झुक पडना। नीद मे आगे को झुकना, ऊँघना।

पिनपिन—स्त्री० बच्चो का अनुनासिक और अस्पष्ट स्वर मे ठहरकर रोने का शब्द, रोगी या दुर्बल बच्चे के रोने का शब्द। रोगी की धीमी और अनुनासिक आवाज। ⊙हाँ = पु० पिनपिन करनेवाला बच्चा, हर समय रोनेवाला बच्चा।

पिनपिनाना—अक० रोते समय नाक से स्वर निकालना, धीमे स्वर मे रुक रुककर रोना, रोगी अथवा कमजोर बच्चे का रोना।

पिनाक—पु० [सं०] शिव जी का वह धनुष जिसे श्री रामचद्र जी ने जनकपुर मे तोड़ा था। धनुष। त्रिशूल। मु०~होना = (किसी काम का) दुष्कर या असाध्य होना।

पिनाकी—पु० [सं०] शिव।

पिन्नी—स्त्री० एक प्रकार की मिठाई, जो आटे या किसी दूसरे अन्न के चूर्ण में गुड या चीनी मिलाकर बनाई जाती है।

पिन्हाना†—सक० दे० 'पहनाना'

पिपरमिंट—पु० [अ०] पुदीने की तरह का एक पौधा। इस पौधे का प्रसिद्ध सत्त जो दवा के काम आता है।

पिपरामूल—पु० पीपल की जड।

पिपराही†—पु० पीपल का वन, पीपल का जगल।

पिपासा—स्त्री० [सं०] लालच, लोभ। **पिपासित**—वि० तृषित प्यासा। **पिपासु**—वि० प्यासा। उग्र इच्छा रखनेवाला, लालची।

पिपीलिका—स्त्री० [सं०] च्यूँटी।

पिप्पल—पु० [सं०] पीपल, अश्वत्थ।

पिप्पली—स्त्री० [सं०] पीपल। ⊙**मूल** = पु० [सं०] पिपरामूल।

पियⓅ—पु० पति, स्वामी।

पियराई†—पीलापन, जर्दी।

पियरानाⓅ†—अक० पीला पडना, पीला होना।

पियरी†—वि० स्त्री० दे० 'पीली'। स्त्री० पीली रँगी हुई धोती। पीलापन।

पियल्ला†—पु० दूध पीनेवाला बच्चा। पीले रग की मीठी बोली बोलनेवाली एक चिडिया जो मैना से छोटी होती है, पियरोला।

पियाⓅ—पु० दे० 'पिय'।

पियाज†—पु० दे० 'प्याज'। **पियाजी**†—पु० दे० 'प्याजी'।

पियादा†—पु० दे० 'प्यादा'।

पियाना†—सक० दे० 'पिलाना'।

पियाबाँसा—पु० दे० 'कटसरैया'।

पियार—पु० मझोले आकार का एक पेड जिसके बीजो की गिरी चिरौंजी कहलाती है।†दे० 'प्यार'। † वि० दे० 'प्यारा'।

पियारा—वि० दे० 'प्यारा'।

पियाल—पु० [सं०] चिरौंजी का पेड। दे० 'पियार'।

पियाला—पु० दे० 'प्याला'।

पियास—वि० दे० 'प्यास'। **पियासा**—वि० दे० 'प्यासा'।

पियासाल—पु० बहेड़े की जाति का एक बड़ा पेड़।
पियूख(पु)—पुं० दे० 'पीयूष'।
पिरकी†—स्त्री० फोड़िया, फुसी।
पिरथी†(पु)—स्त्री० दे० 'पृथ्वी'।
पिराई†(पु)—स्त्री० दे० 'पियराई'।
पिराक—पुं० एक प्रकार का पकवान, गोझिया।
पिराना†(पु)—अक० दर्द करना, दुखना। पीड़ा अनुभव करना, दुःख समझना।
पिरारा(पु)†—पुं० दे० 'पिंडारा'।
पिरीतम—पु० दे० 'प्रियतम'।
पिरीता(पु)—वि० प्रिय, प्यारा।
पिरोजा—पु० दे० 'फिरोजा'।
पिरोना—सक० छेद के सहारे सूत, तागे आदि में फँसाना, गूँथना। तागे आदि को छेद में डालना।
पिरोहना(पु)—अक० दे० 'पिरोना'।
पिलना—अक० ढल पड़ना, झुक पड़ना। एकबारगी प्रवृत्त होना, भिड़ जाना। पेरा जाना।
पिलकना(पु)—सक० गिरना। लुढ़काना, ढकेलना।
पिलकुआँ—पुं० एक प्रकार का देशी जूता।
पिलपिला—वि० भीतर से गीला और नरम। ⊙ना = रसदार या गूदेदार वस्तु को दबाना जिससे रस या गूदा ढीला होकर बाहर निकले।
पिलवाना—सक० [पिलाना का प्रे०] पिलाने का काम दूसरे से कराना। पेलने या पेरने का काम दूसरे से कराना, पेरवाना।
पिलाना—सक० [अक० पीना] पीने का काम कराना। पीने को देना। भीतर भरना।
पिल्ला—पु० कुत्ते का बच्चा।
पिल्लू—पुं० एक सफेद लंबा कीड़ा जो सड़े हुए फल या घाव आदि में देखा जाता है।
पिव(पु)—पु० दे० 'पिय'।
पिवाना†—सक० दे० 'पिलाना'।
पिशाच—पु० [सं०] यक्षों और राक्षसों आदि से हीन कोटि की एक देवयोनि, भूत। ⊙चर्या = स्त्री० शिव जी के समान श्मशानसेवन। ⊙वृक्ष = पुं० सिहोर का पेड़, शाखोट वृक्ष।
पिशित—पुं० [सं०] मांस, गोश्त।
पिशुन—पु० [सं०] एक की दूसरे से बुराई करके भेद डालनेवाला, चुगलखोर। केसर। कौआ।
पिष्ट—वि० [सं०] पिसा हुआ। ⊙पेषण = पु० पिसे हुए को पीसना। कही हुई बात को फिर फिर कहना।
पिष्टक—पुं० [सं०] पिष्टी, पीठी। कचौरी या पूआ, रोट। एक नेत्ररोग, फूला। एक प्रकार का अस्थिभंग (सुश्रुत)।
पि[illegible]हारी—स्त्री० वह स्त्री जिसकी जीविका आटा पीसने से चलती हो।
[illegible]सना—अक० दाब या रगड़ से सूक्ष्म टुकड़ों में बँटना, चूर्ण होना। पिसकर तैयार होना। दब जाना, कुचल जाना। घोर कष्ट, दुःख या हानि उठाना। थककर बेदम होना।
पिसवाज(पु)—स्त्री० दे० 'पेशवाज'।
पिसाई—स्त्री० पीसने की क्रिया या भाव। पीसने का काम या व्यवसाय। पीसने की मजदूरी। कड़ी मिहनत।
पिसाच—(पु) पुं० दे० 'पिशाच'।
पिसान†—पु० गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा आदि अन्न का बारीक पिसा हुआ चूर्ण, आटा।
पिसाना—सक० [पीसना का प्रे०] पीसने का काम दूसरे से कराना। अक० दे० 'पिसना'। पिसानी†—स्त्री० पीसने का काम। कठिन काम।
पिसुन(पु)—पुं० दे० 'पिशुन'।
पिस्तई—वि० पिस्ते के रंग का, पीलापन लिए हरा।
पिस्ता—पुं० एक छोटा पेड़ जिसके फल की गिरी अच्छे मेवों में है।
पिस्तौल—स्त्री० तमंचा, छोटी बंदूक।
पिस्सू—पुं० एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा जो काटता और रक्त पीता है, कुटकी।
पिहकना—अक० कोयल, पपीहे, मोर आदि कोमल कंठवाले पक्षियों का बोलना।
पिहानी—स्त्री० ढक्कन, पर्दा, आवरण।
पिहित—वि० [सं०] छिपा हुआ। पुं० एक अर्थालंकार जिसमें किसी के मन का भाव जानकर क्रिया द्वारा उसपर अपना भाव प्रकट करना वर्णन किया जाय।

पींजना—सक० रुई धुनना।

पींजराⓅ—पुं० दे० 'पिंजडा'।

पींड+—पुं० शरीर, देह। तना, पेडी। गीली वस्तु का गोला, पिंड। दे० 'पीड'। पिंडखजूर।

पींडुरीⓅ—स्त्री० दे०' पिंडली'।

पीⓅ—पुं० दे० 'पिय'।

पीक—स्त्री० चबाए हुए पान के बीडे का या गिलौरी का थूक से मिला हुआ रस। ⊙**दान** = पुं० एक विशेष प्रकार का बना हुआ बरतन जिसमे पीक थूकी जाती है, उगालदान।

पीकना—अक० पिहकना, पपीहे, मोर या कोयल आदि मधुर कठवाले पक्षियों का बोलना।

पीका†—पुं० नया कोमल पत्ता, कोपल।

पीच—स्त्री० मॉड।

पीछा—पुं० किसी व्यक्ति या वस्तु के पीछे की ओर का भाग, पुश्त, आगा का उलटा। किसी घटना के बाद का समय। पीछे पीछे चलकर किसी के साथ लगे रहना। मु०~**करना** = किसी के पीछे पीछे जाना या घूमा करना, हर समय साथ या समीप बने रहना। किसी बात के लिये किसी को तग या दिक करना। किसी को पकडने, मारने या भगाने आदि के लिये उसके पीछे पीछे चलना, खदेडना। ~**छुडाना** = पीछा करनेवाले व्यक्ति से जान छुडाना। अप्रिय या इच्छाविरुद्ध सबध का अत करना। ~**छूटना** = पीछा करनेवालो से छुटकारा मिलना। अप्रिय कार्य या सबध से छुटकारा मिलना। ~**छोड़ना** = तग न करना। जिस बात मे बहुत देर से लगे हो उसे छोड देना। ~**दिखाना** = भागना, पीठ दिखाना। दे० 'पीछा देना'। ~**देना** = किसी काम मे पहले साथ देकर फिर किनारा करना। ~**पकडना या लेना** = आश्रय का आकाक्षी बनना, सहारा बनाना।

पीछूⓅ†—क्रि० वि० दे० 'पीछे'।

पीछे—अव्य० पीठ की ओर, आगे या सामने का उलटा। पीछे की ओर कुछ दूर पर। पश्चात्, अनतर। अत मे, आखिर मे। किसी की अनुपस्थिति या अभाव मे, पीठ पीछे। मर जाने पर। लिये, वास्ते। कारण, निमित्त। मु०—(**किसी के**) ~**चलना** = किसी विषय मे किसी को पथ-दर्शक, नेता या गुरु मानना। अनुकरण करना। ~**छूटना, पड़ना या होना** = किसी विषय मे किसी व्यक्ति की अपेक्षा कम या घटकर होना। किसी विषय मे किसी ऐसे आदमी से घट जाना जिससे किसी समय बराबरी रही हो। (**किसी के**) ~**छोडना या भेजना** = किसी का पीछा करने के लिये किसी को भेजना। (**किसी को**) ~**छोड़ना** = किसी विषय मे किसी से बढकर या अधिक होना। किसी विषय मे किसी से आगे निकल जाना। (**धन**) ~**डालना** = आगे के लिये बटोरना, सचय करना। (**किसी काम के**) ~**पडना** = किसी काम को कर डालने पर तुल जाना, किसी कार्य के लिये अवि-राम उद्योग करना। (**किसी व्यक्ति के**) ~**पडना** = कोई कार्य करने के लिये किसी से बराबर कहना। मौका या सधि ढूंढ ढूंढकर किसी की बुराई करते रहना। ~**लगना** = पीछे घूमना, पीछा करना। दुखजनक वस्तु का साथ हो जाना। (**अपने**) ~**लगाना** = आश्रय देना। अनिष्ट या अप्रिय वस्तु से सबध कर लेना। (**किसी और के**) ~**लगाना** = अनिष्ट या अप्रिय वस्तु मे सबध कर देना। भेद लेने या निगाह रखने के लिये किसी को साथ कर देना।

पीटना—पुं० मातम। मुसीबत, आफत। सक० चोट पहुँचाना, मारना। चोट से चिपटा या चौडा करना। भले या बुरे प्रकार से कर डालना। किसी न किसी प्रकार प्राप्त कर लेना। मु०—**छाती पीटना** = दुःख या शोक प्रकट करने के लिये छाती पर हाथ से आघात करना। **किसी व्यक्ति**

कोया के लिये पीटना = किसी के मरने पर छाती पीटना, मातम करना।

पीठ—पुं० [सं०] लकडी, पत्थर आदि का बैठने का आधार या आसन, पीढा, या चौकी। विद्यार्थियो आदि के बैठने का आसन। किसी मूर्ति के नीचे का आधार-पिंड। । किसी वस्तु के रहने की जगह, अधिष्ठान (जैसे, विद्यापीठ, शारदापीठ आदि)। सिंहासन, तख्त। पवित्र स्थान, वेदी। वह स्थान जहाँ पुराणानुसार दक्ष-पुत्री सती का कोई अग या आभूषण विष्णु चक्र से कटकर गिरा है। प्रदेश, प्रात। बैठने का एक आसन। वृत्त के किसी अश का पूरक। ⊙**केलि** = पुं० पीठमर्द नायक। ⊙**गर्भ** = पुं० वह गड्ढा जो मूर्ति को जमाने के लिये पीठ (आसन) पर खोदकर बनाया जाता है। ⊙**देवता** = पुं० आधार शक्ति, आदि देवता। ⊙**मर्द** = पुं० नायक के चार शाखाओ मे से एक जो वचनचातुरी से नायिका का मानमोचन करने मे समर्थ हो। वह नायक जो कुपित नायिका को प्रसन्न कर सके। ⊙**विवर** = पुं० वह स्थान जहाँ पुराणानुसार दक्षपुत्री सती का कोई अग या आभूषण विष्णु के चक्र से कटकर गिरा है। स्त्री० [हिं०] पेट के दूसरी ओर का भाग जो मनुष्य मे पीछे की ओर तथा पशुपक्षियो आदि के शरीर मे ऊपर की ओर पडता है, पुश्त। बना-वट के पीछे का भाग। मु०~**का** = दे० 'पीठ पर का'। ~**का कच्चा** = देखने मे हृष्टपुष्ट और सुदर किंतु सवारी के लिये अयोग्य (घोडा)। ~**का सच्चा** = (घोडा) जिसमे अच्छी चाल हो, सवारी मे आराम देनेवाला। ~**की** = दे० 'पीठ पर की'। ~**खाली होना** = सहायकहीन होना। ~**चारपई से लग जाना** = बीमारी के कारण अत्यत दुबला और कमजोर हो जाना। ~**ठोकना** = किसी कार्य की प्रशसा करना, शाबाशी देना। हिम्मत बढाना। ~**तोड़ना** = हिम्मत तोडना, हताश करना। ~**दिखाना** = युद्ध या मुकाबिले से भाग जाना। ~**दिखाकर जाना** = स्नेह तोडकर या ममता छोडकर जाना। ~**देना** = विदा होना। विमुख होना। भाग जाना। लेटना, आराम करना। ~**पर** = एक ही माता की सतानो मे से किसी विशेष मे जन्म के बाद। ~**पर का** = जन्मक्रम मे अपने सहोदर के अनतर का। ~**पर खाना** = भागते हुए मार खाना। ~**पर होना** = मदद या हिमायत पर होना। ~**पीछे** = अनुपस्थिति मे। ~**फेरना** = विदा होना, चला जाना भाग जाना। मुँह फेर लेना। अरुचि या अनिच्छा प्रकट करना। ~**मींजना या पीठ पर फेरना** = दे० 'पीठ ठोकना'। ~**लगना** = कुश्ती मे हार खाना। (घोडे, बैल आदि की) ~**लगना** = पीठ पर घाव हो जाना। (चारपाई आदि से) ~**लगाना** = लेटना, सोना, आराम करना। (घोडे, बैल आदि का) ~**लगाना** = इस प्रकार कसना या लादना कि पीठ पर घाव हो जाय।

पीठना—सक० दे० 'पीसना'।

पीठक—पुं० [सं०] पीढा।

पीठाⓟ—पुं० दे० 'पीढा'। एक प्रकार का पकवान जो आटे की लोइयो मे चने या उरद की पीठी भरकर बनाया जाता है।

पीठिⓟ—स्त्री० दे० 'पीठ'।

पीठिका—स्त्री० [सं०] आधार (मूर्ति, खभे आदि का) आसन। छोटा पीढा। परि-च्छेद, अध्याय।

पीठीⓟ—स्त्री० पानी मे भिगोकर पीसी हुई दाल (विशेषत उरद या मूंग की)।

पीड—स्त्री० सिर या बालो पर बाँधा जाने-वाला एक आभूषण। दे० 'पीडा।' ⊙**क** = वि० [सं०] पीडा देनेवाला, दुख-दायी। सतानेवाला।

पीडन—पुं० [सं०] दबाना, चाँपना। पेरना। दुख देना, अत्याचार करना। भली भाँति पकडना, दबोचना। उच्छेद, नाश। आक्रमण करके किसी देश को बर्बाद करना। सूर्य और चंद्रमा का ग्रहण। तिरोभाव, लोप।

पीड़ा—स्त्री० [सं०] शारीरिक या मानसिक कष्ट, तकलीफ, दर्द। रोग। **पीड़ित**—वि० पीडायुक्त, दुखित, सताया हुआ। रोगी। दबाया हुआ। नष्ट किया हुआ।

पीडुरी(पु)—स्त्री० दे० 'पिंडली'।

पीढ़ा†—पुं० चौकी के आकार का छोटा और कम ऊँचा आसन। पाटा, पीठ।

पीढ़ी—स्त्री० कुलपरंपरा में किसी विशेष कुल या व्यक्ति से आरंभ करके बाप, दादे, परदादे आदि अथवा बेटे, पोते, परपोते आदि के क्रम से पहला, दूसरा आदि कोई स्थान, पुश्त। किसी विशेष अथवा प्राणी का संतति-समुदाय। किसी विशेष समय में वर्गविशेष के व्यक्ति की समष्टि, संतान, नस्ल।÷ छोटा पीढा।

पीत—वि० [सं०] पीला, पीतवर्ण युक्त। भूरा, कपिलवर्ण। पिया हुआ। पुं० पीला रंग। भूरा रंग। हरताल। हरिचंदन। कुसुम। पुखराज। मूँगा। ⊙**कंद** = पुं० गाजर। ⊙**चंदन** = पुं० द्राविडदेशीय पीले रंग का चंदन। हरिचंदन ⊙**धातु**(पु) —स्त्री० रामरज, गोपीचंदन। ⊙**पुष्प** = पुं० कनेर। घिया तरोई। पीले फल की कटसरैया। चंपा। ⊙**फेन** = पुं० रीठा, अरिष्टक वृक्ष। ⊙**मणि** = पुं० पुखराज। ⊙**वास** = पुं० श्रीकृष्ण। वि० पीले वस्त्रवाला, जो पीला कपड़ा पहने। ⊙**शाल** = पुं० विजयसार। ⊙**सार** = पुं० पीत चंदन, हरिचंदन। सफेद चंदन, मलयागिर चंदन। गामेद मणि। शिलारस। अकोल। विजयसार। ⊙**स्फटिक** = पुं० पुखराज। **पीतांबर**—पुं० पीला कपड़ा। मरदानी रेशमी धोती जिसे लोग पूजापाठ आदि के समय पहनते हैं। श्रीकृष्ण। **पीताभ**—वि० जिसमें पीली आभा निकली हो, पीला। पुं० पीला चंदन।

पीतक—पुं० [सं०] हरताल। केशर। अगर। पीतल। पीला चंदन। शहद। वि० पीले रंग का।

पीतम(पु)—वि० दे० 'प्रियतम'। पुं० दे० 'प्रियतम'।

पीतर†—पुं० दे० 'पीतल'।

पीतल—पुं० एक प्रसिद्ध पीली उपधातु जो अधिकतर ताँबे और जस्ते के सहयोग से बनती है, यद्यपि कभी कभी इसमें राँगे और सीसे का भी कुछ अंश मिलाया जाता है। यह ताँबे से मजबूत होती है। इसका व्यवहार बरतन, मूर्तियाँ, कल पुर्जे और बाजा बनाने में होता है।

पीति—स्त्री० [सं०] पीना, पान (वैदिक)। गति। पुं० घोड़ा। सूँड।

पीदड़ी—स्त्री दे० 'पिद्दी'।

पीन—वि० [सं०] स्थूल, मोटा। पुष्ट, प्रवृद्ध। संपन्न, भरापूरा। पुं० मोटापन, स्थूलता।

पीनक—स्त्री० अफीम की नशे की हालत में अफीमची का आगे की ओर झुक झुक पड़ना। ऊँघना।

पीनस—पुं० [सं०] नाक का एक रोग जिसमें उसकी घ्राणशक्ति नष्ट हो जाती है। स्त्री० [हिं०] पालकी।

पीना—सक० तरल वस्तु को घूँट घूँट करके गले के नीचे उतारना, घूँटना। किसी बात को दबा देना, उपेक्षा करना। उत्तेजना न प्रकट करना, सह जाना। किसी मनोविकार को भीतर ही भीतर दबा देना। किसी मनोविकार का कुछ भी अनुभव न करना। शराब पीना। धूम्रपान करना। सोखना, जब्त करना। पुं० निसार खाद्य, खली।

पीनी—स्त्री० पोस्त, तीसी या तिल आदि की खली।

पीप—पुं० फोड़े या घाव के भीतर से निकलनेवाला सफेद लसदार पदार्थ, मवाद।

पीपर—पुं० दे० 'पीपल'। ⊙**वर्न**(पु) = कान में पहनने का एक आभूषण।

पीपरामूल—पुं० दे० 'पीपलामूल'।

पीपल—पुं० बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जो हिंदुओं में बहुत पवित्र माना जाता है। स्त्री० एक लता जिसकी कलियाँ प्रसिद्ध ओषधि हैं।

पीपलामूल—पुं० एक प्रसिद्ध औषधि जो पीपल लता की जड़ है।

पीपा—पुं० बड़े ढोल के आकार का या चौकोर काठ या लोहे का पात्र जिसमे मद्य, तेल आदि तरल पदार्थ रखे जाते हैं।

पीब—पुं० दे० 'पीप'।

पीयⓅ—पुं० दे० 'पिय'।

पीयरⓅ—वि० दे० 'पीला'।

पीयूखⓅ—स्त्री० दे० 'पीयूष'।

पीयूष—पुं० [सं०] अमृत, सुधा। दूध। उस गाय का दूध जिसे ब्याए सात दिन से अधिक न हुआ हो ⊙**भानु** = पुं० चद्रमा। ⊙**वर्ष** = पुं० चद्रमा। कपूर। प्रत्येक चरण मे १९ मात्राओंवाला एक मात्रिक छद जिसमे दसवी मात्रा पर यति और चरणात मे विराम होता है। यति का नियम न रहने पर इसी छद को आनद-वर्धक भी कहते है। आनदवर्धक मे अतिम 'गुरु की जगह दो लघु भी आ सकते हैं।

पीर—स्त्री० पीडा, दुख। सहानुभूति, हम दर्दी। वि० [फा०] महात्मा, सिद्ध। बूढा, बडा बुजुर्ग। पुं० दे० पीडक'। ⊙**मुरशिद**—पुं० गुरु, महात्मा, पूजनीय अथवा अपने से दरजे मे बहुत बडा। ⊙**जादा** = पुं० पीर या धर्मगुरु की सतान।

पीरनाⓅ—सक० दे० 'पेरना'।

पीरा†—स्त्री० दे० 'पीडा'। वि० दे० 'पीला'।

पीरी—स्त्री० [फा०] बुढापा। चेला मूँडने का धधा या पेशा। इजारा, ठेका।

पील—पुं० [फा०] हाथी, गज। शतरज का तिरछा चलने और मरने या मारनेवाला एक मोहरा, फील, ऊँट। पुं० [हिं०] एक कीडा। पुं० [सं०] एक फलदार पेड। ⊙**पांव** = पु० एक प्रसिद्ध रोग, फीलपा। ⊙**पाल**Ⓟ† = पुं० दे० 'पीलवान'। ⊙**वान** = पु० दे० 'फीलवान'। ⊙**वान**—पु० [फा०] दे० फीलवान'।

पीलसाज—पु० दीपक जलाने का पात्र, चिरागदान।

पीला—वि० हल्दी, सोने या केसर के रग का (पदार्थ), जर्द। कातिहीन, निस्तेज। पु० हल्दी या सोने के रग से मिलता जुलता एक प्रकार का रग। **पीली चिट्ठी**—स्त्री० विवाह का निमत्रण जिसपर प्रायः केसर आदि छिड़का रहता है। मु०~**पड़ना या होना** = बीमारी के कारण चेहरे या शरीर से रक्त का अभाव सूचित होना। भय से चेहरे पर सफेदी आना। ~**फटना** = तडका होना, सबेरा होना।

पीलिया—पु० कमल रोग जिसमे आँखें और शरीर पीला हो जाता है।

पीलु—पु० [सं०] एक फलदार वृक्ष, पीलू। फूल, पुष्प। परमाणु। हाथी। हड्डी का टुकडा, अस्थिखड। ताल वृक्ष का तना। बाण। कृमि। चने का साग। सरपत या सरकडे का फूल। किकिरात वृक्ष या लाल कटसरैया। अखरोट का पेड या फल। हथेली।

पीलू—पु० एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष जिसका फल दवा के काम मे आता है, वे सफेद लबे कीडे जो सडने पर फलो आदि मे पड जाते हैं। एक प्रकार का राग जो दिन के तीसरे पहर मे गाया जाता है। इसमे गाधार और ऋषभ का मेल होता है और सब शुद्ध स्वर लगते है।

पीव—वि० मोटा, पुष्ट।

पीवर—वि० [सं०] मोटा, स्थूल। भारी गुरु।

पीवरी—स्त्री० [सं०] सतावर। सरिवन। युवती स्त्री। गाय।

पीवस—वि० [सं०] मोटा ताजा, स्थूल (वैदिक)।

पीवा—स्त्री० [सं०] जल, पानी। † वि० [हिं०] मोटा, स्थूल।

पीविष्ठ—वि० [सं०] बेहद मोटा, अति स्थूल।

पीसना—पु० पीसी जानेवाली वस्तु। उतनी जो किसी एक आदमी को पीसने को दी जाय। किसी एक आदमी के हिस्से या जिम्मे का काम, किसी एक आदमी के लिये अलग किया हुआ काम (व्यंग मे)। मु०~**पीसना** = लगातार परिश्रम करते रहना। सक० किसी वस्तु को रगड़कर या दबाव पहुँचाकर आटे, बुकनी या धूल के रूप मे करना। किसी वस्तु को जल की सहायता से रगडकर बारीक करना। कुचल देना। कड़ी मिहनत करना, जान लडाना। म०~**किसी आदमी को पीसना**

=बहुत भारी अपकार करना या हानि पहुँचाना, चौपट कर देना।

पीहर—पु० स्त्रियो के मातापिता का घर, मैका, नैहर।

पुख—पु० [सं०] बाण का पिछला भाग जिसमे पर खोंसे रहते हैं।

पुग—पु० [सं०] समूह।

पुगफल—पु० दे० 'पूंगीफल'।

पुगल—पु० [सं०] आत्मा।

पुगव—पु [सं०] बैल, वृष। वि० श्रेष्ठ, उत्तम (शब्दो के अंत मे प्रयुक्त जैसे, नरपुगव)।

पुगीफल—पु० दे० 'पूंगीफल'।

पुछल्ला—पु० बड़ी पूँछ की तरह जोड़ी हुई वस्तु। बराबर पीछे लगा रहनेवाला, साथ न छोड़नेवाला। साथ मे लगी हुई वस्तु या व्यक्ति जिसकी उतनी आवश्यकता न हो। पिछलग्गू, चापलूस।

पुंछार(पु)†—पु० मयूर, मोर।

पुंछाला—पु० दे० 'पूँछल्ला'।

पुज—पु० [सं०] समूह, ढेर। ⊙शः= अव्य० ढेर का ढेर, बहुत सा।

पुजा†—पु० गुच्छा, समूह। पूला, गट्ठा।

पुजी(पु)—स्त्री० दे० 'पूँजी'।

पुड—पु० [सं०] चदन, केसर आदि पोतकर मस्तक या शरीर पर बनाया हुआ चिह्न, तिलक।

पुंडरी—पु०[सं०]एक पौधा जिसका रस आँख के रोगो मे लाभ पहुँचाता है, स्थलपद्म।

पुंडरीक—पु० [सं०] श्वेत कमल। कमल। रेशम का कीड़ा। शेर, बाघ। तिलक। सफेद रग का हाथी। सफेद कोढ। अग्निकोण के दिग्गज का नाम। आग। बाण, शर(अनेकार्थ०)। आकाश (अनेकार्थ०)। पुंडरीकाक्ष—पु० विष्णु। वि० जिसके नेत्र कमल के समान हो।

पुंड्र—पु० [सं०] गन्ना, पौढ़ा। श्वेत कमल। तिलक, टीका। भारत के एक भाग का प्राचीन नाम। ⊙वर्धन=पुं० पुंड्र देश की प्राचीन राजधानी।

पुंलिग—पु० [सं०] पुरुष का चिह्न। शिश्न। पुरुषवाचक शब्द (व्या०)।

पुंश्चली—वि० स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी, छिनाल। पुंश्चलीय—पुं० कुलटा या वेश्या का पुत्र।

पुंस—पु० पुरुष, मर्द। ⊙त्व= पु० पुरुषत्व। पुरुष की स्त्रीगमन की शक्ति। शुक्र, वीर्य। ⊙वान्=वि० पुत्रवाला।

पुंसवन—पुं० [सं०] द्विजातियों के सोलह सस्कारों मे से दूसरा जो गर्भिणी को पुत्र प्रसव करने के अभिप्राय से गर्भाधान से तीसरे महीने होता है। दूध। वैष्णवो का एक व्रत।

पुआ—पु० मीठे रस मे सने हुए आटे की मोटी पूरी या टिकिया।

पुआल—पुं० दे० 'पयाल'।

पुकार—स्त्री० किसी का नाम लेकर बुलाने की क्रिया या भाव, हाँक। रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाहट, दुहाई। ललकार, चुनौती। प्रतिकार के लिये चिल्लाहट, फरियाद। गहरी माँग। ⊙ना= सक० नाम लेकर बुलाना, टेरना। नाम का उच्चारण करना, धुन लगाना। चिल्लाकर कहना, घोषित करना। चिल्लाकर माँगना। रक्षा के लिये चिल्लाना, गोहार लगाना। फरियाद करना। ललकारना, चुनौती देना।

पुक्कश, पुक्कष, पुक्कस—पुं० [सं०] चाडाल। अधम, नीच।

पुखा(पु)—पुं० दे० 'पुष्य'।

पुखता—वि० दे० 'पुख्ता'।

पुखर(पु)—पुं० तालाब।

पुखराज—पु०एक प्रकार का पीला या हलका नीलापन या हरापन लिए हुए पीला रत्न।

पुख्य—पु० दे० 'पुष्य'।

पुख्ता—वि० [फा०] पक्का, दृढ।

पुगना—अक० दे० 'पुजना'। पुगाना—सक० [अक० पुगना] पूरा करना (जैसे, मिति

पुगाना, रुपया पुगाना)। बच्चो के गोली के खेल मे गड्ढे मे गोली डालना, पिलाना।

पुचकार—स्त्री० दे० 'पुचकारी'। **पुचकारना**—सक० चूमने का सा शब्द निकालकर प्यार जताना, चुमकारना। **पुचकारी**—स्त्री० प्यार जताने के लिये ओठो से निकाला हुआ चूमने का सा शब्द, चुमकार।

पुचरस†—पुं० कई धातुओ का मेल, ऐसी धातु जिसमे मिलावट हो।

पुचारा—पुं० भीगे कपडे को निचोडने का शब्द या पुतारा, भीगे कपडे से पोछने का काम। पतला लेप करने का काम। पोता, हलका लेप। वह गीला कपड़ा जिससे पोतते या पुचारा देते हैं। लेप करने या पोतने के लिये पानी मे घोली हुई कोई वस्तु। दगी हुई तोप या बदूक की गरम नली को ठढा करने के लिये उसपर गीला कपडा फेरने की क्रिया। प्रसन्न करनेवाले वचन। चापलूसी, खुशामद। उत्साह बढानेवाला वचन।

पुच्छ—स्त्री० [सं०] दुम, पूँछ। किसी वस्तु का पिछला भाग।

पुच्छल—वि० [सं०] दुमदार, पूँछदार। ⊙**तारा** = दे० 'केतु'।

पुछल्ला—पु० दे० 'पुछिल्ला'।

पुछवैया—वि० पूछनेवाला। खोज खबर लेनेवाला।

पुछारⓅ†—पु० आदर करनेवाला, पूछनेवाला।

पुछैया†—पुं० खोज खबर लेनेवाला, ध्यान देनेवाला।

पुजंता—वि० पूजा करनेवाला, पूजक।

पुजना—अक० [सक० पूजना] पूजा जाना आराधना का विषय होना। सभावित होना।

पुजवानाⓅ†—सक० पुजाना, भरना। पूरा करना। सफल होना।

पुजाना—सक० [पूजना का प्रे०] पूजा मे प्रवृत्त या नियुक्त करना। अपनी पूजा या प्रतिष्ठा कराना, भेंट चढवाना। धन वसूल करना। भर देना। पूरा करना, सफल करना। **पुजाई**—स्त्री० पूजने का भाव, क्रिया या पुरस्कार। **पुजापा**—पु० पूजा का सामान। **पुजारी**—पुं० देवमूर्ति की पूजा करनेवाला। **पुजेरी**Ⓟ—पुं० दे० 'पुजारी'। **पुजैया**†—पुं० पूजा करनेवाला। पूरा करनेवाला। स्त्री० दे० 'पुजाई'।

पुट—पुं० किसी वस्तु से तर करने या उसका हलका मेल करने के लिये डाला हुआ छीटा। रग या हलका मेल देने के लिये घुले हुए रग या और किसी पतली चीज मे डुबाना, बोरना। बहुत हलका मेल, भावना। पु० [सं०] आच्छादन, ढकनेवाली वस्तु। गोल गहरा पात्र, कटोरा। दोने के आकार की वस्तु। औषध पकाने का मुँहबंद बरतन। दो बराबर बरतनो को मुँह मिलाकर जोडने से बना हुआ बद घेरा, सपुट। घोडे की टाप। अत.पट, अँतरौटा। छिद्र। दो नगण, एक मगण और एक रगण का एक वर्णवृत्त। ⊙**पाक** = पु० पत्ते के दोने मे रखकर औषध पकाने का विधान (वैद्यक)। मुँहबद बरतन मे दवा रखकर उसे गड्ढे के भीतर पकाने का विधान।

पुटकी—स्त्री० पोटली, गठरी। आकस्मिक मृत्यु। दैवी आपत्ति, आफत। बेसन या आटा जो तरकारी के रसे मे उसे गाढा करने के लिये मिलाते है, आलन।

पुटरी, पुटली—स्त्री० दे० 'पोटली'।

पुटाश—पु० दे० 'पोटाश'।

पुटियाना—सक० फुसलाना।

पुटी—स्त्री० छोटा कटोरा। खाली स्थान जिसमे कोई वस्तु रखी जा सके। पुडिया। लँगोटी।

पुटीन—पु० किवाडो मे शीशे बैठाने या लकडी के जोड आदि भरने मे काम आनेवाला एक मसाला।

पुट्ठा—पु० चूतड का ऊपरी कुछ कडा भाग। चौपायो का, विशेषत घोडो का, चूतड। घोडो की सख्या के लिये शब्द। किसी पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग।

पुठवार—क्रि० वि० पीछे, बगल मे।

पुठवाल—पु० चोरो के दल का वह बलिष्ठ आदमी जो सेंध के मुंह पर पहरे के लिये खडा रहता है। मददगार।

पुड़ा—पु० बडी पुड़िया या बडल।

पुडिया—स्त्री० मोड या लपेटकर सपुट के आकार का किया हुआ कागज जिसके भीतर कोई वस्तु रखी जाय। पुड़िया मे लपेटी हुई दवा की एक खुराक या मात्रा। आधार स्थान, खान।

पुढ़ाई(पु)—स्त्री० दे० 'प्रौढता'।

पुण्य—वि० [सं०] पवित्र, अच्छा, धर्मविहित (जैसे, पुण्यकार्य)। पु० धर्म का कार्य। शुभ कर्म का सचय। ⊙**काल**=पु० दान-पुण्य करने का समय पवित्र समय। ⊙**क्षेत्र**=पु० वह स्थान जहाँ जाने से पुण्य हो, तीर्थ। ⊙**जन**=पु० धर्मात्मा, सज्जन। ⊙**भूमि**=स्त्री० आर्यावर्त। ⊙**वान्**=वि० पुण्य करनेवाला, धर्मात्मा। ⊙**श्लोक**=वि० पवित्र यश या कीर्ति-वाला। ⊙**स्थान**=वि० तीर्थस्थान। **पुण्यात्मा**—वि० जिसकी प्रवृत्ति पुण्य की ओर हो, धर्मात्मा। **पुण्याह**—पु० [सं०] शुभ दिन। खुशी का दिन। **पुण्याह-वाचन**—पु० देवकार्य के अनुष्ठान के पहले यजमान के मगल के लिये 'पुण्याह' शब्द का तीन बार कथन।

पुण्याई—स्त्री० पुण्य का फल या प्रभाव।

पुतना—अक० पोता जाना, पुताई होना।

पुतरा—पु० दे० 'पुतला'।

पुतरिका(पु)—स्त्री० दे० 'पुत्तलिका'।

पुतरिया‡—स्त्री० दे० 'पुतरी', 'पुतली'।

पुतला—पु० लकडी, मिट्टी, कपडे आदि का बना हुआ पुरुष का वह आकार या मूर्ति जो विनोद या क्रीडा (खेल) आदि के लिये हो। **मु० किसी का पुतला बाँधना**= किसी की निंदा करते फिरना, बद-नामी करना। **पुतली**—स्त्री० लकडी, मिट्टी, धातु, कपडे आदि की बनी हुई स्त्री की या मूर्ति जो विनोद का क्रीड़ा (खेल) आदि के लिये हो, गुडिया। आँख के बीच का काला भाग। कपडा बुनने की कल या मशीन। ⊙**घर**=पु० कल कारखाना, विशेषत कपडा बुनने का कारखाना। **मु०~फिर जाना**=आँखें पथरा जाना, नेत्र स्तब्ध होना (मरण-चिह्न)।

पुताई—स्त्री० पोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पुतारा—पु० दे० 'पुचारा'।

पुत्त(पु)—पु० दे० 'पुत्र'।

पुत्तरी(पु)†—स्त्री० दे० 'पुत्री'।

पुत्तलक—पु० [सं०] पुतली। **पुत्तलिका**—स्त्री० पुतली, गुडिया। **पुत्तली**—स्त्री० पुतली, गुडिया।

पुत्र—पु० [सं०] लड़का, बेटा। ⊙**क**=पु० [सं०] छोटा बेटा, लडका, बच्चा (प्राय प्यार मे प्रयुक्त)। गुड्डा, कठ-पुतली। टिड्डा। एक प्रकार का चूहा जिसके काटने से बड़ी पीडा और सूजन होती है। दौने का पौदा। ⊙**जीव**=पुं० इगुदी से मिलता जुलता एक बडा और सुदर पेड, जिसकी छाल और बीज दवा के काम आते हैं। ⊙**वती**=वि० स्त्री० जिसके पुत्र हो (स्त्री०)। ⊙**वधू**=स्त्री० पुत्र की स्त्री। ⊙**वान्**=वि० जिसके पुत्र हो। **पुत्रिका**—स्त्री० लडकी, बेटी। पुत्र के स्थान पर मानी हुई कन्या। गुडिया, पुतली। आँख की पुतली। स्त्री का चित्र। **पुत्री**—स्त्री० कन्या, बेटी। **पुत्रेष्टि**—स्त्री० एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्र की इच्छा से किया जाता है।

पुदीना(पु)—पु० एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों मे बहुत अच्छी गंध होती है। इससे लोग चटनी आदि बनाते हैं।

पुद्गल—पु० [सं०] स्पर्श, रस और वर्णवाला पदार्थ, रूपवान् जड़ पदार्थ (जैन)। शरीर, देह (बौद्ध)। परमाणु। आत्मा। वि० सुदर, प्रिय।

पुन(पु)—पु० दे० 'पुण्य'।

पुनना—सक० बुरा भला कहना, बरबराना (स्त्रियो मे प्रयुक्त)।

पुनः—अव्य० [सं०] ('पुनर्' के स्थान पर समास मे) फिर, दूसरी बार। पीछे। अनतर। ⊙पुनः=क्रि० वि० [स०] बारबार।

पुनर्—अव्य० [स०] दे० पुन.'। पुनरपि—क्रि० वि० फिर भी। पुनरागमन—पुं० फिर से आना, दुबारा आना। फिर जन्म लेना। पुनरावर्तन—पुं० बार बार लौटकर आना। बार बार ससार मे जन्म लेना। पुनरावृत्त—वि० फिर से घूमा हुआ, फिर से घूमकर आया हुआ। दुहराया हुआ, फिर से किया कहा हुआ। पुनरावृत्ति—स्त्री० फिर घूमना, फिर से घूमकर आना। किए हुए काम को फिर करना, दुहराना। एक बार पढकर फिर पढना। पुनरुक्त—वि० फिर से कहा हुआ। जो फिर से कहा गया हो। पुनरुक्तवदाभास—पुं० वह शब्दालकार जिसमे शब्द सुनने से पुनरुक्ति सी जान पडे, परतु यथार्थ मे न हो। पुनरुक्ति—स्त्री० एक बार कही हुई बात को फिर कहना, कहे हुए वचन को फिर कहना (साहित्यिक रचना मे दोष माना जाता है)। पुनरुज्जीवन—पुं० फिर से जीवित होना। पुनरुत्थान—पुं० फिर से उठना। पतन होने के बाद फिर से उठना या उन्नति करना। पुनर्जन्म—पुं० मरने के बाद फिर दूसरे शरीर मे उत्पत्ति।

पुनर्जीवन—पुं० दे० 'पुनरुज्जीवन'। तुनर्जन्म। पुनर्नवता—स्त्री० फिर से नया होना। जलपान। पुनर्नवा—स्त्री० एक छोटा पौदा जिसकी पत्तियाँ चौलाई को पत्तियो के समान गोल होती है और जो फूलो के रग के भेद से तीन प्रकार का होता है—श्वेत, रक्त और नील, गदहपुरना। पुनर्भव—पुं० फिर होना, पुनर्जन्म। नाखून। रक्त पुनर्नवा। वि० फिर से पैदा हुआ। पुनर्भू—स्त्री० वह विधवा स्त्री जिसका विवाह दूसरे पुरुष से हो। पुनर्वसु—पुं० २७ नक्षत्रो मे से सातवाँ नक्षत्र। विष्णु। शिव। कात्यायन मुनि। एक लोक।

पुनरबसु⑤‡—पुं० दे० 'पुनर्वसु'।

पुनवासी‡—स्त्री० दे० 'पूर्णमासी'।

पुनि†⑤—क्रि० वि० फिर से, दुबारा। बाद, पीछे।

पुनो⑤—पुं० पुण्यात्मा। स्त्री० पूर्णिमा, पूनो। क्रि० वि० पुन, फिर।

पुनीत—वि० [सं०] पवित्र।

पुन्न—पुं० दे० 'पुण्य'।

पुन्नाग—पुं० [सं०] सुलतान चपा। श्वेत कमल। जायफल।

पुन्य—पुं० दे० 'पुण्य'। ⊙ता, ताई⑤ = स्त्री० धर्मशीलता, पवित्रता।

पुपली†—स्त्री० बाँस की पतली पोली नली।

पुमान्—पुं० [सं०] मर्द, नर।

पुरंजय—वि० [सं०] (शत्रु के) पुर को जीतनेवाला। पुं० एक सूर्यवशी राजा, काकुत्स्थ।

पुरदर—पुं० [सं०] पुर, नगर या घर को तोडनेवाला। इद्र (जिसने दानवो का नगर तोडा था)। विष्णु। चोर (घर फोडनेवाला)।

पुरदरा—स्त्री० [स०] गगा, जाह्नवी।

पुरंध्री—स्त्री० [स०] पत्नी, भार्या। बालबच्चोवाली स्त्री।

पुरः—अव्य० [सं०] आगे। पहले। ⊙सर =वि० अगुआ। सगी, साथी। सहित।

पुर—वि० [अ०] पूर्ण, भरा हुआ। पु० [हिं०] कुएँ से पानी निकालने का चमडे का डोल, चरसा। पुं० [सं०] वह बडी बस्ती जहाँ बहुत से लोग रहते हो और ग्रामो और बरतियो के लोग अपने काम से आया जाया करें, नगर, कसबा। आगार, घर। कोठा, अटारी। लोक, भुवन। पुज, राशि। देह, शरीर। दुर्ग, किला। एक राक्षस, त्रिपुर। ⊙द्वार= पु० नगरद्वार, शहरपनाह का फाटक। ⊙त्राण = पुं० शहरपनाह, प्राकार, कोट। पुरांगना—स्त्री० नगर मे रहनेवाली स्त्री। पुरांतक, पुरारि—पुं० शिव का एक नाम (पुर या त्रिपुर राक्षस के काल या शत्रु)।

पुरइन(पु)––स्त्री० कमल का पत्ता। कमल।

पुरइया+––पु० तकली। बुनाई मे कतना।

पुरखा––पु० पूर्वज, बाप, दादा, परदादा आदि। घर का वडा बूढा। मु०––पुरखे तर जाना = पूर्व पुरुषो को (पुत्र आदि के कृत्य से) परलोक मे उत्तम गति प्राप्त होना। वडी भारी पुण्य या फल होना।

पुरचक––स्त्री० चुमकार, पुचकार। वढावा, प्रोत्साहन। प्रेरणा, समर्थन, हिमायत।

पुरजा––पु० [फा०] टुकडा, खड। कतरन, धज्जी। अवयव, अग। किसी काम या प्रमाण के लिये लिखा हुआ कागज का टुकडा। दवा का लिखित नुस्खा। चलता ⊙ = चालाक आदमी। मु०––पुरजे पुरजे करना या उड़ाना = खड खड, करना, टूक टूक करना।

पुरट––पुं० [स०] स्वर्ण, सोना।

पुरत:––अव्य० [सं०] आगे।

पुरबला, पुरबुला†––वि० पूर्व का, पहले का। पूर्व जन्म का।

पुरबा––पु० पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र जो भाद्रपद शुक्ल पक्ष मे लगता हैं।

पुरबिया––वि० पूर्वदेश मे उत्पन्न या रहनेवाला, पूरब का।

पुरबी|––वि० दे० 'पूरबी'।

पुरवट†––पु० चमडे का बहुत वडा डोल जिसे कुएँ मे डालकर वैलो की सहायता से सिचाई के लिये पानी खीचते हैं, चरसा।

पुरवना(पु)––सक० पूरना, भरना। पूरा करना। अक० पूरा होना, यथेष्ट होना। उपयोग के योग्य होना। मु०––साथ~ = साथ देना। पुरवाना––सक० [पुराना का प्रे०] पूरा करना।

पुरवा––पु० छोटा गाँव, खेडा। पूर्व दिशा से चलनेवाला वायु। मिट्टी का कुल्हड।

पुरवाई पुरवैया––स्त्री० वह वायु जो पूर्व से चलती है।

पुरश्चरण––पु० [सं०] किसी कार्य की सिद्धि के लिये पहले से ही उपाय सोचना और अनुष्ठान करना। किसी मंत्र, स्तोत्र आदि को अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिये नियमपूर्वक जपना, प्रयोग।

पुरषा––पु० दे० 'पुरखा'।

पुरसा––पुं० साढे चार पाँच हाथ की एक नाप।

पुरस्कार––पु० [स०] आगे करने की क्रिया। आदर, पूजा। पारितोषिक, इनाम। प्रधानता। स्वीकार। पुरस्कृत––वि० आगे किया हुआ। आदृत, पूजित। स्वीकृत। जिसे इनाम या पुरस्कार मिला हो।

पुरस्सर––वि० [स०] दे० 'पुर:सर'।

पुरहूत(पु)––पुं० दे० 'पुरुहूत'।

पुरा––पुं० गाँव, वस्ती। अव्य० [सं०] पुराने समय मे। वि० प्राचीन। ⊙कल्प = पुं० पहले का कल्प। प्राचीन काल एक प्रकार का अर्थवाद जिसमे प्राचीन काल का इतिहास कहकर किसी विधि के करने की ओर प्रवृत्त किया जाता है। ⊙कृत = वि० पूर्व काल मे किया हुआ। ⊙ तत्व = पु० प्राचीन काल सबधी विद्या, प्रत्नशास्त्र। ⊙तन = वि० प्राचीन, पुरातन। पुं० विष्णु। ⊙वृत्त = पुं० पुराना वृत्तात, पुराना हाल, इतिहास।

पुराण––वि० [स०] पुरातन, प्राचीन। पुं० सृष्टि, मनुष्यो, देवो, दानवो, राजाओ-महापुरुषो आदि के ऐसे वृत्तात जो पुरुष-परपरा से चले आते हो। हिंदुओ के धर्म सवधी आख्यानग्रथ जिनमे सृष्टि, लय और प्राचीन ऋषियो तथा राजाओ आदि के वृत्तात रहते है। ये १८ हैं जिनके नाम विष्णु, पद्म, ब्रह्म, शिव, भागवत, नारद, मार्कंडेय, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वाराह, स्कद, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड ब्रह्माड और भविष्य हैं। १८ की सख्या। शिव। कार्षापण। ⊙पुरुष = पुं० विष्णु।

पुराना––सक० [पूरना का प्रे०] पूरा करना, पुजवाना, भराना। पालन कराना, अनुकूल कराना। पूरा करना, भरना। पालन करना, अनुसरण करना।

पुराना—वि० बहुत दिनो का, प्राचीन। जो बहुत दिनो का हो, परिपक्व। अगले समय का, प्राचीन, बहुत काल या समय का। जिसका चलन अब न हो मु०~**खुर्राट** = बूढा। बहुत दिनो का अनुभवी, किसी बात मे पक्का। ~**घाघ** = बहुत बडा चालाक। **पुरानी खोपड़ी** = दे० 'पुराना खुर्राट'।

पुराल†(पु)—पु० दे० 'पयाल'।

पुरि—स्त्री० [सं०] पुरी। नदी। पु० [हिं०] दशनामी सन्यासियो का एक भेद।

पुरिखा(पु)—पु० दे० 'पुरखा'।

पुरिया—स्त्री० वह नरी जिसपर जुलाहे बाने को बुनने के पहले फैलाते हैं। दे० 'पुड़िया'

पुरी—स्त्री० [सं०] नगरी, शहर। उडीसा मे जगन्नाथ पुरी।

पुरीष—पु० [सं०] विष्ठा, गू।

पुरु—पु० [सं०] देवलोक। दैत्य। पराग। शरीर। एक प्राचीन राजा जिन्होंने अपने पिता ययाति को बुढौती के बदले अपना यौवन दिया था।

पुरुख(पु)†—पु० दे० 'पुरुष'।

पुरुष—पु० [सं०] मनुष्य, आदमी। नर। साख्य मे प्रकृति से भिन्न एक अपरिणामी, अकर्ता और असग चेतन पदार्थ, आत्मा। विष्णु, पुराणपुरुष। सूर्य। जीव। शिव। व्याकरण मे सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपो का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम या क्रियापद-वाचक (कहनेवाले) के लिये प्रयुक्त हुआ है अथवा सबोध्य (जिससे कहा जाय) के लिये अथवा किसी तीसरे या अन्य के लिये (जैसे मैं, तुम, वह)। मनुष्य का शरीर या आत्मा। पूर्वज। पति, स्वामी। ⊙**त्व** = पु० पुरुष होने का भाव, मरदानगी। ⊙**पुर** = पु० गाधार की प्राचीन राजधानी, आजकल का पेशावर। ⊙**मेध** = पु० एक वैदिक यज्ञ जिसमे नरबलि की जाती थी। ⊙**वार** = पु० ज्योतिष शास्त्रानुसार रवि, मगल, बृहस्पति और शनिवार। ⊙**सूक्त** = ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त जो 'सहस्रशीर्षा' से आरभ होता है और विश्वात्मा का पुरुष के समान निरूपण करता है। **पुरुषानुक्रम**—पु० पुरखो की चली आती हुई परपरा। **पुरुषार्थ**—पु० पुरुष के उद्योग का विषय (पुराणो के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष)। पौरुष, उद्यम। शक्ति, सामर्थ्य। **पुरुषायित बंध**—पु० [सं०] कामशास्त्र के विपरीत रति का एक ढग। **पुरुषारथ**(पु)—पुं० दे० 'पुरुषार्थ'। **पुरुषार्थी**—वि० पुरुषार्थ करनेवाला। उद्योगी। परिश्रमी। बली। **पुरुषोत्तम**—पु० [सं०] वह पुरुष जो शत्रु, मित्र आदि से उदासीन हो, श्रेष्ठ पुरुष। विष्णु। जगन्नाथ जिनका मदिर उडीसा मे है। कृष्णचद्र। ईश्वर, नारायण। मलमास, अधिक मास। **पुरुषोत्तम मास**—पु० मलमास, अधिक मास।

पुरुहूत—पु० [सं०] इद्र।

पुरैन, पुरैनी—स्त्री० कमल का पत्ता। कमल।

पुरोगामी—वि० [सं०] अग्रगामी।

पुरोडाश—पु० [सं०] यव आदि के आटे की बनी हुई टिकिया जो यज्ञ के समय आहुति देने के लिये खप्पर मे पकाई जाती थी। हवि जो यज्ञ से बच रहे। वह वस्तु जिसका यज्ञ मे होम किया जाय, यज्ञ-भाग। सोमरस। वे मत्र जिनका पुरोडाश बनाते समय पाठ किया जाता है।

पुरोधा, पुरोहित—पु० [सं०] वह प्रधान याजक जो यजमान के यहाँ यज्ञादि गृह-कर्म और सस्कार करे कराए, कर्मकाड करानेवाला। **पुरोहिताई**—स्त्री० [हिं०] पुरोहित का काम।

पुरोभागी—वि० [सं०] अग्र भागवाला। दोषदर्शी, छिद्रान्वेषी।

पुरौ(पु)—पु० दे० 'पुरवट'।

पुरौती†—स्त्री० दे० 'पूर्ति'।

पुर्जा—पु० दे० 'पुरजा'।

पुर्तगाल—पु० [अँ०] योरप के दक्षिणपश्चिम कोने का एक छोटा-देश। **पुर्तगाली**—वि० पुर्तगाल सबधी। पुर्तगाल का रहनेवाला।

पुर्तगीज—वि० [अं०] पुर्तगाली ।

पुल—पुं० [फा०] नदी, जलाशय आदि के आर पार जाने का रास्ता जो नाव पाटकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया जाय, सेतु । मु०~टूटना = बहुतायत होना, अटाला या जमघट लगाना । मु०—किसी बात का~बाँधना = झड़ी बाँधना, अतिशय करना ।

पुलक—पु० [स०] प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से रोगटे खड़े होना, रोमाच । एक प्रकार का रत्न, याक़ूत, महताब । ⊙ना=अक० पुलकित होना, प्रेम, हर्ष आदि से प्रफुल्ल होना । पुलकाई(पु)—स्त्री० पुलकित होने का भाव, गद्गद् होना ।

पुलकालि, पुलकावलि—स्त्री० हर्ष से प्रफुल्ल रोमावली । पुलकित—वि० प्रेम या हर्ष के वेग से जिसके रोएँ उभर आए हों, गद्गद् । पुलकी—वि० रोमाच-युक्त, हर्ष या प्रेम से गद्गद् होनेवाला ।

पुलट†—स्त्री० दे० 'पलट' ।

पुलटिस—स्त्री० फोड़े, घाव आदि को पकाने के लिये उसपर चढ़ाया हुआ दवाओं का मोटा लेप ।

पुलपुल†—वि० दे० 'पुलपुला' ।

पुलपुला—वि० जो भीतर इतना ढीला और मुलायम हो कि दबने से धँसे । ⊙ना = सक० किसी मुलायम चीज को दबाना । मुँह से लेकर दबाना, चूसना ।

पुलस्ति, पुलस्त्य—पु० [स०] एक ऋषि जिनकी गिनती सप्तर्षियों और प्रजापतियों में है । ये ब्रह्मा के मानसपुत्रों में थे और विश्रवा के पिता तथा कुबेर, रावण, कुंभकर्ण और विभीषण के पितामह थे । शिव ।

पुलह—पु० [स०] सप्तर्षियों में एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानसपुत्र और प्रजापति थे । शिव ।

पुलहना(पु)—अक० दे० 'पुलह' ।

पुलाक—पु० [स०] एक कदन्न, अँकरा । उबाला हुआ चावल, भात । भात का माँड़ । पुलाव ।

पुलाव—पु० [फा०] एक व्यजन जो मास और चावल को एकसाथ पकाने से बनता है, मांसोदन । चावल के साथ मटर, पिस्ता आदि मिलाकर बनाया हुआ एक नमकीन व्यजन ।

पुलिंद—पु० [स०] भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति । वह देश जहाँ पुलिंद जाति बसती थी ।

पुलिंदा—पुं० लपेटे हुए कपड़े, कागज आदि का छोटा मुट्ठा, बडल ।

पुलिन—पु० [स०] पानी के भीतर से हाल की निकली हुई जमीन । तट, किनारा ।

पुलिस—स्त्री० प्रजा की जान और माल की हिफाजत के लिये मुकर्रर सिपाहियों या अफसरों का दल ।

पुलिहोरा†—पु० एक पकवान ।

पुवा†—पु० दे० 'मालपूवा' ।

पुवार†—पु० दे० 'पयाल' ।

पुश्त—स्त्री० [फा०] पीठ, पीछा । वशपरपरा में कोई एक स्थान । पिता, पितामह, प्रपितामह आदि या पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि का पूर्वापर स्थान । पीढ़ी । ⊙दर ⊙=स्त्री० वशपरपरा में । ⊙नामा= पु० पुवंशावली, पीढ़ीनामा, कुरसीनामा । पुश्तहा० =स्त्री० कई पीढ़ियों तक ।

पुश्तक—स्त्री०, घोड़े, गधे आदि का पीछे के दोनों पैरों से लात मारना, लत्ती ।

पुश्ता—पु० [फा०] पानी की रोक या मजबूती के लिये किसी दीवार से लगातार कुछ ऊपर तक जमाया हुआ मिट्टी, ईंट पत्थर आदि का ढालुवाँ टीला । बाँध, ऊँची मेड़ । किताब की जिल्द के पीछे का चमड़ा, पुट्ठा ।

पुश्ती—स्त्री० [फा०] टेक, सहारा, थाम । सहायता, तरफदारी । बड़ा तकिया ।

पुश्तैन—स्त्री० वशपरपरा, पीढ़ी दर पीढ़ी । पुश्तैनी—वि० [फा०] जो कई पुश्तों से चला आता हो । दादा, परदादा के समय का, पुराना । आगे के पीढ़ियों तक चलनेवाला ।

पुषित—वि० [स०] पोषण किया हुआ, प्रोषित । वर्धित ।

पुष्कर—पु० [सं०] कमल। जलाशय। जल। वाण, तीर। पुष्करमूल। सूर्य। एक दिग्गज। करछी का कटोरा। हाथी की सूंड का अगला भाग। आकाश। सर्प। युद्ध। भाग, अश। सारस पक्षी। विष्णु। शिव। बुद्ध। पुराणो मे कहे गए सात द्वीपो मे से एक। एक तीर्थ जो अजमेर के पास है। ⊙**मूल**=पु० एक ओषधि का मूल या जड जो अब नही मिलती।

पुष्करिणी—स्त्री० [सं०] छोटा तालाव।

पुष्कल—पु० [सं०] चार ग्रास की भिक्षा। अनाज नापने का एक प्राचीन मान। राम के भाई भरत के दो पुत्रो मे से एक। शिव। वि० वहुत, ढेर सा। भरा-पूरा, परिपूर्ण। श्रेष्ठ। उपस्थित। पवित्र।

पुष्ट—वि० [सं०] पोषण किया हुआ, पाला हुआ। मोटा ताजा, वलिष्ठ। मोटा ताजा करनेवाला, बलवर्धक। दृढ, मजवूत। ⊙**ई**=स्त्री०[हिं०]वलवीर्यवर्धक ओषध, ताकत की दवा।

पुष्टि—स्त्री० [सं०] पोषण। मोटाताजापन, बलिष्ठता। सतति की बढती। दृढता, मजवूती। वात का समर्थन। ⊙**कर**, ⊙**कारक**=वि० पुष्टि करनेवाला, वलवीर्यकारक। ⊙**मार्ग**=पु० वल्लभ सप्रदाय, वल्लभाचार्य के मतानुकूल वैष्णव भक्तिमार्ग।

पुष्प—पु० [सं०] पौधो का फूल। ऋतुमती स्त्री का रज। आँख का एक रोग, फूली। कुवेर का विमान, पुष्पक। मास (वाम-मार्गी)। ⊙**क**=पु० फूल। कुवेर का विमान जिसे उनसे रावण ने छीना था और राम ने रावण से छीनकर फिर कुवेर को दे दिया था। आँख का एक रोग, फूला। ⊙**कीट**=पु० फूल का कीडा। भौंरा। ⊙**गंधा**=स्त्री० जुही। **दंत**=पु० वायुकोण का दिग्गज। शिव का अनुचर एक गधर्व। ⊙**धन्वा**=फूलो के धनुषवाला देवता, कामदेव। ⊙**ध्वज**=पु० फूलो की ध्वजावाला देवता, कामदेव। ⊙**पुर**=पु० प्राचीन पाटलिपुत्र (पटना) का एक नाम। ⊙**बाण**=पु० कामदेव। ⊙**रज**=पु० पराग, फूलो की धूल। ⊙**राग**=पु० पुखराज। ⊙**रेणु**=पु० पराग। ⊙**वती**=वि० स्त्री० फूलवाली, फूली हुई। रजोवती, रजस्वला। ⊙**वाटिका**=स्त्री० फुलवारी, फूलो का वगीचा, उद्यान। ⊙**वाण**=पु०कामदेव। ⊙**वृष्टि**=स्त्री० फूलो की वर्षा, ऊपर से फूल गिरना या गिराना। ⊙**शर**=पु० कामदेव। ⊙**हास**=पु० फूलो का खिलना। विष्णु। **पुष्पांजलि**—स्त्री० फूलो से भरी अजलि, अजलि भर फूल जो किसी देवता या पुरुष पर चढाए जायें। **पुष्पागम**—पु० वसत ऋतु। **पुष्पायुध**—पु० कामदेव। **पुष्पिका**—स्त्री० [सं०] अध्याय के अत मे वह वाक्य जिसमे कहे हुए प्रसग की समाप्ति सूचित की जाती है। यह प्राय 'इति श्री' से प्रारभ होता है और इसमे ग्रथ, ग्रथकार और रचनाकाल आदि का उल्लेख रहता है। **पुष्पित**—वि० [सं०] पुष्पो से युक्त, फूला हुआ। **पुष्पिताग्रा**—स्त्री० एक अर्धसम-वृत्त जिसके पहले और तीसरे चरण मे दो नगण, एक रगण और एक नगण, दो जगण, एक रगण और अत्य गुरु होता है। **पुष्पेषु**—पु० कामदेव। **पुष्पोद्यान**—⊙फुलवारी, पुष्पवाटिका।

पुष्य—पु०[सं०] पुष्टि, पोषण। मूल या सार-वस्तु। २७ नक्षत्रो मे से आठवाँ नक्षत्र जिसकी आकृति वाण की सी है। पूस का महीना। ⊙**नेत्रा**=स्त्री० वह रात जिसमे पुष्य नक्षत्र ही बराबर बना रहे। ⊙**रथ**=घूमने-फिरने या उत्सव आदि मे निक-लने का रथ जो युद्ध मे काम नही देता, क्रीडारथ।

पुसकर(फ़ा)—पु० दे० 'पुष्कर'।

पुसाना(फ़ा)†—अक० [सक० 'पोसना]' पूरा पडना, वन पडना। अच्छा लगना।

पुस्त(फ़ा)†—स्त्री० दे० 'पुश्त'।

पुस्तक—स्त्री० [सं०] पोथी, किताब। **पुस्तकाकार**—वि० पोथी के रूप का, पुस्तक के आकार का। **पुस्तकालय**—पु० वह भवन या घर जिसमे पुस्तको का सग्रह हो। **पुस्तिका**—स्त्री० छोटी पुस्तक।

पुहना—अक० [सक० पोहना] पोहा जाना या गूँथा जाना।

पुहप, पुहुप—पु० फूल, पुष्प।

पुहुपराग(पु)—पु० दे० 'पुखराज'।

पुहुमि, पुहुमी, पुहुवी(पु)—स्त्री० भूमि। (पु)—स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

पुहरेनु(पु)—पु० पराग।

पूँगरा—पु० पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था-वाला बालक।

पूँगी—स्त्री० एक प्रकार की बाँसुरी।

पूँछ—स्त्री० जतुओ, पक्षियो, कीडो आदि के शरीर मे सबसे अतिम या पिछला भाग, दुम। किसी पदार्थ के पीछे का भाग।

पूँजी—स्त्री० सचित धन, सपत्ति। वह धन जो किसी व्यापार मे लगाया गया हो। धन, रुपया पैसा। किसी विषय मे किसी की योग्यता। समूह, ढेर। ⊙**दार**= पूँजीपति। ⊙**दारी**=स्त्री० ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसमे पूँजीदारो की प्रधानता और महत्व हो, पूँजीवाद। वि० पूँजीदारो से सबधित, पूँजीवादी। ⊙**पति**=वह जिसके पास पूँजी हो या जो उद्योग व्यवसाय मे पूँजी लगावे, पूँजीदार। ⊙**वाद**=पु० उत्पादन मे लगनेवाले धन पर व्यक्तियों का निजी अधिकार, प्रभाव या उसकी व्यवस्था (वर्तमान राजनीति)। व्यक्तिगत पूँजी का प्रभुत्व, समाजवाद का उलटा। ⊙**वादी**=पु० वह जो पूँजीवाद सिद्धात मानता हो। वि० पूँजीवाद से सबधित, उसी प्रकार की व्यवस्थावाला। मु०~**खोना या गँवाना**=व्यापार मे इतना घाटा उठाना कि लाभ के स्थान मे पूँजी से भी हाथ धोना पडे।

पूँठ‡—स्त्री० पीठ।

पूआ—पु० एक प्रकार की पूरी जो आटे को गुड या चीनी के रस मे घोलकर घी मे तली जाती है, मालपुआ।

पूखन(पु)—पु० दे० 'पोषण'।

पूग—पु० [सं०] सुपारी का पेड या फल। छद। समूह, ढेर। किसी विशेष कार्य के लिये बना हुआ सघ। (अं०) कंपनी। **पूगी**—स्त्री० सुपारी। ⊙**फल**=पु० सुपारी।

पूगना—अक० पूरा होना, पूजन।

पूछ—स्त्री० दे० पूँछ। पूछने का भाव, जिज्ञासा। खोज, चाह, जरूरत। आदर। ⊙**ताछ**=स्त्री० किसी बात का पता लगाने के लिये लोगो से प्रश्न करना या पूछना, जिज्ञासा। ⊙**ना**=सक० कुछ जानने के लिये किसी से प्रश्न करना, जिज्ञासा करना। सहायता करने की इच्छा से किसी का हाल जानने की चेष्टा करना, खोज खबर लेना। किसी के प्रति सत्कार का भाव प्रकट करना। आदर करना, गुण या मूल्य जानना। ध्यान देना, टोकना। मु०—**बात न पूछना**=तुच्छ जानकर ध्यान न देना। आदर न करना। ⊙**पाछ**=स्त्री० दे० 'पूछताछ'।

पूछरी(पु)†—स्त्री० दुम, पूँछ। पीछे का भाग।

पूछाताछी, पूछापाछी—स्त्री० दे० 'पूछताछ।'

पूछि‡—स्त्री० दे० 'पूँछ'।

पूजना—सक० देवी देवता को प्रसन्न करने के लिये अनुष्ठान या कर्म करना, आराधन करना। आदर सत्कार करना। समान करना। घूस देना, रिश्वत देना। (पु) (किसी वस्तु की कमी को) पूरा करना। अक० पूरा होना। भरना। (किसी की) तुलना मे आना या बराबरी को पहुँचना। गहराई का भरना या बराबर हो जाना। पटना, चुकता होना। बीतना, समाप्त होना।

पूजक—पु० [सं०] पूजा करनेवाला। **पूजन**—पु० पूजा की क्रिया, देवता की सेवा और वदना। आदर, संमान। **पूजनीय**—वि० पूजने योग्य। आदरणीय। **पूजमान**—वि० [हिं०] दे० 'पूज्य'। **पूजा**—स्त्री० ईश्वर

या देवी देवता के प्रति श्रद्धा और समर्पण का भाव प्रकट करनेवाला कार्य, आराधन। वह कृत्य जो जल, फूल आदि चढाकर या किसी देवी देवता पर उसके निमित्त रखकर किया जाता है, आराधन। आदर सत्कार, खातिर। **पूजार्ह**—वि० पूज्य। **पूजित**—वि० जिसकी पूजा की गई हो, आराधित। **पूज्य**—वि० पूजा के योग्य, पूजनीय। आदर के योग्य। ⊙**पाद** = वि० जिसके पैर पूजनीय हों, अत्यत मान्य।

पूठि(पु)†—स्त्री० पीठ।

पुडा—पुं० दे० 'पुआ', 'पूआ'।

पुडी—स्त्री० दे० 'पूनी'।

पूत—वि० [सं०] पवित्र। पुं० सत्य। शख। सफेद कुश। पलास। तिल। वृक्ष। पुं० [हिं०] बेटा, पुत्र।

पूतना—स्त्री० [सं०] एक दानवी जो कस के भेजने से बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल आई थी और जिसे कृष्ण ने मार डाला था। एक प्रकार का बालग्रह या बालरोग। **पूतनारि**—पुं० श्रीकृष्ण।

पूतरो†—पुं० दे० 'पुतला'। बेटा, पुत्र।

पूतरी—स्त्री० पुत्तलिका, पुतली।

पूति—स्त्री० [सं०] पवित्रता। दुर्गंध, बदबू।

पूती—स्त्री० वह जड जो गाँठ के रूप मे हो। लहसुन की गाँठ।

पून—पुं० दे० 'पुण्य'। दे० 'पूर्ण'।

पूनिउँ(पु)—स्त्री० दे० 'पूनो'।

पूनी—स्त्री० धुनी हुई रुई की वह बत्ती जो चरखे पर सूत कातने के लिये तैयार की जाती है।

पूनें, पूनो(पु)†—स्त्री० दे० 'पूर्णिमा'।

पून्यो(पु)—स्त्री० दे० 'पूनो'।

पूप—पुं० [सं०] पूआ, मालपुआ।

पूय—पुं० [सं०] पीप, मवाद।

पूर—वि० समूचा, पूरा, अखडित। भरा हुआ। परिपूर्ण। वे मसाले या दूसरे पदार्थ जो किसी पकवान के भीतर भरे जाते है। ⊙**ना**† = सक० कमी या त्रुटि को पूरा करना, पूर्ति करना। आच्छादित करना, ढकना। (मनोरथ) सफल करना, सिद्ध करना। मगल अवसरो पर आटे, अबीर आदि से देवताओ के पूजन आदि के लिये चौखूंटे क्षेत्र आदि बनाना, चौक बनाना। बटना (जैसे, तागा पूरना)। बजाना। अक० भर जाना।

पूरक—वि० [सं०] पूरा करनेवाला। पुं० प्राणायाम विधि के तीन भागो मे से पहला जिसमे श्वास को नाक से खीचते हुए भीतर की ओर ले जाते है। बिजौरा नीबू। वे दस पिंड जो हिंदुओ मे किसी के मरने पर उनके मरने की तिथि से दसवें दिन तक नित्य दिए जाते है। वह अक जिसके द्वारा गुणा किया जाता है, गुणक अक।

पूरन(पु)—वि० दे० 'पूर्ण'। ⊙**परब**(पु)† = पु० दे० 'पूर्णमासी'। ⊙**पूरी** = स्त्री० एक प्रकार की मीठी कचौरी। ⊙**मासी** = स्त्री० दे० 'पूर्णमासी'।

पूरब—पु० पूर्व, प्राची। (पु)†वि०, क्रि० वि० 'पूर्व'।

पूरबल(पु)†—पु० पुराना जमाना। पूर्व जन्म।

पूरबला(पु)—वि० पुं० प्राचीन काल का, पुराना। पहले जन्म का।

पूरबी—वि० दे० 'पूर्वी'। पु० एक प्रकार का दादरा।

पूरा—वि० पुं० जो खाली न हो, भरा, परिपूर्ण। समूचा, समस्त। जिसमे कोई कमी या कसर न हो, पूर्ण। भरपूर, काफी। पूर्ण सपादित, कृत। तुष्ट, पूर्ण। मु०—**किसी बात का**⊙ = जिसके पास कोई वस्तु यथेष्ट या प्रचुर हो, पक्का, अटल। जैसे, बात का पूरा होना। **दिन पूरे करना** = किसी प्रकार समय बिताना। **दिन पूरे होना** = अतिम समय निकट आना। ~**उतरना** = अच्छी तरह होना, जैसा चाहिए वैसा ही होना। (किसी का) ~**पडना** = कार्य पूर्ण हो जाना, सामग्री न घटना। (पु) ~**पाना** = कार्य की सिद्धि तक पहुँचना, प्रयत्न या उद्देश्य की सिद्धि मे सफल होना। **बात पूरी उतरना** = सत्य ठहरना।

पूरित—वि० [सं०] भरा हुआ, परिपूर्ण। तृप्त। गुणा किया हुआ।

पूरी—स्त्री० एक प्रसिद्ध पकवान जिसे रोटी की तरह बेलकर खौलते घी मे छान लेते हैं। मृदग, ढोल आदि के मुँह पर मढा हुआ गोल चमडा।

पूरुष—पुं० [वै० स०] पुरुष, मनुष्य।

पूर्ण—वि० [स०] पूरा, भरा हुआ। समूचा, अखडित। भरपूर, काफी। जिसे कोई इच्छा या अपेक्षा न हो। जिसकी इच्छा पूर्ण हो। सिद्ध, सफल। जो पूरा हो चुका हो, समाप्त। ⊙**काम** = वि० जिसकी सारी इच्छाएँ तृप्त हो चुकी हो। ⊙**चद्र** = पुं० पूर्णिमा का चद्रमा। ⊙**तः** = क्रि० वि० पूरी तरह से। ⊙**तया** = क्रि० वि० [सं०] पूरी तरह से, पूर्ण रूप से। ⊙**प्रज्ञ** = वि० पूर्ण ज्ञानी। पुं० पूर्णप्रज्ञदर्शन के कर्त्ता मध्वाचार्य। ⊙**प्रज्ञदर्शन** = पुं० वेदातसूत्र के आधार पर मध्वाचार्य का बनाया हुआ दर्शन। ⊙**मासी** = स्त्री० चाद्र मास की अतिम तिथि, जिसमे चद्रमा अपनी सारी कलाओ से पूर्ण होता है, पूर्णिमा। ⊙**विराम** = पुं० लिपि प्रणाली मे वह चिह्न जो वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगाया जाता है। **पूर्णायु**—स्त्री० पूरी आयु। सौ वर्ष की आयु। वि० सौ वर्ष तक जीनेवाला। **पूर्णावतार**—पुं० ईश्वर या किसी देवता का सपूर्ण कलाओ से युक्त अवतार। **पूर्णाहुति**—स्त्री० वह आहुति जिसे देकर होम समाप्त करते हैं। किसी कर्म को समाप्ति की क्रिया। **पूर्णोपमा**—स्त्री० उपमा अलकार का वह भेद जिसमे उसके चारो अग (उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म) प्रकट रूप से प्रस्तुत हो। **पूर्णिमा**—स्त्री० पूर्णमासी।

पूर्त—पुं० [सं०] पालन। परोपकार के लिये खोदने या निर्माण करने का कार्य, बावली देवगृह, आराम (बगीचा), सडक आदि बनाने का काम। वि० पूरित। ढका हुआ। ⊙**विभाग** = पुं० वह सरकारी महकमा जिसका काम सडक, पुल आदि बनवाना है। **पूर्ति**—स्त्री० पूरा करने या भरने का भाव या क्रिया, पूरण। किसी काम मे जो वस्तु चाहिए, उसकी कमी को पूरा करने की क्रिया। किसी आरभ किए हुए कार्य की समाप्ति। पूरापन। वापी, कूप या तड़ाग आदि का उत्सर्ग। गुणा करने का भाव, गुणन।

पूर्बी—वि० दे० 'पूर्वी'। पुं० एक प्रकार का दादरा जो बिहार प्रात मे गाया जाता है।

पूर्व—पुं० [सं०] वह दिशा जिस ओर सूर्य निकलता हुआ दिखलाई देता है, पश्चिम के सामने की दिशा। वि० पहले का। आगे का, अगला। पुराना। पिछला। क्रि० वि० पहले, पेश्तर। ⊙**क** = क्रि० वि० साथ, सहित। ⊙**कालिक** = वि० जिसकी उत्पत्ति या जन्म पूर्वकाल मे हुआ हो। पूर्वकालीन, पूर्वकाल सबधी। ⊙**कालिक क्रिया** = स्त्री० वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले पडता हो (जैसे, 'वह ऐसा करके गया' मे 'करके' पूर्वकालिक क्रिया है)। ⊙**ज** = पुं० बडा भाई, अग्रज। बाप, दादा, परदादा आदि, पुरखा। ⊙**जन्म** = पुं० वर्तमान से पहले का जन्म, पिछला जन्म। ⊙**पक्ष** = पुं० शास्त्रीय विषय के सबध मे उठाई हुई बात, प्रश्न या शका। कृष्णपक्ष। मुद्दई का दावा। ⊙**पक्षी** = पु० वह जो पूर्वपक्ष उपस्थित करे। वह जो दावा दायर करे। ⊙**फाल्गुनी** = स्त्री० नक्षत्रो मे ११वाँ नक्षत्र। ⊙**भाद्रपद** = पु० नक्षत्रो मे २५वाँ नक्षत्र। ⊙**मीमासा** = स्त्री० हिंदुओ का जैमिनि-कृत वह वैदिक दर्शन जिसमे वेदो की कर्मकाड सबधी बातो का निर्णय किया गया है। ⊙**रग** = पु० वह सगीत या स्तुति आदि जो नाटक आरभ होने से पहले विघ्नो की शाति या दर्शको को सावधान करने के लिये होती है। ⊙**राग** = पु० साहित्य मे नायक अथवा नायिका की एक अवस्था जो दोनो का सयोग होने से पहले प्रेम के कारण होती है, पूर्वानुराग। ⊙**रूप** = पु० वह आकार जिसमे कोई वस्तु पहले रही हो। किसी वस्तु का वह चिह्न या लक्षण जो उस वस्तु के उपस्थित होने के पहले ही प्रकट हो, आसार। ⊙

वत् = क्रि॰ वि॰ पहले की तरह, जैसा पहले था, वैसा ही । पुं॰ किसी कार्य का वह अनुमान जो किसी कारण को देखकर उसके होने से पहले ही किया जाय । ⊙वर्ती = वि॰ पहले का, जो पहले हो या रह चुका हो । ⊙वृत्त = पुं॰ इतिहास । **पूर्वानुराग**—पुं॰ वह प्रेम जो किसी के गुण सुनकर अथवा उसका चित्र या रूप देखकर उत्पन्न होता है, पूर्वराग । **पूर्वापर**—क्रि॰ वि॰ आगे पीछे का, अगला और पिछला । **पूर्वापर्य**—पुं॰ पूर्वापर का भाव । **पूर्वाभाद्रपद**—पु॰ २७ नक्षत्रो मे २५वाँ नक्षत्र । **पूर्वार्ध**—पु॰ पहला आधा भाग, शुरू का आधा हिस्सा । **पूर्वाषाढ़ा**—स्त्री॰ २७ नक्षत्रो मे से २० वाँ नक्षत्र जिसमे चार तारे है । **पूर्वाह्न**—पु॰ सवेरे से दोपहर तक का समय । **पूर्वी**—वि॰ पूर्व दिशा से सबध रखनेवाला, पूरब का । पु॰ पूरब मे होनेवाला एक प्रकार का चावल । एक प्रकार का दादरा जो बिहार प्रात मे गाया जाता है । सपूर्ण जाति का एक राग । **पूर्वोक्त**—वि॰ [सं॰] पहले कहा हुआ ।

पूला—पु॰ मूँज आदि का बँधा हुआ मुट्ठा ।

पूषण—पु॰ [स॰] सूर्य । पुराणानुसार १२ आदित्यो मे से एक । एक वैदिक देवता जो कही सूर्य के रूप मे और कही पशुओ के पोषक के रूप मे वर्णित हैं ।

पूषन—पु॰ पूषण, सूर्य ।

पूषा—पु॰ दे॰ 'पूषण' । स्त्री॰ [स॰] दाहिने कान की एक नाडी ।

पूस—पु॰ वह चाद्रमास जो अगहन के बाद पडता है, पौष ।

पृथक्का—स्त्री॰ [स॰] असवरग नाम का एक गंधद्रव्य जिसका व्यवहार औषधो मे भी होता है ।

पृच्छक—वि॰ [स॰] पूछनेवाला । जिज्ञासु ।

पृतना—स्त्री॰ [स॰] सेना का एक विभाग जिसमे २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२६ घुडसवार और १२२५ पैदल सिपाही होते थे । सेना । युद्ध ।

पृथक्—वि॰ [स॰] भिन्न, अलग । ⊙करण = पु॰ अलग करने का काम ।

पृथिवी—स्त्री॰ दे॰ 'पृथ्वी' ।

पृथु—वि॰ [स॰] चौडा विस्तृत । बडा, महान । असख्य । चतुर । जिसकी कीर्ति बहुत अधिक हो । पु॰ अग्नि । विष्णु । शिव । एक विश्वेदेव । राजा वेणु के पुत्र का नाम जिन्हें वेणु की मृत्यु के बाद ऋषियो ने उनके शव से उत्पन्न किया था । ⊙ल—वि॰ [स॰] स्थूल, बडा । विशाल । विस्तृत ।

पृथ्वी—स्त्री॰ [स॰] सौर जगत् का वह ग्रह जिसपर हम सब लोग रहते हैं, अवनी । पचभूतो या तत्वो मे से एक जिसका प्रधान गुण गध है । पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग जो मिट्टी और पत्थर आदि का है जिसपर हम सब लोग चलते फिरते है, जमीन । मिट्टी । सहत्र अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसमे ८, ९ पर यति और अत मे लघु गुरु होते है । ⊙तल = पु॰ जमीन की सतह, वह धरातल जिसपर हम सब लोग चलते फिरते हैं । ससार, दुनिया । ⊙नाथ = पु॰ राजा ।

पृश्नि—स्त्री॰ [सं॰] चितकबरी गाय । पिठवन । सुतप नामक राजा की रानी का नाम । रश्मि, किरण ।

पृष्ट—वि॰ [सं॰] पूछा हुआ ।

पृष्ठ—पु॰ [सं॰] पीठ । पीछे का भाग, पीछा । किसी वस्तु का ऊपरी तल । पुस्तक के पत्र के एक ओर का तल । पुस्तक का पन्ना, पन्ना । ⊙ पोषक = पु॰ पीठ ठोकनेवाला । सहायक । ⊙भाग = पु॰ पीठ, पुश्त । पिछला हिस्सा । ⊙भूमि = स्त्री॰ दे॰ 'पृष्ठिका' । ⊙वंश = पु॰ रीढ ।

पृष्ठिका—स्त्री॰ [सं॰] पिछला भाग । मूर्ति, चित्र, विवरण आदि मे वह सबसे पीछे का भाग जो अकित दृश्य या घटना का आश्रय होता है, पृष्ठभूमि (अं॰ बैकग्राउड) ।

पेंग—स्त्री० झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर को जाना। मु०~**मारना** = झूले पर झूलते समय उसपर इस प्रकार जोर लगाना जिसमे उसका वेग बढ जाय और दोनो ओर वह दूर तक झूले।

पेंच—पु० घुमाव, लपेट, चक्कर। उलझन, झझट। चालबाजी, धूर्तता। पगडी की लपेट। कल, मशीन का पुरजा। वह कील या काँटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्करदार गडारियाँ या चूडियाँ बनी होती हैं और जो घुमाकर जड़ा जाता है, (अँ० स्क्रू)। इस प्रकार की चूडियाँ या गडारियाँ। पतग लडने के समय दो या अधिक पतगो की डोरो का एक दूसरी मे फँस जाना। कुश्ती मे दूसरे को पछाड़ने की युक्ति। युक्ति, तरकीब। एक प्रकार का आभूषण जो टोपी या पगडी मे सामने की ओर खोसा या लगाया जाता है, सिरपेंच। एक प्रकार का आभूषण जो कानो मे पहना जाता है, गोशपेच। ⊙**कश** = पु० [हिं० + फा०] बढइयो और लुहारो आदि का वह औजार जिससे वे लोग पेंच जडते अथवा निकालतें हैं। वह घुमावदार काँटा जिससे बोतल का काग निकाला जाता है। ⊙**दार** = वि० [हिं० + फा०] जिसमे कोई पेच या कल हो। जिसमे कोई उलझाव हो। दे० 'पेचीदा'। मु०~**घुमाना** = ऐसी युक्ति करना जिससे किसी के विचार बदल जायँ।

पेंडुकी—स्त्री० पडुक पक्षी, फाखता। सुनारो की फुँकनी। दे० 'गुझिया'।

पेंदा—पुं० किसी वस्तु का निचला भाग जिसके आधार पर वह ठहरती हो, तला।

पेंउसी†—स्त्री० दे० 'पेवस'। एक प्रकार का पकवान, इदर।

पेखक(पु)—वि० देखनेवाला।

पेखन(पु)†—पुं० खेल, नाटक। पेखना—

पेच— [फा०] दे० 'पेच'। ⊙**कश** = पु० दे० 'पेंचकश' ⊙**ताब** = वह गुस्सा जो मन ही मन मे रहे और निकाला न जा सके। ⊙**दार** = वि० दे० 'पेचदार'। ⊙**वान** = पु० बड़ी सटक जो फर्शी या गुडगुडी मे लगायी जाती है। बड़ा हुक्का।

पेचक—स्त्री० [फा०] बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी। [सं०] उल्लू पक्षी। जूँ। बादल। पलग।

पेचा†—पु० उल्लू पक्षी।

पेचिश—स्त्री० [फा०] पेट की वह पीड़ा जो आँव होने के कारण होती है, मरोड़।

पेचीदा—स्त्री० [फा०] जिसमे पेंच हो, पेंचदार। कठिन, मुश्किल।

पेचीला—वि० दे० 'पेचीदा'।

पेज—स्त्री० रबड़ी, बसौधी। [अँ०] पुस्तक का पृष्ठ, पन्ना।

पेट—पु० शरीर मे थैले के आकार का वह निचला भाग जिसमे पहुँचकर भोजन पचता है, उदर। छाती से नीचे कमर तक फैला हुआ शरीर का भाग। गर्भ, हमल। अत करण, मन। पोली वस्तु के बीच का या भीतरी भाग। गुजाइश, समाई। रोजी, जीविका। आहार, भोजन (जैसे पेट की चिंता होना)। मु०~**काटना** = जान बूझकर कम खाना जिसमे कुछ बचत हो जाय। ~**का धंधा** = पेट पालने का पेशा या रोजगार। ~**का पानी न पचना** = न रह सकना। ~**का हलका** = ओछे स्वभाव का। ~**की आग** = भूख। ~**की बात** = भेद की बात। †~**खलाना** = अत्यत दीनता दिखलाना। भूखे होने का सकेत करना। ~**गदराना** गर्भ के लक्षण प्रगट होना। ~**गिरना** = गर्भपात होना। **चलना** = दस्त होना, बार बार पाखाना होना। ~**जलना** = अत्यत भूख लगना। †~**देना** = अपने मन की बात बतलाना। ~**पानी होना** = पतले दस्त होना। ~**पालना** = जीवन निर्वाह करना। ~**फूलना** = किसी बात के लिये बहुत अधिक उत्सुक होना। बहुत अधिक हँसने के कारण पेट मे हवा भर जाना। पेट में वायु का प्रकोप होना। ~**मारकर मर**

जाना = आत्मघात करना। ~मे खलबली पड़ना = चिंता या घबराहट होना। ~में घुसना या पैठना = रहस्य जानने के लिये मेल बढाना। ~में दाढी होना = बचपन ही मे बहुत चतुर होना। ~में डालना = खा जाना। ~मे पाँव होना = अत्यत छली या कपटी होना। (कोई वस्तु) ~में होना = गुप्त रूप से पास मे होना। ~मे होना = मन मे होना, ज्ञान मे होना। ~रहना = गर्भ रहना। ⊙वाली = गर्भवती। ~से पाँव निकलना = कुमार्ग मे लगना, बहुत इतराना। ~से होना = गर्भवती होना।

पेटक—पु० [सं०] पिटारा, मजूषा। समूह, ढेर।

पेटकँया†—क्रि० वि० पेट के बल।

पेटा—पु० किसी पदार्थ का बीच का हिस्सा। तफसील, ब्योरा। सीमा, हद। घेरा, वृत्त।

पेटागिⓟ—स्त्री० पेट की आग, भूख।

पेटारा—पु० दे० 'पिटारा'।

पेटिका—स्त्री० [सं०] सदूक, पेटी। छोटी पिटारी।

पेटी—स्त्री० सदूकची, छोटा सदूक। छाती और पेड़ू के बीच का स्थान। कमर मे बाँधने का चौडा तसमा, कमरबद। चपरास। हज्जामो की किसवत जिसमे वे कैंची, छूरा आदि रखते हैं।

पेटू—वि० जो बहुत अधिक खाता हो, भुक्खड।

पेटेंट—पु० [अं०] किसी अविष्कार की सरकारी रजिस्ट्री जिससे आविष्कारक ही अपने आविष्कार को बना, बेच या इस्तेमाल करके आर्थिक लाभ उठाता है, किसी दूसरे को उसकी नकल करके लाभ उठाने का अधिकार नही रहता। इस प्रकार रजिस्ट्री हो चुका पदार्थ या आविष्कार।

पेट्रोल—पु० [अं०] मिट्टी के तेल की तरह का एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जिसके जलने से मोटरें, वायुयान आदि चलते हैं।

पेठा†—पु० सफेद कुम्हडा।

पेड़ा—पु० खोवे की एक प्रसिद्ध गोल और चिपटी मिठाई। गूँधे हुए आटे की लोई।

पेडी—स्त्री० पेड। तना, काड। मनुष्य का धड। पान का पुराना पौधा। पुराने पौधे के पान। वह कर जो प्रति वृक्ष पर लगाया जाय।

पेड़ू—पु० नाभि और मूत्रेंद्रिय के बीच का स्थान, उपस्थ। गर्भाशय।

पेन्शन—स्त्री० [अं०] वह वृत्ति जो किसी व्यक्ति वा (उस पर आश्रित) परिवार के लोगो को उसकी पिछली सेवाओ के बदले मे या सेवाकाल पूर्ण होने पर मिलती है।

पेन्सिल—स्त्री० [अं०] काठ या धातु मे बद काले, लाल आदि कई रगो के सीसे की नोकदार लेखनी।

पेन्हाना—सक० दे० 'पहनाना'। अक० दुहने समय गाय, भैस आदि के थन मे दूध उतरना।

पेपर—पु० [अं०] कागज। समाचारपत्र।

पेमⓟ†—पु० दे० 'प्रेम'।

पेमचा—पु० एक प्रकार का रेशमी कपडा।

पेय—वि० [सं०] पीने योग्य। पु० पीने की वस्तु। जल, पानी, दूध।

पेरना—सक० किसी वस्तु को इस प्रकार दबाना कि उसका रस निकल आवे। कष्ट देना, बहुत सताना। किसी काम मे बहुत देर लगाना। प्रेरणा करना, चलाना। भेजना।

पेलना—सक० दबाकर भीतर घुसाना, धँसाना। ढकेलना, धक्का देना। टाल देना, अवज्ञा करना। हटाना, फेकना। जबरदस्ती करना, बल प्रयोग करना। प्रविष्ट करना, घुसेडना। दे० 'पेरना'। आक्रमण करने के लिये सामने छोडना, आगे बढ़ाना।

पेला—पु० पेलने की क्रिया या भाव। तकरार, झगडा। अपराध, कसूर। आक्रमण, धावा।

पेवँ†—पु० प्रेम, स्नेह।

पेवस—पु० हाल की ब्याई गाय या भैंस का दूध जो रग मे कुछ पीला और हानिकारक होता है।

पेश—क्रि० वि० [फा०] सामने, आगे। ⊙**कश**=पु० भेंट, नजर। सौगात, उपहार। ⊙**कार**=पु० न्यायालय मे हाकिम के सामने कागजपत्र पेश करनेवाला कर्मचारी। ⊙**खेमा**=पु० फौज का सामान जो पहले से ही आगे भेज दिया जाय। फौज का अगला हिस्सा, हरावल। किसी बात या घटना का पूर्वलक्षण। ⊙**गी**=स्त्री० वह धन जो किसी वस्तु के लिये या किसी को कोई काम करने के लिये पहले ही दे दिया जाय, अग्रिम। ⊙**तर**=क्रि० वि० पहले, पूर्व। ⊙**बंदी**=स्त्री० पहले किया हुआ प्रबंध या बचाव की युक्ति, तरकीब। धोखा। ⊙**राज**=पु० [हि०] पत्थर ढोकर राज तक पहुँचानेवाला मजदूर। ⊙**वाज**=स्त्री० वेश्याओं या नर्तकियो का वह घाघरा जो वे नाचते समय पहनती हैं। मु०~**आना**=वर्ताव करना। घटित होना, सामने आना। ~**करना**=सामने रखना, दिखलाना। भेंट करना। ~**जाना या चलना**=वश चलना, जोर चलना। ~**पाना**=जीतना। होना। ~**की राह बहा देना**=रंडीबाजी मे खर्च कर देना। ~**निकल पड़ना**=इतना डर जाना कि पेशाब निकल पडे।

पेशवा—पु० [फा०] महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्रियो की उपाधि। सरदार, नेता।

पेशवाई—स्त्री० [फा०] किसी माननीय पुरुष के आने पर कुछ दूर आगे चलकर उसका स्वागत करना, अगवानी। पेशवाओ की शासनकला। पेशवा का पद या कार्य।

पेशा—पुं० [फा०] वह कार्य जो जीविका उपार्जित करने के लिये किया जाय, व्यवसाय। ⊙**वर**=पु० किसी प्रकार का पेशा करनेवाला। व्यवसायी। मु०~**कमाना या करना**=वेश्यावृत्ति करना।

पेशानी—स्त्री० [फा०] ललाट, माथा। किस्मत, भाग्य। ऊपरी या आगे का भाग।

पेशाब—पुं० [फा०] मूत, मूत्र। ⊙**खाना**=पु० वह स्थान जहाँ लोग मूत्रत्याग करते हो, मूत्रालय। मु० ~**करना**=मूतना। अत्यंत तुच्छ समझना। ~**का या ~से चिराग जलना**=अत्यंत प्रतापी होना।

पेशी—स्त्री० [फा०] हाकिम के सामने किसी मुकदमे के पेश होने की क्रिया, मुकदमे की सुनवाई। सामने होने की क्रिया या भाव। स्त्री० [सं०] वज्र। तलवार की म्यान। चमडे की वह थैली जिसमे गर्भ रहता है। शरीर के भीतर मास की गुल्थी या गाँठ।

पेशीनगोई—स्त्री० [फा०] भविष्य की बातें कहना, होने या आनेवाली बातें कहना। भविष्य बतलाना, भविष्यवाणी।

पेश्तर—क्रि० वि० [फा०] पहले, पूर्व।

पेषण—पुं० [सं०] पीसना।

पेषना—सक० दे० 'पेखना'।

पेस(पु)—क्रि० वि० दे० 'पेश'। ⊙**खेमा**=पुं० दे० 'पेशखेमा'।

पेहँटा—पु० कचरी नाम की लता का फल।

पैं(पु)—अव्य० पास, निकट।

पैंजनी—स्त्री० बजनेवाला एक गहना जो पैर मे पहना जाता है।

पैंठ—स्त्री० हाट, बाजार। वह दिन जिस दिन हाट लगती हो।

पैंठौर†—पु० दुकान।

पैंड़—पुं० डग, कदम। पथ, रास्ता।

पैंड़ा—पुं० रास्ता। घुडसाल। प्रणाली। मु०—**पैंडे परना**=पीछे पडना, बार बार तंग करना।

पैंत(पु)—स्त्री० दाँव, बाजी।

पैंतरा—पु० तलवार चलने या कुश्ती लड़ने मे घूम फिरकर पैर रखने की मुद्रा, वार करने का ठाट, पटा।

पैंती—स्त्री० कुश का छल्ला जो श्राद्धादि कर्म करते समय उँगली मे पहते हैं, पवित्री।

पैं(पु)†—प्रत्य० अधिकरणसूचक एक विभक्ति, पर। करणसूच विभक्ति, से, द्वारा। स्त्री० दोष, ऐब। दे० 'पोड़ानस'। पुं० दे० 'पयर', पाँव। अव्य० पर, लेकिन। अवश्य, जरूर। पीछे, बाद। पास, समीप। प्रति,

ओर। जो~ = यदि, अगर। तो~ = तो, फिर।

पँकरमा(पु)†—स्त्री० दे० 'परिक्रमा'।

पँकार—पु०[फा०] छोटा व्यापारी, फेरीवाला। खुदरा व्यापारी।

पँकेट—पु० [अँ०] पुलिंदा, मुट्ठा।

पँखाना—पु० दे० 'पाखाना'।

पँग—स्त्री० दे० 'पेंग'।

पँगंबर—पु०[फा०] मनुष्यो के पास ईश्वर का सदेशा लेकर आनेवाला (जैसे ईसा, मुहम्मद)।

पँगाम—पु०[फा०] सदेस, सदेसा।

पँज(पु)—स्त्री० प्रतिज्ञा, प्रण। प्रतिद्वद्विता, होड।

पँजनी—स्त्री० दे० 'पँजनी'।

पँजा—पु०लोहे का कड़ा जो किवाड़ के छेद मे इसलिये पहनाया रहता है जिसमे किवाड़ उतर न सके, पायना।

पँजामा—पु० दे० 'पायजामा'।

पँजार—स्त्री० [फा०] जूता, जोडा। **जूती पँजार** = जूते से मारपीट। लड़ाई झगडा।

पँठ—स्त्री० घुसने का भाव, प्रवेश। गति, पच। ⊙ना—अक० घुसना, प्रविष्ट होना। **पँठाना**—सक० प्रवेश कराना, घुसाना। **पँठार**(पु)—पु० पैठ, प्रवेश। फाटक, दरवाजा। **पँठारी**†—स्त्री० पैठ, प्रवेश। गति, पहुँच।

पँडी—स्त्री० कुएँ से पानी खीचनेवाले बैलो के चलने के लिये बना हुआ ढालुआँ रास्ता। जलाशय से सिचाई के लिये पानी ढालने के लिये बना हुआ स्थान।

पँतरा—पु० दे० 'पैंतरा'

पँताना—पु० दे० 'पायँता'।

पँतृक—वि० [सं०] पितृ सबंधी, पुश्तैनी।

पँत्रिक—वि० दे० 'पैतृक'।

पँदल—वि० जो पाँवो से चले। क्रि० वि० पाँव पाँव चलना। पु० पादचारण, पैदल सिपाही, पदाति।

पँदा—वि० [फा०] उत्पन्न, जन्मा हुआ। प्रकट। प्राप्त, कमाया हुआ। ‡ स्त्री० आमदनी, लाभ। ⊙इश = स्त्री० उत्पत्ति, जन्म। ⊙इशी = वि० जबसे जन्म हुआ, तभी का। स्वाभाविक, प्राकृतिक। ⊙वार—स्त्री० [फा०] अन्न आदि जो खेत मे बोने से प्राप्त हो, उपज।

पँन—वि० पैना, धारदार।

पँना—वि० जिसकी धार बहुत पतली या काटनेवाली हो, धारदार, तेज। तीक्ष्ण, कुशाग्र (जैसे, पैनी बुद्धि)। पु० हलवाहो की बैल हाँकने की छोटी छडी। लोहे का नुकीला छड।

पँमाइश—स्त्री० [फा०] माप, नाप जोख।

पँमाना—पु० [फा०] मापने का औजार या साधन, मानदड।

पँमाल(पु)†—वि० दे० 'पामाल'।

पँयाँ†—स्त्री० पाँव, पैर।

पँया—पु० बिना सत का अनाज का दाना, खोखला दाना। सुक्ख, दीनहीन।

पँर—पु० वह अग जिससे प्राणी चलते फिरते हैं। धूल आदि पर पडा हुआ पैर का चिह्न। खलिहान। ⊙गाडी = स्त्री० वह दो पहिये की हलकी गाडी जो बैठे बैठे पैर घुमाने से चलती है (जैसे बाइसिकिल, ट्राइसिकिल)।

पँरना—अक० तैरना।

पँरवी—स्त्री० [फा०] पक्ष का मडन, पक्ष लेना। मुकदमे मे पक्षसमर्थन के लिये किया जानेवाला प्रयत्न। कोशिश, दौड धूप। ⊙कार = पु० पैरवी करनेवाला।

पँरा—पु० पडे हुए चरण, पौरा। ऊँची जगह चढने के लिये लकडियो के बल्ले आदि रखकर बनाया हुआ रास्ता। एक प्रकार का कडा जो पैर मे पहना जाता है। पु० [अँ०] किसी गद्य लेख का वह छोटा अश जिसमे एक विचारधारा हो।

पँराई—स्त्री० पैरने या तैरने की क्रिया या भाव। **पँराक**—पु० तैरनेवाला, तैराक। **पँराव**—पु० इतना पानी जिसे केवल तैरकर ही पार कर सकें, डुबाव।

पँराशूट—पु० [अँ०] किसी बहुत ऊँचे स्थान या हवाई जहाज से पृथ्वी पर सुरक्षित उतरने के लिये बनाया हुआ छाते की आकार का यत्रविशेष।

पँरी†—स्त्री० दे० 'पीढी'। दे० 'पँडी'।

पँरेखना(पु)‡—सक० दे० 'परेखना'।

पैरोकार—पु० दे० 'पैरवीकार' ।

पैलगी†—स्त्री० प्रणाम, पालागन ।

पैला†—पु० मिट्टी का वह बरतन जिससे दूध, दही ढकते हैं, बडी पैली।

पैबंद—पु०[फा०] कपडे आदि का छेद बद करने का छोटा टुकडा, थिगली, जोड़। किसी पेड की टहनी काटकर उसी जाति के दूसरे पेड की टहनी मे जोडकर बांधना जिससे फल बढ जायँ या उनमे नया स्वाद आ जाय।

पैबंदी—वि० [फा०] पैबद लगाकर पैदा किया हुआ (फल आदि) ।

पैवस्त—वि० [फा०] (द्रव पदार्थ) सोखा हुआ, समाया हुआ ।

पैशाच—वि० [सं०] पिशाच संबधी। पिशाच देश का। ⊙**विवाह**=पु० आठ प्रकार के विवाहो मे से एक जो सोई हुई कन्या का हरण करके या मदोन्मत्त कन्या को फुसलाकर छल से किया गया हो। **पैशाचिक**—वि० पिशाचो का, राक्षसी। घोर वीभत्स। **पैशाची**—स्त्री० एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

पैशुन्य—पु० [सं०] चुगुलखोरी।

पैसना(पु)†—अक० घुसना, पैठना।

पैसरा—पु० झझट, बखेडा। प्रयत्न ।

पैसा—पु० तांबे का वह सिक्का जो रुपए का ६४वां हिस्सा होता है। धन। **नया**⊙ =पु० भारत सरकार द्वारा १९५७ से जारी किया गया तांबे का वह सिक्का जो रुपए का सौवां हिस्सा होता है। अब यह भी 'पैसा' ही कहा जाता है और अब यह अलमूनियम का होता है। **मु०**~**उड़ना**=धन खर्च होना। ~**उड़ाना**= फजूलखर्ची करना। ~**कमाना**=धन उपार्जित करना। ~**डूबना**=लगा हुआ रुपया नष्ट होना, घाटा होना।~**ढो ले जाना**=सब धन उठा ले जाना। सब धन उठा ले जाना। ~**धोकर उठना**= किसी देवता की पूजा की मनौती करके पैसा निकालकर अलग रखना।

पैसार†—पु० पैठ, प्रवेश।

पैसिंजर—पु० [अं०] मुसाफिर, यात्री। ⊙**गाड़ी**=मुसाफिरो को ले जानेवाली रेलगाड़ी।

पैहारी—वि० केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु)।

पोकना†—पतला पाखाना फिरना। बहुत डर जाना ।

पोंका—पु० वह फतिगा जो पौधो पर उडता फिरता है, बोका।

पोंगा—पु० बांस या धातु की नली, चोंगा। पांव की नली। वि० पोला। मूर्ख ।

पोंछ†—स्त्री० दे० 'पूँछ'।

पोंछना—सक० लगी हुई वस्तु को जोर से हाथ आदि फेरकर उठाना या हटाना। रगडकर साफ करना।

पोंछन—स्त्री० लगी हुई वस्तु का वह अश जो पोंछने से निकले। **पोंछना**—साफ करने या पोंछने का कपड़ा।

पोना—सक० गीले आटे की लोई को हाथ से दबाकर घुमाते हुए रोटी के आकार मे बढाना। (रोटी) पकाना। पिरोना, गूंथना।

पोआ—पु० सांप का बच्चा।

पोआना—सक० [अक० पोना] पोने का काम दूसरे से कराना।

पोइया—स्त्री० घोडे की दो दो पैर फेंकते हुए दौड।

पोइस—स्त्री० सरपट दौड। अव्य० देखो, बचो ।

पोई—स्त्री० एक लता जिसकी पत्तियो का साग और पकौडियां बनती हैं । नरम कल्ला, अकुर। ईख का का कल्ला । अन्न का कोमल पौधा, जई। गन्ने का पोर।

पोख—पु० दे० 'पोस' ।

पोखना(पु)—सक० दे० 'पोसना' ।

पोखरा—पु० वह जलाशय जो खोदकर बनाया गया हो, तालाब।

पोखा—पु०'पोषण' ।

पोखराज—पु० दे० 'पुखराज' ।

पोगंड—पु०[स०] पांच से दस वर्ष तक की अवस्था का बालक। वह जिसका कोई अग छोटा, बडा या अधिक हो।

पोच—वि० तुच्छ, निकृष्ट। अशक्त, हीन।

पोचीⓟ—स्त्री० निकृष्टता, हेठापन, बुराई।

पोट—स्त्री० [सं०] गठरी, पोटली। ढेर, अटाला। ⊙**ना**ⓟ—सक० समेटना, बटोरना। फुसलाना, बात में लाना। ⊙**री**ⓟ†—स्त्री० दे० 'पोटली'। ⊙**ली**—स्त्री० छोटी गठरी, छोटा बकुचा।

पोटा—पु० पेट की थैली, उदराशय। साहस, पित्ता। समाई, औकात। आँख की पलक। उँगली का छोर। पु० चिडिया का बच्चा। स्त्री० [सं०] पुरुष के लक्षणो से युक्त स्त्री (जैसे, दाढी मूंछवाली स्त्री)। दासी।

पोटास—पु० [अं०] पौधो या खनिज पदार्थो से प्राप्त वह क्षार जो औषध और शिल्प मे काम आता है।

पोटी—स्त्री० कलेजा।

पोढ़—वि० पुष्ट। **पोढा**—वि० पुष्ट, मजबूत। कडा, कठिन। **पोढ़ना**†—अक० दृढ होना, मजबूत होना। पक्का पड़ना। सक० दृढ करना, पक्का करना।

पोत—पु० [सं०] पशु, पक्षी आदि का छोटा बच्चा। छोटा पौधा। गर्भस्थ पिंड जिस पर झिल्ली न चढी हो। कपडे की बुनावट। बडा नौका, जहाज। स्त्री० [हिं०] माला या गुरिया का छोटा दाना। यह अनेक रगो का होता है और कोदो के दाने के बराबर होता है। काँच की गुरिया। पुं० [हिं०] जमीन का लगान। पोतने की क्रिया या भाव, पुताई। कपडे का वह गुण जिससे वह पतला, मोटा या गफ आदि मालूम होता है। ढब, प्रवृत्ति। बारी, पारी। ⊙**दार**=पु० खजानची। खजाने मे रुपया परखनेवाला। **मु०**~**पूरा करना**=कमी पूरी करना, ज्यो त्यो करके किसी काम को पूरा करना।

पोतक—पु० [सं०] पशु पक्षियो का बच्चा। छोटा बच्चा, शिशु।

पोतकी—स्त्री० [सं०] पूतिका, पोई लता।

पोतड़ा—पु० छोटे बच्चो के नीचे बिछाने का कपडे का टुकड़ा।

पोतना—पु० वह कपड़ा जिससे कोई चीज पोती जाय, पोता। सक० गीली तह चढ़ाना, चुपडना। किसी पदार्थ को किसी वस्तु पर ऐसा लगाना कि वह उसपर जम जाय। मिट्टी, गोबर चूने आदि से लीपना।

पोतला—पु० पराठा।

पोता—पु० बेटे का बेटा, पुत्र का पुत्र। पोतलगान। अडकोष। दे० 'पोटा'। पोतने का कपड़ा। घुली हुई मिट्टी जिसका लेप दीवार पर करते हैं। मिट्टी के लेप पर गीले कपडे का पुचारा जो भबके से अर्क उतारने मे बरतन के ऊपर दिया जाता है।

पोताई—स्त्री० दे० 'पुताई'।

पोती—स्त्री० पुत्र की पुत्री। पुतारा देने की क्रिया।

पोत्र—पु० [सं०] सूअर का खाँग। इद्र का आयुध, वज्र। नाव।

पोत्री—पु० [सं०] सूअर।

पोथा—पु० कागजो की गड्डी। बडी पोथी। **पोथी**—स्त्री० पुस्तक, किताब।

पोदना—पु० एक छोटी चिडिया। नाटा आदमी। मु० ⊙**सा**=बहुत छोटा सा, जरा सा।

पोद्दार—पु० दे० 'पोतदार'।

पोप—पु० [अं०] ईसाई धर्म के रोमन कैथोलिक सप्रदाय का सबसे बडा प्रधान या पुरोहित और सत पीटर का उत्तराधिकारी।

पोपला—वि० पचका और सिकुडा हुआ। जिसमे दाँत न हो। जिसके मुँह मे दाँत न हो। ⊙**ना**—अक० पोपला होना।

पोया—पु० वृक्ष का नरम पौधा। बच्चा। साँप का बच्चा।

पोर—स्त्री० उँगली की गाँठ या जोड जहाँ से वह झुक सकती हैं। उँगली का वह भाग जो दो गाँठो के बीच हो। ईख, बाँस आदि का वह भाग जो दो गाँठो के बीच मे हो। रीढ, पीठ।

पोल—पु० फाटक, प्रवेश द्वार। आँगन। सहन। अवकाश, खाली जगह। खोखला-

पन, सारहीनता। मु० (किसी की)~ खोलना = भडा फोड़ना।

पोलच, पोलचा—पु० वह परती भूमि जो पिछले वर्ष रबी बोने के पहले जोती गई हो। वह ऊसर या बजर भूमि जिसे जुते या टूटे तीन वर्ष हो गए हो।

पोला—वि० जिसके भीतर खाली जगह हो। खोखला, पुलपुला।

पोलिया—पु० दे० 'पौरिया'।

पोलो—वि० [अं०] घोडे पर चढकर खेला जानेवाला चौगान।

पोशाक—स्त्री० [फा०] पहनने के कपडे-पहनावा। मु० ⊙ बढ़ाना = कपड़े उतारना।

पोशीदा—वि० [फा०] गुप्त, छिपा हुआ।

पोष—पु० [सं०] पोषण, पुष्टि। अभ्युदय, उन्नति। वृद्धि, बढती। धन। तुष्टि, संतोष। ⊙क = वि० पालनेवाला। बढानेवाला। सहायक। ⊙ना(पु) = सक० पालना। पोषयितहा(पु)—पु० पुष्ट करनेवाला, पालनेवाला। पोषित—वि० पाला हुआ। पोष्टा—वि० पालनेवाला। पु० कजा, । करज। पोष्य—वि० पालने योग्य,पालनीय पोष्यपुत्र—पु० पुत्र के समान पाला हुआ। लडका, बालक। दत्तक। ⊙ण = पु० पालन। बढती। पुष्टि। सहायता। ⊙न—पु० दे० 'पोषण'।

पोस—पु० पालनेवाले के साथ प्रेम या हेल-मेल। ⊙ना = सक० पालना या रक्षा करना। शरण आदि देकर अपनी रक्षा मे रखना। दे० 'पोंछना'।

पोसन—पु० पालन, रक्षा।

पोसु—वि० पोषण करनेवाला, पालक।

पोस्ट—स्त्री० [अं०] जगह, स्थान। पद, ओहदा। डाकखाना। ⊙आफिस = पु० डाकखाना। ⊙कार्ड = पु० डाकखाने से भेजा जानेवाला मोटे कागज का वह टुकडा जिसपर पत्र आदि लिखते है। ⊙मार्टम = पु० मृत्यु का कारण जानने के लिये शव की चीरफाड। ⊙मास्टर = पु० किसी डाकखाने का प्रधान अधिकारी। ⊙मैन = पु० डाकिया, चिट्ठीरसा।

पोस्टर—पु० [अं०] बहुत मोटे अक्षरो मे छपा हुआ बडा विज्ञापन, इश्तहार। ⊙इंक = पु० छापे की वह स्याही जो लकडी के अक्षर छापने मे काम आती है।

पोस्टेज—स्त्री० [अं०] डाक द्वारा चिट्ठी, पारसल आदि भेजने का महसूल।

पोस्त—पु० [फा०] अफीम के पौधे का डोडा। अफीम का पौधा पोस्ता। छिलका, वकला। खाल, चमडा।

पोस्ता—पु० एक पौधा जिसमे से अफीम निकलती है।

पोस्ती—पु० [फा०] वह जो नशे के लिये पोस्ते के डोडे पीसकर पीता हो। आलसी आदमी।

पोस्तीन—पु० [फा०] गरम और मुलायम रोएँ-वाले समूर आदि कुछ जानवरो की खाल का बना हुआ पहनावा। खाल का बना हुआ कोट जिसमे नीचे की ओर बाल होते हैं। जिल्दबदी मे पुस्तक के आदि और अंत मे लगाया जानेवाला वह मोटा, दोहरा कागज जिसका एक भाग दफ्ती पर चपकाया जाता है।

पोहना—सक० पिरोना, गूँथना। छेदना। लगाना, पोतना। जडना, धँसाना। पीसना, घिसना। दे० 'पोना'। वि० घुसनेवाला, भेदनेवाला।

पोहमी(पु)—स्त्री० दे० 'पुहमी'।

पोहा†—पु० पशु, चौपाया।

पोहिया†—पु० चरवाहा।

पौंचा—पु० साढ़े पाँच का पहाडा।

पौंडा—पु० एक प्रकार की बडी और मोटी जाति की ईख या गन्ना।

पौंड्र—वि० [सं०] पुड्र देश का। पुड्र देश का निवासी या राजा। पु० भीम के शख का नाम। मोटा गन्ना, पौढ़ा। पुड्र देश (बिहार का एक भाग) के राजा का पुत्र जो 'मिथ्यावासुदेव' कहलाया। क्षत्रियो की एक शाखा।

पौंड्रक—पु० [सं०] एक मोटा गन्ना, पौंढा। एक जातिविशेष, पुंड्रा। पुड्र देश का एक राजा जो जरासध का सबधी था और श्रीकृष्ण के हाथ से मारा गया था।

पौंढ़ना—सक० दे० पौढना।

पौरना†—अक० तैरना।

पौंरि—स्त्री० दे० 'पौरि' 'पौरी'। **पौंरिया**—पु० दे० 'पौरिया'।

पौ—पु० पैर, जड। स्त्री० पौसाला, प्याऊ। किरण, प्रकाश की रेखा। पासे की एक चाल या दावँ। मु०~फटना=सवेरे का उजाला दिखाई पडना, सबेरा होना। ~बारह होना=जीत का दावँ पड़ना। लाभ का अवसर मिलना।

पौआ—पु० दे० 'पौवा'।

पौगंड—पु० [सं०] पाँच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था।

पौडर—पुं० चूर्ण, बुकनी। मुँह और शरीर पर मलने का सुगधित या औषधीय चूर्ण, अगराग (अँ० पाउडर)।

पौड़ना—अक० दे० 'तैरना'।

पौढ़ना—अक० झूलना, आगे पीछे हिलना। लेटना, सोना।

पौढ़ाना—सक० [अक० पौढना] डुलाना, झुलाना। लिटाना। सुलाना।

पौत्र—पुं० [सं०] लडके का लडका, पोता।

पौद, पौध—स्त्री० छोटा पौधा। वह छोटा पौधा जो एक स्थान से उखाडकर दूसरे स्थान पर लगाया जा सके। सतान, वश। दे० 'पाँवड़ा'।

पौदर—स्त्री० पैर का चिह्न। पगडडी।

पौदा, पौधा—पुं० नया निकलता हुआ पेड़। छोटा पेड, क्षुप।

पौधि—स्त्री० दे० 'पौद'।

पौनःपुनिक—वि० [सं०] बारबार या पुनः पुन. होनेवाला।

पौन—वि० एक मे से चौथाई कम, तीन चौथाई। पुं० ढगण का एक भेद। पुं० स्त्री० हवा। प्राण, जीवात्मा। प्रेत, भूत। मु०~चलाना या मारना=जादू करना, टोना चलाना। ~बिठाना=(किसी पर) भूत लगाना।

पौनर्भव—वि० [सं०] पुनर्भू सबधी। पुं० पुनर्भू से उत्पन्न पुत्र। वह पति जिससे विधवा या पतिपरित्यक्ता का विवाह हो।

पौना—पुं० पौन का पहाडा। काठ या लोहे की एक बड़ी करछी।

पौनार, पौनारी—स्त्री० कमल के फूल की नाल या डठल।

पौनी—स्त्री० नाई, बारी, धोबी आदि जो विवाह आदि उत्सवो पर इनाम पाते हैं। छोटा पौना।

पौने—वि० किसी सख्या का तीन चौथाई (सख्यावाची शब्दो के साथ)। मु० सोलह आना=बहुत सा, अधिकाश। सोलह आने=प्राय., अधिक अश मे।

पौर—स्त्री० दे० 'पौरी'। वि० [सं०] पुर सबधी, नगर का। ⊙जन=पुं० नगर-निवासी, नागरिक। ⊙सख्य=पुं० वह मित्रता जो एक ही नगर या ग्राम मे रहने से परस्पर होती है। ⊙स्त्री=स्त्री० अत पुर मे रहनेवाली स्त्री। पुर या नगर की स्त्री।

पौरगीय—वि० [सं०] पुनर्जन्म सबंधी।

पौरव—पुं० [सं०] उत्तरपूर्व का एक देश (महाभारत)।

पौरा†—पु० आया हुआ कदम, पड़े हुए चरण।

पौराण—वि० [सं०] पुराणो मे कहा या लिखा हुआ। पुराण सबधी। **पौराणिक**—वि० पुराणवेत्ता। पुराणपाठी। पुराण-सबधी। प्राचीन काल का। पु० १८ मात्रा के छदो की संज्ञा।

पौरि—स्त्री० दे० 'पौरी'। **पौरिया**—पु० द्वारपाल, दरबान।

पौरी—स्त्री० घर के भीतर का वह भाग जो द्वार मे प्रवेश करते ही पडे और कुछ दूर तक लबी कोठरी के रूप मे चला गया हो, ड्योढी। सीढी, पैड़ी। खडाऊँ।

पौरुख(५)—पु० दे० 'पौरुष'।

पौरुष—पु० [सं०] पुरुष का भाव, पुरुषत्व। पुरुषार्थ। पराक्रम। उद्योग। वि० पुरुष सबधी। **पौरुषेय**—वि० पुरुष सबधी। आदमी का किया हुआ। आध्यात्मिक।

पौरुष्य—सं० पुरुषत्व। साहस।

पौरोहित्य—पु० [सं०] पुरोहिताई, पुरोहित का कर्म।

पौर्णमास—पु० [सं०] एक योग जो पूर्णिमा के दिन होता था। **पौर्णमासी**—स्त्री० पूर्णमासी।

पौर्वापर्य—पु० [सं०] पूर्वापर का भाव, आगे पीछे होने का क्रम। सिलसिला, क्रम।

पौर्विक—वि० [सं०] पूर्व मे होनेवाला।

पौल—स्त्री० बडा दरवाजा, फाटक। **पौलिया**—पु० दे० 'पौरिया'। **पौली**—स्त्री० पौरी, ड्योढी।

पौलना(पु)—सक० काटना।

पौलस्त्य—पु० [सं०] पुलस्त्य का पुत्र या उनके वश का पुरुष। कुबेर। रावण, कुभकर्ण और विभीषण। चद्र।

पौला†—पु० खडाऊँ जिसमे खूँटी की जगह छेद मे बँधी रस्सी मे पैर का अँगूठा फँसाया जाता है।

पौलोम—पु० [सं०] पुलोमा ऋषि का अपत्य या सतान। कौशीतक उपनिषद् के अनुसार दैत्यो की एक जाति का नाम। **पौलोमी**—स्त्री० इद्राणी। भृगु महर्षि की पत्नी का नाम।

पौवा—पु० एक सेर का चौथाई भाग। वह वरतन जिसमे पाव भर पानी, दूध आदि आ जाय।

पौष—पु० [स०] वह महीना जिसमे पूर्णमासी पुष्प नक्षत्र मे हो, पूस।

पौष्करिणी—स्त्री० [स०] छोटा पोखरा, छोटा तालाव।

पौष्टिक—वि० [सं०] पुष्टिकारक, वल-वीर्यवर्धक।

पौष्प—वि० [सं०] पुष्प सबधी, फूल का। पु० फूलो से निकला हुआ मद्य। फूल की धूल, पराग।

पौसरा, पौसला—पु० वह स्थान जहाँपर लोगो को पानी पिलाया जाता है, प्याऊ।

पौसेरा—पु० पाव सेर का बाट।

पौहारी—पु० वह जो केवल दूध ही पीकर रहे (अन्न आदि न खाय)।

प्यड(पु)—पु० दे० 'पिड'।

प्याऊ—पु० पौसला, सबील।

प्याज—पु० [फा०] गोल गाँठ के आकार का उग्र गध का एक पर्तदार कद। यह पुष्ट माना जाता है और तरकारी या मसाले के काम मे आता है। **प्याजी**—वि० प्याज के रग का, हलका गुलावी।

प्यादा—पु० [फा०] पदाति, पैदल। दूत, हरकारा।

प्याना(पु)—सक० दे० 'पिलाना'।

प्यार—पु० प्रेम, मुहव्वत। प्रेम जताने की क्रिया।

प्यारा—वि० जिसे प्यार करें, प्रेमपात्र। जो भला मालूम हो।

प्याला—पुं० [फा०] एक प्रकार का छोटा कटोरा, वेला। तोप या वदूक आदि मे वह गड्ढा जिसमे रजक रखते हैं।

प्यावना(पु)†—सक० दे० 'पिलाना'। **प्यावनि**(पु)—स्त्री० पिलाने का कार्य।

प्यास—स्त्री० जल पीने की इच्छा, पिपासा। प्रबल कामना। **प्यासा**—वि० जिसे प्यास लगी हो, तृषित।

प्यूनी(पु)—स्त्री दे० 'पूनी'।

प्यो(पु)—पु० पति, स्वामी।

प्योसर—पु० हाल की व्याई गौ का दूध।

प्योसार‡—पु० (स्त्री के लिये) पीहर, मायका।

प्यौर(पु)—पु० पति, स्वामी। प्रियतम।

प्रकप—पु० [सं०] कँपकँपी, थरथराहट। ⊙**मान**=वि० थरथराता हुआ, अत्यत हिलता हुआ।

प्रकपन—पु० [सं०] कँपकँपी, थरथराहट। तेज हवा, आँधी।

प्रकट—वि० [पु०] प्रत्यक्ष, जाहिर। उत्पन्न, आविर्भूत। स्पष्ट, व्यक्त। ⊙**ना**(पु)=अ० दे० 'प्रगटना'। **प्रकटाना**(पु)—सक० दे०

'प्रगटाना'। **प्रकटित**—वि० प्रकट किया हुआ।

प्रकरण—पु० [सं०] प्रसग, विषय। चर्चा, वर्णन। ग्रंथ का छोटा विभाग जिसमे एक ही विषय या घटना का वर्णन हो, अध्याय। दृश्य काव्य के अतर्गत रूपक का एक भेद।

प्रकरी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का गान। नाटक मे प्रयोजनसिद्धि के पाँच साधनो मे से एक। वह कथावस्तु जो थोडे काल तक चलकर रुक जाय।

प्रकर्ष—पु० [सं०] उत्कर्ष, उत्तमता। अधिकता। ⊙क=वि० उत्कर्ष करनेवाला। ⊙ण=पु० [सं०] प्रकर्ष, उत्कर्ष। अधिकता।

प्रकला—स्त्री० [सं०] एक कला (समय) का ६०वाँ भाग।

प्रकल्पना—स्त्री० [सं०] निश्चित या स्थिर करना। **प्रकल्पित**—वि० निर्मित। निश्चित, स्थिर।

प्रकांड—वि० [सं०] बहुत बड़ा। बहुत विस्तृत।

प्रकाम—वि० [सं०] प्रचुर, बहुत अधिक। काफी।

प्रकाम्य—वि० दे० 'प्राकाम्य'।

प्रकार—पु० [सं०] भेद, किस्म। तरह, भाँति। ⓟ स्त्री० [हिं०] परकोटा, घेरा।

प्रकारी—वि० प्रकार का, प्रकारवाला।

प्रकाश—पु० [सं०] वह जिसके द्वारा वस्तुओ का रूप नेत्रो को गोचर होता है, उजाला, अधकार का उलटा। धूप, घाम। विकाश, स्फुटन। प्रकट होना, गोचर होना। ख्याति। किसी ग्रथ या पुस्तक का विभाग। ⊙क=पु० वह जो प्रकाश करे। वह जो प्रकट करे, प्रसिद्ध करनेवाला। पुस्तक, पत्रिका आदि को छपवाकर प्रचारित करनेवाला (अँ० पब्लिशर)। ⊙गृह=पु० वह ऊँची इमारत, विशेषत समुद्र मे बनी हुई इमारत, जहाँ से बहुत प्रबल प्रकाश चारो ओर फैलता हो (अँ० लाइटहाउस)। ⊙धृष्ट=पु० वह धृष्ट नायक जो प्रकट रूप से धृष्टता करे। ⊙न=पु० [सं०] विष्णु। प्रकाशित करने का काम। वे ग्रथ आदि जो प्रकाशित किए जायँ, प्रकाशित पुस्तक, पत्र आदि। सूचना, विज्ञापन। वि० प्रकाश करनेवाला, चमकीला। ⊙मान=वि० चमकता हुआ, चमकीला। प्रसिद्ध। ⊙वान्=वि० दे० 'प्रकाशमान'। ⊙वियोग=पुं० केशव के अनुसार वह वियोग जो सब पर प्रकट हो जाय। ⊙संयोग=पुं० केशव के अनुसार वह सयोग जो सब पर प्रकट हो जाय। **प्रकाशित**—वि० जिसपर या जिनमे प्रकाश हो चमकता हुआ। प्रकट। छपवाकर प्रकट किया हुआ। सूचित, विज्ञापित। **प्रकाशी**—पु० वह जिसमे प्रकाश हो, चमकता हुआ। **प्रकाश्य**—वि० प्रकट करने योग्य। क्रि० वि० प्रकट रूप से, स्पष्टतया, 'स्वगत' का उलटा (नाटक)।

प्रकासⓟ—पु० आलोक, प्रकाश। प्रकट, व्यक्त। ⊙नाⓟ=सक० प्रकट करना।

प्रकीर्ण—वि० [सं०] बिखरा हुआ। मिला हुआ, मिश्रित। ⊙क=पु० [सं०] वह जिसमे तरह तरह की चीजें मिली हो, अध्याय, प्रकरण। फुटकर आय व्यय की मद।

प्रकुपित—वि० [सं०] जिसका प्रकोप बहुत बढ गया हो।

प्रकृत—वि० [सं०] यथार्थ, जिसमे किसी प्रकार का विकार न हुआ हो। प्रस्तुत, मौजूद। पु० श्लेष अलकार का एक भेद।

प्रकृति—स्त्री० [सं०] तासीर, स्वभाव। प्राणी की प्रधान प्रवृत्ति, स्वभाव। वह मूल शक्ति जिससे अनेक रूपात्मक जगत् का विकास हुआ है, कुदरत। ⊙भाव=पुं० स्वभाव। सधि का वह नियम जिसमे दो पदो के मिलने से कोई विकार नही होता। ⊙शास्त्र—पु० वह शास्त्र जिसमे प्राकृतिक बातो (पशु, वनस्पति, भूगर्भ आदि) का विचार किया जाय। ⊙सिद्ध=वि० स्वाभाविक, प्राकृतिक। ⊙स्थ=वि० जो अपनी प्राकृतिक अवस्था मे हो। स्वाभाविक।

प्रकृष्ट—वि० [स०] उत्तम, श्रेष्ठ। खिचा हुआ। जोता हुआ।

प्रकोप—पु० [सं०] बहुत अधिक कोप। क्षोभ, उत्तेजना। चचलता। बीमारी का अधिक और तेज होना। शरीर के बात, पित्त आदि का बिगड जाना जिससे रोग उत्पन्न होता है।

प्रकोष्ठ—पु० [स०] सदर फाटक के पास की कोठरी। बडा आँगन जिसके चारो ओर इमारत हो।

प्रक्रम—पु० [स०] क्रम, सिलसिला। उपक्रम। ⊙**ण**=पु० [स०] अच्छी तरह घूमना या भ्रमण करना। पार करना। आरभ करना। आगे बढना। ⊙**भंग**=पुं० साहित्य मे एक दोष, किसी वर्णन मे आरभ किए हुए क्रम आदि का ठीक ठीक पालन न होना।

प्रक्रिया—स्त्री० [स०] पद्धति, तरीका। किसी वस्तु या कार्य को बनाने या पूर्ण करने के लिये की जानेवाली क्रमिक क्रियाएँ या कार्यों का सिलसिला (अँ० प्रोसेस), प्रकरण।

प्रक्ष(पु)—वि० पूछनेवाला।

प्रक्षालन—पु० [स०] जल से साफ करने की क्रिया, धोना। **प्रक्षालित**—वि० धोया हुआ।

प्रक्षिप्त—पु० [स०] फेंका हुआ। ऊपर से बढाया हुआ, पीछे से मिलाया हुआ।

प्रक्षेप, प्रक्षेपण—पु० [स०] फेंकना, ढालना। छितराना, बिखराना। मिलाना, बढाना।

प्रखर—वि० [स०] तीक्ष्ण, प्रचड। धारदार, पैना।

प्रख्यात—वि० [स०] प्रसिद्ध, मशहूर।

प्रख्याति—स्त्री० [स०] प्रख्यात होने का भाव, प्रसिद्धि।

प्रगट—वि० दे० 'प्रकट'। ⊙**ना**†=अक० प्रकट होना, सामने आना। **प्रगटाना**†—सक० प्रकट करना, जाहिर करना।

प्रगत—वि० [सं०] मरा हुआ अथवा मृत। छूटा हुआ।

प्रगति—स्त्री० [सं०] आगे की ओर बढ़ना। उन्नति या विकास। सुधार। ⊙**वाद**=पु० वह सिद्धात जिसमे साहित्य को सामाजिक विकास का साधन माना जाता है। सामान्य जनजीवन को साहित्य में व्यक्त करने का सिद्धात। ⊙**वादी**=पुं० प्रगतिवाद का अनुयायी। वि० प्रगतिवाद के सिद्धात पर चलनेवाला। प्रगतिवाद सबंधी। प्रगतिवाद के सिद्धात पर आधारित। ⊙**शील**=वि० बराबर आगे बढनेवाला, उन्नतिशील। सुधारवादी। जो प्रगतिवाद का अनुयायी हो। प्रगतिवाद सबधी। प्रगतिवाद के सिद्धात पर आधारित।

प्रगल्भ—वि० [स०] उद्धत, ढीठ। आत्मविश्वास से पूर्ण, साहसी, प्रत्युत्पन्न मतिवाला, हाजिरजवाब। चतुर, प्रतिभाशाली। निडर। ⊙**वचना**=स्त्री० वह मध्या नायिका जो बातों मे अपना दुःख और क्रोध प्रकट करे और उलाहना दे।

प्रगसना(पु)†—अक० दे० 'प्रगटना'।

प्रगाढ़—वि० [स०] बहुत अधिक। बहुत गाढा या गहरा। कडा, कठोर।

प्रग्रह—पु० [स०] ग्रहण करने या पकड़ने का भाव या ढग, धारण। लड़ाई की एक पकड़। सूर्य या चंद्रमा के ग्रहण का प्रारंभ। आदर, सत्कार। अनुग्रह। उद्धतता। लगाम। बागडोर, रस्सी। किरण। नेता। उपग्रह। बाँह, हाथ। कैदी। सोना, स्वर्ण। विष्णु।

प्रघट(पु)—वि० दे० 'प्रकट'। ⊙**ना**(पु)=अक० दे० 'प्रगटना'।

प्रघट्टक(पु)†—वि० प्रकट या प्रकाश करनेवाला, खोलनेवाला।

प्रघोर—वि० [स०] भयंकर, अत्यत कठिन, असह्य।

प्रचंड—वि० [स०] बहुत तेज, उग्र, प्रखर। भयकर। कठिन, कठोर। असह्य। बडा, भारी। **प्रचडा**—स्त्री० दुर्गा, चडी।

प्रचरना(पु)†—अक० प्रचारित होना, फैलना।

प्रचलन—पु० [सं०] प्रचार, रिवाज। **प्रचलित**—जारी, चलता हुआ।

प्रचाय—पु० [सं०] हाथ से इकट्ठा करना। राशि, ढेर। वृद्धि, आधिक्य।

प्रचार—पु० [सं०] किसी वस्तु का निरंतर व्यवहार या उपयोग, चलन। प्रसिद्धि। विज्ञापन (अं० प्रोपेगैंडा)। ⊙क = वि० प्रचार करनेवाला, फैलानेवाला। ⊙ण = स्त्री० फैलाना। छितराना। चलाना। ⊙ना(पु)† = सक० प्रचार करना, फैलाना। सामना करने या युद्ध के लिये ललकारना। **प्रचारित**—वि० प्रचार किया हुआ, फैलाया हुआ।

प्रचित—पु० [सं०] वह जिसका संग्रह किया गया हो, वह जो चुना गया हो। दंडक छंद का एक भेद।

प्रचुर—वि० [सं०] बहुत अधिक।

प्रचेता—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि। वरुण। पुराणानुसार पृथु के परपोते और प्राचीन बर्हि के दस पुत्र जिन्होंने दस हजार वर्ष समुद्र में रहकर तपस्या करके विष्णु से प्रजासृष्टि का वर पाया था। दक्ष इन्हीं के पुत्र थे।

प्रचर्य—वि० [सं०] चयन करने योग्य। ग्रहण करने योग्य।

प्रचोदक—वि० [सं०] प्रेरणा या उत्तेजना देनेवाला। **प्रचोदन**—पु० प्रेरणा, उत्ते-जना। आज्ञा। **प्रचोदित**—वि० उत्तेजित, प्रेरित। **प्रच्छक**—वि० [सं०] पूछनेवाला।

प्रच्छद—पु० [सं०] लपेटने का कपड़ा, बेठन। कंबल। चोगा।

प्रच्छन्न—वि० [सं०] ढका हुआ, लपेटा या छिपा हुआ।

प्रच्छादन—पु० [सं०] ढकना। छिपाना। उत्तरीय वस्त्र।

प्रच्छाय—पु० [सं०] घनी छाया।

प्रच्छालना (पु)—सक० धोना।

प्रच्यवन—पु० [सं०] झरना, बहना, रिसना।

प्रच्युत—वि० [सं०] गिरा हुआ, स्थानभ्रष्ट। **प्रच्युति**—स्त्री० अपने स्थान से गिरने या हटने का भाव।

प्रजंक(पु)—पु० पलंग।

प्रजंत(पु)‡—अव्य० दे० 'पर्यंत'।

प्रजनन—पु० [सं०] संतान उत्पन्न करने का काम। जन्म। दाई का काम, धात्रीकर्म (सुश्रुत)।

प्रजरना(पु)—अक० अच्छी तरह जलना।

प्रजा—स्त्री० [सं०] संतान, औलाद। वह जनसमूह जो किसी एक राज्य में रहता हो, रिआया। ⊙तंत्र = पुं० वह शासन जिसमें प्रजा ही समय समय पर शासन के लिये अपने प्रतिनिधि चुन लेती है। प्रजा द्वारा अपने ऊपर शासन करने की वह रीति जिसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रजा ही शासक चुनती है। प्रजा द्वारा चुने हुए लोगों से किया जानेवाला शासन ⊙पति = पुं० सृष्टिकर्ता। ब्रह्मा के पुत्र और सृष्टिकर्ता देवता (वेद)। पुराणों के अनुसार ब्रह्मा के दस (कहीं कहीं २१ भी) पुत्रों में से कोई। पिता, बाप। घर का मालिक या बड़ा। दे० 'प्राजापत्य'। ⊙वती = स्त्री० कई बच्चों की माता। गर्भवती। बड़ी भौजाई। ⊙वान् = वि० जिसके आगे बाल बच्चे हों। ⊙सत्ता = स्त्री० दे० 'प्रजातंत्र'। ⊙सत्तात्मक = वि० (वह शासनप्रणाली) जिसमें प्रजा या देश के प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो, 'राजसत्तात्मक' का उलटा।

प्रजाता—स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके बालक उत्पन्न हुआ हो, जच्चा।

प्रजारना(पु)†—सक० [अक० प्रजरना] अच्छी तरह जलाना।

प्रजासन—वि० प्रजा को खानेवाला, प्रजा को सतानेवाला।

प्रजित्—वि० [सं०] जीतनेवाला।

प्रजुरना(पु)—अक० प्रज्वलित होना। चमकना।

प्रजुलित(पु)—वि० दे० 'प्रज्वलित'।

प्रजोग—पुं० दे० 'प्रयोग'।

प्रज्झटिका—स्त्री० [सं०] दे० 'पज्झटिका'।
प्रज्ञ—पुं० [सं०] विद्वान्, जानकार।
प्रज्ञप्ति—स्त्री० [सं०] जताने का भाव। सूचना, विज्ञप्ति। इशारा।
प्रज्ञा—स्त्री० [सं०] अतर्दृष्टि, अतर्ज्ञान। ज्ञान। सरस्वती। एकाग्रता। ⊙चक्षु = पुं० अतदृष्टिवाला। ज्ञानी। धृतराष्ट्र। अधा (व्यग्य)। प्रज्ञान—पुं० चैतन्य। ज्ञान।
प्रज्वलन—पुं० [सं०] जलने की क्रिया, जलना। प्रज्वलित—वि० जलता हुआ या जला हुआ। बहुत स्पष्ट।
प्रज्वलिया—पुं० दे० 'प्रज्झटिका'।
प्रण—पुं० किसी बात का अटल, निश्चय, प्रतिज्ञा।
प्रणत—वि० [सं०] झुका हुआ। प्रणाम करता हुआ। नम्र, दीन। ⊙पाल = पुं० दीनो, दासो या भक्तजनो का पालन करनेवाला। प्रणति—स्त्री० [सं०] प्रणाम, दडवत्। नम्रता। विनती।
प्रणमन—पुं० [सं०] झुकना। प्रणाम करना।
प्रणम्य—वि० [सं०] प्रणाम करने के योग्य।
प्रणय—पुं० [स०] प्रीतियुक्त प्रार्थना। प्रेम। विश्वास, भरोसा। मोक्ष। प्रणय—पुं० रचना, बनाना। प्रणयिनी—स्त्री० प्रियतमा, प्रेमिका। पत्नी। प्रणयी—पु० प्रेमी। पति।
प्रणव—पुं० [सं०] ॐकार, ओकार मत्र। परमेश्वर। त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, शिव)।
प्रणवना(प)—सक० प्रणाम करना, नमस्कार करना।
प्रणाम—पु० [सं०] नमस्कार, दडवत्। झुकना।
प्रणायक—पु० [स०] वह जो मार्ग दिखलाता हो, नेता। सेनानायक।
प्रणाली—स्त्री० [सं०] रीति, प्रथा। ढग, तरीका। पानी निकलने का मार्ग। वह छोटा जलमार्ग जो जल के दो बडे भागो को मिलाता हो, नहर, नाली बरतन मे लगी हुई टोटी।
प्रणाश—पु० [सं०] नाश, बरबादी। मौत।
प्रणिधान—पु० [सं०] रखा जाना। प्रयत्न। समाधि (योग)। अत्यंत भक्ति। ध्यान, चित्त की एकाग्रता।
प्रणिधि—पु० [सं०] प्रार्थना, निवेदन। मन की एकाग्रता। तत्परता। भेदिया, गुप्तचर।
प्रणिपात—पु० [सं०] चरणो पर गिरना। विनयपूर्वक समर्पण। प्रणाम।
प्रणीत—वि० [सं०] रचित, बनाया हुआ। सुधारा हुआ। भेजा हुआ, लाया हुआ। मत्र से सस्कृत। पु० मत्र से सस्कार किया हुआ जल या अग्नि।
प्रणेता—पु० [सं०] रचयिता, बनानेवाला।
प्रतचा(प)†—स्त्री० दे० 'प्रत्यचा'।
प्रतच्छ(प)†—वि० दे० प्रत्यक्ष'।
प्रतछि—वि० प्रत्यक्ष।
प्रतति—स्त्री० [सं०] लबाई चौडाई, विस्तार। लबी चौडी और बड़ी लता।
प्रतन—वि० [सं०] प्राचीन।
प्रतनु—वि० [सं०] हलके या छोटे शरीरवाला। दुबला पतला। सूक्ष्म।
प्रतप्त—वि० [सं०] तपा हुआ।
प्रतर्दन—पु० [सं०] काशी का एक प्रख्यात राजा जो राजा दिवोदास का पुत्र था। एक प्राचीन ऋषि। विष्णु।
प्रतल—पु० [सं०] पाताल के सातवें भाग का नाम।
प्रताप—पु० [सं०] पौरुष, मरदानगी, वीरता। बल, पराक्रम आदि का ऐसा प्रभाव जिसके कारण विरोधी शात रहें, इकबाल, प्रभुत्व। ताप, गरमी। प्रतापी—वि० जिसका प्रताप हो, इकबालमद। सतानेवाला।
प्रतारक—पु० [सं०] वचक, ठग। धूर्त, चालाक। प्रतारणा—स्त्री० वचना, ठगी। प्रतारिक—वि० जिसे ठगा या धोखा दिया गया हो।
प्रतिंचा—स्त्री० धनुष की डोरी, चिल्ला।
प्रति—स्त्री० [सं०] नकल, कापी (अं०)। अव्य० एक उपसर्ग जो शब्दो के आरभ मे लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—विपरीत (जैसे, प्रतिकूल), सामने

(जैसे, प्रत्यक्ष), बदले मे (जैसे, प्रत्युपकार)। हर एक (जैसे, प्रतिदिन), समान (जैसे, प्रतिलिप); मुकाबले का (जैसे प्रतिवादी)। सामने, मुकाबले मे, ओर तरफ। ⊙**कर्म** = पु० वेशभूषा। बदला, प्रतिकार। किसी कार्य के फलस्वरूप होनेवाला कार्य, किसी काम के जवाब मे किया जानेवाला काम। शरीर की सजावट। ⊙**कार** = पु० बदला, जवाब। ⊙**कूल** = वि० जो अनुकूल न हो, खिलाफ विपरीत। ⊙**कृति** = स्त्री० प्रतिमा। तसवीर। प्रतिबिंब, छाया। बदला, प्रतिकार। ⊙**क्रम** = पु० प्रतिकूल कार्य, विपरीत आचार। ⊙**क्रिया** = स्त्री० प्रतिकार, बदला। एक ओर क्रिया होने पर परिणामस्वरूप दूसरी ओर होनेवाली क्रिया। ⊙**क्रियावाद** = पु० सुधार या विकास के विपरीत जानेवाला सिद्धात। ⊙**गृहीता** = स्त्री० वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो, धर्मपत्नी। ⊙**ग्रह** = पु० स्वीकार, ग्रहण। उस दान का लेना जो ब्राह्मण को विधिपूर्वक दिया जाय। पकडना, अधिकार मे लाना। पाणिग्रहण, विवाह। ग्रहण, उपराग। स्वागत। विरोध। जवाब, उत्तर। ⊙**ग्रही** = पु० दे० 'प्रतिग्राही'। ⊙**ग्रहीता** पु० दे० 'प्रतिग्राही'। ⊙**ग्राहक** = पु० दे० 'प्रतिग्राही'। ⊙**ग्राही** = पु० वह जो दान ले। ⊙**घात** = पु० वह आघात जो किसी दूसरे के आघात करने पर किया जाय। टक्कर। रुकावट, बाधा। ⊙**घातक** = वि० प्रतिघात करनेवाला ⊙**घातन** = पु० जान से मार डालना, हत्या। बाधा। ⊙**घाती** = पु० शत्रु, वैरी। मुकाबला करनेवाला। टक्कर मारनेवाला, ढकेलनेवाला। ⊙**छाँई**, ⊙**छाँह** = स्त्री० [हिं०] परछाई, प्रतिबिंब। ⊙**छाया** = स्त्री० दे० 'प्रतिच्छाया'। ⊙**तंत्र** = पु० एक सिद्धात के विरुद्ध दूसरे सिद्धात का शास्त्र, विरुद्ध शास्त्र। ⊙**दत्त** = वि० लौटाया हुआ। बदले मे दिया हुआ। ⊙**दान** लौटाना, वापस करना। परिवर्तन, बदला। ⊙**द्वंद्व** = पु० बराबरीवालों का विरोध, टक्कर। ⊙**द्वंद्विता** = स्त्री० = बराबरवालो की लडाई या विरोध। ⊙**द्वंद्वी**—पु० मुकाबले का लडनेवाला, विपक्षी, शत्रु। ⊙**ध्वनि** = स्त्री० किसी बाधक पदार्थ से टकराकर लौटने के कारण अपनी उत्पत्ति के स्थान पर फिर से सुनाई पडनेवाला शब्द, गूँज। गूँजना। दूसरों के विचारो आदि का दुहराया जाना। ⊙**ध्वनित** = वि० प्रतिध्वनि से व्याप्त, गूंजा हुआ। ⊙**नाद** = पु० प्रतिध्वनि। ⊙**नायक** = पु० नाटको और काव्यो आदि मे नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र। ⊙**निर्यातन** = पु० किसी प्रकार के बदले मे किया हुआ उपकार। ⊙**पक्ष** = पु० शत्रु, वैरी। प्रतिवादी। समानता। विरुद्ध, बल। विरुद्ध पक्ष। ⊙**पक्षी** = पु० विपक्षी, विरोधी, शत्रु। ⊙**पाल, पालक** = पु० पालन पोषण करनेवाला, रक्षक। राजा। ⊙**पालन** = पु० पालन करने की क्रिया या भाव। रक्षण, निर्वाह। ⊙**फल** = पु० नतीजा। बदला। प्रतिबिंब, छाया। **फलक** = पु० वह यंत्र जो किसी वस्तु का प्रतिबिंब उत्पन्न करके उसे दूसरी वस्तु या पट पर डालता हो। ⊙**फलित** = वि० जिसे प्रतिफल या बदला मिला हो। प्रतिबिंबित। ⊙**बंध** = पु० रोक, अटकाव। विघ्न, बाधा। बदोबस्त। ⊙**बंधक** = पु० रोकनेवाला, बाधा डालनेवाला। ⊙**बंधु** = पु० वह जो बंधु के समान हो। ⊙**बद्ध** = वि० जिसमे कोई प्रतिबंध हो। बँधा हुआ। बाधित। नियंत्रित। ⊙**बल** = वि० बल मे समान। ⊙**बिंब** = पु० परछाईं, छाया। मूर्ति, प्रतिमा। चित्र, तसवीर। शीशा, दर्पण। झलक। ⊙**बिंबवाद** = पु० वेदात का यह सिद्धात है कि जीव वास्तव मे ईश्वर का प्रतिबिंब है। ⊙**बोध** = पु० जागरण। ज्ञान। ⊙**भट** = पु० बराबरी या मुकाबिले का वीर। ⊙**भय** = वि० भयंकर। पु० भय, डर। ⊙**भू** = पु० जमानत मे पडनेवाला, जामिन। ⊙**मान** = पु० समानता, बराबरी। दृष्टात, उदाहरण।

प्रतिबिंब, परछाँही। ⊙मुख = पुं० नाटक की पाँच अंगसंधियों में से एक। किसी वस्तु का पिछला भाग। ⊙मूर्ति— स्त्री० प्रतिमा। ⊙मोक्ष = पुं० मोक्ष-प्राप्ति। ⊙मोक्षण = पुं० मोक्ष की प्राप्ति। ⊙मोचन = पुं० बंधन से छुटकारा, खोलना। ⊙योग = पुं० विरुद्ध संयोग। शत्रुता, विरोध। ⊙योगिता = स्त्री० प्रतिद्वंद्विता, होड़, मुकाबला। ⊙योगी = पुं० प्रतियोगिता या होड़ करनेवाला। हिस्सेदार, शरीक। शत्रु, विरोधी। सहायक। बराबर का, जोड़ का। ⊙योद्धा = पुं० शत्रु, विरोधी। बराबर का लड़नेवाला। ⊙रुद्ध = वि० अवरुद्ध, रुका हुआ। फँसा या अटका हुआ। ⊙रूप = पुं० प्रतिमा, मूर्ति। तसवीर, चित्र। प्रतिनिधि। ⊙रोध = पुं० विरोध। रुकावट, बाधा। ⊙लिपि = स्त्री० लेख या लिखी हुई चीज की नकल। ⊙लोम = वि० प्रतिकूल। जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो, उलटा, अनुलोम का उलटा। नीच। ⊙लोम विवाह = पुं० वह विवाह जिसमे पुरुष नीच वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण की हो। ⊙वचन = पुं० उत्तर (जवाब)। प्रतिध्वनि। ⊙वर्तन = पुं० चक्कर काटना, घूमना। लौट आना। ⊙वस्तूपमा = स्त्री० वह काव्यालंकार जिसमे उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का वर्णन अलग अलग वाक्यों में किया जाय। ⊙वाक्य = पुं० दे० 'प्रतिवचन'। ⊙वाद = पुं० वह कथन जो किसी कथन को मिथ्या ठहराने के लिये हो, खंडन। विवाद, बहस। उत्तर, जवाब। ⊙वादी = पुं० प्रतिवाद का खंडन करनेवाला। वह जो वादी की बात का उत्तर दे, प्रतिपक्षी (अं० डिफेंडेंट) ⊙वास = पुं० पड़ोस, समीप का निवास सुगंध। ⊙वासी = पुं० पड़ोस में रहनेवाला, पड़ोसी। ⊙विधान = पुं० किसी विधान के मुकाबिले में किया जानेवाला विधान। ⊙वेश = पुं० पड़ोस। पड़ोस का घर। ⊙वेशी = पुं० पड़ोस में रहनेवाला, पड़ोसी। ⊙शब्द = पुं० प्रतिध्वनि। पर्यायवाची शब्द। ⊙शोध = पुं० वह काम जो किसी बात का बदला चुकाने के लिये किया जाय, बदला। ⊙श्याय = पुं० जुकाम। पीनस रोग। ⊙श्रुति = स्त्री० प्रतिध्वनि। प्रतिज्ञा। स्वीकृति, अंगीकृति। ⊙षेध = पुं० निषेध, खंडन। एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी प्रसिद्ध निषेध या अंतर का इस प्रकार का उल्लेख किया जाय जिससे उसका कुछ विशेष अर्थ निकले। ⊙सारण = पुं० दूर हटाना, अलग करना। ⊙सारणीय = वि० हटाकर दूसरे स्थान पर ले जाने के योग्य। ⊙स्पर्धा = स्त्री० किसी काम में दूसरे की उन्नति देखकर स्वयं उनसे अधिक उन्नत होने का उत्साह या उद्योग, होड़। ⊙स्पर्धी = पुं० वह जो प्रतिस्पर्धा करे, मुकाबला या बराबरी करनेवाला। ⊙हत = वि० रुका हुआ। गिरा हुआ। निराश। क्षीण। जिसे कोई ठोकर या आघात लगा हो, चोट खाया हुआ, नष्ट। ⊙हार = पुं० द्वारपाल, दरबान, ड्योढ़ीदार। दरवाजा। प्राचीन काल का एक राजकर्मचारी जो राजाओं को समाचार आदि सुनाया करता था। चोबदार, नकीब। ⊙हारी = स्त्री० द्वारपाल, ड्योढ़ीदार। ⊙हिंसा = स्त्री० बैर चुकाना, बदला लेना।

प्रतीक—पुं० [सं०] चिह्न, निशान। आकृति, रूप। मुख। प्रतिरूप, स्थानापन्न वस्तु। प्रतिमा, मूर्ति। किसी शब्द, संख्या, नाम, गुणता या सिद्धांत आदि का सूचक चिह्न (अं० सिंबल)। प्रतीकोपासना = स्त्री० किसी विशेष पदार्थ में ब्रह्म की भावना करके उसे पूजना और यह मानना कि हम उसी ब्रह्म को पूज रहे हैं।

प्रतीकार—पुं० [सं०] प्रतीकार, बदला, इलाज।

प्रतीक्षा—स्त्री० [सं०] किसी कार्य के होने या किसी के आने की आशा में रहना, इंतजार। प्रतीक्ष्य—वि० प्रतीक्षा करने योग्य। जिसकी प्रतीक्षा की जाय।

प्रतीघात—पुं० [सं०] वह आघात जो किसी के आघात करने पर किया जाय। वह आघात जो एक आघात लगने पर आपसे आप उत्पन्न हो, टक्कर। बाधा।

प्रतीची—स्त्री० [सं०] पश्चिम दिशा। **प्रतीच्य**—वि० पश्चिमी।

प्रतीत—वि० [सं०] जाना हुआ। प्रसिद्ध। प्रसन्न। **प्रतीति**—स्त्री० ज्ञान, जानकारी। निश्चय, विश्वास। प्रसन्नता, आनंद। प्रसिद्धि। आदर।

प्रतीप—पुं० [सं०] प्रतिकूल घटना, आशा के विरुद्ध फल। वह अर्थालंकार जिसमे उपमान को ही उपमेय के समान कहते हैं अथवा उपमेय द्वारा उपमान का तिरस्कार वर्णन करते हैं। प्रतिकूल, विरुद्ध। विमुख। **प्रतीयमान**—वि० [सं०] जान पडता हुआ। ध्वनि या व्यंग्य द्वारा जाना जाता हुआ।

प्रतीहार, प्रतीहारी—पुं० [सं०] दे० 'प्रतिहार'।

प्रतुद—पुं० [सं०] वे पक्षी जो अपना भक्ष्य चोंच से तोडकर खाते हैं।

प्रतोद—पुं० [सं] चाबुक। अंकुश।

प्रतोली—स्त्री० [सं०] चौडी सडक। गली। दुर्ग का वह द्वार जो नगर की ओर हो।

प्रत्न—वि०[सं०] पुराना, प्राचीन। ⊙तत्व=पुं० दे० 'पुरातत्व'।

प्रत्यंचा†—स्त्री० धनुष की डोरी जिसमे लगाकर बाण छोडा जाता है, चिल्ला।

प्रत्यक्ष—वि० [सं०] जो देखा जा सके, जो आँखों के सामने हो। जिसका ज्ञान इंद्रियो से हो सके, परोक्ष का उलटा। क्रि० वि० आँखो के आगे, सामने। ⊙दर्शी=पुं० वह जिसने प्रत्यक्ष रूप से कोई घटना देखी हो। साक्षी, गवाह। ⊙वाद=पुं० वह सिद्धांत जिसमे केवल प्रत्यक्ष को ही प्रधान मानते हैं। ⊙वादी=पु० वह जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माने। **प्रत्यक्षीकरण**—पुं० किसी वस्तु या विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान करना या कराना, इंद्रिय द्वारा ज्ञान कराना। **प्रत्यक्षीभूत**—वि० जिसका ज्ञान इंद्रियो द्वारा हुआ हो, जो प्रत्यक्ष हुआ हो।

प्रत्यगात्मा—पु० [सं०] व्यापक ब्रह्म। परमेश्वर।

प्रत्यग्र—वि० [सं०] नया, ताजा।

प्रत्यनीक—पु० [सं०] वह अर्थालंकार जिसमें किसी के पक्ष मे रहनेवाले या संबंधी के प्रति किसी हित या अनहित का किया जाना वर्णन किया जाय। शत्रु। प्रतिपक्षी, विरोधी। प्रतिवादी।

प्रत्यपकार—पु० [सं०] अपकार के बदले में किया जानेवाला अपकार।

प्रत्यभिज्ञा—स्त्री० [सं०] वह ज्ञान जो किसी देखी हुई वस्तु को अथवा उसके सदृश किसी अन्य वस्तु को, फिर से देखने पर हो। स्मृति की सहायता से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान। वह अभेद ज्ञान जिसके अनुसार ईश्वर और जीवात्मा दोनो एक ही माने जाते हैं। ⊙दर्शन=पु० माहेश्वर संप्रदाय का एक दर्शन जिसके अनुसार ही परमेश्वर है और वही जडचेतन सबका कारण है। इस दर्शन मे मुक्ति के लिये केवल इस प्रत्यभिज्ञा या ज्ञान की आवश्यकता है कि ईश्वर और जीवात्मा दोनो एक ही हैं और महेश्वर ही ज्ञाता और ज्ञान दोनों है। जीवात्मा मे परमात्मा का प्रकाश होने पर भी जब तक यह ज्ञान न हो जाय कि ईश्वर के गुण मुझमे भी हैं तब तक मुक्ति नही हो सकती। **प्रत्यभिज्ञान**—पुं० सदृश वस्तु को देखकर किसी देखी हुई वस्तु का स्मरण हो आना, स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान।

प्रत्यय—पु० [सं०] विश्वास, एतबार। प्रमाण, सबूत। विचार। बुद्धि। व्याख्या। कारण, हेतु। आवश्यकता। प्रसिद्धि। लक्षण। निर्णय। संमति, राय। चिह्न। वे नौ रीतियाँ जिनके द्वारा छंदो के भेद और उनकी संख्या जानी जाय (छंदशास्त्र)। व्याकरण मे वह अक्षर या अक्षरसमूह जो किसी धातु या मूल शब्द के अंत मे, उसके अर्थ मे कोई विशेषता उत्पन्न करने के उद्देश्य से, लगाया जाय। (जैसे, मूर्खता मे 'ता' प्रत्यय)।

प्रत्यवाय—पु [सं०] कमी, ह्रास। उलटापन, विरोध। विफलता, झुंझलाहट। वह पाप या दुष्कर्म जो शास्त्रों में कहे नित्यकर्म के न करने से होता है। भारी परिवर्तन। जो नहीं है उसका होना या जो है उसका विनाश (भगवद्गीता)।

प्रत्याख्यान—पुं० [सं०] खंडन। निराकरण। निरादरपूर्वक लौटाना। ग्रहण या मान्य न करना।

प्रत्यागत—वि० [सं०] जो लौट आया हो।

प्रत्यागमन—पुं० [सं०] लौट आना, वापसी। फिर से आना।

प्रत्याघात—पुं० [सं०] चोट के बदले की चोट, टक्कर।

प्रत्यालीढ़—पुं० [सं०] धनुष चलानेवालों के बैठने का एक प्रकार, बायाँ पैर आगे बढ़ाकर और दाहिना पीछे खींचकर बैठने का ढंग।

प्रत्यावर्तन—पुं० [सं०] लौट आना।

प्रत्याशा—स्त्री० आशा, उम्मेद।

प्रत्याहार—पु० [सं०] योग के आठ अंगों में से एक जिसमें इंद्रियों को विषयों से हटाकर चित्त का निरोध किया जाता है।

प्रत्युत—अव्य० [सं०] बल्कि, इसके विरुद्ध।

प्रत्युत्तर—पुं० [सं०] उत्तर मिलने पर दिया हुआ उत्तर, जवाब का जवाब।

प्रत्युत्पन्न—वि० [सं०] किसी परिस्थिति के अनुसार तुरत उत्पन्न होनेवाला, तात्कालिक। उपस्थिति, सदा प्रस्तुत। ⊙मति=जो तुरत ही कोई उपयुक्त बात या काम सोच ले।

प्रत्युपकार—पुं० [सं०] वह उपकार जो किसी उपकार के बदले में किया जाय।

प्रत्यूष—पु० [सं०] प्रभात, तड़का।

प्रत्यूह—पु० [सं०] बाधा, विघ्न।

प्रत्येक—वि० [सं०] समूह अथवा बहुतों में से हर एक, अलग अलग।

प्रथम—वि० [सं०] जो गिनती में सबसे पहले आवे, अव्वल। सर्वश्रेष्ठ। क्रि० वि० पहले, पेश्तर। ⊙कारक=पु० व्याकरण में 'कर्ता' (कारक)। ⊙त = क्रि० वि० पहले से, सबसे पहले। ⊙पुरुष=पु० दे० 'उत्तम पुरुष'

प्रथमा—स्त्री० [सं०] मदिरा, शराब (तांत्रिक)। व्याकरण का कर्ता कारक।

प्रथमी(पु)—स्त्री० दे० 'पृथ्वी'।

प्रथा—स्त्री० [सं०] रीति, चाल।

प्रथित—वि० [सं०] प्रसिद्ध। लंबा चौड़ा, विस्तृत।

प्रथी(पु)—स्त्री० दे० 'पृथ्वी'।

प्रथु(पु)—पु० दे० 'पृथु'।

प्रद—वि० [सं०] देनेवाला, दाता जैसे, आनंदप्रद (यौगिक में)।

प्रदक्षिण—पु० [सं०] किसी को दाहिनी ओर कर आदर या भक्ति से उसके चारों ओर घूमना। देवमूर्ति, मंदिर आदि के चारों ओर घूमना। परिक्रमा, फेरी। वि० दाहिनी ओर स्थित। शुभ, अनुकूल। समर्थ, योग्य। **प्रदक्षिणा**—स्त्री० दे० 'दक्षिण'। **प्रदच्छिन**(पु)—पुं० प्रदक्षिणा, परिक्रमा। **प्रदच्छिना**(पु)—स्त्री० दे० 'प्रदक्षिणा'।

प्रदत्त—वि० [सं०] दिया हुआ।

प्रदर—स्त्री० [सं०] स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसदार पानी सा बहता है।

प्रदर्शक—पुं० [सं०] दिखानेवाला। दर्शन करानेवाला। गुरु। **प्रदर्शन**—पु० दिखलाने का काम। दिखावा, आडंबर। दे० 'प्रदर्शनी'। **प्रदर्शनी**—स्त्री० वह स्थान जहाँ तरह तरह की चीजें लोगों को दिखाने के लिये रखी जायँ, नुमाइश।

प्रदर्शित—वि० जो दिखलाया गया हो, दिखलाया हुआ।

प्रदाता—वि० [सं०] दाता, देनेवाला।

प्रदान—पु० [सं०] देने की क्रिया। दान, बखशिश। विवाह। **प्रदायक**—वि० देनेवाला, जो दे। **प्रदायी**—वि० दे० 'प्रदायक'।

प्रदाह—पु० [सं०] ज्वर आदि के कारण अथवा और किसी कारण शरीर मे होनेवाली जलन, दाह।

प्रदिशा—स्त्री० [सं०] दो दिशाओ के बीच की दिशा, कोण।

प्रदीप—पु० [सं०] दीपक, चिराग। रोशनी। ⊙क=पु० प्रकाश मे लानेवाला, प्रकाशक। ⊙न=[सं०] उजाला करना। चमकाना। **प्रदीप्त**—वि० जगमगाता हुआ, प्रकाशवान्। चमकीला। **प्रदीप्ति**—स्त्री० रोशनी, प्रकाश। चमक।

प्रदीपति(पु)†—स्त्री० दे० 'प्रदीप्ति'।

प्रदुमन(पु)—पुं० दे० 'प्रद्युम्न'।

प्रदेय—वि० [सं०] प्रदान करने के योग्य।

प्रदेश—पुं० [सं०] शासन की सुविधा के लिये किए जानेवाले राजनीतिक विभाजन के अनुसार किसी देश के भागो मे से कोई प्रात, सूबा, राज्य। स्थान, जगह। अग, अवयव (जैसे कठप्रदेश, हृदय प्रदेश।)

प्रदोष—पुं० [सं०] सध्याकाल, सूर्य के अस्त होने का समय। सायकाल का हलका अँधेरा। त्रयोदशी का व्रत जिसमे दिन भर उपवास करके सध्या समय शिव का पूजन करने के बाद भोजन करते हैं। बड़ा दोष।

प्रद्युम्न—पुं० [सं०] कामदेव, कदर्प। श्रीकृष्ण के वड़े पुत्र का नाम।

प्रद्योत—पुं० [सं०] किरण, रश्मि। दीप्ति, चमक। **प्रद्योतन**—पुं० सूर्य।

प्रद्वेष—पुं० [सं०] शत्रुता।

प्रधर्षण—पुं० [सं०] अपमान। वलात्कार। आक्रमण। **प्रधर्षित**—वि० [सं०] अपमानित। जिसके साथ वलात्कार किया गया हो। जिसपर आक्रमण किया गया हो।

प्रधान—वि० [सं०] मुख्य, खास। सर्वोच्च। पुं० मुखिया, सरदार। दृश्य जगत् का मूल कारण, मूल प्रकृति। सभापति। किसी सस्था या विभाग का सबसे वड़ा अधिकारी या अध्यक्ष।

प्रधानी(पु)†—स्त्री० प्रधान का पद या कार्य।

प्रधूपित—वि० [सं०] तपाया हुआ प्रज्वलित। चमकता हुआ। पीडित।

प्रध्वंस—पुं० [सं०] विनाश।

प्रन(पु)—पुं० दे० 'प्रण'।

प्रनति(पु)†—स्त्री० दे० 'प्रणति'।

प्रनवना(पु)—सक० दे० 'प्रणमना'।

प्रनामी(पु)†—वि० प्रणाम करनेवाला। स्त्री० वह दक्षिणा जो गुरु, ब्राह्मण आदि को भक्त लोग प्रणाम करने के समय देते हैं।

प्रनिपात(पु)†—पुं० दे० 'प्रणिपात'।

प्रपच—पुं० [सं०] दुनिया का जजाल, सासारिक व्यवहारो का विस्तार। ढग, धोखा। फैलाव। झगडा, वखेडा। समार।

प्रपंची—वि० [सं०] प्रपच रचनेवाला। छली, कपटी।

प्रपत्ति—स्त्री० [सं०] अनन्य शरणागत होने की भावना, अनन्य भक्ति।

प्रपन्न—वि० [सं०] प्राप्त, आया हुआ। शरणागत, आश्रित।

प्रपा—स्त्री० [सं०] पौसरा, प्याऊ।

प्रपाठक—पु० [सं०] वेद के अध्यायो का एक अंश। वैदिक ग्रथो का एक अश।

प्रपात—पु०[सं०] एकबारगी नीचे गिरना। ऊँचे मे गिरती हुई जलधारा, झरना। पहाड या चट्टान का ऐसा किनारा जिसके नीचे कोई रोक न हो, खडा किनारा जहाँ मे गिरने पर कोई वस्तु वीच मे न रुक सके।

प्रपानक—पु० [सं०] फलो के गूदे, रस आदि को पानी मे घोलकर मिर्च, नमक, चीनी आदि देकर वनाई हुई पीने की वस्तु, पन्ना।

प्रपितामह—पु० [सं०] परदादा। परब्रह्म।

प्रपीडन—पु० [सं०] बहुत अधिक कष्ट देना।

प्रपुज—पु० [सं०] भारी झुड।

प्रपुत्र—पु० सं० पुत्र का पुत्र, पोता।

प्रपूर्ण—वि० [सं०] अच्छी तरह भरा हुआ।

प्रपौत्र—पु० [सं०] पुत्र का पोता, पोते का पुत्र।

प्रफुड़ना—अक० दे० 'प्रफुलना'।

प्रफुलना(पु)—अक० फूलना, खिलना।

प्रफुला(पु)—स्त्री० कुमुदिनी, कुई। कमलिनी, कमल।

प्रफुलित(पु)—वि० खिला हुआ, कुसुमित। प्रफुल्ल, आनंदित।

प्रफुल्ल—वि० [सं०] खिला हुआ। जिसमे फूल लगे हों। खुला हुआ। प्रसन्न, आनंदित।

प्रफुल्लित—वि० दे० 'प्रफुल्ल'।

प्रबंध—पु० [सं०] बंदोबस्त, इंतजाम। योजना। बँधा हुआ सिलसिला। एक दूसरे से संबद्ध वाक्यरचना का विस्तार। सिलसिलेवार गद्य या पद्य मे की हुई रचना। निबंध, लेख। साहित्यिक रचना। काव्यरचना। विभाग, अध्याय। ⊙कल्पना = स्त्री० ऐसा प्रबंध जिसमे थोडी सी सत्यकथा मे बहुत सी बातें ऊपर से मिलाई गई हो। प्रबंधरचना, संदर्भरचना। ⊙कारिणी = स्त्री० किसी सभा, समाज या आयोजन के सब प्रबंध करनेवाली (समिति)।

प्रबंड(पु)—वि० प्रचंड, घनघोर, प्रबल।

प्रबल—वि० [सं०] बलवान, प्रचंड, उग्र। घोर, महान्। **प्रबला**—स्त्री० बहुत बलवती।

प्रबुद्ध—वि० [सं०] जागा हुआ। होश मे आया हुआ। पंडित, ज्ञानी। खिला हुआ।

प्रबोध—पु० [सं०] जागना। यथार्थ ज्ञान, तसल्ली, दिलासा। चेतावनी। ⊙ना = सक० जगाना, नींद से उठाना। होशियार करना। समझाना बुझाना। सिखाना, पट्टी पढ़ाना। तसल्ली देना। **प्रबोधन**—पु० जागना। नींद से उठाना। यथार्थ ज्ञान, चेत। जताना, ज्ञान देना। सांत्वना। **प्रबोधिता**—स्त्री० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, जगण, सगण, जगण और अंत्य गुरु होता है। **प्रबोधिनी**—स्त्री० देवोत्थान या कार्तिक शुक्ला एकादशी जिस दिन विष्णु भगवान् सोकर उठते हैं।

प्रभंजन—पु० [सं०] प्रचंड वायु, आँधी। तोडफोड, नाश। ⊙जाया = पु० [हिं०] वायु से पैदा हुआ व्यक्ति, हनुमान्।

प्रभद्रक पु०, **प्रभद्रिका**—स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से नगण, जगण, भगण, जगण, और रगण रहता है।

प्रभव—पु० [सं०] उत्पत्तिकारण। उत्पत्तिस्थान, आकर। उत्पत्ति। सृष्टि। जल का निर्गम स्थान, उद्गम। पराक्रम। ६० में से एक संवत्सर जब अधिक वृष्टि होती है।

प्रभविष्णु—वि० [सं०] प्रभावशाली। बलवान्।

प्रभा—स्त्री० [सं०] प्रकाश, चमक। सूर्य का बिंब। सूर्य की एक पत्नी। एक द्वादशाक्षर का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण और दो रगण रहते हैं, मंदाकिनी। चंचलाक्षिका। ⊙कर = पु० सूर्य। चंद्रमा। अग्नि। समुद्र। मदार वृक्ष। ⊙वती = स्त्री० सूर्य की पत्नी। प्रभाती राग वा गीत। शिव के एक गण की वीणा का नाम। १३ अक्षरो का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तगण, मगण, सगण, जगण और अंत्य गुरु होता है। वि० स्त्री० प्रभावशाली।

प्रभाउ(पु)—पु० दे० 'प्रभाव'।

प्रभात—पु० [सं०] सवेरा, तडका, प्रातःकाल। ⊙फेरी = स्त्री० [सं० + हिं०] प्रचार आदि के लिये बहुत सवेरे दल बाँधकर आबादी का चक्कर लगाते हुए नारे लगाना तथा गीत गाना। **प्रभाती**—स्त्री० एक प्रकार का गीत जो प्रातःकाल गाया जाता है। दातुन।

प्रभाव—पु० [सं०] प्रादुर्भाव। सामर्थ्य, शक्ति। असर। महिमा, माहात्म्य। इतना मान या अधिकार कि जो बात चाहे, कर या करा सके। अंतःकरण को प्रवृत्त करने का गुण। प्रवृत्ति पर होनेवाला फल या परिणाम। ⊙क = वि० प्रभाव करने या डालनेवाला। **प्रभावान्वित**—वि० जिसपर प्रभाव पडा हो। **प्रभावित**—वि० जिसपर प्रभाव पडा हो। **प्रभास**—पु० [सं०] दीप्ति, ज्योति। एक प्राचीन

तीर्थ, सोमतीर्थ। ⊙ना⊙—सक० भासित होना, दिखाई पड़ना।

प्रभु—पु० [सं०] ईश्वर। स्वामी, पति। अधिपति, शासक, नायक। श्रेष्ठपुरुषों का संबोधन। ⊙ता = स्त्री० बड़ाई, महत्व। हुकूमत। वैभव। साहिबी, मालिकपन। ⊙ताई = स्त्री० [हिं०] दे० 'प्रभुता'।

प्रभू(पु)—पु० दे० 'प्रभु'।

प्रभूत—वि० [सं०] बहुत। उन्नत। निकला हुआ, उत्पन्न। पु० पंचभूत, तत्व।

प्रभृति—अव्य० [सं०] इत्यादि, वगैरह।

प्रभेद—पु० [सं०] भेद, विभिन्नता। फोड़कर निकलना।

प्रभेव(पु)—पु० दे० 'प्रभेद'।

प्रभ्रष्ट—वि० [सं०] गिरा हुआ। टूटा हुआ।

प्रमत्त—वि० [सं०] नशे मे चूर। पागल। जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

प्रमथ—पु० [सं०] मथन या पीड़ित करनेवाला। शिव के एक प्रकार के गण या पारिषद। ⊙नाथ = पुं० शिव। ⊙न—पु० मथना। दुख पहुँचाना। वध या नाश करना। प्रमथित—वि० खूब मथा हुआ। पु० मट्ठा जिसमे ऊपर से पानी न मिला हो।

प्रमद—पु० [सं०] मतवालापन। हर्ष, आनंद। वि० मत्त, मतवाला। प्रमदा—स्त्री० [सं०] युवती स्त्री, सुदर स्त्री।

प्रमन—वि० प्रसन्न, खुश।

प्रमर्दन—पु० [सं०] अच्छी तरह मलना, दलना। कुचलना, रौंदना। विष्णु। एक दैत्य। वि० खूब मर्दन करनेवाला।

प्रमा—स्त्री० [सं०] शुद्ध बोध, जैसी बात हो, वैसा ही अनुभव (न्याय)। चेतना। माप।

प्रमाण—अव्य० [सं०] तक। पुं०। वह बात जिससे कोई दूसरी बात सिद्ध हो, सबूत। एक अलकार जिसमे आठ प्रमाणो मे से किसी एक का कथन होता है। सत्यता। निश्चय, प्रतीति। मर्यादा मान। प्रामाणिक बात या वस्तु। इयत्ता, हद। प्रमाणपत्र। वि० प्रमाणित, घटता हुआ। माना जानेवाला, ठीक। बड़ाई आदि मे बराबर। ⊙कोटि = स्त्री० प्रमाण मानी जानेवाली बातों या वस्तुओ का वर्ग। ⊙ना = सक० दे० 'प्रमानना'। ⊙पत्र = पु० किसी बात के प्रमाणस्वरूप आधिकारिक पत्र या लेख (अं०) सर्टिफिकेट। ⊙पुरुष = पुं० वह जिसके निर्णय को मानने के लिये दोनों पक्ष के लोग तैयार हो, पच। प्रमाणिक(पु)—वि० दे० 'प्रामाणिक'। प्रमाणित—वि० प्रमाण द्वारा सिद्ध, साबित।

प्रमाणिका, प्रमाणी—स्त्री० [सं०] 'नगस्वरूपिणी' वृत्तप्रमाणी। इसके प्रत्येक चरण मे क्रम से जगण, रगण, एक लघु और एक गुरु रहता है। इसका दूना पचचामर छंद कहलाता है।

प्रमाणित—वि० [सं०] प्रमाण द्वारा सिद्ध; साबित।

प्रमाता—पु० [सं०] वह जिसे प्रमा का ज्ञान हो। ज्ञानकर्ता आत्मा या चेतन पुरुष। द्रष्टा, साक्षी। स्त्री० दादी।

प्रमाद—पु० [सं०] भूल, चूक, भ्रम। अतःकरण की दुर्बलता। गफलत, लापरवाही। समाधि के साधनो की भावना न करना या उन्हें ठीक न समझना (योग)। प्रमादी—वि० प्रमादयुक्त, लापरवाह।

प्रमान(पु)—पु० दे० 'प्रमाण'। ⊙ना(पु)—सक० प्रमाण मानना, ठीक समझना। प्रमाणित करना। ठहराना, निश्चित करना। प्रमानी(पु)—वि० मानने योग्य, प्रमाण योग्य।

प्रमारन—पु० [सं०] मारण, नाश। प्रमारयिता—वि० [सं०] घातक। हानि पहुँचानेवाला।

प्रमायु—वि० [सं०] विनाशशील, नश्वर।

प्रमित—वि० [सं०] परिमित। निश्चित। अल्प, थोड़ा। प्रमिताक्षरा—स्त्री० १२ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से सगण, जगण और दो सगण होते है।

प्रमीलन—पु० [सं०] निमीलन, मूंदना। प्रमीला—स्त्री० [सं०] तंद्रा। थकावट, शैथिल्य।

प्रमुख—वि० [सं०] प्रथम, पहला। प्रधान, श्रेष्ठ। मुख्य, प्रतिष्ठित। अव्य इत्यादि।

प्रमूद—वि० दे० 'प्रमुदित'। पु० दे० 'प्रमोद'। ⊙ना=अक० प्रमुदित या प्रसन्न। होना। **प्रमुदित**—वि० हर्षित, प्रसन्न। **प्रमुदितवदना**–स्त्री० १२ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से दो नगण और दो रगण होते है।

प्रमेय—वि० [सं०] जो प्रमाण का विषय हो सके, जिसका बोध कराया जा सके। जिसका नाम बताया जा सके, जिसका अंदाज करा सके। पु० वह जिसका बोध प्रमाण द्वारा करा सकें।

प्रमेह—पु० [सं०] एक रोग जिसमे मूत्रमार्ग से शुक्र तथा शरीर की और धातुएँ निकला करती है।

प्रमोद—पु० [सं०] हर्ष, आनद। सुख। दे० 'प्रमोदा'। **प्रमोदा**—स्त्री० साख्य मे आठ प्रकार की सिद्धियो मे से एक।

प्रयक—पु० दे० 'पर्यंक'।

प्रयत(प)—अव्य० दे० 'पर्यंत'।

प्रयातात्मा—वि० [सं०] सयत आत्मावाला, जितेंद्रिय।

प्रयत्न—सं० [सं०] चेष्टा, कोशिश। प्राणियो की क्रिया (न्याय)। वर्णो के उच्चारण मे होनेवाली क्रिया (व्याकरण)। ⊙वान्=वि० प्रयत्न मे लगा हुआ।

प्रयाग—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा यमुना के सगम पर है, इलाहाबाद। ⊙वाल=पुं० [सं०+हिं०] प्रयाग तीर्थ का पडा।

प्रयाण—पुं० [सं०] यात्रा, प्रस्थान।

प्रयात—वि० [स०] गया हुआ। मरा हुआ।

प्रयास—पुं० [सं०] प्रयत्न। श्रम, मेहनत।

प्रयुक्त—वि० [सं०] अच्छी तरह जोडा या मिलाया हुआ। जो काम मे लाया गया हो।

प्रयुत—पुं० [सं०] दस लाख की सख्या।

प्रयोज्य—वि० [स०] प्रयोग के योग्य, बरतने लायक। काम मे लगाए जाने योग्य। प्रेरित करने योग्य। आचरण करने योग्य।

प्रयोक्ता—पु० [स०] प्रयोग या व्यवहार करनेवाला। नियोजित करनेवाला। ऋण देनेवाला। सूत्रधार।

प्रयोग—पु० [स०] किसी काम मे लगना, अनुष्ठान। व्यवहार, इस्तेमाल। क्रिया का साधन, अमल। मारण, मोहन, उच्चाटन, कीलन, विद्वेषण, कामनाशन, स्तभन, वशीकरण, आकर्षण, बदीमोचन, कामपूरण और वाक्प्रसारण आदि १२ तात्रिक उपचार या साधन। अभिनय, नाटक का खेल। यज्ञादि कर्मों के अनुष्ठान का बोध कराने की विधि। दृष्टात, निदर्शन। रोगी के विचार से औषधि की व्यवस्था, उपचार। साम, दंड आदि राजनीतिक उपाय। **प्रयोगातिशय**—पु० नाटक मे प्रस्तावना का एक भेद जिसमे प्रयोग करते करते आपसे आप दूसरे ही प्रकार का प्रयोग कौशल से हो जाता हुआ दिखाई जाय और उसी प्रयोग का आश्रय करके पात्र प्रवेश करें। **प्रयोगी**—पु० प्रयोगकर्ता, इस्तेमाल करनेवाला। काम में लगानेवाला, प्रेरक। प्रदर्शक। व्यवस्थापक।

प्रयोजक—पु० प्रयोगकर्ता, अनुष्ठान करनेवाला। काम मे लगानेवाला, प्रेरक। नियता, इंतजाम रखनेवाला।

प्रयोजन—पु० [स०] कार्य, अर्थ। उद्देश्य, मतलब। उपयोग, व्यवहार। ⊙वती लक्षणा=स्त्री० वह लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करे, जैसे, बहुत सी तलवारें मैदान मे आ गई। यहाँ प्रयोजन के कारण तलवार का अर्थ तलवारबद सिपाही करना प्रयोजनवती लक्षणा का उदाहरण है (शब्दशक्ति)। **प्रयोजनीय**—वि० काम का, मतलब का। **प्रयोज्य**—वि० प्रयोग के योग्य।

प्ररोचना—स्त्री० [स०] चाह या रुचि उत्पन्न करना। उत्तेजना, बढ़ावा। नाटक के

अभिनय मे प्रस्तावना के बीच मे सूत्रधार नट आदि का नाटक और नाटककार की प्रशंसा मे कुछ कहना जिससे दर्शकों मे रुचि उत्पन्न हो। अभिनय के बीच आगे आनेवाली बात का रुचिकर रूप मे कथन।

प्ररोहण—पु० [सं०] आरोह, चढाव। उगना, जमना।

प्रलंब—वि० [सं०] नीचे की ओर तक लटकता हुआ। लंबा। टँगा हुआ। निकला हुआ। **प्रलंबन**—पु० अवलंबन, सहारा। **प्रलंबी**—वि० दूर तक लटकनेवाला। सहारा लेनेवाला।

प्रलपन—पु० [सं०] बकवाद करना। कहना।

प्रलयंकर—वि० [सं०] [स्त्री० प्रलयंकरी] प्रलयकारी। सर्वनाशकारी।

प्रलय—पु० [सं०] जगत् का अपने मूल कारण या प्रकृति मे लीन हो जाना, न रह जाना। जगत् के नाना रूपों का प्रकृति मे लीन होकर मिट जाना। साहित्य मे एक सात्विक भाव जिसमे किसी वस्तु मे तन्मय होने से पूर्वस्मृति का लोप हो जाता है। मूर्छा, बेहोशी। ⊙**कर**=वि० दे० 'प्रलयंकर'।

प्रलाप—पुं० [सं०] व्यर्थ की बकवाद, पागलों की सी बडबड।

प्रलेप—पु० [सं०] अंग पर कोई गीली दवा छोपना या रखना, लेप। **प्रलेपन**—पु० लेप करने या पोतने का काम।

प्रलोभ—पु० [सं०] अत्यंत लोभ। लालच। **प्रलोभन**—पु० दे० 'प्रलोभ'।

प्रवंचन—पुं० [सं०] दे० 'प्रवंचना'। **प्रवंचना**—स्त्री० छल, ठगपना। **प्रवंचित**—वि० जो ठगा गया हो।

प्रवक्ता—पु० [सं०] अच्छी तरह बोलने या कहनेवाला। वेदादि का उपदेश देनेवाला। अच्छी वक्तृता या व्याख्यान देनेवाला।

प्रवचन—पु०[सं०] अच्छी तरह समझाकर कहना, अर्थ खोलकर बताना। व्याख्या। शास्त्रोपदेश। वेदांग।

प्रवण—पु० [सं०] क्रमश. नीची होती हुई भूमि, ढाल। चौराहा। पेट। वि० ढालुआँ। झुका हुआ। प्रवृत्त, रत। नम्र। उदार। व्यवहार मे खरा, दक्ष। अनुकूल। स्निग्ध। लंबा।

प्रवत्स्यत्पतिका—स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति विदेश जानेवाला हो।

प्रवत्स्यत्प्रेयसी, प्रवत्स्यद्भर्तृका—स्त्री० [सं०] दे० 'प्रवत्स्यत्पतिका'।

प्रवर—वि० [सं०] श्रेष्ठ, बडा, प्रधान। पु० किसी गोत्रके अंतर्गत विशेष प्रवर्तक मुनि। संतति। ⊙**ललिता**=स्त्री० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे यगण, भगण, नगण, सगण, रगण, और एक गुरु होता है।

प्रवर्त—पु० [सं०] कार्यारंभ, ठानना। एक प्रकार के मेघ। एक प्राचीन आभूषण। ⊙**क**=पु० किसी काम को चलानेवाला, संचालक। अनुष्ठान या प्रचार करनेवाला'आरंभ करनेवाला (जैसे मत-प्रवर्तक, धर्म प्रवर्तक), काम मे लानेवाला, प्रवृत्त करनेवाला। उभारनेवाला, उसकानेवाला। ईजाद करनेवाला। नाटक मे प्रस्तावना का वह भेद जिसमे सूत्रधार वर्तमान समय का वर्णन करता हो और उसी का संबंध लिये पात्र का प्रवेश हो। न्याय करनेवाला, पंच। ⊙**न**—पु० [सं०] कार्य आरंभ करना, ठानना। काम को चलाना। प्रचार करना, जारी करना। उत्तेजना।

प्रवर्षण—पु० [सं०] बहुत अधिक वर्षा, बारिश। किष्किंधा के समीप का एक पर्वत।

प्रवसन—पु० [सं०] विदेश मे जाना या रहना। बाहर जाना।

प्रवह—पु० [सं०] खूब बहाव। सात वायुओं मे से एक वायु। अग्नि की सात जिह्वाओं मे से एक। ⊙**मान**=वि० जोरों से बहता या चलता हुआ।

प्रवात—पु० [सं०] हवा का झोका, तेज हवा। वह स्थान जहाँ खूब हवा हो। ढाल। वि० (हवा से) झोके खाता हुआ।

प्रवाद—पु० [सं०] बातचीत । जनश्रुति, अफवाह । झूठी बदनामी ।
प्रवान(पु)—पुं० दे० 'प्रमाण' ।
प्रवाल—पु० [सं०] अपना देश छोडकर दूसरे देश मे रहना । विदेश । प्रवासी—वि० परदेश में रहनेवाला ।
प्रवाह—पुं० [सं०] जलस्रोत, बहाव । वहता हुआ पानी । काम का जारी रहना । चलता हुआ क्रम, सिलसिला । झुकाव, प्रवृत्त । ⊙क=वि० अच्छी तरह वहन करनेवाला । जोर से चलने या बहनेवाला । प्रवाहित—वि० बहता हुआ । वहाया हुआ । ढोया हुआ । प्रवाही—वि० वहानेवाला । वहनेवाला । तरल, द्रव ।
प्रविष्ट—वि० [सं०] जिसका प्रवेश हुआ हो ।
प्रविसना—अक० पैठना, घुसना ।
प्रवीण—वि० [सं०] निपुण, कुशल, होशियार ।
प्रवीर—वि० [स०] भारी योद्धा, वहादुर । प्रवृत्त—वि० [स०] लगा हुआ, रत । तत्पर, उद्यत, तैयार । लगाया हुआ, नियुक्त ।
प्रवृत्ति—वि० [स०] लगाव, झुकाव आसक्ति । प्रवाह, वहाव । प्रवर्तन, काम का चलाना । सासारिक विषयो का ग्रहण, निवृत्ति का उलटा । न्याय मे एक यत्नविशेष ।
प्रवृद्ध—वि० [स०] खूब वढा हुआ । प्रौढ, खूब पक्का । पु० तलवार के ३२ हाथो मे से एक ।
प्रवेश—पु० [स०] भीतर जाना, घुसना । गति, पहुँच । किसी विषय की जानकारी । ⊙क=पु० प्रवेश करनेवाला । नाटको मे वह अश जिसमे वीच की किसी घटना का परिचय केवल वातचीत से कराया जाता है । प्रवेशिका—स्त्री० [स०] वह पत्र या चिह्न जिसे दिखाकर कहीं प्रवेश करने पाएँ । प्रवेश के लिये दिया जानेवाला धन, दाखिला । प्रवेश करानेवाली योग्यता, परिक्षा आदि ।
प्रव्रज्या—स्त्री० [स०] संन्यास ।
प्रशस(पु)—स्त्री०, दे० 'प्रशसा' । वि० प्रशसा के योग्य । ⊙ना(पु)—सक० सराहना, तारीफ करना ।
प्रशसक—वि० [स०] प्रशसा करनेवाला । खुशामदी । प्रशसन—पु० गुणकीर्तन, तारीफ । प्रशसनीय—वि० प्रशसा के योग्य बहुत अच्छा ।
प्रशंसा—स्त्री० [स०] बडाई, तारीफ, गुणवर्णन । प्रशसित—वि० जिसकी प्रशसा की गई हो । प्रशसोपमा—स्त्री० वह उपमालकार जिसमे उपमेय की अधिक प्रशसा करके उपमान की प्रशंसा घोषित की जाती है । प्रशस्य—वि० [स०] प्रशंसनीय ।
प्रशम—पु० [स०] शमन, शाति । निवृत्ति, नाश । भागवत के अनुसार रतिदेव के पुत्र का नाम । प्रशमन—पु० शमन, शाति । ध्वस । मारण, वध ।
प्रशस्त—वि० [सं०] प्रशसनीय, सुदर । श्रेष्ठ, उत्तम । भव्य । विस्तीर्ण, लवा चौडा । प्रशस्ति—स्त्री [स०] प्रशसा, स्तुति । राजकीय आज्ञापत्र जो चट्टानो या ताम्रपत्रादि पर खोदे जाते थे और जिनमें राजवश और कीर्ति आदि का वर्णन होता था । किसी की प्रशसा मे लिखा या खुदा हुआ काव्य अथवा लेख । प्राचीन पुस्तको के आदि और अत की कुछ पक्तियाँ जिनसे पुस्तक के कर्ता, विषय, कालादि का परिचय मिलता हो । किसी पत्र के आदि मे लिखा जानेवाला प्रशंसासूचक वाक्य, सरनामा ।
प्रशस्य—वि० [स०] प्रशसा के योग्य । श्रेष्ठ, उत्तम ।
प्रशांत—वि० [सं०] चंचलतारहित, स्थिर । शात । पु० एक महासागर जो एशिया और अमरीका के बीच मे है । प्रशांति—स्त्री० प्रशात या निश्चल होने का भाव, पूर्ण शाति ।
प्रशाखा—स्त्री० [स०] शाखा की शाखा, टहनी ।
प्रश्न—पुं० [स०] पूछताछ, सवाल । पूछने की वात । विचारणीय विषय । एक उप-

निषद्। प्रश्नोत्तर–पु० प्रश्न और उत्तर, सवाद। वह काव्यालकार जिसमे प्रश्न और उत्तर रहते है। प्रश्नोत्तरी––स्त्री० [हि०] किसी विषय के प्रश्नो और उनके उत्तरो का सग्रह।

प्रश्रय—पु० [स०] आश्रय स्थान। टेक, सहारा। नम्रता, शिष्टता।

प्रश्लेष—पु० [स०] घनिष्ट सबध। सधि होने मे स्वरो का परस्पर मिल जाना।

प्रश्वास—पु० [स०] वह वायु जो नाक से बाहर निकलती है।

प्रष्टव्य—वि० [सं०] पूछने योग्य। पूछने का, जिससे पूछना हो। प्रष्टा—वि० पूछने या प्रश्न करनेवाला।

प्रसग—पु० [सं०] मेल, लगाव, सबध। बातो का पारस्परिक सबध, अर्थ की सगति। स्त्रीपुरुष का सयोग, मैथुन। अनुरक्ति, लगन। बात, विषय। अवसर। कारण। विषयानुक्रम, प्रस्ताव, प्रकरण। विस्तार, भेद, रहस्य।

प्रसंसना(पु)––सक० दे० 'प्रशसना'।

प्रसक्त––वि० [सं०] सश्लिष्ट, लगा हुआ। आसक्त। जो बराबर लगा रहे, न छोडनेवाला।

प्रसन्न‡—वि० [फा० पसद] मनोनीत, पसद। वि०[सं०] सतुष्ट। खुश, प्रफुल्ल। अनुकूल। स्वच्छ, निर्मल। ⊙ता = स्त्री० तुष्टि, सतोष। हर्ष, आनद। कृपा।

प्रसन्नित(पु)‡—वि० दे० 'प्रसन्न'।

प्रसरण—पु० [स०] खिसकना, सरकना। फैलना। व्याप्ति। विस्तार।

प्रसव—पु० [सं०] बच्चा जनने की क्रिया प्रसूति। जन्म, उत्पत्ति। बच्चा, सतान। **प्रसवना**(पु)—सक० उत्पन्न करना, जन्म देना। प्रसवा, प्रसविनी––वि० स्त्री० प्रसव करनेवाली।

प्रसाद—पु० [स०] कृपा, मिहरबानी। काव्य का एक गुण, सरल और सुबोध काव्य या रचना। वह वस्तु जो देवता को चढाई जाय। वह पदार्थ जिसे देवता या बडे लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तो या सेवको को दें। देवता गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम मे लाई जाय। ‡ भोजन। प्रसन्नता। शब्दालकार के अतर्गत एक वृत्ति। ‡ दे० 'प्रासाद'। निर्मलता, सफाई। ⊙ना(पु)—सक० प्रसन्न करना। मु०~पाना = भोजन करना। प्रसादनीय—वि० प्रसन्न करने योग्य। प्रसादी—स्त्री० [हि०] देवताओ को चढाया हुआ पदार्थ। नैवेद्य। वह पदार्थ जो पूज्य और बडे लोग छोटो को दे।

प्रसाधक—पुं० [सं०] वह जो किसी कार्य का निर्वाह करे, सपादक। सजावट का काम करनेवाला। दूसरे के शरीर या अगो का शृगार करनेवाला व्यक्ति।

प्रसाधिका—स्त्री० वह दासी जो रानियों का शृगार करती हो।

प्रसाधन—पुं० [सं०] अलकार आदि शृगार। शृगार की सामग्री, सजावट का सामान। कार्य का सपादन। कघा से बाल झाडना।

प्रसार—पुं० [सं०] विस्तार, फैलाव। सचार, प्रचार। निकास। ⊙ण—पु० फैलाना, बढाना। प्रसारिणी––स्त्री० गधप्रसारिणी लता। लजालू, लाजवंती। वि० स्त्री० प्रसार करनेवाली। प्रसारित—वि० फैलाया हुआ।

प्रसिद्ध—वि० [सं०] विख्यात, मशहूर। भूषित, अलकृत। प्रसिद्धि—स्त्री० ख्याति, शोहरत। भूषा, बनाव-सिंगार।

प्रसुप्त—वि० [सं०] खूब सोया हुआ। प्रसुप्ति—स्त्री० गाढी नीद, नीद।

प्रसू––स्त्री० [सं०] जननेवाली, उत्पन्न करनेवाली। प्रसूत––वि० उत्पन्न, पैदा। निकला हुआ। पु० एक प्रकार का रोग जो स्त्रियो को प्रसव के पीछे होता है। इसमे प्रसूता को ज्वर होता और दस्त आते है। प्रसूता—स्त्री० बच्चा जननेवाली स्त्री, जच्चा। प्रसूति—स्त्री० प्रसव, जनन। उद्‌भव। कारण, प्रकृति। प्रसूतिका––स्त्री० दे० 'प्रसूता'।

प्रसून—पुं० [सं०] फूल। फल। वि० पैदा, उत्पन्न।

प्रसृति—स्त्री० [सं०] फैलाव, विस्तार। सतति।

प्रसेक—[स०] सीचना। निचोड। छिड़काव। एक असाध्य रोग, जिरियान (सुश्रुत)।

प्रसेद(पु)—पु० पसीना।

प्रस्तर—पुं० [स०] पत्थर। डाभ या कुश का पूला, पत्ते आदि का बिछावन। समतल। प्रस्तार। बिछावन। ⊙युग=पु० पुरातत्व के अनुसार मनुष्य जाति के इतिहास मे वह समय जब अस्त्र शस्त्र और औजार आदि केवल पत्थर के ही बनते थे। यह सभ्यता बिल्कुल आरभिक काल मे थी और इसमे लोगो को धातुओ का पता नही था।

प्रस्तार—पुं० [सं०] फैलाव, विस्तार। आधिक्य। परत, तह। छद शास्त्र के अनुसार नौ प्रत्ययो मे से पहला जिससे छदो के भेद की सख्याओ और रूपो का ज्ञान होता है। घास और पत्तियो का बिछावन। घास का वन।

प्रस्ताव—पुं० [स०] सभा के सामने उपस्थित मतव्य, सभा समाज मे उठाई हुई बात। अवसर पर कही हुई बात, जिक्र। प्रसग, छिडी हुई बात। भूमिका, विषय परिचय। ⊙क=पुं० प्रस्ताव करनेवाला, तजवीज करनेवाला। ⊙कर्ता=पुं० दे० 'प्रस्तावक'। ⊙ना=स्त्री० आरभ। प्राक्कथन, भूमिका। नाटक मे अभिनय के पूर्व विषय का परिचय देने के लिये उठाया हुआ प्रसग। प्रस्तावित—वि० जिसके लिये या जिसका प्रस्ताव किया गया हो। प्रस्ताव्य—वि० प्रस्ताव करने योग्य।

प्रस्तुत—वि० [सं०] जिसकी स्तुति या प्रशसा की गई हो। जो कहा गया हो, उक्त। उपस्थित, मौजूद। उद्यत, तैयार। प्रस्तुतालकार—पुं० एक अलकार जिसमे एक प्रस्तुत के सबध मे कोई बात कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत के प्रति घटाया जाता है।

प्रस्तोता—पुं० [स०] वह सामवेदी ऋत्विक् जो यज्ञो मे सबसे पहले सामगान का प्रारभ करता है।

प्रस्थ—पु० [सं०] पहाड के ऊपर की चौरस भूमि। प्राचीन काल का मान।

प्रस्थान—पु० [सं०] गमन, यात्रा। पहनने के कपडे आदि जिसे लोग यात्रा के मुहूर्त पर घर से निकालकर यात्रा की दिशा मे किसी के घर या कही पर रखवा देते हैं। विजय के लिये सेना या राजा की यात्रा, कूच। प्रस्थानी—वि० जानेवाला। प्रस्थानीय—वि० प्रस्थान योग्य।

प्रस्थापन—पुं० [सं०] प्रस्थान कराना। प्रेरण। प्रस्थापन।

प्रस्थित—वि० [सं०] ठहराया हुआ, टिका हुआ। दृढ। जो गया हो। प्रस्थिति—स्त्री० [सं०] प्रस्थान, यात्रा।

प्रस्फुटन—पुं० [सं०] फटना या खुलना। खिलना। प्रस्फुटित—वि० फूटा या खुला हुआ। खिला हुआ, विकसित।

प्रस्फुरण—पु० [सं०] निकलना। प्रकाशित होना।

प्रस्फोटन—पुं० [सं०] किसी वस्तु का इस प्रकार एकबारगी जोर से खुलना या फूटना कि उसके भीतर का पदार्थ वेग से बाहर निकल पडे। (जैसे, ज्वालामुखी का प्रस्फोटन)। फोडा निकलना। विकसित होना, खिलना। ठोकना, पीटना। फटकना (अन्न आदि)। सूप।

प्रस्रवण—पु० [सं०] जल आदि का टपकना या गिरकर बहना। सोता। प्रपात, झरना।

प्रस्राव—पु० [सं०] जल आदि का टपकना या रिसना। चूना, क्षरण। बहाव। पेशाब।

प्रस्वन—पु० [सं०] जोर का शब्द, ऊँचा स्वर।

प्रस्वेद—पु० [सं०] पसीना।

प्रह—पु० दे० 'प्रात काल'।

प्रहर—पु० [सं०] दिन के सम भागो मे से एक भाग, पहर, तीन घटे का समय।

प्रहरखना(पु)—अक० हर्षित होना।

प्रहरणकलिका—स्त्री० [सं०] १४ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से दो नगण, एक भगण, एक नगण और अत मे लघु गुरु होता है।

प्रहरी—वि० [सं०] पहरा देनेवाला। पहर पहर पर घटा बजानेवाला, घडियाली।

प्रहर्ता—वि० [सं०] प्रहार करनेवाला। योद्धा।

प्रहर्ष—पुं० [सं०] हर्ष, आनद।

प्रहर्षण—पु० [सं०] आनंद। एक अलकार जिसमे बिना उद्योग के अनायास किसी के वाछित पदार्थ की प्राप्ति का वर्णन होता है। **प्रहर्षणी**—स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से भगण, नगण, जगण, रगण और अत्य गुरु होता है।

प्रहसन—पुं० [सं०] दिल्लगी, परिहास। चुहल, खिल्ली। हास्यरसप्रधान एक प्रकार का काव्यमिश्र नाटक जो रूपक के दस भेदो मे से है। **प्रहसित**—वि० हँसी से भरा हुआ। जिसकी हँसी उडाई जाय। पु० जोर से हँसना। एक बुद्ध।

प्रहान(पु)=पु० परित्याग। चित्त की एकाग्रता, ध्यान।

प्रहार—पु० [सं०] आघात, वार, चोट। ⊙**क**=वि० प्रहार करनेवाला। ⊙**ना** (पु)=अक० मारना, आघात करना। मारने के लिये चलाना। नष्ट करना। **प्रहारित**(पु)†—वि० जिसपर प्रहार हो, प्रताडित। **प्रहारी**—वि० प्रहार करनेवाला। चलानेवाला, छोडनेवाला। नाशक।

प्रहृत—वि० [स०] फेंका हुआ, चलाया हुआ। उठाया या फैलाया हुआ। पीटा या ठोका हुआ।

प्रहृष्ट—वि० [स०] अत्यंत प्रसन्न।

प्रहेलिका—स्त्री० [सं०] पहेली।

प्रह्लाद—पु० [स०] आमोद, आनद। एक भक्त दैत्य जो राजा हिरण्यकशिपु का पुत्र था।

प्रांगण—पु० [स०] मकान के बीच का खुला हुआ भाग, आँगन।

प्रांजल—वि० [स०] सरल, सीधा। सच्चा। बराबर, समान।

प्रांत—पु० [स०] प्रदेश, सूबा। किनारा, छोर। अत, सीमा। ओर दिशा। **प्रांतिक**—वि० किसी एक प्रात से सबध रखनेवाला। **प्रातीय**—वि० दे० 'प्रातिक'। **प्रातीयता**—स्त्री० प्रातीय होने का भाव। अपने प्रात का विशेष पक्षपात या मोह।

प्रातर—पु० [स०] दो स्थानो के बीच का वह प्रदेश जिसमे जल या वृक्ष न हो, उजाड। दो प्रदेशो के बीच का शून्य स्थान या दो गाँवो के बीच की भूमि। जगल। वृक्ष का खोखला अश या कोटर।

प्राइमर—स्त्री० [अं०] किसी भाषा या विषय की प्रारभिक पाठ्य पुस्तक।

प्राइवेट—वि० [अँ०] व्यक्तिगत, निजी। गुप्त। गैरसरकारी।

प्राकाम्य—पु० [स०] आठ प्रकार के ऐश्वर्यों या सिद्धियो मे से एक जिसे प्राप्त करनेवाले को इच्छित वस्तुएँ तुरत प्राप्त हो जाती हैं।

प्राकार—पु० [स०] चहारदीवारी, प्राचीर।

प्राकृत—वि० [स०] प्रकृति से उत्पन्न या प्रकृति सबंधी। स्वाभाविक, नैसर्गिक, भौतिक। सहज। असस्कृत। सामान्य। स्त्री० बोलचाल की भाषा जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रात मे हो अथवा रहा हो। भारत की प्राचीन आर्यभाषाओ में से कोई जिसका प्रयोग सस्कृत नाटको आदि मे स्त्रियो, सेवको और साधारण व्यक्तियो की बोलचाल मे दिखाई पडता है।

प्राकृतिक—वि० [स०] जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो, कुदरती। प्रकृति सबधी, प्रकृति का स्वाभाविक, सहज। ⊙**भूगोल**=भूगोल विद्या का वह अग जिसमे पृथ्वी की वर्तमात स्थिति तथा भिन्न भिन्न प्राकृतिक अवस्थाओ का वर्णन और विवेचन होता है।

प्राक्—पु० [स०] पूर्व, पूरब। वि० पहले का, अगला। ⊙**तन**=पु० वह कर्म जो पहले किया जा चुका हो और आगे

जिसका शुभ या अशुभ फल भोगना पड़े, भाग्य।

प्राखर्य—पु० [सं०] प्रखरता ।

प्रागैतिहासिक—वि० जिस समय का निश्चित और पूरा इतिहास मिलता हो, उससे पहले का, इतिहास के पूर्वकाल का ।

प्राग्भाग—पु० पर्वत के आगे का भाग । उत्कर्ष, उन्नति ।

प्राग्ज्योतिष—पु० महाभारत आदि के अनुसार कामरूप देश जो वर्तमान आसाम में पड़ता है। ⊙पुर = पु० प्राग्ज्योतिष देश की राजधानी, आधुनिक गोहाटी।

प्राङ्मुख—वि० जिसका मुँह पूर्व दिशा की ओर हो ।

प्राची—स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा, पूरब ।

प्राचीन—वि० पिछले जमाने का, पुराना । वृद्ध । पूरब का । पु० दे० 'प्राचीन' ।

प्राचीर—पु० [सं०] चहारदीवारी, शहर-पनाह ।

प्राचुर्य—पुं० [सं०] प्रचुर होने का भाव, अधिकता ।

प्राचेतस्—पु० [सं०] प्रचेतागण जो प्राचीन-बर्हि के पुत्र थे और संख्या में दस माने गए हैं । वाल्मीकि ऋषि । विष्णु । दक्ष । वरुण के पुत्र । प्रचेता के वंशज ।

प्राच्छित(पु)—पु० दे० 'प्रायश्चित्त' ।

प्राच्य—वि० [सं०] पूर्व देश या दिशा में उत्पन्न, पूर्व का । पूर्व संबंधी । प्राचीन । ⊙वृत्ति—स्त्री० साहित्य में वैताली वृत्ति का एक भेद जिसके सम पादों में चौथी और पाँचवीं मात्राएँ मिलकर गुरु हो जाती हैं ।

प्राजापत्य—वि० [सं०] प्रजापति संबंधी । प्रजापति से उत्पन्न । पुं० आठ प्रकार के विवाहों में से चौथा । इसमें कन्या का पिता वर और कन्या को एकत्र कर उनसे यह प्रतिज्ञा कराता है कि हम दोनों मिलकर गार्हस्थ्य धर्म का पालन करेंगे और फिर दोनों की पूजा करके वर को अलंकार युक्त कन्या का दान करता है। यज्ञ । १२ दिवसीय एक व्रत ।

प्राज्ञ—वि० [सं०] समझदार । विद्वान् । मूर्ख ।

प्राड्विवाक—पु० [सं०] न्याय करनेवाला, न्यायाधीश । वकील ।

प्राण—पु० [सं०] वायु । शरीर की वह वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता है । साँस । काल का वह विभाग जिसमें दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण हो सके । बल, शक्ति । जीवन, जान । परम प्रिय । ब्रह्मा । विष्णु । अग्नि, आग । ⊙घात = पुं० हत्या, वध । ⊙च्छेद = पुं० हत्या, वध । ⊙जीवन = पु० प्राणाधार । परम प्रिय व्यक्ति । ⊙ता = स्त्री० प्राण का भाव, जीवन । ⊙त्याग = पु० मर जाना, आत्मघात । ⊙दंड = मृत्युदंड, हत्या आदि गंभीर अपराधों के बदले में मौत की सजा । ⊙द = वि० जो प्राण दे । प्राणों की रक्षा करनेवाला । ⊙दान = पु० किसी को मरने या मारे जाने से बचाना । ⊙धन = वि० अत्यंत प्रिय । ⊙धारी = वि० जीवित, प्राणयुक्त । जो साँस लेता हो, चेतन । पुं० प्राणी, जीव । ⊙नाथ = पु० प्यारा, प्रियतम । पति, स्वामी । एक संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य जो क्षत्रिय थे और औरंगजेब के समय में हुए थे । ⊙नाथी = पुं० [हिं०] प्राणनाथ के संप्रदाय का पुरुष । स्वामी प्राणनाथ का चलाया हुआ संप्रदाय । ⊙नाश = पुं० हत्या या मृत्यु । ⊙पति = पु० पति, स्वामी । प्रिय व्यक्ति, प्यारा । ⊙प्यारा = पुं० [हिं०] प्रियतम, अत्यंत प्रिय व्यक्ति । पति, स्वामी । प्रतिष्ठा = स्त्री० किसी नई मूर्ति को मंदिर आदि में स्थापित करते समय मंत्रों द्वारा उसमें प्राण का आरोप । ⊙प्रद = वि० प्राणदाता । स्वास्थ्यवर्धक । ⊙प्रिय = वि० जो प्राण के समान प्रिय हो, प्रियतम । ⊙मय = पु० जिसमें प्राण हो ⊙मय कोश = पु० वेदांत के अनुसार पाँच कोशों में से दूसरा । यह पाँच प्राणों से बना हुआ माना जाता है । ⊙वल्लभ = पु० प्राणप्रिय, अत्यंत प्रिय । स्वामी, पति । ⊙वायु = स्त्री० प्राण । जीव ।

⊙विज्ञान=पु० दे० 'प्राणिविद्या'। ⊙शरीर=पु० सूक्ष्म शरीर जो मनोमय माना गया है। मु०~उड़ जाना=बहुत घबराहट हो जाना। डर जाना।~का गले तक आना=मरने पर होना, मरणासन्न होना।~या प्राणो का मुंह को आना या चले आना=मरने पर होना। अत्यत दु ख होना, बहुत अधिक कष्ट होना।~खाना=बहुत तग करना, बहुत सताना।~जाना,~छूटना या निकलना=मरना। ~डालना=जीवन प्रदान करना।~त्यागना, तजना या छोडना=मरना। (किसी पर या किसी के ऊपर)~देना=किसी के किसी काम से बहुत दुखी या रुष्ट होकर मरना। किसी को बहुत अधिक चाहना।~निकलना=मर जाना। बहुत घबरा जाना। ~पयान होना=प्राण निकलना। प्राणो पर खेलना=ऐसा काम करना जिसमे जान जाने का भय हो।~या प्राणो पर बीतना=जीवन संकट मे पडना। मर जाना। प्राणो में प्राण आना=घबराहट या भय कम होना, चित्त कुछ ठिकाने होना। ~रखना=जिलाना। जान बचाना, जीवन की रक्षा करना।~लेना या हरना=मार डालना।~हारना= मर जाना। साहस टूट जाना। प्राणात—पु० मरण, मृत्यु। प्राणांतक—वि० प्राण लेनेवाला। प्राणाधार—वि० प्राणो का आधार, अत्यत प्रिय, बहुत प्यारा। पु० पति, स्वामी। प्राणाधिक—वि० प्राणो से अधिक,अत्यत प्रिय। प्राणायाम—पु० योगशास्त्रानुसार योग के आठ अगो मे चौथा, श्वास और प्रश्वास की गति का विच्छेद या निरोध। प्राणद्यूत—पु० वह बाजी जो मेढे, तीतर आदि जीवो की लडाई आदि पर लगाई जाय। प्राणविद्या—स्त्री० वह शास्त्र अथवा विद्या जिसमे जलचर, थलचर, नभचर सभी जीवधारियो का अध्ययन हो, प्राणिशास्त्र। प्राणी—वि० प्राणधारी, जीवधारी। पुं० जतु, जीव। मनुष्य, व्यक्ति

प्राणेश—पुं० पति, स्वामी। बहुत प्यारा। प्राणेश्वर—पुं० दे० 'प्राणेश'।

प्रात—अव्य० सवेरे, तडके। पुं० प्रात काल। ⊙नाथ=पुं० सूर्य।

प्रात.—अव्य०, पुं० [सं० प्रातर् के लिये समास मे] सवेरा, प्रभात। ⊙कर्म=पु० वह कर्म जो प्रात काल किया जाता हो (जैसे, स्नान, शौच आदि)। ⊙काल=पु० रात के अत मे सूर्योदय के पूर्व का काल, वह तीन मूहूर्त का माना गया है। सवेरे का समय। ⊙स्मरण=पु० सवेरे के समय ईश्वर का भजन करना। ⊙स्मरणीय=वि० जो प्रात काल स्मरण करने के योग्य हो, श्रेष्ठ, पूज्य।

प्रातिकूल्य—पु० [स०] दे० 'प्रतिकूलता'।

प्रातिपदिक—पु० [सं०] अग्नि। सस्कृत व्याकरण के अनुसार वह अर्थवान् शब्द जो धातु, प्रत्यय और प्रत्ययात न हो और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगने से हुई हो (जैसे, पेड, अच्छा आदि)।

प्रातिलोमिक—वि० [सं०] प्रतिलोम सबधी, प्रतिलोम का।

प्रातिदेशिक—पु० [सं०] पडोसी।

प्राथमिक—वि० [सं०] पहले का, प्रथम सबधी। आरभ का।

प्रादुर्भाव—पु० [सं०] आविर्भाव, प्रकट होना, उत्पत्ति।

प्रादुर्भूत—वि० [सं०] जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। उत्पन्न। ⊙मनोभवा=स्त्री० केशव के अनुसार मध्या के चार भेदो मे से एक। इसके मन मे काम का पूरा प्रादुर्भाव होता है और कामकला के समस्त चिह्न प्रकट होते हैं।

प्रादेशिक—वि० [सं०] प्रदेश सबधी, किसी एक प्रदेश का, प्रातिक। पु० सामत, जमीदार या सरदार।

प्राधान्य—पु० [स०] प्रधानता।

प्राध्यापक—पु० [सं०] महाविद्यालय या कालेज का अध्यापक, प्रोफेसर।

प्रान--पु० दे० 'प्राण'।
प्रापरण--पु० [सं०] प्राप्ति, मिलना। प्रेरणा। प्रापणीय--वि० [सं०] प्राप्त करने योग्य। पहुँचने योग्य।
प्रापत--वि० दे० 'प्राप्त'। प्रापति(पु)†--स्त्री० दे० 'प्राप्ति'। प्रापत्ति(पु)--स्त्री० दे० 'प्राप्ति'।
प्रापना(पु)†--सक० प्राप्त होना, मिलना।
प्राप्त--वि० [सं०] पाया हुआ, जो मिला हो। समुपस्थित। ⊙काल = पु० कोई काम करने योग्य समय। उपयुक्त काल, उचित समय। मरण योग्य काल। वि० जिसका समय हो गया हो। ⊙वुद्धि = वि० चतुर। वेहोशी के बाद होश मे आया हुआ। ⊙यौवन = वि० जिसकी जवानी आ गई हो, जवान ⊙रूप = पु० विद्वान्, पंडित। सुंदर। ⊙व्य = वि० 'प्राप्य'। प्राप्ति--स्त्री० [सं] उपलब्धि, मिलना। पहुँच। अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यो मे से एक जिससे सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती है। आय। लाभ। नाटक का सुखद उपसंहार। ⊙सम = पु० न्याय मे वह आपत्ति जो हेतु और साध्य को, ऐसी अवस्था मे जब कि दोनो प्राप्य हो, अविशिष्ट वतलाकर की जाय, जैसे, पर्वत अग्निमान् है क्योकि वह धूमवान् है। पर यह आक्षेप करना कि यदि अग्नि और धूम का साथ सर्वत्र रहता है तो साध्य और साधक मे कोई अंतर नही। अतः धूम अग्नि का वैसा ही साधक है जैसा अग्नि धूम का।
प्राप्य--वि० [सं०] पाने योग्य। प्राप्तव्य। गम्य। मिलने योग्य।
प्रावल्य--पु० [सं०] प्रवलता।
प्रामाणिक--वि० [सं०] जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणो द्वारा सिद्ध हो, शास्त्रसिद्ध। मानने योग्य। ठीक, सत्य।
प्रामाण्य--पु० [सं०] प्रमाण का भाव। मानमर्यादा।
प्रामादिक--वि० [सं०] प्रमादजनित। दोषयुक्त।
प्रामाद्य--पु० [सं०] पागलपन। अडूसा।
प्रामिसरी नोट--पु० [अं०] धन अदा करने के लिये किसी के द्वारा लिखा हुआ हस्ताक्षर और तिथि सहित वचनपत्र। सरकार द्वारा इस प्रकार प्रजा के लिये ऋण को चुकाने का वचनपत्र, सरकारी हुंडी।
प्राय--प्रत्य० [सं०] समान, तुल्य (जैसे, मृतप्राय)। लगभग (जैसे, प्रायद्वीप)।
प्राय--वि० [सं०] विशेषकर, अकसर। लगभग।
प्रायद्वीप--पु० स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।
प्रायशः--क्रि० वि० [सं०] प्राय, वहुधा।
प्रायश्चित्त--पु० [सं०] शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट जाते है।
प्रायश्चित्तिक--वि० प्रायश्चित्त के योग्य। प्रायश्चित्त संवंधी। प्रायश्चित्ती--वि० प्रायश्चित्त के योग्य। प्रायश्चित्त करनेवाला।
प्रायिक--वि० [सं०] प्राय होनेवाला।
प्रायोज्य--वि० [सं०] प्रयोग मे आनेवाला, जिससे काम निकलता हो। रोजमर्रा के काम की चीज, जैसे, पुस्तक, शस्त्र, औजार, आदि (धर्मशास्त्र)।
प्रायोद्वीप--पु० [सं०] प्रायद्वीप।
प्रायोगिक--वि० [सं०] प्रयोग संवंधी। प्रयोग के रूप मे नित्य काम आनेवाला।
प्रारंभ--पु० [सं०] आरंभ, शुरू। आदि।
प्रारंभिक--वि० प्रारंभ का। आदिम। प्राथमिक। आरंभ किया हुआ। पु० भाग्य। तीन प्रकार के कर्मो में से वह जिसका फलभोग आरंभ हो चुका हो।
प्रारब्धि--स्त्री० [सं०] आरंभ, शुरू। हाथी के वाँधने की रस्सी। प्रारब्धी--वि० भाग्यवान्, किस्मतवाला।
प्रारूप--पु० [सं०] किसी विधान अथवा नियम का प्रारंभिक रूप जो विचार करने के लिये उपस्थित किया जाय, मसविदा।
प्रार्थना(पु)--स्त्री० [सं०] विनती, निवेदन। किसी से कुछ माँगना, याचना। ⊙पत्र = पु० वह पत्र जिसमे किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो, अर्जी। ⊙समाज = पु० ब्रह्मसमाज की तरह का ववई और उसके

आसपास का एक नवीन समाज या सप्रदाय जिसके अनुयायी मूर्तिपूजा और जातिपाँति आदि नही मानते।

प्रार्थनीय—वि० प्रार्थना करने योग्य। प्रार्थयितव्य—वि० माँगने योग्य, प्रार्थना करने योग्य। प्रार्थित—वि० जिसके लिये प्रार्थना की गई हो। प्रार्थी—वि० प्रार्थना या निवेदन करनेवाला। प्रार्थ्य—वि० प्रार्थना के योग्य, याचनीय।

प्रालब्ध—स्त्री० दे० 'प्रारब्ध'।

प्रालेय—पुं० [स०] हिम, तुषार। बरफ।

प्रावरण—पुं० [सं०] उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा। ढक्कन।

प्रावार—पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बहुमूल्य कपडा। उत्तरीय, दुपट्टा।

प्रावृट्—पुं० [सं०] वर्षा ऋतु।

प्रावृष्—स्त्री० [स०] प्रावृट्, वर्षा। प्रावृषिक—पुं० [स०] मयूर, मोर।

प्रावृषेण्य—पुं० [स०] ईति। कदब। भूमिकर की खरीफ की किस्त। आधिक्य।

प्राश—पुं० दे० 'प्राशन'।

प्राशन—पुं० [स०] खाना, भोजन। चाटना, चखना, (जैसे, अन्नप्राशन)।

प्राशी—वि० [स०] प्राशन करनेवाला, खानेवाला।

प्रासगिक—वि० [स] प्रसग संबधी, प्रसग का। प्रसग द्वारा प्राप्त।

प्रास—पु० [स०] प्राचीन काल का बर्छा या भाला।

प्रासन—पुं० [स०] फेंकना।

प्रासाद—पु० [स०] लबा चौडा, ऊँचा और कई भूमियो का पक्का या पत्थर का घर, महल।

प्रिंटिंग—स्त्री० [अँ०] छपाई का काम, मुद्रण।

प्रिंस—पु० [अँ०] राजकुमार।

प्रिंसिपल—पु० [अँ०] किसी विद्यालय का प्रधान अध्यापक। मूलधन, पूँजी।

प्रियगु—स्त्री० [स०] कँगनी नामक अन्न। राई। पीपल।

प्रियवद—वि० [सं०] प्रिय, मधुर वचन कहनेवाला।

प्रियवदा—स्त्री० [स०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, भगण, जगण और रगण क्रम से रहते है।

प्रिय—पु० [स०] स्वामी, पति। वि० जिससे प्रेम हो, प्यारा। मनोहर, सुदर। ⊙तम = वि० सबसे अधिक प्रिय। पु० स्वामी, पति। ⊙दर्शन = वि० जो देखने मे प्रिय लगे, सुदर। ⊙दर्शी = वि० सबको प्रिय समझने या सबसे स्नेह करनेवाला। ⊙भाषी = वि० मधुर वचन बोलनेवाला। ⊙वर = वि० अति प्रिय, सबमे प्यारा (पत्रो आदि मे सबोधन)। ⊙वादी = पु० दे० 'प्रियभाषी'। प्रिया—स्त्री० नारी। भार्या, पत्नी। प्रेमिका (स्त्री)। एक वृत्त का नाम, मृगी। १६ मात्राओ का एक छद।

प्रियाल—पु० [सं०] चिरौंजी।

प्रिवी काउसिल—स्त्री० [अँ०] ब्रिटेन के बादशाह के वैयक्तिक सलाहकारो की सभा जहाँ अँगरेजी जमाने मे भारत के मुकदमो आदि का अतिम फैसला होता था।

प्रीत—वि० [स०] प्रीतियुक्त। ⓤपु० दे० 'प्रीति'।

प्रीतम—पु० पति, स्वामी। प्यारा।

प्रीति—स्त्री० [स०] प्रेम, प्यार। हर्ष, आनद, संतोष। ⊙कर, ⊙कारक = वि० प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला। ⊙पात्र = पु० जिसके साथ प्रीति की जाय, प्रेमभाजन। ⊙भोज = पु० वह खानपान जिसमे मित्र, बधु आदि प्रेमपूर्वक सम्मिलित हो। प्रीत्यर्थ—अव्य० प्रीति के लिये, प्रसन्न करने के वास्ते। लिये, वास्ते।

प्रुष्ट—वि० [स०] जला हुआ, दग्ध।

प्रूफ—पु० [अँ०] प्रमाण, सबूत। छपनेवाली चीज का वह छपा हुआ नमूना जिसमे अशुद्धिया ठीक की जाती है। किसी वस्तु का

असर या प्रभाव रोकनेवाला पदार्थ (जैसे, वाटरप्रूफ, अर्थात् ऐसा पदार्थ जिसपर जल का प्रभाव न पड सके, फायर प्रूफ अर्थात् जिसपर अग्नि का प्रभाव न पड़े)।

प्रेंखण—पु० [स०] अच्छी तरह हिलना या झूलना। १८ प्रकार के रूपकों मे से एक।

प्रेक्षक—पु० [स०] देखनेवाला, दर्शक।

प्रेक्षण—पु० [स०] देखने की क्रिया। आंख।

प्रेक्षा—स्त्री० [स०] देखना। नाच तमाशा देखना। दृष्टि, निगाह। प्रज्ञा, बुद्धि। वृक्ष की शाखा। प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह—पु० राजाओ आदि के मत्रणा करने का स्थान, मत्रणागृह। नाटयशाला।

प्रेत—पु० [स०] मरा हुआ मनुष्य। पुराणानुसार वह कल्पित शरीर जो मनुष्य को मरने के उपरात प्राप्त होता है। नरक मे रहनेवाला प्राणी। पिशाचो की तरह की एक कल्पित देवयोनि। ⊙कर्म = पु० हिंदुओ मे मृतदाह आदि से लेकर सपिंडी तक का कर्म, प्रेतकार्य। ⊙कार्य = पु० दे० 'प्रेतकर्म'। ⊙गृह = पु० श्मशान, मरघट। कब्रिस्तान। ⊙दाह = पु० मृतक को जलाने आदि का कार्य। ⊙देह = पु० मृतक का वह कल्पित शरीर जो उसके मरने के समय से सपिंडी तक उसकी आत्मा को प्राप्त रहता है। ⊙पक्ष = पुं० पितृपक्ष। ⊙पति = पुं० यम। ⊙यज्ञ = पु० एक प्रकार का यज्ञ जिसके करने से प्रेतयोनि प्राप्त होती है। ⊙राज = पुं० यम। ⊙लोक = पुं० यमपुर। ⊙विधि = स्त्री० मृतक का दाह आदि करना। प्रेतनी—स्त्री० [हि०] भूतनी, चूडैल। प्रेता—स्त्री० पिशाची। भगवती कात्यायनी। प्रेतनाशिनी—स्त्री० भगवती। प्रेताशौच—पुं० वह अशौच जो हिंदुओ मे किसी के मरने पर उसके सबंधियो आदि को होता है। प्रेती—पुं० [सं०] प्रेतपूजक व्यक्ति। प्रेतोन्माद—पुं० एक प्रकार का उन्माद या पागलपन।

प्रेम—पुं० [सं०] वह भाव जिसके अनुसार किसी दृष्टि से अच्छी लगनेवाली किसी चीज या व्यक्ति को देखने, पाने, भोगने या सुरक्षित करने की इच्छा हो, स्नेह, मुहब्बत। पारस्परिक स्नेह जो बहुत रूप, गुण अथवा कामवासना के कारण होता है। केशव के अनुसार एक अलकार। माया और लोभ। ⊙गर्विता = स्त्री० साहित्य मे वह नायिका जो अपने पति के अनुराग का अहकार रखती हो। ⊙जल = पुं० दे० 'प्रेमाश्रु'। ⊙पात्र = पुं० वह जिसमे प्रेम किया जाय, माशूक। ⊙पुलक = वह रोमाच जो प्रेम के कारण होता है। ⊙वत = वि० [हि०] प्रेम मे भरा हुआ। प्रेमी। ⊙वारि = पुं० दे० 'प्रेमाश्रु'। प्रेमा—पुं० [सं०] स्नेह। इद्र। उपजाति वृत्त का ११ वां भेद।

प्रेमाक्षेप—पुं० [सं०] केशव के अनुसार आक्षेप अलकार का एक भेद जिसमे प्रेम का वर्णन करने मे ही उसमे बाधा पड़ती मानी जाती है, जैसे, यदि नायक से नायिका कहे कि 'हमारा मन तुम्हें छोड़ने को कभी नही करता, पर जब तुम उठकर जाना चाहते हो, तब वह तुमसे आगे ही चल पडता है।' यहाँ मन का पहले ही चल पडना 'छोडने को कभी नही करता' का आक्षेप करता है। प्रेमालाप—पुं० वह बातचीत जो प्रेमपूर्वक हो, मुहब्बत की बातचीत। प्रेमालिंगन—पुं० प्रेमपूर्वक गले लगाना। नायिका का एक विशेष प्रकार का आलिंगन। प्रेमाश्रु—पुं० वे आंसू जो प्रेम के कारण आंखो से निकलते हैं। प्रेमिक—पुं० [हि०] दे० 'प्रेमी'। प्रेमी—पुं० प्रेम करनेवाला। आशिक, आसक्त।

प्रेय—पु० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमे कोई भाव किसी दूसरे भाव अथवा स्थायी भाव का अग होता है। वि० प्रिय-प्यारा।

प्रेयसी—स्त्री० [सं०] प्रेमिका।

प्रेरक—पु० [स०] किसी काम मे प्रवृत्त या प्रेरणा करनेवाला।

प्रेरण—पुं० दे० 'प्रेरणा'। प्रेरणा—स्त्री० [सं०] कार्य मे प्रवृत्त या नियुक्त करना, उत्तेजना देना। दबाव, जोर। प्रेरणार्थक क्रिया—स्त्री० क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के सबध मे यह सूचित होता है कि वह किसी की प्रेरणा से कर्ता के द्वारा हुआ है, जैसे, लिखना का प्रेरणार्थक लिखवाना।

प्रेरना—सक० प्रवृत्त करना, प्रेरणा करना।

प्रेरित—वि० [सं०] भेजा हुआ। जिसे दूसरे से प्रेरणा मिली हो। ढकेला हुआ।

प्रेषक—पुं० [सं०] भेजनेवाला।

प्रेषण—पुं० [स०] प्रेरणा करना। भेजना।

प्रेष्ठ—वि० [सं०] अत्यत प्रिय।

प्रेष्य—पुं० [सं०] दास, सेवक। दूत। धावन। वि० प्रेषण करने योग्य।

प्रेस—पुं० [अं०] वह कल जिसमे कोई चीज दबाई या कसी जाय, पेंच। वह स्थान जहाँ छपाई होती है, छापाखाना। छापने की कल। समाचारपत्रों का वर्ग। मु० (किसी चीज का) ~में होना = (किसी चीज की) छपाई जारी रहना, छपना।

प्रेष—पुं० [सं०] क्लेश, दुख। मर्दन। पागलपन। प्रेषण, भेजना।

प्रेष्य—पुं० [सं०] दास, सेवक। दासता।

प्रोक्त—पुं० [सं०] कहा हुआ।

प्रोक्षण—पुं० [सं०] पानी छिडकना। पानी का छींटा।

प्रोग्राम—पुं० [अं०] कार्यक्रम, होनेवाले कार्यों की सिलसिलेवार सूची।

प्रोत—वि० [सं०] किसी मे अच्छी तरह मिला हुआ, घुला मिला। सीया या नाथा हुआ। छिपा हुआ।

प्रोत्साह—पु० [सं०] बहुत अधिक उत्साह या उमग। ⊙क = वि० उत्साह बढानेवाला। ⊙न = पु० खूब उत्साह बढाना, हिम्मत बँधना। प्रोत्साहित—वि० जिसका उत्साह बढाया गया हो।

प्रोथ—पु० [सं०] घोडे की नाक के आगे का भाग। सूअर का थूथन। कमर। गड्ढा।

प्रोफेसर—पुं० [अं०] किसी विषय का बड़ा विद्वान्। कालेज या महाविद्यालय का अध्यापक, प्राध्यापक।

प्रोफेसरी—स्त्री० प्रोफेसर का कार्य या पद।

प्रोमोशन—पु० [अं०] तरक्की (कर्मचारी की)। दर्जा चढना (विद्यार्थी का)।

प्रोष—पु० [स०] अत्यधिक दुख, सताप।

प्रोषित—वि० [सं०] जो विदेश मे गया हो, प्रवासी। ⊙नायक या पति = पुं० वह नायक जो विदेश मे अपनी पत्नी के वियोग मे विकल हो। ⊙पतिका (नायिका) = स्त्री० (वह नायिका) जो अपने पति के परदेश मे होने के कारण दुःखी हो; प्रवत्स्यत्प्रेयसी। ⊙भर्तृका = स्त्री० दे० 'प्रोषितपतिका'। ⊙भार्य = पुं० वह नायक जो अपनी भार्या के विदेश जाने के कारण दुखी हो।

प्रौढ—वि० [स०] अच्छी तरह बढा हुआ। जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। पक्का, मजबूत,। गभीर, गूढ। चतुर। प्रौढोक्ति—स्त्री० एक अलकार जिसमें जिसके उत्कर्ष का जो हेतु नही है, वह हेतु कल्पित किया जाय। गूढ रचना।

प्रौढा—स्त्री० [सं०] अधिक वयसवाली स्त्री। साहित्य मे वह नायिका जो कामकला आदि अच्छी तरह जानती हो। साधारणत ३० वर्ष से ५० वर्ष तक की अवस्थावाली स्त्री। ⊙धीरा = स्त्री० ताना देकर कोप प्रकट करनेवाली प्रौढा। ⊙अधीरा = स्त्री० वह प्रौढा जिसमें अधीरा नायिका के लक्षण हो। ⊙धीराधीरा = स्त्री० वह प्रौढा जिसमे धीराधीरा के गुण हो।

प्रौढि—स्त्री० [सं०] धृष्टता, गर्वोक्ति।

प्लक्ष—[स०] पाकर वृक्ष, पिलखा। पुराणानुसार सात कल्पित द्वीपो मे से एक। पीपल।

प्लवग—पुं० [सं०] बदर। हिरन। प्लक्ष, पाकर। ६० सवत्सरो मे से ४१वाँ।

प्लवंगम—पु० [सं०] २१ मात्राओ का एक मात्रिक छद।

प्लवन—पुं० [सं०] उछलना, कूदना। तैरना। प्लविता—वि० तैरनेवाला।

प्लांचेट—पु० [अं०] पान के आकार की एक तख्ती जिससे मेस्मेरिज्मवाले प्रेतात्माओ से सवाल जवाब करते है।

प्लाट—पु० [अं०] कथावस्तु। षड्यत्र। जमीन का वडा टुकडा।

प्लावन—पु० [स०] वाढ, सैलाव। खूब अच्छी तरह धोना। तैरना। प्लावित—वि० पानी मे डूवा हुआ।

प्लास्टर—पु० [अं०] वह लेप जो किसी अग पर रोग या कष्ट हटाने के लिये किया जाय। ईंटो आदि की दीवारों पर लगाने के लिये सुर्खी, चूना, सिमेंट, वालू आदि का गाढा लेप, पलस्तर।

प्लीडर—पु० [अं०] वकील। किसी की ओर से वादविवाद करनेवाला।

प्लीहा—स्त्री० दे० 'तिल्ली'।

प्लुत—पु० [सं०] टेढी चाल, उछाल। स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी वड़ा और तीन मात्राओ का होता है। ⊙गति=स्त्री० जो कूद कूदकर चलता हो।

प्लेग—पु० [अं०] महामारी। एक भीषण सक्रामक रोग। इसमे रोगी को वहुत तेज ज्वर होता है और जांघ या वगल मे गिलटी निकल आती है। रोगी ३-४ दिन मे मर जाता है। ताऊन।

प्लेट—पुं० [अं०] किसी धातु का पत्तर या पीटा हुआ पतला टुकडा, चादर। छिछली थाली, तश्तरी। वाजी जीतनेवाले को दिया जानेवाला सोने चाँदी आदि का प्याला, तश्तरी या अन्य पात्र। धातु का चौडा पत्तर जिसपर लेख आदि खुदा हो। अपने ऊपर पड़नेवाली छाया को स्थायी रूप से ग्रहण करनेवाला फोटो खींचने का मसाला लगा हुआ शीशा।

प्लैटफार्म—पु० [अं०] मच, चवूतरा। वह-वडा चवूतरा जो मुसाफिरो के रेल पर चढने उतरने के लिये होता है।

प्लैटिनम—पु० [अं०] सामान्य आग से न पिघलनेवाली चाँदी के रग की एक प्रसिद्ध वहुमूल्य धातु। यह प्राय सव धातुओ से भारी होती है और इसके पत्तर पीटे और तार खीचे जा सकते हैं। इसपर तेजाव आदि का प्रभाव नहीं होता और न इसमे मोर्चा लगता है।

प्लोष—पु० [सं०] झक से जल जाना। दाह जलन।

फ

फ—हिंदी वर्णमाला मे २२वाँ व्यजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान ओष्ठ है।

फंका(पु)—पुं० सूखे दाने या वुकनी आदि की उतनी मात्रा जितनी एक वार मे फाँकी जा सके। कतरा, टुकडा। फंकी—स्त्री० फाँकने की दवा। उतनी दवा जितनी एक वार मे फाँकी जाय। ‡ छोटी फाँक।

फग(पु)—पु० वंधन, फदा। राग, अनुराग।

फद—पु० वध, वधन। फदा, फाँस। छल, धोखा। रहस्य, मर्म। दु ख, कष्ट। नथ की काँटी फँसाने का फदा।

फँदना—अक० फदे मे पडना, फँसना। सक० फाँदना, लाँघना।

फँदवार—वि० फंदा लगानेवाला।

फदा—पुं० रस्सी, तागे, तार आदि का वह घेरा जो किसी जीव या वस्तु को फँसाने के लिये वनाया गया हो। फाँस, जाल। वधन। दु ख, कष्ट। मु०—फदे में पड़ना=धोखे मे पडना। किसी के वश मे होना। ~लगाना=किसी को फँसाने के लिये जाल लगाना। धोखा देना।

फंदाई(पु)—स्त्री० दे० 'फदा'।

फँदाना—सक० फदे या जाल मे फँसाना। फाँदने का काम दूसरे से कराना।

फँफाना—अक० शब्द के उच्चारण के समय जिह्वा का काँपना, हकलाना। आग पर खौलते दूध का फेन छोडकर ऊपर उठना।

फँसना—अक० बधन या फदे मे पडना। अटकना, उलझना। मु०—बुरा~ = आपत्ति मे पडना।

फँसाना—सक० [अक० 'फँसना'] फंदे मे लाना या अटकाना। अपनी चाल या वश मे लाना। अटकाना, उलझाना।

फँसिहारा†—वि० फँसानेवाला।

फक—वि० स्वच्छ, सफेद। बदरग। स्तभित। मु०—रग~हो जाना या~पड़ जाना = घबरा जाना, चेहरे का रग फीका पड जाना।

फकड़ी—स्त्री० दुर्दशा, दुर्गति।

फकत—वि० [अ०] बस, पर्याप्त। केवल, सिर्फ।

फकीर—पु० [अ०] भिखमगा, भिक्षुक। साधु ससारत्यागी। निर्धन मनुष्य। **फकीरी**—स्त्री० भिखमगापन। साधुता। निर्धनता।

फक्कड़—पु० गालीगलौज, गदी बातें। सदा दरिद्र परतु मस्त रहनेवाला। वाहियात और उद्दड आदमी। ⊙**बाजी** = स्त्री० [फा०] गदी और वाहियात बातें बकना।

फक्किका—स्त्री० [स०] कूट प्रश्न। अनुचित व्यवहार। धोखेबाजी।

फखर—पु० गौरव, गर्व।

फग(ु)—पु० दे० 'फग'।

फगुआ—पु० होली, होलिकोत्सव का दिन। फागुन के महीने मे लोगो का आमोद प्रमोद जो वसत ऋतु के आगमन के उपलक्ष मे मनाया जाता है। फागुन मे गाए जानेवाले अश्लील गीत। फगुआ खेलने के उपलक्ष मे दिया जानेवाला उपहार। मु०~**खेलना या~मनाना** = होली के उत्सव मे रग, गुलाल आदि एक दूसरे पर डालना।

फगुनहट—स्त्री० फागुन मे चलनेवाली तेज हवा।

फगुहारा—पु० वह जो फाग खेलने या गाने के लिये होली मे किसी के यहाँ जाय।

फजर—स्त्री० [अ०] सवेरा, प्रातःकाल।

फजल—पु० अनुग्रह, कृपा।

फजीलत—स्त्री० [अ०] उत्कृष्टता, श्रेष्ठता। मु०~**की पगड़ी** = विद्वत्तासूचक पदक या चिह्न।

फजीहत—स्त्री० [अ०] दुर्दशा, दुर्गति।

फजूल—वि० [अ०] जो किसी काम का न हो, निरर्थक। ⊙**खर्च** = वि० [फा०] अपव्ययी, बहुत कम खर्च करनेवाला।

फझियत—स्त्री० दे० 'फजीहत'। 'फबत फाग फझियत बडी त्रलन चहत जदुराइ' (जगद्विनोद २५८)।

फट—स्त्री० हलकी पतली चीज के हिलने या गिरने पकडने का शब्द। एक तात्रिक मत्र, अस्त्रमत्र।

फटक†—पु० बिल्लौर। क्रि० वि० तत्क्षण, झट।

फटकन—स्त्री० वह भूसी जो अन्न को फटकने पर निकले।

फटकना—अक० जाना, पहुँचना। दूर होना, अलग होना। तडफडाना। श्रम करना। सक० हिलाकर फट फट शब्द करना, फटफटाना। पटकना, झटकना। फेंकना, चलाना, सूप पर अन्न आदि को हिलाकर साफ करना। रुई रादि को फटके से धुनना। मु०~**पछोरना** = सूप या छाज पर हिलाकर साफ करना। अच्छी तरह से जाँचना, परखना।

फटका—पु० रुई धुनने की धुनकी। कोरी तुकबदी, रस और गुण से हीन कविता। दे० 'फाटक'।

फटकाना†—सक० [अक० फटकना] अलग करना, फेंकना। फटकने का काम दूसरे से कराना।

फटकार—स्त्री० फटकारने की क्रिया या भाव, झिडकी। दे० 'फिटकार'। ⊙**ना** = सक० (शस्त्र आदि) मारना, चलाना। बहुत सी चीजो को एक साथ झटका मारना जिसमे वे छितरा जायँ। लाभ

उठाना। अच्छी तरह से पटक-पटककर धोना। झटका देकर दूर फेंकना। खरी और कडी बात कहकर चुप कराना।

फटना—अक [सक० फाडना] किसी पोली चीज मे इस प्रकार दरार पड जाना जिसमे भीतर की चीजे बाहर निकल पडें अथवा दिखाई देने लगे। किसी वस्तु का कोई भाग बीच से अलग हो जाना। अलग हो जाना। द्रव पदार्थ मे ऐसा विकार होना जिनसे उसका पानी और सार भाग दोनो अलग अलग हो जायँ। किसी बात का बहुत अधिक होना। बहुत अधिक पीडा होना। मु०—छाती ~ = असह्य दु:ख होना। फट पड़ना = अचानक आ पहुँचना। फटे हाल = बहुत ही दुरवस्था मे, बहुत अधिक गरीबी। (किसी से) मन या चित्त फटना = विरक्ति होना, सबध रखने को जी न चाहना।

फटिक—पुं० बिल्लौर, स्फटिक। सगमरमर।

फट्टा, फट्ठा†—पु० बाँस को चीरकर बनाया हुआ लट्ठा। टाट। मु०~लौटना या उलटना = दिवाला निकालना।

फड—पु० जुए का दाँव जिसपर जुआरी बाजी लगाते हैं। जुआखाना। वह स्थान जहाँ बैठकर दूकानदार माल खरीदता या बेचता हो। पक्ष, दल। वह गाडी जिसपर तोप चढाई जाती है, चरख। गाडी का हरसा। ⊙बाज = पुं० [फा०] वह जो लोगो को अपने यहाँ जुआ खेलता हो।

फड़क, फडकन—स्त्री० फडकने की क्रिया या भाव

फड़क—अक० बार बार नीचे ऊपर या इधर उधर हिलना, फडफडाना। किसी अग मे अचानक स्फुरण होना। हिलना डोलना। चचल होना, किसी क्रिया के लिये उद्यत होना। मु०~उठना या जाना = आनदित होना, मुग्ध होना। फड़काना —सक० [अक०] दूसरे को फडकने मे प्रवृत्त करना।

फडनवीस—पुं० मराठो के राजत्वकाल का एक राजपद।

फड़फडाना—सक० फडफड शब्द करना, हिलाना (जैसे, पर फडफडाना) दे० फटफटाना।

फड़िया—पु० खुदरा अन्न बेचनेवाला। फडबाज।

फण—पुं० [सं०] साँप का फन। रस्सी का फदा। नाव का अगला ऊपरी भाग। ⊙धर = पु० साँप। फणिक—पु० साँप, नाग। फणिपति—पुं० दे० 'फणींद्र'। फणिमुक्ता—स्त्री० साँप की मणि फणींद्र—पुं० शेप। वासुकि। बडा साँप। फणी—पुं० साँप। फणीश—पु० [सं०] दे० 'फणींद्र'।

फतह—स्त्री० [अ०] विजय, सफलता। ⊙मद = वि० [फा०] विजयी, विजेता।

फतिगा—पु० किसी प्रकार का उड़नेवाला कीडा। पतिगा, पतग।

फतीलसोज—पु० [फा०] धातुनिर्मित दीवट जिसमे एक या अनेक दीपक ऊपर नीचे बने होते हैं, चौमुखा। दीवट, चिरागदान।

फतीला—पु० [अ०] पलीता।

फतूर—पु० [अ०] विकार, दोप। हानि, नुकसान। विघ्न। उपद्रव, खुराफात। फतूरिया—वि० [हि०] खुराफात करनेवाला, उपद्रवी।

फतूह—स्त्री० फतह, विजय। '... सुखसमूह सु फतूह लिय (हिम्मत० २१०)।

फतूही—स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन की एक प्रकार की पहनने की कुरती, सदरी। लडाई या लूट मे मिला हुआ माल।

फते(पु)†—स्त्री० दे० 'फतह'।

फतेह—स्त्री० विजय, जीत।

फदकना—अक० फद फद शब्द करना, भात या रस आदि का पकते समय फद फद शब्द करके उछलना, खदबद करना। दे० 'फुदकना'।

फदफदाना—अक० शरीर का फुसियो आदि से भर जाना। वृक्ष का शाखाओ से भरना।

फन—पुं० साँप का सिर उस समय जब वह

अपनी गर्दन के दोनो ओर की नलियों मे वायु भरकर उसे फैलाकर छत्र के आकार का बना लेता है, फण। पु०[फा०] गुण, खूबी। विद्या। दस्तकारी। छलने का ढंग, मकर।

फनकना—अक० हवा मे सनसन करते हुए हिलना या चलना।

फनकार—स्त्री० साँप के फूकने या बैल आदि के साँस लेने से उत्पन्न फनफन शब्द।

फनगा†—पु० दे० 'फतिगा'।

फनफनाना—अक० फनफन शब्द उत्पन्न करना। चचलता के कारण हिलना।

फना—स्त्री० [अ०] नाश, बरबादी। मु०—दम~होना = बहुत अधिक भयभीत होना।

फनाना—सक० तैयार करना। तैयार कराना।

फनिगⓅ—स्त्री० साँप।

फनिदⓅ†—पु० दे० 'फणीद्र'।

फनिⓅ—पु० दे० 'फणी'। दे० 'फण'। ⊙धर = पु० साँप। ⊙राज = पु० दे० 'फणीद्र'। **फनी**Ⓟ—पु० दे० 'फणी'।

फनिग—पु० दे० 'फतिगा'।

फनीसⓅ—पु० शेषनाग।

फनूसⓅ—पु० दे० 'फानूस'।

फन्नी—स्त्री० लकडी आदि का वह टुकड़ा जो किसी ढीली चीज की जड मे उसे कसने के लिये ठोका जाता है, पच्चर।

फफूंदीⓅ—स्त्री० स्त्रियो की साडी का बधन, नीवी। काई की तरह की, पर सफेद, तह जो बरसात मे फल, लकडी आदि पर लगती है।

फफोला—पु० चमडे पर पोला उभार जिसके भीतर पानी भरा रहता है, छाला। मु०—**दिल के फफोले फोड़ना** = अपने दिल की जलन या क्रोध प्रकट करना।

फबती—स्त्री० बात जो समय के अनुकूल हो। हँसी की बात जो किसी पर घटती हो। चुटकी। मु०~**उड़ाना** = हँसी उडाना। ~**कसना या कहना** = चुभती हुई पर हँसी की बात कहना।

फबन—स्त्री० फबने का भाव, शोभा। **फबना**—अक० सुदर या भला जान पडना, सोहना। **फबाना**—सक० ऐसी जगह लगाना जहाँ भला जान पडे। **फबि**Ⓟ†—स्त्री० दे० 'फबन'। **फबिता**—स्त्री० शोभा। **फबीला**—वि० जो फबता या भला जान पडता हो, सुदर।

फरⓅ†—पु० दे० 'फल'। सामना, मुकाबिला। बिछौना। ⊙**ना**Ⓟ† = अक० फलना।

फरक—स्त्री० फरकने की क्रिया या भाव। फडक, फुरती से उछलने कूदने की चेष्टा। पु० अलगाव। बीच का अतर, दूरी। अतर। दुराव, परायापन। कमी।

फरकन—स्त्री० फडकने की क्रिया या भाव, दे० फडक। फरक।

फरकना Ⓟ†—अक० दे० फडक। आपसे आप बाहर आना, उमडना। उडना।

फरका—पु० वह छप्पर जो अलग छाकर बँडेर पर चढाया जाता है। बँडेर के एक ओर की छाजन, पल्ला। दरवाजे का टट्टर।

फरकाना—सक० [अक० 'फरकना'] फरकने के लिये प्रेरित करना, हिलाना, सचालित करना। फड़फडाना। अलग करना।

फरचा†—वि० जो जूठा न हो, शुद्ध। साफ सुथरा।

फरजद—पु० [फा०] पुत्र, बेटा।

फरजी—वि० पुं० फर्जी, बनावटी। पुं० शतरज का एक मोहरा जिसे रानी या वजीर भी कहते हैं। ⊙**बद** = पुं० शतरज के खेल मे एक योग।

फरद—स्त्री० लेखा या वस्तुओ की सूची आदि जो स्मरणार्थ किसी कागज पर अलग लिखी गई हो। एक ही तरह के अथवा एक साथ काम मे आनेवाले कपडो के जोडे मे से एक कपडा, पल्ला। रजाई या दुलाई का ऊपरी पल्ला। दो पदो की कविता। वि० अनुपम, बेजोड।

फरफंद—पुं० छल कपट, माया। नखरा, चोचला। **फरफदी**—वि० फ़रफद करनेवाला, चालबाज। नखरेबाज।

फरफर—पुं० किसी पदार्थ के उड़ने या

फड़कने से उत्पन्न शब्द। फरफराना—सक० दे० 'फड़फड़ाना'।
फरफुदा(पु)‡—पुं० दे० 'फतिगा'।
फरमाँबरदार—वि० [फा०] आज्ञाकारी, हुक्म माननेवाला।
फरमा—पु० लकड़ी आदि का ढाँचा या साँचा जिसपर रखकर चमार जूता बनाते है, कालबूत। वह साँचा जिसमे कोई चीज ढाली जाय। कागज का पूरा ताव जो एक बार प्रेस मे छापा जाता है।
फरमाइश—स्त्री० [फा०] आज्ञा, विशेषतः वह आज्ञा जो कई चीज लाने या बनाने आदि के लिये दी जाय। फरमाइशी—वि० विशेष रूप से आज्ञा देकर मँगाया या तैयार कराया हुआ।
फरमान—पु० [फा०] राजकीय आज्ञापत्र, अनुशासन पत्र।
फरमाना—सक० आज्ञा देना, कहना (आदरसूचक)।
फरराना—अक० दे० 'फहराना'।
फरलाग—पुं० [अं०] एक मील का आठवाँ भाग या २२० गज की दूरी।
फरवी—स्त्री० एक प्रकार का भूना हुआ चावल, लाई।
फरश—पुं० दे० 'फर्श'। ⊙बंद = पुं० दे० 'फर्श'।
फरशी—स्त्री० [फा०] धातु का वह बरतन जिसपर नैचा, सटक आदि लगाकर लोग तमाकू पीते हैं, गुडगुड़ी। इस प्रकार बना हुआ हुक्का।
फरस(पु)—पुं० दे० 'फर्श'। (पु)दे० 'फरसा'।
फरसा—पुं० पैनी और चौडी धार की कुल्हाडी। फावडा।
फरहद—पु० एक प्रकार का पेड जिसकी छाल और फूलो से रग निकलता है।
फरहना—अक० फरफराना। फरराना।
फरहरा—पुं० पताका, झडा।
फरहरी(पु)—स्त्री० दे० 'फलहरी'।
फराक(पु)—पुं० मैदान। वि० लबा चौडा, विस्तृत। (पु)दे० 'फराख'। स्त्री० स्त्रियो और बच्चो का एक पहनावा (अं० फ्राक)।
फराकत—वि० लंबा चौडा और समतल, विस्तृत। वि०, पुं० दे० 'फरागत'।
फराख—वि० [फा०] लबा चौडा। फराखी—स्त्री० चौडाई, विस्तार। सपन्नता।
फरागत—स्त्री० [अं०] छुटकारा, मुक्ति। निश्चितता। पाखाना फिरना। वि० [हिं०] लबा चौडा। 'कहै पदमाकर फरागत फरसबद......'(जगद्विनोद २०६)।
फराज—वि० [फा०] ऊँचा। नशे इफराज = ऊँचा नीचा। भला बुरा।
फराना(पु)—सक० दे० 'फलाना'।
फरामोश—वि० [फा०] भूला हुआ, विस्मृत। फरामोशी—स्त्री० भूल जाना, विस्मृति।
फरार—वि० [अं०] भागा हुआ। फरारी—स्त्री० भागने की क्रिया या भाव।
फरालना—सक० फैलाना, पसारना।
फरास(पु)—पुं० दे० 'फर्राश'।
फरासीस—पुं० [फा० फ्रास देश] फ्रांस का रहनेवाला। एक प्रकार की लाल छींट। फरासीसी—वि० फ्रांस का रहनेवाला। फ्रास का।
फरिया—स्त्री० वह लहँगा जो सामने की ओर से सिला नही रहता।
फरियाद—स्त्री० [फा०] दुख से बचाए जाने के लिये पुकार, शिकायत, नालिश। विनती, प्रार्थना। फरियादी—वि० फरियाद करनेवाला।
फरियाना—सक० छाँटकर अलग करना। साफ करना। निबटाना, तै करना। अक० छँटकर अलग होना। साफ होना। तै होना। समझ पडना।
फरिश्ता—पु० [फा०] ईश्वर का वह दूत जो उसकी आज्ञा के अनुसार कोई काम करता हो (मुसल०)। देवता।
फरी‡—स्त्री० फाल, कुशी। गाडी का हरसा, फन। चमडे की गोल छोटी ढाल जिससे गतके की मार रोकते हैं।
फरीक—पुं० [अ०] मुकाबला करनेवाला, दो पक्षो मे से किसी पक्ष का मनुष्य। ⊙सानी = वि० द्वितीय पक्ष प्रतिवादी (कानून)।

फरुही†—स्त्री० छोटा फावडा। लकडी का एक ग्रौजार जिससे क्यारी बनाने के लिये खेत की मिट्टी हटाई जाती है। मथानी। लाई। दे० 'फरवी'।

फरेंदा†—पु० एक प्रकार का बढिया, बडा ग्रौर गूदेदार जामुन।

फरेब—पु० [फा०] छल, धोखा। **फरेबी**—वि० कपटी, धोखेबाज।

फरेरी†—स्त्री० जगल के फल, जगली मेवा।

फरो—वि० [फा०] दबा हुग्रा, तिरोहित (जैसे, झगडा फरो करना)।

फरोख्त—स्त्री० [फा०] बिक्री।

फरोश—वि० [फा०] बेचनेवाला (यौ० के ग्रंत मे जैसे, इत्रफरोश)।

फर्क—पु० [ग्र०] फरक।

फर्जंद—पु० [फा०] बेटा, पुत्र।

फर्ज—पु० [ग्र०] कर्तव्य, कर्म। कल्पना, मान लेना। **फर्जी**—वि० [फा०] कल्पित, माना हुग्रा। नाम मात्र का, सत्ताहीन। पु० दे० 'फरजी'।

फर्द—स्त्री० [फा०] कागज या कपडे ग्रादि का ग्रलग टुकडा। कागज का वह टुकडा जिसपर किसी वस्तु का विवरण, लेखा, सूची ग्रादि लिखी गई हो। रजाई, शाल ग्रादि का ऊपरी पल्ला जो ग्रलग बनता है।

फर्राटा—पु० वेग, तेजी, क्षिप्रता। दे० 'खर्राटा'।

फर्राश—पु० [ग्र०] वह नौकर जिसका काम डेरा गाडना, फर्श बिछाना ग्रौर दीपक जलाना ग्रादि होता है। नौकर, खिदमतगार। **फर्राशी**—वि० [फा०] फर्श या फर्राश के कामो से संबंध रखनेवाला। स्त्री० फर्राश का काम या पद। ~पखा = पुं० [हिं०] वह पखा जिससे फर्श पर हवा की जा सकती हो।

फर्श—पुं० [ग्र०] समतल भूमि। पक्की बनी हुई जमीन, गच।

फर्शी—स्त्री० [ग्र०] एक प्रकार का बडा हुक्का। वि० फर्श संबधी, फर्श का। मु०~सलाम = जमीन पर झुककर किया जानेवाला सलाम।

फलक(ए)—पु० दे० 'फलांग'। ग्राकाश।

फल—पुं० [सं०] वनस्पति मे होनेवाला वह बीज या गूदे से परिपूर्ण बीजकोश जो किसी विशिष्ट ऋतु मे उत्पन्न होता है। लाभ। परिणाम, नतीजा। धर्म या परलोक की दृष्टि से कर्म का परिणाम जो सुख या दुःख है। कर्मभोग। गुण, प्रभाव। शुभ कर्मो के परिणाम जो सख्या मे चार माने जाते हैं—ग्रर्थ, धर्म, काम ग्रौर मोक्ष। प्रतिफल, बदला। बाण भाले, छुरी ग्रादि का वह तेज ग्रगला भाग जिससे ग्राघात किया जाता है। हल की फाल। फलक। ढाल। उद्देश्य की सिद्धि। न्याय शास्त्र के ग्रनुसार वह ग्रर्थ जो प्रवृत्ति ग्रौर दोष से उत्पन्न होता है। गणित की किसी क्रिया का परिणाम (जैसे—योगफल, गुणनफल, ग्रादि)। त्रैराशिक की तीसरी राशि या निष्पत्ति मे प्रथम निष्पत्ति का द्वितीय पद। फलित ज्योतिष मे ग्रहो के योग का परिणाम जो सुख दुःख ग्रादि के रूप मे होता है। पासे पर की बिंदी या चिह्न। क्षेत्रफल। मूल का व्याज, सूद। प्रयोजन। जायफल। कायफल। ⊙कर = पुं० वह कर जो वृक्षो के फल पर लगाया जाय। ⊙त = ग्रव्य० = परिणामत, इसलिये। ⊙द = वि० फल देनेवाला। ⊙दान = पुं० हिंदुग्रो मे विवाह पक्का करने की एक रीति जिसके ग्रनुसार कन्यापक्ष से वर के पिता या ग्रभिभावक को किसी शुभ मुहूर्त मे रुपया, मिठाई, फूल, ग्रक्षत ग्रादि दिया जाता है, बररक्षा। ⊙दार = वि० [सं० + फा०] जिसमे फल लगे हो। जिसमे फल लगें। ⊙योग = पुं० नाटक मे वह स्थान जिसमे फल की प्राप्ति या उसके नायक के उद्देश्य की सिद्धि होती हैं। ⊙लक्षण = स्त्री० एक प्रकार की लक्षणा। ⊙वान् = वि० फलो मे युक्त। सफल। ⊙श्रुति = स्त्री० ग्रर्थवाद, वह वाक्य जिसमे किसी कर्म के फल का वर्णन होता है ग्रौर जिसे सुनकर लोगो की उस कर्म को करने की प्रवृत्ति होती है। ऐसे

वाक्य सुनना। ⊙ना = अक० फल से युक्त होना, फल लाना। फल देना, लाभदायक होना। शरीर मे छोटे छोटे दानो का निकल आना जिसमे पीडा होती है। मु०—फलना फूलना = सुखी और सपन्न होना।

फलक—पु० [सं०] पटल, तखता। चादर। वरक, तवक। पत्र, वरक। हथेली। फल। पुं० [अ०] आकाश। स्वर्ग।

फलकना—अक० छलकना, उमगना। दे० 'फरकना'।

फलका—पु० फफोला, छाला।

फलहरी†—स्त्री० वन के वृक्षो के फल। फल, मेवा।

फलहार(पु)†—पुं० दे० 'फलाहार'।

फलहारी—वि० जिसमे अन्न न पडा हो अथवा जो अन्न से न बना हो, केवल फल से बना हो।

फलां—वि० [फा०] अमुक, फलाना।

फलांग—स्त्री० एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना, कुदान, चौकडी। वह दूरी जो फलांग से तै की जाय। ⊙ना = अक० कूदना, फांदना।

फलाग्र—पु० [स०] तात्पर्य, असल मतलब।

फलाक(पु)—सक० दे० 'फलांगना'।

फलागम—पुं० फल लगने की ऋतु। शरद् ऋतु। फलादेश—पु० जन्मकुडली आदि देखकर ग्रहो आदि का फल कहना (ज्योतिष)।

फलार्थी—पुं० जो फल की कामना करे, फलकामी। फलाशी—वि० फल खानेवाला। फलाहार—पु० केवल फल का आहार करना, फल खाना।

फलाना—पुं० अमुक, कोई अनिश्चित। सक० [अक० 'फलना'] किसी को फलने मे प्रवृत्त करना।

फलालीन, फलालेन—पुं० एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।

फलाहारी—पुं० जो फल खाकर निर्वाह करता हो। वि० [हिं०] फलाहार सबधी, जो केवल फलो से बना हो। फलित—वि० फला हुआ। सपन्न, पूर्ण। ⊙ज्योतिष = पु० ज्योतिष का वह अग जिसमे ग्रहों के योग से शुभाशुभ फल का निरूपण किया जाता है। फलिन—पु० [स०] वह वृक्ष जिसमें फल लगते हो। कटहल। फलीभूत—वि० जिसका फल या परिणाम निकले।

फली—स्त्री० छोटे पौधो मे लगनेवाले लबे और चिपटे फल जिनमे छोटे छोटे बीज होते हैं, छीमी।

फलीता—पु० वह आदि के रेशो से बटी हुई रस्सी जिसमे तोडेदार वदूक दागने के लिये आग लगाकर रखी जाती है, पलीता। वत्ती।

फलेंदा—पु० एक प्रकार का बढिया, बडा और गूदेदार जामुन, फरेंदा।

फसकडा—पुं० पलथी (तिरस्कार मे)।

फसल—स्त्री० ऋतु, मौसम। समय, काल। खेत की उपज, अन्न। फसली—वि० ऋतु का। पु० अकबर का चलाया हुआ एक सवत् जो ईसवी सवत् से ५८३ वर्ष कम होता है और सौर गणना पर चलता है। इसका प्रचार उत्तर भारत मे खेती बारी आदि के कामो मे होता है। हैजा।

फसाद—पु० [अ०] विगाड़, विकार। बलवा, विद्रोह। ऊधम, उपद्रव। झगडा, लडाई। फसादी—वि० [फा०] फसाद खडा करनेवाला, उपद्रवी। झगडालू।

फसूकर(पु)—पुं० फेन-कण। 'ऐसो फैलि परत फसूकर मे मही मैं ·' (जगद्विनोद ७२२)

फस्द—स्त्री० [अ०] नस को छेदकर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया। मु० ~खुलवाना या लेना = शरीर का दूषित रक्त निकलवाना। होश की दवा करना।

फहम—स्त्री० [अ०] ज्ञान, समझ।

फहरना—अक० वायु मे उडना। फहराना—सक० कोई चीज इस प्रकार खुली छोड़ देना जिसमे वह हवा मे हिले और उडे, उडाना। अक० हवा मे रह रहकर हिलना या उड़ना, फहरना। फहरानि(पु)—स्त्री० दे० 'फहरान'।

फहश—वि० फूहड़, अश्लील।

फांक—स्त्री॰ किसी गोल या पिंडाकार वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकडा। टुकडा।

फांकना—सक॰ दाने या बुकनी के रूप की वस्तु को दूर से मुंह मे डालना। मु॰—धूल~ = दुर्दशा भोगना।

फांग, फांगी—स्त्री॰ एक प्रकार का साग।

फांट—पुं॰ काढा, क्वाथ। ⊙ना = सक॰ काढा बनाना।

फांड़Ⓟ†—पु॰ दे॰ 'फांडा'। **फांडा**†—पुं॰ दुपट्टे या धोती का कमर में बँधा हुआ हिस्सा।

फांद—स्त्री॰ उछालने या फांदने का भाव, उछाल। स्त्री॰, पुं॰ फदा, पाश। ⊙ना = अक॰ एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूदना, उछलना। सक॰ कूदकर लांघना। फदे मे फँसाना।

फांकी—स्त्री॰ बहुत महीन झिल्ली। मांडा, जाला (रोग)।

फांस—स्त्री॰ पाश, बन्धन। वह फदा जिसमे शिकारी लोग पशु पक्षी फांसते हैं। बांस, सूखी लकडी आदि का कडा ततु जो शरीर मे चुभ जाता है। पतली तीली या कमाची। ⊙ना = सक॰ [अक॰ फँसना] जाल मे फँसाना। धोखा देकर अपने अधिकार मे करना।

फांसी—स्त्री॰ फँसाने का फदा, पाश। वह रस्सी का फदा जिसमे गला फँसने से दम घुट जाता है और फँसनेवाला मर जाता है। वह दड जो अपराधी को फदे द्वारा मारकर दिया जाय। मु॰~चढना = पाश द्वारा प्राणदड पाना। ~देना = गले मे फदा डालकर मार डालना।

फाइल—स्त्री॰[अँ॰]कागजो आदि की नत्थी। कागजपत्रो का समूह, मिसिल।

फाउड्री—स्त्री॰ [अँ॰] वह कल या कारखाना जहाँ धातु की चीजें ढाली जाती है (जैसे, टाइपफाउड्री)।

फाका—पु॰ [अ॰] उपवास। ⊙मस्त, **फाकेमस्त**—वि॰ [फा॰] जो खाने पीने का कष्ट उठाकर भी कुछ चिंता न करता हो।

फाखता—स्त्री॰ [अ॰] पडुक, धवँरखा।

फाग—पु॰ फागुन मे होनेवाला उत्सव जिसमे एक दूसरे पर रग या गुलाल डालते हैं। वह गीत जो फाग के उत्सव मे गाया जाता है।

फागुन—पु॰ माघ के बाद का महीना, फाल्गुन।

फाजिल—वि॰ [अ॰] आवश्यकता से अधिक। विद्वान्।

फाटक—पुं॰ बडा दरवाजा, तोरण।†मवेशीखाना, कांजीहौस। भूसी जो अनाज फटकने से बची हो।

फाटना—अक॰ दे॰ 'फटना'

फाड़खाऊ—वि॰ फाड खानेवाला, हिंसक।

फाडन—स्त्री॰ कागज, कपडे आदि का टुकडा जो फाडने से निकले।

फाडना—सक॰ चीरना। टुकडे करना, धज्जियाँ उडाना। सीधे या जोड फैलाकर खोलना। किसी गाढे द्रवपदार्थ को इस प्रकार करना कि पानी और सार पदार्थ अलग अलग हो जायँ।

फातिहा—पु॰ [फा॰] प्रार्थना। वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगो के नाम पर दिया जाय।

फानना—सक॰ धुनना, रुई फटकना। †आरभ करना।

फानूस—पु॰ [फा॰] एक प्रकार की बड़ी कदील। एक दड मे लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमे वत्तियाँ जलाई जाती हैं। [अँ॰ फरनेस] ईंटो को पकाने या धातुओ को गलाने की भट्टी।

फाफर—पु॰ दे॰ 'कूद'।

फाबⓅ—स्त्री॰ दे॰ 'फबन'।

फाबना—Ⓟ†—अक॰ दे॰ 'फबना'।

फायदा—पुं॰ [अ॰] लाभ, नफा। मतुलब पूरा होना। भला परिणाम। अच्छा असर।

फायदेमद—वि॰ [फा॰] लाभदायक।

फाया—पुं॰ दे॰ 'फाहा'।

फारⓅ†—पुं॰ दे॰ 'फाल'।

फारखती—स्त्री॰ वह लेख जो इस बात का

सबूत हो कि किसी के जिम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया, चुकती।

फारना(५)†—सक० दे० 'फाडना'।

फारम—पुं० दरखास्तो और रसीदो आदि के वे नमूने जिनमे यह लिखा रहता है कि कहाँ क्या लिखना चाहिए। दे० 'फरमा'। जमीन का वह बडा टुकडा जिसके बहुत से खेत होते हैं और जिनमे व्यवस्थित रूप से वडे पैमाने पर खेती वारी होती है।

फारस—पुं० [फा०] दे० 'पारस'। **फारसी**—स्त्री० [फा०] फारस देश की भाषा।

फारा†—पुं० कतरा, कटी हुई फाँक। दे० 'फाल'।

फारिग†—वि० [अ०] जो कोई काम करके छुट्टी पा गया हो। मुक्त, स्वतत्र।

फार्म—पु० दे० 'फारम'। दे० 'फरमा'।

फाल—स्त्री० [सं०] लोहे का चौकोर लवा छड जो हल के नीचे लगा रहता है और जिससे जमीन खुदती है। [हिं०] काटा या कतरा हुआ पतले दल का टुकडा। कटी हुई सुपारी। पु० [हिं०] डग, फलाँग। कदम भर का फासला, पैड। मु०~**बाँधना**=उछलकर लाँघना।

फालतू—वि० आवश्यकता से अधिक। व्यर्थ, निकम्मा।

फालसई—वि० फालसे के रग का, ललाई लिए हुए हलका ऊदा।

फालसा—पुं० एक छोटा पेड जिसमे मोती के दाने वरावर छोटे छोटे खटमीठे फल लगते हैं।

फालिज—पु० [अ०] एक रोग जिसमे आधा अग सुन्न हो जाता है, लकवा।

फालूदा—पु० [फा०] पीने के लिये गेहूँ के सत्त से वनाई हुई एक चीज (मुसल०)।

फाल्गुन—पु० [सं०] एक चाद्र मास जो माघ और चैत्र के वीच मे पडता है, दे० 'फागुन'। अर्जुन का एक नाम। **फाल्गुनी**—स्त्री० [सं०] पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र।

फावड़ा—पु० मिट्टी खोदने और टालने का एक औजार, फरसा।

फाश—वि० [फा०] खुला, प्रकट।

फासला—पु० [अ०] दूरी, अतर।

फाहा—पु० तेल, घी, या मरहम आदि मे तर की हुई कपडे की पट्टी या रुई, फाया।

फाहिशा—वि० स्त्री० छिनाल, पुश्चली।

फिकर, फिकिर—स्त्री० दे० 'फिक्र'।

फिकरा—पुं० [अ०] वाक्य। व्यग्य। झाँसा पट्टी। मु०~**चलना**=धोखा देने के लिये कही हुई वात का अभीष्ट फल होना। ~**चलाना**=धोखा देने के लिये खोई वात वनाकर कहना। **फिकरे सुनाना, ढालना या कहना**=व्यग्यपूर्ण वात कहना, आवाज कसना।

फिकैत—पु० वह जो फरी,गदका चलाता हो।

फिक्र—स्त्री० [अ०] चिंता, सोच। ध्यान, क्वार। उपाय का विचार, तदवीर। ⊙मद=वि० [फा०] चिंताग्रस्त।

फिचकुर—पु० फेन जो मूर्छा या वेहोशी आने पर मुह से निकलता है।

फिट—अव्य० धिक्, छी [धिक्कारने का शब्द]। ⊙कार=स्त्री० धिक्कार, लानत। कोसना, वददुआ।

फिटकिरी—स्त्री०एक मिश्रित खनिज पदार्थ जो स्फटिक के समान श्वेत होता है।

फिटन—स्त्री० [अँ०] चार पहिए की एक प्रकार की खुली गाडी जिसे एक या दो घोडे खीचते हैं।

फिटाना—सक० हटाना, दूर करना।

फिट्टा—वि० फटकार खाया हुआ, अपमानित। मु०~मुँह=उतरा मुँह, उतरा या फीका पडा हुआ चेहरा।

फितना—पु०[अ०] झगडा या उत्पात करनेवाला। एक प्रकार का इत्र।

फितरती—वि० चालाक, चतुर। फितूरी, धोखेबाज।

फितूर—पु० [अ०] विकार, खराबी। झगडा, वखेडा, घाटा, कमी। 'नैन मुदे, पै न फितूर को····' (प्रबोध० ४४)।

फिदवी—वि० [फा०]स्वामिभक्त, आज्ञाकारी। पु० दास।

फिनिया—स्त्री० एक प्रकार का गहना जो कान मे पहना जाता है।

फिरंग—स्त्री० योरप का एक देश, गोरो का मुल्क, फिरगिस्तान। गरमी, आतशक (रोग)।

फिरंगी—पु० योरप का निवासी। अँगरेज। वि० फिरग देश मे उत्पन्न। फिरग देश मे रहनेवाला, गोरा। फिरग देश का। स्त्री० विलायती तलवार।

फिरट—वि० फिरा हुआ, विरुद्ध। विरोध या लडाई पर उद्यत।

फिर—क्रि० वि० एक बार और, पुन:। भविष्य मे किसी समय। पीछे, उपरात। तब, उस अवस्था मे। आगे और दूरी पर। इसके अतिरिक्त। ⊙**फिर** = क्रि० क्या कई दफा। **मु०** ~क्या है ? = तब वि० पूछना है! तब तो कोई अडचन ही नही है।

फिरका—पु० [अँ०] जाति। जत्था। पथ; सप्रदाय।

फिरकी—स्त्री० वह गोल या चक्राकार पदार्थ जो बीज की कीली को एक स्थान पर टिकाकर घूमता हो। लडको का एक गोल खिलौना जिसे वे नचाते हैं, फिरहरी। चकई नाम का खिलौना। चपडे का गोल टुकडा जो चरखे के तकवे मे लगाया जाता है।

फिरगानाⓅ—पु० दे० 'फिरकी'।

फिरता—पु० वापसी। अस्वीकार। वि० वापस लौटाया हुआ।

फिरना—अक० [सक० फेरना] इधर उधर चलना, भ्रमण करना। टहलना, सैर करना। चक्कर लगाना। मरोडा जाना। लौटना। सामना छोडना, दूसरी तरफ हो जाना। मुडना। लडने या मुकाबला करने के लिये तैयार हो जाना। उलटा होना। बात पर दृढ न रहना। झुकना, टेढा होना। चारो ओर प्रचारित होना, किसी वस्तु के ऊपर पोता जाना या चढाया जाना। **मु०**—किसी ओर~ = प्रवृत्त होना। जी~ = चित्त उचट जाना। सिर~ = बुद्धि भ्रष्ट होना। **फिराना**—सक० [अक० 'फिरना'] कभी इस ओर, कभी उस ओर ले जाना। टहलाना। चक्कर देना, बार बार फेरे खिलाना। ऐठना, मरोडना। पलटाना। सामना एक ओर से दूसरी ओर करना। दे० 'फेरना'।

फिरनी—स्त्री० दे० 'फिरनी'।

फिराऊ—वि० फिरनेवाला। जाकड, (माल) जो फेरा जा सके।

फिराक—पु० [अँ०] बिछोह। चिंता, सोच। खोज।

फिरार—पु० [अँ०] भागना, भाग जाना।

फिरि†Ⓟ—क्रि वि० पुं० 'फिर'।

फिरियादⓅ†—स्त्री० दे० 'फरियाद'।

फिल्ली—स्त्री० पिंडली (अग)।

फिस—वि० कुछ नही (हास्य)। **मु०**—**टाँय टाँय**~ = थी तो बडी धूम, पर हुआ कुछ नही।~ हो जाना = व्यर्थ हो जाना।

फिसड्डी—वि० जिससे कुछ करते धरते न बने। जो काम मे सबसे पीछे रहे, निकम्मा।

फिसलन—स्त्री० फिसलने की क्रिया या भाव, रपटन। चिकनी जगह जहाँ पैर फिसले। **फिसलना**—अक० चिकनाहट और गीलेपन के कारण पैर आदि का न जमना, रपटना। प्रवृत्त होना, झुकना।

फिहरिस्त—स्त्री० [फा०] तालिका, सूची।

फी—अव्य० [अ०] प्रति एक, हर एक।

फीका—वि० स्वादहीन, नीरस। जो चटकीला न हो, धूमिल। कातिहीन, बेरौनक। प्रभावहीन।

फीता—पुं० [फा०] पतली धज्जी, सूत आदि जो किसी वस्तु को लपेटने या बाँधने के काम मे आता है।

फीरनी—स्त्री० एक प्रकार की खीर।

फीरोजा—पुं० [फा०] हरापन लिए नीले रग का एक नग या बहुमूल्य पत्थर। **फीरोजी**—वि० [फा०] हरापन लिए नीला।

फील—पुं० [फा०] हाथी। ⊙**खाना** = पुं० वह घर जहाँ हाथी बाँधा जाता हो। ⊙**पा**

=पुं० एक रोग जिसमे पैर या और कोई अग फूलकर हाथी के पैर की तरह मोटा हो जाता है। ⊙पाया=पुं० खभा। कमरकोट, कमरवल्ला। ⊙वान=पुं० हाथीवान।

फीली—स्त्री० पिंडली।

फीस—स्त्री० [अँ०] कर, शुल्क। मेहनताना, उजरत।

फुंकना—अक० [सक० फूंकना] दे० 'फुकना'। पु० दे० 'फुंकनी'। प्राणियो के शरीर का वह अवयव जिसमे मूत्र रहता है। **फुंकनी**—स्त्री० वह नली जिसे मुँह से फूंककर आग सुलगाते हैं। भाथी।

फुंकरना—अक० फूत्कार छोडना, फूं फूं शब्द करना।

फुंकाना—सक० [फूंकना का प्रे०] दे० 'फुकाना'।

फुंकार—पु० दे० 'फूत्कार'।

फुंदना—पु० फूल के आकार की गाँठ जो बद, डोरी, झालर आदि के छोर पर शोभा के लिये बनाते हैं, झब्बा।

फुंदिया—स्त्री० दे० 'फुंदना'।

फुंदी—स्त्री० फंदा, गांठ। बिंदी, टीका।

फुंनिगा—पु० साँप।

फुंसी—स्त्री० छोटी फोडिया।

फुकना—अक० [सक० फूकना] जलना, भस्म होना। नष्ट होना, बरबाद होना। **फुकाना**—सक० [फूकना का प्रे०] फूकने का काम दूसरे से कराना।

फुचडा—पु० कपडे आदि की बनी हुई वस्तुओ मे बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।

फुट—वि० जिसका जोडा न हो, अकेला। जो लगाव में न हो, अलग। पु० [अँ०] लबाई चौडाई नापने की एक माप जो १२ इंच या ३६ जौ के बराबर होती है।

फुटकर, फुटकल—वि० विषम, फुट, अकेला। अलग। कई प्रकार का, कई मेल का। थोड़ा, थोक का उलटा।

फुटका—पु० फफोला।

फुटकी—स्त्री० किसी वस्तु के जमे हुए कण जो पानी, दूध आदि मे अलग अलग दिखाई पडते हैं। खून, पीब आदि का छींटा जो किसी वस्तु मे दिखाई दे। एक जाति की छोटी चिडिया।

फुटेहरा—पुं० मटर या चने का दाना जो भुनने से खिल गया हो।

फुट्ट—वि० दे० 'फुट'। **फुट्टल**—वि० जोड़े, झुड या समूह से अलग। फूटे भाग्य का, अभागा। **फुट्टैल**—वि० जो झुड या समूह से अलग हो (विशेषत जानवरों के लिये)। अभागा।

फुनकारⓅ—पु० दे० 'फूत्कार'।

फुदकना—अक० उछल उछलकर कूदना। उमग मे आना।

फुदकी—स्त्री० एक प्रकार की छोटी चिडिया।

फुनग—स्त्री० दे० 'फुनगी'।

फुन†—अव्य० पुनः, फिर।

फुनगी—स्त्री० वृक्ष या पौधे की शाखाओ का अग्रभाग, अकुर।

फुप्फुस—स्त्री० [सं०] फेफडा।

फुफुंदी—स्त्री० लहँगे के इजारबद या स्त्रियो की धोती कसने की डोरी की गाँठ, नीवी।

फुफकाना—अक० दे० 'फुफकारना'।

फुफकार—स्त्री० साँप के मुँह से निकली हुई हवा का शब्द, फुकार। **फुफकारना**—अक० साँप का मुँह से फूंक निकालना, फूत्कार करना।

फूफूⓅ†—स्त्री० दे० 'फूफी'। **फुफेरा**—वि० फूफा से उत्पन्न (जैसे, फुफेरा भाई)।

फुर†—वि० सत्य, सच्चा। स्त्री० उडने मे परो का शब्द। ⊙नाⓅ=अक० निकलना, उद्भूत होना। प्रकाशित होना, चमक उठना। फडकना, फडफडाना। उच्चरित होना, मुँह से शब्द निकलना। पूरा उतरना, सत्य ठहरना। प्रभाव उत्पन्न करना, लगना। सफल होना, सोचा हुआ परिणाम उत्पन्न करना।

फुरकत—स्त्री० [अ०] वियोग, जुदाई।

फुरती—स्त्री० शीघ्रता, तेजी। फुरतीला—वि० जिसमे फुरती हो, तेज।

फुरफुराना—सक० 'फुर फुर' करना, उडकर परो का शब्द करना। हवा मे लहराना। अक० किसी हलकी वस्तु का हिलना जिससे फुरफुर शब्द हो।

फुरफुरी—स्त्री० 'फुर फुर' शब्द होने या पख फरफराने का भाव।

फुरमान—पुं० दे० 'फरमान'। फुरमाना‡—सक० दे० 'फरमाना'।

फुरसत—स्त्री० [अ०] अवसर, समय। अवकाश, निवृत्ति। रोग से मुक्ति, आराम। मु०~से=खाली वक्त मे, धीरे धीरे, उतावली मे।

फुरहरना‡—अक० स्फुरित होना, निकलना, प्रादुर्भूत होना।

फुरहेरी—स्त्री० पर को फुलाकर फडफडाना। फडफडाहट, फडकना। कपडे आदि के हवा मे हिलने की क्रिया या शब्द। कँपकँपी, शीत, भय, आनद आदि के कारण शरीर मे होनेवाला कप या रोमाच।

फुराना(पु)—सक० सच्चा ठहराना। प्रमाणित करना। अक० दे० फुरना।

फुरेरी—स्त्री० वह सीक जिसके सिरे पर हल्की रुई लपेटी हो, और जो इत्र, दवा आदि मे डुबाकर काम मे लाई जाय। फाहा। रोमाचयुक्त कप। मु०~लेना=सरदी भय आदि के कारण काँपना। फड़कना, हिलना।

फुरो(पु)—वि० दे० 'फुर'।

फुलका—पु० फफोला, छाला। हलकी और पतली रोटी, चपाती।

फुलचुही—स्त्री० काले रग की एक चमकती हुई चिडिया।

फुलझडी—स्त्री० एक प्रकार की आतशबाजी। उपद्रव खडा करनेवाली बात।

फुलरा—पु० फुँदना।

फुलवर—पु० एक प्रकार का रेशमी बूटीदार कपड़ा।

फुलवाई(पु)—स्त्री० दे० 'फुलवारी'।

फुलवार—वि० प्रफुल्ल, प्रसन्न।

फुलवारी—स्त्री० पुष्पवाटिका, बगीचा। कागज के बने हुए फूल और वृक्षादि जो बरात के साथ निकाले जाते हैं।

फुलसुँघनी—स्त्री० दे० 'फुलचुही'।

फुलहारा—पुं० माली।

फुलाना—सक० [अक० फूलना] किसी वस्तु के विस्तार को उसके भीतर वायु आदि का दवाव पहुँचाकर बढाना। किसी को पुलकित या आनदित कर देना। किसी मे गर्व उत्पन्न करना। कुसुमित करना, फूलों से युक्त करना। †अक० दे० 'फूलना'। मु०—मुँह~या गाल~=मान करना, रूठना।

फुलायल—पु० दे० 'फुलेल'।

फुलाव—पु० फूलने की क्रिया या भाव, उभार या सूजन।

फुलिग—(पु) पु० चिनगारी।

फुलिया—स्त्री० किसी कील या छड़ के आकार की वस्तु का फूल की तरह का गोल सिरा। वह कील या काँटा जिसका सिरा फूल की तरह हो। एक प्रकार की लौग (गहना)।

फुलेल—पु० फूलो की महक से बासा हुआ सिर मे लगाने का तेल। इत्र।

फुलेहरा†—पु० सूत, रेशम आदि के वंदनवार जो उत्सवो मे द्वार पर लगाए जाते हैं।

फुलौरी—स्त्री० मटर या चने आदि के बेसन की सादी पकौडी।

फुल्ल—वि० [सं०] फूला हुआ, विकसित।

फुल्लदाम—पु० १९ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से मगण, तगण, रगण, सगण, दो रगण और अत्य गुरु होता है।

फुस—स्त्री० बहुत धीमी आवाज। मु०~से=अत्यत मद स्वर से।

फुसकारना—(पु)†—अक० फूंक मारना, फूत्कार छोड़ना।

फुसफुसा—वि० जो दबाने से बहुत जल्दी चूर चूर हो जाय। कमजोर। मद्धिम।

फुसफुसाना—सक० बहुत ही दबे हुए स्वर से बोलना ।

फुसलाना—सक० अनुकूल या सतुष्ट करने के लिये मीठी बाते कहना, बहकाना ।

फुहार—स्त्री० पानी का महीन छीटा । महीन बूंदो की झडी, झीसी ।

फुहारा—पुं० जल की वह टोटी जिसमे से दबाव के कारण जल की महीन धार या छीटे वेग से ऊपर की ओर उठकर गिरा करते हैं ।

फुही—स्त्री० दे० 'फुहार' ।

फूंक—स्त्री० मूंह को बटोरकर वेग के साथ छोडी हुई हवा । सांस, मुंह की हवा । कश । मत्र पढकर मुंह से छोडी हुई वायु । झाड ⊙ =स्त्री० मत्र तत्र का उपचार । मु०~निकल जाना=प्राण निकल जाना । फूंकना—सक० मुंह को बटोरकर वेग के साथ हवा छोडना । मत्र पढकर किसी पर मुंक मे हवा छोडना । शख, बांसुरी आदि बाजो को सांस के वेग मे मुंह से बजाना । मुंह से हवा देकर प्रज्वलित करना । जलाना, भस्म करना । फजूल खर्च कर देना, उडाना । नष्ट करना । मु०—~कर पैर रखना या चलना=बहुत सावधानी से कोई काम करना । फूंका—पुं० भाथी या नली से आग फूंकना । बांस की नली मे जलन पैदा करनेवाली ओषधियाँ भरकर और उन्हे योनि मे लगाकर फूंकना जिससे गायो और भैसो का सारा दूध बाहर निकल आवे । बांस आदि की वह नली जिससे फूंका मारा जाता है । फफोला, फोडा ।

फूंद—स्त्री० दे० 'फुंदना' । फूंदा ⓟ†—पु० दे० 'फुदना' । फुफुदी । फूंद, फूंदारा=वि० फूंदनेवाला । फूंदी ⓟ—स्त्री० फदा गांठ ।

फूक—स्त्री० दे० 'फूंक' । झाड़ ⊙ =स्त्री० मत्रतत्र का उपचार । मु०~निकल जाना=प्राण निकल जाना ।

फूकना—सक० दे० 'फूंकना' । मु०—फूक फूककर पैर रखना या चलना=दे० 'फूंकना' ।

फूट—स्त्री० फूटने की क्रिया या भाव । विरोध, विगाड । एक प्रकार की बडी ककडी जो पकने पर फूट जाती है । ⊙ना—अक० खरी या करारी वस्तुओ का आघात पाकर टूटना । ऐसी वस्तुओं का फटना जिनके भीतर या तो पोला हो अथवा मुलायम या पतली चीज भरी हो । नष्ट होना, विगडना । भीतर से झोक के साथ बाहर आना । शरीर पर दाने या घाव के रूप मे प्रकट होना । कली का खिलना । अकुर, शाखा के रूप मे अलग होकर किसी सीध मे जाना । विखरना, फैलना । पक्ष छोडना, दूसरे पक्ष मे हो जाना । शब्द का मुंह से निकलना । व्यक्त होना, प्रकट होना । गुह्य बात का प्रकट हो जाना बांध, मेंड आदि का टूट जाना । जोडो मे दर्द होना । मु०——~कर रोना=विलाप करना । फूटी आंखो न भाना=तनिक भी न सुहाना, बहुत बुरा लगना । फूटी आंखो न देख सकना=बुरा मानना, जलना ।

फूत्कार—पु० [सं०] मुंह से हवा छोड़ने का शब्द, फूंक, फुफकार ।

फूफा—पु० फूफी का पति, बाप का बहनोई ।

फूफी—स्त्री० बाप की बहिन, बुआ, बूआ ।

फूल—स्त्री० फूलने की क्रिया या भाव । उत्साह, उमंग । आनद, प्रसन्नता । पु० गर्भाधानवाले पौधो मे वह ग्रथि जिसमे फल उत्पन्न करने की शक्ति होती है और जिसे उद्भिदो की जननेंद्रिय कह सकते हैं, पुष्प । फूल के आकार के बेलबूटे या नक्काशी । फूल के आकार का कोई गहना (जैसे, करनफूल, सीसफूल) । पीतल आदि की गोल गांठ या घुडी । सफेद या लाल धब्बा जो कुष्ट रोग के कारण शरीर पर पड जाता है । स्त्रियो का मासिक रज, पुष्प । वह हड्डी जो शव जलाने के पीछे बच रहती है (हिंदू) । एक मिश्र धातु जो तांबे और रांगे के मेल से बनती है । ⊙गोभी=स्त्री० गोभी की एक जाति जिसमे मजरियों का बंधा हुआ ठोस पिंड होता है जो तरकारी के काम मे आता है ।

⊙वान=पुं० गुलदस्ता रखने का काँच, पीतल आदि का बरतन। ⊙दार=वि० जिसपर फूलपत्ते और बेलबूटे बने हों। मु०--(स्त्री०) पान ~सा=अत्यत सुकुमार (व्यग्य)। ~झड़ना=मुँह से प्रिय और मधुर बातें निकलना।~सा=अत्यत सुकुमार, हलका या सुदर। ~सूँघकर रहना=बहुत कम खाना। फूलों की सेज=पलग या शय्या जिसपर सजावट और कोमलता के लिये फुलो की पंखडियाँ बिछी हों। आनद की सेज।

फूलना--अक० फूलो से युक्त होना, पुष्पित होना। फूल का सपुट खुलना जिससे उसकी पंखड़ियाँ फैल जायँ, खिलना। भीतर किसी वस्तु के भर जाने के कारण अधिक फैल या बढ जाना। शरीर के किसी भाग का सूजना। मोटा होना। गर्व करना, इतराना। बहुत खुश होना। रूठना। मु०~फलना=सुखी और सपन्न होना। फूलकर कुप्पा होना=अत्यत प्रसन्नता या गर्व का अनुभव होना। फूला फूला फिरना=प्रसन्न घूमना, आनन्द मे रहना। फूले अंग न अमाना(पु) या समाना=अत्यंत आनदित होना।

फूलनि(पु)--स्त्री० खिलना, प्रस्फुटन।

फूली--स्त्री० वह सफेद दाग जो आँख की पुतली पर पड जाता है।

फूस--पुं० वह सूखी लवी घास जो छप्पर आदि छाने के काम मे आती है। सूखा तृण, तिनका।

फूहड़--वि० जिसे कुछ करने का ढग न हो, बेशऊर (प्रायः स्त्रियों के लिये), बेढगा, भद्दा।

फूही--स्त्री० दे० 'फुहार'।

फेंकना--सक० झोंके के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। एक स्थान से ले जाकर और स्थान पर डालना। असावधानी या भूल से इधर उधर छोडना, गिराना या रखना। तिरस्कार के साथ त्यागना, छोडना। अपव्यय करना।

फेंकरना(पु)†--अक० गीदड़ का रोना या बोलना। जोर जोर से या चिल्लाकर रोना।

फेंट--स्त्री० कमर का घेरा। धोती का वह भाग जो कमर मे लपेटकर बाँधा गया हो। कमर मे बाँधा हुआ कोई कपडा, पटुका। फेरा, लपेट। फेंटने की क्रिया या भाव। मु०~कसना या बाँधना=कमर कसकर तैयार होना।~धरना या पकड़ना=इस प्रकार पकडना कि भागने न पावे।

फेंटना--सक० गाढे द्रव पदार्थ को उँगली घुमाकर हिलाना। गड्डी के ताशो को उलट पुलटकर अच्छी तरह से मिलाना। किसी बात को बार बार दुहराना।

फेंटा--पुं० दे० 'फेंट'। छोटी पगडी। सूत की बडी अटी।

फेकरना†--अक० (सिर का) खुलना, नगा होना। **फेकारना**†--सक० (सिर) खोलना या नगा करना।

फेकैत--पु० वह जो फेंकता हो। पहलवान। दे० 'फिकैत'।

फेन--पुं० [सं०] पानी या तरल पदार्थ के महीन बुलबुलो का समूह, झाग। **फेना**(पु)--पुं० दे० 'फेन'।

फेनिल--वि० [सं०] फेन या झाग से भरा हुआ।

फेनी--स्त्री० सूत के लच्छे के आकार की एक मिठाई। दे० 'फेन'।

फेफडा--पुं० वक्षस्थल के भीतर का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव साँस लेते है,, फुप्फुस।

फेफड़ी--स्त्री० फाके या गरमी मे सूखे हुए होंठ पर का चमडा, पपडी।

फेफरी--स्त्री० दे० 'फेफडी'।

फेर--अव्य० फिर, पुन। पुं० चक्कर, घुमाव। मोड, झुकाव। परिवर्तन, उलट पलट। अतर, भेद। असमजस, उलझन। भ्रम, धोखा। चालबाजी। बखेड़ा, झझट। युक्ति, उपाय। अदल बदला। हानि, घाटा। भूत प्रेत का प्रभाव। (पु) ओर, दिशा। ⊙फार=पुं० परिवर्तन, उलट फेर। अतर, फर्क। टालमटोल, बहाना। घुमाव फिराव, चक्कर।

हेरफर = पुं० लेनदेन, व्यवसाय। मु०~ खाना = सीधा न जाकर इधर उधर घूमकर अधिक चलना। ~मे पडना = असमजस मे होना। दिनो का~ = एक दशा से दूसरी दशा की प्राप्ति (विशेषत अच्छी से बुरी दशा की) निन्नानवे का~ = रुपया बढाने का चसका।

फेरना—सक० [अक० फिरना] एक ओर ले जाना, मोडना। पीछे चलाना, लौटाना। जिसने दिया हो, उसी को फिर देना, वापस करना। जिसे दिया था उससे वापस लेना। चक्कर देना, घुमाना। ऐंठना, मरोडना। रखकर इधर उधर स्पर्श कराना। पोतना। उलट पलट या या इधर उधर करना। विरुद्ध या भिन्न करना। चारो ओर सबके सामने ले जाना, घुमाना। प्रचारित करना, घोषित करना (जैसे, डौंडी फेरना)। घोडे आदि को ठीक तरह से चलने की शिक्षा देना, निकालना। मु०—पानी~ = नष्ट करना।

फेरवट—स्त्री० फिरने का भाव। घुमाव फिराव, पेंच।

फेरा—पुं० कीली के चारो ओर गमन, परिक्रमण। लपेट, मोड। वार वार आना जाना। घूमते फिरते आ जाना या जा पहुँचना। लौटकर फिर आना। आवर्त, घेरा। ⊙फेरी = स्त्री० क्रमपरिवर्तन, उलटफेर।

फेरि—अव्य० फिर, पुनः। पुं० अतर, फर्क, भेद।

फेरी(पु)—स्त्री० दे० 'फेरा'। दे० 'फेर'। परिक्रमा, प्रदक्षिणा। योगी या फकीर का किसी वस्ती मे भिक्षा के लिये वरावर आना। कई वार आना जाना। ⊙वाला = पु० घूमकर सौदा वेचनेवाला व्यापारी।

फेल—पु० [अ०] कर्म, काम। वि० [अं०] जो परीक्षा मे पूरा न उतरे, अनुत्तीर्ण। जो समय पर ठीक या पूरा काम न दे।

फेल्ट—पु० [अं०] नमदा।

फेहरिस्त—स्त्री० दे० 'फिहरिस्त'।

फेस—पु० [अं०] मुंह, चेहरा। सामना। टाइप का ऊपरी भाग जो छपने पर उभरता है। घडी का सामने का भाग जिसपर सुई और अक रहते हैं।

फैटा—पु० दे० 'फेंटा'।

फैसी—वि० [अं०] अच्छी काट छाँट का, सजीला।

फैक्टरी—स्त्री० [अं०] कारखाना।

फैज—पु० [अ०] उपकार, फायदा। फल को पहुँचना। मु०—अपने को पहुँचना = अपने कर्म का उचित फल पाना।

फैदम—पु० [अं०] गहराई की एक नाप जो ६ फुट की होती है।

फैन(पु)—पु० दे० 'फेन'।

फैयाज—वि० [अ०] बहुत उदार और दानी।

फैर†—स्त्री० वदूक, तोप आदि आग्नेय हथियारो का दगना।

फैल(पु)†—पु० कार्य। क्रीडा, खेल। नखरा।

फैलना—अक० कुछ दूर तक स्थान घेरना। विस्तृत होना। मोटा होना। सख्या बढना, वृद्धि होना। छितराना, बिखरना। तनकर किसी ओर बढना। प्रचार पाना, बहुतायत से मिलना। प्रसिद्ध होना। आग्रह करना, हठ करना। भाग का ठीक ठीक लग जाना।

फैलसूफ—वि० फजूलखर्च। **फैलसूफी**—स्त्री० फजूलखर्ची, अपव्यय।

फैलाना—सक० [अक० फैलना] लगातार कुछ दूर तक बिखराना। विस्तृत करना, पसारना। छा देना, भर देना। विखेरना। वढती करना, वृद्धि करना। तानकर किसी ओर बढाना। प्रचलित या जारी करना। इधर उधर दूर तक पहुँचाना। प्रसिद्ध करना। हिसाब किताव करना, लेखा लगाना। गुणा-भाग के ठीक होने की परीक्षा करना।

फैलाव—पु० विस्तार, प्रसार। प्रचार।

फैशन—पु० [अं०] ढग, चाल। प्रथा, प्रचलन।

फैसला—पु० [अ०] दो पक्षो मे से किसकी बात ठीक है, इसका निवटेरा। किसी मुकदमे मे अदालत की आखिरी राय।

फैसिज्म—पु० [अं०] प्रथम विश्वयुद्ध के

समय इटली में चलाया हुआ कम्यूनिज्म या समाजवाद का विरोधी और स्वदेशप्रेमी दल या उसके सिद्धात जिसका परिणाम बेनिटो मुसोलिनी का डिक्टेटरशिप था। फैसिस्ट--पु० [अँ०] फैसिज्म का अनुयायी। वह जो मनमानी करे और अपने सामने किसी की चलने न दे।

फोक--पु० तीर के पीछे की नोक जिसके पास पर लगाए जाते हैं।

फोंका--पु० लवा पोला चोगा। मटर आदि पोली डंठलवाले सस्यो की फुनगी। दे० 'फूका'।

फोदाⓟ--पु० दे० 'फुँदना'।

फोक--पु० सार निकल जाने पर बचा हुआ अश, सीठी। भूसी। फीकी या नीरस चीज।

फोकट--वि० जिसका कुछ मूल्य न हो, नि सार, व्यर्थ। मु० ~का = बिना परिश्रम का। बिना मूल्य का। ~मे = मुफ्त मे, यो ही।

फोकला‡--पु० छिलका।

फोकस--पु० [अँ०] वह बिंदु जहाँ प्रकाश की बिखरी हुई किरणे इकट्ठी हों। फोटो लेने के लिये लेंस द्वारा उस वस्तु की छाया को जिसका चित्र लेना है नियत स्थान पर स्थिर रूप से लाने की क्रिया।

फोका--वि० थोथा, निस्सार। पुं० दे० 'फोकला'।

फोट--पुं० दे० 'स्फोट'।

फोटकⓟ--वि० दे० 'फोकट'। पु० फोला, फफोला।

फोटा--पु० बिंदी, टीका।

फोटो--पु० [अँ०] चित्र उतारनेवाले कैमरे की सहायता से उतारा हुआ चित्र, छाया चित्र। प्रतिबिंब। ⊙ग्राफ = पु० फोटो, छायाचित्र। ⊙ग्राफर = पु० फोटो खीचनेवाला। ⊙ग्राफी = स्त्री० प्रकाश की किरणो द्वारा रासायनिक पदार्थों की सहायता से चित्र उतारने की कला या युक्ति।

फोडना--सक० कडी या करारी वस्तुओ को खड खड करना, भग्न करना, विदीर्ण करना। केवल आघात या दबाव से भेदन करना। शरीर मे ऐसा विकार उत्पन्न करना जिससे घाव या फोडे हो जायँ। अकुर, कनखे, शाखा आदि निकालना। शाखा के रूप मे अलग होकर किसी सीध मे जाना। दूसरे पक्ष से अलग करके अपने पक्ष मे कर लेना। भेदभाव उत्पन्न करना। फूट डालकर अलग करना। एकबारगी भेद खोलना।

फोड़ा--पुं० वह शोथ जो शरीर मे कहीं पर कोई दोष सचित होने से उत्पन्न होता है और जिसमे रक्त सडकर पीब के रूप मे हो जाता है, व्रण।

फोड़िया--स्त्री० छोटा फोडा।

फोता--पु० [फा०] भूमिकर, पोत। थैली, कोष। अडकोष। **फोतेदार**--पु० खजाची। रोकडिया।

फोनोग्राफ--पु० [अँ०] एक यत्र जिसमे कही हुई बातें या गाए हुए गाने बाद मे ज्यो के त्यो सुनाई देते है, ग्रामोफोन।

फोरनाⓟ†--सक० दे० 'फोडना'।

फौआरा--पु० दे० 'फुहारा'।

फौज--स्त्री० [अ०] झुड, जत्था। सेना, लशकर। ⊙दार = [फा०] सेनापति। ⊙दारी = स्त्री० [फा०] लडाई झगडा, मारपीट। वह अदालत जहाँ असामाजिक या अवैधानिक कामो को करनेवाले को राजदड दिया जाता है।

फौजी--वि० फौज सबधी, सैनिक।

फौत--वि० [अ०] मृत, नष्ट। **फौती**--स्त्री० मरने की वह सूचना जो सरकारी कागजो मे लिखाई जाती है।

फौरन--क्रि० वि० [अ०] तुरत, चटपट।

फौलाद--पु० एक प्रकार का कडा और अच्छा लोहा, खेडी।

फौवारा--पु० दे० 'फुहारा'।

फ्रासीसी--वि० फ्रास देश का। फ्रास देशवासी।

फ्राक--पु० [अँ०] स्त्रियो और बच्चो का एक प्रकार का कुरता।

फ्रेंच--वि० [अँ०] फ्राम देश का, फ्रासीसी। स्त्री० फ्रास देश की भाषा।

फ्रेम—पु० [अँ०] चौखट जिसमे चित्र या दर्पण लगाए जाते हैं। चश्मे की कमानी।

फ्लूट—पु० [अँ०] वंसी की तरह का एक अँगरेजी बाजा।

ब

ब—हिंदी का २३वाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण, यह ओष्ठ्य वर्ण है।

बंक—वि० टेढा, तिरछा। पुरुषार्थी, विक्रमशाली। दुर्गम। पु० वह संस्था जो लोगों का रुपया अपने यहाँ जमा करती अथवा लोगों को ऋण देती है।

बंकट—वि० वक्र, टेढा।

बंकराज—पु० एक सर्प।

बंका†—वि० टेढा, तिरछा। बाँका। पराक्रमी। ⊙ई†—स्त्री० वक्रता, टेढापन।

बँकारो—वि० वक्र, तिरछा।

बंकिम—वि० [सं०] टेढा, तिरछा, बाँका।

बंकुर⑨—पु० टेढापन, वक्रता। वि० तिरछा, बाँका।

बंकुस—वि० वक्र, टेढा।

बंग—पु० दे० 'वंग'। बाँग। ⑨वि० टेढा। उद्दंड। अभिमानी।

बँगला—वि० बंगाल देश का, बंगाल संबंधी। पु० वह चारों ओर से खुला हुआ एक मंजिल का मकान जिसके चारो ओर बरामदे हों। वह छोटा हवादार कमरा जो प्रायः ऊपरवाली छत पर बनाया जाता है। बंगाल देश का पान। स्त्री० बंगाल देश की भाषा।

बँगली—स्त्री० एक प्रकार का पान। एक प्रकार का गहना।

बंगाला†—पुं० बंगाल प्रांत। स्त्री० बंगालिका नाम की रागिनी जिसे मेघ राग की स्त्री० मानते है।

बंगाली—पुं० बंगाल देश का निवासी। संपूर्ण जाति का एक राग। स्त्री० बंग देश की भाषा। वि० बंगाल का, बंगाल संबंधी।

बंचक—पुं० [सं०] धूर्त, ठग, पाखंडी। ⊙ना = स्त्री० छल, धूर्तता। ⊙ताई ⑨† = स्त्री० दे० 'वंचकता'।

बंचनता⑨—स्त्री० ठगी, छल।

बंचना—स्त्री० ठगी। ⑨†सक० ठगना, छलना।

बँचवाना—सक० [बाँचना का प्रे०] पढ़वाना।

बंछना⑨†—सक० इच्छा करना, चाहना।

बंछित⑨—वि० दे० 'वांछित'।

बंज†—पुं० दे० 'वनिज'।

बंजर—पु० ऊसर।

बंजारा—पुं० दे० 'बनजारा'।

बंजुल—पु० अशोक वृक्ष, बेंत।

बंझा—वि०, स्त्री० दे० 'बाँझ'।

बँटना—अक० [सक० बाँटना] विभाग होना, अलग अलग हिस्सा होना। कई व्यक्तियों को अलग अलग दिया जाना।

बँटवाई—स्त्री० बाँटने की मजदूरी।

बँटवाना—सक० [बाँटना का प्रे०] बाँटने का काम दूसरे से कराना। पिसवाना।

बँटवारा—पु० बाँटने की क्रिया, विभाजन।

बंटा—वि० छोटे कद या आकार का। गोल या चौकोर छोटा डब्बा; जैसे, पान का बंटा, ठाकुर जी के भोग का बंटा, चौड़े पेट की गागर या पतीला। ⊙ढार, ⊙धार = पुं० सर्वनाश, बरबादी।

बँटाना—सक० [बाँटना का प्रे०] हिस्सा कराकर अपना अंश ले लेना, बँटवाना। दूसरे का बोझ हलका करने के लिये शामिल होना।

बँटाई—स्त्री० बाँटने का काम या भाव। खेती का वह प्रकार जिसमे खेत जोतनेवाले से मालिक को लगान के रूप में फसल का कुछ अंश मिलता है।

बँटावन⑨†—बँटानेवाला।

बँटैया—पु० हिस्सा लेनेवाला, बँटानेवाला।

बंडल—पु० [अँ०] पुलिंदा, गड्डी।

बंडा—पुं० एक प्रकार का कच्चू या अरुई।

बंडी—स्त्री० फतुही, कुरती। बगलबंदी। वह लकडी जो खपरैल की छाजन में मँगरे पर लगती है।

बंद—वि० [फा०] जिसके चारो ओर कोई अवरोध हो। जिसके मुँह अथवा मार्ग पर ढकना या ताला आदि लगा हो। जो खुला न हो। किवाड़, ढकना आदि जो

ऐसी स्थिति मे हो जिससे कोई वस्तु भीतर से वाहर न जा सके और वाहर की चीज अदर न आ सके। । जिसका कार्य रुका हुआ या स्थगित हो। रुका या थका हुआ। जो किसी तरह की कैद मे हो। पु० [हिं०] वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु वाँधी जाय । पुश्ता, बाँध। शरीर के अगो का कोई जोड। फीता, तनी। कागज का लंबा और बहुत कम चौडा टुकड़ा वधन, कैद। ⊙गोभी = स्त्री० करमकल्ला, पातगोभी।

बंदगी—स्त्री० [फा०] आदाब, प्रणाम। भक्तिपूर्वक ईश्वर की वदना। सेवा, खिदमत।

बंदनⓅ—पुं० रोचन, रोली। ईंगुर, सेंदुर। दे० 'वदन'। ⊙ता = स्त्री० आदर या वदना किए जाने की योग्यता ⊙वार = स्त्री० फूलो या पत्तो की झालर जो मंगल सूचनार्थ दीवारो आदि मे वाँधी जाती है, तोरण। ⊙माल = स्त्री० दे०' वदनवार'।

बदना—स्त्री० दे० 'वदना'। सक० प्रणाम करना।

बंदनीⓅ—वि० दे० 'वदनीय'।

बदनीमाल—स्त्री० वह लबी माला जो गले से पैरो तक लटकती हो, वनमाला।

बदर—पुं० मनुष्य से मिलता जुलता एक प्रसिद्ध वृक्षारोही एव स्तनपायी चौपाया जो बुद्धि मे अन्य पशुओ से अधिक विकसित होता है, वानर। दे० 'वदरगाह'। मु०~ घुड़की या भभकी = ऐसी धमकी या डाँट-डपट जो केवल डराने या धमकाने के लिये ही हो।

बदरगाह—पु० [फा०] समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते है।

बदवान—पु० वदीगृह का रक्षक, कैदखाने का अफसर।

बदसाल† पु० कैदखाना, जेल।

बदा—पु० [फा०] सेवक, दास। शिष्ट या विनीत भाषा मे उत्तम पुरुष, पुल्लिंग 'मैं' के स्थान पर आनेवाला शब्द।

बंदारु—वि० वदनीय। आदरणीय।

बदाल—पु० देवदाली, घघरबेल।

बदि—स्त्री० कैद, कारावास।

बँदिया†—स्त्री० वदी (आभूषण)।

बदिश—स्त्री० [फा०] रोक, प्रतिबध। प्रबंध, रचना। षड्यत्र।

बदी—पु० [स०] भाट, चारण। स्त्री० [हिं०] एक प्रकार का आभूषण जिसे स्त्रियाँ सिर पर पहनती हैं। पु० [फा०] कैदी। ⊙खाना = पु० कैदखाना। ⊙छोर Ⓟ† = पु० [हिं०] कैद या बधन से छुडानेवाला। ⊙वान Ⓟ = [हिं]० कैदी।

बदूक—स्त्री० [अ०] नली के रूप का एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमे वारूद भरी गोली रखकर चलाई जाती है। ⊙ची = पु० [फा०] वदूक चलानेवाला सिपाही।

बँदेराⓅ—पु० कैदी। सेवक।

बदोबस्त—पु० [फा०] प्रवध, इतजाम। खेती के लिये भूमि को नापकर उसका राज्यकर निर्धारित करने का काम। वह महकमा या विभाग जिसके सपुर्द खेतो आदि को नापकर उनका कर निश्चित करने का काम हो।

बध—पु० [स०] वधन। गाँठ, गिरह। कैद। पानी रोकने का धुस्स, वाँध। कोकशास्त्र के अनुसार रति के १६ मुख्य आसनो मे से कोई। योगशास्त्र के अनुसार योगसाधन की कोई मुद्रा। निवध-रचना, गद्य या पद्य लेख तैयार करना। चित्रकाव्य मे छद की ऐसी रचना जिससे किसी विशेष प्रकार की आकृति या चित्र वन जाय। वह जिससे कोई वस्तु वाँधी जाय, वद। लगाव, फँसाव। शरीर। वद, तनी।

बधक—पु० [स०] वह वस्तु जो लिए हुए ऋण के वदले मे धनी के यहाँ रख दी जाय और ऋण अदा होने पर वापस ले ली जाय, रेहन। विनिमय, वदला करने-वाला। वाँधनेवाला।

बधकी—स्त्री० [स०] व्यभिचारिणी, वद-चलन औरत। वेश्या।

बधन—पुं० [सं०] बाँधने की क्रिया। वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय। वह जो किसी की स्वतत्रता आदि मे बाधक हो। बध। रस्सी। कैदखाना। शरीर का जोड।

बँधना—पुं० वह वस्तु जिससे किसी चीज को बाँधें। अक० [सक० बाँधना] बद्ध होना, बाँधा जाना। कैद होना, बदी होना। फँसना, अटकना। प्रतिज्ञा या वचन आदि से बद्ध होना। ठीक होना, दुरुस्त होना। क्रम निर्धारित होना। प्रेमपाश मे बद्ध होना, मुग्ध होना।

बँधनि†—स्त्री० बधन, जिसमे कोई चीज बँधी हुई हो। उलझने या फँसानेवाली चीज।

बँधवाना—सक० [बाँधना का प्रे०] बाँधने का काम दूसरे से कराना। देना आदि नियत कराना, मुकर्रर कराना। कैद कराना। (तालाव, कुआँ, पुल आदि) वनवाना, तैयार कराना।

बँधाना—सक० [बाँधना का प्रे०] धारण कराना (जैसे, धीरज बँधाना। दे० 'बँधवाना'।

बधान—पुं० लेनदेन या व्यवहार आदि की नियत परिपाटी। वह पदार्थ या धन जो इस परिपाटी के अनुसार दिया या लिया जाय। (पानी रोकने का) बाँध। ताल का सम (सगीत)।

बधी—पु० [स०] वह जो बंधा हुआ हो। †स्त्री० [हिं०] बँधा हुआ क्रम।

बंधु—[स०] भाई। सहायक। मित्र। एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन भगण और दो गुरु होते हैं, दोधक। वधूक पुष्प। ⊙ता = स्त्री० दे० 'बधुत्व'। ⊙त्व = पु० बधु होने का भाव, बधुता। भाई-चारा। मित्रता।

बँधुआ—पु० कैदी, बदी।

बधुक, बधुजीव—पु० [सं०] दुपहरिया का फूल।

बधुर—वि० [स०] ऊंचा नीचा।

बधूक—पु० दे० 'बधुक'। दोधक नामक वृत्त, बधु।

बधेज—पु० नियत समय पर और नियत रूप से मिलने या दिया जानेवाला पदार्थ या द्रव्य। किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति। रुकावट, प्रतिबध।

बधोदय—पु० [सं०] कर्मफल की प्राप्ति का प्रवृत्तिकाल।

बध्या—वि० स्त्री० [सं०] (वह स्त्री) जो संतान न पैदा कर सके, बाँझ। ⊙पुत्र = पु० ठीक वैसा ही असमव भाव या पदार्थ जैसे बध्या का पुत्र, असभव बात।

बपुलिस—स्त्री० मलत्याग के लिये म्यूनिसि-पैलिटी आदि का बनवाया हुआ सबके इस्तेमाल मे आनेवाला स्थान।

बब—स्त्री० ब ब शब्द। युद्धारभ मे वीरों का उत्साहवर्धक नाद, रणनाद। नगाड़ा, दुदुभी। पु० दे० 'बम'।

बबा—पु० पानी की कल, पप। सोता। पानी बहाने का नल।

बँबाना—अक० गौ आदि पशुओ का बाँ बाँ शब्द करना, रँभाना।

बंबू—पु० चडु पीने की बाँस की छोटी पतली नली।

बँभनाई—स्त्री० ब्राह्मणत्व।

बस—पु० दे० 'वश'। ⊙कार = पु० बाँसुरी ⊙लोचन = पु० बाँस का सार भाग जो उसके जल जाने पर सफेद रग के छोटे टुकडो के रूप मे पाया जाता है, बसकपूर। ⊙वाड़ी = स्त्री० बाँसों का झुरमुट।

बँसरी(पु)—स्त्री० मुरली, बाँसुरी।

बसी—स्त्री० बाँसुरी, बसी, मुरली। मछली फँसाने का एक औजार। विष्णु, कृष्ण और रामजी के चरणो का रेखाचिह्न। ⊙धर = पु० श्रीकृष्ण।

बँहगी—स्त्री० भार ढोने का वह उपकरण जिसमे एक लबे बाँस के दोनो सिरों पर सामान रखने के लिये रस्सियों के बड़े बडे छीके लटका दिए जाते हैं और बाँस को कधे पर रखकर ले जाते हैं।

बँहोलनी—स्त्री० आस्तीन।

बइठना(पु)—अक० दे० 'बैठना'।

बउरा†(पु)—वि० दे० 'बावला'।

बक—पुं० बगला। अगस्त्य नामक पुष्प का वृक्ष। कुबेर। बकासुर। वि० बगले सा सफेद। ⊙ध्यान=पु० बनावटी साधु-भाव, पाखडपूर्ण मुद्रा। ⊙ध्यानी=पु० बकुलाभगत, पाखडी। ⊙मौन=पु० दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिये बगले की तरह सीधे बनकर चुपचाप रहना। वि० चुपचाप काम साधनेवाला। ⊙वृत्ति=वि० बकध्यान लगानेवाला।

बक—स्त्री० प्रलाप, बकवाद। ⊙बक=स्त्री० बकने की क्रिया या भाव। सक० ऊटपटांग बात कहना। प्रलाप करना, बडबडाना। ⊙वाद=स्त्री० बकवक, सारहीन वार्ता। ⊙वास=स्त्री० दे० 'बकवाद'।

बकतर—पु० [फा०] एक प्रकार की जिरह या कवच जिसे योद्धा लडाई मे पहनते हैं, सन्नाह।

बक्ता, बकसार(पु)—वि० दे० 'वक्ता'।

बकरकसाव—पु० बकरी का मास बेचने-वाला पुरुष, चिक।

बकरना—सक० आप से आप बकना, बड-बड़ाना। अपना दोष या करतूत स्वय कहना, कबूल करना।

बकरम—पु० [अँ०] एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो कपडो के भीतर कोई भाग कडा करने के लिये दिया जाता है।

बकरा—पुं० एक प्रसिद्ध चतुष्पद पशु जिसके सीग तिकोने, गँठीली और ऐंठनदार तथा पीठ की ओर झुके होते है। पूँछ छोटी होती है, शरीर से एक प्रकार की गध आती है और खुर फटे होते हैं। यह जुगाली करके खाता है, छाग।

बकलस—पुं० एक प्रकार की विलायती अँकुसी जो किसी बधन के दो छोरो को मिलाए रखने या कसने के काम मे आती है, बकसुवा।

बकला—पु० पेड की छाल। फल का छिलका।

बकस—पु० कपडे आदि रखने का चौकोर सदूक। छोटा डिब्बा, खाना।

बकसना(पु)—सक० कृपापूर्वक देना। क्षमा करना। **बकसाना†(पु)**—सक० [बकस का प्रे०] क्षमा कराना।

बकसी(पु)—दे० 'बख्शी'।

बकसीस(पु)—स्त्री० दान। इनाम, पारितोषिक।

बकसुआ—दे० 'बकलस'।

बकाउर—स्त्री० दे० 'बकावली'।

बकाना—सक० [बकना का प्रे०] बक बक कराना। कहलाना।

बकायन—स्त्री० नीम की जाति का एक पेड़ जिसके फूल, फल, छाल और पत्तियाँ औषध के काम आती है तथा लकडी से मेज, कुर्सी आदि बनाई जाती है, महानिंब।

बकाया—पुं० [अ०] बचा हुआ। बचत।

बकारी—स्त्री० मुँह से निकलनेवाला शब्द। मु०~फूटना=मुँह से आवाज निकलना।

बकावर—स्त्री० दे० 'गुलबकावली'। **बका-वली**—स्त्री० दे० 'गुलबकावली'।

बकिनव(पु)—पुं० दे० 'बकायन'।

बकुचना(पु)—अक० सिमटना, सिकुडना।

बकुचा—पु० छोटी गठरी, बकचा।

बकुची—स्त्री० एक पौधा जो औषध के काम मे आता है। छोटी गठरी।

बकुचौहाँ†—वि० बकुचे की भाँति। तुच्छ।

बकुरना(पु)—सक दे० 'बकरना'।

बकुल—पुं० [सं०] मौलसिरी।

बकुला†—पुं० दे० 'बगुला'।

बकेन, बकेना†—स्त्री० वह गाय या भैंस जिसे बच्चा दिए साल भर से अधिक हो गया हो और जो दूध देती हो, 'लवाई' का उलटा।

बकैयाँ—पुं० बच्चो का घुटनो के बल चलना।

बकोट—स्त्री० बकोटने की मुद्रा, मात्रा, क्रिया या भाव।

बकोटना—सक० नाखूनो से नोचना, पजा मारना।

बकौरी(पु)—दे० 'गुलबकावली'।

बक्कम—पु० एक छोटा कँटीला वृक्ष। इसकी लकडी, छिलके और फलो से लाल रग निकलता है, पतग।

बक्कल—पुं० छिलका। छाल।

बक्काल—पु० [अ०] वणिक्, बनिया। ⊙बनिया बक्काल = छोटा मोटा रोजगारी (हीनतासूचक)।

बक्की—वि० बहुत बोलने या बक बक करनेवाला। स्त्री० एक प्रकार का धान।

बक्खर—पु० दे० 'बाखर'

बक्रिमाⓅ—स्त्री० दे० 'बकता'। बाँकपन, टेढापन।

बक्स—पु० दे० 'बकस'।

बखत—पुं० दे० 'वक्त'। दे० 'बख्त'।

बखतर—पु० दे० 'बकतर'।

बखर—पु० दे० 'बाखर'। दे० 'बक्खर'।

बखरा—पुं० हिस्सा, बाँट। दे० 'बाखरा'।

बखेरी†—स्त्री० मिट्टी, ईटो आदि का बना हुआ अच्छा मकान (गाँव)।

बखसीसⓅ†—स्त्री० दे० 'बकसीस'।

बखान—वर्णन, कथन। प्रशसा, बड़ाई। बखानना—सक० वर्णन करना, कहना। प्रशसा करना। गाली गलौज देना।

बखार†—दीवार आदि से घिरा हुआ गोल घेरा जिसमे गाँवो मे अन्न रखा जाता है।

बखिया—पु० [फा०] एक प्रकार की बहुत पास पास की और मजबूत सिलाई। ⊙ सक० किसी चीज पर बखिया की सिलाई करना। मु०~उधेड़ना = भेद या कलई खोलना।

बखीर†—स्त्री० मीठे रस मे उबाला हुआ चावल।

बखील—वि० [अ०] कृपण, सूम।

बखूबी—क्रि० वि० [फा०] भली भाँति। पूर्ण रूप से।

बखेड़ा—पु० उलझाव, झझट। झगडा, विवाद। मुश्किल। आडबर। **बखेड़िया**—वि० बखेडा करनेवाला, झगडालू।

बखेरना—सक० चीजो का इधर उधर या दूर-दूर फैलाना, छितराना।

बखोरना—सक० टोकना, छेडखानी करना।

बख्त—पु० [फा०] भाग्य, किस्मत।

बख्तर—पु० दे० 'बकतर'।

बख्शना—सक० प्रदान करना। त्यागना। क्षमा करना। **बख्शवाना, बख्शाना**—सक० [बख्शना का प्रे०] किसी को बख्शने मे प्रवृत्त करना।

बख्शिश—स्त्री० [फा०] उदारता। दान। क्षमा।

बग†—बगुला।

बगनाⓅ†—अक० घूमना, फिरना।

बगई‡—स्त्री० एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तो पर बहुत बैठती है, कुकुरमाछी। एक प्रकार की घास।

बगछुट, बगटुट—क्रि० वि० बेतहाशा, बडे वेग से।

बगदना†—अक० बिगडना, खराब होना। भ्रम मे पडना। लुढकना, गिरना। **बगदहा**Ⓟ†—वि० चौकने या बिगडनेवाला। **बगदाना**†—सक० [बगद का प्रे०] बिगाडना, खराब करना। ठीक रास्ते से हटाना। भुलाना, भटकाना।

बगनी—स्त्री० बगई (घास)।

बगमेल—पुं० दूसरे के घोडे के साथ बाग मिलाकर चलना, बराबर चलना। बराबरी, समानता। क्रि० वि० बाग मिलाए हुए, साथ साथ।

बगरⓅ†—पुं० महल। बड़ा मकान, घर। कमरा। सहन, आँगन। वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी जाती हैं। स्त्री० दे० 'बगल

बगरना—Ⓟ†—अक० बिखरना, छितराना, फैलना। **बगराना**†—सक० फैलाना, छिटकाना। †अक० दे०'बगराना'

बगरी†—स्त्री० दे० 'बखरी'।

बगरूराⓅ—पु० दे० 'बगूला'।

बगल—स्त्री० [फा०] बाहुमूल के नीचे की ओर का गड्ढा, काँख। छाती के दोनो किनारो का भाग, पार्श्व। इधर उधर या किनारे का हिस्सा। कपडे का वह टुकडा जो कुरते आदि के कंधे के जोड के नीचे लगाया

जाता है। समीप का स्थान। ⊙गंध = पु० [सं०] वह फोड़ा जो बगल में होता है, कँखवार। एक प्रकार का रोग जिसमें बगल से बहुत बदबूदार पसीना निकलता है। ⊙बंदी = स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की मिरजई या कुरती। मु०~ गरम करना = सहवास या प्रसंग करना। ~में दबाना या ~धरना = अधिकार करना, ले लेना। बगलें झाँकना = इधर उधर भागने का यत्न करना, बचाव का रास्ता ढूँढना। कुछ कहते न बनना। बगलें बजाना = बहुत प्रसन्नता प्रकट करना।

बगला—पु० सफेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी टाँगें, चोंच और गला लंबा होता है। और पूँछ नाम मात्र की बहुत छोटी होती है। ⊙मुखी = स्त्री० तान्त्रिकों की एक देवी। ⊙भगत = धर्मध्वजी। कपटी, धोखेबाज।

बगलियाना—अक० बगल से होकर जाना, अलग हटकर चलना या निकलना। सक० अलग करना। बगल में लाना या करना।

बगली—स्त्री० वह थैली जिसमें दर्जी सूई तागा रखते हैं। कुरते आदि में कपड़े का वह टुकड़ा जो कंधे के नीचे लगाया जाता है, बगल। बगला नामक पक्षी की मादा। वि० बगल से संबंध रखनेवाला, बगल का। कुश्ती का एक दाँव। मु०~घूँसा = वह वार जो आड़ में छिपकर या धोखे से किया जाय।

बगलेंदी—स्त्री० एक प्रकार का पक्षी।

बगलौहाँ†—वि० बगल की ओर झुका हुआ, तिरछा।

बगसनाⓅ†—सक० दे० 'बख्शना'।

बगाⓅ†—पु० जामा, बागा। Ⓟ बगला।

बगानाⓅ†—सक० [बगना का प्रे०] टहलाना, घुमना। अक० भागना, जल्दी जल्दी जाना।

बगार—पु० वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी जाती हैं, घाटी।

बगारना—सक० [अक० बगरना] फैलाना, बिखेरना। दे० 'बगराना।

बगारौ—पु० प्रसार, प्रभाव। ... 'बैरि बसत जु कीन्ह बगारौ' (जगद्विनोद ३०८)।

बगावत—स्त्री० [अ०] बागी होने का भाव। बलवा। राजद्रोह।

बगियाⓅ†—वि० बगीचा, उपवन, छोटा बाग।

बगीचा—पु० वाटिका, छोटा बाग।

बगुला—पु० दे० 'बगला'।

बगूला—पुं० वह वायु जो एक ही स्थान पर भँवर सी घूमती हुई दिखाई देती है, बवंडर।

बगेदना†—सक० धक्का देकर गिराना या हटाना, भगाना। विचलित करना।

बगेरी—स्त्री० खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया, बघेरा।

बगैर—अव्य० [अ०] बिना।

बग्गी, बग्घी—स्त्री० चार पहियों की पाटनदार एक या दो घोड़े की गाड़ी।

बघंबर—पु० बाघ की खाल जिसपर साधु लोग बैठते हैं।

बघ—पु० 'बाघ' का के० समा० में प्रयुक्त रूप। ⊙छाला = स्त्री० दे० 'बघंबर'। ⊙नख ⊙नखा = पुं० एक प्रकार का हथियार जिसमें बाघ के नखों के समान चिपटे टेढ़े काँटे निकले रहते हैं, शेरपंजा। एक आभूषण जिसमें बाघ के नाखून चाँदी या सोने के मढ़े होते हैं। ⊙नखना Ⓟ = पुं० एक आभूषण जिसमें बाघ के नाखून चाँदी या सोने में मढ़े होते हैं। ⊙नहाँ = पु० दे० 'बघनखा'। ⊙नहियाँⓅ† = स्त्री० एक आभूषण जिसमें बाघ के नाखून चाँदी या सोने में मढ़े होते हैं। ⊙नाⓅ = दे० 'बघनखा'।

बघरूरा†—पु० दे० 'बगूला'।

बघार—पु० वह मसाला जो बघारते समय घी में डाला जाय, छौंक। ⊙बघारना = सक० छौंकना, तड़का देना। बिना मौके या आवश्यकता से अधिक बोलना। मु०—शेखी~ = बढ़ बढ़कर बातें करना।

बघूरा—पु० दे 'बगूला'।

बघूली—स्त्री० बघनखा।

बच(पु)—पु० वचन, वाक्य। स्त्री०एक प्रचात का पौधा जिसकी जड और पत्तियाँ दवा के काम आती है।
बचका—पु० एक प्रकार का पकवान।
बचकाना—वि० बच्चो के योग्य। बच्चो का सा।
बचत—स्त्री० बचाव, रक्षा। बचा हुआ अंश, शेष। लाभ, मुनाफा।
बचन(पु)†—पु० वाणी, वचन। मु०~हारना = प्रतिज्ञाबद्ध होना, बात हारना। बचना—अक० कष्ट या विपत्ति आदि से अलग रहना, रक्षित होना। किसी बुरी बात से अलग रहना। छूट जाना, रह जाना। बाकी रहना। दूर या अलग रहना। सक० कहना।
बचपन—पु० लडकपन। बच्चा होने का भाव।
बचवैया(पु)‡—पु० बचानेवाला, रक्षक।
बचा(पु)†—पु० लडका, बालक।
बचाना—सक० [अक० बचना] रक्षा करना। प्रभावित न होने देना। छिपाना, चुराना। अलग रखना। तरह देना, छोड देना। बचाव—पु० बचने का भाव, रक्ष। बचावन—पु० बचाने का कार्य।
बच्चा—पु०[फा०]नवजात शिशु। लडका। वि० अज्ञान। छोटा या थोडे दिनो का। ⊙दान = पु० गर्भाशय। ⊙दानी = स्त्री० [फा० + हिं०] दे० 'बच्चादान'। मु०~देना = प्रसव करना। बच्चो का खेल = सहज काम।
बच्ची—स्त्री० पाजेब आदि का घुंघरू। छोटी लडकी। होंठ के नीचे बीच मे जमा हुआ बाल। छत या छाजन मे बडी घोडिया के नीचे बीचे मे जमा हुआ बाल। छत या छाजन मे बडी घोडिया के नीचे लगाई जानेवाली छोटी घोडिया।
बच्छ—पु० बच्चा, बेटा। बाप का बच्चा, बछडा। बच्छल(पु)†—वि० माता पिता के समान प्यार करनेवाला, वत्सल।
बच्छस(पु)†—पु० छाती।
बच्छा†—पु० गाय का बच्चा, बछडा।
बछ(पु)†—पु० दे० 'बछडा'।
बछड़ा—पु० गाय का बच्चा।
बछनाग—पु० एक स्थावर विष। यह नेपाल मे होनेवाली एक पौधे की जड़ है तेलिया।
बछरा(पु)—पुं० दे० 'बछडा'।
बछरू†—पु० दे० 'बछडा'।
बछल(पु)†—वि० दे० 'वत्सल'।
बछवा‡—पु० दे० 'बछडा'।
बछस्थल(पु)—पुं० दे० 'वक्षस्थल'।
बछेड़ा—पु० घोडे का बच्चा।
बछेरू—पुं० दे० 'बछडा'।
बजवी—पुं० बाजा बजानेवाला, बजनियाँ।
बजकना—अक० दे० 'बजबजाना'।
बजट—पु० [अ०] आयव्यय का अनुमान-पत्र, आयव्ययक।
बजड़ा—पुं० दे० 'बजरा'।
बजना—पुं० वह जो बजता हो, बाजा। वि० बजनेवाला। अक० किसी प्रकार के आघात या बाजे आदि मे शब्द उत्पन्न होना। इस प्रकार का पडना या आघात होना कि शब्द उत्पन्न हो, प्रहार होना। शास्त्रो का चलना। अडना, जिद करना। प्रसिद्ध होना। बजनियाँ—पु० बाजा बजानेवाला। बजनी—वि० जो बजता हो। स्त्री० हाथापाई, उठापटक।
बजबजाना—अक० तरल पदार्थ का सडकर बुलबुले छोडना। छोटे कीडो का बहुत अधिक सख्या मे रेंगना।
बजमारा(पु)†—वि० वज्र से मारा हुआ (प्राय स्त्रियो द्वारा प्रयुक्त एक गाली या शाप), दुष्ट।
बजरग(पु)—वि० वज्र के समान दृढ शरीर-वाला। ⊙बली = पुं० हनुमान्- महा-वीर।
बजर(पु)†—पु० दे० 'वज्र'। ⊙अग(पु) = हनुमान्। ⊙बट्टू = पु० [हिं०] एक वृक्ष के फल का दाना या बीज जिसकी माला बच्चो को नजर से बचाने के लिये पहनाते हैं। एक लता जिसकी फलियाँ तरकारी का काम देती हैं।
बजरा—पु० एक प्रकार की बडी और पटी हुई नाव। पु० दे० 'बजरा'।
बजरागि(पु)—स्त्री० दे० 'बिजली'।

बजरी†—स्त्री॰ ककड के छोटे टुकडे, कंकडी। श्रोला। किले श्रादि की दीवारो के ऊपर छोटा नुमायशी कँगूरा। दे॰ 'वाजरा'।

बजवाई—स्त्री॰ वजवाने की मजदूरी। **वजवैया†**—वि॰ वजानेवाला।

बजहाई(पु)—स्त्री॰ एक प्रकार की गाली या तिरस्कार का शब्द, दुष्टता या वदमाशी।

बजा—वि॰ [फा॰] उचित, ठीक। मु॰ लाना = पूरा करना, पालन करना। करना।

बजागि(पु)†—स्त्री॰ वज्र की आग, विद्युत्।

बजाज—पु॰ [अ॰] कपडा वेचनेवाला।

बजाजा—पु॰ [फा॰] वजाजो की दूकानें।

बजाजी—स्त्री॰ [फा॰] वजाज का काम।

बजाना—सक॰ [अक॰ वजना] वाजे आदि से शब्द उत्पन्न करना। चोट पहुँचाकर आवाज निकालना। किसी चीज से मारना। पूरा करना। मु॰—~ठोकना = देख भालकर भली भाँति जाँचना। वजाकर = खुल्लमखुल्ला, डका पीटकर।

बजाय—अव्य॰ [फा॰] स्थान पर, वदले मे।

बजार(पु)‡—पु॰ दे॰ 'वाजार'। **वजारी**—वि॰ वाजार सवधी, वाजारू। साधारण।

बजूखा—पु॰ दे॰ 'विजूखा'।

बज्जर(पु)†—पुं॰ दे॰ 'वज्र'।

बझना(पु)†—अक॰ वंधन मे पडना, वँधना। उलझना, फँसना। हठ करना। **बझाना**(पु)‡—सक॰ [अक॰ 'वझना'] उलझाना फसाना। **बझाव**—पु॰ उलझाव, वधन। **बझावना**(पु)‡—सक॰ दे॰ 'वझाना'। **बझावट**—स्त्री॰ दे॰ 'वझाव'।

बट—पु॰ दे॰ 'वट'। 'वडा' नाम का पकवान, वरा। गोला, गोल वस्तु। वट्टा, लोढिया। वटखरा। वटाई, रस्सी का वल। मार्ग, रास्ता। ⊙ना = सक॰ कई तागो या तारो को एक साथ मिलाकर घुमाना जिसमे वे मिलकर एक ही जायँ। अक॰ सिल पर रखकर पीसा जाना, पिसना।

बटई—स्त्री॰ वटेर चिडिया।

बटखरा—पु॰ पत्थर, पीतल, लोहे आदि का वह टुकडा जो वस्तुओ के तौलने के काम आता है, वाट।

बटन—स्त्री॰ वटने या ऐंठने की क्रिया या भाव ऐंडन। पु॰ [अँ॰] पहनने के कपडो मे चिपटे आकार की कडी गोल घुडी। स्विच अथवा घुडी जिसके दवाने से यत्र या बिजली आदि चालू या वद होती है।

बटना—पु॰ सरसो, चिरौंजी आदि का लेप जो शरीर पर मला जाता है, उवटन।

बटपरा(पु)†—**बटपार, बटमार**—पु॰ मार्ग में मारकर छीन लेनेवाला, ठग, डाकू।

बटला—पु॰ वडी वटलोई, देग।

बटली, बटलोई—स्त्री॰ दाल, चावल आदि पकाने का चौडे मुँह का वरतन, पतीली।

बटवा(पु)—पु॰ दे॰ 'वटुवा'।

बटवार—पु॰ परहरेदार। रास्ते का कर उगाहनेवाला।

बटा(पु)—पुं॰ गोल वस्तु। गेंद। रोडा, ढेला। वटोही।

बटाई—स्त्री॰ बटने की क्रिया, भाव या मजदूरी। दे॰ 'वँटाई'।

बटाऊ—पु॰ वाट चलनेवाला, मुसाफिर। मु॰~होना = चलता होना, चल देना।

बटाक(पु)‡—वि॰ वडा, ऊँचा।

बटाना†—अक॰ वद हो जाना, जारी न रहना। 'सात दिवस जल वरषि बटान्यो आवत चल्यो व्रजहि अतावत' (सूर॰)।

बटिया—स्त्री॰ छोटा गोला। छोटा वट्टा, लोढिया।

बटी—स्त्री॰ गोली। 'वड़ा' नाम का पकवान। (पु)वाटिका, उपवन।

बटुआ—पु॰ दे॰ 'वटुक'।

बटुरना†—अक॰ सिमटना, सरककर थोडे स्थान मे होना। इकट्ठा होना।

बटुवा—पु॰ खानेदार थैली (पैसे आदि रखने की)। वडी वटलोई या देग।

बटेर—स्त्री॰ लवा की तरह की एक छोटी चिडिया। ⊙बाज = पुं॰ [फा॰] वटेर पालने या लड़ानेवाला।

बटोर—पु॰ बहुत से आदमियो का इकट्ठा होना, जमावडा। वस्तुओ का ढेर। ⊙**ना**—सक॰ [अक॰ वटुरना] बिखरी

हुई वस्तुओ को समेटकर एक स्थान पर करना, समेटना। चुनकर एकत्र करना।
बटोरन--स्त्री० इधर उधर से झाड बटोर कर इकट्ठा किया हुआ ढेर। कूडे करकट का ढेर।
बटोही--पु० रास्ता चलनेवाला, पथिक।
बट्ट--पुं० बट्टा गाला। गेंद।
बट्टा--पु० कूटने या पीसने का पत्थर, लोढा। पत्थर आदि का गोल टुकडा। छोटा गोल डिब्बा। वह कमी जो व्यवहार या लेन देन मे किसी वस्तु के मूल्य मे हो जाती है। दलाली, दस्तूरी। खोटे सिक्के, धातु आदि के बेचने मे वह कमी जो उसके पूरे मूल्य मे हो जाती है। टोटा, घाटा। ⊙खाता=पु० डूबी हुई रकम का लेखा या बही। ⊙ढाल=वि० खूब समतल और चिकना। बट्टेबाज=वि० [फा०] जादूगर। धूर्त, चालाक। मु०~लगना=दाग या कलक लगना। बट्टी--स्त्री० छोटा बट्टा, गोल छोटा टुकडा। कूटने पीसने का पत्थर, लोढिया। बडी टिकिया। बट्टू--पुं० दे० 'बजरबट्टू'। बोडा, लोबिया।
बड़--स्त्री० बकवाद। पुं० बरगद का पेड। †वि० दे० 'बडा'। ⊙बोल, ⊙बोला=वि० बढ बढकर बातें करनेवाला, सीटनेवाला। ⊙भाग=वि० बडे भाग्यवाला, भाग्यवान्। ⊙भागी=वि० बहुत भाग्यशाली।
बड़क--स्त्री० डींग, शेखी। दे० 'बड'।
बडप्पन--पु० बडाई, श्रेष्ठ या बडा होने का भाव।
बड़बड़--स्त्री० बकवाद, प्रलाप। बड़बडाना--अक० बकबक करना, बकवाद करना। कोई बात बुरी लगने पर मुँह मे ही कुछ बोलना। बड़बडिया--वि० बकवादी।
बड़बेरी--स्त्री० दे० 'झडबेरी'।
बडरा(पु)--वि० [वि० स्त्री० बडरी] बडा, विशाल।
बड़वाग्नि--पुं० [सं०] समुद्राग्नि, समुद्र के भीतर की आग या ताप। बडवानल--पुं० दे० 'बडवाग्नि'।
बड़वार†--वि० दे० 'बाडा'।
बड़हन†--पु० एक प्रकार का धान। वि० दे० 'बडा'।
बड़हल--पुं० एक बडा पेड जिसके फल पकने पर अमरूद के बराबर गेरुए रग के पर बडे बेडौल होते हैं।
बड़हार--पु० विवाह के पीछे बरातियो की पक्की ज्योनार।
बड़ा--पु० एक पकवान जो मसाला मिली हुई पीठी की गोल टिकियो को तलकर बनाया जाता है। वि० खूब लबा चौडा, विशाल। जिसकी उम्र ज्यादा हो। अधिक परिमाण, विस्तार या अवस्था का। श्रेष्ठ, बुजुर्ग, महत्व का, भारी। बढकर, ज्यादा। ⊙ई=स्त्री० परिणाम या विस्तार का आधिक्य बडप्पन श्रेष्ठता। परिणाम या विस्तार। महिमा, प्रसंशा। ⊙दिन=पु० २५ दिसंबर का दिन जो ईसाइयो का त्योहार है। इसी तिथि को ईसामसीह का जन्म हुआ था। ⊙घर=कैदखाना, कारागार। मु०~देना=आदर करना। मारना=शेखी हाँकना।
बडानो(पु)--वि० बलवान्, बली।
बडी--स्त्री० आलू, पेठा आदि मिली हुई पीठी की छोटी छोटी सुखाई हुई टिकिया, बरी। वि० स्त्री० दे० 'बडा'। ⊙माता=स्त्री० शीतला, चेचक।
बड़ेरर--पु० बवडर, चक्रवात।
बड़ेरा(पु)†--वि० बृहत्, महान्। प्रधान, मुख्य। छाजन मे बीच की लकडी।
बडौना(पु)†--पु० प्रशसा।
बड्डी†--वि० स्त्री० बडी। स्त्री० एक खेल, दे० 'कबड्डी'।
बढ़--स्त्री० दे० 'बढती'।
बढ़ई--पुं० काठ को गढकर अनेक प्रकार के सामान बनानेवाला।
बढ़ती--स्त्री० तोल या गिनती में अधिकता। धन, सपत्ति आदि का बढना, उन्नति, समृद्धि।

बढ़ना—अक० विस्तार या परिमाण मे अधिक होना, जैसे, बच्चे का बढना, नदी का बढ़ना। गिनती या नाप तौल मे ज्यादा होना। मर्यादा, अधिकार, विद्या वृद्धि, सुख सपत्ति आदि मे अधिक होना, तरक्की करना। किसी स्थान से आगे जाना, चलना। किसी से किसी बात मे अधिक हो जाना। लाभ होना। दूकान आदि का समेटा जाना, बद होना चिराग का बुझाना। मु०—**बात~** = विवाद होना। मामला टेढा होना। **बढ़कर चलना** = इतराना, घमड करना।

बढ़नी—स्त्री० झाड़ू।

बढ़वन—वि० बढानेवाला।

बढ़ाई—स्त्री बढाने की क्रिया या भाव। बढाने की मजदूरी।

बढ़ाना—सक० [अक० बढना] विस्तार या परिमाण मे अधिक करना। गिनती या नाप तौल आदि में ज्यादा करना। फैलाना, लबा करना। अधिक व्यापक या तीव्र करना। तरक्की देना। आगे गमन कराना, चलाना। सस्ता बेचना। फैलाना। दुकान आदि बद करना। चिराग बुझाना। अक० समाप्त होना।

बढ़ाव—पु० बढने की क्रिया या भाव। **बढ़ावा**—पु० किसी काम की ओर मन बढानेवाली बात; प्रोत्साहन। साहस या हिम्मत दिलानेवाली बात। मु०—**बढ़ावे में आना** = उत्तेजित होकर किसी टेढे काम मे प्रवृत्त होना।

बढ़िया—वि० उत्तम, अच्छा।

बढ़ैया†—वि० बढानेवाला। बढ़नेवाला। †पुं० दे० 'बढ़ई'।

बढ़ोतरी—स्त्री० उत्तरोत्तर वृद्धि, बढ़ती। उन्नति।

बणिक्—पुं० [सं०] व्यापार, व्यवसाय करने वाला, बनिया। बेचनेवाला।

बणिज—पु० दे० 'वणिक्'।

बत—स्त्री [के० समा० मे 'बात' के लिये]। ⊙**कहाव** = पु० दे० 'बतकही'। ⊙**कही** स्त्री० बातचीत, वार्तालाप। वादविवाद। ⊙**चल** = वि० बकवादी। ⊙**बढ़ाव** = पुं० व्यर्थ बात बढाना, झगड़ा बखेड़ा बढाना। ⊙**बाती**(पु) = स्त्री० बेबात की बात, छेडछाड। ⊙**रस** = पु० बातचीत का आनद।

बतख—स्त्री० हस जाति का एक सफेद जलपक्षी।

बतर(फ़)—वि० दे० 'बदतर'।

बतरान(पु)—स्त्री० बातचीत। बोली। **बतराना**—अक० बातचीत करना। **बतरौहाँ**(पु)†—वि० बातचीत की ओर प्रवृत्त, वार्तालाप का इच्छुक।

बतलाना—सक० दे० 'बताना'।

बताना—सक० कहना, जताना। समझाना बुझाना। निर्देश करना, दिखाना। नाचने गाने मे हाथ उठाकर भाव प्रकट करना। मार पीटकर दुरुस्त करना।

बताशा—पु० दे० 'बतासा'।

बतास†—स्त्री० बात का रोग, गठिया। वायु, हवा।

बतासा—पु० एक प्रक प्रकार की मिठाई जो जो चीनी की चाशनी को टपकाकर बनाई जाती है। एक प्रकार की आतशबाजी। बुलबुला। मु० **बतासे या घुसना** = शीघ्र नष्ट होना (शाप)। क्षीण और दुर्बल होना।

बतिया—स्त्री० छोटा, कोमल और कच्चा फल।

बतियाना†—अक० बातचीत करना।

बतिआर(पु)—स्त्री० बातचीत।

बतीसी—स्त्री० दे० 'बत्तीसी'।

बतू—पुं० दे० 'कलाबत्तू'।

बतौर—क्रि० वि० [अ०] तरह पर, रीति से। सदृश, समान।

बतौरी—स्त्री० मास का उभडा हुआ अश। गुम्मड।

बत्तक—स्त्री० दे० 'बत्तख'।

बत्तिस†—वि० दे० 'बत्तीस'।

बत्ती—स्त्री० चिराग जलाने के लिये रुई या सूत का बटा हुआ लच्छा। मोमबत्ती। चिराग, प्रकाश। फलीता। पतले छड या सलाई के आकार मे लाई हुई कोई वस्तु। फूस का फूला जो छाजन मे लगाते हैं, मूठा। कपडे की वह लबी धज्जी जो घाव मे मवाद साफ करने के लिये भरते हैं।

बत्तीस—वि० जो गिनती मे तीस से दो ज्यादा हो। पु० तीस से दो अधिक की सख्या या अक, ३२। बत्तीसा—पुं० पुष्टई के बत्तीस ममालो का एक प्रकार का लड्डू। बत्तीसी—स्त्री० बत्तीस का समूह। मनुष्य के नीचे ऊपर के दाँतों की पक्ति। मु०~झड पड़ना = सब दाँत गिर पडना। ~दिखाना = दाँत दिखाना, हँसना। ~बजना = अधिक जाडे के कारण दाढो का कँपना।

बथुआ—पु० एक छोटा पौधा जिसके पत्तो का साग खाते हैं।

बद—स्त्री० गोहिया, बाघी (रोग)। पलटा, बदला। वि० [फा०] बुरा, खराब। दुष्ट, नीच। ⊙अमली = स्त्री० [अ०] राज्य का कुप्रबध, अशाति। ⊙इतजामी = स्त्री० [अ०] कुप्रबध, अव्यवस्था। ⊙कार = वि० कुकर्मी। व्यभिचारी। ⊙किस्मत = वि० [अ०] किस्मत का। ⊙खत = वि० लिखने मे जिसके अक्षर अच्छे न हो। ⊙ख्वाह = वि० बुरा चाहनेवाला, अशुभ-चिंतक। ⊙गुमान = वि० बुरा सदेह करने वाला। ⊙गो = वि० बुरी बात कहने-वाला। निंदक। ⊙चलन = वि० [हिं०] कुमार्गी, लपट। ⊙जबान = वि० गाली गलौज बकनेवाला, कटुभाषी। ⊙जात = वि० [अ०] खोटा, बुरी जाति या उत्पत्ति का। ⊙तमीज = वि० अशिष्ट, बेहूदा। ⊙तर = वि० और भी बुरा। ⊙दियानती = स्त्री० बेइमानी, दगा, विश्वासघाती ⊙दुआ = स्त्री० [अ०] शाप। ⊙नसीब = वि० [अ०] अभागा। ⊙नसीबी = स्त्री० दुर्भाग्य। ⊙नाम = वि० जिसकी निंदा हो रही हो, कलंकित। ⊙नामी = स्त्री० लोक-निंदा, अपकीर्ति। ⊙नीयत = वि० [अ०] बुरी नियतवाला। बेईमान। ⊙नीयती = स्त्री० बेइमानी, दगा। ⊙नुमा = वि० बदसूरत, कुरूप। ⊙बख्त = वि० अभागा। ⊙परहेज = वि० जो ठीक तरह से परहेज न करे, खाने पीने आदि मे संयम न रखनेवाला। ⊙बू = स्त्री० दुर्गंध बुरी गध। ⊙मजा = वि० बेस्वाद। आनदरहित। ⊙मस्त = वि० नशे मे चूर, उन्मत्त। ⊙माश = वि० बुरे कर्म से जीविका करनेवाला। दुष्ट, लुच्चा। दुराचारी। ⊙माशी = स्त्री० दुष्कर्म। दुष्टता, पाजीपन। व्यभिचार। ⊙मिजाज = वि० दुस्वभाव, खोटी प्रकृति का। चिडचिडा। ⊙रंग = वि० भद्दे रग का। जिसका रग बिगड गया हो, विवर्ण। ⊙राह = वि० कुमार्गी, बुरी राह पर चलनेवाला। दुष्ट, बुरा। ⊙रोब = [अ०] जिसका कुछ रोब न हो। तुच्छ। भद्दा। ⊙शकल = वि० भद्दा, कुरूप। ⊙सलूक = बुरा व्यवहार करनेवाला, अशिष्ट। ⊙सूरत = वि० कुरूप, बेडौल ⊙हजमी = स्त्री० अपच, अजीर्ण। ⊙हवास = वि० बेहोश। व्याकुल, उद्विग्न।

बदना⑤सक० कहना, वर्णन करना। मान लेना, स्वीकार करना। नियत करना, ठहराना। शर्त लगाना, होड लगाना, बडा या महत्व का मानना। मु०—बद-कर (कोई काम करना) = जानबूझ-कर पूरे हठ के साथ। ललकार कर। ~बदा होन = भाग्य मे लिखा होना।

बदन—पुं० मुख। [फा०] शरीर, देह।

बदर—पुं० दे० 'बादर' पुं० [सं०] बेर का पेड या फल। क्रि० वि० [फा०] बाहर। मु०—~निकालना = जिम्मे रकम निका-लना। हिसाब मे गड़ब रकम अलग करना।

बदरा†—पुं० बादल, मेघ।

बदरि—पु० [सं०] बेर का पौधा या फल। स्त्री० दे० 'बदली'।

बदरिकाश्रम—पुं० [स०] तीर्थविशेष जो हिमालय पर है। यहाँ नर नारायण तथा व्यास का आश्रम है।

बदरिया†—स्त्री० दे० 'बदली'।

बदरीनारायण—पु० [सं०] बदरिकाश्रम के प्रधान देवता।

बदरौंह†—वि० कुमार्गी, बदचलन। †पु० बदली का आभास।

बदल––पु० [अ०] एक के स्थान पर दूसरा होना, हेरफेर। पलटा, एवज। **बदलना**–अक० जैसा रहा हो, उससे भिन्न हो जाना। एक के स्थान पर दूसरा हो जाना। एक जगह से दूसरी जगह तैनात होना। सक० जैसा रहा हो, उससे भिन्न करना। एक वस्तु के स्थान की पूर्ति दूसरी वस्तु से करना। विनिमय करना। मु०––**बात~~** = पहले एक बात कहकर फिर उसमे विरुद्ध दूसरी बात कहना।

बदला–पु० परस्पर लेने और देने का व्यवहार, विनिमय। एक वस्तु की हानि या स्थान की पूर्ति के लिये उपस्थित की हुई दूसरी वस्तु। एक पक्ष के किसी व्यवहार के उत्तर मे दूसरे पक्ष का वैसा ही व्यवहार, प्रतिशोध। नतीजा। मु० ~**लेना** = किसी के बुराई करने पर उसके साथ बुराई करना।

बदलान––सक० [बदलना का प्रे०] बदलने का काम कराना।

बदली––स्त्री० फैलकर छाया हुआ बादल। एक के स्थान पर दूसरी वस्तु की उपस्थिति। एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति, तबादला।

बदलौवल––स्त्री० अदलबदल, हेरफेर।

बदस्तूर––क्रि० वि० [फा०] जैसा था या रहता है वैसा ही, ज्यो का त्यो।

बदा––वि० भाग्य मे लिखा हुआ।

बदान––स्त्री० बदे जाने की क्रिया या भाव, पहले से किसी बात का प्रतिज्ञापूर्वक स्थिर किया जाना।

बदाबदी––स्त्री० दो पक्षो की एक दूसरे के विरुद्ध प्रतिज्ञा या हठ, लाँग डाँट।

बदाम––पु० दे० 'बादाम'।

बदिⓅ†––स्त्री० पलटा, बदला। अव्य० बदले मे, एवज मे। लिये, वास्ते।

बदी––स्त्री० अँधेरा पाख। स्त्री० [फा०] बुराई, अपकार।

बदूखⓅ––स्त्री० दे० 'बंदूक'।

बदैयाⓅ––वि० नियत करनेवाला, ठहरानेवाला।

बदौलत––क्रि० वि० [फा०] द्वारा, कृपा से। कारण से।

बद्दर, बद्दल†––पु० 'बादल'।

बद्ध––वि० [सं०] बँधा हुआ। ससार के बधन मे पडा हुआ, जो मुक्त न हो। जिसके लिये कोई रोक हो। जो किसी वह हिसाब के भीतर रखा गया हो। निर्धारित, ठहराया हुआ। ⊙**कोष्ठ** = पु० मल अच्छी तरह न निकलने का रोग, कब्ज। ⊙**परिकर** = वि० कमर बाँधे हुए, तैयार। **बद्धांजलि**––वि० जो हाथ जोडे हुए हो।

बद्धी––स्त्री० वह जिससे कुछ कसें या बाँधे, डोरी। चार लडो का एक गहना।

बध––पु० [सं०] हनन, हत्या।

बधना––सक० मार डालना, हत्या करना। पु० मुसलमानो का मिट्टी या धातु का टोटीदार लोटा।

बधाना––सक० [बधना का प्रे०] बध कराना, मरवाना।

बधाई––स्त्री० वृद्धि, बढ़ती। मंगलाचार। आनद, मगल, उत्सव। किसी शुभ अवसर पर आनंद प्रकट करनेवाला वचन या संदेशा, मुबारकबाद।

बधाया––पु० दे० 'बधाई'।

बधावन, बधावना, बधावरा––पु० दे० 'बधावा'।

बधावा––पु० बधाई। वह उपहार जो सबंधियो या इष्ट मित्रो के यहाँ से मगल अवसरो पर आता है। आनद मगल के अवसर का गाना बजाना, मगलाचार।

बधिक––पु० बध करनेवाला, हत्यारा। जल्लाद। व्याध, बहेलिया।

बधिया––पुं० वह बैल या पशु जो अडकोश निकालकर षड कर दिया गया हो, खस्सी। मु०~**बैठना** = बहुत हानि होना।

बधिर––वि० [सं०] जिसमे सुनने की शक्ति न हो, बहरा।

बधू––स्त्री० दे० 'वधू'।

बधूटी—स्त्री० पुत्र की स्त्री। नई आई हुई बहू। सुहागिन स्त्री।

बधूरा†—पु० बगूला, बवडर।

बधैया(पु) = स्त्री० दे० 'बधाई'।

बध्य—वि० [सं०] मार डालने के योग्य।

बन—पुं० जगल, अरण्य। समूह। जल, पानी। बगीचा, बाग। कपास का पौधा। दे० 'वन'। ⊙कडा = जगल मे चरनेवाले गाय बैलो के गोबर के आप से आप सूख जाने से बना हुआ कडा। ⊙कट = पु० एक प्रकार का बाँस। ⊙कटा = वि० जगली। ⊙कर = पुं० जगल मे होनेवाले पदार्थों अर्थात् लकडी या घास आदि पर लिया जानेवाला कर। ⊙खड = पुं० जगली प्रदेश। ⊙खडी = स्त्री० वन का कोई भाग। छोटा सा वन। पु० वनवासी। ⊙चर = पु० दे० 'वनचर'। ⊙चारी = वि० दे० 'वनचारी'। ⊙जात = पु० वनज, कमल। ⊙ज्योत्स्ना = स्त्री० माधवीलता। ⊙ताई(पु)† = स्त्री० वन की सघनता या भयकरता। ⊙तुलसी = स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्ती और मजरी तुलसी की सी होती है, ववई। ⊙द(पु) = पुं० बादल। ⊙दाम = स्त्री० वनमाला। ⊙देवी = स्त्री० किसी वन की अधिष्ठात्री देवी। ⊙धातु = स्त्री० गेरू या और कोई रंगीन मिट्टी। ⊙पट = पुं० वृक्षो की छाल आदि से बनाया हुआ कपडा। ⊙बास = पु० जगल मे रहना। बन मे बसने की अवस्था या क्रिया। प्राचीन काल का देशनिकाले का दड। ⊙बासी = पु० वह जो बन मे बसे। जगली। ⊙बाहन = पु० नाव। ⊙बिलाव = पु० बिल्ली की जाति का, पर उससे कुछ बडा, एक जगली जतु। ⊙मानुष = पु० मनुष्य से मिलता जुलता कोई जगली जतु (जैसे गोरिल्ला, चिंपैंजी आदि)। जगली, असभ्य या गँवार आदमी (परिहास)। ⊙माला = स्त्री० तुलसी, कुद, मदार, परजाता और कमल इन पाँच चीजो की बनी हुई माला। गले से पैरो तक लटकनेवाली माला। ⊙माली = पुं० वनमाला धारण करनेवाला व्यक्ति। ⊙रखा = पुं० जगल की रखवाली करनेवाला। बहेलियो की एक जाति। ⊙राज, ⊙राय (पु) = पुं० सिंह, शेर। बहुत बडा पेड। वृंदावन। ⊙रुह = पुं० जगली पेड। कमल। ⊙बसन(पु) = पु० वृक्षो की छाल का बना हुआ कपडा। ⊙स्थली = स्त्री० जगल का कोई भाग।

बनक(पु)‡—स्त्री० सजधज, सजावट। बाना, वेश, भेस।

बनगरी—स्त्री० एक प्रकार की मछली।

बनज—पु० दे० 'वनज'। वाणिज्य, व्यापार। ⊙ना(पु) = अक० व्यापार या रोजगार करना। बनजारा—पु० वह व्यक्ति जो बैलो पर अन्न लादकर बेचने के लिये एक देश से दूसरे देश को जाता है। व्यापारी। बनजी(पु)†—पु० व्यापार, रोजगार। व्यापारी।

बनन—स्त्री० रचना, बनावट। अनुकूलता, मेल।

बनना—अक० तैयार होना, रचा जाना। काम मे आने के योग्य होना। जैसा चाहिए, वैसा होना। किसी एक पदार्थ का रूप परिवर्तित करके दूसरा पदार्थ हो जाना। किसी दूसरे प्रकार का भाव या सबध रखनेवाला हो जाना। कोई विशेष पद, मर्यादा या अधिकार प्राप्त करना। अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचना। वसूल होना। मरम्मत होना। हो सकना। निभना, पटना। अच्छा, सुदर या स्वादिष्ट होना। सुअवसर मिलना। स्वरूप धारण करना। मूर्ख ठहरना, उपहासास्पद होना। अपने आपको अधिक योग्य या गभीर प्रमाणित करना। सजावट करना। मु०—बनकर या बनठनकर = अच्छी तरह, भली भाँति। बना रहना = जीता रहना। उपस्थित रहना, ठहरा रहना।

बननि(पु)†—स्त्री० बनावत। बनावट सिंगार।

बनपाती(पु)†—स्त्री० दे० 'वनस्पति'।

बनफसा—पु० [फा०] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी जड, फूल और पत्तियाँ औषध के काम मे आती हैं।
बनर—पु० एक प्रकार का अस्त्र।
बनरा(पु)†—पुं० दे० 'वदर'। वर, दूल्हा। विवाह के समय का एक प्रकार का गीत। बनरी—स्त्री० नववधू।
बनवना(पु)†—सक० दे० 'बनाना'।
बनवारी—पु० श्रीकृष्ण।
बनातर—पुं० दूसरा वन, अन्य वन।
बना—पुं० दूल्हा, वर। दडकला नामक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १०,८ और १४ मात्राओ पर यति और विराम के क्रम से कुल ३२ मात्राएँ होती हैं और अत में सगण होता है।
बनाइ (य)—क्रि० वि० बिलकुल, अत्यंत। भली भाँति।
बनाउरि(पु)†—स्त्री० दे० 'बाणावली'।
बनाग्नि—स्त्री० दावानल।
बनात—स्त्री० एक प्रकार का बढिया ऊनी कपडा।
बनाना—सक० [अक० बनना] रूप या अस्तित्व देना, रचना। रूप परिवर्तित करके काम मे आने लायक करना। ठीक दशा या रूप मे लाना। एक पदार्थ के रूप को बदलकर दूसरा पदार्थ तैयार करना। दूसरे प्रकार का भाव या सबध रखनेवाला कर देना। कोई विशेष पद मर्यादा या शक्ति आदि प्रदान करना। अच्छी या उन्नत दशा मे पहुँचाना। उपार्जित करना, वसूल करना, प्राप्त करना। मरम्मत करना। मूर्ख ठहराना, उपहासास्पद करना। मु०—बनाकर या बनाठनाकर = खूब अच्छी तरह।
बनाफर—पु० क्षत्रियो की एक जाति।
बनाबत, बनाबनत(पु)†—पु० विवाह करने के विचार से किसी लडके और लडकी की जन्मपत्रियो का मिलान।
बनाम—अव्य० [फा०] नाम पर, नाम से।
बनाय†—क्रि० वि० बिलकुल। अच्छी तरह से।
बनार—पु० एक प्राचीन राज्य जो वर्तमान काशी की उत्तरी सीमा पर था।
बनाव—पु० बनावट, रचना। सजावट। तकीब, तदबीर।
बनावट—स्त्री० बनने या बनाने का भाव, रचना। आडबर। बनावटी—वि० बनाया हुआ, नकली।
बनावनहारा—पु० रचयिता। वह जो बिगडे हुए को बनाए।
बनावरि—स्त्री० दे० 'बनाउरि'।
बनासपती, बनासपाती—स्त्री० जडी बूटी, पत्र, पुष्प इत्यादि। घास, साग पात इत्यादि मूँगफली, बिनौले आदि से तैयार कर जमाया हुआ तेल।
बनि(पु)†—वि० समस्त, सब।
बनिक(पु)—पु० सजधज।
बनिज—पु० व्यापार, रोजगार। व्यापार की वस्तु। ०ना = सक० व्यापार करना, खरीदना और बेचना। अपने अधीन कर लेना।
बनिजारिन, बनिजारी(पु)†—स्त्री० बनजारा जाति की स्त्री।
बनित(पु)†—स्त्री० वेष, साजबाज।
बनिता—स्त्री० स्त्री, औरत। पत्नी।
बनिया—पु० व्यापारी, वैश्य। आटा, दाल आदि बेचनेवाला, मोदी। बनियाइन, बनियान—स्त्री० बनिया की स्त्री। जुर्राब की बुनावट की कुरती या बडी जो शरीर से चिपकी रहती है, गंजी।
बनिस्वत—अव्य० [फा०] अपेक्षा, मुकाबले मे।
बनी—स्त्री० बनस्थली, वन का एक टुकडा। वाटिका, बाग। नववधू, दुलहिन। स्त्री, नायिका। पु० बगिया।
बनीनी—स्त्री० दे० 'बनैनी'।
बनीर(पु)—पु० बेंत।
बनेठी—स्त्री० पटेबाजो की वह लबी लाठी जिसके दोनो सिरो पर गोल लट्टू लगे रहते हैं।
बनैनी—स्त्री० बनिए की स्त्री, वैश्य स्त्री।
बनैला—वि० जगली, वन्य।

बनोवास(पु)†—पु० दे० 'वनवास'।

बनौक्स—वि० वनवासी।

बनौटी—वि० कपास के फूल का सा, कपासी।

बनौरी‡—स्त्री० वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला।

बनौवा—वि० दे० 'बनावटी'।

बन्हि—स्त्री० दे० 'वह्नि'।

बप(पु)†—पु० (के० समा० मे) बाप, पिता। ⊙**मार**=वि० वह जो अपने पिता की हत्या करे, पितृघाती। सब के साथ धोखा देनेवाला।

बपना(पु)†—सक० बीज बोना।

बपतिस्मा—पु० यहूदियो का एक बडा पुराना धार्मिक सस्कार जिसके अनुसार व्यक्ति की शुद्धि के लिये उसपर जल छिडका जाता है या उसको नहलाया जाता है। ईसाइयो मे धार्मिक दीक्षा के समय यह सस्कार किया जाता है जिसके साथ प्राय नामकरण भी होता है।

बपु(पु)—पु० शरीर, देह। अवतार। रूप।

बपुख(पु)—पु० शरीर, देह।

बपुरा†—वि० बेचारा, गरीब।

बपौती—स्त्री० बाप से पाई हुई जायदाद।

बप्पा†—पु० पिता, बाप।

बफारा—पु० औषधमिश्रित जल की भाप से रोगी अग को सेंकना। **बफौरी**—स्त्री० भाप से पकी हुई बरी।

बबर—पु० [फा०] बर्बरी देश का शेर, बड़ा शेर, सिंह।

बबा—पु० दे 'बाबा'।

बबुआ†—पु० बेटे या दामाद के लिये प्यार का सबोधन शब्द (पूरब)। जमीदार, रईस। मिट्टी का छोटा खिलौना।

बबूल—पु० मझोले कद का एक प्रसिद्ध कांटेदार पेड।

बबूला—पु० दे० 'बगूला'। दे० 'बुलबुला'।

बभूत—स्त्री० दे० 'भभूत' या 'विभूति'।

बम—पु० बग्घी, फिटन आदि मे आगे की ओर लगा हुआ वह लबा बांस जिसके साथ घोडे जोते जाते है। जबरदस्त विस्फोटक या दाहक पदार्थ, धुआँ या गैस आदि से भरा हुआ गोला जो किसी शस्त्र से फेंके जाने, हाथो से रखे जाने या हवाई जहाज से गिराने के धक्के से अथवा उसमे लगाई हुई घडी मे निर्धारित समय पर भडकता है। शिव के उपासको का 'बम' 'बम' शब्द। ⊙**चख**=स्त्री० शोरगुल। लडाई झगडा, बकवाद। ⊙**बाज**=पु० [फा०] शत्रुओ पर बम के गोले फेंकनेवाला। ⊙**मार**=वि० बम मारनेवाला। पु० एक प्रकार का बडा हवाई जहाज जिससे शत्रुओ पर बम के गोले फेंके जाते हैं। **मु०**~**बोलना** या ~**बोल जाना**=शक्ति, धन आदि की समाप्ति हो जाना, कुछ न रह जाना।

बमकना—अक० बहुत शेखी हांकना, डींग हांकना।

बमना(पु)†—सक० मुँह से उगलना, कै करना।

बमपुलिस—पु० दे० 'बपुलिस'।

बमीठा—पु० दे० 'बांबी'।

बमुकाबला—क्रि० वि० [फा०] मुकाबले मे, सामने। मुकाबले पर, विरुद्ध।

बमूजिब—क्रि० वि० [फा०] अनुसार, मुताबिक।

बम्हनी—स्त्री० छिपकिली की तरह पतला और आकार मे प्रायः छिपकली का आधा एक जाति का कीडा जिसके शरीर पर कई रगो की सुदर धारियाँ होती हैं। आँख का एक रोग, बिलनी।

बयन(पु)†—पु० बात, वचन।

बयना—पु० दे० 'बैना'। सक० बोना, बीज लगाना। वर्णन करना, कहना।

बयनी(पु)†—वि० बोलनेवाली, वाणीवाली

बयस—स्त्री० दे० 'वय'।

बयससिरोमनि(पु)†—पु० युवावस्था, जवानी

बया—पु० गौरैया के आकार और रग का एक प्रसिद्ध पक्षी। वह जो अनाज तौलने का काम करता हो।

बयान—पु० [फा०] बखान, जिक्र हाल, विवरण।

बयाना--पुं० किसी काम के लिये या किसी चीज की खरीदारी के लिये दिए जानेवाले पुरस्कार का कुछ अंश जो बातचीत पक्की करने के लिये दिया जाय, पेशगी।

बयाबान--पुं० दे० 'वियाबान'।

बयार, बयारि(पु)†--स्त्री० हवा। **बयारी**--स्त्री० दे० 'ब्यालू'। दे० 'बयारि'।

बयाला†--पुं० दीवार का वह छेद जिससे झाँककर बाहर की ओर की वस्तु देखी जा सके। ताख, आला। गढ़ों में वह स्थान जहाँ तोपें लगी रहती हैं।

बरंगा--पुं० वह पटिया या कड़ी जिससे छत पाटते हैं।

बर--पुं० वह जिसका विवाह होता हो, दुल्हा। आशीर्वादसूचक अटल वचन। देवता या बड़े से माँगा जानेवाला मनोरथ। देवता या बड़े से प्राप्त किया हुआ इच्छापूर्ति का आश्वासन या सिद्धि। बल, शक्ति। व्यापार, व्यवसाय आदि का कोई विशेष अंग (जैसे पीतल की चीजों में बरतनों का बर, मूर्तियों का बर, खिलौनों का बर)। वट वृक्ष, बरगद। रेखा, लकीर। किसी व्यापार या व्यवसाय की कोई विशेष शाखा। वि० श्रेष्ठ, अच्छा। (पु)अव्य० बरन्, बल्कि। अव्य० [फा०] ऊपर। वि० बढ़ा चढ़ा, श्रेष्ठ। पूरा, पूर्ण (आशा, कामना आदि के लिये), जैसे मुराद बर आना। मु०~आना या पाना =मुकाबले में अच्छा ठहरना। ~खाँचना = किसी विषय में बहुत दृढ़ता सूचित करना। जिद करना। ~बरना = श्रेष्ठ होना।

बरना--सक० वर या वधू के रूप में ग्रहण करना, ब्याहना। कोई काम करने के लिये किसी को चुनना या नियुक्त करना। दान देना। अक० दे० 'जलना'।

बरई†--पु० पान पैदा करने या बेचनेवाला, तमोली।

बरकंदाज--पु० [अ० + फा०] वह सिपाही जिसके पास बड़ी लाठी रहती हो। तोड़ेदार बंदूक रखनेवाला सिपाही।

बरकत--स्त्री० [अ०] किसी पदार्थ की बहुलता या अधिकता, कमी न पड़ना। लाभ, फायदा। समाप्ति, अंत, एक की संख्या (मंगल या वृद्धि की कामना से), जैसे बरकत, दो, तीन, चार, पाँच आदि। धन दौलत। प्रसाद, कृपा। मु०~उठना =बरकत न रह जाना, पूरा न पड़ना। वैभव आदि की समाप्ति या अंत आने लगना। **बरकती**--वि० जिसमें बरकत हो। बरकत संबंधी, बरकत का।

बरकना†--अक० कोई बुरी बात न होने पाना, निवारण होना। हटना, दूर रहना।

बरकरार--वि० [फा० + अ०] कायम, स्थिर। उपस्थित।

बरकाना†--अक० कोई बुरी बात न होने देना, निवारण करना। बहलाना, फुसलाना।

बरकाज--पु० विवाह।

बरख(पु)†--पु० बरस।

बरखना--अक० दे० 'बरसना'।

बरखा(पु)--स्त्री० दे० 'वर्षा'।

बरखास(पु)†--वि० दे० 'बरखास्त'।

बरखास्त--वि० [फा०] (सभा आदि) जिसका विसर्जन कर दिया गया हो। जो नौकरी से हटा या छुड़ा दिया गया हो।

बरखिलाफ--क्रि० वि० [फा० + अ०] प्रतिकूल, उलटा।

बरग(पु)--पु० दे० 'वर्ग'। दे० 'बरक'।

बरगद--पु० पीपल की जाति का घनी और ठंढी छाया का एक बड़ा वृक्ष, बड़ का पेड़।

बरछा--पुं० भाला नामक हथियार।

बरछैत--पु० बरछा चलानेवाला, भालाबर्दार।

बरजना(पु)†--अक० मना करना, रोकना। **बरजनि**(पु)†--स्त्री० मनाही। रुकावट। रोक।

बरजबान--वि० [फा०] मुखाग्र, कंठस्थ।

बरजोर--वि० [हिं० + फा०] बलवान्, जबरदस्त। अत्याचारी, बलप्रयोग करनेवाला। क्रि० वि० जबरदस्ती, बलपूर्वक। **बरजोरी**

(पु)†—स्त्री० जबरदस्ती, बलप्रयोग। क्रि० वि० जबरदस्ती से, बलपूर्वक।
बरजना—सक० दे० 'बरना'।
बरत—पु० दे० 'व्रत'। स्त्री० रस्सी। नट की रस्सी जिसपर चढ़कर वह खेल करता है।
बरतन—पुं० मिट्टी या धातु आदि की बनी वस्तु जिसमे बहुधा खाने पीने की चीजें रखे या पकाएँ, पात्र।
बरतना—अक० व्यवहार या बरताव करना। सक० काम या व्यवहार मे लाना।
बरतरफ—वि० [फा० + अ०] अलग, एक ओर। नौकरी से छुड़ाया हुआ, बरखास्त।
बरताना—सक० बाँटना।
बरताव—पु० बरतने का ढग, व्यवहार।
बरती—वि० जिसने उपवास किया या व्रत रखा हो।
बरतोर†—पुं० दे० 'बालतोड'।
बरदाइ(पु)—वि० स्त्री० वर देनेवाली।
बरदाना—सक० गौ, बकरी, घोडी आदि पशुओ का उनकी जाति के नर पशुओ से सयोग कराना, जोडा खिलाना। अक० गौ, बकरी घोडी आदि पशुओ का उनकी जाति के नर पशुओ से जोड़ा खाना।
बरदार—वि० [फा०] ढोनेवाला, धारण करनेवाला (जैसे वल्लमबरदार)। पालन करनेवाला, माननेवाला (जैसे, फरमाँबरदार।
बरदाश्त—स्त्री० [फा०] सहन करने की क्रिया या भाव, सहन।
बरधमुतान—स्त्री० दे० 'गोमूत्रिका'।
बरधा—पुं० बैल। सक० दे० 'बरदाना'।
बरन(पु)—पुं० दे० 'वर्ण'।
बरनना(पु)†—सक० वर्णन करना, बयान करना।
बरना(पु)†—सक० वर्णन करना, बखान करना।
बरनेत—स्त्री० विवाह की एक रीति।
बरपा—वि० [फा०] खडा हुआ, मचा हुआ (झगडे, आफत आदि में प्रयुक्त)।
बरफ—पु०, स्त्री० दे० 'बर्फ'।
बरफानी—वि० [फा०] जिसमे या जिसपर बरफ हो।
बरफी—स्त्री० एक प्रकार की प्रसिद्ध चौकोर मिठाई।
बरफीला—वि० दे० 'बरफानी'।
बरवड(पु)†—वि० बलवान्। प्रतापशाली। उद्धत। प्रचड, प्रखर।
बरवट(पु)—क्रि० वि० दे० 'बरबस'।
बरबर†—स्त्री० बकबक। पु० दे० 'बर्बर'।
बरबस—क्रि० वि० जबरदस्ती। व्यर्थ, फिजूल।
बरबाद—वि० [फा०] नष्ट, चौपट। बरबादी —स्त्री० नाश, तबाही।
बरम(पु)—पु० जिरह, बक्तर, कवच, वर्म।
बरमा—पु० लकडी आदि मे छेद करने का लोहे का एक प्रसिद्ध औजार। भारत के पूर्व का एक देश। बरमी—पु० बरमा देश का निवासी। छोटा बरमा (औजार)। स्त्री० बरमा देश की भाषा। वि० बरमा सबधी, बरमा देश का।
बरम्हा—पु० दे० 'ब्रह्मा'। दे० 'बरमा'।
बरम्हाना—सक० (ब्राह्मण का) आशीर्वाद देना।
बरम्हाव—पुं० ब्राह्मणत्व। ब्राह्मण का आशीर्वाद।
बरवट—स्त्री० दे० 'तिल्ली' (रोग)।
बरवा—पु० दे० 'बरवै'।
बरवै—पु० १९ मात्राओ का एक छंद जिसमे १२ और ७ मात्राओ पर यति और अत मे जगण होता है, ध्रुव, कुरग।
बरषना(पु)†—अक० दे० 'बरसना'।
बरषा(पु)—स्त्री० पानी बरसना, वृष्टि। वर्षाकाल।
बरषा(पु)†—सक० दे० 'बरसाना'।
बरषासन(पु)†—पु० एक वर्ष की भोजन-सामग्री।
बरस—पु० १२ महीनो या ३६५ दिनो का समूह, वर्ष। ⊙गाँठ = स्त्री० वह दिन जिसमे किसी का जन्म हुआ हो, जन्म दिन। मु०~दिन का दिन = ऐसा दिन (त्योहार या पर्व आदि) जो साल भर मे एक ही बार आता हो।

बरसना—सक० वर्षा का जल गिरना। वर्षा के जल की तरह ऊपर से गिरना (जैसे फूल बरसना)। बहुत अधिक मात्रा मे चारो ओर से प्राप्त होना। (जैसे रुपया बरसना)। अच्छी तरह झलकना, खूब प्रकट होना। दाँएँ हुए गल्ले का इस प्रकार हवा मे उडाया जाना जिसमे दाना अलग और भूसा अलग हो जाय।

बरसनि—स्त्री० बरसना, खूब प्राप्त होना।

बरसाइत†—स्त्री० जेठ वदी अमावस, जिस दिन स्त्रियाँ वटसावित्री का पूजन करती है।

बरसात—स्त्री० वर्षाऋतु।

बरसाती—वि० बरसात का। पु० एक प्रकार का कपडा जिसे वर्षा के समय पहन लेने से शरीर नही भीगता। घर या बँगले के सामने वह स्थान जहाँ गाडी, मोटर इत्यादि खडी होती है। एक प्रकार का आँख के नीचे का घाव जो प्राय बरसात मे होता है। पैरो में होनेवाली एक प्रकार की फुसिआँ जो बरसात मे होती है। चरस पक्षी।

बरसाना—सक० [बरसना का प्रे०] वर्षा करना। वर्षा के जल की तरह लगातार बहुत सा गिरा। बहुत अधिक सख्या या मात्रा मे चारो ओर से प्राप्त कराना। दाएँ हुए अनाज को इस प्रकार हवा मे गिराना जिससे दाने अलग और भूसा अलग हो जाय, ओसाना।

बरसायत—स्त्री० दे० 'बरसात'।

बरसी—स्त्री० वार्षिक श्राद्ध।

बरसीला—वि० बरसनेवाला।

बरह(प)—पु० पख (विशेषत: मोर का)।

बरहा—पु० खेतो मे सिचाई के लिये बनी हुई छोटी नाली। मोटा रस्सा। मोर मयूर।

बरहि(प)—पु० मोर, मयूर।

बरही—पु० मयूर, मोर। साही नाम का जतु। मुर्गा। स्त्री० प्रसूता का वह स्नान तथा अन्याय क्रियाएँ जो सतान उत्पन्न होने के १२वें दिन होती है। पत्थर आदि भारी वस्तु उठाने का मोटा रस्सा। जलाने की लकडी आदि का भारी बोझ।

बरहीपीड़(प)†—पु० मोर परो का बना हुआ मुकुट।

बरहीमुख—(प)† देवता।

बरहौं—पु० दे० 'बरही'।

बरह्मड—पु० दे० 'ब्रह्माड'।

बरह्माव—सक० आशीर्वाद देना।

बरांडी—स्त्री० एक प्रकार की विलायती शराब, ब्राडी।

बरा—पु० उडद की पीसी हुई दाल का बना हुआ एक प्रकार पक्कावान्न, बडा भुजदड पर पहनने का एक आभूषण, बहुँटा।

बराई—स्त्री० दे० 'बडाई'।

बराक—पु० शिव। युद्ध, लडाई वि० शोचनीय। नीच, अधम। बेचारा। **बराकी**—वि० स्त्री० बेचारी, बपुरी।

बराट—स्त्री कौडी।

बरात—स्त्री० विवाह के लिये वर के साथ कन्या के पिता या अभिभावक के यहाँ जानेवाले लोगो का समूह। **बराती**—पुं० बरात मे वर के साथ कन्या के घर तक जानेवाला।

बराना—अक० प्रसंग पडने पर भी कोई बात न कहना, टालना। जान बूझकर अलग करना, बचाना। रक्षा करना। सक० छाँटना। †दे० बालना (जलाना)।

बराबर—वि० मात्रा, गुण विस्तार, आकार, मूल्य, मर्यादा आदि के विचार से समान। जिसकी सतह ऊँची नीची न हो, समतल। क्रि० वि० लगातार। एक ही पक्ति मे, एक साथ। सदा। मु० ~करना = समाप्त कर देना। **बराबरी**—स्त्री० बराबर होने की क्रिया या भाव समानता। सादृश्य। मुकाबला, सामना।

बरामद—वि० [फा०] बाहर या सामने आया हुआ। खोई हुई, चोरी गई हुई या न मिलती हुई वस्तु जो कही से निकाली जाय। स्त्री० दियारा, गगबरार। निकासी, आमदनी।

बरामदा—पु० [फा०] खभो पर टिका हुआ किसी मकान का वह छाया हुआ भाग

जो मुख्य इमारत से बाहर निकला रहता है, बारजा। दालान।

बराय—अव्य० [फा०] वास्ते, लिये।

बरायन—पु० लोहे का वह छल्ला जो व्याह के समय दूल्हे के हाथ मे पहनाया जाता है।

बरार—पु० [फा०] कर, चदा।

बरारी—वि० स्त्री० बडी।

बराव—पु० बचाव, परहेज।

बरास—पु० भीमसेनी कपूर।

बराह—पु० दे० 'वराह'। क्रि० वि० [फा०] के तौर पर (जैसे, बराह मेहरबानी) जरिए से।

बरि(पु)—पु० बल।

बरिआत(पु)—स्त्री० 'बरात'।

बरिबड(पु)—वि० दे० 'बरबड'।

बरिया—वि० बलवान्। स्त्री० कम उम्र की स्त्री, नवयौवना।

बरियाइन(पु)—क्रि० वि० दे० 'बरियाई'।

बरियाई†—क्रि० वि० बलपूर्वक, जबर्दस्ती। स्त्री० बलवान् होने का भाव।

बरियार†—वि० बली, मजबूत।

बरियारा—पु० एक छोटा झाडदार छतनार पौधा, खिरेंटी।

बरिल†—पु० पकौडी या बडे की तरह का एक पकवान।

बरिषा(पु)—स्त्री० दे० 'वर्षा'।

बरिस†—पु० वर्ष, साल।

बरी—स्त्री० गोल टिकिया, बटी। उर्द या मूँग की पीठी के सुखाए हुए छोटे छोटे गोल टुकडे। (पु)‡ वि० दे० 'बली'। वि० [फा०] मुक्त, छूटा हुआ।

बरीस‡—पु० दे० 'वर्ष'।

बरीसना—अक० दे० बरस।

बरु(पु)†—अव्य भले ही, चाहे। पुं० दे० 'बर'।

बरुआ†—पु० बटु, ब्रह्मचारी। ब्राह्मण-कुमार। उपनयन संस्कार।

बरुक†—अव्य० दे० 'बरु'।

बरुनी—स्त्री पलक के किनारे पर के बाल।

बरुग्रो—स्त्री० एक नदी जो सई और गोमती के बीच मे है।

बरेंड़ा—पु० लकडी का वह मोटा गोल लट्ठा जो खपरैल या छाजन की लबाई के साथ धरन पर लकडी के बल रहता है। छाजन या खपरैल के बीचोबीच का सबसे ऊँचा भाग।

बरे(पु)†—क्रि० वि० जोर से, बलपूर्वक। जबरदस्ती से। ऊँची आवाज से। अव्य० पलटे मे वास्ते।

बरेखी—स्त्री० स्त्रियो का भुजा पर पहनने का एक गहना। विवाह सबध के लिये वर या कन्या देखना।

बरेठा—पु० [स्त्री० बरेठिन] धोबी।

बरेत†—स्त्री सन का मोटा रस्सा, नार।

बरेषी—स्त्री० दे० 'बरेखी'।

बरोक—पु० वह द्रव्य जो कन्यापक्ष से वर-पक्ष को सबध पक्का करने के लिये दिया जाता है, फलदान। (पु)सेना। क्रि० वि० बलपूर्वक।

बरोठा—पु० ड्योढी, पौरी। बैठक, दीवान खाना। मु०—बरोठे का चार = द्वारपूजा।

बरोरु(पु)—वि० दे० 'बरोरु'।

बरोह—स्त्री० बरगद के पेड के ऊपर की डालियो से निकली हुई वह शाखा जो जमीन पर आकर जम जाती है, बरगद की जटा।

बरौठा†—पु० दे० 'बरोठा'।

बरौनी†—पु० दे० 'बरुनी'।

बरौरी†—स्त्री० बडी या बरी नाम का पकवान।

बर्क—स्त्री० [अ०] बिजली, विद्युत्। वि० तेज, चालाक।

बर्य—वि० दे० 'वर्य'।

बर्जना—सक० दे० 'बरजना'।

बर्णना(पु)—सक० वर्णन करना, बयान करना।

बर्तन—पु० दे० 'बरतन'। दे० 'वर्तन'

बर्तना—सक दे० 'बरतना'।

बर्ताव—पु० दे० 'बरताव'।

बर्दाना—(पु)अक० दे० 'बरदाना'।

बर्न(पु)—पु० 'वर्ण'।

बर्फ—पु० स्त्री० [फा०] हवा मे मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म कणो की तह जो

वातावरण की ठढक के कारण जमीन पर गिरती है। बहुत अधिक ढढक के कारण जमा हुआ पानी जो ठोस और पारदर्शी होता है। मशीनो आदि अथवा कृत्रिम उपायो से जमाया हुआ पानी जिससे पीने के लिये जल आदि ठढा करते हैं। कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलो आदि का रस। दे० 'ओला'। **बर्फिस्तान**—पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ वर्फ ही वर्फ हो। **बर्फी**—स्त्री० दे० 'वरफी'।

बर्बर—पु० [सं०] घुंघराले वाल। असभ्य आदमी। अस्त्रो की झनकार। वि० जगली, असभ्य। उद्दड।

बर्बरी—स्त्री० [सं०] वनतुलसी। ईंगुर। पीत चदन।

बरयाइ—क्रि० वि० कठिनाई से। विप्र सुदामा जानी जोइ वरयाइ (पद्माभरण २६८)।

बर्राक—वि० [अ०] चमकीला। तेज, तीव्र। चतुर, चालाक। वहुत उजला, सफेद। पूर्ण रूप से अभ्यस्त।

बर्राना—अक० व्यर्थ वोलना। नीद या वेहोशी मे वकना।

बर्रे†—पु० भिड नाम का कीडा, ततैया।

बलंद—वि० [फा०] ऊँचा।

बल—पु० ऐंठन, मरोड। फेरा, लपेट। लहरदार घुमाव। टेढापन। शिकन। लचक, झुकाव। कसर, कमी। मु०~ **खाना**=घुमाव के साथ टेढा होना। लचकना। घाटा सहना, हानि सहना। ~**पड़ना**=अतर होना। पु० [सं०] सामर्थ्य, ताकत, बूता। भार उठाने की शक्ति। आश्रय, सहारा। आसरा, भरोसा। सेन। पाश्वर्व, पहलू। ⊙**तत्र**=पु० शक्ति या सेना आदि का प्रबध, सैनिक व्यवस्था। ⊙**वंत**=वि० [हिं०] वलवान्। ⊙**वत्ता**=पु० वलवान् होने का भाव, शक्ति सपन्नता। ⊙**वान्**=वि० मजबूत, ताकतवर। सामर्थ्यवान्। ⊙**शाली**=वि० दे० 'वलवान्'। ⊙**शील**=वि० वली, शक्तिवाला। ⊙**सूदन**=पु० इद्र। विष्णु। **बलाग्र**—पु० सेनापति। सेना का अगला भाग। वि० वलशाली। **बलाढ्य**—वि० वली। **बलात्**—क्रि० वि० वलपूर्वक। जवरदस्ती से। हठात्। **बलात्कार**—पु० जवरदस्ती कोई काम करना। किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध सभोग करना। **बलाध्यक्ष**—पु० सेनापति।

बलकट—वि० पेशगी, अगाऊ।

बलकना—अक० उवलना, खौलना। जोश मे होना।

बलकलⓅ—पु० दे० 'वलकल'।

बलकाना†—सक० [अक० 'वलकना'] उबालना। उमगाना, उत्तेजित करना।

बलगना—अक० दे० 'वलकना'।

बलगम—पु० श्लेष्मा, कफ।

बलदाऊ—पुं० श्रीकृष्ण के बडे भाई बलदेव।

बलना—अक० जलना, दहकना। सक० बल डालना, वटना।

बलबलाना—अक० ऊँट का वोलना। व्यर्थ वकना।

बलबलाहट—स्त्री० ऊँट की वोली। व्यर्थ अहकार।

बलबीरⓅ—वलराम के भाई श्रीकृष्ण।

बलभी—स्त्री० मकान मे सब से ऊपरवाली कोठरी, चौवारा।

बलमⓅ—पु० प्रियतम, पति, वल्लभ।

बलमीक—स्त्री० दे० 'बाँबी'।

बलयⓅ—पु० दे० 'वलय'।

बलवडⓅ—वि० बली।

बलवा—पुं० [फा०] दगा, बगावत, विद्रोह।

बलवाई—पुं० वलवा करनेवाला, विद्रोही। उपद्रवी।

बला—स्त्री० [सं०] वरियारा नामक क्षुप। वैद्यक के अनुसार पौधो की एक जाति। पृथिवी। लक्ष्मी। स्त्री० [अ०] विपत्ति, आफत। दु ख, कष्ट। भूत प्रेत या उसकी बाधा। रोग। मु०~**का**=घोर, अत्यत।

बलाइⓅ—स्त्री० दे० 'वलाय'।

बलाक—पुं० [सं०] वक; बगला।

बलाका—पुं० [सं०] बगली। वगलो की पक्ति।

बलाग्र—पुं० [सं०] दे० 'वल' मे। **बलाढ्य**—वि० [सं०] दे० 'वल' मे। **बलात्**—क्रि०

वि० [सं०] दे० 'बल' मे। ⊙कार = पु० दे० 'बल' मे। बलाध्यक्ष – पुं० [सं०] दे० 'बल' मे।

बलाय—स्त्री० दे० 'बला'।

बलाहक—पु० [सं०] मेघ, बादल। एक दैत्य। एक नाग। शालमलि द्वीप का एक पर्वत। एक प्रकार का बगला।

बलि—स्त्री० मालगुजारी, राजकर। उपहार, भेट। पूजा की सामग्री या उपकरण। पचमहायज्ञो मे चौथा, भूतयज्ञ। किसी देवता को उत्सर्ग किया हुआ कोई खाद्य पदार्थ। भक्ष्य, अन्न। चढावा, भोग। वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय। प्रह्लाद का पौत्र जो दैत्यो का राजा था। ⊙**दान** = पु० देवता के उद्देश्य से नैवेद्यादि पूजा की सामग्री चढाना। बकरे आदि पशु देवता के उद्देश्य से मारना। **दानी** = वि० बलिदान सबधी। पु० वह जो बलिदान करता हो। ⊙**पशु** = पु० वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय। ⊙**प्रदान** = पु० बलिदान। ⊙**वैश्वदेव** = पु० पाँच महायज्ञो मे से चौथा। इसमे गृहस्थ पके हुए अन्न से एक ग्रास लेकर भिन्न-भिन्न स्थानो पर रखता है। **मु०** ~**चढना** = मारा जाना। **चढ़ाना** = देवता के उद्देश्य से घात करना। ~**जाना** = निछावर होना। **जाऊँ या बलि** = मैं तुमपर निछावर हूँ।

बलित(पु)—वि० बलिदान चढाया हुआ। मारा हुआ, हत।

बलिया—वि० बलवान्। पु० बनारस के पूरब बनारस कमिश्नरी का एक जिला।

बलिवर्द—पु० [सं०] साँड, बैल।

बलिष्ठ—वि० [सं०] अधिक बलवान्।

बलिहारना(पु)—सक० निछावर कर देना, कुर्बान कर देना।

बलिहारी—स्त्री० प्रेम, भक्ति, श्रद्धा आदि के कारण अपने को उत्सर्ग कर देना, निछावर, कुर्बान। मु० **जाना** = निछावर होना, कुरबान जाना। **लेना** = बलैया लेना, प्रेम दिखाना।

बली—वि० [सं०] बलवान्।

बलीता(पु)—पु० 'पलीता'।

बलीमुख(पु)—पु० बदर।

बलीयस्—वि० [सं०] बहुत अधिक बलवान्।

बलु(पु)—अव्य० दे० 'वरु'।

बलुआ—वि० जिसमे बालू मिला हो, रेतीला।

बलूच—पु० एक जाति जिसके नाम पर देश का नाम बलूचिस्तान पडा है। **बलूची**–पु० बलूचिस्तान का निवासी।

बलूत—पु० [अ०] माजूफल की जाती का एक पेड।

बलैया—स्त्री० बला, बलाय। **मु०** (किसी की) ~**लेना** = किसी का रोग, दु ख अपने ऊपर लेना, मगलकामना करते हुए प्यार करना।

बल्कि—अव्य० [फा०] इसके विरुद्ध, प्रत्युत। और अच्छा है।

बल्लभ(पु)—दे० 'वल्लभ'।

बल्लम—पुं० छड़, बल्ला। वह सुनहला या रुपहला डडा जिसे चोबदार राजाओ के आगे लेकर चलते हैं। बरछा। ⊙**बर्दार** = पु० [फा०] वह जो सवारी या बरात के साथ बल्लम लेकर चलता है।

बल्लमटेर—पु० स्वेच्छापूर्वक सेना मे भरती होनेवाला। स्वयसेवक, वालटियर (अं०)।

बल्ला—पु० शहतीर या मोटा डडा, दड। वह डडा जिससे नाव खेते है। डाँडा। गेद मारने की लकडी या डडा, (अं०) बैट।

बल्लि—स्त्री० दे० 'वल्ली'।

बल्ली—स्त्री० छोटा बल्ला। (पु) दे० 'वल्ली'।

बवँडना†—अक० इधर उधर घूमना, व्यर्थ फिरना।

बवँडर—पु० चक्र की तरह घूमती हुई वायु, बगूला। आँधी।

बवडा†—पु० दे० 'बवडर'।

बवघूरा(पु)—पु० दे० 'बवडर'।

बवन(पु)†—पु० दे० 'वमन'।

बवना—पुं० दे० 'वमन'। ⓟसक० दे० बोना। बिखेरना। अक० बिखरना।

बवरना—अक० दे० 'बौरना'।

बवासीर—स्त्री० [अ०] एक रोग जिसमे गुदेंद्रिय मे मस्से उत्पन्न हो जाते हैं, अर्श।

बसंत—पु० दे० 'वसंत'। **बसंती**—वि० वसंत का, वसन ऋतु सबधी। खुलते हुए पीले रग का।

बसंदरⓟ—पु० आग।

बस—वि० [फा०] प्रयोजन के लिये पूरा, पर्याप्त, काफी। अव्य० पर्याप्त, काफी। सिर्फ, केवल। पु० दे० 'वश'।

बसते, बसती—स्त्री० दे० 'बस्ती'।

बसना–अक० निवास करना, रहना। आवाद होना। ठहरना, डेरा करना। ⓟबैठना। वासा जाना, सुगधित होना। मु०–**घर** = ~कुटुंब सहित सुखपूर्वक स्थित होना, गृहस्थी का बनना। **घर मे**~ = सुखपूर्वक गृहस्थी मे रहना। **मन मे**~ = ध्यान मे बना रहना। पुं० वह कपडा जिसमे कोई वस्तु लपेटकर रखी जाय। थैली।

बसनिⓟ‡—स्त्री० निवास, वास।

बसर—पुं० [फा०] गुजर, निर्वाह।

बसवर्ती—ⓟ वि० दे० 'वशवर्ती।

बसवार—पुं० छौंक, बघार।

बसवास—पुं० निवास, रहना। रहने का ढग, स्थिति। रहने का सुभीता, ठिकाना।

बसह—पुं० बैल।

बसांधा—वि० बसाया या बासा हुआ, सुगधित।

बसा—स्त्री० दे० 'वसा'।

बसाना—सक० [अक० 'बसना'] बसने के लिये जगह देना। आबाद करना। टिकाना, ठहराना। बैठाना, रखना। ⓟअक० बसना, रहना। दुर्गंध देना। बस या जोर चलना। महकना। मु०—**घर बसाना** = गृहस्थी जमाना, सुखपूर्वक कुटुब के साथ रहने का ठिकाना करना।

बस—पु० दे० 'वश'।

बसिऔरा—पुं० वर्ष की कुछ तिथियाँ जिनमे स्त्रियाँ बासी भोजन खाती है, बासी भोजन।

बसीकत, बसीगत—स्त्री० बस्ती, आबादी। बसने का भाव या क्रिया।

बसीकर—वि० वशीकर, वश मे करनेवाला।

बसीकरनⓟ—पुं० दे० 'वशीकरण'।

बसीठ—पुं० सदेशा ले जानेवाला दूत। **बसीठी**—स्त्री० सँदेशा भुगताने का काम, दूतत्व।

बसीनाⓟ—पुं० निवास। निवासस्थान।

बसीना†ⓟ—पुं० रहायश, रहन।

बसुवास—ⓟ पुं० रहना, निवास।

बसूला—पु० एक औजार जिससे बढई लकडी छीलते और गढते है।

बसेरा—वि० बसनेवाला। पुं० टिकने की जगह। वह स्थान जहाँ पर चिडियाँ ठहरकर रात बिताती हैं। टिकने या बसने का भाव, रहना। मु०~**करना** = निवास करना ठहरना। घर बनाना, बस जाना। ~देना = आश्रय देना। लेना = निवास करना, रहना। **बसेरी**–ⓟवि० निवासी।

बसैयाⓟ†—वि० बसनेवाला।

बसोबास—पुं० रहने की जगह।

बसौंधी—स्त्री० एक प्रकार की सुगधित और लच्छेदार रबडी।

बस्ता—पुं० [फा०] कपडे का चौकोर टुकडा या थैला जिसमे कागज, वही या पुस्तक आदि बाँधकर रखते हैं, बेठन।

बस्ती—स्त्री० बहुत से मनुष्यो का घर बनाकर रहने का भाव, आबादी। जनपद। एक प्रकार की यौगिक क्रिया।

बस्साना—अक० दुर्गंध देना।

बहँगी—स्त्री० बोझ ले चलने के लिये तराजू के आकार का एक ढाँचा, काँवर।

बहकना—अक० मार्गभ्रष्ट होना, भटकना। ठीक लक्ष्य या स्थान पर न जाकर दूसरी ओर जा पडना, चूकना। भुलावे में आ जाना। किसी बात मे लग जाने के कारण शात होना, बहलाना (बच्चों के लिये)। रस या मद मे चूर होना। मु०—**बहकी बहकी बातें करना** = मदोन्मत्त की सी बातें करना। बहुत बढी

चढी बातें करना। बहकाना—[अक० बहकना] रास्ता भुलवाना, भटकना। ठीक लक्ष्य या स्थान से दूसरी ओर कर देना। भुलावा देना, भरमाना। (बातो से) शात करना, बहलाना।

बहकावट—स्त्री० बहकाने की क्रिया या भाव।

बहतोल(पु)†—स्त्री० जल बहने की नाली, बरहा।

बहन—स्त्री० दे० 'बहिन'। बहने की क्रिया या भाव। बहनापा—पु० बहिन का सबध।

बहना—अक० द्रव वस्तुओ का किसी ओर चलना, प्रवाहित होना। पानी की धारा मे पडकर जाना। लगातार बूंद या धार के रूप मे निकलकर चलना। हवा का चलना। हट जाना। ठीक लक्ष्य या स्थान से सरक जाना, फिसल जाना। मारा मारा फिरना। कुमार्गी होना, आवारा होना। अधम या बुरा होना। गर्भपात होना (चौपायो के लिये)। बहुतयात से मिलना, रास्ता मिलना। (रुपया आदि) डूब जाना नष्ट हो जाना। लादकर ले चलना (गाडी आदि)। धारण करना। उठाना, चलना। निवाह करना। मु०—बहती गंगा मे हाथ धोना = किसी ऐसी वस्तु से लाभ उठाना जिससे सब लोग लाभ उठा रहे हो।

बहनेली—स्त्री० वह जिसके साथ बहनपने का सबध स्थापित हो (स्त्रियो मे)। बहनोई—पुं० बहिन का पति। बहनौता—पु० भानजा।

बहनी(पु)—स्त्री० अग्नि, आग।

बहनु(पु)—पु० सवारी, वाहन।

बहबह(पु)—वि० चमाचम।

बहबहा(पु)—वि० शरारत, नटखटपना।

बहर—क्रि० वि० [फा०] वास्ते, लिये। पु० समुद्र। छंद। (पु) दे० क्रि० वि० 'बाहर'।

बहरा—वि० जो कान से सुन न सके या कम सुने।

बहराना—सक० ऐसी बात कहना या करना जिसमे दु ख की बात भूल जाय और चित्त प्रसन्न हो जाय। बहकाना, फुसलाना। दे० 'बहरियाना'। पु० शहर या बस्ती का बाहरी भाग। बहरियाना†—सक० बाहर की ओर करना, निकालना। अलग करना। अक० बाहर की ओर होना। अलग होना, जुदा होना।

बहरी—स्त्री० बाज की तरह की एक शिकारी चिडिया, बाहरी।

बहल—स्त्री० दे० 'बहली'।

बहलना—अक० झझट या दु ख की बात भूलकर चित्त का दूसरी ओर लगना। मनोरजन होना।

बहलाना—सक० झझट या दु:ख की बात भुलवाकर चित्त दूसरी ओर ले जाना। मनोरजन करना। भुलवा देना, बातों मे लगाना। बहलाव—पुं० बहलने की क्रिया या भाव, मनोरजन।

बहली—स्त्री० रथ के आकार की बैलगाडी।

बहल्ला(पु)‡—पु० आनंद।

बहल्ली—पु० कुश्ती का एक दाव।

बहस—स्त्री० [अ०] दलील, तर्क। विवाद, झगडा, होड, बाजी।

बहसना(पु)—अक० बहस करना, विवाद करना। शर्त लगाना।

बहादुर—वि० [फा०] उत्साही, साहसी। शूर वीर, पराक्रमी। बहादुराना—वि० बहादुरो का सा।

बहाना—सक० [अक० बहना] प्रवाहित करना। प्रवाह के साथ छोडना। लगातार बूंद या धार के रूप मे छोडना, ढालना। हवा चलना। व्यर्थ व्यय करना, खोना। †फेंकना, डालना। सस्ता बेचना। पु० किसी बात से बचने या मतलब निकलने के लिये झूठ बात कहना, हीला। उक्त उद्देश्य से कही हुई झूठ बात। कहने सुनने के लिये एक कारण, निमित्त।

बहार—स्त्री० [फा०] वसंत ऋतु। मौज, आनंद। यौवन का विकास। सुहावनापन, रौनक। विकास, प्रफुल्लता। मजा, तमाशा। मु०~पर आना = विकसित होना, पूर्ण शोभासंपन्न होना।
बहाल—वि० [फा०] पूर्ववत् स्थित, ज्यों का त्यों। स्वस्थ। प्रसन्न, खुश।
बहाला(पु)—पु० दे० 'वल्लभ'।
बहाली—स्त्री० [फा०] पुनर्नियुक्ति, फिर उसी जगह पर मुकर्ररी। बहाना, मिस। प्रसन्नता। 'लाली भरे अधर बहाली भरे मुखवर' (जगद्विनोद ४९९)।
बहाव—पु० बहने का भाव या क्रिया, प्रवाह। बहता हुआ जल आदि।
बहिः—अव्य० [सं०] बाहर।
बहिक्रम(पु)—अवस्था, उम्र।
बहित्र—पु० नाव।
बहिन—स्त्री० माता की कन्या, भगिनी।
बहिनौला(पु)—पु० दे० 'बहनापा'।
बहियाँ(पु)†—स्त्री० दे० 'बाँह'।
बहिरंग—वि० बाहरवाला, अंतरंग का उलटा।
बहिर(पु)†—वि० दे० 'बहरा'।
बहिरन(पु)†—अव्य० बाहर।
बहिर्—अव्य० [सं०] 'बहिस्' के लिये समास मे प्रयुक्त। ⊙गत = वि० बाहर आया या निकला हुआ। ⊙जगत् = वि० बाहरी दृश्य या जगत्। मन के भीतर के जगत् का उलटा। ⊙भूमि = स्त्री० बस्ती से बाहरवाली भूमि। ⊙मुख = वि० विमुख, विरुद्ध। ⊙लापिका = स्त्री० काव्यरचना मे एक प्रकार की पहेली जिसमे उत्तर का शब्द पहेली के शब्दो के बाहर रहता है, भीतर नही, अंतर्लापिका का उलटा।
बहिश्त—पु० स्वर्ग।
बहिष्—अव्य [सं०] 'बहिस्' के लिये समास मे प्रयुक्त। ⊙कार = पु० बाहर करना, निकालना। हटाना। ⊙कृत = वि० बाहर किया हुआ, निकाला हुआ।
बही—स्त्री० हिसाब किताब लिखने की पुस्तक।
बहीर—स्त्री० भीड, जनसमूह। सेना के साथ साथ चलनेवाली भीड जिसमे साईस, सेवक, दूकानदार आदि रहते है। सेना की सामग्री। (पु)†अव्य० बाहर।
बहुँटा—पुं० बाँह पर पहनने का एक गहना।
बहु—स्त्री० सं० 'बहू'। वि० [सं०] बहुत, अनेक, ज्यादा, अधिक। ⊙ज्ञ = वि० बहुत बातें जाननेवाला। ⊙ता = स्त्री० अधिकता। वि० बहुत अधिक। ⊙त्व = पु० अधिकता। ⊙दर्शिता = स्त्री० बहुदर्शी होने का भाव, बहुज्ञता। ⊙दर्शी = पुं० जिसने बहुत कुछ देखा हो, जानकार, बहुज्ञ। ⊙धा = क्रि० वि० अनेक प्रकार से, बहुत करके, प्राय। ⊙बाहु = पु० रावण। ⊙भाषज्ञ = वि० बहुत सी भाषाएँ जाननेवाला। ⊙भाषी = वि० बहुत बोलनेवाला। बकवादी। ⊙मत = पुं० बहुत से लोगो की अलग अलग राय। बहुत से लोगो की मिलकर एक राय। वह जिनके मत या पक्ष मे बहुत से लोग हो। ⊙मूत्र = पु० एक रोग जिसमे रोगी को मूत्र बहुत उतरता है। ⊙मूल्य = वि० अधिक मूल्य का, कीमती। ⊙रंग = वि० दे० 'बहुरंगा'। ⊙रंगा = वि० कई रंगो का, चित्र विचित्र। बहुरूपधारी। ⊙रंगी = वि० [हिं] बहुरूपिया। अनेक प्रकार के करतब या चाल दिखानेवाला। ⊙रूपिया = पुं० [हिं०] वह जो तरह तरह के रूप बनाकर अपनी जीविका चलाता हो। ⊙विवाह = पुं० किसी पुरुष का एक पत्नी के जीवित रहने पर अन्य स्त्रियो से विवाह करना। ⊙वचन = पुं० व्याकरण मे वह शब्द जिससे एक से अधिक वस्तुओ का बोध होता है। ⊙विध = वि० दे० 'बहुज्ञ'। ⊙व्रीही = पुं० वह छह प्रकार के समासो मे से एक जिसमे दो या अधिक पदो के मिलने से जो समस्त पद बनता है वह एक अन्य पद का विशेषण होता है। ⊙शः = वि० बहुत, अधिक। श्रुत = वि० जिसने अनेक विद्वानो से विभिन्न शास्त्रो का ज्ञान प्राप्त किया हो, अनेक विषयो का जानकार। ⊙संख्यक = वि० गिनती मे

बहुत, अधिक। जो संख्या के विचार से औरों में अधिक हो।

बहुगुना—पु० चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन।

बहुग्यता—⑤स्त्री० बहुज्ञता, बहुत बातों की जानकारी।

बहुँटनी—स्त्री० बाँह पर पहनने का एक गहना, छोटा बहूँटा।

बहुँटा—पु० बाजू, बाजूबंद।

बहुत—वि० एक दो से अधिक, अनेक। जो मात्रा में अधिक हो। यथेष्ट, काफी। ~अच्छा = स्वीकृतिसूचक वाक्य। ~करके = अधिकतर, ज्यादातर। अधिक संभव है। कुछ = कम नहीं। खूब = वाह, क्या कहना है! बहुत अच्छा। ⊙क†⑤—वि० बहुत से, बहुतेरे। बहुताइत—⑤वि० दे० 'बहुतायत'। बहुताई—स्त्री० दे० 'बहुतायत'। बहुतात, बहुतायत—स्त्री० अधिकता, ज्यादती। बहुतेरा—वि० बहुत सा, अधिक। क्रि० वि० बहुत प्रकार से। बहुतेरे—वि० संख्या में अधिक, बहुत से।

बहुधा—क्रि० वि० [सं०] दे० 'बहु' में।

बहुर—अव्य० पुन, फिर।

बहुरना†—अक० लौटना, वापस आना। फिर मिलना।

बहुरि—⑤†क्रि० वि० पुन,। इसके उपरांत। बहुरिया†—स्त्री० नई बहू।

बहुरी†—स्त्री० भुना हुआ खड़ा अन्न, चबेना।

बहुल—वि० [सं०] अधिक ज्यादा।

बहुली—स्त्री० इलायची।

बहूँटा—पु० बाँह पर पहनने का एक गहना।

बहू—स्त्री० पुत्रवधू, पतोहू। पत्नी, स्त्री। दुलहिन।

बहूपमा—स्त्री० [सं०] वह अर्थालंकार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्म से अनेक उपमान कहे जायँ।

बहेड़ा—पु० एक बड़ा और ऊँचा जंगली पेड़ जिसके फल दवा के काम में आते हैं।

बहेतू—वि० इधर उधर मारा फिरनेवाला।

बहेरी—⑤† स्त्री० बहाना, हीला।

बहेलिया—पु० पशुपक्षियों को पकड़ने या मारने का व्यवसाय करनेवाला, चिड़ीमार।

बहोर⑤†—पु० फेरा, वापसी। क्रि० वि० दे० 'बहोरि'। ⊙ना†—सक० [अक० बहुरना] लौटना, वापस करना

बहोरि⑤†—अव्य० पुन, फिर।

बाँ—पु० गाय के बोलने का शब्द। † बार, दफा।

बाँक—स्त्री० भुजदंड पर पहनने का एक आभूषण। एक प्रकार का चाँदी का गहना जो पैरों में पहना जाता है। हाथ में पहनने की एक प्रकार की पटरी या चौड़ी चूड़ी। कमान, धनुष। एक प्रकार की छुरी। पु० टेढ़ापन, वक्रता। वि० घुमावदार। बाँका, तिरछा। ⊙पन = पु० तिरछापन, अलबेलापन। शोभा।

बाँकड़—स्त्री० बादले और कलाबत्तू का बना हुआ एक प्रकार का सुनहला या रुपहला फीता।

बाँकड़ोरी—स्त्री० एक प्रकार का शस्त्र।

बाँकना†—सक० टेढ़ा करना। ‡ अक० टेढ़ा होना।

बाँका—वि० सुंदर और बनाठना, छैला। टेढ़ा, तिरछा। बहादुर, वीर।

बाँकिया—पु० नरसिंहा नामक टेढ़ा बाजा।

बाँकुर, बाँकुरा⑤†—वि० बाँका, टेढ़ा। पैनी धार का। कुशल, चतुर।

बाँग—स्त्री० [फा०] पुकार, चिल्लाहट। वह ऊँचा शब्द या मंत्रोच्चारण जो नमाज का समय बताने के लिये मुल्ला मसजिद में करता है, अजान। प्रातःकाल मुर्गे के बोलने का शब्द।

बाँगड़—पु० हिसार, रोहतक और करनाल का प्रांत, हरियाना। स्त्री० बाँगड़ प्रांत के जाटों की भाषा, हरियानी।

बाँगडू—वि० मूर्ख, गँवार।

बाँगर—पु० छकड़ा गाड़ी को फड के साथ लगाकर उसके ऊपर बाँधा जानेवाला बाँस। वह ऊँची भूमि जो बाढ से न डूबे। अवध मे पाए जानेवाले एक प्रकार के बैल।

बाँगुर—पु० पशुओ या पक्षियो को फँसाने का जाल, फदा। एक मछली।

बाँचना†—सक० पढना। वाचना, छुडाना। (पु) अक० रक्षित होना, वचना। शेष रहना।

बाँछना†—सक० चाहना, इच्छा करना। चुनना, छाँटना। (पु)† स्त्री० इच्छा, आकाछा। **बाँछा**(पु)—स्त्री० इच्छा। **बाँछित**(पु)—वि० अभिलषित, इच्छित। **बाँछी**—पुं० अभिलाषा करनेवाला, चाहनेवाला।

बाँझ—स्त्री० वह स्त्री या मादा जिसे सतान होती ही न हो, वघ्या।

बाँट—स्त्री० बाँटने की क्रिया या भाव। भाग। मु०—बाँटे पढना = हिस्से मे आना। सक० किसी चीज के कई भाग करके अलग रखना। हिस्सा लगाना, विभाग करना।

बाँटा—पु० बाँटने की क्रिया या भाव। भाग, हिस्सा।

बाँड़ा—वि० विना पूँछ का असहाय, दीन।

बाँद†—पु० सेवक, दास।

बाँदर—पु० वदर।

बाँदा—पुं०एक प्रकार की वनस्पति जो अन्य वृक्षो की शाखाओ पर उगकर पुष्ट होती है।

बाँदी—स्त्री० लौंडी, दासी। मु०~का बेटा या जना = परस अधीन, अत्यत आज्ञाकारी। तुच्छ, हीन। दोगला।

बाँदू—पुं० बँधुवा, कैदी।

बाँध—पु०नदी या जलाशय आदि के किनारे मिट्टी, पत्थर आदि का बना धुस्स, वद।

बाँधना—सक० [अक० बँधना] कसने या जकडने के लिये किसी चीज के घेरे मे लाकर गाँठ देना। कसने या जकड़ने के लिये रस्सी, कपड़ा आदि लपेटकर उसमे गाँठ लगाना। कैद करना, पकड़ कर वंद करना। नियम, अधिकार, प्रतिज्ञा या शपथ आदि की सहायता से मर्यादित रखना, पावद करना। मत्न, तत्न आदि की सहायता से शक्ति या गति को रोकना। प्रेमपाश मे बद्ध करना। नियत करना। पानी का बहाव रोकने के लिये बाँध आदि बनाना। चूर्ण आदि को हाथो से दवाकर पिंड के रूप मे लाना। मकान आदि बनाना। किसी विषय के वर्णन आदि के लिये, ढाँचा या स्थूल रूप तैयार करना, मजमून बँधना। क्रम या व्यवस्था आदि ठीक करना। किसी प्रकार का अस्त्र या शस्त्र आदि साथ रखना।

बाँधनी पौरि (पु)†—स्त्री० पशुओ के बाँधने का स्थान।

बाँधनूँ—पु० पहले से ठीक की हुई तरकीव या विचार कोई बात होनेवाली मानकर पहले से ही उसके सवध मे तरह तरह के विचार, खयाली पुलाव। झूठा दोष; कलक। मन से गढी हुई बात। कपड़े की रँगाई मे वह बँधन गो रँगरेज चुनरी या लहरिएदार रँगाई आदि रँगने के लिये कपडे मे बाँधते हैं। चुनरी या और कोई ऐसा वस्त्र जो इस प्रकार बाँध कर रँग गया हो।

बाँधव—पु० [सं०] भाई वधु। रिश्तेदार। मित्र, दोस्त,

बाँबी—स्त्री० दीमको का वनाया हुआ मिट्टी का भीटा, बँबीठा। साँप का बिल।

बाँवना(पु)†—सक० रखना।

बाँस—पुं० तृण जाति की एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसके काडो मे थोडी थोडी दूर पर गाँठें होती हैं और गाँठो के वीच का स्थान प्राय कुछ पोला है। एक नाप जो सवा तीन गज की होती है। नाव खेने की लग्गी। पीठ के वीच की हड्डी रीढ। बल्लम, भाला। ⊙पूर = एक प्रकार का महीन कपडा। मु०~पर चढ़ना = बदनाम होना। ~पर चढ़ाना = वदनाम करना। वहुत आदर करके धृष्ट या घमडी वना देना।

बांसो ~ उछलना = बहुत अधिक प्रसन्न होना।

बांसली—स्त्री० बाँसुरी, मुरली। जालीदार लंबी पतली थैली जिसमें रुपया पैसा रखकर कमर में बांधते हैं।

बांसा†—पु० पीठ की रीढ। नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनों नथनों के ऊपर बीचो बीच रहती है। मु० फिरजाना = नाक का टेढा हो जाना (जो मृत्युकाल समीप होने का चिह्न माना जाता है)।

बांसुरी—स्त्री० बांस का बना हुआ बाजा जो मुंह से फूककर बजाया जाता है, वंशी।

बाँह—स्त्री० कंधे से कलाई तक का भाग, भुजा। कंधे से हथेली तक का भाग। बल, शक्ति। सहायक। भरोसा, सहारा। एक प्रकार की कसरत जो दो आदमी मिलकर करते हैं। कुरते, कोट आदि में वह मोहरीदार टुकड़ा जिसमें बाँह डाली जाती है, आस्तीन। ⊙बोल = पु० रक्षा करने या सहायता देने का वचन। मु० गहना या पकड़ना = सहारा देना। विवाह करना। टूटना = सहायक या रक्षक आदि का न रह जाना। देना = सहारा देना।

बा(पु)—पु० जल, पानी,। बार, दफा, मरतबा स्त्री० [गुज०] माता। [फा०] सहित, साथ के० समा० पै अ० का० शब्दों के साथ जैसे बा अदब।

बाइ(पु)—स्त्री० वायु, हवा।

बाइगी—स्त्री० स्त्री।

बाइबिल—स्त्री० [अं०] यहूदियों और ईसाइयों की धर्मपुस्तक।

बाइसिकिल—स्त्री० [अं०] दो पैरों से चलाई जानेवाली गाड़ी।

बाई—स्त्री० स्त्रियों के लिये एक आदरसूचक शब्द। वेश्याओं के लिये प्रयुक्त शब्द। त्रिदोषों में से वातदोष। दे० 'वात'। मु० चढना = वायु का प्रकोप होना। घमंड आदि के कारण व्यर्थ की बातें करना। पचना = वायु का प्रकोप शांत होना। घमंड टूटना।

बाईस—पु० बीस और दो की संख्या या अंक, २२। वि० बीस और दो।

बाईसी—स्त्री० बाईस वस्तुओं का समूह।

बाउ‡—पु० हवा, पवन।

बाउर†—वि० बावला, पागल। सीधा सादा। मूर्ख, अज्ञान। गूंगा।

बाएँ—क्रि० वि० बाई ओर, दाहिने का उलटा।

बाक(पु)—पु० बात, वचन। ⊙चाल† = वि० बहुत अधिक बोलनेवाला, बकी, बातूनी।

बाकना(पु)†—अक० बकना।

बाकल†—पु० दे० 'वल्कल'।

बाकला—पु० [अ०] एक प्रकार की बड़ी मटर या मोठ। उबाली हुई मोठ।

बाका(पु)—स्त्री० वाणी।

बाकी—वि० [अ०] जो बच रहा हो, शेष। स्त्री० गणित में दो संख्याओं या मानों का अंतर निकालने की रीति। घटाने के पीछे बची हुई संख्या या मान। अव्य० लेकिन, मगर। स्त्री० [हिं०] एक प्रकार का धान।

बाकुल(पु)—पु० दे० 'वल्कल'।

बाखरि(पु)†—स्त्री० दे० 'बाखरी'।

बाग—स्त्री० लगाम ⊙डोर = स्त्री० लगाम। मु० मोड़ना = किसी ओर प्रवृत्त करना, किसी ओर घुमाना। बाग होना = प्रसन्न होना। बाग = पु० [अ०] उद्यान, वाटिका ⊙बान = पुं० [फा०] माली। ⊙बानी = स्त्री० [फा०] माली का काम।

बागना†—अक० फिरना, टहलना। (पु) बोलना।

बागड़(पु)—पु० दे० 'बांगड़'।

बागर—पु० नदी किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ तक नदी का पानी कभी पहुँचता ही नहीं।

बागल(पु)† = पुं० बगला, बक।

बागा—पुं० अँगे की तरह का पुराने समय का एक पहनावा, जामा।

बागी—पु० [अ०] वह जो राज्य के विरुद्ध विद्रोह करे, राजद्रोही।

बागीचा—पुं० छोटा बाग।

बागुर(पु)—पुं० जाल, फंदा।
बागेसरी‡—स्त्री सरस्वती। एक प्रकार की रागिनी।
बाघंबर—पु० बाघ की खाल जिसे लोग बिछाने आदि के काम मे लाते हैं। एक प्रकार का कंबल।
बाघ—पु० शेर नाम का प्रसिद्ध हिंसक जंतु।
बाघी—स्त्री० एक प्रकार की गिल्टी जो अधिकतर उपदंश के रोगियो को पेड़ू और जाँघ की संधि मे होती है।
बाच(पु)—वि० वर्णन करने योग्य, सुंदर।
बाचना‡—अक० बचना। सक० बचाना, सुरक्षित रखना।
बाचा—स्त्री० बोलने की शक्ति। वचन, वाक्य। प्रतिज्ञा, प्रण। ⊙बंध=(पु)वि० जिसने किसी प्रकार का प्रण किया हो, प्रतिज्ञाबद्ध।
बाछा—पुं० गाय का बच्चा, बछडा। लडका, बच्चा।
बाज—पुं० घोडा। बाघ, बाजा। बजने या बाजे का शब्द। वि० कोई कोई, कुछ। क्रि० वि० बगैर, बिना। पुं० [अ०] एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी पर लगा हुआ तीर। प्रत्य० [फा०] एक प्रत्यय जो शब्दो के अंत मे लगकर रखने, खेलने, करने या शौक रखनेवाले आदि का अर्थ देता है, (जैसे, दगाबाज कबूतरबाज, नशेबाज)। वि० वंचित, रहित। ⊙दावा=पुं० अपने अधिकारो, दावे या स्वत्व का त्याग। मु०~आना=खोना, रहित होना। पास न जाना। ~करना या रखना=रोकना, मना करना।
बाजनौ—अक० बाजे आदि का बजना। लडना, झगडना। प्रसिद्ध होना, पुकारा जाना, आघात पहुँचना।
बाजनि—स्त्री० बजने का कार्य।
बाजनी—वि० स्त्री० बजनेवाली। "···कहूँ बाजनी पाइल पाँइ ते न्पाई" (जगद्विनोद २३०)।
बाजरा—पु० एक प्रकार की बडी घास जिसकी बालों के दानो की गिनती मोटे अन्नो मे होती है।

बाजा—पु० कोई ऐसा यंत्र जो स्वर (विशेषत. राग रागिनी) उत्पन्न करने अथवा ताल देने के लिये बजाया जाता हो, वाद्य। ⊙गाजा=पु० अनेक प्रकार के बजते हुए बाजो का समूह।
बाजाब्ता—क्रि० वि० [फा०] जाब्ते के साथ, नियमानुकूल। वि० जो नियमानुसार हो।
बाजार—पु० [फा०] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पदार्थो की अथवा एक ही तरह की चीज की बहुत सी दूकानें हो। वह स्थान जहाँ किसी निश्चित समय या अवसर पर सब तरह की दूकानें लगती हो, पैठ। मु०~उतरना या मंदा होना=बाजार मे किसी चीज की माँग कम होना। दाम घटना। कारबार कम चलना। ~करना=चीजें खरीदने के लिये बाजार जाना। ~गर्म होना=बाजार मे चीजो या ग्राहको आदि की अधिकता होना। खूब काम चलना। ~तेज होना=बाजार मे किसी चीज की माँग बहुत अधिक होना। किसी चीज का मूल्य वृद्धि पर होना। खूब काम चलना। बाजारी—वि० बाजार संबंधी, बाजार का। मामूली, साधारण। अशिष्ट।
बाजारू—वि० दे० 'बाजारी'
बाजि(पु)†—पु० घोडा। बाण। पक्षी। अड़ूसा। वि० चलनेवाला।
बाजी—पु० घोडा। स्त्री० [फा०] ऐसी शर्त जिसमे हार जीत के अनुसार कुछ लेन देन भी हो, शर्त। आदि से अंत तक कोई ऐसा पूरा खेल जिसमे शर्त या दावँ लगा हो। मु०~मारना=बाजी जीतना, दाव जीतना। ~ले जाना=किसी बात मे आगे बढ जाना।
बाजीगर—पु० [फा०] जादूगर।
बाजु—अव्य० बिना, बगैर।
बाजू—पु० [फा०] भुजा, बाहु। बाजूबंद नाम का गहना। सेना का किसी ओर का एक पक्ष। वह जो हर काम मे बराबर साथ रहे और सहायता दे। पक्षी का डैना। ⊙बंद=पु० बाँह पर पहनने का

एक प्रकार का गहना, बिजायट। ⊙बीर †=पु० दे० 'बाजूबंद'।
बाझ—अव्य० बगैर, बिना।
बाझन(पु)†—स्त्री० बझने या फँसने का भाव, उलझन, पेंच। झंझट, बखेडा।
बाझना—अक० दे० 'बझना'।
बाझु (पु)—अव्य० दे० 'बाझ'।
बाट—पु० बटखरा। पत्थर का वह टुकडा जिसमें सिलपर कोई चीज पीसी जाय, बट्टा, लोढा। मार्ग रास्ता। ⊙ना = सक सिल पर बट्टे आदि से पीसना, चूर्ण करना। दे० 'बटना'। मु० करना =रास्ता खोलना, मार्ग बनाना। ~जोहना या देखना = प्रतीक्षा करना। पड़ना = डाका पडना, तंग करना।
बाटकी(पु)—स्त्री० दे० 'बटलोई'।
बाटिका—स्त्री० [सं०] बाग, फुलवारी।
बाटी—स्त्री० गोली, पिंड। अंगरो या उपलो आदि पर सेकी हुई एक प्रकार की रोटी। चौड़ा और कम गहरा कटोरा।
बाड़—स्त्री० फसल आदि की रक्षा के लिये काँटेदार झाडी आदि का बनाया हुआ घेरा (पु)स्त्री० दे० 'बाढ'।
बाड़व—पु० [सं०] बडवाग्नि। वि० बड़वा संबंधी।
बाड़वानल—पु० दे० 'बडवानल'।
बाडा—पु० चारो ओर से घिरा हुआ कुछ विस्तृत खाली स्थान। पशुशाला।
बाड़ी†—स्त्री० बाटिका।
बाढ—स्त्री० तलवार, छुरी आदि शस्त्रो की धार, सान। वृद्धि, अधिकता। अधिक वर्षा आदि के कारण नदी या जलाशय के जल का बहुत अधिक मान में बढना, सैलाब। व्यापार आदि से होनेवाला लाभ। बदूक या तोप आदि का लगातार छूटना।
बाढना(पु)†—अक० दे० 'बढना'।
बाढ़ि, बाढ़ी(पु)†—स्त्री० दे० 'बाढ'।
बाढीवान—वि० शस्त्रो आदि पर बाढ या सान रखनेवाला।
बाण—पु० [सं०] तीर, शर। गाय का थन। आग। निशाना, लक्ष्य। पाँच की संख्या। शर का अगला भाग।
बाणिज्य—पु० [सं०] व्यापार, रोजगार।
बात—पु० दे० 'वात'। स्त्री० सार्थक शब्द या वाक्य, कथन। चर्चा, जिक्र। अफवाह, प्रवाद। माजरा, हाल। प्राप्तिसंयोग, परिस्थिति। संदेश, पैगाम। वार्तालाप, गपशप। कोई मामला तै करने के लिये उसके संबंध मे चर्चा। फँसाने या धोखा देने के लिये कहे हुए शब्द या किए हुए व्यवहार। झूठ या बनावटी कथन, बहाना। वचन प्रतिज्ञा। साख, प्रतीति। मान मर्यादा, प्रतिष्ठा। अपनी योग्यता, गुण इत्यादि के संबंध मे कथन या वाक्य। उपदेश, सीख। भेद। तारीफ की बात। चमत्कारपूर्ण कथन, उक्ति। गूढ अर्थ, अभिप्राय। गुण या विशेषता। ढंग। प्रश्न। अभिप्राय। इच्छा। कथन का सार, तत्व। काम, आचरण। संबंध, लगाव। स्वभाव, गुण। चीज, विषय। मूल्य। उचित पथ या उपाय, कर्तव्य। ⊙चीत = स्त्री० दो या कई मनुष्यो के बीच कथोपकथन, वार्तालाप। ⊙फरोश = पु० [फा०] बात बनानेवाला। झूठमूठ इधर उधर की बातें कहनेवाला। मु० ~उठाना = कठोर वचन सहना। बात मानना। जिक्र करना। ~उड़ना = चारो ओर चर्चा फैलना। ~उलटना = कहे हुए वचन के उत्तर में उसके विरुद्ध बात कहना। एक बार कुछ कहकर फिर दूसरी बार कुछ और कहना। ~कहते = तुरंत, झट। ~का बतंगड़ करना = साधारण विषय या छोटे से मामले को भारी बना देना। ~का धनी, पक्का या पूरा = प्रतिज्ञा का पालन-वाला। ~काटना = किसी के बोलते समय बीच मे बोल उठना। कथन का खंडन करना। ~की बात में = झट, फौरन। खाली जाना = प्रार्थना या कथन का निष्फल होना। ~खोना = साख बिगडना। गढ़ना = झूठ बात कहना। ~चलना या छिडना = चर्चा छिडना (किसी को) ~जाना = (लोगो को) एतबार न रह जाना। इज्जत न रह जाना। ~टलना = सुनी अनसुनी करना। कही हुई बात पर

न चलना। ~ठहरना = विवाह संबंध स्थिर होना। किसी प्रकार का निश्चय होना। ~न पूछना = कुछ भी कदर न करना। दशा पर ध्यान न देना, परवा न रखना। ~निकालना = बात चलाना। (किसी की) ~पर जाना = बात पर ध्यान देना। कहने पर भरोसा करना। ~पड़ना = चर्चा छिड़ना। ~पक्की करना = दृढ़ निश्चय करना। प्रतिज्ञा या संकल्प पुष्ट करना। ~पाना = छिपा हुआ अर्थ समझ जाना। ~पी जाना = बात सुनकर भी उस पर ध्यान न देना। अनुचित या कठोर वचन सुनकर भी चुप हो रहना। ~पूछना = खोज रखना, खबर लेना। कदर करना। ~बढ़ना = झगड़ा होना। बढ़ाना = विवाद करना ~बनना = प्रयोजन सिद्ध होना। साख या विश्वास रहना। प्रतिष्ठा प्राप्त होना। अच्छी परिस्थिति होना, बोल-बाला होना। ~बनाना या सँवारना = कार्य सिद्ध करना। ~बहना = चारों ओर चर्चा फैलना। ~~पर या ~~ में = हर काम में। ~बिगड़ना = काम चौपट होना, विफल होना (अपनी) रखना = वचन पूरा करना। हारना = वचन देना। बातें बनाना = इधर उधर की कल्पित बातें कहना। खुशामद करना। बातों बातों में = बातचीत करते हुए, कथोपकथन के बीच में। बातों में आना या जाना = कथन या व्यवहार से धोखा खाना। बातों में लगाना = बातें कहकर उनमें लीन रखना।

बातमीज—वि० [फा० बा + अ० तमीज] शिष्ट, तमीजदार।

बाती†—स्त्री० दे० 'बत्ती'।

बातुल—वि० पागल, सनकी।

बातूनिया, बातूनी—वि० बहुत बातें करनेवाला, बकवादी।

बाथ†—पु० गोद, अंक। पु० [अं०] स्नान। ⊙**रूम** = पुं० शौच, स्नान आदि का कमरा।

बाद—पुं० बहस, तर्क। विवाद, हुज्जत। झकझक, तूलकलामी। शर्त, बाजी। अव्य० व्यर्थ, निष्प्रयोजन। अव्य० [अ०] अनंतर, पीछे। वि० अलग किया या छोड़ा हुआ। दस्तूरी या कमीशन जो दाम में से काटा जाय। अतिरिक्त, सिवाय। पु० [फा०] वात, हवा। ⊙**बान** = पु० पाल। ⊙हवाई† = क्रि० वि० यों ही, व्यर्थ। वि० ऊटपटाँग।

बादना—अक० बकवाद करना, तर्क वितर्क करना।

बादर†Ⓟ—पु० बादल, मेघ। वि० आनंदित, प्रसन्न।

बादरिया‡—स्त्री० दे० 'बदली'।

बादल—पु० पृथ्वी पर के जल से उठी हुई वह भाप जो घनी होकर आकाश में छा जाती है और फिर पानी की बूँदों के रूप में गिरती है, मेघ।

बादला—पु० सोने या चाँदी का चिपटा चमकीला तार।

बादशाह—पु० [फा०] राजा, शासक। सबसे श्रेष्ठ पुरुष। स्वतंत्र, मनमाना करनेवाला। शतरंज का एक मुहरा। ताश का एक पत्ता। ⊙**पसंद** = पुं० खशखशी रंग, दिलबहार हलका आसमानी रंग। **बादशाहत**—स्त्री० राज्य, शासन। **बाशाही**—स्त्री राज्य, राज्याधिकार। शासन। मनमाना व्यवहार। वि० बादशाह संबंधी।

बादाम—पु० [फा०] मझोले आकार का एक वृक्ष जिसके छोटे फल मेवों में गिने जाते हैं, उसका फल। **बादामी**—वि० बादाम के छिलके के रंग का, अंडाकार। पु० एक प्रकार की छोटी डिबिया। किलकिला पक्षी। बादाम के रंग का घोड़ा।

बादि—अव्य० व्यर्थ, फजूल।

बादितⓅ—वि० बजाया हुआ।

बादी—वि० [फा०] वायु संबंधी। वायु या बात का विकार उत्पन्न करनेवाला। स्त्री० वात विकार।

बादीगर—पु० दे० 'बाजीगर'।
बादुर—पु० चमगादड़।
बाध†—पु० मूंज की रस्सी। पु० [सं०] बाधा, रुकावट। पीड़ा, कष्ट। मुश्किल। अर्थ की असगति। वह पक्ष जिसमे साध्य का अभाव सा हो (न्याय)। ⊙क = वि० रुकावट डालनेवाला, विघ्नकर्त्ता। दु खदायी। ⊙ना = सक० [हि] बाधा डालना, रोकना। **बाधन**—पु० रुकावट या विघ्न डालना। कष्ट देना। **बाधा**—स्त्री० विघ्न, अडचन। सकट। भय, आशंका। **बाधित**—वि० जो रोका गया हो, बाधायुक्त। जिसके साधने मे रुकावट पड़ी हो। जो तर्क से ठीक न हो, असगत। ग्रस्त, गृहीत। दे० 'बाधा'। **बाध्य**—वि० जो रोका या दबाया जा सके। मजबूर होनेवाला।

बान—पुं० बाण, तीर। एक प्रकार की आतशबाजी। समुद्र या नदी की ऊँची लहर। आब, कांति। बाना (हथियार) गोला। स्त्री० सजधज, वेशविन्यास। आदत, अभ्यास। वाणी। ...सुनहु पिकबान' (पद्माभरण १६)।

बानइत†—वि० दे० 'बानैत'। बाण चलानेवाला। योद्धा, वीर।

बानक—स्त्री० वेश, सजधज, मुद्रा।
बानगी—स्त्री० नमूना।
बाननाⓅ—सक० दे० 'बनाना'। किसी बात का बाना ग्रहण करना। ठानना।
बानर—पु० दे० 'बदर'। **बानरेंद्र**—पु० सुग्रीव।

बाना—पु० पहनावा, पोशाक, भेस। तलवार के आकार का सीधा और दुधारा एक हथियार। सांग या भाले के आकार का एक हथियार। बुनावट, बुनाई। कपडे की बुनावट जो ताने मे की जाती है। कपड़े की बुनावट मे वह तागा जो आडे बल ताने मे जाता है, भरनी। महीन सूत जिससे पतग उडाई जाती है। सक० किसी सिकुडने और फैलने वाले छेद को फैलाना, जैसे, मुँह बाना। बालो मे कघी करना। मु०—(किसी वस्तु के लिये) मुँह बाना = लेने या पाने की इच्छा करना।

बानात—स्त्री० एक प्रकार का मोटा, चिकना, ऊनी कपड़ा, बनात।

बानावरीⓅ—स्त्री० बाण चलाने की विद्या।
बानि—स्त्री० बनावट, सजधज। टेव, आदत। चमक, आभा। वाणी, वचन।
बानिक—स्त्री वेश, सजधज, मुद्रा।
बानिन, बानिनि—स्त्री बनिए की स्त्री।
बानिया—पुं० दे० 'बनिया'।

बानी—स्त्री वचन, मुँह से निकला हुआ शब्द। मनौजी, प्रतिज्ञा। सरस्वती। साधु महात्मा का उपदेश। बाना नामक हथियार। गोला। दमक, आभा। दे० 'वाणिज्य'। पु० बनिया। पुं० (अ०) चलानेवाला, प्रवर्तक। बुनियाद डालनेवाला।

बानीर—पु० दे० 'वानीर'।
बानैत—पु० बाना फेरनेवाला। बाण चलानेवाला। योद्धा, सैनिक। बाना धारण करनेवाला

बाप—पु० पिता, जनक। मु० ⊙दादा = पूर्वज।
बापिकाⓅ—स्त्री० दे० 'वापिका'।
बापी—स्त्री० बावली, वापिका।
बापुरा—वि० जिसकी कोई गिनती न हो, तुच्छ। दीन, बेचारा।
बापू—पु० दे० 'बाप'। दे० 'बाबू'। महात्मा मोहनदास कर्मचद गाधी के लिये प्रयुक्त श्रद्धाद्योतक शब्द।

बाफ़्†—स्त्री० दे० 'भाफ'।
बाफ़्ता—पुं० [फा०] एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपडा।

बाब—पु० [अ०] परिच्छेद, अध्याय।
बाबत—स्त्री० सबध। विषय।
बाबा—पु० [तु०] पिता। पितामह, दादा। साधु सन्यासियो के लिये आदरसूचक शब्द। बूढा पुरुष। पु० [अं०] लड़को के लिये प्यार का शब्द।

बाबी(पु)†—स्त्री० साधु स्त्री, संन्यासिन । लड़कियों के लिये प्यार का शब्द ।
बाबुल—पु० बाबू, पिता । पश्चिमी एशिया का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर, बेबिलोन ।
बाबू—पु० राजा के नीचे उनके बंधु बांधवों या अन्य क्षत्रिय जमींदारों के लिये प्रयुक्त शब्द। एक आदरसूचक शब्द, भलामानुस। †पिता का संबोधन। बलार्क ।
बाबूना—पु० [फा०] एक छोटा पौधा जिसके फूलों का तेल बनता है ।
बाभन—पु० दे० 'ब्राह्मण' । दे० 'भूमिहार'।
बाम—वि० दे० 'वाम' । स्त्री० दे० 'वामा',। पु० [फा०] अटारी, कोठा। मकान के ऊपर की छत ।
बामा—स्त्री० दे० 'वामा' ।
बायँ—वि० बायाँ । चूका हुआ लक्ष्य पर न बैठा हुआ। मु० देना = बचा जाना, छोड़ना । तरह देना, कुछ ध्यान न देना । फेरा या चक्कर देना ।
बाय(पु)—स्त्री० वायु, हवा। वात का कोप । बावली, बेहर ।
बायक(पु)—पु० कहनेवाला । पढ़नेवाला, बांचनेवाला । दूत ।
बायकाट—पु० [अं०] सामाजिक या व्यावसायिक बहिष्कार, नाता तोड़ना ।
बायन(पु)—पु० वह मिठाई आदि जो उत्सवादि के उपलक्ष्य से इष्ट मित्रों के यहाँ भेजते हैं । भेंट । बयाना, पेशगी ।
बायबिडंग—पु० एक लता जिसमें मटर के बराबर गोल फल लगते है जो औषध के काम आते हैं।
बायबी—वि० वायव्य दिशा से आया हुआ या उससे संबद्ध । बाहरी, अपरिचित । नया आया हुआ ।
बायलर—पु० [अं०] भाप से चलनेवाले अंजन में लोहे आदि का बना हुआ वह कोठा जिसमें भाप तैयार करने के लिये पानी उबाला जाता है।
बायला†—वि० वायु या बात का प्रकोप उत्पन्न करने वाला ।
बायस—पु० कौआ । •
बायस्कोप—पु० [अं०] एक यंत्र जिससे परदे पर चलते फिरते चित्र दिखाए जाते हैं । सिनेमा, चलचित्र ।
बायाँ—पु० वह तबला जो बाएँ हाथ से बजाया जाता है। वि० वाम, दाहिना का उलटा । उलटा । विरुद्ध, अहित में प्रवृत्त । मु०~देना = किनारे से निकल जाना, बचा जाना। जान बूझकर छोड़ना ।
बाएँ—क्रि० वि० बाईं ओर, विपरीत, विरुद्ध । मु०~होना = विरुद्ध होना । अप्रसन्न होना ।
बारंबार—क्रि० वि० बार बार, लगातार ।
बार—द्वार, दरवाजा। आश्रय स्थान, ठिकाना । दरबार । बचपन, लड़कपन । घेरा या रोक जो किसी स्थान के चारों ओर हो, बाढ़ किनारा, छोर। धार । †दे० 'बाल' । दे० 'बाढ़' । †वि० दे० 'बाल' और 'वाला'। स्त्री० काल, समय। दिन (जैसे, सोमावार, बुधवार)। देर, विलंब । दफा, मरतबा । मु० ⊙बार = फिर फिर ।
बारना—अक० मना करना, रोकना । सक० बालना जलाना । दे० 'वारना'।
बारगह—स्त्री० डेवढ़ी । खेमा, तंबू ।
बारजा—पु० मकान के सामने दरवाजों के ऊपर पाटकर बढ़ाया हुआ बरामदा । कोठा, अटारी । बरामदा। कमरे के आगे का छोटा दालान ।
बारता(पु)—स्त्री० दे० 'वार्ता' ।
बारतिया—स्त्री० दे० 'वारस्त्री' ।
बारदाना—पु० [फा०] व्यापार की चीजों के रखने का बरतन या बेठन । फौज के खाने पीने का समान, रसद । अगड़-खगड़, लोहे लक्कड़ आदि का टूटा फूटा सामान ।
बारदार(पु)—स्त्री० वेश्या ।
बारन(पु)—दे० 'वारण' ।
बारबधू(पु)—स्त्री० वेश्या।
बारबरदार—पु० [फा०] वह जो सामान ढोता हो, बोझ ढोनेवाला । **बारबरदारी**—

स्त्री० [फा०] सामान ढोने का काम या मजदूरी।

बारमुखी—स्त्री० वेश्या।

बारह—वि० जो सख्या मे दस और दो हो। पु० बारह की सख्या या अक, १२। ⊙**खड़ी**=स्त्री० वर्णमाला का वह अंश जिसमे प्रत्येक व्यजन मे अ, आ, इ, ई उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अ और अः इन बारह स्वरों को, मात्रा रूप मे लगाकर बोलते या लिखते है। ⊙**दरी**=स्त्री० चरो ओर से खुली वह हवादार बैठक जिसमे बारह द्वार या खभे हो। खुली हुई हवादार बैठक। ⊙**बान**=पु० एक प्रकार का बहुत अच्छा सोना। ⊙**बान**=वि० सूर्य के समान दमकवाला। खरा, चोखा (सोने के लिये) विशेष—दे० 'बारहबानी'। ⊙**बानी**=वि० सूर्य के समान दमकवाला। खरा, कोखा (सोने के लिये)। निर्दोष, सच्चा। पूरा, पक्का। स्त्री० सूर्य की सी चमक। ⊙**मासा**=पु० वह पद्य या गीत जिसमे बारह महीनो की प्राकृतिक विशेषताओ का वर्णन विरही के मुँह से कराया गया हो। ⊙**मासी** वि० सब ऋतुओ मे फलने या फूलनेवाला, सदाबहार, सदाफल। बारहो महीने होनेवाला। ⊙**वफात**=स्त्री० [फा०] मुहम्मद साहब के जीवन के अंतिम बारह दिन जिनमे वे बीमार थे। ⊙**सिगा**=पु० हिरन की जाति का एक पशु जिसके नर के सीगो में अनेक शाखाएँ होती है।

बारहवाँ—वि० जो स्थान या क्रम मे ११वे के बाद हो।

बारहाँ—वि० दे० 'बारहवाँ'।

बारहाँ—क्रि० वि० कई बार, अक्सर।

बारहो—स्त्री० बच्चे के जन्म से बारहवाँ दिन, जिसमे उत्सव किया जाता है, बरही। किसी व्यक्ति के मरने के दिन से बारहाँ दिन, द्वादशाह।

बारा—वि० बालक जो सयाना न हो। पु० बालक, लडका।

बारात—स्त्री० 'बरात'।

बारादरी—स्त्री० दे० 'बारहदरी'।

बारानी—वि० [फा०] बरसाती। स्त्री० वह भूमि जिसमे केवल बरसात के पानी से फसल उत्पन्न होती हो। वह कपडा जो पानी से बचने के लिये बरसात मे पहना या ओढा जाता हो।

बारिक—पु० फौजी अफसरो और सिपाहियो के रहने के बँगलो या मकानो की छावनी।

बारि(पु)—वि० स्त्री० लडकी, कुमारी। पुं० पानी, जल। ⊙**गर**(पु)=पु० हथियारो पर बाढ रखनेवाला, सकलीगर। ⊙**चर**=पुं० मछली, चर। ⊙**ज**(पु)=पुं० कमल। ⊙**धर**=पु० बादल, मेघ। एक वर्णवृत्त। **बारिश**—स्त्री० [फा०] वर्षा, वृष्टि ऋतु। **बारी** पु० हिंदुओ की एक जाति जो पत्तल दोने बनाती और हिंदू घरो के अन्य छोटे काम करती है। स्त्री० किनारा, तट। हाशिया, बाड। बरतन के मुह का घेरा, ओठ, पैनी वस्तु का किनारा, धार। बगीचा। क्यारी। घर, मकान। खिडकी, झरोखा। ददरगाह। लडकी, वह जो सयानी न हो। थोडे वयस की की स्त्री, नवयौवना। † दे० 'बाली'। आगे पीछे के सिलसिले के मुताबिक आनेवाला मौका। मु० **बाँधना**= आगे पीछे अलग अलग या नियत समय पर होना। ⁓ से=कालक्रम मे एक के पीछे एक की रीति से।

बारीक—वि० [फा०] महीन, पतला। बहुत छोटा, सूक्ष्म। जिसके अणु बहुत ही छोटे या सूक्ष्म हो। जिसकी रचना मे दृष्टि की सूक्ष्मता और कला की निपुणता प्रकट हो। जो बिना अच्छी तरह ध्यान से सोचे समझ मे न आवे। **बारीकी**—स्त्री० महीनपन, पतलापन। गुण, विशेषता।

बारू—पु० दे० 'बालू'।

बारूद—स्त्री० एक प्रकार का ज्वलनशील चूर्ण या बुकनी जिसमे आग लगने से तोप बदूक चलती है, दारू। एक प्रकार का धान। ⊙**खाना**=पुं० वह स्थान

जहाँ गोले और बारूद आदि रहती है। मु०~गोली = लड़ाई की सामग्री।

बारे—क्रि० वि० [फा०] अस्तु, खैर। अतत, आखिरकार।

बारे में—अव्य० प्रसग मे, विषय मे।

बारो, बारौ(पु)—पु० लडका, बालक।

बारोठा—पु० व्याह की एक रस्म जो वर के द्वार पर आने पर होती है, द्वारचार।

बारोमीटर—पु० दे० 'बैरोमीटर'।

बाल—स्त्री० कुछ अनाजो के पौधो के डंठल का वह अग्रभाग जिसके चारो ओर दाने गुछे रहते हैं। (पु)दे० 'बाला'। पु० [अं०] एक प्रकार का विलायती नाच। गेंद, जैसे फुटबाल हॉकी बाल। पु० [सं०] बालक, लडका। नासमझ आदमी। किसी पशु का बच्चा। सून की सी वह वस्तु जो जंतुओ के शरीर से निकलकर सिर और चमड़े के ऊपर बढती रहती है और प्राय इतनी अधिक होती है कि उनसे चमडा ढक जाता है, रोम, केश,। ⊙कृष्ण = बाल्यावस्था के कृष्ण। ⊙खोरा = पु० [फा०] सिर के बाल झड़ने का रोग। ⊙गोविंद = पु० दे० 'बालकृष्ण'। ⊙ग्रह = पु० बालको के प्राणघातक नौ ग्रह। ⊙चर = पु० बालको को कार्यपटुता, चारित्र्य और लोकसेवा की शिक्षा देने-वाली सस्था का सदस्य। ⊙चर्य = पु० शिशुओ और बालको की सेवा। ⊙चर्या = स्त्री० दे० 'बालचर्य'। ⊙छड = स्त्री० [हिं०] जटामामी। ⊙तंत्र = पु० बालको के लालन पालन आदि की विद्या, कौमार भृत्य। ⊙तोड़ = पु० [हिं०] बाल टूटने के कारण होनेवाला फोडा। ⊙बच्चे = पु० [हिं०] लडकेवाले, सतान। ⊙विधवा = स्त्री० वह स्त्री जो बाल्या-वस्था मे ही विधवा हो गई हो। ⊙बुद्धि = स्त्री० बालको की सी बुद्धि। छोटी या थोडी अक्ल। वि० जिसकी बुद्धि बच्चो की सी हो, मदबुद्धि। ⊙बोध = स्त्री० प्रारभिक शिक्षा की पुस्तक। वि० जो बालको की समझ मे आसानी से आ जाय, सरल। ⊙ब्रह्मचारी = पु० वह जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया हो। ⊙भोग = पु० वह नैवेद्य जो देवताओ, विशेषत. बाल-कृष्ण आदि की मूर्तियो के सामने प्रातः काल रखा जाता है। जलपान, कलेवा। ⊙मुकुंद = पु० बाल्यावस्था के श्रीकृष्ण। ⊙लीला = स्त्री० बालको की क्रीडा। ⊙विधवा = वि० दे० 'बालविधवा'। ⊙विधु = पु० शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चद्रमा। ⊙सूर्य = पु० प्रात काल उगते हुए सूर्य। मु०~बाँका न बाँकना = दे०बाल न होना। (किसी काम मे)~पकाना = (कोई काम करते करते) बुड्ढा हो जाना, बहुत दिनो का अनुभव प्राप्त करना। ~बाँका न होना = कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना।~~बचना = कोई आपत्ति पडने या हानि पहुँचने मे बहुत थोडी कसर रह जाना।

बालक—पु० [सं०] लडका, पुत्र। थोडी उम्र का बच्चा, शिशु। अनजान आदमी। हाथी या घोडे का बच्चा। ⊙ताई = स्त्री० [हिं०] बाल्यावस्था। नासमझी। दे० 'बालकपन'। ⊙पन = पु० [हिं०] बालक होने का भाव। लडकपन, नासमझी।

बालटी—स्त्री० एक प्रकार की डोलची जिसमे उठाने के लिये एक दस्ता रहता है

बालधि—पु० [सं०] दुम, पूंछ।

बालना—सक० जलाना। रोशन करना।

बालपन—पु० बालक होने का भाव। लडकपन।

बालम—पु० पति, स्वामी। प्रणयी, प्रेमी।

बालमखीरा—पु० एक प्रकार का बडा खीरा।

बाला—स्त्री० [सं०] जवान स्त्री, बारह तेरह वर्ष से सोलह सत्रह वर्ष तक की अवस्था की स्त्री। पत्नी, भार्या। स्त्री। दो वर्ष तक की अवस्था की लडकी। पुत्री, कन्या हाथ मे पहनने का कडा। कान मे का गहना। १० महाविद्याओ मे से एक महा-विद्या का नाम। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तीन रगण और अत्य गुरु होता है। वि० [हिं०] जो बालको के समान हो, अज्ञानी, निश्छल,

सीधा। ⊙भोला = वि० बहुत ही सीधासादा। ~~ = वि० [फा०] जो ऊपर की ओर हो, ऊँचा। ⊙खाना = पुं० कोठे के ऊपर की बैठक, मकान के ऊपर का कमरा। मु०~बोल रहना = समान और आदर का सदा बड़ा रहना।

बालाई—स्त्री० दे० 'मलाई'। वि० [फा०] ऊपरी, ऊपर का। वेतन या नियत आय के अतिरिक्त।

बालापन—पुं० दे० 'बालापन'।

बालावर—पुं० [फा०] एक प्रकार का अँगरखा।

बालारोग—पुं० नहरुआ रोग।

बालार्क—पुं० [सं०] प्रातःकाल का सूर्य। कन्या राशि मे स्थित सूर्य।

बालिका—स्त्री० [सं०] छोटी लड़की, कन्या। पुत्री।

बालिग—पुं० [अ०] जवान, प्राप्तवयस्क, नाबालिग का उलटा।

बालिश—स्त्री० [फा०] तकिया। वि० [सं०] नासमझ, मूर्ख।

बालिश्त—पुं० दे० 'बित्ता'।

बाली—स्त्री० कान मे पहनने का एक प्रसिद्ध आभूषण। जौ, गेहूँ आदि के पौधो की बाल।

बालुका—स्त्री० [सं०] रेत, बालू।

बालू—पुं० चट्टानो आदि का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ो पर से बह आता है और नदियो के किनारो पर, अथवा ऊसर जमीन या रेगिस्तानो मे पाया जाता है, रेत। ⊙दानी = स्त्री० एक प्रकार की झँझरीदार डिबिया जिसमे लोग बालू रखते है। इस बालू से स्याही सुखाने का काम लेते हैं। मु०~की भीत = ऐसी वस्तु जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय अथवा जिसका भरोसा न हो।

बालूसाही—स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।

बाल्य—पुं० [सं०] बाल का भाव, लड़कपन। बालक होने की अवस्था। वि० बालक का। बचपन का।

बाल्यावस्था—स्त्री० प्रायः सोलह सत्रह वर्ष तक की अवस्था, लड़कपन।

बाव—स्त्री० वायु, हवा, बाई। अपान वायु।

बावड़ी—स्त्री० दे० 'बावली'।

बावन—पुं० दे० 'वामन'। पचास और दो की संख्या ५२। वि० पचास और दो। मु०~तोले पाव रत्ती = जो हर तरह से बिलकुल ठीक हो, बिलकुल दुरुस्त। ~बीर = बड़ा बहादुर और चालाक।

बावर(पु)†—वि० दे० 'बावला'। पुं० दे० 'भामर'। पुं० [फा०] यकीन, विश्वास।

बावरची—पुं० [फा०] भोजन पकानेवाला, रसोइया। ⊙खाना = पुं० भोजन पकाने का स्थान, रसोईघर।

बावरा—वि० दे० 'बावला'।

बावला—वि० पागल, सनकी। मूर्ख।

बावली—स्त्री० चौड़े मुँह का कुआँ जिसमे पानी तक पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ बनी हो। छोटा गहरा तालाब।

बावाँ(पु)†—वि० बाईं ओर का। प्रतिकूल, विरुद्ध।

बाशऊर—वि० [फा० + अ०] व्यवहार-निपुण, गुणी।

बाशिंदा—पुं० [फा०] निवासी।

बाष्प—पुं० भाप। लोहा। अश्रु, आँसू।

बासंतिक—पुं० [सं०] बसंत ऋतु संबंधी। बसंतऋतु मे होनेवाला।

बास—पुं० रहने की क्रिया या भाव, निवास। रहने का स्थान। एक छंद का नाम। कपड़ा। छोटा कपड़ा। स्त्री० बू, गंध, महक। वासना, इच्छा। आग। एक प्रकार का वस्त्र। तेज धारवाली छुरी, चाकू, कैंची इत्यादि छोटे शस्त्र जो तोपो मे भरकर फेंके जाते हैं।

बासकसज्जा—स्त्री० दे० 'वासकसज्जा'।

बासकसज्या(पु)—स्त्री० दे० 'वासकसज्जा'।

बासन—पुं० बरतन भाँडा।

बासना—स्त्री० दे० 'वासना'। गंध, बू। सक० सुगंधित करना, महकाना।

बासमती—पु० एक प्रकार का धान जिसका चावल सुगंध देता है।
बासर—पुं० दिन। सवेरा, प्रातःकाल। वह राग जो सबेरे गाया जाता है।
बासव—पु० [सं०] इंद्र।
बाससो—पु० कपडा।
बासा—पु० वह स्थान जहाँ दाम देने पर पकी हुई रसोई मिलती है।
बासित—वि० गंधपूर्ण, वासित।
बासी—वि० देर का बना हुआ, जो ताजा न हो (खाद्य पदार्थ)। जो कुछ समय तक रखा रहा हो। सूखा या कुम्हलाया हुआ। मु०~कढी मे उबाल आना = बुढापे मे जवानी की उमंग उठना। किसी बात का समय बिलकुल बीत जाने पर उसके संबंध मे कोई वासना उत्पन्न होना।
बासुकी—स्त्री० सुगंधित फूलो की माला। पु० वासुकी नाग।
बासौंधी—स्त्री० दे० 'बसौंधी'।
बाह—स्त्री बाहने की क्रिया या भाव। खेत की जोताई। पु० दे० 'प्रवाह'।
बाहक—पु० सवार। वह जो कोई चीज ले जाता हो। ⓟ हांकने या चलानेवाला।
बाहकीⓟ—स्त्री० पालकी ले चलनेवाली, स्त्री कहारिन।
बाहना—सक० ढोना, लादना या चढाकर ले आना। चलाना, फेंकना (हथियार)। गाडी घोडे आदि को हांकना। धारण करना, लेना प्रवाहित होना। खेत जोतना। बाल आदि कंघी की सहायता से एक तरफ करना।
बाहनीⓟ—स्त्री० सेना।
बाहम—क्रि० वि० [फा०] आपस मे।
बाहर—क्रि० वि० किसी निश्चित या कल्पित सीमा या मर्यादा से हटकर अलग या निकला हुआ। भीतर या अंदर का उलटा। किसी दूसरी जगह, अन्य नगर मे। प्रभाव, अधिकार या संबंध आदि से अलग। बगैर, सिवा। ⊙जामी = ⓟ†ईश्वर के सगुण रूप राम, कृष्ण इत्यादि। मु०~आना या होना = सामने आना, प्रकट होना। ~करना = दूर करना, हटाना। ~का = बेगाना पराया। ⊙बाहर = अलग या दूर से, बिना किसी को जताए। **बाहरी**—वि० बाहर का, बाहरवाला। पराया, गैर जो आपस का न हो, अजनबी। जो केवल बाहर से देखने भर को हो, ऊपरी।
बाहाँजोरी—क्रि० वि० भुजा से भुजा मिलाकर, हाथ से हाथ मिलाकर।
बाहिजⓟ—पु० ऊपर देखने मे।
बाहिनीⓟ—स्त्री० दे० 'वाहिनी'।
बाहु—स्त्री० [सं०] भुजा, बाँह। ⊙ज = पु० वह जो बाहु से उत्पन्न हुआ हो। क्षत्रिय। ⊙त्राण = ⓟपु० वह दस्ताना जो युद्ध मे हाथो की रक्षा के लिये पहना जाता है। ⊙बल = पु० पराक्रम, बहादुरी। ⊙मूल, ⊙पु० कंधे और बाँह का जोड। ⊙युद्ध = पु० कुश्ती। हजार⊙ = पुं० [हिं०] दे० 'सहस्रबाहु'।
बाहुक—पुं० [सं०] राजा नल का उस समय का नाम जब वे अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के सारथी बने थे। नकुल। बाहु की पीड़ा।
बाहुल्य—पु० [सं०] बहुतायत, अधिकता, ज्यादती। व्यर्थता, फालतूपन।
बाह्य—वि० [सं०] बाहरी, बाहर का। पुं० भार ढोनेवाला, पशु। सवारी, यान।
बाह्लीक—पु० [सं०] कांबोज के उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम, बलख।
बिंगि—पु० दे० 'व्यंग्य'।
बिंजनⓟ†—पुं० दे० 'व्यंजन'।
बिंदⓟ†—पुं० पानी की बूँद, दोनो भौहों के मध्य का स्थान। वीर्य की बूँद। बिंदी, माथे का गोल तिलक।
बिंदा—स्त्री० एक गोपी का नाम। पुं० माथे पर का गोल और बडा टीका, बुंदा। **बिंदी**—स्त्री० सुन्ना, शून्य, माथे पर का गोल और छोटा टीका, बिंदुली। इस आकार का कोई चिह्न।
बिंदुका—पु० दे० 'बिंदी'।
बिंदुली—स्त्री० बिंदी, टिकुली।
बिंध—पुं० विंध्याचल पर्वत।

बिंधना—अक० बींधा जाना, छेदा जाना। फँसना।

बिंब—पु० [सं०] प्रतिबिंब, छाया। कमडलु। प्रतिमूर्ति। कुँदरू नामक फल। सूर्य या चद्रमा का मडल। आभास। एक प्रकार का छद जिसके दो भेद हैं, पहला नौ और दूसरा १६ वर्णों का, पहले के प्रत्येक चरण में क्रम से, मगण, तगण, नगण, सगण, दो तगण और अत्य गुरु वर्ण रहता है तथा पाँचवें और १२ वें वर्ण पर यति और चरणात मे विराम होता है। पु० [हिं] दे० 'बाँबी'। बिंबा—पु० कुँदरू। बिंब, प्रतिच्छाया। चद्रमा या सूर्य का मडल। बिंबित—वि० जिसका बिंब या अकस उतर रहा हो।

बि(पु)—वि० दो, एक और एक।

बिअहुता‡—वि० जिसके साथ विवाह सबध हुआ हो। विवाह सबधी, विवाह का।

बिआधि—स्त्री० दे० 'व्याधि'।

बिआधु†—पु० दे० 'व्याधि'।

बिआना—सक० बच्चा देना, जनना (पशुओ के सबध मे)।

बिआहना(पु)—सक० 'व्याहना'।

बिकना—अक० मूल्य लेकर दिया जाना, बेचा जाना। मु०—किसी के हाथ~ = किसी का अनुचर, सेवक का दास होना।

बिकरार‡—वि० भयानक, डरावना।

बिकल†—वि० व्याकुल, घबराया हुआ। बेचैन। बिकलाना†—अक० व्याकुल होना, बेचैन होना। सक० व्याकुल करना, बेचैन करना। बिकलाई—स्त्री० व्याकुलता, बेचैनी। बिकली(पु)—वि० स्त्री० दे० 'बिकल'।

बिकवाना—सक० [बेचना का प्रे०] बेचने का काम दूसरे से कराना।

बिकसना—अक० खिलना, फूलना। बहुत प्रसन्न होना। बिकसाना—अक० दे० 'बिकसाना'। सक० विकसित करना, खिलाना। प्रसन्न करना।

बिकाना—अक० दे० 'बिकवाना'। बिकाऊ—वि० जो बिकने के लिये हो, बिकनेवाला।

बिकार(पु)—पुं० दे० 'विकार'। विकट, भीषण।

बिकारी†—वि० जिसका रूप बिगड़कर और का और हो गया हो। बुरा, हानिकारक। स्त्री० एक प्रकार की टेढ़ी पाई जो अको आदि के साथ संख्या या मान सूचित करने के लिते लगाते हैं। (जैसे ऽ१ = एक सेर, एक आना, इत्यादि)।

बिकासना(पु)—सक० विकसित करना। (फूल आदि) खिलाना।

बिकुंठ(पु)—पु० दे० 'वैकुंठ'।

बिकूल(पु)—वि० प्रतिकूल, वाम।

बिख(पु)—पु० जहर।

बिक्री—स्त्री० किसी पदार्थ के बेचे जाने की क्रिया या भाव, विक्रय। बेचने से मिलनेवाला धन। ⊙कर = पु० माल की बिक्री पर खरीदारो से लिया जानेवाला कर।

बिख†—पु० दे० 'विष'।

बिखम—वि० दे० 'विषम'।

बिखेरना—अक० छितराना, तितर बितर हो जाना। बिखराना—सक० दे० 'बिखेरना'।

बिखाद(पु)—पु० दे० 'विषाद'।

बिखान(पु)—पु० दे० 'विषाण'।

बिखौला—वि० जहरीला।

बिखेरना—सक० [अक० बिखराना] इधर उधर फैलाना, छितराना।

बिग†—पु० दे० 'वीग'।

बिगड़ना—अक० गुण या रूप आदि मे विकार होना, खराब हो जाना। किसी पदार्थ के बनते समय उसमे कोई ऐसा विकार होना जिससे वह ठीक न उतरे। दुरवस्था को प्राप्त होना, खराब दशा मे हो जाना। नीतिपथ से भ्रष्ट होना, बदचलन होना। क्रुद्ध होना। विरोधी होना। विद्रोह करना। (पशुओ आदि का) अपने स्वामी या रक्षक के अधिकार से बाहर हो जाना। परस्पर विरोध या वैमनस्य होना। बेफायदा खर्च होना। बिगड़ेदिल—पुं० [फा०] हर बात मे लड़ने झगड़नेवाला। कुमार्ग

पर चलनेवाला। बिगड़ैल—वि० हर बात मे बिगड़ने या क्रोध करनेवाला। हठी, जिद्दी।
बिगर†—क्रि० वि० दे० 'बगैर'।
बिगराइल†—वि० दे० 'बिगडैल'।
बिगरना—अक० दे० 'बिगडना'।
बिगसना(पु)—अक० दे० 'विकस'।
बिगहा—पुं० दे० 'बीघा'।
बिगाड़—पुं० बिगडने की क्रिया या भाव। खराबी, दोष। वैमनस्य, झगडा। ⊙ना=सक० किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप को नष्ट कर देना। किसी पदार्थ को बनाते समय उसमे ऐसा विकार उत्पन्न कर देना जिससे वह ठीक न उतरे। दुरवस्था को प्राप्त कराना। नीति या कुमार्ग मे लगाना। सतीत्व नष्ट करना। बुरी आदत लगाना। बहकाना। व्यर्थ करना।
बिगाना‡—वि० जिससे आपसदारी का कोई संबंध न हो, पराया।
बिगार‡—पु० दे० 'बिगाड'।
बिगारि(पु)—‡वि० दे० 'बेगार'। बिगारी—स्त्री० दे० 'बेगारी'। बिगास(पु)†—पुं० दे० 'विकास'। ⊙ना=सक० विकसित करना।
बिगिर(पु)‡—क्रि० वि० दे० 'बगैर'।
बिगुन(पु)‡—वि० जिसमे कुछ गुण न हो, गुणरहित।
बिगुर—वि० जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो, निगुरा।
बिगुरचिन(पु)‡—स्त्री० दे० 'बिगूरचन'।
बिगुरदा(पु)‡—पुं० प्राचीन काल का एक प्रकार का हथियार।
बिगुल(पु)†—पु० [अं०] अँगरेजी ढंग की एक प्रकार की तुरही जो प्राय सैनिको के लिये बनाई जाती है।
बिगुलर(पु)‡—पु० [अं०] फौज मे बिगुल बजानेवाला।
बिगूचना—अक० अडचन या असमजस मे पडना। दबाया जाना, पकडा जाना। सक० दबोचना, धर दबाना। बिगूचन—स्त्री० असमजस, अड़चन, कठिनता, दिक्कत।
बिगोना—सक० नष्ट करना, बिगाडना। छिपाना, दुराना। तग करना। भ्रम मे डालना, बहकाना। बिताना।
बिग्गाहा—पुं० आर्या छद का एक भेद, उद्गीति।
बिग्रह—पु० दे० 'विग्रह'।
बिघटना—सक० बिगाडना, तोडना, फोडना।
बिघन—पुं० दे० 'वघिन'।
बिघार†—पु० दे० 'बाघ'।
बिच(पु)|—क्रि० दे० 'बीच'।
बिचकना—अक० मुह का टेढा होना। भडकना, चौंकना। बिचकाना—सक० बिराना, चिढाना (मुँह)। (मुँह का स्वाद बिगडने के कारण) टेढा करना, (मुँह) बनाना। भडकना, चौंकना।
बिचच्छन(पु)‡—विचिच्छन वि० दे० 'विचक्षण'।
बिचरना—अक० चलना फिरना। यात्रा करना।
बिचलना—अक० विचलित होना, इधर उधर हटना। हिम्मत हारना। कहकर मुकरना।
बिचला—वि० जो बीच मे हो, बीच का।
बिचलाना(पु)‡—सक० [अक० बिचलना] विचलित करना, डिगाना। हिला देना। तितर बितर करना।
बिचवई—पुं० दे० 'बिचवान'।
बिचवान, बिचवानी—पुं० बीच बचाव करनेवाला, मध्यस्थ।
बिचषन—(पु)—वि० दे० 'विचक्षण'।
बिचहुत—पु० फरक, दुबधा, सदेह।
बिचार—पु० दे० 'विचार'। ⊙ना(पु)‡—अक० विचार करना, गौर करना। पूछना। ⊙मान=वि० विचार करनेवाला।
बिचारा—वि० दे० 'बेचारा'
बिचारी(पु)†—पु० विचार करनेवाला।
बिचाल(पु)—पु० अलग करना। अंतर, फर्क।
बिचि—क्रि० वि० दे० 'बीचे'।
बिचेत(पु)‡—वि० बेहोश, अचेत। बदहवास।
बिचौनी, बिचौहाँ—पु० दे० 'बिचवान'।

बिच्छित्ति—स्त्री० [सं०] शृगार रस के ११ हावो मे से एक जिसमे किंचित् शृगार से ही पुरुष को मोहित कर लिया जाना, वर्णन किया जाता है।

बिच्छी—स्त्री० दे० 'बिच्छू'।

बिच्छू—पु० एक प्रसिद्ध छोटा जीव जिसे जहरीला डक होता है। एक प्रकार की जहरीली घास।

बिच्छेद(पु)—पु० दे० 'विच्छेद'।

बिच्छेप(पु)‡—पु० दे० 'विक्षेप'।

बिछना—अक० [सक० बिछाना] बिछाया जाना।

बिछलन—अक० दे० 'फिसलना'।

बिछाना—सक० [अक० बिछना] किसी चीज को जमीन पर कुछ कुछ दूर तक फैला देना, बिखेरना। (मार मार कर) जमीन पर गिरा या लेटा देना।

बिछायत—स्त्री० दे० 'बिछौना'।

बिछावन†—पुं० दे० बिछौना'।

बिछिया†—स्त्री० पैर की उँगलियो मे पहनने का एक प्रकार का छल्ला।

बिछिप्त(पु)†—वि० दे० 'विक्षिप्त'।

बिछुआ—पुं० पैर मे पहनने का एक गहना। एक प्रकार की छुरी। एक प्रकार की करधनी।

बिछुड़न†—स्त्री० बिछुडने या अलग होने का भाव, वियोग। बिछुडना—अक० अलग होना। प्रेमियो का एक दूसरे से अलग होना, वियोग होना।

बिछुरत(पु)†—पुं० बिछुड़नेवाला। जो बिछुड गया हो।

बिछुरन(पु)—स्त्री० दे० 'बिछुड़न'। बिछुरना (पु)—अक० दे० 'बिछुडना'।

बिछूरना(पु)†—वि० जो बिछुड गया हो।

बिछेद(पु)—पु० दे० 'विच्छेद'।

बिछोड़ा—पु० बिछुड़ने की क्रिया या भाव। विरह।

बिछोय, बिछोह—पु० जुदाई, विरह।

बिछौन—पुं० दे० बिछौना।

बिछौना—पु० वह कपड़ा जो बिछाया जाता हो, बिस्तर।

बिजन—(पु)†पु० छोटा पंखा, बेना। वि० एकात स्थान। जिसके साथ कोई न हो।

बिजयसार—पु० एक प्रकार का बहुत बडा जगली पेड।

बिजली—वि० बहुत चचल या तेज। बहुत चमकनेवाला। स्त्री० घर्षण, ताप और रासायनिक क्रियाओ से उत्पन्न होनेवाली शक्ति जिसके कारण वस्तुओ मे आकर्षण और अपकर्षण होता है और जिससे ताप और प्रकाश भी उत्पन्न होता है, विद्युत्। आकाश मे सहसा उत्पन्न होनेवाला वह प्रकाश जो बादलों की रगड के कारण उत्पन्न होता है, चपला। आम की गुठली के अदर की गिरी। गले में पहनने का एक गहना। ⊙घर = पुं० वह स्थान जहाँ से अन्य स्थानो को बिजली पहुँचाई जाती हो। मु०~गिरना या पड़ना = बिजली का आकाश से पृथ्वी की ओर बडे वेग से आना और मार्ग मे पडनेवाली चीजों को जलाकर नष्ट करना।

बिजहन—वि० जिसका बीज नष्ट हो गया हो।

बिजाती—वि० और जाति या तरह का। जाति से निकाला हुआ, अजाती।

बिजान(पु)†—पु० अज्ञान, अनजान।

बिजायठ—पु० बाँह पर पहनने का बाजूबंद, भुजबद।

बिजुरी(पु)†—स्त्री० दे० 'बिजली'।

बिजूका, बिजूखा‡—पुं० खेतो मे पक्षियों आदि को डराकर दूर रखने के उद्देश्य से लकडी के ऊपर उलटी रखी हुई काली हाँडी।

बिजोग(पु)‡—पु० 'वियोग'।

बिजोरा—वि० कमजोर, निर्बल।

बिजोहू—अक० अच्छी तरह देखना।

बिजोहा—पु० 'बिज्जूहा'।

बिजौरा—पु० नीबू की जाति का एक वृक्ष और उसका बड़ी नारगी के आकार का तथा मोटे छिलके का फल।

बिजौरी—स्त्री० दे० 'कुम्हडौरी'।

बिज्जु(पु)‡—स्त्री० दे० 'बिजली'।

बिक्कुल(पु)‡—पुं० त्वचा, छिलका। स्त्री० बिजली, दामिनी।

बिज्जू—पु० बिल्ली के आकार प्रकार का एक जंगली जानवर, बीजू।

बिज्जूहा—पु० एक वर्णिक वृत्त, बिजोहा।

बिझुकना(पु)—अक० भड़कना। डरना। टेढ़ा होना, बनना। **बिझुकाना**(पु)—सक० भड़काना, डराना।

बिट—पु० साहित्य मे नायक का वह सखा जो सब कलाओं मे निपुण हो। वैश्य। नीच, खल।

बिटरना—सक० [सक० बिटर] घघोला जाना। गंदा होना। **बिटारना**—सक० घंघोलना, मदा करना।

बिटिया†—स्त्री० दे० 'बेटी'।

बिट्ठल—पु० [सं०] विष्णु का एक नाम। बंबई प्रांत में शोलापुर के अंतर्गत पढरपुर की एक देवमूर्ति। जैनी इसे अपनी तीर्थंकर की मूर्ति और हिंदू विष्णु भगवान् की मूर्ति बतलाते है।

बिठाना—सक० दे० 'बैठाना'।

बिडंब—पु० आडंबर।

बिडंबना—स्त्री० नकल। उपहास, निंदा।

बिड—पु० दे० 'विट्'।

बिड़ई†—स्त्री० दे० 'ईडुरी'।

बिडर—वि० छितराया हुआ, अलग अलग, दूर। † न डरनेवाला। ढीठ।

बिडराना—अक० इधर उधर होना, तितर बितर होना। पशुओ का भयभीत होना। बरबाद होना। **बिडंवना**—सक० इधर उधर या तितर बितर करना। भगाना।

बिडवाना(पु)‡—सक० तोडना।

बिडारना(पु)—सक० [अक० बिडराना] भयभीत करके भगाना।

बिडाल—पुं० [सं०] बिल्ली, बिलाव। बिडालाक्ष नामक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। दोहे का २० वाँ भेद जिसमे तीन अक्षर गुरु और ४२ लघु होते है। ⊙व्रतिक = वि० लोभी। कपटी। दंभी। सबको धोखा देनेवाला और सबसे टेढ़ा रहनेवाला।

बिढ़ौजा—पुं० [सं०] इंद्र।

बिढ़तो(पु)‡—पु० कमाई, नफा।

बिढ़वना(पु)‡—सक० कमाना। बढाना। **बिढाना**(पु)‡—सक० दे० 'बढवना'।

बित(पु)‡—पु० धन, द्रव्य। सामर्थ्य, शक्ति। कद, आकार।

बितंत(पु)—वि० बीता हुआ।

बितताना—अ० व्याकुल होना, संतप्त होना। सक० सतप्त करना, सताना।

बितना‡—सं० दे० 'बित्ता'।

बितल—पु० दे० 'वितल'। फिर तल रसातल बितल गैठि ····(हिम्मत० ६८)।

बितरना(पु)‡—सक० बाँटना।

बितवना(पु)†—सक० दे० 'बिताना'।

बिताना—सक० व्यतीत करना, गुजारना।

बितान—पु० दे० 'वितान'। (पु)यज्ञ। दे० 'दानबल दानवल विविधि बितानबल··· (प्रबोध १०)।

बितावना(पु)†—सक० दे० 'बिताना'।

बितीतना—अक० व्यतीत होना, गुजरना। सक० बिताना, गुजारना।

बितु(पु)†—पुं० दे० 'वित्त'।

बित्त—पु० धन, दौलत। हैसियत, औकात। सामर्थ्य।

बित्ता—पुं० हाथ की सब उँगलियो को फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की दूरी, बालिश्त।

बित्ताल†—पु० बैताल। '' बधु बिताल नचावहि' (प्रताप० ६४)।

बित्थ(पु)—पु० धन, सपत्ति।

बिथकना—अक थकना। चकित होना, हैरान होना। मोहित होना।

बिथरना—अक० छितराना। अलग अलग होना, खिल जाना।

बिथा(पु)—स्त्री० दे० 'व्यथा'।

बिथार—पु० फैलाव, विस्तार।

बिथारना—सक० छितराना, बिखेरना।

बिथित(पु)—वि० दे० 'व्यथित'।

बिथुरना—अक० दे० 'बिथरना'।

बिथुरित—वि० बिखरा या छितराया हुआ।

बियोरना(पु)—सक दे० 'वियराना'।
बिदकना—अक० फटना, चिरना। घायल होना। भड़कना। बिदकाना—सक० [अक० 'बिदकना] फाडना। घायल करना। भड़काना।
बिदर—पुं० बिदर्भ देश, बरार। एक प्रकार की उपधातु जो तांबे और जस्ते के मेल से बनती है।
बिदरन(पु)—स्त्री० दरार, शिगाफ। वि० फाडने वाला, चीरनेवाला।
बिदरना(पु) अक० फटना।
बिदरी—स्त्री० जस्ते और तांबे के मेल से बरतन आदि बनाने का जिसमे बीच बीच मे सोने या चांदी के तारो से नक्काशी की हुई होती है। बिदर की धातु का बना हुआ सामान।
बिदा—स्त्री० प्रस्थान, गमन। जाने की आज्ञा। द्विरागमन, गौना। बिदाई—स्त्री० बिदा होने की क्रिया या भाव। बिदा होने की आज्ञा। वह धन जो किसी को बिदा होने के समय दिया जाय।
बिदारना†—सक० चीरना, फाड़ना। नष्ट करना।
बिदारीकंद—पु० एक प्रकार का लाल कंद, बिलाईकद।
बिदोरना(पु)—सक० फाडना।
बिदुरना(पु)†—अक० मुस्कराना, धीरे धीरे हँसना।
बिदुरानी(पु)—स्त्री० मुस्कराहट।
बिदूषना(पु)†—अक० दोष लगाना, कलक लगाना।
बिदेश—पु० परदेश।
बिदोख‡(पु)—पु० वैर, वैमनस्य।
बिदोरना‡—अक० (मुँह या दांत) खोलकर दिखाना।
बिद्दत—स्त्री० खराबी, बुराई। कष्ट, तकलीफ। विपत्ति। अत्याचार। दुर्दशा।
बिद्रुम—पुं० दे० 'विद्रुम'।
बिधसक—वि० दे० 'विध्वसक'। बिधंसना (पु)‡—सक० विध्वंस करना।
बिध—स्त्री० प्रकार, तरह। ब्रह्मा। जमा-खर्च का हिसाब। ⊙ना = पुं० विधि, ब्रह्मा। मु० ~मिलाना = यह देखना कि आय और व्यय की सब मदें ठीक लिखी गई हैं।
बिधना—अक० दे० 'बिधना'।
बिधवापन(पु)—पुं० दे० 'वैधव्य'।
बिधवा—स्त्री० दे० 'विधवा'।
बिधांसना(पु)‡—सक० विध्वस करना, नष्ट करना।
बिधाई(पु)—पुं० वह जो विधान करता हो, विधायक।
बितात, बिधाता—पु० दे० 'विधाता'।
बिधान—अक० दे० 'बिधाना'। बिानी-(पु)‡—पु० विधान करनेवाला रचनेवाला।
बिधवाना—अक० दे० 'बिधाना।'
बिधुंतुद—पु० दे० 'विधुंतुद'।
बिधुसना(पु)—सक० नष्ट करना।
बिन(पु)‡—अव्य० दे० 'बिना'।
बिनई(पु)‡—पु० दे० 'विनयी'।
बिनउ(पु)‡—स्त्री० दे० 'विनय'।
बिनकार—वि० कपडा बुननेवाला, जुलाहा।
बिनठना(पु)—अक० नष्ट होना।
बिनति, बिनती—स्त्री० प्रार्थना, निवेदन।
बिनन—स्त्री० बिनने या चुनने की क्रिया या भाव। वह कूडाकर्कट आदि जो किसी चीज मे से चुनकर निकाला जाय। बिनना—सक० छोटी छोटी वस्तुओ को एक एक करके उठाना, चुनना। छांट छांटकर अलग करना। दे० 'बुनना'।
बिनदना(पु)†—अक० विनय करना, मिन्नत करना।
बिनवट—स्त्री० पटा बनेठी चलाने की क्रिया या खेल। पत्थर या धातु की गोली जिसमें डोरा लगा होता है और जिसे चलाकर आक्रमण किया जाता है।
बिनसना(पु)†—अक० नष्ट होना, बरबाद होना। सक० विनाश करना। बिनसाना(पु)—सक० विनाश करना, बिगाड़ डालना। अक० विनष्ट होना।

बिना—अव्य [सं०] छोडकर, बगैर। स्त्री० [अ०] मूल आधार, कारण।
बिनाई—स्त्री० बीनने या चुनने की क्रिया या भाव, बुनावट।
बिनती‡—स्त्री० दे० 'विनती'।
बिनानी(पु)—वि० अज्ञानी, अनजान। विज्ञानी। स्त्री० विशेष विचार, गौर।
बिनावट—स्त्री० दे० 'बुनावट'।
बिनास(पु)—पु० दे० 'विनाश'।
बिनासना—सक० विनष्ट करना, सहार करना।
बिनाह(पु)—पु० दे० 'विनाश'।
बिनिंद—वि० अनिंद्य, उत्तम।
बिनि, बिनु(पु)—अव्य दे० 'बिना'।
बिनूठा(पु)‡—वि० अनोखा।
बिनौरी—स्त्री० ओले के छोटे टुकडे।
बिनै(पु)‡—स्त्री० दे० 'विनय'।
बिनौला—पु० कपास का बीज, बनौर, कुकटी।
बिपक्ख—पुं० दे० 'विपक्ष'।
बिपच्छ(पु)‡—पु० शत्रु। वि० अप्रसन्न, नाराज। प्रतिकूल, विरुद्ध।
बिपच्छी(पु)‡—पु० वह जो विपक्ष का हो, विरोधी। शत्रु।
बिपत, बिपद(पु)‡—स्त्री० दे० 'विपत्ति'।
बिपर(पु)‡—पुं० ब्राह्मण।
बिपरीति(पु)—स्त्री० विपरीत होने का भाव।
बिफर(पु)‡—वि० दे० 'विफल'।
बिफरना(पु)‡—अक० बागी होना, विद्रोही होना, नाराज होना।
बिफली—वि० असफल।
बिबछना(पु)‡—अक० विरोधी होना। उलझना,‡ फँसना।
बिबरन(पु)—वि० जिसका रंग खराब हो गया हो, बदरग। जिसके मुख की कांति नष्ट हो गई हो। पु० दे० 'विवरण'।
बिबस(पु)‡—वि० मजबूर, लाचार। पराधीन। क्रि० वि० बेबस होकर।
बिबसना(पु)—अक० विवश होना।
बिबहार(पु)—पु० दे० 'व्यवहार'।
बिबाई—स्त्री० एक रोग जिसमे पैरो के तलुए का चमडा फट जाता है।
बिबाक(पु)—वि० दे० 'बेबाक'।
बिबि—वि० दो।
बिभाना(पु)—अक० चमकना।
बिभात—पु० प्रभात, सवेरा।
बिभावरी—स्त्री० दे० 'विभावरी'।
बिभिचारी(पु)—वि० दे० 'व्यभिचारी'।
बिभोर—वि० दे० 'विभोर'।
बिमन(पु)‡—जिसे बहुत दुःख हो। उदास, सुस्त। क्रि० वि० अनमना होकर।
बिमला—स्त्री० सरस्वती।
बिमानी (पु)—वि० मानरहित, निरभिमान।
बिमोहना—सक० मोहित करना, लुभाना। अक० मोहित होना।
बिय(पु)‡—वि० दो, युग्म। दूसरा। (पु)‡ पु० दे० 'बीज'।
बियत—पु० आकाश।
बिया‡—पु० दे० 'बीज'। वि० दूसरा, अन्य।
बियाधा(पु)‡—पुं० दे० 'व्याधा'।
बियाधि(पु)‡—स्त्री० दे० 'व्याधि'।
बियान‡—पु० दे० 'ब्यान'।
बियापना(पु)‡—सक० दे० 'व्यापना'।
बियाबान—पु० [फा०] बहुत उजाड स्थान या जगल, सुनसान या निर्जन स्थान।
बियारी, बियालू(पु)‡—स्त्री० दे० 'ब्यालू'।
बियाह(पु)‡—पु० दे० 'विवाह'। ⊙चार=पुं० ब्याह की रीति।
बियाहता‡—वि० स्त्री० ब्याही हुई।
बिरंग—वि० कई रगो का। बिना रग का।
बिरई‡—स्त्री० छोटा बिरवा। जडी बूटी।
बिरकत(पु)—वि० दे० 'विरक्त'।
बिचरना(पु)—सक० दे० 'विचरना'।
बिरछ, बिरछा(पु)‡—पुं० दे० 'वृक्ष'।
बिरिछिक(पु)‡—अक० पुं० दे० 'वृश्चिक'।
बिरझना‡—अक० झगडना।
बिरतंत(पु)‡—पुं० दे० 'वृत्तांत'।
बिरता—पुं० सामर्थ्य, बूता।
बिरताना(पु)‡—सक० बाँटना।
बिरथा‡—वि० दे० 'व्यर्थ'।

बिरद—पुं० दे० 'विरद'। **बिरदैत**—पुं० बहुत प्रसिद्ध बीर या योद्धा। वि० नामी, प्रसिद्ध। **बिरध**—वि० दे० 'वृद्ध'। **बिरधाई**(पु)—स्त्री० वृद्धावस्था। **बिरमना**—अक० ठहरना, रुकना। सुस्ताना, आराम करना मोहित होकर फँस रहना। **बिरमाना**—सक० ठहराना, रोक रखना। मोहित करके फँसा रखना। बिताना।

बिरला—वि० बहुतो मे से कोई एकाध, इक्का दुक्का।

बिरवा—पुं० वृक्ष, पेड़।

बिरह—पुं० दे० 'विरह'। **बिरही**—पुं० वह पुरुष जो अपनी प्रेमिका के विरह से दुःखित हो, विरही।

बिरहा—पुं० एक प्रकार का लोकगीत जिसे प्राय अहीर गाते हैं।

बिरहाना—अक० विरह से पीड़ित होना।

बिराजना—अक० शोभित होना। बैठना।

बिरादर—पु० [फा०] भाई, भ्राता।

बिरादरी—पु० [फा०] भाईचारा। एक ही जाति के लोगो का समूह।

बिराना(पु)—सक० किसी को चिढाने के हेतु मुह की कोई विलक्षण मुद्रा बनाना या उसके कहे हुए शब्द दुहराना, मुह चिढाना।

बिरान, बिराना(पु)—वि० दे० 'बेगाना'।

बिरावना—सं० दे० 'बिराना'।

बिरिख(पु)—पु० दे० 'वृष' दे० 'वृक्ष'।

बिरिछ(पु)—पु० दे० 'वृक्ष'।

बिरियाँ—स्त्री० समय। बार, दफा।

बिरी(पु)—स्त्री० दे० 'बाड़ी' दे० 'बीडा'।

बिरुझना—अक० झगड़ना।

बिरुदैत—पु० दे० 'विरदैत'

बिरुधाई—स्त्री० दे० 'बुढापा'। दे० 'विरोध'।

बिरोग—पु० वियोग, बिछोह। दुःख, चिंता।

बिरोजा—पु० दे० 'गंधाबिरोजा'।

बिरोधना†—अक० विरोध करना, वैर करना।

बिरोलना(पु)—सक० दे० 'विलोरना'।

बिलंद(पु)—वि० ऊँचा। बड़ा। जो विफल हो गया हो (व्यंग्य)। विवेकरहित।

बिलंबना(पु)†—अक० बिलंब करना, देर करना। ठहरना, रुकना।

बिल—पुं० [सं०] छेद, दरज। जमीन के अंदर खोदकर बनाया हुआ जीव जंतुओं के रहने का स्थान। पुं० [अं०] किसी को हिसाब चुकता करने के लिये दिया जानेवाला वह पुरजा जिसमे प्राप्य मूल्य या पारिश्रमिक का पूरा ब्योरा लिखा रहता है। कानून का मसौदा जो विधानसभाओं या संसद मे स्वीकृति के लिये उपस्थित किया जाय।

बिलई†—स्त्री० बिल्ली। 'तृसंना बिसासिनि या बिलई सी बाढ़ी है' (प्रबोध० १०)।

बिलकुल—क्रि० वि० [अ०] पूरा पूरा, सब। आदि से अंत तक। निरा, एकदम।

बिलखना—अक० विलाप करना, रोना। दुःखी होना। सकुचित होना, सिकुड़ जाना। **बिलखाना**—सक० रुलाना। दुखी करना। अक० सिकुड़ना, सकुचित होना।

बिलग—वि० अलग, जुदा। पु० पार्थक्य, अलग होने का भाव। द्वेष, कोई बुरा भाव, रंज।

बिलगाना—अक० अलग होना, दूर होना, सक० अलग करना, दूर करना। छाँटना, चुनना।

बिलच्छन—वि० दे० 'विलक्षण'।

बिलछना(पु)—अक० लक्ष करना, ताड़ना।

बिलटी—स्त्री० रेल के द्वारा भेजे जानेवाले माल की रसीद।

बिलनी—स्त्री० काली भौंरी जो दीवारो पर मिट्टी की बाँबी बनाती है। आँख की पलक पर होनेवाली एक छोटी फुंसी, गुहाजनी।

बिलपन—पुं० विलाप, रोदन। **बिलपना** (पु)†—अक० रोना।

बिलफेल—क्रि० वि० [अ०] इस समय।

बिलबिलाना—अक० छोटे छोटे कीडो का इधर उधर रेंगना। व्याकुल होकर बकना या रोना चिल्लाना।

बिलम(पु)†—पुं० दे० 'विलंब'। ⊙ **ना** (पु) † = अक० विलंब करना, देर करना। ठहर जाना,

रुकना। किसी के प्रेमपाश मे फँसकर कहीं रुक रहना। **बिलमाना**--सक० प्रेम के कारण रोका या ठहरा रखना।

बिललाना--अक० दे० 'बिलखना'।

बिलवाना†--सक० खो देना, नष्ट करना। दूसरे के द्वारा नष्ट कराना। छिपाना। छिपवाना।

बिलसना(पु)†--अक० शोभा देना, भला जान पडना। सक० भोगना। **बिलसाना**(पु)†--सक० भोग करना, बरतना। दूसरे को भोगने मे प्रवृत्त करना।

बिलहरा--पुं० बाँस की तीलियो का एक प्रकार का छोटा सपुट जिसमे पान के बीडे रखे जाते है।

बिला--अव्य० [अ०] विना, बगैर।

बिलाई--स्त्री० बिल्ली, बिलारी। कुएँ मे गिरा हुआ बरतन आदि निकालने का काँटा। किवाड बद करने की एक प्रकार की सिटकिनी।

बिलाईकंद--पु० दे० 'बिदारीकंद'।

बिलाना--अक० नष्ट होना, न रह जाना। अदृश्य होना।

बिलापना(पु)†--अक० विलाप करना।

बिलारी†--स्त्री० दे० 'बिल्ली'।

बिलारीकद--पुं० दे० 'बिदारीकद'।

बिलाव--पुं० बडी या नर बिल्ली।

बिलावल--पुं० [सं०] एक राग।

बिलासना--सक० भोगना।

बिलूर(पु)--पु० दे० 'बिल्लौर'।

बिलेशय--पु० [स०] बिल मे रहनेवाले चूहे, साँप आदि जानवर।

बिलैया‡--स्त्री० बिल्ली। कद्दूकश।

बिलोकना(पु)--सक० देखना। जाँच करना, परीक्षा करना। **बिलोकनि**(पु)--स्त्री० देखने की क्रिया। दृष्टिपात, कटाक्ष।

बिलोचन--पु० आँख।

बिलोड़ना(पु)--सक० दूध आदि मथना। अस्तव्यस्त करना।

बिलोन--वि० बिना लवण का। कुरूप, बदसूरत।

बिलोना--सक० दूध आदि मथना, किसी वस्तु, विशेषत पानी की सी वस्तु, को खूब हिलाना। ढालना, गिराना।

बिलोरना(पु)--सक० दे० 'बिलोडना'। छिन्न भिन्न करना।

बिलोलना--सक० हिलाना।

बिलोवना(पु)‡--सक० दे० 'बिलोना'।

बिल्मुक्ता--वि० [अ०] जो घट बढ न सके। पुं० वह लगान जो घट बढ न सके।

बिल्ला--पुं० मार्जार, बिल्ली का नर। चपरास की तरह की पीतल आदि की पट्टी जिसे पहचान के लिये खास खास काम करने के लिये (जैसे, चपरासी, कुली, लैसंसदार खोचेवाले आदि) बाँह पर या गले मे धारण करते हैं।

बिल्लाना--अक० विकल होकर चिल्लाना, विलाप करना।

बिल्ली--स्त्री० एक प्रसिद्ध मासाहारी पशु जो सिंह, व्याघ्र, चीते आदि की जाति का, पर इन सबसे छोटा होता है। एक प्रकार की किवाड की सिटकिनी।

बिल्लौर--पुं० एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पारदर्शक पत्थर, स्फटिक। बहुत स्वच्छ शीशा। **बिल्लौरी**--वि० बिल्लौर का।

बिवरना--सक० सुलझाना, एक मे गुँथी हुई वस्तुओ को अलग अलग करना। बाल सुलझाना। **बिवराना**--सक० बालों को खुलाकर सुलझवाना। बाल सुलझाना।

बिवाई--स्त्री० पैरो की उँगलियाँ और तलवे फटने का रोग।

बिषै--प्रत्य० मे। 'भेद फुरै मीलित विषै · · (पद्माभरण २४४)।

बिसंच(पु)--पुं० वस्तुओ की सँभाल न रखना, बेपरवाई। कार्य की हानि, बाधा। डर।

बिसभर(पु)--पुं० दे० 'विश्वभर'। (पु)वि० जिसे ठीक और व्यवस्थित न रख सके। असावधान, बेहोश।

बिसभार—वि० जिसे तन बदन की खबर न हो, बेखबर ।

बिससृत(पु)—वि० स्खलित, च्युत ।

बिस—पुं० दे० 'विष' । ⊙खपरा = पु० गोह की जाति का एक विषैला सरीसृप जंतु । एक प्रकार की जंगली बूटी ।

बिसतरना(पु)—अक० विस्तार करना, बढ़ाना ।

बिसद(पु)—वि० दे० 'विशद' ।

बिसन(पु)—पुं० व्यसन, शौक । बिसनी—वि० जिसे किसी बात का व्यसन या शौक हो, शौकिन । छैला, शौकीन ।

बिसमउ—पु० दे० 'विस्मय' ।

बिसमरना(पु)—सक० भूल जाना ।

बिसमिल—वि० घायल, जख्मी ।

बिसमौ—क्रि० वि० बिना समय के, असमय मे ।

बिसयक(पु)—पु० देश, प्रदेश । रियासत, राज्य ।

बिसरात(पु)—पुं० खच्चर ।

बिसरना—सक० भूलना । बिसराना—सक० भूलना, विस्मृत करना ।

बिसराम(पु)—पु० दे० विश्राम' । बिसरामी (पु)—वि० विश्राम देनेवाला, सुख देनेवाला, सुखद ।

बिसरावना(पु)†—सक० दे० 'बिसराना' ।

बिसवास(पु)—पु० दे० 'विश्वास' ।

बिसवासिनी—वि० स्त्री० विश्वास करनेवाली । जिसपर विश्वास हो । (पु)वि० स्त्री० जिसपर विश्वास न हो । विश्वासघातिनी ।

बिसवासी—वि० जो विश्वास करे । जिस पर विश्वास हो । जिसपर विश्वास न किया जा सके, बेएतबार ।

बिससना(पु)—सक० विश्वास करना, एतबार करना । वध करना, मारना । शरीर काटना ।

बिसहना(पु)—सक० मोल लेना । जान बूझकर अपने साथ लगाना ।

बिसहर(पु)—पु० सर्प ।

बिसाति—स्त्री० बिसात, हैसियत । "धन की कहा बिसाति" (जगद्विनोद ३०४) ।

बिसायँध—वि० जिसमे सडी मछली की गंध हो । स्त्री० सड़े मास की सी गंध ।

बिसाख(पु)—स्त्री० दे० 'विशाखा' ।

बिसात—स्त्री० [अ०] हैसियत, समाई, वित्त । जमा, पूंजी । सामर्थ्य, हकीकत । शतरंज या चौपड आदि खेलने का कपडा जिसपर खाने बने होते हैं ।

बिसातखाना—पुं० बिसाती के यहाँ मिलनेवाली चीजें ।

बिसाती—पुं० [अ०] सूई, तागा, चूडी, खिलौने इत्यादि वस्तुओ को बेचनेवाला ।

बिसाना—अक० बस चलना, काबू चलना, विष का प्रभाव करना ।

बिसारद—(पु) पुं० दे० 'विशारद' ।

बिसारना—सक० भुलाना, स्मरण न रखना ।

बिसारा(पु)—वि० विष भरा, विषैला ।

बिसाली(पु)—वि० स्त्री० विशाल ।

बिसास(पु)—पु० दे० 'विश्वास' । बिसासिन—स्त्री० (स्त्री) जिसपर विश्वास न किया जा सके । बिसासी(पु)—वि० जिस पर विश्वास न किया जा सकें, दगाबाज ।

बिसाह—पुं० मोल लेने का काम, खरीद । ⊙ना—सक० खरीदना । जान बूझकर अपने पीछे लगाना । पु० काम की चीज जिसे खरीदें, सौदा । मोल लेने की क्रिया ।

बिसाहनी—स्त्री० सौदा, वह वस्तु जो मोल ली जाय । बिसाहा—पुं० दे० 'बिसाहनी' ।

बिसिख—पुं० दे० 'विशिख' ।

बिसियर(पु)—वि० विषैला ।

बिसूरना—अक० मन मे दुख मानना । सिसक सिसककर रोना । स्त्री० चिंता, फिक्र ।

बिसेख(पु)—वि० दे० 'विशेष' । ⊙ना = अक० विशेष प्रकार से या ब्योरेवार वर्णन करना । निर्णय करना, निश्चित करना । विशेष रूप से होना या प्रतीत होना ।

बिसेन—पु० क्षत्रियो की एक शाखा ।

बिसेषक(पु)—पु० माथे पर लगाया जानेवाला तिलक ।

बिसेस(पु)--वि० दे० 'विशेष'।
बिसेसर(पु)‡--पुं० दे० 'विश्वेश्वर'।
बिसैसी(पु)--क्रि० वि० दे० 'विशेष'।
बिस्कुट--पुं० [अँ०] खमीरी आँटे की तदूर पर पकी हुई हलकी टिकिया जो नमकीन या मीठी होती है और नाश्ते आदि मे खाने के काम आती है।
बिस्तर--पु० विछौना, बिछावन। विस्तार, बडाव। ⊙ना(पु) = अक० फैलना, इधर उधर बढना। सक० फैलाना, बढाना। बढाकर वर्णन करना।
बिस्तरा--पुं० दे० 'बिस्तर'।
बिस्तारना--सक० विस्तार करना, फैलाना।
बिस्तुइया†--स्त्री० छिपकली।
बिस्फुलिंग(पु)--पुं० अग्निकरण, स्फुलिंग।
बिस्मिल्लाह--पुं० [अ०] एक अरबी पद का पूर्वार्ध जिसका अर्थ है--ईश्वर के नाम से। इसका प्रयोग मुसलमान लोग कोई कार्य आरभ करते समय करते हैं।
बिस्वा--पु० एक बीघे का २०वाँ भाग। मु०--बीस~ = निश्चय, निस्सदेह।
बिस्वास--पु० दे० 'विश्वास'।
बिहंग--पु० दे० 'विहंग'।
बिहगी(पु)--वि० कुरूप, भद्दी शक्ल का।
बिहंडना--सक० खड खड कर डालना, तोडना। नष्ट कर देना।
बिहँसना--अक० मुस्कराना। बिहँसाना--अक० दे० 'बिहँसना'। प्रफुल्ल होना। (फूल का)। सक० हँसाना, हर्षित करना। बिहँसौंहाँ--वि० हँसता हुआ।
बिहग(पु)--पुं० दे० 'विहग'।
बिहद्द--वि० असीम, परिमाण से बहुत अधिक।
बिहवल--वि० व्याकुल।
बिहरना--अक० घूमना फिरना, सैर करना। (पु)†--सक० फूटना, विदीर्ण होना। टूटना, फूटना।
बिहराना(पु)†--अक० फटना।
बिहाग--पु० एक प्रकार का राग।
बिहान--पुं० सबेरा। आनेवाला दूसरा दिन, कल।
बिहाना(पु)--सक० छोडना, त्यागना। अक० व्यतीत होना, गुजरना।
बिहारना--अक० विहार करना, केलि या क्रीडा करना।
बिहारी--पुं० दे० 'विहारी'।
बिहाल--वि० व्याकुल, बेचैन।
बिहिश्त--पु० [फा०] स्वर्ग।
बिही--स्त्री० [फा०] एक पेड जिसके फल अमरूद से मिलते जुलते होते है। ⊙दाना = पुं० बिही नामक फल का बीज जो दवा के काम मे आता है।
बिहीन--वि० रहित, बिना।
बिहुरना(पु)--अक० दे० 'बिथुरना'।
बिहून--वि० बिना, रहित।
बिहोरना--अक० बिछुडना।
बींड़--पु० टहनियो से बनाया हुआ लबा नाल जो कच्चे कूएँ मे इसलिये दिया जाता है कि उसका भगाड न गिरे। घास आदि को लपेटकर बनाई हुई गेंडुरी। बाँस आदि को बाँधकर बनाया हुआ बोझ।
बींद--पु० दूल्हा, वर।
बींद्दना(पु)--सक० दे० 'बीनना'। अनुमान करना।
बींधना(पु)--अक० फँसना, उलझना। सक० विद्ध करना, छेदना।
बीका†--वि० टेढा।
बीख(पु)†--पु० कदम, डग।
बीग†--पु० भेडिया।
बीगना‡--सक० छाँटना, छितराना। गिराना, फेकना।
बीघा†--पु० खेत नापने का २० बिस्वे का एक वर्ग मान।
बीच†--क्रि० वि० दरमियान, मे। स्त्री० लहर, तरग। पुं० मध्य भाग, मध्य। अतर, अवकाश, अवसर, मौका। मु० ~करना = लडनेवालो को लड़ने से रोकने के लिये अलग अलग करना। झगडा निवटाना। ~खेत = खुले मैदान, सबके सामने। ~

पड़ना = झगड़ा निबटाने के लिये पच बनना। मध्यस्थ होना। ~पारना या डालना = परिवर्तन करना। विभेद या पार्थक्य करना। ~मे = थोड़ी थोड़ी देर में। थोड़े थोड़े अंतर पर। ~मे पड़ना = मध्यस्थ होना। जिम्मेदार बनना, प्रतिभू बनना। ~मे कूदना = अनावश्यक हस्तक्षेप करना। (ईश्वर आदि को) ~मे रखकर पड़ना = (ईश्वर आदि की) कसम खाना। ~रखना = दुराव रखना, पराया समझना।

बीचि--स्त्री० लहर, तरंग।

बीचोबीच--क्रि० वि० बिलकुल बीच मे, ठीक मध्य मे।

बीछना (पु)†--सक० चुनना, पसंद करके छाँटना।

बीछी (पु)†--स्त्री० बिच्छू।

बीछू (पु)--स्त्री० दे० 'बिच्छू'। दे० बिछुआ' (हथियार)।

बीज (पु)--स्त्री० दे० 'बिजली'। पुं० [सं०] फूलवाले वृक्षों का गर्भांड जिससे वृक्ष अंकुरित होकर उत्पन्न होता है, बीया, दाना। प्रधान कारण, मूल प्रकृति। जड़, मूल। हेतु। शुक्र, वीर्य। कोई अव्यक्त सांकेतिक वर्णसमुदाय या शब्द। दे० 'बीजगणित'। अव्यक्त संख्यासूचक संकेत। वह अव्यक्त ध्वनि या शब्द जिसमे तंत्रानुसार किसी देवता को प्रसन्न करने की शक्ति मानी गई हो। ⊙गणित = पुं० गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मानकर निश्चित युक्तियों के द्वारा अज्ञात संख्याएँ आदि जानी जाती हैं। ⊙दर्शक = पु० वह जो नाटक के अभिनय की व्यवस्था करता हो। ⊙पूर, ⊙पूरक = पुं० बिजौरा नीबू। चकोतरा। ⊙बंद = पुं० [हिं०] खिरैंटी या बरियारे के बीज, बला। ⊙मंत्र = पुं० किसी देवता के उद्देश्य से निश्चित मूलमंत्र। गुर।

बीजक--पुं० [सं०] सूची, फिहरिस्त। वह सूची जिसमे माल का ब्योरा, दर और मूल्य आदि लिखा हो। किसी गड़े हुए धन की वह सूची जो उसके साथ रहती है। बीज। कबीरदास के पदों के तीन संग्रहों में से एक।

बीजन (पु)--पुं० बेना, पखा।

बीजरी (पु)--स्त्री० दे० 'बिजली'।

बीजा--वि० दूसरा।

बीजाक्षर--पुं० [सं०] किसी बीजमंत्र का पहला अक्षर।

बीजी--स्त्री० गिरी, मींगी। गुठली।

बीजु बिजुरी बीजुरी--वि० दे० 'बिजली'।

बीजू--वि० जो बीज बोने से उत्पन्न हो, कलमी का उलटा। पुं० दे० 'बिज्जु'।

बीझ, बीझा (पु)†--वि० निर्जन, एकांत।

बीझना (पु)†--अक० लिप्त होना, फँसना।

बीट--स्त्री० पक्षियों की विष्ठा।

बीड--स्त्री० एक के ऊपर एक रखे हुए रुपए जो साधारणत गुल्ली का आकार कर लेते हैं।

बीड़ा--पुं० पान की सादी गिलौरी, खीली। मु०~उठाना = कोई काम करने का संकल्प करना या भार लेना। उद्यत होना।

बीड़ी--स्त्री० दे० बीड़ा'। पत्ते मे लपेटा हुआ सुरती का चूर जिसे लोग सिगरेट या चुरट आदि की तरह सुलगाकर पीते हैं। मिस्सी जिसे स्त्रियाँ दाँत रँगने के लिये मुँह मे मलती है। गड्डी। दे० बीड'।

बीतना--अक० वक्त कटना, गुजरना। जाता रहना, छूट जाना। घटना, पड़ना।

बीता†--पुं० दे० 'बित्ता'।

बीथित (पु)†--वि० दुखित।

बीधना (पु)†--अक० फँसना। रँगना। सक० दे० 'बींधना'।

बीन--स्त्री० सितार की तरह का पर उससे छोटा एक प्रसिद्ध बाजा, वीणा। ⊙कार = पुं० वह जो बीन बजाता हो, बीन बजानेवाला।

बीनना†--सक० छोटी छोटी चीजों को उठाना, चुनना। छाँटकर अलग करना। दे० 'बींधना'। दे० 'बुनना'।

बीफे—पु० बृहस्पतिवार।
बीबी—स्त्री० [फा०] कुलवधू, कुलीन स्त्री। पत्नी, स्त्री।
बीभच्छ(पु)—वि० 'बीभत्स'।
बीभत्स—वि० [सं०] जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो, घृणित। क्रूर। पापी। पुं० काव्य के नौ रसो मे सातवाँ। इसमे रक्त मास आदि ऐसी बातो का वर्णन होता है जिनसे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है।
बीमा—पु० किसी प्रकार की, विशेषत' आर्थिक हानि पूरी करने की, जिम्मेदारी जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले मे की जाती हैं। वह पत्र या पारसल आदि जिसका इस प्रकार बीमा हुआ हो।
बीमार—वि० [फा०] वह जिसे कोई बीमारी हुई हो, रोगी।
बीमारी—स्त्री० [फा०] रोग, व्याधि। झंझट। बुरी आदत (बोलचाल)।
बीय(पु)†—वि० दे० 'बीजा'।
बीया(पु)†—वि० दूसरा। पुं० बीज, दाना।
बीर—वि० दे० 'बीर'। भाई, भ्राता। स्त्री० सखी, सहेली। कान का एक आभूषण, तरना बीरी। कलाई मे पहनने का एक प्रकार का गहना। पशुओ के चरने का स्थान, चरागाह।
बीरउ(पु)†—पु० दे० 'बिरवा'।
बीरज(पु)—पुं० दे० 'वीर्य'।
बीरन—पु० भाई।
बीरबहूटी—स्त्री० गहरे लाल रग का एक छोटा रेंगनेवाला बरसाती कीडा, इद्रवधू।
बीरा(पु)—पुं० पान का बीडा, दे० 'बीडा'। वह फूल फल आदि जो देवता के प्रसाद-स्वरूपभक्तो को मिलाता है। **बीरी**†—स्त्री० पान का बीड़ा। कान मे पहनने का एक गहना, तरना।
बीरो—पुं० वृक्ष, पेड।
बीर्ज—पु० दे० 'वीर्य'।
बील—वि० पोला, खोखला। पु० नीची भूमि। मत्र।
बीवी—स्त्री० दे० 'बीवी'।
बीस—स्त्री० बीस की सख्या या अक, २०। वि० जो संख्या मे १९ से एक अधिक हो श्रेष्ठ, उत्तम। बडा। मु०~**बिस्वे** = =अधिक सभवत। **बीसी**—स्त्री० बीस चीजो का समूह, कोडी। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ६० सवत्सरो के तीन विभागों मे से कोई विभाग।
बीह(पु)—वि० बीस।
बीहड़—वि० ऊँचा नीचा, ऊबडखाबड़। जो समतल या सम न हो, विकट। अलग।
बुंद—स्त्री० दे० 'बूँद'।
बुंदकी—स्त्री० छोटी गोल बिंदी। छोटा गोल दाग या धब्बा।
बुंदवारी—स्त्री० दे० 'बूद'।
बुंदा—पु० बुलाक के आकार का कान में पहनने का एक गहना। माथे पर लटकाने की टिकली।
बुंदिया—स्त्री० दे० 'बूंदी'।
बुंदीवार—वि० जिसमे छोटी छोटी बिंदियाँ हो।
बुंदेलखंड—पु० उत्तर प्रदेश का वह अंश जिसमे जालौन, झाँसी, हमीरपुर और बाँदा जिले पडते हैं। **बुंदेलखंडी**—वि० बुदेलखड सबधी, बुदेलखड का। पुं० बुदेलखड का निवासी। स्त्री० बुदेलखंड की भाषा।
बुंदेला—पु० क्षत्रियो का एक वश जो गहरवार वश की एक शाखा माना जाता हैं। बुदेलखड का निवासी।
बुंदौरी(पु)†—स्त्री० बुंदिया या बूंदी नाम की मिठाई
बुआ—स्त्री० पिता की बहिन, फूफी।
बुक—स्त्री० एक प्रकार का कलफ किया हुआ महीन कपडा।
बुकचा—पुं० गठरी। **बुकची**—स्त्री० छोटी गठरी। दर्जियो की वह थैली। जिसमें वे सुई, डोरा रखते हैं।
बुकनी—स्त्री० किसी चीज का महीन पीसा हुआ चूर्ण।
बुकवा(पु)—पु० उबटन। बुक्का।
बुकुना—पु० बुकनी। किसी प्रकार का पाचक, चूर्ण।
बुक्कस—पु० भगी, मेहतर।

बुकका—पुं० अभ्रक का चूर्ण ।

बुखार—पु०[अ०] ज्वर, ताप । वाष्प, भाप । शोक क्रोध दुःख आदि का आवेग ।

बुजदिल—वि० [फा०] कायर, डरपोक ।

बुजुर्ग—वि० [फा०] वृद्ध, बड़ा । पु० बाप-दादा । पूर्वज ।

बुझना—अक० तपी हुई या गरम चीज का पानी मे पडकर ठढा होना । पानी या या किसी गरम या तपाई हुई चीज से छौंका जाना । पानी पड़ने या मिलने के कारण ठढा होना । चित्त का आवेग या उत्साह आदि मंद पड़ना ।

बुझाना—सक० बूझने का काम दूसरे से कराना । समझाना । संतोष देना । सक० [अक० बुझना] जलते हुए पदार्थ को ठढा करना, अग्नि शात करना । तपी हुई चीज को पानी मे डालकर ठढा करना । किसी चीज को तपाकर पानी में डालना । पानी डालकर ठढा करना । चित्त का आवेश या उत्साह आदि शात करना । मु०जहर में~ = छुरी, बरछी, तलवार आदि शस्त्रो के फलो को तपाकर किसी जहरीले तरल पदार्थ मे बुझाना जिसमे वह फल भी जहरीला हो जाय ।

बुझाई—स्त्री० बुझाने की क्रिया या भाव ।

बुट(पु)†—स्त्री० दे० 'बूटी' ।

बुटना(पु)†—अक० भागना, हट जाना ।

बुड़की—स्त्री० डुबकी, गोता ।

बुड़ना†—अक० दे० 'बूड़ना' ।

बुड़बुड़ाना—अक० मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना, बड़बड़ करना ।

बुड़ाना(पु)†—सक० दे० 'डुबाना' ।

बुड्डी—स्त्री० डुबकी, गोता ।

बुड्ढा†—वि० ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्था वाला, वृद्ध ।

बुढ़वा†—वि० दे० 'बुड्ढा' ।

बुढ़ाई—स्त्री० दे० 'बुढापा' । **बुढाना**—अक० वृद्धावस्था को प्राप्त होना, बुड्ढा होना । **बुढ़ापा**—पु० वृद्धावस्था, बुड्ढा होने की अवस्था । **बुढ़ौती**†—स्त्री० दे० 'बुढापा' ।

बुढ़िया—स्त्री० ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाली स्त्री, वृद्धा ।

बुत—पु० [फा०] मूर्ति पुतला । वह जिसके साथ प्रेम किया जाय, प्रियतम । वि० मूर्ति की तरह चुपचाप बैठा रहनेवाला । ⊙परस्त = पु० मूर्तिपूजक । ⊙शिकन = वि० मूर्तियों को तोड़नेवाला, मूर्तिपूजा का विरोधी ।

बुतना¹—अक० दे० 'बुझना' । **बुताना**—अक० दे० 'बुझना' सक० दे० 'बुझाना' ।

बुताम—पु० बटन । घुंडी ।

बुत्ता—पु० धोखा, झाँसा । बहाना ।

बुदबुद—पु० [सं०] बुलबुला, बुल्ला ।

बुद्ध—वि० [सं०] जो जागा हुआ हो । ज्ञानी । विद्वान् । पु० बौद्ध धर्म के प्रवर्तक एक बड़े महात्मा, सिद्धार्थ गौतम ।

बुद्धि—स्त्री० [सं०] विचार या निश्चय करने की शक्ति, अक्ल । उपजाति वृत्त का १४वाँ भेद सिद्धि । एक प्रकार का छंद लक्ष्मी । छप्पय का ४२वाँ भेद । ⊙जीवी = वि० वह जो केवल बुद्धिबल से जीविका उपार्जन करता हो । ⊙पर = वि० जिस तक बुद्धि न पहुँच सके । ⊙मत्ता = स्त्री० बुद्धिमान् होने का भाव, समझदारी । ⊙मान् = वि० वह जो समझदार हो, अक्लमंद । ⊙मानी = स्त्री० [हिं०] दे० 'बुद्धिमत्ता' । ⊙वंत = वि० [हिं०] दे० 'बुद्धिमान्' । ⊙वाद = पुं० वह सिद्धांत जिसमें केवल बुद्धि-संगत बातें ही मानी जाती है । ⊙शाली = वि० दे० 'बुद्धिमान्' । ⊙हीन = वि० मूर्ख, बेवकूफ ।

बुध—पुं० [सं०] सौर जगत् का एक ग्रह जो सूर्य के सबसे अधिक समीप है । भारतीय ज्योतिष के अनुसार नौ ग्रहो मे से चौथा ग्रह । देवता । बुद्धिमान् अथवा विद्वान् । ⊙जामा(पु) = पु० [हिं०] बुध के पिता, चद्रमा । ⊙वान(पु)†—वि० [हिं०] दे० 'बुद्धिमान्' । ⊙वार = पु० सप्ताह के सात वारो मे से एक जो मगलवार के बाद और बृहस्पतिवार के पहले पड़ता है ।

बुधि—(पु)†स्त्री० दे० 'बुद्धि'।
बुनकर—पु० कपडा बुननेवाला, जुलाहा।
बुनत—स्त्री० बुनने की क्रिया या भाव, बुनाई।
बुनना—सक० जुलाहो की वह क्रिया जिनमे वे सूतो या तारो की सहायता से कपडा तैयार करते हैं, बिनना। बहुत से सीधे और बेडे सूतो को मिलाकर उनको कुछ के ऊपर और कुछ के नीचे निकालकर कोई चीज बनाना। **बुनाई**—स्त्री० बुनने की क्रिया या भाव, बुनावट। बुनने की मजदूरी।
बुनावट—स्त्री० बुनने मे सूतो की मिलावट का ढंग।
बुनिया—पु० दे० 'बुनकर'। †स्त्री० दे० 'बुँदिया'।
बुनियाद—स्त्री० [फा०] बुनियाद या जड़ से सबध रखनेवाला। मूलभूत, प्रारभिक। **बुबुकना**—अक० जोर जोर से रोना, ढाड़ मारना। **बुबुकारी**—स्त्री० पुक्का फाडकर रोना, जोर जोर से रोना।
बुभुक्षा—स्त्री० [सं०] क्षुधा, भूख। **बुभुक्षित** वि० भूखा, क्षुधित।
बुरकना—सक० पिसी हुई या महीन चीज को किसी दूसरी चीज पर छिडकना भुरभुराना।
बुरका—पु० [अ०] मुसलमान स्त्रियों का का एक प्रकार का पहनावा जिससे सिर से पैर तक सब अग ढके रहते हैं।
बुरा—वि० जो अच्छा या उत्तम न हो, खराब। ⊙ई—स्त्री० बडा होने का भाव, खराबी। खोटापन, नीचता। दोष, दुर्गुण। शिकायत, निंदा। मु०~भला = हानि लाभ, खराब और अच्छा। गाली गलौज, लानत मलामत।
बुरादा—पुं० [फा०] लकडी का चूरा।
बुरुश—पु० रँगने या सफाई करने के लिये खास तरह की बनी हुई कूँची।
बुर्ज—पु० [अ०] किले आदि की दीवारो मे उठा हुआ गोल या पहलदार भाग जिसके बीच मे बैठने आदि के लिये थोडा सा स्थान होता है। मीनार का ऊपरी भाग अथवा उसके आकार का इमारत का कोई अग। गुबद।
बुर्द—स्त्री० [फा०] ऊपरी आमदनी, नफा। शर्त, होड। शतरज के खेल मे वह अवस्था जब सब मोहरे मर जाते है और केवल बादशाह रह जाता है।
बुलंद—वि० भारी, बडा। ऊँचा।
बुलबुल—स्त्री० [अ०, फा०]. एक प्रसिद्ध गानेवाली छोटी चिडिया।
बुलबुला—पुं० पानी का बुल्ला, बुदबुदा।
बुलवाना—सक० [बुलाना का प्रे०], बुलाने का काम दूसरे से कराना।
बुलाक—पुं० स्त्री [तु०] वह मोती या सोने का गहना जो नाक मे स्त्रियाँ पहनती है।
बुलाकी—पु० घोडे की एक जाति।
बुलाना—सक० आवाज देना, पुकारना। अपने पास आने के लिये कहना। किसी के बोलने मे प्रवृत्त करना।
बुलावा—पु० बुलाने की क्रिया या भाव, निमत्रण।
बुलाह—पुं० वह घोडा जिसकी गर्दन और पूँछ के बाल पीले हो।
बुलौआ—पुं० दे० 'बुलावा'।
बुल्ला—पुं० दे० 'बुलबुला'।
बुहारना—सक० झाडू से जगह साफ करना।
बुहारी—स्त्री० झाडू, बढनी।
बूँद—स्त्री० जल आदि का वह बहुत ही थोडा अश जो गिरने आदि के समय प्राय छोटी सी गोली का रूप धारण कर लेता है, कतरा। वीर्य। एक प्रकार का कपडा। मु०~भर = बहुत थोडा। **बूँद गिरना या पड़ना** = धीमी वर्षा होना। **बूँदाबाँदी**—स्त्री० हलकी या थोडी वर्षा। **बूँदी**—स्त्री० वर्षा के जल की बूँद। एक प्रकार की मिठाई, बुँदिया।
बू—स्त्री० [फा०] बास, महक। दुर्गंध।
बूआ—स्त्री० बुआ, फूफी। बडी बहन। पुं० कोई वस्तु उठाने के लिये हथेली की गहरी की हुई चगुल।
बूकना—सक० महीन पीसना। गढकर बाते करना (जैसे अँगरेजी बूकना।

बूका—पु० दे० 'गगवरार'। दे० 'बुक्क'।
बूकी(प)—स्त्री० दे० 'बुकनी'।
बूचड़—पुं० कसाई। ⊙खाना = पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ पशुओं की हत्या होती है, कसाई बाड़ा।
बूचा—वि० जिसके कान कटे हुए हो, कनकटा। जिसके ऐसे अंग कट गए हों अथवा न हो, जिनके कारण वह कुरूप जान पड़ता हो।
बूजना—सक० धोखा देना।
बूझ—स्त्री० समझ, बुद्धि। पहेली। ⊙ना = सक० समझना, जानना। पूछना। बूझन(प)†—स्त्री० दे० 'बूझ'।
बूट—पु० चने का हरा दाना। पेड़पौधा।
बूटना(प)—अक० भागना।
बूटनि(प)†—स्त्री० वीर बहूटी नाम का कीड़ा।
बूटा—पुं० छोटा वृक्ष, पौधा। फूलों या वृक्षों आदि के आकार के चिह्न जो कपड़ों या दीवारों आदि पर बनाए जाते है। बड़ी बूटी।
बूटी—स्त्री० वनौषधि, जड़ी। भाँग, भंग। फूलों के छोटे चिह्न जो कपड़ों आदि पर बनाए जाते हैं, छोटा बूटा। खेलने के ताश के पत्तों पर बनी हुई टिक्की।
बूडना†—सक० डूबना, निमज्जित होना। लीन होना। बूड़ा—वर्षा आदि के कारण होनेवाली जल की बाढ़।
बूढ़†—वि० दे० 'बुड्ढा'। पुं० लाल रंग। वीरबहूटी।
बूढ़ा—पु० दे० 'बुड्ढा'।
बूत बूता—पुं० बल, शक्ति।
बूरना(प)†—अक० दे० 'डूबना'।
बूरा—पुं० कच्ची चीनी जो भूरे रंग की होती है, शक्कर। साफ की हुई चीनी। सफूफ।
बृच्छ(प)†—पुं० दे० 'वृक्ष'।
बृहती—स्त्री० [सं०] कटाई, वनभटा। विश्वावसु गंधर्व की वीणा का नाम। उत्तरीय वस्त्र, उपरना। एक वैदिक वर्णवृत्त जिसके चरण में कुल नौ अक्षर होते हैं।
बृहत्—वि० [सं०] बड़ा, विशाल, बलिष्ठ। ऊँचा (स्वर आदि)।
बृहदारण्यक—पुं० [सं०] शतपथ ब्राह्मण का एक प्रसिद्ध उपनिषद्।
बृहद्—वि० [सं०] दे० 'बृहत्'।
बृहन्नला—पुं० [सं०] अर्जुन का एक नाम। बाहु।
बृहस्पति—पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अंगिरस के पुत्र और देवताओं के गुरु माने जाते है। सौर जगत् का पाँचवाँ ग्रह।
बेंच—स्त्री० [अं०] लकड़ी, पत्थर आदि की चौकी जो चौड़ी कम और लंबी अधिक होती है न्यायाधीश के बैठने या आसन या स्थान, न्याय करने में नियुक्त एक से अधिक मजिस्ट्रेट या जज। (विधान सभा या संसद में) विभिन्न दलों के बैठने के लिये नियत स्थान या आसन।
बेंड़ना(प)—सक० दे० 'बेढ़ना'।
बेंग—पुं० मेंढक।
बेंट, बेंठ—स्त्री० औजारों में लगा हुआ काठ का दस्ता, मूठ।
बेंड़†—स्त्री० टेक, चाँड़।
बेंड़ा†—वि० तिरछा। कठिन।
बेंत—पुं० एक प्रसिद्ध लता जिसके डंठल से छड़ियाँ और टोकरियाँ आदि बनती है। बेंत के डंठल की बनी हुई छड़ी। मु०—की तरह काँपना = थरथर काँपना, बहुत अधिक डरना।
बेंदा—पुं० माथे पर लगाने का गोल तिलक, टीका। एक आभूषण, बेंदी। बड़ी गोल टिकली। बेंदी—स्त्री० टिकली, बिंदी। शून्य, सुन्ना। दावनी या बेंदी नाम का गहना।
बेंदुली—स्त्री० टीका नामक गहना।
बेंवड़ा—पुं० बंद किवाड़ के पीछे लगाने की लकड़ी ब्योंड़ा।
बेंवंत—स्त्री० दे० ब्योंत'।
बे—अव्य० छोटों के लिये संबोधन (तिरस्कार) अव्य० [फा०] बिना, बगैर (जैसे, बेगैरत, बेइज्जत)। ⊙अंत(प)† = क्रि० वि० [सं०] जिसका कोई अंत न हो, बेहद। ⊙अकल = वि० [अ० अक्ल] मूर्ख।

⊙अदब = वि० [अ०] जो बडो का आदर समान न करे। ⊙आब = वि० [अ०] जिसमे आब (चमक) न हो। तुच्छ। ⊙आबरू = वि० बेइज्जत। ⊙इंसाफी = स्त्री० अन्याय। ⊙इज्जत = वि० [अ०] जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। अपमानित। ⊙ईमान = वि० जिसे धर्म का विचार न हो, अधर्मी। जो अन्याय, कपट या और किसी प्रकार का अनाचार करता हो। अविश्वसनीय। ⊙उज्र = वि० [अ०] जो आज्ञापालन करने मे कोई आपत्ति न करे। ⊙कदर = वि० बेइज्जत, अप्रतिष्ठित। ⊙करार = वि० जिसे शाति या चैन न हो, व्याकुल। ⊙कस = पुं० निसहाय, निराश्रय। दरिद्र, दीन। ⊙कसूर = वि० [अ०] जिसका कोई दोष या कसूर न हो, निरपराध ⊙कहा = वि० [हिं०] जो किसी का कहना न माने। ⊙काबू = वि० [अ०] विवश, लाचार। जो किसी के वश मे न हो। ⊙काम = वि [हिं०] निकम्मा, निठल्ला जो किसी काम में न आ सके। ⊙कायदा = वि० [अ०] कायदे के खिलाफ। ⊙कार = वि० निकम्मा, निठल्ला। व्यर्थ। बिना कामकाज या उद्योग धंधे का, जीविका के साधन के बिना। ⊙कुसूर = वि० [अ०] निरपराध। ⊙खटके = क्रि० वि० [हिं०] बिना किसी प्रकार की रुकावट या असमजस के, निसकोच। ⊙खतर वि० निर्भय निडर। ⊙खबर = वि० अनजान, नावाकिफ। बेहोश। ⊙गरज = वि० [अ०] जिसे कोई गरज या परवाह न हो। ⊙गुनाह = वि० जिसने कोई गुनाह या अपराध न किया हो। ⊙गैरत = वि० निर्लज्ज, बेशरम। ⊙चारा = वि० दीन और निस्सहाय, गरीब। ⊙चैन = वि० जिसे चैन न पडता हो, व्याकुल। ⊙जबान = वि० जिसमे बातचीत करने की शक्ति न हो, गूंगा। दीन, गरीब ⊙जान = वि० मुर्दा। जिसमे कुछ भी दम न हो। मुरझाया हुआ। निर्बल। ⊙जाब्ता = वि [अ०] कानून या नियम आदि के विरुद्ध। ⊙जार = वि० नाराज। दुःखी। ⊙जोड़ = वि० [हिं०] जिसमे जोड न हो, अखड। जिसकी समता न हो सके, निरुपम। ⊙ठिकाने = वि० [हिं०] जो अपने उचित स्थान पर न हो, स्थानच्युत, ऊलजलूल। व्यर्थ। ⊙डौल = वि० [हिं०] जिसका डौल या रूप अच्छा न हो, भद्दा। बेढगा। ⊙ढंगा = वि० [हिं०] बुरे ढगवाला जो ठीक तरह से लगाया, रखा या सजाया न गया हो। भद्दा। ⊙ढा = वि० [हिं०] जिसका ढब अच्छा न हो, बढगा, भद्दा। क्रि० वि० बुरी तरह से। ⊙तकल्लुफ = वि० [अ०] जिसे तकल्लुफ की कोई परवा न हो, जो अपने हृदय की बात साफ साफ कह दे। क्रि० वि० बिना किसी प्रकार की तकल्लुफ के। निसकोच। ⊙तकसीर = वि० [अ०] निरपराध, निर्दोष। ⊙तमीज = वि० [अ०] जिसे शऊर या तमीज न हो, बेहूदा। ⊙तरह = क्रि० वि० [अ०] अनुचित रूप से असाधारण रूप से। वि० बहुत अधिक। ⊙तरीका = वि०, क्रि० वि० [अ०] तरीके या नियम के विरुद्ध, अनुचित। ⊙तहाशा = क्रि० वि० [अ०] बहुत अधिक तेजी से। बहुत घबराकर। बिना सोचे समझे। ⊙ताब = वि० दुर्बल, व्याकुल। ⊙तार = वि० [हिं०] बिना तार का। ⊙तार का तार = पु० विद्युत् की सहायता से भेजा हुआ वह समाचार जो साधारण तार की सहायता के बिना ही भेजा जाता है। ⊙तुका = वि० [हिं०] जिसमे सामजस्य न हो, बेमेल। बेढगा। बिना तुक या अत्यानुप्रास का (छद)। ⊙दखल = वि० जिसका दखल, कब्जा या अधिकार न हो। ⊙दखली = स्त्री० सपत्ति पर से दखल या कब्जे का हटाया जाना अथवा न होना। ⊙दम = वि० मुरदा। मृतप्राय, अधमरा। जर्जर, बोदा। ⊙दर्द = वि० जो किसी की व्यथा को न समझे, कठोरहृदय। ⊙दाग = वि० जिसमे कोई दाग या धब्बा

न हो, साफ। निर्दोष, शुद्ध। निरपराध। ⊙दाम = वि० बिना दाम का, मुफ्त। पु० दे० 'बादाम'। ⊙धड़क = क्रि वि० [हिं०] निसंकोच। बेखौफ। बिना आगापीछा किए। वि० जिसे किसी प्रकार का संकोच या खटका न हो, निद्वंद्व। निर्भय। ⊙धर्म = वि० [सं०] जिसे अपने धर्म का ध्यान न हो, धर्मच्युत। ⊙धीर(पु) = वि० [हिं०] अधीर। ⊙नजीर = वि० अनुपम, बेजोड़। ⊙नसीब = वि० [अ०] अभागा, बदकिस्मत। ⊙नागा = क्रि० वि० [अ०] निरंतर, लगातार। ⊙निमून(पु) = वि० [हिं०] अद्वितीय, अनुपम। ⊙पनाह = वि० जिससे किसी प्रकार रक्षा न हो सके। ⊙परद = वि० जिसके आगे कोई ओट न हो। नंगा। ⊙परवाह = वि० बेफिक्र। मनमौजी। उदार। ⊙पाइ(पु)‡ = वि० [हिं०] जिसे घबराहट के कारण कोई उपाय न सूझे, भौंचक। ⊙पेंदी = वि० [हिं०] जिसमे पेंदी न हो। मु० बेपेंदी का लोटा = किसी के जरा से कहने पर अपना विचार बदलनेवाला आदमी। ⊙फायदा = वि०, क्रि० वि० व्यर्थ, निरर्थक। ⊙फिक्र = वि० जिसे कोई फिक्र न हो, निश्चित। ⊙बस = वि० [हिं०] जिसका कुछ वश न चले, लाचार। पराधीन। ⊙बसी = स्त्री० [हिं०] बेबस होने का भाव, लाचारी। पराधीनता, परवशता। ⊙बाक = वि० चुकता किया हुआ, चुकाया हुआ (ऋण)। ⊙भाव = क्रि० वि० [अ०] जिसकी कोई गिनती न हो, बेहद। मु०—बेभाव की पड़ना = बहुत अधिक मार पड़ना। बहुत अधिक फटकार पड़ना। ⊙मालूम = क्रि० वि० बिना किसी को पता लगे। वि० जो मालूम न पड़ता हो। मुरव्वत = वि जिसमे मुरव्वत न हो, तोताचश्म। ⊙मौका = वि० जो अपने उपयुक्त अवसर पर न हो। पु० मौके का न होना। ⊙मौसिम = वि० [अ०] मौसिम न होने पर भी होनेवाला। जिसका मौसिम न हो। ⊙रहम = वि० निर्दय, निठुर। ⊙रुख = वि० जो समय पड़ने पर रुख। (मुँह) फेर ले, बेमुरव्वत। नाराज। ⊙लज्जत = वि० जिसमे कोई लज्जत या स्वाद न हो। ⊙लाग = वि० [हिं०] बिलकुल अलग। साफ, खरा। ⊙लौस = वि० सच्चा, खरा। बेमुरव्वत। ⊙वक्त = क्रि० वि० कुसमय में। ⊙वफा = वि० [अ०] जो मित्रता आदि का निर्वाह न करे। बेमुरव्वत। ⊙शक = क्रि० वि० [अ०] जरूर, निःसंदेह। शरम = वि० निर्लज्ज, बेहया। ⊙शुमार = वि० अगणित, असंख्य। ⊙सबब = क्रि० वि० अकारण। ⊙सबरा = वि० जिसे सब्र या संतोष न हो, अधीर। ⊙समझ = वि० [हिं०] नासमझ, मूर्ख। ⊙सिलसिले = वि० जिसमें कोई क्रम या सिलसिला न हो, अव्यवस्थित। ⊙सुध = वि० [हिं०] बेहोश। बेखबर, बदहवास। ⊙सुर, ⊙सुरा = वि० [हिं०] जो अपने नियत स्वर से हटा हुआ हो (संगीत), बेमौका। ⊙सूद = वि० व्यर्थ, बेफायदा। ⊙हद = वि० अपरिमित, अपार। बहुत अधिक। ⊙हया = वि० निर्लज्ज, बेशर्म। ⊙हाल = वि० [अ०] व्याकुल, बेचैन। ⊙हिसाब = क्रि० वि० [अ०] बहुत अधिक, बेहद। ⊙हुनरा = वि० जिसे कोई हुनर न आता हो, बेहुनर, मूर्ख। ⊙हूंफ = वि० बेफिक्र, चितारहित। ⊙होश = वि० मूर्छित, बेसुध। ⊙होशी = स्त्री० मूर्छा, अचेतनता।

बेइलि†—पुं० दे० 'बेला'।

बेकल(पु)⊙—वि० व्याकुल। बेकली—स्त्री० घबराहट, बेचैनी। गर्भाशय संबंधी एक रोग।

बेकारपो(पु)†—बुलाने का शब्द (जैसे, अरे, हो आदि)।

बेख(पु)†—भेष, स्वरूप। स्वाँग, नकल।

बेग—पु० दे० 'वेग'। पुं० [तु०] अमीर, सरदार, राजा, पति। ⊙म = स्त्री०

[तु०] रानी, अमीर की पत्नी। प्रतिष्ठित महिला, श्रीमती।

बेगर—वि० दे० 'बेहर'। क्रि० वि० 'बगैर'।

बेगवती—स्त्री० [सं०] एक वर्णार्ध समवृत्त जिसके विषम पदो मे तीन सगण, एक गुरु और सम पादो मे तीन भगण और दो गुरु होते हैं।

बेगाना—वि० [फा०] गैर, पराया। नावाकिफ, अनजान।

बेगार—स्त्री० [फा०] विना मजदूरी जबरदस्ती लिया हुआ काम। वह काम जो चित्त लगाकर न किया जाय। मु०~टालना = विना चित्त लगाकर कोई काम करना। **बेगारी**—स्त्री० [फा०] बेगार मे काम करनेवाला आदमी। पारिश्रमिक रहित काम, बेगार।

बेगि(पु)†—क्रि० वि० जल्दी से, शीघ्रतापूर्वक। तुरत।

बेचना—सक० मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना, विक्रय करना। **बेच खाना** = खो देना, गँवा देना।

बेचाना(पु)—सक० दे० 'विकवाना'।

बेजा—वि० [फा०] बेठिकाने, बेमौके। अनुचित, खराब।

बेझना(पु)†—सक०दे० 'बेधना'। **बेझा**(पु)†—पुं० निशाना, लक्ष्य।

बेट(पु)—वि० व्यर्थ। पेट के बेट बेगारहि मे जब लौ जियना··· (प्रबोध० ४४)।

बेटकी(पु)†—स्त्री० बेटी।

बेटला(पु)†—पु० दे० 'बेटा'।

बेटा—पु० लड़का, पुत्र। **बेटौना**†—पु०दे० 'बेटा'।

बेठन—पुं० वह कपड़ा जो किसी चीज को लपटने के काम मे आवे, बँधना।

बेड़—पु० वृक्ष के चारो ओर लगाई हुई बाड़, मेड़। रुपया (दलाल)। ⊙**ना** = सक० दे० 'बेढ़ना'।

बेड़ा—पु० बडे बडे लट्ठो या तख्तो आदि से बनाया हुआ ढाँचा जिस पर बैठकर नदी आदि पार करते हैं। बहुत सी नावो आदि का समूह। मु०~डूबना = विपत्ति मे पडकर नाश होना। ~पार करना या लगाना = किसी को सकट से से पार लगाना या छुडाना।

बेड़िन, बेड़िनी—स्त्री० नट जाति की वह स्त्री जो नाचती गाती हो।

बेडी—स्त्री० लोहे के कडो की जोडी या जजीर जो कैदियो को इसलिये पहनाई जाती है, जिसमे वे भाग न सके, निगड। बाँस की एक प्रकार की टोकरी।

बेढ़—पुं० नाश, बरबादी।

बढ़ना—सक० वृक्षो या खेतो आदि को, उनकी रक्षा के लिये चारो ओर से किसी प्रकार घेरना, रुँधना। चौपायो को घेर कर हाँक ले जाना।

बेढ़ई—स्त्री० कचौड़ी।

बेढ़ा—पुं० हाथ मे पहनने का एक प्रकार का कडा (गहना)। घर के आस-पास वह छोटा सा घेरा हुआ स्थान जिसमे तरकारियाँ आदि बोई जाती हो।

बेणीफूल—फूल के आकार का सिर पर पहनने का एक गहना, सीसफूल।

बेतना—अक० जान पडना।

बेताल—पु० दे० 'वेताल'। भाट, वदी।

बेदमज्नूं—पु० [फा०] एक प्रकार का वृक्ष। इसकी छाल और फलो आदि का व्यवहार औषध में होता है।

बेदमुश्क—पु० [फा०] एक वृक्ष जिसमे कोमल और सुगधित फूल लगते हैं। इसकी सूखी टहनी की कलम बनाते है।

बेदलैला—पु० [फा०] एक पौधा जिसके फूल बहुत सुंदर होते हैं।

बेदाना—पुं० एक प्रकार का बढ़िया काबुली अनार। बिहीदाना नामक फूल का बीज, दारुहल्दी। वि० [फा०] मूर्ख, बेवकूफ।

बेदार—वि० [फा०] जागा हुआ। सावधान।

बेध—पुं० छेद। दे० 'वेध'। ⊙**ना** = सक० नुकीली चीज की सहायता से छेद करना, छेदना। **बेधिया**†—पु० अंकुश।

बेन†—पु० वशी, मुरली। बाँसुरी। सँपेरे के बजाने तुमड़ी। बाँस।

बेना†—पुं० बाँस का बना हुआ छोटा पखा। खस, उशीर। बाँस। माथे पर वेदी के बीच मे पहना जानेवाला गहना।

बेनिया—स्त्री० छोटा पखा, पखी।

बेनी—स्त्री० स्त्रियों की छोटी चोटी। प्रयाग मे गगा और यमुना का सगम जहाँ पुरानी कथाओ के अनुसार माना जाता है कि सरस्वती भी अत सलिला होकर मिली हैं, त्रिवेणी। किवाडो के पल्लो मे लगी हुई एक छोटी लकडी जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है।

बेनु—पु० दे० 'वेणु'। मुरली। बाँस।

बेपत—वि० वेपमान, कपमान।

बेपेंदी—वि० जिसमे पेंदी न हो। मु०~का लोटा=किसी के जरा से कहने पर अपना विचार बदलनेवाला आदमी।

बेर—पु० एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके कई भेद होते हैं। इस वृक्ष का फल। समय। स्त्री० बार, दफा। देर।

बेरजरी—स्त्री० भडबेरी।

बेरवा—पु० कलाई मे पहनने का सोने या चाँदी का कडा। दे० 'बेवरा'।

बेरा†—पु० समय, वक्त। प्रात काल।

बेराम—वि० दे० 'बीमार'।

बेरियाँ—स्त्री० समय, वक्त।

बेरी—स्त्री० दे० 'बेर'। दे० 'बेडी'।

बेलद†—वि० ऊँचा। जो बुरी तरह विफल मनोरथ हुआ हो।

बेलंब—Ⓟ† पु० दे० 'विलब'।

बेल—पुं० एक प्रकार की कुदाली। सडक आदि बनाने मे सीमा निर्धारित करने के लिये चूने आदि से जमीन पर डाली हुई लकीर। Ⓟ† बेले का फूल। एक कँटीला पेड जिसमे कडे छिलके और मीठे गूदे के गोल फल लगते हैं, श्रीफल। ⊙पत्ती=स्त्री० दे० 'बिल्वपत्र'। ⊙पत्र =पु० दे० 'बिल्वपत्र'। स्त्री० वे छोटे कोमल पौधे जो अपने बल पर ऊपर की ओर उठकर नही बढ सकते, लता। सतान, वश। कपड़े या दीवार आदि पर बनी हुई फूल पत्तियाँ आदि। फीते आदि पर बनी हुई इसी प्रकार की फूल पत्तियाँ। नाव खेने का डाँड। मु०~चढ़ना=वशवृद्धि होना। ~मँढे चढ़ना=किसी कार्य का अंत तक ठीक पूरा उतरना।

बेलड़ी—स्त्री० लता।

बेलचा—पुं० [फा०] कुदाल, कुदारी।

बेलदार—पुं० [फा०] वह मजदूर जो फावडा चलाने का काम करता हो।

बेलन—पुं० वह भारी, गोल और दड के आकार का खड जिसे लुढकाकर किसी स्थान को समतल करने अथवा कंकड़, पत्थर आदि कूटकर सडकें बनाते हैं, रोलर। किसी यत्र आदि मे लगा हुआ इस आकार का कोई बडा पुरजा। कोल्हू का जाठ। रुई धुनने की मुठिया या हत्था। दे० 'बेलना'।

बेलना—पु० काठ का एक प्रकार का लबा दस्ता जो रोटी, पूरी आदि की लोई बेलने के काम आता है। सक० रोटी, पूरी आदि की लोई को चकले पर रखकर बेलने की सहायता से बढ़ाकर बड़ा और पतला करना। चौपट करना, नष्ट करना। विनोद के लिये पानी के छींटे उडाना। मु०—पापड़~=काम बिगाडना।

बेलरी Ⓟ—स्त्री० दे० 'बेल'।

बेलसना Ⓟ†—अक० भोग करना, सुख लूटना।

बेलहरा†—पु० लगे हुए पान रखने के लिये एक लबोतरी पिटारी।

बेला—पुं० चमेली आदि की जाति का सुगधित फूल का एक छोटा पौधा। समय, वक्त। चमडे की एक प्रकार की छोटी कुल्हिया जिससे तेल दूसरे पात्र मे भरते हैं। कटोरा। समुद्र का तट। समुद्र का तट।

बेली—पुं० सगी, साथी।

बेवकूफ—वि० [फा०] मूर्ख, नासमझ।

बेवट†—स्त्री० संकट, विवशता।

बेवपार Ⓟ†—पु० दे० 'व्यापार'।

बेवरा Ⓟ†—पु० विवरण, ब्योरा। बेवरेवार—वि० तफसीलवार, विवरण सहित।

बेवसाय†—पु० दे० 'व्यवसाय'।

बेवहरना(पु)†—अक० व्यवहार करना, बरतना।
बेवहरिया(पु)†—दे० लेनदेन करनेवाला, महाजन।
बेवा—स्त्री० [फा०] विधवा, राँड
बेवाई—स्त्री० दे० 'बिवाई'।
बेवान, बेवान्(पु)†—पुं० दे० 'विमान'।
बेशकीमत, बेशकीमती—वि० [फा०] बहुमूल्य।
बेशी—स्त्री० [फा०] अधिकता।
बेश्म—पुं० घर, गृह।
बेसदर(पु)†—पु० अग्नि।
बेसँभर, बेसँभार(पु)†—वि० बेहोश।
बेस(पु)—पुं० भेस। वि० अत्यत। "जस उमग्गत जुथ्थ जग्गत बेस हैं, (प्रताप० ११)। श्रेष्ठ, उत्तम। सुस्वाधीन पतिका कही कबिन नाइका बेस, (जगद्विनोद, २१५)।
बेसन—पु० चने की दाल का आटा, बेसन। बेसनी—स्त्री० बेसन की बनी या भरी हुई पूरी।
बेसर—पुं० खच्चर। नाक मे पहनने की नथ'।
बेसरा—वि० [फा०] जिसे ठहरने का स्थान न हो, आश्रयहीन। पु०[हिं०] एक प्रकार का पक्षी।
बेसवा—स्त्री० रडी, वेश्या
बेसा(पु)†—स्त्री० रंडी, वारागना। पुं० दे० 'भेष'।
बेसारा(पु)†—वि० बैठानेवाला। रखने या जमानेवाला।
बेसास(पु)—पुं० दे० 'विश्वास'।
बेसाहना—अक० मोल लेना, जान बूझकर अपने पीछे लगाना (झगडा, विरोध आदि)। बेसाहनी—स्त्री० माल लेने की क्रिया। बेसाहा†—पु० खरीदी हुई चीज, सौदा।
बेसिक—वि० [अँ०] प्ररभिक।
बेहगम—वि० भद्दा, बेढगा। बेढब, विकट।
बेहँसना(पु)†—अक० जोर से हँसना।
बेह(पु)—पुं० छेद, छिद्र।
बेहड़—वि०, पुं० दे० 'बीहड'।
बेहतर—वि० [फा०] किसी के मुकाबिले मे अच्छा, किसी से बढ़कर। अव्य० स्वीकृतिसूचक शब्द, अच्छा। बेहतरी—स्त्री० [फा०] बेहतर का भाव, अच्छापन, भलाई।
बेहना†—पु० जुलाहों की एक जाति। धुनिया।
बेहबूदी—स्त्री० [फा० भलाई, बेहतरी।
बेहर—वि० [फा० + सं०] अचर, स्थावर। वि० [हिं०] अलग, जुदा। बेहरा—वि० अलग, जुदा। बेहराना—अक० फटना।
बेहरी†—स्त्री० बहुत से लोगो से चदे के रूप मे माँगकर एकत्र किया हुआ धन।
बेहला—पु० सारगी के आकार का एक प्रकार का अँगरेजी बाजा, बेला।
बेहूदगी—स्त्री० दे० 'बेहूदापन'।
बेहूदा—वि० [फा०] जो शिष्टता या सभ्यता न जानता हो, बदतमीज। अशिष्टतापूर्ण।
बेहून(पु)—क्रि० वि० बिना, बगैर।
बैंक—पु० [अँ] महाजनी लेन देन की बडी कोठी, बक।
बैंगन—पुं० एक वार्षिक पौधा जिसके फल की तरकारी बनाई जाती है, भटा।
बैंगनी, बैंजनी—वि० जो ललाई लिए नीले रग का हो।
बैंड(पु)—पु० [अँ] अँगरेजी बाजे या उनके बजानेवालो का समूह।
बैंडा(पु)—वि० दे० 'बेड़ा'।
बैंत—पु० दे० 'बेंत'। स्त्री० दे० 'बेत'।
बै—स्त्री० बैसर, कघी (जुलाहे)। दे० 'वय'। स्त्री० [अ०] बेचना, बिक्री।
बैकना(पु)—अक० दे० 'बहकना'।
बैकल†—वि० पागल, उन्मत्त।
बैकुठ—पुं० दे० 'बैकुठ'।
बैजती—स्त्री० एक प्रकार का पौधा जिसके फूल लबे होते और गुच्छो मे लगते हैं। विष्णु की माला।
बैजनाथ—पु० दे० 'वैद्यनाथ'।
बैजंती—स्त्री० [सं०] वैजतीमाला।
बैठक—स्त्री० बैठने का स्थान। वह स्थान जहाँ बहुत से लोग आकर बैठा करते हो, चौपाल। बैठने का आसन, पीठ। किसी मूर्ति या खभे आदि के नीचे की चौकी

आधार। बैठाई, जमावड़ा। अधिवेशन, सभासदों का एकत्र होना। बैठने की क्रिया या ढग। साथ साथ उठना बैठना, संग, मेल। दे० 'बैठकी'। ⊙बाज= वि० [हि+फा०] बातें बनाकर काम निकालनेवाला, धूर्त, चालाक।

बैठका—पु० वह कमरा जहाँ लोग बैठते हों, बैठक।

बैठकी—स्त्री० बारबार उठने और बैठने की कसरत, बैठक। आसन, आधार। धातु आदि का दीवट।

बैठन—स्त्री० बैठने की क्रिया, भाव, ढग या दशा। बैठक, आसन।

बैठना—अक० स्थित होना, आसीन होना। किसी स्थान या अवकाश मे ठीक रूप से जमना। अभ्यस्त होना। जल आदि मे घुली हुई वस्तु का नीचे आधार मे जा लगना। दबना या डूबना। पिचक जाना। (कारबार) चलता न रहना, बिगडना। तोल मे ठहरना या परता पडना। लागत लगना। निशाने पर लगना। पौधे का जमीन मे गाडा जाना, लगना। किसी स्त्री का किसी पुरुष के यहाँ पत्नी के समान रहना। पक्षियों का अंडे सेना। बेरोजगार रहना। मु० बैठते उठते=सब अवस्था मे सदा। बैठे बैठाए=अकारण, अचानक। बैठे बैठे=निष्प्रयोजन, अचानक, अकारण। बैठाना—सक० [अक० बैठना] स्थित करना, उपविष्ट करना। आसन पर विराजने को कहना। पद पर स्थापित करना, नियत करना। ठीक जमाना, अडाना या टिकाना। किसी काम को बार बार करके हाथ को अभ्यस्त करना, माँजना। पानी आदि मे घुली हुई वस्तु को तल मे ले जाकर जमाना। धँसाना या डुबाना। पिचकाना या धँसाना। (कारबार) चलता न रहने देना, बिगाडना। फेंक या चलाकर कोई चीज ठीक जगह पर पहुँचाना। पौधे को पालने के लिये जमीन मे गाडना, जमाना। किसी स्त्री को पत्नी के रूप मे रख लेना।

बैठारना, बैठालना†⑨—सक० दे० 'बैठाना'

बैठना†—सक० बंद करना, घेडना (पशुओं को)।

बैत—स्त्री० [अ०] पद्य, श्लोक।

बैतरनी—स्त्री० दे० 'वैतरणी'।

बैताल—पुं० दे० 'बेताल'।

बैद—पुं० चिकित्सा शास्त्र जाननेवाला पुरुष, वैद्य। बैदई—स्त्री० वैद्य विद्या, वैद्य का व्यवसाय। बैदगी†—स्त्री० वैद्य की विद्या या व्यवसाय, वैद्य का काम। बैदाई—स्त्री० दे० 'बैदगी'।

बैदेही—स्त्री० दे० 'वैदेही'।

बैन⑨—पुं० वचन, बात। बाँसुरी। मु०~ झरना=मुँह से बात निकलना।

बैना—पुं० वह मिठाई आदि जो विवाहादि मे इष्ट मित्रों के यहाँ भेजी जाती है।

बैपार—पुं० व्यवसाय। बेपारी—पुं० रोजगारी।

बैवर्न⑨—पुं० विवर्णता, वैवर्ण्य।

बैयर⑨†—स्त्री० औरत, स्त्री।

बैयाँ—स्त्री० बाहँ।

बैया⑨‡—बै, बैसर। क्रि० वि० घुटनों के बल।

बैरंग—वि० वह चिट्ठी आदि जिसका महसूल भेजनेवाले ने न दिया हो। विफल।

बैर—पुं० बेर का फल। शत्रुता, अदावत। वैमनस्य, द्वेष। मु०~काढ़ना या~निकलना=बदला लेना।~ठानना=दुश्मनी मान लेना।~पड़ना=शत्रु होकर कष्ट पहुँचाना।~बिसाहना या मोल लेना= किसी से दुश्मनी पैदा करना।~लेना= बदला लेना, कसर निकालना।

बैरक—पुं० छावनी, बारिक।

बैरख—पुं० सेना का झंडा, निशान।

बैराग—पुं० दे० 'वैराग्य'। बैरागी—पुं० वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद।

बैराना†—अक० वायु के प्रकोप से बिगड़ना।

बैरिस्टर—पुं० [अं०] विलायत से कानूनों की प्रयोगात्मक शिक्षाप्राप्त वकील।

बैरी—वि० बैर रखनेवाला, शत्रु, विरोधी।

बैल—पुं० एक चौपाया जिसकी मादा गाय है। यह हल मे जोता जाता, बोझ ढोता और

गाड़ियो को खीचता है। मूर्ख। ⊙मूतनी =स्त्री० दे० 'गोमूत्रिका'।
बैलून—पु० [अँ०] गैस से भरा हुआ आसमान मे उड़नेवाला पोला गोला या नाशपाती के आकार का फूला हुआ लिफाफा जिसमे हवा नही घुस सकती, गुब्बारा। हवा से फुलाया जा सकनेवाला रबर का खिलौना।
बैसंदर(पु)—पुं० अग्नि।
बैस—स्त्री० आयु, उम्र। जवानी। पुं० क्षत्रियो की एक प्रसिद्ध शाखा।
बैसना(पु)†—सक बैठना।
बैसर—स्त्री० जुलाहो का एक औजार जिससे वे कपड़ा बुनते समय बाने को बैठाते हैं, कघी।
बैसवारा—पुं० अवध का पश्चिमी प्रांत।
बैसाना(पु)—सक० बैठाना।
बैसाख—पुं० दे० 'वैशाख'।
बैसाखी—स्त्री० लँगडो की कधे के नीचे बगल मे दबाकर चलने की लाठी।
बैसारना(पु)†—सक० दे० 'बैठाना'।
बैसिक(पु)†—पुं० वेश्या से प्रीति करनेवाला नायक।
बैहर(पु)†‡—वि० भयानक, क्रोधालु। †(पु)स्त्री० वायु।
बोडा—पुं० बारूद मे आग लगाने का पलीता। रोडी—स्त्री० दे० 'बौंडी'।
बोआई—स्त्री० बोने का का काम। बोने की मजदूरी।
बोक†—पुं० बकरा।
बोज—पुं० घोड़ों का एक भेद।
बोजा—स्त्री० चावल से बनी हुई शराब।
बोझ—पुं० ऐसी राशि, गट्ठर या वस्तु जो उठाने या ले चलने मे भारी जान पड़े, भार। भारीपन, वजन। मुश्किल काम। किसी कार्य को करने में होनेवाला श्रम, कष्ट या व्यय। वह व्यक्ति या वस्तु जिसके सबंध मे कोई ऐसी बात करनी हो जो कठिन जान पड़े। उतना ढेर जितना एक आदमी या पशु लादकर ले चल सके, गट्ठा। बोझना—सक० बोझ लादना। बोझल, बोझिल—वि० भारी, वजनदार। बोझा—पुं० दे० 'बोझ'।
बोट—स्त्री० [अँ०] नाव, नौका।
बोटी—स्त्री० मास का छोटा टुकडा। मु०~काटना=शरीर को काटकर खड खड करना।
बोडना(पु)—सक० दे० 'बोरना'।
बोड़ा—पुं० एक प्रकार की पतली लबी फली जिसकी तरकारी होती है, लोबिया। अजगर। वह व्यक्ति जिसके दाँत टूट गए हो।
बोड़ी—स्त्री० दमडी कौड़ी। अति अल्प धन। वह स्त्री जिसके दाँत टूट गए हो।
बोत—पुं० घोडो की एक जाति।
बोतल—स्त्री० काँच का लबी गरदन का एक गहरा बरतन।
बोदरी—स्त्री० खसरा रोग।
बोदा—वि० मूर्ख, गावदी। सुस्त, मट्ठर। जो दृढ या कडा न हो, फुसफुसा।
बोध—पुं० [सं०] ज्ञान, जानकारी। तसल्ली, धीरज। ⊙क=पुं० ज्ञान करानेवाला, जतानेवाला। शृगार रस के हावों मे से एक हाव जिसमे किसी सकेत या क्रिया द्वारा एक दूसरे को अपने मन का भाव जताया जाता है। ⊙गम्य=वि० समझ मे आने योग्य। बोधना(पु)†=सक० बोध देना, समझना। ज्ञान देना। बोधन—पुं० सूचित करना। जगाना।
बोधितरु, बोधिद्रुम—पुं० [स०] बोधगया मे स्थित पीपल का वह पेड जिसके नीचे बुद्ध भगवान् ने सबोधि (बुद्धत्व) प्राप्त की थी। बोधिसत्व—पुं० वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो गया हो।
बोना—सक० बीज को जमने के लिये जुते हुए खेत या भुरभुरी की हुई जमीन में छितराना। बिखराना (पु) डुबाना।
बोबा—†पुं० स्तन, थन। घर का साज सामान, अंगड़ खंगड़। गठरी।
बोय‡—स्त्री० गध, वास।
बोर—पुं० डुबाने की क्रिया, डुबाव।

⊙ना†=सक० जल या किसी और द्रव पदार्थ मे निमग्न कर देना, डुबाना। कलंकित करना। योग देना या मिलाना। घुले हुए रंग मे डुबाकर रँगना।

बोरसी†—स्त्री० अँगीठी।

बोरा—पुं० टाट का बना हुआ थैला जिसमे अनाज आदि रखते हैं। दे० 'बोर'। बोरी—स्त्री० टाट की छोटी थैली, छोटा बोरा।

बोरिया—पुं० [फा०] चटाई, बिस्तर। ⊙ बधना उठाना=चलने की तैयारी करना, प्रस्थान करना।

बोरो—पुं० एक प्रकार का मोटा धान।

बोर्ड—पुं० [अं०] किसी स्थायी कार्य के लिये बनी हुई समिति। माल के मामलों का फैसला करनेवाली कमेटी। कागज, काठ आदि की मोटी तख्ती। नामपट्ट, साइनबोर्ड। संघ या संगठन (जैसे जिला बोर्ड, म्युनिसिपल बोर्ड, बोर्ड आव -रेवेन्यू, मेडिकल बोर्ड आदि)। जहाज मे ठहरने की जगह। वह स्थान जहाँ निवास के साथ भोजन का भी प्रबंध हो। बोर्डिंग हाउस—पुं० [अं०] विद्यार्थियो के रहने और खाने पीने का स्थान।

बोल—पुं० वचन, वाणी। ताना। लगती हुई बात। बातो का बँधा या गठा हुआ शब्द। कथन या प्रतिज्ञा। गीत का टुकड़ा, अंतरा। ⊙चाल=स्त्री० बातचीत, कथनोपकथन। मेलमिलाप। छेड़छाड़ चलती भाषा, नित्य के व्यवहार की बोली। मु०—⊙बाला रहना या होना= बात की साख बनी रहना। मान मर्यादा का बना रहना।

बोलता—पुं० ज्ञान कराने और बोलनेवाला तत्व, आत्मा। जीवन तत्व, प्राण। वि० खूब बोलनेवाला, वाचाल। बोलती—स्त्री० बोलने की शक्ति। मु० मारी जाना=मुँह से बात न निकलना।

बोलनहार—पुं० क्षुद्र आत्मा, बोलता।

बोलना—सक० कुछ कहना, कथन करना। —राना, बदना रोक। टोक करना। छेड़छाड़ करना। (पु)† बुलाना, पुकारना। (पु)† पास आने के लिये कहना या कहलाना। अक० मुख से शब्द उच्चारण करना। किसी चीज की आवाज निकालना। बोलना चालना=बातचीत करना। मु०—बोल जाना=मर जाना (अशिष्ट)। बाकी न रह जाना। व्यवहार के योग्य न रह जाना।

बोलसरी†—पुं० दे० 'बोलसिरी'। एक प्रकार का घोड़ा।

बोलाचाली—स्त्री० दे० 'बोल चाल'।

बोली—स्त्री० मुँह से निकली हुई आवाज, वाणी। अर्थयुक्त शब्द या वाक्य, वचन। नीलाम करनेवाले और लेनेवाले का जोर से दाम कहना। वह शब्दसमूह जिसका व्यवहार किसी प्रदेश के निवासी अपने विचार प्रकट करने के लिये करते है, भाषा। हँसी दिल्लगी। मु०—छोड़ना,—बोलना या—मारना= किसी को लक्ष्य करके उपहास या व्यंग के शब्द कहना।

बोल्लाह—पु० घोड़ो की एक जाति।

बोल्शेविक—पुं० [अं०] रूस के पुराने सामाजिक प्रजातंत्रवादी संगठन में मार्क्स के समाज संबंधी कार्यक्रम को तत्काल पूर्णतया लागू करने का समर्थन करनेवाला बहुसंख्यक गरम दल जिसने १९१७ ई० में रूसी शासन पर अपना अधिकार जमाया। इस दल का सदस्य।

बोल्शेविज्म—पु० [अं०] बोल्शेविक दल के सिद्धांत का मत।

बोवना—सक० दे० 'बोना'।

बोवान—सक० दे० 'बोना'।

बोवाना—सक० [बोना प्रे०] बोने का काम दूसरे कराना।

बोह—स्त्री० डुबकी, गोता।

बोहनी—स्त्री० किसी सौदे या दिन की पहली बिक्री।

बोहित(पु)—पु० बड़ी नाव।

बौंड़†—स्त्री० टहनी जो दूर तक गई हो। लता। ⊙ना=अक० लता की तरह बढ़ना, टहनी फेंकना।

बौंडर†—पुं० दे० 'बवंडर'।

बौंड़ी—स्त्री० पौधों या लताओं के कच्चे फल। †फली। दमड़ी, छदाम।

बौआना†—अक० स्वप्नावस्था में प्रलाप करना। पागल या बाई चढ़े मनुष्य की भाँति अट सट बक उठना।

बौखल—वि० पागल, बदहवास।

बौखलाना—अक० कुछ कुछ सनक जाना, मन का संतुलन खो बैठना।

बौछाड़—स्त्री० बूंदों की झड़ी जो हवा के झोंके के साथ कहीं जा पड़े। वर्षा की बूंदों के समान किसी वस्तु का बहुत अधिक संख्या में गिरना या पड़ना। बहुत सा देते जाना या सामने रखते जाना, झड़ी। किसी के प्रति कहे हुए वाक्यों का तार। ताना, कटाक्ष।

बौछार†—स्त्री० दे० 'बौछाड़'।

बौड़ना(पु)—अक० दे० 'बौरना'।

बौड़हा—वि० दे० 'बावला'।

बौद्ध—वि० [सं०] गौतम बुद्ध द्वारा प्रचारित या उनसे संबद्ध। पुं० गौतम बुद्ध का अनुयायी। ⊙**धर्म**=पुं० गौतम बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म।

बौना—पुं० अत्यन्त ठिंगना या नाटा मनुष्य।

बौर†—पुं० आम की मंजरी, मौर। ⊙ना=अक० आम के पेड़ में मंजरी निकलना, मौरना।

बौराई—स्त्री० पागलपन।

बौरहा†—वि० दे० 'बावला'।

बौरा—वि० पागल। नादान, मूर्ख। ⊙**ना**=अक० पागल हो जाना। विवेक या बुद्धि से रहित हो जाना। सक० किसी को ऐसा कर देना कि वह भला बुरा न विचार सके।

बौराई(पु)†—स्त्री० पागलपन। **बौराहा**(पु)†—वि० बावला, पागल। **बौरी**—स्त्री० बावली स्त्री।

बौलसिरी—स्त्री० दे० 'मौलसिरी'।

ब्यतीतना(पु)—सक० बीत जाना। गुजराना, बिताना।

ब्यवहार†—पु० उधार।

ब्यवहरिया—पुं० रुपए का लेनदेन करनेवाला, महाजन।

ब्यवहार—पुं० दे० 'व्यवहार'। रुपए का लेनदेन। रुपए के लेन देन का संबंध। सुख दुःख में परस्पर संमिलित होने का संबंध। **ब्यवहारी**—पु० कार्यकर्ता, मामला करनेवाला। लेन देन करनेवाला, व्यापारी।

ब्याउ—पुं० दे० 'ब्याह'।

ब्याज—पुं० दे० 'व्याज'। वृद्धि, सूद। **ब्याजू**—वि० ब्याज या सूद पर दिया जानेवाला (धन)।

ब्याना—सक० जनना, गर्भ से निकालना।

ब्यापना—अक० किसी वस्तु या स्थान में इस प्रकार फैलना कि उसका कोई अंश बाकी न रह जाय। चारों ओर जाना, फैलना। ग्रसना। प्रभाव करना।

ब्यार—स्त्री० दे० 'बयार'।

ब्यारी—स्त्री० दे० 'ब्यालू'।

ब्याल—पु० (पु) हाथी। दे० 'व्याल'। **ब्याली**—स्त्री० सर्पिणी। वि० सर्प धारण करनेवाला।

ब्यालू—पु० रात का भोजन, ब्यारी।

ब्याह—पुं० वह रीति या रस्म जिससे स्त्री और पुरुष में पति पत्नी का संबंध स्थापित होता है, विवाह।

ब्याहता—वि० जिसके साथ विवाह हुआ हो।

ब्याहना—सक० देश, काल और जाति की रीति के अनुसार पुरुष का किसी स्त्री को अपना पति बनाना। किसी के साथ विवाह संबंध कर देना।

ब्याहला†—वि० विवाह का।

ब्यूह—पुं० समूह, व्यूह।

ब्योचना—अक० झोंके से मुड़ जाने या टेढ़े हो जाने से नसों का स्थान से हट जाना, जिससे पीड़ा और सूजन होती है।

ब्योंत—स्त्री० व्यवस्था, मामला। ढंग, तरीका। उपाय। तैयारी। संयोग, अवसर। प्रबंध काम पूरा उतारने का हिसाब किताब। साधन या सामग्री आदि की सीमा, समाई। पहनावा बनाने के लिये कपड़े की काटछाँट, तराश।

व्योतना—सक० कोई पहनावा बनाने के लिये कपड़े को नापकर काटना छाँटना।

व्योपार—पुं० दे० 'व्यापार'।

व्योरन—पुं० बालों को सँवारने की क्रिया या ढंग। व्योरना—सक० गुँथे या उलझे हुए बालों आदि का सुलझाना। विवेकपूर्वक किसी समस्या को सुलझाना।

व्योरा—पुं० किसी घटना के अंतर्गत एक एक बात का उल्लेख या कथन, विवरण। किसी एक विषय के भीतर की सारी बात। वृत्तांत, हाल, समाचार। अंतर, फरक। व्योरेवार = विस्तार के साथ।

व्योहर—पुं० लेनदेन का व्यापार, रुपया ऋण देना। व्योहरिया—पुं० सूद पर रुपए के लेनदेन का व्यापार करनेवाला।

व्योहार—पुं० दे० 'व्यवहार'।

व्योंत—पुं० व्यवस्था।

व्यौहार—पुं० दे० 'व्यवहार'।

ब्रंद(पु)—पुं० दे० 'वृंद'।

ब्रज—पुं० दे० 'व्रज'।

ब्रजना(पु)—अक० चलना।

ब्रह्मंड(पु)—पुं० दे० 'ब्रह्मांड'।

ब्रह्म—पुं० [सं०] एकमात्र नित्य चेतना सत्ता जो जगत् का कारण और सत्, चित आनंद स्वरूप है। परमात्मा। आत्मा, चैतन्य। ब्राह्मण (विशेषत समस्त पदों में) ब्रह्मा (समास में)। ब्राह्मण जो मरकर प्रेत हुआ हो, ब्रह्मराक्षस। वेद। ज्ञान, विवेक। एक की संख्या। ⊙ग्रंथि = स्त्री० यज्ञोपवीत या जनेऊ की मुख्य गाँठ। ⊙घोष = पुं० वेदध्वनि। ⊙चर्य = पुं० योग में एक प्रकार का यम। वीर्य को रक्षित रखने का प्रतिबंध चार आश्रमों में पहला आश्रम, जिसमें पुरुष को स्त्रीसंभोग आदि व्यसनों से दूर रहकर केवल अध्ययन में लगा रहना चाहिए। ⊙चारिणी = स्त्री० ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करनेवाली स्त्री। दुर्गा, पार्वती। सरस्वती। ⊙चारी = पुं० ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करनेवाला। ब्रह्मचर्य आश्रम के अंतर्गत व्यक्ति, प्रथमाश्रमी। ⊙ज्ञान = पुं० ब्रह्म या पारमार्थिक सत्ता का बोध। ⊙ज्ञानी = पुं० परमार्थ तत्व का बोध रखनेवाला। ⊙दाय = वि० ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखनेवाला। ब्रह्म या ब्रह्मा संबंधी। ⊙त्व = पुं० ब्रह्म का भाव। ब्राह्मणत्व। ⊙दिन = पुं० ब्रह्मा का एक दिन जो १०० चतुर्युगों का माना जाता है। ⊙दोष = पुं० ब्राह्मण को मारने का दोष या पाप। ⊙द्रोही = वि० ब्राह्मणों से वैर रखनेवाला। ⊙द्वार = पुं० ब्रह्मरंध्र। ⊙निष्ठ = वि० ब्राह्मणभक्त। ब्रह्मज्ञान संपन्न। ⊙पद = पुं० ब्रह्मत्व। ब्राह्मणत्व। मोक्ष, मुक्ति। ⊙पुत्र = पुं० ब्रह्मा का पुत्र। नारद, वशिष्ठ। मनु। मरीचि। सनकादिक। एक नद जो मानसरोवर से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरता है। ⊙पुराण = पुं० १८ पुराणों में से एक। ⊙पुरी = स्त्री० ब्राह्मणों की बस्ती। उन बहुत से मकानों का समूह जो राजा महाराजा ब्राह्मणों को दान करते हैं। ब्रह्मलोक। ⊙भट्ट = पुं० वेदों का ज्ञाता, ब्रह्मविद्। एक प्रकार के ब्राह्मण। ⊙भोज = पुं० ब्राह्मणभोजन। ⊙मुहूर्त = पुं० प्रभात, तड़का। ⊙यज्ञ = विधिपूर्वक वेदाभ्यास, वेद पढ़ना। ⊙रंध्र = पुं० मस्तक के मध्य में माना हुआ गुप्त छेद जिससे होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। ⊙राक्षस = पुं० वह ब्राह्मण जो मरकर भूत हुआ हो। ⊙रात्रि = स्त्री० ब्रह्मा की एक रात जो एक कल्प की होती है। ⊙रूपक = पुं० १६ अक्षरों का एक छंद, चंचला, चित्र। ⊙रेख = स्त्री० दे० 'ब्रह्मलेख'। ⊙लेख = पुं० भाग्य का लेख जो ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं। ⊙लोक = पुं० वह लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं। मोक्ष का एक भेद। ⊙वाद = पुं० वेद का पढ़ना पढ़ाना, वेदपाठ। अद्वैतवाद। ⊙वादी = वि० वेदांती, अद्वैतवादी। ⊙विद = वि० ब्रह्म को जानने या समझनेवाला।

वेदार्थज्ञाता। ⊙विद्या = स्त्री० आत्म-तत्व का विवेचन करनेवाला शास्त्र, ब्रह्म को जानने की विद्या। ⊙वैवर्त = पु० वह प्रतीति मात्र जो ब्रह्म के कारण हो। ब्रह्म के कारण प्रतीत होनेवाला जगत्। श्रीकृष्ण। १८ पुराणो मे से एक पुराण जो कृष्ण भक्ति सबधी है। ⊙समाज = पु० दे० 'ब्राह्मसमाज'। ⊙सूत्र = पु० जनेऊ, यज्ञोपवीत। व्यासकृत शारीरिक सूत्र। ⊙हत्या स्त्री० ब्राह्मण को मार डालना (महापाप)। ब्रह्माड--पु० संपूर्ण विश्व, जिसके भीतर अनत लोक हैं। खोपडी, कपाल। ब्रह्मा--पु० ब्रह्म के तीन सगुण रूपो मे से सृष्टि की रचना करनेवाला रूप, विधाता। यज्ञ का एक ऋत्विक्। ब्रह्माणी--स्त्री० ब्रह्मा की स्त्री या शक्ति। सरस्वती। ब्रह्मानद--पुं० ब्रह्म के स्वरूप के अनुभव से होनेवाला आनद।

ब्रह्मावर्त--पु० [सं०] सरस्वती और दृश-द्वती नदियो के बीच का प्रदेश।

ब्रह्मास्त्र--पु० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र जो मत्र से चलाया जाता था।

ब्रात ⓟ--पु० दे० 'ब्रात्य'।

ब्राह्म--वि० [सं०] ब्रह्म सबधी। पुं० विवाह का एक भेद। ⊙मुहूर्त = पु० सूर्योदय से पहले दो घडी तक का समय। ⊙समाज = पु० १९वी सदी के आदि मे राजा राममोहनराय द्वारा स्थापित समाज जिसका उद्देश्य 'वैदिक ब्रह्म एक ही और अद्वितीय है' के आधार पर केवल ब्रह्म की उपासना को ग्राह्य मान-कर अन्य देवताओ की उपासना का विरोध न करके समाज सुधार करना था। इस सजाज मे ज्ञान के लिये जाति पाँति का भेद नही माना गया। 'ॐ तत् सत्' इस समाज का मूलमत्र है।

ब्राह्मण--पुं० [सं०] चार वर्णों मे सबसे श्रेष्ठ वर्ण या जाति जिसके छह प्रधान कर्म अध्यापन, अध्ययन, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना और दान लेना है। उक्त जाति या वर्ण का मनुष्य। मत्र आरण्यक और उपनिषत् के अतिरिक्त वेदो का शेष अश। विष्णु। शिव। ⊙त्व = पुं० ब्राह्मण का भाव अधिकार या धर्म। ब्राह्मणपन। ⊙भोजन = पु० ब्राह्मणो का भोजन, ब्राह्मणो को खिलाना।

ब्रह्मण्य--पुं० [सं०] दे० 'ब्राह्मणत्व'। शनि ग्रह।

ब्राह्मी--स्त्री० [सं०] दुर्गा। शिव की अष्ट मातृकाओ मे से एक। भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ निकली है। एक प्रसिद्ध बूटी जो स्मरण शक्ति और बुद्धि बढानेवाली है।

ब्रिगेड--पुं० [अँ०] सेना का एक समूह। सैनिक ढग पर बना हुआ समूह।

ब्रिटिश--वि० [अँ०] ग्रेट ब्रिटेन या इग्लि-स्तान से सबध रखनेवाला, अँगरेजी।

ब्रीडना ⓟ--अक० लज्जित होना।

ब्लाउज--पु० [अँ०] एक प्रकार की जनानी कुरती।

ब्लाक--पुं० [अँ०] छापे के काम के लिये काठ, ताँबे या जस्ते आदि पर बना हुआ चित्रो आदि का ठप्पा। इमारतो का वह समूह जिसके बीच मे खाली जगह न हो। विभाग, अश।

ब्लैकमार्केट--पुं० [अँ०] सरकार द्वारा नियत्रित वस्तुओ का अवैधानिक व्यव-साय, चोरबाजारी।

भ

भ--हिंदी वर्णमाला का २४वाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है।

भंकार ⓟ पुं० विकट शब्द।

भंग--पु० [सं०] तरग, लहर। पराजय। खंड, टुकडा। भेद। कुटिलता, टेढापन। भय, विनाश, विध्वस। बाधा, अडचन। टेढा होने या झुकने का भाव। स्त्री० दे० 'भाँग'।

भंगड़—वि॰ बहुत भाँग पीनेवाला, भँगेड़ी।
भंगना†—अक॰ टूटना। दबना, हार मानना। सक॰ तोड़ना। दबाना।
भँगरा—पुं॰ भाँग के रेशे से बुना हुआ एक कपड़ा। एक प्रकार की वनस्पति जो औषध के काम में आती है, भँगरैया।
भंगराज—पु॰ काले रंग की एक चिड़िया। दे॰ 'भँगरा'।
भँगरैया†—स्त्री॰ दे॰ 'भँगरा'।
भंगार—पुं॰ वह गड्ढा जिसमें वर्षा का पानी समाता है। वह गड्ढा जो कुआँ बनाते समय खोदते हैं। घासफूस, कूड़ा।
भंगारिⓅ—स्त्री॰ दे॰ 'भंगार'।
भंगि, भंगिमा—स्त्री॰ [सं॰] टेढ़ापन, कुटिलता। स्त्रियों का हाव भाव, अंदाज। लहर। प्रतिकृति।
भंगी—पुं॰ एक जाति जिसका काम मलमूत्र आदि उठाना है। वि॰ भाँग पीनेवाला। वि॰ [सं॰] नष्ट होनेवाला। भंग करनेवाला।
भंगुर—वि॰ [सं॰] नाशवान्। कुटिल, टेढ़ा।
भंगू—वि॰ दे॰ 'भंगुर'।
भंगेड़ी—वि॰ दे॰ 'भंगड़'।
भंगेला—पु॰ दे॰ 'भँगरा'।
भंजक—वि॰ [सं॰] भंगकारी, तोड़नेवाला।
भंजन—पुं॰ [सं॰] तोड़ना, भंग करना। ध्वंस। नाश वि॰ तोड़नेवाला। **भँजना**—अक॰ टुकड़े टुकड़े होना, टूटना किसी बड़े सिक्के का छोटे छोटे सिक्कों से बदल जाना। भुनना। बँट जाना। कागज के तख्तों का कई परतों में मोड़ा जाना। Ⓟ सक॰ तोड़ना।
भंजाई—स्त्री॰ भाँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी। भँजाने या भुनाने की मजदूरी **भँजाना**†—सक॰ [भँजना, भाँजना का प्रे॰] भँजना का सकर्मक रूप, तुड़वाना। बड़ा सिक्का आदि देकर उतने ही मान के छोटे सिक्के लेना, भुनाना। भाँजने का काम दूसरे से कराना।

भंटा—पुं॰ बैंगन।
भंड—पु॰ दे॰ 'भाँड'। वि॰ [सं॰] अश्लील या गंदी बातें बकनेवाला। धूर्त, पाखंडी। ⊙ना=सक॰ हानि पहुँचाना, बिगाड़ना। तोड़ना। नष्ट भ्रष्ट करना। बदनाम करना।
भँड़ताल†—पु॰ एक प्रकार का गाना और नाच जिसमें तालियाँ पीटते हैं।
भँड़तिल्ला—पु॰ दे॰ 'भँड़ताल'।
भँड़फोड़†—पु॰ मिट्टी के बर्तनों को गिराना या तोड़ना फोड़ना। मिट्टी के बर्तनों का टूटना फूटना। रहस्योद्घाटन।
भँड़भाँड़—पु॰ एक कँटीला क्षुप जिसकी पत्तियाँ और जड़ दवा के काम आती हैं भड़भाँड़।
भँडरिया—पुं॰ एक जाति जो सामुद्रिक की सहायता से लोगों को भविष्य बताकर जीवननिर्वाह करती है। भड्डर। वि॰ पाखंडी, धूर्त, मक्कार। स्त्री॰ दीवारों में बना हुआ पल्लेदार ताख।
भँड़सार, भँड़साल†—स्त्री॰ वह गोदाम जहाँ अन्न इकट्ठा किया जाता है, खत्ती।
भंडा—पुं॰ बर्तन, पात्र। भंडारा। भेद मु॰ ~फूटना=भेद खुलना।
भँड़ाना—सक॰ उछलकूद मचाना, उपद्रव करना। तोड़ना फोड़ना, नष्ट करना।
भंडार—पु॰ कोष, खजाना। अन्नादि रखने का स्थान। पाकशाला, भंडारा। पेट, उदर। दे॰ 'भंडारा'।
भंडारा—पु॰ दे॰ 'भंडार'। समूह, भुंड। साधुओं का भोज। पेट। **भंडारी**—स्त्री॰ छोटी कोठरी। कोश, खजाना। पु॰ खजानची, कोषाध्यक्ष। भंडारे का प्रधान अध्यक्ष। रसोइया।
भँडेरिया—पु॰ 'भड्डर'।
भँड़ौआ—पु॰ भाँड़ों के गाने का गीत, ऐसा गीत जो सभ्य समाज में गाने के योग्य न हो। हास्य आदि रसों की साधारण अथवा निम्न कोटि की कविता।

भँती—वि० दे० 'भाँति'।
भँभाना—अक० दे० 'रँभाना'।
भँभीरी—स्त्री० लालरंग का एक बरसाती पतिंगा। जुलाहा।
भंभेरि(पु)†—स्त्री० भय।
भँवना—अक० घूमना फिरना। चक्कर लगाना।
भँवन(पु)—स्त्री० घूमना, फिरना।
भँवर—पु० भौंरा। बहाव में वह स्थान जहाँ पानी की लहर एक केंद्र पर चक्राकार घूमती है। गड्ढा, गर्त। ⊙कली = स्त्री० लोहे का या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि वह जिधर चाहे उधर सहज में घूम सकती है। ⊙जाल = पु० सांसारिक झगड़े बखेड़े, भ्रमजाल। ⊙भीख = स्त्री० वह भीख जो भौंरे के समान घूम फिरकर माँगी जाय।
भँवरी—स्त्री० पानी का चक्कर, भँवर। जंतुओं के शरीर के ऊपर वह स्थान जहाँ के रोएँ और बाल एक केंद्र पर घूमे हुए हों, (बालों का इस प्रकार का घुमाव स्थानभेद से शुभ अथवा अशुभ लक्षण माना जाता है)। दे० 'भाँवर'। बनियों का सौदा लेकर घूमकर बेचना। फेरी।
भँवाना—सक० [अक० भँवना] घुमाना, चक्कर देना। भ्रम में डालना।
भँवारा—वि० भ्रमणशील, घूमनेवाला।
भँसना—अक० पानी में डाला या फेंका जाना।
भ—पुं० [सं०] नक्षत्र। ग्रह। राशि। शुक्राचार्य। भ्रमर, भौंरा। भूधर, पहाड़। भ्रांति। दे० 'भगण'।
भइया—पुं० भाई। बराबरवालों के लिये आदरसूचक शब्द।
भक—स्त्री० सहसा अथवा रह रहकर आग के जल उठने का शब्द।
भकति—स्त्री० दे० 'भक्ति'।
भकभकाना—अक० भकभक शब्द करके जलना। चमकना।
भकभूर—(पु)†—वि० मूर्ख, उजड्ड।
भकाऊँ—पुं० हौवा।
भकुआ†—वि० मूर्ख, मूढ़।
भकुआना—अक० चकपका जाना, घबरा जाना। सक० चकपका देना, घबरा देना। सक० चकपका देना, घबरा देना। मूर्ख बनाना।
भकूट—पुं० [सं०] विवाह के लिये शुभ मानी जानेवाली कुछ राशियाँ।
भकोसना—सक० जल्दी जल्दी भद्देपन या जल्दी से खाना, निगलना।
भक्त—वि० [सं०] भागों में बाँटा हुआ। बाँटकर दिया हुआ। अलग किया हुआ। अनुयायी। सेवा करनेवाला, भक्ति करनेवाला। ⊙वत्सल = वि० जो भक्तों पर कृपा करता हो। विष्णु।
भक्ताई(पु)†—स्त्री० भक्ति।
भक्ति—स्त्री० [सं०] अनेक भागों में विभक्त करना, बाँटना। भाग, विभाग। अंग, अवयव। विभाग करनेवाली रेखा। सेवाशुश्रूषा। पूजा, अर्चन। श्रद्धा। भक्तिसूत्र के अनुसार ईश्वर में अत्यंत अनुराग का होना। इसके नौ प्रकार ये है—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन। एक वृत्त का नाम। ⊙सूत्र = पुं० भक्ति पर बनाया हुआ सूत्र (जैसे शांडिल्य के भक्तिसूत्र नारद के भक्तिसूत्र)। ऐसे सूत्रों का संग्रह या ग्रंथ।
भक्ष—पुं० [सं०] दे० 'भक्षण'। ⊙क = वि० खानेवाला। भोजन करनेवाला।
भक्षण(पु)—[सं०] भोजन करना, किसी वस्तु को दाँतों से काटकर खाना। भोजन। भक्षना(पु)—सक० खाना। भक्षित—वि० खाया हुआ। भक्षी—वि० खानेवाला, भक्षक। भक्ष्य—वि० [सं०] खाने के योग्य। पुं० खाद्य, अन्न।
भख(पु)—पुं० आहार, भोजन। ⊙ना(पु) = सक० खाना, । भोजन करना।
भगंदर—पु० [सं०] एक प्रकार का फोड़ा जो गुदा के किनारे होता है।

भग—पुं० [सं०] योनि। सूर्य। १२ आदित्यो मे से एक। ऐश्वर्य। सौभाग्य। धन। गुदा।

भगण—पुं० [सं०] खगोल मे ग्रहो का पूरा चक्कर जो ३६० अश का होता है। छद शास्त्रानुसार एक गण जिसमे आदि का एक वर्ण गुरु और अत के दो वर्ण लघु होते हैं।

भगत—वि० उपासक, भक्ति करनेवाला। वह साधु जो मास आदि न खाता हो। पुं० वैष्णव या वह साधु जो तिलक लगाता और मास आदि न खाता हो। दे० 'भगतिया'। होली मे वह स्वाँग जो भगत का किया जाता है। भूत प्रेत उतारनेवाला पुरुष, ओझा। ⊙ बछल(पु) =वि० दे० 'भक्तवत्सल'। भगति(पु)—स्त्री० दे० 'भक्ति'। भगती—स्त्री० दे० 'भक्ति'। भगतिया—पुं० राजपूताने की एक जाति। इस जाति के लोग गाने बजाने का काम करते हैं और इनकी कन्याएँ वेश्यावृत्ति करती और भगतिन कहलाती है।

भगदड—स्त्री० भागने की क्रिया या भाव।

भगदर—स्त्री० दे० 'भगदड'।

भगन(पु)—दे० वि० दे० 'भग्न'। पुं० भागने का कार्य या स्थिति। भगना†—पु० दे० 'भानजा'। अक० दे० 'भागना'।

भगर(पु)†—पुं० छल, फरेब।

भगल—पुं० छल, ढोग। जादू, इद्रजाल।

भगली—प० ढोगी, छली, बाजीगर।

भगवंत(पु)†—पुं० भगवान्, ईश्वर। विष्णु।

भगवती—स्त्री० [स०] देवी। गौरी। सरस्वती। दुर्गा।

भगवत्—पुं० [सं०] ईश्वर, परमेश्वर। विष्णु। शिव।

भगवदीन—पुं० भगवद्भक्त।

भगवदीय—वि० [सं०] भगवत् सबधी। भगवान् का भक्त।

भगवद्गीता—स्त्री० [स०] महाभारत के भीष्मपर्व मे वर्णित अर्जुन और भगवान् कृष्ण के १८ अध्यायोवाले वे प्रश्नोत्तर जिनमे भक्ति, ज्ञान, कर्म आदि का रहस्य समझाते हुए अर्जुन को कर्तव्य और अकर्तव्य का भेद समझाया गया है।

भगवान्—वि० [सं०] ऐश्वर्ययुक्त। पूज्य। ईश्वर, परमेश्वर। विष्णु। पूज्य और आदरणीय व्यक्ति। पूज्य और आदरणीय व्यक्ति।

भगवान—सं० दे० 'भगवान्'।

भगाना—सक० [भागना का प्रे०] किसी को भागने मे प्रवृत्त करना, दौड़ाना, हटाना, दूर करना। (पु) अक० दे० 'भागना'।

भगिनी—स्त्री० [सं०] बहन।

भगीरथ—पुं० [सं०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवशी राजा जो दिलीप के पुत्र थे और गगा को पृथ्वी पर लाए थे। वि० भगीरथ की तपस्या के समान भारी बहुत बडा।

भगोड़ा—वि० भागा हुआ। कायर।

भगोल—पुं० दे० 'खगोल'।

भगौती(पु)†—स्त्री० दे० 'भगवती'।

भगौहाँ—वि० भागने को उद्यत। कायर। वि० भगवा, गेरुआ।

भग्गी†—स्त्री० दे० 'भगदड'।

भग्गुल(पु)‡—वि० रण से भागा हुआ। भगोडा।

भग्गू†—वि० जो विपत्ति देखकर भागता हो, कायर।

भग्न—वि० [सं०] टूटा हुआ। हारा या हराया गया। भग्नावशेष—पु० किसी टूटे फूटे माकान या उजड़ी हुई बस्ती का बचा हुआ अश, खडहर। किसी टूटे हुए पदार्थ के बचे हुए टुकडे। भग्नाश—वि० जिसकी आशा भग हो गई हो, निराश।

भचक—स्त्री० चलते समय पैर का ठीक न पडना, लचककर चलने का भाव, लँगडापन। ⊙ ना = अक० आश्चर्य मे निमग्न होकर रह जाना। चलने के समय पैर का इस प्रकार टेढा पडना कि देखने मे लँगडापन मालूम हो।

भचक्र—पुं० [सं०] राशियो या ग्रहो के चलने का मार्ग, कक्षा। नक्षत्रो का समूह।

भच्छ(पु)‡—पुं० दे० 'भक्ष्य'। ⊙**ना**(पु)† = सक० खाना।

भछन—पु० दे० 'भक्षण'।

भजन—पुं० [सं०] वारवार किसी पूज्य या देवता आदि का नाम लेना, स्मरण, जप। वह गीत जिसमे देवता आदि के गुणो का कीर्तन हो। **भजनानंद**—पु० भजन से मिलनेवाला आनद। **भजनानंदी**—पु० भजन गाकर सदा प्रसन्न रहनेवाला।

भजना—सक० सेवा करना। आश्रय लेना। देवता आदि का नाम रटना, जपना। अक० भागना। पहुँचना, प्राप्त होना।

भजनी, भजनीक—पु० भजन गानेवाला।

भजाना—अक० [भजना का प्रे०] भागना सक० भगाना, दूर कर देना।

भजियाउर†—स्त्री० चावल, दही, घीआ आदि एक साथ पकाकर वनाया हुआ भोजन, रझिया।

भट—पु० [सं०] योद्धा। सिपाही, सैनिक।

भटकटाई, भटकटैया—स्त्री० एक छोटा और काँटेदार पौधा जो अक्सर दवा के काम आता है।

भटकना—अक० व्यर्थ इधर घूमते फिरना। रास्ता भूल जाने के कारण इधर उधर घूमना। भ्रम मे पड़ना। **भटकाना**—सक० गलत रास्ता वताना। भ्रम मे डालना।

भटकैया(पु)†—पु० भटकनेवाला। भटकानेवाला।

भटकौंहाँ(पु)‡—वि० भटकानेवाला।

भटनास—स्त्री० एक लता जिसमे फलियाँ लगती है और जिसके दानो की दाल वनती है।

भटभटी(पु)—स्त्री० देखते हुए भी न दिखाई पड़ना।

भटभेरा(पु)†—पु० दो वीरो का मुकावला, भिड़त। धक्का टक्कर। ऐसी भेंट जो अनायास हो जाय।

भटा†—पु० दे० 'वैंगन'।

भटू†—स्त्री० स्त्रियो के सवोधन के लिये एक आदरसूचक शव्द।

भट्ट—पुं० ब्राह्मणो की एक उपाधि। भाट। योद्धा, सूर।

भट्टाकर—पु० [सं०] ऋषि। पंडित। सूर्य। राजा। देवता। वि० माननीय, मान्य।

भट्ठा—पु० वड़ी। ईंटें या खपड़े इत्यादि पकाने का पजावा।

भट्ठी, भट्ठी†—स्त्री० ईंटो आदि का वना हुआ वडा चूल्हा जिसपर हलवाई, लुहार और वैद्य आदि अनेक प्रकार के काम करते हैं। वह स्थान जहाँ देशी शराव वनती है

भठ—पु० गहरा गड्ढा या अधा कुआँ।

भठियारपन—पुं० भठियारे का काम। भठियारो की तरह लड़ना और गालियाँ वकना।

भठियारा—पुं० सराय का प्रवध करनेवाला या रक्षक।

भड़वा—पु० आडवर, नकल।

भड़क—स्त्री० दिखाऊ चमक दमक। भड़कने का भाव, सहम। (पु)**दार** = वि० [हि० फ०] चमकीला, भड़कीलापन। भड़कीला। रोवदार। ⊙**ना** = अक० तेजी से जल उठना। चौंकना, डरकर पीछे हटना (पशुओ के लिये), क्रुद्ध होना। **भड़काना**—सक० प्रज्वलित करना, जलाना। उत्तेजित करना, उभारना। भयभीत कर देना, चमकाना (पशुओं के लिये)।

भड़कीला—वि० दे० 'भड़कदार'।

भड़भड़—स्त्री० भड़भड शव्द जो प्राय. आघातों से होता है। भीड, भव्भड। व्यर्थ की और वहुत अधिक वातचीत। **भड़भड़ाना**—सक० भड भड शव्द करना। **भड़भड़िया**—वि० बहुत अधिक और व्यर्थ की वातें करनेवाला।

भड़भाँड—पु० एक कँटीला पौधा, सत्यानासी।

भड़भूजा—पुं० एक जाति जो भाड़ मे अन्न भूनती है।

भड़साईं—स्त्री० दे० 'भाड'।

भड़ार(पु)†—पु० दे० भडार'।

भड़ास—स्त्री० मन मे छिपा हुआ असतोष का क्रोध।

भड़िहाई(पु)†--क्रि० वि० चोरो की तरह लुक छिप या दबकर।
भडी--स्त्री० झूठा बढावा।
भडुआ--पुं० वह जो वेश्याओ की दलाली करता हो। सफरदाई।
भडेरिया--पु० दे० 'भडुर'।
भड़ैत--पु० किराएदार।
भड्डर--पु० ब्राह्मणो मे बहुत निम्न श्रेणी की एक जाति, भडर।
भना--(पु)†--अक० कहना।
भणित--वि० [सं०] कहा हुआ।
भतार†--पति, खसम।
भतीजा--पु० भाई का पुत्र।
भत्ता--पु० किसी कर्मचारी या अन्य व्यक्ति को निर्धारित वेतन के अतिरिक्त यात्रा, प्रवास, भोजन, सतान, चिकित्सा, महगाई आदि के लिये अथवा किसी विशेष कार्य के लिये दिया जानेवाला धन।
भथियान†--पुं० स्त्री० की गुह्येंद्रिय, भग।
भदत--वि० [स०] पूज्य, मान्य। पुं० बौद्ध भिक्षु या साधु।
भदेई--स्त्री० वह फसल जो भादो मे तैयार होती है।
भदावर--पु० एक प्रात जो आजकल ग्वालियर राज्य मे है।
भदेस--वि० असाधु, भद्दा। अनुचित, अशोभन। पु० बुरा देश या स्थान।
भदेसिल†--वि० भद्दा, भोडा।
भदौंहा†--वि० भादो मास मे होनेवाला।
भदौरिया--वि० भदावर प्रात का, भदावर सबधी। पु० क्षत्रियो की एक जाति।
भद्दा--वि०, पु० जो देखने मे मनोहर न हो, कुरूप।
भद्र--पु० सिर, दाढी, मूछ आदि सबके बालो का मुडन। वि० [सं०] सभ्य, सुशिक्षित कल्याणकारी। श्रेष्ठ साधु। पु० महादेव। उत्तर दिशा के दिग्गज का नाम। सुमेरु पर्वत। सोना, स्वर्ण। ⊙काली = स्त्री० दुर्गा देवी की एक मूर्ति। कात्यायिनी।
भद्रक--पुं० [सं०] एक प्राचीन देश। एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से भगण, रगण, नगण, रगण, नगण, रगण, नगण और अत्य गुरु होता है।
भद्रा--स्त्री० [सं०] केकयराज की एक कन्या जो श्रीकृष्ण जी को ब्याही थी। आकाश गगा। द्वितीया, सप्तमी या द्वादशी तिथि। गाय। दुर्गा। पिंगल मे उपजाति वृत्त का दसवाँ भेद। पृथ्वी। समुद्र का एक नाम। फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग जिसके पृथ्वी पर रहने के समय किया जानेवाला कार्य एक दम नष्ट हो जाता है इसलिये वह अशुभ माना जाता है। किंतु उस योग के स्वर्ग मे रहने के समय कार्यसिद्धि और पाताल में रहने के समय धनप्राप्ति होती है। बाधा (बोलचाल)।
भद्रासन--पु० [सं०] मणियो से जडा हुआ राजसिंहासन जिसपर राज्याभिषेक होता है। योग का एक आसन।
भद्रिका--स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण, नगण और रगण होता है।
भद्री--वि० भाग्यवान्।
भनक--स्त्री० धीमा शब्द, ध्वनि। उडती हुई खबर। ⊙ना(पु)† = सक० कहना।
भनना(पु)--सक० कहना।
भनभनाना--अक० भनभन शब्द करना, गुजारना। विरुद्ध भावना को मद मद कहना, बडबडाना। भनभनाहट--स्त्री० भनभनाने का शब्द, गुजार।
भनित(पु)--वि० दे० 'भणित'।
भनैजी--स्त्री० भानजी।
भबका--पु० अर्क आदि उतारने या शराब चुआने का एक प्रकार का बद मुँह का बड़ा घडा जिसके ऊपरी भाग मे एक लबी नली लगती है।
भबिष(पु)--पु० दे० 'भविष्य'।
भब्भड़--स्त्री० दे० 'भम्भड'।
भभक--स्त्री० भभकने की क्रिया या भाव। ⊙ना = अक० उबलना। गरमी पाकर

किसी चीज का फूटना। जोर से जलना, भडकना।

भभकी—स्त्री० घुडकी, झूठी धमकी।

भम्भड़—स्त्री० भीडभाड, अव्यवस्थित जन-समुदाय।

भभरना(पु)†—अक० डरना। घबरा जाना। भ्रम मे पड़ना।

भभूका—पुं० ज्वाला, लपट।

भभूत—स्त्री० वह भस्म जो शिव जी लगाते थे। शिवमूर्ति के सामने जानेवाली अग्नि की भस्म जिसे शिव के भक्त और उपासक अपने मस्तक और भुजाओं आदि पर लगाते है।

भमीरी†—स्त्री० दे० 'भँभीरी'।

भयंकर—वि० [सं०] डरावना, भयानक।

भय(पु)—वि० दे० हुआ। पुं० [सं०] एक दु:खद मनोविकार जो किसी आनेवाली आपत्ति या बुराई की आशका से उत्पन्न होता है, डर। ⊙**कर** = वि० भयानक, भयकर। ⊙**प्रद** = वि० दे० 'भयानक'। ⊙**भीत** = वि० डरा हुआ। ⊙**हारी** = डर दूर करनेवाला। मु०~**पाना** = डरना।

भयवाद—पुं० एक ही गोत्र या वंश के लोग, भाईबंद।

भया†—वि० दे० 'हुआ'।

भयातुर—वि० [सं०] भय से विकल।

भयान(पु)†—वि० डरावना, भयानक।

भयानक—वि० [सं०] जिसे देखने से भय लगता हो, डरावना। पुं० साहित्य मे नौ रसो मे से एक जिसका स्थायी भाव भय है तथा जिसका अनुभाव भयोत्पादक दृश्यो के वर्णन से होता है।

भयाना(पु)†—अक० डरना। सक० भय-भीत करना।

भयारा†—वि० दे० 'भयानक'।

भयावना—वि० डरावना।

भयावह—वि० [सं०] भयकर, डरावना।

भरंत—†—स्त्री० सदेह। भरने की क्रिया या भाव, भराई।

भर—वि० कुल, सब। (पु)†क्रि० वि० बल से, द्वारा। पु० भार, बोझ। पुष्टि, मोटाई। एक जाति।

भरना—पुं० भरने की क्रिया या भाव। रिश्वत। अक० किसी रिक्त पात्र आदि का कोई और पदार्थ पडने के कारण पूर्ण होना ऊँडेला या डाला जाना। तोप बदूक आदि मे गोली बारूद आदि का होना। ऋण आदि का परिशोध होना। असतुष्ट या अप्रसन्न रहना। अच्छा होते समय घाव मे दाने पडना, घाव का ठीक और बराबर होना। किसी अग का बहुत काम करने के कारण दर्द करने लगना। शरीर का हृष्ट पुष्ट होना। घोडी आदि का गर्भवती होना। सक० खाली जगह को पूरा करने के लिये कोई चीज डालना, पूर्ण करना। उँडेलना, उलटना। तोप या बंदूक आदि मे गोली बारूद आदि डालना। रिक्त पद की पूर्ति करना। ऋण का परिशोध या हानि की पूर्ति करना, चुकाना। गुप्त रूप से किसी की निंदा करना। निर्वाह करना। काटना, डँसना। सहना, झेलना। सारे शरीर मे लगाना, पोतना। मु०—(किसी का) **घर भरना** = किसी को खूब धन देना।

भरकना(पु)†—अक० दे० 'भडकना'।

भरका—पुं० पहाडो या जगलो मे वह गहरा गड्ढा जिसमे चोर डाकू छिपते हैं।

भरण—पुं० [सं०] पालन, पोषण।

भरणी—स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रो में दूसरा नक्षत्र, तीन तारो के कारण इसकी आकृति त्रिकोण सी है। वि० भरण या पालन करनेवाला।

भरत—पुं० लवा पक्षी का एक भेद। काँसा नामक धातु। †ठठेरा। पुं० [सं०] कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र और रामचद्र के छोटे भाई जिनका विवाह माडवी के साथ हुआ था। दे० 'जडभरत'। शकुतला के गर्भ से उत्पन्न पुरु वशी राजा दुष्यत के पुत्र; इस देश का 'भारतवर्ष' नाम इन्ही के नाम से पड़ा है। एक प्रसिद्ध मुनि जो नाट्यशास्त्र

के प्रधान आचार्य माने जाते हैं। संगीत-शास्त्र के एक आचार्य का नाम। वह जो नाटकों में अभिनय करता हो, नट। प्राचीन काल का उत्तर भारत का एक देश जिसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण में है। ⊙खंड=पुं० राजा भरत के किए हुए पृथ्वी के नौ खंडों में से एक खंड, भारतवर्ष।

भरता—पुं० एक प्रकार का नमकीन सालन जो भुने हुए बैंगन, आलू, टमाटर आदि को मसलकर बनाया जाता है, चोखा। दे० 'भर्ता'।

भरती—स्त्री० किसी चीज में भरे जाने का भाव, भरा जाना। दाखिल या प्रविष्ट होने का भाव। मु०~करना=किसी के बीच में रखना, लगाना या बैठाना। ~का=बहुत ही साधारण या रद्दी।

भरतथⓅ†—पुं० दे० 'भरत'।

भरथरी—पुं० दे० 'भर्तृहरि'।

भरदूल—पुं० भरत पक्षी।

भरद्वाज—पुं० [सं०] एक वैदिक ऋषि जो गोत्रप्रवर्तक और मंत्रकार थे। उक्त ऋषि के वंशज या गोत्रापत्य।

भरना—पुं० भरने की क्रिया या भाव। रिश्वत।

भरनिⓅ†—स्त्री० पोशाक, पहनावा।

भरनी†—स्त्री० करघे की ढरकी, नार। नक्षत्र। भरणी नक्षत्र में होनेवाली वर्षा जिसमें साँपों का मरना बताया जाता है। छछूंदर। मोरनी। गारुडी मंत्र। एक जंगली बूटी।

भरपाई—क्रि० वि० पूर्ण रूप से, भली-भाँति। स्त्री० जो कुछ बाकी हो, वह पूरा पूरा पा जाना।

भरपूर—वि० पूरी तरह से भरा हुआ, पूरा पूरा। जिसमें कोई कमी न हो, परिपूर्ण। क्रि० वि० पूर्ण रूप से।

भरभराना—अक० (रोआँ) खड़ा होना। घबराना।

भरभरीⓅ—स्त्री० आकुलता।

भरभर्‍योⓅ—पुं० भगदड़। "सुभो प्रति भरभर्‍यो" (हिम्मत० १७६)।

भरभेंटाⓅ†—पुं० मुकाबला, मुठभेड़।

भरमⓅ†—पुं० संदेह, धोखा। भेद, रहस्य। ⊙ना Ⓟ†=अक० घूमना, चलना। मारा मारा फिरना, भटकना। धोखे में पड़ना। स्त्री० भूल, गलती। धोखा, भ्रम।

भरमाना—सक० भ्रम में डालना, बहकाना। भटकना, व्यर्थ इधर उधर घुमाना। अक० चकित होना। हैरान होना।

भरमार—स्त्री० बहुत ज्यादा, अत्यंत, अधिकता।

भरराना—अक० भरर शब्द के साथ गिरना, अरराना। टूट पड़ना।

भरवाई—स्त्री० भरवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भरवाना—सक० [भरना का प्रे०] भरने का काम दूसरे से कराना।

भरसक—क्रि० वि० यथाशक्ति, जहाँ तक हो सके।

भरसनⓅ†—स्त्री० दे० 'भर्त्सना'।

भरसाईं—पुं० दे० 'भाड़'।

भरहरना—अक० दे० 'भरभराना'।

भरांतिⓅ—स्त्री० दे० 'भ्रांति'।

भराई—स्त्री० भरने या भराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भराना—सक० दे० 'भरवाना'।

भराव—पुं० भरने का काम या भाव।

भरित—वि० [सं०] भरा हुआ।

भरी—स्त्री० दस माशे या एक रुपये के बराबर एक तौल।

भरुⓅ—पुं० बोझ, वजन।

भरुआ—पुं० दे० 'भड़ुआ'।

भरुहाना†—अक० घमंड करना। सक० बहकाना, धोखा देना। उत्तेजित करना, बढ़ावा देना।

भरैया†—वि० पालक, रक्षक। भरनेवाला।

भरोस—पुं० दे० 'भरोसा'।

भरोसा—पुं० आश्रय, आसरा। आशा में दृढ़ विश्वास।

भर्म—पुं० [सं०] शिव, महादेव। सूर्य का तेज। एक प्राचीन देश। ज्योति, दीप्ति।
भर्ता—पुं० [सं०] अधिपति, स्वामी। मालिक, खाविंद। विष्णु।
भर्तार—पति, स्वामी।
भर्त्सना—पुं० [सं०] निंदा, शिकायत। डॉटडपट, फटकार।
भर्म(पु)†—पुं० दे० 'भ्रम'।
भर्मन(पु)†—पुं० दे० 'भ्रमण',
भर्रा—पुं० झाँसा, दमपट्टी।
भर्राना—अक० भर्र भर्र शब्द होना।
भर्त्सना(पु)†—स्त्री० दे० 'भर्त्सना'।
भलका†—पुं० तीर का फल, गाँसी।
भलपति—पुं० भाला रखनेवाला, नेजे-बरदार।
भलमनसत—स्त्री० भलेमानस होने का भाव, शराफत।
भलमनसी—स्त्री० दे० 'भलमनसत'।
भला—वि० अच्छा, उत्तम। सुसस्कृत, शिष्ट। पु० कल्याण, भलाई, नफा। ⊙ई=स्त्री० भला होने का भाव भलापन। उपकार, नेकी। ⊙ बुरा=स्त्री० उलटी सीधी बात, अनुचित बात। डाँट फटकार। हानि और लाभ। भला—अव्य० खैर, अस्तु। नही; का सूचक अव्यय जो प्रायः वाक्यों के आरभ अथवा मध्य मे रखा जाता है। मु०—भले ही=ऐसा हुआ करे, इससे कोई हानि नही।
भले—क्रि० वि० भली भाँति, अच्छी तरह। अव्य० खूब, वाह।
भलेरा(पु)†—पु० दे० 'भला।
भलो(पु)—क्रि० वि० भला।
भल्लर(पु)—वि० भद्दा।
भवग, भवंगम(पु)—पु० साँप।
भवंत—वि० आप लोगो का, आपका।
भव—पुं० डर, भय। पु० [सं०] उत्पत्ति, जन्म। ससार, जगत। शिव। बादल। कुशल सत्ता। कामदेव। जन्ममरण का दुःख। वि० शुभ। उत्पन्न। ⊙जाल=पु० संसार का जाल या माया। झंझट, बखेडा। ⊙बंधन=पुं० सासारिक दुःख और कष्ट। ⊙भंजन=पु० परमेश्वर। ⊙भय=पु० ससार मे बार बार जन्म लेने और मरने का भय। ⊙भामिनी=स्त्री० शिव जी की भार्या पार्वती। ⊙भूति=स्त्री० सृष्टि। पु० सस्कृत भाषा के एक प्रसिद्ध नाटककार। ⊙भूष=पु० [सं०] ससार के भूषण। ⊙मोचन=वि० ससार के बधनो से छुडानेवाले (भगवान्)। ⊙विलास=पु० माया। ससार के सुख जो ज्ञान के अधकार से उदित होते हैं। ⊙सभव=वि० सासारिक।
भवना(पु)†—अक० घूमना।
भवदीय—सर्व० [सं०] आपका।
भवन—पु० जगत्, ससार। पु० [सं०] मकान। महल। छप्पय का एक भेद।
भवनी(पु)—स्त्री० भार्या, स्त्री।
भवाँना‡—सक० घुमाना, फिराना।
भवाब्धि, भवार्णव—पु० [सं०] ससार-रूपी सागर।
भवितव्य—पु० [सं०] होनहार। ⊙ता=स्त्री० भावी, होनहार, किस्मत।
भविष्य—वि० [स०] वर्तमान काल के उपरात आनेवाला काल। ⊙गुप्ता=स्त्री० वह गुप्त नायिका जो रति मे प्रवृत्त होनेवाली हो किंतु पहले से उसे छिपाने का उद्योग करे।
भविष्यत्—पु० [सं०] भविष्य। भविष्यद्वक्ता—पु० भविष्यद्वाणी करनेवाला। ज्योतिषी।
भविष्यद्वाणी—स्त्री० भविष्य में होनेवाली बात का पहले से ही कहना।
भवीला(पु)†—वि० भावपूर्ण। बाँका-तिरछा।
भवेश—पुं० [सं०] ससार के स्वामी, महादेव।
भवेस—पु० दे० 'भवेश'।
भव्य—वि० [सं०] देखने मे विशाल और सुदर, शानदार। शुभ, मगलसूचक। सच्चा। भविष्य मे होनेवाला।
भष(पु)—पु० भोजन, आहार।
भषना†—सक० खाना, भोजन करना।

भसम—पु० दे० 'भस्म'।
भसमा—पु० एक प्रकार की खिजाब।
भसान†—पु० दुर्गा, काली आदि की मूर्ति को नदी आदि मे प्रवाहित करना।
भसाना†—सक० [बँ०] किसी चीज को पानी मे तैरने के लिये छोड़ना। पानी मे डालना।
भसिड—स्त्री० दे० 'भसीड'।
भसींड—स्त्री० कमलनाल, कमल की जड।
भसुड—पु० हाथी, गज। स्त्री० हाथी की सूंड। 'परी टूटिहिं कँ विराजै भसुडै' (हिम्मत० ६८)।
भसुर—पु० पति का बडा भाई, जेठ।
भस्मत—वि० दे० 'भस्म'।
भस्म—पु० [स०] लकडी आदि के जलने पर बची हुई राख। अग्निहोत्र मे की राख जिसे शिव के भक्त मस्तक तथा शरीर मे लगाते है। चिता की राख जिसे शिवजी अपने शरीर मे लगाते हैं (पुराण)। आयुर्वेद मे धातुओ अथवा रत्नो को विशेष प्रकार से जलाकर बनाई हुई ओषधि। वि० जो जलकर राख हो गया हो।
भस्मक—पुं० [सं०] एक रोग जिसमे भोजन तुरत पच जाता है किंतु पाखाना नहीं होता और रोगी शीघ्र मर जाता है। अत्यधिक भूख।
भस्मीभूत—वि० [सं०] जो जलकर राख हो गया हो।
भहराना—अक० टूट पडना। एकाएक गिरना।
भाँउ—पु० अभिप्राय।
भाँउर—स्त्री० दे० 'भाँवर'।
भाँग—स्त्री० एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ मादक होती है, भग, विजया। मु०—घर मे भूँजी भाँग न होना = अत्यत दरिद्र होना।~खा जाना या ~पी जाना = नशे की सी या पागलपन की बातें करना।
भाँज—स्त्री० भाँजने या घुमाने की क्रिया या भाव। वह धन जो रुपया, नोट आदि भुनाने के बदले मे दिया जाय, भुनाई।
(पु)ना = सक० तह करना, मोड़ना। मुगदर आदि घुमाना (व्यायाम)।
भाँजी—स्त्री० वह बात जो किसी के होते हुए काम मे बाधा डालने के लिये कही जाय, चुगली।
भाँटा†—पु० दे० 'बैगन'।
भांड—पु० [सं०] बरतन, भाँडा।
भांड, भाँड†—पु० विदूषक, मसखरा। एक प्रकार के पेशेवर जो महफिलो आदि में जाकर नाचते, गाते और हास्यपूर्ण नकलें उतारते हैं। बेहया आदमी। बरबादी। बरतन, भाँड़ा। भडाफोड। उपद्रव, उत्पात।
भाँडना, भाँड़ना(पु)†—अक० व्यर्थ इधर उधर घूमना, मारा मारा फिरना। नष्ट भ्रष्ट करना, बिगाड़ना।
भाँडा—पु० बरतन, पात्र।
भाडागार—पु० [सं०] भडार, कोश।
भाडागारिक—पु० [सं०] भडारी।
भांडार—पु० [सं०] वह स्थान जहाँ काम मे आनेवाली बहुत सी चीजें या बातें हों। खजाना, कोश।
भाँति,—स्त्री० तरह, प्रकार।
भाँपना—सक० ताड़ना, पहचानना। देखना (बाजारू)।
भाँयँ भाँयँ—पुं० नितात एकात स्थान या सन्नाटे मे होनेवाला शब्द।
भाँरी†—स्त्री० दे० 'भाँवर'।
भाँवना†—सक० खरादना। अच्छी तरह गढकर सुदरतापूर्वक बनाना।
भाँवर—स्त्री० परिक्रमा करना। अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के समय वर और वधू करते हैं। पुं० दे० 'भौंरा'।
भाँव†—स्त्री० आवाज, शब्द।
भा—स्त्री० [सं०] दीप्ति, चमक। शोभा। किरण, बिजली। (पु)†अव्य० चाहे, यदि इच्छा हो।
भाना(पु)†—अक० जान पडना। अच्छा लगना। शोभा देना। सक० चमकाना।
भाइ(पु)—† पुं० प्रेम, मुहब्बत। स्वभाव, भाव। विचार। स्त्री० भाँति, प्रकार। चालढाल, रंगढंग।

भाइप(पु)†—पु० दे० 'भाईचारा'।

भाई—पु० भ्राता, भैया। किसी वंश की किसी एक पीढी के किसी व्यक्ति के लिये उसी पीढी का दूसरा पुरुष (जैसे, चचेरा या ममेरा भाई)। बराबरवाले के लिये एक प्रकार का संबोधन। ⊙चारा =पु० भाई के समान परम मित्र होने का भाव। ⊙दूज=स्त्री० कार्तिक शुक्ल द्वितीया, भैया दूज। ⊙बंद = पुं० भाई और मित्र बंधु आदि। ⊙बिरादरी = स्त्री० जाति या समाज के लोग।

भाउ(पु)†—पुं० चित्तवृत्ति, विचार। भाव। प्रेम। उत्पत्ति, जन्म।

भाउती†—स्त्री० नायिका। 'है पदमाकर भाउती है।' '' (जगद्विनोद २३४)।

भाऊ(पु)—प्रेम, मुहब्बत। भावना। स्वभाव। हालत, अवस्था। महत्व, महिमा। स्वरूप, सत्ता। वृत्ति, विचार। भाई।

भाएँ(पु)†—क्रि० वि० समझ में, बुद्धि के अनुसार।

भाकर—पुं० [सं०] सूर्य, भास्कर।

भाकसी—स्त्री० भट्ठी।

भाकुर—स्त्री० एक प्रकार की मछली। हौआ। वि० भद्दा और भयानक।

भाख(पु)†—पुं० दे० 'भाषण'।

भाखना(पु)†—सक० कहना।

भाखा†—स्त्री० दे० 'भाषा'।

भाग—पुं० [सं०] हिस्सा, खंड। तरफ और नसीब, भाग्य। सौभाग्य। भाग्य का कल्पित स्थान, माथा। प्रातःकाल। गणित में किसी राशि को अनेक अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया।

भागना—अक० पलायन करना, दौड़ना। टल जाना, कोई काम करने से बचना। मु०—सिर पर पैर रखकर~=बहुत तेजी से भागना।

भागड़—स्त्री० बहुत से लोगों का एक साथ घबराकर भागना। भगदड़।

भागत्याग—पुं० [सं०] दे० 'जहदजहल्लक्षणा'।

भागदौड़—स्त्री० भगदड़। दौड़धूप।

भागधेय—पुं० [सं०] भाग्य। राजकर। दायाद, सपिंड।

भागनेय(पु)—पुं० भानजा।

भागफल—पुं० [सं०] वह संख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो, लब्धि।

भागवंत†—वि० दे० 'भाग्यवान्'।

भागवत—पुं० [सं०] १८ पुराणों में से एक जिसमें १२ स्कंध, ३१२ अध्याय और १८००० श्लोक हैं। यह वेदांत का तिलकस्वरूप माना जाता है। श्रीमद्‌भागवत। देवीभागवत। ईश्वर का भक्त। १३ मात्राओं का एक छंद। वि० भगवत्‌संबंधी।

भागाभाग—स्त्री० दे० 'भागड़'।

भागिनेय—पु० [सं०] बहन का लड़का, भानजा।

भागी—पु० [सं०] हिस्सेदार, शरीक। हकदार। वि० [हिं०] भाग्यवाला (यौ० के अंत में)।

भागीरथ—पु० दे० 'भगीरथ'।

भागीरथी—स्त्री० [सं०] गंगा नदी, जाह्नवी।

भाग्य—हिस्सा करने के लायक। पु० [सं०] वह अवश्यंभावी दैवी विधान जिसके अनुसार मनुष्य के सब कार्य पहले ही से निश्चित रहते हैं। तकदीर, किस्मत। ⊙वान् = पु० सौभाग्यशाली, किस्मतवर।

भाचक्र—पु० [सं०] क्रांतिवृत्त।

भाजक—वि० [सं०] विभाग करनेवाला। पुं० वह अंक जिससे किसी राशि को भाग दिया जाय (गणित)।

भाजन—पु० [सं०] बरतन। आधार। योग्य पात्र।

भाजना(पु)—अक० दे० 'भागना'।

भाजी—स्त्री० [सं०] तरकारी, साग आदि। माँड।

भाज्य—पु० [सं०] वह अंक जिसे भाजक अंक से भाग दिया जाता है (गणित) वि० विभाग करने के योग्य।

भाट—पुं० राजाओं का यश वर्णन करनेवाला, चारण, खुशामदी।

भाटक—पु० [सं०] भाड़ा, किराया।

भाटा—पु० पानी का उतार की ओर जाना। समुद्र के चढ़ाव का उतरना, ज्वार का उलटा।

भाट्यौ(पु)†—पु० भाट का काम, यशकीर्तन।
भाठी(पु—स्त्री० दे० 'भट्टी'।
भाड़—पु० भडभूजो की भट्ठी जिसमे वे अनाज भूनते हैं। मु०~झोकना = तुच्छ या अयोग्य काम। ~मे झोकना या डालना = फेंकना, नष्ट करना। जाने देना।
भाड़ा—पुं० किराया। मु०—भाड़े का टट्टू = क्षणिक। निकम्मा।
भाण—पु० [सं०] हास्य रस का एक प्रकार का दृश्य काव्यरूपक जो एक अंक का होता है। व्याज, मिस।
भात—पु० पानी मे पकाया हुआ चावल। विवाह की एक रस्म, इसमे कन्यावाला समधी को भात खिलाता है। पु० [सं०] प्रभात। प्रकाश।
भाति—स्त्री० [सं०] शोभा, काति।
भाथा—पु० तरकश, तूणीर। बडी भाथी।
भाथी—पु० वह धौंकनी जिससे भट्ठी या आग सुलगाते हैं।
भादौं—पु० सावन के वाद और क्वार के पहले का महीना, भाद्र।
भाद्र, भाद्रपद—[सं०] 'भादो'।
भाद्रपदा—स्त्री० [सं०] एक नक्षत्रपुज जिसके दो भाग हैं—पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा।
भान—पुं० [सं०] प्रकाश, रोशनी। चमक। ज्ञान। आभास।
भानजा(पु)†—पु० वहन का लडका।
भानना(पु)†—सक० तोडना, भग करना। नष्ट करना, मिटाना। दूर करना। काटना। समझना।
भानमती—स्त्री० जादूगरनी।
भानवी(पु)—स्त्री० जमुना।
भानु—पुं० [सं०] सूर्य। विष्णु। किरण। राजा। ⊙ज = पुं० यम। शनिश्चर। कर्ण ⊙जा = स्त्री० यमुना (नदी)। ⊙तनया = स्त्री० यमुना (नदी)। ⊙मत् = वि० प्रकाशमान। पु० सूर्य। ⊙सुत = पुं० यम। मनु। शनिश्चर। कर्ण। ⊙सुता = स्त्री० यमुना (नदी)।
भाप, भाफ—स्त्री० ताप से धुएँ या हलके की फाँकी के रूप मे परिणत जल।
भाभर—पु० वह जगल जो पहाड़ो के नीचे तराई मे होते हैं।
भाभरा(पु)†—वि० लाल।
भाभी—स्त्री० भौजाई।
भाम—(पु)स्त्री० स्त्री। पु० [सं०] प्रकाश, ज्योति। सूर्य। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, मगण और अंत मे तीन सगण होते हैं। ⊙ज = पु० सूर्य से उत्पन्न।
भामता(पु)—वि० दे० 'भावता'।
भामा—स्त्री० [सं०] स्त्री, औरत।
भामिनी—स्त्री० [सं०] स्त्री, औरत।
भाय—पुं० 'भाई'। (पु)अंत करण की वृत्ति, भाव। परिमाण। दर, भाव। भाँति, ढंग।
भायप—पु० दे० 'भाईचारा'।
भाया—वि० प्रिय, प्यारा।
भारंगी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पौधा। इसकी पत्तियो का साग वनाकर खाते हैं, असवरग।
भार—पु० [सं०] एक परिमाण जो बीस पसेरी का होता है। वोझ। वह वोझ जिसे वहँगी पर ले जाते है। सँभाल, रक्षा। किसी कर्तव्य के पालन का उत्तरदायित्व। आश्रय, सहारा। २० तुला या २०० पल का एक मान या तौल। ⊙वाह = वि० दे० 'भारवाहक'। ⊙वाहक = वि० वोझ ढोनेवाला। ⊙वाही = पुं० वोझ ढोनेवाला। मु०~उठना = उत्तरदायित्व ऊपर लेना। ~उतरना = कर्तव्य के ऋण से मुक्त होना।
भारत—पु० [सं०] महाभारत का पूर्वरूप या मूल जो २४,००० श्लोको का था। दे० 'भारतवर्ष'। भरत के गोत्र मे उत्पन्न पुरुष। लवी कथा। घोर युद्ध। ⊙खंड = पुं० दे० 'भारतवर्ष'। ⊙वर्ष = पु० वह देश जो हिमालय के दक्षिण से लेकर कन्याकुमारी तक और थार रेगिस्तान के एक भूभाग से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है, हिंदुस्तान। ⊙वासी = भारतवर्ष का रहनेवाला भारतीय।
भारती—स्त्री० [सं०] वचन, वाणी। सरस्वती। एक वृत्ति जिसके द्वारा रौद्र और बीभत्स

रस का वर्णन किया जाता है। ब्राह्मी। दशनामी सन्यासियो का एक भेद।
भारतीय—वि० भारत संबंधी। पुं० भारत का निवासी।
भारथ(पु)—पुं० दे० 'भारत'। युद्ध, संग्राम।
भारथी—पुं० सैनिक।
भारना(पु)†—सक० बोझ लादना। दबाना।
भारशिव—पु० [सं०] एक प्राचीन शैव संप्रदाय जिसके नियमो के अनुसार पापी सिर पर शिव की मूर्ति रखते थे।
भारा†—वि० दे० 'भारी'।
भाराक्रांता—स्त्री० [सं०] एक वर्णिक वृत्त।
भारावलंबकत्व—पुं० [सं०] पदार्थों के परमाणुओं का पारस्परिक आकर्षण।
भारी—वि० जिसमे बोझ हो, गुरु। कठिन, भीषण। विशाल। अधिक, बहुत। असह्य। सूजा हुआ, फूला हुआ। प्रबल गंभीर, शात। मु० ~भरकम=बड़ा और भारी।
भार्गव—पुं० [सं०] भृगु के वंश मे उत्पन्न पुरुष। परशुराम। शुक्राचार्य। मार्कंडेय। एक उपपुराण का नाम। जमदग्नि। एक प्रसिद्ध व्यवसायी जाति, दूसर। वि० भृगु सबधी, भृगु का।
भार्या—स्त्री० [सं०] पत्नी, जोरू, स्त्री।
भाल—पुं० भाला, बरछा। तीर का फल, गाँसी। पुं० रीछ, भालू। पुं० [सं०] कपाल ललाट। ⊙चंद्र=पुं० महादेव। गणेश। ⊙लोचन=पु० शिव।
भालना—सक० अच्छी तरह देखना। †तलाश करना।
भाला—पुं० बरछा, नेजा। ⊙बरदार=पुं० [फा०] बरछा चलानेवाला।
भालि(पु)†—स्त्री० बरछी, साँग। शूल, काँटा।
भालिया—पुं० वह अन्न जो हलवाहे को वेतन मे दिया जाता है।
भाली—स्त्री० भाले की गाँसी या नोक। शूल, काँटा।
भालुक—पुं० [सं०] भालू, रीछ।
भालू—पुं० एक घने रोएँवाला स्तनपायी भीषण चौपाया जो कई प्रकार का होता है। यह मास भी खाता है और फल मूल आदि भी, रीछ।
भावता(पु)†—पुं० प्रेमपात्र, प्रिय। होनहार, भावी।
भाव—पु० [सं०] अस्तित्व, अभाव का उलटा। मन मे उत्पन्न हानेवाली प्रवृत्ति, विचार। अभिप्राय, मतलब। मुख की आकृति या चेष्टा। आत्मा। जन्म। चित्त। पदार्थ, चीज प्रेम। कल्पना प्रकृति, स्वभाव। ढग, तरीका। प्रकार, तरह। दशा, हालत। भावना। विश्वास, भरोसा। आदर। बिक्री आदि का हिसाब, दर। ईश्वर, देवता आदि के प्रति होनेवाली श्रद्धा या भक्ति। नायक आदि को देखने के कारण अथवा और किसी प्रकार नायिका के मन मे उत्पन्न होनेवाला विकार। गीत के विषय के अनुसार शरीर या अंगो का सचालन। नाज, नखरा। ⊙गति=स्त्री० इरादा, इच्छा। ⊙गम्य=वि० भक्ति भाव से जानने योग्य। ⊙ग्राह्य=वि० भक्ति भाव से ग्रहण करने योग्य। ⊙ज्ञ=वि० मन की प्रवृत्ति या भाव जाननेवाला। ⊙ताव=पु० [स० हिं०] किसी चीज का मूल्य या भाव यादि, निर्ख। ⊙प्रवण=वि० दे० 'भावुक'। ⊙भक्ति=स्त्री० भक्तिभाव। आदर, सत्कार। ⊙वाचक=पुं० व्याकरण मे वह सज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव या गुण सूचित हो, जैसे सज्जनता। ⊙वाच्य=पुं० व्याकरण मे क्रिया का वह रूप जिससे यह जाना जाय कि वाक्य का उद्देश्य केवल कोई भाव है। (जैसे, मुझसे बोला नही जाता)। ⊙संधि=स्त्री० एक प्रकार का अलकार जिसमें दो विरुद्ध भावो की संधि का वर्णन होता है (साधारणतः यह अलकार नहीं माना जाता क्योकि इसका विषय रस से संबंध रहता है)। ⊙शबलता=स्त्री० एक प्रकार का अलकार जिसमे कई भावों

की संधि होती है। मु०~उतरना या गिरना = किसी का दाम घट जाना। ~चढ़ना = दाम बढ़ जाना। ~देना = आकृति आदि से अथवा अंग संचालित करके मन का भाव प्रकट करना।

भावई(पु)†—अव्य० जी चाहे, इच्छा हो तो।

भावक(पु)—क्रि० वि० किंचित्, थोड़ा सा, जरा सा। वि० [सं०] भावपूर्ण। पु० भावना करनेवाला। भावसंयुक्त। भक्त, प्रेमी।

भावज—स्त्री० भाई की स्त्री, भाभी।

भावता—वि० जो भला लगे, प्रिय। पुं० प्रेमपात्र, प्रियतम।

भावन(पु)†—वि० अच्छा या प्रिय लगनेवाला, जो अच्छा लगे।

भावना†—वि० प्रिय। स्त्री० [सं०] ध्यान, विचार। चित्त का एक संस्कार जो अनुभव और स्मृति से उत्पन्न होता है। इच्छा, चाह। साधारण विचार या कल्पना। वैद्यक के अनुसार किसी चूर्ण आदि को किसी प्रकार के तरल पदार्थ में मिलाकर घोटना जिसमें उस औषध में तरल पदार्थ के कुछ गुण आ जायँ। (पु) अक० अच्छा लगना, पसंद आना।

भावनि(पु)†—स्त्री० जो कुछ जी में आवे।

भावनीय—वि० [सं०] भावना करने योग्य।

भावली—स्त्री० जमींदार और असामी के बीच उपज की बँटाई।

भावाभास—पु० [सं०] एक प्रकार का अलंकार।

भावार्थ—पु० [सं०] वह अर्थ जिसमें मूल का केवल भाव आ जाय। अभिप्राय, तात्पर्य।

भावालंकार—पु० [सं०] एक प्रकार का अलंकार।

भाविक—वि० [सं०] जानेवाला, मर्मज्ञ। पु० भावी, अनुमान। वह अलंकार जिसमें भूत और भावी बातें प्रत्यक्ष वर्तमान की भाँति वर्णन की गई हों।

भावित—वि० [सं०] जिसका ध्यान या विचार किया गया हो। चिंतित, उद्विग्न। जिसमें किसी पदार्थ की भावना या सुगंध दी गई हो। शुद्ध किया हुआ। जिसमें रस आदि की भावना दी गई हो। भेंट किया हुआ।

भावी—स्त्री० [सं०] भविष्यत् काल। भविष्य में अवश्य होनेवाली बात। तकदीर।

भावुक—वि० [सं०] भावना करनेवाला, सोचनेवाला जिसपर कोमल भावों का जल्दी प्रभाव पड़ता हो, अत्यधिक संवेदनशील। भावग्राही, सरस। अच्छी बातें सोचनेवाला।

भावै—अव्य० चाहे।

भाव्य—वि० [सं०] चिंता करने या सोचने योग्य।

भाषण—पुं० [सं०] कथन, बातचीत।

भाषना(पु)†—अक० बोलना, कहना। भोजन करना।

भाषांतर—पु० [सं०] अनुवाद, उल्था।

भाषा—स्त्री० [सं०] मुख से उच्चरित होनेवाले परस्पर संबद्ध शब्दों और वाक्यों आदि का वह ध्वनिसमूह जिसके द्वारा मन का भाव बताया जाय, बोली, जबान। किसी जनसमुदाय में प्रचलित बातचीत करने का विशेष ढंग या शब्दावली (जैसे दलालों की भाषा, ठगों की भाषा)। पशुपक्षियों आदि के मनोविकार सूचित करने की ध्वनियाँ (जैसे, बंदरों की भाषा)। आधुनिक हिंदी। वाक्य। वाणी, सरस्वती। ⊙बद्ध = वि० साधारण देशभाषा में लिखित। ⊙सम = पु० एक प्रकार का शब्दालंकार, काव्य में केवल ऐसे शब्दों की योजना जो कई भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होते हों।

भाषित—वि० [सं०] कथित।

भाषी—पुं० [सं०] बोलनेवाला, कहनेवाला।

भाष्य—पुं० [सं०] सूत्रों की व्याख्या या टीका। किसी गूढ़ बात या वाक्य की विस्तृत व्याख्या। ⊙कार = पुं० सूत्रों की व्याख्या करनेवाला, भाष्य बनानेवाला।

भास—पुं० [सं०] दीप्ति, चमक। किरण। इच्छा। संस्कृत के एक नाटककार। प्रतीति।

भासना—अक० प्रकाशित होना, चमकना। मालूम होना, प्रतीत होना। देख पडना। फँसना, लिप्त होना। ⓟ†कहना।

भासमान—वि० [सं०] जान पडता हुआ, भासता हुआ, दिखाई देता हुआ। पुं० सूर्य। 'मनो मेघमाला गिलै भासमानै' (हिम्मत० ६८)।

भासित—वि० [सं०] तेजोमय, चमकीला। कुछ कुछ प्रकट होनेवाला।

भास्कर—पुं० [सं०] सुवर्ण, सोना। सूर्य। आग। वीर। महादेव। पत्थर पर चित्र और वेल बूटे आदि बनाना।

भास्वर—पु० [सं०] दिन। सूर्य। वि० दीप्तियुक्त, चमकदार।

भिंगⓟ—पु० भौंरा। बिलनी (कीडा)।

भिंगाना—सक० दे० 'भिगोना'।

भिंजाना—सक० दे० 'भिगोना'।

भिंडी—स्त्री० एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनती है।

भिंदिपाल—पु० [सं०] एक प्रकार का डंडा जो फेंककर मारा जाता था।

भिक्षा—स्त्री० [सं०] याचना, मांगना। दीनता दिखलाते हुए अपने उदरनिर्वाह के लिये मांगने का काम, भीख। इस प्रकार मांगने से मिली हुई वस्तु, भीख। ⊙पात्र = पुं० वह पात्र जिसमे भिखमंगे भीख मांगते हैं।

भिक्षाटन—पुं० [सं०] भीख मांगने के लिये किया जानेवाला भ्रमण।

भिक्षु—पुं० [सं०] भीख मांगनेवाला, भिखारी। संन्यासी। बौद्ध सन्यासी। ⊙क = पुं० भिखमंगा।

भिखमंगा—पुं० जो भीख मांगे, भिखारी।

भिखारिणी—स्त्री० वह स्त्री जो भिक्षा मांगे भिखमंगिन।

भिखारिन—स्त्री० दे० 'भिखारिणी'।

भिखारी—पु० भिक्षुक, भिखमंगा।

भिगोना—सक० दे० 'भिगोना'।

भिगोना—सक० पानी से तर करना, भिगोना।

भिच्छा—स्त्री० दे० 'भिक्षा'।

भिच्छु—पु० दे० 'भिक्षु'।

भिजवाना—सक० [भेजना प्रे०] किसी वस्तु या व्यक्ति को भेजने मे प्रवृत्त करना।

भिजाना—सक० भिगोना। दे० 'भिजवाना'।

भिजोनाⓟ†—सक० दे० 'भिगोना'।

भिडंत—स्त्री० भिडने की क्रिया या भाव, मुठभेड।

भिड—स्त्री० बर्रे, तितैया।

भिड़ना—अक० टकराना। लडना, झगडना।

भितरिया—पु० मंदिर के बिलकुल भीतरी भाग मे रहनेवाला, पुजारी। वि० अंदर का।

भितल्ला—पु दुहरे कपडे मे भीतरी ओर का पल्ला, अस्तर। वि० भीतर का।

भितानाⓟ†—सक० डरना।

भित्ति—स्त्री० [सं०] दीवार। डर, भय। वह पदार्थ जिसपर चित्र बनाया जाय। ⊙चित्र = पु० दीवार पर अंकित किया हुआ चित्र।

भिद—पुं० भेद, अंतर।

भिदना—अक० पैवस्त होना, घुस जाना। छेदा जाना। घायल होना।

भिदुर—पुं० वज्र।

भिनकना—अक० भिन भिन शब्द करना (मक्खियो का), घृणा उत्पन्न होना।

भिनभिनाना—अक० भिन भिन शब्द करना। **भिनसार**†—पुं० सबेरा।

भिन्न—वि० [सं०] अलग, जुदा। दूसरा, अन्य। पुं० वह सख्या जो ईकाई से कुछ कम हो (गणित) ⊙ता = स्त्री० अलगाव, अंतर।

भिन्नाना—अक० (दुर्गंध आदि से) सिर चकराना।

भियनाⓟ†—अक० डरना।

भिरनाⓟ†—सक० दे० 'भिडना'।

भिरिंगⓟ†—सक० दे० 'भृंग'।

भिलनी—स्त्री० भील जाति की स्त्री-भीलनी।

भिलावाँ—पु० एक प्रसिद्ध जंगली वृक्ष। इसका फल औषध के काम मे आता है।

भिल्ल—पु० दे० 'भील'।

भिश्त(पु)†—'विहिश्त'।

भिश्ती—पु० मशक द्वारा पानी ढोनेवाला व्यक्ति, सक्का।

भिषक् भिषज—पु० [सं०] वैद्य।

भींगना—अक० दे० 'भीगना'।

भींचना†—सक० खींचना, कसना। दे० 'मीचना'।

भीजना(पु)†—अक० भीगना। पुलकित या गद्गद् हो जाना। मिलाप पैदा करना। नहाना। समा जाना।

भी—स्त्री० [सं०] भय, डर। अव्य० [हिं०] अवश्य, जरूर। ज्यादा तक, लौं।

भीख—स्त्री० दे० 'भिक्षा'।

भीखन(पु)—वि० दे० 'भीषण'।

भीखम(पु)†—पुं० दे० 'भीष्म'।

भीगना—अक० तरल पदार्थ के सयोग के कारण तर होना, आर्द्र होना। मु० भीगी बिल्ली होना=भय आदि से दब रहना, एकदम चुप रहना।

भीजना†—अक० दे० 'भीगना'।

भीटा—पु० ऊँची या टीलेदार जमीन। वह बनाई हुई ऊँची जमीन जिस पर पान की खेती होती है।

भीड—स्त्री० जनसमूह, ठठ। सकट, आपत्ति। मु० –छँटना=भीड के लोगो का इधर उधर हो जाना, भीड न रह जाना। ⊙भड़क्का=स्त्री० दे० 'भीडभाड'। ⊙भाड़=स्त्री० मनुष्यो का जमाव, भीड।

भीडन(पु)—स्त्री० मलने लगने या भरने की क्रिया। भीड़ना(पु)†—सक० मलना, लगाना। मलना।

भीडा†—वि० सकुचित, तग।

भीडी†—स्त्री० दे० 'भिंडी'।

भीत—वि० [सं०] डरा हुआ। स्त्री० [हिं०] दीवार। विभाग करनेवाला परदा। चटाई। छत, गच। मु० –के बिना चित्र बनाना=बेसिर पैर की बात करना। –पर दौड़ना=अपनी सामर्थ्य से बाहर अथवा असभव कार्य करना।

भीतर—क्रि० वि० अंदर, में। पु० अतः-करण। जनानखाना। भीतरी—वि० भीतरवाला, अदर का, गुप्त।

भीति—स्त्री० [सं०] डर भय, खौफ। कप। स्त्री० [हिं०] दीवार।

भीती(पु)†—स्त्री० दीवार। डर, भय।

भीन(पु)†—पु० सवेरा।

भीनना—अक० भर जाना, समा जाना।

भीनी—वि० स्त्री० भीगी, सिक्त। भरी हुई, पैवस्त। मद मद, मीठी मीठी।

भीम—पु० [सं०] शिव। विष्णु। महादेव की आठ मूर्तियो मे से एक। पाँचो पाडवो मे से एक जो वायु के संयोग से कुती के गर्भ से उत्पन्न बडे वीर और बलवान् थे, भीमसेन। वि० भयानक। बहुत बड़ा।

भीमआयली—पु० घोड़ों की एक जाति।

भीर(पु)—स्त्री० दे० 'भीड'। कष्ट, दुःख। विपत्ति, आफत। (पु) वि० डरा हुआ। कायर।

भीरना(पु)—अक० डरना।

भीरी—स्त्री० भीड, समूह।

भीरु—वि० [सं०] डरपोक, कायर। ⊙ता=स्त्री० डरपोकपन, कायरता, बुज-दिली। डर, भय। ⊙ताई(पु)=स्त्री० [हिं०] दे० 'भीरुता'।

भीरे(पु)†—क्रि० वि० समीप, नजदीक, पास।

भील—पुं० एक जंगली जाति।

भीव(पु)—पु० भीमसेन।

भीष(पु)—स्त्री० भीख।

भीषज(पु)†—स्त्री० वैद्य।

भीषण—वि० [सं०] देखने मे बहुत भयानक, डरावना। उग्र या दुष्ट।

भीषन(पु)—वि० दे० 'भीषण'।

भीषम(पु)—पुं० दे० 'भीष्म'।

भीष्म—पु० [सं०] शिव, महादेव। राक्षस। राजा शातनु के आठवें पुत्र जो गगा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और आजन्म नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पालन करने की प्रतिज्ञा

करने के कारण भीष्म कहलाए। वि० भयकर। कठोर, उग्र। ⊙पंचक = पु० कार्तिक शुक्ला एकादशी से पचमी तक के दिन।

भीष्म(पु)—पुं० दे० 'भीष्म'।

भुंइ—स्त्री० पृथ्वी, भूमि। (पु)फोर = पुं० एक प्रकार की बरसाती खुभी, गरजुआ। ⊙हरा = पु० वह स्थान जो भूमि के नीचे खोदकर बनाया गया हो। तहखाना।

भुंकाना—सक० [अक० भुंकना] किसी को भूंकने मे प्रवृत्त करना।

भुंज—पु० [सं०] भोजन।

भुंजना†—अक० दे० 'भूनना'।

भुंडा—वि० बिना सीग का। दुष्ट, बदमाश।

भुअग(पु)†—पु० साँप।

भुअंगम(पु)—पु० साँप।

भुअन(पु)—पु० दे० 'भुवन'।

भुआर(पु)—पु० दे० 'भुआल'।

भुआल(पु)—पुं० राजा।

भुइं(पु)—स्त्री० भूमि, पृथ्वी। ⊙आँवला = पुं० एक घास जो औषधि के काम मे आती है। ⊙चाल, ⊙डोल = पु० दे० 'भूकप'। ⊙पाल = पुं० दे० 'भूपाल'। ⊙हार = पुं० दे० 'भूमिहार'।

भुक(पु)—पु० भोजन, आहार। अग्नि।

भुकडी—स्त्री० सडे हुए खाद्य पदार्थों पर निकलनेवाली एक वनस्पति।

भुकरांद, भुकरायँध—स्त्री० सडने की दुर्गंध।

भुक्खड़—वि० भूखा। वह जो बहुत खाता हो, पेटू। दरिद्र, कगाल।

भुक्त—वि० [सं०] जो खाया गया हो। भोगा हुआ, उपभुक्त। भुक्ति—स्त्री० भोजन, आहार लौकिक सुखभोग। कब्जा।

भुखमरा—वि० जो भूखो मरता हो। पेटू।

भुखाना‡—अक० भूख से पीडित होना।

भुखाल—वि० दे० 'भूखा'।

भुगत(पु)†—स्त्री० दे० 'भुक्ति'।

भुगतना—सक० सहना, झेलना। अक० पूरा होना, निवटना। बीतना, चुकना। देना चुकाना, बेबाकी। देना, देन। भुगताना—सक० पूरा करना, सपादन करना। बिताना, लगाना। चुकाना। झेलना, भोग करना। दुख देना।

भुगाना—सक० दे० 'भोगनेवाला'।

भुगुति(पु)—स्त्री० दे० 'भुक्ति'।

भुच्च, भुच्चड—वि० मूर्ख।

भुजंग—पुं० [सं०] साँप। किसी स्त्री का यार, जार। ⊙प्रयात = पु० एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार यगण होते है। ⊙विजृंभित = पुं० २६ अक्षरो का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से दो मगण, एक तगण, तीन नगण, एक रगण एक सगण और अत मे लघु, गुरु हो। ⊙संगता = स्त्री० ६ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से सगण, जगण और रगण हो।

भुजंगा—पु० काले रग का एक पक्षी, भुजैटा। दे० 'भुजग'।

भुजंगिनी—स्त्री० [स०] गोपाल या गुपाल नामक छद का दूसरा नाम। इसके प्रत्येक चरण मे अत्य जगण सहित कुल १५ मात्राएँ होती है। साँपिन।

भुजगी—स्त्री० [सं०] साँपिन, नागिन। एक वर्णिक भृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तीन यगण और अत मे लघु, गुरु रहता है।

भुजगेंद्र, भुजगेश—पु० [सं०] शेपनाग।

भुज—पु० [सं०] बाहु, बाँह। हाथ। हाथी की सूड। शाखा, डाली। प्रात, किनारा। ज्यामिति मे किसी क्षेत्र का किनारा या किनारे की रेखा। त्रिभुज का आधार। समकोणो का पूरक कोण। दो की सख्या का बोधक शब्द या सकेत। ⊙दंड = पु० बाहुदड। ⊙पाश = पु० गलबाँही, गले मे हाथ डालना। ⊙प्रतिभुज = पु० सरल क्षेत्र की आमने सामने की भुजाएँ। ⊙बंद = पु० [हिं०] बाजूबंद। ⊙बाथ(पु) = पु० [हिं०]

अंकवार। ⊙मूल=पुं० खवा, मोढा। कांख।

भुजग—पु० [सं०] सांप। ⊙निसृता=स्त्री० एकवर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ६ अक्षर होते है जिनमे छठा, आठवां और नवां अक्षर गुरु और शेष लघु होते हैं। ⊙शिशुसृता=स्त्री० एक वार्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण के बाद एक मगण होता है, भुजगशिशुसुता, युक्ता।

भुजपात⑤—पु० दे० 'भोजपत्र'।

भुजा—स्त्री० [स०] बांह, हाथ। मु० उठाना या टेकाना=प्रतिज्ञा करना।

भुजाली—स्त्री० एक प्रकार की बडी टेढी छुरी, खुखरी। छोटी बरछी।

भुजिया†—पुं० उबाले हुए धान का चावल। सूखी भूनी हुई तरकारी।

भुजैल—पु० भुजगा, पक्षी।

भुजौना†—पु० भुना हुआ अन्न, भूजा। भूनने या भुनाने की मजदूरी।

भुट्टा—पु० मक्के की हरी बाल। जुआर या बाजरे की वाल। गुच्छा, घौद।

भुठौर—पु० घोडे की एक जाति।

भुथरा—वि० (शस्त्र) जिसकी धार तेज न हो, कुद। ⊙ई=स्त्री० भुथरा, कुठित या कुद होने का भाव।

भुन—पु० मक्खी आदि का शब्द, अव्यक्त गुजार का शब्द।

भुनगा—पु० एक छोटा उड़नेवाला कीडा। कीड़ा, पतिंगा।

भुनना—अक० [सक० भूनना] भूना जाना।

भुनभुनाना—अक० भुनभुन शब्द करना। मन ही मन कुढकर अस्पष्ट स्वर मे कुछ कहना, बडबडाना।

भुनवाई—स्त्री० दे० 'भुनाई'।

भुनाई—स्त्री० भुनाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भुनाना—सक० [भूनना का प्रे०] दूसरे को भुनने के लिये प्रेरित करना। बडे सिक्के आदि को छोटे सिक्को आदि से बदलना।

भुबि⑤ स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

भुरकना—अक० सूखकर भुरभुरा हो जाना। भूलना। सक० दे० 'भुरभुराना'।

भुरकाना—सक० [अक० भुरकाना] भुरभुरा करना। छिडकना, भूलवाना, बहकाना।

भुरकुस—पु० चूर्ण। मु०~निकलना=चूर चूर होना। इतनी मार खाना कि हड्डी पसली चूर चूर हो जाय। नष्ट होना।

भुरता—पु० दबकर विकृतावस्था को प्राप्त पदार्थ। चोखा या भरता नाम का सालन]

भुरभुरा—वि० जिसके कारण थोडा आघात लगने पर भी अलग हो जायें, बलुआ। ⊙ना=सक० (चूर्ण आदि) छिड़कना, बुरकना। भुरभुरा करना।

भुरवना⑤†—सक० भुलवाना, भ्रम मे डालना।

भुरहरा—पु० सवेरा, तडका।

भुराना—⑤† सक० दे० 'भुरवना'। अक० दे० 'भूलना'।

भुराई⑤†—स्त्री० भोलापन। पु० भूरापन।

भुलक्कड—वि० जिसका स्वभाव भूलने का हो।

भुलवाना—सक० [भूलना का प्रे०] भ्रम मे डालाना। दे० 'भुलाना'।

भुलसना—सक० गरम राख मे झुलसना।

भुलाना—सक० [भूलना का प्रे०] भूलने के लिये प्रेरित करना, भ्रम मे डालना। भूलना, विस्मृत करना, भ्रम मे पडना। भटकना, राह भूलना। भूल जाना।

भुलावा—पु० धोखा, छल।

भुवंग—पु० सांप। **भुवगम**—पु० सांप।

भुव—पु० [सं०] वह आकाश या लोक जो भूमि और सूर्य के अंतर्गत है, अतरिक्ष लोक।

भव—पु० [सं०] अग्नि। स्त्री० पृथ्वी। ⑤स्त्री० [हिं०] भौंह, भ्रू।

भुवन—पु० [सं०] जगत्। जल। जन, लोग, लोक (पुराणानुसार लोक १४ है)। चौदह की सख्या का द्योतक शब्दसकेत। सृष्टि। ⊙कोश=पु० भूमडल, पृथिवी। ब्रह्माड। ⊙पति=पु० दे० भूपाल'।

भुवपाल⑤†—पु० दे० 'भूपाल'।

भुवभग—पु० कटाक्ष।

भुवर्लोक—पु० [सं०] सात लोकों मे दूसरा लोक, अंतरिक्ष लोक।

भुवा—पुं० घूआ, रूई।

भुवार(प)—पु० दे० 'भुवाल'। भुवाल(प)—पु० राजा।

भुवि—स्त्री० भूमि, पृथिवी।

भुशुंडी—पु० दे० 'काकभुशुंडी'। स्त्री० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र।

भुस—पु० भूसा।

भुसी(प)—स्त्री० भूसी।

भूँकना—अक० भूँ भूँ या भौं भौं शब्द करना (कुत्तो का)। व्यर्थ बकना।

भूँचाल—पुं० दे० 'भूकंप'।

भूँजना†—सक० दे० भूनना। दुःख देना, सताना। सक० भोगना।

भूँजा†—पुं० भुना हुआ, चबेना। भडभूँजा।

भूँडोल—पुं० दे० 'भूकंप'।

भू—स्त्री० भौंह। स्त्री० [सं०] पृथ्वी। स्थान। ⊙कंप=पुं० पृथ्वी के भीतर की ज्वाला के परिवर्तन (न्यूनाधिक्य) से ऊपरी भाग का सहसा हिल उठना, भूचाल। ⊙गर्भ=पुं० पृथ्वी का भीतरी भाग। विष्णु। ⊙गर्भशास्त्र=पुं० वह शास्त्र जिसके द्वारा इस बात का ज्ञान होता है कि पृथ्वी का ऊपरी और भीतरी भाग किन किन तत्वों का बना है और उसका वर्तमान रूप किन कारणों से हुआ है। ⊙गोल=पुं० जिस शास्त्र के द्वारा पृथ्वी के स्वरूप, उसके प्राकृतिक और राजनीतिक विभाग, जलवायु, उपज और आबादी आदि का ज्ञान होता है। वह ग्रंथ जिसमे ऐसे विषयों आदि का वर्णन हो। ⊙चर=पु० शिव, महादेव। भूमि पर रहनेवाला प्राणी। तंत्र के अनुसार एक की सिद्धि। ⊙चरी=स्त्री० योग मे समाधि अंग की एक मुद्रा। ⊙तल=पु० पृथ्वी का ऊपरी तल। संसार, दुनिया। पाताल। ⊙देव=पु० ब्राह्मण। ⊙धर=पु० पहाड। शेषनाग। विष्णु। राजा। ⊙प, ⊙पति=पु० राजा। ⊙पाल=पु० राजा। ⊙भृत्=पु० [सं०] राजा। ⊙मंडल=पु० पृथ्वी। ⊙मध्यसागर=पु० युरोप और अफ्रिका के बीच का समुद्र। ⊙लोक=पु० संसार, जगत्। ⊙शायी=वि० पृथ्वी पर सोनेवाला। पृथ्वी पर गिरा हुआ। मरा हुआ। ⊙सुता=स्त्री० सीता। ⊙सुर=पु० ब्राह्मण।

भूआ—स्त्री० दे० 'बुआ'। (प)पु० 'घूआ'। भूई—स्त्री० रूई के समान मुलायम छोटा टुकड़ा।

भूख—स्त्री० खाने की इच्छा, क्षुधा। आवश्यकता, जरूरत (व्यापारी)। कामना। ⊙हड़ताल=स्त्री० किसी व्यक्ति या समुदाय द्वारा किसी माँग की पूर्ति के लिये किया जानेवाला अन्नत्याग।

भूखन(प)—पु० दे० 'भूषण'।

भूखना†(प)सक० सजाना।

भूखा—वि० पुं० जिससे भूख लगी हो। चाहनेवाला, इच्छुक। गरीब।

भूचाल—पु० दे० 'भूकंप'।

भूटान—पु० हिमालय की तलहटी का एक प्रदेश जो नेपाल और आसाम के बीच सिक्किम के पूर्व मे है। भूटानी—वि० भूटान देश का, भूटान संबंधी। पु० भूटान देश का निवासी। भूटान देश का घोड़ा। स्त्री० भूटान देश की भाषा।

भूटिया बादाम—पु० एक पहाडी वृक्ष जिसका फल खाया जाता है, कपासी।

भूडोल—पु० दे० 'भूकंप'।

भूत—पु० वि० [सं०] गत, बीता हुआ, गुजरा हुआ, भूतकाल। युक्त, मिला हुआ। समान, सदृश। जो हो चुका हो। पु० वे मूल द्रव्य जिनकी सहायता से सारी सृष्टि की रचना हुई है। द्रव्य, महाभूत। सृष्टि का कोई जड या चेतन, अचर या चर पदार्थ या प्राणी। प्राणी, जीव। सत्य। बीता हुआ समय। व्याकरण के अनुसार क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता हो कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका। पुराणानुसार एक प्रकार के पिशाच या देव जो रुद्र के अनुचर हैं। मृत शरीर, शव। मृत प्राणी की आत्मा। प्रेत, जिन, शैतान। (प)व्यक्ति

=स्त्री० भूत की गति। विलक्षण बात। ⊙दया=स्त्री० जड और चेतन सबके साथ की जाननेवाली दया। ⊙नाथ=पुं० शिव। ⊙पूर्व=वि० वर्तमान से पहले का, इससे पहले का। ⊙भावन=पु० महादेव। ⊙भाषा=स्त्री० पैशाची भाषा। ⊙यज्ञ=पुं० पचयज्ञ मे से एक यज्ञ, भूतवलि, वलिवैश्व। ⊙वाद=पु० दे० 'पदार्थवाद'। मु० ~की मिठाई, पकवान=वह पदार्थ जो भ्रम से दिखाई दे, पर वास्तव मे जिसका अस्तित्व न हो। सहज मे मिला हुआ धन जो शीघ्र ही नष्ट हो जाय। ~चढना या सवार। होना=वहुत आग्रह या हठ होना। ~वहुत अधिक क्रोध होना।

भूतत्वविद्या—स्त्री० [सं०] दे० 'भूगर्भशास्त्र'।

भूतांकुश—पु० [सं०] कश्यप ऋषि। गावजुवान।

भूतागति—स्त्री० दे० 'भूतगति'।

भूतात्मा—पु० [सं०] शरीर। परमेश्वर। शिव। जीवात्मा।

भूतावेस(पु)—पु० एक मानसिक स्थिति जब व्यक्ति प्रेत वाधा के कारण असाधारण व्यवहार करता है।

भूति—स्त्री० [सं०] वैभव, धनसपत्ति। भस्म, राख। उत्पत्ति। वृद्धि। अधिकता। अणिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियाँ।

भूतिनी—स्त्री० भूत योनि मे प्राप्त स्त्री। शाकिनी, डाकिनी।

भूतेश्वर—पु० [सं०] महादेव।

भूतोन्माद—पु० [सं०] वह उन्माद जो भूतो (पु) पिशाचों के प्रभाव के कारण हो।

भून—पु० दे० 'भ्रूण'।

भूनना—सक० आग पर रखकर या गरम वालू मे डालकर पकाना। घी तेल आदि मे डालकर कुछ देर तक आग मे सेकना। तलना। वहुत अधिक कष्ट देना।

भूपाली—स्त्री० [सं०] एक रागिनी।

भूभल—स्त्री० गरम राख या धूल।

भूभरि(पु)—स्त्री० दे० 'भूभल'।

भूमा—पु० [सं०] ईश्वर, परमात्मा। वि० वहुत अधिक।

भूमि—स्त्री० [सं०] पृथ्वी, जमीन। जड, वुनियाद। देश, प्रात। योगशास्त्र के अनुसार वे अवस्थाएँ जो क्रम क्रम से योगी को प्राप्त होती है। क्षेत्र। ⊙ज=वि० भूमि से उत्पन्न। ⊙जा=स्त्री० सीता जी। ⊙धर=पु० किसान जिसे अपनी जमीन को वेचने, दान करने आदि का अधिकार हो। ⊙पुत्र=पु० मगल ग्रह ⊙सुत=पु० मंगल ग्रह। ⊙सुता=स्त्री० जानकी। मु० होना=पृथ्वी पर गिर पडना।

भूमिका—स्त्री० [सं०] रचना। भेष वदलन किसी ग्रथ के आरभ की वह सूचना जिस उस ग्रंथ के सवध की आवश्यक औ ज्ञातव्य वातों का पता चले, दीवाचा वेदात के अनुसार चित्त की ये पाँ अवस्थाएँ—क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एका और निरुद्ध। वह आधार जिसपर को दूसरी चीज खड़ी की जाय, पृष्ठभूमि अभिनय। स्त्री० [हि०] पृथ्वी जमीन।

भूमिया—पु० जमींदार। ग्रामदेवता।

भूमिहार—पु० [सं०] विहार और उत्त प्रदेश मे वसनेवाली एक हिंदू जाति।

भूय—अव्य० पुनः, फिर।

भूयसी—वि० [सं०] वहुत अधिक, व वार। स्त्री० वह दक्षिणा जो विवाह आ शुभ कार्य होने पर सभी उपस्थि ब्राह्मणो को दी जाती है।

भूयोभूयः—क्रि० वि० [सं०] वारवार।

भूर—वि० वहुत अधिक। प० वालू।

भूरज—पु० भोजपत्र। धूल, मिट्टी। भूर पत्र—पु० दे० 'भोजपत्र'।

भूरपूर(पु)†—वि०, क्रि० वि० दे० 'भरपूर

भूरसी दक्षिणा—स्त्री० दे० 'भूयसी'।

भूरा—प० मिट्टी का सा रग, खाकी कच्ची चीनी। चीनी। वि० मटमैले का खाकी।

भूरि—पु० [सं०] ब्रह्मा। विष्णु। शिव। इ स्वर्ण, सोना। वि० अधिक, वहुत। भा

भूरितेजस—पु० अग्नि। सोना।

भूर्जपत्र—पु० [सं०] भोजपत्र।

भूल—स्त्री० भूलने का भाव। गलती, कसूर। अशुद्धि, त्रुटि। ⊙भुलैया = स्त्री० वह घुमावदार और चक्कर मे डालनेवाली इमारत जिसमे जाकर आदमी इस प्रकार भूल जाता है कि फिर बाहर नही निकल सकता। चकावू। बहुत घुमाव फिराव की बात या घटना।

भूलक(पु)†—पुं० भूल करनेवाला, जिससे भूल होती है।

भूलना—सक० विस्मरण करना, याद न रखना। गलती करना। खो देना। अक० विस्मृत होना। चूकना, गलती होना। आसक्त होना, लुभाना। वि० भूलनेवाला (जैसे, भूलना स्वभाव)।

भूवा—पुं० रुई। वि० उजला, सफेद।

भूषण—पुं० [सं०] अलकार, जेवर। वह जिससे किसी चीज की शोभा बढती हो।

भूषन(पु)—पुं० दे० 'भूषण'। भूषना(पु)†—सक० भूषित करना, सजाना।

भूषा—स्त्री० गहना, जेवर। सजाने की क्रिया।

भूषित—वि० [सं०] गहना पहनाया हुआ, अलकृत। सजाया हुआ, सँवारा हुआ।

भूसन(पु)†—पु० दे० 'भूषण'।

भूसा—पु० गेहूँ, जौ आदि के डंठल तथा बालो के छोटे छोटे टुकडे जो पशुओ के खाने के काम आते हैं।

भूसी—स्त्री० भूसा। किसी अन्न या दाने के ऊपर का छिलका।

भूहरा—पु० दे० 'भुँइहरा।

भृंग—पु० [सं०] भौंरा। एक प्रकार का कीडा, बिलनी जिसके बारे मे कहा जाता है कि वह किसी कीडे को मिट्टी से ढककर उसपर बैठ जाता है और तब तक 'भिन्न भिन्न' शब्द करता रहता है जब तक वह कीडा भी इसी की तरह नही हो जाता। ⊙राज = बडा भौंरा। भँगरा नामक वनस्पति, भँगरैया। काले रंग का एक पक्षी, भीमराज।

भृंगी—पु० शिव जी का एक गण। स्त्री० भौरी। बिलनी।

भृकुटी—स्त्री० [सं०] भौंह।

भृगु—पु० [सं०] एक मुनि। प्रसिद्ध है कि इन्होंने विष्णु की छाती मे लात मारी थी। परशुराम। शुक्राचार्य। शुक्रवार। शिव। पहाड का ऐसा किनारा जहाँ से गिरने पर बीच मे कोई रोक न हो। ⊙कच्छ = पु० आधुनिक भडौच जो एक प्रसिद्ध तीर्थ था। ⊙नाथ = पुं० परशुराम। ⊙मुख्य = पु० परशुराम। ⊙रेखा = स्त्री० विष्णु की छाती पर का वह चिह्न जो भृगु मुनि के लात मारने से हुआ था।

भृत—पुं० [सं०] दास। वि० भरा हुआ, पूरित। पला हुआ।

भृति—स्त्री० [सं०] नौकरी। मजदूरी। वेतन। मूल्य। भरना। पालन करना।

भृत्य—पु० [सं०] नौकर।

भृश—क्रि० वि० [सं०] बहुत, अधिक।

भेंगा—वि० जिनकी आँखो की पुतलियाँ टेढी तिरछी रहती हो, ढेरी।

भेंट—स्त्री० मुलाकात। उपहार। नजराना।

भेंटना(पु)†—सक० मुलाकात करना। गले लगाना।

भेंना†—सक० दे० 'भेवना'।

भेवना—सक० भिगोना।

भेइ, भेउ(पु)†—पुं० रहस्य।

भेक—पु० [सं०] दे० 'मेंढक'।

भेख—पु० दे० 'वेष'।

भेखज—पु० दे० 'भेषज'।

भेजना—सक० किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिये रवाना करना।

भेजवाना—सक० दे० 'भिजवाना'।

भेजा—पु० खोपड़ी के भीतर का गूदा, मग्ज।

भेड़—स्त्री० बकरी की जाति का एक चौपाया, गाडर। मु० भेड़िया धसान = बिना परिणाम सोचे समझे दूसरो का अनुसरण करना।

भेड़ा—पु० भेड जाति का नर मेष।

भेड़िया—पु कुत्ते की तरह का एक प्रसिद्ध जगली मासाहारी जतु।

भेड़िहर†—पु० दे० 'गडेरिया'।

भेड़ी—स्त्री० दे० 'भेड़'।

भेद--पु० [सं०] भेदने या छेदने की क्रिया। शत्रु पक्ष के लोगों को बहकाकर अपनी ओर मिलाना अथवा उनमे द्वेष उत्पन्न करना। भीतर छिपा हुआ, रहस्य। मर्म, तात्पर्य। फर्क। प्रकार, किस्म। ⊙क = वि० छेदनेवाला। रेचक, दस्तावर (वैद्यक)। भेद करने या बतलानेवाला ⊙भाव = पु० अंतर, फरक।

भेदकातिशयोक्ति—स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमे 'और और' शब्द द्वारा किसी वस्तु का अति वर्णन किया जाता है।

भेदडी—स्त्री० रबडी, बसौंधी।

भेदन—पु० [सं०] छेदना, बेधना।

भेदना—सक० बेधना, छेदना।

भेदिया—पु० जासूस, गुप्तचर। गुप्त रहस्य जाननेवाला। भेदी—पु० 'भेदिया'। वि० [सं०] भेदन करनेवाला। भेदू—वि० पुं० दे० 'भेदिया'।

भेद्य—वि० [सं०] जो भेदा या छेदा जा सके।

भेन—वि० बहिन।

भेय—पु० दे० 'भेद'।

भेरा(पु)†—पु० दे० 'बेडा'।

भेरी—स्त्री० [सं०] बडा ढोल या नगाडा, ढक्का।

भेल—वि० [सं०] भीरु, डरपोक। मूर्ख, बेवकूफ।

भेला(पु)†—पु० भिडत। भेंट, मुलाकात। दे० 'भिलावाँ'। बडा गोला या पिंड।

भेली†—स्त्री० गुड या और किसी चीज की गोल बट्टी या पिंडी।

भेव(पु)†—पुं० मर्म की बात, भेद। बारी पारी।

भेवना(पु)—सक० भिगोना।

भेष—पु० दे० 'वेष'।

भेषज—पु० [सं०] औषध, दवा।

भेषना(पु)—सक० भेष बनाना। पहनना।

भेस—पु० बाहरी रूपरंग और पहनावा आदि, वेष कृत्रिम रूप और वस्त्र आदि।

भेसज—पु० दे० 'भेषज'।

भेसना(पु)†—सक० वेश धारण करना, पहनना।

भैंस—स्त्री० गाय की जाति और आकार प्रकार का, पर उससे बड़ा, चौपाया (मादा) जिसे लोग दूध के लिये पालते है। एक प्रकार की मछली। भैंसा—पु० भैंस का नर। भैंसासुर—पु० 'महिषासुर'।

भै(पु)—पु० 'भाया'। दे० 'भय'।

भैक्ष—पु० [सं०] भिक्षा माँगने की क्रिया या भाव। भीख। ⊙चर्या, ⊙वृत्ति = स्त्री० भिक्षा माँगने की क्रिया या भाव।

भैचक, भैचक्क(पु)† = वि० चकपकाया हुआ, चकित।

भैजन(पु)—वि० भयप्रद।

भैन, भैना—स्त्री० बहिन।

भैने—पु० भांजा।

भैयस†—पु० संपत्ति मे भाइयों का हिस्सा या अंश।

भैया—पु० भाई, भ्राता। बराबरवालों या छोटों के लिये संबोधन शब्द। ⊙चारी = स्त्री० दे० 'भाईचारा'। ⊙दूज = स्त्री० कार्तिक शुक्ला द्वितिया, हिंदुओं का एक त्योहार जिसमे बहनें भाइयों को टीका लगाती तथा मिठाई खिलाती हैं।

भैरव—वि० [सं०] देखने मे भयंकर, भयानक। भीषण शब्दवाला। पु० शंकर, महादेव। शिव के एक प्रकार के गण जो उन्ही के अवतार माने जाते हैं। एक राग जो छः रागों मे से मुख्य है। भयानक शब्द।

भैरवी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार की देवी जो महाविद्या की एक मूर्ति मानी जाती है, चामुंडा (तंत्र)। एक रागिनी जो सवेरे गाई जाती है। ⊙चक्र = पु० तांत्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशेष समयों मे देवी का पूजन करने के लिये एकत्र होता है। ⊙यातना = स्त्री० पुराणानुसार वह यातना जो प्राणियों को मरते समय भैरव जी देते हैं।

भैषज, भैषज्य—पुं० [सं०] औषध, दवा।

भैहा(पु)†—पुं० भयभीत। जिसपर भूत या किसी देव का आवेश आता हो।

भोंकना—सक० बरछी, तलवार आदि नुकीली चीज जोर से घँसाना।

भोंडा—वि० भद्दा, बदसूरत। ⊙पन = पुं० भद्दापन। बेहूदगी।

भोंदू—वि० वेवकूफ, मूर्ख।

भोंपा, भोंपू—पु० एक बाजा जिसे फूंककर बजाते हैं। कल कारखानो आदि की बहुत जोर से बजनेवाली सीटी। मोटर, साइकिल आदि गाडियो मे हाथ से दबाकर आवाज करने का एक रबर का बाजा।

भोया (पु)†—वि० युक्त, सहित। डुबाया हुआ, भीगा हुआ।

भोंसले—पु० महाराष्ट्रो के एक राजकुल की उपाधि। (महाराज शिवाजी और रघुनाथ राव आदि इसी कुल के थे)।

भो (पु)—अक० भया, हुआ।

भोकस (पु)†—वि० भुक्खड़। पुं० एक प्रकार का राक्षस।

भोकार—स्त्री० जोर जोर से रोना।

भोक्ता—वि० [सं०] भोजन करनेवाला। भोग करनेवाला। ऐयाश।

भोग—पु० [सं०] सुख या दुःख आदि का अनुभव करना। सुख, विलास। दु.ख, कष्ट। स्त्री के साथ मैथुन। धन। पालन। भक्षण। देह। पाप या पुण्य का वह फल जो सहन किया या भोगा जाता है, प्रारब्ध। फल, अर्थ। देवता आदि के आगे रखे जानेवाले खाद्य पदार्थ, नैवेद्य। सूर्य आदि ग्रहो के राशियों मे रहने का समय। ⊙विल्लास = पुं० आमोद प्रमोद, सुख चैन।

भोगना—अक० सुख दुःख या शुभाशुभ कर्म-फलों का अनुभव करना, भुगतना। सहन करना।

भोगबंधक—पु० बंधक या रेहन रखने का वह प्रकार जिसमे व्याज के बदले मे रेहन रखी हुई भूमि या मकान आदि भोगने का अधिकार होता है, दृष्ट-बंधक का उलटा।

भोगली—स्त्री० नाक का एक गहना, लौंग। टेटका या तरकी नाम का कान मे पहनने का गहना। वह छोटी पतली पोली कील जो लौंग या कान के फूल आदि को अटकाने के लिये उसमे लगाई जाती है।

भोगवना (पु)—अक० भोगना। **भोगवाना**—सक० [भोगना का प्रे०] दूसरे से भोग कराना। **भोगाना**—सक० दे० भोगवाना।

भोगी—पु० [सं०] भोगनेवाला। वि० सुखी। इंद्रियों का सुख चाहनेवाला। भुगतने-वाला। विषयासक्त। आनंद करनेवाला। साँप।

भोग्य—वि० [सं०] भोगने योग्य, काम में लाने योग्य। ⊙मान—वि० जो भोगा जाने को हो, अभी भोगा न गया हो (जैसे, भोग्यमान नक्षत्र)।

भोज—पु० बहुत से लोगो का एक साथ बैठकर खाना पीना, जेवनार। खाने की चीज। पु० [सं०] भोजकट नामक देश जिसे आजकल भोजपुर कहते हैं। चंद्रवंशियो के एक वंश का नाम। कान्यकुब्ज के एक प्रसिद्ध राजा जो महाराजा रामभद्रदेव के पुत्र थे। मालवा के परमार वंशी एक राजा जो संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान् और कवि थे। ⊙विद्या = स्त्री० इंद्रजाल, बाजीगरी।

भोजक—पु० [सं०] भोग करनेवाला। ऐयाश, विलासी।

भोजन—पु० [सं०] भक्षण करना, खाना। खाने की सामग्री। ⊙खाना (पु) = स्त्री० [हिं०] दे० 'भोजनालय'। ⊙भट्ट = पु० बहुत अधिक खानेवाला। ⊙शाला = स्त्री० रसोई घर। **भोजनालय**—पुं० [सं०] रसोईघर।

भोजपत्र—पुं० एक प्रकार का मझोले आकार का वृक्ष और उसकी छाल जो प्राचीन काल मे ग्रंथ और लेख आदि लिखने मे बहुत काम आती थी।

भोजपुरी—स्त्री० भोजपुर की बोली। पुं० भोजपुर का निवासी। वि० भोजपुर का या भोजपुर संबंधी।

भोजी—पु० खानेवाला।

भोजू (पु)—पुं० भोजन, आहार।

भोज्य—पुं० [सं०] खाद्यपदार्थ। वि० खाने योग्य।

भोट—पुं० भूटान देश। एक प्रकार का बडा पत्थर।

भोटा(पु)—दे० 'भोला'।

भोटिया—पु० भोट या भूटान देश का निवासी। स्त्री० भूटान देश की भाषा। वि० भूटान देश सबधी, भूटान का।

भोडिया, बादाम—पुं० [फा०] आलू बुखारा। मूंगफली।

भोडर, फोडल†—पु० अभ्रक, अबरक। अभ्रक का चूर, बुक्का।

भोथरा—वि० जिसकी धार तेज न हो, कुद।

भोना—अक० [हिं० भीनना] भीनना, सचरित होना। लिप्त होना, लीन होना। आसक्त होना।

भोपा—पुं० एक प्रकार की तुरही, भोंपू। मूर्ख।

भोमि—स्त्री० दे० 'भूमि'।

भोर—पुं० तड़का, सबेरा। (पु)†धोखा, भ्रम। वि० चकित, स्तंभित। (पु)वि० भोला, सीधा।

भोरना(पु)—सक० दे० 'भोराना'।

भोरा(पु)‡—पुं० दे० 'भोर'। (पु)†वि० भोला, सीधा। बेवकूफ।

भोराना—सक० भ्रम में डालना, बहकाना। अक० धोखे मे आना।

भोरानाथ(पु)—पुं० शिव।

भोरु—पु० दे० 'भोर'।

भोलना(पु)—सक० भुलवा देना, बहकाना।

भोला—वि० सीधा सादा, सरल। मूर्ख, बेवकूफ। ⊙नाथ=पु० महादेव, शिव वि० (व्यक्ति के लिये) सीधासादा, सरल। ⊙पन=पु० सिधाई, सरलता। नादानी, मूर्खता। ⊙भाला=वि० सीधासादा, सरल चित्त का।

भोहरा—पुं० भुंइहरा। खोह, गुफा।

भौं—स्त्री० दे० 'भौंह'।

भौंकना—अक० भौं भौं शब्द करना, कुत्तो का बोलना। बहुत बकवाद करना, निरर्थक बोलना।

भौंचाल†—पु० दे० 'भूकंप'।

भौंतुवा—पु० काले रंग का एक कीडा जो प्राय: वर्षाऋतु मे जलाशयो आदि मे जल तल के ऊपर चक्कर काटता हुआ चलता है। एक प्रकार का रोग जिसमे ज्वर के साथ साथ शरीर का कोई अग फूल जाता है। (अं० फाइलेरिया)। तेली का बैल जो सवेरे से ही कोल्हू मे जोता जाता है और दिन भर घूमा करता है। वि० घूमनेवाला, चक्कर काटनेवाला।

भौंर—पुं० भौरा। तेज बहते हुए पानी मे पडनेवाला चक्कर, आवर्त, नांद। मुश्की घोड़ा।

भौंरा—पु० काले रंग का उड़नेवाला एक पतगा जो देखने मे बहुत दृढाग प्रतीत होता है, यह गुजारता हुआ उड़ा करता है और फूलो का रस पीता है। बड़ी मधुमक्खी, सारग। काली या लाल भिड, एक प्रकार का खिलौना। हिंडोले की वह लकड़ी जिसमे डोरी बंधी रहती है। वह कुत्ता जो गड़ेरियो की भेड़ो की रखवाली करता है। प्रेमी, रसिक। मकान के नीचे का घर, तहखाना। वह गड्ढा जिसमे अन्न रखा जाता है, खत्ता।

भौंराना(पु)—सक० घुमाना, परिक्रमा करना। विवाह की भांवर दिलाना। अक० घूमाना, चक्कर काटना।

भौंराला—वि० घुंघराला या छल्लेदार। (बाल)।

भौंरी—स्त्री० पशुओ के शरीर मे बालो के घुमाव मे बना हुआ चक्र जिसके स्थान आदि के विचार से उनके गुणदोष का निर्णय होता है। विवाह के समय पर वधू का अग्नि का परिक्रमा करना, भांवर। तेज बहते हुए जल मे पडनेवाला चक्कर। अगाकडी, बाली (पकवान)।

भौंह—स्त्री० आंख के ऊपर की हड्डी पर के रोएँ या बाल, भृकुटी, भौं। मु०—चढ़ना या तनना=नाराज होना। त्योरी चढ़ाना, बिगड़ना। —जोहना=खुशामद करना।

भौंहरा(पु)—दे० 'भुइँहरा'।
भौंही—स्त्री० दे० 'भौंह'।
भौ(पु)—पु० ससार, जगत्, डर, खौफ।
भौकन(पु)†—स्त्री० आग की लपट, ज्वाला।
भौगिया(पु)†—पु० ससार के सुखो को भोगनेवाला।
भौगोलिक—वि० [सं०] भूगोल का।
भौचक—वि० चकपकाया हुआ, स्तभित।
भौंज(पु)—स्त्री० दे० 'भौजाई'।
भौजल(पु)—पु० दे० 'भवजाल'।
भौजाई, भौजी—स्त्री० दे० 'भावज'।
भौज्य—पु० [सं०] वह राज्य जो केवल सुखभोग के विचार से होता हो, प्रजापालन के विचार से नही।
भौतिक—वि० [सं०] पचभूत सबधी। पाँचो भूतों से बना हुआ, पार्थिव। शरीर सबंधी, शरीर का। भूतयोनि का। ⊙वाद = पु० दे० 'पदार्थवाद'।
भौन(पु)—पु० घर, मकान।
भौना(पु)†—अक० घूमना।
भौम—वि० [सं०] भूमि सबधी, भूमि का। भूमि से उत्पन्न। पु० मगल ग्रह। ⊙वार = पु० मगलवार। भौमिक—पुं० भूमि का मालिक। वि० भूमि संबंधी, भूमिका।
भौर(पु)—पु० दे० 'भौंरा'। घोड़ो का एक भेद। दे० 'भाँवर।
भौलिया—स्त्री० एक प्रकार की छायादार नाव।
भौसा—पु० भीड़भाड, जनसमूह। हो हुल्लड, गडबड।
भ्रंग(पु)—पु० दे० 'भृग'।
भ्रंश—पु० [सं०] अध पतन, नीचे गिरना। नाश, ध्वंस। भागना। वि० भ्रष्ट, खराब।
भ्रकुटि—स्त्री० [सं०] भृकुटी, भौह।
भ्रम—पु० मान, प्रतिष्ठा, इज्जत। पु० [सं०] किसी चीज या बात को कुछ का कुछ समझना, मिथ्या ज्ञान, भ्राति, धोखा। सशय, सदेह, शक। एक प्रकार का रोग जिसमे चक्कर आता है। मूर्च्छा, बेहोशी। भ्रमण। ⊙मूलक = वि० जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो। ⊙वात = पु० आकाश का वह वायुमडल जो सर्वदा घूमा करता है।
भ्रमण—पु० [स०] घूमना फिरना, विचरण। आना जाना। यात्रा, सफर। मंडल, चक्कर, फेरी। भ्रमना—अक० घूमना। धोखा खाना, भूल करना। भटकना, भूलना।
भ्रमनि(पु)—स्त्री० दे० 'भ्रमण'।
भ्रमर—पु० [सं०] भौंरा। उद्धव का एक नाम। दोहे का एक भेद जिसमे २२ गुरु और चार लघु वर्ण होते है। छप्पय का तिरसठवां भेद जिसमे ८ गुरु, १३६ लघु, कुल १४४ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ⊙गीत = पु० वह गीत या काव्य जिसमे उद्धव के प्रति व्रज की गोपियों का उपालभ हो। ⊙गुफा = पु० योगशास्त्र के अनुसार हृदय के अदर का एक स्थान। ⊙विलासिता = स्त्री० एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से मगण, भगण, नगण और अत मे लघु गुरु होता है।
भ्रमरावली—स्त्री० [सं०] भँवरो की श्रेणी। एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे पाँच सगण होते हैं, मनहरण, नलिनी।
भ्रमाना(पु)†—सक० घुमाना, फिराना। बहकाना।
भ्रमात्मक—वि० [सं०] जिससे अथवा जिसके संबध मे भ्रम होता है, संदिग्ध।
भ्रमित—वि० [सं०] भ्रम मे पडा हुआ। चक्कर खाता हुआ।
भ्रमी—वि० [सं०] जिसे भ्रम हुआ हो। चकित, भौचक।
भ्रष्ट—वि० [सं०] गिरा हुआ। जो खराब हो गया हो, बहुत बिगड़ा हुआ। दूषित। बदचलन। भ्रष्टा—स्त्री० कुलटा, छिनाल।
भ्रांत—पु० [सं०] तलवार के ३२ हाथो मे से एक। वि० जिसे भ्रांति या भ्रम हुआ हो। व्याकुल, विकल। उन्मत्त। घुमाया हुआ।
भ्रांतापह्नुति—स्त्री० [सं०] एक काव्यालकार जिसमे किसी भ्राति को दूर करने के लिये सत्य वस्तु का वर्णन होता है।

भ्रांति—स्त्री० [सं०] भ्रम, धोखा। संदेह, शक। भ्रमण। पागलपन। भँवरी। भूल-चूक। मोह, प्रमाद। एक प्रकार का काव्यालंकार, इसमें किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ उनकी समानता देखकर भ्रम से वह दूसरी वस्तु ही समझ लेना वर्णित होता है।

भ्राजना(पु)—अक० शोभा पाना।

भ्राजमान(पु)—वि० शोभायमान।

भ्रात(पु)—पुं० दे० 'भ्राता'।

भ्राता—पु० [सं०] सगा भाई।

भ्रातृ—पुं० [सं०] भ्राता, भाई। ⊙जाया = स्त्री० भावज। ⊙त्व = पुं० भाई होने का भाव या धर्म, भाईपन। ⊙द्वितीया = स्त्री० कार्तिक शुक्ला द्वितीया, भाईदूज। ⊙पुत्र = पु० भतीजा। (पु)भाव = पुं० भाई का सा प्रेम या संबंध, भाईचारा। ⊙व्य = पुं० भतीजा।

भ्रामक—वि० [सं०] भ्रम में डालनेवाला, बहकानेवाला। घुमानेवाला, चक्कर दिलानेवाला।

भ्रामर—पुं० [सं०] मधु, शहद। दोहे का दूसरा भेद। वि० भ्रमर संबंधी, भ्रमर का।

भ्रुअ(पु)—स्त्री० भौंह।

भ्रू—स्त्री० [सं०] भौं, भौंह। ⊙भङ्ग = पुं० त्योरी चढ़ाना। ⊙विक्षेप = पुं० देखना, त्योरी चढ़ाना, नाराजगी दिखलाना।

भ्रूण—स्त्री० [सं०] स्त्री का गर्भ। बालक वह अवस्था जब वह गर्भ में रहता है। ⊙हत्या = स्त्री० गर्भ के बालक की हत्या।

भ्वहरना(पु)†—अक० डरना।

म

म—हिंदी वर्णमाला का २५वाँ व्यंजन और पवर्ग का अंतिम वर्ण। इसका उच्चारण स्थान होंठ और नासिका है।

मकुर(पु)—पु० शीशा, आईना।

मंग—स्त्री० स्त्रियों के सिर की माँग।

मंगत—पु० दे० 'मंगता'। मंगता—पुं० भिखमंगा, भिक्षुक।

मंगन—पु० भिक्षुक।

मंगन(पु)—सक० दे० 'माँगना'।

मंगनी—स्त्री० माँगने की क्रिया या भाव। वह पदार्थ जो किसी से इस शर्त पर माँग-कर लिया जाय कि कुछ समय तक काम लेने के उपरांत लौटा दिया जायगा। इस प्रकार माँगने की क्रिया या भाव। विवाह के पहले की वह रस्म जिसमें वर और कन्या का संबंध निश्चित होता है।

मंगल—पुं० [सं०] मनोकामना का पूर्ण होना। कल्याण, भलाई। सौर जगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह जो पृथ्वी के उपरांत पहले पहल पड़ता है और जो सूर्य से १४ करोड़ १५ लाख मील दूर है तथा जो किसी समय पृथ्वी का ही एक भाग था, भौम, कुज। मंगलवार। ⊙कलश (घट) = पु० जल से भरा हुआ वह घड़ा जो मंगल अवसरों पर काम में लाया जाता है। ⊙पाठ = पुं० दे० मंगला-चरण। ⊙पाठक = पु० बंदीजन। ⊙वार = वह वार जो सोमवार के उपरांत और बुधवार के पहले पड़ता है, भौमवार। ⊙सूत्र = पु० वह तागा जो किसी देवता के प्रसाद रूप में कलाई में बाँधा जाता है। ⊙स्नान = पु० वह स्नान जो मंगल की कामना से किया जाता है।

मंगला—स्त्री० पार्वती। मंगलाचरण—पुं० [सं०] किसी शुभ कार्य के आरंभ में उसकी निर्विघ्न समाप्ति के लिये की जानेवाली ईश्वरप्रार्थना या आशीर्वाद (श्लोक या पद आदि के रूप में)।

मंगलामुखी—स्त्री० वेश्या, रंडी।

मंगलाष्टक—पु० [सं०] नवविवाहित पति-पत्नी को उनके भावी सुख और समृद्धि के लिये किसी ब्राह्मण द्वारा दिया जाने-वाला आठ चरणों का आशीर्वाद।

मंगली—वि० जिसकी जन्मकुंडली के चौथे, आठवें या बारहवें स्थान मे मगल ग्रह हो (अशुभ)।
मगवाना—सक० [मांगना का प्रे०] मांगने का काम दूसरो से कराना। किसी से कोई चीज मोल खरीदकर या किसी से मांग कर लाने मे प्रवृत्त करना।
मंगाना—सक० दे० 'मँगवाना'। मँगनी का सवध कराना।
मंगेतर—वि० जिसकी किसी के साथ मँगनी हुई हो।
मंगोल—पु० मध्यएशिया और उसके पूरव की ओर वसनेवाली एक जाति। मूलत यह जाति भ्रमणशील है। ईसा की १२ वी सदी मे इसने चीन, ईरान और भारत मे वडे वडे साम्राज्य स्थापित किए। इस जाति का मनुष्य।
मंच, मंचक—पु० [सं०] खाट, खटिया। छोटी पीढी। ऊँचा बना हुआ मडप जिसपर बैठक सर्वसाधारण के सामने किसी प्रकार का कार्य किया जाय (जैसे, नाटक का रगमंच)।
मंछरⓅ—पुं० दे० 'मत्सर'। दे० 'मच्छर'।
मंछला—पुं० दे० 'मत्स्य'।
मजन—पु० दांत साफ करने का चूर्ण। स्नान।
मंजना—अक० मांजा जाना। अभ्यास होना।
मंजरित—वि० [स०] जिसमे मजरी लगी हो, मजरियो या कोपलो के युक्त।
मजरी—स्त्री० [सं०] नया निकला हुआ कल्ला, कोपल। कुछ विशेष पौधो मे फूलो या फलो के स्थान पर लगे हुए बहुत से दानो का समूह। वेल, लता।
मंजाई—स्त्री० मँजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
मंजाना—सक० [मांजना का प्रे०] मांजने का काम दूसरे से करान। दे० 'मांजना'।
मजार—स्त्री० बिल्ली।
मंजिल—स्त्री० [अ०] यात्रा मे ठहरने का स्थान, पड़ाव। मकान का खड, मरातिब।
मजिष्ठा—स्त्री० [सं०] मजीठ।
मजीर—पु० [सं०] नूपुर, घुंघरू।
मजु, मजुल—वि० [सं०] सुदर, मनोहर।
मजूर—वि० [अ०] जो मान लिया गया हो, स्वीकृत। **मजूरी**—स्त्री० स्वीकृति।
मंजूषा—स्त्री० [सं०] छोटा पिटारा या डिव्वा, पिटारी। पिजडा।
मझ—वि० अज्ञानी।
मझाⓅ†—वि० मध्य का। पुं० पलग, खाट। दे० मांझा।
मँझार†—क्रि० वि० बीच मे।
मँझियार†—वि० बीच का।
मंड—पुं० [सं०] भात का पानी, मांड।
मंडन—पु० [सं०] शृगार करना, सजाना। प्रमाण आदि द्वारा कोई बात सिद्ध करना, खडन का उलटा।
मंडनाⓅ—सक० भूपित करना, युक्ति आदि देकर सिद्ध या प्रतिपादन करना। भरना। रचना, बनाना। दलित करना।
मंडप—पु० [सं०] विश्राम स्थान। बारहदरी। किसी उत्सव या समारोह के लिये बांस, फूस आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान। देवमदिर के ऊपर का गोल या गावदुम हिस्सा। चँदोवा, शामियाना।
मंडरⓅ—पु० दे० 'मडल'।
मँडरना—अक० मडल बांधकर छा जाना, चारो ओर से घेर लेना। **मँडराना**—अक० किसी वस्तु के चारो ओर घूमते हुए उडना, परिक्रमण करना। किसी के आसपास ही घूम फिरकर रहना।
मंडल—पुं० [सं०] वृत्त, चक्कर, गोलाई। गोल फैलाव गोला। चद्रमा या सूर्य के चारो ओर पडनेवाला घेरा, परिवेश। क्षितिज। समाज, समूह। ग्रह के घूमने की कक्षा। ऋग्वेद के १० मुख्य विभागो मे से कोई। किसी राज्य के उन १२ मित्र राज्यों का समूह जिनसे उसका राजनीतिक सवध वना हो। **मडलाकार**—वि० गोल। **मडली**—स्त्री० समूह, समाज। पुं० वटवृक्ष। बिल्ली। सूर्य। **मंडलेश्वर**—पु० दे० 'मंडलीक'।
मंडलीक—पुं० सामंत राजा।
मँड़वा—पु० मंडप।

मँडार†—पु० झावा, डलिया।
मंडित—वि० [सं०] सजाया हुआ। छाया हुआ भरा हुआ।
मंडी—स्त्री० बहुत भारी बाजार जहाँ व्यापार की चीजें बहुत आती हों, बड़ा हाट।
मंडील— पुं० दे० 'मदील'।
मँडुआ—पुं० एक प्रकार का कदन्न।
मंडूक—पुं० [सं०] मेंढक। एक ऋषि। दोहा छंद का पाँचवाँ भेद।
मंडूर—पुं० [सं०] लोहकीट, गलाए हुए लोहे की मैल, सिंघान।
मँडैया(पु)†—स्त्री० दे० 'मँडई'।
मंत(पु)—(पु)†—पु० सलाह। मंत्र। ⊙ तंत = पु० उद्योग, प्रयत्न।
मंतव्य—पु० [सं०] विचार, मत।
मंत्र—पु० [सं०] गोप्य या रहस्यपूर्ण बात, सलाह। देवाधिसाधन, गायत्री आदि वैदिक वाक्य जिनके द्वारा यज्ञ आदि क्रिया करने का विधान हो। वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह है, संहिता। तंत्र में वे शब्द या वाक्य जिनका जप देवताओं की प्रसन्नता या कामनाओं की सिद्धि के लिये करने का विधान है। ⊙कार=पु० मंत्र रचने वाला ऋषि। ⊙गृह=पु० मंत्रणा करने का स्थान। ⊙पूत=वि० मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ। ⊙यंत्र या यंत्र⊙=पु० जादू टोना। ⊙विद्या= स्त्री० मंत्र शास्त्र, तंत्र। ⊙संहिता= स्त्री० वेदों का वह अंश जिसमें मंत्रों का संग्रह हो। ⊙णा=स्त्री० परामर्श, सलाह। कई आदमियों की सलाह से स्थिर किया हुआ मत, मंतव्य। मंत्रिणी—स्त्री० मंत्रणा देनेवाली स्त्री। मंत्रित—वि० मंत्र द्वारा संस्कृत, अभिमंत्रित। मंत्रिता—स्त्री० दे० 'मंत्रित्व'। मंत्रित्व—पु० मंत्री का कार्य या पद। मंत्री—पु० पु० परामर्श देनेवाला। सचिव, अमात्य किसी राज्य के शासन के विविध विभागों में से किसी एक या अधिक का शासक।
मंत्रेला†—पु० मंत्र तंत्र जाननेवाला।
मंथ—पु० [सं०] मथना, विलोना। हिलाना। मलना। मारना, ध्वस्त करना। मथानी।
मंथन—पु० मथना, विलोना। तत्व के लिये किसी विषय पर बार बार मनन करना। मथानी।
मंथर—पुं० [सं०] मथानी। एक प्रकार का ज्वर, मथज्वर। वि० मंद, सुस्त। जड़ मंदबुद्धि। भारी नीच।
मंथान—पु [सं०] एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में दो तगण होते हैं। मथानी।
मंद—वि० [सं०] धीमा, सुस्त। ढीला, शिथिल। आलसी। मूर्ख, कुबुद्धि। खल। ⊙ग= वि० धीरे धीरे चलने-वाला। ⊙भाग्य=वि० दुर्भाग्य, अभाग्य।
मंदर—पु० मकान, महल। पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत जिससे देव-ताओं ने समुद्र को मथा था। स्वर्ग। दर्पण, आईना। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण होता है। पहाड़। वि० मंद, धीमा। ⊙गिरि= पु० मंदराचल।
मंदरा—वि० नाटा, ठिगना। पु० एक प्रकार का बाजा।
मंदा—वि० धीमा। जिसका दाम थोड़ा हो, सस्ता। खराब। ढीला, शिथिल।
मंदाकिनी—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार गंगा की वह धारा जो स्वर्ग में है। आकाश-गंगा। एक नदी जो चित्रकूट के पास है। बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से दो नगण और दो रगण होते हैं।
मंदाक्रांता—स्त्री० [सं०] सत्रह अक्षरों का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, भगण, नगण तगण और अंत में दो गुरु होते हैं।
मंदाग्नि—स्त्री० [सं०] बदहजमी, अपच।
मंदार—पु० [सं०] स्वर्ग का एक देववृक्ष आक, मदार। स्वर्ग। हाथी। मंदराचल पर्वत। ⊙माला=स्त्री० अक्षरों २२ का वर्णवृत्त।
मंदिर—पु० [सं०] वासस्थान। घर, मकान। देवालय।

मंदिल(पु)†—पुं० दे० 'मंदिर'।
मंदिलरा—पुं० दे० 'मदिर'।
मंदी—स्त्री० महँगी का उलटा, सस्ती।
मदील—पुं० एक प्रकार कामदार साफा।
मंद्र—पुं० [सं०] गंभीर ध्वनि। संगीत में स्वरो के तीन भेदो के से एक। वि० मनोहर, सुदर। प्रसन्न, गभीर। धीमा (शब्द आदि)।
मंशा—स्त्री० [अ०] इच्छा, चाहना। आशय, मतलब।
मसब—पुं० [अ०] पद, स्थान। काम, कर्तव्य अधिकार ⊙**दार**=पुं० [फा०] बादशाही जमाने के एक प्रकार के अधिकारी।
मसा—स्त्री० दे० 'मशा'।
मंसूख—वि० [अ०] खारिज किया हुआ, रद।
मंसूबा—पुं० दे० 'मनसूवा'।
महगा—वि० दे० 'महँगा'।
म—पुं० [सं०] शिव। चंद्रमा। ब्रह्मा। यम। मधुसूदन।
मइँ†—सर्व० दे० 'मैं'।
मइका†(पु)—पुं० दे० 'मायका'।
मइमत(पु)—वि० दे० 'मैमत'।
मइया—स्त्री० माँ, माता।
मकई†—स्त्री० दे० 'ज्वार' (अन्न)।
मकड़ा—पुं० बडी मकडी। **मकडी**—स्त्री० आठ पैरो और आठ आखोवाला एक प्रसिद्ध कीडा जिसकी सैकड़ो हजारो जातियाँ होती हैं।
मकतब—पुं० [अ०] छोटे वालको के पढने का स्थान, पाठशाला।
मकदूर—पुं० [अ०] सामर्थ्य, शक्ति।
मकना—पुं० दे० 'मकुना'।
मकनातीस—पुं० [अ०] चुबक पत्थर।
मकफूल—वि० [अ०] रेहन या बधक रखा हुआ।
मकबरा—पुं० [अ०] वह इमारत जिसमे किसी की लाश गाड़ी हुई हो, रौजा।
मकबूल—वि० [अ०] जो कबूल किया गया हो। प्रिय।
मकरंद—पुं० [सं०] फूलो का रस जिसे मधुमक्खियाँ और भौंरे आदि चूसते हैं। एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे ७ जगण और अंत्य यगण कुल २४ वर्ण होते हैं। फूल का केसर।
मकर=पुं० [फा०] छल, कपट, नखरा। पु० [सं०] मगर या घडियाल नामक जलजतु। बारह राशियो मे से दसवी राशि। फलित ज्योतिष के अनुसार एक लग्न। सेना का एक प्रकार का व्यूह। माघ मास। मछली। छप्पय के ३९ वें भेद का नाम। कुबेर की नौ निधियो मे से। एक मकर की आकृति का कान का आभूषण। ⊙**कुंडल**=पुं० मगर के आकार का कुडल। ⊙**केतन**, ⊙**केतु**=पु० कामदेव। ⊙**तार**=पु० [हिं०] बादले का तार। ⊙**ध्वज**=पु० कामदेव। रससिंदूर। लौंग। ⊙**संक्रांति**=स्त्री० वह समय जब सूर्य मकर राशि मे प्रवेश करता है।
मकरा—पु० मडुवा नामक अन्न। एक प्रकार का कीडा।
मकराकृत—वि० मकर या मछली के आकारवाला।
मकराक्ष—पु० [सं०] खर का पुत्र और रावण का भतीजा।
मकराज(पु)—स्त्री० दे० 'मिजराफ'
मकरालय—पु० [सं०] समुद्र।
मकरी—स्त्री० [सं०] मगर की मादा।
मकसद—पु० [अ०] अभिप्राय, उद्देश्य।
मकान—प० [फा०] गृह, घर। रहने की जगह।
मकुंद—पु० दे० 'मुकुद'।
मकु—अव्य० चाहे। बल्कि। कदाचित्।
मकुना—पु० वह नर हाथी जिसके दाँत न हों
मकुनी, **मकुनी**†—स्त्री० आटे के भीतर बेसन भरकर बनाई हुई कचौरी, बेसनी रोटी।
मकूला—पु० [अ०] कहावत। उक्ति, कथन।
मकोई—स्त्री० जगली मकोय।
मकोड़ा—पु० कोई छोटा कीडा।
मकोय—स्त्री० एक क्षुप जो दो प्रकार का होता है। एक मे लाल रंग के और दूसरे मे काले रग के बहुत छोटे छोटे फल लगते हैं। इस क्षुप का फल। एक कँटीला

पौधा या उमदा फल, रसभरी।

मकोरना(पु)†—सक० दे० 'मरोडना'।

मक्का—पु० ज्वार, मकई। पु० [अ०] अरब का एक प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानो का सबसे बडा तीर्थस्थान है।

मक्कार—वि० [अ०] फरेबी, कपटी।

मक्खन—पु० दूध का सार भाग जो दही या मट्ठे को मथने पर निकलता है और तपाने से घी हो जाता है, नवनीत।

मक्खी—स्त्री० एक प्रसिद्ध छोटा कीडा जो साधारणत सब जगह उडता फिरता है, मक्षिका। मधुमक्खी। बदूक के अगले भाग पर वह उभरा हुआ अश जिससे निशाना साधा जाता है। ⊙**चूस**=पु० बहुत अधिक कजूस। **मु० जीती मक्खी निगलना**=जान बूझकर कोई ऐसा अनुचित कृत्य करना जिसके कारण पीछे से हानि हो। **दूध की मक्खी**=एकदम त्याज्य। **की तरह निकाल या फेंक देना**=किसी को किसी काम से बिलकुल अलग कर देना। **मारना या उड़ाना**=बिलकुल निकम्मा रहना।

मक्र—पु० [अ०] छल, धोखा। पाखंड।

मक्षिका—स्त्री० [सं०] मक्खी।

मख—पु० [सं०] यज्ञ। ⊙**शाला**=स्त्री० यज्ञशाला।

मखजन—पु० [अ०] खजाना, भडार।

मखतूल—पु० काला रेशम। **मखतूली**—वि० काले रेशम से बना हुआ, काले रेशम का।

मखदूम—पु० [अ०] वह जिसकी खिदमत की जाय, मालिक। एक प्रकार के मुसलमान धर्माधिकारी या फकीर।

मखन(पु)—पु० दे० 'मक्खन'।

मखनिया†—पु० मक्खन बनाने या बेचने वाला। वि० जिसमे से मक्खन निकाल लिया गया हो (दूध, दही)।

मखमल—स्त्री० [अ०] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी मुलायम कपड़ा।

मखलूक—स्त्री० [अ०] सृष्टि के प्राणी और जीव आदि।

मखाना—पु० दे० 'तालमखाना'।

मखी(पु)—स्त्री० दे० 'मक्खी'।

मखौना†—स्त्री० एक प्रकार का कपडा।

मखौल—पु० हँसी, ठट्ठा। **मखौलिया**—वि० दिल्लगीबाज।

मग—पु० रास्ता, राह। पुं० [सं०] एक प्रकार के शाकद्वीपी ब्राह्मण। मगध देश, मगह।

मगज—पु० दिमाग, मस्तिष्क। गिरी, गूदा। ⊙**पच्ची**=सं० किसी काम के लिये बहुत दिमाग लडाना, सिर खपाना। **मु०~खाना या चाटना**=बकबक कर तग करना। **~खाली करना या पचाना**=बहुत अधिक दिमाग लडाना।

मगजी—स्त्री कपडे के किनारे पर लगी हुई पतली गोट।

मगण—पु० [स०] कविता के आठ गणो मे से एक शुभ गण जिसमे तीन गुरु वर्ण होते हैं। इसका देवता पृथ्वी है, इसे लक्ष्मीप्रद माना जाता है।

मगद, मगदल—पुं० मूँग या उडद का एक प्रकार का लड्डू।

मगदा(पु)—वि० मार्गप्रदर्शक, रास्ता दिखलानेवाला।

मगधूर(पु)—पुं० दे० 'मकधूर'।

मगध—पु० [सं०] दक्षिणी बिहार का प्राचीन नाम, कीकट। बदीजन।

मगन—वि० डूबा हुआ, समाया हुआ। प्रसन्न। लीन।

मगना(पु)†—अक० लीन होना, तन्मय होना। डूबना।

मगर—अव्य० लेकिन, परतु। पु० अराकान प्रदेश जहाँ मग जाति बसती है। घडियाल नामक प्रसिद्ध जलजतु। मछली। ⊙**मच्छ**=पु० मगर या घड़ियाल नामक जलजतु। बड़ी मछली।

मगरिब—पुं० [अ०] पश्चिम दिशा।

मगरूर—वि० [अ०] घमंडी, अभिमानी।

मगरूरि(पु)—वि० स्त्री० गर्वीली ।
मगरूरी—स्त्री० घमंड, अभिमान ।
मगह—पुं० मगध देश ।
मगहय(पु)—पु० मगध देश ।
मगहर(पु)—पु० मगध देश ।
मगही—वि० मगध संबंधी, मगध देश का । मगह में उत्पन्न ।
मगु, मग्ग—पु० रास्ता ।
मग्ज—पु० [अ०] दिमाग, भेजा । गिरी, भींगी ।
मग्न—वि० [सं०] डूबा हुआ । तन्मय, खुश । नशे आदि में चूर ।
मघवा—पुं० [सं०] इंद्र । ⊙प्रस्थ = पुं० इंद्रप्रस्थ । २७ नक्षत्रों में से दसवां नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं ।
मघोनी—स्त्री० [सं०] इंद्राणी ।
मघौना—पु० नीले रंग का कपड़ा ।
मचक—स्त्री० दबाव । मचकना—सक० किसी पदार्थ को इस प्रकार जोर से दबाना कि मच मच शब्द निकले । अक० इस प्रकार दबना जिसमें मच मच शब्द हो, झटके से हिलना ।
मचका—पु० धक्का । झोंका, पेंग ।
मच—अक० किसी ऐसे कार्य का आरंभ होना जिसमें शोर हो । छा जाना, फैलना । दे० 'मचकना' ।
मचमचाना—सक० इस प्रकार दबाना कि मच मच शब्द हो ।
मचलना—अक० किसी चीज के लिये जिद बांधना ।
मचला—वि० मचलनेवाला । जो बोलने के अवसर पर जान बूझकर चुप रहे ।
मचलाना—अक० कै मालूम होना, जी मतलाना । (पु) दे० मचलना । सक० किसी को मचलने में प्रवृत्त करना ।
मचलाई—स्त्री० मचलने की क्रिया या भाव ।
मचली—स्त्री० दे० 'मिचली' ।
मचान—स्त्री० बाँस का टट्टर बाँधकर बनाया हुआ स्थान जिसपर बैठकर शिकार खेलते या खेत की रखवाली करते हैं । मंच, ऊंची बैठक ।

मचाना—सक० [अक०] कोई ऐसा कार्य आरंभ करना जिसमें हुल्लड़ हो ।
मचिया—स्त्री० छोटी चारपाई, पीढ़ी ।
मचिलई—(पु) स्त्री० मचलने का भाव । मचलापन ।
मच्छ—पुं० बड़ी मछली । दोहे का १९वां भेद ।
मच्छड—पुं० दे० 'मच्छर' ।
मच्छर—पुं० एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती पतिंगा । इसकी मादा काटती और डंक से रक्त चूसती है । ⊙दानी = स्त्री० दे० 'मसहरी'
मच्छरता(पु)—स्त्री० मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष ।
मच्छी—स्त्री० दे० 'मछली' ।
मछरंगा—पुं० एक प्रकार का जलपक्षी, रामचिड़िया ।
मछली—स्त्री० जल में रहनेवाला एक प्रसिद्ध जीव जिसकी छोटी बड़ी असंख्य जातियाँ होती हैं, मछली के आकार का कोई पदार्थ ।
मछुआ, मछुवा—पुं० मछली मारनेवाला, मल्लाह ।
मजकूर—वि० [अ०] जिसका जिक्र हुआ हो, उक्त । पुं० लिखित विवरण । मजकूरी—पुं० [फा०] समन तामील करनेवाला चपरासी ।
मजदूर—पुं० [फा०] बोझ ढोनेवाला, मजूरा, कुली । कल कारखानों में छोटा काम करनेवाला आदमी । मजदूरी—स्त्री० मजदूर का काम । बोझ ढोने या और कोई छोटा काम करने का पुरस्कार । परिश्रम के बदले में मिला हुआ धन, उजरत, पारिश्रमिक ।
मजना(पु)—अक० डूबना, निमज्जित होना । अनुरक्त होना ।
मजनूं—पु० [अ०] पागल, सिड़ी । अरब के एक प्रसिद्ध सरदार का लड़का जिसका वास्तविक नाम कैस था और जो लैला

नाम की कन्या पर आसक्त होकर उसके लिये पागल हो गया था। आशिक, प्रेमी। एक प्रकार का वृक्ष, वेदमजनू।

मजबूत—वि० [अ०] दृढ, पुष्ट। बलवान्, सबल।

मजबूर—वि० [अ०] विवश, लाचार। मजबूरन—क्रि० वि० लाचारी की हालत मे।

मजबूरी—स्त्री० असमर्थता, लाचारी।

मजमा—पुं० [अ०] बहुत से लोगो का जमाव, भीड।

मजमूआ—पुं० [अ०] बहुत सी चीजो का समूह, सग्रह। वि० एकत्र किया हुआ। मजमूई—वि० सामूहिक।

मजमून—पु० [अ०] विषय, जिसपर कुछ कहा या लिखा जाय। लेख।

मजल†—स्त्री० दे० 'मंजिल'।

मजलिस—स्त्री० [अ०] सभा, समाज। महफिल, नाचरग का स्थान।

मजलूम—वि० [अ०] जिसपर जुल्म हो, पीडित।

मजहब—पु० [अ०] धार्मिक सम्प्रदाय, पथ।

मजा—पुं० [फा०] स्वाद, आनद, सुख। दिल्लगी, हँसी। मजेदार = वि० स्वादिष्ट, जायकेदार। अच्छा, बढिया। जिसमे आनद आता हो। मु०~आ जाना = परिहास का साधन प्रस्तुत होना। ~चखाना = किए हुए अपराध का दंड देना।

मजाक—पुं० [अ०] हँसी, ठट्ठा। मजाकन—क्रि० वि० मजाक या हँसी मे।

मजाकिया—वि० मजाक सबंधी। हँसोड, ठठोल। क्रि० वि० दे० 'मजाकन'।

मजारत‡—स्त्री० विनोद की बात, मजाक। ··· न मिले मरजी न मजा न मजारत (जगद्विनोद १६०)।

मजाज—पुं० [अ०] नियमानुसार मिला हुआ अधिकार।

मजाजी—वि० [अ०] नकली। सासारिक, लौकिक।

मजार—पु० [अ०] समाधि, मकबरा। कब्र पु० [हि०] बिलाव, बिल्ला। मजारी—स्त्री० बिल्ली।

मजाल—स्त्री० [अ०] सामर्थ्य, शक्ति। साहस, हिम्मत।

मजिल(पु)†—स्त्री० एक प्रकार की लता, इसकी जड और डठलो से लाल रग निकलता है। मजीठी—पु० मजीठ के रंग का, सुर्ख।

मजीर(पु)—स्त्री० घौद।

मजीरा—पु० बजाने के लिये कांसे की छोटी कटोरियो की जोड़ी, ताल।

मजूर(पु)—पु० मोर। दे० 'मजदूर'। मजूरी†—स्त्री० दे० 'मजदूरी'।

मजेज(पु)†—वि० अहकार।

मज्ज(पु)—स्त्री० दे० 'मज्जा'।

मज्जन—पु० [स०] स्नान, नहान।

मज्जना(पु)—अक० गोता लगाना, नहाना। डूबना।

मज्जा—वि० [स०] नली की हड्डी के भीतर का गूदा जो बहुत कोमल और चिकना होता है।

मझ, मझ(पु)—क्रि० वि० बीच।

मझधार—स्त्री० नदी के मध्य की धारा। किसी काम का मध्य।

मझला—वि० बीच का।

मझाना(पु)†—सक० प्रविष्ट करना, बीच मे धसाना। अक० पैठना। सक० पार करना। जिन ३० कोस कराल भूमि, मझाइकै··· (हिम्मत, ६५)

मझार(पु)†—क्रि० वि० बीच मे।

मझावना(पु)†—अक० दे० 'मझाना'।

मझियाना(पु)†—अक० नाव खेना, मल्लाही करना। बीच से होकर निकलना।

मझियारा(पु)†—वि० बीच का।

मझीला(पु)—वि० दे० 'मझोला'।

मझु(पु)—सर्व० मैं। मेरा।

मझोला—वि० मझला, बीच का। मध्यम आकार का।

मझोली—स्त्री० एक प्रकार की बैलगाडी।
मट†—पु० मटका, मटकी।
मटक—स्त्री० गति, चाल। मटकने को क्रिया या भाव।
मटकना—अक० अग हिलाते हुए चलना, लचककर नखरे से चलना। अगो का इस प्रकार संचालन जिसमे कुछ लचक या नखरा जान पडे। हटना, लौटना। विचलित, होना, हिलना। मटकनि(पु)—स्त्री० दे० 'मटक'। नाचना, नृत्य। नखरा, मटक। मटकाना—सक०[अक०] मटकना, नखरे के साथ अगो का सचालन करना, चमकाना। दूसरे को मटकने मे प्रवृत्त करना।
मटका—पुं० मिट्टी का बडा घडा, माट।
मटकी—स्त्री० मटकने या मटकाने का भाव। छोटा मटका।
मटकीला—वि० मटकनेवाला, नखरे से हिलने डोलने वाला।
मटकौअल—स्त्री० मटकाने की क्रिया या भाव, मटक।
मटमैला—वि० मिट्टी के रग का, खाकी।
मटर—पु० एक प्रसिद्ध मोटा अन्न। इसकी लबी फलियो को छीमी छीबी कहते है, जिनमे गोल दाने रहते हैं।
मटरगस्त—पु० टहलना, सैर सपाटा।
मटिआना—सक० मिट्टी लगाकर मांजना। मिट्टी से ढांकना।
मटियामसान—वि० गया बीता, नष्टप्राय।
मटियामेट—वि० दे० 'मलियामेट'।
मटियाला, मटीला—वि० दे० 'मटमैला'।
मटुक†—पु० दे० 'मुकुट'।
मटुका—पु० दे० 'मटका', मटुकी†(पु)—स्त्री० दे० 'मटकी।
मट्टी—स्त्री० दे० 'मिट्टी'।
मट्ठर†—वि० सुस्त, काहिल।
मट्ठा—पु० मथा हुआ दही जिसमे से नैनू निकाल लिया गया हो, छाछ। वि० मद 'सुह्वै कै इकट्ठै परै जे न मट्ठैं'। (प्रताप० ५५)।
मट्ठी—स्त्री० एक प्रकार का पकवान।
मठ—पु० [सं०] रहने की जगह। वह मकान जिसमे साधु आदि रहते हो। देवालय, मदिर। ⊙धारी=वह साधु या महंत जिसके अधिकार मे कोई मठ हो।
मठरी—स्त्री दे० 'मट्ठी'।
मठा—पु० दे० 'मट्ठा'।
मठाधीश—पु० [स०] दे० 'मठधारी'।
मठिया—स्त्री० छोटी कुटी या मठ। फूल (धातु) की बनी हुई चूडियाँ।
मठी—स्त्री० छोटा मठ। मठधारी।
मठोठा†—पु० कुएँ की जगत।
मठोर—स्त्री० दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी।
मड़ई†—स्त्री० छोटा मडप। कुटिया, पर्णशाला।
मड़क—स्त्री० किसी बात का भीतरी रहस्य।
मड़वा—पु० दे० 'मडप'।
मड़हट(पु)—पु० दे० 'मरघट'।
मड़ाड†—पु० छोटा कच्चा तालाब या गड्ढा।
मड़ुआ—पु० बाजरे की जाति का एक प्रकार का कदन्न।
मड़ैया—स्त्री० दे० 'मडई'
मढ़—वि० अडकर बैठनेवाला। पुं० देवालय, मदिर। घर, झोपडी। ⊙ना=सक० चारो ओर लपेटना या चिपकाना। बाजे के मुंह पर चमडा लगाना। पुस्तको आदि पर जिल्द आदि चढाना। मदिर, मूर्ति, सीग, चोच आदि पर कोई धातु जडना। किसी वस्तु का मुंह या छिद्र बद करना। छिपाना, समाना। किसी के गले लगना, थोपना। †अक० आरंभ होना, मचना। ⊙वाना=सक० [मढना का प्रे०] मढने का काम दूसरे से कराना। मढाई—स्त्री० मढने का भाव, काम या मजदूरी। मढ़ाना—सक०[अक० 'मढना'] 'मढवाना'।
मढ़ी—स्त्री० छोटा मठ, कुटी, झोपड़ी। छोटा घर।

मणि—स्त्री० [सं०] बहुमूल्य रत्न, जवाहिर। सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति। ⊙गुण=पु० एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण और अत्य सगण होता है, शशि-कला, शरभ, स्रक, चद्रावती। गुणनिकर पु० मणिगुण नामक छद का वह भेद जिसमे आठवें वर्ण पर यति हो। ⊙धर =पु० सर्प, साँप। ⊙पुर=एक चक्र जो नाभि के पास माना जाता है(तत्र)। ⊙मध्या= पु० नवाक्षरी वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से भगण, मगण और सगण हो। कलाई, गट्टा। ⊙माला =स्त्री० १२ अक्षरो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तगण, यगण, दे तगण, और यगण, होते हैं। मणियो की माला।

मणी—पु० [सं०] सर्प। स्त्री० [हिं०]] दे० 'मणि'।

मतंग मतंगजम—पु० [सं०] हाथी। वादल। एक ऋषि जो शवरी के गुरु थे।

मतंगी—पु० [सं०] हाथी का सवार।

मत= वि० दे० 'मत्त'। क्रि० वि० न, नही। (निषेध) पु० [सं०] निश्चित सिद्धात, राय। धर्म, पथ, मजहव। भाव, आशय। चुनावो में प्रकट की जानेवाली इच्छा या राय (राजनीति)। ⊙दान=पु० राज-नीतिक या अन्य चुनावो मे किसी पद के उम्मीदवारो मे से किसी को विधिपूर्वक चुनने की क्रिया। ⊙ना(पु)=अक० समति निश्चित करना। मत्त होना। ⊙पत्र=पु०वह कागज का टुकडा जिसके द्वारा मत प्रकट किया जाय। ⊙भेद=पु० दो व्यक्तियो या पक्षो के मत न मिलना। मताधिकार—पुं० मत या वोट देने का अधिकार। मतानुयायी—पुं० किसी के मत को माननेवाला। मतावलवी—पुं० किसी एक मत या संप्रदाय का अवलवन करनेवाला।

मतरिया—स्त्री० दे०'माता'। (पु)वि० मत्री, सलाहकार। मत्र से प्रभावित, मत्रित।

मतलब—पुं० [अ०] तात्पर्य, आशय। अर्थ, मानी। अपना हित, स्वार्थ। उद्देश्य। सवध, वास्ता। मतलवी—वि० [अ० मतलव] स्वार्थी।

मतली—स्त्री० दे० 'मिचली'।

मतवार, मतवारा(पु)—वि० दे०'मतवाला'।

मतवाला—वि० पु० नशे आदि के कारण मस्त। पागल। पु० वह भारी पत्थर जो किले या पहाड पर से नीचे के शत्रुओ को मारने के लिये लुढकाया जाता है। एक प्रकार का गावदुमा खिलौना जिसके नीचे का भाग मिट्टी आदि भरे रहने से भारी होता है और जमीन पर सदा खडा ही रहता।

मता†—पु० दे० 'मत'। स्त्री० दे० 'मति'।

मति—अव्य०समान, सदृश। (पु)† क्रि०वि० दे० 'मत'। स्त्री० [सं०] समझ, अक्ल। राय, सलाह। ⊙मत=वि० [हिं०] बुद्धिमान्, विचारशील। ⊙मान=वि० बुद्धिमान्।

मतिमाह(पु)—वि० दे० 'मतिमत'।

मती—स्त्री० दे० 'मति'। क्रि० वि० दे० 'मति'।

मतीरा—पु० तरवूज, कलिदा।

मतीस—पु० एक प्रकार का वाजा।

मतेई—(पु)†—स्त्री० विमाता।

मतौ—पु० परामर्श।

मत्कुण—पु० [सं०] खटमल।

मत्त—(पु)†—स्त्री० मात्रा। वि० [सं०] मस्त। मतवाला। पागल। प्रसन्न। ⊙काशिनी=स्त्री० अच्छी स्त्री। ⊙गयंद=पु० सवैया छद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे सात भगण और अत मे गुरु होते हैं, मालती, इदव। ⊙मयूर=पु० तेरह अक्षरो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम मगण तगण, यगण मगण और अत मे एक गुरु वर्ण होता है, माया। ⊙मातंगलीलाकर =पु० एक दडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नौ या अधिक रगण हो। ⊙समक =पु० चौपाई छंद का एक भेद जिसकी नवी मात्रा लघु होती है।

मत्ता—स्त्री० [सं०] दस अक्षरों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, भगण, सगण और अंत्य में गुरु होता है। मदिरा, शराब। प्रत्य० भाव-वाचक प्रत्यय- पन (जैसे बुद्धिमत्ता, नीतिमत्ता)। ⑤†स्त्री० [हिं०] दे० 'मात्रा'।

मत्ताक्रीडा—स्त्री० [सं०] २३ अक्षरों का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण, एक तगण, चार नगण और अंत में क्रम से लघु गुरु होता है।

मत्था—पुं० दे० 'माथा'।

मत्सर—पुं० [सं०] डाह, हसद। गुस्सा।

मत्सरी—पुं० [सं०] मत्सरपूर्ण व्यक्ति।

मत्स्य—पुं० मछली। प्राचीन विराट् देश का नाम। छप्पय छंद के २३ वें भेद का नाम। विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार। ⊙पुराण=पुं० १८ पुराणों में से एक।

मत्स्यावतार—पुं० [सं०] विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार।

मथन—पुं० [सं०] मथने का भाव या क्रिया बिलोना। एक अस्त्र। वि० मारनेवाला, नाशक।

मथना—सक० तरल पदार्थ को लकड़ी आदि से हिलाना या चलाना, बिलौना। चलाकर मिलना। अस्ता व्यस्त करना, गड्डवड्ड करना। नष्ट करना। घूम घूमकर पता लगाना। किसी कार्य को बहुत अधिक बार करना। पुं० मथानी।

मथनियाँ⑤†—स्त्री० दे० 'मथनी'।

मथनी—स्त्री० वह मटका जिसमें दही मथा जाता है। दे० 'मथानी'। मथने की क्रिया।

मथवाह⑤—पुं० महावत।

मथानी—स्त्री० काठ का एक प्रकार का दंड जिससे मथकर दही से मक्खन निकाला जाता है। मु०~**पड़ना या बहना**=खलबली मचना।

मथाव—पुं० मथने की क्रिया या भाव।

मथीत—वि० [सं०] मथा हुआ।

मथी—स्त्री० दे० 'मथानी'।

मथुरा—पुं० [सं०] पुराणानुसार सात मोक्ष देनेवाली पुरियों में से एक पुरियों में से एक पुरी जो व्रज में यमुना के किनारे पर है। **मथुरिया**—वि० मथुरा से संबंध रखनेवाला, मथुरा का।

मथूल—⑤—पुं० दे० 'मस्तूल'।

मथोरा—पुं० एक प्रकार का भद्दा रंदा।

मथ्थ†—पुं० दे० 'माथा'।

मदंध⑤—वि० दे० 'मदांध'।

मद—स्त्री० [अ०] विभाग, सरिश्ता। पुं० [सं०] हर्ष, आनंद। वह गंधयुक्त द्रव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों से बहता है, दान। वीर्य। कस्तूरी मद्य। मतवालापन, नशा। उन्मत्तता, पागलपन। गर्व, अहंकार। वि० मतवाला, मस्त। ⊙कल=वि० मत्त, मतवाला। ⊙जल=पुं० हाथी का मद। ⊙मत्त=वि० मस्त, मतवाला। ⊙लेखा =स्त्री० एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, सगण और अंत्य गुरु होता है।

मदक—स्त्री० एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफीम के सत से बनता है। इसे चिलम पर रखकर पीते हैं। ⊙ची= वि० जो मदक पीता हो, मदक पीनेवाला।

मदगल—वि० मत्त, मस्त। पुं० दे० 'मगदल'

मदद—स्त्री० [अ०] सहायता, सहारा। मजदूर और राज आदि जो किसी काम के ऊपर लगाए जाते हैं। ⊙गार=वि० [फा०] मदद करनेवाला।

मदन—पुं० [सं०] कामदेव। कामक्रीडा। कामशास्त्र में वर्णित आलिंगन का एक ढंग। मैनफल। भ्रमर। मैना पक्षी। प्रेम। रूपमाला छंद जिसके प्रत्येक चरण में कुल २४ मात्राएँ होती हैं। इसमें २४ वीं मात्रा पर यति और अंत में गुरु लघु का क्रम होता है। ५६ का एक भेद। ⊙कदन=पुं० शिव। ⊙गोपाल=पुं० श्री कृष्णचंद्र का एक नाम ⊙फल= पुं० मैनफल। ⊙मनोरमा=स्त्री० केशव के अनुसार सवैया का एक भेद, दुर्मिल। ⊙मनोहर=पुं० दंडक का एक भेद, मनोहर। ⊙मल्लिका=स्त्री० मल्लिका

वृत्त का दक नाम जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण, जगण और अत मे गुरु लघु हो, समानी। ⊙मस्त = पु० [हिं०] चपे की जाति का एक प्रकार का फूल। ⊙महोत्सव = पु० प्राचीन काल का एक उत्सव जो चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी पर्यंत होता था। ⊙मोदक = पु० सवैया छद का एक भेद, सुदरी (केशव)। ⊙मोहन = पुं० कृष्णचद्र। ⊙ललिता = स्त्री० एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से मगण, भगण, नगण, मगण, नगण और अत्य गुरु होता है। ⊙हरा = पु० ४० मात्राओ का एक छद जिसमे आदि की दो मात्राएँ लघु और अत की एक मात्रा गुरु होती है। मदनोत्सव—पु० मदनमहोत्सव।

मदर(पु)—पुं० मँडराना, आक्रमण।

मदरसा—पु० [अ०] पाठशाला।

मदांध—वि० [सं०] मदमत्त, मदोन्मत्त।

मदाखिलत—स्त्री० [अ०] दखल देना। दखल जमाना।

मदानि(पु)—वि० मगलकारक।

मदार—पु० आक।

मदारी—स्त्री० [पुं०] वदर, भालू नाचने वाले और लाग के तमाशा दिखानेवाले व्यक्ति, मदारिया। वाजीगर।

मदिया—स्त्री० दे० 'मादा'

मदिर—स्त्री० [सं०] मत्तरा उत्पन्नकरनेवाला। नशीला।

मदिरा—स्त्री० [सं०] शराव, दारू। २२ अक्षरो का एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे सात भगणऔर अत्य गुरु होता है, कालिनी, उमा, दिवा। मदिरास—वि० मदिरा की मत्तता से भरा हुआ। मस्त, मतवाला। मदिरालय—पु० शराव की दूकान, कलवरिया। मदीरालस—पु० मदिरा से उत्पन्न होनेवाल, आलस्य, खुमारी।

मदीय—वि० [सं०] मेरा।

मदीला—वि० नशीला।

मदीयून—वि० [अ०] कर्जदार, ऋणि।

मदुकल—पु० दोहे का एक भेद।

मदोद्धत, मदोन्मत्त—वि० [सं०] मद मे पागल, मदाध।

मदोवै(पु)—स्त्री० दे० 'मदोदरी'।

मद्दत(पु)—स्त्री० सहायता। प्रशसा, तारीफ।

मद्धिम(पु)†—वि० मध्यम, अपेक्षाकृत कम अच्छा। मदा।

मद्धे—अव्य० वीच मे, मे। विषय मे, सबध मे, वावत।

मद्य—पुं० [स०] मदिरा, शराव। ⊙प = वि० मद पीनेपाला, शरावी।

मद्र—पुं० [स०] एक प्राचीन देश। उत्तर कुरु। पुराणानुसार रावी और झेलम नदियो के बीच का देश।

मध, मधि(पु)—पुं० दे० 'मध्य'। अव्य मे।

मधिम(पु)—वि० दे० 'मध्यम'।

मधु—वि० [सं०] मीठा। स्वादिष्ट। पुं० शहद। मदिरा। फूल का रस, मकरद। वसत ऋतु। चैत्र मास। पानी, जल। एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था। दो लघु अक्षरो का एक छद। शिव, महादेव। मुलेठी। अमृत। ⊙कठ = पुं० कोयल। ⊙कर = पुं० भौरा, भ्रमर। ⊙कोष, ⊙चक्र = पु० शहद की मक्खी का छत्ता। ⊙जा = स्त्री० पृथ्वी। ⊙प = पु० भौरा। उद्धव। ⊙पति = पु० श्रीकृष्ण। ⊙पर्क = पु० दही, घी, जल, शहद और चीनी का समूह जो देवताओ को चढ़ाया जाता है। ⊙पुरी = स्त्री० मथुरा नगरी। ⊙प्रमेह = पु० दे० 'मधुमेह'। ⊙वन = पु० व्रज का एक वन। ⊙भार = प० एक मात्रिक छद। ⊙मक्खी = स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की प्रसिद्ध मक्खी जो फूलो का रस चूसकर शहद एकत्र करती है, मधुमाखी। ⊙मक्षिका = स्त्री० दो नगण और एक गुरु का एक वर्णवृत्त। मती भूमिका = स्त्री० योग की एक अवस्था, तन्मयता। ⊙माधवी = स्त्री० वासती या लता। एक प्रकार की रागिनी। ⊙मालती = स्त्री०

मालती लता। ⊙मेह=पु० प्रमेह का बढा हुआ रूप जिसमे पेशाब बहुत अधिक और गाडा आता है। ⊙यदि =स्त्री० मुलेठी। ⊙राज=पु० भौरा। ⊙रिपु=पु० दे० 'मधुसूदन'। ⊙लिह =पु० [हिं०] भ्रमर, भौंरा। ⊙वन= पु० मथुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन। किष्किंधा के पास का सुग्रीव का वन। ⊙वामन=पु० भौरा। ⊙शर्करा=स्त्री० शहद से बनाई हुई चीनी। ⊙सख=पुं० कामदेव। ⊙सूदन=पु० श्रीकृष्ण।

मधुक—पु० [सं०] महुआ।

मधुकरी—स्त्री० वह भिक्षा जिसमे केवल पका हुआ अन्न लिया जाता हो, मधूकरी।

मधुर—वि० [सं०] जिसका स्वाद मधु के समान हो, मीठा। जो सुनने मे भला जान पडे। सुदर, मनोरजक। जो क्लेशप्रद न हो, हलका। ⊙ई(पु) =स्त्री० [हिं०] दे० 'मधुरता'। ⊙ता =मधुर होने का भाव। मिठास। सौंदर्य, सुदरता। सुकुमारता, कोमलता।

मधुरा—स्त्री० [सं०] मद्रास प्रात का एक प्राचीन नगर, मदूरा। मथुरा नगर। **मधुराना**(पु)†—अक० मीठा होना। सुदर होना। **मधुराई**(पु)—स्त्री० दे० 'मधुरता'।

मधुरान्न—पु० [सं०] मिठाई।

मधुरिमा—स्त्री० [सं०] मिठास, मीठापन। सुदरता, सौंदर्य।

मधुरी(पु)—स्त्री० सौंदर्य, मिठास।

मधूक—पु० [सं०] महुआ।

मधूकरी—स्त्री० दे० 'मधुकरी'।

मध्य—पुं० किसी पदार्थ के बीच का भाग, दरमियानी हिस्सा। कमर, कटि। सुश्रुत के अनुसार १६ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था। अतर, भेद। ⊙गत=वि० बीच का। ⊙तापिनी=स्त्री० एक उपनिषद्। ⊙देश=पु० भारतवर्ष का वह प्रदेश जो हिमालय के दक्षिण, विंध्य पर्वत के उत्तर, कुरुक्षेत्र के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम मे है। ⊙युग= पु० प्राचीन युग और आधुनिक युग के बीच का समय। योरोप के इतिहास मे ईसवी छठी शताब्दी से १५वी शताब्दी तक का समय। ⊙युगीन=वि० मध्ययुग का। ⊙वर्ती=वि० बीच का। ⊙स्थ=पु० बीच मे पडकर विवाद मिटानेवाला, तटस्थ। ⊙स्थता=स्त्री० मध्यस्थ होने का भाव या धर्म।

मध्यम—वि० [सं०] न बहुत बडा और न बहुत छोटा, बीच का। पु० सगीत के सात स्वरो मे से चौथा स्वर। वह उपपति जो नायिका के क्रोध करने पर अनुराग न प्रगट करे। ⊙पदलोपी= पु० वह समास जिसमे पहले पद से दूसरे पद का संबध बतलानेवाला शब्द लुप्त रहता है, लुप्तपद समास (व्या०)। ⊙पुरुष=पु० वह पुरुष जिससे बात की जाय (व्या०)।

मध्यमा—स्त्री० [सं०] बीच की उँगली। वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार उसका आदर मान या अपमान करे।

मध्या—स्त्री० [सं०] काव्य मे वह नायिका जिसमे लज्जा और काम समान हो। तीन अक्षरो का एक वर्णवृत्त।

मध्याह्न—पु० दे० 'मध्याह्न'।

मध्याह्न—पुं० [सं०] ठीक दोपहर।

मध्ये—क्रि० वि० दे० 'मद्धे'।

मनःपूत—वि० [सं०] मनचाहा। मन को प्रसन्न करनेवाला।

मनःशिल—पुं० [सं०] मैनसिल।

मन(पु)—पुं० मणि, बहुमूल्य पत्थर। ४० सेर की एक तौल। प्राणियो मे वह शक्ति जिससे उनमे वेदना, सकल्प, इच्छा और विचार आदि होते हैं, अत करण। अत करण की चार वृत्तियो मे से एक जिससे सकल्प विकल्प होता है। इच्छा, इरादा। ⊙कामना=स्त्री० इच्छा। ⊙गढंत=वि० जिसकी वास्तविक सत्ता न हो, केवल कल्पना कर ली गई हो। स्त्री० कोरी कल्पना ⊙चला =वि० धीर, निडर। साहसी।

रसिक। ⊙चाहा = वि० इच्छित। ⊙चीता = वि० मनचाहा, मन में सोचा हुआ। ⊙जात = पु० कामदेव। ⊙वांछित = वि० दे० 'मनोवांछित'। ⊙भाया = वि० जो मन को भावे। (पु)भावता = वि० जो भला लगता हो। प्यारा। ⊙भावन = वि० मन को अच्छा लगनेवाला। ⊙मति = वि० अपने मन का काम करनेवाला, स्वेच्छाचारी ⊙मन = क्रि० वि० मन ही मन। ⊙मानता = वि० दे० 'मनमाना'। ⊙माना = वि० जो मन को अच्छा लगे। मन के अनुकूल, पसद। यथेच्छ। ⊙मुखी = वि० मनमाना काम करनेवाला। ⊙मुटाव = पु० मन में भेद पडना, वैमनस्य होना। ⊙मोदक = पु० अपनी प्रसन्नता के लिये मन मे बनाई हुई असभव बात। मन का लड्डू। ⊙मोहन = वि० मन को मोहनेवाला, चित्ताकर्षक। प्रिय। पु० श्रीकृष्ण। एक मात्रिक छद। ⊙मौजी = वि० मन की मौज के अनुसार काम करनेवाला। ⊙रज्ञ(पु) = वि० दे० 'मनोरजक'। ⊙रजन = वि०, पु० दे० 'मनोरजन'। ⊙रोचन = वि० सुदर। ⊙रौन(पु) = पु० प्रियतम। ⊙लाडू(पु) = पु० दे० 'मनमोदक'। ⊙हस = पु० १५ अक्षरो का एक वर्णिक छद, मानस हस। ⊙हर = वि० दे० 'मनोहर'। पु० घनाक्षरी छद का एक नाम। ⊙हरण = पु० मन हरने की क्रिया या भाव। पद्रह अक्षरो का एक वर्णिक छद, नलिनी, भ्रमरावली। वि० मनोहर, सुदर। ⊙हार,--⊙हारि = वि० दे० 'मनोहारी'। मु०--किसी मन टटोलना = किसी के मन की थाह लेना। किसी का मन बूझना = किसी के मन की थाह लेना। किसी का मन रखना = किसी की इच्छा पूर्ण करना। किसी से मन अटकना या उलझना = प्रीति होना। किसी पर मन धरना = ध्यान देना। ~के लड्डू खाना = व्यर्थ की आशा पर प्रसन्न होना। ~चलना = इच्छा होना। ~टूटना = साहस छूटना। ~डोलना = मन का चचल होना। लालच उत्पन्न होना। तोडना या हारना = साहस छोडना। ~देना = जी लगाना। ध्यान देना। ~फेरना = मन को किसी ओर से हटाना। ~बढ़ना = साहस बढना, उत्साह~बढना। ~बढाना = साहस दिलाना, उत्साह बढाना ~बहलाना = खिन्न या दुखी चित्त को किसी मे लगाकर आनदित करना। ~भरना = निश्चय या विश्वास होना।~भर जाना = अघा जाना, तृप्ति होना। अधिक प्रवृत्ति न रह जाना। ~भाना = भला लगना, रुचना। ~मानना = सतोष होना। निश्चय होना, प्रतीति होना। अच्छा लगना, पसद आना। स्नेह होना। ⊙माना = अपने अपने मन के अनुसार। ~मारना = उदास होना, इच्छा को दबाना। ~मिलना = दो मनुष्यों की प्रकृतियों का अनुकूल अथवा एक समान होना। ~मे बसना = पसद आना, रुचना। ~मे रखना = प्रकट न करना। स्मरण रखना। ~मे लाना = विचार करना। ~मैला करना = अप्रसन्न या असतुष्ट होना। ~मोटा होना = विराग होना, उदासीन होना। ~मोड़ना प्रवृत्ति या विचार को दूसरी ओर लगाना। ~लगना = जी लगना चित्तविनोद होना। ~लाना = (पु) मन लगाना। प्रेम करना, आसक्त होना। ~से उतरना मन = मे आदरभाव न रह जाना। याद न रहना, विस्मृत होना। ~हरा होना = चित्त प्रसन्न रहना। ही मन = हृदय मे, चुपचाप।

मनई‡--पु० मनुष्य, आदमी

मनकना--अक० हिलना, डोलना।

मनकरा--(पु) वि० चमकदार।

मनका--पु० पत्थर, लकडी आदि का वेधा हुआ दाना जिसे पिरोकर माला बनाई जाती है। गुरिया गरदन के पीछे की हड्डी जो रीढ़ के बिलकुल ऊपर होती

है। मु०~ढलना या ढलकना = मरने के समय गरदन टेढी हो जाना।

मनकूला—वि० स्त्री० [अ०] स्थिर या स्थावर का उलटा, चर। जायदाद⊙ = स्त्री० चर संपत्ति। गैर⊙ = स्थिर, स्थायी।

मनचीतना—सक० मन को अच्छा लगना।

मनन—पु० [सं०] चिंतन, सोचना। भली-भाँति अध्ययन करना। ⊙शील = वि० विचारशील, विचारवान्।

मननाना—अक० गुंजारना, गूंजना।

मनमत (पु)†—वि० दे० 'मैमत'।

मनमथ—पु० 'मन्मथ'।

मनवाना—सक० [मानना का प्रे०] किसी को मनाने मे प्रवृत्त करना।

मनशा—स्त्री० [अ०] इच्छा, इरादा। मतलब।

मनसना(पु)—सक० इच्छा करना, इरादा करना। दृढ निश्चय या विचार करना। हाथ मे जल लेकर सकल्प का मत्र पढकर कोई चीज दान करना।

मनसब—पु० [अ०] पद, ओहदा। कर्म, काम अधिकार। ⊙दार = पुं० [फा०] ओहदेदार।

मनसा—स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम। वि० मन से उत्पन्न। मन का। क्रि० वि० मन मे से, मन के द्वारा। स्त्री० [हिं] कामना, इच्छा। सकल्प, इरादा। अभिलाषा। मन। बुद्धि। अभिप्राय।

मनसाना—अक० उमग मे आना, तरग मे आना। सक० [मनसना का प्रे०] मनसने का काम दूसरे से कराना।

मनसायन†—वि० वह स्थान जहाँ मनबहलाव के लिये कुछ लोग हो। मनोरम स्थान।

मनसिज—पु० [सं०] कामदेव।

मनसूख—वि० [अ०] जो अप्रामाणिक ठहरा दिया गया हो, अतिवर्तित। त्यागा हुआ।

मनसूबा—पु० [अ०] युक्ति, ढग। इरादा, विचार। मु० बाँधना = युक्ति सोचना।

मनस्क—पुं० [सं०] मन का अल्पार्थक रूप। इसका प्रयोग समस्त पदो मे होता है। (जैसे, अन्यमनस्क)।

मनस्ताप—पु० [सं०] आंतरिक दुख। पश्चात्ताप।

मनस्विता—स्त्री० [सं०] बुद्धिमत्ता।

मनस्वी—वि० [सं०] बुद्धिमान्। स्वेच्छाचारी।

मनहुँ(पु)—अव्य० जैसे, यथा।

मनहूस—वि० [अ०] अशुभ, बुरा। देखने मे बेरौनक।

मना—वि० [सं०] निषिद्ध, वर्जित। वारण किया हुआ। अनुचित।

मनाक, मनाग—वि० थोडा।

मनादी—स्त्री० दे० 'मुनादी'।

मनावन†—पुं० रूठे हुए को प्रसन्न करने का काम या भाव।

मनाही—स्त्री० न करने की आज्ञा, निषेध।

मनिधर(पु)—पुं० दे० 'मणिधर'।

मनाना—सक० [मानना का प्रे०] स्वीकार कराना। राजी करना। देवता आदि से किसी काम के लिये प्रार्थना करना।

मनिया—स्त्री० दाना जो माला मे पिरोया हो। कठी, माला।

मनियार(पु)†—वि० उज्वल, चमकीला। दर्शनीय, शोभायुक्त। पु० दे० 'मनिहार'।

मनियारा—वि० सुहावना, सुदर।

मनिहार—पु० चूडी बनानेवाला, चुडिहारा।

मनी(पु)—स्त्री० अहकार। दे० 'मणि'। वीर्य।

मनीषा—स्त्री० [सं०] बुद्धि।

मनीषी—वि० [सं०] पडित, ज्ञानी। बुद्धिमान्, मेधावी।

मनु(पु)—अव्य० मानो, जैसे। पु० [सं०] ब्रह्मा के १४ पुत्र जो मनुष्यो के मूल पुरुष माने जाते हैं। विष्णु। अत करण, मन। वैवस्वत मनु। १४ की सख्या। मनन। ⊙ज = पुं० मनुष्य, आदमी।

मनुआँ†(पु)—पु० मन। मनुष्य। स्त्री० एक प्रकार की कपास, नरमा।

मनुजाद—पुं० [सं०] मनुष्य को खानेवाला, राक्षस।

मनुजोचित—वि० [सं०] जो मनुष्य के लिये उचित हो, मनुष्य के उपयुक्त।

मनुष(पु)—पुं० मनुष्य, आदमी। पति, खाविंद।

मनुष्य—पुं० [सं०] एक स्तनपायी प्राणी जो अपने बुद्धिबल की अधिकता के कारण सब प्राणियों मे श्रेष्ठ है, आदमी। ⊙ता = स्त्री० मनुष्य का भाव, आदमीपन। दया-भाव, शील। शिष्टता, तमीज। ⊙त्व = पु० मनुष्यता। ⊙लोक = पु० मर्त्यलोक।

मनुसाई(पु)†—स्त्री० पुरुषार्थ, बहादुरी। आदमीयत।

मनुस्मृति—स्त्री० [सं०] धर्मशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जो मनुप्रणीत है, मानव धर्म-शास्त्र।

मनुहार—स्त्री० वह विनती जो किसी का मान छुड़ाने या उसे प्रसन्न करने के लिये की जाती है, खुशामद। विनय, प्रार्थना। सत्कार, आदर। शांति, तृप्ति।

मनुहारना(पु)†—सक० मनाना, खुशामद करना। विनय करना। सत्कार करना।

मनों†—अव्य० मानो।

मनो—पु० [सं० 'मनस्' के लिये समास मे प्रयुक्त] दे० 'मन'। ⊙कामना = स्त्री० इच्छा, अभिलाषा। ⊙गत = वि० जो मन मे हो, दिली। पु० कामदेव, मदन। ⊙गति = स्त्री० मन की गति, चित्त-वृत्ति। इच्छा। ⊙ज = पु० कामदेव, मदन। ⊙जव = वि० अत्यंत वेगवान्। पु० विष्णु। वायु का एक पुत्र। ⊙ज्ञ = वि० मनोहर, सुंदर। ⊙देवता = पु० विवेक। ⊙निग्रह = पु० मन का निग्रह, मन को वश मे रखना। ⊙नियोग = किसी काम में मन लगाना। ⊙नीत = वि० जो मन के अनुकूल हो, पसंद। चुना हुआ। ⊙भाव = पु० मन मे उत्पन्न होनेवाला भाव। ⊙भूत = पु० चंद्रमा। ⊙मय = वि० मन से युक्त या पूर्ण। मानसिक। ⊙मयकोष = पु० पाँच कोशों में से तीसरा। मन, अहंकार और कर्मेंद्रियाँ इसके अंतर्भूत मानी जाती है (वेदांत)। ⊙मालिन्य = पुं० मनमुटाव, रंजिश। ⊙योग = पुं० मन को एकाग्र करके किसी एक पदार्थ पर लगाना। ⊙रंजक = वि० चित्त को प्रसन्न करनेवाला। ⊙रंजन = पु० मन को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव, दिल बहलाव। ⊙रथ = पु० अभिलाषा। ⊙रम = वि० मनोहर, सुंदर। २४ मात्राओं का एक छंद जिसके आदि मे दीर्घ और अंत मे दीर्घ ह्रस्व, ह्रस्व या ह्रस्व दीर्घ, दीर्घ होता है। एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार सगण और दो लघु रहते हैं। पु० सखी छंद का एक भेद। इसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राएँ होती हैं। इसके अंत में मगण या यगण रहता है। ⊙रमा = गोरोचन। सात सरस्वतियों मे से चौथी का नाम। एक प्रकार का छंद। चंद्रशेखर के अनुसार आर्या के ५० भेदों मे से एक वर्णिक वृत्त। दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, रगण, जगण और अंत मे गुरु होता है। केशव के अनुसार १४ अक्षरों का एक वर्णात वृत्त जिसके प्रत्येक पाद मे चार सगण और अंत मे दो लघु होते हैं। केशव के मतानुसार दोधक छंद का एक नाम जिसके प्रत्येक चरण मे चार भगण और दो गुरु होते हैं। सूदन के अनुसार दस अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन तगण और एक गुरु होता है। ⊙राज्य = पु० मन की कल्पना। ⊙वांछा = स्त्री० इच्छा, कामना। ⊙वांछित = वि० इच्छित, मनमाँगा। ⊙विकार = पुं० मन की वह अवस्था जिसमे कोई भाव, विचार या विकार उत्पन्न होता है (जैसे, क्रोध, दया)। ⊙विज्ञान = पुं० वह शास्त्र जिसमे चित्त की वृत्तियों का विवेचन होता है। ⊙विश्लेषण = पुं० इस बात का विश्लेषण या जाँच कि मनुष्य का मन किस समय किस प्रकार कार्य करता है। ⊙वृत्ति = स्त्री० मनोविकार। ⊙वेग = पुं० मनोविकार। ⊙वैज्ञानिक = वि० मनोविज्ञान संबंधी। ⊙व्यापार = पुं० विचार। ⊙हर = वि० मन को

आकर्षित करनेवाला। सुदर। पु० एक मात्रिक छद जिसके पहले तीन चरण १३, १३, के और अंतिम २८ मात्राओ का होता है, इस प्रकार कुल ६७ मात्राएँ होती हैं। कही कही १३, १५ मात्राओ के पाँच पद भी होते हैं। इसमे पहले पद का तुकात दूसरे से और तीसरे का चौथे से मेल खाता है। ⊙हारी = वि० दे० 'मनोहर'।

मनोभिराम—वि० [सं०] सुदर, मनोहर।

मनोरा—पु० दीवार पर गोवर से वनाए हुए चित्र जो दीवाली के पीछे वनाकर पूजे जाते हे, भिझिया।

मनोसर(पु)—पु० मनोविकार।

मनौती(पु)†—स्त्री० दे० 'मन्नत'।

मन्नत—स्त्री० देवता की पूजा करने की वह प्रतिज्ञा जो किसी कामनाविशेष की पूर्ति के लिये की जाती है, मनौती। मु०~ उतारना या चढाना = पूजा की प्रतिज्ञा पूरी करना। ~मानना = यह प्रतिज्ञा करना की अमुक कार्य के हो जाने पर अमुक पूजा की जायगी।

मन्वंतर—पु० [सं०] ७१ चतुर्युगो का काल, ब्रह्मा के एक दिन का १४वाँ भाग।

मफरूर—वि० भागा हुआ।

मम—सर्व [सं०] मेरा या मेरी। ⊙ता = स्त्री० 'यह मेरा है' इस प्रकार का भाव, ममत्व। स्नेह, प्रेम। वह स्नेह जो माता का पुत्र पर होता है। मोह, लोभ। ⊙त्व = पु० दे० 'ममता'

ममत—पु० दे० 'ममत्व'

ममरखी(पु)—स्त्री० वधाई।

ममाखी—स्त्री० दे० 'मधुमक्खी'

ममास(पु)—पुं० दे० 'मवास'।

ममिया—वि० संवध मे मामा के स्थान का (जैसे, ममिया ससुर)।

ममीरा—पु० एक पौधे की जड जो आँख के रोगो की अपूर्व ओषधि है।

ममोल—पु० खजन।

मयंक—पु० चद्रमा।

मयद—पु० सिंह, शेर।

मय—पु० [सं०] एक देश का नाम। पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दानव जो वडा शिल्पी था। अमेरिका देश के मेक्सिको नामक देश के प्राचीन निवासी। प्रत्य० एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार और प्राचुर्य के अर्थ मे शब्दो के साथ लगाया जाता है (जैसे, आनदमय)। स्त्री० अव्य० दे० 'मैं'।

मयगल—पु० मत्त हाथी।

मयन—पुं० कामदेव।

मयमंत, मयमत्त—वि० मस्त, मदमत्त।

मयसुता—स्त्री० दे० 'मदोदरी'।

मयस्सर—वि० [अ०] मिलता या मिला हुआ, सुलभ।

मया—(पु)—स्त्री० दे० 'माया'।

मयार—वि० दयालु, कृपालु।

मयारी—स्त्री० वह डडा या धरन जिसपर हिंडोले की रस्सी लटकती है।

मयारू(पु)—वि० दयालु।

मयूख—पुं० [सं०] किरण, रश्मि। दीप्ति ज्वाला। शहद।

मयूखपी—वि० किरणो को पीनेवाला।

मयूर—पुं० [सं०] मोर। ⊙गति = स्त्री० [सं०] २४ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से ५ यगण के वाद मगण, यगण और भगण होता है। ⊙सारिणी = स्त्री० १० वर्णों एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण, जगण, रगण, और अंत्य गुरु होता है।

मरद(पु)—पु० मकरद।

मरक—स्त्री० दवाकर संकेत करना, संकेत। आकर्षण, खिंचाव। दे० 'मडकना'

मरकना—अक० दवाव के नीचे पडकर टूटना। दे० 'मुडकना'

मरकज—वि० [अ०] केंद्र।

मरकट—पु० दे० 'मर्कट'।

मरकत—पु० [सं०] पन्ना।

मरकाना—सक० [अक० करकना] चूर करना, तोडना। दे० 'मुडकाना'।

मरगज—वि० मसला हुआ, मला दला।

मरगजा(पु)†—वि० मसका हुआ, गींजा हुआ।

मरघट—पुं० वह घाट या स्थान जहाँ मुर्दे फूंके जाते है, श्मशान।

मरज—पुं० रोग, बीमारी। खराब आदत, कुटेव।

मरजाद, मरजादा(पु)—स्त्री० सीमा, हद। प्रतिष्ठा, महत्व। रीति, नियम।

मरजिया—वि० मरकर जीनेवाला, जो मरने से बचा हो, जो करने के समीप हो, मरणासन्न। जो प्राण देने पर उतारू हो। अधमरा। पुं० समुद्र मे डूबकर उसके भीतर से मोती आदि निकालनेवाला।

मरजी—स्त्री० [अ०] इच्छा, कामना। प्रसन्नता। आज्ञा, स्वीकृति।

मरजाया—वि० पु० दे० 'मरजिया'।

मरजीवा—पुं० ' 'मरजिया'।

मरण—पु० [स०] मृत्यु, मौत।

मरत(पु)—पुं० मृत्यु।

मरतबा—पुं० [अ०] पद, पदवी। बार, दफा।

मरद(पु)—पुं० दे० 'मर्द'।

मरदई‡—स्त्री० मनुष्यत्व। साहस। वीरता।

मरदन(पु)—पु० दे० 'मर्दन'।

मरदना(पु)—सक० ममलना, मलना। ध्वस करना। मांडना, गूंथना।

मरदनिया‡—पुं० शरीर मे तेल मलनेवाला सेवक।

मरदानगी—स्त्री० [फा०] वीरता। साहस।

मरदाना—वि० [फा०] पुरुष सबधी। पुरुषो का सा। वीरोचित।

मरदूद—वि० [अ०] तिरस्कृत। नीच।

मरना—अक० प्राणियो या वनस्पतियो के शरीर मे ऐसा विकार होना जिससे उनकी सब शारीरिक क्रियाएँ बद हो जायँ, मृत्यु को प्राप्त होना, बहुत अधिक कष्ट उठाना। मुरझाना, सूखना। लज्जा, सकोच आदि के कारण सिर न उठा सकना। किसी काम का न रहना। किसी वेग का शात होना, दबना। पछताना। हारना। मु० किसी पर = लुब्ध होना, आसक्त होना। पानी = पानी की नीव मे सोखा जाना। किसी के सिर कोई कलक आना। लज्जा का न रह जाना। मर मिटना = श्रम करते करते विनष्ट हो जाना। किसी चीज की प्राप्ति के लिये बेहद परिश्रम करना। ~जीना = शादी गमी, सुख दुख। मरा जाना = व्याकुल होना, घबडाना।

मरनी—स्त्री० मृत्यु, मौत। वह कृत्य या शोक जो किसी के मरने पर उसके सबधियो का होता है। कष्ट, हैरानी।

मरभुक्खा—वि० भुक्खड। कगाल, दरिद्र।

मरम—पु० दे० 'मर्म'।

मरमर—पु० [यू०] एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर। दे० 'मर्मर'।

मरमराना—अक० मरमर शब्द करना। अधिक दबाव पाकर लकडी आदि का मरमर शब्द करके दबना।

मरमी—वि० दे० 'मर्मज्ञ'।

मरम्मत—स्त्री० [अ०] किसी वस्तु के टूटे फूटे अगो को ठीक करना, जीर्णोद्धार।

मरवाना—सक० [मारना का प्रे०] किसी को मारने के लिये प्रेरणा करना।

मरसा—पु० एक प्रकार का साग।

मर्सिया—पु० [अ०] उर्दू भाषा मे शोक-सूचक कविता जो किसी की मृत्यु के सबंध मे बनाई जाती है। करुण शोक, रोना पीटना।

मरहट(पु)†—पु० मसान। (पु)† स्त्री० मोठ।

मरहटा—पुं० मरहठा। २० मात्राओ का एक मात्रिक छद जिसके अत मे गुरु लघु का क्रम होता है और दसवी तथा ८१वीं मात्राओंपर यति और अत मे विराम होता है। इसकी ११वी और १९वी मात्राओ पर यति रखने से मरहटा माधवी छद होता है।

मरहठा—पु० महाराष्ट्र देश का रहनेवाला, महाराष्ट्र।

मरहठी—वि० महाराष्ट्र या मरहठो से सबंध रखनेवाला, मरहठो का। स्त्री० मरहठो की बोली। दे० 'मराठी'।

मरहम—पु० [अ०] ओपधियो का वह गाढा

और चिकना लेप जो घाव या पीडित स्थानो पर लगाया जाता है।

मरहला—पुं० [अ०] टिकान, मजिल, पडाव। मरातिव। मु०~तय करना=झमेला निवटाना, कठिन काम पूरा करना।

मरहूम—वि० [अ०] स्वर्गवासी, मृत।

मराठा—पुं० दे० 'मरहठा'।

मरातिब—पुं० [अ०] दरजा, पद। उत्तरोत्तर आनेवाली अवस्थाए। मकान का खड, तल्ला। ध्वजा, झडा।

मराना—सक० [मारना का प्रे०] मारने के लिये प्रेरणा करना, मरवाना।

मरायल(पु)†—वि० जो कई वार मार खा चुका हो, पीटा हुआ। सत्वहीन। निर्वल, निर्जीव। पु० घाटा, टोटा।

मराल—पु० [सं०] एक प्रकार का वत्तख। हस। घोडा। हाथी।

मरिंद(पु)—पुं० दे० 'मलिद'। दे० 'मरद'।

मरिच—पु० [सं०] मिरिच, मिर्च।

मरियम—स्त्री० [अ०] कुमारी। ईसामसीह की माता का नाम।

मरयल—वि० वहुत दुर्वल, कमजोर।

मरी—स्त्री० वह सक्रामक रोग जिसमे एक साथ वहुत से लोग मरते हैं। महामारी। शेर द्वारा मारा हुआ पशु या उसके वाँधने का स्थान।

मरीचि—पुं० [सं०] एक ऋषि जिन्हें पुराणो में ब्रह्मा का मानसिक पुत्र, एक प्रजापति और सप्तर्षियो मे माना है। एक मरुत् का नाम। एक ऋषि जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे। स्त्री० किरण। प्रभा, कांति। मृगतृष्णा।

मरीचिका—स्त्री० [सं०] मृगतृष्णा। किरण।

मरीची—पुं० [सं०] सूर्य। चद्रमा।

मरीज—पुं० [अ०] रोगी, वीमार।

मरीना—पुं० एक प्रकार का मुलायम पतला ऊनी कपडा।

मरु—पुं० [सं०] निर्जन स्थान, रेगिस्तान। मारवाड और उसके आस पास के प्रदेश का नाम। ⊙द्वीप=पु० वह उपजाऊ और सजल हरा भरा स्थान जो मरुस्थल मे हो, नखलिस्तान। ⊙धर=पु० मारवाड देश। ⊙भूमि=स्त्री० बालू का निर्जल मैदान, रेगिस्तान। ⊙स्थल=पुं० दे० 'मरुभूमि'।

मरुआ—पुं० वनतुलसी या ववरी की जात का एक पौधा। पु मकान की छाजन मे सवसे ऊपर की वल्ली, वँडेर। वह लकडी जिसमे हिंडोला लटकाया जाता है।

मरुत्—पुं० [सं०] एक देवगण का नाम, वेदो मे इन्हें रुद्र और वृश्नि का पर पुराणो मे कश्यप और दिति का पुत्र लिखा है। वायु, हवा। प्राण। दे० 'मरुत्वान्' ⊙वान=पु० इद्र। देवताओ के एक गण जो धर्म के पुत्र माने जाते हैं। 'हनुमान्'।

मरुतवान्—पुं० दे० 'मरुत्वान्'।

मरुरना(पु)—अक० [सक० मरोरना] ऐंठना, वल खाना।

मरू(पु)—वि० कठिन, दुरुह। मु०~करिके या मरू करि(पु)=ज्यो त्यो करके, वहुत मुश्किल से।

मरूरा(पु)†—पु० दे० 'मरोड'। मु०~देना=वज देना, मरोडना।

मरोड़—पु० मरोड़ने का भाव या क्रिया। ऐंठन, वल। व्यथा, क्षोभ। पेट मे ऐंठन और पीडा होना। घमड। क्रोध। ⊙फली=स्त्री० एक प्रकार की फली, मुर्रा। मु०~की वात=घुमाव फिराव की वात। ~खाना=चक्कर खाना, उलझन मे पडना। ~गहना=क्रोध करना। मन में मरोड करना=कपट करना।

मरोड़ना—सक० वल डालना। ऐंठना। ऐंठकर नष्ट करना या मार डालना। पीडा देना, दुख देना। मसलना। मु० अंग~=अँगडाई लेना। भौंह~ या अंग (आदि)~=आंख से इशारा करना या कनखी मारना। नाक भौ चढना।

मरोड़ा—पु० ऐंठन, मरोड़। पेट की वह पीडा जिसमे कुछ ऐंठन सी जान पड़ती हो।

मरोड़ी—स्त्री० ऐंठन । मु०~करना = खींचातानी करना ।

मरोरना—सक० दे० 'मरोड़ना' ।

मर्कट—पुं० [सं०] बंदर, वानर । मकड़ा । दोहे के एक भेद का नाम । छप्पय का आठवाँ भेद । मर्कटी—स्त्री० वानरी, बँदरी । मकड़ी । छंद के नौ प्रत्ययों में से अंतिम प्रत्यय । इसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छंद के लघु, गुरु, कला और वर्णों की संख्या का ज्ञान होता है ।

मर्कत(पु)—पुं० दे० 'मरकत' ।

मर्तबान—पुं० रोगनी बर्तन जिसमें अचार, घी आदि रखा जाता है, अमृतबान ।

मर्त्य—पुं० [सं०] मनुष्य । भूलोक । शरीर । ⊙लोक = पु० पृथ्वी ।

मर्द—पुं० [फा०] मनुष्य । साहसी, पुरुषार्थी वीर पुरुष । पुरुष, नर । पति ।

मर्दन—पुं० [सं०] कुचलना, रौंदना । मसलना । हाथों से दबाना या रगड़ना । तेल उबटन आदि शरीर में लगाना, मलना । द्वंद युद्ध में एक मल्ल का दूसरे मल्ल की गर्दन आदि पर हाथों से घस्सा लगाना, घस्सा । ध्वंस, नाश । पीसना, घोटना, रगड़ना । वि० नाशक, संहार कर्ता । मर्दित—जो मर्दन किया गया हो ।

मर्दना(पु)—सक० मालिश करना, मलना । तोड़ फोड़ डालना । नाश करना । कुचलना, रौंदना ।

मर्दल—पुं० [सं०] मृदंग की तरह का एक बाजा । इसका प्रचार बंगाल में है ।

मर्दुम—पुं० [फा०] मनुष्य, आदमी । ⊙शुमारी = स्त्री० देश में रहनेवाले मनुष्यों की गणना, मनुष्यगणना । जनसंख्या ।

मर्दुमी—स्त्री० [फा०] मरदानगी, पौरुष ।

मर्दूद—वि० दे० 'मरदूद' ।

मर्म—पुं० [सं०] स्वरूप । रहस्य, तत्व भेद । संधिस्थान । प्राणियों के शरीर में वह स्थन जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है । ⊙ज्ञ = वि० जो किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जानता हो, तत्वज्ञ । रहस्य जाननेवाला । ⊙भेदक = वि० दे० 'मर्मभेदी' । ⊙भेदी = वि० हृदय पर आघात पहुँचानेवाला, आंतरिक कष्ट देनेवाला । ⊙वचन = पुं० वह बात जिससे सुननेवाले को आंतरिक कष्ट हो । ⊙वाक्य = पुं० रहस्य की बात, भेद की या गूढ़ बात । ⊙विद् = मर्मज्ञ । ⊙स्पर्शी = वि० मर्म पर प्रभाव डालनेवाला ।

मर्मर—पुं० दे० 'मरमर' । पत्तों डालियों आदि के हिलने से होनेवाली एक प्रकार की ध्वनि ।

मर्मरित = वि० जिसमें मर मर शब्द होती हो ।

मर्मांतक—वि० [सं०] मन में चुभनेवाला, मर्मभेदक, हृदयस्पर्शी ।

मर्मांतिक—वि० दे० 'मर्मांतक' ।

मर्याद—स्त्री० दे० 'मर्यादा' । रीति, रस्म, प्रथा । विवाह में बढ़हार, बढ़ार ।

मर्यादा—स्त्री० [सं०] सीमा, हद । कूल, नदी का किनारा । प्रतिज्ञा, मुआहिदा, करार । नियम । सदाचार । मान, प्रतिष्ठा । धर्म ।

मर्यादित—वि० स्त्री० जिसकी सीमा या हद निश्चित हो । जो अपनी मर्यादा या सीमा के अंदर हो ।

मर्षण—पुं० [सं०] क्षमा, माफी । रगड़, घर्षण । वि० नाशक । दूर करनेवाली ।

मलंग—पुं० [फा०] एक प्रकार का पक्षी ।

मल—पुं० [सं०] मैल, कीट । शरीर के अंगों से निकलनेवाली मैल या विकार । विष्ठा, पुरीष । दूषण, विकार । पाप । ऐब । ⊙द्वार = पुं० शरीर की वे इंद्रियाँ जिससे मल निकलते है, गुदा, पाखाने का स्थान । ⊙मास = पुं० वह अमात मास जिसमें संक्रांति न पड़ती हो, अधिक मास, पुरुषोत्तम मास, अधिमास । ⊙युग = पुं० दे० 'कलियुग' । ⊙रुचि = वि० दूषित रुचि का, पापी ।

मलना—सक० हाथ या किसी और चीज से दबते हुए घिसना, मर्दन, मीजना, मसलना । मालिस करना । मसलना, मीजना । मरोड़ना, ऐंठना । हाथ से

बार बार रगड़ना या दबाना। मु०—~डलना = चूर्ण करना, पीसकर टुकड़े टुकड़े करना। मसलना, घिसना। पछताना, पश्चात्ताप करना। क्रोध प्रकट करना।

मलकना(पु)—सक० दे० 'मचकना'। अक० दे० 'मचकना'।

मलका—स्त्री० बादशाह की पटरानी। महारानी।

मलकुलमौत—पुं० [अ०] जीवों के प्राण लेनेवाला देवदूत, यमराज।

मलखभ—पु० दे० 'मलखम'।

मलखम—पुं० लकड़ी का एक प्रकार का खभा जिसपर फुर्ती से चढ़ और उतरकर कसरत करते हैं, मलखभ। वह कसरत जो मलखम पर की जाय।

मलखाना—पुं० पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे बसने वाली राजपूतों की एक शाखा।

मलगजा(पु)—वि० मला दला हुआ, गीजा हुआ, मरगजा। पुं० बेसन मे लपेटकर तले हुए बैगन के पतले टुकड़े।

मलगिरी—पुं० एक प्रकार का हल्का कत्थई रग।

मलता—वि० घिसा हुआ (सिक्का)।

मलबा—पुं० कूड़ा कर्कट, कतवार। टूटी या गिराई हुई ईमारत की ईंट, पत्थर और चूना आदि।

मलमल—स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध पतला कपड़ा।

मलमलाना—सक० बार बार स्पर्श करना। बार बार खोलना और ढकना पुनः पुनः आलिंगन करना। पश्तात्ताप करना।

मलय—पु० [सं०] पश्चिमी घाट का वह भाग जो मैसूर राज्य के दक्षिण और ट्रावकोर पूर्व मे हैं। मलाबार देश। मलाबार देश के रहनेवाले मनुष्य। सफेद चदन। नंदनवन। छप्पय के एक भेद का नाम। ⊙गिरि = पुं० मलय नामक पर्वत जो दक्षिण मे है। मलयगिरि मे उत्पन्न चंदन। हिमालय पर्वत का वह देश जहाँ असम है। ⊙ज = पु० चंदन। वि० मलय पर्वत। मलयाचल—पुं० मलय पर्वत। मलयानिल—पुं० मलय-पर्वत की ओर से आनेवाली वायु, दुर्गंधित वायु। वसतकाल की वायु।

मलयागिरी—पुं० दे० 'मलयगिरि।'

मलयाली—वि० मलाबार देश का, मलाबार सबधी। स्त्री० मलाबार देश की भाषा।

मलराना(पु)—सक० दे० 'मल्हाना'।

मलहम—पुं० दे० 'मरहम'।

मलाई—स्त्री० बहुत गरम किए हुए दूध का ऊपरी सार भाग, दूध की साढी। सार, तत्व, रस,। मलने की क्रिया या भाव, मजदूरी।

मलाट—पु० एक प्रकार का मोटा घटिया कागज जिसमे चीजें लपेटी जाती है।

मलान(पु)—वि० दे० 'म्लान'।

मलानि—(पु)स्त्री० दे० 'म्लानि'।

मलामत—स्त्री० [अ०] लानत, फटकार, दुतकार। निकृष्ट या खराब अंश, गदगी।

मलार—पु० एक राग जो वर्षा ऋतु में गाया जता है। मु०—~गाना = बहुत प्रसन्न होकर कुछ कहना, विशेषतः गाना।

मलाल—पु० [अ०] दुख, रज। उदासीनता, उदासी।

मलाह(पु)—पु० दे० 'मल्लाह'।

मलिंग—पु० दे० 'मिलग'।

मलिंद—पु० भौरा।

मलिक—पु० [अ०] राजा, अधीश्वर।

मलिक्ष, मलिच्छ(पु)—पु० दे० 'म्लेच्छ'।

मलिन—वि० [सं०] मलयुक्त, मैला, गँदला। दूषित, खराब। मटमैला, धूमिल, बदरग। पापात्मा, पापी। धीमा, फीका। म्लान। उदासीन। पु० एक प्रकार के साधु जो मैला कुचैला कपड़ा पहनते हैं। ⊙ई(पु)—स्त्री० मैलापन।

मलिनना(पु)—अक० मैला होना।

मलिनी—वि० स्त्री० मैली।

मलिया—स्त्री० तग मुंह का मिट्टी का एक बर्तन, घेरा। चक्कर।

मलियामेट—पुं० सत्यानाश, तहस नहस।

मलीदा—पु० [फा०] चूरमा। एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी वस्त्र।

मलीन—वि० मैला, अस्वच्छ। उदास।

मलूक—पु० [सं०] एक प्रकार का कीडा। एक प्रकार का पक्षी। दे० 'अमूलक'। वि० [हिं०] सुदर, मनोहर।

मलेच्छ—पुं० दे० 'म्लेच्छ'।

मलेरिया—पु० [अं०] जाडा देकर आनेवाला बुखार, जूडी।

मलै⑤—पु० मलय चदन।

मलैज⑤—पु० चदन।

मलोल—पु० दे० 'मलोला'।

मलोलना—अक० मन का दुखी होना। पछताना।

मलोला—पु० मानसिक व्यथा, दुख, रंज। वह इच्छा जो मानसिक व्याकुलता उत्पन्न करे, अरमान। मु०~या मलोले आना = दुख होना, पछतावा होना। मलोले खाना = मानसिक व्यथा सहना।

मल्ल—पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग द्वद्व युद्ध मे बडे निपुण होते थे, इसीलिये कुश्ती लडनेवाले को भी मल्ल कहते हैं। पहलवान। एक प्राचीन देश जो विराट देश के पास था। दीपशिखा। ⊙भूमि = स्त्री० कुश्ती लडने की जगह, अखाडा। ⊙युद्ध = पुं० परस्पर द्वद्व युद्ध जो विना शस्त्र के केवल हाथो से किया जाय, बाहुयुद्ध, कुश्ती। ⊙विद्या—स्त्री० कुश्ती की विद्या। ⊙शाला = स्त्री० दे० 'मल्लभूमि'।

मल्लार—पुं० दे० 'मलार'।

मल्लार—पु० दे० 'मलार'।

मल्लाह—पुं० [अ०] एक अत्यज जाति जो नाव चलाकर और मछलियाँ मारकर अपना निर्वाह करती है, केवट।

मल्लिका—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वेला। मोतिया। आठ अक्षरो का एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण जगण और अत मे गुरु लघु होता है, समानी। ११ वर्णों का वह छद जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से नगण, जगण, जगण और अत मे लघु गुरु हो। २३ अक्षरोंवाले सवैया का वह भेद जिसके प्रत्येक चरण मे सात जगण और अत मे लघु गुरु हो, सुमुखी, मानिनी।

मल्ली—स्त्री० [सं०] मल्लिका। सवैया छंद का वह भेद जिसमे प्रत्येक चरण मे सात भगण और अंत मे गुरु गुरु होता है, सुंदरी, सुखदानी।

मल्लू—पु० [सं०] भालू। बंदर।

मल्हाना, मल्हारना⑤—सक० चुमकारना, पुचकारना।

मवक्किल—पुं० मुकदमे में अपनी ओर से कचहरी मे काम करने के लिये वकील नियत करनेवाला पुरुष।

मवाजिब—पुं० [अ०] नियमित समय पर मिलनेवाला पदार्थ (जैसे, वेतन)॥

मवाजी—वि० [अ०] कुल, सब। प्रायः बराबर, लगभग।

मवाद—पुं० [अ०] पीव। मसाला, सामग्री।

मवास—पुं० आश्रय, शरण। किला, दुर्ग। वे पेड जो दुर्ग के प्राकार पर होते हैं। मु०~करना = निवास करना। **मवासी**—स्त्री० छोटा गढ़। पुं० गढपति। प्रधान, मुखिया।

मवेशी—पु० पशु, ढोर। ⊙खाना = पुं० [फा०] वह बाडा जिसमे मवेशी रखे जाते हैं।

मशक—पु० [सं०] मच्छड। मसा नामक चर्मरोग। स्त्री० [फा०] चमडे का बना हुआ वह थैला जिसमे पानी भरकर ले जाते हैं।

मशक्कत—स्त्री० [अ०] मेहनत, परिश्रम। वह परिश्रम जो जेलखाने के कैदियो को करना पडता है।

मशगूल—वि० [अ०] काम मे लगा हुआ।

मशरू—पु० एक प्रकार का धारीदार कपडा।

मशविरा—पु० [अ०] सलाह, परामर्श।

मशहूर—वि० [अ०] प्रख्यात, प्रसिद्ध।

मशाल—स्त्री० [अ०] डडे मे लगी हुई एक प्रकार की बहुत मोटी बत्ती जिससे पुराने जमाने मे प्रकाश का काम लिया जाता था। ⊙ची = पु० [फा०] मशाल

हाथ मे लेकर दिखलानेवाला। मु०~लेकर या जलाकर ढूंढना = अच्छी तरह ढूंढना। वहुत ढूंढना।

मशीन—स्त्री० पेंचो और पुरजो से बनी हुई वह वस्तु जिससे कुछ काम होता हो, कल।

मश्क—पुं० [अ०] अभ्यास।

मशीनगन—स्त्री० [अं०] वह मशीन जो गोलियाँ चलाती है।

मष—पुं० दे० 'मख'।

मष्ट—वि० संस्कारशून्य, जो भूल गया हो। उदासीन, मौन। मु०~करना, धारना या मारना = चुप रहना, न बोलना।

मस(पु)†—स्त्री० रोंशनाई। मोछ निकलने के पहले उसके स्थान पर की रोमावली। मु०—मसें भीगना = मूंछो का निकलना आरंभ होना।

मसक—पु० मसा, मच्छड। स्त्री० मसकने की क्रिया।

मशकत(पु)—स्त्री० दे० 'मशक्कत'

मसकना—सक० कपडे को इस प्रकार दबाना कि बुनावट के तंतु टूटकर अलग हो जायँ। जोर से दबाना या मलना। इस प्रकार दबाना कि बीच मे से फट जाय। अक० किसी पदार्थ का दबाव या खिंचाव आदि के कारण बीच मे से फट जाना। चित्त का चिंतित होना।

मसकरा—पु० दे० 'मसखरा'।

मसकला—पु० [अ०] सिकलीगरो का एक औजार। इसमे रगडने से धातुओ पर चमक आ जाती है। सैकल या सिकला करने की क्रिया।

मसकली—स्त्री० दे० 'मसकला'।

मसका—पु०[फा०] नवनीत, मक्खन। ताजा निकला हुआ घी। दही का पानी। चूने की बरी का वह चूर्ण जो उसपर पानी छिडकने से बने।

ममकान(पु)†—वि० गरीब, बेचारा। साधु। दरिद्र। भोला। सुशील।

मसखरा—पु० [फा०] बहुत हँसी मजाक करनेवाला, हँसोड। मसखरी—स्त्री० दिल्लगी, हँसी मजाक।

मसखवा†—पु० वह जो मांस खाता हो, मांसाहारी।

मसजिद—स्त्री० [फा०] मुसलमानो के एकत्र होकर नमाज पढने तथा ईश्वर-वंदना करने का स्थान या घर।

मसनद—स्त्री० [अ०] बडा तकिया, गाव तकिया। अमीरो के बैठने की गद्दी या सिंहासन।

मसनवी—स्त्री० [अ०] अरबी, उर्दू और फारसी पद्य का वह भेद जिसमे दो दो चरणों के अंत्यानुप्रासो मे मेल हो।

मसना†—सक० दे० 'मसलना'।

मसमंद(पु)†—वि० कशमकश, धक्कमधक्का,

मसयारा(पु)†—पु० मशाल। मशालची।

मसरना—स० दे० 'मसलना'

मसरफ—पुं० [अ०] काम मे आना, उपयोग।

मसरूफ—वि० [अ०] काम मे लगा हुआ।

मसल—स्त्री० [अ०] कहावत, लोकोक्ति।

मसलत(पु)—स्त्री० दे० 'मसलहत'।

मसलन—स्त्री० मसलने की क्रिया या भाव।

मसलना—सक० हाथ से दबाते हुए रगडना, मलना। जोर से दबाना। आँटा गूंथना।

मसलन्—वि० [अ०] उदाहरणार्थ, जैसे।

मसलहत—स्त्री० [अ०] ऐसी गुप्त युक्ति या भलाई जो सहसा जानी न जा सके।

मसला—पुं० [अ०] कहावत, लोकोक्ति। विचारणीय विषय।

मसवासी—पुं० वह साधु आदि जो एक मास से अधिक किसी स्थान मे रहें। स्त्री० गणिका, वेश्या।

मसविदा—पुं० दे० 'मसौदा'।

मसहरी—स्त्री० पलग के ऊपर और चारो ओर लटकाया जानेवाला वह जालीदार कपडा जिसका उपयोग मच्छरो आदि से बचने के लिये होता है, मच्छरदानी। ऐसा पलग जिसमे मसहरी लग सके।

मसहार(पु)—पुं० दे० 'मासाहारी'।

मसा—पुं० शरीर पर काले रग का उभरा हुआ मास का छोटा दाना। ववासीर रोग मे मास का दाना। मच्छड।

मसान—पुं० मरघट। भूत, पिशाच आदि। रणभूमि। मु०~जगाना = तंत्र शास्त्र के अनुसार श्मशान मे बैठकर किसी शव के द्वारा प्रेतात्मा को सिद्ध करना।

मसाना—पुं० [अ०] पेट की वह थैली जिसमे पेशाब रहता है, मूत्राशय। (पु) पुं० [हिं०] दे० 'मसान'।

मसानिया—पु० मसान पर रहनेवाला। डोम। वि० मसान सबधी।

मसानी—स्त्री० श्मशान मे रहनेवाली पिशाचिनी, डाकिनी इत्यादि।

मसाल—पुं० दे० 'मशाल'।

मसाला—पुं० किसी वस्तु को इच्छित रूप देने मे सहायक सामग्री, जैसे, (क) मकान बनाने के लिये सुर्खी, चूना आदि, (ख) रसोई बनाने के लिये हल्दी, धनिया, मिर्च, जीरा आदि, (ग) ग्रथ या लेख आदि लिखने के लिये दूसरे ग्रथ आदि। औषधियो अथवा रासायनिक द्रव्यो का योग या समूह। साधन। तेल। आतिशबाजी।

मसि—स्त्री० [सं०] लिखने की स्याही, रोशनाई। काजल। कालिख। ⊙दानी = स्त्री० [फा०] दावात, मसिपात्र। ⊙पात्र = पु० दावात। ⊙बुंदा = पु० [स० + हिं०] दे० 'मसिबिंदु'। ⊙मुख = वि० जिसके मुँह मे स्याही लगी हो। पापी। ⊙विंदु = पुं० काजल का बुंदा जो नजर से बचने के लिये बच्चो को लगाया जाता है, डिठौना।

मसियर(पु)—स्त्री० दे० 'मशाल'।

मसियाना—अक० भली भाँति भर जाना, पूरा हो जाना।

मसियारा(पु)—पुं० दे० 'मशालची'।

मसी—स्त्री० दे० 'मसि'।

मसीत, मसीद (पु)†—स्त्री० दे० 'मसजिद'।

मसीना†—पु० मोटा अन्न।

मसीह, मसीहा—पुं० [अ०] यहूदियो के प्राचीन धर्मग्रथ के अनुसार पीडितो की रक्षा के लिये पृथ्वी पर आनेवाला देवदूत। बचानेवाला या उद्धार करनेवाला मनुष्य। ईसा।

मसू(पु)†—स्त्री० कठिनाई।

मसूड़ा—पुं० मुँह के अदर का वह कडा मास जिसपर दाँत जमे होते हैं।

मसूर—पुं० [सं०] एक प्रकार का द्विदल और चिपटा अन्न, मसुरी।

मसूरा—स्त्री० [सं०] मसूर की दाल। मसूर की बनी हुई बरी।

मसूरिका—स्त्री० [सं०] शीतला, चेचक। छोटी माता, जिसमे सारे शरीर मे लाल लाल छोटी फुसियाँ निकल आती है।

मसूरिया—स्त्री० दे० 'मसूरी'।

मसूरी—स्त्री० [स०] माता, चेचक। दे० 'मसूर'।

मसूस—स्त्री० मन मसूसने का भाव, आतरिक व्यथा।

मसूसन—स्त्री० दे० 'मसूस'।

मसूसना—अक० दे० 'मसोसना'।

मसृण—वि० [सं०] चिकना और मुलायम।

मसेवरा†—मास की बनी हुई खाने की चीजें।

मसोसना—अक० मनोवेग को रोकना, जब्त करना। कुढना। ऐंठना, मरोडना। निचोड़ना।

मसोसा—पुं० मन का दु ख।

मसोदा—पु० काँट छाँट करने और साफ करने के उद्देश्य से पहली बार लिखा हुआ लेख, मसविदा। उपाय, युक्ति। **मसौदेबाज** = पु० अच्छी युक्ति सोचनेवाला। धूर्त चालाक। **मु०~गाँठना या बाँधना** = कोई काम करने की युक्ति या उपाय सोचना।

मस्करा(पु)—पु० दे० 'मसखरा'।

मस्कला—पु० दे० 'मसकला'।

मस्त—वि० [फा०] जो नशे आदि के कारण मत्त हो, मतवाला। सदा प्रसन्न

और निश्चित रहनेवाला। यौवन मद से भरा हुआ। मदपूर्ण। परम प्रसन्न आनंदित।

मस्तक—पु० [सं०] सिर।

मस्तगी—स्त्री० एक प्रकार का बढ़िया गोंद।

मस्ताना—अक० मस्त होना। सक० मस्त करना। वि० [फा०] मस्तों की तरह का। मस्त।

मस्तिष्क—पु० [सं०] मस्तक के अंदर का गूदा, भेजा। सिर का वह स्नायविक अवयव जिससे बुद्धि व्यापार होते है, दिमाग।

मस्ती—स्त्री० [फा०] मस्त होने की क्रिया या भाव। बेफिक्री। वह स्राव जो कुछ विशिष्ट पशुओं के मस्तक, कान आदि के पास उनके मस्त होने के समय होता है, मद। वह स्राव जो कुछ विशिष्ट वृक्षों अथवा पत्थरों आदि में से होता है।

मस्तूल—पु० [पुर्त०] बड़ी नावों आदि के बीच का वह बड़ा शहतीर जिसमें पाल बाँधते हैं।

मस्सा—पु० दे० 'मसा'।

महँ—अव्य० मे।

महँई(पु)—वि० महान्, भारी। अव्य० दे० 'महँ।'

महँगा—वि० जिसका मूल्य साधारण या उचित की अपेक्षा अधिक हो। ⊙ई†—स्त्री० दे० 'महँगी'। महँगी—स्त्री० महँगा होने का भाव, महँगापन। महँगा होने की अवस्था। दुर्भिक्ष, अकाल।

महंत—पुं० साधुमंडली या मठ का अधिष्ठाता। वि० श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया। महंती—स्त्री० महंत का भाव। महत का पद।

मह—अव्य० दे० 'महँ'। वि० अति, बहुत। श्रेष्ठ, बड़ा।

महक—स्त्री० गंध, बास। ⊙ना = अक० गंध देना।

महकमा—पुं० [अ०] किसी विशिष्ट कार्य के लिये अलग किया हुआ विभाग, सीगा।

महकान(पु)—स्त्री० दे० 'महक'।

महकीला—वि० खुशबूदार।

महज—वि० [अ०] खालिस। केवल, सिर्फ।

महजिद†—स्त्री० दे० 'मसजिद'।

महज्जन—पु० [सं०] महापुरुष।

महत्—वि० [सं०] महान्, बड़ा। सबसे बढ़कर, सर्वश्रेष्ठ। पु० प्रकृति का पहला विकार, महत्व। ब्रह्म।

महत—पु० दे० 'महत्व'। वि० दे० 'महत्'।

महता—पु० गाँव का मुखिया, महतो। मुहर्रिर, मुंशी। (पु)स्त्री० अभिमान।

महताब—स्त्री० [फा०] चाँदनी, चंद्रिका। दे० 'महताबी'। पु० [फा०] चाँद, चंद्रमा।

महताबी—स्त्री० [फा०] मोटी बत्ती के आकार की आतिशबाजी। बाग आदि के बीच में बना हुआ गोल या चौकोर ऊँचा चबूतरा।

महतारी(पु)†—स्त्री० माँ, माता।

महति, महती—स्त्री० [सं०] नारद की वीणा का नाम। महिमा, बड़ाई। वि० स्त्री० बहुत बड़ी।

महतु(पु)†—पु० बड़ाई, महत्व।

महतो—पु० कहार। प्रधान।

महत्तत्व—पु० [सं०] सांख्य मे प्रकृति का पहला कार्यविकार जिससे अहंकार की उत्पत्ति होती है, बुद्धितत्व। जीवात्मा।

महत्तम—वि० [सं०] सबसे अधिक श्रेष्ठ।

महत्तर—वि०[सं०] दो पदार्थों मे से बड़ा या श्रेष्ठ।

महत्ता—स्त्री० दे० 'महत्व'।

महत्व—पु० [सं०] महत् का भाव, बड़ाई। उत्तमता।

महदूद—वि० [अ०] परिमित, सीमित।

महन(पु)†—पु० दे० 'मथन'।

महना(पु)†—सक० (दही आदि) बिलोना, मथना।

महनीय—वि० मान्य, पूज्य। महत्, महान्।

महनु(पु)—पुं० मथन करनेवाला, विनाशक।

महफिल—स्त्री० [अ०] मजलिस, सभा। नाचगाना होने का स्थान।

महफूज—वि० [अ०] सुरक्षित।

महबूब—पुं० [अ०] वह जिससे प्रेम किया जाय, प्रिय।

महमंत(पु)—वि० मस्त, मदमत्त।

महमद(पु)—पुं० दे० 'मुहम्मद'।

महमह—क्रि० वि० सुगध के साथ। **महमहा**—वि० सुगधित। **महमहाना**—अक० गमकना, सुगध देना।

महमा(पु)†—स्त्री० दे० महिमा'।

महमेज—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की लोहे की नाल जो जूते मे एडी के पास लगाई जाती है और जिसकी सहायता से घोडे के सवार उसे एड लगाते हैं।

महर—पुं० एक आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार विशेषत भूस्वामियो आदि के सबध मे होता है (व्रज)। एक प्रकार का पक्षी। दे० 'महरा'। वि० महमहा, सुगधित।

महरम—पुं० [अ०] मुसलमानो मे किसी कन्या या स्त्री के लिये उसका कोई ऐसा बहुत पास का सबधी जिसके साथ उसका विवाह न हो सका हो। भेद को जाननेवाला। स्त्री० अँगिया की कटोरी। अँगिया।

महरा—पु० कहार। सरदार, नायक।

महराइ(पु)—पुं० दे० 'मेहाराज'।

महराई(पु)†—स्त्री० प्रनता, श्रेष्ठता।

महराज—पुं० दे० 'महाराज'।

महराना—पुं० महरो के रहने का स्थान या महल्ला।

महराब—स्त्री० दे० 'मेहराब'।

महरि, महरी—स्त्री० एक प्रकार का आदरसूचक शब्द जिसका व्यवहार व्रज मे प्रतिष्ठित स्त्रियो के सबध मे होता है। मालकिन, घरवाली। ग्वालिन नामक पक्षी।

महरूम—वि० [अ०] जिसे प्राप्त न हो, वचित।

महरेटा—पुं० महर का बेटा। श्रीकृष्ण। **महरेटी**—स्त्री० श्री राधिका।

महर्घ—वि० दे० 'महार्घ'।

महर्लोक—पुं० [सं०] पुराणानुसार १४ लोको मे से ऊपर का चौथा लोक।

महर्षि—पुं० [सं०] बहुत बडा और श्रेष्ठ ऋषि।

महल—पुं० [अ०] बहुत बड़ा और बढिया मकान, प्रासाद। रनिवास। बड़ा कमरा। अवसर। ⊙**सरा**=स्त्री० अत पुर, रनिवास।

महल्ला—पुं० [अ०] शहर का कोई विभाग या टुकडा जिसमे बहुत से मकान हो।

महवट—पुं० माघ की झडी, महावट।

महसिल—पु० महसूल आदि वसूल करनेवाला।

महसूस—वि० [अ०] जिसका ज्ञान या अनुभव हो, अनुभूत।

महाँ(पु)—अव्य० दे० 'महँ'।

महा—पु० मट्ठा। वि० [सं०] अत्यत, बहुत अधिक। सर्वश्रेष्ठ। बहुत बडा, भारी। ⊙**कल्प**=पु० पुराणानुसार उतना काल जितने मे एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है, ब्रह्मकल्प। ⊙**कवि**=पु० वह कवि जिसने किसी महाकाव्य की रचना की हो। उच्च कोटि का कवि। ⊙**काय**=वि० जिसका शरीर बहुत बडा हो। पु० शिव का एक गण। हाथी। ⊙**काल**=पु० महादेव। ⊙**काली**=स्त्री० महाकाल (शिव) की पत्नी। दुर्गा की एक मूर्ति। ⊙**काव्य**=पु० वह बडा सर्गबद्ध काव्य जिसमे प्राय. सभी रसो, ऋतुओ और प्राकृत दृश्यो तथा सामाजिक कृत्यो आदि का वर्णन हो। ⊙**खर्ब**=पु० सौ खर्ब की सख्या या अक। ⊙**गौरी**=स्त्री० दुर्गा। ⊙**जन**=पु० बडा या श्रेष्ठ पुरुष। साधु। धनवान, दौलतमंद। रुपए पैसे का लेनदेन करनेवाला, कोठीवाला। बनिया। भलामानुस। ⊙**जल**=पु० समुद्र। ⊙**तत्व**=पु० दे० 'महत्तत्व'। ⊙**तल**=पु० १४ भुवनों मे से पृथ्वी के नीचे का पाँचवाँ भुवन या तल। ⊙**दंडधारी**=पु० यमराज। ⊙**दान**=पु० वे बडे दान जिनसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है (जैसे, तुला पुरुष, सोने की गाय या घोड़ा, भूमि, हाथी, रथ, कन्या आदि)।

वह दान जो ग्रहण आदि के समय छोटी जातियो को दिया जाता है । ⊙देवी = स्त्री० दुर्गा । राजा की प्रधान पत्नी या पटरानी । ⊙द्वीप = पुं० पृथ्वी का वह बडा भाग जिसमे अनेक देश हो (जैसे, एशिया, यूरोप, अमरीका, अफ्रीका आदि) । ⊙धन = वि० बहुमूल्य, अधिक मूल्य का । बहुत धनी । ⊙नद = पुं० बहुत बड़ा नद । ⊙नवमी = स्त्री० आश्विन शुक्ल नवमी । ⊙नाटक = पु० नाटक के लक्षणो से युक्त १० अको-वाला नाटक । ⊙नाम = पुं० एक प्रकार का मत्र जिससे शत्रु के शस्त्र व्यर्थ हो जाते हैं । ⊙ निद्रा = स्त्री० मृत्यु, मरण । ⊙निधान = पुं० बुभुक्षित । धातुभेदी पारा जिसे 'बावन तोला पाव रत्ती' भी कहते हैं । ⊙निर्वाण = पु० परि-निर्वाण, जिसके अधिकारी केवल अर्हत् या बुद्ध है । ⊙निशा = स्त्री० आधी रात । कल्पात या प्रलय की रात्रि । ⊙पथ = पुं० लंबा और चौडा रास्ता, राज-पथ । मृत्यु । ⊙पद्म = पुं० नौ निधियो मे से एक । सफेद कमल । सौ पद्म की सख्या । ⊙पातक = पुं० पाँच बहुत बडे पाप—ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरुपत्नी के साथ व्यभिचार और इन चार पापो को करनेवाले का साथ या ससर्ग । ⊙पातकी = पुं० वह जिसने महापातक किया हो । बहुत ही क्रूर और घृणास्पद कार्य करनेवाला । ⊙पात्र = पुं० वह ब्राह्मण जो मृतक कृत्य का दान लेता हो, कट्टहा । निकृष्ट ब्राह्मण । ⊙पुरुष = पुं० नारायण । श्रेष्ठ पुरुष । महात्मा । दुष्ट, पाजी (व्यग) । ⊙प्रभु = पुं० वल्लभाचार्य जी की एक आदर-सूचक पदवी । बगाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य चैतन्य की एक आदरसूचक पदवी ईश्वर । ⊙प्रलय = पुं० वह काल, जब सपूर्ण सृष्टि का विनाश हो जाता है और अनत जल के अतिरिक्त कुछ भी नही रहता, कल्पात । ⊙प्रसाद = जगन्नाथ जी का चढा हुआ भात । मास (व्यग्य) । अखाद्य (व्यग्य) । ⊙प्रस्थान = पुं० शरीर त्यागने की कामना से हिमा-लय की ओर जाना । मरण । ⊙प्राज्ञ = पुं० बहुत बडा पडित, विद्वान् । ⊙प्राण = पु० व्याकरण के अनुसार वह वर्ण जिसके उच्चारण मे प्राणवायु का विशेष व्यवहार करना पडता है । हिंदी वर्ण-माला मे प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा अक्षर महाप्राण है । ⊙बल = वि० अत्यत बलवान् । ⊙बाहु = वि० लबी बाँहोवाला । बलवान् । ⊙ ब्राह्मण = पु० ...० 'महापात्र' । ⊙ भाग = वि० भाग्यवान् । ⊙ भागवत = पु० २६ मात्राओ के छद जिनमे शार, विष्णु पद, कामरूप, झूलना, गीतिका और गीता मुख्य हैं । मनु, सनकादि (सनक, सनदन सनत्कुमार,) ' नारद, जनक, कपिल, ब्रह्मा, बलि, भीष्म, प्रह्लाद, शुकदेव, धर्मराज और शभु प्रभृति १२ महाभक्त परमवैष्णव । दे० 'भागवत' (पुराण) । ⊙भारत = पु० सस्कृत भाषा मे १८ पदो का एक प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमे सृष्टि के आदि से कौरव और पाडवो के युद्ध और स्वर्गा-रोहण तक का विस्तृत वर्णन है । बहुत बडा ग्रथ । कौरवो और पाडवो का प्रसिद्ध युद्ध । बडा युद्ध । झगडा, लड़ाई । ⊙ भाष्य = पु० पाणिनी के व्याकरण पर पतजलि का लिखा भाष्य । ⊙भूत = पु० पृथ्वी, जल, अग्नि वायु, आकाश ये पचतत्व । ⊙मंत्र = पु० बहुत बडा और प्रभावशाली मत्र । अच्छी सलाह । ⊙मति = वि० बडा बुद्धिमान् । ⊙ मना = वि० बहुत उच्च और उदार मनवाला, महानुभाव । ⊙ महिम = वि० जिसकी महिमा बहुत अधिक हो । राज्यपाल आदि के लिये प्रयुक्त होनेवाली एक उपाधि । ⊙महोपाध्याय = पु० गुरुओं का गुरु । एक प्रकार की उपाधि जो भारत मे सस्कृत के विद्वानो को सरकार की ओर से मिलती थी । ⊙मांस = पु० गोमास, गाय का गोश्त । मनुष्य का मांस । ⊙माई = स्त्री० [सं० + हिं०] दुर्गा, काली । ⊙माया = स्त्री० प्रकृति । दुर्गा ।

गगा। छाया। छद का १३ वाँ भेद। ⊙मारी = स्त्री० वह सक्रामक रोग जिससे एक साथ ही बहुत से लोग मरें, मरी (जैसे, प्लेग, हैजा आदि) ⊙मालिनी = स्त्री० नाराच छद। ⊙मृत्युजय = पु० शिव। ⊙मेदा = स्त्री० एक प्रकार का कद। ⊙मोदकारी = पु० एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे छह यगण होते है, क्रीडाचक्र। ⊙यज्ञ = पु० धर्मशास्त्र के अनुसार नित्य किए जानेवाले पाँच कर्म—ब्रह्मयज्ञ या सध्यावदन, देवयज्ञ या हवन, पितृयज्ञ या तर्पण, भूतयज्ञ या बलि और नृयज्ञ या अतिथि सत्कार। ⊙यात्रा = स्त्री० मृत्यु, मौत। ⊙यान = पु० बौद्धो के तीन मुख्य सप्रदायो मे से एक जो चीन, जापान, तिब्बत, नेपाल आदि देशो मे प्रचलित हुआ। इसमे तत्र भी मिला हुआ है। ⊙युग = पु० सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि इन चारो युगो का समूह जिसे देवताओ का एक युग माना जाता है। ⊙युद्ध = पु० वह बडा युद्ध जिसमे बहुत से बडे बडे देश या राष्ट्र समिलित हो, विश्वयुद्ध। ⊙यौगिक = पु० २६ मात्राओ के छद जिनमे चुलियाला, मरहटा, मरहट माधवी, और धारा है। ⊙रथ = पु० वह योद्धा जो अकेला दस हजार योद्धाओ से लड सके, भारी योद्धा। ⊙रथी = पु० दे० 'महारथ'। ⊙राजा = पु० बहुत बडा राजा। राजा। ब्राह्मण, गुरु आदि के लिये एक सबोधन। ⊙राजाधिराज = पु० बहुत बडा राजा। ⊙राज्ञी = स्त्री० महारानी। ⊙राणा = पु० मेवाड, चित्तौर और उदयपुर के राजाओ की उपाधि। ⊙रात्रि = स्त्री० महाप्रलयवाली रात जब ब्रह्मा का लय हो जाता है और महाकल्प होता है। ⊙रानी = स्त्री० महाराज की रानी, बहुत बडी रानी। ⊙रावल = पु० [सं० + हिं०] जैसलमेर, डूंगरपुर आदि राज्यो के राजाओ की उपाधि। ⊙राष्ट्र = पु० दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश। इस प्रदेश के निवासी। बहुत बडा राष्ट्र। ⊙राष्ट्री = स्त्री० एक प्राकृत भाषा। दे० 'मराठी'। ⊙रुद्र = पु० शिव। ⊙रोग = पु० बहुत बडा रोग (जैसे—दमा, भगदर, पागलपन, कोढ, यक्ष्मा आदि)। ⊙रौरव = पु० एक नरक। ⊙लक्ष्मी = स्त्री० लक्ष्मी का एक रूप। नारायण की शक्ति जिसे कही कही दुर्गा या सरस्वती से अभिन्न माना गया है। एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन रगण होते है। ⊙वारुणी = स्त्री० गगास्नान का एक योग। ⊙विद्या = स्त्री० तत्र मे मानी हुई ये दस देवियाँ—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातगी और कमलात्मिका। दुर्गा देवी। ⊙वीर = पु० हनुमान् जी। गौतम बुद्ध। जैनियो के २४ वें और अतिम जिन या तीर्थंकर। वि० बहुत बडा बहादुर या वीर। ⊙व्याहृति = स्त्री० भूः, भुवः और स्वः ये तीन ऊपर के लोकों का समूह। ⊙व्रत = पु० वेद की एक ऋचा का नाम। १२ वर्षों तक चलनेवाला व्रत। आश्विन की दुर्गापूजा। वि० बहुत बडा व्रत करनेवाला। ⊙शख = पु० एक बहुत बडी सख्या का नाम, सौ शख। ⊙श्मशान = पु० काशी नगरी। ⊙श्वेता = सरस्वती। दुर्गा। चीनी। ⊙सस्कार = पु० मृतक की अत्येष्टि क्रिया। ⊙सस्कारी = पु० १७ मात्राओ के छंद जिनमे राम और चद्र मुख्य हैं।

महारभ—वि० [स०] बहुत शोर।

महाई†—स्त्री० मथने का काम या मजदूरी।

महाउत(पु)—पु० दे० 'महाव्रत'।

महाउर—पु० दे० 'महावर'।

महाजनी—स्त्री० रुपये के लेने देने का व्यवसाय। एक लिपि जो महाजनो के यहाँ बही खाता लिखने मे काम आती है।

महतम(पु)†—पु० दे० 'महात्म्य'।

महात्मा—पु० [सं०] वह जिसकी आत्मा

या आशय बहुत उच्च हो, महानुभाव। बहुत बडा साधु या सन्यासी ।
महान्—वि० [सं०] बहुत बडा, विशाल। श्रेष्ठ ।
महानस—पु० [सं०] रसोईघर।
महानी(पु)—वि० स्त्री० बडी। दूषन रहित भव भूखन महानी के (गगा० ३६) ।
महानुभाव—पुं० [सं०] बडा और आदरणीय व्यक्ति, महापुरुष ।
महामात्य—पुं० [सं०] महामत्री ।
महाय(पु)—वि० महान्, बहुत ।
महार्घ—वि० [सं०] बडे मोल का । महँगा।
महाल—पु० [अ०] मुहल्ला, टोला । बदोबस्त में जमीन का एक भाग, जिसमें कई गाँव होते हैं । भाग, पट्टी ।
महालय—पुं० [सं०] दे० 'पितृपक्ष' ।
महालया—स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्ण अमावास्या, पितृविसर्जन की तिथि ।
महावट—स्त्री० पूस माघ की वर्षा, जाडे की झडी ।
महावत—पुं० फीलवान, हाथीवान ।
महावतारी—पु० [सं०] २५ मात्राओं के छद जिनमें गगनागना, मुक्तमणि, मुगीतिका, नाग और मदनाग प्रधान हैं ।
महावर—पुं० एक प्रकार का लाल रग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पावों को चित्रित कराती हैं, यावक ।
महावरा—पु० दे० 'मुहावरा' ।
महावरी—पु० महावर की बनी हुई गोली या टिकिया ।
महाशय—पु० उच्च आशयवाला व्यक्ति, महानुभाव ।
महि(पु)—अव्य० दे० 'महँ' । स्त्री० [सं०] पृथ्वी । ⊙जा = स्त्री० सीता जी। ⊙देव = पु० ब्राह्मण । ⊙धर = पु० पर्वत शेषनाग । ⊙पाल(पु) = पु० दे० 'महीपाल' । ⊙सुता = स्त्री० सीता जी। ⊙सुर = पु० दे० 'महीसुर' ।
महिख(पु)—पु० दे० 'महिष' ।
महिमा—स्त्री० [सं०] महत्व, माहात्म्य । प्रभाव, प्रताप । आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिससे योगी अपनी महिमा अर्थात् शक्तियों या प्रभाव को इच्छानुसार बढा सकता है। ⊙वान् = वि० महिमा या गौरववाला ।
महिम्न—पु० [सं०] पुष्पदत का बनाया हुआ सस्कृत भाषा में शिव का स्तोत्र ।
महियाँ(पु)—अव्य० में ।
महियाउर†—पु० मठे में पका हुआ चावल ।
महिला—स्त्री० [सं०] भली स्त्री । स्त्री ।
महिष—स्त्री० [सं०] भैंसा । एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मारा था । ⊙मर्दिनी = स्त्री० दुर्गा ।
महिषी—स्त्री० [सं०] भैंस । रानी, विशेषत पटरानी । सैरध्री ।
महिषेश—पु० [सं०] महिषासुर । यमराज ।
मही—पु० मठा, छाछ । स्त्री० [सं०] पृथ्वी । देश, स्थान । नदी । एक की सख्या । एक लघु और एक गुरु मात्रा का एक छद । ⊙तल = पु० पृथ्वी, ससार । ⊙धर = पु० पर्वत । शेषनाग । एक वर्णिक वृत्त जिसमें लघु गुरु क्रम से १४ लघु १४ गुरु हों । ⊙प, ⊙पति, ⊙पाल = पुं० राजा । ⊙सुर = पुं० ब्राह्मण ।
महीन—वि० जिसकी मोटाई बहुत कम हो, मोटा का उल्टा, पतला । बारीक, झीना । कोमल, धीमा (शब्द या स्वर) ।
महीना—पुं० काल का एक परिमाण जो प्राय तीस दिन का होता है वर्ष का १२वाँ हिस्सा । हिंदी में एक वर्ष के इन हिस्सा के नाम चैत, वैसाख, जेठ, असाढ, सावन, भादों, कुआर (आसोज या आसो) कातिक, अगहन या मँगसर, पूस, माघ या माह और, फागुन । मासिक वेतन, दरमाहा । मासिक धर्म, रजोधर्म ।
महेरी—स्त्री० मठे में पकाया हुआ चावल । [illegible] मक्खन की तलछट ।
महुँ(पु)—अव्य० दे० 'महँ' ।
महुअर—पु० एक प्रकार का बाजा, तूँबी । एक प्रकार का इद्रजाल का खेल जो महुअर बजाकर किया जाता है ।
महुआ—पु० एक वृक्ष जो ऊँचा और छतनार होता है और डालियाँ चारो ओर फैलती हैं । इसके फूल, फल, बीज, लकड़ी

सभी काम मे आती हैं। इसके फूलो से शराब भी खीची जाती है।

महुकम(पु)—वि० पक्का, दृढ।

महुज्जल—वि० अत्यत उज्वल।

महुरि—स्त्री० सं० 'महुअर'।

महुछा(पु)†—पु० दे० 'महोच्छव'।

महुर्वार—स्त्री० दे० 'महुअर'।

महुरव(पु)—पु० महुआ। जेठी मधु, मुलेठी। शहद।

महूम(पु)—स्त्री० दे० 'मुहिम'। पु० मित्र। . . मदमद मारुत मुहूम मनसा की है" (जगद्विनोद ३८५)।

महूरत(पु)—पु० दे० 'मुहूर्त'।

महूष(पु)—दे० 'महुख'।

महेंद्र—पु० [सं०] विष्णु। इद्र। भारतवर्ष का एक पर्वत जो सात कुलपर्वतो मे गिना जाता है। ⊙**वारुणी**=स्त्री० बडा इद्रायण।

महेंद्री—स्त्री० इद्र की स्त्री, इद्राणी।

महेर†—पु० दे० 'महेरा'। पु० झगडा, बखेडा।

महेरा—पु० एक प्रकार का व्यजन या खाद्य पदार्थ, मट्ठा।

महेरी—स्त्री० उबाली हुई ज्वार जिसे लोग नमक मिर्च से खाते हैं। वि० अडचन डालनेवाला।

महेश—पु० [सं०] शिव। ईश्वर।

महेशानी—स्त्री० दे० 'महेशी'।

महेशी—स्त्री पार्वती।

महेश्वर—पु० ईश्वर। परमेश्वर। महादेव।

महेस(पु)—पु० दे० 'महेश'।

महोखा(पु)—पु० एक पक्षी जो तेज दौडता है, पर उड नही सकता।

महोगनी—पु० [अ०] एक प्रकार का बहुत बडा पेड जिसकी लकडी बहुत ही अच्छी, दृढ और टिकाऊ होती है और पालिश खूब पकडती है। यह पेड मध्य अमेरिका मे जिसको और भारत आदि मे पाया जाता है।

महोच्छव(पु)†—पु० बडा उत्सव, महोत्सव।

महोछा, महोछो(पु)†—पु० महोत्सव।

महोत्सव—पु० [सं०] बडा उत्सव।

महोदधि—[सं०] समुद्र।

महोदय—पु० [सं०] महाशय। स्वामी। आधिपत्य। स्वर्ग। कान्यकुब्ज देश।

महोला(पु)†—पु० हीला, बहाना। धोखा, चकमा।

महौघ—पु० [सं०] जल की तेज धारा। समुद्र की बाढ। तूफान।

मह्या, मह्यौ(पु)—पु० मठा, छाछ।

माँ—अव्य० मे। स्त्री० जन्म देनेवाली माता। दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी आदि देवियो के लिये प्रयुक्त शब्द। ⊙**जाया**=पु० सगा भाई।

माँखना(पु)†—अक० दे० 'माखना'।

माँखी(पु)†—स्त्री० दे० 'मक्खी'।

माँग—स्त्री० माँगने की क्रिया या भाव। बिक्री या खपत आदि के कारण किसी पदार्थ के लिये होनेवाली आवश्यकता या चाह। सिर के बालो के बीच की रेखा जो बालो को विभक्त करके बनाई जाती है, सीमत। ⊙**टीका**=पु० स्त्रियो का माँग पर का गहना। ⊙**फूल**=पु० दे० 'माँगटीका'। मु०~**कोख से सुखी रहना या जुडाना**=स्त्रियो का सौभाग्यवती और सतानवती रहना। ~**पट्टी करना**=कघी करना।

माँगन(पु)†—पु० माँगने की क्रिया या भाव। भिक्षुक।

माँगना—सक० किसी से यह कहना कि तुम अमुक पदार्थ मुझे दो, याचना करना। कोई आकाक्षा पूरी करने के लिये कहना।

माँगलिक—वि० [सं०] मगल करनेवाला। पु० नाटक का वह पात्र जो मगलपाठ करता है।

माँगल्य—वि० [सं०] शुभ, मगलकारक। पु० मंगल का भाव।

माँचना(पु)†—अक० आरभ होना, जारी होना। प्रसिद्ध होना।

माँचा†—पु० पलँग, खाट। छोटी पीढी। मचान।

माँछ†—पु० मछली।

माँजना—सक० किसी वस्तु मे रगडकर मैल छुडाना। सरेस और शीशे की बुकनी आदि लगाकर पतंग की डोर को

दृढ़ करना, माँझा देना। रगड़कर चमकाना। अक० अभ्यास करना।

मांजर(पु)†—स्त्री० दे० 'पजर'।

मांजा—पु०। पहली वर्षा का फेन जो मछलियो के लिये मादक होता है।

मांझ(पु)†—अव्य० मे, भीतर। (पु)†—पु० अतर, फरक।

माझा—पु० नदी मे का टापू। एक प्रकार का आभूषण जो पगडी पर पहना जाता है। वृक्ष का तना। वे पीले कपडे जो वर कन्या को हल्दी चढने पर पहनाए जाते हैं। पतग या गुड्डी के डोरे या नख पर चढाया जानेवाला कलफ। दे० 'मझा'।

मांझिल(पु)†—क्रि० वि० बीच का।

मांझी—पु० केवट, मल्लाह। झगडा या मामला तै करानेवाला।

मांट(पु)†—पु० मटका। कुडा। घर का ऊपरी भाग, अटारी।

मांठ—पु० मटका, कुडा।

मांठा(पु)—स्त्री० एक प्रकार की चूडी। मट्ठी या मठरी नामक पकवान।

मांड—पुं० पकाए हुए चावलो मे से निकला हुआ लसदार पानी, पीच।

मांड़ना(पु)†—सक० सानना, गूंथना। पोतना, लेपन करना। अन्न की बाल मे से दाने झाडना। मचाना। चलना। रौंदना। सजानाव जाना।

मांड़न—स्त्री० मरंजी, गोट।

मांडया(पु)†—पुं० अतिथिशाला। विवाह का मडप, मँडवा।

मांडलिक—पुं० वह जो किसी मडल या प्रात की रक्षा अथवा शासन करता हो। वह छोटा राजा जो किसी वडे राजा को कर देता हो। वि० मंडल सबधी, मंडल का।

मांडव—पुं० विवाह आदि शुभ कृत्यो के लिये छाया हुआ मडप।

मांड़ा—पुं० आँख का एक रोग जिसमे उसके अदर महीन झिल्ली सी पड जाती है। मडप, मँडवा। मँदे की एक प्रकार की बहुत पतली रोटी, लुचई। पराठा। **मांडी**—स्त्री० भात का पसावन, मांड। कपडे या सूत के ऊपर चढाया जानेवाला कलफ।

मांडूक्य—पु० [सं०] एक उपनिषद्।

मांढ़ा†(पु)—पु० दे० 'मांड़व'।

माँत(पु)—वि० उन्मत्त,। मस्त। बेरौनक, उदास। **माँतना**(पु)†—वि० अक० उन्मत्त होना। **माँता**(पु)†—वि० मतवाला।

मांत्रिक—पु० [सं०] वह जो तत्र मंत्र का काम करता हो।

माँद—वि० बेरौनक, उदास। किसी के मुकाबले मे खराब या हलका। हारा हुआ, मात। स्त्री० जगली पशुओ के रहने का विवर, खोह। मनुष्य के न रहने योग्य छोटी और अँधेरी कोठरी।

माँदगी—स्त्री० [फा०] बीमारी, रोग।

माँदर—पु० मृदग बाजे की एक किस्म, मर्दल।

माँदा—वि० थका हुआ। रोगी।

माद्य—पु० [सं०] मद होने का भाव।

माँपना(पु)†—अक० नशे मे चूर होना।

माँयँ—अव्य० मे, मध्य।

मांस—पु० [सं०] शरीर का वह प्रसिद्ध, मुलायम, लचीला, लाल पदार्थ जो रेशेदार तथा चरबी मिला हुआ होता है। कुछ विशिष्ट पशुओ के शरीर का उक्त अश, गोश्त। ⊙पेशी=स्त्री० शरीर के अदर होनेवाला मासपिड। ⊙भक्षी=⊙भोजी=पु० दे० 'मासाहारी'। ⊙ल=वि० मास से भरा हुआ, मासपूर्ण (अंग)। मोटा ताजा। पु० काव्य मे गौडी रीति का गुण।

मांसाहारी—पु० [सं०] मासभक्षी।

माँसु(पु)—पु० दे० 'मास'।

माँह(पु)†—अव्य० मे, बीच। अदर। **माँहा**(पु)†—अव्य दे० 'माँह'। **माँहि, माँहीं**(पु)†—अव्य दे० 'माँह'।

मा—स्त्री० [सं०] लक्ष्मी। दुर्गा या काली। माता। दीप्ति, प्रकाश। **मा**(पु)†—सक०

नापना, तोलना। जाँचना। अक० दे० 'समाना' या 'अमाना'।

माइ, माइँ(पु)‡—स्त्री० पुत्री, लडकी। छोटा पूआ जिससे विवाह मे मातृपूजन किया जाता है।

माइ—स्त्री० दे० 'माई'।

माइक—पु० [अं०] 'माइक्रोफोन का संक्षेप' वह यत्र जिसके समुख बोलने से दूर तक जोर से सुनाई देता है।

माइका—पु० दे० 'मायका'। पु० [अं०] अभ्रक।

माई—स्त्री० माता, माँ। बूढी या बडी स्त्री के लिये सबोधन। ~का लाल=पु० उदार चित्तवाला व्यक्ति। वीर, वली।

माउल्लहम—पुं० [अ०] हिकमत मे मास का बना हुआ एक प्रकार का पुष्टिकारक अरक।

माकूल—वि० [अ०] उचित - वाजिव। लायक, योग्य। अच्छा, वढिया। जिसने वादविवाद मे प्रतिपक्षी की वात मान ली हो।

माक्षिक—पु० [सं०] शहद। सोनामक्खी। रूपामक्खी।

माख(पु)—पु० नाराजगी, रिस। अभिमान, घमड। पछतावा। अपने दोष को ढकना।

माखन+—पु० दे० 'मक्खन'। ⊙चोर=पु० श्रीकृष्ण।

माखना(पु)†—अक० क्रोध करना।

माखी(पु)†—स्त्री० मक्खी। सोनामक्खी।

मागध—वि० मगध देश का। पु० [सं०] एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग विरुदावली का वर्णन करते है, भाट। जरासध।

मागधी—स्त्री० [सं०] मगध देश की प्राचीन प्राकृत भाषा।

माघ—पु० कुद का फूल। पु० [सं०] वह चाद्र मास जो पूस के बाद और फागुन से पहले पडता है। सस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि का नाम। उपर्युक्त कवि का वनाया हुआ एक प्रसिद्ध काव्य ग्रथ।

माघी—स्त्री० माघ मास की पूर्णिमा। वि० माघ का, माघ सवधी।

माच(पु)†—पुं० दे० 'मचान'।

माचना(पु)†—सक० दे० 'मचना'।

माचल(पु)†—वि० मचलनेवाला, जिद्दी। मनचला।

माचा†—पुं० खाट की तरह की बैठने की पीढी। **माची**—स्त्री० छोटा माचा।

माछ†—पु० मछली।

माछर(पु)†—पु० दे० 'मच्छड़'। मछली।

माछरि—स्त्री० दे० 'मछली'।

माछी†—स्त्री० मक्खी।

माजरा—पु० [अ०] हाल, वृत्तात। घटना। रहस्य।

माजून—स्त्री० [अ०] औषध के रूप मे काम आनेवाला मीठा अवलेह।

माजूफल—पु० [फा० + हिं०] माजू नामक झाडी का गोटा या गोद जो औषध तथा रँगाई के काम मे आता है।

माजूर—वि० [सं०] जिसमे उज्र हो। असमर्थ, लाचार।

माट—पु० मिट्टी का वह बरतन जिसमे रँगरेज रग वनाते है। बडी मटकी।

माटा†—पु० एक प्रकार की लाल च्यूँटी।

माटी(पु)†—स्त्री० दे० 'मिट्टी'। शव, लाश। पृथ्वी नामक तत्त्व। धूल, रज।

माठ—पु० एक प्रकार की मिठाई।

माठर—पुं० [सं०] सूर्य के एक पारिपार्श्वक जो यम माने जाते हैं। व्यास। ब्राह्मण। कलाल।

माड़ना(पु)†—अक० ठानना। सक० भूषित करना। धारण करना, पहनना। आदर देना, पूजना। दे० 'माँडना'।

माढ़ा(पु)†—पु० अटारी पर का चौबारा।

माढ़ी(पु)†—स्त्री० दे० 'मढी'।

माणवक—पु० [सं०] १६ वर्ष की अवस्था वाला युवक। विद्यार्थी, बटु। निंदित या नीच आदमी।

माणिक—पु० दे० 'माणिक्य'।

माणिक्य—पु० [सं०] लाल रंग का एक रत्न, पद्मराग। वि० सर्वश्रेष्ठ, परम आदरणीय।

मातंग—पु० [सं०] हाथी। चांडाल। एक ऋषि जो शबरी के गुरु थे। अश्वत्थ।

मातंगी—स्त्री० दस महाविद्याओं में से नवीं महाविद्या (तंत्र)।

मात—स्त्री० दे० 'माता'। ⓟ वि० मदमस्त, मतवाला। स्त्री० [अ०] पराजय, हार। वि० पराजित।

मातदिल—वि० जो गुण के विचार से न बहुत ठंढा हो न बहुत गरम।

मातनाⓟ†—अक० मस्त होना, नशे में हो जाना।

मातबर—वि० [अ०] विश्वसनीय। **मातबरी** स्त्री० विश्वसनीयता।

मातम—पु० [अ०] वह रोना, पीटना आदि जो किसी के मरने पर होता है, मरण-शोक। ⊙**पुर्सी** = स्त्री० [फा०] मृतक के संबंधियों को सांत्वना देना। **मातमी**—वि० [फा०] शोकसूचक।

मातलिसूत—पु० [सं०] इंद्र।

मातहत—वि० [अ०] किसी की अधीनता में काम करनेवाला।

माता—स्त्री० [सं०] जन्म देनेवाली स्त्री, जननी। पूज्य या आदरणीय स्त्री। गौ, भूमि। लक्ष्मी। शीतला, चेचक। वि० [हिं०] मतवाला।

मातामह—पुं० [सं०] माता का पिता, नाना।

मातुⓟ—स्त्री० माता, माँ ⊙**श्री** = स्त्री० [सं०] माता जी।

मातुल—पुं० [सं०] माता का भाई, मामा। धतूरा। **मातुली**—स्त्री० [सं०] मामा की स्त्री, मामी। माँग।

मातृ—स्त्री० [सं०] दे० 'माता'। ⊙ **क** = वि० माता संबंधी। ⊙**पूजा** = स्त्री० विवाह की एक रीति जिसमें पूर्वो से पितरों का पूजन किया जाता है, मातृ का पूजन। ⊙**भाषा** = स्त्री० वह भाषा जो बालक माता की गोद में रहते हुए सीखता है, माँ से ग्रहण की हुई भाषा। ⊙**ष्वसा** = स्त्री० माँ की बहन, मौसी।

मातृका—स्त्री० [सं०] दाई, धाय। माता, जननी। तांत्रिकों की ये सात देवियाँ—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इंद्राणी और चामुंडा।

मात्र—अव्य० [सं०] केवल, सिर्फ।

मात्रा—स्त्री० [सं०] परिमाण। एक बार खाने योग्य औषध। उतना काल जितना एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने में लगता है। कला। वह स्वरसूचक रेखा जो अक्षर के ऊपर नीचे या आगे पीछे लगाई जाती है। ⊙**समक** = पुं० एक मात्रिक छंद।

मात्रिक—वि० [सं०] मात्रा संबंधी। जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।

मात्सर्य—पुं० [सं०] ईर्ष्या, डाह।

माथⓟ†—पुं० दे० 'माथा'

माथनाⓟ—सक० दे० 'मथना'।

माथा—पुं० सिर का ऊपरी भाग, मस्तक किसी पदार्थ का ऊपरी भाग। ⊙**पच्ची** = स्त्री० बहुत अधिक बकना या समझाना। मु०~**ठनकना** = पहले से ही किसी दुर्घटना या विपरीत बात के होने की आशंका होना। **माथे चढ़ाना या धरना** = सादर स्वीकार करना। **माथे पर बल पड़ना** = आकृति से क्रोध, दुःख या असंतोष आदि प्रकट होना। **माथे मानना** = सादर स्वीकार करना।

माथुर—पु० [सं०] मथुरा का निवासी। ब्राह्मणों की एक जाति, चौबे। कायस्थों की एक उपजाति।

माथे—क्रि० वि० मस्तक पर। भरोसे, सहारे पर।

मादⓟ—दे० 'मद'।

मादक—वि० [सं०] नशा उत्पन्न करने वाला।

मादन—वि० [सं०] मादक। मस्त करने-वाला। पुं० कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

मादर—पुं० एक प्रकार का मृदग। स्त्री० [फा०] माँ, माता। ⊙जाद = वि० जन्म का, पैदाइशी। सहोदर (भाई)। बिलकुल नगा दिगबर। मादरी = वि० [फा०] मादर या माता से सबध रखनेवाला, माता का (जैसे मादरी जबान)।

मादरिया(पु)—स्त्री० दे० 'मादर'।

मादा—स्त्री० [फा०] स्त्री जाति का प्राणी, नर का उलटा।

माद्दा—पुं० [अ०] मूल तत्व। योग्यता। मवाद।

माधव—पुं० [सं०] विष्णु, नारायण। वैशाख मास। वसत ऋतु। एक वृत्त, मुक्तहरा। वि० मधु सबधी। मस्त करनेवाला।

माधविका—स्त्री० दे० 'माधवी'।

माधवी—स्त्री० [सं०] प्रसिद्ध लता जिसमे सुगधित फूल लगते हैं। सवैया छद का एक भेद, एक प्रकार की शराब। तुलसी। दुर्गा। माधव की पत्नी।

माधुरिया(पु)—स्त्री० दे० 'माधुरी'।

माधुरी—स्त्री० [सं०] मिठास। शोभा, सुदरता। शराब।

माधुर्य—पुं० [सं०] मधुरता। सुदरता। मिठास। पाचाली रीति के अतर्गत काव्य का एक गुण जिसके द्वारा चित्त बहुत प्रसन्न होता है।

माधैया(पु)—पुं० दे० 'माधव'।

माधो—पु० श्रीकृष्ण। श्रीरामचद्रजी।

माध्यदिनी—स्त्री० [सं०] शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

माध्यम—वि० [सं०] मध्य का, बीचवाला। पुं० कार्यसिद्धि का उपाय या साधन। वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय।

माध्यमिक—पुं० [सं०] बौद्धो का भेद। मध्य देश।

माध्यस्थ—पुं० दे० 'मध्यस्थ'।

माध्याकर्षण—पुं० [सं०] पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण जो सदा सब पदार्थों को अपनी ओर खीचता रहता हैं।

माध्व—पुं० [सं०] वैष्णवो के चार मुख्य सप्रदायो मे से एक जो मध्वाचार्य का चलाया हुआ है।

माध्वी—स्त्री० [सं०] मदिरा, शराब।

मान—पुं० [सं०] भार, तौल या नाप आदि, परिमाण। वह साधन जिसके द्वारा कोई चीज नापी या तौली जाय, पैमाना। अभिमान। प्रतिष्ठा, इज्जत। मन का वह विकार जो अपने प्रिय व्यक्ति को कोई दोष या अपराध करते देखकर होता है (साहित्य)। सामर्थ्य, शक्ति। ⊙क = पुं० किसी वस्तु का वह निश्चित रूप या माप जिसके अनुसार उस वर्ग की और चीजो के गुण दोष की माप होती हो, मानदड। ⊙क्रीड़ा = वि० स्त्री सूदन के अनुसार एक प्रकार का छद। ⊙गृह = पुं० कोपभवन। ⊙चित्र = पुं० किसी स्थान का नकशा ⊙दड = पुं० वह निश्चित या स्थिर की हुई माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता या गुण आदि का अदाज लगाया जाय। ⊙धन = वि० जो अपने मान या इज्जत को ही धन समझता हो। ⊙परेखा = पु० [हिं०] आशा, भरोसा। ⊙मदिर = पु० कोपभवन। वह स्थान जिसमे ग्रहों आदि का वेध करने के यत्र तथा सामग्री हो, वेधशाला। ⊙मनौती = स्त्री० [हिं०] मन्नत, मनौती। रूठने और मनाने की क्रिया। ⊙मरोर(पु)† = स्त्री० [हिं०] दे० 'मनमुटाव'। ⊙मोचन = पु० रूठे हुए प्रिय को मनाना। ⊙हानि = स्त्री० वेइज्जती, हतक इज्जत। मु०~मनाना = रूठे हुए को मनाना।~मारना = मान छोड देना। ~रखना = प्रतिष्ठा करना।

मानकद—पु० एक प्रकार का मीठा कंद। सालिब मिस्त्री।

मानकच्चू—पुं० दे० 'मानकद'।

मानता—स्त्री० दे० 'मन्नत'।

मानवा—अक० अगीकार करना, फर्ज करना, समझना। ध्यान मे लाना, समझना, ठीक मार्ग पर आना। सक० स्वीकृत करना।

किसी को पूज्य, आदरणीय या योग्य समझना। पारगत समझना। धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा या विश्वास करना। देवता आदि को भेंट करने का प्रण करना, मन्नत करना। ध्यान मे लाना, समझना।

माननीय—वि० [सं०] जो मान करने योग्य हो, पूजनीय।

मानव—पु० [सं०] मनुष्य, आदमी। २४ मात्राओं के छदो की सज्ञा। ⊙शास्त्र =पुं० वह शास्त्र जिसमे मानव जाति की उत्पत्ति विकास आदि का विवेचन होता है (अं० ऐंथ्रापॉलॉजी)। मानवी —स्त्री०, स्त्री, नारी। वि० मानव सबधी। मानवीय—वि० मानव संबंधी। मानवेंद्र—पु० राजा। श्रेष्ठ पुरुष।

मानस—वि० [सं०] मन से उत्पन्न। मन का विचारा हुआ। क्रि० वि० मन के द्वारा। पुं० मन हृदय। मानसरोवर। कामदेव। संकल्प विकल्प। मनुष्य। दूत। ⊙पुत्र = पुं० पुराणानुसार वह पुत्र जिसकी उत्पत्ति इच्छा मात्र से हो। ⊙शास्त्र = पुं० मनोविज्ञान। ⊙हंस = पुं० एक वृत्त का नाम, मानहस, रणहस।

मानसर—पुं० दे० 'मानसरोवर'।

मानसरोवर—पुं० हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध बडी झील।

मानसिक—वि० [सं०] मन की कल्पना से उत्पन्न। मन सबधी, मन का।

मानसी—स्त्री० [सं०] वह पूजा जो मन ही मन की जाय। एक विद्यादेवी। वि० मन का मन से उत्पन्न।

मानसून—पुं० [अं०] एक प्रकार की वायु जो भारतीय महासागर मे अप्रैल से अक्टूबर मास तक बराबर दक्षिण पश्चिम के कोण से और अक्टूबर से चलती है। अप्रैल से अक्टूबर तक जो हवा चलती है प्राय. उसी के द्वारा भारत मे वर्षा भी हुआ करती है। वह वायु जो महादेशो और महाद्वीपो तथा उनके आसपास के समुद्रो मे पड़नेवाले वातावरण सबध पारस्परिक अतर के कारण उत्पन्न होती है और जो प्रायः छह मास तक एक निश्चित दिशा मे और छह मास तक उसकी विपरीत दिशा मे बहती है।

मानहंस—पुं० [सं०] मनहस वृत्त।

मानहुँ—Ⓟ अव्य० दे० 'मानों'।

माना—पु० [इब्र०] एक प्रकार का मीठा निर्यास जो रेचक भी होता है। †पु० [हिं०] अन्नादि नापने का पात्र जो लकडी, मिट्टी या धातु का बना होता है।

मानिंद—वि० [फा०] समान, तुल्य।

मानिक—पु० लाल रग की एक मणि, पद्मराग। ⊙रेत = स्त्री० मानिक का चूरा जिससे गहने साफ करते हैं।

मानिकचदी—स्त्री० साधारण छोटी सुपारी।

मानित—वि० [सं०] समानित प्रतिष्ठित।

मानिता—स्त्री० [सं०] गौरव, समान। अभिमान।

मानिनी—वि० स्त्री० [सं०] मानवती, गर्ववती। मान करनेवाली, रुष्टा। स्त्री० साहित्य मे वह नायिका जो नायक का दोष देखकर उससे रूठ गई हो।

मानी—वि०, [सं०] अहकारी, घमंडी। समानित। पु० वह नायक जो नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो। स्त्री० [अ०] अर्थ, मतलब।

मानुखⓅ—पु० दे० 'मनुष्य'।

मानुष—वि० [सं०] मनुष्य का। पु० मनुष्य, आदमी।

मानुषिक—वि० मानुष का। **मानुषी**—वि० मनुष्य सबधी।

मानुष्य—पु० [सं०] मनुष्य का धर्म या भाव, मनुष्यता। मनुष्य का शरीर।

मानुस—पु० मनुष्य।

माने—पु० अर्थ, मतलब।

मानो—अव्य० जैसे, गोया।

मान्य—वि० [सं०] मानने योग्य, माननीय। पूजनीय, पूज्य। ⊙ता = स्त्री० आदर्श, मान्य होने का भाव, स्वीकृति। प्रामाणिकता।

माप—स्त्री० [सं०] मापने की क्रिया या भाव, नाव। वह मान जिससे कोई पदार्थ मापा जाय। ⊙क=पु० माप, पैमाना। वह जिससे कुछ मापा जाय। वह जो मापता हो। ⊙मान=पु० दे० मानदंड'।

मापना—सक० किसी पदार्थ के विस्तार या घनत्व आदि का किसी नियत मान से परिमाण करना, नापना। किसी पदार्थ का परिमाण जानने के लिये कोई क्रिया करना, नापना। अक० मतवाला होना।

माफ—वि० [अ०] जो क्षमा कर दिया गया हो।

माफकत—स्त्री० [अ०] अनुकूलता। मेल, मैत्री।

माफिक†—वि० अनुकूल, अनुसार। योग्य।

माफी—स्त्री० [अ०] क्षमा। वह भूमि जिसका कर सरकार से माफ हो। ⊙दार=पु० वह जिसकी भूमि की मालगुजारी सरकार ने माफ की हो।

माम पु †—पु० ममता, अहंकार। शक्ति, अधिकार।

मामता—स्त्री० अपनापन, आत्मीयता। प्रेम।

मामलत, मामलति पु †—स्त्री० मामला, व्यवहार की बात। विवादास्पद विषय।

मामला—पु० व्यापार, कामधंधा। पारस्परिक व्यवहार। व्यावहारिक, व्यापारिक या विवादास्पद विषय। झगड़ा, विवाद। मुकदमा।

मामा—पु० माता का भाई। स्त्री० [फा०] माता, माँ। रोटी पकानेवाली स्त्री। नौकरानी।

मामी—स्त्री० अपने दोष पर ध्यान न देना

मामूल—पु० [अ०] रीति, रिवाज।

मामूली—वि० [अ०] नियमित, नियत। सामान्य, साधारण।

माय पु †—स्त्री० माँ, जननी। बड़ी या आदरणीय स्त्री। दे० 'माया'। अव्य० दे० 'माहिं'।

मायक—पु० दे० 'मायावी, वि० मायामय।

मायका—पु० स्त्री के लिये उसकी माता का घर, नैहर।

मायन—पु †—पु० वह दिन या तिथि जिसमे विवाहादि में मातृका पूजन और पितृनिमंत्रण होता है। उपर्युक्त दिन का कृत्य।

मायनी—†स्त्री० दे० 'मायाविनी'।

मायल—वि० [फा०] झुका हुआ, प्रवृत्त। मिश्रित (रंग)।

माया†—स्त्री० माँ, जननी। पु† किसी को अपना समझने का भाव, ममत्व, कृपा, दया। स्त्री० [सं०] लक्ष्मी। धन, संपत्ति। अवधि, भ्रम। छल, कपट। सृष्टि की उत्पत्ति का मुख्य कारण, प्रकृति। ईश्वर की वह कल्पित शक्ति जो उसकी आज्ञा से सब काम करती हुई मानी गई है। इंद्रजाल, जादू। इंद्रवज्रा नामक वर्णवृत्त का एक उपभेद जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से मगण, तगण, यगण सगण और अंत मे गुरु, कुल १३ वर्ण हो। एक वर्णवृत्त। मय दानव की कन्या जिससे खरदूषण, त्रिशिरा और सूर्पनखा पैदा हुए थे। किसी देवता की कोई लीला, शक्ति या प्रेरणा। दुर्गा। बुद्धदेव (गौतम) की माता का नाम। ⊙पात्र=वि० धनवान्। ⊙वाद=पु० ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं को अनित्य और असत्य मानने का श्री शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत। ⊙वादी=पु० वह जो सारी सृष्टि को माया या भ्रम समझे।

मायाविनी—स्त्री० छल या कपट करनेवाली स्त्री, ठगिनी। मायावी—पु० बहुत बड़ा चालाक, धोखेबाज। एक दानव जो मय या दुंदुभी नामक राक्षस का पुत्र था। परमात्मा। जादूगर।

मायास्त्र—पु० एक प्रकार का कल्पित अस्त्र। कहते हैं कि इसका प्रयोग विश्वामित्र ने श्री रामचंद्र जी को सिखाया था। मायिक=वि० माया से बना हुआ, बनावटी। मायावी।

मायूस—वि० [अ०] निराश, नाउम्मेद ।

मार—पु० [सं०] कामदेव । धतूरा । ⑤,† स्त्री० [हिं०] माला । अव्य० अत्यत बहुत । स्त्री० मारने की क्रिया या भाव । आघात, चोट । निशाना । मारपीट । ⊙काट = स्त्री० युद्ध, लडाई । मारने काटने का काम या भाव । ⊙पीट = स्त्री० ऐसी लडाई जिससे लोग मारे पीटे जायें । ⊙पेच = पु० धूर्तता, चालबाजी ।

मारक—वि० [सं०] मार डालनेवाला, सहारक । किसी के प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला ।

मारका—पु० चिह्न, निशान । विशेषता सूचक चिह्न (व्यापार) । पुं० [अ०] युद्ध, लडाई । बडी या महत्वपूर्ण घटना ।

मारकीन—पुं० एक प्रकार का मोटा कोरा कपडा ।

मारकेश—पु० [सं०] ग्रहो का वह योग जो किसी मनुष्य के लिये घातक होता है (ज्योतिष) ।

मारग⑤†—पु० रास्ता ।

मारगन—पु० बाण, तीर । भिक्षुक ।

मारण—पुं० [सं०] मार डालना, हत्या करना । एक कल्पित तात्रिक प्रयोग । प्रसिद्ध है कि जिस मनुष्य के लिये यह प्रयोग किया जाता है वह मर जाता है ।

मारतड—पु० दे० 'मार्तंड' ।

मारतोल—पुं० एक प्रकार का हथौड़ा ।

मारना—सक० वध करना, प्राण लेना । पीटना या आघात पहुँचाना । जरव लगाना । दुख देना, सताना । कुश्ती या मल्लयुद्ध मे विपक्षी को पछाड़ देना । बंद कर देना । शस्त्र आदि चलाना, फेंकना । किसी शारीरिक आवेग या मनोविकार आदि को रोकना । नष्ट कर देना, न रहने देना । शिकार करना, आखेट करना । छिपाना । चलाना, सचालित करना । धातु आदि को जलाकर उसकी भस्म तैयार करना । बिना परिश्रम के बहुत अधिक धन, माल आदि प्राप्त करना । जीतना । अनुचित रूप से रख लेना । बल या प्रभाव कम करना । निर्जीव सा कर देना । लगाना, देना । मु०—कुछ पढ़कर~ = मत्र से फूंककर कोई चीज फेंकना । गोली~ = किसी पर बदूक चलाना या छोडना, जाने देना । जादू या टोना~ = जादू का प्रयोग करना । मत्र~ = जादू करना ।

मारफत—अव्य० [अ०] द्वारा, जरिए से ।

मारवाड़—पु० भारत के राजस्थान या राजपूताना राज्य का वह भाग जिसके उत्तर मे बीकानेर, दक्षिण मे कच्छ, पश्चिम मे सिंध और पूर्व मे उदयपुर और अजमेर है । मारवाड़ी—पुं० मारवाड़ देश का निवासी । स्त्री० मारवाड़ देश की भाषा । वि० मारवाड़ देश का ।

मारा⑤—वि० जो मार डाला गया हो । मु०~फिरना,~मारा फिरना = बुरी दशा मे इधर उधर घूमना ।

मारामार—क्रि० वि० अत्यत शीघ्रता से ।

मारी—स्त्री० महामारी ।

मारुत्—पु० [सं०] वायु, हवा । मारुति—पु० [सं०] हनुमान् । भीम ।

मारू—पुं० एक बाजा और राग जो युद्ध के समय बजाया और गाया जाता है । बहुत बड़ा डका या धौंसा । पुं० मरु देश निवासी । वि० मारनेवाला । हृदयबेधक, कटीला ।

मारे—अव्य० वजह से ।

मार्कंडेय—पुं० [सं०] मृकड ऋषि के पुत्र । कहते हैं कि ये अपने तपोबल से सदा जीवित रहते हैं और रहेंगे ।

मार्का—पुं० दे० 'मारका' ।

मार्ग—पु० [सं०] रस्ता, पथ । अगहन का महीना । मृगशिरा नक्षत्र ।

मार्गण—पु० [सं०] अन्वेषण, ढूंढना । बाण ।

मार्गन⑤—पुं० बाण ।

मार्गशीर्ष—पु० [सं०] अगहन मास । कार्तिक के बाद का महीना ।

मार्गी—पुं० [सं०] मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति, यात्री ।

मार्जन—पु० [सं०] दे० 'मार्जना' ।

मार्जना—स्त्री० सफाई । क्षमा । मार्जनीय = स्त्री० झाडू । क्षम्य ।

मार्जार—पु० [सं०] बिल्ली ।

मार्जित—वि० [सं०] साफ किया हुआ ।

मार्तंड—पु० [सं०] सूर्य ।

मार्दव—पुं० [सं०] अहंकार का त्याग । दूसरे को दुखी देखकर दुखी होना । सरलता ।

मार्फत—अव्य० [अ०] द्वारा, जरिए से ।

मार्मिक—वि० [सं०] जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े, विशेष प्रभावशाली । मर्मज्ञ ।

माल—पुं० पहलवान, कुश्ती लड़नेवाला । †स्त्री० माला, हार । वह रस्सी या सूत की डोरी जो चरखे में टेकुए को घुमाती है । पंक्ति, पाँती । पु० [अ०] संपत्ति, धन । सामान, असबाब । क्रय विक्रय का पदार्थ । वह धन जो कर में मिलता है । फसल की उपज । उत्तम और सुस्वादु भोजन । गणित में वर्ग का घात, वर्गांक । वह द्रव्य जिससे कोई चीज बनी हो, । ⊙खाना=पु० [फा०] वह स्थान जहाँ माल असबाब रहता हो, भंडार । वह स्थान जहाँ सरकारी और प्रजा से अधिकृत माल रखा जाता है । ⊙गाड़ी =स्त्री० रेल में वह गाड़ी जिसमें माल लादा जाता है । ⊙गुजार=पु० [फा०] मालगुजारी देनेवाला पुरुष । ⊙गुजारी =स्त्री० [फा०] वह भूमिकर जो जमींदार से सरकार लेती है । लगान । ⊙गोदाम =पु० स्टेशन पर वह स्थान जहाँ रेल से आया हुआ माल रखा जाता है । ⊙टाल=पुं० धन संपत्ति । ⊙दार= वि० [फा०] धनी, संपन्न । ⊙पुआ, ⊙पूआ=पु० [हिं०] पूरी की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा पकवान । ⊙मता= पु० माल असबाब । मु०~चीरना या मारना=पराया धन हड़पना, दूसरे की संपत्ति दबा बैठना ।

मालकँगनी—स्त्री० एक लता जिसके बीजों से तेल निकलता है ।

मालकोश—पु० [सं०] संपूर्ण जाति का एक राग, कोशिक राग ।

मालती—स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध लता जो बड़े वृक्षों पर घटाटोप फैलती है । छह अक्षरों का छंद जिसके प्रत्येक चरण में दो जगण हों । १२ अक्षरों का छंद जिसके प्रत्येक चरण में नगण के बाद दो जगण और अंत में एक रगण होता है । सवैया का मत्तगयंद नामक भेद जिसके प्रत्येक चरण में ७ भगण और अंत में दो गुरुवर्ण हों । चाँदनी, ज्योत्स्ना । रात्रि, रात ।

मालद्वीप—पु० भारतवर्ष के पश्चिम ओर का एक द्वीपपुंज ।

मालव—पुं० [सं०] मालवा देश । एक राग जिसे भैरव भी कहते हैं । मालव देशवासी या मालव का पुरुष । वि० मालव देश संबंधी, मालवे का ।

मालवा—पु० एक प्राचीन देश जो अब मध्य भारत में है ।

मालवीय—वि० [सं०] मालवे का । मालव देश का निवासी ।

माला—स्त्री० [सं०] पंक्ति, अवली । फूलों का हार, गजरा । समूह, झुंड । दूब । उपजाति छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और अंत में सगण हो, इसे शशिकला और चंद्रावती भी कहते हैं । ⊙दीपक=पु० एक अलंकार जिसमें पूर्वकथित वस्तु को उत्तरोत्तर वस्तु के उत्कर्ष का हेतु बतलाया जाता है । ⊙धर=पु० १७ अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण, सगण, जगण, यगण, और और अंत में लघु गुरु हों ।

मालामाल—वि० [फा०] बहुत संपन्न ।

मालिक—पु० [अ०] ईश्वर, अधिपति । स्वामी । पति, शौहर ।

मालिका—स्त्री० [सं०] पंक्ति, माला । मालिन ।

मालिकाना—पुं० [फा०] स्वामी का अधिकार या स्वत्व, मिलकियत । क्रि० वि० मालिक की तरह ।

मालिकी—स्त्री० मालिक होने का भाव । मालिक का स्वत्व ।

मालिनी—स्त्री० [सं०] मालिन । चंपा नगरी का एक नाम । स्कंद की सात

मातामो मे से एक। गौरी। एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से दो नगण और अत मे दो यगण हो। मदिरा नाम के वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात भगण और अंत्य गुरु हो, उमा, दिया।

मालिन्य—पुं० [सं०] मलिनता, मैलापन।

मालियत—स्त्री० [अ०] कीमत, मूल्य। सपत्ति। कीमती चीज।

मालिया—पुं० जमीन का लगान, राजस्व।

मालिवान(पु)—पुं० दे० 'माल्यवान्'।

मालिश—स्त्री० [फा०] मलने का भाव या क्रिया।

माली—पुं० बाग को सीचने और पौधो को ठीक स्थान पर लगानेवाला आदमी। एक छोटी जाति, जिसके लोग बागो मे फूल और फल के वृक्ष लगाते हैं। वि० [फा०] आर्थिक, धन सबधी। वि० [सं०] जो माला धारण किए हो। पुं० एक राक्षस जो माल्यवान् और सुमाली का भाई था। एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १८ मात्राएँ हो। इसका एक वर्णिक भेद भी होता है जिसमे तीन मगण और दो अत्य गुरू कुल ११ वर्ण होते हैं। इसमे यदि पाँचवें की जगह आठवें वर्ण पर यति हो तो श्रद्धा छद होगा।

मालीदा—पु० [फा०] मलीदा, चूरमा। एक प्रकार का बहुत कोमल और गरम ऊनी कपडा।

मालूम—वि० [अ०] जाना हुआ, ज्ञात।

मालोपमा—एक प्रकार का उपमालकार जिसमे एक उपमेय के अनेक उपमान होते हैं और प्रत्येक उपमान के भिन्न भिन्न धर्म होते हैं।

माल्य—पुं० [सं०] फूल। माला। ⊙**कोश** = पु० दे० 'मालकोश'। ⊙**वंत** = पुं० [हिं०] दे० माल्यवान्'। ⊙**वान** = पु० पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था।

मावत(पु)†—पु० दे० 'महावत'।

मावली—पुं० दक्षिण भारत की एक पहाडी वीर जाति का नाम।

मावस(पु)—स्त्री० दे० 'अमावस'।

मावा—पुं० मांड, पीच। सत्त, निष्कर्ष। प्रकृति। खोया।

माशकी—पुं० मशक मे पानी भरनेवाला, भिश्ती।

माशा—पु० ८ रत्ती का एक बाट या मान। एक रग जो कालापन लिए हरा होता है। वि० कालापन लिए हरे रग का।

माशूक—पु० [अ०] प्रेमपात्र, प्रिय।

माष(पु)—स्त्री० दे० 'माख'। पु० [सं०] उदड। माष। शरीर के ऊपर का काले रग का मसा। ⊙**पर्णी** = स्त्री० जगली उडद।

मास(पु)—पु० दे० 'मास'। पु० [सं०] काल का एक विभाग जो वर्ष के १२ वें भाग के बराबर या प्राय. ३० दिनो का होता है, महीना।

मासना(पु)†—अक० मिलना। सक० मिलाना।

मासांत—पु० [सं०] महीने का अत। अमावास्या। सक्राति।

मासा—पु० दे० 'माशा'।

मासिक—वि० [स०] मास सबधी, महीने का, महीने मे एक बार होनेवाला।

मासी—स्त्री० माँ की बहिन, मौसी।

मासूम—वि० [अ०] निरपराध, बेगुनाह। निरीह।

माहँ(पु)—अव्य० बीच, मे।

माह(पु)†—पुं० माघ मास। माष, उडद। प्रत्य० में। 'किजें जहँ सभावना वस्तु हेतु फल माह, (पद्माणभरण ५४)। पु० [फा०] मास, महीना। ⊙**वार** = क्रि० वि० प्रतिमास। वि० मासिक। ⊙**वारी** = वि० हर महीने का।

माहल(पु)—स्त्री० महत्व।

माहताब—पु० [फा०] चद्रमा। चाँदनी।

माहताबी—स्त्री० [फा०] दे० 'महताबी'। एक प्रकार का कपडा।

माहना(पु)—अक० दे० 'उमाहना'।
माहर—पु० इंद्रासन। वि० दे० 'माहिर'।
माहली—पु० अंतःपुर में जानेवाला सेवक, खोजा। सेवक, दास।
माहाँ†—अव्य० दे० 'महँ'।
माहात्म्य—पु० [सं०] महिमा, गौरव, बड़ाई। आदर, मान।
माहि(पु)—अव्य० भीतर, अंदर। अधिकरण कारक का चिह्न 'में' या 'पर'।
माहिर—वि० [अ०] निपुण, तत्वज्ञ।
माहिला(पु)†—पु० माँझी।
माहिष्मती—स्त्री० [सं०] दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर।
माहीं(पु)—अव्य० दे० 'माँहि'।
माही—स्त्री० [फा०] मछली।
माही मरातिब—पु० [फा०] राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले सात झंडे जिनपर मछली और ग्राहो आदि की आकृतियाँ बनी होती हैं।
माहुर—पु० विष, जहर।
माहेंद्र—पु० [सं०] एक अस्त्र का नाम।
माहेश्वर—वि० [सं०] महेश्वर संबंधी। पु० एक यज्ञ का नाम। एक उपपुराण का नाम। पाणिनि के वे १४ सूत्र जिसमें स्वर और व्यंजन वर्णों का संग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है। शैव संप्रदाय का एक भेद। एक अस्त्र। माहेश्वरी—स्त्री० दुर्गा। एक मातृका। वैश्यों की एक जाति।
मिंडवारी—स्त्री० मेड़।
मिंड़ाई—स्त्री० मीड़ने या मींजने की क्रिया या भाव। मीड़ने की मजदूरी। देशी छींट की छपाई में एक क्रिया जिससे छींट का रंग पक्का और चमकदार हो जाता है।
मित(पु)—पु० दे० 'मित्र'।
मिकदार—स्त्री० [अ०] परिमाण, मात्रा।
मिचकना†—अक० (आँखों का) बार बार खुलना और बंद होना।
मिचकाना†—सक० [अक०, मिचकना] बार बार (आँखें) खोलना और बंद करना।
मिचकी†—स्त्री० छलाँग। पेंग। 'यो मिचकी मचकी न हहा...' (जगद्विनोद २२७)।
मिचना—अक० [सक० मीचना] (आँख का) बंद होना।
मिचलना—अक० कै आने को होना, मतली आना।
मिचली—स्त्री० जी मिचलाने की क्रिया, मतली।
मिचौनी—स्त्री० दे० 'आँख मिचौनी'।
मिछा—(पु)†—वि० दे० 'मिथ्या'।
मिजराब—स्त्री० [अ०] तार का एक प्रकार का छल्ला जिससे सितार आदि बजाते हैं, नाखुना।
मिजाज—पु० [अ०] किसी पदार्थ का वह मूल गुण जो सदा बना रहे, तासीर। प्रवृत्ति, स्वभाव। शरीर या मन की दशा, तबीयत। अभिमान, शेखी। ⊙दार=वि० [फा०] जिसे बहुत अभिमान हो, घमंडी। ⊙पुरसी=स्त्री० [फा०] किसी का मिजाज या कुशल-समाचार पूछना। ⊙शरीफ=आप अच्छे तो हैं? आप सकुशल तो हैं? मु०~खराब होना=मन में अप्रसन्नता आदि उत्पन्न होना। अस्वस्थता होना। ~न मिलना=घमंड के कारण किसी से बात न करना। ~पाना=किसी के स्वभाव से परिचित होना। किसी को अनुकूल या प्रसन्न देखना। ~पूछना=यह पूछना कि आपका शरीर तो अच्छा है। ~बिगाड़ना=किसी के मन में क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न करना।
मिजाजी—वि० दे० 'मिजाजदार'।
मिटना—अक० किसी अंकित चिह्न आदि का न रह जाना। खराब या नष्ट हो जाना, न रह जाना। मिटाना—सक० [अक० मिटना] रेखा, दाग, चिह्न आदि दूर करना। नष्ट करना। खराब करना।
मिट्टी—स्त्री० भूमि, जमीन। वह भुरभुरा पदार्थ जो पृथ्वी के ऊपरी तल की प्रधान वस्तु है, धूल। राख। शरीर। लाश। शारीरिक गठन, बदन की बनावट।

चदन की जमीन जो इन मे दी जाती है। ~का तेल = पुं० एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जिसका व्यवहार प्राय दीपक आदि जलाने के लिये होता है। ~का पुतला = पुं० मानव ~शरीर। मु० ~करना = नष्ट करना, । ~के मोल = बहुत सस्ता । ~डालना = किसी बात को जाने देना। किसी के दोष को छिपाना । ~देना = मुसलमानो मे किसी के मरने पर सब लोगो का उसकी कब्र मे तीन तीन मुट्ठी मिट्टी डालना । कब्र मे गाडना । ~पलीद या बरबाद करना = दुर्दशा करना । ~में मिलना = चौपट होना। मरना ।

मिट्ठू—पुं० मीठा बोलनेवाला । तोता । वि० चुप रहनेवाला । प्रिय बोलनेवाला ।

मिट्ठी—स्त्री० चुबन, चूमा ।

मिठ— वि० मीठा का सक्षिप्त रूप (यौगिक मे) ⊙बोला = पुं० मधुरभाषी । वह जो मन मे कपट रखकर ऊपर से मीठी बातें करता हो । ⊙लोना = वि० थोड़े नमक-वाला ।

मिठाई—स्त्री० मिठास । खाने की मीठी चीज । अच्छा पदार्थ ।

मिठाना—अक० मीठा होना ।

मिठास—स्त्री० मीठापन, माधुर्य ।

मितंग(पु)—पुं० हाथी ।

मित—वि० [सं०] जो सीमा के अंदर हो, परिमित । कम । ⊙भाषी = पुं० कम या थोड़ा बोलनेवाला । ⊙मति = वि० थोड़ी बुद्धिवाला । ⊙व्यय = पु० कम खर्च करना, किफायत । ⊙व्ययता = स्त्री० कम खर्च करने का भाव । ⊙व्ययी = वह जो कम खर्च करता हो । मिताक्षरा—स्त्री० याज्ञवल्क्य स्मृति की विज्ञानेश्वरकृत टीका । मितार्थ—पुं० [सं०] वह दूत जो थोड़ी बातें कहकर अपना काम पूरा करे ।

मिताई(पु)†—स्त्री० दे० 'मित्रता' ।

मिति—स्त्री० [सं०] मान, परिमाण । काल की अवधि ।

मिती—स्त्री० देशी महीने की तिथि या तारीख । दिन ⊙काटा = पुं० सूद जोडने का एक देशी सहज ढग । मु० पुगना या पूजन = हुडी का नियत समय पूरा होना ।

मित्त(पु)—पु० दे० 'मित्र'

मित्र—पु० [सं०] वह जो अपना साथी, सहायक और शुभचिंतक हो, दोस्त । सूर्य का एक नाम । १२ आदित्यो मे से पहला । पुराणानुसार मरुद्गण में से पहला । आर्यो के प्राचीन देवता । भारत-वर्ष का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवश जिसका राज्य उदुबर और पाचाल आदि मे था । ⊙ता = स्त्री० मित्र होने का भाव, दोस्ती मित्र का धर्म । मित्रा—स्त्री० मित्र नामक देवता की स्त्री । शत्रुघ्न की माता सुमित्रा ।

मित्राई⊙†—स्त्री० दे० 'मित्रता' ।

मित्राक्षर—पु० [सं०] छद के रूप मे बना हुआ पद ।

मिथ—अव्य० [सं०] आपस मे । एकात मे गुप्त रूप मे ।

मिथिला—स्त्री० [सं०] वर्तमान तिरहुत का प्राचीन नाम ।

मिथुन—पुं० [सं०] स्त्री और पुरुष का जोड़ा । सयोग, समागम । मेष आदि राशियो मे से तीसरी राशि ।

मिथ्या—वि० [सं०] असत्य, झूठ । ⊙त्व = पुं० मिथ्या । होने का भाव । माया ⊙योग—पु० वह कार्य जो रूप, रस या प्रकृति आदि के विरुद्ध हो (वैद्यक) । ⊙वादी—वि० मिथ्या बोलनेवाला ।

मिथ्याचार—पुं० कपटपूर्ण व्यवहार ।

मिथ्याध्यवसिति—स्त्री० एक अर्थालकार जिसमे कोई एक असभव या मिथ्या बात निश्चित करके कोई दूसरी बात कही जाती है । मिथ्याहार—पुं० अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना, स्वास्थ्य के लिये हानिकारक भोजन ।

मिनती†—स्त्री० दे० 'विनती' ।

मिनहा—वि० [अ०] जो काट या घटा लिया गया हो ।

मिनमिन—क्रि० वि० [अनु०] मद या अस्पष्ट स्वर मे ।

मिनमिनाना--अक० धीमे स्वर मे या नाक से बोलना।
मिनिस्टरी--स्त्री० [अं० मिनिस्टर] मिनिस्टर का कार्य या पद।
मिन्नत--स्त्री० [अ०] प्रार्थना, निवेदन।
मिमियाना--अक० भेड या बकरी का बोलना।
मिमियाई†--स्त्री० दे० 'मोमियाई'।
मियाँ--पु० [फा०] स्वामी मालिक। पति, खसम। महाशय। [मुसल०] मुसलमान। ⊙मिट्ठू = पु० मीठी बोली बोलनेवाला, मधुर भाषी। तोता। मूर्ख। मु०--अपने मुँह मिट्ठू बनना = अपने मुँह अपनी प्रशसा करना।
मियाद--स्त्री० दे० 'मीयाद'।
मियान--स्त्री० दे० 'म्यान'।
मियाना--वि० [फा०] मध्यम आकार का। पुं० एक प्रकार की पालकी।
मिरग†(पु)--पु० मृग, हिरन।
मिरगी--स्त्री० एक प्रसिद्ध मानसिक रोग जिसमे रोगी प्राय मूच्छित होकर गिर पडता है, अपस्मार रोग।
मिरचा--पुं० लाल मिर्च।
मिरजई--स्त्री० कमर तक का एक प्रकार का बददार अगा।
मिरजा--पु० [फा] मीर या अमीर का लडका। राजकुमार। मुगलो की एक उपाधि।
मिरगारन--पु० जानवरो से भरा वन।
मिरियास(पु)--स्त्री० दे० 'मीरास'।
मिर्च--स्त्री० कुछ प्रसिद्ध तिक्त फलो और फलियो का एक वर्ग जिसके अतर्गत काली मिर्च, लालमिर्च आदि है। इस वर्ग की एक प्रसिद्ध तिक्त फली जिसका व्यवहार व्यजनों मे मसाले के रूप मे होता है, लाल मिर्च। एक प्रसिद्ध तिक्त, काला, छोटा दाना जिसका व्यवहार व्यजनो मे मसाले के रूप मे होता है, इसी तरह का सफेद दाना जो ठढाई आदि मे प्रयुक्त होता है, गोल मिर्च।
मिल--पु० [अं] कारखाना।
मिलक†--स्त्री० जमीन जायदाद, जमीदारी। जागीर।
मिलकना(पु)--सक० जलाना।
मिलकी--स्त्री० जमीदार। दौलतमंद, अमीर।
मिलन--पु० [सं०] मिलाप, भेंट। मिश्रण, मिलावट। ⊙सार = वि० [हि०] सबसे मेलजोल रखनेवाला।
मिलना--सक० समिलित होना, मिश्रित होना। दो भिन्न भिन्न पदार्थों का एक होना। समूह या समुदाय के भीतर होना। जुडना, चिपकना। बिलकुल या बहुत कुछ बराबर होना। आलिंगन करना, गले लगाना। मुलाकात होना। मेल मिलाप होना। लाभ होना। प्राप्त होना। मिला जुला = समिलित। मिश्रित।
मिलनी--स्त्री० विवाह की एक रस्म। इसमे कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष के लोगो से गले मिलते और उन्हें कुछ नकद देते हैं।
मिलवना--सक० पहुँचाना, चरने के लिये जानवरो के झुड मे छोड़ना।
मिलवाई--स्त्री० मिलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
मिलवाना--स्त्री० मिलाने की क्रिया या भाव। विवाह की मिलनी नामक रस्म।
मिलाई--स्त्री० मिलने या मिलाने की क्रिया या भाव। भेंट, मुलाकात (जेल के कैदियो के साथ)।
मिलान--पु० मिलाने की क्रिया या भाव। तुलना। ठीक होने की जाँच। पडाव।
मिलाना--सक० [अक० मिलना] मिश्रण करना। दो भिन्न भिन्न पदार्थों को एक करना। समिलित करना, एक करना। जोडना चिपकाना। तुलना करना। ठीक होने की जाँच करना। भेंट या परिचय कराना। सधि कराना। अपना भेदिया या साथी बनाना। बजाने से पहले बाजो का सुर ठीक करना।
मिलाप--पु० मिलने की क्रिया या भाव। मित्रता। भेंट, मुलाकात।
मिलावट--स्त्री० मिलाए जाने का भाव। बढिया चीज मे घटिया चीज का मेल, खोट।
मिलिंद--पु० [सं०] भौंरा।

मिलिक(पु)†—स्त्री० जमीदारी, मिल्कियत। जागीर।
मिलिटरी—वि० [अं०] फौजी। फौज, सेना।
मिलित—वि० [सं०] मिला हुआ, युक्त।
मिलौना†—सक० दे० 'मिलाना'। गौ का दूध दुहना।
मिलौनी—स्त्री० दे० 'मिलाई'।
मिल्कियत—स्त्री० [अ०] जमीदारी। जागीर। धन संपत्ति। वह धन संपत्ति जिसपर मालिको का हक हो।
मिल्लत—स्त्री० मेलजोल, घनिष्ठता। मिलनसारी। स्त्री०[अ०] मजहब, संप्रदाय।
मिशन—पुं० [अं०] विशिष्ट कार्य के लिये जाना या भेजा जाना। इस प्रकार भेजे जानेवाले व्यक्ति। ईसाई धर्मप्रचारको का निवास स्थान। मिशनरी—पुं० ईसाई धर्म प्रचारक। सेवाभाव, लोकसेवा। वि० मिशन संबंधी, मिशन का।
मिश्र—वि० [सं०] मिला या मिलाया हुआ। श्रेष्ठ, बड़ा। जिसमे कई भिन्न भिन्न प्रकार की रकमो की संख्या हो। (गणित)। पुं० सरयूपारीण, कान्यकुब्ज, मैथिल, शाकद्वीपी और सारस्वत आदि ब्राह्मणो के एक वर्ग की उपाधि।
मिश्रण—पुं० [सं०] दो या अधिक पदार्थो को एक में मिलाने की क्रिया, मिलावट। जोड़ लगाने की क्रिया, जोडना [गणित]।
मिश्रित—वि० [सं०] एक मे मिलाया हुआ।
मिष—पु० [स०] छल। बहाना, हीला। ईर्ष्या।
मिष्ट—वि० [सं०] मीठा, मधुर। ⊙भाषी =पु० वह जो मीठा बोलता हो, मधुरभाषी।
मिष्ठान्न—पुं० [सं०] मिठाई।
मिस—पु० बहाना, हीला। नकल, पाखंड। स्त्री० [अं०] कुमारी।
मिसना (पु)—अक० मिश्रित होना, मिलना। मींजा या मला जाना।
मिसकीन—वि० [अ०] बेचारा, दीन। गरीब। ⊙ता (पु)=स्त्री० [हिं०] गरीबी।
मिसरा—पुं० उर्दू या फारसी आदि की कविता का एक चरण, पद।
मिसरी—स्त्री० मिस्र देश का निवासी। मिस्र देश की भाषा। दुबारा बहुत साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी।
मिसल—स्त्री० सिक्खो के अनेक समूह जो अलग अलग नायको की अधीनता मे रणजीत सिंह के बाद स्वतंत्र हो गए थे (जैसे, रामगढिया मिसल, अहलूवालिया मिसल आदि)।
मिसहा†—वि० बहानेबाज। कपटी।
मिसाल—स्त्री० [अ०] उपमा। उदाहरण, नमूना। कहावत।
मिसिल—वि० दे० 'मिस्ल'। स्त्री० किसी एक मुकदमे या विषय से संबंध रखनेवाले कुल कागजपत्र। [अं०] फाइल।
मिस्टर—पु० [अं०] श्रीमान्, जनाब।
मिस्कोट—पु० भोजन। गुप्त परामर्श।
मिस्तर—पु० काठ का वह औजार जिससे राज लोग छत पीटते हैं। पु० [अ०] डोरे मे लपेटा हुआ दफ्ती का वह टुकड़ा जो लिखने के समय लकीरें सीधी रखने के लिये लिखे जानेवाले कागज के नीचे रख लिया जाता है। पु० दे० 'मेहतर'।
मिस्तरी—पु० वह जो हाथ का बहुत अच्छा कारीगर हो।
मिस्र—पु० [अं०] एक प्रसिद्ध देश जो अफ्रीका के उत्तरपूर्वी भाग मे समुद्र के तट पर है। मिस्री—स्त्री० दे० 'मिसरी'।
मिस्ल—वि० [अ०] समान, तुल्य।
मिस्सा—पु० कई तरह की दालो आदि को पीसकर तैयार किया हुआ आटा।
मिस्सी—स्त्री०[फा०] एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जो माजूफल, लोहचून और तूतिए आदि से तैयार किया जाता है और जिसे बहुधा सधवा स्त्रियाँ दातो मे लगाती हैं।
मिहचना(पु)—सक० दे० 'मिचना'।
मिहानी(पु)—स्त्री० दे० 'मथानी'।
मिहिर—पु० [सं०] सूर्य। आक का पौधा। बादल। चंद्रमा। दे० 'वराहमिहिर'।
मिहीं—वि० दे० 'महीन'।

मींगी—स्त्री० बीज के अंदर का गूदा, गिरी।

मींजना†—सक० हाथों से मलना,। मर्दन करना।

मींड़—स्त्री० सगीत मे एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश इस सुदरता से कहना जिसमे दोनो स्वरो का सबध स्पष्ट हो जाय, गमक।

मींडक(प)—पु० दे० 'मेढक'।

मींडना†—सक० हाथो से मलना, मसलना।

मिआदी—स्त्री० [अ०] किसी कार्य की समाप्ति आदि के लिये नियत समय, अवधि।

मीच—स्त्री० दे० 'मीचु'।

मीचना—सक० (आँखें) बद करना, मूंदना।

मीचु(प)†—स्त्री० मृत्यु।

मीजान—स्त्री० [अ०] कुल सख्याओ का योग, जोड (गणित)।

मीजना—सक० मसलना। 'कहै पदमाकर जरा जों लागि मीजी तब . . '(जगद्विनोद ५६६)।

मीठा(प)—वि० चीनी या शहद आदि के स्वादवाली, मधुर। स्वादिष्ट। धीमा, सुस्त। साधारण या मध्यम श्रेणी का, मामूली। हल्का, मद। नामर्द। वहुत अधिक सीधा। प्रिय, रुचिकर। पु० मिठाई। गुड। ~जहर = पु० दे० 'वछनाग'। ~तेल = पु० तिल का तेल। ~नीबू = पु० जवीरी नीबू, चकोतरा। पानी = पुं० नीवू का सत मिला हुआ पानी, लेमनेड। **मीठी छुरी** = स्त्री० वह जो देखने मे मित्र, पर वास्तव मे शत्रु हो, विश्वासघातक। कपटी। मुहँ~ **होना** = किसी प्रकार के लाभ या आनद आदि की प्राप्ति होना।

मीत—पु० दे० 'मित्र'।

मीन—पु० [सं०] मछली। मेष आदि १२ राशियो मे से अतिम राशि ⊙केतन = पु० कामदेव।

मीना—पु० राजपूताने की एक प्रसिद्ध योद्धा जाति। पु० [फा०] एक प्रकार का नीले रंग का कीमती पत्थर। सोने, चाँदी आदि पर किया जानेवाला रग बिरंग का काम। शराब रखने का कटर।

मीनाकारी—स्त्री० [फा०] सोने या चाँदी पर होनेवाला रगीन काम।

मीनार—स्त्री० वह इमारत जो प्राय. गोलाकार चलती है और ऊपर की ओर वहुत अधिक ऊँचाई तक चली जाती है।

मीमासक—पु० [सं०] वह जो किसी वात की मीमासा करता हो। वह जो मीमासा शास्त्र का ज्ञाता हो।

मीमांसा—स्त्री० [सं०] अनुमान, तर्क आदि द्वारा यह स्थिर करना कि कोई वात कैसी है। हिंदुओ के छह दर्शनो मे से दो दर्शन जो पूर्वमीमासा और उत्तरमीमासा कहलाते हैं। जेमिनिकृत दर्शन जिसे पूर्वमीमासा कहते है।

मीमास्य—वि० [सं०] मीमासा करने के योग्य।

मीयाद—स्त्री० [अ०] किसी कार्य के लिये नियत समय, अवधि।

मीयादी—वि० [अ०] जिसके लिये मीयाद निश्चित हो (जैसे मीयादी हुडी), मीयादी वुखार।

मीर—पु० [फा०] सरदार, नेता। धार्मिक आचार्य। सैयद जाति की उपाधि। वह जो सवसे पहले कोई काम, विशेषत प्रतियोगिता का काम, कर डाले। ⊙फर्श = पु० वे वडे वडे पत्थर आदि जो फर्शों आदि के कोनो पर मजवूती के लिये रखे जाते हैं। ⊙ मजलिस = पु० सभापति।

मीरजा—पुं० दे० 'मिरजा'।

मीरास—स्त्री० [अ०] तरका, वपौती।

मीरासी—पु० एक प्रकार के मुसलमान जो प्राय गाने वजाने का काम या मसखरापन करते हैं।

मील—पु० दूरी की एक नाप जो १७६० गज की होती है।

मीलन—पु० [सं०] बद करना। संकुचित करना।

मीलित—वि० [सं०] बंद किया हुआ। सिकोड़ा हुआ। पु० एक अलंकार जिसमे किसी वस्तु का अन्य वस्तु से स्वाभाविक या आकस्मिक लक्षण के कारण व्यक्त न हो सकना या उसमे छिप जाना दिखाया जाय।

मुंगरा—पुं० हथौड़े के आकार का काठ का एक औजार। †नमकीन बुंदिया।

मुंगौछी, मुंगौरी—स्त्री० मूंग की बनी हुई बरी।

मुंचना(पु)—सक० मुक्त करना।

मुंजारन—पुं० मूंज वन।

मुंड—पुं० [सं०] गरदन के ऊपर का अंग, सिर। शुंभ का सेनापति एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। राहु ग्रह। वृक्ष का ठूंठ। कटा हुआ सिर। वि० मुंडा हुआ। ⊙माला=स्त्री० कटे हुए सिरो या खोपड़ियो की माला जो शिव या काली देवी के गले मे होती है। ⊙मालिनी=स्त्री० (मुंडो की माला पहनने वाली) काली देवी। ⊙मौली=(मुंडो की माला धारण करनेवाले) शिव जी।

मुंडचिरा—पुं० एक प्रकार के फकीर जो जो प्राय. अपना सिर, आंख या नाक आदि नुकीले हथियार से घायल करके भिक्षा मांगते हैं। वह जो लेनदेन मे बहुत हुज्जत और हठ करे।

मुंडन—पु० [सं०] सिर को उस्तरे से मूंडने की क्रिया। द्विजातियो के १६ संस्कारों मे से एक जिसमे बालक का सिर मूंडा जाता है।

मुंडना—अक० मूंडा जाना, सिर के बालो की सफाई होना। लुटना।

मुंडा—पुं० वह जिसके सिर के बाल न हो या मुंडे हुए हो। वह जो किसी साधु या जोगी का शिष्य हो गया हो। वह पशु जिसके सींग होने चाहिए, पर न हो। वह जिसके ऊपरी अथवा इधर उधर फैलनेवाले अंग न हो। एक प्रकार की लिपि जिसमे मात्राएँ आदि नही होती, कोठीवाली। एक प्रकार का जूता। छोटा नागपुर मे रहनेवाली एक असभ्य जाति।

मुंडाई—स्त्री० मूंडने या मुंड़ाने की क्रिया या मजदूरी।

मुंड़ासा†—पुं० सिर पर बांधने का साफा।

मुंड़िया—पु० साधु या योगी आदि का शिष्य, सन्यासी।

मुंडी—स्त्री० वह स्त्री जिसका सिर मुंडा हो। विधवा। रांड (गाली) स्त्री० [सं०] गोरखमुंडी।

मुंडेर—स्त्री० द० 'मुंडेरा'।

मुंड़ेरा—पु० गिरने से बचाव या ओट के लिये दीवार का वह ऊपरी उठा हुआ भाग जो सबसे ऊपर की छत पर होता है।

मुंतजिम—वि० [अ०] इंतजाम करनेवाला।

मुंतजिर—वि० [अ०] जो इंतजार या प्रतीक्षा करे।

मुंदना—अक० खुली हुई वस्तु का ढक जाना, बंद होना। छिपना। छेद, बिल आदि का बंद होना।

मुंदरा—पुं० एक प्रकार का कुंडल जो जोगी लोग कान मे पहनते हैं।

मुंदरी—स्त्री० छल्ला, अँगूठी।

मुंशियाना—वि० मुंशियो का सा।

मुंशी—पु० [अ०] मुहर्रिर, लेखक। कायस्थो की एक उपाधि। वि० पढने लिखने मे दक्ष।

मुंसरिम—पु० [अ०] इंतजाम करनेवाला। कचहरी का वह कर्मचारी जो दफ्तर का प्रधान होता है और जिसके सुपुर्द मिसलें आदि ठिकाने से रखना रहता है।

मुंसिफ—पु० [अ०] इंसाफ करनेवाला। दीवानी विभाग का एक न्यायाधीश।

मुंसिफी—स्त्री० न्याय करने का काम। मुंसिफ का काम या पद। मुंसिफ की कचहरी।

मुंह—पु० प्राणी का वह अंग जिससे वह बोलता और भोजन करता है, मुखविवर। मनुष्य का मुखविवर। मनुष्य अथवा किसी और जीव के सिर का अगला भाग जिसमे, माथा, आँखें, नाक, मुंह, कान, ठोडी, और गाल आदि अंग होते हैं, चेहरा। किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का विवर। सूराख, छेद। मुलाहजा, मुरव्वत। योग्यता, सामर्थ्य। साहस।

ऊपर का सतह या किनारा। ⊙अखरी (पु)†—वि० जवानी, शाब्दिक। ⊙काला = पुं० बेइज्जती। बदनामी। ⊙चोर = =वि० जो किसी के सामने जाने मे हिचकता हो। ⊙छुट = वि० दे० 'मुंहफट'। ⊙जोर = वि० वह जो बहुत अधिक बोलता हो, बकवादी। दे० 'मुंहफट'। तेज, उद्दंड। ⊙दिखाई = वि० (स्त्रियों मे) नई वधू का मुंह देखने की रस्म जिसमे मुंह देखनेवाली स्त्रियां वधू को कुछ उपहार देती हैं। वह धन जो मुंह देखने पर वधू को दिया जाय। ⊙देखा = वि० केवल सामना होने पर सबका लिहाज करनेवाला। ⊙नाल = वह नली जो हुक्के की सटक या नैचे आदि मे लगा देते हैं और जिसे मुंह मे लगाकर धुंआं खीचते हैं। ⊙पातर† = वि० बकवादी। मुंहफट। ⊙फट = वि० ओछी या कटु बात करने मे संकोच न करनेवाला। ⊙बोला = वि० (सम्बंधी) जो वास्तविक न हो केवल मुंह से कहकर बताया गया हो। ⊙भराई = स्त्री० मुंह भरने की क्रिया या भाव। रिश्वत, घूस। ⊙मांगा = वे० मु०—अपना सा—लेकर रह जाना = लज्जित होकर रह जाना। आना = मुंह के अंदर छाले पड़ना और चेहरा सूजना (प्राय गरमी आदि रोगो मे)। (अपना) काला करना = व्यभिचार करना। अपनी बदनामी करना। (दूसरे का) काला करना = उपेक्षा से हटाना, त्यागना। की खाना = बेइज्जत होना, दुर्दशा कराना। मुंहतोड़ उत्तर सुनना। के बल गिरना = ठोकर खाना। धोखा खाना। खराब करना = जबान से गदी बातें कहना।~खुलना = उद्दंडतापूर्वक बातें करने की आदत पड़ना। चलना = भोजन होना। मुंह से व्यर्थ की बातें या दुर्वचन निकलना। चिढ़ाना = किसी की आकृति, हाव भाव या कथन की बहुत बिगाड़कर नकल करना। ~छिपाना = लज्जा के मारे सामने न होना। ~छूना = नाम मात्र के लिये कहना, मन से नही बल्कि ऊपर से कहना।—तक आना या भरना = पूरी तरह से भर जाना। (किसी का) —ताकना = किसी के मुंह की ओर कुछ पाने आदि की आशा से देखना। विवश या चकित होकर देखना। सहायता की अपेक्षा रखना। —ताकना = अकर्मण्य होकर चुपचाप बैठे रहना। —दिखाना = सामने आना। —देखकर बात कहना = खुशामद करना। (किसी का) —देखना = किसी के सामने जाना। चकित होकर देखना। —देखे का = जो हार्दिक न हो, केवल ऊपरी या दिखौआ हो। —धो रखना = किसी पदार्थ की प्राप्ति की ओर से निराश हो जाना। —पड़ना = साहस होना। —पर लाना = मुंह से कहना। —पर = सामने, प्रत्यक्ष। —पर आना = किसी का ध्यान करना, लिहाज करना। —पर बरसना = आकृति से प्रकट होना, चेहरे से जाहिर होना। —पेट चलना = कै दस्त होना, हैजा होना। —फाड़कर कहना = बेहया बनकर जबान पर लाना। —फुलाना या फुलाकर बैठना = आकृति से असतोष या अप्रसन्नता प्रकट करना। —फूकना = मुंह मे आग लगाना, मुंह झुलसना (स्त्रियो मे गाली) दाहकर्म करना। बैठना† चुपचाप बैठना। —भरना = रिश्वत देना। —मीठा करना = मिठाई खिलाना। देकर प्रसन्न करना। —में खून या लहू लगना = चसका पड़ना। —में जबान होना = कहने की सामर्थ्य होना। —मे पानी भर आना = कोई पदार्थ प्राप्त करने के लिये ललचना। —में लगाम न होना = जो मुंह मे आवे, सी कह देना। —रखना = किसी का लिहाज रखना। —लगना = किसी के सामने बढ़ बढ़कर बातें करना, उद्दंड बनना। सवाल जवाब करना। —लगाना = सिर चढ़ाना, उदंड बनाना। (अपना) —सीना = बोलने से रुकना। —सूखना = भय या लज्जा आदि से चेहरे का तेज जाता रहना। प्यास या रोग आदि के कारण गला

खुश्क होना, गले और जबान मे कांटे पड़ना। ~से निकालना = कहना, उच्चारण करना। ~से फूल झड़ना = मुंह से बहुत ही सुदर और प्रिय बातें निकलना। ~से दूध टपकना = बहुत ही अनजान बालक होना (परिहास)।

मुंहबंग—पुं० दे० 'मुचग'।

मुंहामुंह—क्रि० वि० मुंह तक, भरपूर।

मुंहासा—पुं० मुंह पर के वे दाने या फुंसियाँ जो युवावस्था मे निकलती हैं।

मुअज्जन—पुं० [अ०] वह जो नमाज के समय अजान या बांग देता हो।

मुअत्तल—वि० [अ०] जो नौकरी से कुछ समय के लिये किसी आरोप की जांच के लिये अलग कर दिया गया हो।

मुआफिक—वि० [अ०] अनुकूल। सदृश। मनोनुकूल।

मुआयना—पुं० [अ०] देखभाल, जांच पड़ताल।

मुआवजा—पुं० [अ०] बदला, पलटा। वह धन जो किसी कार्य अथवा हानि आदि के बदले में मिले।

मुकटा—पुं० एक प्रकार की रेशमी धोती।

मुकताⓅ—पुं० दे० 'मुक्ता'। वि० बहुत अधिक, यथेष्ट। **मुकतावली**—स्त्री० दे० 'मुक्तावली'।

मुकति—स्त्री० दे० 'मुक्ति'।

मुकदमा—पु० [अ०] धन या अधिकार आदि से संबंध रखनेवाला अथवा किसी अपराध (जुर्म) का दो पक्षो के बीच का मामला जो विचार के लिये न्यायालय मे जाय, अभियोग। दावा, नालिश। **मुकदमेबाज** = पुं० वह जो प्रायः मुकदमे लड़ा करता हो।

मुकद्दमा—पु० दे० 'मुकदमा'।

मुकद्दर—पु० [अ०] भाग्य।

मुकना—पु० दे० 'मकुना'। Ⓟ अक० मुक्त होना, छूटना। खतम होना।

मुकरना—अक० कोई बात कहकर उससे फिर जाना, नटना। Ⓟ वि० कोई बात कहकर उससे इनकार कर जानेवाला। **मुकरनी**—स्त्री० दे० 'मुकरी'।

मुकरी—स्त्री० एक प्रकार की कविता जिसमे कही हुई बात से मुकरते हुए कुछ और ही अभिप्राय प्रकट किया जाता है, कहमुकरी।

मुकर्रर—क्रि० वि० [अ०] दुबारा, फिर से। वि० जिसका इकरार किया गया हो, निश्चित। तैनात।

मुकाबला—पुं० [अ०] आमना सामना। मुठभेड। बराबरी, समानता। तुलना। मिलान। विरोध, लडाई।

मुकाबिल—क्रि० वि० [अ०] समुख, सामने। पु० प्रतिद्वंद्वी। शत्रु।

मुकाम—पु० [अ०] ठहरने की क्रिया, विराम। रहने का स्थान। अवसर।

मुकियाना—सक० मुक्कियो से बार बार आघात करना। घूंसे लगाना।

मुकुंद—पु० [सं०] विष्णु। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से तगण, भगण, दो जगण और अंत में गुरु, लघु हो।

मुकुट—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध शिरोभूषण जो प्राय राजा आदि धारण किया करते थे।

मुकुताⓅ—पु० दे० 'मुक्ता'।

मुकुर—पु० [सं०] शीशा दर्पण। मौलसिरी। कली।

मुकुल—पु० [सं०] कली। शरीर। आत्मा। एक प्रकार का छंद। जमालगोटा। **मुकुलित** वि० जिसमे कलियाँ आई हों। कुछ खिली हुई (कली)। आधा खुला, आधा बंद। झपकता हुआ (नेत्र)।

मुकेसⓅ—पुं० दे० 'मुक्कैश'।

मुक्का—पुं० बँधी मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय या जिससे मारा जाय। **मुक्केबाजी** = स्त्री० मुक्को की लड़ाई, घूंसेबाजी।

मुक्की—पु० मुक्का, घूंसा। वह लड़ाई जिसमें मुक्को की मार हो। मुट्ठियाँ बाँधकर उससे किसी के शरीर पर धीरे धीरे आघात मारना, जिससे शरीर की शिथिलता और पीड़ा दूर होती है।

मुक्कैश—पु० [अ०] बादला। वह कपड़ा जिस पर कलाबत्तू आदि का काम हो।

मुक्त—वि० [सं०] जिसे मुक्ति मिल गई हो। जो बंधन से छूट गया हो। चलने के लिये छूटा हुआ, फेंका हुआ। ⊙कंठ=वि० चिल्लाकर बोलनेवाला। जिसे कहने में आगा पीछा न हो। ⊙व्यापार=पु० ऐसा व्यापार जिसमें किसी के लिये कोई रुकावट न हो। ⊙हस्त=वि० जो खुले हाथों दान करता हो।

मुक्तक—पु० [सं०] वह कविता जिसमें कोई एक कथा या प्रसंग कुछ दूर तक न चले, फुटकर कविता, प्रबंध का उलटा। एक प्रकार का अस्त्र जो फेंककर मारा जाता था।

मुक्तता—स्त्री० दे० 'मुक्ति'।

मुक्ता—स्त्री० [सं०] मोती। ⊙फल=पु० मोती। **मुक्तावली**—स्त्री० मोतियों की माला या लड़ी। **मुक्ताहल**—पु० दे० 'मुक्ताफल'।

मुक्ति—स्त्री० [सं०] छूटकारा। आत्मा का मोक्ष।

मुख—पु० [सं०] मुंह, आनन। दरवाजा। नाटक में एक प्रकार की संधि। किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी खुला भाग आदि, आरंभ। किसी वस्तु से पहले पड़नेवाली वस्तु। वि० प्रधान, मुख्य। चपला=स्त्री० आर्या छंद का एक भेद। ⊙चित्र=पु० किसी पुस्तक के मुखपृष्ठ पर या बिलकुल आरंभ में दिया हुआ चित्र। ⊙पृष्ठ=पुं० किसी पुस्तक में सबसे ऊपर का पृष्ठ, पृष्ठ। ⊙बंध=पुं० ग्रंथ की प्रस्तावना या भूमिका। ⊙शुद्धि=स्त्री० मुंह साफ करना। भोजन के उपरांत पान, सुपारी आदि खाकर मुंह शुद्ध करना। ⊙स्थ=वि० दे० 'मुखाग्र'।

मुखग्र(पु)=वि० दे० 'मुखाग्र'।

मुखड़ा—पुं० मुख, चेहरा।

मुखतार—पु० [अ०] जिसे किसी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई कानूनी काम करने का अधिकार दिया हो। एक प्रकार का कानूनी सलाहकार और काम करनेवाला। माल और फौजदारी के मुकदमों में इजलास में वैधानिक बहस करनेवाला। ⊙नामा=पु० [फा०] वह वैधानिक अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की ओर से अदालती कार्रवाई और बहस करने के लिये मुख्तार बनाया जाय।

मुखतारी—स्त्री० मुखतार होकर दूसरे के मुकदमे लड़ने का काम या पेशा। प्रतिनिधित्व।

मुखन्नस—वि० [अ०] नपुंसक।

मुखबिर—पु० [अ०] वह अभियुक्त जो अपराध स्वीकार कर सरकारी गवाह बन जाय और जिसे दंड से माफी मिल जाय। जासूस।

मुखबिरी—स्त्री० खबर देने का काम, मुखबिर का काम।

मुखभेड़(पु)—स्त्री० दे० 'मुठभेड़'।

मुखर—वि० जो अप्रिय बोलता हो, कटुभाषी। बकवादी। बहुत बढ़ बढ़कर बोलनेवाला। दे० 'मुखरित'।

मुखरित—वि० शब्दों या ध्वनियों से युक्त।

मुखागर—वि० मौखिक, जबानी।

मुखाग्र—वि० जो जबानी याद हो, कंठस्थ, बरजबान।

मुखातिब—पुं० [अ०] किसी से कुछ कहनेवाला, वक्ता। मु० (किसी की ओर) होना=किसी की ओर मुंह करके सुनना या बातें करना।

मुखापेक्षा—स्त्री० दूसरों का मुंह ताकना, दूसरों के आश्रित रहना।

मुखापेक्षी—पुं० वह जो दूसरों का मुंह ताकता हो आश्रित।

मुखालिफ—वि० [अ०] जो खिलाफ हो, विरोधी। शत्रु। प्रतिद्वंद्वी।

मुखिया—पुं० नेता, प्रधान। वह जो किसी काम में सबसे आगे हो, अगुआ।

मुख्तलिफ—वि० [अ०] भिन्न। भिन्न।

मुख्तसर—वि० [अ०] जो थोड़े में हो, संक्षिप्त। छोटा। अल्प, थोड़ा।

मुख्य—वि० [सं०] सबमें बड़ा, ऊपर या

आगे रहनेवाला, प्रधान। ⊙तः = क्रि० वि० मुख्य रूप से, खास तौर पर।

मुगदर—पु० एक प्रकार की गावदुमी, भारी मुंगरी जिसका प्राय: जोडा होता है और जिसका उपयोग व्यायाम के लिये किया जाता है, जोडी।

मुगल—[फा०] मगोल देश का निवासी। तुर्कों का एक श्रेष्ठ वर्ग जो तातार देश का निवासी था। मुसलमानो के चार वर्गों मे से एक वर्ग। मुगलई†—पु० मुगलपन, अहकार। वि०† मुगलो की तरह का, मुगलो का सा। मुगलाई—वि० [हिं०] दे० 'मुगलई'। स्त्री० मुगल होने का भाव, मुगलपन। मुगलानी—स्त्री० [हिं०] मुगल स्त्री। दासी। कपडे सीनेवाली।

मुगवन—पुं० मोट।

मुगालता—पुं० [अ०] धोखा, छल।

मुगधम—वि० (वात) जो वहुत खोलकर या स्पष्ट करके न कही जाय।

मुग्ध—वि० [सं०] मोह या भ्रम मे पडा हुआ, मूढ। सुदर, खूबसूरत। आसक्त, मोहित।

मुग्धा—स्त्री० [सं०] साहित्य मे वह नायिका जो यौवन को तो प्राप्त हो चुकी हो पर जिसमे कामचेष्टा न हो और मान मे कोमल तथा वहुत अधिक लज्जावती हो।

मुचना (प)—अक० मोचन होना।

मुचकुद—पुं० एक वडा पेड जिसमे सुगधित फूल होते हैं।

मुचलका—पुं० [तु०] वह प्रतिज्ञापत्र जिसके द्वारा भविष्य मे कोई अनुचित काम न करने अथवा किसी नियत समय पर अदालत मे उपस्थित होने की प्रतिज्ञा और उसके भग होने पर कुछ आर्थिक दड देने का निश्चय हो।

मुछंदर—पु० जिसकी मुछें वढी वडी हो। कुरूप और मूर्ख।

मुजरा—पु० [अ०] वह जो जारी किया किया गया हो। वह रकम जो किसी रकम मे से काट ली गई हो। किसी वडे या धनवान् के सामने जाकर उसे सलाम करना। वेश्या का बैठकर गाना।

मुजरिम—पुं० [अ०] जिसपर अभियोग लगाया गया हो, अभियुक्त।

मुजायका—पुं० [अ०] हर्ज, हानि।

मुजावर—पु० [अ०] मुसलमान जो किसी मौजे पर रहकर वहाँ का चढावा आदि लेता हो।

मुझ—सर्व० 'मैं' का वह रूप जो उसे कर्त्ता और सबध कारक को छोडकर शेष कारको मे, विभक्ति लगने से प्राप्त होता है (जैसे मुझको, मुझमे आदि)।

मुझे—सर्व० 'मैं' का वह रूप जो उसे कर्म और सप्रदान कारक मे प्राप्त होता है।

मुटकना†—वि० आकार मे छोटा पर सुदर।

मुटका—पु० एक प्रकार की रेशमी धोती, मुटका।

मुटाई—स्त्री० मोटापन। पुष्टि। अहकार, घमड।

मुटाना—अक० मोटा हो जाना। अहकारी हो जाना।

मुटासा—वि० वह जो धन कमा लेने से वेपरवा और घमडी हो गया हो।

मुटिया—पुं० वोझ ढोनेवाला, मजदूर।

मुट्ठा—पुं० घास, फूस, तृण या डठल का उतना पूला जितना एक हाथ की मुट्ठी मे आ सके। चगुल भर वस्तु। पुलिदा। शस्त्र या यत्र आदि की बेंट, दस्ता।

मुट्ठी—स्त्री० हाथ की वह मुद्रा जो उँगलियो को मोडकर हथेली पर दवा लेने से वनती है। उतनी वस्तु जितनी उपर्युक्त मुद्रा के समय हाथ मे आ सके। वँधी हथेली के वरावर का विस्तार। हाथो से किसी के अगो को पकड पकड दवाने की क्रिया जिससे शरीर की थकावट दूर होती है, चपी। मु०~गरम करना = रुपया देना। ~मे = कब्जे मे।

मुठभेड़—स्त्री० टक्कर, भिडत। भेंट, सामना।

मुठिका (प)—स्त्री० मुट्ठी। घूँसा।

मुठिया—स्त्री० औजारो का दस्ता, बेंट। भिखमंगो को मुट्ठी मुट्ठी भर अन्न बाँटने की क्रिया।

मुट्ठी(पु)†—स्त्री० दे० 'मुट्ठी'।

मुड़ना—अक० सीधी वस्तु का कहीं से बलखाकर दूसरी ओर फिरना, घुमाव लेना। किसी धारदार किनारे या नोक का झुक जाना। लकीर की तरह सीधे न जाकर घूमकर किसी ओर झुकना। दाएँ अथवा बाएँ घूम जाना। लौटना। दे० 'मुँडना'।

मुड़कना—अक० दे० 'मुरकना'।

मुड़ना(पु)†—वि० जिसके सिर पर बाल न हो, मुंडा।

मुड़वारी—स्त्री० अटारी की दीवार का सिरा, मुंडेरा। सिरहाना।

मुड़हर†—पुं० स्त्रियों की साड़ी या चादर का वह भाग जो ठीक सिर पर रहता है।

मुड़ाना—सक० [मुड़ना का प्रे०] मुड़ने या घूमने में प्रवृत्त करना। [मूँडना का प्रे०] किसी को मूँडने में प्रवृत्त करना।

मुड़िया†—पुं० वह जिसका सिर मुँडा हुआ हो। एक लिपि।

मुताल्लिक—वि० [अ०] संबंध रखनेवाला, संबद्ध। सम्मिलित। क्रि० वि० संबंध में, विषय में।

मुतक्का—पुं० कोठे के छज्जे या चौक के ऊपर पाटन के किनारे खड़ी की हुई पटिया या नीची दीवार। खंभा। मीनार।

मुतफन्नी—वि० [अ०] धूर्त, चालाक।

मुतफर्रिक—वि० [अ०] तरह तरह के, विभिन्न। खराब, बुरा।

मुतबन्ना—पुं० [अ०] दत्तक पुत्र।

मुतलक—क्रि० वि० [अ०] जरा भी, रत्ती भर भी। वि० बिलकुल, निरा।

मुतवज्जह—वि० [अ०] किसी ओर तवज्जह या ध्यान देनेवाला।

मुतवफ्फी—वि० [अ०] स्वर्गवासी।

मुतवल्ली—पुं० [अ०] धार्मिक संस्था की संपत्ति का रक्षक।

मुतसद्दी—पुं० [अ०] लेखक, मुंशी। पेशकार दीवान। इंतजाम करनेवाला। मुनीम।

मुतलसिरी(पु)†—स्त्री० कंठ में पहनने की मोतियों की कंठी।

मुताबिक—क्रि० वि० [अ०] अनुसार। वि० अनुकूल।

मुतालबा—पुं० [अ०] उतना धन जितना पाना वाजिब हो, बाकी रुपया।

मुताह—पुं० मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी विवाह।

मुतिया—पु० दे० 'मोती'।

मुतिलाडू(पु)†—पुं० मोतीचूर का लड्डू।

मुतेहरा(पु)†—पुं० कलाई पर पहनने का एक आभूषण।

मुद—पुं० [सं०] हर्ष, आनंद। ⊙मान = पुं० हँसी में किया जानेवाला मान। आवत कत ... है। ठानत मुदमान (जगद्विनोद २६५)।

मुदगर—पुं० दे० 'मुगदर'।

मुदर्रिस—पुं० [अ०] अध्यापक।

मुदा(पु)†—अव्य० तात्पर्य यह कि। मगर, लेकिन। स्त्री० [सं०] हर्ष, आनंद।

मुदामी—वि० [फा०] जो सदा होता रहे।

मुदित—वि० [सं०] प्रसन्न, खुश। मुदिता = स्त्री० परकीया के अंतर्गत एक प्रकार की नायिका। हर्ष।

मुदिर—पुं० [सं०] बादल, मेघ।

मुदीर(पु)—पुं० दे० 'मुदिर'।

मुद्ग—पु० [सं०] मूँग नामक अन्न।

मुद्गर—पुं० [सं०] दे० 'मुगदर'। प्राचीन काल का एक अस्त्र, अस्त्र।

मुद्दई—पुं० [अ०] दावा करनेवाला, वादी। दुश्मन, बैरी।

मुद्दत—स्त्री० [अ०] अवधि। बहुत दिन।

मुद्दती—वि० [अ०] जिसकी कोई मुद्दत या अवधि निश्चित हो।

मुद्दाअलेह, मुद्दालेह—पुं० [अ०] वह जिसके ऊपर कोई दावा किया जाय, प्रतिवादी।

मुद्ध(पु)†—वि० दे० 'मुग्ध'।

मुद्धी—स्त्री० रस्सी की वह गाँठ जिसके अंदर से उसका दूसरा सिरा खिसक सके।

मुद्रक—पुं० [सं०] छापनेवाला।

मुद्रण—पुं० [सं०] किसी चीज पर अक्षर आदि अंकित करना, छपाई।

मुद्रणालय—पुं० [सं०] छापाखाना ।
मुद्रांकित—वि० [सं०] मोहर किया हुआ । जिसके शरीर पर विष्णु के आयुध के चिह्न गरम लोहे से दागकर बनाए गए हो (वैष्णव) ।
मुद्रा—स्त्री० [सं०] किसी के नाम की छाप मोहर । रुपया, अशरफी आदि सिक्का । अँगूठी, छाप । टाइप से छपे हुए अक्षर । गोरखपंथी साधुओ के पहनने का एक कर्णभूषण । हाथ, पाँव, आँख, मुह, गर्दन आदि की कोई स्थिति । बैठने, लेटने या खडे होने का कोई ढग । मुख की आकृति या चेष्टा । विष्णु के आयुधो के चिह्न जो प्राय: भक्त लोग अपने शरीर पर अकित करते हैं या गरम लोहे से दगवाते हैं । हठयोग मे विशेष अग-विन्यास । ये मुद्राएँ पाँच होती है—खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी, और उन्मनी । वह अर्थालकार जिसमे प्रकृति या प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त पद्य मे कुछ और भी साभिप्राय नाम हो । ⊙तत्व =पु० वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्को आदि की सहायता से ऐतिहासिक बातें जानी जाती है । ⊙यंत्र =पुं० छापने या मुद्रण करने का यत्र । ⊙विज्ञान =पु० दे० 'मुद्रातत्त्व' । ⊙शास्त्र =पुं० दे० 'मुद्रातत्व' ।
मुद्रिक—स्त्री० दे० 'मुद्रिका' ।
मुद्रिका—स्त्री० [सं०] अँगूठी । कुश की बनी हुई अँगूठी जो पितृकार्य मे अनामिका मे पहनी जाती है । मुद्रा, सिक्का ।
मुद्रित—वि० [सं०] मुद्रण किया हुआ, छपा हुआ । मूँदा हुआ, बद ।
मुधा—क्रि० वि० [सं०] व्यर्थ, वृथा । वि० व्यर्थ का 'असत्' मिथ्या । पुं० असत्य ।
मुनक्का—पुं० [अ०] एक प्रकार की बड़ी किशमिश ।
मुनगा—पुं० दे० 'सहिजन' ।
मुनहसर—वि० [अ०] निर्भर, आश्रित ।
मुनादी—स्त्री० [अ०] वह घोषणा जो डुग्गी या ढोल आदि पीटते हुए सारे शहर मे हो, ढिंढोरा ।
मुनाफा—पु० [अ०] लाभ, नफा ।
मुनारा+—पु० दे० 'मीनार' ।
मुनासिब—वि० [अ०] उचित, वाजिब ।
मुनासिबत—स्त्री० संबध । उपयुक्तता । किसी चित्र मे का दृष्टिक्रम ।
मुनि—पु० [सं०] ईश्वर, धर्म और सत्यासत्य आदि का सूक्ष्म विचार करनेवाला व्यक्ति । तपस्वी, त्यागी । सात की सख्या ।
मुनियाँ—स्त्री० लाल नामक पक्षी की मादा ।
मुनीब—पु० [अ०] दे० 'मुनीम' ।
मुनीम—पु० सहायक साहूकारो का हिसाब किताब लिखनेवाला ।
मुनीश, मुनीश्वर—पु० [सं०] मुनियो मे श्रेष्ठ । बुद्धदेव । विष्णु ।
मुन्ना मुन्नू—पु० छोटे के लिये प्रेमसूचक प्रिय, प्यारा ।
मुफलिस—वि० [अ०] निर्धन दरिद्र ।
मुफस्सल—वि० [अ०] ब्योरेवार, विस्तृत । पु० किसी केंद्रस्थ नगर के चारो ओर के कुछ दूर तक के स्थान, देहात ।
मुफ्त—वि० [अ०] जिसमे कुछ मूल्य न लगे । ⊙खोर = वि० [फा०] मुफ्त का माल खानेवाला । मु०~मे = बिना मूल्य दिए या लिए । व्यर्थ, बेफायदा **मुफ्ती**—पु० धर्मशास्त्री (मुस०) वि० मुफ्त का ।
मुबलिग—पु० [अ०] धन की सख्या, रकम ।
मुबारक—वि० [अ०] जिसका कारण बरकत हो । शुभ, मगलप्रद । ⊙बाद =पु० [फा०] कोई शुभ बात होने पर यह कहना कि 'मुबारकहो' बधाई ।
मुब्तिला—वि० [अ०] सकट आदि मे फँसा हुआ ।
मुमकिन—वि० [अ०] संभव ।
मुमानियत—स्त्री० [अ०] मनाही ।
मुमुक्षु—वि० [सं०] मुक्ति पाने का इच्छुक जो मुक्ति की कामना करता हो ।
मुमुख—वि० दे० 'मुमुक्षु' ।
मुमूर्षा—स्त्री० सं० मरने की इच्छा ।
मुमूर्ष—वि० [सं०] जो मरने के समीप हो ।

मुयस्सर—वि० दे० 'मयस्सर'। वि० सूखा हुआ, शुष्क।
मुर—पुं० [सं०] वेष्टन, वेठन। एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था। अव्य० फिर, दुबारा।
मुरकना—स्त्री० मुरकने की क्रिया या भाव।
मुरजना—अक० लचककर किसी ओर झुकना, मुड़ना। फिरना, घूमना। लौटना, वापस होना। किसी ओर इस प्रकार मुड जाना कि जल्दी। सीधा न हो, मोच खाना, हिचकना, रुकना। विनिष्ट होना, चौपट होना।
मुरकाना—सक० फेरना, घुमाना। लौटना, वापस करना। किसी अंग मे मोच लाना। नष्ट करना, चौपट करना।
मुरकी—स्त्री० कान मे पहनने की एक प्रकार की बाली।
मुरखाई(पु)†—स्त्री० दे० 'मूर्खता'।
मुरगा—पुं० एक प्रसिद्ध पक्षी जो कई रगो का होता है। नर के सिर पर कलगी होती है। यह ब्राह्म मूहूर्त मे बोलने के लिये प्रसिद्ध है।
मुरगाबी—स्त्री० [फा०] जलपक्षियो की एक जाति।
मुरचंग—पुं० मुह से बजाने का एक प्रकार का बाजा, मुंहचग।
मुरचा—पु० दे० 'मोरचा'।
मुरछना, मुरछना(पु)—अक० शिथिल होना। अचेत होना। मुरछावत(पु)—वि० मूर्छित बेहोश। मुरछित(पु)—वि० दे० मूर्छित।
मुरज—पु० [सं०] मृदंग, पखावज।
मुरझना(पु)—अक० दे० 'मुरझाना'। मुरझाना अक० फूल या पत्ती आदि का कुम्हलाना। सुस्त या उदास होना।
मुरझाई—स्त्री० दे० 'मूर्च्छा'।
मुरडा—पुं० भुने हुए गरमागरम गेहूँ मे गुड़ मिलाकर बनाया हुआ लड्डू'
मुरदर—पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मुरदा—पुं० [फा०] मरा हुआ प्राणी। वि० मरा हुआ, मृत। जिसमे कुछ भी दम न हो। मुरझाया हुआ।
मुरदार—वि० मरा हुआ। अपवित्र। बेजान।
मुरदासंख—पुं० एक प्रकार की औषधि जो फूंके हुए सीसे और सिंदूर से बनती है।
मुरदासन(पु)—पु० दे० 'मुरदासख'।
मुरधर(पु)—पु० मारवाड।
मुरना(पु)—अक० दे० 'मुडना'।
मुर परैना‡—पुं० फेरा करके सौदा बेचनेवालो का बुकचा।
मुरब्बा—पुं० चीनी या मिसरी आदि की चाशनी मे रक्षित किया हुआ फलो या मेवो आदि का पाक।
मुरमुराना—अक० चूर चूर हो जाना। मुरमुर शब्द करना।
मुररिपु—पुं० [सं०] मुरारि, श्रीकृष्ण।
मुररिया†—स्त्री० दे० 'मुरी'।
मुरलिका—स्त्री० [स०] मुरली, वंशी।
मुरलिया†—स्त्री० दे० 'मुरली'।
मुरली—स्त्री० [सं०] बाँसुरी, वंशी। ⊙धर = पुं० श्रीकृष्ण। ⊙मनोहर = पुं० श्रीकृष्ण।
मुरवा—पु० एड़ी के ऊपर की हड्डी के चारो ओर का घेरा। †दे० 'मोर'।
मुरवी(पु)—स्त्री० धनुष की डोरी, चिल्ला।
मुरव्वत—स्त्री० [अ०] शील, लिहाज। भलमनसी।
मुरशिद—पुं० [अ०] गुरु, पथदर्शक। पूज्य।
मुरहा†—पुं० दे० 'मुडवारी'। †वि० (बालक जो मूल नक्षत्र मे उत्पन्न हुआ हो। अनाथ। नटखट, उपद्रवी। पुं० [स०] श्रीकृष्ण।
मुरहारी—पुं० [स०] श्रीकृष्ण।
मुरा—स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध गधद्रव्य, मुरामासी। कथासरित्सागर के अनुसार उस स्त्री का नाम जिसके गर्भ से महापद्मनद का पुत्र चद्रगुप्त उत्पन्न हुआ था।
मुराड़ा—पुं० जलती लकडी।
मुराद—स्त्री० [अ०] अभिलाषा। अभिप्राय, मतलब। मु०~पाना = मनोरथ पूर्ण होना। ~मांगना = मनोरथ पूरा होने की प्रार्थना करना।
मुराना(पु)†—सक० मुंह मे कोई चीज डाल

कर उसे मुलायम करना, चुभलाना। (पु) †दे० 'मोरना'।

मुरायठ†—पु० दे० 'मुरेठ'।

मुरार—पु० कमल की जड, कमलनाल। (पु)दे० 'मुरारि'।

मुरारि—पु० [सं०] श्रीकृष्ण। डगण के तीसरे भेद (।ऽ।) की संज्ञा। मुरारे—पुं० हे मुरारि (सबो०)।

मुरारी—पुं० दे० 'मुरारि'।

मुरासा†—पु० कर्णफूल।

मुरीद—पु० [अ०] शिष्य, चेला। अनुयायी।

मुरु(पु)—पुं० दे० 'मुर'।

मुरुआ†—पु० एडी के ऊपर का घेरा, पैर का गट्ठा।

मुरुख(पु)†—वि० दे० 'मूर्ख'।

मुरुछना(पु)—अक० दे० 'मुरझाना'। (पु) स्त्री० दे० 'मूर्च्छना'।

मुरुझना(पु)†—अक दे० 'मुरझाना'।

मुरेठा—पुं० पगड़ी, साफा।

मुरेरना†—सक० दे० 'मरोडना'।

मुरोवत—स्त्री० दे० 'मुरव्वत'।

मुर्ग—पुं० [फा०] दे० 'मुरगा', ⊙केश= मरसे की जाति का एक पौधा, जटाधारी।

मुर्दनी—स्त्री० मुखपर प्रकट होनेवाले मृत्यु के चिह्न। शव के साथ उसकी अत्येष्टि क्रिया के लिये जाना।

मुर्दावली—स्त्री० दे० 'मुर्दनी'। वि० मृतक के संबध का, मुरदे का।

मुर्रा—पु० मरोडफली। पेट मे ऐंठन होकर बार बार दस्त होना, मरोड। एक प्रकार की अधिक दूध देनेवाली भैंस।

मुर्री—स्त्री० दो डोरी के सिरो को आपस मे जोडने की एक क्रिया जिसमे दोनो सिरो को मिलाकर मरोड या बट देते हैं। कपडे आदि में लपेटकर डाली हुई ऐंठन या बल। कपड़े आदि को मरोडकर बटी हुई बत्ती।

मुलकना—(पु)†—अक० पुलकित होना, नेत्रों मे हँसी प्रकट करना।

मुलकित—वि० मुस्कराता हुआ।

मुलकी—वि० शासन या व्यवस्था संबंधी। देशी, बिलायती का उलटा।

मुलजिम—वि० [अ०] जिसपर कोई अभियोग हो, अभियुक्त।

मुलतवो—वि० जिसका समय टाल दिया गया हो, स्थगित।

मुलतानी—वि० मुलतान का, मुलतान संबधी। स्त्री० एक रागिनी। एक प्रकार की बहुत कोमल और चिकनी मिट्टी।

मुलना†—पु० मौलवी।

मुलमुची—पुं० गिलट करनेवाला, मुलम्मासाज।

मुलम्मा—पुं० [अ०] किसी चीज पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की पतली तह, कलई। ऊपरी तडक भडक। ⊙साज=पु० [फा०] मुलम्मा चढानेवाला।

मुलहठी—स्त्री० दे० 'मुलेठी'।

मुलहा†—वि० जिसका जन्म मूल नक्षत्र मे हुआ हो। शरारती।

मुलां†—पुं० मौलवी।

मुलाकात—स्त्री० [अ०] आपस मे मिलना, भेंट। मेल मिलाप।

मुलाकाती—पुं० परिचित, मुलाकात करने वाला।

मुलाजिम—पु० [अ०] नौकर, सेवक।

मुलाजिमत—स्त्री० नौकरी। सेवा।

मुलायम—वि० [अ०] सख्त का उलटा, जो कडा न हो। हलका, धीमा, नाजुक, सुकुमार। जिसमे किसी प्रकार की कठोरता या खिचाव न हो। ~चारा=वि० वह जो सहज मे दूसरे की बातो मे आ जाय। वह जो सहज मे प्राप्त किया जा सके।

मुलायमियत—स्त्री० नर्मी। नजाकत, सुकुमारता।

मुलायमी—स्त्री० दे० 'मुलायमियत'।

मुलाहजा—पु० [अ०] निरीक्षण, देखभाल। संकोच। रिआयत।

मुलुक†—पुं० मुल्क।

मुलेठी—स्त्री० घुंघची नाम की लता की जड़ जो खाँसी की औषध के काम में आती है।

मुल्क—पु० [अ०] देश। प्रांत, प्रदेश। संसार। मुल्की—वि० शासन संबंधी। राजनीतिक। मुल्क या देश सबधी।

मुल्लह†—वि० मूर्ख, बेवकूफ।
मुल्ला—पु० दे० 'मौलवी'।
मुवक्किल—पु० अ० वह जो अपने किसी काम के लिये कोई वकील नियुक्त करे।
मुवना(पु)‡—अक० मरना। (पु)‡—सक० हत्या करना, मार डालना।
मुश्क—पु० [फा०] कस्तूरी, †गंध, बू। ⊙दाना=पु० एक प्रकार की लता का बीज़ जिससे कस्तूरी की सी सुगंध निकलती है। ⊙नाफा=पु० कस्तूरी का नाफा जिसके अंदर कस्तूरी रहती है। ⊙बिलाई=स्त्री० [हिं०] एक प्रकार का जंगली बिलाव जिसके अंडकोशों का पसीना बहुत सुगंधित होता है, गंधबिलाव। मुश्क=स्त्री० [हिं] कंधे और कोहनी के बीच का भाग, भुजा। मु०~मुश्कें कसना या बाँधना=(अपराधी आदि की) दोनों भुजाओं को पीठ की ओर करके बाँध देना।
मुश्किल—वि० [अ०] कठिन, दुष्कर। स्त्री० कठिनता, दिक्कत। मुसीबत।
मुश्की—वि० [फा०] कस्तूरी के रंग का, काला। जिसमें मुश्क या कस्तूरी पड़ी हो। पु० काले रंग का घोड़ा।
मुश्त—पु० [फा०] मुट्ठी। एक मुश्त=पु० एक साथ, एक ही बार। (रुपयों के लेन देन में)।
मुश्तबहा—वि० [अ०] जिसपर कोई शुबहा या शक हो, संदिग्ध।
मुष—पु० दे० 'मुख'।
मुषुर(पु)†—स्त्री० गूँजने का शब्द, गुंजार।
मुष्टि—स्त्री० [सं०] मुट्ठी। घूँसा। चोरी। दुर्भिक्ष, अकाल। मुष्टिक, मल्ल। मौन, चुप। ⊙क=पु० राजा कंस के पहलवानों में से एक जिसे बलदेव जी ने मारा था। घूँसा। चार अँगुली की नाप। मुट्ठी। ⊙युद्ध=पु० वह लड़ाई जिसमें मुक्कों से प्रहार हो, घूँसेबाजी। ⊙योग=पु० हठयोग की कुछ क्रियाएँ जो शरीर की रक्षा करने, बल बढाने और रोग दूर करनेवाली मानी जाती हैं। छोटा और सहज उपाय। ⊙का=स्त्री० (सं०) मुक्का, घूँसा। मुट्ठी।
मुसकनि—(पु)‡—स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।
मुसकनिया‡—स्त्री० दे० 'मुसकान'।
मुसकराना—अक० बहुत ही मंद रूप से हँसना। मुसकराहट—स्त्री० मुसकराने की क्रिया या भाव।
मुसकाना—अक० दे० 'मुसकराना'।
मुसकान—स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।
मुसक्यान—स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।
मुसना—अक० मूसा जाना, चुराया जाना (धन आदि)।
मुसन्ना—पु०[अ०] असल कागज की दूसरी नकल। रसीद आदि का वह दूसरा भाग जो रसीद देनेवाले के पास रह जाता है।
मुसब्बर—पु० (जमाया हुआ) घीकुँवार का रस जिसका व्यवहार औषधि के रूप में होता है।
मुसमुद, मुसमुंद (पु)†—वि० नष्ट, बरबाद। पु० नाश। बरबादी।
मुसम्मात—वि० स्त्री० (अ०) 'मुसम्मा' शब्द का स्त्रीलिंग रूप, नाम्नी। स्त्री० स्त्री, औरत।
मुसरा†—पु० पेड की जड जिसमें एक ही मोटा पिंड हो, इधर उधर शाखाएँ न हों।
मुसलधार—क्रि० वि० दे० 'मूसलाधार'।
मुसलमान—पुं० (फा०) वह जो मुहम्मद साहब के चलाए हुए संप्रदाय में हो, मुहम्मदी। मुसलमानी—वि० मुसलमान संबंधी, मुसलमान का। स्त्री० मुसलमानों की एक रस्म जिसमें छोटे बालक की इंद्रिय पर का कुछ चमड़ा काट डाला जाता है, सुन्नत।
मुसल्लम—वि० (फा०) जिसके खंड न किए गए हों, पूरा। पु० दे०'मुसलमान'।
मुसव्विर—स्त्री० चित्रकार। मुसव्विरी—स्त्री० चित्रकार का काम, चित्रकारी।
मुसहर—पु० एक जंगली जाति जिसका व्यवसाय जंगली पत्ते, पत्तल, जड़ी बूटी आदि बेचना है।
मुसहिल—वि० (अ०) दस्तावर, रेचक।
मुसाफिर—वि० (अ०) यात्री, पथिक। ⊙खाना=पु० (फा०) यात्रियों के

ठहरने का स्थान, धर्मशाला। मुसाफिरत, मुसाफिरी—स्त्री० मुसाफिर होने की दशा। यात्रा, प्रवास।

मुसाहब—पुं० (अ०) धनवान् या राजा आदि का पार्श्ववर्ती, सहवासी।

मुसाहबी—स्त्री० मुसाहब का पद या काम।

मुसीबत—स्त्री० (अ०) तकलीफ, कष्ट। विपत्ति।

मुसौवर—पु० दे० 'मुसव्विर'।

मुस्कराना—अ० दे० 'मुसकराना'।

मुस्की—स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।

मुस्क्यान(पु)†—स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।

मुस्टंडा—वि० हृष्ट पुष्ट। बदमाश, गुंडा।

मुस्तक—पुं० [सं०] मोथा।

मुस्तकिल—वि० (अ०) अटल, स्थिर। मजबूत, दृढ़।

मुस्तगीस—पुं० (अ०) मुद्दई।

मुस्तसना—वि० (अ०) अलग किया हुआ, छोड़ा हुआ। मुक्त, बरी।

मुस्तहक—वि० (अ०) जिसको हक हासिल हो, हकदार। पात्र, अधिकारी।

मुस्तैद—वि० तत्पर, सन्नद्ध। चालाक, तेज।

मुस्तैदी—स्त्री० सन्नद्धता, तत्परता। फुरती।

मुस्तौफी—पुं० (अ०) वह पदाधिकारी जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के हिसाब की जाँच पड़ताल करे, आय-व्यय-परीक्षक।

मुहकम—वि० (अ०) दृढ़, पक्का।

मुहकमा—पुं० (अ०) सरिश्ता, विभाग।

मुहताज—वि० (अ०) दरिद्र, कंगाल। विशेष कामना रखनेवाला, इच्छुक।

मुहब्बत—वि० (अ०) प्यार, चाह। दोस्ती, मित्रता। इश्क, लगन।

मुहम्मदी—पुं० [अ०] मुसलमान।

मुहर—स्त्री० दे० 'मोहर'।

मुहरा—पुं० सामने का भाग, । निशाना। मुँह की आकृति। शतरंज की कोई गोटी। घोड़े का एक साज जो उसके मुँह पर रहता है। शतरंज के खेल की गोटियाँ। मु०~लेना=मुकाबिला करना

मुहर्रम—पुं० [अ०] अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे। यह महीना शोक का माना जाता है।

मुहर्रमी—वि० मुहर्रम संबंधी। शोक व्यंजक, मनहूस।

मुहर्रिर—पुं० [अ०] लेखक, मुंशी। मुहर्रिरी स्त्री० मुहर्रिर का काम, लिखने का काम।

मुहल्ला—पुं० शहर का कोई विभाग जिसमें बहुत से मकान हों,।

मुहसिल—वि० तहसील वसूल करनेवाला, उगाहनेवाला। पु० प्यादा, फेरीदार।

मुहाफिज—वि० [अ०] हिफाजत करने-वाला, रखवाला।

मुहाल—वि० [अ०] असंभव। कठिन, दुष्कर। पुं० दे० 'महाल'। दे० 'मुहल्ला'।

मुहाला—पु० पीतल की वह चूड़ी जो हाथी के दाँत में शोभा के लिये चढ़ाई जाती है।

मुहावरा—[अ०] लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वह रूढ़ वाक्य या प्रयोग जिसका अर्थ प्रत्यक्ष (अभिधेय) अर्थ से विल-क्षण हो। अभ्यास, आदत।

मुहासिब—पुं० [अ०] हिसाब जाननेवाला। हिसाब किताब रखनेवाला कर्मचारी। हिसाब लेनेवाला।

मुहासिबा—पु० [अ०] हिसाब, लेखा। पूछताछ।

मुहासिरा—पु० [अ०] किले या शत्रुसेना को चारों ओर से घेरना, घेरा।

मुहासिल—पु० [अ०] आमदनी। लाभ, मुनाफा।

मुहिं(पु)—सर्व० दे० 'मोहिं'।

मुहिम—स्त्री० [अ०] कठिन या बड़ा काम। लड़ाई, युद्ध। फौज की चढ़ाई।

मुहीम(पु)—स्त्री० दे० 'मुहिम'।

मुहुँ†—पु० दे० 'मुँह'।

मुहुः—अव्यय [सं०] बार बार।

मुहूरत—पु० दे० 'मुहूर्त'।

मुहूर्त—पु० [सं०] दिन रात का ३० भाग। निर्दिष्ट क्षण या काल। फलित ज्योतिष के अनुसार गणना करके निकाला हुआ कोई समय जिसपर कोई शुभ काम किया जाय।

मुहै(पु)—सर्व० मुझे।"....मुहैं तौ निज, पाइन कौ पूरी परिचारिका गने रह्यौ" (जगद्विनोद २७२)।

मुह्यमान—वि० [सं०] मूर्च्छित, बेसुध। बहुत अधिक मोहित।

मूँग—स्त्री० एक अन्न जिसकी दाल बनती है। ⊙फली=स्त्री० एक प्रकार का क्षुप जिसकी खेती फलों के लिये की जाती है। इस वृक्ष का फल, चिनिया बादाम।

मूँगरी—स्त्री० एक प्रकार की तोप।

मूँगा—पु० समुद्र में रहनेवाले एक प्रकार के कृमियों की लाल ठठरी जिसकी गिनती रत्नों में की जाती है, विद्रुम।

मूँगिया—वि० मूँग के रंग का, हरा। पु० एक प्रकार का हरा रंग।

मूँछ—स्त्री० ऊपरी ओष्ठ के ऊपर के बाल जो केवल पुरुषों के उगते हैं। मु०~उखाड़ना=घमंड चूर करना। ~नीची होना=घमंड टूट जाना। बेइज्जती होना। मूँछों पर ताव देना=अभिमान से मूँछ मरोड़ना।

मूँछी—स्त्री० बेसन की बनी हुई एक प्रकार की कढ़ी।

मूँज—स्त्री० एक प्रकार का तृण जिसमें टहनियाँ नहीं होतीं और बहुत पतली लंबी पत्तियाँ चारों ओर रहती हैं।

मूँठ—स्त्री० दे० 'मूठ'।

मूँड़‡—पु० सिर। मु०~मारना=बहुत हैरान होना, बहुत कोशिश करना। ~मूँडना=सन्यासी होना।

मूँडना—सक० सिर के बाल बनाना, हजामत करना। धोखा देकर माल उड़ाना, ठगना। चेला बनाना।

मूँड़न—पु० चूडाकरण संस्कार, मुंडन।

मूँड़ी—स्त्री० सिर। किसी वस्तु का मूँड के आकार का भाग।

मूँदना—सक० ऊपर से कोई वस्तु फैलाकर छिपाना, आच्छादित करना। द्वार, मुँह आदि पर कोई वस्तु रखकर उसे बंद करना।

मूँदर—स्त्री० दे० 'मुँदरी'।

मूक—वि० [सं०] गूंगा। विवश। (पु)स्त्री० [हिं०] फेंकने की क्रिया। "अप्रन की मूकै घालि न चूकैं .." (हिम्मत० १८५)

मूकना(पु)‡—सक० दूर करना, त्यागना। बंधन से छुड़ाना।

मूका‡—पु० गोल झरोखा, मोखा। पु० दे० 'मुक्का'।

मूकू(पु)—वि० अपना दोष जानते हुए भी चुप रहनेवाला, मचला।

मूखना(पु)— सक० दे० 'मूसना'।

मूचना(पु)—सक० दे० 'मोचना'।

मूजी—पु० [अ०] कष्ट पहुँचनेवाला। दुष्ट, खल।

मूझना(पु)‡—सक० मूर्च्छित होना।

मूठ—स्त्री० मुट्ठी। किसी औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ में रहता है, दस्ता। उतनी वस्तु जितनी मुट्ठी में आ सके। एक प्रकार का जुआ। जादू, टोना। मु०~चलाना या मारना=जादू करना। ~लगना=जादू का असर होना।

मूठना(पु)—सक० नष्ट होना।

मूठी(पु)‡—स्त्री० 'मुट्ठी'।

मूड़—पु० दे० मूँड'।

मूढ़—वि० [सं०] मूर्ख। बेवकूफ। स्तब्ध। जिसे आगा पीछा न सूझता हो। ⊙गर्भ=पु० गर्भ का बिगड़ना जिससे गर्भस्राव आदि होता है।

मूत—पु० दे० 'मूत्र'। ⊙ना—सक० पेशाब करना।

मूत्र—पु० [सं०] शरीर के विषैले पदार्थ को लेकर उपस्थमार्ग से निकलनेवाला जल, ⊙कृच्छ—पुं० एक रोग जिसमें पेशाब बहुत कष्ट से या रुक रुककर होता है। मूत्राघात—पु० पेशाब बंद होने का रोग। मूत्राशय—पु० नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित रहता है,

मूना†—अक० दे० 'मुवना'।

मूर(पु)‡—पु० मूल, जड़। जड़ी। मूलधन। मूल नक्षत्र।

मूरख(पु)‡--वि० दे० 'मूर्ख'।
मूरचा—पु० दे० 'मोरचा'।
मूरछना(पु)—अक० मूर्च्छित या वेहोश होना। (पु)—स्त्री० दे० 'मूर्च्छना'।
मूरछा ‡(पु)—स्त्री० दे० 'मूर्च्छा'।
मूरत(पु)‡--स्त्री० दे० 'मूर्ति'।
मूरतिवत--वि० मूर्तिमान्, देहधारी।
मूरध—पु० दे० 'मूर्धा'।
मूरि, मूरी(पु)—स्त्री० मूल, जड। जडी, वूटी।
मूरुख(पु)‡—वि० दे० 'मूर्ख'।
मूर्ख—वि० [सं०] वेवकूफ, अज्ञ। ⊙ता=स्त्री० नासमझी, वेवकूफी।
मूर्खिनी(पु)—स्त्री० मूढा स्त्री।
मूर्च्छन—पु० [सं०] वेहोश करना। मूर्छित करने का मंत्र या प्रयोग। पारे का तीसरा सस्कार। कामदेव का एक वाण।
मूर्च्छना—स्त्री० [सं०] सगीत मे एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने मे सातो स्वरो का आरोह अवरोह।
मूर्च्छा—स्त्री० [सं०] अचेत होना, वेहोशी।
मूर्छित, मूर्च्छित—वि० [सं०] जिसे मूर्च्छा आई हो, वेहोश। मरा हुआ (पारा आदि धातुओ के लिये)।
मूर्त—वि० जिसका कोई प्रत्यक्ष रूप या आकार हो। ठोस।
मूर्ति—स्त्री० [सं०] शरीर, देह। आकृति, शकल। किसी के रूप या आकृति के सदृश गढ़ी हुई वस्तु, प्रतिमा। चित्र, तसवीर। ⊙कार=पु० मूर्ति वनानेवाला। तसवीर वनानेवाला। ⊙पूजक =पु० वह जो मूर्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो। ⊙पूजा=स्त्री० मूर्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसकी पूजा करना। ⊙भंजक=पु० वह जो मूर्तियो को तोडता हो, वुतशिकन। मुसलमान। ⊙मंत=वि० [हिं०] दे० 'मूर्तिमान्'। ⊙मान्=वि० जो रूप धारण किए हो, सशरीर। साक्षात् प्रत्यक्ष।
मूर्ध—पु० सिर। ⊙कपारी(पु)=स्त्री० दे० 'मूर्धकर्णी'। ⊙कर्णी=स्त्री० छाया आदि के लिये सिर पर रखी हुई वस्तु।
मूर्धन्य—वि० [सं०] मूर्धा से सवध रखनेवाला। मस्तक मे स्थित। श्रेष्ठ, उच्च कोटि का। ⊙वर्ण=पु० वे वर्ण जिनका उच्चारण सस्कृत व्याकरण मे मूर्धा से माना गया है; यथा ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, और ष।
मूर्धा—पु० [सं०] सिर।
मूर्धाभिषेक—पु० [सं०] सिर पर अभिषेक या जलसिंचन।
मूल—पुं० [सं०] पेडो का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है, जड। खाने के योग्य मोटी जड, कद। आरभ, शुरू। उत्पत्ति का हेतु। असल जमा या धन, पूंजी। आरभ का भाग। नीव। ग्रथकार का निज वाक्य या लेख जिसपर टीका आदि की जाय। १९वां नक्षत्र। वि० मुख्य प्रधान। ⊙द्रव्य=पु० आदिम द्रव्य या मूल जिससे और द्रव्य वने हो। ⊙द्वार=पु० सदर फाटक। ⊙धन=पुं० वह असल धन जो किसी व्यापार में लगाया जाय, पूंजी। ⊙पुरुष=किसी वश का आदिपुरुष जिससे वश चला हो। ⊙भूत=वि० किसी वस्तु के नितात मूल या तत्व से सवध रखनेवाला, असली। ⊙स्थली=स्त्री० थाला, आलवाल। ⊙स्थान=पुं० पूर्वजो का स्थान। प्रधान स्थान। मुलतान नगर।
मूलक—पु० [सं०] मूली। मूलस्वरूप। वि० उत्पन्न करनेवाला, जनक।
मूलाधार—पु० [सं०] मानव शरीर के भीतर के छह चक्रों में से एक (योग)।
मूलिका—स्त्री० [सं०] जडी।
मूली—स्त्री० एक पौधा जिसकी जड मीठी, चरपरी और तीक्ष्ण होती है और खाई जाती है। जडी बूटी। मु० (किसी को) ⊙गाजर समझना=अति तुच्छ समझना।
मूल्य—पु० [सं०] किसी वस्तु के बदले मे मिलनेवाला धन, दाम। ⊙वान्=वि० जिसका दाम अधिक हो, कीमती।
मूष, मूषक—पुं० [सं०] चूहा।
मूस—पु० चूहा। ⊙दानी=स्त्री० चूहा फँसाने का पिंजड़ा।

मूसना—सक० चुराकर ले जाना।

मूसर—पुं० दे० 'मूसल'।

मूसल—पु० धान कूटने का लंबा मोटा डंडा। एक अस्त्र जिसे बलराम धारण करते थे। ⊙चंद=पु० हट्टा कट्टा पर निकम्मा मनुष्य। ⊙धार=क्रि० वि० मूसल के समान मोटी धार से (वृष्टि)।

मूसला—पु० मोटी और सीधी जड़ जिसमे इधर उधर सूत या शाखाएँ न फूटी हों।

मूसली—स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम मे आती है।

मूसा—(पु)चूहा। पुं० [इबरानी] यहूदियों के एक पैगंबर जिनको खुदा का नूर दिखाई पड़ा था।

मूसाकानी—स्त्री० एक लता। इसके सब अंग औषधि के काम मे आते हैं।

मृगंक—पु० मृगांक, चंद्रमा। 'तव मुख ··· वैरी मनहु मृगंक' (पद्माभरण, ५८)।

मृग—पु० [सं०] पशु मात्र, विशेषतः वन्य पशु। हिरन। हाथियों की एक जाति। अगहन का महीना। मृगशिरा नक्षत्र। मकर राशि। कस्तूरी का नाफा। पुरुष के चार भेदों मे से एक (कामशास्त्र)। ⊙चर्म=पु० हिरन का चमड़ा जो पवित्र माना जाता है। ⊙छाला=स्त्री० [हिं०] दे० 'मृगचर्म'। ⊙जल=पुं० मृगतृष्णा की लहरें। ⊙तृषा, (पु)तृष्णा=स्त्री० जल की लहरों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी कभी ऊसर मैदानों मे कड़ी धूप पड़ने के समय होती है, मृगमरीचिका। ⊙दाव=पु० काशी के पास 'सारनाथ' नामक स्थान का प्राचीन नाम। ⊙धर=पु० चंद्रमा। ⊙नाथ=पुं० सिंह। ⊙नाभि=पु० कस्तूरी। ⊙नैनी=स्त्री० [हिं०] दे० 'मृगलोचनी'। ⊙मंद्र=पु० हाथियों की एक जाति। ⊙मद=पु० कस्तूरी। ⊙मरीचिका=स्त्री० मृगतृष्णा। ⊙मित्र=पु० चंद्रमा। ⊙मेद=पुं० कस्तूरी। ⊙रोचन=पु० कस्तूरी। ⊙लांछन=पु० चंद्रमा। ⊙लोचना=वि० स्त्री० हरिण के समान सुंदर नेत्रोंवाली (स्त्री)। ⊙लोचनी=स्त्री० [सं० + हिं०] दे० 'मृगलोचना'। ⊙वारि=पु० मृगतृष्णा का जल। ⊙शिरा=पु० २७ नक्षत्रों मे से पाँचवाँ नक्षत्र। ⊙शीर्ष=पु० दे० 'मृगशिरा'।

मृगया—पु० [सं०] शिकार, आखेट।

मृगांक—पु० [सं०] चंद्रमा। वैद्यक मे एक प्रकार का रस।

मृगाक्षी—वि० स्त्री० [सं०] हरिण के से नेत्रों वाली।

मृगाशन—पु० [सं०] सिंह।

मृगिनी(पु)†—स्त्री० हरिणी।

मृगी—स्त्री० [सं०] हरिणी, हिरनी। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक ही रगण हो। कश्यप ऋषि की दस कन्याओं मे एक जिससे मृगों की उत्पत्ति हुई है। अपस्मार नामक रोग। कस्तूरी।

मृगेंद्र—पु० [सं०] सिंह।

मृगेक्षिणी—स्त्री० दे० 'मृगाक्षी'।

मृड—पु० [सं०] शिव, महादेव। **मृडा**, मृडानी—स्त्री० दुर्गा।

मृणाल—पुं० [सं०] कमल का डंठल, कमल नाल। कमल की जड़, भसीड़।

मृणालिका—स्त्री० दे० 'मृणाल'।

मृणालिनी—स्त्री० [सं०] कमलिनी। वह स्थान जहाँ कमल हो।

मृणाली—स्त्री० दे० 'मृणाल'।

मृण्मय—वि० [सं०] मिट्टी का।

मृण्मूर्ति—स्त्री० [सं०] मिट्टी की बनी हुई मूर्ति।

मृत—वि० [सं०] मरा हुआ, मुर्दा। ⊙जीवनी=स्त्री० वह विद्या जिससे मुर्दे को जिलाया जाता है। ⊙संजीवनी=स्त्री० एक बूटी जिसके विषय मे यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मुर्दा भी जी उठता है।

मृतक—पुं० [सं०] मरा हुआ प्राणी। ⊙कर्म=पु० मृतक पुरुष की गति के लिये किया जानेवाला कृत्य, प्रेतकर्म। ⊙धूम=पुं० राख, भस्म।

मृताशौच—पुं० वह अशौच जो किसी निकट संबंधी के मरने पर लगता है।
मृति—स्त्री० [सं०] दे० 'मृत्यु'।
मृत्तिका—स्त्री० [सं०] मिट्टी, खाक।
मृत्युंजय—पु० [सं०] वह जिसने मृत्यु को जीता हो। शिव का एक रूप।
मृत्यु—स्त्री० [सं०] प्राण छूटना, मौत। यमराज। ⊙लोक=पु० यमलोक। ‡मर्त्यलोक।
मृथा㉤‡—क्रि० वि० दे० 'वृथा'। दे० 'मृषा'।
मृदंग—पु० [सं०] एक प्रकार का बाजा जो ढोलक से कुछ लंबा होता है।
मृदव—पु० [सं०] गुण के साथ दोष के वैषम्य का प्रदर्शन (नाट्यशास्त्र)।
मृदु—वि० [सं०] कोमल, मुलायम। जो सुनने में कर्कश या अप्रिय न हो। सुकुमार, नाजुक। धीमा, मंद।
मृदुत्पल—पु० [सं०] नील कमल।
मृदुल—वि० [सं०] कोमल, नरम। कृपालु। नाजुक।
मृदुलाई—स्त्री० मृदुलता, सुकुमारता।
मृनाल㉤—पु० दे० 'मृणाल'।
मृन्मय—वि० [सं०] मिट्टी का बना हुआ।
मृषा—अव्य० [सं०] झूठमूठ, व्यर्थ। वि० असत्य, झूठ। ⊙त्व=पु० मिथ्यात्व। ⊙भाषी=वि० झूठ बोलनेवाला, झूठा।
मृष्ट—वि० [सं०] शोधित।
मृष्टि—स्त्री० [सं०] शोधन।
में—अव्य० अधिकरण कारक का चिह्न जो किसी शब्द के आगे लगकर उसके भीतर या चारों ओर होना सूचित करता है, आधार या अवस्थासूचक शब्द।
मेंगनी—स्त्री० छोटी गोलियों की आकार की विष्ठा, लेंडी।
मेंड—स्त्री० दे० 'मेड़'।
मेंढक—पु० एक जल-स्थल-चारी जंतु जो एक बालिश्त तक लंबा होता है, मंडूक।
मेंह—स्त्री० दे० 'मेह'।
मेकल—पु० (सं०) विंध्य पर्वत का एक भाग जिसमें अमरकंटक पर्वत है तथा जहाँ से नर्मदा और सोन दो बड़ी नदियाँ निकलती हैं।
मेख—पु० दे० 'मेष'। स्त्री० [फा०] गाड़ने के लिये एक ओर नुकीली गढ़ी हुई कील, खूँटी। कील, काँटा। लकड़ी का पच्चड़।
मेखल—स्त्री० दे० 'मेखला'।
मेखला—स्त्री० (सं०) वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु के मध्य भाग में उसे चारों ओर से घेरे हुए पड़ी हो। करधनी, किंकिणी। मंडल। डंडे आदि के छोर पर लगा हुआ लोहे आदि का घेरदार बंद, सामी। पर्वत का मध्य भाग। कपड़े का टुकड़ा जो साधु लोग गले में डाले रहते हैं, कफनी।
मेखली—स्त्री० एक पहनावा जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और दोनों हाथ खुले रहते हैं। करधनी।
मेघ—पु० [सं०] आकाश में घनीभूत जलवाष्प जिससे वर्षा होती है, बादल। संगीत में छह रागों में से एक। ⊙डंबर=पु० मेघ गर्जन। बड़ा शामियाना। ⊙नाथ=पु० इंद्र, देवराज। ⊙नाद=पुं० मेघ का गर्जन। वरुण। रावण का पुत्र इंद्रजित। मोर। ⊙पुष्प=पुं० इंद्र का घोड़ा। श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा। ⊙माला=स्त्री० बादलों की घटा, कादंबिनी। ⊙राज=पुं० इंद्र। ⊙वर्त=प्रलयकाल के मेघों में से एक का नाम। ⊙विस्फूर्जित=स्त्री० १९ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से यगण, मगण, नगण, सगण दो रगण और अंत्य गुरु हो, विस्मिता।
मेघबाई㉤—स्त्री० बादलों की घटा।
मेघा†—पुं० मेढक।
मेघागम—पुं० (सं०) वर्षाऋतु का आरंभ।
मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित—वि० (सं०) बादलों से ढका या छाया हुआ।
मेघावरि㉤‡—स्त्री० बादलों की घटा।
मेचक—वि० [सं०] काला, श्याम। अँधेरा। बादल।

मेच्छ—पुं० दे० 'म्लेच्छ'।

मेज—स्त्री० [फा०] लंबी चौडी ऊँची चौकी जो खाना खाने या लिखने पढने के लिये रखी जाती है (अं० टेबुल)। ⊙बान = पुं० आतिथ्य करनेवाला, मेहमादार।

मेजा†—पुं० मेढक, मडूक।

मेट—पु० [अं०] मजदूरो का अफसर या सरदार, टंडैल।

मेटक(पु)‡—पु० नाशक, मिटानेवाला।

मेटनहारा(पु)†—वि० मिटानेवाला, दूर करनेवाला।

मेटना†—सक० दे० 'मिटाना'।

मेटा†—पु० दे० 'मटका'। वि० मिटाने वाला।

मेटिया†—स्त्री० दे० 'मटकी'।

मेड़—स्त्री० मिट्टी डालकर बनाया हुआ खेत या जमीन का घेरा, छोटा बाँध। दो खेतो के बीच मे सीमा के रूप मे बना रास्ता। समान। गौख।

मेड़रा†—पु० किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा या ढांचा। बिना मढा ढोल, खँजडी आदि।

मेड़िया—स्त्री० मढी।

मेढक—पु० दे० 'मेढक'।

मेढ़ा—पु० सीगवाला एक चौपाया जो घने रोवो से ढका होता है।

मेढ़ासिगी—स्त्री० एक झाडीदार लता। इसकी जड औषधि है।

मेढ़ी†—स्त्री० तीन लडियो से गूँथी हुई चोटी।

मेथी—स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ साग की तरह खाई जाती हैं।

मेथौरी—स्त्री० मेथी का साग मिलाकर बनाई हुई बरी।

मेद—पु० [सं०] शरीर के अदर की वसा नामक धातु, चरबी। मोटाई या चरबी बढना। कस्तूरी।

मेदपाट—पुं० [सं०] मेवाड देश।

मेदा—स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध औषधि। पु० [अ०] पाकाशय, पेट।

मेदिनी—स्त्री० [सं०] पृथ्वी, धरती।

मेदुर—वि० [सं०] चिकना, स्निग्ध। मोटा या गाढा।

मेध—पु० [सं०] यज्ञ।

मेधा—स्त्री० [सं०] बात को स्मरण रखने की मानसिक शक्ति। षोडश मात्रिकाओ मे से एक। छप्पय छद का एक भेद।

मेधावी—वि० [सं०] जिसकी धारणा शक्ति तीव्र हो। बुद्धिमान्। पडित, विद्वान्।

मेध्य—वि० [सं०] यज्ञ सबधी। पवित्र। पु० बकरी। जौ। खैर।

मेना—स्त्री० पार्वती की माता, मेनका।

मेम—स्त्री० [अं० मैडम का सक्षिप्त रूप] युरोप या अमेरिका आदि की स्त्री। ताश का एक पत्ता, बीबी।

मेमना—पु० भेड का बच्चा। घोडे की एक जाति।

मेमार—पु० [अ०] इमारत बनानेवाला, राजगीर।

मेय—वि० [सं०] जो नापा जा सके।

मेयना—सक० दे० 'मेना'।

मेर(पु)†—पु० दे० 'मेल'।

मेरवना—सक० मिश्रित करना। सयोग कराना।

मेरा—सर्व० 'मैं' के सबध कारक का रूप। (पु)†पु० दे० 'मेला'। मेल भेंट।

मेराउ, मेराव†—पु० मेल, मिलाप। स्त्री० अहकार।

मेरी—स्त्री० अहभाव, हमता।

मेरु—पु० [सं०] एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है, सुमेरु। जपमाला के बीच का सबसे बडा दाना, सुमेरु। छद शास्त्र की एक गणना जिससे यह पता लगा हैं कि कितने कितने लघु गुरु के कितने छद हो सकते है।

मेरुदंड—पु० [सं०] रीढ। पृथ्वी के दोनों ध्रुवो के बीच गई हुई सीधी कल्पित रेखा।

मेरे—सर्व० मेरा' का बहुवचन। 'मेरा' का वह रूप जो उसे सबधवान् शब्द के आगे विभक्ति लगने के कारण प्राप्त होता है।

मेल—पु० [सं०] मिलने की क्रिया या भाव, सयोग। एकता. सलाह। मैत्री, दोस्ती।

उपयुक्तता, सगति। जोड, बराबरी। ढग, तरह। मिश्रण, मिलावट। ⊙~खाना, बैठना या मिलना = साथ निभना। दो चीजो का जोड ठीक बैठना।

मेलक—वि० मेल कराने या मिलानेवाला। पु० [सं०] सग, साथ, सहवास। मिलान। समूह, मेल।

मेलना(पु)†—सक० मिलाना। डालना, रखना। पहनाना। अक० इकट्ठा होना।

मेला—पुं० भीड़ भाड। देवदर्शन, उत्सव, तमाशे आदि के लिये बहुत से लोगो का जमावड़ा।

मेलान—पु० ठहराव। पडाव, डेरा। प्रवृत्ति, झुकाव। अनुराग, चाह।

मेलाना†—सक० दे० 'मिलाना'।

मेली—पुं० मुलाकाती। वि० जल्दी हिलमिल जानेवाला।

मेल्हना†—अक० छटपटाना, बेचैन होना। आनाकानी करके समय बिताना।

मेव—पुं० राजपूताने की ओर बसनेवाली एक लुटेरी जाति, मेवाती।

मेवा—पु० [फा०] किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाए हुए बढिया फल।

मेवाटी—स्त्री० एक पकवान जिसके अदर मेवे भरे रहते हैं।

मेवाड—पुं० राजस्थान का एक प्रसिद्ध मध्यकालीन राज्य जो भारतीय स्वतत्रता के लिये अफगान और मुगल बादशाहो से बराबर युद्ध करता रहा। इसके शासक महाराणा कहलाते थे और राजधानी चित्तौर थी जो महाराणा प्रताप के बाद उदयपुर हो गई।

मेवात—पुं० [सं०] राजपूताने और सिंध के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

मेवाती—पुं० मेवात का रहनेवाला।

मेवासा(पु)†—पु० किला, गढ। रक्षा का स्थान। घर।

मेवासी—पुं० घर का मालिक। किले मे रहनेवाला। सुरक्षित और प्रबल।

मेष—पु० [सं०] भेड। १२ राशियो मे से एक। ⊙वृषण = पु० इंद्र। ⊙संक्रांति = स्त्री० मेष राशि पर सूर्य के आने का योग या काल (पर्व)।

मेस—पु० [अं०] बहुत से लोगो की मिली जुली भोजनशाला।

मेसू—पु० बेसन की एक प्रकार की बरफी।

मेहँदी—स्त्री० एक झाडी। इसकी पत्तियो को पीसकर शरीर पर लगाने से लाल रग आता है। इसी से स्त्रियाँ इसे हाथ पैर मे लगाती है।

मेह—पुं० मेघ, बादल। वर्षा, झडी। पु० [सं०] प्रस्राव, मूत्रप्रमेह रोग।

मेहतर—पु० [फा०] श्रेष्ठ व्यक्ति, बुजुर्ग, सरदार। भगी, हलालखोर।

मेहनत—स्त्री० [अ०] श्रम, प्रयास। मेहनताना—पु० [फा०] किसी काम का पारिश्रमिक या मजदूरी।

मेहनती—वि० मेहनत करनेवाला, परिश्रमी।

मेहमान—पु० [फा०] अतिथि। ⊙दारी = स्त्री० अतिथिसत्कार, आतिथ्य।

मेहमानी—स्त्री० आतिथ्य, पहुनाई। मेहमान बनकर रहने का भाव। मु० ~ करना = खूब गत बनाना, मारना पीटना, दड देना [व्यग्य]।

मेहर—वि० [फा०] कृपा, दया। स्त्री० [हिं०] दे० 'मेहरी'।

मेहरबान—वि० [फा०] कृपालु, दयालु।

मेहरबानी—स्त्री० दया, कृपा।

मेहरा—पु० स्त्रियो की सी चेष्टावाला, जनखा।

मेहराब—स्त्री० [अ०] द्वार के ऊपर का अर्ध मडलाकार बनाया हुआ भाग।

मेहरारू, मेहरी—स्त्री० स्त्री। पत्नी।

मैं—सर्व० सर्वनाम उत्तम पुरुष मे कर्ता का रूप, स्वय। (पु)अव्य० दे० 'में'।

मैंड—स्त्री० सीमा। सम्मान, गौरव। दे० 'मेड'।

मै—अव्य०, दे० 'मय'। स्त्री० [अ०] शराब, मद्य।

मैका—पु० दे० 'मायका'।

मैगल—पु० मस्त हाथी। वि० मस्त (हाथी के लिये)।

मैच—पु० [अं०] खेल की प्रतियोगिता।

मैटर—पु० [अं०] तत्व। साधन या सामग्री। अँ० लेख या उसका वह अंश जो छपने को दिया जाय।

मैड—स्त्री० दे० 'मेड' ।
मैत्रायणि—पु० [सं०] एक उपनिषद् ।
मैत्री—स्त्री० [सं०] मित्रता, दोस्ती ।
मैत्रेय—पु० [सं०] एक बुद्ध जो अभी होनेवाले है। भागवत के अनुसार एक ऋषि । सूर्य ।
मैथिल—वि० [सं०] मिथिला प्रदेश का, मिथिला सबधी । पु० मिथिला देश का निवासी । **मैथिली**–स्त्री० [सं०] जानकी, सीता । मिथिला की बोली ।
मैथुन—पु० [सं०] स्त्री के साथ पुरुष का समागम, सभोग ।
मैदा—पु० [फा०] बहुत महीन आटा ।
मैदान—पु० [फा०] लबा चौडा समतल स्थान जिसमे पहाडी या घाटी आदि न हो, सपाट भूमि । वह लबी चौडी भूमि जिसमे कोई खेल खेला जाय । युद्धक्षेत्र, रणक्षेत्र । मु०~करना=लडना, युद्ध करना । ~मारना=विजय प्राप्त करना । खेल, बाजी आदि मे जीतना । ~मे आना=मुकावले पर आना । ~साफ होना=मार्ग मे कोई बाधा आदि न होना ।
मैन—पु० कामदेव, मदन । मोम ।
मैनफल—पु० मझोले आकार का एक एक कँटीला वृक्ष। इस वृक्ष का फल जो अखरोट की तरह होता है और औषध के काम मे आता है।
मैनमथ(पु)—कामासक्त ।
मैनसिल—स्त्री० एक प्रकार की पीली धातु ।
मैना—स्त्री० काले रग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखाने से मनुष्य की सी बोली वोलने लगता है, सारिका । दे० 'मेनका' । पुं० एक जाति जो राजपूताने मे पाई जाती है और 'मीना' कहलाती है ।
मैनाक—पु० [सं०] एक पर्वत जो हिमालय का पुत्र माना जाता है। हिमालय की एक ऊँची चोटी ।
मैनावली—स्त्री० [सं०] १२ वर्णों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार तगण होते है।
मैमत(पु)†—वि० मदोन्मत्त । अभिमानी ।
मैया—स्त्री० माता, माँ ।
मैर†—स्त्री० साँप के विष की लहर ।
मैल—पुं० स्त्री० गर्द, धूल आदि जिसके पडने या जमने से किसी वस्तु की चमक दमक नष्ट हो जाती है, मल । दोष, विकार। ⊙खोरा=वि० [फा०] (रग आदि) जिस पर जमी हुई मैल जल्दी दिखाई न दे। मु०–हाथ पैर का मैल=तुच्छ वस्तु।
मैला—वि० जिस पर मैल जमी हो। विकारयुक्त। गदा, दुर्गधयुक्त। पु० गलीज, कूडा कर्कट । ⊙कुचैला=जो वहुत मैले कपडे पहने हुए हो। गदा ।
मैलान—पु० दे० 'मेलान' ।
मो(पु)†—अव्य० दे० 'मे'। सर्व० दे० 'मो' ।
मोगरा—पुं० दे० 'मोगरा' । दे० 'मुँगरा' ।
मोछ—स्त्री० दे० 'मूँछ' ।
मोढा—पुं० बाँस आदि का बना हुआ एक प्रकार का ऊँचा गोलाकार आसन। कधा ।
मो(पु)—सर्व० मेरा। अवधी और व्रजभाषा मे 'मै' का वह रूप जो उसे कर्ता कारक के अतिरिक्त और किसी कारक का चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है।
मोइ—सर्व० दे० 'मुझे' ।
मोकना(पु)†—सक० छोडना, परित्याग करना । फेकना ।
मोकल(पु)†—वि० छूटा हुआ, आजाद, स्वच्छद ।
मोकला†—वि० अधिक चौडा, कुशादा। छूटा हुआ, स्वच्छद ।
मोक्ष—पु० [सं०] वधन से छूट जाना, छुटकारा। शास्त्रो के अनुसार जीव का जन्म और मरण के बधन से छूट जाना, मुक्ति। मृत्यु। ⊙द=पु० मोक्ष देनेवाला ।
मोख(पु)†—पुं० दे० 'मोक्ष' ।
मोखा—पुं० वहुत छोटी खिडकी, झरोखा ।
मोगरा—पुं० एक प्रकार का बढिया बडा बेला (पुष्प) । दे० 'मोगरा' ।
मोगल—पु० दे० 'मुगल' ।

मोगा—पुं० एक प्रकार का रेशम। इस रेशम का बना हुआ कपडा।

मोघ—वि० [सं०] निष्फल, चूकनेवाला।

मोच—स्त्री० शरीर के किसी अंग के जोड़ की नस का अपने स्थान से इधर उधर खिसक जाना।

मोचन—पुं० [सं०] बंधन आदि से छुडाना। दूर करना, हटाना। रहित करना, ले लेना। मोचना—सक० छोड़ना, गिराना, बहाना। छुडाना। पुं० हज्जामो का वह औजार जिससे वे बाल उखाडते हैं।

मोचरस—पुं० [सं०] सेमल का गोंद।

मोची—पुं० वह जो जूते आदि बनाने का व्यवसाय करता हो। वि० [सं०] छुडाने वाला। दूर करनेवाला।

मोच्छ(पु)†—पुं० दे० 'मोक्ष'।

मोछ—स्त्री० दे० 'मूंछ'। (पु)†—पुं० दे० 'मोक्ष'।

मोजा—पुं० [फा०] पैरो मे पहनने का एक प्रकार का बुना हुआ कपडा, जुर्राब। पैर मे पिंडली के नीचे का भाग। कुश्ती का एक दांव।

मोट—स्त्री० गठरी, मोटरी। पुं० चमडे का बडा थैला जिससे खेत सींचने के लिये कुएँ से पानी निकालते हैं, चरसा। (पु)† —वि० दे० 'मोटा'। कम मोल का, साधारण।

मोटनक—पुं० [सं०] ११ वर्णों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तगण, दो जगण और अंत मे लघु गुरु हो।

मोटमरदी—स्त्री० अभिमान, अहकार।

मोटर—पुं० [अं०] एक प्रकार का यंत्र जो यंत्रो का संचालन करता है। स्त्री० वह प्रसिद्ध गाड़ी जो इस यंत्र से चलती है। ⊙कार = पुं० हवागाडी।

मोटरी—स्त्री० गठरी।

मोटा—वि० दुबला का उलटा, स्थूल शरीर वाला। पतला का उलटा, दलदार, गाढा। जिसका घेरा या मान आदि साधारण से अधिक हो। जिसके कण खूब महीन न हो गए हो, दरदरा। घटिया, खराब। भारी या कठिन। घमडी। जो देखने मे भला न जान पडे, भद्दा, बेडौल। बडा। मु०~असामी = अमीर। ~दिखाई देना = आँख की ज्योति मे कमी होना, कम दिखाई देना। ~भाग्य = सौभाग्य। मोटी बात = मामूली बात। मोटे हिसाब से = अंदाज से, अटकल से।

मोटाई—स्त्री० मोटा होने का भाव, स्थूलता। पाजीपन। मु० ~चढना = बदमाश या घमडी होना।

मोटाना—अक० मोटा होना। अभिमानी होना। धनवान् होना। सक० दूसरे को मोटा करना।

मोटापा—पुं० दे० 'मोटाई'।

मोटा मोटी—क्रि० वि० मोटे हिसाब से, अनुमानत.।

मोटिया—पुं० मोटा और खुरखुरा देशी कपडा, गाढा। बोझ ढोनेवाला।

मोट्टायित—पुं० [सं०] साहित्य मे एक हाव जिसमे नायिका अपने आतरिक प्रेम को कटु भाषण आदि द्वारा छिपाने की चेष्टा करने पर भी छिपा नही सकती।

मोठ—स्त्री० मूंग की तरह का एक मोटा अन्न, माट।

मोठस—वि० मौन, चुप।

मोड़—पुं० रास्ते आदि मे घूम जाने का स्थान। घुमाव या मुडने की क्रिया या भाव।

मोड़ना—सक० [अक० मुडना] फेरना, लौटाना। किसी फैली हुई सतह का कुछ अंश समेटकर एक तह के ऊपर दूसरी तह करना। धार कुठित करना। मु०~ मुंह मोड़ना = विमुख होना।

मोड़ी—स्त्री० महाराष्ट्र देश की लिपि।

मोतियदाम—पुं० चार जगण का एक वर्ण-वृत्त।

मोतिया—पुं० एक प्रकार का बेला। एक प्रकार का सलमा। वि० हलका गुलाबी या पीले और गुलाबी रंग के मेल का (रंग)। छोटे गोल दानो का।

मोतियाबिंद—पुं० आँख का एक रोग जिसमे उसके एक परदे मे गोल झिल्ली सी पड़ जाती है।

मोती—स्त्री० थाली जिसमे मोती पडे रहते हैं। पु० एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रो में सीपी मे से निकलता है। ⊙चूर = पु० छोटी बूँदियो का लड्डू। ⊙झरा = पु० एक ज्वर (अँ० टाइफाइड)। ⊙भात = पु० एक विशेष प्रकार का भात। ⊙सिरी = स्त्री० मोतियो की माला। मु०~गरजना = मोती चटकना या कडक जाना।~रोलना = बिना परिश्रम अथवा थोडे परिश्रम से बहुत अधिक धन कमाना या प्राप्त करना। मोतियो से मुँह भरना = बहुत अधिक धन सपत्ति देना।

मोतीबेल—स्त्री० मोतिया बेला (फूल)।

मोथा—पुं० नागरमोथा नामक घास या उसकी जड।

मोद—पु० [सं०] आनद, हर्ष। २२वर्णों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से पाँच भगण, मगण, सगण और अत्य गुरु हो। सुगध, महक।

मोदक—पु० [सं०] लड्डू, मिठाई। औषध आदि का बना हुआ लड्डू। गुड। चार भगण का एक वर्णवृत्त।

मोदकी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार की गदा।

मोदनाⓅ—अक० प्रसन्न होना। सुगध फैलना। सक० प्रसन्न करना।

मोदित—वि० दे० 'मुदित'।

मोदी—पु० आटा, दाल, चावल आदि बेचनेवाला बनिया, परचूनिया। ⊙खाना = पुं० [फा०] अन्नादि रखने का घर, भडारा।

मोधुकⓅ—पु० मछली पकडनेवाला, मछुआ।

मोघू†—वि० बेवकूफ, मूर्ख।

मोन—पुं० दे० 'मोना'।

मोना—पुं० झाबा, पिटारा। Ⓟ† सक० भिगोना।

मोम—पु० [फा०] वह चिकना नरम पदार्थ जिससे शहद की मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं। ⊙जामा = पु० वह कपडा जिसपर मोम का रोगन चढ़ाया गया हो, तिरपाल। ⊙बत्ती = स्त्री० [हिं०] मोम या ऐसे ही और पदार्थ की बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।

मोमतिⓅ—स्त्री० दे० 'ममत्व'।

मोमिन—पु० [अ०] धर्मनिष्ठ मुसलमान। जुलाहो की एक जाति।

मोमियाई—स्त्री० [फा०] नकली शिलाजीत।

मोमी—वि० [फा०] मोम का बना हुआ।

मोयन—पु० माँडे हुए आटे मे घी या चिकना देना जिसमे उनसे बनी हुई वस्तु खसखसी और मुलायम हो।

मोरंग—पु० नेपाल का पूर्वी भाग।

मोरⓅ—सर्व० दे० 'मेरा'। पु० एक अत्यत सुदर बडा पक्षी। नीलम की आभा। ⊙चदा = पु० दे० 'मोरचद्रिका'। ⊙चद्रिका = स्त्री० [सं०] मोरपख पर की चद्राकार बूटी। ⊙पंख = पु० मोर का पर। ⊙पखाⓅ† = पु० मोर का पर। मोरपख की कलगी। ⊙पंखी = स्त्री० वह नाव जिसका एक सिरा मोर की तरह बना और रँगा हुआ हो। पु० मोर के पर से मिलता-जुलता गहरा चमकीला नीला रग। वि० मोर के पख के रग का। ⊙मुकुट = पुं० मोर के पखो का बना हुआ मुकुट। ⊙ शिखा = स्त्री० एक प्रकार की जडी।

मोरचा—पु० [फा०] लोहे की सतह पर चढनेवाली वह लाल या पीले रग की बुकनी की सी तह जो वायु और नमी के योग से रासायनिक विकार होने पर उत्पन्न होती है, जग। दर्पण पर जमी मैल। पु० [हिं०] वह गड्ढा जो गढ के चारो ओर रक्षा के लिये खोदा जाता है। वह स्थान जहाँ से सेना, गढ या नगर आदि की रक्षा की जाती है। ⊙बदी = गढ के चारो ओर यथास्थान सेना की नियुक्ति। मु०~जीतना या मारना = शत्रु के मोरचे पर अधिकार कर लेना। ~बाँधना = दे० 'मोरचाबदी'। ~लेना = युद्ध करना।

मोरछड़Ⓟ—पु० दे० 'मोरछल'।

मोरछल—पुं० मोर के परों से बनाया हुआ चँवर जो देवताओं और राजाओं आदि के मस्तक के पास डुलाया जाता है।

मोरछली—पु० दे० 'मौलसिरी'। मोरछल हिलानेवाला।

मोरछांह—स्त्री० दे० 'मोरछल' ।
मोरजुटना=पु० एक प्रकार का आभूषण ।
मोरन—स्त्री० मोडने की क्रिया या भाव, मोडना । विलोया हुआ दही जिसमे मिठाई और सुगधित वस्तुएँ डाली गई हो, शिखरन ।
मोरना—सक० दे० मोडना' । दही को मथकर मक्खन निकालना ।
मोरनी—स्त्री० मोर पक्षी की मादा ।
मोरनो(पु)†—पु० दे० 'मोर' ।
मोरा(पु)†—वि० दे० 'मेरा' ।
मोराना(पु)†—सक० [मोरना का प्रे०] चारो ओर घुमाना, फिराना ।
मोरी—स्त्री० वह नाली जिसमे गदा और मैला पानी बहता हो, पनाली । (पु)† मोर की मादा ।
मोल—पु० कीमत, दाम । ⊙चाल=पु० अधिक मूल्य । किसी चीज का दाम घटा बढाकर तै करना ।
मोलना†—पु० मौलवी ।
मोलाना(पु)—सक० मोल पूछना या तै करना ।

मोवना(पु)†—सक०दे० 'मोना' ।
मोष—पु० दे० 'मोक्ष' ।
मोषण—पुं० [सं०] लूटना । चोरी करना । वध करना ।
मोह—पु० [सं०] अज्ञान, भ्राति । शरीर और सासारिक पदार्थों को अपना या सत्य समझने की बुद्धि । प्रेम, प्यार । साहित्य में ३३संचारी भावो मे से एक, भय, दुःख, चिता, प्रेम आदि से उत्पन्न चित्त की विकलता । दु.ख, कष्ट । मूर्छा, बेहोशी । ⊙क=वि० मोह उत्पन्न करनेवाला । लुभानेवाला, मनोहर । ⊙निशा=स्त्री० दे० 'मोहरात्रि' । ⊙रात्रि=स्त्री० वह प्रलय जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है । कृष्ण जन्माष्टमी ।
मोहना—अक० मोहित होना, रीझना । मूर्छित होना । सक० मोहित करना, लुभा लेना । भ्रम मे डालना ।
मोहठा—पुं० [सं०] दस अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन रगण और अत्य गुरु होता है ।
मोहडा—पु० किसी पात्र का मुँह या खुला भाग । किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग ।
मोहतमिम—पु० [अ०] प्रबधकर्ता, व्यवस्थापक ।
मोहताज—वि० दरिद्र, कगाल । विशेप कामना रखनेवाला ।
मोहन—पु० [सं०] जिसे देखकर जी लुभा जाय । श्री कृष्ण । एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से एक सगण और एक जगण होता है । एक प्रकार का तात्रिक प्रयोग जिसमे किसी को बेहोश करते है । एक अस्त्र जिससे शत्रु मूर्च्छित किया जाता था । कामदेव के पाँच बाणो मे से एक । वि० मोह उत्पन्न करनेवाला । ⊙भोग=पुं० एक प्रकार का हलुआ । एक प्रकार का आम । ⊙माला=स्त्री० सोने की गुरियो या दानो की बनी हुई माला ।
मोहनास्त्र—पु० [सं०] एक अस्त्र जिससे शत्रु मूर्च्छित किया जाता था ।
मोहनी—वि० स्त्री० [सं०] मोहित करनेवाली, अत्यत सुदरी । स्त्री० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से सगण, तगण यगण, भगण और सगण होते हैं । इसे मोहिनी छन्द या मोहिनी भी कहते हैं । इसका एक मात्रिक भेद भी है जिसके विषम पदो मे १२ और सम मे सात मात्राएँ होती हैं । अत मे सगण रहता है । भगवान् का वह स्त्री रूप जो उन्होंने समुद्रमंथन के उपरात अमृत बाँटते समय धारण किया था । वशीकरण का मत्र । माया । मु० ~डालना या लाना=माया के वश करना, जादू करना । ~लगना=मोहित होना ।
मोहर—स्त्री० [फा०] अक्षर, चिह्न आदि दबाकर अकित करने का ठप्पा । उपर्युक्त वस्तु की छाप जो कागज या कपडे आदि पर ली गई हो । अशरफी ।

मोहरा—पु० [फा०] शतरंज की कोई गोटी। मिट्टी का साँचा जिसमे चीजें ढालते हैं। रेशमी वस्त्र घोटने का घोटना। यशब या अकीक पत्थर की वह छोटी गुल्ली जिससे रगड कर चित्र पर का सोना या चाँदी चमकाते है। सिंगिया विष। जहरमोहरा। पु० [हिं०] किसी बरतन का मुँह या खुला भाग। किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला भाग। सेना की अगली पंक्ति। फौज की चढाई का रुख। छेद या द्वार जिससे कोई वस्तु बाहर निकले। चोली आदि की तनी। मु०~लेना = सेना का मुकबला करना। भिड जाना, प्रतिद्वंद्विता कराना।

मोहरी—स्त्री० बरतन आदि का छोटा मुँह। पाजामे का वह भाग जिसमे टाँगें रहती हैं। दे० 'मोरी'।

मोहर्रिर—पु० [अ०] लेखक, मुशी।

मोहलत—स्त्री० [अ०] फुरसत, अवकाश। अवधि।

मोहार+—पु० दरवाजा, मुँहडा।

मोहिं—सर्व० मुझको, मुझे। मेरे लिये।

मोहित—वि० [सं०] मोह या भ्रम मे पडा हुआ। मोहा हुआ, आसक्त।

मोहिनी—वि० स्त्री० [सं०] मोहनेवाली। स्त्री० विष्णु के एक अवतार का नाम। जादू। टोना। दे० 'मोहनी'।

मोही—वि० [सं०] मोहित करनेवाला। वि० [हिं०] मोह करनेवाला, प्रेम करनेवाला। लोभी, अज्ञानी।

मोहोपमा—स्त्री० [सं०] एक अलकार जो केशवदास के अनुसार उपमा का एक भेद है, पर और आचार्य जिसे भ्रांति अलकार कहते हैं।

मौं(पु)—अव्य० मे।

मौंगा(पु)—पु० मौन, चुप।

मौंगी—स्त्री० चुप्पी, मौन।

मौंजिबंधन—पु० [सं०] यज्ञोपवीत संस्कार।

मौंड़ा(पु)†—पु० लडका, बालक।

मौका—पु० [अ०] घटनास्थल। स्थान, जगह। अवसर, समय।

मौकूफ—वि० [अ०] रोका हुआ, बंद किया हुआ। नौकरी से अलग किया गया। रद किया गया। अवलंबित, निर्भर।

मौक्तिक—पु० [सं०] मुक्ता, मोती। वि० मोतियो का, मुक्ता संबंधी। ⊙**दाम** = पु० दे० 'मोतियदाम'। ⊙**माल** = स्त्री० ११ अक्षरो का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से भगण, तगण, नगण, और दो अंत्य गुरु होते हैं।

मौख—पु० एक प्रकार का मसाला।

मौखरी—पु० [सं०] भारत का एक प्राचीन राजवंश।

मौखर्य—पु० [सं०] मुखर होने का भाव, मुखरता।

मौखिक—वि० [सं०] मुख का। जबानी।

मौज—स्त्री० [अ०] लहर, तरंग। मन की उमंग, जोश। धुन। आनंद, मजा। विभव, विभूति।

मौजा—पु० [अ०] गाँव, ग्राम।

मौजी—वि० जो जी में आए वही करनेवाला। सदा प्रसन्न रहनेवाला, आनंदी।

मौजूँ—वि० [अ०] उपयुक्त, ठीक, उचित।

मौजूद—वि० [अ०] उपस्थित, हाजिर। प्रस्तुत, तैयार। ⊙**गी** = स्त्री० [फा०] उपस्थित। **मौजूदा**—वि० वर्तमान काल का।

मौड़ा—(पु)†—पु० दे० 'मौंडा'।

मौत—स्त्री० [अ०] मरण, मृत्यु। मरने का समय, काल। आपत्ति। मु०~**का सिर पर खेलना** = मरने को होना। आपत्ति-काल समीप होना।

मौताद—स्त्री० [अ०] मात्रा।

मौन—वि० जो न बोले, चुप। (पु)‡पु० बरतन, पात्र। डब्बा। पु० [सं०] न बोलना, चुप्पी। मुनियो का व्रत, मुनिव्रत। ⊙**व्रत** = पु० मौन धारण करने का व्रत। मु०~**खोलना** = चुप रहने के उपरांत बोलना। ~**ग्रहण या धारण करना** = चुप रहना। ~**लेना या साधना** = चुप होना, न बोलना।

मौना†—पु० दे० 'मोना'।

मौनी—त्रि॰ [सं॰] मौन धारण करनेवाला। मुनि।

मौर—पु॰ विवाह के समय का एक शिरोभूषण जो ताडपत्र या खुखडी आदि का बनाया जाता है। शिरोमणि, प्रधान। मजरी, बौर। गरदन।

मौरना—सक॰ वृक्षों पर मजरी लगना।

मौरसिरीⓅ—स्त्री॰ दे॰ 'मौलसिरी'।

मौरूसी—वि॰ [अ॰] बाप दादा के समय से चला आया हुआ, पैतृक।

मौर्ख्य—पुं॰ [सं॰] मूर्खता।

मौर्य—पु॰ [स॰] क्षत्रियों के एक वश का नाम। सम्राट् चद्रगुप्त और अशोक इसी वंश मे हुए थे।

मौर्वी—स्त्री॰ [सं॰] धनुष की डोरी।

मौलवी—पु॰ [अ॰] मुसलमान धर्म का आचार्य जो अरबी, फारसी, आदि का पडित होता है।

मौलसिरी—स्त्री॰ एक बडा सदावहार पेड जिसमे छोटे छोटे सुगधित फूल लगते हैं, वकुल।

मौलि—पु॰ [स॰] चोटी, जूडा। मस्तक, सिर। किरीट। जटाजूट। प्रधान, सरदार।

मौलिक—वि॰ [सं॰] मूल से सबध रखनेवाला। असली। (ग्रथ या विचार आदि) जो किसी का अनुवाद, नकल या अन्य किसी प्रकार से किसी दूसरी रचना के आधार पर न हो बल्कि अपनी उद्भावना से निकला हो। ⊙ता = स्त्री॰ मौलिक होने का भाव। अपनी उद्भावना से कुछ कहने या लिखने की शक्ति।

मौली—वि॰ [स॰] मौलि धारण करनेवाला।

मौलूद—पु॰ [अ॰] मुहम्मद साहब के जन्म का उत्सव (मुसल॰)।

मौसरⓅ†—वि॰ दे॰ 'मयस्सर'।

मौसा—पु॰ माता की बहिन का पति।

मौसिम—पु॰ [अ॰] उपयुक्त समय। ऋतु।

मौसिया—वि॰ दे॰ 'मौसेरा'।

मौसी—स्त्री॰ माता की बहिन, मासी।

मौसेरा—वि॰ मौसी से सबद्ध, मौसी के सबध का।

म्यंतⓅ—पु॰ मित्र, दोस्त।

म्यावँ—स्त्री॰ बिल्ली की बोली।

म्यान—पुं॰ तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना। अन्नमय कोश, शरीर।

म्यानाⓅ—पु॰ दे॰ 'मियाना'। सक॰ म्यान मे रखना।

म्युनिसपैल्टी—पु॰ दे॰ 'नगरपालिका' (अँ॰ म्युनिसिपैलिटी)।

म्यूजियम—पुं॰ [अँ॰] स्थान या घर जिसमे पुरातत्व, पुराने जीव जतु और प्राचीन कलाओ आदि से सबद्ध वस्तुएँ अवलोकनार्थ सुरक्षित रखी जाती है, सग्रहालय।

म्यो—स्त्री॰ बिल्ली की बोली।

म्योडी—स्त्री॰ एक सदाबहार झाड जिसमे पीले छोटे फूलो की मजरियाँ लगती हैं।

म्रजादⓅ—स्त्री दे॰ 'मर्यादा'।

म्रियमाण—वि॰ [स॰] मरने के तुल्य। जो मर रहा हो।

म्लान—वि॰ [सं॰] कुम्हलाया हुआ। दुर्बल। मैला।

म्लानि—स्त्री॰ [सं॰] म्लानता, मलिनता। दुर्बलता। उदासी। गदगी।

म्लेच्छ—पु॰ [सं॰] मनुष्यो की वे जातियाँ जिनमे धर्म न हो। वि॰ नीच। पापी।

म्हाⓅ†—सर्व दे॰ 'मुझ'।

म्हाराⓅ†—सर्व दे॰ 'हमारा'।

य

य—हिंदी वर्णमाला का २६वाँ अक्षर, इसका उच्चारण स्थान तालू है।

यंत्र—पु॰ [सं॰] तांत्रिकों के अनुसार कुछ विशेष प्रकार से बने हुए कोष्ठक आदि

जतर। औजार। किसी खास काम के लिये बनाई हुई कल या औजार। बदूक। बाजा। ताला। ⊙मंत्र = पु० जादू टोना। ⊙विद्या = स्त्री० कलो के चलाने और बनाने की विद्या। ⊙शाला = स्त्री० वेधशाला। वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के यत्र हो। ⊙सज्ज = वि० मशीनगनो और टैको आदि से युक्त और सजी (सेना)।

यंत्रालय—पु० वह स्थान जहाँ कलें हो। छापाखाना। यंत्रिका—स्त्री० ताला। यंत्रित—वि० यत्र आदि की सहायता से रोका या बद किया हुआ। ताले मे बद। यंत्री—पु० यत्र मंत्र करनेवाला। यत्र या मशीन की सहायता से काम करनेवाला।

यंद—पु० राजा, स्वामी।

य—पु० [सं०] यश। योग। सवारी। सयम। छद शास्त्रो मे यगण का सक्षिप्त रूप।

यकबयक, यकबारगी—क्रि० वि० [फा०] अचानक, सहसा।

यकसाँ—वि० [फा०] एक समान, बराबर।

यकायक—क्रि वि० दे० 'यकबयक'।

यकीन—पु० [अ०] विश्वास, एतबार।

यकृत—पु० [सं०] पेट मे दाहिनी ओर की एक थैली जिसकी क्रिया से पित्त नामक रस बनता है, जिससे भोजन पचता है। जिगर का वह रोग जिसमे यह अग दूषित होकर बढ़ जाता है, बर्म जिगर।

यक्ष—पुं० [सं०] देवयोनि मे गिनाए हुए एक प्रकार के प्राणी जो कुबेर के सेवक और उनकी निधियो के रक्षक माने जाते हैं। ⊙कर्दम = पुं० एक प्रकार का अगलेप। ⊙पति = कुबेर। ⊙पुर = पुं० अलकापुरी।

यक्षिणी—स्त्री० [सं०] यक्ष की कन्या या स्त्री। यक्ष की पत्नी।

यक्षी—दे० 'यक्षिणी'। पुं० जो वह यक्ष-साधना करता हो।

यक्षेश्वर—पुं० [सं०] कुबेर।

यक्ष्मा—पुं० [सं०] क्षयी रोग, तपेदिक।

यखनी—स्त्री० [फा०] उबले हुए मांस का रसा, शोरबा।

यगण—पुं० [सं०] छंद शास्त्र में वर्णिक छदो का एक गण जिसमे एक लघु और दो गुरु मात्राओ के तीन वर्ण होते हैं। (ISS) सक्षिप्त रूप 'य'।

यच्छ(पु)‡—पुं० दे० 'यक्ष'।

यच्छना†—सक० देना। 'लच्छिन्नो करत जस यच्छिवो करत जन' (प्रबोध० २५)।

यजन—पुं० [सं०] यज्ञ करना।

यजना(पु)—सक० पूजा करना। यज्ञ करना।

यजमान—पु० [सं०] वह जो यज्ञ करता हो, यष्टा। वह जो ब्राह्मणो को दान देता हो।

यजमानी—स्त्री० यजमान का भाव या धर्म। यजमान के प्रति पुरोहित की वृत्ति।

यजु—पु० दे० 'यजुर्वेद'।

यजुर्वेद—पुं० [सं०] चार वेदो मे से एक वेद जिसमे विशेषत यज्ञ कर्मो का विस्तृत विवरण है। यजुर्वेदी—पु० यजुर्वेद का ज्ञाता या यजुर्वेद के अनुसार कृत्य करनेवाला।

यज्ञ—पु० [सं०] प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य जिसमे प्राय: हवन और पूजन होता था, याग। ⊙कुंड = पु० हवन करने की वेदी या कुड। ⊙पति = पु० विष्णु। वह जो यज्ञ करता हो। ⊙पत्नी = स्त्री० यज्ञ की स्त्री, दक्षिणा। ⊙पशु = पुं० वह पशु जिसका यज्ञ मे बलिदान किया जाय। ⊙पात्र = पुं० यज्ञ मे काम आने वाले काठ के बने हुए बरतन। ⊙पुरुष = पु० विष्णु। ⊙भूमि = स्त्री० वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो, यज्ञक्षेत्र। ⊙मंडप = पुं० यज्ञ करने के लिये बनाया हुआ मंडप। ⊙शाला = स्त्री० यज्ञमंडप। ⊙सूत्र = पु० यज्ञोपवीत। यज्ञेश्वर—पुं० विष्णु। यज्ञोपवीत—पुं० जनेऊ। हिंदुओ मे द्विजो का एक संस्कार, उपनयन।

यतनी—वि० इतना।

यति—पुं० [सं०] संन्यासी, त्यागी। ब्रह्मचारी। छप्पय के ६६वें भेद का नाम। ⊙धर्म = पुं० संन्यास। यति = स्त्री० छंदों के चरणों मे वह स्थान जहाँ पढ़ते

समय लय ठीक रखने के लिए थोड़ा विश्राम हो। ⊙भंग=पुं० काव्य का वह दोष जिसमे यति अपने उचित स्थान पर न पडकर कुछ आगे या पीछे पडती है। ⊙भ्रष्ट=वि० (काव्य) जिसमे यतिभग दोष हो।

यती—स्त्री०, पु० दे० 'यति'।

यतीम पु० [अ०] जिसके माता पिता न हो, अनाथ। ⊙खाना=पुं० [फा०] अनाथालय।।

यत्किचित्—क्रि० वि० [सं०] थोड़ा, कुछ।

यत्न—पु० [स०] न्याय मे रूप आदि २४ गुणो के अतर्गत एक गुण। उद्योग, कोशिश, उपाय। हिफाजत। ⊙वान्=वि० यत्न करनेवाला।

यत्र—क्रि० वि० [सं०] जिस जगह, जहाँ। ⊙तत्र=क्रि० वि० जहाँ तहाँ, इधर उधर। जगह जगह।

यथा—अव्य० [सं०] जिस प्रकार, जैसे। ⊙क्रम=क्रि० वि० तरतीबवार, क्रमशः। ⊙तथ्य=अव्य० ज्यो का त्यो, जैसा हो वैसा ही। ⊙पूर्व=अव्य० जैसा पहले था, वैसा ही। ज्यों का त्यों। ⊙मति=अव्य० बुद्धि के अनुसार। ⊙यथ=क्रि० वि० जैसा चाहिए, वैसा। वि० पूर्ववर्तियो का अनुयायी। ⊙योग्य=अव्य० जैसा चाहिए वैसा, उपयुक्त। ⊙लाभ=वि० जो कुछ प्राप्त हो, उसी पर निर्भर। ⊙वत्=अव्य० ज्यों का त्यो, जैसा था वैसा ही। जैसा चाहिए, वैसा। अच्छी तरह। ⊙विधि=अव्य० विधि के अनुसार ठीक। ⊙शक्ति=अव्य० सामर्थ्य के अनुसार भरसक। ⊙शक्य=अव्य० दे० 'यथाशक्ति'। ⊙संभव=अव्य० जहाँ तक हो सके। ⊙साध्य=अव्य० दे० 'यथाशक्ति'।

यथानुक्रम—क्रि० वि० दे० 'यथाक्रम'।

यथारथ(पु)—अव्य० दे० 'यथार्थ'। **यथार्थ**—अव्य० ठीक, उचित। जैसा होना चाहिए, वैसा। **यथार्थतः**=अव्य० यथार्थ में, सचमुच। **यथार्थवादी**—पुं० यथार्थ या सत्य कहनेवाला। **यथेच्छ**—अव्य० इच्छा के अनुसार, मनमाना। **यथेच्छाचार**—पु० जो जी मे आवे, वही करना, स्वेच्छाचार। **यथेष्ट**—वि० जितना इष्ट हो, जितना चाहिए, उतना, काफी,। **यथोक्त** अव्य० जैसा कहा गया हो। **यथोचित**—वि० मुनासिब, ठीक।

यथेच्छित—वि० दे० 'यथेच्छ'।

यदपि(पु)—अव्य० दे० 'यद्यपि'।

यदा—अव्य० [सं०] जिस समय, जब। जहाँ। ⊙कदा=अव्य० कभी कभी।

यदि—अव्य० [सं०] अगर, जो। ⊙चेत्=अव्य० यद्यपि, अगरचे।

यदु—पु० [सं०] देवयानी के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा के बडे पुत्र जिनके वश में श्रीकृष्ण जी का जन्म हुआ था। ⊙नंदन=पु० श्रीकृष्णचद्र। ⊙पति=पु० श्रीकृष्ण। ⊙राई=पु० [हिं०] दे० 'यदुराज'। ⊙राज=पु० श्रीकृष्ण। ⊙वंशमणि=पु० श्रीकृष्णचद्र।

यद्यपि—अव्य० [सं०] अगरचे, हरचद।

यदृच्छया—क्रि० वि० [सं०] अकस्मात्। दैवसयोग से। मनमाने तौर पर।

यदृच्छा—स्त्री० [सं०] स्वेच्छाचार। आकस्मिक सयोग।

यद्वातद्वा—क्रि० वि० [सं०] कभी कभी।

यम—पु० [सं०] दे० 'यमज'। भारतीय आर्यो के एक प्रसिद्ध देवता जो मृत्यु के देवता माने जाते हैं। मन, इद्रिय आदि को वश या रोक मे रखना, निग्रह। चित्त को धर्म मे स्थित रखनेवाले कर्मों का साधन। दो की संख्या। ⊙कातर=पु० [हिं०] यम का छुरा या खाँडा। एक प्रकार की तलवार। ⊙घंट=पुं० एक दुष्ट योग जो कुछ विशेष दिनो में कुछ विशेष नक्षत्र पड़ने पर होता है। दीपावली का दूसरा दिन। ⊙ज=पुं० एकही गर्भ से एक साथ जन्म लेनेवाले दो बच्चो का जोड़ा, जुड़वाँ। अश्विनीकुमार। ⊙द्वितीया=स्त्री० कार्तिक शुक्ला द्वितीया, भाईदूज। ⊙धार=पुं० वह तलवार जिसमें दोनों ओर धार हो।

⊙नाह(पु) = पु० [हिं०] धर्मराज। ⊙पुर = पु० दे० 'यमलोक'। ⊙पुरी = स्त्री० यमलोक। ⊙यातना = स्त्री० नरक की पीडा। मृत्यु के समय की पीडा। ⊙राज = पुं० यमो के राजा धर्मराज, जो मरने पर प्राणी के कर्मों के अनुसार उसे दड या उत्तम फल देते है। ⊙लोक = पु० वह लोक जहाँ मरने पर मनुष्य जाते हैं, यमपुरी।

यमक—पु० [स०] एक प्रकार का शब्दालकार या अनुप्रास जिसमे एक ही शब्द कई बार आता है, पर हर बार उसके अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण और अत मे दो लघु हो, यम।

यमदग्नि—पु० दे० 'जमदग्नि'।

यमन (पु)—पु० दे० 'यवन'।

यमनिका—स्त्री० दे० 'यवनिका'।

यमल—पुं० [सं०] युग्म, जोडा। यमज।

यमानुजा—स्त्री० [सं०] यमुना।

यमालय—पु० [सं०] यमपुर।

यमुना—स्त्री० [सं०] उत्तर भारत की एक नदी। यम की बहन। दुर्गा। एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से नगण, जगण जगण और रगण हो, मालती।

यव—पुं० [सं०] जौ नामक अन्न। १२ सरसो या एक जौ की तौल। एक नाप जो एक इच की तिहाई होती है। सामुद्रिक के अनुसार जौ के आकार की एक प्रकार की रेखा जो उँगली मे होती है (शुभ)। ⊙द्वीप = पुं० जावा द्वीप। ⊙मती = स्त्री० एक वर्णवृत्त जिसके सम चरणों मे क्रम से जगण, रगण, जगण, रगण और अंत्य गुरु तथा विषम मे रगण, जगण, रगण और जगण हो।

यवन—पु० [सं०] यूनान देश का निवासी। मुसलमान। कालयवन नामक राजा।

यवनानी—वि० [सं०] यवन देश सबधी।

यवनाल—स्त्री० [सं०] जुआर।

यवनिका—स्त्री० [सं०] नाटक का परदा।

यश—पुं० नेकनामी, कीर्ति। बडाई, प्रशंसा। मु०~गाना = प्रशसा करना। एहसान मानना।~मानना = कृतज्ञ होना।

यशब, यशम—पुं० [अ०] एक प्रकार का हरा पत्थर जिसकी नादली बनती है। यह चीन, लका आदि मे पाया जाता है। कलेजे, मेदे और दिमाग के रोगो मे यह लाभप्रद माना जाता है।

यशस्वी—वि० [सं०] जिसका खूब यश हो।

यशी—वि० यशस्वी।

यशील(पु)‡—वि० दे० 'यशस्वी'।

यशोदा—स्त्री० [सं०] नद की स्त्री जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक जगण और दो गुरु होते हैं।

यष्टि—स्त्री० [सं०] लाठी, छडी। टहनी, शाखा। मुलेठी।

यष्टिका—स्त्री० [सं०] छडी, लकडी।

यह—सर्व० एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग वक्ता और श्रोता को छोडकर निकट के और सब मनुष्यो तथा पदार्थों के लिये होता है।

यहाँ—क्रि० वि० इस स्थान में, इस जगह पर।

यहि(पु)—सर्व० वि० 'यह' का वह रूप जो पुरानी हिंदी मे उसे कोई विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है। 'ए' का विभक्ति युक्त रूप, इसको।

यही—अव्य० निश्चित रूप से यह, यह ही।

यहूद—पुं० वह देश जहाँ हजरत ईसा पैदा हुए थे। यहूदी = पुं० यहूद देश का निवासी।

यां†—क्रि० वि० दे० 'यहाँ'।

यांचा—स्त्री० [सं०] माँगने की क्रिया, प्रार्थनापूर्वक किसी वस्तु को माँगना।

यांत्रिक—वि० [सं०] यत्र सबधी।

या—अव्य० [फा०] अथवा, वा। सर्व० वि० [हिं०] 'यह' का वह रूप जो उसे व्रजभाषा मे कारक का चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है।

याक†—वि० दे० 'एक'। पु० दक्षिण अमरीका का पहाडो पर का बैल के समान पशु।

याकूत—पुं० [अ०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर, लाल।

याग—पु० [सं०] यज्ञ।

याचक—पु० [सं०] माँगनेवाला। भिक्षुक, भिखमगा। **याचना**—स्त्री० माँगने की क्रिया। सक० पाने के लिये विनती करना, माँगना। **याचित**—वि० माँगा हुआ।

याजक—पुं० [सं०] यज्ञ करनेवाला। **याजन**—पुं० [सं०] यज्ञ की क्रिया।

याजी—वि० [सं०] दे० 'याजक'।

याज्ञिक—पु० [सं०] यज्ञ करने या करानेवाला।

यातना—स्त्री० [सं०] तकलीफ, पीडा। वह पीडा जो यमलोक मे भोगनी पड़ती है।

याता—स्त्री० [सं०] पति के भाई की स्त्री, जेठानी या देवरानी।

यातायात—पुं० [सं०] आना जाना, आमदरफ्त।

यातुधान—पु० [सं०] राक्षस।

यात्रा—स्त्री० [सं०] एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया, सफर। प्रस्थान। दर्शनार्थ देवस्थानो को जाना, तीर्थाटन। ⊙**वाल**=पु० [हिं०] वह पडा जो यात्रियो को देवदर्शन कराता हो। **यात्री**—पुं० यात्रा करनेवाला, मुसाफिर। तीर्थाटन के लिये जानेवाला।

यथातथ्य—पुं० [सं०] यथातथ्य होने का भाव, ज्यो का त्यो होना।

याद—स्त्री [फा०] स्मरणशक्ति, स्मृति। स्मरण करने की क्रिया। ⊙**गार**, ⊙**गारी**=स्त्री० स्मृतिचिह्न। ⊙**दाश्त**=स्त्री० स्मरण शक्ति, स्मृति। स्मरण रखने के लिये लिखी हुई बात।

यादव—पु० [सं०] यदु के वशज। श्रीकृष्ण।

यादि—अव्य० ['इत्यादि' का संक्षेप] इत्यादि। 'थाई जाको सोक वहै करुनरस यादि' (जगद्विनोद ६७५)।

यादृश—वि० [सं०] जिस तरह का, जैसा।

यान—पुं० [सं०] गाडी रथ आदि सवारी, वाहन। विमान, आकाशयान। शत्रु पर चढाई करना।

यानी, याने—अव्य० [अ०] अर्थात्।

यापन—पुं० [सं०] चलाना, वर्तन। व्यतीत करना। निबटाना। **यापना**—स्त्री० [सं०] दे० 'यापन'।

याबू—पुं० [फा०] छोटा घोडा, टट्टू।

याम—पु० [सं०] तीन घटे का समय, पहर। एक प्रकार के देवगण। समय। स्त्री० [हिं०] रात।

यामल—पु० [सं०] यमज सतान, जोडा। एक प्रकार का तत्र ग्रथ।

यामिनी—स्त्री० [सं०] रात, रात्रि।

याम्य—वि० [सं०] यम सबधी, यम का। दक्षिण का। **याम्योत्तर दिगंश**—पु० लंबांश, दिगंश (भूगोल, खगोल)। **याम्योत्तर रेखा**—स्त्री० वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारो ओर मानी गई है।

यायावर—पु० [सं०] वह जो एक जगह टिककर न रहता हो। सन्यासी। ब्राह्मण। अश्वमेध का घोडा।

यार—पुं० [फा०] मित्र, दोस्त। उपपति, जार। ⊙**बास**=वि० यार दोस्तो मे प्रसन्नता से समय बितानेवाला। **याराना**—पुं० मित्रता, मैत्री। वि० मित्र का सा, मित्रता का। **यारी**—स्त्री० मित्रता। स्त्री० और पुरुष का अनुचित प्रेम या सबध।

यावज्जीवन—क्रि० वि० [सं०] जब तक जीवन रहे, जीवन भर।

यावत्—अव्य० [सं०] जब तक, जिस समय तक। सब, कुल।

यावनी—वि० [सं०] यवन सबधी।

यासु(पु)—सर्व स० 'जासु'।

याहि(पु)†—सर्व० इसका, इसे।

युंजान—पुं० [सं०] वह योगी जो अभ्यास कर रहा हो पर मुक्त न हुआ हो।

युक्त—वि० [सं०] जुडा हुआ, मिला हुआ। समिलित। नियुक्त। सयुक्त, साथ। उचित, ठीक।

युक्ता—स्त्री० [सं०] दो नगण और एक मगण का एक वृत्त।

युक्ति—स्त्री० [सं०] उपाय, ढग। कौशल, चाल, रीति। नीति। तर्क, ऊहा। ठीक तर्क। योग, मिलन। एक अलकार जिसमे अपने मर्म को छिपाने के लिये दूसरे की किसी क्रिया या युक्ति द्वारा वचित करने का वर्णन होता है। केशव के अनुसार स्वभाववोक्ति। ⊙युक्त = वि० युक्ति-सगत, ठीक।

युगधर—पु० [सं०] कूवर, हरस। गाडी का बम। एक पर्वत।

युग—पु० [सं०] जोडा, युग्म। जुआ। पासे के खेल की गोल गोटियाँ। पासे के खेल की वे दो गोटियाँ जो एक घर मे साथ आ बैठती हैं। १२ वर्ष का काल। समय, काल। पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण (सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग)। ⊙धर्म = धर्म के अनुसार चाल या व्यवहार। ⊙पत् = अव्यय० साथ साथ। ⊙पुरुष = पु० अपने समय का बहुत बडा आदमी। मु० ⊙युग = बहुत दिनो तक। ⊙ल = पु० युग्म, जोडा। युगात—पु० [सं०] युग का अत। प्रलय। किसी चलती हुई परपरा का विच्छिन्न हो जाना।

युगति(पु)†—स्त्री० दे० 'युक्ति'।

युगम(पु)—पु० दे० 'युग्म'।

युगातर—पु० दूसरा युग और जमाना। मु०~उपस्थित करना = किसी पुरानी प्रथा को हटाकर उसके स्थान पर नई प्रथा चलाना। युगाधा—स्त्री० वह तिथि जिससे किसी युग का आरभ हुआ हो। युग्म, युग्मकर—पु० जोडा, युग। द्वद्व। मिथुन राशि। युग्मज—पु० दे० 'यमज'।

युत—वि० [सं०] युक्त, सहित। मिला हुआ। युति—स्त्री० योग, मिलाप।

युद्ध—पु० [सं०] लडाई, सग्राम। ⊙पोत = पु० लडाई का जहाज। युद्ध्यमान् —वि० युद्ध करनेवाला।

युयुत्सा—स्त्री० [सं०] युद्ध करने की इच्छा। शत्रुता, विरोध। युयुत्सु—वि० [सं०] लडने की इच्छा रखनेवाला।

युयधान—पु० [सं०] इंद्र। क्षत्रिय। योद्धा।

युरोप—[अं०] पूर्वी गोलार्द्ध का एक महाद्वीप जो एशिया के पश्चिम मे है। युरोपियन—वि० यूरोप का। युरोप का रहनेवाला।

युरोपीय—वि० युरोप का। युरोप का रहनेवाला।

युवक—पु० [सं०] १६ वर्ष से ३५ वर्ष तक की अवस्था का मनुष्य, जवान।

युवति, युवती—स्त्री० [सं०] जवान स्त्री।

युवराई(पु)—स्त्री० युवराज का पद।

युवराज—पु० [सं०] राजा का सबसे बडा लडका जिसे आगे चलकर राज्य मिलने वाला हो।

युवराजी—स्त्री० युवराज का पद; यौवराज्य।

युवरानी—स्त्री० युवराज की पत्नी।

युवा वि० [सं०] जवान, युवक।

यूँ†—अव्य० इस प्रकार।

यूत—पु० मिलावट, मेल।

यूथ—पु० [सं०] समूह, झुड। दल। सेना।

यूथप, यूथपति—पु० [सं०] सेनापति।

यथिका—स्त्री० [सं०] जूही का फूल और उसका पौधा।

यूनान—पु० युरोप का एक देश जो प्राचीन काल मे अपनी सभ्यता, साहित्य आदि के लिये प्रसिद्ध था।

यूनानी—वि० यूनान देश संबंधी, यूनान का। स्त्री० यूनान की भाषा। यूनान देश का निवासी। यूनानी देश की चिकित्सा प्रणाली, हकीमी।

यूप—पु० [सं०] यज्ञ मे वह खभा जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है।

यूपा†—पु० जुआ, द्यूतकर्म।

यूह(पु)†पु० समूह, झुड।

ये—सर्व० यह सब।

येई(पु)†—सर्व० यह।

येऊ†—सर्व० यह भी।

येतो†—वि० दे० 'एतो'।

येन केन प्रकारेण—क्रि० वि० [सं०] जैसे तैसे, किसी तरह से।

येहू(पु)†—अव्य० यह भी।

यो—अव्य० इस भाँति, ऐसे। ⊙ही=अव्य० इसी प्रकार से, ऐसे ही। बिना काम, व्यर्थ ही। बिना विशेष प्रयोजन या उद्देश्य के। मु० ⊙वो करना=आनाकानी करना।

यो†—सर्व० वह। 'यो तो पद्‌माकर न न मानत है · ·, (गगा० १५)।

योग—पुं० [सं०] सयोग, मेल। ध्यान। प्रेम। संगति। उपाय। छल, धोखा। प्रयोग। औषध। धन, दौलत। लाभ। कोई शुभ काल। नियम, कायदा। साम, दाम, दंड और भेद ये चारो उपाय। सबध। धन और सपत्ति। प्राप्त करना तथा बढाना। तप और ध्यान, वैराग्य। गणित मे दो या अधिक राशियो या जोड़। २० मात्राओ का एक छंद जिसके अत मे यगण हो। सुभीता, जुगाड। फलित ज्योतिष मे कुछ विशिष्ट काल या अवसर। मुक्ति या मोक्ष का उपाय। दर्शनकार पतंजलि के अनुसार चित्त की वृत्तियो को चचल होने से रोकना। छह दर्शनो मे से एक जिसमे चित्त को एकाग्र करके ईश्वर मे लीन होने का विधान है। ⊙क्षेम=पु० नया पदार्थ प्राप्त करना और मिले हुए पदार्थ की रक्षा करना। जीवन निर्वाह। कुशल मगल। राष्ट्र की सुव्यवस्था। ⊙तत्व=पु० एक उपनिषद। ⊙दर्शन=पतजलि प्रणीत योगसूत्र। ⊙दान=पु० किसी काम मे साथ देना। ⊙निद्रा=स्त्री० युग के अंत मे होनेवाली विष्णु की निद्रा, जो दुर्गा मानी जाती है। ⊙फल=पु० दो या अधिक संख्याओ को जोड़ने से प्राप्त सख्या। ⊙बल=पु० वह शक्ति जो योग की साधना से प्राप्त हो, तपोबल। ⊙माया=स्त्री० भगवती। वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और जिसे कस ने मार डाला था। ⊙रूढ=वि० (यौगिक शब्द) जो अपना मूल और व्याकरण-सिद्ध सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष अर्थ दे (जैसे, शूलपाणि, त्रिलोचन, पचशर)। ⊙रूढ़ि=स्त्री० दो शब्दो के योग से बना हुआ वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोडकर विशेष अर्थ बताए (जैसे, पचानन, चद्रभाल)। ⊙वाशिष्ठ=पुं० वेदात शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रथ जो वशिष्ठ मुनि का बनाया कहा जाता है। इसमे वशिष्ठ जी ने रामचद्र को वेदात समझाया है। ⊙शास्त्र=पु० पतजलि ऋषि कृत योगसाधन पर एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमे चित्तवृत्ति को रोकने के उपाय बतलाए गए हैं। ⊙सूत्र=पु० महर्षि पतजलि के बनाए हुए योग सबधी सूत्रो का सग्रह। योगाजन—पु० दे० 'सिद्धाजन'। योगात्मा—पु० योगी। योगाभ्यास—पुं० योगशास्त्र के अनुसार योग के आठ अगो का अनुष्ठान। योगाभ्यासी—पु० योगी। योगासन—पु० योगसाधन के आसन, अर्थात् बैठने के ढग। योगिनी—स्त्री० [सं०] रणपिशाचिनी। योगाभ्यासिनी, तपस्विनी। शैलपुत्री, चद्रघटा, स्कदमाता, कालरात्रि, चडिका, कूष्माडी, कात्यायनी और महागौरी ये आठ विशिष्ट देवियाँ। देवी, योगमाया। योगिराज, योगींद्र—पु० बहुत बडा योगी। योगी—पु० वह जिसने योगाभ्यास करके सिद्धि प्राप्त कर ली हो। आत्मज्ञानी। महादेव, शिव। योगीश, योगेश्वर—पु० बहुत बडा योगी। याज्ञवल्क्य। योगेश्वरी=स्त्री० दुर्गा। योगेंद्र—पु० बहुत बडा योगी। योगेश्वर—पुं० श्रीकृष्ण। बहुत बडा योगी, सिद्ध। शिव योगेश्वरी—स्त्री० दुर्गा।

योग्य—वि० [सं०] ठीक (पात्र) लायक। श्रेष्ठ, अच्छा। युक्ति भिडानेवाला। उचित। आदरणीय। ⊙ता=स्त्री० क्षमता, लायकी। बडाई। बुद्धिमानी, लियाकत। सामर्थ्य। अनुकूलता, मुनासिबत। औकात। गुण। इज्जत। उपयुक्तता।

योजक—वि० [सं०] मिलने या जोड़नेवाला।

योजन—पु० [सं०] योग। सयोग, मिलान। दूरी की एक नाप जो किसी के मत से दो

कोस की, किसी के मत से चार कोस की और किसी के मत से आठ कोस की होती है। परमात्मा। ⊙गधा = स्त्री० व्यास की माता और शातनु की भार्या, सत्यवती।

योजना—स्त्री० नियुक्त करने की क्रिया, नियुक्ति। प्रयोग। जोड, मेल। बनावट, रचना। भावी कार्यो की व्यवस्था, आयोजन। **योजमोय, योज्य**—वि० योजना करने के योग्य।

योद्धा—पु० [सं०] वह जो युद्ध करता हो, सिपाही।

योनि—स्त्री० [सं०] आकर, खानि। उत्पत्तिस्थान। स्त्रियो की जननेंद्रिय, भग। प्राणियो के विभाग, जातियाँ या वर्ग जिनकी सख्या पुराणो मे ८४ लाख कही गई है। देह, शरीर। ⊙ज = पु० वह जिसकी उत्पत्ति योनि से हुई हो।

योषा—स्त्री० [स०] नारी, स्त्री। **योषित**—स्त्री० नारी, स्त्री। **योषिता**—स्त्री० स्त्री, औरत।

यों(पु)†—अव्य० दे० 'यों'।

यौ(पु)†—सर्व० यह।

यौक्तिक—वि० [सं०] युक्ति सबधी। युक्ति-युक्त।

यौगधर—पुं० [सं०] अस्त्रो को निष्फल करने का एक प्रकार का अस्त्र।

यौगिक—पुं० [सं०] मिला हुआ। प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द। दो शब्दो से मिलकर बना हुआ शब्द। अट्ठाइस मात्राओ के छदो की सज्ञा।

यौतक, यौतुक—पुं० [सं०] वह धन जो विवाह के समय वर और कन्या को मिलता हो, दहेज।

यौद्धिक—वि० [सं०] युद्ध सबधी।

यौधेय—पु० [सं०] योद्धा। एक प्राचीन देश का नाम। प्राचीन काल की एक योद्धा जाति।

यौवन—पु० [सं०] अवस्था का वह मध्य भाग जो बाल्यावस्था के उपरात और वृद्धावस्था के पहले होता है। युवा होने का भाव, जवानी।

यौवराज्य—पु० [सं०] युवराज होने का भाव। युवराज का पद। **यौवराज्याभिषेक** = पु० वह अभिषेक तथा उत्सव जो किसी के युवराज बनाए जाने के समय हो।

र

र—हिंदी वर्णमाला का सत्ताईसवाँ व्यजन।

रक—वि० [सं०] धनहीन, गरीब। कजूस, सुस्त।

रंग—पु० [सं०] राँगा नामक धातु। नृत्य गीत आदि। वह स्थान जहाँ नृत्य या अभिनय होता हो। युद्धस्थल। आकार से भिन्न किसी दृश्य पदार्थ का वह गुण जिसका अनुभव केवल आँखो से ही होता है, वर्ण। वह पदार्थ जिसका व्यवहार किसी चीज को रँगने के लिये होता है। बदन और चेहरे की रगत, वर्ण। जवानी। शोभा। प्रभाव। धाक। क्रीडा, आनद, उत्सव। युद्ध, लडाई। मन की उमग या तरग। आनद, मजा। दशा। अद्भुत व्यापार काड, दृश्य। प्रसन्नता, कृपा। प्रेम। ढग, चाल। भाँति। चौपड की गोटियो के दो कृत्रिम विभागों मे से एक। ⊙क्षेत्र = पु० दे० 'रगभूमि'। ⊙ढग = पुं० [हिं] दशा। चालढाल, तौर तरीका। बरताव। लक्षण। ⊙बाती = स्त्री० [हिं] शरीर पर मलने के लिये सुगधित द्रव्यो की बत्ती। ⊙बिरगा = वि० [हिं] अनेक रगो का, चित्रित तरह तरह का। ⊙भवन = पु० दे० 'रगमहल'। ⊙भूमि = स्त्री० वह स्थान। जहाँ कोई जलसा हो। खेल या तमाशे का स्थान नाट्यशाला, रंगस्थल। अखाडा। युद्धक्षेत्र। ⊙मडप = पु० दे० 'रगभूमि'। ⊙महल = पु० [अ०] भोगविलास करने का स्थान। ⊙मार = पुं० [हिं०] ताश का एक खेल। ⊙रली = स्त्री० [हिं०] आमोद प्रमोद। ⊙रस = पु० दे० 'रगरली'। ⊙रसिया = पु० [हिं] विलासी पुरुष। ⊙राता = वि० [हिं०]

अनुरागपूर्ण। ⊙शाला = स्त्री० नाटक खेलने का स्थान, नाट्यशाला। मु० (चेहरे का) ~उड़ना या उतरना = भय या लज्जा से चेहरे की रौनक का जाता रहना। ~चूना या टपकना = युवावस्था का पूर्ण विकास होना। ~जमना = प्रभाव या असर पडना। खूब मजा होना। ~जमाना या बाँधना = प्रभाव डालना। ~निखरना = चेहरा साफ और चमकदार होना। ~बदलना = क्रुद्ध होना। ~मचाना = रण मे खूब युद्ध करना। धूम मचाना। ~मारना = बाजी जीतना। ~मे भग पड़ना = आनंद मे विघ्न पडना। ~रचाना = उत्सव करना। ~रलना = आमोद प्रमोद करना। ~लाना = प्रभाव या गुण दिखलाना।

रंगत—स्त्री रंग का भाव, मजा, आनंद। हालत, दशा।

रँगतरा—पुं० एक प्रकार की बडी और मीठी नारंगी, संतरा।

रँगना—सक० रंग मे डुबाकर किसी चीज को रंगीन करना। कागज आदि पर कुछ लिखना। किसी को अपने प्रेम मे फँसाना। अपने अनुकूल करना। अक० किसी पर आसक्त होना।

रंगरूट—पु० सेना या पुलिस आदि मे नया भर्ती होनेवाला सिपाही। किसी काम मे पहले पहल हाथ डालनेवाला आदमी।

रँगरेज—पु० [फा०] वह जो कपडे रँगने का काम करता हो।

रँगरेली†—स्त्री० दे० 'रंगरली'।

रँगवाई—स्त्री० दे० 'रँगाई'।

रँगसाज—पु० [फा०] वह जो चीजो पर रंग चढाता हो। रंग बनानेवाला।

रँगाई—स्त्री० रँगने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

रँगावट—स्त्री० रँगने का भाव।

रँगाना—सक० रँगने का काम दूसरे से कराना।

रंगी—वि० आनंदी, मौजी। रंगोवाला।

रंगीन—वि० फा० रँगा हुआ, रंगदार। विलासप्रिय, आमोदप्रिय। चमत्कारपूर्ण, मजेदार।

रँगीला—वि० आनंदी, रसिया। सुंदर। प्रेमी।

रंगोपजीवी—पुं० [सं०] अभिनेता, नट।

रंच, रंचकⓅ—वि० थोडा, अल्प।

रंज—पुं० [फा०] दुःख, खेद। शोक।

रंजक—वि० [सं०] रँगनेवाला, जो, रँगे। प्रसन्न करनेवाला। स्त्री० [हिं०] थोड़ी बारूद जो बत्ती लगाने के वास्ते बदूक की प्याली पर रखी जाती है। वह बात जो किसी को भडकाने के लिये कही जाय।

रंजन—पु० [सं०] रँगने की क्रिया। चित्त प्रसन्न करने की क्रिया। लाल चंदन। छप्पय छंद का पचासवाँ भेद। वि० मन प्रसन्न करनेवाला। (यौ० के अंत मे)।

रंजनाⓅ—सक० प्रसन्न करना, आनंदित करना। भजना, स्मरण करना। रँगना।

रंजित—वि० [सं०] रँगा हुआ। प्रसन्न। अनुरक्त।

रंजिश—स्त्री० [फा०] रंज होने का भाव। मनमुटाव। शत्रुता।

रंजीदा—वि० [फा०] जिसे रंज हो, दुःखित। नाराज।

रंडा—स्त्री० [सं०] राँड, विधवा।

रँडापा—पुं० वैधव्य, वैवापन।

रंडी—वेश्या, कसबी। ⊙बाज = वि०[फा०] वेश्यागामी।

रँडुआ, रँडुवा†—पुं० वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो।

रंताⓅ†—वि० अनुरक्त।

रंति—स्त्री० [सं०] क्रीडा, केलि।

रंद—पुं० रोशनदान। किले की दीवारों का वह मोखा जिसमे से बदूक या तोप चलाई जाती है।

रंदना—सक० रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी करना।

रंदा—पुं० एक औजार जिससे लकड़ी को छीलकर चिकनी की जाती है।

रंधन—पु० स० रसोई बनाना।
रंध्र—पुं० [सं०] छेद, सूराख।
रंश—पु० [सं०] बाँस। एक प्रकार का बाण। भारी शब्द।

रंभण—पुं० [स०] गले लगाना, आलिंगन।
रंभा—स्त्री० [स०] केला। गौरी। उत्तर दिशा। वेश्या। पुराणानुसार एक प्रसिद्ध अप्सरा। पुं० [हिं०] लाहे का वह मोटा भारी डडा जिससे दीवारो आदि को खोदते हैं।

रँभाना—अक० गाय का बोलना।
रँहचटा—पुं० मनोरथसिद्धि की लालसा, चस्का।

रअय्यत—स्त्री० [अ०] प्रजा, रिआया।
रइकौ(पु)†—क्रि० जरा भी, कुछ भी।
रइनि(पु)†—स्त्री० रात।
रई—स्त्री० मथानी, खैलर। दरदरा आटा। सूजी। चूर्ण मात्र। वि० स्त्री० डूबी हुई, पगी हुई। अनुरक्त। सहित। मिली हुई।

रईस—पुं० [अ०] जिसके पास रियासत या इलाका हो, ताल्लुकेदार। बडा आदमी, अमीर।

रउताई(पु)†—स्त्री० मालिक होने का भाव, स्वामित्व।

रउरे†—सर्व० मध्यम पुरुष के लिये आदर-सूचक शब्द, आप।

रकछ†—पुं० पत्तो की पकौडी, पतौड।
रकत(पु)—पु० लहू, खून। वि० लाल, सुर्ख।
रकतांक(पु)—पु० प्रवाल, मूँगा [डिं०]। केसर। लालचदन।

रकबा—पु० [अ०] क्षेत्रफल।
रकबाहा—पु० घोडो का एक भेद।
रकम—स्त्री० [अ०] लिखने की क्रिया या भाव। छाप, मोहर। धन, सपत्ति। गहना। चालाक, धूर्त। प्रकार।

रकाब—स्त्री० [फा०] घोडो की काठी का पावदान जिससे बैठने मे सहारा लेते हैं। ⊙**दार**=पु० हलवाई। खानसामा। साईस। मु०—पर या में पैर रखना=चलने के लिये बिलकुल तैयार होना।

रकाबी—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की छिछली छोटी थाली, तश्तरी।

रकीब—पु० [अ०] प्रेमिका का दूसरा प्रेमी, सपत्न।

रक्त—पुं० [स०] लाल रग का वह तरल पदार्थ जो शरीर की नसो आदि मे बहा करता है लहू। कुकुम, केसर। ताँबा। कमल। सिंदूर। सिंगरफ। ईंगुर। लाल-चदन। लाल रग। कुसुभ। वि० रँगा हुआ। लाल सुर्ख। ⊙**कठ**=पु० कोयल। बैंगन। ⊙**कमल**=पु० लाल कमल। ⊙**चदन**=पुं० लाल चदन। ⊙**चाप**=पुं० एक प्रकार का रोग जिसमे रक्त का वेग या चाप साधारण से अधिक घट या बढ जाता है (अँ० ब्लड प्रेशर)। ⊙**ज**=वि० रक्त के विकार के कारण उत्पन्न होनेवाला (रोग)। ⊙**ता**=स्त्री० लाली, सुर्खी। ⊙**पात**=पु० ऐसा लडाई झगडा जिसमे लोग जख्मी हो, खून खराबी। ⊙**पायी**=वि० रक्तपात करने वाला। ⊙**पित्त**=पु० एक प्रकार का रोग जिससे मुँह, नाक आदि इद्रियो से रक्त गिरता है। ⊙**प्रदर**=पु० स्त्रियो का एक रोग। ⊙**बीज**=पु० अनार, बीदाना। एक राक्षस जो शुभ और निशुभ का सेनापति था। कहते हैं युद्ध के समय इसके शरीर से रक्त की जितनी बूँदें गिरती थी, उतने ही नए राक्षस उत्पन्न हो जाते थे। ⊙**वृष्टि**=स्त्री० आकाश से रक्त या लाल रंग के पानी की वृष्टि होना। ⊙**स्राव**=पु० किसी अग से रक्त का बहना या निक-लना। **रक्तातिसार**—पुं० एक प्रकार का अतिसार जिसमे लहू के दस्त आते है। **रक्ताभ**—वि० लाल रंग की आभा से युक्त। **रक्तार्श**—पुं० वह बवासीर जिसमे मसो मे से खून भी निकलता है, खूनी बवासीर। **रक्तिका**—स्त्री० घुँघची, रत्ती। **रक्तिम**—वि० लाल रंग का। **रक्तिमा**—स्त्री० लाली, सुर्खी। **रक्तोत्पल**—पु० लाल कमल।

रक्ष—पु० [स०] रखवाला। रक्षा, हिफाजत

छप्पय के ६०वें भेद का नाम। पुं० [हिं०] राक्षस।

रक्षक—पुं० [सं०] रक्षा करनेवाला। पहरेदार।

रक्षण—पु० [सं०] रक्षा करना, पालन-पोषण।

रक्षणीय—वि० [सं०] जिसकी रक्षा करना उचित हो, रखने लायक।

रक्षन(पु)—पुं० दे० 'रक्षण'।

रक्षना(पु)—सक० रक्षा करना।

रक्षस(पु)—पु० दे० 'राक्षस'।

रक्षा—स्त्री० [सं०] आपत्ति, कष्ट या नाश आदि से बचाव हिफाजत। वह सूत्र आदि जो बालकों को भूत, प्रेत, नजर आदि से बचने के लिये बांधा जाता है। ⊙गृह = पुं० जच्चाखाना। हवाई हमलों आदि से बचने के लिये बना हुआ स्थान। ⊙बंधन = पुं० हिंदुओं का एक त्योहार जो श्रावण, शुक्ला पूर्णिमा को होता है, सलोनो। ⊙मंगल = पुं० वह धार्मिक क्रिया जो भूत, प्रेत आदि की बाधा से रक्षित रहने के लिये की जाय। रक्षित—वि० जिसकी रक्षा की गई हो। पाल-पोसा। रखा हुआ। ~राज्य = पुं० वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्य या साम्राज्य की रक्षा मे हो और जिसे स्वराज्य के बहुत ही परिमित अधिकार प्राप्त हो। रक्षिता—स्त्री० [सं०] रखी हुई स्त्री, रखेली।

रक्षी—पुं० [सं०] दे० 'रक्षक'। पुं० [हिं०] राक्षसो के उपासक।

रक्ष्य—वि० [सं०] रक्षा करने के योग्य।

रखना—सक० किसी वस्तु पर या किसी वस्तु मे स्थित करना, धरना। रक्षा करना, बचाना। वृथा या नष्ट न होने देना। संग्रह करना सौंपना। रेहन करना। अपने अधिकार मे लेना। मनोविनोद या व्यवहार आदि के लिये अपने अधिकार मे करना। नियत करना। धारण करना। जिम्मे लगाना, मढना। कर्जदार होना। मन मे अनुभव या धारण करना। स्त्री (या पुरुष) से संबंध करना, उपपत्नी (या उपपति) बनाना। ⊙रखरखाव = पुं० हिफाजत।

रखनी—स्त्री० रखेली, सुरैतिन।

रखया—वि० स्त्री० रक्षा करनेवाली।

रखला—(पु) पुं० दे० 'रहँकला'।

रखवाई—स्त्री० खेतो की रखवाली, चौकीदारी। रखवाली की मजदूरी। रखने या रखवाने की क्रिया या ढंग।

रखवार(पु)†—पु० दे० 'रखवाला'।

रखवाला—पु० रक्षक। पहरेदार। रखवाली—स्त्री० रक्षा करने की क्रिया या भाव, हिफाजत।

रखा—स्त्री० गौओं के लिये रक्षित भूमि, गोचर भूमि।

रखाई—स्त्री० हिफाजत, रखवाली। रक्षा करने का भाव, क्रिया या मजदूरी।

रखाना—सक० रखने की क्रिया दूसरे से कराना। अक० रखवाली करना।

रखिया(पु)†—पु० रक्षक। रखनेवाला।

रखीसर(पु)—पु० बहुत बडा ऋषि।

रखैली—स्त्री० दे० 'रखनी'।

रखैया†—पु० दे० 'रक्षक'।

रखैल—स्त्री० दे० 'रखनी'।

रग—स्त्री० हठ, जिद। स्त्री० [फा०] शरीर मे की नस या नाडी। पत्तो मे दिखाई पडनेवाली नसें। ⊙रेशा = पु० पत्तियो की नसें, शरीर के अंदर का प्रत्येक अंग। मु०~दबना = किसी के प्रभाव या अधिकार मे होना। ⊙रग मे = सारे शरीर मे।

रगड—स्त्री० रगडने की क्रिया या भाव, घर्षण। वह चिह्न जो रगडने से उत्पन्न हो। हुज्जत, झगडा। भारी श्रम। रगडना—सक० घिसना। पीसना। किसी काम को जल्दी जल्दी और बहुत परिश्रमपूर्वक करना। तंग करना। अक० बहुत मेहनत करना।

रगडा—पुं० रगडने की क्रिया या भाव, घर्षण। अत्यंत परिश्रम। वह झगडा जो बराबर होता रहे।

रगण--पु० [सं०] छंदःशास्त्र मे एक गण या तीन वर्णों का समूह जिसका पहला वर्ण गुरु, दूसरा लघु और तीसरा फिर गुरु होता (ऽ। ऽ)।
रगत(पु)--पु० रक्त, रुधिर।
रगदना(पु)--सक० दे० 'रगेदना'।
रगबत--स्त्री० [अ०] इच्छा, ख्वाहिश।
रगमगा(पु)--पु० लीन।
रगर(पु)†--स्त्री० दे० 'रगड'।
रगना--अक० चुप होना। सक० चुप कराना।
रगीला--वि० जिद्दी। दुष्ट, पाजी। जिसमे रगें हों।
रगेद--स्त्री० रगेदने की क्रिया या भाव।
रगेदना--सक० भगाना, खदेड़ना।
रघु--पु० [सं०] सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र जो अयोध्या के बहुत प्रतापी राजा और रामचंद्र के परदादा थे। ⊙नंदन =पु० श्रीरामचंद्र। ⊙नाथ=पु० श्रीरामचंद्र। ⊙नायक=पु० श्रीरामचंद्र। ⊙पति=पु० श्रीरामचंद्र। ⊙राई(पु)=पु० [हिं०] श्रीरामचंद्र। ⊙राज=पु० श्रीरामचंद्र। ⊙वंश= पु० महाराज रघु का वंश या खानदान। महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसिद्ध महाकाव्य। ⊙वंशी=पु० वह जो रघु के वंश मे उत्पन्न हुआ हो। क्षत्रियों के अंतर्गत एक जाति। ⊙वर =पु० श्रीरामचंद्र। ⊙वीर=पु० श्रीरामचंद्र।
रचक--पु० [सं०] रचना करनेवाला, रचयिता।
रचना--सक० हाथों से बनाकर तैयार करना। निश्चित करना। ग्रंथ आदि लिखना। उत्पन्न करना। ठानना। काल्पनिक सृष्टि करना, कल्पना करना। सजाना। रँगना। अक० अनुरक्त होना, रँगा जाना। स्त्री० [सं०] रचने या बनाने की क्रिया या भाव निर्माण। बनाने का ढंग या कौशल। बनाई हुई वस्तु। गद्य या पद्य की कोई कृति।
रचयिता--पु० [सं०] रचनेवाला, बनानेवाला।
रचयित्री--स्त्री० [सं०] रचना करनेवाली, बनानेवाली।
रचाना(पु)†--सक० अनुष्ठान करना, बनाना। सक० मेहँदी, महावर आदि से हाथ पैर रँगाना।
रचित--वि० [सं०] बनाया हुआ, रचा हुआ।
रचौहाँ(पु)--वि रचा या रँगा हुआ। अनुरक्त।
रच्छस(पु)--पु० दे० 'राक्षस'।
रच्छा(पु)--स्त्री० दे० 'रक्षा'।
रज--स्त्री० [सं०] धूल। रात। प्रकाश। पु० [हिं०] चाँदी। धोबी। वह रक्त जो स्त्रियों और स्तनपायी जाति के मादा प्राणियों के योनिमार्ग से प्रतिमास तीन चार दिन तक निकलता है, आर्तव। दे० 'रजोगुण'। पाप। पानी। फूलों का पराग। आठ परमाणुओं का एक मान। ⊙वती=वि० स्त्री० दे० 'रजस्वला'।
रजई--पु० राजत्व, राजापन।
रजक--पु० [सं०] धोबी।
रजगुण--पु० दे० 'रजोगुण'।
रजतत--स्त्री० वीरता।
रजत--पु० [सं०] चाँदी, रुपा। सोना। लहू। वि० सफेद। लाल, सुर्ख। ⊙जयंती=स्त्री० किसी संस्था आदि के २५ वर्ष का जीवनकाल समाप्त होने पर मनाई जानेवाली जयंती। ⊙पट--पु० चलचित्रों के दृश्य दिखाने के लिये प्रयुक्त सफेद पर्दा।
रजताई(पु)--स्त्री० सफेदी।
रजथानी(पु)--स्त्री० दे० 'राजधानी'।
रजन--स्त्री० दे० 'राल'।
रजना(पु)--अक० रँगा जाना। सक० रँग मे डुबाना, रँगना।
रजनी--स्त्री० [सं०] रात। हल्दी। ⊙कर = पुं० चंद्रमा। ⊙गंधा=स्त्री० एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल जो रात को खूब महकता है, गुलसब्बो। ⊙चर=पु० राक्षस। ⊙पति=पु० चंद्रमा। ⊙मुख =पु० सध्या।
रजनीश--पु० [सं०] चंद्रमा।

रजपूत(पु)†—पु० दे० 'राजपूत'। वीर पुरुष, योद्धा।
रजपूती—स्त्री० क्षत्रियता। वीरता। वि० राजपूत संबंधी।
रजबहा—पु० वह बड़ा नल जिससे और भी अनेक छोटे छोटे नल निकलते हैं।
रजभर—पु० एक हिंदू जाति।
रजवाड़ा—पु० राज्य, देशी रियासत। राजा।
रजवार—पु० (पु)†—दरबार।
रजस्वला—वि० स्त्री० [सं०] जिसका रज प्रवाहित होता हो, ऋतुमती। धूलभरी।
रजा—स्त्री० [अ०] मरजी। रुखसत, छुट्टी। अनुमति। स्वीकृति। ⊙मंद = वि० [फा०] जो किसी बात पर राजी हो गया हो, सहमत।
रजाइ, रजाइय(पु)—स्त्री० आज्ञा, हुक्म। दे० 'रजा'।
रजाई—स्त्री० एक प्रकार का रूईदार ओढना, लिहाफ। राजा होने का भाव, राजापन। दे० 'रजाइ'।
रजाना—सक० राज्यसुख का भोग करना।
रजाय, रजायस(पु)†—स्त्री० आज्ञा, हुक्म।
रजील—वि० [अ०] छोटी जाति का, नीच।
रजोकुल(पु)—पु० 'राजवंश'।
रजोगुण—पु० [सं०] प्रकृति के तीन गुणों में से एक। प्रकृति का वह स्वभाव जिससे जीवधारियों में भोगविलास तथा दिखावे की रुचि होती है।
रजोदर्शन—पु० [सं०] स्त्रियों का मासिक धर्म, रजस्वला होना। रजोधर्म—पु० [सं०] स्त्रियों का मासिक धर्म।
रज्जु—स्त्री [सं०] रस्सी। लगाम की डोरी।
रटत—स्त्री० रटने की क्रिया या भाव।
रट—स्त्री० किसी शब्द को बार बार उच्चारण करने की क्रिया।
रटना—स्त्री० दे० 'रट'। सक० किसी शब्द को बार बार कहना। जबानी याद करने के लिये बार बार उच्चारण करना। बार बार शब्द करना, बजना।
रटन—स्त्री० दे० 'रट'।
रठ†—वि० रूखा, शुष्क।
रढना(पु)—सक० दे० 'रटना'।
रण—पु० [सं०] लड़ाई, युद्ध। ⊙क्षेत्र = पु० लडाई का मैदान। ⊙छोड़ = पुं० [हिं०] श्रीकृष्ण का एक नाम। ⊙खेत (पु) = पुं० [हिं०] दे० 'रणक्षेत्र'। ⊙भूमि = स्त्री० रणक्षेत्र। ⊙रंग = पुं० लडाई का उत्साह। युद्ध, लडाई। युद्धक्षेत्र। ⊙लक्ष्मी = स्त्री० दे० 'विजय-लक्ष्मी'। ⊙सिंहा = पुं० [हिं०] तुरही, नरसिंघा। ⊙स्तंभ = पुं० विजय के स्मारक में बनाया हुआ स्तंभ। ⊙स्थल = रणभूमि। ⊙हंस = पुं० एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, जगण, भगण और रगण होते हैं। इसको मनहंस, और मानसहंस भी कहते हैं।
रणन - पुं० [सं०] शब्द या गुंजार करना। बजना।
रणरोझ(पु)—पुं० व्यर्थ का रोदन, निरर्थक गुहार।
रणांगण—पुं० [सं०] युद्धक्षेत्र।
रणित—वि० [सं०] शब्द या गुंजार करता हुआ। बजता हुआ।
रत—वि० आसक्त, (कार्य आदि में) लगा हुआ, लिप्त। (पु) पुं० रक्त, खून। पु० [सं०] मैथुन। प्रीति।
रतजगा—पु० उत्सव या विहार आदि के लिये सारी रात जागना।
रतताली—स्त्री० कुटनी।
रतन—पुं० दे० 'रत्न'। ⊙जोत = स्त्री० एक मणि। एक प्रकार का बहुत छोटा क्षुप, इसकी जड से लाल रंग निकाला जाता है।
रतनागर(पु)—पुं० समुद्र।
रतनार, रतनारा—वि० कुछ लाल, सुर्खी लिए हुए।
रतनारी—पुं० एक प्रकार का धान। स्त्री० लाली, सुर्खी।
रतनालिया(पु)†—वि० दे० 'रतनारा'।
रतमुहाँ—वि० लाल मुहँवाला। सुर्खरू।
रतमुहीं—वि० स्त्री० लाल मुहँवाली, सुर्खरू।
रतल—स्त्री० दे० 'रत्तल'।

रताना(पु)†—अक० रत होना। सक० किसी को अपनी ओर रत करना।

रतालू—पुं० पिंडालू नाम कंद। वाराही-कंद, गेंठी।

रति—स्त्री० रात, रैन। क्रि० वि० दे० 'रती'। स्त्री० [सं०] कामदेव की पत्नी। जो दक्ष प्रजापति की कन्या और सौंदर्य की साक्षात् मूर्ति मानी जाती है। मैथुन। प्रेम। शोभा। साहित्य में शृंगार रस का स्थायी भाव। नायक और नायिका की परस्पर प्रीति। ⊙ज = वि० रति या मैथुन के कारण उत्पन्न। ⊙दान = पुं० संभोग, मैथुन। ⊙नायक = पुं० कामदेव। ⊙नाह(पु) = पु० [हिं०] कामदेव। ⊙पति = पु० कामदेव। ⊙पद = एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और एक सगण होता है। ⊙प्रीता = स्त्री० वह नायिका जिसका रति से प्रेम हो। ⊙बंध = पुं० मैथुन या संभोग करने का प्रकार, जिसे आसन भी कहते हैं। ⊙भवन = पु० वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका रतिक्रीडा करते हों। ⊙भौन(पु) = पु० [हिं०] दे० 'रतिभवन'। ⊙मंदिर = पु० रतिभवन। ⊙राई = पु० कामदेव। मैथुन। ⊙राई = पु० [अ० + हिं०] दे० 'रतिराज'। ⊙राज = पु० कामदेव। ⊙वत = वि० [हिं०] सुंदर, खूबसूरत। ⊙शास्त्र = पु० कामशास्त्र।

रतियाना(पु)†—अक० प्रेम करना।

रती(पु)†—स्त्री० कामदेव की पत्नी रति। सौंदर्य, शोभा। मैथुन। कांति। दे० 'रति'। †(पु)स्त्री० दे० 'रत्ती'। क्रि० वि० जरा सा, रत्ती भर।

रतीक(पु)—क्रि० वि० दे० 'रत्तिक'।

रतोपल(पु)†—पु० लाल कमल।

रतौंधी—स्त्री० एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी को रात के समय बिलकुल दिखाई नहीं देता।

रत्त(पु)—पुं० दे० 'रक्त'।

रत्तल—स्त्री० एक पौंड या आधा सेर के लगभग एक तौल।

रत्ती—(पु)स्त्री० शोभा, छवि। आठ चावल का मान या बाट घुँघची का दाना, गुंजा। वि० बहुत थोड़ा। मु०~भर = बहुत थोड़ा सा, जरा सा।

रत्थी—स्त्री० वह ढाँचा या संदूक आदि जिसमें शव को रखकर अंतिम संस्कार के लिये ले जाते हैं, अरथी।

रत्न—पु० [सं०] वे छोटे, चमकीले, बहुमूल्य खनिज पदार्थ जिनका व्यवहार आभूषणों आदि में जड़ने के लिये होता है, मणि, नगीना। मानिक, लाल। सर्वश्रेष्ठ। ⊙गर्भा = स्त्री० पृथ्वी, भूमि। ⊙निधि = पु० समुद्र। ⊙पारखी = पु० [हिं०] जौहरी। ⊙माला = स्त्री० रत्नों या जवाहिरात की माला। ⊙सू = स्त्री० पृथ्वी।

रत्नाकर—पु० [सं०] समुद्र। खान। रत्नों का समूह।

रत्नावली—स्त्री० [सं०] मणियों की श्रेणी या माला। एक अर्थालंकार जिसमें प्रस्तुत अर्थ निकलने के अतिरिक्त ठीक क्रम में कुछ और वस्तुसमूह के नाम भी निकलते हैं।

रथग—पु० चकवा पक्षी।

रथ—पु० [सं०] एक प्रकार की पुरानी सवारी जिसमें चार या दो पहिए हुआ करते थे, गाड़ी, बहल। शरीर। चरण, पैर। शतरंज में ऊँट। ⊙यात्रा = स्त्री० हिंदुओं का एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है। ⊙वान = पुं० [हिं०] रथ चलानेवाला, सारथी। ⊙वाह = पु० रथ चलानेवाला, सारथी। घोड़ा।

रथांग—पु० [सं०] रथ का पहिया। चक्र नामक अस्त्र। चकवा ⊙पाणि = पु० विष्णु।

रथिक—पुं० [सं०] रथी।

रथी—पुं० [सं०] रथ पर चढ़कर लड़नेवाला। एक हजार योद्धाओं से अकेला युद्ध करनेवाला योद्धा। वि० रथ पर चढ़ा हुआ।

रथोद्धता—स्त्री० [सं०] ११ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसका पहला, तीसरा, सातवाँ नवाँ और ११वाँ वर्ण गुरु और बाकी

वर्ण लघु होते हैं अर्थात् इसके प्रत्येक चरण में रगण नगण जगण रगण होता है।

रय्या—स्त्री० [सं०] रास्ता, सड़क। नाली, नाबदान।

रद—वि० दे० 'रद्द'। पु० [सं०] दंत, दाँत। ⊙च्छद=पु० ओठ, ओष्ठ। ⊙छद(पु)=पु० [हिं०] ओठ। रति आदि के समय दाँतों के लगने का चिह्न। ⊙दान=पु० (रति के समय) दाँतों से ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाय। ⊙पट=पुं० ओष्ठ। रदन—पुं० दशन, दाँत।

रदनी—वि० दाँतवाला।

रद्द—स्त्री० कै, वमन। वि० [अ०] जो काट, छाँट, तोड या बदल दिया गया हो। जो खराब या निकम्मा हो गया। हो ⊙बदल=पु० परिवर्तन, फेरफार।

रद्दा—पु० दीवार में एक बार चुनकर उठाई जानेवाली ईंटों की पंक्ति। मिट्टी की दीवार उठाने में उतना अंश, जितना चारों ओर एक बार में उठाया जाता है। थाली में चुनकर लगाई हुई मिठाइयों की तह। नीचे ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह। मु० ~कसना, जमाना, देना या लगाना=रोब जमाना। चपेटना।

रद्दी—वि० बेकार। स्त्री० काम न आनेवाले कागज आदि।

रन—पु० [अं०] क्रिकेट खेल संबंधी दौड़, दौड। पु० [हिं०] युद्ध। जंगल। झील, ताल। समुद्र का छोटा खंड। ⊙बंका, ⊙बाँकुरा, ⊙बादी(पु)=वि० शूरवीर, योद्धा। ⊙साजी=स्त्री० [फा०] लडाई छेडना।

रनकना(पु)†—अक० घुँघरू आदि का मंद शब्द होना।

रनना(पु)—अक० बजना, झनकार होना।

रनवास—पु० रानियों के रहने का महल, अंतःपुर। जनानखाना।

रनित(पु)—वि० बजता हुआ, झनकार करता हुआ।

रनिवास(पु)—पुं० दे० 'रनवास'।

रनी(पु)—पु० योद्धा।

रपट†—स्त्री० रपटने की क्रिया या भाव, फिसलाहट। दौड। जमीन की ढाल। सूचना।

रपटना†—अक० नीचे या आगे की ओर फिसलना, जम न सकने के कारण किसी ओर सरकना। बहुत जल्दी जल्दी चलना, झपटना। सक० किसी काम को शीघ्रता से करना, कोई काम चटपट पूरा करना। रपटाना—सक० रपटने का काम दूसरे से कराना।

रपट्टा†—पुं० फिसलने की क्रिया, फिसलाव। दौडधूप। झपट्टा, चपेट। मु० ~लगाना या मारना= झपटना, लपकना।

रफल—स्त्री० विलायती ढंग की एक प्रकार की बंदूक। ऊनी चादर।

रफा—वि० [अ०] दूर किया हुआ। निवारित, दबाया हुआ। ⊙दफा=वि० दे० 'रफा'।

रफीक—पु० [अ०] साथी। मित्र।

रफू—पु० [अ०] फटे हुए कपडे के छेद में तागे भर कर उसे बराबर करना। ⊙गर=पु० [फा०] रफू करने का व्यवसाय करने वाला। ⊙चक्कर=वि० [हिं०] चंपत, गायब।

रफ्तनी—स्त्री० [फा०] जाने की क्रिया या भाव। माल का बाहर जाना।

रफ्ता रफ्ता—क्रि० वि० [फा०] धीरे धीरे, क्रम क्रम से।

रफ्तार—स्त्री० [फा०] चाल, गति।

रब—पुं० [अ०] ईश्वर।

रबड़—पु० एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जो अनेक वृक्षों के दूध से बनता है। एक वृक्ष जो वट वर्ग के अंतर्गत है। इसी के दूध से उपर्युक्त लचीला पदार्थ बनता है।

रबड़ना—सक० घुमाना, चलाना, फेंटना।

रबड़ी—स्त्री० औटाकर गाढा और लच्छेदार किया हुआ दूध।

रबदा—पु० चलने में होनेवाला श्रम। कीचड।

रबर—पुं० [अ०] दे० 'रबड'।

रबना—पु० एक प्रकार का डफ।

रवाब—पु० [अ०] सारगी की तरह का एक प्रकार का बाजा। रवाबिया, रवाबी—वि० रवाब बजानेवाला।
रबी—स्त्री० वसत ऋतु। वह फसल जो वसत ऋतु मे काटी जाती है।
रब्त—पुं० [अ०] अभ्यास, मश्क। सबध, मेल। ⊙जब्त = पुं० मेलजोल, घनिष्टता।
रब्ब—पुं० दे० 'रब'।
रभस—पु० [सं०] वेग, तेजी। हर्ष। प्रेम का उत्साह। पछतावा।
रम—वि० [सं०] प्रिय। सुदर। पुं० पति। स्त्री० [अं०] जौ की शराब।
रमक—स्त्री० झूले की पेग। तरग, झकोरा। रमक—अक० हिंडोले पर झूलना। झूमते या इतराते हुए चलना।
रमजान—पुं० [अ०] एक अरबी महीना जिसमे मुसलमान रोजा रखते हैं।
रमण—पुं० [स०] विलास, केलि। मैथुन। गमन घूमना। पति। कामदेव। एक वर्णिक छद। वि० मनोहर। प्रिय। रमनेवाला। ⊙रमना = स्त्री० वह नायिका जो यह समझकर दुखी होती है कि सकेत स्थान पर नायक आया होगा, और मैं वहां उपस्थित न थी। रमणी—स्त्री० नारी, स्त्री। रमणीय = वि० सुदर, मनोहर। ⊙ता = स्त्री० सुदरता। साहित्यदर्पण के अनुसार वह माधुर्य जो सब अवस्थाओं मे बना रहे।
रमणीक—वि० सुदर, रमणीय।
रमता—वि० एक जगह जमकर न रहनेवाला, घूमता फिरता।
रमन(पु)—पु०, वि० दे० 'रमण'।
रमना—अक० भोग विलास के लिये कही रहना या ठहरना। आनंद करना। व्याप्त होना, लग जाना। किसी के आसपास फिरना। आनदपूर्वक इधर उधर फिरना, विहार करना। चल देना। पुं० चरागाह। वह सुरक्षित स्थान या घेरा, जहाँ पशु शिकार के लिये या पालने के लिये छोड दिए जाते हैं। बाग। सुदर और रमणीक स्थान।
रमनी(पु)—स्त्री० दे० 'रमणी'।
रमनीक(पु)—वि० दे० 'रमणीक'।
रमल—पुं० [अ०] एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसमे पासे फेककर शुभाशुभ फल जाना जाता है।
रमली—पुं० वह जो रमल की सहायता से भविष्य की बाते बतलाता हो।
रमसरा(पु)—पुं० दे० 'रामशर'।
रमा—स्त्री० [स०] लक्ष्मी। ⊙कांत = पु० विष्णु। ⊙नरेश(पु) = पु० दे० 'रमाकात'। ⊙निवास = पु० विष्णु। ⊙पति, ⊙रमण = पु० विष्णु।
रमना—सक० [अक० रमना] मोहित करना, लुभाना। अपने अनुकूल बनाना। ठहराना, रोक रखना। लगाना, जोड़ना।
रमित(पु)—वि० लुभाया हुआ, मुग्ध।
रमेश—पुं० [सं०] रमा के पति, विष्णु।
रमुज—स्त्री० [अ०] कटाक्ष। पहेली, गूढार्थ वाक्य। श्लेष। गुप्त बात, भेद।
रमैनी—स्त्री० कबीरदास के बीजक का एक भाग।
रमैया(पु)‡—पुं० राम। ईश्वर।
रम्माल—पु० [अ०] रमल फेकनेवाला।
रम्य—वि० [सं०] सुदर। रमणीय।
रम्हाना—अक० दे० 'रँभाना'।
रय(पु)—पुं० रज, धूल। पु० [सं०] वेग, तेज। प्रवाह। ऐल के छह पुत्रो मे से चौथा।
रयन(पु)†—स्त्री० रात, रात्रि।
रयना(पु)†—सक० रग से भिगोना, तराबोर करना। अक० अनुरक्त होना। सयुक्त होना।
रयवारा(पु)—पु० राजा।
रयासत—स्त्री० दे० 'रियासत'।
रय्यत†—स्त्री० प्रजा।
ररकार—पु० रकार की ध्वनि।
रर(पु)†—स्त्री० रटन, रट।
ररकना†—अक० कसकना, पीडा देना।
ररना†—अक० लगातार एक ही बात कहना, रटना।
ररिहा, ररुआ(पु)†—पु० ररनेवाला। रटुआ या रुरुआ नामक पक्षी। भारी मगन।

ररी—वि० बहुत गिड़गिडाकर माँगनेवाला। अधम, नीच।

रलना(पु)†—अक० एक मे मिलना, संमिलित होना। रलमल—स्त्री० रलने मिलने की क्रिया या भाव। समिश्रण। रलाना (पु)†—सक० [अक० रलना] एक मे मिलाना, समिलित करना।

रलिका(पु)—स्त्री० दे० 'रली'।

रली—स्त्री० विहार, क्रीडा। आनद, प्रसन्नता। वि० रसी हुई, मिली हुई।

रल्ल(पु)†—पुं० रेला, हल्ला।

रव(पु)†—पु० सूर्य। पु० [सं०] गुजार, नाद, आवाज। शोरगुल।

रवकना—अक० दौडना। उमगना, उछलना।

रवताई(पु)—स्त्री० राजा या रावत होने का भाव। प्रभुत्व, स्वामित्व।

रवन(पु)—पु० पति, स्वामी। वि० रमण करनेवाला। क्रीडा करनेवाला।

रवाना(पु)—अक० क्रीडा करना। शब्द करना।

रवनि, रवनी(पु)—स्त्री० भार्या, पत्नी। रमणी, सुदरी।

रवन्ना—पुं० वह कागज जिसपर रवाना किए हुए माल का व्योरा होता है। राहदारी का परवाना।

रवाँ—वि० [फा०] चलता हुआ। बहता हुआ। जिसका आवास हो।

रवा—पुं० बहुत छोटा टुकडा, कण। सूजी। बारूद का दाना। वि० [फा०] उचित, ठीक। प्रचलित। ⊙दार = वि० सबध या लगाव रखनेवाला। वि० [फा०] जिसमे कण या दाने हो।

रवाज—स्त्री० [फा०] चाल, प्रथा।

रवानगी—स्त्री० [फा०] रवान। होने की क्रिया या भाव, प्रस्थान। रवाना—वि० जो कही से चल पडा हो, प्रस्थित। भेजा हुआ। रवानी—स्त्री० प्रवाह, तेजी।

रवारवी—स्त्री० जल्दी, शीघ्रता।

रवि—पुं० [सं०] सूर्य। मदार का पेड़, आक। अग्नि। नायक, सरदार। ⊙कुल = पु० सूर्यवश। ⊙चंचल = पुं० लोलार्क नामक तीर्थस्थल जो काशी मे है। ⊙जा = स्त्री० यमुना। ⊙तनय = पु० यमराज। शनैश्चर। सुग्रीव। कर्ण। अश्विनीकुमार। ⊙तनया = स्त्री० यमुना। ⊙नंदन = पुं० दे० 'रवितनय'। ⊙नदनी = स्त्री० यमुना। ⊙पूत(पु) = पु० [हिं०] दे० 'रविनदन'। ⊙मडल = पुं० सूर्य के चारो ओर लाल मडल या गोला। ⊙बाण = पुं० वह बाण जिसके चलाने से सूर्य का सा प्रकाश हो। ⊙वार = पु० एक वार जो शनिवार के बाद तथा सोमवार के पहले पडता है, आदित्यवार। ⊙सुअन = पु० [हिं०] दे० 'रवितनय'।

रविश—स्त्री० [फा०] गति, चाल। तौर, ढग। क्यारियो के बीच का छोटा मार्ग।

रवीला—वि० जिसमे कण या रवे हो।

रवैया†—पु० चलन, चालचलन। तौर, ढग।

रशना—स्त्री० [सं०] कमर मे पहनने की करधनी। दे० 'रसना'।

रश्क—पु० [फा०] ईर्ष्या, डाह।

रश्मि—पु० [सं०] किरण। घोडे की लगाम, बाग।

रस—स्त्री० [सं०] खाने की चीज का स्वाद, रसनेद्रिय का सवेदन या ज्ञान जो वैद्यक मे मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय ये छह माने गए हैं। वैद्यक के अनुसार शरीर के अदर की सात धातुओ मे से पहली धातु। किसी पदार्थ का सार। मन मे उत्पन्न होनेवाला वह भाव या आनद जो काव्य पढने अथवा अभिनय देखने से उत्पन्न होता है (साहित्य)। नौ की सख्या। आनद, मजा। प्रेम। केलि, विहार। उमग। गुण। तरल या द्रव पदार्थ पानी। किसी चीज को दबा या निचोड़कर निकाला हुआ द्रव पदार्थ। वह पानी जिसमे चीनी घुली हुई हो, शरबत। पारा। धातुओ को फूँककर तैयार किया हुआ भस्म। केशव के अनुसार रगण और सगण। भाँति, तरह। मन की तरग, मौज। ⊙ऐन = पु० [हिं०] रसिक, रस लेनेवाला व्यक्ति। ⊙कपूर = पु० [हिं०] सफेद रग की एक प्रसिद्ध उपधातु। ⊙केलि = स्त्री०

विहार, क्रीडा। हँसी ठट्ठा, दिल्लगी। ⊙कोरा = पुं० [हिं०] दे० 'रसगुल्ला'। ⊙खीर = स्त्री [हिं०] ऊख के रस मे पकाया चावल। ⊙गुनी† = पु० [हिं०] काव्य या सगीत शास्त्र का ज्ञाता। ⊙गुल्ला = पु० [हिं०] एक प्रकार की छेने की मिठाई। ⊙ज्ञ = वि० वह जो रस का ज्ञाता हो। काव्यमर्मज्ञ। निपुण। ⊙दार = वि०[फा०] जिसमे किसी प्रकार का रस हो। स्वादिष्ठ, मजेदार। ⊙पति = पु० चद्रमा। राजा। पारा। शृंगार रस। ⊙प्रबंध = पु० नाटक। वह कविता जिसमे एक ही विषय बहुत से सबद्ध पद्यो मे वर्णित हो। ⊙भरी = स्त्री० [हिं०] एक स्वादिष्ठ फल, मकोय। ⊙भीना = वि० [हिं०] आनद मे मग्न। आर्द्र, तर। ⊙बसा = वि० [हिं०] आनदमग्न, अनुरक्त। तर, गीला। पसीने से भरा। ⊙मोए = वि० [हिं०] रससिक्त। ⊙रंग = पु० प्रेमक्रीडा, केलि। ⊙राज = पु० पारद, पारा। शृंगार रस। ⊙राय(पु) = पु० [हिं०] दे० 'रसराज'। ⊙रीति = स्त्री० प्रेम का व्यवहार। ⊙वंत = पु० [हिं०] रसिक, प्रेमी। वि० जिसमे रस हो, रसीला। ⊙वंती = स्त्री० [हिं०] रसौत। ⊙वत् = पुं० वह काव्यालकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रस अथवा भाव का अंग होकर आवे। ⊙वाद = पुं० प्रेम या आनंद की बातचीत, रसिकता की बातचीत। मनोरंजन के लिये कहा सुनी, छेड़छाड़। बकवाद। ⊙वाम् = वि० सरस, रसीला। मधुर। ⊙विरोध = पुं० साहित्य में एक ही पद्य मे दो प्रतिकूल, रसों की स्थिति, जैसे, शृंगार और रौद्र की। मु०~भीजना या भिनना = यौवन का आरंभ या सचार होना।

रसद—वि० [सं०] आनंददायक, सुखद। स्वादिष्ठ। स्त्री० [फा०] बाँट, बखरा। आटा, दाल, चावल आदि भोजन की बिना पकी सामग्री। मु०—हिस्सा रसद = बँटने पर अपने हिस्से के अनुसार लाभ।

रसन—पु० [सं०] स्वाद लेना, चखना। ध्वनि। जीभ।

रसना—अक० धीरे धीरे बहना या टपकना। किसी वस्तु का गीला होकर जल या और कोई द्रव पदार्थ छोडना या टपकाना। रस मे मग्न होना, प्रफुल्लित होना। तन्मय होना। रस लेना, स्वाद लेना। प्रेम मे अनुरक्त होना। मु०—रस रस यार से रसे = धीरे धीरे। स्त्री० [सं०] जिह्वा, जीभ। वह स्वाद, जिसका अनुभव जीभ से किया जाता है। रस्सी। लगाम। मु०~खोलना = बोलना आरभ करना। ~तालू से लगाना = बोलना बद होना। रसनेंद्रिय—स्त्री० रसना, जीभ। रसनोपम—स्त्री० एक प्रकार की उपमाओं की एक शृंखला बँधी होती है और पहले कहा हुआ उपमेय आगे चलकर उपमान होता जाता है।

रसम—स्त्री० परिपाटी, चाल। मेल जोल।

रसमि(पु)—स्त्री० किरण। आभा, प्रकाश।

रसरा—पु० दे० 'रस्सा'। रसरी†—स्त्री० दे० 'रस्सी'।

रसल—वि० दे० 'रसीला'।

रसवत—स्त्री० दे० 'रसौत'।

रसाँ—वि० [फा०] पहुँचानेवाला (जैसे चिट्ठीरसाँ)।

रसांजन—पु० [सं०] रसौत।

रसा—पु० तरकारी आदि का झोल, शोरबा। वि० [फा०] पहुँचानेवाला, ऊँचा होने या दूर जानेवाला। स्त्री० [सं०] पृथ्वी, जमीन। जीभ, रसना। ⊙तल = पुं० पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोको में छठा लोक। मु०~रसातल में पहुँचाना = मिट्टी मे मिला देना, बरबाद कर देना।

रसाइनी(पु)—पुं० रसायन विद्या जाननेवाला।

रसाई—स्त्री० [फा०] पहुँचने की क्रिया या भाव, पहुँच।

रसाना—(पु)—सक० रसपूर्ण करना। प्रसन्न करना। अक० रसयुक्त होना। आनंद लूटना।

रसाभास—पुं० [सं०] साहित्य मे किसी रस

का अनुचित विषय मे अथवा अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन। एक प्रकार का अलकार जिसमे उक्त ढग का वर्णन होता है।
रसायन—पु० [सं०] वैद्यक के अनुसार वह औषध जिसके खाने से आदमी बुड्ढा या बीमार न हो। पदार्थों के तत्वो का ज्ञान। विशेष दे० 'रसायन शास्त्र'। वह कल्पित योग जिसके द्वारा ताँबे से सोना बनना माना जाता है। ⊙शास्त्र =पु० वह शास्त्र जिसमे यह विवेचन हो कि पदार्थों मे कौन कौन से तत्व होते हैं और उनके अणुओ मे परिवर्तन न होने पर पदार्थों मे क्या परिवर्तन होता है।
रसायनिक—वि० दे० 'रासायनिक'।
रसाल—पु० कर, राजस्व। पुं० [सं०] ऊख, गन्ना। आम। कटहल। गेहूँ। वि० मधुर, मीठा रसीला। सुदर।
रसालस—पुं० कौतुक।
रसालिका—वि० स्त्री० मधुर।
रसाव—पुं० रसने की क्रिया या भाव।
रसावर, रसावल—पुं० दे० 'रसौर'।
रसासव—पुं० [सं०] शराब।
रासिआउर†—पु० ऊख के रस या गुड के शर्बत मे पका हुआ चावल। एक प्रकार का गीत जो नई बहू के आने पर विवाह की एक रीति मे गाया जाता है।
रसिक—पुं० [सं०] वह जो रस या स्वाद लेता हो। काव्यमर्मज्ञ। आनदी, रसिया। अच्छा ज्ञाता। भावुक, सहृदय। एक प्रकार का छद। ⊙ता=स्त्री० रसिक होने का भाव या धर्म। हँसी ठट्ठा। ⊙बिहारी=पु० श्रीकृष्ण।
रसिकाई(प)—स्त्री दे० 'रसिकता'।
रसित—पु० [सं०] शब्द।
रसिया—पुं० रसिक, रस लेनेवाला। एक प्रकार का गाना जो फागुन मे ब्रज, बुदेलखंड आदि मे गाया जाता है।
रसियाव—पु० दे० 'रसौर'।
रसी(प)†—पु० दे० 'रसिक'।
रसीन—स्त्री० [फा०] किसी चीज के पहुँचने या प्राप्त होने की क्रिया, प्राप्ति। किसी चीज के पहुँचने या मिलने के प्रमाणरूप मे लिखा हुआ पत्र। मु० (थप्पड मुक्का आदि)~करना= लगाना।
रसील—वि० दे० 'रसीला'।
रसीला—वि० रस मे भरा हुआ। स्वादिष्ट, मजेदार। रस या आनद लेनेवाला। बाँका।
रसूम—पु० [अ०] 'रस्म' का बहुवचन। नियम, कानून। वह धन जो किसी को किसी प्रचलित प्रथा के अनुसार दिया जाता हो, नेग।
रसूल—पु० [अ०] ईश्वर का दूत, पैगबर।
रसेंद्र—पु० [सं०] पारा।
रसेश्वर—पु० [सं०] पारा। एक दर्शन जो छह दर्शनो मे नहीं है।
रसेस(प)—दे० 'श्रीकृष्ण'।
रसोइया=पु० रसोई बनानेवाला।
रसोई—स्त्री० दे० 'रसोई'।
रसोई—स्त्री० पका हुआ खाद्य पदार्थ। चौका, पाकशाला। ⊙घर=पु० खाना बनाने की जगह, चौका। ⊙दार=पु० दे० 'रसोइया'।
रसोडा†—पु० दे० 'रसोई'।
रसोत—स्त्री० दे० 'रसौत'।
रसोव(प)†—स्त्री० दे० 'रसोई'।
रसौत—स्त्री०, एक प्रसिद्ध औषध जो दारुहल्दी की जड और लकडी को पानी मे औटाकर तैयार की जाती है।
रसौर—पुं० ऊख के रस मे पके हुए चावल।
रसौली—स्त्री० एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर मे गिल्टी निकल आती है।
रस्ता—पु० दे० 'रास्ता'।
रस्तोगी—पु० वैश्यो की एक जाति।
रस्म—स्त्री० [अ०] मेलजोल। खाज। परिपाटी।
राहरस्म=मेलजोल, व्यवहार।
रस्मि(प)—स्त्री० दे० 'रश्मि'।
रस्सा—पु० बहुत मोटी रस्सी।
रस्सी—स्त्री० रुई, सन आदि के रेशों या या डोरो को बटकर बनाया हुआ लंबा खड, डोरी।
रहँकला—पु० एक प्रकार की हलकी

गाडी। तोप लादने की गाडी। रहकले पर लदी हुई तोप।

रहँचटा—पु० प्रीति की चाह, चसका।

रहँट—पु० कुएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यत्र।

रहँटा—पु० सूत कातने का चर्खा।

रहचट(पु)—पु० दे० 'रहँचटा'।

रहचह—स्त्री० चिडियो का बोलना, चहचहाहट।

रहट—पु० दे० रहँट'।

रहठा—पु० अरहर के पौधो का सूखा डठल।

रहठान(पु)—पु० रहने की जगह।

रहन—स्त्री० रहने की क्रिया या भाव। व्यवहार, आचार। ⊙सहन = स्त्री० जीवननिर्वाह का ढग, चाल ढाल।

रहना—अक० स्थित होना, ठहरना। न जाना, थमना। बिना किसी परिवर्तन या गति के एक ही स्थिति मे अवस्थान करना। बसना या टिकना। काम करना बद करना थामना। चलना, बद करना, रुकना। उपस्थित होना। चुपचाव समय बिताना। नौकरी करना, कामकाज करना। स्थापित होना (जैसे, पेट रहना)। मैथुन करना। जीवित रहना, जीना। बचना, छूट जाना। रहा सहा = बचाबचाया। मु०—रह जाना = कुछ कार्रवाई न करना। सफल न होना, लाभ न उठा सकना। पीछे छूट जाना। खर्च या व्यवहार से बच जाना। (अग आदि का) रह जाना = थक जाना।

रहनि(पु)—स्त्री० दे० 'रहन' प्रेम, प्रीति।

रहपट—पु० झापड, थप्पड।

रहम—पु० गर्भाशय। पु० [अ०] दया। अनुग्रह। ⊙दिल = पु० दयालु।

रहरू—स्त्री० एक प्रकार की छोटी देहाती गाडी।

रहल—स्त्री० [अ०] एक प्रकार की छोटी चौकी जिसपर पढने के समय पुस्तक रखी जाती है।

रहलू—स्त्री० दे० 'रहरू'।

रहवैया—वि० रहनेवाला।

रहस—पु० छिपी बात। आनंदमय लीला, क्रीडा। आनद, सुख। गूढ तत्त्व। एकात स्थान। ⊙बधावा = पु० विवाह की एक रीति।

रहसि(पु)—स्त्री० एकात स्थान।

रहस्य—पु० [सं०] गुप्तभेद। मर्म या भेद की बात। वह जिसका तत्व सहज मे समझ मे न आ सके। मजाक। ⊙वाद पु० ध्यान एव चितन के द्वारा परोक्ष सत्ता मे तल्लीन होने का प्रयत्न। ऐसी अतर्दशा मे व्यक्त भावनाएँ। ⊙वादी—वि० रहस्यवाद का अनुयायी। रहस्यवाद सबधी।

रहाई—स्त्री० दे० 'रहन'। चैन, आराम।

रहाना(पु)—अक० होना। रहना।

रहावन†—स्त्री० वह स्थान जहाँ गाँव भर के सब पशु एकत्र होकर खडे हो।

रहित—वि० [सं०] बिना, बगैर।

रहिला—पु० चना।

रहीम—वि० [अ०] कृपालु। पु० रहीम खाँ खानखानाँ का उपनाम। ईश्वर।

रहूवा†—पुं० रोटियो पर रहनेवाला मनुष्य।

राँक†—वि० दे० 'रक'।

राँग—पुं० दे० 'राँगा'।

राँगा—पुं० एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम और रग मे सफेद होती है।

राँच(पु)†—अव्य० दे० 'रच'

राँचना(पु)†—अक० प्रेम करना, चाहना। रग पकडना। सक० रग चढाना।

राँजना†—अक० काजल लगाना। सक० रँगना।

राँटा†—पुं० टिटिहरी चिडिया।

राँड़—वि० स्त्री० विधवा। वेश्या।

राँड़ना†—सक० रोना, विलाप करना।

राँध—पुं० निकट। पडोस, बगल।

राँधना—सक० (भोजन आदि) पकाना।

राँधा—पुं० दे० 'राँध'।

राँपी—स्त्री० पतली खुरपी के आकार का मोचियों का एक औजार।

राँभना—अक० (गाय का) बोलना या चिल्लाना, बँबाना। रँभाना।

राग्रा(पु)†—पुं० दे० 'राजा'।
राइ—पुं० छोटा राजा, सरदार।
राई—पु० राजा। सर्वश्रेष्ठ। (पु)†स्त्री० राजापन। स्त्री० एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों। बहुत थोडी मात्रा या परिमाण। मु० ~नोन उतारना=नजर लगे हुए बच्चे पर उतारा करके राई और नमक को आग मे डालना। ~से पर्वत करना=थोडी बात को बहुत बडा देना।
राउ(पु)—पु० राजा, नरेश।
राउत—पु० राजवंश का कोई व्यक्ति। क्षत्रिय। वीर पुरुष।
राउर(पु)†—पु० अंतःपुर, रनिवास। वि० श्रीमान् का, आपका।
राउल(पु)†—पु० राजकुल मे उत्पन्न पुरुष। राजा।
राकस(पु)†—पु० राक्षस।
राका—स्त्री० [सं०] पूर्णिमा की रात, पूर्णमासी। ⊙पति=पु० चंद्रमा। **राकेश**—पुं० चंद्रमा।
राक्षस—पु० [सं०] दैत्य, असुर। कुबेर के धनकोश के रक्षक। कोई दुष्ट प्राणी। वि० एक प्रकार का विवाह जिसमे कन्या प्राप्त करने के लिये युद्ध करना पडता है।
राख—स्त्री० भस्म, खाक।
राखना(पु)†—सक० रक्षा करना। रखवाली करना। छिपाना, कपट करना। रोक रखना। आरोप करना, बताना। दे० 'रखना'।
राखी—स्त्री० रक्षाबंधन का डोरा, रक्षा। दे० 'राख'।
राग—पु० (सं०) प्रिय या अभिप्रेत वस्तु को प्राप्त करने की अभिलाषा। कष्ट, पीडा। ईर्ष्या, द्वेष। प्रीति। अंगराग। एक वर्णवृत्त। रंग, विशेषतः लाल रंग। पैर मे लगाने का आलता। किसी खास धुन मे बैठाए हुए स्वर जिनके उच्चारण से गान होता हो (भारतीय आचार्यों ने छह राग माने हैं)। मु० **अपना~ अलापना**=अपनी ही बात कहना। **रागिनी**—स्त्री० संगीत मे किसी राग की पत्नी या स्त्री (प्रत्येक राग की पाँच या छह रागिनियाँ मानी गई है)। **रागी**—पु० [सं०] अनुरागी, प्रेमी। छह मात्रावाले छंदों का नाम। वि० रँगा हुआ। लाल, सुर्ख। विषय वासना मे फँसा हुआ। रँगनेवाला। ‡(पु) स्त्री० [हिं०] रानी।
रागना(पु)†—अक० अनुरक्त होना। रंग जाना। निमग्न होना। (पु) सक० गाना, अलापना।
राघव—पु० [सं०] रघु के वंश मे उत्पन्न व्यक्ति। श्री रामचंद्र।
राचना(पु)—सक० रचना, बनाना। अक० रचा जाना, बनना। रँगा जाना। प्रेम करना। लीन होना, मग्न होना। प्रसन्न होना। शोभा देना। सोच या चिंता मे पडना।
राछ—पु० कारीगरों का औजार। जुलाहों के करघे मे एक औजार जिससे ताने का का तागा ऊपर नीचे उठता और गिरता है। बरात, जलूस।
राछस(पु)†—पु० दे० 'राक्षस'।
राज—पु० [फा०] रहस्य, भेद। पु० [हिं०] राज्य। हुकूमत, शासन। दे० 'राजगीर'। एक राजा द्वारा शासित देश, जनपद, राज्य। पूरा अधिकार, खूब चलती। अधिकारकाल। देश। पु० [सं०] समास मे 'राजन्' के लिये प्रयुक्त। राजा। श्रेष्ठता या प्रधानतासूचक वस्तु (समास मे)। ⊙कर=पु० वह कर जो प्रजा से राजा लेता है। ⊙कुँअर†=पु० [हिं०] दे० 'राजकुमार'। ⊙कुमार=पु० [सं०] राजा का पुत्र। ⊙कुल=पुं० दे० 'राजवंश'। ⊙गद्दी=स्त्री० (हिं०) राजसिंहासन। राज्याभिषेक, राज्यारोहण। राज्याधिकार। ⊙गिरि=मगध देश के पर्वत का नाम। दे० 'राजगृह'। ⊙गृह=पु० राजा का महल एक प्राचीन स्थान जो बिहार मे पटने के पास है, प्राचीन गिरिव्रज जहाँ मगध की राजधानी थी। ⊙तंत्र=पु० वह शासन

प्रणाली जिसमे राज्य का सारा प्रबंध एकमात्र राजा के हाथ मे रहता है। शासनव्यवस्था मे प्रजा या प्रजा के प्रतिधिनियो का कोई स्थान नही होता है। ⊙तरंगिणी = स्त्री० कल्हणकृत कश्मीर का एक प्रसिद्ध सस्कृत इतिहास ।⊙तिलक = पु० दे० 'राज्याभिषेक'। ⊙त्व = पु० राजा का भाव या कर्म। राजा का पद। ⊙दड = पु० वह दड जो राजा या शासन की ओर से दिया जाय। ⊙दंत = पु० बीच का वह दाँत जो और दाँतो से बडा और चौडा होता है। ⊙दूत = पु० वह दूत जो एक राज्य की ओर से किसी अन्य राज्य मे भेजा जाता है। ⊙द्रोह = पु० राजा या राज्य के प्रति द्रोह, बगावत। ⊙द्वार = पु० राजा की ड्योढी। न्यायालय। ⊙धर्म = पु० राजा का कर्तव्य या धर्म। ⊙धानी = स्त्री० किसी प्रदेश का वह नगर जहाँ उस देश के शासन का केंद्र हो। ⊙नीति = स्त्री० वह नीति जिससे राज्य और शासन का सचालन होता है। ⊙नीतिक = वि० राजनीति सबधी। ⊙नीतिज्ञ = पु० राजनीति का ज्ञाता। ⊙पखी = पुं० [हिं०] दे० 'राजहस'। ⊙पथ (पु) = पुं० [हिं०] दे० 'राजपथ'। ⊙पथ = पुं० बडी सडक, राजमार्ग। ⊙पाट = पुं० (हिं०) राजसिंहासन। शासन। राजा द्वारा शासित देश। ⊙पुत्र = पु० राजा का पुत्र, राजकुमार। बडे आम का एक भेद। बुध ग्रह। ⊙पुरुष = पुं० राज्य का कर्मचारी। ⊙पूत = पुं० [हिं०] दे० 'राजपुत्र'। राजपूताने मे रहनेवाले क्षत्रियो के कुछ विशिष्ट वश। ⊙प्रासाद = पुं० राजा का महल। ⊙बाडी = स्त्री० (हिं०) दे० 'राजप्रासाद'। ⊙भक्त = वि० जिसमे राजा या राज्य के प्रति भक्ति हो। ⊙भक्ति = स्त्री० राजा या राज्य के प्रति भक्ति या प्रेम। ⊙भवन = पु० राजा का महल। ⊙भोग = पु० एक प्रकार का महीन धान जो अगहन मे होता है। राजा का भोजन। ⊙मराल = पुं० राजहस। ⊙महल = पु० (हिं०) राजा का महल। एक पर्वत जो सथाल परगने के पास है। ⊙माता = स्त्री० किसी देश के राजा या शासक की माता। ⊙मार्ग = पुं० चौडी सडक, राजपथ। ⊙यक्ष्मा = पुं० यक्ष्मा, क्षयरोग, तपेदिक। ⊙योग = पुं० वह प्राचीन योग जिसका उपदेश पतजलि ने योग शास्त्र मे किया है। ग्रहो का ऐसा योग जिसके जन्म कुडली मे पडने से मनुष्य राजा होता है। ⊙राजेश्वर = पु० राजाओ का राजा, अधिराज। ⊙रोग = पुं० वह रोग जो असाध्य हो। क्षय रोग। ⊙लक्ष्मी = स्त्री० राजश्री, राजवैभव। राजा की शोभा। ⊙लोक (पु) = पुं० दे० 'राजप्रसाद'। ⊙वत = वि० (हिं०) राजा के कर्म से युक्त। ⊙वश = पुं० राजा का कुल या वश, राजकुल। ⊙श्री = स्त्री० राजलक्ष्मी, राजा का ऐश्वर्य। ⊙सत्ता = स्त्री० राजशक्ति। राज्य की सत्ता। वह शासन जिसमे सारी शक्ति राजा के ही हाथ मे हो, प्रजा के हाथ मे न हो। ⊙सत्तात्मक = वि० (वह शासन प्रणाली) जिसमे केवल राजा की सत्ता प्रधान हो, प्रजा सत्तात्मक का उलटा। ⊙सभा = स्त्री० राजा की सभा, दरबार। राजाओ की सभा। ⊙समाज = पुं० राजाओ का दरबार या समाज, राजमडली। ⊙सिंहासन = पु० राजा के बैठने का सिंहासन, राजगद्दी। ⊙सूय = एक यज्ञ जिसके करने का अधिकार केवल ऐसे राजा को होता है, जो सम्राट् पद का अधिकारी हो। ⊙स्थान = पु० दे० 'राजपूताना'। ⊙स्व = पु० दे० 'राजकर'। ⊙हस = पु० एक प्रकार का हस, सोना पक्षी। मु०—(दे० हिं० 'राज') ⊙काज = राज्य का प्रबध। ~ पर बैठना = राजसिंहासन पर बैठना। ~रजना = राज्य करना। बहुत सुख से रहना।

राजकीय—वि० [सं०] राजा या राज्य से सबंध रखनेवाला।

राजगीर—पु० मकान बनानेवाला कारीगर, राज ।
राजना(पु)—अक० उपस्थित होना, रहना। शोभित होना ।
राजन्य—पुं० [स०] क्षत्रिय । राजा ।
राजबहा—पुं० वह बडी नहर जिससे अनेक छोटी छोटी नहरे निकाली जाती है।
राजर्षि—पुं० [स०] वह ऋषि जो राजवश या क्षत्रिय कुल का हो ।
राजवार—पुं० दे० 'राजद्वार' ।
राजस—वि० [सं०] रजोगुण से उत्पन्न, रजोगुणी । पुं० आवेश, क्रोध । राज्याभिमान । राजसिक—वि० दे० 'राजस' ।
राजसिरी(पु)—स्त्री० दे० 'राजश्री' ।
राजसा—वि० [स०] राजा के योग्य, बहुमूल्य या भडकीला, राजाओ की सी शानवाला। वि० स्त्री० रजोगुणमयी ।
राजा—पुं० [सं०] किसी देश का सर्वाधिकार सपन्न प्रधान शासक (प्राय· वंशपरपरा से अधिकार प्राप्त), बादशाह । किसी प्रभु शक्ति के अधीन राज्य या रियासत का शासक। स्वामी, मालिक। एक उपाधि जो अँगरेजी सरकार भारत के बडे रईसो को प्रदान करती थी। राजाज्ञा—स्त्री० राजा या शासन की आज्ञा । राजाधिराज—पु० राजाओ का राजा, शाहंशाह।
राजावत्त—पुं० [सं०] लाजवर्द नामक उपरत्न । राजिंद(पु)—पुं० श्रेष्ठ राजा, महाराज। अतिप्रिय।
राजि, राजिक—स्त्री० [सं०] राई । श्रेणी, पक्ति। रेखा ।
राजित—वि० [सं०] शोभित, विराजा हुआ।
राजिव(पु)—पुं० कमल ।
राजी—स्त्री० [सं०] पक्ति, श्रेणी । वि० [अ०] कही हुई बात मानने को तैयार, सहमत । नीरोग । खुश । सुखी । †स्त्री० रजामदी । ⊙नामा = पुं० [फा०] वह लेख जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें ।
राजीव—पु० [सं०] कमल। पद्म । ⊙गण = पुं० एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १८ मात्राएँ होती हैं और नौ नौ मात्राओ पर विराम पडता है । इसमें तुकात मे गुरु लघु का विशेष नियम नही है।
राजुक—पुं० [सं०] मौर्य काल का एक राजकर्मचारी या सूबेदार।
राजेंद्र, राजेश्वर—पु० राजाओ का राजा, महाराज ।
राज्ञी—स्त्री० [सं०] रानी, राजमहिषी। सूर्य की पत्नी, सध्या।
राज्य—पु० [सं०] राजा का काम, शासन। किसी सगठित राजनीतिक शासनव्यवस्थावाला भूभाग। ऐसे भूभाग का एक मुख्य अग, प्रात, प्रदेश। ⊙तत्र = पु० राज्य की शासनप्रणाली। ⊙श्री = स्त्री० राज्य की शोभा और वैभव।
राज्याभिषेक—पु० [स०] राजसिंहासन पर बैठने के समय या राजसूय यज्ञ मे राजा का अभिषेक। राजगद्दी पर बैठने की रीति, राज्यारोहण।
राट्—पुं० [स०] राजा, बादशाह। श्रेष्ठ व्यक्ति, सरदार।
राष्ट्र(पु)—पु० राज्य। राजा।
राठौर—पुं० दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवश।
राड़—वि० नीच, निकम्मा। कायर।
राढ़—स्त्री० रार, झगडा। वि० निकम्मा। कायर।
राढ़ि—पु० [सं०] वग के उत्तरी भाग का नाम।
राणा—पु० राजा।
रात—वि० लाल, रक्ताबरा। स्त्री० [हिं०] सध्या से प्रातकाल तक का समय, निशा। मु०~⊙ दिन = पुं० सदा। ⊙ रातना(पु) = अक० लाल रग से रँगा जाना। अनुरक्त होना। रातड़ी, रातरी† —स्त्री० दे० 'रात'। राता(पु)—वि० लाल, सुर्ख। रँगा हुआ। अनुरागमय।
रातिचर(पु)—पुं० दे० 'राक्षस'।
रातिब—पुं० [अ०] पशुओ का भोजन।
राती—स्त्री० दे० 'रात्रि'।
रातुल—वि० सुर्ख, लाल।

रात्रि—स्त्री० [सं०] रात, निशा। ⊙**चारी** =पु० राक्षस। वि० रात के समय विचरनेवाला।

राधन—पु० पूजन। पु० [सं०] साधने की क्रिया, साधना,। मिलना, प्राप्ति। सतोष। साधन।

राधना(पु)†—सक० पूजा करना। सिद्ध करना काम निकालना।

राधा—स्त्री० [स०] वैशाख की पूर्णिमा। प्रीति। वृपभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी। एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, तगण मगण, यगण और एक गुरु मब मिलाकर १३ अक्षर होते है। बिजली। ⊙**रमण**=पु० श्रीकृष्ण। ⊙**वल्लभ** =पु० श्रीकृष्ण। ⊙**वल्लभी**=पु० वैष्णवो का एक प्रसिद्ध सप्रदाय।

राधिका—स्त्री० [स०] वृपभानु गोप की कन्या, राधा एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १३ और ९ के विश्राम से २२ मात्राएँ होती हैं, लावनी इसी छद में होती है।

रान—स्त्री० [फा०] जघा जाँघ।

राना—पु० दे० 'राणा'। (पु) अक० अनुरक्त होना।

रानी—स्त्री० राजा की स्त्री। स्वामिनी, मालकिन। प्रियतमा। ⊙**काजर**=पुं० एक प्रकार का धान।

राब—स्त्री० औंटाकर खूब गाढा किया हुआ गन्ने का रस।

राबड़ी—स्त्री० दे० 'रबड़ी'।

राम—पु० [सं०] परशुराम बलराम, बलदेव। सूर्यवशी महाराज दसरथ के पुत्र जो दस अवतारो मे से एक माने जाते हैं, रामचद्र। तीन की सख्या। ईश्वर। एक प्रकार का मात्रिक छद जिसमे ९ और ८ के विराम से प्रत्येक चरण मे १७ मात्राएँ होती है और अत मे यगण होता है। ⊙**केला**= पु० [हिं०] एक प्रकार का बढिया केला। एक प्रकार का बढिया आम। ⊙**गिरि** =पु० दे० 'रामटेक'। ⊙**गीती**=पु० एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण में ३६ मात्राएँ होती हैं। ⊙**जनी**=स्त्री० [हिं०] एक प्रकार की तोप। ⊙**जना** =पु० [हिं०] एक सकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्यावृत्ति करती हैं। ⊙**टेक** =पु० [हिं०] नागपुर जिले की एक पहाडी। ⊙**तरोई**=स्त्री० [हिं०] दे० 'भिंडी'। ⊙**ता**=स्त्री० राम का गुण, रामपन। ⊙**तारक**=पु० रामजी का मत्र जो इस प्रकार है—रा रामाय नम। ⊙**दल**=पुं० रामचद्र जी की बदरोवाली सेना। कोई बडी और प्रबल सेना जिसका मुकाबला करना कठिन हो। ⊙**दाना**=पु० [हिं०] मरसे या चौलाई की जाति का एक पौधा। ⊙**दास** पुं० हनुमान्। दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु थे। ⊙**दूत**=पुं० हनुमान् जी। ⊙**धनुष**=पुं० इद्रधनुष। ⊙**धाम**=पु० साकेत लोक। ⊙**नवमी** =स्त्री० चैत्र सुदी नवमी जिस दिन रामजी का जन्म हुआ था। ⊙**नामी** =पुं० [स० + हिं०] वह कपडा जिसपर 'राम राम' छपा रहता है। एक प्रकार का हार। ⊙**बाँस**=पुं० [हिं०] एक प्रकार का मोटा बाँस। केतकी या केवड़े की जाति का एक पौधा जिसके पत्तो के रेशे से रस्से बनते हैं। ⊙**बाण** =वि० तुरत प्रभाव दिखानेवाला (औषध)। अव्यर्थ, अचूक। ⊙**भोग**= पुं० एक प्रकार का आम। एक प्रकार का चावल। ⊙**मत्र**=पुं० दे० 'राम-तारक'। ⊙**रज**=स्त्री० एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक लगाते हैं। ⊙**रस**=पुं० नमक। ⊙**राज्य**=पु० अत्यत सुखदायक शासन। ⊙**रौला**= पु० [हिं०] व्यर्थ का हल्ला। ⊙**लीला** =स्त्री० राम के चरित्रो का अभिनय। एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे २४ मात्राएँ होती हैं और अत मे 'जगण' का होना आवश्यक होता है। ⊙**सनेही**=पु० (स० + हिं०) वैष्णवों का एक सप्रदाय। वि० राम से

स्नेह रखनेवाला, रामभक्त। ⊙सदर=स्त्री० एक प्रकार की नाव। ⊙सेतु=पु० रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह। मु० ~राम करना=प्रणाम करना। भगवान् का नाम जपना। ~~करके =बड़ी कठिनता से। ~~हो जाना =मर जाना। ~शरण होना=साधु होना, विरक्त होना। मर जाना।

रामा—स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री, रमणी। नदी। लक्ष्मी। सीता। रुक्मिणी। राधा। इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के मेल से बना हुआ एक उपजाति वृत्त, जिसके प्रथम दो चरण इंद्रवज्रा के अंतिम दो चरण उपेंद्रवज्रा के होते हैं। आर्या छंद का १७ वाँ भेद। आठ अक्षरों का एक वृत्त।

रामानंदी—वि० रामानंद के संप्रदाय का अनुयायी।

रामायण—पु० [सं०] रामचंद्र के चरित्र से संबंध रखनेवाला ग्रंथ। संस्कृत में रामायण नाम के बहुत से ग्रंथ हैं, जिनमें से वाल्मीकिकृत रामायण सबसे प्राचीन और अधिक प्रसिद्ध है। तुलसीकृत 'रामचरितमानस' नामक ग्रंथ। रामायणी—वि० रामायण का। पु० वह जो रामायण की कथा कहता हो।

रामावत—पु० [सं०] वैष्णव आचार्य रामानंद का चलाया हुआ एक संप्रदाय।

रामेश्वर—पु० [सं०] दक्षिण भारत के समुद्रतट का शिवलिंग।

राय—स्त्री० [फा०] संमति, सलाह। पु० [हिं०] राजा। सरदार, सामंत। भाट, बंदीजन। वि० बड़ा। बढ़िया। ⊙करौंदा=पु० एक प्रकार का बड़ा करौंदा। ⊙बहादुर=पु० [फा०] एक समान की उपाधि जो भारत में अँग्रेजी सरकार की ओर से राजभक्त रईसों आदि को दी जाती थी। ⊙भोग=पु० दे० 'राजभोग'। ⊙रासि(पु)=स्त्री० शाही खजाना। ⊙साहब=पु० [अ०] एक समान की उपाधि जो भारत में अँग्रेजी सरकार की ओर से राजभक्त रईसों को दी जाती थी।

रायज—वि० [अ०] जिसका रवाज हो, प्रचलित।

रायता—पु० नमकीन साग या बुँदिया आदि पड़ा हुआ दही।

रायमुनी—स्त्री० लाल नामक पक्षी की मादा, सदिया।

रायल्टी—स्त्री० [अँ०] वह धन जो किसी आविष्कारक या ग्रंथकर्ता आदि को उसके आविष्कार या कृति से होनेवाले लाभ के अंश के रूप में बराबर मिलता रहता है।

रासा—पु० दे० 'रासो'।

रार—स्त्री० हुज्जत, तकरार।

राल—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का बड़ा पेड़। इसका निर्यास जो 'राल' नाम से प्रसिद्ध है, धूप। स्त्री० [हिं०] पतला लसदार थूक, लार। मु० ~गिरना, चूना या टपकना=किसी पदार्थ को देखकर उसे पाने की बहुत इच्छा होना।

राव—पु० दे० 'राय'। ⊙राना=पु० राव और राणा के उपाधिधारी छोटे बड़े राजा।

रावचाव—पु० लाड प्यार, दुलार।

रावट(पु)—पु० राजमहल।

रावटी—स्त्री० कपड़े का बना हुआ एक प्रकार का छोटा घर। या डेरा, छोलदारी। छोटा घर बारहदरी।

रावत—पु० छोटा राजा। बहादुर। सामंत सरदार। एक जाति।

रावन(पु)—वि० रमण करनेवाला। दे० 'रावण'। ⊙गढ(पु)=पु० दे० 'लंका'।

रावना(पु)—सक० रुलाना।

रावर(पु)—पु० रनिवास, राजमहल। वि० आपका।

रावल—[फा०] अंतःपुर, रनिवास। राजा। राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि। प्रधान, सरदार।

राशि—स्त्री० [सं०] ढेर, पुंज। किसी का उत्तराधिकार। क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले विशिष्ट तारासमूह जो १२ हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन। ⊙चक्र=पु० मेष, वृष, मिथुन आदि

राशियो का चक्र या मडल, भचक्र। ⊙नाम = पु० किसी व्यक्ति का वह नाम जो उसके जन्मसमय की राशि के अनुसार और पुकारने के नाम से भिन्न होता है।

राष्ट्र--पु० [स०] राज्य। देश, मुल्क। प्रजा। एक देश या राज्य मे बसनेवाला जनसमुदाय। ⊙**कूट** = पु० दे० 'राठौर'। ⊙**तत्र** = पु० राज्य का शासन करने की प्रणाली। ⊙**पति** = पु० आधुनिक प्रजातात्रिक शासन प्रणाली मे वह सर्वप्रधान शासक जो शासन करने के लिय चुना जाता है। भारतीय राष्ट्रीय महासभा (काग्रेस) का सभापति। ⊙**वाद** = पु० वह सिद्धात जिसमे अपने राष्ट्र के हितो को सबसे अधिक प्रधानता दी जाती है। **राष्ट्रीय**--वि० राष्ट्रसबधी, राष्ट्र का, विशेषत अपने राष्ट्र या देश का। **राष्ट्रीयता**--स्त्री० किसी राष्ट्र के विशेष गुण। अपने देश या राष्ट्र का उत्कट प्रेम।

रास--स्त्री० ढेर, पुज। क्रातिवृत्त मे पडनेवाले विशिष्ट तारासमूह जो १२ हैं--मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुभ और मीन। एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे ८+८+६ के विराम से २२ मात्राएँ और अत मे सगण होता है। जोड। चौपायो का झुड। गोद, दत्तक। व्याज। एक प्रकार का धान जो अगहन मे तैयार होता है। वि० अनुकूल, ठीक। स्त्री० [अ०] लगाम, बागडोर। स्त्री० [सं०] गोपो की प्राचीन काल की एक क्रीडा जिसमे वे सब घेरा बाँधकर नाचते थे। एक प्रकार का नाटक जिसमे श्रीकृष्ण की इस क्रीडा का अभिनय होता है। ⊙**धारी** = पु० वह व्यक्ति या समाज जो श्रीकृष्ण की रासक्रीडा अथवा अन्य लीलाओ का अभिनय करता है। ⊙**मडल** = पु० रासक्रीडा करने अथवा अन्य लीलाओ का समूह या मडली रासधारियो का अभिनय। ⊙**मंडली** = स्त्री० रासधारियो का समाज या टोली। ⊙**लीला** = स्त्री० रासधारियो का कृष्णलीला सबधी अभिनय। ⊙**विलास** = पु० रासक्रीडा। आनद मगल।

रासक--पु० [सं०] हास्य रस के नाटक का एक भेद जो केवल एक अक का होता है।

रासना--पु० [स०] दे० 'रास्ना'।

रासभ--पु० [सं०] गधा। खच्चर।

रासायनिक--वि० [सं०] रसायनशास्त्र सबधी। रसायनशास्त्र का ज्ञाता।

रासि--स्त्री० दे० 'राशि'।

रासु(पु)†--वि० सीधा, सरल। ठीक।

रासो--पु० पुरानी हिंदी का काव्य जिसमे किसी राजा के चरित, प्रेम और युद्ध आदि का वर्णन हो।

रास्त--वि० [फा०] सीधा, सरल। दुरुस्त, ठीक, उचित।

रास्ता--पु० [फा०] मार्ग, राह। प्रथा, चाल। उपाय। ~**देखना** = प्रतीक्षा करना। ~**पकड़ना** = चल देना। ~**बताना** = चलता करना, टालना, तरकीब बताना।

रास्ना--स्त्री० [सं०] गधनाकुली नामक कद, घोडरासन।

राह--पु० दे० 'रोहू'। स्त्री० [फा०] मार्ग, रास्ता। प्रथा, चाल। नियम कायदा। ⊙**खर्च** = पु० रास्ते मे होनेवाला खर्च। ⊙**गीर** = पु० मुसाफिर, पथिक। ⊙**चलता** = पु० [हिं] पथिक, राहगीर। अजनबी, गैर। ⊙**चौरगी** = स्त्री० [हिं०] दे० चौमुहानी'। ⊙**जन** = पु० डाकू, लुटेरा। ⊙**दारी** = स्त्री० सडक का कर। चुगी, महसूल। **परवाना राहदारी** = वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी मार्ग से होकर जाने का अधिकार प्राप्त होता है। मु०~**देखना या ताकना** = प्रतीक्षा करना। ~**पड़ना** = डाका पडना। ~**लगना** = रास्ते से जाना। अपने काम से काम रखना।

राहित्य--पु० [सं०] 'रहित' का भाव, अभाव।

राहना†(पु)--अक्र० दे० 'रहना'।

राहिन—वि० (अ०) रेहन या बधक रखनेवाला।

राही—पु० (फा०) मुसाफिर, यात्री।

राहु—पु० रोहू मछली। पु० [सं०] विप्रचित्ति और सिंहिका का पुत्र जो चंद्रमा और सूर्य को ग्रसता है। पुराणानुसार नौ ग्रहो मे से एक।

रिंगन—स्त्री० घुटने के बल चलने की क्रिया, रेंगना।

रिंगनाⓅ—अक० दे० 'रेंगना'।

रिंगानाⓅ—सक० रेंगने की क्रिया कराना। घुमाना फिराना, चलाना (बच्चो के लिये)।

रिंद—पु० [फा०] धार्मिक बधनो को न माननेवाला पुरुष। मनमौजी आदमी। वि० मतवाला। मस्त।

रिंदा†—वि० निरकुश, उद्दड।

रिआयत—स्त्री० (अ०) कोमल और दयापूर्ण व्यवहार। कमी। छूट। खयाल, ध्यान। **रिआयती**—वि० बिना मूल्य अथवा कम मूल्य मे प्राप्त। विशेष छूट अथवा सुविधा सबधी।

रिआया—स्त्री० (अ०) प्रजा।

रिकवँच, रिकवँछ—स्त्री० एक भोज्य पदार्थ जो उर्द की पीठी और अरुई के पत्तो से बनता है।

रिकाब—स्त्री० दे० 'रिकाव'।

रिक्त—वि० [सं०] खाली, निर्धन। **रिक्ति**—स्त्री० रिक्त होने का भाव, खालीपन। खाली जगह।

रिक्शा—पु० एक प्रकार की सवारी जिसे आदमी चलाते हैं।

रिक्ष—पु० दे० 'ऋक्ष'।

रिखभⓅ†—पु० दे० 'ऋषभ'।

रिगⓅ—पु० दे० ऋक्।

रिचा—स्त्री० दे० 'ऋचा'।

रिजु—वि० दे० 'ऋजु'।

रिझकवार, रिझवार†—पु० किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला। रूप पर मोहित होनेवाला। अनुराग करनेवाला, प्रेमी। गुणग्राहक। **रिझवारि**†—वि० स्त्री० रिझानेवाली। **रिझाना**—सक० (अक० रीझना) किसी को अपने ऊपर प्रसन्न कर लेना। अपना प्रेमी बनाना, अनुरक्त करना। **रिझायल**Ⓟ†—वि० रिझानेवाला। **रिझाव**—पु० प्रसन्न होने या रिझाने का भाव।

रिझावनाⓅ†—सक० दे० 'रिझाना'।

रिझौने—वि० रिझनेवाला।

रिढना†—अक० घसीटते हुए चलना।

रित, रितु—स्त्री० दे० 'ऋतु'।

रितवनाⓅ—सक० खाली करना।

रिताना—सक० रिक्त करना। अक० खाली होना, रिक्त होना।

रिद्धि—स्त्री० दे० 'ऋद्धि'।

रिन—Ⓟ—पु० दे० 'ऋण'।

रिनिआँ, रिनी†—वि० जिसने ऋण लिया हो।

रिपु—पु० शत्रु, दुश्मन।

रिपोर्ट—पु० (अं०) किसी घटना की सूचना। कार्य विवरण। **रिपोर्टर**—पु० समाचारपत्र का सवाददाता।

रिमझिम—स्त्री० वर्षा की छोटी छोटी बूँदों का लगातार गिरना। क्रि० वि० वर्षा की छोटी छोटी बूँदो की भाँति।

रियायत—पु० दे० 'रिआयत'।

रियासत—स्त्री० (अ०) राज्य, अमलदारी। अमीरी, रईसी। वैभव।

रिरⓅ†—स्त्री० हठ, जिद।

रिरना—अक० गिडगिडाना।

रिरकनाⓅ—अक० सरकना, खिसकना। 'प्यौ लखि सुदरि सेज ने यो थिरकी थहरानी' (जगद्विनोद, ४११)।

रिरिहा†—वि० बहुत गिडगिडाकर और दीनतापूर्वक भीख माँगनेवाला।

रिलनाⓅ†—अक० पैठना, घुसना। मिल जाना। **रिलना मिलना**=अच्छी तरह मिलना। मेल मिलाप रखना।

रिलमिल—स्त्री० मेल जोल, मेल मिलाप।

रिवाज—पु० (अ०) प्रथा, रस्म।

रिश्ता—पु० (फा०) नाता, सबध।

रिश्तेदार—पु० संबधी, नातेदार।

रिश्वत—स्त्री० [अ०] घूस, उत्कोच। ⊙खोर = वि० [फा०] रिश्वत लेनेवाला।
रिश्वती—वि० दे० 'रिश्वतखोर'।
रिष्ट(पु)†—वि० प्रसन्न। मोटा ताजा।
रिष्यमूक—पु० दक्षिण भारत का एक पर्वत।
रिस—स्त्री० क्रोध, गुस्सा। ⊙वत=(पु) वि० क्रोधी। ⊙हाया† = वि० क्रुद्ध। मु०~मारना = क्रोध को रोकना।
रिसना†—सक० छन छनकर बाहर निकल जाना, रसना।
रिसहा†—वि० क्रोधी।
रिसाना(पु)—अक० क्रुद्ध होना। सक० किसी पर क्रुद्ध होना, बिगडना।
रिसानी(पु)—स्त्री० दे० 'रिस'।
रिसाल—पु० राज्यकर।
रिसालदार—पु० (फा०) घुडसवार, सेना का एक अफसर।
रिसाला—पु० [फा०] घुडसवारो की सेना।
रिसि(पु)†—स्त्री० दे० 'रिस'।
रिसिआना, रिसियाना†—अक० क्रुद्ध होना सक० किसी पर क्रुद्ध होना, बिगडना।
रिसिक(पु)—स्त्री० तलवार।
रिसौंहाँ—वि० थोडा नाराज। क्रोध से भरा।
रिहल—स्त्री० [अ०] काठ की चौकी जिसपर रखकर पुस्तक पढते हैं।
रिहा—वि० [फा०] बधन या बाधा आदि से मुक्त, छूटा हुआ। रिहाना(पु)—सक० मुक्त कराना, छुडाना। रिहाई—स्त्री० छुटकारा, मुक्ति।
रींधना—सक० दे० 'राँधना'।
री—अव्य० सखियो के लिये सबोधन, अरी, एरी।
रीछ—पुं० भालू। ⊙राज(पु) = पुं० जामवत।
रीझ—स्त्री० किसी की किसी बात पर प्रसन्नता। मुग्ध होने का भाव। रीझना—अक० किसी बात पर प्रसन्न होना। मोहित होना।
रीठ(पु)—स्त्री० तलवार। युद्ध (डिं०)। रोवि० अशुभ, खराब।
ठा—पुं० एक बडा जगली वृक्ष। इस वृक्ष का फल जो बेर के बराबर होता है।
रीडर—स्त्री० [अँ०] किसी भाषा की शिक्षा देनेवाली आरभिक पुस्तक। पुं० किसी अधिकारी या न्यायालय का पेशकार। विश्वविद्यालय के शिक्षकों की एक कोटि।
रीढ—स्त्री० पीठ के बीचोबीच की लबी खडी हड्डी जिसमे पसलियाँ मिली रहती है, मेरुदड।
रीत—स्त्री० दे० 'रीति'।
रीतना(पु)†—अक० खाली होना, रिक्त होना। सक० खाली करना। रीता—वि० खाली।
रीति—स्त्री० [स०] ढग, प्रकार। रस्म, रिवाज। नियम। साहित्य मे किसी विषय का वर्णन करने मे पदो की वह योजना जिससे ओज, प्रसाद या माधुर्य आता है। ⊙काल = पुं० हिंदी साहित्य के इतिहास का एक विशेष कालखड जो लगभग सवत् १७०० वि० से १९०० तक माना जाता है।
रीषमूक(पु)—पु० दे० 'ऋष्यमूक'।
रीस—स्त्री० दे० 'रिस'। डाह। स्पर्धा, बराबरी। ⊙ना = अक० क्रुद्ध होना।
रुज—पु० एक प्रकार का बाजा।
रुड—पु० [सं०] बिना सिर का धड, कबध। वह शरीर जिसके हाथपैर कटे हो।
रुधना—अक० मार्ग न मिलने के कारण अटकना, रुकना। फँस जाना। किसी काम मे लगना। घेरा जाना।
रु(पु)—अव्य० और।
रुआ(पु)†—पु० रोम, रोआँ।
रुआना(पु)†—सक० दे० 'रुलाना'।
रुआब—पु० दे० 'रोब'।
रुई—स्त्री० कपास के कोष के अदर का घूआ जिसे बट या कातकर सूत बनाते अथवा गद्दे, रजाई या जाडे के पहनने के कपडो मे भरते है। बीजो के ऊपर का रोआँ।
रुकना—अक० आगे न बढ सकना, अटकना। किसी कार्य का बीच मे ही बद हो जाना। किसी चलते क्रम का बद होना।
रुकाव—पु० दे० 'रुकावट'। रुकावट—स्त्री० रुकने की क्रिया या भाव, रोक। बाधा, विघ्न।
रुकुम(पु)—पुं० दे० 'रुक्म'।

रुक्का—पु० छोटा पत्र या चिट्ठी। पुरजा, परचा। वह कागज जो ऋण देनेवाला ऋण लेनेवालों से ऋण के प्रमाणस्वरूप लिखवाता है।

रुख(पु)—पु० पेड, वृक्ष।

रुक्म—पु० [सं०] स्वर्ण, सोना। धतूरा। रुक्मिणी के एक भाई का नाम। ⊙वती =स्त्री० एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, मगण, सगण और अंत्य गुरु, सब मिलाकर १० वर्ण हों, रूपवती, चपकमाला।

रुक्ष—वि० जिसमें चिकनाहट न हो, रूखा। ऊबड खाबड, खुरदरा। नीरस। सूखा।

रुख—पु० [फा०] गाल। मुँह। आकृति, चेष्टा। मन की इच्छा जो मुख की आकृति में प्रकट हो। कृपादृष्टि। सामने या आगे का भाग। शतरज का एक मोहरा। क्रि० वि० तरफ, ओर। सामने।

रुखसत—स्त्री० [अ०] आज्ञा, परवानगी। प्रस्थान। काम से छुट्टी, अवकाश। वि० जो कहीं से चल पडा हो।

रुखसताना—पु० [फा०] वह धन जो विदा होने के समय दिया जाय, विदाई।

रुखसती—स्त्री० विदाई, विशेषत दुलहिन की विदाई।

रुखसार—पु० [फा०] कपोल, गाल।

रुखाई—स्त्री० रुखापन। खुश्की। शील का त्याग बेमुरौवती।

रुखाना(पु)†—अक० रूखा होना। नीरस होना।

रुखानी—स्त्री० बढइयों का लोहे का एक औजार।

रुखावट—स्त्री० दे० 'रुखाई'।

रुखिता(पु)—स्त्री० मानवती नायिका।

रुखौहाँ—वि० रुखाई लिए हुए, रुखा सा।

रुग्न—वि० रुग्ण, बीमार।

रुच(पु)†—स्त्री० दे० 'रुचि'।

रुचना—अक० रुचि के अनुकूल होना, अच्छा लगना। मु०—रुच रुच=बहुत रुचि से, चुन चुनकर।

रुचि—स्त्री० [सं०] प्रवृत्ति, तबीयत। अनुराग, चाह। किरण। शोभा। भूख। स्वाद। एक अप्सरा का नाम। वि० फबता हुआ, योग्य। ⊙कर=वि० रुचि उत्पन्न करनेवाला, दिलपसद। ⊙कारक =वि० दे० 'रुचिकर'। ⊙ता=स्त्री० सौंदर्य। रोचकता। अनुराग। ⊙मान =वि० (हिं०) मनोहर, सुदर। ⊙वर्धक—वि० रुचि उत्पन्न करनेवाला। भूख बढानेवाला।

रुचिर—वि० सुदर मीठा। ⊙वृत्ति= अस्त्र का एक प्रकार का सहार।

रुचिरा—स्त्री० [सं०] १६ मात्राओं का एक छद जिसके चौकलों में जगण का निषेध है। वह छद जिसके विषम चरणों में १६ और सम में १४ मात्राएँ हों। इसके अत में दो गुरु होते हैं। १३ वर्णों का वह छद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से जगण और अंत्य गुरु हो।

रुचिराई(पु)†—स्त्री० सुदरता, मनोहरता।

रुच्छ(पु)—वि० दे० 'रूखा'। पु० दे० 'रूख'।

रुछ्द्द(पु)—वि० क्रुद्ध। "...कपि रुछ्द्द ह्वै उचारी इमि" (जगद्विनोद ६८३)।

रुज—पु० [सं०] भग, भाँग। वेदना, कष्ट। घाव।

रुजाली—स्त्री० कष्टों का समूह।

रुजी—वि० अस्वस्थ, बीमार।

रुजू—वि० जिसकी तबीयत किसी ओर लगी हो, प्रवृत्त।

रुझना(पु)†—अक० घाव आदि का भरना या पूजना। दे० 'उलझना'।

रुझान—पु० [अ०] प्रवृत्ति, झुकाव।

रुठना—पु० क्रोध, गुस्सा।

रुठाना—सक० [अक० रूठना] नाराज करना।

रुणित—वि० [सं०] झनकारता या बजता हुआ।

रुत—स्त्री० दे० 'ऋतु'। पुं० [सं०] पक्षियों का शब्द। शब्द, ध्वनि। क्रांति चमक।

रुतबा—पु० [अ०] ओहदा, पद। इज्जत।

रुदन—पु० रोना, क्रदन।

रुदराछ(पु)†—पुं० दे० 'रुद्राक्ष'।

रुदित—वि० (सं०) जो रो रहा हो ।
रुद्ध—वि० (सं०) घेरा हुआ, वेष्टित। मुँदा हुआ, बंद। जिसकी गति रोक ली गई हो। ⊙कंठ = वि० जो प्रेम आदि के कारण बोलने में असमर्थ हो गया हो।

रुद्र—पुं० [सं०] एक प्रकार के गणदेवता जो कुल मिलाकर ११ हैं। ११ की संख्या। शिव का एक रूप। रौद्र रस। वि० भयंकर डरावना। ⊙गण = पुं० पुराणानुसार शिव के पारिषद। ⊙जटा = स्त्री० एक प्रकार का क्षुप। ⊙यामल = पुं० तांत्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें भैरव और भैरवी का संवाद है। ⊙लोक = पुं० वह लोक जिसमें शिव का निवास माना जाता है। ⊙विंशति = स्त्री० प्रभव आदि साठ संवत्सरों या वर्षों में से अंतिम २० वर्षों का समूह, रुद्रबीसी। रुद्राक्ष—पुं० एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष, इस वृक्ष का गोल बीज प्राय शैव लोग इनकी मालाएँ पहनते हैं। रुद्राणी—स्त्री० पार्वती, भवानी। रुद्रजटा नाम की लता।

रुद्रक†—पुं० रुद्राक्ष।
रुद्री—स्त्री० वेद के रुद्रानुवाक् या अघमर्षण सूक्त की ११ आवृत्तियाँ।

रुधिर—पुं० (सं०) रक्त, लहू, रुधिराशि—वि० (सं०) लहू पीनेवाला।

रुनझुन—स्त्री० नूपुर, किंकणी आदि का शब्द, झनकार।

रुनाई(पु)—स्त्री० अरुणता, लाली।
रुनित(पु)—वि० बजता हुआ।
रुनुक झुनुक—स्त्री० दे० 'रुनझुन'।
रुपना—अक० (सक० रोपना) रोपा जाना जमीन में गड़ा या लगाया जाना। डटना अड़ना, ठनना।

रुपमनी(पु)—स्त्री० सुंदरी स्त्री।
रुपया—पुं० एक भारतीय सिक्का जो पुराने ६४ और नए १०० पैसे का अथवा पौंड (स्टर्लिंग) का करीब साढ़े १३॥ वाँ हिस्सा माना जाता है। धन, संपत्ति।

रुपहला—वि० चाँदी के रंग का, चाँदी का-सा।
रुबाई—स्त्री० [अ०] चार चरणों का पद्य जिसके पहले, दूसरे और चौथे चरणांत के तुक समान हों, चौबोला।
रुमंच(पु)—पुं० दे० 'रोमांच' रुमांचित(पु) वि० दे० 'रोमांचित'।
रुमाल—पुं० कपड़े का हाथ मुँह पोंछने का चौकोर टुकड़ा। दे० 'रूमाल'। रुमाली—स्त्री० छोटा रूमाल।
रुमावली(पु)—स्त्री० दे० 'रोमावली'।
रुराई(पु)—स्त्री० सुंदरता।
रुरुआ—पुं० बड़ी जाति का उल्लू।
रुरुक्ष—वि० [सं०] रूखा, रूक्ष।
रुलना†—स्त्री० इधर उधर मारा मारा फिरना।
रुलाना—सक० [रोना का प्रे०] दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना। इधर उधर फिराना खराब करना।
रुलाई—स्त्री० रोने की क्रिया या भाव। रोने की प्रवृत्ति।
रुवा—पुं० सेमल के फूल का धूआ, भूआ।
रुष—वि० [सं०] क्रोध गुस्सा। पु० [हिं०] दे० 'रुख' रुष्ट—वि० [सं०] क्रुद्ध, नाराज, कुपित।
रुसना—(पु)—अक० दे० रूसना'।
रुसवा—वि० [फा०] जिसकी बहुत बदनामी हो, निंदित।
रुसित(पु)—वि० रुष्ट, नाराज।
रुसूम—पु० दे० 'रसूम'।
रुस्तम—पु० [अ०] फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान। भारी वीर। मु० छिपा ~ = वह जो देखने में सीधा सादा पर वास्तव में बहुत वीर हो।
रुहठि(पु)†—स्त्री० रूठने की क्रिया या भाव।
रुहिर(पु)—पु० दे० 'रुधिर'।
रुहेलखंड—पुं० अवध के उत्तर पश्चिम पड़ने वाला एक प्रदेश।
रुहेला—पुं० पठानों की एक जाति जो प्रायः रुहेलखंड में बसी है।
रूँध—वि० रुका हुआ, अवरुद्ध।

रूँधना—सक० कँटीले झाड आदि से घेरना, बाड़ लगाना। चारो ओर से घेरना।
रू—पु० [फा०] मुँह, चेहरा। द्वार, कारण। आगा, सामना।
रूई—स्त्री० दे० 'रुई'।
रूख—पुं० पेड, वृक्ष। वि० दे० 'रूखा'।
रूखड़ा†—पुं० पेड, वृक्ष।
रूखना(पु)—अक० रूठना।
रूखा१—वि० जो चिकना न हो। जिसमे घी, तेल आदि चिकने पदार्थ न पडे हो। जो खाने मे स्वादिष्ट न हो। सूखा, नीरस। खुरदार। उदासीन। कठोर। विरक्त। मु०~पड़ना या होना = बेमुरौवती करना, क्रुद्ध होना। ⊙सूखा = जिसमे चिकना और चरपरा पदाथ न हो, बहुत साधारण भोजन।
रूचना(पु)—सक० दे० 'रुचना'।
रूझना(पु)—अक० दे० 'उलझना'।
रूठ, रूठन—स्त्री० ठहरने की क्रिया या भाव, नाराजगी। रूठना—अक० नाराज होना, मान करना।
रूड़, रूड़ा—वि० श्रेष्ठ, उत्तम।
रूढ़—वि० [सं०] चढा हुआ। उत्पन्न। प्रसिद्ध गँवार, उजड्ड। कडा। अकेला। अविभाज्य। परपरागत,। पुं० वह शब्द या अर्थ जो व्युत्पत्ति से भिन्न हो, यौगिक का उलटा, रूढि। ⊙यौवना = स्त्री० दे० आरूढयौवना'। रूढ़ा—स्त्री० वह लक्षण जो किसी रूढ अर्थ के कारण हो। व्युत्पत्ति अर्थ के आधार पर नही। रूढि—स्त्री० चढाई। उभार, उत्पत्ति। ख्याति। प्रथा, चाल। विचार, निश्चय। रूढ शब्द की शक्ति जिससे वह यौगिक न होने पर भी अपने अर्थ का बोध कराता है।
रूनी—पुं० घोडो की एक जाति।
रूप—पुं० चाँदी। पुं० [सं०] शकल, सूरत। स्वभाव, प्रकृति। सौदर्य। शरीर। वेष। दशा, अवस्था। समान, तुल्य। चिह्न, लक्षण। रूपक। वि० खूबसूरत। ⊙करण = पुं० एक प्रकार का घोडा। ⊙कार = पुं० मूर्ति बनाने वाला। ⊙कांता = स्त्री० १७ अक्षरो का एक वर्णवृत्त। ⊙गर्विता स्त्री० वह गर्विता नायिका जिसे अपने रूप का अभिमान हो। ⊙घनाक्षरी = स्त्री० ३२ वर्णो का एक प्रकार का दडक छद जिसके अत मे गुरु लघु हो। ⊙जीविनी = स्त्री० वेश्या। ⊙जीवी = पुं० बहुरूपिया। ⊙धर = वि० रूपधारण करनेवाला, रूपधारी। ⊙धारी = पुं० दे० 'रूपधर'। ⊙मजरी = स्त्री० एक प्रकार का फूल। एक प्रकार का धान। ⊙मनी (पु) = वि० [हि०] रूपवती। ⊙मय = = वि० [हि०] अतिसुदर। ⊙मान = [हि०] दे० 'रूपवान्'। ⊙माला = स्त्री० २४ मात्राओ का एक छद जिसमे १४ वी मात्रा पर यति हो और अत मे दीर्घ ह्रस्व का क्रम रहे, मदन छद। ⊙माली - स्त्री० नौ दीर्घ वर्णो का एक छद। ⊙रूपक = पु० रूपकालकार के 'सावयव रूपक' भेद का एक नाम। ⊙रेखा = स्त्री० आकार, ढाँचा। चिह्न पता। ⊙वत = वि० [हि०] रूपवान्, सुदर। ⊙वती = स्त्री० गौरी नामक छद। चपकमाला वृत्त का एक नाम। वि० स्त्री० सुदरी। ⊙वान् = वि० सुदर, रूपवाला। ⊙वान = वि० [हि०] दे० 'रूपवान्'। मु०~भरना = भेष बनाना। ~लेना = रूप धारण करना। ~हरना = लज्जित करना।
रूपक—पु० [सं०] मूर्ति। वह काव्य जिसका अभिनय किया जाता है, दृश्यकाव्य। इसके प्रधान दस भेद हैं—नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अक, वीथी और प्रहसन। एक अर्थालकार जिसमे उपमेय मे उपमान के साधर्म्य का आरोप करके उसका वर्णन उपमान के रूप से या अभेद रूप से किया जाता है रूपया।
रूपकातिशयोक्ति—स्त्री० [सं०] वह अतिशयोक्ति जिसमे केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेयो का अर्थ समझते हैं।
रूपली—स्त्री० [सं०] सुदरी स्त्री। वि० सुदरी।

रूपा—पु० चाँदी। घटिया चाँदी। स्वच्छ सफेद रग का घोडा।

रूपित—पुं० [स०] वह उपन्यास जिसमे ज्ञान, वैराग्यादि पात्र हो।

रूपी—वि० [सं०] रूपवाला, रूपधारी। तुल्य, सदृश।

रूप्यक—पुं० [स०] रुपया।

रूबकार—पु० [फा०] सामने उपस्थित करने का भाव, पेशी। अदालत का हुक्म। आज्ञापत्र।

रूबरू—क्रि० वि० [फा०] सम्मुख, सामने।

रूम—पु० [फा०] टर्की या तुर्की देश का एक नाम।

रूमना(पु)—सक० झूमना। रूम झूमकर = उमड घुमडकर, मस्ती से।

रूमाल—पु० [फा०] कपडे का वह चौकोर टुकडा जिसमे हाथ मुँह पोछते है। चौकोना शाल या दुपट्टा।

रूमाली—दे० 'रुमाली'।

रूमी—वि० [फा०]। रूमदेश सबधी, रूम का, रूमदेश का निवासी।

रूरना—अक० चिल्लाना।

रूरा—वि० श्रेष्ठ, उत्तम। सुदर। बहुत बडा।

रूल—पुं० [अ०] नियम, कायदा। वह लकडी जिसकी सहायता से सीधी लकीरें खीची जाती है। सीधी खीची हुई लकीर।

रूलना—सक० दबाना।

रूलर—पुं० [अं०] शासक, राजा। सीधी लकीर खीचने की पट्टी या डडा।

रूप—पु० दे० 'रूख'।

रूषीकेश(पु)—इद्रियों का स्वामी, सयमी।

रूस—पु० योरोप एशिया के उत्तर मे स्थित एक बडा देश।

रूसना—अक० दे० 'रूठना'।

रूसा—पु० अडूसा, अरूसा। एक सुगधित घास जिससे तेल निकला जाता है।

रूसी—वि० रूस देश का निवासी। रूस देश का। स्त्री० रूस की भाषा। सिर के चमडे पर जमा हुआ भूसी के समान छिलका।

रूह—स्त्री० [अ०] आत्मा, जीवात्मा। सत्त, सार। इत्र का एक भेद। रूहानी—वि० रूह या आत्मा सबधी। आध्यात्मिक।

रूहना(पु)—अक० चढना, उमडना। सक० आवेष्टित करना, घेरना।

रेंकना—अक० गधे का बोलना। बुरे ढग से बोलना।

रेंगना—अक० चीटी आदि कीडो का चलना। धीरे धीरे चलना।

रेंट—पु० नाक का मल।

रेंड—पु० एक पौधा जिसके बीजो से तेल निकलता है। रेंडी—स्त्री० रेंड के बीज।

रे—अव्य [स०] एक तुच्छतासूचक सबोधन। पुं० [हि०] ऋषभ स्वर।

रेख—स्त्री० लडकी। निशान। गिनती, शुमार नई निकलती हुई मूछें। मु० ~काढना, खीचना = लकीर बनाना। (कहने मे) जोर देना प्रतिज्ञा करना। ~भीजना या भीनना = निकलती हुई मूँछो का दिखाई पडना।

रेखता—पु० [फा०] अरबी, फारसी, तुरकी आदि के शब्दो से मिश्रित प्रारभिक उर्दू के पद्य।

रेखना(पु)—सक० रेखा खीचना। खरोच डालना।

रेखाकरण—पु० [सं०] चित्र का खाका बनाने के लिये रेखाएँ अंकित करना। दे० 'रेखाचित्र'।

रेखा—स्त्री० [सं०] सूत के आकार का लबा चिह्न, लकीर। किसी वस्तु का सूचक चिह्न। गणना, शुमार। आकृति, सूरत। हथेली, तलवे आदि मे पडी हुई लकीरें जिनसे सामुद्रिक मे शुभाशुभ का निर्णय होता है। ⊙कर्म = पुं० दे० 'रेखाकन ⊙गणित = पुं० गणित का वह विभाग जिसमे रेखाओ द्वारा कुछ सिद्धात निर्धारित किए जाते हैं, ज्यामिति। ⊙चित्र पुं० किसी वस्तु का केवल रेखाओ से बनाया हुआ चित्र, खाका।

रेंखित—वि० जिसपर रेखा या लकीर पड़ी हो। फटा हुआ।

रेग—स्त्री० [फा०] बालू। **रेगिस्तान**—पुं० बालू का मैदान, मरु देश।

रेगमाल—पु० एक प्रकार का कागज जिसके ऊपर रेत जमाई हुई होती है और जिसमे रगडकर लकडी, धातु आदि साफ की जाती है।

रेचक—वि० [सं०] जिसके खाने से दस्त आवे, दस्तावर। पुं० प्राणायाम की तीसरी क्रिया, जिसमे खीची हुई साँस को विधिपूर्वक बाहर निकलना होता है।

रेचन—पु० [सं०] दस्त लाना, कोष्ठ शुद्ध करना। जुलाब।

रेचना(पु)—सक० वायु या मल को बाहर निकालना।

रेजगारी—स्त्री० दे० 'रेजगी'।

रेजगी—स्त्री० दुअन्नी, चवन्नी आदि छोटे सिक्के। छोटे खड या कतरन आदि।

रेजा—पुं० [फा०] बहुत छोटा टुकडा। नग, थान, पटरी।

रेडियम—पुं० [अँ०] एक उज्ज्वल मूल द्रव्य (धातु) जिसमे बहुत शक्ति सचित रहती हैं।

रेडियो—पु० [अँ०] ध्वनियो को सुनने और भेजने का वेतार का यत्र।

रेढ़ना†—सक० लुढकाना। घसीटते हुए। चलने मे प्रवृत्त करना। रुक रुककर बोलना। धीरे धीरे गिडगिडाना।

रेढ़ी—स्त्री० बैलगाडी, लढिया।

रेणु—स्त्री० [सं०] धूल। बालू। अत्यत लघु परिमाण, कणिका।

रेणुका—स्त्री० [सं०] रेत, धूल। पृथ्वी। परशुराम की माता का नाम।

रेत—पु० वीर्य, शुक्र। पारा। जल। स्त्री०, पु० बालू। बलुआ मैदान, मरुभूमि।

रेतना—सक० रेती से रगडकर किसी वस्तु से छोटे छोटे कण गिराना। औजार से रगडकर काटना। मु०—गला~ = हानि पहुँचाना।

रेता—पु० बालू। मिट्टी। बालू का मैदान।

रेती—स्त्री० एक औजार जिसे किसी वस्तु पर रगडने से उसके महीन कण कटकर गिरते है। नदी या समुद्र के किनारे पडी हुई बलुई जमीन। **रेतीला**†—वि० बालूवाला।

रेनु(पु)—पु० दे० 'रेणु'।

रेफ—पु० [सं०] हलत रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के पहले आने पर उसके मस्तक पर रहना है, जैसे—सर्प, दर्प, हर्ष मे। रकार अर्धक।

रेल—स्त्री० [अँ०] लोहे की पटरियो पर चलनेवाली गाडी जिसमे कई डब्बे होते हैं, रेलगाडी। लोहे की पटरी। स्त्री० [हिं०] बहाव, धारा। आधिक्य, भरमार। ⊙**ठेल** = स्त्री० दे० 'रेलपेल'। ⊙**पेल** = स्त्री० भारी भीड। भरमार। ⊙**मेल** = पु० मेलजोल, हेलमेल।

रेलना—सक० आगे की ओर ढकेलना। अधिक भोजन करना। अक० ठसाठस भरा होना।

रेलवे—स्त्री० [सं०] रेलगाडी की पटरी। रेले का महकमा।

रेला—पुं० रेले का प्रवाह, बहाव, तोड। समूह मे चढाई, धावा। धक्कमधक्का। अधिकता, बहुतायत।

रेवंद—पुं० [फा०] एक पहाडी पेड जिसकी जड और लकडी रेवद चीनी के नाम से बिकती और औषध के काम मे आती है।

रेवड़—पुं० भेड बकरी का झुड, गल्ला।

रेवडी—स्त्री० तिल और चीनी की बनी एक प्रसिद्ध मिठाई, खुटिया।

रेवती—स्त्री० [सं०] २७वाँ नक्षत्र जो ३२ तारो से मिलकर बना है। गाय। दुर्गा। बलराम की पत्नी जो राजा रेवत की कन्या थी। ⊙**रमण** = पुं० बलराम।

रेवा—स्त्री० [सं०] नर्मदा नदी। काम की पत्नी रति। दुर्गा। रीवा राज्य।

रेशम—पुं० [फा०] एक प्रकार का महीन चमकीला और दृढ ततु जिससे कपडे बुने जाते है। यह ततु कोश मे रहनेवाले एक प्रकार के कीडे तैयार करते हैं। **रेशमी**—वि० रेशम का बना हुआ।

रेशा—पु० [फा०] ततु या महीन सूत जो पौधों की छालों आदि से निकलता है।

रेष(पु)—स्त्री० दे० 'रेख'।

रेस—स्त्री० [अँ०] घोड़ों की दौड़ जिसमे प्रतियोगिता होती है। दौड़।

रेह—स्त्री० खार मिली हुई वह मिट्टी जो ऊसर मैदान मे पाई जाती है।

रेहन—पु० [फा०] महाजन के पास माल या जायदाद इस शर्त पर रखना कि जब कर्ज का रुपया अदा हो जाय, तब वह माल या जायदाद वापस कर दे, बंधक। ⊙दार = पुं० वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी हो। ⊙नामा = पु० वह कागज जिसपर रेहन की शर्तें लिखी हो।

रेहल—स्त्री० दे० 'रिहल'।

रेहू—स्त्री० दे० 'रोहू'।

रैअति(पु)—स्त्री० दे० 'रैयत'।

रैकेट—पु० [अँ०] टेनिस या बैडमिटन के खेल मे गेंद मारने का डडा जिसका छिद्रमय अगला भाग वर्तुलाकार और तांत से बुना हुआ होता है।

रैतुआ—पु० दे० 'रायता'।

रैदास—पु० चमार जाति के एक प्रसिद्ध भक्त जो रामानंद के शिष्य और कबीर के समकालीन थे। चमार।

रैन, रैनि(पु)—स्त्री० रात्रि।

रैनिचर—पु० राक्षस।

रैयत—स्त्री० [अ०] प्रजा, रिआया।

रैयाराव—पु० छोटा राजा।

रैल(पु)—स्त्री० प्रवाह, रेला। समूह, झुड।

रैवतक—पु० [सं०] गुजरात का एक पर्वत जो अब गिरनार कहलाता है।

रोंगटा—पु० सारे शरीर पर के बाल। मु०—रोंगटे खड़े होना = किसी भयानक काड को देख या सोचकर शरीर मे बहुत क्षोभ उत्पन्न होना।

रोंगटी—स्त्री० खेल मे बुरा मानना या बेईमानी करना।

रोंव(पु)—पु० रोआँ, लोम।

रोआँ—पु० वे बाल जो प्राणियो के शरीर पर थोड़े या बहुत उगते हैं, रोम। मु०~खड़ा होना = हर्ष या भय से रोमकूपों का उभरना। ~पसीजना = हृदय मे दया उत्पन्न होना।

रोआं†—पु० दे० 'रोआँ'।

रोआब†—पु० रोब, आतक।

रोउँ(पु)—पु० दे० 'रोंव'।

रोऊ(पु)—वि० दे० 'रोना'।

रोक—पु० दे० 'रोकड'। स्त्री० गति मे बाधा, अटाव। मनाही। काम मे बाधा। रोकनेवाली वस्तु। ⊙टोक, ⊙थाम = स्त्री० बाधा, प्रतिबध। मनाही।

रोकड़—स्त्री० नकद रुपया पैसा आदि। जमा, पूँजी। ⊙बही = स्त्री० वह बही जिसमे नगद रुपए पैसे का हिसाब रखा जाता है।

रोकड़िया—पु० खजाची।

रोकना—सक० चलने या बढ़ने न देना। कही जाने से मना करना। किसी चली आती हुई बात को बद करना। छेकना। बाधा डालना। ऊपर लेना, ओढ़ना। वश मे रखना।

रोख(पु)—पु० दे० 'रोष'।

रोग—पु० [सं०] मर्ज, बीमारी।

रोगदई, रोगदैया—स्त्री० बेईमानी। अन्याय।

रोगन—पु० [फा० रोगन] तेल, चिकनाई। वह पतला लेप जिसे किसी वस्तु पर पोतने से चमक आवे, पालिश। वह मसाला जिसे मिट्टी के बरतनो आदि पर चढाते हैं।

रोगनी—वि० रोगन किया हुआ।

रोगिया—पु० दे० 'रोगी'।

रोगी—वि० [सं०] जो स्वस्थ न हो, बीमार।

रोचक—वि० [सं०] अच्छा लगनेवाला, प्रिय। मनोरजक।

रोचन—पु० लोचन, नयन। वि० [सं०] अच्छा लगनेवाला, रोचक। शोभा देनेवाला। लाल। पुं० काला सेमर। प्याज। स्वारोचिष मन्वंतर के इद्र। कामदेव के पाँच बाणो से एक, मोहन। रोली।

रोचना—स्त्री० [सं०] रक्तकमल। गोरोचन। वसुदेव की स्त्री। रोली।

रोचि—स्त्री० प्रभा, दीप्ति। प्रकट होती हुई शोभा। किरण।

रोचित—वि० शोभित।

रोज—(प) पु० रोना, रुदन। पु० [फा०] दिन, दिवस। अव्य० प्रतिदिन। ⊙**नामचा**=पु० वह किताब जिसपर रोज का किया हुआ काम लिखा जाता है, (अं०) डायरी। ⊙**मर्रा**=अव्य० प्रतिदिन, नित्य।

रोजगार—पु० [फा०] जीविका या धनसचय के लिये हाथ मे लिया हुआ काम, व्यवसाय। व्यापार। **रोजगारी**—पु० [फा०] व्यापारी।

रोजा—पु० [फा०] व्रत, उपवास। महीने भर का उपवास जो मुसलमान रमजान के महीने मे करते हैं।

रोजी—स्त्री० [फा०] नित्य का भोजन। जीवननिर्वाह का सबल, जीविका।

रोजीना—पु० [फा०] दैनिक वृत्ति या मजदूरी।

रोजू(प)—पु० रोदन, रोना।

रोझ—स्त्री० नीलगाय। मृगो की एक जाति।

रोट—पु० मोटी रोटी, लिट्ट। मीठी मोटी रोटी।

रोटिहा†—पुं० केवल भोजन पर रहनेवाला चाकर।

रोटी—स्त्री० आँच पर सेकी हुई गुंधे हुए आटे की लोई या टिकिया, फुलका। भोजन, रसोई। मु०—**किसी के यहाँ रोटियाँ तोडना**=किसी के घर पडा रहकर पेट पालना। **रोटियों के लाले पडना**=भोजन दुर्लभ होना। ~**कपडा**=भोजन वस्त्र, जीवनिर्वाह की सामग्री। (**किसी बात की**) **रोटी खाना**=किसी बात से जीविका कमना। ~**दाल चलना**=जीवन निर्वाह होना। ~**बेटी का सबंध**=विवाह और खानपान का सबध। अक० चिल्लाना और आँसू बहाना, रुदन करना। बुरा मानना, चिढना। दु ख करना, पछताना।

रोठा(प)—पुं० दे० 'रोडा'।

रोडा—ईट या पत्थर का बडा ढेला, बडा ककड। मु० ~**अटकाना या डालना**=विघ्न या बाधा डालना।

रोदन—पु० [स०] क्रदन, रोना।

रोदसी—पुं० स्त्री० [सं०] स्वर्ग। भूमि। वायुमडल सहित पृथ्वी।

रोदा—पु० कमान की डोरी, चिल्ला।

रोध, रोधन—पुं० [सं०] रोक, अवरोध। दमन। पु० [हिं०] रोना, विलाप।

रोधना(प)—सक० रोकना।

रोना—पु० रुलाई, विलाप। दु ख, रज। वि० थोडी सी बात पर भी रोनेवाला। चिडचिडा, रोनेवाले का सा, मुहर्रमी। **रोनी धोनी**=रोने कलपने की वृत्ति। मु०—**रो बैठना**=(किसी व्यक्ति या वस्तु के लिये) शोर कर चुकना, निराश होकर रह जाना। **रो रोकर**=ज्यो त्यो करके, कठिनता से। बहुत धीरे धीरे। ~**गाना**=विनती करना, गिडगिडाना। ⊙**पीटना**=बहुत विलाप करना।

रोप—स्त्री० रोपने की क्रिया या भाव।

रोपक—वि० [सं०] रोपनेवाला। **रोपण**—पुं० ऊपर रखना या स्थापित करना। लगाना, बैठाना। (बीज या पौधा), मोहित करना।

रोपना—सक० जमाना, बैठाना। पौधे को एक स्थान से उखाडकर दूसरे स्थान पर जमाना। अडाना, ठहराना। बोना। लेने के लिये हथेली या कोई बरतन सामने करना। रोकना।

रोपनी—स्त्री० धान आदि के पौधो को गाडने का काम, रोपाई।

रोपित—वि० लगाया हुआ, जमाया हुआ। स्थापित। मोहित, भ्रात।

रोब—पुं० [अ० रुश्राब] बढप्पन की धाक, दबदबा। ⊙**दार**=वि० रोबदाबवाला, प्रभावशाली। मु० ~**जमाना**=आतक उत्पन्न करना। ~**में आना**=आतंक के कारण कोई ऐसी बात कर डालना

जो साधारणत. न की जाती हो। भय मानना।

रोवकार—पुं० दे० 'रूबकार'।

रोम—पु० [अँ०] योरप के इटली नामक एक देश की प्राचीन काल से अवतक की राजधानी। पु० [सं०] 'रोमन' के लिये [समास मे] देह के बाल, लोम। छेदा जल, ऊन। ⊙कूप=पु० शरीर के वे छिद्र जिनमे से रोएँ निकले हुए होते हैं। ⊙पट,. ⊙पाट= पुं० ऊनी कपडा। ⊙राजी=स्त्री० दे० 'रोमावली'। ⊙लता=स्त्री० दे० 'रोमावली, ⊙हर्ष = दे० रोमहर्षण। ⊙हर्षण= पुं० रोओ का खडा होना जो अत्यत आनद और भय आदि के आवेग मे होता है, रोमाच। वि० भयकर, भीषण। मु० रोम मे= शरीर भर मे रोम से=तन मे।

रोमक—पुं० [स०] रोम नगर का वासी, रोमन। रोम नगर या देश।

रोमन—वि० [अँ०] रोम नगर या राष्ट्र-सबधी। स्त्री० वह लिपि जिसमे अँगरेजी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

रोमाच—पुं० [सं०] आनद से रोओ का खडा होना, पुलक। भय से रोगटे खडे होना।

रोमाली—स्त्री० दे० 'रोमावलि'।

रोमावलि, रोमावली—स्त्री० [सं०] रोओ की पक्ति, रोमराजी।

रोयाँ—पुं० दे० 'रोआँ'।

रोर—स्त्री० हल्ला, कोलाहल। बहुत से लोगो के रोने चिल्लाने का शब्द। उपद्रव, हलचल। वि० प्रचड, दुर्दमनीय। उद्धत, दुष्ट।

रोरी†—स्त्री० रोली। ⓟ चहल पहल। वि० स्त्री० सुदर, रुचिर।

रोलⓟ—स्त्री० रोर, हल्ला। शब्द, ध्वनि। पुं० पानी का तोड रेला।

रोला—पु० रोर, शोरगुल, कोलाहल। घमासान, युद्ध। पुं० [सं०] २४ मात्राओ का एक छद जिसमे ११वी मात्रा पर यति और अत मे विराम होता है।

रोली—स्त्री० चूने और हल्दी से बनी लाल बुकनी जिसका तिलक लगाते हैं स्त्री।

रोवनहार—वि० रोनेवाला। किसी के मर जाने पर उसका शोक करनेवाला।

रोवना—अक० दे० 'रोना'।

रोवनिहाराⓟ—वि० दे० 'रोवनहार'।

रोवनी धोवनी†—स्त्री० रोने धोने की वृत्ति, मनहूसी।

रोवासा—वि० जो रोने ही वाला हो।

रोशन—वि० [फा०] जलता हुआ। प्रकाशमान, चमकदार। प्रसिद्ध। प्रकट। ⊙चौकी=स्त्री० शहनाई का बाजा, नफीरा। ⊙दान= पु० प्रकाश आने क. छिद्र, गवाक्ष।

रोशनाई—स्त्री० [फा०] लिखने का स्याही, मसि। रोशनी।

रोशनी—स्त्री० [फा०] उजाला, प्रकाश। दीपक। दीपमाला का प्रकाश। ज्ञान का प्रकाश।

रोष—पुं० [स०] क्रोध। चिढ, कुढन। वैर, विरोध। लडाई का उमग, जोश। रोषी—वि० क्रोधी, गुस्सैल।

रोस—पुं० दे० 'रोस'।

रोह—पुं० नीलगाय।

रोहजⓟ—पुं० नेत्र।

रोहण—पु० [सं०] चढना, चढाई। ऊपर को बढना। पौधे का उगना।

रोहिणी—स्त्री० [सं०] गाय। बिजली। वसुदेव की स्त्री जो बलराम की माता थी। नौ वर्ष की कन्या (मनुस्मृति)। सत्ताईस नक्षत्रो मे से चौथा नक्षत्र।

रोहित—वि० [सं०] लाल रग का, लोहित। पुं० लाल रग। रोहू मछली। एक प्रकार का मृग। इद्रधनुष। केसर, कुंकुम। रक्त, लहू।

रोहिताश्व—पु० [सं०] अग्नि। राजा हरिश्चद्र के पुत्र का नाम।

रोही—वि० [सं०] चढनेवाला। पुं० [हिं०] एक हथियार।

रौहू—स्त्री० एक प्रकार की बडी मछली।

रौंद—स्त्री० रौंदने का भाव या क्रिया। चक्कर, गश्त।

रौंदन—स्त्री० दे० 'रौद्र'।
रौंदना—सक० पैरो से कुचलना, मर्दित करना।
रौ(पु)†—पु० दे० 'रव'। स्त्री० [फा०] गति, चाल। वेग, झोक। पानी का बहाव। किसी बात की धुन, झोक। चाल, ढग।
रौगन—पु० दे० 'रोगन'।
रौजा—पु० [अ०] कब्र, समाधि।
रौताइन—स्त्री० राव या रावत की स्त्री, ठकुराइन।
रौताई—स्त्री० राव या रावत होने का भाव। ठकुराई, सरदारी।
रौद्र—वि० [सं०] रुद्र सबधी। भयकर, डरावना। क्रोधपूर्ण। पु० काव्य के नौ रसो मे से एक जिसमे क्रोध की अनुभूति करानेवाले शब्दो और चेष्टाओ का वर्णन होता है। ११ मात्राओ के छदो की सज्ञा। एक प्रकार का अस्त्र। रौद्रार्क—पु० ३२ मात्राओ के छदो की सज्ञा।
रौन(पु)—पु० दे० 'रमण'। पति, प्रियतम।
रौनक(पु)—स्त्री० [अ०] वर्ण और आकृति, रूप। चमक दमक, काति। प्रफुल्लता, विकास। शोभा।
रौना†—पु० दे० 'रोना'।
रौनी(पु)—स्त्री० दे० 'रमणी'।
रौप्य—पु० [स०] चाँदी, रूपा। वि० चाँदी का बना हुआ।
रौर†—स्त्री० हल्ला, शोर।
रौरई(पु)—स्त्री० दे० 'रौरा'।
रौरव—वि० [स०] भयकर, डरावना। पु० एक भीषण नरक।
रौरा—पु० दे० 'रौला'। † सर्व० आपका।
रौराना†—अक० प्रलाप करना, बकना।
रौरे†—सर्व० आप (सबोधन)।
रौल—पु० दे० 'रौला। स्त्री० दे० 'रौलि'।
रौला—पु० हल्ला, शोर। हुल्लड। रौलि †—स्त्री० चपत। चिल्लाहट, शोर।
रौशन—वि० दे० 'रोशन'।
रौस—स्त्री० गति, चाल। तौर, तरीका। बाग की क्यारियो के बीच का मार्ग।
रौहाल—स्त्री० घोडे की एक चाल। घोडे की एक जाति।

ल

ल—व्यजन वर्ण का २८वाँ वर्ण, यह अल्पप्राण है।
लक—स्त्री० कमर, कटि। लका नामक द्वीप। ⊙नाथ, ⊙नायक = पुं० रावण, विभीषण। लकलाट—पुं० एक प्रकार मोटा बढिया कपडा।
लंका—स्त्री० [सं०] भारत के दक्षिण का एक टापू जहाँ रावण का राज्य था। ⊙पति = पु० रावण। विभीषण।
लकेश, लकेश्वर—पु० [सं०] रावण। विभीषण।
लग—स्त्री० दे० 'लाँग'। पु० [फा०] लँगडापन।
लंगड़—वि० दे० 'लँगडा'। पु० दे० 'लगर'।
लँगड़ा—वि० जिसका एक पैर बेकाम या टूटा हो। पु० एक प्रकार का बढिया आम। लँगडाना—अक० लग करते हुए चलना, लँगडे होकर चलना। लँगड़ी—स्त्री० एक प्रकार का छद।
लगर—पु० [फा०] लोहे का एक प्रकार का बहुत बडा काँटा जिसका व्यवहार बडी बडी नावो या जहाजो को एक ही स्थान पर ठहराए रखने के लिये होता है। लकडी का वह कुदा जो किसी हरहाई गाय के गले मे बाँधा जाता है, ढेंगुर। लटकती हुई कोई भारी चीज। लोहे की मोटी और भारी जंजीर। चाँदी का तोडा जो पैर मे पहना जाता है। पहलवानो का लँगोटा। कच्ची सिलाई।

वह भोजन जो प्राय नित्य दरिद्रो को वाटा जाता है। वह स्थान जहाँ दरिद्रो आदि को भोजन बाँटा जाता हो। वि० भारी, वजनी। नटखट। ⊙खाना = पु० दे० 'लगर'। ⊙गाह = पु० दे० 'बदरगाह'।

लँगरई, लँगराई (पु)†--स्त्री० ढिठाई, शरारत।

लगी (पु)—वि० लँगडी।

लगूर—पु० बदर। दुम (बदर की)। काले मुँह का बडा बदर। ⊙फल = पु० दे० 'नारियल'।

लँगूल—पु० पूँछ, दुम।

लँगोट—पु० कमर पर बाँधने का एक प्रकार का वस्त्र जिससे केवल उपस्थ ढका जाता है। ⊙बद = पु० ब्रह्मचारी, स्त्रीत्यागी। म०—लँगोटिया यार = बचपन का मित्र। लँगोटा—पु० दे० 'लँगोट'। लंगोटी—स्त्री० कोपीन, कछनी, धज्जी। मु०~पर फाग खेलना = कम सामर्थ्य होने पर भी बहुत अधिक व्यय करना।~ बँधवाना = बहुत दरिद्र कर देना।

लंघन—पु० [सं०] उपवास, फाका। लाँघने की क्रिया, डाँकना। अतिक्रमण।

लँघना (पु)—सक० दे० 'लाँघना'।

लंच—पु० [अं०] दोपहर का भोजन या जलपान।

लंठ—पु० वि० मूर्ख, उजड्ड।

लँडूरा—वि० जिसकी सारी पूंछ कट गई हो।

लंतरानी—स्त्री० [अ०] व्यर्थ की बडी बडी बातें, शेखी।

लप—पु० दीपक, लालटेन।

लंपट—वि० [सं०] व्यभिचारी, विषयी।

लब—स्त्री० दे० 'विलब'। पु० [सं०] वह रेखा जो किसी दूसरी रेखापर इस भाँति गिरे कि उसके साथ समकोण बनावे। एक राक्षस जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। अग। पति। वि० लबा। ⊙कर्ण = वि० जिसके कान लबे हो। ⊙तड़ंग = वि० [हिं०] ताड के समान लबा, बहुत लबा।

लबा—वि० जो किसी एक ही दिशा मे बहुत दूर तक चला गया हो, चौडा का उलटा। जिसकी ऊँचाई अधिक हो। (समय) जिसका विस्तार अधिक हो। विशाल, दीर्घ। ⊙ई = स्त्री० लबा होने का भाव, लबापन। मु०~करना = रवाना करना, चलता करना। जमीन पर पटकना या लेटा देना।

लबान—स्त्री० लबाई।

लबायमान—वि० बहुत लबा। लेटा हुआ।

लंबित—वि० [सं०] लबा।

लंबी—वि० स्त्री० 'लबा' का स्त्रीलिंग रूप। मु०~तानना = लेटकर सो जाना।

लंबोतरा—वि० लबे आकारवाला, जो कुछ लबा हो।

लंबोदर—पु० [सं०] गणेश।

ल—पु० [सं०] इद्र। पृथ्वी।

लउटी—स्त्री० दे० 'लकुटी'।

लकड़बग्घा—पु० एक मासाहारी जगली जंतु जो भेडिए से कुछ बडा होता है, लग्घड़।

लकड़हारा—पु० जगल से लकड़ी तोड़कर बेचनेवाला व्यक्ति।

लकड़ा—पु० लकड़ी का मोटा कुंदा, लक्कड।

लकड़ी—स्त्री० पेड़ का कोई स्थूल अग जो कटकर उससे अलग हो गया हो, काठ। ईंधन, जलावन। गतका। छडी, लाठी। मु०~फेरना या सुंघाना = किसी को अपने अनुकूल या वश मे करना। ~सा = बहुत दुबला पतला। ~होना = बहुत दुबला पतला होना। सूखकर बहुत कड़ा हो जाना।

लकदक—वि० [अ०] वनस्पति आदि से रहित और खुला (मैदान)।

लकब—पु० [अ०] उपाधि, खिताब।

लकलक—पु० [अ०] सारस। वि० दुबला पतला।

लकवा—पु० [अ०] एक वातरोग जिसमे शरीर का कोई भाग शक्तिहीन हो जाता है, पक्षाघात।

लकी—स्त्री० कबूतरी।

लकीर—स्त्री॰ वह आकृति जो बहुत दूर तक एक ही सीध मे चली गई हो, रेखा। धारी। पंक्ति, सतर। मु॰~का फकीर = आँखें बंद करके पुराने ढंग पर चलनेवाला। ~पीटना = बिना समझे, बूझे पुरानी प्रथा पर चले चलना।

लकुट—पुं॰ एक प्रकार का फलदार वृक्ष। लुकाट। स्त्री॰ [सं॰] लाठी, छड़ी।

लकुटिया—स्त्री॰ छोटी छड़ी या लाठी। लाठी।

लकुटी—स्त्री॰ लाठी, छड़ी।

लक्कड़—पुं॰ काठ का बड़ा कुंदा।

लक्का—पुं॰ [अ॰, फा॰] एक प्रकार का कबूतर जिसकी पूंछ पंखे सी होती है और गला उलटकर उससे सटा रहता है।

लक्खी—वि॰ लाख के रंग का, लाखी। लाखों से संबंध रखनेवाला (जैसे, लक्खी मेला) पुं॰ घोड़े की एक जाति। लखपती।

लक्ष—वि॰ [सं॰] एक लाख, सौ हजार। पुं॰ वह अंक जिससे एक लाख की संख्या का ज्ञान हो। अस्त्र का एक प्रकार का संहार। दे॰ 'लक्ष्य'।

लक्षण—पुं॰ [सं॰] किसी पदार्थ की वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय, चिह्न। नाम। परिभाषा। शरीर मे दिखाई पड़नेवाले वे चिह्न आदि जो किसी रोग के सूचक हों। सामुद्रिक के अनुसार शरीर के अंगों मे होनेवाले कुछ विशेष चिह्न जो शुभ या अशुभ माने जाते हैं। शरीर में होनेवाला एक विशेष प्रकार का काला दाग, लच्छन। चाल-ढाल। लक्ष्मण, राजा दशरथ के एक पुत्र। ⊙लक्षणा = स्त्री॰ लक्षणा का एक भेद।

लक्षणा—स्त्री॰ [सं॰] शब्द की वह शक्ति जिससे मुख्यार्थ से भाव न खुलने पर उससे संबद्ध अन्य अर्थ सूचित होता है।

लक्षित—वि॰ [सं॰] बतलाया हुआ, निर्दिष्ट। देखा हुआ। अनुमान से समझा या जाना हुआ। पु॰ वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा ज्ञात होता है।

लक्षनाⓅ—सक॰ दे॰ 'लखना'।

लक्षिता—स्त्री॰ [सं॰] वह परकीया नायिका जिसका पर-पुरुष-प्रेम दूसरों को ज्ञात होता हो।

लक्षी—वि॰ लक्ष रखनेवाला। स्त्री॰ [सं॰] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे आठ रगण होते हैं, गंगाधर, खंजन, गंगोदक।

लक्ष्म—पु॰ [सं॰] चिह्न, लक्षण।

लक्ष्मी—स्त्री॰ [सं॰] हिंदुओं की एक देवी जो विष्णु की पत्नी और धन की अधिष्ठात्री मानी जाती है, रमा। धनसंपत्ति। शोभा, सौंदर्य। दुर्गा का एक नाम। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो रगण, एक गुरु और एक लघु अक्षर होता है। एक मात्रिक छंद जिसके प्रथम और द्वितीय चरणों मे ३० तथा तृतीय और चतुर्थ मे २७ मात्राएँ होती हैं, वृद्धि छंद। आर्या छंद का पहला भेद। घर की मालकिन। वि॰ अत्यंत सद्‌गुणी (स्त्री), श्रीवृद्धि करनेवाली। ⊙धर = पुं॰ स्रग्विणी छंद का दूसरा नाम जिसके प्रत्येक चरण मे चार रगण हों, लक्ष्मीधरा, शृंगारिणी, कामिनीमोहन। विष्णु। ⊙पति = पुं॰ विष्णु। ⊙पुत्र = पु॰ धनवान्, अमीर।

लक्ष्य—पुं॰ [सं॰] वह वस्तु जिसपर किसी प्रकार का निशाना लगाया जाय, निशाना। वह जिसपर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय। अभिलषित पदार्थ, उद्देश्य। अस्त्रों का एक प्रकार का संहार। वह अर्थ जो किसी शब्द की लक्षणा शक्ति के द्वारा निकलता हो। ⊙भेद = पुं॰ एक प्रकार का निशान जिसमे चलते या उड़ते हुए लक्ष्य को भेदते हैं। लक्ष्यार्थ—पु॰ वह अर्थ जो लक्षणा से निकले।

लखघर—पु॰ दे॰ 'लाक्षागृह'।

लखन—स्त्री॰ लखने की क्रिया या भाव। पु॰ राजा दशरथ के एक पुत्र, लक्ष्मण।

लखनाⓅ†—सक॰ लक्षण देखकर अनुमान कर लेना, ताड़ना। देखना।

लखपती—पु॰ जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो।

लखरांव—पु० वह बाग जिसमे लाख पेड हो। बहुत बडा बाग।
लखलखा—पु० [फा०] मूर्छा दूर करने का कोई सुगंधित द्रव्य।
लखलुट—वि० बहुत बडा अपव्ययी।
लखाउⓅ—पु० लक्षण, पहचान। चिह्न के रूप मे दिया हुआ कोई पदार्थ। **लखाना** Ⓟ†—अक० दिखाई पडना। सक० दिखलाना, अनुमान करा देना, समझा देना। **लखाव**Ⓟ—पु० दे० 'लखाउ'।
लखीमीⓅ†—पु० दे० 'लक्ष्मी'।
लखियाⓅ†—पु० वह जो लखता हो।
लखी—पु० लाख के रंग का घोडा, लाखी।
लखेदना†—सक० दे० 'खदेडना'।
लखेरा—पु० वह जो लाख की चूडी आदि बनाता हो।
लखौट†—स्त्री० लाख की चूडी जो स्त्रियाँ हाथो मे पहनती है।
लखौटा—स्त्री० चंदन, केसर आदि मे बना हुआ अगराग। एक प्रकार का छोटा डिब्बा जिसमे स्त्रियाँ प्राय सिंदूर आदि रखती हैं।
लखौरी—स्त्री० एक प्रकार की भ्रमरी या भृंगी का घर। एक प्रकार की छोटी पतली ईंट। किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ आदि चढाना।
लगंनⓅ—स्त्री० लगने या लगन होने की क्रिया या भाव।
लग—क्रि० वि० तक, पर्यंत। निकट, पास। स्त्री० लगन, प्रेम। अव्य० वास्ते, लिये। साथ।
लगढग—क्रि० वि० दे० 'लगभग'।
लगन—पु० [फा०] एक प्रकार की थाली। पु० [हिं०] शुभ मुहूर्त, व्याह का मुहूर्त या साइत। वे दिन जिनमे विवाह आदि होते हो। दे० 'लग्न'। ⊙**पत्री** = स्त्री० विवाह समय के निर्णय की चिट्ठी जो कन्या का पिता वर के पिता को भेजता है। **लगन**—स्त्री० [हिं०] किसी ओर ध्यान लगने की क्रिया, लौ। प्रेम, स्नेह। लगाव, संबध। ⊙**वट** = स्त्री० प्रेम, मुहब्बत।
लगना—अक० दो पदार्थों के तल आपस मे मिलना, सटना। मिलना, जुडना। एक चीज का दूसरी चीज पर सिया, जडा, टाँका या चिपकाया जाना। शामिल होना, मिलना। छोर या प्रांत आदि पर पहुँचकर टिकना या रुकना। क्रम से रखा या सजाया जाना। खर्च होना। जान पडना, मालूम होना। स्थापित होना, कायम होना। संबंध या रिश्ते मे कुछ होना। चोट पहुँचना। किसी पदार्थ का किसी किसी प्रकार की जलन या चुनचुनाहट आदि उत्पन्न करना। खाद्य पदार्थ का बरतन के तल में जम जाना। आरंभ होना। जारी होना, चलना। सडना। प्रभाव पडना। आरोप होना। हिसाब होना। पीछे पीछे चलना, साथ होना। गौ, भैंस, बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओं का दुहा जाना। गडना, चुभना। छेडखानी करना। बंद होना, मुँदना। दाँव पर रखा जाना, बदना। घात मे रहना। होना। (यह क्रिया बहुत से शब्दों के साथ लगकर भिन्न भिन्न अर्थ देती है।) मु०—लगती बात कहना = मर्मभेदी बात कहना, चुटकी लेना।
लगना—पु० एक प्रकार का जगली मृग।
लगनिⓅ—स्त्री० दे० 'लगन'।
लगनी—स्त्री० छोटी थाली, रिकाबी। परात।
लगभग—क्रि० वि० प्राय, करीब करीब।
लगमात—स्त्री० स्वरो के वे चिह्न जो उच्चारण के लिये व्यजनों मे जोडे जाते है।
लगरⓅ†—पु० लग्घड पक्षी।
लगलग—वि० बहुत दुबला पतला, अति सुकुमार।
लगवⓅ†—वि० झूठ, असत्य। बेकार।
लगवार[+]—पु० उपपति, यार, आशना।
लगातार—क्रि० वि० एक के बाद एक, निरतर।
लगान—पु० लगने या लगाने की क्रिया या भाव। भूमि पर लगनेवाला कर, राजस्व।
लगाना—सक० [अक० लगना] सतह पर सतह रखना, सटाना। मिलाना, जोडना।

किसी पदार्थ के तल पर कोई चीज डालना, फेकना, रगडना, चिपकाना या गिराना, शामिल करना। वृक्ष आदि आरोपित करना, जमाना। एक ओर या किसी उपयुक्त स्थान पर पहुँचाना। क्रम मे रखना या सजाना, सजाना। खर्च करना। अनुभव करना मालूम करना। आघात करना। किसी मे कोई नई प्रवृत्ति आदि उत्पन्न करना। उपयोग मे लाना। आरोपित करना, अभियोग लगाना। प्रज्वलित करना, जलाना। ठीक स्थान पर बैठाना, जडना। गणित करना। चुगली खाना। नियुक्त करना। गौ, भैस बकरी आदि दूध देनेवाले पशुओ को दुहना। गाडना, धँसाना। स्पर्श कराना। जूए की बाजी पर रखना। किसी बात का अभिमान करना। अग पर पहनना, ओढना या रखना। करना। लगाना बुझाना—सक० लडाई झगडा कराना, दो आदमियो मे वैमनस्य उत्पन्न करना। मु० किसी को लगाकर कुछ कहना या गाली देना = बीच मे किसी का सबध स्थापित करके किसी प्रकार का आरोप करना।

लगाम—स्त्री० [फा०] वह ढाँचा जो घोडे के मुँह मे रखा जाता है और जिसके दोनो ओर रस्सा या चमडे का तस्मा बँधा रहता है। इस ढाँचे के दोनो ओर बँधा हुआ रस्सा या चमडे का तस्मा जो सवार या हाँकनेवाले के हाथ मे रहता है, राम।

लगाय(पु)—स्त्री० दे० 'लगावट'।

लगार(पु)+—स्त्री० नियमित रूप मे कोई काम करना या कोई चीज देना, बधेज। लगाव, सबध। क्रम, सिलसिला। लगन, प्रीति। वह जो किसी की ओर से भेद लेने के लिये भेजा गया हो। भेदी, सबधी।

लगालगी—स्त्री० लगन, प्रेम। सबध, मेल जोल। लागडाँट, चढाऊपरी।

लगाव—पु० लगा होने का भाव, सबध।

लगावट—स्त्री० सबध, वास्ता। प्रेम, मुहब्बत।

लगावन(पु)+—स्त्री० दे० 'लगाव'।

लगावना(पु)—सक० दे० 'लगाना'।

लगि(पु)+—अव्य० दे० 'लग'। स्त्री० दे० 'लग्गी'।

लगी(पु)+—स्त्री० दे० 'लग्गी'।

लगु(पु)+—अव्य० दे० 'लग'।

लगुड—पु० [स०] डडा, लाठी।

लगूर(पु)—स्त्री० पूँछ, दुम।

लगूल(पु)—स्त्री० पूँछ, दुम।

लगे+—अव्य० दे० 'लग'।

लगौंहा(पु)—वि० जिसे लगन लगाने की कामना हो, रिझवार।

लग्गा—पुं० लबा बाँस। वृक्षो से फल आदि तोडने का लबा बाँस। कार्य आरभ करना। किसी कार्य मे पूरी तरह लगना। लग्गी—स्त्री० दे० 'लग्गा'।

लग्घड—पुं० बाज (पक्षी)। एक प्रकार का चीता, लकडबग्घा।

लग्घा लग्घी—पु० दे० 'लग्गा'।

लग्न—वि० लगा हुआ, मिला हुआ। लज्जित। पुं० स्त्री० दे० 'लगन'। पुं० [सं०] ज्योतिष मे दिन का उतना अश, जितने मे किसी एक राशि का उदय रहता है। शुभ कार्य करने का मुहूर्त। विवाह का समय। विवाह, शादी। विवाह के दिन। ⊙पत्र = पुं० वह पत्रिका जिसमे विवाह के कृत्यो का लग्न व्योरेवार लिखा जाता है।

लग्नेश—पुं० [स०] जन्मकुडली मे लग्न का स्वामी ग्रह।

लघिमा—स्त्री० [सं०] एक सिद्धि जिसे प्राप्त कर लेने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन सकता है। लघु या ह्रस्व होने का भाव, लघुत्व।

लघु—पुं० [सं०] व्याकरण मे वह स्वर जो, एक ही मात्रा का होता है। (जैसे अ इ)। वह जिसमे एक ही मात्रा हो। इसका चिह्न 'I' है (छद शास्त्र)। वि० छोटा, कनिष्ठ। थोडा, कम। हलका। निस्सार। शीघ्र। सुदर, बढिया। ⊙चेता = पुं० वह जिसके विचार तुच्छ और बुरे हो, नीच। ⊙ता = स्त्री० लघु होने का भाव,

छोटापन, हलकापन, तुच्छता। ⊙त्व = पुं० छोटापन, लघुता। तुच्छता, हलकापन। ⊙पाक = पुं० वह खाद्य पदार्थ जो सहज मे पच जाय। ⊙मति = वि० कमसमझ, मूर्ख। ⊙मान = पुं० नायिका का वह मान जो नायक को किसी दूसरी स्त्री से बातचीत करते देखकर उत्पन्न होता है। ⊙शका = स्त्री० पेशाब करना।

लच—स्त्री० लचकने की क्रिया या भाव, वह गुण जिसके रहने रहने से कोई वस्तु झुकती हो।

लचक—स्त्री० दे० 'लच'। **लचकना**—अक० लंबे पदार्थ का दबने आदि के कारण बीच से झुकना, लचना। स्त्रियो की कमर का कोमलता आदि के कारण झुकना। **लचकनि** (पु)—स्त्री० लचीलापन। लचक। **लचकाना**—सक० [अक० लचकना] लचकने में प्रवृत्त करना। **लचकीला**—वि० दे० 'लचीला'। **लचकौहाँ**—वि० दे० 'लचीला'। **लचन**—स्त्री० दे० 'लचक'। **लचना**—अक० दे० 'लचकना'। **लचलचा**—वि० दे० 'लचीला'।

लचर—वि० दे० 'लाचार'।

लचारी—दे० 'लाचारी'। भेंट, नजर। एक प्रकार का गीत।

लचीला—वि० जो सहज मे लच या झुक सकता हो, लचकदार। जिसमे सहज मे परिवर्तन या उतार चढाव हो सकता हो।

लच्छ (पु)—पुं० बहाना, मिस। निशाना, ताक। सौ हजार की सख्या। स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'।

लच्छन (पु)—पुं० दे० 'लक्षण'।

लच्छना (पु)—सक० दे० 'लखना'।

लच्छमी—स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'।

लच्छा (पु)—स्त्री० लाख, लाह। पुं० गुच्छे आदि के रूप मे लगाए हुए तार। किसी चीज के सूत की तरह लंबे और पतले कटे हुए टुकडे। हाथ या पैर का एक प्रकार का गहना। **लच्छेदार**—वि० [फा०] (खाद्यपदार्थ) जिसमे लच्छे पड़े हो। (बातचीत) मजेदार या श्रुतिमधुर।

लच्छि (पु)—स्त्री० लक्ष्मी। पुं० लाख की सख्या।

लच्छिल (पु)—वि० आलोचित, देखा हुआ। निशान किया हुआ। लक्षणवाला।

लच्छिन—पुं० लक्षण, चिह्न।

लच्छिनिवास (पु)—पुं० विष्णु, नारायण।

लच्छी—वि० एक प्रकार का घोडा। स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'। छोटा लच्छा, अटी।

लछ—पुं० लक्ष्य, निशाना।

लछन—पुं० दे० 'लक्षण'। राजा दशरथ के एक पुत्र, लक्ष्मण।

लछना†—अक० दे० 'लखना'।

लछमना—स्त्री० दे० 'लक्ष्मणा'।

लछमी—स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'।

लछारा (पु)—वि० दे० 'लत्रा'।

लज (पु)—स्त्री० दे० 'लाज'। **लजना** (पु)—अक० दे० 'लजाना'।

लजाना—अक० लज्जित होना। सक० लज्जित करना।

लजाधुर—वि० लज्जावान्, शर्मीला। पुं० लजालू नाम का पौधा।

लजारू†—पुं० लजालू पौधा।

लजालू—पुं० एक काँटेदार पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़कर बंद हो जाती हैं।

लजावना (पु)†—सक० दे० 'लजाना'।

लजियाना (पु)†—अक०, सक० दे० 'लजाना'।

लजीज—वि० [अ०] अच्छे स्वादवाला, स्वादिष्ट।

लजीला—वि० दे० 'लज्जाशील'।

लजुरी—स्त्री० कूएँ से पानी भरने की डोरी, रस्सी।

लजोर (पु)—वि० दे० 'लज्जाशील'।

लजोहा, लजौना, लजौहाँ—वि० जिसमे लज्जा हो, लज्जाशील।

लज्जा—स्त्री० [सं०] लाज, हया। मान, मर्यादा, पत। ⊙**प्राया** = स्त्री० मुग्धा नायिका के चार भेदो मे से एक (केशव)। ⊙**वती** = वि० स्त्री० शर्मीली। ⊙**वान्** = वि० दे० 'लज्जा-

शील'। ⊙शील = वि० जिसमे लज्जा हो, लजीला। लज्जालु—वि० लज्जाशील। पुं० दे० 'लजालू'। लज्जित—वि० शर्माया हुआ।

लज्या (पु)—दे० स्त्री० 'लज्जा'।

लट—स्त्री० लपट, लौ। बालो का गुच्छा, केशपाश। एक मे उलझे हुए बालो का गुच्छा। मु०~छिटकाना = सिर के बालो को खोलकर इधर उधर बिखराना।

लटक—स्त्री० लटकने की क्रिया या भाव। झुकाव, लचक। अगो की मनोहर चेष्टा, अगभगी। लटकन—पुं० दे० 'लटक'। लटकनेवाली चीज, लटक। नाक मे पहनने का एक गहना। कलँगी या सिरपेंच मे लगे हुए रत्नो का गुच्छा। एक पेड जिसके बीजो से बढिया रग निकलता है। लटकना—अक० ऊँचे स्थान से लगकर नीचे की ओर कुछ दूर तक फैला रहना, झुकना। किसी ऊँचे आधार पर इस प्रकार टिकना कि सब भाग नीचे की ओर अधर मे हो, टँगना। किसी खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना। लचकना, बल खाना। किसी काम का बिना पूरा हुए पडा रहना देर होना। मु०—लटकती चाल = बल खाती हुई मनोहर चाल।

लटका—पुं० चाल, ढग। हावभाव। बातचीत का बनावटी ढग। मंत्रतत्र या उपचार आदि की छोटी युक्ति, टोटका।

लटकाना—सक० लटकना। अक० किसी को लटकने मे प्रवृत्त करना। लटकीला—वि० लटकता या झूमता हुआ। लटकौवाँ—वि० जो लटकता हो।

लटजीरा—पुं० अपामार्ग, चिचडा। एक प्रकार का जडहन। लटना—अक० थक कर गिर जाना, लडखडाना। अशक्त होना। शक्ति और उत्साह से रहित या निकम्मा होना। व्याकुल या विकल होना। ललचाना, लुभाना। प्रेमपूर्वक तत्पर होना, लीन होना।

लटपट, लटपटा—वि० गिरता पडता, लडखडाता हुआ। ढीला ढाला, जो चुस्त और दुरुस्त न हो। (शब्द) जो स्पष्ट या ठीक क्रम से न निकले, टूटाफूटा। अव्यवस्थित, अडबड। थककर गिरा हुआ। जो न बहुत पतला हो और न बहुत गाढा। भिजा हुआ, मला दला हुआ (कपडा आदि), जिसमे शिकन या सिलवट पडी हो। लटपटान—स्त्री० लडखडाहट। लटक, लचक। लटपटाना—अक० गिरना पडना, लडखडाना। डिगना, ठीक तरह से न चलना। मोहित होना। लीन होना, अनुरक्त होना। लटपाटी—स्त्री० लटपटाने की क्रिया या भाव। लडाई, झगडा।

लटा†—वि० लोलुप, लुच्चा। तुच्छ, हीन। बुरा, खराब।

लटापोट (पु)†—वि० मोहित, मुग्ध।

लटी—स्त्री० बुरी बात। झूठी बात, गप। साधुनी, भक्तिन। वेश्या।

लटुआ—पुं० दे० 'लट्टू'।

लटुक—पुं० दे० 'लकुट'।

लटुरी—स्त्री० दे० 'लटूरी'।

लटू—पुं० वि० दे० 'लट्टू'।

लटूरी—स्त्री० सिर के बालो का लटका हुआ गुच्छा, अलक।

लटोरा—पुं० एक प्रकार का छोटा पेड जिसके फलो मे बहुत सा लसदार गूदा होता है।

लट्टपट्ट†—वि० दे० 'लथपथ'।

लट्टू—पुं० एक गोल खिलौना जिसे सूत के द्वारा जमीन पर फेंककर नचाते है। वि० मोहित, मुग्ध।

लट्ठ—पुं० बडी लाठी। ⊙बाज = वि० [फा०] लाठी से लडनेवाला, लठैत। ⊙मार = वि० लट्ठ मारनेवाला। अप्रिय और कठोर।

लट्ठा—पुं० लकडी का बहुत लबा टुकडा। धरन, कडी। एक प्रकार का गाढा मोटा कपडा।

लठिया—स्त्री० दे० 'लाठी'।

लठैत—पुं० दे० 'लट्ठबाज'।

लडंत—स्त्री० लडाई। भिडत। सामना, मुकाबला।

लड़—स्त्री० एक ही प्रकार की वस्तुओं

की पंक्ति, माला,। पंक्ति, श्रेणी। रस्सी का एक तार।

लड़कई—स्त्री० दे० 'लड़कपन'।

लड़कखेल—पु० बालकों का खेल। सहज काम।

लड़कपन—पु० वह अवस्था जिसमें मनुष्य बालक हो, बाल्यावस्था। चंचलता। नादानी, नासमझी।

लड़का—पु० थोड़ी अवस्था का मनुष्य, बालक। बेटा। ⊙बाला = पु० सतान, औलाद। परिवार। मु०—लड़कों का खेल = बिना महत्व की बात। सहज बात या काम।

लड़काई।—स्त्री० दे० 'लड़कपन'।

लड़कानि(पु)—स्त्री० दे० 'लड़कई'।

लड़किनी—स्त्री० दे० 'लड़की'।

लड़की—स्त्री० छोटी अवस्था की कन्या। बेटी।

लड़कौरी—वि० स्त्री० (स्त्री) जिसकी गोद में लड़का हो।

लड़खड़ाना—अक० खड़े करने में असमर्थ होने के कारण इधर झुक पड़ना, डगमगाना। डगमगाकर गिरना। विचलित होना।

लड़ना—अक० युद्ध करना, भिड़ना। मल्ल-युद्ध करना। झगड़ा करना, हुज्जत करना। बहस करना। टक्कर खाना, भिड़ना। व्यवहार आदि में सफलता के लिये एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न करना। सट कर बैठना। बिच्छू, भिड़ आदि का डंक मारना। लक्ष्य पर पहुँचना, भिड़ना।

लड़बड़ाना—अक० दे० 'लड़खड़ाना'।

लड़बावला—वि० अल्हड़, मूर्ख। गँवार, अनाड़ी। जिसमें मूर्खता प्रकट हो।

लड़ाई—स्त्री० एक दूसरे पर वार, भिड़त, द्वंद्व। संग्राम, लड़ाई। मल्लयुद्ध, कुश्ती। झगड़ा, तकरार। वादविवाद, बहस। टक्कर। व्यवहार या मामले में सफलता के लिये एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न या चाल। अनबन, विरोध।

लड़ाका, लड़ाकू—वि० योद्धा सिपाही। झगड़ा करनेवाला।

लड़ाना—सक० [लड़ना का प्रे०] दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना। झगड़े में प्रवृत्त करना। टक्कर खिलाना, भिड़ाना। लक्ष्य पर पहुँचाना। परस्पर उलझाना। सफलता के लिये व्यवहार में लाना। जमीन पर उड़ेल देना। प्यार या दुलार करना।

लड़ायता।—वि० दे० 'लड़ैता'।

लड़ावली—वि० स्त्री० लाड़ प्यारवाली।

लड़ी—स्त्री० दे० 'लड़'।

लड़ीला—वि० दे० 'लाड़ला'।

लड़ुआ—पु० दे० 'लड्डू'।

लड़ैता—वि० लाड़ला, दुलारा। जो लाड़ प्यार के कारण बहुत इतराता हो, शोख। प्यारा। लड़नेवाला योद्धा।

लड़ैती—वि० स्त्री० दुलारी, प्यारी।

लड्डू—पु० गोल बनी हुई मिठाई, मोदक। मु०—ठगलड्डू खाना = नासमझी करना, होश हवास में न रहना। मन के लड्डू खाना या फोड़ना = व्यर्थ किसी असंभव लाभ की कल्पना करना।

लड़्याना(पु)†—सक० लाड़ प्यार करना।

लढ़ा—पु० दे० 'लढ़िया'। लढ़िया†—स्त्री० बैलगाड़ी।

लत—स्त्री० दुर्व्यसन, बुरी टेव।

लतखोर, लतखोरा—वि० सदा लात खानेवाला। नीच, कमीना। दरवाजे पर पड़ा हुआ पैर पोंछने का कपड़ा, पायदाज।

लतमर्दन—स्त्री० पैरों से रौंदने की क्रिया।

लतर—स्त्री० बेल, वल्ली।

लतरी—स्त्री० एक पौधा जिसकी फलियों से दाल निकलती है। कपड़े, टाट आदि की एक प्रकार की बहुत साधारण चप्पल।

लता—स्त्री० [सं०] वह पौधा जो डोरी के रूप में जमीन पर फैले अथवा वृक्ष के साथ लिपटकर ऊपर चढ़े, बेल। कोमल कांड या शाखा। सुंदर स्त्री। ⊙कुंज, ⊙गृह = पु० लताओं से मंडप की तरह छाया हुआ स्थान। ⊙पत्ता = पु० [सं० + हिं०] पेड़ पत्ते। जड़ी बूटी। ⊙भवन = पु० लतागृह। ⊙मंडप = पु० लतागृह।

लताड़—स्त्री॰ लताडने की क्रिया या भाव। दे॰ 'लथाड'।
लताड़ना—सक॰ पैरों से कुचलना, रौंदना। हैरान करना।
लतिका—स्त्री॰ [सं॰] छोटी लता, बेल।
लतियर, लतियल—वि॰ दे॰ 'लतखोर'।
लतियाना—सक॰ पैरों से दबाना या रौंदना। खूब लातें मारना।
लतीफा—पु॰ [अ॰] चोज की बात, चुटकुला। हँसी की छोटी कहानी।
लत्ता—पुं॰ फटा पुराना कपडा, चीथडा, कपडे का टुकडा। कपडा लत्ता = पुं॰ पहनने के वस्त्र।
लत्ती—स्त्री॰ पशुओं का पदप्रहार, लात। कपडे की लंबी धज्जी।
लथपथ—वि॰ भीगा हुआ, सराबोर। (कीचड आदि में) सना हुआ।
लथाड—स्त्री॰ जमीन पर पटककर लेटाने या घसीटने की क्रिया, चपेट। पराजय। झिडकी।
लथाड़ना—सक॰ दे॰ 'लथेडना'।
लथेड—सक॰ कीचड आदि में लपेटकर गंदा करना। पटककर इधर उधर घसीटना। हैरान करना, थकाना, डपटना।
लदना—अक॰ बोझ ऊपर लेना। आच्छादित होना, पूर्ण होना। सामान ढोनेवाली सवारी पर बोझ भरा जाना। बोझ का डाला या रखा जाना। कैद होना। बीत जाना, सदा के लिये समाप्त होना। **लदाऊ**(पु)†—वि॰ दे॰ 'लदाव'। **लदाव**—पु॰ लाद देने की क्रिया या भाव। बोझ। छत आदि का पटाव। ईंटों की जुडाई जो बिना धरन या कडी के अधर में ठहरी हो। **लदुआ, लद्दू**—वि॰ बोझ ढोनेवाला, जिसपर बोझ लादा जाय।
लद्धड—वि॰ सुस्त, आलसी।
लद्धना(पु)—सक॰ प्राप्त करना।
लप—स्त्री॰ लचीली चीज को पकडकर हिलाने का व्यापार। लपने या लचकने का गुण। छुरी, तलवार आदि की चमक की गति। पुं॰ अंजली।
लपना†—अक॰ झोंके के साथ इधर उधर लचना। झुकना, लचना। ललचना। हैरान होना।
लपक—स्त्री॰ लपट, लौ। चमक, लपलपाहट तेजी, वेग।
लपकना—अक॰ झपट पडना। तुरत दौड पडना। आक्रमण करने या लेने के लिये झपटना। मु॰—लपककर = तुरत, तेजी से, झट से।
लपका—पु॰ लत, चस्का।
लपझप—वि॰ चंचल। तेज, फुरतीला।
लपट—स्त्री॰ अग्निशिखा, आग की लौ। तपी हुई वायु, आँच। गंध से भरा वायु का झोंका। गंध, महक।
लपटना†—अक॰ दे॰ 'लिपटना'।
लपटा—पु॰ गाढी गीली वस्तु, लपसी। कढी।
लपटाना—सक॰ दे॰ 'लिपटाना'। दे॰ 'लपेटना'। † अक॰ सटना। उलझना, फँसना।
लपना—पु॰ कहना, कथन।
लपलपाना—अक॰ लपना। लंबी कोमल वस्तु का इधर उधर हिलना डुलना। छुरी, तलवार आदि का चमकना, झलकना। सक॰ दे॰ लपाना। छुरी तलवार आदि को हिलाकर चमकाना।
लपसी—स्त्री॰ थोडे घी का हलुवा। गीली गाढी वस्तु। पानी में औटाया हुआ आटा जो कैदियों को दिया जाता है।
लपाना—सक॰ लचीली छडी आदि को इधर उधर लचाना, फटकारना। आगे बढना।
लपेट—स्त्री॰ लपेटने की क्रिया या भाव। बंधन का चक्कर, फेरा। ऐंठन, बल। घेरा, उलझन, जाल या चक्कर। **लपेटन**—स्त्री॰ दे॰ 'लपेट'। पु॰ लपेटनेवाली वस्तु। बाँधने का कपडा। पैरों में उलझनेवाली वस्तु। **लपेटना**—सक॰ घुमाव या फेरे के साथ चारों ओर ले जाना। फैली हुई वस्तु को लच्छे या गट्ठर के रूप में करना। कपडे आदि के अंदर बाँधना। पकड लेना। गतिविधि बंद करना। झंझट में फंसाना। **लपेटवाँ**—वि॰ जो लपेटा हो। जिसमें सोने चाँदी

के तार लपेटे गए हो। जिसका अर्थ छिपा हो, गूढ। लपेटा—पु० दे० 'लपेट'।
लफंगा—वि० लंपट, दुश्चरित्र। शोहदा, आवारा।
लफना(पु)†—अक० दे० लिपना।
लफलफानि(पु)†—स्त्री० लपलपाने की क्रिया या भाव।
लफाना(पु)†—सक० दे० 'लपाना'।
लफ्ज—पु० [अ०] शब्द।
लबझना(पु)†—अक० उलझना।
लबडना(पु)†—अक० झूठ बोलना। गप हांकना।
लबड़धोधों—स्त्री० झूठमूठ का हल्ला। गड-बडी, अंधेर। बेईमानी की चाल।
लबरा†—वि० दे० 'लबार'।
लबादा—पु० [फा०] रूईदार अबा, चोगा।
लबार†—वि० मिथ्यावादी। गप्पी, प्रपंची। लबारी—स्त्री० झूठ बोलने का काम। वि० झूठा, चुगुलखोर।
लबालब—क्रि० वि० [फा०] मुंह या किनारे तक, छलकता हुआ।
लबासी(पु)†—वि० दे० लबासी'।
लबेद—पु० लोकाचार की भद्दी बात।
लबेदा—पु० मोटा बडा डंडा।
लब्ध—वि० [सं०] मिला हुआ, प्राप्त। भाग करने से आया हुआ फल (गणित)। ⊙काम = वि० जिसकी कामना पूरी हो गई हो। ⊙प्रतिष्ठ = वि० प्रतिष्ठित, समानित। लब्धि—स्त्री० प्राप्ति, लाभ।
लभ्य—वि० [सं०] पाने योग्य। उचित।
लमकना†—अक० लपकना। उत्कंठित होना।
लमछड़—वि० बिलकुल लंबा। पु० भाला, बरछा।
लमटंगा—वि० लंबी टांगोवाला।
लमतडंग—वि० बहुत लंबा या ऊंचा।
लमधी†—पुं० समधी का बाप।
लमाना(पु)†—सक० लंबा करना। दूर तक आगे बढाना। अक० दूर निकल जाना।
लय—पुं० [सं०] एक पदार्थ का दूसरे मे मिलना, प्रवेश। विलीन होना। ध्यान मे डूबना। प्रेम। कार्य का फिर कारण के रूप में परिणत हो जाना। जगत् का नाश, प्रलय। विनाश, लोप। मिल जाना, संश्लेष। संगीत मे नृत्य, गीत, और वाद्य की समता। स्त्री० गीत गाने का ढंग या तर्ज। संगीत मे सम।
लयन—पु० [सं०] लय होने की क्रिया या भाव।
लर(पु)†—स्त्री० दे० 'लड'।
लरकई(पु)—स्त्री० दे० 'लडकपन'।
लरकना(पु)†—अक० दे० 'लटकना'।
लरकिनी(पु)†—स्त्री० दे० 'लटकी'।
लरखरना(पु)†—अक० दे० 'लड़खडाना'।
लरखरनि(पु)†—स्त्री० लडखडाने की क्रिया या भाव।
लरजना—अक० कांपना, हिलना। दहल जाना, डरना।
लरझर(पु)†—वि० बहुत अधिक, प्रचुर।
लरना(पु)—अक० दे० 'लडना'।
लरनि(पु)—स्त्री० लडाई।
लरबरी—वि० लड़खडानेवाली, लटपटाने-वाली।
लराई(पु)†—स्त्री० दे० 'लडाई'।
लरिकाई(पु)†—स्त्री० दे० 'लडकपन'।
लरिकसलोरी†—स्त्री० लडकों का खेल।
लरिका(पु)†—पुं० दे० 'लडका'। लरिकाई (पु)†—स्त्री० दे० 'लडकपन'।
लरिया†—पु० दुपट्टा।
लरी(पु)—स्त्री० दे० 'लड़ी'।
लल(पु)—पुं० सार, तत्व।
ललक—स्त्री० प्रबल अभिलाषा।
ललकत—वि० गहरी चाह से भरा हुआ।
ललकना—अक० पाने की गहरी इच्छा करना, लालसा करना। चाह की उमंग से भरना।
ललकार—स्त्री० ललकारने की क्रिया या भाव, चुनौती। ललकारना—सक० युद्ध या प्रतिद्वंद्विता के लिये उच्च स्वर से आह्वान करना। चुनौती देना।
ललचना—अक० लालच करना। मोहित होना। अभिलाषा से अधीर होना। लल-चाना—सक० [अक० 'ललचना'] किसी के मन में लालच उत्पन्न करना। मोहित करना, लुभाना। कोई वस्तु दिखाकर उसके पाने के लिये अधीर करना। (पु)†अक० दे०

'ललचना। मु०—जी या मन ~ = मन मोहित करना, लुभाना।

ललचौहाँ—वि० लालच से भरा, ललचाया हुआ।

ललन—पु० [सं०] प्यारा बालक। प्रिय नायक या पति। क्रीडा।

ललना—पु० प्यारा बेटा। स्त्री० [सं०] स्त्री, कामिनी। जीभ। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण, मगण और दो सगण हों।

लला—पु० प्यारा या दुलारा लडका। प्रिय। नायक या पति।

ललाई—स्त्री० दे० 'लाली'।

ललाट—पु० [सं०] भाल, मस्तक। किस्मत का लिखा। ⊙पटल = पु० मस्तक का तल। ⊙रेखा = स्त्री० कपाल का लेख, भाग्यलेख।

ललना⑤†—अक० ललचना, लालायित होना।

ललाम—वि० [सं०] सुदर। लाल। श्रेष्ठ, प्रधान। पु० गहना। रत्न। चिह्न। घोड़ा। ललामी—स्त्री० सुदरता। लालिमा, लाली।

ललित—वि० [सं०] सुदर। मनचाहा, प्यारा। हिलता डोलता हुआ। पु० शृगार रस मे एक कायिक हाव या अगचेष्टा जिसमे सुकुमारता (नजाकत) के साथ अंग हिलाए जाते हैं। एक विषम वर्णवृत्त जिसके प्रथम चरण मे सगण, जगण, सगण और अत्य लघु, दूसरे मे नगण, सगण, जगण और अत्य गुरु, तीसरे मे दो नगण और दो सगण तथा चौथे मे तीन नगण, जगण और यगण हो। एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से दो नगण, मगण और रगण हो। एक अलकार जिसमे वर्ण्य वस्तु (बात) के स्थान पर उसके प्रतिबिंब का वर्णन किया जाता है। एक रागिनी। ⊙ई ⑤† = स्त्री० [हिं०] दे० 'ललिताई'। ⊙कला = स्त्री० वे कलाएँ जिनमे कल्पना और बुद्धि का सुदरतम सयोग हो (जैसे, सगीत, चित्रकला, वास्तुकला आदि)। ⊙पद = पु० एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे २८ मात्राएँ और अत मे दो दीर्घ वर्ण हो, नरेंद्र, दोवे, सार।

ललिता—स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तगण, भगण, जगण और रगण ह। राधिका की प्रधान आठ सखियो मे से एक। ⊙ई⑤ = स्त्री० [हिं०] सुदरता।

ललितोपमा—स्त्री० [सं०] एक अर्थालकार जिसमे उपमेय और उपमान की समता जताने के लिये सम, तुल्य आदि के वाचक पद न रखकर ऐसे पद लाए जाते है जिनसे बराबरी, मित्रता, निरादर, ईर्ष्या इत्यादि भाव प्रकट होते हैं।

लली—स्त्री० लडकी के लिये एक प्यार का शब्द। नायिका, प्रेमिका।

ललौहाँ—वि० सुर्खीमायल, ललाई लिए हुए।

लल्ला—पु० दे० 'लला'। स्त्री० जीभ।

लल्लोचप्पो—स्त्री० चिकनीचुपडी बात। लल्लोपत्तो—स्त्री० दे० 'लल्लोचप्पो'।

लवग—पु० [सं०] लौंग (मसाला)।

लव—पु० [सं०] बहुत थोडी मात्रा। दो काष्ठा अर्थात् छत्तीस निमे का समय। लवा नाम की चिड़िया। लवग। श्रीरामचद्र के दो यमज पुत्रो मे से एक।

लवकना—सक० दे० 'लौकना'।

लवका†—स्त्री० बिजली विद्युत्।

लवण—पु० [सं०] नमक, नोन। दे० 'लवणासुर'। दे० 'लवणसमुद्र'। ⊙समुद्र = पु० पुराणोक्त सात समुद्रो मे से एक, खारे पानी का समुद्र।

लवन—पु० [सं०] काटना, छेदना। खेत की कटाई, लुनाई।

लवना—सक० दे० 'लुनना'।

लवनाई⑤—स्त्री० दे० 'लावण्य'।

लवनि, लवनी—स्त्री० खेत मे अनाज की पकी फसल की कटाई, लुनाई। मक्खन।

लवन्या—स्त्री० लावण्य, लुनाई।

लवर†—स्त्री० अग्नि की लपट, ज्वाला ।
लवला—स्त्री० ज्योति, छटा ।
लवलासो(पु)†—स्त्री० प्रेम की लगावट ।
लवनी—स्त्री० [सं०] हरफारेवरी नाम का पेड़ और उसका फल । एक विषम वर्ण वृत्त जिसके प्रथम चरण मे १६, दूसरे मे ११, तीसरे मे ८ और चौथे मे २० वर्ण हो ।
लवलीन—वि० तन्मय, मग्न ।
लवलेश—पु० [सं०] अत्यंत अल्प ससर्ग ।
लवा†—पु० भुने हुए धान या ज्वार की खील, लावा । तीतर की जाति का एक पक्षी ।
लवाई—वि० वह गाय जिसका बच्चा अभी बहुत ही छोटा हो । स्त्री० खेत की फसल की कटाई, लुनाई ।
लवाजमा—पु० किसी के साथ रहनेवाला दल । बल और साज सामान । आवश्यक सामग्री ।
लवारा—पु० गौ का बच्चा । † वि० दे० 'आवारा' ।
लवासी—वि० गप्पी, बकवादी । लपट ।
लशकर—पु० [फा०] सेना । भीड़भाड़, दल । सेना का पड़ाव, छावनी । जहाज मे काम करनेवालो का दल । लशकरी—वि० फौज का, सेना संबंधी । जहाज पर काम करनेवाला, खलासी । स्त्री० जहाजियो या खलासियो की भाषा ।
लषन(पु)—पु० दे० 'लखन' ।
लस—पु० चिपकने या चिपकाने का गुण । लासा । चित्त लगने की बात, आकर्षण । ⊙दार=वि० [फा०] जिसमे लस हो, लसीला । लसना—सक० एक वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ सटाना, चिपकाना । (पु)अक० शोभित होना, फबना । विराजना । लसनि(पु)—स्त्री० स्थिति, विद्यमानता । शोभा, छटा ।
लसम—वि० दूषित, खोटा । पु० लसलसापन, चिपकने का गुण ।
लसलसा—वि० दे० 'लसदार' । लसलसाना —अक० चिपचिपा होना ।
लसित—वि० [सं०] सजा हुआ, सुशोभित ।
लसी—स्त्री० लस, चिपचिपाहट । दिल लगने की वस्तु । लाभ या योग । संबंध, लगाव । दूध या दही और पानी मिला शरबत । लसीला—वि० लसदार । शोभायुक्त ।
लसोड़ा—पु० एक प्रकार का पेड़ जिसके फल औषध के काम मे आते है ।
लस्टम पस्टम†—क्रि० वि० किसी न किसी तरह से । भद्दे ढग से ।
लस्त—वि० थका हुआ, शिथिल । अशक्त ।
लस्सी—स्त्री० चिपचिपाहट । छाछ, तक्र । मथा हुआ दही मिश्रित शर्बत ।
लहँगा—पु० कमर के नीचे का अंग ढकने के लिये स्त्रियो का एक घेरदार पहनावा ।
लहक—स्त्री० लहकने की क्रिया या भाव । आग की लपट । शोभा । चमक । लहकना—अक० झोंके खाना, लहराना । हवा का बहना । आग का इधर उधर लपट छोड़ना, दहकना । लपकना । उत्कठित होना ।
लहकाना, लहकारना—सक० लहकने मे किसी को प्रवृत्त करना ।
लहकौर, लहकौरी—स्त्री० विवाह की एक रीति जिसमे दूल्हा और दुलहिन एक दूसरे के मुँह मे कौर (ग्रास) डालते है ।
लहजा—पु० गाने या बोलने का ढग ।
लहनदार—पु० ऋण देनेवाला, महाजन ।
लहना—सक० प्राप्त करना । पु० उधार दिया हुआ रुपया पैसा । रुपया पैसा जो किसी कारण किसी से मिलनेवाला हो । लहनी—स्त्री० प्राप्ति । फलभोग ।
लहबर—पु० एक प्रकार का लबा पहनावा, लबादा । झडा, निशान । तोते की एक किस्म ।
लहर—स्त्री० ऊँची उठती हुई जल की राशि, मौज । उमग, जोश । मन की मौज । बेहोशी, पीडा आदि का वेग जो रुक रुककर उत्पन्न हो, झोका, आनद की उमग, मौज । इधर उधर मुड़ती हुई टेढी चाल । चलते हुए सर्प की सी कुटिल रेखा । हवा का झोका । ⊙दार =वि० [फा०] जो सीधा न जाकर

बल खाता हुआ गया हो। ⊙पटोर = पुं० पुरानी चाल का एक धारीदार रेशमी कपड़ा। ⊙पटोरी = स्त्री० दे० 'लहरपटोर'। मु० ~आना = साँप के काटने से बेहोश व्यक्ति को रह रहकर होश आना। लहरना—अक० दे० लहराना। लहरा— पु० लहर, तरंग। आनद, मजा। लहराना—अक० हवा के झोके से इधर उधर हिलना डोलना। पानी का हवा के झोके मे उठना और गिरना, हिलोरा मारना। इधर उधर मुडते या झोका खाते हुए चलना। मन का उमग मे होना। उत्कंठित होना, लपकना। आग की लपट का हिलना, दहकना। शोभित होना। सक० हवा के झोके मे इधर उधर हिलाना। वक्र गति से ले जाना। लहरान—स्त्री० लहराने की क्रिया या भाव। लहरिया—पुं० लहरदार चिह्न, टेढी मेढी गई हुई लकीरो की श्रेणी। एक प्रकार का कपडा जिसमे रग विरगी टढी मेढी लकीरें बनी होती हैं। उपर्युक्त प्रकार के कपडे की साडी या धोती। स्त्री० दे० 'लहर'।

लहरी—स्त्री० [स०] लहर, तरग। †वि० [हिं०] मन की तरग के अनुसार चलनेवाला। मनमौजी।

लहलहा—पुं० लहलहाता हुआ, हरा भरा। आनद से पूर्ण, प्रफुल्ल। हृष्टपुष्ट।

लहलहाना—अक० हरी पत्तियो से भरना, हरा भरा होना। खुशी से भरना। सूखे पेड या पौधे मे फिर से पत्तियाँ निकलना।

लहसुन— पुं० एक पौधा जिसकी जड गोल गाँठ के रूप मे होती और मसाले के काम आती है।

लहसुनिया—पुं० धूमिल रग का एक रत्न।

लहा—पुं० दे० 'लाह'।

लहाछेह—पु० नाच की एक गति। नाचने मे तेजी और झपट। तीव्रता, तेजी।

लहालह(पु)†—वि० 'लहलहा'।

लहालोट—वि० हँसी से लोटता हुआ। खुशी से भरा हुआ, प्रेममग्न, मोहित।

लहास†—स्त्री० दे० 'लाश'।

लहासी—स्त्री० मोटी रस्सी।

लहि†—अव्य० पर्यंत, तक।

लहु(पु)†—अव्य० दे० 'लौं'।

लहुरा†—वि० छोटा।

लहू(पु)†—पुं० रक्त, खून। मु०~लुहान होना = खून से भर जाना अत्यत लहू बहना।

लहेरा—पुं० लाह का पक्का रग चढानेवाला।

लाँक†—स्त्री० कटि।

लाँग—स्त्री० धोती का वह भाग जो पीछे की ओर कमर मे खोस लिया जाता है।

लाँगल—पुं० [सं०] खेत जोतने का हल।

लागली—पुं० बलराम। नारियल। साँप। स्त्री० पुराणानुसार एक नदी का नाम। कलियारी। मजीठ।

लांगूली—वि०, पुं० [स०] बदर।

लाँघना—सक० इस पार से उस पार जाना, डांकना।

लाँच—स्त्री० रिश्वत, घूस।

लाछन—पुं० [सं०] चिह्न, निशान। दाग। कलक।

लाँछना—स्त्री० दे० 'लाछन'।

लाछनित—वि० दे० 'लाछित'।

लाछित—वि० [सं०] जिसे लाछन लगा हो, कलकित।

लाँझ(पु)—स्त्री० बाधा, रुकावट।

लांपट्य—पुं० [सं०] लपट का भाव, लपटता।

लाँवा(पु)†—वि० दे० 'लवा'।

लाइ(पु)†—पु० अग्नि।

लाइक—वि० दे० 'लायक'।

लाइट—स्त्री० [अं०] प्रकाश, रोशनी। ⊙हाउस = पु० वह स्थान जहाँ बहुत दूर तक पहुँचनेवाला प्रकाश जलता है। समुद्र मे चलनेवाले जहाजो के ज्ञान के लिये जलाए जानेवाले प्रकाशपुज का स्थान या घर।

लाइन—स्त्री० [अँ०] पक्ति, कतार। सतर। रेखा। रेल की सडक। घरो की वह पक्ति जिसमे सिपाही रहते हैं, बारिक।

लाई—स्त्री० धान का लावा। चुगली, निंदा। ⊙लुतरी = स्त्री० चुगली, शिकायत। वह (स्त्री) जो दूसरों की चुगली खाती फिरती हो।

लाकडी—स्त्री० दे० 'लकडी'।

लाक्षणिक—वि० [सं०] जिससे लक्षण प्रकट हो। लक्षण सबधी। पु० वह छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राएं हो। लक्षण जाननेवाला।

लाक्षा—स्त्री० [सं०] लाख, लाह। ⊙गृह पुं० लाख का वह घर जिसे दुर्योधन ने पाडवों को जला देने की इच्छा से बनवाया था। ⊙रस = पु० महावर। लाक्षिक—वि० लाख का बना हुआ। लाख सबधी।

लाख—वि० सौ हजार। बहुत अधिक। पुं० सौ हजार की सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००००। क्रि० वि० बहुत अधिक। स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध लाल पदार्थ जो अनेक प्रकार के वृक्षो की टहनियो पर कई प्रकार के कीडो से बनता है। लाह के वे छोटे लाल कीडे जिनसे उक्त द्रव्य निकलता है।

लाखना—अक० लाख लगाकर कोई छेद बद करना। ⑨†सक० जानना।

लाखागृह—पु० दे० 'लाक्षागृह'।

लाखिराज—वि० [अ०] (जमीन) जिसका खिराज या लगान न देना पडता हो, माफी।

लाखी—वि० लाख के रग का, मटमैला लाल। पुं० लाख के रग का घोडा।

लाग—क्रि० वि० पर्यंत, तक। स्त्री० सबध, लगाव। प्रेम। लगन। युक्ति, तरकीब। वह स्वांग आदि जिसकी निर्माणकला प्रकट न हो, जिसमे कोई विशेष कौशल हो और जो जल्दी समझ मे न आवे। प्रतियोगिता। वैर। जादू। वह नियत धन जो शुभ अवसरो पर ब्राह्मणो, भाटो आदि को दिया जाता है। लगान। एक प्रकार का नृत्य। ⊙डाँट = स्त्री० शत्रुता। प्रतियोगिता, चढ़ाऊपरी। नृत्य की एक क्रिया।

लागत—स्त्री० वह खर्च जो किसी चीज की तैयारी या बनाने मे लगे।

लागना⑨—अक० दे० 'लगना'।

लागि⑨†—अव्य कारण। लिये। द्वारा। क्रि० वि तक, पर्यंत। स्त्री० लगी। लगन, प्रेम।

लागू—वि० प्रयुक्त या चरितार्थ होनेवाला। †पु० ला, लगन।

लागे†—अव्य० वास्ते, लिये।

लाघव—पु० [सं०] लघु होने का भाव, लघुता। कमी, अल्पता। हाथ की सफाई, फुर्ती। तदुरुस्ती। अव्य० फुर्ती से, सहज मे।

लाघवी⑨—स्त्री० फुर्ती, शीघ्रता।

लाचार—वि० [फा०] विवश, मजबूर। क्रि० वि० विवश या मजबूर होकर। लाचारी—स्त्री० मजबूरी, विवशता।

लाछन⑨—पुं० दे० 'लाछन'।

लाज—स्त्री० दे० 'लज्जा'। ⊙वंत = वि० लज्जायुक्त, शर्मदार। ⊙वती = स्त्री० लजालू या छुई मुई (पौधा)। मु०~ रखना = प्रतिष्ठा बचाना। ~संभालना = दे० 'लज्जा रखना'।

लाजना⑨—अक० लज्जित होना। सक० लज्जित करना।

लाजक—पु० धान का लावा।

लाजवर्द—पु० [फा०] एक प्रकार का कीमती पत्थर।

लाजवाब—वि० [फा०] अनुपम, बेजोड़। निरुत्तर, चुप।

लाजा—स्त्री० [सं०] चावल। भूनकर फुलाया हुआ धान, लावा।

लाजिम—वि० [अ०] अवश्य करने योग्य। उचित, मुनासिब।

लाजिमी—वि० जरूरी, आवश्यक।

लाट—स्त्री० मोटा और ऊँचा खभा। पु० अँगरेजी जमाने मे प्रातो और केंद्र के शासको की उपाधि। अंगरेजो मे सामतों की परंपरागत उपाधि। पु० [सं०] प्राचीन देश जहाँ अब अहमदाबाद आदि नगर हैं। दे० 'लाटानुप्रास'।

लाटरी—स्त्री० [अं०] टिकट खरीदनेवालो मे पुरस्कार वितरण का सयोग पर अवलम्बित तरीका ।

लाटानुप्रास—पुं० [सं०] वह शब्दालकार जिसमे शब्दो की पुनरुक्ति तो होती है, परतु अन्वय के हेरफेर से तात्पर्य भिन्न हो जाता है ।

लाटिका—स्त्री० [सं०] साहित्य मे एक प्रकार की रचना या रीति । इसमे पद और समास दोनो छोटे छोटे होते है ।

लाटी‡—स्त्री० वह अवस्था जिसमे मुँह का थूक और ओठ सूख जाता है । स्त्री० [सं०] लाटिका रीति ।

लाठ—स्त्री० दे० 'लाट' ।

लाठी—स्त्री० डडा, लकडी । ⊙चार्ज = पुं० [अं०] भीड आदि हटाने के लिये पुलिस का लोगो पर लाठियाँ चलाना । मु० ~ चलना—लाठियो की मारपीट होना ।

लाड़—पु० बच्चो का लालन, प्यार, दुलार लडैता—वि० दे० 'लाड़ला' ।

लाड़ला—वि० जिसका लाड़ किया जाय, दुलारा ।

लाडू—पुं० दे० 'लड्डू' । ‡ प्यार ।

लात—स्त्री० पैर, पाँव, पद । पैर से किया हुआ आघात या पादप्रहार । मु०~खाना पैरो की ठोकर या मार सहना ।~मारना = तुच्छ समझकर छोड देना ।

लाद—स्त्री० लादने की क्रिया या भाव, लदाई । पेट, उदर । आँत, अँतडी ।

लादना—सक० किसी पर बहुत सी वस्तुएँ रखना । ढोने या ले जाने के लिये वस्तुओं को भरना । बोझ रखना ।

लादिया—पुं० वह जो एक स्थान से माल लादकर दूसरे स्थान पर ले जाता है ।

लादी—स्त्री० वह गठरी जो किसी पशु पर लादी जाती है ।

लाधना(पु)‡—सक० प्राप्त करना, पाना ।

लानत—स्त्री० धिक्कार, फिटकार ।

लाना—अक० कोई चीज उठाकर या साथ लेकर आना । उपस्थित करना, सामने रखना । †आग लगाना, जलाना । (पु)† लगाना ।

लाने(पु)†—अव्य वास्ते, लिये ।

लाप—पु० बातचीत, सवाद ।

लापता—वि० [अ० + हिं०] जिसका पता न लगे । गुप्त, गायब ।

लापरवा, लापरवाह—वि० [अ० + फा०] जिसे किसी बात की परवा न हो, बेफिक्र । असावधान ।

लापरवाही—पुं० बेफिक्र । असावधानी ।

लापसी†—स्त्री० दे० 'लपसी' ।

लाबर(पु)†—वि० दे० 'लबार' ।

लाबी—स्त्री० [अं०] ससद् और विधान सभाओ आदि का वह बडा कमरा जिसमें उनके सदस्यो से बाहरी लोग मिलजुल सकते हैं । ऐसी सभाओ के वे दो अलग अलग गलियारे जिनमे किसी विषय के पक्ष और विपक्ष मे मत देने के लिये सदस्य एकत्र होते हैं ।

लाभ—पु० [सं०] मिलना, प्राप्ति । मुनाफा उपकार । ⊙कारी = वि० फायदा करनेवाला, गुणकारक । ⊙दायक = वि० दे० 'लाभकारी' । ⊙प्रद = वि० दे० 'लाभकारी' । लाभांश—पुं० किसी व्यापार से हुए लाभ का हिस्सेदारो मे बाँटा हुआ अश (अं० डिविडेंट) ।

लाम—पुं० सेना, फौज । बहुत से लोगो का समूह ।

लामज—पु० एक प्रकार का तृण, पोलावाला ।

लामन—पु० लहँगा ।

लामा—पु० [ति०] तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धो का धर्माचार्य । वि० [हिं] दे० 'लंबा' ।

लामे‡—क्रि० वि० दूर, अंतर पर ।

लाय(पु)—स्त्री० लपट, ज्वाला । आग, अग्नि ।

लायक़—वि० [अ०] उचित, ठीक । उपयुक्त, मुनासिब । सुयोग्य, गुणवान् । समर्थ । पुं० [हिं०] धान का लावा ।

लायकियत, लायकी—स्त्री० लायक होने का भाव या धर्म, योग्यता ।

लायची—स्त्री० दे० 'इलायची' ।

लार—क्रि० वि० साथ, पीछे । स्त्री० वह पतला लसदार थूक जो मुँह मे से तार के रूप मे निकलता है । कतार, पक्ति । लासा, लुआब । मुंह मे ~आना या ~टपकना = किसी चीज को देखकर उसके पाने की तीव्र लालसा होना ।

लारी—स्त्री० [अँ०] वह लबी मोटर गाडी जिसपर बहुत से आदमियो के बैठने और माल लादने की जगह होती है ।

लाल—पु० छोटा और प्रिय बालक । बेटा, पुत्र । प्यारा आदमी । श्रीकृष्णचद्र । दे० 'लार' । दे० 'मानिक' । एक प्रसिद्ध छोटी चिडिया जिसकी मादा को 'मुनियाँ' कहते है । ⓟ† स्त्री० इच्छा, चाह । वि० रक्तवर्ण, सुर्ख । बहुत अधिक क्रुद्ध । (खिलाडी) जो खेल मे औरो से पहले जीत गया हो । ⊙बुझक्कड = पु० वह जो बातो का अटकल पच्चू मतलब लगाए । ⊙चदन = पु० [सं०] एक प्रकार का चदन जिसे घिसने से लाल रग और अच्छी सुगध निकलती है, रक्त चदन । ⊙मिर्च = स्त्री० दे० 'मिर्च' । ⊙समुद्र = पु० दे० 'लाल सागर' । ⊙सागर = पु० [हिं० + स०] अरब सागर का वह अश जो अरब और अफ्रिका के मध्य मे पडता है । ⊙सिखी† = पु० मुर्गा । मु० ~उगलना = बहुत अच्छी और प्यारी बातें कहना । ~पडना या होना = क्रुद्ध होना । ~पीला होना = गुस्सा होना । ~होना = बहुत अधिक सपत्ति पाकर सपन्न होना ।

लालच—पु० किसी को पाने की उत्कट इच्छा । लोभ, लोलुपता ।

लालचहा†—वि० दे० 'लालची' ।

लालची—वि० जिसे बहुत अधिक लालच हो, लोभी ।

लालटेन—स्त्री० मिट्टी के तेल से जलनेवाला तथा शीशे से घिरा एक प्रकार का टीन या पीतल का दीपक, कदील ।

लालडी—पु० एक प्रकार का लाल नगीना ।

लालन—पु० [सं०] प्रेमपूर्वक बालको का आदर करना, लाड । पु० [हिं०] प्यारा बच्चा । कुमार, बालक ।

लालना ⓟ—सक० दुलार करना, लाड करना ।

लालमन—पु० श्रीकृष्ण । एक प्रकार का तोता ।

लालरी—स्त्री० दे० 'लालडी' ।

लालस—वि० [सं०] ललचाया हुआ, लोलुप ।

लालसा—स्त्री० [सं०] बहुत अधिक इच्छा या चाह, लिप्सा । उत्सुकता ।

लालसी ⓟ—वि० अभिलाषा या इच्छा करनेवाला उत्सुक ।

लाला—पु० एक प्रकार का सबोधन, महाशय । छोटे प्रिय बच्चे के लिये सबोधन । वि० लाल रग का । स्त्री० [सं०] मुँह से निकलने वाली लार, थूक । पु० [फा०] पोस्त का लाल रग का फूल ।

लालायित—वि० [सं०] ललचाया हुआ ।

लालित—वि० [सं०] दुलारा, प्यारा । जो पाला पोसा गया हो ।

लालित्य—पु० [सं०] ललित का भाव, सौंदर्य, सरसता ।

लालिमा—स्त्री० [सं०] लाली सुर्खी ।

लाली—स्त्री० लाल होने का भाव सुर्खी । इज्जत । पु० दे० 'लाल' ।

लाले—पु० लालसा, अभिलाषा । मु० (किसी चीज के) ~पड़ना = (किसी चीज के लिये) बहुत तरसना ।

लाल्हा†—पु० मरसा नामक साग ।

लाव ⓟ†—स्त्री० आग । मोटा रस्सा । ⊙दार = वि० [फा०] (तोप) जो छोड़ी जाने या रंजक देने के लिये तैयार हो । पु० तोप छोडनेवाला, तोपची ।

लावक—पु० [सं०] लवा पक्षी ।

लावण्य—पु० [सं०] लवण का भाव या धर्म, नमकपन । अत्यत सुदरता ।

लावन्यता ⓟ—स्त्री० दे० 'लावण्य' ।

लावनि (पु)—स्त्री० सौंदर्य, लावण्य।
लावनी—स्त्री० एक प्रकार का छद। इस छद का एक प्रकार जो प्राय चग बजाकर गाया जाता है, ख्याल।
लावन्न—पु० सौदय।
लाव लश्कर—पु० [फा०] सेना और उसके साथ रहनेवाले लोग तथा सामग्री।
लावल्द—वि० [फा०] निःसतान।
लावा—पु० [स०] लवा नामक पक्षी। पु० [हि०] भुना हुआ धान, या रामदाना आदि जो भुनने के कारण फूटकर खिल जाता है, खील। ज्वालामुखी पर्वत से निकला पदार्थ। ⊙परछन = पुं० हिंदुओं में विवाह के समय की एक रीति।
लावारिस—पुं० [अ०] वह जिसका कोई उत्तराधिकारी या वारिस न हो।
लाश—स्त्री० [फा०] प्राणी की मृत देह मुरदा।
लाष (पु)—पुं०, वि० दे० 'लाख'।
लाषना (पु)†—सक० दे० 'लखना'।
लास—पु० एक प्रकार का नाच। मटक।
लासा—पुं० कोई लसदार चीज, चेप। एक प्रकार का चिपचिपा पदार्थ जो बहेलिए चिडियों को फँसाने के लिये बनाते हैं।
लासानी—वि० [अ०] अद्वितीय, बेजोड।
लासि—पु० दे० 'लास्य'।
लास्य—पुं० [सं०] नृत्य, नाच। भाव और ताल आदि सहित वह नृत्य जो कोमल अगो द्वारा शृगार आदि कोमल रसो का उद्दीपन करे।
लाह—(पु) स्त्री० लाख, चमडा। चमक, काति। पु० लाभ, नफा।
लाहक (पु)—पुं० इच्छुक, चाहनेवाला।
लाही—स्त्री० दे० 'लाख'। लाख से मिलता जुलता एक कीडा जो फसल को प्राय हानि पहुँचाता है। वि० मटमैलापन लिए लाल।
लाहु (पु)—पु० नफा, लाभ।
लिंग—पु० [सं०] चिह्न, लक्षण। पुरुष की गुप्त इंद्रिय, शिश्न। व्याकरण में पुरुष, स्त्री या पुरुष का कल्पित या यथार्थ भेद जिससे पुरुष और स्त्री का पता लगता है, जैसे पुल्लिग, स्त्रीलिंग, नपुसक लिंग। शिव का एक विशेष प्रकार का प्रतीक। साख्य के अनुसार मूल प्रकृति। वह जिससे किसी वस्तु का अनुमान हो। ⊙देह = पुं० वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्मों को भोगने के लिये जीवात्मा के साथ लगा रहता है (अध्यात्म)। ⊙पुराण = पुं० १८ पुराणों में से एक जिसमे शिव का माहात्म्य वर्णित है। ⊙शरीर = पुं० दे० 'लिंगदेह'।

लिंगायत—पु० एक शैव सप्रदाय जिसका प्रचार दक्षिणभारत मे बहुत है। लिंगी—पु० चिह्नवाला निशानवाला। आडवरी, धर्मध्वजी। लिंगेंद्रिय—पुं० पुरुषों की मूत्रेंद्रिय।
लिए—दे० 'लिये'। लेना' क्रिया का भूतकालिक बहुवचन रूप।
लिक्खाड—पु० बहुत लिखनेवाला, भारी लेखक [व्यग्य]।
लिक्षा—स्त्री० [सं०] जूँ का अडा, लिख। एक परिमाण जो कई प्रकार का कहा गया है।
लिखक—सक० पु० लिखनेवाला, लिपिकार।
लिखत—स्त्री० लिखी हुई बात, लेख। दस्तावेज। लिखधार (पु)—पु० दे० 'लिखहार'। लिखना—सक० अक्षर उपटाना, लिपिबद्ध करना। अकित करना। चित्रित करना। पुस्तक लेख या काव्य आदि की रचना, काव्य। लिखनी (पु)—स्त्री० दे० 'लेखनी'।
लिखवार—पु० दे० 'लिखहार'। लिखहार (पु)—पु० लिखनेवाला, मुहर्रिर या मुशी।
लिखाई—स्त्री० लेख, लिपि। लिखने का कार्य। लिखने का ढग, लिखावट। लिखने की मजदूरी। चित्र अकित करने की क्रिया या भाव। लिखाना—सक० [लिखना का प्रे०] दूसरे के द्वारा लिखने

का काम कराना। लिखापढ़ी—स्त्री० पत्र व्यवहार, चिट्ठियों का आना जाना। किसी विषय को कागजों पर लिखकर निश्चित या पक्का करना। लिखावट—स्त्री० लेख, लिपि। लिखने का ढंग।

लिखित—वि० [सं०] लिखा हुआ, अंकित।

लिखितक—पु० एक प्रकार के प्राचीन चौखूंटे अक्षर।

लिख्या—स्त्री० दे० 'लिक्षा'।

लिच्छवी—पु० [सं०] एक प्राचीन राजवंश जिसका राज्य नेपाल, मगध और कोसल तक था।

लिटाना—सक० [लेटना का प्रे०] दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।

लिट्ट—पु० अंगाकड़ी, बाटी।

लिडार†—पु० शृगाल, गीदड़। वि० डरपोक, कायर।

लिपटना—अक० एक वस्तु का दूसरी से सट जाना, चिपटना। गले लगना। किसी काम में जी जान से लग जाना।

लिपटाना—सक० संलग्न करना, चिमटाना। आलिंगन करना, गले लगाना।

लिपड़ा—पु० कपड़ा। वि० गीला और चिपचिपा। स्त्री० दे० 'लिबड़ी'।

लिपना—अक० [सक० लीपना] लीपा या पोता जाना। रंग या गीली वस्तु का फैल जाना। लिपाना—सक० [लीपना का प्रे०] रंग या किसी गीली वस्तु की तह चढ़वाना, पुताना। चूने, मिट्टी गोबर आदि से लेप कराना।

लिपाई—स्त्री० लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

लिपि—स्त्री० [सं०] अक्षर या वर्ण के अंकित चिह्न, लिखावट। अक्षर लिखने की प्रणाली (जैसे, ब्राह्मी लिपि, अरबी लिपि)। लिखे हुए अक्षर या बात, लेख। ⊙कार = पु० लेखक। प्रतिलिपि करनेवाला। ⊙बद्ध = वि० लिखा हुआ।

लिप्त—वि० [सं०] लिपा हुआ, पुता हुआ। खूब तत्पर, लीन। जिसकी पतली तह चढ़ी हो।

लिप्सा—स्त्री० [सं०] लालच, लोभ।

लिफाफा—पु० [अ०] कागज की बनी हुई वह चौकोर थैली जिसके अंदर कागज पत्र रखकर भेजे जाते हैं। दिखावटी कपड़े लत्ते। ऊपरी आडंबर, मुलम्मा। जल्दी नष्ट हो जानेवाली वस्तु।

लिबड़ना—अक० कीचड़ आदि में लतपथ होना। सक० कीचड़ आदि में लतपथ करना।

लिबड़ी—स्त्री० कपड़ा लत्ता। ⊙बरतना या बरदाना = निर्वाह का मामूली सामान, असबाब।

लिबरल—पु० [अं०] लोकतंत्रात्मक सुधार का पक्षपाती और विशेषाधिकारों का विरोधी राजनीतिज्ञ। भारतीय राजनीति में कांग्रेस के सक्रिय आंदोलन से अलग हुए नेताओं का दल जो क्रमिक स्वराज्य के पक्ष में था, नरम दल। इस दल का सदस्य। वि० उदार।

लिबास—पुं० [अ०] पहनने का कपड़ा, पहनावा।

लियाकत—स्त्री० [अ०] योग्यता। गुण, हुनर। सामर्थ्य। शील, शिष्टता।

लिये—हिंदी का एक कारकचिह्न जो संप्रदान में आता है और जिस शब्द के आगे लगता है उसके अर्थ या निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित करता है (जैसे, उसके लिये)। दे० 'लिए'।

लिलाट, लिलार(पु)†—पु० दे० 'ललाट'।

लिलोही†—वि० लालची।

लिव(पु)—स्त्री० लगन।

लिवर—पुं० [अं०] जिगर, यकृत। ताले का खटका।

लिवाना—सक० [लेना या लाना का प्रे०] लेने या लाने का काम दूसरे से कराना, पकड़ाना। अपने हाथ ले जाना।

लिवाल—पुं० खरीदने या लेनेवाला।

लिवैया—वि० लेने, लाने या लिवा ले जानेवाला।

लिसोड़ा—पुं० एक मझोला पेड़ जिसके फल छोटे बेर के बराबर होते हैं और पकने पर लसदार गूदे से युक्त होते हैं।

लिह—वि० लेह्य ।
लिहाज—पुं० [अ०] व्यवहार या बरताव में किसी बात का ध्यान या ख्याल। कृपादृष्टि । मुलाहजा, शील सकोच । पक्षपात, तरफदारी । समान ,या मर्यादा का ध्यान । लज्जा ।
लिहाडा—वि० नीच, गिरा हुआ। खराब, निकम्मा ।
लिहाडी†—स्त्री० हँसी, विडबना । निंदा। मु०~लेना = बनाना, उपहास करना ।
लिहाफ—पु० [अ०] जाडो मे रात को सोने समय ओढने का रुईदार कपडा, रजाई।
लिहित—वि० चाटता हुआ।
लीक—स्त्री० लकीर रेखा । गहरी पडी हुई लकीर । मर्यादा, नाम । बँधी हुई मर्यादा । रीति, दस्तूर । हद, प्रतिबध। बदनामी, लाछन । गिनती। मु०~करके = दे० 'लीक खीचकर' । ~खिचना = किसी बात का अटल और और दृढ होना। मर्यादा बँधना । प्रतिष्ठा स्थिर होना । ~खींचकर = निश्चयपूर्वक जोर देकर । ~पीटना = चली आई हुई प्रथा का ही अनुसरण करना ।
लीखी—स्त्री० जूं का अडा । लिक्षा नामक परिणाम ।
लीग—स्त्री० [अं०] पारस्परिक रक्षा, सहयोग या सामान्य लक्ष्य की सिद्धि के लिये सगठित व्यक्तियो या राष्ट्रो का सघ। बहुत बडी सभा या सस्था । मुसलमानो का वह सघटन जिसने पाकिस्तान का निर्माण कराया, मुस्लिम लीग। लबाई की एक नाप जो स्थल के लिये तीन मील की और समुद्र के लिये साढे तीन मील की होती है ।
लीगी—वि० मुस्लिम लीग का या उससे सबद्ध (व्यक्ति या) कार्य ।
लीचड़—वि० काहिल, निकम्मा । जल्दी न छोडनेवाला । जिसका लेन देन ठीक न हो ।
लीची—स्त्री० एक सदाबहार पेड़ जिसका फल सफेद गूदेदार और मीठा होता है तथा छिलके कटावदार दाने से उभरे रहते हैं ।

लीझी—वि० नीरस, निस्सार। निकम्मा । स्त्री० देह मे मले हुए उबटन के साथ छूटी हुई मैल की बत्ती । वह गूदा या रेशा जिसका रस चूस या निचोड लिया गया हो, सीठी ।
लीडर—पु० [अं०] अगुआ, नेता ।
लीथो—पु० पत्थर का छापा जिसपर हाथ से लिखकर अक्षर या चित्र छापे जाते है।
लीद—स्त्री० घोडे, गधे, हाथी आदि कुछ पशुओ का मल ।
लीन—वि० [सं०] जो किसी वस्तु में समा गया हो। तन्मय, मग्न । बिलकुल लगा हुआ, तत्पर।
लीपना—सक० गीली वस्तु की पतली तह चढाना, पोतना । **मु० लीप पोतकर बराबर करना = चौपट करना । लीपा पोती करना** = गदा लिखना, काट छाँट-कर लिखना। गलती को ढकने का प्रयास करना ।
लीबर(पु)—वि० कीचड आदि से भरा हुआ।
लीर†—स्त्री० कपडे की धज्जी, चिथडा ।
लील†—पुं० नील । वि० नीला, नीले रग का ।
लीलना—सक० गले के नीचे पेट मे उतारना, निगलना ।
लीलया—क्रि० वि० [सं०] खेल मे । सहज मे ही, बिना प्रयास ।
लीलाबर—पुं० दे० 'नीलाबर' ।
लीला—पुं० स्याह रग का घोडा । वि० नीला । स्त्री० [स०] वह व्यापार जो केवल मनोरजन के लिये किया जाय, केलि । प्रेम का खिलवाड । नायिकाओ का एक हाव जिसमे वे प्रायः वेश, गति, वाणी आदि का अनुकरण करती है। विचित्र काम । मनुष्यो के मनोरजन के लिये किए हुए ईश्वरावतारो का अभिनय, चरित्र । १२ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे । ऽ । (ह्रस्व, दीर्घ और ह्रस्व) हो। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, तगण और एक गुरु होता है। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे पाँच भगण और अत्य गुरु हो, नील, विशेषक, अश्वगति । एक छद

जिसमे २४ मात्राएँ और अत मे सगण होता है। ⊙पुरुषोत्तम = पुं० श्रीकृष्ण। ⊙वती = स्त्री० ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की पत्नी जिसने लीलावती नाम की गणित की एक पुस्तक बनाई थी। ३२ मात्राओ के पद्मावती या कमलावती नामक छद (जिसके अत मे दो दीर्घ हों। और किसी चौक्ल मे जगण हो) के सब पदो के अत मे यगण (।ऽऽ) पडने से बननेवाला वृत्त (बाबा रामदास जी)। बाबा भिखारीदास इस नियम के विरुद्ध लीलावती छद की यह परिभाषा देते हैं—

द्वैकल दै फिरि तीस कल, लीलावती अनेम।
दुगुन पद्धरिया के किए, जानो वहै सप्रेम।

लुंगाड़ा—पुं० शोहदा, लुच्चा।

लुंगी—स्त्री० धोती के स्थान पर कमर मे लपेटने का छोटा टुकड़ा, तहमत।

लुंचन—पु० [सं०] चुटकी से पकडकर उखाड़ना, नोचना।

लुंज—वि० विना हाथ पैर का, लँगडा लूला। विना पत्ते का, ठूँठ (पेड)।

लुंठन—पुं० [सं०] लूटने या चुराने की क्रिया। लुढकना।

लुंड—पुं० विना सिर का धड, कवंध।

लुड मुंड—वि० जिसके सिर, हाथ, पैर आदि कट हो, केवल धड का लोथड़ा रह गया हो। विना पत्ते का, ठूँठ।

लुंडा—वि० जिसकी पूँछ और पख झड गए हों (पक्षी)।

लुंबिनी—स्त्री० [सं०] कपिलवस्तु के पास का एक वन जहाँ गौतम बुद्ध पैदा हुए थे।

लुआठा—पुं० सुलगती हुई लकडी, लुआती।

लुआब—पुं० [अ०] लसदार गूदा, लासा।

लुआर—स्त्री० दे० 'लू'।

लुकंजन ⓟ†—पुं० दे० 'लोपाजन'।

लुक—पु० चमकदार रोगन, वार्निश। आग की लपट, लौ।

लुकठी—स्त्री० लुआठा।

लुकना, लुकाना—सक० [अक० लुकना] आड मे करना, छिपाना। †अक० लुकना, छिपना।

लुकाट—पु० एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल जो खाया जाता है, लक्कुट। ⓟ दे० 'लुआठा'।

लुकार—स्त्री० दे० 'लुक'।

लुकेठा†—पुं० दे० 'लुआठा'।

लुगडा—पुं० दे० 'लूगडा'।

लुगदी—स्त्री० गीली वस्तु का छोटा पिंड या गोला।

लुगरा†—पु० कपडा। ओढनी, छोटी चादर। फटा पुराना कपडा।

लुगरी—स्त्री० फटी पुरानी धोती। †चुगली, शिकायत।

लुगाई—स्त्री० स्त्री, औरत।

लुगी†—स्त्री० पुराना कपडा। लहँगे का सजाफ या फटा चौडा किनारा।

लुग्गा†—पु० दे० 'लूग'।

लुचकना ⓟ—सक० छीनना, झपटना।

लुचरी—स्त्री० दे० 'लुचुई'।

लुचुई†—स्त्री० मैदे की पतली पूरी, लूची।

लुच्चा—वि० शोहदा, वदमाश। कुमार्गी। वेईमान, झूठा।

लुटत ⓟ‡—स्त्री० लूट।

लुटकन—अक० दे० 'लटकना'।

लुटाना—अक० [सक० लूटना] दूसरे के द्वारा लूटा जाना। तबाह होना, बरबाद होना। ⓟ दे० 'लुठना'।

लुटरना—अक० इधर उधर लुढकना या लोटना।

लुटाना—सक० [लूटना का प्रे०] दूसरे को लूटने देना। मुफ्त मे या बिना पूरा मूल्य लिए देना। व्यर्थ फेंकना या व्यय करना। बहुतायत से बाँटना, अधाधुंध दान करना।

लुटावना ⓟ†—सक० दे० 'लुटाना'।

लुटिया—स्त्री० छोटा लोटा। मु० ~डूबना = असफल होना। अप्रतिष्ठा या हानि होना।

लुटेरा—पुं० लूटनेवाला, डाकू।

लुठना ⓟ—अक० भूमि पर पडना, लोटना। लुढकना। लुठाना ⓟ—सक० भूमि पर डालना। लुढकना।

लुड़कना—अक० दे० 'लुढ़कना'।
लुढकना—अक० गेंद की तरह नीचे ऊपर चक्कर खाते हुए गमन करना, लुढकना। लुढकाना (पु)†—सक० इस प्रकार फेंकना या छोड़ना कि चक्कर खाते हुए कुछ दूर चला जाय, लुढकाना।
लुडाना (पु)—सक० दे० 'लुढकाना'। लुढना (पु)†—अक० दे० 'लुढकना'।
लुतरा—वि० चुगुलखोर। शरारती।
लुत्थ (पु)—स्त्री० दे० 'लोथ'।
लुनाई (पु)—स्त्री० दे० 'लावण्य'।
लुनना—सक० खेत की तैयार फसल काटना। नष्ट करना।
लुनेरा—पु० खेत की फसल काटनेवाला।
लुपना (पु)—अक० छिपना।
लुप्त—वि० [सं०] छिपा हुआ। गायब, अदृश्य। लुप्तोपमा—स्त्री० वह उपमा अलंकार जिसमे उपमान, उपमेय वाचक और सामान्य धर्म नामक चार अंगो मे से एक या अधिक अंग लुप्त हो, अर्थात् न कहे गए हो।
लुबुध (पु)‡—वि० दे० 'लुब्ध'।
लुबुधना†—अक० लुब्ध होना, लुभाना।
लुबुधा (पु)—वि० लालची। इच्छुक। प्रेमी।
लुब्ध—वि० [सं०] लुभाया या ललचाया हुआ। तन मन की सुध भूला हुआ, मोहित। ⊙क=पु० व्याध, शिकारी। उत्तरी गोलार्ध का एक बहुत तेजवान् तारा (आधुनिक)। ⊙ना (पु)—अक० दे० 'लुबुधना'।
लुब्धापति—स्त्री० [सं०] केशव के अनुसार वह प्रौढा नायिका जो पति और कुल के सब लोगो की लज्जा करे।
लुभाना—अक० लुब्ध होना, रीझना। लालच मे पडना। तन मन की सुध भूलना। सक० लुब्ध करना, रिझाना। ललचाना। सुध बुध भुलाना, मोह मे डालना।
लुरकना†—अक० लटकना, झूलना।
लुरकी—स्त्री० कान मे पहनने की बाली, मुरकी।
लुरना (पु)†—अक० झूलना, पडना। कही से एकबारगी आ जाना। आकर्षित होना।
लुरियाना—अक० दे० 'लुरना'।
लुरी—स्त्री० वह गाय जिसे बच्चा दिए थोडे ही दिन हुए हो।
लुवना (पु)—अक० दे० 'लुरना'।
लुवार†—वि० दे० 'लू'।
लुहना (पु)—अक० दे० 'लुभाना'।
लुहार—पु० लोहे की चीजें बनानेवाला। इ जाति जो लोहे की चीजे बनाती है। हारी—स्त्री० लुहार जाति की स्त्री। लोहे की वस्तु बनाने का काम।
लूवरी†—स्त्री० दे० 'लोमडी'।
लू—स्त्री० गरमी के दिनो की तपी हुई हवा। मु०~मारना या लगना=शरीर मे तपी हवा लगने से ज्वर आदि उत्पन्न होना।
लूक—स्त्री० आग की लपट। जलती हुई लकडी। गरमी के दिनो की तपी हवा। टूटकर गिरना हुआ तारा, उल्का। मु०~लगाना=जलती लकडी या बत्ती छुआना, आग लगाना।
लूकट (पु)—पु० दे० 'लुआठा'।
लूकना (पु)—सक० आग लगाना, जलाना। (पु)‡—अक० दे० 'लुकना'।
लूका†—पुं० आग की लौ या लपट। लुआठा।
लूकी†—स्त्री० आग की चिनगारी। लूका।
लूखा (पु)—वि० रूखा।
लूगा†—पुं० वस्त्र, कपडा। धोती।
लूट—स्त्री० किसी के माल का जबरदस्ती छीना जाना, डकैती। लूटने से मिला हुआ माल। ⊙क=पु० लुटेरा। कांति हरनेवाला। ⊙ना, ⊙पाट, ⊙मार=लोगो को मारना पीटना और उनका धन छीनना। ⊙ना=सक० मार पीटकर या छीन झपटकर लेना। अनुचित रीति से किसी का माल लेना। वाजिब से बहुत ज्यादा दाम लेना, ठगना। मोहित करना।
लूटा (पु)—वि० लूटनेवाला, लुटेरा। लूटि (पु)†—स्त्री० दे० 'लूट'।

लूत—स्त्री० मकडी।
लूता—स्त्री० [सं०] मकडी। पु० [हिं०] लूका, लूआाठा।
लूनना(पु)†—अक दे० 'लुनना'।
लूम—पु० [सं०] पूंछ, दुम। स्त्री० [अँ० हैडलूम] कपडा बुनने का करघा।
लूमडी—स्त्री० दे० 'लोमडी'।
लूमना(पु)—अक० लटकना।
लूरना(पु)—अक० दे० 'लूरना'।
लूला—वि० जिसका हाथ कट गया हो, लुजा। वेकाम, असमर्थ।
लूलू—वि० मूर्ख, वेवकूफ।
लूह, लूहर†—स्त्री० दे० 'लू'।
लेंड—पु० दे० 'लेंडी'। लेंडी—स्त्री० मल की वत्ती, वँधा मल। वकरी या ऊँट की मेगनी।
लेंहड, लेंहडा—पु० झुंड, दल, गल्ला (चौपायो के लिये)।
ले—अव्य० आरंभ होकर। ‡ तक, पर्यंत।
लेई—स्त्री० किसी चूर्ण को गाढा करके वनाया हुआ लसीला पदार्थ, अवलेह। लपसी। घुला हुआ आटा जिसे आग पर पकाकर कागज आदि चिपकाने के काम मे लाते हैं। सुरखी मिला हुआ वरी का गीला चूना जो ईंटों की जोडाई मे काम आता है। ⊙पूंजी = स्त्री० सारी जमा, सर्वस्व।
लेख—स्त्री० पक्की वात, लकीर। (पु)वि० लेख्य, लिखने योग्य। पु० [सं०] लिखे हुए अक्षर, लिपि। लिखावट। किसी विषय पर गद्य मे लिखी हुई पूरी वात। लेखा, हिसाव किताव। देवता। ⊙क =पु० लिखनेवाला, लिपिकार। ग्रंथकार। लेखन—पु० [सं०] लिखने का कार्य। लिखने की कला या विद्या। चित्र वनाना। हिसाव करना लेखा लगाना। ⊙हार(पु) = वि० दे० 'लेखक'। लेखनी—स्त्री० [सं०] कलम।
लेखना (पु)—सक० अक्षर या चित्र वनाना, लिखना। गिनना। समझना, सोचना। मानना। लेखना जोखना = ठीक ठीक अंदाज करना, हिसाव करना। परीक्षा करना।
लेखा—स्त्री० [सं०] हाथ की लिखावट। रचना। चित्र। रेखा। श्रेणी, पंक्ति। किरण। पुं० गिनती, हिसाब किताव। ठीक ठीक अंदाज। आय व्यय का विवरण। अनुमान, समझ।
लेखिका—स्त्री० [सं०] लिखनेवाली। ग्रंथ या पुस्तक बनानेवाली।
लेख्य—वि० [सं०] लिखने योग्य। जो लिखा जाने को हो। पु० लेख, दस्तावेज।
लेजम—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की नरम और लचकदार कमान जिससे धनुष चलाने का अभ्यास किया जाता है। वह कमान जिसमे लोहे की जंजीर लगी रहती है और जिससे कसरत करते है।
लेजुर, लेजुरी†—स्त्री० डोरी। कुएँ से पानी खींचने की रस्सी।
लेट—पु० चूने सुरखी की वह परत जो छत या फरश बनाने के लिये डाली जाती है, गच।
लेटना—अक० पीठ या वगल को जमीन या विस्तरे आदि से लगाकर बदन की सारी लंवाई उसपर ठहराना, पडना किसी चीज का वगल की ओर झुककर जमीन पर गिर जाना। लेटाना—सक० दे० 'लिटाना'।
लेदी—स्त्री० एक प्रकार का पक्षी।
लेन—पु० लेने की क्रिया या भाव। लहना, पावना। ⊙दार = पुं० [फा०] जिसका कुछ वाकी हो, महाजन। ⊙देन = पु० लेने और देने का व्यवहार। ऋण देने और लेने का व्यवहार। ⊙हार = वि० लेनेवाला। मु०~देन = सरोकार, सवंध।
लेना—सक० दूसरे के हाथ से अपने हाथ मे करना, प्राप्त करना। पकडना। मोल लेना। अपने अधिकार मे करना। जीतना। धरना। अगवानी करना। जिम्मे लेना। सेवन करना, पीना। धारण करना, स्वीकार करना (जैसे सन्यास लेना, वाना लेना)। किसी को उपहास द्वारा लज्जित करना। मु०—आडे हाथो~ = गूढ व्यंग्य द्वारा लज्जित करना। कान मे~ = सुनना। ले डालना = खराव करना। पराजित करना।

पूरा या समाप्त करना। ले डूबना या मरना = अपने साथ दूसरों को भी नष्ट या बरबाद करना। ले देकर = सब मिलाकर, जोड जाडकर। ले दे करना = हुज्जत करना। बडा यत्न करना। लेना एक न देना दो = कुछ सरोकार नही। लेने के देने पडना = लेने के स्थान पर उलटे देना पडना (किसी मामले मे) लाभ के बदले हानि होना।

लेप—पुं० [सं०] लेई के समान गाढी गीली वस्तु। गाढा गीली वस्तु की वह तह जो किसी वस्तु के ऊपर फैलाई जाय।

लेपन—[सं०] लेपने की क्रिया या भाव।

लेपना—सक० गाढी गीली वस्तु की तह चढाना, छोपना।

लेपालक—पुं० गोद लिया हुआ पुत्र, दत्तक।

लेरुवा—पुं० बछडा।

लेलिहान—वि० [सं०] बार बार चखने या चाटनेवाला। ललचाया हुआ। पुं० सर्प।

लेव—पुं० मिट्टी का लेप जो बर्तनो की पेंदी पर उन्हे आग पर चढाने से पहले किया जाता है। लेप। दे० 'लेवा'।

लेवा—पुं० गिलावा। मिट्टी का गिलावा। लेप। वि० लेनेवाला। ⊙देई† = पुं० लेनदेन।

लेवाल—पुं० लेने या खरीदनेवाला।

लेश—पुं० [सं०] अणु। छोटाई, सूक्ष्मता। चिह्न। संसर्ग, लगाव। एक अलंकार, जिसमे किसी वस्तु के वर्णन के केवल एक ही भाग या अंश मे रोचकता आती है। वि० थोडा।

लेश्या—स्त्री० [सं०] जैनियो के अनुसार जीव की वह अवस्था जिसके कारण कर्म जीव को बाँधता है। जीव।

लेषना(पु)—सक० दे० 'लेखना'। दे० 'लिखना'। जलाना। किसी चीज पर लेप लगाना, पोतना। दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना। चिपकाना, सटाना। चुगली खाना।

लेहन—पुं० चखना। चाटना।

लेहना—पुं० दे० 'लहना'।

लेह्य—वि० [सं०] चाटने के योग्य।

लैंगिक—पुं० [सं०] वैशेषिक दर्शन के अनुसार वह ज्ञान जो लिंग या स्वरूप के वर्णन द्वारा प्राप्त हो, अनुमान।

लैं(पु)—अव्य० तक, पर्यंत।

लैन†—स्त्री० दे० 'लाइन'।

लैया—स्त्री० दे० 'लाई'।

लैरु†—पुं० बछडा। बच्चा।

लैस—वि० वर्दी और हथियारो मे सजा हुआ, तैयार। पुं० कपडे पर चढाने का फीता। एक प्रकार का बाण।

लो—अव्य० दे० 'लौ'।

लोंदा—पुं० किसी गीले पदार्थ का डले की तरह बँधा अंश।

लोइ(पु)—पुं० लोग। स्त्री० प्रभा दीप्ति। लव, शिखा।

लोइन(पु)—पुं० दे० 'लावण्य'। दे० 'लोचन'।

लोई—स्त्री० गुँथे हुए आटे का उतना अंश जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं। एक प्रकार का कबल।

लोकजन(पु)—पुं० दे० 'लोपाजन'।

लोकदा†—पुं० विवाह मे कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।

लोकदी†—स्त्री० वह दासी जो कन्या के साथ ससुराल भेजी जाती है।

लोक—पुं० [सं०] स्थान विशेष जिसका बोध प्राणी का हो। (विशेष उपनिषदों मे दो लोक माने गए हैं—इहलोक और परलोक। निरुक्त मे तीन लोको का उल्लेख है—पृथ्वी, अतरिक्ष और द्युलोक। पौराणिक काल मे इन सात लोकों की कल्पना हुई—भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सत्यलोक या ब्रह्मलोक। फिर पीछे इनके सात पाताल—अतल, नितल, वितल, गभस्तिमान्, तल, सुतल और पाताल मिलाकर चौदह लोक किए गए)। ससार। स्थान, निवास स्थान। प्रदेश, दिशा। लोग। समाज। प्राणी। यश। ⊙धुनि(पु) = स्त्री० [हिं०] अफवाह।

⊙प, ⊙पति = पु० ब्रह्मा। लोकपाल। राजा। ⊙पाल = पु० किसी दिशा का स्वामी, दिग्पाल। राजा। ⊙मत = पु० किसी विषय मे लोक या जनता की राय, समाज के बहुत से लोगों का मत। ⊙रूढ़ = पु० परंपरा, प्रथा। ⊙संग्रह = पु० व्यावहारिक अनुभव। लोकरंजन। ⊙सत्ता = स्त्री वह शासन-प्रणाली जिसमे सब अधिकार लोक या जनता के हाथ मे हो। ⊙सभा = स्त्री० भारत की विधान बनानेवाली सभा का जनता द्वारा प्रत्यक्ष चुनाव से चुने हुए प्रतिनिधियों वाला अंग। ⊙हर = वि० [हिं०] लोक या संसार को नष्ट करनेवाला।

लोकना—सक० ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथों से पकड़ लेना। बीच में से ही उड़ा लेना। ⊙लीक ⑸—स्त्री० लोक की मर्यादा। लोकांतर—पु० [सं०] वह लोक जहाँ जीव मरने पर जाता है। लोकांतरित—वि० मरा हुआ। लोकाचार—पु० संसार मे बरता जानेवाला व्यवहार, लोकव्यवहार। लोकापवाद—[सं०] लोगों मे होनेवाली बदनामी।

लोकायत—पु० वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो। चार्वाक दर्शन। दुर्मिल नामक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राएँ होती हैं और किसी चौकल मे जगण नहीं रहता। एक सवैया जिसके प्रत्येक चरण मे आठ सगण होते हैं। लोकेश—पु० सब संसार का स्वामी, ईश्वर। लोकेश्वर—पु० दे० 'लोकेश'। लोकोक्ति—स्त्री० कहावत, मसल। काव्य मे वह अलंकार जिसमे किसी लोकोक्ति का प्रयोग करके कुछ रोचकता या चमत्कार लाया जाय। लोकोत्तर—वि० बहुत ही अद्भुत और विलक्षण, अलौकिक।

लोकटी ⑸—स्त्री० दे० 'लोमड़ी'।

लोकनी—स्त्री० दे० 'लोकदी'।

लोकल—वि० [अं०] अपने नगर या स्थान का, स्थानीय।

लोकाना†—सक० अधर मे फेंकना, उछालना।

लोकाट—पु० एक पौधा जिसमे बड़े बेर के बराबर मीठे, गूदेदार फल लगते हैं।

लोखर—स्त्री० नाई के औजार। लोहारों या बढ़ईयों आदि के औजार।

लोग—पु० जन, मनुष्य।

लोगाई†—स्त्री० दे० 'लुगाई'।

लोच—स्त्री० लचलचाहट। कोमलता, लचक। पु० अभिलाषा। ⊙ना = सक० प्रकाशित करना। रुचि उत्पन्न करना। अभिलाषा करना। अक० शोभित होना। कामना करना। ललचना, तरसना। विचार करना।

लोचन—पु० [सं०] आँख, नेत्र।

लोट—स्त्री० लोटने का भाव, लुढ़कना। पु० उतार, घाट। ⑸ त्रिवली। ⊙ना = अक० सीधे और उलटे लेटते हुए किसी ओर को जाना। लुढ़कना। कष्ट से करवटें बदलना। विश्राम करना, लेटना। मुग्ध होना, चकित होना। मु०~जाना = बेसुध होना। मर जाना।

लोटकपोट ⑸—स्त्री० उलटने पुलटने या मिलाने जुलाने की क्रिया।

लोटन—पु० एक प्रकार का कबूतर। राह की छोटी कंकड़ियाँ।

लोटपटा†—पु० विवाह के समय पीढ़ा या स्थान बदलने की रीति। दाव का उलटा फेर।

लोट पोट—स्त्री० लोटना, आराम करना। वि० हँसी या प्रसन्नता के कारण लेट लेट जानेवाला। बहुत अधिक प्रसन्न।

लोटा—पु० धातु का एक गोल पात्र जो पानी रखने के काम मे आता है।

लोटिया—स्त्री० दे० 'लुटिया'।

लोड़ना ⑸†—सक० आवश्यकता होना।

लोढ़ना—सक० चुनना तोड़ना। ओटना।

लोढ़ा—पु० पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर किसी चीज को रखकर पीसते हैं, बट्टा। मु०~डालना = बराबर करना। ~ढाल = चौपट।

लोढिया—स्त्री० छोटा लोढ़ा ।

लोथ, लोथि—स्त्री० मृत शरीर, लाश। मु०~लोथ गिरना = मारा जाना। ~डालना = मार गिराना ।

लोथड़ा—पुं० मासपिंड ।

लोध—स्त्री० एक प्रकार का वृक्ष । वैद्यक में इसकी छाल और लकडी दोनो का प्रयोग होता है ।

लोध्र—पुं० [सं०] दे० 'लोध'। ⊙तिलक =पु० एक प्रकार का अलकार जो उपमा का एक भेद होता है ।

लोन(पु)†—पु० [अं०] ऋण, उधार। पु० लवण, नमक। सौदर्य। वि० दे० 'नमक'। ⊙हरामी† = वि० दे० 'नमकहराम'। मु०—किसी का~खाना = अन्न खाना, पाला जाना। किसी का~निकलना = नमकहरामी का फल मिलना। किसी बात का~सा लगना = अप्रिय होना। जले पर~लगाना या देना = दुःख पर दुःख देना। ~न मानना = उपकार न मानना ।

लोना—वि० नमकीन, सलोना। सुदर। पु० पत्थरो और दीवारो का एक प्रकार का रोग जिसमे वह झडने लगती और कमजोर हो जाती है। वह धूल जो लोना लगने पर दीवार या पत्थर से झडकर गिरती है। नमकीन मिट्टी जिससे शोरा बनाया जाता है। अमलोनी। स्त्री० एक कल्पित चमारी जो जादू टोने मे प्रवीण मानी जाती है। सक० फसल काटना। ⊙ई = स्त्री० दे० 'लावण्य'। ⊙र† = पुं० वह स्थान जहाँ नमक होता।

लोनिका—स्त्री० दे० 'लोनी'।

लोनिया—पुं० एक जाति जो लोन या नमक बनाने का व्यवसाय करती है, नोनियाँ। वि० सुदर।

लोनी—स्त्री० कुलफे की जाति का एक साग।

लोप—पुं० [सं०] नाश। विच्छेद। अदर्शन, अभाव। व्याकरण मे वह नियम जिसके अनुसार शब्द के साधन मे किसी वर्ण को उडा देते हैं। छिपना, अंतर्धान होना। **लोपन**—पु० लुप्त करना, तिरोहित करना। नष्ट करना। **लोपांजन**—पु० वह कल्पित अजन जिसके विषय मे यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने मे लगानेवाला अदृश्य हो जाता है ।

लोपना(पु)†—सक० लुप्त करना। मिटाना। अक० लुप्त होना। मिटाना।

लोपामुद्रा—स्त्री० [सं०] अगस्त्य ऋषि की स्त्री का नाम। एक तारा जो अगस्त्य मडल के पास उदय होता है।

लोबा—स्त्री० लोमडी ।

लोबान—पुं० [अ०] एक वृक्ष का सुगधित गोंद जो जलाने और दवा के काम मे लाया जाता है।

लोबिया—पुं० एक प्रकार का बडा बोडा (फली)।

लोभ—पुं० [सं०] दूसरे के पदार्थ को लेने की कामना, लालच।

लोभना(पु)†—सक० मोहित करना, लुभाना। अक० लुब्ध होना। मोहित होना, मुग्ध होना।

लोभनीय—वि० जिसके लिये लोभ हो सके, सुदर, मनोहर।

लोभाना—सक० दे० 'लोभना'।

लोभार(पु)†—वि० लुभानेवाला।

लोभित—वि० लुब्ध, मुग्ध।

लोभी—वि० [सं०] लालची। लुब्ध, भाया हुआ।

लोम—स्त्री० लोमडी। पु० [सं०] शरीर पर के छोटे छोटे बाल, रोम। बाल। ⊙हर्षण = वि० ऐसा भीषण जिससे रोएँ खडे हो जायँ।

लोमड़ी—स्त्री० गीदड की जाति का एक प्रसिद्ध जतु।

लोमश—पु० [सं०] एक ऋषि जिनको पुराणो मे अमर माना गया है। वि० अधिक और बडे रोएँवाला।

लोय(पु)†—पु० लोग। आँख, नेत्र। लौ, लपट। अव्य० 'लौं'।

लोयन(पु)---पु० आँख ।
लोर+---वि० लोल, चचल । उत्सुक, इच्छुक ।
लोरना(पु)---अक० चचल होना । लपकना । लिपटना । झुकना । लोटना ।
लोरी---स्त्री० एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिये गाती हैं ।
लोल---वि० [सं०] हिलता डोलता, कपायमान । परिवर्तनशील । क्षणिक, क्षणभगुर । उत्सुक । ⊙दिनेश = पु० दे० 'लोलार्क' ।
लोलक--- पुं० [सं०] लटकन जो बालियो मे पहना जाता है । कान की लव, लोलकी ।
लोलना(पु ---अक० हिलना ।
लोला---स्त्री० [सं०] जीभ । लक्ष्मी । एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे मगण, सगण, मगण, भगण और अत मे दो गुरु होते है ।
लोलार्क---पु० [सं०] काशी के एक प्रसिद्ध तीर्थ का नाम ।
लोलिनी---वि० स्त्री० चचल प्रकृतिवाली ।
लोलुप---वि० [सं०] लोभी । चटोरा । परम उत्सुक ।
लोवा---पु० लोमडी ।
लोष्ठ---पु० [सं०] पत्थर । ढेला । लोथडा ।
लोहंडा---पुं० लोह का एक प्रकार का पात्र । तसला ।
लोह---पु० [सं०] लोहा (धातु) । ⊙सार = पुं० फौलाद । फौलाद की बनी हुई जजीर ।
लोहबान---पु० दे० 'लोबान' ।
लोहा---पु० काले रग की एक प्रसिद्ध धातु जिसके बरतन, शस्त्र और मशीनें आदि बनती है । अस्त्र, हथियार । लोहे की बनाई हुई कोई चीज या उपकरण । लाल रग का बैल । मु०~गहना = हथियार उठाना, युद्ध करना । ~बजना युद्ध होना । (किसी का) ~मानना = किसी विषय मे किसी का प्रभुत्व स्वीकार करना । पराजित होना । ~लेना = युद्ध करना । लोहे के चने = अत्यत कठिन काम ।
लोहाना---अक० किसी पदार्थ मे लोहे का रग या स्वाद आ जाना ।
लोहार---पु० दे० 'लुहार' ।
लोहारी---स्त्री० दे० 'लुहारी' ।
लोहित---वि० [सं०] रक्त, लाल । पुं० [हिं०] मगल ग्रह ।
लोहित्य---पु० [सं०] ब्रह्मपुत्र नद । एक समुद्र का नाम ।
लोहिया---पु० लोहे की चीजो का व्यापार करनेवाला । बनियो और मारवाडियो की एक जाति । लाल रग का बैल । भोजन पकाने का लोहे का एक प्रकार का बर्तन ।
लोही---स्त्री० उष काल की लाली । दे० 'लाई' । वि० स्त्री० दे० 'लोहू' ।
लोहू---पुं० दे० 'लहू' ।
लौं(पु)†---अव्य० तक, पर्यंत । समान, तुल्य ।
लौंकना(पु)†---अक० दिखाई देना । चमकना ।
लौंग---पुं० एक झाड की कली जो खिलने के पहले ही तोडकर सुखा ली जाती है, यह मसाले और दवा के काम मे आती है । लौंग के आकार का एक आभूषण जिसे स्त्रियाँ नाक या कान मे पहनती है । ⊙लता = स्त्री० एक प्रकार की मिठाई ।
लौंडा---पुं० छोकरा, बालक ।
लौंडी---स्त्री० दासी ।
लौंद---पु० मलमास ।
लौंदा(पु)---पु० दे० 'लोदा' ।
लौ---स्त्री० आग की लपट, ज्वाला । दीपक की टेम । लाग, चाह । चित्त की वृत्ति । आशा, कामना । ⊙लीन = किसी के ध्यान मे डूबा हुआ ।
लौकना---अक० दूर से दिखाई पडना ।
लौका---पु० कद्दू ।
लौकिक---वि० [सं०] लोक सबधी, सासारिक । व्यावहारिक । पुं० सात मात्राओ के एक छद का नाम ।
लौकी---स्त्री० दे० 'कद्दू' ।

लौंजोरा(पु)†—पु० धातु गलानेवाला कारीगर।

लौट—स्त्री० लौटने की क्रिया, भाव या ढग। ⊙फेर—पु० उलट फेर, भारी परिवर्तन।

लौटना—अक० वापस आना, पलटना। पीछे की ओर मुडना। सक० पलटना, उलटना।

लौटाना—सक० फेरना, पलटाना। वापस करना। ऊपर नीचे करना।

लौन(पु)—पु० नमक।

लौना†—पुं० दे० 'लौनी'। (पु) वि० लावण्ययुक्त, सुदर।

लौनी—स्त्री० फसल की कटनी, कटाई। (पु) मक्खन।

लौनी—पुं० मक्खन। वि० लोना।

लौन्यो—पुं० मक्खन।

लौरी—स्त्री० बछिया।

लौवा—पु० कद्दू।

लौह—पु० [सं०] लोहा। वि० लोहे का। ⊙युग = पु० सभ्यता के इतिहास मे वह समय जब मुख्य रूप से लोहे के अस्त्र शस्त्र और औजार का प्रयोग होने लगा।

लौहित्य—पु० [सं०] ब्रह्मपुत्र नदी। लाल सागर। वि० लाल रग का।

ल्याना(पु)—सक० दे० 'लाना'।

ल्यारी†—पु० भेडिया।

ल्यावना(पु)—सक० दे० 'लाना'।

ल्वारि(पु)†—स्त्री० दे० 'लूह'।

ल्हसण—पु० दे० 'लहसुन'।

व

व—हिंदी वर्णमाला का उनतीसवाँ व्यजन वर्ण जो उकार का विकार और अतस्थ अर्धव्यजन माना जाता है।

वंक—वि० [सं०] टेढा, वक्र। ⊙नाल = पु० शरीर की एक नाडी का नाम, सुषुम्ना। ⊙नाली = स्त्री० सुषुम्ना नामक नाडी।

वंकट—वि० टेढा, कुटिल। विकट, दुर्गम।

वंकिम—वि० [सं०] टेढा, झुका हुआ।

वक्षु—स्त्री० [सं०] आक्सस नदी जो हिंदूकुश पर्वत से निकलकर अरल समुद्र मे गिरती है।

वग—पु० [सं०] बगाल प्रदेश। राँगा नाम की धातु। राँगे का भस्म ⊙ज = पु० सिंदूर, पीतल। वि० बगाल मे उत्पन्न होनेवाला।

वंचक—वि० [सं०] धूर्त, ठग। खल।

वंचन—पु० [सं०] धोखा, छल। धोखा देना, ठगना।

वंचना(पु)—सक० धोखा देना, ठगना। पढना, वाँचना। स्त्री० [सं०] धोखा, छल।

वंचित—वि० [सं०] जो ठगा गया हो। अलग किया हुआ। अलग, रहित।

वदन—पुं० [सं०] स्तुति और प्रणाम, पूजन। ⊙माला = स्त्री० वदनवार। वदना—स्त्री० स्तुति। प्रणाम। वंदनीय—वि० वदना करने योग्य, आदर करने योग्य। वदित—वि० जिसकी वदना की जाय। आदरणीय पूजित। वदी—पु० [सं०] दे० 'वदी'। ⊙जन = पुं० राजाओ आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति।

वद्य—वि० [सं०] वदनीय, पूजनीय।

वश—पुं० [सं०] कुटुब, खानदान। बाँस। पीठ की हड्डी। नाक के ऊपर की हड्डी। बाँसुरी। बाहु आदि की लबी हड्डियाँ। ⊙ज = पुं० सतान, औलाद। ⊙तिलक = पुं० एक छद। ⊙धर = पुं० कुल मे उत्पन्न, सतान। ⊙लोचन = पुं० दे० 'वसलोचन' ⊙स्थ = पु० १२ वर्णों का एक वर्णवृत्त। वशावली—स्त्री० [सं०] किसी वश मे उत्पन्न पुरुषो की पूर्वोत्तर क्रम से सूची।

वशी—स्त्री० [सं०] मुँह से फूककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा, बाँसुरी। ⊙धर = पु० श्रीकृष्ण। ⊙वट = पुं०

वृंदावन मे वह बरगद का पेड जिसके नीचे श्रीकृष्ण वशी वजाया करते थे।
वशीय—वि० [सं०] कुल मे उत्पन्न, वश का।
व—पु० [स०] वायु। वाण। वरुण। बाहु। कल्याण। समुद्र। वस्त्र। वदन। अव्य० [फा०] और।
वक—पुं० [सं०] बगला पक्षी। अगस्त का पेड या फूल। एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था। ⊙वृत्ति = स्त्री० धोखा देकर काम निकालने की घात मे रहना।
वकालत—स्त्री० [अ०] दूसरे की ओर से उसके अनुकूल वातचीत करना। मुकदमे म किसी फरीक की तरफ से कानूनी बहस करने का पेशा। ⊙नामा = पु० [फा०] वह अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी तरफ से मुकदमे मे कानूनी बहस करने के लिए मुकर्रर करता है।
वकासुर—पु० [सं०] एक राक्षस।
वकील—पुं० [अ०] दूत। राजदूत, एलची। प्रतिनिधि। दूसरे का पक्षमडन करनेवाला। वह आदमी जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जो अदालतो मे वादी या प्रतिवादी की ओर से कानूनी बहस करे।
वकुल—पु० [सं०] अगस्त का पेड या फल।
वक्त—पु० [अ०] समय। अवसर। फुरसत।
वक्तव्य—वि० [स०] कहने योग्य। पु० कथन, वचन। वह बात जो किसी विषय पर कहनी हो।
वक्ता—वि० [सं०] बोलनेवाला। भाषणपटु। पु० कथा कहनेवाला पुरुष, व्यास।
वक्तृ—वि० [सं०] दे० 'वक्ता'। ⊙ता = स्त्री० वाक्यपटुता। व्याख्यान। कथन। ⊙त्व = पु० वक्तृता। व्याख्यान कथन।
वक्त्र—पुं० [सं०] मुख। एक प्रकार का छद।
वक्फ—पुं० [अ०] वह सपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो। धर्म के काम मे धन आदि देना।
वक्र—वि० [सं०] टेढा, बाँका। झुका हुआ। कुटिल। ⊙गामी = वि० टेढी चाल चलनेवाला। शठ, कुटिल। ⊙ता = स्त्री० टेढापन। कुटिलता। ⊙तुंड = पुं० गणेश। ⊙दृष्टि = स्त्री० टेढी दृष्टि। क्रोध की दृष्टि।
वक्री—पु० [सं०] वह प्राणी जिसके अग जन्म से टेढे हो। बुद्धदेव।
वक्रोक्ति—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमे काकु या श्लेष से वाक्य का और का और अर्थ किया जाता है। काकूक्ति। वढिया उक्ति।
वक्ष—पुं० [स० वक्षस्] छाती, उरस्थल। ⊙स्थल = पु० [सं०] उर, छाती।
वक्षु—पुं० दे० 'वक्ष'।
वक्षोज, वक्षरुह—पुं० [स०] स्तन, कुच।
वगलामुखी—पु० [सं०] एक महाविद्या।
वगैरह—अव्य० [अ०] इत्यादि, आदि।
वच—पुं० वाक्य।
वचन—पुं० [सं०] मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द, वाणी। कथन, उक्ति। व्याकरण मे शब्द के रूप मे वह विधान जिससे एकत्व या वहुत्व का बोध होता है। ⊙लक्षिता = स्त्री० वह परकीया नायिका जिसकी वातचीत से उसके उपपति से प्रेम लक्षित या प्रकट होता हो। ⊙विदग्धा—स्त्री० वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से नायक की प्रीति का साधन करती हो।
वचनीय—वि० [सं०] कहने योग्य। पुं० निंदा, शिकायत।
वचा—स्त्री० [स०] वच नाम की औषधि।
वच्छ(पु)—पुं० उर, छाती।
वजन—पु० [अ०] बोझ। तोल। मान, मर्यादा। गौरव। वह विशेषता जिसके कारण चित्र का एक अग दूसरे से न्यून या विषम हो जाय।
वजनी—वि० जिसका बहुत बोझ हो, भारी।
वजह—स्त्री० [अ०] कारण, हेतु।
वजीफा—पुं० [अ०] वह वृत्ति या आर्थिक सहायता जो विद्वानो, छात्रो, सन्यासियों आदि को दी जाती है। जप या पाठ (मुसलमान)।
वजीर—पुं० [अ०] मत्री, दीवान। शतरंज की एक गोटी।
वज्र—पु० [सं०] पुराणानुसार भाले के

फल के समान एक शस्त्र जो इंद्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है, कुलिश। बिजली। हीरा। फौलाद। भाला। वि० बहुत कड़ा या मजबूत। घोर, दारुण। ⊙पाणि = पुं० इंद्र। ⊙लेप = पु० एक मसाला जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि मजबूत हो जाती है। ⊙सार = पु० हीरा।

वज्रावर्त—पु० [सं०] एक मेघ का नाम।

वज्रासन—पु० [सं०] हठयोग के चौरासी आसनों में से एक।

वज्री—पु० [सं०] इंद्र।

वज्रोली—स्त्री० [सं०] हठयोग की एक मुद्रा।

वट—पुं० [सं०] बरगद का पेड़। ⊙सावित्री = स्त्री० एक व्रत का नाम जिसमें स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं।

वटक—पु० [सं०] बड़ी टिकिया या गोला। बड़ा, पकौड़ी। वटिका वटी—स्त्री० गोली या टिकिया।

वटु—पु० [सं०] बालक। ब्रह्मचारी, माणवक।

वटुक—[सं०] बालक। ब्रह्मचारी। एक भैरव।

वणिक्—पु० [सं०] रोजगार करनेवाला। बनिया।

वतंस—पु० दे० 'अवतंस'।

वतन—पु० [अ०] जन्मभूमि।

वत्—प्रत्य० [सं०] समान, तुल्य।

वत्स—पु० [सं०] गाय का बच्चा, बछड़ा। बालक। वत्सासुर। ⊙नाभ = पु० एक विष, बछनाग।

वत्सर—पु० [सं०] वर्ष, साल।

वत्सल—वि० [सं०] बच्चे के प्रेम से भरा हुआ। अपने से छोटों के प्रति अत्यंत स्नेहवान् या कृपालु। पु० साहित्य में कुछ लोगों के द्वारा माना हुआ दसवाँ रस जिसमें माता पिता का संतान के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है।

वदतोव्याघात—पु० [सं०] कथन का एक दोष जिसमें कोई एक बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।

वदन—पु० [सं०] मुख। अगला भाग। कथन।

वदान्य—वि० [सं०] अतिशय दाता, उदार। मधुरभाषी।

वदि—पु० कृष्णपक्ष; जैसे जेठ वदि ४।

वदना(पु)—सक० दोष देना, भला बुरा कहना।

वध—पु० जान से मार डालना, हत्या। ⊙भूमि = स्त्री० वह स्थान जहाँ वध किया जाता हो।

वधक—पु० [सं०] घातक, हिंसक। व्याध। मृत्यु।

वधू—स्त्री० [सं०] नवविवाहिता स्त्री, दुलहन। पत्नी। पतोहू।

वधूटी—स्त्री० दे० 'वधू'।

वधूत(पु)—पु० दे० 'अवधूत'।

वध्य—वि० [सं०] मार डालने योग्य।

वन—पु० [सं०] वन, जंगल। वाटिका। जल। घर, आलय। शंकराचार्य के अनुयायी संन्यासियों की एक उपाधि। ⊙चर = वि० वन में भ्रमण करने या रहनेवाला। पु० वन में रहनेवाला पशु। जंगली आदमी। ⊙चारी = पु० [हिं०] दे० 'वनचर'। वि० वन में घूमनेवाला। ⊙ज = पु० वह जो वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न हो। कमल। ⊙देव = पु० वन के अधिष्ठाता देवता। ⊙प्रिय = पुं० कोयल। ⊙माला—स्त्री० वन के फूलों की माला। एक विशेष प्रकार की माला जो श्रीकृष्ण धारण करते थे। ⊙माली = पु० श्रीकृष्ण। ⊙राज = पु० सिंह। अश्मंतक वृक्ष। ⊙राजि = स्त्री० वन की श्रेणी। वन के बीच की पगडंडी ⊙रुह = पु० कमल। ⊙लक्ष्मी = स्त्री० वन की शोभा, वनश्री। ⊙वास = पु० जंगल में रहना। बस्ती छोड़कर जंगल में रहने की व्यवस्था या विधान। ⊙वासी = वि० जंगल में निवास करनेवाला। ⊙स्थली = स्त्री० वनभूमि।

वनस्पति—स्त्री० [सं०] पेड़ पौधे। घास, सागपात, पत्रपुष्प इत्यादि। पु० मूँगफली या बिनौले आदि से जमाकर तैयार किया हुआ तेल। ⊙शास्त्र = पु० वह शास्त्र जिसमें पौधों और वृक्षों आदि के स्पों-

जातियो और भिन्न भिन्न अगो का विवेचन होना है ।
वनिता—स्त्री० [सं०] प्रिय, प्रियतमा । स्त्री । छह वर्णो की एक वृत्ति, तिलका, डिल्ला ।
वनी—स्त्री० [सं०] छोटा वन ।
वनेचर—वि० [सं०] दे० 'वनचर' ।
वन्य—वि० [सं०] वन मे उत्पन्न होनेवाला । जगली ।
वपन—पुं० [स०] बीज बोना ।
वपा—स्त्री० [स०] चरबी, मेद ।
वपित—[सं०] बोया हुआ ।
वपु—पु० [स० वपुस्] शरीर, देह । ⊙मान = पुं० [हिं०] सुदर और हृष्ट पुष्ट शरीरवाला ।
वप्प‡—पुं० दे० 'बाप' ।
वफा—स्त्री० [अ०] वादा पूरा करना, बात निबाहना । निर्वाह, पूर्णता । मुरौवत । सुशीलता । ⊙दार = वि० [फा०] वचन या कर्तव्य का पालन करनेवाला ।
वबाल—पुं० [अ०] बोझ । आपत्ति, कठिनाई । झमेला ।
वभ्रु—पुं० [सं०] दे० 'बभ्रु' ।
वमन—पु० [सं०] कै करना, उलटी करना । वमन किया हुआ पदार्थ ।
वमि—स्त्री० [सं०] वमन का रोग ।
वय—सर्व० [सं०] हम ।
वय क्रम—पु० [स०] अवस्था, उम्र ।
वय.संधि—स्त्री० [स०] बाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति ।
वय—स्त्री० अवस्था, उम्र (स० वयस्) ।
वयन—पुं० [सं०] बुनने का काम, बुनाई ।
वयस—पु० बीता हुआ जीवन काल, उम्र ।
वयस्क—वि० [सं०] उमर का, अवस्थावाला (यौ० मे) । पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ, बालिग ।
वयस्य—पुं० [सं०] समान अवस्था या उम्र वाला । दोस्त ।
वयोवृद्ध—वि० [स०] बडाबूढा । बूढा ।
वरंच—अव्य [स०] ऐसा न होकर ऐसा, वल्कि । परतु ।
वर—पु० [सं०] किसी देवता या वडे से मॉगा हुआ मनोरथ । किसी देवता या वडे से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि । पति या दूल्हा । वि० श्रेष्ठ, उत्तम (जैसे प्रियवर) । ⊙द = वि० वर देनेवाला । ⊙दाता = वि० [स्त्री० वरदात्री] वर देनेवाला । ⊙दान = पु० किसी देवता या वडे का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना । किसी फल का लाभ जो किसी की प्रसन्नता से हो । ⊙दानी = पु० वर देनेवाला । ⊙यात्रा = स्त्री० दूल्हे का बाजे गाजे के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिये जाना, बरात ।
वरक—पुं० [अ०] पत्र । पुस्तको का पन्ना, पन्ना । सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर ।
वरण— [स०] किसी को किसी काम के लिये चुनना या मुकर्रर करना । मगल कार्य के विधान मे होता आदि कार्यकर्ताओ को नियत करके उनका सत्कार करना । मगल कार्य मे नियत करके किए हुए होता आदि के सत्कारार्थ दी हुई वस्तु या दान । कन्या के विवाह मे वर को अगीकार करने की रीति । पूजा, सत्कार ।
वरणी—स्त्री० दे० 'वरण' ।
वरणीय—वि० [सं०] वरण करने योग्य । पूजनीय ।
वरदी—स्त्री० [अ०] वह पहनावा जो किसी खास महकमे के अफसरो और नौकरो के लिये मुकर्रर हो ।
वरन्—अव्य० ऐसा नही, वल्कि ।
वरना—सक० किसी को किसी काम के लिये चुनना या मुकर्रर करना । विवाह के समय कन्या का वर को अगीकार करना । ग्रहण या धारण करना । ⓟपु० ऊँट । अव्य० [अ०] यदि ऐसा न होगा तो, अन्यथा ।
वरम—पु० दे० 'वर्न' ।
वरहीⓟ—पु० दे० 'वही' ।
वरांग—पु० [सं०] सुदर रूप या शरीर । मुख्य भाग । मस्तक ।
वराक—वि० [सं०] बेचारा, बापुरा ।
वराटिका—स्त्री० [सं०] कौडी, कपर्दिका ।
वरानना—स्त्री० [स०] सुंदर स्त्री ।

वरान्न—पु० [सं०] दला हुआ उत्तम अन्न ।
वरासत—स्त्री० वारिस होने का भाव, उत्तराधिकार । उत्तराधिकार से मिला हुआ धन, वपौती ।
वराह—पु० [सं०] सूअर । विष्णु । १८ द्वीपों में से एक । ⊙**क्रांता** = स्त्री० वाराही । लज्जालु, लजालू ।
वरिष्ठ—वि० [सं०] श्रेष्ठ, पूजनीय ।
वरुण—पु० [सं०] एक वैदिक देवता जो जल के अधिपति, दस्युओं के नाशक और देवताओं के रक्षक कहे गए हैं, इनका अस्त्र पाश है । वरुना का पेड़ । पानी । सूर्य । एक ग्रह (अं० नेपचून) । ⊙**पाश** = पुं० वरुण का अस्त्रपाश या फंदा ।
वरुणानी—वि० [सं०] वरुण की स्त्री ।
वरुणालय—पु० [सं०] समुद्र ।
वरूथ—पु० [सं०] कवच । ढाल । सेना ।
वरूथिनी—स्त्री० [सं०] सेना, फौज ।
वरेण्य—वि० [सं०] प्रधान, मुख्य । पूज्य, श्रेष्ठ ।
वर्ग—पु० [सं०] एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह, जाति, श्रेणी । एक सामान्य धर्म रखनेवाले पदार्थों का समूह । समान आर्थिक और सामाजिक स्थिति का लोकसमूह । छन्दशास्त्र में एक स्थान से उच्चरित होनेवाले स्पर्श व्यंजन वर्णों का समूह (जैसे, कवर्ग चवर्ग, टवर्ग आदि) । परिच्छेद, अध्याय । दो समान अंकों या राशियों का घात या गुणनफल । वह चौखूंटा क्षेत्र जिसकी लंबाई चौड़ाई बराबर और चारों कोण समकोण हों (रेखागणित) । ⊙**फल**—पु० वह गुणनफल जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो । ⊙**मूल** = पु० किसी वर्गांक का वह अंक जिसे यदि उसी से गुणन करें तो गुणन वही वर्गांक हो (जैसे २५ का वर्गमूल ५ होगा) ।
वर्गलाना—सक० कोई काम करने के लिये उभारना, उकसाना । बहकाना, फुसलाना ।
वर्गीकरण—पु० [सं०] बहुत सी वस्तुओं को उनके अलग वर्ग के अनुसार छाँटना और लगाना ।
वर्चस—पु० [सं०] तेज, कांति । रूप । अन्न ।
वर्चस्वी—वि० [सं०] तेजस्वी ।
वर्जन—पु० [सं०] त्याग, छोड़ना । मनाही ।
वर्जना—सक० मना करना, रोकना ।
वर्जित—वि० [सं०] त्यागा हुआ । जो ग्रहण के अयोग्य ठहराया गया हो, निषिद्ध ।
वर्ज्य—वि० [सं०] त्याज्य । जो मना हो ।
वर्ण—पुं० [सं०] पदार्थों के लाल, पीले आदि भेदों का नाम, रंग । जन समुदाय के चार विभाग—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—जो प्राचीन आर्यों ने किए थे, जाति । अकारादि शब्दों के चिह्न या संकेत, अक्षर । रूप । ⊙**खंड मेरु** = पुं० पिंगल में वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाए यह ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं । ⊙**तूलिका** = स्त्री० रंग पोतने की कूँची या बुरुश । ⊙**नष्ट** = पु० छंद शास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णों के वृत्तों के अमुक संख्यक भेद का रूप लघु गुरु के हिसाब से कैसा होगा । ⊙**पताका** = स्त्री० छंद शास्त्र में एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तों के भेदों में से कौन सा ऐसा है जिसमें इतने लघु और इतने गुरु होंगे । ⊙**प्रस्तार** = पुं० छंदः शास्त्र में वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्तों के इतने भेद हो सकने हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे । ⊙**माला** = स्त्री० अक्षरों के रूपों की यथाश्रेणी लिखित सूची । ⊙**विकार** = पुं० शब्दों में एक वर्ण का बिगड़कर दूसरा वर्ण हो जाना । ⊙**विचार** = पु० आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों का वर्णन हो । प्राचीन वेदांग में यह विषय 'शिक्षा' कहलाता था । ⊙**विपर्यय** = पु० शब्द में वर्णों या ध्वनियों का परस्पर परिवर्तन (जैसे 'हिंस' से बना 'सिंह', शब्द) । ⊙**वृत्त** = पुं० वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु गुरु के क्रमों में समानता हो ।

⊙सकर = पु० वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियो के स्त्री पुरुष के सयोग से उत्पन्न हो। व्यभिचारिणी से उत्पन्न मनुष्य, दोगला। ⊙सूची = स्त्री० छद या शास्त्र या पिंगल मे एक क्रिया जिसके द्वारा वर्णवृत्तो की सख्या की शुद्धता, उनके भेदो मे आदि अत लघु और आदि अत गुरु की सख्या जानी जाती है।

वर्णन—पु० [स०] चित्रण, रँगना। सविस्तार कहना, बयान। गुणकथन।

वर्णनातीत—वि० [सं०] जिसका वर्णन न हो सके, वर्णन के बाहर।

वर्णनीय—वि० [सं०] दे० 'वर्ण्य'।

वर्णिकवृत्त—पु० [स०] दे० 'वर्णवृत्त'।

वर्णिका—स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट रगो का समवाय जो किसी चित्र या शैली मे विशेष रूप से वरता जाय। ⊙भग = पु० चित्र के विषय और भाव के अनुसार उपयुक्त रगो का व्यवहार।

वर्णित—वि० [सं०] कहा हुआ। जिसका वर्णन हो चुका हो।

वर्ण्य—वि० [स०] वर्णन के योग्य। जो वर्णन का विषय हो।

वर्तन—पु० [सं०] बरताव, व्यवहार। व्यवसाय, रोजी। फेरना। परिवर्तन। स्थापन, रखना। सिल बट्टे से पीसना।

वर्तमान—वि० [सं०] चलता हुआ, जो जारी हो। उपस्थित, विद्यमान। आधुनिक, हाल का। पुं० व्याकरण मे क्रिया के तीन कालो मे से एक, जिससे सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है, समाप्त नही हुई है। वृत्तात, समाचार। चलता व्यवहार।

वर्ति—स्त्री० [सं०] बत्ती। अजन। गोली, वटी।

वर्तिका—स्त्री० [सं०] बत्ती। सलाई।

वर्तित—वि० [सं०] सपादित किया हुआ। चलाया हुआ, जारी किया हुआ।

वर्ती—वि० [सं०] वरतनेवाला। स्थित रहनेवाला।

वर्तुल—वि० [सं०] गोल, वृत्ताकार।

वर्त्म—पुं० [सं०] मार्ग। किनारा, ओठ। आँख की पलक। आधार, आश्रय।

वर्दी—स्त्री० दे० 'वरदी'।

वर्धक—वि० [सं०] बढ़ानेवाला, पूरक।

वर्धन—पुं० [सं०] बढाना। बढती, उन्नति। काटना, तराशना।

वर्धमान—वि० [सं०] जो बढता जा रहा हो। बढनेवाला। पुं० एक वर्णवृत्त जिसके चारो चरणो मे वर्णो की सख्या भिन्न अर्थात् १४, १३, १८ और १५ होती है। जैनियो के २४वें तीर्थंकर जिन महावीर।

वर्धित—वि० [सं०] बढा हुआ। पूर्ण। छिन्न, फटा हुआ।

वर्म—पु० कवच, बकतर। घर।

वर्मा—पु० क्षत्रियो, खत्रियो तथा कायस्थो आदि की उपाधि जो उनके नाम के अत मे लगाई जाती है।

वर्य—वि० [सं०] श्रेष्ठ (जैसे, विद्वद्वर्य)।

वर्या—स्त्री० [सं०] कन्या। पतिवरा वधू। अरहर।

वर्वर—पु० [सं०] एक देश का नाम। इस देश के असभ्य निवासी जिनके बाल घुंघराले कहे गए है। पामर नीच।

वर्ष—पु० [स०] वृष्टि। काल का एक मान जिसमे १२ महीने होते हैं, साल। पुराणो मे माने हुए सात द्वीपो का एक विभाग। किसी द्वीप का प्रधान भाग। मेघ। ⊙क = वि० वर्षा करनेवाला। बसानेवाला। ⊙काम = वृष्टि चाहनेवाला। ⊙ गाँठ = स्त्री० [हिं०] दे० 'बरसगाँठ'। ⊙फल = पु० फलित ज्योतिष में वह कुडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहो, शुभाशुभ फलो का विवरण जाना जाता है।

वर्षण—पुं० [स०] बरसना।

वर्षा—स्त्री० [स०] वह ऋतु जिसमे पानी बरसता है। पानी बरसने की क्रिया या भाव, वृष्टि। ⊙काल = पुं० बरसात। मु० (किसी वस्तु की) ~होना = बहुत अधिक परिमाण मे ऊपर से गिरना। बहुत अधिक सख्या मे मिलना।

वर्ह—पुं॰ [सं॰] मोरपख । पत्ता ।
वर्ही—पुं॰ [सं॰] मयूर ।
वर्जन—पु॰ [सं॰] ज्योतिष शास्त्रानुसार ग्रह नक्षत्रादि का सायनांश से हटकर चलना ।
वलभी—स्त्री॰ [सं॰] एक पुरानी नगरी जो काठियावाड़ मे थी । सदर फाटक, तोरण। छत । अटारी ।
वलय—पुं॰ [सं॰] मडल । ककड । चूडी । वेष्ठन ।
वलयित—वि॰ [सं॰] वेष्ठित, घेरा हुआ ।
वलवला—पु॰ [अ॰] उमग, आवेश ।
वलाक—पुं॰ [सं॰] बगला ।
वलाहक—पु॰ [सं॰] मेघ, बादल । पर्वत । एक दैत्य का नाम ।
वलि—पु॰ [सं॰] रेखा । पेट के दोनो ओर पेटी के सिकुडने मे पडी हुई रेखा । देवता को चढाने की वस्तु । एक दैत्य जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था । श्रेणी, पक्ति । **वलित**—वि॰ बल खाया हुआ । झुकाया या मोडा हुआ । घेरा हुआ, जिसमे झुर्रियाँ पड़ी हो । लिपटा हुआ, लगा हुआ । ढका हुआ । युक्त, सहित ।
वली—स्त्री॰ [सं॰] झुर्री, शिकन । श्रेणी । रेखा । पुं॰ [अ॰] मालिक । शासक । साधु, फकीर ।
वल्कल—[सं॰] वृक्ष की छाल या वस्त्र, जिसे तपस्वी पहना करते थे ।
वल्द—पुं॰ [अ॰] औरस बेटा, पुत्र ।
वल्दियत—स्त्री॰ [अ॰] पिता के नाम का परिचय ।
वल्मीक—पुं॰ [सं॰] दीमको का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर, बाँबी । वाल्मीकि मुनि
वल्लकी—स्त्री॰ [सं॰] वीणा । सलई का पेड़ ।
वल्लभ—वि॰ [सं॰] प्रियतम, प्यारा । पुं॰ प्रिय मित्र, नायक । पति । अध्यक्ष, मालिक । वैष्णव सप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य । **वल्लभा**—स्त्री॰ प्यारी स्त्री, प्रेयसी ।
वल्लभी—पुं॰ दे॰ 'वलभी' ।
वल्लरि, वल्लरी—स्त्री॰ [सं॰] वल्ली, लता । मजरी ।
वल्ली—स्त्री॰ [सं॰] लता, बेल ।
वशवद—वि॰ [सं॰] वशीभूत, वश मे होकर ।
वश—पु॰ [सं॰] काबू, अधिकार । इच्छा । सामर्थ्य । ⊙**ता** = वशिता । ⊙**वर्ती** = वि॰ [सं॰] जो दूसरे के वश मे रहे, अधीन । मु॰ ~**का** = जिस पर अधिकार हो । ~**चलना** = शक्ति काम करना । **वशिता**—स्त्री॰ अधीनता, तावेदारी । मोहने की क्रिया या भाव ।
वशित्व—पुं॰ [सं॰] वशता । योग के अणिमादि आठ ऐश्वर्यों मे से एक ।
वशिष्ट—पुं॰ दे॰ 'वशिष्ठ' ।
वशी—वि॰ [सं॰] अपने को वश मे रखनेवाला । अधीन । ⊙**करण** = पु॰ वश मे लाने की क्रिया । मणि, मत्र आदि द्वारा किसी को वश मे करना । ⊙**भूत**—वि॰ अधीन, ताबे । दूसरे की इच्छा के अधीन ।
वश्य—वि॰ [सं॰] वश मे आनेवाला ।
वसंत—पु॰ [सं॰] वर्ष की छह ऋतुओ मे से प्रधान और प्रथम ऋतु जिसके अतर्गत चैत और वैशाख के महीने माने गए हैं, बहार का मौसिम । शीतला रोग, चेचक । छह रागो मे से दूसरा राग । ⊙**तिलक**—पु॰ १४ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तगण, भगण, जगण और अत मे दो गुरु होते है, उद्धर्षिणी, सिंहोन्नता । ⊙**तिलका** = स्त्री॰ दे॰ 'बसंततिलक' । ⊙**दूत** = पुं॰ आम का वृक्ष । कोयल । चैत्र मास । ⊙**दूती** = स्त्री॰ कोकिला, कोयल । माधवी लता । ⊙**पंचमी** = स्त्री॰ माघ महीने की शुक्ल पचमी, श्रीपचमी ।
वसंती—पु॰ दे॰ 'बसती' ।
वसंतोत्सव—पु॰ [सं॰] वसत पचमी के दूसरे दिन मनाया जानेवाला एक प्राचीन उत्सव । इसमे लोग उद्यानो मे वसत

और कामदेव की पूजा करते और उत्सव मनाते थे। होली का उत्सव।

वसति, वसती--स्त्री० [सं०] निवास। घर। बस्ती।

वसन--पुं० [सं०] वस्त्र। आवरण। निवास।

वसवास--पु० [अ०] भ्रम, संदेह। प्रलोभन या मोह।

वसह(पु)--पुं० बैल।

वसा-- स्त्री० [सं०] मेद। चरबी।

वसिष्ठ--पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जिनका उल्लेख वेदों से लेकर रामायण, महाभारत और पुराणों आदि तक में है। सप्तर्षि मंडल का एक तारा। ⊙पुराण = पुं० एक उपपुराण। कुछ लोग कहते हैं कि लिंगपुराण ही वसिष्ठ पुराण है।

वसीका--पुं० [अ०] वह धन जो इस उद्देश्य से सरकारी खजाने में जमा किया जाय कि उसका सूद जमा करनेवाले के संबंधियों को मिला करे। ऐसे धन से आया हुआ सूद। वक्फ का इकरारनामा।

वसीयत--स्त्री० [अ०] अपने बाद अपनी संपत्ति और संतति के भावी विभाजन और प्रबंध आदि के संबंध में की हुई कानूनी व्यवस्था। ⊙नामा = पुं० [फा०] वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य वसीयत करता है।

वसुंधरा--स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

वसु--पु० [सं०] देवताओं का एक गण जिसके अंतर्गत आठ देवता है। आठ की संख्या। रत्न। धन। अग्नि। रश्मि, किरण। जल। सोना। कुबेर। शिव। सूर्य। विष्णु। साधु पुरुष, सज्जन। तालाब। छप्पय का ६९वाँ भेद। ⊙दा = स्त्री० पृथ्वी। माली राक्षस की पत्नी। ⊙धा = स्त्री० पृथ्वी। ⊙धारा = स्त्री० जैनों की एक देवी। कुबेर की पुरी, अलका। ⊙मती = स्त्री० पृथ्वी। छह वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण के बाद सगण होता है।

वसल--वि० [अ०] मिला हुआ, प्राप्त। जो चुका लिया गया हो। पुं० दे० 'उसूल'।

वसूली--स्त्री० दूसरे से रुपया पैसा या वस्तु लेने का काम, प्राप्ति।

वस्ति--स्त्री० [सं०] पेडू। मूत्राशय। पिचकारी। ⊙कर्म = पु० लिंगेंद्रिय, गुदेंद्रिय आदि मार्गों में पिचकारी देना।

वस्तु--स्त्री० [सं०] वह जो सचमुच हो। सत्य। गोचर पदार्थ, चीज। नाटक का कथन या आख्यान। ⊙त = अव्य० यथार्थत सचमुच। ⊙निर्देश = पुं० मंगलाचरण का एक भेद जिसमें कथा का कुछ आभास भी दे दिया जाता है। ⊙वाद = पु० वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें जगत् जैसा दृश्य है, उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है [जैसे, न्याय और वैशेषिक]। ⊙स्थिति = स्त्री० परिस्थिति। असलियत।

वस्त्र--पु० [सं०] कपड़ा। ⊙भवन = पु० कपड़े का बना घर, पट्टावास (जैसे, खेमा, रावटी आदि)।

वह--सर्व० एक शब्द जिसके द्वारा किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है, कर्तृकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम। एक निर्देशकारक शब्द जिससे दूर या परोक्ष की वस्तुओं का संकेत करते हैं। वि० वाहक (समास में)।

वहन--पु० [सं०] बेड़ा, तरेंदा। खींचकर अथवा सिर या कंधे पर लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। ऊपर लेना, उठाना।

वहम--पु० [अ०] मिथ्या धारणा, झूठा खयाल। भ्रम। मिथ्या संदेह।

वहमी--वि० वहम करनेवाला।

वहशी--वि० [अ०] जंगल में रहनेवाला। जो पालतू न हो। असभ्य।

वहाँ--अव्य० उस जगह।

वहाबी--पु० [अ०] अब्दुल वहाब नज्दी का चलाया हुआ मुसलमानों का एक संप्रदाय या उसका अनुयायी।

वहिः--अव्य० [सं०] जो अंदर न हो, बाहर।

वहित्र--पुं० [सं०] जहाज।

वहिरंग—पु० [सं०] शरीर का बाहरी भाग। बाहरी भाग, अंतरग का उलटा। कही बाहर से आया हुआ आदमी। वि० ऊपर ऊपर का, बाहरी।
वहिर्गत—वि० [सं०] निकला हुआ, बाहर का।
वहिर्द्वार—पु० [सं०] बाहरी फाटक, तोरण।
वहिर्भूत—वि० [सं०] वहिर्गत।
वहिर्मुख—वि० [सं०] विमुख। अंतर्मुख का उलटा, बाह्य वस्तुओं की ओर प्रवृत्त।
वहिर्लापिका—स्त्री० [सं०] पहेली।
वहिष्कार—पु० दे० 'वहिष्कार'।
वहाँ—अव्य० उसी जगह।
वही—सर्व० उस तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके संबंध मे कुछ कहा जा चुका हो, पूर्वोक्त व्यक्ति। निर्दिष्ट व्यक्ति, अन्य नही।
वहै(पु)—वि० वही।
वह्नि—पु० [सं०] अग्नि। कृष्ण के एक पुत्र का नाम। तीन की सख्या।
वांछनीय—वि० [सं०] चाहने योग्य। जिसकी इच्छा हो। **वांछा**—स्त्री० इच्छा, चाह। **वांछित**—वि० इच्छित, चाहा हुआ।
वा—अव्य० [सं०] विकल्प या सदेहवाचक शब्द, या, अथवा। (पु)† सर्व० ब्रजभाषा में प्रथम पुरुष का वह एकवचन रूप जो कारक चिह्न लगने के पहले उसे प्राप्त होता है (जैसे वाको, वासो)।
वाइ(पु)†—सर्व दे० 'वाही'। स्त्री० दे० 'वायु'।
वाक्—पु० [सं०] वाणी। सरस्वती। बोलने की इंद्रिय। ⊙छल = पु० न्यायशास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदो मे से एक। ⊙पटु = वि० वात करने मे चतुर। ⊙पति = पु० वृहस्पति। विष्णु। ⊙सिद्धि = स्त्री० इस प्रकार की सिद्धि या शक्ति कि जो बात मुँह से निकले, वह ठीक घटे।
वाकई—वि० [अ०] सच, वास्तव। अव्य० सचमुच, यथार्थ मे।
वाकफियत—स्त्री० [अ०] जानकारी। परिचय, जान पहचान।
वाकया—पु० [अ०] घटना। वृत्तात, समाचार।
वाकिफ—[अ०] जानकार। जानकारी रखनेवाला, अनुभवी।
वाकिफ़यत—स्त्री० [अ०] जानकारी।
वाक्य—पु० [सं०] पद या पदसमूह की अभिप्रायसूचक पूर्ण इकाई, जुमला।
वागीश—पु० [सं०] वृहस्पति। ब्रह्मा। वाग्मी, कवि। वि० अच्छा बोलनेवाला, वक्ता।
वागीश्वरी—स्त्री० [सं०] सरस्वती।
वाग्जाल—पु० [सं०] बातो की लपेट या भरमार।
वाग्दंड—पु० [सं०] भला बुरा कहने का दंड, डाँटडपट।
वाग्दत्त—वि० [सं०] जिसे दूसरे को देने के लिये कह चुके हो।
वाग्दत्ता—स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो।
वाग्दान—पु० [सं०] कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें व्याहूँगा।
वाग्देवी—स्त्री० [सं०] सरस्वती, वाणी।
वाग्मी—पु० [सं०] अच्छा वक्ता। पंडित। वृहस्पति।
वाग्विलास—पु० [सं०] आनंदपूर्वक परस्पर बातचीत करना।
वाङ्मय—वि० [सं०] वचन संबंधी। वचन द्वारा किया हुआ। पु० गद्यपद्यात्मक वाक्य आदि जो पठन पाठन का विषय हो, साहित्य।
वाङ्मुख—पु० [सं०] एक प्रकार का गद्यकाव्य, उपन्यास।
वाच्—स्त्री० [सं०] वाचा, वाणी।
वाच—स्त्री० दे० 'वाच्'।
वाचक—वि० [सं०] बतानेवाला, सूचक। पु० नाम, संकेत। ⊙धर्मलुप्ता = स्त्री० वह उपमा जिसमे वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो। ⊙लुप्ता = स्त्री० वह उपमालंकार

जिसमे उपमावाचक शब्द का लोप हो। वाचकोपमानधर्मलुप्ता—स्त्री० वह उपमा जिसमे वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनो लुप्त हो, केवल उपमेय हो। वाचकोपमेयलुप्ता—स्त्री० वह उपमालकार जिसमे वाचक और उपमेय का लोप होता है।

वाचन—पु० [सं०] पढना, वाँचना। कहना। प्रतिपादन। वाचनालय—पु० वह स्थान जहाँ वैठकर लोग समाचार-पत्र या पुस्तके आदि पढते हो (अँ० रीडिंग रूम)।

वाचसापति, वाचस्पति—पु० [सं०] वृहस्पति।

वाचा—स्त्री० [सं०] वाणी। वचन, शब्द।

वाचावध(पु)—वि० प्रतिज्ञावद्ध।

वाचाल—वि० [सं०] वोलने मे तेज, वाक्पटु। वकवादी।

वाचिक—वि० [सं०] वक्ता सवधी। वाणी से किया हुआ। पु० अभिनय का एक भेद जिसमे केवल वाक्यविन्यास द्वारा अभिनय का कार्य सपन्न होता हैं।

वाची—वि० [सं०] प्रकट करनेवाला, सूचक।

वाच्य—वि० [सं०] कहने योग्य। शब्द-सकेत द्वारा जिसका वोध हो, अभिधेय। पु० अभिधेयार्थ। दे० 'वाच्यार्थ'।

वाच्यार्थ—पु० [सं०] वह अभिप्राय जो शब्दो के सकेतित या साधारण अर्थ द्वारा ही प्रकट हो।

वाच्यावाच्य—पु० [सं०] भली वुरी या कहने न कहने योग्य वात।

वाजपेई(पु)—पु० दे० 'वाजपेयी'।

वाजपेय—पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रौत यज्ञो मे पाँचवाँ है।

वाजपेयी—पु० [सं०] वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। ब्राह्मणो की एक उपाधि। अत्यत कुलीन पुरुष।

वाजसनेय—पु० [सं०] यजुर्वेद की एक शाखा। याज्ञवल्क्य ऋषि।

वाजिव—वि० [अ०] उचित, ठीक।

वाजवी—वि० [अ०] उचित, ठीक।

वाजी—पु० [सं०] घोडा। फटे हुए दूध का पानी। ⊙करण = पु० वल और वीर्य वढानेवाली ओषधि।

वाटधान—पु० [सं०] एक जनपद जो काश्मीर के नैर्ऋत्य कोण मे कहा गया है। एक वर्णसकर जाति।

वाटिका—स्त्री० [सं०] वाग, वगीचा।

वाडवाग्नि—स्त्री० [सं०] समुद्र के अदर की आग। समुद्री आग।

वाण—पु० [सं०] धारदार फल लगा हुआ एक छोटा अस्त्र जो धनुष द्वारा छोडा जाता है, तीर।

वाणावली—स्त्री० [सं०] वाणो की अवली। तीरो की लगातार वर्षा। एक साथ वने हुए पाँच श्लोक।

वाणिज्य—स्त्री० [सं०] दे० 'वाणिज्य'।

वाणिनी—स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त।

वाणी—स्त्री० [सं०] मुँह से निकले हुए सार्थक शब्द, वचन। सरस्वती। वाक्शक्ति। जीभ, रसना। मु०~फुरना = मुँह से शब्द निकलना।

वात—पुं० [सं०] वायु, हवा। वैद्यक के अनुसार शरीर के अदर पक्वाशय में रहनेवाली वह वायु जिसके कुपित होने से से अनेक प्रकार के रोग होते हैं। ⊙ज = वि० वायु द्वारा उत्पन्न। ⊙जात = पुं० हनुमान्। ⊙प्रकोप = पुं० शरीर के भीतर की वायु का वढ जाना जिससे अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातापि—पु० [सं०] एक असुर का नाम जो आतापि का भाई था और जिसे अगस्त्य ऋषि ने खा डाला था।

वातायन—[सं०] झरोखा, छोटी खिडकी। रामायण के अनुसार एक जनपद।

वातावरण—पु० [सं०] आसपास की परिस्थिति। पृथ्वी को चारो ओर से घेरे रहनेवाला हवा का लिफाफा, वायुमडल।

वातुल—[सं०] वावला, उन्मत्त।

वातोर्मि—पु० [सं०] ११ अक्षरो का एक वर्णवृत्त।

वात्या—स्त्री० [सं०] ववडर।

वात्सरिक—वि० [सं०] सालाना, वार्षिक ।
वात्सल्य—पुं० [सं०] प्रेम, स्नेह । माता पिता का संतति के प्रति प्रेम ।
वात्स्यायन—पुं० [सं०] न्याय शास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार । कामसूत्र के प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि ।
वाद—पुं० [सं०] वह बातचीत जो किसी तत्व के निर्णय के लिये हो, तर्क, दलील । किसी पक्ष के तत्वज्ञो द्वारा निश्चित सिद्धात, उसूल (जैसे, अद्वैतवाद) । बहस, झगडा । मुकद्दमा । ⊙क = पु० बाजा बजानेवाला । वक्ता । तर्क या शास्त्रार्थ करनेवाला । ⊙ग्रस्त = वि० जिसके सबध मे विवाद या मतभेद हो । ⊙प्रतिवाद = पुं० शास्त्रीय विषयो मे होनेवाला तर्क वितर्क बहस । ⊙विवाद = पु० बहस ।
वादन—पुं० [सं०] बाजा बजाना ।
वादरायण—पुं० [स०] वेदव्यास ।
वादा = पु० प्रतिज्ञा, इकरार । ⊙खिलाफी वचन के विरुद्ध कार्य । मु० ~रखाना = प्रतिज्ञा कराना ।
वादानुवाद—पुं० [स०] दे० 'वादविवाद' ।
वादित्र—पु० [सं०] वाद्य, बाजा ।
वादी—पु० [स०] वक्ता, बोलनेवाला । मुकदमा चलानेवाला, मुद्दई । पक्ष या प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला ।
वाद्य—पु० [स०] बाजा ।
वानप्रस्थ—पु० [स०] प्राचीन भारतीय आर्यो मे प्रचलित वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार मनुष्यजीवन के २५-२५ वर्षो के चार आश्रमो मे से तीसरा ।
वानर—पु० [स०] बदर । दोहे का एक भेद ।
वानवासिका—स्त्री० [स०] १६ मात्राओ के छदो या चौपाई का एक भेद जिसमे नवो और १२वी मात्रा लघु हो ।
वानीर—पु [सं०] बेत ।
वापन—पु० [स०] बीज बोना ।
वापस—वि० [फा०] लौटा हुआ, फिरता ।
वापसी—वि० लौटा हुआ या फिरा हुआ, वापस होने के सबध का । स्त्री० लौटने की क्रिया या भाव ।
वापिका, वापी—स्त्री० [स०] छोटा जलाशय, बावली ।
वाम—वि० [स०] बायाँ, दक्षिण या दाहिने का उलटा । विरुद्ध, खिलाफ । टेढा, कुटिल । दुष्ट । पुं० कामदेव । एक रुद्र का नाम, वामदेव । वरुण । धन । २४ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात जगणो के बाद एक यगण हो, मजरी, मकरद, माधवी । ⊙देव = पु० शिव, महादेव । एक वैदिक ऋषि । ⊙मार्ग = पु० तात्रिक मत जिसमे मद्य, मास आदि का विधान है ।
वामकी—स्त्री० [स०] एक देवी जिसकी पूजा जादूगर करते हैं ।
वामन—वि० [स०] बौना, छोटे डील का । ह्रस्व । पु० विष्णु । शिव । एक दिग्गज । विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार जो बलि को छलने के लिये हुआ था । १८ पुराणो मे से एक ।
वामांगिनी, वामागी—स्त्री० [स०] पत्नी ।
वामा—स्त्री० [स०] स्त्री । दुर्गा । १० अक्षरो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तगण, यगण, भगण और अत्य गुरु हो, सुषमा ।
वामावर्त—वि० [स०] दक्षिणावर्त का उलटा, (वह फेरी) जो किसी वस्तु की बाई ओर से आरभ की जाय । जिसमे बाई ओर का घुमाव या भँवरी हो ।
वाय(पु)—सर्व० दे० 'वाही' ।
वायव्य—वि० [स०] वायु सबधी । पुं० उत्तरपश्चिम का कोना । एक अस्त्र का नाम ।
वायस—पु० [स०] कौआ, काक ।
वायु—स्त्री० [स०] हवा, वात । ⊙कोण = पुं० पश्चिमोत्तर दिशा । ⊙मंडल = पृथ्वी के चारो ओर व्याप्त वायु का आवरण, वातावरण । ⊙यान = पुं० हवा मे उडनेवाला यान, हवाई जहाज । ⊙लोक = पु० पुराणानुसार एक लोक का नाम । आकाश ।
वारंवार—अव्य० दे० 'बारबार' ।

वार—पु० [स०] द्वार। रुकावट। आवरण। अवसर, दफा। क्षण। सप्ताह का दिन (सोमवार, मगलवार, वुधवार आदि)। दाँव, वारी। पु० [हि०] चोट, आघात, आक्रमण, हमला।
वारक—वि० [स०] वारण या निषेध करने वाला। दूर करनेवाला।
वारण—पु० [स०] किसी वात को न करने की आज्ञा, मनाही। वाधा। कवच। छप्पय छद का एक भेद। हाथी।
वारणावत—पु० [सं०] महाभारत के समय का एक नगर जो हस्तिनापुर से आठ दिन के मार्ग पर गगा के किनारे वसा था। इस नगर के चारो ओर फैला हुआ जनपद।
वारतिय(पु)—स्त्री० वेश्या।
वारद(पु)—पु० वादल।
वारदात—स्त्री० [अ०] कोई भीषण काड, दुर्घटना। मारपीट, दगा फसाद।
वारन(पु)—स्त्री० निछावर, वलि। पु० वदनवार।
वारना—पु० निछावर। सक० निछावर करना। मु०—**वारने जाना**=निछावर होना।
वारनारी—स्त्री० [स०] दे० 'वारवधू'।
वारपार—पु० (नदी आदि का) यह किनारा और वह किनारा, दोनो किनारे। अत। सीमा, आदि अत। अव्य० इस किनारे तक। एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक।
वारफेर—पु० निछावर, वलि।
वारवधू—स्त्री० [स०] वेश्या, रंडी।
वारमुखी—स्त्री० वेश्या।
वारांगना—स्त्री० [सं०] वेश्या, रडी।
वारांनिधि—पुं० [स०] समुद्र।
वारा—पु० खर्च की वचत, किफायत। लाभ। वि० किफायत, सस्ता।
वाराणसी—स्त्री० [स०] गगा तट पर वसी हुई उत्तरप्रदेश की एक प्राचीन नगरी, काशी नगरी।
वारान्यारा—पु० किसी ओर निश्चय, फैसला। झझट या झगडे का निपटारा।
वारापार—पु० सीमा, आदि अत।
वाराह—वि० [स०] वाराह से सबंधित। वराह अवतार से सबधित। पु० दे० 'वाराह'। **वाराही**—स्त्री० आठ मातृकाओं मे से एक योगिनी। ⊙**कंद**=पु० एक प्रकार का महाकंद जो गेंठी कहलाता है।
वारि—पु० [स०] जल, पानी। ⊙**ज**=पु० कमल। शख। घोघा। कौडी। खरा सोना। ⊙**द**=पु० मेघ, वादल। ⊙**धि**=पु० समुद्र। ⊙**वाह**=पुं० मेघ, वादल। **वारित**—वि० जो मना किया गया हो, निवारित।
वारिवर्त—(पु)पु० एक मेघ का नाम।
वारिस—पुं० [अ०] वह पुरुष के जो किसी के मरने के वाद उसकी सपत्ति का स्वामी और उसके दातव्यों का देनदार हो, उत्तराधिकारी।
वारींद्र—प० [स०] समुद्र।
वारीफेरी—स्त्री० दे० 'वारफेर'।
वारीश—पु० [स०] समुद्र।
वारुणी—स्त्री० [स०] शराव। वरुण की स्त्री या लड़की, वरुणानी। वरुणोपदिष्ट उपनिषद् विद्या। पश्चिम दिशा। चैत्र कृष्णत्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र होने पर लगनेवाला एक पर्व जिसमे गंगास्नान और दान आदि करते हैं। शतभिषा नक्षत्र।
वारेंद्र—पु० [स०] गौड देश का एक प्राचीन जनपद जहाँ आजकल का राजशाही जिला है।
वार्ता—स्त्री० [स०] वातचीत। वृत्तांत, हाल। अफवाह। विषय, मामला। वैश्य वृत्ति जिसके अतर्गत कृषि, वाणिज्य, गोरक्षा और कुसीद है। ⊙**वह**=पुं० सदेश ले जानेवाला, दूत। **वार्तालाप**—पुं० वातचीत।
वार्तिक—पु० [स०] किसी ग्रंथ के अनुक्त और अस्पष्ट अर्थो को स्पष्ट करनेवाला वाक्य या ग्रथ। शुद्धिपत्र।
वार्द्धक्य—पुं० [सं०] वुढापा। वृद्धि, वढती।
वार्य—वि० [सं०] वारण करने योग्य, निवारण करने योग्य, जिसे वारण करना हो, जिसे रोकना हो।
वार्षिक—वि० [स०] वर्ष सवधी। जो प्रति वर्ष होता हो, सालाना।

वार्ष्णेय—पुं० [सं०] वृष्णि का वंशज, कृष्णचंद्र ।
वालंटियर—पुं० [अं०] लोक की निःस्वार्थ सेवा करनेवाला व्यक्ति, स्वयंसेवक । फौज का अवैतनिक सिपाही या अफसर ।
वाला—प्रत्य० एक संबंधसूचक प्रत्यय ।
वालिद—पुं० [अ०] पिता, बाप ।
वाल्मीकीय—वि० [सं०] वाल्मीकि संबंधी । वाल्मीकि का बनाया हुआ ।
वावैला—पुं० [अ०] विलाप, रोना पीटना । शोरगुल ।
वाशिष्ठ—पुं० [सं०] एक उपपुराण । वि० वशिष्ठ संबंधी, वशिष्ठ का ।
वाष्प—पुं० [सं०] आँसू । भाप ।
वासंत—वि० [सं०] वसंत का, वासंती ।
वासंतक—वि० [सं०] वसंत संबंधी, वसंत ऋतु में बोया हुआ ।
वासंतिक—पुं० [सं०] सांड़, विदूषक । नाचनेवाला । वि० वसंत संबंधी ।
वासंती—स्त्री० [सं०] माधवी लता । जूही । मदनोत्सव । दुर्गा । १४ वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, तगण, नगण, मगण और अंत में दो गुरु हों । वि० वसंत संबंधी । वसंती ।
वास—पुं० [सं०] रहना, निवास । घर, मकान । सुगंध, बू ।
वासक—पुं० [सं०] अडूसा ।
वासकसज्जा—स्त्री० [सं०] वह नायिका जो अपने घर और शरीर को सुसज्जित करके नायक की प्रतीक्षा करे (साहित्य-दर्पण) ।
वासकट—पुं०, स्त्री० दे० 'वास्कट' ।
वासन—पुं० [सं०] सुगंधित करने का कार्य । वस्त्र । वास ।
वासना—स्त्री० [सं०] प्रत्याशा । ज्ञान । भावना, संस्कार, स्मृतिहेतु । इच्छा । सक० [हिं०] दे० 'बासना' ।
वासर—पुं० [सं०] दिन, दिवस । वह घर जिसमें नवदंपती पहली रात को सोते हैं ।
वासव—पुं० [सं०] इंद्र ।
वासित—वि० [सं०] सुगंधित किया हुआ । कपड़े से ढका हुआ । बासी ।
वासिता—स्त्री० [सं०] स्त्री । आर्या छंद का एक भेद ।
वासिष्ठ—वि० [सं०] वसिष्ठ संबंधी ।
वासी—पुं० [सं०] रहनेवाला ।
वासुदेव—पुं० [सं०] वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्णचंद्र । पीपल का पेड़ ।
वास्कट—स्त्री० एक प्रकार की विलायती बंडी ।
वास्तव—वि० [सं०] प्रकृत, यथार्थ । **वास्तविक**—वि० यथार्थ, ठीक ।
वास्तव्य—वि० [सं०] रहने या बसने योग्य । पुं० बस्ती, आबादी ।
वास्ता—पुं० [अ०] संबंध, लगाव ।
वास्तु—पुं० [सं०] वह स्थान जिसपर घर उठाया जाय, डीह । घर, मकान । ⊙**कला** = स्त्री० दे० 'वास्तुविद्या' । ⊙**पूजा** = स्त्री० वास्तु पुरुष की पूजा जो नवीन घर में गृहप्रवेश के आरंभ में की जाती है । ⊙**विद्या** = स्त्री० भवननिर्माण की कला । ⊙**शास्त्र** = पुं० दे० 'वास्तुविद्या' ।
वास्ते—अव्य० [फा०] लिये, निमित्त । हेतु ।
वाह—अव्य० [फा०] प्रशंसा, आश्चर्य या घृणाद्योतक शब्द । ⊙**वाही** = स्त्री० लोगों की प्रशंसा ।
वाहक—पुं० [सं०] बोझ ढोने या खींचनेवाला सारथी । **वाहन**—पुं० सवारी । **वाहित**—वि० [सं०] वहन किया हुआ, ढोया हुआ । बिताया हुआ ।
वाहना—सक० दे० 'बाहना' ।
वाहिनी—स्त्री० [सं०] सेना का एक भेद जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते थे ।
वाहियात—वि० [अ०+फा०] व्यर्थ । बुरा, खराब ।
वाही—वि० [सं०] वहन करनेवाला । †सर्व० [हिं०] उसी । वि० [अ०] सुस्त । निकम्मा । ⊙**तबाही** = वि० बेहूदा । आवारा । अंडबंड । स्त्री० अंड-बंड, गालीगलौज ।
वाह्य—क्रि० वि० [सं०] बाहर, अलग ।

वाह्यांतर—वि० [स०] भीतर और वाहर का ।

वाह्येंद्रिय—स्त्री० [स०] आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा ये पाँच ज्ञानेद्रियाँ ।

वाह्लीक—पुं० [स०] गाधार के पास का एक प्रदेश । इस देश का घोडा ।

विंदु—पु० [स०] जलकण, बूँद । विंदी । अनुस्वार । शून्य ।

विंध(पु)—पु० विध्य पर्वत ।

विंध्य—पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध पर्वतश्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य मे पूर्व से पश्चिम को फैली है । ⊙वासिनी = स्त्री० देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो मिरजापुर जिले मे है । विंध्याचल—पु० [स०] विंध्य पर्वत ।

विंश—वि० [स०] २० वाँ ।

वि—उप० [स०] एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगकर विशेष अर्थ देता है । जैसे, विमल, वियोग, विकार, विक्रय आदि ।

विकंपित—वि० दे० 'कपित' ।

विकच—वि० [स०] खिला हुआ, विकसित । जिसके बाल न हो ।

विकट—वि० [स०] विशाल । भयकर । टेढा । कठिन । दुर्गम । दु साध्य ।

विकराल—वि० [स०] भीषण, डरावना ।

विकर्म—वि० [स०] वुरा काम करनेवाला । पु० बुरा काम ।

विकर्षण—पु० [स०] आकर्षण का उलटा, प्रतिकर्षण । टुकडे करना ।

विकल—वि० [स०] व्याकुल । कलाहीन, अपूर्ण ।

विकलाग—वि० [स०] जिसका कोई अग टूटा या खराव हो ।

विकला—स्त्री० [स०] कला का ६० वाँ अश । समय का एक वहुत छोटा भाग ।

विकलाना(पु)—अक० व्याकुल होना, घवराना ।

विकलित—वि० दे० 'विकल' ।

विकल्प—पु० [स०] भ्राति, धोखा । सोच-विचार । कई प्रकार की विधियो का मिलना । एक चित्तवृत्ति । अवांतर कल्प । एक काव्यालकार । समाधि का एक भेद, सविकल्प । व्याकरण में एक ही विषय के कई नियमो मे से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण ।

विकसन—पु० [सं०] फूटना, खिलना ।

विकसना—अक० दे० 'विकसना' । विकसाना—सक० दे० 'विकसाना' ।

विकसित—वि० [सं०] खिला हुआ । प्रसन्न ।

विकस्वर—पु० [सं०] एक काव्यालकार । वि० विकासशील, खिलनेवाला ।

विकार—पु० [सं०] विगडना, खरावी । वासना । रूप आदि का वदल जाना, परिणाम (जैसे ककण सोने का विकार है) । व्याकरण मे एक वर्ण की जगह दूसरा वर्ण हो जाना ।

विकारी—वि० [सं०] जिसमे विकार या परिवर्तन हुआ हो । क्रोधादि मनोविकारो से युक्त । अक्षर के साथ लगनेवाली मात्रा ।

विकाश—पु० [सं०] प्रकाश । फैलाव । एक काव्यालकार जिसमे किसी वस्तु का विना निज का आधार छोडे अत्यंत विकसित होना वर्णन किया जाता है । दे० 'विकास' ।

विकास—पु० [स०] फैलाव । खिलना, प्रस्फुटित होना । किसी पदार्थ का उत्पन्न होकर भिन्न भिन्न रूप धारण करते हुए उत्तरोत्तर बढना । ⊙वाद = पु० एक प्रसिद्ध पाश्चात्य सिद्धात जिसमे यह माना जाता है कि वर्तमान सृष्टि और सब वनस्पतियाँ, वृक्ष, जीव जतु, आदि एक ही मूल तत्व से उत्तरोत्तर निकलते और विकसित होते गए हैं । ⊙ना(पु) = सक० प्रकट, करना, निकालना । विकसित करना, खिलने मे प्रवृत्त करना, अक० खिलना, प्रकट होना ।

विकिर—पुं० [सं०] पक्षी, चिड़िया ।

विकिरण—पु० [सं०] वहुत सी किरणो का एक केंद्र मे इकट्ठा किया जाना (जैसे आतशी शीशे से) ।

विकीर्ण—वि० [सं०] फैला या छितराया हुआ । प्रसिद्ध ।

विकुंठ(पु)—पु० वैकुंठ। वि० [सं०] जो कुंठित न हो, तेज धारवाला।

विकृत—वि० [सं०] जिसमे किसी प्रकार का विकार आ गया हो, बिगड़ा हुआ। जो भद्दा या कुरूप हो गया हो। असाधारण।

विकृति—स्त्री० [सं०] विकार, खराबी। बिगडा हुआ रूप। रोग। सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमे विकार आने पर होता है। परिवर्तन। मन मे होनेवाला क्षोभ। मूल धातु से से बिगडकर बना हुआ शब्द का रूप। २३ वर्णों के वृत्त की संज्ञा।
विकृष्ट-वि० सज्ञा। [सं०] खीचा हुआ।

विकेंद्रीकरण—पु० [सं०] किसी केंद्रीभूत व्यवसाय, कार्य, वस्तु, शासन या व्यवस्था का भिन्न भिन्न भागो मे विभाजित होना, केंद्रीकरण का उलटा।

विक्रम—पु० [सं०] विष्णु। बहादुरी। बल। गति। राजा विक्रमादित्य। वि० श्रेष्ठ। **विक्रमाब्द**—पु० विक्रमादित्य के नाम से चला हुआ संवत्, विक्रम संवत्। **विक्रमी**—पु० पराक्रमी। विष्णु। वि० विक्रम का, विक्रम सबधी।

विक्रय—पु० बेचना, बिक्री। **विक्रयी**-वि० बेचनेवाला।

विक्रांत—पु० [सं०] शूर, वीर। विक्रम, बल। वैक्रांत मणि। व्याकरण मे एक प्रकार की संधि जिसमे विसर्ग अविकृत ही रहता है। **विक्रांति**—स्त्री० [सं०] वीरता। बल, शक्ति।

विक्रिया—स्त्री० [सं०] विकार, खराबी। किसी क्रिया के विरुद्ध होनेवाली क्रिया।

विक्रीत—वि० [सं०] जो बेच दिया गया हो। **विक्रेता**—पु० बेचनेवाला। **विक्रेय**—वि० जो बेचा जाने को हो, बिकाऊ।

विक्षत—वि० [सं०] चोट खाया हुआ, घायल।

विक्षिप्त—वि० [सं०] जिसका दिमाग ठिकाने न हो, पागल। व्याकुल। फेंका या छितराया हुआ। पु० योग मे चित्त की एक अवस्था जिसमे चित्त कभी स्थिर और कभी अस्थिर रहता है।

विक्षुब्ध—वि० [सं०] जिसमे क्षोभ उत्पन्न हुआ हो।

विक्षेप—पु० [सं०] ऊपर की ओर अथवा इधर उधर फेंकना, डालना। इधर उधर हिलाना, झटक देना। (धनुषकी डोरी) खीचना, चिल्ला चढाना। मन को इधर उधर भटकाना, संयम का उलटा। एक प्रकार का अस्त्र जो फेंककर चलाया जाता था। बाधा।

विक्षोभ—पु० [सं०] मन की चचलता या उद्विग्नता। क्षोभ। **विक्षोभी**-वि० जो क्षोभ उत्पन्न करे।

विखान(पु)—पु० सीग।

विखानस—पु० दे० 'वैखानस'।

विख्यात—वि० [सं०] प्रसिद्ध। **विख्याति**—स्त्री० प्रसिद्ध, शोहरत।

विगंध—वि० [सं०] जिसमे किसी प्रकार की गंध न हो। बदबूदार।

विगत—वि० [सं०] जो बीत चुका हो। अंतिम या बीते हुए से पहले का। रहित। **विगति**—स्त्री० विगत का भाव। दुर्दशा, दुर्गति।

विगर्हणा—स्त्री० [सं०] डाँट, फटकार। **विगर्हित**—वि० जिसे डाँट या फटकार बतलाई गई हो। बुरा, खराब।

विगलन—पु० [सं०] गलना। गिराना। शिथिल होना। बिगडना।

विगाथा—स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद, विग्गाहा, उद्गीति।

विगुण—वि० [सं०] गुण रहित, निर्गुण।

विग्गाहा—स्त्री० दे० 'विगाथा'।

विग्रह—पु० [सं०] दूर या अलग करना। झगडा। युद्ध। विभाग। यौगिक शब्दो अथवा समस्त पदो के किसी एक अथवा अनेक शब्द को अलग करना (व्या०)। विपक्षियों मे फूट या कलह उत्पन्न करना। आकृति। (पु) शरीर। मूर्ति। **विग्रही**—पु० लडाई झगडा करनेवाला। युद्ध करने वाला।

विघट—पु० [सं०] तोडना फोडना। नष्ट करना। बुरी घटना घटित होना।

विघटिका—स्त्री० [सं०] समय का एक छोटा मान, घड़ी का २३ वाँ भाग।

विघात—पुं० [सं०] चोट, आघात। नाश। हत्या। विकलता। बाधा।
विघूर्णन—पुं० [सं०] चारो ओर घुमाना, चक्कर देना।
विघ्न—पु० [सं०] अड़चन, बाधा। ⊙ **विनायक** = पुं० गणेश। ⊙ **विनाशक** = पुं० गणेश।
विचकित—वि० [सं०] दे० 'चकित'।
विचक्षण—वि० [सं०] चमकता हुआ। चतुर। विद्वान्।
विचच्छन—पु० दे० 'विचक्षण।
विचय—पु० [सं०] इकट्ठा करने की क्रिया। जाँचपड़ताल, परीक्षा।
विचरण—पुं० [सं०] चलना। घूमना फिरना, पर्यटन करना।
विचरन(पु)—पु० 'विचरण'।
विचरना(पु)—अक० चलना फिरना।
विचल—वि० [सं०] अस्थिर। स्थान से हटा हुआ। ⊙ **ता** = स्त्री० चंचलता, अस्थिरता। घबराहट।
विचलित—वि० अस्थिर, चंचल। प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ।
विचलना(पु)†—अक० अपने स्थान से हट जाना या चल पड़ना। अधीर होना, घबराना। प्रतिज्ञा या संकल्प पर दृढ़ न रहना।
विचलाना(पु)†—सक० विचलित करना।
विचार—पुं० [सं०] वह जो सोचा जाय। मन मे उठी कोई बात, भावना, ख्याल। मुकदमे की सुनवाई और फैसला। ⊙ **क** = पुं० विचार करनेवाला। फैसला करनेवाला। न्यायकर्ता ⊙ **पति** = पु० स्त्री० विचारक, न्यायाधीश। ⊙ **वान्** = पुं० दे० 'विचारशील' ⊙ **शक्ति** = स्त्री० सोचने या भला बुरा पहचानने की शक्ति। ⊙ **शील** = पु० वह जिसमे विचारने की अच्छी शक्ति हो, विचारवान्। ⊙ **शीलता** = स्त्री० बुद्धिमत्ता। **विचारण**—स्त्री० विचार करने की क्रिया या भाव। **विचारणीय**—वि० जिसपर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो। जिसे प्रमाणित करने की आवश्यकता हो, चित्य, संदिग्ध।
विचारा—अक० विचार करना, सोचना, समझना। पूछना। खोजना पता लगाना। **विचारालय**—पुं० न्यायालय। **विचारित**—वि० जिसपर विचार हुआ हो, विचार किया हुआ। **विचारी**—पुं० वह जो विचार करता है, विचार करनेवाला। **विचार्य**—वि० दे० 'विचारणीय'।
विचालन—पु० [सं०] हटाना या चालना। नष्ट करना।
विचिकित्सा—स्त्री० [सं०] संदेह, शक।
विचित्र—वि० [सं०] कई तरह के रंगो या वर्णोंवाला। अद्भुत। चकित करनेवाला। सुंदर। पु० एक अर्थालंकार जिसमे किसी फल की सिद्धि के लिये उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख हो।
विचुंबित—वि० [सं०] दे० 'चुंबित'।
विचेतन—वि० [सं०] चेतनाहीन, बेहोश। विवेकहीन।
विचेष्ट—वि० [सं०] चेष्टारहित।
विच्छिति—स्त्री० [सं०] विच्छेद, अलगाव। कमी, त्रुटि। चिह्नित करना। कविता मे यति। एक हाव जिसमे स्त्री थोड़े शृंगार से पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है।
विच्छिन्न—वि० [सं०] जुदा, अलग। समाप्त। पु० योग मे चारो ओर क्लेशो की वह अवस्था जिसमे बीच मे उनका विच्छेद हो जाता है।
विच्छेद—पु० [सं०] अलग करने की क्रिया। क्रमभंग। नाश। विरह। कविता मे यति। **विच्छेदन**—पु० काट या छेदकर अलग करना। नष्ट करना।
विच्युत—वि० [सं०] अपने स्थान आदि से गिरा हुआ, च्युत।
विजड़ित—वि० दे० 'जड़ित'।
विजन—पु० पंखा, बीजन। वि० [सं०] निर्जन, एकांत।
विजना(पु)†—पु० पंखा।
विजय—स्त्री० [सं०] युद्ध या विवाद आदि मे होनेवाली जीत। केशव के अनुसार सवैया का मत्तगयंद नामक भेद। ⊙ पताका, ⊙ लक्ष्मी ⊙ **श्री** = स्त्री० विजय

की अधिष्ठात्री देवी, जिनकी कृपा पर वह निर्भर मानी जाती है।

विजया—स्त्री० [सं०] दुर्गा। भाँग, भग। श्रीकृष्ण की माला का नाम। १० मात्राओं का छंद जिसके चारो पदो की वर्णसंख्या समान नही रहती और अंत मे रगण रखना अच्छा समझा जाता है। आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त जिसके अंत मे लघु गुरु या नगण भी होता है। दे० 'विजयादशमी'। **विजया दशमी**—स्त्री० आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जो हिंदुओं का बहुत बड़ा त्यौहार है। **विजयी**—पुं० जीतनेवाला, विजेता।

विजिगीषा—स्त्री० विजय की इच्छा। **विजित**—वि० जो जीत लिया गया हो, जीता हुआ। **विजेता**—वि० जिसने विजय पाई हो, जीतनेवाला।

विजल—पु० [सं०] जलरहित। पु० वर्षा का अभाव।

विजात—पु० [सं०] सखी छंद का एक भेद जिसके आदि मे ह्रस्व हो।

विजाति, विजातीय—वि० [सं०] दूसरी जाति का।

विजानना (पु)—सक० अच्छी तरह जानना।

विजानु—पु० [सं०] तलवार चलाने के ३२ हाथो मे से एक हाथ या प्रकार।

बिजै (पु)†—स्त्री० दे० 'विजय'।

विजैसार—पु० साल की तरह का एक बड़ा वृक्ष।

विजोग (पु)—पु० वियोग।

विजोर—वि० कमजोर।

विजोहा—पु० एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो रगण होते हैं।

विज्जु, विज्जुलता (पु)—स्त्री० दे० 'विद्युत्'।

विज्जोहा—पुं० दे० 'विजोहा'।

विज्ञ—वि० [सं०] जानकार। बुद्धिमान्। विद्वान्, पंडित।

विज्ञप्ति—स्त्री० [सं०] बताने या सूचित करने की क्रिया। सूचना। विज्ञापन।

विज्ञान—पु० [सं०] विशेष ज्ञान, जानकारी। किसी विषय का शास्त्र के रूप मे किया गया विवेचन, शास्त्र। माया या अविद्या नाम की वृत्ति। ब्रह्म। आत्मा। निश्चयात्मिका बुद्धि। ⊙**मय कोष**=पु० ज्ञानेद्रियो और बुद्धि का समूह (वेदांत)। ⊙**वाद**=पु० वह सिद्धांत जिसमे ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित हो। वह सिद्धांत जिसमे आधुनिक विज्ञान की बातें मान्य हो। **विज्ञानी**—पु० वह जिसे किसी किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो। वैज्ञानिक।

विज्ञापन—पु० [सं०] जानकारी कराना, सूचना देना। समाचारपत्र, पत्रिका, परचे और इश्तहार आदि द्वारा सब लोगो को दी जानेवाली सूचना या किसी प्रकार का प्रचार। **विज्ञापित**—वि० जिसका विज्ञापन हुआ हो।

विट—पु० [सं०] कामुक, लंपट। वेश्यागामी। धूर्त। साहित्य मे वह धूर्त और स्वार्थी नायक जो विषयभोग मे सारी संपत्ति नष्ट कर चुका हो। विष्ठा।

विटप—पु० [सं०] नई शाखा, कोपल। पेड़।

विटपी—पु० [सं०] दे० 'विटप'।

विट्ठल—पु० दक्षिण भारत की विष्णु की एक मूर्ति का नाम।

विडंबना—स्त्री० [सं०] किसी को चिढ़ाने या बनाने के लिये उसकी नकल उतारना। मजाक करना। छलना। उपहास का विषय। लज्जा की बात।

विडरना (पु)†—अक० तितर बितर होना। **विडराना** (पु)†—सक० दे० 'विडारना'। **विडारना**—सक० तितर बितर करना, बिखेरना, छितराना। नष्ट करना। दौड़ना।

विडाल—पु० [सं०] बिल्ली।

विडौजा—पु० [सं०] इंद्र।

वितंडा—स्त्री० [सं०] दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना। व्यर्थ का झगड़ा या कहा सुनी। निरर्थक दलील।

विततत (पु)—पु० वह बाजा जिसमे तार न लगे हो।

वित (पु)—वि० जाननेवाला, ज्ञाता। चतुर।

वितत—वि० [सं०] विस्तृत।

वितताना (पु)†—अक० व्याकुल होना।

वितति—स्त्री० [स०] विस्तार।
वितथ—वि० [स०] जिसमे कुछ तथ्य न हो। मिथ्या।
वितद्रु—पु० [स०] झेलम नदी।
वितपन्न(पु)—पु० दक्ष, प्रवीण। वि० घबराया हुआ, व्याकुल।
वितरना(पु)—सक० बाँटना।
वितरक—पु० बाँटनेवाला।
वितरण—पु० [स०] बाँटना। दान या अर्पण करना।
वितरन—बाँटनेवाला। दे० 'वितरण'।
वितरिक्त(पु)—अव्य० अतिरिक्त, सिवा।
वितरित—वि० [स०] बाँटा हुआ।
वितरेक(पु)—क्रि० वि० छोडकर, सिवा।
वितर्क—पु० [स०] एक तर्क के उपरात होनेवाला दूसरा तर्क। सदेह। एक अर्थालकार जिसमे सदेह या वितर्क का उल्लेख होता है। **वितर्क्य**—वि० जिसमे किसी प्रकार के वितर्क या सदेह का स्थान हो। जो देखने मे वहुत विलक्षण हो।
वितल—पु० [स०] पुराणानुसार सात पातालो मे तीसरा पाताल।
वितस्ता—स्त्री० [स०] झेलम नदी।
वितस्ति—पु० [स०] उतना परिमाण जितना हाथ के अँगूठे और कनिष्ठा उँगली को पूरा पूरा फैलाने से होता है, बालिश्त। १२ अगुल की माप।
वितान—पु० [स०] वडा चँदोआ या खेमा। विस्तार। यज्ञ। समूह, जमाव। शून्य। एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सगण, भगण और दो गुरु होते हैं।
वितानना(पु)†—सक० शामियाना आदि तानना।
वितिक्रम(पु)—पु० दे० 'व्यतिक्रम'।
वितीत(पु)†—वि० दे० 'व्यतीत'।
वितुंड—पु० [स०] हाथी।
वित्त—पुं० [स०] धन, संपत्ति। ⊙पति = पु० कुवेर। ⊙हीन = गरीब।
विथकना(पु)†—अक० थकना। मोहित या चकित होकर चुप हो जाना।
विथकित(पु)—वि० थका हुआ, शिथिल। जो आश्चर्य या मोह आदि के कारण चुप हो।
विथा(पु)†—स्त्री० दे० 'व्यथा'।
विथित(पु)—वि० दुखी।
विदग्ध—पु० [स०] रसिक पुरुष। विद्वान्। चालाक। ⊙ता = वि० विद्वत्ता। चातुर्य। **विदग्धा**—स्त्री० वह परकीया नायिका जो होशियारी के साथ पर पुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे।
विदमान(पु)—अव्य० दे० 'विद्यमान'।
विदरना—अक० फटना। सक० फाडना।
विदर्भ—पु० [स०] आधुनिक बरार प्रदेश का प्राचीन नाम।
विदल—वि० [स०] जिसमे दल न हो। खिला हुआ।
विदलना(पु)—सक० दलित करना, नष्ट करना।
विदा—स्त्री० प्रस्थान, रवाना होना। कही से चलने की अनुमति। **बिदाई**—स्त्री० रुखसती, प्रस्थान। विदा होने की आज्ञा या अनुमति। वह वस्तु जो विदा होने के समय दी जाय।
विदारक—वि० [स०] फाड डालनेवाला। **विदारी**—पु० फाड़ना। मार डालना। **विदारना**(पु)—फाडना। **विदारी**—वि० फाडनेवाला। ⊙कंद = पु० भुइँ-कुम्हडा।
विदाही—पु० [स०] जलन पैदा करनेवाला पदार्थ। वि० जलन या दाह उत्पन्न करनेवाला।
विदित—वि० [स०] जाता हुआ।
विदिश्—स्त्री० [स०] दो दिशाओ के बीच का कोना, कोण।
विदिशा—स्त्री० [स०] वर्तमान भेलसा नामक कसबा जो पहले एक नगर था। दे० 'विदिश्'।
विदीर्ण—वि० [स०] फाड़ा हुआ। मार डाला हुआ।
विदुर—पु० [स०] जानकार। पडित, ज्ञानी। कौरवों के सुप्रसिद्ध मत्री जो राजनीति और धर्मनीति मे वहुत निपुण थे (महाभारत)।

विदुष—पुं० [सं०] विद्वान्, पडित। विदुषी—स्त्री० विद्वान् स्त्री।
विदूर—वि० [सं०] जो बहुत दूर हो। पु० दे० 'वैदूर्य' (मणि)।
विदूषक—पु० [सं०] विषयी, कामुक। मसखरा। अपनी वेषभूषा, देह, कार्य आदि से हँसानेवाला नायक का सहायक जो अपने खाने पीने की धुन मे मस्त रहता और दूसरो को लडाने मे आनद लिया करता है (साहित्यदर्पण)। भाँड।
विदूषण—पु० [सं०] दोष लगाना।
विदूषना—सक० सताना, दु.ख देना। दोष लगाना। अक० दु खी होना।
विदेश—पु० [सं०] अपने देश को छोडकर दूसरा देश, परदेश।
विदेशी—वि० दूसरे देश का। परदेसी।
विदेह—पु० [सं०] वह जो शरीर से रहित हो। वह जिसकी उत्पत्ति माता पिता से न हो। शरीर की परवा न करनेवाले राजा जनक। प्राचीन मिथिला। वि० शरीररहित। बेसुध, अचेत। देहाध्यास रहित। ⊙कुमारी, ⊙जा = स्त्री० जानकी, सीता। ⊙पुर = पु० जनकपुर। विदेही—पु० ब्रह्म। वि० दे० 'विदेह'।
विद्—पु० [सं०] जानकार। पडित, विद्वान्। बुध ग्रह।
विद्ध—वि० [सं०] बीच मे से छेद किया हुआ। फटा हुआ। जिसको चोट लगी हो। टेढा। सटा हुआ।
विद्यमान—वि० [सं०] उपस्थित, मौजूद। ⊙ता = स्त्री० उपस्थिति, मौजूदगी।
विद्या—स्त्री० [सं०] शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त ज्ञान। वे शास्त्र आदि जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। दुर्गा। आर्या छंद का पाँचवाँ भेद। ⊙गुरु = पु० शिक्षक। ⊙दान = पु० विद्या पढाना। ⊙धर = पु० एक देवयोनि जिसके अतर्गत खेचर, गधर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं। एक प्रकार का अस्त्र। विद्वान्। ⊙धरी = स्त्री० विद्याधर नामक देवता की स्त्री। ⊙धारी = पु० एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार मगण होते हैं। ⊙पीठ = पु० शिक्षा का बडा केंद्र, महाविद्यालय। विद्यारभ—पु० वह सस्कार जिसमे विद्या की पढाई आरभ होती है। विद्यार्थी—पु० वह जो विद्या पढता हो, छात्र। विद्यालय—पु० वह स्थान जहाँ विद्या पढाई जाती हो, पाठशाला।
विद्युत्—स्त्री० [सं०] बिजली। विद्युच्चालक—वि० (वह पदार्थ) जिसमे बिजली का प्रवाह हो सके, विद्युत्प्रवाही (जैसे धातुएँ आदि)। ⊙प्रवाही = वि० दे० 'विद्युच्चालक'। विद्युन्मापक—पुं० वह यत्र जिससे यह जाना जाता है कि विद्युत् का बल कितना और प्रवाह किस ओर है। विद्युन्माल—स्त्री० बिजली का समूह या सिलसिला। आठ गुरु वर्णों का एक छद। विद्युन्माली—पु० पुराणानुसार एक राक्षस। एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, मगण और दो गुरु होते हैं। विद्युल्लेखा—स्त्री० दो मगण का एक वृत्त। विद्युत्।
विद्रधि—पुं० स्त्री० [सं०] पेट के अंदर का एक प्रकार का घातक फोडा।
विद्रावण—पुं० [सं०] भागना। पिघलना। उडना। फाडना। वह जो नष्ट करता हो।
विद्रुम—पु० [सं०] प्रवाल, मूँगा।
विद्रोह—पुं० [सं०] द्वेष। वह उपद्रव जो राज्य को हानि पहुँचाने या नष्ट करने के उद्देश्य से हो, बगावत। विद्रोही—पुं० विद्रोह या द्वेष करनेवाला। राज्य का अनिष्ट करनेवाला, बागी।
विद्वत्ता—स्त्री० [सं०] बहुत विद्वान् होने का भाव, पांडित्य।
विद्वान्—पु० [सं०] वह जिसने बहुत अधिक विद्या पढी हो, पडित।
विद्वेष—पुं० [सं०] शत्रुता, बैर।
विद्वेषण—पुं० [सं०] शत्रुता, बैर। एक क्रिया जिससे दो व्यक्तियो मे द्वेष या शत्रुता उत्पन्न की जाती है (तत्र)। शत्रु। दुष्टता।
विध्वंस—पु० नाश। वि० विध्वस्त, नष्ट।

विधंसना(पु)†—सक० नष्ट करना।

विध(पु)—पु० ब्रह्मा, विधि। स्त्री० विधि, प्रकार।

विधन—वि० [सं०] निर्धन, कगाल।

विधना—स्त्री० वह जो होने को हो, होनी। पु० विधि, ब्रह्मा। सक० प्राप्त करना, ऊपर लेना।

विधर†—क्रि० वि० दे० 'उधर'।

विधर्म—पुं० [सं०] दूसरे का धर्म, पराया धर्म। **विधर्मी**—पुं० धर्मभ्रष्ट। किसी दूसरे धर्म का अनुयायी।

विधवा—स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति मर गया हो, बेवा। **विधवाश्रम**—पु० वह स्थान जहाँ विधवाओ के निर्वाह आदि का प्रबध किया जाता है।

विधाता—पु० [सं०] विधान करनेवाला। उत्पन्न करनेवाला। प्रबध करनेवाला। सृष्टि बनानेवाला, ब्रह्मा या ईश्वर।

विधान—पु० [सं०] आयोजन, अनुष्ठान। प्रबध। विधि. पद्धति। रचना। उपाय, युक्ति। वे नियम आदि जिनके अनुसार किसी देश या राष्ट्र का राजनीतिक सघटन और शासन होता है नियम। आज्ञा करना। नाटक मे वह स्थान जहाँ किसी वाक्य द्वारा एक साथ सुख और दु ख दोनो प्रकट किए जाते हैं। (पु)**वाद** = पु० वह सिद्धात जिसमे विधान या शासन के नियम ही सर्वप्रथम हो और उसके विरुद्ध कुछ करना मना हो। ⊙**वादी** = पु० विधानवाद को मानने और उसका अनुकरण करनेवाला। **विधायक विधायी**—वि० विधान करने-वाला। बनानेवाला। प्रबध करनेवाला। पु० वह जो विधान करता हो। वह जो बनाता हो। विधान सभा का सदस्य।

विधि—पु० [सं०] ब्रह्मा। ⊙**पुर**पु० ब्रह्मलोक। ⊙**रानी**(पु) = स्त्री० [हि०] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती। स्त्री० कार्य करने की रीति, प्रणाली। व्यवस्था, करीना। शास्त्रोक्त व्यवस्था। राज्य द्वारा निर्धारित कानून। व्याकरण मे क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का परामर्श या आदेश किया जाता है। साहित्य मे एक अर्थालकार जिसमे किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। आचार व्यवहार, चाल ढाल। भाँति, प्रकार। **गतिविधि** = स्त्री० चेष्टा और कार्रवाई। ⊙**वत्** = क्रि० वि० विधि या पद्धति के अनुसार। जैसा चाहिए, उचित रूप से। मु०~ **बैठना** = मेल बैठना। ~**मिलना** = आय और व्यय के अनुसार हिसाब ठीक ठीक मिल जाना।

विधुतुद—पुं० [सं०] राहु।

विधु—पु० [सं०] चद्रमा। ब्रह्मा। विष्णु। ⊙**दार** = पुं० चद्रमा की स्त्री, रोहिणी। ⊙**बंधु** = पु० कुमुद का फूल। ⊙**बैनी**(पु) = स्त्री० [हि०] दे० 'विधुवदनी'। ⊙**वदनी** = स्त्री० चंद्रमुखी, सुदरी स्त्री।

विधुर—पु० [स०] वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो, रँडुआ। दुखी। घबराया हुआ। असमर्थ। वृद्ध।

विधूत—वि० [सं०] काँपता या हिलता हुआ। छोडा हुआ। दूर किया हुआ।

विधूनन—पु० [स०] काँपना।

विधेय—वि० [स०] जिसका अनुष्ठान उचित हो, कर्तव्य। जिसका विधान होनेवाला हो। जो नियम या विधि द्वारा जाना जाय। वशीभूत, अधीन। वह (शब्द या वाक्य) जिसके द्वारा किसी के सबध मे कुछ कहा जाय (व्या०)। **विधेयक**—पु० [स०] विधानसभा, लोकसभा आदि मे पारित होने के लिये उपस्थित विधान का प्रस्तावित रूप (अँ० बिल)।

विधेयाविमर्ष—पु० [स०] साहित्य मे एक वाक्यदोष, जो बात प्रधानत कहनी है उसका दबी रह जाना या बिलकुल उल्लेख न होना।

विध्याभास—पु० [स०] एक अर्थालकार जिसमे घोर अनिष्ट की आशका दिखाते हुए अनिच्छापूर्वक किसी बात की अनुमति दी जाती है।

विध्वंस—पुं० [सं०] नाश, बरबादी । ⊙क=पुं० एक प्रकार का लडाई का जहाज। वि० दे० 'विध्वसी' । **विध्वंसी**—पुं० नाश या बरबाद करनेवाला ।

विध्वस्त—वि० [सं०] नष्ट किया हुआ।

विन†—सर्व० 'इस' का बहुवचन, उन।

विनत—वि० [सं०] झुका हुआ । नम्र। शिष्ट ।

विनतडी(पु)†—स्त्री० दे० 'विनति'

विनति—स्त्री० [सं०] झुकाव । नम्रता। प्रार्थना ।

विनती—स्त्री० दे० 'विनति' ।

विनम्र—वि० [सं०] झुका हुआ । विनीत।

विनय—स्त्री० [स०] नम्रता । शिक्षा । प्रार्थना। शासन, तबीह । नीति। ⊙पिटक=पु० आदि बौद्ध शास्त्रो मे से एक। ⊙शील=वि० नम्र, सुशील । **विनयन**—पुं० [सं०] नम्रता । शिक्षा। दूर करना, मोचन। **विनयी**—वि० विनय युक्त, नम्र ।

विनशन—पु० [सं०] नष्ट होने की क्रिया, नाश। **विनश्य**—वि० विनष्ट होने के योग्य। **विनश्वर**—वि० नष्ट हो जानेवाला, अनित्य ।

विनष्ट—वि० [सं०] जो बरबाद हो गया हो, ध्वस्त। मरा हुआ। भ्रष्ट, पतित।

विनष्ट—स्त्री० दे० 'विनाश'।

विनसना(पु)—अक० नष्ट होना। **विनसाना**(पु)—सक० नष्ट करना। बिगाडना। अक० दे० 'विनसना'।

विना—अव्य० [सं०] अभाव मे, बगैर। छोडकर, अतिरिक्त।

विनाती(पु)‡—स्त्री० विनत ।

विनाथ—वि० दे० 'अनाथ'।

विनाशक—पु० [सं०] गणेश ।

विनाश—पुं० [सं०] नाश, बरबादी। लोप। खराबी। ⊙क=वि० विनाश करनेवाला। **विनाशन**—पुं० नष्ट करना। वध करना। **विनाशी**—वि० स्त्री० [सं०] विनाश करनेवाला ।

विनास(पु)‡—पु० दे० 'विनाश'।

विनासन(पु)—पुं० दे० 'विनाशन'। **विनासना**(पु)—सक० सहार करना। बिगाडना। अक० बरबाद होना ।

विनिमय—पुं० [सं०] एक वस्तु के बदले मे दूसरी वस्तु देना, परिवर्तन।

विनियोग—पु० [स०] किसी फल के उद्देश्य से किसी वस्तु का उपयोग, प्रयोग। वैदिक कृत्य मे मत्र का प्रयोग। भेजना।

विनीत—वि० [स०] विनययुक्त । शिष्ट, नम्र। नीतिपूर्वक व्यवहार करनेवाला, धार्मिक।

विनु(पु)†—अव्य० दे० 'विना'।

विनोक्ति—स्त्री० [स०] एक अलकार जिसमे किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता वर्णन की जाती है।

विनोद—पुं० [स०] हँसी दिल्लगी । हर्ष, आनद । **विनोदी**—वि० चुहलबाज । आनदी । खेलकूद या हँसी ठठ्ठे मे रहनेवाला ।

विन्यास—पुं० [स०] स्थापना, रखना । शृगार।

विपक्ख—पुं० दे० 'विपक्ष'।

विपक्ष—पुं० [स०] विरुद्ध पक्ष। विरोधी, प्रतिद्वद्वी। प्रतिवादी। शत्रु, विरोध, खडन। व्याकरण मे बाधक नियम, अपवाद। **विपक्षी**—वि० विरुद्ध पक्ष या दूसरी तरफ का। शत्रु। प्रतिद्वद्वी। प्रतिवादी। बिना पख का।

विपत्ति—स्त्री० [स०] कष्ट, दुख या शोकजनक स्थिति, आफत । सकट, झझट।

विपथ—पुं० [स०] बुरा या खराब रास्ता ⊙गामी—पुं० बुरा या खराब रास्ते पर चलनेवाला। बदचलन।

विपद—स्त्री० [स०] विपत्ति। **विपदा**—स्त्री० विपत्ति, आफत।

विपन्न—वि० [स०] जिसपर विपत्ति पडी हो । दुखी, आर्त ।

विपरीत—वि० [स०] उलटा, प्रतिकूल । रुष्ट। अनुपयुक्त। पुं० एक अर्थालकार जिसमे कार्य की सिद्धि मे स्वयं साधक का बाधक होना दिखाया जाता है (केशव)।

विपरीतोपमा—स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमे कोई भाग्यवान् व्यक्ति अति हीन दशा मे दिखाया जाय (केशव)।

विपर्यय—पुं० [सं०] उलट पुलट । और का और। भूल, गड़बड़ी, अव्यवस्था। **विपर्यस्त**—वि० जिसका विपर्यय हुआ हो। अस्तव्यस्त, गड़बड़। **विपर्यास**—पुं० दे० 'विपर्यय'।

विपल—पुं० [सं०] एक पल का ६० वाँ भाग।

विपाक—पुं० [सं०] पकाना । पूर्ण दशा को पहुँचना। परिणाम। कर्म का फल। पचना। दुर्गति, दुर्दशा।

विपादिका—स्त्री० [सं०] बिवाई नामक रोग। पहेली।

विपादित—स्त्री० [सं०] नष्ट किया हुआ।

विपाशा—स्त्री० [सं०] पंजाब की पाँच नदियों मे से व्यास नाम की नदी।

विपिन—पुं० [सं०] जंगल । उपवन, वाटिका। ⊙**तिलका**=स्त्री० एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, सगण, नगण और दो रगण होते हैं। ⊙**पति**=पुं० सिंह। ⊙**विहारी**=पुं० वन मे विहार करनेवाला । श्रीकृष्ण।

विपुत्र—वि० [सं०] पुत्ररहित ।

विपुल—वि० [सं०] बहुत अधिक। अगाध। ⊙**ता**=स्त्री० विपुल होने का भाव या गुण। **विपुला**—स्त्री० पृथ्वी, वसुधरा। एक प्रकार का छंद, जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, रगण और दो लघु होते हैं। आर्या छंद के तीन भेदों में से एक।

विपुलाई(पु)—स्त्री० दे० 'विपुलता'।

विप्र—पुं० [सं०] ब्राह्मण। पुरोहित। ⊙**चरण**=पुं० भृगु मुनि की लात का वह चिह्न जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है।

विप्रकर्षण—पुं० [सं०] दूर खींच ले जाना, दूर हटना। किसी कृत्य का अंत।

विप्रलंभ—पुं० [सं०] चाही हुई वस्तु का न मिलना। प्रिय का न मिलना, विरह। अलग होना, विच्छेद। धोखा, छल। **विप्रलब्धा**—वि० जिसे चाही हुई वस्तु न प्राप्त हुई हो, रहित, वंचित। वियोगदशा को प्राप्त। स्त्री० साहित्य मे वह नायिका जो संकेतस्थान मे प्रिय को न पाकर दुःखी हो।

विप्लव—पुं० [सं०] विद्रोह, बलवा। उथल-पुथल। आफत। जल की बाढ़। **विप्लवी**—वि० विप्लव करनेवाला। **विप्लावक**—वि० [सं०] दे० 'विप्लवी'।

विप्सा—वि० [सं०] दे० 'वीप्सा'।

विफल—वि० [सं०] जिसमे फल न लगा हो व्यर्थ, बेफायदा। जिसके प्रयत्न का कुछ परिणाम न हुआ हो।

विबाध—वि० [सं०] बाधारहित।

विबुध—पुं० [सं०] बुद्धिमान्। देवता। चंद्रमा। ⊙**विलासिनी**=स्त्री० देवता की स्त्री। अप्सरा। ⊙**वेलि**=स्त्री० कल्पलता।

विबोध—पुं० [सं०] जागना। सम्यक् बोध, अच्छा ज्ञान। सावधान होना।

विभंग—पुं० [सं०] गठन या रचना। टूटना। विभाग। क्रम या परंपरा का टूटना। भ्रूभंग।

विभक्त—वि० [सं०] बँटा हुआ। अलग किया हुआ। **विभक्ति**—स्त्री० विभाग, बाँट। अलगाव। कारक सूचित करने के लिये संज्ञा या सर्वनाम के अंत मे लगाए जानेवाले प्रयत्न।

विभव—पुं० [सं०] धन, संपत्ति। ऐश्वर्य। मोक्ष।

विभाँति—स्त्री० प्रकार, किस्म। वि० अनेक प्रकार का। क्रि० वि० अनेक प्रकार से।

विभा—स्त्री० [सं०] प्रकाश। किरण। ⊙**कर**=पुं० सूर्य। अग्नि। राजा।

विभाग—पुं० [सं०] भाग, हिस्सा। महकमा।

विभाजक—वि० [सं०] विभाग करनेवाला। **विभाजन**—पुं० बाँटने की क्रिया या भाव, बँटवारा। **विभाजित**—वि० जिसका विभाग किया गया हो, विभक्त। **विभाज्य**—वि० जिसका विभाग करना हो।

विभाति(पु)—स्त्री० शोभा।

विभाना(पु)—अक० चमकना, झलकना। शोभित होना।

विभारना(पु)—अक० दे० 'विभाना'।

विभाव——पुं० [सं०] लोक मे रति, क्रोध, हास आदि भावो को उत्पन्न करनेवाली वस्तुओ की काव्य, नाटक और साहित्य मे प्रचलित सज्ञा। **विभावन**——पु० विशेष रूप से चिंतन। साहित्य मे रसविधान मे वह मानसिक व्यापार जिसके कारण पात्र द्वारा प्रदर्शित भाव का श्रोता या पाठक भी साधारणीकरण के द्वारा अनुभव करता है। **विभावना**——स्त्री० साहित्य मे एक अर्थालकार जिसमे कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति, अथवा विरुद्ध कारण से किसी कार्य की उत्पत्ति दिखाई जाती है।

विभावरी——स्त्री० [सं०] रात। वह रात जिसमे तारे चमकते हो। कुटनी, दूती।

विभावसु——पु० [सं०] वसुओ के एक पुत्र। सूर्य। अग्नि। चंद्रमा

विभास——पुं० [सं०] चमक, दीप्ति।

विभासना——अक० चमकना, झलकना।

विभिन्न——वि० [स०] पृथक्, जुदा। अनेक प्रकार का।

विभीति——स्त्री० [सं०] डर। शका।

विभीषिका——स्त्री० [स०] डर दिखाना। भयानक काड या दृश्य।

विभु——वि० [सं०] सर्वव्यापक। जो सब जगह जा सकता हो। (जैसे, मन)। महान्। नित्य। दृढ, अचल। शक्तिमान्। पु० ब्रह्मा। जीवात्मा। प्रभु। ईश्वर।

विभूति——स्त्री० [सं०] बढती, ऐश्वर्य। दिव्य या अलौकिक शक्ति जिसके अंतर्गत अष्ट सिद्धियाँ भी हैं। शिव के अग मे पोतने की राख या भस्म। लक्ष्मी। एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था। सृष्टि।

विभूषण——पु० [सं०] भूषण, गहना। गहनो आदि से सजाना। **विभूषना**(पु)——सक० गहने आदि से सजाना। सुशोभित करना। **विभूषित**——वि० गहनो आदि से सजाया हुआ। (अच्छी वस्तु, गुण आदि से) युक्त, सहित। शोभित।

विभेटना(पु)——पुं० गले मिलना।

विभेद——पुं० [स०] फरक, अतर। अनेक भेद, कई प्रकार के भेद। धँसना। फूट। मतैक्य न होना।

विभेदना(पु)——पु० सक० भेदन करना, छेदन करना। घुसना। भेद या फर्क डालना।

विभोर——वि० विह्वल। मग्न, मस्त।

विभौ(पु)——पु० दे० 'विभव'।

विभ्रम——पु० स० भ्रमण फेरा। भ्राति। सदेह। घबराहट। स्त्रियो का एक हाव जिसमे वे भ्रम से उलटे पलटे भूषणवस्त्र पहनकर कभी क्रोध, कभी हर्ष आदि भाव प्रकट करती हैं। सौंदर्य, शोभा।

विभ्राट——पुं० [सं०] आपत्ति, सकट। उपद्रव, बखेडा।

विमंडन——पुं० [स०] शृंगार करना, सँवारना। **विमडित**——वि० [स०] सजा हुआ। सहित।

विमत——वि० [स०] विपरीत सिद्धात या समति।

विमत्सर——पु० [स०] अधिक अहकार।

विमन, विमनस्क——वि० अनमना, उदास।

विमर्दन——पु० [स०] अच्छी तरह मलना, दलना। नष्ट करना। मार डालना।

विमर्श——पु० [स०] विवेचन या विचार। आलोचना, समीक्षा। परीक्षा। परामर्श।

विमर्श——पु० [स०] दे० 'विमर्श'। नाटक का अग जिसके अतर्गत अपवाद, व्यवसाय, शक्ति, खेद, विरोध और आदान आदि का वर्णन होता है।

विमल——वि० [स०] निर्मल, स्वच्छ। निर्दोष, शुद्ध। मनोहर। ⊙ध्वनि＝पु० छह चरणो का एक छद जो भगणात ३२ मात्राओ के सवैया छद के पहले एक दोहा जोडने से बनता है।

विमला——स्त्री० [स०] सरस्वती। ⊙पति ＝पु० ब्रह्मा।

विमाता——स्त्री० [स०] सौतेली माँ।

विमान——पु० [स०] आकाश मार्ग से गमन करनेवाला रथ। हवाई जहाज, वायुयान। मरे हुए मनुष्य की अरथी। वाहन।

घोडा। ⊙वेधी=पु० हवाई जहाज को मार गिरानेवाला (यत्रास्त्र)।

विमार्ग—वि० [स०] बुरा रास्ता, कुमार्ग।

विमुक्त—वि० [स०] छूटा हुआ। स्वतत्र, स्वच्छद। (हानि, दड आदि से) बचा हुआ। अलग किया हुआ, वरी। फेंका हुआ, छोडा हुआ। विमुक्ति—स्त्री० रिहाई। मोक्ष।

विमुख—वि० [स०] जिसके मुँह न हो। विरत। उदासीन। विरुद्ध। निराश।

विमुग्ध—वि० [स०] आसक्त। भूला हुआ, भ्रात। घबराया या डरा हुआ। मतवाला। पागल।

विमूढ—वि० [स०] विमोहित। भ्रम मे पडा हुआ। मूर्ख। ⊙गर्भ=पुं० वह गर्भ जिसमे वच्चा मरा या वेहोश हो।

विमोचन—पु० [स०] वधन, गाँठ आदि खोलना। वधन से छुडाना, मुक्त करना। निकालना। छोडना, फेंकना।

विमोचना(पु)—सक० वधन आदि खोलना, मुक्त करना। निकालना, बाहर करना।

विमोह—पु० [स०] मोह, अज्ञान। वेहोशी। आसक्ति। ⊙क=वि० मोहित करनेवाला।

विमोहन—पु० मोहित करना। सुधबुध भुलाना। कामदेव के पाँच वाणो मे से एक। विमोहित—वि० लुभाया हुआ, मुग्ध। तन मन की सुध भूला हुआ। मूर्च्छित। विमोही—वि० मोहित करनेवाला। सुध बुध भुलानेवाला। वेहोश करनेवाला। भ्रम मे डालनेवाला।

विमोहना(पु)—अक० मोहित होना, लुभा जाना। वेसुध होना। धोखा खाना। सक० लुभाना। वेसुध करना। धोखे मे डालना।

विमोहा—स्त्री० दे० 'विमोह'।

विमौट—पु० दीमको का उठाया हुआ मिट्टी का ढूह, वाँवी।

वियंग(पु)—पु० (दो अगोवाले) महादेव।

विय(पु)—वि० दो, जोडा। दूसरा।

वियुक्त—वि० [स०] विछुडा हुआ। अलग। रहित।

वियो(पु)—वि० दूसरा, अन्य।

वियोग—पु० [स०] मिलन का अभाव, विच्छेद। अलगाव। विरह। वियोगांत—वि० दुखात (नाटक या उपन्यास आदि) जिसके अत मे दुख या वियोग हो।

वियोगिनी—वि० स्त्री० जो अपने पति या प्रिय से अलग हो। वियोगी—वि० [स०] जो प्रिया से दूर या वियुक्त हो।

वियोजक—पुं० [स०] पृथक् करनेवाला। गणित मे वह सख्या जिसे किसी दूसरी वडी सख्या मे से घटाना हो।

विरंग—वि० [स०] बुरे रग का। फीका। अनेक रंगो का।

विरचि—पु० [स०] ब्रह्मा, विधाता।

विरक्त—वि० [स०] उदासीन। विषय-वासना से दूर रहनेवाला। अप्रसन्न।

विरक्ति—स्त्री० [स०] अनुराग का अभाव। उदासीनता। अप्रसन्नता।

विरचन—पु० [स०] निर्माण, बनाना। विशेष प्रेम।

विरचना(पु)—सक० रचना, बनाना। सजाना। अक० विरक्त होना। विरचित—वि० वनाया हुआ। लिखित।

विरज—वि० [स०] रजोगुण से रहित। साफ, निर्दोष। धूलरहित।

विरत—वि० [स०] जो अनुरक्त न हो, विमुख। जो लीन या तत्पर न हो। निवृत्त। वैरागी। वहुत लीन। विरति—वि० चाह का न हो। उदासीनता। वैराग्य।

विरथ—वि० [स०] जिसके पास रथ या सवारी न हो। पैदल।

विरद—पु० ख्याति। यश। दे० 'विरुद'। विरदावली—स्त्री० यश की कथा। विरदैत (पु)—वि० वडे विरदवाला, कीर्ति या यशवाला।

विरमण—पु० [स०] रमण करना, रमना। निवृत्त होना। रुकना। ठहरना।

विरमना(पु)†—अक० रम जाना, मन लगना। विराम करना, ठहरना। मोहित होकर रुक जाना। वेग आदि का थमना या कम होना।

दे० 'विलवना'। विरमाना(पु)†—सक० [अक० विरम] दूसरे को विरमने मे प्रवृत्त करना।

विरल—वि० [सं०] जो घना न हो, सघन का उलटा। जो दूर दूर पर हो। दुर्लभ। पतला। निर्जन। अल्प।

विरस—वि० [सं०] फीका, नीरस। जो अच्छा न लगे, अरुचिकर। (काव्य) जिसमे रस का निर्वाह न हो सका हो।

विरह—पुं० [स०] किसी वस्तु से रहित होने का भाव। वियोग, जुदाई। वियोग का दुःख। विरहिणि(पु—वि० स्त्री० दे० 'वियोगिनी'। विरहित—वि० रहित, विना। विरही—वि० जो प्रियतमा से अलग होने के कारण दुःखी हो, वियोगी। विरहोत्कठिता—स्त्री० वह दुःखी नायिका जिसके मन मे पूरा विश्वास हो कि पति या नायक आवेगा, पर फिर भी वह किसी कारणवश न आवे।

विराग—पुं० [सं०] अनुराग का अभाव। विषयभोग आदि से निवृत्त, वैराग्य।

विराजना—अक० शोभित होना, सोहना। उपस्थित होना। बैठना।

विराजमान—वि० [सं०] चमकता हुआ। उपस्थित। बैठा हुआ।

विराजित—वि० [स०] दे० 'विराजमान'।

विराट्—वि० वहुत बडा, बहुत भारी। पु० ब्रह्मा का वह स्थूल रूप जो अनत है। क्षत्रिय। काति, दीप्ति।

विराट—पु० [स०] मत्स्य देश। मत्स्य देश के राजा जिनके यहाँ पाडवो ने अज्ञातवास किया था।

विराध—पु० [स०] पीडा, तकलीफ। सतानेवाला। एक राक्षस जिसे दडकारण्य मे राम लक्ष्मण ने मारा था।

विराम—पु० [स०] ठहरना, विश्राम करना। वाक्य के अतर्गत वह स्थान जहाँ बोलते समय ठहरना पडता हो। ऐसे स्थानो पर प्रयुक्त विभिन्न चिह्न। छद की यति।

विरुज—वि० [स०] नीरोग।

विरुझना(पु)†—अक० 'उलझना'।

विरुद—पु० [सं०] राजाओ की स्तुति या प्रशसा जो सुदर भाषा मे की गई हो। यश या प्रशशासूचक पदवी जो राजा लोग प्राचीन काल मे धारण करते थे। यश। विरुदावली—स्त्री० [स०] किसी के गुण, प्रताप, पराक्रम आदि का सविस्तार कथन, यशवर्णन।

विरुद्ध—वि० [स०] जो अनुकूल न हो, खिलाफ। अप्रसन्न। विपरीत। अनुचित। क्रि० वि० प्रतिकूल स्थिति मे। ⊙कर्ता = पुं० बुरे चलन का आदमी। श्लेष अलकार का एक भेद जिसमे एक ही क्रिया के कई परस्पर विरुद्ध फल दिखाए जाते हैं। ⊙रूपक = पुं० केशव के अनुसार रूपक अलकार का एक भेद जो रूपकातिशयोक्ति है। विरुद्धार्थ दीपक—पु० दीपक अलकार का एक भेद जिसमे एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओ का एक साथ होना दिखाया जाता है।

विरूप—वि० [सं०] बदसूरत, भद्दा। बदला हुआ। शोभाहीन। कई रगरूप का। उलटा। ⊙ता = स्त्री० विरूप का भाव, बदसूरती।

विरूपाक्ष—[सं०] शिव शकर। शिव के एक गण का नाम। रावण का एक सेनानायक। एक दिग्गज।

विरेचक—वि० [सं०] दस्तावर।

विरेचन—पु० [सं०] दस्त लानेवाली दवा, जुलाब। दस्त लाना।

विरोचन—पु० [सं०] चमकना, प्रकाशित होना। प्रकाशमान। सूर्य की किरण। सूर्य। चद्रमा। अग्नि। विष्णु। प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता।

विरोध—पु०[स०] विपरीत भाव। अनबन, शत्रुता, व्याघात। नाश। नाटक का एक अग जिसमे किसी बात का वर्णन करते समय विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। एक अर्थालकार जिसमे जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य मे किसी एक का दूसरी जाति, गुण, क्रिया या द्रव्य मे

किसी एक के साथ विरोध होता है। **विरोधन**—पु० विरोध करना। नाश, वरबादी। नाटक मे विमर्ष का एक अग जो उस समय होता है, जब किसी कारणवश कार्यध्वस का उपक्रम (सामान) होता है। **विरोधना**Ⓟ—सक० विरोध करना, शत्रुता या झगडा करना। **विरोधाभास**—पु० विरोध का आभास। एक अर्थालकार जिसमे जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य का अवास्तविक विरोध या बदलता दिखाई पडता है। **विरोधी**—वि० विरोध करनेवाला, बाधा डालनेवाला। विपक्षी, शत्रु। ⊙**श्लेष**=पु० श्लेष अलकार का एक भेद जिसमे श्लिष्ट शब्दो द्वारा दो पदार्थो मे भेद, विरोध या न्यूनाधिकता दिखाई जाती है (केशव)। **विरोधोपमा**=स्त्री० उपमा अलकार का एक भेद जिसमे किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थो से दी जाती है। **विरोध्य**—वि० [स०] विरोध के योग्य। जिसका विरोध करना हो।

विलंब—वि० [स०] आवश्यकता, अनुमान आदि से अधिक समय (जो किसी बात मे लगे), देर। अतिकाल। **विलंबना**Ⓟ—अक० विलब करना। मन लगने के कारण बस जाना। लटकना। सहारा लेना। **विलंबित**—वि० लटकता हुआ। लबा किया हुआ। जिसमे देर हुई हो।

विलक्षण—वि० [स०] अनोखा, विचित्र।

विलखना—अक० दे० विलख। Ⓟताडना, पता पाना।

विलग—वि० अलग।

विलगना—अक० अलग होना। विभक्त या अलग दिखाई देना। सक० अलग करना।

विलच्छन—वि० दे० 'विलक्षण'।

विलपनाⓅ—अक० रोना। **विलपाना**Ⓟ—सक० दूसरे को विलाप मे प्रवृत्त करना, रुलाना।

विलमⓅ—पु० देर, अवेर। **विलमना**—अक० दे० 'विलमना'।

विलय—पु० [स०] लोप। नाश, मृत्यु। प्रलय। **विलयन**—पु० [सं०] विलय को प्राप्त होना, किसी मे मिलकर अपने अस्तित्व को खो देना। विघटित हो जाना।

विलसन—पु० [स०] चमकने की क्रिया। क्रीडा, मोद। **विलसना**Ⓟ—अक० शोभा पाना। विलास करना। आनद मनाना।

विलाप—पु० [स०] रोकर दुख प्रकट करने की क्रिया, रुदन।

विलापनाⓅ—अक० विलाप करना।

विलायत—पु० [अँ०] अमरीका, यूरोप या उसका कोई देश। ब्रिटेन, इग्लैड। पराया देश। दूर का देश। **विलायती**—वि० [अँ०] युरोप या अमरीका का। पराए देश का। विदेशी।

विलास—पु० [स०] प्रसन्न करनेवाली क्रिया। मनोरजन। आनद। हावभाव, नाज नखरा। किसी अग की मनोहर चेष्टा (जैसे, भ्रूविलास, करविलास आदि) किसी चीज का हिलना डोलना। अतिशय सुखभोग। **विलासिका**—स्त्री० एक प्रकार का रूपक जिसमे एक ही अक होता है। **विलासिनी**—स्त्री० सुदरी स्त्री, कामिनी। वेश्या। एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे जगण, रगण और अत मे दो गुरु होते है। **विलासी**—पु० सुख-भोग मे अनुरक्त पुरुष, कामी। क्रीड़ा-शील, हँसोड। आरामतलब। एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से मगण और अंत्य गुरु हो।

विलिखित—वि० [सं०] लिखा हुआ। खरोचा हुआ। खुदा हुआ।

विलीकⓅ—वि० अनुचित।

विलीन—वि० [सं०] जो अदृश्य हो गया हो, लुप्त। जो किसी दूसरे मे मिल गया हो। छिपा हुआ।

विलेप—पु० [स०] शरीर आदि पर चुपड-कर लगाने की चीज। पलस्तर, गारा।

विलेशय—पु० [स०] बिल या दरार मे रहनेवाले जीव। सर्प, साँप।

विलोकना—सक० देखना।

विलोचन—पु० [स०] आँख । आँख फोडने की क्रिया ।
विलोड़न—पु० [स०] मथना । आदोलन, उथल पुथल ।
विलोड़ना—सक० मथना । उथल पुथल करना ।
विलोप—पु० [स०] लुप्त या गायब होना । **विलोपना**—सक० लुप्त या नष्ट करना ।
विलोम—वि० [स०] विपरीत । पु० ऊँचे नीचे की ओर आना । विरोधी या उलटा अर्थ देनेवाला ।
विलोल—वि० [स०] चचल । सुदर ।
विल्व—पुं० [स०] वेल का पेड या फल । ⊙**पत्र**—पु० वेल का पत्ता, जो शिव जी पर चढाया जाता है । ⊙**मंगल**=पुं० कृष्ण कर्णामृत के रचयिता एक कवि का नाम ।
विव(पु)—वि० दे० 'विवि' ।
विवक्षा—स्त्री० [स०] कहने की इच्छा । अर्थ । अनिश्चय, शक । **विवक्षित**—वि० जिसकी आवश्यकता वा इच्छा हो । अपेक्षित ।
विवर—पुं० [स०] छिद्र, विल । गड्ढा, दरार । गुफा ।
विवरण—पु० [स०] विवेचन, व्याख्या । वृत्तांत, वयान । भाष्य, टीका ।
विवर्जन—पु० [स०] मना करना ।
विवर्ण—वि० नीच, कमीना । कुजाति । बुरे रग का । कातिहीन । पु० [स०] साहित्य मे एक भाव जिसमे भय, मोह, क्रोध आदि के कारण मुख का रग बदल जाता है ।
विवर्त—पु० [स०] भ्राति । उलटफेर । समूह । आकाश । परिणाम । ⊙**वाद**=पु० वेदात मे एक सिद्धात जिसके अनुसार ब्रह्म को सृष्टि का मुख्य उत्पत्तिस्थान और ससार को माया मानते हैं, परिणामवाद । **विवर्तन**—पु० घूमना, फिरना । परिवर्तन ।
विवर्धन—पु० [स०] विशेष रूप से वढ़ाना ।
विवश—वि० [स०] लाचार, वेबस । पराधीन ।
विवसन, विवस्त्र—वि०[स०] जो कोई वस्त्र न पहने हो, नगा ।
विवस्वत्—पु० स० सूर्य । सूर्य का सारथी, अरुण ।
विवाद—पु० [स०] जवानी झगडा, वहस । झगडा, कलह । मुकदमेवाजी । **विवादास्पद**—वि० [स०] जिसपर विवाद या झगडा हो । **विवादी**—पु० कहासुनी या झगढा करनेवाला । मुकदमा लडनेवालो मे से कोई एक पक्ष ।
विवाह—पु० [स०] एक प्रथा जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष आपस मे दापत्य सूत्र मे वँधते है, शादी, व्याह । ⊙**विच्छेद**=पु० पति और पत्नी का वैवाहिक सबध विधानत तोडना या न रखना, तलाक । **विवाहना**—सक० [हिं०] दे० 'व्याहना' । **विवाहित**—वि० पु० जिसका विवाह हो गया हो । **विवाही**—वि० स्त्री० [हिं०] जिसका विवाह हो चुका हो । **विवाह्य**—वि० विवाह के योग्य ।
विवि(पु)—वि० दो । दूसरा ।
विविक्त—वि० [स०] अलग । बिखरा हुआ । निर्जन । त्यक्त । पवित्र । पुं० त्यागी, सन्यासी ।
विविचार—वि० [स०] विचाररहित, विवेकरहित । आचाररहित ।
विविध—वि० [स०] वहुत प्रकार का, अनेक तरह का ।
विविर—पु० [स०] खोह । बिल । दरार ।
विवृत—वि० [स०] फैला हुआ । खुला हुआ । वर्णन किया हुआ । पु० ऊष्म स्वरो के उच्चारण करने का एक प्रयत्न (व्या०) ।
विवृति—स्त्री० [स०] चक्र के समान घूमने की क्रिया । भाष्य टीका ।
विवृतोक्ति—स्त्री० [स०] एक अलकार जिसमे श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि अपने शब्दो द्वारा प्रकट कर देता है ।
विवृत्त—वि० [स०] घूमता हुआ । लौटा हुआ ।
विवेक—पुं० [स०] भली बुरी वस्तु का ज्ञान । सत् असत् की पहचान । मन की वह शक्ति जिससे भले बुरे का ज्ञान

होता है। बुद्धि, विचार। प्रकृति और पुरुष का भेदज्ञान।

विवेकी—पुं० भलेबुरे का ज्ञान रखनेवाला। समझदार। ज्ञानी। न्यायशील। न्यायाधीश।

विवेचन—पुं० [सं०] भली भाँति परीक्षा करना। जाँचना। यह देखना कि कौन सी बात ठीक है और कौन नही, तर्क वितर्क। मीमासा। विवेचनीय—वि० विवेचन करने योग्य, विचार करने लायक।

विव्वोक—पुं० [सं०] साहित्य मे एक हाव जिसमे स्त्रियाँ सभोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं।

विशद—वि० [सं०] स्वच्छ, विमल। स्पष्ट। जो दिखाई पड़ा हो, व्यक्त। सफेद। सुदर।

विशापति—पुं० [सं०] राजा।

विशाख—पुं० [सं०] कार्तिकेय। एक देवता जिनका जन्म कार्तिकेय के वज्र चलाने से हुआ था। शिव।

विशाखा—स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रो मे १६वाँ नक्षत्र जिसे राधा भी कहते है। एक प्राचीन जनपद जो कौशावी के पास था।

विशारद—पुं० [सं०] वह जो किसी विषय का विद्वान् हो। दक्ष।

विशाल—वि० [सं०] बहुत बडा और विस्तृत, लबा चौडा। सुदर और भव्य। प्रसिद्ध।

विशालाक्ष—पुं० [सं०] महादेव, शिव। विष्णु। गरुड।

विशालाक्षी—स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसकी आँखें बडी और सुदर हो। पार्वती। देवी की एक मूर्ति।

विशिष्ट—वि० [सं०] मिला हुआ, युक्त। जिसमे किसी प्रकार की विशेषता हो। विलक्षण। विशिष्टाद्वैत—पुं० [सं०] द्वैत और अद्वैत के बीच का रामानुजाचार्य का दार्शनिक सिद्धात जिसके अनुसार यह माना जाता है कि जीवात्मा और जगत् दोनो ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वास्तव मे भिन्न नहीं हैं। ब्रह्म, जीवात्मा और जगत् तीनो मूलत. एक होते हुए भी कार्यरूप मे भिन्न है। जीव और ब्रह्म मे वही सबध है जो किरण और सूर्य मे।

विशुद्ध—वि० [सं०] जिसमे किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो। सच्चा, ठीक।

विशुद्धि—स्त्री० शुद्धता।

विशूचिका—स्त्री० [सं०] दे० 'विसूचिका'।

विशृखल—वि० [सं०] जिसमे क्रम या शृखला न हो।

विशेष—पुं० [सं०] भेद, अतर। वह जो साधारण के अतिरिक्त और उससे अधिक हो, अधिकता। वस्तु। साहित्य मे एक प्रकार का अलकार। सात प्रकार के पदार्थो मे से एक (वैशेषिक)। दो वस्तुओं का पारस्परिक अतर (वैशेषिक)। वि० साधारण या सामान्य के अतिरिक्त, अधिक। ⊙ज्ञ—पुं० वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो। विशेषण—पुं० वह जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करता या बतलाता हो। व्याकरण मे वह शब्द जिससे किसी सज्ञा या सर्वनाम की कोई विशेषता सूचित होती है, अथवा उसकी व्याप्ति मर्यादित होती है। विशेषता—स्त्री० विशेष का भाव या धर्म। विशेषोक्ति—स्त्री० काव्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे पूर्ण कारण के रहते हुए भी कार्य के न होने का वर्णन रहता है। विशेष्य—पुं० सज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो (व्या०)

विश्—स्त्री० [सं०] प्रजा। ⊙पति = पुं० राजा।

विश्रंभ—पुं० [सं०] विश्वास। प्रेमी और प्रेमिका मे रति के समय होनेवाला झगडा। प्रेम।

विश्रब्ध—वि० [सं०] शात। विश्वसनीय। निडर। ⊙नवोढ़ा = स्त्री० साहित्य मे वह नवोढा नायिका जिसका अपने पति पर कुछ कुछ अनुराग और कुछ कुछ विश्वास होने लगा हो।

विश्रांत—वि० [सं०] जो विश्राम करता हो। ठहरा या रुका हुआ। थका हुआ। विश्रांति—स्त्री० विश्राम, आराम।

विश्राम--पुं० [सं०] श्रम मिटाना, आराम करना। ठहरने का स्थान। आराम, चैन। विश्रामालय--पु० वह स्थान जहाँ यात्री विश्राम करते हो।

विश्री--वि० [सं०] श्री या काति से रहित। भद्दा।

विश्रुत--वि० [स०] प्रसिद्ध।

विश्लिष्ट--वि० [स०] अलग किया हुआ, जिसका विश्लेपण हो चुका है। थका हुआ। विकसित। प्रकट, खुला हुआ।

विश्लेष--पु० [स०] अलगाव। वियोग। थकावट। विराग, विकास। विश्लेषण--पु० किसी पदार्थ के सयोजक द्रव्यो को अलग अलग करना। खोलकर समझाना।

विश्वंभर--पु० [स०] परमेश्वर। विष्णु। विश्वभरा--स्त्री० [स०] पृथ्वी।

विश्व--पु० [स०] समस्त ब्रह्माड। ससार। विष्णुपुराण के अनुसार दक्ष की कन्या विश्वा से उत्पन्न दस देवता। विष्णु। शरीर। वि० समस्त। बहुत। ⊙कर्त्ता =पु० ईश्वर। ब्रह्मा। सूर्य। एक देवता जो सब प्रकार के शिल्पशास्त्र के आविष्कर्ता माने जाते हैं। शिव। बढई। मेमार, राज। लुहार। ⊙कोश=पु० वह ग्रथ जिसमे सब प्रकार के विषयो का विस्तृत वर्णन हो। ⊙नाथ=पु० शिव, महादेव। ⊙रूप=पु० विष्णु। शिव। श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जो उन्होने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था। ⊙लोचन= पु० सूर्य और चद्रमा। ⊙विद्यालय=पु० वह सस्था जिसमे सभी प्रकार की विद्याओ की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती हो, (अँ०) यूनिवर्सिटी। ⊙व्यापी=पु० ईश्वर। वि० जो सारे विश्व मे व्याप्त हो। ⊙सृज्=विश्व का सृजन करनेवाला। विश्वात्मा--पु० विष्णु। शिव। ब्रह्मा। विश्वाधार--पु० रामेश्वर।

विश्वसनीय--वि० [स०] विश्वास करने योग्य।

विश्वस्त--वि० [स०] विश्वसनीय।

विश्वास--पु० [सं०] एतबार, यकीन। ⊙घात=पु० अपने पर विश्वास करनेवाले के साथ ऐसा कार्य करना जो उसके विश्वास के बिलकुल विपरीत हो, धोखा। ⊙पात्र=पु० विश्वसनीय। विश्वासी--पु० विश्वास करनेवाला। विश्वास करने योग्य।

विश्वेदेव--पु० [स०] अग्नि। देवताओ का एक गण जिसमे इद्र अग्नि आदि नौ देवता माने जाते है।

विश्वेश्वर--पु० [स०] ईश्वर। शिव की एक मूर्ति।

विष--पु० [स०] वह पदार्थ जिसे खाने से प्राणात हो जाता है, जहर। वह जो किसी की सुख शाति आदि मे बाधक हो। बछनाग। कलिहारी। ⊙कठ= पु० महादेव। ⊙कन्या=स्त्री० वह स्त्री जिसके शरीर मे इस आशय से विष प्रविष्ट कर दिए गए हो कि जो उसके साथ सभोग करे, वह मर जाय। ⊙धर=पु० साँप। ⊙मत्र=पु० वह जो विष उतारने का मत्र जानता हो। सँपेरा। ⊙विद्या=स्त्री० विप उतारने की विद्या। ⊙वैद्य=पु० वह जो मत्र तत्र आदि की सहायता से विष उतारता हो। मु०~की गाँठ=वह जो अनेक प्रकार के उपद्रव और अपकार आदि करता हो।

विषण्ण--वि० [स०] दुखी, विषादयुक्त।

विषम--वि० [स०] जो सम या समान न हो। (वह सख्या) जिसमे दो से भाग देने पर एक बचे। बहुत कठिन। बहुत तीव्र, बहुत तेज। भीषण। पु० वह वृत्त जिसके चारो चरणो मे बराबर बराबर अक्षर न हो। एक अर्थालकार जिसमे दो विरोधी वस्तुओ का सबध वर्णन किया जाता है या यथायोग्य का अभाव कहा जाता है। ⊙ज्वर=पु० वह नित्य होनेवाला ज्वर जिसके चढने का समय निश्चय न हो। जाडा देकर आनेवाला ज्वर। ⊙ता=स्त्री० विषम होने का भाव। वैर, विरोध। ⊙बाण=पु० कामदेव। वृत्त=पु० वह वृत्त या छंद

जिसके चरण या पद समान न हो।
विषमायुध—पु० कामदेव।
विषय—पु० [सं०] वह जिसपर कुछ विचार किया जाय। अधिकारक्षेत्र, राज्य, प्रदेश, भूभाग आदि। पहुँच या दौड का क्षेत्र (आँख, कान, मन, आदि का)। विशेष विभाग। स्थान या पात्र। ज्ञानेंद्रियग्राह्य वस्तु (जैसे शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध)। पाँच की सख्या का सूचक सकेत। कामोपभोग। अभीष्ट वस्तु। मजमून। दर्शन शास्त्र मे तर्क का पक्ष, अलकार शास्त्र मे तुलना की वस्तु, उपमेय। सबध। विषयक—अव्य० विषय का, सबधी। विषयानुक्रमणिका—स्त्री० किसी ग्रथ के विषयो के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका, विषयसूची। विषयी—पुं० वह जो भोगविलास मे बहुत आसक्त हो, विलासी। कामदेव। धनवान्।
विषागना—स्त्री० [सं०] दे० 'विषकन्या'।
विषाक्त—वि० [सं०] जिसमे विष मिला हो, जहरीला।
विषाण—पुं० [सं०] पशु का सीग। शृग नामक एक बाजा। सूअर का दाँत।
विषाद—पुं० [सं०] खेद, दुख। जड या निश्चेष्ट होने का भाव।
विषानन—पुं० [सं०] साँप।
विषुव—पुं० [सं०] वह समय जब सूर्य विषुवत् रेखा पर पहुँचता है और दिन रात बराबर होते है। चैत्र नवमी या २१ मार्च और सौर आश्विन नवमी या २२ सितंबर का दिन।
विषुवत रेखा—स्त्री० [सं०] ज्योतिष के कार्य के लिये कल्पित एक रेखा जो पृथ्वी तल के ठीक मध्य भाग मे पूर्व पश्चिम पृथ्वी के चारो ओर मानी जाती है।
विषूचिका—स्त्री० [स०] दे० 'विसूचिका'।
विष्कंभ—पुं० [स०] ज्योतिष मे एक प्रकार का योग। विस्तार। बाधा। नाटक का एक प्रकार का अक जिसमे पहले हो चुकी अथवा आगे होनेवाली कथा की सूचना मध्यम पात्रो द्वारा दी जाती है।
विष्कंभक—पुं० [सं०] दे० 'विष्कभ'।
विष्कार—पुं० [स०] पक्षी, चिड़िया।
विष्टंभ—पुं० [स०] बाधा, रुकावट। पेट फूलने का रोग। ⊙न = पुं० [स०] रोकने या सकुचित करने की क्रिया।
विष्टि—स्त्री० [स०] बेगार। मजदूरी। दे० 'विष्टिभद्रा'। ⊙भद्रा = स्त्री० ज्योतिष मे एक प्रकार का योग जो यात्रा और शुभ कर्मो के लिये निषिद्ध माना जाता है, भद्रा।
विष्ठा—स्त्री० [स०] मल, पाखाना। गू।
विष्णु—पु० [स०] हिंदुओ के एक प्रधान और बहुत बडे देवता जो सृष्टि का भरण-पोषण और पालन करवाले तथा ब्रह्म का एक विशेष रूप माने जाते हैं। १२ आदित्यो मे से एक। ⊙क्राता = स्त्री० नीली अपराजिता या कोयल नाम की लता। ⊙पदी = स्त्री० गंगा नदी। ⊙लोक = पुं० वैकुठ।
विष्वकसेन—पं० [स०] विष्णु। एक मनु का नाम। शिव।
विसदृश—वि० [स०] विपरीत, उलटा। विलक्षण।
विसर्ग—पुं० [स०] दान। त्याग। व्याकरण मे एक वर्ण जिसमे ऊपर नीचे दो बिंदु होते हैं और जिसका उच्चारण प्रायः अर्ध 'ह' के समान होता है। मोक्ष। मृत्यु। प्रलय। विछोह।
विसर्जन—पुं० [स०] परित्याग। विदा होना। समाप्ति।
विसर्प—पुं० [स०] एक रोग जिसमे ज्वर के साथ फुसियाँ हो जाती हैं। विसर्पी—वि० फैलनेवाला।
विसूचिका—स्त्री० [स०] वैद्यक के अनुसार एक रोग जिसे कुछ लोग हैजा मानते हैं।
विस्तर—वि० [स०] बहुत अधिक। पु० दे० 'विस्तार'। विस्तार—पुं० लबे या चौडे होने का भाव, फैलाव। ⊙ना(पु) —सक० विस्तार करना, फैलाना। विस्तीर्ण—वि० [स०] विस्तृत। बहुत बडा। बहुत अधिक।
विस्तृत—वि० [सं०] अधिक दूर तक फैला

हुआ। यथेष्ट विवरणवाला। बहुत बडा या लबा चौडा, विशाल।

विस्फारण—पुं० [सं०] खोलना, फैलाना। फाडना।

विस्फोट--पु० [स०] किसी पदार्थ का गरमी आदि के कारण उबल या फूट पडना। जहरीला और खराब फोडा। ⊙क = पुं जहरीला फोड़ा। वह पदार्थ जो गरमी या आघात के कारण भडक उठे या फट जाय। चेचक। वि० भडकने या फटनेवाला।

विस्मय--पुं० [स०] आश्चर्य। साहित्य मे अद्‌भुत रस का एक स्थायी भाव।

विस्मरण--पु० [स०] भूल जाना।

विस्मित—वि० [स०] जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो, चकित।

विस्मृत—वि० [स०] जो स्मरण न हो, भूला हुआ। विस्मृति – स्त्री० विस्मरण।

विहंग—पुं० [सं०] पक्षी। तीर। मेघ, बादल। चद्रमा। सूर्य।

विहँसना(पु)—अक० दे० 'हँसना'।

विहग—पु० [सं०] दे० 'विहंग'।

विहरना--अक० विहार करना। घूमना फिरना।

विहसित—पु० [सं०] वह हास्य जो न बहुत उच्च हो न बहुत मधुर, मध्यम हास्य।

विहान--पु० [सं०] प्रात काल, सवेरा।

विहार--पुं० [स०] टहलना, घूमना फिरना। रतिक्रीडा, सभोग। बौद्ध श्रमणो के रहने का मठ। ⊙क = वि० [स०] दे० 'विहारी' ⊙ना(पु) = अक० दे० 'विहरना'।

विहारी--पु० श्रीकृष्ण। वि० विहार करने-वाला।

विहित—वि० [सं०] जिसका विधान किया गया हो।

विहीन—वि० [सं०] बगैर, बिना। त्यागा हुआ।

विहून—वि० दे० 'विहीन'।

विह्वल—वि० [सं०] घबराया हुआ, व्याकुल।

वीक्षण—पु० [सं०] देखना।

वीचि—स्त्री० [सं०] लहर, तरग। ⊙माली = पु० समुद्र।

वीज—पु० [सं०] मूल। कारण। शुक्र, वीर्य। तेज। अन्न आदि का बीज या अकुर। तत्व। तात्रिको के अनुसार एक प्रकार के मत्र। बीजगणित। ⊙गणित = पु० एक प्रकार का गणित जिसमे अज्ञात राशियों को जानने के लिये साकेतिक चिह्नो की सहायता से गणना की जाती है।

वीणा—स्त्री० [स०] प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध बाजा, बीन। ⊙पाणि = स्त्री० सरस्वती।

वीत--वि० [स०] जो बीत गया हो। जो छोड दिया गया हो। जो छूट गया हो, मुक्त। जो निवृत्त हो चुका हो। ⊙राग = पु० वह जिसने राग या आसक्ति आदि का परित्याग कर दिया हो। बुद्ध का एक नाम।

वीथिका—स्त्री० [स०] दे० 'वीथी'।

वीथी—स्त्री० [स०] मार्ग सडक। आकाश मे सूर्य या अन्य ग्रहो का मार्ग। रूपक का एक भेद जो एक ही अक का होता है। **वीथ्यग**--पु० रूपक मे वीथी के अग जो १३ माने गए है।

वीप्सा--स्त्री० [स०] व्याप्त होने की इच्छा। द्विरुक्ति। एक प्रकार का शब्दालकार।

वीभत्स—वि० दे० 'बीभत्स'।

वीर—पु० [स०] साहसी और बलवान्, बहादुर। योद्धा, सैनिक। लडका। पति, खसम। भाई (स्त्रियो मे प्रयुक्त)। साहित्य मे एक रस जिसमे उत्साह और वीरता आदि की परिपुष्टि होती है। तात्रिको के अनुसार साधना के तीन भावो मे से एक भाव। ⊙गति = स्त्री० वह उत्तम गति जो वीरो को रणक्षेत्र मे मरने से प्राप्त होती है। ⊙ता = स्त्री० शूरता, बहादुरी। ⊙भद्र = पु० अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। उशीर, खस। शिव के एक प्रसिद्ध गण जो उनके पुत्र और अवतार माने जाते हैं। ⊙ललित = पु० वीरो का सा, पर साथ ही कोमल स्वभाव का। ⊙व्रती = पु० वह जिसने वीरता का व्रत लिया हो, परम वीर। ⊙शय्या = स्त्री० रणभूमि। ⊙शैव = पु० शैवो का एक भेद।

वीरा—स्त्री० [स०] मदिरा, शराब। वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हो।

वीराचारी—पुं० [स०] एक प्रकार के वाम-मार्गी जो देवताओ की उपासना वीरभाव से करते हैं।

वीरान—वि० [फा०] उजड़ा हुआ, जिसमे आबादी न रह गई हो। शोभाहीन।

वीराना—पुं० उजाड जगह।

वीरासन—पुं० [स०] बैठने का एक आसन या ढग।

वीरुध—स्त्री० [स०] पौधा। जडी बूटी। झाडी।

वीर्य—पु० [स०] शरीर मे स्थित धातुओ मे से एक जिसके कारण शरीर मे बल और काति आती है, शुक्र। दे० 'रज'। पराक्रम, शक्ति। बीज।

वृंत—पु० [सं०] स्तन का अगला भाग, कुचमुख। बोंडी।

वृंद—पु० [दे०] समूह, झुड।

वृंदा—स्त्री० [स०] तुलसी। राधिका का एक नाम।

वृंदारक—पु० [स०] देवता।

वृंदावन—पु० [सं०] मथुरा जिले का एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण-चद्र का क्रीड़ाक्षेत्र माना जाता है।

वृक—पु० [स०] भेड़िया। गीदड। कौवा।

वृक्ष—पु० [स०] पेड़, द्रुम। वृक्ष से मिलती वह आकृति जिसमे किसी चीज का मूल अथवा उद्गम और उसकी अनेक शाखाएँ आदि दी गई हो (जैसे वशवृक्ष)।

वृज—पु० दे० 'व्रज'।

वृजिन—पुं० [सं०] पाप। दुख, कष्ट। बाल।

वृत्त—पु० [स०] चरित्र। चालचलन। समाचार, वृत्तांत। जीविका का साधन, वृत्ति। एक छद जिसके प्रत्येक चरण में २० वर्ण होते हैं। गडका। दलिका। वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक बिंदु उसके मध्यबिंदु से समान अतर पर हो (ज्यामिति)। मडल। वृत्तांत—स्त्री० घटना का विवरण, हाल।

वृत्ति—वि० [सं०] जीविका, रोजी। वह धन जो किसी दीन या छात्र आदि को बराबर उसके सहायतार्थ दिया जाय। सूत्रो आदि की व्याख्या। कारिका। नाटको मे विषय के विचार से वर्णन करने की शैली जो चार प्रकार की कही गई है। योग के अनुसार चित्त की अवस्था जो पांच प्रकार की मानी गई है। व्यापार, कार्य। स्वभाव, प्रकृति। एक प्रकार का शास्त्र। वृत्यनुप्रास—पुं० एक प्रकार का अनुप्रास या शब्दालकार। इसमे एक या कई व्यजन वर्ण एक ही या भिन्न भिन्न रूपो मे बार बार आते है। वृत्र—पुं० [सं०] अँधेरा। बादल। शत्रु। एक असुर जिसे इद्र ने दधीचि ऋषि की हड्डियो से बने वज्र द्वारा मारा था। ⊙हा = पुं० इद्र। वृत्रारि—पु० इद्र।

वृथा—वि० [सं०] बिना मतलब का, फजूल। क्रि० वि० बेफायदा।

वृद्ध—वि० [सं०] अधिक अवस्था मे पहुँचा हुआ, बुड्ढा। विद्वान्। पु० उक्त अवस्था या स्थिति को प्राप्त मनुष्य। ⊙श्रवा = पु० इंद्र। वृद्धा—स्त्री० [सं०] वृद्ध स्त्री, बुड्ढी।

वृद्धि—स्त्री० [सं०] बढ़ने या अधिक होने की क्रिया या भाव, अधिकता। समृद्धि। सूद। वह अशौच जो घर मे सतान उत्पन्न होने पर होता है। अष्टवर्ग के अतर्गत एक प्रसिद्ध लता।

वृश्चिक—पु० [सं०] बिच्छू नामक जंतु। वृश्चिकाली या बिच्छू नाम की लता। मेष आदि १२ राशियों मे से आठवी राशि जिसके सब तारो से बिच्छू का आकार बनता है। वृश्चिकाली—स्त्री० बिच्छू नाम की लता जिसके रोएँ शरीर मे लगने से बहुत तेज जलन होती है।

वृष—पुं० [सं०] गौ का नर, साँड। काम-शास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषो मे से एक। श्रीकृष्ण। १२ राशियों मे से दूसरी राशि। ⊙केतन, ⊙केतु, ⊙ध्वज = पु० शिव, महादेव। गणेश। पुराणानुसार एक पर्वत।

⊙वासी = पु० शिव । ⊙वाहन = पु० शिव ।
वृषण—पु० [सं०] इंद्र । कर्ण । विष्णु । साँड । घोड़ा । अंडकोश ।
वृषभ—पु० [सं०] बैल या साँड । साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद । कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में श्रेष्ठ पुरुष । ⊙ध्वज = पुं० शिव महादेव ।
वृषल—पु० [सं०] शूद्र । पापी और दुष्कर्मी । घोड़ा । सम्राट् चंद्रगुप्त का एक नाम ।
वृषलि—स्त्री० [सं०] वह कुँआरी कन्या जो रजस्वला हो गई हो । कुलटा । नीच जाति की स्त्री । रजस्वला स्त्री ।
वृषादित्य—पु० [सं०] वृष राशि का सूर्य ।
वृषी—पु० [सं०] मयूर, मोर ।
वृषोत्सर्ग—पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमे लोग साँड को दागकर छोड़ देते है ।
वृष्टि—स्त्री० [सं०] वर्षा, मेह । ऊपर से बहुत सी चीजों का एक साथ गिरना या गिराया जाना । किसी क्रिया का कुछ समय तक लगातार होना ।
वृष्णि—पु० [सं०] बादल । यादव वंश । श्रीकृष्ण । इंद्र, अग्नि । वायु ।
वृष्य—पुं० [सं०] वह चीज जिससे वीर्यबल और आनंद बढ़ता हो ।
वृहती—स्त्री० [सं०] कटकारी । वनभटा । बैंगन ।
वृहत्—वि० [सं०] बड़ा, महान् ।
वृहद्रथ—पुं० [सं०] इंद्र । यज्ञपात्र । सामवेद का एक अंश ।
वृहस्पति—पु० [सं०] दे० 'बृहस्पति' ।
वे—सर्व० 'वह' का बहु० रूप ।
वेक्षण—पु० [सं०] अच्छी तरह देखना या तलाश करना ।
वेग—पुं० [सं०] किसी ओर प्रवृत्त होने का जोर, तेजी । बहाव । शीघ्रता । आनंद, प्रसन्नता । शरीर में से मल मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति । ⊙धारण = पु० मलमूत्र आदि का वेग रोकना ।
वेण—पु० [सं०] एक प्राचीन वर्णसंकर जाति । राजा पृथु के पिता का नाम ।
वेणी—स्त्री० [सं०] बालों की गूँथी हुई चोटी ।
वेणु—पु० [सं०] बाँस । बाँस की बनी हुई वंशी । दे० 'वेणु' । वेणुका—स्त्री० [सं०] बाँसुरी । एक वृक्ष जिसका फल बहुत जहरीला होता है । हाथी को चलाने के लिये प्राचीन काल में प्रयुक्त एक प्रकार का दंड जिसमें बाँस का दस्ता लगा होता था ।
वेतन—पु० [सं०] वह धन जो किसी काम के बदले में दिया जाय, पारिश्रमिक । तनखाह । ⊙भोगी = पु० वह जो वेतन लेकर काम करता हो, वैतनिक ।
वेतस्—पु० [सं०] दे० 'वेत्र' ।
वेताल—पु० [सं०] द्वारपाल, संतरी । शिव के एक गणाधिप । पुराणों के अनुसार भूतों की एक योनि । वह शव जिसपर भूतों ने अधिकार कर लिया हो । छप्पय का छठा भेद ।
वेत्ता—वि० [सं०] जाननेवाला, ज्ञाता ।
वेत्र—पु० [सं०] बेंत । ⊙धर = पु० द्वारपाल, संतरी । ⊙वती = स्त्री० बेतवा नदी ।
वेद—पु० [सं०] भारतीय आर्यों का प्राचीनतम धार्मिक तथा आध्यात्मिक ग्रंथ जिनकी संख्या चार है, श्रुति । किसी विषय का विशेषत धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का सच्चा और वास्तविक ज्ञान । वृत्ति । वित्त । यज्ञांग । ⊙माता = स्त्री० गायत्री, सावित्री । दुर्गा । सरस्वती । ⊙वाक्य = पुं० पूर्ण रूप से प्रामाणिक बात जिसका खंडन न हो सकता हो, अकाट्य बात । वेदांग—पुं० [सं०] वेदों के अंग या शास्त्र जो छह हैं, शिक्षा, कल्प व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंद । वेदांत—पु० [सं०] उपनिषद् और आरण्यक आदि वेद के अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा, जगत् आदि के संबंध में निरूपण है, ब्रह्मविद्या, ज्ञानकांड । छह दर्शनों में से प्रधान दर्शन जिसमें चैतन्य ब्रह्म ही एकमात्र पारमार्थिक सत्ता स्वीकार किया गया है, अद्वैतवाद । ⊙

सूत्र = पु० महर्षि वादरायणकृत सूत्र जो वेदातशास्त्र के मूल माने जाते हैं। वेदांती—पु० वह जो वेदात का अच्छा ज्ञाता हो, ब्रह्मवादी।

वेदन—पु० [सं०] दे० 'वेदना'।

वेदना—स्त्री० [स०] पीडा, व्यथा।

वेदिका—स्त्री० [स०] वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनती है, कुरसी। दे० 'वेदी'।

वेदी—स्त्री० [स०] किसी शुभ कार्य, विशेषत धार्मिक कार्य के लिये तैयार हुई ऊँची भूमि। वि० पडित विद्वान्। जानकार।

वेद्य—वि० [स०] जानने या समझने के योग्य।

वेध—पु० [स०] छेदना विद्ध करना। यत्रो आदि की सहायता से नक्षत्रो और तारो आदि को देखना। ⊙शाला = स्त्री० वह स्थान जहाँ ग्रहो और नक्षत्रो आदि के वेध करने के यत्र आदि रखे हो।

वेधालय—पु० [स०] दे० 'वेधशाला'।

वेधी—पु० [स०] वह जो वेध करता हो वेध करनेवाला।

वेपथु—पुं० [स०] कँपकँपी, कप।

वेपन—पु० [सं०] काँपना, कप।

वेला—स्त्री० [स०] समय, वक्त। दिन और रात का २४वाँ भाग। समुद्र तट का मैदान।

वेल्लि—स्त्री० [स०] वेल, लता।

वेश—पु० [स०] कपडे, लत्ते आदि मे अपने आपको सजाना। किसी के कपड़े लत्ते आदि पहनने का ढग। पहनने के वस्त्र पोशाक। खभा, तंबू। घर, मकान। ⊙भूषा = स्त्री० पहनने के कपडे आदि। ⊙वनिता = स्त्री० वेश्या, रंडी।

वेश्म—पु० [सं०] घर, मकान।

वेश्या—स्त्री० [स०] गाने और कसव कमाने-वाली औरत, रडी।

वेष—पु० [स०] दे० 'वेश'। रंगमच मे नेपथ्य।

वेष्टन—पु० [स०] वह कपडा आदि जिससे कोई चीज लपेटी जाय, बेठन। घेरने या लपेटने की क्रिया या भाव। पगडी।

वेष्टित—वि० किसी चीज से घेरा या लपेटा हुआ।

वैकट्य—पु० [स०] विकटता।

वैकल्पिक—वि० [स०] जो किसी पक्ष मे हो, एकागी। सदिग्ध। जो अपने इच्छा-नुसार ग्रहण किया जा सके।

वैकाल—पु० [स०] तीसरा पहर अपराह्न।

वैकाली—वि० [स०] तीसरे पहर का। स्त्री० तीसरे पहर का जलपान।

वैकुठ—पु० [स०] पुराणानुसार वह स्थान जहाँ भगवान् विष्णु रहते हैं। विष्णु। स्वर्ग।

वैकृत—पुं० [सं०] विकार, खराबी। वीभत्स रस या उसके आलवन घृणित पदार्थ। वि० जो विकार से उत्पन्न हुआ हो।

वैक्रम, वैक्रमीय—वि० [सं०] विक्रम का, विक्रम सबधी।

वैक्रांत—पुं० [सं०] चुन्नी नामक मणि।

वैक्लव्य—पुं० [सं०] व्याकुलता।

वैखरी—स्त्री० [सं०] वह स्वर जो उच्च और गभीर हो और बहुत स्पष्ट सुनाई पडे। वाक्शक्ति। वाग्देवी।

वैखानस—पुं० [स०] वह जो वानप्रस्थ आश्रम मे हो। एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी जो वन मे रहते थे।

वैचक्षण्य—पु० [स०] विचक्षणता।

वैचित्र्य—पुं० [स०] दे० 'विचित्रता'।

वैजयंत—पुं० [स०] इद्र की पुरी का नाम। इद्र।

वैजयंती—स्त्री० [सं०] पताका, झंडी। पाँच रगो की एक प्रकार की माला।

वैज्ञानिक—पु० [स०] वह जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो। निपुण। वि० विज्ञान सबधी, विज्ञान का।

वैतनिक—पु० [स०] तनख्वाह लेकर काम करनेवाला, नौकर।

वैतरणी—स्त्री० [स०] एक पौराणिक नदी जो यम के द्वार पर है।

वैताल, वैतालिक—पु० [सं०] वह स्तुति-पाठक जो राजाओ को स्तुति करके जगाता था।

वैतालीय—पु० एक वर्णवृत्त जिसके

पहले और तीसरे चरणों मे १४ तथा दूसरे और चौथे मे १६ मात्राएँ हो। वि० वेताल संबंधी, वेताल का।

वैदग्ध्य--पुं० [स०] विदग्धता, चातुरी।

वैदर्भ--पुं० [स०] विदर्भ देश का राजा या शासक। दमयनी के पिता भीमसेन। रुक्मिणी के पिता भीष्मक। वि० विदर्भ देश का। वैदर्भी--स्त्री० काव्य की वह रीति या शैली जिसमे रचना के लिये मधुर वर्णों का प्रयोग होता है। दमयती। रुक्मिणी।

वैदिक--पुं० [स०] वेद मे कहे हुए कृत्य करनेवाला। वेदो का पडित। वि० वेद सवधी, वेद का।

वैदूर्य--पुं० [स०] एक प्रकार का रत्न जिसे 'लहसुनिया' कहते है।

वैदेशिक--वि० [स०] विदेश सवधी।

वैदेही--स्त्री० [स०] विदेह (राजा जनक) की कन्या, सीता।

वैद्य--पुं० [स०] पडित, विद्वान्। वह जो आयुर्वेद के अनुसार रोगियो की चिकित्सा करता हो, चिकित्सक। वैद्यक--पुं० वह शास्त्र जिसमे रोगो के निदान और चिकित्सा आदि का विवेचन हो। चिकित्साशास्त्र, आयुर्वेद।

वैद्युत--वि० [स०] विद्युत सबधी।

वैध--वि० [स०] कायदे या कानून के मुताबिक, विधिसमत, ठीक।

वैधर्म्य--पुं० [स०] विधर्मी होने का भाव। नास्तिकता।

वैधव्य--पुं० [स०] विधवा होने का भाव, रँडापा।

वैधानिक--वि० [स०] विधान या सघटन के नियमो से सबध रखनेवाला। विधान या नियमो के अनुकूल।

वैधेय--वि० [सं०] विधिसंबधी, विधि का।

वैनतेय--पु० [स०] विनता की सतान। गरुड। अरुण।

वैपरीत्य--पुं० [स०] विपरीतता।

वैभव--पु० [स०] धनसपत्ति, दौलत। बडप्पन।

वैमनस्य--पु० [स०] मनमुटाव। वैर, दुश्मनी।

वैमात्र, वैमात्रेय--वि० [स०] विमाता से उत्पन्न, सौत से उत्पन्न।

वैमानिक--वि० [सं०] विमान सबधी। पु० वह जो विमान पर सवार हो। हवाई जहाज चलानेवाला।

वैयक्तिक--वि० [सं०] किसी एक व्यक्ति से सबध रखनेवाला, 'सामूहिक' का उलटा।

वैयाकरण--पु० [स०] वह जो व्याकरण का अच्छा ज्ञाता हो, व्याकरण का पडित।

वैर--पु० [स०] शत्रुता, दुश्मनी, द्वेष। ⊙शुद्धि = स्त्री० किसी से वैर का बदला चुकाना।

वैरागी--पुं० [स०] वह जिसके मन मे विराग उत्पन्न हुआ हो, विरक्त। उदासीन वैष्णवो का एक सप्रदाय।

वैराग्य--पु० [स०] ससार के झझटो से हटाकर ईश्वर की ओर लगाई जानेवाली मन की वृत्ति। विषय वासनाओ मे अनुराग का अभाव, विरक्ति।

वैराज--पु० [स०] परमात्मा। ब्रह्मा। दे० 'वैराज्य'। वैराज्य--पु० [स०] एक ही देश मे दो राजाओ का शासन। वह देश जहाँ इस प्रकार की शासनप्रणाली हो।

वैरी--पु० [स०] दुश्मन, शत्रु।

वैरूप्य--पु० [स०] विरूपता, शकल का भद्दापन।

वैलक्षण्य--पु० [स०] विलक्षणता। विभिन्नता।

वैवस्वत--पु० [स०] सूर्य के एक पुत्र का नाम। एक रुद्र। एक मनु। वर्तमान मन्वतर का नाम।

वैवाहिक--पु० [स०] कन्या अथवा वर का श्वसुर, समधी। वि० विवाह सबधी, विवाह का।

वैशाख--पु० [स०] चैत के बाद का और जेठ के पहले का महीना।

वैशाखी--स्त्री० [स०] वैशाख मास की पूर्णिमा।

वैशाली—स्त्री० [स०] प्राचीन बौद्ध काल की एक प्रसिद्ध नगरी जिसे राजा तृण-बिंदु के पुत्र विशाल ने बसाया था। मुजफ्फरपुर जिले का बसाढ नामक गाँव।
वैशिक—पु० [स०] साहित्य के अनुसार वेश्यागामी नायक।
वैशेषिक—पु० [स०] छह दर्शनो मे से एक जो महर्षि कणादकृत है और जिसमे पदार्थों का विचार तथा द्रव्यो का निरूपण है, पदार्थ विद्या। दर्शन का माननेवाला। वि० किसी विशेष विषय आदि से सबध रखनेवाला (जैसे वैशेषिक विद्यालय)।
वैश्य—पु० [स०] भारतीय आर्यो के चार वर्णों मे से तीसरा वर्ण।
वैश्वजनीन—वि० [स०] विश्व भर के लोगो से सबध रखनेवाला, सब लोगो का।
वैश्वदेव—पु० [स०] वह होम या यज्ञ आदि जो वैश्वदेव के उद्देश्य से किया जाय।
वैश्वानर—पु० [स०] अग्नि। परमात्मा। चेतन।
वैषम्य—पु० [स०] विषमता।
वैषयिक—वि० [स०] विषय संबधी। पु० विषय का। पु० विषयी, लपट।
वैष्णव—पु० [सं०] विष्णु की उपासना करनेवाला। हिंदुओ का एक धार्मिक सप्रदाय। वि० विष्णु संबंधी, विष्णु का।
वैष्णवी—स्त्री० [स०] विष्णु की शक्ति। दुर्गा। गगा। तुलसी।
वैसा—वि० उस तरह का।
वैसे—क्रि वि० उस तरह।
वोक(पु)—पु० ओर, तरफ।
वोख(पु)—स्त्री० अजलि।
वोट—पु० [अं०] किसी चुनाव मे दी जाने-वाली राय, मत।
वोटर—पु० [अं०] वह जो किसी चुनाव मे राय देता हो, मतदाता।
वोटिंग—स्त्री० [अं०] चुनाव के लिये वोट या मत लिया जाना।
वोहि(पु)—सर्व० वह।
वोहित्य—पु० [स०] बडी नाव।
व्यंग्य—पुं० [स०] शब्द का वह गूढ अर्थ जो उसकी व्यजना वृत्ति के द्वारा प्रकट हो। ताना, बोली।
व्यंजक—वि० [सं०] व्यक्त, प्रकट या सूचित करनेवा।
व्यंजन—[सं०] व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया। वर्णमाला मे स्वर के अतिरिक्त वर्ण। पका हुआ भोजन। अवयव, अग। व्यंजना—स्त्री० [स०] प्रकट करने की क्रिया। शब्द की वह तीसरी शक्ति जिसके द्वारा अभिधा और लक्षणा के असफल रहने पर असल अर्थ प्रकट होता हो।
व्यक्त—वि० [सं०] प्रकट, जाहिर, साफ, स्पष्ट। ⊙गणित=पुं० दे० 'अक-गणित'।
व्यक्ति—स्त्री० [स०] व्यक्त होने की क्रिया या भाव। पुं० मनुष्य, आदमी। ⊙गत=वि० किसी व्यक्ति से सबध रखनेवाला, निजी। ⊙त्व=पुं० व्यक्ति का विशेष गुण या भाव।
व्यग्र—वि० [स०] घबराया हुआ, परेशान। डरा हुआ। काम मे फँसा हुआ।
व्यजन—पुं० [सं०] पखा।
व्यतिक्रम—पु० [सं०] क्रम मे होनेवाला उलटफेर। बाधा।
व्यतिरिक्त—क्रि० वि० [स०] अतिरिक्त, सिवा।
व्यतिरेक—पुं० [स०] भेद, अतर। अभाव। अतिक्रम। एक प्रकार का अर्थालकार।
व्यतिरेकी—पुं० [स०] वह जो किसी का अतिक्रमण करके जाता हो।
व्यतीत—वि० [स०] बीता हुआ, गत। ⊙ना(पु)अक० दे० 'बीतना'
व्यतीपात—पुं० [स०] बहुत बड़ा उत्पात। ज्योतिष मे एक अशुभ योग।
व्यत्यय—पुं० [सं०] दे० 'व्यतिक्रम'।
व्यथा—स्त्री० [स०] पीडा, वेदना, तक-लीफ। दुःख, क्लेश। व्यथित—वि० जिसे किसी प्रकार की व्यथा या तकलीफ हो। दुखित।

व्यभिचार—पुं० [सं०] बुरा या दूषित आचार, बदचलनी। स्त्री का परपुरुष से अथवा पुरुष का परस्त्री से यौन संबंध। **व्यभिचारी**—पुं० मार्गभ्रष्ट। बदचलन। परस्त्रीगामी। दे० 'संचारी'।

व्यय—पु० [सं०] खर्च, आय का उलटा। खपत। नाश। **व्ययी**—वि० व्यय करनेवाला, खर्चीला।

व्यर्थ—वि० [सं०] उपयोगरहित, बेकार। बिना माने का, अर्थरहित। जिसमे कोई लाभ न हो। क्रि० वि० फजूल, योंही।

व्यलीक—पुं० [सं०] दुख। अपराध। विट। डाँटडपट। वि० सरासर, असत्य।

व्यवकलन—पुं० [सं०] एक रकम मे से दूसरी रकम घटाना, बाकी निकालना।

व्यवच्छेद—पु० [सं०] पार्थक्य, अलगाव। विभाग, हिस्सा। विराम, ठहरना।

व्यवधान—पुं० [सं०] रुकावट, बाधा। हस्तक्षेप। परदा। विभाजन।

व्यवसाय—पुं० [सं०] रोजगार, व्यापार। जीविका। कामधंधा। प्रयास। **व्यवसायी**—पु० व्यसाय करनेवाला। रोजगारी।

व्यवसित—वि० [सं०] किया हुआ, समाप्त। काम करने के लिये तैयार, उद्यत। जो निश्चय किया जा चुका हो।

व्यवस्था—स्त्री० [सं०] प्रबंध, इंतजाम। चीजों को सजाकर ठिकाने से रखना। किसी कार्य का वह विधान जो शास्त्रो आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित हुआ हो। ⊙**पत्र**=पु० वह पत्र जिसमे किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था हो। मु०~**देना**=पंडितो आदि का किसी विषय मे शास्त्रो का विधान बतलाना। किसी सभा या समिति मे किसी नियम या विचारणीय विषय के संबंध मे सभापति या अध्यक्ष द्वारा किया गया स्पष्टीकरण जो सर्वमान्य होता है। **व्यवस्थाता**—पु० दे० 'व्यवस्थापक'। **व्यवस्थापक**—पु० इंतजाम करनेवाला। प्रबंधक वह जो किसी कार्य आदि को नियमपूर्वक चलाता हो। शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला। **व्यवस्थापिका सभा**—स्त्री० (भारतीय स्वतंत्रता के पूर्व) देश या प्रांत के प्रतिनिधियों की वह सभा जो कानून बनाती थी। (अँ० लेजिस्लेटिव असेंबली) **व्यवस्थित**—वि० जिसमे किसी प्रकार की व्यवस्था या नियम हो, कायदे का।

व्यवहार—पुं० [सं०] कार्य, काम। बरताव। रोजगार। बोलचाल का प्रयोग। रीतिरिवाज। लेनदेन का काम, महाजनी। झगडा, विवाद, मुकदमा। ⊙**तः**=क्रि० वि० व्यवहार की दृष्टि से, उपयोग के विचार से। ⊙**शास्त्र**=पु० वह शास्त्र जिसमे यह बतलाया गया हो कि विवाद का किस प्रकार निर्णय करना चाहिए और किस अपराध के लिये कितना दंड देना चाहिए आदि। **व्यवहार्य**—वि० व्यवहार या काम मे लाने के योग्य।

व्यवहित—वि० [सं०] जिसमे किसी प्रकार का व्यवधान या बाधा पड़ी हो। आड़ या ओट मे गया हुआ, छिपा हुआ।

व्यवहृत—वि० [सं०] जिसका आचरण किया गया हो, आचरित। जो काम मे लाया गया हो।

व्यष्टि—स्त्री०[सं०] समष्टि का एक विशिष्ट पृथक् अंश, समष्टि का उलटा।

व्यसन—पुं० [सं०] किसी प्रकार का शौक। बुरी आदत। विषयो के प्रति आसक्ति। बुरी या अमंगल बात। विपत्ति।

व्यसनी—पु० वह जिसे किसी प्रकार का व्यसन या शौक हो।

व्यस्त—वि० [सं०] काम मे लगा या फँसा हुआ। घबराया हुआ। व्याप्त।

व्याकरण—पु० [सं०] वह विद्या या शास्त्र जिसमे किसी भाषा के शब्दो के शुद्ध रूपो और वाक्यो के प्रयोग के नियमो आदि का निरूपण होता है।

व्याकुल—वि० [सं०] घबराया हुआ। बहुत उत्कंठित।

व्याक्रोश—पु० [स०] तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना। चिल्लाना।

व्याख्या—स्त्री० [स०] वह वाक्य आदि जो किसी जटिल वाक्य आदि का अर्थ स्पष्ट करता हो, टीका करना, वर्णन। व्याख्याता—पु० व्याख्या करनेवाला। भाषण करनेवाला। व्याख्यान—पुं० वक्तृता, भाषण। व्याख्या या टीका करने अथवा विवरण बतलाने का काम। व्याख्येय—वि० [स०] व्याख्या करने या समझाने लायक।

व्याघात—पु० [स०] बाधा। प्रहार, मार। एक प्रकार का अलकार जिसमे एक ही उपाय या साधन के द्वारा दो विरोधी कार्यों के होने का वर्णन होता है। ज्योतिष मे एक अशुभ योग।

व्याघ्र—पु० [स०] बाघ, शेर। ⊙चर्म=पु० बाघ या शेर की खाल जिसपर प्राय. लोग बैठते है।

व्याज—पु० दे० 'व्याज'। पु० [सं०] कपट, फरेब। बाधा, खलल। देर। ⊙निंदा=स्त्री० ऐसी निंदा जो ऊपर से देखने मे स्पष्ट निंदा न जान पडे। एक प्रकार का शब्दालकार जिसमे इस प्रकार की निंदा की जाती है। ⊙स्तुति=स्त्री० वह स्तुति जो व्याज अथवा किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने मे स्तुति न जान पडे। एक प्रकार का शब्दालकार जिसमे उक्त प्रकार से स्तुति की जाती है। व्याजोक्ति—स्त्री० कपटभरी बात। एक प्रकार का अलकार जिसमे किसी स्पष्ट या प्रकट बात को छिपाने के लिये किसी प्रकार का बहाना किया जाता है।

व्याध—पु० [सं०] वह जो जगली पशुओ आदि का शिकार करता हो। एक प्राचीन जाति जो जगली पशुओ को मारकर अपना निर्वाह करती थी।

व्याधि—स्त्री० [सं०] रोग। आफत, झंझट। विरह या काम आदि के कारण शरीर में किसी प्रकार का रोग होना (साहित्य)।

व्याधित—वि० जिसे किसी प्रकार की व्याधि हुई हो, रोगी।

व्यान—पु० [सं०] शरीर की पाँच वायुओ मे से एक जो सारे शरीर में सचार करनेवाली मानी जाती है।

व्यापक—वि० [सं०] चारो ओर फैला हुआ, दूर तक व्याप्त। घेरने या ढकनेवाला।

व्यापन—पुं० [सं०] व्याप्त होना, फैलना।

व्यापना—अक० किसी चीज के अदर फैलना, व्याप्त होना।

व्यापन्न—वि० [स०] विपत्ति मे पडा हुआ। जख्मी। नष्ट, मरा हुआ।

व्यापार—पुं० [स०] क्रय विक्रय का कार्य, व्यवसाय। कार्य, काम। व्यापारिक—वि० व्यापार सबधी, रोजगार का।

व्यापारी—पुं० व्यवसायी, रोजगारी। वि० व्यापार सबधी।

व्यापित—वि० [सं०] दे० 'व्याप्त'।

व्याप्त—वि० [सं०] चारो ओर फैला या भरा हुआ। पूरित।

व्याप्ति—स्त्री० [स०] व्याप्त होने की क्रिया या भाव। न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ का पूर्ण रूप मे मिला या फैला हुआ होना। आठ प्रकार के ऐश्वर्यो मे से एक।

व्यामोह—पु० [स०] मोह, अज्ञान।

व्यायाम—पुं० [स०] वह शारीरिक श्रम जो बल बढाने के उद्देश्य से किया जाता है, कसरत। परिश्रम।

व्यायोग—पु० [स०] एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य।

व्याल—पु० [सं०] साँप। बाघ, शेर। राजा। विष्णु। दडक छद का एक भेद।

व्यालू†—स्त्री०, पुं० रात का खाना।

व्यावहारिक—वि० [स०] व्यवहार या बरताव का। व्यवहारशास्त्र सबंधी।

व्यासंग—पु० [सं०] बहुत आसक्ति या मनोयोग।

व्यास—पु० [स०] पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होंने वेदो का सग्रह, विभाग और संपादन किया था। कहा जाता है कि

अठारह पुराणो, महाभारत, भागवत और वेदांत आदि रचना भी उन्होने की थी। वह ब्राह्मण जो रामायण, महाभारत या पुराणो आदि की कथाएँ लोगो को सुनाता हो, कथावाचक। वह सीधी रेखा जो परिधि के सिरे से चलकर केंद्र से होती हुई दूसरे सिर तक पहुँची हो। विस्तार, फैलाव। ⊙समास = पु० घटाना बढाना, काँट छाँट।

व्याहत—वि० [सं०] मना किया हुआ। व्यर्थ।

व्याहार—पुं० [सं०] वाक्य, जुमला।

व्याहृति—स्त्री० [सं०] कथन, उक्ति। भू., भुवः, स्व., इन तीनो का मत्र।

व्युत्पत्ति—स्त्री० [स०] किसी चीज का मूल, उद्गम या उत्पत्तिस्थान। शब्द का वह मूलरूप, जिसमे वह शब्द निकला हो। किसी विज्ञान या शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञान।

व्युत्पन्न—वि० [सं०] जो किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो।

व्यूह—पुं० [सं०] युद्ध के समय सेना की स्थापना। समूह, जमघट। सेना। निर्माण। शरीर।

व्योम—पुं० [सं०] आकाश, आसमान। जल। बादल। ⊙केश = पुं० महादेव। ⊙चारी = पुं० देवता। पक्षी, चिडिया। वह जो आकाश मे विचरण करता हो। ⊙यान = पुं० विमान, हवाई जहाज।

व्रज—पुं० [सं०] मथुरा और वृंदावन के आसपास का प्रात जो भगवान् श्रीकृष्ण का लीलाक्षेत्र है। जाना या चलना, गमन। समूह, झुड। ⊙भाषा = स्त्री० मथुरा, आगरा और इनके प्रदेशो मे बोली जानेवाली भाषा जो १४वी १५वी शताब्दी से लेकर २०वी शताब्दी के आरभ तक उत्तरभारत की मुख्य साहित्य-भाषा रही है। ⊙मडल = पु० व्रज और उसके आस पास का प्रदेश। ⊙राज, ⊙लाल = पु० श्रीकृष्ण।

व्रजन—पु० [स०] चलना, जाना।

व्रजांगना—स्त्री० [सं०] व्रज की स्त्री।

व्रजेश—पु० [स०] श्रीकृष्ण।

व्रज्या—स्त्री० [स०] घूमना, फिरना। गमन। आक्रमण।

व्रण—पु० [स०] फोडा। घाव। **व्रणी**—वि० जिसे फोडा हुआ हो। घायल।

व्रत—पु० [स०] किसी पुण्यतिथि को अथवा पुण्य की प्राप्ति के विचार से नियमपूर्वक उपवास करना। पवित्र सकल्प। पवित्र या धार्मिक कार्य। शुभ कार्य के लिये दृढ निश्चय। **व्रतिक, व्रती**—पु० वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। यजमान। ब्रह्मचारी।

व्राचड़—स्त्री० [अव्य०] अपभ्रंश भाषा का एक भेद जिसका व्यवहार आठवी से ११वी शताब्दी तक सिंध प्रांत मे था। पैशाची भाषा का एक भेद।

व्रात्य—पु० [स०] वह जिसके दस संस्कार न हुए हो। वह जिसका यज्ञोपवीत सस्कार न हुआ हो ऐसा मनुष्य पतित या अनार्य समझा जाता है। दोगला, वर्णसकर।

व्रीडा—स्त्री० [स०] लज्जा, शरम।

व्रीहि—पु० [सं०] धान, चावल।

श

श—हिंदी वर्णमाला का ३०वाँ व्यजन।

शं—पु० [सं०] कल्याण, मगल। सुख। शांति वैराग्य। वि० शुभ।

शंक—पुं० [स०] डर, आशका। ⊙ना (पु) = अक० शका करना, सदेह करना।

शंकर—पुं० दे० 'शकर'। वि० [स०] मगल

करनेवाला। शुभ। लाभदायक। पुं० शिव, महादेव। अद्वैतमत के प्रवर्तक शकराचार्य। २६ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे दीर्घ ह्रस्व का क्रम हो। ⊙शैल = पु० कैलास। ⊙स्वामी = पु० दे० शकराचार्य।

शंकराचार्य—पु० [स०] अद्वैतमत के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य जिनका जन्म सन् ७८८ ई० मे केरल देश मे हुआ था और जो ३२ वर्ष की अल्प आयु मे स्वर्गवासी हुए थे।

शंका—स्त्री० [स०] अनिष्ट का भय, डर। सदेह। अपने किसी अनचित व्यवहार आदि से होनेवाली इष्टहानि की चिंता। साहित्य का एक सचारी भाव। शकालु—वि० सदेहशील। शकित—वि० डरा हुआ। जिसे सदेह हुआ हो। अनिश्चित, सदेहयुक्त।

शकु—पु० नुकीली वस्तु। मेख, कील। खूंटी। भाला। गाँसी, फल। दस लक्ष कोटि की एक सख्या, शख। कामदेव। शिव। वह खूंटी जिसका व्यवहार प्राचीन काल मे सूर्य या दीपक की छाया आदि नापने मे होता था।

शख—पु० [स०] एक समुद्री घोघा जिसका कोष बहुत पवित्र समझा जाता है और देवताओ के आगे बाजे की भाँति बजाया जाता है, कबु। दस खर्व की एक सख्या। हाथी का गडस्थल। एक दैत्य, शखासुर। एक निधि। छप्पय का एक भेद। दडक वृत्त के अतर्गत प्रचित्त का एक भेद। वि० (व्यग्यात्मक) मूर्ख, ढपोरशख। ⊙चूड = पुं० एक राक्षस जो कृष्ण द्वारा मारा गया था। कुवेर के दूत और सखा का नाम। एक जहरीला साँप। ⊙द्राव = पुं० एक अर्क जिसमे शंख भी गल जाता है (वैद्यक)। ⊙धर = पु० विष्णु। श्रीकृष्ण। ⊙नारी = स्त्री० छह वर्णों का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो भगण होते है। ⊙पाणि = पु० विष्णु। ⊙विष = पु० दे० 'सखिया'। शखिनी—स्त्री० पद्मिनी आदि स्त्रियो के चार भेदो मे से एक भेद। एक प्रकार की वनौषधि, मुंह की नाडी।

शजरफ—पु० दे० 'ईंगुर'।

शठ—पु० [स०] नपूसक, हीजडा। मूर्ख।

शड—पु० [सं०] नपुसक, हीजडा। वह जिसके सतान न होती हो। साँड।

शपा—स्त्री० [सं०] विद्युत्, विजली। कमर, कटि।

शवर—पु० [स०] एक दैत्य जो इद्र के वाण से मारा गया था। प्राचीन काल का एक शस्त्र। युद्ध, लडाई। शंबरारि—पुं० शवर का शत्रु, कामदेव, मदन। प्रद्युम्न।

शबु—पु० [सं०] घोघा। छोटा शख। शबुक—पु० घोघा। शंबूक—पु० [सं०] वह तपस्वी शूद्र जिसे राम ने मारकर मृत ब्राह्मणपुत्र को जिलाया था। घोघा। शख।

शभु—पु० दे० 'स्वायभुव'। पु० [सं०] शिव, महादेव। ११ रुद्रो मे से एक। एक दैत्य का नाम। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से सगण, तगण, यगण, भगण, दो मगण और अत्य गुरु हो। ⊙गिरि = पु० कैलास। ⊙बीज = पु० पारा, पारद। ⊙भूषण = पु० चद्रमा। ⊙लोक = पु० कैलास।

शऊर—स्त्री० [अ०] काम करने की योग्यता, ढग। बुद्धि।

शक—पु० [स०] एक प्राचीन जाति। वह राजा या शासक जिसके नाम से कोई सवत् चले। राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत् जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् आरभ हुआ था। पु० [अ०] शका, सदेह।

शकट—पु० [स०] छकडा, बैलगाडी। बोझ। शकटासुर नामक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था। शरीर, देह। शकटासुर—पु० शकट नाम का दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था। शकटी—स्त्री० छोटी गाडी।

शकट—पु० मचान।

शकर—स्त्री० दे० 'शक्कर'। ⊙कंद = पु० [स०] एक प्रकार का कद, कदा।

शकरपारा—पु० [फा०] एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बडा होता है।

वर्फी समान चौकोर कटा हुआ एक मीठा या नमकीन पकवान। रुईदार कपड़े पर सकरपारे के आकार की चौकोर सिलाई।

शकल—स्त्री० मुख की बनावट, रूप। श मुख का भाव, चेष्टा। बनावट, ढाँचा। आकृति, स्वरूप। उपाय। पुं० [सं०] चमड़ा। छाल, अश, खड।

काब्द—पु० [स०] राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक संवत् (ईसवी सवत् मे से ७८, ७९ घटाने से शक सवत् निकल आता है)।

शकार—पु० [सं०] शकवंशीय व्यक्ति।

शकुंत—पु० [सं०] पक्षी, चिड़िया। विश्वामित्र के लडके का नाम।

शकुन—पु० [सं०] किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण जो उस काम के सबध मे शुभ या अशुभ माने जाते हैं। मुहूर्त या उसमे होनेवाला कार्य। चिड़िया। ⊙शास्त्र=पु० वह शास्त्र जिसमें शकुनो के शुभ और अशुभ फलो का विवेचन हो। मु०~विचारना या देखना=कोई कार्य करने से पहले लक्षण आदि देखकर यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नही।

शकुनि—पु० [सं०] कौरवो का मामा जो दुर्योधन का मत्री और कौरवो के नाश का मुख्य कारण था। पक्षी। एक दैत्य जो हिरण्याक्ष का पुत्र था।

शक्कर—स्त्री० चीनी। कच्ची चीनी, खाँड।

शक्की—वि० शक करनेवाला।

शक्त—पुं० [स०] शक्तिसपन्न, समर्थ।

शक्ति—स्त्री० [स०] वल, पराक्रम। वश, अधिकार। राज्य के वे साधन जिनसे शत्रुओ पर विजय प्राप्त की जाती है। शब्द का वह गुण जिससे अर्थ का वोध होता है। प्रकृति, माया। तत्र के अनुसार किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करनेवाले शाक्त कहे जाते हैं। दुर्गा, भगवती। गौरी। लक्ष्मी। एक प्रकार का शस्त्र, साँग। तलवार। ⊙धर=पु० कार्तिकेय। ⊙पूजक=पु० शाक्त, तांत्रिक, वाममार्गी। ⊙पूजा=स्त्री० शाक्तो द्वारा किया जानेवाला शक्ति का पूजन। ⊙मत्ता=स्त्री० शक्तिमान् होने का भाव, ताकत। ⊙मान्=वि० बलवान् ताकतवर। ⊙शाली=वि० बलवान्, ताकतवर। ⊙हीन=वि० निर्वल, असमर्थ। नामर्द। शक्ति—पु० १८ मात्राओ का एक मात्रिक छद जिसके आदि मे लघु और अत मे सगण, रगण या नगण होता है। इसकी पहली, छठी, ११वी और १६वी मात्राएँ सदा लघु होती हैं।

शक्तु—पु० [स०] सत्तू।

शक्य—वि० [स०] किया जाने योग्य, संभव, क्रियात्मक। जिसमे शक्ति हो। पु० शब्दशक्ति के द्वारा प्रकट होनेवाला अर्थ (व्या०)।

शक्र—पु० [स०] इद्र। रगण का चौथा भेद जिसमे छह मात्राएँ होती हैं। ⊙चाप=पु० इंद्रधनुष। ⊙प्रस्थ=पु० इद्रप्रस्थ।

शक्ल—स्त्री० [अ०] दे० 'शकल'।

शख्स—पु० [अ०] व्यक्ति, जन।

शगल—पु० [अ०] व्यापार, कामधधा। मनोविनोद।

शगुन—पु० दे० 'शकुन'। एक प्रकार की रस्म जो विवाह की बातचीत पक्की होने पर होती है, तिलक।

शगुनियाँ—पु० साधारण कोटि का ज्योतिषी।

शगूफा—पु० [फा०] विना खिला हुआ फूल, कली। पुष्प। नई और विलक्षण घटना।

शजरा—पु० [अ०] वशवृक्ष, कुर्सीनामा। पटवारी का तैयार किया हुआ खेतो का नक्शा।

शठ—वि० [स०] चालाक, धोखेबाज। पाजी, लुच्चा। मूर्ख। पु० साहित्य मे वह पति या नायक जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने मे चतुर हो।

शत—वि० [स०] दस का दस गुना, सौ। सौ की सख्या (१००)। ⊙क=पु०

[सं०] सौ का समूह। एक ही तरह की सौ चीजो का संग्रह। शताब्दी। ⊙घ्नी = स्त्री० प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र। ⊙दल = पु० पद्म। ⊙द्रु = स्त्री० सतलज नदी। ⊙धा = अव्य० सैंकडो वार। सैंकडो प्रकार से। सैंकडो टुकडो मे। ⊙पत्र = पु० कमल। सेवती, शतपत्री। मोर नामक पक्षी। ⊙पथ ब्राह्मण = पु० यजुर्वेद का एक ब्राह्मण, जिसके कर्ता महर्षि याज्ञवल्क्य माने जाते है। इसमे अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध तक कर्मकाड का विशद वर्णन है। ⊙पद = पु० कनखजूरा, गोजर। च्यूंटी। ⊙पुष्प = पु० साठी धान्य। ⊙भिषा = स्त्री० चौवीसवाँ नक्षत्र जो सौ तारो का समूह है और जिसकी आकृति मडलाकार है। ⊙मूला = स्त्री० वडी सतावर। वच। नीली दूव। ⊙शः = वि० सैंकडो। सौगुना। शताश—पुं० [सं०] सौ हिस्सो मे से एक, १००वाँ भाग। शतानद—पु० [सं०] ब्रह्मा। विष्णु। कृष्ण। गौतम मुनि। राजा जनक के एक पुरोहित। शतानीक—पु० [सं०] वृद्ध पुरुष। पुराणानुसार चद्रवश के द्वितीय राजा, इनके पिता जनमेजय और पुत्र सहस्रानीक थे। सौ सिपाहियो का नायक। शताब्द—वि० [सं०] सौ वर्षवाला। पु० सौ वर्ष, सदी। शताब्दी—स्त्री० सौ वर्षों का समय। किसी सवत् के सैंकडे के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय। शतायु—पुं० [सं० शतायुस्] जिसकी आयु सौ वर्षों की हो। शतायुध—पु० [सं०] वह जो सौ अस्त्र धारण करता हो। शतावधान—पुं० [सं०] वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सी बातें सुनकर याद रख सकता हो और बहुत से काम एक साथ कर सकता हो।

शतरंज—पुं० [फा०] एक प्रकार का खेल जो दो राजाओ के युद्ध की नकल पर ६४ खानों की बिसात पर खेला जाता है; इसके प्रत्येक पक्ष मे १६ मोहरे होते हैं। शतरजी—स्त्री० [फा०] वह दरी जो कई प्रकार के रगविरगे सूतो से बनी हो। शतरज खेलने की विसात। वह जो शतरज का अच्छा खिलाडी हो।

शतावर—स्त्री० सतावर नाम की ओषधि, सफेद मुसली।

शती—स्त्री० [स०] सौ का समूह, सैकडा (जैसे, दुर्गासप्तशती)। किसी सवत् या सन् का सैंकडे के अनुसार एक से सौ वर्षों तक का समय, शताब्दी।

शत्रु—पु० [स०] रिपु, दुश्मन। ⊙ता = स्त्री० शत्रु का भाव या धर्म, दुश्मनी, वैर भाव। ⊙ताई(पु) = स्त्री० [हिं०] दे० 'शत्रुता'। ⊙दमन = पु० दे० 'शत्रुघ्न'। ⊙साल = वि० [हिं०] शत्रु के हृदय मे शूल उत्पन्न करनेवाला।

शनाख्त—स्त्री० [फा०] पहचानने की क्रिया। जान पहचान।

शनि—पु० [स०] सौर जगत् का सातवाँ ग्रह। सूर्य से इसका अतर लगभग ९० करोड मील है और सूर्य की परिक्रमा मे इसको प्राय २९ वर्ष लगते है। दे० 'शनिवार'। दुर्भाग्य। ⊙वार = पु० रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद का वार।

शनिश्चर—पु० दे० 'शनि'।

शनैः—अव्य० [स०] धीरे, आहिस्ता। शनैश्चर—पुं० दे० 'शनि'।

शपथ—स्त्री० [स०] कसम, सौगध। कौल, वचन।

शफ्ताल—पु० [फा०] एक प्रकार का बडा आलू, सताल।

शबल—वि० [सं०] चितकबरा, बहुरगा। शबलित—वि० दे० 'शबल'।

शब्द—पु० [स०] ध्वनि, आवाज। वह सार्थक ध्वनि जिससे किसी पदार्थ या भाव आदि का बोध हो। ⊙ग्रह = वि० शब्द को ग्रहण करनेवाला। पुं० कान जिससे शब्द का ग्रहण होता है। एक प्रकार का काल्पनिक बाण। ⊙चित्र = पुं० अनुप्रास नामक अलकार। किसी विषय का विश्लिष्ट और सजीव वर्णन। ⊙प्रमाण = पुं० वह प्रमाण जो किसी के केवल कथन के

ही आधार पर हो। ⊙भेद=पु० व्याकरण के शब्द की कोटि। दे० 'शब्दवेध' ⊙भेदी=पु० दे० 'शब्दवेधी'। ⊙वेध=पुं० लक्ष्य के विना केवल शब्द से, दिशा का ज्ञान करके उसपर निशाना लगाना। ⊙वेधी = पुं० वह जो विना देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को वाण से मारता हो। इस प्रकार चलाया गया वाण या अन्य अस्त्र। अर्जुन। दशरथ। ⊙शक्ति=स्त्री० शब्द की वह तीन प्रकार की शक्ति जिसके द्वारा वह विभिन्न अर्थ व्यक्त करता है। ⊙शास्त्र=पु० व्याकरण। ⊙साधन =पु० व्याकरण का वह अंग जिसमे शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद और रूपांतर आदि का विवेचन होता है। शब्दाडंबर—पु० बडे बडे शब्दो का ऐसा प्रयोग जिसमे भाव की बहुत ही न्यूनता हो, शब्दजाल। शब्दातीत—वि० जो शब्द से परे हो (ईश्वर)। शब्दानुशासन—पुं० व्याकरण। शब्दालंकार—पु० वह अलंकार जिसमे केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से लालित्य उत्पन्न किया जाय, उसी अर्थ के दूसरे शब्द को रखने से वह बात जाती रहे (जैसे, अनुप्रास आदि)। शब्दित—वि० जिसमे शब्द होना हो। बोलना हुआ।

शम—पुं० [सं०] शांति। अंतःकरण तथा बाह्य इंद्रियो का निग्रह। मोक्ष। उपचार। साहित्य मे शांत रस का स्थायी भाव। क्षमा। ⊙लोक=पुं० स्वर्ग।

शमन—पु० [सं०] दमन। शांति। यज्ञ मे पशुओं का बलिदान। यम। हिंसा।

शमशेर—स्त्री० [फा०] तलवार।

शमा—स्त्री० मोमबत्ती। ⊙दान=पु० [फा०] वह आधार जिसमे मोम की वत्ती लगाकर जलाते हैं।

शमित—वि० [सं०] जिसका शमन किया गया हो। शांत, ठहरा हुआ।

शमी—स्त्री० [सं०] मजबूत लकडी का एक बडा वृक्ष। सफेद कीकर।

शयन—पुं० [सं०] निद्रा लेना, सोना। शय्या, बिछौना। ⊙आरती=स्त्री० [हिं०] देवताओं की वह आरती जो रात को सोने के समय होती है। ⊙गृह=पु० दे० 'शयनागार'। ⊙बोधिनी=स्त्री० अगहन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी। शयनागार—पुं० सोने का स्थान, शयनगृह। शयित—वि० सोया हुआ, निद्रित। शय्या पर लेटा हुआ।

शय्या—स्त्री० [सं०] बिस्तर, बिछौना। [illegible]ग, खाट। ⊙दान=पु० मृतक के [illegible]द्देश्य से संबंधियो का महापात्र और ब्राह्मण को चारपाई, बिछावन आदि दान देना।

शर—पुं० [सं०] वाण, तीर। सरकंडा। सरपत। दूध या दही की मलाई। भाले का फल। चिता। पाँच की संख्या। एक असुर का नाम। ⊙ता=स्त्री० शर का भाव। तीरदाजी। ⊙पट्टा=पुं० [हिं०] एक प्रकार का शस्त्र। ⊙पुंख= सरफोका। तीर मे लगा हुआ पंख।

शरण—स्त्री० [सं०] आश्रय। बचाव की जगह। रक्षा, आड। घर, मकान। मातहत। ⊙द=वि० शरण देनेवाला, रक्षा करनेवाल। शरणागत—पु० शरण मे आया हुआ व्यक्ति। शिष्य, चेला। शरणार्थी—पु० शरण माँगनेवाला, अपनी रक्षा की प्रार्थना करनेवाला। विपत्ति आदि के कारण किसी दूसरे स्थान से भागकर आया हुआ। शरण्य—शरण मे आए हुए की रक्षा करनेवाला।

शरत—स्त्री० दे० 'शर्त' और 'शरत्'।

शरतिया—क्रि० वि० दे० 'शर्तिया'।

शरत्—स्त्री० [सं०] एक जो आश्विन और कार्तिक मास मे मानी जाती है। वर्ष, साल।

शरद—स्त्री० दे० 'शरत्। ⊙पूर्णिमा=स्त्री० कुआर मास की पूर्णमासी, शरदपूनो। ⊙चंद्र=पु० शरद ऋतु का चंद्रमा।

शरबत—पु० [अ०] पीने की वस्तु, रस। पानी मे घोली हुई शक्कर या खाँड़। चीनी आदि मे पका हुआ किसी, औषधि का अर्क।

शरबती—पु० एक प्रकार का हल्का पीला रंग। एक प्रकार का नीबू। एक प्रकार

का नगीना। एक प्रकार का बढिया कपडा।

शरभ—पु० [सं०] टिड्डी। हाथी का बच्चा। राम की सेना का एक बदर। ऊँट। एक प्रकार का हिरण। एक प्रकार का पक्षी। विष्णु। शेर। एक वृत्त का नाम। शशिकला। दोहे का एक भेद।

शरम—स्त्री० लज्जा। लिहाज, सकोच। प्रतिष्ठा। मु०~से गड़ना या पानी पानी होना = बहुत लज्जित होना। **शरमाऊ**—वि० दे० 'शरमीला'। **शरमाना**—अक० शर्मिंदा होना। सक० शर्मिंदा करना। **शरमीला** = वि० जिसे जल्दी शरम या लज्जा आए, लज्जालु।

शर्मिंदगी—स्त्री० [फा०] शर्मिंदा होने का भाव, लाज। **शर्मिंदा**—वि० लज्जित।

शराकत—स्त्री० [फा०] शरीक या समिलित होने का भाव। साझा, हिस्सेदारी।

शराफत—स्त्री० [अ०] शरीफ होने का भाव, सुज्जनता।

शराब—स्त्री० [अ०] मदिरा, मद्य। ⊙खाना = पु० [फा०] वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो। ⊙खोर = पु० [फा०] दे० 'शराबी' ⊙खोरी = स्त्री० [फा०] मदिरापान।

शराबी—पु० वह जो शराब पीता हो, मद्यप।

शराबोर—वि० [फा०] जल आदि से बिलकुल भीगा हुआ, तरबतर।

शरारत—स्त्री० [अ०] पाजीपन, दुष्टता।

शराश्रय—पु० [स०] तरकश।

शरासन—पुं० [स०] धनुष, कमान।

शरीअत—स्त्री० [अ०] मुसलमानो का धर्मशास्त्र।

शरीक—वि० [अ०] शामिल। पु० साथी, साझी, हिस्सेदार, सहायक।

शरीफ—पु० [अ०] कुलीन मनुष्य। सभ्य पुरुष, भला मनुष्य। वि० पवित्र।

शरीफा—पु० मझोले आकार का एक प्रकार का फलदार वृक्ष। इस वृक्ष का खाकी रंग का फल जो गोला होता है, सीताफल।

शरीर—वि० [अ०] दुष्ट, नटखट। पु० [सं०] देह, काया। ⊙त्याग = पु० मृत्यु, मौत। ⊙पात = पु० मृत्यु, मौत। ⊙रक्षक = पु० वह जो राजा की रक्षा के लिए रहता हो, अगरक्षक। ⊙शास्त्र = पुं० वह शास्त्र जिससे यह जाना जाता है कि शरीर का कौन सा अंग कैसा है और क्या काम करता है, शरीरविज्ञान। **शरीरांत**—पुं० मृत्यु, मौत। **शरीरी**—पु० शरीरवाला। आत्मा, जीव। प्राणी, जीवधारी।

शर्करा—स्त्री० [सं०] शक्कर, चीनी, खाँड। बालू का कण।

शर्करी—स्त्री० [सं०] १४ अक्षरो की एक वृत्ति।

शर्त—स्त्री० [अ०] वह बाजी जिसमे हार-जीत के अनुसार कुछ लेन देन भी हो, दावँ, बदान किसी कार्य की सिद्धि के लिए आवश्यक या अपेक्षित नियम का कार्य। **शर्तिया**—क्रि० वि० शर्त बदकर, बहुत ही निश्चय या दृढतापूर्वक। वि० बिलकुल ठीक, निश्चित।

शर्म—स्त्री० दे० 'शरम'। पुं० [सं०] सुख, आनद। आशीर्वाद। आश्रय। घर। ⊙द = वि० आनंद देनेवाला सुखदायक।

शर्मा—[सं०] ब्राह्मणो की उपाधि।

शर्मिष्ठा—स्त्री० [सं०] दैत्यो के राजा वृषपर्वा की कन्या जो देवयानी की सखी थी।

शर्वरी—स्त्री०—[सं०] रात, सध्या, स्त्री।

शल—पुं० [सं०] कंस के एक मल्ल का नाम ब्रह्मा। भाला।

शलगम—पुं० दे० शलजम'।

शलजम—पुं० [फा०] गाजर की तरह का एक कद।

शलभ—पुं० [सं०] पतग, फतिगा। टिड्डी। छप्पय के ३१वें भेद का नाम।

शलाका—स्त्री० [सं०] लोहे आदि की लबी सलाई, सलाख। बाण, तीर। जुआ खेलने का पासा।

शलाख—स्त्री० दे० 'सलाख'।

शलातुर—पुं० [सं०] एक प्राचीन जनपद जो पाणिनि का निवासस्थान था।

शलूका—पुं० [फा०] आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती।

शल्य—पुं० [सं०] शरीर मे चुभनेवाला पदार्थ। भाला। बाण। शलाका। साँग। दुर्वाक्य। मद्र देश के राजा जो द्रौपदी के स्वयंवर के समय मल्लयुद्ध मे भीमसेन से हार गए थे। छप्पय के ५६वें भेद का नाम। ⊙क्रिया = स्त्री० चीरफाड का इलाज, शस्त्रचिकित्सा।

शल्यकी—स्त्री० साही (जतु)।

शल्ल—वि० [अ०] शिथिल, सुन्न (हाथ पैर)।

शल्लकी—स्त्री० [सं०] साही नामक जतु। सलई का वृक्ष।

शल्व—पुं० दे० 'साल्व'।

शव—पुं० [सं०] मृत शरीर, लाश। ⊙दाह = पुं० मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया। ⊙भस्म = पुं० चिता की भस्म।

शवरी—स्त्री० [सं०] शवर जाति की श्रमण नाम की एक तपस्विनी। शवर जाति की स्त्री।

शवल—वि० दे० 'शबल'।

शश—पुं० [सं०] खरगोश। चद्रमा का लाछन या कलक। कामशास्त्र मे मनुष्य के चार भेदो मे से एक। ⊙धर = पुं० चद्रमा। ⊙शृंग = पुं० वैसा ही असभव कार्य जैसा खरगोश को सीग होना होता है। **शशक**—पुं० खरगोश। **शशाक**—पुं० चद्रमा।

शशा—पुं० दे० 'शश'।

शशि—पुं० [सं० समास मे 'शशिन्' के लिये] चद्रमा। इद्र। छप्पय के ५४वें भेद का नाम। रगण के दूसरे भेद (ऽIऽ) की सज्ञा। छह की सख्या। ⊙कला = स्त्री० चद्रमा की कला। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण के बाद एक सगण होता है। ⊙कांत = पुं० चद्रकात मणि। कोईं, कुमुद। ⊙कुल = पुं० चंद्रवश। ⊙ज = पुं० बुध ग्रह। ⊙धर पुं० शिव। ⊙प्रभा = स्त्री० ज्योत्स्ना, चाँदनी। ⊙भाल = पुं० शिव, महादेव। ⊙भूषण = पुं० शिव। ⊙मंडल = पुं० चद्रमा का घेरा या मडल, चद्रमडल। ⊙मुख = वि० (वह) जिसका मुख चद्रमा के सदृश सुदर हो। ⊙वदना = स्त्री० एक नगण और एक ही सगण कुल छह वर्णों का एक वृत्त। वि० स्त्री० शशिमुखी। ⊙शाला = स्त्री० वह घर जिसमे बहुत से शीशे लगे हुए हो, शीश-महल। ⊙शेखर = शिव, महादेव। ⊙हीरा = पुं० [हिं०] चद्रकात मणि।

शशी—पुं० दे० 'शशि'।

शसाⓅ—पुं० खरगोश, खरहा

शसि, शसीⓅ—पुं० दे० 'शशि'।

शस्त्र—पुं० [सं०] हाथ से पकडकर प्रयोग किए जानेवाले वे उपकरण जिनसे किसी को काटा या मारा जाय, हथियार। कार्यसिद्धि का अच्छा उपाय। ⊙क्रिया = स्त्री० फोडो आदि की चीरफाड, नश्तर लगाने की क्रिया। ⊙जीवी = पुं० योद्धा, सैनिक। ⊙धारी = वि० शस्त्र धारण करनेवाला, हथियारबद। ⊙विद्या = स्त्री० हथियार चलाने की विद्या। यजुर्वेद, जिसमे युद्ध करने की और शस्त्र चलाने की विधियाँ हैं। **शस्त्रागार**—पुं० शस्त्रो के रखने का स्थान, शस्त्रशाला। **शस्त्रीकरण**—पुं० सेना या राष्ट्र को शस्त्रो आदि से सज्जित करना।

शस्य—पुं० [सं०] नई घास। खेती, फसल। वृक्षों का फल। अन्न।

शहंशाह—पुं० [फा०] दे० शाहशाह'।

शह—पुं० [फा०] बादशाह। वर, दूल्हा। वि० बढा चढा, श्रेष्ठतर। स्त्री० शतरज के खेल मे कोई मुहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात मे पडता हो, किस्त। गुप्त रूप से किसी को भडकाने या उभारने की क्रिया या भाव। ⊙जादा = पुं० दे० 'शाहजादा। ⊙जोर = वि० बली, बलवान्। ⊙तूत = पुं० दे० 'तूत'। ⊙बाला = पुं० वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ

जाता है। ⊙मात = स्त्री० शतरंज के खेल मे एक प्रकार की मात।

शहत—पु० दे० 'शहद'।

शहतीर—पु० लकडी का बहुत बडा और लबा लट्ठा।

शहद—पु० [अ०] शीरे की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा, तरल पदार्थ जो मधुमक्खियाँ फूलो के मकरद से सग्रह करके अपने छत्तो मे रखती है। मु० ~लगाकर चाटना = किसी निरर्थक पदार्थ को व्यर्थ लिए रहना। (व्यग्य)।

शहना—पु० शासक। कोतवाल। कर सग्रह करनेवाला।

शहनाई—स्त्री० [फा०] नफीरी नामक बाजा। दे० 'रोशनचौकी'।

शहर—पु० [फा०] मनुष्यो की बडी बस्ती, नगर। ⊙पनाह = स्त्री० शहर की चारदीवारी, प्राचीर। शहरी—वि० शहर का। नगरनिवासी, नागरिक।

शहसवार—पु० [फा०] वह जो घोडे पर अच्छी तरह सवारी कर सकता हो, अच्छा सवार।

शहादत—स्त्री० [अ०] गवाही। सबूत। शहीद होना।

शहाना—पु० सपूर्ण जाति का एक राग। वि० [फा०] शाही, राजसी। बहुत बढिया।

शहिजाद(पु)—पु० दे० 'शाहजादा'।

शहीद—पु० [अ०] धर्म या किसी शुभ कार्य के लिये बलिदान होनेवाला व्यक्ति।

शाकर—वि० [स०] शकर सबधी। शकराचार्य का (जैसे, शाकर भाष्य, शाकर मत)। पु० एक छद का नाम।

शात—वि० [सं०] जिसमे वेग, क्षोभ या क्रिया न हो। मौन, चुप। जिसमें क्रोध आदि न रह गया हो, स्थिर। धीर, गभीर। उत्साह या तत्परतारहित। स्वस्थ चित्त। रागादिशून्य, जितद्रिय। विघ्न बाधा-रहित। नष्ट। मरा हुआ। पुं० काव्य के नौ रसो मे से एक जिसका स्थायी भाव निर्वेद है। इस रस में ससार की दुखपूर्णता, असारता आदि का ज्ञान अथवा परमात्मा का स्वरूप आलबन होता है। शाति—स्त्री० वेग, क्षोभ, क्रिया का अभाव। स्तब्धता, सन्नाटा। चित्त का ठिकाने होना, स्वस्थता। रोग आदि का दूर होना। धीरता। अमगल दूर करने का उपचार। वासनाओ से छुटकारा। दुर्गा। मृत्यु। ⊙कर्म = पु० बुरे ग्रह आदि से होनेवाले अमगल के निवारण का उपचार।

शाभव—वि० [सं०] शभु सबधी, शिव का। शाँभवी—स्त्री० [सं०] दुर्गा। नीली दूब।

शाइस्तगी—स्त्री० [फा०] शिष्टता, सभ्यता। भलमनसी। शाइस्ता—वि० शिष्ट, सभ्य। विनीत।

शाकभरी—स्त्री० [स०] शिवा, दुर्गा।

शाक—पु० [स०] भाजी, तरकारी। वि० शक जाति सबधी। ⊙द्वीप = पु० पुराणानुसार पृथ्वी के सात बडे विभागो या द्वीपो मे से एक। ईरान और तुर्किस्तान के बीच मे पडनेवाला वह प्रदेश जिसमे आर्य और शक बसते थे। ⊙द्वीपीय = वि० शाकद्वीप का। पु० ब्राह्मणो का एक भेद मग ब्राह्मण।

शाकल—पु० [सं०] खड, टुकडा। ऋग्वेद की एक शाखा या सहिता। मद्र देश का एक नगर।

शाकाहार—पु० [सं०] शाक आदि का भोजन। निरामिष भोजन।

शाकिनी—स्त्री० [स०] डाइन, चुडैल।

शाकुतिक—पु० [सं०] चिडीमार, बहेलिया।

शाकुन—वि० [स०] पक्षी सबधी। शुभाशुभ लक्षण सबधी। सगुनवाला। पु० बहेलिया। शकुन, सगुन।

शाक्त—वि० [सं०] शक्ति सबधी। पु० शक्ति का उपासक, तत्र पद्धति से देवी की पूजा करनेवाला।

शाक्य—पु० [स०] एक क्षत्रिय जाति जो नेपाल की तराई मे बसती थी। ⊙मुनि, ⊙सिंह = पु० गौतम बुद्ध।

शाख—स्त्री० [फा०] टहनी, डाल। लगा

हुआ टुकडा, फाँक। दे० 'शाखा'। मु० ~निकालना = दोष निकालना।

शाखा—स्त्री० [सं०] टहनी, डाल। हिस्सा। किसी मूल वस्तु से निकले हुए विकार या अंग, प्रकार। वेद की संहिताओं के पाठ और क्रमभेद। अंग, अवयव। हाथ और पैर। ⊙मृग = पुं० वानर, बंदर। शाखी—वि० शाखाओंवाला। पुं० वृक्ष। शाखोच्चार—पुं० विवाह के समय वंशावली का कथन।

शागिर्द—पुं० [फा०] किसी से विद्या प्राप्त करनेवाला, शिष्य।

शाठ्य—पुं० [सं०] शठता, दुष्टता।

शाण—पुं० [सं०] सान रखने का पत्थर। पत्थर। कसौटी।

शातिर—पुं० [अ०] शतरंज का खिलाडी। धूर्त, चालाक।

शादियाना—पुं० [फा०] आनंद और मंगल-सूचक बाद्य। बधाई।

शादी—स्त्री० [फा०] खुशी, आनंद। आनंदोत्सव। विवाह।

शाद्वल—वि० [सं०] हरी घास से ढका हुआ, हरा भरा। पुं० हरी घास, दूब। बेंत। रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती।

शान—स्त्री० [अ०] तडक भड़क, सजावट। ठसक। भव्यता, विशालता। शक्ति, करामात। प्रतिष्ठा। ⊙शौकत = स्त्री० तडक भडक, ठाटबाट। मु०—किसी की ~में = किसी बडे के संबंध में।

शाप—पुं० [सं०] अहित कामनासूचक शब्द, कोसना। धिक्कार, फटकार। ⊙ना(पु) = सक० शाप देना। शापित —वि० जिसे शाप दिया गया हो।

शाबर भाष्य—पुं० [सं०] मीमांसा सूत्रपर एक प्रसिद्ध भाष्य या व्यवस्था।

शाबरी—स्त्री० [सं०] शबरों की भाषा, एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

शाबाश—अव्य० [फा०] एक प्रशंसासूचक शब्द। वाह वाह, धन्य हो।

शाब्द—वि० (सं०) शब्द संबंधी, शब्द का। शब्द विशेष पर निर्भर। शाब्दिक—वि० [सं०] शब्द संबंधी। भाव पर निर्भर न रहकर केवल शब्द पर निर्भर रहनेवाला। शाब्दी—स्त्री० शब्द संबंधिनी केवल शब्द विशेष पर निर्भर रहनेवाली। ⊙व्यंजना = स्त्री० वह व्यंजना जो शब्द विशेष के प्रयोग पर ही निर्भर हो, अर्थात् उसका पर्यायवाची शब्द रखने पर न रह जाय, आर्थी व्यंजना का उलटा।

शाम(पु)—वि०, पुं० दे० 'श्याम'। एक प्राचीन देश जो अरब के उत्तर में है, सीरिया। स्त्री० दे० 'शामी'। स्त्री० [फा०] साँझ, संध्या।

शामकर्ण—पुं० घोडा जिसके कान श्याम रंग के हों।

शामत—स्त्री० [अ०] विपत्ति। दुर्दशा। मु०~का घेरा या मारा = जिसकी दुर्दशा का समय आया हुआ हो।~सवार होना या~सिर पर खेलना = दुर्दशा का समय आना।

शामियाना—पुं० [फा०] एक प्रकार का बडा तंबू

शामिल—वि० [फा०] जो साथ में हो, सम्मिलित।

शामीश—स्त्री० धातु का वह छल्ला जो लकडियों या औजारों के दस्ते के सिरे पर उसकी रक्षा के लिये लगाया जाता है, शाम। वि० शाम देश का।

शायक—पुं० [सं०] बाण, तीर। खड्ग, तलवार। पुं० [अ०] शौकीन। इच्छुक।

शायद—अव्य० [फा०] कदाचित्, संभव है।

शायर—पुं० [अ०] कवि। शायरी—स्त्री० कविताएँ रचना। काव्य।

शायित—वि० [सं०] सुलाया या लेटाया हुआ। गिरा हुआ, पतित। शायी—वि० सोनेवाला।

शारंग—पुं०[सं०] दे०'सारंग'। ⊙पाणि = पुं० विष्णु। कृष्ण। राम।

शारद—वि० [सं०] शरत्काल का या शरत् संबंधी। शारदा—स्त्री० [सं०] सरस्वती। दुर्गा। प्राचीन काल की एक लिपि। शारदीय—शरत्काल का, शरत्काल संबंधी। ⊙महापूजा = स्त्री० शरत्काल में होनेवाली नवरात्र की दुर्गापूजा।

शारिका—स्त्री० [सं०] मैना (चिड़िया)।

शारिवा—स्त्री० [सं०] अनंतमूल, सालसा। जवासा, धमासा।

शारीर—वि० [सं०] शरीर संबंधी। ⊙विज्ञान (शास्त्र) = पु० वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीव किस प्रकार उत्पन्न होते हैं। दे० 'शरीरशास्त्र'।

शारीरक भाष्य—पुं० [सं०] शंकराचार्य का किया हुआ वेदांतसूत्र का भाष्य। शारीरक सूत्र—पुं० [सं०] वेदव्यास का बनाया वेदांतसूत्र।

शारीरिक—वि० [सं०] शरीर संबंधी।

शार्ङ्ग—पुं० [सं०] धनुष, कमान। विष्णु के हाथ में रहनेवाला धनुष। ⊙धर, पाणि = पुं० विष्णु। श्रीकृष्ण।

शार्दूल—पुं० [सं०] चीता, बाघ। सिंह। राक्षस। शरभ नामक जंतु। एक प्रकार का पक्षी। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, रगण और सगण होते हैं। वि० सर्वश्रेष्ठ। ⊙ललित = पुं० १८ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, और सगण, होते हैं। ⊙विक्रीड़ित = पु० १९ अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से मगण, सगण, जगण, दो तगण और अंत्य गुरु रहता है।

शाल—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर, दुशाला। पु० [सं०] एक प्रकार का बहुत बड़ा वृक्ष, साखू। ⊙पर्णी = स्त्री० दे० 'सरिवन'।

शालग्राम—पु० [सं०] विष्णु की एक प्रकार की काले पत्थर की मूर्ति।

शाला—स्त्री० [सं०] घर, मकान। जगह, स्थान (जैसे, पाठशाला)। इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बननेवाल एक वृत्त।

शालि—पुं० [सं०] धान। जड़हन धान बासमती चावल। गन्ना।

शालिधान—पुं० बासमती चावल।

शालिनी—स्त्री० [सं०] एक मगण, दो तग और दो अंत्य गुरु कुल ११ अक्षरों क एक वृत्त।

शालिहोत्र—पुं० [सं०] घोड़ा। घोड़ों अं पशुओं आदि की चिकित्सा का शास्त्र शालिहोत्री—पु० वह जो पशुअ विशेषत घोड़ों आदि की चिकित करता हो।

शालीन—वि० [सं०] विनीत, नम्र। जि लज्जा आती हो। समान, तुल्य। अ आचार विचारवाला। धनवान्। दक्ष

शाल्मलि—पुं० [सं०] सेमल का पेड़ पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। ए नरक।

शाल्व—पुं० [सं०] सौभ राज्य के एक रा श्रीकृष्ण द्वारा मारे गए थे। ए प्राचीन देश का नाम।

शावक—पुं० [सं०] बच्चा (विशेषत. प या पक्षी का)।

शाश्वत—वि० [सं०] जो कभी नष्ट हो, नित्य। शाश्वतिक—वि० शाश्व नित्य।

शासक—पुं० [सं०] वह जो शास करता हो। हाकिम। शासन—प् आज्ञा। अधिकार या वश में रख हुकूमत। प्रतिज्ञा, पट्टा। राजा दान की हुई भूमि, मुआफी। वह प वाना या फरमान जिसके द्वारा कि व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाय शास्त्र। इंद्रियनिग्रह। दंड, सजा

शासनिक—वि० शासन संबंधी, शास का। शासन विभाग का। शासित—वि० जिसका शासन किया जा जिसपर शासन हो। जिसे दंड दि जाय।

शास्ता—पु० [सं०] शासक, राजा, पिता उपाध्याय, गुरु।

शास्ति—स्त्री० [सं०] शासन। दंड, सजा

शास्त्र—पुं० [सं०] वे धार्मिक ग्रंथ जो लोगों के हित और अनुशासन के लिये बनाए गए हैं। इनकी संख्या १८ कही गई है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अथर्ववेद; मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद और अर्थशास्त्र। किसी विशिष्ट विषय के संबंध का वह समस्त ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह करके रखा गया हो। ⊙कार=पुं० वह जिसने शास्त्र की रचना की हो, शास्त्र बनानेवाला। ⊙ज्ञ=पुं० शास्त्र का वेत्ता। शास्त्री—पुं० शास्त्रज्ञ। वह जो धर्मशास्त्र का ज्ञाता हो। शास्त्रीकरण—पुं० [सं०] किसी विषय को शास्त्र का रूप देना। शास्त्रीय—वि० शास्त्र संबंधी। शास्त्रों के सिद्धांतों के अनुसार।

शाहंशाह—पुं० [फा०] बादशाहों का बादशाह, महाराजाधिराज।

शाहंशाही—स्त्री० [फा०] शाहंशाह का कार्य या भाव। व्यवहार का खरापन (बोलचाल)।

शाह—पुं० [फा०] महाराज, बादशाह। मुसलमान फकीरों की उपाधि। वि० बड़ा, महान्। ⊙खर्च=वि० बहुत खर्च करनेवाला। ⊙जादा=पुं० बादशाह का लड़का। शाहाना—वि० राजसी। पुं० विवाह का जोड़ा जो दूल्हे को पहनाया जाता है, जामा। दे० 'शहाना'

शाही—वि० शाहों या बादशाहों का।

शिंगरफ—पुं० दे० 'ईंगुर'।

शिंजन—पुं० [सं०] मधुर ध्वनि। आभूषणों की झंकार। वि० मधुर ध्वनि करनेवाला। शिंजिनी—स्त्री० नूपुर, पैंजनी। धनुष की डोरी। अंगूठी।

शिंबी—स्त्री० [सं०] छीमी, फली। सेम। केवाँच। शिंबी धान्य—पुं० द्विदल अन्न, दाल।

शिंशपा—स्त्री० [सं०] शीशम का पेड़। अशोक वृक्ष। शिंशुपा(पु)—स्त्री० दे० 'शिंशपा'।

शिंशुमार—पुं० [सं०] सूँस (जलजंतु)।

शिकंजा—पुं० [फा०] दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र। एक यंत्र जिससे जिल्दबंद किताबें दबाते उसके पन्ने काटते हैं। अपराधियों को कठोर दंड देने के लिये एक प्राचीन यंत्र जिसमें उनकी टाँगें कस दी जाती थीं। पकड़, कब्जा। मु०—शिकंजे में आना=कब्जे में आना। शिकंजे में खिंचवाना=घोर यंत्रणा दिलाना।

शिकन—स्त्री० [फा०] बल, सिकुड़न।

शिकम—पुं० [फा०] पेट, उदर।

शिकमी काश्तकार—पुं० [फा०] वह काश्तकार जिसे जोतने के लिये खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।

शिकरम—स्त्री० एक प्रकार की गाड़ी।

शिकवा—पुं० [फा०] शिकायत, गिला।

शिकस्त—स्त्री० [फा०] पराजय, हार।

शिकायत—स्त्री० [अ०] बुराई करना, गिला, चुगली। उलहना। रोग।

शिकार—पुं० [फा०] जंगली पशुओं को मारना, आखेट। वह जानवर जो मारा गया हो। मांस। आहार। कोई ऐसा आदमी जिसके फँसने से बहुत लाभ हो। ⊙गाह=स्त्री० शिकार खेलने का स्थान। मु०—किसी का~होना=किसी के द्वारा मारा जाना। वश में आना, फँसना। ~खेलना=शिकार करना। शिकारी—वि० शिकार करनेवाला। शिकार में काम आनेवाला।

शिक्षक—पुं० [सं०] शिक्षा देनेवाला, गुरु, अध्यापक। शिक्षण—पुं० तालीम, शिक्षा। शिक्षणालय—पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ किसी प्रकार की शिक्षा दी जाय, विद्यालय।

शिक्षा—स्त्री० [सं०] सीख, तालीम। गुरु के निकट विद्या का अभ्यास। उपदेश, सलाह। छह वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण है। शासन, दबाव। सबक, दंड। ⊙गुरु=विद्या पढ़ानेवाला गुरु। शिक्षाक्षेप—पुं० एक प्रकार का अलंकार जिसमें शिक्षा द्वारा गमनस्व-

रूप कार्य रोका जाता है (केशव)। शिक्षार्थी--पु० विद्यार्थी। शिक्षालय--पु० विद्यालय।

शिक्षित--वि०, पु० [सं०] जिसने शिक्षा पाई हो। सिखाया हुआ (पशु)। विद्वान्।

शिखड--पुं० [स०] मोर की पूंछ। चोटी, शिखा। काकुल। शिखडिका--स्त्री० चोटी। शिखडिनी--स्त्री० मोरिनी, मयूरी। द्रुपदराज की एक कन्या जो पीछे पुरुष के रूप मे होकर कुरुक्षेत्र के युद्ध मे लडी थी। शिखडी--पुं० मोर पक्षी। मुर्गा। बाण। विष्णु। कृष्ण। शिव। शिखा, बालकों की चोटी। द्रुपदराज की एक कन्या शिखडिनी।

शिख(पु)--स्त्री० दे० 'शिखा'।

शिखर--पु० [स०] सिरा, चोटी। पहाड़ की चोटी। मकान के ऊपर का निकला हुआ नुकीला सिरा, कगूरा। मडप, गुबद। जैनियो का एक तीर्थ। एक अस्त्र का नाम। एक रत्न जो अनार के रत्नो के समान सफेद और लाल होता है। शिखरन--स्त्री० [हिं०] दही और चीनी का बनाया हुआ शरबत।

शिखरिणी--स्त्री० रसाल। स्त्रियो मे श्रेष्ठ। रोमावली। दही और चीनी का रस, शिखरन। १७ अक्षरो का एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से यगण, मगण, नगण, सगण और अत मे लघु गुरु होता है।

शिखरी--स्त्री० एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचद्र को दी थी।

शिखा--स्त्री० [सं०] चोटी, चुटैया। पक्षियो के सिर पर उठी हुई चोटी, कलँगी। आग की लपट, ज्वाला। दीपक की लौ। प्रकाश की किरण। नुकीला छोर या सिरा, नोक। चोटी, शिखर। शाखा, डाली। एक विषम वृत्त जिसके विषम चरणो मे २८ और सम मे ३० लघु गुरु होते है।

शिखि--पु० [सं०] मोर, मयूर। कामदेव। अग्नि। तीन की सख्या। ⊙ध्वज=पु० धुआं। कार्तिकेय। मयूरध्वज।

शिखी--वि० [सं०] शिखावाला, चोटी-वाला। पु० मोर। मुर्गा। बैल, सांड। घोडा। अग्नि। तीन की सख्या। पुच्छल तारा, केतु। वाण।

शिगूफा--पु० दे० 'शगूफा'।

शिगोफा--पुं० दे० 'शगूफा'।

शित(पु)--वि० दे० 'सित'।

शिताब--क्रि० वि० [फा०] जल्द, शीघ्र। शिताबी--स्त्री० शीघ्रता, जल्दी। तेजी, हडबडी।

शिति--वि० [स०] सफेद, श्वेत। काला, कृष्ण। ⊙कंठ--पु० मुर्गाबी, जलकाक। पपीहा, चातक। मोर, मयूर। महादेव।

शिथिल--वि० [सं०] जो कसा या जकडा न हो, ढीला। सुस्त। थका हुआ। जो पूरा मुस्तैद न हो, आलस्ययुक्त। जिसकी पूरी पाबदी न हो। शिथिलाना(पु)--अक० शिथिल होना, ढीला पडना। थकजाना। शिथिलित--वि० [स०] जो शिथिल हो गया हो। थका मांदा, सुस्त।

शिद्दत--स्त्री० [अ०] तेजी, उग्रता। अधिकतर।

शिनाख्त--स्त्री० [फा०] यह निश्चय कि अमुक वस्तु या व्यक्ति यही है, पहचान। परख।

शिया--पुं० [अ० शीया] मुहम्मद साहब के दामाद हजरत अली को पैगबर का उत्तराधिकारी माननेवाला एक मुसल-मान सप्रदाय।

शिर--पुं० सिर, खोपडी। माथा। सिरा, चोटी। शिखर। ⊙फूल=पुं० दे० 'सीसफूल'। ⊙मौर=पु० शिरोभूषण, मुकुट। प्रधान, श्रेष्ठ या मुख्य व्यक्ति।

शिरकत--स्त्री० [अ०] समिलित अधिकार, साझा। किसी काम या व्यवसाय मे शामिल होना।

शिरनेत--पुं० गढवाल या श्रीनगर के आस-पास का प्रदेश। क्षत्रियो की एक शाखा।

शिरस्त्राण--पुं० [सं०] युद्ध मे पहनी जाने-वाली लोहे की टोपी।

शिरहन(पु)†--पुं० तकिया, सिरहाना।

शिरा—स्त्री० [सं०] रक्त की छोटी नाड़ी। पानी का सोता या धारा।
शिरीष—पु० [सं०] सिरस (पेड)।
शिरो—पुं० [सं० समास मे 'शिरस्'] के लिये। दे० 'शिर'। ⊙धार्य = वि० सिर पर धरने या आदरपूर्वक मानने के योग्य। ⊙भूषण = पु० सिर पर पहनने का गहना। मुकुट। श्रेष्ठ व्यक्ति। ⊙मणि = पुं० सिर पर का रत्न, चूडामणि। श्रेष्ठ व्यक्ति। ⊙रुह = पु० सिर के बाल।
शिल—पु० दे० 'उछ'। स्त्री० दे० 'शिला'।
शिला—स्त्री० [सं०] पत्थर। पत्थर का बडा चौड़ा टुकडा, चट्टान। शिलाजीत। पत्थर की ककडी अथवा वटिया। उछवृत्ति। ⊙जतु = पुं० शिलाजीत। ⊙न्यास = पुं० भवन आदि की नीव का पत्थर रखना। सिर के बाल। ⊙पट्ट = पु० पत्थर की चट्टान। ⊙रस = पु० लोहवान की तरह का एक प्रकार का सुगधित गोद। ⊙लेख = पु० पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ प्राचीन लेख। ⊙वृष्टि = स्त्री० ओले की वर्षा। ⊙हरि = पु० शालिग्राम की मूर्ति।
शिलाजीत—पु०, स्त्री० काले रग की एक पौष्टिक ओषधि जो शिलाओ का रस है, मोमियाई।
शिलीपद—पुं० दे० 'श्लीपद'।
शिलीमुख—पु० [सं०] भ्रमर, भौरा। वाण।
शिल्प—पु० [सं०] हाथ से कोई चीज वना कर तैयार करने का काम, दस्तकारी। कला सवधी, व्यवसाय। ⊙कला = स्त्री० हाथ से चीजे वनाने की कला, दस्तकारी। ⊙कार = पुं० शिल्पी, कारीगर। राज, मेमार। ⊙विद्या = स्त्री० दे० 'शिल्पकला'। ⊙शास्त्र = पुं० शिल्प सवंधी शास्त्र। गृह निर्माण का शास्त्र। शिल्पी—पु० शिल्पकार, कारीगर। राज, थवई।
शिव—पु० [सं०] महादेव, उमापति। परमेश्वर। देव। रुद्र; काल। लिग। मंगल, क्षेम। वसु। मोक्ष। वेद। ११ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे सगण, रगण या नगण रहता है तथा तीसरी छठी और नवी मात्राएँ सदा लघु रहती है। जल। पारा। ⊙ता = स्त्री० शिव का भाव या धर्म। मोक्ष। ⊙निर्माल्य = पु० वह पदार्थ जो शिव जी को अर्पित किया गया हो (ऐसी चीजों के ग्रहण करने का निषेध है)। परम त्याज्य वस्तु। ⊙पुराण = पु० १८ पुराणो मे से एक, जिसमे शिव का माहात्म्य वर्णित है। ⊙पुरी = स्त्री० काशी। ⊙रात्रि = स्त्री० फाल्गुन वदी चतुर्दशी, शिवचतुर्दशी। ⊙लिंग = पुं० महादेव का लिग या पिडी जिसका पूजन होता है। ⊙लिंगी = स्त्री० [हि०] एक लता जिसका व्यवहार औषधि के रूप मे होता है। ⊙लोक = पु० कैलास। ⊙वृषभ = पु० शिव जी की सवारी का वैल, नदी। शिवा—स्त्री० दुर्गा। पार्वती। मोक्ष। शृगाली, सियारिन। शिवालय—पु० शिव जी का मदिर। देवमदिर। शिवाला—पु० [हि०] शिव जी का मंदिर। देवमदिर।
शिविका—स्त्री० [सं०] पालकी, डोली।
शिविर—पु० [सं०] डेरा, खेमा। फौज के ठहरने का पड़ाव, छावनी। किला।
शिशिर—पुं० [सं०] एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन मास मे होती है। जाड़ा, शीतकाल। हिम। शिशिरांत—पु० वसत-ऋतु।
शिशु—पु० [सं०] छोटा बच्चा, विशेषतः आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा। ⊙ता = स्त्री० वचपन, शिशुत्व। ⊙ताई (पु) = स्त्री० [हि०] दे० 'शिशुता'।
शिशुमार—पु० [सं०] सूंस नामक जलजतु। नक्षत्रमडल। कृष्ण। ⊙चक्र = पु० सब ग्रहो सहित सूर्य, सौर जगत्।
शिश्न—पु० [सं०] पुरुष का लिग।
शिष (पु)—पु० दे० 'शिष्य'। स्त्री० सीख, शिक्षा। शिखा, चोटी।
शिषरी (पु)—वि० शिखरवाला।
शिषा (पु)—स्त्री० दे० 'शिखा'।
शिषि (पु)—पु० दे० 'शिष्य'।
शिषी—पुं० दे० 'शिखी'।

शिष्ट—वि० [सं०] अच्छे स्वभाव और आचरणवाला। सभ्य, सज्जन। शांत, धीर, भला। धर्मशील। बुद्धिमान्। ⊙ता=स्त्री० शिष्ट होने का भाव या धर्म। सभ्यता, सज्जनता। श्रेष्ठता। शिष्टाचार—पु० [सं०] सभ्य पुरुषों के योग्य आचरण। आदर, खातिरदारी। विनय, नम्रता। दिखावटी सभ्य व्यवहार। आवभगत।

शिष्य—पु० [सं०] वह जो शिक्षा या उपदेश देने के योग्य हो। विद्यार्थी। शागिर्द, चेला। मुरीद, किसी से दीक्षा या मंत्र ग्रहण करनेवाला। शिष्या—स्त्री० चेली। सात गुरु अक्षरों का एक वृत्त।

शीघ्र—क्रि० वि० [सं०] बिना देर के, तुरंत। ⊙गामी=वि० जल्दी या तेज चलनेवाला। ⊙ता=स्त्री० जल्दी, फुरती।

शीत—वि० [सं०] ठंढा, सर्द। पु० जाड़ा, सर्दी। ओस। जाड़े का मौसिम। जुकाम, सरदी। ⊙कटिबंध=पु० पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमिखंड के वे कल्पित विभाग जो भूमध्यरेखा से २३॥ उत्तर के बाद और २३॥ अंश दक्षिण के बाद माने गए है। ⊙कर=पु० चंद्रमा। वि० शीतल। करनेवाला। ⊙काल=पु० अगहन और पूस के महीने। जाड़े का मौसम। ⊙ज्वर=पुं० जाड़ा देकर आनेवाला बुखार, जूड़ी। ⊙पित्त=पुं० जुडपित्ती।

शीतल—वि० [सं०] ठंढा, सर्द। गरम का उलटा। क्षोभ या उद्वेगरहित, शांत। ⊙चीनी=स्त्री० (हिं०) कबाब चीनी।

शीतला—स्त्री० [सं०] चेचक। एक देवी जो विस्फोटक की अधिष्ठात्री मानी जाती है। शीतलाष्टमी—स्त्री० चैत्र कृष्णपक्ष की अष्टमी।

शीया—पुं० [अ०] दे० 'शिया'।

शीरा—पुं० [फा०] चीनी या गुड को पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस, चाशनी।

शीरीं—वि० [फा०] मीठा प्यारा।

शीर्ण—वि० [सं०] टूटा फूटा। फटा पुराना। मुरझाया हुआ। दुबला पतला।

शीर्ष—पु० [सं०] सिर, कपाल। माथा। सिरा, चोटी। सामना, अग्रभाग। ⊙क=पु० दे० 'शीर्ष'। वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख के ऊपर हो। ⊙बिंदु=पुं० सिर के ऊपर और ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान।

शील—पु० [सं०] आचरण, चरित्र। स्वभाव, प्रवृत्ति। उत्तम आचरण। उत्तम स्वभाव। मुरौवत। वि० प्रवृत्त, तत्पर (यौ० में) ⊙वान्=वि० अच्छे आचरण का। सुशील।

शीश(पु)†—पु० दे० 'शीर्ष'।

शीशम—पु० [फा०] एक पेड़ जिसका तना भारी, सुंदर और मजबूत होता है, शिंशपा।

शीशमहल—पु० वह भवन जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।

शीशा—पुं० [फा०] एक पारदर्शी मिश्र धातु, काँच। दर्पण, आईना। झाड़, फानूस आदि काँच के बने सामान।

शीशी—स्त्री० शीशे का छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं। मु०~सुंघना=दवा सुंघाकर बेहोश करना (शस्त्रचिकित्सा आदि में)।

शुंग—पुं० [सं०] एक ब्राह्मण वंश जो मौर्यों के पीछे मगध के सिंहासन पर बैठा था।

शुंठि, शुंठी—स्त्री० [सं०] सोंठ।

शुंड—पु० [सं०] हाथी की सूंड। हाथी का मद जो उसकी कनपटी से बहता है।

शुंडा—स्त्री० [सं०] सूंड। एक तरह की शराब। शुंडिक—पु० शराब बनानेवाला कलवार। शुंडी—पुं० हाथी। मद्य बनानेवाला, कलवार।

शुक—पु० [सं०] तोता। शुकदेव। कपड़ा। शिरीष वृक्ष।

शुक्त—वि० [सं०] सड़ाकर खट्टा किया हुआ। खट्टा। कड़ा, कठोर। अप्रिय; नापसंद। सुनसान, उजाड़।

शुक्ति, शुक्तिका—स्त्री० [सं०] सीप, सीप।

शुक्र—पु० [सं०] चमकीला ग्रह जो पुराणानुसार दैत्यों का गुरु कहा गया है, शुक्र।

कारा वीर्य। वल, सामर्थ्य। वृहस्पति और शनिवार के वीच का दिन। अग्नि। पुं० [अ०] धन्यवाद। शुक्राचार्य—पु० एक ऋषि जो दैत्यो के गुरु थे।

शुक्रिया—पु० [फा०] धन्यवाद, कृतज्ञता-प्रकाश।

शुक्ल—वि० [सं०] सफेद, उजला। पु० ब्राह्मणो की एक पदवी। चाँदी। शुक्ल पक्ष। ⊙पक्ष = पु० अमावस्या के उपरात प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का पक्ष। शुक्ला—स्त्री० सरस्वती। शर्करा, चीनी। काकोली। विदारी। शकरकद। निर्गुडी, शेफालिका। वि० स्त्री० उजली। शुक्ल पक्ष की (तिथि)।

शुचि—स्त्री० [सं०] पवित्रता, स्वच्छता। वि० पवित्र। साफ। निर्दोष। स्वच्छ हृदयवाला। ⊙कर्मा = वि० सदाचारी, कर्मनिष्ठ।

शुतुर—पुं० [अ०] ऊँट। ⊙नाल = स्त्री० [हिं०] ऊँट पर रखकर चलाई जानेवाली तोप। ⊙मुर्ग = पु० [फा०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की तरह बहुत लबी होती है।

शुदनी—स्त्री [फा०] भावी, होनी।

शुद्ध—वि० [सं०] पवित्र, स्वच्छ। सफेद। जिसमे किसी प्रकार की अशुद्धि न हो, खालिस, बिना मिलावट का। ⊙प = पुं० शुक्ल पक्ष। शुद्धांत—पुं० अत पुर, जनानखाना। शुद्धापह्नुति—स्त्री० एक अलकार जिसमे उपमेय को झूठ ठहराकर या उसका निषेध करके उपमान स्थापित किया जाता है। शुद्धि—स्त्री० शुद्ध होने का कार्य। सफाई, स्वच्छता। वह कृत्य या सस्कार जो किसी धर्मच्युत, विधर्मी, अशुद्ध या अशुचि व्यक्ति के शुद्ध होने के समय होता है। ⊙पत्र = पुं० पुस्तक पुस्तिका आदि मे लगा हुआ वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है।

शुनि—पुं० [सं०] कुत्ता।

शुबहा—पु० [अ०] सदेह, शक। धोखा, भ्रम।

शुभंकर—वि० [सं०] मगलकारक। शुभंकरी—स्त्री० पार्वती।

शुभ—वि० [सं०] अच्छा, भला। कल्याणकारी। पु० मगल, भलाई। ⊙चिंतक = वि० शुभ या भला चाहनेवाला। ⊙द = कल्याण कारक। ⊙दर्शन = वि० सुंदर, खूबसूरत। विवाह का एक कृत्य जिसमे वर वधू एक दूसरे को देखते हैं। शुभा—स्त्री० शोभा। काति। देवसभा। पु० [सं०] दे० 'शुबहा'। शुभाकांक्षी—वि० दे० 'शुभचिंतक'। शुभाशय—पुं० वह जिसका आशय या विचार शुभ हो।

शुभ्र—वि० [सं०] सफेद, उजला।

शुमार—पुं० [फा०] गिनती। हिसाब, लेखा।

शुरू—पुं० [अ० शुरूअ] आरभ। वह स्थान जहाँ से किसी वस्तु का आरभ हो, उत्थान।

शुल्क—पुं० [सं०] वह महसूल जो घाटों आदि पर वसूल किया जाता है। दहेज। बाजी, शर्त। किराया। मूल्य। वह धन जो किसी कार्य के बदले मे लिया या दिया जाय, फीस।

शुश्रूषा—स्त्री० [सं०] सेवा, टहल। खुशामद।

शुष्क—वि० [सं०] आर्द्रतारहित, सूखा। नीरस। जिसमे मन न लगता हो। निरर्थक। स्नेह आदि से रहित।

शूक—पुं० [सं०] अन्न की बाल। यव, जौ। एक प्रकार का कीड़ा।

शूकर—पु० [सं०] सूअर। विष्णु का तीसरा अवतार, वाराह अवतार। ⊙क्षेत्र = पुं० एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है (आज कल का सोरों)।

शूची—स्त्री० सूई।

शूद्र—पुं० [सं०] आर्यों के चार वर्णों मे से चौथा जिसका कार्य अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना माना गया है। शूद्र जाति का पुरुष। खराब, निकृष्ट। ⊙द्युति = पुं० नीला रंग। शूद्रक—पुं० विदिशा नगरी का एक राजा और सस्कृत के

'मृच्छकटिक' नाटक का रचयिता महाकवि। शूद्र जाति का एक राजा, शबूक। शूद्री—स्त्री० [सं०] शूद्र की स्त्री।

शूना—स्त्री० [सं०] गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान मे अनेक जीवो की हत्या हुआ करती है (जैसे चूल्हा, चक्की, पानी का बरतन आदि)।

शून्य—पुं० [सं०] खाली स्थान। आकाश। एकात स्थान। आकाश। बिंदु, सिफर। अभाव। स्वर्ग। विष्णु। ईश्वर। वि० खाली। जिसमे क्रियाशीलता न हो। निराकार। रहित। ⊙वाद = पुं० बौद्धो का एक सिद्धात। ⊙वादी = पुं० वह व्यक्ति जो ईश्वर और जीव के अस्तित्व मे विश्वास न करता हो। बौद्ध। नास्तिक।

शूप—पुं० अन्न आदि पछोरने का पात्र, सूप।

शूर—पुं० [सं०] वीर, बहादुर। योद्धा, सिपाही। सूर्य। सिंह। कृष्ण के पितामह का नाम। विष्णु। ⊙वीर = पुं० वह जो अच्छा वीर और योद्धा हो, सूरमा। ⊙सेन = पुं० मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह थे। मथुरा प्रदेश का प्राचीन नाम।

शूरा(पु)†—पुं० सामंत, वीर। सूर्य।

शूर्प—पुं० [सं०] दे 'सूप'।

शूर्पारक—पुं० [सं०] बबई प्रात के सोपारा नामक स्थान का प्राचीन नाम।

शूल—पुं० [सं०] प्राचीन काल का बरछे के आकार का एक अस्त्र। सूली, जिससे प्राचीन काल मे प्राणदड दिया जाता था। दे० 'त्रिशूल'। बड़ा लबा और नुकीला काँटा। वायु के प्रकोप मे होनेवाला एक प्रकार का बहुत तेज दर्द। कोच, टीस। पीड़ा, दुःख। ज्योतिष मे एक अशुभ योग। सलाख। मृत्यु। झडा। वि० नुकीला। दुःखदाई। ⊙धारी = पुं० महादेव। ⊙ना(पु) = अक० शूल के समान गड़ना। दुःख देना। ⊙पाणि = पुं० महादेव। ⊙हस्त = पुं० महादेव, शिव। शूलिक—पुं० सूली देनेवाला।

शूली—पुं० शिव, महादेव। वह जिसे शूल रोग हुआ हो। एक नरक का नाम। स्त्री० [हिं०] पीड़ा, शूल।

शृंखल—पुं० [सं०] मेखला। हाथी आदि बाँधने की लोहे की जजीर, साँकल। हथकडी बेडी। ⊙ता = स्त्री० सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव। शृंखला—स्त्री० [सं०] क्रम, सिलसिला। जजीर, साँकल। कटिवस्त्र मेखला। करधनी। कतार। एक प्रकार का अलकार जिसमे कथित पदार्थों का वर्णन सिलसिलेवार किया जाता है। ⊙बद्ध = वि० सिलसिलेवार। जो शृंखला से बाँधा हुआ हो। शृंखलित—वि० [सं०] दे० 'शृंखलाबद्ध'।

शृंग—पुं० [सं०] पर्वत का ऊपरी भाग, चोटी, गौ, भैंस, बकरी आदि के सिर के सींग। कगूरा। सिंगी बाजा। कमल, पद्म।

शृंगार—पुं० [सं०] साहित्य के नौ रसो मे से एक जिसका स्थायी भाव रति है। वस्त्राभूषण आदि से शरीर, देवमूर्ति आदि को शोभित करना। सजावट, बनाव चुनाव। भक्ति का एक भाव या प्रकार जिसमे भक्त अपने आप को पत्नी के रूप में और अपने इष्टदेव को पति के रूप मे मानते हैं। वह जिससे किसी चीज की शोभा हो। ⊙हाट = स्त्री० [सं० + हिं०] वह बाजार जहाँ वेश्याएँ रहती हो। शृंगारिक—वि० शृंगार सबधी। शृंगारिणी—स्त्री० स्रग्विणी छद जिसके प्रत्येक चरण मे चार रगण होते हैं, लक्ष्मीधर, लक्ष्मीधरा, कामिनीमोहन। शृंगारित—वि० जिसका शृंगार किया गया हो, सजाया हुआ। शृंगारिया—पुं० [हिं०] वह जो देवताओ आदि का शृंगार करता हो। बहुरूपिया।

शृंगि—पुं० [सं०] सिंगी मछली। [हिं०] सीगवाला जानवर। शृंगी—पुं० [सं०] एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। इन्ही के शाप से अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को तक्षक ने डसा था। सीगवाला पशु। सीग का बना हुआ एक बाजा

जिसे कनफटे बजाते हैं। महादेव, शिव। हाथी। वृक्ष। पर्वत। ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। महर्षि विभाडक के पुत्र एक ऋषि जिन्होने दशरथ के यहाँ पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था। ⊙गिरि = पुं० एक प्राचीन पर्वत जिसपर शृगी ऋषि तप करते थे।

शृग (पु) —पु० 'शृगाल'।

शृगाल—पु० [सं०] गीदड।

शेख—पु० [अ०] पैगबर मुहम्मद के वशजो की उपाधि। मुसलमानो के चार वर्गों मे से पहला वर्ग। इसलाम धर्म का आचार्य। (पु) पु० [हि०] दे० 'शेष'। शेखचिल्ली—पु० [हि०] एक कल्पित वज्रमूर्ख जिसके बारे मे अनेक विलक्षण हास्यमयी कथाएँ प्रसिद्ध है। बैठे बैठे बडे बडे मसूबे बाँधनेवाला व्यक्ति। वि० चचल और शरारती।

शेखर—पु० [सं०] सिर, माथा मुकुट। शिखर (पर्वत आदि का)। सबसे श्रेष्ठ या उत्तम व्यक्ति या वस्तु। टगण के पाँचवें भेद की सज्ञा। गीत मे ध्रुव या स्थायी, पद का एक भेद।

शेखावत—पु० कछवाहे राजपूतो की एक शाखा।

शेखी—स्त्री० [फा०] गर्व, अहकार। शान, ऐंठ। डीग। ⊙बाज = वि० अभिमानी। डीग मारनेवाला व्यक्ति। मु०~बघारना, हाँकना या मारना = डीग मारना।

शेफालिका, शेफाली—स्त्री० [सं०] नील सिधुवार का पौधा, निर्गुडी।

शेर—पु० [अ०] उर्दू कविता के दो चरण। पु० [फा०] बिल्ली की जाति का एक भयकर हिंसक पशु, व्याघ्र। अत्यत वीर और साहसी पुरुष। ⊙पंजा = पुं०[हि०] शेर के पजे के आकार का एक शस्त्र, बघनखा। ⊙बच्चा = पुं० एक प्रकार की तोप। ⊙बबर = पु० सिंह, केशरी। ⊙मर्द = पु० वीर, बहादुर। मु०~ होना = निर्भर या धृष्ट होना।

शेरवानी—स्त्री० एक प्रकार का अगा, अचकन।

शेष—पु० [सं०] बची हुई वस्तु, बाकी। घटाने से बची हुई सख्या। समाप्ति, अत। पुराणानुसार सहस्र फनो के सर्पराज जिनके फनो पर पृथ्वी ठहरी है। वह शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ करने के लिये ऊपर से लगाया जाय, अध्याहार। लक्ष्मण। बलराम। दिग्गजो मे से एक। परमेश्वर। पिंगल मे टगण के पाँचवें भेद का नाम। छप्पय छद के २५वें भेद का नाम। वि० बचा हुआ, बाकी। अत को पहुँचा हुआ, खतम। ⊙धर = पु० शिव जी। ⊙राज = पु० दो मगण का एक एक वर्णवृत्त। ⊙वत् = पु० न्याय मे कार्य को देखकर कारण का निश्चय (जैसे, नदी की बाढ देखकर ऊपर हुई वर्षा का अनुमान)। ⊙शायी = पु० विष्णु। शेषाश—पु० बचा हुआ अश। अतिम अश। शेषाचल—पु० दक्षिण का एक पर्वत। शेषोक्त—वि० अत मे कहा हुआ।

शैतान—पुं० [अ०] तमोगुणमयी शक्ति जो मनुष्यो को बहकाकर धर्ममार्ग से भ्रष्ट करती है। भूत, प्रेत। दुष्ट। मु०~की आँत = बहुत लंबी वस्तु। शैतानी—स्त्री० दुष्टता, शरारत। वि० शैतान सबंधी, शैतान का। नटखटी से भरा, दुष्टतापूर्ण।

शैत्य—पु० [सं०] 'शीत' का भाव, शीतता।

शैथिल्य—पु० [सं०] शिथिलता।

शैल—पु० [सं०] पर्वत पहाड। चट्टान। शिला। ⊙कुमारी = स्त्री० पार्वती। ⊙गंगा = स्त्री० गोवर्धन पर्वत की एक नदी। ⊙जा = स्त्री० पार्वती, दुर्गा। ⊙तटी = स्त्री० पहाड की तराई। ⊙नंदिनी = स्त्री० पार्वती। ⊙पुत्री = स्त्री० पार्वती। नौ दुर्गाओ मे से एक। गगा नदी। ⊙सुता = स्त्री० पार्वती। उमा। शैलेंद्र—पु० हिमालय। शैलेय—वि० पत्थर का, पथरीला। पहाड़ी। पु० छरीला। सिलाजीत।

शैली—स्त्री० [स०] चाल, ढग। तर्ज, तरीका, रीति रस्म। वाक्यरचना का प्रकार। हाथ से बनाई जानेवाली ऐसी चीजो का वर्ग जिनकी विशेषताओ मे उनके कर्ताओ की मनोवृत्ति की एकता के कारण साम्य हो, कलम (जैसे मुगल या पहाडी शैली के चित्र)।

शैलूष—पु० [स०] नाटक खेलनेवाला, नट। धूर्त।

शैव—वि० [स०] शिव सबधी, शिव का। पु० शिव का अनन्य उपासक। पाशुपत अस्त्र। धतूरा।

शैवल—पु० [स०] दे० 'शैवाल'। **शैवलिनी**—स्त्री० नदी। **शैवाल**—पु० सिवार, सेवार।

शैशव—वि० [स०] शिशु सबधी, बच्चो का, बाल्यावस्था सबधी। पु० बचपन। बच्चो का सा व्यवहार।

शैशुनाग—पु० [स०] मगध के प्राचीन राजा शिशुनाग का वशज।

शोक—पु० [स०] प्रिय व्यक्ति के अभाव या पीडा से उत्पन्न क्षोभ, रज। ⊙हर =पु० तीस मात्राओ के एक छद का नाम। इसके अत मे एक या अधिक गुरु होता है तथा प्रत्येक चरण के दूसरे, चौथे और छठे चौकल मे जगण वर्जित है।

शोख—वि० [फा०] धृष्ट, ढीठ। नटखट। चचल। गहरा और चमकदार (रग)

शोच—पु० दु ख, अफसोस। चिता। **शोचनीय**—वि० जिसकी दशा देखकर दु ख हो। बहुत हीन या बुरा। **शोच्य**—वि० सोचने या विचार करने के योग्य। दे० 'शोचनीय'।

शोण—पु० [स०] लाल रग। लाली। आग। रक्त। एक नद का नाम, सोन। वि० लाल रग का, सुर्ख। **शोणित**—[स०] लाल, रक्त वर्ण का। पु० रक्त, खून।

शोथ—पु० [स०] किसी अग का फूलना, सूजन।

शोध—पु० [सं०] शुद्धिसंस्कार, सफाई। ठीक किया जाना, दुरुस्ती। चुकता होना। जाँच, खोज। ⊙क = वि० शोधनेवाला। सुधार करनेवाला, सुधारक। खोजनेवाला। ⊙न = पु० [स०] शुद्ध करना, साफ करना। ठीक करना, सुधारना। धातुओ का औषध रूप मे व्यवहार करने के लिये सस्कार। छानबीन, जाँच। तलाश करना। ऋण चुकाना। प्रायश्चित्त। साफ करना। दस्त द्वारा कोठा साफ करना, विरेचन। ⊙ना = सक० [हिं०] शुद्ध करना, साफ करना। ठीक करना, सुधारना। औषध के लिये धातु का सस्कार करना। तलाश करना।

शोधित—वि० शुद्ध या साफ किया हुआ। जिसका या जिसके सबंध मे शोध हुआ हो।

शोभन—स्त्री० [स०] शोभायुक्त, सुदर। सुहावना। उत्तम। शुभ। पुं० अग्नि। शिव। इष्टिभोग। २४ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे जगण हो। गहना। कल्याण। दीप्ति, सौंदर्य। **शोभना**(पु)—अक० शोभित होना। स्त्री० [स०] सुदरी स्त्री। हल्दी। **शोभनीय**—वि० दे० 'शोभन'। **शोभाजन**—पुं० [स०] सहिजन।

शोभा—स्त्री० [स०] काति, चमक। सुदरता, छटा। सजावट। रंग। बीस अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से यगण, मगण, दो नगण, दो तगण और अत मे दो गुरु हो। **शोभायमान**—वि० सोहाता हुआ, सुदर। **शोभित**—वि० सजीला। अच्छा लगता हुआ।

शोर—पुं० [फा०] जोर की आवाज, कोलाहल। धूम, प्रसिद्धि।

शोरबा—पुं० [फा०] किसी उबाली हुई वस्तु का पानी, जूस, रसा।

शोरा—पुं० एक प्रकर का क्षार जो मिट्टी मे निकलता है।

शोला—पुं० [अ०] आग की लपट।

शोशा—[फा०] निकली हुई नोक। अद्‌भुत या अनोखी बात।
शोष—पुं० [सं०] सूखने का भाव, खुश्क होना। शरीर का घुलना या क्षीण होना। राजयक्ष्मा का भेद, क्षयी। बच्चो का सुखडी रोग। ⊙क=वि० जल, रस, या अन्य द्रव पदार्थ खीचनेवाला, सोखनेवाला। सुखानेवाला। क्षीण करनेवाला। **शोषण**—पुं० जल या रस खीचना, सोखना। खुश्क करना। क्षीण करना। नाश करना। कामदेव के एक बाण का नाम। **शोषित**—वि० जिसका शोषण किया गया हो। **शोषी**—वि० दे० 'शोषक'।
शोहदा—पुं० [अ०] व्यभिचारी, लपट। गुडा, बदमाश।
शोहरत—स्त्री० [अ०] ख्याति, प्रसिद्धि। धूम, जनरव।
शोहरा—पुं० दे० 'शोहरत'।
शौंडिक—पुं० [सं०] कलवार।
शौक—पुं० [अ०] किसी वस्तु की प्राप्ति या भोग के लिये होनेवाली तीव्र अभिलाषा, प्रबल लालसा। आकाक्षा, हौसला। व्यसन, चसका। प्रवृत्ति। मु०~करना=किसी वस्तु या पदार्थ का भोग करना। ~से=प्रसन्नतापूर्वक। **शौकत**—स्त्री० दे० 'शान'। **शौकिया**—वि० शौकवाला। क्रि० वि० शौक से।
शौकीन—वि० शौक करनेवाला। सदा बना ठना रहनेवाला। **शौकीनी**—स्त्री० शौकीन होने का भाव।
शौक्तिक—पुं० [सं०] मोती।
शौच—पुं० [सं०] शुद्धता, पवित्रता। शास्त्रीय परिभाषा मे, सब प्रकार से शुद्धतापूर्वक जीवन व्यतीत करना। वे कृत्य जो प्रात काल उठकर सबसे पहले किए जाते है। पाखाना या टट्टी जाना। दे० 'अशौच'।
शौत—स्त्री० दे० 'सौत'।
शौध(पु)—वि० निर्मल, पवित्र।
शौरसेन—पुं० [सं०] आधुनिक व्रजमडल का प्राचीन नाम।
शौरसेनी—स्त्री० एक प्रसिद्ध प्राचीन प्राकृत भाषा जो शौरसेन प्रदेश मे बोली जाती थी। एक प्रसिद्ध प्राचीन अपभ्रंश भाषा जो नागर कहलाती थी।
शौर्य—पुं० [सं०] शूरता, बहादुरी। नाटक मे आरभटी नाम की वृत्ति।
शौहर—पुं० [फा०] स्त्री का पति, स्वामी।
श्मशान—पुं० [सं०] मसान, मरघट। ⊙पति=पुं० शिव। ⊙यात्रा=स्त्री० शव या मृत शरीर का श्मशान जाना।
श्मश्रु—पुं० [सं०] मुँह पर के बाल, दाढी मूँछ।
श्याम—पुं० [सं०] श्रीकृष्ण का एक नाम। बादल। प्राचीन काल का एक देश जो कन्नौज के पश्चिम ओर था। श्याम नामक देश। वि० काला और नीला मिला हुआ (रग)। काला, साँवला। ⊙कर्ण=पुं० वह घोडा जिसका सारा शरीर सफेद और एक कान काला हो। ⊙जीरा=पुं० (हिं०) एक प्रकार का धान। काला जीरा। ⊙टीका=पुं० [हिं०] वह काला टीका जो बच्चो को नजर से बचाने के लिये लगाया जाता है। ⊙सुदर=पुं० श्रीकृष्ण का एक नाम। एक प्रकार का वृक्ष। **श्यामल**—वि० [सं०] काला, साँवला।
श्यामा—स्त्री० [सं०] राधा, राधिका। एक गोपी का नाम। एक प्रसिद्ध काला पक्षी। इसका स्वर बहुत ही मधुर और कोमल होता है। १६ वर्ष की तरुणी। काले रग की गाय। तुलसी (क्षुप)। कोयल नामक पक्षी। यमुना नदी। रात। वि० स्त्री० श्याम रगवाली।
श्याल—पुं० गीदड, सियार। पुं० [सं०] पत्नी का भाई, साला।
श्यालक—पुं० [सं०] पत्नी का भाई, साला।
श्येन—पुं० [सं०] शिकरा या बाज पक्षी। दोहे के चौथे भेद का नाम। **श्येनिका**—स्त्री० ११ अक्षरो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण, जगण, रगण और अत मे एक लघु और एक गुरु हो। **श्येनी**—स्त्री० दे० 'श्येनिका'। मार्कंडेय पुराण के अनुसार कश्यप की एक कन्या जो पक्षियो की जननी थी।

श्योनाक—पुं० [सं०] सोनापाढा वृक्ष। लोध।

श्रंग(पु)—पु० दे० 'शृंग'।

श्रद्धा—स्त्री० [सं०] बडे के प्रति मन मे होनेवाला आदर और स्नेह भाव। वेदादि शास्त्रो और आप्त पुरुषो के वचनो पर विश्वास, भक्ति, आस्था। कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि की पत्नी थी। वैवस्वत मनु की पत्नी। ⊙वान् = वि० श्रद्धायुक्त। धर्मनिष्ट। श्रद्धालु—वि० जिसके मन मे श्रद्धा हो, श्रद्धावान्। श्रद्धास्पद—वि० जिसके प्रति श्रद्धा की जा सके, पूजनीय। श्रद्धेय—वि० [सं०] श्रद्धास्पद।

श्रम—पु० [सं०] परिश्रम मेहनत। थकावट। साहित्य मे सचारी भावो मे मे एक कोई कार्य करते करते शिथिल हो जाना। क्लेश, तकलीफ। दौड धूप, परेशानी। पसीना। व्यायाम। प्रयास। अभ्यास। ⊙कण = पु० पसीने की बूँदें। ⊙जल = पुं० पसीना, स्वेद। ⊙जीवी = वि० मेहनत करके पेट पालनेवाला। ⊙बिंदु = पुं० पसीना। ⊙वारि = पु० पसीना। ⊙सीकर = पु० पसीने की बूंद। पसीना। श्रमण—पु० बौद्ध मतावलबी सन्यासी। यति, मुनि। मजदूर। श्रमिक—पुं० श्रम या काम करनेवाला, कमकर। मजदूर। दे० 'श्रमजीवी'। श्रमित—वि० थका हुआ, श्रात। श्रमी—पु० मेहनती, परिश्रमी। मजदूर।

श्रवण—पुं० [सं०] वह इद्रिय जिससे ध्वनि का ज्ञान होता है, कान। शास्त्रो मे लिखी हुई बातें सुनना और उसके अनुसार काम करना अथवा देवताओ आदि के चरित्र सुनना। नौ प्रकार की भक्तियो मे से एक। वैश्य तपस्वी अधक मुनि के पुत्र का नाम। बाईसवाँ नक्षत्र, जिसका आकार तीर का सा है। श्रवणीय—वि० सुनने योग्य।

श्रवन(पु)—पुं० श्रवण, कान।

श्रवना(पु)—सक० बहना, चूना। गिराना, बहाना।

श्रवित(पु)—वि० बहा हुआ।

श्रव्य—वि० [सं०] जो सुना जा सके, सुनने योग्य। ⊙काव्य = पु० वह काव्य जो केवल सुना जा सके अभिनय आदि के रूप मे न खेला जा सके।

श्रात—वि० [सं०] जितेद्रिय। शात। परिश्रम मे थका हुआ। दुखी। श्रांति—स्त्री० परिश्रम। थकावट। विश्राम।

श्राद्ध—पु० [सं०] वह कार्य जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरो के उद्देश्य से किया जाता है (जैसे, तर्पण पिंडदान तथा ब्राह्मणभोजन)। पितृपक्ष। ⊙देव = पुं० धर्मराज। यमराज। वैवस्वत मनु। श्राद्ध म निमत्रित ब्राह्मण।

श्राप—पु० दे० 'शाप'।

श्रावक—पु० [सं०] जैन साधु या सन्यासी। जैन धर्म का अनुयायी, जैनी। नास्तिक। वि० सुननेवाला।

श्रावग—पु० दे० 'श्रावक'। श्रावगी—पु० जैनी।

श्रावण—पुं० [सं०] आषाढ के बाद और भादो के पहले का महीना, सावन। श्रावणी—स्त्री० [सं०] सावन मास की पूर्णमासी। इस दिन प्रसिद्ध त्योहार 'रक्षाबधन' तथा पूजन आदि होते हैं।

श्रावस्ती—स्त्री० [सं०] उत्तर कोशल मे गगातट की एक प्राचीन नगरी, जो अब सहेत महेत कहलाती है।

श्राव्य—वि० [सं०] सुनने योग्य, जताने योग्य, घोषित करने योग्य।

श्रिय—स्त्री० मगल, कल्याण। शोभा।

श्री—पुं० [सं०] वैष्णवो का एक सप्रदाय। एक अक्षर का छद या वृत्त। सपूर्ण जाति का एक राग। स्त्री० विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। सरस्वती। कमल, पद्म। सफेद चदन। धर्म, अर्थ और काम। सपत्ति। ऐश्वर्य। कीर्ति। शोभा। काति। एक प्रकार का पदचिह्न। स्त्रियो का बेंदी नामक आभूषण। आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि मे रखा

जाता है। ⊙कंठ = पुं० शिव, महादेव। ⊙कांत = पुं० विष्णु। ⊙क्षेत्र = पुं० जगन्नाथ पुरी। ⊙खंड = पुं० हरिचंदन, मलयागिरि चंदन। ''शिखरन'। ⊙खंड शैल = पुं० मलय पर्वत। ⊙गदित = पुं० उपरूपक के १८ भेदों में से एक, श्रीरसिका। ⊙धर = पुं० विष्णु। ⊙धाम = पुं० स्वर्ग। ⊙निकेतन = पुं० वैकुंठ। लाल कमल। स्वर्ण, सोना। ⊙निवास = पुं० विष्णु। वैकुंठ। ⊙ पंचमी = स्त्री० वसंतपंचमी। ⊙पति = पुं० विष्णु, नारायण। रामचंद्र। कृष्ण। कुबेर। राजा। ⊙पद = पुं० १२ अक्षरों का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से नगण नगण, जगण और यगण होते हैं। दे० 'श्रीपाद'। ⊙पाद = पुं० पूज्य, श्रेष्ठ। ⊙फल = पुं० बेल। नारियल। खिरनी। आँवला। धन, संपत्ति। पुं० [हिं०] एक प्रकार का शिरोभूषण। स्त्रियों के बीच की माँग। वि० श्रीमान्, धनवान्। ⊙मत् = वि० धनवान्। जिसमें श्री या शोभा हो। सुंदर। ⊙मती = स्त्री० 'श्रीमान्' का स्त्रीलिंग। लक्ष्मी। राधा। ⊙मान् = पुं० आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है, श्रीयुत, धनवान्, अमीर। ⊙माल = स्त्री० [हिं०] 'गले' में पहनने का एक आभूषण, कंठश्री। ⊙ माली = पुं० [हिं०] विष्णु। ⊙मुख = पुं० शोभित या सुंदर मुख। वेद। सूर्य। ⊙युक्त = वि० जिसमें श्री या शोभा हो। आदमियों के नाम के पूर्व प्रयुक्त होनेवाला एक आदरसूचक विशेषण, श्रीमान्। ⊙युत = वि० दे० 'श्रीयुक्त'। ⊙रंग = पुं० विष्णु। ⊙रमण = पुं० विष्णु। ⊙वत्स = पुं० विष्णु विष्णु के वक्षस्थल पर का चिह्न जो श्वेत बालों का दक्षिणावर्त भौंरी सा माना जाता है। ⊙वास, ⊙वासक = पुं० गंधा बिरोजा। देवदारु। चंदन। कमल। विष्णु। शिव। ⊙हत = वि० शोभा-रहित। निस्तेज, प्रभाहीन। श्रीश— पुं० विष्णु।

श्रुत—वि० [सं०] सुना हुआ। जिसे परंपरा से सुनते आते हों, प्रसिद्ध।

श्रुति—स्त्री० सुनने की इंद्रिय, कान। वह पवित्र ज्ञान जो सृष्टि के आदि में ब्रह्मा या कुछ महर्षियों द्वारा सुना गया और जिसे परंपरा से ऋषि सुनते आए, वेद। खबर, शोहरत। सुनी हुई बात। शब्द, आवाज। सुनना। चार की संख्या (वेद ४ होने से)। अनुप्रास का एक भेद। त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा। धारणा। विद्या। ⊙कटु = पुं० काव्य में कठोर और कर्कश वर्णों का व्यवहार (दोष)। ⊙गोचर = वि० जो सुना जा सके। ⊙पथ = पुं० श्रवणेंद्रिय। वेद-विहित मार्ग, सन्मार्ग।

श्रुत्य—वि० [सं०] सुनने योग्य। प्रसिद्ध।

श्रुत्यनुप्रास—पुं० [सं०] वह अनुप्रास जिसमें एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले व्यंजन दो या अधिक बार आएँ।

श्रुवा—दे० 'स्रुवा'।

श्रेणी—स्त्री० [सं०] पंक्ति, कतार। क्रम, शृंखला, सिलसिला। दल, समूह। सेना। एक ही कारबार करनेवालों की मंडली, कंपनी। सिकड़ी, जंजीर। सीढ़ी, जीना। ⊙बद्ध = वि० पंक्ति के रूप में स्थित, कतार बाँधे हुए।

श्रेय—वि० अधिक अच्छा, बेहतर। श्रेष्ठ, उत्तम। मंगलदायक, शुभ। पुं० अच्छा-पन। कल्याण। धर्म। सदाचार।

श्रेयस्कर—वि० [सं०] शुभदायक। श्रेष्ठ— वि० [सं०] उत्तम, बहुत अच्छा। मुख्य, प्रधान। पूज्य, बड़ा। वृद्ध।

श्रेष्ठी—पुं० [सं०] व्यापारियों या वणिकों का मुखिया, महाजन, सेठ।

श्रोत—पुं० श्रवणेंद्रिय, कान।

श्रोता—पुं० [सं०] सुननेवाला।

श्रोत्र—पुं० [सं०] श्रवणेंद्रिय, कान। वेद-ज्ञान। श्रोत्रिय—पुं० [सं०] वेदवेदांग में पारगत ब्राह्मण। ब्राह्मणों का एक भेद।

श्रोत्री—पुं० दे० 'श्रोत्रिय'।

श्रोन(पु)—पुं० दे० 'शोण'। दे० 'श्रवण'।

श्रोनित(पु)--पुं० दे० 'शोणित'।
श्रौत--वि० [सं०] श्रवण संबधी। श्रुति संबधी। जो वेद के अनुसार हो। यज्ञ संबधी। ⊙सूत्र=पु० कल्प ग्रथ का अंश जिसमे यज्ञो का विधान है।
श्रौन(पु)--पुं० दे० 'श्रवण'।
श्लथ--वि० [सं०] शिथिल, ढीला। मद, धीमा। दुर्बल।
श्लाघनीय--वि० [सं०] प्रशसनीय। उत्तम, श्रेष्ठ। श्लाघा--स्त्री० प्रशसा। स्तुति, बड़ाई। खुशामद, चापलूसी। चाह। श्लाघ्य--वि प्रशसनीय। श्रेष्ठ, अच्छा।
श्लिष्ट--वि० [सं०] मिला हुआ, एक मे जड़ा हुआ। (साहित्य मे) श्लेषयुक्त।
श्लीपद--पु० [सं०] टाँग फूलने का रोग, फीलपाँव।
श्लील--वि० [सं०] उत्तम, जो भद्दा न हो। शुभ।
श्लेष--पुं० [सं०] मिलना, जुड़ना। सयोग, जोड़। साहित्य मे एक अलकार जिसमे एक शब्द के दो या अधिक अर्थ लिए जाते हैं। ⊙क=वि० जोड़नेवाला। पुं० दे० 'श्लेष'। श्लेषण--पु० [सं०] मिलाना, जोड़ना। आलिगन। श्लेषोपमा--स्त्री० एक अलकार जिसमे ऐसे श्लिष्ट शब्दो का प्रयोग होता है जिनके अर्थ उपमेय और उपमान दोनो मे लग जाते हैं। श्लेष्मा--पु० [सं०] शरीर की तीन धातुओ मे से एक, कफ। लिसोड़े का फल।
श्लोक--पुं० [सं०] सस्कृत का पद्य। अनुष्टुप्। छद। स्तुति, प्रशसा। कीर्ति। पुकार। आवाज।
श्वन्--पु० [सं०] कुत्ता।
श्वपच--पु० [सं०] चाडाल, डोम।
श्वशुर--पु० [सं०] पत्नी अथवा पति का पिता, ससुर।
श्वश्रू--स्त्री० [सं०] पत्नी अथवा पति की माता, सास।
श्वसन--पु० [सं०] श्वास, साँस। जीवन।
श्वसित--वि० जो श्वास लेता हो, जीवित। पु० निश्वास।
श्वान--पु० [सं०] कुत्ता। दोहे का २१वाँ भेद। छप्पय का १५वाँ भेद।
श्वापद--पुं० [सं०] हिंसक पशु।
श्वास--पु० [सं०] नाक से हवा खीचने और बाहर निकालने का व्यापार, साँस। जल्दी जल्दी साँस लेना, हाँफना। दम फूलने का रोग, दमा। श्वासा--स्त्री० [हिं०] साँस, दम। प्राण, प्राणवायु। श्वासोच्छ्वास--पु० वेग मे साँस खीचना और निकालना।
श्वेत--वि० [सं०] सफेद, चिट्टा। उज्ज्वल, साफ। निष्कलक। गोरा। पु० सफेद रग। चाँदी। पुराणानुसार एक द्वीप। शिव का एक अवतार श्वेतवाराह। ⊙कृष्ण=पु० सफेद और काला। यह और वह पक्ष, एक बात और दूसरी बात। ⊙केतु=पु० महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम। केतु ग्रह। ⊙गज=पुं० ऐरावत हाथी। ⊙द्वीप=पु० पुराणानुसार क्षीरसागर के पास एक उज्ज्वल द्वीप जहाँ विष्णु रहते हैं। ⊙पत्र=पु० सफेद रग के कागज पर छपा हुआ कोई राजकीय पत्र जिसमे किसी प्रकार की घोषणा या निश्चय होता है (अँ० ह्वाइट पेपर)। ⊙प्रदर=पु० वह प्रदर रोग जिसमे स्त्रियो को सफेद रग की धातु गिरती है। ~वाराह=पु० वराह भगवान् की एक मूर्ति। एक कल्प का नाम जो ब्रह्मा के मास का प्रथम दिन माना गया है। ⊙सार=पुं० अनाजो और तरकारियो आदि का सफेद सत्त जो प्राय कपड़ो मे कलफ देने या दवाओ आदि मे काम आता है। माँडी। श्वेतांग--वि० जिसके अंग का रग सफेद हो। पु० गोरी जाति का व्यक्ति, गोरा [अँ० ह्वाइट मैन]। श्वेतांबर--पु० जैनो के दो प्रधान सप्रदायो मे से एक। श्वेतांशु--पु० चद्रमा। श्वेता--स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक। कौड़ी।

श्वेत या शख नामक हस्ती की माता, शंखिनी। चीनी, शक्कर। श्वेताश्वतर--स्त्री० [सं०] कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। कृष्ण यजुर्वेद का एक उपनिषद्।

ष

ष—हिंदी वर्णमाला का ३१ वाँ व्यजन। सस्कृत मे इसका उच्चारण स्थान मूर्धा होने से इसे मूर्धन्य कहा गया है।

षड, षंढ—[सं०] हीजडा, नपुसक। शिव का एक नाम। साँड। ⊙त्व=पु० नामर्दी, हीजडापन।

षग(पु)—पु० खग, पक्षी।

षट्—वि० [सं०] गिनती मे ६, छह। पु० छह की सख्या ⊙क=पु० छह की सख्या, ६ वस्तुओ का समूह। ⊙कर्म=पु० ब्राह्मणो के छह कर्म--पढना, पढाना, यज्ञ करना, कराना, दान देना और दान लेना। वखेडा, झझट। ⊙कोण=वि० छह कोनोवाला, छहपहला। ⊙चक्र=पु० हठयोग मे माने हुए कुडलिनी के ऊपर पढनेवाले छह चक्र। भीतरी चाल, षड्यत्र। ⊙तिला=स्त्री० माघ महीने के कृष्णपक्ष की एकादशी। ⊙पद=वि० छह पैरोवाला। पु० भौंरा। ⊙पदी=स्त्री० भ्रमरी। छप्पय। ⊙मुख=पुं० कार्तिकेय। ⊙रस=पुं० दे० 'षड्रस'। ⊙राग=पु० सगीत के छह राग--भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक। वखेड़ा, झझट। ⊙रिपु=पु० दे० 'षड्रिपु'। ⊙शास्त्र=पुं० हिंदुओ के छह दर्शन।

षडंग—पुं० [सं०] वेद के छह अग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छद और ज्योतिष। शरीर के छह अवयव--दो पैर, दो हाथ, सिर और धड। वि० जिसके अग या अवयव हो।

षडबिसत(पु), षडबिसति(पु)—वि० छब्बीस।

षडानन—वि० [सं०] जिसे छह मुंह हो। पुं० कार्तिकेय।

षड्—वि० [सं०] छह, ६। ⊙गुण=पुं० छह गुणो का समूह। ⊙ज=पु० सगीत के सात स्वरो मे से पहला स्वर। ⊙दर्शन=पुं० न्याय, मीमासा आदि हिंदुओं के छह दर्शन। ⊙दर्शनी=पुं० [हि०] दर्शनो को जाननेवाला, ज्ञानी। ⊙यत्र=पुं० किसी के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई कार्रवाई। जाल, कपटपूर्ण आयोजन। ⊙रस=पुं० छह प्रकार के रस या स्वाद—मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल। ⊙रिपु=पुं० काम, क्रोध आदि मनुष्य के छह मनोविकार।

षण्मुख—पु० [सं०] दे० 'षडानन'।

षपरा(पु)—पुं० खप्पर।

षरतर(पु)—वि० प्रचड, उग्र।

षष्ठ—वि० [सं०] जिसका स्थान पाँचवें के उपरात हो, छठा।

षष्ठी—स्त्री० [सं०] शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। षोडश मातृकाओ मे से एक। कात्यायनी, दुर्गा। सबध कारक (व्या०)। बालक उत्पन्न होने से छठा दिन तथा उक्त दिन का उत्सव।

षाड़व—पुं० [सं०] वह राग जिसमे केवल छह स्वर लगते हो।

षाण्मातुर—पुं० [सं०] कार्तिकेय।

षाण्मासिक—पु० [सं०] छह महीने का, छठे महीने मे पडनेवाला, छमाही।

षोडश—वि० [स०] १६वाँ। सोलह की सख्या।। वि० जो गिनती मे दस से छह अधिक हो, सोलह। ⊙कला=स्त्री० चद्रमा के १६ भाग जो क्रम से एक एक करके निकलते और क्षीण होते है। ⊙पूजन=पु० दे० 'षोडशोपचार' ⊙मातृका=स्त्री० एक प्रकार की देवियाँ

जो १६ मानी गई है—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातर और आत्मदेवता। ⊙शृंगार=पु० पूर्ण शृंगार जो सोलह प्रकार का है। ⊙संस्कार=पु० गर्भाधान, पुंसवन, यज्ञोपवीत विवाह आदि सोलह संस्कार। षोडशी—वि० स्त्री० १६वीं। १६ वर्ष की (लड़की या स्त्री)। स्त्री० दस महाविद्याओं में से एक। मृतक संबंधी एक कर्म जो मृत्यु के १०वें या ११वें दिन होता है। षोडशोपचार—पु० पूजन के पूर्ण अंग जो १६ माने गए हैं—आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना।

षोरी†—वि० खोखली, खाली।

ष्ठीवन—पु० [सं०] थूकना।

स

स—हिंदी वर्णमाला का ३२वाँ व्यंजन।

सं—अव्य० [सं० सम्] एक अव्यय जिसका व्यवहार शोभा, समानता, संगति, उत्कृष्टता, निरंतरता आदि सूचित करने के लिये शब्द के आरंभ में होता है (जैसे संयोग, संताप, संतुष्ट आदि)। से।

सँइतना—सक० लीपना, पोतना। संचय करना। सहेजना।

सँउपना(पु)†—सक० दे० 'सौंपना'।

संक(पु)†—स्त्री० दे० 'शंका'।

संकट—वि० सँकरा, तंग। पु० विपत्ति। दुःख, तकलीफ। दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता।

संकटा—स्त्री० [सं०] एक देवी। ज्योतिष में एक योगिनी दशा।

संकत(पु)—पु० दे० 'संकेत'।

संकना(पु)†—अक० शंका करना। डरना।

संकर—पु० [सं०] दो चीजों का आपस में मिलना। वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से हुई हो, दोगला। अलंकारों का एक भेद। इसमें दो या अधिक अलंकार अंगांगिभाव से मिले रहते हैं या एक आश्रय पर स्थित रहते हैं या अनेक अलंकारों का संदेह होता है। पु० [हिं०] दे० 'शंकर'।

संकरा†—वि० पतला और तंग। पु० कष्ट, विपत्ति। (पु)†स्त्री० साँकल, जंजीर।

सँकराना(पु)—सक० सँकरा करना। अक० सँकरा होना।

संकर्षण—पु० [सं०] खींचने की क्रिया। हल से जोतने की क्रिया। कृष्ण के भाई बलराम। वैष्णवों का एक संप्रदाय।

संकल†—स्त्री० सिकड़ी, जंजीर। पशुओं को बाँधने का सिक्कड़।

संकलन—पु० [सं०] संग्रह करना। ढेर। गणित की योग नाम की क्रिया, जोड़। अनेक ग्रंथों से अच्छे विषय चुनने की क्रिया। इस प्रकार संकलित ग्रंथ। संकलयिता—पु० संकलन करनेवाला। संकलित—वि० चुना हुआ। इकट्ठा किया हुआ।

संकलप(पु)†—पु० दे० 'संकल्प'। संकलपना (पु)†—सक० किसी बात का दृढ़ निश्चय करना। किसी धार्मिक कार्य के निमित्त कुछ दान देना, संकल्प करना। अक० इच्छा करना।

संकल्प—पु० [सं०] कार्य करने की इच्छा, विचार। देवकार्य करने से पहले एक निश्चित मंत्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ़ निश्चय या विचार प्रकट करना। ऐसे समय पढ़ा जानेवाला मंत्र। दृढ़ निश्चय। संकल्पित—वि० जिसका संकल्प या निश्चय किया गया हो।

संकष्ट—पु० [सं०] दे० 'संकट'।

संकाना(पु)†—अक० डरना।

संकार‡—स्त्री० इशारा। ⊙ना‡=सक० संकेत करना।
संकाश—अव्य० [सं०] सदृश। समीप, पास। पुं० [हिं०] प्रकाश, चमक।
संकीर्ण—वि० [सं०] संकुचित, तंग। मिश्रित। क्षुद्र, छोटा। पुं० वह राग जो दो अन्य रागों को मिलाकर बने। संकट, विपत्ति। एक प्रकार का गद्य जिसमें कुछ वृत्तगंधि और कुछ अवृत्तगंधि का मेल होता है।
संकीर्तन—पुं० [सं०] किसी की कीर्ति का वर्णन करना। देवता की वंदना, भजन आदि।
संकु(पु)—पुं० दे० 'शंकु'।
संकुचन—पुं० [सं०] दे० 'संकोच'। **संकुचित**—वि० संकोचयुक्त, लज्जित। सिकुड़ा हुआ, तंग। क्षुद्र, उदार का उलटा।
सँकुचना—अक० दे० 'सकुचना'।
संकुल—वि० [सं०] संकीर्ण, घना। भरा हुआ। पुं० युद्ध। समूह, झुंड भीड़, जनता। परस्पर विरोधी वाक्य। **संकुलित**—वि० भरा हुआ, व्याप्त।
संकेत‡—वि० दे० 'सँकरा'। पुं० [सं०] भाव प्रकट करने के लिये कायिक चेष्टा, इशारा। वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलना निश्चित करें, सहेट। चिह्न, निशान। पते की बातें। संकट। ⊙लिपि=स्त्री० दे० 'संक्षिप्त लिपि'।
संकेतना(पु)—सक० संकट या कष्ट में डालना।
संकेलना(पु)—सक० दे० 'सकेलना'।
संकोच—पुं० [सं०] खिंचाव, तनाव। कमी, बहुत सी बातों को थोड़े में कहना, विस्तार का उलटा। लिहाज, मुरव्वत। लज्जा। भय। हिचकिचाहट। एक अलंकार जिसमें 'विकास' अलंकार के विपरीत किसी वस्तु का अतिशय संकोच वर्णन किया जाता है। ⊙ना(पु)=सक० संकुचित करना। संकोच करना।
संकोचिन—पुं० तलवार चलाने का एक ढंग या प्रकार। **संकोची**—वि० सिकुड़नेवाला। संकोच करनेवाला।
संकोपना(पु)—अक० क्रोध करना।
संक्या(पु)—स्त्री० शंका।
संक्रंदन—पुं० [सं०] शक्र, इंद्र।
संक्रमण—पुं० [सं०] गमन, चलना। सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि में प्रवेश करना। **संक्रांति**—स्त्री० सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना या प्रवेश करने का समय। **संक्रामक**—वि० जो संसर्ग या छूत आदि के कारण फैलता हो। **संक्रामी**—वि० दे० 'संक्रामक'।
संक्रोन(पु)—स्त्री० दे० 'संक्रांति'।
संक्षिप्त—वि० [सं०] जो संक्षेप में हो। थोड़ा। ⊙लिपि=स्त्री० एक लेखन प्रणाली जिसमें अक्षरों के स्थान पर संकेतों का प्रयोग होता है और थोड़े काल और स्थान में बहुत सी बातें लिखी जा सकती हैं। **संक्षिप्ति**—स्त्री० नाटक में एक आरभटी जिसमें क्रोध आदि उग्र भावों की निवृत्ति होती है।
संक्षेप—पुं० [सं०] थोड़े में कोई बात कहना। कम करना। ⊙ण=पुं० संक्षिप्त करने की क्रिया या भाव। ⊙तः=अव्य० संक्षेप में, थोड़े में।
संख(पु)—पुं० दे० 'शंख'।
संखनारी—स्त्री० दो यगण का एक छंद, सोमराजी।
संखिया—पुं० एक बहुत जहरीली सफेद उपधातु से तैयार दवा के काम में आनेवाला भस्म।
संख्यक—वि० [सं०] संख्यावाला।
संख्या—स्त्री० [सं०] एक, दो, तीन, चार आदि की गिनती, तादाद। गणित में वह अंक जो किसी वस्तु का गिनती में परिमाण बतलावे, अदद।
संग—पुं० [फा०] पत्थर (जैसे संगमर्मर)। वि० पत्थर की तरह कठोर, बहुत कड़ा। ⊙जराहत=पुं० [अ०] एक सफेद चिकना पत्थर जो घाव भरने के लिये बहुत उपयोगी माना जाता है। ⊙तराश=पुं० पत्थर काटने या गढ़नेवाला मजदूर। ⊙मर्मर=पुं० [अ०] एक बहुत चिकना मुलायम और सफेद

कीमती पत्थर। ⊙मूसा = पु० एक प्रकार का काला, चिकना, कीमती पत्थर। ⊙यशव = पुं० एक प्रकार का हरा कीमती पत्थर जिसे घिसकर धोकर पीने से दिल का धडकना कम हो जाता है, हौलदिली। ⊙सार = पु० अपराधी को पत्थर मारकर उसके प्राण लेना। ⊙सग = पु० [म०] मिलना, मिलन। सहवास, सोहबत। विषयो के प्रति होनेवाला अनुराग। वासना, आसक्ति। क्रि० वि० साथ, हमराह। मु०—(किसी के) ~लगना = साथ हो लेना।

सगठन—पुं० गठन या गढने का कार्य। दे० 'संघटन'। बिखरी हुई शक्तियो या लोगो आदि को इस प्रकार मिलाकर एक करना कि उनमे नवीन बल आ जाय। वह सस्था जो इस प्रकार की व्यवस्था से तैयार हो। सगठित—वि० अच्छी तरह गठित, गढा या रचा हुआ। दे० 'सघटित'। जो भली भाँति व्यवस्था करके एक मे मिलाया हुआ हो।

संगत—स्त्री० सोहबत, सगति। साथी। वह मठ जहाँ उदासी या निर्मले साधु रहते हैं। सवध, ससर्ग। गाने वजाने के काम मे योग देना। वि० मेल या जोड का, उपयुक्त, ठीक।

सगतरा—पु० [पुर्त०] दे० 'संतरा'।

संगति—स्त्री० [स०] मिलने की क्रिया, मिलाप। सग, साथ। मैथुन। सवंध। ज्ञान। आगे पीछे कहे जानेवाले वाक्यो आदि का मिलान। सगतिया, सगती—वि० [हिं०] साथी। गवैए के साथ वाजा वजानेवाला।

संगम—पु० [स०] मिलाप, सयोग। दो नदियो के मिलने का स्थान। प्रयाग मे गगा और यमुना के मिलने का विस्तृत मैदान। साथ, सग।

संगर—पुं० [सं०] युद्ध। विपत्ति। नियम। पु० [फा०] सेना की रक्षा के लिये वनी हुई चारों ओर की खाई या धुस आदि। मोरचा।

संगाती—पु० संगी। दोस्त।

संगारी(प)—पु० सगी, साथी।

संगिनि—स्त्री० [स०] साथी स्त्री।

सगिनी—स्त्री० साथ रहनेवाली स्त्री, सहेली। वि० स्त्री० साथ देनेवाली।

सगी—पु० सग रहनेवाला, साथी। मित्र, वधु। स्त्री० एक प्रकार का कपडा। वि० पत्थर का, सगीन।

सगीत—पुं० [स०] वह कार्य जिसमे नाचना, गाना और वजाना तीनो हो। ⊙शास्त्र = पु० वह शास्त्र जिसमे संगीत का विवेचन हो।

संगीन—पुं० [फा०] लोहे का एक नुकीला अस्त्र जो वदूक के सिरे पर लगाया जाता है। वि० पत्थर का वना हुआ। मोटा। टिकाऊ। विकट, असाधारण (जैसे सगीन जुर्म)।

संगृहीत—वि० [स०] सग्रह किया हुआ। सकलित।

संगोपन—पु० [स०] छिपाना।

सग्रह—पु०[स०] जमा करना, संचय। वह ग्रथ जिसमे अनेक विषयों की वातें एकत्र की गई हो। रक्षा। पाणिग्रहण। ग्रहण करने की क्रिया। संग्रहणी—स्त्री० एक रोग जिसमे खाद्य पदार्थ विना पचे वरावर पाखाने के रास्ते निकल जाता है। सग्रहणीय—वि० दे० 'सग्राह्य'। सग्रहाध्यक्ष—पुं० वह जो किसी सग्रह या सग्रहालय का अध्यक्ष या व्यवस्थापक हो। संग्रहालय—पुं० वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की वहुत सी चीजो का सग्रह हो [अं०] म्यूजियम। संग्रही—वि० दे० 'सग्राहक'।

संग्राम—पु० [सं०] युद्ध, लडाई।

संग्राहक—वि० [सं०] सग्रह करनेवाला।

संग्राह्य—वि० संग्रह करने योग्य।

संघ—पुं० [सं०] समूह, दल। समिति, सभा। प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातन्त्र राज्य। महात्मा वुद्ध द्वारा स्थापित वौद्धो (श्रमणो आदि) का धार्मिक समाज। साधुओ आदि के रहने का मठ, सगत। ⊙पति = पुं० सघ या दल का नायक।

स्थविर=पु० संघाराम का प्रधान बौद्ध भिक्षु। संघट--पु० संघटन। युद्ध। समूह, ढेर। संघटन--पुं० मेल, संयोग। नायक नायिका का संयोग, मिलाप। रचना। बनावट। संघटित--वि० [सं०] जिसका संघटन हुआ हो।

संघट्ट, संघट्टन--पु० [सं०] बनावट, रचना। मिलन, संयोग। दे० 'संघटन'।

संघती†--पुं० दे० 'संघाती'।

संघरना--सक० संहार या नाश करना। मार डालना।

संघर्ष, संघर्षण--पुं० [सं०] रगड़। प्रतियोगिता, स्पर्धा। रगड़ना, घिसना।

संघात--पुं० [सं०] समूह, समष्टि। घनिष्ठ मेल या मिश्रण। ठोसपन, कठोरता। सहयात्रा, काफिले का साथ। आघात। हत्या। नाटक में एक प्रकार की गति। शरीर। निवासस्थान।

संघाती--पुं० साथी। मित्र। (पु) स्त्री० सहेली।

संघार(पु)†--पुं० दे० 'संहार'। ⊙ना(पु) =सक० संहार या नाश करना। मार डालना।

संघाराम--पु० [सं०] बौद्ध भिक्षुओं आदि के रहने का मठ, विहार।

संघोष--पुं० [सं०] जोर का शब्द।

संच(पु)†--पुं० संचय। रक्षा, देखभाल। ⊙कर(पु) = पुं० संचय करनेवाला। कंजूस।

संचक(पु)--पुं० दे० 'सचकर'।

संचना(पु)†--सक० संचय करना। रक्षा-करना।

संचय--पुं० [सं०] समूह, ढेर। एकत्र या संग्रह करना।

संचरण--पुं० [सं०] संचार करने की क्रिया। चलना। संचारित--वि० जिसमें संचार हुआ हो।

संचरना(पु)†--अक० घूमना, चलना। फैलना। प्रचलित होना।

संचान--पु० [सं०] बाज पक्षी।

संचार--पु० [सं०] गमन, चलना। फैलना। चलना। ⊙क = वि० संचार करनेवाला। ⊙ना(पु)† = सक० किसी वस्तु का संचार करना। प्रचार करना, फैलाना। जन्म देना। संचारिका--स्त्री० दूती, कुटनी। संचारी--पु० वायु, हवा। साहित्य में वे क्षणिक भाव जो किसी प्रधान या स्थायी भाव के बीच में उठकर उसकी पुष्टि करते हैं, व्यभिचारी भाव। वि० गतिशील।

संचालक--पुं० [सं०] चलाने या गति देने-वाला। संचालन--पु० चलाने की क्रिया; काम जारी रखना। संचालित--वि० चलाया या जारी किया हुआ।

संचित--वि० [सं०] संचय या जमा किया हुआ।

संचौनी(पु)--स्त्री० संग्रह।

संजम(पु)--पु० दे० 'संयम'।

संजात--वि० [सं०] उत्पन्न। प्राप्त।

संजाफ--स्त्री० [फा०] झालर, किनारा। चौड़ी और आड़ी गोट जो रजाइयों आदि में लगाई जाती है, गोट। पुं० एक प्रकार का घोड़ा जिसका रंग आधा लाल और आधा सफेद या आधा आधा हरा होता है। संजाफी--पुं० आधा लाल और आधा हरा घोड़ा।

संजाव--पु० दे० 'संजाफ'।

संजीदा--वि० [फा०] गंभीर। शांत। समझदार।

संजीवन--पु० [सं०] भली भाँति जीवन व्यतीत करना। जीवन देनेवाला। संजीवनी--वि० स्त्री० [सं०] जीवनी देने-वाली। स्त्री० एक प्रकार की कल्पित औषधि कहते हैं कि इसके सेवन से मुर्दा जी उठता है। ⊙विद्या = स्त्री० एक प्रकार की कल्पित विद्या। कहते हैं कि इस विद्या के द्वारा मरे हुए को जिलाया जा सकता है।

संजुक्त--वि० दे० 'संयुक्त'।

संजुग(पु)--पु० संग्राम, युद्ध।

संजुत(पु)--वि० दे० 'संयुत'। पुं० युद्ध।

संजुता--स्त्री० दे० 'संयुत' (छंद)।

संजूत--वि० सावधान, तैयार।

संजोइ(पु)--क्रि० वि० साथ में।

संजोइल(पु)—वि० अच्छी तरह सजाया हुआ। जमा किया हुआ।

सजोऊ(पु)—पु० तैयारी, उपक्रम। सामग्री।

संजोग—पु० दे० 'सयोगी'। सजोगी—पु० दे० 'सयोगी'।

संजोना, सँजोना—सक० सजाना।

सजोवल, सँजोवल(पु)†—वि० सुसज्जित। सेना सहित। सावधान। सचेत, सजग।

संज्ञक—वि० [सं०] सज्ञावाला, जिसकी सज्ञा हो (यौगिक मे)।

सज्ञा—स्त्री० [सं०] चेतना, होश। बुद्धि। ज्ञान। नाम। व्याकरण मे वह विकारी शब्द जिससे किसी पदार्थ या कल्पित वस्तु का बोध होता है (जैसे मकान, नदी)। सूर्य की पत्नी जो विश्वकर्मा की कन्या थी। सकेत। ⊙हीन = वि० बेहोश, बेसुध।

संझला†—वि० सध्या का।

संझबाती—स्त्री० सध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक। वह गीत जो सध्या के समय गाया जाता है।

संझा†—स्त्री० सध्या, शाम।

संझोखे(पु)—स्त्री० सध्या का समय।

सड—पु० सॉड। ⊙मुसड = वि० हट्टा कट्टा, मोटा ताजा।

सड़सा—पुं० कैंची के आकार का एक औजार जिससे कोई वस्तु कसकर पकडी जाती है, जँबूरा।

सडा—वि० मोटा ताजा, हृष्ट पुष्ट।

सडास—पुं० कुएँ की तरह का एक प्रकार का भूमि के नीचे खोदा हुआ गहरा पाखाना, शौचकूप।

सत—पुं० साधु, सन्यासी या त्यागी पुरुष, महात्मा। ईश्वर भक्त, धार्मिक पुरुष। २१ मात्राओ का एक छद।

संतत—अव्य० [सं०] निरतर, लगातार।

सतति—स्त्री० [सं०] बाल बच्चे, सतान। प्रजा, रिआया।

सतपन—पुं० [सं०] अच्छी तरह तपना। बहुत दुःख देना। सतप्त वि० बहुत तपा हुआ, जला हुआ। दुःखी, पीडित।

सतरण—पु० [सं०] अच्छी तरह से तरना या पार होना। जल आदि द्रव पदार्थ के ऊपरी तल पर चलना। उतराना। तारनेवाला।

सतरा—पुं० एक प्रकार का बडा और मीठा नीबू।

सतरी—पुं० पहरेदार। द्वारपाल।

सतान—स्त्री० [सं०] बालबच्चे, औलाद। पुं० विस्तार। वह प्रवाह जो अविच्छिन्न रूप से चलता हो। प्रबध। कल्पवृक्ष।

सताप—पु० [सं०] ताप, आँच। दुःख, कष्ट। मानसिक कष्ट। पु० सताप देना, जलाना। बहुत दुःख या कष्ट देना। कामदेव के पॉच बाणो मे से एक। संतापि—वि० दे० 'सतप्त'। संतापीत—पु० सताप देनेवाला। सक० सताप देना, कष्ट पहुँचाना।

सती†—अव्य० बदले मे एवज मे। द्वारा, से।

संतुलन—पु० [सं०] तोल या भार बराबर और ठीक करना। दो पक्षो का बल बराबर रखना।

सतुष्ट—वि० [सं०] जिसका सतोष हो गया हो, तृप्त। जो मान गया हो।

संतोख—पुं० दे० 'सतोष'।

सतोष—पु० [सं०] हर हालत मे प्रसन्न रहना, सब्र। तृप्ति, इतमीनान। प्रसन्नता, शुभ। सक० सतोष दिलाना। अक० सतुष्ट होना, प्रसन्न होना। संतोषित—वि० दे० 'सतुष्ट'। सतोषी—पु० वह जो सदा सतोष रखता हो, सब्र करनेवाला।

सत्रस्त—वि० [स०] डरा हुआ। पीडित।

सत्री—पु० दे० 'सतरी'।

संथा—पुं० एक बार मे पढाया हुआ अश, पाठ।

सद†—पुं० दबाव।

सदर्भ—पु० [सं०] रचना, बनावट। निबध, लेख। छोटी पुस्तक।

संदर्शन—पुं० [स०] अच्छी तरह देखना।

संदल—पुं० [फा०] श्रीखंड, चंदन। संदली—वि० संदल के रंग का, हलका पीला (रंग), चंदन का। पुं० एक प्रकार का हलका पीला रंग। एक प्रकार का हाथी। घोड़े की एक जाति।

संदि—(पु) स्त्री० मेल, संधि।

संदिग्ध—वि० [सं०] जिसमें संदेह हो। संदेहपूर्ण। ⊙त्व = पुं० संदिग्ध होने का भाव या धर्म। किसी उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट न होना, अलंकार शास्त्रानुसार एक दोष।

संदीपन—पुं० [सं०] उद्दीपन। कृष्ण के गुरु का नाम। कामदेव के पाँच बाणों में से एक। वि० उद्दीपन या उत्तेजना करनेवाला।

संदूक—पुं० [अ०] लकड़ी, लोहे आदि का बना हुआ चौकोर पिटारा, पेटी। ⊙चा = पुं० दे० 'संदूकड़ी'। संदूकड़ी—स्त्री० छोटा संदूक।

संदूर—पुं० दे० 'सिंदूर'।

संदेश—पुं० [सं०] समाचार, हाल। एक प्रकार की बँगला मिठाई।

संदेशा—पुं० दे० 'संदेसा'। संदेसड़ा—पुं० संदेसा, संदेश। संदेसा—पुं० जबानी कहलाया हुआ समाचार, खबर, हाल। संदेसी—पुं० संदेसा लाने और ले जानेवाला, दूत।

संदेह—पुं० [सं०] किसी विषय में निश्चित न होनेवाला विश्वास, शक। एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी चीज को देखकर संदेह बना रहता है।

संदेहिल—वि० संदेहवाला।

संदोह—पुं० [सं०] समूह, झुंड।

संध(पु)—स्त्री० दे० 'संधि'। ⊙ना† = अक० संयुक्त होना।

संधान—पुं० [सं०] लक्ष्य करना, निशाना लगाना। योजना, मिलाना। खोज। काठियावाड़ का एक नाम। संधि। काँजी। ⊙ना† = सक० निशाना लगाना। बाण छोड़ना।

संधाना—पुं० आचार।

संधि—स्त्री० [सं०] मेल, संयोग। मिलने की जगह, जोड़। राजाओं आदि में होनेवाली वह प्रतिज्ञा जिसके अनुसार युद्ध बंद किया जाता है अथवा मित्रता या व्यापार संबंध स्थापित किया जाता है। सुलह, मैत्री। शरीर का कोई जोड़। व्याकरण में दो अक्षरों का मेल और उसके कारण होनेवाला रूपांतर। नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होनेवाला संबंध। सेंध। एक अवस्था या काल के अंत और दूसरी अवस्था या काल के आरंभ के बीच का समय (जैसे, युगसंधि, कालसंधि, वयसंधि आदि)। बीच की खाली जगह, दरार। ⊙तट = पुं० संधिस्थल, जोड़ का स्थान।

संध्या—स्त्री० [सं०] दिन और रात दोनों के मिलने का समय। सायंकाल। आर्यों की एक विशिष्ट उपासना जो प्रतिदिन प्रातःकाल, मध्याह्न और संध्या के समय होती है।

संन्यस्त—वि० [सं०] जिसने संन्यास लिया हो। पूरी तरह से किसी काम में लगा हुआ, कटिबद्ध।

संन्यास—पुं० [सं०] भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में अंतिम जो वानप्रस्थ के बाद प्रारंभ होता है। इसमें सदा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहना, दंड और कमंडलु साथ रखना, शिखा और सूत्र का परित्याग करके सिर मुँड़ाए रहना, भिक्षा द्वारा जीवन निर्वाह करना, एकांतवास करना, तृष्णा त्यागकर समता धारण करना, नित्य, नैमित्तिक आदि कर्म निष्काम भाव से करते रहना और सदुपदेश देकर लोककल्याण की साधना आवश्यक माना गया है। संन्यासी—पुं० संन्यास आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला।

संपजना(पु)—अक० उपजना, पैदा होना। प्रकाशित होना।

संपति—स्त्री० दे० 'संपत्ति'।

संपत्ति--स्त्री० [सं०] ऐश्वर्य, वैभव। धन, दौलत, जायदाद।
संपद्--स्त्री० [सं०] सिद्धि, पूर्णता। ऐश्वर्य, वैभव। सौभाग्य।
संपदा--स्त्री० धन, दौलत। ऐश्वर्य। वैभव।
संपन--(पु)वि० संपन्न।
संपन्न--वि० [सं०] पूरा किया हुआ, सिद्ध। सहित, युक्त। धनी।
संपर्क--पु० [सं०] मिलावट। लगाव, वास्ता। स्पर्श, सटना।
संपर्कित--वि० दे० 'संपृक्त'।
संपा(पु)--स्त्री० विद्युत्, बिजली।
संपात--पु० [सं०] एक साथ गिरना या पड़ना। संसर्ग, मेल। समागम। वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी पर पड़े या मिले।
संपादक--पु० [सं०] काम संपन्न या पूरा करनेवाला। तैयार करनेवाला। किसी की कृति को प्रकाशन के योग्य बनानेवाला व्यक्ति। समाचारपत्र या पुस्तक को क्रम आदि लगाकर निकालनेवाला (अँ० एडीटर)। संपादकीय--वि० संपादक का। संपादन--पु० काम को पूरा करना। दुरुस्त करना। किसी की कृति को प्रकाशन के योग्य बनाना। किसी पुस्तक या संवादपत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना। संपादित--वि० [सं०] पूरा किया हुआ। प्रकाशन योग्य बनाया हुआ। क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ (पत्र, पुस्तक आदि)।
संपुट--पु० [सं०] पात्र के आकार की कोई वस्तु। खप्पर, ठीकरा। दोना। डिब्बा। अंजली। फूल के दलों का ऐसा समूह जिसके बीच में खाली जगह हो, कोश। कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या औषधि फूकते हैं।
संपुटी--स्त्री० कटोरी, प्याली।
संपूर्ण--वि० [सं०] खूब भरा हुआ। सब, बिलकुल। समाप्त। पु० वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों। आकाशभूत। ⊙तः = क्रि० वि० पूरी तरह से। ⊙तया = क्रि० वि० पूरी तरह से। ⊙ता = स्त्री० पूरापन। समाप्ति।
संपृक्त--वि० [सं०] जिसमें संपर्क हो। मिला हुआ।
सँपेरा--साँप पालनेवाला, मदारी।
सँपै(पु)--स्त्री० दे० 'संपत्ति'।
सँपोला--पु० साँप का बच्चा।
संपोषण--पुं० [सं०] अच्छी तरह पालन पोषण करना।
संप्रज्ञात--पु० [सं०] योग में वह समाधि जिसमें साधक को अपने पार्थक्य का ज्ञान बना रहता है जिसमें वह एकाकार वृत्ति में नहीं हो पाता।
संप्रति--अव्य० [सं०] अभी, आजकल। मुकाबले में।
संप्रदान--पुं० [सं०] दान देने की क्रिया या भाव। दीक्षा, मंत्रोपदेश। एक कारक जिसमें शब्द 'देना' क्रिया का लक्ष्य होता है। इसका चिह्न 'को' और 'के लिये' है (व्या०)।
संप्रदाय--पुं० [सं०] गुरुमंत्र। धर्मसंबंधी विशेष मत। किसी मत के अनुयायियों की मंडली, फिरका। परिपाटी, रीति, चाल।
संप्राप्त--वि० [सं०] पहुँचा हुआ, उपस्थित। पाया हुआ। घटित, जो हुआ हो।
संबंध--पुं० [सं०] एक साथ बाँधना, जुड़ना या मिलना। लगाव, संपर्क। नाता, रिश्ता। संयोग, मेल। विवाह, सगाई। व्याकरण में एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का संबंध सूचित होता है (जैसे राम 'का' घोड़ा)। संबंधातिशयोक्ति--स्त्री० अतिशयोक्ति अलंकार का भेद जिसमें असंबंध में संबंध दिखाया जाता है। संबंधित--वि० दे० 'संबद्ध'। संबंधी--वि० संबंध या लगाव रखनेवाला। विषयक। पुं० रिश्तेदार। समधी।
संबत्--पु० दे० 'संवत्'।
संबद्ध--वि० [सं०] बँधा हुआ, जुड़ा हुआ। संबंधयुक्त। बंद।

संबल—पुं०[सं०] रास्ते का भोजन, सफर-खर्च। सहारा, सहायता।

संबुद्ध—पुं०[सं०] ज्ञानवान्। ज्ञात। बुद्ध। जिन।

संबोधन—पुं० [सं०] जगाना, नींद से उठाना। पुकारना। व्याकरण मे वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या बुलाने के लिये प्रयोग सूचित होता है (जैसे, हे राम !)। जताना। नाटक मे आकाशभाषित। समझाना बुझाना।

संबोधना(पु)—सक० समझाना बुझाना।

संभरना—सक० दे० 'सँभालना'।

संभलना—अक० [सक० सँभलना] बोझ आदि का थामा जा सकना। किसी सहारे पर रुका रह सकना। सावधान होना। चोट या हानि से बचाव करना। कार्य का भार उठाया जाना। चगा होना।

संभव—पुं० [सं०] उत्पत्ति, जन्म। मेल, सयोग। होना। हो सकना, मुमकिन होना। वि० उत्पन्न (यौ० के अत मे)। ⊙तः = अव्य० मुमकिन है, शायद। ⊙ना(पु)—सक० उत्पन्न करना। अक० उत्पन्न होना। हो सकना। **संभवनीय**—वि० [सं०] सभव, मुमकिन।

संभार—पुं० [सं०] सचय। तैयारी। साज सामान। धन, सपत्ति। पालन पोषण। (पु)पुं०[हिं०] देखरेख, खबरदारी। पालन-पोषण। वश मे रखने का भाव, निरोध। तन बदन की सुध। **सार सँभार**—पुं० पालन पोषण और निरीक्षण का भार।

संभारना(पु)†—सक० दे० सँभालना। याद करना।

सँभाल—स्त्री० रक्षा, हिफाजत। पोषण का भार। देखरेख। तन-बदन की सुध। ⊙ना—सक० भार ऊपर ले सकना। काबू मे रखना। गिरने न देना, थामना। रक्षा करना, बुरी दशा को प्राप्त होने से बचना। पालन पोषण करना। देखरेख करना। निर्वाह करना। कोई वस्तु ठीक ठीक है, इसका इतमीनान कर लेना, सहेजना। मनोवेग को रोकना। **सँभाला**—पुं० मरने के पहले कुछ चेतनता सी आना।

सँभालू—पुं० श्वेत सिंधुवार वृक्ष।

संभावना—स्त्री० [सं०] कल्पना, अनुमान। हो सकना। प्रतिष्ठा। एक अलकार जिसमे किसी एक बात के होने पर दूसरी का होना निर्भर होता है। **संभावित**—वि० कल्पित, मन मे माना हुआ। जुटाया हुआ। सभव। प्रतिष्ठित। **संभाव्य**—वि० सभव, मुमकिन।

संभाषण—पुं०[सं०]कथोपकथन, बातचीत। **संभाषी**—वि० कहनेवाला, बोलनेवाला। **संभाष्य**—वि० [सं०] जिससे बातचीत करना उचित हो।

संभूत—वि० [सं०] एक साथ उत्पन्न। उत्पन्न। युक्त, सहित।

संभूय—अव्य० [सं०] साझे मे। मिलजुलकर, एक साथ। ⊙समुत्थान = पुं० साझे का कारबार।

संभोग—पुं० [सं०] सुखपूर्वक व्यवहार, उपभोग। रतिक्रीड़ा, मैथुन। सयोग शृंगार, मिलाप की दशा।

संभ्रम—पुं० [सं०] घबराहट, व्याकुलता। सहम, सिटपिटाना। आदर, मान। चक्कर, फेरा। उमग, जोश। आतुरता, जल्दी। क्रि० वि०—झपटकर, तेजी से। **संभ्रांत**—वि० [सं०] घबराया हुआ, उद्विग्न। प्रतिष्ठित।

संभ्राजना(पु)—अक० पूर्णत सुशोभित होना

संमत—वि० दे० 'सम्मत'।

संयत—वि० [सं०] बँधा हुआ। दबाव मे रखा हुआ। दमन किया हुआ, वशीभूत। बद किया हुआ, कैद। क्रमबद्ध, व्यवस्थित। जिसने इद्रियो और मन को वश मे किया हो, निग्रही। उचित सीमा के भीतर रोका हुआ।

संयम—पुं०[सं०] रोक, दाब। इंद्रियनिग्रह, आत्मनिग्रह। परहेज। बाँधना, बधन। बंद करना। योग मे ध्यान, धारणा और समाधि तीनो का वाचक शब्द, मनोनिग्रह। **संयमन**—पुं० दे० 'सयम'। **संयमनी**—

स्त्री० यमपुरी । सयमी--वि० रोक या दवाव मे रखनेवाला । मन और इद्रियो को वश मे रखनेवाला । परहेजगार ।

सयुक्त--वि० [सं०] जुडा हुआ, लगा हुआ । मिला हुआ । सवद्ध । सहित । सयुक्ता--स्त्री० [सं०] एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, दो जगण और अत्यगुरु कुल १० वर्ण होते है ।

सयुग--पु० [स०] मेल, सयोग । युद्ध, लडाई ।

सयुत--वि० [सं०] जुडा हुआ, मिला हुआ । सहित, साथ । पुं० एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है ।

सयोग--पु० [सं०] मिलावट, मिश्रण । समागम, मिलाप । लगाव, सवध । स्त्री० पुरुष का प्रसग । विवाह सवध । जोड, योग । दो या कई वातो का इकट्ठा होना, इत्तफाक । मु०--से = विना पहले से निश्चित हुए, दैववशात् । संयोगी--पुं० सयोग करनेवाला । वह पुरुष जो अपनी प्रिया के साथ हो ।

सयोजक--पु० [सं०] मिलानेवाला । व्याकरण मे वह शब्द जो शब्दो, वाक्याशो, उपवाक्यो या वाक्यो को जोडता है । वह व्यक्ति जो किसी सभा या समिति के द्वारा किसी समिति या उपसमिति के अधिवेशन या कार्यसपादन कराने और उसका कार्य संचालित करने के लिये नियुक्त होता है और उस समिति या उपसमिति के मत्री या अध्यक्ष के रूप मे काम करता है । सयोजन--पु० जोडने या मिलाने की क्रिया । चित्र अकित करने मे प्रभाव या रमणीयता लाने के लिये आकृतियो को ठीक जगह पर वैठाना ।

संयोना(पु)--सक० दे० 'सँजोना' ।

संरक्षक--पु० [सं०] रक्षक । देखरेख और पालन पोषण करनेवाला । आश्रय देनेवाला । संरक्षण--पु० हानि या नाश आदि से वचाने का काम, हिफाजत । देखरेख । अधिकार, कब्जा । दूसरो की प्रतियोगिता से अपने व्यापार आदि की रक्षा । सरक्षित--वि० हिफाजत मे रखा हुआ । अच्छी तरह से वचाया हुआ । अपनी देखरेख मे लिया हुआ ।

सलक्ष्य--वि० [स०] जो लखा जाय । ⊙क्रम व्यग्य = पुं० वह व्यजना जिसमे वाच्यार्थ मे व्यग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो (साहित्य) ।

संलग्न--वि० [स०] सटा हुआ । साथ मे लगा हुआ, सवद्ध । लडाई मे गुँथा हुआ ।

सलाप--पु० [सं०] वातचीत । नाटक मे एक प्रकार का सवाद जिसमे धीरता होती है । ⊙क = पु० एक प्रकार का उपरूपक । दे० 'सलाप' ।

संवत्--पुं० [सं०] वर्ष, साल । वर्षविशेष जो किसी सख्या द्वारा सूचित किया जाता है, सन् । महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई मानी जानेवाली वर्षगणना । संवत्सर--पु० वर्ष, साल ।

संवर--स्त्री० स्मरण, याद । खवर । हाल । पुल । चुनना ।

संवरण--पु० [सं०] दूर रखना । वद करना । आच्छादित करना । छिपाना । चित्तवृत्ति को दवाना या रोकना, निग्रह । पसद करना । कन्या का विवाह के लिये वर या पति चुनना ।

सँवरना--अक० दुरुस्त होना । सजना, अलकृत होना । सक० स्मरण करना ।

सँवरिया--वि० दे० 'साँवला' ।

सवर्धक--पु० [सं०] वढानेवाला । संवर्धन--पु० बढना । पालना, पोसना । वढाना ।

सवलित--वि० [सं०] भिडा हुआ, जुटा हुआ । युक्त, सहित । घिरा हुआ ।

सँवा(पु)--वि० समान, तुल्य ।

सवाद--पु० [सं०] वातचीत । खवर, हाल । प्रसग, चर्चा । मुकदमा, मामला । ⊙दाता पु० वह जो समाचारपत्रो मे स्थानीय समाचार भेजता हो । सवादी--वि० सवाद या वातचीत करनेवाला । सहमत या अनु-

कूल होनेवाला। पुं० सगीत मे वह स्वर जो वादी के साथ सब स्वरो के साथ मिलता और सहायक होता है।

संवार—पुं० [स०] ढाँकना, छिपाना। शब्दो के उच्चारण मे बाह्य प्रयत्नो मे से एक जिसमे कठ का आकुचन होता है।

सँवार—स्त्री० हाल, खबर। सँवारने की क्रिया या भाव। ⊙ना = सक० सजाना। दुरुस्त करना, ठीक करना। क्रम से रखना। काम ठीक करना।

संवास—पुं० [सं०] सुगध। श्वास के साथ मुह से निकलनेवाली दुर्गंध। सार्वजनिक निवासस्थान। मकान, घर।

संवाहन—पु० [स०] उठाकर ले चलना, ढोना। ले जाना, पहुँचाना। चलाना।

संविद्—स्त्री० [स०] चेतना, ज्ञानशक्ति। बोध, समझ। बुद्धि, महत्तत्व। सवेदन, अनुभूति। मिलने का स्थान जो पहले से ठहराया गया हो। वृत्तात। नाम। युद्ध, लडाई। जायदाद। वि० चेतन, चेतनायुक्त।

संविधान—पु० [सं०] राज्य या राष्ट्र के सघटन की रीति, राज्यनियम। प्रबध, व्यवस्था। रीति, दस्तूर। रचना।

संवृत—वि० [सं०] ढका या घिरा हुआ। रक्षित।

सवेद—पुं० [सं०] अनुभव, वेदना। ज्ञान, बोध। **सवेदन**—पुं० [सं०] अनुभव करना, सुख दु ख आदि की प्रतीति करना। ज्ञान। जताना। **सवेदना**—स्त्री० दे० 'सवेदन'। स्त्री० [हिं०] दे० 'समवेदना'। **सवेद्य**—वि० अनुभव करने योग्य। बताने लायक।

संशय—पुं० [सं०] अनिश्चयात्मक ज्ञान, शक। आशका, डर। सदेह नामक काव्यालकार। **संशयात्मक**—वि० जिसमे सदेह हो, सदिग्ध। **सशयात्मा**—पुं० जो किसी बात पर विश्वास न करे, जो हर बात के लिये सदेह से भरा हो। **सशयित**—वि० सशययुक्त, दुबिधा मे पड़ा हुआ। संदिग्ध, अनिश्चित। **सशयी**—वि० सशय या सदेह करनेवाला। शक्की। **सशयोपमा**—स्त्री० [सं०] एक उपमा अलकार जिसमे कई वस्तुओ के साथ समानता सशय के रूप मे कही जाती है।

संशुद्ध—वि० [स०] जिसका सशोधन हुआ हो।

संशोधक—पुं० [सं०] सुधारनेवाला। बुरी से अच्छी दशा मे लानेवाला। **सशोधन**—पुं० शुद्ध करना, साफ करना। दुरुस्त करना, ठीक करना। चुकता करना (ऋण आदि)। **सशोधित**—वि० [सं०] शुद्ध किया हुआ। सुधारा हुआ।

सश्रय—पुं० [स०] सयोग, मेल। सबध लगाव। आश्रय, शरण। सहारा, अवलब। मकान, घर। **सश्रयण**—पुं० सहारा लेना। शरण लेना। **सश्रित**—वि० लगा हुआ। शास्त्र मे आया हुआ। दूसरे के सहारे रहनेवाला।

सश्लिष्ट—वि० [सं०] मिला हुआ, समिलित। सटा हुआ, जुडा हुआ। आलिंगित।

सश्लेष—पु० [स०], मेल, मिलाप। मिलान, सटाव। आलिंगन। **सश्लेषण**—पुं० एक मे मिलाना, सटाना। प्टकाना, टाँगना।

सस Ⓟ—स्त्री० आशका। **ससइ**—स्त्री० पुं० सशय, आशका।

ससक्ति—स्त्री० [सं०] लगाव, सबध। आसक्ति, लगन। लीनता। प्रवृत्ति।

ससद—स्त्री० [सं०] बहुत से आदमियो का जमाव, सभा। भारत की विधान बनानेवाली सभा जिसके तीन अग—राष्ट्रपति, राज्यसभा और लोकसभा—हैं।

ससरण—पुं० [सं०] चलना, गमन करना। ससार। सडक, रास्ता।

संसर्ग—पु० [सं०] सबध लगाव। मेल, मिलाप। सग साथ। स्त्री पुरुष का सहवास ⊙**दोष** = पुं० वह बुराई जो किसी के साथ रहने से आवे। **संसर्गी**—वि० ससर्ग या लगाव रखनेवाला।

संसा(पु)—पुं० दे० 'संशय'।

संसाध्य—वि० [सं०] करने योग्य। पूरा करने योग्य। जीतने योग्य।

संसार—पुं० [सं०] जगत्, दुनिया। मर्त्यलोक। गृहस्थी। बार बार जन्म लेने की परंपरा। लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाते रहना। ⊙तिलक = पुं० एक प्रकार का उत्तम चावल। संसारी—वि० लौकिक। संसार की माया में फँसा हुआ, लोक व्यवहार में कुशल, बार बार जन्म लेनेवाला।

संसिक्त—वि० [सं०] बहुत गीला या आर्द्र।

संसृति—स्त्री० [सं०] जन्म पर जन्म लेने की परंपरा, आवागमन। संसार।

संसृष्ट—वि० [सं०] एक में मिला जुला। संबद्ध, परस्पर लगा हुआ। शामिल। संसृष्टि—स्त्री० [सं०] एक साथ उत्पत्ति या आविर्भाव। मिलावट। संबंध, लगाव। हेलमेल, घनिष्ठता। इकट्ठा करना। दो या अधिक काव्यालंकारों का ऐसा मेल जिसमें सब चावल और तिल के समान अलग अलग मालूम पड़ें।

संसेवन—पुं० [सं०] दे० 'सेवन'।

संस्करण—पुं० [सं०] ठीक करना, दुरुस्त करना। शुद्ध करना। सुधारना। द्विजातियों के लिये विहित संस्कार करना। पुस्तकों की एक बार की छपाई, आवृत्ति (आधुनिक)।

संस्कर्ता—पुं० [सं०] संस्कार करनेवाला।

संस्कार—पुं० [सं०] ठीक करना, दुरुस्ती। सजाना। साफ करना, परिष्कार। शिक्षा, उपदेश, संगत आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव। पिछले जन्म की बातों का असर जो आत्मा के साथ लगा रहता है। धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना। जन्म से लेकर मृत्यु तक किए जानेवाले वे १६ कृत्य जो धर्मशास्त्र के अनुसार द्विजातियों के लिये जरूरी हैं। मृतक की क्रिया। इंद्रियों के विषयों के ग्रहण से मन में उत्पन्न प्रभाव। ⊙क = वि० संस्कार करनेवाला। शुद्ध करनेवाला। ⊙हीन = वि० जिसका संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

संस्कृत—वि० [सं०] संस्कार किया हुआ। शुद्ध किया हुआ। परिमार्जित, परिष्कृत। साफ किया हुआ। सुधारा हुआ। सँवारा हुआ, सजाया हुआ। जिसका उपनयन आदि संस्कार हुआ हो। स्त्री० भारत की प्राचीन और पवित्र भाषा जो आर्यों की ज्ञात भाषाओं में सबसे पुरानी है, देववाणी। संस्कृति—स्त्री० [सं०] शुद्धि, सफाई। संस्कार, सुधार। सजावट। सभ्यता। २८ वर्ण का एक वृत्त की संज्ञा।

संस्था—स्त्री० [सं०] ठहरने की क्रिया या भाव, स्थिति। व्यवस्था, मर्यादा। जत्था, गरोह। संघटन, समुदाय। संस्थान—पुं० ठहराव, स्थिति। खड़ा रहना, टटारहना। स्थापन। अस्तित्व, जीवन। घर। बस्ती जनपद। सर्वसाधारण के इकट्ठे होने की जगह। राज्य। समष्टि, योग। प्रबंध। नाश, मृत्यु। संस्थापक—पुं० संस्थापन करनेवाला। संस्थापन—पुं० खड़ा करना, उठाना (भवन आदि)। जमाना, बैठाना। नई बात चलाना।

संस्मरण—पुं० [सं०] पूर्ण स्मरण। किसी व्यक्ति के संबंध की स्मरणीय घटना। अच्छी तरह सुमिरना या नाम लेना।

संहत—वि० [सं०] जुड़ा या सटा हुआ। संयुक्त, सहित। कड़ा। घना। मजबूत। इकट्ठा। संहति—स्त्री० मेल। जुटाव। ढेर। समूह भुंड। ठोसपन। संधि, जोड़।

संहरना(पु)—अक० संहार होना। सक० संहार करना।

संहार—पुं० [सं०] नाश। समाप्ति। परिहार। इकठ्ठा करना, समेटना। गूँथना (केशों को)। छोड़े हुए बाण को वापस लेना। ⊙क = वि० संहार करनेवाला। ⊙काल = पुं० प्रलय काल। ⊙ना(पु) = सक० मार डालना। नाश करना।

संहिता—स्त्री० [सं०] मिलावट। व्याकरण के अनुसार दो अक्षरों का मिलकर

एकहोना, सधि। किसी ग्रथ का स्वरभेद पर निर्धारित पाठक्रम (विशेषत शब्दो या पदो के उच्चारण के समुचित परि-वर्तन के ध्यान से सकलित वैदिक मत्रो का सग्रह, मूल पाठ या पद्यो का क्रमिक सग्रह)।

स—पुं० [सं०] सगीत मे षड्ज स्वर का सूचक अक्षर। छद शास्त्र मे 'सगण' शब्द का सक्षिप्त रूप। उप० एक उपसर्ग जिसका प्रयोग शब्दो के आरभ मे कुछ विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करने के लिये होता है, जैसे—(क) सजीव = सह + जीव, (ख) सगोत्र = स्व + गोत्र, (ग) सपूत = सु + पुत्र।

सई(पु)—अव्य० से, साथ। एक विभक्ति जो करण और अपादान कारक का चिह्न है।

सउ(पु)—अव्य दे० 'सो'।

सक†—स्त्री० दे० 'शक्ति' या 'सकत'। पु० साका, धाक। दे० 'शक'।

सकट—पु० गाडी, छकडा।

सकत'—स्त्री० बल, सामर्थ्य। वैभव, सपत्ति। क्रि० वि० जहाँ तक हो सके, भरसक।

सकता—स्त्री० शक्ति, बल। सामर्थ्य। पु० बेहोशी की बीमारी। विराम, यति। मु०~पड़ना = छद मे यतिभग दोष होना।

सकती—स्त्री० दे० 'शक्ति'।

सकना—अक० करने योग्य होना।

सकपकाना—अक० आश्चर्ययुक्त होना। हिचकना। लज्जित होना। प्रेम, लज्जा या शंका से उत्पन्न एक प्रकार की चेष्टा। हिलना डोलना।

सकरना—सक० सकारा जाना। मजूर होना। कबूला जाना।

सकरपाला—पु० दे० 'शकरपारा'।

सकर्मक—वि० [सं०] कर्म से युक्त। काम मे लगा हुआ। ⊙क्रिया = स्त्री० व्याकरण मे वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त हो (जैसे, खाना, देना, लेना)।

सकल—वि० [सं०] सब, समस्त। पु० निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति।

सकलात—पु० ओढने की रजाई। सौगात। मखमल। सकलाती—वि० उपहार मे देने के योग्य, बहुत बढिया। मख-मल का।

सकसना, सकसकाना(पु)†—अक० डर के मारे काँपना।

सकाना(पु)†—अक० शका करना। भय के कारण सकोच करना, हिचकना। दुखी होना। सक० सकना का प्रेरणार्थक।

सकाम—पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसे कोई कामना या इच्छा हो। वह व्यक्ति जिसकी कामना पूर्ण हुई हो। कामवासनायुक्त व्यक्ति। वह जो कोई कार्य फल मिलने की इच्छा से करे। वि० फल मिलने की इच्छा से किया जानेवाला।

सकारना—अक० स्वीकार या मजूर करना। महाजनो का हुडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले उसपर हस्ताक्षर करना।

सकारे†—क्रि० वि० सबेरे।

सकाश—अव्य० दे० 'सकाश'।

सकिलना†—अक० फिसलना, सरकना। सिमटना।

सकुच(पु)†—स्त्री० लाज, शर्म। ⊙ना = अक० लज्जा करना। (फूलो का) बद होना। सकुचाना—अक० सकोच करना। सक० सिकोडना। सकुचित या लज्जित करना। सकुचाई(पु)—स्त्री० लज्जा।

सकुची—स्त्री० कछुए के आकार की एक मछली।

सकुचौला, सकुचौहाँ—वि० सकोच करने-वाला, लजीला।

सकुन(पु)—पु० पक्षी, चिडिया। दे० 'शकुन'।

सकुनी(पु)†—स्त्री० चिडिया।

सकुपना(पु)—अक० दे० 'सकोपना'।

सकूनत—स्त्री० [अ०] निवासस्थान।

सकृत—पु० पुण्य कर्म। अव्य० [सं०] एक बार। सदा। साथ। तुरत।

सकेत(पु)†—पु० सकेत, इशारा। प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान। विपत्ति, दुख। वि० तग, सकुचित।

सकेतना(पु)†—अक० दे० 'सिकुडना'।
सकेरना†—सक० बुहारना, झाड़ देना। दे० 'सकेलना'।
सकेलना†—सक० इकट्ठा करना, बटोरना।
सकेला—स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
सकोच—पु० दे० 'सकोच'। सकोचना—सक० दे० 'सिकोडना'।
सकोपना(पु)†—अक० कोप करना।
सकोरा—पुं० दे० 'कसोरा'।
सक्कम(पु)—पु० कठिन, मुश्किल।
सक्का(पु)—[अ०] भिश्ती, माशकी।
सक्ति—स्त्री० दे० 'शक्ति'।
सक्तु—पु० [सं०] भुने हुए जौ और चने या दूसरे अन्न का आटा, सत्तू।
सक्र(पु)—पु० इद्र। सक्रारि(पु)—पु० मेघनाद।
सक्रिय—वि० [स०] क्रियाशील। जिसमे क्रिया हो। जिससे कुछ करके दिखाया जाय।
सक्षम—वि० [सं०] जिसमे क्षमता हो, समर्थ।
सख—पु० सखा, मित्र।
सखरच—पु० वि० दे० 'शाहखर्च'।
सखरस—पु० मक्खन।
सखरा—पु० दे० 'सखरी'। सखरी—स्त्री० कच्ची रसोई (जैसे दाल भात)।
सखा—पुं० [सं०] साथी। मित्र। सहयोगी, सहचर। साहित्य मे 'नायक' का सहचर।
सखावत—स्त्री० [अ०] दानशीलता। उदारता।
सखी—वि० [अ०] दाता, दानी। स्त्री० [स०] सहेली, सहचरी। सगिनी। साहित्य मे वह स्त्री जो नायिका के साथ रहती हो और जिससे वह अपनी कोई बात न छिपावे। १४ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे मगण या यगण हो। ⊙भाव=पु० भक्ति का एक प्रकार जिसमे भक्त अपने आपको इष्ट देवता की पत्नी या सखी मानकर उपासना करते हैं।
सखुआ—पु० दे० 'शाल' (वृक्ष)।
सखुन—पुं० [फा०] बातचीत। कविता। कौल, वचन। कथन, उक्ति। ⊙तकिया=पु० वह शब्द या वाक्याश जो बातचीत के बीच कुछ लोगो के मुँह से प्राय निकला करता है, तकिया कलाम।
सख्त—वि० [फा०] कठोर, कडा। मुश्किल। क्रि० वि० बहुत अधिक। सख्ती—स्त्री० कड़ापन। व्यवहार की कठोरता।
सख्य—पु० [स०] सखापन। मित्रता। वैष्णव मतानुसार ईश्वर के प्रति वह भाव जिसमे ईश्वरावतार को भक्त अपना सखा मानता है।
सग—पु० [फा०] कुत्ता।
सगण—पुं० [स०] छद.शास्त्र मे तीन अक्षरो का गण जिसमे आदि के दो लघु और अत का एक गुरु होता है, इनका रूप ।।ऽ है।
सगपन—पु० दे० 'सगापन'।
सगपहती, सगपहिता—स्त्री० एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।
सगबग—वि० सराबोर, लथपथ। द्रवित। परिपूर्ण। क्रि० वि० तेजी मे, जल्दी से।
सगबगाना—अक० लथपथ होना। सकपकाना। हिलना डोलना।
सगरा†—वि० सब, तमाम। पुं० तालाब, पोखरा।
सगल(पु)†—वि० दे० 'सकल'।
सगा—वि० एक माता से उत्पन्न, सहोदर। जो सबध मे अपने ही कुल का हो।
सगाई—स्त्री० विवाह सबधी निश्चय, मँगनी। छोटी जातियो मे होनेवाला वह दापत्य सबध जो पूर्वविवाहिता स्त्री से किया जाता है। सबध, नाता।
सगापन—पु० सगापन होने का भाव सबंध की आत्मीयता।
सगारत†—स्त्री० दे० 'सगापन'।
सगुण—पु० [स०] परमात्मा का वह रूप जो सत्व, रज और तम तीनो गुणो से युक्त है, साकार ब्रह्म। वह सप्रदाय जिसमे ईश्वर का सगुण रूप मानकर अवतारो की पूजा होती है।

सगुन—पु० दे० 'शकुन'। दे० 'सगुण'। **सगुनाना**—सक० शकुन वतलाना। शकुन निकालना या देखना। **सगुनिया**—पु० शकुन विचारने और वतलानेवाला। **सगुनौती**—स्त्री० शकुन विचारने की क्रिया। मंगलपाठ।

सगोती—पु० एक गोत्र के लोग। भाईबंधु।

सगोत्र—पुं० [सं०] एक गोत्र के लोग, सजातीय। कुल, जाति।

सग्गड—पु० दो पहिए की हाथ से खींची जानेवाली मजबूत गाडी जो भारी बोझ लादने के काम में आती है।

सघन—वि० [स०] घना, गुंजान। ठोस।

सच—वि० सत्य, वास्तविक। दे० 'सत्य'।

सचना(पु)†—सक० संचय करना। पूरा करना। अक० दे० 'सजना'।

सचमुच—अव्य० यथार्थ, वास्तव में। अवश्य, निश्चय।

सचरना(पु)—अक० संचरित होना, फैलना। बहुत प्रचलित होना। संचार करना, प्रवेश करना।

सचराचर—पुं० [स०] संसार की सब चर और अचर वस्तुएँ।

सचल—वि० [स०] जो अचल न हो, चलता हुआ। चंचल। जंगम।

सच सच—अव्य० ठीक ठीक, यथार्थ रूप से। **सचाई**—स्त्री० दे० 'सच्चाई'।

सचान—पुं० श्येन पक्षी, बाज।

सचाना(पु)†—सक० फैलाना।

सचिंत—वि० [सं०] चिंतायुक्त।

सचिक्कण—वि० [सं०] अत्यंत चिकना।

सचिव—पुं० [स०] मित्र। मंत्री। सहायक।

सची—स्त्री० दे० 'शची'।

सचु(पु)†—पुं० सुख, आनंद। प्रसन्नता, खुशी।

सचेत—वि० दे० 'सचेतन'। **सचेतन**—पु० [स०] वह जिसमें चेतना हो। वह जो जड न हो, चेतन। वि० चेतनायुक्त। सावधान। समझदार। **सचेती**—स्त्री० [हिं०] सचेत होने का भाव। सावधानी, होशियारी।

सचेष्ट—वि० [सं०] जिसमें चेष्टा हो। जो चेष्टा करे।

सचैयत ‡—स्त्री० सच्चाई।

सच्चरित—वि० [स०] अच्छे चरित्र या चालचलनवाला। **सच्चरित्र**—वि० [स०] दे० 'सच्चरित'।

सच्चा—वि० सच बोलनेवाला, सत्यवादी। यथार्थ, ठीक। असली, विशुद्ध। बिलकुल ठीक और पूरा। **सच्चाई**—स्त्री० सच्चा होने का भाव, सत्यता। वास्तविकता। **सच्चापन**—पुं० दे० 'सच्चाई'। **सच्चाहट**—स्त्री० सच्चा होने का भाव, सच्चापन।

सच्चिक्कन(पु)—वि० दे० 'सचिक्कण'।

सच्चिदानंद—पुं० [स०] (सत, चित् और आनंद से युक्त) परमात्मा, ईश्वर।

सच्छंद(पु)—वि० दे० 'स्वच्छंद'।

सच्छत—वि० घायल, जख्मी।

सच्छी(पु)—पु० स्त्री० दे० 'साक्षी'।

सज—स्त्री० सजने की क्रिया या भाव। डौल, शकल। शोभा, सजावट। ⊙**दार**=वि० [फा०] अच्छी आकृति का, सुंदर। ⊙**धज**=स्त्री० वेश विन्यास। सजावट। ⊙**ना**=सक० सज्जित करना, शृंगार करना। शोभा देना। अक० सुसज्जित होना।

सजग—वि० सावधान, सचेत।

सजधज—स्त्री० बनाव सिंगार, सजावट।

सजन—पु० भला आदमी, सज्जन। पति, भर्ता। प्रियतम, यार।

सजना—अ० दे० 'सज' में।

सजल—वि० [स०] जल से युक्त या पूर्ण। आँसुओं से पूर्ण (आँख)।

सजवल—पु० तैयारी।

सजवाई—स्त्री० सजावने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सजा—स्त्री० [फा०] दंड। जेल में रखने का दंड, कारावास ⊙**याफ्ता**=वि० जो कैद की सजा भुगत चुका हो।

सजाइ(पु)†—स्त्री० दंड।

सजाई—स्त्री० सजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सजागर—वि० [स०] जागता हुआ। होशियार।
सजाति, सजातीय—वि० [स०] एक जाति या गोत्र का।
सजान(पु)—पुं० जानकार। चतुर।
सजाना—सक० [अक० सजना] तरतीव लगाना। अलकृत करना।
सजाय(पु)†—स्त्री० दे० 'सजा'।
सजाव—पु० एक प्रकार का वढिया दही।
सजावट—स्त्री० सज्जित होने का भाव या धर्म।
सजावन(पु)†—पु० सजाने या तैयार करने की क्रिया।
सजावल—पु० सरकारी कर उगाहनेवाला कर्मचारी, तहसीलदार। सिपाही, जमादार।
सजावार—वि० [फा०] दड पाने के योग्य, दडनीय।
सजीउ(पु)†—वि० दे० 'सजीव'।
सजीला—वि० सजधज के साथ रहनेवाला, छैला। सुदर।
सजीव—वि० [सं०] जिसमे प्राण हो। फुर्तीला, तेज। ओजयुक्त।
सजीवन—पु० दे० 'सजीवनी'।
सजुग(पु)†—वि० सचेत।
सजुता—स्त्री० दे० 'सयुक्ता' (छद)।
सजूरी—स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।
सजो†—सक० दे० 'सजा'।
सजोयल(पु)—वि० दे० 'सँजोइल'।
सज्ज(पु)—पु० दे० 'साज'।
सज्जन—पुं० [स०] भला आदमी। प्रिय मनुष्य, प्रियतम। सजाने की क्रिया या भाव।
सज्जा—स्त्री० [स०] सजावट। वेशभूषा। स्त्री० [हिं०] सोने की चारपाई, शय्या। दे० 'शय्यादान'। सज्जित—वि० सजा हुआ। आवश्यक वस्तुओ से युक्त।
सज्जी—स्त्री० भूरे रग का क्षार। ⊙खार = पुं० दे० 'मज्जी'।
सज्जुता—स्त्री० दे० 'सयुता' (छद)।
सज्ञान—वि० [सं०] ज्ञानयुक्त। चतुर। सावधान।
सज्या(पु)—स्त्री० दे० 'सज्जा'। दे० 'शय्या'।
सटक—स्त्री० सटकने की क्रिया। तवाकू पीने का लवा लचीला नैचा। पतली लचनेवाली छडी।
सटकना—अक० धीरे से खिसक जाना, चपत होना। सटकाना—सक० छड़ी कोड़े आदि से मारना। सड सड़ या सट शब्द करते हुए हुआ पीना।
सटकार—स्त्री० सटकाने की क्रिया या भाव। गौर आदि को हाकने की क्रिया, हट-कार। सटकारना—सक० छडी या कोडे से मारना, सटसट मारना।
सटकारा—वि० चिकना और लवा (वाल)।
सटकारी—स्त्री० पतली छडी।
सटना—अक० दो चीजो का इस प्रकार एक मे मिलना जिसमे दोनो के पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ। चिपकना। मारपीट होना।
सटपट—स्त्री० सिटपिटाने की क्रिया, चक-पकाहट। शील, सकोच। दुविधा। सटपटाना—अक दे० 'सिटपिटाना'।
सटरपटर—वि० छोटा मोटा, तुच्छ। स्त्री० वखेडे का या तुच्छ काम।
सटसट—क्रि वि० सटासट। शीघ्र।
सटाना—सक० [अक० सटना] दो चीजो के पार्श्वो को आपस मे मिलाना,मिलाना। † लाठी डडे आदि से लडाई करना।
सटियल—वि० घटिया।
सटिया(पु)—स्त्री० षड्यन्त्र।
सटीक—वि० [स०] जिसमे मूल के साथ टीका भी हो, व्याख्यासहित। वि० विलकुल ठीक, जैसा चाहिए, ठीक वैसा ही।
सटोरिया—पु० दे० 'सट्टेबाज'।
सट्टक—पु० [स०] प्राकृत भाषा मे प्रणीत छोटा रूपक। एक छद का नाम।
सट्टा—पु० इकरारनामा। साधारण व्यापार से भिन्न भिन्न खरीद विक्री का वह प्रकार जो केवल तेजी और मंदी के विचार से अतिरिक्त लाभ करने के लिये होता है, लेखा। ⊙वट्टा = पु० मेलमिलाप।

चालबाजी। सट्टेबाज--पु० [फा०] वह जो केवल तेजी मदी के विचार से खरीद बिक्री करता हो, सटोरिया।

सट्टी--स्त्री० वह बाजार जिसमे एक ही मेल की चीजे लोग लाकर बेचते हो, हाट।

सठ--पुं० दे० 'शठ'।

सठियाना--अक० साठ बरस का होना। बुड्ढा होना, वृद्धावस्था के कारण बुद्धि का कम हो जाना।

सठोरा--पु० दे० 'सोठौरा'।

सड़क--स्त्री० आने जाने का चौड़ा रास्ता, राजमार्ग।

सडना--अक० किसी पदार्थ मे ऐसा विकार होना जिससे उसके अग अलग हो जायें और उसमे दुर्गंध आने लगे। किसी पदार्थ मे खमीर उठना या आना। दुर्दशा मे पड़ा रहना। सड़ान--स्त्री० सडने की क्रिया। सडाना--सक० किसी वस्तु को सडने मे प्रवृत्त करना।

सडाप--अव्य० सडसड आवाज के साथ।

सड़ायंध, सडांध--स्त्री० सडी हुई चीजो की गध। सड़ाव--पु० सडने की क्रिया या भाव।

सड़ासड़--अव्य० सड शब्द के साथ, जिसमे सड शब्द हो।

सड़ियल--वि० सडा हुआ, गला हुआ। रद्दी, खराब। नीच, तुच्छ।

सत्--पुं० [सं०] ब्रह्म। वि० सत्य। साधु, सज्जन। धीर। स्थायी। विद्वान्। शुद्ध। श्रेष्ठ। ⊙कर्म = पु० अच्छा काम। धर्म का काम, पुण्य। ⊙कार = पुं० आदर। आतिथ्य। ⊙कार्य = वि० सत्कर करने योग्य। पु० अच्छा काम। ⊙कीर्ति = स्त्री० यश, नेकनामी। ⊙कृत = वि० जिसका सत्कार किया जाय, आदृत। ⊙पथ = पु० उत्तम मार्ग। सदाचार, अच्छी चाल। ⊙पात्र = पुं० दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। श्रेष्ठ और सदाचारी। ⊙पुरुष = पु० भला आदमी। ⊙संग = पु० साधुओ या सज्जनो के साथ उठना बैठना, भली सगत। ⊙संगति = स्त्री० दे० 'सत्सग'। ⊙सगी = वि० अच्छी सोहबत मे रहनेवाला। मेल जोल रखनेवाला।

सतत(प)--अव्य० दे० 'सतत'।

सत--वि० दे० 'शत'। पु० मूल तत्व, सार भाग। जीवनी शक्ति, ताकत। वि० 'सात' (सख्या) का सक्षिप्त रूप (यौगिक)। ⊙कोन = वि० जिसमे सात कोने हो। ⊙पदी = स्त्री० दे० 'सप्तपदी'। ⊙पुतिया = स्त्री० एक प्रकार की तरोई। ⊙फेरा = पुं० दे० 'सप्तपदी'। ⊙मासा = पु० वह बच्चा जो गर्भ के सातवे महीने उत्पन्न हो। गर्भाधान के सातवे महीने होनेवाला कृत्य। ⊙रगा = वि० सात रग वाला। पुं० इद्रधनुष। ⊙लड़ी = स्त्री० सात लडो की माला। ⊙वाँसा = पु० दे० 'सतमासा'। ⊙सई = स्त्री० वह ग्रथ जिसमे सात सौ पद्य हो, सप्तशती। सत--वि० दे० 'सत्'। पु० सत्य, सभ्यतापूर्ण धर्म। ⊙कार = पु० दे० 'सत्कार'। ⊙गुरु = पु० [हिं + सं०] अच्छा गुरु, परमात्मा। ⊙जुग = पु० दे० 'सत्ययुग'। ⊙भाय(प) = पुं० दे० 'सद्भाव'। ⊙युग = पुं० दे० 'सत्ययुग'। ⊙वती = वि० स्त्री० सतवाली, पतिव्रता। ⊙संग = पु० दे० 'सत्सग'। मु० ~पर चढ़ना = पति के मृत शरीर के साथ सती होना। ~पर रहना = पतिव्रता रहना।

सतकारना(प)--सक० सत्कार करना, समान करना।

सतत--अव्य० [सं०] सदा, हमेशा।

सतनजा--पु० सात भिन्न प्रकार के अन्नो का मेल।

सतनु--वि० [सं०] शरीरवाला।

सतपात†--पु० शतपत्र, कमल।

सतर--स्त्री० [अ०] लकीर, रेखा। पक्ति, कतार। मनुष्य की गुह्य इद्रिय। ओट, आड। वि० [हिं०] टेढा। कुपित। सतराना--अक० क्रोध करना। चिढना। सतराहट--स्त्री० कोप, नाराजगी। सतरौहा†--वि० क्रोधयुक्त। कोपसूचक।

सजागर—वि० [सं०] जागता हुआ। होशियार।
सजाति, सजातीय—वि० [सं०] एक जाति या गोत्र का।
सजान(पु)—पुं० जानकार। चतुर।
सजाना—सक० [अक० सजना] तरतीब लगाना। अलंकृत करना।
सजाय(पु)†—स्त्री० दे० 'सजा'।
सजाव—पु० एक प्रकार का बढ़िया दही।
सजावट—स्त्री० सज्जित होने का भाव या धर्म।
सजावन(पु)†—पु० सजाने या तैयार करने की क्रिया।
सजावल—पु० सरकारी कर उगाहनेवाला कर्मचारी, तहसीलदार। सिपाही, जमादार।
सजावार—वि० [फा०] दंड पाने के योग्य, दंडनीय।
सजीउ(पु)†—वि० दे० 'सजीव'।
सजीला—वि० सजधज के साथ रहनेवाला, छैला। सुंदर।
सजीव—वि० [सं०] जिसमें प्राण हो। फुर्तीला, तेज। ओजयुक्त।
सजीवन—पु० दे० 'संजीवनी'।
सजुग(पु)†—वि० सचेत।
सजुता—स्त्री० दे० 'संयुक्ता' (छंद)।
सजूरी—स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।
सजो†—सक० दे० 'सजा'।
सजोयल(पु)—वि० दे० 'सँजोइल'।
सज्ज(पु)—पु० दे० 'साज'।
सज्जन—पुं० [सं०] भला आदमी। प्रिय मनुष्य, प्रियतम। सजाने की क्रिया या भाव।
सज्जा—स्त्री० [सं०] सजावट। वेशभूषा। स्त्री० [हिं०] सोने की चारपाई, शय्या। दे० 'शय्यादान'। सज्जित—वि० सजा हुआ। आवश्यक वस्तुओं से युक्त।
सज्जी—स्त्री० भूरे रंग का क्षार। ⊙खार = पुं० दे० 'सज्जी'।
सज्जुता—स्त्री० दे० 'संयुता' (छंद)।
सज्ञान—वि० [सं०] ज्ञानयुक्त। चतुर। सावधान।
सज्या(पु)—स्त्री० दे० 'सज्जा'। दे० 'शय्या'।
सटक—स्त्री० सटकने की क्रिया। तंबाकू पीने का लंबा लचीला नैचा। पतली लचनेवाली छड़ी।
सटकना—अक० धीरे से खिसक जाना, चंपत होना। सटकाना—सक० छड़ी कोड़े आदि से मारना। सड़ सड़ या सट शब्द करते हुए हुआ पीना।
सटकार—स्त्री० सटकाने की क्रिया या भाव। गौर आदि को हाँकने की क्रिया, हटकार। सटकारना—सक० छड़ी या कोड़े से मारना, सटसट मारना।
सटकारा—वि० चिकना और लंबा (बाल)।
सटकारी—स्त्री० पतली छड़ी।
सटना—अक० दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना जिसमें दोनों के पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ। चिपकना। मारपीट होना।
सटपट—स्त्री० सिटपिटाने की क्रिया, चकपकाहट। शील, संकोच। दुविधा। सटपटाना—अक दे० 'सिटपिटाना'।
सटरपटर—वि० छोटा मोटा, तुच्छ। स्त्री० बखेड़े का या तुच्छ काम।
सटसट—क्रि वि० सटासट। शीघ्र।
सटाना—सक० [अक० सटना] दो चीजों के पार्श्वों को आपस में मिलाना, मिलाना। † लाठी डंडे आदि से लड़ाई करना।
सटियल—वि० घटिया।
सटिया(पु)—स्त्री० षड्यंत्र।
सटीक—वि० [सं०] जिसमें मूल के साथ टीका भी हो, व्याख्यासहित। वि० बिलकुल ठीक, जैसा चाहिए, ठीक वैसा ही।
सटोरिया—पु० दे० 'सट्टेबाज'।
सट्टक—पु० [सं०] प्राकृत भाषा में प्रणीत छोटा रूपक। एक छंद का नाम।
सट्टा—पु० इकरारनामा। साधारण व्यापार से भिन्न भिन्न खरीद बिक्री का वह प्रकार जो केवल तेजी और मंदी के विचार से अतिरिक्त लाभ करने के लिये होता है, लेखा। ⊙बट्टा = पु० मेलमिलाप।

चालबाजी। सट्टेबाज--पु० [फा०] वह जो केवल तेजी मदी के विचार से खरीद बिक्री करता हो, सटोरिया।

सट्टी--स्त्री० वह बाजार जिसमे एक ही मेल की चीजे लोग लाकर बेचते हो, हाट।

सठ--पुं० दे० 'शठ'।

सठियाना--अक० साठ बरस का होना। बुड्ढा होना, वृद्धावस्था के कारण बुद्धि का कम हो जाना।

सठोरा--पु० दे० 'सोठौरा'।

सड़क--स्त्री० आने जाने का चौडा रास्ता, राजमार्ग।

सडना--अक० किसी पदार्थ मे ऐसा विकार होना जिससे उसके अग अलग हो जायँ और उसमे दुर्गंध आने लगे। किसी पदार्थ मे खमीर उठना या आना। दुर्दशा मे पडा रहना। सडान--स्त्री० सडने की क्रिया। सडाना--सक० किसी वस्तु को सडने मे प्रवृत्त करना।

सडाप--अव्य० सडसड आवाज के साथ।

सड़ायंध, सड़ाँध--स्त्री० सडी हुई चीजो की गध। सड़ाव--पु० सडने की क्रिया या भाव।

सड़ासड़--अव्य० सड शब्द के साथ, जिसमे सड शब्द हो।

सड़ियल--वि० सड़ा हुआ, गला हुआ। रद्दी, खराब। नीच, तुच्छ।

सत्--पुं० [स०] ब्रह्म। वि० सत्य। साधु, सज्जन। धीर। स्थायी। विद्वान्। शुद्ध। श्रेष्ठ। ⊙कर्म = पु० अच्छा काम। धर्म का काम, पुण्य। ⊙कार = पुं० आदर। आतिथ्य। ⊙कार्य = वि० सत्कर करने योग्य। पु० अच्छा काम। ⊙कीर्ति = स्त्री० यश, नेकनामी। ⊙कृत = वि० जिसका सत्कार किया जाय, आदृत। ⊙पथ = पु० उत्तम मार्ग। सदाचार, अच्छी चाल। ⊙पात्र = पुं० दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। श्रेष्ठ और सदाचारी। ⊙पुरुष = पु० भला आदमी। ⊙संग = पु० साधुओ या सज्जनो के साथ उठना बैठना, भली सगत। ⊙संगति = स्त्री० दे० 'सत्सग'। ⊙संगी = वि० अच्छी सोहबत मे रहनेवाला। मेल जोल रखनेवाला।

सतंत(५)--अव्य० दे० 'सतत'।

सत--वि० दे० 'शत'। पु० मूल तत्व, सार भाग। जीवनी शक्ति, ताकत। वि० 'सात' (सख्या) का सक्षिप्त रूप (यौगिक)। ⊙कोन = वि० जिसमे सात कोने हो। ⊙पदी = स्त्री० दे० 'सप्तपदी'। ⊙पुतिया = स्त्री० एक प्रकार की तरोई। ⊙फेरा = पु० दे० 'सप्तपदी'। ⊙मासा = पु० वह बच्चा जो गर्भ के सातवे महीने उत्पन्न हो। गर्भाधान के सातवे महीने होनेवाला कृत्य। ⊙रगा = वि० सात रग वाला। पुं० इद्रधनुप। ⊙लड़ी = स्त्री० सात लडो की माला। ⊙वाँसा = पु० दे० 'सतमासा'। ⊙सई = स्त्री० वह ग्रथ जिसमे सात सौ पद्य हो, सप्तशती। सत--वि० दे० 'सत्'। पु० सत्य, सभ्यतापूर्ण धर्म। ⊙कार = पु० दे० 'सत्कार'। ⊙गुरु = पु० [हिं + सं०] अच्छा गुरु, परमात्मा। ⊙जुग = पु० दे० 'सत्ययुग'। ⊙भाय(५) = पुं० दे० 'सद्भाव'। ⊙युग = पुं० दे० 'सत्ययुग'। ⊙वंती = वि० स्त्री० सतवाली, पतिव्रता। ⊙संग = पु० दे० 'सत्सग'। मु० ~पर चढ़ना = पति के मृत शरीर के साथ सती होना। ~पर रहना = पतिव्रता रहना।

सतकारना(५)--सक० सत्कार करना, समान करना।

सतत--अव्य० [सं०] सदा, हमेशा।

सतनजा--पु० सात भिन्न प्रकार के अन्नो का मेल।

सतनु--वि० [सं०] शरीरवाला।

सतपात†--पु० शतपत्र, कमल।

सतर--स्त्री० [अ०] लकीर, रेखा। पक्ति, कतार। मनुष्य की गुह्य इद्रिय। ओट, आड। वि० [हिं०] टेढा। कुपित। सतराना--अक० क्रोध करना। चिढना। सतराहट--स्त्री० कोप, नाराजगी। सतरौंहा†--वि० क्रोधयुक्त। कोपसूचक।

सतर्क—वि० [सं०] तर्कयुक्त, युक्ति से पुष्ट। सावधान।

सतर्पना—सक० अच्छी तरह सतुष्ट या तृप्त करना।

सतजल—स्त्री० पजाब की पाँच नदियो मे से एक, शतद्रु नदी।

सतह—स्त्री० [अ०] किसी वस्तु का ऊपरी भाग, तल। वह विस्तार जिसमे केवल लबाई और चौडाई हो।

सताग—पु० रथ, यान।

सताना—सक० सताप देना। हैरान, तंग करना।

सतालू—पुं० शफतालू आड।

सतावनाⓟ†—सक० दे० 'सताना'।

सतावर—स्त्री० एक बेल जिसकी जड और बीज औषध के काम मे आते हैं, शतमूली।

सतिⓟ—पुं० दे० 'सत्य'।

सतिवन—पुं० छतिवन।

सती—वि० सच्चा, पक्का। वि० स्त्री० [सं०] साध्वी, पतिव्रता। स्त्री० दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव को ब्याही थी। पतिव्रता स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता मे जले। एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण और एक गुरु होता है। पु० [सं०] सती होने का भाव, पातिव्रत्य। ⊙हरण=पु० परस्त्री के साथ बालात्कार, सतीत्व बिगाडना।

सतुआ†—पु० दे० 'सत्तू'। ⊙सक्रांति=स्त्री० मेष की सक्राति।

सतुआन†—स्त्री० दे० 'सतुआ सक्राति'।

सतृष्ण—वि० [सं०] तृष्णा से युक्त, तृष्णापूर्ण।

सतोखनाⓟ†—सक० सतुष्ट करना। ढारस देना।

सतोगुण—पुं० दे० 'सत्वगुण'।

सतोगुणी—पु० सत्वगुणवाला, सात्विक।

सत्त—पु० सार। काम की वस्तु। ⓟ‡सच बात। पातिव्रत्य।

सत्तम—वि० [सं०] सर्वश्रेष्ठ। परमसाधु।

सत्तर—वि० साठ और दस। पुं० साठ और दस की सख्या, ७०।

सत्तरह—वि० दे० 'सत्रह'।

सत्ता—पु० ताश या गजीफे का वह पत्ता जिसमे सात बूटियाँ हो। स्त्री० [सं०] अस्तित्व। शक्ति, दम। अधिकार, प्रभुत्व। ⊙धारी-पु० अधिकारी, हाकिम। ⊙शास्त्र=पु० वह शास्त्र जिसमे मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो।

सत्तू—पु० भुने हुए अन्न का चूर्ण, सतुआ।

सत्थ—पु० सग साथ।

सत्य—वि० [स०] यथार्थ, वास्तविक, असल। पु० ठीक बात, यथार्थ तत्व। उचित पक्ष, धर्म की बात। वह वस्तु जिसमे किसी प्रकार का विकार न हो (वेदात)। ऊपर के सात लोको मे से सबसे ऊपर का लोक। विष्णु। चार युगो मे से पहला युग। ⊙काम=वि० सत्य का प्रेमी। ⊙तः=अव्य० वास्तव मे, सचमुच। ⊙नारायण=पु० विष्णु। ⊙निष्ठ=वि० सदा सत्य पर दृढ रहनेवाला। ⊙प्रतिज्ञ=वि० अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ रहनेवाला। ⊙युग=पु० चार युगो मे से पहला जो सबसे उत्तम माना जाता है। ⊙लोक=पु० सबसे ऊपर का लोक जिसमे ब्रह्मा रहते है। ⊙बादी-वि० सच बोलनेवाला। वचन को पूरा करनेवाला। ⊙व्रत=पु० सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम। ⊙सध=वि० सत्यप्रतिज्ञ, वचन को पूरा करनेवाला। पुं० रामचंद्र। जनमेजय।

सत्या—स्त्री० [स०] सत्यभामा। दे० 'सत्ता'। दे० 'सत्यता'।

सत्याग्रह—पु० [सं०] किसी न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिये शातिपूर्वक सघर्ष। धरना।

सत्याग्रही—पु० [सं०] वह जो सत्याग्रह करता हो।

सत्यानाश—पु० [हिं०] सर्वनाश, ध्वस।

सत्यानाशी—वि० सत्यानाश करनेवाला। स्त्री० एक कँटीला पौधा, भडभाँड।

सत्र—पुं० [स०] यज्ञ । एक सोमयाग । घर, मकान । धन । वह स्थान जहाँ असहायों को भोजन बाँटा जाता है, सदावर्त । विधानसभा, ससद् या किसी सस्था के अधिवेशन का कोई कार्यकाल (अँ० सेशन) । शिक्षासस्थाओं में शिक्षण का एक कार्यकाल (अँ० टर्म) ।

सत्रह—वि० दस और सात । पु० दस और सात की सख्या, १७ ।

सत्राईⓅ—स्त्री० शत्रुता, दुश्मनी ।

सत्रु—पु० दे० 'शत्रु' ।

सत्व—पुं० [स०] सत्ता, हस्ती । सार, तत्व । चित्त की प्रवृत्ति । आत्मतत्व, चैतन्य । प्राण, जीव । ⊙**गुण**=पु० अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण ।

सत्वर—अव्य० [स०] शीघ्र, जल्द ।

सथरⓅ—स्त्री० भूमि, पृथ्वी ।

सथिया—पु० एक प्रकार का मगलसूचक चिह्न, स्वस्तिक चिह्न । फोडे आदि की चीरफाड करनेवाला, जर्राह ।

सद्—स्त्री० आदत, टेव ।

सदईⓅ—अव्य० सदा ।

सदन—पु० [स०] घर, मकान । विराम, स्थिरता । एक प्रसिद्ध भगवद्भक्त कसाई । वह स्थान जहाँ विधान आदि बनानेवाली सभा का अधिवेशन हो । ऐसी सभा के लिये एकत्र जनसमुदाय ।

सदबर्ग—पु० [फा०] हजारा गेंदा ।

सदमा—पु० [अ०] आघात, धक्का । दुख ।

सदय—वि० [स०] दयालु ।

सदर—वि० प्रधान, मुख्य । पु० वह स्थान जहाँ कोई बडा हाकिम रहता हो । सभापति । ⊙**आला**=पु० [अ०] अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे का हो, छोटा जज । ⊙**बाजार**=पु० [फा०] बडा बाजार । छावनी का बाजार ।

सदरी—स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती, जवाहरवडी ।

सदर्थनाⓅ—सक० समर्थन करना ।

सदसद्विवेक—पुं० [स०] भले बुरे का ज्ञान ।

सदस्य—पु० [स०] यज्ञ करनेवाला । सभा या समाज मे समिलित व्यक्ति, सभासद, (अँ० मेबर) । ⊙**ता**=स्त्री० सदस्य का भाव या पद, सभासदी ।

सदा—स्त्री० [अ०] गूँज, प्रतिध्वनि । आवाज, शब्द । पुकार । अव्य० [स०] नित्य, हमेशा । लगातार । ⊙**गति**=पु० वायु । सूर्य । ⊙**फल**=वि० सदा फलनेवाला । पु० गूलर, ऊमर । श्रीफल, बेल । नारियल । एक प्रकार नीबू । ⊙**बहार**=वि० [फा०] जो सदा हरा रहे । (वृक्ष) । ⊙ **शिव**=पु० महादेव । ⊙ **सुहागिन**=स्त्री० [हिं०] वेश्या, रडी (विनोद) । वि० स्त्री० जो सदा सौभाग्यवती रहे, जो कभी पतिहीन न हो ।

सदाचरण, सदाचार—पुं० [स०] अच्छा आचरण । भलमनसाहत । **सदाचारिता**—स्त्री० दे० 'सदाचरण' । **सदाचारी**—पु० [स०] अच्छे आचरणवाला पुरुष । धर्मात्मा ।

सदावरत—पु० दे० 'सदावर्त' ।

सदारत—स्त्री० [अ०] सदर या प्रधान का धर्म, भाव या कार्य । सभापतित्व ।

सदावर्त—पुं० नित्य भूखों और दीनों को भोजन बाँटना । वह भोजन जो नित्य गरीबों को बाँटा जाय, खैरात । **सदावर्ती**—वि० सदावर्त बाँटनेवाला । बडा दानी, बहुत उदार ।

सदाशय—वि० [सं०] जिसका भाव उदार और श्रेष्ठ हो, भलामानस ।

सदिया—स्त्री० वह लाल पक्षी जिसका शरीर भूरे रग का होता है, लाल पक्षी की मादा ।

सदी—स्त्री० [अ०] सौ वर्षों का समूह, शताब्दी । सैकडा ।

सदुपदेश—पुं० [सं०] अच्छा उपदेश उत्तम शिक्षा । अच्छी सलाह ।

सदूरⓅ—पु० दे० 'शार्दूल' ।

सदूरुⓅ—पुं० सिंह ।

सदृश—वि० [सं०] समान, अनुरूप । बराबर ।

सदेह--क्रि० वि० [सं०] इसी शरीर से, विना शरीरत्याग किए। मूर्तिमान्, सशरीर।
सदैव--अव्य० [सं०] सदा, हमेशा।
सद्‌गति--स्त्री० [सं०] मरण के उपरांत उत्तम लोक की प्राप्ति। सद्‌गुण--पु० अच्छा गुण। भलमनसाहत।
सद्‌गुरु--पु० [सं०] अच्छा गुरु उत्तम शिक्षक। परमात्मा।
सद्द(पु)†--पु० शब्द, ध्वनि। अव्य० तुरत।
सद्‌धर्म--पुं० [सं०] अच्छा या उत्तम धर्म। बौद्ध धर्म।
सद्‌भाव--पुं० [सं०] प्रेम और हित का भाव। मेलजोल, मैत्री। अच्छी नीयत।
सद्म--पुं० [सं०] घर, मकान। युद्ध। पृथ्वी और आकाश।
सद्य--अव्य० [सं०] आज ही। इसी समय, अभी, तुरत।
सद्य--अव्य० [सं०] दे० 'सद्य'।
सद्र--पु० [अ०] दे० 'सदर'।
सद्‌व्रत--वि० [सं०] जिसने अच्छा व्रत धारण किया हो। सदाचारी।
सधना--अक० सिद्ध होना, काम होना। काम चलना। अभ्यस्त होना। प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल होना। निशाना ठीक होना।
सधर--पु० [सं०] ऊपर का होठ।
सधवा--स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सुहागिन।
सधाना--सक० [अक० सधना] साधने का काम दूसरे से कराना।
सन्--पुं० [अ०] साल, संवत्सर। कोई विशेष वर्ष, संवत्। ईसवी वर्ष।
सन--पुं० एक पौधा जिसकी छाल के रेशों से रस्सियाँ आदि बनती है। (पु)† प्रत्य० अवधी में करण कारक का चिह्न, से, साथ। स्त्री० वेग से निकलने का शब्द। वि० सन्नाटे में आया हुआ, स्तब्ध। चुप।
सनई--स्त्री० छोटी जाति का सन।
सनक--पुं० [सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। स्त्री० [हिं०] किसी बात की धुन, मन की झोंक। खब्त, जुनून। मु०~सवार होना = धुन होना। सनकना--अक० पागल हो जाना। बहकी बहकी बातें करना। डींग मारना।
सनकारना(पु)†--सक० संकेत या इशारा करना।
सनकियाना--सक० [अक० सनकना] पागल बनाना। इशारा करना। सनकी--वि० जो सनक गया हो, पागल, सिड़ी। जो किसी धुन में विशेष रूप से रहे।
सनद--स्त्री० [अ०] सबूत, दलील। प्रमाण-पत्र (अं०) सर्टिफिकेट' ⊙याफ्ता = वि० [फा०] जिसे किसी बात की सनद मिली हो।
सनना--अक० गीला होकर लेई के रूप में मिलना (जैसे आटा सनना) लीन होना, ओतप्रोत होना। मैले, गंदे या घृणाजनक तरल पदार्थों से भीगना। (जैसे कीचड़ में सनना')।
सनम--पु० [अ०] प्रिय, प्यारा।
सनमान--पु० दे० 'समान'।
सनमानना(पु)--सक० सत्कार करना।
सनमुख(पु)--अव्य० दे० 'सम्मुख'।
सनसनाना--अक० (हवा का) सन सन शब्द करते हुए बहना। सनसनाहट--स्त्री० सन सन शब्द होने का भाव या क्रिया।
सनसनी--स्त्री० संवेदन सूत्रों का एक प्रकार का स्पंदन, झनझनाहट। भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता। घब-राहट।
सनहकी--स्त्री० [अ०] मिट्टी का एक बरतन (मुसलमान)।
सनहना--पुं० वह गड्ढा या पात्र जिसमें माँजने के पूर्व जले हुए बरतन कालिख फूलने के लिये रखे जाते हैं।
सनाढ्य--पु० ब्राह्मणों की एक शाखा जो गौड़ों के अंतर्गत है।
सनातन--पुं० [सं०] अत्यंत प्राचीन काल। प्राचीन परंपरा, बहुत दिनों से चला आता हुआ क्रम। ब्रह्मा। विष्णु। वि० बहुत पुराना। जो बहुत दिनों से चला आता हो। परंपरागत। शाश्वत। ⊙धर्म = पुं० प्राचीन

या परपरागत धर्म। वर्तमान हिंदू धर्म का वह स्वरूप जिसमे पुराण, तंत्र, प्रतिमा-पूजन, तीर्थ माहात्म्य आदि सब समान रूप से माननीय है। ⊙पुरुष=पु० विष्णु भगवान्।

सनातनी—पु० जो बहुत दिनों से चला आता हो। सनातन धर्म का अनुयायी।

सनाथ—वि० [सं०] जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो, स्वामियुक्त।

सनाय—स्त्री० एक पौध। जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती है, सोनामुखी।

सनाह—पु० कवच, बकतर।

सनित—वि० सना या एक मे मिलाया हुआ, मिश्रित।

सनीचर—पु० दे० 'शनैश्चर'। **सनीचरी**—पु० शनि की दशा, जिसमे अधिक दुख होता है। वि० अशुभ। सनीचर से सबधित, सनीचर का।

सनेस सनेसा†—पु० दे० 'सदेश'।

सनेह(पु)†—पु० दे० 'सनेह'। **सनेहरा**(पु)†—पु० दे० 'सनेह'। **सनेहिया**(पु)†—पु० दे० 'सनेही'।

सनेही—वि० स्नेह रखनेवाला, प्रेमी।

सनोवर—पु० [अ०] चीड (पेड)।

सन्न—वि० सज्ञाशून्य, जड। भौचक। डर मे चुप।

सन्नद्ध—वि० [सं०] बँधा हुआ। तैयार। लगा हुआ, जुडा हुआ।

सन्नाटा—वि० नीरव, स्तब्ध। निर्जन। पु० जोर से हवा चलने की आवाज। हवा चीरते हुए तेजी से निकल जाने का शब्द। नीरवता। निर्जनता, एकातता। ठक रह जाने का भाव, स्तब्धता। एकदम खामोशी, चुप्पी। चहल पहल का अभाव, उदासी। काम धधे से गुलजार न रहना। **मु० ~खींचना या मारना**=एक बारगी चुप हो जाना। **सन्नाटे मे आना**=ठक रह जाना, कुछ कहते सुनते न बनना।

सन्नाह—पुं० [सं०] कवच, बकतर।

सन्निकट—वि० [सं०] समीप, पास।

सन्निकर्ष—पुं० [सं०] सबध, लगाव। नाता, रिश्ता। समीपता।

सन्निध—पु० [स०] सामीप्य। आमने सामने की स्थिति। **सन्निधान**—पु० निकटता स्थापित करना। **सन्निधि**—स्त्री० समीपता। आमने सामने की स्थिति।

सन्निपात—पु० [स०] कफ, वात और पित्त तीनो का एक साथ बिगडना, त्रिदोष। सयोग इकट्ठा होना। एक साथ गिरना या पडना।

सन्निविष्ट—वि० [स०] प्रविष्ट। स्थापित। एक साथ बैठा हुआ, जमा हुआ। रखा हुआ, पास का। **सन्निवेश**—पुं० समाना। जमाना, स्थित होना। रखना। लगाना, जडना। जुटना। प्रवेश। एक साथ बैठना। गढन, बनावट। निवास, घर। समूह, समाज।

सन्निहित—वि० [सं०] समिलित। समीपस्थ। एक साथ रखा हुआ, ठहराया हुआ, टिकाया हुआ।

सन्मान—पु० दे० 'सम्मान'।

सन्मुख—अव्य० दे० 'सम्मुख'।

संन्यास—पु० छोडना, त्याग। दुनिया के जजाल से अलग होने की अवस्था, वैराग्य। भारतीय आर्यो के चार आश्रमो मे से अतिम आश्रम, यति धर्म। **सन्यासी**—पुं० वह पुरुष जिसने सन्यास धारण किया हो, चतुर्थ आश्रमी। विरागी, त्यागी।

सपक्ष—वि० [स०] अपने पक्ष का, तरफदार। समर्थक, पोषक। पखसहित। पुं० तरफदार, मित्र। न्याय मे वह बात या दृष्टात जिसमे साध्य अवश्य हो।

सपत्नी—स्त्री० [स०] एक ही पति की दूसरी स्त्री सौत।

सपत्नीक—वि० [सं०] पत्नी के सहित।

सपदि—अव्य० [स०] उसी समय, तुरत।

सपन—पु० दे० 'सपना'।

सपना—पु० वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पडे, स्वप्न।

सपरदाई—पुं० तवायफ के साथ तबला, सारगी आदि बजानेवाला, भडुआ।

सपरना--अक० समाप्त होना, निवटना। हो सकना।

सपरिकर--वि० [स०] अनुचर वर्ग के साथ, ठाट बाट के साथ।

सपाट--वि० वरावर, समतल। जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो, चिकना।

सपाटा--पुं० चलने या दौडने का वेग, तेजी। तीव्र गति, दौड। **सैर सपाटा** = पुं० घूमना फिरना।

सपाद--वि० [स०] चरण सहित। जिसमे एक का चौथाई और मिला हो, सवाया।

सपिंड--पु० [स०] एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरो को पिंडदान करता हो। **सपिंडी**--स्त्री० मृतक के निमित्त वह श्राद्ध कर्म जिसमे वह और पितरो के साथ मिलाया जाता है।

सपुर्द--स्त्री० अमानत, धरोहर। वि० किसी के जिम्मे किया हुआ, सौंपा हुआ। ⊙**गी**= स्त्री० सपुर्द करने या होने की क्रिया।

सपूत--पु० अच्छा या लायक पुत्र। **सपूती**-- स्त्री० सपूत होने का भाव, लायकी। योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता।

सपेद‡(पु)--वि० दे० 'सफेद'।

सपोला--पु० साँप का छोटा वच्चा।

सप्त--वि० [स] गिनती मे सात। ⊙**ऋषि** = पु० दे० 'सप्तक'। दे० 'सप्तर्षि'। ⊙**द्वीप** = पु० पुराणानुसार पृथ्वी के सात वडे और मुख्य विभाग--जवू कुश प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप। ⊙**पदी** = स्त्री० विवाह की एक रीति जिसमे वर और वधू अग्नि के चारो ओर सात परिक्रमाए करते हैं, भाँवर। ⊙**पर्ण** = पु० छतिवन। (पेड़)। ⊙**पर्णी** = स्त्री० लज्जावती लता। ⊙**पाताल** = पु० पृथ्वी के नीचे के ये सातो लोक--अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल। ⊙**पुरी** = स्त्री० ये सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गए हैं--अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, काची, अवतिका (उज्जयिनी) और द्वारका। ⊙**शती** = स्त्री० सात सौ का समूह। सात सौ पद्यो का समूह, सतसई। दुर्गापाठ। **सप्तक**-- पु० सात वस्तुओ का समूह। सातो स्वरो का समूह। **सप्तम**--वि० सातवाँ। **सप्तमी**--वि० स्त्री० सातवी। स्त्री० किसी पक्ष की सातवी तिथि। अधिकरण कारक की विभक्ति (व्या०)। **सप्तर्षि**- पु० सात ऋषियो का समूह या मडल, शतपथ ब्राह्मण के अनुसार--गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि; महाभारत के अनुसार-- मरीचि, अत्रि, अगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ। उत्तर दिशा के सात तारे जो ध्रुव की परिक्रमा करते हैं। **सप्ताह**-- पुं० सात दिनो का काल, हफ्ता। भागवत की कथा जो सात ही दिनो मे सब पढी या सुनी जाय।

सफ--स्त्री० [अ०] पंक्ति, कतार। सीतलपाटी।

सफर--पु० [अ] प्रस्थान, यात्रा। रास्ते मे चलने का समय या दशा।

सफरमैना--स्त्री० सेना के वे सिपाही जो खाईं आदि खोदने के लिये आगे चलते हैं।

सफरी--वि० [फा०] सफर मे का, सफर मे काम आनेवाला। छोटा और हलका। पु० राहखर्च। अमरूद। (पु स्त्री० सौरी मछली।

सफल--वि० [स०] जिसमे फल लगा हो। जिसका कुछ परिणाम हो, सार्थक। कामयाव। ⊙**ता** = स्त्री० कामयावी, सिद्धि। पूर्णता।

सफलित--वि० दे० 'सफलीभूत'।

सफलीभूत--वि० [स०] जो सफल हुआ हो।

सफा--वि० [अ०] साफ, स्वच्छ। पवित्र। चिकना, वरावर। पृष्ठ, पन्ना।

सफाई--स्त्री० स्वच्छता, निर्मलता। मैल या कूडा करकट आदि हटाने की क्रिया। स्पष्टता, मन मे मैल न रहना। कुटिलता का अभाव। निर्दोषता। मामले का निपटारा, निर्णय।

सफाचट--वि० विलकुल साफ या चिकना।

सफीर--पु० [अ०] एलची, राजदूत।

सफूफ—पुं० [अ०] बुकनी, चूर्ण।

सफेद—वि० [फा० सुफ़ैद] चूने के रंग का, श्वेत। जिसपर कुछ लिखा न हो, कोरा। ⊙पोश = पुं० [फा०] साफ कपड़े पहनने वाला। भलामानस, शिष्ट। मु०—स्याह~ = भला बुरा, इष्ट अनिष्ट।

सफेदा—पुं० जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा रँगाई के काम में आता है। आम का एक भेद। खरबूजे का एक भेद।

सफेदी—स्त्री० सफेद होने का भाव, श्वेतता। दीवार आदि पर सफेद रंग या चूने की पुताई। मु०~आना = बुढ़ापा आना।

सब—वि० जितने हों वे कुल, समस्त। पूरा, सारा। वि० [अं०] बड़े कर्मचारी का सहायक, नायब (जैसे सब एडिटर, सब-जज)

सबक—पुं० [फा०] पाठ। शिक्षा, सीख।

सबद(पु)—दे० 'शब्द'। महात्मा के वचन। भजन, गीत। शास्त्रवचन, व्यवस्था।

सबब—पुं० [अ०] कारण, वजह, हेतु। द्वारा साधन।

सबर—पुं० दे० 'सब्र'।

सबल—वि० [सं०] बलवान्, ताकतवर। जिसके साथ सेना हो।

सबार—क्रि० वि० शीघ्र।

सबील—स्त्री० [अ०] मार्ग, सड़क। उपाय। प्याऊ।

सबूत—पुं० [अ०] वह जिससे कोई बात प्रमाणित की जाय, प्रमाण। वि० जो खंडित न हो, पूरा।

सबेरा—पुं० दे० 'सवेरा'।

सब्ज—वि० [फा०] कच्चा और ताजा (फल फूल आदि)। हरा (रंग)। शुभ, उत्तम। ⊙कदम = वह जिसका आना अशुभ माना जाय, मनहूस। मु०~बाग दिखलाना = काम निकालने के लिये बड़ी बड़ी आशाएँ दिलाना। सब्जा—पुं० हरियाली। भंग, भाँग। पन्ना नामक रत्न। घोड़े का एक रंग जिसमें सफेदी के साथ कुछ कालापन होता है। सब्जी—स्त्री० वनस्पति आदि हरियाली। हरी तरकारी। भाँग।

सब्र—पुं० [अ०] संतोष, धैर्य। मु०—किसी का~पड़ना = किसी के धैर्यपूर्वक सहन किए हुए कष्ट का प्रतिफल होना।

सभा—स्त्री० [सं०] गोष्ठी, समिति, मजलिस। वह संस्था जो किसी विषय पर विचार करने के लिये संघटित हो। ⊙गृह = पुं० बहुत से लोगों के एक साथ बैठने का स्थान, मजलिस की जगह। ⊙पति = पुं० वह जो सभा का प्रधान नेता या मुखिया हो। ⊙सद = पुं० वह जो किसी सभा में संमिलित हो, सदस्य, सामाजिक।

सभागा—वि० भाग्यवान्। सुंदर।

सभीत—वि० [सं०] 'भीत'।

सभ्य—पुं० [सं०] सभासद, सदस्य। वह जिसका आचार व्यवहार उत्तम हो, भला आदमी। ⊙ता = स्त्री० सभ्य होने का भाव, सदस्यता। सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था। भलमनसाहत। सामाजिक उन्नति।

समंजस—वि० [सं०] उचित, ठीक।

समंत—पुं० [सं०] सीमा, सिरा।

समंद—पुं० [फा०] घोड़ा। पुं० [हिं०] सागर, समुद्र। बड़ा तालाब या झील।

सम—पुं० [अ०] विष, जहर। वि० [सं०] समान, बराबर। सब, कुल। जिसका तल ऊबड़ खाबड़ न हो, चौरस। (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे, जूस। पुं० संगीत में वह स्थान जहाँ गाने बजानेवालों का सिर या हाथ आप से आप हिल जाता है। साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संबंधों का वर्णन होता है। ⊙कंध = पुं० [हिं०] सुडौल कंधा। ⊙कक्ष = वि० समान, तुल्य। ⊙कालीन = वि० जो (दो या कई) एक ही समय में हों, सामयिक। ⊙कोण = वि० (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने-सामने के दो कोण समान हों। ⊙चतुर्भुज = पुं० वह चतुर्भुज जिसके चारों भुज समान हों।

⊙चर = वि० समान आचरण-वाला। ⊙तल = वि० जिसकी सतह बराबर हो, हमवार। ⊙ता = स्त्री० सम या समान होने का भाव, बराबरी। ⊙तूल(पु) = वि० [हिं०] दे० 'समतोल'। ⊙तोल = वि० [हिं०] महत्व आदि के विचार से समान, बराबर। ⊙तोलन = पु० महत्व आदि के विचार से सबको समान रखना। दोनो पलडो या पक्षो को समान रखना। ⊙त्रिभुज = पु० वह त्रिभुज जिसके तीनो भुज समान हो। ⊙त्व = पु० दे० 'समता'। ⊙दर्शी = सबको समान दृष्टि से देखनेवाला, किसी से भेदभाव न रखनेवाला। ⊙नाम = पु० समान नामवाला। पर्याय। ⊙पाद = पु० वह छंद या कविता जिसके चारो चरण समान हो। ⊙रस = वि० एक ही प्रकार के रसवाले (पदार्थ)। एक ही तरह के। ⊙वयस्क = वि० समान वयस या उम्रवाला। ⊙वर्ती = वि० जो समान रूप मे स्थित हो। जो पास मे स्थित हो। ⊙वृत्त = पु० वह छद जिसके चारो चरण समान हो। ⊙वेदना = स्त्री० किसी के शोक, दु ख, कष्ट या हानि के प्रति सहानुभूति। ⊙शीतोष्ण कटिबध = पुं० पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण कटिबध के उत्तर मे कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण मे मकर रेखा से दक्षिण वृत्त तक है। ⊙स्थली = स्त्री० गगा और यमुना के बीच का देश, अतर्वेद।

समक्ष—अव्य० [सं०] सामने।

समग्र—वि० [सं०] कुल, पूरा, सब।

समग्री(पु)—स्त्री० दे० 'सामग्री।'

समचार—पु० समाचार, सदेसा।

समझ—स्त्री० वुद्धि, अक्ल। ⊙दार = वि० [फा०] वुद्धिमान्। ⊙वार = वि० समझनेवाला, समझदार। समझना—अक० किसी वात को अच्छी तरह मन मे बैठाना। समझाना—सक० [अक० समझना] दूसरे को समझने मे प्रवृत्त करना। समझाव, समझावा—पु० समझने या समझाने की क्रिया या भाव।

समझौता—पु० आपस का निपटारा।

समदना—अक० प्रेमपूर्वक मिलना। समदन—स्त्री० भेंट, नजर।

समधिक—वि० [सं०] वहुत, अधिक।

समधियाना—पु० समधी का घर। समधी—पुं० पुत्र या पुत्री का ससुर।

समधीत—वि० जिसने अच्छी तरह से पढा हो।

समन्वय—पुं० [सं०] सयोग, मिलन। विरोध का न होना, कार्य कारण का निर्वाह। समन्वित—वि० मिला हुआ, सयुक्त।

समय—पु० [सं०] वक्त, काल। अवसर, मौका। फुरसत। अतिम काल।

समर—पु० [सं०] युद्ध, लड़ाई। ⊙भूमि = स्त्री० युद्धक्षेत्र।

समरथ—वि० दे० 'समर्थ'।

समरागण—पु० [सं०] दे० 'समरभूमि'।

समराना(पु)—सक० सजाना या सजवाना।

समर्चना—स्त्री० [सं०] भली भांति की हुई अर्चना।

समर्थ—वि० [सं०] जिसमे कोई काम करने की सामर्थ्य हो, योग्य।

समर्थक—वि० समर्थन करनेवाला। समर्थन—पुं० यह निश्चय करना कि अमुक वात उचित है या अनुचित। (मत की) पुष्टि या ताईद करना। विवेचन। समर्थित—वि० जिसका समर्थन हुआ हो।

समर्पक—वि० [सं०] समर्पण करनेवाला। समर्पण—पुं० आदरपूर्वक भेंट करना। दान देना। समर्पना(पु)—सक० समर्पण करना, सौंपना। समर्पित—वि० समर्पण किया हुआ। समर्प्य—वि० समर्पण करने के योग्य।

समल—वि० [सं०] मैला, गदा।

समवकार—वि० पु० [सं०] एक प्रकार का वीररसप्रधान नाटक जिसमे किसी देवता या असुर आदि के जीवन की कोई घटना होती है।

समवाय—पुं० [सं०] समूह, झुंड। न्याय शास्त्र के अनुसार वह संबंध जो अवयवी के साथ अवयव का या गुणी के साथ गुण का होता है। **समवायी**—वि० जिसमें समवाय या नित्य संबंध हो।

समवेत—वि० [सं०] इकट्ठा किया हुआ। जमा किया हुआ, संचित।

समष्टि—स्त्री० [सं०] सब का समूह, कुल, व्यष्टि का उलटा।

समस्त—वि० [सं०] सब, कुल। एक में मिलाया हुआ, संयुक्त। जो समास द्वारा मिलाया गया हो।

समस्या—स्त्री० [सं०] कठिन अवसर या प्रसंग, कठिनाई। किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिये तैयार करके दूसरों को दिया जाता है। मिलाने की क्रिया। संघटन। ⊙**पूर्ति**=स्त्री० किसी समस्या के आधार पर छंद आदि बनाना।

समाँ—पुं० समय, वक्त। मु० ~बँधना= (संगीत आदि का) इतनी उत्तमता से होना कि लोग स्तब्ध हो जायँ।

समा—पुं० दे० 'समाँ'। वि० [सं०] वर्ष, साल।

समाई—स्त्री० समाने की क्रिया या भाव। सामर्थ्य, शक्ति।

समाकुल—वि० [सं०] ठसाठस भरा हुआ। जिसकी अक्ल ठिकाने न हो।

समागत—वि० [सं०] आया हुआ।

समागम—पुं० [सं०] मिलना, भेंट। मैथुन। आगमन।

समाचार—पुं० संवाद, खबर। ⊙**पत्र**= पुं० वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार रहते हों अखबार।

समाज—पुं० [सं०] समूह, दल। सभा। एक ही स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करनेवाले लोगों का समूह। वह संस्था जो बहुत से लोगों ने मिलकर विशेष उद्देश्य से स्थापित की हो, सभा। ⊙**वाद**=पुं० उत्पादन के साधनों और वितरण पर सामूहिक हित के लिये व्यक्तिगत अधिकार का विरोधी सिद्धांत। ⊙**वादी**=वि० वह जो समाजवाद का सिद्धांत मानता हो। ⊙**शास्त्र**= पुं० मानवसमाज का विकास, प्रकृति और नियम बतलानेवाला शास्त्र। ⊙**शास्त्री**= पुं० समाजशास्त्र का ज्ञाता या पंडित।

समादर—पुं० आदर, खातिर।

समादृत—वि० [सं०] जिसका खूब आदर हुआ हो।

समाधान—पुं० [सं०] निष्पत्ति, निराकरण। किसी के मन का संदेह दूर करनेवाली बात या काम। किसी प्रकार का विरोध दूर करना। बीज को ऐसे रूप में पुनः प्रदर्शित करना जिससे नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत हो (नाटक)। चित्त को सब ओर से हटाकर ब्रह्म की ओर लगाना। ⊙**ना**Ⓟ=सक० समाधान या संतोष करना। सांत्वना देना।

समाधि—स्त्री० [सं०] योग का चरम फल। इस अवस्था में मनुष्य सब प्रकार के क्लेशों से मुक्त हो जाता है और उसे अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं। योग। ध्यान। निद्रा। मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव जमीन में गाड़ना। वह स्थान जहाँ इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों। काव्य का एक गुण जिसके द्वारा दो घटनाओं का दैवसंयोग से एक ही समय में होना प्रकट होता है। एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से कोई कार्य बहुत ही सुगमतापूर्वक होना बतलाया जाता है। समर्थन। प्रतिज्ञा। ग्रहण करना, अंगीकार। दे० 'समाधान'। ⊙**क्षेत्र**=पुं० वह स्थान जहाँ योगियों आदि के मृत शरीर गाड़े जाते हों। कब्रिस्तान। ⊙**स्थ**=वि० जो समाधि लगाए हुए हो। **समाधित**—वि० जिसने समाधि लगाई या ली हो।

समान—वि० [सं०] जो रूप, गुण, मान, मूल्य, महत्व आदि में एक से हों, तुल्य। Ⓟस्त्री० [हिं०] समानता, बराबरी।

समानाधिकरण—पुं० व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये आता है। समानार्थ, समानार्थक—पुं० वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो, पर्याय। समानिका—स्त्री० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण और एक गुरु होता है। समानी—स्त्री० [सं०] आठ वर्णों का वह छंद जिसके प्रत्येक चरण में रगण के बाद जगण और अंत में गुरु लघु हों।

समापक—पुं० [सं०] समाप्त करनेवाला, पूरा करनेवाला। समापन—वि० पूर्ण। पुं० पूरा या समाप्त करने की क्रिया। मार डालने की क्रिया। समापिका—स्त्री० व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त हो जाना सूचित होता है। समापित—वि० समाप्त किया हुआ। समाप्त—वि० जो खतम या पूरा हो गया हो। समाप्ति—स्त्री० किसी कार्य या बात आदि का खतम या पूरा होना। समाप्य—वि० जो समाप्त होनेवाला या समाप्त होने योग्य हो।

समायोग—पुं० [सं०] संयोग। लोगों का एकत्र होना।

समारंभ—पुं० [सं०] अच्छी तरह आरंभ होना। समारोह, आयोजन।

समारना(पु)—सक० दे० 'सँवारना'।

समारोह—पुं० [सं०] तड़क भड़क, धूमधाम। ऐसा कार्य या उत्सव जिसमें बहुत धूम धाम हो।

समालोचक—पुं० [सं०] समालोचना करनेवाला। समालोचन—पुं० दे० 'समालोचना'। समालोचना—स्त्री० खूब देखना भालना। किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना। वह कथन या लेख आदि जिसमें इस प्रकार के गुण और दोषों की विवेचना हो, आलोचना।

समावर्तन—पुं० [सं०] वापस आना, लौटना। वैदिक काल का एक संस्कार जो उस समय होता था, जब ब्रह्मचारी नियत समय तक गुरुकुल में रहकर और विद्याओं का अध्ययन करके स्नातक बनकर घर लौटता था।

समाविष्ट—वि० [सं०] जिसका समावेश हुआ हो। समावेश—पुं० एक साथ या एक जगह रहना। एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना। मनोनिवेश।

समाश्रय—पुं० [सं०] आश्रय, शरण। समाश्रित—वि० [सं०] आश्रय या शरण में रहनेवाला।

समास—पुं० [सं०] संक्षेप। समर्थन। संग्रह। संमिलन। व्याकरण में शब्दों का कुछ नियमों के अनुसार मिलकर एक होना, मुख्य समास ये हैं—अव्ययीभाव, द्विगु, द्वंद्व कर्मधारय, तत्पुरुष और बहुव्रीहि। समासोक्ति—स्त्री० एक अर्थालंकार जिसमें समान कार्य और समान विशेषण आदि के द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत का ज्ञान होता है।

समासीन—वि० [सं०] भली भाँति आसीन या बैठा हुआ, आसीन।

समाहरण—पुं० [सं०] दे० 'समाहार'। समाहर्ता—पुं० समाहार करनेवाला, मिलानेवाला। प्राचीन काल का राज्यकर एकत्र करनेवाला एक कर्मचारी। समाहार—पुं० [सं०] बहुत सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना, संग्रह। राशि, ढेर। मिलना। ⊙द्वंद्व—पुं० वह द्वंद्व समास जिससे उसके पदों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता हो (जैसे, सेठ साहूकार, दाल रोटी)।

समाहित—वि० [सं०] एक जगह इकट्ठा किया हुआ। शांत। समाप्त। स्वीकृत।

समिति—स्त्री० [सं०] सभा, समाज। प्राचीन वैदिक काल की एक संस्था जिसमें राजनीतिक विषयों पर विचार होता था। विशिष्ट कार्य के लिये नियुक्त की हुई सभा।

समिद्ध—वि० [सं०] प्रज्वलित। उत्तेजित, भड़का या भड़काया हुआ।

समिध—पुं० [सं०] अग्नि। लकड़ी।

समिधा—स्त्री० [सं०] हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी ।

समीकरण—पु० [सं०] समान या बराबर करना । गणित में एक क्रिया जिसमें किसी ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि का पता लगाते हैं ।

समीक्षक—वि० [सं०] अच्छी तरह से देखने भालनेवाला । समालोचक । समीक्षा—स्त्री० अच्छी तरह देखना । आलोचन, समालोचना । बुद्धि । यत्न । मीमांसा शास्त्र ।

समीचीन—वि० [सं०] यथार्थ, ठीक । उचित ।

समीति(प)—स्त्री० दे० 'समिति' ।

समीप—वि० [सं०] दूर का उलटा, पास । ⊙वर्ती=वि० समीप का ।

समीर—पुं० [सं०] वायु, हवा । प्राणवायु ।

समीरण—पुं० वायु, हवा ।

समुद, समुदर—पुं० दे० 'समुद्र' ।

समुंदरफूल—पुं० एक प्रकार का विधारा ।

समुचित—वि० [सं०] उचित, ठीक । जैसा चाहिए वैसा, उपयुक्त ।

समुच्चय—पुं० [सं०] समूह, ढेर । समाहार, मिलन । साहित्य में एक अलंकार जिसके दो भेद हैं एक तो वह जहाँ आश्चर्य, हर्ष, विषाद आदि बहुत से भावों का एक साथ उदित होने का वर्णन हो, दूसरा वह जहाँ किसी एक ही कार्य के लिये बहुत से कारणों का वर्णन हो ।

समुज्वल—वि० [सं०] विशेष रूप से उज्वल, प्रकाशमान, चमकीला ।

समुझ(प)†—वि० दे० 'समझ' ।

समुत्थान—पु० [सं०] उठने की क्रिया । उत्पत्ति । आरंभ ।

समुत्सुक—वि० [सं०] विशेष रूप से उत्सुक ।

समुद—पु० दे० 'समुद्र' ।

समुदय—पु० वि० [सं०] दे० 'समुदाय' ।

समुदाउ—पु० समुदाय, समूह ।

समुदाय—पुं० [सं०] ढेर । झुंड, गरोह । समुत्थान, उदय । वि० सब, समस्त ।

समुदाव—पु० दे० 'समुदाय' ।

समुद्यत—वि० [सं०] जो भली भाँति उद्यत या तैयार हो ।

समुद्र—पु० [सं०] वह जलराशि जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है और जो इस पृथ्वीतल के प्राय तीन चतुर्थांश में व्याप्त है, सागर । किसी विषय या गुण आदि का बहुत बड़ा आगार । ⊙फेन=पु० समुद्र के पानी का झाग जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है । ⊙यात्रा=स्त्री० समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की यात्रा । ⊙यान=पु० जहाज । ⊙लवण=पुं० करकच लवण जो समुद्र के जल से बनता है । समुद्रीय—वि० समुद्र संबंधी ।

समुन्नत—वि० [सं०] भली भाँति उन्नत ।

समुन्नति—स्त्री० यथेष्ट उन्नति । बड़ाई । उच्चता ।

समुपस्थित—वि० [सं०] दे० 'उपस्थित' ।

समुल्लास—पु० [सं०] उल्लास, आनंद । ग्रंथ आदि का प्रकरण या परिच्छेद ।

समुहा—वि० सामने का । क्रि० वि० सामने, आगे । समुहाना=अक० सामने आना,

समूर—पु० [सं०] शबर या साबर नामक हिरन ।

समूल—वि० [सं०] जिसमें मूल या जड़ हो । कारण सहित । क्रि० वि० जड़ से, मूलसहित ।

समूह—पु० [सं०] बहुत सी चीजों का ढेर, राशि । समुदाय झुंड, ।

समृद्ध—वि० [सं०] संपन्न, धनवान् ।

समृद्धि—स्त्री० बहुत अधिक संपन्नता, अमीरी ।

समें, समैं—पु० समय ।

समेटना—सक० [अक० सिमटना] बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना, फैली हुई वस्तु को सिकोड़ना । अपने ऊपर लेना ।

समेत—वि० [सं०] संयुक्त, मिला हुआ । अव्य० सहित, साथ ।

समै, समैया ⓟ—पुं० दे० 'समय'।
समोना—सक० मिलाना।
समोखना—सक० बहुत ताकीद से कहना।
समोधना ⓟ—सक० प्रबोध करना, ढाढ़स बँधाना।
समोसा—पुं० एक प्रकार का नमकीन पकवान, तिकोना।
समौ ⓟ—पु० दे० 'समय'
समौरिया—वि० बराबर की उमरवाला।
सम्मत—वि० [सं०] जिसकी राय मिलती हो, सहमत। सम्मति—स्त्री० सलाह, राय। अनुमति, आदेश। मत।
सम्मन—पुं० अदालत का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को हाजिर होने का हुक्म दिया जाता है।
सम्मान—पु० [सं०] इज्जत, मान। ⊙ना ⓟ=सक० सम्मान या आदर करना। सम्मानना—स्त्री० दे० 'सम्मान'। सम्मानित—वि० [सं०] जिसका सम्मान हुआ हो, प्रतिष्ठित।
सम्मार्जनी—स्त्री० [सं०] झाड़।
सम्मिलन—पुं० [सं०] मिलाप, मेल।
सम्मिलित—वि० मिला हुआ, मिश्रित।
सम्मिश्रण—पु० [सं०] मिलने की क्रिया। मेल, मिलावट। एक साथ मिली हुई एकाधिक वस्तुएँ।
सम्मुख—अव्य० [सं०] सामने, समक्ष।
सम्मेलन—पुं० [सं०] मनुष्यों का किसी निमित्त एकत्र हुआ समाज, समाज। जमघट। मिलाप, संगम।
सम्मोहन—पुं० [सं०] मोहित या मुग्ध करना। मोह उत्पन्न करनेवाला। एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे। कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
सम्यक्—वि० [सं०] पूरा, सब। क्रि० वि० सब प्रकार से। अच्छी तरह।
सम्याना ⓟ—पु० दे० 'शामियाना'।
सम्राज्ञी—स्त्री० [सं०] सम्राट् की पत्नी। साम्राज्य की अधीश्वरी।
सम्राट्—पु० [सं०] बहुत बड़ा राजा, शाहंशाह।
सम्हलना—अक० दे० 'सँभलना'।
सयन ⓟ—पुं० 'शयन'।
सयान ⓟ—पु० दे० 'सयाना'। दे० 'सयानापन', ⊙पतप, ⊙पन= चतुराई, चालाकी।
सयाना—पु० अधिक अवस्थावाला। होशियार। चालाक।
सरंजाम—पुं० कार्य की समाप्ति। प्रबंध। सामग्री।
सर—पु० [सं० सरस्] ताल, तालाब। समय, अवसर, अधुना, 'अवसर' के पूर्व यौगिक रूप में प्रचलित। वि० दमन किया हुआ, पराजित, अभिभूत। वि० [अं०] एक अंग्रेजी उपाधि या किताब। स्त्री० [हिं०] चिता। ⓟ+पु० दे० 'शर'। ⊙आगी=पु० अग्निबाण। ⊙घर=पु० तीर रखने का खाना, तरकश। ⊙पिंजर ⓟ=पु० बाणों का बना हुआ पिंजड़ा या घेरा।
सर=पुं० [फा०] सिर। सिरा, चोटी। ⊙अंजाम=पु० सामग्री। ⊙कश=वि० उद्दंड। विरोध में सिर उठानेवाला। ⊙कार=स्त्री० मालिक, प्रभु। शासनसत्ता। रियासत। ⊙खत=पु० वह दस्तावेज जिसपर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें और चुकाए हुए ऋण आदि का ब्योरा रहता है। आज्ञापत्र, परवाना। ⊙गर्म=वि० जोशीला। उमंग से भरा हुआ। ⊙गना=पुं० सरदार, अगुआ। ⊙जोर=वि० बलवान्। प्रबल, जबरदस्त। उद्दंड। विद्रोही। ⊙ताज=पु० दे० 'सिरताज'। ⊙तारा=वि० [हिं०) जो अपना काम करके निश्चित हो गया हो। ⊙दर=क्रि० वि० एक सिरे से। सब एक साथ मिलाकर, औसत में ⊙दार=पु० नायक, अगुवा। शासक। अमीर, रईस। श्रेष्ठतासूचक उपाधि। ⊙नाम=वि० प्रसिद्ध। ⊙नामा=पुं० शीर्षक। पत्र का आरंभ या संबोधन। पत्र पर लिखा जानेवाला पता। ⊙पंच=पु० [हिं०]। पंचों में बड़ा व्यक्ति, पंचायत का सभापति। ⊙परस्त=पुं० अभिभावक, संरक्षक।

⊙पेच = पु० पगडी के ऊपर लगाने का एक जडाऊ गहना। ⊙पोश = पु० थाल या तश्तरी ढकने का कपडा। ⊙फराज = वि० उच्च पद पर पहुँचा हुआ, सम्मानित। ⊙बराह = पुं० प्रबध-कर्ता, कारिंदा। मजदूरो आदि का सरदार। रास्ते के खानपान और ठहरने आदि का प्रवध। ⊙बराहकार = पुं० किसी कार्य का प्रबध करनेवाला, कारिंदा। ⊙हग = पुं० सेनापति। पहलवान। कोतवाल। सिपाही। ⊙हद = स्त्री० [अ०] सीमा। किसी भूमि की चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा या चिह्न।

सरकडा—पुं० सरपत की जाति का एक पौधा।

सरक—स्त्री० सरकने की क्रिया या भाव। शराब की खुमार। ⊙सरकना—अक० जमीन से लगे हुए किसी ओर धीरे से वढना, खिसकना। नियत काल से और आगे जाना, टहलना। काम चलना।

सरकस—पु० [अं०] पशुओ और कला-वाजी आदि का कौशल या उसे दिख-लानेवालो का दल।

सरकारी—वि० [फा०] सरकार या मालिक का। राजकीय। ~कागज—पुं० राज्य सरकार के दफ्तर का कागज। प्रामि-सरी नोट।

सरग(पु)—पु० दे० 'स्वर्ग'। ⊙तिय(पु) = स्त्री० अप्सरा।

सरगम—पु० सगीत मे सात स्वरो के चढाव उतार का क्रम, स्वरग्राम।

सरघा—स्त्री० [सं०] मधुमक्खी।

सरज—स्त्री० दे० 'सर्ज'।

सरजना—सक० सृष्टि करना। रचना, वनाना।

सरजा—पु० श्रेष्ठ व्यक्ति, सरदार। सिंह।

सरजीवन†—वि० जिलानेवाला। हरा भरा, उपजाऊ।

सरणी—स्त्री० [सं०] मार्ग, रास्ता। ढर्रा। लकीर।

सरद—वि० दे० 'सर्द'।

सरदई—वि० सरदे के रग का, हरापन लिए। पीला।

सरदा—पुं० एक प्रकार का वहुत वढिया खरवूजा।

सरधन(पु)—वि० धनवान्, अमीर।

सरधा(पु)—स्त्री० दे० 'श्रद्धा'। पु० दे० 'सरदा'।

सरन(पु)‡—स्त्री० दे० 'शरण'

सरनदीप—पु० दे० 'सिंहलद्वीप'।

सरना—अक० सरकना, खिसकना। हिलना, डोलना। काम चलना, पूरा पडना। किया जाना, निवटना।

सरनी(पु)—स्त्री० मार्ग, रास्ता।

सरपट—क्रि० वि० घोडे की वहुत तेज दौड जिसमे वह दोनो अगले पैर साथ साथ आगे फेंकता है।

सरपत—पुं० कुश की तरह की एक घास जो छप्पर आदि छाने के काम मे आती है।

सरफराना(पु)—अक० व्याकुल होना, घवराना।

सरफोका—पुं० दे० 'सरकडा'।

सरवग—पुं० समस्त देह, सर्वांग।

सरवधी(पु)—पुं० तीरदाज, धनुर्धर।

सरव(पु)†—वि० दे० 'सर्व'।

सरवस(पु)‡—पुं० दे० 'सर्वस्व'।

सरमा—स्त्री० [सं०] देवताओ की एक प्रसिद्ध कुतिया (वैदिक)। कुतिया।

सरयू—स्त्री० [स०] उत्तर भारत की एक नदी।

सरराना†—अक० हवा मे किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द होना।

सरल—पुं० [स०] चीड का पेड। सरल का गोद, गधाबिरोजा। वि० जो टेढा न हो, सीधा। निष्कपट, सीधासादा। सहज, आसान। ⊙ता = स्त्री० टेढा न होने का भाव, सीधापन। निष्कपटता। आसानी। सादगी, भोलापन। ⊙निर्यास = पुं० गधाबिरोजा। तारपीन का तेल।

सरवग्य—वि० सर्वज्ञ।

सरवत—स्त्री० [अ०] संपन्नता, वैभव।

सरवन—पु० अधक मुनि के पुत्र जो अपने पिता को एक बहँगी मे वैठाकर ढोया करते थे। (पु)‡पु० दे० 'श्रवण'।

सरवर—पुं० दे० 'सरोवर'।

सरवरि(पु)‡—स्त्री० बराबरी, तुलना।
सरवरिया—वि० सरवार या सरयूपार का। पुं० सरयूपारी।
सरवाक—पुं० सपुट, प्याला। कसोरा।
सरवान—पुं० तबू, खेमा।
सरवार—पुं० सरयू नदी के उस पार का देश जिसमे गोरखपुर, बस्ती और देवरिया जिले है।
सरविस—स्त्री० [अं०] नौकरी। सेवा, खिदमत।
सरवे—पुं० [अं०] जमीन की पैमाइश। यह पैमाइश करनेवाला सरकारी विभाग।
सरस—वि० [सं०] रसयुक्त। गीला, सजल। हरा, ताजा। सुदर। मीठा। जिसमे भाव जगाने की शक्ति हो, भावपूर्ण। बढकर, उत्तम। रसिक, सहृदय। पु० छप्पय छद के २५वें भेद का नाम। ⊙ता=स्त्री० 'सरस' होने का भाव। रसीलापन। गीलापन। सुदरता। मधुरता। भावपूर्णता, रसिकता।
सरसई(पु)—स्त्री० सरस्वती नदी या देवी। सरसता, रसपूर्णता। हरापन, ताजापन। फल के छोटे अकुर या दाने जो पहले दिखाई पडते हैं।
सरसना—अक० हरा होना, पनपना। बढना। शोभित होना। रसपूर्ण होना। भाव या उमग से भरना।
सरसनि—स्त्री० सरसना, प्रसन्न होना।
सरसब्ज—वि० [फा०] हरा भरा, लहलहाता हुआ। जहाँ हरियाली हो।
सरसर—पु० जमीन पर रेंगने का शब्द। वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि।
सरसराना—अक० वायु का सर सर की ध्वनि करते हुए बहना, सनसनाना। साँप आदि का रेंगना।
सरसराहट—स्त्री० साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। खुजली, सुरसुराहट। वायु बहने का शब्द।
सरसरी—वि० जमकर या अच्छी तरह नही, जल्दी में, मोटे तौर पर।
सरसाई—स्त्री० सरसता। शोभा, सुदरता। अधिकता।
सरसाना—सक० सरस करना। हरा भरा करना। (पु) अक० दे० 'सरसना'। शोभा देना।
सरसाम—पु० [फा०] सन्निपात।
सरसार—वि० (सं०) डूबा हुआ, मग्न। चूर, मदमस्त (नशे मे)।
सरसिज—पु० [सं०] वह जो ताल में होता हो। कमल।
सरसिरुह—पु० [सं०] कमल।
सरसी—स्त्री० [सं०] छोटा सरोवर तलैया। बावली। २७ मात्राओं का एक छद जिसके अत मे गुरु लघु का क्रम रहता है। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से नगण, जगण, भगण, तीन जगण और रगण होता है। ⊙रुह=पु० कमल।
सरसेटना—सक० खरी खोटी सुनाना, फटकारना। दुराग्रह करना।
सरसो—स्त्री० एक पौधा जिसके छोटे गोल बीजो से तेल निकलता है। एक तेलहन।
सरसौहाँ—वि० सरस बनाया हुआ।
सरस्वती—स्त्री० [सं०] पुराणों के अनुसार प्रयाग मे त्रिवेणी संगम मे मिलनेवाली एक प्राचीन नदी जो अब लुप्त हो गई है। पंजाब की एक प्राचीन नदी। विद्या या वाणी की देवी। विद्या, इल्म। ब्राह्मी बूटी। सोमलता। एक छद का नाम। ⊙पूजा=सरस्वती का उत्सव जो कही बसत पचमी को और कही आश्विन मे होता है।
सरह—पु० पतग, फतिगा, टिड्डी।
सरहज—स्त्री० साले की स्त्री, पत्नी के भाई की स्त्री।
सरहटी—स्त्री० सर्पाक्षी नाम का पौधा, नकुलकद।
सरहदी—वि० सरहद सबधी।
सरहरी—स्त्री० मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा।
सरा(पु)—स्त्री० चिता। दे० 'सराय'।
सराना(पु)‡—सक० [सारना का प्रे०] पूर्ण करना, सपादित कराना (काम)। कराना।

सराई†—स्त्री० शलाका, सलाई। सरकडे की पतली छड़ी। सकोरा, मिट्टी का प्याला।

सराग†—पु० लोहे की सीख, छड।

सराजाम†—पु० दे० 'सरजाम'।

सराध(पु)†—पु० दे० 'श्राद्ध'। ⊙पख(पु) = पितृपक्ष।

सराफ—पु० [अ०] सोने चांदी का व्यापारी। बदले के लिये रुपए पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार।

सराफा—पु० [अ०] सराफी का काम, रुपए पैसे या सोने चांदी के लेनदेन का काम। सराफो का बाजार। कोठी, बक।

सराफी—स्त्री० चांदी सोने या रुपए पैसे के लेनदेन का रोजगार। महाजनी लिपि, मुडा।

सराबोर—वि० बिलकुल भीगा हुआ, तरबतर।

सराव—स्त्री० [फा०] घर, मकान। मुसाफिरखाना।

सरारी(पु)—स्त्री० बाणो की पक्ति।

सराव(पु)†—पु० मद्यपात्र, प्याला (शराब पीने का)। कसोरा, कटोरा। चिराग।

सरावग, सरावगी—पु० जैनधर्म को माननेवाला, जैनी।

सरासन(पु)—पु० दे० 'शरासन'।

सरासर—अव्य० [फा०] एक सिरे से दूसरे सिरे तक। पूर्णतया। प्रत्यक्ष।

सरासरी—स्त्री० [फा०] आसानी, फुरती। जल्दी। मोटा अदाज। क्रि० वि० जल्दी मे। मोटे तौर पर।

सराह(पु)—स्त्री० प्रशसा।

सराहना—सक० तारीफ या प्रशसा करना।

सराहना—स्त्री० प्रशसा।

सराहनीय(पु)—वि० प्रशसा के योग्य। अच्छा, बढिया।

सरि(पु)—स्त्री० नदी। बराबरी, समता। वि० सदृश, समान।

सरित्—स्त्री० [सं०] नदी।

सरिता—स्त्री० धारा। नदी।

सरियाना—सक० तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना। मारना, लगाना (बाजारू)।

सरिवन—पु० शालपर्ण नाम का पौधा, त्रिपर्णी।

सरिवरि(पु)†—स्त्री० बराबरी, समता। रा०

सरिश्ता—पु० [स०] अदालत, कचहरी। कार्यालय का विभाग, महकमा। दफ्तर। सरिश्तेदार—पु० [फा० सरिश्तादार] किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी। भारत की अग्रेजी अदालतो मे देशी भाषाओ मे मुकदमो की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।

सरिष्यु—वि० सदृश, समान।

सरिस(पु)—वि० सदृश, समान।

सरी—स्त्री० [स०] छोटा सर या तालाब। झरना, सोता। स्त्री० [हिं०] पतला सरकडा।

सरीक—वि० दे० 'शरीक'। ⊙ता(पु) = स्त्री० साझा, हिस्सा।

सरीखा—वि० समान, तुल्य।

सरीफा—पु० एक छोटा पेड़ जिसके गोल फल खाए जाते हैं।

सरीर(पु)†—पु० दे० 'शरीर'।

सरीसृप—पुं० [सं०] रेंगनेवाला जत। सांप।

सरुज—वि० [स०] रोगी।

सरुष—वि० [सं०] क्रोधयुक्त।

सरूप—वि० [सं०] आकारवाला। सदृश। रूपवान्, सुदर। †पु० [हिं०] दे० 'स्वरूप'।

सरूपी—वि० [हिं०] स्वरूप से सबधित।

सरूर—पुं० खुशी, प्रसन्नता। हलका नशा।

सरूहाना—सक० रोमयुक्त करना।

सरेख, सरेखा(पु)†—वि० बडा और समझदार, चालाक, सयाना।

सरेखना—सक० दे० 'सहेजना'।

सरे बाजार—क्रि० वि० [फा०] खुल्लमखुल्ला, आम लोगो के बीच मे।

सरेस—पुं० एक लसदार वस्तु जिसे ऊँट, भैंस आदि के चमडे या मछली के पोटे को पका कर निकालते हैं, सरेश।

सरोट(पु)†—पु० कपडो मे पडी हुई शिकन, बल।

सरो—पु० एक सीधा पेड जो बगीचो में शोभा के लिये लगाया जाता है, बनझाऊ।

सरोकार—पुं० [फा०] परस्पर व्यवहार का संबंध। लगाव, वास्ता।

सरोज—पु० [सं०] कमल।

सरोजना—सक० पाना।

सरोजिनी—स्त्री० [सं०] कमलों का समूह। कमल का फूल। कमलों से भरा हुआ ताल।

सरोद—पु० [फा०] बीन की तरह का एक बाजा।

सरोरुह—पु० [सं०] कमल।

सरोवर—पुं० [सं०] तालाब, पोखरा। झील, ताल।

सरोवरी—स्त्री० छोटा तालाब, तलैया।

सरोष—वि० [सं०] क्रोधयुक्त।

सरोसामान—पु० [फा०] सामग्री, असबाब।

सरौता—पुं० सुपारी, कच्चा आम आदि काटने का एक प्रसिद्ध औजार।

सर्ग—पुं० स्वर्ग। पुं० [सं०] किसी ग्रंथ (विशेषत काव्य) का अध्याय, प्रकरण। संसार, सृष्टि। उत्पत्ति स्थान। प्राणी, जीव, औलाद। स्वभाव। बहाव। छोडना। फेंकना। चलना या बढना। ⊙**बंध**=वि० जो कई अध्यायों मे विभक्त हो (जैसे सर्गबंध काव्य)।

सगुन—वि० दे० 'सगुण'।

सर्ज—पु० [सं०] बडी जाति का शालवृक्ष। राल, धूना। सलाई का पेड। स्त्री० [अं०] एक बढिया मोटा ऊनी कपडा जो प्राय कोट आदि बनाने के काम आता है।

सर्जन—पुं० [सं०] छोडना, फेंकना। निकालना सृष्टि।

सर्द—वि० [फा०] शीतल। सुस्त, काहिल। मंद, धीमा। नपुंसक। **सर्दी**—स्त्री० सर्द होने का भाव, ठंढ। जाडा। जुकाम, नजला।

सर्प—पुं० [सं०] साँप। रेंगना। एक म्लेच्छ जाति। ⊙**काल**=पुं० गरुड। ⊙**यज्ञ**, ⊙**याग**=पुं० नागों के संहार के लिये जनमेजय द्वारा संपादित वह यज्ञ जिसमे नागों की आहुति दी गई थी। ⊙**राज**=पुं० सर्पों के राजा, शेष। वासुकि। ⊙**विद्या**=स्त्री० साँप को पकडने या वश मे करने की विद्या।

सर्पिणी—स्त्री० [सं०] साँपिन, मादा साँप। भुजंगी लता।

सर्पिल—वि० [सं०] साँप के आकार का साँप की तरह कुंडली मारे हुए।

सर्फ—वि० [अ०] खर्च किया हुआ। सर्फा—पुं० [अ०] खर्च, व्यय।

सर्बस—पुं० दे० 'सर्वस्व'।

सर्रक—स्त्री० सर्राते हुए आगे बढने की क्रिया या भाव।

सर्राटा—पुं० हवा के जोर से चलने से होनेवाला सर्र सर्र शब्द। उस प्रकार तेजी से भागना कि सर्र सर्र शब्द हो। मु०~ भरना=तेजी से साथ सर्र सर्र शब्द करते हुए इधर से उधर जाना।

सर्राफ—पुं० [अ०] दे० 'सराफ'।

सर्व—वि० [सं०] सब, तमाम। पुं० शिव, विष्णु। पारा। ⊙**काम**=पुं० सब इच्छाएँ रखनेवाला। सब इच्छाएँ पूरी करनेवाला। शिव। ⊙**क्षार**=पुं० सब कुछ जला देना या नष्ट कर देना, विशेषतः युद्धस्थल से पीछे हटनेवाली सेना का अपनी वह समस्त रणसामग्री नष्ट कर देना जो साथ न आ सके। ⊙**गत**=वि० सर्वव्यापक। ⊙**ग्रास**=पुं० चंद्र या सूर्य का पूर्ण ग्रहण। ⊙**जनीन**=वि० दे० 'सार्वजनिक'। ⊙**जित्**=वि० सबको जीतनेवाला। ⊙**ज्ञ**=वि० सब कुछ जाननेवाला। पु० ईश्वर। देवता। बुद्ध या अर्हत्। शिव। ⊙**तंत्र**=पुं० सब प्रकार के शास्त्रसिद्धांत। वि० जिसे सब शास्त्र मानते हों। ⊙**तः**=अव्य० सब ओर चारों तरफ। सब प्रकार से। ⊙**दर्शी**=वि० सब कुछ देखनेवाला। ⊙**नाम**=पुं० व्याकरण मे वह शब्द जो संज्ञा के स्थान मे प्रयुक्त होता है (जैसे–मैं, तू, वह)। ⊙**नाश**=पु० सत्यानाश, विध्वंस, पूरी बरबादी। ⊙**प्रिय**=वि० सबको प्यारा, जो सबको अच्छा लगे। ⊙**भक्षी**=वि० सब कुछ खानेवाला। पुं० अग्नि।

⊙भोगी = वि० सबका आनद लेनेवाला। सब कुछ रखनेवाला। ⊙मगला = स्त्री० दुर्गा। लक्ष्मी। ⊙व्यापक = पुं० दे० 'सर्वव्यापी'। ⊙व्यापी = वि० सबमे रहनेवाला, सब पदार्थों मे रमणशील। ⊙शक्तिमान् = वि० सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला। पुं० ईश्वर। ⊙श्रेष्ठ = वि० सबमे उत्तम। ⊙साधारण = पुं० साधारण लोग, जनता, आम लोग। वि० जो सबमे पाया जाय, आम। ⊙सामान्य = वि० जो सबमे एक सा पाया जाय, मामूली। ⊙स्व = पुं० सारी सपत्ति, सब कुछ, कुल मालमता। ⊙हर = पुं० सब कुछ हर लेनेवाला। महादेव, शकर। यमराज। काल। ⊙हारा = वि० [हिं०] जिसका सब कुछ नष्ट हो गया हो, जो अपनी समस्त सपति और अधिकारो मे वचित हो। पुं० श्रमिक, मजदूर। श्रमिक वर्ग, मजदूर वर्ग। **सर्वतोभद्र**—वि० सब ओर से मगल। जिसके सिर, दाढी, मूँछ आदि सबके बाल मुंडे हो। पु० वह चौखूंटा मदिर जिसके चारो ओर दरवाजे हो। एक प्रकर का मागलिक चिह्न जो पूजा के वस्त्र पर बनाया जाता है। एक प्रकार का चित्रकाव्य। एक प्रकार की पहेली जिसमें शब्द के खडाक्षरो के भी अलग अर्थ लिए जाते हैं। विष्णु का रथ। **सर्वतोभाव**—अव्य० सब प्रकार से, अच्छी तरह, भली भाँति। **सर्वतोमुख**—वि० जिसका मुंह चारो ओर हो। पूर्ण, व्यापक। **सर्वत्र**—अव्य० सब कही, सब जगह। **सर्वथा**—अव्य० सब प्रकार से, तरह सब से। बिलकुल, सब। **सर्वदा**—अव्य० हमेशा, सदा। **सर्वदैव**—अव्य० सदा ही। **सर्वांग**—पुं० सपूर्ण शरीर। सब अवयव या अग। **सर्वांगीण**—वि० सब अगो से युक्त, सपूर्ण। **सर्वात्मा**—पु० सारे विश्व की आत्मा, ब्रह्म। शिव। **सर्वाधिकार**—पु० सब कुछ करने का अधिकार। पूरा इख्तियार। **सर्वाधिकारी**—पुं० वह जिसके हाथ मे पूरा इख्तियार हो। हाकिम। **सर्वाशी**—वि० सब कुछ खानेवाला, सर्वभक्षी। **सर्वास्तिवाद**—पुं० यह दार्शनिक सिद्धात कि सब वस्तुओ की वास्तव मे सत्ता है, वे असत् नही हैं। **सर्वेश, सर्वेश्वर**—सब का स्वामी। ईश्वर। चक्रवर्ती राजा। **सर्वोत्तम**—वि० सबसे उत्तम या बढकर। **सर्वोपरि**—वि० सबसे ऊपर या बढकर। **सर्वोषधि**—स्त्री० आयुर्वेद मे औषधियो का एक वर्ग जिसके अतर्गत दस जडी बूटियाँ है। **सर्वरी**(पु)—स्त्री० दे० 'शर्वरी'।

सर्विस—स्त्री० [अँ०] सेवा का भाव या काम। नौकरी, सेवा।

सर्षप—पुं० [स०] सरसो भर का मान या तौल। एक तेलहन, सरसो।

सलई—स्त्री० शल्लकी वृक्ष, चीड। चीड का गोद, कुदुर।

सलगम—पु० दे० 'शलजम'।

सलज्ज—वि० [स०] जिसे लज्जा हो, शर्म और हयावाला, लज्जाशील।

सलतनत—स्त्री० [अ० सल्तनत] राज्य, बादशाहत। साम्राज्य। इतजाम। सुभीता, आराम।

सलना—अक० साला जाना छिदना। छंद मे डाला या पहनाया जाना।

सलब—वि० नष्ट, बरबाद।

सलमा—पु० सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेलबूटे बनाने के काम मे आता है, बादला।

सलवट—स्त्री० सिकुडने से पडी हुई लकीर, शिकन, सिकुडन।

सलवात—स्त्री० [अ०] शुभकामना। सलाम। दुर्वचन, गाली गलौज।

सलहज—स्त्री० साले की पत्नी, सरहज।

सलाई—स्त्री० सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी। धातु या अन्य पदार्थ का पतला छोटा टुकडा, तीली। दे० 'दियासलाई'। मु०~फेरना = सलाई गरम करके अधा करने के लिये आँखो मे लगाना।

सलाक—पु० तीर, सलाई।

सलाख—स्त्री० [फा०] धातु का बना हुआ छड़, शलाका, सलाई।

सलाद—पुं० मूली, प्याज आदि के पत्तो का अँग्रेजी ढग से डाला हुआ अचार। एक प्रकार के कद के पत्ते जो प्राय. कच्चे खाए जाते हैं।

सलाम—पु० [अ०] प्रणाम करने की क्रिया, प्रणाम, वदगी, आदाव। मु०~दूर से ~करना=किसी बुरी वस्तु के पास न जाना। ~देना=सलाम करना।~लेना=सलाम का जवाब देना।

सलामत—वि० [अ०] सब प्रकार की आपत्तियो से बचा हुआ, रक्षित। जीवित और स्वस्थ, तदुरुस्त और जिंदा। कायम, वरकरार। क्रि० वि० कुशलपूर्वक, खैरियत से। सलामती—स्त्री० तदुरुस्ती, स्वस्थता। कुशल, क्षेम।

सलामी—स्त्री० प्रणाम करने की क्रिया, सलाम करना। सैनिको की प्रणाम करने की प्रणाली। तोपो या बदूको की बाढ जो किसी बडे अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है। वह द्रव्य जो जमीदार, महाजन आदि वास्तविक किराए या मूल्य इत्यादि के अतिरिक्त लेते हैं, पगडी, नजराना। मु०~उतारना=किसी के स्वागतार्थ बदूको या तोपो की बाढ दागना।

सलार—पु० एक प्रकार का पक्षी।

सलाह—स्त्री० [अ०] समति, परामर्श, राय, मशवरा। ⊙कार=पु० [फा०] वह जो परामर्श देता हो, राय देनेवाला।

सलाही—पुं० दे० 'सलाहकार'।

सलिल—पु० [सं०] जल, पानी। ⊙पति=पु० वरुण। समुद्र। सलिलेश—पुं० वरुण। समुद्र।

सलीका—पु० [अ०] काम करने का अच्छा ढग, शऊर। हुनर, लियाकत। चालचलन, वरताव। तहजीव, सभ्यता। ⊙मद=वि० [फा०] शऊरदार, तमीजदार। हुनरमद। सभ्य।

सलीता—पुं० एक प्रकार का बहुत मोटा कपडा।

सलील—वि० [सं०] लीलायुक्त। क्रीडाशील, खेलवाडी। कूतूहलप्रिय, कौतुकी। किसी प्रकार की भावभगी से युक्त। लीला या क्रीडा से युक्त।

सलीस—वि० [अ०] सहज, सुगम। महावरेदार और चलती हुई (भाषा)।

सलूक—पु० [अ०] वरताव, व्यवहार, आचरण। मिलाप, मेल। भलाई, नेकी, उपकार।

सलूका—पुं० स्त्रियो का एक पहनावा।

सलेमशाही—पु० एक प्रकार का देशी जूता।

सलोतर—पु० पशुओ, विशेषत घोडो की चिकित्सा का विज्ञान। सलोतरी—पु० पशुओ, विशेषत घोडो की चिकित्सा करनेवाला, शालिहोत्री।

सलोना—वि० जिसमे नमक पडा हो, नमकीन, रसीला, सुदर। सलोनी—स्त्री० सुदरी।

सलोनो—पुं० हिंदुओ का एक त्योहार जो श्रावण मास मे पूर्णिमा को पडता है, रक्षावधन, राखीपूनो।

सल्लम—स्त्री० एक प्रकार का मोटा कपड़ा, गजी, गाढा।

सल्लाह—स्त्री० दे० 'सलाह'।

सवत—स्त्री० दे० 'सौत'

सवत्स—वि० [सं०] वच्चे के सहित, जिसके साथ वच्चा हो।

सवन—पुं० [सं०] प्रसव, वच्चा जनना। यज्ञस्नान। यज्ञ। चद्रमा, अग्नि।

सवर्ण—वि० [सं०] समान, सदृश। समान वर्ण या जाति का। वर्ण व्यवस्था को माननेवाला या उनके अनुसार निर्धारित वर्णवाला। द्विजाति हिंदू।

सवाँग—पु० दे० 'स्वाँग'।

सवा—स्त्री० चौथाई सहित, सपूर्ण और एक का चतुर्थांश। सवाई—स्त्री० ऋण का एक प्रकार जिसमे मूलधन का चतुर्थांश ब्याज मे देना पडता है। जयपुर के महाराजाओ की एक उपाधि। वि० एक और चौथाई, सवा।

सवाद—पु० दे० 'स्वाद'।

सवादिका(पु)†—वि० स्वाद देनेवाला, स्वादिष्ठ।

सवाब—पु० [अ०] शुभ कृत्य का फल जो स्वर्ग में मिलेगा, पुण्य। भलाई, नेकी।

सवाया—वि० पूरे से एक चौथाई अधिक, सवा गुना।

सवार—पुं० [फा०] वह जो घोड़े पर चढ़ा हो, अश्वारोही। अश्वारोही सैनिक। वह जो किसी चीज पर चढ़ा हो। वि० किसी चीज पर चढ़ा या बैठा हुआ। **सवारी**—स्त्री० किसी चीज पर विशेषत चलने के लिये चढ़ने की क्रिया। सवार होने की वस्तु या पशु। वह व्यक्ति जो सवार हो। जलूस।

सवारा—पु० दे० 'सवेरा'।

सवाल—पुं० [अ०] पूछने की क्रिया। वह जो कुछ पूछा जाय, प्रश्न। दरखास्त, माँग। निवेदन, प्रार्थना। गणित का प्रश्न जो उत्तर निकालने के लिये दिया जाता है। ⊙जवाब=पु० बहस, वादविवाद। तकरार, झगड़ा।

सविकल्प—वि० [सं०] विकल्पसहित, संदेहयुक्त, संदिग्ध। जो किसी विषय के दोनो पक्षो या मतो आदि को, कुछ निर्णय न कर सकने के कारण मानता हो। पुं० वह समाधि जो किसी आलंबन की सहायता मे होती है।

सविता—पुं० [सं०] सूर्य। बारह की संख्या। आक, मदार। ⊙पुत्र=पु० सूर्य के पुत्र, हिरण्यपाणि। ⊙सुत=पु० शनैश्चर।

सविनय अवज्ञा—स्त्री० [सं०] राज्य की किसी आज्ञा या कानून को विनय के साथ न मानना।

सवेरा—पु० प्रातःकाल, सुबह। निश्चित समय के पूर्व का समय (क्व०)।

सवैया—पु० तौलने का सवा सेर का बाट। एक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे सात भगण और एक गुरु होता है, उमा, मालिनी, दिवा। ३१ मात्राओ का वह छंद जिसके प्रत्येक चरण के अंत मे दीर्घ ह्रस्व का क्रम रहता है। इसी को मात्रिक सवैया या वीर छंद कहते हैं। वह पहाड़ा जिसमे एक, दो तीन आदि संख्याओ का सवाया रहता है।

सव्य—वि० [सं०] वाम, बायाँ। प्रतिकूल, विरुद्ध। पुं० यज्ञोपवीत। विष्णु। ⊙साची=पुं० अर्जुन।

सव्रण वि० [सं०] जिसे व्रण हो। जिसे घाव लगे हो, घायल।

सशंक—वि० [सं०] जिसे शंका हो, शंकित, भयभीत। भयानक। ⊙ना(पु)=अक० शंका करना। भयभीत होना।

सस(पु)—पु० चंद्रमा। खेतीबारी।

ससक, ससा†—पुं० खरगोश।

ससधर—पु० शशांक, चंद्रमा।

ससाना(पु)—अक० घबराना। काँपना।

ससि(पु)—पु० चंद्रमा।

ससी(पु)—पु० दे० 'शशि'।

ससुर—पु० पति या पत्नी का पिता, श्वसुर। **ससुरा**—पु० श्वसुर, ससुर। एक प्रकार की गाली। दे० 'ससुराल'। **ससुराल**—स्त्री० श्वशुर का घर, पति या पत्नी के पिता का घर।

सस्ता—वि० जो महँगा न हो, थोड़े मूल्य का। जिसका भाव बहुत उतर गया हो। घटिया, साधारण, मामूली (क्व०)। मु०—सस्ते छूटना=थोड़े व्यय, परिश्रम या कष्ट मे कोई काम हो जाना।

सस्ताना†—अक० किसी वस्तु का कम दाम पर बिकना। सक० सस्ते दामो पर बेचना। **सस्ती**—स्त्री० सस्ता होने का भाव, सस्तापन। वह समय जब सब चीजें सस्ती मिलें।

सस्त्रीक—वि० [सं०] जिसके साथ स्त्री हो, पत्नी के सहित।

सस्मित—वि० [सं०] मुस्कराता या हँसता हुआ। क्रि० वि० मुस्कराकर, हंसकर।

सहँगा—वि० सस्ता।

सह—अव्य० [सं०] सहित, समेत। वि० उपस्थित, मौजूद। सहनशील, समर्थ, योग्य। ⊙कार=पु० सुगंधित पदार्थ। आम का पेड़। सहायक। सहयोग। ⊙कारता=स्त्री० सहायता। ⊙कारिता=स्त्री० सहकारी या सहायक होने का

भाव। सहायता। ⊙कारी = पु० एक साथ काम करनेवाला, साथी, सहयोगी। सहायक मददगार। ⊙गमन = पु० पति के शव के साथ पत्नी का सती होना। ⊙गान = पु० कई मनुष्यों का एक साथ गाना। ⊙गामिनी = स्त्री० वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो। स्त्री, पत्नी। सहचरी, साथिन। ⊙गामी = पु० साथ चलनेवाला, साथी। ⊙गौन(पु)—पु० दे० 'सहगमन'। ⊙चर = पु० साथ चलनेवाला, साथी। सेवक, नौकर। दोस्त, मित्र। ⊙चरी = स्त्री० 'सहचर' का स्त्री० रूप। पत्नी, जोरू। सखी। ⊙चार = पु० संगी, साथी। साथ, संग, सोहबत। ⊙चारिणी = स्त्री० [सं०] साथ में रहनेवाली। सखी। पत्नी, स्त्री। ⊙चारिता = स्त्री० सहचारी होने का भाव। ⊙चारी = पुं० संगी, साथी। सेवक। ⊙जात = वि० सहोदर। यमज। ⊙त्व = पुं० 'सह' का भाव। एकता। मेलजोल। ⊙धर्मचारिणी, ⊙धर्मिणी = स्त्री० पत्नी। ⊙धर्मी = वि० समान धर्मवाला। पु० पति। ⊙पाठी = पु० वह जो साथ में पढ़ा हो। ⊙भोजी = पुं० वे जो एक साथ बैठकर खाते हों। ⊙मत = वि० जिसका मत दूसरे के साथ मिलता हो। एक मत का। ⊙मरण = पु० स्त्री० का पति के शव के साथ सती होना। ⊙मृता = स्त्री० सहमरण करनेवाली स्त्री, सती। ⊙योग = पु० साथ मिलकर काम करने का भाव। साथ, संग। सहायता। ⊙योगी = पु० सहायक। सहयोग करनेवाला, साथ मिलकर कोई काम करनेवाला। समकालीन। ⊙वास = पु० संग, साथ। मैथुन, रति। ⊙वासी = पुं० साथ रहनेवाला, संगी। ⊙व्रता = स्त्री० धर्मपत्नी, स्त्री।

सहज—पुं० [सं०] सहोदर भाई। स्वभाव। वि० स्वाभाविक, प्राकृतिक। साधारण। सरल, सुगम, आसान। साथ उत्पन्न होनेवाला। ⊙पथ = पुं० गौडीय वैष्णव संप्रदाय का एक निम्न वर्ग।

सहजिया—पु० वह जो सहज पथ का अनुयायी हो।

सहतरा—पु० पित्तपापड़ा। पर्यटक।

सहताना—(पु)†—अक० दे० 'सुस्ताना'।

सहदानी(पु)—स्त्री० निशानी, पहचान।

सहदूल(पु)—पुं० दे० 'शार्दूल'।

सहदेई—स्त्री० क्षुप जाति की एक पहाड़ी वनौषधि।

सहन—पु० [अ०] मकान के बीच में या सामने का खुला छोड़ा हुआ भाग, आँगन। एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा। पु० [सं०] सहने की क्रिया। क्षमा, क्षांति। ⊙शील = वि० बरदाश्त करनेवाला। संतोषी।

सहनभँडार—पु० राज्यकोश के अतिरिक्त राजमहल में निहित खजाना। कोष, खजाना। धनराशि, दौलत।

सहना—सक० बरदाश्त करना, झेलना। परिणाम भोगना।

सहनायन†—स्त्री० शहनाई बजानेवाली स्त्री।

सहनीय—वि० [सं०] सहन करने योग्य।

सहबाला—पु० दे० 'शहबाला'।

सहम—पुं० [फा०] डर, भय। संकोच, लिहाज।

सहमना—अक० भयभीत होना। सहमाना—सक० भयभीत करना।

सहरगही—स्त्री० वह भोजन जो निर्जल व्रत करने के पहले बहुत तड़के किया जाता है, सहरी।

सहरा—पुं० [अ०] जंगल, वन। मैदान। वनबिलाव।

सहराना(पु)†—सक० दे० 'सहलाना'। (पु)† अक० डर से काँपना।

सहरी—स्त्री० सफरी मछली। दे० 'सहरगही'।

सहल—वि० [अ०] जो कठिन न हो, आसान। साधारण।

सहलाना—सक० धीरे धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना। मलना। गुदगुदाना। अक० गुदगुदी होना, खुजलाना।

सहस—वि० दे० 'सहस्र'। ⊙गो(पु) = पु० सूर्य। ⊙किरन(पु) = पु० सूर्य। सहसाक्षि—(पु) पुं० इंद्र। सहसाखी(पु)—पुं०

हजार आँखोवाला, इंद्र। सहसान(पु)—पु० शेषनाग।

सहसा—अव्य० [सं०] एकदम से, अचानक।

सहस्र—पु० [सं०] दस सौ की संख्या (१०००)। वि० जो गिनती मे दस सौ हो। ⊙कर=पु० सूर्य। ⊙किरण=पु० सूर्य। ⊙चक्षु=पुं० इंद्र। ⊙दल=पु० पद्म, कमल। ⊙धारा=स्त्री० देवताओ को स्नान कराने का एक प्रकार का छददार पात्र। ⊙नाम=पु० वह स्तोत्र जिसमे किसी देवता के हजार नाम हो। ⊙नेत्र=पु० इंद्र। ⊙पत्र=पु० कमल। ⊙पाद=पु० सूर्य। विष्णु। सारस पक्षी। ⊙बाहु=पुं० शिव। कार्तवीर्यार्जुन, जो हैहय जाति के क्षत्रियो के राजा कृतवीर्य का पुत्र था। ⊙भुजा=स्त्री० देवी का एक रूप। ⊙रश्मि=पु० सूर्य। ⊙लोचन=पु० इंद्र। ⊙शीर्ष=पु० विष्णु। सहस्राक्ष—पु० इंद्र। विष्णु। सहस्राब्दी—स्त्री० किसी संवत् या सन् के हजार वर्षो का समूह।

सहाइ, सहाई(पु)†—पु० सहायक, मददगार। स्त्री० सहायता।

सहाउ—पु० दे० 'सहाय'।

सहाध्यायी—पु० [सं०] सहपाठी।

सहाना(पु)—वि० दे० 'शहाना'।

सहानुगमन—पु० [सं०] दे० 'सहगमन'।

सहानुभूति—स्त्री० [सं०] किसी को दुखी देखकर स्वयं दुखी होना, हमदर्दी।

सहाब—पु० एक प्रकार का गहरा लाल रंग।

सहायक—पु० [सं०] सहायता करनेवाला। (वह छोटी नदी) जो किसी बड़ी नदी मे मिलती हो। किसी की अधीनता मे रह कर काम मे सहायता करनेवाला। सहायता—स्त्री० किसी के कार्य मे शारीरिक या और किसी प्रकार का योग देना, मदद। वह धन जो किसी का कार्य आगे बढाने के लिये दिया जाय।

सहाय—पुं० सहायता, मदद।

सहार—पुं० बर्दाश्त, सहनशीलता। सहना।

सहारना†—सक० सहन करना, बर्दाश्त करना। अपने ऊपर भार लेना।

सहारा—पु० मदद, सहायता। आश्रय। भरोसा। इतमीनान। टेक, आड। एक प्रसिद्ध मरुस्थल जो अफ्रीका मे है।

सहालग—पु० वे मास या दिन जिनमे विवाह के मुहूर्त हो, लगन।

सहावल—पुं० दे० 'साहुल'

सहिजन—पु० एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लंबी फलियो की तरकारी होती है, मुनगा।

सहिजानी(पु)†—स्त्री० निशानी, पहचान।

सहित—अव्य० [सं०] समेत, संग।

सहिदान†(पु)—पु० दे० 'सहिदानी'। सहिदानी†—स्त्री० पहचान, चिह्न, निशान। सहिष्णु—वि० [सं०] सहनशील। ⊙ता=स्त्री० सहनशीलता।

सही—वि० [फा०] सत्य, सच। प्रामाणिक, यथार्थ। शुद्ध, ठीक। हस्ताक्षर, दस्तखत। ⊙सलामत—वि० [अ०] आरोग्य, तंदुरुस्त। जिसमे कोई दोष या न्यूनता न आई हो। मु०~भरना=मान लेना।

सहूँ—अव्य० संमुख, सामने। ओर, तरफ।

सहूलियत—स्त्री० [फा०] सुविधा, सुगमता। अदब, कायदा, शऊर।

सहृदय—वि० [सं०] जो दूसरे के दुख सुख आदि समझता हो। दयालु। रसिक। सज्जन।

सहेजना—सक० भली भाँति जाँचना सँभालना। अच्छी तरह कह सुनकर सुपुर्द करना।

सहेट—पुं० दे० 'सहेत'।

सहेत(पु)—पु० वह निर्दिष्ट स्थान जहाँ प्रेमी प्रेमिका से मिलते है।

सहेत महेत—पु० दे० 'श्रावस्ती'।

सहेतुक—वि० [सं०] जिसका कुछ हेतु, उद्देश्य या मतलब हो।

सहेली—स्त्री० साथ मे रहनेवाली स्त्री, संगिनी। दासी।

सहैया(पु)†—पु० सहायक। वि० सहन करनेवाला।

सहोक्ति—स्त्री० [सं०] एक काव्यालकार जिसमे 'सह' 'सग' 'साथ' आदि शब्दो का व्यवहार होता है और अनेक कार्य साथ ही होते हुए दिखाए जाते हैं।

सहोदर—पु० [सं०] एक ही माता के उदर से उत्पन्न सतान। वि० सगा, अपना खास। पु० [स०] सह्याद्रि। वि० सह्य—सहने योग्य। सह्याद्रि—पु० ववई प्रात का एक प्रसिद्ध पर्वत।

साईं—पु० स्वामी, मालिक। ईश्वर। पति, शौहर। मुसलमान फकीरो की एक उपाधि।

सांक(पु)†—स्त्री० दे० 'शका'।

साँकडा—पु० पैरो मे पहनने का एक आभूषण।

साँकर(पु)†—स्त्री० शृखला, जंजीर। पु० सकट, कष्ट। वि० तग, सँकरा। दु खमय।

साँकरा†—वि० दे० 'सँकरा'।

सांकेतिक—वि० [स०] जो सकेत रूप मे हो, इशारे का।

सांख्य—पु० [सं०] महर्षि कपिल कृत एक प्रसिद्ध दर्शन। इसमे ईश्वर की सत्ता नही मानी गई है। त्रिगुणात्मिका प्रकृति ही सृष्टिविधान करती है। इसे परिणामवाद भी कहते हैं।

साँग—स्त्री० एक प्रकार की वरछी जो फेंककर मारी जाती है, शक्ति। पुं० दे० 'स्वाँग'। वि० सपूर्ण, पूरा। साँगी—स्त्री० बरछी, साँग।

सागोपाग—अव्य० [स०] अगो और उपागो सहित, समस्त अवयवो सहित।

सांघातिक—वि० इकट्ठा करनेवाला। वि० [स०] सघात सवधी। प्राणो को सकट मे डालने या मार डालनेवाला।

साँच(पु)†—वि० पुं० सत्य, यथार्थ। साँचला†—वि० सच्चा, सत्यवादी।

साँचा—पुं० वह उपकरण जिसमे कोई गीली चीज रखकर किसी विशिष्ट आकार प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है, फरमा। वह छोटी आकृति जो कोई वडी आकृति वनाने से पहले नमूने के तौर पर तैयार की जाती है। कपडे पर वेल बूटा छापने का ठप्पा, छापा। मु०~साँचे मे ढला होना=अग प्रत्यग से वहुत ही सुदर होना।

साँची—पु० एक प्रकार का पान जो खाने मे ठढा होता है। पुस्तको की वह छपाई जिसमे पक्तियाँ वडे वल मे होती हैं।

साँझ—स्त्री० सध्या।

साँझा—पु० दे० 'साझा'।

साँझी—स्त्री० देव मंदिरो मे जमीन पर की हुई फूलपत्तो आदि की सजावट जो प्राय. सावन मे होती है।

साँट—स्त्री० छडी, पतली कमची। कोडा। शरीर पर का वह दाग जो कोडे आदि का आघात पडने से होता है।

साँटा—पु० कोडा। ईख।

साँटि—स्त्री० मेलमिलाप।

साँटिया—पु० डौंडी या डुगी पीटनेवाला।

साँटी—स्त्री० पतली छोटी छडी। मेलमिलाप। वदला, प्रतिहिंसा।

साँठ—पु० दे० 'साँकडा'। ईख, गन्ना। सरकडा ⊙गाँठ=पु० मेलमिलाप। गुप्त और अनुचित सवध।

साँठना—सक० पकडे रहना।

साँठी—स्त्री० पूँजी, धन।

साँड—पुं० वह वैल (या घोडा) जिसे लोग केवल जोडा खिलाने के लिये पालते हैं। वह वैल जिसे हिंदू लोग मृतक की स्मृति मे दागकर छोड देते हैं।

साँडनी—स्त्री० ऊँटनी या मादा ऊँट जो बहुत तेज चलती है।

साँडा—पुं० एक प्रकार का जगली जानवर जिसकी चरवी दवा के काम मे आती है।

साँडिया—पु० बहुत तेज चलनेवाला एक प्रकार का ऊँट। साँडनी पर सवारी करनेवाला।

सांत—वि० [सं०] अंत युक्त।

सांतवन—पु० दे० 'सात्वना'।

सांत्वना—स्त्री० [स०] दु खी व्यक्ति को उसका दु.ख हलका करने के लिये शाति देना, ढारस ।

सांधⓅ—पु० वह जिसपर सधान किया जाय, लक्ष्य ।

साधना--सक० निशाना साधना लक्ष्य करना । पूरा करना, साधना । मिलाना, मिश्रण ।

सांध्य—वि० [स०] सध्या सबंधी, सध्या का।

सांप—पु० एक प्रसिद्ध रेगनेवाला लबा कीडा जिसकी सैकडो जातियाँ होती हैं । कुछ जातियाँ जहरीली और बहुत ही घातक होती हैं। भुजग, विषधर । ⊙**धरन**Ⓟ = पु० शिव, महादेव । मु०—**कलेजे पर**~**लोटना** = अत्यत दुःख होना (ईर्ष्या आदि के कारण) । ~**सूँघ जाना** = भय या आशका से अभिभूत हो जाना, काठ मारना । **साँपिन**—स्त्री० साँप की मादा । **सांपियाँ**—पु० सांप के रग से मिलता-जुलता एक प्रकार का रग । वि० साँप के रग का ।

सांपत्तिक—वि० सपत्ति से संवध रखनेवाला, आर्थिक ।

सांप्रत—अव्य [सं०] इसी समय, अभी । **सांप्रतिक**—वि० इस समय का, तत्कालिक।

सांप्रदायिक—वि० [स०] किसी संप्रदाय से संवध रखनेवाला। सप्रदाय का । जो अपने ही सप्रदाय या उसके अनुयायियो के हित का ध्यान रखता हो । ⊙**ता** = स्त्री० [स०] साप्रदायिक होने का भाव । केवल अपने संप्रदाय की श्रेष्ठता और हितो का विशेष ध्यान रखना, दूसरे संप्रदायो या उनके अनुयायियो को कुछ न समझना ।

सांभर—पुं० राजपूताने की एक झील जिसके पानी से सांभर नमक बनता है। उक्त झील के जल से बना हुआ नमक । भारतीय मृगो की एक जाति । सबल, पाथेय ।

साँमुहे†—अव्य० सामने । पुं० सावां नमक अन्न ।

सांवत†—पुं० दे० 'सामंत' ।

सांवत्सरिक—वि० [सं०] संवत्सर संबंधी या संवत्सर का, वार्षिक । जो प्रतिवर्ष हो ।

सांवर‡—वि० दे० 'साँवला' ।

सांवलताई†— स्त्री० साँवला होन का भाव, श्यामता ।

सांवला—वि० जिसका रंग कुछ कालापन लिए हो, श्यामवर्ण का । पुं० श्रीकृष्ण । पति या प्रेमी आदि का बोधक एक नाम (गीतो मे) ।

सांवां—पुं० कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न ।

सांस—पुं० स्त्री० नाक या मुंह के द्वारा बाहर से हवा खीचकर अदर फेफडो तक पहुँचाने और फिर बाहर निकालने की क्रिया, श्वास । फुरसत । गुजाइश। सधि या दराज जिसमे से हवा आ जा सकती हो । किसी अवकाश के अदर भरी हुई हवा । दम फूलने का रोग, दमा। मु० **उलटी**~**लेना** = दे० 'गहरी सांस लेना'। मरने के समय रोगी का बडे कष्ट से अतिम सांस लेना। **गहरी, ठंढी या लबी** ~**लेना** = बहुत अधिक दु ख आदि के के कारण बहुत देर तक अदर की ओर वायु खीचते रहना और उसे कुछ देर तक रोककर बाहर निकालना । ~**उखड़ना** = मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से साँस लेना । ~**ऊपर नीचे होना** = साँस का ठीक तरह से ऊपर नीचे न आना, साँस रुकना । ~**चढ़ना** = बहुत परिश्रम करने के कारण साँस का जल्दी जल्दी आना और जाना । ~**टूटना** = दे० 'साँस उखडना' । ~**तक न लेना** = बिलकुल चुपचाप रहना । ~**फूलना** = बार बार साँस आना और जाना, साँस चढना । ~**भरना** = किसी चीज के अंदर हवा भरना । ~**रहते** = जीते जी । ~**लेना** = विश्राम लेना, ठहरना ।

सांसत—स्त्री० दम घुटने का सा कष्ट । बहुत अधिक कष्ट या पीडा। झंझट, बखेडा। फजीहत । ⊙**घर** = पुं० वह तंग और अँधेरी कोठरी जिसमे अपराधियो को विशेष दंड देने के लिये रक्खा जाता है, कालकोठरी ।

सांसना(पु)†—सक० दंड देना। डाँटना। डपटना। कष्ट देना।
सांसर्गिक—वि० [सं०] संसर्ग संबंधी। संसर्ग से उत्पन्न होनेवाला।
सांसा†—साँस। जीवन। प्राण। संशय, संदेह। डर, दहशत।
सांसारिक—वि० [सं०] इस संसार का, लौकिक।
सांस्कृतिक—वि० [सं०] संस्कृति संबंधी।
सा—अव्य० समान, तुल्य। एक मानसूचक शब्द (जैसे थोड़ा सा)।
साइंस—स्त्री० [अँ०] विज्ञान।
साइ—पुं० स्वामी, मालिक। ईश्वर। पति खाविंद।
साइक(पु)—पुं० दे० 'शायक'।
साइकिल—स्त्री० [अँ०] पैर से चलाने की दो या अधिक पहियों की एक प्रसिद्ध गाड़ी, बाइसिकिल। ⊙रिक्शा=पु० एक प्रकार की रिक्शागाड़ी जिसमें चलाने के लिये साइकिल जैसी यांत्रिक व्यवस्था होती है।
साइत—स्त्री० एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। पल, लहमा। मुहूर्त, शुभ लग्न।
साइनबोर्ड—पु० [अँ०] नाम और व्यवसाय आदि का सूचक तख्त, नामपट्ट।
साइयाँ—पुं० दे० 'साईं'।
साइर—†पुं० दे० 'सायर'।
साईं—पुं० स्वामी, मालिक। ईश्वर, परमात्मा।
साई—स्त्री० वह धन जो पेशेकारों को, किसी अवसर के लिये उनकी नियुक्ति पक्की करके, पेशगी दिया जाता है, बयाना।
साईस—पु० वह नौकर जो घोड़ों की खबरदारी और सेवा करता है। साईसी—स्त्री० साईस का काम, भाव या पद।
साउज(पु)—पु० दे० 'सावज'।
साकंभरी—पु० साँभर झील या उसके आस पास का प्रांत।
साकचेरी†—स्त्री० मेहँदी।
साकट, साकत—पुं० शाक्त मत का अनुयायी। वह जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो। दुष्ट, पाजी।
साकर†—वि० दे० 'सँकरा'।
साकल्य—पु० [सं०] सकल का भाव। समुदाय, समूह। हवन की सामग्री।
साँका—पु० संवत, शाका। प्रसिद्धि। यश। कीर्ति का स्मारक। धाक, रोब। अवसर। कोई ऐसा बड़ा काम जिसमें कर्ता की कीर्ति हो। मु०~चलाना=रोब जमाना। ~बाँधना=दे० 'साँका चलाना'।
साका—पु० दे० 'साँका'।
साकार—वि० [सं०] जिसका कोई आकार या स्वरूप हो। मूर्तिमान्, साक्षात्। स्थूल। पु० ईश्वर का साकार रूप। साकारोपासना—स्त्री० ईश्वर की मूर्ति बनाकर उसकी उपासना करना।
साकिन—वि० [अ०] निवासी, रहनेवाला।
साकी—पु० [अ०] शराब पिलानेवाला। माशूक।
साकेत—पु० [सं०] अयोध्या नगरी। रामोपासकों की धारणा में वह सर्वोच्च लोक जहाँ वे मरने के बाद भगवान् राम के साथ निवास करते हैं। ⊙वास=पु० पुण्य लाभ के लिये अयोध्या नगरी में निवास करना। स्वर्गवास, मृत्यु (रामोपासकों के लिये)।
साक्षर—वि० [सं०] जो पढ़ना लिखना जानता हो, शिक्षित।
साक्षात्—अव्य [सं०] सामने, प्रत्यक्ष। वि० मूर्तिमान्, साकार। पुं० मुलाकात, देखादेखी। ⊙कार=पु० भेंट, मुलाकात। पदार्थों का इंद्रियों द्वारा होनेवाला ज्ञान।
साक्षी—पु० [सं०] वह मनुष्य जिसने किसी घटना को अपनी आँखों देखा हो। देखनेवाला। स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया, गवाही। साक्ष्य—पु० गवाही, शहादत।
साख—पुं० साक्षी, गवाह। धाक, रोब। मर्यादा। लेनदेन की प्रामाणिकता। स्त्री० गवाही, प्रमाण।
साखना(पु)—सक० साक्षी देना, गवाही देना।

साखर(पु)†—वि० दे० 'साक्षर'।
साखा(पु)†—स्त्री० दे० 'शाखा'।
साखी—पुं० गवाह। स्त्री० साक्षी, गवाही। ज्ञान सबधी पद या कविता। (पु)वृक्ष, पेड। मु०~पुकारना = गवाही देना।

साखू—पु० शालवृक्ष।
साखोचारन(पु)†—विवाह के अवसर पर वर और वधू के वंश गोत्रादि का परिचय देने की क्रिया, गोत्रोच्चार।

साग—पु० पौधो की खाने योग्य पत्तियाँ, शाक। पकाई हुई भाजी, तरकारी। ⊙पात = पुं० रूखा सूखा भोजन।

सागर—पुं० [सं०] समुद्र, उदधि। बड़ा तालाब, झील। सन्यासियो का एक भेद।
सागू—पुं० ताड़ की जाति का एक पेड। दे० 'सागूदाना'। ⊙दाना = पु० सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा जो कूटकर दानो के रूप मे सुखा लिया जाता है। यह बहुत जल्दी पच जाता है, 'साबूदाना'
सागौन—पु० दे० 'शाल'।
साग्निक—पु० [सं०] वह जो बराबर अग्निहोत्र आदि क्रिया करता हो।

साग्र—वि० [स०] समस्त, कुल।
साग्रह—क्रि० वि० [सं०] आग्रहपूर्वक।
साज—पुं० [फा०] सजावट का काम, ठाट बाट। सजावट का सामान, उपकरण, जैसे, घोडे का साज, नाव का साज। वाद्य, बाजा। लडाई मे काम आनेवाले हथियार। मेल जोल। वि० मरम्मत या तैयार करनेवाला, बनानेवाला (यौ० के अंत मे)। ⊙बाज = पु० [फा० + हिं०] तैयारी। मेलजोल। ⊙सामान = पुं० उपकरण, असबाब। ठाटबाट।
साजन—पु० पति, स्वामी। प्रेमी, वल्लभ। ईश्वर। सज्जन।

साजना(पु)†—पुं० दे० 'साजन'। सक० दे० 'सजाना'।

साजिंदा—पु० साज या बाजा बजानेवाला। सपरदाई, समाजी।
साजिश—स्त्री० [फा०] मेल, मिलाप। किसी के विरुद्ध कोई काम करने मे सहायक होना, षड्यंत्र।
साजुज्य(पु)—पु० दे० 'सायुज्य'।
साझा—पु० शराकत, हिस्सेदारी। हिस्सा, बाँट। साझेदार—पु० हिस्सेदार, साझी। साझी—पु० दे० 'साझेदार'।
साटक—पु० भूसी, छिलका। तुच्छ और निकम्मी चीज। एक प्रकार का छद।
साटन—स्त्री० एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपडा।

साटना(पु)†—सक० दे० 'सटाना'।
साटिका—स्त्री० [सं०] साड़ी।
साठ—वि० पचास और दस। पु० पचास और दस के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

साठनाठ—वि० निर्धन, दरिद्र। नीरस, रूखा। इधर उधर, तितर बितर।

साठसाती—स्त्री० दे० 'साढेसाती'।
साठा—पुं० ईख, गन्ना। साठी धान। वि० साठ वर्ष की उम्रवाला।

साठी—पु० एक प्रकार का धान।
साडी—स्त्री० स्त्रियो के पहनने की धोती, सारी। स्त्री० दे० 'साड़ी'।

साढसाती—स्त्री० दे० 'साढेसाती'।
साढ़ी—स्त्री० वह फसल जो असाढ मे बोई जाती है, असाढी। दूध के ऊपर जमनेवाली बालाई। दे० 'साड़ी'।
साढ़ू—पुं० साली का पति।

साढ़े—अव्य० आधे के साथ या आधा अधिक (जैसे, साढ़े चार)। ⊙साती = स्त्री० शनि ग्रह की साढे सात वर्ष, साढ़े सात मास या साढ़े सात दिन आदि की दशा (अशुभ)। मु०~बाईस = व्यर्थ, तुच्छ।
सात—वि० पाँच और दो। पुं० पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७। ⊙फेरी = स्त्री० विवाह की भाँवर नामक रीति। मु०~ पाँच = चालाकी, मक्कारी। ~समुद्र पार = बहुत दूर। ~राजाओं की साक्षी देना = किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना।

सातकुंभ(पु)—पु० स्वर्ण, सोना।
सातला—पुं० एक प्रकार का थूहर, स्वर्ण पुष्पी।
सातिक(पु)†—वि० दे० 'सात्विक'।
सात्मक—वि० [स०] आत्मा के सहित।
सात्म्य—पु० [स०] सारूप्य, सरूपता।
सात्वत—पु० [सं०] बलराम। श्रीकृष्ण। विष्णु। यदुवशी।

सात्वती वृत्ति—स्त्री० [सं०] साहित्य मे एक प्रकार की वृत्ति जिसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शात रसो मे होता है।
सात्विक—वि० [सं०] सत्वगुणवाला, सतोगुणी। सत्व गुण से उत्पन्न। पु० सतोगुण से उत्पन्न होनेवाले निसर्गजात अग-विकार(यथा-स्तंभ, स्वेद, रोमाच, स्वर-भग, कप वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय)। सात्वती वृत्ति (साहित्य)।

साथ—पु० मिलकर या सग रहने का भाव, सगत। बराबर पास रहनेवाला, साथी, सगी। घनिष्ठता। अव्य० सबधसूचक अव्यय जिससे सहचर का बोध होता है, सहित। विरुद्ध। प्रति, से। द्वारा। मु०~एक=एक सिलसिले मे। ~ही=सिवा, अतिरिक्त। ~ही साथ=एक साथ, सिलसिले मे।
साथरा†—पुं० बिछौना, बिस्तर। कुश की बनी चटाई। चटाई।
साथी—पु० हमराही, सगी। दोस्त, मित्र।
सादगी—स्त्री० [फा०] सादापन, सरलता। सीधापन, निष्कपटता।
सादा—वि० जिसकी बनावट आदि बहुत सक्षिप्त हो। जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो। बिना मिलावट का, खालिस। जिसके ऊपर कुछ अकित न हो। जो कुछ छल कपट न जानता हो। मूर्ख। ⊙पन=पु० सादगी, सरलता।
सादिर—वि० [अ०] निकलने या जारी होनेवाला।
सादी—स्त्री० लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया, सदिया। वह पूरी जिसमे पीठी आदि नही भरी होती। पु० शिकारी। घोड़ा। सवार।

सादुल, सादूर—पु० शार्दूल, सिह। हिंसक पशु।

सादृश्य—पु० [सं०] समानता, एकरूपता। तुलना, बरबरी।

साधु—पु० साधु, महात्मा। योगी। सज्जन। फर्रुखाबाद और कन्नौज के आसपास पाई जानेवाली एक जाति। स्त्री० इच्छा, कामना। गर्भधारण करने के सातवें मास मे होनेवाला एक प्रकार का उत्सव। वि० उत्तम, अच्छा।

साधक—पु० [सं०] साधना करनेवाला। योगी, तपस्वी। वसीला, जरिया। वह जो किसी दूसरे के स्वार्थसाधन मे सहायक हो। साधन—पुं० काम को सिद्ध करने की क्रिया। सामग्री, उपकरण। उपाय, युक्ति। उपासना, साधना। धातुओ को शोधने की क्रिया, शोधन। कारण, हेतु। साधना—स्त्री० कार्य सिद्ध या सपन्न करने की क्रिया, सिद्धि। देवता आदि को सिद्ध करने के लिये उसकी उपासना। दे० 'साधन'। सक० [हिं०] कार्य सिद्ध या पूरा करना। निशाना लगाना। नापना, पैमाइश करना। अभ्यास करना। शोधना। पक्का करना, ठहराना। एकत्र करना। वश मे करना। बनावट को असल के रूप मे दिखाना।
साधर्म्य—पुं० [स०] समान धर्म होने का भाव, एकधर्मता।
साधार—वि० [स०] जिसका आधार हो, आधार सहित।
साधारण—वि० [स०] मामूली, सामान्य। सरल, सहज। सार्वजनिक, आम। समान, सदृश। ⊙तः=अव्य० मामूली तौर पर, सामान्यत। बहुधा, प्राय। साधारणीकरण—पु० एक ही प्रकार के बहुत से विशिष्ट तत्वो के आधार पर कोई ऐसा सिद्धात स्थिर करना जो इन सब तत्वो पर प्रयुक्त हो सके। गुणों के आधार पर समानता स्थिर करना (अं० जेनरलाइजेशन)। साहित्य शास्त्र में निर्विकल्प ज्ञान का होना, जहाँ रस की सिद्धि होती है। वह व्यंजना

जिसमे नायक द्वारा व्यक्त भाव श्रोता या पाठक (सर्वसाधारण) के भाव हो जायें।

साधिकार—क्रि० वि० [सं०] अधिकार-पूर्वक, अधिकार सहित। वि० जिसे अधिकार प्राप्त हो।

साधित—वि० [सं०] जो सिद्ध किया या साधा गया हो।

साधु—पु० [सं०] कुलीन, आर्य। महात्मा, संत। भला आदमी, सज्जन। वि० अच्छा उत्तम। सच्चा। प्रशंसनीय। उचित। ⊙ता = स्त्री० साधु होने का भाव या धर्म, भलमनसाहत सीधापन, सिधाई। ⊙वाद पु० = किसी के कोई उत्तम कार्य करने पर 'साधु साधु' कहकर उसकी प्रशंसा करना। ⊙साधु = अव्य० धन्य धन्य, बहुत खूब। मु०~कहना - किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी प्रशंसा करना।

साधू—पु० दे० 'साधु'।

साधो—पु० संत, साधु।

साध्य—वि० [सं०] सिद्ध करने योग्य। जो सिद्ध हो सके। सहज, आसान। जो प्रमाणित करना हो। पु० देवता। न्याय मे वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। शक्ति, सामर्थ्य। ⊙ता = स्त्री० साध्य का भाव या धर्म, साध्यत्व।

साध्यवसाना—स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसमे उपमेय को गायब करके केवल उपमान कहा जाता है (जैसे, यह देखो, 'दक्षिण का शेर आ गया')। साध्यवसानिका—स्त्री० दे० 'साध्यवसाना'।

साध्यसम—पु० [सं०] न्याय मे वह हेतु जिसका साधन साध्य की भाँति करना पडे।

साध्वी—वि० स्त्री० [सं०] पतिव्रता (स्त्री)। शुद्ध चरित्रवाली (स्त्री)।

सानंद—वि० [सं०] आनंद के साथ, आनंद-पूर्वक।

सान—पु० वह पत्थर जिसपर अस्त्रादि तेज किए जाते हैं। मु०~देना या धरना = धार तेज करना।

सानना†—सक० [अक० 'सनना'] चूर्ण आदि को तरल पदार्थ मे मिलाकर गीला करना, गूँथना। शामिल करना, उत्तर-दायी बनाना। मिश्रित करना।

सानी—स्त्री० वह भोजन जो पानी मे सानकर पशुओं को देते है। वि० [अ०] दूसरा। बराबरी या मुकाबले का। ला⊙ = वि० अद्वितीय।

सानु—पु० [सं०] पर्वत की चोटी, शिखर। अंत, सिरा। चौरस जमीन। जंगल। सूर्य। विद्वान्, पंडित। अगला भाग। वि० लंबा चौडा। चौरस।

सानुज—क्रि० वि० [सं०] अनुज या छोटे भाई के साथ।

सान्निध्य—पु० [सं०] समीपता, सामीप्य, संनिकटता। एक प्रकार की मुक्ति, मोक्ष।

सान्निपातिक—वि० [सं०] संनिपात संबंधी

सापⓅ—पु० दे० 'शाप'। Ⓟ†—सक० शाप देना। गाली देना, कोसना।

सापत्न्य—पु० [सं०] सपत्नी का भाव या धर्म, सौतपन। सौत का लडका।

सापेक्ष—वि० [सं०] एक दूसरे की अपेक्षा रखनेवाले। जिसे किसी की अपेक्षा हो।

साप्तपदीन—वि० [सं०] सप्तपदी का। पु० मित्रता।

साप्ताहिक—वि० [सं०] सप्ताह संबंधी। प्रति सप्ताह होनेवाला।

साफ—वि० [अ०] जिसमे मैल आदि न हो, स्वच्छ। खालिस। निर्दोष, बेऐब। स्पष्ट। उज्वल। जिसमे कोई बखेडा या झंझट न हो। स्वच्छ, चमकीला। जिसमे छल कपट न हो। समतल, हमवार। सादा, कोरा जिसमे से अनावश्यक या रद्दी अंश निकाल दिया गया हो। जिसमे कुछ तत्व रह गया हो। लेन देन आदि का निपटना, चुकती। क्रि० वि० बिना किसी प्रकार के दोष, कलंक या अपवाद आदि के। बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाए

हुए। इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे। बिलकुल, नितांत। मु०~ करना = मार डालना, हत्या करना। नष्ट या बरबाद करना।
साफल्य—पु० [सं०] दे० 'सफलता'।
साफा—पु० पगड़ी। मुरेठा। नित्य के पहनने के वस्त्रों को साबुन लगाकर साफ करना, कपड़े धोना।
साफी—स्त्री० रुमाल, दस्ती। वह कपड़ा जो गांजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते हैं। भांग छानने का कपड़ा। छनना।
साबन—पु० दे० 'साबुन'।
साबर—पु० दे० 'सांभर'। सांभर मृग का चमड़ा। मिट्टी खोदने का एक औजार, सबरी। शिवकृत एक प्रकार का सिद्ध मंत्र।
साबस‡—पु० दे० 'शाबास'।
साबिक—वि० [अ०] पूर्व का, पहले का। ⊙दस्तूर = पु० पहले की ही तरह। साबिका—पु० मुलाकात, भेंट। संबंध, सरोकार।
साबित—वि० [अ०] जिसका सबूत दिया गया हो, प्रमाणित। वि० [हिं०] साबूत, पूरा। दुरुस्त, ठीक।
साबुत—वि० साबूत, संपूर्ण। दुरुस्त।
साबुन—पु० [अ०] तेल, चर्बी, सोडा, पोटाश आदि से रासायनिक क्रिया द्वारा प्रस्तुत एक मिश्रित द्रव्य जो पानी मे घुलने पर फेन देता है और जिससे शरीर और वस्त्रादि साफ किए जाते हैं।
साबूदाना—पु० दे० 'सागूदाना'।
साभार—वि० [सं०] भार से युक्त। क्रि० वि० भार सहित। आभार या कृतज्ञतापूर्वक।
सामंजस्य—पुं० [सं०] औचित्य, उपयुक्तता, अनुकूलता। एकरसता।
सामंत—पुं० [सं०] वीर, योद्धा। बड़ा जमीदार या सरदार। किसी चक्रवर्ती राजा के अधीन राजा।
साम—पुं० दे० 'श्याम' और 'शाम'। स्त्री० दे० 'शाम' और 'शामी'। पु० [सं० समास मे 'सामन्' के लिये] वेदमंत्र जो प्राचीन काल मे यज्ञ आदि के समय गाए जाते थे। दे० 'सामवेद'। मधुर भाषण। राजनीति मे अपने वैरी या विरोधी को मीठी बातें करके अपनी ओर मिला लेना। सामान। ⊙ग = पु० वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो। सामवेद गानेवाला।
सामग्री—स्त्री० [सं०] वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य मे उपयोग होता हो। असबाब, सामान। जरूरी चीज। साधन।
सामत—स्त्री० दे० 'शामत'। पुं० दे० 'सामंत'।
सामना—पुं० किसी के समक्ष होने की क्रिया या भाव। भेंट, मुलाकात। किसी पदार्थ का अगला भाग। विरोध, मुकाबला। मु०~करना = धृष्टता करना, सामने होकर जवाब देना। मुकाबला करना। सामने होना = (स्त्रियो का) परदा न करके समक्ष आना। सामने—क्रि० वि० समक्ष, आगे। उपस्थिति मे। सीधे, आगे। मुकाबले में, विरुद्ध।
सामयिक—वि० [सं०] समय संबंधी। वर्तमान समय से संबंध रखनेवाला। समय के अनुसार, समय की दृष्टि से उपयुक्त। किसी विशेष समय से संबंध रखनेवाला। ⊙पत्र पुं० निर्धारित समय के अंतर से प्रकाशित होनेवाला पत्र।
सामरथ‡—स्त्री० दे० 'सामर्थ्य'
सामरिक—वि० [सं०] संगर या समर संबंधी, युद्ध का
सामर्थ—स्त्री० दे० 'सामर्थ्य'
सामर्थी—पु० सामर्थ्य रखनेवाला। पराक्रमी, बलवान्।
सामर्थ्य—पु०, स्त्री० [सं०] समर्थ होने का भाव। शक्ति, ताकत। योग्यता। शब्द की वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है।
सामवायिक—वि० [सं०] समवाय संबंधी। समूह या झुंड संबंधी।
सामवेद—पु० [सं०] भारतीय आर्यों के चार वेदों में से तीसरा। (यज्ञो के समय जो स्तोत्र आदि गाए जाते थे, उन्ही स्तोत्रो का इसमे संग्रह है।) सामवेदीय—वि०

सामवेद संबंधी। पु० सामवेद का ज्ञाता या अनुयायी।

सामसाली—पु० राजनीतिज्ञ।

सामुहि(पु)—अव्य० सामने।

सामाजिक—वि० [सं०] समाज से सबंध रखनेवाला, समाज का। सभा से सबध रखनेवाला। सभा मे उपस्थित या समिलित। पुं० पाठक या दर्शक। ⊙ता= स्त्री० सामाजिक का भाव, लौकिकता। दे० 'समाजवाद'।

सामान—पु० [फा०] उपकरण, सामग्री। माल, असबाब। इतजाम।

सामान्य(पु)—वि० [सं०] साधारण, मामूली। पु० समानता, बराबरी। वह गुण जो किसी जाति की सब चीजो मे समान रूप से पाया जाय (जैसे, मनुष्यो मे मनुष्यत्व)। साहित्य मे एक अलकार। एक ही आकार की दो या अधिक वस्तुओ का वर्णन जिनमे देखने मे कुछ भी अतर नही जान पडता। ⊙तः, ⊙तया= अव्य० सामान्य या साधारण रीति से। ⊙तोदृष्ट=पु० तर्क मे अनुमान सबधी एक प्रकार की भूल, किसी ऐसे पदार्थ के द्वारा अनुमान करना जो न कार्य हो और न कारण। दो वस्तुओ और बातो मे ऐसा साधर्म्य जो कार्य कारण सबध से भिन्न हो। ⊙भविष्यत्=पु० भविष्यत् क्रिया का वह काल जो साधारण रूप बतलाता है (व्या०)। ⊙भूत=पु० भूत क्रिया का वह रूप जिसमे क्रिया की पूर्णता होती है और भूतकाल की विशेषता नही पाई जाती (व्या०)। ⊙ लक्षणा=स्त्री० किसी पदार्थ को देखकर उस जाति के और सब पदार्थों का बोध करनेवाली शक्ति (व्या०)। ⊙ वर्तमान=पु० वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमे कर्ता का उसी समय करते रहना सूचित होता है (व्या०) ⊙विधि= स्त्री० साधारण विधि या आज्ञा।

सामान्या—स्त्री०[सं०] साहित्य मे वह नायिका जो धन लेकर प्रेम करती है, गणिका।

सामासिक—वि० [सं०] समास से संबंध रखनेवाला, समास का।

सामिग्री—स्त्री० दे० 'सामग्री'।

सामियाना—स्त्री० दे० 'शामियाना'।

सामिष—वि० [स०] मास, मत्स्य आदि के सहित, निरामिष का उलटा।

सामी(पु)†—पुं० दे० 'स्वामी'। स्त्री० दे० 'शामी'।

सामीप्य—पु० [सं०] निकटता। वह मुक्ति जिसमे मुक्त जीव का भगवान् के समीप पहुँच जाना माना जाता है।

सामुझि(पु)‡—दे० 'समझ'।

सामुदायिक—वि० [सं०] समुदाय का।

सामुद्र—पुं० [सं०] समुद्र से निकला हुआ नमक। समुद्रफेन। दे० 'सामुद्रिक'। वि० समुद्र से उत्पन्न। समुद्र सबधी, समुद्र का। **सामुद्रिक**—वि० सागर सबधी। पु० फलित ज्योतिष का एक अग जिसमे हथेली की रेखाओ और शरीर पर के तिलो आदि को देखकर मनुष्य के जीवन की घटनाएं तथा शुभाशुभ फल बतलाए जाते हैं। वह जो इस शास्त्र का ज्ञाता हो।

सामुहाँ(पु)†—अव्य० सामने।

सामुहें, सामुहे(पु)†—क्रि० वि० सामने।

सामूहिक—वि० [सं०] समूह से संबध रखनेवाला, वैयक्तिक का उलटा। ⊙ता= स्त्री० 'सामूहिक' का भाव। साम्यवाद का यह सिद्धात कि शिल्पो आदि पर व्यक्ति का नही बल्कि समूह या समाज का अधिकार हो।

साम्य—पुं० [सं०] तुल्यता, समानता। ⊙वाद= पुं० मार्क्स द्वारा प्रतिपादित एक वर्गहीन समाज का सिद्धात जिसमे सपत्ति पर समाज का अधिकार होता है और व्यक्ति से उसकी शक्ति के अनुसार काम लेकर उसकी सारी आवश्यकताओ को पूरा करना लक्ष्य है। ⊙वादी= पु० वह जो साम्यवाद के सिद्धात मानता हो।

साम्यावस्था—स्त्री० वह अवस्था जिसमे सत्व, रज और तम तीनो गुण बराबर हो, प्रकृति।

साम्राज्य—पु० [सं०] वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हो और जिसमे किसी एक सम्राट् का शासन हो, सार्वभौम राज्य। आधिपत्य, पूर्ण अधिकार।

⊙वाद = पु० साम्राज्य को बराबर बढाते रहने का सिद्धात।

सायं—वि० [सं०] सध्या सबधी। पुं० सध्या, शाम। ⊙काल = पु० दिन का अतिम भाग, सध्या। ⊙सध्या = स्त्री० वह सध्या (उपासना) जो सायकाल की जाती है।

सायक—पु० [सं०] बाण, तीर। खड्ग। एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद मे सगण, भगण, तगण, एक लघु और गुरु होता है। पाँच की सख्या।

सायकिल—स्त्री० अं० 'साइकिल'।

सायण—पुं० [सं०] एक आचार्य जिन्होंने वेदो के भाष्य लिखे हैं।

सायत—स्त्री० एक घटे या ढाई घडी का समय। दड, पल। शुभ मुहूर्त।

सायन—पुं० दे० 'सायण'। वि० [स०] अयनयुक्त, जिसमे अयन हो (ग्रह आदि)। पु० सूर्य की एक प्रकार की गति।

सायबान—पु० [फा०] मकान के आगे की वह छाजन या छप्पर आदि जो छाया के लिये बनाई गई हो।

सायर—पुं० सागर, समुद्र। ऊपरी भाग, शीर्ष। पु० [अ०] वह भूमि जिसकी आय पर कर नही लगता। फुटकर। दे० 'शायर'।

सायल—पुं० [अ०] सवाल करनेवाला। माँगनेवाला। भिखारी, फकीर। प्रार्थना करनेवाला। उम्मीदवार, आकाक्षी।

साया—पुं० घाघरे की तरह का एक जनाना पहनावा। छाया। परछाईं। जिन, भूत, प्रेत, परी आदि। प्रभाव। मु०—साये में रहना = शरण मे रहना।

सायास—क्रि० वि० [स०] परिश्रमपूर्वक।

सायाह्न—पुं० [सं०] सध्या, शाम।

सायुज्य—पुं० [सं०] ऐसा मिलना कि कोई भेद न रह जाय। वह मुक्ति जिसमे जीवात्मा परमात्मा मे लीन हो जाता है।

सारंग—पुं० [स०] एक प्रकार का मृग। कोयल। श्येन, बाज। सूर्य। सिंह। हस पक्षी। मयूर, मोर। चातक। हाथी। घोड़ा। छाता, छत्र। शख। कमल। स्वर्ण, सोना। गहना। तालाब। भौंरा। एक प्रकार की मधुमक्खी। विष्णु का धनुष। कपूर। श्रीकृष्ण। चद्रमा। समुद्र। पानी। बाण। दीपक। पपीहा। शभु, शिव। साँप। चदन। भूमि। केश, बाल। शोभा। नारी। रात। दिन। तलवार, खड्ग (डिं०)। एक प्रकार का छद जिसमे चार तगण होते हैं। छप्पय के २६वें भेद का नाम। हिरन। बादल। हाथ, कर। ग्रह, नक्षत्र। खजन पक्षी। मेंढक। गगन। चिड़िया। सारगी नामक वाद्य यत्र। ईश्वर। कामदेव। बिजली। पुष्प, फूल। सपूर्ण जाति का एक राग। वि० रँगा हुआ। सुदर, सुहावना। सरस। ⊙पाणि = पु० विष्णु। ⊙लोचन = वि० जिसके लोचन मृग के समान हों।

सारंगिक—[सं०] चिड़ीमार, बहेलिया। एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पद में क्रम से नगण, यगण और सगण हो।

सारंगिया—पुं० सारगी बजानेवाला, साजिदा।

सारंगी—स्त्री० एक प्रकार का बहुत प्रसिद्ध तारवाला बाजा।

सार⑮—पु० सारिका, मैना। पालन, पोषण। देखरेख। शय्या, पलग। †पत्नी का भाई, साला। पु० [सं०] किसी पदार्थ का मूल या असली भाग, तत्व। मुख्य अभिप्राय, निष्कर्ष। निर्यास या अर्क आदि, रस। जल, पानी। गूदा, मग्ज। दूध पर की साढ़ी, मलाई। लकड़ी का हीर। फल, नतीजा। धन, दौलत। मक्खन। अमृत। बल, शक्ति। मज्जा। जुआ खेलने का पासा। तलवार (डिं०)। २८ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे दो दीर्घ हो (इस छद मे सब मात्राएँ गुरु हो सकती है)। एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसमे एक गुरु और एक लघु हो। वि० दे० 'स्वाल'। एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे उत्तरोत्तर वस्तुओ का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णित होता है, उदार। ⊙गर्भित = वि० सार युक्त, तत्वपूर्ण। ⊙भूत = वि० सार स्वरूप। सर्वोत्तम। ⊙वती = स्त्री० तीन भगण और एक गुरु का एक छद। ⊙

वत्ता = स्त्री० सार ग्रहण करने का भाव, सारग्राहिता।

सारना—सक० [अक० सरना] पूर्ण या समाप्त करना। बनाना, दुरुस्त करना। सुंदर बनाना। रक्षा करना, सँभालना। आँखो मे अंजन आदि लगाना। अस्त्र चलाना। तिलक काढना या लगाना।

सारखा—वि० दे० 'सरीखा'।

सारथी—पुं० [सं०] रथादि का चलानेवाला, सूत। समुद्र।

सारथ्य—पु० [सं०] सारथी कार्य, पद या भाव।

सारद—(पु)—स्त्री० सरस्वती। वि० शारद, शरदसंबंधी। पुं० शरद ऋतु।

सारदा—स्त्री० दे० 'शारदा'।

सारदी(पु)—वि० दे० 'शारदीय'।

सारदूल—पु० दे० 'शार्दूल'।

सारभाटा—पुं० ज्वार भाटे का वापस समुद्र मे जानेवाला रूप।

सारमेय—पुं० [सं०] सरमा की संतान। कुत्ता।

सारल्य—पुं० [सं०] सरलता।

सारस—पु० [सं०] एक प्रकार का बडा पक्षी जिसकी गर्दन और पैर बहुत लंबे होते हैं। हंस। चंद्रमा। कमल। छप्पय का ३७वाँ भेद।

सारसी—स्त्री० [सं०] आर्या छंद का २३वाँ भेद। मादा सारस।

सारसुता—स्त्री० यमुना।

सारसुती(पु)†—स्त्री० दे० 'सरस्वती'।

सारस्य—पु० [सं०] सरसता।

सारस्वत—पु० [सं०] दिल्ली के उत्तर-पश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर है और जिसमे पंजाब का कुछ भाग संमिलित है। इस देश के ब्राह्मण। एक संस्कृत ब्राह्मण। वि० सरस्वती संबंधी, विद्या संबंधी। सारस्वत देश का।

सारांश—पु० [सं०] संक्षेप, सार। तात्पर्य, मतलब। नतीजा, परिणाम।

सारा†—पु० दे० 'साला'। वि० समस्त, संपूर्ण। पुं० [सं०] एक प्रकार का अलंकार जिसमे एक वस्तु दूसरी से बढकर कही जाती है।

सारावती—स्त्री० [सं०] सारावली छंद।

सारि—पु० [सं०] पासा या चौपड़ खेलनेवाला। जुआ खेलने का पासा।

सारिक—पु० दे० 'सारिका'।

सारिका—स्त्री० [सं०] मैना पक्षी।

सारिखा(पु)†—वि० दे० 'सरीखा'।

सारिणी—स्त्री० [सं०] सहदेई, नागबेला। कपाय। गंधप्रसारिणी। रक्त पुनर्नवा।

सारि[illegible]—स्त्री० [सं०] अनंतमूल।

सा[illegible]—स्त्री० दे० 'साडी'। दे० 'साली'। पुं० [सं०] अनुकरण करनेवाला। स्त्री० सारिका पक्षी, मैना। पासा, गोटी। थूहर।

सारु(पु)†—पु० दे० 'सार'।

सारूप्य—पु० [सं०] एक प्रकार की मुक्ति जिसमे उपासक अपने उपास्यदेव का रूप प्राप्त कर लेता है। समान रूप होने का भाव, एकरूपता।

सारो—स्त्री० दे० 'सारिका'। पुं० दे० 'सारिका'। पु० दे० 'साला'।

सारोपा—स्त्री० [सं०] साहित्य में एक लक्षणा जिसमे उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाता है।

सारौ(पु)—स्त्री० दे० 'सारिका'।

सार्थ—वि० [सं०] अर्थसहित। पुं० काफिला। ⊙पति = पुं० काफिले का सरदार, व्यापारियो का प्रधान। सार्थक—वि० अर्थसहित। सफल। उपकारी, गुणकारी।

सार्दूल—पुं० दे० 'शार्दूल'।

सार्द्ध—वि० [सं०] अर्धयुक्त।

सार्द्र—वि० [सं०] आर्द्र, गीला।

सार्व—वि० [सं०] सबसे संबंध रखनेवाला। ⊙कालिक = वि० जो सब कालो में होता हो। ⊙जनिक, ⊙जनीन = वि० सब लोगो से संबंध रखनेवाला, सर्व-साधारण का। ⊙देशिक = वि० संपूर्ण देशो का, सर्व देश संबंधी। ⊙भौतिक = वि० सब भूतो या तत्वो से संबंध रखनेवाला। ⊙भौम = पुं० चक्रवर्ती राजा। हाथी। वि० समस्त भूमि संबंधी, संपूर्ण जगत् का। ⊙राष्ट्रीय = वि० जिसका संबंध अनेक राष्ट्रों से हो।

सार्वत्रिक—वि० [सं०] सर्वत्र व्यापी।

सालक—पुं० [सं०] वह राग जिसमे किसी और राग का मेल न हो, पर फिर भी किसी राग का अभ्यास जान पडता हो।

साल—पुं० दे० 'शालि' और 'शाल'। काँटा। स्त्री० दे० 'शाला'। सालने या सलने की क्रिया या भाव। छेद, सूराख। चारपाई के पावो मे किया हुआ चौकोर छेद। घाव। दुख, पीडा। एक प्रकार की मोच या चटक जो बहुधा गर्दन से लेकर कमर तक के बीच होती है। ⊙क = वि० सालनेवाला, दुख देनेवाला। साल = पुं० [फा०] वर्ष, बरस। ⊙गिरह = स्त्री० बरसगाँठ, जन्मदिन। साल = पुं० [स०] जड। राल। वृक्ष। ⊙निर्यास = पुं० राल, धूना। ⊙रस = पु० राल, धूना।

सालग्रामी—स्त्री० गडक नदी।

सालन—पुं० मास, मछली या साग सब्जी की मसालेदार तरकारी।

सालना—अक० दुख देना, खटकना। चुभना। सक० दुख पहुँचाना। चुभाना।

सालम मिश्री—स्त्री० एक प्रकार का क्षुप जिसका कद पौष्टिक होता है, सुधामूली, वीरकदा।

सालसा—पु० खून साफ करने का एक प्रकार का अगरेजी ढग का काढा जो अमरीका की एक प्रकार की जडी से बनाया जाता है। इस प्रकार की जडी की बुकनी जो पौष्टिक मानी जाती है।

साला—पु० पत्नी का भाई। (इसका प्रयोग गाली या तिरस्कार के लिये भी होता है।) सारिका, मैना। स्त्री० दे० 'शाला'।

सालाना—वि० [फा०] साल का, वार्षिक।

सालिग्राम—पुं० दे० 'शालग्राम'।

सालिब मिश्री—स्त्री० दे० 'सालम मिश्री'।

सालिम—वि० [अ०] जो कही से खडित न हो, पूरा।

सालियाना—वि० दे० 'सालाना'।

सालु⑤†—पुं० ईर्ष्या। कष्ट।

सालू—पु० एक प्रकार का लाल कपडा (मागलिक)। सारी।

सालोक्य—पु० [सं०] वह मुक्ति जिसमे मुक्त जीव भगवान् के साथ एक लोक मे वास करता है, सलोकता।

सावत—पु० दे० 'सामत'।

साव—पु० दे० 'साहु'।

सावक⑤—पु० दे० 'शावक'।

सावकाश—पु० [सं०] अवकाश, फुर्सत, छुट्टी, मौका, अवसर।

सावचेत⑤‡—वि० दे० 'सावधान'।

सावज—पु० वह जगली जानवर जिसका शिकार किया जाय।

सावत—पु० सौतो का पारस्परिक द्वेष। ईर्ष्या, डाह।

सावधान—वि० [सं०] सचेत, होशियार सावधानी—स्त्री० [हिं०] सावधान होने का भाव, होशियारी।

सावन—पु० आषाढ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना, श्रावण। एक प्रकार का गीत जो श्रावण महीने मे गाया जाता है (पूरब)। पु० [सं०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय, ६० दड। सावनी—स्त्री० [हिं०] वह बायन जो सावन महीने मे वर पक्ष से वधू के यहाँ भेजा जाता है। दे० 'श्रावणी'। वि० सावन सबधी, सावन का।

सावर—पुं० शिवकृत एक प्रसिद्ध तत्र। एक प्रकार का लोहे का लबा औजार। एक प्रकार का हिरन।

सावर्णि—पु० [सं०] आठवें मनु जो सूर्य के पुत्र थे। एक मन्वतर का नाम।

सावित्र—पु० [सं०] सूर्य। शिव। वसु। ब्राह्मण। यज्ञोपवीत। एक प्रकार का अस्त्र। वि० सविता सबधी, सविता का। सूर्यवशी।

सावित्री—स्त्री० [सं०] वेदमाता गायत्री। सरस्वती। ब्रह्मा की पत्नी। वह सस्कार जो उपनयन के समय होता है। धर्म की पत्नी और दक्ष की कन्या। मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और सत्यवान् की सती पत्नी। यमुना नदी। सरस्वती नदी। सधवा स्त्री।

साशंक—वि० दे० 'सशक'।

साश्रु—क्रि० वि० [सं०] आँखों में आँसू भरकर। वि० जिसमें आँसू भरे हो।

साष्टांग—वि० [सं०] आठों अंगों सहित। ⊙**प्रणाम** = पु० मस्तक, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन से भूमि पर लेटकर प्रणाम करना। मु०~प्रणाम करना = बहुत बचना, दूर रहना (व्यग)।

सास—स्त्री० पति या पत्नी की माँ।

सासनⓟ—पुं० दे० 'शासन'।

सासनलेट—स्त्री० एक प्रकार का सफेद जालीदार कपड़ा।

सासनⓟ—स्त्री० दे० 'शासन'। दड, सजा। कष्ट।

सासरा‡—पुं० दे० 'ससुराल'।

सासाⓟ†—स्त्री० सदेह। पु० स्त्री० दे० 'श्वास' या 'साँस'।

सासुर†—पुं० ससुर। ससुराल।

साह—पु० साधु, सज्जन। व्यापारी, साहूकार। धनी, महाजन। दे० 'शाह'।

साहचर्य—पु० [सं०] सहचर होने का भाव। सग साथ।

साहजिक—वि० [सं०] सहज मे होनेवाला स्वाभाविक।

साहनी—स्त्री० सेना। पु० साथी, सगी। पारिषद।

साहब—पु० [अ० साहिब] मालिक। अफसर। परमेश्वर। एक समानसूचक शब्द, महाशय। गोरी जाति का कोई व्यक्ति। मित्र। ⊙**जादा** = पु० [फा०] भले आदमी का लड़का। पुत्र। ⊙**सलामत** = स्त्री० परस्पर अभिवादन, बदगी। **साहबी**—वि० साहब का। स्त्री० साहब होने का भाव। प्रभुता, मालिकपन। बड़ाई। मिथ्या अभिमान।

साहस—पु० [सं०] वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य दृढतापूर्वक विपत्तियों आदि का सामना करता है, हिम्मत। जबरदस्ती दूसरे का धन लेना, लूटना। कोई बुरा काम। दंड, सजा। जुर्माना। **साहसिक**—पुं० साहसवाला, हिम्मतवर। डाकू, चोर। निडर। **साहसी**—वि० साहस करनेवाला, हिम्मती।

साहस्र, साहस्रिक—वि० [सं०] सहस्र सबधी, हजार का।

साहा—पुं० विवाह आदि शुभ कार्यों के लिये निश्चित लग्न या मुहूर्त।

साहाय—पुं० [सं०] सहायता।

साहिⓟ†—पुं० राजा। दे० 'साहु'।

साहित्य—पु० [सं०] सहित का भाव, एकत्र होना। वाक्य में पदों का एक प्रकार का सबध जिसमे उनका एक ही क्रिया से अन्वय होता है। गद्य और पद्य सब प्रकार की रचनाएँ, ऐसी रचनाओं के ग्रथ, वाङ्मय। देश या काल की उन समस्त लिखी बातों का समूह जो मार्मिक प्रभावों या रसात्मक व्यजना के लिये महत्वपूर्ण हो। लिखित बातें। काव्यशास्त्र। विक्रेय या अन्य उपयोगी वस्तुओं का विवरणात्मक परिचय। इस प्रकार की परिचय पुस्तिका। ⊙**कार** = पु० वह जो साहित्य की रचना करता हो। ⊙**सेवी** = पु० वह जो साहित्य की सेवा और रचना करता हो, साहित्यकार। **साहित्यिक**—साहित्य सबधी। पु० दे० 'साहित्यसेवी'।

साहिनीⓟ—स्त्री० दे० 'साहनी'।

साहिब—पु० दे० 'साहब'।

साहियाँⓟ‡—पु० दे० 'साँई'।

साही—स्त्री० एक जतु जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते है।

साहु—पु० सज्जन। साहूकार, चोर का उलटा।

साहुल—पु० राजगीरों का एक यत्र जिसमे पतली रस्सी के सहारे एक दोलन (भार) लटकता है और जिससे यह ज्ञात होता है कि दीवार पृथ्वी पर ठीक ठीक लब है।

साहू—पु० दे० 'साहु'।

साहूकार—पु० बड़ा महाजन या व्यापारी, कोठीवाल। **साहूकारा**—पु० रूपयों का लेनदेन, महाजनी। वह बाजार जहाँ बहुत

से साहुकार कारबार करते हो। वि० साहूकारो का। साहूकारी—स्त्री० साहूकार होने का भाव, साहूकारपन।

साहेब—पु० दे० 'साहब'।

साहै(पु)†—स्त्री० भुजदड, बाजू। अव्य० सामने, समुख।

सिउँ(पु)‡—प्रत्य० दे० 'स्यों'।

सिंकना—अक०[सक० सेंकना]सेंका जाना।

सिंगा—पु० फूंककर बजाया जानेवाला सींग या लोहे का एक बाजा, तुरही। ठेंगा (अपशब्द)।

सिंगार—पु० सजावट, बनाव। शोभा। शृंगार रस। सौभाग्य। दे० 'हरसिंगार' ⊙दान =पु० [फा०] वह छोटा सदूक जिसमे शीशा, कघी आदि शृंगार की सामग्री रखी जाती है। ⊙ना=सक० सजाना, सँवारना। ⊙हाट = स्त्री वेश्याओ के रहने का स्थान, चकला। ⊙हार = पु० हरसिंगार नामक फूल, परजाता। सिंगारिया—वि० देवमूर्ति का सिंगार करनेवाला पुजारी। सिंगारी—वि० पु० शृंगार करनेवाला, सजानेवाला।

सिंगिया—पु० एक प्रसिद्ध स्थावर विष।

सिंगी—पु० फूंककर बजाया जानेवाला सींग का एक बाजा। स्त्री० एक प्रकार की मछली। सींग की नली जिसमे देहाती जर्राह शरीर का रक्त चूसकर निकालते है।

सिंगौटी—स्त्री० बैल के सींग पर पहनाने का एक आभूषण। सिंदूर, कघी आदि रखने की स्त्रियो की पिटारी।

सिंघ(पु)†—पु० दे० 'सिंह'।

सिंघल—पु० दे० 'सिंहल'।

सिंघाडा—पु० पानी मे फैलनेवाली एक लता जिसके तिकोने फल खाए जाते हैं, पानीफल। इस आकार की सिलाई या बेलबूटा। समोसा नाम का नमकीन पकवान।

सिंघासन—पु० दे० 'सिंहासन'।

सिंघी—स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली। सोठ।

सिंघेला—पु० शेर का बच्चा।

सिंचन—पु० [सं०] जल छिडकना। सीचना, पानी से तर करना।

सिंचना—अक०[सक० सीचना] सींचा जाना। सिंचाना—सक० [सीचना का प्रे०] सीचने का काम दूसरे से कराना। सिंचाई—स्त्री०पानी छिडकने का काम। सीचने का काम। सीचने का कर या मजदूरी।

सिंचित—वि० [सं०] सीचा हुआ।

सिंजा—स्त्री० दे० 'शिंजा'।

सिंजित—स्त्री० ध्वनि, झकार। नूपुर।

सिंदन(पु)‡—पु० दे० 'स्यदन'।

सिंदुवार—पु० [सं०] सँभालू वृक्ष, निर्गुडी।

सिंदूर—पु० [सं०] ईंगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ माँग मे भरती हैं। सौभाग्य। ⊙दान = पु० विवाह मे वर का कन्या की माँग मे सिंदूर देना। ⊙पुष्पी = स्त्री० एक पौदा जिसमे लाल फूल लगते हैं, फीरपुष्पी। ⊙बदन = पु० [हिं०] दे० 'सिंदूरदान'। मु०~पुछना, मिटना आदि = विधवा होना। सिंदूरिया—वि० [हिं०] सिंदूर के रंग का, खूब लाल। सिंदूरी—वि० [हिं०] सिंदूर के रंग का।

सिंदोरा—पु० दे० 'सिंधोरा'।

सिंध—पु० भारत के पश्चिम का एक प्रदेश। स्त्री० पजाब की एक प्रधान नदी। भैरव राग की एक रागिनी।

सिंधव—पु० दे० 'सैंधव'।

सिंधी—स्त्री० सिंध देश की बोली। वि० सिंध देश का। पु० सिंध देश का निवासी। सिंध देश का घोडा।

सिंधु—पु० [सं०] नद, नदी। एक नद जो मानसरोवर से निकलकर कश्मीर से बहता हुआ पाकिस्तान के पजाब और सिंध नामक सूबो को पारकर अरब सागर मे गिरता है। समुद्र। चार की संख्या। सात की संख्या। पाकिस्तान का सिंध प्रदेश। एक राग। ⊙ज = पुं० सेंधा नमक। ⊙जा = स्त्री० लक्ष्मी। ⊙पुत्र= पुं० चद्रमा। ⊙माता = स्त्री० सरस्वती। ⊙विष = पुं० हलाहल विष। ⊙सुत = जलधर राक्षस। ⊙सुता = स्त्री० लक्ष्मी। ⊙सुतासुत = पुं० मोती।

सिंधुर--पुं० [सं०] हस्ती, हाथी। आठ की संख्या। ⊙मणि = पुं० गजमुक्ता। ⊙वदन = पुं० गणेश। **सिंधुरगामिनी**--वि० गजगामिनी, हाथी की सी चालवाली।

सिंधूरा--पुं० संपूर्ण जाति का एक राग।

सिंधोरा--पुं० सिंदूर रखने का एक पात्र।

सिंह--पुं० [सं०] बिल्ली की जाति का बहुत बलवान् और भयानक जंगली जंतु जिसके नर वर्ग की गर्दन पर बडे बडे बाल होते हैं, शेरबबर। ज्योतिष में मेष आदि १२ राशियों में से पाँचवीं राशि। वीरता या श्रेष्ठतावाचक शब्द (जैसे, पुरुषसिंह)। छप्पय छंद का १६वाँ भेद। ⊙नाद = पुं० सिंह की गरज। युद्ध में वीरों की ललकार। ललकारकर कहना। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, जगण, दो सगण और अंत्य गुरु हो। ⊙पौर = पुं० [हिं०] दे० 'सिंह-द्वार' ⊙वाहिनी = स्त्री० दुर्गा देवी। ⊙स्थ = वि० सिंह राशि में स्थित (बृहस्पति)।

सिंहनी--स्त्री० [सं०] सिंह की मादा, शेरनी। एक मात्रिक छंद जिसके चारों पदों में क्रम से १२, २०, १२ और १८ मात्राएँ होती है। इसका उलटा गाहिनी है। इसमें २० मात्राओं पर एक जगण रहता है और अंत में गुरु होता है। सिंहनाद छंद। **सिंहाव-लोकन**--पुं० [सं०] सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढना। आगे बढने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में कथन। पद्यरचना की एक युक्ति जिसमें पिछले चरण के अंत के कुछ शब्द लेकर अगला चरण चलता है। **सिंहासन** [सं०] पुं० राजा या देवता के बैठने का आसन या चौकी। **सिंहिका**--[सं०] स्त्री० एक राक्षसी जो राहु की माता थी। इसको लंका जाते समय हनुमान ने मारा था। शोभन छंद का एक नाम। इसमें कुल २४ मात्राएँ होती हैं। अंत में जगण रहता। ⊙सूनु = पुं० राहु। **सिंहिनी**--[सं०] स्त्री० शेरनी। **सिंही**--स्त्री० सिंह की मादा, शेरनी। आर्या का २५वाँ भेद। इसमें ३ गुरु और ५१ लघु होते हैं। **सिंहोदरी**--[सं] वि० स्त्री० सिंह के समान पतली कमरवाली।

सिंहल--पुं० [सं०] एक द्वीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है और जिसे लोग रावण की लंका अनुमान करते हैं। ⊙द्वीप = पुं० दे० 'सिंहल'। ⊙द्वीपी = वि० दे० 'सिंहली।'

सिंहली--वि० [सं०] सिंहल द्वीप का निवासी। स्त्री० सिंहल द्वीप की भाषा।

सिंहारहार(पु)--पुं० दे० 'हरसिंगार'।

सिअन--स्त्री० दे० 'सीवन'।

सिअरा(पु)--वि० ठंडा। पुं० छाया, छाँह।

सिआना--सक० दे० 'सिलाना'।

सिआर-- पुं० शृगाल, गीदड,

सिकंजबीन--स्त्री० [फा०] सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।

सिकंदरा--पुं० रेल की लाइन के किनारे ऊँचे खंभे पर लगा हुआ हाथ या डंडा जो झुककर आती हुई गाडी की सूचना देता है, सिगनल।

सिकटा†--पुं० मिट्टी के बर्तन का टूटा हुआ छोटा टुकडा। कंकड।

सिकडी--स्त्री० किवाड की कुंडी, साँकल। जंजीर के आकार का गले में पहनने का गहना। करधनी।

सिकत(पु)--स्त्री० दे० 'सिकता'।

सिकता--स्त्री० [सं०] बालू, रेत। बलुई जमीन। चीनी, शर्करा। **सिकतिल**--वि० रेतीला।

सिकत्तर--पुं० संस्था या सभा का मंत्री, सेक्रेटरी।

सिकरवार--पुं० क्षत्रियों की एक शाखा।

सिकली--स्त्री० धारदार हथियारों को माँजने और उनपर सान चढाने की क्रिया। ⊙गर = पुं० [हिं० + फा० गर] तलवार आदि पर सान धरनेवाला।

सिकहर--पुं० छींका।

सिकुडन--स्त्री संकोच, आकुंचन। बल, शिकन।

सिकुड़ना--अक० सिमटकर थोडे स्थान में होना, बटुरना। संकीर्ण होना। शिकन पड़ना।

सिकुरना(पु)--अक० दे० 'सिकुड़ना'।

सिकोड़ना—सक० [अक० सिकुडना] समेट-कर थोडे स्थान मे करना, सकुचित करना। समेटना, बटोरना।

सिकोरना Ⓟ†—सक० दे० 'सिकोडना'।

सिकोरा—पु० दे० 'कसोरा'।

सिकोली—स्त्री० कांस, मूंज, बेंत आदि की बनी डलिया।

सिक्कड—पु० दे० 'सीकड'।

सिक्का—पु० मुहर, ठप्पा। रुपए, पैसे आदि पर की राजकीय छाप। टकसाल मे ढला हुआ धातु का टुकडा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है, मुद्रा। पदक, तमगा। मुहर पर अक बनाने का ठप्पा। मु०~बैठना या जमना = अधिकार स्थापित होना। रोब जमना।

सिक्ख—पुं० दे० 'सिख'।

सिक्त—वि० [सं०] सींचा हुआ। भीगा हुआ, तर।

सिखड—पु० दे० 'शिखड'।

सिख—स्त्री० सीख। Ⓟ शिखा, चोटी। पु० शिष्य, चेला। गुरु नानक आदि दस गुरुओ का अनुयायी, नानकपथी।

सिखना† Ⓟ—सक० दे० 'सीखना'।

सिखर—पु० दे० 'शिखर'।

सिखरन—स्त्री० दही मिला हुआ शरबत।

सिखलाना—सक० दे० 'सिखाना'।

सिखा—स्त्री० दे० 'शिखा'।

सिखाना—सक० [अक० सीखना] शिक्षा देना, उपदेश देना। पढाना। सिखाना-पढ़ाना = चालाकी सिखाना।

सिखापन—पु० शिक्षा, उपदेश। सिखाने का काम।

सिखावन—पु० दे० 'सिखाना'।

सिखावना Ⓟ†—सक० दे० 'सिखाना'

सिखिर Ⓟ—पु० दे० 'शिखर'।

सिखी—पु० दे० 'शिखी'।

सिगरा, सिगरो†—वि० सपूर्ण, सारा।

सिचान Ⓟ—पु० बाज पक्षी।

सिच्छा—स्त्री० दे० 'शिक्षा'।

सिजदा—पु० [अ०] प्रणाम, दंडवत।

सिझना—सक० आंच पर पकना, सिझाया जाना। सिझाना—सक० आंच पर पका-कर गलाना। तपस्या करना।

सिटकिनी—स्त्री० किवाडो के बद करने के लिये लोहे या पीतल की छड, चटखनी।

सिटपिटाना—अक० दब जाना, मंद पड जाना। भय या घबराहट से किंकर्तव्य-विमूढ होना। सकुचाना।

सिटटी—स्त्री० बहुत बढ बढकर बोलना, वाक्पटुता। मु०~भूलना = सिटपिटा जाना।

सिट्ठी—स्त्री० दे० 'सीठी'।

सिठनी—स्त्री० विवाह के अवसर पर गाई जानेवाली गाली, सीठना।

सिठाई—स्त्री० फीकापन, नीरसता। मदता।

सिड़—स्त्री० पागलपन। सनक, धुन। सिड़ी—वि० पागल। सनकी, धुनवाला। मन-माना काम करनेवाला।

सित—वि० [सं०] सफेद। उज्वल, चम-कीला। साफ। पु० शुक्ल पक्ष। चीनी, शक्कर। चांदी। ⊙कठ = वि० सफेद गर्दनवाला। पु० [हिं०] शितिकठ, महा-देव। ⊙कर = पु० चद्रमा। ⊙पक्ष = पु० हस। ⊙भानु = पु० चद्रमा। ⊙वराह = पु० श्वेत वराह। ⊙वराहपत्नी = स्त्री० पृथ्वी। ⊙सागर = क्षीरसागर।

सितम—पुं० [फा०] गजब, अनर्थ। जुल्म। ⊙गर = वि० जालिम, अन्यायी।

सिता—स्त्री० [सं०] चीनी, शक्कर। शुक्ल पक्ष। चांदनी, ज्योत्सना। मल्लिका, मोतिया। शराब। ⊙खड = पु० शहद से बनाई हुई शक्कर। मिस्री।

सिताब† Ⓟ—क्रि० वि० जल्दी, तुरत।

सितार—पु० तूंबेवाला एक प्रसिद्ध बाजा जो तारो को उंगली से झनकारने से बजता है। सितारिया—पु० सितार बजाने-वाला।

सितारा—पु० दे० 'सितार'। तारा, नक्षत्र। भाग्य। चांदी या सोने के पत्तर की बनी हुई छोटी गोल बिंदी जो शोभा के लिये चीजो पर लगाई जाती है, चमकी। सितारेहिंद—पु० [फा०] एक उपाधि

जो अँगरेजी सरकार की ओर से दी जाती थी। मु०~चमकना या बुलंद होना = अच्छी किस्मत होना।

सितासित—पुं० [सं०] श्वेत और श्याम। बलदेव।

सिति—वि० दे० 'शिति'।

सितिकठ—पुं० महादेव।

सिथिल(पु)—वि० दे० 'शिथिल'।

सिवोसी +—क्रि० वि० जल्दी, शीघ्र।

सिद्ध—वि० [सं०] सपन्न, सपादित। प्राप्त, हासिल। प्रयत्न मे सफल, कृतकार्य। जिसने योग या तप द्वारा अलौकिक सिद्धि प्राप्त की हो। योग की विभूतियाँ दिखानेवाला। मोक्ष का अधिकारी। जिस (कथन) के अनुसार कोई बात हुई हो। प्रमाणित, साबित। जो अनुकूल किया गया हो, कार्यसाधन के उपयुक्त बनाया हुआ। आँच पर पका हुआ, उबला हुआ। पु० वह जिसने योग या तप मे सिद्धि प्राप्त की हो। ज्ञानी या भक्त महात्मा। एक प्रकार के देवता। ज्योतिष मे एक योग। ⊙काम = वि० जिसकी कामना पूरी हुई हो। सफल, कृतार्थ ⊙गुटिका = स्त्री० वह मत्रसिद्ध गोली जिसे मुँह मे रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत शक्ति आ जाती है। ⊙पीठ = पु० वह स्थान जहाँ योग, तप या तात्रिक प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो। ⊙रस = पु० पारा। ⊙रसायन = पुं० वह रसौषध जिससे दीर्घजीवन और प्रभूत शक्ति प्राप्त हो। ⊙हस्त = वि० जिसका हाथ किसी काम मे मँजा हो। निपुण। **सिद्धांजन**—पुं० वह अजन जिसे आँख मे लगा लेने से भूमि मे गडी वस्तुएँ दिखाई देती हैं। **सिद्धांत**—पुं० भली भाँति सोच विचार कर स्थिर किया हुआ मत। मुख्य उद्देश्य या अभिप्राय। वह बात जो विद्वान्, उनके किसी वर्ग या सप्रदाय द्वारा सत्य मानी जाती हो, मत। निर्णीत अर्थ या विषय, तत्त्व की बात। पूर्व पक्ष के खडन के उपरात स्थिर मत। किसी शास्त्र (ज्योतिष, गणित आदि) पर लिखी हुई कोई विशेष पुस्तक। **सिद्धांती**—वि० शास्त्रो आदि के सिद्धात जानने-वाला। अपने सिद्धात पर दृढ रहनेवाला। **सिद्धा**—स्त्री० सिद्ध की स्त्री, देवागना। आर्या छद का १५ वाँ भेद जिसमे १३ गुरु और ३१ लघु होते है। **सिद्धाई**—स्त्री० [हिं०] सिद्धपन, सिद्ध होने की अवस्था। **सिद्धार्थ**—वि० जिसकी कामनाएँ पूर्ण हो गई हो। पुं० गौतम बुद्ध। जैनो के २४ वे अर्हत महावीर के पिता का नाम। **सिद्धासन**—पु० योग का एक आसन। सिद्ध पीठ।

सिद्धि—स्त्री० [सं०] काम का पूरा होना। सफलता। प्रमाणित होना। किसी बात का ठहराया जाना, निश्चय। निर्णय, फैसला। पकना। योग द्वारा प्राप्त अलौकिक शक्ति, विभूति (अणिमा, महिमा गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व)। मुक्ति। निपुणता। दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की पत्नी थी। गणेश की दो स्त्रियो मे से एक। भाँग, विजया। छप्पय छद के ४१ वें भेद का नाम जिसमे ३० गुरु और ९२ लघु वर्ण होते है। ⊙ गुटिका = स्त्री० रसायन आदि बनाने की बटी। ⊙दाता = पुं० गणेश।

सिद्धेश्वर—पुं० [सं०] बडा सिद्ध, महा-योगी। महादेव।

सिधाई—स्त्री० सीधापन।

सिधाना(पु)—अक० दे० 'सिधारना'।

सिधारना—अक० जाना, प्रस्थान करना। मरना। (पु)‡ सक दे० सुधारना।

सिधि(पु)‡—स्त्री० दे० 'सिद्धि'।

सिन—पुं० [अ०] उम्र, अवस्था।

सिनक—स्त्री० नाक से निकला हुआ कफ या या मल।

सिनकना—अक० जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना।

सिनि—पुं० एक यादव जो सात्यकि का पिता था। क्षत्रियो की एक प्राचीन शाखा।

सिनीवाली—स्त्री० [स०] एक वैदिक देवी। शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा।

सिनेमा—पु० [अ०] परदे पर दिखलाया जानेवाला नाटकों आदि का चलता फिरता छायाचित्र।

सिन्नी †—स्त्री० मिठाई। वह मिठाई जो किसी पीर या देवता को चढ़ाकर प्रसाद की तरह बाँटी जाय।

सिपर—स्त्री० [फा०] ढाल।

सिपहगिरी—स्त्री० [फा०] सिपाही का काम, युद्ध व्यवसाय।

सिपहसालार—पुं० [फा०] सेनापति।

सिपारस†—स्त्री० सिफारिश। खुशामद।

सिपास—स्त्री० [फा०] कृतज्ञता। प्रशंसा।

सिपाह—स्त्री० [फा०] फौज, सेना। पुं० सिपाही। ⊙गिरी = स्त्री० दे० 'सिपाहगिरी'। सिपाहियाना—वि० सिपाहियों या सैनिकों का सा। सिपाही—पुं० सैनिक, शूर, योद्धा। कास्टेबिल, तिलंगा।

सिपुर्द†—पुं० दे० 'सुपुर्द'।

सिप्पर—स्त्री० दे० 'सिपर'।

सिप्पा—पु० निशाने पर किया हुआ वार। कार्यसाधन का उपाय, तदबीर। सूत्रपात। प्रभाव, धाक। एक प्रकार की तोप। मु०~जमाना = किसी कार्य के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करना, भूमिका बाँधना।

सिप्र—पुं० [सं०] चंद्रमा। पसीना।

सिप्रा—स्त्री० [सं०] महिषी, भैंस। मालवा की एक नदी जिसके किनारे उज्जैन बसा है।

सिफत—स्त्री० [अ०] विशेषता, गुण। लक्षण। स्वभाव।

सिफर—पु० शून्य, सुन्ना।

सिफारिश—स्त्री० [फा०] किसी के दोष क्षमा करने के लिये या किसी के पक्ष में कुछ कहना सुनना, सस्तुति। सिफारिशी—वि० जिसमें सिफारिश हो। जिसकी सिफारिश की गई हो। ⊙टट्टू = पु० [हि०] वह जो केवल सिफारिश से किसी पद पर पहुँचा हो।

*सिवाल—स्त्री दे० 'सवार'।

सिविका⑤—स्त्री० दे० 'शिविका'।

*सिमंत—पुं० दे० 'सीमंत'।

सिमटना—अक० सिकुड़ना। शिकन पड़ना। बटुरना, इकट्ठा होना। तरतीब से लगाना। पूरा होना। लज्जित होना। सहमना।

सिमरना†—सक० दे० 'सुमिरना'।

सिमाना⑤†—सक० दे० 'सिलाना'। † पुं० सिवाना, हद।

सिमिटना†⑤—अक० दे० 'सिमटना'।

सिमृति ⑤†—स्त्री० दे० 'स्मृति'।

सिमेटना⑤†—सक० दे० 'समेटना'।

सिय⑤—स्त्री० जानकी।

सियना⑤—अक० उत्पन्न करना, रचना।

सियरा⑤—वि० ठंडा, शीतल। कच्चा।

सियराई⑤—स्त्री० शीतलता।

सियराना⑤—अक० शीतल होना।

सियापा—पु० [फा०] मरे हुए मनुष्य के शोक में बहुत सी स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति। निस्तब्धता, सन्नाटा।

सियार †—पुं० गीदड़, जंबुक।

सियाल—पुं० गीदड़।

सियाला—पु० शीतकाल।

सियासत—स्त्री० [अ०] देश की रक्षा और शासन। व्यवस्था। राजनीति। सियासी—वि० राजनीतिक।

सियाह—वि० दे० 'स्याह'।

सियाहा—पु० [फा०] आयव्यय की वही। रोजनामचा। सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसमें जमीन से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है। ⊙नवीस = पु० सरकारी खजाने में सियाहा लिखनेवाला।

सियाही—स्त्री० दे० 'स्याही'।

सिर—पु० शरीर के सबसे अगले या ऊपरी भाग का गोल तल, खोपड़ी। शरीर का सबसे अगला या ऊपर का गोला या लबोतरा अंग जिसमें आँख, कान, नाक आदि होते हैं। सिरा, चोटी। वि० बड़ा, श्रेष्ठ। ⊙कटा = वि० जिसका सिर कट गया हो। दूसरों का अनिष्ट करनेवाला। ⊙चंद = पु० हाथी का एक प्रकार का अर्ध चंद्राकार

गहना। ⊙ताज = पुं० [फा०] मुकुट। शिरोमणि। सरदार। ⊙त्राण = पु० दे० 'शिरस्त्राण'। ⊙धरा = पु० दे० 'सिरधरू'। ⊙धरू = पु० सिर पर रहनेवाला, रक्षक, पृष्ठपोषक। ⊙नामा = पु० दे० 'सरनामा'। ⊙नेत = पुं० पगडी, पटा। क्षत्रियो की एक शाखा। ⊙पच्ची = स्त्री० सिर खपाना, माथापच्ची। ⊙पाव = पु० दे 'सिरोपाव'। ⊙पेच = पु० पगडी। पगडी पर बाँधने का एक आभूषण। ⊙पोश = पु० सिर पर का आवरण। टोप, कुलाह। बंदूक के ऊपर का कपडा। ⊙फूल = पुं० सिर पर पहना जानेवाला एक आभूषण, शीशफूल। ⊙फेंटा = पु० दे० 'सिरवद'। ⊙वद = पुं० [फा०] साफा। ⊙वंदी = स्त्री० [फा०] माथे पर पहनने का एक आभूषण। ⊙मगजन = पुं० [हिं० + अ०] माथापच्ची। ⊙मनि(पु) = पुं० दे० 'शिरोमणि'। ⊙मौर = पु० सिर का मुकुट। सिरताज, शिरोमणि। ⊙रुह = पुं० दे० 'शिरोरुह'। मु०~आँखो पर होना = सहर्ष स्वीकार होना, माननीय होना। ~आँखो पर बैठाना = बहुत आदर सत्कार करना। (अपना) ~उठाना = विरोध मे खडा होना। ऊधम मचाना। सामने मुँह करना, लज्जित न होना। प्रतिष्ठा के साथ खडा होना। (अपना) ~ऊँचा करना = प्रतिष्ठा के साथ लोगो के बीच खडा होना। ~करना = (स्त्रियो) के बाल सँवारना, चोटी गूँथना। ~के बल जाना = बहुत अधिक आदरपूर्वक किसी के पास जाना। ~खाली करना = बकवाद करना। माथापच्ची करना, सोच विचार मे हैरान होना। ~खपाना = सोचने विचारने मे हैरान होना। कार्य मे व्यग्र होना। ~खाना या चाटना = बकवाद करके जी उबाना। ~घूमना = सिर मे दर्द होना। घबराहट या मोह होना, बेहोशी होना। ~चकराना = दे० 'सिर घूमना'। ~चढ़ाना = पूज्य भाव दिखाना। मुँह लगाना। ~झुकाना = सिर नवाना, नमस्कार करना। लज्जा से गर्दन नीची करना। ~देना = प्राण निछावर करना। ~धुनना = शोक या पछतावे से सिर पीटना, पछताना ~नीचा करना = लज्जा से सिर झुकाना, शर्माना। ~पटकना = सिर धुनना। बहुत परिश्रम करना। अफसोस करना। (भूत, प्रेत, या देवी देवता का) ~पर आना = आवेश होना। प्रभाव होना। खेलना। ~पर खून चढ़ना या सवार होना = जान लेने पर उतारू होना। हत्या के कारण आपे मे न रहना। ~पर पडना = जिम्मे पडना। अपने ऊपर घटित होना। ~पर पाँव रखकर भागना = बहुत जल्द भाग जाना। ~पर पाँव रखना = उद्दडता का व्यवहार करना। ~पर होना = थोडे ही दिन रह जाना। ~पर सेहरा होना = कार्य का श्रेय प्राप्त होना। ~फिरना = सिर चकराना। पागल हो जाना। ~मारना = समझाते समझाते हैरान होना। सोचने विचारने मे हैरान होना, सिर खपाना। ~मुँड़ाते ही ओले पडना = कार्यारभ होते ही विघ्न पडना। ~से पैर तक = आरभ से अत तक, पूर्णतया। ~से पैर तक आग लगना = अत्यत क्रोध चढना। ~से कफन बाँधना = मरने के लिये उद्यत होना। ~से खेल जाना = प्राण देना। ~होना = बार बार किसी बात का आग्रह करके तंग करना, झगडा करना।

सिरका—पुं० [फा०] धूप मे पकाकर खट्टा किया हुआ ईख आदि का रस।

सिरकी—स्त्री० सरकडे की बनी हुई टट्टी जो प्राय दीवार या गाडियो पर धूप और वर्षा से बचाव के लिये डालते हैं। चार छह अगुल की सरकडे की पतली नली।

सिरखना—अक० दे० 'सिलखना'।

सिरगा—पुं० घोडे की एक जाति।

सिरजक(पु)—पु० रचनेवाला, सृष्टिकर्ता।

सिरजनहार(पु)—पुं० रचनेवाला। परमेश्वर।

सिरजना(पु)--सक० रचना, सृष्टि करना। सचय करना।
सिरजित(पु)--वि० रचा हुआ।
सिरदार(पु)†--पु० दे० 'सरदार'।
सिरनी--स्त्री० मिठाई आदि जो देवताओ या गुरु आदि के आगे रखी जाय।
सिरस--पु० शीशम की तरह का लबा एक प्रकार का ऊँचा पेड जिसके फूल सफेद, सुगधित, अत्यत कोमल और मनोहर होते हैं।
सिरहाना--पु० चारपाई मे सिर की ओर का भाग।
सिरा--स्त्री० रक्तनाडी। सिंचाई की नली। पु० लबाई का अत, छोर। ऊपर का भाग। अतिम भाग। आरभ का भाग। नोक। मु० सिरे का = अव्वल दरजे का।
सिराजी--पु० [फा० शीराज (नगर)] शीराज का घोडा। शीराज का कबूतर। शीराज की शराब।
सिराना(पु)†--अक० शीतल होना। हतोत्साह होना। समाप्त होना। मिटना, दूर होना। बीत जाना। †काम से फुरसत मिलना। सक० शीतल करना, समाप्त करना। बिताना।
सिरावना(पु)†--सक० दे० 'सिराना'।
सिरिश्ता--पु० [फा०] विभाग। सिरिश्तेदार = पु० दे० 'सरिश्तेदार'।
सिरिस--पुं० दे० 'सिरस'।
सिरी--(पु)‡स्त्री० लक्ष्मी। शोभा, काति। रोली, रोचना। माथे पर का एक गहना।
सिरोपाव--पु० सिर से पैर तक का पहनावा जो राजदरबार से समान के रूप मे दिया जाता है, खिलअत।
सिरोमनि--पु० दे० 'शिरोमणि'।
सिरोरुह--पु० दे० 'शिरोरुह'।
सिरोही--स्त्री० एक प्रकार की काली चिड़िया। पु० राजपूताने मे एक स्थान जहाँ की तलवार बहुत बढिया होती है। तलवार।
सिर्फ--क्रि० वि० [अ०] केवल, मात्र। वि० अकेला। शुद्ध।
सिल--स्त्री० पत्थर, शिला। पत्थर की चौकोर पटिया जिसपर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं। पत्थर की चौकोर पटिया। धातु, उपधातु आदि का चौकोर खड। पु० दे० 'शिल', 'उछ'। पुं० [अ०] क्षयरोग।
सिलकी--पु० बेल, लता।
सिलखडी--स्त्री० एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर। खरिया मिट्टी।
सिलगना--अक० दे० 'सुलगना'।
सिलप(पु)‡--पु० दे० 'शिल्प'।
सिलपट--वि० बराबर, चौरस। घिसा हुआ। चौपट।
सिलपोहनी--स्त्री० विवाह की एक रीति।
सिलबची--स्त्री० चिलमची।
सिलवट--स्त्री० सिकुडने से पडी हुई लकीर, सिकुडन।
सिलवाना--सक० दे० 'सिलाना'।
सिलसिला--वि० भीगा हुआ। जिसपर पैर फिसले। चिकना। पुं० [अ०] बँधा हुआ तार, क्रम। श्रेणी, पक्ति। श्रृखला, लडी। तरतीब। सिलसिलेवार = वि० [फा०] तरतीबवार, क्रमानुसार।
सिलह--पुं० हथियार।
सिलहारा--पुं० खेत मे गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।
सिलहिला--वि० जिसपर पैर फिसले, कीचड से चिकना
सिला--स्त्री० दे० 'शिला'। पुं० कटे खेत मे से चुना हुआ दाना। कटे हुए खेत मे गिरे अनाज के दाने चुनना, शिलवृत्ति। बदला, एवज।
सिलाई--स्त्री० सीने का काम या ढग। सीने की मजदूरी। टाँका, सीवन।
सिलाजीत--पुं० स्त्री० दे० 'शिलाजतु'।
सिलाना--सक० [सीना का प्रे०] सीने का काम दूसरे से कराना, सिलवाना। (पु) दे० 'सिराना'।
सिलारस--पुं० सिल्हक वृक्ष। सिल्हक वृक्ष का गोद।
सिलावट--पुं० पत्थर काटने और गढ़नेवाला सगतराश।
सिलाह--पु० [अ०] जिरह, बकतर, कवच। अस्त्रशस्त्र। ⊙बद = वि० [फा०] सशस्त्र, हथियारबंद।

सिलाहर—पुं० दे० 'सिलहारा'।
सिलाही—पुं० सैनिक।
सिलिक†—पुं० दे० 'सिल्क'।
सिलिप‡(पु)—पुं० दे० 'शिल्प'।
सिलीमुख—पुं० दे० 'शिलीमुख'।
सिलोच्च—पुं० एक प्राचीन पर्वत।
सिलौट, सिलौटा—पुं० सिल। सिल तथा बट्टा।
सिल्क—पुं० [अं०] रेशम। रेशमी कपडा।
सिल्ला—पुं० अनाज की बालियाँ या दाने जो फसल कट जाने पर खेत मे पडे रह जाते हैं।
सिल्ली—स्त्री० हथियार की धार चोखी करने का पत्थर, सान। पत्थर की छोटी पतली पटिया। धातु उपधातु आदि का चौकोर खड।
सिल्हक—पुं० [सं०] सिलारस।
सिव(पु)‡—पुं० दे० 'शिव'।
सिवई—स्त्री० गुँधे हुए के सूत से सूखे लच्छे जो दूध मे पकाकर खाए जाते हैं, सिवैंयाँ।
सिवा—स्त्री० दे० 'शिवा'। अव्य० [अ०] अतिरिक्त, अलावा। वि० अधिक, फालतू।
सिवाइ—अ० दे० 'सिवाय', 'सिव'।
सिवाई—स्त्री० एक प्रकार की मिट्टी।
सिवान—पुं० हद, सीमा।
सिवाय—क्रि० वि० अतिरिक्त, अलावा। वि० अधिक। ऊपरी।
सिवार, सिवाल—स्त्री० पानी मे लच्छो की तरह फैलनेवाला एक तृण।
सिवाला—पु० दे० 'शिवालय'।
सिविर—पुं० दे० 'शिविर'।
सिष्ट—स्त्री० वशी की डोरी। (पु)‡ वि० दे० 'शिष्ट'।
सिसकना—अक० रोने मे रुक रुककर निकलती हुई साँस छोडना। खुलकर न रोना। जी धडकना। उलटी साँस लेना, मरने के निकट होना। तरसना।
सिसकारना—अक० सीटी का सा शब्द मुँह से निकालना। अत्यत पीडा या आनद के कारण मुँह से साँस खीचना. सीत्कार करना। सिसकारी—स्त्री० सिसकारने का शब्द। पीडा या आनद के कारण मुँह से निकला हुआ 'सी सी' शब्द।
सिसकी—स्त्री० खुलकर न रोने का शब्द। सिसकारी, सीत्कार।
सिसिर (पु)—पुं० दे० 'शिशिर'।
सिसु(पु)—पु० दे० 'शिशु'।
सिसुमार(पु)—पु० दे० 'शिशुमार'।
सिसोदिया—पु० गुहलौत राजपूतो की एक शाखा।
सिहदा—पु० वह स्थान जहाँ तीन सीमाएँ मिलती हो।
सिहरन—स्त्री० सिहरने की क्रिया या भाव, सिहरी। सिहरना †—अक० ठढ से काँपना। काँपना। डरना।
सिहरा—पु० दे० 'सेहरा'।
सिहराना †—सक० [अक० 'सिहरना'] सरदी से कँपाना। डरना। सिहरावना—पु० दे० 'सिहरना'। सिहरी—स्त्री० कँपकँपी। भय से दहलना। जूड़ी का बुखार। रोगटे खड़े होना।
सिहाना †—अक० ईर्ष्या करना। स्पर्द्धा करना। पाने के लिये ललचना। मुग्ध होना। सक० ईर्ष्या की दृष्टि से देखना। ललचना।
सिहारना(पु)†—सक० तलाश करना। जुटाना।
सिहोड़, सिहोर †—पु० दे० 'सेहुँड'।
सींक—स्त्री० मूंज आदि की पतली तीली। किसी घास का महीन डठल। तिनका। शकु। नाक का एक गहना, लौंग।
सींका—पु० पेड़ पौधो की बहुत पतली टहनी, डाँड़ी।
सींकिया—पु० एक प्रकार का रगीन धारीदार कपडा। वि० सीक सा पतला।
सींग—पु० खुरवाले कुछ पशुओ के सिर के दोनो ओर निकले हुए कडे नुकीले अवयव। सीग का बना फूककर बजाया जानेवाला एक बाजा, सिगी। मु०~ कहीं~समाना = कहीं ठिकाना मिलना। ~कटाकर बछड़ों में मिलना = बूढ़े

होकर भी बच्चों मे मिलना। (किसी के सिर पर) ~होना = कोई विशेषता होना (व्यंग्य)।

सींगदाना—पु० दे० 'मूंगफली'।

सींगरी—स्त्री० एक प्रकार का लोबिया या फली।

सींगी—स्त्री० हिरन के सीग का बना बाजा, सिंगी। वह पोला सीग जिसमे जर्राह शरीर से दुषित रक्त खीचते है। एक प्रकार की मछली।

सींच—स्त्री० सिचाई। ⊙ना = सक० आबपाशी करना। पानी छिडककर तर करना। छिडकना, (पानी आदि) छितराना।

सींड—पु० नाक से निकला हुआ मल या कफ।

सींव(पु)—स्त्री० सीमा, हद। सीवँ(पु)—पु० सीमा, हद।

सी—स्त्री० सीत्कार, सिसकारी। वि० स्त्री० समान, तुल्य। मु० अपनी~ = अपने इच्छानुसार।

सीअरी(पु)—वि० स्त्री० ठडी, शीतल।

सीउ(पु)—पु० शीत, ठढ।

सीकर—पु० [सं०] जलकरण, छीटा। पसीना। (पु) स्त्री० [हिं०] जजीर।

सीकल—स्त्री० हथियारो का मोरचा छुड़ाने की क्रिया।

सीकस—पु० ऊसर।

सीकुर—पु० गेहूँ, जौ आदि की बाल के ऊपर के कड़े सूत, शूक।

सीख—स्त्री० शिक्षा, तालीम। वह बात जो सिखाई जाय। परामर्श, सलाह। स्त्री० [फा०] लोहे की लंबी पतली छड़।

सीखचा—पु० [फा०] लोहे की सीक जिस-पर मास लपेटकर भूनते हैं। लोहे की छड।

सीखन(पु)†—स्त्री० शिक्षा।

सीखना—सक० किसी से कोई बात जानना। काम करने का ढग आदि जानना।

सीगा—पुं० [अ०] विभाग, महकमा। प्रयोजन, हीला।

—स्त्री० सीझने की क्रिया या भाव। ⊙ना = अक० आँच या गरमी पाकर ... पकना। आँच या गरमी से मुलायम पड़ना। सूखे हुए चमडे का मसाले आदि मे भीगकर मुलायम पडना। सूखे हुए चमडे का मसाले आदि मे भीगकर मुलायम होना। कष्ट सहना। तपस्या करना। मिलने के योग्य होना।

सीटना—सक० शेखी मारना।

सीटपटाग—स्त्री० घमडभरी बातें।

सीटी—स्त्री० वह महीन शब्द जो ओठो को सिकोडकर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है। इसी प्रकार का शब्द जो किसी बाजे या यत्र आदि से होता है। वह यत्र, बाजा या खिलौना जिसे फूंकने से उक्त प्रकार का शब्द निकले।

सीठना—पु० वह अश्लील गीत जो स्त्रियां विवाहादि मागलिक अवसरो पर गाती है। सीठनी—स्त्री० दे० 'सीठना'।

सीठा—वि० नीरस, फीका। सीठी—स्त्री० फल पत्ते आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ निकम्मा अश। सारहीन पदार्थ। फीकी चीज।

सीड—स्त्री० तरी, नमी।

सीढी—स्त्री० ऊँचे स्थान पर चढने के लिये एक के ऊपर एक बना हुआ पैर रखने का स्थान, पैडी। धीरे धीरे आगे बढने की परपरा।

सीत(पु)†—पु० दे० 'शीत' ⊙कर = पुं० चद्रमा।

सीतल†—वि० दे० 'शीतल'। ⊙पाटी = स्त्री० एक प्रकार की बढिया चटाई।

सीतला—स्त्री० दे० 'शीतला'।

सीता—स्त्री० [सं०] वह रेखा जो जमीन जोतते समय हल की फाल से पडती जाती है। मिथिला के राजा जनक की कन्या जो श्री रामचद्र जी की पत्नी थी, जानकी। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते हैं। ⊙फल = पुं० शरीफा। कुम्हडा।

सीताध्यक्ष—पुं० [सं०] वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेतीबारी आदि का प्रबंध करता हो।

सीत्कार—पुं० [सं०] वह सी सी शब्द जो पीडा या ग्रानद के समय मुँह से निकलता है, सिसकारी।

सीय—पुं० पके हुए अन्न का दाना, भात का दाना।

सीद—पुं० [सं०] सूदखोरी, कुसीद।

सीदना—अक० दु ख पाना।

सीध—स्त्री० वह लबाई जो बिना इधर उधर मुडे एक तार चली गई हो। लक्ष्य, निशाना।

सीधा—पुं० विना पका हुआ अन्न। वि० जो ठीक लक्ष्य की ओर हो। भोला भाला। शात और सुशील। ग्रासान, सहज। दाहिना। क्रि० वि० ठीक सामने की ओर। ⊙पन = पु०सीधा होने का भाव, सिधाई। ⊙साधा = वि० भोला भाला। मु० (किसी को) ~करना = दड देकर ठीक करना। सीधी तरह = शिष्ट व्यवहार से।

सीधे—क्रि० वि० बराबर सामने की ओर। बिना कही मुडे या रुके। नरमी से, शिष्ट व्यवहार से।

सीना—सक० कपडे, चमडे ग्रादि के दो टुकडो को सुई तागो से जोडना। टाँका मारना। पु० [फा०] छाती। ⊙बद = पु० अँगिया, चोली।

सीनियर—वि० [अँ०] बडा, वयस्क। पद या मर्यादा मे ऊँचा, श्रेष्ठ।

सीप—पुं० कडे ग्रावरण के भीतर रहनेवाला शख, घोघे ग्रादि की जाति का एक जलजतु, सीपी। इस समुद्री जलजतु का सफेद, कडा, चमकीला ग्रावरण जो बटन ग्रादि बनाने के काम मे ग्राता है। ताल के सीप का सपुट जो चम्मच ग्रादि के समान काम मे लाया जाता है। ⊙सुत = पुं० मोती।

सीपति—पु० विष्णु।

सीपर⑮†—पु० ढाल।

सीपा—पुं० कडा जाडा।

सीपिज—पु० मोती।

सीपी—स्त्री० दे० 'सीप'।

सीबी—स्त्री० सी सी शब्द, सिसकारी।

सीमंत—पुं०[सं०] स्त्रियो की माँग। हड्डियो का सधिस्थान। दे० 'सीमतोन्नयन'। **सीमतिनी**—स्त्री० स्त्री, नारी। **सीमतोन्नयन**—पुं० प्रथम गर्भ के चौथे, छठे या ग्राठवें महीने मे द्विजातियो की स्त्रियो का एक प्राचीन शास्त्रीय सस्कार।

सीम—पुं० सीमा, हद्द।

सीमात—पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ सीमा का ग्रत होता है, सरहद।

सीमा—स्त्री० [स०] माँग। हद, सरहद। मर्यादा। ⊙बद्ध = पुं० रेखा या हद मे घिरा हुग्रा। मु०~से बाहर जाना = उचित से ग्रधिक बढ जाना। **सीमोल्लघन**—पुं० [स०] सीमा का उल्लघन करना। विजययात्रा। सीमातिक्रमणोत्सव। मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना।

सीय—स्त्री० जानकी।

सीयन†—स्त्री० दे० 'सीवन'।

सीयरा—⑮ वि० दे० 'सियरा'।

सीर—पु० रक्त की नाडी। ⑮†वि० ठढा, शीतल। पु० [सं०] हल। हल जोतनेवाले बैल। सूर्य। स्त्री वह जमीन जिसे भूस्वामी स्वय जोतता ग्रा रहा हो। वह जमीन जिसकी उपज कई हिस्सेदारी मे बँटती हो। ⑮ध्वज = पु० राजा जनक।

सीरक⑮—वि० ठढा करनेवाला। ठढा।

सीरख⑮—पु० दे० 'शीर्ष'।

सीरनी—स्त्री० मिठाई।

सीरष—⑮ दे० 'शीर्ष'।

सीरा—पु० पकाकर गाढा किया हुग्रा चीनी का रस, चाशनी। हलवा। ⑮†वि० शीतल। शात, मौन।

सीरीज—स्त्री०[अँ०] एक ही तरह की बहुत सी चीजो का क्रम या सिलसिला, माला।

सील—स्त्री० सीड, नमी, तरी। ⑮†पु०दे० 'शील'। स्त्री० [अँ०] मोहर, छाप। पुं० उत्तरी ध्रुव क्षेत्र की एक प्रकार की मछली।

सीला—पु० ग्रनाज के वे दाने जो खेत कट जाने पर गरीब लोग चुनते हैं, सिल्ला। खेत

मे गिरे दानो से निर्वाह करने की मुनियो की वृत्ति। वि० गीला।

सीव(पु)—स्त्री० दे० 'सीमा'।

सीवन—पु०, स्त्री० [पु०] सीने का काम, सिलाई। सीने मे पडी हुई लकीर। दरार, संधि।

सीवना—सक० दे० 'सीना'।

सीवा(पु)—स्त्री० सीमा, पराकाष्ठा।

सीस—पुं० सिर, माथा। ⊙ताज=पु० [फा०] वह टोपी जो शिकारी जानवरो के सिर पर रहती है और शिकार के समय खोली जाती है, कुलाह। ⊙त्रान=पुं० दे० 'शिरस्त्राण'। ⊙फूल=पुं० सिर पर पहनने का गहना।

सीसक—पु० [स०] सीसा (धातु)।

सीसमहल—पु० [फा० शीशा + अ० महल] वह मकान जिसकी दीवारो मे शीशे जडे हो।

सीसा—पु० नीलापन लिए काले रग की एक मूल धातु। (पु)†पु० दे० 'शीशा'।

सीसी—स्त्री० शीत, पीडा या आनद के समय मुंह से निकला हुआ शब्द, सीत्कार। (पु)‡ स्त्री० दे० 'शीशी'।

सीसौदिया—पु० दे० 'सिसोदिया'।

सीह—स्त्री० महक, गध। (पु)पु०दे०'सिंह'।

सीहगोस—पु० एक प्रकार का जतु जिसके कान काले होते हैं।

सु(पु)†—प्रत्य० दे० 'सो'।

सुंघनी—स्त्री० तबाकू के पत्ते की बारीक बुकनी जो सूंघी जाती है, नस्य।

सुंघाना—सक० ['सूंघना का प्रे०'] सूंघने की क्रिया कराना।

सुडमसुड—पु० हाथी, जिसका अस्त्र सुंड है।

सुडा—स्त्री सूंड।

सुडादड—पुं० सूंड।

सूंडाल—पुं० हाथी।

सुदर—वि० [स०] रूपवान्, खूबसूरत। अच्छा, बढिया। ⊙ता=स्त्री० सौंदर्य, खूबसूरती।

सुदरापा—पुं० दे० 'सुदरता'।

सुदरी—स्त्री० [सं०] सुदर स्त्री। त्रिपुरसुदरी देवी। एक योगिनी का नाम। सवैया नामक छद का एक भेद जिसमे आठ सगण और एक गुरु होता है। इसे मतली और सुखदानी भी कहते हैं। १२ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से नगण, दो भगण और रगण हों। २३ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से दो सगण, भगण, सगण, तगण, दो जगण और अत मे एक लघु और एक गुरु हो। १० वर्णो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से नगण, रगण, जगण और अत्य गुरु होता है।

सुंधाहट—स्त्री० सोधापन।

सुबा—पु० इस्पज। तोप या बदूक की गरम नली को ठडा करने के लिये गीला कपडा।

सु(पु)—अव्य० तृतीया, पचमी और षष्ठी विभक्ति का चिह्न। सर्व० सो, वह। उप० [स०] एक उपसर्ग जो सज्ञा के साथ लगकर श्रेष्ठ, सुदर, बढिया आदि का अर्थ देता है। वि० सुदर, अच्छा। उत्तम, श्रेष्ठ। शुभ, भला।

सुअ—पु० बेटा, पुत्र।

सुअटा‡—पु० सुग्गा, तोता।

सुअन(पु)—पु० पुत्र, बेटा। पु० पुष्प, फूल।

सुअनजर्द—पुं० दे० 'सोनजर्द'।

सुअना—पु० दे० 'सुअटा'। (पु) अक० उदय होना।

सुआ—दे० सुग्गा तोता। बडी सुई, सूजा।

सुआउ(पु)—वि० बडी उम्रवाला।

सुआन(पु)—पु० दे० 'श्वान'।

सुआना†—सक० [सुना का प्रे०] उत्पन्न कराना।

सुआमी—पु० दे० 'स्वामी'।

सुआर†—पु० रसोइया।

सुआख—वि० [सं०] मीठे स्वर से बोलने या बजानेवाला।

सुआसिनी(पु)†—स्त्री० स्त्री, विशेषत पास रहनेवाली स्त्री। सौभाग्यवती स्त्री सधवा।

सुम्राहित—पुं० तलवार के ३२ हाथो मे से एक हाथ।
सुई—स्त्री० एक छोटा पतला कडा तार जिसके छेद से तागा पिरोकर कपडा सिया जाता है, सूची। वह तार या काँटा जिससे कोई बात सूचित हो। (घडी या तराजू आदि की सुई)।
सुकंठ—वि० [सं०] जिसका कठ सुदर हो। सुरीला। पुं० सुग्रीव।
सुक—पु० दे० 'शुक'। ⊙नासा(पु) = वि० जिसकी नाक शुक पक्षी की ठोर के समान सुदर हो।
सुकचाना(पु)—अक० दे० 'सकुचाना।'
सुकड़ना(पु)—अक० दे० 'सिकुडना'।
सुकर—वि० [स०] सुसाध्य, सहज। ⊙ता = सहज मे होने का भाव, सौकर्य। सुदरता।
सुकराना—पुं० दे० 'शुक्राना'।
सुकरित(पु)—वि० शुभ, अच्छा।
सुकर्मी—वि० [सं०] अच्छा काम करनेवाला। धार्मिक। सदाचारी।
सुकल—पुं० दे० 'शुक्ल'।
सुकवाना(पु)—अक० अचभे मे आना।
सुकाना(पु)—सक० दे० 'सुखाना'।
सुकाल—पुं० [स०] उत्तम समय। वह समय जिसमे अन्न आदि की उपज अच्छी हो।
सुकावना(पु)—सक० दे० 'सुखाना'।
सुकिज(पु)—पुं० शुभ कर्म।
सुकिया(पु)—स्त्री० दे० 'स्वकीया'।
सुकी—स्त्री० तोते की मादा, सुग्गी।
सुकीउ(पु)—स्त्री० दे० 'स्वकीया' [नायिका]।
सुकुआर—वि० दे० 'सुकुमार'।
सुकुति(पु)†—स्त्री० सीप।
सुकुमार—वि० [सं०] जिसके अग बहुत कोमल हों, नाजुक। पुं० कोमलाग बालक। काव्य का कोमल अक्षरो या शब्दो से युक्त होना।
सुकुना(पु)†—अक० दे० 'सिकुडना'।
सुकुल—पुं० दे० 'शुक्ल'। पुं० [सं०] उत्तम कुल। वह जो उत्तम कुल में उत्पन्न हो, कुलीन। ब्राह्मणो की एक उपजाति।
सुकुवाँर सुकुवार—वि० दे० 'सुकुमार'।
सुकृत—वि० [सं०] उत्तम और शुभ कार्य करनेवाला। धार्मिक।
सुकृत—पुं० [सं०] पुण्य। दान। उत्तम कार्य। वि० भाग्यवान्। धर्मशील। सुकृतात्मा—वि० [स०] धर्मात्मा। सुकृति—स्त्री० अच्छा काम, पुण्य। सुकृती—वि० धार्मिक, पुण्यवान्। भाग्यवान्। बुद्धिमान्।
सुकृत्य—पुं० पुण्य, अच्छा काम।
सुकेशी—स्त्री० [सं०] उत्तम केशोवाली स्त्री। पु० वह जिसके बाल बहुत सुदर हो।
सुक्ख(पु)—पुं० दे० 'सुख'।
सुक्ति—स्त्री० दे० 'शुक्ति'।
सुक्रित—पु० दे० 'सुकृत'।
सुक्षम(पु)†—वि० दे० 'सूक्ष्म'।
सुखडी—स्त्री० बच्चो का एक रोग जिसमे शरीर सूख जाता है। वि० बहुत दुबला पतला।
सुखद—वि० सुखदायी।
सुख—पुं० [सं०] अनुकूल और प्रिय अनुभूति, दुख का उलटा, आराम, आनद। एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे आठ सगण और दो लघु होते हैं। तदुरुस्ती। स्वर्ग। पानी। क्रि० वि० स्वभावत। सुखपूर्वक। ⊙आसन = पु० पालकी। ⊙कंद = वि० सुखद। ⊙कंदन = वि० दे० 'सुखकद'। ⊙कंदर = वि० [हिं०] सुख का घर, सुख का आगार। ⊙कर = वि० सुख देनेवाला। जो सहज मे किया जाय। ⊙करण† = वि० सुखद। ⊙करनी(पु) = वि० स्त्री० [हिं०] सुखकर, आनदप्रद। ⊙दरन = वि० स्त्री० [हिं०] दे० 'सुखद'। ⊙थर(पु)† = पुं० [हिं०] सुख का स्थल, सुख देनेवाला स्थान। ⊙दनिया(पु) = वि० [हिं०] दे० 'सुखदानी'। ⊙दा = वि० स्त्री० सुख देनेवाली। स्त्री० एक प्रकार का छद। इसमे कुल २२ मात्राएँ होती हैं। अत मे दीर्घ रहता है। ⊙दाइक = वि० [हिं०] दे० 'सुखदायक'। ⊙दाइन(पु) = वि० [हिं०] दे० 'सुखदायिनी'। ⊙दाई = वि० [हिं०]

दे॰ 'सुखदायी'। ⊙दाता = वि॰ सुखद। ⊙दान = वि॰ [हिं॰] दे॰ 'सुखदाता'। ⊙दानी = वि॰ स्त्री॰ [हिं॰] सुख देनेवाली स्त्री। आठ सगण और एक गुरु का एक वृत्त, सुदरी। ⊙दायक = वि॰ सुख देनेवाला। पुं॰ एक प्रकार का छद। ⊙दायी = वि॰ सुख देनेवाला, सुखद। ⊙दाव = वि॰ [हिं॰] दे॰ 'सुखदायी'। ⊙दास = पुं॰ [हिं॰] एक प्रकार का अगहनी बढ़िया धान। ⊙देनी = वि॰ स्त्री॰ [हिं॰] दे॰ 'सुखदायिनी'। ⊙दैन = वि॰ [हिं॰] दे॰ सुखदायी'। ⊙धाम = पुं॰ सुख का घर, आनदसदन। वैकुठ, स्वर्ग। ⊙पाल = पुं॰ [हिं॰] एक प्रकार की पालकी। ⊙रास ⊙रासी(पु) = वि॰ [हिं॰] जो सर्वथा सुखमय हो। ⊙वंत = वि॰ [हिं॰] सुखी, प्रसन्न। सुखदायक। ⊙वार = वि॰ [हिं॰] सुखी, प्रसन्न, खुश। ⊙साध्य = वि॰ सुकर, सहज। ⊙सार = पुं॰ मोक्ष। मु॰~की नींद सोना = निश्चित होकर रहना। ~मानना = परिस्थिति आदि की अनुकूलता के कारण ठीक अवस्था मे रहना।

सुखक(पु)†—वि॰ सूखा, शुष्क।

सुखद—वि॰ [सं॰] सुख या आनद देनेवाला। ⊙गीत = वि॰ प्रशसनीय।

सुखना—अक॰ दे॰ 'सूखना'।

सुखमन(पु)†—स्त्री॰ 'सुषुम्ना'।

सुखमा—स्त्री॰ शोभा, छवि। एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से तगण, यगण, भगण और अत्य गुरु हो।

सुखलाना—सक॰ दे॰ 'सुखाना'।

सुखवन†—पुं॰ वह कमी जो किसी चीज के सूखने के कारण होती है। वह वालू जिससे लिखे हुए अक्षरो आदि पर की स्याही सुखाते हैं। अन्नादि की वह राशि जो सूखने के लिये धूप मे पडी हो।

सुखांत—पुं॰ [सं॰] वह जिसका अत सुखमय हो। वह नाटक, कहानी आदि जिसके अत में कोई सुखपूर्ण घटना (जैसे संयोग) हो।

सुखाना—सक॰ [सूखना का प्रे॰] गीली या नम चीज को धूप आदि मे इस प्रकार रखना जिससे उसकी नमी दूर हो। कोई ऐसी क्रिया करना जिससे आर्द्रता दूर हो। † अक॰ दे॰ 'सूखना'।

सुखारा, सुखारी(पु)†—वि॰ सुखी, प्रसन्न। सुखद।

सुखाला—वि॰ सुखदायक। सहज।

सुखावह—वि॰ [सं॰] सुख देनेवाला।

सुखासन—पुं॰ [सं॰] सुखद आसन। पालकी, डोली।

सुखिआ—वि॰ दे॰ 'सुखिया'।

सुखित—वि॰ सूखा हुआ। सुखी, [illegible]।

सुखिता—स्त्री॰ [सं॰] सुख, आनंद।

सुखिया—वि॰ दे॰ 'सुखी'।

सुखिर—पुं॰ सांप का बिल।

सुखी—वि॰ [सं॰] जिसे सब प्रकार का सुख हो, आनदित।

सुखेन—पुं॰ दे॰ 'सुषेण'।

सुलेखक—पुं॰ [सं॰] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, जगण, भगण, जगण और रगण होता है।

सुखैना(पु)†—वि॰ सुख देनेवाला।

सुख्याति—स्त्री॰ [सं॰] प्रसिद्धि, यश।

सुगध—स्त्री॰ [सं॰] अच्छी महक, खुशबू। वह जिससे अच्छी महक निकलती हो। चदन। वि॰ सुगधित। ⊙वाला = स्त्री॰ एक प्रकार की सुगधित वनौषधि।

सुगधि—स्त्री॰ [सं॰] सुगंध, खुशबू। परमात्मा। आम।

सुगधित—वि॰ सुगधयुक्त।

सुगत—पुं॰ [सं॰] बुद्धदेव। बौद्ध।

सुगति—स्त्री॰ [सं॰] मरने के उपरात होनेवाली उत्तम गति, मोक्ष। वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात मात्राएँ और अत मे एक गुरु होता है।

सुगना†—पु॰ तोता।

सुगम—वि॰ [सं॰] जिसमे गमन करने मे कठिनता न हो। सरल, सहज। जो आसानी से समझा जा सके। सुगम्य—वि॰ जिसमे सहज मे प्रवेश हो सके।

सुगर(पु)†—वि० दे० 'सुघड'। दे० 'सुकठ'।

सुगाना(पु)—अक० दुखित होना। नाराज होना। सदेह करना।

सुगीतिका—स्त्री० [सं०] एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे २५ मात्राएँ और अत मे गुरु लघु होते हैं।

सुगुरा—पु० वह जिसने अच्छे गुरु से मत्र लिया हो।

सुग्गा†—पु० तोता, सूआ।

सुग्रीव—पु० [सं०] वालि का भाई, वानरो का राजा और श्री रामचद्र का सखा। इद्र। शख। वि० जिसकी ग्रीवा सुदर हो।

सुघट—वि० [सं०] सुडौल। जो सहज मे बन सकता हो। सुघटित—वि० अच्छी तरह से बनाया या गढा हुआ।

सुघड—वि० सुदर, सुडौल। निपुण, कुशल। ⊙ई = सुडौलपन। निपुणता।

सुघड़ाई—स्त्री० दे० 'सुघड़ई'। सुघरी—स्त्री० अच्छी घडी, शुभ समय। वि० स्त्री० सुदर, सुडौल।

सुच(पु)—वि० दे० 'शुचि।

सुचना—सक० सचय या इकट्ठा करना।

सुचरित, सुचरित्र—पु० [सं०] उत्तम आचरणवाला, नेकचलन।

सुचा—वि० दे० 'शुचि'। स्त्री० ज्ञान, चेतना।

सुचान—स्त्री० सुचाने की क्रिया या भाव। सुझाव, सूचना। सुचाना—सक० किसी को सोचने या समझने मे प्रवृत्त करना। दिखलाना। किसी बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना।

सुचार(पु)—स्त्री० दे० 'सुचाल'। सुदर।

सुचारु—वि० [स०] अत्यत सुदर।

सुचाल—स्त्री० अच्छी चाल या आचरण।

सुचाली—वि० अच्छे चालचलन वाला।

सुचाव—पु० सुचाने की क्रिया या भाव। सुझाव, सूचना।

सुचि—वि० दे० 'शुचि'। ⊙बर = वि० अत्यत पवित्र। ⊙मंत = वि० शुद्ध आचरणवाला।

सुचित—वि० जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो। निश्चित। एकाग्र, सावधान। ⊙ई†—स्त्री० बेफिक्री। एकाग्रता, शाति। फुरसत। सुचिती†—वि० दे० 'सुचित'।

सुचित्त—वि० [स०] जिसका चित्त स्थिर हो, शात। जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो।

सुचि[illegible]—वि [सं०] चिरस्थायी, पुराना।

सु[illegible]—स्त्री० दे० 'शुची'।

[illegible]त—वि० सावधान, होशियार।

सुच्छंद(पु)†—वि० दे० 'स्वच्छद'।

सुच्छ(पु)†—वि० दे० 'स्वच्छ'।

सुच्छम(पु)—वि० दे० 'सूक्ष्म'।

सुछंद(पु)—वि० स्वच्छद, निर्बाध।

सुछ—वि० स्वच्छ, उज्ज्वल।

सुजन(पु)—पु० परिवार के लोग। पुं० [सं०] सज्जन, शरीफ। ⊙ता = स्त्री० सौजन्य, भलमनसत।

सुजनी—स्त्री० एक प्रकार की बिछाने की बडी चादर।

सुजन्मा—वि० [सं०] उत्तम कुल का।

सुजल—पु० [सं०] कमल।

सुजस—पु० दे० 'सुयश'।

सुजागर—वि० प्रकाशमान, सुशोभित।

सुजात—वि [सं०] विवाहित स्त्री पुरुष से उत्पन्न। अच्छे कुल मे उत्पन्न। सुदर। सुजाति—स्त्री० उत्तम जाति। वि० उत्तम जाति या कुल का। सुजातिया—वि० [हिं०] उत्तम जाति या कुल का। अपनी जाति का।

सुजान—वि० समझदार, चतुर, सयाना। निपुण, विज्ञ, पडित। सज्जन। पु० पति या प्रेमी। ईश्वर। सुजानी—वि० पडित, ज्ञानी।

सुजोग(पु)†—पुं० अच्छा अवसर। अच्छा सयोग।

सुजोधन(पु)—पु० दे० 'सुयोधन'।

सुजोर—वि० दृढ।

सुज्ञ—वि० [सं०] सुविज्ञ, विद्वान्।

सुझना†—अक० सूझना, दिखाई पडना। सुझाना—सक० [सूझना का प्रे०] दूसरे के ध्यान मे लाना, दिखाना। सुझाव—पुं० सुझाने की क्रिया या भाव। यह बात जो सुझाई जाय, सूचना।

सुटुकना—अक० दे० 'सुडकना'। दे० 'सिकुडना'। सक० चाबुक लगाना।

सुठ—वि० दे० 'सुठि'।

सुठहर†—अच्छा स्थान।

सुठार(पु)‡—वि० सुडौल, सुंदर।

सुठि(पु)†—वि० सुंदर, बढ़िया। बहुत। अव्य० पूरा पूरा, बिलकुल।

सुठोना(पु)†—वि० दे० 'सुठि'।

सुठौनी(पु)—वि० सुंदर मुद्रा (अदा) वाली।

सुडकना—अक० सुड सुड शब्द के साथ पीना या निगलना।

सुड़सुडाना—सक० सुडसुड शब्द उत्पन्न करना।

सुडौल—वि० सुंदर डौल या आकार का।

सुढंग—पु० अच्छी रीति। सुघड।

सुढर—वि० प्रसन्न और दयालु। सुंदर, सुडौल।

सुढार(पु)†—वि० सुंदर, सुडौल।

सुतंत, सुतंतर(पु)—वि० दे० 'स्वतंत्र'।

सुतंत्र(पु)—वि० दे० 'स्वतंत्र'। क्रि० वि० स्वतंत्रतापूर्वक।

सुत—पु० [सं०] पुत्र, बेटा। वि० पार्थिव। उत्पन्न।

सुतधार(पु)—पु० दे० 'सूत्रधार'।

सुतनु—वि० [सं०] सुंदर शरीरवाला। स्त्री० सुंदर शरीरवाली स्त्री, कृशांगी।

सुतर(पु)†—पु० दे० 'शुतुर'। ⊙नाल=स्त्री० दे० 'शुतुरनाल'।

सुतरां—अव्य० [सं०] इसलिये। और भी।

सुतरी†—स्त्री० तुरही। दे० 'सुतली'।

सुतल—पु० [सं०] सात पाताल लोकों मे से एक।

सुतली—स्त्री० रस्सी, डोरी।

सुतवाना†—सक० दे० 'सुलवाना'।

सुता—स्त्री० [सं०] पुत्री, बेटी।

सुताना†—सक० [अक० सूतना] सुलाना।

सुतार—पुं० बढ़ई। शिल्पकार, कारीगर। दे० 'सुभीता'। वि० अच्छा। सुतारी—स्त्री० मोचियों का सुआ जिससे वे जूता सीते हैं। सुतार या बढ़ई का काम। पुं० शिल्पकार, कारीगर।

सुतिय(पु)—स्त्री० रूपवती स्त्री।

सुतिहार†—पुं० दे० 'सुतार'।

सुती—वि० [सं०] पुत्रवाला।

सुतुही†—स्त्री० सीपी जिससे छोटे बच्चों को दूध पिलाते हैं। वह सीप जिससे कच्चा आम छीला जाता है।

सुतून—पु० [फा०] खंभा, स्तंभ।

सुथना—पुं० दे० 'सूथन'।

सुथनी—स्त्री० स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का ढीला पायजामा, सूथन। पिंडालू, रतालू।

सुथरा—वि० स्वच्छ, साफ। ⊙ई=स्त्री० सुथरापन।

सुथरेशाही—पुं० गुरु नानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया संप्रदाय। इस संप्रदाय के अनुयायी।

सुदती—वि० [सं०] सुंदर दाँतोंवाली स्त्री।

सुदर्शन—पु० विष्णु भगवान के चक्र का नाम। शिव। सुमेरु। एक पौधा जो औषधि के काम आता है। वि० देखने में सुंदर, मनोरम।

सुदास—पु० [सं०] दिवोदास का पुत्र। एक प्राचीन जनपद।

सुदि—स्त्री० दे० 'सुदी'।

सुदिन—पुं० [सं०] शुभ दिन।

सुदी—स्त्री शुक्ल पक्ष।

सुदीपति(पु)—स्त्री० दे० 'सुदीप्ति'।

सुदीप्ति—स्त्री० [सं०] बहुत प्रकाश, खूब उजाला।

सुदूर—वि० [सं०] बहुत दूर।

सुदृढ—वि० [सं०] खूब मजबूत।

सुदेव—पु० [सं०] देवता।

सुदेश—पु० [सं०] सुंदर देश, उत्तम देश। उपयुक्त स्थान। वि० सुंदर।

सुदेस(पु)—वि० सुंदर, खूबसूरत। अच्छा देश या स्थान।

सुदेह—वि० [सं०] सुंदर, कमनीय ।
सुदौसौ†—क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी ।
सुद्ध(प)—वि० दे० 'शुद्ध' ।
सुद्धाँ†—अव्य० सहित, समेत ।
सुद्धि—स्त्री० दे० 'सुध' । दे० 'शुद्धि' ।
सुधंग—पुं० अच्छा ढंग । वि० सब प्रकार से ठीक और अच्छा ।
सुध—वि० दे० 'शुद्ध' । स्त्री० दे० 'सुधा' । स्मरण, याद । चेतना, होश । खबर, पता । ⊙बुध = पुं० होशहवाश । मु०~ दिलाना = याद दिलाना । ~न रहना = भूल जाना । ~बिसरना = भूल जाना । होश में न रहना । ~बिसराना, बिसारना = किसी को भूल जाना । अचेत करना । ~भूलना = दे० 'सुध बिसरना' ।
सुधन्वा—पुं० [सं०] अच्छा धनुर्धर । विष्णु । विश्वकर्मा । आंगिरस ।
सुधमना(प)†—वि० [स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो, सचेत ।
सुधरना—अक० सुधर या संशोधन होना ।
सुधराई—स्त्री० सुधार । सुधारने की मजदूरी ।
सुधर्म—पुं० [सं०] उत्तम धर्म या कर्तव्य ।
सुधर्मा, सुधर्मी—वि० धर्मनिष्ठ ।
सुधवाना—सक० [सोधना का प्रे०] शोधन कराना, दुरुस्त कराना ।
सुधाँ—अव्य० दे० 'सुद्धाँ' ।
सुधांग—पुं० [सं०] चंद्रमा ।
सुधांशु—पुं० [सं०] चंद्रमा ।
सुधा—पुं० [सं०] अमृत । मकरंद । गंगा । जल । दूध । रस, अर्क । पृथ्वी, धरती । विष, जहर । एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से यगण, मगण, नगण, सगण, तगण और सगण होते हैं । चूना । ⊙कर = पुं० चंद्रमा । ⊙गेह = पुं० [हिं०] चंद्रमा । ⊙घट = पुं० चंद्रमा । ⊙धर = पुं० चंद्रमा । ⊙धाम = पुं० चंद्रमा । ⊙निधि = पुं० चंद्रमा । समुद्र । दंडक वृत्त का एक भेद । इसमें १६ बार क्रम से गुरु लघु आते हैं । ⊙पाणि = पुं० देवताओं के वैद्य, धन्वंतरि । ⊙स्रवा = पुं० अमृत बरसानेवाला । ⊙सदन = पुं० चंद्रमा ।
सुधाई—स्त्री० सिधाई, सरलता ।
सुधाधर—वि० [सं०] जिसके अधरों में अमृत हो ।
सुधाधार—पुं० [सं०] चंद्रमा ।
सुधाधी(प)—वि० सुधा के समान ।
सुधना(प)—सक० सुध करना, स्मरण कराना, दुरुस्त कराना । (लग्न या कुंडली आदि) ठीक कराना ।
सुधार—पुं० सुधारने की क्रिया या भाव, संशोधन । सुधारक—पुं० (दोषों या त्रुटियों का) संशोधक वह जो धार्मिक या सामाजिक सुधार के लिये प्रयत्न करता हो ।
सुधारना—सक० [अक० सुधरना] दोष या बुराई दूर करना, संशोधन करना । वि० सुधारनेवाला ।
सुधारा—वि० सीधा, निष्कपट ।
सुधि—स्त्री० दे० 'सुध' ।
सुधी—पुं० [सं०] विद्वान्, पंडित । त्रि० बुद्धिमान्, (चतुर) धार्मिक ।
सुनंदिनी—स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सगण, जगण, सगण, जगण और अंत में एक गुरु रहता है ।
सुनकिरवा—पुं० एक प्रकार का कीड़ा जिसके पर पत्ते के रंग के होते हैं । जुगनू ।
सुनगुन—स्त्री० भेद, टोह । कानाफूसी ।
सुनत, सुनति(प)†—स्त्री० दे० 'सुन्नत' ।
सुनना—सक० कानों के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना । किसी के कथन पर ध्यान देना । भली बुरी बातें श्रवण करना । मु०—सुनी अनसुनी कर देना = कोई बात सुनकर भी उसपर ध्यान न देना ।
सुनबहरी—स्त्री० फीलपाँव (रोग) ।
सुनय—पुं० [सं०] उत्तम नीति ।
सुनरि(प)†—स्त्री० सुंदर स्त्री ।
सुनवाई—स्त्री० सुनने की क्रिया या भाव । मुकदमे या शिकायत आदि का सुना जाना । स्वीकृति, मंजूरी ।
सुनवैया—वि० सुननेवाला । सुनानेवाला ।

सुनसान—वि० खाली, निर्जन । उजाड़, वीरान। पु० सन्नाटा।
सुनहरा—वि० दे० 'सुनहला'।
सुनहला—वि० सोने के रंग का। सोने का।
सुनाई—स्त्री० दे० 'सुनवाई'।
सुनाना—सक० [सुनना का प्रे०] दूसरे को सुनने मे प्रवृत्त करना । खरी खोटी कहना ।
सुनाम—पु० [सं०] यश, कीर्ति ।
सुनार—पु० सोने चाँदी के गहने आदि बनानेवाली जाति या व्यक्ति, स्वर्णकार। सुनारी—स्त्री० सुनार का काम । सुनार की स्त्री ।
सुनावन—स्त्री० कही विदेश से किसी संबंधी आदि की मृत्यु का समाचार आना । वह स्नान आदि कृत्य जो ऐसा समाचार आने पर होता है ।
सुनाहक(पु)—क्रि० वि० दे० 'नाहक'।
सुनीति—स्त्री० [सं०] उत्तम नीति। राजा उत्तानपाद की पत्नी और ध्रुव की माता।
सुनैया—वि० सुननेवाला ।
सुनोची—पु० एक प्रकार का घोडा।
सुन्न—वि० नि स्तब्ध, निश्चेष्ट । पु० शून्य, सिफर।
सुन्नत—स्त्री० [अ०] लडके की लिंगेंद्रिय के अगले भाग का चमडा काट देने की मुसलमानी रस्म, खतना ।
सुन्ना—पु० बिंदी, सिफर ।
सुन्नी—[अ०] मुसलमानो का एक भेद जो मोहम्मद साहब के बाद हुए चारो खलीफाओ को मानता है और हजरत अली को पैगबर का ठीक उत्तराधिकारी नही मानता, चारयारी ।
सुपक—वि० अच्छी तरह पका हुआ ।
सुपक्व—वि० [सं०] अच्छी तरह का पका हुआ। आँच पर अच्छी तरह पकाया हुआ ।
सुपच—पु० चाडाल, डोम ।
सुपत—वि० प्रतिष्ठायुक्त।
सुत्पथ—पु० दे० 'सुपथ'।
सुपथ—पु० [सं०] उत्तम पथ, सदाचरण । एक वृत्त जो रगण, नगण, भगण और दो गुरु का होता है । वि० समतल, हमवार ।
सपन, सपना—पु० दे० 'स्वप्न' ।
सपनाना(पु)—सक० स्वप्न दिलाना ।
सपरस(पु)—दे० 'स्पर्श'।
सुपर्ण—[सं०] गरुड़ । पक्षी । किरण। विष्णु । घोडा।
सुपर्णी—स्त्री० [सं०] गरुड़ की माता, सुपर्णा। कमलिनी, पद्मिनी ।
सुपात्र—पु० [सं०] योग्य या अच्छा पात्र ।
सुपारी—स्त्री० नारियल की जाति का एक पेड। इसके फल टुकड़े करके पान के साथ खाए जाते हैं, पूग, गुवाक । मु०~लगना = खाते समय सुपारी का गले या उसके नीचे अटकना जो कष्टप्रद होता है।
सुपास—पु० सुख, आराम। सहूलियत। सुपासी—वि० सुख देनेवाला ।
सुपुत्र—पु० [सं०] अच्छा और योग्य पुत्र ।
सुपुर्द—पु० दे० 'सपुर्द'।
सुपूत—पु० दे० 'सपूत'। सुपूती—स्त्री० सुपूतपन ।
सुपेती†—स्त्री० दे० 'सफेदी'। सुपेद†—वि० दे० 'सफेद'। सुपेदी(पु)†—स्त्री० सफेदी। ओढने की रजाई । बिछाने की तोशक । बिछौना, बिस्तर ।
सुपेली—स्त्री० छोटा सूप।
सुप्त—वि० [सं०] सोया हुआ । ठिठुरा हुआ। मुंदा हुआ।
सुप्ति—स्त्री० [सं०] नीद। उँघाई।
सुप्रज्ञ—वि० [सं०] बहुत बुद्धिमान् ।
सुप्रतिष्ठ—वि० [सं०] उत्तम प्रतिष्ठावाला। बहुत प्रसिद्ध । सुप्रतिष्ठा—स्त्री० एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे पाँच वर्ण होते हैं। प्रसिद्धि।
सुप्रसिद्ध—वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध, बहुत मशहूर ।
सुप्रिया—स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चौपाई जिसमे अंतिम वर्ण के अतिरिक्त और सब वर्ण लघु होते हैं।
सुफल—पु० [सं०] सुदर फल। अच्छा परिणाम। वि० सुदर फलवाला (अस्त्र)। सफल। कामयाब ।

सुबल—पु० [सं०] शिव जी। गंधार का एक राजा जो दुर्योधन का नाना और शकुनि का पिता था। वि० अत्यंत बलवान्।

सुबह—स्त्री० [अ०] प्रातःकाल, सबेरा।

सुबहान—पु० [अ०] पवित्र, शुद्ध।

सुबहान अल्ला—अव्य० [अ०] अरबी का एक पद जिसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य व्यक्त करने के लिये होता है।

सुबास—स्त्री० अच्छी महक। पु० एक प्रकार का धान। **सुबासना**—सक० सुगंधित करना। स्त्री० सुगंध, खुशबू। **सुबासिक**—वि० सुगंधित।

सुबाहु—पुं० [सं०] धृतराष्ट्र का पुत्र और चेदि का राजा। फौज। वि० दृढ़ या सुंदर बाहों वाला।

सुबिस्ता, सुबीता—पु० दे० 'सुभीता'।

सुबुक—वि० [फा०] हलका, भारी का उलटा। सुंदर। पु० घोड़े की एक जाति।

सुबुद्धि—वि० [सं०] बुद्धिमान्। उत्तम बुद्धि।

सुबू—स्त्री० दे० 'सुबह'। पु० दे० 'सबू'।

सुबूत—पु० दे० 'सबूत'। पु० [अ०] वह जिसमे कोई बात साबित हो, प्रमाण।

सुबोध—वि० [सं०] अच्छी बुद्धिवाला। जो कोई बात सहज में समझ सके। जो आसानी से समझ मे आ जाय।

सुब्रह्मण्य—पु० [सं०] शिव। विष्णु। दक्षिण का एक प्राचीन प्रांत।

सुभ(पु)—दे० 'शुभ'।

सुभग—वि० [सं०] मनोहर। भाग्यवान्। प्रिय, प्रियतम। सुखद। **सुभगा**—वि० स्त्री० खूबसूरत (स्त्री)। सुहागिन। स्त्री०। वह स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। पाँच वर्ष की कुमारी।

सुभग्ग(पु)—वि० दे० 'सुभग'।

सुभट—पु० [सं०] भारी योद्धा।

सुभडोल—वि० सुडौल, सुंदर।

सुभद्र—पु० [सं०] विष्णु। सनत्कुमार। श्रीकृष्ण के एक पुत्र। सौभाग्य। कल्याण। वि० भाग्यवान्। सज्जन।

सुभद्रा—स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी, दुर्गा।

सुभद्रिका—स्त्री० एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण, रगण और अंत में लघु गुरु हो।

सुभर(पु)—वि० दे० 'शुभ्र'।

सुभा—स्त्री० सुधा। शोभा। हरीतकी।

सुभाइ, सुभाउ(पु)†—पु० दे० 'स्वभाव'। क्रि० वि० सहज भाव से, स्वभावतः।

सुभाग(पु)‡—पु० दे० 'सौभाग्य'। **सुभागी**—वि० भाग्यवान्। **सुभागीन**—पु० भाग्यवान् (व्यक्ति), सुभग।

सुभान—अव्य दे० 'सुबहान'।

सुभाना(पु)†—अक० शोभित होना।

सुभाय(पु)†—पु० दे० 'स्वभाव'।

सुभायक(पु)—वि० दे० 'स्वाभाविक'

सुभाव—(पु)‡—पु० दे० 'स्वभाव'।

सुभाषित—वि० [सं०] सुंदर ढंग से कहा हुआ। **सुभाषी**—स्त्री० उत्तम रूप से बोलनेवाला, मिष्ठभाषी।

सुभिक्ष—पु० [सं०] ऐसा समय जिसमे अन्न खूब हो, सुकाल।

सुभी—वि० स्त्री० शुभकारक।

सुभीता—पु० सुगमता, सहूलियत। अवसर।

सुभौटी(पु)†—स्त्री० शोभा।

सुभ्र—वि० दे० 'शुभ्र'।

सुमंगली—स्त्री० विवाह मे सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा।

सुमथन—पु० दे० 'मंदर' (पर्वत)।

सुमंद्र—पु० [सं०] २७ मात्राओं का एक वृत्त जिसमे अंत मे गुरु लघु होते हैं।

सुम—पु० [फा०] घोड़े या दूसरे चौपायों के खुर, टाप।

सुमत—स्त्री० दे० 'सुमति'।

सुमति—स्त्री० [सं०] सगर की पत्नी। अच्छी बुद्धि। मेलजोल। भक्ति, प्रार्थना। वि० बुद्धिमान्।

सुमन—पु० पुष्प, फूल। देवता। विद्वान्। वि० सहृदय, दयालु। सुंदर। ⊙चाप पु० कामदेव।

सुमनस—पु० देवता। विद्वान्। फूल। फूलों की माला। वि० प्रसन्नचित्त। महात्मा।

सुमनित—वि० उत्तम मणियों से जड़ा हुआ।
सुमरन(पु)—पु० दे० 'स्मरण'। **सुमरना**(पु)† सक० स्मरण करना, ध्यान करना। जपना। **सुमरनी**—स्त्री० [हिं०] नाम जपने की २७ दानों की छोटी माला।

सुमानिका—स्त्री० [सं०] सात अक्षरों का एक वृत्त।
सुमार्ग—पु० [सं०] अच्छा रास्ता, सन्मार्ग।
सुमालिनी—स्त्री० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छह वर्ण होते हैं।

सुमिरन(पु)—पुं० दे० 'स्मरण'।
सुमिरण(पु)—पु० दे० 'स्मरण'।
सुमिरना(पु)†—पु० दे० 'स्मरण'।
सुमिरनी—स्त्री० दे० 'सुमरनी'।
सुमिल—वि० सरलता से मिलने योग्य।
सुमिष्ट—वि० [सं०] बहुत मीठा।
सुमुख—पु० [सं०] शिव। गणेश। पंडित, आचार्य। सुंदर मुखवाला व्यक्ति। सुंदर। प्रसन्न। कृपालु। **सुमुखी**—स्त्री० [सं०] सुंदर मुखवाली स्त्री। दर्पण। एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, दो जगण, एक लघु और अंत्य गुरु कुल ११ अक्षर होते हैं।

सुमृत, सुमृति(पु)—स्त्री० दे० 'स्मृति'।
सुमेध—वि० दे० 'सुमेधा'।
सुमेधा—वि० [सं० सुमेधस्] बुद्धिमान्।
सुमेर—पुं० सुमेरु पर्वत।
सुमेरु—पु० [सं०] एक पुराणोक्त पर्वत जो सब पर्वतों का राजा और सोने का कहा गया है। शिव जी। जपमाला के बीच का बड़ा और ऊपरवाला दाना। उत्तर ध्रुव। एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १७ मात्राएँ होती हैं। वि० बहुत ऊँचा। सुंदर। ⊙**वृत्त**=पु० वह कल्पित रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।

सुयश—पु० [सं०] सुकीर्ति, सुनाम। वि० [सं० सुयशस्] यशस्वी।

सुयोग—पु० [सं०] सुअवसर, अच्छा मौका।
सुयोग्य—वि० [सं०] बहुत योग्य, लायक।
सुयोधन—पु० दे० 'दुर्योधन'।

सुरंग—वि० [सं०] सुंदर रंग का। सुंदर, सुडौल। रसपूर्ण। लाल रंग का। स्वच्छ। पु० शिंगरफ। नारंगी। रंग के अनुसार घोड़ों का एक भेद। स्त्री० [हिं०] जमीन या पहाड़ के नीचे बनाया हुआ रास्ता। किले या दीवार आदि के नीचे खोदकर बनाया हुआ वह रास्ता जिसमें बारूद भरकर और आग लगाकर किला या दीवार उड़ाते हैं। एक प्रकार का आधुनिक यंत्र जिससे शत्रुओं के जहाज नष्ट किए जाते हैं। सेंध।
सुर—पु० [सं०] देवता। सूर्य। पंडित, विद्वान्। मुनि, ऋषि। ⊙**कत**(पु)=पु० [हिं०] इंद्र। ⊙**करी**=पु० देवताओं का हाथी, दिग्गज। ⊙**केतु**=पु० देवताओं या इंद्र की ध्वजा। इंद्र। ⊙**गज**=पु० इंद्र का हाथी, ऐरावत। ⊙**गिरि**=पु० सुमेरु। ⊙**गुरु**=पु० बृहस्पति। ⊙**चाप**=पु० इंद्रधनुष। ⊙**जन**=पु० देवसमूह। वि० सज्जन, सुजन। चतुर। ⊙**तरंगिणी**=स्त्री० गंगा। ⊙**ता**=स्त्री० सुर या देवता का भाव या कार्य, देवत्व। देवसमूह। स्त्री० [हिं० सुरत] चिंता, ध्यान। चेत; सुध। वि० सयाना, होशियार, चतुर। ⊙**त्राण**=पु० दे० 'सुरत्राता'। ⊙**त्राता**=पु० विष्णु। श्रीकृष्ण। इंद्र। ⊙**दीर्घिका**=स्त्री० आकाशगंगा। ⊙**द्रुम**=पु० कल्पवृक्ष। ⊙**धनु**=पु० इंद्रधनुष। ⊙**धाम**=पु० स्वर्ग। ⊙**धुनी**=स्त्री० गंगा। ⊙**धेनु**=स्त्री० कामधेनु ⊙**नदी**=स्त्री० गंगा। आकाशगंगा। ⊙**नारी**=स्त्री० देववधू। ⊙**नाह**=पु० [हिं०] इंद्र। ⊙**निलय**=पु० सुमेरु पर्वत। ⊙**पति**=पु० इंद्र। विष्णु। ⊙**पथ**=पु० आकाश। ⊙**पादप**=पु० कल्पवृक्ष। ⊙**पाल**=पु० [हिं०] इंद्र। ⊙**पुर**=पु० स्वर्ग। ⊙**बाला**=स्त्री० देवांगना। ⊙**बृच्छ**(पु)=पुं० [हिं०] दे० 'सुरवृक्ष'। ⊙**बेल**=स्त्री० [हिं०] कल्पलता। ⊙**भवन**=पु० मंदिर। सुरपुरी, अमरावती। ⊙**भूप**=पु० इंद्र। विष्णु। ⊙**भोग**=अमृत। ⊙**भौन**(पु)=पुं० [हिं०] दे०

'सुरभवन'। ⊙मंडल = पुं० देवताओं का समूह अथवा मंडल। एक प्रकार का बाजा। ⊙मणि = पुं० चितामणि। ⊙मौर = पुं० [सं० + हिं०] विष्णु। ⊙राई (पु) = पुं० [हिं०] दे० 'सुरराज'। ⊙राज = पुं० इंद्र। विष्णु। ⊙राय(पु) = पुं० [हिं०] दे० 'सुरराज'। ⊙रिपु = पुं० असुर, राक्षस। ⊙रूख = पुं० [हिं०] दे० 'सुरतरु'। ⊙लोक = पुं० स्वर्ग। ⊙वधू = स्त्री० देवागना। ⊙वृक्ष = पुं० देवताओ का वृक्ष कल्पतरु। ⊙वैद्य = देवताओ के वैद्य अश्विनीकुमार। ⊙श्रेष्ठ = पुं० देवताओ मे श्रेष्ठ। विष्णु। शिव। इंद्र। ⊙सदन = पुं० स्वर्ग। ⊙सरिता = स्त्री० दे० 'गगा'। ⊙साईं = पुं० [हिं०] इंद्र। शिव। ⊙सालु (पु) = वि० [हिं०] देवताओ को सतानेवाला। ⊙साहब = पुं० [फा०] देवताओ के स्वामी इंद्र। ⊙सिंधु = पुं० गगा। ⊙सुदरी = स्त्री० अप्सरा। दुर्गा। देवकन्या। एक योगिनी। ⊙सुरभी = स्त्री० कामधेनु। ⊙सैयां(पु) = पुं० [हिं०] इंद्र। ⊙स्वामी = पुं० इंद्र।

सुर—पुं० [हिं०] स्वर, ध्वनि। ⊙कुदाव (पु) = पुं० धोखा देने के लिये स्वर बदलकर बोलना। ⊙दार = वि० [फा०] जिसके गले का स्वर सुदर हो, सुस्वर, सुरीला। ⊙बहार = पुं० [फा०] सितार की तरह का एक बाजा। ⊙भंग = = पुं० प्रेम, भय आदि मे होनेवाला स्वर का विपर्यास जो सात्विक भावो के अतर्गत है स्वरभग। मु०~मे सुर मिलाना, चापलूसी करना।

सुरक—पुं० नाक पर का वह तिलक जो भाले की आकृति का होता है।

सुरकना—सक० हवा के साथ ऊपर की ओर धीरे धीरे खीचना। सुड़सुड़ शब्द के साथ पान करना, सुड़कना।

सुरकी—स्त्री० बाण के फल के आकार का तिलक।

सुरक्षण—पुं० [सं०] उत्तम रूप से रक्षा करना, रखवाली, हिफाजत। सुरक्षा—अच्छी प्रकार रक्षा, रखवाली, हिफाजत।

सुरक्षित—वि० जिसकी भली भाँति रक्षा की गई हो, उत्तम रूप से रक्षित। किसी विशेष प्रयोजन के लिये निर्धारित।

सुरख, सुरखा—वि० दे० 'सुर्ख'।

सुरखाब—पु० [फा०] चकवा। मु०~का पर लगाना = विलक्षणता या विशेषता होना, अनोखापन होना।

सुरखी—स्त्री० ईंटो का महीन चूरा जो इमारत बनाने के काम मे आता है। दे० 'सुर्खी'।

सुरखुरू—वि० दे० 'सुर्खरू'।

सुरग(पु)†—पु० दे० 'स्वर्ग'।

सुरज(पु)†—पुं० दे० 'सूर्य'।

सुरझना—अक० दे० 'सुलझना'। सुरझाना—सक० दे० 'सुलझाना'।

सुरत—पु० [सं०] सभोग, मैथुन। स्त्री० [हिं०] ध्यान, याद, सुध। मु०~बिसारना = भूल जाना।

सुरतान—(पु) पुं० दे० 'सुलतान'।

सुरति—स्त्री० स्मरण, सुधि। दे० 'सूरत'। स्त्री० [सं०] भोगविलास, कामकेलि, सभोग। अनुराग। ⊙गोपना = स्त्री० वह नायिका जो रतिक्रीडा करके अपनी सखियो आदि से छिपाती हो। ⊙वत = वि० [हिं०] कामातुर। ⊙विचित्रा = स्त्री० वह मध्या जिसकी रतिक्रिया विचित्र हो।

सुरती—स्त्री० तबाकू। खैनी।

सुरथ—पु० [सं०] एक चद्रवशी राजा, पुराणो के अनुसार, इन्होने पहले पहल दुर्गा की आराधना की थी। जयद्रथ के एक पुत्र का नाम। एक पर्वत।

सुरप(पु)—पु० इंद्र।

सुरभान—पुं० इंद्र।

सुरभि—स्त्री० [सं०] सुगध, खुशबू। गौ। गायो की अधिष्ठात्री देवी तथा गोवश की आदि जननी। पृथ्वी। सुरा, शराब। तुलसी। पु० वसतकाल। चैत्रमास। सोना, स्वर्ण। वि० सुगंधित, सुवासित। मनोरम, सुंदर। सुरभित—वि० सुगंधित सौरभित।

सुरभिषक—पु० [स०] अश्विनीकुमार।
सुरभी—स्त्री० [सं०] सुगध, खुशबू। गाय। चदन। ⊙पुर = पु० गोलोक।
सुरमई—वि० [फा०] सुरमे के रग का। हलका नीला रग। इस रग मे रँगा हुआ कपडा।
सुरमा—पु० [फा०] नीले रंग का एक खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आँखो मे लगाया जाता है। ⊙दानी = स्त्री० [हिं०] वह शीशीनुमा पात्र जिसमे सुरमा रखते हैं।
सुरमे(पु)—वि० दे० 'सुरमई'।
सुरम्य—वि० [सं०] अत्यत मनोरम, सुदर।
सुरली—स्त्री० सुदर क्रीड़ा।
सुरवा—पु० दे० 'स्रुवा'।
सुरस—वि० [सं०] सरस, रसीला। स्वादिष्ट, मधुर। सुदर। प्रेम।
सुरसती(पु)+—स्त्री० दे० 'सरस्वती'।
सुरसर—पु० [सं०] मानसरोवर। स्त्री० [हिं०] दे० 'सुरसरि'। ⊙सुता = वि० सरयू नदी।
सुरसरि, सुरसरी—स्त्री० गगा। गोदावरी।
सुरसा—स्त्री० [सं०] एक नागमाता जिसने हनुमान जी को सीता की खोज मे लका जाते समय समुद्र पार करने मे रोका था। एक अप्सरा। तुलसी। ब्राह्मी। दुर्गा। एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से मगण, रगण, भगण, नगण और अत्य गुरु रहता है।
सुरसारी(पु)—स्त्री दे० 'सुरसरी'।
सुरसुराना—अक० कीडो आदि का रेंगना। खुजली होना।
सुरहरा—वि० जिसमे सुरसुर शब्द हो, सुरसुर शब्द युक्त।
सुरही†—स्त्री० एक प्रकार की १६ चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जूआ खेलते हैं। इन कौड़ियो से होनेवाला जूआ।
सुरागना—स्त्री० [सं०] देवपत्नी, देवागना। अप्सरा।
सुरा—स्त्री० [सं०] मदिरा, शराब। ⊙पान = पु० शराब पीना। ⊙पात्र = पु० मदिरा रखने या पीने का पात्र।
सुराई(पु)—स्त्री० शूरता, वीरता, बहादुरी।
सुराख—पु० सूराख, छेद। दे० 'सुराग'।
सुराग—पु० [सं०] अत्यत प्रेम, अत्यत अनुराग। सुदरता। पु० [अ०] टोह, पता।
सुरागाय—स्त्री० एक प्रकार की दोनस्ली गाय जिसकी पूँछ से चँवर बनता है।
सुराज—पु० दे० 'सुराज्य'। दे० 'स्वराज्य'।
सुराज्य—पु० [स०] वह राज्य या शासन जिसमे सुख और शाति विराजती हो।
सुराधिप—पु० [सं०] इद्र।
सुरानीक—पु० [सं०] देवताओ की सेना।
सुरापगा—स्त्री० [सं०] गगा।
सुरापी—वि० [सं०] शराबी, मद्यप।
सुरारि—पु० [सं०] राक्षस, असुर।
सुरालय—पु० [सं०] स्वर्ग। सुमेरु। देवमदिर। शराबखाना।
सुरावट—स्त्री० स्वरो का विन्यास या उतार चढ़ाव। सुरीलापन।
सुराष्ट्र—पु० [सं०] एक प्राचीन देश। किसी के मत से यह सूरत और किसी के मत से काठियावाड है।
सुरासुर—पु० [सं०, सुर और असुर, देवता और दानव। ⊙गुरु = पु० शिव। कश्यप।
सुराही—स्त्री० [अ०] जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध पात्र। बाजू, जोशन आदि मे घुडी के ऊपर लगनेवाला सुराही के आकार का छोटा टुकड़ा। ⊙दार = वि० [फा०] सुराही की तरह का गोल और लबोतरा।
सुरी—स्त्री० [सं०] देवागना।
सुरीला—वि० मीठे सुरवाला, सुस्वर, सुकंठ।
सुरुख—वि० [सं० + फा०] अनुकूल, सदय, प्रसन्न। †वि० दे० 'सुर्ख'।
सुरुखुरु—वि० जिसे किसी काम मे यश मिला हो, यशस्वी।
सुरुचि—स्त्री० [सं०] राजा उत्तानपाद की एक पत्नी, ध्रुव की विमाता। उत्तम रुचि। वि० जिसकी रुचि उत्तम हो।
सुरुज(पु)‡—पु० दे० 'सूर्य'। ⊙मुखी† = पु० दे० 'सूर्यमुखी'।
सुरुवा†—पु० दे० 'शोरबा'।

सुरूप(पु)—पुं० दे० 'स्वरूप'। वि० [सं०] सुंदर रूपवाला, खूबसूरत। पुं० कुछ विशिष्ट देवता और व्यक्ति (यथा कामदेव, दोनो अश्विनीकुमार, नकुल, पुरूरवा, नलकूबर और सांब)। ⊙ता = स्त्री० सुंदरता।

सुरूपा—वि० स्त्री० [सं०] सुंदरी।

सुरेंद्र—पुं० [सं०] इंद्र। राजा। ⊙चाप = पुं० इंद्रधनुष। ⊙वज्रा = स्त्री० एक वर्णवृत्त जिसमे दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं, इंद्रवज्रा।

सुरेंथ—पु० सूंस, शिशुमार।

सुरेश—पुं० [सं०] इंद्र। शिव। विष्णु। कृष्ण। लोकपाल।

सुरेश्वर—पुं० [सं०] इंद्र। ब्रह्मा। शिव। रुद्र। **सुरेश्वरी**—स्त्री० [सं०] दुर्गा। लक्ष्मी। स्वर्गगगा।

सुरंत, सुरंतिन—स्त्री० उपपत्नी, रखनी, रखेली।

सुरोचि—वि० सुंदर।

सुर्ख़—वि० [फ़ा०] रक्त वर्ण का, लाल। पु० गहरा लाल। ⊙रू = वि० तेजस्वी, कांतिवान्। प्रतिष्ठित। सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके मुँह की लाली रह गई हो। **सुर्खी**—स्त्री० [फ़ा०] लाली, अरुणता। लेख आदि का शीर्षक। रक्त, लहू, खून। दे० 'सुरखी'।

सुर्ता—वि० समझदार, होशियार।

सुलंक—पु० दे० 'सोलंक'।

सुलंकी—पु० दे० 'सोलंकी'।

सुलक्षण—वि० [सं०] अच्छे लक्षणवाला। भाग्यवान्, किस्मतवर। पु० शुभ लक्षण, शुभ चिह्न। १४ मात्राओं का एक छंद जिसमे सात मात्राओं के बाद एक गुरु, एक लघु और तब विराम होता है। **सुलक्षणा, सुलक्षणी**—वि० स्त्री० [सं०] अच्छे लक्षणोंवाली।

सुलग—अव्य० पास, निकट। स्त्री० दे० 'सुलगन'।

सुलगन—स्त्री० सुलगने की क्रिया या भाव। **सुलगना**—अक० (लकड़ी आदि का) जलना, दहकना। बहुत संताप होना। **सुलगाना**—सक० जलाना, प्रज्वलित करना। दुखी करना।

सुलच्छन—वि० दे० 'सुलक्षण'। **सुलच्छनी**—वि० दे० 'सुलक्षणा'।

सुलछ—वि० सुंदर।

सुलझन—स्त्री० सुलझने की क्रिया या भाव। **सुलझना**—अक० उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना। जटिलताओं का दूर होना। **सुलझाना**—सक० उलझन या गुत्थी खोलना, जटिलताओं को दूर करना। **सुलझाव**—पु० दे० 'सुलझन'।

सुलटा—वि० सीधा, उलटा का विपरीत।

सुलतान—पु० [फ़ा०] बादशाह। **सुलतान चंपा**—पु० एक प्रकार का पेड़, पुन्नाग।

सुलतानी—स्त्री० बादशाहत, राज्य। एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। वि० लाल रंग का।

सुलप(पु)—वि० दे० 'स्वल्प'। मंद। पु० सुंदर, आलाप।

सुलफ—वि० लचीला, नाजुक, कोमल।

सुलफा—पु० वह तंबाकू जो चिलम में बिना तवा रखे भरकर पिया जाता है। चरस। **सुलफेबाज** = वि० गाँजा या चरस पीनेवाला।

सुलभ—वि० सहज मे मिलनेवाला। आसान। साधारण, मामूली।

सुलह—स्त्री० [अ०] मेल, मिलाप। वह मेल जो किसी प्रकार की लड़ाई समाप्त होने पर हो, संधि। ⊙नामा = पु० [फ़ा०] वह कागज जिसपर परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रों की ओर से मेल की शर्तें लिखी रहती हैं, संधिपत्र। वह कागज जिसपर लड़नेवाले व्यक्तियों या दलों की ओर से समझौते की शर्तें लिखी रहती हैं।

सुलागना(पु)†—अक० दे० 'सुलगना'।

सुलाना—सक [सोना का प्रे०] सोने मे प्रवृत्त करना। लिटाना, डाल देना।

सुलाह(पु)—स्त्री० दे० 'सुलह'। लाभ।

सुलिपि—स्त्री० [सं०] उत्तम लिपि। स्पष्ट लिपि।

सुलूक—पु० दे० 'सलूक'।

सुलेखक—पु० [सं०] अच्छा लेख या निबंध लिखनेवाला।

सुलेमान—पु० [फा०] यहूदियो का एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगबर माना जाता है। एक पहाड जो बिलोचिस्तान और पजाब के बीच मे है। अपनी भारत और चीन की यात्रा के लिये प्रसिद्ध फारस का मुसलमान व्यापारी जो ९वी शताब्दी मे यहाँ आया था।

सुलेमानी—पु० वह घोडा जिसकी आँखें सफेद हो। एक प्रकार का दुरगा पत्थर। वि० सुलेमान का, सुलेमान सबधी।

सुलोचन—वि० [सं०] सुदर आँखोवाला।

सुलोचनी—वि० स्त्री० [हि०] सुदर नेत्रोवाली।

सुल्तान—पु० दे० 'सुलतान'।

सुव—पु० दे० 'सुअन'।

सुवक्ता—वि० उत्तम व्याख्यान देनेवाला।

सुवचन—वि० [सं०] सुदर बोलनेवाला, मिष्ठभाषी।

सुवटा—पु० दे० 'सुअटा'।

सुवन—पु० दे० 'सुअन'। दे० 'सुमन'। पु० [सं०] सूर्य। अग्नि। चद्रमा।

सुवनारा—पु० दे० 'सुअन'।

सुवर्ण—पु० [सं०] सोना, स्वर्ण। धन, सपत्ति। एक प्राचीन स्वर्णमुद्रा जो दस माशे की होती थी। सोलह माशे का एक मान। धतूरा। एक वृत्त का नाम। वि० सुदर वर्ण या रग का, उज्ज्वल। सोने के रग का, पीला। ⊙करणी = स्त्री० शरीर के वर्ण को सुदर करनेवाली एक प्रकार की जडी। घाव भरकर शरीर को स्वस्थ बनानेवाली ओषधि। ⊙रेखा = स्त्री० एक नदी जो बिहार के राँची जिले से निकलकर बगाल की खाडी मे गिरती है।

सुवस(पु)—वि० जो अपने वश वा अधिकार मे हो।

सुवाँग†—पु० दे० 'स्वाँग'।

सुवा—पु० दे० 'सुआ'।

सुवाना(पु)†—स० दे० 'सुलाना'।

सुवार(पु)†—पु० रसोइया। अच्छा दिन।

सुवाल(पु)†—पु० दे० 'सवाल'।

सुवास—पु० [सं०] सुगध। सुदर घर। एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे न, ज, ल (।।।, ।ऽ, ।) होता है। सुवासिक—वि० स्त्री० सुगध करनेवाली। सुवासित—वि० खुशबूदार। सुवासिनी—स्त्री० [सं०] युवावस्था मे भी पिता के यहाँ रहनेवाली स्त्री, चिरंटी। सधवा स्त्री।

सुविचार—पु० [सं०] सूक्ष्म या उत्तम विचार। अच्छा फैसला।

सुविज्ञ—वि० [सं०] बहुत चतुर।

सुविधा—स्त्री० दे० 'सुभीता'।

सुवृता—स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम। १९ अक्षरो का एक वृत्त।

सुवेल—पु० [सं०] त्रिकूट पर्वत जो रामायण के अनुसार लका मे था।

सुवेश—वि० [सं०] सुदर वेशयुक्त। सुदर, रूपवान्।

सुवेषित—वि० दे० 'सुवेश'।

सुव्रत—वि० [सं०] दृढता से व्रत पालन करनेवाला।

सुशिक्षित—वि० [सं०] उत्तम रूप से शिक्षित।

सुशील—वि० [सं०] उत्तम स्वभाववाला। सच्चरित्र। विनीत।

सुशोभन—वि० [सं०] अत्यत शोभायुक्त। बहुत सुदर।

सुश्रव्य—वि० [सं०] जो सुनने मे अच्छा लगे।

सुश्री—[सं०] बहुत सुदर, शोभायुक्त। बहुत धनी। वि० स्त्री० आदरसूचक शब्द जो स्त्रियो के नाम के पहले लगाया जाता है।

सुश्रुत—पु० [सं०] आयुर्वेद के मान्य ग्रथ 'सुश्रुतसहिता' के रचयिता। सुश्रुतसहिता।

सुश्रूखा(पु)—स्त्री० दे० 'शुश्रूषा'।

सुश्रोनि(पु)—वि० सुदर कमरवाली।

सुष(पु)—पु० दे० 'सुख'।

सुषमना(पु)—स्त्री० दे० 'सुषुम्ना'। सुसमनि (पु)—स्त्री० दे० 'सुषुम्ना'।
सुषमा—स्त्री० [सं०] परम शोभा। दस अक्षरो का एक वृत्त।
सुषाना(पु)—अक० दे० 'सुखाना'।
सुषारा(पु)—वि० दे० 'सुखारा'।
सुषिर—पु० [सं०] बाँस। बेंत। आग। संगीत मे वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता हो। वि० छेदवाला, पोला।
सुषुप्त—वि० [सं०] गहरी नीद मे सोया हुआ। स्त्री० [हिं०] दे० 'सुषुप्ति'।
सुषुप्ति—स्त्री० गहरी नीद। अज्ञान [वेदांत]। पातंजल दर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति जिसमे जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है, परंतु उसे उसका ज्ञान नही होता।
सुषुम्ना—स्त्री० [सं०] हठयोग मे शरीर की तीन प्रधान नाड़ियो मे से एक जो नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) मे स्थित है। वैद्यक मे चौदह प्रधान नाडियो मे से एक जो नाभि के मध्य मे है।
सुषोपति(पु)—स्त्री० दे० 'सुषुप्ति'।
सुष्ट—वि० भला, दुष्ट का उलटा।
सुष्ठु—क्रि वि० [सं०] अच्छी तरह। वि० सुंदर, उत्तम।
सुसंग—पु० दे० 'सुसंगति'।
सुसंगति—स्त्री० अच्छी संगत।
सुस—स्त्री० दे० 'सुसा'।
सुसकना—अक० दे० सिसकना'।
सुसज्जित—वि० [सं०] भली भाँति सजाया हुआ, शोभायमान।
सुसताना—अक० थकावट दूर करना, विश्राम करना।
सुसम(पु)—स्त्री० सुषमा सौंदर्य।
सुसमय—पु० [सं०] वे दिन जिनमे अकाल न हो सुकाल, सुभिक्ष।
सुसमा—स्त्री० दे० 'सुषमा'।
सुसमुझि(पु)—वि० दे० 'समझदार'।
सुसुम्ना(पु)—स्त्री० दे० 'सुषुम्ना।'
सुसर, सुसरा—पु० दे० 'ससुर'
ससराल—स्त्री० ससुर का घर, ससुराल।
सुसरित—स्त्री० [सं०] गंगा।
सुसरी—स्त्री० दे० 'ससुरी'। दे० 'सुरसुरी'।
सुसा(पु)†—स्त्री० बहन। पु० एक प्रकार का पक्षी।
सुसाध्य—वि० [सं०] जो सहज मे किया जा सके, सुखसाध्य।
सुसाना—अक० सिसकना।
सुसिद्धि—स्त्री० [सं०] साहित्य मे एक अलंकार, जहाँ परिश्रम एक मनुष्य करता है पर उसका फल दूसरा भोगता है।
ससुकना—अक० दे० 'सिसकना'।
ससुपि, सुसुप्ति—स्त्री० दे० 'सुषुप्ति'।
सुसेन—पु० दे० 'सुषेण'।
सुसैनी(पु)—वि० स्त्री० अच्छे संकेतोवाली।
सुस्त—वि० [फा०] दुर्बल। चिंता आदि के कारण निस्तेज, उदास। जिसकी प्रबलता या गति आदि घट गई हो। जिसमे तात्परता न हो, आलसी। धीमी चालवाला।
सुस्तना, सुस्तनी—स्त्री० [सं०] सुंदर स्तनो से युक्त स्त्री।
सुस्ताई—स्त्री० दे० 'सुस्ती'।
सुस्ताना—अक० दे० 'सुसताना'।
सुस्ती—स्त्री० [फा० सुस्त] सुस्त होने का भाव आलस्य, शिथिलता।
सुस्तैन—पु० दे० 'स्वस्त्ययन'।
सुस्थ—वि० [सं०] नीरोग, तंदुरुस्त। प्रसन्न। भली भाँति स्थित।
सुस्थिर—वि० [सं०] अविचल। कार्य की अधिकता से मुक्त, निश्चित।
सुस्वर—वि० [सं०] सुकंठ, सुरीला।
सुस्वादु—वि० [सं०] बहुत स्वादिष्ट।
सुहंग(पु)—वि० सस्ता।
सुहगम(पु)—वि० सहज।
सुहटा(पु)—वि० सुहावना, सुंदर।
सुहनी(पु)—स्त्री० दे० 'सोहनी'।
सुहराना†—सक० दे० 'सहलाना'।
सुहल(पु)—पु० दे० 'सुलेह'।
सुहव—पु० दे० सूहा' [राग]।
सुहवी(पु)—स्त्री० दे० 'सूहा' [राग]।

सुहाग—पुं० स्त्री का सधवापन, सौभाग्य। वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है, जामा। मांगलिक गीत जो वरपक्ष की स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं। पति। सिंदूर।

सुहागा—पुं० एक प्रकार का क्षार जो गरम गंधकी सोतों से निकलता है।

सुहागिन—स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सौभाग्यवती। **सुहागिनी**—स्त्री० दे० 'सुहागिन'। **सुहागिल**Ⓟ—स्त्री० दे० 'सुहागिन'।

सुहाता—सहने योग्य।

सुहाना—वि० दे० 'सुहावना'। अक० शोभा देना। भला मालूम होना।

सुहायाⓅ—वि० दे० 'सुहावना'।

सुहारी†—स्त्री० सादी, पूरी।

सुहाल—पु० एक प्रकार का तिकोना और खस्ता नमकीन पकवान।

सुहावⓅ—वि० दे० 'सुहावन'। पु० सुंदर हाव।

सुहावताⓅ—वि० दे० 'सुहावना'। **सुहावन** Ⓟ—वि० दे० 'सुहावना'। **सुहावना** वि० दे० देखने मे भला, सुंदर। अक० दे० 'सुहाना'।

सुहावलाⓅ—वि० दे० 'सुहाना'।

सुहास—वि० (सं०) सुंदर या मधुर मुसकानवाला। **सुहासी**—वि० मधुर मुसकानवाला।

सुही—वि० स्त्री० लाल।

सुहृत्—पु० (सं०) अच्छे हृदयवाला। मित्र,दोस्त। **सुहृद्**—पु० (स० सुहृत् के लिये समास मे) दे० 'सुहृत्'।

सुहेल—पु० [अ०] एक चमकीला तारा जिसका उदय शुभ माना जाता है।

सुहेलराⓅ†—वि० दे० 'सुहेला'।

सुहेला—वि० सुहावना, सुंदर। सुखद। पु० मंगलगीत। स्तुति। Ⓟपु० दे० 'सुहेल'।

सूँⓅ†—अव्य० करण और अपादान का चिह्न, सो, से।

सूँघना—सक० नाक द्वारा गंध लेना। मु०—**सिर**⊙ = बड़ों का मंगलकामना के लिये छोटों का मस्तक सूँघना। बहुत कम भोजन करना (व्यंग्य)। (साँप का) काटना।

सूँघा—पु० वह जो केवल सूँघकर बतलाता हो कि अमुक स्थान पर जमीन के अंदर पानी या खजाना है। भेदिया, जासूस।

सूँड—स्त्री० हाथी की लंबी नाक जो प्रायः जमीन तक लटकती है, शुंड। कीट, पतंग आदि छोटे जानवरों का आगे निकला हुआ वह नुकीला अवयव जिससे वे आहार करते और काटते हैं।

सूँडी—स्त्री० एक प्रकार का सफेद कीड़ा जो पौधों को हानि पहुँचाता है।

सूँस—स्त्री० एक प्रसिद्ध बड़ा जलजंतु, सूस।

सूँहⓅ†—अव्य० सामने।

सूअर—पु० एक स्तनपायी जंतु जो मुख्यतः दो प्रकार का होता है—जंगली और पालतू। एक प्रकार की गाली।

सूआ†—पु० सुग्गा, तोता। बडी सूई, सूजा।

सूई—स्त्री० दे० 'सुई'

सूक[1]—पु० दे० 'शूक'। दे० 'शुक्र' (नक्षत्र)।

सूकना†—अक० दे० 'सूखना'।

सूकर—पु० [सं०] सूअर, शूकर ⊙**क्षेत्र** = पु० एक प्राचीन तीर्थ जो मथुरा जिले मे है, सोरों। **सूकरी**—स्त्री० मादा सूअर।

सूका†—पु० चार आने के मूल्य का सिक्का चवन्नी।

सूक्त—पु० [स०] वेदमंत्रों या ऋचाओं का समूह। उत्तम कथन। वि० भली भाँति कहा हुआ। **सूक्ति**—स्त्री० उत्तम उक्ति या कथन, सुंदर पद या वाक्य आदि, सुभाषित।

सूक्षम—वि० पु० दे० 'सूक्ष्म'।

सूक्ष्म—वि० [स०] बहुत छोटा। बारीक या महीन। पु० परमाणु। परब्रह्म। लिंग शरीर। एक काव्यालंकार जिसमे चित्तवृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है। ⊙**दर्शक यंत्र** = पु० एक यंत्र जिससे देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं, खुर्दबीन। ⊙**दर्शिता** = स्त्री० सूक्ष्म

या बारीक बात सोचने समझने का गुण। ⊙दर्शी = वि० बारीक बात को सोचने समझनेवाला, कुशाग्रबुद्धि। ⊙दृष्टि = स्त्री० वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बात भी समझ मे आ जाय। पुं० दे० 'सूक्ष्मदर्शी'। ⊙शरीर = पुं० पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्वो का समूह।

सूख(पु)†—वि० दे० 'सूखा'।

सूखना—अक० रसहीन होना। जल का न रहना या कम हो जाना। उदास होना, तेज नष्ट होना। नष्ट होना। डरना, सन्न होना। दुबला होना।

सूखा—वि० जिसका पानी निकल, उड या जल गया हो। जिसकी आर्द्रता निकल गई हो। उदास, तेजरहित। हृदयहीन, कठोर। कोरा। केवल, निरा। पुं० अनावृष्टि। नदी का किनारा जहाँ पानी न हो। ऐसा स्थान जहाँ जल न हो। सूखा हुआ तबाकू। एक प्रकार की खाँसी। दे० 'सुखडी'। मु० ~जवाब देना = साफ इनकार करना।

सूघड़(पु)—वि० दे० 'सुघड'।

सूचक—वि० [सं०] सूचना देनेवाला। पुं० सूई। दरजी। नाटककार, सूत्रधार। कुत्ता। **सूचना**(पु)—अक० बतलाना। —स्त्री० [सं०] वह बात जो किसी को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय, विज्ञप्ति। विज्ञापन, इश्तहार। बेधना, छेदना। ⊙पत्र = पुं० विज्ञापन, इश्तहार।

सूचा—स्त्री० दे० 'सूचना'। †वि० जो होश मे हो, सावधान।

सूचिका—स्त्री० [पुं०] सूई। हाथी की सूंड।

सूचित—वि० [स०] जिसकी सूचना दी गई हो, ज्ञापित।

सूची—पु० [सं०] चर, भेदिया। चुगुलखोर। खल, दुष्ट। स्त्री० कपडा सीने की सूई। दृष्टि, नजर। सेना का एक प्रकार का व्यूह। नामावली, तालिका। दे० 'सूची-पत्र'। पिंगल के अनुसार एक रीति जिसके द्वारा मात्रिक छदो मे आदि अत लघु या आदि अत गुरु की सख्या जानी जाती है। ⊙कर्म = पु० सिलाई या सूई का काम। ⊙पत्र = पु० वह पुस्तिका आदि जिसमे एक ही प्रकार की बहुत सी चीजो अथवा उनके अगो की नामावली हो, फेहरिस्त।

सूच्छम(पु)—वि० दे० 'सूक्ष्म'। **सूच्छिम**(पु)†—वि० दे० 'सूक्ष्म'।

सूच्य—वि० [स०] सूचित करने योग्य।

सूच्यग्र—पु० [सं०] सूई की नोक। वि० अत्यल्प, बिंदु मात्र।

सूच्यार्थ—पु० [सं०] वह अर्थ जो शब्दो की व्यजना शक्ति से जाना जाता हो।

सूछम(पु)†—वि० दे० 'सूक्ष्म'।

सूज†—स्त्री० दे० 'सूजन'। दे० 'सूई'।

सूजन—स्त्री० सूजने की क्रिया या भाव। फुलाव, शोथ। **सूजना**—अक० रोग, चोट आदि के कारण शरीर के किसी अग का फूलना, शोथ होना।

सूजनी—स्त्री० दे० 'सुजनी'।

सूजा—पु० बडी मोटी सूई, सूआ।

सूजाक—पु० [फा०] मूत्रेंद्रिय का एक प्रवाहयुक्त रोग, औपसर्गिक प्रमेह।

सूजी—स्त्री० गेहूँ का दरदरा आटा जिससे पकवान बनाते हैं। सूई। पु० दरजी।

सूझ—स्त्री० सूझने का भाव। दृष्टि, नजर। अनूठी कल्पना। ⊙ना = अक० दिखाई देना। ध्यान मे आना। छुट्टी पाना। ⊙बूझ = स्त्री० समझ, अक्ल।

सूट—पु० [अ०] पहनने के कपडे, विशेषत कोट पतलून आदि। ⊙केस = पु० पहनने के कपडे रखने का चिपटा बक्स।

सूटा†—पु० मुँह से तबाकू या गाँजे का धुआँ जोर से खीचना। दम।

सूत†—पु० [सं०] एक वर्णसकर जाति। रथ हाँकनेवाला, सारथी। बदी, भाट, चारण। पुराणवक्ता पौराणिक। बढई। सूत्रधार, सूत्रकार। सूर्य। वि० प्रसूत, उत्पन्न। वि० [हिं०] भला, अच्छी। पु० दे० 'सु'। थोडे

शब्दो मे ऐसा पद या वचन जिसमे बहुत अर्थ हो। रुई, रेशम आदि का काता हुआ महीन तार जिससे कपडा बुना जाता है, ततु। तागा, डोरा। नापने का एक माप। सगतराशो और बढइयो की पत्थर या लकडी पर निशान डालने की डोर। पेंच, वाल्टू आदि का वह कटाव जिसके सहारे वे कसे या खोले जाते हैं, चूडी। ⊙मु०~धरना = निशान लगाना।

सूतक—पु० [सं०] जन्म। वह अशौच जो सतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालो को होता है। सूतकी—वि० परिवार मे किसी की मृत्यु या जन्म के कारण जिसे सूतक लगा हो।

सूतता—स्त्री० [सं०] सूत का भाव। सूत या सारथी का काम।

सूतधार—पु० बढई।

सूतना†—अक० दे० 'सोना'।

सूतपुत्र—पु० [सं०] सारथी। कर्ण।

सूता—पु० ततु सूत। स्त्री० [सं०] प्रसूता।

सूति—स्त्री० [सं०] जन्म। प्रसव, जनन। उत्पत्ति का स्थान, उद्गम।

सूतिका—स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसने अभी हाल मे बच्चा जना हो, जच्चा। सूतिकागृह, सूतिकार—पु० सौरी, प्रसवगृह।

सूतिग†—पुं० दे० 'सूतक'।

सूती—वि० सूत का बना हुआ। स्त्री० सीपी।

सूतीघर—पुं० दे० 'सूतिकागार'।

सूत्र—पुं० [सं०] सूत, तागा, डोरा। यज्ञोपवीत, जनेऊ। रेखा, लकीर। करधनी, कटिभूषण। नियम, व्यवस्था। थोडे अक्षरो या शब्दो मे कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करे। पता, सुराग। ⊙कर्म = पुं० बढई या मेमार का काम। जुलाहे का काम। ⊙कार = पु० वह जिसने सूत्रो की रचना की हो। सूत्ररचयिता। बढई। जुलाहा। ⊙ग्रंथ = पुं० वह ग्रथ जो सूत्रो मे हो, जैसे साख्यसूत्र। ⊙धर, ⊙धार = पु० नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट। बढई, काष्ठशिल्पी। पुराणानुसार एक वर्णसकर जाति। ⊙पात = पुं० प्रारभ, शुरू। ⊙पिटक = पुं० बौद्धसूत्रों का एक सग्रह।

सूत्रात्मा—पु० [सं०] जीवात्मा।

सूथन—स्त्री० पायजामा, सुथना। सूथनी—स्त्री० पायजामा, सुथना। एक प्रकार का कद।

सूद—पु० [फा०] लाभ, फायदा। व्याज, वृद्धि, उधार लिए हुए धन के उपयोग के लिये दिया जानेवाला धन। ⊙खोर = वि० बहुत सूद या व्याज लेनेवाला। मु०~दर~ = व्याज पर व्याज, चक्रवृद्धि व्याज।

सूदन—वि० [सं०] विनाश करनेवाला। पु० वध करने की क्रिया, हनन। अगीकरण। फेंकने की क्रिया।

सूदना—सक० नाश करना।

सूदी(पु)—वि० [फा०] (पूंजी या रकम) जो सूद या व्याज पर हो, व्याजू।

सूध(पु)—वि० दे० 'सूधा'। दे० 'शुद्ध'।

सूधना—अक० सिद्ध होना, सत्य होना, ठीक होना।

सूधरा†—वि० पु० 'सूधा'।

सूधे—क्रि० वि० सीधे से।

सून—पुं० [सं०] प्रसव, जनन। कली, कलिका। फूल, पुष्प। फल। पुत्र। (पु)† पुं० [हिं०] वि० दे० 'शून्य'।

सूना—स्त्री० [सं०] बेटी। कसाईखाना। गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चूल्हा, चक्की आदि जिनसे जीवहिंसा की सभावना रहती है। हत्या। पु० [हिं०] एकात, निर्जन स्थान। वि० जिसमे या जिसपर कोई न हो, निर्जन सुनसान, खाली। ⊙पन = पु० सूना होने का भाव। सन्नाटा।

सूनु—पु० [सं०] पुत्र, सतान। छोटा भाई। नाती, दौहित्र। सूर्य।

सूप—पु० [सं०] अनाज फटकने का सरई या सीक का छाज। पु०[सं०]। पकी हुई दाल या उसका रसा। रसे की तरकारी आदि व्यजन। रसोइया। बाण। ⊙क, ⊙कार = पु० रसोइया, पाचक। ⊙शास्त्र = पु० पाकशास्त्र।

सूपच(पु)†—पु० दे० 'श्वपच'।

सूफ—पुं० [अ०] ऊन। वह लत्ता जो देशी काली स्याहीवाली दावात मे डाला जाता है। **सूफी**—पुं० मुसलमानो का एक धार्मिक संप्रदाय जो एकेश्वरवाद मानता है। इस सप्रदाय के लोग धार्मिक मामलो मे अपेक्षाकृत अधिक उदार विचार के होते हैं।

सूबा—पुं० [फा०] शासन की सुविधा के लिये बनाया हुआ किसी देश का कोई भाग प्रात, प्रदेश। दे० 'सूबेदार'। **सूबेदार**—पुं० किसी सूबे या प्रात का शासक। एक छोटा फौजी ओहदा। **सूबेदारी**—स्त्री० सूबेदार का ओहदा या पद।

सूभरⓅ—वि० सुदर, दिव्य। श्वेत, सफेद।

सूम—वि० कृपण, कजूस।

सूरⓅ†—पुं० सुअर। भूरे रग का घोडा। दे० 'शूल'। पठानो की एक जाति। Ⓟ वीर, बहादुर। ⊙ता, ⊙ताईⓅ = स्त्री० दे० 'शूरता'। ⊙सावत = सं० युद्धमत्री। नायक, सरदार।

सूर—पुं० [सं०] सूर्य आक, मदार। पडित, आचार्य। दे० 'सूरदास'। अधा। छप्पय छद के ५५ वें भेद का नाम जिसमे १६ गु और १२० लघु होते हैं। ⊙पुत्र = पुं० सुग्रीव। ⊙सुत = पुं० शनि ग्रह। सुग्रीव। ⊙सुती = स्त्री० यमुना।

सूरज—पुं० [सं०] शनि, सुग्रीव। पुं० [हिं०] शूर का पुत्र। सूर्य। दे० 'सूरदास'। ⊙तनी‡—स्त्री० दे० 'सूर्यतनया'। ⊙मुखी = पुं० एक प्रकार का पौधा जिसका पीले रंग का फूल दिन के समय ऊपर की ओर रहता और सूर्यास्त के बाद झुक जाता है। एक प्रकार की आतिशबाजी। एक प्रकार का छत्र या पखा। ⊙सुत = पुं० [सं०] सुग्रीव। ⊙सुता = स्त्री० दे० 'सूर्यसुता'। मु०~को दीप दिखाना = जो स्वय अत्यंत गुणवान् हो उसे कुछ बतलाना। जो स्वयं विख्यात हो उसका परिचय देना। ~पर थूकना या धूल फेंकना = किसी निर्दोष या साधु व्यक्ति पर लांछन लगाना।

सूरत—स्त्री० कुरान का प्रकरण। Ⓟसुध, स्मरण। वि० अनुकूल, मेहरबान। स्त्री० [फा०] रूप, शक्ल। शोभा, सौंदर्य। उपाय, युक्ति। दशा, हालत। मु०~दिखाना = सामने आना। ~बनाना = रूप बनाना। भेष बदलना। मुँह बनाना, नाक भौ सिकोडना। ~बिगड़ना = चेहरे की रगत फीकी पडना। **सूरति**—स्त्री० दे० 'सूरत'। सुध, स्मरण।

सूरन—पुं० जमीकद, ओल।

सूरमा—पुं० योद्धा, वीर।

सूरमुखी—पुं० [सं०] सूर्यमुखी, शीशा।

सूरवाँ†—पुं० दे० 'सूरमा'।

सूरसेनⓅ—पु० दे० 'शूरसेन'।

सूराख—पु० [फा०] छेद, छिद्र।

सूरि—पुं० [सं०] ऋत्विज। विद्वान्, आचार्य। कृष्ण का एक नाम। सूर्य। जैन साधुओ की एक उपाधि।

सूरीⓅ‡—स्त्री० दे० 'सूली'। Ⓟ‡ पुं० भाला। पु० [सं०] विद्वान्, पडित। स्त्री० विदुषी, पडिता। सूर्य की पत्नी। कुती।

सूरुजⓅ†—पु० दे० 'सूर्य'।

सूरुवाँ‡Ⓟपु० दे० 'सूरमा'।

सूर्य—पु० [स०] आकाश का वह ज्वलंत पिंड जिसकी ३६५ दिन ६ घटो मे पृथ्वी एक परिक्रमा करती है और जो अपनी किरणो से प्रकाश और ताप देता है, सूरज। बारह की सख्या। मदार, आक। ⊙कांत = पु० एक प्रकार का स्फटिक या बिल्लौर। आतशी शीशा। ⊙ग्रहण = पु० सूर्य का ग्रहण या चद्रमा की ओट मे आना। ⊙तनय = पु० दे० 'सूर्यपुत्र'। ⊙तनया = स्त्री० यमुना। ⊙तापिनी = स्त्री० एक उपनिषद् का नाम। ⊙पुत्र = पु० शनि। यम। वरुण। अश्विनीकुमार। सुग्रीव। कर्ण। ⊙पुत्री = स्त्री० यमुना। विद्युत्। बिजली। ⊙प्रभ = वि० सूर्य के समान दीप्तिमान्। ⊙मणि = पु० सूर्यकात मणि। ⊙मुखी = पु० दे० 'सूरजमुखी'। ⊙लोक = पुं० सूर्य का लोक। कहते हैं कि युद्ध में

मरनेवाले इसी लोक को प्राप्त होते हैं। ⊙वंश=पु० क्षत्रियो के दो आदि और प्रधान कुलो मे से एक जिसका आरभ इक्ष्वाकु से माना जाता है। ⊙वंशी=वि० सूर्यवश का, सूर्यवश मे उत्पन्न। ⊙संक्रांति=स्त्री० सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे प्रवेश। ⊙सुत=पु० दे० 'सूर्यपुत्र'। सूर्यावर्त—पु० हुलहुल का पौधा। एक प्रकार की सिर की पीडा आधा सीसी। सूर्यास्त—पु० सूर्य का छिपना या डूबना। सायकाल। सूर्योदय—पु० सूर्य का उदय या निकलना। प्रातःकाल।

सूल—पु० बरछा, भाला। चुभनेवाली नुकीली चीज, कांटा। भाला चुभने की सी पीड़ा। दर्द। भाले का ऊपरी भाग। ⊙ना=सक० भाले से छेदना। पीडित करना। अक० भाले से छिदना। पीडित होना, दुखना।

सूली—स्त्री० प्राणदड देने की प्राचीन प्रथा जिसमे दंडित मनुष्य नुकीले डडे पर बैठा दिया जाता था और उसके ऊपर मुँगरा मारा जाता था। फांसी। (५)†पु० महादेव, शिव।

सूवना(५)†—अक० वहना। पुं० दे० 'सुआ'।

सूस—पुं० दे० 'सूंस'। सूसि(५)†—पु० दे० 'सूस'।

सूहा—पु० एक प्रकार का लाल रग। एक संकर राग। वि० लाल रंग का। सूही—वि० स्त्री० दे० 'सूहा'। स्त्री० लालिमा, लाली।

सृंखला(५)—स्त्री० दे० 'शृखला।

सृंग(५)—पुं० दे० 'शृंग'

सृंगवेरपुर(५)—पुं० दे० 'शृगवेरपुर'।

सृंगी—पुं० दे० 'शृगी।

सृंजय—पु० [सं०] मनु का एक पुत्र। एक वश जिसमे धृष्टद्युम्न हुए थे।

सृक—पुं० [सं०] शूल, भाला। वाण। हवा। (५)पु० [हिं०] माला।

सृकाल—पु० दे० 'सृगाल।

सृण(५)—पुं० बरछा, भाला। वाण, तीर। माला, गजरा।

सृष्टि वस्त्री(५)†—स्त्री० दे० सवित्री।

सृजक(५)—पुं० उत्पन्न करनेवाला, सर्जक।

सृजन(५)—पुं० सृष्टि करने की क्रिया, उत्पादन। सृष्टि। ⊙हार(५)=पुं० सृष्टिकर्ता।

सृजना(५)—सक० सृष्टि करना, उत्पन्न करना।

सृत—वि० [सं०] चला या खिसका हुआ। सृति—स्त्री० पथ, रास्ता। गमन, चलना। सरकना।

सृष्ट—वि० [सं०] उत्पन्न। निर्मित, रचित। मुक्त। छोडा हुआ। सृष्टि—स्त्री० [सं०] उत्पत्ति, पैदाइश। रचना, बनावट। ससार की उत्पत्ति। ससार। प्रकृति। ⊙कर्ता=पु० ससार की रचना करनेवाला, ब्रह्मा। ईश्वर। ⊙विज्ञान=पु० वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार हो।

सेँक—स्त्री० सेक।

सेँकना—सक० सेकना।

सेँगर—पु० एक पौधा जिसकी कलियो की तरकारी बनती है। एक प्रकार का अगहनी धान। क्षत्रियो की एक जाति।

सेँट—स्त्री० दूध की धार। पु० [अं०] सुगंध। पाश्चात्य ढग से तैयार किया हुआ सुगधित द्रव्य।

सेँत—स्त्री० पास का कुछ खर्च न होना। ⊙मेत=क्रि० वि० बिना दाम दिए, मुफ्त मे। व्यर्थ। मु०~का=जिसमे कुछ दाम न लगा हो, मुफ्त का। (५)† बहुत, ढेर का ढेर। ~मे=मुफ्त मे, व्यर्थ, फजूल।

सेँतना(५)†—सक० दे० 'सैतना।

सेँति, सेँती(५)†—स्त्री० दे० 'सेँत'। प्रत्य० पुरानी हिंदी की करण और अपादान की विभक्ति।

सेँथी†—स्त्री० बरछी, भाला।

सेँदुर(५)†—पु० दे० 'सिंदूर'। मु०~चढ़ना=स्त्री का विवाह होना। ~देना=विवाह के समय पति का पत्नी की मांग भरना। सेँदुरिया—पु० एक सदाबहार पौधा जिसमे लाल फूल लगते हैं। वि० सिंदूर के रंग का, खूब लाल। [illegible]—स्त्री० लाल रग की गाय।

सेंद्रिय—वि० [सं०] जिसमे इंद्रियाँ हो ।

सेंध—स्त्री० चोरी करने के लिये दीवार मे किया हुआ बड़ा छेद, संधि, सुरंग, सेन । सेंधना—सक० सेंध या सुरंग लगाना । सेंधिया—वि० दीवार मे सेंध लगाकर चोरी करनेवाला । पु० ग्वालियर के मराठा राजवंश की उपाधि ।

सेंधा—पु० एक प्रकार का खनिज नमक, लाहौरी नमक ।

सेंधुआर—पु० एक प्रकार मांसाहारी जंतु ।

सेंधुर—पु० दे० 'सिंदूर' ।

सेंवई—स्त्री० मैदे के सुखाए हुए सूत के से लच्छे जो दूध मे पकाकर खाए जाते हैं ।

सेंवर(पु)†—पु० दे० 'सेमल' ।

सेंहुड़—पु० दे० 'थूहर' ।

से—प्रत्य० करण और अपादान कारक का चिह्न, तृतीया और पंचमी की विभक्ति । वि० समान, सदृश । (पु) सर्व० वे ।

सेउ(पु)†—पु० दे० 'से' ।

सेकंड—पु० [अं०] एक मिनट का साठवाँ भाग । वि० दूसरा, द्वितीय ।

सेक—पु० [सं०] जलसिंचन, सिंचाई । जलप्रक्षेप, छिड़काव । आँच से सेकने की क्रिया या भाव । ⊙ना = सक० आँच के पास या आग पर रखकर भूनना । आँच के द्वारा गरमी पहुँचाना । आँख सेकना = सुंदर रूप देखना । धूप सेकना = धूप मे रहकर शरीर मे गरमी पहुँचाना ।

सेकेंड—पुं० वि० दे० 'सेकंड' ।

सेक्रेटरी—पु० [अं०] मंत्री ।

सेख(पु)—पु० दे० 'शेष' और 'शेख' ।

सेखर(पु)—पु० दे० 'शेखर' ।

सेगा—पुं० [अ०] विभाग, महकमा । विषय, क्षेत्र ।

सेचक—वि० [सं०] सींचनेवाला ।

सेचन—पु० [सं०] सिंचाई । छिड़काव । अभिषेक ।

सेज—स्त्री० शय्या, पलंग । ⊙पाल = पुं० राजा की सेज पर पहरा देनेवाला व्यक्ति । सेजरिया(पु)†—स्त्री० दे० 'सेज' । सेज्या(पु)—स्त्री० दे० 'शय्या' ।

सेझना—अक० दूर होना ।

सेझदाद्रि(पु)—पु० दे० 'सह्याद्रि' ।

सेटना(पु)†—अक० समझाना, मानना । महत्व स्वीकारना ।

सेठ—पु० बड़ा साहूकार, महाजन । बड़ा या थोक व्यापारी । मालदार आदमी । सुनार ।

सेड़ा—पु० दे० 'सीड़' ।

सेत(पु)—पु० दे० 'सेतु' और 'श्वेत' । ⊙कुली = पुं० सफेद जाति के नाग । ⊙द्युति(पु) = पु० चंद्रमा । ⊙वाह (पु) = पुं० अर्जुन । चंद्रमा (डिं०)

सेतिका—स्त्री० अयोध्या ।

सेती†—अव्य दे० 'से' ।

सेतु—पुं० [सं०] बंधन, बँधाव । बाँध, धुस्स । मेंड़, डाँड़ । नदी आदि के आरपार जाने का रास्ता जो लकड़ी आदि बिछाकर या पक्की जुड़ाई करके बना हो, पुल । हदबंदी । मर्यादा, नियम या व्यवस्था । प्रणव, ओंकार । व्याख्या । ⊙बंध = पु० पुल की बँधाई । वह पुल जो लंका पर चढ़ाई के समय रामचंद्र जी ने भारत और लंका के बीच के समुद्र पर बँधवाया था । सेतुक (पु)—पुं० दे० 'सौतुख' । पु० [सं०] पुल । बाँध ।

सेतुवा†—पु० दे० 'सूस' ।

सेथिया—पु० आँखो का इलाज करनेवाला ।

सेद(पु)—पु० दे० 'स्वेद' ।

सेदज(पु)—वि० दे० 'स्वेदज' ।

सेन—पु० [सं०] शरीर । जीवन । एक भक्त का नाम । पु० [हिं०] बाज पक्षी । बंगाल का एक हिंदू राजवंश जिसने ११वीं शताब्दी से १४वीं शताब्दी तक राज्य किया था । (पु)स्त्री० दे० 'सेना' । ⊙जित् = वि० [सं०] सेना को जीतनेवाला । पुं० श्रीकृष्ण का एक पुत्र । ⊙नय, ⊙पति(पु) = पुं० [हिं०] दे० 'सेनापति' ।

सेना—सक० सेवा या टहल करना । पूजना । नियमपूर्वक व्यवहार करना । पड़ा रहना, निरंतर वास करना । लिए बैठे रहना, दूर न करना । चिड़ियों का गरमी पहुँचाने

के लिये अपने अडी पर बैठना । मु०—चरण~ = तुच्छ चाकरी बजाना। स्त्री० [सं०] युद्ध की शिक्षा पाए हुए और अस्त्र शस्त्र से सजे हुए मनुष्यो का बडा समूह, फौज। भाला, बरछी । इद्र का वज्र । इद्राणी । ⊙जीवी = पु० सैनिक, सिपाही । ⊙नायक = पु० सेना का अफसर, फौजदार। ⊙पति = पु० सेना का नायक, फौजदार। फौज का अफसर । देवताओ की सेना के नायक, कार्तिकेय। शिव। ⊙पाल = पुं० दे० 'सेनापति'। ⊙मुख = पु० सेना का अग्र भाग । सेना का एक खड जिसमे ३ या ९ हाथी, ३ या ९ रथ, ९ या २७ घोडे, और १५ या ४५ पैदल होते थे । ⊙वास = वह स्थान जहाँ सेना रहती हो, छावनी । खेमा । ⊙व्यूह = पु० युद्ध के समय भिन्न भिन्न स्थानो पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अगो की स्थापना या नियुक्ति। सेनाध्यक्ष—पु० सेनापति। सेनानी—पु० सेनापति । कार्तिकेय । एक रुद्र का नाम। सेनापत्य—पु० सेनापति का कार्य, पद या अधिकार ।

सेनि(पु)—स्त्री० दे० 'श्रेणी' ।

सेनिका—स्त्री० मादा बाज पक्षी । एक छद। दे० 'श्येनिका' ।

सेनी—स्त्री० तश्तरी । (पु)मादा बाज पक्षी। (पु)पक्ति, कतार। सीढी, जीना। पुं० विराट के यहाँ अज्ञातवास करते समय का सहदेव का नाम ।

सेब—पु० [फा०] नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक पेड जिसका फल मेवो मे गिना जाता है ।

सेम—स्त्री० एक प्रकार की लता तथा उसकी फली जिसकी तरकारी खाई जाती है ।

सेमई(पु)†—स्त्री० दे० 'सेंवई'।

सेमल—पु० एक बहुत बडा पेड जिसमे लाल फूल लगते हैं और जिसके फलो मे केवल रूई होती है ।

सेमा—पु० एक प्रकार की बड़ी सेम ।

सेमेटिक—पुं० [अं०] मनुष्यो का वह आधुनिक वर्गविभाग जिसमे यहूदी, अरब, सीरियन और मिस्री आदि जातियाँ हैं, सामी ।

सेर—पुं० सोलह छटाँक या अस्सी तोले का एक वजन। एक प्रकार का धान । दे० 'शेर'। वि० [फा०] तृप्त।

सेरा—पु० चारपाई की वे पाटियाँ जो सिरहाने की ओर रहती है। सींची हुई जमीन ।

सेराना(पु)†—अक० शीतल होना, तुष्ट होना । जीवित न रहना। समाप्त होना। चुकना, तै होना। सक० शीतल करना। मूर्ति आदि का जल मे प्रवाह करना ।

सेराब—वि० [फा०] पानी से भरा हुआ। सिंचा हुआ, तराबोर।

सेरी—स्त्री० [फा०] तृप्ति, तुष्टि ।

सेल—पु० बरछा, भाला । स्त्री० बद्धी, माला।

सेलना—अक० मर जाना ।

सेलखड़ी—स्त्री० दे० 'खडिया'।

सेला—पु० रेशमी चादर ।

सेलिया—पु० घोडे की एक जाति ।

सेली—स्त्री० छोटा भाला। छोटा दुपट्टा। गाँती। सूत, ऊन, रेशम या बालो की वह बद्धी या माला जिसे योगी, यती लोग गले मे डालते या सिर मे लपेटते हैं। स्त्रियो का एक गहना ।

सेलून—पु० [अं०] जहाज का प्रधान कमरा। रेल का बढिया सजा सजाया बडा डब्बा । होटल आदि आमोद प्रमोद का स्थान। बाल काटने की दूकान । वह स्थान जहाँ अंग्रेजी शराब बिकती है। जहाज मे कप्तान के खाने की जगह।

सेल्ला—पु० भाला, सेल ।

सेल्ह—पु० दे० 'सेल' ।

सेल्हा†—पुं० दे० 'सेला'।

सेवँर(पु)†—पु० दे० 'सेमल' ।

सेवई—स्त्री० गुंधे हुए मैदे के सूत के से लच्छे जो दूध मे पकाकर खाए जाते हैं।

सेव—पु० सूत या डोरी के रूप मे बेसन का एक पकवान। दे० 'सेब'। स्त्री० दे० 'सेवा'।

सेवक—पुं० [सं०] सेवा करनेवाला, नौकर। भक्त, उपासक। काम में लानेवाला। छोड़कर कहीं न जानेवाला, वास करनेवाला। दरजी। सेवकाई—स्त्री० [हिं०] सेवा, टहल।

सेवग(पु)—पुं० दे० 'सेवक'।

सेवड़ा—पुं० जैन साधुओं का एक भेद। मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान।

सेवना(पु)+—सक० दे० 'सेना'।

सेवनि(पु)‡—स्त्री० दे० 'स्वाति'।

सेवती—स्त्री० [सं०] सफेद गुलाब।

सेवदाना—पुं० एक प्रकार की फलियों के दाने जो मटर की तरह होते हैं।

सेवन—पुं० [सं०] परिचर्या, खिदमत। आराधना। प्रयोग, इस्तेमाल। छोड़कर न जाना, वास करना। उपभोग। सीना। गूंथना।

सेवनी—स्त्री० दासी।

सेवनीय—वि० [सं०] सेवा योग्य। पूजा के योग्य। व्यवहार के योग्य। सीने के योग्य।

सेवर—पुं० दे० 'शबर'।

सेवरा(पु)†—पुं० दे० 'सेवड़ा'।

सेवरी(पु)‡—स्त्री० दे० 'शबरी'।

सेवल—पुं० व्याह की एक रस्म।

सेवा—स्त्री० [सं०] दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया, खिदमत, टहल। नौकरी। उपासना, पूजा। आश्रय, शरण। रक्षा। संभोग। ⊙टहल = स्त्री० [हिं०] परिचर्या, खिदमत। ⊙धारी = पुं० दे० 'पुजारी'। ⊙बंदगी = स्त्री० [फा०] आराधना, पूजा। ⊙वृत्ति—स्त्री० नौकरी, चाकरी की जीविका। मु०~में = समीप, सामने।

सेवाती—स्त्री० दे० 'स्वाति'।

सेवार, सेवाल—स्त्री० पानी में फैलनेवाली एक घास।

सेवि—पुं० [सं०] 'सेवी' का वह रूप जो समास में होता है। (पु)वि० दे० 'सेव्य', 'सेवित'। सेविका—स्त्री० सेवा करनेवाली, नौकरानी। सेवित—वि० जिसकी सेवा की गई हो। पूजित। व्यवहृत। उपभोग किया हुआ। सेवी—वि० सेवा करनेवाला। पूजा करनेवाला।

सेव्य—वि० [सं०] जिसकी सेवा करना उचित हो। जिसकी सेवा करनी हो या जिसकी सेवा की जाय। पूजा या आराधना के योग्य। काम में लाने लायक। रक्षण के योग्य। संभोग के योग्य। पुं० स्वामी, मालिक। पीपल का पेड़। पानी। ⊙सेवक = पुं० सेव्य या स्वामी और सेवक। ⊙सेवकभाव = पुं० उपास्य को स्वामी या मालिक के रूप में समझना (भक्तिमार्ग में उपासना का वह भाव जिसमें हनुमान जी ने राम की उपासना की थी)।

सेश्वर—वि० [सं०] ईश्वरयुक्त। जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो।

सेष(पु)—पुं० दे० 'शेष', 'शेख'।

सेस(पु)—पुं०, वि० 'शेष'।

सेसरंग(पु)—पुं० सफेद रंग।

सेसर—पुं० ताश का एक खेल। जालसाजी। जाल। मुँह लगना, बहुत अधिक सवाल जवाब।

सेसरिया—वि० छलकपट कर दूसरों का माल मारनेवाला, जालिया।

सेहत—स्त्री० [अ०] सुख, चैन। रोग से छुटकारा। ⊙खाना—पुं० [फा०] पाखाने, पेशाब आदि की कोठरी।

सेहर—पुं० फूल की या तार और गोटों की बनी मालाओं की पंक्ति जो दूल्हे के मौर के नीचे रहती है। विवाह का मुकुट। वे मांगलिक गीत जो विवाह के अवसर पर वर के यहाँ गाए जाते हैं। मु०—किसी के सिर~बँधना = किसी का कृतकार्य होना।

सेही—स्त्री० साही (जंतु)।

सेहुँड़(पु)†—पुं० थूहर।

सेहुआँ—पुं० एक प्रकार का चर्मरोग।

सेंतना—सक० संचित करना, बटोरना। हाथों से समेटना। सँभालकर रखना। भूमि को पानी, गोबर, मिट्टी आदि से लीपना।

सेंथी†—स्त्री० भाला। बरछी।

सेंधव—पुं० [सं०] सेंधा नमक। सिंध का घोड़ा। सिंध देश का निवासी। सिंध

देश का। समुद्र सबंधी। ⊙पति = पुं० सिंधवासियों के राजा जयद्रथ। सैंधवी—स्त्री० संपूर्ण जाति की एक रागिनी।
सैंधू—स्त्री० दे० 'सैंधवी'।
सैंवर†—पुं० दे० 'सांभर'।
सैंह(पु)†- -क्रि० वि० दे० 'सौंह'।
सैंहथी—स्त्री० दे० 'सैंथी'।
सै—वि०, पुं० सौ। वि० तत्व, सार। वीर्य, शक्ति। बढती, बरकत।
सैकडा—पुं० सौ का समूह। सैकडे—क्रि० वि० प्रति सौ के हिसाब से, फी सदी। सैकडो- -वि० कई सौ। बहुसख्यक।
सैकत, सैकतिक—वि० [सं०] रेतीला। बालू का बना।
सैकल—पुं० [अ०] हथियारो को साफ करने और उनपर सान चढाने का काम। ⊙गर = पुं० [फा०] तलवार, छुरी आदि पर बाढ रखनेवाला।
सैथी—स्त्री० बरछी।
सैदू(पु)‡—पुं० दे० 'सैयद'।
सैद्धांतिक—पु० [सं०] सिद्धात को जानने-वाला, विद्वान्। तात्विक। वि० सिद्धात-सबधी।
सैन(पु)‡- पु० दे० 'शयन'। एक प्रकार का बगला। स्त्री० सकेत इशारा। चिह्न, निशान। (पु)‡दे० 'सेना'। ⊙पति(पु) = पु० दे० 'सेनापति'।
सैना(पु)‡—स्त्री० दे० 'सेना'।
सैनापत्य—पु० [सं०] सेनापति का पद या कार्य। वि० सेनापति सबधी।
सैनिक- पु० [सं०] सेना या फौज का आदमी, सिपाही। सतरी। वि० सेना सबधी, सेना का। ⊙ता = स्त्री० सेना या सैनिक का कार्य। युद्ध, लडाई।
सैनिका—स्त्री० एक छद।
सैनी—पु० हज्जाम। (पु)‡ स्त्री०दे० 'सेना'। पु० सैनिक।
सैनू- पु०एक प्रकार का बूटेदार कपडा, नैनू।
सैनेय(पु)—वि० लडने के योग्य।
सैनेश—पु० सेनापति।
सैन्य—पु० [सं०] सैनिक, सिपाही। सेना। शिविर, छावनी। वि० सेना सबधी, फौज का। ⊙सज्जा = स्त्री० सेना को आवश्यक अस्त्रशस्त्रो से सज्जित करना। सैन्याध्यक्ष—पु० सेनापति।
सैयतिक—पु० [सं०] सिंदूर, सेंदुर।
सैयद—पु० [अ०] मुहम्मद साहब के नाती, हुसैन के वश का आदमी। मुसलमानो के चार वर्गो मे से एक वर्ग।
सैयां(पु)†- -पु० पति।
सैया(पु)—स्त्री० दे० 'शय्या'।
सैरध्र—पु० [सं०] घर का नौकर। एक सकर जाति। सैरंध्री—स्त्री० सैरध्र नामक सकर जाति की स्त्री। अतपुर या जनाने मे रहनेवाली दासी। द्रौपदी का अज्ञातवास का नाम।
सैर—पु० [फा०] मन बहलाने के लिये घूमना फिरना। बहार, मौज। मित्र मडली का कही बगीचे आदि मे खानपान और नाचरग। कौतुक, तमाशा। ⊙गाह = पु० सैर करने की अच्छी जगह।
सैल‡—स्त्री० दे० 'सैर'। [अ०] बाढ, जलप्लावन। स्रोत, बहाव। (पु)पु० दे० 'शैल'। ⊙जा(पु) = स्त्री० = दे० 'शैलजा'। ⊙सुता(पु) = स्त्री० दे० 'शैलसुता'।
सैलानी—वि० मनमाना घूमनेवाला। आनदी, मनमौजी।
सैलाबी—वि० [फा०] जो बाढ आने पर डूब जाता हो, बाढवाला। स्त्री० तरी, सीला। सैलूख(पु)†—पु० दे० 'शैलूष'।
सैव(पु)†—पु० दे० 'शैव'।
सैवल(पु)—पु० दे० 'शैवाल'। सैवलिनी, सैवालिनी (पु)—स्त्री० दे० 'शैवालिनी'।
सैव्य(पु)—पुं० दे० 'शैव्य'।
सैसव(पु)—पु० दे० 'शैशव'।
सैहथी—स्त्री० बरछी।
सों(पु)†—प्रत्य० करण और अपादान कारक का चिह्न, द्वारा से। वि० दे० 'सा'। अव्य० दे० 'सौंह'। क्रि० वि० सग, साथ। सर्व० दे० 'सो'। स्त्री० दे० 'सौंह'।
सोंच—पु० दे० 'सोच'।
सोंचर नमक—पु० दे० 'काला नमक'।

सोटा—पु० मोटी छड़ी, लाठी। भंग घोटने का मोटा डंडा। ⊙**बरदार** = पु० [फा०] आसाबरदार, बल्लमबरदार।

सोंठ—स्त्री० सुखाया हुआ अदरक, शुंठि। वि० शुष्क, नीरस।

सोठौरा†, **सोठौरा**—पु० एक प्रकार का लड्डू जिसमें मेवों के साथ सोंठ भी पड़ता है (प्रसूता स्त्री के लिये)।

सोंधⓅ—अव्य दे० 'सौंह'।

सोंधा—वि० सुगंधित, महकनेवाला (मिट्टी के नए बरतन में पानी पड़ने या चना, बेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगंध के समान।) गर्मी से तपी हुई भूमि से पहली वर्षा होने पर उठनेवाली सुगंध से युक्त। पु० एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिससे स्त्रियाँ केश धोती हैं। एक सुगंधित मसाला जो नारियल के तेल में उसे सुगंधित करने के लिये मिलाते हैं। सुगंध।

सोंपना—सक० दे० 'सौंपना'।

सोंबनिया—पु० एक आभूषण जो नाक में पहना जाता है।

सोंहⓅ†—स्त्री०, अव्य० दे० 'सौंह'।

सोंहींⓅ—अव्य० दे० 'सौंह'।

सो—सर्व० वह। Ⓟवि० दे० 'सा'। अव्य० इसलिये, निदान।

सोऽहम्—[सं०] उपनिषदों का एक महावाक्य जिसका अर्थ है 'वही मैं हूँ' अर्थात् 'मैं ब्रह्म हूँ।' (वेदांत का सिद्धांत है कि जीव और ब्रह्म एक ही है)।

सोऽहमस्मि—दे० 'सोऽहम्'।

सोअनाⓅ—अक० दे० 'सोना'।

सोआ—पु० एक प्रकार का साग।

सोई—सर्व० दे० 'वही'। अव्य० दे० 'सो'।

सोकⓅ—दे० 'शोक'।

सोकन—पु० दे० 'सोखन'।

सोकनाⓅ—सक० शोक करना।

सोकितⓅ—वि० शोकयुक्त।

सोक्कन—पु० दे० 'सोखन'।

सोखकⓅ—वि० शोषण करनेवाला। नाश करनेवाला।

सोखता—वि० पु० दे० 'सोख्ता'।

सोखन—पुं० एक प्रकार का जंगली धान।

सोखाना—सक० शोषण करना, चूस लेना।

सोख्ता—पु० [फा०] एक प्रकार का खुरदुरा कागज जो स्याही सोख लेता है। वि० जला हुआ।

सोगⓅ—पुं० दुःख, रंज। **सोगिनी**Ⓟ—वि० स्त्री० शोक करनेवाली। **सोगी**—वि० शोक करनेवाला, दुखित।

सोच—पुं० सोचने की क्रिया या भाव। चिंता। शोक, रंज। पछतावा। ⊙**विचार** = पुं० [सं०] समझबूझ, गौर। आगापीछा, अनिश्चय। **सोचना**—अक० मन में किसी बात पर विचार और गौर करना, चिंता करना। खेद करना।

सोचुⓅ—पुं० दे० 'सोच'।

सोज—स्त्री० सूजन। दे० 'सौंज'।

सोजनी—स्त्री० दे० 'सुजनी'।

सोझ, सोझा—वि० सरल। सामने की ओर गया हुआ, सीधा।

सोटा—पु० दे० 'सुअटा'।

सोढर—वि० भोंदू, बेवकूफ।

सोत—पु० स्रोत या 'सोता'।

सोता—पु० जल की बराबर बहनेवाली छोटी धारा, चश्मा। नदी की शाखा, नहर।

सोति—स्त्री० स्रोत, धारा। दे० 'स्वाति'। पु० दे० 'श्रोत्रिय'।

सोदर—पु० [सं०] सगा भाई। वि० एक गर्भ से उत्पन्न।

सोधⓅ†—पु० खोज, पता, टोह। संशोधन। चुकता होना। महल, प्रासाद। सक० दूर करना। निश्चित करना। खोजना। धातुओं का ओषधि रूप में व्यवहार करने के लिये संस्कार। दुरुस्त करना। ऋण चुकाना। Ⓟपु० ढूँढ़, खोज।

'**सोन**—वि० लाल, अरुण। पु० एक नद जो विंध्य पर्वत के अमरकंटक नामक शिखर से निकलकर पटना के पास गंगा में मिलता है। एक प्रकार का जलपक्षी। दे०

'सोना'। ⊙कीकर=पु० एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़। ⊙केला=पु० चंपा केला, सुवर्णकदली। ⊙चिरी=स्त्री० नटी। ⊙ जर्द स्त्री० दे० 'सोनजूही'। ⊙जुही, जूही=स्त्री० एक प्रकार की जूही जिसके फूल पीले होते हैं, स्वर्ण-यूथिका। ⊙हार=पु० एक प्रकार का समुद्री पक्षी।

सोनवाना—वि० दे० 'सुनहला'।

सोनहा—पु० कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली जानवर।

सोना—अक० नींद लेना, शयन करना। शरीर के किसी अंग का सुन्न होना। मु० **सोते जागते**=हर समय। स्त्री० एक प्रकार की मछली। पु० मझोले कद का एक वृक्ष। सुंदर उज्ज्वल पीले रंग की एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके सिक्के और गहने बनते हैं, स्वर्ण। बहुत सुंदर वस्तु। राजहंस। ⊙गेरू=पु० गेरू का एक भेद। ⊙पाठा=पु० एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष। इसकी छाल, फल और बीज औषध के काम में आते हैं। इसी वृक्ष का एक और भेद। ⊙मक्खी=स्त्री० एक खनिज पदार्थ जिसकी गणना धातुओं में है। मु०~छूते मिट्टी होना =अच्छे या बने बनाए कार्य में योग देते ही उसका नष्ट होना (घोर विपत्ति का सूचक)। **सोने का मिट्टी होना**= सब कुछ नष्ट होना। **सोने में घुन लगना** =असंभव बात होना। **सोने में सुगंध**= किसी बहुत बढ़िया चीज में और अधिक विशेषता होना। **सोनार**—पु० दे० 'सुनार'।

सोनित⑤—पुं० दे० 'शोणित'।

सोनी†—पु० सुनार।

सोपत—पु० सुभीता, सुपास।

सोपान—पु० [सं०] सीढ़ी, जीना।

सोपि—वि० [सं० स+अपि] वही। वह भी।

सोफता—पु० एकांत स्थान। रोग आदि में कुछ कमी होना।

सोफा—पु० [अं०] एक प्रकार का लंबा गद्दीदार आसन, कोच।

सोफियाना—वि० सूफियों का, सूफी संबंधी। जो देखने में सादा, पर बहुत भला लगे।

सोफी—पु० दे० 'सूफी'।

सोभ⑤—स्त्री० दे० 'शोभा'। ⊙ना⑤†=अक० सोहना, शोभित होना। **सोभाकारी**—वि० सुंदर। **सोभित**—वि० दे० 'शोभित'।

सोभार—वि० उभारदार। क्रि० वि० उभार के साथ।

सोम—पु० [सं०] प्राचीन काल की एक लता जिसका रस मादक होता था और जिसे प्राचीन वैदिक ऋषि पान करते थे। एक प्रकार की लता जो वैदिक काल के सोम से भिन्न है। वैदिक काल के एक प्राचीन देवता। चंद्रमा। सोमवार। कुबेर। यम। वायु। अमृत। जल। सोमयज्ञ। स्वर्ग, आकाश। ⊙कर=पुं० चंद्रमा की किरण। ⊙जाजी=पुं० [हिं०] दे० 'सोमयाजी'। ⊙नाथ=पुं० द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग है। ⊙पान=पु० सोम पीना। ⊙पायी =वि० सोम पीनेवाला। ⊙प्रदोष=पु० सोमवार को किया जानेवाला प्रदोष व्रत। ⊙याग=पु० एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस पान किया जाता था। ⊙याजी=पु० वह जो सोमयाग करता हो। ⊙रस=पु० सोमलता का रस। ⊙राज=पु० चंद्रमा। ⊙राजी=पु० बकुची। दो यगण का एक वृत्त। ⊙वंश=पु० चंद्रवंश। ⊙वंशीय=वि० चंद्र-वंश संबंधी। ⊙वती अमावास्या= स्त्री० सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्य तिथि मानी जाती है। ⊙वल्लरी=स्त्री० ब्राह्मी। एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण होते हैं। ⊙वल्ली=स्त्री० दे० 'सोम'। ⊙वार=पुं० सप्ताह के सात दिनों में से एक जो सोम अर्थात् चंद्रमा का माना है और रविवार के बाद पड़ता है, चंद्रवार। ⊙सुत=पु० बुध।

सोमन—पुं० एक प्रकार का अस्त्र ।
सोमनस—पु० दे० 'सौमनस्य' ।
सोमवारी—स्त्री० दे० 'सोमवती अमावास्या' । वि० सोमवार सबंधी ।
सोमास्त्र—पु० [सं०] एक अस्त्र जो चद्रमा का अस्त्र माना जाता है ।
सोमेश्वर—पु० [सं०] दे० 'सोमनाथ' । सगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम ।
सोय(पु)—सर्व० वही । दे० 'सो' ।
सोया—वि० निद्रित, सुप्त । पु० दे० 'सोआ' ।
सोर(पु)—पु० शोर, प्रसिद्धि, नाम । स्त्री० जड, मूल ।
सोरठ—पुं० गुजरात और दक्षिणी काठियावाड का प्राचीन नाम । सोरठ देश की राजधानी, सूरत । एक ओडव राग । **सोरठा**—पु० ४८ मात्राओ का एक छद जिसके पहले और तीसरे चरण मे ११–११ और दूसरे तथा चौथे चरण मे १३–१३ मात्राएँ होती हैं ।
सोरनी†—स्त्री० झाडू, बुहारी । मृतक का त्रिरात्र नामक संस्कार ।
सोरह(पु)‡—वि० दे० 'सोलह' । **सोरही**†—स्त्री० जुआ खेलने के लिये १६ चित्ती कौडियाँ । वह जुआ जो १६ कौडियों से खेलते हैं ।
सोरा(पु)‡—पु० दे० 'शोरा' ।
सोलंकी—पुं० क्षत्रियो का एक प्राचीन राजवश जिसका अधिकार गुजरात पर बहुत दिनो तक था ।
सोलह—वि० जो गिनती मे दस से छह अधिक हो, षोडश । पुं० दस और छह की सख्या या अंक (१६) । पु०~परियो का नाच । दे० 'सोरही' । **सोलहो आने** = पूरा पूरा ।
सोला—पुं० एक प्रकार का ऊंचा झाड जिसकी डालियो के छिलके से अंगरेजी ढंग की टोपी बनती है ।
सोवज—पु० दे० 'सावज' ।
सोवन(पु)†—पु० सोने की क्रिया या भाव ।
सोवना(पु)†—अक० दे० 'सोना' ।
सोवरी†—स्त्री० दे० 'सौरी' ।
सोवा—पु० दे० 'सोआ'
सोवाना—सक० दे० 'सुलाना' ।
सोवियट, सोवियत—पुं० [रूसी] रूस मे सैनिको और मजदूरो द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियो की सभा । आधुनिक रूसी प्रजातंत्र जो इन सभाओ के प्रतिनिधियो मे चलता है ।
सोवैया(पु)†—पुं० सोनेवाला ।
सोषण(पु)—वि० सोखनेवाला ।
सोषना(पु)—अक० दे० सोखना' ।
सोषु, सोस(पु)—वि० सोखनेवाला ।
सोसन—पु० फूल का एक पौधा जो भारतवर्ष मे हिमालय के पश्चिमोत्तर भाग मे पाया जाता है ।
सोसनी—वि० सोसन के फूल के रग का लाली लिए नीला ।
सोसाइटी—वि० [अं०] समाज । सभा, समिति ।
सोस्मि(पु)—सं० दे० 'सोऽहम्' ।
सोह(पु)‡—क्रि० वि० दे० सौंह' । अक० शोभित होना । अच्छा लगना ।
सोहं, सोहंग—दे० 'सोऽहम्' ।
सोहगी—स्त्री० तिलक चढने के बाद की एक रस्म जिसमे लडकी के लिय कपडे, गहने आदि जाते हैं । सिंदूर मेहदी आदि सुहाग की वस्तुएँ ।
सोहन—स्त्री० एक प्रकार की बडी चिडिया । पुं० सुंदर पुरुष, नायक । वि० अच्छा लगनेवाला, सुहावना । ⊙**पपड़ी** = स्त्री० एक प्रकार की मिठाई । ⊙**हलवा** = पुं० एक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई । **सोहना**†—वि० मनोहर । **सोहनी**—स्त्री० झाडू । वि० सुंदर, सुहावनी ।
सोहबत—स्त्री० [अ०] सगत । सभोग ।
सोहमस्मि—दे० 'सोऽहम्' ।
सोहर—पु० दे० 'सोहला' । स्त्री० सूतिका-गृह, सौरी ।
सोहरद(पु)‡—पु० दे० 'सौहार्द' ।
सोहराना—सक० दे० 'सहलाना' ।
सोहला—पुं० वह गीत जो घर मे बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं । मागलिक गीत ।

सोहाइन(पु)‡—वि० दे० 'सुहावना'।
सोहाग†—पु० दे० 'सुहाग'। सोहागिन—स्त्री० दे० 'सुहागिन'। सोहागिल—स्त्री० दे० 'सुहागिन'।
सोहाता—वि० सुहावना, शोभित। सुंदर, अच्छा। सोहाना†—अक० शोभित होना, सजना। अच्छा लगना, रुचना। सोहाया—वि० शोभित, शोभायमान, सुंदर।
सोहारी—स्त्री० पूरी।
सोहावना—अक० दे० 'सोहाना'। वि० दे० 'सुहावना'।
सोहासित(पु)†—वि० प्रिय लगनेवाला, रुचिकर। ठकुरसोहाती।
सोहिं†—क्रि० स्त्री० दे० 'सौंह'।
सोहिनी—वि० स्त्री० सुहावनी। स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।
सोहिल—पु० अगस्त्य तारा।
सोहिला—पुं० दे० 'सोहाला'।
सोहीं(पु)†—क्रि० वि० सामने।
सोहैं(पु)—क्रि० वि० सामने, आगे।
सौं(पु)—स्त्री० दे० 'सौंह'। अव्य, प्रत्य० दे० 'सो या 'सा'।
सौंकारा, सौंकेरा—पुं० सबेरा, तड़का। सौंकेरे = क्रि०वि० सवेरे, तड़के। जल्दी।
सौंघा—वि० उत्तम। उचित, ठीक। सौंघई—अधिकता।
सौंचना†—सक० मलत्याग करना या उसके बाद हाथ पैर धोना। आबदस्त लेना।
सौंचाना—सक० शौच कराना, हगाना। आबदस्त कराना।
सौंचर—पु० दे० 'सोचर नमक'।
सौंज(पु)—स्त्री० दे० 'सौज'। सौंजाई(पु)—स्त्री० दे० 'सौज'।
सौंड़, सौंड़ा(पु)—पु० ओढ़ने का भारी कपड़ा।
सौंतुख(पु)—पु० सामने। क्रि० वि० आँखों के आगे, सामने।
सौंदन—स्त्री० धोबियों का कपड़ा धोने से पहले रेह मिले पानी में भिगोना। सौंदना—सक० आपस में मिलाना, सानना।
सौंदर्ज—पु० दे० 'सौंदर्य'।
सौंदर्य—पु० [सं०] सुंदरता, खूबसूरती।
सौंध(पु)—पु० दे० 'सौध'। स्त्री० सुगंध। सौंधना—सक० सुगंधित करना, बासना। सौंधा—वि० दे० 'सोंधा'। रुचिकर, अच्छा।
सौंनमक्खी—स्त्री० दे० 'सोनामक्खी'।
सौंपना—सक० सुपुर्द करना। सहेजना।
सौंफ—स्त्री० एक छोटा पौधा जिसके बीजों का औषध के अतिरिक्त मसाले में भी व्यवहार करते हैं। सौंफिया, सौंफी—वि० सौंफ का बना हुआ। जिसमें सौंफ का योग हो। स्त्री० सौंफ की बनी हुई शराब।
सौंभरि—पु० दे० 'सौभरि'।
सौंरई†—स्त्री० साँवलापन।
सौंर—स्त्री० दे० 'सौरी'।
सौंरना(पु)—सक० स्मरण करना। अक० दे० 'सँवारना।
सौंह(पु)†—स्त्री० शपथ, कसम। (पु) क्रि० वि० सामने।
सौंहन—पु० दे० 'सोहन'।
सौंही—स्त्री० एक प्रकार का हथियार।
सौ—वि० नब्बे और दस, शत। नब्बे और दस की संख्या या अंक (१००)। मु०~बात की एक बात = तात्पर्य और निचोड़।
सौक—स्त्री० सौत। वि० एक सी। सौकन‡—स्त्री० दे० 'सौत'।
सौकर्य—पुं० [सं०] सुकरता, सुसाध्यता। सुविधा, सुभीता।
सौकुमार्य—पु० [सं०] सुकुमारता, नाजुकपन। जवानी। काव्य का एक गुण जिसमें ग्राम्य और श्रुतिकटु शब्दों का प्रयोग त्याज्य माना गया है।
सौख†(पु)—पु० 'शौक'।
सौख्य—पुं० [सं०] सुख का भाव। सुख, आराम।
सौगंद—स्त्री० [फा०] शपथ, कसम।
सौगंध—पु० [सं०] सुगंधित तेल, इत्र आदि का व्यवहार करनेवाला, गंधी। सुगंध। स्त्री० [हिं०] सौगंद, कसम।

सौगत, सौगतिक—पुं० [सं०] 'सुगत' का अनुयायी, बौद्ध । नास्तिक ।
सौगरिया—पुं० क्षत्रियो की एक जाति ।
सौगात—स्त्री० [तु०] वह वस्तु जो परदेश से इष्ट मित्रो को देने के लिये लाई जाय, भेंट, तोहफा । **सौगाती**—वि० [हि०] सौगात सबधी । सौगात मे देने योग्य, बढिया ।

सौंधा†—वि० सस्ता, महँगा का उलटा ।
सौच(पु)—पुं० दे० 'शौच' ।
सौज—स्त्री० उपकरण, साज सामान । ⊙ना—अक० दे० 'सजना' ।
सौजन्य—पु० [सं०] सुजन का भाव, भलमनसत ।
सौजा—पु० वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय ।
सौत—स्त्री० किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका, सपत्नी । मु०—सौतियाडाह = दो सौतो मे होनेवाली डाह या ईर्ष्या । द्वेष । **सौतन, सौतिन**—स्त्री० दे० 'सौत' । **सौतेला**—वि० सौत से उत्पन्न । सौत का । जिसका सबध सौत के रिश्ते से हो ।

सौतुक, सौतुख(पु)—पुं० दे० 'सौंतुख' ।
सौत्रामणी—स्त्री० [सं०] इद्र के प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ ।
सौदा—पु० [अ०] क्रय विक्रय की वस्तु, माल । लेनदेन, व्यवहार । व्यापार । ⊙ सुलफ = खरीदने की चीज, वस्तु । **सौदाई**—पु० [अ० सौदा] पागल, बावला । ⊙गर = स्त्री० [फा०] पागलपन, उन्माद । पु० [फा०] व्यापारी, व्यवसायी । ⊙गरी = पु० [फा०] व्यापार, तिजारत ।

सौदामनी—स्त्री० [सं०] बिजली, विद्युत् । **सौदामिनी**—स्त्री० [हि०] दे० 'सौदामनी' ।
सौध—पुं० [सं०] भवन, प्रासाद । चाँदी, रजत । दूधिया पत्थर ।
सौधना—सक० दे० 'सोधना' ।
सौन(पु)—क्रि० वि० सामने ।
सौनक—पु० दे० 'शौनक' ।
सौनन†—स्त्री० दे० 'सौंदन' ।
सौना(पु)—पु० दे० 'सोना' ।
सौपना(पु)—सक० दे० 'सौंपना' ।
सौभ—पु० [सं०] राजा हरिश्चद्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश मे मानी गई है, कामचारिपुर । एक प्राचीन जनपद । उक्त जनपद के राजा ।

सौभग—पु० [सं०] सौभाग्य, खुशकिस्मती, सुख, आनद । ऐश्वर्य, धन दौलत । सौंदर्य ।
सौभद्र—पुं० [सं०] सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु । वह युद्ध जो सुभद्रा के कारण हुआ था । वि० सुभद्रा सबधी ।
सौभागिनी—स्त्री० सधवा स्त्री, सुहागिन ।
सौभाग्य—पुं० [सं०] अच्छा भाग्य । सुख, आनद । कल्याण, कुशल । सुहाग, अहिवात । ऐश्वर्य । सुदरता । ⊙वती = वि० स्त्री० (स्त्री) जिसका सौभाग्य अ॰ सुहाग (पति) बना हो, सधवा । एक आदरसूचक उपाधि जो सधवा स्त्रियों के नाम के पूर्व लगती है । ⊙वान् = वि० अच्छे भाग्यवाला । सुखी और सपन्न ।
सौभिक्ष्य—पु० [सं०] 'सुभिक्ष' का भाववाचक रूप । वि० दे० 'सुभिक्ष' ।

सौम(पु)—वि० दे० 'सौम्य' ।
सौमन—पुं० [सं०] एक प्रकार का अस्त्र ।
सौमनस—वि० [सं०] फूलो का । मनोहर, प्रिय । पु० प्रफुल्लता, आनद । पश्चिम दिशा का हाथी (पुराण) । अस्त्र निष्फल करने का एक अस्त्र । **सौमनस्य**—पु० प्रसन्नता । प्रेम । सतोष । अनुकूलता ।
सौमित्र—पु० [सं०] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण । मित्रता ।
सौमित्रा(पु)—स्त्री० दे० 'सुमित्रा' ।
सौम्य—वि० [सं०] सोमलता संबधी । चद्रमा सबधी । शीतल और स्निग्ध । सुशील, शात । मागलिक, शुभ । मनोहर । पु० सोमयज्ञ । चद्रमा का पुत्र बुध । ब्राह्मण । मार्गशीर्ष मास । ६० सवत्सरों मे से एक । सज्जनता । एक दिव्यास्त्र । ⊙कृच्छ = पुं० एक प्रकार का व्रत । ⊙दर्शन = वि० सुदर, प्रियदर्शन ।

सौम्या—स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद। ⊙शिखा = स्त्री० जिस मुक्तक के विषम वृत्त के पहले दो चरणों में १६ गुरुवर्ण और दूसरे दोनो मे ३२ लघुवर्ण हों। इसके उलटे को (अर्थात् पहले दो मे ३२ लघु और दूसरे दोनो मे १६ गुरु को) ज्योति शिखा कहते हैं।

सौर(पु)—स्त्री० चादर, ओढ़ना। सूतिकागार। वि० [सं०] सूर्य का। सूर्य से उत्पन्न। पुं० शनि। सूर्य का उपासक। सूर्यवंशी। ⊙दिवस = पुं० एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ⊙मास = पुं० एक संक्राति से दूसरी संक्राति तक का समय। ⊙वर्ष = एक मेघ संक्राति से दूसरी मेघ संक्राति तक का समय।

सौरज(पु)—पुं० दे० 'शौर्य'।

सौरभ—पुं० [सं०] सुगंध, खुशबू। केसर। आम, आम्र। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से भगण, जगण और दो सगण होते हैं। सौरभक—पुं० एक वर्णवृत्त जिसके प्रथम चरण मे सगण, जगण, सगण और अंत्य लघु, द्वितीय में नगण, सगण, जगण और अंत्य गुरु, तृतीय में रगण, नगण भगण अंत्य गुरु तथा चौथे मे सगण, जगण, सगण, जगण और अंत्य गुरु हो।

सौरभित—वि० सौरभयुक्त।

सौरसेन—पुं० दे० 'शौरसेन'।

सौरस्य—पुं० [सं०] 'सुरस का भाव, सुरसता।

सौराष्ट्र—पुं० [सं०] गुजरात काठियावाड का प्राचीन नाम, सोरठ देश। उक्त प्रदेश का निवासी। एक वर्णवृत्त। (पु)मृत्तिका = स्त्री० गोपीचदन। सौराष्ट्रिक—वि० [सं०] सौराष्ट्र देश संबंधी।

सौरास्त्र—पुं० [सं०] एक प्रकार का दिव्यास्त्र।

सौरि—पुं० दे० 'शौरि'।

सौरी—स्त्री० वह कोठरी या कमरा जिसमे स्त्री० बच्चा जने, सूतिकागार। स्त्री० एक प्रकार की मछली।

सौर्य—वि० [सं०] सूर्य संबंधी, सूर्य का।

सौवर्चल—पुं० [सं०] सोंचर नमक।

सौवर्ण—वि० [सं०] सोने का। पुं० स्वर्ण, सोना।

सौवीर—पुं० [सं०] सिंधु नद के आसपास का प्राचीन प्रदेश। उक्त प्रदेश का निवासी या राजा।

सौवीरांजन—पुं० [सं०] सुरमा।

सौष्ठव—पुं० [सं०] सुडौलपन, उपयुक्तता। सुंदरता। नाटक का एक अंग।

सौसन—पुं० दे० 'सोसन'। सौसनी—वि० पुं० दे० 'सोसनी'।

सौहँ—स्त्री० कसम। क्रि० वि० सामने, आगे।

सौहार्द, सौहार्य—पुं० [सं०] सुहृद् का भाव, मित्रता।

सौहीं—क्रि० वि० सामने, आगे।

सौहृद—पुं० [सं०] मित्रता। मित्र।

स्कंद—पुं० [सं०] निकलना, बहना। विनाश। कार्तिकेय जो शिव के पुत्र देवताओ के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं। शिव। शरीर, देह। बालकों के नौ प्राणघातक ग्रहों या रोगों में से एक। ⊙पुराण = पुं० १८ पुराणों मे से एक प्रसिद्ध पुराण।

स्कंदन— [सं०] कोठा साफ होना, रेचन। निकलना, बहना।

स्कंदित—वि० [सं०] निकला हुआ, गिरा हुआ।

स्कंध—पुं० [सं०] कंधा। वृक्ष के तने का वह भाग जहाँ से डालियाँ निकलती हैं, कांड। डाल, शाखा। समूह, झुंड। सेना का अंग, व्यूह। ग्रंथ का विभाग जिसमे कोई पूरा प्रसंग हो, खंड। शरीर। मुनि, आचार्य। युद्ध। आर्या छंद का एक भेद। बौद्धों के अनुसार रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार ये पाँचो पदार्थ। दर्शन शास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

स्कंधावार—पुं० [सं०] राजा का डेरा या शिविर। छावनी, सेनानिवेश। सेना।

स्कंभ—पुं० [सं०] खंभा। परमेश्वर।

स्काउट—पु० [अं०] दे० 'बालचर'।

स्कूल—पु० [अं०] विद्यालय। सप्रदाय या शाखा।

स्खलन—पु० [सं०] फाडना। हत्या। पतन। **स्खलित**—वि० [सं०] गिरा हुआ, च्युत। फिसला हुआ, विचलित। चूका हुआ।

स्टांप—पुं० [अं०] वह सरकारी कागज जिसपर कानूनी लिखा पढी होती है। डाक या अदालत का टिकट। मोहर, छाप।

स्टाक—पुं० [अं०] बिक्री करने या बेचने का मालगोदाम। भाडार।

स्टीम—पुं० [अं०] भाप, वाष्प।

स्टीमर—पु० [अं०] भाप से चलनेवाला जहाज।

स्टूल—पु० [अं०] तिपाई।

स्टेज—पु० [अं०] रंगमच। रंगभूमि। मंच।

स्टेट—पु० [अं०] राज्य। देशी राज्य। भारतीय गणतंत्र। भारतीय गणतत्र के अतर्गत शासन के लिये विभाजित भूभाग, प्रदेश। पु० [अं० एस्टेट]। बड़ी जमीदारी। स्थावर और जगम सपत्ति।

स्टेशन—पु० [अं०] रेलगाडी के ठहरने का स्थान। किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियत स्थान। ⊙**मास्टर**=पु० किसी स्टेशन का प्रधान कर्मचारी।

स्तंभ—पु० [सं०] खभा, थभा। पेड का तना। साहित्य मे एक प्रकार का सात्विक भाव। किसी कारण से संपूर्ण अगो की गति का अवरोध, जडता। रुकावट। एक प्रकार का तात्रिक प्रयोग जिससे किसी शक्ति को रोकते हैं। ⊙**क**=वि० रोकनेवाला। कब्जा करनेवाला। वीर्य रोकनेवाला। **स्तभन**—पुं० रुकावट, प्रवरोध। वीर्य आदि के स्खलन मे बाधा या विलब। वीर्यपात रोकने की दवा। जड या निश्चेष्ट करना। एक प्रकार का तात्रिक प्रयोग जिससे किसी की चेष्टा या शक्ति को रोकते हैं। कब्ज। कामदेव के पाँच बाणों मे से एक। **स्तंभित**—वि० जो जड या अचल हो गया हो, सुन्न। रुका या रोका हुआ।

स्तन—पु० [सं०] स्त्रियो या मादा पशुओं की छाती जिसमे दूध रहता है। ⊙**पान** =स्तन का दूध पीना। ⊙**पायी**= वि० स्तन से दूध पीनेवाला (जीवधारी)। ⊙**हार**=पु० गले मे पहनने का एक प्रकार का हार। मु०~**पीना**=स्तन मे मुँह लगाकर उसका दूध पीना।

स्तनन—पु० [सं०] बादल का गरजना। ध्वनि या शब्द करना। आर्त्तनाद। **स्तनित**—पु० बादल की गरज। बिजली की कडक। ताली बजाने का शब्द। वि० गरजता या शब्द करता हुआ।

स्तन्य—वि० [सं०] स्तन सबधी। पुं० दे० 'दूध'।

स्तब्ध—वि० [सं०] स्तभित, निश्चेष्ट। दृढ, स्थिर। मद, धीमा। ⊙**ता**=स्त्री० स्तब्ध का भाव, जडता। स्थिरता, दृढता।

स्तर—पु० [सं०] तह, परत। सेज, तल्प। भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो उसकी भिन्न भिन्न कालो मे बनी हुई तहो के आधार पर होता है। **स्तरण**—पु० फैलाने या बिखेरने की क्रिया।

स्तव—पु० [सं०] किसी देवता का छदोबद्ध स्वरूपकथन, बदना या गुणगान, स्तुति। **स्तवक**—पु० फूलो का गुच्छा, गुलदस्ता। समूह, ढेर। पुस्तक का कोई अध्याय या परिच्छद। वह जो किसी की स्तुति या स्तव करता हो। **स्तवन**—पु० गुणकीर्तन, स्तुति।

स्तिमित—वि० [सं०] ठहरा हुआ, निश्चल। भीगा हुआ।

स्तीर्ण—वि० [सं०] फैलाया या छितराया हुआ।

स्तुत—वि० [सं०] जिसकी स्तुति या प्रार्थना की गई हो। **स्तुति**—स्त्री० गुणकीर्तन। प्रशसा, बडाई। दुर्गा। ⊙**पाठक**=पु० स्तुतिपाठ करनेवाला। चारण, भाट। ⊙**वाचक**=पु० स्तुति या प्रशंसा करनेवाला। खुशामदी।

स्तुत्य—वि० स्तुति या प्रशंसा के योग्य।

स्तूप—पु० [सं०] ऊँचा ढूह या टीला। वह ढूह या टीला जिसके नीचे भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृतिचिह्न सुरक्षित हो।

स्तेन—पु० [सं०] चोर। चोरी। स्तेय—पु० चोरी, चौर्य। स्तैन्य—पु० चोर का काम, चोरी।

स्तोक—पु० [सं०] बूँद। पपीहा। वि० थोड़ा, अल्प। लघु, छोटा।

स्तोता—वि० [सं०] स्तुति करनेवाला।

स्तोत्र—पु० [सं०] किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूपकथन, वंदना या गुणकीर्तन।

स्तोम—पु० [सं०] स्तुति, प्रार्थना। यज्ञ। एक विशेष प्रकार का यज्ञ। समूह, राशि।

स्त्री—स्त्री० दे० 'इस्तिरी'। स्त्री० [सं०] नारी। पत्नी। मादा। एक वृत्त जिसके प्रति चरण मे दो गुरु होते हैं। व्याकरण मे वह 'प्रत्यय' जो स्त्रीलिंग का सूचक होता है। ⊙धन = पु० वह धन जिस पर स्त्रियो का ही अधिकार हो। ⊙धर्म = पुं० स्त्री का रजस्वला होना, रजोदर्शन। ⊙प्रसंग = पुं० मैथुन, संभोग। ⊙लिंग = पुं० भग, योनि। व्याकरण मे (यथार्थ या कल्पित) लिंगभेद (जैसे हिंदी मे घोड़ा, पुस्तक)। ⊙व्रत = पुं० अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना। ⊙समागम = पुं० मैथुन, प्रसंग।

स्त्रैण—वि० [सं०] स्त्री संबंधी, स्त्रियो का। स्त्रियो के कहने के अनुसार चलनेवाला, मेहरा।

स्थ—प्रत्यय [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दो के अंत मे लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) स्थित। (ख) उपस्थित। (ग) रहनेवाला। (घ) लीन।

स्थकित—वि० थका हुआ।

स्थगन—पु० [सं०] कुछ समय के लिये रोकना या टालना। अवरोध। आच्छादन।

स्थगित—वि० जो कुछ समय के लिये रोक या टाल दिया गया हो, मुलतवी। रोका हुआ। ढका हुआ।

स्थल—पुं० [सं०] भूभाग, जमीन। जनशून्य भूभाग, गुफा। स्थान। अवसर। निर्जल और मरुभूमि, कर। ⊙कमल = पु० कमल की आकृति का एक पुष्प जो स्थल मे होता है। ⊙चर, ⊙चारी = वि० स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला। ⊙ज = वि० स्थल या भूमि मे उत्पन्न। ⊙पद्म = पुं० स्थलकमल। स्थली—स्त्री० शुष्क जमीन, भूमि। जगह। स्थलीय—वि० स्थल या भूमि संबंधी। किसी स्थान का।

स्थविर—पु० [सं०] बुड्ढा। ब्रह्मा। वृद्ध और पूज्य बौद्ध भिक्षु।

स्थाई—वि० दे० 'स्थायी'।

स्थाणु—पुं० [सं०] खंभा स्तंभ। पेड़ का वह धड़ जिसके ऊपर की डालियाँ और पत्ते आदि न रह गए हों, ठूँठ। शिव। वि० स्थिर, अचल।

स्थान—पु० [सं०] जगह, स्थल। भूभाग, जमीन। पद, ओहदा। घर, आवास। टिकाव, स्थिति। मंदिर। अवसर। ⊙च्युत = वि० जो अपने स्थान से हट गया हो। ⊙भ्रष्ट = वि० दे० 'स्थानच्युत'। स्थानांतर—पु० दूसरा स्थान, प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न स्थान। स्थानांतरण—पु० एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने की क्रिया। बदली। स्थानांतरित—वि० जो एक स्थान से हट या उठकर दूसरे स्थान पर गया हो। स्थानापन्न—वि० दूसरे के स्थान पर स्थायी रूप से काम करनेवाला, एवजी। स्थानिक—वि० दे० 'स्थानीय'। स्थानीय—वि० उस स्थान का जिसके संबंध मे कोई उल्लेख हो।

स्थापक—वि० [सं०] रखने या कायम करनेवाला। मूर्ति बनानेवाला। सूत्रधार का सहकारी (नाटक)। संस्था खोलनेवाला, संस्थापक।

स्थापत्य—पु० [सं०] भवननिर्माण, राजमीरी। वह विद्या जिसमे भवननिर्माण

संबधी सिद्धातो आदि का विवेचन होता है। ⊙वेद = पुं० चार उपवेदो मे से एक जिसमे वास्तु शिल्प या भवननिर्माण को विषय वर्णित है।

स्थापन--पु० [सं०] खड़ा करना, उठाना। रखना, जमाना। नया काम जारी करना। (प्रमाणपूर्वक किसी विषय को) सिद्ध करना, प्रतिपादन। निरूपण। **स्थापना**--स्त्री० प्रतिष्ठित करना, थापना। जमाकर रखना। प्रतिपादन या सिद्ध करना। युक्ति, तर्क अथवा प्रमाणपूर्वक निश्चित मत। **स्थापित**--वि० [सं०] जिसकी स्थापना की गई हो, व्यवस्थित, निर्दिष्ट। निश्चित।

स्थायित्व--पु० [सं०] स्थायी होने का भाव। स्थिरता, मजबूती। **स्थायी**--वि० जो ठहरे या स्थिर रहे। बहुत दिन चलनेवाला, टिकाऊ। ⊙भाव = पु० सहृदयो के मन मे वासना रूप मे स्थित रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय और निर्वेद प्रभृति नौ प्रधान भाव जो विभाव, अनुभाव और सचारी भावो मे प्रतिबिंबित होते है और काव्य और नाटक मे रस कहलाते हैं। ⊙समिति = स्त्री० वह समिति जो किसी सभा या समेलन के दो अधिवेशनो के मध्य के काल मे उसके कार्यो का संचालन करती है।

स्थाली--स्त्री० [सं०] हंडा, हँडिया। मिट्टी की रिकाबी। ⊙पुलाक न्याय = पु० एक बात को देखकर उस सबध की और सब बातो का मालूम होना।

स्थावर--वि० [सं०] अचल, स्थिर। जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया न जा सके, जगम का उल्टा। पु० पहाड। अचल सपत्ति। ⊙विष = पु० स्थावर पदार्थों मे होनेवाला जहर।

स्थित--वि० [सं०] अपने स्थान पर ठहरा हुआ। बैठा हुआ। अपनी प्रतिज्ञा पर डटा हुआ। विद्यमान, मौजूदा। निवासी। खडा हुआ। ऊर्ध्व। ⊙प्रज्ञ = वि० जिसकी विवेकबुद्धि स्थिर हो। समस्त मनोविकारो से रहित, आत्मसंतोषी। **स्थिति**--स्त्री० एक स्थान या अवस्था मे रहना। दशा, हालत। रहना, ठहरना। अस्तित्व। निवास। पद, दर्जा। पालन। स्थिरता। ⊙स्थापक = पुं० वह गुण जिससे कोई वस्तु नवीन स्थिति मे आने पर फिर अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाय। वि० किसी वस्तु को उसकी पूर्व अवस्था मे प्राप्त करानेवाला। लचीला। ⊙स्थापकता = स्त्री० लचीलापन।

स्थिर--वि० [सं०] निश्चल, ठहरा हुआ। निश्चित। शात। दृढ, अटल। स्थायी। नियत। पु० शिव। ज्योतिष मे एक योग। देवता। पहाड। एक प्रकार का छद। **स्थिरीकरण**--पु० स्थिर या दृढ करना।

स्थूल--वि० [सं०] मोटा। सहज मे दिखाई देने या समझ मे आने योग्य, सूक्ष्म का उलटा। पुं० वह पदार्थ जिसका इंद्रियो द्वारा ग्रहण हो सके।

स्थैर्य--पु० [सं०] स्थिरता। दृढता।

स्नात--वि० [सं०] जिसने स्नान किया हो।

स्नातक--पु० [सं०] वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत की समाप्ति पर गृहस्थ आश्रम मे प्रवेश किया हो। वह जो किसी गुरुकुल, विद्यालय आदि की परीक्षा मे उत्तीर्ण हुआ हो।

स्नान--पु० [सं०] शरीर को स्वच्छ करने के लिये उसे जल से धोना, नहाना। शरीर के अगो को धूप या वायु के सामने इस प्रकार करना कि उनके ऊपर उसका पूरा प्रभाव पडे। (जैसे, वायुस्नान)। **स्नानागार**--पु० वह कमरा जिसमे स्नान किया जाता है।

स्नायविक--वि० [सं०] स्नायु सबधी। **स्नायु**--स्त्री० [सं०] शरीर के अदर की वे नसें जिनसे स्पर्श और वेदना आदि का ज्ञान होता है।

स्निग्ध--वि० [सं०] जिसमे स्नेह या तेल हो।

स्नेह--पु० [सं०] प्रेम, प्यार। चिकना पदार्थ, विशेषत तेल। कोमलता। ⊙पात्र

= पुं० वैद्यक की एक क्रिया जिसमे कुछ विशिष्ट रोगो मे तेल, घी, चरबी आदि पीते हैं। स्नेहन—पु० चिकनाहट उत्पन्न करना। शरीर मे तेल या सुगधित लेप लगाना। स्नेही—पु० प्रेमी, मित्र।

स्पंद, स्पदन—पु० [सं०] धीरे धीरे हिलना, कांपना। (अगो आदि का) फड़कना। स्पंदित—वि० हिलता, कांपता या फड़फड़ाता हुआ।

स्पर्धा—स्त्री० [सं०] किसी के मुकाबले मे आगे बढने की इच्छा, होड। साहस। सघर्ष, रगड़। साम्य, बराबरी। स्पर्धी—वि० स्पर्धा करनेवाला।

स्पर्श—पु० [सं०] दो वस्तुओ का आपस में इतना पास पहुँचना कि उनके तलो का कुछ अश आपस मे सट जाय, छूना। त्वगिंद्रिय का वह गुण जिसके कारण ऊपर पडनेवाले दबाव का ज्ञान होता है। त्वगिंद्रिय का विषय। (व्याकरण मे) 'क से लेकर 'म' तक से २५ व्यजन। ग्रहण या उपराग मे सूर्य अथवा चद्रमा पर छाया पडने का आरभ। ⊙जन्य = वि० जो स्पर्श के कारण उत्पन्न हो। सक्रामक। ⊙मणि = पुं० पारस पत्थर। स्पर्शनेंद्रिय—स्त्री० दे० 'स्पर्शेंद्रिय'। स्पर्शास्पर्श—पु० छूने या न छूने का भाव या विचार। स्पर्शी—वि० छूनेवाला। स्पर्शेंद्रिय—स्त्री० वह इद्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है, त्वचा।

स्पष्ट—वि० [सं०] साफ दिखाई देने या समझ मे आनेवाला। पु० व्याकरण मे वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न जिसमे दोनो होठ एक दूसरे से छू जाते हैं। ⊙तया, ⊙तः = क्रि० वि० स्पष्ट रूप से, साफ साफ। ⊙ता = स्त्री० स्पष्ट होने का भाव, सफाई। ⊙वक्ता, ⊙वादी = वि० जो कहने मे किसी का मुलाहजा न करता हो। स्पष्टीकरण—पुं० स्पष्ट करने की क्रिया।

स्पिरिट—स्त्री० [अं०] एक तरल पदार्थ जो जलाने और दवा के काम आता है। आत्मा। मुख्य सिद्धात या अभिप्राय।

स्पीकर—पु० [अं०] व्याख्यानदाता। विधानसभा या लोकसभा आदि का सभापति।

स्पीड—स्त्री० [अं०] गति, चाल।

स्पृश्—वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला। स्पृश्य—वि० स्पर्श करने के या छूने लायक। स्पृष्ट = वि० छूआ हुआ।

स्पृहणीय—वि० [सं०] स्पृहा या कामना करने योग्य, वाछनीय। गौरवशाली।

स्पृहा—स्त्री० [सं०] इच्छा, कामना। स्पृही—वि० इच्छा करनेवाला।

स्पेशल—वि० [अं०] विशेष, खास।

स्प्रिंग—स्त्री० [अं०] कमानी।

स्फटिक—पुं० [सं०] एक प्रकार का सफेद बहुमूल्य पत्थर जो कांच के समान पारदर्शी होता है। सूर्यकांत मणि। शीशा। फिटकिरी।

स्फार—वि० [सं०] प्रचुर, बहुत। विकट।

स्फाल—पु० दे० 'स्फूर्ति'।

स्फीत—वि० [सं०] बढा हुआ। फूला हुआ। समृद्ध। स्फीति—स्त्री० बढ़ती, वृद्धि।

स्फुट—वि० [सं०] खिला हुआ। अलग अलग। स्पष्ट। जो सामने दिखाई देता हो, व्यक्त। स्फुटन—पुं० खिलना। फूलना। फूटना। सामने आना। स्फुटित—वि० [सं०] विकसित, खिला हुआ। जो स्पष्ट किया गया हो। हँसता हुआ।

स्फुरण—पुं० [सं०] किसी पदार्थ का जरा जरा हिलना, कंपन। अग का फरकना। दे० 'स्फूर्ति'।

स्फुरति(प)—स्त्री० दे० 'स्फूर्ति'।

स्फुरित—वि० [सं०] जिसमे स्फुरण हो।

स्फुलिंग—पु० [सं०] चिनगारी।

स्फूर्ति—स्त्री० [सं०] धीरे धीरे हिलना, फड़कना। काम करने के लिये मन मे उत्पन्न होनेवाली हलकी उत्तेजना। फुरती, तेजी।

स्फोट—पु० [सं०] किसी पदार्थ का अपने ऊपरी आवरण को भेदकर बाहर निकलना,

फूलना। शरीर मे होनेवाला फोडा, फुसी आदि। ⊙क = पुं० फोडा, फुसी। वि० जोर से भभकने या फूटनेवाला। स्फोटन—पु० अदर से फोडना। फाडना।

स्मर—पु० [सं०] कामदेव। स्मरण, याद।

स्मरण—पु० [सं०] देखी सुनी या अनुभव मे आई हुई बात का फिर से मन मे आना। भक्ति के ९ भेदो मे से एक जिसमे उपासक अपने उपास्य देव को बराबर याद किया करता है। एक अलकार जिसमे कोई बात या पदार्थ देखकर उससे मिलते किसी विशिष्ट पदार्थ या बात स्मरण हो आने का वर्णन होता है। ⊙पत्र = पु० वह पत्र जो किसी को कोई बात स्मरण दिलाने के लिये लिखा जाय। ⊙शक्ति = स्त्री० याद रखने की शक्ति, धारणशक्ति। स्मरणीय—वि० [सं०] स्मरण रखते योग्य।

स्मरना(पु)—सक० स्मरण करना।

स्मरारि—पु० [सं०] महादेव।

स्मर्ण(पु)—पु० दे० 'स्मरण'

स्मशान—पु० दे० 'श्मशान'।

स्मारक—वि० [सं०] स्मरण करानेवाला। पु० वह कृत्य या वस्तु जो किसी की स्मृति बनाए रखने के लिये प्रस्तुत की जाय, यादगार। वह चीज जो किसी को अपना स्मरण रखने के लिये दी जाय।

स्मार्त—पुं० [सं०] वे कृत्य आदि जो स्मृतियो मे लिखे हुए हैं। वह जो स्मृतियो मे लिखे अनुसार सब कृत्य करता हो। स्मृतिशास्त्र का पडित। वि० स्मृति सबधी, स्मृति का।

स्मित—पुं० [सं०] धीमी हँसी। वि० खिला हुआ, विकसित। मुस्कराता हुआ। स्मिति—स्त्री० दे० 'स्मित'।

स्मृत—वि० [सं०] याद किया हुआ। स्मृति—स्त्री० स्मरण शक्ति के द्वारा सचित होनेवाला ज्ञान, स्मरण। हिंदुओ के धर्म-शास्त्र जिनमे धर्म, दर्शन, आचार व्यवहार, शासननीति आदि के विवेचन हैं। १८ की सख्या। एक प्रकार का छंद। ⊙कार = पुं० स्मृति या धर्मशास्त्र बनानेवाला।

स्यंदन—पुं० [सं०] चूना, टपकना। गलना। जाना, चलना। रथ। युद्ध का रथ। वायु।

स्यमंतक—पुं० [सं०] पुराणोक्त एक मणि जिसकी चोरी का कलक श्रीकृष्णचद्र पर लगा था।

स्यात्—अव्य० [सं०] कदाचित्, शायद।

स्याद्वाद—पुं० [सं०] जैन दर्शन जिसमे किसी वस्तु के सबध मे कहा जाता है कि स्यात् यह भी है, स्यात् वह भी है आदि, अनेकातवाद।

स्यान(पु)—वि० दे० 'स्याना'। ⊙पन = पुं० बुद्धिमानी। चालाकी।

स्याना—वि० चतुर, होशियार। चालाक, धूर्त। बालिग। पुं० बडा बूढा। ओझा। चिकित्सक।

स्यापा—पु० मरे हुए मनुष्यो के शोक मे कुछ काल तक स्त्रियो के प्रतिदिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति। मु०~पड़ना = रोना, चिल्लाना मचना। बिलकुल उजाड या सुनसान होना।

स्याबास(पु)—अव्य दे० 'शाबास'।

स्याम(पु)—पु० वि० दे० 'श्याम'। पु० भारतवर्ष के पूर्व का एक देश। ⊙क = पु० दे० 'श्यामक'। ⊙करन = पु० दे० 'श्यामकर्ण'। ⊙ल = वि० दे० 'श्यामल'। स्यामलिया—पु० दे० 'साँवला'। स्यामा(पु)—स्त्री० दे० 'श्यामा'।

स्यार†—पु० सियार, गीदड। स्यारी—स्त्री० सियार की मादा, गीदडी।

स्याल—पु० [सं०] पत्नी का भाई, साला। दे० 'सियार'। स्यालिया†—पु० गीदड।

स्यावाज(पु)—पु० दे० 'सावज'।

स्याह—वि० [फा०] काला, कृष्ण वर्ण का। पु० घोडे की एक जाति।

स्याहा—पु० दे० 'सियाहा'।

स्याही—स्त्री० साही (जतु)। स्त्री० [फा०] एक रगीन तरल पदार्थ जो लिखने के काम आता है, रोशनाई। कालापन। कालिख। ⊙सोख = पु० सोख्ता। बालूदानी। मु०~जाना = बालो का कालापन जाना, जवानी का बीत जाना।

स्यो, स्योह(पु)––अव्य० सहित। पास।

स्रग––पु० दे० 'शृग'।

स्रक्––स्त्री०, पु० [सं०] फूलों की माला। एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण और एक सगण होता है स्रक(पु)––स्त्री० पु० दे० 'स्रक्'। स्रग(पु)––स्त्री० दे० स्रक।

स्रग्धरा––स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे मगण, भगण, नगण और ३ यगण होते हैं।

स्रग्विणी––स्त्री० [सं०] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे चार रगण होते हैं।

स्रज्––स्त्री० [सं०] माला।

स्रजना(पु)––सक० दे० 'सृजना'

स्रद्धा(पु)––स्त्री० दे० 'श्रद्धा'।

स्रम(पु)––पु० दे० 'श्रम'। स्रमित(पु)––वि० दे० 'श्रमित'।

स्रवण––पु० [सं०] बहना, प्रवाह। टपकना। गर्भपात। मूत्र। पसीना।

स्रवन(पु)––पु० दे० 'श्रवण'।

स्रवना(पु)––अक० बहना, चूना। गिरना। सक० बहाना, टपकाना। गिराना।

स्रष्टा––पु० [सं०] सृष्टि या विश्व की रचना करनेवाले, ब्रह्मा। विष्णु। शिव। वि० सृष्टि रचनेवाला।

स्रस्त––वि० [सं०] अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। शिथिल।

स्राध†––पु० दे० 'श्राद्ध'।

स्राप(पु)––पु० दे० 'शाप'। स्रापित(पु)––वि० दे० 'शापित'।

स्राव––पु० [सं०] बहना, झरना। गर्भपात। निर्यास, रस। स्रावक––वि० बहाने, चुआने या टपकानेवाला। स्रावण––पु० बहाने, चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव। स्रावी––वि० बहानेवाला।

स्रिग(पु)––पु० दे० 'शृग'।

स्रिजन(पु)––पु० दे० 'सृजन'।

स्रिय(पु)––स्त्री० दे० 'श्रिय'।

स्रुत(पु)––वि० दे० 'श्रुत'। वि० [सं०] चुआ या टपका हुआ।

स्रुति––स्त्री० दे० 'श्रुति'। ⊙माय(पु) = पु० विष्णु। स्त्री० [सं०] टपकने या चूने की क्रिया।

स्रुवा––स्त्री० [सं०] लकड़ी की एक प्रकार की छोटी करछी जिससे हवनादि में घी की आहुति देते हैं।

स्रेनी(पु)––स्त्री० दे० 'श्रेणी'।

स्रोत––पु० [सं०] पानी का बहाव या झरना। धारा। नदी। वह कार्य या मार्ग जिसके द्वारा किसी वस्तु की उपलब्धि हो, जरिया।

स्रोतस्विनी––स्त्री० [सं०] नदी।

स्रोता(पु)––पु० दे० 'श्रोता'।

स्रोन(पु)––पु० दे० 'श्रवण'।

स्रोनकन(पु)––पु० पसीने की बूंद।

स्रोनित(पु)––पु० दे० 'शोणित'।

स्व.––पुं० [सं०] स्वर्ग।

स्व––वि० [सं०] अपना, निज का। ⊙कीय = वि० अपना, निज का। ⊙कीया = स्त्री० विनय, आर्जव आदि गुणों से युक्त, गृहकर्मपरायण, पतिव्रता स्त्री (साहित्य-दर्पण)। शील, सकोच स्नेह, सौजन्य और सौदर्य आदि गुणो से युक्त, सती, पार्वती और सीता के समान मन, और कर्म से पति से प्रेम करनेवाली स्त्री (रससाराश)। ⊙गत = पु० [सं०] दे० 'स्वगतकथन'। क्रि० वि० आप ही आप, अपने आपसे (कहना या बोलना)। वि० अपने मे आया या लाया हुआ। मन मे आया हुआ। स्वगत कथन = पु० नाटक मे पात्र का इस प्रकार अपने आपसे बोलना मानो कोई उसकी बात सुनता नही है, आत्मगत। ⊙जन = पु० अपने परिवार के लोग, आत्मीय जन। रिश्तेदार। ⊙जनि,⊙जनी = स्त्री० अपने कुटुंब की या आपसदारी की स्त्री। सहेली। ⊙जन्मा = वि० अपने आपसे उत्पन्न (ईश्वर आदि)। ⊙जात = वि० अपने से उत्पन्न। पुं० पुत्र। ⊙जाति = स्त्री० अपनी जाति वि० अपनी जाति या काम का। ⊙जातीय = अपनी जाति या वर्ग का। ⊙तत्र =

वि० स्वाधीन, आजाद। मनमानी करनेवाला, निरकुश। अलग, जुदा। किसी प्रकार के बधन या नियम आदि से रहित। ⊙तत्रता = स्त्री० स्वतत्र होने का भाव, आजादी। ⊙तः = अव्य० अपने आप, आप ही। ⊙त्व = पु० किसी वस्तु को अपने अधिकार मे रखने, या लेने का अधिकार। 'स्व' या अपना होने का भाव। ⊙देश = पुं० अपना और अपने पूर्वजो का देश। मातृभूमि। ⊙देशी = वि० [हिं०] अपने देश का अपने देश सबधी। पु० भारत मे वगभग के समय (सन् १६०५) विदेशी वस्तुओ के बहिष्कार के लिये चला हुआ स्वदेशी वस्तुओ के प्रचार का आदोलन। ⊙धर्म = पुं० अपना धर्म। ⊙नामधन्य = वि० जो अपने नाम के कारण धन्य हो। ⊙भू = पुं० ब्रह्मा। विष्णु। वि० आपमे आप होनेवाला। ⊙रस = पुं० पत्ती आदि को कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस। ⊙राज्य = पु० वह राज्य जिसमे किसी देश के निवासी स्वय ही अपने देश के शासन, सुरक्षा आदि का सब प्रबध करते हो, अपना राज्य। ⊙राट् = पुं० ब्रह्मा। ईश्वर। वह राजा जो किसी ऐसे राज्य का स्वामी हो जिसमे स्वराज शासन प्रणाली प्रचलित हो। वि० जो स्वय प्रकाशमान हो और दूसरो को प्रकाशित करता हो।

स्वक्ष (पु)—वि० दे० 'स्वच्छ'।

स्वच्छंद—वि० [सं०] जो अपनी इच्छा के अनुसार सब कार्य करे, स्वाधीन। मनमाना काम करनेवाला, निरकुश। क्रि० वि० मनमाना, बेधडक।

स्वच्छ—वि० [सं०] निर्मल, साफ। उज्ज्वल, शुभ्र। स्पष्ट। पवित्र। ⊙ता = स्त्री० सफाई निर्मलता। पवित्रता। स्पष्टता। आचार विचार। **स्वच्छना** (पु)—सक० स्वच्छ करना। **स्वच्छी**—वि० [हिं०] दे० 'स्वच्छ'।

स्वतोविरोधी—वि० [सं०] अपना ही विरोध या खंडन करनेवाला।

स्वत्वाधिकारी—पुं० [सं०] वह जिसके हाथ मे किसी विषय का पूरा स्वत्व हो। स्वामी, मालिक।

स्वधा—अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका उच्चारण देवताओ या पितरो को हवि आदि देने के समय किया जाता है। स्त्री० पितरो को दिया जानेवाला अन्न। दक्ष की एक कन्या।

स्वन—पु० [सं०] शब्द, आवाज।

स्वपच (पु)—सं० 'श्वपच'।

स्वप, **स्वपना** (पु)†—पु० दे० 'स्वप्न'।

स्वप्न—पु० [सं०] निद्रावस्था मे कुछ दिखाई देना। वह घटना आदि जो इस प्रकार निद्रित अवस्था मे दिखाई दे अथवा मन मे आवे। निद्रा, नीद। मन मे उठनेवाली ऊँची या असभव कल्पना। ⊙गृह = पु० शयनागार। ⊙दोष = पुं० निद्रावस्था मे वीर्यपात होना जो एक प्रकार का रोग है। **स्वप्नाना**—सक० [हिं०] स्वप्न देना, स्वप्न दिखाना। **स्वप्निल**—वि० सोया हुआ। स्वप्न देखता हुआ। स्वप्न सबधी, स्वप्न का।

स्वबरन (पु)—पु० दे० 'सुवर्ण'।

स्वभाउ (पु)—पु० दे० 'स्वभाव'।

स्वभाव—पुं० [सं०] सदा रहनेवाला मूल या प्रधान गुण, तासीर। मिजाज, प्रकृति। आदत, टेव। ⊙ज = वि० प्राकृतिक, स्वाभाविक। ⊙त. = अव्य० स्वभाव से, प्राकृतिक रूप से। ⊙सिद्ध = वि० सहज, प्राकृतिक। **स्वभावोक्ति**—स्त्री० एक अर्थालकार जिसमे किसी के रूप, गुण, स्वभाव आदि का यथावत् चित्रण होता है।

स्वयं—अव्य० [सं०] खुद, आप। आपसे आप ⊙दूत = पुं० नायिका पर अपनी कामवासना स्वय ही प्रकट करनेवाला नायक। ⊙दूती = स्त्री० नायक पर स्वय ही अपनी कामवासना प्रकट करनेवाली परकीया नायिका। ⊙देव = पुं० प्रत्यक्ष देवता। ⊙पाक = पुं० अपना भोजन आप पकाना। ⊙पाकी = पुं० अपना भोजन स्वय पकाकर खानेवाला मनुष्य। ⊙प्रकाश = पु० वह जो बिना किसी दूसरे की सहायता के

प्रकाशित हो। परमात्मा। ⓟभू = पुं० ब्रह्मा। काल। कामदेव। विष्णु। दे० 'स्वायभुव'। वि० जो आपसे आप उत्पन्न हुआ हो। ⊙भूत = वि० [हिं०] 'स्वयभू'। ⊙वर = पु० प्राचीन भारत का एक विधान जिसमे कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियो मे से अपने लिये स्वय पति या वर चुनती थी। वह स्थान जहाँ इस प्रकार कन्या अपने लिये वर चुने। ⊙वरण = पुं० दे० 'स्वयवर' ⊙वरा = स्त्री० अपने इच्छानुसार अपना पति चुननेवाली स्त्री। ⊙सिद्ध = वि० (बात) जिसकी सिद्धि के लिये किसी तर्क या प्रमाण की आवश्यकता न हो। ⊙सेवक = पु० वह जो बिना कुछ लिए किसी कार्य मे अपनी इच्छा से योग दे। स्वयमागत—वि० अपने आप आया हुआ। पु० अतिथि। स्वयमेव—क्रि० वि० स्वय ही।

स्वर—पु० [सं०] स्वर्ग। परलोक। आकाश। ⊙गगा = स्त्री० मदाकिनी, आकाश-गंगा। ⊙गत = वि० मृत, स्वर्गीय। ⊙धुनी = स्त्री० गगा नदी। ⊙नगरी = स्त्री० अमरावती। ⊙नदी = स्त्री० स्वर्गंगा। ⊙ लोक = पुं० स्वर्ग। ⊙ वेश्या = स्त्री० अप्सरा। ⊙वैद्य = पु० अश्विनीकुमार।

स्वर—पु० आकाश। पु० [सं०] प्राणी के कठ से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पडने के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द, जिसमे कोमलता, तीव्रता, उदात्तता आदि गुण हो। सगीत के सात स्वर षड्ज, ऋषभ, गाधार, मध्यम, पचम, धैवत और निषाद (सक्षिप्त रूप सा, रे, ग, म, प, ध, और नि)। व्याकरण मे वह वर्णात्मक ध्वनि जिसका उच्चारण आपसे आप स्वतत्रतापूर्वक होता है। वेदपाठ मे होनेवाले शब्दो का उतार चढाव। ⊙पात = पु० किसी शब्द का उच्चारण करने मे उसके किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना। ⊙भंग = पुं० आवाज का बैठना जो एक रोग माना गया है। ⊙मडल = एक प्रकार का वाद्य जिसमे तार लगे होते हैं। ⊙लिपि = स्त्री० सगीत मे किसी गीत या तान आदि मे लगनेवाले स्वरो का लेख। ⊙वेधी = पुं० दे० 'शब्दवेधी'। ⊙साधना = स्त्री० सगीत के स्वरो का साधन या अभ्यास करना। मु०~उतारना = स्वर नीचा या धीमा करना। ~चढाना = स्वर ऊँचा करना। स्वरांत = वि० (शब्द) जिसके अत मे कोई स्वर हो (जैसे, राम, सीता, कवि, नदी आदि)। स्वरित—पु० [सं०] वह स्वर जिसका उच्चारण न बहुत जोर से और न बहुत धीरे हो। वि० स्वर से युक्त। गूँजता हुआ।

स्वरगⓟ—पुं० दे० 'स्वर्ग'।

स्वरूप—पु० दे० 'सारूप्य'। अव्य० रूप मे, तौर पर। पु० [सं०] आकार, शक्ल। मूर्ति या चित्र आदि। देवताओ आदि का धारण किया हुआ रूप। वह जो किसी देवता का रूप धारण किए हो। वि० खूबसूरत। तुल्य, समान। ⊙ज्ञ = पु० वह जो परमात्मा का स्वरूप पहचानता हो। ⊙वान् = जिसका स्वरूप अच्छा हो, सुदर। स्वरूपी—वि० स्वरूपवाला। जो किसी के स्वरूप के अनुसार हो। ⓟपु० [हिं०] दे० 'सारूप्य'।

स्वरोद—एक प्रकार का बाजा जिसमे तार लगे होते हैं। सरोद।

स्वरोदय—पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमे श्वासो के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं।

स्वर्ग—पु० [सं०] हिंदुओ के सात लोकों में से तीसरा लोक। कहा गया है कि सत्कर्म करनेवालो की आत्माएँ इसी लोक मे जाकर निवास करती हैं। ईश्वर। सुख। वह स्थान जहाँ स्वर्ग का सा सुख मिले। आकाश। ~की धार = पु० आकाशगगा। ⊙गत = वि० मृत, स्वर्गीय। ⊙गमन = पुं० मरना। ⊙गामी = वि० स्वर्ग जानेवाला। मरा हुआ, स्वर्गीय। ⊙तरु = पु० कल्पवृक्ष। ⊙नदी = आकाशगगा। ⊙पुरी = स्त्री० अमरावती। ⊙लोक = पु० दे० 'स्वर्ग'।

⊙वधू = स्त्री० अप्सरा । ⊙वाणी = स्त्री० दे० 'आकाशवाणी' । ⊙वास = पु० स्वर्ग को प्रस्थान करना, मरना । ⊙वासी = वि० स्वर्ग मे रहनेवाला । मृत । ⊙स्थ = वि० दे० 'स्वर्गवासी' । ⊙सुख = बहुत अधिक और उच्च कोटि का सुख । मु० ~के पंथपर पैर देना = मरना । जान जोखिम मे डालना । ~जाना या सिधारना = मरना । देहात होना । स्वर्गारोहण—पुं० स्वर्ग की ओर जाना । मरना । स्वर्गिक = वि० दे० 'स्वर्गीय' । स्वर्गीय—वि० स्वर्ग सबधी, स्वर्ग का । जो मर गया हो ।

स्वर्ण—पुं० [सं०] सुवर्ण या सोना नामक बहुमूल्य धातु । धतूरा । ⊙कमल = पु० लाल कमल । ⊙कार = पु० सुनार । ⊙गिरि = पु० सुमेरु पर्वत । ⊙जयंती = स्त्री० किसी व्यक्ति या सस्था के जन्म, शासक के राज्यारोहण अथवा शासन के प्रारभ का पचासवाँ वार्षिक महोत्सव । ⊙पर्पटी = स्त्री० वैद्यक में एक औषध जो संग्रहणी के लिये बहुत गुणकारी मानी जाती है । ⊙पुरी = स्त्री० लंका । ⊙मय = वि० जो बिलकुल सोने का हो, स्वर्णयुक्त । ⊙माक्षिक = पु० दे० 'सोनामक्खी' । ⊙मुद्रा = स्त्री० अशरफी । ⊙युग = पु० सुख समृद्धि । उन्नति आदि की दृष्टि से कुछ श्रेष्ठ वर्षों का समय या युग । ⊙यूथिका = स्त्री० पीली जूही । स्वर्णिम—पु० [हिं०] सोने के रग का, सुनहला ।

स्वल्प—वि० [सं०] बहुत थोडा ।

स्ववरन(पु)—पु० दे० 'सुवर्ण' ।

स्वसा—स्त्री० बहिन ।

स्वस्ति—अव्य०[सं०] मगल हो (आशीर्वाद) । स्त्री० कल्याण, मगल । ब्रह्मा की तीन स्त्रियो मे से एक । सुख । ⊙वाचन = पु० कर्मकाड के मगल कार्यों के आरभ मे किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमे पूजन और मगलसूचक मत्रों का पाठ किया जाता है ।

स्वस्तिक—पु० हठयोग मे एक प्रकार का आसन । चावल पीसकर और पानी मे मिलाकर बनाया हुआ एक मगल द्रव्य जिसमे देवताओ का निवास माना जाता है । प्राचीन काल का एक मगल चिह्न जो शुभ अवसरो पर मागलिक द्रव्यो से अंकित किया जाता था । आजकल इसका मुख्य आकार यह प्रचलित है 卐 । शरीर के विशिष्ट अगो मे होनेवाला उक्त आकार का एक चिह्न (शुभ) । स्वस्ती(पु)—अव्य० दे० 'स्वस्ति' । स्वस्त्ययन—पु० एक धार्मिक कृत्य जो किसी विशिष्ट कार्य मे कल्याण की भावना से किया जाता है ।

स्वस्थ—वि० [सं०] तदुरुस्त, चंगा जिसका चित्त ठिकाने हो, सावधान ।

स्वहाना(पु)—अक० दे० 'सोहाना' ।

स्वांग—पु० बनावटी वेश जो दूसरे का रूप बनने के लिये धारण किया जाय, भेष । मजाक का खेल या तमाशा, नकल । धोखा देने के उद्देश्य से बनाया हुआ कोई रूप या क्रिया । स्वाँगना(पु)—सक० स्वाँग बनाना । स्वाँगी—पु० वह जो स्वाँग सजाकर जीविका उपार्जन करता हो । अनेक रूप धारण करनेवाला, बहुरूपिया । वि० रूप धारण करनेवाला ।

स्वांत—पु० [सं०] अत करण, मन ।

स्वाँस—स्त्री० दे० 'साँस' । स्वाँसा—पु० दे० 'साँस' ।

स्वाक्षर—पु० [सं०] हस्ताक्षर, दस्तखत ।

स्वागत—पु० [सं०] अतिथि आदि के पधारने पर उसका सादर अभिनदन करना, अगवानी । ⊙कारिणी सभा = स्त्री० वह सभा जो किसी विराट् सभा या समेलन मे आनेवाले प्रतिनिधियो के स्वागत आदि की व्यवस्था करने के लिये सघटित हो । ⊙पतिका = स्त्री० वह नायिका जो अपने पति के परदेश से लौटने से प्रसन्न हो, आगतपतिका । ⊙प्रिया = पु० वह नायक जो अपनी पत्नी के परदेश से लौटने से उत्साहपूर्ण और प्रसन्न हो ।

स्वागता—स्त्री० एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण, भगण और दो अत्य गुरु हों ।

स्वातंत्र्य--पु० [सं०] दे० 'स्वतंत्रता'।

स्वात(पु)--स्त्री० दे० 'स्वाति'।

स्वाति--स्त्री० [सं०] १५वाँ नक्षत्र जो फलित ज्योतिष में शुभ माना गया है। प्रसिद्ध है कि इस नक्षत्र में वर्षा होने से सीप में मोती, बाँस में वंशलोचन और साँप में विष उत्पन्न होता है और चातक केवल इसी नक्षत्र में बरसनेवाला पानी पीता हैं। ⊙पथ = पु० [हिं०] आकाशगंगा। ⊙सुत,⊙सुवन = पु० मोती, मुक्ता। स्वाती--[हिं०] दे० 'स्वाति'।

स्वात्म-- वि० [सं०] अपना।

स्वाद--पु० [सं०] किसी पदार्थ के खाने या पीने से रसनेंद्रिय को होनेवाला अनुभव, जायका। रसानुभूति, आनंद। चाह, इच्छा। ⊙क = पुं० [हिं०] वह जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होने पर चखता है। मु०~ चखाना = किसी को उसके किए हुए अपराध का दंड देना। स्वादन--पुं० चखना, स्वाद लेना। मजा लेना। स्वादिष्ट--वि० जिसका स्वाद अच्छा हो, जायकेदार। स्वादी--वि० स्वाद चखनेवाला। मजा लेनेवाला, रसिक। स्वादीला--वि० दे० 'स्वादिष्ट'। स्वादु--पुं० मीठा रस, मधुरता। गुड। दुग्ध, दूध। वि० मीठा, मधुर। स्वादिष्ट। सुंदर। स्वाद्य--वि० स्वाद लेने योग्य।

स्वाधिकार--पु० [सं०] अपना अधिकार। स्वाधीनता।

स्वाधीन--वि० [सं०] जो किसी के अधीन न हो, स्वतंत्र। मनमाना काम करनेवाला, निरंकुश। पु० समर्पण, सुपुर्द। ⊙ता = स्त्री० स्वाधीन होने का भाव, आजादी। ⊙पतिका = स्त्री० वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो। ⊙भर्तृका = स्त्री० दे० 'स्वाधीनपतिका'। स्वाधीनी--स्त्री० दे० 'स्वाधीनता'।

स्वाध्याय--पु० [सं०] अनुशीलन, अध्ययन। वेद। वेदों का निरंतर और नियमपूर्वक अभ्यास करना।

स्वान--पु० दे० 'श्वान'।

स्वाप--पु० [सं०] निद्रा, नींद। अज्ञान। ⊙न = पु० प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु निद्रित किए जाते थे। वि० नींद लानेवाला।

स्वाभाविक--वि० [सं०] जो आप ही आप हो। स्वभावसिद्ध, प्राकृतिक। स्वाभाविकी--वि० स्त्री० दे० 'स्वाभाविक'।

स्वाभिमान--पु० [सं०] अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान।

स्वामि(पु)--पुं० दे० 'स्वामी'।

स्वामिता--स्त्री०, स्वामित्व--पु० [सं०] मालिकपन, प्रभुत्व। स्वामिनी--स्त्री० मालकिन। गृहिणी। श्री राधिका। स्वामी--पुं० मालिक, प्रभु। घर का प्रधान पुरुष। स्वत्वाधिकारी। पति। भगवान्। राजा। कार्तिकेय। साधु, सन्यासी और धर्माचार्यों की उपाधि। स्वाम्य--पु० दे० 'स्वामित्व'।

स्वायंभुव--पु० [सं०] १४ मनुओं में से पहले मनु जो स्वयंभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं। स्वायंभू(पु)--पु० दे० 'स्वायंभुव'।

स्वायत्त--वि० [सं०] जो अपने अधीन हो, जिसपर अपना ही अधिकार हो। ⊙शासन = पु० वह शासन जो अपने अधिकार में हो स्थानिक स्वराज्य।

स्वारथ(पु)†--पुं० दे० 'स्वार्थ'। वि० सफल, सिद्ध। स्वारथी--वि० दे० 'स्वार्थी'।

स्वारस्य--वि० सरसता, रसीलापन। स्वाभाविकता।

स्वाराज्य--पुं० [सं०] स्वाधीन राज्य। स्वर्ग का राज्य।

स्वारी(पु)†--स्त्री० दे० 'सवारी'।

स्वार्थ--वि० सार्थक सफल। पु० [सं०] अपना उद्देश्य या मतलब। अपना लाभ। ⊙त्याग = पुं० किसी भले काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना। ⊙पर = वि० [सं०] स्वार्थी, मतलबी।

⊙परता = स्त्री० स्वार्थपर होने का भाव। ⊙परायण = वि० स्वार्थी, मतलबी। ⊙साधन = पु० अपना प्रयोजन सिद्ध करना या काम निकालना। मु०—(किसी बात मे) ~लेना = दिलचस्पी लेना (आधुनिक)। स्वार्थांध—वि० अपने स्वार्थ के वश होकर उचित अनुचित का ध्यान न रखनेवाला। स्वार्थी—वि० मतलबी, खुदगरज।

स्वाल (पु)—पु० दे० 'सवाल'।

स्वावलंब, स्वावलंबन—पु० [सं०] अपने ही भरोसे या बल पर काम करना। **स्वावलबी**—वि० अपने ही अवलब या सहारे पर रहनेवाला।

स्वाश्रय—पु० [सं०] वह जिसे केवल अपना ही सहारा हो, दूसरो का सहारा न हो। **स्वाश्रित**—वि० केवल अपने सहारे पर रहनेवाला।

स्वास (पु)—पु० साँस, श्वास। **स्वासा**—स्त्री० साँस, श्वास।

स्वास्थ्य—पु० [सं०] आरोग्य, तदुरुस्ती। ⊙कर = वि० तदुरुस्त करनेवाला।

स्वाहा—स्त्री० [सं०] अग्नि की पत्नी का नाम। अव्य० एक शब्द जिसका प्रयोग देवताओ को अग्नि मे हवि देने के समय किया जाता है। मु०~करना = नष्ट करना।

स्वीकरण—पु० [सं०] अपनाना। राजी होना। **स्वीकार**—पु० अगीकार, कबूल। लेना। **स्वीकारोक्ति**—स्त्री० वह बयान जिसमे अभियुक्त अपना अपराध स्वय ही स्वीकृत कर ले। **स्वीकार्य**—वि० स्वीकार करने या मानने के योग्य। **स्वीकृत**—वि० [सं०] स्वीकार किया हुआ। **स्वीकृति**—स्त्री० मंजूरी, रजामदी।

स्वीय—वि० [सं०] अपना, निज का। पु० आत्मीय, सबधी। ⊙त्व = पु० अपनापन। आपसदारी। **स्वीया**—वि० स्त्री० दे० 'स्वकीया'।

स्वे (पु)—वि० दे० 'स्व'।

स्वेच्छा—स्त्री० [सं०] अपनी इच्छा। ⊙सेवक = पु० दे० 'स्वयसेवक'। **स्वेच्छाचार**—पु० जो जी मे आवे, वही करना। **स्वेच्छाचारी**—वि० मनमाना काम करनेवाला। निरकुश।

स्वेत (पु)—वि० दे० 'श्वेत'।

स्वेद—पु० [सं०] पसीना। भाप। ताप। ⊙क = वि० पसीना लानेवाला। ⊙ज = वि० पसीने से उत्पन्न होनेवाला—जूँ खटमल, मच्छर आदि। **स्वेदन**—पु० पसीना निकलना। **स्वेदित**—वि० पसीने से युक्त। सेका हुआ।

स्वै (पु)—वि० अपना, निज का। सर्व० दे० 'सो'।

स्वैर—वि० [सं०] मनमाना काम करनेवाला, स्वच्छद। धीमा, मद। मनमाना। (पु)चारी = वि० मनमाना काम करनेवाला, निरकुश। व्यभिचारी। ⊙ता = स्त्री० यथेच्छाचारिता। **स्वैराचार**—पु० दे० 'स्वेच्छाचार'। **स्वैरिणी**—स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री। **स्वैरिता**—स्त्री० दे० 'स्वैरता'।

स्वोपार्जित—वि० [सं०] अपना उपार्जन किया या कमाया हुआ।

ह

ह—हिंदी वर्णमाला का ३३ वाँ व्यजन जो उच्चारण के अनुसार ऊष्म वर्ण कहलाता है।

हँक—स्त्री० दे० 'हाँक'।

हँकड़ना—अक० दर्प के साथ बोलना, ललकारना। चिल्लाना। **हँकरना**—अक० दे० 'हँकड़ना'।

हँकरावा—पु० पुकार। बुलावा, निमत्रण। शिकार खेलते समय कुछ लोगो का हल्ला

करना जिसे सुनकर जानवर निकल आते हैं।

हँकवा—पु० शेर के शिकार का एक ढग जिसमे बहुत से लोग शेर को हाँककर शिकारी की ओर ले जाते हैं। **हँकवाना**—सक० [हँकना का प्रे०] हाँक लगवाना, बुलवाना। हाँकने का काम दूसरे से कराना। **हँकवैया**(५)†—पु० हाँकनेवाला।

हँका—स्त्री० ललकार।

हँकाई-स्त्री० हाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

हँकाना—सक० दे० 'हाँकना'। पुकारना, बुलाना। हँकवाना।

हँकार—स्त्री० आवाज लगाकर बुलाना, पुकार। वह ऊँचा शब्द जो किसी को बुलाने या सबोधन करने के लिये किया जाय। मु०~पड़ना=बुलाने के लिये आवाज लगाना। (५)†—पु० दे० 'अहकार'। ललकार, दपट।

हँकारना(५)†—सक० आवाज देकर बुलाना। बुलाना, पुकारना। पुकारने का काम दूसरे से कराना, बुलाना। क्रि० स० टेरना, जोर से पुकारना। बुलाना। युद्ध के लिये ललकारना।

हँकारा—पुं० पुकार, बुलाहट, बुलौवा, न्योता। **हँकारी**—स्त्री० वह जो लोगो को बुलाकर लाता हो। दूत।

हंगामा—पुं० [फा०] उपद्रव, लड़ाई झगड़ा, शोर गुल।

हंडना—अक० घूमना फिरना। व्यर्थ इधर उधर फिरना। इधर उधर ढूंढना। वस्त्र आदि का पहना या ओढ़ा जाना।

हंडा—पुं० पीतल या तांबे का बड़ा बरतन जिसमे पानी रखते हैं।

हँडाना—सक० [अक० हँडना] घुमाना फिराना। काम मे लाना।

हँडिया—स्त्री० बड़े लोटे के आकार का बरतन, हाँडी। इस प्रकार का शीशे का पात्र जो शोभा के लिये लटकाया जाता है।

हंडी—स्त्री० दे० 'हँडिया', 'हाँडी'।

हत—अव्य० [सं०] खेद या शोकसूचक शब्द।

हंता—पुं० [सं०] वध करनेवाला।

हँफनि—स्त्री० हाँफने की क्रिया या भाव।

हँबाना—अक० दे० 'रँभाना'।

हस—पुं० [सं०] बत्तख के आकार का एक जलपक्षी जो बड़ी बड़ी झीलो मे रहता है। दोहे के नवें भेद का नाम जिसमे १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते हैं। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक भगण और दो गुरु होते हैं। माया से निर्लिप्त आत्मा। जीवात्मा, जीव। सूर्य। ब्रह्म। विष्णु। शिव। प्राणवायु। सन्यासियो का एक भेद। घोड़ा। ⊙गति=स्त्री० हस के समान सुदर धीमी चाल। सायुज्य, मुक्ति। २० मात्राओ का एक छद। ⊙गामिनी=स्त्री० हस के समान सुदर मद गति से चलनेवाली। ⊙पदी=स्त्री० एक लता। ⊙राज=पुं० एक प्रकार की पहाड़ी बूटी, समलपत्ती। एक प्रकार का अगहनी धान। ⊙वंश=पुं० सूर्यवश। ⊙वाहन=पुं० ब्रह्मा। ⊙वाहिनी=स्त्री० सरस्वती। ⊙सुता=स्त्री० सूर्यसुता यमुना नदी।

हंसक—पुं० [सं०] हस पक्षी। पैर की उँगलियो मे पहनने का विछुआ।

हँसतामुखी—वि० दे० 'हँसमुख'।

हँसन—स्त्री० हँसने की क्रिया, भाव या ढग।

हँसना—सक० अनादर करना, हँसी उड़ाना। अक० खुशी के मारे मुँह फैलाकर एक तरह की आवाज करना, खिलखिलाना, हास करना। रमणीय लगना। दिल्लगी करना, हँसी करना। प्रसन्न या सुखी होना। मु०~बोलना=आनद की बातचीत करना। ~खेलना=आनंद करना। किसी पर~=विनोद की बातें कहकर तुच्छ या मूर्ख ठहराना। ठठाकर~=जोर से हँसना। बात हँसकर उड़ाना=तुच्छ या साधारण समझकर विनोद में टाला देना। हँसते हँसते=प्रसन्नता से।

हँसनि(५)†—स्त्री० दे० 'हँसन'।

हसिनी—स्त्री० दे० 'हसी।

हँसमुख—वि० जिसके चेहरे से प्रसन्नता प्रकट होती हो। विनोदशील।

हँसली—स्त्री० गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकर हड्डी। गले मे पहनने का स्त्रो का एक मंडलाकार गहना।

हँसाई—स्त्री० हँसने की क्रिया या भाव। निंदा, बदनामी।

हँसाना—सक० [हँसना का प्रे०] दूसरे को हँसने मे प्रवृत्त करना।

हँसाय(पु)†—स्त्री० दे० 'हँसाई'।

हंसालि—स्त्री० [सं०] ३७ मात्राओ का एक छद जिसके अत मे यगण होता है।

हसिनि—स्त्री० दे० 'हसी'।

हँसिया—स्त्री० एक औजार जिससे खेत की फसल या तरकारी आदि काटी जाती है।

हंसी—स्त्री० [सं०] हस की मादा। २२ अक्षरो का एक वर्णवृत्त। १० अक्षरो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से मगण, भगण, नगण और एक गुरु रहता है।

हँसी—स्त्री० हँसने की क्रिया या भाव, हास। मजाक दिल्लगी। उपहास। बदनामी, अनादर। ⊙खुशी=स्त्री० प्रसन्नता। ⊙खेल=पु० विनोद और क्रीड़ा। साधारण या सहज बात।⊙ठट्ठा =पु० आनद क्रीडा, मजाक। मु०~उड़ाना=उपहास करना। ~छूटना= हँसी आना। ~मे उड़ाना=परिहास की बात कहकर टाल देना।~मे ले जाना =किसी बात को मजाक समझना।~समझना या~खेल समझना=साधारण या आसान बात समझना।

हँसुआ, हँसुवा†—पु० दे० 'हँसिया'।

हँसोड़—वि० हँसी ठट्ठा करनेवाला, मसखरा।

हँसोर(पु)—वि० दे० 'हँसोड़'।

हँसौहाँ—वि० कुछ हँसी लिए। हँसने का स्वभाव रखनेवाला। मजाक से भरा।

हई—पुं० घुडसवार। स्त्री० आश्चर्य।

हउँ(पु)—अक०, सर्व० दे० 'हौं'।

हक—वि० [अ०] सच। उचित, न्याय। पु० किसी वस्तु को अपने कब्जे मे रखने, काम मे लाने या लेने का अधिकार, स्वत्व। कोई काम करने या किसी से कराने का अधिकार, इख्तियार। कर्तव्य। वह वस्तु जिसे पाने, पास रखने या काम मे लाने का न्याय से अधिकार प्राप्त हो। दस्तूरी। ठीक बात। उचित पक्ष या न्याय पक्ष। खुदा, ईश्वर। ⊙तलफी=स्त्री० किसी का हक मारना। ⊙दार=पुं० [फा०] स्वत्व या अधिकार रखनेवाला। ⊙ नाहक=अव्य० [अ०+फा०] जबरदस्ती, धींगाधींगी से। बिना कारण या प्रयोजन। ⊙शफा=पुं० किसी को खरीदने का वह विशेष हक जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पडोसियो को औरो से पहले प्राप्त होता है। मु०~अदा करना=कर्तव्यपालन करना। ~पर होना=उचित बात का आग्रह करना। ~मे=विषय मे, पक्ष मे।

हकदक—वि० चकित, भौंचक्का।

हकबक—वि० दे० 'हक्का बक्का'।

हकबकाना—अक० हक्का बक्का हो जाना, घबड़ा जाना।

हकला—वि० हकलानेवाला। ⊙ना=अक० बोलने मे अटकना, रुक रुककर बोलना।

हकीकत—स्त्री० [अ०] सच्चाई। ठीक बात, असल हाल। मु०~खुलना=असल बात का पता लगना। ~में=वास्तव मे।

हकीकी—वि० [अ०] असली। सगा।

हकीम—पुं० [अ०] विद्वान् आचार्य। यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला। चिकित्सक।

हकीमी—स्त्री० यूनानी चिकित्साशास्त्र। हकीम का पेशा या काम।

हकूमत†—स्त्री० दे० 'हुकूमत'।

हक्काक—पु० नग को काटने, सान पर चढाने, जडने आदि का काम करनेवाला।

हक्का बक्का—वि० भौंचक्का, घबराया हुआ।

हगना—अक० मलत्याग करना, पाखाना फिरना। झख मारकर अदा कर देना।

हगाना—सक० [हगना का प्रे०] हगने

की क्रिया करना। हगास—स्त्री० मल-त्याग का वेग या इच्छा।

हचना(पु)†—अक० दे० 'हिचकना'।

हचकोला—पु० वह धक्का जो गाडी, चारपाई आदि पर हिलने डोलने से लगे, धचका।

हज—पुं० [अ०] मुसलमानो का कावे के दर्शन के लिये मक्का जाना।

हजम—पुं० [अ०] पेट मे पचने की क्रिया या भाव, पाचन। वि० पेट मे पचा हुआ। वेईमानी या अनुचित रीति से अधिकार किया हुआ।

हजरत—पुं० [अ०] महात्मा, महापुरुष। महाशय। नटखट या खोटा आदमी (व्यंग्य)।

हजामत—स्त्री० [अ०] हज्जाम का काम, क्षौर। वाल वनाने की मजदूरी। सिर या दाढ़ी के वढे हुए वाल जिन्हें कटाना हो। मु०~वनाना=दाढ़ी या सिर के वाल साफ करना या काटना। धन हरण करना। मारना पीटना।

हजार—वि० [फा०] जो गिनती मे दस सौ हो, सहस्र। वहुत से। पुं० दस सौ की सख्या या अक (१०००)। क्रि० वि० चाहे जितना अधिक। ⊙हा=वि० हजारो। वहुत से। हजारा—वि० (फूल) जिसमे हजार या वहुत अधिक पंखड़ियाँ हो। पुं० फौवारा। सिंचाई या छिड़काव के लिये प्रयुक्त डोल जिसकी चौडी टोंटी मे छोटे छोटे वहुत से छिद्र होते हैं। एक प्रकार की छोटी नारगी। हजारी—पुं० एक हजार सिपाहियों का सरदार। दोगला। (व्यंग्य)।

हजूम—पुं० [अ० हुजूम] जनसमूह, भीड।

हजूर—पुं० दे० 'हुजूर'।

हजूरी—पु० [अ०] सदा वादशाह या राजा के पास रहनेवाला सेवक।

हजो—स्त्री० निंदा, वुराई।

हज्ज—पुं० दे० 'हज'।

हज्जाम—पु० [अ०] हजामत वनानेवाला, नाई, नापित।

हटक(पु)†—स्त्री० वारण, वर्जन। गायो को हाँकने की क्रिया या भाव। मु०~मानना=मना करने पर किसी काम से रुकना।

हटकन—स्त्री० दे० 'हटक'। चौपायो को हाँकने की छडी या लाठी। हटकना—सक० मना करना, रोकना। चौपायो को किसी ओर जाने से रोककर दूसरी तरफ हाँकना।

हटतार—स्त्री० दे० 'हडताल'। स्त्री० माला का सूत।

हटताल—स्त्री० दे० 'हड़ताल'।

हटना—अक० एक जगह से दूसरी जगह पर जा रहना, खिसकना, टलना। पीछे सरकना। जी चुराना, भागना। सामने से दूर होना। टलना। न रह जाना, दूर होना। वात पर दृढ न रहना। (पु)† निषेध करना।

हटवा—पुं० दूकानदार।

हटवाई(पु)†—स्त्री० सौदा लेना या बेचना।

हटवार(पु)†—पुं० हाट मे सौदा बेचनेवाला, दुकानदार।

हटाना—सक० [अक० हटना] सरकाना, खिसकाना। किसी स्थान पर न रहने देना दूर करना। आक्रमण द्वारा भगाना। जाने देना।

हट्ट—पु० [सं०] वाजार। दूकान। चौहट्ट=पु० वाजार का चौक।

हट्टा कट्टा—वि० हृष्ट पुष्ट, मोटा ताजा।

हट्टी—स्त्री० दुकान।

हठ—पु० [सं०] किसी वात के लिये अड़ना, जिद। दृढ प्रतिज्ञा। जबरदस्ती। ⊙धर्म=पु० दुराग्रह, कट्टरपन। ⊙धर्मी=स्त्री० उचित अनुचित का विचार छोड़कर अपनी वात पर जमे रहना दुराग्रह। कट्टरपन। ⊙योग=पु० वह योग जिसमे शरीर को साधने के लिये वड़ी कठिन मुद्राओ और आसनो आदि का विधान है। नेती, धोती अदि क्रियाएँ इसी मे हैं। मु०~पकड़ना=जिद करना। ~में पड़ना=हठ करना। ~रखना=जिस वात के लिये कोई अड़े, उसे पूरा करना।

हठना—अक० हठ करना, जिद पकड़ना। प्रतिज्ञा करना। मु०~हठ कर=बलात् जबरदस्ती।

हठात्—प्रत्य० [सं०] हठपूर्वक, जबरदस्ती से। अवश्य।

हठाहठ(पु)—क्रि० वि० दे० 'हठात्'।

हठी—वि० हठ करनेवाला, जिद्दी। हठीला—वि० हठी, जिद्दी। बात का पक्का। लड़ाई मे जमा रहनेवाला, धीर।

हड़—वि० एक बड़ा पेड़ जिसका फल औषध के काम मे लाया जाता है। हड के आकार का एक प्रकार का गहना, लटकन।

हड़कप—पुं० भारी हलचल, तहलका।

हड़क—स्त्री० पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिये गहरी आकुलता। किसी वस्तु को पाने की गहरी झक, धुन। हड़कना—अक० किसी वस्तु के अभाव से दुःखी होना, तरसना।

हड़काना—सक० आक्रमण करने या तग करने आदि के लिये पीछे लगा देना। किसी वस्तु के अभाव का दुःख देना, तरसाना। कोई वस्तु माँगनेवाले को न देकर भगाना। हड़काया—वि० पागल (कुत्ता)।

हड़गीला—पु० बगले की जाति का एक पक्षी।

हड़जोड़—पु० एक प्रकार की लता। कहते है कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड जाती है।

हड़ताल—स्त्री० किसी बात से असतोष प्रकट करने के लिये दूकानदारो का दुकानें बद कर देना। दे० 'हरताल'। हड़ताली—वि० हडताल करनेवाला। हड़ताल सबधी। झझट, बखेड़ा।

हड़ना—अक० तौल मे जाँचा जाना।

हड़प—वि० पेट मे डाला हुआ, निगला हुआ। गायब किया हुआ।

हड़पना—सक० मुँह मे डाल लेना, खा जाना। अनुचित रीति से ले लेना।

हड़बड़—स्त्री० जल्दबाजी प्रकट करनेवाली गतिविधि। हड़बड़ाना—अक० उतावलापन करना, आतुर होना। सक० किसी को जल्दी करने के लिये कहना। जल्दी मचाकर दूसरे को घबराना। हड़बड़िया—वि० हडबडी करनेवाला, जल्दबाज। हड़बड़ी—स्त्री० जल्दी के कारण घबराहट। हड़ावरि, हड़ावल—स्त्री० हड्डियो का ढाँचा, ठठरी। हड्डियो की माला।

हड़ीला—वि० जिसमे हड्डियाँ हो। दुबला पतला।

हड्डा—पु० मधुमक्खियो की तरह का एक कीडा, भिड, बर्रे।

हड्डी—स्त्री० शरीर के अदर की वह कठोर वस्तु जो भीतरी ढाँचे के रूप मे होती है, अस्थि। कुल, वश। ⊙तोड़ = पु० घोर, कठोर (परिश्रम)। मु०—पुरानी~ = पुराने आदमी का दृढ शरीर। हड्डियाँ गढना या तोड़ना = खूब मारना, खूब पीटना। हड्डियाँ निकल आना या रह जाना = शरीर बहुत दुबला होना।

हत—वि० [सं०] वध किया हुआ। पीटा हुआ। खाया हुआ। जिसमे या जिस पर ठोकर लगी हो। नष्ट किया हुआ। बिगड़ा हुआ। पीडित। गुणा किया हुआ (गणित)। ⊙चेत = वि० दे० 'हतज्ञान'। ⊙ज्ञान = वि० बेहोश। ⊙दैव = वि० अभागा। ⊙प्रभ = वि० जिसकी प्रभा या श्री नष्ट हो गई हो। ⊙बुद्धि = वि० बुद्धिशून्य, मूर्ख। ⊙बोध = वि० दे० 'हतबुद्धि'। ⊙भाग्य = वि० भाग्यहीन। ⊙श्री वि० जिसके चेहरे पर काति न रह गई हो। मुरझाया हुआ, उदास। हतना—सक० [हिं०] वध करना मारना, पीटना। पालन न करना, न मानना नष्ट भ्रष्ट करना, तोडफोड देना। हतवाना—सक० [हिं०] वध कराना। हताना—सक० [हिं०] दे० 'हतवाना'। हताश—वि० [सं०] निराश, नाउम्मीद। हताहत—वि० मारे गए और घायल। हतोत्साह—वि० [सं०] जिसे कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।

हतक—स्त्री० [अ०] हेठी, बेइज्जती। ⊙इज्जती—स्त्री० अप्रतिष्ठा, बेइज्जती।

हता(पु)+—अक० [होना का भूतकाल] था।

हते(पु)†—अक० [होना का भूतकाल बहु०] थे।

हत्थ(पु)—पु० दे० 'हाथ'।

हत्था—पुं० दस्ता, मूठ। लकड़ी का वह बल्ला जिससे खेत की नालियों का पानी चारों ओर उलीचा जाता है, हाथा। केले के फलों का घौद। हत्थी—स्त्री० ओजार या हथियार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है, दस्ता।

हत्थे—क्रि० वि० हाथ में। मु०~चढ़ना = हाथ में आना, प्राप्त होना। वश में होना।

हत्या—स्त्री० [सं०] मार डालने की क्रिया, वध। मु०~लगना हत्या का पाप लगना। हत्यारा—पुं० [हिं०] हत्या करनेवाला जान लेनेवाला। हत्यारी—स्त्री० हत्या का पाप। हत्या करनेवाली।

हथ—पुं० 'हाथ' का संक्षिप्त रूप (समस्त पदों में), जैसे हथफेर, हथकड़ा आदि। ⊙उधार = पुं० दे० 'हथफेर'। ⊙कंडा = पुं० हस्तकौशल। गुप्त चाल, चालाकी का ढंग। ⊙कड़ी = स्त्री० लोहे का वह कड़ा जो कैदी के हाथ में पहनाया जाता है। ⊙गोला = पुं० हाथ से फेंककर मारा जानेवाला गोला। ⊙छुट = वि० जरा सी बात पर मार बैठनेवाला। ⊙फूल = पुं० हथेली की पीठ पर पहनने का एक जड़ाऊ गहना, हथसाँकर। ⊙फेर = पुं० प्यार करते हुए शरीर पर हाथ फेरने की क्रिया। दूसरे के माल को सफाई से उड़ा लेना। थोड़े दिनों के लिये लिया या दिया हुआ कर्ज। ⊙लेवा = पुं० विवाह में वर का कन्या का हाथ अपने हाथ में लेने की रीति, पाणिग्रहण। ⊙बाँस = पुं० नाव चलाने का सामान (जैसे, पतवार, डाँड़ा)। ⊙साँकर = पुं० दे० 'हथफूल'।

हथनाल—पुं० वह तोप जो हाथी पर चलती थी, गजनाल।

हथनी—स्त्री० हाथी की मादा।

हथवाँसना—सक० हाथ में लेना, पकड़ना। काम में लाना।

हथा†—पुं० हाथ का छापा जो शुभ अवसर पर दीवारों पर लगाया जाता है।

हथाहथी(५)†—अव्य० हाथोंहाथ। शीघ्र।

हथिनी—स्त्री० दे० 'हथनी'।

हथिया—पुं० हस्त नक्षत्र।

हथियाना—सक० हाथ में करना, ले लेना। धोखा देकर ले लेना। हाथ में पकड़ना।

हथियार—पुं० हाथ से पकड़कर काम में लाने की साधनवस्तु, औजार। तलवार, भाला आदि आक्रमण करने का साधन। अस्त्रशस्त्र। ⊙बंद = वि० [फा०] जो हथियार बाँधे हो सशस्त्र। मु०~उठाना = मारने के लिये अस्त्र हाथ में लेना। लड़ाई के लिये तैयार होना।

हथेरी(५)†—स्त्री० दे० 'हथेली'।

हथेली—स्त्री० हाथ की कलाई का चौड़ा सिरा जिसमें उँगलियाँ लगी होती हैं। मु०~में आना = प्राप्त होना। वश में होना। ~पर जान होना = ऐसी स्थिति में पड़ना जिसमें जान जाने का भय हो।

हथेव—पुं० हथौड़ी।

हथोरी(५)‡—स्त्री दे० 'हथेली'।

हथौटी—स्त्री० किसी काम में हाथ लगाने का ढंग, हस्तकौशल। किसी काम में हाथ डालने की क्रिया या भाव।

हथौड़ा—पुं० वह औजार जिससे कारीगर किसी धातुखंड को तोड़ते पीटते या गढ़ते हैं। कील ठोकने, खूँटे गाड़ने आदि का औजार। हथौड़ी—स्त्री० छोटा हथौड़ा।

हथ्याना(५)—सक० दे० 'हथियाना'।

हथ्यार(५)†—पुं० दे० 'हथियार'।

हद—स्त्री० [अ०] किसी चीज की लंबाई, ऊँचाई या गहराई की सबसे अधिक पहुँच, सीमा। किसी वस्तु या बात का सबसे अधिक परिणाम जो ठहराया गया हो। किसी बात की उचित सीमा, मर्यादा। मु०~बाँधना = सीमा निर्धारित करना। ~से हिसाब नहीं = बहुत ही ज्यादा, अत्यंत। ~से ज्यादा = बहुत अधिक, अत्यंत।

हदका—पुं० धक्का, आघात।

हदस—स्त्री० डर, भय, आशंका।

हदीस—स्त्री० [अ०] मुसलमानों का वह धर्मग्रंथ जिसमें मुहम्मद साहब के वचनों का

संग्रह हैं और जिसका व्यवहार बहुत कुछ स्मृति के रूप मे होता है।

हनन—पु० [सं०] मार डालना, वध करना। लुप्त या न्यून करना। आघात करना, पीटना। गुणा करना (गणित)। **हनना** (पु)†—सक० मार डालना, वध करना। आघात करना, प्रहार करना। पीटना, ठोकना। लकडी से पीट या ठोककर बजाना।

हनिवंत(पु)†—पु० दे० 'हनुमान्'। **हनुंव**(पु)—पु० दे० 'हनुमान्'।

हनु—स्त्री० [सं०] दाढ की, हड्डी, जबडा। ठुड्डी, चिबुक। ⊙**मंत** = पुं० [हिं०] दे० 'हनुमान्'। ⊙**मान्** = पु० रामचद्रजी की बडी सेवा और सहायता करनेवाले एक वीर बदर, महावीर। वि० दाढ या जबडेवाला। भारी दाढ या जबडेवाला। बहुत बडा वीर।

हनूफाल—पुं० एक प्रकार का मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १२ मात्राएँ और अन मे गुरु लघु होते हैं।

हनूमान्—पुं० [सं०] दे० 'हनुमान्'।

हनोज—अव्य० [फा०] अभी अभी तक।

हप—पु० मुँह मे चट से लेकर ओठ बद करने का शब्द। मु०~**कर जाना** = झट से मुँह मे डालकर खा जाना।

हफ्ता—पुं० [फा०] सप्ताह।

हबकना†—अक० खाने या दाँत काटने के लिये झट से मुह खोलना। सक० दाँत काटना।

हबर हबर—क्रि० वि० जल्दी जल्दी, उतावली से। जल्दी के कारण ठीक तौर से नही, हडबडी से।

हबराना(पु)†—सक० दे० 'हडबडाना'।

हबशी—पुं० [फा०] हब्श देश का निवासी जो बहुत काला होता है।

हब्बा डब्बा—पुं० जोर जोर से साँस या पसली चलने की बीमारी जो बच्चो को होती है।

हम—सर्व० उत्तम पुरुष बहुवचनसूचक सर्वनाम शब्द, 'मैं' का बहुवचन, एकवचन मे 'मैं' के लिये भी इसका प्रयोग होता है पर क्रिया सदा बहुवचन मे ही रहती है। ⊙**ता** = पुं० अहंकार, 'हम' का भाव। अव्य [फा०] साथ, सग। समान, तुल्य। ⊙**जोली** = पुं० [हिं०] साथी, सगी, सहयोगी। ⊙**राह** = अव्य० (कही जाने मे किसी के) साथ, सग।

हमल—पु० [अ०] स्त्री के पेट मे बच्चे का होना, गर्भ। वि० दे० 'गर्भ'।

हमला—पु० [अ०] युद्धयात्रा, चढाई। धावा मारने के लिये झपटना, आक्रमण। प्रहार, वार। विरोध मे कही हुई बात।

हमहमी—स्त्री० दे० 'हमाहमी'।

हमाम—पुं० दे० 'हम्माम'।

हमारा—सर्व० 'हम' का सबधकारक रूप।

हमाहमी—स्त्री० स्वार्थपरता। अहकार।

हमें—सर्व० 'हम' का कर्म और सप्रदान कारक का रूप, हमको।

हमेल—स्त्री० सिक्को आदि की माला जो गले मे पहनी जाती है।

हमेव(पु)†—पु० अहकार।

हमेशा—अव्य० [फा०] सदा, सदैव।

हमेस(पु)—अव्य० दे० 'हमेशा'।

हमैं(पु)—अव्य० दे० 'हमें'।

हम्माम—पुं० [अ०] नहाने की वह कोठरी जिसमे गरम पानी रखा रहता है, स्नानागार।

हयंद(पु)—पु० बडा या अच्छा घोडा।

हय—पु० [सं०] घोडा। कविता मे सात की मात्रा सूचित करने का शब्द। चार मात्राओ का एक छद। इद्र। ⊙**ग्रीव** = पु० विष्णु के २४ अवतारों मे से एक अवतार। एक राक्षस जो कल्पात में ब्रह्मा की निद्रा के समय वेद उठा ले गया था। ⊙**नाल** = स्त्री० वह तोप जिसे घोडे खीचते हैं। ⊙**मेध** = पुं० अश्वमेध यज्ञ। ⊙**शाला** = स्त्री० घुडसाल।

हयना(पु)—सक० वध करना। मारना पीटना। ठोककर बजाना। नष्ट करना।

हया—स्त्री० [अ०] लज्जा, शर्म।

हर—पु० हल। वि० [सं०] छीनने या लूटनेवाला। दूर करनेवाला, मिटानेवाला। वध या नाश करनेवाला। ले जानेवाला। पुं० महादेव। एक राक्षस जो विभीषण

का मंत्री था। भाजक (गणित)। अग्नि, आग। छप्पय के दसवें भेद का नाम। ठगण के पहले भेद का नाम। वि० [फा०] प्रत्येक, एक एक। मु०~एक = प्रत्येक, एक एक। ~रोज = प्रति दिन। ~दम = सदा।

हरउद†—पुं० शिशुओ को सुलाने के गीत, लोरी।

हरए(पु)—अव्य० धीरे धीरे।

हरकत—स्त्री० [अ०] गति, चाल। चेष्टा, क्रिया। दुष्ट व्यवहार, नटखटी।

हरकना(पु)†—सक० दे० 'हटना'।

हरकारा—पुं० [फा०] चिट्ठीपत्री ले जानेवाला। डाकिया।

हरख(पु)‡—पु० दे० 'हर्ष'।

हरखना—अक० हर्षित होना, प्रसन्न होना।

हरखाना†—अक० दे० 'हरखना'। सक० प्रसन्न करना, खुश करना।

हरगिज—अव्य० [फा०] किसी दशा मे भी, कभी।

हरचंद—अव्य० [फा०] कितना ही, बहुत या बहुत बार। यद्यपि।

हरज—पु० दे० 'हर्ज'।

हरजा—पु० दे० 'हर्ज' और 'हरजाना'।

हरजाई—पु० [फा०] हर जगह घूमनेवाला। आवारा। स्त्री० कुलटा।

हरजाना—पुं० [फा०] हानि का बदला, क्षतिपूर्ति।

हरट्ट(पु)—वि० हृष्टपुष्ट, मजबूत।

हरण—पु० [सं०] छीनना, लूटना या चुराना। हटाना मिटाना। नाश। ले जाना। भाग देना (गणित)।

हरता—पु० दे० 'हर्ता'।

हरता धरता—पुं० [(वैदिक)] सब बातो का अधिकार रखनेवाला।

हरतार—स्त्री० दे० 'हरताल'।

हरताल—स्त्री० पीले रग का एक खनिज पदार्थ जो खानो मे मिलता है और बनाया भी जा सकता है। मु० (किसी बात पर)~फेरना या लगाना = नष्ट करना।

हरतालिका—स्त्री० [सं०] एक व्रत जो भाद्रपद शुक्ल ३ को स्त्रियाँ रहती हैं।

हरताली—पु० एक तरह का पीला रग। वि० हरताल के रग का।

हरद, हरदी(पु)—स्त्री० दे० 'हल्दी'।

हरद्वार—पुं० दे० 'हरिद्वार'।

हरना(पु)†—पु० दे० 'हिरन'। अक० दे० 'हारना'। सक० छीनना, लूटना या चुराना। उठाकर ले जाना। दूर करना, हटाना। मिटाना। मु०—प्राण~ = मार डालना। बहुत सताप या दुःख देना। मन~ = मन आकर्षित करना।

हरनाच्छ†(पु)—पु० दे० 'हिरण्याक्ष'।

हरनी—स्त्री० हिरन की मादा, मृगी। हरनौटा—पु० सिधोरा। डिब्बा।

हरफ—पु०[अ०] अक्षर, वर्ण। मु०—किसी पर~आना = दोष लगाना। ~उठाना = अक्षर पहचानकर पढ लेना।

हरफारेवड़ी—स्त्री० कमरख की जाति का एक पेड़। उक्त पेड का फल।

हरबराना(पु)†—अक० दे० 'हड़बडाना'।

हरबा—पु० हथियार।

हरबोंग—वि० गँवार, अक्खड। मूर्ख, जड। पु० अँधेर, कुशासन। उपद्रव।

हरम—पु० [अ०] अंत पुर, जनानखाना। स्त्री० रखेली स्त्री। दासी। पत्नी।

हरमजदगी—स्त्री० शरारत, बदमाशी।

हरयाल(पु)—स्त्री० दे० 'हरियाली'।

हरये(पु)—अव्य० दे० 'हरए'।

हरवल(पु)—पुं० दे० 'हरावल'।

हरवली—स्त्री० सेना की अध्यक्षता।

हरवा‡—पुं० दे० 'हार'। वि० दे० 'हरुवा'।

हरवाना—अक० जल्दी या उतावली करना। सक० [हराना प्रे०] हराने के लिये प्रेरित करना।

हरवाहा—पुं० दे० 'हलवाहा'।

हरष(पु)‡—पुं० 'हर्ष'। हरषना(पु)—अक० हर्षित होना। पुलकित होना। सक० हर्षित करना। हरषाना(पु)—सक० [अक० हरषना]

हर्षित होना। अक० हर्षित करना।
हरषित (पु)—वि० दे० 'हर्षित'।
हरसना (पु)—अक० दे० 'हरषना'।
हरसा—पुं० दे० 'हरिस'।
हरसिंगार—पुं० एक पेड़ जिसके फूल में पाँच दल और नारंगी रंग की डाँडी होती है, परजाता।
हरहाई—वि० स्त्री० नटखट (गाय)।
हरहाना (पु)—अक० हर्षित होना। रोमांच में प्रफुल्ल होना। सक० हर्षित करना।
हरहार, हरहारू—पुं० [सं०] (शिव का हार) सर्प, साँप। शेषनाग।
हरांस—स्त्री० भय। दुःख, चिंता। थकावट। हरारत।
हरा—स्त्री० [सं०] हर की स्त्री। पुं० घास या पत्ती का सा रंग। (पु) हार, माला। वि० घास या पत्ती के रंग का, सब्ज। प्रसन्न। जो मुरझाया न हो, ताजा। (घाव) जो सूखा या भरा न हो। दाना या फल जो पका न हो। मु०~बाग = व्यर्थ आशा बँधानेवाली बात। ~भरा = जो सूखा या मुरझाया न हो। जो हरे पेड़ पौधों से भरा हो।
हराई—स्त्री० हारने की क्रिया या भाव, हार।
हराना—सक० [अक० हारना] पराजित करना शत्रु को विफलमनोरथ करना। थकाना।
हराम—वि० [अ०] निषिद्ध, बुरा। पुं० वह वस्तु या बात जिसका धर्मशास्त्र में निषेध हो। सूअर (मुसल०)। बेईमानी, अधर्म। स्त्री पुरुष का अनुचित संबंध, व्यभिचार। ⊙**खोर** = पुं० [फा०] पाप की कमाई खानेवाला। मुफ्तखोर। निकम्मा। ⊙**जादा** = पुं० [फा०] दोगला। दुष्ट, बदमाश। मु०—(कोई बात) ~ **करना** = किसी बात का करना मुश्किल कर देना। ~**का** = जो बेईमानी से प्राप्त हो। मुफ्त का। (कोई बात) ~**होना** = किसी बात का मुश्किल हो जाना।
हरामी—वि० व्यभिचार से उत्पन्न। दुष्ट, पाजी।

हरारत—स्त्री० [अ०] गर्मी, ताप। हलका ज्वर।
हरावरि (पु)—स्त्री० दे० 'हड़ावरि'। पु० दे० 'हरावल'।
हरावल—पु० [तु०] सिपाहियों का वह दल जो सबके आगे रहता है।
हरास—पु० भय। आशंका दुःख, रंज। नैराश्य। स्त्री० दे० 'हरांस'। हारने की क्रिया या भाव।
हराहर (पु)—पु० दे० 'हलाहल'।
हरि—अव्य० धीरे, आहिस्ते। वि० प्रत्येक। भूरा या बादामी। पीला, हरा, हरित। पु० [सं०] विष्णु। विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण। श्रीराम। शिव। इंद्र। सूर्य। चंद्रमा। अग्नि। वायु। बंदर। सिंह। मोर, मयूर। सर्प, साँप। घोड़ा। पृथ्वी के एक भाग का नाम। १८ वर्णों का एक छंद। एक पर्वत का नाम। ⊙**कथा** = स्त्री० भगवान् का गुणगान या उनके अवतारों का चरित्रवर्णन। ⊙**कीर्तन** = पु० भगवान् का यशगान या उनके अवतारों की स्तुति का गान। ⊙**गीतिका** = स्त्री० मात्राओं का एक छंद जिसकी आठवीं, १२वीं, १९वीं और २६वीं मात्रा लघु और अंत में लघु गुरु होता है। ⊙**चंदन** = पु० एक प्रकार का चंदन। ⊙**जन** = पु० ईश्वर का भक्त। उस जाति का व्यक्ति जो पहले नीच या अस्पृश्य समझी जाती थी (आधु०)। ⊙**द्वार** = पु० एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती है। ⊙**धाम** = पु० बैकुंठ। ⊙**नग** = पु० सर्प का मणि। ⊙**नाथ** = पुं० हनुमान। ⊙**पद** = पु० [सं०] विष्णु का लोक, बैकुंठ। एक छंद जिसके विषम चरणों में १६ तथा सम चरणों में ११ मात्राएँ तथा अंत में गुरु लघु होता है। ⊙**पुर** = पु० बैकुंठ। ⊙**प्रिया** = स्त्री० लक्ष्मी। एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ४६ मात्राएँ और अंत में गुरु होता है। तुलसी। लालचंदन। ⊙**प्रोता** = स्त्री०

एक प्रकार का शुभ मुहूर्त (ज्योतिष)। ⊙लीला = स्त्री० १४ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, भगण, दो जगण और अत मे गुरु लघु हो। ⊙लोक = पुं० वैकुठ। ⊙वश = पुं० कृष्ण का कुल। वह ग्रथ जिसमे कृष्ण तथा उनके कुल के यादवो का वृत्तात है। ⊙वासर = पुं० रविवार। विष्णु का दिन, एकादशी। ⊙शयनी = स्त्री० आषाढ शुक्ल एकादशी। ⊙सौरभ = पु० कस्तूरी, मृगमद।

हरिअर(पु)‡—वि० हरा, सब्ज। हरिअरी (पु)†—स्त्री० दे० 'हरियाली'।

हरिआना—अक० हरा होना, पल्लवित हो उठना। हरिआली—स्त्री० हरेपन का विस्तार। घास और पेड पोधो का फैला हुआ समूह। ताजगी, प्रसन्नता।

हरिजान (पु)—पुं० दे० 'हरियान'।

हरिण—पुं० [स०] मृग, हिरन। हिरन की एक जाति। हस। सूर्य। ⊙प्लुता = स्त्री० एक वर्णार्ध समवृत्त जिसके विषम चरणो मे तीन सगण, लघु गुरु और सम मे नगण, दो भगण तथा अत मे रगण हो।

हरिणाक्षी—वि० स्त्री० [सं०] हिरन की आंखो के समान सुदर आँखोवाली (सुदरी)।

हरिणी—स्त्री० [सं०] हिरन की मादा। स्त्रियो के चार भेदो मे के एक जिसे चित्रिणी भी कहते हैं (कामशास्त्र)। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से नगण, रगण, सगण और अत मे लघु गुरु हो। दश वर्णों का एक वृत्त।

हरित्—वि० [सं०] भूरे या बादामी रग का। हरा। पुं० सूर्य के घोडे का नाम। मरकत, पन्ना। सिंह। सूर्य।

हरित—वि० [सं०] भूरे या बादामी रग का। पीला, जर्द। हरा, सब्ज। ⊙मणि = पुं० मरकत, पन्ना। हरिताभ—वि० [सं०] जिसमे हरे रग की आभा हो।

हरितालिका—स्त्री० [सं०] दे० 'हरतालिका'।

हरिद्रा—स्त्री० [सं०] हल्दी। जगल। मगल।

⊙राग = पुं० साहित्य मे वह पूर्वराग जो स्थायी या पक्का न हो।

हरिन—पुं० खुर और सीगवाला एक चौपाया जो प्राय सुनसान मैदानों, जगलो और पहाडो मे रहता है, मृग। हरिनी—स्त्री० मादा हिरन।

हरियर(पु)‡—वि० दे० 'हरा'। हरियाई(पु)†—स्त्री० दे० 'हरियाली'।

हरियाना—पुं० हिसार और रोहतक के आस-पास का प्रात।

हरियाली—स्त्री० हरे रग का फैलाव। हरे हरे पेड पौधो का समूह या विस्तार। दूब। आनद, प्रसन्नता। ⊙तीज = स्त्री० सावन वदी तीज। मु०~सूझना = चारों ओर आनद ही आनद दिखाई पडना।

हरिस—स्त्री० हल के दोनो छोरो के बीच का लबा लट्ठा।

हरिहर क्षेत्र—पुं० [स्त्री०] विहार मे एक तीर्थस्थान जहाँ कार्तिक पूर्णिमा को भारी मेला होता है।

हरिहाई(पु)—वि० स्त्री० दे० 'हरहाई'।

हरी—पु० दे० 'हरि'। स्त्री० [सं०] १४ वर्णो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से जगण, रगण, जगण, रगण और अत मे लघु गुरु हो।

हरीकेन—स्त्री० [अं०] एक प्रकार की लालटेन।

हरीतकी—स्त्री० [सं०] हड, हर्रे।

हरीतिमा—स्त्री० [सं०] हरे भरे पेड़ो का विस्तार, हरियाली।

हरीरा (पु)†—वि० हरा, सब्ज। हर्षित, प्रसन्न। पु० [अ०] एक प्रकार का पेय पदार्थ जो दूध मे मसाले और मेवे डालकर औटाने से बनता है।

हरीस—स्त्री० दे० 'हरिस'।

हरुअ(पु)—वि० हलका।

हरुआ(पु)†—वि० दे० 'हलका'। ⊙ई† = स्त्री० हलकापन। फुरती।

हरुआना†—अक० हलका होना, फुरती करना।

हरुए†(पु)——क्रि० वि० धीरे धीरे । इस प्रकार जिसमे आहट न मिले, चुपचाप ।
हरू(पु)——वि० दे० 'हलका' ।
हरूफ——पुं० [अ०] अक्षर ।
हरे(पु)——क्रि० वि० धीरे से, मंद । (शब्द) जो ऊँचा या जोर का न हो । हलका, कोमल (आघात, स्पर्श आदि) ।
हरेक——वि० दे० 'हरएक' ।
हरेरी(पु)——स्त्री० दे० 'हरियाली' ।
हरेव——पु० मगोलो का देश । मगोल जाति ।
हरेवा——पु० हरे रंग की एक चिड़िया, हरी वुलवुल ।
हरै(पु)——क्रि० वि० दे० 'हरे' ।
हरैया†(पु)——पु० हरनेवाला ।
हरौल——पुं० दे० 'हरावल' ।
हरौहर(पु)†——स्त्री० लूट, वलपूर्वक छीनना ।
हर्ज——पु० [अ०] काम मे रुकावट । नुकसान । ⊙मर्ज = पु० बाधा, अडचन ।
हर्ता——पु० [सं०] हरण करनेवाला । नाश करनेवाला । हर्तार——पुं० हर्ता ।
हर्फ——पु० दे० 'हरफ' ।
हर्म——पुं० [अ०] अत पुर, जनानखाना ।
हर्म्य——पुं० [सं०] सुदर प्रासाद, महल ।
हर्र——स्त्री० दे० 'हड़' । हर्रा——पु० वडी जाति की हड । हर्रे——स्त्री० दे० 'हड' ।
हर्ष——पु० [सं०] प्रफुल्लता या भय के कारण रोगटो का खडा होना । आनद, खुशी । हर्षण——पु० [सं०] प्रफुल्लता या भय से रोगटो का खडा होना । प्रफुल्लित करना या होना । कामदेव के पाँच बाणो मे से एक । हर्षना(पु)——अक० प्रसन्न होना । हर्षाना(पु)——अक० हर्षित या प्रसन्न होना । सक० आनदित करना । हर्षित——वि० आनदित, प्रसन्न ।
हलंत——पु० [सं०] दे० 'हल्' ।
हल——पु० [अ०] हिसाब लगाना । किसी समस्या का समाधान या उत्तर निकालना । पु० [सं०] वह ओजार जिससे जमीन जोती जाती है । सीर । एक अस्त्र का नाम । ⊙धर = पु० बलराम जी । ⊙मुखी = पु० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण, नगण और सगण आते हैं । ⊙वाह = पु० वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो ।
हलकंप——पु० दे० 'हडकप' ।
हलक——पु० [अ०] गले की नली, कठ । मु०~के नीचे उतरना = पेट मे जाना । (किसी वात का) मन मे बैठना ।
हलकई†——स्त्री० हलकापन । ओछापन । अप्रतिष्ठा ।
हलकन——स्त्री० हलकने की क्रिया या भाव, हिलना । हलकना(पु)†——अक० किसी वस्तु मे भरे हुए जल का हिलाने से हिलना डोलना या शब्द करना । हिलोरें लेना । बत्ती की लौ का झिलमिलाना । हिलना डोलना ।
हलका†——पुं० तरग, लहर । पु० वृत्त, मडल । घेरा । मडली, झुड । हाथियो का झुड । कई मुहल्लो, गाँवो या कसबों का समूह जो किसी काम या व्यवस्था के लिये नियत हो । वि० जो तौल मे भारी न हो । पतला । जो गहरा या चटकीला न हो । उथला । जो उपजाऊ न हो । थोडा । जो जोर का न हो, मद । ओछा, तुच्छ । आसान । जिसे किसी बात के करने की फिक्र न रह गई हो । प्रफुल्ल, ताजा । महीन । घटिया । खाली । ⊙पन = पु० हलका होने का भाव, लघुता । ओछापन, नीचता । अप्रतिष्ठा । मु०~करना = अपमानित करना, तुच्छ ठहराना । हलके हलके = धीरे धीरे ।
हलकाई†——स्त्री० दे० 'हलकापन' । हलकाना†——अक० हलका होना । सक० हलका करना, वोझ कम करना । हिलोरा देना । दे० 'हिलगाना' ।
हलकान†——वि० दे० 'हलाकान' ।
हलकारा†——पु० दे० 'हरकारा' ।
हलकोरा†——पु० तरंग, लहर ।
हलचल——स्त्री० लोगो के बीच फैली हुई अधीरता, घवराहट, दौडधूप, शोरगुल आदि, खलवली । उपद्रव, दंगा । वि० डगमगाता हुआ ।

हलदहात—स्त्री० विवाह मे हलदी चढ़ाने की रस्म ।

हलदी—स्त्री० एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी जड़, जो गाँठ के रूप मे होती है, मसाले और रँगाई के काम मे आती है । उक्त पौधे की गाँठ जो मसाले आदि के काम में आती है । मु०~उठना या चढ़ाना = विवाह के पहले दूल्हे और दूल्हन के शरीर मे हल्दी और तेल लगाने की रस्म होना । ~लगना = विवाह होना । ~लगे न फिटकरी = मुफ्त ।

हलदू—पु० एक बहुत बडा और ऊँचा पेड, करन ।

हलनाⓅ†—अक० हिलना डोलना । घुसना ।

हलफ—पु० [अ०] पवित्र वस्तु की शपथ, कसम । ⊙नामा = पु० [फा०] वह कागज जिसपर कोई बात ईश्वर को साक्षी मानकर अथवा शपथपूर्वक लिखी गई हो । मु०~उठाना = कसम खाना ।

हलफा—पुं० बच्चो को होनेवाला एक प्रकार का श्वास रोग । लहर, तरग ।

हलबलⓅ†—पु० खलबली, हलचल ।

हलबलाना†—अक० दे० 'हडबड़ाना' ।

हलबी, हलब्बी—वि० हलब देश का (शीशा), बढ़िया (शीशा) ।

हलराना—सक० (बच्चो को) हाथ पर लेकर इधर उधर हिलना।

हलवा—पुं० [अ०] एक प्रकार का प्रसिद्ध मीठा भोजन, मोहनभोग । मु०~हलवे माँडे से काम = अपने लाभ ही से मतलब ।

हलवाई—पुं० मिठाई बनाने और बेचनेवाला व्यक्ति ।

हलवाहा—पु० दे० 'हलवाह' ।

हलहल—पु० जल के हिलने डुलने की ध्वनि । किसी द्रव्य मे जलादि द्रव पदार्थ का अत्यधिक मिश्रण ।

हलहलाना†—सक० खूब जोर से हिलाना डुलाना, झकझोरना । अक० काँपना ।

हलाक—वि० मारा हुआ ।

हलाकान†—वि० परेशान, तग ।

हलाकी—वि० मार डालनेवाला, घातक ।

हलाकू—वि० हलाक करनेवाला । पुं० एक तुर्क सरदार जो चंगेज खाँ का पोता और उसी के समान हत्याकारी था ।

हलामला—पु० निबटारा, निर्णय । परिणाम ।

हलाल—वि० [अ०] जो शरअ या मुसलमानी धर्मपुस्तक के अनुकूल हो, जायज । पुं० वह पशु जिसका मास खाने की मुसलमानी धर्मपुस्तक मे आज्ञा हो । ⊙खोर = पुं० [फा०] मिहनत करके जीविका करनेवाला । मेहतर, भगी । मु०~करना = खाने के लिये मुसलमानी शरअ के मुताबिक (धीरे धीरे गला रेतकर) मारना, जबह करना । ~का ⊙ईमानदारी से पाया हुआ ।

हलाहल—पुं० [सं०] वह प्रचड विष जो समुद्रमथन के समय निकला था । भारी जहर । एक जहरीला पौधा ।

हली—पुं० [सं०] बलराम । किसान ।

हलीम—वि० [अ०] सीधा, शात ।

हलुवा—पुं० हलवा ।

हलुक†Ⓟ—वि० दे० 'हलका' ।

हलूक—स्त्री० वमन, कै ।

हलोरⓅ†—पुं० दे० 'हिलोरा' ।

हलोरना—सक० पानी मे हाथ डालकर उसे हिलाना डुलाना । मथना । अनाज फटकना । बहुत अधिक मान मे किसी पदार्थ का सग्रह करना । **हलोरा** Ⓟ†—पु० दे० 'हिलोरा' ।

हल्—पु० [सं०] शुद्ध व्यंजन जिसमे स्वर न मिला हो।

हल्दी—स्त्री० दे० 'हलदी' ।

हल्ला—पुं० चिल्लाहट, शोरगुल । लडाई के समय की ललकार । धावा, हमला ।

हल्लीश—पु० [सं०] एक प्रकार का उपरूपक जिसमे एक ही अंक होता है और नृत्य की प्रधानता रहती है ।

हवन—पु० [सं०] किसी देवता के निमित्त मत्र पढकर घी, जौ, तिल आदि अग्नि में डालने का कृत्य, होम । अग्नि । स्रुवा ।

हवनीय—पुं० हवन के योग्य । पुं० वह

पदार्थ जो हवन करने के समय अग्नि मे डाला जाता है।

हवलदार—पु० बादशाही जमाने का वह अफसर जो राजकर की ठीक ठीक वसूली और फसल की निगरानी के लिये तैनात रहता था। फौज का सबसे छोटा अफसर।

हवस—स्त्री० [अ०] लालसा, चाह। तृष्णा।

हवा—स्त्री० [अ०] पृथ्वी पर रहनेवाले जीवो के श्वास लेने का वह प्राणवायु और नाइट्रोजन द्रव्यो का मिला जुला पदार्थ जो पृथ्वी को चारो ओर से लिफाफे की तरह घेरे हुए हैं, वायु। भूत, प्रेत। प्रसिद्धि, ख्याति। साख। किसी बात की सनक, धुन। ⊙**गाडी** = स्त्री० [हिं०] दे० 'मोटर'। ⊙**चक्की** = स्त्री० [हिं०] आटा पीसने की वह चक्की जो हवा के जोर से चलती हो। हवा की गति से चलनेवाला यत्र। ⊙**दार** = स्त्री० [फा०] जिसमे हवा आने जाने के लिये खिडकियाँ या दरवाजे हो। पुं० बादशाहो की सवारी का एक प्रकार का हलका तख्त। ⊙**बाज** = पुं० [फा०] वह जो हवाई जहाज चलाता या उडाता हो, उडाका। मु०~**उड़ना** = खबर फैलना। अफवाह फैलना। ~**करना** = पखा हाँकना। ~**के घोड़े पर सवार** = बहुत उतावली मे। ~**खाना** = शुद्ध वायु के सेवन के लिये बाहर टहलना। प्रयोजनसिद्धि तक न पहुँचना। ~**पलटना, फिरना या बदलना** = दूसरी ओर की हवा चलने लगना। दूसरी स्थिति या अवस्था होना। ~**पीकर रहना** = बिना आहार के रहना (व्यग्य)। ~**बताना** = किसी वस्तु से वचित रखना, टाल देना। ~**बँधना** = अच्छा नाम हो जाना। बाजार मे साख होना। **बाँधना** = लबी चौड़ी बातें कहना। गप हाँकना। ~**बिगडना** = संक्रामक रोग फैलना। रीति या चाल बिगडना, बुरे विचार फैलना। ~**सा** = बिल्कुल महीन या हलका। ~**से लड़ना** = किसी से अकारण लडना। ~**से बातें करना** = बहुत तेज दौडना या चलना। आप ही आप या व्यर्थ बहुत बोलना। (**किसी की**) ~**लगना** = (किसी की) संगत का प्रभाव पडना। ~**हो जाना** = झटपट चल देना, भाग जाना। एकबारगी गायब हो जाना।

हवाई—वि० स्त्री० एक प्रकार की आतिश-बाजी, आसमानी। हवा का। वायुसंबंधी। आकाश मे होनेवाला। आकाश में से .कर आने वाला। आकाश मे स्थित। ल्पित या झूठ। हवा की भाँति झीना या हल्का। ⊙**जहाज** = पुं० [अ०] हवा मे उडनेवाली सवारी, वायुयान। मु०~(**मुँह पर**) **हवाइयाँ उड़ना** = डर से चेहरे का रंग फीका पड जाना। ~**किला बनाना** = ऐसे मनसूबे गाँठना जो कभी संभव न हो।

हवाल—पु० हाल, दशा। गति; परिणाम। समाचार, वृत्तात।

हवालदार—पु० दे० 'हवलदार'।

हवाला—पुं० [अ०] प्रमाण का उल्लेख। उदाहरण, मिसाल। सुपुर्दगी, जिम्मे-दारी। मु० (**किसी के**) **हवाले करना** = किसी के सुपुर्द करना, सौंपना।

हवालात—स्त्री० [अ०] पहरे के भीतर रखे जाने की क्रिया या भाव, नजरबंदी। अभियुक्त की वह साधारण कैद जो मुकदमे के फैसले के पहले उसे भागने से रोकने के लिये दी जाती है, हाजत। वह मकान या कोठरी जिसमे ऐसे अभियुक्त रखे जाते हैं।

हवास—पुं० [अ०] इद्रियाँ। संवेदन। चेतना, होश। मु०~**गुम होना** = भय आदि से होश ठिकाने न रहना।

हवि—पुं० हवन की वस्तु।

हविष्य—वि० [सं०] हवन करने योग्य। पुं० बलि, हवि। **हविष्यान्न**—पु० वह आहार जो यज्ञ के समय किया जाय।

हविस—स्त्री० दे० 'हवस'।

हवेल(पु)—स्त्री० हुमेल, गले मे पहनने का गहना।

हवेली—स्त्री० [अ०] पक्का बडा मकान; प्रासाद।

हव्य—पु० [सं०] हवन की सामग्री ।
हसद—पु० [अ०] ईर्ष्या, डाह ।
हसन—पु० [स०] हँसना । दिल्लगी । विनोद ।

हसब—अव्य० [अ०] अनुसार, मुताबिक ।
हसरत—स्त्री० [अ०] अफसोस । हार्दिक कामना ।
हसित—वि० [स०] जिसपर लोग हँसते हो । जो हँसा हो । खिला हुआ । पु० हँसना । हँसी ठठ्ठा । हास्य का एक भेद । कामदेव का धनुष ।

हसीन—वि० [अ०] सुंदर, खूबसूरत ।
हसील†—वि० सीधासादा ।
हस्त—पु० [सं०] हाथ । हाथी का सूँड । एक नाप जो २४ अगुल की होती है, हाथ । लिखावट । एक नक्षत्र जिसमे पाँच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथ का सा माना गया है । ⊙क = पुं० हाथ । हाथ से बजाई जानेवाली ताली । करताल । नृत्य की मुद्रा । ⊙कौशल = पुं० किसी काम मे हाथ चलाने की निपुणता । ⊙क्रिया = स्त्री० हाथ का काम, दस्तकारी । हाथ से इंद्रियसचालन । ⊙क्षेप = पु० किसी होते हुए काम मे कुछ कार्रवाई कर बैठना, दखल देना । ⊙गत = वि० हाथ मे आया हुआ, प्राप्त । ⊙त्राण = पु० अस्त्रो के आघात मे रक्षा के लिये हाथ मे पहना जानेवाला दस्ताना । ⊙मैथुन = पु० हाथ के द्वारा इंद्रियसचालन । ⊙रेखा = स्त्री० हथेली मे पडी हुई लकीरें जिनके अनुसार सामुद्रिक मे शुभाशुभ का विचार किया जाता है । ⊙लाघव = पु० हाथ की फुर्ती । हाथ की सफाई । ⊙लिखित = वि० हाथ का लिखा हुआ (ग्रथ आदि) । ⊙लिपि = स्त्री० [सं०] हाथ की लिखावट, लेख ।
हस्ताक्षर—पुं० अपना नाम जो अपने हाथ से लिखा जाय, दस्तखत । **हस्तामलक**—पुं० वह चीज या बात जिसका हर एक पहलू साफ जाहिर हो गया हो ।
हस्तायुर्वेद—पुं० हाथियो के रोगो की चिकित्सा का शास्त्र ।

हस्ति—पु० [सं० 'हस्ती' के लिये समास मे प्रयुक्त] दे० 'हस्ती' । ⊙कंद = पु० एक पौधा जिसका कद खाया जाता है, हाथी-कंद । ⊙दंत = पु० दे० 'हाथीदाँत' । **हस्तिनी**—स्त्री० मादा हाथी, हथिनी । कामशास्त्र के अनुसार स्त्री के चार भेदो मे से निकृष्ट भेद । **हस्ती**—पु० हाथी । स्त्री० [फा०] अस्तित्व । होने का भाव ।
हस्तिनापुर—पु० कौरवो की राजधानी जो वर्तमान दिल्ली नगर मे कुछ दूरी पर थी ।

हस्त—अव्य० [स०] हाथ से, मारफत ।
हहर—स्त्री० थर्राहट, कँपकँपी । भय । ⊙ना = अक० काँपना । डर के मारे काँप उठना, थर्राना । चकित रह जाना । डाह करना । अधिक[illegible] देखकर चक-पकाना । **हहराना**—अक० काँपना । डरना । सक० दहलना । दे० 'हरहराना' ।
हहा—स्त्री० हँसने का शब्द, ठट्टा । गिड-गिडाने का शब्द । हाहाकार । मु० ~खाना = बहुत गिडगिडाना ।

हाँ—अव्य० स्वीकृतिसूचक शब्द । एक शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि जो बात पूछी जा रही है, वह ठीक है । वह शब्द जिसके द्वारा किसी बात का दूसरे रूप मे या अंशतः माना जाना प्रकट किया जाता है । (पु)दे० 'यहाँ' । मु० ~**करना** = राजी होना । ~**मे हाँ मिलाना** = (खुशामद के लिये) बुरी भली सभी बातो का अनुमोदन करना ।
हाँक—स्त्री० किसी को बुलाने के लिये जोर से निकाला हुआ शब्द । ललकार, गर्जन । उत्साह दिलाने का शब्द, बढावा । दुहाई । मु० ~**देना या** ~**लगाना** = जोर से पुकारना । ~**मारना** = दे० 'हाँक लगाना' ।
हाँकना—सक० चिल्लाकर बुलाना । लडाई या धावे के समय गर्व से चिल्लाना । बढ़ बढकर बोलना । मुँह से बोलकर या चाबुक आदि मारकर जानवरो को आगे बढ़ाना । खीचने-वाले जानवर को चलाकर गाड़ी, रथ

आदि चलाना। मारकर या बोलकर चौपायो को भगाना। पखे से हवा पहुँचाना।

हाँका—पु० पुकार, टेर। ललकार। गरज। दे० 'हँकवा'।

हाँगी—स्त्री० हामी, स्वीकृति।

हाँड़ना—सक० व्यर्थ इधर उधर फिरना। वि० आवारा फिरनेवाला।

हाँड़ी—स्त्री० मिट्टी का मँझोला बरतन जो बटलोई के आकार का हो, हँडिया। इसी प्रकार का शीशे का वह पात्र जो सजावट के लिये कमरे मे टाँगा जाता है। मु०~चढ़ना = कोई चीज पकाने के लिये हाँडी का आग पर रखा जाना। ~पकना = हाँडी मे पकाई जानेवाली चीज का पकना। कोई षट्चक्र रचा जाना।

हाँता(पु)—वि० छोड़ा हुआ। हटाया हुआ। **हाँति**(पु)—स्त्री० समाप्ति, नाश। **हाँती**—स्त्री० पार्थक्य, विमुखता।

हाँपना, हाँफना—अक० कड़ी मिहनत करने, दौड़ने या रोग आदि के कारण जोर जोर से साँस लेना। **हाँफा**—पुं० हाँफने की क्रिया या भाव।

हाँसना(पु)†—अक० दे० 'हँसना'।

हाँसल—पुं० वह घोड़ा जिसका रग मेहँदी सा लाल और चारो पैर कुछ काले हो।

हाँसी—स्त्री० हँसी। परिहास, दिल्लगी। उपहास, निंदा।

हाँ हाँ—अव्य० निषेध या वारण करने का शब्द।

हा—अव्य० [सं०] शोक या दुःखसूचक शब्द भयसूचक शब्द। वि० हनन करनेवाला।

हाइ(पु)†—अव्य० दे० 'हाय'।

हाई—स्त्री० दशा, हालत। ढग, घात।

हाऊ—पु० हौवा, भकाऊँ।

हाकलि—पु० [सं०] एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राएँ और अत मे एक गुरु होता है। **हाकलिका**—स्त्री० १५ अक्षरों का एक वर्णवृत्त। **हाकली**—स्त्री० दस अक्षरो का एक वर्णवृत्त।

हाकिम—पु० [अ०] शासक। बड़ा अफसर। **हाकिमी**—स्त्री० [हिं०] हाकिम का काम, प्रभुत्व, शासन। वि० हाकिम का, हाकिम सबधी।

हाजत—स्त्री० [अ०] जरूरत, आवश्यकता। चाह। हिरासत। मु०~मे देना या रखना = हवालात मे डालना।

हाजमा—[अ०] पाचन क्रिया, पाचन शक्ति।

हाजिर—वि० [अ०] समुख, उपस्थित। ⊙ जवाब = वि० बात का चटपट अच्छा जवाब देने मे होशियार। ⊙बाश = वि० [फा०] सदा हाजिर रहनेवाला।

हाजी—पु० [अ०] वह जो हज कर आया हो।

हाट—स्त्री० दूकान। बाजार। बाजार लगने का दिन। मु० ~करना = दूकान रखकर बैठना। सौदा लेने के लिये बाजार जाना। ~चढना = बाजार मे बिकने के लिये आना। ~लगना = दुकान या बाजार मे बिक्री की चीजें रखी जाना।

हाटक—पु० [सं०] सोना, स्वर्ण। ⊙पुर = पु० लका।

हाड़⊙†—पु० हड्डी। कुलीनता।

हाता—पु० घेरा हुआ स्थान, बाड़ा। देश-विभाग, प्रात। सीमा। मारनेवाला। वि० अलग, दूर किया हुआ। नष्ट।

हातिम—पु० [अ०] चतुर, कुशल। किसी काम मे पक्का आदमी, उस्ताद। एक प्राचीन अरब सरदार जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार प्रसिद्ध है। बड़ा मनुष्य। मु०~की कब्र पर लात मारना = बहुत अधिक उदारता या परोपकार करना (व्यग्य)।

हाथ—पुं० बाहु से लेकर पजे तक का अग, विशेषत कलाई और हथेली या पजा, हस्त। लबाई की एक नाप जो मनुष्य की कुहनी से लेकर पजे के छोर तक की मानी जाती है। ताश, जुए आदि के खेल मे एक एक आदमी के खेलने की बारी, दाँव। ⊙पान = पु० हथेली की पीठपर पहनने का एक

गहना। ⊙ फूल = पु० हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना। मु०—(किसी को) ~उठना = प्रणाम करना। (किसी पर) ~उठाना = किसी को मारने के लिये थप्पड़ या घूंसा तानना। मारना। ~ऊंचा होना = दान देने मे प्रवृत्त होना। संपन्न होना। ~कट जाना = कुछ करने लायक न रह जाना। प्रतिज्ञा आदि से बद्ध हो जाना। ~की मैल = तुच्छ वस्तु। ~के हाथ = उसी समय। ~खाली होना = पास मे कुछ द्रव्य न रह जाना। ~खुजलाना = मारने को जी करना। प्राप्ति के लक्षण दिखाई पडना। ~खींचना = किसी काम से अलग हो जाना, योग न देना, बंद कर देना। ~चलाना = मारने के लिये थप्पड़ तानना, मारना। ~चूमना = किसी की कारीगरी पर इतना खुश होना कि उसके हाथों को प्रेम की दृष्टि से देखना। ~छोड़ना = मारना, प्रहार करना। ~जोड़ना = प्रणाम करना। अनुनय विनय करना। (दूर से) ~जोड़ना = सवधान रखना, किनारे रहना। ~डालना = किसी काम मे योग देना। ~तंग होना = खर्च करने के लिये रुपया पैसा न रहना। (किसी वस्तु या बात से) ~धोना = खो देना, नष्ट करना। ~धोकर पीछे पड़ना = किसी काम मे जी जान से लग जाना। ~पकड़ना = किसी काम से रोकना। आश्रय देना। विवाह करना। ~पत्थर तले दबना = संकट या कठिनता की स्थिति मे पड़ना। लाचार होना। ~पर~धरे बैठे रहना = कुछ काम धंधा न करना। ~पसारना या फैलाना = याचना करना। ~पाँव चलना = काम धंधे के लिये सामर्थ्य होना। ~पाँव ठंढे होना = मर जाना। प्राणांत होना। भय या आशंक से स्तब्ध हो जाना। ~पाँव निकालना = मोटा ताजा होना। सीमा का अतिक्रमण करना। ~पाँव फूलना = डर या शोक से घबरा जाना। ~पाँव पटकना = छटपटाना। ~पाँव मारना या हिलाना = प्रयत्न करना। बहुत परिश्रम करना। ~पैर जोड़ना = विनती करना। (किसी वस्तु पर) ~फेरना = किसी वस्तु को उड़ा लेना, ले लेना। (किसी काम मे) ~बँटाना = शामिल होना। ~बाँधे खड़ा रहना = सेवा मे बराबर उपस्थित रहना। ~मलना = बहुत पछताना। निराश और दुःखी होना। (किसी वस्तु पर) ~मारना = गायब कर लेना। ~मे आना या पड़ना = अधिकार या वश मे आना। ~मे करना = वश मे करना, ले लेना। (मन) ~मे करना = मोहित करना। ~मे होना = अधिकार मे होना। ~रँगना = घूस लेना। ~रोपना या ओड़ना = हाथ फैलाना, माँगना। (कोई वस्तु) ~लगना = प्राप्त होना। (किसी काम मे) ~लगना = आरंभ होना। किसी के द्वारा जाना। (किसी काम मे) ~लगाना = आरंभ करना, योग देना। ~लगाना = स्पर्श करना। ~लगे मैला होना = बहुत स्वच्छ और पवित्र होना। हाथों~ = एक के हाथ से दूसरे के हाथ मे होते हुए। ⊙हाथों लेना = बड़े आदर और सम्मान से स्वागत करना। ⊙लगे = (जो काम हो रहा हो) उसी सिलसिले मे, साथ ही। हत्था—पु० मूठिया, दस्ता। पंजे की छाप या चिह्न जो गीले पिसे चावल और हल्दी आदि पोतकर दीवार पर छापने से बनता है। 'हाथी। †थाल्हे से पानी उलीचकर खेत सींचने का काठ का एक औजार। हाथाजोड़ी—स्त्री० एक पौधा जो ओषधि के काम मे आता है। हाथापाई, हाथाबाहीं = वह लड़ाई जिसमे हाथ पैर चलाए जायँ, धौलधप्पड़।

हाथी—स्त्री० हाथ का सहारा। पुं० एक विशालकाय मोटे चमड़ेवाला स्तनपायी चौपाया जिसके कान बहुत चौड़े होते हैं नाक के स्थान पर लटकनेवाली इसकी सूँड़ मोटी और लंबी तथा दुम छोटी होती है। नर मे सूँड के दोनो ओर एक एक सफेद दाँत निकला रहता है। ⊙खाना = पुं० [फा०] फीलखाना। ⊙दाँत = पुं० हाथी के मुँह के दोनो छोरों पर निकले हुए सफेद दाँत जो केवल दिखावटी होते हैं।

⊙नाल=स्त्री० हाथी पर चलनेवाली तोप हथनाल। ⊙पाँव=पु० दे० 'फीलपा'। ⊙वान=पु० फीलवान, महावत। मु०~की राह=आकाशगगा। ~पर चढना=बहुत अमीर होना। ~बाँधना=बहुत अमीर होना।

हान(पु)†--स्त्री० दे० 'हानि'। पु० त्याग, छोडना।

हानना(पु--सक० मारना।

हानि--स्त्री० [सं०] नाश, अभाव। नुकसान, घाटा। स्वास्थ्य मे बाधा। अपकार, बुराई। †दु ख, पश्चात्ताप। ⊙कर=वि० हानि करनेवाला, जिससे नुकसान पहुँचे। बुरा परिणाम उपस्थित करनेवाला। तंदुरुस्ती बिगाडनेवाला। ⊙कारक=वि० दे० 'हानिकर'।

हाफिज--पु० [अ०] वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान कठ हो।

हामी--पु० वह जो हिमायत करता हो। सहायक। स्त्री० हाँ करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति। ~भरना=मजूर करना।

हाय--अव्य० शोक, दु ख या कष्ट सूचित करनेवाला शब्द। स्त्री० पीडा, दु ख। ईर्ष्या। मु०--(किसी की)~पड़ना=पहुँचाए हुए दु ख या कष्ट का बुरा फल मिलना।

हायन--पु० [सं०] वर्ष साल।

हायल--वि० [अ०] ।. दो वस्तुओ के बीच मे पडनेवाला, रोकनेवाला। (पु वि० [हि०] घायल। शिथिल। मूर्छित। ⊙ताई=स्त्री० शिथिलता।

हाय हाय--अव्य० शोक, दु ख या शारीरिक कष्टसूचक शब्द। दे० 'हाय'। स्त्री० दु ख, शोक। परेशानी, झझट।

हाया(पु--प्रत्य० (किसी वस्तु के लिये) आतुर, व्याकुल।

हार--पुं० [सं०] सोने, चाँदी या मोतियो आदि की माला जो गले मे पहनी जाय। ले जानेवाला। मनोहर। अकगणित मे भाजक। पिंगल या छद शास्त्र मे गुरु मात्रा। नाशक। ⊙बध=पुं० एक चित्रकाव्य जिसमे पद्य हार के आकार मे रखे जाते हैं। हार=प्रत्य० [हिं०] दे० 'हारा'। स्त्री० लडाई, खेल, बाजी या चढा ऊपरी मे जोड या प्रतिद्वद्वी के सामने न जीत सकने का भाव, पराजय। शिथिलता, थकावट। हानि। जब्ती, राज्य द्वारा हरण। विरह। मु०~खाना हारना।

हारक--वि० [सं०] हरण करनेवाला। मनोहर। पुं० चोर, लुटेरा। गणित मे भाजक। हार, माला।

हारद(पु--वि० दे० 'हार्दिक'।

हारना--सक० लडाई, बाजी आदि की सफलता के साथ न पूरा करना। गँवाना, खोना। छोड़ देना, न रख सकना। दे देना। अक० पराजित होना। थक जाना। प्रयत्न मे निराश होना, असमर्थ होना। हारकर=लाचार होकर। हारे दर्जे=लाचार होकर।

हारवार(पु--स्त्री० दे० 'हडबडी'।

हारा†--प्रत्य० एक पुराना प्रत्यय जो किसी शब्द के आगे लगकर कर्तव्य, धारण या सयोग आदि सूचित करता है, व ला।

हारित--पुं० [सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त। (पु वि० [हिं०] हारा हुआ। खोया हुआ। दे० 'हारा'।

हारिल--पुं० एक प्रकार की चिडिया जो प्राय अपने चगुल मे कोई लकड़ी या तिनका लिए रहती है।

हारी--वि० [सं०] हरण करनेवाला। ले जानेवाला। चुगनेवाला। दूर करनेवाला। पुं० एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण और दो गुरु होते हैं।

हारीत--पुं० [सं०] चोर, लुटेरा। चोरी, लुटेरापन। कण्व ऋषि के एक शिष्य। हारी छद।

हारील—पुं० दे० 'हरावल'।
हार्दिक—वि० [सं०] हृदय संबंधी। हृदय से निकला हुआ, सच्चा।
हाल—स्त्री० हिलने की क्रिया या भाव। लोहे का वह बंद जो पहिए के चारो ओर घेरे में चढाया जाता है। पुं० [अ०] दशा, अवस्था। परिस्थिति। समाचार, वृत्तांत। ब्योरा। कथा। ईश्वर में तन्मयता, लीनता (मुसल०)। वि० वर्तमान, चलता। अव्य० इस समय। तुरंत। ⊙चाल=पुं० [हिं०] समाचार। मु०~ का=नया, ताजा। ~में=थोडे ही दिन हुए।
हालगोला—पुं० गेंद।
हालडोला—पु० हिलने की क्रिया या भाव, गति। हलचल। भूकंप।
हालत—स्त्री० [अ०] दशा, अवस्था। आर्थिक दशा। संयोग, परिस्थिति।
हालना(पु)†—अक० हिलना डोलना। काँपना झूमना।
हालरा—पु० बच्चों को लेकर हिलाना डुलाना। झोंका, लहर।
हालांकि—अव्य० [फा०] यद्यपि, गोकि।
हाला—स्त्री० [सं०] मद्य, शराब।
हालाहल—पु० [सं०] दे० 'हलाहल'।
हालिम—पु० एक पौधा जिसके बीज औषध के काम में आते हैं, चंसुर।
हाली—अव्य० जल्दी, शीघ्र।
हाली रुपया—पु० दक्षिण हैदराबाद का रुपया।
हालो—पु० दे० 'हालिम'।
हाव—पु० [सं०] संयोग के समय में नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं। इनकी संख्या ११ है। ⊙भाव=पु० स्त्रियों की वह मनोहर चेष्टा जिससे पुरुषों का चित्त आकर्षित होता है, नाज नखरा।
हाशिया—पु० [अ०] किनारा, कोर। गोट, मगजी। हाशिए या किनारे पर का लेख, नोट। हाशिए का गवाह=वह गवाह जिसका नाम किसी दस्तावेज के किनारे दर्ज हो। ~चढ़ाना=किसी बात में मनोरंजन आदि के लिये कुछ और बात जोडना।
हास—पु० [सं०] हँसी दिल्लगी, मजाक। उपहास। ⊙क=पु० हँसने हँसानेवाला।
हासिल—वि० [अ०] पाया हुआ, मिला हुआ। पु० गणित करने में किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेष भाग के कहीं रखे जाने पर बच रहे। उपज, पैदावार। लाभ। गणित की क्रिया का फल। जमा, लगान।
हासी—वि० [सं०] हँसनेवाला।
हास्य—वि० [सं०] जिसपर लोग हँसें। उपहास के योग्य। पु० हँसी। साहित्य में नौ स्थायी भावों और रसों में से एक। उपहास, निंदापूर्ण हँसी। दिल्लगी, मजाक। ⊙क=पु० हँसी की बात या किस्सा, चुटकुला। हास्यास्पद—पु० वह जिसके बेढंगेपन पर लोग हँसी उड़ावें।
हाहंत—अव्य [सं०] अत्यंत शोकसूचक शब्द।
हाहा—पु० [सं०] हँसने का शब्द। बहुत विनती की पुकार, दुहाई। ⊙कार=पु० घबराहट की चिल्लाहट, कुहराम। ⊙ठीठी~⊙हीही=स्त्री० [हिं०] हँसी ठट्ठा। मु०~करना या खाना=गिड-गिडाना।
हाहाहूत(पु)—पु० दे० 'हाहाकार'।
हाही—स्त्री० कुछ पाने के लिये 'हाय हाय' करते रहना।
हाहू—पु० कोलाहल। हलचल, धूम।
हाहू बेर—पु० जंगली बेर, झड़बेर।
हिंकरना—अक० दे० 'हिनहिनाना'।
हिंकार—पु० [सं०] गाय के रँभाने का शब्द।
हिंगलाज—स्त्री० दुर्गा या देवी की एक मूर्ति जो सिंध में है।
हिंगु—पु० [सं०] हींग।
हिंगुल—पु० [सं०] ईंगुर, शिंगरफ।
हिंगोट—पु० एक कँटीला जंगली पेड। इसके गोल छोटे फलों से तेल निकलता है। इंगुदी।
हिंछा(पु)†—स्त्री० दे० 'इच्छा'।
हिंडन—पु० [सं०] घूमना, फिरना।
हिंडोरना—पुं० हिंडोला, झूला।

हिंडोरा (पु)—पुं० दे० 'हिंडोला'। हिंडोल—पुं० [हिं०] हिंडोला। एक प्रकार का राग। हिंडोलना†—पुं० दे० 'हिंडोला'। हिंडोला—पुं० [हिं०] नीचे ऊपर घूमनेवाला एक चक्कर जिसमें लोगों के बैठने के लिये छोटे छोटे मंच बने रहते हैं। पालना। झूला।

हिंताल—पुं० [सं०] एक प्रकार का खजूर।

हिंद—पुं० [फा०] हिंदोस्तान, भारतवर्ष।

हिंदवाना†—पुं० तरबूज, कलिंदा।

हिंदवी—स्त्री० [फा०] हिंदी भाषा।

हिंदी—वि० [फा०] हिंदुस्तान का, भारतीय। पुं० हिंद का रहनेवाला, भारतवासी। स्त्री० हिंदुस्तान की भाषा। हिंदुस्तान में दिल्ली और मेरठ के आस पास के बोलचाल की भाषा। उत्तर भारत की साहित्यिक भाषा। भारत की राजभाषा।

हिंदुस्तान—पुं० [फा० हिंदोस्तान] भारतवर्ष। भारतवर्ष का उत्तरीय मध्य भाग जो दिल्ली से पटने तक है (प्राचीन)। हिंदुस्तानी—वि० हिंदुस्तान का निवासी। स्त्री० हिंदुस्तान की भाषा। बोलचाल या व्यवहार की वह हिंदी जिसमें न तो बहुत अरबी, फारसी के शब्द हों, न संस्कृत के। उर्दू भाषा।

हिंदुस्थान—पुं० दे० 'हिंदुस्तान'।

हिंदू—पुं० [फा०] हिंदू धर्म को माननेवाला। वेद, स्मृति, पुराण अथवा किसी भारतीय ऋषि या महापुरुष के उपदेशों के अनुसार चलनेवाला।

हिंदोस्तान—पुं० दे० 'हिंदुस्तान'।

हियाँ (पु)†—अव्य० दे० 'यहाँ'।

हिंव—पुं० दे० 'हिम'।

हिंवार—पुं० हिम, बर्फ।

हिंस—स्त्री० घोड़ों के बोलने का शब्द, हिनहिनाहट।

हिंसक—पुं० [सं०] हिंसा करनेवाला, हत्यारा। बुराई या हानि करनेवाला। जीवों को मारनेवाला पशु। शत्रु। हिंसन—पुं० जीवों का वध करना। पीड़ा पहुँचाना, सताना। अनिष्ट करना या चाहना। हिंसा—स्त्री० प्राण लेना या कष्ट देना। हानि पहुँचाना। हिंसात्मक—वि० जिसमें हिंसा हो। हिंसालु—वि० हिंसा करनेवाला।

हिंस्र, हिंस्रक—वि० [सं०] खूँखार।

हि—एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले तो सब कारकों में होता था, पर पीछे कर्म और संप्रदान में ही ('को' के अर्थ में) रह गया। (पु)†अव्य० दे० 'ही'।

हिअ, हिआ—पुं० दे० 'हृदय'।

हिआव—पुं० दे० 'हियाव'।

हिकमत—स्त्री० [अ०] विद्या। कलाकौशल। युक्ति, उपाय। चतुराई का ढंग, चाल। हकीमी। हिकमती—वि० [हिं०] तदबीर सोचनेवाला। चतुर, चालाक। किफायती।

हिक्का—स्त्री० [सं०] हिचकी। बहुत हिचकी आने का रोग।

हिचक—स्त्री० कोई काम करने में वह रुकावट जो मन में मालूम हो, आगा पीछा। हिचकना—अक० हिचकी लेना। आगा-पीछा करना। हिचकिचाना—अक० हिचकना। हिचकिचाहट—स्त्री० दे० 'हिचक'।

हिचकी—स्त्री० पेट की वायु का झोंके के साथ ऊपर चढ़कर कंठ में धक्का देते हुए निकलना। रह रहकर सिसकने का शब्द। मु०~हिचकियाँ लगना = मरने के निकट होना।

हिचर मिचर—स्त्री० सोचविचार। आनाकानी, टालमटोल।

हिजड़ा—पुं० दे० 'हीजड़ा'।

हिजरी—पुं० [अ०] मुसलमानी सन या संवत् जो मुहम्मद साहब के मक्के से मदीने भागने की तारीख (१५ जुलाई, सन् ६२२) से आरंभ होता है।

हिज्जे—पुं० किसी शब्द में आए हुए अक्षरों को मात्राओं सहित कहना, वर्तनी।

हिज्र—पुं० [अ०] जुदाई, वियोग।

हित—अव्य० (किसी के) लाभ के हेतु, खातिर या प्रसन्नता के लिये। हेतु, लिये, वास्ते। वि० [सं०] भलाई करने या

चाहनेवाला। पुं० लाभ, फायदा। कल्याण, भलाई, उपकार। स्वास्थ्य के लिये लाभ। प्रेम, स्नेह। मित्रता, खैरखाही। भला चाहनेवाला आदमी, मित्र। सबंधी। ⊙कर, कारक = पु० भलाई करनेवाला। लाभ पहुँचानेवाला। स्वास्थ्यकर। ⊙कारिता = स्त्री० हितकारक होने का भाव। ⊙कारी = वि० दे० 'हितकर'। ⊙चिंतक = पुं० भला चाहनेवाला। ⊙चिंतन = पु० किसी की भलाई की कामना या इच्छा। ⊙वादी = वि० हित की बात कहनेवाला। हितावह—वि० दे० 'हितकारी'। हिताहित—पु० भलाई बुराई, लाभ हानि। हितेच्छु—वि० दे० 'हितैषी'। हितैषिता—स्त्री० खैरखाही। हितैषी—वि० भला चाहनेवाला।

हितवना (पु)†—अक० दे० 'हिताना'। **हिताना** (पु)—अक० हितकारी होना, अनुकूल होना। प्रेमयुक्त होना। प्यारा या अच्छा लगना। **हिताई**—स्त्री० [हिं०] नाता, रिश्ता। **हिती, हितू**—पु० [हिं०] खैरखाह। नातेदार। सुहृद्, स्नेही।

हितौना (पु)†—अक० दे० 'हिताना'।

हिदायत—स्त्री० [अ०] अधिकारी की शिक्षा। निर्देश। आज्ञा, आदेश।

हिनती (पु)‡—स्त्री० दे० 'हीनता'।

हिनहिनाना—अक० घोड़े का बोलना, हींसना।

हिना—स्त्री० [अ०] मेंहदी।

हिफाजत—स्त्री० [अ०] किसी वस्तु को इस प्रकार रखना कि वह नष्ट न होने पावे, रक्षा। देखरेख।

हिब्बा—पुं० [अ०] दाना। दान। ⊙नामा = पुं० [फा०] दानपत्र।

हिमंचल (पु)†—पुं० दे० 'हिमाचल'।

हिमत (पु)†—पुं० दे० 'हेमंत'।

हिम—पुं० [सं०] पाला, बर्फ। जाड़ा, ठंड। जाड़े की ऋतु। चद्रमा। चदन। कपूर। मोती। कमल। वि० ठंडा, सर्द। ⊙उपल = पुं० ओला, पत्थर। ⊙कण = पु० बर्फ या पाले के महीन टुकड़े। ⊙कर = पु० चद्रमा। ⊙किरण = पु० चंद्रमा। ⊙भानु = पुं० चद्रमा। ⊙वत् = पु० दे० 'हिमवान्'। ⊙वान् = वि० जिसमे बर्फ या पाला हो। पु० हिमालय पहाड़। कैलाश पर्वत। चद्रमा। हिमांशु—पुं० चद्रमा। हिमाचल—पु० हिमालय पर्वत। हिमाद्रि—पु० हिमालय पहाड़। हिमानी—स्त्री० [सं०] तुषार, पाला। बरफ। बरफ की वे बड़ी चट्टानें या नदियाँ जो ऊँचे पहाड़ों पर होती हैं, ग्लेशियर। हिमालय—पु० [सं०] भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर का पहाड़ जो संसार के सब पर्वतो से बड़ा और ऊँचा है।

हिमयानी—स्त्री० [फा०] रुपया पैसा रखने की जालीदार लबी थैली जो कमर मे बाँधी जाती है।

हिमांशु—पु० [सं०] दे० 'हिम' मे।

हिमाकत—स्त्री० [अ०] बेवकूफी। अनधिकार चेष्टा।

हिमाचल—पु० [सं०] दे० 'हिम' मे।

हिमाद्रि—पुं० [सं०] दे० 'हिम' मे।

हिमानी—स्त्री० [सं०] दे० 'हिम' मे।

हिमामदस्ता—पुं० खरल और बट्टा।

हिमायत—स्त्री० [अ०] पक्षपात। समर्थन। हिमायती—वि० [फा०] समर्थन या मडन करनेवाला। मददगार

हिमालय—पुं० [सं०] दे० 'हिम' मे।

हिमि (पु)—पुं० 'हिम'।

हिम्मत—स्त्री० [अ०] कठिन या कष्टसाध्य कर्म करने की मानसिक दृढ़ता साहस। बहादुरी। मु०~हारना = साहस छोड़ना। हिम्मती—वि० फा०] साहसी, दृढ़। पराक्रमी, बहादुर।

हिय—पुं० हृदय, मन। छाती। मु०~हारना = हिम्मत छोड़ना। हियरा—पुं० हृदय। छाती।

हियाँ†—अव्य० दे० 'यहाँ'।

हिया—पुं० दे० 'हिय'। मु०—हिये का अंधा। अज्ञानी, मूर्ख। हिये की फूटना = बुद्धि न होना। हिया जलना = अत्यत क्रोध मे होना। हिये में लोन सा लगना बहुत

=बहुत बुरा लगना। हिये लगना = गले से लगना। विशेष—दे० 'जी' और 'कलेजा' के मुहावरे।

हियाव—पु० साहस, जीवट। मु०~खुलना = साहस हो जाना। सङ्कोच या भय न रहना।~पड़ना = साहस होना।

हिरकना(पु)†—अक० पास होना। सटना। **हिरकाना** (पु)†—सक० नजदीक ले जाना, सटाना, भिड़ाना।

हिरण(पु)†—पु० दे० 'हिरन'।

हिरण्मय—वि० [सं०] सोने का, सुनहला।

हिरण्य—पु० [सं०] सोना। वीर्य। कौड़ी। धतूरा। अमृत। **हिरण्यगर्भ**—पु० वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। ब्रह्मा। सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा। विष्णु। **हिरण्यनाभ**—पु० [सं०] विष्णु। मैनाक पर्वत। **हिरण्यरेता**—पु० [सं०] अग्नि। सूर्य। शिव।

हिरदय, हिरदै—पु० दे० 'हृदय'।

हिरन—पु० हरिन, मृग। मु०~हो जाना = भाग जाना। **हिरनौटा**—पु० हिरन का बच्चा।

हिरफतबाज—वि० [अ० + फा०] चालबाज।

हिरमजी—स्त्री० [अ०] लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी।

हिरस‡—स्त्री० दे० 'हिर्स'।

हिराती—पु० एक जाति का घोड़ा जो अफगानिस्तान के उत्तर हिरात देश में होता है। यह गरमी मे नही थकता।

हिराना†—अक० खो जाना। न रह जाना। मिटना, दूर होना। हक्का बक्का होना। अपने को भूल जाना। सक० भूल जाना, ध्यान मे न रहना।

हिरावल—पु० दे० 'हरावल'।

हिरास—स्त्री० [अ०] चिंता, दुःख। भय। वि० निराशा।

हिरासत—स्त्री० [अ०] पहरा, चौकी। कैद, नजरबंदी।

हिरौंजी‡—स्त्री० दे० 'हिरमजी'।

हिरौल(पु)—पु० दे० 'हरावल'।

हिर्स—स्त्री० [अ०] लालच, तृष्णा। इच्छा का वेग। किसी की देखादेखी कुछ काम करने की इच्छा।

हिलकना—अक० हिचकी लेना। सिसकना। दे० 'हिलगना'। **हिलकी**(पु)†—स्त्री० हिचकी। सिसकने का शब्द, सिसकी।

हिलकोर, हिलकोरा—पु० लहर, तरंग।

हिलग—स्त्री० लगाव, संबंध। लगन, प्रेम। परिचय। **हिलगना**—अक० अटकना, टँगना। फँसना। हिलमिल जाना। पास होना, सटना। **हिलगाना** = सक० अटकाना। टाँगना। फँसाना। मेल जोल करना। परचाना। सटाना।

हिलसा—स्त्री० एक प्रकार की मछली।

हिलना—अक० चलायमान होना, स्थिर न रहना। सरकना, चलना, काँपना। खूब जमकर बैठा न रहना, ढीला होना। झूमना। पैठना (विशेषतः पानी मे)। परिचित और अनुरक्त होना, परचना। प्रवेश करना, घुसना (विशेषतः पानी मे)। ⊙मिलना = घनिष्ठ संबंध रखना। ⊙डोलना = चलायमान होना। घूमना। प्रयत्न करना। **हिलाना**—सक० डुलाना, चलायमान करना। स्थान से उठाना। टालना। कँपाना। नीचे ऊपर या इधर उधर डुलाना, झुलाना। घुसाना पैठाना।

हिलोर—पु० तरंग, लहर। मु०~हिलोरें लेना = लहराना। **हिलोरना**—सक० पानी को इस प्रकार हिलाना कि लहरें उठें। लहराना। किसी वस्तु की ढेरी इस प्रकार हिलाना डुलाना जिसमे बड़ी बड़ी या स्वच्छ वस्तुएँ ऊपर हो जाएँ। **हिलोरा**—पु० दे० 'हिलोर'।

हिलोल—पु० दे० 'हिलोर'।

हिल्लोल—पु० [सं०] हिलोरा, तरंग। आनंद की तरंग।

हिवँ—पु० पाला, बर्फ। **हिवाँर**—पु० बर्फ, पाला।

हिसका—पु० ईर्ष्या। स्पर्धा।

हिसाब—पु० [अ०] गिनती, लेखा। लेनदेन या आमदनी खर्च आदि का लिखा हुआ ब्योरा, लेखा। गणित विद्या। गणित

विद्या का प्रश्न। भाव, दर। नियम। समझ। दशा। व्यवहार। रीति। किफायत। ⊙किताब = पु० आमदनी, खर्च आदि का व्योरा जो लिखा हो। ढग, चाल। मु०—बेडा या टेढ़ा~ = कठिन कार्य। अव्यवस्था। बे ~ = बहुत अधिक। ~करना = जो कुछ जिम्मे आता उसे दे देना। ~चुकाना या चुकता करना = जो कुछ जिम्मे निकलता हो, हो उसे देना। ~देना = जमा खर्च का व्योरा बताना। ~बैठना = ठीक ठीक जैसा चाहिए, वैसा प्रबंध होना। सुभीता होना। ~रखना = आमदनी खर्च आदि का व्योरा लिखकर रखना। ~लेना या समझना = यह पूछना या जानना कि कितनी रकम कहाँ खर्च हुई। ~से = सयम से, परिमित। लिखे हुए व्योरे के मुताबिक। परिणाम, क्रम या गति के अनुसार, मुताबिक। विचार से, ध्यान से।

हिसिषा(पु)†—स्त्री० स्पर्धा, होड। उतना अश जितना प्रत्येक को विभाग करने पर मिले, बखरा। विभाग, तकसीम। विभाग, खड अवयव। साझा। हिस्सेदार—पु० [अ० हिस्सा + फा० दार] वह जिसे कुछ हिस्सा मिला या मिलनेवाला हो। साझेदार।

हिहिनाना—अक० दे० 'हिनहिनाना'।

हींग—स्त्री० एक छोटा पौधा जो अफगानिस्तान और फारस मे आप से आप बहुत होता है। इस पौधे का जमाया हुआ दूध या गोद जिसमे बडी तीक्ष्ण गध होती है और जिसका व्यवहार दवा और मसाले मे होता है।

हींछना—अक० उत्साह करना, चाहना। हींछा†—स्त्री० चाह, ख्वाहिश।

हींस—स्त्री० घोडे या गधे के बोलने का शब्द। हींसना—अक० दे० 'हिनहिनाना'। गधे का बोलना।

हींहीं—स्त्री० हँसने का शब्द।

ही—अव्य० एक अव्यय जिसका व्यवहार जोर देने के लिये या निश्चय, अल्पता, परिमिति तथा स्वीकृति आदि सूचित करने के लिये होता है। एक विभक्ति जिसका प्रयोग कर्म के लिये 'हि' के समान होता है। पु० दे० 'हिय', 'हृदय'।

ही—अक० ब्रजभाषा के 'होने' (होना) क्रिया के भूतकाल 'हो' [= था] का स्त्री० रूप, थी।

हीअ—पु० दे० 'हिय'

हीक—स्त्री० हिचकी। हलकी अरुचिकर गध।

हीचना(पु)†—अक० दे० 'हिचकना'।

हीठना—अक० पास जाना, फटकना। जाना, पहुँचना।

हीन—वि० [सं०] परित्यक्त। रहित। घटिया। ओछा, नीच। तुच्छ। सुखसमृद्धि-रहित, हीन। कम। दीन, नम्र। पु० प्रमाण के अयोग्य साक्षी, बुरा गवाह। अधम नायक (साहित्य)। ⊙कला = वि० जिसमे कला न हो, कलारहित। ⊙कुल = वि० नीच कुल का। ⊙क्रम = पु० काव्य मे एक दोष जो उस स्थान पर माना जाता है जहाँ जिस क्रम से गुण गिनाए गए हो, उसी क्रम से गुणी न गिनाए जायँ। ⊙ता = स्त्री० कमी क्षुद्रता। ओछापन। बुराई। ⊙त्व = पु० हीनता। ⊙बल = वि० कमजोर। ⊙बुद्धि = वि० दुर्बुद्धि, मूर्ख। ⊙यान = पु० बौद्ध सिद्धात की आदि और प्राचीन शाखा जिसके ग्रथ पाली भाषा मे हैं। ⊙योनि = वि० नीच कुल या जाति का। ⊙रस = पु० काव्य मे एक दोष जो किसी रस का वर्णन करते समय उस रस के विरुद्ध प्रसग लाने से होता है। यह वास्तव मे रसविरोध ही है। ⊙वीर्य = पु० कमजोर। हीनांग—वि० जिसका कोई अग न हो, खडित अगवाला। अधूरा।

हीनोपमा—स्त्री० [सं०] काव्य मे वह उपमा जिसमे बडे उपमेय के लिये छोटा उपमान लाया जाय।

हीय, हीया(पु)—पु० दे० 'हिय'।

हीर—पु० किसी वस्तु के भीतर का सार भाग, गूदा या सत। लकडी के भीतर का सार भाग। धातु, वीर्य। शक्ति, बल। पु० [सं०] हीरा नामक रत्न। वज्र, बिजली। छप्पय के

६२ वे भेद का नाम। २३ मात्राओ का वह छद जिसके आदि मे गुरु और अत मे रगण हो। एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, सगण, नगण, जगण, नगण और रगण होते हैं। सांप।

हीरक—पुं० [सं०] हीरा नामक रत्न। हीर छद।

हीरा—पुं० एक रत्न या बहुमूल्य पत्थर जो अपनी चमक और कडाई के लिये प्रसिद्ध है। ⊙कसीस = पुं० लोहे का वह विकार जो देखने मे कुछ हरापन लिए मटमैले रग का होता है। ⊙मन = पुं० तोते की एक कल्पित जाति जिसका रंग सोने का सा माना जाता है।

हीरो⑤—पुं० हृदय, हियरा।

हीलना⑤†—अक० दे० 'हिलना'।

हीला—पुं० [अ०] बहाना, मिस। निमित्त, वसीला। ⊙हवाला = पुं० बहाना।

ही ही—स्त्री० 'ही ही' शब्द के साथ हँसने की क्रिया।

हुँ—अव्य० दे० 'हूँ'।

हुँकरना—अक० दे० 'हुँकारना'। हुँकार—पुं० [सं०] ललकार, डाँटने का शब्द। गरज। चीत्कार। हुँकारना—अक० डपटना। गरजना। चिग्घाडना। हुँकारी—स्त्री० 'हुँ' करने की क्रिया। स्वीकृतिसूचक शब्द, हामी। दे० 'बिकारी'।

हुकृति—स्त्री० [सं०] दे० 'हुँकार'।

हुँड़ार—पुं० दे० 'भेडिया'।

हुँडावन—स्त्री० हुंडी की दर। हुडी की दस्तूरी। हुडी लिखने की क्रिया या भाव।

हुंडी—स्त्री० वह कागज जिसपर एक महाजन दूसरे महाजन को कुछ रुपया देने के लिये लिखकर किसी को रुपये के बदले मे देता है, निधिपत्र, चेक। उधार रुपए देने की एक रीति जिसमे लेनेवाले को साल भर मे २०)का २५) या १५) का २०)देना पडता है। मु०—दर्शनी~ = वह हुडी जिसके दिखाते ही रुपये चुकता कर देने का नियम हो। ~सकारना = हुडी के रुपए का देना स्वीकार करना।

हुँते—अव्य० से, द्वारा। ओर से, तरफ से।

हु⑤†—अव्य० अतिरेकसूचक शब्द, कथित के अतिरिक्त और भी।

हुआना—अक० 'हुआँ हुआँ' करना, गीदडों का बोलना।

हुक—स्त्री० क प्रकार का दर्द जो प्राय पीठ या किसी नस मे होता है। पुं० [अ०] टेढ़ी कील। अँकुसी।

हुकरना—अक० दे० 'हुँकारना'। हुकारना—अक० 'हुँकारना'।

हुकुम†—पुं० दे० 'हुक्म'।

हुकूमत—स्त्री० [अ०] शासन, आधिपत्य। राज्य, शासन। मु०~चलाना = प्रभुत्व या अधिकार से काम लेना। ~जताना = अधिकार या बडप्पन प्रकट करना।

हुक्का—पुं० तबाकू का धुआँ खीचने या तबाकू पीने के लिये विशेष रूप से बना एक नल या यत्र, फरशी। ⊙पानी = पुं० [हिं०] एक दूसर के हाथ से हुक्का तबाकू, जल आदि पीने और पिलाने का व्यवहार, बिरादरी की राहरस्म। मु०~पानी बंद करना = बिरादरी से अलग करना।

हुक्काम—पु० [अ०] हाकिम लोग, अधिकारी वर्ग।

हुक्म—पु० [अ०] बडे का वचन जिसका पालन कर्तव्य हो, आज्ञा। स्वीकृति, इजाजत। अधिकार, शासन। विधि, नियम। ताश के पत्तो का एक रग। ⊙नामा—= पु० [फा०] वह कागज जिसपर हुक्म लिखा हो, आज्ञापत्र। ⊙बरदार = पुं० [फा०] आज्ञाकारी, सेवक। मु०~उठाना = हुक्म रद करना। आज्ञापालन करना। ~की तामील = आज्ञा का पालन। ~चलाना या जारी करना = आज्ञा देना। ~तोड़ना = आज्ञा भग करना। ~देना = आज्ञा करना। ~बजाना या बजा लाना = आज्ञापालन करना। ~मानना = आज्ञापालन करना।

हुक्मी—वि० दूसरे की आज्ञा के अनुसार

काम करनेवाला, पराधीन। जरूर असर करनेवाला, अचूक। अवश्य कर्तव्य, जरूरी।

हुचकी†—स्त्री० दे० 'हिचकी'।

हुजूम—पु० [अ०] भीड़।

हुजूर—पु० [अ०] किसी बड़े का सामीप्य। बादशाह या हाकिम का दरबार, कचहरी। बहुत बड़े लोगों के संबोधन का शब्द। हुजूरी—पु० [हिं०] खास सेवा में रहनेवाला नौकर। दरबारी, मुसाहब। खुशामदी। हुजूर का, सरकारी।

हुज्जत—स्त्री० [अ०] व्यर्थ का तर्क। विवाद, झगड़ा। हुज्जती—वि० [हिं०] हुज्जत करनेवाला।

हुड़क, हुड़कन—स्त्री० हुड़कने की क्रिया या भाव। हुड़कना—अक० वियोग के कारण बहुत दुःखी होना। भयभीत और चिंतित होना। तरसना।

हुड़दंग—पु० धमाचौकड़ी, उपद्रव।

हुड़क—पु० एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल।

हुड्ड—दे० जंगली, गँवार। उद्दंड। बहुत ऊँचा, लंबा तड़ंगा।

हुढक्क(पु)†—पु० दे० 'हुड़क'।

हुत—वि० [सं०] आहुति दिया हुआ।

हुत(पु)—अक० 'होना' क्रिया का प्राचीन भूतकाल का रूप, था।

हुता(पु)†—अक० 'होना' क्रिया का पुरानी अवधी हिंदी का भूतकालिक रूप, था।

हुताशन—पुं० [सं०] अग्नि, आग।

हुति(पु)—अव्य० अपादान और करण कारक का चिह्न, द्वारा। ओर से, तरफ से।

हुते(पु)—अक० [होना का ब्रज० का भूतकालिक बहुवचनांत रूप] थे।

हुतो†—अक० [होना का ब्रज का भूतकालिक रूप] था।

हुदना(पु)†—अक० स्तब्ध होना, रुकना।

हुदकना(पु)†—सक० उसकाना, उभारना।

हुदहुद—पुं० [अ०] एक चिड़िया।

हुन—पुं० मोहर, अशरफी। सोना। मु०~बरसना = धन की बहुत अधिकता होना।

हुनना†—सक० आहुति देना। हवन करना।

हुनर—पु० [फा०] कला, कारीगरी। गुण। करतब। कौशल, चतुराई। ⊙मंद = वि० कलाकुशल, निपुण।

हुन्न(पु)—पु० दे० 'हुन'।

हुब्ब—स्त्री० [अ० हुब] प्रेम। मित्रता। इच्छा।

हुमकना—अक० उछलना कूदना। पैरों से जोर से लगाना। पैरों को आघात के लिये जोर से उठाना। चलने का प्रयत्न करना, ठुमकना (बच्चों का)। दबाने के लिये जोर लगाना।

हुमगना—अक० दे० 'हुमकना'।

हुमसना—अक० उठना। दे० 'उमसना'।

हुमेल—स्त्री० सिक्कों को गूँथ कर बनी हुई एक प्रकार की माला।

हुरदंगा—पुं० दे० 'हुड़दंगा'।

हुलसना—अक० आनंद से फूलना। उभरना, उठना। उमड़ना। (पु)सक० आनंदित करना। हुलसाना—सक० आनंदित करना। हुलसित(पु)—वि० आनंद की उमंग में भरा हुआ।

हुलसी—स्त्री० उल्लास, आनंद की उमंग। किसी किसी के मत से तुलसीदास जी की माता का नाम।

हुलहुल—पु० एक छोटा पौधा।

हुलाना†—सक० दे० 'हूलना'।

हुलास—पु० आनंद की उमंग, उल्लास। उत्साह, हौसला। उमगना, बढ़ना। स्त्री० सुँघनी।

हुलिया—पुं० [अ०] शकल, आकृति। किसी मनुष्य के रूप रंग आदि का विवरण। मु०~कराना या लिखाना = किसी आदमी का पता लगाने के लिये उसकी शकल सूरत आदि पुलिस में दर्ज कराना। ~बिगड़ना = चेहरे का रंग उतर जाना, आकृति खराब होना। बहुत घबड़ा जाना।

हुल्लड़—पुं० शोरगुल। उपद्रव, ऊधम। हलचल, आंदोलन।

हुल्लास—पुं० पादाकुलक के अंत में त्रिभंगी के मेल से बना एक छंद। उल्लास, उमंग।

हुश—अव्य० अनुचित बात मुँह से निकालने वाले को रोकने का शब्द।

हुसियार(पु)†—वि० दे० 'होशियार'।

हुस्न—पुं० [अ०] सौंदर्य। तारीफ की बात, खूबी। ⊙परस्त=वि० [अ०+फा०] सौंदर्य का उपासक या प्रेमी।

हुस्यार(पु)‡—वि० दे० 'होशियार'।

हूँ—अव्य० स्वीकारसूचक शब्द। अव्य० दे० 'हूँ'। सर्व० वर्तमानकालिक क्रिया 'है' उत्तम पुरुष एकवचन का रूप।

हूँकना—अक० गाय का दुःख सूचित करने के लिये धीरे धीरे बोलना, हुँड़कना। हुँकार शब्द करना, वीरों का ललकारना या डपटना।

हूँठ—वि० साढ़े तीन। हुँठा—पु० साढ़े तीन का पहाड़ा।

हूँस—स्त्री० ईर्ष्या, डाह। बुरी नजर। कोसना, फटकारना। ⊙ना=सक० नजर लगाना। अक० ईर्ष्या से जलना। ललचना। कोसना।

हू†—अव्य०—एक अतिरेकबोधक शब्द, भी।

हूक—स्त्री० छाती या कलेजे का दर्द, साल। पीड़ा, कसक। संताप।

हूकना—अक० सालना, दुखना। पीड़ा से चौंक उठना।

हूठ(पु)†—अक० हटना, टलना। मुड़ना, पीठ फेरना।

हूठा—पुं० अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा, ठेंगा। भद्दी या गँवारू चेष्टा। मु०~देना =ठेंगा दिखाना, अशिष्टता से हाथ मटकाना।

हूड़—वि० दे० 'हुड्ड'।

हूण—पुं० [सं०] एक प्राचीन मंगोल जाति जो प्रबल होकर एशिया और योरप के सभ्य देशों पर आक्रमण करती हुई फैली थी। ईसा की पाँचवी सदी मे हूणो ने भारत के पश्चिमी हिस्सो पर अधिकार कर लिया था।

हूत—वि० [सं०] बुलाया हुआ।

हूनना†—सक० आग मे डालना। विपत्ति में डालना।

हूबहू—वि० [अ०] ज्यों का त्यो, ठीक वैसा ही।

हूर—स्त्री० [अ०] मुसलमानो के स्वर्ग की अप्सरा। पुं० पाकिस्तान के सिंध प्रदेश के मुसलमानो की एक शाखा।

हूरना†—सक० बहुत अधिक भोजन करना। मारना। हूलना।

हूल—स्त्री० भाले, डंडे आदि की नोक को जोर से ठेलना अथवा भोंकना। हूक, शूल। कोलाहल। हर्षध्वनि। ललकार। खुशी। उबकाई, मिचली। ⊙ना—सक० लाठी भाले आदि की नोक को जोर से ठेलना या घुसाना। शूल उत्पन्न करना। हूला—पुं० हूलने की क्रिया या भाव।

हूश—वि० उजड्ड। अशिष्ट।

हूह—स्त्री० कोलाहल, युद्धनाद।

हूहू—पुं० अग्नि के जलने का शब्द, धाँय धाँय।

हृत—वि० [सं०] पहुँचाया हुआ। हरण किया हुआ। हृति—स्त्री० [सं०] ले जाना, हरण। नाश। लूट।

हृत्कंप—पु० [सं०] हृदय की कँपकँपी। अत्यंत भय। हृत्तंत्री—स्त्री० [सं०] हृदयरूपी तंत्री या वीणा। हृत्तल—पुं० [सं०] हृदय, कलेजा। हृत्पिंड—पुं० [सं०] कलेजा।

हृद्—पुं० [सं०] हृदय, दिल। ⊙गत= वि० हृदय का, आतरिक। मन मे बैठा या जमा हुआ। प्रिय, रुचिकर। ⊙रोग =पुं० हृदय मे होनेवाला रोग (जैसे धड़कन आदि)। ⊙रोध=पु० हृदय की गति का रुक जाना।

हृदयंगम—वि० [सं०] मन मे बैठा हुआ, समझ मे आया हुआ।

हृदय—पु० [सं०] छाती के भीतर बाईं ओर मांशपेशियो से बना हुआ एक सिकुड़ने और फैलनेवाला खोखला अवयव जो शरीर मे रक्तसचार का केंद्र है। दिल। छाती। प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा, क्रोध आदि मनोविकारो का स्थान अंत.करण,

मन। अतरात्मा, विवेकबुद्धि। ⊙ग्राही = पुं० मन को मोहित करनेवाला। ⊙निकेत = पु० कामदेव। ⊙विदारक = वि० अत्यत शोक, करुणा या दया उत्पन्न करनेवाला। ⊙वेधी = वि० मन को अत्यत मोहित या दुखी करनेवाला, अत्यन्त कटु। अत्यत शोक करनेवाला। ⊙स्पर्शी = वि० हृदय पर प्रभाव डालनेवाला। ⊙हारी = वि० मन को लुभानेवाला। मु०~विदीर्ण होना = अत्यत शोक होना। हृदयालु—वि० साहसी। उदार। हृदयवाला। सहृदय। हृदयेश, हृदयेश्वर—पुं० हृदय का स्वामी, बहुत प्यारा प्रियतम। पति।

हृदवाला—वि० दे० 'हृदयालु'।

हृदि—क्रि० वि० [सं०] हृदय मे।

हृद्य—वि० [सं०] हृदय का, भीतरी। अच्छा लगनेवाला। सुदर, लुभावना। स्वादिष्ट।

हृषि—स्त्री० [सं०] हर्ष, आनद।

हृषीक—पु० [सं०] ज्ञानेंद्रिय, आँख, कान, नाक, मुँह और त्वचा।

हृषीकेश—पुं० [सं०] विष्णु। श्रीकृष्ण। पूस का महीना।

हृष्ट—वि० [सं०] हर्षित, अत्यत प्रसन्न। ⊙पुष्ट = वि० मोटा ताजा, तगडा। ⊙रोम = वि० पुलकित, रोमाचित।

हें—अक० दे० 'है'।

हें हें—पुं० धीरे से हँसने का शब्द। गिड़गिडाने का शब्द।

हेंगा†—पु० जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा, पहटा।

हे—अव्य० [सं०] सबोधन का शब्द। ‡अक० ब्रजभाषा के 'हो'। (=था) का बहुवचन, थे।

हेकड—वि० हृष्टपुष्ट, मोटा ताजा। जबरदस्त, प्रबल। अक्खड, उजड्ड। हेकड़ी—स्त्री० अक्खडपन, ऐंठ। जबरदस्ती, बलात्कार।

हेच—वि० [फा०] तुच्छ, नाचीज। नि सार, पोच।

हेठ—क्रि० वि० नीचे। हेठा—वि० नीचा। घटकर। तुच्छ, नीच। हेठी—स्त्री० प्रतिष्ठा मे कमी, तौहीन।

हेत(पु)—पुं० दे० 'हेतु'।

हेति—स्त्री० [सं०] आग की लपट। वज्र। सूर्य की किरण। भाला। चोट, आघात।

हेती(पु)—स्त्री० दे० 'हेति'।

हेतु—पुं० लगाव, प्रेम सबध। प्रेम, अनुराग। पु० [सं०] वह बात जिसे ध्यान मे रखकर कोई दूसरी बात की जाय, उद्देश्य। कारक या उत्पादक विषय, कारण। उत्पन्न करनेवाला व्यक्ति या वस्तु। वह बात जिसके होने से कोई दूसरी बात सिद्ध हो। तर्क, दलील। एक अर्थालकार जिसमे कारण ही कार्य कह दिया जाता है। ⊙वाद = पुं० तर्क विद्या। कुतर्क, नास्तिकता। ⊙शास्त्र = पुं० तर्कशास्त्र। ⊙हेतुमद्भाव = पुं० कार्य कारण भाव, कारण और कार्य का सबध। ⊙हेतुमद्भूत काल = पुं० क्रिया के भूत काल का वह भेद जिसमें ऐसी दो क्रियाएँ सूचित होती हैं जिनमे दूसरी पहली पर निर्भर होती है (व्या०)। हेतूपमा—स्त्री० दे० उत्प्रेक्षा। हेत्वापह्नुति—स्त्री० वह अपह्नुति अलकार जिसमे प्रकृत के निषेध का कुछ कारण भी दिया जाय। हेत्वाभास—पुं० किसी बात को सिद्ध करने के लिये उपस्थित किया हुआ वह कारण जो कारण सा प्रतीत होता हुआ भी ठीक न हो, असत् हेतु।

हेमंत—पु० [सं०] अगहन और पूस, शीतकाल।

हेम—पु० [सं० मे 'हेमन्' के लिये समास मे] पाला, बर्फ। सोना, स्वर्ण। ⊙कूट = पु० हिमालय के उत्तर का एक पर्वत (पुराण)। ⊙गिरि = पु० सुमेरु पर्वत। ⊙पर्वत = पु० सुमेरु पर्वत। ⊙मुद्रा = स्त्री० सोने का सिक्का अशरफी। हेमाद्रि—पु० सुमेरु पर्वत। ईसा की १३वी शताब्दी के एक प्रसिद्ध ग्रथकार। हेमाभ—वि० [सं०] हेम की सी आभावाला, सुनहला।

हेय—वि० [सं०] छोड़ने योग्य, त्याज्य। बुरा, खराब।

हेरंब—पु० [सं०] गणेश।

हेर(पु)†—स्त्री० ढूँढ। पु० दे० 'अहेर'। हेरना (पु)†—सक० खोजना। देखना। जाँचना। हेरनि—स्त्री० देखने का कार्य।

हेरफेर—पु० घुमाव, चक्कर। बात का आडबर, दाव पेंच, चाल। उलट पलट, अतर, फर्क, अदला बदली। हेराफेरी—स्त्री० हेरफेर, अदल बदल। इधर का उधर होना या करना।

हेराना†—अक० खो जाना, पास से निकल जाना। न रह जाना। लुप्त हो जाना, नष्ट हो जाना। फीका पड जाना। सुध-बुध भूलना, तन्मय होना। सक० [हेरना का प्रे०] तलाश करवाना।

हेरी(पु)—स्त्री० आवाज, पुकार। मु०~देना = पुकारना।

हेल—पुं० कीचड, गोबर का खेप।

हेलना(पु)—अक० क्रीडा करना, केलि करना। हँसी ठट्ठा करना। † प्रवेश करना, घुसना। तैरना। सक० तुच्छ समझना।

हेलमेल—पुं० मिलने जुलने आदि का सबध, घनिष्ठता। सग, साथ। परिचय।

हेलया—क्रि० वि० [स०] खिलवाड मे।

हेला—स्त्री० [सं०] प्रेम की क्रीडा, केलि। नायक से मिलने के समय नायिका का विविध विलास या विनोदसूचक मुद्रा (साहित्य)। खिलवाड़। तुच्छ समझना, तिरस्कार। पुं० [हिं०] पुकार, हाँक। धावा, चढाई। ठेलने की क्रिया या भाव। गलीज उठानेवाला, मेहतर।

हेली(पु)—अव्य० हे सखी। स्त्री० सहेली, सखी।

हेवंत(पु)—पुं० दे० 'हेमत'।

हैं—अव्य० एक आश्चर्यसूचक शब्द।

हैं—अक० सत्तार्थक क्रिया 'होना' के वर्तमान रूप 'है' का बहुवचन रूप।

है(पु)—पु० दे० 'हय'।

है—अक० हिंदी क्रिया होना का वर्तमान-कालिक एकवचन रूप।

हैकड़—वि० दे० 'हेकड'।

हैकल—स्त्री० एक गहना जो घोडो के गले मे पहनाया जाता है। ताबीज, हुमेल।

हैजा—पुं० [अ० हैज:] दस्त और कै की बीमारी, विशूचिका।

हैवर(पु)—पु० अच्छा घोड़ा।

हैम—वि० [सं०] सोने का। सुनहरे रग का। हिम सबधी। जाडे या बर्फ में होनेवाला।

हैमवत—वि० [सं०] हिमालय का, हिमालय सबधी। पु० हिमालय का निवासी। एक राक्षस। एक सप्रदाय का नाम। हैमवती—स्त्री० पार्वती। गगा।

हैरत—स्त्री० [अ०] आश्चर्य, अचभा।

हैरान—वि० [अ०] चकित, भौचक्का परेशान, व्यग्र।

हैवान—पुं० [अ०] पशु, जानवर। बेवकूफ, गँवार या अत्यत निर्दयी आदमी। हैवानी—वि० [हिं०] पशु का। पशु के करने के योग्य।

हैसियत—स्त्री० [अ०] योग्यता, सामर्थ्य। वित्त, बिसात। श्रेणी, दरजा। धन, दौलत।

हैहय—पु० [स०] एक क्षत्रियवश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है और कलचुरि के नाम से प्रसिद्ध है। हैहयवशी कार्तवीर्य सहस्रार्जुन।

है है—अव्य० शोक या दुखसूचक शब्द, हाय हाय।

हों—अक० सत्तार्थक 'होना' का बहुवचन सभाव्य काल का रूप।

होंठ—पु० मुखविवर का उभरा हुआ किनारा जिससे दाँत ढके रहते हैं, ओष्ठ। मु०~काटना या चबाना = भीतरी क्रोध या क्षोभ प्रकट करना।

हो—अव्य० [सं०] पुकारने का शब्द या सबोधन।

हो—अक० सत्तार्थक क्रिया 'होना' के अन्य पुरुष सभाव्य काल तथा मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप। (पु)† ब्रज की वर्तमानकालिक क्रिया 'है' का सामान्य भूत का रूप, था।

होई—स्त्री० एक पूजन जो दीवाली के आठ दिन पहले होता है।

होड़—स्त्री० शर्त, वाजी । स्पर्धा । समान होने का प्रयास । जिद । पुं० एक आदिवासी जाति जो छोटा नागपुर के आसपास रहती है । इस जाति का व्यक्ति । इस जाति की भाषा । **होड़ावादी**—स्त्री० दे० 'होड़ाहोडी' । **होड़ाहोड़ी**—स्त्री० लागडाँट, चढाऊपरी । शर्त, वाजी ।

होत†—स्त्री० पास मे धन होने की दशा, सपन्नता । सामर्थ्य, समाई ।

होतब, होतव्य—पुं० दे० 'होनहार' । **होतव्यता**—स्त्री० दे० 'होनहार' ।

होता—पु० [सं०] यज्ञ मे आहुति देनेवाला ।

होनहार—वि० जो अवश्य होगा, भावी । अच्छे लक्षणोवाला । पुं० वह बात जो होने को हो, वह वात जो अवश्य हो, होनी, भवितव्यता ।

होना—अक० अस्तित्व रखना, उपस्थित रहना । एक रूप से दूसरे रूप मे आना, अन्य दशा, स्वरूप या गुण प्राप्त करना । सावित किया जाना, कार्य का सपन्न किया जाना, भुगतना, सरना । वनना । किसी घटना या व्यवहार का प्रस्तुत रूप में आना, घटित किया जाना । किसी रोग, व्याधि, अस्वस्थता, प्रेतवाधा आदि का आना । वीतना । परिणाम निकलना । प्रभाव या गुण दिखाई पडना । जन्म लेना । काम निकलना । काम विगड़ना, हानि पहुँचना । मु०—**किसी का होना** = किसी के आधार मे, अधीन या आज्ञावर्ती होना । किसी का प्रेमी या प्रेमपात्र होना । किसी का आत्मीय, कुटुवी या सवधी होना । **कहीं का हो रहना** = (कही से) न लौटना, वहुत रुक या ठहर जाना । **हो आना** = मिल आना । **होने पर** = सपन्नता मे । **होजाना या चुकना** = पूरा होना । **हो वैठना** = वन जाना । अपने को समझने लगना या प्रकट करने लगना । मासिक धर्म से होना । **होकर या होते हुए** = गुजरते हुए, वीच से । वीच में ठहरते हुए । पहुँचना, जाना, मिलना । **होकर रहना** = अवश्य घटित होना ।

होनी—स्त्री० उत्पत्ति, पैदाइश । हाल, पूर्वकथा । होनेवाली बात या घटना, भावी । वह बात जिसका होना सभव हो ।

होम—पु० [सं०] देवताओ के उद्देश्य से अग्नि मे घृत, जौ आदि डालना, हवन । ⊙**कुंड** = पु० होम की अग्नि रखने का गड्ढा । ⊙**ना** = सक० [हिं०] हवन करना । उत्सर्ग करना, छोड देना । नष्ट करना । मु०~**कर देना** = जला डालना । नष्ट करना । उत्सर्ग करना ।~**करते हाथ जलना** = अच्छा कार्य करने का वुरा परिणाम होना या अपयश मिलना । **होमीय**—वि० होम सवधी, होम का ।

होरसा—पु० पत्थर की गोल छोटी चौकी जिसपर चंदन घिसते हैं, चौका ।

होरहा—पु० चने का पौधा । हरा चना ।

होरा—पु० दे० 'होला' । स्त्री० [सं० यूनानी भाषा से गृहीत ।] एक अहोरात्र का २४वाँ भाग, घटा, ढाई घड़ी का समय । एक राशि या लग्न का आधा भाग । जन्मकुंडली ।

होरिल—पु० नवजात वालक ।

होरिहार(पु)†—पुं० होली खेलनेवाला ।

होरी—स्त्री० दे० 'होली' ।

होला—पुं० आग मे भूनी हुई हरे चने या मटर की फलियाँ । चने का हरा दाना । स्त्री० [स०] होली का त्योहार । पुं० सिखो की होली जो होली के दूसरे दिन होती है ।

होलाष्टक—पु० [सं०] होली के पहले के आठ दिन जिनमे विवाह कृत्य नही किया जाता ।

होलिका—स्त्री० [सं०] होली का त्योहार । लकडी, घासफुस आदि का वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है । एक राक्षसी का नाम ।

होली—स्त्री० हिंदुओ का एक बड़ा त्योहार जो फाल्गुन के अंत मे मनाया जाता है और जिसमे लोग एक दूसरे पर रंग, अवीर आदि डालते है । लकड़ी, घासफूस आदि का वह ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है ।

एक प्रकार का गीत जो होली के उत्सव में गाया जाता है। मु०~खेलना = एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि डालना। अपव्यय करना।

होश—पुं० [फा०] बोध या ज्ञान की वृत्ति, संज्ञा, चेत। सुध, याद। बुद्धि, समझ। ⊙मंद = वि० दे० 'होशियार'। ⊙व हवास = पुं० चेतना और बुद्धि। मु०~उड़ना, गुम होना या जाता रहना = (भय या आशंका से) सुध बुध भूल जाना। ~करना = सचेत होना। ~की दवा करो = समझ बूझ से काम लो। ~ठिकाने होना—बुद्धि ठीक होना, भ्रांति या मोह दूर होना। चित्त की अधीरता या व्याकुलता मिटना। दंड पाकर भूल का पछतावा होना। ~दंग होना = चित्त चकित होना। ~दिलाना = याद दिलाना। ~में आना = बोध या ज्ञान की वृत्ति फिर लाभ करना। ~सँभालना = सयाना होना।

होशियार—वि० [फा०] चतुर, समझदार। निपुण। सावधान। जिसने होश सँभाला हो, सयाना। चालाक, धूर्त। होशियारी —[फा०] बुद्धिमानी, चतुराई। कौशल, सावधानी।

होसⓅ‡—पुं० दे० 'होश', 'हौस'।

हौंⓅ†—सर्व० ब्रजभाषा का उत्तम पुरुष एक वचन सर्वनाम, मैं।

हौं—अक० होना क्रिया का वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष एकवचन रूप, हूँ।

हौंकनाⓅ†—अक० हुँकार करना। हाँफना। पखा झलना। हवा पहुँचाकर आग को तेज करना।

हौंनी—स्त्री० होनी, भावी।

हौंसⓅ—स्त्री० दे० 'हौस'।

हौⓅ—अव्य० स्वीकृतिसूचक शब्द, हाँ (मध्यप्रदेश)।

हौ—अक० होना क्रिया का मध्यमपुरुष एक-वचन का वर्तमानकालिक रूप, हो। होना का भूतकाल, था।

हौआ—पुं० लड़कों को डराने के लिये एक कल्पित वस्तु, हाऊ। वि० दे० 'हौवा'।

हौका—पुं० किसी बात की बहुत प्रबल इच्छा। दीर्घ विश्वास।

हौज—पु० [अ०] पानी जमा रखने का चहबच्चा, कुंड।

हौड़†—स्त्री० दे० 'होड़'।

हौद—पु० 'हौज'।

हौदा—पु० हाथी की पीठ पर कसा जाने-वाला आसन जिसके चारों ओर रोक रहती है।

हौदी—स्त्री० छोटा हौदा। छोटा हौज, विशेषत. नल का। †जानवरों को सानी खिलाने का मिट्टी का पात्र।

हौमⓅ†—पु० अपनापन, निजत्व।

हौरा†—पु० हल्ला।

हौरेⓅ—क्रि० वि० दे० 'हौले'।

हौल—पु० [अ०] डर, भय। ⊙खौल (जौल) = [अ० + हिं०] भय या शीघ्रता के कारण होनेवाली घबराहट। ⊙दिल = पु० [फा०] दिल की धड़कन। दिल धड़कने का रोग। वि० जिसका दिल धड़कता हो। दहशत में पड़ा हुआ। ⊙दिला = वि० [फा० हौलदिल] डर-पोक। ⊙दिली = स्त्री० [फा०] संग यशब (पत्थर) का वह टुकड़ा जो गले में हृदय संबंधी रोग दूर करने के लिये पहना जाता है। ⊙नाक = वि० [फा०] भयानक। मु०~पैठना या बैठना = जी में डर समाना।

हौली—स्त्री० वह स्थान जहाँ मद्य उतरता और बिकता है, आबकारी।

हौलू—वि० जिसके मन में जल्दी हौल या भय उत्पन्न हो।

हौले—क्रि० वि० धीरे, आहिस्ता। हलके हाथ से।

हौवा—स्त्री० [अ०] पैगंबरी मतों के अनु-सार सबसे पहली स्त्री जो मनुष्य जाति की आदिमाता मानी जाती है। पु० [हिं०] दे० 'हौआ'

हौंस—स्त्री० चाह, प्रबल इच्छा। उमग। हौसला, उत्साह।

हौसला—पु० [अ०] किसी काम को करने की आनंदपूर्ण इच्छा, उत्कठा। उत्साह, और हिम्मत। प्रफुल्लता, उमग। ⊙मद =वि० लालसा रखनेवाला। बढी हुई तबीयत का। उत्साही, साहसी। मु० ~निकालना=अरमान पूरा करना। ~पस्त होना=उत्साह न रह जाना।

ह्याँⓤ†—अव्य० दे० 'यहाँ'।

ह्यो ⓤ†—पु० दे० 'हियो', 'हिय'।

ह्रद—पु०[सं०] बडा ताल, झील। सरोवर, तालाब। ध्वनि, आवाज। किरण।

ह्रदिनी—स्त्री० [सं०] नदी।

ह्रस्व—वि० [सं०] छोटा, जो बड़ा न हो। नाटा, छोटे आकार का। कम। नीचा। तुच्छ। पु० वामन, बौना। दीर्घ की अपेक्षा कम खीचकर बोला जानेवाला स्वर (जैसे, अ, इ, उ)।

ह्रास—पु० [सं०] कमी, घटती। अवनति। शक्ति, वैभव, गुण आदि की कमी। ध्वनि।

ह्री—स्त्री० [सं०] लज्जा, शर्म। दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म की पत्नी मानी जाती है।

ह्वाँⓤ†—अव्य० दे० 'वहाँ'।

पारिभाषिक शब्द

Arithmetic अंकगणित

Absolut परम । पूर्ण । निरपेक्ष ।
Abstract number सारसंख्या । संक्षिप्त संख्या ।
Addition जोड । योग ।
Aliquot part आठवाँ भाग ।
Approximate लगभग ।
Approximately अनुमानतया ।
Approximate value उपसन्न मूल्य । लगभग मूल्य ।
Arthmetic series गणित श्रेणी ।
Average औसत ।
Base (of logarithm) निधान
Binomial दोहरी प्रणाली ।
By (–) भाजित
Cardinal मुख्य । आधारभूत ।
Characteristic (of log) पूर्णांक ।
Coefficient गुणक, सहग
Combination संयोजन ।
Commensuraple मापने योग्य ।
Complex जटिल । मिश्रित ।
Compound चक्रवृद्धि ।
Cempound मिश्र । यौगिक
—interest ब्याज ।
Concrete number बद्ध संख्या
Co-ordinates स्थानांक
Cube घन ।
Cube root घनमूल, तृतीय मूल
Cubic घनत्व ।
Decimal दशमिक
Denominator हर
Difference अंतर

Algebra बीजगणित

Differential calculus अंतर कलन ।
Digit अंक ।
Dimension मात्रा ।
Dividend भाज्य, गुणांश ।
Division विभाजन । श्रेणी ।
Divisor भाजक ।
Double rule of three बहुराशिक ।
Duo-deeimal द्वादशिक ।
Elimination अपनयन ।
Equation समीकरण ।
Equivalent तुल्य जालक ।
Even युग्म, सम, जोड ।
Evolution अवघातन ।
Exponential theorem सूचक सूत्र ।
Expression व्यंजक ।
Facter गुणन खंड ।
Factorial क्रमगुणित ।
Formula सूत्र ।
Fraction अपूर्णांक । भिन्न ।
Function कार्य ।
Geometric series ज्यामिति श्रेणी ।
Graph विंदुरेखा ।
Graphical विंदुरेखीय ।
Highest common factor, H. G. F. महत्तम समापवर्तक ।
Homogeneous एकमात्र ।
Identity परिचयात्मक ।
Imaginary काल्पनिक ।

Improper (farctson) अनुचित (अपूर्णांक) ।
Incommensurable असम्मेय ।
Indeterminant अनिर्णेय ।
Index सूची ।
Infinite, infinity अनत ।
Integer पूर्ण संख्या ।
Integral calculus समाकलन ।
Into (×) गुणा ।
Inverse ratio अक्रमित अनुपात्त ।
Involution अनुघातक ।
Irrational अमूलक ।
Logarithm लागरिद्म ।
Lowest common multiple.
L. C. M. लघुतम समापवर्तक ।
Magnitude परिमान ।
Mantissa (of log.) अंशक ।
Maximum अधिकतम ।
Mean तात्पर्य । माने । मतलब ।
Minimum न्यूनतम ।
Minus ऋण ।
Mixed (fraction) मिश्र ।
Multipe गुणात्मक ।
Multiplicand गुण्य, गुणनीय ।
Multiplicund गुणन, पूरण ।
Multiplier गुणक ।
Negative नकारात्मक ।
Number अक । संख्या । क्रमाक
Numerator संख्यासूचक यत्न ।
Odd विषम ।
Order क्रम ।
Ordinal क्रमित ।
Ordinate कोटि ।
Percent प्रतिशत ।
Permu'ation विन्यास ।
Plus घन ।
Positive सकारात्मक ।
Power शक्ति ।
Practice अभ्यास ।
Present wroth वर्तमान मूल्य ।
Prime प्रधान ।
Product गुणनफल ।
Progression प्रत्यात्मक ।
Proper (farction) प्रकृत ।
Proportion समानुपात । अनुपात ।
Quadratic द्विघात ।
Quantity मात्रा । परिणाम ।
Quotient भागफल । भजनफल । भजनफल ।
Rate दर । भाव ।
Ratio अनुपात ।
Rational परिमेय ।
Reciprocal व्यत्क्रम ।
Recurring आवर्ती ।
Reduction लघु ।
Remainder शेष । बाकी ।
Root मूल ।
Rule of three त्रैराशिक नियम ।
Series श्रेणी ।
Side (of equation) पक्ष ।
Sign चिह्न ।
Significant साक्षर ।
Simple साधारण । अनिश्चित ।
Simplification सरलीकरण ।
Simultaneous dquation सहसमीकरण ।
Solutlon हल ।
Square वर्ग ।
Square root वर्गमूल ।
Subtraction घटाना ।
Sum राशि । योग ।
Surd Term करणी । अवधि ।
Uniform बराबर हिस्सा ।
Unit इकाई ।
Unitary method एकात्म तरीका ।
Unknown quontity अज्ञात । परिणाम ।
Value मूल्य ।

Variable अस्थिर ।
Variation भिन्न ।
Vugar (fraction) सहमान्य ।
Zero शून्य ।

Geometry ज्यामिति

Abscissa भुज ।
Acute angle न्यून कोण ।
Adjacent आसन्न १ ।
Altereate एकातर ।
Angle कोण ।
Arc चाप, अर्क ।
Area क्षेत्र । क्षेत्रफल ।
Arm भुजा ।
Axiom स्वयंसिद्ध ।
Axis अक्ष । धुरी ।
Base आधार ।
Center केंद्र ।
Chord जीवा ।
Circle वृत्त ।
Circular measure वृत्तीय मान ।
Circumference परिधि ।
Circumscribed परिगत ।
Coincidence संपातन ।
Collinear समरोख ।
Complementry (angle) कोटिपूरक (कोण) ।
Concentric एककेंद्रीय । सकेंद्रीय ।
Concurrent संगामी ।
Cone कोन ।
Conjugate अभिसारी ।
Converse विलोम । विपरीत ।
Co-ordinates निर्देशांक ।
Coplaner एकतलीय ।
Corollary उपप्रमेय ।
Corresponding (angle) संगत कोण ।
Cosecant व्युत्क्रमजा (व्युज्या) कोण ।
Cosine कोटि
Contangent कोस्प । काट ।
cross section काट ।
Cube घन ।
Curved वक्र ।
Cylinder सिलिंडर । बेलन ।
Data न्यास । आँकड़े ।
Deduction निगमन ।
Degree अंश ।
Diagonal विकर्ण ।
Diameter व्यास ।
Dihedral angle द्वितल कोण ।
Directrix नियता ।
Divergent अपसारी ।
Eccentricity उत्केंद्रता ।
Ellipse दीर्घवृत्त । इलिप्स ।
Enunciation प्रतिज्ञा ।
Equiangular समकोण, समान-कोणीय ।
Equidistant समदूरस्थ ।
Equilateral समबाहु ।
Escribed बहिर्लेखन ।
Exterior angle बाह्य कोण ।
Fxterngl बाह्य ।
Face फलक ।
Figure संख्या । अंक ।
Focus नाभि । संगम ।
Hyperbola अतिपरवलय । हाइपरबोल ।
Hypotenuse कर्ण ।
Hypothesis परिकल्पना ।
Inclination प्रवृत्ति, झुकाव ।
Included an le अंतर्गत कोण ।
Inscribed अंतर्लिखित । उत्कीर्णन
Internal आंतरिक ।
Intersection कलन । प्रतिच्छेदन

Irregular अनियमित ।
Isosceles समद्विबाहु ।
Latus rectum नाभिलंब ।
Line रेखा ।
Locus बिंदुपथ ।
Lougitudinal section दीर्घच्छेद ।
Major axis दीर्घ अक्ष ।
Minor axis लघु अक्ष ।
Minute कला ।
Normal अभिलब ।
Normal section सामान्य काट । लबच्छेद ।
Oblique section तिर्यक काट, तिरछी काट । अच्छेद ।
Obtuse angle अधिक कोण ।
Octahedron अष्टतलक ।
Opposite (angle) समुख कोण ।
Ordinate कोटि ।
Parabola परवलय ।
Parallel समातर ।
Parallelogram समातर चतुर्भुज ।
Pentagon पचभुज ।
Perimeter परिसीमा । परिमाप । परमार्प ।
Perpendicular लंब ।
Plane समतल ।
Point बिंदु ।
Pole छोर । पोल ।
Polygon बहुभुज ।
Polyhedron बहुफलक ।
Postulate अभिधारण । गृहीत ।
Problem समस्या ।
Projecction प्रक्षेपण । प्रक्षेप ।
Prohortional समानुपाती । अनुपाती ।
ProPosition प्रस्ताव । साध्य ।
Pyramid सूचीस्तभ । पिरामिड ।
Quadrilateral चतुर्भुज ।
Radian रेडियन ।
Radius रेडिअस । अर-पट्ट ।
Rectangle आयत ।
Rectilinear ऋजुरेखीय ।
Reflex angle समकोण ।
Regular समभुज कोणीय ।
Rhombus समचतुर्भुज ।
Right angle समकोण ।
Scalene विषमभुज ।
Secant छेदक ।
Second विकला, सेकड । द्वितीय ।
Section खड ।
Sector द्विज्य ।
Segment (of circle) वृत्त के खड ।
Semicircle अर्द्धवृत्त ।
Side भुजा । पक्ष ।
Similar (triangle) समरूप त्रिकोण ।
Sine ज्या । साइन ।
Size आकार । माप ।
Solid घन । घनाकृत । ठोस ।
—Geometry घन ज्यामिति ।
Space अवकाश ।
Spiral सर्पिल ।
Square वर्ग ।
Straight ऋजु । सीधा । सरल ।
Subtended angle आतरित कोण ।
Superposition अध्यारोपण ।
Supplementary (angle) ऋजु पूरक (कोण) ।
Surface पृष्ठ । सतह ।
Symmetry सममिति ।
Tangent स्पर्श । स्पर्शी ।
Tetrahedron चतुष्फलक ।
Theorem प्रमेय ।
Transverse आडा । अनुप्रस्थ ।
Trapezium समालब ।
Triangle त्रिकोण ।
Trigonometrical ratios त्रिकोणमितीय अनुपात ।

Vertex शीर्ष। मूर्धा।

Vertical angle खड़ा कोण शीर्षकोण।

Vertically opposite उध्र्वाधर दिशा मे समुख।

Volume आयतन।

Mechanics यांत्रिकी

Acceleration त्वरण।

Attraction आकर्षण। आकर्षण शक्ति।

Axle अक्षवर्ती। एक्जाइल।

Capacity सामर्थ्य।

Centre of gravity अपकेंद्र।

Cantrifugal अपकेंद्र।

Centripetal अभिकेंद्र।

Conservation अविनाशिता।

Density घनत्व।

Dynamic गत्यात्मक। गतिज।

Dynemics (kinetics) गतिकी।

Elastic स्थितिस्थापक।

Energy ऊर्जा।

Equilibrium सतुलन। साम्यावस्था।

Force बल।

Friction घर्षण।

Fulcrum आलंब।

Gravitation गुरुत्वाकर्षण।

Gravity गुरुत्व।

Horizontal क्षैतिज। अनुप्रस्थ।

Impact सघट्टन।

Impulse, blow वेगाघात।

Inclined झुका हुआ।

Inertia अचलता।

Kinematics शुद्ध गति विज्ञान।

Kinetic गति सबंधी।

Kinetics (dynamics) गतिविद्या।

Lever लीवर।

Mass द्रव्यमान। सघति।

Matter पदार्थ। उत्पादन।

Moment घूर्ण।

Momentum सवेग।

Motion चाल। गति।

Neutral मध्याग, तटस्थ।

Parallelogram of forces बल सामातरिक।

Pendulum दोलक।

Period समय। अवधि।

Periodic आवधिक। कालिक।

Pitch, Step (of screw) थाक।

Plane रदा। समतल।

Plumb line साहुल सूत्र।

Position अवस्था, स्थिति, स्वरूप।

Potential (energy) कार्यक्षमता

Power शक्ति।

Pressure दबाव।

Projectile प्रक्षिप्त। प्रक्षेप्य।

Pull निकासी। कर्षण।

Pulley घिरनी। चरखी।

Push दबाना।

Reaction प्रतिक्रिया।

Repulsion विकर्षण। प्रतिकर्षण, विलगता।

Resistance प्रतिरोध।

Rest शेष। अवशेष।

Resultant परिणामी।

Retardation मद।

Revolution परिक्रमा। परिक्रमण

Screw पेंच।

Speed चाल।

Spring कमानी। स्प्रिंग।

Stable स्थायी। खड़ा करना।

Static स्थैतिक ।
Statics स्थैतिकी ।
Tension तनाव ।
Thread (of screw) चूड़ी (पेंच की) ।
Thrust प्रघात ।
Unstable अस्थायी, अस्थिर ।
Velocity उद्वृत ।
Weight बाट, बट्टा ।
Work निर्माण ।

Physics विज्ञान

Aberration विपथन ।
–Spherical गोलाप्रेरण ।
Absolute निरपेक्ष, परम, चरम, परिशुद्ध ।
Absorbent अवशोषक ।
Absorption अवशोषण ।
Accomodation, Adjustment स्थान, जगह ।
Achromatic अवर्णी, अवर्ण, अवर्णक ।
Adhesion आसजन ।
Alternating (current) प्रत्यावर्ती (धारा) ।
Amplitude आयाम ।
Apparatus उपकरण, यंत्र ।
Astigmatism अबिंदुकता ।
Asymmetric असममित ।
Aurora मेरुज्योति ।
Balance संतुलित करना । तुला ।
Balloon गुब्बारा ।
Beat ढोल । विस्पदन ।
Bending बेकन ।
Boiling point क्वथनांक ।
Buoyancy उत्प्लवन ।
Calibration अंशशोधन, समापन ।
Capacity धारित्र ।
Capillary केशिका ।
Charge, Charged आवेश, आविष्ट ।
Chord (music) स्वर संघात ।
Co efficient गुणांक ।
Cohesion साहचर्य, संसक्ति ।
Coil कुंडली ।
Compass दिक्सूचक, कुतुबनुमा, कपास ।
Compression संपीडन, दबाव ।
Concave अवतल ।
Concentration (of ray) समाहरण संकेंद्रण ।
Concentrated संकेंद्रित ।
Condensation सुद्रवण, संघनन ।
Conduction सवाहन, संवहन ।
Conductivity संवाहकता ।
Conductor तड़ित संवाहक ।
Conservation of energy ऊर्जा संरक्षण ।
Constant नियतांक ।
Contraction सिकुड़न, आकुंचन ।
Convection संनयन ।
Convergent अभिसारी ।
Convex उत्तल ।
Crystal......(quartz) मणिभ (स्फटिक) ।
Current धारा ।
Diflection विक्षेप ।
Density घनत्व ।
Dew–Dewpoint ओस-ओसांक ।
Diamagnetism विषम चुंबकत्व ।
Dip नमन ।
Direct Current दिष्ट धारा ।
Discharge निस्सार ।

Dispersion (of light) विखडन ।
Divergent अपसारी ।
Electricity विद्युत् ।
Electrods विद्युदग्र ।
Electrolysis विद्युद्विश्लेषण ।
Electromagnet विद्युच्चुबक ।
Electromotive विद्युद्वाहक ।
Electron इलेक्ट्रान ।
Ether ईथर ।
Evaporation वाष्पन । वाष्पीकरण ।
Expansion प्रसार । प्रसरण ।
Fluid तरल ।
Fluorescence प्रतिप्रभा । fluorescent प्रतिप्रभ ।
Focus—real प्रतीयमान फोकस ।
Virtual आभासी । कल्पित ।
Fog कुहरा ।
Formula सूत्र ।
Freezing point हिमाक ।
Gas—gaseous गैस–गैसीय ।
Heat उष्मा ।
Horizontal अनुप्रस्थ ।
Humidity आर्द्रता ।
Hydraulic द्रवचालित ।
Hydrostatics जलस्थैतिकी ।
Ice हिम, बर्फ ।
Image प्रतिबिंब । real सदबिंब । वास्तविक ।
—Virtual असदबिंब ।
Incidence आयात, आयतन ।
Induction प्रेरण ।
Infra-red अवरक्त ।
Insulated पृथक्यस्त ।
Insulation पृथक्करण ।
Insulator पृथक्कारी ।
Ion–Ionized आयन-आयनित ।
Latent गुप्त ।
Law नियम ।
Lens लेंस ।
Level तल ।
Liquefaction द्रवण ।
Magnet–magnetic चुबक–चुबकीय ।
Magnetism चुबकत्व ।
Magnetization चुबकीकरण ।
Magnification आवर्धन ।
Medium मध्यम । माध्यम ।
Melting point गलनाक । द्रवांक ।
Microscope सूक्ष्मदर्शी ।
Mirage मृगतृष्णा । मृगजल ।
Mirror दर्पण ।
Musical scale स्वरग्राम ।
Negative नकरात्मक ।
Neutral उदासीन ।
Opaque अपारदर्शी ।
Orange (colour) नारगी (रग)
Oscillation दोलन ।
Parallax विस्थापनाभास ।
Pendulum दोलक ।
Penumbra उपच्छाया ।
Period—Periodic काल–कालिक ।
Periodicity आवर्तता, कालक्रम ।
Permeable प्रवेश्य । पारगम्य ।
Phase अवस्थान ।
Phosphorescence अनुप्रभा ।
—phosphorescent अनुप्रभ ।
Polarization (light) ध्रुवण (प्रकाश) ।
Pole ध्रुव । पोल ।
Porous छिद्रल । porosity सरंध्रता ।
Positive पोजिटिव ।
Potential (electric) विभव 'विद्युत्' ।
Pressure चाप । दबाव ।
Prism स्तंभ । समपार्श्व ।
Rarefication विरलीकरण ।

Ray किरण ।
Reaction (physical) प्रतिक्रिया ।
Reflection परावर्तन । प्रतिफलन ।
Refraction वर्तन । प्रतिसरण ।
Refracting index प्रतिसराक ।
Refrigeration प्रशीतन । हिमायन ।
Relative आपेक्षिक ।
Relativity आपेक्षिकता ।
—Theory of आपेक्षवाद । आपेक्षिकवाद ।
Repulsion विलग्नता ।
Resistance प्रतिरोधक ।
Resonance अनुनाद । अनुस्पदन ।
Response प्रतिक्रिया ।
Saturation सतृप्ति ।
Sensitive (balance) (photoplate) सुग्राही ।
Shade, Shadow छाया ।
Solid घन । ठोस ।
Solidification जमना, ठोस बनाना ।
Source स्रोत, उद्‌गम ।
Specific gravity अपेक्षित गुरुत्व ।
Spectrum वर्णक्रम ।
Standard प्रामाणिक ।
Steam भाप ।
Strain विकृति ।
Stress प्रतिबल ।
Suction चूषण ।
Symmetry सममिति । संहति ।
Symmetrical संहत ।
Synchronism समक्रमिता । तुल्यकालत्व ।
Telescope दूरदर्शक, दूरबीन ।
Television सचित्र रेडियो, चित्रवाणी, दूरदर्शन ।
Temperature तापमान ।
Tension तान, तनाव ।
Thermal तापीय ।
Thermometer तापमापी ।
Torsion ऐंठन । मरोड़ ।
Translucent पारभासक । पारभासी ।
Transparent पारदर्शक ।
Ultraviolet पारबैंगनी ।
Umbra प्रच्छाया ।
Undulatory लहरदार ।
Unit एकक ।
Vacuum शून्य ।
Vapour वाष्प ।
Vibration कपन ।
Vioet बैंगनी ।
Viscocitty सान्द्रता ।
Vortex आवर्त ।
Wave तरंग, आवेग ।
Wind instrument सुषिर वाद्य ।
Wireless बेतार ।
X-ray एक्स किरण ।

Chemistry रसायनशास्त्र

Absolute alcohol परिशुद्ध ऐलकोहल ।
Acid अम्ल, तेजाब ।
Active क्रियाशील ।
Agate गोमेद । अकीक ।
Affinity बधुता ।
Alcohol ऐलकोहल ।
Alchemy कीमिया ।
Alkali —Alkaline खारा—खारापन ।
Alkaloid एलकालायड ।
Alloy मिश्रधातु ।
Alum फिटकरी ।
Amalgam सरस ।
Amorphous अमणिभ ।

Analysis— —gravimetric विश्लेषण-भारतोल ।

—-qualitative—-गुणात्मक, प्रकारात्मक ।

—-quantitative—-मात्रात्मक, मात्रामूलक ।

volumetric—-आयतन-मितीय ।

Anhydride एनहाइड्राइड ।

Anhydrous अजल ।

Annealing तापानुशीतन ।

Aqueous जलीय ।

Astringent कषाय ।

Atom——atomic परमाणु—-परमाणविक ।

Balance अतर ।

Base—-Basic समाक्षार—समाक्षारीय ।

Basic salt समाक्षारीय लवण ।

Bell-metal घटा धातु ।

Bellows धौंकनी ।

Bleaching विरंजना. विरजन ।

Blow pipe—-flame फूंकनी, धौकनी—शोला, जाला ।

Blue vitriol नीला थोथा, तूतिया ।

Boiling क्वथन ।

Bubble बुलबुला ।

By-product उपोत्पाद ।

Calcination निस्तापन ।

Calx भस्मक ।

Camphor कपूर ।

Cane sugar इक्षु-शर्करा ।

Carbon कार्बन । अगारक ।

Carbonic acid कार्बोनिक अम्ल ।

Catalysis—उत्प्रेरण ।

Catalist उत्प्रेरक ।

Caustic दाहक । क्षारक ।

Chalk खड़िया ।

Chemical रसायन ।

Chemistry—analytical—रसायन-विश्लेषणात्मक ।

applied—-फलित, bio-जीव । physical भौतिक, practical व्यावहारिक । theoretical—सैद्धांतिक ।

Cinnabar सिंगरक, हिंगुल ।

Coagulation

Coal— —Coal-tar——कोयला—अलकतरा ।

Combining weight सयोजन भार ।

Compound यौगिक ।

Combustible दह्य ।

Combustion दहन ।

Composition सगठन ।

Concentration सान्द्रण, सान्द्रता ।

Constituent घटक, अग ।

Copper ताम्र, तांबा ।

Cork काग ।

Corrosive sublimate रसपुष्प ।

Crystal—crystallin—-दाना । दानेदार ।

Crystallization दानाकरण ।

Crucible मूषा, कुठाली ।

Corrundum कुरुविंद ।

Decomposition विघटन ।

Decoction काढा, कषाय ।

Decolourization विरगीकरण ।

Dehydratin निर्जलीकरण, निर्जली गलना ।

Deliqbesscence—-उदग्रह ।

Deliquescent उदग्रही ।

Destructive distillation भजक आसवन ।

Detonation प्रस्फोटन ।

Decantation निथारना ।

Diamond हीरक, हीरा ।

Diffusion विसरण, विसार ।

Dilution तनुकरण, तनुता ।

Distillation आसवन ।
Double decomposition द्विकविच्छेद ।
Double salt द्विगुन लवण ।
Dry test शुष्क परीक्षण ।
Ductility तन्यता ।
Dye, dying रंजक, रंजन ।
Ebullition उत्क्वथन ।
Effervescence बुदबुदन ।
Efflorescence प्रस्फुटन ।
Element तत्व । घटक ।
Elementary प्राथमिक, मौलिक ।
Emulsion पायस ।
Enamel एनैमल करना ।
Equivalent तुल्यांक । तुल्य ।
Essential oil वाष्पी तैल ।
Evaporation वाष्पीभवन ।
Extraction निस्सारण । निष्कर्षण ।
Explosion ··· विस्फोट ।
Explosive विस्फोटक, प्रस्फोटक ।
Fat चर्बी । स्नेह द्रव्य । fatty स्नेह । स्नेहमय ।
Ferment किण्व । खमीर ।
Fermentation किण्वन ।
Fertilizer उर्वरक । रासायनिक खाद ।
Filtration छानना । निस्यंदन । परिस्रुति, परिस्रावन ।
Filtered परिस्रुत ।
Fireproof अग्निसह ।
Fixation स्थिरीकरण ।
Film पटल, फिल्म
Flame, oxidizing··········· जारक । शिखा ।
Reducing अपचायक ।
Flash point दमकांक ।
Flocculent ऊर्ण्य ।
Formula सूत्र ।
Fruit sugar फल शर्करा ।
Fuel ईंधन
Furance चुल्ली combustion दाह Muffle संवृत ।
Reverberatory परावर्त ।
Fusion गलन । सगलन ।
Galena सीसाभस्म ।
Gas गैस । Gaseous गैसीय ।
Glass कांच, शीशा ।
Glaze चमक । लुक ।
Gold सोना, स्वर्ण ।
Grape sugar द्राक्षाशर्करा ।
Green vitriol हरा कसीस, तूतिया ।
Graphite ग्रैफाइट ।
Hard water कठोर जल ।
Hardness कठोरता ।
Hygroscopic आर्द्रताग्राही ।
Ignition प्रज्वलन । सुलगना ।
Ignorganic अकार्बनिक, अजैव ।
Incandescent उद्दीप्त ।
Inert, inactive निष्क्रिय ।
Indicator संकेतक । सूचक ।
Inflammable ज्वलनशील ।
Ingredient अवयव ।
Iron लोहा cast ढला हुआ लोहा ।
Soft कच्चा । wrought पीटा हुआ लोहा ।
Isomorphous सममणिभीय समाकृतिक ।
Lac लाख । लाक्षा ।
Lampblack दीप काजल ।
Law नियम ।
Layer स्तर ।
Lead सीस, सीसा ।
Lime चूना ।
Lime stone चूना पत्थर ।
Liquefaction द्रवीकरण ।

Litharge लिथार्ज ?
Lixiviation द्रावण।
Manure खाद
Marble संगमरमर।
Mechanical mixture सामान्य मिश्रण।
Mercury पारद, पारा।
Matal धातु।—noble वरधातु।
—base अवरधातु।
Metallic धातव......lustre द्युति।
Metallurgy धातुकर्म।
Mica अभ्रक।
Mine सुरंग, खान।
Mineral खनिज। mineralogy खनिज विद्या।
Minimum न्यूनतम।
Mixture मिश्रण।
Molecule अणु। molecular आणविक।
Mortar खरल, ओखली।
Nascent नवजात।
Neutral प्रशमित। neutral salt प्रशमितलवण।
......neutralization प्रशमन।
Nitre शोरा, कलमी।
Non-metal अधातु।
Occlusion अधिधारण।
Occurrence प्राप्तिस्थान।
Organic जैव।
Orpiment हरताल।
Osmosis परिसरण, रसाकर्षण।
Perfect gas आदर्श गैस।
Physical property भौतिक गुणधर्म।
Percolation रिसन। च्यवन।
Periodic law आवर्त नियम।
Pigment रंजक, रंगद्रव्य।
Plating पट्टन।
Plastic प्लास्टिक।
Precipitate अवक्षेप।
Precipitation अवक्षेपण।
Putrefaction सड़ना, सड़ांध।
Pyrite माक्षिक।
Quartz स्फटिक।
Quicklime कली चूना, वराचूना।
Redioactive विघटनात्मिक।
Rare earth विरल मृद।
Reaction (chemical) प्रतिक्रिया।
Reagent प्रतिकारक। प्रतिकर्मी।
Realgar मैनशिल।
Rectified spirit परिशोधित स्पिरिट।
Reduction अवकरण, अपचयन।
Refractory उष्मसह।
Retort वकयंत्र।
Resin रजन।
Rock satt सेंधा नमक।
Ruby माणिक्य
Salammoniac नौसादर।
Saline नमकीन, खारा।
Salt लवण।—common खाद्यलवण।
—Compound ..योग।
—Double द्विधातुक।—netural प्रशम।
.. ... normal ...पूर्ण।
Sandstone चूनेदार बलुआ पत्थर।
Saponification साबुनीकरण।
Saturated संतृप्त।
Supersaturatiou संतृप्ति।
Sediment दृढ।
Silver रजत।
Solder टाँका, टाँका लगाना।
Slag काचमल।
Smelting प्रद्रावण।
Soft water मृदुजल।

Solubility विलेयता ।

Soluble विलेय ।

Solution द्रवण । द्रव । विलयन ।

Solvent शोधक्षम । सपत्र । विलायक ।

Sieve छलनी । चलनी ।

S irit स्पिरिट ।

Spontaneous combustion स्वतोदहन ।

Stable स्थायी ।

Standard solution प्रमाण द्रव ।

Standardization मानकीकरण ।

Starch मडा । माँडी ।

Still भभका ।

Sublimation ऊर्ध्वपातन ।

Sugar शक्कर ।

Sulphur गधक ।

Suspension निलवन ।

Symbol प्रतीक, सकेत ।

Synthesis सश्लेषण Synthetic ... सश्लिष्ट ।

Sapphire नीलम ।

Smelting प्रद्रावण ।

Tin कलई करना ।

Tempering मृदुकरण । दृढ़ीकरण । पानी चढाना ।

Trituration सपेषण ।

Turpentine तारपीन ।

Union जोड़, समेल ।

Vapour वाष्प ।

Vinegar सिरका ।

Viscous सांद्र । Viscosity सांद्रता ।

Vitreous काचाभ, काचीय ।

Volatile वाष्पशील ।

Vermillion सिंदूर ।

Watarproof जलसह ।

Watertight जलरोक, पनरोक ।

Wax मोम ।

Zinc जस्ता ।

Zircon गोमेद ।

Astronomy ज्योतिष

Aberration विपयन ।

Altitude ऊँचाई ।

Annual motion वार्षिक गति ।

Aphelion सूर्योच्च ।

Apogee भूम्च्युच । पराकाष्ठा ।

Apparent आभासी । भासमान ।

Ascendingnode आरोह-पात (lunar) ।

Asteriods क्षुद्रग्रह ।

Autumnal equinox जलविषुव ।

Azimuth दिगश ।

Binary star युग्मतारा ।

Canopus अगस्त्य ।

Celestial equator खगोलीय विषुवत ।

Equinoctial विषुव ।

Celestial latitude विक्षेप । शर ।

—Longitude भोगाश ।

—Sphere खगोल ।

Collimation सधान ।

Comet धूमकेतु । पुच्छलतारा ।

Conjunction (of planets) सयोग ।

Constellation नक्षत्र, तारामडल ।

Culmination मध्यगमन ।

Cycle चक्र ।

Declination विषुवलव ।

Descending node अवविंदु ।
निम्नपात ।
(Lunar) केतु ।
Deviation च्युति
Diurnal आह्निक। दैनिक ।
Earth पृथ्वी ।
Ebb tide भाटा ।
Eclipse ग्रहण । annular—
वलयग्रास ।
Pertial—खडग्रास ।—total—
पूर्णग्रास—।
Ecliptic क्रातिवृत्त ।
Equation of time कालशोधन ।
Equator निरक्ष रेखा। भू-विषुवतरेखा।
Equatorial निरक्षीय ।
Equinoctial दे० celestial
equator ।
Equinox (time) विषुव
Flow tide ज्वार ।
Full moon पूर्णिमा ।
Galaxy छायापथ ।
Geocentric भूकेंद्रीय ।
Heliocentric सूर्यकेंद्रीय ।
Horizon (circle) दिगत ।
(plane) क्षितिज ।
Horizeontal अनुप्रस्थ
Inferior planet अतर्ग्रह
Interstellar space भात प्रदेश ।
Jupiter वृहस्पति
Leap-year अधिवर्ष ।
Local time स्थानीय समय ।
Lunar चाद्र ।
Lunation चाद्रमास ।
Mars मगल ।
Mean time मध्यकाल ।
Mercury पारद । बुध (ग्रह) ।
Meridian मध्यरेखा—plane
मध्यतल ।
—Meteor—उल्का ।
Meteorite. उल्कापिंड ।
Moon चद्रमा
Nadir अधोविंदु । पादविंदु ।
Neap-tide लघुस्फीति ।
Nebula नीहारिका ।
Neptune नेपचून ।
New moon नवचद्र ।
Node नोड पात ।
Nutation अक्ष विचलन ।
Observatory वेधशाला ।
Opposition प्रतियोग ।
Orbit अक्ष ।
Orion ओरियन । कालपुरुष ।
Paraliax लबन ।
Penumbra उपच्छाया ।
Perigee भूमिनीच ।
Perihelion रवि नीच, अनुसूर्य ।
Phase कला ।
Planet ग्रह ।
Pluto प्लूटो, यम ।
Polar axis ध्रुवाक्ष ।
—Distance लबाश ।
Pole मेरु । —star—ध्रुवतारा ।
Precession अयक ।
Prime meridian मूल याम्योत्तर
Prime vertican प्रधान उद्वृत्त ।
Progression उत्थान ।
Regresson प्रतीपगमन ।
Right ascension विषुवाश ।
Satellite उपग्रह ।
Saturn शनि ।
Siderial time नक्षत्र समय ।
Sirius लुब्धक
Solstice सक्राति ।

Spring-tide बृहत् ज्वार ।
Star नक्षत्र ।
Summér solstice दक्षिणायन विंदु, कर्क, सक्रांति, उत्तरायणांत ।
Sun सूर्य ।
Sun-Spot सूर्य के धब्बे । सूर्यकलंक ।
Sun-dial धूपघडी ।
Superior planet प्रमुख नक्षत्र ।
Synodic period सयुति काल ।
Tide ज्वार ।
Transit circle संक्राति परिधि
Twilight गोधूलि ।
Umbra प्रच्छाया
Uranus वरुण ।
Ursa major सप्तर्षि ।
Ursa minor लघु सप्तर्षि ।
Vega अभिजित् ।
Venus शुक्र ।
Vernal equinox वसंत विषुव ।
Vertical circle दिगंश वृत्त ।
Winter solstice दक्षिणायनांत मकर सक्रांति, उत्तरायण विंदु ।
Zenith शिरोविंदु ।

Geography—Geology भूगोल--भूविज्ञान

Abyssal वितलीय ।
Alluvial जलोढ ।
Alluvium कछारी भूमि, जलोढ आवृद्धि ।
Antractic circle कुमेरुवृत्त
Antipodal प्रतिमुख ।
Archipelago द्वीपसमूह ।
Arctic circl उत्तर ध्रुववृत्त ।
Argillaceous मृण्मय ।
Atmosphere वातावरण ।
Avalanche हिमानी ।
Axis, earth's भूमि का अक्ष ।
Azoic जीवहीन ।
Bank किनारा ।
Bar रोधिका ।
Barysphere गुरुमडल ।
Basin थाला, द्वार का क्षेत्र, नदी पात्र ।
Bay खाड़ी
Boulder गोलाश्म, वट्टक ।
Branch शाखा ।
Cainozoic केनोजोइक, नवजीव ।
Calcareous चूर्णमय चूनेदार, सितोपलीय, खटीमय ।
Catchment अपवाह क्षेत्र । स्रवण क्षेत्र ।
Cahannel जलमार्ग । जलांतराल ।
Clevage सभेद ।
Continent महाद्वीप । महादेश ।
Coast line समुद्रतटीय रेखा ।
Contour समोच्च रेखा । कटूर ।
Coral Island प्रवाल द्वीप ।
Country देश ।
Crust of the earth भूमि की पपडी ।
Crystalline rcck स्फटिक चट्टान ।
Cyclone चक्रवात, बवंडर ।
Defile सँकरा रास्ता ।
Delta डेल्टा ।
Deposition निक्षेपण ।
Desert मरुस्थल । रेगिस्तान ।
Equator विषुवद्वृत्त । विषुवत्रेखा । भूमध्यरेखा ।

Erosion भूक्षरण। अपरदन।
Estuary मुहाना।
Fall प्रपात, झरना।
Fault भ्रंश।
Fold वलन, तह।
Fold mountain पर्वत की तह।
Geyser उष्णोत्स।
Glacier हिमनदी।
Globe भूमंडल, गोलक।
Gorge तंग घाटी, गार्ज, कंदर।
Gulf खाड़ी।
Harbour बंदरगाह।
Hemisphere गोलार्ध।
Hill पहाड़ी।
Hydrosphere जलमंडल।
Ice cap हिमावरण।
Iceberg हिमशैल।
Igneous आग्नेय।
Impervious अपारगम्य।
Island द्वीप।
Isobar समदाब रेखा।
Isohyet समवृष्टि रेखा।
Isotherm समताप रेखा।
Isthmus संकीर्ण पथ। डमरूमध्य।
Lagoon समुद्रताल, पाश्चजल।
Lake झील।
Landslip भूमिस्खलन।
Latitude अक्षांश parallel of latitude समाक्ष रेखा।
Limestone चूनेवाला पत्थर।
Lithosphere अश्ममंडल।
Loam दुमट।
Longitude भोगांश। रेखांश। देशांतर।
Map मानचित्र।
Mediterranean sea भूमध्यसागर।
Mesozoic मध्यजीव।
MetamorPhic कायांतरित।
Meteorite उल्काश्म।
Meteorology मौसम शास्त्र।
Mineral खनिज।
Monsoon मानसून।
Mountain पहाड़।
Block खडक।
Fold पुटक। पुट।
Mountain range पर्वतमाला।
System प्रक्रिया।
Mouth मुख, मुंह।
Navigable नौगम्य।
Oasis मरूद्यान।
Ocean महासागर।
Antarctic दक्षिण ध्रुवीय।
Arctic उत्तर ध्रुवीय।
Atlantic एटलांटिक।
Pacific प्रशांत।
Indian भारतीय। Southern Indian दक्षिणी भारतीय।
Ooze सिंधु-पंक, सिंधु साद,
Outcrop दृश्यांश।
Palaeozoic पुराजीवक।
Pass पास। पारित होना। गुजर जाना।
Peak शिखर, चोटी।
Peninsula प्रायद्वीप।
Permeable पारगम्य, प्रवेश्य।
physiography भूमिवृत्ति।
Plains मैदान। भूमि।
Plateau पठार।
Plutonic पातालीय।
Pole ध्रुव। North उत्तर।

—South दक्षिण।

Port समुद्रतट।

Promontory प्रोत्तुग। अतरीप।

Province प्रदेश।

Rapid तीव्रढाल, तरखा, द्रुत।

Ravine तगघाटी, नार।

Region प्रदेश, क्षेत्र, इलाका।

Relict mountain अवशिष्ट पर्वत।

Relief उभार।

Ridge मेंड, डाँडा। उद्रेख।

River नदी।

Rock चट्टान, शैल।

Sea समुद्र। सागर। sea beach सैकत।

Sea level सतह, तह।

Sedimentary rock तलछटी, शैल, अवसादी शैल।

Slit छिद्र, विदर।

Slope ढाल, ढलान, प्रवणता।

Snow हिम, वर्फ।

Snow-line हिमरेखा।

Spring वसत। सोता, चश्मा।

State राज्य।

Strait जलसधि।

Stratum स्तर।

Stratification स्तरविन्यास।

Stratified स्तरित।

Submarine पनडुब्बी।

Sub-soil निचली मिट्टी, अवभूमि।

Subterranean भूमिगत।

Suburb उपनगर।

Summit शिखर।

Syncline अवतलमय।

Table-land उच्चसम भूमि।

Tide ज्वार भाटा ebb tide ज्वार। low tide भाटा।

High tide, low tide ज्वार। भाटा।

Flood tide भरा हुआ heap tide अमावस्या या पूर्णिमा का उतरा हुआ ज्वार।

Spring tide अमावस्या या पूर्णिमा का तेज ज्वार।

Topography स्थलाकृति विज्ञान। स्थलरूप। भूमस्थान रेखा, रूपरेखा।

Tornado बवडर।

Trade wind व्यापारिक वायु।

Tributary सहायक नदी, उपनदी।

Tropic of cancer कर्क रेखा।

Tropic of Capricorn मकर रेखा।

Tropics उष्ण कटिबंध।

Urban पौर, नागरिक।

Valley उपत्यका।

Volcano ज्वालामुखी। active Vulcano जीवत ज्वालामुखी पहाड।

Extinct vulcano मृत ज्वालामुखी पहाड।

Volcano सुप्त ज्वालामुखी पहाड।

Waterfall प्रपात, झरना।

Watershed, water-parting जलविभाजिका।

Water spout जलस्तभ, जलबवडर।

Weather मौसम।

Whirlwind वात्या, वात्यावर्त, बगूला।

Zone वलयमंडल। Frigid Zone हिममंडल।

Temperate Zone नातिशीतोष्ण मडल।

Torrid Zone ऊष्ण मडल।

Biology जीवविज्ञान

Abiogenesis अजीव जनन।

Abortive अवर्धित।

Acquired character उपार्जित लक्षण, उपार्जित गुणधर्म।

Adaptation रूपांतर।

Amphibious जलस्थलचर, उभयचर।

Anabolism चय, उपचय।

Analogous समवृत्ती।

Ancestral आनुवंशिक।

Appendage अनुबंध, उपांग।

Aquatic जलीय।

Articulate संधियुक्त।

Asexual अलिंगी।

Assimilation आत्मीकरण।

Biogenesis जीवजनन।

Biologist जीववैज्ञानिक।

Bisexual उभयलिंगी।

Bristle कूच, शूक, शूका।

Bud कली। Budding समुद्भवन, कलिकोद्गम।

Cell कोशिका सेल, कोषाणु।

Cell-wall कोशिकाभित्ति।

Charactar लक्षण।

Chromosome गुणसूत्र।

Class श्रेणी, sub-elass उपश्रेणी।

Claisification वर्गीकरण, श्रेणीविभाग।

Colony मंडल, संघ।

Contractile संकोची।

Culture (of bacteria etc) संवर्धन।

Daughter cell अनुजात कोशिका।

Defensive रक्षात्मक।

Degeneration अपकर्ष, अपविकाश।

Descent उद्भव।

Differentiation विभेदीकरण।

Distribution विस्तार।

Dominant प्रबल, प्रभावी।

Dormant, latent अव्यक्त।

Dorsal पृष्ठदेश, पृष्ठ, अभिपृष्ठ।

Ecology पारिस्थितिकी, परिस्थिति विज्ञान।

Elimination विलोपन, निरसन।

Embryo भ्रूण।

Embryology भ्रूणविज्ञान, भ्रौणिकी।

Environment पर्यावरण।

Ephemeral स्वल्पायु।

Evolution क्रमविकास।

Exotic विदेशीय।

Extinct विलुप्त।

Family परिवार, कुटुंब, कुल।

Fertilization निषेचन, गर्भाधान।

Fossil जीवाश्म।

Gamete युग्मक।

Generation पीढी।

Generation, reproduction जनन।

Genetics आनुवंशिकी, प्रजनन विद्या।

Genus वंश, जीनस।

Germ cell जनन कोशिका।

Growth वृद्धि।

Habit स्वभाव, प्रकृति।

Habitat निवास स्थान।

Hereditary आनुवंशिक, वंशानुगत।

Heredity आनुवंशिकता।

Hermaphrodite द्विलिंगी
Hib rnation शीत निष्क्रियता, शीतनिद्रा।
Histology ऊतिकी।
Homogamous सविध पुष्पी।
Homologous समजात।
Host पोषद, पोषक।
Hybrid संकर
Irritability क्षोभ्यता, उत्तेजनशीलता।
Katabolism अपचय।
Kingdom सर्ग।
Life cycle जीवनचक्र।
Life history जीवनवृत्तांत।
Littoral तटवर्ती,
Marine समुद्रीय।
Metabolism उपापचयन। metabolic उपापचयात्मक।
Metamorphosis रूपांतर
Mimicry अनुहरण।
Modification विवर्तन।
Morphology आकृति विज्ञान, आकारिकी।
Mutation उत्परिवंतन।
Natural history प्रकृति विज्ञान।
Naturalist प्रकृतिवैज्ञानिक।
Natural selection प्राकृतिक वरण।
Nucleus नाभिक, केंद्रक।
Ontogeny व्यक्ति इतिहास।
Order श्रेणी, sub-order उपगण।
Organism जीव।
Origin मूलस्थान।
Ovary अंडाशय, डिंबग्रंथि।
Ovule बीजांड।
Ovum डिंब, अंडाणु।
Palaeontology जीवाश्म विज्ञान।
Parasite पराश्रयी, परजीवी।
Parent जनक, जनिता।
Parthenogenesis असेचन जनन, अनिषेक जनन।
Pelagic तलप्लावी।
Phylum संघ।
Phylogeny जाति इतिहास।
Plankton परिप्लावी जीव।
Protoplasm जीव द्रव्य।
Race मूलवंश, प्रभेद।
Reproduction जनन।
Response उत्तर। प्रत्युत्तर।
Reversion प्रतिवर्तन।
Selection वरण।
Sensitive संवेदनशील, प्रतिसंवेदी।
Species जाति।
Sterile बाँझ, बंध्या।
Stimulus उद्दीप्त। उद्दीपन।
Survival अतिजीविता, अतिजीवन।
Symbiosis मियोजीविता।
Tribe कबीला, कुटुंब।
Type प्रकार, प्रतिरूप।
Uuisexual एकलिंगी।
Variation विभिन्नता, परिवर्तन।
Variety प्रजाति।
Ventral उदरदेशी, अधर।

Botany उद्भिदविद्या

Acotyledon अबीजपत्री
Adventitious अस्थानिक
Aerial root अवरोह
Aerobic वातापेक्षी।

Algae शैवाल, काई।
Anacrobic अवायुजीवी।
Angiosperm आवृतबीज।
Annual वार्षिक।
Anther पराग कोश।
Aquatic जलीय।
Awn सूक।
Bacillus दडाणु।
Bacteria जीवाणु।
Bark छाल। वल्कल।
Blade फल। फलक।
Bract निपत्र,
Branching शाखाविन्यास, शाखा निकलना।
Bud अकुरिका,
Bulb गुटिका,
Calyx वाह यदल पुज,
Carpel स्त्री केसर। अड पत्र।
Climber आरोहिणी।
Cordate हृदयाकार।
Corolla दलपुज।
Corn अनाज, मक्का।
Corona मुकुट
Cotyledon बीजपत्र,
Creeper विसर्पी, अधोलता;
Crenate दँतिल, दाँतेदार।
Cruciform स्वस्तिकाकार। कुसाकार।
Cryptogam क्रिप्टोगैम।
Culm सधिस्तभ। नाल।
Cyme बहुवर्ध्यक्ष।
Deciduous (leaf) पाती। पतझड़ी।
Dentate दतुर। दाँतेदार।
Diandrous द्विपुकेसर।
Declinous, Unisexual एकलिंगी।
Dicotyledon द्विबीजपत्नी।
Digitate प्रागुलित,
Dioecious पृथग्लिगी, द्वयोकसी,
Endocarp अतस्तर, अतश्छद।
Endogenous अंतर्जात। अतर्जनित।
Endosperm भ्रूणपोश। भ्रूणपोशी।
Evergreen सदाबहार, सदारहित।
Flora ओषधि, पादपजात।
Fruit फल।
Fungus कवक, फफूंद।
Fusiform तर्कुरूप।
Gamopetalous युक्तदलीय।
Gamosepalous युक्त वाह्यदलीय।
Germination अकुरण।
Gymnosperm विवृतबीज।
Gynandrous पुजायाग।
Heliotropism सूर्याभिवर्तन।
Inflorescence पुष्पक्रम।
Kernel अष्टि, गिरी।
Labiate ओष्ठी।
Lanceolate भल्लाकार
Latex आक्षीर,
Leaf पत्रपर्ण। Leaf bud—पत्रमुकुल।
Legume शिंब। फली।
Lichen शैवाक।
Mesocarp मध्यस्तर।
Monoclinous उभयलिंगी।
Monocotyledon एकबीजपत्र। एकबीजपत्नी।
Monoecious द्विलिंगी।
Mould साँचा।
Nectar मधुरस मकरद।
Node गाँठ, पर्व।
Perenial वर्षानुवर्षी।
Perienth परिदलपुज।
Pericarp फलत्वक्।
Petal पंखुडी, दल।
Phanerogam फेनीरोगैम।
Photosynthesis प्रकाशसश्लेषण।
Pinnate पक्षल।
Pistil गर्भकेशर।
Pith मज्जा।

Pollen पराग । Pollination परागण ।
Polycotyledon बहुबीजपत्री ।
Polygamous बहुलिंगी ।
Root मूल ।
Sac कोश ।
Seed बीज ।
Sepal बाह्यदल ।
Serrate आरावत् ।
Shrub क्षुप । झाडी ।
Spine रीढ । मेरुदंड ।
Spore बीजाणु ।
Stem कांड ।
Stigma गर्भमुंड ।
Style गर्भदंड ।
Tendril तंतु । प्रतान ।
Tree वृक्ष । पेड़ ।
Unisexual एकलिंगी ।
Wood लकडी । काठ । काष्ठ ।
Yeast खमीर ।

Zoology प्राणिविज्ञान

Air-bladder वाताशय ।
Animalcule जंतुक ।
Antenna शृंगिका ।
Anterior अग्र ।
Arthropoda आर्थ्रोपोडा । संधिपाद ।
Ape वानर ।
Articulated संहित । जुड़वा ।
Bat चमगादड ।
Beak चोंच ।
Beetle भृंग । गुबरैला । फूंगा । बीटल ।
Bipod द्विपाद । द्विपादी ।
Bladder मूत्राशय ।
Boa अजगर ।
Breeding प्रजनन ।
Burrow बिल ।
Burrowing बिल बनाना ।
Butterfly मधुमक्खी ।
Canine भेदक ।
Carapace पृष्ठवर्म ।
Carnivorous मांसभक्षी ।
Caterpillar सूँडी, इल्ली ।
Centipede शतपद । कनखजूरा ।
Chrysalis कोषावस्था ।
Claw नखर । पंजा ।
Cocoon कीटकोष, कोवा, कोकून, रेशमकोष ।
Cold blooded नृशंस, शीतरक्त ।
Compound eye मिश्रित चक्षु ।
Crustacea क्रस्टेशिया ।
Dorsal पृष्ठदेश । पृष्ठ ।
Drone नर मधुमक्खी ।
Earthworm भूनाप ।
Egg अंडा ।
Endoskeleton अंत कंकाल ।
Entomology कीटविज्ञान ।
Exoskeleton बहि कंकाल ।
Fang दंतमूल । विषदंत ।
Fauna प्राणिजगत् ।
Feather पिच्छपर ।
Fin पंख । बाज ।
Foetus भ्रूण, गर्भ ।
Forelimb अग्रपाद ।
Forgivorous भक्षी ।
Gastropoda गैस्ट्रोपोडा । उदरपाद ।
Gill गिल । क्लोम । Gill flap ...
क्लोमपट्ट ।
Gizzard पेषणी ।

Gregarious यूथचर । यूथचारी ।
Herbivorous शाकभक्षी ।
Hind limb पश्चपाद ।
Hive मधुमक्खी पेन्टिका ।
Hood छज्जा ।
Hoof शफ । खुर ।
Horn सीग । शृंग ।
Image प्रतिमा, बिंब, प्रतिबिंब ।
Insect कीट । कीडा ।
Insectivorous कीटहारी, कीटभक्षी ।
Invertebrate अकशेरुकी ।
Larva डिंभ, लार्वा ।
Leg, jointed पदसंधि ।
Mane अयाल ।
Mammal स्तनधारी । स्तनी
Marsupial धानी । प्राणी ।
Millipede मिलीपीड । सहस्रपाद ।
Moth शलभ ।
Moulting निर्मोचन ।
Omnivorous सर्वभक्षी, सर्वाहारी ।
Ostrich शुतुर्मुग ।
Oviparous अंडज ।
Oyester शुक्ति, कस्तूरी ।
Parental care पैतृक रक्षण ।
Parrot तोता ।
Parthenogenesis अमैथुन प्रजनन । अनिषेक जनन ।
Pedigree वंशावली ।
Placenta गर्भनाल, अपरा ।
Plankton परिप्लावी जीव ।
Porciupine सेह ।
Prawn झींग ।
Prehensile परिग्राही ।
Proboscis शुंड ।
Pseudopodium पादाभ, कूटपाद ।
Pupa कोष ।
Qnadruped चतुष्पाद ।
Reptile सरीसृप ।
Rodent कृतक प्राणी ।
Ruminant रोमंथकारी प्राणी ।
Shark हागुर ।
Shell कवच । शुक्ति । घोंघा ।
Shrew छछुंदर ।
Simple eye सरल चक्षु ।
Snail घोंघा ।
Snout प्रोथ । तुंड ।
Social सामाजिक । समाजमूलक ।
Spine रीढ़ । मेरुदंड ।
Sting डंक ।
Sucker चूषक ।
Testes अंडकोश ।
Toad भेक । मेंढक ।
Tusk गजदंत ।
Vertebrate कशेरुकी । कशेरुक दंडी ।
Viviparous जरायुज ।
Whale ह्वेल मछली ।
Warker कर्मकारी ।
Warm गर्म ।

Physiology क्रियाविज्ञान

Alimentary canal पाचकनाल आहारनाल ।
Anaemia रक्तक्षीणता ।
Antiseptic विषाणु निरोधक ।

Hygiene स्वास्थ्यविज्ञान

Antitoxin जीव विषहर ।
Anus गुद, गुदा ।
Aorta महाधमनी ।
Appetite क्षुधा ।

Artery धमनी।
Artificial कृत्रिम।
——Respiration श्वसन।
Asehtic अपूति दूषित।
Assimilation आत्मीकरण, स्वागीकरण।
Auricle कर्णाभ।
Balanced diet संतुलित आहार, यक्ताहार।
Bi'e पित्त।
Bladder मूत्राशय।
Blood रुधिर, रक्त।
 Circulation परिसंचार।
 Clotting थक्का बनाना।
 Pressure दवाब, चाप।
 Vessel वाहिका।
Bone अस्थि, हड्डी।
Breast छाती, स्तन।
 Carpal मणिबंधिका।
 Hip कूल्हा। नितंब।
 Metacarpal करभास्थि।
 Metatarsal अनुगुल्फिका।
 Thigh जघा।
Bowel अँतडी।
Brain मस्तिष्क, मगज।
Breathing श्वसन।
Bronchus श्वसनी।
Chest छाती। वक्ष।
Choroid coat रक्तक पटल।
Chyme आमपेय।
Collar bone हंसली।
Colon वृहदन्त्र।
Conjunctive नेत्रश्लष्मा।
Cornea स्वच्छ मडल।
Cuticle आह्यचर्म।
Dermis अतस्त्वचा।
Diaphragm मध्यच्छद।
Diet भोजन, आहार।
Digestion पाचन।
Discharge स्खलन।
Disease रोग। बीमारी।
Contagious संक्रामक।
Epidemic महामारी।
Infectious सांक्रमिक।
Water-borne जलवाहित।
Disinfectant रोगाणुनाशक।
Disinfection रोगाणुनाशन।
Duodenum ग्रहणी।
Fainting मूर्च्छा, रूपण।
Femur ऊर्वस्थि।
Ferment खमीर, किण्व।
Fibula उपजंघिका।
Foramen magnum महारंध्र बृहद्रंध्र।
Gall-bladder पित्ताशय।
Ganglion गुच्छिका।
Germ जीवाणु।
Gland ग्रंथि।
Gullet ग्रासनली।
Gum मसूढा।
Health स्वास्थ्य।
Heart दिल। —beat—स्पंद।
Humerus प्रगंडिका।
Immune निरापद, प्रतिरक्षित।
Inspiration प्रश्वासन।
Intestine आन्त्र।
Iris परितारिका पट्ट।
Joint जोड। संधि।
Juice, gastric आमाशय रस।
Kidney वृक्क, गुर्दा।
Knee घुटना, Knee cape जानु फलक।
Larynx कंठ। स्वरयंत्र।
Ligament स्नायु।

Limb अग।
Liver जिगर।
Loin कटि।
Lungs फेफड़ा।
Lymph लसीका।
medulla Oblongata मेरुशीर्ष।
Membrane झिल्ली, कला।
Microbe अणुजीव।
Muscle पेशी।
  Involuntary अनैच्छिक।
  Voluntary ऐच्छिक।
Nail नख, कील।
Neck ग्रीवा। गर्दन।
Nostril नथुना।
Nourishment, nutrition पोषण।
Oesophagus ग्रासनली।
Organ इद्रिय। अग।
Ovary अडाशय।
Pancreas अग्न्याशय।
Pancreatic अग्न्याशय (स)।
Parasite पराश्रयी, परजीवी।
Pelvis श्रोणि। श्रोणिप्रदेश। वस्तिदेश।
Pericardium परिहृद।
Peristalsis लहरी गति।
Persprition स्वेदन, स्वेद।
Phalanges अगुलास्थि।
Pharynx ग्रसनी।
Plasma प्लाविका।
Pleura प्लूरा, झिल्ली।
Poison विष।
Poisonous विषैला।
Poissoned विषाक्त।
Poisoning विषक्रिया, विष देने का कार्य।
Prevertion रोक, प्रतिरोध।
Pulse, Pulse beat नाड़ी स्पंदन।
Pupil तारा (आंख का)।
Quarantine सगरोध, सगरोधन करतीन, निरोध।
Rectum मलाशय।
ResPiration श्वसन।
Retina दृष्टिपटल।
Rib पर्शुका, पसली।
Rigor mortic मृत्युज काठिन्य, शव की अकड़न।
Sacrum त्रिक, त्रिकास्थि।
Saliva लार, लाला।
Salivary gland लार ग्रंथि।
Sanitation स्वास्थ्य रक्षा, सफाई।
ScaPula अंसफलक। स्कधास्थि।
Sclerotic coat शुल्क पटल, श्वेत पटल।
Secretion स्राव।
Sense organ ज्ञानेन्द्रिय।
Sensory centre सवेदी केंद्र।
Sepsis पूतिदोष।
Septic tank पूतिकुंड। मलगर्त।
Serum रक्तोद, सीरम् लस
Shortsightendness निकट दृष्टिमत्ता।
Shoulder-blade स्कैप्ला, असफलक,
Skin चमड़ा। त्वचा।
Skull कपाल। करोटि। खोपडी।
Socket गर्त।
Spinal chord रीढ रज्जु। मेरु रज्जु।
Spleen प्लीहा, तिल्ली।
Spore बीजाणु।
Sterilization अनुर्वरीकरण, विसक्रमण।
Sternum उरोस्थि।
Stomach उदर।
Sweat gland स्वेदग्रंथि।

System योजना, व्यवस्था, पद्धति क्रम ,
Sympathetic अनुकंपी ।
Tongue जीभ, जिह्वा ।
Tonsil गलसुआ । गलगुटिका ।
Tooth दाँत
Bicuspid द्विदली ।
Incisor कृंतक, छेदक ।
Molar चर्वणदंत ।
Tympanum कर्णपट, मध्यकर्ण ।
Ulna अंत प्रकोष्ठिका ।
Ureter मूत्रवाहिनी । गविनी
मूत्रप्रवाहिणी ।
Urethra मूत्रमार्ग ।
Vein शिरा, नस ।
Ventilated संवातित ।
Ventilation संवातन, हवादारी ।
Ventricle निलय ।
Vertebra कशेरुका । कशेरु ।

Economics अर्थशास्त्र

Acceptance स्वीकृति ।
Accentor स्वीकारी ।
Accident संयोग ।
Accidental आकस्मिक ।
Account हिसाब । खाता ।
Acquittence निस्तारण ।
Advalorem यथा मूल्य ।
Advance पेशगी, अग्रिम ।
Agent दलाल । मध्यस्थ ।
Agreement करार । सहमति ।
Annuity वार्षिकी ।
Appreciation मूल्यवृद्धि ।
Approximate अनुमान करना ।
Approximation अनुमान ।
Arbitration विवाचन, मध्यस्थ निर्णय ।
Arrears बकाया ।
Assay परख । परखना ।
Assessment करनिर्धारण, निर्धारण, मूल्यांकन ।
Assets अस्ति । मालमत्ता । परिसंपत्ति ।
Association संस्था ।
Attachment कुर्की ।
Attorney न्यायवादी ।
Audit लेखापरीक्षा ।
Average औसत ,
Balance अंतर । शेष ।
Bank बैंक, बंक ।
Bankrupt दिवालिया ।
Barter वस्तु विनिमय ।
Bimetallism द्विधातुवादी ।
Bond बंध । बंधपत्र । बंधक । ऋणपत्र ।
Bounty अधिदान ।
Broker दलाल ।
Brokerage दलाली ।
Bullion बुलियन, बहुमूल्य ।
Business व्यापार ।
By-product उपजात । उपोत्पाद । गौण उत्पादन ।
Call आह्वान, बुलाना, अभियाचना ।
Capital पूँजी ।
Capitalism पूँजीवाद ।
Capitalist पूँजीपति ।
Cash रोकड
Cashier रोकडिया, खजाची रोकडवाल ।
Chamber of Commerce वाणिज्य मंडल, वाणिज्यवेश्म ।
Cheque धनादेश ।
Civil जानपद ।

Clearing house ऋणमार्जन गृह ।

Code संहिता । सग्रह ।

Coin टक ।

Colleetivism राज्य स्वत्ववाद, राज्य सामूहिकतावाद ।

Combination, Combine सयोग सयोजन । समिलन ।

Commerce वाणिज्य ।

Commission वर्तन । छूट । बट्टा ।

Commodity पदार्थ ।

Communism साम्यवाद ।

Company कपनी, प्रमडल, समवाय ।

Comrensation प्रतिफल । हानिपूर्ति । समतोलन ।

Competition सस्पर्धा । प्रतियोगिता प्रतिस्पर्धा ।

Compound interest चक्रवृद्धि व्याज ।

Compromise मध्यमार्ग । समझौता ।

Concession रिआयत ।

Condition शर्त । प्रतिबध ।

Confiscated समापहरण ।

Cousigument प्रेषितमाला ।

Coustant स्थिर । अपरिवर्तित । अचल ।

Constitution सविधान । सघटन । सस्थापना ।

Consumer उपभोक्ता ।

Consumption उपभोग ।

Contract ठेका, सविदा ।

Conversion रूपातरण, परिवर्तन ।

Convertible परिवर्त्य ।

Cooperation सहकारिता ।

Countermand विरुद्ध आदेश ।

Countervaling प्रतिप्रभावी ।

Credit प्रत्यय, साख ।

Creditor साहूकार । लेनदार ।

Crisis सकट ।

Criterion निकष । कसौटी । मानदड ।

Currency चलार्थ । सिक्का । मुद्रा ।

Current Accouut चालू खाता, चललेखा ।

Debenture ऋणपत्र ।

Debit विकलन, नामे लिखना ।

Debt ऋण ।

Debtor ऋणी ।

Deficit हीनता ।

Deflation अवस्फीति ।

Demand माँग ।

Deposit जमा ।

Depreciation अवक्षयण । अवमूल्यन ।

Depression अवसाद अवदात ।

Discount छूट, उपहार ।

Dividend लाभाश ।

Draft सूख, बट्टा ।

Drawee आहार्थी ।

Drawer आहर्ता, लेखीवाल ।

Duty कर, शुल्क ।

Economic मितव्ययता । अर्थशास्त्रीय ।

Eccnomics अर्थशास्त्र ।

Endorsement पृष्ठाकन ।

Endorser पृष्ठाकक ।

Equity साम्य । सुनीति ।

Equivalent समान । समतुल्य ।

Exchange विनिमय ।

Exeise उत्पादकर । मादककर, क्लृप्ति ।

Executive अधिशासी ।

Export निर्यात ।

Factory निर्माणशाला । कारखाना ।

Forward अग्रे, अग्रवेपण ।

Freight वस्तु भाडा ।

Gain लाभ ।

Gambling द्यूत, जुआ

Gold standard स्वर्णमान ।

Goods वस्तु । माल ।
Goodwill सदभाव । ख्याति ।
Governing body शासी निकाय ।
Government paper राज्यपत्र ।
Import आयात ।
Income आय ।
Indemnity क्षतिपूर । क्षतिपूर्ति ।
Index सूची, देशना ।
Index Number सूची अंक । देशनांक ।
Industry उद्योग ।
Inflation स्फीति ।
Inheritance दाय ।
Insolvent शोधाक्षम ।
Instalment प्रभाग, किस्त ।
Insurance आगोप । बीमा ।
Interest सूद । ब्याज ।
Intrinsic धात्विक ।
Invest विनियोजन ।
Invoice बीजक ।
Joint संयुक्त ।
Labour श्रम ।

—Division of विभाजन ।

Labourer श्रमिक ।
Laissez faire यथेच्छाकारिता ।
Law विधि ।
Legacy पत्ररिक्थ ।
Legal tender विधिग्राह्य ।
Limited सीमित ।
Unlimited असीमित ।
Liquid assent अनिरुद्ध परिसंपत्ति ।
Local स्थानीय ।
Localization स्थानीयकरण ।
Lockout तालाबंदी ।
Loss हानि । घाटा ।
Manufacture निर्माण ।
Manufactory निर्माणशाला ।
Margin सीमांत ।
Marginal सीमांतटीय ।
Market बाजार ।
Maximum अधिकतम ।
Mean मध्यमान, माध्य ।
Middleman दलाल । मध्यस्थ ।
Minimum न्यूनतम ।
Money मुद्रा, द्रव्य, रुपया, धन ।
Monometallism एकधातुमान ।
Monopoly एकाधिकार ।
Mortage बधक, गिरवी, रेहन ।
Nationalism राष्ट्रवाद ।
Necessaries आवश्यकताएं ।
Needs जरूरतें ।
Negotiable instrument परक्राम्य पत्र ।
Nominal नाममात्र, सांकेतिक ।
Normal सामान्य ।
Over-population जनसंख्यातिरेक ।
Over-production उत्पादनातिरेक ।
Panic आतंक ।
Paper money कागजी मुद्रा ।
Par, above सममूल्य से ऊपर ।
Partner भागी, साझेदार ।
Patronage प्रश्रय, संरक्षण ।
Pay मूलदेय । वेतन ।
Payee आदाता । पानेवाला । रुपया पानेवाला ।
Pecuniary आर्थिक । धनसंबंधी ।
Percent प्रतिशत ।
Permit आज्ञा ।
Plea पक्ष ।
Pledge बधक ।
Possession धारण । स्ववश । कब्ज ।
Prime cost प्रधान मूल्य ।
Principal प्रधान ।
Probability संभाविता ।
Produce उत्पादन क्रिया ।

Producer उत्पादक ।
Production उत्पादन ।
Profession पेशा ।
Profit लाभ ।
Promissory note वचनपत्र, रुक्का ।
Promoter प्रवर्तक ।
Proportion अनुपात ।
Protection संरक्षण । रक्षा । सुरक्षा ।
Proxy प्रतिपत्र ।
Rate of exchange विनिमय की दर ।
Ratio अनुपात ।
Raw material कच्चा माल ।
Receipt प्राप्ति ।
Reciprocal अन्योन्य, व्यतिहारी ।
Reciprocity परस्परता ।
Rent किराया, भाडा, लगान ।
Reserva सुरक्षित ।
Resident स्थानिक ।
Retail खुदरा, फुटकर, परचून ।
Returns वापसी, विवरणी ।
Revenue राजस्व ।
Ring वलय । छल्ला । मडल । मुद्रिका ।
Rise and fall चढाव उतार ।
Risk खतरा ।
Sale विक्रय ।
Sample नमूना ।
Saving सचय ।
Slump अवपात । मदता । मदी ।
Socialism समाजवाद ।
Speculation सट्टा ।
Standard मान । प्रामाणिक ।
Standardized मानाकित ।
Statistics साख्यिकी शास्त्र ।
Strike हडताल ।
Supply पूर्ति ।
Surety प्रतिभू ।
Surplus आधिक्य । अतिरेक । शेष ।
Income आय ।
Indirect परोक्ष ।
Token coin साकेतिक मुद्रा ।
Trade व्यापार ।
Treasury कोषागार ।
Unanimous सर्वसमत । एकमत ।
Underwriting निम्नाकन, बीमा ।
Unit इकाई । एकक ।
Usance व्यवहारी अवधि, प्रचलित अवधि ।
Utility उपयोगिता ।
Value मूल्य ।
Wages मजदूरी ।
Wealth धन ।
Wholesale थोक ।
Winding up बदी ।
Workshop कार्यभवन-निर्माण । भवन ।
Yield उपज ।

Psychology मनोविज्ञान

Philosophy दर्शनशास्त्र ।
Abbreviation संक्षिप्त रूप ।
Aberration विपथन ।
Ability योग्यता ।
Abnormal असामान्य ।
Absolute ठोस ।

Abstinence परिवर्जन ।
Abstract अमूर्त ।
Abstraction विविक्त विचारण, सामान्य ग्रहण ।
Accessory उपसाधन, उपाग ।
Accident दुर्घटना ।
Accidental आकस्मिक ।
Accmodation व्यवस्थापन ।
Aceretion अभिवृद्धि, सचयन
Adantation अनुकूलन ।
Adult वयस्क ।
Advocate अधिवक्ता । वकील ।
Aesthetic सौंदर्यबोधी ।
Aesthetics सौंदर्यशास्त्र ।
Aetiolcgy रोगहेतु निदान ।
Affeıent अभिवाही ।
Agnosticism अनीश्वरवाद ।
Aggregate संपूर्ण ।
Agreement करारनामा ।
Alternative विकल्प ।
Altruism परार्थवाद । परार्थपरता ।
Ambiguous सदिग्ध, गोलमाल ।
Ambivalence उभय वृत्तिता ।
Ambivalent उभयावृत्ति ।
Amnesia स्मृतिहीनता ।
Anaesthesia सवेदनहरण । निश्चेतन ।
Analogous समानार्थक पद ।
Analogy साम्यानुमान ।
Ana ysis विश्लेषण ।
Ancestor पूर्वज । पुरखा ।
Animism सर्वात्मवाद । जीववाद ।
Ancmalous असगत ।
Anomaly असगति ।
Anthropology मानव विज्ञान ।
Anthropomorphism मानवतारोप ।
Anticipation प्राग्ज्ञान ।
Antipathy विद्वेष ।
Anxiety चिंता उद्वेग ।
Apathy उदासीनता ।
Aphorism सूत्र ।
Apparent परिधान ।
Application प्रयोग ।
Approximate सनिकट ।
Approximation सनिकटन ।
Argument तर्क ।
Armistice विरामसधि ।
Asexual अलिंगी ।
Aspiration उत्कृष्ट अकांक्षा ।
Assemblage समुच्चय । सकलन ।
Assimilation आत्मीकरण ।
Association विचारसाहचर्य ।
Assumption अभ्युपगम, मान्यता ।
Asymmetrical असममित ।
Asymmetry असममिति ।
Atavism पूर्वजोद्भव ।
Atheism निरीश्वरवाद, नास्तिकवाद ।
Attitude अभिवृत्ति ।
Attribute उपरोपण ।
Auditory श्रवण सबंधी, श्रवणीय ।
Authentic प्रामाणिक ।
Authenticity प्रामाणिकता ।
Automatic स्वाभाविक ।
Axiom स्वयसिद्ध ।
Backgroucd पृष्ठभूमि ।
Behaviour बर्ताव । आचरण ।
Bias अभिनति ।
Broadcast प्रसारण ।
Byproduct उपोत्पाद ।
Capacity कार्यक्षमता ।
Castration अडोच्छेदन । बधिया ।
Casual अनियत्त सामयिक ।
Casuality सामयिकता, आकस्मिकता ।

Category कोटि, श्रेणी, दर्जा ।
Categorical श्रेणीबद्ध, क्रमबद्ध ।
Cause कारण ।
Censor अवष्टंभक ।
Certain निश्चित ।
Certainty निश्चितता ।
Certificate प्रमाणपत्र ।
Chance संयोग ।
Chaos दुर्व्यवस्था ।
Clairvoyance अलोकदृष्टि । अतीद्रिय दृष्टि ।
Clearness स्पष्टता, प्राजलता ।
Climax चरमावस्था ।
Coexistence सहजीवन । सहअस्तित्व ।
Cognitive संज्ञानात्मक ।
Common sense सामान्य ज्ञान ।
Comparative तुलनात्मक ।
Compassion अनुकंपा ।
Compatible संगत ।
Complementary पूरक । संपूरक ।
Complex मनोग्रथि । भावग्रथि ।
composite संमिश्र । संयुक्त ।
Composition संविरचना । संघटन । संयोजन ।
Comprehension व्यापकार्थ ।
Compromise समझौता ।
Concatenation कारणानुबंध ।
Concept अवधारण, प्रत्यय, संकल्पना ।
Conception अवधारणा, संकल्पना ।
Concomitant सहवर्ती ।
Concrete वस्तुवाचक ।
Concurrence सहमति । संगमन ।
Concurrent संगामी ।
Congenital सशर्त ।
Congruity संगति ।
Connotation स्वगुनार्थ । स्वगुण-निर्देश ।
Conscience अतर्भावना । अतर्विवेक ।
Conscious चेतन ।
Consciousness चेतनता ।
Consequence परिणाम, फल ।
Consequent अनुवर्ती, परिणामी ।
Constitution संविधान ।
Contempt तिरस्कार, अवज्ञा, अवहेलना ।
Context प्रसंग । प्रकरण । संदर्भ ।
Contiguity सान्निध्य ।
Continuity निरंतरता ।
Contour समोच्च रेखा, कंटूर ।
Contrary विरोधी ।
Contrast विरोध । वैषम्य ।
controversy विवाद ।
Convention समय । संकेत ।
Converse परिवर्तित वाक्य ।
Coordination समन्वय, तालमेल । एकसूत्रता ।
Correlation सहसंबंध । परस्पर संबद्ध ।
Correspondence संवादिता ।
Counterpart प्रतिभाग ।
Crime अपराध ।
Criminal अपराधी ।
Criterion निकष, कसौटी ।
Crucial निर्णायक ।
Culture संस्कृति ।
Cynic द्वेषान्वेषी । मानवदोषी ।
Daat दत्त सामग्री । प्राप्त सामग्री ।
Day-dream दिवा स्वप्न ।
Decadence ह्रास ।
Decaying क्षय ।
Deduction निगमन ।
Defined परिभाषित ।
Definition परिभाषा ।
Degenerate अपकर्ष होना ।

Degeneration अपकर्ष, अपविकास।
Delusion विभ्रम।
Demensia मनोभ्रम।
Demoralization नैतिक पतन।
Denotation वस्तुनिर्देश, वस्त्वर्थ।
Depreciation घसन। सकोच। कमी।
Design डिजाइन। नमूना। रूपाकन।
Despondency विषाद।
Destiny विपत्ति। भवितव्यता।
Deviation स्खलन। विचलन।
Diagnosis निदान।
Diehard दकियानूस।
Dilemma द्विपाशक। दिश्रृंगक।
Direct सीधा सरल।
Discipline अनुशासन।
Displacement विस्थापन।
Dissociation मनोविच्छेद।
Divine दैवी।
Doctrine मत। सिद्धात।
Dualism द्वैतवाद।
Duet युगल गान।
Effernt अपवाही।
Effort प्रयास, आयास।
Ego अहम्। Fgonism अहम्वाद।
Egotism अहम्भाव।
Elimination विलोपन। निरसन। निरास।
Emaciated क्षीण।
Emotion आवेग। भावावेग।
Empirical आनुभविक।
Entity अस्तित्व। सत्ता।
Envirorment पर्यावरण।
Envy असूया।
Eolithic आदिपाषाण।
Ephemeral स्वल्पायु।
Equilibrium सतुलन।
Equivalent समान।
Equivocation अनेकार्थ।
Eternal सतत।
Ethics नीतिशास्त्र।
Ethnology मानव-जाति-विज्ञान।
Etiology हेतु विज्ञान। हेतुकी।
Eugenics सुजनन तत्व। सैजिनिकी।
Evolution क्रमविकास। विकास।
Exception अपवाद।
Expectation आशा।
Expediency इष्टसिद्धि। कार्य-साधकता।
Extract निष्कर्ष।
Fact तथ्य।
Faculty मन शक्ति। सकाय।
Fallacy तर्कदोष। तर्काभाव।
Fanaticism मताधता। धर्माधता। कट्टरता।
Feeling अनुभूति। भावना।
Feigning छद्म व्यवहार।
Fine art ललित कला।
Finite परिमित।
Foreground अग्रभाग, वरला भाग।
Form रूप। आकृति।
Formal औपचारिक।
Formality औपचारिकता।
Formula सूत्र।
Fortuitous आकस्मिक।
Free will स्वतत्र इच्छाशक्ति।
Function कार्यव्यवहार। कार्य।
Fundamental मौलिक।
General सामान्य। साधारण।
Generalization साधारणीकरण।
Generic जातीय।
Gregarious यूथचर, यूथचारी।
Gustatory रसवेदी।
Habit आदत।

Hallucination निर्मूल भ्रम ।

Hate घृणा ।

Hedonism सुखवाद, प्रेयवाद ।

Hereditary पैतृक, पीढीगत खानदानी ।

Heredity आनुवंशिकता ।

Heterogeneous विषम ।

Homogeneous समरूप । सजातीय ।

Hypnosis, hypnotism संमोहन ।

Hypnothesis प्राक्कल्पना ।

Idea विचार ।

Ideal आदर्श ।

Idealism आदर्शवाद ।

Identity अभिज्ञान, पहिचान ।

Identification अभिज्ञान । पहचान ।

Idiot जड । जडमति । जडबुद्धि ।

Illusion भ्रम । माया ।

Image बिंब । प्रतिमा । प्रतिबिंब ।

Imagination परिकल्पना ।

Immediate शीघ्र ।

Impersonal पररूप ।

Implication मंशा । आशय । अभिप्रेत ।

Impulse मनोवेग । भावावेग ।

Imputation स्पंदन । आरोप ।

Inborn जन्मजात ।

Incarnation अवतार ।

Incest उत्साह ।

Incidental प्रासंगिक ।

Incipient आरब्ध ।

Incompatible असंगत ।

Inconsistent असंगत । अननुरूप ।

Indefinite अनिश्चित ।

Indicative सांकेतिक ।

Indirect परोक्ष ।

Individual वैयक्तिक ।

Individuality व्यक्तिकता ।

Induction प्रेरणा ।

Industry कारखाना, उद्योगशाला ।

Industrial औद्योगिक ।

Inertia अवस्थिततत्व ।

Inference अनुमान । अनुमिति ।

Inferiority complex हीनताग्रंथि ।

Infinite अपरिमित, अनंत ।

Infinity अनंत ।

Inherence अंतर्निहित ।

Inheritance वंशानुक्रमण । वंशगति ।

Inhibition अंतर्बाधा । निरोध । निरोधन ।

Innate चलगति, सहज ।

Inner आंतरिक ।

Insight अंतर्दृष्टि ।

Instability अस्थिरता ।

Instinct वृत्ति । सहज वृत्ति । मूलवृत्ति ।

Instinctive वृत्तिक, सहज ।

Instrumentality यांत्रिकता ।

Intellect बुद्धि, प्रज्ञा ।

Interaction अन्योन्य क्रिया । पारस्परिक क्रिया ।

Introspection अंतर्दर्शन ।

Intuition अंतर्ज्ञान ।

Inversion प्रतिपर्यवर्तन ।

Irrelevant विसंगत असंबद्ध ।

Jealousy ईर्ष्या । जलन ।

Judgment निर्णय ।

Kinesthesis गतिसंवेदना ।

Law विधि ।

Lethargy तंद्रा । सुस्ती ।

Limit सीमा ।

Local स्थानीय ।

Logic तर्क । Logical तार्किक ।

Logos शब्द ।

Longing अनुकांक्षा ।

Lust काम । कामुकता ।

Luxury विलासिता।
Magic जादू। इद्रजाल।
Major मुख्य।
Malice द्रोह, दुर्भावना।
Manifest अभिव्यक्त।
Masochism स्वपीड़नरति।
Material भौतिक। प्रचुर। महत्वपूर्ण।
Materilıasm भौतिकवाद।
Maximum अधिकतम।
Mean मध्यमान। माध्य। औसत।
Memory स्मरणशक्ति।
Mentity विचारधारा।
Mental science मानसिक विज्ञान
Measurement नाप। मापक।
Metaphysical तात्विक।
Metaphysics तत्व मीमासा।
Method तरीका।
Migration प्रव्रजन। देशातरण।
स्थानातरण।
Mind मस्तिष्क।
Minimum न्यूनतम।
Minor गौण। अप्रधान।
Misogynist नारीद्वेषी।
Modal निश्चयमात्मक।
Monism एकवाद। एकत्ववाद।
Monotony ऊब, उकताहट।
Moral नैतिक।
Morality नैतिकता।
Morbid विकार। रोग।
Mystic रहस्य।
Myth पुराणकथा। देवकथा।
Narcissism आत्ममोह।
Negative नकारात्मक।
Neclithic नवपाषाण, नवप्रस्तर।
Normal सामान्य।
Object बिंब। वस्तु।
Objective वस्तुनिष्ठा, वस्तु।
Observation प्रेक्षण, प्रेक्षित अंक।
Obsession ग्रस्तता।
Obversion प्रतिवर्तन।
Occasional यत्रतत्र। यदाकदा।
Ontology जीवविकास विज्ञान।
Origin उद्गम। उत्पत्ति। उद्भव।
Orthodox परपरानिष्ठ।
Outer बाह्य। बाहरी।
Outline खाका, रूपरेखा।
Output पैदावार। निकासी।
Over-population जनसख्यातिरेक।
Overruled विपरीत व्यवस्था।
Paleolithic पुरापाषाणिक।
Panorama दृश्यपटल।
Paradox विरोधाभास।
Parallelism समानता। समानातरवाद।
Passive निष्क्रिय। निश्चेष्ट। आक्रमण।
Percept प्रत्यक्ष। जानना।
Perfection पूर्णता। निष्पत्ति।
Period काल। Periodic कालिक।
Persistence अनुलंब। बना रहना।
Persistent आग्रही। निरतर।
Personality व्यक्तित्व।
Personification व्यक्तीकरण।
Pessimism निराशावाद।
Phase सगत, अवस्था।
Phobia भीति। भय।
Portable सुवाह्य।
Positive सकारात्मक।
Positivism साकारवाद। वस्तुनिष्ठावाद। प्रत्यक्षवाद।
Postula e अभिधारण।
Practical व्यावहारिक।
Pragmatic फलमूलक।
Pragmatism अर्थ क्रियावाद।

Precaution पूर्वोपाय ।
Precocity अकालप्रौढ़ता । विलक्षणता ।
Predicate विधेय ।
Principle सिद्धांत ।
Probable संभाव्य ।
Problem समस्या ।
Profile पार्श्वचित्र । रूपरेखा । वाह्य रूपरेखा ।
Projection प्रक्षेपण । प्रक्षेप ।
Propensity सीमांत ।
Propitiation आराधना, प्रसादन ।
Proposition तर्कवाक्य ।
Psychonalysis मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ।
Psychology मनोविज्ञान ।
Psychologist मनोवैज्ञानिक ।
punctuality नियमितता ।
Puritanism शुद्धाचारवाद ।
Rationalism तर्कनावाद, तर्कबुद्धिवाद ।
Rationalization यौक्तिकीकरण ।
Reaction प्रतिक्रिया ।
Real वास्तविक ।
Realism यथार्थवाद ।
Reality वास्तविकता ।
Reason कारण ।
Receptive संग्रहणशील ।
Reciprocity पारस्परिकता ।
Recognition परिचय । प्रमाण ।
Reconciliation । समाधान । निपटारा । मेलमिलाप । पुनर्मेल ।
Recreation मनोरंजन ।
Redundancy अतिरिक्तांगिता ।
Reflex सहज क्रिया । प्रतिवर्ग ।
Relative संबंधित । सापेक्ष ।
Relativity सापेक्षिकता ।
Relaxation विश्राम, शिथिलन ।
Repetition आवृत्ति ।
Repression निरोध । निग्रह । दमन ।
Reproduction उत्पादन । पुनरुत्पादन ।
Resident स्थानिक ।
Resistance पदावास, निवास ।
Response उत्तर । प्रत्युत्तर । अनुक्रिया ।
Rhythm ताल । स्पंद । लय ।
Sacrament संस्कार ।
Sadism परपीडनरति । Sadist परपीडितरति ।
Safeconduct सुरक्षणपात्र । अभयपात्र ।
Scepticism संशयवाद । संशयालुता ।
School विद्यालय । शाला ।
Scientist वैज्ञानिक ।
Sensation संवेदन । संवेदना ।
Sense बोध । ज्ञान । भावना ।
Sense organ ज्ञानेंद्रिय ।
Sensitive संवेदनशील । संवेदी ।
Sentiment मनोभाव । भाव ।
Sex लिंग । Sexual यौन । लैंगिक । कामुकता ।
Sexuality लैंगिकता । कामुकता ।
Simultaneous समकालिक । एक साथ ।
Socialogy समाजशास्त्र ।
Sodomy गुदामैथुन ।
Somnambulism निद्राचार ।
Space देश । जगह । आकाश । अवकाश ।
Speculation सट्टा । फाटका ।
Smell गंध ।
Standard मानक ।
Statistics सांख्यिकी शास्त्र ।
Stimulus उद्दीपन । उद्दीप्ति ।

Stupor जडिमा ।

Subconscious अवचेतन ।

Subject उद्देश्य ।

Subjective आत्मनिष्ठ । व्यक्तिनिष्ठ ।

Sublimation उदात्तीकरण । उन्नयन ।

Substitution बदलना । प्रतिस्थापन ।

Superintendent अधीक्षक ।

Supernatural अलौकिक । अति-प्राकृतिक ।

Supression दमन ।

Syllogism हेत्वनुमान, हेतुभेद, अनुमान ।

Symbol चिह्न, सकेत, प्रतीक ।

Symbolism प्रतीकवाद ।

Symmetry समिति । संहृति ।

Symmetrical सममितिक ।

Sympathy सहानुभूति ।

Synthesis संश्लेषण ।

Taboo वर्जन । निषेध ।

Tactile स्पर्श ।

Taste स्वाद ।

Technique तकनीक । प्रविधि । प्रक्रिया ।

Teleology उद्देश्यवाद ।

Texture बनावट, गठन ।

Theorem प्रमेय ।

Theory सिद्धात ।

Theoretical सैद्धातिक ।

Trance लेश । दीप्तिरेखा ।

Transcendental बीजातीत ।

Type प्रकार । भेद ।

Unconscious अचेतन ।

Universal सार्विक । सार्वदेशिक । सर्वव्यापो ।

Utilitarianism उपयोगितावाद ।

Utility उपयोगिता ।

Utopia काल्पनिक राज्य, काल्पनिक समाज । आदर्श राज्य, आदर्शसमाज ।

Vision दृष्टि ।

Will इच्छा, संकल्प ।

Wish अभिलाषा ।

Public Service लोकसेवा

Academic अधिविद्य, विद्या ।

Academy परिषद् ।

Accountant आंकिक । लेखपाल ।

Accounts लेखा ।

Act अधिनियम । क्रिया ।

Acting कार्यकारी । स्थानापन्न ।

Acquisition अवाप्ति । ग्रहण ।

Additional (e g. Secretary) अतिरिक्त (सचिव) ।

Adhoc एतदर्थ । तदर्थ ।

Adinterim अत कालीन ।

Adjourment स्थगन । अवधिदान । कालदान ।

Administration प्रशासन ।

Adulteration अपमिश्रण । हीन-मिश्रण ।

Adult suffrage वयस्क मताधिकार ।

Advocate General महाधिवक्ता ।

Affidavit शपथपत्र ।

Affiliation सबद्धता ।

Agreement संविदा । करारनामा ।

Airforce वायुसेना । विमान विभाग ।

Airways वायुमार्ग ।

Alderman नगरवृद्ध ।

Allotment आवंटन । बाँट ।

Allowance भधिदेय । भत्ता ।

Amalgamation समिश्रण ।
Ambassador राजदूत ।
Amendment संशोधन । सशुद्धि ।
Amnesty द्रोहिक्षमा । सर्वक्षमा ।
Annuity वार्षिकी । वार्षिक वृत्ति ।
Apprentice शिशिक्षु । शिक्ष ।
Arbitration निवाचन । मध्यस्थ ।
Armed शस्त्रसज्ज । सशस्त्र ।
Armistice युद्धविश्राति ।
Assesment अभिनिर्धारण । कर निर्धारण ।
Assignee अभिहस्ताकिती ।
Assignment अभिहस्ताकन । सौंपना ।
Assignor अभिहस्तातक ।
Association पार्षद । साहचर्य ।
Attache सहचारी ।
Authenticated प्राधिकार दत्त
Authority प्राधिकार ।
Authorized अधिकारिक
Autograph स्वाक्षर ।
Autonomy स्वायत्तशासन । स्वायत्तता । स्वप्रबध । स्वशासन ।
Award परिनिर्णय । पचनिर्णय । विवाचन पचाट ।
Bail जमानत ।
Balance शेष । आधिक्य । अतर ।
Balance sheet तलपट ।
Ballot मतपत्र ।
—Box मतपत्र पेटिका ।
Bank कोष ।
Bankrupt नष्टनिधि । दिवालिया ।
Barrack सेनावास ।
Board of revenue आगमगण ।
Body काय । वर्ग । निकाय ।
Bonafide सद्भात । सद्भाव ।
Bonded बध ।
Bonus अधिलाभाश ।
Book-keeping पुस्तपालन ।
Broadcast प्रसारण । आकाश भाषण ।
Budget आयव्ययक ।
Bulletin विवरणिका ।
By-election उपनिर्वाचन ।
By-law उपनियम । उपविधि ।
Cabinet मन्त्रिसभा । मन्त्रिमडल ।
Cadet नौछात्र । सेनाछात्र । बालबीर ।
Calcutta Corporation कलकत्ता महापालिका ।
Candidate उम्मीदवार ।
Cantonment सेनावसति । छावनी । कटक ।
Convassing मतार्थन । मतमांग ।
Cash रोकड । नगद ।
Cashier रोकडिया ।
Casting vote निर्णायक मत ।
Censor अवष्टभक । सेंसर ।
Census गणना । जनगणना ।
Certificate प्रमाणपत्र ।
Cess उपकरण ।
Chairman सभापति ।
Chancellor कुलपति ।
Charge १—कर्तव्य । कार्यभार । दोषारोप ।
Chief मुख्य ।
Chief Commissioner मुख्यायुक्त ।
Chief Justice मुख्यक न्यायाधिपति ।
Chief minister मुख्यमन्त्री ।
Circular परिपत्र ।
Circulate परिवहण । परिचलन ।
Civil court व्यवहारालय ।
Civil marriage जानपद विवाह ।
Collective समूह ।
Collector जिलाधीश ।
College महाविद्यालय ।

Commission (e. g. finance) दलाली । छूट । कमीशन ।

Commissioner (e. g., ofexcise) आयुक्त ।

Committee समिति ।

Commonwealth समधिराज्य । अधिराज्य ।

Communications संचार । सचारण ।

Community समुदाय । लोकसमाज ।

Company प्रमडल ।

Compulsory अनिवार्य ।

Condition शर्त । प्रतिबध ।

Conditional सप्रतिबध ।

Context सदर्भ ।

Contract सविदा, ठीका ।

Contractor ठीकेदार ।

Convention परपरा ।

Municipal नागर ।

Corruption भ्रष्टाचार । भ्रष्टता ।

Credit साख ।

Crime अपराध ।

Criminal law अपराधी के दंड की विधि, विधान ।

Dairy दुग्धशाला ।

Debit कर्म ।

Defence सुरक्षा ।

Definition परिभाषा ।

Demand मांग ।

Democracy प्रजातंत्र । गणतंत्र ।

Demurrage क्षति ।

Devolopment विकास ।

Direction निर्देश ।

Drrecfor निर्देशक ।

Dismissal पदच्युति । विसर्जन । खारिज करना ।

Disqualification अयोग्यता ।

District जनपद ।

Domicile निवासी ।

Dominion राज्य ।

Draft प्रारूप ।

Duplicate प्रातिलिपि ।

Duty कर्तव्य ।

Economic अर्थ सबंधी । आर्थिक ।

Eligibilit पात्रता ।

Embargo घाट बंदी, निषेध, रोक ।

Embassy राजदूतावास ।

Emergency आपात । आपातिक ।

Emigration उत्प्रवास । उत्प्रवासन ।

Emigrant उत्प्रवासी । उत्प्रवासक ।

Employment रोजगार ।

Enactment अधिनियमिति । अधिनियमन ।

Endórsement सही करना । अनुमोचन । बेचान । पृष्ठाकन ।

Establishment स्थापना, संस्थापना ।

Estimate अनुमान ।

Estimator अनुमान, आगणक ।

Etiquette शिष्टाचार ।

Exchange विनिमय ।

Executive अधिशासी ।
—officer अधिकारी ।

Excise उत्पादक शुल्क । जानकारी ।

Exofficio पदेन ।

Export निर्यात ।

Expropriation सपत्तिहरण ।

Extenuation परिस्थितियाँ लघुकारक परिस्थितियाँ ।

Extradition प्रसारण ।

Evacuation शून्यीकरण । खालीकरना ।

Evacuee निष्क्रांत ।

Face value प्रत्यक्ष मूल्य ।

Federal court संघन्यायालय ।

Federation संघ ।

Fee शुल्क ।

Fertilizer खाद । उर्वरक ।

Finance अर्थ ।

Fine arts ललितकला ।

Fishery मत्स्य ।

Fixed deposit स्थायी खाता ।

Form प्रपत्र । फार्म । रूप ।

Formal, Formally औपचारिक, औपचारिकता ।

Formula सूत्र ।

Full-time officer पूर्ण समयाधिकारी ।

Function कार्य ।

Fund कोष ।

Government सरकार ।

Governor राज्यपाल ।

Grant सहायता । अनुदान ।

Health officer स्वास्थ्याधिकारी ।

High Commissioner उच्चायुक्त ।

High-Court उच्चन्यायालय ।

Home (department) गृह विभाग ।

Hospital अस्पताल । औषधालय ।

House of the people लोकसभा ।

Import आयात ।

Incharge अधिपति ।

Incidental आकस्मिक ।

Income-tax आयकर ।

Industry उद्योग ।

Incorporated मिश्रित ।

Incorporation मिश्रण ।

Inland अतर्देशीय ।

Injunction निषेधाज्ञा ।

Inspector निरीक्षक ।

Institution सस्था ।

Interim अंतरिम ।

Interpreter व्याख्याकार ।

Jailor कारागृहपति ।

Joint संयुक्त ।

Joint stock company सयुक्त-पूंजी की कपनी ।

Judge न्यायाधीश ।

Judgement निर्णय ।

Judicial न्यायिक ।

Jurisdiction अधिकार क्षेत्र । क्षेत्राधिकार ।

Laboratory प्रयोगशाला ।

Labour Union मजदूर सघ ।

Land acquisition भूमि अर्जन ।

Law अधिनियम ।

Legislative विधान ।

—Assembly परिषद् ।

Council मडल ।

Licence अनुज्ञा ।

Limited company सीमित प्रमडल ।

Magistrate दडाधीश । दंडाधिकारी ।

Majoirty बहुमत ।

Manager व्यवस्थापक ।

Manual हस्तपुस्तिका । पुस्तिका ।

Margin अंतर । हाशिया । उपात ।

Meeting अधिवेशन । संमेलन । बैठक ।

Member सदस्य ।

Memo स्मार । ज्ञान ।

Memorandum स्मारक ।

Migration प्रव्रजन ।

Military सैनिक । सेना ।

Minister मत्री ।

Ministry (e. g ,-of Defence) सुरक्षा मत्रालय ।

Minor अवयस्क ।

Minority अल्पमत ।
Mobilization सज्जा ससज्जन ।
Monopoly एकाधिकार ।
Morality नैतिकता ।
Motion सवेग ।
Move प्रस्ताव करना ।
Mover प्रस्तावक ।
Municipality नगरपालिका ।
Nationalization राष्ट्रीयकरण
Promissory प्रतिज्ञापत्र ।
Notice सूचना । सूचनापत्र ।
Notification अधिसूचना ।
Nurse उपचारिका ।
Nursing उपचारण ।
Oath शपथ ।
Octori Duty चुगी ।
Offence अपराध । दोष ।
Office कार्यालय । दफ्तर ।
Officer अधिकारी । पदाधिकारी ।
Officer-in charge प्रभारिक । प्रभारी अधिकारी ।
Order आज्ञा ।
Ordinance अध्यादेश ।
Organization सघटन । सगठन ।
Overseer अधिदर्शक ।
Parliament ससद ।
Parliamentary secretary ससद सचिव ।
Permit आदेश ।
Personal Assistant निजसहायक ।
Planning योजना ।
Police आरक्षी । आरक्षक ।
Political राजनैतिक ।
Poll मतदान ।
Polling Station मतदान केद्र ।
Post पद ।
Post-Graduate स्नातकोत्तर ।

Prime Minister प्रधान मत्री ।
Private Secretary निजी सचिव ।
Proclamation घोषणा । उद्घोषणा ।
Prohibition प्रतिषेध ।
Promulgation प्रवर्तन । प्रख्यापन ।
Protection रक्षण । सरक्षण ।
Provident Fund भविष्यनिधि ।
Province प्रात । राज्य ।
Provision प्रबध । प्रावधान । उपबध ।
Provisional अस्थायी ।
Public Health लोकस्वास्थ्य ।
Publicity प्रचार ।
Qualification विशेषण । योग्यता । अर्हता ।
Record अभिलेख ।
Reference उद्धरण ।
Ragistered पजीकृत ।
Registration पजीकरण ।
Relief निवारण । सहायता । साहाय्य ।
Remission परिहार ।
Repeal विखडन करना । प्रत्याहान । प्रत्यावर्तन ।
Representative प्रतिनिधि ।
Republic गणराज्य ।
Requisition अधियाचन ।
Research शोध । अन्वेषण ।
Reservation पश्चाद्धृति । पश्चाद्-धारण ।
Resolution सकल्प । प्रस्ताव ।
Resource ससाधान ।
Retirement निवृत्ति ।
Review पुनरीक्षा ।
Revision पुनरावृत्ति । पुनरीक्षण ।
Revocation खडन । निरसन ।
Rules नियम ।
Rulling व्यवस्था । निर्णय ।

Safeguard अभिरक्षा । अभिरक्षण । रक्षाकवच ।
Schedule अनुसूची ।
Scholarship छात्रवृत्ति ।
School विद्यालय ।
School final examination विद्यालयीय अंतिम परीक्षा ।
Seal नाममुद्रा । मुद्रा ।
Seat आसन । स्थान ।
Secondary Educatiod माध्यमिक-शिक्षा ।
Secretary सचिव ।
Section विभाग ।
Secular State धर्मनिरपेक्ष राज्य ।
Security प्रतिभूति ।
Sedition राजद्रोह ।
Senior उपरि । ज्येष्ठ ।
Serial क्रम ।
Sericulture कृमिपालन ।
Session सत्र ।
Sessions-Judge सत्रन्यायाधीश ।
Settlement व्यवस्था । बदोबस्त ।
Sine Die अनिश्चिन तिथि पर्यंत ।
Smmuggling चौर्यनियन ।
Society समाज । समिति । मंडली ।
Specification विस्तृत विवरण ।
Staff कर्मचारी वर्ग । कर्मचारी वृंद ।
Stamp मुद्रांक ।
State राज्य ।
Statue मूर्ति ।
Stock स्कंध ।
Store-Keeper भाडागारिक । कोष्टा-गारिक । भंडार । कोठार ।
Sub-Inspector उपनिरीक्षक ।
Subordinate अधीन । अधीनस्थ ।
Sub-Section उपविभाग ।
Suffrage मताधिकार ।
Summons आह्वान ।
Superior उत्कृष्ट ।
Super-tax अधिकर ।
Supervisor परिवेक्षक ।
Supplementary अनुपूरक ।
Supplies प्रदाय ।
Sur-charge अधिभार ।
Surrender अध्यार्पण ।
Sur-Tax उपरि कर ।
Survey भूमापन ।
Surveyor भूमापक ।
Suspension निलवन ।
Syndicate अभिषद् ।
System पद्धति । संहृति ।
Table सारणी ।
Trible वनजाति । गणजाति । जनजाति ।
Tribunal अधिकरण ।
Trust प्रन्यास । न्यास ।
Trustee प्रन्यासी ।
Union संघ ।
Unit इकाई ।
Urban नगरीय नागर ।
Urgent अविलब । अविलबनीय ।
Usage प्रथा । रीति ।
Vacant रिक्त ।
Vacancy रिक्तता ।
Veterinary पशुचिकित्सा ।
Veto अभिषेध ।
Vice-Chancellor उपकुलपति ।
Vice-Principal उप प्रधानाचार्य ।

Visa द्रष्टाक। प्रवेशपत्र।
Vote मत।
Voter मतदाता।
Voucher प्रमाणक।
Ward पाल्य।
Warrant (for arrest) अधिपत्र।
Whip प्रतोद।
Will इच्छापत्र। वसीयत।
Zone प्रदेश।